

पालि-हिन्दी

शब्दकोश

(प्रथम भाग, प्रथम खण्ड)

(अ - अहोसि)



नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा (बिहार)

बुद्ध महापरिनिर्वाणाब्द 2550 2007 ई.

पालि-हिन्दी शब्दकोश

पालि-हिन्दी शब्दकोश

[प्रथम भाग, प्रथम खण्ड]

[अ – अहोसि]

प्रधान सम्पादक

डॉ॰ रवीन्द्र पंथ

सम्पादक-मण्डल

डॉ॰ उमा शंकर व्यास

डॉ॰ सुकोमल चौधुरी

डॉ॰ ब्रज मोहन पाण्डेय 'नलिन'



नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा (बिहार)

बुद्धमहापरिनिर्वाणाब्द 2550 **2007 ई.**

मूल्य : 2550.00 रुपये

आइ. एस. बी. एन. 81-88242-14-4

प्रकाशक
निदेशक, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा 803111, बिहार (भारत)
(संस्कृति विभाग, भारत सरकार के अधीन एक स्वायतशासी संस्थान)
फोन : 06112-281672
फैक्स : 06112-281505

मुद्रक : पैरागोन इंटरप्राईजिज, नई दिल्ली, 110002, फोन 011–23280295

Pāli-Hindī Dictionary

[Vol. 1, Part 1]
[a – ahosi]

Chief Editor

Ravindra Panth

Board of Editors

Dr. Uma Shankar Vyas
Dr. Sukomal Chaudhuri
Dr. Braj Mohan Pandey 'Nalin'



Nava Nalanda Mahavihara, Nalanda (Bihar)

2550 Mahāparinirvāṇa year of the Buddha 2007

Price : Rs. 2550.00

ISBN 81-88242-14-4

Published by
The Director, Nava Nalanda Mahavihara, Nalanda 803111, Bihar, India
An autonomous institute under the Ministry of Culture, Government of India
Phone : 06112-281672
Fax : 06112-281505

Printed by Paragon Enterprises, New Dehi 110002, Phone 011-23280295

राजभवन, पटना
RAJ BHAVAN
PATNA-800022

पुरोवाक्

पचास वर्ष पहले डा. भीमराव अम्बेडकर जी ने भगवान् गौतम बुद्ध का 'धम्म' अपनाया और महाराष्ट्र में लाखों लोगों ने बौद्ध-धर्म को स्वीकार किया।

तबसे पालि-भाषा में बौद्ध-धर्म का साहित्य पढ़ने हेतु लोगों की रुचि जागने लगी। पचास वर्ष बाद अब उत्तर प्रदेश, बिहार एवं मध्य प्रदेश, इन हिन्दी-भाषी प्रदेशों में बौद्ध-धर्म की लहर दौड़ने लगी है।

पालि-भाषा के ग्रन्थ पढ़ने, समझने के लिए *पालि-हिन्दी शब्दकोश* की बहुत आवश्यकता प्रतीत होते देख नव नालन्दा महाविहार के निदेशक डॉ. रवीन्द्र पंथ के नेतृत्व में *पालि-हिन्दी शब्दकोश* का कार्य शुरू हुआ और अब भगवान् गौतम बुद्ध के 2550वें महापरिनिर्वाण वर्ष दुनिया भर में गंभीरता के साथ मनाने के ऐतिहासिक क्षण पर *पालि-हिन्दी शब्दकोश,* खंड-1 का प्रकाशित होना मेरे लिए हर्ष की बात है।

इस शब्दकोष के प्रकाशन से पालि-भाषा के सामान्य पाठक, शोध-कर्ता, प्राध्यापकगण, विद्यार्थी एवं बौद्ध-धर्म के अनुयायियों को पालि-भाषा पढ़ने-समझने में बड़ी सुलभता होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

नव नालन्दा महाविहार की स्थापना 1951 ई. में हुई। पालि एवं बौद्ध-अध्ययन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के कारण इस संस्थान ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। 1955–56 ई. में 2500वें बुद्धमहापरिनिर्वाण-जयन्ती के पुनीत अवसर पर संस्थान के निदेशक पूज्य भिक्खु जगदीश कश्यप जी ने पहली बार देवनागरी लिपि में समस्त *पालि-तिपिटक* के प्रकाशन का ऐतिहासिक कार्य किया। यह संस्करण समूचे बौद्धजगत् में तथा बौद्धविद्यावेत्ताओं के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है। आज भी विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञानी, *तिटिपक* के इसी संस्करण के उपयोग के प्रबल पक्षधर हैं। पूज्य कश्यप जी की भी यह अभिलाषा थी कि छात्रों, विद्वानों

एवं बुद्धवचनों के पठन में रुचि रखने वाले सामान्य हिन्दी-भाषी पाठकों के लिए एक प्रामाणिक *पालि-हिन्दी शब्दकोश* की रचना की जाए। दुर्भाग्यवश उनके असामयिक देहावसान के कारण उनका यह स्वप्न पूरा न हो सका।

मेरी यह कामना है कि नव नालन्दा महाविहार के निदेशक डॉ. रवीन्द्र पंथ द्वारा निर्मित यह *पालि-हिन्दी शब्दकोश* निःसंदेह-रूप से वंदनीय भदन्त कश्यप जी के स्वप्न को पूरा करेगा तथा छात्रों, शोधार्थियों, शिक्षकों एवं पालि तथा बौद्धधर्म के अध्ययन में रुचि रखने वाले सामान्यजनों के लिए समानरूप से उपयोगी एवं लाभप्रद सिद्ध होगा।

"चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो"

(आर॰ एस॰ गवई)
बिहार के राज्यपाल

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

प्रस्तावना

भगवान् बुद्ध ने उरुवेला के बोधि-मण्डप में अनुत्तर-धर्म का ज्ञान-दर्शन प्राप्त कर जम्बुद्वीप के नगरों, निगमों एवं जनपदों में बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय विनेय-जनों को धर्मामृत का पान कराया। उनके मौखिक लोकमाङ्गलिक धर्मोपदेश देवों एवं मानवमात्र के लिये कल्याणकारी थे। उनके जीवनकाल में ही उनके शिष्यों ने उनके वचनों का मौखिक संग्रह एवं प्रचार-प्रसार विभिन्न जनपदीय भाषाओं में किया। दुर्भाग्यवश इन संग्रहों में से अधिकतर संग्रह विलुप्त हो गये अथवा आंशिक रूप में ही वर्तमान काल में उपलब्ध हैं परन्तु बुद्ध-वचनों का एकमात्र संग्रह पालि-भाषा में स्थविरवादी परम्परा की सुदृढ़ निष्ठा के कारण इस शताब्दी के पाठकों के पठनार्थ उपलब्ध है।

भारत में पालि-भाषा के अध्ययन-अध्यापन की विलुप्त परम्परा उन्नीसवीं सदी में अनेक लोगों के सत्प्रयासों से पुनरुज्जीवित हुई। विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अनेक विश्वविद्यालयों में पालि-भाषा तथा इसके समृद्ध साहित्य के पठन-पाठन-हेतु स्वतन्त्र विभागों की स्थापना के साथ-साथ उत्तम एवं उदात्त मानव-मूल्यों के सन्देशवाहक पालि-साहित्य के अध्ययन के प्रति सामान्य पाठकों का उत्साह भी उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। सद्धर्म की वैज्ञानिक एवं तर्कसङ्गत प्रकृति के कारण आधुनिक अध्येता की अभिरुचि पालि-भाषा एवं साहित्य के प्रति दृढ़तर हो रही है। परन्तु प्राचीन भाषा होने के कारण वर्तमान काल के अध्येताओं एवं जिज्ञासु जनों के लिये पालि-भाषा का ज्ञान सहज एवं सरल नहीं है। उन्हें आधुनिक भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में किये गये पालि-ग्रन्थों एवं संग्रहों के अनुवादों का सहारा लेना आवश्यक हो जाता है साथ ही इन भाषाओं में पालि-भाषा के शब्दकोशों की उपादेयता एवं स्वीकार्यता भी स्वतः स्पष्ट हो जाती है।

अभी तक कोई प्रामाणिक *पालि-हिन्दी शब्दकोश* उपलब्ध न होने से भारत के बहुत बड़े भू-भाग के हिन्दी-भाषा-भाषी अध्येताओं एवं जिज्ञासु जनों को पालिभाषा को ठीक से समझने में अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्व॰ भिक्षु आनन्द कौशल्यायन द्वारा रचित *पालि-हिन्दी शब्दकोश* जैसे एक दो कोश ही इस समय उपलब्ध हैं, उनमें बहुत थोड़े शब्दों को ही स्थान दिया जा सका है तथा शब्दों के सन्दर्भसङ्गत अर्थों को न देकर सामान्य अर्थमात्र दिये गये हैं। इनसे विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों, शोधार्थियों एवं धर्म-जिज्ञासु सामान्य पाठकों की आवश्यकताएं पूर्ण नहीं हो पाती थीं। इन सभी दृष्टियों से एक मानक *पालि-हिन्दी शब्दकोश* के प्रणयन की अनिवार्य आवश्यकता थी। उपयुक्त *पालि-हिन्दी शब्दकोश* का अभाव बहुत दिनों से अनुभव किया जा रहा था। प्रस्तुत शब्दकोश इस अभाव की पूर्ति हेतु किया जा रहा एक प्रयास है।

नव नालन्दा महाविहार की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक उद्देश्य देवनागरी लिपि में सम्पूर्ण बुद्धवचनों (*तिपिटक*) का प्रकाशन तथा मानक *पालि-हिन्दी शब्दकोश* का प्रणयन भी था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु नव नालन्दा महाविहार ने भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 2500वें वर्ष के पुनीत अवसर पर 1955-56 ई॰ में लिये गये निर्णय के आलोक में सम्पूर्ण *पालितिपिटक* ग्रन्थों का प्रथम बार देवनागरी लिपि में प्रकाशन कर भारतीय जनमानस के लिये बुद्धवचनामृत के पान का सुअवसर प्रदान किया। कालान्तर में *पालि-तिपिटक* के ग्रन्थों पर लिखी

गयीं *अट्ठकथाओं* के प्रकाशन की महत्वाकांक्षी योजना को नव नालन्दा महाविहार ने अपने हाथ में लिया। इसी क्रम में कुछ *अट्ठकथाओं* के अतिरिक्त *सासनवंस* और *महावंसटीका* का भी देवनागरी लिपि में प्रकाशन पूर्ण किया गया। परन्तु उस समय एक मानक *पालि-हिन्दी शब्दकोश* के प्रणयन की योजना पूर्ण नहीं हो सकी।

नव नालन्दा महाविहार के संस्थापक निदेशक स्व॰ भदन्त जगदीश कश्यप ने बुद्धवचनों को सर्वग्राह्य बनाने हेतु *तिपिटक* के देवनागरी संस्करण तैयार करने तथा अनुवाद-कार्य में एकरूपता एवं प्रामाणिकता लाने हेतु एक *पालि-हिन्दी शब्दकोश* की संरचना को महाविहार की भावी प्रकाशन-योजनाओं में सम्मिलित किया था। उनका यह स्वप्न प्रस्तुत शब्दकोश के प्रणयन के रूप में यथार्थता का स्वरूप ग्रहण कर रहा है तथा भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 2550वें वर्ष में तथागत एवं सद्धर्म के प्रति महाविहार के श्रद्धाकुसुम के रूप में अर्पित किया जा रहा है।

नव नालन्दा महाविहार को एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के बौद्ध-केन्द्र के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से भारत सरकार के संस्कृति विभाग ने वर्ष 1994 में एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में महाविहार का अधिग्रहण सम्पूर्ण परिसंपत्तियों एवं देयताओं के साथ किया। केन्द्र सरकार ने इसके उपरान्त महाविहार के बहुमुखी विकास-हेतु अनेक कदम उठाए। एक मानक *पालि-हिन्दी शब्दकोश* की रचना की महत्वाकांक्षी योजना भी केन्द्रीय अधिग्रहण के उपरान्त लिये गये निर्णयों में से एक महत्वपूर्ण निर्णय है। प्रस्तुत शब्दकोश के प्रणयन के प्रमुख प्रेरणास्रोतों में स्व॰ भदन्त जगदीश कश्यप एवं पूज्य सत्यनारायण जी गोयन्का का प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व एवं उनकी धर्मचर्या हैं। विपश्यना-विशोधन-विन्यास (वि॰ वि॰ वि॰) की इगतपुरी (महाराष्ट्र) में स्थापना कर तथा विपश्यना-ध्यान-पद्धति के शिविरों द्वारा पटिपत्ति को सुदृढ़ कर पूज्य गोयन्का जी ने तथागत के धर्म को सभी के बीच प्रकाशित कर मानवता एवं मानवमूल्यों को जागृत किया है। वि॰ वि॰ वि॰ द्वारा देवनागरी लिपि में समस्त *पालि-तिपिटक*, समस्त *अट्ठकथाएं, मूलटीकाएं* एवं अनेक *अनुटीकाएं* जनसामान्य के लिये सुलभ करायी गयीं। प्रस्तुत शब्दकोश में वि॰ वि॰ वि॰ द्वारा प्रकाशित पालि-वाङ्मय के विभिन्न खण्डों को ही प्रकाशन की समग्रता के कारण प्रमुख आधार बनाया गया है। हिन्दी-भाषा में धर्म के वास्तविक तत्त्व को प्रकाशित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी पूज्य गोयन्का जी की प्रेरणा से ही पुष्पित एवं पल्लवित हुआ है। प्रस्तुत शब्दकोश की संरचना के संकल्प की पृष्ठभूमि में पूज्य गोयन्का जी की इस सदिच्छा की बहुत बड़ी भूमिका है कि हिन्दी-भाषाभाषी जन-जन तक धर्म का सन्देश पहुंचाने में *पालि-हिन्दी शब्दकोश* की महती महत्ता होने से इस प्रकार के शब्दकोश की रचना अत्यन्त आवश्यक है।

जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत *पालि-हिन्दी शब्दकोश* एक ओर छात्रों एवं शोधार्थियों की चिर-प्रतीक्षित आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु है तो दूसरी ओर पालि-भाषा में सुरक्षित सद्धर्मामृत के पिपासु सामान्य-जनों की पिपासा के उपशमन में भी सहायक है। शब्दकोश के प्रयोगकर्ताओं के इन समूहों की अपरिहार्य अपेक्षाओं को दृष्टि में रखते हुए हमने पालिभाषा में निबद्ध पिटक एवं अनुपिटक साहित्य में प्रयुक्त अधिकतर महत्त्वपूर्ण शब्दों का चयन इस शब्दकोश में अर्थप्रकाशन हेतु किया है। पालि-साहित्य में प्रयुक्त समग्र शब्दराशि को शब्दकोश के अन्तर्गत निविष्ट कर सकना अशक्य है फिर भी प्रयास यही किया गया है कि कोई भी महत्त्वपूर्ण शब्द छूटने न पाये।

इस शब्दकोश में गृहीत शब्द-व्याख्यान-योजना के विषय में यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस शब्दकोश में शब्दों के विभिन्न विशिष्ट अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्धरण या सन्दर्भ मुख्य रूप से *तिपिटक*, *अट्ठकथाओं* एवं *मूलटीकाओं* से लिये गये हैं तथा शब्दों के अर्थों का निर्धारण शब्दों की व्युत्पत्ति पर ही आधारित

न होकर *अट्ठकथाओं* में दिये गए निर्वचनों के आलोक में भी हुआ है। इन व्याख्यानों के अनुशीलन से पालि के अध्येता को उपयुक्त पर्यायवाचक शब्द ढूंढ़ने में तथा बुद्धधर्म के विशेष सन्दर्भ में उस शब्द के विशिष्ट अर्थ का निर्धारण करने में निश्चय ही उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा। शब्दों के अर्थ-निर्धारण-हेतु पालिभाषा के एकमात्र परम्परा-प्राप्त पर्यायकोश *'अभिधानप्पदीपिका'* तथा इसकी सूची से पर्याप्त सहायता ली गयी है। शब्दों की व्युत्पत्तियां मुख्य रूप से पालिभाषा की *कच्चायन, मोग्गल्लान* एवं *सद्दनीति* नामक व्याकरण-परम्पराओं के आलोक में दी गयीं हैं।

इस शब्दकोश में अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों, विशेष रूप से *विनय, अभिधम्म* एवं *विपस्सना* से सम्बन्धित शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या लघु-टिप्पणियों के रूप में यथास्थान दी गयी है। इस कोश को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु शब्दकोश के अन्तिम खण्ड में कुछ परिशिष्टों के जोड़े जाने की योजना भी बनाई गई है। इन परिशिष्टों में पालिगाथाओं के छन्दों, अलङ्कारों, उपाख्यानों, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के शब्दों आदि को जोड़ा जाना है। शब्द-निर्वचन-हेतु अपनायी गयी पद्धति आदि के सम्बन्ध में विशेष बातें **"शब्दकोश देखने के लिये आवश्यक निर्देश"** शीर्षक में बतला दी गयी हैं।

इस कोश के प्रणयन में तथा इसे परिसंस्कृत स्वरूप प्रदान करने में हमें पालि-तिपिटक के यशस्वी अट्ठकथाकार आचार्य बुद्धघोष, आचार्य बुद्धदत्त एवं आचार्य धम्मपाल के शब्द-निर्वचनों से विशेष सहायता मिली है। स्थविरवादी-परम्परा ने पालि-भाषा के विभिन्न शब्दों के जो विशिष्ट अभिप्राय सुनिश्चित किये थे उनके ज्ञान के एक-मात्र साधन *पालि-अट्ठकथाएं* ही हैं। पुनश्च जो शब्द *अट्ठकथाओं* में सुस्पष्ट-रूप से व्याख्यात नहीं हो सके थे उन्हें उत्तरकाल में रचित *मूल-टीकाओं* एवं *अनुटीकाओं* में स्पष्ट किया गया है। प्रस्तुत शब्दकोश का शब्दार्थ-विवेचन इन पारम्परिक व्याख्यानों पर ही आधारित है। अतः हम इन ग्रन्थों के यशस्वी रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करते हैं। इनके अतिरिक्त *पालि-इंग्लिश डिक्शनरी* (प्रो॰ रिस डेविड्स, पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन), *ए डिक्शनरी ऑफ दी पालि लैंगवेज* (आर॰ सी॰ चाइल्डर्स, लन्दन), *ए क्रिटिकल पालि डिक्शनरी* (वी॰ ट्रेंकनर, रॉयल डेनिश अकादमी, कोपेनहेगेन), *पालि-इंग्लिश डिक्शनरी* (ए॰ पी॰ बुद्धदत्त महाथेर, कोलम्बो), *बुद्धिस्ट हाइब्रिड संस्कृत ग्रामर एण्ड डिक्शनरी* (एफ॰ एजर्टन, न्यू हावेन), *डिक्शनरी ऑफ पालि प्रोपर नेम्स* (2 खण्डों में, जी॰ पी॰ मलालशेखर, लन्दन) तथा *डिक्शनरी ऑफ अर्ली बुद्धिस्ट मोनैस्टिक टर्म्स* (प्रो॰ सी॰ एस॰ उपासक, नालन्दा) जैसे आधुनिक शब्दकोश भी इस कोश की संरचना में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं। अतः इन कोशों के विद्वान् सम्पादकों के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

महाविहार की नियन्त्री-परिषद् के अध्यक्ष बिहार के महामहिम राज्यपाल महोदय ने संस्थान के चतुर्मुख विकास तथा इसके शैक्षणिक क्रिया-कलापों के उत्थान-हेतु सदा मार्गदर्शक की महती भूमिका का निर्वहण कर हमें प्रोत्साहित किया है। प्रस्तुत शब्दकोश के प्रकाशन की परियोजना की सफल परिणति में महामहिम मुख्य प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। महामहिम के इस उदात्त दृष्टिकोण एवं विद्यानुराग के लिए हम विनत कृतज्ञताभाव व्यक्त करते हैं। भारत सरकार के संस्कृति विभाग के सम्माननीय मन्त्री, सचिव, संयुक्त-सचिव तथा अन्य पदाधिकारियों ने इस शब्दकोश की परियोजना के कार्यान्वयन-हेतु उदारतापूर्वक आर्थिक अनुदान देकर इसे सफल परिणति की अवस्था तक पहुंचाया है। हम उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

शब्दकोश-संरचना की आधुनिक प्रक्रिया में दिनानुदिन नई-नई पद्धतियों का समावेश हो रहा है। प्रस्तुत शब्दकोश के संकलन एवं निर्वचनों को सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने हेतु बौद्ध-विद्या के अनुभवी विद्वानों की एक परामर्शदात्री समिति का गठन किया गया था। प्रो॰ एन॰ एच॰ सन्तानी, श्री एस॰ एन॰ टण्डन, प्रो॰ सुनीति कुमार पाठक, डा॰ सत्यप्रकाश शर्मा, प्रो॰ महेश देवकर, प्रो॰ देव प्रसाद गुहा तथा डा॰ जे॰ एस॰ नेगी ने समिति की बैठकों में उपस्थित होकर शब्दकोश के प्रणयन में अमूल्य दिशानिर्देश प्रदान किए। प्रो॰ एम॰ जी॰ धड़फले, प्रो॰ संघसेन सिंह तथा प्रो॰ विश्वनाथ बनर्जी जैसे मूर्धन्य सुधीजनों ने भी इस शब्दकोश की संरचना में अपने अमूल्य परामर्श देकर कार्य को सफल परिणति की स्थिति तक पहुंचाया है। प्रो॰ सुनीति कुमार पाठक इस परियोजना के प्रणयन में मूल प्रेरणास्रोत हैं तथा शब्दकोश-संरचना-प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में इनका सृजनात्मक सहयोग हमें सदा प्राप्त होता रहा है। इन सभी सुधीजनों के प्रति हम विनत कृतज्ञताभाव व्यक्त करते हैं।

इस चिरकांक्षित *पालि-हिन्दी शब्दकोश* की पाण्डुलिपि तैयार करने में शोध-सहायक श्री मुरारी मोहन कुमार सिन्हा, डॉ॰ चिरंजीव कुमार आर्य, डॉ॰ विश्वजीत प्रसाद सिंह, श्री सच्चिदानन्द सिंह का अप्रतिम योगदान रहा है, अतः ये साधुवाद के पात्र हैं। बिहार-विधान-परिषद् के पुस्तकालय के पूर्व पुस्तकाध्यक्ष श्री श्याम देव द्विवेदी ने इस शब्दकोश की भाषा को संशोधित करने तथा विषयवस्तु को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। इसके लिए हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। इस शब्दकोश की पाण्डुलिपि के कम्प्यूटर-टंकण-कार्य में श्री राजेश कुमार जायसवाल ने पूर्ण मनोयोग एवं अध्यवसाय के साथ लगकर इसकी सफल परिणति में अमूल्य योगदान दिया है। इसके लिए हम उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते है।

हम इस विश्वास के साथ यह शब्दकोश प्रयोग के रूप में जन-सामान्य के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं कि यह शब्दकोश केवल छात्रों एवं शोधकर्ताओं के लिये ही नहीं, अपितु सद्धर्म-रस के पान को उत्सुक सभी विनेयजनों के लिये हितकर एवं उपयोगी सिद्ध होगा। कोई भी कृति कितनी ही सावधानी से क्यों न लिखी गयी हो, सर्वथा दोषमुक्त नहीं हो सकती। प्रस्तुत शब्दकोश भी इसका कथमपि अपवाद नहीं हो सकता। अतः विज्ञजनों से यह निवेदन है कि जहां कहीं भी वे इस कोश में किसी प्रकार की त्रुटियां अथवा अशुद्धियां देखें तो उन्हें सुधारने हेतु अपने अमूल्य परामर्श देकर अनुगृहीत करने की अहैतुकी कृपा करें ताकि आने वाले खण्डों का संकलन इन मूल्यवान् परामर्शों के आलोक में अधिक परिपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

आ-परितोसा विदूनं साधु न मञ्ञे पयोगविञ्ञाणं।
बलवापि सिक्खितानं अत्तनि अप्पच्चयं चेतो ।।

नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा
बुद्ध-जयन्ती
बुद्धपरिनिर्वाणाब्द 2550

रवीन्द्र पंथ
निदेशक और प्रधान सम्पादक
एवं
सम्पादक-मण्डल

Namo Tassa Bhagavato Arahato Sammāsambuddhassa

Preface

The Perfectly Enlightened One, the Buddha, himself realised the supreme knowledge (= *Bodhijñāna*) under the *Bodhi tree* at *Uruvelā* (known as *Buddha-Gayā*) and travelled through villages, cities and Janapadas of *Jambudvīpa* to propagate his Dhamma-ambrosia for the good and welfare of the many and liberated thousands and thousands of people from suffering through repeated existences (= saṃsāra). What he taught and preached verbally, was beneficial to both the gods and men. Immediately after his *Mahāparinibbāna* his disciples collected his teachings at the Council of *Rājagaha* and verbally propagated the same in different colloquial dialects of north and central India. Unfortunately, a great part of this collection was lost and only a part was somehow preserved. It is a good news for the entire Buddhist world that the *Theravāda* tradition has preserved and maintained the teachings in *Pāli* in its pristine purity in a chain of teacher and taught and they are available even today due to enthusiastic zeal and faithful allegiance of the Theravādin Buddhists of Myan-mar, Śrīlaṅkā, Thailand, Laos, Cambodia and Bangladesh etc.

In the nineteenth century, the lost *Pāli* tradition of India was revived by the utmost efforts of some dedicated scholars of modern India. The study of *Pāli* language and literature started in full swing in schools, colleges and universities. In some institutions separate departments for the study of *Pāli* have been established. Among the general readers too interest for the study of *Pāli* and Buddhism grew up to a great extent. Due to its scientific and logical approach, tendency for the study of the *Pāli* literature carrying the messages of ancient India has been increasing day by day among the common people. But as *Pāli* is the ancient classical language, it is not easy to learn it by the students and general readers. They have to depend on the Indian and foreign translations of the *Pāli* texts. Side by side necessity arose to have *Pāli* dictionaries in these languages.

Owing to the non-availability of a standard *Pāli-Hindī dictionary* Hindi-speaking people of a greater part of India, students and researchers of *Pāli* and general public, have to face difficulties to study *Pāli* and collect data for various purposes from *Pāli* literature. The late Pandit Bhadant Ānanda Kausalyāyan compiled a small *Pāli-Hindī dictionary*. This is undoubtedly a pioneer work but it does not contain sufficient *Pāli* words and general meaning of the words have been given there without discussing their literal meanings. Therefore this is not so much helpful to the post-graduate students and researchers of the universities as well as to the general public interested in theoretical and practical aspects of Buddha's teachings, specially their technical and philosophical vocabularies. From these points of view an authentic *Pāli-Hindī dictionary* had been a long desideratum. The present *Pāli-Hindī dictionary* is just an attempt to fulfil the needs of the day.

Among the principal aims and objective of establishing the Nava Nālandā Mahāvihāra by the late Bhikṣhu Jagadīsh Kashyap was to publish the entire *Pāli-Tipiṭaka* texts and their commentaries and to compile an authentic *Pāli-Hindī dictionary*. To materialise the objectives, the Nava Nālandā Mahāvihāra published for the first time the entire *Pāli-Tipiṭaka* texts in Devanāgarī script in 1955-56 during the 2500[th] year of *Buddha-Jayantī* which was observed in pomp and grandeur in India and abroad. This publication gave a golden opportunity to the people in general to know about the Buddha and his teachings lost in India several centuries ago. Thereafter, the Nava Nālandā Mahāvihāra took up the project of publishing the *Pāli-Aṭṭhakathās* or the commentaries written on the *Tipiṭaka* texts. As a result in due course many volumes of the Pāli-Aṭṭhakathās were published. Side by side Sāsanavaṁsa and Mahāvaṁsaṭīkā also have been published. All these had been possible by the noble and generous attitude and sincere dedication of the late Ven. Jagadīsh Kashyap, the founder and Director of the Nava Nālandā Mahāvihāra and also by the dedicated co-operation of his team-colleagues. Unfortunately, in his life time, Ven. Kashyapjī could not materialise his noble dream of compiling an authentic *Pāli-Hindī dictionary*. The present dictionary is an attempt to fulfil his dream and mission.

To make this institute, an international centre for the study of Pali and Buddhist Studies, the Ministry of Culture, Govt. of India, came forward in 1994 and took up the Mahāvihāra along with its assets and liabilities and gave it a status of an autonomous institution. This apart, the Central Govt. has already taken various measures for the overall development of the Mahāvihāra. One of them is to compile an authentic *Pāli-Hindī dictionary*. Ven. Jagadīsh Kashyap had been the main source of inspiration for this dictionary project. Dr. Āchārya Satyanārāyan Goenka also has always been inspiring this centre by his noble blessings and advice to see this Dictionary project a great success. Dr. Goenkaji established Vipassanā Research Institute (V.R.I.) at Igatpuri (Nasik, Maharastra) wherefrom entire *Pāli-Tipiṭaka* texts, their *Aṭṭhakathās* and *Ṭikās* of *Chaṭṭhasaṅgāyana* edition were published in Devanāgarī script and CD Rom for the good and welfare of the people in general as well as for the meditators, *Pāli* students of all categories, the Pāli teachers and the researchers of Indology. As the *Tipiṭaka* texts, their *Aṭṭhakathās, Mūlaṭīkās* and *Ṭīkās* are available in their entirety in the Igatpuri edition, the present dictionary has been utilising the V.R.I. Igatpuri edition of Pāli texts only in its *Pāli-Hindī dictionary*. To propagate the real nature of Dhamma in Hindī is the glorious task which has been flourished by the noble inspiration and blessings of Dr. Goenkaji. Behind the compilation of the present dictionary Goenkaji's heartfelt desire actively worked as he knew it well that to propagate the noble message of *Dhamma* among the Hindī-speaking people, the *Pāli-Hindī dictionary* would be an inevitable medium.

The present *Pāli-Hindī dictionary* will serve two purposes: *(i)* it will fulfil the long-cherished desires of the students and the researchers; *(ii)* it will quench the thirst of the common people interested in knowing the ambrosia-like *Dhamma* of the Buddha. Keeping all these in mind and considering the necessity and expectations of those, who will use this dictionary, very useful and choicest words have been collected from the *Pāli-Tipiṭaka* and *Anupiṭaka* literature and included in the dictionary with their proper meanings and real interpretations.

It is not possible to include all the *Pāli* words in a dictionary which have been used in the entire Pāli literature. Nevertheless the compilers of this dictionary had been cautious enough and vigilant in every step so that any useful word must not slip or be omitted.

This is necessary to make it clear as regards the meanings and explanations of the words adopted in this dictionary that to understand the real meaning of a word suitable quotations and examples are given especially from the *Pāli-Tipiṭaka, Aṭṭhakathās, Mūlaṭīkās* and while giving meaning of a word the compilers did not depend only on the etymology of the word but also on the explanations of the word given in the *Aṭṭhakathās, Ṭīkās* and *Anuṭīkās*. This will help the readers to know the synonyms of the word as well as to ascertain the doctrinal meaning implied in a particular word. The only available dictionary in Pāli language i.e. the *Abhidhānappadīpikā* with its *Sūcī* has been immensely utilised here to ascertain the proper meaning of a particular word. For the derivations of the words the Pāli grammatical works like *Kaccāyana-vyākaraṇa, Moggallāna-vyākaraṇa* and *Saddanīti* have been consulted wherever necessary.

In this dictionary the technical words, especially *Abhidhammic* and *Vinayic* terms and also the words connected with *Vipassanā* meditation have been briefly explained and given in the proper place in the form of note (= टि.). To make this dictionary more useful to the readers of all categories some appendices will be given in the last and concluding volume of this dictionary. In these appendices we propose to explain metres of the *Pāli-Gāthās,* rhetorics, narratives and the words of geographical and cultural importance. Instructions for the use of the dictionary are given in a separate para titled "Necessary guidance for the use of the dictionary" (शब्दकोश देखने के लिये आवश्यक निर्देश).

The writings of the great Pāli commentators like *Āchārya Buddhaghosa, Āchārya Buddhadatta* and *Āchārya Dhammapāla* were very much helpful, while compiling this dictionary as well as giving it a purified form. What the *Theravāda* tradition ascertained the main purport of the different words of the *Pāli* language, its sources of knowledge had been the *Pālī Aṭṭhakathās*. Again while the explanation of a word seemed not clear in the *Aṭṭhakathās,* in later period were further clearly explained in the *Mūlaṭīkās* and the *Anuṭīkās*. In the present dictionary meanings of the entry-words are based on these traditional explanations. We, therefore, express our heartiest gratitude to those famous commentators and exegetists. Apart from these, the *Pāli-Hindī dictionary* (Rhys Davids and W. Stede, P.T.S., London), *A Dictionary of the Pali Language* (R.C. Childers, London), *A Critical Pali Dictionary* (V. Trenckner, Royal Danish Academy, Copenhagen), *Pāli-Hindī dictionary* (A.P. Buddhadatta Mahathera, Colombo), *Buddhist Hybrid Sanskrit Grammar and Dictionary* (F. Edgerton, New Haven), *Dictionary of Pali Proper Names* (2 Vols. G.P. Malalasekera, London) and *Dictionary of Early Buddhist Monastic Terms* (C.S. Upasaka, Nalanda) also have been very much helpful for the compilers of this dictionary. We, therefore express our heartiest thanks to the learned editors of these dictionaries.

His Excellency the Governor of Bihar, who is also the Chairman of the Board of Management of the Nava Nālandā Mahāvihāra, took keen interest in the alround development of the institute and encouraged us for making the institute an ideal centre of education. His

Excellency was the most prominent source of the inspiration for the present dictionary project. We express humble thankfulness to His Excellency. The implimentation of the project was improbable without financial support. We are specially thankful to the Honourable Minister and officials of the Department of Culture, Government of India who, promptly approved this project and financed it.

An advisory committee consisting of eminent scholars of Buddhism was formed in order to make this compilation work perfect, systematic and in accordance to the modern methodology. Prof. N.H. Samtani, Sri S.N. Tandon, Prof. S.K. Pathak, Dr. S.P. Sharma, Prof. Mahesh Deokar, Prof. D.P. Guha and Prof. J.S. Negi, took so much pain in attending the meetings of this committee and gave valuable guidelines for the compilation of this dictionary. We express our humble thankfulness to them.

We are also thankful to Prof. M.G. Dhadphale, Prof. Sanghasen Singh and Prof. Biswanath Banarjee for their valuable suggestions. Prof. S.K. Pathak has been the most prominent source of inspiration for the compilation of this dictionary. He took personal interest in the project. He deservers special thanks for his unique contribution.

While preparing the manuscript of this long-cherished dictionary research assistants Sri Murari Mohan Kumar Sinha, Dr. Chiranjeev Kumar Arya, Dr. Vishwajit Prasad Singh, Sri Sacchidananda Singh, extended their unparalleled help for which we are highly thankful to them. We are also thankful to Sri S.D. Dwivedi, former librarian, Bihar Vidhan Parishad library for extending his valuable help. We express thankfulness to Mr. Rajesh Kumar Jaiswal for his dedication in preparing computerized type-setting of the manuscript.

With our full confidence we dedicate this dictionary to the people of India in general. Most confidently we may assure that this dictionary will be useful and helpful not only to the students and researchers, but also to those who are desirous to taste the ***Dhammarasa*** of the Buddha. Whatever precaution might be taken for the publication of any research work, it can not be free from mistakes. The present dictionary also can not be free from lapses and mistakes. It is, therefore, our humble submission to the learned readers and scholars to be kind enough not to overlook the lapses and mistakes they will come across in our dictionary, but to inform us with suggestions which will help us in preparing the forthcoming volumes of the dictionary free from errors.

Ā-paritosā vidūnaṃ sādhu na maññe payogaviññāṇaṃ.
Balavāpi sikkhitānaṃ attani appaccayaṃ ceto.

Nava Nalanda Mahavihara, Nalanda
Buddha-Jayanti
2550th Year of the Mahāparinibbāna of the Buddha

Dr. R. Panth
Director and Chief Editor
&
Members of the Editorial Board

शब्दकोश देखने के लिए आवश्यक निर्देश

1. शब्दों का क्रम-विन्यसन पालि-व्याकरणों में उल्लिखित देवनागरी वर्णमाला के अकारादि वर्णों के क्रम के अनुरूप किया गया है।

2. ह्रस्व-स्वर-परवर्ती अनुस्वार-(निग्गहीत) युक्त शब्द का विन्यसन ह्रस्व स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के तुरन्त बाद में किया गया है, जैसे कि अकारादि शब्दों का प्रारम्भ '**अ**' शब्द के साथ किया गया है तथा इनके उपरान्त परवर्ती अनुस्वार-युक्त '**अंस**' आदि का विन्यसन हुआ है।

3. संज्ञा-शब्दों का प्रातिपदिक-रूप रख कर उसके आगे **पु.** या **स्त्री.** या **नपुं.** लिखकर उसके विशिष्ट लिंग को दर्शाया गया है, जैसे कि **अंस** के तुरन्त बाद **पु.** लिखकर आगे उसके **अंसं**, **अंसेन** एवं **अंसे** आदि रूप उल्लिखित किये गये हैं।

4. विशेषण-शब्दों का प्रातिपदिक-रूप रखकर उसके आगे **त्रि.** लिख दिया गया है, जैसे कि **अंसव**, **अकक्कस**, **अक्खात**, **त्रि.** आदि।

5. क्रियाविशेषण के रूप में व्यवहृत निपातों के आगे **क्रि. वि.** लिखा गया है तथा संज्ञा अथवा विशेषणों से व्युत्पन्न क्रियाविशेषणों को उस संज्ञा अथवा विशेषण के ही अन्तर्गत दर्शाया गया है जैसे, '**पर**' के अन्तर्गत **परं** या **परेन** अथवा '**समीप**' के अन्तर्गत **समीपं** या **समीपे** को रखकर **क्रि. वि.** लिख दिया गया है।

6. किसी भी एक शब्द के अलग-अलग अर्थों को अरबिक क्रमांक देकर दर्शाया गया है तथा उद्धरणों के उल्लेख में भी अरबिक अंकों का ही प्रयोग किया गया है। जैसे – '**अधिवत्थ**' में (पृ. 175) **1.क.**, **1.ख.** इत्यादि और **दी. नि. 2.76**; **म. नि. 2.251** इत्यादि।

7. उद्धरणों के लिए विपश्यना-विशोधन-विन्यास, इगतपुरी के वर्ष 1993 से 1998 तक मुद्रित संस्करण को ही प्रमुख आधार बनाया गया है क्योंकि इसी संस्करण में पालि-तिपिटक, अट्ठकथाएँ तथा अधिकतर मूलटीकाएँ एवं अनुटीकाएँ उपलब्ध हैं। इसी संस्करण के सन्दर्भ का अंकन सम्बद्ध उद्धरण के तुरन्त बाद किया गया है। जैसे – *'अधिवुत्थं खो मे ... अम्बपालिया गणिकाय भत्तं',* दी. नि. 2.76।

8. वि. वि. वि. इगतपुरी के संस्करण में सन्दर्भ उपलब्ध न रहने की स्थिति में केवल रोमन, नालन्दा अथवा अन्य उपलब्ध संस्करण के सन्दर्भ का ही अंकन उद्धरण के उपरान्त कर दिया गया है। उदाहरणार्थ *महावंस, दीपवंस, चूळवंस, दाठावंस, गन्धवंस, सासनवंस, सद्धम्मोपायन, मोग्गल्लान-व्याकरण, कच्चायन-व्याकरण, सद्दनीति, अभिधानप्पदीपिका* आदि ग्रन्थों के उद्धरण अन्य उपलब्ध संस्करणों से दिये गये हैं।

9. वि. वि. वि. एवं रोमन संस्करणों के बीच उपलब्ध पाठान्तर को संकेताक्षर **पाठा.** लिखकर सूचित किया गया है, जैसे कि '**अञ्जन**' के अन्तर्गत '**अञ्जनारहो**' का **पाठा. अच्चनारहो।**

10. गद्यभाग से गृहीत उद्धरणों के सन्दर्भाङ्कों में सम्बद्ध संस्करणों की पृष्ठ संख्या दी गयी है परन्तु *थेरगाथा, थेरीगाथा, धम्मपद, सुत्तनिपात, दीपवंस, महावंस, खुद्दकपाठ, उदान, चूळवंस, सद्धम्मोपायन, अभिधानप्पदीपिका, सद्धम्मसंगहो, अभिधम्मावतार, नामरूपपरिच्छेद, परमत्थ-विनिच्छय, सच्चसङ्खेप, खुद्द-सिक्खा, विनयविनिच्छय, उत्तरविनिच्छय, गंधवंस, जिनचरित, जिनालंकार, अनागतवंस, तेलकटाहगाथा, थूपवंस, दाठावंस, वुत्तोदय, सुबोधालंकार, सच्चसंगहो* जैसे गाथा-संग्रहों के उद्धरणों के सन्दर्भाङ्कों में गाथा-

संख्या का उल्लेख हुआ है। *सुत्तनिपात* के गद्यभाग के सन्दर्भों का सङ्केत **पृ॰** का उल्लेख कर तथा गाथाओं का संकेत गाथा-संख्या द्वारा किया गया है।

11. जातक की गाथाओं एवं अट्ठकथा दोनों से गृहीत उद्धरणों के सन्दर्भ जातक-अट्ठकथा की पृष्ठ-संख्या द्वारा सङ्केतित किये गये हैं।

12. विनय एवं अभिधम्म के विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों के निहितार्थ के स्पष्टीकरण हेतु संक्षिप्त टिप्पणियाँ दी गयीं हैं।

13. पालि-शब्दों के संस्कृत-समानान्तर कोष्ठक [ ] के अन्तर्गत सङ्केतित कर दिये गये हैं।

14. प्रायः मूल-शब्दों की संक्षिप्त व्युत्पत्ति शब्द के उपरान्त ही दे दी गयी है।

15. मूल-शब्द से व्युत्पन्न उस शब्द के विविध प्रयोगों को प्रायः **(क)** उसी मूलशब्द के अन्तर्गत पड़ी रेखा – के पश्चात् रखा गया है, जैसे कि **भगवन्तु** के **भगवा, भगवता, भगवति** आदि विभिन्न विभक्तियों के पदों को मूल प्रातिपदिक **भगवन्तु** के ही अन्तर्गत रखा गया है. **(ख)** समस्त-पदों को मूल-शब्द के ही अन्तर्गत पड़ी रेखा – के पश्चात् रखा गया है, जैसे कि बोधि के अन्तर्गत – **रुक्ख, 'बोधिरुक्ख'** का सूचक है।

16. विभिन्न धातुओं से निष्पन्न क्रियारूपों को सम्बद्ध धातु के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष एकवचन के रूप के ही अन्तर्गत रखा गया है, जैसे कि **√गम् (जाना)** धातु से व्युत्पन्न विविध कालों, भावों एवं कृत्प्रत्ययान्त रूपों को **'गच्छति'** शीर्षक के अन्तर्गत रखा गया है। यत्र-तत्र कुछ क्रिया-रूपों को स्वतन्त्र प्रविष्टि के अन्तर्गत भी रखा गया है।

17. उपसर्गयुक्त धातुओं के रूप पृथक्रूप से उपसर्ग के आदिवर्ण की क्रम-स्थिति के अनुरूप विन्यस्त किये गये हैं।

18. उद्धरणों को **तिरछे (Italics) टंकण** में प्रस्तुत किया गया है।

19. संकेतसूची **'क'** के अन्तर्गत व्याकरण आदि के विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों के सङ्केताक्षर उल्लिखित हैं जबकि संकेत-सूची **'ख'** में सन्दर्भ-ग्रन्थों के नामों के सङ्केतक प्रस्तुत किये गये है।

20. पालि-साहित्य में उल्लिखित उपाख्यानों, प्रयुक्त छन्दों, अलङ्कारों, विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों एवं भौगोलिक शब्दों आदि के सामान्य व्याख्यानों को शब्दकोश के अन्त में विभिन्न परिशिष्टों के रूप में जोड़ दिये जाने की योजना है।

21. शब्दकोश के शब्द-व्युत्पत्तिपरक संक्षिप्त निर्देशों में हिन्दी-भाषी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए व्याकरणों में गृहीत पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे कि **बुद्धो** के व्युत्पत्ति-परक निर्वचन में **प्र॰ वि॰, ए॰ व॰** तथा **गच्छति** के लिए **वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰** लिखा गया है। पारिभाषिक शब्दों की संकेताक्षर-सूची में व्याकरण के इन पारिभाषिक शब्दों के पालि-समानान्तर भी दे दिए गए है।

22. यद्यपि आधुनिक हिन्दी-लेखन में परसवर्ण के स्थान पर प्रायः अनुस्वार का ही प्रयोग होने की प्रवृत्ति बनती है परन्तु शब्दकोश के हिन्दी-निर्वचनों में दोनों का प्रयोग हुआ है।

23. **चन्द्रविन्दु** के स्थान पर **अनुस्वार** का ही प्रयोग हुआ है।

शब्दकोश में प्रयुक्त संकेतक-चिह्न

= एक से अधिक सम्बद्ध उद्धरणों के बीच पूर्ण समानता का सूचक चिह्न.

– समास के पूर्वपद में व्याख्येय शब्द की स्थिति को सूचित करने वाला तथा प्रत्येक उद्धरण के पूर्व में दिया हुआ चिह्न.

... सम्बद्ध उद्धरण की अपरिसमाप्ति का सङ्केतक चिह्न.

√ धातु का चिह्न.

\+ योग-सूचक चिह्न.

( ) लघु-कोष्टक का चिह्न, जिसमें सम्बद्ध शब्द की व्युत्पत्ति, समानान्तर अथवा पाठान्तर आदि अन्तर्निविष्ट किये गये हैं.

[ ] बृहत्-कोष्टक का चिह्न जिसमें व्याख्येय पालि-शब्द के समानान्तर संस्कृत अथवा बौद्धसंस्कृत शब्द अन्तर्निविष्ट कर प्रस्तुत किये गये हैं.

. विवेच्य शब्द के विवेचन के अन्त में प्रयुक्त पूर्ण-विराम-चिह्न.

शब्दकोश में पालि-शब्दों के लिए प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला का स्वरूप

स्वरः— अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ

व्यञ्जन :— क, ख, ग, घ, ङ
(अ-सहित) च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
य, र, ल, व, स, ह, ळ, ां

प्रस्तुत कोश में प्रयुक्त वर्ण-क्रम

कच्चायन-व्याकरण में 8 स्वरों एवं 33 व्यञ्जनों सहित कुल 41 वर्णों का उल्लेख हैं। शब्दकोश में इसी प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है।

शब्दों का वर्णानुरूप क्रम-विन्यास निम्नलिखित रूप में किया गया है

अ, अं, आ, इ, इं, ई, उ, उं, ऊ, ए, ओ

यही क्रम स्वर-सहित व्यञ्जनों के विन्यसन में भी ग्रहण किया गया है। किसी भी संयुक्त व्यञ्जनयुक्त शब्द को सस्वर व्यञ्जन वाले शब्दों के बाद में रखा गया है। जैसे कि **अकक्कस** (पृ॰ 2) से लेकर **अकोसल्ल** (पृ॰ 14) तक अस्वरयुक्त विसंयुक्त ककार वाले शब्दों की प्रविष्टि के उपरान्त ही संयुक्त कव्यञ्जनयुक्त **"अक्क"** आदि का उपन्यसन किया गया है।

संकेत-सूची

क. व्याकरण संबंधी पारिभाषिक शब्द

संकेत सूची	सं. पारिभाषिक शब्द	पालि पारिभाषिक शब्द	रोमन (अंग्रेजी) पारिभाषिक शब्द
अ॰	अव्यय	अव्यय	Indeclinable
अक॰ क्रि॰	अकर्मक क्रिया	अकम्मक क्रिया	Intransitive Verb
अद्य॰	अद्यतन भूत	अज्जतनी विभत्ति	Aorist
अन्त॰	अन्तर्गत		Included
अनद्य॰	अनद्यतन-भूत	हीयत्तनी विभत्ति	Imperfect
अनि॰	अनियमित		Irregular
अनु॰	अनुज्ञा (लोट्)	पञ्चमी विभत्ति	Imperative mood
अप॰	अपपाठ	अपपाठो	Corrupt reading
अव्ययी॰ स॰	अव्ययीभाव-समास	अव्ययीभाव-समासो	Adverbial compound
अ॰ मा॰	अर्धमागधी	अड्डमागधी	Ardha-māgadhī
अलु॰ स॰	अलुक्-समास	अलुत्त-समासो	Non-obsolete compound
आग॰	आगम	आगमो	Augmentation
आत्मने॰	आत्मनेपद	अत्तनोपद	Middle Conjugation
आलं॰ प्र॰	आलंकारिक प्रयोग		Figurative use
आ॰ श॰	आदत्त शब्द		Borrowed Word
इच्छा॰	इच्छार्थक (सनन्त)	इच्छित	Desiderative
इत॰ द्व॰	इतरेतर द्वन्द्व	इतरीतर द्वन्द्व	Individual Copulative or Aggregative Compound
उत्त॰ प॰	उत्तर-पद	उत्तर पद	Later Member (of a compound)
उ॰ पु॰	उत्तम पुरुष	उत्तम-पुरिस	First Person
उप॰	उपसर्ग	उपसग्ग	Prefix
उप॰ स॰	उपपद-समास	उपपद-समास	
ऊ॰ द्रष्ट॰	ऊपर द्रष्टव्य		See above
ए॰ व॰	एक-वचन	एकवचन	Singular Number
औप॰	औपचारिक		Formal
क॰	कर्ता	कत्तुकारक	Agent, Nominative case
क॰ ना॰	कर्तृनाम	कत्तरि नाम	Agent noun
कर्तृ॰ वा॰	कर्तृ-वाच्य	कत्तुकारक	Active Voice
कर्म॰ वा॰	कर्म-वाच्य	कम्मकारक	Passive Voice
कर्म॰ स॰	कर्मधारय समास	कम्मधारय-समास	Adjectival compound
कार॰	कारक	कारक	Case
काला॰	कालातिपत्ति	कालातिपत्ति	Conditional
क्रि॰ प॰	क्रिया-पद	आख्यातपद	Verbal formation
क्रि॰ ना॰	क्रिया-नाम	आख्यातपद	Verbal noun
क्रि॰ रू॰	क्रिया-रूप	क्रिया-रूप	Verbal form
क्रि॰ वि॰	क्रिया-विशेषण	क्रिया-विसेसन	Adverb
कृद॰	कृदन्त	कितकनाम	Primary derivative
गा॰	गाथा	गाथा	Verse
च॰ वि॰	चतुर्थी-विभक्ति	चतुत्थी विभत्ति	Dative
छ॰ सं॰	छट्ठसंगायन	छट्ठ-संगायन	6th Council of Myanmar
जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰	जॅर्नल ऑफ पालि टेक्स्ट सोसाइटी		Journal of Pali Text Society

टि॰	टिप्पणी		Foot Note
टी॰	टीका	टीका	Commentary
त॰	तद्धित	तद्धित	Secondary Derivative
तदे॰	तदेव	तदेव	*Ibid.,* As above
तत्पु॰	तत्पुरुष	तप्पुरिस	Determinative Compound
त॰ भ॰	तद्भव		Derived from Sanskrit
त॰ स॰	तत्सम		Similar to Sanskrit
तुल॰	तुलनीय	तुलनीय	To be compared
तुल॰ वि॰	तुलनात्मक विशेषण		Adjectives of Comparison
तृ॰ वि॰	तृतीया-विभक्ति	ततिया-विभत्ति	Instrumental case
त्रि॰	त्रिलिङ्ग	तिलिङ्गक	Adjective
द्व॰ स॰	द्वन्द्व-समास	द्वन्द-समास	Couplative compound co-ordinate compound
द्रष्ट॰	द्रष्टव्य	दट्ठब्ब	See
द्वि॰ व॰	द्विवचन		Dual number
द्वि॰ वि॰	द्वितीया-विभक्ति	दुतिया-विभत्ति	Accusative
द्वि॰ स॰	द्विगु-समास	दिगु-समास	Numerical compound
न॰ तत्पु॰	नञ्-तत्पुरुष-समास	न-तप्पुरिस	Negative
न॰ ब॰	नञ्-बहुव्रीहि	न बहुब्बीहि	Negative adjectival compound
नपुं॰	नपुंसक-लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	Neuter Gender
ना॰ धा॰	नामधातु	नामधातु	Denominative
ना॰ प॰	नामपद	नामपद	Substantive noun
ना॰ रू॰	नामरूप	नामरूप	Declension
ना॰	नालन्दा-संस्करण		Nalanda Edition
निपा॰	निपात	निपात	Particle
निमि॰ कृ॰	निमित्तार्थक कृदन्त	निमित्तत्थक कितक	Dative Infinitives
निषे॰	निषेधार्थक	निसेधपरिदीपक	Negative
नी॰	नीचे		Below
प॰	पद	पद	Derived form
पर॰ प॰	परस्मैपद	परस्सपद	Active Form
प॰ वि॰	पञ्चमी-विभत्ति	पञ्चमी-विभत्ति	Ablative
परो॰	परोक्ष	परोक्खा-विभत्ति	Perfect Tense
पा॰ टे॰ सो॰	पालि टेक्स्ट सोसाइटी, लन्दन		Pali Text Society, London
पाठा॰	पाठान्तर	पाठन्तर	Variant reading
पारि॰	पारिभाषिक	पारिभासिक	Technical
पु॰	पुंलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	Masculine Gender
पू॰ का॰ कृ॰	पूर्व-कालिक कृदन्त	पुब्बकालिक-कितक	Absolutive
पूर॰ सं॰	पूरणार्थक संख्या	पूरणत्थक	Ordinals
पू॰ स॰	पूर्व-सर्ग		Prefix
पृ॰	पृष्ठ	पिट्ठ	Page
प्र॰ पु॰	प्रथम-पुरुष	पठम-पुरिस	Third Person
प्र॰ वि॰	प्रथमा-विभक्ति	पठमा-विभत्ति	Nominative
प्रा॰ भा॰ आ॰ भा॰	प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा		Old Indo-Aryan Language
प्रा॰ स॰	प्रादि-समास		
प्रेर॰	प्रेरणार्थक	कारित	Causative
ब॰ स॰	बहुव्रीहि-समास	बहुब्बीहि-समास	Relative or Attributive Compound
ब॰ व॰	बहुवचन	अनेकवचन	Plural Number
बौ॰ सं॰	बौद्ध-संस्कृत		Buddhist Hybrid Sanskrit

भवि॰	भविष्यत्काल	अनागता विभत्ति, भविस्सन्ती विभत्ति	Future Tense
भाव॰	भाववाचक संज्ञा	भाववाचक सञ्ञा	Abstract Noun
भा॰ वा॰	भाववाच्य	भावकारक	Passive Voice (Intransitive Verbs)
भूत॰	भूतकाल	अतीतकाल	Past Tense
भू॰ क॰ कृ॰	भूतकालिक कर्मणि कृदन्त		Past Passive Participle
भू॰ ग॰	भ्वादिगण	भूवादिगण	First Conjugation
म॰ पु॰	मध्यम-पुरुष	मज्झिमपुरिस	Second Person
म॰ भा॰ आ॰ भा॰	मध्य-भारतीय आर्यभाषा		Middle Indo-Aryan Language
मा॰	मात्रिका	मतिका	Matrix
मि॰ सा॰	मिथ्या-सादृश्य		False analogy
रा॰ ए॰ सो॰ ब॰	रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल		Royal Asiyatice Society, Bangal
रो॰	रोमन (पालि टेक्स्ट सोसाइटी, लन्दन संस्करण)		Roman
ला॰ अ॰	लाक्षणिक अर्थ		Secondary Meaning
ला॰ प्र॰	लाक्षणिक प्रयोग		Secondary Usage
लि॰	लिङ्ग	लिङ्ग	Gender
लु॰	लुप्त	लुत्त	Elided
व॰	वचन	वचन	Number
वर्त॰	वर्तमान-काल	पच्चुप्पन्ना विभत्ति	Present Tense
वर्त॰ कृ॰	वर्तमानकालिक कृदन्त	वत्तमानकालिक कत्तरि कितक	Present Participle (Active)
वि॰	विभक्ति	विभत्ति	Case-affixes
वि॰ अ॰	विशेष, अर्थ		Special meaning
विधि॰	विधिलिङ्	सत्तमी-विभत्ति	Optative or Potential mood
विप॰	विपरीतार्थक		Antonym
वि॰ प्र॰	विविध-प्रयोग		Different Usages
विलो॰	विलोम		Opposite
विशे॰	विशेषण	विसेसन	Adjective
वि॰ वि॰ वि॰	विपश्यना-विशोधन-विन्यास (इगतपुरी संस्करण)		Vipassana Visodhan Vinyasa (Igatpuri Edition)
व्य॰ सं॰	व्यक्तिवाचक संज्ञा		Personal Name
व्यु॰	व्युत्पन्न / व्युत्पत्ति	निप्फन्न	Derived
व्यु॰ अ॰	व्युत्पत्तिपरक अर्थ		Etymological meaning
व्यु॰ रू॰	व्युत्पन्न रूप		Derived form
वै॰	वैदिक	वेदिक	Vedic
श॰	शब्दशः	सद्दसो	Literally
शा॰ अ॰	शाब्दिक अर्थ		Literal meaning
ष॰ वि॰	षष्ठी-विभक्ति	छट्ठी-विभत्ति	Genitive Case
सं॰	संस्कृत	सक्कत	Sanskrit
सं॰ कृ॰	संभाव्य कृदन्त		Potential Passive Participle
संपा॰	संपादित	संसोधित	Edited
संबो॰	संबोधन	आलपन	Vocative Case
संस्क॰	संस्करण		Edition
सं॰ रू॰	संक्षिप्त-रूप	सङ्खित्त-रूप	Abbreviated Form
स॰	समास	समास	Compound
सक॰ क्रि॰	सकर्मक क्रिया	सकम्मक क्रिया	Transitive Verb
सत्त्व॰	सत्त्वनाम		Substantive noun

सप्त॰ वि॰	सप्तमी-विभक्ति	सत्तमी-विभत्ति	Locative case
समा॰	समानान्तर		Parallel
समाना॰	समानार्थक	तुल्लत्थक	
समा॰ द्व॰	समाहार-द्वन्द्व-समास	समाहारद्वन्द-समास	Aggregative Co-ordinate compound
स॰ उ॰ प॰	समास-उत्तर-पद	समासुत्तरपद	Later member of a compound
स॰ प॰	समस्त-पद	समासपद	Compound-word
स॰ पू॰ प॰	समास-पूर्वपद	समासपुब्बपद	First member of a compound
सर्व॰	सर्वनाम	सब्बनाम	Pronoun
सि॰	सिआमी संस्करण		
सिं॰	सिंहली संस्करण		
स्त्री॰	स्त्रीलिङ्ग	इत्थिलिङ्ग	Feminine gender
स्था॰	स्थानापन्न		Substitute

ख. सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

संकेत सूची	*ग्रन्थों के नाम*	*प्रकाशन*	*सन्*
अ॰ नि॰	*अङ्गुत्तर-निकाय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अट्ठ॰	*अट्ठकथा*		
अना॰ वं॰	*अनागत वंस*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1886
अनु॰ टी॰	*अनुटीका*		
अप॰	*अपदान*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ अव॰	*अभिधम्मावतार*	पालि परिवेण, पटपड़गंज, दिल्ली	1987
		वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ टी॰	*अभिनवटीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ ध॰ वि॰	*अभिधम्मत्थविभाविनी*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ ध॰ स॰	*अभिधम्मत्थसङ्गहो*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ प॰	*अभिधानप्पदीपिका*	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
अभि॰ प॰ सू॰	*अभिधानप्पदीपिका सूची*	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
अभि॰ पि॰	*अभिधम्म पिटक*		
अमर॰	*अमरकोष*	चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी	2001
अर्थ॰ वि॰	*अर्थविनिश्चय सूत्र*	काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना	1971
अव॰ श॰	*अवदानशतक*	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1958
अष्टा॰	*अष्टाध्यायी*	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, भाग 1, 2	1962
इतिवु॰	*इतिवुत्तक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
उत्त॰ वि॰	*उत्तरविनिच्छय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
उदा॰	*उदान*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
उप॰ प॰	*उपरिपण्णास*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
एकक्ख॰	एकक्खरकोस *(अभिधानप्पदीपिका)*	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
कङ्खा॰ टी॰	*कङ्खावितरणी-टीका (पातिमोक्ख-टीका)*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
कथा॰	*कथावत्थु*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
क॰ व॰	*कच्चायन-वण्णना*	रा॰ ए॰ सो॰ ऑफ बंगाल, कलकत्ता	1910–12
क॰ वु॰	*कच्चायन-वुत्ति*	रा॰ ए॰ सो॰ ऑफ बंगाल, कलकत्ता, पृ॰ 1 से 339	1871
क॰ व्या॰	*कच्चायन-व्याकरण*	तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी	1981
खु॰ पा॰	*खुद्दकपाठ*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
खु॰ सि॰	*खुद्दसिक्खा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998

ग॰ वं॰	*गन्धवंस*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1896
चरिया॰	*चरियापिटक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
चूळनि॰	*चूळनिद्देस*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
चूळव॰	*चूळवग्ग*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
चू॰ वं॰	*चूलवंस*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1980
जा॰	*जातक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
जि॰ च॰	*जिनचरित*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1904–05
जिना॰	*जिनालंकार*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1894
ति॰ प॰	*तिकपट्ठान*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1996
तेल॰	*तेलकटाहगाथा*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1884
		महाबोधि सभा, सारनाथ	1948
थू॰ वं॰	*थूपवंस*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1935
		रा॰ ए॰ सो॰ ऑफ बंगाल, कलकत्ता	1945
थेरगा॰	*थेरगाथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
थेरीगा॰	*थेरीगाथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
दा॰ वं॰	*दाठावंस*	टरुम्बनर एण्ड कम्पनी, लुड्गेट हिल, लन्दन	1874
दिव्या॰	*दिव्यावदान*	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1959
दी॰ नि॰	*दीघनिकाय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
दी॰ वं॰	*दीपवंस*	काशी विद्यापीठ, वाराणसी	1996
ध॰ प॰	*धम्मपद*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
ध॰ स॰	*धम्मसङ्गणि*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
धातु॰	*धातुकथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
धा॰ पा॰	*धातुपाठ (पालि-महाव्याकरण)*	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
धा॰ मं॰	*धातुमञ्जूसा (क॰ व्या॰)*	तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी	1962
ना॰ रू॰ प॰	*नामरूप-परिच्छेद*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1913–14
		पालि परिवेण, पटपड़गंज, दिल्ली	1988
नेत्ति॰	*नेत्तिप्पकरण*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
प॰ प॰ अट्ठ॰	*पञ्चप्पकरण अट्ठकथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
प॰ म॰	*पज्जमधु*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1887
पटि॰ म॰	*पटिसम्भिदामग्ग*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पट्ठा॰	*पट्ठान*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पर॰ वि॰	*परमत्थ-विनिच्छय*	पालि परिवेण, पटपड़गंज, दिल्ली	1992
		वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
परि॰	*परिवार*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पा॰ इ॰ डि॰	*पालि-इंग्लिश डिक्शनरी*	मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली	2001
पाचि॰	*पाचित्तिय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पाति॰	*पातिमोक्ख*		
पारा॰	*पाराजिक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पु॰ टी॰	*पुराणटीका* (अभि॰ अव॰)	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पु॰ प॰	*पुग्गलपञ्ञत्ति*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पे॰ व॰	*पेतवत्थु*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पेटको॰	*पेटकोपदेस*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
बाला॰	*बालावतार*	बौद्धभारती, वाराणसी	1996
बु॰ वं॰	*बुद्धवंस*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
म॰ नि॰	*मज्झिमनिकाय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
म॰ प॰	*मज्झिमपण्णास* (म॰ नि॰)	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
म॰ बो॰ वं॰	*महाबोधिवंस*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1891
म॰ भा॰	*महाभाष्य,* भाग 1–2	डेक्कन एज्युकेशन सोसाइटी, पुणे	1952

म॰ व॰	*महावस्तु*	पेरिस,	1882–97
		मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1970
म॰ वं॰	*महावंस*	काशी विद्यापीठ, वाराणसी	1996
म॰ वं॰ टी॰	*महावंसटीका*	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1971
महाटी॰	*महाटीका (विसुद्धि॰)*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
महानि॰	*महानिद्देस*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
महाभा॰	*महाभारत,* भाग 1–19	भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पुणे	1958
महाव॰	*महावग्ग*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मि॰ प॰	*मिलिन्दपञ्ह*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मू॰ टी॰	*मूलटीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मू॰ प॰	*मूलपण्णास (म॰ नि॰)*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मू॰ सि॰	*मूलसिक्खा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मो॰ प॰ प॰	*मोग्गल्लान-पञ्जिका-पदीप (पालि-महाव्याकरण)*	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
मो॰ वु॰	*मोग्गल्लान-वुत्ति (पालि-महाव्याकरण)*	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
मो॰ व्या॰	*मोग्गल्लान व्याकरण*	विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर	1985
यम॰	*यमक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
रू॰ सि॰	*रूपसिद्धि*	कोलम्बो (सिं)	1915
रूपा॰ वि॰	*रूपारूपविभाग*	पालि परिवेण पटपड़गंज, दिल्ली	1987
ललित॰	*ललितविस्तर*	मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा	1958
लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰)	*लीनत्थप्पकासना*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वजिर॰ टी॰	*वजिरबुद्धि-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ पि॰	*विनय-पिटक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ व॰	*विमानवत्थु*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ वि॰ टी॰	*विमति-विनोदनी-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ सङ्ग॰ अट्ठ॰	*विनय-सङ्गह-अट्ठकथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
विन॰ वि॰	*विनयविनिच्छय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
विन॰ वि॰ टी॰	*विनयविनिच्छय-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
विभ॰	*विभङ्ग*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
विसुद्धि॰	*विसुद्धिमग्गो*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वुत्तो॰	*वुत्तोदय (रिसर्च वोल्यूम भाग 1)*	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1960
स॰ नि॰	*संयुत्तनिकाय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सच्च॰	*सच्चसङ्खेप*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन, पृ॰ 1–25 तक	1917–19
सद्द॰	*सद्दनीति* भाग 1, 2, 3, 4 (रो॰)	ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, लन्दन	1928
सद्धम्म॰	*सद्धम्मसङ्गहो*	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1981
सद्धम्मो॰	*सद्धम्मोपायन*	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	1983
सद्धर्म॰	*सद्धर्मपुण्डरीक-सूत्र*	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1960
सा॰ वं॰	*सासनवंस*	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1961
सा॰ सं॰	*सारसङ्गहो*	कोलम्बो (सिं)	1914
सारत्थ॰ टी॰	*सारत्थदीपनी-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सार॰ प॰ टी॰	*सारत्थपकासनी-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सु॰ नि॰	*सुत्तनिपात*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सु॰ पि॰	*सुत्तपिटक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सुबोधा॰	*सुबोधालङ्कार (बौद्धालङ्कार-शास्त्रं नाम से)*	लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली	1973

अ[1] नागरी वर्णमाला में प्रयुक्त प्रथम स्वर-वर्ण, उच्चारण की सुविधा हेतु समस्त व्यञ्जनों में अनिवार्य रूप में समाहित ध्वनि, व्याकरण-ग्रन्थों में 'अ' तथा 'आ' (अवर्ण) के सङ्केतन-हेतु अन्त में 'कार' प्रत्यय जोड़ कर 'अकार' के रूप में भी प्रयुक्त तथा व्याकरण-ग्रन्थों में ही 'अवण्ण' (अवर्ण) रूप में भी प्राप्त.

अ[2] **क**. पालि-शब्दावली में संस्कृत-भाषा के उप॰ आङ् (आ) का संयुक्त-व्यञ्जनों से पूर्व ह्रस्वीकृत रूपान्तरण – अक्कोसति [आक्रोशते], अक्खाति [आचक्षते]; **ख**. असंयुक्त अन्तःस्थों (य्, र्, ल्, व्) तथा सानुनासिक वर्गीय व्यञ्जन-ध्वनियों (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) से पूर्व संस्कृत-भाषा के उप॰ आङ् (आ) का ह्रस्वीकृत स्था॰ – अमज्जप [आमद्यप], अत्यधिक मद्यपायी – अमज्जपाति एत्थ अ-कारो निपातमत्तं, जा॰ अट्ठ॰ 7.225; – **अपस्सतो** आ + √दिस, वर्त॰ कृ॰ [आपश्यतः], भली-भांति देखते हुए – *अपस्सतोति अ-कारो निपातमत्तो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.324.

अ[3] **क**. अद्य॰, अनद्य॰ एवं काला॰ नामक आख्यात-प्रयोगों में धातु से पूर्व यादृच्छिक रूप से पूर्वागम-रूप में प्रयुक्त; (संस्कृत-प्रयोगों में इन्हीं स्थलों पर यह पूर्वागम अनिवार्य है जब कि पालि-गद्य में इसका प्रयोग यादृच्छिक है) – *अगमा खो त्वं, महाराज, यथापेम'न्ति ...*, दी॰ नि॰ 1.45; *अहुदेव भयं, अहु छम्भितत्तं अहु लोमहंसो*, दी॰ नि॰ 1.44; *एतदवोच*, दी॰ नि॰ 1.47; **ख**. कतिपय सर्वनामों से निष्पन्न शब्दरूपों एवं अव्ययों के मूलाधार के रूप में 'अ' रूप में प्रयुक्त, परन्तु अर्थ-विशेष का द्योतक नहीं – **अज्ज** [अद्य], अस्स [अस्य], अस्मिं [अस्मिन्], अतो [अतः], अत्त [अत्र].

अ[4] **क**. निषे॰, तत्पु॰ स॰ एवं ब॰ स॰ में व्यञ्जनादि उत्त॰ प॰ रहने पर निषे॰ निपा॰ 'न' के स्था॰-रूप में प्रयुक्त, आगे द्रष्ट॰; – **टि॰** उत्त॰ प॰ स्वरादि रहने पर निषे॰ निपा॰ 'न' का स्था॰ 'अन्' हो जाता है – **अनन्तो** (ने + अन्तो), वह जिसका अन्त न हो – अनन्तो अयं लोको अपरियन्तो, दी॰ नि॰ 1.20; **ख**. कुछ कृत्प्रत्ययान्त शब्द-रूपों में निषे॰ पू॰ स॰ के रूप में प्रयुक्त – **अजानं** √ञा के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, नहीं जानते हुए – सो अजानं वा आह, म॰ नि॰ 1.361; – **टि॰** संस्कृत भाषा में जहाँ कृत्प्रत्ययान्त नामपद के आदि में कोई भी व्यञ्जन रकार के साथ संयुक्त रूप में प्रयुक्त था वहाँ पालि में पूर्वसर्गीभूत 'अ' के प्रयोग के फलस्वरूप समीकरण की प्रवृत्ति के प्रभाव से व्यञ्जन का द्वित्वभाव हो गया है – अप्पटिबलो [अप्रतिबलः], अप्पटिहत [अप्रतिहतः].

अं केवल व्याकरण-ग्रन्थों में निम्न रूप में प्रयुक्त – **क**. निग्गहीत (अनुस्वार) को सूचित करने हेतु प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द – *अं इति निग्गहीतं*, क॰ व्या॰ 8; (नासिका-नामक करण का निग्रहण कर खुले हुए मुख द्वारा जिसका उच्चारण किया जाता है, उसे 'निग्गहीत' कहते हैं, यह स्वर के पीछे लगने वाला 'बिन्दु' है); **ख**. नामपदों में लगने वाली द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ का विभक्तिप्रत्यय – *सियो अंयो ...*, क॰ व्या॰ 55; – **वचन** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, (केवल व्याकरणों में ही प्रयुक्त) – *अंवचनस्स यं होति*, क॰ व्या॰ 223.

अंस[1] पु॰, **क**. [अंश], भाग, विभाग, हिस्सा – *पटिविंसो... अंसो भागो*, अभि॰ प॰ 485; *एकेन अंसेन ...*, अ॰ नि॰ 1(1).78; *उभयेन अंसेन*, दी॰ नि॰ 2.165; **ख**. संख्याबोधक शब्दों के साथ समस्त होने पर उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त – *पच्चंसेन*, अ॰ नि॰ 2(1).33; *चतुरंसं, छळंसं, अट्ठंसं, सोळसंसं ...*, ध॰ स॰ 618; *उपसङ्कमितुं पुटंसेनाति*, दी॰ नि॰ 1.103; अ॰ नि॰ 1(2).212, पाठा॰ पुटोसेन; निम्न प्रयोगों में स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त – अनागतंस, थिरंस, दीघंस, पच्चुप्पन्नंस, पापियंस, मेत्तंस, सिरंस, सुक्कंस, सेय्यंस.

अंस[2] पु॰, [अंस, अंस्यते समाहन्यते इति अंसः अमति, अम्यते वा भारादिना इति अंसः], कंधा – *अंसो नित्थि भुजसिरो खन्धो*, अभि॰ प॰ 264; *अंसेन अंसं*, जा॰ अट्ठ॰ 4.88; *अंसे कत्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 1.12; उ॰ प॰ के रूप में अन्तरंस, एकंस आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **कासाव** पु॰, [अंसकाषाय], कन्धे पर अवलम्बित भिक्षु का विशेष चीवर-प्रकार – *चतुत्थं वत्तमानं अंसकासावमेव वट्टति*, विसुद्धि॰ 1.63; – **कूट** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अंसकूट], कंधे का किनारा, कन्धे का जोड़ – *पत्तं अंसकूटे लग्गेत्वा ...*, जा॰ अट्ठ॰ 1.65; *पत्तं अंसे आलग्गेत्वा*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.44; – **बन्धक** पु॰, [असंबन्धक], सामान्यतया भिक्षापात्र को लटकाने हेतु भिक्षु द्वारा प्रयुक्त कंधे के सहारे लटकाने वाली पट्टिका; बुद्ध द्वारा भिक्षु के लिए अनुमत चार परिक्खारों में से एक के रूप में इसी अर्थ में प्रयुक्त – *अनुजानामि, भिक्खवे ... अंसबद्धकं बन्धनसुत्तकन्ति*, महाव॰ 279, पाठा॰ अंसबद्धक.

अंस[3] पु॰, [अश्रः, अश् + रक्], किनारा, कोना, प्रायः स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त; संख्याबोधक शब्दों के साथ भी स॰ उ॰ प॰ रूप में अट्ठंस, चतुरंस, छळंस, ति-अंस, आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **भाग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्रभाग], किनारा अथवा किनारे का भाग – *अट्ठंसेसु थम्भेसु एकमेकस्मिं*

अंसभागे, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 257; – **वन्तु** त्रि॰, [अस्रवत्], किनारों वाला – *अट्ठसोळसट्ठत्तिंसादिअंसवन्तो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 288.

अंसा व्यु॰, अनिश्चित, संभवतः पु॰, अंस का प्र॰ वि॰ के ब॰ व॰ का शब्दरूप, परन्तु – *अंसाय ... पिळकाय ... भगन्दलेन,* महानि॰ 272 में स्त्री॰ रूप में उल्लिखित [अर्शस्], अर्श, बवासीर, भगन्दर – *अंसा पिळका भगन्दला,* अ॰ नि॰ 3(2).91, तुल॰ अरिस.

अंसि स्त्री॰, [अश्रि], कोना, किनारा, कोण – *एकमेकाय अंसिया, रतना सत्त निम्मिता,* वि॰ व॰ 1135; *तत्थ पन एकमेकाय अंसियाति अट्ठंसेसु,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 257.

अंसिक त्रि॰, कन्धा अर्थ वाले, 'अंस' शब्द से व्युत्पन्न [अंसिक], अपने कन्धों पर भार ढोकर ले जाने वाला व्यक्ति – *एवं अंसिको,* क॰ व्या॰ 352; मो॰ व्या॰ 4.30.

अंसु पु॰, [अंशु] **क.** धागा, सूत, सूत्र का सूक्ष्म अंश – *वत्थादिलोमेप्यंसुकरे* अभि॰ प॰ 1121, ... *अंसु-अब्भन्तरगतम्पि निस्सेसं मलं पवाहेत्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 284; **ख.** पु॰ [अंशु], सूर्य की किरण, रश्मि – *मरीचि द्वीसु भान्वंसु,* अभि॰ प॰ 64; – **क** नपुं॰, [अंशुक, अंशु + क, अंशवः सूत्राणि विषया यस्य तत्], वस्त्र, कपड़ा, सामान्यतया पहना जाने वाला वस्त्र – *चेलमच्छादनं वत्थं वासो वसनमंसुकं,* अभि॰ प॰ 290; – **माली** पु॰, [अंशुमालिन्], सूर्य, किरण रूपी मालाओं वाला भानु – *अंसुमाली दिनपति तपनो रवि भानुमा,* अभि॰ प॰ 63.

अकक्कस त्रि॰, कक्कस का निषे॰ स॰ [अकर्कश], चिकना, विशुद्ध, कोमल – *अकक्कसं विञ्ञापनिं, गिरं सच्चमुदीरये,* ध॰ प॰ 408; *अकक्कसन्ति ... अफरुसं अगळितं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.196; – **संग** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकर्कशाङ्ग], कोमल, मृदु अथवा चिकने अङ्गों वाला – *अकक्कसङ्गो न च दीघलोमो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.194.

अकक्खळ त्रि॰, कक्खल का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकक्खट], वह, जो कठोर नहीं हो – **ता** स्त्री॰ भाव॰ [अकक्खटता], चिकनापन, कोमलता – *अकक्खळताति अकक्खळभावो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 194, ध॰ स॰ 44, 45; – **वाचता** स्त्री॰, [अकक्खटवाचिता], वाणी की कोमलता – *अफरुसवाचताति अकक्खळवाचता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 418.

अकंख त्रि॰, कंख का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकाङ्क्ष], इच्छा से रहित, तृष्णारहित, आकांक्षाओं से मुक्त – *स वे अनेजो अखिलो अकङ्खो,* सु॰ नि॰ 481; *स्वाहं अकङ्खो असितो अनूपयो,* स॰ नि॰ 1(1).211.

अकच्छ त्रि॰, कच्छ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकथ्य], न कहने योग्य, उपदेश न देने योग्य, संलाप में प्रयोग के लिए अनुपयुक्त – *पुग्गलो वेदितब्बो यदि वा कच्छो यदि वा अकच्छोति,* अ॰ नि॰ 1(1).227, *अकच्छोति कथेतुं न युत्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.178.

अकट / अकत त्रि॰, कट का निषे॰ स॰ [अकृत], अनिर्मित, हेतुओं एवं प्रत्ययों से अनुत्पन्न – *सत्तिमे, महाराज, काया अकटा अकटविधा, अनिम्मिता, अनिम्माता,* दी॰ नि॰ 1.49, म॰ नि॰ 2.195; स॰ नि॰ 2(1)197; – **टि॰** बुद्धकालीन छः बौद्धेतर श्रमण धर्माचार्यों में से कुछ ने तत्त्वों को अकृत अथवा हेतु-प्रत्ययों से उत्पन्न नहीं माना था। बौद्धेतर-सम्प्रदायों एवं विनय में 'अकत' रूप में प्रयुक्त; – **टानुधम्म** त्रि॰, [अकृतानुधर्म], ऐसा भिक्षु, जिसके लिये भिक्षुसंघ ने ओसारण (संघ में पुनर्वास) नामक अनुधर्म का अनुमोदन नहीं दिया है – *छब्बग्गिया भिक्खू ... अरिट्ठेन भिक्खुना अकटानुधम्मेन ... सद्धिं सम्भुञ्जिस्सन्तिपि ...,* पाचि॰ 182; *सो ओसारणसङ्खातो अनुधम्मो यस्स न कतो, अयं अकटानुधम्मो नाम,* पाचि॰ अट्ठ॰ 126; द्रष्ट॰ अनुधम्म एवं ओसारण, (आगे); – **पब्भार** पु॰, [अकृतप्राग्भार], पर्वत का प्राकृतिक ऊंचा क्षेत्र, निवास-स्थान के रूप में प्रयुक्त प्राकृतिक पर्वत-गुफा – *एकस्मिं अकटपब्भारे ससीसं पारुपित्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.296; – **भूमिभाग** पु॰, कर्म॰ स॰ [अकृतभूमिभाग], परती भूमि, नहीं जोता हुआ खेत – *अकतभूमिभागो वत्थु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.72; – **यूस** पु॰ नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकृतयूष], पूरी तरह से तैयार न किया हुआ तथा मूंग से बनाया गया एक प्रकार का तरल पेय, जो भिक्षुओं के लिए बुद्ध द्वारा अनुज्ञात पेयों मे से एक है – *अनुजानामि, भिक्खवे, अकटयूसन्ति,* महाव॰ 283; *अकटयूसन्ति असिनिद्धो मुग्गपचितपानीयो,* महाव॰ अट्ठ॰ 353; – **विञ्ञत्ति** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, केवल तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ में क्रि॰ वि॰ के रूप में 'अकटविञ्ञत्तिया' रूप में प्रयुक्त [अकृतविज्ञप्ति], सामान्य परिस्थिति में अनुमोदित न किये गये अथवा अकस्मात् सामने आए हुए विषयों पर संघ द्वारा जारी की गई विज्ञप्ति अथवा अनुमोदन – *गिलानस्सत्थाय अप्पवारितट्ठानतोपि विञ्ञत्तिया अनुञ्ञातत्ता कतापि अकता वियाति अकतविञ्ञत्ति,* सारत्थ॰ टी॰ 2.243; – **विध** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतविध], ऐसे धर्म जिनकी संरचना अथवा निर्माण का विधान किसी के द्वारा न किया गया हो – *अकटा अकटविधा अनिम्मिता अनिम्माता वञ्झा कूटट्ठा,* दी॰ नि॰ 1. 49; *अकटविधाति अकतविधाना,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.138.

अकट्ठ त्रि., [अकृष्ट], बिना जोती हुई भूमि; – **पाक** त्रि., ब. स. [अकृष्टपाक], प्राकृतिक रूप से उत्पन्न अथवा बिना जोती हुई भूमि में उत्पन्न और परिपक्व धान आदि – *अकट्ठपाको सालि पातुरहोसि,* दी. नि. 3.65; *सालि अकट्ठपाको च,* जा. अट्ठ. 7.308; *अकट्ठपाकोति अकट्ठेयेव भूमिभागे उप्पन्नो,* दी. नि. अट्ठ. 3.47; – **पाकिम** त्रि. उपरिवत् – *अकट्ठपाकिमं सालिं, परिभुञ्जन्ति मानुसा,* दी. नि. 3.151; *अकट्ठपाकिमन्ति अकट्ठे भूमिभागे अरञ्ञे सयमेव जातं,* दी. नि. अट्ठ. 3.133.

अकठिनता / अकथिनता स्त्री., भाव. [अकठिनता], कोमलता, कर्कशता का अभाव – ... *अकथिनता ... मुदुता होति,* ध. स. 44; *अकथिनता'ति अकथिनभावो,* ध. स. अट्ठ. 194.

अकण त्रि., निषे., ब. स. [अकण], बिना कण वाला चावल या धान, कण-रहित – *सालि पातुरहोसि अकणो अथुसो,* दी. नि. 3.65; *अकणोति निक्कुण्डको,* दी. नि. अट्ठ. 3.47.

अकणिक त्रि., निषे. स. [अकणिक], तिलों या मस्सों से रहित (मुख) – *अकणिकं वा अकणिक'न्ति जानेय्य,* दी. नि. 1.71; म. नि. 2.221, सकणिक का विलो..

अकण्टक त्रि., निषे., ब. स. [अकण्टक], **शा. अ.** कण्टक-रहित, **ला. अ.** विपत्तियों से मुक्त, सुखदायक, राग आदि से मुक्त – *खेमट्ठिता जनपदा अकण्टका,* दी. नि. 1.120; *अकण्टके ... गुम्बे,* जा. अट्ठ. 2.98; *मग्गो ... अकण्टको अगहणो,* वि. व. 164; *रागकण्टकादीनं अभावेन अकण्टको,* वि. व. अट्ठ. 76; *अकण्टका, भिक्खवे, विहरथ निक्कण्टका, भिक्खवे, विहरथ,* अ. नि. 3(2).112.

अकण्ह त्रि., निषे., तत्पु. स. [अकृष्ण], **शा. अ.** वह, जो कृष्ण वर्ण का नहीं है, **ला. अ.** वह, जो अधम अथवा दुष्ट प्रकृति का नहीं है, निर्मल, पवित्र स्वभाव वाला – *अकण्हअसुक्कं अकण्हअसुक्कविपाकं,* अ. नि. 1(2).265; *अकण्हं असुक्कं निब्बानं,* दी. नि. 3.198; *अकण्हं असुक्कं निब्बानं अभिजायति,* अ. नि. 2(2).94; – **टि.** लोकोत्तर-धर्म होने के कारण निर्वाण कृष्ण, शुक्ल आदि प्रपञ्चों का विषय नहीं है। इसी कारण थेरवादियों ने अकण्ह, असुक्क आदि पदों का प्रयोग प्रत्यात्मवेद्य निर्वाण के लिए किया है; – **असुक्क-विपाक** त्रि., ब. स., [अकृष्णाशुक्लविपाक], ऐसा कर्म, जिसका विपाक न बुरा हो न अच्छा हो – *कम्मं अकण्हं असुक्कं अकण्हअसुक्कविपाकं ...,* म. नि. 2.59; अ. नि. 1(2).265; – **नेत्त** त्रि. ब. स. [अकृष्णनेत्र], वह, जिसके नेत्र कृष्ण वर्ण के नहीं हों, जिसके नेत्र पिङ्गलवर्ण के हों – *अकण्हनेत्तोति पिङ्गलनेत्तो,* जा. अट्ठ. 2.202.

अकत[1] त्रि., [अकृत], **क.** किसी के द्वारा न किया गया, स्वतः उत्पन्न, अहेतुक – *अकतं दुक्कटं सेय्यो, पच्छा तप्पति दुक्कटं,* ध. प. 314; स. नि. 1(1).58; *अत्तना अकतं पापं, अत्तनाव विसुज्झति,* ध. प. 165; पाठा. अकट; **ख.** न जोती हुई कृषि-भूमि, अशिक्षित व्यक्ति, शील आदि से रहित व्यक्ति – *अकतं भूमिभागते,* जा. अट्ठ. 7.106, *अकतबुद्धिनो असिक्खितका,* जा. अट्ठ. 3.49; – **ताभिनिवेस** त्रि., ब. स. [अकृताभिनिवेश], सांसारिक आसक्ति से मुक्त व्यक्ति, लगावरहित – *आरद्धवीरियस्स ... अकताभिनिवेसस्स विपस्सकस्स,* जा. अट्ठ. 1.117; – **तूपसेवन** त्रि., ब. स., असत्कृत, उपेक्षित, जिसे सत्कार या सेवा प्राप्त न हुई हो – *गिज्झपत्तादीहि अकतूपसेवनेन,* जा. अट्ठ. 2.230; – **तूपासन** त्रि., ब. स. [अकृतोपासन], किसी की सेवा-शुश्रूषा या देख-भाल न करने वाला व्यक्ति, विनय, शिल्पों एवं शास्त्रों में अशिक्षित व्यक्ति – *अथ आगच्छेय्य खत्तियकुमारो असिक्खितो ... अकतूपासनो,* स. नि. 1(1).117; *अकतूपासनोति राजराजमहामत्तानं अदस्सितसरक्खेपो,* स. नि. अट्ठ. 1.145; – **तोकास** त्रि., ब. स. [अकृतावकाश], वह, जिसके सम्बन्ध में कोई अनुमति अथवा अनुमोदन प्राप्त नहीं है – *रञ्ञोयेव अत्थाय अकतं अकतोकासं भूमिं समागते* ..., जा. अट्ठ. 7.106; – **कप्प** त्रि., ब. स. [अकृतकल्प], वह वस्तु, जिसके उपयोग की अनुमति भिक्षु-संघ द्वारा प्रदान न की गई हो, संघ द्वारा अनुमोदित न की गई वस्तु या कार्य – *अनुजानामि, भिक्खवे, अबीजं निब्बत्तबीजं अकतकप्पं फलं परिभुञ्जितुन्ति,* महाव. 291; – **कम्म** त्रि., ब. स. [अकृतकर्मन्], वह, जिसने अपने लिए निर्धारित कर्म को निष्पादित नहीं किया हो, निर्धारित या उचित कर्म को न करने वाला – *माणवेहि समागच्छेय्यं कतकम्मेहि वा अकतकम्मेहि वा,* अ. नि. 2(1).95; *चोरिकं कातुं गच्छन्ता अकतकम्मा नाम,* अ. नि. अट्ठ. 3.36; – **कल्याण** त्रि., ब. स. [अकृतकल्याण], वह, जिसने कल्याणकारी कर्म नहीं किया है, पापकारी – *अकतकल्याणा अकतकुसला अकतभीरुत्ताणा,* अ. नि. 1(1).181; *अकतकल्याणानं अकतकुसलानं अकतभीरुत्ताणानं,* म. नि. 3.204; – **किब्बिस** त्रि., ब. स. [अकृतकिल्विष], वह, जिसने कलुषित कर्म अथवा पापकर्म नहीं किए हों, कल्याणकारी कर्मों को करने वाला – *कतकल्याणो ... अकतपापो अकतलुद्दो*

अकतकिब्बिसो, पारा॰ 84; – **कुसल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतकुशल], वह, जिसने कुशल कर्मों को नहीं किया है, प्राणि-हत्या से विरति आदि कुशल कर्मों को न करने वाला – *अकतकल्याणा अकतकुसला अकतभीरुत्ताणा,* अ॰ नि॰ 1(1).181; – **परिग्गह** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतपरिग्रह], वह, जिसने किसी प्रकार का परिग्रह अथवा गृह-पत्नी आदि का संग्रह न किया हो, अविवाहित – *अनापादा, अञ्ञेहि अकतपरिग्गहा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.160; – **परित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतपरित्त], वह, जिसने अपने लिए निर्धारित अथवा अभीप्सित परित्तपाठ को नहीं पढ़ा है – *अकतपरित्तस्स तं येव दिवसं पासं उपनेसीति,* मि॰ प॰ 152; – **टि॰** स्थविरवादी बौद्ध-परम्परा में विशेष कर श्रीलङ्का एवं म्या-मां में बौद्ध गृहस्थों के बीच 'परित्त' अत्यन्त लोकप्रिय है। उन लघु वचन-खण्डों को परित्त अथवा परित्ता कहते हैं, जिनका पाठ व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप से रोग एवं प्राकृतिक विपदाओं से पूर्ण त्राण दिलाने हेतु किए जाने की परम्परा प्रचलित रही है। 'परित्त' पालि-त्रिपिटक में परित्त नाम से स्वतन्त्र रूप में संगृहीत न होकर खु॰ पा॰, अ॰ नि॰, म॰ नि॰ तथा सु॰ नि॰ में संगृहीत खण्डों के समुच्चय हैं। मि॰ प॰ में छः प्रमुख परित्त-पाठों की सूची दी गई है। 'परित्त' का शाब्दिक अर्थ परित्राण एवं सुरक्षा है। विशेष अर्थ के लिए द्रष्ट॰ 'परित्त' (आगे); – **पाप** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतपाप], वह, जिसने पाप कर्म नहीं किए हैं, कल्याणकर्म अथवा पुण्यकर्म करने वाला – *कतकल्याणो ... अकतपापो अकतलुद्दो अकतकिब्बिसो,* पारा॰ 84; – **पुञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतपुण्य], वह, जिसने अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि पुण्यकर्म नहीं किए हैं – *ये केचि निब्बिसेसा अकतपुञ्ञा बुद्धिपरिहीना,* मि॰ प॰ 234; – **बहुमान** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतबहुमान], वह, जिसे बहुत सम्मान नहीं मिला है – *अबहुकतो अहोसिं धम्मेन अबहुकतो सङ्घेन,* स॰ नि॰ 3(1).110; *अबहुकतोति अकतबहुमानो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.187; – **बुद्धि** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतबुद्धि], वह, जिसके पास बुद्धि अथवा समझने की क्षमता नहीं है, जिसे बौद्धिक क्षमता प्राप्त नहीं है, अशिक्षित – *अकतबुद्धिनो असिक्खितका च,* जा॰ अट्ठ॰ 3.49; – **भीरुत्ताण** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसने भयों, विपत्तियों एवं संकटों से सुरक्षित रखने का कोई उपाय नहीं किया है, सुरक्षित शरणस्थल में अप्राप्त व्यक्ति – *ते चम्हा अकतकल्याणा अकतकुसला अकतभीरुत्ताणा,* अ॰ नि॰1(1).181; *अकतभीरुत्ताणाति अकतभयपरित्ताणा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.138; – **मल्लक** पुं॰, साधारण प्रकार की चिकनाई से रहित खुरचनी अथवा त्वचा को रगड़ने वाला वह उपकरण, जिसके प्रयोग की अनुमति बुद्ध ने खुजली से पीड़ित भिक्षुओं के लिए दी थी – *अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानस्स अकतमल्लकन्ति,* चूळव॰ 223; *अकतमल्लकं नाम दन्ते अच्छिन्दित्वा कतं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 45; – **योग्य** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतयोग्य], वह, जिसे कामों में नहीं लगाया गया हो, जो व्यावहारिक जीवन में कुशल न हुआ हो, अप्रशिक्षित – *अथ आगच्छेय्य खत्तियकुमारो असिक्खितो अकतहत्थो अकतयोग्गो अकतूपासनो भीरु छम्भी उत्रासी पलायी,* स॰ नि॰ 1(1).117; *अकतयोग्गोति तिणपुञ्जमत्तिका-पुञ्जादीसु अकतपरिचयो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.145; – **रस्स** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतह्रस्व], *केवल व्याकरण-ग्रन्थों में ही प्रयुक्त शब्द-रूप,* अह्रस्वीकृत स्वर, वह स्वर, जिसे ह्रस्व नहीं किया गया है, ह्रस्वता को अप्राप्त – *अकतरस्सा लतो य्वालपनस्स वे वो,* क॰ व्या॰ 116; – **लुद्द** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतलुब्ध], वह, जो क्रूरता से मुक्त है, पाप न करने वाला, कल्याणकारी, दयालु – *त्वं खोसि, ... अकतपापो अकतलुद्दो अकतकिब्बिसो,* पारा॰ 84; – **वेदी** त्रि॰, [अकृतवेदिन्], अकृतज्ञ, कृतघ्न, उपकार न मानने वाला, असज्जन पुरुष – *असप्पुरिसो, भिक्खवे, अकतञ्ञू होति अकतवेदी,* अ॰ नि॰ 1(1).78; – **वेदिता** स्त्री॰, भाव॰ [अकृतवेदित्व], कृतघ्नता, अकृतज्ञता, उपकार को न मानने की दुष्टता-भरी मनोवृत्ति – *केवला एसा, भिक्खवे, असप्पुरिसभूमि यदिदं अकतञ्ञुता अकतवेदिता,* अ॰ नि॰ 1(1).78; – **संविधान** नपुं॰, [अकृतसंविधान], वस्त्रों एवं परिधानों का अपूर्ण-निर्माण – *चीवरत्थाय उप्पन्नवत्थानं विचारणसिब्बनादीहि ... अकतं संविधानं पि वट्टति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.115, 'कतपरिभण्ड' का विप॰, पाठा॰ अकतं संविधानं; – **संसग्ग** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतसंसर्ग], अपरिचित, अप्रसिद्ध – *तत्थ असन्थुतन्ति अकतसंसग्गं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.53; – **संकेत** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतसंकेत], वह, जिसके बारे में कोई संकेत अथवा अनुमोदन प्राप्त नहीं हुआ है, अननुमोदित – *पठममेव कतसङ्केता वा हुत्वा अकतसङ्केता वापि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.433; – **सहाय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकृतसहाय], वह, जिसके साथ समान संवास वाला कोई भिक्षु न हो – *या पन भिक्खुणी ... भिक्खुं ... अकतसहायं तमनुवत्तेय्य ...,* पाचि॰ 293; *समानसंवासका भिक्खू वुच्चन्ति सहाया, सो तेहि सद्धिं नत्थि, तेन वुच्चति अकतसहायोति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 166; –

हत्थ त्रि., ब. स. [अकृतहस्त], अप्रशिक्षित, व्यावहारिक-जीवन से अपरिचित - *अथ आगच्छेय्य खत्तियकुमारो असिक्खितो अकतहत्थो अकतयोग्गो अकतूपासनो भीरु छम्भी उत्रासी पलायी*, स. नि. 1(1).117.

अकत² नपुं., निषे., तत्पु. स. [अकृत], हेतु-प्रत्यय-सामग्री से अनुत्पन्न लोकोत्तर परमार्थ-धर्म निर्वाण, निर्वाण की पर्यायवाची संज्ञा के रूप में सूचीबद्ध - *अनासवं धुवमनिदस्सनाकतापलोकितं*, अभि. प. 7; - **टि.** असंस्कृत-धर्म निर्वाण लोक के समस्त संस्कृत धर्मों से सर्वथा भिन्न अकृत रूप में प्रतिपादित है.

अकतञ्ञू¹ त्रि., कतञ्ञू का निषे. [अकृतज्ञ], हेतु-प्रत्ययों द्वारा अनुत्पादित असंस्कृत (= अकृत) धर्म निर्वाण को जानने वाला - *अस्सद्धो अकतञ्ञू च, ... स वे उत्तमपोरिसो*, ध. प. 97; *सङ्खारानं खयं ञत्वा, अकतञ्ञूसि ब्राह्मण*, ध. प. 383; *अकतं निब्बानं जानातीति अकतञ्ञू*, ध. प. अट्ठ. 1. 353.

अकतञ्ञू² त्रि., निषे., तत्पु. स. [अ + कृतज्ञ], दूसरे द्वारा किए गए उपकार को न मानने वाला, आभार न मानने वाला व्यक्ति - *अकतञ्ञू होति अकतवेदी*, अ. नि. 1(1).78; *अकतञ्ञुस्स पोसस्स*, जा. अट्ठ. 3.475; *अकतञ्ञू मित्तदुब्भी*, जा. अट्ठ. 4.34; *अकतञ्ञुस्स कदरियस्स*, मि. प. 176; - **जातक** नपुं., जातक संख्या 90 का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.360-362; - **ता** स्त्री., भाव. [अकृतज्ञता], कृतज्ञ न होने की मनोवृत्ति, कृतघ्नता, अकृतज्ञता - ... *उपञ्ञातं यदिदं अकतञ्ञुता अकतवेदिता*, अ. नि. 1(1).78; - **रूप** त्रि., कर्म. स. [अकृतज्ञरूप], कृतघ्न स्वभाव वाला, प्रकृति से ही अकृतज्ञ - *तथा हि बाला अकतञ्ञुरूपा*, जा. अट्ठ. 4.88.

अकतत्त त्रि., ब. स. [अकृतात्मन्], वह, जो असभ्य या अशिष्ट स्वभाव का हो, अशिष्ट प्रकृति का व्यक्ति, अशोभन स्वभाव का पुरुष, मित्रद्रोही - *नहेव अकतत्तस्स, नयो एतादिसो सिया*, जा. अट्ठ. 5.347; *अकतत्तस्साति असम्पादितअत्तभावस्स मित्तदुब्भिस्स*, तदे.

अकत्तब्ब त्रि., निषे., तत्पु. स. [अकर्तव्य], नहीं करने योग्य कर्म, ऐसा कर्म, जिसे पूरा न किया जा सके - *अकरणीयं वा करणीयं वापीति अकत्तब्बं*, जा. अट्ठ. 5.225; - **पटिकम्म/परिकम्म** त्रि., कर्म. स., उपचार न करने योग्य, असाध्य, जिसका उपाय द्वारा निराकरण सम्भव न हो - *अतेकिच्छाति अकत्तब्बपरिकम्मा*, अ. नि. अट्ठ. 3.47; - **रूप** त्रि., कर्म. स. [अकर्तव्यरूप], ऐसा रूप, जिसे बनाने संवारने की आवश्यकता नहीं हो - *अकिरियरूपोति अकत्तब्बरूपो*, जा. अट्ठ. 3.468; *अकत्तब्बरूपोयेव*, ध. प. अट्ठ. 2.57.

अकत्तब्बत्त नपुं., भाव. [अकर्तव्यत्व], नहीं करने योग्य होना - *अरियेहि अकत्तब्बत्ता अनरियेहि च कत्तब्बत्ता* ..., जा. अट्ठ. 1.228.

अकत्ता पु., निषे., तत्पु. स. [अकर्तृ], प्रत्युपकार न करने वाला, अकृतज्ञ, कृतघ्न - *अकत्तारन्ति यंकिञ्चि अकरोन्तं*, जा. अट्ठ. 3.23.

अकत्ति/अकित्ति पु. [अगस्त्य, पाणिनि 2, 4, 70], एक ऋषि का नाम - *अकित्ति नाम तापसो*, चरिया. 371; *समुद्दो माघो भरतो च, इसि कालपुरक्खतो, अङ्गीरसो कस्सपो च किसवच्छो अकत्ति चा ति*, जा. अट्ठ. 6.120 - **चरिया** स्त्री., चरिया. के एक सुत्त का शीर्षक, चरिया. 371; - **वग्ग** पु., चरिया. के प्रथम वग्ग का शीर्षक, चरिया. 371-384; द्रष्ट. अकित्ति².

अकत्थमान त्रि., [अकथ्यमान], आत्म-प्रशंसा अथवा आत्मश्लाघा न करने वाला व्यक्ति - *इतिहन्ति सीलेसु अकत्थमानो*, सु. नि. 789; *अकत्थमानो, ... अत्तूपनायिकं वाचं अभासमानोति* ..., सु. नि. अट्ठ. 2.216.

अकथंकथी त्रि., निषे., तत्पु. स. [अकथङ्कथी], संशयों से रहित, सन्देहों से मुक्त - *तिण्णो पारङ्गतो झायी, अनेजो अकथंकथी*, सु. नि. 643; ध. प. 414; *अकथंकथी कुसलेसु धम्मेसु*, दी. नि. 1.185.

अकथना स्त्री., निषे., तत्पु. स. [अकथना], नहीं कहना, उपदेश न देना - *नाचिक्खणा ... होतीति अकथना अप्पसन्नस्स होति*, पे. व. अट्ठ. 193.

अकथित त्रि., √कथ के भू. क. कृ. का निषे. [अकथित], अनुद्घोषित, अघोषित, नहीं कहा गया, अव्यक्त, अप्रदर्शित - *अब्याकतमेत न्ति सस्सतादिभावेन अकथितत्ता*, प. प. अट्ठ. 241.

अकद्दम त्रि., ब. स. [अकर्दम], कीचड़-रहित, पंक-रहित - *कतमो रहदो अकद्दमो, धम्मो रहदो अकद्दमो*, जा. अट्ठ. 3.253; - **मोदक** त्रि., ब. स. [अकर्दमोदक], पङ्किल जल से रहित, निर्मल जल वाला - *अकद्दमोदके सकटानि नप्पवत्तिंसु*, थेरगा. अट्ठ. 1.48.

अकनिट्ठ¹ पु., [अकनिष्ठ], उच्चतम देवताओं का एक वर्ग-विशेष - *येन अकनिट्ठा देवा तेनुपसङ्कमि*, दी. नि. 2.40; *अकनिट्ठानं देवानं*, म. नि. 1.364.

अकनिट्ठ[2] नपुं., अकनिष्ठ नामक देवों का लोक - *अकनिट्ठं गच्छन्तो*, ध. प. अट्ठ. 2.169; *यामतो याव अकनिट्ठं*, खु. पा. अट्ठ. 133; - **गामी** त्रि., [अकनिष्ठ-गामी], उत्कृष्ट-वर्ग के देवों के पास जाने वाला, उत्तम तत्त्वों के समीप जाने वाला - *संयोजनानं परिक्खया उद्धंसोतो अकनिट्ठगामी*, अ. नि. 1(1).265; स. नि. 3(2).277; - **देवता** स्त्री., कर्म. स., उत्तम-वर्ग का देव-प्राणी - *एतेनुपायेन याव सुदस्सीदेवतानं अकनिट्ठदेवता मित्ता होन्ति*, खु. पा. अट्ठ. 96; - **ब्रह्मलोक** पु., कर्म. स., अकनिष्ठ ब्रह्माओं का लोक - *एतेनेव उपायेन याव अकनिट्ठब्रह्मभवनं, ताव महासक्कारविसेसो निब्बत्ति*, खु. पा. अट्ठ. 156.

अकन्त त्रि., कन्त का निषे., तत्पु. स. [अकान्त], असुन्दर, अप्रिय - *अकामं राज कामेसि, अकन्तं कन्तुमिच्छसी'ति*, जा. अट्ठ. 5.284; *विज्जति यं मनोदुच्चरितस्स अनिट्ठो अकन्तो अमनापो*, अ. नि. 1(1).40.

अकन्तिक / अकन्तिय त्रि., कन्तिक / कन्तिय का निषे., तत्पु. स. [अकान्तिक], अप्रिय - *गन्धञ्च ... घत्वा असुचिं अकन्तियं*, स. नि. 2(2).76; *गूथं असुचिं अकन्तं, परिभुञ्जसि*, पे. व. अट्ठ. 167; *अकन्तन्ति अमनापं जेगुच्छं*, तदे..

अकप्पकत त्रि., कप्पकत का निषे. [अकल्प्यकृत], वह, जो विनय-नियमों के विपरीत तैयार किया गया हो, अनैतिक - *अकप्पकतेन अत्थतं होति*, महाव. 331.

अकप्पिय[1] त्रि., कप्पिय का निषे., तत्पु. स. [अकल्प्य], अनुपयुक्त, प्रतिष्ठा के विपरीत, विनय-विरुद्ध ऐसा कर्म, जिसके लिए भिक्षुसङ्घ ने 'ञत्तिचतुत्थकम्म' द्वारा अनुमति न दी हो - *अकप्पियं अनुलोमेति, कप्पियं पटिबाहति*, महाव. 327; *अकप्पियं अकरणीयं*, पारा. 21; - **यट्ठेन** तृ. वि. में प्रयोग; अननुज्ञात अर्थ में प्रयोग - *यागुया सद्धिं अकप्पियट्ठेन तेलं अत्थीति होति*, ध. स. अट्ठ. 252; - **कत** त्रि., विनय के विरुद्ध किया गया - *अनतिरित्तं नाम अकप्पियकतं होति*, पाचि. 113; - **भण्ड** नपुं., विनय-नियमों द्वारा अननुमोदित वस्तु - *सङ्घस्स बहुं अकप्पियभण्डं उप्पन्नं होति*, चूळव. 299; - **मंस** नपुं., अवैध मांस, विनय-नियमों द्वारा अननुमोदित मांस - *अकप्पियमंसं पन अजानित्वा भुत्तेन पच्छा ञत्वापि आपत्ति देसेतब्बा*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.35; - **सयनानि** खु. सि. के 25वें अध्याय का शीर्षक; स. उ. प. में द्रष्ट. कप्पिया. के अन्त..

अकप्पिय[2] त्रि., [अकल्प्य], वह, जिसकी संख्या की कल्पना न की जा सके, अगण्य - *कप्पं नेति अकप्पियो*, सु. नि. 866.

अकम्प त्रि. [अकम्प्य], वह, जो कांपता न हो, अविचलनीय, अटल - *अकम्पो कम्पयित्वान महिं ठानेसु अट्ठसु*, म. वं. 15.175.

अकम्पनीय त्रि., √कम्प के सं. कृ. का निषे. [अकम्पनीय], जिसे हिलाया न जा सके, अविचल, अटल - *लोकधम्मेहि अकम्पनीयतो ठितत्तो*, सु. नि. अट्ठ. 2.124; तुल. अकम्पिय.

अकम्पित त्रि., √कम्प + इत का निषे. [अकम्पित], अविचल, अटल - *अचलितन्ति किलेसेहि अकम्पितं*, जा. अट्ठ. 5.453; *अकम्पितं असञ्चलितं सुसण्ठितं*, मि. प. 211; - **चित्त** त्रि., ब. स. [अकम्पितचित्त], दृढ़ चित्त वाला - *अट्ठलोकधम्मेहि अकम्पितचित्तं, असोकचित्तं, विरजचित्तं, खेमचित्तन्ति*, खु. पा. अट्ठ. 124.

अकम्पिय त्रि., कम्पिय का निषे. [अकम्प्य] उपरिवत् - *अकम्पियं अतुलियं, अपुथुज्जनसेवितं*, थेरीगा. 201, तुल. अकम्पनीय.

अकम्पी त्रि., कम्पी का निषे., तत्पु. स. [अकम्पिन्], न कांपने वाला, भयभीत न होने वाला - *अच्छम्भी अकम्पी अवेधी अपरितस्सी विगतलोमहंसो*, म. नि. 2.346.

अकम्म[1] नपुं., निषे., तत्पु. स. [अकर्मन्], नहीं किया गया कर्म, नहीं किये जाने योग्य कर्म, अनुचित कर्म - *अकम्मं हेतं, महाराज, जिनपुत्तानं यदिदं पूजा*, मि. प. 173; *वग्गकम्मं अकम्मं न च करणीयं*, महाव. 411.

अकम्म[2] नपुं., निषे., कर्म. स. [अकर्मन्], अकर्मण्यता, निष्क्रियता, अनुचित कार्य - *मा अकम्माय रन्धयि*, जा. अट्ठ. 5.117.

अकम्मक[1] त्रि., [अकर्मक], कर्म न करने वाला, कर्म के साथ नहीं जुड़ा हुआ - *अकम्मकेन हेतुना ...*, मि. प. 139.

अकम्मक[2] केवल व्याकरण के ही संदर्भ में [अकर्मक], अक. क्रि., वह क्रिया, जिसका कोई कर्म न हो - *गमनत्थाकम्मकाधारे च*, मो. व्या. 5.59.

अकम्मकाम त्रि., ब. स. [अकर्मकाम], कर्महीन, कर्म न करने की कामना करने वाला - *अकम्मकामा अलसा महग्घसा*, अ. नि. 2(2).230; जा. अट्ठ. 2.288.

अकम्मज त्रि., कम्मज का निषे., तत्पु. स. [अकर्मज], कर्म से उत्पन्न या उद्भूत न होने वाला - *यं लोके अकम्मजं अहेतुजं अनुतुजं ...*, मि. प. 250.

अकम्मञ्ञ त्रि., कम्मञ्ञ का निषे., तत्पु. स. [अकर्मण्य], कार्य करने के लिए अनुपयुक्त, अक्षम - *तस्स मे कायो*

गरुको अकम्मञ्ञो मासाचितं मञ्ञे, अ. नि. 3(1).153; – **ता** स्त्री., भाव. निषे. [अकर्मण्यता], कर्म न करने की मनोदशा, आलस्य भरे मन की स्थिति – *दुब्बल्यं मन्दता अकम्मञ्ञता कायस्स,* मि. प. 276; *अकम्मञ्ञताति चित्तगेलञ्ञसङ्खातोव अकम्मञ्ञताकारो,* ध. स. अट्ठ. 402.

अकम्मनिय त्रि., कम्मनिय का निषे., तत्पु. स. [अकर्मणीय], अयोग्य, कर्म न करने योग्य – *चित्तं, भिक्खवे, अभावितं अकम्मनीयं होतीति,* अ. नि. 1(1).7; तुल. कम्मञ्ञ एवं अकम्मनेय्य; – **वग्ग** त्रि., अ. नि. प्रथम भाग के प्रथम निपात के एक वग्ग का नाम, अ. नि. 1(1).7-8; – **ता** स्त्री. भाव. [अकर्मण्यता] – *अकल्लता अकम्मनियता ...,* नेत्ति. 72.

अकम्मनेय्य त्रि., कम्मनेय्य का निषे., तत्पु. स. [अकर्मण्य], जो कर्म करने में सक्षम न हो, काम न करने योग्य – *बाहुं पसारेति अकम्मनेय्यं,* जा. अट्ठ. 4.346.

अकम्मास त्रि., कम्मास का निषे., तत्पु. स. [अकल्माष], निष्कलङ्क, कलङ्क-रहित, विशुद्ध – *सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि,* म. नि. 1.404; *अच्छिद्देहि असबलेहि अकम्मासेहि,* स. नि. 2(2). 265; – **कारी** त्रि., [अकल्माषकारिन्], अनवरत कार्य करने वाला, सतत कार्य करनेवाला – *दीघरत्तं खो अयमायस्मा अखण्डकारी अच्छिद्दकारी असबलकारी अकम्मासकारी सन्ततकारी सन्ततवुत्ति,* अ. नि. 1(2).217.

अकरं √कर के वर्त. कृ. का निषे., प्र. पु., ए. व. [अकुर्वन्], नहीं करता हुआ – *रसेसु गेधं अकरं अलोलो,* सु. नि. 65.

अकरणीय त्रि., करणीय का निषे. [अकरणीय, अ + √कृञ् + अनीयर्], **शा. अ.** न करने योग्य कर्म, भिक्षु के लिए बुद्ध द्वारा वर्जित किये गए हिंसा आदि पापकर्म – *अकामा अकरणीयं वा, करणीयं वापि कुब्बति,* जा. अट्ठ. 5.225; *चत्तारि च अकरणीयानि, तं ते यावजीवं अकरणीयं,* महाव. 123; **ला. अ. क.** वह, जिसके पास कुछ भी करने को नहीं है – *सो तदहेव अकरणीयो पक्कमति,* महाव. 203; **ख.** अजेय, नहीं जीतने योग्य – *अकरणीयाव ... वज्जी रञ्ञा मागधेन,* दी. नि. 2.59.

अकराणि त्रि., [अकरणि, स्त्री.], नहीं करने योग्य – *न कत्तब्बं अकराणि ते जम्मकम्मं,* क. व्या. 647.

अकळु / अकलु / अगळु नपुं., [अगरु, अगुरु], सुगन्धित द्रव्य, अगर की सुगन्धित लकड़ी, सुगन्धित पदार्थ के रूप में व्यवहृत पेड़ – *लोहं त्वगरु चागलु,* अभि. प. 302; *अहञ्च खो अगळुं चन्दनञ्च सिलाय पिंसामि पमत्तरूपा,* जा. अट्ठ. 4.399; *अगलुतगरतालीसकलोहित-चन्दनानुलित्तगत्तो,* मि. प. 307.

अगलु-चन्दन-विलित्त त्रि., अगर और चन्दन के लेप से युक्त – *कुण्डलिनो अगलुचन्दनविलित्ता,* जा. अट्ठ. 7.96.

अकल्य त्रि., निषे. स. [अकल्य], अप्रसन्न, असंतुष्ट – *अकल्यरूपो गळयति अस्सुकानि,* सु. नि. 696; – **ता** स्त्री., भाव. अस्वस्थता, अप्रसन्नता, अनीरोगता, द्रष्ट. अकल्लता (आगे); – **रूप** त्रि., ब. स. [अकल्यरूप], असंतुष्ट स्वभाव वाला, अप्रसन्न रूप वाला – *अकल्यरूपो गळयति अस्सुकानि,* सु. नि. 696.

अकल्याण त्रि., निषे., तत्पु. स. [अकल्याण], असुन्दर, असुखकर, अशोभन – *इधलोकपरलोकत्थभञ्जकं अकल्याणमित्तसंसग्गं,* खु. पा. अट्ठ. 100; – **करण** नपुं., कुत्सितकर्म, असुखकर एवं अरुचिकर कर्म – *अकल्याणकरणकल्याणाकरणपच्चयानञ्च,* खु. पा. अट्ठ. 127.

अकल्ल[1] त्रि., निषे. स. [अकल्य], अनुपयुक्त, अप्रतिरूप, असत्य – *अन्धोवट्टो अकल्लो,* थेरीगा. 443.

अकल्ल[2] नपुं., [आकल्य], संभवतः 'आकल्ल' का भ्रष्ट पाठ, रोग, बाधा – *गेलञ्ञाकल्लमाबाधो,* अभि. प. 323.

अकल्लक त्रि., कल्लक का निषे. [अकल्यक], बीमार, रुग्ण, अस्वस्थ – *आहर मे, भन्ते, भण्डिकं; नाहं अकल्लको,* पारा. 73; *भवं अकल्लकोति भवन्तं पटिजग्गितुं आगतोम्हीति,* जा. अट्ठ. 3.409.

अकल्लता स्त्री., भाव. [अकल्यता], चित्त, वेदना संज्ञा एवं संस्कार स्कन्धों की अस्वस्थता, शिथिलता, अकर्मण्यता – *या चित्तस्स अकल्लता अकम्मञ्ञता ... इदं वुच्चति थिनं,* ध. स. 1162; अकल्लताति चित्तस्स गिलानभावो ध. स. अट्ठ. 402.

अकवाटक त्रि., कवाटक का निषे., ब. स. [अकपाटक], द्वाररहित, बिना किवाड़ वाला – *ते विहारा अकवाटका होन्ति,* चूळव. 273.

अकसाव त्रि., कसाव का निषे., ब. स. [अकाषाय], काषायरहित, मलरहित, पवित्र – *अदोसा अकसावा,* अ. नि. 1(1).135; – **त्त** नपुं., भाव. – *तं नेमियापि अवङ्कत्ता अदोसत्ता अकसावत्ता ...,* अ. नि. 1(1).135.

अकसिरलाभी त्रि., [अकृच्छ्रलाभी], बिना कठिनाई या दुख के प्राप्त करने वाला, सहज या सुलभ रूप से प्राप्त करने

वाला – *निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी,* म॰ नि॰ 2.19; *दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी ... अकसिरलाभी,* अ॰ नि॰ 2(1).125.

अकाच त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अकाच], कलङ्करहित, निर्मल – *अयं मणि वेळुरियो, अकाचो विमलो सुभो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.344; *सुद्धो निदोसो विमलो अकाचो,* सु॰ नि॰ 480.

अकाची त्रि॰, [अकाचिन्], पवित्र, निर्दोष – *अकाचिनन्ति निद्दोसं ...,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 212.

अकातून निपा॰, √कर के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अकृत्वा], न करके – *अकातून पुञ्ञं किलमिस्सन्ति सत्ता,* क॰ व्या॰ 566.

अकापुरिससेवित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अकापुरुष-सेवित], दुष्ट मनुष्यों के द्वारा असेवित, सज्जनों द्वारा सेवित – *ब्रह्मविहारं भावेमि, अकापुरिससेवितं,* थेरगा॰ 649; *पटिविज्झिं पदं सन्तं, अकापुरिससेवितं,* थेरीगा॰ 189.

अकाम त्रि॰, ब॰ स॰ [अकाम], राग, प्रेम या कामनाओं से मुक्त, अनभिलाषी, राग से अप्रभावित – *ओघातिगं पुट्ठमकाममागमं,* सु॰ नि॰ 1102; *जेट्ठस्स च भातुनो अकामस्स ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.176; – **क** त्रि॰, निषे॰ ब॰ स॰, कामनारहित, प्रबल इच्छा से मुक्त – *मरणेनपि ते मयं अकामका विना भविस्साम,* म॰ नि॰ 2.256; *तात, त्वं किर अम्हे अकामके पहाय पब्बजामी'ति वदसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.176; – **करणीय** त्रि॰, कर्म॰ स॰, बिना कामना के ही किया जाने वाला – *अकामकरणीयम्हि, क्विध पापेन लिप्पति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.225; *न हि, भन्ते, अकामकरणीया ... मातापितूनं,* मि॰ प॰ 226; – **कामी** त्रि॰, कामनाओं अथवा तृष्णा से मुक्त – *सुत्वानहं वीरमकामकामिं,* सु॰ नि॰ 1102; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अकामता], स्वतः, अन्तः-स्फूर्त्त, अनचाहापन, अपने-आप, अपरिहार्य रूप से – *यथा पन पक्के गण्डे गण्डभेदेन पुब्बलोहितं अकामताय निक्खमति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.278; – **रूप** त्रि॰, अनिच्छु, अनभिलाषी, निराकांक्षी – *अञ्ञे अकामरूपा नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.30.

अकामा निपा॰, अ॰, क्रि॰ वि॰ [अकामं], किसी की इच्छा के विरुद्ध, अनिच्छा से, अनजाने या मनमाने रूप से – *अकामा अकरणीयं वा, करणीयं वापि कुब्बति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.225; *यंवदा तक्करा रञ्ञो, अकामा पियभाणिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.226; *अकामा भागं नो ददे,* चूळव॰ 313.

अकामित त्रि॰, निषे॰ स॰, जो प्रिय न हो, अप्रिय, अवांछित – *अकन्तन्ति अकामितं, निस्सिरिकं वा,* विभ॰ अट्ठ॰ 8.

अकार पु॰, [अकार], नागरी वर्णमाला का प्रथम स्वर-अक्षर, किसी वर्ण या अक्षर के बाद में उच्चारण की सुविधा के लिए 'कार' प्रत्यय जोड़ा जाता है, अकार कहने से अ-वर्ण (अ एवं आ) का बोध होता है – *अ कारो निपातमत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.480; *अकारो निपातमत्तं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.164.

अकारक त्रि॰, 1. निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकारक], वह, जिसने कुछ भी नहीं किया या जिसने कोई गलत काम नहीं किया है, निर्दोष – *... किं सम्म कारकोसी ति पुच्छित्वा अकारकोम्ही ति वुत्ते अत्तनो मनोपदोसं रक्खितुं सक्खि, नासक्खी ति पुच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.27; मि॰ प॰ 180; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.16; 2. वह, जिसने शोभन कार्य नहीं किया है, अयोग्य, निकम्मा – *अहं खो, भन्ते, भिक्खूनं अकारको, तेन मं भिक्खू न उपट्ठेन्ती'ति,* महाव॰ 393.

अकारण[1] त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अकारण], कारणरहित, स्वतः-स्फूर्त – *नत्थि बुद्धानं ... अकारणमहेतुकं गिरमुदीरणं,* मि॰ प॰ 146.

अकारण[2] **क.** नपुं॰, [अकारण], कारण का अभाव, **ख.** क्रि॰ वि॰, बिना कारण के, अप्रत्याशित रूप में, व्यर्थ – *किं इमं अकारणेन नासेमि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.405; *अयं ब्राह्मणो न अकारणेन इमं ब्रहारञ्ञं आगतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.312.

अकारण[3] नपुं॰, अनैतिक कार्य, अनर्थ से भरे हिंसा आदि दुष्कर्म – *अनयं नयतीति अकारणं कारणन्ति गण्हाति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.217.

अकारण[4] नपुं॰, असंभव स्थल, अनुपयुक्त विषय – *अट्ठानं तं, अकारणं तन्ति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.83.

अकारितपुब्ब त्रि॰, [अकारितपूर्व], पूर्व काल में नहीं किया गया – *यथा तं अकारितपुब्बं कारणं कारियमानस्स,* म॰ नि॰ 2.118.

अकारिय त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकार्य], न करने योग्य, अकरणीय – *वितिण्णपरलोकस्स, नत्थि पापं अकारियं,* ध॰ प॰ 176; इतिवु॰ 15.

अकारुञ्ञता स्त्री॰, निषे॰, भाव॰ [अकारुण्यता], निष्ठुरता, कठोरता, असौम्यता – *तेन हि तस्स अकारुञ्ञता सम्भवति,* मि॰ प॰ 199.

अकाल पु॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकाल], अनुपयुक्त समय, असमय – *राजा थेरस्स पत्तं गाहापेत्वा भत्तस्स अकालो ति पत्तपूरं चतुमधुरं दापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.231; *कालं वा अकालं वा एस कुक्कुटो न जानाति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.418; *अकालो, भो, अयं रञ्ञो दस्सनाय,* मि॰ प॰ 154; *अकालो खो ताव*

भगवन्तं दस्सनाय, पटिसल्लीनो भगवा, म॰ नि॰ 2.224; – **चारी** त्रि॰, [अकालचारिन्], अनुपयुक्त समय में पिण्डपात के लिए जाने वाला, असमय में भिक्षा के लिए गमन करने वाला – *अकालचारिञ्हि सजन्ति सङ्गा* ..., सु॰ नि॰ 388; – **चीवर** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकालचीवर], अनिर्धारित काल में प्राप्त चीवर, चीवरकाल के लिए निर्धारित काल से भिन्न काल में प्राप्त चीवर, 'पवारणा' के पश्चात् सामान्यतया एक माह के उपरान्त प्राप्त होने वाला चीवर – *अकालचीवरं नाम अनत्थते कथिने एकादसमासे उप्पन्नं, अत्थते कथिने सत्तमासे उप्पन्नं, कालेपि आदिस्स दिन्नं, एतं अकालचीवरं नाम,* पारा॰ 313; पाचि॰ 333; – **ञ्ञू** त्रि॰, [अकालज्ञ], उचित समय को न जाननेवाला, उपयुक्त समय का ज्ञान न रखने वाला – *अकालञ्ञू च, अमत्तञ्ञू च,* अ॰ नि॰ 3(1).7; – **पुप्फ** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकालपुष्प], बेमौसमी फूल, असमय पर खिलनेवाला फूल – *तेन खो पन समयेन यमकसाला सब्बफालिफुल्ला होन्ति अकालपुप्फेहि,* दी॰ नि॰ 2.104; *अकालपुप्फानि सुट्ठ पुप्फापेन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.86; – **फल** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकालफल], बेमौसमी फल, असमय पर फलने वाला फल – *अकालफलानि गण्हापेन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.86; – **मच्चु** पु॰, कर्म॰ स॰ [अकालमृत्यु], असमय पर मृत्यु – *अत्थि अरहतो अकालमच्चु,* क॰ व्या॰ 640; – **मरण** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकालमरण], अकालमृत्यु – *अन्तरा अकालमरणं नाम नो नत्थीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.48; *अकालमरणं कम्मुपच्छेदककम्मवसेन,* विसुद्धि॰ 1.220; – **मेघ** पु॰, कर्म॰ स॰ [अकालमेघ], असमय में उत्पन्न होने वाला बादल – *अकालमेघो वस्सि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.62; *अकालमेघोत्वेव सङ्खं गच्छति,* मि॰ प॰ 121; *महा अकालमेघोति असम्पत्ते वस्सकाले उप्पन्नमहामेघो,* उदा॰ अट्ठ॰ 79; – **रावी** स्त्री॰, [अकालरावी], असमय में ध्वनि करने वाला, असमय में कोलाहल करनेवाला – *इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं अकालराविं भिक्खुं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.417; – **रावीकुक्कुट** पु॰, कर्म॰ स॰, असमय में या बिना ऋतु में चिल्लाने वाला कुक्कुट – *अकालरावी कुक्कुटो अम्हेहि घातितो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.418; – **रूप** त्रि॰, कर्म॰ स॰, असुविधाजनक, अवसर के लिए अननुकूल – *यो अत्तनो दुक्खमननुपुट्ठो, पवेदये जन्तु अकालरूपे, आनन्दिनो तस्स भवन्ति मित्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.202; – **वादी** त्रि॰, [अकालवादिन्], अनुचित अवसर पर बोलने वाला, अवसर के अनुरूप नहीं बोलनेवाला – *अकालवादी अभूतवादी अनत्थवादी ... अविनयवादी,* म॰ नि॰ 1.360; म॰ नि॰ 3.96; *अकालवादीति आदीसु अकाले वदतीति अकालवादी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.258; – **विज्जुलता** स्त्री॰, [अकालविद्युल्लता], असामयिक बिजली की चमक अथवा आकाश में बिना ऋतु के चमकने वाली बिजली – *अकालविज्जुलता हिमवन्तपदेसे समन्ता निच्छरिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 7.345; – **समय** पु॰, कर्म॰ स॰ [अकालसमय], अप्रत्याशित क्षण – *अथेकदिवसं अकालसमये* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.480(रो॰), पाठा॰ निदाघसमये.

अकालिक त्रि॰, [अकालिक], **1.** कादाचित्क, कभी-कभी ही उत्पन्न होने वाला, काल-निरपेक्ष – *अकालिकं कदाचुप्पत्तिकं,* मि॰ प॰ 121; **2.** तात्कालिक रूप में प्राप्त, वह, जिसके प्राप्त होने में समय की अपेक्षा नहीं हो, इसी जन्म में प्राप्त होने वाला – *ब्रह्मचरियचरणं नाम दुतिये वा ततिये वा अत्तभावे विपाकदानतो कालिकं नाम, रज्जं पन इमस्मिंयेव अत्तभावे कामगुणसुखुप्पादनतो अकालिकं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.348; *धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको* ..., म॰ नि॰ 1.48; *धम्मेन दिट्ठेन विदितेन अकालिकेन पत्तेन परियोगाळ्हेन,* स॰ नि॰ 1(2).50.

अकालुस्सिय नपुं॰, भाव॰, निषे॰, केवल स॰ पू॰ प॰ के रूप में ही उपलब्ध [अकालुष्य], कालुष्य एवं मलिनता से मुक्ति की अवस्था, पवित्रता; – **पच्चुपट्ठान** त्रि॰, [अकालुष्यप्रत्युपस्थान], अकालुष्य द्वारा उत्पादित, विशुद्धि के फलस्वरूप उत्पन्न – *तत्थ ... सद्धा ... अकालुस्सियपच्चुपट्ठाना वा* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.114; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 165.

अकाले अ॰, क्रि॰ वि॰, सप्त॰ वि॰ के अर्थ वाला निपा॰, अनुपयुक्त समय में, अनिर्दिष्ट काल में – *अक्खित्थियो वारुणी नच्चगीतं, दिवा सोप्पं पारिचरिया अकाले,* दी॰ नि॰ 3.140; *अकाले अत्तनो वसनट्ठानतो न निक्खमितब्बं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.175.

अकालेन अ॰, तृ॰ वि॰ के अर्थ वाला निपा॰, असमय में, अनुपयुक्त अवसर पर – *अकालेन हि निक्खम्म, एककम्पि पि बहुज्जनो, न किञ्चि अत्थं जोतेति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.175; *यो त्वं मतालयं कत्वा, अकालेन विपेक्खसी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.471.

अकासिक त्रि॰, निषे॰ स॰ [अकाशिक], **शा॰ अ॰** जो काशी क्षेत्र का नहीं है, **ला॰ अ॰** उत्तम गुणों से विहीन – *न खो पनस्साहं भिक्खवे, अकासिकं चन्दनं धारेमि,* अ॰ नि॰ 1.170.

अकासिय त्रि॰ [आकाशीय / आकर्षिक?], राजस्व एकत्रित करने वाला सरकारी अधिकारी – *अकासिया राजूहिवानुसिट्ठा*

जा॰ अट्ठ॰ 7.57; – **टि॰** संभवतः यह शब्द सं॰ आकर्षिक (मुद्रानियन्त्रक) शब्द से सम्बद्ध हो सकता है तथा बलपूर्वक राजस्व ले जाने वाले अधिकारी के आशय को प्रकट करने वाला माना जा सकता है.

अकिच्च नपुं॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकृत्य], नहीं करने योग्य, अकरणीय – *अकिच्चं करोति किच्चं अपराधेति,* अ॰ नि॰ 1(2).77; *यञ्हि किच्चं अपविद्धं, अकिच्चं पन कयिरति,* ध॰ प॰ 292; *अकिच्चं ते न सेवन्ति, किच्चे सातच्चकारिनो,* ध॰ प॰ 293; – **कर** त्रि॰, [अकृत्यकर], व्यर्थ, निरर्थक, बेकार – *सम्पत्ते काले वायामो अकिच्चकरो भवति,* मि॰ प॰ 69; *भेसज्जानि ... खीणायुकस्स अकिच्चकरानि भवन्ति,* मि॰ प॰ 151; – **कारी** त्रि॰, [अकृत्यकारिन्], अकरणीय को करने वाला, जो करने योग्य नहीं है उसे करने वाला – *भवं खो पन राजा एवं सकण्टके जनपदे सउपपीळे बलिमुद्धरेय्य, अकिच्चकारी अस्स तेन भवं राजा,* दी॰ नि॰ 1.120; *हनामि तं मित्तदुब्भिं अकिच्चकारिं, यो तादिसं कम्मकतं न जाने'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.233; *अकिच्चकारी दुम्मेधो, रुक्खा पवनमागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.290.

अकिच्छलाभी त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकृच्छ्रलाभी], बिना कठिनाई के ही या सरलता एवं सहजता से लाभ पाने वाला – *अकिच्छलाभी अकसिरलाभी,* अ॰ नि॰ 2(1).125.

अकिञ्चन त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अकिञ्चन], जिसके पास अपना कुछ न हो, दरिद्र, महत्त्वहीन, इच्छा से मुक्त – ... *अकिञ्चनो जीविकत्थाय पाणं हनति,* मि॰ प॰ 207; *सकिञ्चनस्सेव भयं, नाकिञ्चनस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 6.52; *अकिञ्चनं अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं,* ध॰ प॰ 396.

अकिञ्चि नपुं॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकिञ्चित्], कुछ भी नहीं – *न ब्राह्मणस्सेतदकिञ्चि सेय्यो,* ध॰ प॰ 390; – टि॰ जहां-तहां 'अकिञ्चन' का समानार्थक भी है तथा श्रेय अर्थात् निर्वाण की स्थिति का प्रत्यायक है.

अकितव पु॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकितव], वह, जो जुआड़ी न हो, जुआ न खेलने वाला - *अनक्खाकितवे तात, असोण्डे अविनासके,* जा॰ अट्ठ॰ 5.111; *अनक्खाकितवेति अनक्खे अकितवे अजुतकरे चेव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.113.

अकित्ति[1] स्त्री॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकीर्ति], अपयश, बदनामी – *या एतिस्सा अकित्ति मय्हेसा अकित्ति,* पाचि॰ 291; – **सञ्जननी** स्त्री॰, [अकीर्तिसञ्जननी], अपयश-निर्मात्री, अपयश को उत्पन्न करने वाली – *सन्दिट्ठिका धनजानि ... अकित्तिसञ्जननी,* दी॰ नि॰ 3.138 = ध॰ स॰ अट्ठ॰ 404.

अकित्ति[2] पु॰, [अगस्त्य ऋषि], एक ब्राह्मण का नाम, भारतीय ऋषियों की परम्परा में आने वाले एक ऋषि का नाम – *अकित्ती ति'स्स नामं करिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.212; *अकित्तिपण्डितो पन अहमेव अहोसिन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.218; – **जातक** नपुं॰, जातक संख्या 480 का शीर्षक – *अकित्तिजातकादीहि चायमत्थो दीपेतब्बो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.230; – **तित्थ** नपुं॰, कर्म॰ स॰, ऋषि अकित्ति के नाम पर वाराणसी के एक घाट का नाम – *येन तित्थेन नदिं ओतिण्णो, तम्पि अकित्तितित्थं नाम जातं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.212; – **द्वार** नपुं॰, कर्म॰ स॰, एक द्वार का नाम – *भगिनिं गहेत्वा बाराणसितो ... येन द्वारेन निक्खमि, तं अकित्तिद्वारं नाम जातं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.212.

अकित्तिम त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकृत्रिम], स्वाभाविक, नैसर्गिक – *सो पन अपोरिसताय अकित्तिमो सयंजातो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 231.

अकिरिय त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अक्रिय], निष्क्रिय, अकर्मण्य, आलसी – *ये केचि पापका असंवुता अहिरिका अकिरिया ... दुज्जना मनुस्सा,* मि॰ प॰ 234; *पुरिसं विवटं पाकटं अकिरियं अरहस्सं,* मि॰ प॰ 276; *यस्मा कायदुच्चरितादीनं अकिरियं वदति तस्मा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.98; – **दिट्ठि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अक्रियादृष्टि], कुशल तथा अकुशल कर्मों के विपाक के असद्भाव का सिद्धान्त, अक्रियावाद – *अकिरियदिट्ठिञ्च पजहति,* विभ॰ अट्ठ॰ 189; – **रूप** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अक्रियरूप], अकरणीय, न करने योग्य, अनुचित – *अकिरियरूपो पमदाहि सन्थवो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.467; – **वाद**[1] त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अक्रियावाद], कर्मों के विपाक के असद्भाव के मत या सिद्धान्त को मानने वाला, अक्रियावादी – *अकिरियवादो समणो गोतमो'ति,* अ॰ नि॰ 3(1).21; *गोतमो अकिरियवादो अकिरियाय धम्मं देसेति,* महाव॰ 309; *सब्बेपेते अत्थतो ... अहेतुकवादा अकिरियवादा च नत्थिकवादा च सन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.137; – **वाद**[2] पु॰, कर्मों के विपाक के असद्भाव का मत या सिद्धान्त – *नत्थिकवादो अहेतुकवादो अकिरियावादो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰ प॰) 3.89, द्रष्ट॰ अकिरियदिट्ठि ऊपर; – **वादी** त्रि॰, [अक्रियावादी], वह, जो कर्मों के विपाक के सिद्धान्त को नहीं मानता है, अक्रियावादी – *किरियवादी चाहं, ब्राह्मण, अकिरियवादी चा'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).79; – **सुद्धि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अक्रियाशुद्धि], अक्रिया के द्वारा शुद्धि या पवित्रता, क्रिया के बिना ही शुद्धि – *अच्चन्तसुद्धिं संसारसुद्धिं अकिरियसुद्धिं सस्सतवादं न वदन्ति न कथेन्ति न भणन्ति,* महानि॰ 70 (रो॰).

अकिरिया 1. स्त्री., निषे., तत्पु. स. [अक्रिया], वह चेतना, जो उत्पन्न होकर अकुशल कर्मों के क्रियापथ का उपच्छेदन कर देती है, समस्त अकुशल कर्मों से चित्त की विरति - *उप्पज्जित्वा तं किरियं कातुं न देति, किरियापथं पच्छिन्दतीति अकिरिया,* ध. स. अट्ठ. 262; *अकुसलानं धम्मानं अकिरिया,* अ. नि. 3(1).21; *अनेकविहितानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अकिरियं वदामि,* पारा. 3; *अकिरियाय धम्मं देसेति;* महाव. 309; - **टि.** यहां 'अक्रिया' का विशेष अर्थ इस रूप में अभिव्यक्त है - शारीरिक, वाचिक एवं मानसिक आदि सभी प्रकार के पापकर्मों से विरत रहना ही बुद्ध अभिप्रेत अक्रिया है - *कायदुच्चरितस्स वचीदुच्चरितस्स मनोदुच्चरितस्स, अनेकविहितानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अकिरियं वदामि,* अ. नि. 1(1).79; **2.** स्त्री., [अक्रिया], कर्त्तव्यविमुखता, अनुचित क्रिया, अकरणीय क्रिया - *तेन हि, महाराज, भगवता किरिया येव कता, नो अकिरिया,* मि. प. 168; **3.** स्त्री., अक्रिया का सिद्धान्त, बुद्धकालीन छः धर्माचार्यों में से एक पूरणकस्सप के मत के रूप में कुशल तथा अकुशल कर्मों के किसी भी प्रकार के विपाक के न प्राप्त होने के मत को अक्रिया की संज्ञा दी गयी है। कुछ विद्वानों ने इसकी सङ्गति गीताप्रतिपादित निष्काम कर्मयोग के साथ स्थापित करने का प्रयास भी किया है - *पूरणो कस्सपो सन्दिट्ठिकं सामञ्ञफलं पुट्ठो समानो अकिरियं व्याकासि,* दी. नि. 1.47; अकिरियाय सण्ठहन्ति, अ. नि. 1(1).202, द्रष्ट. अकिरियदिट्ठि एवं अकिरियवाद ऊपर.

अकिलन्त त्रि., निषे., तत्पु. स. [अक्लान्त], न थकने वाला, अश्रान्त, अनिद्रालु, जागरूक - *किलन्तरूपो कायेन, अकिलन्तोव चेतसा,* वि. व. 1152; - **काय** त्रि., ब. स. [अक्लान्तकाय], थकान-रहित शरीर वाला, तरोताजा शरीर वाला - *सुखिनो बोधिसत्तमाता होति अकिलन्तकाया,* दी. नि. 2.10.

अकिलासु त्रि., तत्पु. स. [अग्लास्नु, √ग्लै + स्नु], थकावट-रहित, नहीं थकने वाला, उद्योगी - *निक्कोसज्जो अकिलासु,* अभि. प. 516; *अकिलासु विन्दे हदयस्स सन्तिन्ति,* जा. अट्ठ. 1.116; *अकिलासुनोति निक्कोसज्जा आरद्धवीरिया,* तदे.; *अकिलासुनो अहेसुं ... धम्मं देसेतुं,* पारा. 9; *करणीयमेतं ब्राह्मणेन, पधानं अकिलासुना ...,* स. नि. 1(1).56; *योगिना ... धम्मदेसनासु अकिलासुना भवितब्बं,* मि. प. 350.

अकिलिट्ठ त्रि., निषे., तत्पु. स. [अक्लिष्ट], पवित्र, अघृणित, मलरहित; - **वसन** त्रि., ब. स., शुद्ध वस्त्र या स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाला - *सुचिवसनेति अकिलिट्ठवसने ...,* सु. नि. अट्ठ. 2.184.

अकिस्सव त्रि., निषे., तत्पु. स., (व्यु. संदिग्ध) प्रज्ञाविहीन, ज्ञानविहीन, प्रमादी - *अप्पमेय्यं पमादिनं, निवुतं तं मञ्ञे अकिस्सव'न्ति,* स. नि. 1(1).175; नेत्ति. 109; *अकिस्सवं'ति किस्सवा वुच्चति पञ्ञा, निप्पञ्ञोति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 1.189.

अकुक्कु-कत त्रि., निषे., तत्पु. स., केवल किसी निर्धारित समय-विशेष के लिए न तैयार किया गया - *अकुक्कुकतेन अत्थतं होति कठिनं,* महाव. 333.

अकुक्कुच्च त्रि., कुक्कुच्च का निषे., तत्पु. स. [अकौकृत्य], मानसिक अनुताप से रहित, पश्चात्ताप के मनोभाव से मुक्त, दुष्कृत्यों को न करने वाला - *अकुकतभावो अकुक्कुच्चं, अकुच्छितकिरियाय वा चेतसो अविप्पटिसारो अमनोविलेखो,* महानि. 158; *अकुक्कुच्चोति हत्थकुक्कुच्चादिविरहितो ...,* महानि. अट्ठ. 256; *यस्सेतं कुक्कुच्चं पहीनं समुच्छिन्नं ... ञाणग्गिना दड्ढं, सो वुच्चति अकुक्कुच्चोति,* महानि. 159; द्रष्ट. कुक्कुच्च (आगे); - **क.** त्रि., कुक्कुच्चक का निषे., ब. स. [अकौकृत्यक], **1.** संदेह से रहित, अशंकालु, दुष्कृत्यों, कदाचारों या अनुतापों से मुक्त - *कोसज्जबहुला अञ्ञमञ्ञं न चोदेन्ति न सारेन्ति अकुक्कुच्चका होन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.71; **2.** केवल स. पू. प. में ही प्रयुक्त, - **जात** त्रि., दोष या अशुद्धि के बिना ही उत्पन्न - *सो तत्थ पस्सेय्य महतिं साललट्ठिं उजुं नवं अकुक्कुच्चकजातं,* अ. नि. 1(2).230.

अकुटिल त्रि., कुटिल का निषे., तत्पु. स. [अकुटिल], **शा. अ.** अवक्र, सरल, सीधा - *दहरा रुक्खा च वुद्धा च, अकुटिला चेत्थ पुप्फिता,* जा. अट्ठ. 7.302; *अवङ्कस्स अकुटिलस्स दळ्हचापसमारुळ्हस्स ...,* मि. प. 115; **ला. अ.** निष्कपट, ईमानदार - *उजुकेसु अकुटिलेसु,* जा. अट्ठ. 3.9; - **ता** स्त्री., भाव. [अकुटिलता], निष्कपटता, सरलता, सीधापन - *अज्जवता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता अयं वुच्चति अज्जवो,* ध. स. 1346.

अकुतूहल त्रि., कुतूहल का निषे. [अकुतूहल], कौतूहल से रहित, आश्चर्य से रहित, स्वाभाविक, स्थिर - *उक्कट्ठे सूरमिच्छन्ति, मन्तीसु अकुतूहलं,* जा. अट्ठ. 1.369; *अकुतूहलो अविकिण्णवाचो,* जा. अट्ठ. 1.370.

अकुतो / अकुतोचि निपा., स. पू. प. के रूप में ही प्राप्त [अकुतः], कहीं से भी नहीं; - **उपद्दव** त्रि., सभी तरह से उपद्रव-रहित - *कच्चि रट्ठं अनुपपीळं अकुतोचिउपद्दवं,* जा.

अट्ठ॰ 5.374; – **भय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकुतोभय], वह, जिसे कहीं से भय न हो, सभी तरह से भयरहित – *निब्बुते अकुतोभये,* ध॰ प॰ 196; *सब्बामित्ते वसीकत्वा, मोदामि अकुतोभयो,* सु॰ नि॰ 566; *अकुतोभयोति कुतोचि अभयो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.158; *अकुतोभयाति कुतोचिपि असञ्जातभया,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 66.

अकुत्तिम त्रि॰, द्रष्ट॰ अकित्तिम.

अकुद्ध त्रि॰, द्रष्ट॰, अक्कुद्ध.

अकुप्प त्रि॰, कुप्प का निषे॰ [अकोप्य, अकम्प्य], क्रोध-रहित, अचल, सुदृढ़, शान्त – *अकुप्पा मे विमुत्ति,* म॰ नि॰ 1.226; *अकुप्पा मे विमुत्तीति, भवसंयोजनक्खया,* इतिवु॰ 39; – **ट्ठान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकम्प्यस्थान], ध्रुवस्थान, अच्युत-स्थान, दृढ़ स्थिति – *अकुप्पट्ठानं धुवट्ठानं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.186; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अकोप्यता, अकम्प्यता], क्रोध-रहितता, दृढ़ता, शान्तता, चित्त की अडिग स्थिति अर्थात् निर्वाण – *सो पत्वा परमं सन्तिं, सच्छिकत्वा अकुप्पतं,* थेरगा॰ 434; – **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकम्प्यधर्म], अचल एवं अडिग निर्वाण-धर्म से युक्त, क्षीणास्रव अर्हत् – *पापभिक्खूति अपि अकुप्पधम्मोपि,* अ॰ नि॰ 2(1).120; *अकुप्पधम्मोपीति अपि अकुप्पधम्मो खीणासवो समानोपि परेहि पापभिक्खूहि उस्सङ्कित-परिसङ्कितो होतीति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.43; परि॰ 243.

अकुब्बतो त्रि॰, √कर के वर्त॰ कृ॰ का च॰ वि॰, ए॰ व॰ का निषे॰, [अकुर्वतः], न करते हुए, अक्रियाशील – *एवं सुभासिता वाचा, अफला होति अकुब्बतो,* ध॰ प॰ 51; *नाब्बणं विसमन्वेति, नत्थि पापं अकुब्बतो,* ध॰ प॰ 124.

अकुब्बमानो त्रि॰, √कर के वर्त॰ कृ॰ का प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अकुर्वाणः], न करते हुए – *यदत्तगरही तदकुब्बमानो, न लिप्पती दिट्ठसुतेसु धीरो,* सु॰ नि॰ 784.

अकुल नपुं॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अकुल], भ्रष्ट कुल, बिगड़ा हुआ कुल – *अकुलं काहति खिप्पमत्तनो,* दी॰ नि॰ 3.140; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, कुल के भ्रष्ट होने की अवस्था – *कुला अकुलतं गता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.112; – **पुत्त** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अकुलपुत्र], अशोभन परिवार या कुल का व्यक्ति या पुत्र, अच्छे कुल में उत्पन्न न होने वाला व्यक्ति – *दुक्कुलीनोति दुज्जातिको अकुलपुत्तो,* जा॰ अट्ठ 2.187.

अकुलीन त्रि॰, कुलीन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकुलीन], नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति – *तासं कुलधीतानं अकुलीनेहि सद्धिं संवासो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.323; *एवं इत्थियो नाम ... कुलीनम्पि अकुलीनम्पि ... भजन्ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.362.

अकुसल त्रि॰, कुसल का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकुशल], **शा॰ अ॰** अनिपुण, अचतुर, मूर्ख – *एळमूगो तु वत्तुञ्च सोतुञ्चाकुसलो भवे,* अभि॰ प॰ 734; *बालो परो अक्कुसलोति चाहु,* सु॰ नि॰ 885; *बालो अब्यत्तो अकुसलो,* स॰ नि॰ 3(1).227; **ला॰ अ॰ क.** लोभ, द्वेष एवं मोह, इन तीन अकुशल-मूलों में से किसी एक से भरा हुआ, पापमय, कलुषित – *कुसलं, अकुसलं, अब्याकतं,* चूळव॰ 199; *अकुसलकम्मपथाति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 126; *अकुसलस्स कम्मस्स बलवताय,* मि॰ प॰ 112; *अकुसलं भयभेरवं,* म॰ नि॰ 1.22; **ला॰ अ॰ ख.** नपुं॰, पापकर्म, दुष्कर्म, अपुण्यकर्म – *अकुसलं पजहति, कुसलं भावेति,* मि॰ प॰ 34; *तथागतो सब्बं अकुसलं झापेत्वा सब्बञ्ञुतं पत्तो,* मि॰ प॰ 137; *चतुब्बिधं अकुसलं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 115; – **क.** त्रि॰, [अकुशलक], अनाड़ी, अनुभवहीन – *तेन अकुसलकेन चिता वङ्का भित्ति परिपति,* चूळव॰ 288; – **कम्म** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलकर्मन्], पापकर्म, बुरा कर्म, लोभ, द्वेष और मोह नामक तीन अकुशलमूलों से सम्प्रयुक्त चित्त द्वारा अभिसंस्कृत कर्म – *अकुसलकम्मं अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.216; *अकुसलकम्मं विनासनत्थेन,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.202; – **कम्मपथ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अकुसलकर्मपथ], निम्नलिखित दस प्रकार के पापकर्म सुगत-परम्परा में अकुसलकर्मपथ में परिगणित हैं तथा ये कायिक, वाचिक तथा मानसिक द्वारों से प्रवर्तित होते हैं; **1.** कायिक अकुसलकम्मपथ-प्राणातिपात, अदत्तादान, अब्रह्मचर्य, **2.** वाचिक अकुसलकम्मपथ- असत्यभाषण, चुगली करनेवाली वाणी, कठोरवचन, निरर्थक वार्तालाप, **3.** मानसिक अकुसलकम्मपथ-लोभ, द्वेष तथा मोह – *दस अकुसलकम्मपथा,* अ॰ नि॰ 3(2).234; *एवमस्स दस अकुसलकम्मपथा पारिपूरिं गच्छन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.15; – **कम्मपथकथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अकुशलकर्मपथकथा], ध॰ स॰ अट्ठ॰ के पांचवें परिच्छेद का शीर्षक, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 148; – **कारी** त्रि॰, [अकुशलकारिन्], पापकर्मों को करने वाला – *कुसलकारिस्सपि अकुसलकारिस्सपि विपाको समसमो,* मि॰ प॰ 191; – **चित्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलचित्त], **1.** लोभ, द्वेष, मोह से संप्रयुक्त बारह चित्तों को अकुशल-चित्त कहा गया है, इनमें आठ लोभ-संप्रयुक्त, चित, दो द्वेष-संप्रयुक्त चित्त तथा दो मोहमूलक चित्त परिगणित हैं – *अट्ठधा लोभमूलानि, दोसमूलानि च द्विधा। मोहमूलानि च द्वेति द्वादसाकुसला सियुं,* अभि॰ ध॰ स॰ 2; **2.** ध॰ स॰ के एक खण्ड का शीर्षक, ध॰ स॰ 402–430; **3.** विभ॰ (पृ॰) 186–190 का शीर्षक; –

चेतना स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलचेतना], अकुशल-चैतसिकों या चित्तधर्मों का नेतृत्व करने वाला चेतना नामक प्रमुख चैतसिक जो कर्मो के अभिसंस्करण में मुख्य भूमिका निभाता है, इसे अपुण्याभिसंस्कार-चेतना भी कहा जाता है – *एवमेव अकुसलचेतनाय अभावेन* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.16; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).209; – **चेतसिक** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलचैतसिक], बारह अकुशल चित्तों के साथ संप्रयुक्त चौदह अकुशल चित्तवृत्तियां, मोह, अह्रीक, अनपत्राप्य, औद्धत्य, लोभ, दृष्टि, मान, द्वेष, ईर्ष्या, मात्सर्य, कौकृत्य, स्त्यान, मृद्ध तथा विचिकित्सा – *चुद्दसिमे चेतसिका अकुसला नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ (पृ॰) 8; – **धम्म** पु॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलधर्म], लोभ, द्वेष एवं मोह से संप्रयुक्त चित्त तथा चैतसिक – *कुसला धम्मा अकुसला धम्मा, अव्याकता धम्मा,* ध॰ स॰ 1; *असब्भा चाति अकुसलधम्मा च निवारेय्य,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.311; – **धम्मसुत्त** नपुं॰, एक सुत्त का नाम, स॰ नि॰ 3(1).17; – **धातु** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलधातु], ऐसे मूल-तत्त्व जिनकी प्रकृति पापमयी हो – *तत्थ कतमा तिस्सो अकुसलधातुयो? कामधातु, ब्यापादधातु, विहिंसाधातु,* विभ॰ 420-21, तुल॰ अकुसलत्तिक तथा अकुसल-सङ्कप्प; – **परिच्चाग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अकुशलपरित्याग], अकुशल पापधर्मो का पूर्णपरित्याग – *अकुसलपरिच्चागो कुसलवीमंसाय च समाधिन्द्रियस्स च साधारणं पदट्ठानं,* नेत्ति॰ 42; – **पुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अकुशलपृच्छा], पापमय धर्मों से सम्बद्ध प्रश्न – *अपरापि तिस्सो पुच्छा-कुसलपुच्छा, अकुसलपुच्छा, अब्याकतपुच्छा,* महानि॰ 251; – **मूल** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलमूल], दुष्कर्मों के लोभ, द्वेष एवं मोह नामक तीन मूल उत्प्रेरक या प्रयोजक – *तीणि अकुसलमूलानि-लोभो, दोसो, मोहो,* विभ॰ 233; 234; 396; *तीणि ... अकुसलमूलानि ... लोभो अकुसलमूलं, दोसो अकुसलमूलं, मोहो अकुसलमूलं,* अ॰ नि॰ 1(1).231; म॰ नि॰ 1.59; – **रासि** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अकुशलराशि], पाप-कर्मों की राशि, पापकर्मो का संचय – *केवलो हायं, भिक्खवे, अकुसलरासि यदिदं पञ्च नीवरणा;* अ॰ नि॰ 2(1).60; *अकुसलरासी ति, भिक्खवे, वदमानो पञ्च नीवरणे वदमानो वदेय्य,* स॰ नि॰ 3(1).224; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 406; – **टि॰** कामच्छन्द, व्यापाद, स्त्यान-मृद्ध औद्धत्य-कौकृत्य तथा विचिकित्सा, ये पांच नीवरण हैं; इन्हीं के समुच्चय को अकुशल-राशि कहा गया है; – **वितक्क** पु॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलवितर्क], पाप से परिपूर्ण चिन्तन का प्रारम्भिक भाग – *तयोमे, भिक्खवे, अकुसलवितक्का,* इतिवु॰ 53; *तयोमे ... अकुसलवितक्का-कामवितक्को ब्यापादवितक्को विहिंसावितक्को,* स॰ नि॰ 2(1).86; नेत्ति॰ 103; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.36; – **टि॰** कामवितर्क, व्यापादवितर्क तथा विहिंसावितर्क इन तीनों को अकुशलवितर्क कहा गया है, तुल॰ अकुसलधातु तथा अकुसल-सङ्कप्प; – **विपाक** (= पाक) पु॰, तत्पु॰ स॰ [अकुशलविपाक], काम-भूमि के अहेतुक एवं अव्याकत चित्तों में परिगणित बारह अकुशल कर्मों के कुल सात प्रकार के अकुशलविपाक – *सत्ताकुसलपाकानि,* अभि॰ ध॰ स॰ 3; – **विपाकअब्याकतं** ध॰ स॰ के एक खण्डविशेष का शीर्षक, ध॰ स॰ 146; – **विपाकाहेतुकचित्त** नपुं॰, कामावचरभूमि में बारह अकुशल चित्तों के सात प्रकार के अकुशलविपाक जो अहेतुक बतलाये गए हैं – *इमानि सत्तपि अकुसलविपाक (अहेतुक) चित्तानि,* अभि॰ ध॰ स॰ 3; – **विपाकुपेक्खा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अकुशलविपाकोपेक्षा], अकुशल कर्मों के विपाकों से सम्बद्ध उपेक्षामयी मनोवृत्ति – *सेसा छ अकुसलविपाकुपेक्खा अब्बोहारिका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.264; – **वेर** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलवैर], वैर की पापमयी मनोवृत्ति – *वेरबहुलोति पुग्गलवेरेनपि अकुसलवेरेनपि बहुवेरो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.82; – **सङ्खात** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलसङ्ख्यात], अकुशलरूप में पहचाने गये धर्म – *अकुसलसङ्खाता ये धम्मा* ..., अ॰ नि॰ 3(1).181; – **सङ्गह** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अकुशलसंग्रह], अकुशल धर्मों का संग्रह, अभि॰ ध॰ स॰ नामक पुस्तक के समुच्चयपरिच्छेद नामक सातवें अध्याय के प्रथम खण्ड का शीर्षक, अभि॰ ध॰ स॰ 49; – **सञ्चेतनिक** त्रि॰, [अकुशलसञ्चेतनिक], अकुशल कायकर्म द्वारा अभिसंस्कृत तीन प्रकार के दुःखमय विपाक, वाणी के चार प्रकार के दुःखमय विपाक तथा ऐसे ही मनोकर्मों के तीन प्रकार के दुःखमय विपाक अकुशलसञ्चेतनिक हैं – *तत्र, भिक्खवे, तिविधा कायकम्मन्तसन्दोसब्यापत्ति ... चतुब्बिधा वचीकम्मन्तसन्दोसब्यापत्ति ... तिविधा मनोकम्मन्तसन्दोसब्यापत्ति अकुसलसञ्चेतनिका दुक्खुद्रया दुक्खविपाका होति,* अ॰ नि॰ 3(2).260; – **सञ्ञा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अकुशलसंज्ञा], पापपूर्ण या पापमयी चेतना, पाप से भरा विचार, कामसंज्ञा, व्यापादसंज्ञा और विहिंसासंज्ञा, ये तीन प्रकार की अकुशल संज्ञाएं हैं – *तिस्सो अकुसलसञ्ञा-कामसञ्ञा ब्यापादसञ्ञा विहिंसासञ्ञा,* नेत्ति॰ 103; – **सील** पु॰, [अकुशलशील], पाप से परिपूर्ण व्यक्ति अथवा पापमय व्यवहार – *इमे अकुसला सीला, तमहं, थपति, वेदितब्बन्ति वदामि,* म॰ नि॰ 2.226; पाठा॰ अकुसला सीला; – **हेतु** पु॰,

कर्म॰ स॰ [अकुशलहेतु], अकुशल धर्मो के तीन हेतु लोभ, द्वेष तथा मोह - *तत्थ कतमो तयो अकुसलहेतू ? लोभो दोसो मोहो - तयो अकुसलहेतू,* ध॰ स॰ 1059; विभ॰ 470; 472; 476; 482; 500.

अकुसीत त्रि॰, कुसीत का निषे॰ [अकुसीद], आलस्यरहित, उद्योगी, परिश्रमी - *अकुसीते अतन्दिते कल्याणमित्ते भजस्सु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.346; *अकुसीता अनुद्धता,* थेरीगा॰ 113; - **वुत्ति** त्रि॰, ब॰ स॰ [अकुसीदवृत्ति], आलस्यरहित, अध्यवसायी पुरुष - *आरद्धवीरियो परमत्थपत्तिया, अलीनचित्तो अकुसीतवुत्ति,* सु॰ नि॰ 68; चूळनि॰ 266, 268; *अकुसीतवुत्तीति एतेन ठानआसनचङ्कमनादीसु कायस्स अनवसीदनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.97.

अकुह त्रि॰, ब॰ स॰ [अकुह], छल-प्रपंच से रहित, सरल, ईमानदार - *तं बुद्धं ... अकुहं गणिमागतं,* सु॰ नि॰ 963; *इसिसत्तमस्स अकुहस्स ... भगवतो,* म॰ नि॰ 2.55; - **क.** त्रि॰, [अकुहक], ईमानदार, निष्कपट, वञ्चनारहित - *पतिलीनो अकुहको, अपिहालु अमच्छरी,* सु॰ नि॰ 858; *अकुहको निपको अपिहालु,* थेरगा॰ 1227; *अकुहकोति कोहञ्ञरहितो असठो अमायावी,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.440.

अकूजन त्रि॰, कूजन का निषे॰ [अकूजन], शकट की कर्कश ध्वनि से रहित - *वाचासञ्ञमकूजनो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.142; *उजुको नाम सो मग्गो, अभया नाम सा दिसा-रथो अकूजनो नाम, धम्मचक्केहि संयुतो,* स॰ नि॰ 1(1).37.

अकेतवी त्रि॰ [अकैतव], ढोंग से मुक्त, छल-मुक्त, चालबाजी से रहित - *अमायाविनो अकेतविनो अनुद्धता अनुन्नळा अचपला अमुखरा अविकिण्णवाचा,* म॰ नि॰ 1.39 = अ॰ नि॰ 2(1).184; पाठा॰ अकेटुभिनो.

अकेराटिक त्रि॰ केराटिक का निषे॰ [अकैरातिक], समस्त प्रपञ्चों से रहित, छल-छद्म-मुक्त - *अनक्खाकितवेति अनक्खे अकितवे अजुतकरे चेव अकेराटिके च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.113, द्रष्ट॰ केराटिक.

अकेवल त्रि॰, केवल का निषे॰ [अकेवल], जो पूर्ण नहीं है, अपूर्ण, सदोष, दोषपूर्ण - *अकेवलंयेव समानं केवलन्ति वक्खति,* म॰ नि॰ 1.409, द्रष्ट॰ केवल.

अकेवली त्रि॰, [अकेवलिन्], हीन, अधूरा - *इद पटिक्कोसमकेवली सो,* सु॰ नि॰ 884; *अपरद्धा विरद्धा सुद्धिमग्गं, अकेवलिनो च,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.249.

अकोटिगत त्रि॰ [अकोटिगत], अपने अन्त तक न पहुंचा हुआ, फल-अवस्था को अप्राप्त व्यक्ति - *आगन्तुकेन ... अगदेन पटिपीळितं विसं अकोटिगतं येव विगतन्ति,* मि॰ प॰ 281.

अकोतूहलमङ्गलिक त्रि॰, निषे॰ [अकौतूहल-माङ्गलिक], अन्धविश्वासपूर्ण विचारों अथवा बाहरी कर्मकाण्डों एवं उत्सवों आदि में मन को न लगाने वाला - *सद्धो होति, सीलवा होति, अकोतूहलमङ्गलिको होति,* अ॰ नि॰ 2(1).192.

अकोप त्रि॰, ब॰ स॰ [अकोप], क्रोध-रहित, कोपरहित - *समिताविनो वीतरागा अकोपा,* सु॰ नि॰ 504.

अकोविद त्रि॰, कोविद का निषे॰ [अकोविद], मूर्ख, अज्ञानी, धर्म के सम्यक्-ज्ञान से रहित व्यक्ति - *जना मञ्जन्ति बालोति, ये धम्मस्स अकोविदा ति,* स॰ नि॰ 1(1).189; *धीरं मञ्जन्ति बालोति, ये धम्मस्स अकोविदा ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.49; *अकोविदा गामधम्मस्स सेग्गु,* जा॰ अट्ठ॰ 2.150.

अकोसल्ल नपुं॰, भाव॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अकौशल्य], अचतुरता, अनिपुणता, स॰ पू॰ प॰ के रूप में - **पवत्ति** स्त्री॰, [अकौशल्यप्रवृत्ति], अकुशलता की प्रवृत्ति - *अकोसल्लप्पवत्तिया अकुसलं वेदितब्बं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).205; - **सम्भूत** त्रि॰, अकुशलता से उत्पन्न, अनैपुण्य से उत्पन्न - *पापकानं अकोसल्लसम्भूतट्ठेन अकुसलानं धम्मानं समापत्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.99.

अक्क पु॰, [अर्क], **1.** सूर्य - *भानु अक्को सहस्सरंसि च,* अभि॰ प॰ 63; **2.** आक का पौधा - *त्वळक्को सेतपुप्फके,* अभि॰ प॰ 581; - **दुस्स** नपुं॰, आक के पौधे से बना वस्त्र - *अक्कदुस्सकदलिदुस्सएरकदुस्सानि पन पोत्थकगतिकानेव,* महाव॰ अट्ठ॰ 391; - **नाळ** नपुं॰, आक के पौधे की छड़ी - *भिक्खु अक्कनाळं निवासेत्वा ...,* महाव॰ 398; महाव॰ अट्ठ॰ 391.

अक्कन्त त्रि॰, आ + √कम का भू॰ क॰ कृ॰ [आक्रान्त], किसी के द्वारा रौंदा हुआ, कुचला हुआ, अभिभूत - *अक्कन्तोपि पासो न संवरति,* मि॰ प॰ 152; *हत्थेन वा पादेन वा अक्कन्तं हत्थं वा पादं वा भेच्छति,* अ॰ नि॰ 1(1).11; *अथस्स गहितसाखापि अक्कन्तसाखापि भिज्जिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.37.

अक्कन्तसञ्ञक पु॰, एक थेर का नाम - *आयस्मा अक्कन्तसञ्ञको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.221.

अक्कन्दति आ + √कन्द का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आक्रन्दति], चिल्लाता है, जोर से रोता है - *अक्कन्दति परोदति, दुब्बलो अप्पथामको,* स॰ नि॰ 2(2).204.

अक्कपण्ण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अर्कपर्ण], आक के पौधे का पत्ता, मन्दारपर्ण - *अक्कपण्णेन वेठेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.404.

अक्कमति आ + √कमु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आक्राम्यति], कदम-कदम चलकर थोड़ी दूर चलता है, रौंदता है,

कुचलता है - *जलितम्पि जातवेदं अक्कमति,* मि॰ प॰ 208.

अक्कमन नपुं॰, [आक्रमण], कदम-कदम चलकर थोड़ी दूर पर जाना, पग धरना, डग भरना, - *अक्कमनअक्कमनपदवारे हत्थतलानि उपनामेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.72; *तीरप्पदेसेसु द्विपदचतुप्पदानं अक्कमनट्ठाने ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.324; तुल॰ अक्कन्त.

अक्कवाक पु॰/नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अर्कवल्क], आक के पौधे की छाल - ... *अक्कवाके गहेत्वा जियं करोन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 3.102; *रत्तिं भुञ्जन्तापि केससण्ठानं अक्कवाकं वा ... जिगुच्छन्ति,* विभ॰ अट्ठ॰ 222.

अक्कुट्ठ त्रि॰, आ + √कुस के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, बुरी तरह से डांटा-फटकारा गया अथवा निन्दा किया गया व्यक्ति - *असब्भाहि फरुसाहि वाचाहि अक्कुट्ठो परिभासितो,* मि॰ प॰ 209; *अक्कुट्ठोति दसहि अक्कोसवत्थूहि अभिसत्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.87.

अक्कुद्ध त्रि॰, कुद्ध का निषे॰ [अक्रुद्ध], जो क्रुद्ध न हो या क्रोधाभिभूत न हो - *अक्कुद्धस्स मुखं पस्स, कथं कुद्धो करिस्सती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.292; *सो अप्पमत्तो अक्कुद्धो, तात किच्चानि कारय,* जा॰ अट्ठ॰ 5.108, पाठा॰ अकुद्ध; - **मानस** त्रि॰, ब॰ स॰, क्रोध से मुक्त मन वाला - *यो अकुद्धमानसो हुत्वा अधिवासेति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.377.

अक्कुल पु॰, आश्चर्य या विस्मयातिरेक में अथवा किसी को आतंकित करने या दहलाने के लिए 'अक्कुलो पक्कुलो' के अन्दर प्रयुक्त चीत्कार, कोलाहल या चीख को सूचित करने वाला व्याकुलता-सूचक शब्द - *'अक्कुलो पक्कुलो'ति अक्कुलपक्कुलिकं अकासि,* उदा॰ 74; *'अक्कुलो पक्कुलो'ति भिंसापेतुकामताय एवरूपं सद्दं अकासि,* उदा॰ अट्ठ॰ 53; तुल॰ आकुल-व्याकुल.

अक्कोध/अकोध पु॰, कोध का निषे॰ [अक्रोध], क्रोध का अभाव, सौम्यता, सदयता - *अक्कोधेन जिने कोधं,* ध॰ प॰ 223; मि॰ प॰ 123; जा॰ अट्ठ॰ 3.240; स॰ नि॰ 1(1).277.

अक्कोधन/अकोधन त्रि॰, कोधन का निषे॰ [अक्रोधन], क्रोध से मुक्त, क्रोधरहित - *अक्कोधनं वतवन्तं, सीलवन्तं अनुस्सदं,* ध॰ प॰ 400; सु॰ नि॰ 629; *अक्कोधनो विगतखिलोहमस्मि,* सु॰ नि॰ 19; *सत्त कप्पे ब्रह्मलोके, तस्मा अक्कोधनो अह'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.163; *मनुस्सभूतो समानो अक्कोधनो अहोसि,* दी॰ नि॰ 3.119; स॰ नि॰ 1(1).278; - **ना** स्त्री॰, क्रोध न करने वाली नारी - *अक्कोधना पुञ्ञवती, पण्डिता अत्थदस्सिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 6.304; - **मनुग्घाती** त्रि॰, वह मनुष्य, जो क्रोध से मुक्त होकर किसी भी प्राणी को चोट नहीं पहुँचाता है - *अक्कोधनमनुग्घाती, धम्मपण्डरछत्तको,* जा॰ अट्ठ॰ 7.142.

अक्कोधसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त-विशेष का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).277.

अक्कोधनसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त-विशेष का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(2).238.

अक्कोधूपायास पु॰, तत्पु॰ स॰, क्रोध के दुःख से मुक्ति, क्रोधजनित विपत्ति का अभाव - *अक्कोधूपायासं निस्साय कोधूपायासो पहातब्बो ति,* म॰ नि॰ 2.27.

अक्कोस पु॰, [आक्रोश], दुर्वचन, निन्दा, अपशब्द अथवा अपशब्दों का प्रयोग, डांटना-फटकारना - *परिभासनमक्कोसे,* अभि॰ प॰ 899; *अक्कोसं वधबन्धञ्च, अदुट्ठो यो तितिक्खति,* ध॰ प॰ 399; सु॰ नि॰ 628; *अक्कोसं तितिक्खति ... अञ्ञदत्थु अक्कोसमेव अलत्थ,* म॰ नि॰ 2.260; *अञ्ञमञ्ञं अक्कोसा होन्ति,* अ॰ नि॰ 2(1).62; *अथ खो अक्कोसञ्ञेव परिभासञ्ञेव पटिलभति,* मि॰ प॰ 8.

अक्कोसक त्रि॰, [आक्रोशक, आङ् + √क्रुश, आक्रोशे], भर्त्सना करने वाला, गाली देने वाला, केवल स॰ प॰ में 'अक्कोसकपरिभासक' रूप में प्राप्त - *अक्कोसकपरिभासको समणब्राह्मणानं,* अ॰ नि॰ 1(2).66; 2(1).232; 3(1).6; 3(2).144; *अक्कोसिकपरिभासिका समणब्राह्मणानं,* अ॰ नि॰ 1(2).67; *अक्कोसकपरिभासकानि ... कुलानि,* विभ॰ 277; विभ॰ अट्ठ॰ 323; - **भारद्वाजो** पु॰, एक ब्राह्मण का नाम - *अक्कोसकभारद्वाजो ब्राह्मणो,* स॰ नि॰ 1(1).188; - **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ के एक वग्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(1).232.

अक्कोसकभारद्वाजवत्थु नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ की एक कथा का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.376-78.

अक्कोसति आ + √कुस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आक्रोशति], निन्दा करता है, गाली देता है, अपशब्द बोलता है - *यस्मिं ते, तात, ठाने ठितो नन्दो अक्कोसति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.221; *भिक्खु गिही अक्कोसति परिभासति,* महाव॰ 433; - **न्ति** ब॰ व॰ - *सब्बे अम्हेयेव अक्कोसन्ती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.103; *तथागतं अक्कोसन्ति परिभासन्ति रोसेन्ति विहेसेन्ति,* म॰ नि॰ 1.194; - **न्तं** वर्त॰ कृ॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं खीणासवस्स अक्कोसन्तं वा अपच्चक्कोसनं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.368; - **न्ते** ब॰ व॰ - *परेसं पुत्ते अक्कोसन्ते वा पहरन्ते वा,* मि॰ प॰ 153; - **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ - *एत्थ ... कल्याणधम्मे*

अक्कोसथ परिभासथ रोसेथ विहेसेथ, म॰ नि॰ 1.418; - **सेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अक्कोसेय्यपि मं परिभासेय्यपि मं,* पु॰ प॰ 144; **सिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ *सचे ने भन्ते, सुनापरन्तका मनुस्सा अक्कोसिस्सन्ति परिभासिस्सन्ति* ..., स॰ नि॰ 2(2).67; - **सि / च्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *चतूहाकारेहि थेरं अक्कोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.279; *अक्कोच्छि मं,* ध॰ प॰ 3; *तत्थ अक्कोच्छीति अक्कोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.29; द्रष्ट॰ क॰ व्या॰ 500; - **सितब्ब** सं॰ कृ॰ - *न ... भिक्खुनिया भिक्खु अक्कोसितब्बो परिभासितब्बो,* अ॰ नि॰ 3(1).106.

अक्कोसन नपुं॰, √कुस से व्यु॰ [आक्रोशन], गाली, निन्दा, डांट-फटकार, अभिशाप, दुर्वचन *अक्कोसनमभिस्सङ्गो,* अभि॰ प॰ 759; *एवं छसु पि ठानेसु अक्कोसनं बोधिसत्तस्सेव आनुभावेन अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.103; - **ना** स्त्री॰, उपरिवत् - *या परेसं अक्कोसना वम्भना गरहणा उक्खेपना समुक्खेपना* ..., विभ॰ 405.

अक्कोसप्पहार पु॰, द्व॰ स॰ [आक्रोशप्रहार], गाली-गलौज और धक्का-मुक्की - *वेतनं अदेन्तेहि सद्धिं कलहं करोन्तो अक्कोसप्पहारेयेव बहू लभति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.201.

अक्कोसवग्ग पु॰, अ॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 3(2).64.

अक्कोसवचन नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आक्रोशवचन], आक्रोश से भरा वचन या कथन, निन्दावचन, दुर्वचन *अक्कोसवचनेहि,* म॰ वं॰ 37.154.

अक्कोसवत्थु नपुं॰ [आक्रोशवस्तु], शरीर वाणी और मन के द्वारों से प्रकट दस अकुशल कर्म, दुर्व्यवहार, गाली, निन्दा - *दसहि अक्कोसवत्थूहि अक्कोसन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.190; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.377; विभ॰ अट्ठ॰ 323; *दसहि अक्कोसवत्थूहि अक्कोसन्ते वधबन्धादीहि वा विहेसन्ते,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 119; *अक्कोसवत्थूहि अभिसत्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.87.

अक्कोससुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).188.

अक्कोसीयति आ + √कुस भा॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, गाली दी जा रही है, निन्दा की जा रही है; - **सियमान** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰, किसी के द्वारा निन्दित - *अप्पेव नाम तुम्हेहि अक्कोसियमानानं परिभासियमानानं रोसियमानानं विहेसियमानानं सिया चित्तस्स अञ्ञथत्तं,* म॰ नि॰ 1.418.

अक्ख[1] पु॰, [अक्ष, √अक्ष् + अच्], धुरी, धुरा, गाड़ी के बीच में प्रयुक्त लकड़ी या लोहे का वह धड़ जिस पर पहिया चलता है - *रथङ्गेक्खो,* अभि॰ प॰ 893; *अक्खो रथो ति,* मि॰ प॰ 23; ... *भिक्खवे, ... सेय्यथा वा पन अक्खं अब्भञ्जेय्य* ..., स॰ नि॰ 2(2).180; *अक्खेन अक्खं ... पटिवट्टेसि,* दी॰ नि॰ 2.75; *अक्खयुगादीनि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.116.

अक्ख[2] पु॰, [अक्ष], **1**. पासा - *अक्खो तु पासको भवे,* अभि॰ प॰ 532; *सुवण्णस्मिं पासके अक्खमिन्द्रिये,* अभि॰ प॰ 893; *अक्खं मुखे पक्खिपित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.363; *अक्खेनपि कीळन्ति,* चूळव॰ 22; *अक्खा जिता संयमो अब्भतीतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.477; *अक्खेसु धनपराजयो,* सु॰ नि॰ 664; *यो अक्खेसु धनपराजयो,* स॰ नि॰ 1(1).176; अ॰ नि॰ 1(2).4; अ॰ नि॰ 3(2).146; *विमट्ठा तुय्हं सुस्सोणी अक्खस्स फलकं यथा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.150; **2**. पासे या गोली का एक प्रकार का खेल ... *घटिकं सलाकहत्थं अक्खं* ..., दी॰ नि॰ 1.6; *अक्खन्ति गुळकीळा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.78; **3**. एक वृक्ष का नाम, बहेड़ा, जिसका बीज पासा के रूप में प्रयुक्त होता था *अक्खो विभीटको,* अभि॰ प॰ 569; **4**. तौल, दो अक्ष पांच मासा के बराबर और आठ अक्ष एक धरण के बराबर होता है - *द्वे अक्खा मासका पञ्चक्खानं धरणमट्ठकं,* अभि॰ प॰ 479.

अक्ख[3] नपुं॰, [अक्ष], ज्ञानेन्द्रिय - *विसयी त्वक्खमिन्द्रियं,* अभि॰ प॰ 149.

अक्ख[4] पु॰, केवल ब॰ स॰ में ही प्रयुक्त, स॰ उ॰ प॰ के रूप में अक्खि का ही अक्ख रूप में परिवर्तन [अक्षि], चक्षु, नेत्र, आंख - अनञ्जित॰, अलार॰, आविल॰, उत्तम॰, काल॰, लोहित॰, गव॰, चतुर॰, तम्ब॰, तिरो॰, नील॰, अपच्च॰, परो॰, भद्द॰, मत्त॰, मन्द॰, रत्त॰, विरुप॰, विसाल॰, सदिस॰, समान॰, सहस्स॰, सुन्दर॰, के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अक्खक[1] द्रष्ट॰ मोरक्खक के अन्त॰ आगे.

अक्खक[2] पु॰, [अक्षक], गिरेवान की हड्डी, गले की हड्डी - *गलन्तट्ठि तु अक्खको,* अभि॰ प॰ 278; - **ट्ठि** नपुं॰, [अक्षकास्थि], उपरिवत् - *द्वे अक्खकट्ठीनि* ..., विसुद्धि॰ 1.244; *अक्खकट्ठीनि खुद्दकलोहवासि-दण्डसण्ठानानि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 38; विभ॰ अट्ठ॰ 226; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰ अधक्खक, उब्भक्खक दक्खिणक्खक के अन्त॰.

अक्खकण्ड नपुं॰, जातक संख्या 546 के एक वर्ग का शीर्षक; जा॰ अट्ठ॰ 7.172-79.

अक्खक्खायिकछातक नपुं॰, कर्म॰ स॰, ऐसा दुर्भिक्ष, जिसमें बिना पके बहेड़ा फल को उबालकर खाया जाता था *कोट्टनामम्हि मलये अक्खखायिकछातके,* म॰ वं॰ 32.29; तुल॰ पासाण-छातक.

अक्खग्गकील पु., [अक्षाग्रकील], धुरे के अग्रभाग में लगी हुयी कील, अक्षकील – *अक्खग्गकीले आणीत्थि,* अभि. प. 374.

अक्खच्छिन्न त्रि., कर्म. स. [अक्षछिन्न], भग्न धुरा, टूटा हुआ धुरा – *यथा साकटिको मट्ठं, समं हित्वा महापथं, विसमं मग्गमारुय्ह, अक्खच्छिन्नोव झायति,* स. नि. 1(1).70; मि. प. 70.

अक्खण पु., खण का निषे., तत्पु. स. [अक्षण], अनुचित क्षण, गलत क्षण, अनुपयुक्त समय, असंगत समय, दुर्भाग्यपूर्ण क्षण – *अथक्खणे दस्सयसे विलापं,* जा. अट्ठ. 4.16; *अट्ठिमे, भिक्खवे, अक्खणा असमया ब्रह्मचरियवासाय,* अ. नि. 3(1).59; *अक्खणो असमयो ब्रह्मचरियवासाय,* दी. नि. 3.211 (कहीं-कहीं आठ की जगह नौ अनुपयुक्त क्षणों की संख्या मिलती है) – *नव अक्खणा असमया ब्रह्मचरियवासाय,* दी. नि. 3.210; – **दीपनगाथा** स्त्री., सद्धम्मो. में गाथा संख्या 4 से 52 तक के खण्ड का शीर्षक; – **सम्मत** त्रि., असमयानुकूल – *अनोकासभावेन एते अक्खणसम्मतं,* सद्धम्मो. 15.

अक्खणवेधी त्रि. [अक्षणवेधिन्], अमोघ आघात करने वाला, अचूक निशानेबाज जो क्षण में वेध करता है, समय चूके बिना लक्ष्यवेध करने वाला – *योधाजीवो दूरे पाती च होति अक्खणवेधी च महतो च कायस्स पदालेता,* अ. नि. 1(1).320; *अक्खणवेधीवालवेधिधनुग्गहे,* जा. अट्ठ. 1.68. – **टि.** यह चार प्रकार के धनुर्धरों में से एक है – *अक्खणवेधिवालवेधिसरवेधिसद्दवेधिनो,* जा. अट्ठ. 5.125; इसकी व्यु. अनिश्चित है, अट्ठकथाओं में 'अक्खणा वुच्चति विज्जु' रूप में इसका व्याख्यान संदेहास्पद है, क्योंकि पालि-निकायों में उस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग नहीं मिलता है। पालि-अंग्रेजी शब्दकोष में इसका निर्वचन संस्कृत अक्षन् से बताया गया है, जो लक्ष्य के रूप में बैल की आँख का द्योतक है; – **वेधिता** स्त्री., भाव., अचूक लक्ष्यवेध करने की स्थिति – *सिप्पञ्च सीलं अक्खणवेधिताय,* नेत्ति. 47.

अक्खणा स्त्री./नपुं., [अक्षणा], बिजली, विद्युत – *अक्खणा विज्जु,* अभि. प. 48; *अक्खणा वुच्चति विज्जु,* जा. अट्ठ. 2.75; अ. नि. 1(1).320.

अक्खण्ड द्रष्ट. अखण्ड (आगे).

अक्खत[1] त्रि., खत का निषे., तत्पु. स. [अक्षत], सुरक्षित, अदूषित, स्वस्थ, सकुशल – *अक्खतं अनुपहतं अत्तानं परिहरति,* अ. नि. 1(1).331; *अक्खतो पण्डितो सदा'ति,* अ. नि. 2(2).84; अ. नि. अट्ठ. 3.124.

अक्खत[2] नपुं., [अक्षत], छिलका न निकाला हुआ या भूसी न निकाला हुआ यव (जौ) का दाना, यवान्न, भूंजा हुआ जौ – *लाजो सियाक्खतं,* अभि. प. 463; *लाजासु च'क्खतं,* अभि. प. 1133.

अक्खदस्स पु., [अक्षदर्शक अथवा अक्षदृक्], न्यायाधीश, विवादों को हल करने वाला व्यक्ति – *न्यासादीनं विवादानमक्खदस्सो पदट्ठरि,* अभि. प. 341; *राजानो नाम ... अन्तरभोगिका अक्खदस्सा महामत्ता,* पारा. 53.

अक्खदायिकपेतवत्थु नपुं., पे. व. के चौथे वर्ग की तेरहवीं कथा का शीर्षक; पे. व. 158; पे. व. अट्ठ. 241-42.

अक्खदेवी पु., [अक्षदेविन्, अक्षद्यू], जुआड़ी, धूर्त्त, अक्षधूर्त्त, जुए के खेल में लगा रहने वाला – *धुत्तो अक्खधुत्तो कितवो जूतकारक्खदेविनो,* अभि. प. 531.

अक्खधुत्त पु., [अक्षधूर्त], जुआड़ी, द्यूतकार, जुआ के खेलने में धूर्त – *धुत्तो अक्खधुत्तो कितवो,* अभि. प. 531; *इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो, अक्खधुत्तो च यो नरो,* सु. नि. 106; जा. अट्ठ. 3.227; *अक्खधुत्ता अक्खेहि दिब्बिंसु,* दी. नि. 2.257.

अक्खन्ति/अखन्ति स्त्री., खन्ति का निषे. [अक्षान्ति], क्षान्ति का अभाव, व्याकुलता, असहिष्णुता, असन्तोष – *अहु देव अक्खन्ति अहु अप्पच्चयो,* अ. नि. 1(1).269.

अक्खपराजित त्रि., [अक्षपराजित], जुए के खेल में हारा हुआ, द्यूतक्रीड़ा में पराजित – *जूते अक्खपराजितो,* जा. अट्ठ. 3.171.

अक्खबन्धनयोत्त नपुं., तत्पु. स., रथ की धुरी की रस्सी – *अक्खबन्धनयोत्तेन एकतो बन्धित्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.191.

अक्खभग्ग त्रि., ब. स. [अक्षभग्न], टूटी धुरी के साथ, टूटी धुरी वाला – *पारं नावा अक्खभग्गञ्च यानं,* जा. अट्ठ. 5.430.

अक्खभञ्जन नपुं., [अक्षभञ्जन], धुरी का टूटना – *अयं वाणिजो अक्खभञ्जनेन अटवियं किलमति,* पे. व. अट्ठ. 242.

अक्खम त्रि., खम का निषे. [अक्षम], अक्षम, असमर्थ, सहन करने में असमर्थ, बिना सहनशक्ति वाला, क्षमता-विहीन – *ऊनवीसतिवस्सो, ... पुग्गलो अक्खमो होति सीतस्स उण्हस्स ...,* महाव. 98; *अक्खमो अप्पदक्खिणग्गाही अनुसासनिं,* पारा. 278; *अक्खमा पटिपदा,* दी. नि. 3.182; *अक्खमादीसु पधानकरणकाले सीतादीनि न खमतीति अक्खमा,* दी. नि. अट्ठ. 3.186.

अक्खमद पु., [अक्षमद], जुए का मद, द्यूत की उत्तेजना – *ते पाविसुं अक्खमदेन मत्ता,* जा. अट्ठ. 7.175.

अक्खमन नपुं., खमन का निषे. [अक्षमन], सहनशक्ति अथवा क्षान्ति का अभाव, असहिष्णुता, दूसरों की सम्पत्ति को देखकर ईर्ष्या करना – *परसम्पत्तिखीयनलक्खणा इस्सा, तस्सा अक्खमनलक्खणा वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).114.

अक्खम्भिय त्रि., [अक्षोभ्य], खम्भिय का निषे., अकम्प्य, अविक्षुब्ध, अचल – *अक्खम्भियो होति अगारमावसं,* दी. नि. 3.109; *अक्खम्भियोति अविक्खम्भनीयो, न नं कोचि ठानतो चालेतुं सक्कोति,* दी. नि. अट्ठ. 3.94.

अक्खय त्रि., खय का निषे. [अक्षय], क्षय का अभाव, लगातारपन; – **पटिभान** त्रि., प्रश्नों के उत्तर देने की कभी क्षीण न होने वाली क्षमता – *एत्थन्तरे ... अयं गङ्गाऊमिवेगो विय अक्खयपटिभानो ...,* मि. प. 3; – **विचित्रपटिमान** त्रि., प्रश्नों के उत्तर देने की कभी समाप्त न होने वाली अद्भुत क्षमता – *आयस्मा नागसेनो ... अक्खयविचित्रपटिभानो,* मि. प. 18.

अक्खयित त्रि., द्रष्ट. अक्खायित.

अक्खयुद्ध नपुं., तत्पु. स., पासा का खेल – ... *एते राजानो असठेन अक्खयुद्धं पस्सन्तु,* जा. अट्ठ. 7.173.

अक्खर पु., नपुं., [अक्षर], **1.क.** ध्वनि, वर्ण, वर्णमाला में आया हुआ अक्षर, अभिलेख, लिपि – *वण्णो तु अक्खरोप्यथ,* अभि. प. 348; *एकेकमेव अक्खरं वत्वा,* जा. अट्ठ. 3.40; *लिपिया ... इमस्स अक्खरस्स अनन्तरं इमं अक्खरं,* मि. प. 87; *अपरिमाणा पदा, अपरिमाणा अक्खरा ...,* नेत्ति. 10; *अक्खरानि दिस्वा निट्ठं गच्छेय्याथा'ति वेदेय्याथ,* जा. अट्ठ. 6.235; – **टि.** क. व्या. के अनुसार 8 स्वर-ध्वनियों और 33 व्यञ्जन-ध्वनियों अर्थात् कुल 41 तरह की अर्थ-ज्ञान में सहायक वर्णों को ही अक्खर कहते हैं – *अत्थो अक्खरसञ्ञातो, अक्खरापादयो एकचत्तालीसं,* क. व्या. 1-2; परन्तु मोग्गल्लान के अनुसार 43 वर्ण हैं जिसमें ए (ह्रस्व) और ओ (ह्रस्व) ये दो वर्ण अधिक हैं; **1.ख.** पद अथवा शब्द किसी एक शब्द के विप. के रूप में – *अपि च अञ्ञमञ्ञेहि ... अक्खरेहि अञ्ञमञ्ञेहि ... वुत्ता भगवता,* नेत्ति. 33; **1.ग.** गाथा के एक पाद अथवा एक चौथाई भाग के विप. के रूप में– *भगवन्तं गाथाय अज्झभासीति भगवन्तं अक्खरपदनियमितगन्थितेन वचनेन अभासीति अत्थो,* खु. पा. अट्ठ. 94; **2.** नपुं. लोक-कहावत, अक्षर की लकीर-मात्र, आशय को ध्यान में न रखकर केवल अक्षरमात्र – *तदेव पोराणं अग्गञ्ञं अक्खरं अनुसरन्ति, न त्वेवस्स अत्थं आजानन्ति,* दी. नि. 3.64; *अग्गञ्ञं अक्खरन्ति लोकुप्पत्तिवंसकथं,* दी. नि. अट्ठ. 3.47; **3.** कभी नष्ट न होने वाला निर्वाण का पद – *अपलोकितं निपुणमनन्तमक्खरं,* अभि. प. 7; *अक्खरं लिपि मोक्खेसु,* अभि. प. 1063; – **रत्थ** पु., तत्पु. स. [अक्षरार्थ], शब्दों का शाब्दिक अर्थ – ... *यतूहि मट्ठस्स सुद्धस्साति अक्खरत्थो,* जा. अट्ठ. 2.88; विप. अधिप्पाय; – **कोस** पु., व्याकरण से सम्बद्ध एक रचना का शीर्षक, सद्धर्मकीर्ति-रचित 'एकक्खरकोस' – *एकक्खरकोसं नाम सद्दप्पकरणं,* एकक्ख. 184; – **कोसल्ल** नपुं., तत्पु. स. [अक्षरकौशल्य], अक्षरों या वर्णों के प्रयोग में प्रवीणता, अक्षरचातुर्य, लिपियों के ज्ञान में कुशलता – *तस्मा अक्खरकोसल्लं बहूपकारं सुत्तन्तेसु,* क. व्या. 1; – **चिन्तक** पु., तत्पु. स., अक्षरों पर चिंतन करने वाला, व्याकरण का ज्ञाता – ... *अक्खरचिन्तका इच्छन्ति,* खु. पा. अट्ठ. 9; *अतीतकालिकानम्पि हि छन्दसि वत्तमानवचनं अक्खरचिन्तका इच्छन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.15; *यं छन्दञ्ञेनमत्तेन अक्खरचिन्तका सोत्तियं वण्णयन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.141; – **जाननकीळा** स्त्री., कर्म. स. [अक्षरजाननक्रीड़ा], अक्षरों या वर्णों को जानने की क्रीड़ा, आकाश में लिखित या किसी की पीठ पर लिखित अक्षरों को जानने की क्रीड़ा – *अक्खरिका वुच्चति आकासे वा पिट्ठियं वा अक्खरजाननकीळा,* दी. नि. अट्ठ. 1.78; *अक्खरिकायपि कीळन्ति,* चूळव. 22; – **पट्टिका** स्त्री./नपुं. [अक्षरपट्टिका], अभिलेख-युक्त पट्टिका, अक्षरपट्टी – *तत्थ तं अक्खरपट्टकं,* खु. पा. अट्ठ. 128, पाठा. पट्टक; – **पदनियमित** त्रि., पद्यात्मक रूप से व्यवस्थित, छन्दःशास्त्रीय नियमों द्वारा नियमित – *अक्खरपदनियमितगन्थितेन वचनेन अभासीति,* खु. पा. अट्ठ. 94; – **प्पभेद** पु., तत्पु. स., शिक्षा और निरुक्ति, ध्वनिविज्ञान और व्युत्पत्तिविज्ञान – *अक्खरप्पभेदोति सिक्खा च निरुत्ति च,* सु. नि. अट्ठ. 2.153; – **पिण्ड** पु., तत्पु. स., एक दूसरे के साथ मिले हुए अक्षरों का समूह – *अक्खरानं सन्निपातसङ्घातं अक्खरपिण्डञ्च जानाति,* ध. प. अट्ठ. 2.321; – **विपत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [अक्षरविपत्ति], अक्षरों के प्रयोग में हेर-फेर – *अक्खरविपत्तियं हि सति अत्थस्स दुन्नयता होति,* क. व्या. 1; – **विसोधनी** पञ्ञासामी-विरचित एक व्याकरण-ग्रन्थ का नाम – *सो येवाहं अक्खरविसोधनिं नाम गन्थं ...,* सा. वं. 141; – **सञ्ञात** त्रि., तत्पु. स. [अक्षरसंज्ञात], अक्षरों के द्वारा अच्छी तरह से ज्ञात (अर्थ) – *अत्थो अक्खरसञ्ञातो,* क. व्या. 1; – **सन्निपात** पु., तत्पु. स., संज्ञा, अक्षरों का

समूह, वर्णमाला, अक्षरसमाम्नाय, रू. सि. 1; - **समय** पु., तत्पु. स. [अक्षरसमय], वर्णों का परम्परा-प्राप्त अर्थ, वर्णों की परम्परागत पाठ-पद्धति - *अक्खरसमयं न जानाति,* ध. प. अट्ठ. 1.104; - **समवाय** पु., तत्पु. स. [अक्षरसमवाय], ध्वनियों का सम्मिश्रण, वर्णों की सन्धि, वर्णों का अव्यवहित सामीप्य या सन्निकर्ष, संहिता - *अक्खरसमवायो ब्यञ्जनसिलिट्ठता पदानुपुब्बतामेतन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.24; - **सम्मोहच्छेदनी** स्त्री., व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम, पालि लिट्रेचर ऑफ बर्मा, पृ. 106; स. उ. प. में द्रष्ट. अन्त., अन्व., अपर., अव्यत्त (पद)., आदि., चतुर., चतुवीसत., चित्त., पमित., पुब्ब., बट्ट., साक्खर., सञ्ञ., सोळस. के अन्त., तुल. अक्खरा.

अक्खर-उत्तरिक-यमक जिना. 105-8 में उदाहृत एक प्रकार के अन्त्यानुप्रास का विशिष्ट रूप.

अक्खरा स्त्री., [वै. अक्षरा, सर्वथा भिन्न अर्थ में], अक्षर, वाक्य एवं पद से भिन्न केवल अक्षर-मात्र - *अक्खराय वाचेति, अक्खरक्खराय आपत्ति पाचितियस्स,* पाचि. 26, तुल. अक्खर.

अक्खरिका स्त्री., [अक्षरिका], एक प्रकार के खेल का नाम, आकाश या पीठ पर लिखे अक्षर को जानने का खेल - *अक्खरिका वुच्चति आकासे वा पिट्ठियं वा अक्खरजाननकीळा,* दी. नि. अट्ठ. 1.78; *अक्खरिकायपि कीळन्ति,* चूळव. 22.

अक्खरुक्खपेतवत्थु पे. व. के एक खण्ड का शीर्षक - *अक्खरुक्खपेतवत्थु तेरसमं,* पे. व. 158.

अक्खलित त्रि., द्रष्ट. अखलित.

अक्खवाट पु. [अक्षवाट या अक्षपाट], अखाड़ा, कुश्ती खेलने का स्थान, एक खेल का घेरा - *अक्खवाटं कारेत्वा* ... जा. अट्ठ. 4.73.

अक्खा अक्खाति का अनद्य. द्रष्ट. अक्खाति के अन्त. (आगे).

अक्खात त्रि. अ + √ख्या का भू. क. कृ. [आख्यात], कहा गया, व्याख्या किया गया, उद्घोषित, उपदिष्ट, घोषणा किया हुआ - *अक्खातं वो यथातथं,* सु. नि. 174; *अक्खातो वो मया मग्गो,* ध. प. 275; इतिवु. 14; *अक्खातं नून तं तेन, यो तं साखमकम्पयि,* जा. अट्ठ. 3.372; तुल. आख्यात स. उ. प. में द्रष्ट. अन., दुर., सम्मद., स्वा. के अन्त.; - **रूप** त्रि., ब. स. [आख्यातरूप], पूर्णतः प्रसिद्ध, ठीक से जाना हुआ, सुपरिचित - *अक्खातरूपं तव सब्बमित्ता,* जा. अट्ठ. 5.17; *अक्खातरूपन्ति सभावतो अक्खातं,* जा. अट्ठ. 5.18.

अक्खाता पु. [आख्याता], **क.** कहने वाला, मिथ्यावाद या झूठी निन्दा करने वाला - *अमुत्र वा सुत्वा न इमेसं अक्खाता,* दी. नि. 1.4; अ. नि. 3(2).233, 235, 252, पु. प. 168; **ख.** उपदेष्टा, शास्ता, शिक्षक - *अनक्खातस्स मग्गस्स अक्खाता,* स. नि. 1(1).221; *अक्खातारं पवत्तारं,* सु. नि. 169; *तुम्हेहि किच्चमातप्पं अक्खातारो तथागता,* ध. प. 276; **ग.** अनुभव-सिद्ध व्यक्ति - *अक्खेय्यञ्च परिञ्ञाय, अक्खातारं न मञ्ञति,* स. नि. 1(1).13.

अक्खाति आ + √ख्या का वर्त., प्र. पु., ए. व., समझाता है, घोषणा करता है, कहता है - ... *अक्खाति विभजते इधेव धम्मं,* सु. नि. 87; *गुय्हञ्च तस्स नक्खाति, तस्स गुय्हं न गूहति,* जा. अट्ठ. 4.176, (वैकल्पिक रूप, आचिक्खति); - **सि** म. पु., ए. व. - *यं मे त्वं सम्म अक्खासि,* जा. अट्ठ. 4.37; 7.264; - **मि** उ. पु., ए. व. - *एतं वो अहमक्खामि,* सु. नि. 174; - **म** उ. पु., ब. व. - *ते मयमक्खाम,* जा. अट्ठ. 7.277; - **यन्तस्स** वर्त. कृ., ष. वि., ए. व. - *राजकुलं गन्त्वा अक्खायन्तस्स,* जा. अट्ठ. 3.91; - **हि** अनु., म. पु., ए. व. - *अक्खाहि मे भगवा दक्खिणेय्ये,* सु. नि. 493; जातिं अक्खाहि पुच्छितो, सु. नि. 423; - **थ** अनु., म. पु., ब. व. - *अक्खाथ नो ब्राह्मणा के नु तुम्हे,* जा. अट्ठ. 5.386; - **क्खेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. *अक्खेय्य तिब्बानि परस्स धीरो,* जा. अट्ठ. 4.202; पाठा. आचिक्खेय्य; - **क्खिस्सं** भवि., उ. प., ए. व. - *एहि ते अहमक्खिस्सं,* जा. अट्ठ. 7.284; - **क्खा** अद्य., प्र./म. पु., ए. व. - *उदाहु ते कोचि नं एतदक्खा,* जा. अट्ठ. 4.242; *यमेतमक्खा उदधिं महन्तं,* जा. अट्ठ. 6.187; - **क्खिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *तस्साहं अक्खिं विवरिं गुय्हमत्थं,* जा. अट्ठ. 5.73; - **क्खंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *पुब्बेवमेतमक्खंसु,* जा. अट्ठ. 3.424; - **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *अक्खासि नं वेदयि मन्तपारगू,* सु. नि. 254; 509; 1137; जा. अट्ठ. 4.231; जा. अट्ठ. 6.119; 128; - **तु** निमि. कृ. - ... *सक्का निब्बानस्स सच्छिकिरियाय मग्गो अक्खातुं ...,* मि. प. 251.

अक्खान नपुं. [आख्यान], **क.** घोषणा, विज्ञप्ति, कथन - **नेन** तृ. वि., ए. व. - *न सुकरा अक्खानेन पापुणितुं याव दुक्खा निरया,* म. नि. 3.206; **ख.** कहानियों और मिथकों पर आधारित रङ्गमञ्चीय प्रदर्शन, जन-मनोरञ्जन की शृंखला की एक कड़ी - **नं** प्र. वि., ए. व. - *नच्चं गीतं वादितं पेक्खं अक्खानं पाणिस्सरं वेताळं ...,* दी. नि. 1.6; *अक्खानन्ति भारतयुज्झनादिकं,* दी. नि. अट्ठ. 1.77; - **पञ्चम** त्रि., ब.

स॰ [आख्यानपञ्चम], चार वेदों के साथ अतिरिक्त पांचवे के रूप में प्राचीन महाकाव्य या इतिहास – **मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वेदमक्खानपञ्चमन्ति इतिहासपञ्चमं वेदचतुक्कं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.449.

अक्खायति आ + √ख्या का कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आख्यायति], उद्घोषित किया जाता है, कहा जाता है – *एवमक्खायति एवमनुसूयति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.411; *सो नेसं अग्गमक्खायति,* दी॰ नि॰ 3.61.

अक्खायिक त्रि॰, [आख्यापक], कथक, कहने वाला, वर्णन करने वाला – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पियक्खानं अक्खायिका मय्हं तुट्ठिदानं देहि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.471.

अक्खायिका स्त्री॰ [आख्यायिका], सुसंगत कहानी, कथा, केवल समास के स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त, लोक॰, समुद्द॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अक्खायित त्रि॰, खायित का निषे॰ [अखादित], नहीं खाया गया, अभक्षित (भोजन आदि) – *सिवथिकं गन्त्वा अक्खायितं सरीरं पस्सित्वा,* पारा॰ 42; परि॰ 56.

अक्खायी त्रि॰, [आख्यायिन् आ√ख्या + णिनि], कहने वाला, सूचना देने वाला – **यिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पुब्बमेव राजकुलं गन्त्वा अक्खायन्तस्स पुब्बमक्खायिनो* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.91.

अक्खाहत त्रि॰, धुरे पर दृढ़रूप से रखा हुआ – *चक्कं* ... *अक्खाहतं मञ्ञे अट्ठासी'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).135; *अक्खे पवेसेत्वा ठपितमिव,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.82.

अक्खि नपुं॰, [अक्षि], आंख, नेत्र – *नयनं त्वक्खि नेत्तं च लोचनं चाच्छि चक्खु च,* अभि॰ प॰ 149; *सूकेनक्खीव घट्टितं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.188; – **म्हा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्खिम्हा अक्खिगूथको, कण्णम्हा कण्णगूथको,* सु॰ नि॰ 199; – **क्खीनि** प्र॰/द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अक्खीनि ... वाता विज्झन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.6; *अक्खीनि उम्मीलेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.113; – **क्खीहि** प॰ वि॰, ब॰ ब॰ – *अक्खीहि अस्सूनि पग्घरन्ते,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.6; *अक्खीहि अस्सुना पग्घरन्तेन,* जा॰ अट्ठ॰ 1.219; – **क्खीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अक्खीनं अनिमिसताय,* जा॰ अट्ठ॰ 6.163; तुल॰ अक्ख, अच्छि, अक्खिक; – **अञ्जन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आंख का अञ्जन – *पण्डुकासावपारूपनअक्खिअञ्जनसीसमक्खनादीहि अत्तभावं मण्डेत्वा* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.205; – **आवाटक** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षि आवर्तक], आंख की गर्तिका, आंख का कोटर, अक्षिकूप, – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अक्खिआवाटका मत्थलुङ्गं आहच्च अट्ठंसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).362.

अक्खिक[1] त्रि॰, [अक्षिक], आंखवाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त; अन॰, अञ्जन॰, अण्ड॰, तम्ब॰, मणि॰, मण्डल॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अक्खिक[2] पु॰/नपुं॰, [अक्षिक], स॰ पू॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त, जाल का छिद्र, जाल में आंख की आकृति का छिद्र; – **हारक** त्रि॰, जाल को ले जानेवाला – *पुरिसो अक्खिकहारको गन्त्वा उब्भतेहि अक्खीहि आगच्छेय्य,* म॰ नि॰ 2.52, द्रष्ट॰ जालक्खिक के अन्त॰.

अक्खिक[3] त्रि॰ [आक्षिक], जुए से जीता हुआ, जुआड़ी, द्यूतकार, पासों से जुआ खेलने वाला – *अक्खेन दिब्बती ति अक्खिको,* क॰ व्या॰ 353; मो॰ व्या॰ 4.29.

अक्खिकूट नपुं॰, [अक्षिकूट], आंख का कोर या कोना – **टानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उभयतो च अक्खिकूटानि भगवतो लोहितकानि होन्ति,* महानि॰ 261; *अक्खिकूटादीनि लुञ्चित्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).283; – **टेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सेतेहि अक्खिकूटेहि समन्नागता* ..., जा॰ अट्ठ॰ 7.309.

अक्खिकूप पु॰, [अक्षिकूप], आंख का कोटर या अक्षि-विवर – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्खि अक्खिकूपतो मुञ्चि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.365; *अक्खि ओसधबलेन परिब्भमित्वा अक्खिकूपतो निक्खमित्वा न्हारुसुत्तकेन ओलम्बमानं अट्ठासि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.365; – **पेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अक्खिकूपेसु अक्खितारका,* म॰ नि॰ 1.115; तुल॰ अक्खि आवाटक; – **पट्ठि** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिकूपस्थि], आंख के भीतर की हड्डियों में से एक – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्खिकूपट्ठिना हेट्ठा,* अभि॰ अव॰ 641; – **क** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिकूपक], आंख का कोटर, आंख का विवर या कोटरिका – **केसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ओकासतो अक्खिकूपकेसु ठितन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 49; – **कट्ठिक** नपुं॰, आंख के गड्ढे की हड्डी – *तत्थ योयं अक्खिकूपके पतिट्ठितो हेट्ठा अक्खिकूपकट्ठिकेन,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 341.

अक्खिकोटि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिकोटि], आंख का कोना, आंख का किनारा – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्खिकोटिया ओलोकेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.363; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्खिकोटितो अञ्जनसलाकाय नीहरित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.371; – **टिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्खिकोटिं पहरि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.380.

अक्खिगण्ड पु॰, कर्म॰ स॰ [अक्षिगण्ड], बरौनियों तथा पलकों के साथ दिखने वाला आंख का गोलक, अक्षिगोलक – **ण्डा**

प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *आळारपम्हाति विसालक्खिगण्डा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.260.

अक्खिगूथ पु॰/नपुं॰, [अक्षिगूथः], आंख का कीचड़ या मल - *अक्खिमलन्ति अक्खिगूथं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 171; - **क** पु॰, उपरिवत् - *अक्खिम्हा अक्खिगूथको,* सु॰ नि॰ 199; *पीळकोळिकाति अक्खिगूथको,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 281.

अक्खिछिद्द नपुं॰ [अक्षिछिद्र], आंख का छिद्र - *द्वीहि अक्खिच्छिद्देहि अपनीततचमंससदिसो अक्खिगूथको,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.209.

अक्खिज त्रि॰, [अक्षिज], आंख पर विद्यमान बरौनी - *पम्हं पखुममक्खिजं,* अभि॰ प॰ 259.

अक्खितारका स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षितारका], आंख की पुतली - *तेनस्स एवरूपा अक्खितारका अहेसुं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).362; ... *केसे वा पित्ते वा अक्खितारकाय वा करोति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 235.

अक्खित्त[1] त्रि॰, खित्त का निषे॰ [अक्षिप्त], अनुपेक्षित, अनिन्दित, अतिरस्कृत - ... *याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन ...,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 173 = दी॰ नि॰ 1.99.

अक्खित्त[2] त्रि॰, [आक्षिप्त], दूर तक खींचकर ले जाया गया, दूर ले जाकर फेंक दिया गया - *अक्खित्ता वातवेगेन,* जा॰ अट्ठ॰ 3.223.

अक्खिदल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिदल], आंख की पलक, नेत्रच्छद - *हेट्ठिमं अक्खिदलं अधो सीदति, उपरिमं उद्धं लङ्घेति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.158.

अक्खिपटल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिपटल], आंख की झिल्ली या झिल्लिका - *सत्तक्खिपटलानि ब्यापेत्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 342.

अक्खिपात पु॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिपात], दृष्टिपात, नज़र का गिरना, स॰ उ॰ प॰ में ही प्रयुक्त, द्रष्ट॰ मन्द॰ के अन्त॰.

अक्खिपूजा त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिपूजा], एक महोत्सव का नाम; सम्राट अशोक द्वारा प्रार्थित होकर चार बुद्धों के दर्शनकारी ऋद्धिसम्पन्न महाकालरूप नागराज ने सम्राट को सम्यक्-सम्बुद्ध का निर्मित रूप प्रदर्शित करवाया. बुद्ध के मनमोहक रूप को देखकर सम्राट अतिविस्मित हो उठे. इस रूपदर्शन से प्रभावित होकर महान् सम्राट ने सप्ताहपर्यन्त निरन्तर अक्षिपूजा नामक महोत्सव करवाये थे - *अक्खिपूजं ति सञ्ञातं तं सत्ताहं निरन्तरं, महामहं महाराजा कारापेसि महिद्धिको,* म॰ वं॰ 5.94.

अक्खिपूर त्रि॰, आंखों में पूरी तरह से भरा हुआ, आंखों को पूर्णरूप से भर देने वाला - *सो अक्खिपूरानि अस्सूनि गहेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.36.

अक्खिमण्डल नपुं, तत्पु॰ स॰ [अक्षिमण्डल], आंख का गोल घेरा - *एतस्मिं अक्खिमण्डले उभोसु कोटीसु विसगन्धं वायन्तो निब्बत्तति,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 281; **अक्खिमल** नपुं, तत्पु॰ स॰ [अक्षिमल], आंख से निकलने वाला कीचड़ या मैल - *अक्खिमलन्ति अक्खिगूथं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 171.

अक्खिरोग पु॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिरोग], आंख का रोग - *मज्झिममासे सम्पत्ते अक्खिरोगो उप्पज्जि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.6.

अक्खिलोम नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अक्षिलोमन्], आंख का रोयां, बरौनी - *अक्खिलोमानि च भगवतो ... उमापुप्फसमानं,* महानि॰ 261.

अक्खुद्दावकास त्रि॰, ब॰ स॰, पर्याप्त आकार-प्रकार से सम्पन्न, दिखने में सुस्पष्ट - *अखुद्दावकासोति एत्थ भगवतो अपरिमाणोयेव दस्सनाय ओकासोति वेदितब्बो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.229.

अक्खेतुं आ + √खी का निमि॰ कृ॰ [आक्षेतुं?], विनाश करने के लिए, अन्त करने के लिए - *अक्खेतुं खेपेतुं विनासेतुं उलति पवत्तेतीति अक्खुलो,* उदा॰ अट्ठ॰ 54.

अक्खेम/अखेम त्रि॰, खेम का निषे॰, ब॰ स॰ [अक्षेम], असुरक्षित, अमंगलमय - *अकुसलन्ति सावज्जं अक्खेमञ्च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).121; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, असुरक्षित स्थिति, अमंगलमय अवस्था - *तन्निस्सितस्स च अखेमतं चिन्तेत्वा ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 255; - **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰, अमंगल का भाव - *तेसं द्विन्नम्पि अखेमभावं चिन्तेत्वा ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 255.

अक्खेय्य त्रि॰, अक्खाति का सं॰ कृ॰ [आख्येय], अच्छी तरह कहे जाने योग्य, शब्दों द्वारा बतलाये जाने योग्य - *नामंयेवावसिस्सति, अक्खेय्यं पेतस्स जन्तुनो,* सु॰ नि॰ 814; *अक्खेय्यञ्च अपरिञ्ञाय, अक्खातारं न मञ्ञति,* स॰ नि॰ 1(1).13; - **सञ्ञी** त्रि॰, धर्मों के विषय में केवल लौकिक संज्ञा अथवा व्यावहारिक ज्ञान रखने वाला व्यक्ति - **ञ्ञिनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अक्खेय्यसञ्ञिनो सत्ता, अक्खेय्यस्मिं पतिट्ठिता,* स॰ नि॰ 1(1).13; - **सम्पन्न** त्रि॰, लौकिक ज्ञान द्वारा जानने योग्य विषयों की समझ रखने वाला - *स वे अक्खेय्यसम्पन्नो, सन्तो सन्तिपदे रतो,* इतिवु॰ 40.

अक्खोब्भ त्रि॰, खोब्भ का निषे॰ [अक्षोभ्य], स्थिर, धीर, क्षोभ-रहित - *सागरो विय अक्खोब्भो,* मि॰ प॰ 18.

अक्खोभणी स्त्री॰ अक्खोभण से व्यु॰, अविचलित, शान्त – *अक्खोभणी अपरियन्ता, सागरस्सेव ऊमियो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.314; *अक्खोभणीति खोभेतुं न सक्का,* जा॰ अट्ठ॰ 5.315.

अक्खोभित त्रि॰, खोभित का निषे॰ [अक्षुब्ध], स्थिर, शान्त – *अघट्टितो ति अक्खोभो,* महानि॰ अट्ठ॰ 304.

अक्खोभिय / अखोभिय त्रि॰, खोभिय का निषे॰ [अक्षोभ्य], अप्रकम्प्य, किसी के द्वारा न कंपाये जाने योग्य, – *सागरोव अखोभियाति अञ्ञेहि अखोभियो अनालुळितो ... कम्पेतुं असक्कुणेय्या ...,* अप॰ अट्ठ॰ 1.229.

अक्खोहिणी स्त्री॰ [अक्षौहिणी, अक्ष + ऊहिणी, अक्ष् + ऊह + णिनि + ङीप्], **1**. एक पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें 21,870 रथों, 21,870 हाथियों, 65,610 घोड़ों तथा 109,350 पैदलों की सेना हो; किन्तु अभि॰ प॰ 475 और क॰ वु॰ 397 के अनुसार एक संख्या के बाद 42 शून्य देने से अक्षौहिणी की संख्या मिलती है (कोटि-पकोटि-कोटिप्पकोटि-नहुत-निन्नहुत-अक्खोहिणी); चाईल्डर्स का भी वही मत है, चाईल्डर्स, पृ॰ 25; तुल॰ अभि॰ प॰ 384; *(सट्ठिवंसकलापेसु पच्चेकं सट्ठिदण्डिसु, धूलिकतेसु सेनाय यन्तियाक्खोहिणीत्थियं),* और म॰ वं॰ टी॰ 451 *(... चतुद्दसकोटिसहस्सानि कोटिसतं च एकादसकोटियो चा ति एवं अक्खोहिणीसेनाय पमाणं जानितब्बं);* – **महासेनाघात** पु॰, तत्पु॰ स॰, एक अक्षौहिणी महासेना का विनाश – *येन मे अक्खोहिणीमहासेनाघातो कारापितो इति,* म॰ वं॰ 25.108; – **परिवार** पु॰, एक अक्षौहिणी सेना का समूह – *चतुवीसतिअक्खोभणिपरिवारेन सद्धिं एकसतराजानो गहेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.311; – **सङ्ख** त्रि॰, ब॰ स॰, अक्षौहिणी संख्या वाली सेना – *अट्ठारस अक्खोभणिसङ्खाय सेनाय परिवुता,* जा॰ अट्ठ॰ 6.224; तुल॰ चतुरंगिणी; **2**. बहुत बड़ी संख्या की संज्ञा; अभि॰ प॰ 475; *निन्नहुतसतसहस्सानं सतं अक्खोहिणी,* क॰ व्या॰ 397.

अखण्ड त्रि॰, खण्ड का निषे॰, ब॰ स॰ [अखण्ड], जो टूटा नहीं हो, पूर्ण, निर्दोष – *... बीजानि पतिट्ठपेय्य अखण्डानि अपूतीनि अवातातपहतानि सारदानि सुखसयितानि,* दी॰ नि॰ 2.260; *यानि तानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि ...,* म॰ नि॰ 1.404; *पञ्चसीलानि अखण्डादीनि कत्वा रक्खाही'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.157; – **कारी** त्रि॰ [अखण्डकारिन्], पूर्ण रूप से करने वाला, सही ढंग से कार्य करने वाला – *अयमायस्मा अखण्डकारी अच्छिद्दकारी ...,* अ॰ नि॰ 1(2).217; 278; *अखण्डकारिना भवितब्बं ...,* मि॰ प॰ 105; – **रिता** स्त्री॰, भाव॰, सम्पूर्ण रूप से कार्य करने की मनोवृत्ति या अवस्था – *तत्थ या संवरसीले अखण्डकारिता,* नेत्ति॰ 38; – **पञ्चसील** त्रि॰, कर्म॰ स॰, पांच शीलों का पूर्णरूप से पालन या अनुल्लङ्घन करने वाला – *अखण्डपञ्चसीलायेव होति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.60; – **फुल्ल** त्रि॰, अखण्ड, अटूट, अभग्न, अक्षुण्ण, अक्षत – *तथेव सिक्खापदानि पञ्च अखण्डफुल्लानि समादियस्सु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.22.

अखर त्रि॰, खर का निषे॰ [अखर], जो कड़ा न हो, कोमल, मृदुल – *... खरेन पासाणेन धोतत्ता ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.247; संभवतः यहां अखरेन की जगह खरेन का जो पाठ मिलता है, वह अशुद्ध है.

अखलित त्रि॰, खलित का निषे॰ [अस्खलित], अटल, स्खलन से रहित, निष्पाप – *अखलितमभयं निरुपतापं,* थेरीगा॰ 514; *खलितसङ्खातानं दुच्चरितानं अभावेन अखलितं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 316.

अखात त्रि॰, खात का निषे॰ [अखात], नहीं खोदा हुआ, नैसर्गिक सरोवर, स्वाभाविक जलाशय – *अखातं तु देवखातकं,* अभि॰ प॰ 680.

अखादन्त त्रि॰, √खाद का वर्त॰ कृ॰, निषे॰ [अखादत्], नहीं खा रहा, भोजन नहीं कर रहा – **न्तियो** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यथा ता तिणं अखादन्तियो पानीयं अपिबन्तियो सयन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.18.

अखादितपुब्ब त्रि॰, ब॰ स॰ [अखादितपूर्व], जो पहले न खाया गया हो – *तुम्हे किञ्चि अखादितपुब्बं खादन्ता ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.173; *अखादितपुब्बानि च तिणानि खादेय्यं,* अ॰ नि॰ 3(1).225.

अखारिक त्रि॰, खारिक का निषे॰ [अक्षारिक], तीखेपन अथवा खट्टापन से रहित – *अखारिकम्पि विजानाति ...,* स॰ नि॰ 2(1).81.

अखिल त्रि॰, खिल का निषे॰, **1.क**. खिल अथवा क्लेशों से रहित, चित्त की अनुर्वरता से रहित, क्लेशरहित, पवित्र – *अखिलमनिमित्तमकण्टकं इद्धं फीतं खेमं सिवं ...,* दी॰ नि॰ 3.108; **1.ख** राग, द्वेष एवं मोह नामक तीन अकुशलमूलों एवं पांच नीवरणों से जनित चित्त की रूक्षता एवं कर्कशता से रहित अथवा मुक्त – *सञ्ञा पमुत्तं अखिलं अनासवं ...,* सु॰ नि॰ 214; *पञ्चचेतोखिलचतुआसवाभावेन अखिलं ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.219; **2**. अन्तराल-रहित, जो त्रुटिपूर्ण न हो, निर्दोष, कुल मिलाकर, समूचे तौर पर – *सब्बं समत्तमखिलं निखिलं सकलं तथा,* अभि॰ प॰ 702; *... इति अट्ठारसाखिला,* म॰ वं॰ 5.10; 23.13.

अखीण त्रि., खीण का निषे. [अक्षीण], वह, जिसे कोई क्षति अथवा हानि नहीं हुई है, हानि-रहित - *खीणम्पि अखीणम्पि न तं जहन्ति,* जा. अट्ठ. 3.435; - **वचन** त्रि., ब. स. [अक्षीणवचन], कर्कश वचन न बोलने वाला, मृदुभाषी - ... *न अखीणवचनोति अत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 1.176; - **ब्यप्पथ** त्रि., ब. स., उपरिवत् - *न खीणब्यप्पथो ति (पाठा. नाखीणब्यप्पथो तिपि पाठो) न फरुसवाचो,* सु. नि. अट्ठ. 1.176; - **णासव** त्रि., ब. स., वह, जिसके चित्त के आस्रव क्षीण नहीं हुए हैं - *भिक्खु अखीणासवो कालङ्करोति,* म. नि. 3.177, अप. अखील.

अखीलक त्रि., ब. स. [अकीलक], कांटा-रहित, कण्टकमुक्त - *अखीलकानि च अवण्टकानि ... किंरुक्खफलानि तानि,* जा. अट्ठ. 5.193.

अखेत्त त्रि., खेत्त का निषे., ब. स. [अक्षेत्र], **शा. अ.** भूमि-रहित, क्षेत्र-रहित - *अखेत्तबन्धू अममो निरासो,* जा. अट्ठ. 4.269; *तत्थ अखेत्तबन्धूति अक्खेत्तो अबन्धु, खेत्तवत्थुगामनिगमपरिग्गहेन ... रहितो,* जा. अट्ठ. 4.270; **ला. अ.** अविषय, अपात्र, अनुपयुक्त स्थल - *अखेत्तञ्ञूसि दानस्स,* जा. अट्ठ. 4.334; - **ञ्ञ** त्रि., खेत्तञ्ञ का निषे. [अक्षेत्रज्ञ], जो क्षेत्र या भूमि को ठीक से नहीं जानता है - *अखेत्तञ्ञाय ते मद्दि, भविस्सते महब्भयं,* जा. अट्ठ. 7.263; *अखेत्तञ्ञायाति अरञ्ञभूमिअकुसलताय,* जा. अट्ठ. 7.264; - **ञ्ञू** त्रि., खेत्तञ्ञू का निषे. [अक्षेत्रज्ञ], **शा. अ.** खेत को न जानने वाला - *गावी पब्बतेय्या बाला अब्यत्ता अखेत्तञ्ञू अकुसला विसमे पब्बते चरितुं,* अ. नि. 3(1).226; **ला. अ.** अनुपयुक्त पात्र, उचित अवसर अथवा कुशल कर्मों को करने के लिए उपयुक्त भूमि को न जानने वाला, मूर्ख, अज्ञानी - *अखेत्तञ्ञूसी दानस्स, कोयं धम्मो नमत्थु ते,* जा. अट्ठ. 4.334; - **बन्धु** त्रि., ब. स. [अक्षेत्रबन्धु], खेतों एवं जाति-बन्धुओं से विहीन, ममता-रहित - *अखेत्तबन्धू अममो निरासो,* जा. अट्ठ. 4.269; - **भाव** पु. [अक्षेत्रभाव], दान आदि शोभन कर्मों के लिए अनुपयुक्त भूमि या पात्र - *अधुना अभिञ्ञालाभीनं पुग्गलानं अखेत्तभावेन ...,* सा. वं 69. (ना.)

अग पु. [अग], **शा. अ.** अचल, अडिग, **ला. अ.** वृक्ष एवं पर्वत - *पादपो विटपी रुक्खो अगो साळो महीरुहो,* अभि. प. 539.

अगणित त्रि., गणित का निषे. [अगणित], वह, जो गणना के अन्दर न आये, अनन्तर्भूत - *अगणितं अट्ठहि हेतूहि ...,* मि. प. 121; 148.

अगण्हन नपुं., गण्हन का निषे. [अग्रहण], न पकड़ना, समझ में न आना, अस्वीकरण - *उण्हस्स डाहभयेन अगण्हनं विय अपायभयेन पापस्स अकरणं वेदितब्बं,* ध. स. अट्ठ. 171.

अगत त्रि., गत का निषे. [अगत], अप्राप्त, वह, जिसे प्राप्त नहीं किया गया है - *नहि एतेहि यानेहि, गच्छेय्य अगतं दिसं,* ध. प. 323; - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अगता दिसा वुच्चति अमतं निब्बानं,* महानि. 355; - **पुब्ब** त्रि., ब. स. [अगतपूर्व], वह स्थान, जहां पहले कोई न गया हो - **ब्बाय** स्त्री., सप्त. वि., ए. व. - *अगतपुब्बाय वा दिसाय, अस्सुतपुब्बाय वा नामपञ्ञत्तिया सम्मुय्हेय्याति,* मि. प. 41; - **ब्बं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *सचितमनुरक्खे, पत्थयानो दिसं अगतपुब्बं,* जा. अट्ठ. 1.382; जा. अट्ठ. 3.206.

अगति स्त्री., गति का निषे. [अगति], **शा. अ.** अनागमन, अप्रवेश - *अगति यत्थ मारस्स, तत्थ मे निरतो मनो'ति,* स. नि. 1(1).157; *समुद्दं अज्झगाहासि, अगती यत्थ पक्खिनं,* जा. अट्ठ. 5.245; **ला. अ.** प्रायः यह चार प्रकार की दुःखद गतियों या पुनर्जन्मों के अर्थ में तथा कुशलकर्मों की अवहेलना करने के अर्थ में भी प्रयुक्त - *चतस्सो अगतियो वज्जेत्वा,* जा. अट्ठ. 1.252; *छन्दा दोसा मोहा भया अगतिं गन्तुं ...,* पारा. अट्ठ. 1.7; खु. पा. अट्ठ. 75; *छन्दादिवसेन अगतिं गच्छन्ता,* जा. अट्ठ. 1.324; - **किलेस** पु., चार प्रकार की दुःखद गतियों की ओर ले जाने वाले क्लेश - *छन्दादीहि अगतिकिलेसेहि अमुच्छितो,* जा. अट्ठ. 3.391; - **गत** त्रि., दुःखद गतियों की ओर ले जाने वाला, भ्रामक या संदेहास्पद स्थिति में पहुंचा हुआ - *कोसलराजा एकं अगतिगतं दुब्बिनिच्छयं अड्डं विनिच्छिनित्वा ...,* जा. अट्ठ. 2.1; - **गमन** नपुं, तत्पु. स. [अगतिगमन], चार दुःखद गतियों की ओर ले जाने वाले अशोभन मार्ग का अनुगमन, जीवन में पापकर्मों का आचरण - *पञ्चालो नाम राजा अगतिगमने ठितो अधम्मेन पमत्तो रज्जं कारेसि,* जा. अट्ठ. 5.93; *अगतिगमनं पहाय,* जा. अट्ठ. 3.240; ध. प. अट्ठ. 2.104; *छन्दागमनन्ति छन्दादिचतुब्बिधम्पि अगतिगमनं,* जा. अट्ठ. 5.266; *चत्तारिमानि, भिक्खवे, अगतिगमनानि,* अ. नि. 1(2).21; स. उ. प. में द्रष्ट. छन्दा., छन्दादि., दोसा., भया., मोहा..

अगथित / अगधित त्रि., गथित या गधित का निषे. [अग्रथित], **शा. अ.** जो आपस में बंधा न हो, जो फंसा न हो, **ला. अ.** लोभ-लालच की जकड़न से मुक्त, सभी तरह के लगावों से

रहित – *अगथितो अमुच्छितो अनज्झोपन्नो आदीनवदस्सावी निस्सरणपञ्ञो परिभुञ्जति,* म॰ नि॰ 2.36; दी॰ नि॰ 3.179; *अगधितोति विगतलोभगिद्धो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.178.

अगद पु॰ [अगद], औषधि, प्रतिरोधक औषधि, भैषज्य – *भेसज्जमगदो चेव भेसजं चोसधं प्यथ,* अभि॰ प॰ 330; *अगदे किमि न सण्ठाति,* अप॰ 1.43; *अगदे विय अगदो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.63; *हलाहलं खणेन अगदं भवति,* मि॰ प॰ 126; *ओसधन्ति तदा आयतिञ्च आरोग्यावहं अगदं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 171; *अगदेन किर दाठा धोवित्वा एकं सप्पं पेसेतू'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.123; – **दङ्गार** पु॰/नपुं॰, व्रण के लिए प्रयुक्त एक औषधीय चूर्ण, हर्रे अथवा आंवला से बनाया गया चूर्ण – *तस्स सो भिसक्को सल्लकत्तो अगदङ्गारं वणमुखे ओदहेय्य,* म॰ नि॰ 3.4; *अगदङ्गारन्ति झामहरीतकस्स वा आमलकस्स वा चुण्णं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.2; – **दामलक** पु॰/नपुं॰, कर्म॰ स॰, औषधि के रूप में प्रयुक्त आंवला का फल – *अगदामलकञ्चेव तथागदहरीतकं,* म॰ वं॰ 5.26; – **सम** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, औषधि जैसा, दवा के समान हितकारी – ... *सीलवा, महाराज, सीलसम्पन्नो अगदसमो सत्तानं किलेसविनासने,* मि॰ प॰ 188; – **हरीतक** पु॰/नपुं, औषधि के रूप में प्रयुक्त हर्रे की जड़ी-बूटी – *अगदामलकं चेव तथागदहरीतकं,* म॰ वं॰ 5.26; पाठा॰ हरितक.

अगन्तु पु॰, √गम के कर्तृ॰ कृ॰ का निषे॰ [अगन्तृ], नहीं जाने वाला व्यक्ति – *अगन्ता निरयं* ..., स॰ नि॰ 3(2).440.

अगन्थनिय त्रि॰, √गन्ध के सं॰ कृ॰ का निषे॰, एक जुट न करने योग्य, आपस में बांधकर नहीं रखने योग्य, नहीं गूंथने योग्य – *अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु-इमे धम्मा अगन्थनिया,* ध॰ स॰ 1147; द्रष्ट॰ गन्थनिय (आगे).

अगन्धक त्रि॰, गन्धक का निषे॰ [अगन्धक], गन्धरहित, निर्गन्ध – *यथापि रुचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं अगन्धकं,* ध॰ प॰ 51; *अगन्धकन्ति गन्धविरहितं* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.215; – **न्धिका** स्त्री॰ – *माला सेरेय्यकस्सेव, वण्णवन्ता अगन्धिका,* जा॰ अट्ठ॰ 3.221.

अगन्धता स्त्री॰, भाव॰, गन्धरहितता – *अगन्धताय गन्धेन न तप्पेति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.221.

अगब्भसेय्यक त्रि॰, गब्भसेय्यक का निषे॰, ब॰ स॰ [अगर्भशयानक], जो गर्भ में नहीं आया है, जिसने गर्भ में शयन नहीं किया है, जिसने मातृकुक्षि में प्रवेश या अवतरण नहीं किया है – *अगब्भसेय्यका सत्ता येव,* मि॰ प॰ 132.

अगब्भिनी स्त्री॰, गब्भिनी का निषे॰ [अगर्भिणी], गर्भ धारण न करने वाली स्त्री, बांझ स्त्री – **निया** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अगब्भिनिया गब्भिनिसञ्ञा, आपत्ति दुक्कटस्स,* पाचि॰ 433; – **सञ्ञा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, गर्भवती न होने का ज्ञान या समझ – *गब्भिनिया अगब्भिनिसञ्ञा वुट्ठापेति* ..., पाचि॰ 433.

अगमन नपुं॰, गमन का निषे॰ [अगमन], न जाना, गमनक्रिया का अभाव – *पदसा अद्धानं अगमनेन अनद्धगूनं* ... *देवतानं इद्धि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.15.

अगमनीय त्रि॰, गमनीय का निषे॰ [अगमनीय], **शा॰ अ॰** गमन न करने योग्य, **ला॰ अ॰** परस्पर व्यवहार न करने के लिए अनुपयुक्त या समागम (मैथुन) के लिए अनुपयुक्त, – **ट्ठान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अगमनीयस्थान], न जाने योग्य स्थान – *रत्तिभागे अन्धकारे सति पुरिसस्स अगमनीयट्ठानं नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.476.

अगमानि स्त्री॰, जहां गमन या आगमन न हो – *न गमितब्बं अगमानि ते जम्मदेसं, न कत्तब्बं अकराणि ते जम्म कम्मं,* क॰ व्या॰ 647, (द्रष्ट॰ अकराणि).

अगम्भीर त्रि॰, गम्भीर का निषे॰ [अगम्भीर], जो गहरा न हो, अगाध न हो, छिछला – *अनिगाधकूलाति अगम्भीरतीरा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.132.

अगय्ह त्रि॰, गय्ह का निषे॰ [अगृह्य], वह, जिसका ग्रहण संभव न हो, वह, जिसको कसकर पकड़ना संभव न हो, वह, जिसको समझना संभव न हो, – **य्हूपग** त्रि॰, कर्म॰ स॰, पास जाकर ग्रहण न करने योग्य – ... *अगय्हूपगस्स तिणस्स च अनादानं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.101; – **य्हूपगट्ठान** नपुं॰, कर्म॰ स॰, वह भाग जो उपयुक्त न हो, अनुपयुक्त-स्थल – *यं यं चम्मस्स अगय्हूपगट्ठानं होति,* तं तं चजित्वा उपाहनं कत्वा, जा॰ अट्ठ॰ 4.155.

अगरहित त्रि॰, गरहित का निषे॰ [अगर्हित], वह, जो दोषयुक्त न हो, गर्हारहित, अनिन्दित – *न आवज्जानि अनवज्जानि, अनिन्दितानि अगरहितानीति* ..., खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 112.

अगरहिय त्रि॰, गरहिय का निषे॰ [अगर्ह्य], अनिन्दनीय, निन्दा न करने योग्य – *अगरहियं मा गरहित्थ,* स॰ नि॰ 1(1).277.

अगरु[1] नपुं॰, [अगरु], अगर की सुगन्धित लकड़ी और पेड़, गूगुल का पेड़ – *काळागरु तु कालस्मिं, तुरुक्खो तु च पिण्डको,* अभि॰ प॰ 302; *यथा, महाराज, पथवी इट्ठानिट्ठानि कप्पूरागरुतगरचन्दन – कुङ्कुमादीनि आकिरन्तेपि* ..., मि॰

प॰ 350; *गन्धकेन विलिम्पित्वा, अगरुचन्दनेन च,* जा॰ अट्ठ॰ 7.268; *उद्दालका सोमरुक्खा, अगरुफल्लिया बहू,* जा॰ अट्ठ॰ 7.294; द्रष्ट॰ एवं तुल॰ अकलु, अगलु.

अगरु² त्रि॰, गरु का निषे॰ [अगुरु], **शा॰ अ॰** हल्का, जो भारी न हो - *सीघम्हि लहु तं इङ्गनिस्सारा गरुसुतिसु,* अभि॰ प॰ 929; **ला॰ अ॰ 1.** महत्त्वहीन, तुच्छ, अनादृत, अप्रिय, अमनाप - ... *भिक्खु सब्रह्मचारीनं अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो च,* अ॰ नि॰ 3(1).6; **ला॰ अ॰ 2.** सरल, सहज, सुविधाजनक - ... *सचे ते, अगरु, भासस्सू ति,* दी॰ नि॰ 1.46; *अगरूति ... अफासुकभावो ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.132; *सचे ते, कस्सप, अगरु, वसेय्याम एकरत्तं अग्यागारे,* महाव॰ 28; *सचे ते, आचरिय अगरु, मयञ्चेत्थ एकरत्तिं वसेय्यामा'ति याचि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.26; - **कत** त्रि॰, अगरु + √कर का भू॰ क॰ कृ॰, सरलीकृत, सुविधाजनक अथवा सहज बना दिया गया - *अचित्तीकतन्ति अगरुकतं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 5, पाठा॰ न गरुकतं.

अगरुकुलवासिक त्रि॰, [अगुरुकुलवासिक], वह, जिसने गुरु या आचार्य के कुल में निवास न किया हो - *अगरुकुलवासिको ... पुग्गलो ...,* मि॰ प॰ 267.

अगळु / अगलु पु॰, अगरु / अकळु का अप॰ [अगरु, अगुरु], अगरु नामक पेड़ और उसकी लकड़ी - *लोहं त्वगरु चागलु,* अभि॰ प॰ 302; *अगरुचन्दनादीहि हत्थसतुब्बेधं चितकमकंसु,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 130; द्रष्ट॰ कालागलु / कालागरु आगे.

अगहन त्रि॰, गहन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अगहन], उलझन-रहित, निष्कण्टक, जटिलता से रहित - *अकण्डकं अगहनं, पटिपन्नो महापथं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.251; *गहनं अगहनं कतं,* मि॰ प॰ 112; 125.

अग्गळित त्रि॰, निषे॰ स॰, धाराप्रवाह वचन बोलने वाला, सुस्पष्ट, अनुकूल, सुन्दर अकर्कश, कोमल - *अकक्कसं अग्गळितं मुहुं मुदुं, उजुं अनुद्धतं अचपलमस्स भासितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.193, पाठा॰ अगलित.

अग्गहित त्रि॰, गहित का निषे॰ [अगृहीत], वह, जिसे छीना-झपटा न गया हो, जिसे कसकर पकड़ा न गया हो, जिसका आश्रय नहीं किया गया हो - *अग्गहितमेव होति सरणं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).142; - **दण्ड** त्रि॰, ब॰ स॰ [अगृहीतदण्ड], **शा॰ अ॰** वह, जिसका दण्ड ऊपर की ओर न उठा हुआ हो; **ला॰ अ॰** वह, जो हिंसालु, कड़ा, कर्कश या कठोर न हो, हिंसा से विरत - *नादिन्नदण्डस्साति अग्गहितदण्डस्स निक्खित्तदण्डस्स ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.195.

अगाध त्रि॰, ब॰ स॰ [अगाध], बहुत गहरा, अतिगंभीर - *अगाधं त्वतलम्पस्सं,* अभि॰ प॰ 669; *महासमुद्दं गम्भीरं वित्थतं अगाधमपारं दिस्वा,* मि॰ प॰ 114.

अगाम पु॰, गाम का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अग्राम], जो गांव न हो, ग्रामेतर निवास-स्थल, उजड़ चुका गांव - *गामापि अगामा होन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).187; - **क.** त्रि॰, ब॰ स॰, ग्राम-रहित जनपद, निर्जन स्थान - *एकूपचारो नाम अगामके अरञ्ञे समन्ता सत्तब्भन्तरा एकूपचारा,* पारा॰ 311; *अगामके अरञ्ञे दुतियिकाय भिक्खुनिया दस्सनूपचारं ... विजहन्तिया आपत्ति थुल्लच्चयस्स,* पाचि॰ 307.

अगार / आगार नपुं॰, [अगार, आगार], घर, आवास, गृहस्थ जीवन - *मन्दिरं सदनागारं निकायो निलयालयो,* अभि॰ प॰ 205; *यथा अगारं दुच्छन्नं वुट्ठी समतिविज्झति,* ध॰ प॰ 13; *नागारमावसे,* सु॰ नि॰ 811; तुल॰ अगारक, अगारी, अगारिक; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰, अग्या॰, अन॰, अना॰, आगन्तुका॰, आवसथा॰, कूटा॰, कोट्ठा॰, कोसकोट्ठा॰, चित्ता॰, झाना॰, तिणा॰, दाना॰, धञ्ञा॰, नळा॰, निवासा॰, परिया॰, पाना॰, बन्धना॰, भण्डा॰, भुसा॰, महा॰, यञ्ञा॰, राजा॰, वासा॰, वाहना॰, सन्था॰, सलळा॰, सुञ्ञा॰ इत्यादि के अन्त॰; - **क.** नपुं॰, [अगारक], छोटा घर, झोपड़ी, कुटी - *एकं अगारकं ओलुग्गविलुग्गं काकातिदायिं नपरमरूपं ...,* म॰ नि॰ 2.123; - **मज्झे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰, घर के भीतर, गृहस्थजीवन की सुरक्षा के बीच - *इमस्स अगारमज्झे ठानकारणं नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.66; - **मुनि** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [आगारमुनि], गृहस्थ मुनि, घरेलू जीवन यापन करने वाला मुनि - **नो** ब॰ व॰ - *ये ते अगारिका दिट्ठपदा विञ्ञातसासना - इमे अगारमुनिनो,* महानि॰ 41; - **वास** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आगारवास], गृही जीवन - *अगारवासेन अलं नु ते इदं,* थेरगा॰ 1110.

अगारय्ह त्रि॰, गारय्ह का निषे॰ [अगर्ह्य], अनिन्दनीय, दोषारोपण करने के लिए अयोग्य, निर्दुष्ट - **हं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्मा अगारय्हं ब्राह्मणं विनिन्दमानो ... धम्मञ्च जहाति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.47.

अगारव त्रि॰, गारव का निषे॰ [अगौरव], अश्रद्धेय, सम्मान के अयोग्य - **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भिक्खु अगारवो अप्पतिस्सो चवति,* अ॰ नि॰ 2(1).7; - **वा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ते अञ्ञमञ्ञं अगारवा अपतिस्सा असभागवुत्तिनो अहेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.215; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ -

सहधम्मिके वुच्चमाने ... अनादरियता अगारवता अप्पतिस्सवता-अयं वुच्चति दोवचस्सता, पु. प. 126.

अगारिक / अगारिय पु., [आगारिक], गृहपति, गृहस्वामी, गृहस्थ - *गहट्ठागारिका गिही,* अभि. प. 446; *मयं ... आगारिका नाम उपजानामेतस्स संयमस्स,* महाव. 360; *तत्थ मुनिनन्ति अगारिकानगारिकसेक्खासेक्खपच्चेकमुनीसु पच्चेकमुनिं,* जा. अट्ठ. 3.400; *ननु सो अगारिको कामभोगी होती'ति एवञ्च पन वत्वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.23; - **पटिपत्ति सुगति** स्त्री., गृहस्थ जीवन में अपनाए गये अच्छे कर्म या पद्धतियां - *पटिपत्तिसुगतिपि अगारियपटिपत्तिसुगतीति दुविधा होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).177. - **भूत** त्रि., [आगारिकभूत], गृहस्थ जीवन में रहने वाला, गृही - *अहञ्हि, भन्ते, पुब्बे अगारिकभूतो समानो अबहुकतो अहोसिं,* स. नि. 3(1).110, *सेय्यथापि पुब्बे अगारिकभूतो,* महाव. 21; तुल. अगारियभूत; - **मुनि** पु., गृहस्थ-मुनि - *सो पनेस अगारियमुनि ... मुनिमुनीति अनेकविधो,* जा. अट्ठ. 1.116-117; - **रतन** नपुं., तत्पु. स., गृहस्थों के बीच रत्न; स्वच्छ निष्कलंक एवं उत्तम गृहस्वामी - *पुरिसरतनम्पि दुविधं अगारिकरतनं अनगारिकरतनञ्च,* पु. प. अट्ठ. 141; - **विभूसा** स्त्री., तत्पु. स. [आगारिकविभूषा], सामान्यजनों या गृहस्थों की वेश-भूषा या अलंकार - *तत्थ विभूसा दुविधा अगारिकविभूसा अनगारिकविभूसा च,* सु. नि. अट्ठ. 1.89; तुल. *अगारियस्स विभूसा,* महानि. 279.

अगारी त्रि., [आगारिन्], उपासक, गृहपति, गृहस्वामी, सामान्यजन, गृहस्थ - **रिनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *अगारिनो वा पनुपासकासे,* सु. नि. 378; *अगारिनो अन्नदपानवत्थदा,* जा. अट्ठ. 3.205; *अगारिनोति गहट्ठा,* तदे. 3.205; - **रिनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व., घरनी, गृहिणी, गृहस्वामिनी - *अगारिनी सब्बकुलस्स इस्सरा,* पे. व. 449; *अगारिनीति गेहसामिनी,* पे. व. अट्ठ. 168; वि. व. अट्ठ. 190.

अगिद्ध त्रि., गिद्ध का निषे. [अगृध्र], जो लोभी न हो, लोभ-मुक्त, निर्लोभ, आसक्ति से रहित - **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *स वे मुनी वीतगेधो अगिद्धो,* सु. नि. 212; *एवं मुनी सन्तिवादो अगिद्धो,* सु. नि. 851; - **द्धा** ब. व. - *इसयो जिव्हाविञ्ञेय्यरसे अगिद्धा,* जा. अट्ठ. 6.123; - **ता** स्त्री., भाव. [अगृध्रता], तृष्णा से मुक्ति की अवस्था, लोभरहितता, निराकाङ्क्षता, तृष्णाविमुक्तता - *तस्मा मत्तञ्ञुता साधु भोजनस्मिं अगिद्धता,* जा. अट्ठ. 2.244.

अगिद्धि-लोभ पु., [अगृध्रिलोभ], लोभ तथा तृष्णा का संयमन, तृष्णा का अभाव - *अगिद्धिलोभं निस्साय गिद्धिलोभो पहातब्बो,* म. नि. 2.25.

अगिलान त्रि., गिलान का निषे. [अग्लान], वह, जो रोगी न हो, जो रुग्ण न हो, नीरोग, स्वस्थ - **नस्स** पु., ष. वि., ए. व. - *न छत्तपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामीति सिक्खा करणीया,* पाचि. 271.

अगिह / अगह त्रि., ब. स. [अगृह], **शा. अ.** घर-रहित, बिना घर-बार का, **ला. अ.** तृष्णा-रहित, आसक्ति-रहित - **हो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सङ्घाटिवासी अगहो चरामि,* सु. नि. 458; - **हा** ब. व. - *ये कामे हित्वा अगहा चरन्ति,* सु. नि. 502; *अगहोति अगेहो, नित्तण्होति अधिप्पायो,* सु. नि. अट्ठ. 2.118; *कासायवासिं अगहं चरन्तं,* सु. नि. 491.

अगुण[1] त्रि., ब. स. [अगुण], डोरीरहित धनुष - *अगुणं धनु ञातिकुले च भरिया,* जा. अट्ठ. 5.430.

अगुण[2] पु., गुण का निषे. [अगुण], दोष, दुर्गुण - *इदानि मया अत्तनो अगुणं परियेसितुं वट्टति,* जा. अट्ठ. 2.2; - **गवेसक** त्रि., तत्पु. स., केवल दोषों को खोजनेवाला - *राजा अत्तनो अगुणगवेसको हुत्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.332; - **वादी** त्रि., [वादिन्], अपने दुर्गुणों को कहनेवाला - *अत्थि नु खो मे कोचि अगुणवादीति परिग्गण्हन्तो ...,* जा. अट्ठ. 2.2.

अगुत्त त्रि., गुत्त का निषे. [अगुप्त], अरक्षित, असुरक्षित, अनियन्त्रित, असंयमित - **त्ता** पु., प्र. वि., ए. व. - *विहारा अगुत्ता होन्ति,* चूळव. 273; - **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *चित्तं, भिक्खवे, अगुत्तं ...,* अ. नि. 1(1).9; - **द्वार** त्रि., ब. स., वह, जिसके इन्द्रियद्वार असुरक्षित हैं, संवररहित, आत्मनियन्त्रण-रहित, आत्मसंयम-रहित - **रेहि** पु., तृ. वि., ब. व. - *इमेहि नवेहि भिक्खूहि इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारेहि ... सद्धिं चारिकं चरसि,* स. नि. 1(2).197; - **द्वारता** स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व. - *इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता,* दी. नि. 3.170.

अगुत्ति स्त्री., गुत्ति का निषे. [अगुप्ति], असुरक्षा, अनियन्त्रण, असंवर - *इन्द्रियानं अगुत्ति अगोपना अनारक्खो असंवरो ... अगुत्तद्वारता,* ध. स. 1352.

अगेधता स्त्री., गेधता का निषे., भाव. [अगृध्रता], आसक्ति या लोभ से मुक्त मन की स्थिति, निर्लोभिता - *अगेधता निरालयता चागो पहानं ... असदिसता बुद्धधम्मस्स ...,* मि. प. 257.

अगेधलक्खण त्रि., ब. स. [अगृध्रलक्षण], लोभरहित प्रकृति या लक्षणों वाला - **णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तेसु*

अलोभो आरम्मणे चित्तस्स अगेध-लक्खणो, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 172.

अगेह त्रि॰, गेह का निषे॰, ब॰ स॰, बिना घर-बार का, गृहरहित, लगाव-रहित – **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अगहोति अगेहो, नित्तण्होति अधिप्पायो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.118.

अगोचर पु॰, गोचर का निषे॰ [अगोचर], **शा॰ अ॰** चरने या विचरने का अनुपयुक्त स्थल, **ला॰ अ॰** इन्द्रियों का अनुपयुक्त आलम्बन – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयुत्तो गोचरो अगोचरो सो वेसियादिभेदतो पञ्चविधो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 1(1).87; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथारूपे अगोचरे चरन्तं ...,* म॰ नि॰ 1.15; – *ये मयं अगोचरे चरिम्ह परविसये,* स॰ नि॰ 3(1).225; – **रेसु** ब॰ व॰ – *छसु च अगोचरेसु चरति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 195; – **रस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छब्बिधस्स अगोचरस्स सेवनं इध अयोनिसोमनसिकारो नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.160.

अगोपना स्त्री॰, गोपना का निषे॰, [अगोपना], असंवर, अनियन्त्रण, असुरक्षा – *या इमेसं छन्नं इन्द्रियानं अगुत्ति अगोपना अनारक्खो असंवरो – अयं वुच्चति इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता,* पु॰ प॰ 127.

अगोपित त्रि॰, √गुप के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अगुप्त], अरक्षित, अनियन्त्रित, असंवृत – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अगुत्ता'ति अगोपिता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.27.

अग्ग¹ त्रि॰, [अग्र/अग्र्य], **क.** प्रथम, सर्वोपरि, मुख्य, सर्वोत्तम, सर्वप्रमुख – **ग्गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदि कोट्ठासकोटीसु पुरतो अग्गं वरे तिसु,* अभि॰ प॰ 843; *अग्गो च सेट्ठो च पामोक्खो च उत्तमो च पवरो च,* पु॰ प॰ 181; *अग्गोहमस्मि लोकस्स,* दी॰ नि॰ 2.12; म॰ नि॰ 3.165; *तेसु उरुवेलकस्सपो जटिलो ... नायको होति ... अग्गो पमुखो पामोक्खो,* महाव॰ 28; – **ग्गानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *इमानि पञ्च अग्गानि देति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.224; **ख.** पु॰/नपुं॰, अंश, स्थल, बिन्दु, नोक, अग्रभाग, सिरा, वृक्ष का शिखर, पर्वत की चोटी – *सिरो अग्गं सिखरो,* अभि॰ प॰ 542; – **ग्गा** पु॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *याव चग्गा याव च मूला ...,* म॰ नि॰ 3. 137; – **ग्गानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *फुस्सितानि अग्गानि अस्साति फुस्सितग्गो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 152; **ग.** नपुं॰, उत्तम अथवा प्रमुख वस्तु या पुरुष – ... *सदेवके, भिक्खवे, लोके समारके ... तथागतो अग्गमक्खायति,* अ॰ नि॰ 1(2).20; *दिस्वा अभिहटं अग्गं, कासिराजेन पेसितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.373; *तं बहुं अग्गपानभोजनं दिस्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.375; **घ.** चित्त-विशुद्धि की सर्वोच्च स्थिति, अर्हत्त्वफल की अवस्था – *इति खो, आनन्द, कुसलानि सीलानि अनुपुब्बेन अग्गाय परेन्तीति,* अ॰ नि॰ 3(2).3; *अग्गाय परेन्तीति अरहत्तत्थाय गच्छन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.285; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰ अक्ख॰, अग्ग॰, अग्गम॰, अङ्गुल॰, अध॰, अन॰, अनमत॰, अनीक॰, अन्न॰, अम्बिल॰, अयो॰, अरुण॰, आयत॰, आर॰, अच्छ॰, उद॰, उद्ध॰, एक॰, एतद॰, एत्तावत॰, कटूक॰, कनक॰, कणय॰, कर॰, कलाप॰ इत्यादि के अन्त॰; – **अरियवंसिक** त्रि॰, उत्तम आचरण वाला भिक्षु – *अयमायस्मा अग्गअरियवंसिको समानोपि एवमाह,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.210; – **उपासक** पु॰, कर्म॰ स॰ [अग्रोउपासक], उपासकों में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ उपासक – *हत्थको आळवकोति द्वे अग्गउपासका,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.193; – **उपासिका** स्त्री॰, बुद्ध की धर्मानुगामिनी उपासिकाओं में श्रेष्ठ – *उपासिकासु वेळुकण्ठकी नन्दमाता, खुज्जुत्तराति द्वे अग्गउपासिका,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.193; – **कटच्छु** पु॰, चम्मच का अग्रभाग – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अग्गकटच्छुना गण्हाति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 401; – **कारिका** स्त्री॰, परोसे गये भोजन का प्रथम या सर्वोत्तम भाग – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *भिक्खूनं अग्गकारिकं अदासि,* पारा॰ 96; – **किरिया** स्त्री॰, उत्तम क्रिया, उत्तम एवं स्वादिष्ट भिक्षा-भोजन – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्गकारिकन्ति अग्गकिरियं; पठमं लद्धपिण्डपातं अग्गग्गं वा पणीतपणीतं पिण्डपातन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.56; – **कुलिक** त्रि॰, अग्रकुल का या श्रेष्ठकुल का व्यक्ति, प्रधान व्यक्ति – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं कुमारो नगरस्सिमस्स, अग्गकुलिको भविस्सति भोगतो च,* पे॰ व॰ 458; *अग्गकुलिको सेट्ठकुलिको भविस्सतीति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 172; – **गन्धब्ब** पु॰, कर्म॰ स॰ [अग्रगन्धर्व], श्रेष्ठ गन्धर्व, गन्धर्वों में अग्रगण्य या श्रेष्ठ – *गुत्तिलगन्धब्बो नाम सकलजम्बुदीपे अग्गगन्धब्बो अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.208; – **गिम्ह** पु॰, कर्म॰ स॰ [अग्रग्रीष्म], ग्रीष्म का प्रारम्भ, वसन्तकाल – **म्हे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वनं यथा अग्गगिम्हे सुफुल्लं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.193; *अग्गगिम्हेति वसन्तसमये,* जा॰ अट्ठ॰ 5.196.

अग्गग्ग 1. त्रि॰, परमश्रेष्ठ, सर्वोत्तम – **ग्गं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बसूपब्यञ्जनेहि अग्गग्गं आदाय भाजने पक्खिपित्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 155; तुल॰ अग्गमग्ग; **2.** नपुं॰, सबसे बाहरवाला किनारा, बाह्यतम सिरा – **ग्गेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इतरानि अग्गग्गेसु परिमिलातानि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.244–45; – **नेमिवट्टि** स्त्री॰ [अग्राग्रनेमिवर्ति], पहिये का बाहरी घेरा,

हाल – **यो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चक्कानं अग्गग्गनेमिवट्टियो नेव तेमिंसु*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.318.

अग्गङ्कुरक. नपुं॰, [अग्राङ्कुरक], अगला अङ्कुर, प्रथम अङ्कुर – *अग्गङ्कुरकं मे उदरं छुपति*, चूळव॰ 290.

अग्गङ्गुलि स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अग्राङ्गुलि], अङ्गुलियों का अग्रभाग, अङ्गुलियों का सिरा – **लीसु** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पसारितहत्थस्स अङ्गुलीसु*, जा॰ अट्ठ॰ 6.10.

अग्गज[1] त्रि॰, [अग्रज], एक प्रकार के पुष्प का नाम, वृक्ष का अंखुआ – **जं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्गजं पुप्फमादाय, उपागच्छिं नरुत्तमं*, अप॰ 1.243, *अग्गजं पुप्फमादायाति अग्गजनामकं पुप्फं गहेत्वा*, अप॰ अट्ठ॰ 2.184.

अग्गज[2] पु॰, [अग्रज], बड़ा भाई, अग्रज, ज्येष्ठभ्राता – *अग्गजो पुब्बजो जेट्ठो*, अभि॰ प॰ 254.

अग्गजिव्हा स्त्री॰, [अग्रजिह्वा], जिह्वा का अगला भाग या सिरा – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्गजिव्हाय चेस तनुको होति*, विभ॰ अट्ठ॰ 234; विलो॰ मूल-जिव्हा.

अग्गञ्ञ त्रि॰, **1**. आदिम, अथवा पुरातन के रूप में जाना गया – **ञ्ञे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु पोराणे अग्गञ्ञे अरियवंसे ठितो*, दी॰ नि॰ 3.179; – **ञ्ञा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते खो पनेते अग्गञ्ञा अग्गाति जानितब्बा*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.174; *अग्गाति जानितब्बा सब्बवंसेहि सेट्ठभावतो*, लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 3.198; *चत्तारोमे, भिक्खवे, अरियवंसा अग्गञ्ञा रत्तञ्ञा वंसञ्ञा पोराणा ...*, अ॰ नि॰ 1(2).32; *ते खो पनेते अग्गञ्ञा अग्गाति जानितब्बा ...*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.269; **2**. प्रधान, प्रमुख – *परमग्गञ्ञमुत्तरं*, अभि॰ प॰ 695; – **टि॰** सम्भवतः यह अग्गञ्ञु अथवा बौ॰ सं॰ अग्रण्य का समानान्तर शब्द है, जो पोराणो अग्गञ्ञो जैसे मुहावरों में प्रयुक्त है.

अग्गञ्ञसुत्त नपुं॰, दी॰ नि॰ के पाथिकवग्ग के चौथे सुत्त का शीर्षक, दी॰ नि॰ 3.59–72.

अग्गट्ठान नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अग्रस्थान], सर्वोच्चस्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्गट्ठाने ठपेसि मं*, अप॰ 1.28; तुल॰ अग्ग-निक्खित्त.

अग्गता स्त्री॰ अग्ग का भाव॰ [अग्रता], वरिष्ठता, श्रेष्ठता, उच्चता – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दक्खग्गतासु कथने ...*, अभि॰ प॰ 1168; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यमाहुनेय्यानं अग्गतं गतो*, कथा॰ 449.

अग्गतो अग्ग का प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अग्रतः], **1**. प्रारम्भ से, आगे से – *यदग्गतो मज्झतो सेसतो वा*, सु॰ नि॰ 219; *यं कुम्भितो पठममेव गहितत्ता अग्गतो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.126; **2**. उपस्थिति में, सम्मुख, अभिमुख – *पुरेग्गतो तु पुरतो*, अभि॰ प॰ 1148; **3**. शिखर से, चोटी से – *यदग्गतो मज्झतो सेसतो वा*, सु॰ नि॰ 219; – **कत** त्रि॰, [अग्रतःकृत], आंखों के सामने लाया हुआ, परिकल्पित, मन में कल्पित, – *विसपत्तोरिव अग्गतो कतो*, थेरीगा॰ 388; *मायं विय अग्गतो कतं*, थेरीगा॰ 396; द्रष्ट॰ यदग्गतो.

अग्गत्त नपुं॰, भाव॰ [अग्रत्व], उत्तम अथवा श्रेष्ठ होने की स्थिति, उत्तमता, अगुआपन, प्रमुखता – **त्ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *दसहि ठानेहि सुट्ठु अग्गत्ता ...*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 8.

अग्गदक्खिणेय्य त्रि॰, कर्म॰ स॰, दक्षिणा देने योग्य लोगों के बीच सर्वप्रथम – **य्यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं अग्गदक्खिणेय्यो सत्था ति भगवतो पच्चयं दत्वा*, मि॰ प॰ 211; – **य्यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एवं उळारगुणं अग्गदक्खिणेय्यं सम्मासम्बुद्धं अभूतेन अक्कोसित्वा ...*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.103; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अग्रदक्षिणेयत्व], दान पाने योग्यों के बीच सर्वोत्तमता – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्गदक्खिणेय्यत्ता च चीवरादिपच्चये अरहति पूजाविसेसञ्च*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.81; – **भाव** पु॰, भाव॰ उपरिवत् – ... *इमं विसेसं हत्थगतमेव कत्वा अग्गदक्खिणेय्यभावं लभति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.164.

अग्गदन्त पु॰, कर्म॰ स॰ [अग्रदन्त], **1**. दांत का अग्रभाग, सामने वाला दांत – *अग्गदन्ते विवरित्वा हसितं अकासि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.415; *सो द्वेपि अग्गदन्ते छिन्दि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.307; **2**. त्रि॰, [अग्रदान्त], आत्मसंयमन करने वालों में अत्युत्तम, अत्युत्कृष्ट – *सम्बुद्धं अग्गदन्तं समाहितं*, थेरगा॰ 354.

अग्गदान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अग्रदान], श्रेष्ठ वस्तु का दान, उत्तम दान – *एवं एकसस्से नव वारे अग्गदानं अदासि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.57; *मम अग्गदानं अग्गधम्मस्स सब्बपठमं पटिवेधाय संवत्ततूति*, तदे॰; ... *इमानि पञ्च अग्गदानानि देति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.338.

अग्गदायी त्रि॰, [अग्रदायिन्], उत्तम दान देने वाला – *यो अग्गदायी वरदायी, सेट्ठदायी च यो नरो*, अ॰ नि॰ 2(1).47.

अग्गद्वार नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ में अग्गद्वारेन रूप में ही प्रयुक्त [अग्रद्वार], द्वार के ऊपरी भाग से होकर, मुख्य द्वार में से होकर – *वेपचिति असुरिन्दो ... अग्गद्वारेन अस्समं पविसित्वा*, स॰ नि॰ 1(1).261; ... *हत्थसारं गहेत्वा अग्गद्वारेन निक्खमित्वा ...*, जा॰ अट्ठ॰ 1.121; ... *अग्गद्वारेन पलायित्वा अञ्ञस्स रञ्ञो विजितं अगमंसु*, जा॰ अट्ठ॰ 3.297.

अग्गधनुग्गह पु॰, कर्म॰ स॰ [अग्रधनुर्ग्राहिन्], धनुष धारण करने वालों में सर्वोत्तम, अत्युत्कृष्ट धनुर्धर, सर्वोत्तम

धनुषधारी - *उम्मादफुस्सदेवो सो दीपे अग्गधनुग्गहो,* म. वं. 25.82; *सा हि पुब्बे सकलजम्बुदीपे अग्गधनुग्गहपण्डितं पहाय ...,* ध. प. अट्ठ. 2.318.

अग्गधम्म पु., कर्म. स. [अग्रधर्म], **1.क.** सर्वोत्तम अवस्था, अर्हत्व-फल की प्राप्ति की अवस्था - **म्मं** द्वि. वि., ए. व. - *पापुण बोधिञ्च अग्गधम्मञ्च,* थेरीगा. 434; *अग्गधम्मं पन अरहत्तं सब्बपठमं पटिविज्झितुं पत्थेत्वा अदासि,* ध. प. अट्ठ. 1.56; **1.ख.** सर्वोत्तम धर्म - **म्मो** प्र. वि., ए. व. - *अग्गधम्मो सुदेसितो,* थेरगा. 94; **2.** त्रि., ब. स. [अग्रधर्मन्], वह, जिसका धर्म सर्वोत्तम है या प्रथम है - **म्मा** पु., प्र. वि., ए. व. - *अग्गधम्मा तथागता,* दी. वं. 4.13.

अग्गधम्मालङ्कार पु., बर्मा के एक विद्वान् का नाम एम. बोडे, बर्मा का पालि साहित्य, पृ. 53.

अग्गनख पु., कर्म. स. [अग्रनख], नख का अग्रभाग, नखशीर्ष - **खा** प्र. वि., ब. व. - *हत्थग्गहणं वा सादियेय्याति हत्थो नाम कप्परं उपादाय याव अग्गनखा,* पाचि. 297; - **खेहि** तृ. वि., ब. व. - *अग्गनखेहि वीणं वादेन्ती मधुरसरेन गायित्वा तं पलोभेसि,* जा. अट्ठ. 4.426.

अग्गनगर नपुं., कर्म. स. [अग्रनगर], प्रमुख नगर, प्रधान नगर, नगरों में भव्य नगर - **रं** प्र. वि., ए. व. - *इदं अग्गनगरं भविस्सति पाटलिपुत्तं पुटभेदनं,* महाव. 304; *महाराज, तव नगरं सकलजम्बुदीपे अग्गनगरं,* जा. अट्ठ. 4.220.

अग्गनङ्गुट्ठ नपुं., पूंछ का शीर्षभाग, पूंछ का अगला सिरा - *पुन सा ... गिलनकाले अग्गनङ्गुट्ठं चालेसि,* ध. प. अट्ठ. 1.156.

अग्गनिक्खित्त त्रि., [अग्रनिक्षिप्त], विशेषज्ञ या प्रमुख के रूप में उद्घोषित या मान्यता को प्राप्त, सर्वाधिक प्रशंसित, प्रसिद्ध, 'एतदग्गवग्ग' में बुद्ध के द्वारा विशेषज्ञ के रूप में उद्घोषित व्यक्ति, द्रष्ट. अ. नि. 1(1).31-37; - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *धुतगुणे अग्गनिक्खित्तो,* बु. वं. 1.59; - **त्ता** ब. व. - *ये पन ते ... भिक्खू ... धुतङ्गगुणे अग्गनिक्खित्ता ...,* मि. प. 311; - **क** त्रि., ब. स., उपरिवत् - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *अञ्ञे पि अत्थि महाथेरा अग्गनिक्खित्तिका बहू,* दी. वं. 4.5.

अग्गपकतिमन्तु त्रि., ब. स. [अग्रप्रकृतिमत्], सर्वोत्तम प्रकृति से युक्त - **मा** पु., प्र. वि., ए. व. - *एवं अग्गपकतिमा एवं उत्तमसत्तवो,* जा. अट्ठ. 5.347.

अग्गपञ्ञत्ति स्त्री., कर्म. स. [अग्रप्रज्ञप्ति], प्रधानतासूचक पद, महत्तापरिदीपक उपाधि - **यो** प्र. वि., ब. व. - *चतस्सो अग्गपञ्ञत्तियो,* अ. नि. 1(2).20; *अग्गपञ्ञत्तियोति उत्तमपञ्ञत्तियो,* अ. नि. अट्ठ. 2.253 - **टि.** राहु, मान्धाता, मार, तथागत, इन लोगों की सूची को ही अग्रप्रज्ञप्ति (अग्गपञ्ञत्ति) कहते हैं.

अग्गपण्डित लोकुप्पत्तिप्पकरण नामक ग्रन्थ के लेखक, जम्बुद्वीप में उत्पन्न तथा म्यां-मां के अरिमद्दननगर के निवासी एक वैयाकरण का नाम, ग. वं. 64; 67(रो.).

अग्गपत्त द्रष्ट. अग्गप्पत्त.

अग्गपद नपुं., कर्म. स. [अग्रपद], सर्वोच्च शब्द, अति उत्तम-वचन, सर्वोच्च-दशा, अत्युत्कृष्ट अवस्था - **दं** प्र. वि., ए. व. - *देसना हि इध अग्गपदन्ति पि अधिप्पेता,* स. नि. अट्ठ. 3.151.

अग्गपरिसा स्त्री., चार परिषदों में से प्रथम - **सं** द्वि. वि., ए. व. *अग्गपरिसं सो उपगतो,* मि. प. 161.

अग्गपवाल नपुं., [अग्रप्रवाल], पौधे के अग्रभाग की कोपल या अङ्कुर - *अल्लसिङ्गन्ति मालुवलताय अग्गपवालं,* जा. अट्ठ. 3.344.

अग्गपाद पु., [अग्रपाद], पाद का अग्रभाग, पैर का अगला भाग - **दा** प्र. वि., ब. व. - *उभो अग्गपादा छिज्जिंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.103.

अग्गपिट्ठ नपुं., अङ्गुलिशीर्ष का ऊपरी किनारा - **ट्ठेसु** सप्त. वि., ब. व. - *ओकासतो अङ्गुलीनं अग्गपिट्ठेसु पतिट्ठिता,* विसुद्धि. 1.241.

अग्गपिण्ड पु., कर्म. स. [अग्रपिण्ड], प्रथम या सर्वोत्तम भोजन, अग्रभोजन - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *अहो वत अहमेव लभेय्यं भत्तग्गे अग्गासनं अग्गोदकं अग्गपिण्डं,* म. नि. 1.35; *भिक्खाचारमग्गे पन अग्गासनअग्गोदकअग्गपिण्डत्थं वुड्ढानं पुरतो पुरतो याति,* खु. पा. अट्ठ. 196.

अग्गपिण्डिक पु., वह, जो सर्वोत्तम देय वस्तुओं को ग्रहण करता है, सर्वोत्तम भोजनपानादि को ग्रहण करने वाला - **का** प्र. वि., ब. व. - *अथग्गपिण्डिकापीति अथ ते अग्गोदकं अग्गपिण्डं लभन्ता अग्गपिण्डिकापि होन्ति,* जा. अट्ठ. 7.79.

अग्गपुग्गल पु., कर्म. स. [अग्रपुद्गल], सर्वोत्तम, पुरुषों में उत्तम - **लो** प्र. वि., ए. व. - *सो सब्बसत्तुत्तमो अग्गपुग्गलो,* सु. नि. 689; *लोके अग्गपुग्गलो बुद्धो जातो,* ध. प. अट्ठ. 2.63 - **लं** द्वि. वि., ए. व. - *इमेहि अट्ठीहि तमग्गपुग्गलं ...,* मि. प. 119.

अग्गपुप्फ नपुं., कर्म. स. [अग्रपुष्प], उत्तम पुष्प, श्रेष्ठ पुष्प - *अग्गमालं अग्गपुप्फं,* जा. अट्ठ. 1.138.

अग्गपुप्फिय पु., एक थेर का नाम - *आयस्मा अग्गपुप्फियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.243.

अग्गपुरोहित पु., कर्म. स. [अग्रपुरोहित], पुरोहितों में श्रेष्ठ या प्रथम - *अहञ्च अग्गपुरोहितो भविस्सामीति,* जा. अट्ठ. 6.221.

अग्गप्पत्त त्रि., तत्पु. स., पूर्णता या श्रेष्ठता को प्राप्त व्यक्ति - **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *न खो, निग्रोध, एत्तावता तपोजिगुच्छा अग्गप्पत्ता च होति सारप्पत्ता च,* दी. नि. 3.35; - **त्तेन** तृ. वि., ए. व. - *तेनायं अग्गप्पत्तेन, अग्गधम्मो सुदेसितो,* थेरगा. 94.

अग्गप्पसाद पु., कर्म. स. [अग्रप्रसाद], सर्वोत्तम श्रद्धा का विषय या आलम्बन, वह, जिसके प्रति उत्तम श्रद्धा का भाव रखा जाए - **दा** प्र. वि., ब. व. - *इमे खो, भिक्खवे, चत्तारो अग्गप्पसादा,* अ. नि. 1(2).41; - **टि.** बुद्ध, अष्टाङ्गिक-मार्ग, धर्म और सङ्घ इन चारों को चार अग्गप्पसाद कहा गया है, द्रष्ट. अग्गप्पसादसुत्त.

अग्गफल नपुं., कर्म. स. [अग्रफल], सर्वोत्तम फल, अर्हत्वफल - **लं** द्वि. वि., ए. व. - *सूलावुतो अग्गफलं अफस्सयि,* पे. व. 603; *इमानि अग्गफलं अरहत्तं पापुणन्तस्स निरुज्झन्ति,* नेत्ति. 15.

अग्गबाहु स्त्री., कर्म. स., प्रकोष्ठ, प्रबाहु, पहुंचा, भुजा का अग्रभाग - **ट्ठि** नपुं., भुजा के अग्रभाग की हड्डी - **ट्ठीनि** प्र. वि., ब. व. - *द्वे बाहुट्ठीनि, द्वे द्वे अग्गबाहुट्ठीनि,* विसुद्धि. 1.244.

अग्गबीज नपुं., कर्म. स. [अग्रबीज], वह पौधा, जिसे काटकर या टुकड़े-टुकड़े कर रोप कर बढ़ाया जाय, काटकर रोपा गया या बढ़ाया गया पौधा, दी. नि. में वर्णित पांच प्रकार के पौधों में से एक प्रकार का पौधा - *सेय्यथिदं - मूलबीजं खन्धबीजं, फलुबीजं अग्गबीजं बीजबीजमेव पञ्चमं,* दी. नि. 1.57; *अग्गबीजं नाम अज्जकं, फणिज्जकं, हिरिवेरन्ति एवमादि,* दी. नि. अट्ठ. 1.75; तुल. बीजग्ग.

अग्गबोधि पु., **क.** 564-596 ईस्वी में वर्तमान सिंहल के राजा का नाम - *अहोसि पुत्तो सीवस्स अग्गबोधि सनामको,* चू. वं. 41.70; **ख.** राजा उदय के अधीन मलय के राज्यपाल का नाम - *कतं मलयराजेन अमच्चेन अग्गबोधिना,* चू. वं. 53.36; - **पब्बत** त्रि., ब. स., एक तालाब का नाम - *मण्डवाटकवापी च कित्तग्गबोधिपब्बता,* चू. वं. 60.49.

अग्गभक्ख पु., कर्म. स. [अग्रभक्ष्य], उत्तम भोजन, मुख्य भोजन - **क्खं** द्वि. वि., ए. व. - *यस्मा पनाहं एवरूपं अग्गभक्खं दिस्वापि ... पापं न करोमि,* जा. अट्ठ. 7.148.

अग्गभत्त नपुं., कर्म. स., प्रथम भोजन, उत्तम या चुनिन्दा भोजन - **त्तं** द्वि. वि., ए. व. - *भिक्खुना अग्गभत्तं अदत्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.382; जा. अट्ठ. 1.138; तुल. भत्तग्ग.

अग्गभाव पु., कर्म. स. [अग्रभाव], श्रेष्ठता, उत्तमभाव - **स्स** ष. वि., ए. व. - *... तेरसधुतङ्गधरानं अग्गभावस्स सच्चकारो होतूति,* अ. नि. अट्ठ. 1.131; तुल. अनेकग्गभाव.

अग्गभिक्खा स्त्री., कर्म. स. [अग्रभिक्षा], भिक्षा में प्राप्त अभीष्टतम भोजन या यथेच्छित भोजन - **क्खं** द्वि. वि., ए. व. - *यत्थ अग्गभिक्खं पक्खिपित्वा ठपेन्ति ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).357.

अग्गमग्ग 1. त्रि., [अग्राग्र], हर तरह से उत्तम या श्रेष्ठ - **ग्गानि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. - *... अग्गमग्गानि भोजनानि देन्ति,* पाचि. 311, 313; **2.** पु., [अग्रमार्ग], सर्वोत्तम मार्ग, अब तक गृहीत मार्गों की तुलना में अधिक उत्तम - **ग्गो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अनागामिनो हि यथा अग्गमग्गो उप्पज्जति,* थेरीगा. अट्ठ. 21; - **समङ्गी** त्रि., बुद्ध के मार्ग की उच्चतम अवस्था अर्थात् अर्हत्व को प्राप्त - *अग्गमग्गसमङ्गी वेदनाक्खन्धं न परिजानिस्सति,* यम. 1.105.

अग्गमहेसी स्त्री., कर्म. स. [अग्रमहिषी], पटरानी, प्रमुख पत्नी, प्रधान रानी - **सी** प्र. वि., ए. व. - *एसा ... इत्थी कलिङ्गस्स रञ्ञो अग्गमहेसी अहोसि,* स. नि. 1(2).236; - **सिया** तृ. वि., ए. व. - *सा ... धनञ्जयसेट्ठिनो अग्गमहेसिया सुमनदेविया कुच्छिम्हि निब्बत्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.216; ... *बोधिसत्तो रञ्ञो अग्गमहेसिया कुच्छिम्हि निब्बत्तो,* जा. अट्ठ. 1.254; - **सिट्ठान** नपुं., तत्पु. स., प्रधान पत्नी अथवा रानी के रूप में स्थान या पद - *पञ्च ते इत्थिसतानि परिवारं दत्वा अग्गमहेसिट्ठानं दस्सामी'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.113; - **सित्त** नपुं., भाव. [अग्रमहेषित्व], प्रधान पत्नी अथवा रानी होने की अवस्था - *... रञ्ञो चन्दपज्जोतस्स अग्गमहिसित्तं पत्ता,* मि. प. 269, (पाठा. अग्गमहेसिट्ठानं); - **भाव** पु., उपरिवत् - **स्स** ष. वि., ए. व. - *सा एकदिवसं द्विन्नं राजूनं अग्गमहेसिभावस्स सुपिने निमित्तं दिस्वा ...,* जा. अट्ठ. 5.440.

अग्गमाला स्त्री., कर्म. स. [अग्रमाला], उत्कृष्ट माला, श्रेष्ठ माला - **लं** द्वि. वि., ए. व. - *यथा सो अग्गमालं अग्गपुप्फं अग्गभत्तञ्च लभति ...,* जा. अट्ठ. 1.138.

अग्गयान नपुं., कर्म. स. [अग्रयान], प्रधान यान, प्रधान-

वाहन, शाही-हाथी, प्रधान-कुञ्जर - *अग्गयानं राजवाहिं ब्राह्मणानं अदा गजं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.239; 274.

अग्गयोध पु॰, कर्म॰ स॰ [अग्रयोद्धा], प्रधान-योद्धा, मुख्य सैनिक या सिपाही - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *योधानं अग्गयोधस्स सीसच्छिन्नासिधोवनं,* म॰ वं॰ 22.44.

अग्गरतन नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अग्ररत्न], बहुमूल्य रत्न, महार्घ रत्न, त्रिरत्न - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अग्गरतनं पयच्छेहि असोकं मम सहायकं,* दी॰ वं॰ 11.28.

अग्गरय्ह त्रि॰, गरय्ह का निषे॰ [अगर्ह्य], 1. अनिन्दनीय, प्रशंसनीय, श्लाघ्य - *तदग्गरय्हञ्हि विनिन्दमानो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.46; 2. यह शब्द संभवतः अग्ग + अरय्ह (= अर्ह्य) रूप में भी निष्पन्न कहा जा सकता है तथा अत्यन्त पूजनीय या अग्रगण्य अर्थ का प्रकाशक है.

अग्गरस पु॰, कर्म॰ स॰ [अग्ररस], प्रणीत रस, उत्तम या श्रेष्ठरस, निर्वाणरस - **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *धोरय्हसीली च कुलम्हि जातो, न मज्जती अग्गरसं पिवित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.80; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.334; - **परितित्त** त्रि॰, [परितृप्त], उत्तम रस या निर्वाणरस से छका हुआ या परितृप्त - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पुरिसो अग्गरसपरितित्तो न अञ्ञेसं हीनानं रसानं पिहेति,* अ॰ नि॰ 2(1).218; - **टि॰** भोज्य पदार्थों में खीर, तरल पदार्थों में गोघृत, कसैले पदार्थों में क्षुद्रक मधु, मीठे पदार्थों में शर्करा अग्ररस माने गये हैं - *भोजनरसेसु पायासो स्नेहरसेसु गोसप्पि, कसावरसेसु खुद्दकमधु अनेलकं मधुररसेसु सक्कराति एवमादयो अग्गरसा नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.71.

अग्गराज पु॰, कर्म॰ स॰ [अग्रराजन्], सर्वोपरि राजा, अधिराज, अधीश्वर, मूर्द्धाभिषिक्त राजा - **ञ्ञो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *हंसानं अभिहारेसु, अग्गरञ्ञो पवासितन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.373; - **जा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *त्वंसि, महाराज, सकलजम्बुदीपे अग्गराजा,* मि॰ प॰ 24.

अग्गरूप नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अग्ररूप], अतीव सुन्दर वस्तु, अतिशय शोभन पदार्थ, द्रष्ट॰ स॰ उ॰ प॰ के रूप में, सुत्त॰ के अन्त॰.

अग्गल / अग्गळ नपुं॰ [अर्गल, अर्गला, अर्गली, बौ॰ सं॰ अर्गड], 1. अगड़ी, किल्ली, दरवाजे को बन्द करने वाली लकड़ी, सिटकिनी, - *महल्लकं ... विहारं कारयमानेन यावद्वारकोसा अग्गलट्ठपनाय ...,* पाचि॰ 69; - **ळानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *एसिका परिखायो च, पलिखं अग्गळानि च,* जा॰ अट्ठ॰ 7.167; 2. कपड़ों पर लगा पैबन्द, थिगली, चकती - **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अथ खो सो भिक्खु अग्गलं अच्छुपेसि,* महाव॰ 380; *अग्गळं अच्छुपेय्यन्ति छिद्दट्ठाने पिलोतिकखण्डं लग्गापेय्यं,* महाव॰ अट्ठ॰ 385; *उद्धरित्वा अल्लीयापनखण्डं अग्गळं,* तदे॰; - **लन्तरिका** स्त्री॰, किवाड़ की दरार - *अग्गळन्तरिकाय च अच्चि निक्खमित्वा तिणानि झापेसि,* स॰ नि॰ 2(2).282; - **लादिदान** नपुं॰, थिगली या पैबन्द आदि जोड़कर मरम्मत करना - *अग्गळादिदाने हिस्स तं पलिबोधकरं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).275; - **गुत्ति** स्त्री॰, [अर्गलगुप्ति], अर्गला या चटखनी के द्वारा की गई सुरक्षा - *अग्गळगुत्तिविहारोति ... अग्गळगुत्तियेव पमाणं,* महाव॰ अट्ठ॰ 386; - **गुत्तिविहार** पु॰, अर्गला, सिटकिनी या चटखनी के प्रयोग द्वारा सुरक्षित विहार - *अग्गलगुत्तिविहारो वा होति ...,* महाव॰ 390; - **ट्ठपन** नपुं॰ [अर्गडस्थापन], द्वार की अर्गला या सिटकिनी का स्थापन या नियोजन - **नाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अग्गलट्ठपनायाति द्वारट्ठपनाय,* पाचि॰ 70; - **थम्भ** पु॰, [अर्गड़स्तम्भ, अर्गलास्तम्भ], किवाड़ के पीछे लगा हुआ काठ, द्वार में नियोजित अर्गला का खम्भा या खूंटा - *कपिसीसो अग्गलत्थम्भो,* अभि॰ प॰ 217; - **थम्भक** पु॰, खिड़की, खिड़की में लगाया जाने वाला अर्गला का खूंटा या खम्भा - *अम्हाकं मज्झे अग्गळत्थम्भको ठितो ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 41; - **दान** नपुं॰, पैवन्द को लगाना, अर्गला को बैठाना - *जिण्णस्स हि तुन्नं वा अग्गळदानं वा कातब्बं होति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.11; - **पासक** [अर्द्धमा॰ अग्गलपासग], दरवाजे को बन्द करने के लिए लगायी गयी अगड़ी, अर्गला का चतुर्भुजीय छोर - *कपिसीसकं नाम द्वारबाहं विज्झित्वा तत्थ पवेसितो अग्गळपासको वुच्चति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 51; - **पुर** नपुं॰, एक नगर का नाम - *आयस्मा रेवतो उदुम्बरा अग्गळपुरं अगमासि,* चूळव॰ 469; - **फलक** नपुं॰, द्वार का फलक, दरवाजे की पट्टी या तख्ता - **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पुरिसो लहुकं सुत्तगुळं सब्बसारमये अग्गळफलके पक्खिपेय्य,* म॰ नि॰ 3.139; - **रुक्ख** पु॰, दरवाजे की सिटकिनी या चटखनी - **क्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कपिसीसन्ति द्वारबाहकोटियं ठितं अग्गळरुक्खं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.157; - **वट्टि** स्त्री॰ [अर्गलिवर्तिका], अर्गला के लिए खम्भा या खूंटा - *अनुजानामि, भिक्खवे, कवाटं ... उत्तरपासकं अग्गळवट्टिकं ...,* चूळव॰ 238; - **वट्टिकरण** नपुं॰, अर्गला के रूप में प्रयुक्त खूंटे का निर्माण - *अग्गळवट्टिकरणमत्तेनपि नवकम्मं देन्ति,* चूळव॰ 303; - **सीस** नपुं॰, दरवाजे की अर्गला का चतुर्भुजीय छोर - *भगवति परिनिब्बायन्ते*

अग्गलसीसमोलुब्ह ठत्वा आनन्दस्स रोदिताधिकारं च, म. वं. टी. 506; – **सूचि** स्त्री., द्वार की सिटकिनी की सुरक्षा के लिए लगायी गयी कील या खूंटी या कुञ्जी – **चिं** द्वि. वि., ए. व. – *अग्गळसूचिं गहेत्वा सीसे पहारं अदासि,* म. नि. 1.178.

अग्गवती स्त्री., [अग्रवती], प्रथम वर्ग की, श्रेष्ठ, उत्तम मनुष्यों वाली – *कतमा च, भिक्खवे, अग्गवती परिसा,* अ. नि. 1(1).87; *अग्गवतीति उत्तमपुग्गलवती, अग्गाय वा उत्तमाय वा पटिपत्तिया समन्नागता,* अ. नि. अट्ठ. 2.44; विलो. अनग्गवती.

अग्गवंस पु., सद्द. के लेखक, 1154 ईस्वी में वर्तमान प्रख्यात बर्मी वैयाकरण का नाम – *ततिय-अग्गपण्डितो पन अग्गवंसो ति पि वोहारीयति,* सा. वं. 71; *अग्गवंसो नाम थेरो सद्दनीतिपकरणं अकासि,* सा. वं. 70-71.

अग्गवन्दन नपुं., [अग्रवन्दन], प्रातःकालिक प्रथम अभिवादन या नमस्क्रिया, प्रातःकालिक प्रथम नमन – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *जेतवनसमीपे तित्थियारामे वसित्वा पातोव अग्गवन्दनं वन्दिस्साम,* जा. अट्ठ. 4.167, स्त्री. अग्गवन्दना.

अग्गवर त्रि., श्रेष्ठतम, अग्रतम, सर्वोत्तम – *गच्छन्तु अग्गवरं सङ्घदस्सनं,* दी. वं. 6.68.

अग्गवाद पु., [अग्रवाद], मूल-सिद्धान्त, उत्तम-सिद्धान्त (थेरवाद के विशे. के रूप में प्रयुक्त) – *सब्बोपि सो थेरवादो अग्गवादोति वुच्चति,* दी. वं. 4.13, 5.14; तुल. 5.52.

अग्गवादी त्रि., उत्तम-वाद को कहने वाला, परमार्थसत्य का प्रकाशक – **दिनो** पु., ष. वि., ए. व. – *दायादको हेहिसि अग्गवादिनो,* थेरगा. 1145.

अग्गसन्तिके अ., श्रेष्ठ व्यक्ति से – *अग्गसन्तिके गहेत्वा अग्गधम्मा तथागता,* दी. वं. 4.13.

अग्गसभाव त्रि., ब. स. [अग्रस्वभाव], उत्तम प्रकृति वाला, श्रेष्ठ स्वभाव वाला – *अग्गपकतिमाति अग्गसभावो,* जा. अट्ठ. 5.347.

अग्गसस्स नपुं., कर्म. स. [अग्रशस्य], उत्तम फसल, अच्छी कृषि या पैदावार – *... अग्गसस्सं अभिनिप्फन्नं,* मि. प. 8; – **दान** नपुं., तत्पु. स., उत्तम कृषि-उत्पादों अथवा खाद्यान्नों का दान – *गामवासीहि सद्धिं अग्गसस्सदानं नाम अदासि,* ध. प. अट्ठ. 1.57.

अग्गसाखा स्त्री., तत्पु. स. [अग्रशाखा], वृक्ष अथवा पौधे का शीर्ष भाग, सब से ऊपर वाली शाखा – *तस्मिं समये मूलतो पट्ठाय याव अग्गसाखा सब्बं एकपालिफुल्लं अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.63.

अग्गसावक पु., कर्म. स. [अग्रश्रावक], बुद्ध के प्रधान शिष्य, परम्परा में सभी बुद्धों के दो प्रधान शिष्य बतलाये गये हैं, गौतम बुद्ध के दो अग्रश्रावक के रूप में सारिपुत्त एवं मोग्गल्लान के नाम उल्लिखित – *एते, भिक्खवे, द्वे सहायका आगच्छन्ति कोलितो च उपतिस्सो च, एतं मे सावकयुगं भविस्सति अग्गं भद्दयुग'न्तिं,* ध. प. अट्ठ. 1.55; *अग्गसावको उपतिस्सो नाम थेरो, दुतियसावको कोलितो नाम,* जा. अट्ठ. 1.19; – **ट्ठान** नपुं., कर्म. स., प्रधान शिष्य के रूप में स्थान – *द्विन्नं थेरानं अग्गसावकट्ठानं दत्वा पातिमोक्खं उद्दिसि,* ध. प. अट्ठ. 1.56; – **वत्थु** ध. प. अट्ठ. की एक कथा का शीर्षक, ध. प. अट्ठ. 1.49-66; तुल. सावकग्ग एवं सावकयुग.

अग्गसाविका स्त्री. [अग्रश्राविका], बुद्ध की प्रथम या प्रधान स्त्री-शिष्याएं – *खेमा उप्पलवण्णाति द्वे अग्गसाविका,* ध. प. अट्ठ. 1.193; *अग्गसाविका खेमा नाम थेरी, दुतियसाविका उप्पलवण्णा नाम थेरी भविस्सति,* जा. अट्ठ. 1.19-20.

अग्गसिस्स पु., कर्म. स. [अग्रशिष्य], प्रथम या ज्येष्ठतम शिष्य, प्रधान शिष्य – *अहं पोक्खरसातिस्स जेट्ठन्तेवासी अग्गसिस्सो,* सु. नि. अट्ठ. 2.167.

अग्गसुञ्ञ नपुं., कर्म. स. [अग्रशून्य], निर्वाण, अमृतपद – *अग्गमेतं पदं सेट्ठमेतं पदं ... यदिदं ... तण्हक्खयो विरागो निरोधो निब्बानं इदं अग्गसुञ्ञं,* पटि. म. 354.

अग्गसेट्ठि पु., कर्म. स. [अग्रश्रेष्ठिन्], प्रधान व्यापारी, प्रमुख श्रेष्ठी – *इमस्मिंयेव नगरे अग्गसेट्ठि अभविस्स,* ध. प. अट्ठ. 2.72.

अग्गहित / अग्गहीत त्रि., √गह (गण्ह) के भू. क. कृ. का निषे. [अगृहीत], वह, जिसे ग्रहण नहीं किया गया है, पकड़ा नहीं गया है – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असि कोसिया पक्खित्तो अग्गहितो हत्थेन उस्सहति छेज्जं छिन्दितुं* मि. प. 92.

अग्गा अ., अग्ग का प. वि., प्रतिरू. निपा., छोर तक, अन्त तक, अग्रभाग तक – *तानि याव चग्गा याव च मूला सीतेन वारिना अभिसन्नानि ...,* दी. नि. 1.66.

अग्गाभा स्त्री., तत्पु. स. [अग्न्याभा], अग्नि की आभा, अग्नि का प्रकाश, आग की चमक – *चन्दाभा, सूरियाभा, अग्गाभा, पञ्ञाभा – इमा खो, भिक्खवे, चतस्सो आभा,* अ. नि. 1(2).160.

अग्गाळव पु./स्त्री./नपुं. अग्ग + आळवी, अग्ग + आळवक, आलवी-जनपद में विद्यमान एक प्रमुख चैत्य, जो कालान्तर में विहार के रूप में परिणत हो गया – **वे** नपुं., सप्त. वि.,

ए. व. – *अग्गाळवे चेतियेति आळवियं अग्गचेतिये,* सु. नि. अट्ठ. 2.71; स. नि. अट्ठ. 1.236; ... *आळवियं विहरति अग्गाळवे चेतिये,* स. नि. 1(1).215; ... *आळविनगरं उपनिस्साय अग्गाळवे चेतिये* ..., जा. अट्ठ. 1.163; 2.235; *इमं धम्मदेसनं सत्था अग्गाळवे चेतिये विहरन्तो एकं पेसकारधीतरं आरब्भ कथेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.97; – **विहार** पु., आळवी-जनपद में स्थित उत्तम विहार अथवा अग्गाळव नामक विहार – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *अनुपुब्बेन अग्गाळवविहारं अगमासि,* ध. प. अट्ठ. 2.98.

अग्गालोक पु., तत्पु. स. [अग्न्यालोक], अग्नि का प्रकाश, अग्नि की दीप्ति या कान्ति, आग की चमक – **को** प्र. वि., ए. व. – *चन्दालोको, सूरियालोको, अग्गालोको, पञ्ञालोको – इमे खो, भिक्खवे, चत्तारो आलोका,* अ. नि. 1(2).160.

अग्गासन नपुं., कर्म. स. [अग्रासन], सम्मान का आसन, संघस्थविर का आसन, उत्तम आसन, श्रेष्ठ आसन – **नं** द्वि. वि., ए. व. – ... *न अञ्ञो भिक्खु लभेय्य भत्तग्गे अग्गासनं अग्गोदकं अग्गपिण्डं* ..., म. नि. 1.35; *अग्गासनन्ति सङ्घत्थेरासनं,* म. नि. अट्ठ. 1(1).155.

अग्गासनिय त्रि., श्रेष्ठ या प्रधान आसन पाने योग्य, सम्माननीय – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – ... *सावत्थियं महाकोसलरञ्ञो अग्गासनियस्स ब्राह्मणस्स पुत्तो हुत्वा निब्बत्ति* ..., थेरगा. अट्ठ. 1.75.

अग्गि पु., प्र. वि., ए. व. [अग्नि], **शा. अ.** अग्नि, आग – *हुतावहो अच्चिमा धूमकेत्वग्गि गिनि भानुमा,* अभि. प. 34; *जायेय्य सो अग्गी ति,* मि. प. 54; *अग्गीव दड्ढं अनिवत्तमानो,* सु. नि. 62; – **ग्गिं** द्वि. वि., ए. व. – *दारूनि मे आहरित्वा अग्गिं करोही ति वदेय्यासि,* जा. अट्ठ. 2.84; पर्याय के लिये द्रष्ट. अभि. प. 33-34; **ला. अ. 1.** चिता की अग्नि – *अहं तुम्हे ठपेत्वा ... अग्गिं पविसित्वा तुम्हे सद्दहापेस्सामी ति,* जा. अट्ठ. 1.283; **ला. अ. 2.** अग्नि के समान चित्त को जलाने वाले क्लेश, अनुशय, राग, द्वेष आदि – *नत्थि रागसमो अग्गि,* ध. प. 202, 251; *रागग्गि, दोसग्गि, मोहग्गि- इमे खो, भिक्खवे, तयो अग्गी ति,* इतिवु. 66; **ला. अ. 3.** यज्ञ की अग्नि, यज्ञाग्नि – *अग्गिकभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स निवेसने अग्गि पज्जलितो होति,* सु. नि. 103; *गाहपच्चावहणीयो दक्खिणग्गि तयोग्गयो,* अभि. प. 419; **ला. अ. 4.** देवता के रूप में आराध्य-अग्नि – *त्वं अग्गिं आदाय ... अग्गिं भगवन्तं नमस्समानो ब्रह्मलोकपरायणो होहि,* जा. अट्ठ. 1.275; स. उ. प. में द्रष्ट. अति., अन., अन्तो., अवीचि., असनि., अहापित., आहवनीय., आहुनेय्य., आहुट., इन्द., उदर., इत्यादि के अन्त.; – **उट्ठानकाल** पु., वह क्षण, जब कोई वस्तु आग पकड़ती है, आग लगने का समय – **लो** प्र. वि., ए. व. – *पक्खसन्धीसु अग्गिउट्ठानकालो विय अहोसि,* जा. अट्ठ. 4.191; – **क**[1] त्रि., [अग्निक], अग्नि की पूजा करने वाला, ('जटिल' के विशे. के रूप में प्रयुक्त) – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अथ खो सो अग्गिको जटिलो कालस्सेव वुट्ठाय येन सो सत्थवासो तेनुपसङ्कमि,* दी. नि. 2.252; *अग्गिकोति अग्गिपरिचारको,* दी. नि. अट्ठ. 2.361; – **क**[2] पु., व्य. सं. – *अग्गिकभारद्वाजं ब्राह्मणं एतदवोच,* सु. नि. 103; – **कसुत्त** नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 1(1).193; – **कपल्ल** नपुं., अग्नि-कटाह, आग की कड़ाही – **ल्लानि** प्र. वि., ब. व. – *अथस्स हेट्ठामञ्चके अग्गिकपल्लानि ठपयिंसु,* जा. अट्ठ. 6.9; – **क-भारद्वाज** पु., श्रावस्ती के एक ब्राह्मण का नाम, जिसको भगवान् बुद्ध ने बुद्धधर्म में दीक्षित किया था – *अग्गिं जुहति परिचरतीति कत्वा अग्गिकोति नामेन पाकटो अहोसि, भारद्वाजोति गोत्तेन,* सु. नि. अट्ठ. 1.139]; – **क-भारद्वाज-जातक** नपुं., जा. अट्ठ. की एक कथा का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.441; – **क-सुत्त** नपुं., सु. नि. के प्रथम वग्ग (उरगवग्ग) के सातवें सुत्त का शीर्षक, इसका दूसरा नाम वसलसुत्त भी है, सु. नि. 103-106; – **करणीय** नपुं., अग्नि के द्वारा करने योग्य ठण्ड हटाने एवं गर्मी उत्पन्न करने के काम – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *तेन च सक्का अग्गिना अग्गिकरणीयं कातुं,* म. नि. 2.367; *अग्गिकरणीयन्ति सीतविनोदनअन्धकारविधमनभत्तपचनादिअग्गिकिच्चं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.288; – **खन्ध** पु., [अग्निस्कन्ध], आग की धधकती लपटों का समूह, अग्निज्वालाप्रचय – **न्धो** प्र. वि., ए. व. – *महाअग्गिक्खन्धो तदाहारो तदुपादानो चिरं दीघमद्धानं जलेय्य,* स. नि. 1(2).76; – **न्धं** द्वि. वि., ए. व. – *अद्दसा खो भगवा ... महन्तं अग्गिक्खन्धं आदित्तं सम्पज्जलितं सजोतिभूतं,* अ. नि. 2(2).258; – **खन्धूपम** त्रि., जलती या दहकती हुई अग्निराशि के समान, प्रज्वलित अग्नि-स्कन्ध के समान – **मा** पु., प्र. वि., ब. व. – *कामा अग्गिक्खन्धूपमा दुखा,* थेरीगा. 353; – **मे** द्वि. वि., ब. व. – *अग्गिक्खन्धूपमे धम्मपरियाये,* मि. प. 162; – **खन्धोपमसुत्त** नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(2).258; – **गत** त्रि., [अग्निगत], आग के ऊपर विन्यस्त या रखा हुआ, आग में गिरा हुआ – **तं** नपुं., प्र.

वि., ए॰ व॰ - *किस्स पन अग्गिगतं चलति खुब्भति लुळति आविलति ऊमिजातं होति,* मि॰ प॰ 243; - **तो** पु., प्र॰ वि., ए॰ व॰ - *अकाले मरति, अग्गिगतो,* मि॰ प॰ 278; - **गवेसी** त्रि., [अग्निगवेषिन्], अग्नि का गवेषक, आग की गवेषणा या खोज करने वाला, अग्निपर्येषक - **सी** पु., प्र॰ वि., ए॰ व॰ - *सेय्यथापि, भूमिज, पुरिसो अग्गित्थिको अग्गिगवेसी अग्गिपरियेसनं चरमानो ...,* म॰ नि॰ 3.181; - **ज** त्रि., [अग्निज], अग्नि से उत्पन्न आग की लपटें - *काळा निदाघेरिव अग्गिजारिव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.399; *अग्गिजारिवाति अग्गिजाला इव,* तदे.; - **जालन** नपुं., अग्नि का जलाना या सुलगाना, अग्नि को उत्तेजित करना, आग के द्वारा तापन - *तथा जन्ताघरे बुड्ढे चेत्थ अनापुच्छा अग्गिजालनादीनि करोति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 196; - **जाला** स्त्री., [अग्निज्वाला], **1**. एक पौधे का नाम, घातकीवृक्ष - *अग्गिजाला तु घातकी,* अभि॰ प॰ 589; **2**. अग्निशिखा, ज्वाला, लपट, आग की लौ - **लं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ - *अग्गिजालं विय लोहितधारं उग्गिरमानं तस्स मुखं दिस्वापि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.41; - **हि** तृ॰ वि., ब॰ व॰ - *वेदनाहि अग्गिजालाहि विय परिडय्हमानस्स,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.266; - **जुहन** नपुं., अग्निहोम, अग्नि में हवि प्रदान, अग्नि में आहुति-अर्पण - **नं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ - *इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अग्गिजुहनं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.35; - **जुहनकटच्छु** पु., अग्नि में आहुति डालने की डोई - *अग्गिहुत्तन्ति अग्गिजुहनकटच्छुं* जा॰ अट्ठ॰ 7.288; - **झापनतल** नपुं., म्यां-मां के एक स्थान का नाम - *तं पि ठानं यावज्जतना, अग्गिझापनतलं ति पाकटं,* सा॰ वं॰ 57; - **ट्ठ** नपुं., स्त्री॰ [अग्निस्थ], अग्निस्थान, अग्निकुण्ड, अग्निशाला - *अग्गिट्ठं परिमज्जन्तं, ... अग्गिट्ठन्ति अग्गिसालं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.149; - **ट्ठान** [अग्निस्थान], उपरिवत् - *तेन खो पन समयेन भिक्खू खुद्दके जन्ताघरे मज्झे अग्गिट्ठानं करोन्ति,* चूळव॰ 239; - **त्थिक** त्रि., [अग्न्यर्थिक], अग्नि की इच्छा रखने वाला, अग्निगवेषी, अग्निपर्येषक - **को** पु., प्र॰ वि., ए॰ व॰ - *पुरिसो अग्गित्थिको अग्गिगवेसी अग्गिपरियेसनं चरमानो,* म॰ नि॰ 3.181; - **दड्ड** त्रि., [अग्निदग्ध], आग से जला हुआ - **ड्डो** पु., प्र॰ वि., ए॰ व॰ - *अग्गिदड्डोव तप्पति,* ध॰ प॰ 136; *अग्गिदड्डोव आतपे,* जा॰ अट्ठ॰ 6.263; - **दत्त** पु., [अग्निदत्त], **1**. ककुसन्ध-बुद्ध के एक ब्राह्मण-पिता का नाम - *ककुसन्धस्स, भिक्खवे, भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स अग्गिदत्तो नाम ब्राह्मणो पिता अहोसि,* दी॰ नि॰ 2.6; **2**. एक भिक्षु का नाम, जिसको थेरगा॰ के गह्वरतीरियत्थेरगाथा का रचयिता कवि माना गया है - *ब्राह्मणकुले निब्बत्तित्वा अग्गिदत्तो ति लद्धनामो ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.95; **3**. वाराणसी के एक ब्राह्मण का नाम - *अतीते किर वाराणसियं अग्गिदत्तस्स नाम ब्राह्मणस्स,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.68; **4**. कोशल के राजा के पुरोहित का नाम - *सो किर महाकोसलस्स पुरोहितो अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.139; - **दत्तब्राह्मणवत्थु** नपुं., ध॰ प॰ अट्ठ॰ की एक कथा का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.139-142; - **दाह / डाह** पु., अग्नि का प्रकोप, अग्निदाह, अग्नि के प्रज्वलन की उत्तेजना, प्रज्वलन वाली आग, अग्निकाण्ड - *होति सो, भिक्खवे, समयो यं महाअग्गिडाहो वुट्ठाति,* अ॰ नि॰ 1(1).206; - **देव** पु., **1**. उत्तरमधुरा के राजा उपसागर से उत्पन्न देवगर्भा के पांचवें पुत्र का नाम, एक राजकुमार का नाम - *देवगब्भाय ... पञ्चमो अग्गिदेवो ... अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.72; पे॰ व॰ अट्ठ॰ 82; **2**. अग्निदेव, अग्निदेवता - *वरतोति वरस्स अग्गिदेवस्स यजित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.48; **3**. एक चक्रवर्ती राजा का नाम - *इतो एकादसे कप्पे, अग्गिदेवोति विस्सुतो,* अप॰ 1.222; - **नि** पु., क॰ व्या॰ के अनुसार केवल प्र॰ पु., ए॰ व॰ में प्रयुक्त [अग्नि], आग - *पुरतो अग्गिनि पच्छतो अग्गिनि,* क॰ व्या॰ 95, तुल॰ गिनि॰; - **निकासी** त्रि., अग्नि अथवा ऊष्मा के कारण देदीप्यमान अर्थात् सूर्य - **सिना** पु., तृ॰ वि., ए॰ व॰ - *अग्गिनिकासिफालिमन्ति अग्गिनिकासिना सूरियेन फालितं विकसितन्ति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.281; - **निकासि-फालिम** त्रि., सूर्योद्गमन के समय खिलनेवाला, धूप में प्रस्फुटित होनेवाला - **मं** नपुं., प्र॰ वि., ए॰ व॰ - *पदुमं यथा अग्गिनिकासिफालिमं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.281; - **निब्बान** नपुं., आग को बुझाना, आग को शान्त करना - **नं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ - *दहनं अग्गिनिब्बानं तत्थ सक्कारमेव च,* म॰ वं॰ 30.86; - **निब्बापन** पु., एक चक्रवर्ती का नाम - *अग्गिनिब्बापनो नाम ... चक्कवत्ती महब्बलो,* अप॰ 1.160; - **निसम** त्रि., अग्नि के समान प्रज्वलित - **मासु** स्त्री., सप्त॰ वि., ब॰ व॰ - *पच्चन्ति हि तासु चिररत्तं, अग्गिनिसमासु समुप्पिलवाते,* सु॰ नि॰ 675; *अग्गिनिसमासूति अग्गिसमासु,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.181; - **पक्किक** त्रि., तत्पु॰ स॰ [अग्निपक्वक], अग्नि के द्वारा पकाये हुए पर आश्रित रहने वाला - **का** पु., प्र॰ वि., ब॰ व॰ - *अग्गिपक्केन जीवन्तीति अग्गिपक्किका,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.271; - **पज्जोत** पु., [अग्निप्रद्योत], आग का प्रकाश - ... *अग्गिपज्जोतो, पञ्ञापज्जोतो,* अ॰ नि॰ 1(2).161; - **पदित्त** त्रि.,

[अग्निप्रदीप्त], अग्नि के द्वारा प्रदीप्त, आग के द्वारा ऊष्णीकृत या दहकाया गया - **तानि** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *महाराज, तेन हि किलेसकण्डेन हदये विद्धकालतो पट्ठाय मम अग्गिपदित्तानिव सब्बानि अङ्गानि डय्हन्तीति दस्सेति,* जा. अट्ठ. 2.230; - **पपटिका** स्त्री., [अग्निपर्परीका], आग की चिनगारी, अग्निस्फुलिङ्ग, आग की पपड़ी - **कं** द्वि. वि., ए. व. - *खज्जोपनकमत्तं अग्गिपपटिकं,* अ. नि. अट्ठ. 1. 38(रो.); *खज्जूपनकमत्ता अग्गिपपटिका,* म. नि. अट्ठ. 2. 139(रो.); - **परिचरक / परिचरणक** त्रि., [अग्निपरिचारक], यज्ञीय-अग्नि का रक्षक या पहरेदार, अग्नि की परिचर्या या सेवा करने वाला - **णका** पु., प्र. वि., ब. व. - *अग्गिकाति अग्गिपरिचरणका,* महाव. अट्ठ. 263; - **परिचरणट्ठान** नपुं., अग्नि की परिचर्या का स्थान - *अत्तनो पत्तचीवरमादाय तस्स बहिनिगमे अग्गिपरिचरणट्ठानं अगमासि,* ध. प. अट्ठ. 1.115; - **परिचारिक** त्रि., वह, जो यज्ञाग्नि की परिचर्या या पूजा करता है, अग्निपूजक - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *ब्राह्मणा, भन्ते, पच्छाभूमका कामण्डलुका ... अग्गिपरिचारका,* स. नि. 2(2).299; - **परिचित** त्रि., [अग्निपरिचित], आग से जला हुआ, आग से अभिभूत, अग्निदग्ध - **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अनुजानामि, भिक्खवे, पञ्चहि समणकप्पेहि फलं परिभुञ्जितुं - अग्गिपरिचितं ...,* चूळव. 226; - **परियेसन** नपुं., [अग्निपर्येषण], आग की खोज, आग की गवेषणा - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *सेय्यथापि, भूमिज, पुरिसो अग्गित्थिको अग्गिगवेसी अग्गिपरियेसनं चरमानो ...,* म. नि. 3.181; - **पाक** त्रि., ब. स. [अग्निपाक], अग्नि के द्वारा पकाया हुआ - **को** प्र. वि., ए. व. - *एत्थ मधुकपुप्फरसो अग्गिपाको वा होतु आदिच्चपाको वा,* महाव. अट्ठ. 361; - **पाकी** त्रि., तापसों का एक वर्ग - *अग्गिपाकी अनग्गी च, दन्तोदुक्खलिकापि च,* अप. 1.15; - **पारिचरिया** स्त्री., [अग्निपरिचर्या], अग्नि की परिचर्या या सेवा, यज्ञीय-अग्नि की परिचर्या - *ब्राह्मण, वस्ससतम्पि एवं अग्गिं परिचरन्तस्स तव अग्गिपारिचरिया मम सावकस्स तङ्खणमत्तं पूजम्पि न पापुणाति,* ध. प. अट्ठ. 1.375; - **यं** द्वि. वि., ए. व. - *अग्गिपारिचरियञ्च अनभिसम्भुणमानो,* दी. नि. 1.89; - **पूजोपकरण** नपुं., अग्निपूजा के उपकरण, अग्निपूजा की सामग्री, यज्ञ के समस्त उपकरण, द्रष्ट. अग्गिहुत्तमिस्स; - **ब्रह्मा** पु., व्य. सं. [अग्निब्रह्मन्], अशोक के भाञ्जे का नाम, जो सङ्घमित्ता (सङ्घमित्रा) का पति था - *तस्सा च सामिको अग्गिब्रह्मा नाम कुमारो ...,* पारा. अट्ठ. 1.37; *भागिनेय्यो नरिन्दस्स अग्गिब्रह्माति विस्सुतो,* म. वं. 5.169,201; - **भय** नपुं., [अग्निभय], अग्नि का भय, आग का डर - *अग्गिभयं, उदकभयं, राजभयं, चोरभयं-इमानि खो, भिक्खवे, चत्तारि भयानि,* अ. नि. 1(2).138; *अग्गिभयन्ति अग्गिं पटिच्च उप्पज्जनकभयं,* अ. नि. अट्ठ. 2.326; - **भाजन** नपुं., [अग्निभाजन], अग्नि-कुण्ड, अग्नि रखने का पात्र, आग वाली अंगीठी - **नानि** प्र. वि., ब. व. - *मन्दामुखियोति अग्गिभाजनानि वुच्चन्ति,* महाव. अट्ठ. 242; - **मन्थ** पु., [अग्निमन्थ], कणिका-नामक वह वृक्ष, जिसकी लकड़ी को रगड़ कर आग पैदा की जाती है - *अग्गिमन्थो कणिका भवे,* अभि. प. 574; - **माली** पु., एक पौराणिक या कल्पित समुद्र का नाम - **लिं** द्वि. वि., ए. व. - *नावा तं समुद्दं अतिक्कमित्वा पुरतो अग्गिमालिं नाम गता,* जा. अट्ठ. 4. 127; - **मित्ता** स्त्री., व्य. सं. [अग्निमित्रा], एक भिक्षुणी का नाम, जो सङ्घमित्ता के साथ श्रीलंका (सिंहल) गयी थी - *हेमा च मासगल्ला च अग्गिमित्ता मितावदा,* दी. वं. 15.78; 18.11; - **मुख**[1] नपुं., प्रायः केवल सप्त. वि., ए. व. में ही प्रयुक्त, आग की भट्ठी में - *तेजोधातुप्पकोपेन, होति अग्गिमुखेव सो'ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.162; ध. स. अट्ठ. 336; - **मुख**[2] पु., एक प्रकार का विषधर सांप - **खेन** तृ. वि., ए. व. - *संतत्तो भवति कायो, दट्ठो अग्गिमुखेन वा,* ध. स. अट्ठ. 336; - **यायन** नपुं., [अग्न्यायतन], यज्ञाग्नि के रखने का गृह, अग्निशाला, - *अद्दसासि हरितरुक्खे, समन्ता अग्गियायनं,* जा. अट्ठ. 5.153; *अग्गियायनसङ्खातं अग्गिसालं समन्ता परिवारेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 5.154; - **वच्छगोत्तसुत्त** नपुं., म. नि. के 62वें सुत्त का शीर्षक, म. नि. 2.160, 166; - **वड्डमानक** त्रि., श्रीलंका के एक सरोवर का नाम - *अग्गिवड्डमानकञ्च इच्चेकादसवापियो,* म. वं. 35.95; - **वण्ण** त्रि., [अग्निवर्ण], आग की तरह गरम या उष्ण - *धातुयोव धातुसमूहं गण्हन्ति सण्डासेन अग्गिवण्णपत्तग्गहने वियाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).276; *आदित्तन्ति अग्गिवण्णं,* दी. नि. अट्ठ. 1.213; - **वत** नपुं., [अग्निव्रत], अग्नियज्ञ, आग की उपासना - *... अग्गिवतं वा नागवतं वा सुपण्णवतं वा यक्खवतं वा,* महानि. 66; - **वतिक** त्रि., [अग्निव्रतिक], अग्नि का उपासक, अग्नि की उपासना करने वाला - **का** पु., प्र. वि., ब. व. -*अग्गिवतिका वा होन्ति, नागवतिका वा होन्ति,* महानि. 63; - **वीजनक** नपुं., आग को लहकाने या उद्दीप्त करने का एक उपकरण, पंखा, व्यंजन - **केन** तृ.

वि., ए. व. – *विधूपनेनाति अग्गिवीजनकेन,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).127; – **वेस्स** पु., एलेय्य नामक राजा के अङ्गरक्षकों या प्रहरियों में से एक का नाम – *इमेपि रञ्ञो एळेय्यस्स परिहारका बाला-यमको मोग्गल्लो उग्गो ... गन्धब्बो अग्गिवेस्सो,* अ. नि. 1(2).208; – **वेस्सन** पु., [अग्निवेश्यायन, अर्द्धमा., अग्गिवेस्सायण], 1. निगण्ठनाटपुत्त का उपनाम – ... *निगण्ठं नाटपुत्तं एतदवोचं - यथा नु खो इमानि, भो अग्गिवेस्सन ...,* दी. नि. 1.50; 2. सच्चक निगण्ठपुत्त का नाम – ... *सच्चको निगण्ठपुत्तो वेसालियं पटिवसति,* म. नि. 1.293; *अपिस्सु मं अग्गिवेस्सन तिस्सो उपमायो पटिभंसु,* क. व्या. 308; 3. दीघनख परिव्राजक का नाम – *यापि खो ते एसा, अग्गिवेस्सन, दिट्ठि ...,* म. नि. 2.176; 4. अचिरवत का नाम – *एकमन्तं निसिन्नो खो जयसेनो राजकुमारो अचिरवतं समणुद्देसं एतदवोच-सुतं मेतं, भो अग्गिवेस्सन ...,* म. नि. 3.170; – **टि.** पालि के वैयाकरणों ने 'णायन' या 'णान' प्रत्ययों के आधार पर अग्गिवेस्स + णायन = अग्गिवेस्सायनो तथा अग्गिवेस्स + णान, अग्गिवेस्सानो रूप दिए हैं – *णायनणान वच्छादितो,* क. व्या. 347; *वच्छादितो णानणायना,* मो. व्या. 4.21; – **सञ्जित** पु., अग्नि के आधार पर रखा गया नाम – *चित्तकोत्वग्गिसञ्ञितो,* अभि. प. 580; – **संताप** पु., [अग्निसन्ताप], अग्नि का ताप, अग्नि का प्रदाह, जलन, गरमी – *अपि च, महाराज, अग्गिसन्तापवेगस्स महन्तताय उदकं चिच्चिटायति चिटिचिटायति ...,* मि. प. 242; *अग्गिसन्तापो सूरियसन्तापो ... अयं वुच्चति बाहिरा तेजोधातु,* विभ. 93; – **सम¹** त्रि., अग्नि के समान – **मासु** स्त्री., सप्त. वि., ब. व. – *अग्गिनिसमासूति अग्गिसमासु,* सु. नि. अट्ठ. 2.181; – **मा** प्र. वि., ब. व. – *भेस्मा अग्गिसमा जाला,* जा. अट्ठ. 6.66, पाठा. अग्गिनिसम; – **सम²** त्रि., सोलह चक्रवर्तियों का नाम – **मा** प्र. वि., ए. व. – *चत्तालीससहस्सम्हि, कप्पे सोळस खत्तिया, नामेनग्गिसमा नाम, चक्कवत्ती महब्बला,* अप. 1.158; – **समूदक** त्रि., अग्नि के समान गर्म जल वाला – *लोहकुम्भिं पवज्जन्ति, तत्तं अग्गिसमूदकं,* जा. अट्ठ. 5.262; – **सम्फस्स** पु., [अग्निसंस्पर्श], अग्नि के साथ सम्पर्क – ... *अग्गिसम्फस्सो दण्डसम्फस्सो सत्थसम्फस्सो ...,* अ. नि. 3(2).100; – **साला** स्त्री., [अग्निशाला], अग्निगृह, यज्ञाग्नि के रखने का घर, तप्त-जल से स्नान करने का प्रकोष्ठ – *जन्ताघरं त्वग्गिसाला,* अभि. प. 214; – **लम्हि / लायं** सप्त. वि., ए. व. – *सचे ते कस्सप अगरु, विहरेमु अज्जण्हो अग्गिसालम्ही'ति,* महाव. 29; *अग्गिसालायं अङ्गारकपल्लदारुआदिनीति,* जा. अट्ठ. 1.11; – **सिख** पु., 1. बुद्ध के द्वारा दीक्षित अनेक प्राणियों के नामों में से एक, एक नागराज का नाम – ... *चूळोदरो, महोदरो, अग्गिसिखो धूमसिखो ... एवमादयो दमिता, ... सीलेसु च पतिट्ठापिता,* पारा. अट्ठ. 1.87; 2. तीन चक्रवर्तियों का नाम – *इतो अट्ठमके कप्पे, तयो अग्गिसिखा अहु,* अप. 1.128; – **सिखा** स्त्री., [अग्निशिखा], आग की लपट, आग की ज्वाला – *का दिस्सति अग्गिसिखाव दूरे,* जा. अट्ठ. 5.202; *तस्स अग्गिसिखा काया, निच्छरन्ति पभस्सरा,* जा. अट्ठ. 5.260; – **सिखूपम** त्रि., ब. स., आग की जलती हुई लपटों की तरह चञ्चल, अस्थिर या जलाने वाला / वाली – **मा** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *उच्चावचा निच्छरन्ति, दाये अग्गिसिखूपमा,* सु. नि. 708; – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सेय्यो अयोगुळो भुत्तो, तत्तो अग्गिसिखूपमो,* ध. प. 308; – **सुत्त** नपुं., स. नि. के एक सुत्त का नाम, स. नि. 3(1).131-135; – **हुत्त** 1. नपुं., [अग्निहोत्र], अग्नि में हवि का अर्पण, अग्नि में आहुति डालना – *अग्गिहुत्तंव ब्राह्मणो,* ध. प. 392; *चरतो च ते ब्रह्मचरियं, अग्गिहुत्तञ्च जूहतो,* सु. नि. 430; 2. नपुं., अग्नि की पूजा का एक उपकरण – *अग्गिहुत्तं कमण्डलुं,* जा. अट्ठ. 7.287; *अग्गिहुत्तन्ति अग्गिजुहनकटच्छु,* जा. अट्ठ. 7.288; – **हुत्तक** नपुं., अग्नि में हवन या आहुति का अर्पण – *दुयिट्ठं ते नवमियं, अकतं अग्गिहुत्तकं,* जा. अट्ठ. 7.282; – **हुत्तमिस्स** नपुं., अग्नि की पूजा के विविध उपकरण या साधन – ... *अग्गिहुत्तमिस्सं उदके पवाहेत्वा,* महाव. 37; – **हुत्तमुख** त्रि., अग्निहोत्र की प्रमुखता वाला – **खा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अग्गिहुत्तमुखा यञ्ञा,* सु. नि. 573; – **हुत्तसाला** स्त्री., [अग्निहोत्रशाला], यज्ञीय-अग्नि का गृह, अग्निहोत्र का स्थान, वह स्थान, जहां पवित्र अग्नि रखी जाय – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *अत्तनो अग्गिहुत्तसालं आहरिं,* जा. अट्ठ. 5.4; – **हुत्तसेट्ठ** त्रि., ब. स. [अग्निहोत्रश्रेष्ठ], अग्निहोत्र की प्रधानता वाला – **ट्ठा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अग्गिहुत्तसेट्ठा अग्गिहुत्तपधाना ति अत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 2.160; – **होम** नपुं., [अग्निहोम, पु.], अग्नि में कष्टों से बचने के लिए हवन या आहुति डालना – **मं** प्र. वि., ए. व. – *अग्गिहोमन्ति एवरूपेन दारुना एवं हुते इदं नाम होतीति अग्गिजुहनं,* दी. नि. अट्ठ. 1.82-83; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *अग्गिहोमस्स भावो अग्गिहोमकं,* क. व्या. 364.

अग्गुपट्ठाक पु., [अग्रोपस्थापक], प्रथम या प्रधान परिचारक, प्रमुख सेवक, प्रधान अनुवर्ती - **को** प्र. वि., ए. व. - *मय्हं, भिक्खवे, एतरहि आनन्दो नाम भिक्खु उपट्ठाको अहोसि अग्गुपट्ठाको,* दी. नि. 2.5; *सम्मासम्बुद्धस्स उपट्ठाको अहोसि अग्गुपट्ठाको,* म. नि. 2.248.

अग्गुपट्ठायिका स्त्री., [अग्रोपस्थापिका], प्रधान स्त्री-परिचारिका - *तस्स अग्गउपट्ठायिका एका उपासिका,* ध. प. अट्ठ. 1.234; पाठा. अग्गउपट्ठायिका.

अग्गे सप्त. वि. का प्रतिरू. काल और देशवाचक निपा. [अग्रे], सामने, पहले, आगे, - *अग्गे च छेत्वा मज्झे च, पच्छा मूलम्हि छिन्दथ,* जा. अट्ठ. 4.140; *अग्गे चाति अवकन्तन्ता पन पठमं अग्गे,* जा. अट्ठ. 4.141.

अग्गेन तृ. वि., प्रतिरू. निपा. [अग्रेण], सन्दर्भानुसार केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, द्रष्ट. परिवेण., भिक्ख., यद., विहार., सेय्य. के अन्त..

अग्गोदक नपुं. [अग्रोदक], प्रथम जल, सर्वोत्तम जल, सम्मान में दिया गया जल - *अहो वत अहमेव लभेय्यं भत्तग्गे अग्गासनं अग्गोदकं अग्गपिण्डं,* म. नि. 1.35; *अग्गोदकन्ति दक्खिणोदकं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).155; *भिक्खाचारमग्गे पन अग्गासनअग्गोदकअग्गपिण्डत्थं वुड्ढानं पुरतो पुरतो याति,* खु. पा. अट्ठ. 196.

अग्घ पु., [अर्घ], 1. कीमत, मूल्य, दाम, - *अग्घो मूले च पूजने,* अभि. प. 1048; *यतो तया, अय्यपुत्त, अग्घो कतो, गहितो आरामो,* चूळव. 287. - **घेन** तृ. वि., ए. व. - *अग्घेन अग्घं कयं हापयन्ति,* जा. अट्ठ. 6.135; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट. अनग्घ, अप्प., कोटि-कोटि-धन., ठपित., मह., महतिमह., सम., सहस्स. के अन्त. तुल. पच्चग्ग; 2. नपुं., [अर्घ्य, अर्घ + यत् अर्घमर्हति], पूजा, सत्कार, किसी व्यक्ति या अतिथि का सम्मान या स्वागत - *अग्घो मूले च पूजने,* अभि. प. 1048; *अग्घे भवन्तं पुच्छाम, अग्घं कुरुतु नो भवन्ति,* जा. अट्ठ. 4.354; - **क** त्रि., अग्घ से व्यु. [अर्घ्य, अर्घ + यत् अर्घमर्हति], मूल्य, मूल्यवान्, मूल्यवाला, केवल स. उ. प. में ही प्रयुक्त - *कोटिधनग्घकं एव पञ्ञत्तं सयनं अहु,* म. वं. 30.77; - **ट्ठपन** नपुं., [अर्घ्यस्थपन], मूल्य-निर्धारण, मूल्य-विनिश्चय - *अग्घट्ठपनं नाम मनुस्सानं जीविता वोरोपनसदिसं,* जा. अट्ठ. 1.108.

अग्घति √अग्घ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अर्घति, अर्हति], **शा. अ.** मूल्यवान् होता है, मूल्य लगाता है, मूल्य के योग्य होता है - *नव कोटियो अग्घति,* ध. प. अट्ठ. 1.231; *सा पन किं अग्घति तण्डुलनाकिकाति पुच्छि,* जा. अट्ठ. 1.131; **ला. अ.** सत्पात्र होता है, सुयोग्य है, किसी कार्य के लिए सक्षम या समर्थ होता है - *किमग्घति तण्डुलनाळिकायं, अस्सान मूलाय वदेहि राज,* जा. अट्ठ. 1.131; - **ग्घापेन्तो** प्रेर., वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., मूल्य लगवा रहा, मूल्य-निर्धारित करवा रहा - *अयं अग्घापनिको एवं अग्घापेन्तो न चिरस्सेव मम गेहे धनं परिक्खयं गमेस्सति,* जा. अट्ठ. 1. 130; *गोणे अग्घापेन्तो विय तत्थेव ठितो कुमारे अग्घापेति,* जा. अट्ठ. 7.316; - **ग्घापेसि** प्रेर., अद्य., प्र. पु., ए. व., - *विसाखा तं अपिलन्धित्वाव कम्मारे पक्कोसापेत्वा अग्घापेसि,* ध. प. अट्ठ. 1.231; - **ग्घापेतुं** प्रेर., निमि. कृ. - *न सक्का केनचि अग्घापेतुं तुलेतुं परिमेतुं,* मि. प. 185; - **ग्घापेत्वा** प्रेर., पू. का. कृ. - *अग्घापेत्वा वातजवं, सिन्धवं सीघवाहनं,* अप. 1.105.

अग्घनक त्रि., केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, [अर्घनक], मूल्यवाला, द्रष्ट. सद्धपाद., कहापण., सतसहस्स. के आदि के अन्त.; - **भाव** पु., मूल्यवान होने की अवस्था, मूल्यवत्ता, अर्घता - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *पञ्चन्नं अस्ससतानं एकं तण्डुलनाळिं अग्घनकभावं जानाम,* जा. अट्ठ. 1.131.

अग्घनीय द्रष्ट. अनग्घनीय के अन्त..

अग्घसमोधान पु., समोधान-परिवास का एक विशिष्ट रूप, परिवास के अनेक प्रकारों में से एक - *अग्घसमोधानो नाम ... सम्बहुला वा आपत्तियो सब्बचिरपटिच्छनायो, तासं अग्घेन समोधाय तासं रत्तिपरिच्छेदवसेन अवसेसानं ऊनतरपटिच्छन्नानं आपत्तीनं परिवासो दिय्यति, अयं वुच्चति अग्घसमोधानो,* चूळव. अट्ठ. 27, - **टि.** जो भिक्षु एक से अधिक सङ्घादिसेस नामक आपत्तियों में आपतित है तथा लम्बी अवधि तक सङ्घ के सामने इन आपत्तियों को छिपाता है, उसके लिए अग्घसमोधान परिवास का दण्ड-विधान बुद्ध के द्वारा प्रज्ञप्त है.

अग्घापनक / अग्घापनिक त्रि., मूल्य-निर्धारण करने वाला, मूल्याङ्कन करने वाला, मूल्याङ्कक - **कं** पु., प्र. वि., ए. व. - *अञ्ञं अग्घापनिकं करिस्सामी'ति,* जा. अट्ठ. 1.130; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अहो अग्घापनिकस्स ञाणसम्पदा,* जा. अट्ठ. 1.131; - **ट्ठान** नपुं., मूल्यनिर्धारक का कार्यालय, मूल्याङ्कक का पद - *बोधिसत्तस्सेव अग्घापनिकट्ठानं अदासि,* जा. अट्ठ. 1.131.

अग्घापनियकम्म नपुं., मूल्याङ्कन या मूल्य-निर्धारक का काम या मूल्याङ्कक का अधिकार - **म्मे** सप्त. वि., ए.

व॰ – *अथ नं राजा अग्घापनियकम्मे ठपेसि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.125.

अग्घिय 1. त्रि॰ [अर्घ्य], मूल्यवान्, बहुमूल्य, कीमती, पूजनीय, महत्त्वपूर्ण – *सकलपब्बतं मणिअग्घियं विय अलङ्करित्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 7.155; **2**. नपुं, समादर, सम्मान, महान् पुरुष या अतिथि का पाद अर्घ्य एवं जल भोजनादि के द्वारा सत्कार – *अथाग्घमग्घियं*, अभि॰ प॰ 424; – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुम्हेहि मय्हं अग्घियं निवेदनं कतं*, जा॰ अट्ठ॰ 7.275; **3**. नपुं॰, सम्मानसूचक पुष्पालङ्करणादि का प्रचय, राशि, ढेर, समूह – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्घियं कारयित्वान, जातिपुप्फेहि छादयिं*, अप॰ 1.100; – **यानि** ब॰ व॰ – *अग्घियानि च तिट्ठन्तु, येन मग्गेन एहिति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.363; स॰ उ॰ प॰ में कुसुम॰, पुप्फ॰, मणि॰, रतन॰, तोरण॰, सुवण्ण॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अग्यन्तराय पु॰, अग्गि + अन्तराय, [अग्न्यन्तराय], आग के कारण उत्पन्न बाधा या भय – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्रिमे अन्तराया – राजन्तरायो, चोरन्तरायो, अग्यन्तरायो ...*, महाव॰ 141; *दवदाहो वा आगच्छति, आवासे वा अग्गि उट्ठहति, अयं अग्यन्तरायो*, महाव॰ अट्ठ॰ 320.

अग्यागार नपुं॰, अग्गि + आगार [अग्न्यागार], आग के रखने का घर, अग्निशाला, अग्निहोत्रशाला – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो भगवा अग्यागारं पविसित्वा ...*, महाव॰ 29; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... भारद्वाजगोत्तस्स ब्राह्मणस्स अग्यागारे तिणसन्थारकं*, म॰ नि॰ 2.180; *अग्यागारेति अग्गिहोमसालायं*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.151.

अग्याधान नपुं॰, अग्गि + आधान [अग्न्याधान], अग्नि का अधिष्ठापन, यज्ञीय-अग्नि का प्रतिष्ठापन – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... अरञ्ञायतने अग्गिहुतसालायं अग्याधानं, कत्वा ...*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.370 अप॰ अग्यागार.

अग्यायतन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अग्गि + आयतन [अग्न्यायतन], अग्निहोत्रशाला, यज्ञीय-अग्नि को रखने के लिए बनाया गया घर – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्गिहुत्तं परिचरतीति अग्यायतनं सम्मज्जनूपलेपनबलिकम्मादिना पयिरुपासति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.116–17.

अघ[1] नपुं॰, [अघ], कुकृत्य, अपराध, पाप, अकुशल कर्म, विपत्ति दुख – *पापं च किब्बिसं वेराघं दुच्चरितदुक्कतं अपुञ्ञाकुसलं कण्हं कलुसं दुरितागु च*, अभि॰ प॰ 84; *दुक्खं च कसिरं किच्छं नीघो च व्यसनं अघं*, अभि॰ प॰ 89; *पापस्मिं गगने दुक्खे व्यसने चाघमुच्चते*, अभि॰ प॰ 940; *छन्दजं अघं छन्दजं दुक्खं*, स॰ नि॰ 1(1).26; *अघन्ति पञ्चक्खन्धदुक्खं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.57; – **कर** त्रि॰, [अघकर], पापकर, हानिकर, अकुशल-कर्म करने वाला, दुःखदायी – *अघम्मिगाति अघकरा मिगा, दुक्खावहा मिगाति अत्थो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.264; – **गत** नपुं॰, राग आदि क्लेश, दुःखजनक चित्तवृत्तियां – *अब्बुळ्हं अघगतं विजितं*, थेरगा॰ 321; *विबाधनसभावताय अघा नाम रागादयो, अघानि एव अघगतं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.37; – **जात** त्रि॰, दुःखी, विपन्न, विपद्ग्रस्त, दुःखाभिभूत – *अघजातस्स वे नन्दी, नन्दीजातस्स वे अघं*, स॰ नि॰ 1(1).66; *अघजातस्साति दुक्खजातस्स, वट्टदुक्खे ठितस्साति अत्थो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101; – **भूत** त्रि॰, [अघभूत], पापमय, दुःखमय, रोगों से भरपूर – *अयं खो पन, मागण्डिय, कायो रोगभूतो गण्डभूतो सल्लभूतो अघभूतो आबाधभूतो*, म॰ नि॰ 2.188; – **मूल** नपुं॰, [अघमूल], पाप की जड़, बुराई का मूल, दुष्टता का मूल, दुःख का कारण – *अघमूलं वमित्वान, पत्तो मे आसवक्खयो*, थेरगा॰ 116; *अघस्स वट्टदुक्खस्स मूलभूतं अविज्जाभवतण्हासङ्खातं दोसं, सब्बं वा किलेसदोसं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.252; *यायं तण्हा ... कामतण्हा, भवतण्हा, विभवतण्हा, इदं वुच्चति, भिक्खवे, अघमूलन्ति*, स॰ नि॰ 2(1).31; – **विनय** पु॰, घृणा का दूरीकरण, पाप का अपनयन, दोष का निराकरण, विद्वेष-निवारण – *छन्दविनया अघविनयो, अघविनया दुक्खविनयो'ति*, स॰ नि॰ 1(1).26; *अघविनयोति तण्हाविनयेन पञ्चक्खन्धविनयो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.57; – **सुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ के खन्धसंयुत्त के एक सुत्त का नाम, स॰ नि॰ 2(1).30–31.

अघ[2] क. नपुं॰, [बौ॰ सं॰ अघ पु॰], आकाश, वायुमण्डल, वातावरण, पर्यावरण – *देवो वेहायसो तारापथो सुरपथो अघं*, अभि॰ प॰ 46; *न हञ्ञतीति अघं, अघट्टनीयन्ति अत्थो*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 358; *अघेति अप्पटिघे ठाने*, जा॰ अट्ठ॰ 4.287. **ख**. त्रि॰, आकाशीय, निराश्रय, निरावरण, उन्मुक्त – **घा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यापि ता लोकन्तरिका अघा असंवुता अन्धकारा अन्धकारतिमिसा*, दी॰ नि॰ 2.9; *अघा ति निच्चविवटा*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.23, तुल॰ नभसि; – **गत** नपुं॰, आकाशतत्त्व – *यो आकासो आकासगतं अघं अघगतं*, ध॰ स॰ 637; *अघमेव अघगतं*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 358; – **गामी** त्रि॰, आकाश में गमन करने वाला, दिव्यमार्ग में जानेवाला – **मिनं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अघगामिनन्ति आकासगामीनं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.114.

अघट्टनीय त्रि., √घट्ट के सं. कृ. का निषे., संघर्षण-रहित, संघट्टन के अयोग्य - **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *न हञ्ञतीति अघं अघट्टनीयन्ति अत्थो,* ध. स. अट्ठ. 358; - **ता** स्त्री., भाव., घात-प्रतिघात से रहित - **यं** प्र. वि., ए. व. - *अघट्टनीयताय अघं,* विभ. अट्ठ. 66.

अघट्टित त्रि., घट्टित का निषे., घात-प्रतिघात-रहित, स्थिर, शान्त - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अनेरितो अघट्टितो अचलितो अळुलितो ... समुद्दोति,* महानि. 260.

अघम्मिग पु., भयङ्कर जङ्गली-जीव, भीषण वन्य-पशु - **गेहि** तृ. वि., ब. व. - *लुद्देहि वाळेहि अघम्मिगेहि च,* जा. अट्ठ. 7.136; *अघम्मिगेहीति अघावहेहि मिगेहि, दुक्खावहेहि सुनखेहीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 7.136.

अघर त्रि., घर का निषे., ब. स., गृहविहीन - **रा** पु., प्र. वि., ब. व. - *गेहं विकिणित्वा अघरा हुत्वा,* जा. अट्ठ. 6.84.

अघसिगम त्रि., आकाशचारी, आकाश में गमन करने वाला - **मा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अधोमुखा अघसिगमा बली जवा,* वि. व. 13; *अघसिगमाति वेहासंगमा,* वि. व. अट्ठ. 63.

अघापह त्रि., [अघापह], पापों या द्वेषों का नाश करने वाला - *तरिंसु तं धम्ममघप्पहं पहं,* अभि. प. मङ्गलगाथा 2; पाठा. अधप्पहं.

अघावह त्रि., दु:ख या कष्ट को लानेवाला - **हेहि** पु., तृ. वि., ब. व. - *अघावहेहि मिगेहि, दुक्खावहेहि सुनखेहीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 7.136.

अघावी त्रि., दुःखपूर्ण, दुःखाभिभूत, व्यथित, विपद्ग्रस्त, संकटापन्न - **वी** पु., प्र. वि., ए. व. - *तेनम्हि अट्टो ब्यसनंगतो अघावी,* सु. नि. 699; *अघावीति दुक्खितो ... तेन च सो चेतसिकअघभूतेन अघावी,* सु. नि. अट्ठ. 2.189; - **विनो** ब. व. - *मल्लपजापतियो च अघाविनो दुम्मना चेतोदुक्खसमप्पिता,* दी. नि. 2.111; *अघाविनोति उप्पन्नदुक्खा,* दी. नि. अट्ठ. 2.160.

अघोस त्रि., घोस का निषे. [अघोष], वे व्यञ्जन, जिनके उच्चारण में ध्वनि अव्यक्त रहती है, ध्वनिहीन निःशब्द, प्रत्येक व्यञ्जनवर्ग के प्रथम दो अक्षर तथा स - *एत्थ पञ्चसु वग्गेसु वग्गानं पठमा परा, वग्गानं दुतिया पि च सकारो च तथा परो, अब्यत्तनादयुत्तत्ता अघोसो ति पकासिता,* क. व्या. (पृ.) 9; - **टि.** यह पालि-व्याकरण का एक महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक पद है, परसमञ्ञा पयोगे, क. व्या. 9; क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, तथा स, ये ग्यारह व्यञ्जन अघोषसञ्ज्ञक हैं, अव्यक्त नाद से युक्त होने के कारण ये अघोष कहे जाते हैं.

अङ्क पु., [अङ्क], **शा. अ.** गोद, बैठने के समय जांघ और नितम्ब के मिलने से बननेवाला एक कोण-विशेष, छाती, वक्षस्थल - *उच्छङ्गङ्का तुभो पुमे,* अभि. प. 276; - **ङ्कं** द्वि. वि., ए. व. - *इत्थियो नाम एकदिवसम्पि अङ्कं अवत्थरित्वा निपन्नसामिकम्हि हदयं भिन्दितुं न सक्कोन्ति,* जा. अट्ठ. 5.288; - **ङ्के** सप्त. वि., ए. व. - *न, भिक्खवे, अङ्के पत्तो निक्खिपितब्बो,* चूळव. 232; - **ङ्केन** सप्त. वि., ए. व. - *दारके अङ्केनादाय वाणिजे उपसङ्कमन्ति,* जा. अट्ठ. 2.105; **ला. अ.** लक्षण, चिह्न, अभिज्ञान - *कलङ्को लञ्छनं लक्खं अङ्कोभिञ्ञाण-लक्खणं, चिहं चापि,* अभि. प. 55; *उच्छङ्गे लक्खणे चाङ्को,* अभि. प. 1043.

अङ्कित त्रि., अङ्केति का भू. क. कृ., [अङ्कित], चिह्नित, अभिलक्षित, संकेतित, हस्ताक्षरित, प्रतीकित, - *नमकरानमन्तानं नियुत्ततम्हि,* क. व्या. 619; साहित्य में केवल स. उ. प. में ही प्राप्त; - **कण्णक** त्रि., [अङ्कितकर्णक], वह, जिसका कान चिह्नित हो, कटे हुए या बिंधे हुए कान वाला - *अथो अङ्कितकण्णकोति अथ स्वेव विद्धकण्णो छिद्दकण्णोति लम्बकण्णतं सन्धायाह,* जा. अट्ठ. 2.154.

अङ्कुर[1] पु./नपुं., [अङ्कुर], जीवाणु, अंखुआ, अङ्कुर, बीज से निकली हुई पहली पत्ती - **रो** प्र. वि., ए. व. - *ततो अङ्कुरो उट्ठहित्वा ... फलं ददेय्य,* मि. प. 50, *यं यदेव अवसिट्ठं होति अङ्कुरो वा पत्तं वा तचो वा,* ध. प. अट्ठ. 1.161; *तं खणं येव बीजम्हा तम्हा निक्खम्म अङ्कुरो,* म. वं 15.43; - **निब्बत्तनट्ठान** नपुं., अङ्कुर या अंखुआ के बढ़ने या विकसित होने का स्थान - **नं** प. वि., ए. व. - *अङ्कुरनिब्बत्तनट्ठानं मण्डूककण्टकेन विज्झित्वा पेसेसि,* जा. अट्ठ. 2.86; - **वण्ण** त्रि., [अङ्कुरवर्ण], अङ्कुर जैसा रंग, अंखुआ जैसा वर्ण - *अम्बङ्कुरवण्णन्ति अम्बङ्कुरेन समानवण्णं,* ध. स. अट्ठ. 350.

अङ्कुर[2] पु. [अक्रूर], उपसागर तथा देवगब्भा (देवगर्भा) से उत्पन्न दसवें पुत्र का नाम, एक राजकुमार का नाम - *देवगब्भाय ... दसमो अङ्कुरो नाम अहोसि,* जा. अट्ठ. 4.72; *अङ्कुरो इदमब्रवि,* पे. व. 323; *देसनावसाने अङ्कुरो च इन्दको च सोतापत्तिफले पतिट्ठहिंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.127.

अङ्कुरपेतवत्थु नपुं., पे. व. के उरगवग्ग के अन्त. एक खण्ड का शीर्षक, पे. व. 114-119.

अङ्कुरवत्थु नपुं., ध. प. की अट्ठ. की एक कथा का शीर्षक, ध. प. अट्ठ. 2.327-28.

अङ्कुस पु., [अङ्कुश], अङ्कुश, **1**. शा॰ अ॰ हाथी को हांकने तथा काबू रखने वाला दो मुंहा भाला, हाथी को निर्देश देने में व्यवहृत एक नियन्त्रक-यन्त्र या उपकरण – *मत्थकम्हि तु अङ्कुसो,* अभि॰ प॰ 367; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दण्डेनेके दमयन्ति, अङ्कुसेहि कसाहि च,* चूळव॰ 335; – **से** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *हत्थिनो तस्मिं काले अङ्कुसे वा कुन्ततोमरे वा न गणेन्ति, चण्डा भवन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.289; **2**. फल तोड़ने के लिए लग्गी के सिरे पर बंधी छोटी लकड़ी या हुक, ब्राह्मण-तापस के अनेक उपकरणों में से एक – *किमङ्कुसञ्च पत्तञ्च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.219; ... *पच्छिखणित्ति अङ्कुसहत्था अरञ्ञं पविसित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.281; **3. ला॰ अ॰** √कर से व्यु॰, क्रि॰ रू॰ के साथ प्रयुक्त, सचेष्ट करना, नियन्त्रित करना, नियंत्रण में रखना – *सो तंयेव अङ्कुसं कत्वा* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).245; *अत्तनो वचनं अङ्कुसं कत्वा,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 195; **4**. नेत्ति॰ के पांचवें नय का नाम – *पञ्चमो अङ्कुसो नाम, सब्बे पञ्च नया गताति,* नेत्ति॰ 3; – **यट्ठि** स्त्री॰, [अङ्कुशयष्टि], अङ्कुश लगाने की छड़ी, चुभोने की छड़ी – **ट्ठिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अङ्कुसयट्ठिञ्च गहेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.56; – **गय्ह** नपुं, अङ्कुसगह का भाव, हाथी को नियन्त्रित करने अथवा अपने वश में रखने की कला – **य्हे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुसलो अहं हत्थारुळ्हे अङ्कुसगय्हे सिप्पेति,* म॰ नि॰ 2.304; – **ग्गह** पु॰ [अङ्कुशग्रह], एक कुशल महावत, पीलवान, हाथीवान – *हत्थिप्पभिन्नं विय अङ्कुसग्गहो,* ध॰ प॰ 326; थेरगा॰ 77.

अङ्केत्वा √अङ्क का पू॰ का॰ कृ॰, चिह्नित करके, निशान लगा करके, पहचान करके – *बन्धित्वालक्खणेन अङ्केत्वा दासपरिभोगेनपि परिभुञ्जिस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.432; *इमस्मिं पन रुक्खे अम्बानि अङ्केत्वा गहितानि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.328.

अङ्कोल पु॰, [अङ्कोल, अर्द्धमा॰ अङ्कोल्ल], एक वृक्ष का नाम, पिस्ते का वृक्ष – *लिकोचको तथाङ्कोलो,* अभि॰ प॰ 557; *अङ्कोला कच्छिकारा च पारिजञ्ञा च पुप्फिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.302; – **क**[1] नपुं॰, पिस्ते के वृक्ष का फूल – *अङ्कोलकादीनि पुप्फानि ओचिनामि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.400; – **क**[2] पु॰, एक स्थविर का नाम – *इत्थं सुदं आयस्मा अङ्कोलको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.206.

अङ्क्य पु॰, [अङ्क्य, अङ्की], एक प्रकार की खंजरी, वाद्यविशेष, मृदङ्गविशेष – *आलिङ्गयङ्क्योद्धका भेदा,* अभि॰ प॰ 143.

अङ्ग[1] निपा॰, व्यङ्ग्योक्ति-पूर्ण कथनों में प्रयुक्त सम्बोधन, कटाक्षपरक अभिव्यक्तियों में प्रयुक्त – *अब्भाने भो अरे अम्भो हम्भो रे जेऽङ्ग आवुसो, हे हरे थ,* अभि॰ प॰ 1139.

अङ्ग[2] नपुं॰ [अङ्ग], **शा॰ अ॰** शरीर का अवयव – *अङ्गं त्ववयवो वुत्तो,* अभि॰ प॰ 278; *अङ्गमेतं मनुस्सानं, भाता लोके पवुच्चति, अङ्गस्स सदिसी वाचा, अङ्गं सम्म ददामि ते,* जा॰ अट्ठ॰ 3.42; **ला॰ अ॰ 1**. किसी सम्पूर्ण वस्तु का एक अविभाज्य हिस्सा अथवा उसका गौण खण्ड – *रञ्ञो अङ्गन्तेव सङ्ख्यं गच्छति,* अ॰ नि॰ 1(1).277; *अज्झत्तिकं, भिक्खवे, अङ्गन्ति करित्वा नाञ्ञं एकङ्गम्पि समनुपस्सामि,* अ॰ नि॰ 1(1).22; **ला॰ अ॰ 2**. बुद्ध के वचनों के नौ प्रकार के विभाजनों के लिए प्रयुक्त – *नवङ्गं सत्थुसासनं,* दी॰ वं॰ 4.15; – **ङ्गानि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अङ्गतो नव अङ्गानि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 20; *सुत्तं गेय्यं वेय्याकरणं गाथुदानितिवुत्तकं, जातकब्भुतवेदल्लं नवङ्गं सत्थुसासनं,* दी॰ वं॰ 4.15; **ला॰ अ॰ 3**. कड़ी, योजक, जोड़, निदान, हेतु, कारण – *अङ्गा देसे बहुम्हङ्गं तथावयवहेतुसु,* अभि॰ प॰ 955; *तत्थ तयो अद्धा द्वादसङ्गानि* ..., अभि॰ ध॰ स॰ 56; *अङ्गतोति एत्थ च पाणातिपातस्स पञ्च अङ्गानि भवन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 21; **ला॰ अ॰ 4**. गुण, विशेषता, अभिलक्षण, चिह्न, मापदण्ड, (प्रायः संख्याओं के साथ प्रयुक्त) – **ङ्गेहि** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चतूहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागता वाचा सुभासिता होति, न दुब्भासिता,* सु॰ नि॰(पृ॰) 148; *चतूहि अङ्गेहीति चतूहि कारणेहि अवयवेहि वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.112; **ला॰ अ॰ 5**. शरीर के अंगों के विशिष्ट फल बतलाने वाली एक विद्या – *सेय्यथिदं-अङ्गं निमित्तं* ..., दी॰ नि॰ 1.8; *अङ्गन्ति हत्थपादादीसु येन केनचि एवरूपेन अङ्गेन समन्नागतो दीघायु यसवा होतीतिआदिनयप्पवत्तं अङ्गसत्थं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.82; – **घंसन** नपुं॰, [अङ्गघर्षण], अङ्गों को रगड़ना या घिसना, अङ्ग-संघर्षण – *अङ्गघंसनत्थाय चतुरस्से वा अट्ठंसे वा थम्भे निखाते ... अङ्गं घंसन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221; – **जात** नपुं॰, एक विशेष प्रकार का शरीरावयव, स्त्रियों एवं पुरुषों की जननेन्द्रिय, – *अङ्गजातं रहस्सङ्गं,* अभि॰ प॰ 272; *तस्मिञ्च सरीरे अङ्गजातसामन्ता वणो होति,* पारा॰ 41; *पञ्चहाकारेहि अङ्गजातं कम्मनियं होति,* पारा॰ 45.

अङ्ग[3] पु॰, व्य॰ सं॰ [अङ्ग], **1**. एक प्रत्येकबुद्ध का नाम – *अङ्गो च पङ्गो च गुत्तिजितो च,* म॰ नि॰ 3.116; **2**. एक स्थविर (थेर) का नाम – *तत्थ लोमसकङ्गियोति अङ्गथेरो किर नामेस,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.182; **3**. अनेक राजाओं के नाम – ... *अङ्गो नाम लोमपादो वाराणसिराजा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.49; **4**. देश का नाम, सदा ब॰ व॰ में ही बिहार-प्रदेश के भागलपुर-क्षेत्र के निवासियों के लिए प्रयुक्त शब्द – *वङ्गा विदेहकम्बोजा मद्दा भग्गाङ्गसीहळा,* अभि॰ प॰ 185; *एकं समयं*

भगवा अङ्गेसु चारिकं चरमानो महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं, दी॰ नि॰ 1.97; *एकं समयं भगवा अङ्गेसु विहरति अस्सपुरं नाम अङ्गानं निगमो,* म॰ नि॰ 1.343; – **क** पु॰, सोणदण्ड-नामक ब्राह्मण की बहिन के पुत्र का नाम – *सोणदण्डस्स ब्राह्मणस्स भागिनेय्यो अङ्गको नाम माणवको,* दी॰ नि॰ 1.107; – **रट्ठ** नपुं, अङ्ग का जनपद – *अतीते अङ्गरट्ठे अङ्गे च मगधरट्ठे मगधे च ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.411; – **राजा** पु॰, अङ्ग देश का राजा – *किं पन ते, ब्राह्मण, अङ्गराजा देवसिकं निच्चभिक्खं ददाती'ति,* म॰ नि॰ 2.382.

अङ्गकूट नपुं॰, माप-तौल में ठगी या धोखा-धड़ी का एक प्रकार – *अङ्गकूटं नाम गण्हन्तो पच्छाभागे हत्थेन तुलं अक्कमति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.73.

अङ्गगामव्हय त्रि॰, अङ्गगाम नाम वाला (श्रीलङ्का का एक सरोवर) – *अङ्गगामव्हयं पि च,* चू॰ वं॰ 79.37.

अङ्गण[1] नपुं॰, [अङ्गन], खुली जगह, खुला स्थान, चौक, नगर में घर के सामने का वृक्ष-रहित मैदान या जंगल का पेड़-रहित क्षेत्र – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजिरं चच्चराङ्गणं,* अभि॰ प॰ 218; *न पटिवाते अङ्गणे सेनासनं पप्फोटेतब्बं,* चूळव॰ 362; – **ट्ठान** नपुं॰, आंगन का स्थान – *उय्याने विचरन्ता एकं अङ्गट्ठानं दिस्वा उय्यानपालं पुच्छिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.243; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *फासुके अङ्गणट्ठाने खन्धावारं निवेसयि,* म॰ वं॰ 25.20; – **परियन्त** पु॰, खुले हुए निर्वृक्ष क्षेत्र का छोर – **न्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अङ्गणपरियन्ते ठितं निग्रोधरुक्खं दिस्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.168; स॰ उ॰ प॰ के रूप में उद॰, एक॰, अन्तोनिवेसन॰, अम्ब॰, इसिभूम॰, चेतिय॰, राज॰, विवट॰ इत्यादि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अङ्गण[2] नपुं॰, **शा॰ अ॰** धूलि, गंदगी, रज, **ला॰ अ॰** क्लेश, राग, द्वेष, मोह – *भूमिभागे किलेसे च मले चाङ्गणमुच्चते,* अभि॰ प॰ 859; *अत्थि मे अज्झत्तं अङ्गणन्ति यथाभूतं नप्पजानाति,* म॰ नि॰ 1.31; *रागो अङ्गणं, दोसो अङ्गणं, मोहो अङ्गणं ...,* विभ॰ 426.

अङ्गणसालक पु॰, एक गांव का नाम – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विहारस्सभयस्सादा गामं अङ्गणसालकं,* चू॰ वं॰ 42.63.

अङ्गणिक भारद्वाज पु॰, थेरगा॰ के तिकनिपात की 219–221 गाथाओं के रचयिता थेर (स्थविर) का नाम, थेरगा॰ (पृ॰) 203.

अङ्गति पु॰, मिथिला के एक राजा का नाम, – *ततो रत्या विवसाने, उपट्ठानम्हि अङ्गति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.114; *इच्चेवं पितरं कञ्ञा, रुचा तोसेसि अङ्गतिं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.130; *जम्बुदीपं अवेक्खन्तो, अद्दा राजानमङ्गतिं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.131.

अङ्गद नपुं॰, एक आभूषण का नाम, केयूर, बाजूबन्द – *केयूरमङ्गदं चेव बाहुमूलविभूसनं,* अभि॰ प॰ 287; *ततो हेमञ्च कायूरं अङ्गदं मणिमेखलं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.376; स॰ उ॰ प॰ में द्रष्ट॰ चित्त॰, दिब्ब॰, पाद॰ के अन्त॰.

अङ्गदी त्रि॰, अङ्गद धारण करने वाला, बाजूबन्द पहनने वाला – *अङ्गदीति दिब्बङ्गदसमन्नागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.10.

अङ्गदुब्बल त्रि॰, ब॰ स॰, **शा॰ अ॰** दुर्बल, कृश, **ला॰ अ॰** दुर्बल ध्यान अङ्गों वाला, ध्यान-भावना के समय किसी एक आलम्बन पर चित्त को स्थिर रखने में अक्षम – **ला** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वितक्कविचारानं ओळारिकत्ता अङ्गदुब्बला'ति च तत्थ दोसं दिस्वा,* विसुद्धि॰ 1.149; *एवं सुखस्स थूलत्ता, होतायं अङ्गदुब्बला,* अभि॰ अव॰ 962.

अङ्गना स्त्री॰, [अङ्गना], स्त्री, नारी – *इत्थी सीमन्तिनी नारी थी वधू वनिताङ्गना, पमदा सुन्दरी कन्ता रमणी दयिता'बला, मातुगामो च महिला,* अभि॰ प॰ 230.

अङ्गपच्चङ्ग नपुं॰, [अङ्गप्रत्यङ्ग], **1.** एक अङ्ग के पश्चात् दूसरा अङ्ग या अवयव, प्रत्येक अङ्ग, सम्पूर्ण अङ्ग या शरीर का भाग – **ङ्गं** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञतरं वा अङ्गपच्चङ्गं दहेय्य,* म॰ नि॰ 2.30; *एवमेव धनं वा यसं वा पुत्तं वा दारं वा अङ्गपच्चङ्गं वा अनोलोकेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.26; – **नि** ब॰ व॰ – *अङ्गपच्चङ्गानि छिन्दिवा पातेसुं* जा॰ अट्ठ॰ 4.290; **2.** त्रि॰, ब॰ स॰, सुसंगठित-अङ्गों वाला, सुन्दर-अङ्गों वाला – **ङ्गा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो त्वं अङ्गपच्चङ्गा, सुचारु पियदस्सना,* पे॰ व॰ 358; – **ङ्गी** उपरिवत् – *अङ्गपच्चङ्गीति परिपुण्णसब्बङ्गपच्चङ्गवती,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 137; – **सम्पन्न** त्रि॰, [अङ्गप्रत्यङ्गसम्पन्न], सभी अङ्गों में परिपूर्ण – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अङ्गपच्चङ्गसम्पन्नो, आरोहपरिणाहवा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.24; स॰ उ॰ प॰ में किस॰ फरुस॰ काळ॰, दस्सनीय॰, सब्ब॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अङ्गपच्चङ्गी त्रि॰, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, सब्बङ्गपच्चङ्गी, सोभनसब्बङ्गपच्चङ्गी के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अङ्गपरिच्चाग पु॰, [अङ्गपरित्याग], अङ्ग का परित्याग, शरीर के अङ्गों का दान – *अङ्गपरिच्चागो दानउपपारमी नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.34; विलो॰ जीवितपरिच्चाग.

अङ्गपरिणाम पु॰, धर्मों, उपादानों या उपकरणों का रूपान्तरण या परिवर्तन, अङ्गों की जीर्णता – *अङ्गपरिणामो यथा होति तथा वेदितब्बो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 270.

अङ्गपावुरण / अङ्गपापुरण नपुं॰, माता द्वारा अपनी सन्तान को हाथ की थपकी देकर उसे शान्त कराना या सुरक्षित अनुभव कराना – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थनखीरेन गीतेन,*

अङ्गपावुरणेन च, रोदन्तं पुत्तं तोसेति, तोसेन्ती तेन वुच्चति, जा. अट्ठ. 5.323; *अङ्गपावुरणेन चाति थनन्तरे निपज्जापेत्वा सरीरसम्फस्सं फरापेन्ती अङ्गसङ्घातेनेव पावुरणेन,* जा. अट्ठ. 5.325.

अङ्गपुत्तपिन नपुं., कर्म. स., अपने अङ्गों के समान प्रिय स्थूल या मोटा पुत्र – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *नाङ्गपुत्तपिनेन वाति अङ्गसरिक्खकेन वा पुत्तपिनेनपि न पमोचितो,* जा. अट्ठ. 3.191, पाठा. अङ्गपुत्त-सिर.

अङ्गमंस नपुं., शरीर के अङ्ग का मांस – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *अङ्गमंसं उक्खिपित्वा अदासि,* जा. अट्ठ. 3.43.

अङ्गमगध पु., ब. व. में ही प्रयुक्त, अङ्ग तथा मगध के जनपद या उन जनपदों के निवासी – **धानं** ष. वि., ब. व. – *लाभा वत, भो, अङ्गमगधानं,* म. नि. 2.205; *सो तेहि सद्धिं अङ्गमगधानञ्च कुरुरट्ठस्स च अन्तरे वासं कप्पेत्वा इमं ओवादं देति,* ध. प. अट्ठ. 2.139; – **धेसु** सप्त. वि., ब. व. – *अहं ते अङ्गमगधेसु, याविच्छसि, ताव ददामि भोगे,* जा. अट्ठ. 2.102.

अङ्गमगधवासी पु./नपुं., ब. व. में ही प्रयुक्त, अङ्ग तथा मगध के निवासी या रहने वाले – **नं** पु., ष. वि., ब. व. – *अङ्गमगधवासीनं कुलपुत्तानं दसहि सहस्सेहि,* जा. अट्ठ. 1.95; *अङ्गमगधवासीनं तस्स सक्कारं गहेत्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.284; 2.139.

अङ्गमङ्ग नपुं., केवल ब. व. में ही प्रयुक्त, प्रत्येक अङ्ग, एक-एक अङ्ग – *ततो ते, कण्णमुण्डो सुनखो अङ्गमङ्गानि खादति,* पे. व. 121; *तस्स अङ्गमङ्गानि वातूपत्थद्धानि होन्ति,* पारा. 44; – **ङ्गानुसारी** त्रि., प्रत्येक अङ्ग का अनुसरण या संस्पर्श करने वाला – **रिनो** पु., प्र. वि., ब. व. – *अङ्गमङ्गानुसारिनो वाता,* म. नि. 1.249; *अङ्गमङ्गानुसारिनो वाता सत्थकवाता खुरकवाता ... अयं वुच्चति अज्झत्तिका वायोधातु,* विभ. 94.

अङ्गमागधिक पु., अङ्ग और मगध का निवासी मनुष्य – *अङ्गमगधेहि आगतो अङ्गमागधिको,* क. व्या. 407.

अङ्गमु पु., एक स्थान विशेष का नाम – *सम्पत्तविजयो गन्त्वा ठाने अङ्गमुनामके,* चू. वं. 70.130.

अङ्गराग पु., [अङ्गराग], सुगन्धित-लेप, शरीर पर सुगन्धित उबटन का लेप, सुगन्धित उबटन – **गं** द्वि. वि., ए. व. – *अङ्गरागं ... मुखरागं करोन्ति, अङ्गरागमुखरागं करोन्ति,* चूळव. 224; *न अङ्गरागमुखरागो कातब्बो,* चूळव. 225.

अङ्गलट्ठि स्त्री., [अङ्गयष्टि], सुकुमार शरीर, पतला, इकहरा या छरहरा कद – *एवं नो अङ्गलट्ठि सुसण्ठिता भविस्सति,* ध. स. अट्ठ. 422.

अङ्गवन्तु त्रि., अङ्ग वाला, शरीर वाला – **वा** पु., प्र. वि., ए. व. – *एकेकलोमूपचितङ्गवा अहु,* दी. नि. 3.129.

अङ्गववत्थापन नपुं. [अङ्गव्यवस्थापन], ध्यानाङ्गों की संख्या का व्यवस्थापन – **तो** प. वि., ए. व. – *अङ्गववत्थापनतो, आरम्मणववत्थापनतोति,* विसुद्धि. 2.2.

अङ्गवात पु., [अङ्गवात], सन्धिवात, गठिया का रोग, गठिया – *आयस्मतो पिलिन्दवच्छस्स अङ्गवातो होति,* महाव. 281; तुल. पब्बवात.

अङ्गविकल त्रि., ब. स. [अङ्गविकल], अङ्गवञ्चित, विकलाङ्ग – **लं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अङ्गविकलं मातुगामं जिगुच्छन्ता निट्ठुभित्वा गच्छन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.302.

अङ्गविकार पु., [अङ्गविकार], शारीरिक दोष, अङ्गों का दोष – *येनङ्गविकारो,* क. व्या. 293.

अङ्गविक्खेप पु., [अङ्गविक्षेप],अङ्गसञ्चालन, शारीरिक चेष्टा, नृत्य, अङ्गसंकेत, शारीरिक हावभाव – *अङ्गहारो अङ्गविक्खेपो,* अभि. प. 101.

अङ्गविज्ज त्रि., ब. स. [अङ्गविद्य], अङ्गविद्या को जानने वाला, अङ्गविद्या में दक्ष या निपुण – *निमित्तं अवेच्च अधीते ति नेमित्तो; एवं अङ्गविज्जो, वेय्याकरणो,* क. व्या. 354.

अङ्गविज्जा स्त्री., [अङ्गविद्या], मनुष्यों के अङ्गों को देखकर उनके चरित्रों और भविष्यों को बतानेवाली विद्या – *अङ्गविज्जा वत्थुविज्जा खत्तविज्जा सिवविज्जा भूतविज्जा ...,* दी. नि. 1.8; *अङ्गविज्जाति ... अङ्गुलट्ठिं दिस्वा विज्जं परिजप्पित्वा अयं कुलपुत्तो वा नो वा ... आदिव्याकरणवसेन अङ्गविज्जा वुत्ता,* दी. नि. अट्ठ. 1.83; – **य** सप्त. वि., ए. व. – *सो च अङ्गविज्जाय छेको होति,* जा. अट्ठ. 1.279; – **पाठक** पु., अङ्गविद्या में पूर्णतः निपुण या दक्ष – *इतो किर सत्तमे दिवसे पुत्तं विजायिस्सती'ति अङ्गविज्जापाठका आहंसु,* जा. अट्ठ. 2.17; – **पाठकत्त** नपुं., भाव., अङ्ग-विद्या में दक्षता, निपुणता, कुशलता – **त्ता** प. वि., ए. व. – *बोधिसत्तोपि अङ्गविज्जापाठकत्ता ... एवं ओवदित्वा उय्योजेसि,* जा. अट्ठ. 5.456.

अङ्गवेकल्ल नपुं., [अङ्गवैकल्य], शारीरिक विरूपता, विकलांगता, कुरूपता – **ल्लेन** तृ. वि., ए. व. – *सो एवरूपेन अङ्गवेकल्लेन समन्नागतो पंसुपिसाचको विय अतिविरूपो अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 1.265; तुल. अङ्गविकल.

अङ्गसंकन्ति स्त्री. [अङ्गसंक्रान्ति], ध्यान में उच्चतर नवीन अङ्ग के ग्रहण हेतु आगे बढ़ना, नवीन ध्यानाङ्ग का अधिग्रहण – **तो** प. वि., ए. व. – *अङ्गसङ्कन्तितो, आरम्मणसङ्कन्तितो,* विसुद्धि. 2.2.

अङ्गसत्थ नपुं., [अङ्गशास्त्र], अङ्गों के आधार पर भविष्यवाणी बतानेवाला विज्ञान या शास्त्र - *अङ्गेन ... यसवा होतीति आदिनयप्पवत्तं अङ्गसत्थं,* दी. नि. अट्ठ. 1.82.

अङ्गसदिस त्रि., [अङ्गसदृश], शरीर के अङ्गों के समान या अनुरूप - **सी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अङ्गसदिसी वाचाति,* जा. अट्ठ. 3.43; - **त्त** नपुं., भाव. [अङ्गसदृशत्व], शरीर के अङ्गों जैसा प्रिय होने की स्थिति - **त्ता** प. वि., ए. व. - *इमस्मिं लोके मनुस्सानं अङ्गसदिसत्ता अङ्गमेतं यदिदं भाता भगिनीति,* जा. अट्ठ. 3.43.

अङ्गसन्तता स्त्री., अङ्गों के शान्त होने की अवस्था, - **य** तृ. वि., ए. व. - *आरम्मणसन्ततायपि अङ्गसन्ततायपि सन्ता,* अ. नि. अट्ठ. 3.287.

अङ्गसम त्रि., [अङ्गसम], अपने अङ्गों के समान प्रिय, अपने शरीर के अङ्गों के समान, अपने से विलग न करने योग्य - **मा** पु., प्र. वि., ब. व. - *भातरो नाम अङ्गसमा होन्ति,* जा. अट्ठ. 5.318; - **मो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अङ्गसमो नाम कम्मायतनं ...,* खु. पा. अट्ठ. 174.

अङ्गसम्पन्न त्रि., स्वस्थ अङ्गों वाला, सभी अङ्गों से युक्त - **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *जातिमा अङ्गसम्पन्नो, पञ्ञवा बुद्धसम्मतो,* अप. 1.345.

अङ्गसम्भार पु. [अङ्गसम्भार], अङ्गों का समुच्चय, अङ्गों या अवयवों की एकत्रित राशि - **रा** प. वि., ए. व. - *यथा हि अङ्गसम्भारा, होति सद्दो रथो इति,* स. नि. 1(1).160; *यथा हि अङ्गसम्भारा ...,* मि. प. 24.

अङ्गसरिक्खक त्रि., [अङ्गसदृक्षक], अपने शरीर के समान प्रियतर - **केन** पु., तृ. वि., ए. व. - *अङ्गसरिक्खकेन वा पुत्तपिनेनपि,* जा. अट्ठ. 3.191.

अङ्गसुत्त नपुं., स. नि. के अनेक सुत्तों का शीर्षक, स. नि. 2(2).242; 3(1).122; 3(2).468.

अङ्गहार पु., अङ्गों के हावभाव या सङ्केत, नृत्य - *अङ्गहारो अङ्गविक्खेपो,* अभि. प. 101.

अङ्गहीन त्रि., [अङ्गहीन], अपाहिज, विकलांग, विकृत अङ्ग वाला - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *पञ्च पुग्गला न उपसम्पादेतब्बा ... अङ्गहीनो ...,* परि. 253.

अङ्गहेतुक पु., एक विशेष पक्षी का नाम, जंगली पक्षियों की एक जातिविशेष - **का** प्र. वि., ब. व. - *चेलावका पिङ्गलायो, गोटका अङ्गहेतुका,* जा. अट्ठ. 7.306.

अङ्गातिक्कम पु., [अङ्गातिक्रम], ध्यानाङ्गों का अतिक्रमण - **मं** द्वि. वि., ए. व. - *अङ्गातिक्कमं पन एतासं न इच्छन्ति पण्डिता,* ध. स. अट्ठ. 253; विसुद्धि. 1.328.

अङ्गानुसारी त्रि., अङ्गों में परिव्याप्त या शरीर में रहनेवाली छह हवाओं में से एक का नाम - **नो** पु., प्र. वि., ब. व. - *वायुभेदा इमे छुद्धङ्गमो, चाधोगमो तथा, कुच्छिट्ठो च कोट्ठासयो अस्सास'ङ्गानुसारिनो,* अभि. प. 38-39 ≠ म. नि. 1.249.

अङ्गार पु./नपुं. [अङ्गार], 1. दहकता हुआ कोयला, कण्डा या अच्छी तरह जलती हुई लकड़ी का टुकड़ा, धूमरहित अग्नि - *अङ्गारो अलातमुम्मुकं,* अभि. प. 36; *इतो अङ्गारं हरथा'ति,* दी. नि. 2.125; - **रे** पु., द्वि. वि., ब. व. - *अत्तनो सीसे अङ्गारे पुणन्ति,* जा. अट्ठ. 6.130; स. उ. प. के रूप में अगद., कुल., खदिर., झाम., नरक., निब्बुत. के अन्त. द्रष्ट.; 2. मङ्गलग्रह; द्रष्ट. अङ्गारवार, अङ्गारक; - **क** पु., मङ्गलग्रह, रक्तवर्ण का ग्रह - *... अङ्गारकादिगाहसमापयोगोपि नक्खत्तगाहोयेव,* दी. नि. अट्ठ. 1.84; - **कटाह** नपुं., [अङ्गारकटाह], एक पात्र, जलते हुए कोयले वाली कड़ाही, अंगीठी, - **हेन** तृ. वि., ए. व. - *सपत्तिं अङ्गारकटाहेन ओकिरि,* स. नि. 1(2).236; - **हे** सप्त. वि., ए. व. - *अङ्गारकटाहे अग्गिं कत्वा,* दी. नि. अट्ठ. 1.211; सु. नि. अट्ठ. 2.80; - **कपल्ल** नपुं., एक बर्तन या जलते हुए कोयले वाली कड़ाही या अंगीठी - **ल्ले** उपरिवत् - *अङ्गारकपल्ले तापेत्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.163; - **ल्लं** द्वि. वि., ए. व. - *दारूनि आहरित्वा अङ्गारकपल्लं सज्जेत्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.148; *अङ्गारकपल्ले उसुं तापेत्वा,* जा. अट्ठ. 6.79; - **कम्मकर** पु., कोयला जलानेवाला, लकड़ी को जलाकर कोयला बनानेवाला - **रा** प्र. वि., ब. व. - *अङ्गारिकाति अङ्गारकम्मकरा,* जा. अट्ठ. 7.55; तुल. अङ्गारिक, अङ्गारीय; - **कासु** 1. स्त्री, जलते हुए कोयले का गड्ढा - **सुं** द्वि. वि., ए. व. - *अङ्गारकासुं भिन्दित्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.249; *भवं अङ्गारकासुंव ञानेन अनुपस्सनो ...,* थेरगा. 420; 2. स्त्री., जलते हुए कोयले की राशि - *जलितङ्गारकासुं वा दिवसं तत्तं फालं वा पटिच्च यं दुक्खं उप्पज्जति ...,* जा. अट्ठ. 4.107; - **कासूपम** त्रि., जलते हुए कोयले के गड्ढे जैसा - **मा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अङ्गारकासूपमा कामा,* स. नि. 2(2).189; - **मं** द्वि. वि., ए. व. - *अङ्गारकासूपमं देसेसि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).220; - **गब्भक** त्रि., अपने अन्दर जलते हुए अंगारों को रखने वाला - **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *महन्तं अकासि चितकं, कत्वा अङ्गारगब्भकं,* चरिया.

383; – **चितक** नपुं., [अङ्गारचिता स्त्री.], जलते हुए कोयले की चिता, मृतक को जलाने के लिए जलते हुए कोयले का ढेर – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *अङ्गारचितकं मञ्च सूलं तच्छन्तं पस्सति,* जा. अट्ठ. 5.485; – **जात** त्रि., जलते हुए कोयले के समान संतप्त या उद्दीप्त – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अङ्गारजाता पठवी,* जा. अट्ठ. 3.395; – **थूप** पु., [अङ्गारस्तूप], चिता की आग पर निर्मित स्तूप – *इति अट्ठ सरीरथूपा नवमो तुम्बथूपो दसमो अङ्गारथूपो,* दी. नि. 2.126; – **पक्क** त्रि., [अङ्गारपक्व], जलते हुए कोयले पर भुना हुआ – **क्कं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अङ्गारपक्कं तितिरमंसं,* स. नि. अट्ठ. 3.86(रो.); *वाराणसिराजापि अङ्गारपक्कमंसं खादिस्सामी'ति देविं आदाय अरञ्ञं पविट्ठो,* विभ. अट्ठ. 445; – **पच्छी** स्त्री., कोयले की आग का पात्र – **च्छियं** सप्त. वि., ए. व. – *सो सत्थु सन्तिके अङ्गारपच्छियं काको विय अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 2.393; – **पब्बत** पु., [अङ्गारपर्वत], जलते हुए कोयले का पहाड़ – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *तमेनं, भिक्खवे, निरयपाला महन्तं अङ्गारपब्बतं आदित्तं ... आरोपेन्तिपि,* अ. नि. 1(1).165-166; – **तेन** तृ. वि., ए. व. – *अङ्गारपब्बतेनेव अङ्गारपब्बतं यमविसयेनेव यमविसयं,* मि. प. 279; – **पिण्ड** पु., जलते हुए कोयले का पिण्ड, लोंदा – *अलातखण्डं वा अङ्गारपिण्डो वा धरिका वा धूमो वा उपट्ठाति,* विसुद्धि. 1.164; – **पुण्णकूप** पु., जलते हुए कोयले से भरा हुआ कूप या गड्ढा – **पे** सप्त. वि., ए. व. – *अङ्गारकासुयाति अङ्गारपुण्णकूपे,* पारा. अट्ठ. 1.170; – **भाव** पु., जलते हुए कोयले की अवस्था – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *आपज्जति सुवण्णं अङ्गारभावं,* ध. प. अट्ठ. 2.40; – **भूत** पु., जलते हुए कोयले के समान दुःख देने वाला – **ता** प्र. वि., ब. व. – *नयिमे अम्हाकं पुत्ता, दुज्जाता एते कुलस्स अङ्गारभूता,* सु. नि. अट्ठ. 1.153; – **मंस** पु., जलते या लहकते हुए कोयले पर भुना हुआ मांस – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ अङ्गारमंसञ्च खादिस्ससि तुवं इति,* म. वं. 10.16; – **मसि** पु., स्त्री., काजल, कालिख – **सिं** द्वि. वि., ए. व. – *छारिकाय ओकिण्णं अङ्गारमसिमक्खितं,* ध. प. अट्ठ. 2.180; – **रासि** पु., अङ्गारों का ढेर – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *अङ्गारकासुयाति अङ्गारपुण्णकूपे, अङ्गाररासिम्हि वा,* पारा. अट्ठ. 1.170; – **वस्स** पु./नपुं., अङ्गारों की वर्षा – **स्सं** द्वि. वि., ए. व. – *ततो अङ्गारवस्सं समुट्ठापेसि,* सु. नि. अट्ठ. 1.191; *मारेन अङ्गारवस्से पवत्तिते,* विसुद्धि. 2.5.

अङ्गारम्मणववत्थापन नपुं., तत्पु. स., ध्यान के क्रम में नवीन ध्यानाङ्गों का व्यवस्थापन, ध्यान के सन्दर्भ में नवीन आलम्बन पर चित्त का स्थिरीकरण – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *अङ्गारम्मणववत्थापनम्पि एके इच्छन्ति,* विसुद्धि. 2.4.

अङ्गारम्मणसंकन्ति स्त्री., ध्यान के सन्दर्भ में नवीन आलम्बनों की ओर आगे बढ़ना – *एकन्तरिकवसेन अङ्गानञ्च आरम्मणानञ्च सङ्कमनं अङ्गारम्मणसङ्कन्तिकं नाम,* विसुद्धि. 2.4.

अङ्गारवार पु., मङ्गल-ग्रह के नाम पर सप्ताह के एक दिन का नाम, मङ्गलवार, द्रष्ट. अङ्गार (2).

अङ्गारिक पु., लकड़ी का कोयला जलाने वाला, कोयले का काम करने वाला – **का** प्र. वि., ब. व. – *अङ्गारिका लोणकरा च सूदा,* जा. अट्ठ. 7.52; *अङ्गारिकाति अङ्गारकम्मकारा,* जा. अट्ठ. 7.55.

अङ्गारी त्रि., [अङ्गारिन्], लाल, रक्तिम, अरुण, गहरे लाल रंग वाला – **रिनो** पु., प्र. वि., ब. व. – *अङ्गारिनो दानि दुमा भदन्ते,* थेरगा. 527.

अङ्गिक त्रि., [अङ्गिक], अङ्गों वाला, शरीरधारी, स. उ. प. में अट्ठ., एक., चतुर., द्वङ्गिक, पञ्च. के अन्त. द्रष्ट., तुल. अङ्गिय.

अङ्गिनी स्त्री., [अङ्गिनी], सुन्दर अङ्गों वाली नारी – **निं** द्वि. वि., ए. व. – *अङ्गिनिन्ति अङ्गलट्ठिसम्पन्नं,* थेरीगा. अट्ठ. 251.

अङ्गी त्रि., [अङ्गिन्], अङ्गों वाला, शरीर-धारी – **ङ्गिनो** पु., ष. वि., ए. व. *येन व्याधिमता अङ्गेन अङ्गिनो विकारो लक्खीयते,* क. व्या. 293; स. उ. प. में चतुर., सम. आदि के अन्त. द्रष्ट., तुल. अङ्गपच्चङ्गी.

अङ्गीरस / अङ्गिरस पु., 1. बुद्ध का एक नाम – *मुनिन्दो भगवा नाथो चक्खुमा'ङ्गिरसो मुनि,* अभि. प. 1; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *बुद्धस्स पुत्तोम्हि असय्हसाहिनो, अङ्गीरसस्सप्पटिमस्स तादिनो,* थेरगा. 536; – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *अङ्गीरसं पस्स विरोचमानं, तपन्तमादिच्चमिवन्तलिक्खे'ति,* अ. नि. 2(1).220; *अङ्गीरसन्ति भगवतो अङ्गमङ्गेहि रस्मियो निच्छरन्ति, तस्मा अङ्गीरसोति वुच्चति,* अ. नि. अट्ठ. 3.72; 2. वेदप्रणेता दस ऋषियों में से एक का नाम – *अट्ठको वामको वामदेवो चाङ्गीरसो भगु,* अभि. प. 109; *अट्ठको वामको वामदेवो वेस्सामित्तो यमतग्गि अङ्गीरसो ...,* दी. नि. 1.91; 3. एक चिकित्सक या वैद्य का नाम – *ये ते अहेसुं तिकिच्छकानं पुब्बका आचरिया सेय्यथिदं, नारदो धम्मन्तरी अङ्गीरसो कपिलो ...,* मि. प.

253; 4. असहय श्रेष्ठी का नाम - *नाहं पजानामि असय्हसाहिनो, अङ्गीरसस्स गतिं आगतिं वा,* पे॰ व॰ 279.

अङ्गीरसी स्त्री॰, [आङ्गिरसी], अङ्गिरस गोत्र की एक नारी का नाम - **सिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अङ्गीरसिं पियामेसि, धम्मो अरहतामिव,* दी॰ नि॰ 2.195.

अङ्गीस पु॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम - *सागरदेवो, भरतो च, अङ्गीसो नाम खत्तियो,* दी॰ वं॰ 3.6.

अङ्गुट्ठ पु॰, [अङ्गुष्ठ], अंगूठा, हाथ का अंगूठा, पैर का अंगूठा - *ता तु पञ्चाङ्गुट्ठो च तज्जनी,* अभि॰ प॰ 266; *भमुकाय वा अङ्गुट्ठेन वा विञ्ञापेति,* मि॰ प॰ 216; - **क** पु॰, उपरिवत् - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अङ्गुट्ठकतो चस्स खीरं निब्बत्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 128; - **गणना** स्त्री॰, अंगूठा से गणना - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अहं अङ्गुट्ठगणनं नाम जानामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1. 441; - **पद** नपुं॰, अंगूठे का चिह्न, निशान या ठप्पा - **दानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अङ्गुलिपदानि दिस्सति अङ्गुट्ठपदं,* स॰ नि॰ 2(1).138; - **स्नेह** पु॰, अंगूठे की आर्द्रता, नमी, गीलापन, तरी - **हेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अङ्गुट्ठस्नेहेन यापेति रत्तिं,* पे॰ व॰ 454; *अङ्गुट्ठस्नेहेनाति अङ्गुट्ठतो पवत्तस्नेहेन, देवताय अङ्गुट्ठतो पग्घरितखीरेनाति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 171.

अङ्गुट्ठिगणना स्त्री॰, द्रष्ट॰ अङ्गुट्ठगणना(ऊपर).

अङ्गुत्तर त्रि॰, ब॰ स॰ अङ्ग + उत्तर, [अङ्गोत्तर], वह संग्रह या रचना, जिसमें क्रमशः ऊपर की ओर बढ़ रही अङ्कों की संख्या के आधार पर विषय रखे गये हों, केवल स॰ पू॰ प॰ के रूप के ही प्रयुक्त; - **ट्ठकथा** स्त्री॰, अ॰ नि॰ की अट्ठ॰ या व्याख्या - **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अङ्गुत्तरट्ठकथायं पन पठमं वेरिपुग्गलो करुणायितब्बो,* विसुद्धि॰ 1.305; - **एकक** पु॰, अ॰ नि॰ के 20 वग्गो वाले प्रथम निपा॰ का नाम, अ॰ नि॰ 1(1).1-61, सा॰ सं॰ 21; 49; - **तिकनिपात-वण्णना** स्त्री॰, अ॰ नि॰ के तीसरे निपा॰ की अट्ठ॰, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.71-240; सा॰ सं॰ 50; - **दुकनिपात-वण्णना** स्त्री॰, अ॰ नि॰ के दूसरे निपात की अट्ठ॰, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.1-70; सा॰ सं॰ 32; - **निकाय** सु॰ पि॰ के चौथे संग्रह का नाम, विषयवस्तु का स्वरूप सङ्ख्यात्मक पद्धति पर आधारित, यह संग्रह 11 निपात में विभक्त है, इसमें 9,557 सुत्त संगृहीत - *नव सुत्तसहस्सानि, पञ्च सुत्तसतानि च, सत्तपञ्ञास सुत्तानि, सङ्ख्या अङ्गुत्तरे अयं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.21; अनुपिटकीय ग्रन्थों में इसका उल्लेख एकङ्गुत्तरनिकाय अथवा केवल अङ्गुत्तर के रूप में - *भासितम्पेतं, महाराज, भगवता देवातिदेवेन एकङ्गुत्तरनिकायवरलञ्छके ...,* मि॰ प॰ 326; *सम्पत्तपरिसाय धम्मं देसेन्तानं देसना संयुत्तअङ्गुत्तरिकट्ठेमहानिकायप्पमाणाव होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 17; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ का नाम मनोरथपूरणी, इसके लेखक आचार्य बुद्धघोष हैं, अ॰ नि॰ के मूल ग्रन्थ को परम्परा अङ्गुत्तरनिकायपालि कहती है - *लज्जी पेसलो अङ्गुत्तरनिकायपालिया तदट्ठकथायञ्च अत्थयोजनं मरम्मभासाय अकासि,* सा॰ वं॰ 136.

अङ्गुत्तरिकनिकाय पु॰, अ॰ नि॰ का दूसरा नाम - *दीघमज्झिमसंयुत्त, अङ्गुत्तरिकखुद्दका,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 2.

अङ्गुल[1] नपुं॰, [अङ्गुल], अङ्गुली, अंगूठा, केवल, स॰ उ॰ प॰ में, अङ्गुली का स्था॰, मो॰ व्या॰ 3.52; अड्ढङ्गुल, चतुरङ्गुल, एकङ्गुल, एकद्वङ्गुल इत्यादि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अङ्गुल[2] नपुं॰, [अङ्गुल], सात धान्यमाष वाली एक माप, अङ्गुल भर की माप, लगभग एक इंच के बराबर वाली माप - *ता धञ्ञमासो ति सत्त, सत्ताङ्गुलं,* अभि॰ प॰ 195; *सत्तध ञ्ञमासप्पमाणं एकं अङ्गुलं,* विभ॰ अट्ठ॰ 325; *एकङ्गुलद्वङ्गुलादि-वसेनेव यथाक्कमं,* अभि॰ अव॰ 1064; - **काल** पु॰, वह क्षण विशेष, जब छाया एक अङ्गुल की लम्बाई वाली रह जाती है, दोपहर का समय - **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भत्तं गहेत्वा अङ्गुलकाले भुञ्जति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).129; तुल॰ द्वङ्गुलकाल, द्वङ्गुलकाले; - **ग्ग** नपुं॰, [अङ्गुल्यग्र], अङ्गुली का अगला भाग, अङ्गुली की नोक या सिरा - **ग्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेनेव अङ्गुलग्गेन तं अङ्गुलग्गं परामसेय्य,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101; - **ट्ठि** नपुं॰, [अङ्गुल्यस्थि], अङ्गुली की हड्डी, अङ्गुली का पोर या जोड़ - **ट्ठिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इध अङ्गुलट्ठिं दिस्वा ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.83; - **न्तर** नपुं॰, [अङ्गुल्यन्तर], अंगूठों का अन्तराल या मध्यवर्ती भाग - **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अक्कन्तस्साति छत्तदण्डके अङ्गुलन्तरं अप्पवेसेत्वा केवलं पादुकं अक्कमित्वा ठितस्स,* पाचि॰ अट्ठ॰ 157; - **न्तरिका** स्त्री॰, अङ्गुलियों के बीच की जगह, अङ्गुलियों के बीच में विद्यमान अन्तराल - **हि** प॰ वि॰, ब॰ व॰ - *उदकं पाणिना गहितं अङ्गुलन्तरिकाहि पग्घरति,* मि॰ प॰ 175; *तस्स हि अत्तभावो उब्बेधेन चत्तारि योजनसहस्सानि ... तथा अङ्गुलन्तरिका ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 199; - **काय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एहि, भन्ते, अङ्गुलन्तरिकाय घट्टेहि,* पारा॰ 469; - **मत्त** नपुं, क्रि॰ वि॰ के रूप में प्रयुक्त, केवल एक अङ्गुल की चौड़ाई, केवल एक अङ्गुल भर - *अङ्गुलमत्तम्पि अपरापरं न सङ्कमति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 129.

अङ्गुलि / अङ्गुली स्त्री॰, [अङ्गुली], अङ्गुली, उंगली - *करसाखाङ्गुली,* अभि॰ प॰ 266; *अङ्गुलि चेत्थ छिज्जथ,* थेरगा॰

1058; *अङ्गुलिं जालेत्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 2.187; – **क** त्रि., [अङ्गुलिक], अङ्गुलियों द्वारा कार्य करने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *एवं अंसिको, खन्धिको, हत्थिको, अङ्गुलिको,* क. व्या. 352; तुल. मो. व्या. 4.30; – **का** स्त्री., अङ्गुलियों की माप, फैलाव, विस्तार – *उण्णिगण्डा नाम होन्ति गोथना विय अङ्गुलिका विय च तत्थ तत्थ लम्बन्ति,* महाव. अट्ठ. 264; – **कोटिमंस** नपुं., [अङ्गुलिकोटिमांस], अङ्गुलियों के सिरे का मांस – **सेहि** तृ. वि., ब. व. – *परिच्छेदतो द्वीसु दिसासु अङ्गुलिकोटिमंसेहि,* विभ. अट्ठ. 223; – **कोस** पु., गोह के चमड़े का बना अङ्गुलित्राण या दस्ताना – *पटिग्गहो नाम अङ्गुलिकोसो,* वजिर. टी. 477; – **च्छिन्न** त्रि., ब. स. [अङ्गुलिछिन्न], कटी उंगलियों वाला – *अङ्गुलिच्छिन्नं पब्बाजेन्ति,* महाव. 155; 420; *अङ्गुलिछिन्नोति यस्स नखसेसं अदस्सेत्वा एका वा बहु वा अङ्गुलियो छिन्ना होन्ति,* महाव. अट्ठ. 292; – **पतोदक** पु., नपुं. [अङ्गुलिप्रतोदक], अङ्गुलियों द्वारा उत्पन्न की गयी गुदगुदाहट या गुदगुदी – *भिक्खुं अङ्गुलिपतोदकेन हासेसुं,* पाचि. 150; *अङ्गुलिपतोदकेनाति अङ्गुलीहि उपकच्छकादिघट्टनं वुच्चति,* पाचि. अट्ठ. 115; *अञ्ञमञ्ञं अङ्गुलिपतोदकेन सञ्जग्घन्ति सङ्कीळन्ति,* अ. नि. 3(1).162; – **पद** नपुं., [अङ्गुलिपद], अङ्गुलि का चिह्न या छाप, अंगूठे का ठप्पा – *दिस्सन्तेव वासिजटे अङ्गुलिपदानि, दिस्सति अङ्गुट्ठपदं,* अ. नि. 2(2).257; स. नि. 2(1).138; – **पब्ब** नपुं., [अङ्गुलिपर्व], अङ्गुलियों अथवा अंगूठों के पोर या गांठ – *अङ्गुलिपब्बेहि पन परिवत्तेत्वा ...,* विभ. अट्ठ. 85; – **पब्बतेमनमत्त** त्रि., **शा. अ.** अंगूठे के पोर तक भिगोने वाला, **ला. अ.** बहुत कम मात्रा वाला – *अङ्गुलिपब्बतेमनमत्तम्पि उदकं न होति,* म. नि. 1.248; – **पिट्ठिमंस** नपुं., उंगलियों के ऊपरी भाग का मांस – ... *अन्तो अंगुलिपिट्ठिमंसेन,* विभ. अट्ठ. 223; विसुद्धि. 1.241; पाठा. अङ्गुलिपिट्ठिमंस; – **पोट** पु., उंगलियों को चटकाना अथवा फोड़ना, चुटकी बजाना – *चेलुक्खेपे च अङ्गुलिफोटे च पवत्तेसि,* जा. अट्ठ. 5.61; ... *साधु साधूति साधुकारेसु अङ्गुलिफोटनेसु चेलुक्खेपेसु च पवत्तमानेसु ...,* जा. अट्ठ. 1.377; ... *अच्छराघटितमत्तम्पि खणं अङ्गुलिफोटनमत्तम्पि कालन्ति अत्थो,* थेरीगा. अट्ठ. 85; – **मत्त** नपुं., एक अंगुल की माप, एक अंगुल की चौड़ाई – *अङ्गुलिमत्तम्पि ऊनं नाहोसि,* ध. प. अट्ठ. 2.404; – **मान** त्रि., एक अंगुल माप वाला – *विदत्थुक्कट्ठमानानि अङ्गुलिमानानि हेट्ठतो,* म. वं. 28.14; – **मुद्दा** स्त्री. [अङ्गुलिमुद्रा], उंगलियों में पहने जाने वाली अंगूठी, मणिरत्न आदि का ठप्पा, जो मोहर लगाने के लिए प्रयुक्त होता था – *मुद्दिकाङ्गुलिमुद्दाथ,* अभि. प. 287; – **मुद्दिका** स्त्री., [अङ्गुलिमुद्रिका], उपरिवत् – *न अङ्गुलिमुद्दिका धारेतब्बा,* चूळव. 224; *एकं अङ्गुलिमुद्दिकं नाविकस्स सच्चकारं दत्वा,* जा. अट्ठ. 1.128; 2.368; – **विक्खेप** पु., उंगलियों की चेष्टाएं या गतिविधियां – *मनापेन च हत्थपादङ्गुलिभमुकविक्खेपेन,* ध. स. अट्ठ. 335; – **विनामन** नपुं., उंगलियों का अवनमन या झुकाव – *उपासनसालायं चापभेदचापारोपनग्गहणमुट्ठिप्पटिपीळनअङ्गुलिविनामनपादठपनसरग्गहणसन्नहनआकड्ढनसन्धारणलक्खनियमनखिपने,* मि. प. 319; – **वेधकसण्ठान** त्रि., अंगूठी की आकृति वाला – *अङ्गुलिवेधकसण्ठाने पदेसे,* ध. स. अट्ठ. 344; अभि. अव. 84, पाठा. वेठनक खण्डन; – **सङ्घट्टन** नपुं., उंगलियों का संघर्षण – *संकीळन्ताति हसितमत्तकरणअङ्गुलिसङ्घट्टनपाणिप्पहारदानादीनि करोन्ता,* दी. नि. अट्ठ. 1.207.

अङ्गुलिमाल पु., एक दुर्दान्त दस्यु का नाम – ... *चोरो अङ्गुलिमालो नाम लुद्दो लोहितपाणि ... अदयापन्नो पाणभूतेसु,* म. नि. 2.308; वास्तविक नाम अहिंसक – *अहिंसकोति मे नामं, हिंसकस्स पुरे सतो,* थेरगा. 879; काटी हुई उंगलियों की माला-धारण करने के कारण, अंगुलिमाल नाम को प्राप्त – *सो मनुस्से वधित्वा वधित्वा अंगुलीनं मालं धारेति,* म. नि. 2.308; पिता का नाम गर्ग और माता का नाम मन्त्राणी – *गग्गो, खो, महाराज, पिता, मन्ताणी माताति,* जा. अट्ठ. 2.311; जीवनचरित्र म. नि. के अङ्गुलिमालसुत्त की अट्ठ. में वर्णित, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.234-244; बुद्ध के प्रभाव से भिक्षुसङ्घ में प्रव्रजित – *चोरो अङ्गुलिमालो भिक्खूसु पब्बज्जितो होति,* महाव. 93; बुद्ध के मार्ग में प्रतिष्ठित हो अर्हत्त्व-पद को प्राप्त – *आयस्मा अङ्गुलिमालो रहोगतो पटिसल्लीनो विमुत्ति- सुखपटिसंवेदी,* ध. प. अट्ठ. 2.97; थेरगा. की कुछ गाथाओं के रचयिता के रूप में भी प्रसिद्ध, थेरगा. 866-891; – **क** पु., अङ्गुलिमाल के लिए ही प्रयुक्त – *देवदत्ते च वधके, चोरे अङ्गुलिमालके,* अप. 1.45; – **त्थेर** पु., स्थविर अङ्गुलिमाल – *इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अङ्गुलिमालत्थेरदमनं आरब्भ कथेसि,* जा. अट्ठ. 5.454; – **त्थेरवत्थु** नपुं., ध. प. अट्ठ. की एक कथा का शीर्षक, ध. प. अट्ठ. 2.96-97; – **परित्त** म. नि. के अङ्गुलिमालसुत्त में गर्भवती स्त्री के गर्भरक्षण हेतु अङ्गुलिमाल द्वारा उच्चारित रक्षाकवच – *सेय्यथिदं, रतनसुत्तं मेत्तसुत्तं खन्धपरित्तं मोरपरित्तं धजग्गपरित्तं*

आटानाटियपरित्तं अङ्गुलिमालपरित्तं, मि॰ प॰ 151; म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 2.308-315; - **पिटक** नपुं॰, परियत्ति-सद्धम्मपटिरूपकों में से एक - *वण्णपिटकं अङ्गुलिमालपिटकं रट्ठपालगज्जितं आळवकगज्जितं वेदल्लपिटकन्ति अबुद्धवचनं परियत्तिसद्धम्मप्पतिरूपकं नाम,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177; - **टि॰** वर्णपिटक आदि पांच खण्ड बुद्ध-वचन न होते हुए भी सद्धर्म के प्रतिरूप माने गये हैं। इन्हीं में से एक अङ्गुलिमालपिटक भी है.

अङ्गुलीयक नपुं॰ [अङ्गुलीयक], अंगूठी, उंगली का आभरण - *अङ्गुलीयकमङ्गुल्याभरणं,* अभि॰ प॰ 286.

अङ्गोळारिकता स्त्री॰, भाव॰ अङ्ग + ओळारिक से व्यु॰, कतिपय ध्यानाङ्गों में स्थूलता - *अङ्गोळारिकता पनेत्थ नत्थि,* विसुद्धि॰ 1.317.

अचक्खुक त्रि॰, चक्खुक का निषे॰, ब॰ स॰ [अचक्षुष्क], अन्धा, प्रज्ञाविहीन, ज्ञानहीन, अज्ञानी, अज्ञ - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सब्बेव खो एते, पोट्ठपाद, परिब्बाजका अन्धा अचक्खुका, त्वंयेव नेसं एको चक्खुमा,* दी॰ नि॰ 1.169; *अन्धाति पञ्ञाचक्खुनो नत्थिताय अन्धा, तस्सेव अभावेन अचक्खुका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.282; - **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तमहं, भिक्खवे, बालं पुथुज्जनं अन्धं अचक्खुकं अजानन्तं अपस्सन्तं किन्ति करोमि,* स॰ नि॰ 2(1).126.

अचक्खुकरण त्रि॰, अन्धा कर देने वाला, प्रज्ञाचक्षु से विरहित कर देनेवाला, मूढ़ बना देने वाला, मोहग्रस्त कर देने वाला - **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तयोमे, भिक्खवे, अकुसलवितक्का अन्धकरणा अचक्खुकरणा अञ्ञाणकरणा पञ्ञानिरोधिका,* इतिवु॰ 60; *पञ्चिमे, भिक्खवे, नीवरणा अन्धकरणा अचक्खुकरणा ...,* स॰ नि॰ 3(1).118.

अचक्खुस्स त्रि॰, नेत्रों के लिए अहितकर, चक्षुविशुद्धि के लिए अनुपयोगी - **स्सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा दन्तकट्ठस्स अखादने ... अचक्खुस्सं ...,* अ॰ नि॰ 2(1).230; *अचक्खुस्सन्ति न चक्खूनं हितं, चक्खुं विसुद्धं न करोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.79; - **स्सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तेन खो पन समयेन विहारा अवातपानका होन्ति अचक्खुस्सा दुग्गन्धा,* चूळव॰ 274.

अचङ्कम पु॰, चङ्कम का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अचंक्रम], चंक्रमण के लिए अनुपयुक्त स्थान - **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अचङ्कमं जिम्हपथं, कुम्मग्गमनुधावति,* थेरगा॰ 1183.

अचण्डिक्क नपुं॰, चण्डिक्क का निषे॰ भाव॰ [अचाण्डिक्य], चण्डता से रहित मन की दशा, क्षान्ति, कठोरता का अभाव, विहिंसा का अभाव - *या खन्ति खमनता अधिवासनता अचण्डिक्कं अनसुरोपो अत्तमनता चित्तस्स,* ध॰ स॰ 1348; - **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰, क्षान्ति-युक्त प्रकृति वाला, उग्रता या हिंसा से रहित - **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अदोसो अचण्डिक्कलक्खणो, अविरोधलक्खणो वा अनुकूलमित्तो विय,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 172.

अचपल त्रि॰, चपल का निषे॰ [अचपल], चञ्चलता से रहित, शान्त - **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अनुद्धता अनुन्नळा अचपला अमुखरा अविकिण्णवाचा,* म॰ नि॰ 1.39; - **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उजुं अनुद्धतं अचपलमस्स भासितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.193; - **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अचपलेन सुट्ठु ठपितेन चित्तेन समन्नागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.188; *पतिट्ठितताय अचपलं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.196.

अचरिम त्रि॰, चरिम का निषे॰, प्रायः अपुब्ब के साथ प्रयुक्त [अचरिम], वह, जो अन्तिम नहीं है, एक साथ विद्यमान - **ब्बं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं एकिस्सा लोकधातुया द्वे अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा अपुब्बं अचरिमं उप्पज्जेय्युं,* अ॰ नि॰ 1(1).39; *अपुब्बं अचरिमन्ति अपुरे अपच्छा, एकतो न उप्पज्जन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.343; *अपुब्बं अचरिमं विय सन्दहति,* मि॰ प॰ 40; अपुब्ब के साथ युगपद के अर्थ में प्रयुक्त.

अचल[1] त्रि॰, [अचल], अडिग, अटल, स्थिर, ध्रुव - **ला** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञा दिसा अचला तितसेला,* जा॰ अट्ठ॰ 7.57; *रञ्ञो पच्चन्तिमे नगरे एसिका होति गम्भीरनेमा सुनिखाता अचला असम्पवेधी,* अ॰ नि॰ 2(2).243; - **लं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पत्ता ते अचलं सुखं,* थेरीगा॰ 352; - **पत्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अचलत्वप्राप्त], अचलता की स्थिति को प्राप्त - *रञ्ञो खत्तियस्स ... मुद्धावसित्तस्स पुत्तभावेन चेव पुत्तेसु जेट्ठकभावेन च न ताव अभिसित्तभावेन च अभिसेकप्पत्तिअत्थाय अचलप्पत्तो निच्चलप्पत्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.316; - **प्पसाद** पु॰, कर्म॰ स॰ [अचलप्रसाद], अडिग श्रद्धा, अचल श्रद्धा - *अवेच्चप्पसन्नाति अचलप्पसादेन सम्पन्ना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.315; - **बुद्धि** त्रि॰, [अचलबुद्धि], निश्चल बुद्धि वाला, चित्त की साम्यावस्था वाला, एकाग्रचित्त - *यथा ..., कोचि यतचारी समाहितचित्तो ठितधम्मो अचलबुद्धि पहीनकोतूहलसद्दं वनमज्झोगाहित्वा सुखुमं अत्थं चिन्तयति,* मि॰ प॰ 276; - **सभाव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अचलस्वभाव], स्थिर स्वभाव वाला, सभी स्थितियों में समभाव रखने वाला - *नियतोति यसादीनि निस्साय अचलसभावो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.191.

अचल[2] पु., [अचल], पर्वत – *गिरि सेलोद्दी नगाचल सिलुच्चया,* अभि. प. 605.

अचल[3] पु., [अचल], एक स्थविर का नाम – *मित्तसेनो जयसेनो अचलेन च द्वादस,* दी. वं. 19.8.

अचलधिति स्त्री., [अचलधृति], एक छन्द का नाम, वुत्तो. 37.

अचलित त्रि., चलित का निषे., निर्वाण के विशे. के रूप में प्रयुक्त [अचलित], अकम्पित, स्थिर, दृढ़ – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अच्चन्तमचलितं असङ्कतं,* जा. अट्ठ. 5.452; *अचलितन्ति किलेसेहि अकम्पितं,* जा. अट्ठ. 5.453; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अनेरितो अघट्टितो अचलितो ... ठितो होति समुद्दो,* महानि. 260.

अचवनधम्म त्रि., ब. स. [अच्यवनधर्म], वह, जिसका पुनर्जन्म नहीं होना है, वह, जो पुनर्जन्म का विषय नहीं है – **म्मं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदं निच्चं, इदं धुवं, ... इदं अचवनधम्मं* स. नि. 1(1).168; म. नि. 1.409; जा. अट्ठ. 3.316.

अचित्तक त्रि., चित्तक का निषे., ब. स. [अचित्तक], बोधरहित, ज्ञानरहित, निश्चेतन, चेतनाहीन – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *त्वं, महाराज, तस्मिं समये अचित्तको अहोसी'ति,* मि. प. 85; – **कानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *सचे अचित्तकानि कट्ठकलिङ्गरानि गहेत्वा चक्कादीनि करोन्ति ...,* ध. प. अट्ठ. 1.327; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *इमं अचित्तकं कलिङ्गरकण्डम्पि ताव तव गुणं जानाति,* जा. अट्ठ. 3.239-40.

अचित्तकाय त्रि., चित्तकाय का निषे., ब. स. [अचित्तकाय], चेतनारहित शरीर वाला, चेतनाशून्य शरीर वाला – **यं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *असञ्ञकायन्ति अनिन्द्रियबद्धं अचित्तकायञ्च समानं,* जा. अट्ठ. 7.55.

अचित्तविक्खित्तक त्रि., चिन्तनरहित, विक्षिप्त, व्यग्र – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अचित्तविक्खित्तकोपि, भन्ते, नागसेन मनुजो एकमेकेनपि ताव ओपम्मेन निट्ठं गच्छेय्य अत्थि अकाले मरण'न्ति,* मि. प. 283.

अचित्तीकत त्रि., अवज्ञात, अनादृत, तुच्छ, नगण्य, तिरस्कृत, गर्हित, महत्त्वहीन – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *ओञ्ञातं अवञ्ञातं हीळितं परिभूतं अचित्तीकतं,* पाचि. 8-9; – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *इत्थी, महाराज, विधवा लोकस्मिं ओञ्ञाता अवञ्ञाता हीळिता खीळिता गरहिता परिभूता अचित्तीकता,* मि. प. 266-267.

अचित्तीकार पु., अवमानना, अपमान, तिरस्कार – *यं अनादरियं अनादरता अगारवता अप्पतिस्सवता अनद्दा अनद्दायना अनद्दायितत्तं असील्यं अचित्तीकारो – इदं वुच्चति अनादरियं,* विभ. 432; *अचित्तीकारोति गरुचित्तीकारस्स अकरणं,* विभ. अट्ठ. 471; – **कत** त्रि., अवज्ञात, अनादृत, अपमानित, विगर्हित, तिरस्कृत – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इधेकच्चो सङ्गतो अचित्तीकारकतो थेरे भिक्खू घट्टयन्तोपि तिट्ठति,* महानि. 166.

अचिन्तनीय त्रि., चिन्तनीय का निषे., [अचिन्तनीय], विचार, बुद्धि एवं तर्क की पकड़ से बाहर, अकल्पनीय – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अचिन्तनीयं वा एत्थ कारणं, बुद्धविसयो एसो ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.121.

अचिन्तित त्रि., चिन्तित का निषे. [अचिन्तित], जिसका चिन्तन पूर्व में कभी नहीं किया गया है, अविचारित – *अब्भक्खानन्ति अदिट्ठअसुतअचिन्तितपुब्बं,* ध. प. अट्ठ. 2.40.

अचिन्तिय त्रि., चिन्तिय का निषे. [अचिन्त्य], अचिन्तनीय, विचार न करने योग्य, अविचारणीय – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *इद्धिमतो इद्धिविसयोपि कम्मविपाकोपि द्वे अचिन्तिया,* मि. प. 182; – **यानुभाव** त्रि., अकल्पनीय महिमा वाला, अकल्पनीय वैभव वाला – **वो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अचिन्तियोति अचिन्तियानुभावो,* वि. व. अट्ठ. 289, पाठा. अचिन्तेय्यानुभावो.

अचिन्तेय्य त्रि., चिन्तेय्य का निषे., चिन्तन करने के अयोग्य, अचिन्तनीय – **य्यानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *चत्तारिमानि, भिक्खवे, अचिन्तेय्यानि, न चिन्तेतब्बानि,* अ. नि. 1(2).93; *अचिन्तेय्यानीति चिन्तेतुं अयुत्तानि,* अ. नि. अट्ठ. 2.312; – **त्त** नपुं., भाव., चिन्तन के अयोग्य होने की स्थिति – **त्ता** प. वि., ए. व. – *न चिन्तेतब्बानीति अचिन्तेय्यत्तायेव, न चिन्तेतब्बानि,* अ. नि. अट्ठ. 2.312.

अचिरं क्रि. वि., निपा. [अचिरं], शीघ्र ही, हाल ही में, तुरन्त ही, अविलम्ब – *अचिरं वत ते ततो, पिता तं दट्ठुमेस्सती'ति,* जा. अट्ठ. 7.352; *अचिरं वतयं कायो, पठविं अधिसेस्सति,* ध. प. 41; – **अरहत्तप्पत्त** त्रि., शीघ्र ही अर्हत्व-अवस्था को प्राप्त – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आयस्मा वङ्गीसो अचिरअरहत्तप्पत्तो हुत्वा विमुत्तिसुखं पटिसंवेदी ...,* स. नि. 1(1).227; – **कारित** त्रि., शीघ्र ही बनवाया गया, शीघ्र ही विनिर्मित, नवनिर्मित – **तं** प्र. वि., ए. व. – *नवं सन्थागारं अचिरकारितं होति,* स. नि. 2(2).184; तुल. अचिरा, अचिरेन; – **पक्कन्त** त्रि., अभी हाल में ही गया हुआ – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *अचिरप्पक्कन्तस्स च कोकालिकस्स भिक्खुनो*

सासपमत्तीहि पिळकाहि सब्बो कायो फुटो अहोसि, सु॰ नि॰ (पृ॰) 181; – **न्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अचिरपक्कन्ते देवदत्ते,* स॰ नि॰ 1(1).180; – **पब्बजित** त्रि॰, नवदीक्षित, शीघ्र प्रव्रजित, हाल ही में प्रव्रजित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयस्मा वङ्गीसो नवको होति अचिरपब्बजितो ओहिय्यको विहारपालो,* स॰ नि॰ 1(1).215; *नवो अचिरपब्बजितो, अधुनागतो इमं धम्मविनयं,* महाव॰ 45; – **परिनिब्बुत** त्रि॰, शीघ्र निर्वाण प्राप्त – **तो** उपरिवत् – *निग्रोधकप्पो नाम थेरो अग्गाळवे चेतिये अचिरपरिनिब्बुतो होति,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 135; – **तेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं अचिरपरिनिब्बुतेसु सारिपुत्तमोग्गल्लानेसु,* स॰ नि॰ 3(2). 239; – **प्पभा** स्त्री॰, [अचिरप्रभा], बिजली, चपला, विद्युत् – *सतेरिताक्खणा विज्जु विज्जुता चाचिरप्पभा,* अभि॰ प॰ 48.

अचिरवत पु॰, एक श्रामणेर का नाम – *तेन खो पन समयेन अचिरवतो समणुद्देसो अरञ्ञकुटिकायं विहरति,* म॰ नि॰ 3.170.

अचिरवती स्त्री॰, [अजिरवती], एक नदी का नाम, संभवतः राप्ती नदी का नाम – *गङ्गाचिरवती चेव यमुना सरभू मही,* अभि॰ प॰ 682; यह पांच महानदियों में एक है, अचिर अथवा शीघ्रगमन के कारण यह अचिरवती कहलायी – *सेय्यथापि, भिक्खवे, यत्थिमा महानदियो संसन्दन्ति समेन्ति, सेय्यथिदं – गङ्गा यमुना अचिरवती सरभू मही,* स॰ नि॰ 1(2).120; *अचिरवतिया नदिया तीरे अम्बवने,* दी॰ नि॰ 1.214;

अचिरविब्भन्त त्रि॰, कुछ ही समय पूर्व बुद्ध धर्म को छोड़ चुका, वह, जिसने अभी हाल में ही सङ्घ को छोड़ा है – **न्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुन्दरीनन्दा खो, अय्ये, अचिरविब्भन्ता विजाता,* पाचि॰ 291.

अचिरवुट्ठित त्रि॰, वह, जिसने अभी हाल ही में मुक्ति पायी है या आरोग्य-लाभ प्राप्त किया है – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो भगवा गिलाना वुट्ठितो अचिरवुट्ठितो गेलञ्ञा,* दी॰ नि॰ 2.77; – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खलु, भो, कुणालो सकुणो तं पुण्णमुखं ..., अचिरवुट्ठितं गेलञ्ञा एतदवोच,* जा॰ अट्ठ॰ 5.420.

अचिरा प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अचिरात्], शीघ्र ही, हाल ही में – *अचिरा चक्खूनि जीयरेति निच्चरोदनेन न चिरस्सेव चक्खूनि जीयिस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.291.

अचिरूपसम्पन्न त्रि॰, [अचिरोपसम्पन्न], कुछ समय पहले ही उपसम्पदा को पाया हुआ – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अचिरूपसम्पन्नो खो पनायस्मा भारद्वाजो ...,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 98; – **न्ने** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो, आनन्द, कस्सपो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो अचिरूपसम्पन्ने जोतिपाले माणवे,* म॰ नि॰ 2.250.

अचिरेण / अचिरेन तृ॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अचिरेण], शीघ्र ही, हाल ही में – *तव माता च पिता च अचिरेनेव तं पस्सितुकामो हुत्वा इधागमिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.352.

अचीवरक त्रि॰, चीवरक का निषे॰, ब॰ स॰, चीवररहित, वह, जिसके पास चीवर नहीं है – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न, भिक्खवे, अचीवरको उपसम्पादेतब्बो,* महाव॰ 114.

अचेतन त्रि॰, चेतन का निषे॰, ब॰ स॰ [अचेतन], चेतनाविहीन, संज्ञाविहीन, जड़ – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा कट्ठं अचेतनन्ति,* म॰ नि॰ 1.376; – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किं पन निब्बुतो उपसन्तो अचेतनो सादियति,* मि॰ प॰ 108.

अचेत(स) त्रि॰, [अचेतस्], उपरिवत् – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मित्तरूपेनिधेकच्चे, साखल्येन अचेतसा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.51.

अचेतस त्रि॰, चेतस का निषे॰, ब॰ स॰, उपरिवत् – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा मूळ्हो अचेतसो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.60; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गिरिदुग्गचरं छेतं, अप्पपञ्ञं अचेतसं,* स॰ नि॰ 1(1).230; *अचेतसन्ति कारणजाननसमत्थेन चित्तेन रहितं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.255.

अचेतसिक त्रि॰, चेतसिक का निषे॰, ब॰ स॰ [अचैतसिक], **शा॰ अ॰** चेतना-विहीन, स्वतःस्फूर्त, **ला॰ अ॰** वह धर्म अथवा स्कन्ध, जो चैतसिक के अन्तर्गत परिगणित नहीं है – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तयो खन्धा चेतसिका, द्वे खन्धा अचेतसिका,,* विभ॰ 73; *सब्बं रूपं न हेतु ... अचेतसिकं, चित्तविप्पयुत्तं,* ध॰ स॰ 584; *कतमे धम्मा अचेतसिका? चित्तञ्च सब्बञ्च रूपं, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अचेतसिका,* ध॰ स॰ 1196; *चित्तञ्च, रूपञ्च, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अचेतसिका,* ध॰ स॰ 1530.

अचेल त्रि॰, चेल का निषे॰, ब॰ स॰ [अचेल], निर्वस्त्र, नग्न, नग्न-तापस – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं वे पिवित्वा अचेलो नग्गो, चरेय्य गामे विसिखन्तरानि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.15; *अथ खो अचेलो कस्सपो येन भगवा तेनुपसङ्कमि,* दी॰ नि॰ 1.146.

अचेलक पु॰, उपरिवत् – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अचेलको निगण्ठो च, जटिलो तु जटाधरो,* अभि॰ प॰ 440; *अचेलको नाम यो कोचि परिब्बाजकसमापन्नो नग्गो,* पाचि॰ 126; *एकच्चो अचेलको होति मुत्ताचारो हत्थापलेखनो,* म॰ नि॰ 1.389; – **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ के एक वर्ग का नाम, अ॰ नि॰

1(1).333-335; पाचि॰ के एक खण्ड का नाम, पाचि॰ 125-147; परि॰ के एक खण्ड का नाम, परि॰ 30-32, 67-68; - **वाद** पु॰, नग्न-तापसों का सिद्धान्त - **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ते उच्छेदवादं विस्सज्जेत्वा अचेलकवादं गण्हिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.215; - **सावक** पु॰, नग्न या निर्वस्त्र रहनेवाले तापसों का श्रावक या शिष्य - **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *गिही ओदातवसना अचेलकसावका,* अ॰ नि॰ 2(2).93; - **सिक्खापद** नपुं॰, 41वें पाचित्तिय से सम्बद्ध विनय-शिक्षापद, पाचि॰ 125-127.

अचेलकस्सप पु॰, एक तापस का नाम, जिसे भगवान् बुद्ध ने अपने सङ्घ में दीक्षित किया था, दी॰ नि॰ में एक 'वत्थु' का शीर्षक, दी॰ नि॰ 1.146.

अचेलसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त का नाम, स॰ नि॰ 1(2).18-21; 2(2).290-291.

अचोर पु॰, चोर का निषे॰ [अचोर], वह, जो चोर नहीं है, वह, जो चौर्यकर्म में प्रवृत्त नहीं है - **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ते पञ्चपि अचोरा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.369; - **भाव** पु॰, भाव॰, अचौर्यत्व - *तेसं तथतो अचोरभावं ञत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.369; - **राहरण** त्रि॰, चोरों के द्वारा न ले जा सकने योग्य, चोरों के द्वारा हरण न करने योग्य - **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यथा, महाराज, आकासो न जायति, ... अनन्तो, एवमेव खो, महाराज, निब्बानं न जायति, ... अचोराहरणं,* मि॰ प॰ 292; - **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असाधारणमञ्ञेसं, अचोराहरणो निधि,* खु॰ पा॰ 10.

अच्चगमा, अच्चगा, अच्चगुं अति + √गम धातु का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अतिगच्छति के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अच्चङ्कुस त्रि॰, ब॰ स॰ [अत्यङ्कुश], अङ्कुश के द्वारा अदम्य, निरङ्कुश, अनियंत्रित - **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अच्चङ्कुसोव नागो, वजितं मे तुत्ततोमरं,* दी॰ नि॰ 2.196.

अच्चङ्गुल नपुं॰, [अत्यङ्गुल], एक अङ्गुल से अधिक - *असंख्येहि चाङ्गुल्या नञ्आसंख्यत्थेसु-अच्चङ्गुलं,* मो॰ व्या॰ 3.44.

अच्चति √अच्च का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अर्चति], पूजा करता है, प्रशंसा करता है - **च्चितुं** निमि॰ कृ॰ - *यो इमं सेलं सुट्ठ उपचरितुं अच्चितुं ... जानाति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.23.

अच्चना स्त्री॰, [अर्चना], पूजा, समादर, सत्कार - *अपचित्यच्चना पूजा पहारो बलि मानना,* अभि॰ प॰ 425.

अच्चन्त त्रि॰, [अत्यन्त], 1. पूर्ण, सम्पूर्ण, परम, अन्त का अतिक्रमण करने वाला, अविनाशधर्मा निर्वाण (नपुं॰ नाम के रूप में) - **न्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सब्बदुक्खसमतिक्कमं सिवं, अच्चन्तमचलितं असङ्खतं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.452; *अच्चन्तन्ति अन्तातीतं अविनासधम्मं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.453; *अन्तं अतीतत्ता अच्चन्तसङ्खातं अविनासधम्मं निब्बानं ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.342; 2. - **अच्चन्तं** क्रि॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ **क.** सम्यक् रूप से, अत्यधिक रूप से, पूर्ण रूप से - *अस्स इन्दसमो राज, अच्चन्तं अजरामरो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.454; **ख.** लौकिक सन्दर्भ में, हमेशा, सदैव, लगातार, सतत रूप से - *अपारनेय्यमच्चन्तं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.44; *नाच्चन्तं निकतिप्पञ्ञो, निकत्या सुखमेधति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.219; *न अच्चन्तं सुखमेधति, निच्चकाले सुखस्मिंयेव पतिट्ठातुं न सक्कोति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.220; - **कामानुगत** त्रि॰, कर्म॰ स॰, कामभोगों अथवा इन्द्रियजनित सुखों के साथ अत्यधिक बंधा हुआ - **स्स** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अच्चन्तकामानुगतस्सा'ति अच्चन्तं कामं अनुगतस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 5.441; - **कोधन** त्रि॰, अत्यधिक क्रोधी स्वभाववाला - **नो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चण्डो त्वच्चन्तकोधनो,* अभि॰ प॰ 732; - **क्खय** पु॰, कर्म॰ स॰, पूर्ण विनाश - *खयाति लोकुत्तरमग्गेन अच्चन्तक्खया,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).59; - **खार** त्रि॰, अत्यधिक नमकीन, बहुत अधिक खारा - **रे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अच्चन्तखारे उदके,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.433(रो॰); - **दालिद्दिय** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अत्यन्त-दारिद्रय], अत्यधिक दरिद्रता - **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *... अच्चन्तदालिद्दियं पापुणाति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.58; - **दुस्सील्य** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अत्यन्त-दौश्शील्य], अत्यधिक दुराचारमय व्यवहार अथवा मनोभाव - *यस्स अच्चन्तदुस्सील्यं,* ध॰ प॰ 162; *अच्चन्तदुस्सील्यन्ति एकन्तदुस्सीलभावो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.85; - **निट्ठ** त्रि॰, पूर्ण दृढ़ता वाला, हर तरह से परिपूर्ण - **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भिक्खु संखित्तेन ... होति अच्चन्तनिट्ठो ...,* म॰ नि॰ 1.320; - **नियामकथा** स्त्री॰, कथा॰ के उन्नीसवें वग्ग की सातवीं कथा का शीर्षक, कथा॰ 472-74; - **नियामता** स्त्री॰, अन्तिम समाश्वासन, निश्चित प्रकृति की निर्भरता - *अत्थि पुथुज्जनस्स अच्चन्तनियामता,* कथा॰ 477; - **निरोध** पु॰, पूर्ण रूप से क्षय, समूचे तौर पर उन्मूलन - *निरोधोपि हि खयनिरोधो च अच्चन्तनिरोधो चाति दुविधोयेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).194; - **पेमानुगत** त्रि॰, असीम प्रेमभाव से भरपूर - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अच्चन्तपेमानुगतस्स भरिया ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.445; - **वण्ण** त्रि॰, ब॰ स॰, अत्यधिक सुन्दर रूप वाला - **ण्णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नच्चन्तवण्णा न बहून कन्ता ...,* जा॰ अट्ठ॰

5.443; *नच्चन्तवण्णाति अभिरूपवती,* जा॰ अट्ठ॰ 5.444; – **विराग** पु॰, कर्म॰ स॰, राग का पूर्णरूप से अभाव – *विरागानुपस्सीति एत्थ द्वे विरागा खयविरागो च अच्चन्तविरागो च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).194; – **वोदान** नपुं॰, कर्म॰ स॰, पूर्ण रूप से विशुद्धि – *सुचिन्ति किलेसमलसमुच्छेदकरणतो अच्चन्तवोदानं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 144; – **संयोग** पु॰, कर्म॰ स॰, अव्यवहित सातत्य, व्यवधान से रहित निरन्तरता, लगातारपन – **गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कालद्धानमच्चन्तसंयोगे दुतिया विभत्ति होति,* क॰ व्या॰ 300; सद्द॰ 3.581, तुल॰ पाणिनि, 2.3.5; *अच्चन्तसंयोगे चेतं उपयोगवचनं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 57; *एवंजातिके सुत्तन्तपाठे अच्चन्तसंयोगत्थो सम्भवति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 86; – **सन्त** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अत्यन्तशान्त], पूर्ण रूप से शान्ति-भाव से युक्त – **न्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चन्तसन्ता पन या अयं निब्बानसम्पदा,* विसुद्धि॰ 1.56; – **सन्ति** स्त्री॰, [अत्यन्तशान्ति], पूर्णशान्ति, निर्वाण की अवस्था – *अच्चन्तसन्ति वुच्चति अमतं निब्बानं,* महानि॰ 52; – **सील** त्रि॰, ब॰ स॰, अनैतिक, सदाचार-विहीन, शील का अतिक्रमण करने वाला – **लासु** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अच्चन्तसीलासु असञ्ञतासु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.445; *अच्चन्तसीलासूति अतिक्कन्तसीलासु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.447; – **सुख** नपुं॰, [अत्यन्तसुख], अत्यधिक सुख – *न पापजनसंसेवी अच्चन्तसुखमेधति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.466; *अच्चन्तसुखं एकन्तसुखं निरन्तरसुखं नाम न एधति,* तदे॰; – **सुखुमाल** त्रि॰, अत्यन्त सुकोमल – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *त्वं खोसि, महाराज, खत्तियसुखुमालो,* मि॰ प॰ 23; – **सुञ्ञता** स्त्री॰, परम या चरम शून्यता – *मग्गेन विपस्सनं निवत्तेत्वा अनुपुब्बेन अच्चन्तसुञ्ञता नाम दस्सिता होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.113; – **सुद्धि** स्त्री॰, [अत्यन्तशुद्धि], पूर्ण विशुद्धि – ... *अच्चन्तसुद्धीति न ते वदन्ति,* सु॰ नि॰ 800; – **सेट्ठ** त्रि॰, [अत्यन्तश्रेष्ठ], सबसे श्रेष्ठ, उत्तम – **ट्ठाय** स्त्री॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथो अच्चन्तसेट्ठाय परत्थपटिपत्तिया,* सद्धम्मो॰ 29; – **ताधम्मबहुल** त्रि॰, अधार्मिक कार्यों में अत्यधिक लिप्त – *अच्चन्ता- धम्मबहुले मुनिन्दसुतवज्जिते ...,* सद्धम्मो॰ 11.

अच्चय पु॰, [अत्यय], **शा॰ अ॰** (समय का) निकल जाना, बीत जाना – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ *तस्सा रत्तिया अच्चयेन,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 169; *अथ खो आयस्मा नागसेनो तस्सा रत्तिया अच्चयेन ...,* मि॰ प॰ 100; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहोरत्तानमच्चये,* स॰ नि॰ 1(1).35; **ला॰ अ॰ 1.** मृत्यु, अन्त, मरण, देहान्त – *मरणं कालकिरिया पलयो मच्चु चाच्चयो,* अभि॰ प॰ 404; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतरहि वा मम वा अच्चयेन ...,* दी॰ नि॰ 2.78; ... *पितु अच्चयेन नियामकजेट्ठको हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.125; **ला॰ अ॰ 2.** अतिक्रमण, नियमों का उल्लंघन, अतिचार, दोष, अपराध – *अच्चयो अतिक्कमे दोसे,* अभि॰ प॰ 1117; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *भगवा अच्चयं अच्चयतो पटिग्गण्हातु ...,* दी॰ नि॰ 1.75; *तत्थ अच्चयोति अपराधो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.191; *अच्चयं देसयन्तीनं, यो चे न पटिगण्हाति,* स॰ नि॰ 1(1).29; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अत्थ॰, थुल्ल॰, दुर॰, नान॰, पाण॰, फल॰, वस्सान॰, हिम॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **पटिग्गहण** नपुं॰, [अत्ययप्रतिग्रहण], पापस्वीकरण पर क्षमा-प्रदान, पाप-निर्मोचन, क्षमादान – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अच्चयपटिग्गहणस्स कतत्तापि त्वं अम्हाकं आचरियोव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.380; – **सुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).276–77.

अच्चरुचि अति + √रुच का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अत्यधिक प्रकाशित या सुशोभित हुआ, अतिरोचति के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अच्चसरा / अच्चसा / अच्चसारि अति + √सर का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बहुत तेजी के साथ आगे को बढ़ा, अतिसरति के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अच्चहासि द्रष्ट॰ अतिहरति के अन्त॰.

अच्चादर पु॰, कर्म॰ स॰ [अत्यादर], अत्यधिक सम्मानभाव, अच्छी देखभाल – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवतो ब्रह्मसमत्तं आरब्भ अच्चादरेन सपथं करोति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.130.

अच्चाधाय अति + आ + √धा का पू॰ का॰ कृ॰ [अत्याधाय], एक के ऊपर दूसरे को रखकर, एक पर एक रूप में विन्यस्तकर, थोड़े से तिरछे रूप में ऊपर की ओर चढ़ा कर – *अथ खो भगवा ... दक्खिणेन पस्सेन सीहसेय्यं कप्पेति पादे पादं अच्चाधाय ...,* स॰ नि॰ 1(1).32; *अच्चाधायाति अतिआधाय, ईसकं अतिक्कम्म ठपेत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.71–72; दी॰ नि॰ 2.102; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.149.

अच्चाभिक्खणं अ॰, क्रि॰ वि॰ [अत्यभीक्ष्णं], बहुधा, प्रायः, स॰ पू॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त; – **संसग्ग** पु॰, [अत्यभीक्ष्णसंसर्ग], प्रायः होने वाला मिलन या संसर्ग – **ग्गा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चाभिक्खणसंसग्गा, असमोसरणेन च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.221; *अच्चाभिक्खणसंसग्गाति अतिविय अभिण्हसं – सग्गेन,* जा॰ अट्ठ॰ 5.222.

अच्चायत त्रि॰, [अत्यायत], अत्यधिक फैला हुआ, अतिशय खिंचा हुआ या तना हुआ – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰

व॰ – *वीणाय तन्तियो नेव अच्चायता होन्ति,* महाव॰ 254.

अच्चायिक त्रि॰, [आत्ययिक], 1. अपरिहार्य, शीघ्र करणीय, बिना विलम्ब के तुरन्त सम्पादनीय – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे पनस्स अच्चायिकं करणीयं,* महाव॰ 183; – **कानि** ब॰ व॰ – *तीणिमानि, भिक्खवे, कस्सकस्स गहपतिस्स अच्चायिकानि करणीयानि,* अ॰ नि॰ 1(1).273; *अच्चायिकानीति अतिपातिकानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.213; 2. असामान्य, अत्यधिक, प्रचुर – **केन** पु॰/नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चायिकेन लुद्देन, यो नो गावोव सुम्भति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.319.

अच्चारद्ध त्रि॰, [अत्यारब्ध], अत्यन्त कष्ट-साध्य, सुदृढ़, कठोर, प्रबल – **म्हि** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चारद्धम्हि वीरियम्हि ...,* थेरगा॰ 638; – **द्धेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चारद्धेन वीरियेन तेमासं कम्मट्ठानं भावेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.119; – **विरिय** नपुं॰, अत्यन्त प्रबल पराक्रम, दृढ़ उत्साह – *अच्चारद्धविरियं उद्धच्चाय संवत्तति,* महाव॰ 254; – **विरियता** स्त्री॰, भाव॰ [अत्यारब्धवीर्यत्व], अत्यधिक वीर्यता, प्रबल पराक्रम से युक्त होने की दशा, प्रयास में अशिथिलता – *यस्मिं समये अच्चारद्धवीरियतादीहि उद्धतं चित्तं होति ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).308.

अच्चावदति अति + √आ + √वद, वर्त॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, 1. चापलूसी करके वश में कर लेता है, मन्त्रमुग्ध कर देता है, मीठी बोली बोलकर बहका देता है या ठग लेता है – ... *चत्तालीसाय ... ठानेहि इत्थी पुरिसं अच्चावदति ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.396; 2. विवाद में अत्यधिक बोलता है, विवाद में हल्ला करते हुए दूसरे को पीछे छोड़ देता है – **दन्ते** वर्त॰ कृ॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अञ्ञमञ्ञं सुतेन अच्चावदन्ते ...,* स॰ नि॰ 1(2).182; *अच्चावदन्ते'ति अतिक्कम्म वदन्ते, सुतपरियत्तिं निस्साय अतिविय वादं करोन्तेति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.154; 3. हंसी या खिल्ली उड़ाया – **थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुनियो अच्चावदथा'ति,* पाचि॰ 300.

अच्चासन नपुं॰, [अत्यशन], अधिक रूप में ग्रहण किया गया भोजन – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चासनस्स पुरिसो, पायासस्सापि तप्पती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.184; *अच्चासनस्साति करणत्थे सामिवचनं, अतिअसनेन अतिभुत्तेनाति अत्थो,* तदे॰ 1.184.

अच्चासन्न त्रि॰, [अत्यासन्न], अत्यधिक समीप, बहुत अधिक निकट – **न्नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेनासनं नातिदूरं होति नाच्चासन्नं ...,* अ॰ नि॰ 3(2).13; – **न्ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं अस्स गामतो नेव अविदूरे न अच्चासन्ने,* महाव॰ 44.

अच्चासरति अति + आ + √सर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, **शा॰ अ॰** बहुत आगे या दूर तक चला जाता है, **ला॰ अ॰** निर्धारित सीमा अथवा नियमों का अतिक्रमण करता है – *अच्चारद्धवीरियेन हि उद्धच्चे पतन्तो अच्चासरति ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.19.

अच्चासरा स्त्री॰, अच्चासरति से व्यु॰, वञ्चना, ठगी, कूटसंरचना, छल-प्रपञ्च, माया – *या एवरूपा माया मायाविता अच्चासरा वञ्चना निकति ... अयं वुच्चति माया,* विभ॰ 413; *कत्वा पापं पुन पटिच्छादनतो अतिच्च आसरन्ति एताय सत्ताति अच्चासरा,* विभ॰ अट्ठ॰ 465.

अच्चाहित त्रि॰, [अत्यहित], अत्यधिक अहितकारक – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चाहितं कम्मं करोसि लुद्दं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.42; *अच्चाहितन्ति हितातिक्कन्तं, अतिअहितं वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.204.

अच्चि / अच्ची स्त्री॰/पु॰, [अर्चिष्], लपट, आग की लौ या चिनगारी, ज्वाला की शिखा, प्रकाशकिरण – *अथ सिखा जाला अच्चि वा पुमे,* अभि॰ प॰ 35; *जालंसुस्वच्चि नो पुमे,* अभि॰ प॰ 1102; *अच्ची यथा वातवेगेन खित्ता,* सु॰ नि॰ 1080; *अच्चीति अनलजालक्खन्धो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.202; – **जाला** स्त्री॰, [अर्चिज्वाला], देदीप्यमान आग की लौ, चमकती हुई प्रकाश-किरण – *अच्चिजालामालके ... पच्चति ...,* मि॰ प॰ 322; – **बद्ध / अच्छिबद्ध** त्रि॰, [अर्चिबद्ध], **शा॰ अ॰** किरणों मे बंधा हुआ, **ला॰ अ॰** लड़ियों या पंक्तियों में विभक्त, चौकोर आकृति के टुकड़ों में विभक्त, मर्यादाओं में बंधा हुआ – *अद्दसा खो भगवा मगधखेत्तं अच्छिबद्धं पालिबद्धं मरियादबद्धं ...,* महाव॰ 378; *अच्छिबद्धन्ति चतुरस्सकेदारकबद्धं,* महाव॰ अट्ठ॰ 384; – **मन्तु** 1. त्रि॰, [अर्चिष्मत्], चमकदार, प्रभास्वर, लपटों से युक्त, देदीप्यमान – **मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – .. *अग्गि अच्चिमा चेव वण्णवा च पभस्सरो ...,* म॰ नि॰ 2.367; – **न्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं सब्बङ्गसम्पन्नं, अच्चिमन्तं पभस्सरं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.172; – **न्तो** ब॰ व॰ – *अच्चिमन्तो महब्भया,* जा॰ अट्ठ॰ 5.258; 2. अग्नि – *हुतावहोच्चिमा,* अभि॰ प॰ 34; – **मतो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चि अच्चिमतो लोके,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 335; 3. पु॰, एक पौराणिक राजा का नाम – *एकसतं च राजानो अच्चिमस्सासि अत्रजा,* दी॰ वं॰ 3.14; – **मती** स्त्री॰, वेस्सवण की एक पुत्री का नाम – ... *अच्चिमती राजवरस्स सिरीमतो, सुता च रञ्ञो वेस्सवणस्स*

धीता ..., वि॰ व॰ 316; – **माली** त्रि॰, [अर्चिमाली], ज्वालाओं की माला को धारण करने वाला (अग्नि) – *यथापि पावको ब्रह्मे, अच्चिमाली यसस्सिमा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.57; *अच्चिमाली'ति अच्चीहि युत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.58; – **वेग** पु॰, ज्वालाओं अथवा आग की लपटों का वेग – ... *समन्ता सतयोजनानुफरणच्चिवेगा* ..., मि॰ प॰ 149; – **सङ्घ** पु॰, ज्वालाओं या आग की लपटों की राशि, बहुत सारी आग की ज्वालाएं – *अच्चिसङ्घपरेतो सो, दुक्खं वेदेति वेदनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.260.

अच्चित त्रि॰, √अच्च का भू॰ क॰ कृ॰, [अर्चित], पूजित, सम्मानित, सत्कृत, सम्मानित – *अपचायितो च महितो पूजितारहिताच्चिता,* अभि॰ प॰ 750; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सूपचिण्णो अयं सेलो, अच्चितो मानितो सदा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.23.

अच्चुक्कट्ठ त्रि॰ [अत्युत्कृष्ट], **शा॰ अ॰** ऊपर की ओर अत्यधिक खींचा गया या ले जाया गया, **ला॰ अ॰** अत्यधिक समुन्नत, बहुत अधिक उत्तम – ट्ठं नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *न च तस्स भोतो गोतमस्स काये चीवरं अच्चुक्कट्ठं होति न च अच्चोक्कट्ठ* ..., म॰ नि॰ 2.347; *यो हि याव हनुकट्ठितो उक्खिपित्वा पारुपति, तस्स अच्चुक्कट्ठं नाम होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.277.

अच्चुग्गत त्रि॰, [अत्युद्गत], **शा॰ अ॰** अत्यधिक ऊपर की ओर गया हुआ, **ला॰ अ॰** बहुत ऊंचा, लम्बा, उन्नत, बहुत अधिक ऊपर तक व्याप्त – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नभे अच्चुग्गतं धीरं, चन्दवं गगने यथा,* बु॰ वं॰ 291; *अनुमानेन जानन्ति, दिस्वा अच्चुग्गतं गिरिं,* मि॰ प॰ 314; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिनेरु, भिक्खवे, पब्बतराजा ... महासमुद्दा अच्चुग्गतो,* अ॰ नि॰ 2(2).237; – **धज** पु॰, दूसरों से अधिक ऊपर उठी हुई ध्वजा – *केतु वुच्चति बहूसु धजेसु अच्चुग्गतधजो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 397; – **सरीर** त्रि॰, ब॰ स॰, बहुत लम्बे शरीर वाला – *को नु असि त्वं एवं अच्चुग्गतसरीरोति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.99.

अच्चुग्गम्म अति + उ + √गम का पू॰ का॰ कृ॰ [अत्युद्गम्य], अधिक ऊपर उठकर – *उदकं अच्चुग्गम्म ठितानि अनुपलित्तानि उदकेन,* म॰ नि॰ 1.228; ... *उप्पलं वा पदुमं वा पुण्डरीकं वा उदके जातं उदके संवड्ढं उदका अच्चुग्गम्म तिट्ठति* ..., अ॰ नि॰ 1(2).44.

अच्चुण्ह त्रि॰, [अत्युष्ण], अत्यधिक गर्म, बहुत उष्ण – ... *तस्सा अच्चुण्हअतिसीतअतिअम्बिलादिपरिभोगं वज्जेत्वा सुखेन गब्भं परिहरियमानाय* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.297; – **ण्हं** पु॰/नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो पट्ठाय यागुं ददमाना अच्चुण्हं वा अतिसीतलं वा अतिलोणं वा अलोणं वा देति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.374.

अच्चुत 1. त्रि॰, [अच्युत], चिरस्थायी, अपने स्वरूप में स्थिर, अपरिणामधर्मा, अचल, ध्रुव – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चुतो च सद्धम्मा,* अ॰ नि॰ 3(1).121; 149; – **तं**[1] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चुतन्ति संवण्णितं पदमज्झगाति* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.212; – **तं**[2] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चुतन्ति सस्सतं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.186; **2.** नपुं॰, निर्वाण – *अपवग्गो विरागो च पणीतं अच्चुतं पदं,* अभि॰ प॰ 8; *अज्झगा अमतं सन्तिं, निब्बानं पदमच्चुतं,* सु॰ नि॰ 206; *एवरूपा हि अच्चुतं अमतं महानिब्बानमेव पापुणन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.186; – **गत / पत्त** त्रि॰, निर्वाण की अच्युत अवस्था में पहुंचा हुआ, निर्वाण का साक्षात्कार किया हुआ – *सो अभिञ्ञापारगू ... अच्चुतगतो अच्चुतप्पत्तो अमतगतो अमतप्पत्तो निब्बानगतो निब्बानप्पत्तो,* महानि॰ 15; *अच्चुतगतोति चुतिविरहितं निब्बानं मग्गेन गतो,* महानि॰ अट्ठ॰ 65; **3.क.** पु॰, एक व्यापारी का नाम – ... *ककुसन्धस्स भगवतो काले अच्चुतो नाम सेट्ठि* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.103; **3.ख.** एक ऋषि का नाम – *अच्चुतोति एवंनामको इसि तत्थ वसति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.297; **3.ग.** एक प्रत्येकबुद्ध का नाम – *अथच्चुतो अच्चुतगामब्यामको,* म॰ नि॰ 3.116; **3.घ.** देवों के एक वर्ग-विशेष का नाम – *वरुणा सहधम्मा च, अच्चुता च अनेजका,* दी॰ नि॰ 2.191; – **गामी** पु॰, विजय के साथियों में से एक का नाम – *अच्चुतगामी उपतिस्सो पठमं तो इधागतो,* दी॰ वं॰ 9.32; – **वाद** पु॰, निर्वाण से सम्बन्धित अथवा निर्वाण-विषयक वाद, शान्तिवाद – *सन्तिवादोति सन्तिवादो ... अभयवादो अच्चुतवादो अमतवादो* ..., महानि॰ 148.

अच्चुति स्त्री॰, चुति का निषे॰ [अच्युति], अच्यवन, अस्खलन, अपुनर्भव, पुनर्जन्म में प्रवेश न करना – *तञ्हि सयं अचवनधम्मत्ता अधिगतानं अच्चुतिहेतुभावतो च नत्थि एत्थ चुतीति अच्चुतं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.15.

अच्चुद्धुमातभाव पु॰, भाव॰, आत्मदर्प अथवा अहङ्कार से भरी हुई मनोदशा, अतिमान – *अतिमानो, अतिविय अहङ्कारस्सो, अच्चुद्धुमातभावपच्चुपट्ठानो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).114; पाठा॰ अच्चुद्धुमतभाव.

अच्चुपसेवतो त्रि॰, अति + उप + √सेव का वर्त॰ कृ॰, पु॰,

ष॰ वि॰, ए॰ व॰ [अत्युपसेवत:], अत्यधिक साथ संग करने वाले का - *अनत्था तात वड्डन्ति, बालं अच्चुपसेवतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.463.

अच्चुळार त्रि॰, [अत्युदार], अत्यधिक प्रभावशाली - **राहि** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अच्चुळाराहि पूजाहि देवा नागा नरा पि च,* म॰ वं॰ 19.7.

अच्चेक त्रि॰, अतिरिक्त, असाधारण, असामान्य, प्रदान की जा रही वस्तु-विशेष की समय आदि की दृष्टि से असामान्यता - *अच्चेकं मञ्ञमानेन भिक्खुना पटिग्गहेतब्बं* ..., पारा॰ 388; - **चीवर** नपुं॰, कर्म॰ स॰, भिक्षु द्वारा असामान्य परिस्थिति में प्राप्त चीवर - *अच्चेकं मञ्ञमानेन ... पटिग्गहेतब्बं पटिग्गहेत्वा याव चीवरकालसमयं निक्खिपितब्बन्ति सञ्ञाणं कत्वा निक्खिपितब्बं, इदं अच्चेकचीवर'न्ति,* पारा॰ 389; - **चीवर-सिक्खापद** नपुं॰, निस्सग्गिय 28 का शीर्षक, पारा॰ 387-90; - **टि॰** सेनाक्षेत्र की ओर जा रहे, लम्बी यात्रा पर निकल रहे अथवा गम्भीर रूप से रुग्ण व्यक्ति द्वारा दान दिया गया तथा पूर्णिमा के दिन भिक्षु के द्वारा प्राप्त चीवर अच्चेक-चीवर कहलाता है.

अच्चेति क. अति + √इ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [अत्येति], **1.** पार कर जाता है, अतिक्रमण करता है, उल्लंघन करता है - *वेलं न अच्चेति महासमुद्दो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.187; ... *न अच्चेतीति ... वेलं अतिक्कमितुं न सक्कोति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.188; **2.** एक ओर होकर निकल जाता है, खो जाता है, अदृश्य हो जाता है - *अत्था अच्चेन्ति माणवे,* दी॰ नि॰ 3.140; - **न्ति** ब॰ व॰ ... *माणवेति एवरूपे पुग्गले अत्था अतिक्कमन्ति, तेसु न तिट्ठन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.118; **3.** उपेक्षा करता है, खो देता है - ... *अत्तनो अत्थं न अच्चेति नातिवत्तति, न हापेतीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.149; **4.** गुज़र जाता है, बीत जाता है - **च्चयन्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अच्चयन्ति अहोरत्ता, जीवितं उपरुज्झति,* थेरगा॰ 145; *अच्चयन्तीति अतिक्कमन्ति, लहुं लहुं अपगच्छन्तीति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.289; **5.** मर जाता है, कालकवलित हो जाता है - *मच्चो एकोव अच्चेति, एकोव जायते कुले,* जा॰ अट्ठ॰ 4.116; **6.** किसी दूसरे की तुलना में अधिक श्रेष्ठ होता या बढ-चढ़कर होता है - *पञ्ञं न अच्चेति सिरी कदाचि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.191; **7.** अभिभूत कर लेता है, 'वशवर्ती बना लेता है', नियन्त्रित कर लेता है - *कथं सु दुक्खमच्चेति,* सु॰ नि॰ 185-86; *पुरायं अम्हे अच्चेति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.147; **ख.** √अच्च का वर्त॰, **प्र॰** पु॰, ए॰ व॰, [अर्चयति], तुल॰ अच्चति, द्रष्ट॰ अच्चति के अन्त॰.

अच्चेन्ति-सुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के देवतासंयुत्त के चौथे सुत्त का नाम, स॰ नि॰ 1(1).3-4.

अच्चोक्कट्ठ त्रि॰, [अत्यवकृष्ट], नीचे की ओर अत्यधिक खींचा गया अथवा ले जाया गया - ... *न च तस्स भोतो गोतमस्स काये चीवरं अच्चुक्कट्ठं होति न च अच्चोक्कट्ठं,* म॰ नि॰ 2.347.

अच्चोगाळ्ह त्रि॰, [अत्यवगाढ], अमर्यादित, असंयत, अत्यधिक अपव्ययुक्त - ... *समं जीविकं कप्पेति नाच्चोगाळ्हं नातिहीनं,* अ॰ नि॰ 3(1).110.

अच्चोदक नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अत्युदक], अत्यधिक जल - *सेसजनेहि कतसस्सं अच्चोदकेन वा अनोदकेन वा नस्सति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.33; - **टि॰** अच्चोदर (अति + उदर) एवं पच्चोदर आदि के सादृश्य पर अच्चुदक के स्थान पर अच्चोदक रूप, द्रष्ट॰ मो॰ व्या॰ 1.29.

अच्चोदर नपुं॰, कर्म॰ स॰, बहुत बड़ा उदर, विशाल पेट - *उदरं नून अञ्ञेसं, सुव अच्चोदरं तव,* जा॰ अट्ठ॰ 4.248.

अच्चोदात / अतिओदात त्रि॰, [अत्यवदात], अत्यधिक उजला, अत्यधिक गोरी त्वचा वाला - **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अभिरूपा दस्सनीया ... नातिकाळिका नाच्चोदाता ...,* दी॰ नि॰ 2.131; *अतिओदाताय खीरं अतिउण्हं होति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.3.

अच्छ 1. पु॰, [ऋक्ष], भालू - *अच्छो इक्को च इस्सो तु,* अभि॰ प॰ 612; - **च्छं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेन खो पन समयेन लुद्दका ... अच्छं हन्त्वा ... विहरन्ति,* महाव॰ 296; - **स्स** च॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यो च हत्थिस्स भायति ... अच्छस्स ... भायति,* मि॰ प॰ 149; - **चम्म** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, [ऋक्षचर्मन्], भालू की खाल - *तेन खो पन समयेन सङ्घस्स अच्छचम्मं उप्पन्नं होति,* चूळव॰ 307; - **फन्दन** नपुं॰, द्व॰ स॰, **शा॰ अ॰** भालू एवं फन्दन नामक एक वृक्ष, **ला॰ अ॰** स्वाभाविक वैर-भाव - **नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *अच्छफन्दनानं विय काकोलूकानं विय च कप्पट्ठितिकं वो वेरं अभविस्स,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.32; - **मंस** नपुं॰, [ऋक्षमांस], भालू का मांस - *अच्छमंसं सूकरमंसन्ति ... खादति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 406-7; - **वसा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऋक्षवसा], **1.** भालू की चर्बी - **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनुजानामि, भिक्खवे, वसानि भेसज्जानि - अच्छवसं, मच्छवसं, सुसुकावसं,* महाव॰ 275; परि॰ 253; **2.** केवल गवच्छ, सेतच्छ जैसे स॰ उ॰ प॰ में अच्छि के

परिवर्तित अच्छ रूप में प्राप्त, तत्रैव द्रष्ट.; **3**. त्रि., [अच्छ], स्वच्छ, निर्मल, विमल, साफ-सुथरा – **च्छो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *अच्छो पसन्नो विमलो गभीरप्पभुती तिसु*, अभि. प. 670; *अयं खो मणि वेळुरियो सुभो ... अच्छो विप्पसन्नो अनाविलो* ..., दी. नि. 1.67; – **च्छं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अच्छं भवेय्य उदकं विप्पसन्नं अनाविलं*, मि. प. 32.

अच्छकञ्जी / अच्छकञ्जिका स्त्री., साफ-सुथरा दलिया, स्वच्छ खिचड़ी अथवा तरल पेय, स्वच्छ मांड़ – **ञ्जिं** द्वि. वि., ए. व. – *अनुजानामि, भिक्खवे, अच्छकञ्जिन्ति*, महाव. 283; *अच्छकञ्जियन्ति तण्डुलोदकमण्डो*, महाव. अट्ठ. 353.

अच्छगल्ल / अच्छगल्लक पु., श्रीलङ्का के एक प्राचीन बौद्ध-विहार का नाम – *अरिट्ठपादे मकुलकं, पुरिमायच्छगल्लकं*, म. वं. 21.6.

अच्छति √अस / √आस का वर्त., प्र. पु., ए. व., किसी स्थान पर है, विद्यमान है, बैठता है, आसीन है – ... *अग्गिं परिचरन्तो अच्छति*, दी. नि. 1.89; *कायं बलाका रुचिरा, काकनीळस्मिमच्छति*, जा. अट्ठ. 2.303; – **सि**, म. पु., ए. व. – ... *अग्यागारं करित्वा अग्गिं परिचरन्तो अच्छसि साचरियको*, दी. नि. 1.90; *सिब्बमच्छसी'ति सिब्बन्तो अच्छसि*, जा. अट्ठ. 4.23; – **च्छामि**, उ. पु., ए. व. – ... *बहिमुखो येव पन अच्छामि*, मि. प. 99; – **न्ति**, प्र. पु., ब. व. – ... *छब्बग्गिया भिक्खू थेरेसु भिक्खूसु उक्कुटिकं निसिन्नेसु ... आसनेसु अच्छन्ति*, महाव. 212; – **रे**, प्र. पु., ब. व., आत्मने. – *दहरा बुद्धा च अच्छरे*, जा. अट्ठ. 6.53; *अच्छरेति वसन्ति*, तदे.; – **च्छाम** अनु., उ. पु., ब. व. – *एवं सन्ते किं निक्कम्मा अच्छाम*, जा. अट्ठ. 3.187; – **स्सु** अनु., म. पु., ए. व. – *अच्छस्सु तावा'ति आह*, ध. प. अट्ठ. 1.106; *इधेव ताव अच्छस्सु* ..., जा. अट्ठ. 6.22; – **थ** अनु., म. पु., ब. व. – *तुम्हे इधेव समणधम्मं करोन्ता अच्छथ*, जा. अट्ठ. 4.273; – **च्छे** विधि., प्र. पु., ए. व. – *यतं चरे यतं तिट्ठे, यतं अच्छे यतं सये*, इतिवु. 84; – **च्छि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *अथेकं विटपं अभिरुहित्वा निलीनो अच्छि*, जा. अट्ठ. 3.24; – **च्छिं**, उ. पु., ए. व. – *अच्छाहन्ति अच्छिं अहं, अवसिन्ति अत्थो*, जा. अट्ठ. 6.20; – **च्छिंसु**, प्र. पु., ब. व. – ... *इमिना उपायेन अड्ढमासमत्तं भूमियमेव अच्छिंसु*, ध. प. अट्ठ. 1.179; – **स्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – ... *न खो पनायं एत्तकं कालं निक्कम्मकोव अच्छिस्सति*, जा. अट्ठ. 6.265-6; – **स्सन्ति**, प्र. पु., ब. व. – *इमायपिमे आयस्मन्तो रतिया अच्छिस्सन्तीति*, पारा. 251; – **तुं** निमि. कृ. – ... *सीसं मे रुज्जति, पिट्ठि मे रुज्जती'ति वत्वा अच्छितुं लभन्तियेव*, ध. प. अट्ठ. 1. 252; – **तब्बं** सं. कृ. – ... *अतिसम्बाधे ओकासे चतुकोटेन चतुसङ्कुटितेनेव हुत्वा अच्छितब्बं*, जा. अट्ठ. 3.213.

अच्छत्त / अछत्त नपुं., छत्र का निषे. [अछत्र], वह वस्तु, जो छत्र नहीं है, छाता से इतर वस्तु – *अछत्तं छत्तमिव आचरति छत्तीयति*, क. व्या. 438.

अच्छन्दक नपुं., केवल भत्तच्छन्दक शब्द में स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, इच्छा का अभाव, अनिच्छा, अकामना, द्रष्ट. अच्छन्दिक आगे.

अच्छन्दिक / अच्छन्दक त्रि., आर्यमार्ग पर चलने की इच्छा से रहित – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अस्सद्धो च होति, अच्छन्दिको च, दुप्पञ्ञो च*, अ. नि. 2(2).136; – **का** ब. व. – *ये ते पुग्गला कम्मावरणेन समन्नागता ... अस्सद्धा अच्छन्दिका दुप्पञ्ञा एळा* ..., पु. प. 119; *अच्छन्दिकाति अपच्चनीक – पटिपदायं छन्दविरहिता*, विसुद्धि. 1.169.

अच्छन्न 1. त्रि., छन्न का निषे. [अछन्न], न ढका हुआ, नहीं छाया हुआ, बिना छत वाला, आवरणरहित, खुला हुआ – *छादेती ति छन्नो, सुच्छन्नो, अच्छन्नो*, क. व्या. 584; – **तल** त्रि., बिना छत वाली (कुटी) – **लाय** स्त्री., ष. वि., ए. व. – *उपरिवेहासकुटियाति उपरि अच्छन्नतलाय द्विभूमिककुटिया वा* ..., पाचि. अट्ठ. 42; **2**. त्रि., [आच्छन्न], अच्छी तरह से ढका हुआ, भलीभांति आवृत, चारों ओर से आच्छादित – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *क्याहं तेन अच्छन्नोपि करिस्सामि याहं न परिभुञ्जिस्सामी'ति*, पारा. 327; – **न्नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अच्छन्नन्ति निमुग्गं*, जा. अट्ठ. 3.284.

अच्छम्भी त्रि., छम्भी का निषे., निर्भय, निडर, भयरहित – *परिस्सयानं सहिता अछम्भी*, सु. नि. 42; *थद्धभावकरभयाभावेन अछम्भी*, सु. नि. अट्ठ. 1.70; *यदि समणपरिसं, विसारदो उपसङ्कमति अमङ्कुभूतो अभीरू अच्छम्भी ... परिसं उपसङ्कमति*, मि. प. 307; पाठा. अछम्भी; – **ता** स्त्री., भाव. [अच्छम्भितत्व], निर्भयता, भयरहित होने की स्थिति – *अभेज्जपरिसता अच्छम्भिता दुप्पधंसिता*, खु. पा. अट्ठ. 23; *अच्छम्भितट्ठेन उसभसदिसताय उसभं*, ध. प. अट्ठ. 2.416.

अच्छर नपुं., अद्भुत, आश्चर्य – *आभुसो चरितब्बन्ति अच्छरियं, एवं अच्छरं, अच्छेरं*, क. व्या. 633; – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *भये कोधे पसंसायं, तुरिते कोतूहलच्छरे*, सु. नि. अट्ठ. 1. 122, द्रष्ट. अच्छरिय (आगे).

अच्छरा[1] स्त्री., [बौ. सं. अच्छटा, अ. मा. अच्छरा], **शा. अ.** उंगलियों के अग्रभाग को आपस मे मिला देना, उंगलियों को चटकाना, चुटकी बजाना – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *बोधिसत्तो अच्छरं पहरित्वा ...,* जा. अट्ठ. 2.371; *अत्तनो पमाणं न जानाथ, अपगच्छथा'ति अच्छरं पहरि,* ध. प. अट्ठ. 1.238; **ला. अ. 1.** चुटकी बजाने में लगने वाला एक क्षण का समय, अल्प-समय – ... *द्वे च तुम्बा एकच्छराक्खणे पवत्तचितस्स ...,* मि. प. 112; **ला. अ. 2.** *माप के सन्दर्भ में,* एक चुटकी भर, बहुत थोड़ा सा – ... *मय्हं पन पत्थं तण्डुलानं चतुभागं खरीस्स अच्छरं सक्खराय करण्डकं ... देहि,* जा. अट्ठ. 5.382; *अच्छरग्गहणमत्ते सिद्धत्थके लद्धुं वट्टती'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.396; **ला. अ. 3.** आज्ञा, डांट-फटकार अथवा तिरस्कारसूचक उंगली की चेष्टा – ... *अच्छरं पहरित्वा मोरिं वस्सापेसि,* जा. अट्ठ. 4.299; – **गहणमत्त** त्रि., चुटकी भर में आने योग्य, अतिस्वल्प मात्रा वाला – *अच्छरग्गहणमत्ते सिद्धत्थके लद्धुं वट्टती'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.396; – **घातकालिक** त्रि., चुटकी बजाने की अति-स्वल्प समयावधि वाला – ... *अनिच्चसञ्ञन्तु अच्छराघातकालिकं,* सद्धम्मो. 490; – **योग्ग** त्रि., उंगली द्वारा प्रहार किये जाने योग्य, थप्पड़ मारने योग्य, तिरस्करणीय – *अयं पन अट्ठकथानयो – अच्छरायोग्गन्ति अच्छरियं, अच्छरं पहरितुं युत्तन्ति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.42; – **सङ्घातमत्त** पु., **शा. अ.** चुटकी का बजाना, **ला. अ.** अत्यन्त कम अवधि का काल, क्षणमात्र की कालावधि – *अच्छरासङ्घातमत्तम्पि, चेतोसन्तिमनज्झगं,* थेरगा. 405; *अच्छरासङ्घातमत्तम्पि चे, भिक्खवे, भिक्खु मेत्ताचित्तं आसेवति ...,* अ. नि. 1(1).13; *अच्छरासङ्घातमत्तम्पीति अच्छराघटितमत्तम्पि खणं अङ्गुलिफोटनमत्तम्पि कालन्ति अत्थो,* थेरीगा. अट्ठ. 85; – **सङ्घातवग्ग** पु., अ. नि. के एकक निपात का पांचवां वर्ग, अ. नि. 1(1).13-14; – **सद्द** पु., उंगलियों के चटकाने का शब्द, चुटकी का शब्द – **देन** तृ. वि., ए. व. – .. *यथा अच्छरसद्देन वस्सति ...,* जा. अट्ठ. 3.108; **टि.** व्यु. पूरी तरह से संदिग्ध, संभवतः इसका सम्बन्ध अक्षर, आ + √त्सर अथवा ऋच्छटा में देखा जा सकता है.

अच्छरा[2] स्त्री., [अप्सरस्, अप्सरा, आप + √सर् से व्यु.], देवकन्याएं, स्वर्गलोक में नृत्य करने वाली अप्सरा – **यो** प्र. वि., ब. व. – *अच्छरायो त्थियं वुत्ता रम्भा चालम्बुसादयो, देवित्थियो,* अभि. प. 24-25; – **रा** प्र. वि., ए. व. – *विचरसि चित्तलतेव अच्छरा,* थेरीगा. 375; *तिदिवोकचराव अच्छरा,* जा. अट्ठ. 7.161; *तस्सा मे पस्स विमानं, अच्छरा कामवण्णिनीहमस्मि,* वि. व. 334; – **गण** पु., [अप्सरागण], अप्सराओं का समूह या मण्डली – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *नन्दस्स सक्यपुत्तस्स अच्छरागणं दस्सेत्वा अरहत्तं अदासि,* जा. अट्ठ. 4.201; – **गणसंघुट्ठ** त्रि., अप्सरागणों द्वारा अनुगुञ्जायमान, अप्सराओं के संगीत से गूंज रहा – *अच्छरागणसङ्घुट्ठं, पिसाचगणसेवितं,* स. नि. 1(1).37; – **सङ्गण** पु., देवकन्याओं या अप्सराओं का समूह – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *तथेव त्वं अच्छरासङ्गणं इमं,* वि. व. 152; – **सङ्घ** पु., उपरिवत् – **ङ्घं** द्वि. वि., ए. व. – *महन्तं अच्छरासङ्घं, वण्णेन अतिरोचसि,* वि. व. 35; – **ङ्घो** प्र. वि., ए. व. – *अच्छरासङ्घोपि नं दिस्वा पासादतो ओरोहित्वा आह,* ध. प. अट्ठ. 2.171; – **सङ्घपरिवुत** त्रि., अप्सराओं के समूह के साथ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *बोधिसत्तो देवो विय अच्छरासङ्घपरिवुतो,* जा. अट्ठ. 1.68; – **सहस्सपरिवार** त्रि., हज़ारों अप्सराओं से घिरा हुआ – *अच्छरासहस्सपरिवारो भविस्सति ...,* ध. प. अट्ठ. 1.16; – **सुत्त** नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 1(1).37.

अच्छरिका स्त्री., अच्छरा से व्यु., चुटकी की आवाज़ – **य** तृ. वि., ए. व. – *थेरो तस्स सह निक्खमनाव अरहत्तं पत्वा अच्छरिकाय सञ्ञं अदासि,* विसुद्धि. 1.45; – **सद्द** पु., चुटकी बजाने का शब्द – *अच्छरिकासद्दं करोन्तो विय विचरति,* खु. पा. अट्ठ. 51.

अच्छरिय 1. त्रि., [आश्चर्य], अद्भुत, अनुपम, भव्य, आश्चर्यमय, सुन्दर – *विम्हयेच्छरियाब्भुता,* अभि. प. 736; – **यानं** नपुं., ष. वि., ब. व. – *यथाबलं ... गिलानुपट्ठानेन अच्छरियानं रसानं संविभागेन ...,* दी. नि. 3.145; – **ये** सप्त. वि., ए. व. – ... *अच्छरिये मधुररसे लभित्वा सयमेव अखादित्वा ...,* दी. नि. अट्ठ. 3.126; **2.क.** नपुं., आश्चर्य – *अतेव मे अच्छरियं, हीङ्कारो पटिभाति मं,* जा. अट्ठ. 7.293; ... *अच्छरियन्ति अतिविय मे अच्छरियं,* जा. अट्ठ. 7.295; *तं दिस्वा मद्दी अच्छरियं पवेदेसि,* जा. अट्ठ. 7.272; **2.ख.** भगवान् बुद्ध के उपदेशों से हर्षित व्यक्तियों द्वारा अभिनन्दक वचनों के रूप में अद्भुत आश्चर्य, कौतुक या चमत्कार-सूचक निपा. – *अच्छरियं, भन्ते अब्भुतं, भन्ते, याव परिसुद्धो, भन्ते तथागतस्स छविवण्णो परियोदातो,* दी. नि. अट्ठ. 2.101; *अच्छरियं, भन्ते, नागसेन, बुद्धानं, अब्भुतं, भन्ते, नागसेन, बुद्धानं ...,* मि. प. 125; – **यब्भुत-सुत्त** नपुं., म. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, म. नि. 3.161-66; – **कथा** स्त्री., सा.

सं॰ के दूसरे, सातवें तथा आठवें संग्रहों की कथाओं का शीर्षक, सा॰ सं॰ 2.21; 7.44; 8.60; – **गामी** त्रि॰, मग्ग के विशे॰ के रूप में ही प्रयुक्त, आश्चर्य की ओर ले जाने वाला (मार्ग) – **मिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्छरियञ्च वो, भिक्खवे, देसेस्सामि अच्छरियगामिञ्च मग्गं,* स॰ नि॰ 2(2).342; – **जातिक / जात** त्रि॰, आश्चर्यमय, आश्चर्यभरी प्रकृतिवाला – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यञ्च त्वं आकासे गच्छसि तिट्ठसि च, इदं अच्छरियजातं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.133; – **धम्म** पु॰, कर्म॰ स॰, [आश्चर्यधर्म], आश्चर्यजनक बातें अथवा अद्भुत गुण या धर्म – **म्मेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतूहि अच्छरियधम्मेहि सङ्गहवत्थूहि च लोकं रञ्जनतो राजा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.154; – **यब्भुतचित्तजात** त्रि॰, आश्चर्य एवं कुतूहल से भरपूर – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *देवा च तावतिंसा अच्छरियब्भुतचित्तजाता अहेसुं ...,* म॰ नि॰ 1.322; – **यब्भुतजात** त्रि॰, उपरिवत् – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अच्छरियब्भुतजातो अमच्चे एवमाह,* मि॰ प॰ 127; – **यब्भुत-धम्म-सुत्त** नपुं॰, म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 3.161-166; – **मनुस्स** पु॰, अद्भुत मनुष्य, आश्चर्यमय पुरुष – *एकपुग्गलो ... लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति अच्छरियमनुस्सो,* अ॰ नि॰ 1(1).29; ... *अनेकेहि अच्छरियब्भुतधम्मेहि समन्नागत-त्तापि अच्छरियमनुस्सो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.92; – **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰, आश्चर्यजनक स्वरूप वाला – **पं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्छरियरूपं किर पाटिहारियं भविस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.236; – **टि॰** व्यु॰ के लिये द्रष्ट॰ दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.42; यहां इस शब्द को अच्छरा से व्यु॰ कहा गया है – *अच्छरायोग्गन्ति अच्छरियं, अच्छरं पहरितुं युत्तन्ति,* तुल॰ पाणिनि 6.1.147 तथा क॰ व्या॰ 633, जहां इसे आ + √चर धातु से व्यु॰ बतलाया गया है.

अच्छरूपम त्रि॰, [अप्सरोपम], अप्सराओं के समान – **मा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवी विय अच्छरूपमा, मज्झे नारिगणस्स सोभसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.366.

अच्छलाखारसवण्ण त्रि॰, स्वच्छ तरल लाह के समान वर्ण वाला – *तत्थ सन्निचितलोहितं ... संसरणलोहितं अच्छलाखारसवण्णं,* विभ॰ अट्ठ॰ 232.

अच्छविहार पु॰, श्रीलङ्का के एक विहार का नाम – *अयं हि दक्खिणदिसाय मरुचियतिस्सेन रञ्ञा कारापितं अच्छविहारं पटिच्च ...,* म॰ वं॰ टी॰ 383.

अच्छादन नपुं॰, [आच्छादन], आवरण, ढकने वाली चादर, सुरक्षा-कवच, संरक्षण, वस्त्र – *छदनेच्छादनं वत्थे,* अभि॰ प॰ 1104; *चेलमच्छादनं वत्थं वासो वसनमंसुकं,* अभि॰ प॰ 290; *इत्थिया हि सामिको अच्छादनं नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.294; – **नानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तिंसभिक्खुसहस्सस्स अदा अच्छादनानि च,* म॰ वं॰ 34.6; – **ना / छादना** स्त्री॰, **शा॰ अ॰** आवरण-क्रिया, छिपा कर रखना, गुप्त करके रखना, **ला॰ अ॰** धोखाधड़ी – *तिणपण्णेहि विय गूथं कायवचीकम्मेहि पापं छादेतीति अच्छादना,* विभ॰ अ॰ 465.

अच्छादेति आ + √छद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [आच्छादयति], वस्त्र धारण कराता है, कपड़े पहनाता है, ढक देता है, आच्छादित कर देता है – ... *एकेन भगवन्तं अच्छादेति, एकेन आयस्मन्तं आनन्दं,* दी॰ नि॰ 2.101; – **हि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एकेन मं अच्छादेहि, एकेन आनन्दं,* दी॰ नि॰ 2.101; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एकमेकञ्च भिक्खुं ... दुस्सयुगेन अच्छादेसि,* म॰ नि॰ 2.17; – **सुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *निवासनं उत्तरीयन्ति द्वीहि वत्थेहि अच्छादेसुं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 43; – **स्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *इत्थन्नामं भिक्खुं चीवरेन अच्छादेस्सामि,* पारा॰ 327; – **स्ससि** भवि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न चत्तारि वत्थयुगानि अच्छादेस्ससि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.153; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *दिब्बवत्थेहि अच्छादेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.161; *अथ खो महापजापती गोतमी केसे छेदापेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा ...,* चूळव॰ 415; – **दितो** भू॰ क॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन अच्छादितो सत्था, हेमवण्णो असोभथाति,* दी॰ नि॰ 2.102; – **दापेत्वा** प्रेर॰, पू॰ का॰ कृ॰ – *कासायानि वत्थानि अच्छादापेत्वा ...,* महाव॰ 26.

अच्छि नपुं॰, [अक्षि], आंख, नेत्र, नयन, जालरन्ध्र, जाल का डोरा – *नयनं त्वक्खि नेत्तं च लोचनं चाच्छि चक्खु च,* अभि॰ प॰ 149.

अच्छिद्द त्रि॰, छिद्द का निषे॰, ब॰ स॰ [अच्छिद्र], अव्यथित, दोषरहित, परिशुद्ध, अखण्ड, सघन, ठोस – **द्दानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि,* म॰ नि॰ 1.404; *अच्छिद्देन अप्पटिमंसेन,* चूळव॰ 409; – **द्दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा सेलो पब्बतो अच्छिद्दो असुसिरो एकग्घनो,* महाव॰ 256; – **कगणना** स्त्री॰, अटूट-क्रम से संख्या की गणना, क्रमबद्ध गणना, अबाधित गणना – *गणना वुच्चति अच्छिद्दकगणना,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.84; – **कारी** त्रि॰, पूर्णता से करने वाला, बिना व्यवधान के करने वाला, क्रमबद्धता के साथ कार्य करने वाला – *अयमायस्मा अखण्डकारी अच्छिद्दकारी असबलकारी ...,* अ॰ नि॰ 1(2).217; – **पाठक** त्रि॰, क्रमबद्ध रूप से संख्या की गणना करने वाला,

अखण्ड-गणक या पाठक, बिना तोड़े ही संख्या गिनने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *गणकाति अच्छिद्दकपाठका,* दी. नि. अट्ठ. 1.131; – **वचन** त्रि., ब. स., विश्वस्तवाक् व्यक्ति, विश्वसनीय या निर्दोष वचन बोलने वाला, भरोसा करने योग्य बात करने वाला – **ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *अच्छिद्दवचना'तिपि पाठो, तस्स निद्दोसवचनाति अत्थो,* बु. वं. अट्ठ. 118; – **वुत्ति** त्रि., निर्दोष या उत्तम जीवन-पद्धति का अनुसरण करने वाला – **त्तिं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अच्छिद्दवुत्तिं मेधाविं,* ध. प. 229; *अच्छिद्दाय वा सिक्खाय अच्छिद्दाय वा जीवितवुत्तिया समन्नागतत्ता अच्छिद्दवुत्तिं ...,* ध. प. अट्ठ. 2.191.

अच्छिन्दति आ + √छिद का वर्त., प्र. पु., ए. व., [आछिनत्ति], विदीर्ण करता है, फाड़ता है, चिथड़े-चिथड़े करता है, बलपूर्वक अपहरण करता है, लूटता है – *... चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दति वा अच्छिन्दापेति वा,* निस्सग्गियं पाचित्तियं, पाचि. 335; – **न्देय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *अच्छिन्देय्याति सयं अच्छिन्दति,* पाचि. 335; – **न्दिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *थुल्लनन्दा भिक्खुनिया सद्धिं चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दिस्सति,* पाचि. 334; *कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा ... चीवरं परिवत्तेत्वा अच्छिन्दिस्सती'ति,* पाचि. 334; – **न्दिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. – *... चोरा निक्खमित्वा एकच्चे भिक्खू अच्छिन्दिंसु,* महाव. 110; – **न्दित्वा** पू. का. कृ. – *इमे, मं, अय्यपुत्त, ञातका त्वं अच्छिन्दित्वा अञ्ञस्स दातुकामा,* म. नि. 2.319; *अच्छिन्दित्वा गहणस्स भायामि,* जा. अट्ठ. 7.314; – **च्छेज्ज** उपरिवत् – *अच्छेज्ज तण्हं गणसङ्घचारी,* स. नि. 1(1).149; – **न्दापेय्य** प्रेर., विधि. प्र. पु., ए. व. – *अच्छिन्दापेय्याति अञ्ञं आणापेति ...,* पाचि. 335.

अच्छिन्दन त्रि., प्रवञ्चन, विनाशन – *यसविलोपसेनापतिट्ठानादिअच्छिन्दनादिकं राजतो उपसग्गं वा,* ध. प. अट्ठ. 2.40.

अच्छिन्न[1] त्रि., छिन्न का निषे. [अछिन्न], **शा. अ.** अखण्ड, पूर्ण, वह जो कटा हुआ नहीं है – **न्नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अत्थि रुक्खस्स अच्छिन्नं,* जा. अट्ठ. 2.64; – **न्ने** सप्त. वि., ए. व. – *न च अच्छिन्ने थेवे पक्कमितब्बं,* महाव. 55; **ला. अ.** जो जीर्ण-शीर्ण न हो, जो फटा हुआ न हो, द्रष्ट. अच्छिन्नक, आगे; – **क** त्रि., अच्छिन्न[1] से व्यु., अविदारित, अविदीर्ण, नहीं काटा हुआ, अपृथक्कृत – **कानि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *न, भिक्खवे, अच्छिन्नकानि चीवरानि धारेतब्बानि,* महाव. 377; – **केस** त्रि., ब. स., [अच्छिन्नकेश], अमुण्डित केश वाला, न मुंड़े हुए केश वाला व्यक्ति – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सचे अच्छिन्नकेसो आगच्छति, सङ्घो अपलोकेतब्बो भण्डुकम्माय,* महाव. 90; – **चीवर** त्रि., ब. स., वह भिक्षु, जिसका चीवर राजा अथवा चोरों आदि द्वारा नहीं छीन लिया गया है – **रो** उपरिवत् – *अच्छिन्नचीवरो नाम भिक्खुस्स चीवरं अच्छिन्नं होति राजूहि वा चोरेहि वा धुत्तेहि वा,* पारा. 323; – **चीवरक / चीवरिका** त्रि., ब. स., उपरिवत् – **काय** स्त्री., च. वि., ए. व. – *अनापत्ति अच्छिन्नचीवरिकाय वा,* पाचि. 381; – **तट** त्रि., वह जलाशय या नदी, जिसका तट भग्न नहीं है अथवा कटा-छंटा या दुरारोह नहीं है, समतल तट वाला – **टा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अपब्भाराति अच्छिन्नतटा समतित्था,* जा. अट्ठ. 5.402; – **दस** त्रि., ब. स., बिना कटे-फटे किनारों या झालरों वाला – **सानि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *अच्छिन्नदसानि चीवरानि धारेन्ति,* महाव. 399; – **धार** त्रि., ब. स. [अच्छिन्नधार], अविच्छिन्न जलधारा वाला, लगातार जलप्रवाह से युक्त – **रे** पु., सप्त. वि., ए. व. – *वस्सारत्तसमये अच्छिन्नधारे देवे वस्सन्ते,* जा. अट्ठ. 2.225; – **धारा** स्त्री., जल की लगातार बह रही धारा – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *देवो अच्छिन्नधारं वस्सन्तो मुहुत्तेनेव जेतवनपोक्खरणिं पूरेसि,* जा. अट्ठ. 1.315.

अच्छिन्न[2] त्रि., आ + √छिद का भू. क. कृ., [आच्छिन्न], पूर्ण रूप से लूटा हुआ, परिलुण्ठित – **न्नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अम्हाकं बलञ्च वाहनञ्च जनपदो च कोसो च कोट्ठागारञ्च अच्छिन्नं,* महाव. 464; – **रट्ठ** त्रि., वह, जिसका अपना राष्ट्र छीन लिया गया है, जिसका राज्य छिन चुका है – **ट्ठा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अच्छिन्नरट्ठा व्यथिता पञ्चालियं वसं गता,* जा. अट्ठ. 6.225; *अच्छिन्नरट्ठाति चूलनिब्रह्मदत्तेन अच्छिन्दित्वा गहितरट्ठा,* जा. अट्ठ. 6.228; – **लज्जिता** स्त्री., भाव., निर्लज्जता, बेशर्मी, लज्जाशीलता का अभाव – **य** तृ. वि., ए. व. – *महाभोगकुलस्स धीता विपत्तिया अच्छिन्नलज्जिताय अलज्जमाना ...,* ध. प. अट्ठ. 1.109; – **सद्द** पु., लुटे हुए व्यक्ति का शब्द, उस व्यक्ति का शब्द, जिसके सर्वस्व का अपहरण कर लिया गया है – *चोरेहि अच्छिन्नसद्दं कत्वा,* जा. अट्ठ. 4.41.

अच्छिव पु., [अक्षीव], एक वृक्ष-विशेष का नाम – *अच्छिवा सल्लवा रुक्खा,* जा. अट्ठ. 7.302; *अच्छिवातिआदयोपि रुक्खायेव,* जा. अट्ठ. 7.303.

अच्छुपियन्ति अच्छुपेति का कर्म॰ वा॰, वर्त॰ प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, सन्निविष्ट किये जाते हैं, किसी में रख दिये जाते हैं - *बहलानि मण्डलानि न अच्छुपियन्ति,* चूळव॰ 230; - **पेसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अथ खो सो भिक्खु अग्गळं अच्छुपेसि,* महाव॰ 380; - **पेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *यंनूनाहं अग्गळं अच्छुपेय्यं,* महाव॰ 380.

अच्छेदसङ्की त्रि॰, लूटे जाने की शंका से आक्रान्त - **ङ्किनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अच्छेदसंकिनोपि फन्दन्ति,* महानि॰ 36; *अच्छेदसंकिनोपि फन्दन्तीति अच्छिन्दित्वा पसय्ह बलक्कारेन गण्हिस्सन्तीति उप्पन्नसंकिनोपि चलन्ति,* महानि॰ अट्ठ॰ 127.

अच्छेर त्रि॰, अद्भुत आश्चर्यकर - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नायं अज्जतनो धम्मो, नच्छेरो नपि अब्भुतो,* थेरगा॰ 552; - **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अच्छेरं वत बुद्धानं, गम्भीरो गोचरो सको,* थेरगा॰ 1088; *अच्छेरं वत लोकस्मिं, अब्भुतं लोमहंसनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.272; पाठा॰ अच्छरिय, तुल॰ आचेर, मच्छेर; - **क** त्रि॰, अच्छेर से व्यु॰, आश्चर्यजनक - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अच्छेरकं मं पटिभाति, एककम्पि रहोगतं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.30; - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इदं अच्छेरकं दिस्वा, अब्भुतं लोमहंसनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.272; - **तर** त्रि॰, अच्छेर का तुल॰ वि॰, दूसरों की तुलना में अधिक आश्चर्यजनक - *इतोपि अच्छेरतरं,* वि॰ व॰ 966(रो॰); - **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰, आश्चर्यजनक, चमत्कारपूर्ण, अत्यद्भुत - **पं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अच्छेररूपं पटिभाति मं इदं,* स॰ नि॰ 1(1).210; *अच्छेररूपं सुगतस्स ञाणं,* पे॰ व॰ 453; *तत्थ अच्छेररूपन्ति अच्छरियसभावं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 170.

अच्छोदक त्रि॰, अच्छ + उदक [अच्छोदक], स्वच्छ जल वाला, निर्मल जल से युक्त - **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पोक्खरणी अच्छोदका सातोदका सीतोदका सेतका सुपतित्था रमणीया,* म॰ नि॰ 1.110; स॰ नि॰ 1(1).108; *अच्छोदकाति तनुपसन्नसलिला,* उदा॰ अट्ठ॰ 326.

अच्छोदिक त्रि॰, अच्छोदक का ही अप॰ [अच्छोदक], उपरिवत् - **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अच्छोदिका पुथुसिला, गोनङ्गुलमिगायुता,* थेरगा॰ 601; *अच्छोदका'ति वत्तब्बे लिङ्गविपल्लासेन अच्छोदिका'ति वुत्तं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.243.

अज पु॰, [अज], बकरा - **जा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इमे ... अजा पसू मनुस्सा,* मि॰ प॰ 111; - **क** पु॰, अज से व्यु॰, [अजक], छोटा बकरा - **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अजकापि पसुकापि उपरोपे विहेठेन्ति,* चूळव॰ 281; - **करणी** स्त्री॰, एक नदी का नाम - *तदा नदी अजकरणी रमेति मं,* थेरगा॰ 307; - **कलापक** पु॰, 1. झुंड में बकरों की बलि स्वीकार करने वाले एक यक्ष का नाम - *सो किर यक्खो अजे कलापे कत्वा, बन्धनेन अजकोट्ठासेन सद्धिं बलिं पटिच्छति, न अञ्ञथा, तस्मा अजकलापको'ति पञ्ञायित्थ,* उदा॰ अट्ठ॰ 52; 2. एक चैत्य का नाम - *एकं समयं भगवा पावायं विहरति अजकलापके चेतिये,* उदा॰ 74; - **कोट्ठास** पु॰, बलि के अंश के रूप में बकरे - **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजकोट्ठासेन सद्धिं बलिं पटिच्छति,* उदा॰ अट्ठ॰ 52; - **चम्म** नपुं॰, [अजचर्म], बकरे का चमड़ा - *एळकचम्मं अजचम्मं मिगचम्मं,* महाव॰ 270; - **पथ** पु॰, बकरों के जाने योग्य मार्ग - **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजपथन्ति अजेहि गन्तब्बमग्गं,* महानि॰ अट्ठ॰ 222; *अजपथं सङ्कुपथं वेत्तपथं गच्छति,* मि॰ प॰ 260; - **पद** त्रि॰, ब॰ स॰ [अजपद], अजपादसदृश, बकरे के पैरों के समान - **देन** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजपदेन दण्डेन सुनिग्गहितं निग्गण्हेय्य,* म॰ नि॰ 1.187; *अजपदेन दण्डेन उप्पीळेन्तो दुब्बलं कत्वा सीसं दळ्हं गहेत्वा निप्पीळि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.413; - **पददण्ड** पु॰, बकरे के खुर के समान फटी छड़ी, बकरे के फटे खुर के समान फटी आकृतिवाली छड़ी - **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यथा हि पुरिसस्स सायं गेहं पविट्ठं सप्पं अजपददण्डं गहेत्वा परियेसमानस्स,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 218; - **पदसण्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰, बकरे के खुर के समान आकृतिवाला - **ने** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं ससम्भारधानबिलस्स अन्तो अजपदसण्ठाने पदेसे यथावुत्तप्पकारा हुत्वा तिट्ठति,* अभि॰ अव॰ 84; - **पाल** पु॰, एक पुरोहित के पुत्र का नाम - *चतुत्थस्स जातकाले अजपालो'ति नामं करिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.432; - **पालक**[1] पु॰, [अजपालक], गड़रिया, अजों का पालन करने वाला - *अथेको अजपालको अनेकसहस्सा अजा गोचरं नेन्तो सुसानपस्सेन गच्छति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.102; - **पालक**[2] नपुं॰, एक प्रकार के पादप-विशेष का नाम - *कुट्ठं तु अजपालकं,* अभि॰ प॰ 303; *कुट्ठं रोगेअजपालके,* अभि॰ प॰ 1120; - **पालकथा** स्त्री॰, महाव॰ के अन्तर्गत आयी हुई एक कथा का शीर्षक, महाव॰ 3; - **पालतरु** पु॰, [अजपालतरु], अजपाल नामक वटवृक्ष, बरगद का पेड़, निरञ्जना-नदी के तट पर उरुवेला के समीप का वह वटवृक्ष जहां भगवान् बुद्ध ने बोधिलाभ के पश्चात्, पंचम सप्ताह तथा अष्टम सप्ताह व्यतीत किया था - *पञ्चमे सत्ताहे ... अजपालनिग्रोधो तेनुपसङ्कमि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.87; 89; *अट्ठमे सत्ताहे अजपालनिग्रोधमूले निसिन्नो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.51; -

पालसञ्ञी पु., अजपाल की संज्ञा वाला, अजपाल नाम से जाना गया - ञ्ञिनो प्र. वि., ब. व. - वटस्स मूले अजपालसञ्ञिनो, दा. वं. 1.55; - पालिका स्त्री., छाग या बकरा पालने वाली - *अञ्ञतरा अजपालिका पस्सित्वा,* पारा. 44; - भूत त्रि., छाग के रूप में जन्मग्रहण करने वाला - तानं पु., ष. वि., ब. व. - *अजानं सतं अजभूतानं* ..., स. नि. 1(2).169; - युद्ध नपुं., [अजयुद्ध], बकरों का युद्ध, बकरों की लड़ाई - *अजयुद्धं मेण्डयुद्धं ...,* दी. नि. 1.6; महानि. 270; - यूथ नपुं., [अजयूथ], बकरों का समूह, बकरों का झुण्ड - थं द्वि. वि., ब. व. - *अजपालब्राह्मणो महन्तं अजयूथं गहेत्वा ... अजयूथं पटिजग्गन्तो,* जा. अट्ठ. 3.355; - थेन तृ. वि., ए. व. - *ब्राह्मणो अजयूथेन, पहूतेजो वने वसं,* जा. अट्ठ. 3.355; - रथ पु., [अजरथ], बकरों के द्वारा खींचा जानेवाला रथ - थे सप्त. वि., ए. व. - *कदाहं अजरथे च, सन्नद्धे उस्सितद्धजे ... पहाय पब्बजिस्सामि,* जा. अट्ठ. 6.57-58; *अजरथमेण्डरथमिगरथे सोभनत्थाय योजेन्ति,* जा. अट्ठ. 6.64; - राज पु., [अजराज], बकरों का राजा या स्वामी - *यं नु सम्म अहं बालो, अजराज विजानहि,* जा. अट्ठ. 3.245; - लक्खण नपुं., तत्पु. स., बकरों के लक्षण या इन लक्षणों को बतलाने वाली विद्या - *गोलक्खणं अजलक्खणं मेण्डलक्खणं ...,* दी. नि. 1.9; महानि. 281; - लण्डिका स्त्री., तत्पु. स., बकरों की लेंडी का पिण्ड, बकरे की लेंडी - *नाळिमत्ता सुक्खा अजलण्डिका,* जा. अट्ठ. 1.401; *सक्खिस्ससि तस्स मुखे नाळिमत्ता अजलण्डिका खिपितुन्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.289; - वत त्रि., कतिपय तापसों की बकरों के समान जीवन-यापन करने की प्रवृत्ति - *अजवतगोवता हुत्वा पुत्तं अलभित्वा उय्यानं अगमंसु,* जा. अट्ठ. 4.283; - विसाण-बद्धिक त्रि., बकरे के शृंग की तरह कोनों वाला जूता - का स्त्री., द्वि. वि., ब. व. - *अजविसाणबद्धिका उपाहनायो धारेन्ति,* महाव. 259; - वीथि स्त्री., [अजवीथि], शा. अ. बकरों के चलने योग्य मार्ग, ला. अ. मूल-नक्षत्र से लेकर उत्तरासाळ्ह तक सूर्य तथा चन्द्रमा के मार्ग का भाग, ग्रीष्म-ऋतु का काल - *सा वीथि उदकाभावेन अजानुरूपताय अजवीथी'ति समञ्ञा गता,* सारत्थ. टी. 1.230; - सद्द पु., [अजशब्द], बकरों की चिल्लाहट, बकरों की चीख, - *यदा अजसद्दं कत्वा बलिं उपहरन्ति, तदा सो तुस्सति,* उदा. अट्ठ. 52; - सील नपुं., बकरों के समान तापसों के रहने की प्रवृत्ति, आदत या साधना का प्रकार - *अजसीलगोसीलकुक्कुरसीलपञ्चातपम-रुप्पपातउक्कुटिकप्पधानकण्टकापस्सयादिभेदं,* सु. नि. अट्ठ. 2.217.

अजगर पु., [अजगर], एक बड़ा सांप, जो बकरे को निगल जाता है (इसे पाषाण-सर्प भी कहते हैं) - *वाहसोजगरो भवे,* अभि. प. 651; - रा प्र. वि., ब. व. - *सप्पा अजगरा नाम, अविसा ते महब्बला ...,* जा. अट्ठ. 7.263; - स्स ष. वि., ए. व. - *अजगरस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं,* मि. प. 329; - परिवारित त्रि., अजगरों से घिरा हुआ - तो पु., प्र. वि., ए. व. - *अजगरपरिवारितो विय कोत्थुको,* मि. प. 20; - पेत पु., अजगर के रूप में प्रेत - *अजगरपेतं नाम अद्दस,* ध. प. अट्ठ. 2.35; - पेतवत्थु नपुं., ध. प. अट्ठ. के एक कथानक का शीर्षक, ध. प. अट्ठ. 2.35-37; - मुख नपुं., अजगर का मुंह - *अजगरमुखेनेव अजगरमुखं ... परिवित्तित्वा,* मि. प. 279; - मेदा स्त्री., अजगर की चरबी या वसा - दं द्वि. वि., ए. व. - *तेसं अजगरमेदं, अच्चहासि बहुत्तसो,* जा. अट्ठ. 3.427; *अजगरमेदन्ति अजगरानं मेदं,* जा. अट्ठ. 3.428.

अजच्च त्रि., जच्च का निषे., [अजात्य], हीन जन्म वाला, नीच जन्म में उत्पन्न - च्चं पु., द्वि. वि., ए. व. - *जातिमन्तं अजच्चञ्च, अहं उजुगतं नरं,* जा. अट्ठ. 6.121.

अजज्जर त्रि., जज्जर का निषे., [अजर्जर], शा. अ. वह, जो जर्जर या जीर्ण नहीं है, अविनाशी, ला. अ. निर्वाण, जो कभी जर्जर नहीं होता - रं नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अजज्जरञ्च वो, भिक्खवे, देसेस्सामि अजज्जरगामिञ्च मग्गं,* स. नि. 2(2).341-42; *अजज्जरं धुवं अपलोकितं, अनिदस्सनं निप्पपञ्चं सन्तं,* नेत्ति. 46; *उप्पादजराहि अनभाहतत्ता अजज्जरं,* नेत्ति. अट्ठ. 245.

अजज्जित नपुं., जज्जित का निषे., भोजन से अपने को दूर रखने का अभ्यास, भोजन का परिवर्जन, निराहार की दशा - *अहञ्चेव खो पन सब्बसो अजज्जितं पटिजानेय्यं,* म. नि. 1.313; *अजज्जितन्ति अभोजनं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).186; पाठा. अजद्धुकं.

अजञ्ञ त्रि., जञ्ञ का निषे. [अजन्य], 1. मनुष्यों के लिए अयोग्य, भयावह, प्रतिकूल - ञ्ञं द्वि. वि., ए. व. - *अजञ्ञं जञ्ञसङ्खातं, असुचिं सुचिसम्मतं,* जा. अट्ठ. 2.361; *अजञ्ञं जञ्ञसङ्खातन्ति पटिकूलं अमनापमेव,* तदे.; 2. नपुं., अनहोनी, अपशकुन, दुर्लक्षण - *ईति त्विथि अजञ्ञं च उपसग्गो उपद्दवो,* अभि. प. 401.

अजटाकास पु., कर्म. स., खुला स्थान, खुली जगह - सं द्वि. वि., ए. व. - *चत्तारो च आरुप्पे विनिविज्झित्वा*

अजटाकासं पक्खन्दिंसु, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 16; विलो॰ कण्णच्छिद्दाकास.

अजनपद पु॰, जनपद का निषे॰, उजाड़ या निर्जन प्रदेश – **दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *जनपदापि अजनपदा कता,* म॰ नि॰ 2.308.

अजनयमान त्रि॰, √जन, प्रेर॰, वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, अनुत्पादक, अनुर्वर – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छन्दं पेमं रागं खन्तिं अकुब्बमानो अजनयमानो असञ्जनयमानो,* महानि॰ 36; *अजनयमानोति पोनोभविकतण्हावसेन अजनयमानो,* महानि॰ अट्ठ॰ 128.

अजप त्रि॰, जप का निषे॰, मंत्र न जपने वाला, मंत्र पाठ न करने वाला – **पा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *न जपन्तीति अजपा, मन्तानं अनज्झायकाति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 42.

अजमोद पु॰, [सिंहली में अजमोजक = अजमोदक], अजमोदा, एक पौधा, वनस्पति, एक औषधीय पादप – *तिकटुकअजमोदहिङ्गुजीरकलसुणादीहि कटुकभण्डेहि,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 155.

अजर त्रि॰, ब॰ स॰ [अजर], जरा-रहित, निर्जर, वह, जिसे कभी बुढ़ापा न आये, जीर्णता-रहित, अविनश्वर – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बेन तेन कुसलेन, अजरो अमरो भवा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.375; – **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजरं अनुत्तरं योगक्खेमं निब्बानं,* अ॰ नि॰ 1(2).284.

अजरामर त्रि॰, [अजरामर], जरा-जीर्णता-रहित, अमर्त्य, मरणरहित, कभी न मरने वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्स इन्दसमो राज, अच्चन्तं अजरामरो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.454.

अजळ त्रि॰, जळ का निषे॰ [अजड़], वह, जो मूर्ख नहीं है, प्रज्ञावान, ज्ञानवान् – **ळो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्ञवा अजळो अनेळमूगो,* दी॰ नि॰ 3.211; – **ळा** ब॰ व॰ – *पञ्ञवन्तो अजळा अनेळमूगा,* अ॰ नि॰ 1(1).48; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, जळता का निषे॰ [अजड़ता], जड़ता का सर्वथा अभाव, सुविज्ञता – *अजळता अनेळमूगता दुल्लभा लोकस्मिं,* अ॰ नि॰ 2(2).141.

अजहित त्रि॰, √हा का भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, अपरित्यक्त, न छोड़ा हुआ, वह, जिसका त्याग न किया गया हो – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिरिया अजहितो होति, यो मित्तानं न दुब्भति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.16.

अजा स्त्री॰ [अजा], बकरी, छागी – *तत्थ अजा ठपेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.355; *आगच्छन्ती वजन्ती वा, तस्स ता विनस्सुं अजा,* तदे॰; *अजा च विभवं गता,* तदे॰.

अजात त्रि॰, [अजात], **शा॰ अ॰** जो कारणों द्वारा उत्पन्न न किया गया हो, पैदा न किया गया हो, अनुत्पन्न, अभूत, **ला॰ अ॰** निर्वाण – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजातं अभूतं अकतं असङ्खतं,* उदा॰ 165; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजाते साधु पस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.24; *कारणसामग्गिया न जातं न निब्बत्तन्ति अजातं,* उदा॰ अट्ठ॰ 320; – **पक्ख** त्रि॰, ब॰ स॰ [अजातपक्ष], पक्षियों के वे शिशु, जिनके पंख अभी तक उत्पन्न नहीं हुए हैं – **क्खा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अजातपक्खा तरुणा, पुत्तका मय्ह कोसिय,* जा॰ अट्ठ॰ 4.249; – **बुद्धि** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जो अपने विवेक या स्वनिर्णय तक नहीं पहुंच पाया है, अविकसित बुद्धि वाला – *अजातबुद्धिदारको, कहापणानं चित्तविचित्तदीघचतुरस्सपरिमण्डलभावमत्तमेव जानाति,* विसुद्धि॰ 2.64.

अजातसत्तु पु॰, [अजातशत्रु], मगध का सम्राट, बिम्बिसार का पुत्र, बुद्ध का समकालीन – *राजा मागधो अजातसत्तु वेदेहिपुत्तो,* दी॰ नि॰ 1.42; – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पसेनदि राजा अजातसत्तुना पितरि मारिते तं गामं अच्छिन्दि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.304; – **त्तुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *केन नु खो उपायेन अजातसत्तुं गण्हेय्यामा'ति,* तदे॰.

अजाति त्रि॰, ब॰ स॰ [अजाति], **शा॰ अ॰** जन्मरहित स्थिति या अवस्था, **ला॰ अ॰** निर्वाण – *एवमेव जाति विज्जन्ते, अजातिपिच्छितब्बकं,* बु॰ वं॰ 294; *अजातिपीति जातिखेपनं अजातिनिब्बानम्पि इच्छितब्बं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 82.

अजातिमन्तु त्रि॰, [अजातिमत्], नीच कुल में उत्पन्न, अधमकुलोत्पन्न, जारज, दोगला – **मस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुजातिमन्तोपि अजातिमस्स, यसस्सिनो पेसकरा भवन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.184, विलो॰ सुजातिमन्तु.

अजानक द्रष्ट॰, अयानक.

अजानं/अजानन्त जानाति के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, न जानते हुए, द्रष्ट॰ जानाति॰ के अन्त॰.

अजानन नपुं॰, [अजानन], अनभिज्ञता, अज्ञान – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते द्वीहि कारणेहि आपज्जन्ति अनादरियेन वा अजाननेन वा'ति,* मि॰ प॰ 248; – **क** त्रि॰, नहीं जानने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तदाहि सुपण्णा नागं गहेतुं अजाननकायेव,* जा॰ अट्ठ॰ 7.20–21; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, जानकारी का अभाव – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजाननताय अचेतनं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.79; – **भाव** पु॰, भाव॰, उपरिवत् – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मेथुनधम्मस्स च अजाननभावेन,* जा॰ अट्ठ॰ 5.190.

अजानितब्ब त्रि॰, [अज्ञातव्य], न जानने योग्य – **ब्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथो अविञ्ञातमजानितब्बं,* महानि॰ 265.

अजामिग पु॰, [अजामृग], अज, बकरा, छाग – *वामेन सूकरो होति, दक्खिणेन अजामिगो,* विभ॰ अट्ठ॰ 466.

अजिका स्त्री॰, [अजिका], बकरी – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अल्पवयस्का अजा, बकरी छागी – तं अजिकं कत्वा अत्तना अजो हुत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.244; *अजिकञ्च अजञ्च हन्त्वा येनकामं पलेति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.232; – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजिका चरमाना चोरा हरन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.235; – **क्खायित** त्रि॰, बकरियों के द्वारा खाया हुआ, कुतरा हुआ, नष्ट किया हुआ – *अपरानिपि पञ्च पंसुकूलानि – गोखायिकं अजक्खायिकं,* परि॰ 253, पाठा॰ अजिकाक्खायित; – **खीर** नपुं॰, बकरी का दूध – *खीरं नाम गोखीरं वा अजिकाखीरं वा महिंसखीरं वा,* पाचि॰ 122; – **गोपक** पु॰, बकरी पालने वाला – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजिकगोपका चोरे गण्हिस्सामा'ति एकमन्तं निलीना अट्ठंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.235; पाठा॰ अजिकागोपका; – **सप्पि** नपुं॰, बकरी के दूध से बना हुआ घी – *सप्पि नाम गोसप्पि वा अजिकासप्पि वा महिंससप्पि वा,* पारा॰ 376.

अजिण्ण त्रि॰, जिण्ण का निषे॰ [अजीर्ण], नहीं पचा हुआ भोजन, समास के पू॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त; – **ण्णसञ्ञा** स्त्री॰, अपच हो जाने की आशंका – *तुम्हे गच्छथ, मय्हं अजिण्णासञ्ञा अत्थी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.301.

अजित पु॰, [अजित], **1**. बुद्ध के समकालीन छः धर्माचार्यों में से एक का नाम, जिसका उपनाम या कुलनाम केसकम्बल या केसकम्बली था – *अयं देव, अजितो केसकम्बलो सङ्घी चेव गणी च गणाचरियो च,* दी॰ नि॰ 1.43; *अजितोति तस्स नामं, केसकम्बलं धारेतीति केसकम्बलो, इति नामद्वयं संसन्दित्वा अजितो केसकम्बलोति वुच्चति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.121; **2**. बावरी के बहिन के पुत्र का नाम – *अजितो पठमं पञ्हं, तत्थ पुच्छि तथागतं,* सु॰ नि॰ 1037; **3**. द्वितीय बौद्धसङ्गीतिकालीन एक भिक्षु का नाम – *अजितो नाम भिक्खु दसवस्सो सङ्घस्स पातिमोक्खुद्देसको होति,* चूळव॰ 475; म॰ वं॰ 4.51; **4**. लिच्छवियों के एक सेनापति का नाम – *अजितोपि नाम लिच्छवीनं सेनापति,* दी॰ नि॰ 3.10; **5**. एक परिव्राजक या तापस का नाम – *अजितो परिब्बाजको,* अ॰ नि॰ 3(2).196; **6**. बुद्ध-सोभित के समय के एक ब्राह्मण-बोधिसत्त्व का नाम – *तदा बोधिसत्तो अजितो नाम ब्राह्मणो हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰1.45; **7**. सिखि-बुद्ध के समय विद्यमान एक ब्राह्मण का नाम – *अजितो नाम नामेन, अहोसिं ब्राह्मणो तदा,* अप॰ 1.260; **8**. एक प्रत्येकबुद्ध का नाम – *अजितो नाम सम्बुद्धो, हिमवन्ते वसी तदा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.71; – **पञ्ह** पु॰, अजित द्वारा पूछा गया प्रश्न, स॰ नि 1(2).42; द्रष्ट॰ आगे; – **माणवपुच्छा** स्त्री॰, अजितमाणव के द्वारा किया गया प्रश्न, सु॰ नि॰ के एक सुत्त का नाम, सु॰ नि॰ 231-32; चूळनि॰ 5-6; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.276-277; – **सुत्त** नपुं॰, अजितमाणवपुच्छा के लिये सु॰ नि॰ अट्ठ॰ में प्रयुक्त शीर्षक सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.276-277.

अजिन¹ नपुं॰, [अजिन], मृग का चमड़ा, मृगचर्म, कुरंगमृग का चर्म, सामान्यतः अजिन मृगचर्म का प्रयोग तापसों के द्वारा किया जाता है – *चम्मं तु अजिनं प्यथ,* अभि॰ प॰ 442; *अजिनं दन्तभण्डञ्च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.377; *अजिनन्ति अजिनमिगचम्मं,* तदे॰.

अजिन² पु॰, एक स्थविर का नाम, थेरगा॰ की 129-30 गाथाओं का प्रणेता.

अजिनं जिनाति के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ जिनाति के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अजिनक्खिप पु॰/नपुं॰, केवल द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ में प्राप्त, तापसों द्वारा परिधान के रूप में प्रयुक्त कृष्णमृग का चर्म, जो अखण्डित, परन्तु बीच में फटा रहता है – *अजिनम्पि धारेति, अजिनक्खिपम्पि धारेति,* दी॰ नि॰ 1.150; *अजिनन्ति अजिनमिगचम्मं, अजिनक्खिपन्ति तदेव मज्झे फालितकं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.265; – **निवत्थ** त्रि॰, बीच से फटे हुए अजिनमृगचर्म को धारण करने वाला – **त्थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महन्तेन जटण्डुवेन अजिनक्खिपनिवत्थो जिण्णो ... येन ते भिक्खू तेनुपसङ्कमि,* स॰ नि॰ 1(1).139; *अजिनक्खिपनिवत्थोति सखुरं अजिनचम्मं एकं निवत्थो एकं पारुतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.160; – **टि॰** यह बौद्ध-भिक्षुओं के लिये अनुज्ञात नहीं था. अन्य सम्प्रदाय के तापसों के द्वारा इसे धारण किया जाता था, अतः इसे तित्थियधज भी कहा जाता था, महाव॰ 398.

अजिनचम्म नपुं॰, [अजिनचर्म], कृष्णमृग का चर्म – **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो निसीदनं अजिनचम्मं महन्तं कत्वा पसारेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.307; – **म्मेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किं सखुरेन अजिनचम्मेन,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.372; – **धर** त्रि॰, मृगचर्म को धारण करनेवाला – *चम्मवासीति अजिनचम्मधरो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.293; – **परिक्खट** त्रि॰, अजिनचर्म से समलंकृत, अजिनचर्म से विभूषित,

अजिनचर्मवस्त्र से आवृत - **टा** स्त्री., द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अजिनचम्मपरिक्खटा उपाहनायो धारेन्ति,* महाव॰ 259; - **सद्द** पु॰, अजिनचर्म का शब्द या कोलाहल - **द्देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजिनचम्मसद्देन, मुदिता होन्ति देवता,* अप॰ 1.15; - **साटिका** अजिन-चर्म से निर्मित वस्त्र या परिधान - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमाय अजिनचम्मसाटिकाय च किमत्थोति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.373, तुल॰ अजिनसाटी.

अजिनदायक पु॰, एक थेर की उपाधि - *आयस्मा अजिनदायको थेरो,* अप॰ 1.224.

अजिनपत्ता स्त्री॰, [अजिनपत्रा], चमगादड़, गादुर, चर्मचटका, चमड़े के पंखों वाला एक स्तनपायी जन्तु, जो रात में ही बाहर निकलता है - *जतुकाजिनपत्ताथ,* अभि॰ प॰ 646.

अजिनप्पवेणी स्त्री॰, [अजिनप्रवेणी], अजिन-मृग के चमड़े को एक साथ सिलकर बनाया गया चादर - **णिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सत्थरं रथत्थरं अजिनप्पवेणिं ...,* दी॰ नि॰ 1.7; - **णी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजिनप्पवेणीति अजिनचम्मेहि मञ्चप्पमाणेन सिब्बित्वा कता पवेणी,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.79; - **णिया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुखसम्फस्साय अजिनप्पवेणिया गण्हिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.63.

अजिनमिगचम्म नपुं॰, [अजिनमृगचर्म], एक प्रकार के मृग का चमड़ा जिसका प्रयोग व्यवहार में शयनासन के लिये किया जाता है - **म्मं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजिनन्ति अजिनमिगचम्मं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.377.

अजिनयोनि पु॰, [अजिनयोनि], मृगों का एक प्रकार-विशेष - *हरिणो मिगसारङ्गा मगो अजिनयोनि च,* अभि॰ प॰ 617; तुल॰ मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः अमर॰ 2.5.8.

अजिनसाटी स्त्री॰, अजिन मृग के चमड़े से बना वस्त्र - **टिया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किं ते अजिनसाटिया,* ध॰ प॰ 394; *इमाहि जटाहि सखुराय निवत्थायपि इमाय अजिनचम्मसाटिकाय च किमत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.373; जा॰ अट्ठ॰ 1.459.

अजिनुत्तरवासी त्रि॰, अजिनचर्म से निर्मित उत्तरासङ्ग धारण करनेवाला - *ते जटाखारिभरिता, अजिनुत्तरवासना,* अप॰ 1.16; *अजिनुत्तरवासोहं वसामि पब्बतन्तरे* अप॰ 1.129; *जटाभारेन भरितो, अजिनुत्तरनिवासनो,* अप॰ 1.21.

अजिनुपसेवित त्रि॰, [अजिनोपसेवित], अजिनचर्म को धारण करनेवाला - **तं** नपुं॰, प्र॰/द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *सुचिं सुगन्धं अजिनूपसेवितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402; *अजिनूपसेवितं उपरिअत्थतेन अजिनचम्मेन उपसेवितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.403.

अजिम्ह त्रि॰, जिम्ह का निषे॰ [अजिह्म], सरल, ऋजु, अकुटिल - **म्हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजिम्हो पगुणो उजु,* अभि॰ प॰ 708; - **ता** भाव॰, सरलता, आर्जवता ऋजुता - *या तस्मिं समये ... सञ्ञाक्खन्धस्स ... उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता - अयं तस्मिं समये कायुजुकता होति,* ध॰ स॰ 50-51.

अजिय त्रि॰, ब॰ स॰ [अज्या], डोरी-रहित, प्रत्यञ्चारहित - *अजियधनुदण्डको विय ओणता नेमिप्पदेसा,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 232.

अजिर नपुं॰, [अजिर], आंगन, अहाता, प्रांगण - *अजिरं चच्चराङ्गणं* अभि॰ प॰ 218; स॰ उ॰ प॰ के रूप में कुच्छिआजिर, घराजिर के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अजिव्हता स्त्री॰, भाव॰ [अजिह्वता], जीभ-रहित होने की अवस्था, गूंगापन - *नाहं अजिव्हता मूगो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.19; *अजिव्हताति सम्परिवत्तनजिव्हाय अभावेन मूगो अहं न भवामि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.20.

अजिव्हवन्तु त्रि॰, ब॰ स॰ [अजिह्वावत्], जीभ-रहित, जिह्वा-रहित, जीभ-विहीन - **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजिव्हवाति यथा मच्छो अजिव्हताय न कथेति, तथा सेवको मन्दकथताय अजिव्हवा भवेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 7.190.

अजी स्त्री॰, [अजा, अजिका], बकरी, अजा, छागी - *उरणी तु अजी अजा,* अभि॰ प॰ 502; *हन्त्वा उरणिं अजिकं अजञ्च, उत्तासयित्वा येनकामं पलेति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.230; *अजिया पादमोलम्ब मित्तको विय सोचतीति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.235.

अजीरक[1] त्रि॰, जो बूढ़ा नहीं होता, जीर्णता से मुक्त, क्षय या अपक्षय से मुक्त - *सत्ता पन अजीरका नाम नत्थि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.67.

अजीरक[2] पु॰, अपच, अजीर्ण, बदहजमी, अपाचन की प्रक्रिया - **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *काकानं अजीरको नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.301; - **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजीरकेन मरिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.151; *अजीरकेन कालमकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.186; *अजीरकेन निपन्नोम्हि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.197.

अजीरण नपुं॰, जीरण का निषे॰, **क.** वृद्धावस्था का अभाव, क्षय या अपक्षय का अभाव, **ख.** अपच, बदहज़मी - **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजरसाति अजीरणेन, अविपत्तियाति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.83; - **धम्मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अपाच्य, न पचने योग्य - *तं पायासं ठपेत्वा तथागतं तथागतसावकञ्च अञ्ञस्स अजीरणधम्मोति ञत्वा ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.121; *खीणासवस्स हि अजीरणधम्मोपि अत्थि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.122.

अजीवक पु., कल्पित, काल्पनिक, अवास्तविक, वह, जिसमें वास्तविक जीवन नहीं है - **को** प्र. वि., ए. व. - *जीवकोपि मरति, अजीवकोपि मरति,* जा. अट्ठ. 1.385.

अजुट्ठमारी / अजुट्ठमारिका स्त्री., प्र. वि., ए. व., भूख के कारण मरण, आहार के उपच्छेद के कारण मृत्यु - *अजुट्ठमारीव खुदाय मिय्ये,* जा. अट्ठ. 6.77; *अजुट्ठमारीवाति अनाथमरणमेव,* तदे.; पाठा. अजद्धुमारी.

अजुतकर पु., [अद्यूतकर], जुआ न खेलने वाला, अद्यूतकर - **रे** द्वि. वि., ब. व. - *अनक्खाकितवेति अनक्खे अकितवे अजुतकरे चेव अकेराटिके च,* जा. अट्ठ. 5.113.

अजेगुच्छ त्रि., जेगुच्छ का निषे. [अजिगुप्स्य], 1. वह, जिसमें दूसरों के प्रति घृणा या जुगुप्सा का भाव न हो - **च्छो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अप्पगब्भो अजेगुच्छो पेसुणेय्ये च नो युतो,* सु. नि. 858; *इध भिक्खु सीलवा होति ... समादाय सिक्खति सिक्खापदेसु - अयं वुच्चति पुग्गलो अजेगुच्छो,* महानि. 169; 2. प्रातिमोक्षसंवर से युक्त शीलवान् भिक्षु *इध भिक्खु सीलवा होति पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति ... अयं वुच्चति पुग्गलो अजेगुच्छो,* महानि. 169; 3. क्रोधरहित, प्रतिहिंसाभाव-विरहित - ... *अक्कोधनो होति ... न कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोति अयं वुच्चति पुग्गलो अजेगुच्छो,* महानि. 169; 4. आठ प्रकार के आर्यपुद्गल - **च्छा** पु., प्र. वि., ब. व. - *पुथुज्जनकल्याणकं उपादाय अट्ठ अरियपुग्गला अजेगुच्छाति,* महानि. 169.

अजेय्य त्रि., जिनाति के सं. कृ. का निषे., [अजेय], अपराजेय, नष्ट न किये जाने योग्य, अनभिभवनीय - *अजेय्यमेसा तव होतु मेत्ति,* जा. अट्ठ. 7.221; - **य्यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *एसो निधि सुनिहितो, अजेय्यो अनुगामिको,* खु. पा. 10; *अवज्झा ब्राह्मणा आसुं, अजेय्या धम्मरक्खिता,* सु. नि. 290; *न सो राजा यो अजेय्यं जिनाति,* जा. अट्ठ. 5.501.

अजेळक पु. / नपुं., द्व. स. [अजैडकम्] 1. बकरे और भेड़ - **का** प्र. वि., ब. व. - *अजेळका कुक्कुटसूकरा सोणसिङ्गाला,* दी. नि. 3.53; इतिवु. 27; - **कं** प्र. वि., ए. व. - *अजो च एळको च अजेळकं अजेळका वा,* क. व्या. 325; *अजेळकं जातिधम्मं,* म. नि. 1.220; 2. स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(2).530; - **पटिग्गहण** नपुं., बकरियों और भेड़ों का दान के रूप में स्वीकरण - **णा** प. वि., ए. व. - *अजेळकपटिग्गहणा पटिविरतो समणो गोतमो,* दी. नि. 1.5.

अज्ज अ. [अद्य], आज, अब, इसी दिन में - *अज्ज अत्राहे,* अभि. प. 1155; *इमस्मिं काले अज्ज,* क. व्या. 573; *अज्ज पन्नरसो उपोसथो,* सु. नि. 153; *तदज्जहं निग्गहेस्सामि योनिसो,* ध. प. 326; - **अज्जापि** अ., [अद्यापि], अब भी - *अज्जापि मूसिका दासी न पुनागच्छति,* जा. अट्ठ. 3.190; *मोरो अज्जापि ताव मे बलं न पस्सतीति ...,* ध. प. अट्ठ. 1.223; - **अज्जेव** अ., [अद्यैव], आज ही, इस समय ही - *अज्जेव मे इमं रत्तिं ... पातो दक्खिसि नो मतं,* जा. अट्ठ. 7.336.

अज्जक / अज्जुक पु. / नपुं. [अर्जक], एक प्रकार का पौधा - *अज्जुको सितपन्नासे समीरणो फणिज्झको,* अभि. प. 579; *अग्गबीजं नाम - अज्जुकं,* पाचि. 53.

अज्जतग्गे / अज्जदग्गे निपा., [अद्यत अग्रे], इस समय से प्रारंभ कर, आज से आगे, वर्तमान से आगे - *अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गतं,* पारा. 6; *अज्जतग्गेति अज्जतं आदिंकत्वा,* पारा. अट्ठ. 1.131; दी. नि. 1.75.

अज्जतन त्रि., [अद्यतन], आज से सम्बन्ध रखने वाला, वर्तमानकालविषयक, आधुनिक - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *नायं अज्जतनो धम्मो,* थेरगा. 552; - **ना** ब. व. - *नेतं अज्जतनामिव,* ध. प. 227; *ततो पट्ठाय किर यावज्जतना,* जा. अट्ठ. 2.335, स. उ. प. के प्रयोग के लिये द्रष्ट. अनज्जतन.

अज्जतनाय अज्जतन से व्यु., च. वि., प्रतिरू. निपा., आज के लिये - *अधिवासेतु मे, भन्ते, भगवा अज्जतनाय भत्तं,* महाव. 22; ध. प. अट्ठ. 1.22, तुल. स्वातनाय.

अज्जतनी स्त्री., [अद्यतनी], एक प्रकार के भूतकाल को सूचित करने वाली आख्यात-विभक्ति, अद्य. (लङ् लकार) - *समीपेज्जतनी,* क. व्या. 421; 430, मो. व्या. 6.4, सद्द. 3. 887, रू. सि. 452; - **विभत्ति** स्त्री., क्रि. रू. के अनेक प्रयोगों में से एक, अद्य. (लङ् लकार), आज से लेकर, वर्तमान क्षण से पहले वाले समीपवर्ती अतीतकाल में चाहे वह प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष, अज्जतनी विभक्ति होती है - *अज्जप्पभुति अतीते काले, पच्चक्खे वा अप्पच्चक्खे वा समीपे अज्जतनीविभत्ति होति,* क. व्या. 421.

अज्जता स्त्री., अज्ज से व्यु. भाव., अज्जतग्गे शब्द की व्याख्या के सन्दर्भ में प्रयुक्त एक कृत्रिम शब्द, आज का समय - **तं** द्वि. वि., ए. व. - *अज्जतग्गेति अज्जतं आदिं कत्वा ति ... अज्जतन्ति अज्जभावन्ति वुत्तं होति,* पारा. अट्ठ. 1.131.

अज्जति √अज्ज (भूवादि) का वर्त॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, कमाता है, अर्जित करता है, - *अज्ज सज्ज अज्जने, अज्जनं अज्जनकिरिया, अज्जति, सज्जति,* सद्द॰ 2.345; धा॰ पा॰ 61; धा॰ मं॰ 16.

अज्जतो प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अद्यतः], आज से लेकर आगे - *अनणो सो मम'ज्जतो,* चू॰ वं॰ 47.28.

अज्जदग्गे निपा॰, द्रष्ट॰ अज्जतग्गे.

अज्जदिवस पु॰, [अद्यदिवस], वर्तमान दिन, आज का दिन - **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *हिय्यो पवत्तम्पि अज्जदिवसं न पापुणि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.97.

अज्जन नपुं॰, [अर्जन], अर्जन, प्राप्त करना, अधिग्रहण, धन की कमाई - *अज्जनादीनि दुक्खानि अनुभोत्वापि अज्जिता,* सद्धम्मो॰ 98; - **नारह** त्रि॰, [अर्जनार्ह], अर्जनयोग्य, कमाने योग्य, अधिग्रहण करने योग्य - **हो पु॰**, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजेय्योति ... अज्जनारहो हितसुखत्थिकेन उपचितब्बोति अत्थो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 179, पाठा॰ अच्चनारहो.

अज्जप्पभुति निपा॰, [अद्यप्रभृति], आज से लेकर - *अज्जप्पभुति अतीते काले पच्चक्खे वा अपच्चक्खे वा समीपे अज्जतनी विभत्ति होति,* क॰ व्या॰ 421.

अज्जरत्ति स्त्री॰, आज की रात - **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मम अनच्छरियं अज्जरत्तिं हटभण्डं आहरितुं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.447; *अम्म, अज्जरत्तिं ... तयोपि ... एकचितकस्मिं झायन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.392.

अज्जव पु॰/नपुं॰ [आर्जव], सरलता, सच्चाई, ईमानदारी - *अज्जवो च मद्दवो च,* ध॰ स॰ 19; *अज्जवञ्च च मद्दवञ्च ... खन्ती च सोरच्चञ्च,* अ॰ नि॰ 1(1).114, स॰ उ॰ प॰ में द्रष्ट॰ अनज्जव - **ता** स्त्री॰, भाव॰, सरलता, अजिह्मता - *या अज्जवता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता–अयं वुच्चति अज्जवो,* ध॰ स॰ 286; - **मद्दव** नपुं॰, सरलता एवं दयालुता या मृदुता - **वे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *धम्मे ठितो अज्जवमद्दवे रतो,* सु॰ नि॰ 253; - **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्जवलक्षण], सरलता के लक्षण से युक्त, अवक्रता के लक्षण से युक्त - **णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कायचित्तानं अज्जवलक्खणा वा,* अभि॰ अव॰ 22.

अज्जसट्ठिं निपा॰, आज से छः दिन पूर्व से - *अज्जसट्ठिं न दिस्सन्ति, तेनायं समणो सुखी,* स॰ नि॰ 1(1).198 (*अज्ज छदिवसमत्तका पट्ठाय न दिस्सन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.210).

अज्जसुवे निपा॰, अज्ज + सुवे, आज अथवा कल - *अज्जसुवे ति पुरिसो, सदत्थं नावबुज्झति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.227.

अज्जित त्रि॰, √अज्ज का भू॰ क॰ कृ॰, [अर्जित], अर्जन किया हुआ, कमाया हुआ - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अज्जनादीनि दुक्खानि अनुभोत्वापि अज्जिता,* सद्धम्मो॰ 98.

अज्जितब्ब त्रि॰, √अज्ज का सं॰ कृ॰, [अर्जितव्य], कमाने योग्य, अर्जन करने योग्य - **ब्बो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्स अज्जितब्बो अच्चनारहो हितसुखत्थिकेन उपचितब्बोति अत्थो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 179, पाठा॰ अच्चितब्बो.

अज्जुक पु॰, वैशाली के एक भिक्षु का नाम - *अथ खो सो गहपति आयस्मन्तं अज्जुकं एतदवोच,* पारा॰ 79.

अज्जुकण्ण पु॰, [अर्जकर्ण], एक वृक्ष का नाम - **ण्णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अज्जुना अज्जुकण्णा च, महानामा च पुप्फिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.302.

अज्जुण्ह / अज्जण्ह निपा॰, [अद्य + अहन्], केवल आज के दिन, आज के दिन और रात के बचे हुए समय में - *विहरेमु अज्जण्हो अग्गिसालम्हि,* महाव॰ 29; *अज्जण्हो, भन्ते, आगमेहि अज्ज नेगमस्स समयो,* पारा॰ 334.

अज्जुन[1] पु॰, [अर्जुन], एक गुणकारी छाल वाला वृक्ष, अर्जुन वृक्ष - *अज्जुनो ककुधो भवे,* अभि॰ प॰ 562, *अज्जुना अज्जुकण्णा च महानामा च पुप्फिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.302, *अज्जुना च पियङ्गुका,* अप॰ 1.362, - **रुक्ख** पु॰, [अर्जुनवृक्ष], अर्जुन वृक्ष, अनोमदर्शी-बुद्ध के बोधिवृक्ष के रूप निर्धारित वृक्ष का नाम - *बोधि तस्स भगवतो, अज्जुनोति पवुच्चति,* बु॰ वं॰ 323; *अनोमदस्सिस्स पन भगवतो ... अज्जुनरुक्खो बोधि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.46.

अज्जुन[2] पु॰, देवगब्भा के सातवें पुत्र का नाम - *देवगब्भाय जेट्ठपुत्तो वासुदेवो नाम अहोसि ... सत्तमो अज्जुनो ... नाम अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.72.

अज्जुन[3] पु॰, राजा पाण्डु के एक पुत्र का नाम - *अथज्जुनो नकुलो भीमसेनो युधिट्ठिलो सहदेवो च राजा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.420.

अज्जुन[4] पु॰, केकय क्षेत्र के एक राजा का नाम, महाभारत के सहस्रबाहु कार्तवीर्य-अर्जुन का संक्षिप्त नाम - *सहस्सबाहु अज्जुनो च अङ्गीरसे अपरज्झित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.130.

अज्जुन[5] पु॰, थेरगा॰ की अट्ठाइसवीं कविता के रचयिता एक स्थविर का नाम - *थेरो समितिगुत्तो च ... नीतो सुनगो नागितो, पविट्ठो अज्जुनो इसि,* थेरगा॰ 90.

अज्जुन[6] पु॰, एक बुद्ध का नाम - *अज्जुनो नाम सम्बुद्धो, हिमवन्ते वसी तदा,* अप॰ 2.89.

अज्जुनपुप्फिय पु., एक स्थविर का नाम - *आयस्मा अज्जुनपुप्फियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थ,* अप. 2.95.

अज्जेकदिवसं निपा., केवल आज के ही दिन - *त्वं पन अज्जेकदिवसं यत्थ कत्थचि वसाही'ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).170.

अज्जेकरत्तिं निपा., केवल आज रात भर के लिए - *पाटिभोगं मे उपासका गहेत्वा अज्जेकरत्तिं जीवितं देथाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).243.

अज्जेतरहि निपा., आजकल, इस समय - *अज्जेतरहिपि तं लोके वत्तती'ति,* मि. प. 152.

अज्जेति √अज्ज (चुरादि) वर्त. प्र. पु., ए. व., **1**. साफ करता है, धा. पा. 464; सद्द. 1.2; **2**. अर्जित करता है, धा. मं. 125.

अज्झक्ख पु., [अध्यक्ष], प्रमुख, प्रधान, मुखिया - *अज्झक्खो अधिकतो चेव,* अभि. प. 343.

अज्झत्तं निपा., क्रि. वि. [अध्यात्मं], आन्तरिक रूप में, भीतरी तौर पर, प्रायः इसका प्रयोग सत्त्व. के विशे. के रूप में प्राप्त, विसुद्धि. में इसका व्याख्यान अव्ययी. स. से निष्पन्न अधित्थि जैसे स. प. के समान, अट्ठ. में प्रायः विशे. के रूप में व्याख्यात; 1. *सत्त्व. के विशे. के रूप में* - *अलमिदं अज्झत्तं नहानं भविस्सति, यदिदं भगवति पसादो'ति,* स. नि. 3(2).453; *यं अज्झत्तं पच्चत्तं कक्खळं खरिगतं उपादिन्नं* ..., म. नि. 1.245; **2**. *अव्ययी. स. के अधि जैसे अव्ययपदों के समान* क्रि. वि. के रूप में प्रयुक्त - *चोदकेन, भिक्खवे, भिक्खुना ... पञ्च धम्मे अज्झत्तं उपट्ठापेत्वा परो चोदेतब्बो,* अ. नि. 3(2).65, *अज्झत्तञ्च बहिद्धा च, काये छन्दं विराजये,* सु. नि. 205.

अज्झत्त[1] त्रि., *अज्झत्तं के स्थान पर तथा उसी के अर्थ में कहीं-कहीं प्रयुक्त,* [अध्यात्म], आन्तरिक, भीतरी, चित्त से सम्बद्ध - **त्ता**[1] पु., प्र. वि., ब. व. - *अज्झत्ता धम्मा, बहिद्धा धम्मा, अज्झत्तबहिद्धा धम्मा,* ध. स. (पृ.) 4; *अत्तानं अधिकारं कत्वा पवत्ताति अज्झत्ता, अज्झत्तसद्दो पनायं गोचरज्झत्ते नियकज्झत्ते अज्झत्तज्झत्ते विसयज्झत्तेति चतूसु अत्थेसु दिस्सति,* ध. स. अट्ठ. 93; - **त्ता**[2] स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *सब्बाव पञ्ञा सिया अज्झत्ता ...,* विभ. 374.

अज्झत्त[2] अभि. प. में इसका व्याख्यान सत्त्व. के रूप में प्राप्त, आन्तरिक धर्म - *ससन्ताने च विसये गोचरेज्झत्तमुच्चते,* अभि. प. 1040; - **चिन्ती** त्रि., [अध्यात्मचिन्ती], आन्तरिक धर्मों को आलम्बन बनाने वाला - **न्ती** पु., प्र. वि., ए. व. - *अज्झत्तचिन्ती सतिमा, ओघं तरति दुत्तरं,* सु. नि. 176, *अज्झत्तचिन्ती न मनो बहिद्धा, निच्छारये सङ्कहितत्तभावो,* सु. नि. 390, - **तज्झत्त** त्रि., अत्यन्त दृढ़ता के साथ आन्तरिक धर्मों को चित्त का आलम्बन बनाने वाला - *अज्झत्त-सद्दो पनायं गोचरज्झत्ते नियकज्झत्ते अज्झत्तज्झत्ते विसयज्झत्तेति चतूसु अत्थेसु दिस्सति,* ध. स. अट्ठ. 93, विलो. गोचरज्झत्त; - **तिक** नपुं., अज्झत्त से प्रारम्भ होने वाली ध. स. की एक तिकमातिका - *अज्झत्तत्तिके एवं पवत्तमाना मयं अत्ता'ति गहणं,* ध. स. अट्ठ. 92; - **पुच्छा** स्त्री., [अध्यात्मपृच्छा], अध्यात्मविषयक प्रश्न, आन्तरिक आलम्बनों से सम्बद्ध प्रश्न - *अपरापि तिस्सो पुच्छा-अज्झत्तपुच्छा बहिद्धापुच्छा अज्झत्तबहिद्धापुच्छा,* महानि. 251; - **बन्धन** त्रि., [अध्यात्मबन्धन], आन्तरिक बन्धन अर्थात् दसविध चित्तबन्धन - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अज्झत्तसंयोजनोति अज्झत्तबन्धनो,* पु. प. अट्ठ. 53; - **बहिद्ध** त्रि., अंशतः भीतरी और अंशतः बाहरी - *अत्थि अज्झत्तो, अत्थि बहिद्धो, अत्थि अज्झत्तबहिद्धो,* विभ. 18; - **बहिद्धारम्मण** त्रि., चित्त के आभ्यन्तरिक आलम्बन एवं बाह्यालम्बन - *अत्थि अज्झत्तबहिद्धारम्मणो,* विभ. 18; - **बहिद्धापुच्छा** स्त्री., आन्तरिक एवं बाह्य धर्मों से सम्बद्ध प्रश्न - *अपरापि तिस्सो पुच्छा - अज्झत्तपुच्छा बहिद्धापुच्छा अज्झत्तबहिद्धा-पुच्छा,* महानि. 251; - **बहिद्धारूप** नपुं., आध्यात्मिक एवं बाह्य रूप - *अज्झत्तबहिद्धारूपे ति तदुभये,* पारा. 150, - **बहिद्धावत्थुक** त्रि., आन्तरिक एवं बाह्य धर्मों को मन के चिन्तन का आधार बनाने वाला - **केसु** नपुं., सप्त. वि., ब. व. - *इमिना अज्झत्तबहिद्धावत्थुकेसु कसिणेसु झानपटिलाभो दस्सितो,* ध. स. अट्ठ. 235; - **बाहिर** त्रि., भीतर और बाहर - **रा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अनिच्चं दुक्खं अनत्ता च, तयो अज्झत्तबाहिरा,* स. नि. 2(2).6; - **भातिक** पु., सहोदर भ्राता, अपना सगा भाई - *अयं पन थेरस्स अज्झत्तभातिको,* अ. नि. अट्ठ. 1.176; - **रत** त्रि., [अध्यात्मरत], अन्तर्मुख होकर आध्यात्मिक साधनापरायण, समाधिस्थ, समाधि में संलीन - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अज्झत्तरतो समाहितो,* उदा. 143; *अज्झत्तरतो समाहितो, एको सन्तुसितो तमाहु भिक्खुं,* ध. प. 362; *अज्झत्तरतोति गोचरज्झत्तसङ्खाताय कम्मट्ठानभावनाय रतो,* ध. प. अट्ठ. 2.333; - **ववत्थान** नपुं., [अध्यात्मव्यवस्थान], आत्मिक धर्मों पर अनुचिन्तन, आभ्यन्तरिक धर्मविषयक विवेक - **ने** सप्त. वि., ए. व. - *कथं अज्झत्तववत्थाने पञ्ञा वत्थुनानत्ते ञाणं,* पटि. म. 69;

– **विमोक्ख** पु., [अध्यात्मविमोक्ष], फलक्षणस्थ अर्हत्-पुद्गल द्वारा साक्षात्कृत विमुक्ति – **क्खेन** तृ. वि., ए. व. – *अज्झत्तं विमोक्खाति अज्झत्तविमोक्खेन, अज्झत्तसङ्खारे परिग्गहेत्वा पत्तअरहत्तेनाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 2.56; – **वुट्ठान** पु. (लिङ्गविपर्यय) – चार प्रकार के नीवरणों जैसे आन्तरिक धर्मों के अपनयन से प्राप्त होने वाले चार ध्यान – *चत्तारि झानानि अज्झत्तं नीवरणादीहि वुट्ठानतो अज्झत्तवुट्ठानो,* पटि. म. अट्ठ. 2.139; – **संयोजन** 1. त्रि., अपने चित्त के अन्दर विद्यमान दस प्रकार के क्लेशों से युक्त – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कतमो चावुसो, अज्झत्तसंयोजनो पुग्गलो,* अ. नि. 1(1).80; पु. प. 128; 2. नपुं., चित्त में विद्यमान दस संयोजनों में अन्तिम पांच संयोजन – *पञ्चोरम्भागियानि संयोजनानि अज्झत्तसंयोजनं,* विभ. 418; – **सन्ति** स्त्री., आध्यात्मिक शान्ति, भीतरी रागों अर्थात् द्वेष, मोह, क्रोध, उपनाह तथा म्रक्ष आदि की शान्ति – *अज्झत्तसन्तिं अज्झत्तं रागस्स सन्तिं, दोसस्स सन्तिं, मोहस्स सन्तिं, कोधस्स ... सन्तिं,* महानि. 135–136, – **समुट्ठान** त्रि., [अध्यात्मसमुत्थान], भीतर से समुत्थित या उत्पन्न – **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *इमस्स नेव अज्झत्तसमुट्ठाना हिरी अत्थि, न बहिद्धासमुट्ठानं ओतप्पं,* जा. अट्ठ. 1.205, – **सम्भव** त्रि., भीतर में उत्पन्न, भीतर में उद्भूत – **वो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अज्झत्तसम्भवो कतञ्ञुताय ते, दुक्खे चिरं संसरितं तया कते,* थेरगा. 1129, *अज्झत्तसम्भवो अत्तनि सम्भूतो हुत्वापि तव अकतञ्ञुताय,* थेरगा. अट्ठ. 2. 400; – **सुञ्ञ** नपुं., आन्तरिक रूप में धर्मों की स्वभाव-शून्यता – *कतमं अज्झत्तसुञ्ञं? अज्झत्तं चक्खुं सुञ्ञं अत्तेन वा अत्तनियेन वा निच्चेन वा ... इदं अज्झत्तसुञ्ञं,* पटि. म. 355–356; – **त्तारम्मण** त्रि., आध्यात्मिक धर्मों को आलम्बन बनाकर उत्पन्न होने वाले – **णा** पु., प्र. वि., ब. व. – *कतमे धम्मा अज्झत्तारम्मणा? अज्झत्ते धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा-इमे धम्मा अज्झत्तारम्मणा,* ध. स. 1053; *चत्तारो खन्धा सिया अज्झत्तारम्मणा, सिया बहिद्धारम्मणा,* विभ. 69.

अज्झत्तिक त्रि., अज्झत्त से व्यु. [आध्यात्मिक], अपने से सम्बद्ध, अपने से सम्बन्ध रखनेवाला – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तत्थ चक्खादिपञ्चविधं अत्तभावं अधिकिच्च पवत्तत्ता अज्झत्तिकं, सेसं ततो बाहिरत्ता बाहिरं,* विसुद्धि. 2.77; – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *बाहिरा हेसा रक्खा, नेसा रक्खा अज्झत्तिका, तस्मा तेसं अरक्खितो अत्ता,* स. नि. 1(1).89; विविध तात्पर्यों में प्रयुक्त 1. अपने व्यक्तित्व अथवा शरीर से सम्बन्धित – *अट्ठारस खो पनिमानि, भिक्खवे, तण्हाविचरितानि अज्झत्तिकस्स उपादाय,* अ. नि. 1(2).241; *विञ्ञाणक्खन्धो अज्झत्तिको,* विभ. 74; 2. अपरिहार्य, अविभाज्य, अपृथक्करणीय – *अज्झत्तिकं, भिक्खवे, अङ्गन्ति करित्वा ...,* स. नि. 3(1).122; इति. वु. 9; 3. अपने स्वयं के घर या बन्धुजनों से सम्बद्ध आत्मीय जन, आत्मीय परिग्रह – *एवं, महाराज, यो सकं पोराणं अज्झत्तिकं जनं नीहरित्वा ... आगन्तुकं पियं करोति,* जा. अट्ठ. 3.356, *नियकोति अज्झत्तिको एकपितरा जातो,* जा. अट्ठ. 6.274; – **कम्मट्ठान** नपुं., [आध्यात्मिक कर्मस्थान], ध्यान-प्रक्रिया में चित्त को स्थिर करने के लिए बतलाए गये 40 प्रकार के भीतरी आलम्बन – *तथारूपं वनसण्डं अनुपविसित्वा अज्झत्तिककम्मट्ठानं सम्मसन्तो,* ध. प. अट्ठ. 1.210; – **दान** नपुं., आध्यात्मिक दान, स्वकीय अङ्गों का दान – *अहं अज्झत्तिकदानं दातुकामो,* जा. अट्ठ. 4.360, – **बाहिर** त्रि., भीतरी और बाहरी – **रे** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *अज्झत्तिकबाहिरे आयतने अभिनन्दन्ति,* मि. प. 72, – **वत्थुक** त्रि., आध्यात्मिक वस्तु वाला, ज्ञान की प्रक्रिया में इन्द्रियों को आधार बनाने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *अज्झत्तिकवत्थुका बाहिरारम्मणा,* विभ. 348, – **सङ्गह** पु., [आध्यात्मिक संग्रह], आन्तरिक अथवा चित्त के कुशल धर्मों का संग्रह – **हं** द्वि. वि., ए. व. – *ततो पट्ठाय च अज्झत्तिकसङ्गहमेव करोन्तो दानादीनि पुञ्ञानि कत्वा सग्गपरायणो अहोसि,* जा. अट्ठ. 3.356; – **सन्तति** स्त्री., चित्त एवं चैत्तसिक जैसे भीतरी धर्मों का निरन्तर प्रवाह – **या** तृ. वि., ए. व. – *वुच्चते, अज्झत्तिकसन्ततिया विसेसपच्चयत्ता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).217; – **सुत्त** नपुं., स. नि. के एक सुत्त का नाम, स. नि. 2(1).165.

अज्झपत्त त्रि., अधिपतति का भू. क. कृ. [अभ्यापतित], 1. अकस्मात् झपट्टा मारनेवाला, अपने पास अचानक पहुंचा हुआ, उड़कर अचानक टूट पड़ने वाला, आक्रमण करने वाला – **त्ता** प्र. वि., ब. व. – *उभो पक्खे सन्नय्ह लापं सकुणं सहसा अज्झप्पत्ता,* स. नि. 3(1).225; – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *भुजङ्गमो कक्कटमज्झपत्तो,* जा. अट्ठ. 3.259; *महोदधिं हंसोरिव अज्झपत्तो,* सु. नि. 1140; 2. सम्मूर्च्छित, बेहोश – **तं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *तमज्झपत्तं राजपुत्तिं, उदकेनाभिसिञ्चथ,* जा. अट्ठ. 7.343; *तत्थ अज्झपत्तन्ति अत्तनो सन्तिकं पत्तं, पादमूले पतित्वा विसञ्ञिभूतन्ति अत्थो,* तदे..

अज्झपत्वा अज्झ + √पत का पू॰ का॰ कृ॰, अचानक आकर, अकस्मात् उपस्थित होकर – *तमज्झपत्वा उपनिसीदि, महासोणस्स हेट्ठतो,* बु॰ वं॰ 11.3.

अज्झभवि अधि + अव + √भू का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभ्यभूत्], अभिभूत किया, प्रभाव में ले लिया, पराभूत कर दिया, विनाश को प्राप्त करा दिया – *तं मं पङ्को अज्झभवि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.66; *अज्झभवीति अधिअभवि विनासं पापेसि,* तदे॰.

अज्झभासि अधि + √भास अद्य॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बोला, कहा – *अथ खो कसिभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं गाथाय अज्झभासि,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 96; *एवं वुत्ते मारो पापिमा भगवन्तं गाथाय अज्झभासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.243.

अज्झभासित्थ अधि + √भास अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ आत्मने॰, उपरिवत् – *राजानं कालिङ्गं, तरमानो अज्झभासित्थ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.210.

अज्झयन नपुं॰, [अध्ययन], वेदों का अध्ययन, कण्ठस्थीकरण, स्वाध्याय, पठन, शिक्षण – *ब्राह्मणो नाम अज्झयनअज्झापन-दानप्पटिग्गहणदमसंयमनियमपुब्बमनुसट्ठिपवेणिवंसधरणो,* मि॰ प॰ 212, तुल॰ अज्झान, अज्झायन, अज्झेन.

अज्झवोदहि अज्झ + अव + √दह अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बन्द कर दिया – *उभो हत्थेहि संगय्ह, पञ्जरे अज्झवोदहि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.360.

अज्झागारे सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, अपने घर में – *मातापितरो अज्झागारे पूजिता होन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).156; इतिवु॰ 78.

अज्झाचरति अधि + आ + √चर वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, दुःशील्यादि अकरणीय पापकर्मों का आचरण करता है, अकुशल कर्मों को करता है – *इध, विसाखे, मातुगामो यं भत्तु अमनापसङ्खातं तं जीवितहेतुपि न अज्झाचरति,* अ॰ नि॰ 3(1).99, *यं पन मनेन दुस्सील्यं अज्झाचरति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 135.

अज्झाचरिय अधि + आ + √चर का सं॰ कृ॰ [अध्याचर्य], नियमों का अतिक्रमण करके किये गये दुःशील्यादि पापकर्म; – **वत्थु** नपुं॰, पापकर्मों की आधारभूत वस्तु – *अब्रह्मचरियस्स पन चत्तारि अङ्गानि भवन्ति-अज्झाचरियवत्थु च होति, तत्थ च सेवनचित्तं पच्चुपट्ठितं होति ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 21.

अज्झाचार पु॰, [अध्याचार], **शा॰ अ॰** व्यतिक्रम, उल्लंघन, पापकर्म – *वीतिक्कमोज्झाचारो,* अभि॰ प॰ 430, *कायिकवाचसिकअज्झाचारनिसेधनतो चेस कायं वाचञ्च विनेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.15, *संयमवेलं अतिभवित्वा पवत्तो आचारो अज्झाचारो वीतिक्कमो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.61; **ला॰ अ॰** कायसंसर्ग-विषयक दुराचार के विशेष अर्थ में भी प्रयुक्त – *यस्मा पनेतं समापज्जन्तस्स यो सो कायसंसग्गो नाम सो अत्थतो अज्झाचारो होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.109.

अज्झाचारे सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, दुःशील्यादि पापकर्मों के विषय में – *अधिसीले सीलविपन्नो होति, अज्झाचारे आचारविपन्नो होति ...,* महाव॰ 82; – **टि॰** पाराजिक एवं सङ्घादिशेष इन आपत्तियों को छोड़कर शेष पांच आपत्तियों में परिगणित पापकर्मों को अज्झाचार कहते हैं – *इतरे पञ्चापत्तिकक्खन्धे आपन्नो अज्झाचारे आचारविपन्नो नाम,* महाव॰ अट्ठ॰ 258.

अज्झाचिण्ण त्रि॰, अधि + आ + √चर का भू॰ क॰ कृ॰, [अध्याचीर्ण], नियमों का उल्लंघन करके अथवा अनुचित रूप में आचरित, व्यवहृत या प्रयुक्त – **ण्णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहुं अस्सामणकं अज्झाचिण्णं होति,* चूळव॰ 183, म॰ नि॰ 3.33, *इदं मे आचरियेन अज्झाचिण्णं,* चूळव॰ 470.

अज्झाजीवे सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, जीविकोपार्जन के विषय में – *अप्पमत्तको सो, आनन्द, विवादो यदिदं अज्झाजीवे वा अधिपातिमोक्खे वा,* म॰ नि॰ 3.31; *अज्झाजीवेति आजीवहेतु आजीवकारणा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.24.

अज्झापज्जति अधि + आ + √पद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [अध्यापद्यते], अपराध करता है, अत्यधिक दूर पहुंच जाता है, अतिक्रमण करता है, भिक्षुसंघ के लिये निर्धारित आपत्तियों में आपन्न होता है – *चतुब्बिधं वचीदुच्चरितं भासमानो अज्झापज्जति नाम,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 262 – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अदिट्ठस्स होति पाराजिकं धम्मं अज्झापज्जन्तो,* पारा॰ 256.

अज्झापन[1] नपुं॰, अधि + √इ के प्रेर॰ से व्यु॰ [अध्यापन], प्रशिक्षण, अध्यापन – *ब्राह्मणो नाम अज्झयन-अज्झापन ... पवेणिवंसधरणो,* मि॰ प॰ 212.

अज्झापन[2] नपुं॰, √झा के प्रेर॰ का निषे॰, अप्रज्वलन, नहीं बुझाना, दाहसंस्कार नहीं करना – *इति अल्लहत्थस्स अज्झापनं नाम अयं दुतियो साधुनरधम्मो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.208.

अज्झापन्न त्रि॰, अधि + आ + √पद का भू॰ क॰ कृ॰, [अध्यापन्न], 1. कर्तृ॰ वा॰ में – अपराध किया हुआ, अपराध में आपतित – **न्नाय** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गरुधम्मं अज्झापन्नाय भिक्खुनिया,* चूळव॰ 418; – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नोसि,* पारा॰ 256,

2. कर्म॰ वा॰ में - किया गया अपराध - **न्ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आपत्ति अज्झापन्ना वा होति,* महाव॰ 131, स॰ उ॰ प॰ के रूप में अनज्झा॰, अत्तज्झा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **क** त्रि॰, अज्झापन्न से व्यु॰, उपरिवत् - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अन्तिमवत्थुं अज्झापन्नको पटिजानाति,* महाव॰ 151.

अज्झापित त्रि॰, झापित का निषे॰, भस्म नहीं किया गया, नहीं जलाया गया - **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न हि मतसरीरे अज्झापिते तं सुसानं नाम होति,* विसुद्धि॰ 1.75.

अज्झापीळित त्रि॰, अधि + आ + √पीळ का भू॰ क॰ कृ॰, अत्यन्त उत्पीडित, अतिशय संतप्त, अत्यंत कृशता को प्राप्त - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *खुप्पिपासाय अज्झापीळिता,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 157; पाठा॰ अट्टा पीळिता.

अज्झापेक्खिंसु अज्झ + अप + √इक्ख का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, लापरवाही किया, परित्याग किया, अवहेलना की, तिरस्कार किया - *येन किच्चेन सम्पत्ता, अज्झापेक्खिंसु तावदे,* अप॰ 1.185, तुल॰ अज्झुपेक्खिंसु.

अज्झाभव पु॰, अधि + आ + √भू से व्यु॰, आधिपत्य पराभव, परस्पर व्यवहार, समागम - *पुब्बेवज्झाभवं तस्स, रक्खे अक्खीव पण्डितो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.296.

अज्झाभवति अधि + आ + √भू का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अत्यधिक अभिभूत करता है, विशेष रूप से पराभूत करता है - *यथा नं सो न अज्झाभवति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.297.

अज्झाय पु॰, [अध्याय], खण्ड, किसी ग्रन्थ का एक भाग, सर्ग - *सग्गोज्झाये दिवेप्यथ,* अभि॰ प॰ 911.

अज्झायक[1] पु॰, अज्झायति से व्यु॰ [आध्यायिक, अध्यायिन], अध्ययन करने वाला, अध्ययनशील, वेदों को पढ़नेवाला, वेदपाठी, वेदों के पाठ में पारङ्गत, वेदज्ञ - *अन्तेवासी होति अज्झायको मन्तधरो तिण्णं वेदानं पारगू,* दी॰ नि॰ 1.76; *अज्झायकोपि चे अस्स, तिण्णं वेदानं पारगू,* थेरगा॰ 1180; *अज्झायको याचयोगी, आहुतग्गि च ब्राह्मणो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.45; - **कुल** नपुं॰, वेदमन्त्रपाठी ब्राह्मणों का परिवार या वंश - *अज्झायककुले जाता, ब्राह्मणा मन्तबन्धवा,* सु॰ नि॰ 140; *अज्झायककुले जाता ति मन्तज्झायके ब्राह्मणकुले जाता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.153.

अज्झायक[2] पु॰, झायक का निषे॰, ध्यान-विरहित, ध्यानविपन्न, ध्यान न करने वाला - **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *न दानिमे झायन्तीति खो, वासेट्ठ, अज्झायका ... झानविरहितानं ब्राह्मणानं गरहवचनं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.200.

अज्झायति अधि + √इ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [अध्येति], कण्ठस्थ करता है, अध्ययन करता है, पढ़ता है, स्मरण करता है - *तं अज्झायतीति अज्झायको,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.200; तुल॰ अज्झेति, अधीयति, अधीते, सज्झायति.

अज्झारामे निपा॰, अधि + आरामे, आराम के भीतर, आराम अर्थात् बौद्धविहार के अन्तःपरिसर में - *न च, भिक्खवे, अज्झारामे उपाहना धारेतब्बा,* महाव॰ 261.

अज्झारूळ्ह त्रि॰, अज्झारुहति का भू॰ क॰ कृ॰, 1. अधिक ऊपर उठा हुआ, उन्नत, समुन्नत - **ळ्हा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *येहि रुक्खा अज्झारूळ्हा ओभग्गविभग्गा विपतिता सेन्ति,* स॰ नि॰ 3(1).117.

अज्झारुह त्रि॰, [अध्यारुह], **शा॰ अ॰** भीतर से बाहर की ओर या बाहर से भीतर की ओर उठते हुए उत्पन्न होने वाला, **ला॰ अ॰** 1. पराश्रयी, परजीवी - **हा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भिक्खवे, महारुक्खा अणुबीजा, महाकाया रुक्खानं अज्झारुहा,* स॰ नि॰ 3(1).117, जा॰ अट्ठ॰ 3.353; *निग्रोधादयो रुक्खा अज्झारुहा हुत्वा महन्तम्पि अञ्ञं वनप्पतिं अतिक्कम्म वड्ढन्तीति,* तदे॰; 2. अभिभूत करने वाला, दबाने वाला - *पञ्चिमे, भिक्खवे, आवरणा नीवरणा चेतसो अज्झारुहा पञ्ञाय दुब्बलीकरणा,* स॰ नि॰ 3(1).117.

अज्झारुहति अधि + आ + √रुह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, परोपजीवी लता की तरह किसी को चारों तरफ से लपेट लेता है, भयभीत करता है, अत्याचार करता है - *अज्झारुहति दुम्मेधो, गोव भिय्यो पलायिन'न्ति,* स॰ नि॰ 1(1).256; पाठा॰ अज्झोसहति.

अज्झारोह पु॰, विशाल पांच सौ योजन लम्बी एक बड़ी मछली - *आनन्दो च तिमिन्दो च अज्झारोहो महातिमि,* अभि॰ प॰ 673, *अतीतस्मिञ्हि काले महासमुद्दे छ महामच्छा अहेसुं, तेसु आनन्दो तिमिनन्दो अज्झारोहोति इमे तयो मच्छा पञ्चयोजनसतिका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.459.

अज्झावर पु॰, सहचर, साथी, समवाय, समूह - **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भवन्तं अज्झावरं कत्वा, सोणं याचेमु संवरं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.309, संभवतः अज्झाचार के स्थान में प्रयुक्त अप॰.

अज्झावसति अधि + आ + √वस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अध्यावसति], शासक या अधिपति के रूप में निवास करता है, विशिष्ट प्रकार की जीवनपद्धति में आनन्द लेता है - *सचे अगारं अज्झावसति राजा होति चक्कवत्ति,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 166; *एसो अरियसावको विजितसङ्गामो तमेव सङ्गामसीसं अभिविजिय अज्झावसती'ति,* इतिवु॰ 55; - **सि** म॰ पु॰, ए॰

व॰ - *तं किं मञ्ञसि, महाराज, फीतं कुरुं अज्झावससी'ति,* म॰ नि॰ 2.268; - **सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एवं, भो रट्ठपाल, फीतं कुरुं अज्झावसामी'ति,* म॰ नि॰ 2.268; - **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यदि, भन्ते नागसेन, गिही ओदातवसनो कामभोगी पुत्तदारसम्बाधसयनं अज्झावसन्तो ... आराधको होति,* मि॰ प॰ 228; - **सता** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नयिदं सुकरं अगारं अज्झावसता ... ब्रह्मचरियं चरितुं,* म॰ नि॰ 2.255; - **सन्तेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सक्का गेहं अज्झावसन्तेहेव पुञ्ञानि कातुं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.5; - **सतं** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यञ्च गिहीनं अगारं अज्झावसतं ... पधानं,* अ॰ नि॰ 1(1).65; - **सेय्याम** विधि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ - *तम्पि मयं, भो रट्ठपाल, अभिविजिय अज्झावसेय्यामा'ति,* म॰ नि॰ 2.268; - **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *सा वयप्पत्ता पतिकुलं गन्त्वा अगारं ... अज्झावसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.150; - **सिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *ततो पट्ठाय यावजीवं समग्गा सम्मोदमाना फीतं धरणिं अज्झावसिंसूति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.303; - **सिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *कूटागारवरूपेतं, ब्यम्हं अज्झावसिस्सति,* अप॰ 1.92; - **सित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *तं यूपं उस्सापेत्वा अज्झावसित्वा ... अगारस्मा अनगारियं पब्बजिस्सति,* दी॰ नि॰ 3.56.

अज्झावसथे सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, घर में, आवास के अन्दर, निवास में - *अनापत्ति अज्झारामे वा अज्झावसथे वा उग्गहेत्वा वा उग्गहापेत्वा वा निक्खिपति,* पारा॰ 358.

अज्झावुट्ठ / अज्झावुत्थ त्रि॰, अज्झावसति का भू॰ क॰ कृ॰, [अध्युषित], किसी के द्वारा अधिग्रहण किया हुआ या आबाद किया हुआ - **ट्ठं** नपुं, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अज्झावुट्ठं अनज्झावुट्ठं वा आचिक्खितब्बं,* चूळव॰ 353; - **पासाद** पु॰, आबाद किया हुआ महल - **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भद्दजि, तया महापनादराजकाले अज्झावुत्थपासादो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.276; - **घर** नपुं॰, आबाद किया हुआ घर - **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सकघरं नाम पुब्बञातिघरम्पि अत्तना सामिभावेन अज्झावुत्थघरम्पि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 21.

अज्झासय पु॰, अधि + आ + √सी से व्यु॰ [अध्याशय], **शा॰ अ॰** विश्राम करने का स्थल, किसी वस्तु को रखने का आश्रय-स्थल या पात्र, आसन, **ला॰ अ॰** मानसिक अभिप्राय, श्रोताओं की मनोदशा - **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भगवा तेसं अज्झासयं ओलोकेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.96; - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ह्रीहाकारेहि होति अज्झासयतो वा विसयाधिमत्ततो वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 365; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अत्तज्झा॰, अदान॰, अदोस॰, अनेक॰, अमोह॰, अलोभ॰, अहित॰, आकास॰, उपादिन्नक॰, उलार॰, एक॰, एवं॰, कल्याण॰, जान॰, गाम॰, दान॰, नान॰, निस्सरण॰, नेक्खम्म॰, पणीत॰, पर॰, पविवेक॰, पुग्गल॰, पुरिस॰, मह॰, यथा॰, विसम॰, वेनेय्य॰, हित॰, हीन॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **गहण** नपुं॰, [अध्याशयग्रहण], मनोदशाओं का ग्रहण, दूसरे के मन के विचारों को पकड़ना या समझना - *अथेको सकुणो सब्बेसं अज्झासयग्गहणत्थं तिक्खत्तुं सावेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.291; - **पूरण** नपुं॰, अपने अभिप्राय की पूर्णता - *पुण्णपत्तन्ति तव अज्झासयपूरणं पुण्णपत्तं ददामीति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.291; - **फल** नपुं॰, अपने अभिप्राय के अनुरूप फल - *सोळसवस्सेहि कतवायामस्स समिद्धं अज्झासयफलं दस्सेतुं एवमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 6.19; - **सम्पन्न** त्रि॰, उत्तम मनोवृत्ति से सम्पन्न व्यक्ति, उदार अभिप्राय वाला - **न्नं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकं अज्झासयसम्पन्नं उपट्ठाककुलं दिस्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.54; - **यानुरूप** त्रि॰, 1. अपने मानसिक अभिप्रायों के अनुरूप, स्वकीय मानसिक वृत्तियों के अनुकूल - **पं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अथायस्मा संकिच्चो तस्स अज्झासयानुरूपं कम्मट्ठानं आचिक्खि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 52; *सब्बेन वित्तं पटिपादये तुवन्ति ... भोगेन तुय्हं अज्झासयानुरूपं* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 94; 2. किसी की इच्छा के अनुसार - *अत्तनो अज्झासयानुरूपं दुतियगाथाय वुत्ताय सुलसा ठानुप्पत्तिकारणं पटिलभित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.387; *यथामतिं ते ति इदानि तव अज्झासयानुरूपं करोमाति वदति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.198; - **यानुसन्धि** पु॰, श्रोताओं के मानसिक अभिप्राय के अनुरूप भगवान् बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेश को ध्यान में रखकर सुत्तों में उपदेशों का क्रम-विन्यास, सुत्तों की तीन अनुसन्धियों में से एक - *तयो हि सुत्तस्स अनुसन्धी - पुच्छानुसन्धि, अज्झासयानुसन्धि, यथानुसन्धीति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.104; *परेसं अज्झासयं विदित्वा भगवता वुत्तसुत्तवसेन अज्झासयानुसन्धि वेदितब्बो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.105.

अज्झासयं सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, मानसिक अभिप्राय के सम्बन्ध में, मानसिक अभिप्राय को दृष्टि में रखकर - *सो भगवा विगतकथङ्कथो परियोसितसङ्कप्पो अज्झासयं आदिब्रह्मचरियं ...,* दी॰ नि॰ 2.165.

अज्झाहार पु॰, [अध्याहार], आपूर्ति, संभरण अविद्यमान वस्तु को कहीं अन्यत्र से लाकर रख देना - *अत्रापि उप्पन्नन्ति अज्झाहारवसेन ततोति ...,* सद्द॰ 3.727.

अज्झिट्ठ त्रि॰, अज्झेसति का भू॰ क॰ कृ॰ [अध्येष्ट], इच्छित, निवेदित, प्रार्थित, आमन्त्रित, धर्मदेशना-हेतु अभ्यर्थित - **ट्ठो**

पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *परिचारकसोळसानं ब्राह्मणानं अज्झिट्ठो पुट्ठो पञ्हं व्याकासि,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 246; *अज्झिट्ठो न विकम्पेय्य, स राजवसतिं वसे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.187; *महिन्दत्थेरेन अज्झिट्ठो ... धम्मासने निसीदि,* पारा॰ अट्ठ॰ 70, तुल॰ अज्झेसित.

अज्झुपगच्छति वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अधि-उप + √गम् [अभ्युपगच्छति], अनुमोदन देता है, सहमति प्रदान करता है, किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है - **च्छे** विधि॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभ्युपगच्छेत्], अनुमोदन दें, सहमति प्रदान करें, किसी निष्कर्ष पर पहुंचे - *अज्झुपगच्छे घातं, यो विञ्ञायेवं सत्थुनो वचनं,* थेरीगा॰ 476; *अज्झुपगच्छेति सम्पटिच्छेय्य,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 309; - **पागमि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *धनुं कण्डं निक्खिप्प, संयमं अज्झुपागमि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.331; - **पागमुं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *सब्बे पञ्जलिका हुत्वा, इसीनं अज्झुपागमुं'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.315; - **गतो** भू॰ क॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वेवण्णियं हि अज्झुपगतो'ति पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं,* अ॰ नि॰ 3(2).72; *पब्बजितो पि भण्डुकासाववत्थवसनो परपिण्डमज्झुपगतो ... ञायं धम्मं कुसलं,* मि॰ प॰ 228.

अज्झुपगमन नपुं॰, [अभ्युपगमन], स्वीकरण, सहमति, अनुमोदन, उपगमन - *या तिणवत्थारकस्स कम्मस्स किरिया करणं उपगमनं अज्झुपगमनं अधिवासना अप्पटिक्कोसना ...,* चूळव॰ 220.

अज्झुपावेक्खि अधि + अव + उप + √विस अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आसन पर बैठा - *सुमुखो अज्झुपावेक्खि, धतरट्ठस्सनन्तरा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.373.

अज्झुपेक्खकता स्त्री॰, अज्झुपेक्खक का भाव॰ [अध्युपेक्षकता], मध्यस्थता, तटस्थता, चित्तसमता, निरपेक्षता - *ततो परं पन कत्तब्बाभावतो अज्झुपेक्खकतासङ्खातेन मज्झत्ताकारेन पटिपज्जितब्बं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 240.

अज्झुपेक्खति अधि + उप + √इक्ख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [बौ॰ सं॰ अध्युपेक्षति], उपेक्षा करता है, निरपेक्ष दृष्टि से देखता है, तटस्थभाव से अनुचिन्तन करता है, सहता है - *कालेन कालं अज्झुपेक्खति,* अ॰ नि॰ 1(1).290; *अज्झुपेक्खति कालेन, सो योगी कालकोविदो,* महानि॰ 385; - **सि** वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अम्हे दब्बेन मल्लपुत्तेन विहेठियमाने अज्झुपेक्खसि,* चूळव॰ 180; - **क्खथ** वर्त॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ - *भन्ते, तुम्हे राजगेहे भुञ्जमाना ... लोकं विनासेन्ते कस्मा अज्झुपेक्खथ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.217; - **क्खेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *समाहितचित्तमञ्ञाय, अज्झुपेक्खेय्य तावदे,* महानि॰ 385; - **क्खेय्याम** विधि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ - *यंनून मयं चतुत्थे मिगजाते अज्झुपेक्खेय्यामा'ति,* म॰ नि॰ 1.213; - **क्खि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *पिये पुत्ते ... लताय बन्धित्वा तेन ब्राह्मणेन लताय अनुमज्जीयन्ते दिस्वा अज्झुपेक्खि,* मि॰ प॰ 256; - **क्खिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *यंनून मयं चतुत्थे मिगजाते अज्झुपेक्खेय्यामा'ति अज्झुपेक्खिंसु ...,* म॰ नि॰ 1.213; - **क्खिस्सथ** भवि॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अत्थि नाम, आनन्द, थेरं भिक्खुं विहेसियमानं अज्झुपेक्खिस्सथ,* अ॰ नि॰ 2(1).181; - **क्खिय** पू॰ का॰ कृ॰ - *उक्कासितञ्च खिपितं, अज्झुपेक्खिय सुब्बता,* बु॰ वं॰ 291; - **क्खितब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अत्थि, भिक्खवे, पुग्गलो अज्झुपेक्खितब्बो न सेवितब्बो न भजितब्बो न पयिरुपासितब्बो,* अ॰ नि॰ 1(1).149; - **क्खिता** क्रि॰ ना॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यस्मिं समये, भिक्खवे, भिक्खु तथासमाहितं चित्तं साधुकं अज्झुपेक्खिता होति,* स॰ नि॰ 3(1).86.

अज्झुपेक्खन नपुं॰, अधि + उप + √इक्ख से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अध्युपेक्षण], निष्पक्षता, निरपेक्षता, तटस्थता, समभाव - *चित्तचेतसिकानं अज्झुपेक्खनवसेन समप्पवत्तानं आजानेय्यानं अज्झुपेक्खनसारथि विय दट्ठब्बा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 178.

अज्झुपेक्खना स्त्री॰, निरपेक्षता, उपेक्षा, मध्यस्थता, तटस्थता - *या उपेक्खा उपेक्खना अज्झुपेखना मज्झत्तता चित्तस्स उपेक्खासम्बोज्झङ्गो - अयं वुच्चति उपेक्खासम्बोज्झङ्गो,* विभ॰ 260.

अज्झुपेत त्रि॰, अज्झुपेति का भू॰ क॰ कृ॰ [अभ्युपेत], पूर्णतया युक्त, पूर्णतया अन्वित - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुचिरं अवनिपालो सञ्ञमं अज्झुपेतो,* दा॰ वं॰ 4.5.

अज्झुपेति वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ (अधि-उप + √इ) [अभ्युप + इ], समीप में जाता है, किसी स्थान में विश्राम के लिए पहुंचता है, आशय या मनोभाव को ग्रहण करता है - **पेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, समीप में जाए, किसी स्थान में विश्राम के लिये पहुंचे, आशय या मनोभाव को ग्रहण करे - *तमेव आसयं अज्झुपेय्य,* दी॰ नि॰ 3.16; - **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *सो वरं वरं मिगसङ्घे वधित्वा मुदुमंसानि मुदुमंसानि भक्खयित्वा तमेवं आसयं अज्झुपेसि,* दी॰ नि॰ 3.17; - **स्सं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अहञ्च नं मालिनी अज्झुपेस्सं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.398.

अज्झेति[1] अधि + √इ, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पढ़ता है, अध्ययन करता है, स्वाध्याय करता है - *व्याकरणं अज्झेति*

वेदेति च, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.153; विविध प्रयोगों के लिये अज्झेतब्ब, अज्झेय्य, अज्झापितब्ब, अज्झापनीय आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अज्झेति² अधि + √इ, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, शोक करता है, विलाप करता है, शोकपर्याकुल होता है – *न सो सोचति नाज्झेति,* महानि॰ 323.

अज्झेन नपुं॰, [अध्ययन], पढ़ना, वेदपाठ, स्वाध्याय, अध्ययन – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्झेनं खो, भो गोतम, ब्राह्मणा चतुत्थं धम्मं पञ्ञपेन्ति, पुञ्ञस्स किरियाय,* म॰ नि॰ 2.423; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधेकच्चो जातिया वा गोत्तेन वा ... अज्झेनेन वा ... मानं जप्पेति,* विभ॰ 405, *अज्झेनमरिया पथविं जनिन्दा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.53, तुल॰ अज्झयन, अज्झायन, अज्झान परियज्झेन, स॰ उ॰ में छन्द॰, झान॰, मन्त॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **कुत्त** नपुं॰, अनेक ग्रन्थों का निरर्थक सैद्धान्तिक ज्ञान – *अज्झेनकुत्तं परदारसेवना,* सु॰ नि॰ 245; *अज्झेनकुत्तन्ति निरत्थकमनेकगन्थपरियापुणनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.263; पाठा॰ अज्झेनकुट्ठं, अज्झेनकुज्ज.

अज्झेसति अधि + √एस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अध्येषति], कहता है, अनुरोध करता है, विशेष रूप से धर्मोपदेश के लिये प्रेरित करता है – *सामं वा धम्मं भासति परं वा अज्झेसति,* अ॰ नि॰ 3(1).6; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एतेनेव उपायेन याव सङ्घनवकं अज्झेसन्ति,* महाव॰ 145; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अथ खो देवदत्तो ... सारिपुत्तं अज्झेसि,* चूळव॰ 339; – **सितुं** निमि॰ कृ॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, थेरेन भिक्खुना सामं वा धम्मं भासितुं परं वा अज्झेसितुं,* महाव॰ 141; – **त** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [अध्येषित], याचित, प्रार्थित, निवेदित, अभ्यर्थित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *याचितो याचितो अज्झेसितो अज्झेसितो,* चूळनि॰ 177; *एकं अज्झेसितोपि अप्पं याचितो बहुदायको उळारपुरिसो विय एकाय गाथाय तीणि मङ्गलानि वत्वा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 105.

अज्झेसना स्त्री॰, [अध्येषणा], सत्क्रिया, याचना, निवेदन, आयाचन, अभ्यर्थना, धर्मोपदेशहेतु अनुरोध – *अज्झेसना तु सक्कारपुब्बङ्गमनियोजनं,* अभि॰ प॰ 427; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्झेसनं बुद्धसिरिव्हयस्स, थेरस्स सम्मा समनुस्सरन्तो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.3; *अज्झेसनन्ति गरुट्ठानियं पयिरुपासित्वा गरुतरं पयोजनं उद्दिस्स अभिपत्थना अज्झेसना, तं अज्झेसनं, आयाचनन्ति,* सारत्थ॰ टी॰ 1.19.

अज्झोकास पु॰, अधि + ओकास, केवल सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ में ही प्रयुक्त, खुले आकाश के नीचे, खुली जगह में – *भगवा ... अज्झोकासे चङ्कमति,* महाव॰ 20; *अज्झोकासे ठपितम्हि विवटमुखं भाजनं देवे वस्सन्ते किञ्चापि एकबिन्दुना न पूरति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.10; *अज्झोकासे पटिच्छन्नेन वत्थादिना उदकट्ठाने ... गच्छ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.186, – **गत** त्रि॰, खुली जगह पर या बाहर गया हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न अज्झोकासगतो रमति,* स॰ नि॰ 1(2).209.

अज्झोकिरन्ति अधि + अव + √किर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अभ्यवकिरन्ति], आच्छादित करते हैं, ढकते हैं, विखेरते हैं, चारों ओर विखेरते या फैलाते हैं – *अकालपुप्फेहि ... तथागतस्स सरीरं ओकिरन्ति अज्झोकिरन्ति,* दी॰ नि॰ 2.104.

अज्झोगाळ्ह त्रि॰, अधि + अव + √गाह, भू॰ क॰ कृ॰ [अध्यवगाढ], अत्यधिक गहरा, अत्यधिक निमग्न, डूबा हुआ, बहुत भीतर तक प्रविष्ट, गम्भीर रूप में निविष्ट – **ह्हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चतुरासीति-योजनसहस्सानि महासमुद्दो अज्झोगाळ्हो,* अ॰ नि॰ 2(2).237; – **ळ्हे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्झोगाळ्हे धुते गुणे,* मि॰ प॰ 316; – **पत्त** त्रि॰, [अध्यवगाढप्राप्त], अत्यधिक भीतर तक प्रविष्ट, बहुत गहराई तक गया हुआ – *अञ्ञतरस्मिं कुले अतिवेलं अज्झोगाळ्हपत्तो विहरति,* स॰ नि॰ 1(1).233.

अज्झोगाहति अधि + अव + √गाह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बहुत गहराई तक प्रवेश करता है, गहरी छान-बीन करता है, गहरी डुबकी लगाता है – *खारिविधमादाय अरञ्ञायतनं अज्झोगाहति,* दी॰ नि॰ 1.88; *मोसवज्जं पगाहति ओगाहति अज्झोगाहति पविसतीति,* महानि॰ 111; – **गहिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *खारिभारं गहेत्वान, वनं अज्झोगहिं अहं,* अप॰ 1.16; – **हितुं** निमि॰ कृ॰ – *न सक्का अप्पेसक्खेहि अज्झोगाहितुन्ति वुत्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).119; – **हेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *पुरिसो नावाय महासमुद्दं अज्झोगाहेत्वा,* मि॰ प॰ 97; *नदिं वा तळाकं वा अज्झोगाहेत्वा न्हायेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).200.

अज्झोत्थरति अधि + अव + √थर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अध्यवस्तृणाति], ऊपर तक ढक देता है, भरपूर कर देता है, व्याप्त हो जाता है, पराभूत या अभिभूत कर देता है (जलमग्न कर देता है, प्लावित कर देता है), – *बहुकत्ता कुसलं सदेवकं लोकं अज्झोत्थरति,* मि॰ प॰ 273; – **रि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सकलं राजगहनगरं गन्धेन अज्झोत्थरि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.239; – **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *उदकेन नं अज्झोत्थरित्वा मारेस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.82; *गहितग्गहितानि तूरियानि अज्झोत्थरित्वा निपज्जिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.71.

अज्झोत्थट त्रि., भू. क. कृ., आच्छादित, अत्यधिक अभिभूत, चारों ओर से भरा हुआ, बुरी तरह से प्रभावित - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सो च तेन आसीनो अतिनिविट्ठो अज्झोत्थटो,* जा. अट्ठ. 1.347; *चतुसहस्सयोजनपरिमाणो पदेसो उदकेन अज्झोत्थटो ...,* सु. नि. अट्ठ. 2.145; - **टं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *एत्तकं ठानं बुद्धरस्मीहियेव अज्झोत्थटं अहोसि,* ध. स. अट्ठ. 16; - **टस्स** ष. वि., ए. व. - *अट्ठहि लोकधम्मेहि फुट्ठस्स अज्झोत्थटस्स चित्तं न कम्पति,* खु. पा. अट्ठ. 123; - **हदय** त्रि., ब. स., भरपूर हृदयवाला - **या** पु., प्र. वि., ब. व. - *पेमेन महोघेनेव अज्झोत्थटहदया हुत्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.157.

अज्झोपन्न त्रि., अधि + अव√पद का भू. क. कृ., अत्यधिक संलग्न, दृढ़ता के साथ आसक्त - **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *भोगे गधितो मुच्छितो अज्झोपन्नो,* स. नि. 2(2).315; - **न्ना** ब. व. - *इमे खो वासेट्ठ, पञ्च कामगुणे तेविज्जा ब्राह्मणा गधिता मुच्छिता अज्झोपन्ना ... परिभुञ्जन्ति,* दी. नि. 1.222; *इत्थिरूपे ... रत्ता गिद्धा गथिता मुच्छिता अज्झोपन्ना,* अ. नि. 2(1).63; *कामगुणेसु ... गथिता मुच्छिता अज्झोपन्ना,* दी. नि. अट्ठ. 1.56; स. उ. प. में अनज्झोपन्न के अन्त. द्रष्ट..

अज्झोमद्दति अधि + अव + √मद्द का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अध्यवमर्दति], कुचल देता है, मर्दन करता है, चूर्ण-विचूर्ण कर देता है - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सत्थिं उस्सज्जित्वा रथीसंयेव अज्झोमद्दति,* अ. नि. 3(1).34.

अज्झोमुच्छित त्रि., अधि + अव + √मुच्छ का भू. क. कृ. [अध्यवमूर्च्छित], पूर्णतया सञ्ज्ञाहीन, बेहोश, मूर्च्छित, शोकसंतप्त, शोकाकुल - *रत्तिन्दिवं भद्दाय देविया सरीरे अज्झोमुच्छितो,* अ. नि. 2(1).53.

अज्झोलम्बन्ति अधि + अव√लम्ब का वर्त., प्र. पु., ब. व., किसी के ऊपर जाकर लटकते है, अवलम्बित होते या आ पड़ते हैं - *महतं पब्बतकूटानं छाया सायन्हसमयं पथविया ओलम्बन्ति अज्झोलम्बन्ति,* म. नि. 3.204.

अज्झोसति / अज्झोसेति अधि + अप + √सो का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अध्यवस्यति], विनिश्चित करता है, ग्रहण करता है, ध्यान-प्रक्रिया में विनिश्चित करता है; - **सिस्ससि** भवि., म. पु., ए. व., विनिश्चित करोगे, ग्रहण करोगे, ध्यान-प्रक्रिया विनिश्चित करोगे - *सचे खो त्वं, भिक्खु, पठविं अज्झोसिस्ससि,* म. नि. 1.411; - **सितुं** निमि. कृ. - *यदनिच्चं तं नालं अभिनन्दितुं नालं अभिवदितुं, नालं अज्झोसितुं,* म. नि. 3.47.

अज्झोसान नपुं., [अध्यवसान], सांसारिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति, चित्त का उपादान, छन्द और राग पर आधारित परिग्रहभाव - **नं** प्र. वि., ए. व. - *यो इमेसु पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु छन्दो आलयो अनुनयो अज्झोसानं सो दुक्खसमुदयो,* म. नि. 1.251; *यो रागो सारागो अनुनयो ... इच्छा मुच्छा अज्झोसानं ... अयं वुच्चति लोभो,* ध. स. 1065; - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *छन्दरागं पटिच्च अज्झोसानं, अज्झोसानं पटिच्च परिग्गहो,* अ. नि. 3(1).210; - **लक्खण क.** नपुं., सांसारिक वस्तुओं के प्रति लगाव युक्त रहने का लक्षण या स्वभाव - **णेन** तृ. वि., ए. व. - *सब्बा हि तण्हा अज्झोसानलक्खणेन एकलक्खणा,* नेत्ति. 22; **ख.** त्रि., लगाव युक्त रहने के लक्षण वाला - **णा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अज्झोसानलक्खणा तण्हा,* नेत्ति. 26; स. उ. प. में अन., एकन्त., काम., दिट्ठि., भव. के अन्त. द्रष्ट..

अज्झोसाय / अज्झोस अज्झोसति का पू. का. कृ. [अध्यवसाय, अध्यवस्य], सुनिश्चित करके, सुग्रहीत करके, ठीक से विनिश्चय करके - *तस्स तं वेदनं अभिनन्दितो अभिवदतो अज्झोसाय तिट्ठतो उप्पज्जति नन्दी,* म. नि. 1.338; *अज्झोसाय तिट्ठतीति तण्हाअज्झोसानगहणेन गिलित्वा परिनिट्ठपेत्वा गण्हाति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.206; *नाभिनन्दति नाभिवदति नाज्झोसाय तिट्ठति,* स. नि. 2(2).164; मि. प. 72; *सारत्तचित्तो वेदेति, तञ्च अज्झोस तिट्ठति,* थेरगा. 98; *विरत्तचित्तो वेदेति, तञ्च नाज्झोस तिट्ठति,* स. नि. 2(2).81.

अज्झोसित त्रि., अज्झोसति का भू. क. कृ. [अध्यवसित], **क.** कर्तृ. वा. में - किसी धर्म का अच्छी तरह ग्रहण कर चुका अथवा विनिश्चय कर चुका, किसी के प्रति सुदृढ़ आसक्ति रखने वाला, पूर्णतया तल्लीन - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अज्झोसिता असारे कळेवरे अट्ठिन्हारुसङ्घाते,* थेरीगा. 472; - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यं किञ्चि दिट्ठंव सुतं मुतं वा, अज्झोसितं सच्चमुतं परेसं,* अ. नि. 1(2).30; *अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स अज्झोसितं ममायितं परामट्ठं,* स. नि. 1(2).84; **ख.** कर्म. वा. में - वह आलम्बन या धर्म, जिसके प्रति चित्त में दृढ़ आसक्ति है, आसक्ति के साथ ग्रहण किया गया - **तं** उपरिवत् - *अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स अज्झोसितं ममायितं परामट्ठं,* स. नि. 1(2).84; *अज्झोसितंयेव अद्दसं, अनज्झोसितं नाद्दसं,* महानि. 304.

अज्झोहट त्रि., अधि + अव + √हर का भू. क. कृ. [अभ्यवहृत], गले के नीचे उतारा हुआ, निगला हुआ, निगीर्ण - **टा** पु., प्र. वि., ब. व. - *गिलितो खादितो भुत्तो भक्खिताज्झोहटासिता,* अभि. प. 757; - **टं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तज्हि मूलफलादि ओदनकुम्मासादि वा अज्झोहटं कुच्छिं वित्थम्भेति,* ध. स. अट्ठ. 361; - **टो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अज्झोहटो व बलिसं मच्छो आमिसतण्हया,* सद्धम्मो. 610.

अज्झोहरण नपुं., अज्झोहरति से व्यु. [अभ्यवहरण], प्रयोग, समाचरण, भोजन-ग्रहण, भोजन का निगलना - **णं** द्वि. वि., ए. व. - *अस्साजानीयो ... पतोदस्स अज्झोहरणं समनुपस्सति,* अ. नि. 3(2)291; *अत्तनो अभिमुखस्स पतोदस्स अज्झोहरणसङ्खातं पतनं विपस्सतीति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 3.342; *द्वत्तिक्खत्तुं अज्झोहरणमत्तेनेव कम्मजतेजो उपादिन्नकं मुञ्चित्वा अनुपादिन्नकं गण्हाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).267; स. उ. प. में ब्राह्मणज्झोहरण के अन्त. द्रष्ट..

अज्झोहरणीय त्रि., अज्झोहरति का सं. कृ. [अभ्यवहरणीय], निगलने योग्य, भोजन में ग्रहण करने योग्य - *अहं एते मनुस्से निस्साय अज्झोहरणीयमत्तं आहारं लभामि लूखे वा पणीते वा,* ध. प. अट्ठ. 1.160; *तत्थ अज्झोहरणीयाहारो मंसविभूसा नाम,* जा. अट्ठ. 7.149; स. उ. प. में गलज्झोहरणीय के अन्त. द्रष्ट., तुल. अज्झोहरितब्बो.

अज्झोहरति अधि + अव + √हर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्यवहरति], निगलता है, गले के नीचे उतारता है, नीचे की ओर खींचता है - *येन च असितपीतखायितसयितं अज्झोहरति,* म. नि. 2.93; - **हारेय्युं** विधि., प्र. पु., ब. व., प्रेर. - *इमा च मे देवता दिब्बं ओजं लोमकूपेहि अज्झोहारेय्युं,* म. नि. 1.313; - **हरेस्साम** भवि., उ. पु., ब. व. - *तस्स ते मयं दिब्बं ओजं लोमकूपेहि अज्झोहरेस्साम,* म. नि. 1.313; - **हरी** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *को मं अज्झोहरी भूतो, ओगाळ्हं यमुनं नदिं,* जा. अट्ठ. 7.43; - **रितब्बं** सं. कृ., नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *पच्चवेक्खित्वा अज्झोहारं अज्झोहरितब्बं,* मि. प. 333; - **रित्वा** पू. का. कृ. - *सिङ्गालो सब्बपच्छिमं मूसिकं गहेत्वा मंसं खादित्वा अज्झोहरित्वा मुखं पुञ्छित्वा तिट्ठति,* जा. अट्ठ. 1.440; - **रीयति** कर्म. वा., वर्त. प्र. पु., ए. व. - *कवळं कत्वा अज्झोहरीयतीति अत्थो,* ध. स. अट्ठ. 361.

अज्झोहार पु., [अभ्यवहार], भोजन निगलने का कृत्य, भोजन-ग्रहण, भोजन - **रे** सप्त. वि., ए. व. - *अज्झोहारे अज्झोहारे आपत्ति दुक्कटस्स,* पाचि. 312; - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *कुक्कुटो पथविं खणित्वा खणित्वा अज्झोहारं अज्झोहरति,* मि. प. 333.

अञ्चति √अञ्च का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अञ्चति], 1. खींचता है, अपनी ओर घसीटता है - *अञ्छामि नं न मुञ्चामि,* थेरगा. 750; पाठा. अञ्छामि; *उदकं अञ्चन्ति एतायाति उदञ्चनी,* जा. अट्ठ. 1.399; 2. सिकोड़ता है, संकुचित करता है - *याचकं दिस्वा कटुकभावेन चित्तं अञ्चति सङ्कोचेतीति,* ध. स. अट्ठ. 401.

अञ्छति √अञ्छ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अञ्छति], खींचता है, अपनी ओर घसीटता है - *दक्खो भमकारो वा भमकारन्तेवासी वा दीघं वा अञ्छन्तो दीघं अञ्छामीति पजानाति,* दी. नि. 2.215; म. नि. 1.72.

अञ्चित त्रि., √अञ्च का भू. क. कृ., गति करने वाला, जाने वाला - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *उद्धं अनुगन्त्वा तिरियं अञ्चिताति तिरच्छाना,* विभ. अट्ठ. 428.

अञ्जति √अञ्ज से व्यु., वर्त. प्र. पु., ए. व., व्यक्त करता है, अञ्जन लगाता है, मालिश करता है, चमकाता है, सम्मानित करता है, लीपता है, स्पष्ट करता है, तैयार करता है - **न्ति** ब. व. - *भिक्खू अङ्गुलिया अञ्जन्ति,* महाव. 279; - **ञ्जापेसि** अद्य., प्रेर., म. पु., ए. व. - *इमं भेसज्जं अञ्जेहीति अञ्जापेसि,* ध. प. अट्ठ. 1.13; - **ञ्जेय्यासि** विधि., म. पु., ए. व. - *अक्खीनि च अञ्जेय्यासि,* स. नि. 1(2).254; - **ञ्जेत्वा** पू. का. कृ. - *अक्खीनि अञ्जेत्वा अच्छं पत्तं गहेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि,* स. नि. 1(2).254.

अञ्जन[1] नपुं., [अञ्जन], काजल, विलेपन, आंजन, चूर्ण - *अञ्जनं तु कज्जलं,* अभि. प. 306; - **नानि** प्र. वि., ब. व. - *तेन खो पन समयेन भिक्खू पिट्ठानि अञ्जनानि चरुकेसुपि सरावकेसुपि निक्खिपन्ति,* महाव. 278; - **नानं** ष. वि., ब. व. - *अञ्जनानं खयं दिस्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.264; स. उ. प. में अक्ख., अलङ्कार., कण्ह., काळ., खार., तेल., रस., सोत. के अन्त. द्रष्ट.; - **टि.** पांच प्रकार के अञ्जनों का उल्लेख - *अनुजानामि, भिक्खवे, अञ्जनं - काळञ्जनं, रसञ्जनं, सोतञ्जनं, गेरुकं, कपल्लन्ति,* महाव. 278; - **कम्मनाथ** पु., एक प्रमुख व्यक्ति का नाम - *अञ्जनकम्मनाथं सो धातुरक्खाय योजयि,* चू. वं. 74.168; - **क्खिक** त्रि., ब. स. [अञ्जनाक्षिक], अञ्जन से रंगी हुई आंखों वाला या वाली - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *चपला अञ्जनक्खिका,* थेरगा. 960; - **गिरि** पु., अञ्जन की तरह काले रंग वाले एक पर्वत का नाम - *काळपब्बतं नाम अञ्जनगिरिं गन्त्वा,*

जा॰ अट्ठ॰ 7.155; तुल॰ अञ्जनपब्बत; – **चुण्ण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अञ्जनचूर्ण], अञ्जन का चूर्ण या चूरा – *गगनतलं अञ्जनचुण्णसमोकिण्णं विय,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 15; – **देवी** स्त्री॰, देवगब्भा की एक पुत्री का नाम – *भातरो सुत्वा हट्ठतुट्ठा तस्सा अञ्जनदेवी'ति नामं करिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.72; – **नालिका** स्त्री॰, अञ्जन रखनेवाली छोटी डिबिया – *अञ्जनीति अञ्जननालिका,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.214; – **पब्बत** पु॰, अञ्जन के रंग वाले काले पहाड़ का नाम – *महाअटवियं अञ्जनपब्बतो नाम अत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.128; *नीला अञ्जनपब्बता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.292; – **नाळी** स्त्री॰, अञ्जन रखने का डिब्बा – *ओसधञ्जननाली च, सलाका धम्मकुत्तरा,* अप॰ 1.333; – **पुञ्ज** पु॰, अञ्जन का ढेर, अञ्जन की राशि – *अञ्जनपुञ्जसमानवण्णेन इमिना तव नागेन,* जा॰ अट्ठ॰ 2.306; *लुद्दे अञ्जनपुञ्जाभे उग्गदण्डे सुदारुणे,* सद्धम्मो॰ 286; – **मक्खित** त्रि॰, अञ्जन द्वारा विलिप्त – **ता** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नेत्ता अञ्जनमक्खिता,* थेरगा॰ 772; म॰ नि॰ 2.262; – **मय** त्रि॰, अञ्जन से भरा हुआ – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *काळकूटं अञ्जनमयं,* उदा॰ अट्ठ॰ 244; – **मूल** पु॰, एक प्रकार की मणि – *अञ्जनमूलो, राजपट्टो, अमतंसको, पियको, ब्राह्मणी चाति चतुब्बीसति मणि नाम,* उदा॰ अट्ठ॰ 81; – **रुक्ख** पु॰, एक प्रकार का वृक्ष – *अञ्जनरुक्खसारघटिकवण्णो महामच्छो ... आकासं उल्लोकेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.316; – **लोमसादिस** त्रि॰, सुरमे जैसे काले रङ्ग के बालों वाला/वाली – **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बाहा मुदू अञ्जनलोमसादिसा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.194; – **वण्ण** त्रि॰, अंजन अथवा सुरमे जैसे काले रंग वाला – **ण्णानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रञ्ञो अञ्जनवण्णानं केसानं अन्तरे एकमेव पलितं दिस्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.142; – **ण्णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकच्चे काळा अञ्जनवण्णायेव,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 109; – **ण्णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वण्णं अञ्जनवण्णेन,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.332; – **वन** नपुं॰, साकेत के निकटवर्ती मृगोद्यान का नाम – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्जनवनं ओभासेत्वा,* स॰ नि॰ 1(1).65; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *साकेतं निस्साय अञ्जनवने विहरन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.296; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.184; – **वनिय** पु॰, एक भिक्षु का नाम – *कतं बुद्धस्स सासनन्ति ... अञ्जनवनियो थेरो,* थेरगा॰ 55; – **सक्क** पु॰, महाप्रजापती गौतमी के पिता का नाम – *पिता अञ्जनसक्को मे, माता मम सुलक्खणा,* अप॰ 2.207; – **सदिस** त्रि॰, अञ्जन के समान, आंजन जैसा – **सेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्जनसदिसेहि लोमेहि समन्नागता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.196; – **सन्निभ** त्रि॰, अञ्जन जैसा – **भो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महासत्तस्स पन अञ्जनसन्निभो नाम मङ्गलहत्थी महापुञ्ञो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.332.

अञ्जन² पु॰, [अञ्जन], आठ दिग्गजों में से एक, पश्चिमी दिशा के एक हाथी का नाम – *एरावणो पुण्डरीको वामनो कुमुदोञ्जनो, पुप्फदन्तो सब्बभुम्मो सुप्पतीको दिसागजा,* अभि॰ प॰ 30.

अञ्जन³ पु॰, देवदह के एक शाक्यप्रमुख देवदहसक्क के पुत्र का नाम – *अञ्जनो चाथ कच्चाना आसुं तस्स सुता दुवे,* म॰ वं॰ 2.17.

अञ्जनित्थविका स्त्री॰, अञ्जन रखने का छोटा डिब्बा – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, अञ्जनित्थविकन्ति,* महाव॰ 279.

अञ्जनिसलाका स्त्री॰, अञ्जन लगाने वाली सलाका – *तेन खो पन समयेन अञ्जनिसलाका भूमियं पतिता फरुसा होति,* महाव॰ 279; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, अञ्जनिं अञ्जनिसलाकं,* चूळव॰ 256.

अञ्जनी स्त्री॰, **क.** अञ्जन रखने का पात्र – **निं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, अञ्जनि'न्ति,* महाव॰ 278; *अञ्जनीव नवा चित्ता,* थेरगा॰ 773, *न, भिक्खवे, उच्चावचा अञ्जनी धारेतब्बा,* महाव॰ 278; **ख.** एक पौधे का नाम, एक औषधीय पौधा – *केतका अञ्जनी चेव गोधुका तिणसूलिका,* अप॰ 1.12, पाठा॰ कन्दली.

अञ्जलि पु॰, [अञ्जलि], **1.** करपुट, हथेली – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचाहं अञ्जलिना वा पिविस्सामि,* अ॰ नि॰ 2(1).176; – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पलितानि साधुकं सण्डासेन उद्धरित्वा मम अञ्जलिस्मिं पतिट्ठापेहि,* म॰ नि॰ 2.272; **2.** सम्मान प्रकट करने हेतु सिर तक ले जाये गये दोनों जुड़े हुए करतल – *करपुटोञ्जलि,* अभि॰ प॰ 268; *येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 148; चूळव॰ 325; *राजा मागधो अजातसत्तु ... भिक्खुसङ्घस्स अञ्जलिं पणामेत्वा,* दी॰ नि॰ 1.45; स॰ उ॰ प॰ में द्रष्ट॰ उदक॰, एक॰, कत॰, पग्गहित॰, पग्गहित-तुच्छ॰, सुक्ख॰, प॰ के अन्त॰; – **क** त्रि॰, हाथ जोड़कर खड़ा हुआ व्यक्ति, सम्मान प्रकट करने हेतु खड़ा व्यक्ति – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवतो पुरतो अट्ठासि अञ्जलिको भगवन्तं नमस्समानो,* महाव॰ 4; पाठा॰ पञ्जलिको; स॰ उ॰ प॰ में द्रष्ट॰ एक॰, ठित॰, निपन्न॰ के अन्त॰; – **कम्म** नपुं॰, [अञ्जलिकर्मन्], हाथ जोड़कर प्रकट

किया गया सम्मान का भाव, सादर अभिवादन या नमस्कार – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्जलिकम्मस्स अयमीदिसो विपाको,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.21; – **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उभो हत्थे सिरस्मिं पतिट्ठापेत्वा सब्बलोकेन कयिरमानं अञ्जलिकम्मं अरहति,* विसुद्धि॰ 1.212; *ब्राह्मणमहासालानं ... अञ्जलिकम्मं सादियेय्य,* अ॰ नि॰ 2(2).260; – **करणीय** त्रि॰, [अञ्जलिकरणीय], हाथ जोड़कर सम्मान दिये जाने योग्य – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवतो सावकसङ्घो आहुनेय्यो ... अञ्जलिकरणीयो,* दी॰ नि॰ 2.74; म॰ नि॰ 1.48; अ॰ नि॰ 1(2).41, इतिवु॰ 64; *अञ्जलिकम्मं अरहतीति अञ्जलिकरणीयो,* विसुद्धि॰ 1.212; – **या** ब॰ व॰ – *सत्तिमे ... पुग्गला आहुनेय्या ... अञ्जलिकरणीया,* अ॰ नि॰ 2(2).164; – **का** स्त्री॰, करतल, सम्मान में जुड़े हुए हाथ, करपुट, करसम्पुट – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिवादयिं अञ्जलिकं अकासिं,* वि॰ व॰ 5; द्रष्ट॰ पञ्जलिका; – **पग्गह** त्रि॰, सम्मान प्रकट करने हेतु करसम्पुट को बांधने वाला, हाथ जोड़कर सम्मान को प्रकाशित करने वाला – **हा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्जलिपग्गहा देवा पुप्फपुण्णघटा ततो,* म॰ वं॰ 30.90; – **पणाम** पु॰, सम्मानपूर्वक प्रणति, सादर नमन, आदरयुक्त नमन – *एको मनोपसादो, सरणगमनमञ्जलिपणामो वा,* मि॰ प॰ 228.

अञ्जली स्त्री॰, एक भिक्षुणी का नाम, जो सङ्घमित्ता के साथ श्रीलङ्का गयी थी – *महादेवी च पदुमा हेमासा च यसस्सिनी उन्नला अञ्जली सुमा, एता तदा भिक्खुनियो छळभिञ्ञा महिद्धिका,* दी॰ वं॰ 18.25(रो॰).

अञ्जस[1] त्रि॰, [अञ्जस], अकुटिल, सीधा, सरल, ईमानदार, सत्यवादी – **सं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो अरियमट्ठङ्गिकमञ्जसं उजुं, भावेति मग्गं अमतस्स पत्तिया,* थेरगा॰ 35; *सिक्खमाना अहं सन्ती, भावेन्ती मग्गमञ्जसं,* थेरीगा॰ 99, *असङ्खतं दुक्खनिरोधसस्सतं, मग्गञ्चिमं अकुटिलमञ्जसं सिवं,* वि॰ व॰ 143; *अञ्जसो निब्बानगामिनिपटिपदाभावतो अमतोगधो मग्गो अरियसच्चन्ति मं अवोचाति सम्बन्धो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 181.

अञ्जस[2] पु॰, [अञ्जस], सरल मार्ग, अकुटिल पथ – *मग्गो पज्जो पथो पन्थो अञ्जसं वटुमायनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.29; *सुत्वान पटिपज्जिस्सं, अञ्जसं अमतोगधं,* थेरगा॰ 179; *अद्दसं ख्वाहं, भिक्खवे, पुराणं मग्गं पुराणं अञ्जसं पुब्बकेहि सम्मासम्बुद्धेहि अनुयात'न्ति,* मि॰ प॰ 205; – **सा** क्रि॰ वि॰ [अञ्जसा], ठीक तरह से, उचित रूप से, सरल मार्ग से – *उजुमग्गस्सेतं वेवचनं अञ्जसा वा उजुकमेव एतेन आयन्ति आगच्छन्तीति अञ्जसायनो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.300; – **सापरद्ध** त्रि॰, सीधे मार्ग से लुप्त, सरल-पथ से भ्रष्ट – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विपथपक्खन्दो लोकसन्निवासो अञ्जसापरद्धो,* पटि॰ म॰ 117; *विपथपक्खन्दो अञ्जसापरद्धो महोघपक्खन्दो,* उदा॰ अट्ठ॰ 114; – **सायन** पु॰, सीधा मार्ग, सरल पथ – **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्जसा वा उजुकमेव एतेन आयन्ति आगच्छन्तीति अञ्जसायनो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.300.

अञ्जस[3] पु॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम – *अञ्जसो नाम खत्तियो,* अप॰ 1.42.

अञ्जापेसि √अञ्ज, प्रेर॰ अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अभ्यञ्जन करवाया, किसी के द्वारा लेप करवाया – *भद्दे, इमं भेसज्जं अञ्जेही'ति अञ्जापेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.13.

अञ्जित त्रि॰, अञ्जति का भू॰ क॰ कृ॰ [अक्त], अञ्जन से पोता हुआ, अञ्जन से लिप्त, अञ्जन लगाया हुआ – **तानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सुअञ्जितानि अक्खीनि हदयमंसञ्च उब्बटेत्वा दिन्नं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.86; *अञ्जितक्खा मनोरमा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.378.

अञ्ञ[1] त्रि॰, [अन्य], 1. दूसरा, भिन्न, और, कोई और दूसरा, अपेक्षाकृत दूसरा, किसी एक से भिन्न, किसी अन्य की अपेक्षा असाधारण या नया – **ञ्ञं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदमेव सच्चं मोघमञ्ञं,* अ॰ नि॰ 3(2).164; *अञ्ञदेव कायदण्डं, अञ्ञं वचीदण्डं, अञ्ञं मनोदण्ड'न्ति,* म॰ नि॰ 2.39; *अञ्ञदेव उप्पज्जति अञ्ञं निरुज्झति,* स॰ नि॰ 1(2).84; – **ञ्ञे** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये चञ्ञे सन्ति पाणिनो,* सु॰ नि॰ 203; 2. वाक्य में पुनरावृत्ति होने पर विपरीत अर्थ का सूचक – *अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरं,* म॰ नि॰ 2.97; – **ञ्ञा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञाव सञ्ञा भविस्सति अञ्ञो अत्ता,* दी॰ नि॰ 1.166; – **ञ्ञो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञो हि तिण्णस्स मनो, अञ्ञो होति पारेसिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.202; – **खन्तिक** त्रि॰, दूसरों की दृष्टियों या मतों पर मौन सहमति देने वाला, मतान्तरों के प्रति सहिष्णु – **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुज्जानं खो एतं, पोट्ठपाद, तया अञ्ञदिट्ठिकेन अञ्ञखन्तिकेन ... अञ्ञत्राचरियकेन सञ्ञापुरिसस्स अत्ता'ति,* दी॰ नि॰ 1.166; – **गतिक** त्रि॰, दूसरों का आश्रय लेने वाला, परावलम्बी, पराश्रयी – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अत्तगतिकाव होथ, मा अञ्ञगतिका,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.235; – **गोचर** त्रि॰, [अन्यगोचर], अन्य आलम्बन को ज्ञान का विषय बनाने वाला, अन्यत्र विचरण करने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मयं खो, काक,*

अञ्ञगोचरा त्वम्पि अञ्ञगोचरो, जा॰ अट्ठ॰ 2.300; - **जन** पु॰, [अन्यजन], पृथक्जन, साधारण लोग, दूसरे लोग, अज्ञजन, अशिष्टजन, अभद्र लोग - **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मिस्सो अञ्ञजनेन वेदगू,* उदा॰ 176; *(अत्तनो हिताहितं न जानातीति अञ्ञो ... तेन अञ्ञेन जनेन मिस्सो सहचरणमत्तेन मिस्सो),* उदा॰ अट्ठ॰ 345; - **जाति** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अन्यजाति], दूसरी योनि, दूसरा जन्म - *जातो वा अञ्ञजातिया,* अप॰ 2.21; - **जातिक** त्रि॰, [अन्यजातिक], दूसरे प्रकार की योनि में जन्म लेने वाला, दूसरे प्रकार की मानसिक प्रकृति अथवा स्वभाव वाला - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ये ते किलेसा अञ्ञजातिका अञ्ञविहितका,* महानि॰ 193; *अञ्ञजातिकाति अञ्ञसभावा,* महानि॰ अट्ठ॰ 283; - **ञोञ्ञं** क्रि॰ वि॰, [अन्यान्यं], आपस में, परस्पर में, एक दूसरे को - *अञ्ञोञ्ञं मुसला हन्त्वा सम्पत्ता यमसाधनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.259; - **तत्था** निपा॰, अञ्ञ + तत्था, दूसरे प्रकार से, दूसरी तरह से - *एवं यतत्था अञ्ञतत्था ...,* सद्द॰ 3.805; तुल॰ क॰ व्या॰ 400; - **तम** त्रि॰, ष॰/सप्त॰ वि॰ वाले नामपदों के साथ प्रयुक्त, [अन्यतम], अनेकों के बीच में कोई एक - *अञ्ञतर-अञ्ञतमसद्दा अनियमत्था,* सद्द॰ 1.266; तुल॰ रू॰ सि॰ 207; क॰ व्या॰ 180; - **तर** त्रि॰, सर्व की तरह शब्दरूप, ष॰ वि॰ या सप्त॰ वि॰ वाले नाम के साथ प्रयुक्त, [अन्यतर], 1. दो में से कोई एक व्यक्ति या वस्तु - **रं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *द्विन्नमञ्ञतरं अत्वा, मुत्तो गच्छेय्य पब्बतं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.226; - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जयो, महाराज, पराजयो च, आयूहतं अञ्ञतरस्स होति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.175; 2. बहुत से लोगों के बीच में कोई एक सुनिश्चित व्यक्ति या वस्तु, **क.** *ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले पदों के साथ - अविहेठयं अञ्ञतरम्पि तेसं,* सु॰ नि॰ 35; *अनिकामयं अञ्ञतरम्पि तेसं,* सु॰ नि॰ 212; - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सोहं सतं अञ्ञतरोस्मि हंस,* जा॰ अट्ठ॰ 3.435; **ख.** *सत्त्व॰ के विशे॰ के रूप में* - **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञतरस्मिं रुक्खमूले ससीसं पारुतं निसिन्नं,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 149; *अथ खो अञ्ञतरो हुहुङ्कजातिको ब्राह्मणो येन भगवा तेनुपसङ्कमि,* महाव॰ 3; *इमस्साहं अञ्ञतरं सामञ्ञङ्गन्ति वदामि,* इतिवु॰ 74; 3. अन्य, सर्वथा भिन्न, कोई दूसरा - *इतरोञ्ञतरा एको अञ्ञो,* अभि॰ प॰ 717; *अथ खो अञ्ञतरो भिक्खु येनञ्ञतरो भिक्खु तेनुपसङ्कमि,* स॰ नि॰ 2(2).191; *अथ खो अञ्ञतरो सत्तो ... सुञ्ञं ब्रह्मविमानं उपपज्जति,* दी॰ नि॰ 1.15; स॰ उ॰ प॰ में आमिस॰, काय॰, ञात॰, थेरगा॰, देव॰, वेदना॰, सिप्प॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **त्थेर** पु॰, विभिन्न स्थविर - *छ कनिट्ठभातरो अञ्ञतरत्थेरा अहेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.8; - **त्थेरित्थिवत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ की एक कथा का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.359-60; - **त्थेरुपासकवत्थु** नपुं॰, उपरिवत्, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.151-53, - **कुटुम्बिकावत्थु** नपुं॰, उपरिवत्, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.161-62; - **कुलदारिकवत्थु** नपुं॰, उपरिवत्, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.150-151; - **कुलपुत्तवत्थु** नपुं॰, उपरिवत्, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.202-3; - **पुरिसवत्थु** नपुं॰, उपरिवत्, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.251-60; - **ब्राह्मणवत्थु** नपुं॰, उपरिवत्, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.166-67; 2.196-97; - **भिक्खुवत्थु** नपुं॰, उपरिवत्, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.159-160, 1.164-169; - **मनुस्सवत्थु** नपुं॰, उपरिवत्, र॰ वा॰ 1.31-32.

अञ्ञ[2] त्रि॰, [अज्ञ], अज्ञ, मूर्ख - **ञ्ञो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अत्तनो हिताहितं न जानातीति अञ्ञो, अविद्वा बालोति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 345, द्रष्ट॰ अञ्ञ-जन.

अञ्ञतित्थिय 1. त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अन्यतीर्थिक], बौद्धेतर धार्मिक सम्प्रदायों से सम्बद्ध, विमुक्ति के बौद्धेतर मार्ग का अनुयायी - **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अञ्ञतित्थिया समणब्राह्मणपरिब्बाजका,* स॰ नि॰ 2(2).303; *अञ्ञतित्थिया परिब्बाजका अत्तनि समनुपस्सेय्युं* दी॰ नि॰ 3.85, *अञ्ञतित्थिया, भिक्खवे, परिब्बाजका अन्धा अचक्खुका; अत्थं न जानन्ति,* उदा॰ 146; 2. सत्त्व॰, बौद्धेतर धर्माचार्य - *मज्हिं, भन्ते, अञ्ञतित्थिया सावकं लभित्वा केवलकप्पं वेसालिं पटाकं परिहरेय्युं,* अ॰ नि॰ 3(1).30; - **यानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *समणो हि, भन्ते, गोतमो मायावी आवट्टनिं मायं जानाति याय अञ्ञतित्थियानं सावके आवट्टेती'ति,* म॰ नि॰ 2.43; तुल॰ तित्थिय, नानातित्थिया, पुथुतित्थिया; - **पुब्ब** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जो बौद्धधर्म में दीक्षित होने से पूर्व अन्य धर्मों का अनुयायी था और जिसके लिए उपसम्पदा से पूर्व परिवास का नियम प्रज्ञप्त था - **ब्बो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेन खो पन समयेन यो सो अञ्ञतित्थियपुब्बो ... तयेव तित्थायतनं सङ्कमि,* महाव॰ 87; *यो खो, सभिय, अञ्ञतित्थियपुब्बो इमस्मिं धम्मविनये आकङ्खति पब्बज्जं,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 164; - **पुब्बकथा** स्त्री॰, महाव॰ की एक कथा का शीर्षक, महाव॰ 87-90; - **सरण** नपुं॰, बौद्धेतर धार्मिक-सम्प्रदायों का आश्रयग्रहण - **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञतित्थियसरणं भिन्दित्वा बुद्धं सरणं अगमंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.104.

अञ्ञतो प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अन्यतः], **क.** किसी अन्य कारण से, किसी भी दूसरे तरीके से - *न ब्राह्मणो अञ्ञतो*

सुद्धिमाह, सु॰ नि॰ 796; *न अञ्ञतो भिक्खु सन्तिमेसेय्य*, सु॰ नि॰ 925; **ख.** दूसरी दिशा की ओर, दूसरे स्थान की तरफ – *अञ्ञतो ओलोकेन्तो अपरं निप्फलं अम्बरुक्खं दिस्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.333; **ग.** दूसरे प्रकार से, अन्यथा रूप से, अन्य दृष्टिकोण से – *सब्बं धम्मं परिञ्ञाय सब्बनिमित्तानि अञ्ञतो पस्सति*, स॰ नि॰ 2(2).56.

अञ्ञत्थ[1] सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, [अन्यत्र], **1.** किसी दूसरे स्थान पर, अन्य स्थान में, किसी भी दूसरी जगह में – *किं तया अञ्ञत्थापि एवरूपो पासादो कतपुब्बो*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.74, *अञ्ञत्थ पन उपसग्गवसेन संभावना परिभावना विभावनाति एवं अञ्ञथापि अत्थो होति*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 207, *अञ्ञत्थ वसि सो देसो तेन तन्नामको अहु*, म॰ वं॰ 22.14; **2.** किसी अन्य स्थान की ओर – *त्वं अत्तनो पुत्तके गहेत्वा अञ्ञत्थ याहि*, जा॰ अट्ठ॰ 2.128; *इतो अञ्ञत्थ गच्छामा'ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.122.

अञ्ञत्थ[2] त्रि॰, [अन्यार्थ, अन्यार्थप्रधान], 1. स॰ प॰ से भिन्न पदों के अर्थ की प्रधानता वाला ब॰ स॰ – **त्थेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञपदत्थेसु बहुब्बीहि*, क॰ व्या॰ 330; **2.** कोई दूसरा पदार्थ, कोई अन्य अभीप्सित वस्तु या प्रयोजन – **त्थाय** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या सति पच्चुपट्ठिता होति, सा न अञ्ञत्थाय*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).261.

अञ्ञत्र निपा॰, [अन्यत्र], 1. क्रि॰ वि॰ और जगह, दूसरे स्थान पर – *किं पन त्वं, आवुसो उपनन्द, अञ्ञत्र वस्संवुट्ठो, अञ्ञत्र चीवरभागं सादियी'ति*, महाव॰ 392, *ये च अञ्ञत्र पटिसन्धिं देन्ति, सो अद्धा अत्थि*, मि॰ प॰ 49, *यदा बोधिसत्तो दुक्करकारिकं अकासि, नेतादिसो अञ्ञत्र आरम्भो अहोसि* ..., मि॰ प॰ 230; **2.** क्रि॰ वि॰, सिवाय, के अतिरिक्त, के बिना – *अञ्ञत्रापि धम्मा कम्मं करोन्ति, अञ्ञत्रापि विनया कम्मं करोन्ति, अञ्ञत्रापि सत्थुसासना कम्मं करोन्ति*, महाव॰ 412; *यस्मा च खो, कस्सप, अञ्ञत्रेव इमाय मत्ताय अञ्ञत्र इमिना तपोपक्कमेन सामञ्ञं वा होति ब्रह्मञ्ञं वा दुक्करं सुदुक्करं*, दी॰ नि॰ 1.152; आवुसो, आनन्द, अञ्ञत्रेव भगवता, अञ्ञत्र, भिक्खुसङ्घा उपोसथं करिस्सामि, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.82; **3.** अन्यथा, दूसरी अवस्था में या स्थिति में – *एवरूपो, भिक्खवे, पुग्गलो ... पयिरुपासितब्बो अञ्ञत्र अनुदया अञ्ञत्र अनुकम्पा*, अ॰ नि॰ 1(1).148; *किमञ्ञत्र, भिक्खवे, नन्दो इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो, भोजने मत्तञ्ञू, जागरियं अनुयुत्तो*, अ॰ नि॰ 3(1).15, तुल॰ अञ्ञत्थ; – **गति** स्त्री॰, [अन्यत्रगति], दूसरे जन्म में संक्रमण, दूसरे अस्तित्व में गमन, विवश होकर दूसरे जन्म में संक्रमण – *पकतियापि च परलोकं गता नाम अञ्ञत्रगतिवसा पुन तेनेव सरीरेन नागच्छन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 2.203, पाठा॰ अञ्ञत्थ; – **योग / त्रायोग** त्रि॰, दूसरे धार्मिक-सम्प्रदाय का आचरण करने वाला, अन्य धार्मिक-सम्प्रदाय के मन्तव्यों का आसेवन करने वाला – **गेन** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो तया दुज्जानो अञ्ञदिट्ठिकेन अञ्ञखन्तिकेन अञ्ञरुचिकेन अञ्ञत्रयोगेन*, म॰ नि॰ 2.164, *सञ्ञा पुरिसस्स अत्ता'ति वा, अञ्ञाव सञ्ञा अञ्ञो अत्ताति वा ति ? दुज्जानं खो एतं, पोट्ठपाद, तया अञ्ञदिट्ठिकेन ... अञ्ञत्रयोगेन*, दी॰ नि॰ 1.166; पाठा॰ अञ्ञत्थ-योग, अञ्ञत्त-पयोग.

अञ्ञथत्त नपुं॰, अञ्ञथा का भाव॰ [अन्यथात्व], **शा॰ अ॰** भिन्नता, विशिष्टता, परिवर्तन, रूपान्तरण, अन्यथाभाव, विपरिणाम – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न खो पन मयं पस्साम आयस्मतो उपसेनस्स कायस्स वा अञ्ञथत्तं इन्द्रियानं वा विपरिणामं*, स॰ नि॰ 2(2).44; *अञ्ञथत्तन्ति अञ्ञथाभावं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.15; *कुमारिया विपरिणामञ्ञथाभावा जीवितस्सपि सिया अञ्ञथत्तं*, म॰ नि॰ 2.319; **ला॰ अ॰** चित्त का सम्मोह, विषाद, ग्लानि, दुःख, अनुताप, पश्चाताप आदि में या दूसरे रूप में परिवर्तन – *तत्थ अप्पसन्ना चेव नप्पसीदन्ति, पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्तं होति*, अ॰ नि॰ 2(1).61; – **त्ताय** नपुं॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ ख्वेतं, भिक्खवे, अप्पसन्नानञ्चेव अप्पसादाय, पसन्नानञ्च एकच्चानं अञ्ञथत्ताया'ति*, महाव॰ 51; स॰ उ॰ प॰ में चित्त॰, पसाद॰, भाव॰, लक्खण॰, विपरिणाम॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अञ्ञथा निपा॰, [अन्यथा], **1.** नहीं तो, वरना, भिन्न रूप से, भिन्न ढंग से – *येन येन हि मञ्ञन्ति, ततो तं होति अञ्ञथा*, सु॰ नि॰ 593; 762; *तस्स तं रूपं विपरिणमति अञ्ञथा होति*, स॰ नि॰ 2(1).16; *अहोसि पुब्बे ततो मे अञ्ञथा, इच्चेव मे विमति एत्थ जाता*, जा॰ अट्ठ॰ 3.460; **2.** अननुकूल, अप्रिय, अरुचिकर या विपरीत रूप में – *यञ्च मे अय्यपुत्तस्स, मनो हेस्सति अञ्ञथा*, जा॰ अट्ठ॰ 5.86; *चित्तस्स अञ्ञथा नत्थि, एसा मे वीरियपारमी*, जा॰ अट्ठ॰ 1.57; **3.** यथार्थता से विपरीत भाव में, अयथार्थ रूप में – *सब्बं तं तथेव होति नो अञ्ञथा, तस्मा तथागतोति वुच्चति*, इतिवु॰ 85; *यो जानं पुच्छितो पञ्हं, अञ्ञथा नं वियाकरे*, जा॰ अट्ठ॰ 3.402; – **थाचरियक** त्रि॰, दूसरे धार्मिक मतवाद के अनुसार आचरण करने वाला, बौद्धेतर धार्मिक सम्प्रदायों के आचार्यों के समीप रहने वाला – **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो तया*

दुज्जानो ... अञ्ञत्रयोगेन अञ्ञथाचरियकेन, म. नि. 2.164; दी. नि. 1.166; पाठा. अञ्ञत्राचरियकेन; – **धम्म** त्रि., भिन्न प्रकृति या स्वभाव वाला – **म्मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कोलियानं लम्बचूळका भटा, अञ्ञथाधम्मोहमस्मी'ति,* स. नि. 2(2).321; – **भाव** पु., [अन्यथाभाव], रूपान्तरण, स्वरूप-परिवर्तन, विपरिणमन, दूसरे रूप में बदलाव, पांच प्रकार के विपर्यासों में से एक – **वो** प्र. वि., ए. व. – *विपल्लासो अञ्ञथाभावो व्यतयो च विपरियियो विपरियासो ...,* अभि. प. 776; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *इत्थभावञ्ञथाभावं, संसारं नातिवत्तति,* इतिवु. 77; *इत्थभावञ्ञथाभावं, अविज्जायेव सा गति,* सु. नि. 734; स. उ. प. में द्रष्ट. पसादञ्ञथाभाव के अन्त.; – **भावी** त्रि., [अन्यथाभावी], रूपान्तरण को प्राप्त, विपर्यस्त, दूसरे स्वरूप में विपरिवर्तित, दूसरी तरह से बदल जाने वाला – *चक्खुं, भिक्खवे, अनिच्चं विपरिणामि अञ्ञथाभावी,* स. नि. 2(1).218; *अञ्ञथाभावी भवसत्तो लोको, भवमेवाभिनन्दति,* स. नि. 2(2).21; उदा. 105; स. उ. प. में द्रष्ट. अनञ्ञथाभावी; – **सञ्ञी** त्रि., [अन्यथासञ्ज्ञी], विपरीत-रूप में विचार या दृष्टिकोण रखने वाला, विपरीत-मतवादी, अन्यमतवादी – **ञ्ञिनो** पु., प्र. वि., ब. व. – *अञ्ञथासञ्ञिनोपि हेत्थ, चुन्द, सन्त्येके सत्ता,* दी. नि. 3.103.

अञ्ञदत्तिक त्रि., [अन्यदत्तक], किसी अन्य के द्वारा प्रदत्त, दूसरे के द्वारा दिया हुआ – **कं** नपुं., प्र./द्वि. वि., ए. व. – *पटिसङ्घानरहितो पच्चयं अञ्ञदत्तिकं,* सद्धम्मो. 394.

अञ्ञदत्थ पु., [अन्यार्थ], दूसरा प्रयोजन, अन्य लक्ष्य, दूसरा लाभ – *एतम्पि दिस्वा विरमे कथोज्जं, न हञ्ञदत्थत्थिपसंसलाभा,* सु. नि. 834.

अञ्ञदत्थिक त्रि., [अन्यार्थिक], किसी अन्य के लिये निर्धारित, किसी दूसरों को दी जानी वाली – **केन** पु., तृ. वि., ए. व. – *भिक्खुनियो अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन ... अञ्ञं चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तिय'न्ति,* पाचि. 340.

अञ्ञदत्थु / अञ्ञदत्थुं निपा., [अन्यमस्तु, आस्तां तावत्], **शा. अ.** रहने भी दो, **प्रयोगगत अर्थ** – **क.** (नियमतः 'एव' एवं 'व' के साथ ही प्रयुक्त), केवल, पूर्णरूप से, निश्चित रूप से – *अञ्ञदत्थु तु तग्घेकंसे ससक्कं चाद्धा कामं जातुचे हवे,* अभि. प. 1140; *अञ्ञदत्थु ममञ्ञेव मञ्ञे अनुजग्घन्ता, न मं कोचि आसनेनपि निमन्तेसि,* दी. नि. 1.79; **ख.** ('एव' के प्रयोग के बिना ही वाक्यों में प्रायः 'खो' के तात्पर्य में प्रयुक्त), कम से कम, निश्चित रूप से – *अञ्ञदत्थु खो दानिमे अञ्ञतित्थिया परिब्बाजका भगवतो भासितं सुस्सूसन्ति,* दी. नि. 3.38; **ग.** (विप. निपा. के रूप में), अन्यथा, इससे विपरीत – *अञ्ञदत्थु समणंयेव गोतमं ओकासं याचन्ति अगारस्मा अनगारियं पब्बज्जाय,* म. नि. 1.238; *न सोभति ... अञ्ञदत्थु गरहं लभति,* ध. प. अट्ठ. 1.218; – **जय** पु., पूर्ण विजय, निश्चित विजय – *निय्यन्ति धीरा लोकम्हा, अञ्ञदत्थुजयं जयं,* स. नि. 3.6; – **दस** त्रि., सब लोगों को तुरन्त देख लेने वाला, प्रत्येक वस्तु को देखने वाला, पूर्ण द्रष्टा – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अहमस्मि ब्रह्मा महाब्रह्मा ... अञ्ञदत्थुदसो वसवत्ती इस्सरो कत्ता,* दी. नि. 1.16; *सदेवमनुस्साय तथागतो अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थुदसो वसवत्ती,* अ. नि. 1(2).28; इतिवु. 85; *अञ्ञदत्थूति एकंसत्थे निपातो ... सब्बं तं हत्थतले आमलकं विय पस्सतीति दस्सो,* इतिवु. अट्ठ. 321; तुल. रामायण 7.35; – **हर** त्रि., बिना दिये हुए केवल लेने ही वाला, पूर्णतः हरण करने वाला – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अञ्ञदत्थुहरो अमित्तो मित्तपतिरूपको वेदितब्बो,* दी. नि. 3.141; – **रा** ब. व. – *अञ्ञदत्थुहरा सन्ता, ते वे राज पिया होन्ति,* जा. अट्ठ. 6.208.

अञ्ञदा निपा., [अन्यदा, अ. मा. अण्णया], **शा. अ.** किसी दूसरे समय में, **प्रयोगगत अर्थ क.** पूर्वकाल में, प्राचीन समय में – *न हि मे अञ्ञदा ताय नत्थिपूवा नाम पक्कपुब्बा'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.354; *उदरवातो मे समुट्ठितो'ति; अञ्ञदापि समुट्ठितपुब्बो, भन्ते'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.357; **ख.** एक बार फिर, पुनः एक बार – *यदा अञ्ञदापि एवरूपो पञ्हो आगच्छेय्य,* स. नि. 2(2).278; पाठा. अञ्ञथापि.

अञ्ञदिट्ठिक त्रि., ब. स. [अन्यदृष्टिक], बुद्धधर्म से भिन्न धर्म में श्रद्धा रखने वाला – **केन** पु., तृ. वि., ए. व. - *तया अञ्ञदिट्ठिकेन अञ्ञखन्तिकेन अञ्ञरुचिकेन अञ्ञयोगेन ...,* दी. नि. 1.166; म. नि. 2.164.

अञ्ञपदत्थ पु., ब. स. [अन्यपदार्थ], ब. स. के व्याख्यान् के सन्दर्भ में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द, ऐसा समास, जिसमें समास से बाहर के अथवा अन्य पदों के अर्थ प्रधान रहते हैं – **त्थेसु** सप्त. वि., ब. व. – *अञ्ञपदत्थेसु बहुब्बीहि,* क. व्या. 330; मो. व्या. 2.188-189; 3.86; तुल. कातन्त्र 2.5; – **पधान** त्रि., [अन्यपदार्थप्रधान], ब. स., जिसमें अन्य पदों के अर्थों की प्रधानता रहती है, रू. सि. 337.

अञ्ञपुरिससारत्त त्रि., अन्य पुरुष के प्रति आकृष्ट – **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *कुद्धा वा अञ्ञपुरिससारत्ता वा हुत्वा सब्बमेतं हननादिं करेय्युं,* जा. अट्ठ. 5.447.

अञ्ञभागीय त्रि., [अन्यभागीय], दूसरे व्यक्ति या वस्तु से सम्बन्धित – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स ... उपादाय पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेथा'ति,* पारा. 262.

अञ्ञमञ्ञ त्रि., [अन्योन्य], 1. एक दूसरे को, आपस में, परस्पर में **क.** कर्म के रूप में – **ञ्ञं** द्वि. वि., ए. व. – *ते न सक्कोम सञ्ञापेतुं, अञ्ञमञ्ञं मयं उभो,* सु. नि. 602; *भिक्खू अञ्ञमञ्ञं आवुसोवादेन समुदाचरन्ति,* दी. नि. 2.115; **ख.** क्रि. रू. एवं ना. रू. से पूर्व क्रि. वि. के रूप में – *तुम्हे अञ्ञमञ्ञं किं होथा'ति पुट्ठा ...,* जा. अट्ठ. 4.103; *अञ्ञमञ्ञं अच्चयं देसेत्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.36; 2. एक के बाद एक करके, विविध रूप से, भिन्न प्रकार से – *अञ्ञमञ्ञं कायसमाचारं ... वचीसमाचारं ... मनोसमाचारं ... तञ्च अञ्ञमञ्ञं अत्तभावपटिलाभ'न्ति,* म. नि. 3.94; तुल. अञ्ञोञ्ञ; – **ञ्ञूपत्थम्भ** पु., [अन्योन्योपस्तम्भ], पारस्परिक सहारा – **म्भेन** तृ. वि., ए. व. – *अरञ्ञे जातरुक्खापि सम्बहुला अञ्ञमञ्ञूपत्थम्भेन ठिता साधुयेव,* जा. अट्ठ. 1.314; – **ञ्ञूपत्थम्भक** त्रि., [अन्योन्योपस्तम्भक], परस्पर में एक दूसरे को सहारा देने वाला – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *अञ्ञमञ्ञूपत्थम्भकं तिदण्डकं विय,* विसुद्धि. 2.164; – **ञ्ञूपनिस्सित** त्रि., एक दूसरे पर निर्भर, परस्पर एक दूसरे पर आश्रित – **त्ता** प्र. वि., ब. व. – *यञ्चेव तत्थ नामं, यञ्चेव रूपं, उभोपेते अञ्ञमञ्ञूपनिस्सिता,* मि. प. 48; – **खादिका** स्त्री., परस्पर में एक दूसरे का भक्षण – *अञ्ञमञ्ञखादिका एत्थ, भिक्खवे, वत्तति दुब्बलखादिका,* म. नि. 3.208; *अञ्ञमञ्ञखादिका ति अञ्ञमञ्ञखादनं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.156; – **गुत्त** त्रि., [अन्योन्यगुप्त अन्योन्यगुप्ता], परस्पर में संरक्षित, पारस्परिक रूप से रक्षित, अन्योन्याश्रय रूप से रक्षित – *एवं मयं अञ्ञमञ्ञं गुत्ता अञ्ञमञ्ञं रक्खिता सिप्पानि चेव दस्सेस्साम,* स. नि. 3(1).244; – **चतुक्क** नपुं., विभ. के एक खण्डविशेष का एक शीर्षक, विभ. 177–186; – **चित्त** त्रि., चञ्चल-चित्त, ढुलमुल चित्त, लघुचित्त, चलचित्त – **त्तानं** ष. वि., ब. व. – *न हि अञ्ञञ्ञचित्तानन्ति अञ्ञेनञ्ञेन चित्तेन समन्नागतानं, लहुचित्तानन्ति अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.51–52; – **पच्चय** 1. त्रि., [अन्योन्यप्रत्यय], परस्पर में एक दूसरे के साथ कार्य-कारण-भाव से जुड़े हुए – **या** प्र. वि., ब. व. – *भावनाय चत्तारिन्द्रियानि तदन्वया होन्ति, सहजातपच्चया होन्ति अञ्ञमञ्ञपच्चया होन्ति,* पटि. म. 235; 2. पु., परस्पर-निर्भरता – *अञ्ञमञ्ञं उप्पादनुपत्थम्भनभावेन उपकारको धम्मो अञ्ञमञ्ञपच्चयो,* विसुद्धि. 2.164; 3. पट्ठान-प्रकरण में प्रतिपादित चौबीस प्रत्ययों के बीच सातवां पच्चय, द्रष्ट. पच्चय के अन्त.; – **पच्चयता** स्त्री. भाव., परस्पर-सापेक्षता – *सङ्खारपच्चयापि अविज्जा'ति अञ्ञमञ्ञपच्चयता दस्सिता,* विभ. अट्ठ. 197; – **भोजन** त्रि., ब. स. [अन्योन्यभोजन], परस्पर में एक दूसरों को खाने वाले – **नानं** पु., ष. वि., ब. व. – *तेसं अञ्ञमञ्ञभोजनानं वीतिहरणं सक्खिकं अत्तनो पच्चक्खं कत्वा अद्दस,* जा. अट्ठ. 6.183; – **लग्ग** त्रि., [अन्योन्यलग्न], एक दूसरे के साथ संलग्न या जुड़ा हुआ – *परम्परासंसत्ताति अञ्ञमञ्ञं लग्गा,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.298; पाठा. अञ्ञमञ्ञं लग्गा; – **वचन** नपुं., [अन्योन्यवचन], एक दूसरे के लिए हितकारक वचन – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *एवं संवद्धा हि तस्स भगवतो परिसा यदिदं अञ्ञमञ्ञवचनेन अञ्ञमञ्ञवुट्ठापनेनाति,* पारा. 278; – **वुट्ठापन** नपुं., [अन्योन्योत्थापन], परस्पर में एक दूसरे को प्रबोधन या उद्बोधन – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *यदिदं अञ्ञमञ्ञवचनेन अञ्ञमञ्ञवुट्ठापनेनाति,* पारा. 278; – **वेवचन** नपुं., आपस में पर्यायवाची – *आरा दूरे ति अञ्ञमञ्ञवेवचनं,* जा. अट्ठ. 4.32; *कुहिं गता कत्थ गताति अञ्ञमञ्ञवेवचनानि,* जा. अट्ठ. 3.190.

अञ्ञमोक्ख त्रि., [अन्यमोक्ष], किसी अन्य की सहायता द्वारा मुक्ति प्राप्त करने वाला – **क्खा** पु., प्र. वि., ब. व. – *ते दुप्पमुञ्चा न हि अञ्ञमोक्खा,* सु. नि. 779; *न हि अञ्ञमोक्खाति अञ्ञेन च मोचेतुं न सक्कोन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.211.

अञ्ञरुचिक त्रि., [अन्यरुचिक], भिन्न रुचियों वाला, भिन्न मनोवृत्ति वाला – **केन** पु., तृ. वि., ए. व. – *दुज्जानं अञ्ञदिट्ठिकेन अञ्ञखन्तिकेन अञ्ञरुचिकेन अञ्ञत्रायोगेन अञ्ञत्राचरियकेन ...,* दी. नि. 1.166.

अञ्ञवादक त्रि., पूछे गये प्रश्न से बचकर कोई अन्य बात करने वाला, सङ्घ में उठाये मूल मुद्दे से हटकर इधर-उधर की बात करने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अञ्ञवादको नाम सङ्घमज्झे वत्थुस्मिं वा आपत्तिया वा अनुयुञ्जीयमानो तं न कथेतुकामो तं न उग्घाटेतुकामो अञ्ञेनञ्ञं पटिचरति – को आपन्नो, किं आपन्नो किस्मिं आपन्नो, कथं आपन्नो, कं भणथ, किं भनथा'ति, एसो अञ्ञवादको,* पाचि. 56; – **पद** नपुं., पाचि. के एक खण्ड का शीर्षक, पाचि. 54–57.

अञ्ञवादी त्रि., [अन्यवादिन्], बौद्धेतर-सिद्धान्त का प्रतिपादक – **दिनं** पु., द्वि॰ वि., ए॰ व॰ *इतो बहिद्धा पुथु अञ्ञवादिनं,* थेरगा॰ 86.

अञ्ञविहित / अञ्ञाविहित त्रि., [अन्यविहित], दूसरे विचारों में डूबा हुआ, दूसरे के विचारों में निमग्न, दूसरी चीजों के बारे में विचार करने वाला अन्यमनस्क – **स्स** पु., ष॰ वि., ए॰ व॰ – *तस्स अञ्ञविहितस्स एको सुनखो तं आदाय पलायि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.76; – **ता** स्त्री., प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *अञ्ञविहिता सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा, उम्मत्तिकाय, आदिकम्मिकायाति,* पाचि॰ 367.

अञ्ञसत्थारुद्देस पु., अन्य शास्ता का ग्रहण या स्वीकरण, छः प्रकार के गम्भीर अपराधों में से एक – **सेन** तृ॰ वि., ए॰ व॰ – *अञ्ञसत्थारुद्देसेन सह छ ठानानि न करोति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 150 ≠ *अपगतकोतूहलमङ्गलिको जीवितहेतुपि न अञ्ञं सत्थारं उद्दिसति,* मि॰ प॰ 106.

अञ्ञसत्थु पु., कर्म॰ स॰ [अन्यशास्तृ], दूसरा शास्ता या मार्गदर्शक – **रं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *भवन्तरेपि हि अरियसावको अञ्ञसत्थारं उद्दिसतीति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).144.

अञ्ञसमान त्रि., [अन्यसमान], **शा॰ अ॰** दूसरे के समान, **ला॰ अ॰** भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्तों में समान रूप से प्राप्त स्पर्श आदि तेरह चैतसिक, जिनमें सात सब्बचित्तसाधारण तथा शेष छः प्रकीर्णक हैं – **ना** पु., प्र॰ वि., ब॰ व॰ – *तेरसञ्ञसमाना च, चुद्दसाकुसला तथा,* अभि॰ ध॰ स॰ 9.

अञ्ञसित त्रि., [अन्याश्रित], किसी अन्य पर निर्भर या आश्रित, किसी दूसरे पर अवलम्बित – **तं** पु., द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *वदन्ति ते अञ्ञसितं कथोज्जं,* सु॰ नि॰ 831; – **ता** पु., प्र॰ वि., ब॰ व॰ – *अञ्ञसिता कथोज्जन्ति ते अञ्ञमञ्ञं सत्थारादिं निस्सिता कलहं वदन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.332.

अञ्ञा स्त्री., [आज्ञा], अर्हत्वफल के क्षण में प्राप्य सम्यक्-ज्ञान – *अञ्ञा तु अरहत्तं च,* अभि॰ प॰ 436; – **ञ्ञाय** तृ॰ वि., ए॰ व॰ – *अञ्ञाय निब्बुता धीरा तिण्णा लोके विसत्तिकं,* स॰ नि॰ 1(1).28; – **ञ्ञा** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 190; *दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा ति अस्मिंयेव अत्तभावे अरहत्तं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.200; तुल॰ आणा.

अञ्ञाकोण्डञ्ञ / अञ्ञातकोण्डञ्ञ पु., [बौ॰ स॰ आज्ञातकौण्डिन्य], 1. सर्वप्रथम अर्हत्व प्राप्त करने वाले एक स्थविर-शिष्य का नाम, पञ्चवर्गीय भिक्षुओं में से एक, पूर्वकाल में कौण्डिन्य के नाम से विख्यात - **स्स** ष॰ वि., ए॰ व॰ – *इति हिदं आयस्मतो कोण्डञ्ञस्स अञ्ञासिकोण्डञ्ञो त्वेव नामं अहोसि,* महाव॰ 16; स॰ नि॰ 3(2).487; **2**. केवल कोण्डञ्ञ नाम से भी प्रसिद्ध – *कोण्डञ्ञोहं भगवा, कोण्डञ्ञोहं सुगता'ति,* स॰ नि॰ 1(1).224; 3(2).487; थेरगा॰ की गाथा संख्या 673-688 गाथाओं का रचयिता – *तेसु अञ्ञासिकोण्डञ्ञत्थेरो ... अट्ठारसहि ब्रह्मकोटीहि सद्धिं सोतापत्तिफले पतिट्ठासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.90; अप॰ 1.45; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 82; द्रष्ट॰ अञ्ञासिकोण्डञ्ञ.

अञ्ञाचित्त नपुं., [आज्ञाचित्त], अर्हत्वफललक्षण में प्राप्त सम्यक्-ज्ञान के लिये तत्पर चित्त – **त्तं द्वि॰** वि., ए॰ व॰ – *अञ्ञाचित्तं उपट्ठपेन्तीति अञ्ञाय आजाननत्थाय चित्तं न उपट्ठपेन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.298; पाठा॰ अञ्ञा चित्तं.

अञ्ञाण[1] त्रि., निषे., ब॰ स॰ [अज्ञान], न जानने वाला, अज्ञानी, मूर्ख, अविद्याग्रस्त – **णेन** पु., तृ॰ वि., ए॰ व॰ – *बालिसेन अञ्ञाणेन पुरिसेन न सक्का जानितुं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.236; – **णो** पु., प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *बालो अहोसि अञ्ञाणो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.200; – **मनुस्स** पु., [अज्ञानमनुष्य], अज्ञानी मनुष्य – **स्सा** प्र॰ वि., ब॰ व॰ – *इमे अञ्ञाणमनुस्सा ... पाणातिपातं करोन्ता नन्दन्ति तुस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.255.

अञ्ञाण[2] नपुं., ञाण का निषे., तत्पु॰ स॰ [अज्ञान], अविद्या, मोह, ज्ञान का अभाव, ज्ञानाभाव – *मोहोविज्जा तथाञ्ञाणं,* अभि॰ प॰ 168; *यं अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो ...,* पु॰ प॰ 127; – **णाभिभूत** त्रि., [अज्ञानाभिभूत], अज्ञान से ग्रस्त, प्रमादग्रस्त, प्रमादापन्न – **तो** पु., प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *सो अञ्ञाणाभिभूतो नेव बुद्धं उपट्ठहि, न असीति महाथेरे,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.151; – **णुपेक्खा** स्त्री., [अज्ञानोपेक्षा], अज्ञानता के कारण उत्पन्न उपेक्षाभाव – *उप्पज्जति उपेक्खा ति एत्थ उपेक्खा नाम अञ्ञाणुपेक्खा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.196; – **क** नपुं., अज्ञान, मूर्खता, मोह – **केन** तृ॰ वि., ए॰ व॰ – *अञ्ञाणकेन आपन्नोति,* पाचि॰ 194; *न च तस्स भिक्खुनो अञ्ञाणकेन मुत्ति अत्थि,* पाचि॰ 193; – **करण** त्रि., [अज्ञानकरण], अज्ञान उत्पन्न करने वाले, अविद्याजनक – **णा** पु., प्र॰ वि., ब॰ व॰ – *पञ्चिमे, भिक्खवे, नीवरणा अन्धकरणा अचक्खुकरणा अञ्ञाणकरणा,* स॰ नि॰ 3(1).118; *एवं अञ्ञाणकरणा किलेसा नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.293; – **चरिया** स्त्री., [अज्ञानचर्या], राग, द्वेष एवं मोह भरे चित्त वाली जीवनवृत्ति, पटि॰ म॰ में वर्णित 28 प्रकार की चर्यायों में से एक – *अञ्ञाणचरिया ति, केनट्ठेन अञ्ञाणचरिया? सरागा चरतीति अञ्ञाणचरिया,*

सदोसा चरतीति - अञ्ञाणचरिया ..., पटि॰ म॰ 75-76; - **जातिक** त्रि॰, अज्ञानमयी प्रकृति वाला व्यक्ति, अविद्या-ग्रस्त व्यक्ति - *इधेकच्चो अञ्ञाणजातिको पोसो यावतासीसती ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.342; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अज्ञानता], मूढ़ता, अज्ञानता - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *महासेट्ठि, त्वं अञ्ञाणताय कामगिद्धो हुत्वा घरावासस्स गुणं, पब्बज्जाय च अगुणं कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.195; - **दुक्ख** त्रि॰, [अज्ञानदुःख], मूढ़ता के कारण उत्पन्न दुःख वाला - **क्खा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अदुक्खमसुखावेदना ञाणसुखा अञ्ञाणदुक्खा,* म॰ नि॰ 1.384; - **धम्म** पु॰, अज्ञान से भरी हुई प्रकृति या स्वभाव, अज्ञानियों का धर्म - *मोमूहधम्मो अयं ... अञ्ञाणधम्मो,* महानि॰ 141; - **पकत** त्रि॰, [अज्ञानप्रकृतिक], अज्ञानता के कारण प्रवृत्त - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञाणपकतो पाणं हनेय्य, अदिन्नं आदियेय्य,* कथा॰ 149; - **पक्ख** त्रि॰, [अज्ञानपक्ष], अज्ञानता या मूढ़ता के कारण पापधर्म का पक्ष लेने वाला - **क्खा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ये केचि गन्था इध मोहमग्गा, अञ्ञाणपक्खा ... तथागतं पत्वा न ते भवन्ति,* सु॰ नि॰ 349; - **भावकर** त्रि॰, [अज्ञानभावकर], अज्ञान या मोह की अवस्था को लाने वाला - **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *एवं उत्तमबुद्धीनं नाम विसुद्धचित्तानं बोधिसत्तानं अञ्ञाणभावकरा किलेसा तथि किं लज्जिस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.291; - **मूलप्पभव** त्रि॰, [अज्ञानमूलकप्रभव], अज्ञान के मूल से उत्पन्न होने वाला - **वा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *या काचि कङ्खा ... अञ्ञाणमूलप्पभवा ... सब्बा मया व्यन्तिकता समूलिका,* स॰ नि॰ 1(1).211; - **लक्खण** त्रि॰, [अज्ञानलक्षण], अज्ञान के लक्षण से युक्त, अज्ञान की प्रकृतिवाला - **णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञाणलक्खणा अविज्जा,* विभ॰ अट्ठ॰ 128; - **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मोहो चित्तस्स अन्धभावलक्खणो अञ्ञाणलक्खणो वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 289; - **सुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ के पांच सुत्तों के समूह का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(1).255-257.

अञ्ञाण[3] नपुं॰, [आज्ञान], सुस्पष्ट ज्ञान, अर्हत्वफल के चित्तक्षण का ज्ञान - *हन्द मयं अञ्ञाणत्थम्पि समणे गोतमे ब्रह्मचरियं चराम,* दी॰ नि॰ 3.41; - **कथा** स्त्री॰, कथा॰ की एक वस्तु का शीर्षक, कथा॰ 148-154.

अञ्ञाणी त्रि॰, [अज्ञानी], मूर्ख, अज्ञानी, उद्विग्न - *सो अञ्ञाणी हुत्वा भत्तं भुञ्जितुं असक्कोन्तो ... निपज्जि,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 60; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.59.

अञ्ञात[1] त्रि॰, [अज्ञात], **क**. नहीं जाना हुआ, नहीं समझा हुआ - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बुद्धानञ्हि अञ्ञातं नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.320; *अञ्ञातं ञापनत्थाय ञातं अनुग्गहणत्थाय,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.309-310; - **पुब्ब** त्रि॰, [अज्ञातपूर्व], पूर्वकाल में अज्ञात - **ब्बेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अञ्ञातपुब्बेसु वा, महाराज, सिप्पट्ठानेसु,* मि॰ प॰ 41; **ख**. अपरिचित व्यक्ति - **तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञातानं निवारेता ञातानं पवेसेता,* दी॰ नि॰ 2.65; स॰ नि॰ 2(2).193; अ॰ नि॰ 2(2).242; **ग**. अप्रसिद्ध व्यक्ति, अविख्यात व्यक्ति - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञातो लभते यसं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.186; *अञ्ञातोति अपाकटगुणो अविदित- कम्मावदानो,* तदे॰; - **क** त्रि॰, [अज्ञातक], **क**. अपरिचित व्यक्ति, वस्तु अथवा विषय - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञातकं सामिकेही पदिन्नं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.207; *इध पन भिक्खवे, आवासिका भिक्खू पस्सन्ति आगन्तुकानं भिक्खूनं ... अञ्ञातकं पत्तं, अञ्ञातकं चीवरं,* महाव॰ 173-174; **ख**. वह व्यक्ति, जो सगोत्रीय या सगा-सम्बन्धी न हो, अपने कुल या परिवार का न हो, अबान्धव - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञातको, मोघपुरिस, अञ्ञातिकाय न जानाति पतिरूपं वा अप्पतिरूपं वा,* पारा॰ 315; - **का** ब॰ व॰ - *तं दिस्वा तस्सा अञ्ञातकापि लज्जं दत्वा ... आगच्छिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.127; - **वेस** पु॰, [अज्ञातकवेश], छद्मवेश, कपटवेश - **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञातकवेसेन परिब्बाजकच्छन्नेन पटिवसन्तं दिस्वान ... कासिराजानं एतदवोच,* महाव॰ 465; *अञ्ञातकवेसेन वसन्तस्स पितुनो ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.35; - **सञ्ञी** त्रि॰, [अज्ञातकसंज्ञिन्], किसी परिचित को देखकर उसे अनजान मानने वाला - **ञ्ञी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *ञातके अञ्ञातकसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स,* पारा॰ 329.

अञ्ञात[2] त्रि॰, आ + √ञा, भू॰ क॰ कृ॰ [आज्ञात], अच्छी तरह से जाना या समझा हुआ, सुविज्ञात - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञातमेतं वचनं असितस्स यथातथं,* सु॰ नि॰ 704; *अञ्ञातं भगवा, अञ्ञातं सुगता'ति,* चूळव॰ 286; - **मानी** त्रि॰, [आज्ञातमानिन्], अपने को अधिक ज्ञानी मानने वाला, घमण्ड करने वाला - **नी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनञ्ञाते अञ्ञातमानी होति,* अ॰ नि॰ 2(1).164; *अञ्ञातमानिनो धम्मे,* थेरगा॰ 953.

अञ्ञातावी त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आज्ञातावी], सम्यक्-ज्ञान प्राप्त कर चुका व्यक्ति अर्थात् अर्हत् - **वीनं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *या तेसं अञ्ञातावीनं धम्मानं अञ्ञा पञ्ञा पजानना*

..., ध॰ स॰ 145; - **विन्द्रिय** नपुं॰, [बौ॰ सं॰ आज्ञातावीन्द्रिय], सम्यक्-ज्ञान प्राप्त अर्हत् की इन्द्रिय, अभिधर्म-परिगणित बाईस प्रकार की इन्द्रियों के बीच बीसवीं इन्द्रिय - **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तीणिन्द्रियानि – अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं, अञ्ञिन्द्रियं, अञ्ञाताविन्द्रियं,* दी॰ नि॰ 3.175; स॰ नि॰ 3(2).280; इतिवु॰ 39; पु॰ प॰ 104; ध॰ स॰ 553; नेत्ति॰ 45.

अञ्ञाति पु॰, ञाति का निषे॰ [अज्ञाति], वह, जो अपना कुटुम्बीजन नहीं है, अपना भाई-बन्धु नहीं है, अकुटुम्ब, अबन्धु - **तीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *भिक्खुना नाम ञातीहिपि अञ्ञातीहिपि दिन्नके चत्तारो पच्चये पच्चवेक्खित्वाव परिभोगो कातब्बो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.370; - **का** स्त्री॰, ञातिका का निषे॰ [अज्ञातिका], वह, जिसके पास कुटुम्बजन के रूप में कोई नारी न हो, द्रष्ट॰ अञ्ञातक के अन्त॰.

अञ्ञातु पु॰, [आज्ञातृ], वह, जिसने यथार्थ को अथवा धर्मों की धर्मता को ठीक से जान लिया है, गम्भीर रूप से ज्ञान पा लेने वाला - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञाता विहरिस्सामि,* दी॰ नि॰ 2.211; - **तारो** ब॰ व॰ - *के च धम्मस्स अञ्ञातारो,* म॰ नि॰ 2.394; *देसस्सु भगवा धम्मं अञ्ञातारो भविस्सन्ती'ति,* दी॰ नि॰ 2.31; अ॰ नि॰ 1(1).158; - **काम** त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आज्ञातुकाम], अच्छी तरह से या पूर्ण रूप से जानने की इच्छा रखने वाला - **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञातुकामो परं पञ्हं पुच्छति,* अ॰ नि॰ 2(1).178; *अञ्ञातुकामो परिपुच्छिता अहु,* दी॰ नि॰ 3.118.

अञ्ञातुञ्छ पु॰, अञ्ञाति + उञ्छ [अज्ञात्युञ्छ], अपरिचित अथवा अकुटुम्बी-जनों से प्राप्त भिक्षा, पिण्डपात अथवा आहार - **ञ्छेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञातुञ्छेन यापेन्तं, कामेसु अनपेक्खिनं,* स॰ नि॰ 1(2).255.

अञ्ञादि त्रि॰, [अन्यादृश्], दूसरों के समान, भिन्न प्रकृति वाला - **दि** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञो विय दिस्सती'ति अञ्ञादि, अञ्ञादिक्खो, अञ्ञादिसो,* मो॰ व्या॰ 5.44; तुल॰ क॰ व्या॰ 644.

अञ्ञादिस त्रि॰, [अन्यादृश], अन्य सदृश, दूसरे जैसा, भिन्न प्रकृति वाला, कुछ अलग ढङ्ग का - **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तादिसोव सो भवं गोतमो, नो अञ्ञादिसो,* म॰ नि॰ 2.343; दी॰ नि॰ 1.93; *अयं सीहो वण्णादीहि अम्हेहि समानो, सद्दो पनस्स अञ्ञादिसो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.89; - **ता** स्त्री॰, अन्यादृशता, भिन्नता, परिवर्तित स्वरूपता - **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्स पुरिमभावतो अञ्ञादिसतं दस्सेतुं वुत्तं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 210.

अञ्ञाधिकारवचनारम्भ पु॰, किसी नए विषय की व्याख्या का आरम्भ, नई बात को कहने का प्रारम्भ - **म्भे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अथ इति निपातो अञ्ञाधिकारवचनारम्भे,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.110.

अञ्ञापटिवेध पु॰, [बौ॰ सं॰ आज्ञाप्रतिवेध], पूर्ण-ज्ञान अथवा अर्हत्व के ज्ञान का प्रतिलाभ, अर्हत्व-फल की प्राप्ति - **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमस्मिं धम्मविनये अनुपुब्बसिक्खा अनुपुब्बकिरिया अनुपुब्बपटिपदा न आयतकेनेव अञ्ञापटिवेधो,* चूळव॰ 395; *इति खो, भिक्खवे, यावता सम्मासमापत्ति तावता अञ्ञापटिवेधो,* अ॰ नि॰ 3(1).233.

अञ्ञापदेस पु॰, कर्म॰ स॰ अञ्ञ + अपदेस [अन्यापदेश], दूसरा बहाना, दूसरी पद्धति, अन्य उपदेश-प्रकार - **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *धनियं अतुट्ठब्बेन तुस्समानं अञ्ञापदेसेनेव परिभासति, ओवदति, अनुसासति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.27.

अञ्ञापेक्ख त्रि॰, ब॰ स॰ अञ्ञा + अपेक्ख, [आज्ञापेक्ष], सुस्पष्ट ज्ञान पाने की इच्छा रखने वाला, ज्ञानार्थी - **क्खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं किञ्चि मं सुभद्दो पुच्छिस्सति, सब्बं तं अञ्ञापेक्खोव पुच्छिस्सति, नो विहेसापेक्खो,* दी॰ नि॰ 2.113; - **क्खा** ब॰ व॰ - *ये केचि अञ्ञापेक्खा चतुसच्चं धम्मं सुणन्ति, ते जातिया परिमुच्चन्ति,* मि॰ प॰ 304.

अञ्ञाफल त्रि॰, ब॰ स॰ [आज्ञाफल], पूर्ण-ज्ञान की प्राप्ति कराने वाला या वाली, सम्यक्-ज्ञान की प्राप्ति का फल दिलाने वाला या वाली - **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *समाधि अञ्ञाफलो वुत्तो भगवता,* अ॰नि॰ 3(1).235.

अञ्ञाराधना स्त्री॰, अञ्ञा + आराधना [आज्ञाराधना], अर्हत्वफल का साक्षात्कार, सम्यक्-ज्ञान अथवा अर्हत्व-फल-चित्त की प्राप्ति - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नाहं, भिक्खवे, आदिकेनेव अञ्ञाराधनं वदामि, अपि च, भिक्खवे, अनुपुब्बसिक्खा अनुपुब्बकिरिया अनुपुब्बपटिपदा अञ्ञाराधना होति,* म॰ नि॰ 2.155; *अञ्ञाराधनं अरहत्ते पतिट्ठानं* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.137.

अञ्ञाविमुत्त त्रि॰, [आज्ञाविमुक्त], सम्यक्-ज्ञान अथवा अर्हत्व फल के क्षण में प्राप्य ज्ञान द्वारा विमुक्ति को प्राप्त व्यक्ति - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ततो अञ्ञाविमुत्तस्स, ञाणं वे होति तादिनो,* इतिवु॰ 39; 75; तुल॰ सम्मदञ्ञाविमुत्त.

अञ्ञाविमोक्ख पु॰, [आज्ञाविमोक्ष], अर्हत्व की स्थिति में आस्रवक्षयज्ञान द्वारा प्राप्त विमोक्ष - **क्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञाविमोक्खं पब्रूहि, अविज्जाय पभेदनं,* सु॰ नि॰ 1111; 1113.

अञ्ञाब्याकरण नपुं., पांच प्रकार के व्याकरण (व्याख्यान), स्वयं द्वारा प्राप्त अर्हत्त्वावस्था की घोषणा या व्याख्यान - **णानि** प्र. वि., ब. व. - *पञ्चिमानि, भिक्खवे, अञ्ञाब्याकरणानि* ..., अ. नि. 2(1).111; *अञ्ञाब्याकरणानीति अरहत्तब्याकरणानि,* अ. नि. अट्ठ. 3.41.

अञ्ञासिकोण्डञ्ञ पु., अञ्ञाकोण्डञ्ञ के अन्त. द्रष्ट..

अञ्ञिन्द्रिय नपुं., कर्म. स. [बौ. सं. आज्ञेन्द्रिय], अर्हत-अवस्था के ज्ञान द्वारा प्राप्त इन्द्रिय, अभिधर्म में निर्दिष्ट 22 इन्द्रियों में से एक - **यं** प्र. वि., ए. व. - *तीणिन्द्रियानि - अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं, अञ्ञिन्द्रियं, अञ्ञातावीन्द्रियं,* दी. नि. 3.175; स. नि. 3(2).280; इतिवु. 39; पु. प. 104; विभ. 137; नेत्ति. 15; ध. स. 362.

अञ्ञुद्दिसिक त्रि., [अन्योद्देश्यक], दूसरों को उद्देश्य में रखकर प्रदत्त (वस्तु, परिष्कार) - **केन** पु., तृ. वि., ए. व. - *अञ्ञदत्थिकेन परिक्खारेन अञ्ञुद्दिसिकेन सङ्घिकेन अञ्ञं चेतापेय्य, निस्सग्गियं पाचित्तियं,* पाचि. 340.

अञ्ञेय्य त्रि., आ + √ञा का सं. कृ. [आज्ञेय], अच्छी तरह से जानने योग्य, अर्हत् के ज्ञान द्वारा साक्षात्करणीय - **य्यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *कथं कथं नामायं ... भगवता धम्मो देसितो अञ्ञेय्यो,* अ. नि. 2(2).62; *अञ्ञेय्योति आजानितब्बो,* अ. नि. अट्ठ. 3.116.

अञ्ञोञ्ञ त्रि., [अन्योन्य], पारस्परिक, परस्पर-सापेक्ष - **ञ्ञं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *न एकं वदन्ति नाना वदन्ति विविधं वदन्ति अञ्ञोञ्ञं वदन्ति,* महानि. 214; *पच्चयता अञ्ञोञ्ञं पटिच्च यस्मा समं सह च धम्मे,* विसुद्धि. 2.150; - **निस्सित** त्रि., [अन्योन्याश्रित], परस्पर एक दूसरे पर निर्भर - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *सागारा अनगारा च, उभो अञ्ञोञ्ञनिस्सिता,* इतिवु. 79.

अञ्हमान/अस्नमान त्रि., √अस का वर्त. कृ. आत्मने., भोजन कर रहा, उपभोग कर रहा, खा रहा - **नो** पु., प्र. वि., ब. व. - *यदस्नमानो सुकतं सुनिट्ठितं परेहि दिन्नं पयतं पणीतं,* सु. नि. 243; - **ना** प्र. वि., ए. व. - *धम्मेन लद्धं सतमस्नमाना, न कामकामा अलिकं भणन्ति,* सु. नि. 242.

अटट¹ नपुं., संख्या-विशेष, एक करोड़ की बारह गुनी अथवा दस लाख की बीस गुनी संख्या - *अहहं अबबं चेवाटटं सोगन्धिकुप्पलं,* अभि. प. 475; क. व्या. 397; रू. सि. 401, सद्द. 3.833; 801; *सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति अटटा निरया एवमेको कुमुदो निरयो,* सु. नि. (पृ.) 182.

अटट² पु., एक नरक का नाम - **टो** प्र. वि., ए. व. - *सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति अबबा निरया, एवमेको अटटो निरयो,* स. नि. 1(1).178; अ. नि. 3(2).147.

अटन नपुं., √अट से व्यु., क्रि. ना. [अटन], घूमना, भ्रमण करना, धा. म. 525; - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. [अटनक], इधर-उधर घूमने वाली/वाली, घुमक्कड़, भगोड़ी - *चण्डा अटनका गावी यं पुरे न दुहामसे,* जा. अट्ठ. 5.100; *अटनकाति पलायनसीला,* तदे..

अटनि स्त्री., [अटनि], मञ्च या पर्यङ्क का एक अङ्ग - *मञ्चावयव मञ्चङ्गे त्वटनित्थियं,* अभि. प. 309; - **निं** द्वि. वि., ए. व. - *मञ्चकअटनिं गहेत्वा निपज्जि,* जा. अट्ठ. 2. 279; - **नियं** सप्त. वि., ए. व. - *तिखिणेन सत्थेन तस्स मञ्चवाणं हेट्ठाअटनियं तहं तहं छिन्दि,* ध. प. अट्ठ. 1.133; - **नियो** प्र. वि., ब. व. - *तथा चतस्सो अटनियो,* ध. प. अट्ठ. 2.211.

अटली स्त्री., एक प्रकार के जूते - **लियो** प्र. वि., ब. व. - *अटलियो उपाहना आरुहित्वा,* म. नि. 2.369, पाठा. पटलियो; *अटलियोति गणङ्गणुपाहना,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.289.

अटवी स्त्री., [अटवी], **क.** बड़ा जङ्गल, बीहड़ जङ्गल, महारण्य - *अटवीत्थि महारञ्ञं,* अभि. प. 536; *अन्तरामग्गे च अमनुस्सपरिग्गहिता अटवी अत्थि,* ध. प. अट्ठ. 1.9; - **वियं** सप्त. वि., ए. व. - *अन्तो अटवियं चोरा मनुस्से विलुम्पित्वा पलायिंसु,* जा. अट्ठ. 1.294; **ख.** ब. व. में वनदस्यु या जंगली डाकू के अर्थ में प्रयुक्त - **वियो** प्र. वि., ब. व. - *अटवियो समुप्पन्ना रट्ठं विद्धंसयन्ति तं,* जा. अट्ठ. 6.67; *तत्थ अटवियोति ... अटविचोरा,* जा. अट्ठ. 6.68; - **हि** तृ. वि., ब. व. - *कुपितो अहु पच्चन्तो अटवीहि परन्तिहि,* चरिया. 395; - **विगत** त्रि., [अटविगत], वन में गया हुआ, वन में प्राप्त - *अटविगतं पोथेत्वा पठवियं पातनपच्चामित्तसदिसा जरा,* ध. स. अट्ठ. 361; - **विआरक्खिक** पु., वनरक्षक - *अटविआरक्खकेसु सब्बजेट्ठको हुत्वा ...,* जा. अट्ठ. 2.278; - **चोर** पु., [अटविचोर], वनदस्यु, वन का चोर, अटवी (ख) के अन्त. द्रष्ट.; - **विजनपद** पु., [अटविजनपद], वन्य प्रदेश, जङ्गली जनपद या क्षेत्र - **दं** द्वि. वि., ए. व. - *एकं अटविजनपदं निस्साय अनेकसहस्सइसिपरिवारो वसि,* जा. अट्ठ. 3.408; - **विमज्झ** नपुं., वन का मध्यभाग - **ज्झे** सप्त. वि., ए. व. - *अटविमज्झे पञ्चसता चोरा उट्ठहिंसु,* जा. अट्ठ. 2.278;

यानकं आरोपेत्वा आदाय गच्छन्तो अटविमज्झं पत्तकाले ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.39; – **मुख** नपुं॰, [अटविमुख], जङ्गल का प्रान्तभाग – **खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भरियं गहेत्वा अटविमुखं अभिरुहि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.192; – **खे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अटविमुखे ठत्वा सब्बे मनुस्से सन्निपातापेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.261; – **बिवासी** त्रि॰, [अटविवासिन्], वनवासी, अरण्यवासी, जङ्गल में रहने वाला – **सिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अटवीति चेत्थ अटविवासिनो चोरा वेदितब्बा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.161; – **सङ्कोप** पु॰, अरण्यजनपद में विद्रोह, जङ्गली जातियों के द्वारा उत्पन्न किया गया उपद्रव – *होति सो समयो यं भयं होति अटविसङ्कोपो,* अ॰ नि॰ 1(1).207.

अट्ट¹ पु॰, [अट्ट], ऊंची अटारी, कंगूरा, विशाल भवन, मीनार, जिस पर खड़ा होकर निरीक्षण किया जाता है, अट्टालिका – *अट्टो त्वट्टालको भवे,* अभि॰ प॰ 204; *एककुलस्स अट्टो होति,* पारा॰ 309; *उपासकेन अत्तनो अत्थाय ... अट्टो कारापितो होति,* महाव॰ 185; – **क** पु॰, [अट्टक], पेड़ के ऊपर निर्मित मञ्च, मचान, चिता – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपरिरुक्खे अट्टकं बन्धित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.174; *सरीरं आमकसुसाने अट्टकं आरोपेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.342; – **कलुद्दक** पु॰, [अट्टकलुब्धक], मचान पर बैठने वाला शिकारी – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कदाचि अट्टकलुद्दका रुक्खेसु अट्टकं बन्धन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.174.

अट्ट² पु॰, मुकदमा, अभियोग, विवाद विषय – *युत्यट्टालट्टितेस्वट्टो,* अभि॰ प॰ 1126; *अट्टो उप्पन्नो तं विनिच्छिनाथ,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.175; – **ट्टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सक्का मया इमं अट्टं विनिच्छिनितुं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.225, पाठा॰ अड्डं; स॰ उ॰ प॰ में कूट॰ विमान॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **करण** नपुं॰, **क.** अभियोजन, अभियोगकरण, मुकदमा दायर करना, नालिश करना – *एतेसं अत्थाय अट्टकरणं नत्थि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.196; **ख.** न्यायासन, धर्मासन, न्यायाधिकारी का आसन – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा अट्टकरणे निसिन्नो विपस्सिं कुमारं अङ्के निसीदापेत्वा,* दी॰ नि॰ 2.16, पाठा॰ अत्थकरणे; *इधाहं ... भन्ते, अट्टकरणे निसिन्नो पस्सामि खत्तियमहासालेपि,* स॰ नि॰ 1(1).91, पाठा॰ अत्थकरण, अड्डकरण; – **कारक** पु॰/स्त्री॰, वादी अथवा प्रतिवादी, अभियोजक, अभियुक्त – *राजा अत्तनो अञ्ञाणेन अट्टकारकमनुस्से 'तस्स परिवारा' ति मञ्ञमानो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.218; – **रिका** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उस्सयवादिका नाम अट्टकारिका वुच्चति,* पाचि॰ 300.

अट्ट³ त्रि॰, [आर्त्त], संपीड़ित, उपहत, उत्पीड़ित, कष्ट को प्राप्त – **ट्टो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनम्हि अट्टो ब्यसनंगतो अघावी,* सु॰ नि॰ 699; – **ट्टा** ब॰ व॰ – *मम च पुत्ता अट्टा आतुरा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.262; *स्वाहं अट्टोम्हि दुक्खेन,* वि॰ व॰ 1167; स॰ उ॰ प॰ में इण॰, छात॰, भय॰, वेदन॰, सीत॰, सोक॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰, तुल॰ अट्टित, अद्दित; – **स्सर** पु॰, [आर्त्तस्वर], अत्यन्त कारुणिक स्वर, पीड़ा से आर्त व्यक्ति का स्वर – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा सुदं अट्टस्सरं करोति,* पारा॰ 140; स॰ नि॰ 1(2).232; *सिङ्गाला तस्स तं अट्टस्सरं सुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.256.

अट्टहास पु॰, [अट्टहास], ठहाका मारकर हंसना, महाहास, उच्च-स्वर से युक्त हास – *अट्टहासो महाहासो,* अभि॰ प॰ 175; *यक्खानं हिकारसद्दं, भूतानं अट्टहासं, असुरानं अप्फोटनघोसं,* उदा॰ अट्ठ॰ 53.

अट्टान/अट्ठान नपुं॰, [आस्थान], नदी या सरोवर के स्नानघाट पर गाड़ा हुआ फलक, जिस पर अष्टपदाकार अथवा चौकोर लकीरें उकेरी हुयी रहती हैं, (स्नान करते समय इसी पर स्नानीय सुगन्धित चूर्ण आकीर्ण कर उनसे अङ्गविलेपन करते हैं) – *अट्टानं नाम रुक्खं फलकं विय तच्छेत्वा अट्ठपदाकारेन राजियो छिन्दित्वा न्हानतित्थे निखणन्ति, तत्थ चुण्णानि आकिरित्वा मनुस्सा कायं घंसन्ति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 45; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छब्बग्गिया भिक्खू अट्टाने नहायन्ति,* चूळव॰ 222.

अट्टाल पु॰, [अट्टाल], मीनार, बुर्ज, भवन के मुख्य द्वार पर निर्मित निरीक्षण-कक्ष – *युत्यट्टालट्टितेस्वट्टो,* अभि॰ प॰ 1126; – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदा मकसपादानं, अट्टालो सुकतो सिया,* जा॰ अट्ठ॰ 3.420; *दळ्हमट्टालकोट्ठके,* थेरगा॰ 863; मि॰ प॰ 2; – **क** पु॰, [अट्टालक], अटारी, महल, भव्यभवन, बालाखाना, चौबारा – *अट्टो त्वट्टालको भवे,* अभि॰ प॰ 204; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स अट्टालकतो एको यक्खो आगन्त्वा दक्खिणक्खिं उप्पाटेत्वा अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.138; स॰ उ॰ प॰ में अन्तर॰, गोपुर॰, द्वार॰, वीरिय॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अट्टि स्त्री॰, [आर्त्ति], आतुरता, विपत्ति – *अट्टीति आतुरता ब्याधिरोगो,* पारा॰ अट्ठ॰ 132.

अट्टित त्रि॰, [आर्दित], आतुर, व्याधिग्रस्त, व्याकुल, विपन्न, संपीड़ित, रोगी – *युत्यट्टालट्टितेस्वट्टो,* अभि॰ प॰ 1126; *कामरागेन अट्टितो,* थेरगा॰ 157; *पण्डुरोगेन अट्टितो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.360; स॰ उ॰ प॰ में अतिभय॰, दुक्ख॰, पिपासावेदन॰,

भय॰, भूत॰, मकस॰, वेदन॰, हिमसिसिर॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰, पाठा॰ अद्दित, अड्डित, अट्टित.

अट्टीयति / अट्टियति अट्ट का ना॰ धा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, (सामान्यतया हरायति, जिगुच्छति के पूर्व में प्रयुक्त), पीड़ित होता है, दुःखित होता है, व्याकुल होता है; – *न च तेन पथवी अट्टीयति वा हरायति वा,* म॰ नि॰ 2.93; – **यामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इद्धिपाटिहारिये आदीनवं सम्पस्समानो इद्धिपाटिहारियेन अट्टीयामि हरायामि जिगुच्छामि,* दी॰ नि॰ 1.197; *अट्टीयामि हरायामि, नग्गा निक्खमितुं बहि,* पे॰ व॰ 59; – **यथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *इति किर तुम्हे, भिक्खवे, दिब्बेन आयुना अट्टीयथ हरायथ जिगुच्छथ,* अ॰ नि॰ 1(1).137; – **येय्याथ** विधि॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ननु तुम्हे, भिक्खवे, एवं पुट्ठा अट्टीयेय्याथ हरायेय्याथ, तदेव; तुम्हेहि कायदुच्चरितेन अट्टीयितब्बं हरायितब्बं,* तदे॰; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छन्नो ब्रह्मदण्डेन अट्टीयमानो,* चूळव॰ 461; *भिक्खुभावं अट्टीयमानो ... गिहिभावं पत्थयमानो,* पारा॰ 26, पाठा॰ अड्डीयति, अड्ढीयति, तुल॰ अद्दीयति.

अट्टीयन नपुं॰, अट्टीयति से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, त्रास, व्याकुलाहट, बेचैनी – *अहिकुणपादीहि विय अत्तनो कायेन अट्टीयनं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.348.

अट्ठ[1] त्रि॰, [अष्टन्, अष्टौ], आठ – *ये पुग्गला अट्ठ सतं पसत्था,* सु॰ नि॰ 229; *अट्ठ कहापणे दापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.125; *अट्ठ नाम किं? सङ्घस्स अट्ठसलाकभत्तं दापेति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 60; स॰ उ॰ प॰ में अड्ढ॰, सत्त॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **उसभ** त्रि॰, आठ उसभ (1 उसभ = 140 हाथ) लम्बाई वाला – **भा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा दीघतो अट्ठउसभा अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.19; – **ङ्गंस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टास्र], आठ पहलों वाला, आठ कोनों वाला, अष्टभुज – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मणि वेळुरियो सुभो जातिमा अट्ठंसो सुपरिकम्मकतो,* दी॰ नि॰ 1.67; म॰ नि॰ 2.219; – **सा** ब॰ व॰ – *अट्ठंसा सुकता थम्भा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.152; *रूपं चतुन्नं महाभूतानं उपादाय ... चतुरंसं छळंसं अट्ठंसं, सोळसंसं,* ध॰ स॰ 177; – **क**[1] पु॰ / नपुं॰ [अष्टक], आठ का वर्ग, आठ का समूह – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अट्ठ अट्ठका, नव नवका, दस दसका,* म॰ नि॰ 3.50; – **कवग्गिक** त्रि॰, सु॰ नि॰ के अट्ठकवग्ग के अन्तर्गत् आने वाला – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बानेव अट्ठकवग्गिकानि सरेन अभासि,* महाव॰ 270; उदा॰ 136; – **भत्त** नपुं॰, आठ के समूह में रहने वालों का भाजन – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सङ्घस्स अट्ठकभत्तं निबद्धं दापेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.58; स॰ उ॰ प॰ में द्रष्ट॰ अड्ढ॰, अन्तर॰, अहेतुक॰, इन्द्रिय॰, कुसदायक॰, गुह॰, दुट्ठ॰, परम॰, सब्ब॰, सुद्ध॰; – **क**[2] पु॰, [अष्टक], **क.** वेदमन्त्रद्रष्टा, दस ऋषियों में एक ऋषि का नाम – *अट्ठको वामको वामदेवो चाङ्गीरसो भगु ... वेस्सामित्तो ति मन्तानं कत्तारो इसयो इमे,* अभि॰ प॰ 109; *अट्ठको वामको ... कस्सपो भगु,* दी॰ नि॰ 1.91; म॰ नि॰ 2.388; **ख.** पु॰, एक प्राचीन राजा का नाम – *कालिङ्गो, अट्ठको, भीमरथोति तयो राजानो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.130; *वेस्सामित्तो अट्ठको ... सिवीति छ राजानो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.141.

अट्ठ[2] पु॰, अत्थ की ही दूसरी वर्तनी, प्रायः स॰ प॰ के अन्त॰ प्रयुक्त [अर्थ], अर्थ, तात्पर्य, प्रयोजन – *अविज्जाय सङ्खारानं पच्चयट्ठो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).54, द्रष्ट॰ अत्थ[2]; – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, तात्पर्य के रूप में, अर्थ के रूप में – *अयं अत्तभावो नाम भिज्जनकट्ठेन अथावरट्ठेन कुलालभाजनसदिसो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.180; *धुतगुणं विसुद्धिकामानं पतिट्ठानट्ठेन,* मि॰ प॰ 320; स॰ उ॰ प॰ में – अत्त॰, अप्प॰, इन्द॰, एक॰, कट्ठ॰, नान॰, परम॰, पीळन॰, मह॰, सङ्खत॰, सच्छिक॰, के अन्त॰ द्रष्ट॰ तुल॰ अट्ठकथा, अट्ठिक॰, अट्ठि॰.

अट्ठकथा स्त्री॰, [अर्थकथा], **शा॰ अ॰** अर्थवाद, अर्थकथन अर्थात् व्याख्या, **ला॰ अ॰** पालि-त्रिपिटक पर बुद्धदत्त, बुद्धघोष और धम्मपाल के द्वारा लिखी गई व्याख्याएं – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठकथिका अट्ठकथं ... साकच्छन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 122; *उसभा'ति आदीनि तीणि पदानि अट्ठकथं आरोपेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.330; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं व्यञ्जनं अट्ठकथायं नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.466; स॰ उ॰ प॰ में अन्ध(क)॰, आगम॰, कुरुन्दी॰, खन्धक॰, पञ्चप्पकरण॰, परित्त॰, महा॰, महापच्चरी॰, सङ्खेप॰, सीहल॰, साट्ठ॰, के अन्त॰ द्रष्ट॰, तुल॰ अत्थवण्णना; – **टि॰** पालि-त्रिपिटक पर लिखी गयी व्याख्याओं के लिए सामान्य नाम, परम्परानुसार इनका संगायन प्रथम सङ्गीति में तथा अनुगायन द्वितीय एवं तृतीय सङ्गीतियों में हुआ; महेन्द्र द्वारा श्रीलङ्का ले जायी गयी तथा प्राचीन सिंहली भाषा में रूपान्तरण किया गया; बुद्धदत्त, बुद्धघोष तथा धम्मपाल द्वारा श्रीलङ्का की महाविहारीय-परम्परा का अनुसरण करते हुए तथा महाअट्ठकथा एवं कुरुन्दी, पच्चरी, अन्धकट्ठकथा, पण्णवार एवं सीहलट्ठकथा जैसी सिंहली भाषा की अट्ठकथाओं के आधार पर पालि में रूपान्तरण किया गया; – **थाचरिय** पु॰, [अर्थकथाचार्य],

अट्ठकथा लिखने वाले आचार्य - **या** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अट्ठकथाचरिया पन ... वण्णयन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.20; *अट्ठकथाचरिया पनाहु,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 168; विसुद्धि॰ 1.101; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).235; - **कण्ड** नपुं॰, सारिपुत्र द्वारा उपदिष्ट अर्थोद्धारपरक ध॰ स॰ के एक खण्ड का शीर्षक, ध॰ स॰ 1384-1616; - **ण्डं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कस्मा पनेतं अट्ठकथाकण्डं नाम जातन्ति? तेपिटकस्स बुद्धवचनस्स अत्थं उद्धरित्वा ठपितत्ता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 428; - **ण्डेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तीसुपि हि पिटकेसु धम्मन्तरं आगतं अट्ठकथाकण्डेनेव परिच्छिन्दित्वा ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 428; - **कण्डवण्णना** स्त्री॰, ध॰ स॰ के ऊपर निर्दिष्ट खण्ड का वर्णन - *अट्ठकथाकण्डवण्णना निट्ठिता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 428-443; - **गन्ध** पु॰, [अर्थकथा-ग्रन्थ], अट्ठकथाओं की पुस्तकें - **न्धे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *बुद्धघोसो नाम थेरो सीहळदीपं गन्त्वा सीहळभासाय लिखिते अट्ठकथागन्धे मागधभासाय परिवत्तित्वा लिखि,* सा॰ वं॰ 26; - **नय** पु॰, [अर्थकथा-नय], अट्ठकथाओं द्वारा अपनाई गई निर्वचन-पद्धति या व्याख्या-प्रकार - **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अट्ठकथानयेन यथानुरूपं वीमंसित्वा वेदितब्बा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).42; *पालिमुत्तकेन पन अट्ठकथानयेन अपरा पि छ पञ्ञत्तियो,* पु॰ प॰ अट्ठ॰ 26; - **पाठ** पु॰, अट्ठकथा में गृहीत या स्वीकृत एक पाठ - **ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पाळियं पन 'अगिद्धिमा'ति लिखितं, ततो अयं अट्ठकथापाठोव सुन्दरतरो,* जा॰ अट्ठ॰ 2. 245; - **मुत्तक** त्रि॰, अट्ठकथाओं से सर्वथा स्वतन्त्र अन्य आचार्यों द्वारा गृहीत व्याख्यानपद्धति - **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अट्ठकथामुत्तकेन पन आचरियनयेन अपरा पि छ पञ्ञत्तियो,* पु॰ प॰ अट्ठ॰ 27; - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयमेत्थ अट्ठकथामुत्तको एकस्स आचरियस्स मतिविनिच्छयो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 267.

अट्ठकथिक पु॰, अट्ठकथाओं का अध्ययन करने वाला अथवा उनमें रुचि रखने वाला, (प्रायः प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ में प्रयुक्त) - *जातकभाणका जातकं, अट्ठकथिका अट्ठकथं ... साकच्छन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 122.

अट्ठकनागर पु॰, अट्ठक-नगर-निवासी, दसम-नामक गृहपति का उपनाम - *दसमो गहपति अट्ठकनागरो पाटलिपुत्तं अनुप्पत्तो,* म॰ नि॰ 2.12; अ॰ नि॰ 3(2).308; - **सुत्त** नपुं॰, म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 2.12; अ॰ नि॰ 3(2).308.

अट्ठकनिग्गहपेय्याल पु॰, अठगुने खण्डनपरक सूत्रों का पुनरावृत्ति-परक समुच्चय या समूह - **ला** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अट्ठकनिग्गहपेय्याला सन्धावनिया उपादाय ...,* कथा॰ 67.

अट्ठकनिद्देस पु॰, पु॰ प॰ के आठवें परिच्छेद का शीर्षक, पु॰ प॰ 185.

अट्ठकनिपात पु॰, अ॰ नि॰ के आठवें खण्ड या ग्रन्थ का शीर्षक, अ॰ नि॰ 3(1).1-169.

अट्ठकभत्त नपुं॰, आठ सलाकाओं द्वारा प्राप्त पिण्डपात या भोजन - **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सङ्घस्स अट्ठकभत्तं निबद्धं दापेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.58; *सिरिमाय अट्ठकभत्तं मे भुत्तं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 60.

अट्ठकवग्ग पु॰, सु॰ नि॰ के चतुर्थ संग्रह का शीर्षक, सु॰ नि॰ 772-981.

अट्ठकवग्गिक / अट्ठकवग्गिय त्रि॰, सु॰ नि॰ के अट्ठकवग्ग नाम वाले चतुर्थ निपात के अन्त॰ आनेवाला - **कानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *आयस्मा सोणो भगवतो पटिस्सुणित्वा सब्बानेव अट्ठकवग्गिकानि सरेन अभासि,* महाव॰ 270; *सोळस अट्ठकवग्गिकानि सब्बानेव सरभञ्ञेन अभणि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.340; - **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वुत्तमिदं, भन्ते, भगवता अट्ठकवग्गिये मागण्डियपञ्हे ...,* स॰ नि॰ 2(1).9.

अट्ठकसिण नपुं॰, ध्यानभावना में सहायक पठवी, तेजो, आपो, वायो आदि दस कर्मस्थानों में आठ - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अट्ठकसिणं सोळसक्खत्तुकं,* ध॰ स॰ 203.

अट्ठकहापण त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टकार्षापण], आठ कार्षापण मूल्य वाला - *अट्ठकहापणा दण्डो'ति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 61.

अट्ठकुटिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टकुटिक], आठ झोपड़ियों वाला गांव - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अट्ठकुटिको गामो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.252, पाठा॰ अट्ठङ्गिको.

अट्ठकोण त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टकोण], आठ कोनों वाला, अठपहल, अठकोना - **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *गण्ठिकपट्टकञ्च पासक - पट्टञ्च अट्ठकोणम्पि सोळसकोणम्पि करोन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.232.

अट्ठक्खणविनिम्मुत्त त्रि॰, आठ प्रकार के अक्षणों अथवा दुर्गतियों से सर्वथा विमुक्त - **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अट्ठक्खणविनिम्मुत्तं खणं परमदुल्लभं,* सद्धम्मो॰ 4.

अट्ठक्खत्तुं निपा॰, [अष्टकृत्वः], आठ बार - *अट्ठक्खत्तुं, नवक्खत्तुं, दसक्खत्तुं एवमादयो अञ्ञेपि सद्दा एवं योजेतब्बा,* क॰ व्या॰ 648.

अट्ठक्खुर त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टखुर], आठ खुरों वाला मृग, एक-एक पैर में दो-दो खुरों वाला पशु - **रं** पु॰, द्वि॰ वि॰,

ए॰ व॰ – *अट्ठक्खुरं खरादिये, मिगं वङ्कातिवङ्किनं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.162; *अट्ठक्खुरन्ति एकेकस्मिं पादे द्विन्नं द्विन्नं वसेन अट्ठक्खुरं,* तदे॰.

अट्ठगुण त्रि॰, [अष्टगुण], आठगुना अधिक – **णं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰ – *यत्तकं तुलिता एसा ... ततो अट्ठगुणं दस्सं,* थेरीगा॰ 153.

अट्ठगोपानसी पु॰, व्यक्तिविशेष का नाम – *अट्ठगोपानसी नाम, तव पुत्तो महामुनि,* अप॰ 1.285.

अट्ठङ्ग त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टाङ्ग], आठ अङ्गों वाला (मार्ग एवं उपोसथ) – **ङ्गे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपवासे च अट्ठङ्गे उपोसथदिने सिया,* अभि॰ प॰ 780; द्रष्ट॰ अट्ठङ्गिक के अन्त॰; – **ङ्गुपागत** त्रि॰, आठ गुणों से युक्त – **ङ्गे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुञ्ञे ओकासे पविवित्ते अरञ्ञे अट्ठङ्गुपागते समणसारुप्पे,* मि॰ प॰ 102; – **ङ्गुपेत** त्रि॰, आठ अङ्गों से युक्त – **तं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपोसथं ... अट्ठङ्गुपेतं सुसमत्तरूपं,* सु॰ नि॰ 404; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गुपेतस्स उपोसथस्स,* अ॰ नि॰ 1(1).244; – **तं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गुपेतं गिरमब्भुदीरयि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.58; – **ङ्गुपोसथ** पु॰, [अष्टाङ्गिकोपोसथ], ऐसा उपोसथ, जिसमें आठ शीलों का ग्रहण आवश्यक है – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्था अट्ठङ्गुपोसथस्स गुणं कथेसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.310; द्रष्ट॰ अ॰ नि॰ 1(1).244; 3(2).69; – **ङ्गुपोसथी** त्रि॰, आठ शिक्षापदों के समादान-सहित उपोसथ करने वाला / वाली – *राजा ... एकोपवासगब्भम्हि हुत्वा अट्ठङ्गुपोसथी,* म॰ वं॰ 36.84; – **वचनसम्पन्न** त्रि॰, [अष्टाङ्गवचनसम्पन्न], आठ गुणों से युक्त वचन बोलने वाला (बुद्ध) – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गवचनसम्पन्नो, अच्छिद्दानि निरन्तरं,* बु॰ वं॰ 24.26, (पृ॰) 357; *अट्ठङ्गवचनसम्पन्नोति अट्ठङ्गसमन्नागतसरो सत्था,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 295; – **विनिम्मुत्त** त्रि॰, [अष्टाङ्गविनिर्मुक्त], मार्ग के आठ अङ्गों से रहित – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गविनिम्मुत्तो मग्गो नाम नत्थि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 68; – **समन्नागत** त्रि॰, **क.** आठ शीलाङ्गों से युक्त – **तं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गसमन्नागतं उपोसथं उपवसथ,* अ॰ नि॰ 3(2).69; **ख.** आठ शुभ-गुणों से युक्त – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गसमन्नागतं ... आहारं आहारेति,* म॰ नि॰ 2.347; – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गसमन्नागते ... खेत्ते बीजं वुत्तं महप्फलं होति,* अ॰ नि॰ 3(1).70; **ग.** आठ अशुभ-गुणों से युक्त – **तेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गसमन्नागते ... खेत्ते बीजं वुत्तं न महप्फलं होति ... अट्ठङ्गसमन्नागतेसु समणब्राह्मणेसु दानं दिन्नं न महप्फलं होति,* अ॰ नि॰ 3(1).70; – **सुसमागत** त्रि॰, आठ शीलाङ्गों से भरपूर – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पाटिहारियपक्खञ्च, अट्ठङ्गसुसमागतं,* थेरीगा॰ 31; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.292; वि॰ व॰ 129; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गसुसमागता ... सीलवती उपासिका,* अ॰ नि॰ 3(1).100, पाठा॰ अट्ठङ्गसुसमाहित.

अट्ठङ्गिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टाङ्गिक], आठ अङ्गों वाला **क.** बुद्ध का आठ अङ्गों वाला मध्यम-मार्ग (मज्झिमापटिपदा) – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयमेव अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो,* महाव॰ 13; स॰ नि॰ 3(2).484; अ॰ नि॰ 1(1).206; *भावितो अट्ठङ्गिको मग्गो,* थेरीगा॰ 158; **ख.** बुद्ध के मध्यम-मार्ग से भिन्न आठ अङ्गों वाला मिथ्यामार्ग – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मग्गो'ति खो ... अट्ठङ्गिकस्सेतं मिच्छामग्गस्स अधिवचनं,* स॰ नि॰ 2(1).99; **ग.** शील के प्रथम आठ अङ्गों के समादान से युक्त (उपोसथ) – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठङ्गिकमाहुपोसथं,* सु॰ नि॰ 403; अ॰ नि॰ 1(1).244; **घ.** आठ अङ्गों से युक्त (असत्य-भाषण) – *अट्ठङ्गिको मुसावादो,* परि॰ 265; – **यानयायी** त्रि॰, [अष्टाङ्गिकयानयायिन्], बुद्ध के आठ अङ्गों वाले मार्ग-रूपी वाहन पर चलने वाला, अष्टाङ्गिक मार्ग का अनुसरण करने वाला – *साहं सुगतस्स साविका मग्गट्ठङ्गिकयानयायिनी,* थेरीगा॰ 391.

अट्ठङ्गुल त्रि॰, ब॰ स॰, अट्ठ + अङ्गुल [अष्टाङ्गुल], आठ अङ्गुलों की लम्बाई या चौड़ाई वाला – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, आयामेन अट्ठङ्गुलं सुगतङ्गुलेन ...,* महाव॰ 388; *अट्ठङ्गुलं बहलतो लोहपट्टं सिलोपरि,* म॰ वं॰ 29.11; – **परम** त्रि॰, [अष्टाङ्गुलपरम], अधिक से अधिक आठ अङ्गुल माप वाला – **मं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, अट्ठङ्गुलपरमं दन्तकट्ठं,* चूळव॰ 259; *अट्ठङ्गुलपरमं मञ्चपटिपादकं,* चूळव॰ 276; – **बहल** त्रि॰, आठ अङ्गुल मोटा – *अट्ठङ्गुलबहलं उदुम्बरपदरं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.75.

अट्ठचत्तारीस / अट्ठचत्ताळीस संख्यावाचक विशे॰ [अष्टचत्वारिंशत्], अड़तालीस, अड़तालीस की संख्या – *अट्ठचत्ताळीसं वस्सानि ब्रह्मचरियं चरिंसु ते,* सु॰ नि॰ 291; *अट्ठचत्ताळीसं वस्सानि तपचरणं करिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.377; *अहोरत्तेन अट्ठचत्ताळीसयोजनसहस्सानि भस्समाना,* मि॰ प॰ 90.

अट्ठट्ठक त्रि॰, [अष्टाष्टक], प्रत्येक आठ दिन पर मिलने वाला – **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पूजेमि चतुरो सतसहस्सरूपियं अट्ठट्ठकं निच्चभत्तं च थेरं,* दी॰ वं॰ 6.56.

अट्ठट्ठान त्रि., [अष्टस्थान], आठ विषयों अथवा वस्तुओं से सम्बन्धित – **नाय** स्त्री., ष. वि., ए. व. – *पञ्चन्नं चेतोखिलानञ्च अट्ठट्ठानाय कङ्खाय च अभावा ... अखिलो अकङ्खो,* सु. नि. अट्ठ. 2.124.

अट्ठतिंस / अट्ठतिंसा संख्यावाचक विशे. [अष्टत्रिंशत्], अड़तीस (38) – **स** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *अट्ठतिंस महामङ्गलानि कथेत्वा,* खु. पा. अट्ठ. 124; – **सा** स्त्री., प्र./द्वि. वि., ब. व. – *अट्ठतिंसा च राजपरिसा,* मि. प. 323; – **य** नपुं., सप्त. वि., ब. व. – *अट्ठतिंसाय आरम्मणेसु,* ध. प. अट्ठ. 2.241.

अट्ठत्थम्भ त्रि., ब. स. [अष्टस्तम्भ], आठ खम्भों वाला – *अट्ठत्थम्भो,* क. व्या. 385.

अट्ठदन्तक त्रि., ब. स. [अष्टदन्तक], आठ दांतों वाला / वाली – **केन** तृ. वि., ए. व. – *थलवप्पे विसमपतितानं वा बीजानं समकरणत्थाय पुन अट्ठदन्तकेन समीकतं* पारा. अट्ठ. 2.123.

अट्ठदसिक त्रि., अट्ठ + दस से व्यु., संभवतः अठारह वर्ष वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – सङ्ख्याने ति किमत्थं? अट्ठादसिको, क. व्या. 384, पाठा. अट्ठादसिको.

अट्ठदोण त्रि., ब. स. [अष्टद्रोण], आठ द्रोणों की माप-तौल वाला – **ण** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अट्ठदोणं चक्खुमतो सरीरं, सत्तदोणं जम्बुदीपे महेन्ति,* दी. नि. 2.126.

अट्ठदोससमाकिण्ण त्रि., [अष्टदोषसमाकीर्ण], आठ प्रकार के दोषों से भरपूर – *अट्ठदोससमाकिण्णं पजहिं पण्णसालकं,* बु. वं. 2.31.

अट्ठधम्मसमोधान नपुं., आठ प्रकार के धर्मों का संग्रह या समुच्चय – *अट्ठधम्मसमोधाना, अभिनीहारो समिज्झति,* जा. अट्ठ. 1.18; बु. वं. (पृ.) 298; *दीपङ्करस्स हि भगवतो पादमूले अट्ठधम्मसमोधानेन अभिनीहारसमिद्धितो पभुति,* म. नि. अट्ठ.(मू.प.) 1(1).120.

अट्ठधा प्रकारार्थक निपा. [अष्टधा], आठ भागों या प्रकारों में, आठ तरह से – *त्वञ्ञेव भगवतो सरीरानि अट्ठधा समं सुविभत्तं विभजाही'ति,* दी. नि. 2.125.

अट्ठनख त्रि., ब. स. [अष्टनख], आठ खुरोंवाला, प्रत्येक पैर में दो-दो खुरों वाला – *मेण्डो अट्ठनखो अदिस्समानो,* जा. अट्ठ. 6.182; *अट्ठनखोति एकेकस्मिं पादे द्विन्नं द्विन्नं खुरानं वसेनेतं वुत्तं,* तदे..

अट्ठनवुति / अट्ठानवुति त्रि., संख्यावाचक विशे., अंठानवे की संख्या – *तयो रोगा ... अट्ठानवुतिमागमुं,* सु. नि. 313; *इमे अट्ठनवुति रोगा काये निब्बत्तन्तू'ति,* मि. प. 111.

अट्ठनिपात पु., **क.** थेरगा. के एक निपात का शीर्षक जिसमें प्रत्येक स्थविर की आठ-आठ गाथाएं निहित हैं, थेरगा. 494-517; **ख.** थेरीगा. के एक खण्ड का शीर्षक, थेरीगा. 196-203; **ग.** जा. अट्ठ. के एक खण्ड का शीर्षक जिसके अन्त. दस जातक (417-426) और पंचानवे गाथाएं हैं।

अट्ठपञ्ञासा स्त्री., [अष्टपञ्चाशत्], अट्ठावन – *रतनानट्ठपञ्ञासं, उग्गतोव महामुनि,* अप. 2.243; – **क्खत्तुं** अट्ठावन बार – *अट्ठपञ्ञासक्खत्तुञ्च, देवरज्जमकारयिं,* अप. 2.13.

अट्ठपद नपुं, [अष्टापद], **शा. अ.** प्रत्येक पंक्ति में आठ-आठ खानों वाला, **ला. अ.** चौपड़ का खेल या इसे खेली जाने वाली पट्टिका अथवा शतरंज का खेल – *अट्ठपदं दसपदं आकासं परिहारपथं,* दी. नि. 1.6; *एकेकाय पन्तिया अट्ठ अट्ठ पदानि अस्साति अट्ठपदं,* दी. नि. अट्ठ. 1.78; – **दाकारेन** पु., तृ. वि., ए. व., क्रि. वि. के रूप में प्रयुक्त, आड़े, तिरछे रूप में, चौसर (चौपड़) की खेलपट्टिका की आड़ी, तिरछी पंक्तियों के अनुरूप – *अट्ठपदाकारेन राजियो छिन्दित्वा न्हानतित्थे निखणन्ति,* चूळव. अट्ठ. 45; तुल. अट्ठपाद, अट्ठापद.

अट्ठपदक नपुं., अट्ठपद से व्यु. [अष्टापदक], चौसर की खेलपट्टिका के समान विधि – *अनुजानामि, भिक्खवे, अट्ठपदकं कातुन्ति,* महाव. 389; – **च्छन्न** त्रि., चौसर की खेल पट्टी के समान आड़े-तिरछे रूप वाली विधि द्वारा आच्छादित – *अट्ठपदकच्छन्नेन पत्तमुखं सिब्बितुं,* महाव. अट्ठ. 386.

अट्ठपदट्ठपन नपुं., तत्पु. स. [अष्टापदस्थापन], केशालंकरण की एक विशेष पद्धति, केशों को संवारने की विधि जिसमें केशों को आठ पंक्तियों में रखकर सजाया जाता है – *मस्सुकरणकेससण्ठपन – अट्ठपदट्ठपनादीनि सब्बकिच्चानि करोति,* जा. अट्ठ. 2.5.

अट्ठपदफलक नपुं., [अष्टापदफलक], चौसर अथवा शतरंज की खेलपट्टिका – *अट्ठपदेपि कीळन्तीति अट्ठपदफलके जूतं कीळन्ति,* पारा. अट्ठ. 2.185.

अट्ठपना / आठपना स्त्री., [आस्थापना], विन्यसन, व्यवस्थापन, व्यवस्थित रूप में रखना – *पापिच्छस्स इच्छापकतस्स ... इरियापथस्स वा अट्ठपना ठपना ...,* विभ. 404; *यो एवरूपो उपनाहो ... अट्ठपना ठपना सण्ठपना ... दळ्हीकम्मं कोधस्स,* विभ. 412; *अट्ठपना ति पठममुप्पन्नस्स अनन्तरट्ठपना मरियादट्ठपना वा,* विभ. अट्ठ. 464.

अट्ठपरिक्खारधर त्रि., आठ प्रकार के परिष्कारों अर्थात् मूलभूत जीवनसाधनों से सम्पन्न, परिक्खार के अन्त. द्रष्ट. – *तावदेवस्स गिहिलिङ्गं अन्तरधायि अट्ठपरिक्खारधरो सट्ठिवस्सिकमहाथेरो विय अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 1.284.

अट्ठपरिवट्ट त्रि., [अष्टपरिवर्त], आठ प्रकार के परिवर्तों से युक्त, आठ प्रकार के विशिष्ट लक्षणों से अन्वित – *यावकीवं च मे, भिक्खवे, एवं अट्ठपरिवट्टं अधिदेवञाणदस्सनं न सुविसुद्धं अहोसि,* अ. नि. 3(1).128; – **टि.** दिव्यचक्षुज्ञान आदि आठ प्रकार के विशिष्ट ज्ञान ही अट्ठपरिवट्ट शब्द द्वारा संसूचित हैं, द्रष्ट., अ. नि. अट्ठ. 3.241-242.

अट्ठपाद त्रि., ब. स. [अष्टपाद], **1**. नपुं., आठ पैरों वाला जीव-जन्तु – *पीठञ्च सब्बसोवण्णं, अट्ठपादं मनोरमं,* जा. अट्ठ. 5.373; **2**. पु., मृग की एक जातिविशेष, शरभमृग – *अट्ठपादा च मोरा च, भस्सरा च कुकुत्थका,* जा. अट्ठ. 7.306; *अट्ठपादाति सरभा मिगा,* जा. अट्ठ. 7.307; **3**. पु., एक विशेष प्रकार की मकड़ी, अट्ठापद के अन्त. द्रष्ट..

अट्ठपितधुर त्रि., ब. स. [आस्थापितधुर], वह, जिसने भारवहन करना अस्वीकार न किया हो, वह, जिसने अभी तक भार न उतार फेंका हो, सुदृढ़ वीर्यवाला – *अनिक्खित्तधुरोति अट्ठपितधुरो पग्गहितवीरियो,* अ. नि. अट्ठ. 3.141.

अट्ठम त्रि., [अष्टम], आठवां, अष्टम – *एवं छट्ठमो सत्तमो अट्ठमो नवमो दसमो,* क. व्या. 375; *इति हेतं विजानाम, अट्ठमो सो पराभवो,* सु. नि. 107; – **क** पु., [अष्टमक], विशुद्धि की आठवीं अवस्था में प्रविष्ट व्यक्ति, आठ प्रकार के आर्यपुद्गलों में अधम स्थिति में आपन्न व्यक्ति – *यानि अट्ठमकस्स इन्द्रियानि, इमे उप्पन्ना कुसला धम्मा,* नेत्ति. 18; *अट्ठमकस्स सोतापन्नस्स च कामरागब्यापादा साधारणा ...,* नेत्ति. 42; *अट्ठमकस्साति सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्नस्स,* नेत्ति. अट्ठ. 239; – **कथा** स्त्री., कथा. की एक कथा का शीर्षक, कथा. 204-207; – **स्स इन्द्रिय-कथा** स्त्री., कथा. के तीसरे वर्ग की एक कथा का शीर्षक, कथा. 207-210.

अट्ठमङ्गल नपुं., [अष्टमङ्गल], आठ माङ्गलिक वस्तुएं, आठ प्रकार के मंगल – *कञ्चनचित्तसन्निभन्ति, कञ्चनमयेन सत्तरतनविचित्तेन अट्ठमङ्गलेन समन्नागतं,* जा. अट्ठ. 5.405.

अट्ठमास नपुं., [अष्टमास], आठ महीने – *अट्ठमासे असम्पत्ते, अरहत्तमपापुणिं,* अप. 2.192, पाठा. अड्ढमास.

अट्ठमासिक त्रि., [अष्टमासिक], आठ महीना पुराना, आठ महीने वाला – *मासिको पि चवति मरति अन्तरधायति ... अट्ठमासिको पि ...,* महानि. 86.

अट्ठमी स्त्री., [अष्टमी], **1**. किसी भी संख्या में आठवीं – *अनिच्चतायेव अट्ठमीति,* स. नि. 2(2).309; **2**. चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की आठवीं तिथि – *ततो च पक्खस्सुपवस्सुपोसथं, चातुद्दसिं पञ्चदसिञ्च अट्ठमिं,* सु. नि. 404; *चातुद्दसिं पञ्चदसिं, या च पक्खस्स अट्ठमी,* थेरीगा. 31; **3**. आलपन-विभक्ति के रूप में निरुत्तिपिटक की निर्वचन-परम्परा के अनुसार आठवीं विभक्ति – *आमन्तणवचने अट्ठमी विभत्ति भवति,* सद्द. 1.60.

अट्ठमुख त्रि., ब. स. [अष्टमुख], **शा. अ.** आठमुखों वाला, **ला. अ.** आठ मुख्य बिन्दुओं से युक्त वादपद्धति – *चतूसु पञ्हेसु द्विन्नं पञ्चकानं वसेन अट्ठमुखा वादयुत्ति,* ध. स. अट्ठ. 5.

अट्ठयोजन त्रि., [अष्टयोजन], आठयोजन की दूरी तक फैला हुआ, द्रष्ट. योजन के अन्त..

अट्ठरतन त्रि., ब. स. [अष्टरत्न], आठ हाथों की लम्बाई की मापवाला – *मुखवट्टितो पट्ठाय अट्ठरतनं,* अ. नि. अट्ठ. 3.268; – **निक** त्रि., उपरिवत् – *तिवित्थतं दसपरिणाहं अट्ठरतनिकं सकट्ठानमुपगतं दिस्वा,* मि. प. 286; – **नुब्बेध** त्रि., [अष्टरत्नोद्वेध], आठ हाथों की ऊंचाई वाला – *यथा, महाराज, तिधा पभिन्नो सब्बसेतो ... अट्ठरतनुब्बेधो ... पासादिको दस्सनीयो उपोसथो नागराजा,* मि. प. 262.

अट्ठलोकधम्म पु., (सामान्यतया ब. व. में प्राप्त), लाभ, सत्कार आदि आठ प्रकार की सांसारिक उपलब्धियां – *अट्ठलोकधम्मपदन्तिपि वदन्तियेव,* जा. अट्ठ. 3.146; – **वात** पु., लौकिक उपलब्धियों रूपी आठ प्रकार के झञ्झावात – *गिरिराजवरसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं अट्ठलोकधम्मवातेहि अकम्पियट्ठेन,* मि. प. 321; – **म्मातिक्कम** पु., आठ प्रकार की लौकिक उपलब्धियों का अतिक्रमण – *अट्ठलोकधम्मातिक्कमा,* उदा. अट्ठ. 273.

अट्ठवङ्क त्रि., [अष्टावक्र], **शा. अ.** आठ स्थानों से वक्र, **ला. अ.** अष्टकोणीय (विशेष रूप से वैरोचननामक रत्न के लक्षण के रूप में प्रयुक्त) – *अट्ठवङ्कं मणिरतनं उळारं, सक्को ते अददा पितामहस्स,* जा. अट्ठ. 6.217.

अट्ठवत्थुक त्रि., ब. स. [अष्टवस्तुक], आठ वस्तुओं पर आधारित अथवा उनसे सम्बद्ध – *अट्ठवत्थुकाय कङ्खाय अवितिण्णभावेन अवितिण्णकङ्खं मच्चं सोधेन्तीति,* ध. प.

अट्ठ॰ 2.44; *अट्ठवत्थुकेन हि अविज्जान्धकारेन ओनद्धा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.57; *अयम्पि पाराजिका होति असंवासा अट्ठवत्थुका'ति,* पाचि॰ 297; - **हेतु** पु॰, आठ प्रकार की वस्तुओं का कारण - *अपराधकारकस्स अट्ठवत्थुकहेतु अट्ठेव,* जा॰ अट्ठ॰ 3.391.

अट्ठवस्सिक त्रि॰, [अष्टवार्षिक], आठ वर्षों वाला, अष्टवर्षीय - *अट्ठवस्सिकोपि ... चवति मरति अन्तरधायति विप्पलुज्जतीति,* महानि॰ 87.

अट्ठवाचिक त्रि॰, [अष्टवाचिक], **शा. अ.** आठ प्रकार की वचन-विज्ञप्तियों से युक्त, **ला. अ.** भिक्षुणियों की उपसम्पदा - *अट्ठवाचिका उपसम्पदा,* परि॰ 265; *अट्ठवाचिका भिक्खुनीनं उपसम्पदा उभतोञत्तिचतुत्थत्ता,* वजिर॰ टी॰ 513; - **टि.** भिक्षुणियों की उपसम्पदा में दो बार ज्ञप्तिचतुर्थकर्म निर्धारित है, अतः भिक्षुणियों की उपसम्पदा को अट्ठवाचिका उपसम्पदा कहा गया है.

अट्ठविध त्रि॰, [अष्टविध], आठ प्रकार का, आठ तरह का, अष्टविध, आठ तरह वाला - *लाभो अलाभो यसो अयसो निन्दा पसंसा सुखं दुक्खन्ति अयञ्हि अट्ठविधो लोकधम्मो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.159; *अट्ठविधेन रूपक्खन्धो,* विभ॰ 16; *अट्ठविधेन रूपसङ्गहो,* ध॰ स॰ 590.

अट्ठवीसति स्त्री॰, [अष्टाविंशति], अट्ठाईस - *कतमे अट्ठवीसति?,* मि॰ प॰ 141; *अट्ठवीसति वस्सानि रज्जं कारेसि खत्तियो,* म॰ वं॰ 34.37; *नक्खत्तपदकोविदोति अट्ठवीसतिया नक्खत्तकोट्ठासेसु छेको,* जा॰ अट्ठ॰ 6.308; - **क्खत्तुं** निपा॰, क्रि॰ वि॰ अट्ठाईस बार - *अट्ठवीसतिक्खत्तुञ्च, चक्कवत्ती अहोसहं,* अप॰ 1.33.

अट्ठवीससत नपुं॰, [अष्टाविंशतिशत], एक सौ अट्ठाईस - *अट्ठावीससतं पदानि,* सा॰ सं॰ 13.

अट्ठसट्ठि स्त्री॰, [अष्टाषष्टि], अड़सठ - *सट्ठिकम्हि निपातम्हि, मोग्गल्लानो महिद्धिको, एकोव थेरगाथायो, अट्ठसट्ठि भवन्ति ताति,* थेरगा॰ (पृ॰) 295; *महाभिक्खुसङ्घो पटिवसति अट्ठसट्ठिभिक्खुसतसहस्सं,* दी॰ नि॰ 2.35; *कम्मानि आरभापेत्वा लेणानि अट्ठसट्ठियो,* म॰ वं॰ 16-12.

अट्ठसत नपुं॰, [अष्टाशत], **1**. एक सौ आठ - *अट्ठसतम्पि मया वेदना वुत्ता परियायेन,* स॰ नि॰ 2(2).226; *ये पुग्गला अट्ठसतं पसत्था,* सु॰ नि॰ 229; **2**. आठ सौ - *वेदानं पारङ्गते अट्ठसतब्राह्मणे निमन्तेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.66; - **परियाय** पु॰, [पर्याय], एक सौ आठ संख्या तक विस्तृत वेदनाओं से सम्बन्धित धर्मोपदेश की पद्धति - *अट्ठसतपरियायं वो, भिक्खवे, धम्मपरियायं देसेस्सामि,* स॰ नि॰ 2(2).225; - **परियायवग्ग** पु॰, स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(2).224-232; - **भेद** त्रि॰, ब॰ स॰, एक सौ आठ उपविभागों वाला - *अट्ठसतभेदेन तण्हानिस्सयेन द्वासट्ठिभेदेन दिट्ठिनिस्सयेन च ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.87; - **सहस्सविभव** त्रि॰, वह, जिसके पास आठ लाख तक की सम्पत्ति हो - *सावत्थियं किरेको ब्राह्मणो अट्ठसतसहस्सविभवो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.286; - **सुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(2).225-26.

अट्ठसत्ततिवस्स त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टसप्ततिवर्ष], अठहत्तर वर्षों की आयुवाला - *अट्ठसत्ततिवस्साहं, पच्छिमो वत्तते वयो,* अप॰ 2.254.

अट्ठसद्द-जातक नपुं॰, जा॰ कथानकों में से एक जातक का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 3.379-85.

अट्ठसमापत्तियान नपुं॰, आठ प्रकार की आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कराने वाला वाहन या साधन - *देवलोकयानसज्जितं अट्ठसमापत्तियानं अभिरुय्ह,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.148.

अट्ठसहस्स नपुं॰, [अष्टसहस्र], **1**. आठ हजार - *ततो अट्ठसहस्सनागासरं ओतरित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.35; **2**. नपुं॰, श्रीलङ्का के एक क्षेत्र-विशेष का नाम - *देसं अट्ठसहस्सव्हं दत्वान वसितुं तहिं,* म॰ वं॰ 61-24; - **पाद** त्रि॰, ब॰ स॰ [अष्टसहस्रपाद], आठ हजार पैरों, जटाओं या प्रशाखाओं (बरोहों) से युक्त (वटवृक्ष) - *तत्थद्दसा मेघसमानवण्णं, निग्रोधराजं अट्ठसहस्सपादं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.42.

अट्ठहत्थ त्रि॰, **ब॰ स॰** [अष्टहस्त], आठ हाथ की लम्बाई वाला - *एकं सत्तहत्थं, एकं अट्ठहत्थन्ति द्वे वस्सावासिकसाटके लभित्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.171.

अट्ठान नपुं॰, ठान का निषे॰ [अस्थान], **1**. अनुपयुक्त विषय अथवा क्षेत्र, अनुपयुक्त स्थल, अनुपयुक्त काल - *अट्ठाने पदेसे मता मद्दी,* जा॰ अट्ठ॰ 7.343; **2**. असंभाव्यता, असम्भव होना (यदि उत्तरवर्ती उपवाक्य में 'यं' तथा 'विधि' के क्रियारूप हों) - *अट्ठानं तं सङ्गणिकारितस्स, यं फस्सये सामयिकं विमुत्तिं,* सु॰ नि॰ 54; *अट्ठानमेतं, आनन्द, अनवकासो यं तथागतो ... पाराजिकं सिक्खापदं पञ्ञत्तं समूहनेय्या'ति,* पारा॰ 25; *अट्ठानमेतं अनवकासोति उभयम्पेतं कारणपटिक्खेपवचनं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.178; **3**. (केवल सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ में 'अट्ठाने' रूप में), अनुपयुक्त व्यक्ति के बारे में - *... अट्ठाने कोपं बन्धित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.185; **4**. (अट्ठानेन रूप में), बिना किसी उपयुक्त कारण के, अकारण,

अहेतुकरूप में – *कुद्धो हि अट्ठवत्थुकं सोळसवत्थुकं कत्वा अट्ठानेन अकारणेन अत्तनो राजभावस्स अननुरूपं ... बलवदुक्खानि उदीरये,* जा॰ अट्ठ॰ 3.391; – **नारह** त्रि॰, स्थित न रहने योग्य, न टिकने योग्य, टिकने या जारी न रखने योग्य – *तेसं तं कम्मं अधम्मिकं कुप्पं अट्ठानारहं,* महाव॰ 139; *ठानारहेन वा अट्ठानारहेन वा,* तदे॰ 408 – **कुसलता** स्त्री॰, भाव॰, अनुपयुक्तताओं, अपराधों अथवा असंभाव्यताओं को ठीक से समझने की क्षमता, दी॰ नि॰ तथा इसकी अट्ठ॰ में इस शब्द के निम्नलिखित दो प्रकार के व्याख्यान उपलब्ध 1. कौन सा धर्म किस आपत्ति का कारण नहीं हो सकता, यह विनिश्चित करने की क्षमता – ... *सह कम्मवाचाय आपत्तीहि वुट्ठानपरिच्छेदजानना पञ्ञा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.146 तथा ध॰ स॰ 1337; 2. किसी एक धर्म की किसी अन्य धर्म के उदय में अकारणता – ... *एवं ठानपरिच्छिन्दनसमत्था पञ्ञा ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.147; तथा म॰ नि॰ 3.127; *ठानकुसलता च अट्ठानकुसलता च,* दी॰ नि॰ 3.169; तुल॰ ठानाट्ठानकुसलता, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 416; – **गाथा** स्त्री॰, [–गाथा], सु॰ नि॰ के खग्गविसाणसुत्त की 54वीं गाथा जिसमें सांसारिक आसक्तियों में लिप्त व्यक्ति के लिए सामयिक विमुक्ति का स्पर्शमात्र तक असम्भव कहा गया है – *अट्ठान तं सङ्गणिकारतस्स, यं फस्सये सामयिकं विमुत्तिं,* सु॰ नि॰ 54; – **जातक** नपुं॰, चार सौ पच्चीसवें जातक का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 3.418-422; – **परिकप्प** पु॰, असम्भव स्थितियों या धर्मों की परिकल्पना, अनुपयुक्त परिकल्पना – *इति महासत्तो इमिना अट्ठानपरिकप्पेन एकादस गाथा अभासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.422; – **पाळि** स्त्री॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का नाम, अ॰ नि॰ 1(1).38-39; – **मनवकासता** स्त्री॰, भाव॰, अहेतुकता असम्भाव्यता – *किं कारणं? अट्ठानमनवकासताय,* मि॰ प॰ 199; – **वग्ग** पु॰, [–वर्ग], अ॰ नि॰ के अट्ठानपाळि-नामक खण्ड का ही दूसरा नाम, अ॰ नि॰ 1(1).38-39; – **सो** निपा॰, अहेतुकता के कारण, अनुपयुक्तता के कारण, अप्रतिरूपता के कारण – *अट्ठानसो अप्पतिरूपमत्तनो, परस्स दुक्खानि भुसं उदीरये,* जा॰ अट्ठ॰ 3.390.

अट्ठानियकथा स्त्री॰, कभी पूरी न होने वाली बात, निरर्थक प्रलाप, बकवास – *पियपक्खे पठमवाचा अट्ठानियकथा नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.80.

अट्ठापद नपुं॰, [अष्टपद], द्यूतक्रीड़ा या चौसर आदि की खेलपट्टिका, कृमिविशेष, मकड़ी, अट्ठपद एवं अट्ठपाद के अन्त॰ ऊपर द्रष्ट॰; – **कत** त्रि॰, [अष्टपदीकृत], खेलपट्टिका के अनुकरण पर विरचित – *अट्ठापदकता केसा, नेत्ता अञ्जनमक्खिता,* म॰ नि॰ 2.262; *अट्ठापदकताति रसोदकेन मक्खित्वा नलाटपरियन्ते आवत्तनपरिवत्ते कत्वा अट्ठपदकरचनाय रचिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.214.

अट्ठारस संख्यावाचक विशे॰ [अष्टदश], 1. अठारह – *अट्ठारसअक्खोभणिसङ्खाय सेनाय सद्धिं निक्खमि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.224; *अट्ठारससु कोटीसु एकोपि पुरिसो वा इत्थी वा भिक्खं गहेत्वा अनिक्खन्तो नाम नत्थि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.274; 2. अठारहवां – *अट्ठारसकप्पसते, यं दानमददिं तदा,* अप॰ 1.144; – **क्खत्तुं** निपा॰, अठारह बार – *अट्ठारसञ्च खत्तुं सो, देवराजा भविस्सति,* अप॰ 1.91; तुल॰ अट्ठक्खत्तुं; – **म** त्रि॰, अठारस से व्यु॰, [अष्टादशम], अठारहवां– *मलवग्गो अट्ठारसमो निट्ठितो,* ध॰ प॰ (पृ॰) 45; – **मनोपविचार** त्रि॰, वह, जो अठारह प्रकार से वस्तुओं या धर्मों का अनुचिन्तन करता है – ... *पुरिसो छ फस्सायतनो अट्ठारसमनोपविचारो चतुराधिट्ठानो ...,* म॰ नि॰ 3.288; – **रतनुब्बेध** त्रि॰, अट्ठारह हाथों की ऊंचाई वाला – ... *अट्ठारसरतनुब्बेधं व्यामप्पभापरिक्खेपं ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).314; – **वस्स** त्रि॰, ब॰ स॰, अठारह वर्षों की आयुवाला, अष्टादशवर्षीय – *सोहं अट्ठारसवस्सो पब्बजिं अनगारियं,* अप॰ 1.56; – **विध** त्रि॰, 1. अठारह प्रकारों वाला – *अट्ठारसविधं खज्जकं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.185; 2. अठारह प्रकार के विभाजनों अथवा प्रत्ययों से युक्त – *इमिना इमस्स अट्ठारसविधेन कायानुपस्सनासतिपट्ठानभावकस्स भिक्खुनो इरियापथो कथितो होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.370; – **हत्थुब्बेध** त्रि॰, अठारह हाथों की ऊंचाई वाला – *अट्ठारसहत्थुब्बेधेन यन्तयुत्तद्वारेन समन्नागतं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.258.

अट्ठाह नपुं॰, [अष्टाह], आठ दिनों का समुच्चय – *सालिं आहासि सकिदेव अट्ठाहाय,* दी॰ नि॰ 3.66; – **पटिच्छन्न** त्रि॰, आठ दिनों तक छिपाया हुआ – *एका आपत्ति अट्ठाहप्पटिच्छन्ना,* चूळव॰ 127.

अट्ठि[1] स्त्री॰, [अष्टि], समवृत्त छन्द का एक भेद – *न-ज-भ-ज-रा यदा भवति वाणिनी गयुत्ता,* वुत्तो॰ 96; – **टि॰** इसमें सोलह वर्ण होते हैं। इसके उसभगतिविलसिता, ललना, चन्दलेखा, चन्दनिका (वाणिनी) तथा चित्तभागा (नाराच, पञ्चचामर) आदि पांच भेद हैं.

अट्ठि[2] नपुं॰, [अस्थि], 1. हड्डी – *पण्डके अट्ठि धात्वत्थी,* अभि॰ प॰ 278; *सीहस्स ... अट्ठि गले लग्गि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.22; *कामं तचो च न्हारु च अट्ठि च अवसिस्सतु,* म॰ नि॰ 2.156;

स॰ नि॰ 1(2).27; अ॰ नि॰ 1(1)66; *अट्ठीति ... द्वतिंस दन्तट्ठीनि अवसेसानि,* विसुद्धि॰ 1.244; **2**. आंठी, गुठली – *तेसं अम्बं खादित्वा अट्ठिं रोपितं न सम्पज्जति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.86; *कोचिदेव पुरिसो पक्कं अम्बं खादित्वा अट्ठिं रोपेय्य,* मि॰ प॰ 84; – **क** नपुं॰ [अस्थिक], हड्डी – *अट्ठिकानि विप्पकिण्णानि होन्ति,* पारा॰ 43; *अट्ठिकानेव सेसानि,* दी॰ नि॰ 2.254; स॰ उ॰ प॰ में द्रष्ट॰, अम्बल॰, ताल॰, मधुकफल॰, कदल॰ इत्यादि के अन्त॰; – **कङ्कल** पु॰, [अस्थिकङ्काल], हड्डियों का ढांचा, अस्थिपञ्जर – *अपि नु खो सो कुक्कुरो अमुं अट्ठिकङ्कलं ... पलेहन्तो जिघच्छादुब्बल्यं पटिविनेय्या'ति,* म॰ नि॰ 2.29; *कप्पं सन्धावतो संसरतो सिया एवं महाअट्ठिकङ्कलो अट्ठिपुञ्जो अट्ठिरासि यथायं वेपुल्लो पब्बतो,* स॰ नि॰ 1(2).167; – **कङ्कलकुटि** स्त्री॰, अस्थिकङ्काल से निर्मित शरीर, अस्थिपञ्जर से निर्मित शरीर – *अट्ठिकङ्कलकुटि चे सा, मक्कटावसथो इति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.27; – **कङ्कलकुटिका** स्त्री॰, उपरिवत् – *अट्ठिकङ्कलकुटिके, मंसन्हारुपसिब्बिते,* थेरगा॰ 1153; – **कल्याण** नपुं॰, दांतों की अस्थियों का सौन्दर्य – *केसकल्याणं, मंसकल्याणं, अट्ठिकल्याणं, छविकल्याणं, वयकल्याणन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.217; – **कङ्कलसन्निभ** त्रि॰, अस्थिकङ्काल के समान – *अट्ठिकङ्कलसन्निभा अप्पस्सादट्ठेन,* थेरीगा अट्ठ॰ 311; – **कदली** स्त्री॰, बीजयुक्त फलवाला केला का पेड़ – *मोचाति अट्ठिककदलियो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402; – **कीळन** नपुं॰, अस्थियों की क्रीड़ा, हड्डियों का खेल, अस्थियों को लेकर क्रीड़ाप्रदर्शन – *अट्ठिकीळनसदिसं नच्चं दिस्वा ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; – **कोटि** त्रि॰, हड्डी का किनारा या छोर – *अट्ठिकोटिं तुण्डेन पहरि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.22; – **चम्म** नपुं॰, द्व॰ स॰, अस्थि एवं चर्म, हड्डी एवं चमड़ा – *पुन किसिके'ति वचनं अट्ठिचम्मन्हारुमत्तसरीरताय अतिविय किसभावदस्सनत्थं वुत्तं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 58; – **चम्ममत्त** त्रि॰, वह, जिसके शरीर में केवल हड्डी और चमड़ा मात्र शेष है – *न उदकं पिवि, परिसुस्सित्वा किसा अट्ठिचम्ममत्ता अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.280; – **चम्मावसेस** त्रि॰, वह, जिसकी हड्डी और चमड़ी शेष है – *सा खुदापीळिता अट्ठिचम्मावसेसा किसा अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.168; – **परिकिण्ण** त्रि॰, अस्थियों से परिपूर्ण, हड्डियों से भरा हुआ – *निवेसनं अट्ठि(क)परिकिण्णं दिस्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.381; पाठा॰ अट्ठि(क)-परिपुण्ण – **सहगत** त्रि॰, अस्थि की संज्ञा से युक्त, अस्थि की संज्ञा को रखने वाला – *अट्ठि(क)सञ्ञासहगतं धम्मविचयसम्बोज्झङ्गं भावेति,* स॰ नि॰ 3(1).150.

अट्ठिकच्छक पु॰, एक विशाल वृक्ष का नाम, अंजीर वृक्ष का एक भेद – *कच्छकोति अट्ठिकच्छको,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.188.

अट्ठिकच्छप पु॰, कछुआ, कच्छप, कूर्म, – *महाकुम्भकुलन्ति महन्तं अट्ठिकच्छपकुलं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.181.

अट्ठिंकत्वा / अट्ठिकत्वा / अट्ठिकत्वान अट्ठि + √कर का पू॰ का॰ कृ॰, किसी वस्तु के विचारणीय होने की प्रकृति का अनुभव करके, अत्यवहित होकर, ध्यान लगाकर, मन में धारण कर – *यो कोचिमा अट्ठिकत्वा सुणेय्य, लभेथ पुब्बापरियं विसेसं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.144; *अट्ठिकत्वाति अत्तनो अत्थिकभावं कत्वा अत्थिको हुत्वा सक्कच्चं सुणेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 5.145; *विहायाय विक्खपमलं अट्ठिकत्वान साधुकं,* सद्धम्मो॰ 220; *यं तथागतप्पवेदिते धम्मविनये देसियमाने अट्ठिंकत्वा मनसिकत्वा सब्बचेतसा समन्नाहरित्वा ओहितसोतो धम्मं सुणाति,* म॰ नि॰ 1.407; *साधुकं सुणोमाति अट्ठिं कत्वा मनसि कत्वा सब्बचेतसा समन्नाहराम,* महाव॰ 131.

अट्ठिकसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के बोज्झङ्ग-संयुत्त के सातवें वर्ग के प्रथम सुत्त का नाम, कुछ संस्करणों में **अट्ठिकमहप्फल** नाम से भी उल्लिखित, स॰ नि॰ 3(1).150.

अट्ठिकुम्म पु॰, कछुआ – *कुम्मोति अट्ठिकुम्मो, कच्छपोति तस्सेव वेवचनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.72, द्रष्ट॰ अट्ठिकच्छप, (ऊपर).

अट्ठित[1] त्रि॰, ठित का निषे॰, [अस्थित], अस्थिर, अविच्छिन्न, निरन्तर, असुदृढ़, चञ्चल, स्पन्दनशील; – **समाव** त्रि॰, अस्थिर प्रकृतिवाला, शिथिल स्वभाववाला – *अट्ठितधम्माति नट्ठितसभावा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.87; द्रष्ट॰ 'अट्ठितकारी', 'अट्ठितधम्म' तथा 'अट्ठितपधान' के अन्त॰ (आगे) विलो॰ अनट्ठित.

अट्ठित[2] त्रि॰, आ + √ठा का भू॰ क॰ कृ॰ [आस्थित], अधिष्ठित, अभिप्रेत, सुदृढीकृत प्रतिज्ञात – *अट्ठितं मे मनस्मिं मे, अथो मे हदये कतं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.207; – **कारी** त्रि॰, अप्रमादी, सदैव क्रियाशील, निरन्तर कार्य करने वाला, शान्त मन से काम करने वाला – *सक्कच्चकारी सातच्चकारी अट्ठितकारी ...,* महानि॰ 42; – **किरियता** स्त्री॰, भाव॰, अप्रमाद-पूर्वक क्रिया की स्थिति, दृढ़कर्मपरायणता – *या कुसलानं धम्मानं भावनाय सक्कच्चकिरियता सातच्चकिरियता अट्ठितकिरियता ...,* ध॰ स॰ 1379; – **धम्म** त्रि॰, वह, जो धर्म में सुदृढ़ रूप से अवस्थित है, स्थिर स्वभाव वाला – *अट्ठितधम्मा समणा सक्यपुत्तिया विहरन्ती'ति,* दी॰ नि॰ 3.99; *अट्ठितधम्माति नट्ठितसभावा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.87; – **वत्त**

नपुं., कर्म. स. [आस्थितव्रत], अप्रमत्त अथवा वीर्यवान् व्यक्ति का तप या व्यायाम – *अट्ठितवतं भोतो गोतमस्स पधानं अहोसि,* म. नि. 2.444; *अट्ठितवतन्ति अट्ठिततपं, अस्स पधानपदेन सद्धिं सम्बन्धो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.319.

अट्ठितं निपा., सदा, सदैव, निरन्तर, अनवरत – *ये त्वं मुनिं अट्ठितं ओवदेय्य,* सु. नि. 1064; *तत्थ अट्ठितन्ति सक्कच्चं सदा वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.282.

अट्ठिति स्त्री., ठिति का निषे. [अस्थिति], चित्त की चंचलता, स्थिर प्रकृति का सर्वथा अभाव, चित्त की प्रशान्तावस्था का अभाव – *या च इञ्जना या च चित्तस्स अट्ठिति,* नेत्ति. 73.

अट्ठित्तच 1. नपुं., द्व. स., अस्थियां एवं त्वचा, हड्डियां और त्वचा – *अट्ठि तचेन ओनद्धं, सह वत्थेभि सोभति,* म. नि. 2.262; **2.** त्रि., ब. स., वह, जिसके लिये अस्थि ही त्वचा है – *अट्ठिमेव तचो अस्साति अट्ठित्तचो,* जा. अट्ठ. 3.258.

अट्ठिन्हारुसंयुत्त त्रि., हड्डी और नसों से युक्त, अस्थि तथा स्नायुओं से समुपेत – *अट्ठिनहारुसंयुत्तो, तचमंसावलेपनो,* सु. नि. 196; *तीहि अट्ठिसतेहि नवहि न्हारुसतेहि च संयुत्तत्ता अट्ठिनहारुसंयुत्तो,* सु. नि. अट्ठ. 1.208.

अट्ठिपक्ख त्रि., ब. स. [अस्थिपक्ष], हड्डियों के पंखों वाला – *पक्खिनोति ये केचि अट्ठिपक्खा वा चम्मपक्खा वा लोमपक्खा वा,* दी. नि. अट्ठ. 2.78.

अट्ठिपाकार पु., [अस्थिप्राकार], हड्डियों का प्राकार, हड्डियों से निर्मित शरीर-रूपी महल – *सोसितो मया अस्सुसमुद्दो, भिन्नो अट्ठिपाकारो,* जा. अट्ठ. 3.333.

अट्ठिपुञ्ज पु., [अस्थिपुञ्ज], हड्डियों का समूह, अस्थिपुञ्ज – *कप्पं सन्धावतो संसरतो सिया एवं महा अट्ठिकङ्कलो अट्ठिपुञ्जो अट्ठिरासि यथायं वेपुल्लो पब्बतो,* स. नि. 1(2).167; इतिवु. 14.

अट्ठिपुट त्रि., [अस्थिपुट], हड्डियों का पुट, हड्डियों का विवर – *अट्ठिपुटे अट्ठिपुटो, निब्बत्तो पूतिनि पूतिकायम्हि,* खु. पा. अट्ठ. 39.

अट्ठिभाग पु., [अस्थिभाग], अस्थिकङ्काल, शरीर की हड्डियों का हिस्सा – *अट्ठिकङ्कलोति अट्ठिभागो,* इतिवु. अट्ठ. 74.

अट्ठिमत्तावसेस त्रि., ब. स. [अस्थिमात्रावशेष], वह, जिसमें हड्डियांमात्र शेष बची हों – *अत्तनो सामिकं लुञ्जित्वा खादन्ता अट्ठिमत्तावसेसं करिंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.19.

अट्ठिमय त्रि., [अस्थिमय], हड्डियों से विनिर्मित, हड्डियों से बना हुआ – *अट्ठिमयं, दन्तमयं, विसाणमयं, नळमयं, वेळुमयं ...,* महाव. 278; *अट्ठिमयेन वा सल्लेन दन्तमयेन वा ...,* महानि. 4.

अट्ठिमिञ्जा स्त्री., नपुं., [अस्थिमज्जा, अ. मा. अट्ठिमिञ्जा], हड्डियों की मज्जा – *अट्ठिमिञ्जं आहच्च तिट्ठति,* महाव. 105; *पेमं छवियादीनि छिन्दित्वा अट्ठिमिञ्जं आहच्च ठितं,* ध. प. अट्ठ. 1.105.

अट्ठिरासि पु., [अस्थिराशि], हड्डियों का ढेर, अस्थिपुञ्ज, हड्डियों का समूह, अस्थिकङ्काल – *एकपुग्गलस्स, भिक्खवे, कप्पं संधावतो संसरतो सिया एवं महा अट्ठिकङ्कलो अट्ठिपुञ्जो अट्ठिरासि ...,* स. नि. 1(2).167.

अट्ठिल्ल पु./नपुं. [आष्ठीला, स्त्री.], गाय की जङ्घा की वह हड्डी, जिसका प्रयोग रगड़ने आदि के कार्य में होता था – *अट्ठिल्लेन जघनं घंसापेन्ति ... गोहनुकेन जघनं कोट्टापेन्ति ...,* चूळव. 430.

अट्ठिवेधविद्ध त्रि., हड्डियों के वेधे जाने से पीड़ित – *नापि लोमवेधविद्धो संविज्जति ... अपि च खो अट्ठिवेधविद्धो संविज्जति ...,* अ. नि. 1(2).131; *अट्ठिवेधविद्धोति अट्ठिं भिन्दन्तेन वेधेन विद्धो,* अ. नि. अट्ठ. 2.324.

अट्ठिवेधी त्रि., [अस्थिवेधी], अस्थि को वेधने वाला, वेध कर हड्डियों तक प्रभाव डालने वाला – *वच्छदन्तमुखा सेता, तिक्खग्गा अट्ठिवेधिनो,* जा. अट्ठ. 6.277.

अट्ठिसङ्खलिका स्त्री., [अस्थिशृङ्खला], अस्थिपञ्जर अस्थिकङ्काल, हड्डियों का ढांचा-मात्र – *पस्सेय्य सरीरं सिवथिकाय छड्डितं अट्ठिकसङ्खलिकं,* दी. नि. 2.219; म. नि. 1.75; – **पेत** पु., [अस्थिशृङ्खलाप्रेत], नरकङ्काल के रूप में प्रेत – *तथागतस्स सन्तिके थेरेन पुट्ठो अट्ठिसङ्खलिकपेतादीनं दिट्ठभावं आचिक्खित्वा,* ध. प. अट्ठ. 2.273; – **कमत्त** त्रि., वह, जिसका अस्थिकङ्काल-मात्र शेष है – *अतिसयजिघच्छाभिभूतो विय पसय्ह खादन्तो अट्ठिसङ्खलिकमत्तं कत्वा ...,* पे. व. अट्ठ. 132.

अट्ठिसङ्घात पु., [अस्थिसङ्घात], हड्डियों का ढेर, अस्थिकङ्काल, अस्थिपञ्जर – *किमेविदं सरीरं ... रुहिरपुण्णं अट्ठिसङ्घातन्हारुसम्बन्धं ...,* महानि. 133; तुम्हाकं एवरूपं अट्ठिसङ्घातं दिस्वा ..., ध. प. अट्ठ. 2.62; – **जटित** त्रि., [– जटित], हड्डियों के ढेर से भरपूर – *पेताहि अप्पमंसलोहितत्ता अट्ठिसङ्घातजटिता एकेन पस्सेन सयितुं न सक्कोन्ति,* सा. सं. 14; – **मत्तावसेस** त्रि., [अस्थिसङ्घातमात्रावशेष], वह, जिसका

अस्थिकङ्काल मात्र ही शेष है, हड्डियों का ढेर - *दिवसभागे महन्ता सुनखा उपधावित्वा अट्ठिसङ्घातमत्तावसेसं सरीरं करोन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 179.

अट्ठिसञ्चय पु॰, [अस्थिसञ्चय], अस्थिसमुच्चय, अस्थियों का समूह, हड्डियों का ढेर - *एकस्सेकेन कप्पेन, पुग्गलस्सट्ठिसञ्चयो,* इतिवु॰ 14.

अट्ठिसञ्ञा स्त्री॰, [अस्थिसञ्ज्ञा], अशुभ अनुस्मृतियों के अन्तर्गत शरीर को अस्थिपञ्जर के रूप में देखना या समझना - *केवलं अट्ठिसञ्ञाय, अफरी पथविं इमं,* थेरगा॰ 18.

अट्ठिसन्धि पु॰, [अस्थिसन्धि], हड्डियों का जोड़, अस्थिसन्धि - *कटकटा'ति विरवन्तेहि अट्ठिसन्धीहि स॰ तो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.320.

अट्ठिसमूह पु॰, [अस्थिसमूह], हड्डियों का समूह, अस्थिपुञ्ज, हड्डियों की राशि - *अट्ठिपुञ्जोति अट्ठिसमूहो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 74.

अट्ठिसीस त्रि॰, ब॰ स॰ [अस्थिशीर्ष], हड्डियों से भरा सिर, वह, जिसका सिर हड्डियों का ढांचा-मात्र प्रतीत हो - *अट्ठिसीसाति मंसस्स अभावतो अतिविय अट्ठिताय, पतनुभावतो वा तचोनद्धअट्ठिमत्तसीसा,* लीन॰ (दी॰नि॰ टी॰) 2.37.

अट्ठिसेन पु॰, [अस्थिसेन], ब्राह्मण-कुलोत्पन्न एक बोधिसत्त्व का नाम - *बोधिसत्तो एकस्मिं निगमे ब्राह्मणकुले निब्बत्ति, अट्ठिसेनकुमारोतिस्स नामं करिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.310; - **जातक** नपुं॰, [जातक], जातक संख्या 403 का नाम, जा॰ अट्ठ॰ 3.309-313.

अट्ठिसेस त्रि॰, [अस्थिशेष], वह, जिसमें हड्डी के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं हो, केवल हड्डी मात्र - *सेसभागानि डय्हिंसु, अट्ठीसेसानि सब्बसो,* अप॰ 2.211.

अट्ठिस्सर पु॰, एक प्रत्येकबुद्ध का नाम - *पञ्च कोट्ठासे निरये पच्चित्वा, ततो मुच्चित्वा अट्ठिस्सरो नाम पच्चेकबुद्धो भविस्सति,* मि॰ प॰ 119; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.86.

अट्ठुत्तरसत नपुं॰, [अष्टोत्तरशत], एक-सौ-आठ की संख्या - *उपरिमञ्चे राजधीतरं ठपेत्वा गन्धोदकघटानं अट्ठुत्तरसतेन न्हापेत्वा काळकण्णिं पवाहेस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.436.

अट्ठुप्पत्ति / अत्थुप्पत्ति स्त्री॰, [अर्थोत्पत्ति], धर्मदेशना के लिये सर्वथा उपयुक्त अवसर की उत्पत्ति - *अट्ठुप्पत्तिञ्च दीपेत्वा, करिस्सामत्थवण्णनं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 173; *सुत्तदेसनाय वत्थुभूतस्स अत्थस्स उप्पत्ति अत्थुप्पत्ति, अत्थुप्पत्ति एव अट्ठुप्पति,* उदा॰ अट्ठ॰ 25; - **क** त्रि॰, वह धर्मदेशना, जो किसी अवसर-विशेष के कारण प्रकाशित की गयी हो, अर्थ-विशेष को ध्यान में रखकर दिया गया (उपदेश) - *सा एतस्स अत्थीति अट्ठुप्पत्तिको,* उदा॰ अट्ठ॰ 25; *चत्तारो हि सुत्तनिक्खेपा अत्तज्झासयो, परज्झासयो, पुच्छावसिको, अट्ठुप्पत्तिकोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.48; - **काल** पु॰, धर्मदेशना की सप्रयोजन उत्पत्ति का अवसर - *अपि च चतूहि कारणेहि बुद्धा भगवन्तो चारिकं चरन्ति, जङ्घविहारवसेन सरीरफासुकत्थाय, अत्थुप्पत्तिकालाभिकङ्खनत्थाय, भिक्खूनं* ..., दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.196.

अट्ठुसभमत्त त्रि॰, ब॰ स॰, आठ उसभ माप वाला - *अट्ठुसभमत्तं ठानं पक्खन्दित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.130; - **टि॰** एक उसभ 140 हाथ का होता है.

अट्ठुसभवित्थत त्रि॰, आठ उसभ माप तक फैला हुआ - *अट्ठुसभवित्थतं मग्गं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.311.

अट्ठुसभवित्थार त्रि॰, ब॰ स॰, उपरिवत् - *अट्ठुसभवित्थाराय नदिया* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.74; *अट्ठुसभवित्थारं आगमनमग्गं समतलं कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.362.

अड्ढ[1] त्रि॰, [आढ्य], धनी, धनवान, धनाढ्य - *अड्ढो त्वनित्थियं भागे धनिस्मिं वाच्चलिङ्गिको,* अभि॰ प॰ 1039; *इब्भो त्वड्ढो तथा धनी,* अभि॰ प॰ 725; *भवञ्हि सोणदण्डो अड्ढो महद्धनो महाभोगो,* दी॰ नि॰ 1.99; *अड्ढा दलिद्दा च फुसन्ति फस्सं, बालो च धीरो च तथेव फुट्ठो,* थेरगा॰ 783; - **क** त्रि॰, [आढ्यक], धनी, समृद्ध, धनाढ्य - *बाराणसीनगरं दूरघुट्ठं, तत्थाहं गहपति अड्ढको अहु दीनो,* पे॰ व॰ 247; *अड्ढकोति अड्ढो महाविभवो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 94; *न खत्तियोति न च ब्राह्मणोति, न अड्ढका बलवा तेजवापि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.448.

अड्ढ[2] **/ अद्ध** 1. पु॰ / नपुं॰, [अर्ध], आधा, समान भाग - *अड्ढो त्वद्धो उपड्ढो च,* अभि॰ प॰ 53; *अद्धं वुत्तं समे भागे,* अभि॰ प॰ 54; *तं कत्वा नेगमो अग्घं, अड्ढेनग्घं ठपेसि मं,* थेरीगा॰ 25; 2. किसी भी मुद्रा या माप की 1/2वीं इकाई - *अड्ढो पादो, चत्तारो मासका,* जा॰ अट्ठ॰ 3.396; अड्ढं वा पादं वा कहापणं वा पेसेन्ति, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.145, स॰ उ॰ प॰ में द्रष्ट॰ अपर॰, मज्झिम॰, पुब्ब॰, पुरिम॰, उप॰, दसड्ढ॰, दि॰, दुव-॰; - **करीसमत्त** त्रि॰, केवल आधे करीष की माप वाला - *पुण्णोपि अड्ढकरीसमत्तं ठानं कसित्वा* ..., वि॰ व॰ अट्ठ॰ 51; - **कहापण** नपुं॰ [अर्द्धकार्षापण], आधा कार्षापण - *अकुसलं दिवसं अड्ढकहापणं निब्बिसेय्य,* अ॰ नि॰ 3(2).69; *अपरे अन्तरवीथिचतुक्कराजद्वारादीसु निसीदित्वा कहापणअड्ढकहापणपादमासकरूपादीनिपि निस्साय देसेस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.325; - **कायिक** त्रि॰, [अर्द्धकायिक],

मानवशरीर की लम्बाई से आधी लम्बाई वाला – *न, भिक्खवे, अड्ढकायिकानि बिब्बोहनानि धारेतब्बानि,* चूळव. 276; *अड्ढकायिकानीति उपड्ढकायप्पमाणानि, येसु कटितो पट्ठाय याव सीसं उपदहन्ति,* चूळव. अट्ठ. 60; – **काल** पु., धनवान होने का समय – *अड्ढस्साति अड्ढकाले अड्ढा हुत्वा सामिकमेव अनुवत्तति,* जा. अट्ठ. 3.59; – **कासिक / कासिय** त्रि., **शा. अ.** काशी में निर्मित कौशेयवस्त्र का आधा भाग, **ला. अ. क.** काशी की आधी आबादी के लिये पर्याप्त कम्बल – *तेन खो पन समयेन कासिराजा जीवकस्स कोमारभच्चस्स अड्ढकासिकं कम्बलं पाहेसि,* महाव. 370; **ख.** पांच सौ मुद्राओं के मूल्य योग्य – *अड्ढकासियन्ति एत्थ कासीति सहस्सं वुच्चति, तं अग्घनको कासियो, अयं पन पञ्चसतानि अग्घति तस्मा, अड्ढकासियो'ति वुत्तो,* महाव. अट्ठ. 378; – **कासी / कासि** स्त्री., काशी जनपद की एक गणिका का नाम, थेरीगा. की 25-26 गाथाओं की कवयित्री – *अड्ढकासि भिक्खुनी इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 2.281; – **टि.** संभवतः काशी जनपद से प्राप्त समस्त राजस्व का आधा भाग देने के फलस्वरूप इसका नाम 'अड्ढकासि' किया गया – *अड्ढकासिगणिका विय बहूनं पिया मनापा,* जा. अट्ठ. 5.444; – **कुड्डक / कुट्टक** नपुं., [अर्थकुड्यक], आधी दीवार, आधी भित्ति – *अनुजानामि, भिक्खवे, अड्ढकुट्टक'न्ति,* चूळव. 278; – **कुम्भूपम** त्रि., [अर्धकुम्भोपम], अधजल गगरी जैसा – *अड्ढकुम्भूपमो बालो, रहदो पूरोव पण्डितो,* सु. नि. 726; – **कुल** नपुं., [आढ्यकुल], समृद्ध कुल, समृद्ध वंश – *समणो खलु, भो गोतमो अड्ढा कुला पब्बजितो महद्धना महाभोगा,* दी. नि. 1.101; *चोरा उदकनिद्धमनेन नगरं पविसित्वा एकस्मिं अड्ढकुले उमङ्गं भिन्दित्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.271; – **कुसि** स्त्री., भिक्षुचीवर पर बीच बीच में की गयी आड़ी-तिरछी सिलाई – *अड्ढकुसिम्पि नाम करिस्सति,* महाव. 378; *अड्ढकुसीति अन्तरन्तरा रस्सपत्तानं नामं,* महाव. अट्ठ. 384; – **कोस** पु., [अर्धक्रोश], आधा कोस – *इतो गन्त्वा अड्ढकोसं, तत्थ नेसं अगारकं,* जा. अट्ठ. 6.97; – **कोसकाहार** त्रि., भोजनपात्र में से आधा आहार ग्रहण करने वाला – *सावका कोसकाहारापि अड्ढकोसकाहारापि बेलुवाहारापि अड्ढबेलुवाहारापि,* म. नि. 2.209; – **क्खि** नपुं., [अर्द्धाक्षि], आधी खुली तथा आधी बन्द आंख – *अपलोकेत्वाति सिनेहरसविप्फारसंसूचकेन अड्ढक्खिना आबन्धन्ती विय ओलोकेत्वा,* उदा. अट्ठ. 138; *सत्थारं अड्ढक्खिकेन ओलोकेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.338; – **खादित** त्रि., आधा खाया हुआ, अर्द्धभक्षित – *येहि अड्ढखादितानि, तेसं वमनविरेचनं दत्वा ...,* जा. अट्ठ. 3.173; – **गाथा** स्त्री., [अर्द्धगाथा], आधी गाथा – *इमं अड्ढगाथं वत्वा सो पच्चेकबुद्धो आह,* सु. नि. अट्ठ. 1.58; – **गावुत** नपुं., [अर्द्धगव्यूति], आधे गावुत की लम्बाई (एक चौथाई योजन अस्सी उसभों के बराबर माप वाला माना जाता है) – *सो अड्ढगावुतमत्तं गतकाले निवत्तित्वा ...,* जा. अट्ठ. 6.68; – **चन्द** नपुं., [अर्द्धचन्द्र], एक प्रकार के पादपविशेष का नाम – *अड्ढचन्दं मया दिन्नं, धरणीरुहपादपे,* अप. 1.245; – **चन्दक** पु., [अर्द्धचन्द्रक], आधे चन्द्रमा की लघु आकृति – *मालाकम्मलताकम्ममकरदन्तकगोमुत्तक-अड्ढचन्दकादिभेदं वा विकाररूपं न वट्टति,* पारा. अट्ठ. 1.233; – **चन्दिय** पु., एक थेर का नाम – *इत्थं सुदं आयस्मा अड्ढचन्दियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.245; – **चूळ** नपुं., अर्थ अनिश्चित, कुछ के अनुसार साढ़े तेरह (अड्ढचुद्दस), कुछ के अनुसार साढ़े तीन (अड्ढचतुत्थ), अन्यों के अनुसार असम्पूर्ण अर्द्धभाग (अड्ढचूळ) – *वाहसतानं खो, महाराज, वीहीनं अड्ढचूळञ्च वाहा वीहिसत्तम्बणानि ...,* अ. नि. अट्ठ. 1.47; मि. प. 112; *अड्ढचूळन्ति थोकेन ऊनं उपड्ढं, कस्स पन उपड्ढन्ति? अधिकारतो वाहस्साति विञ्ञायति, अड्ढचुद्दस'न्ति केचि, अड्ढचतुत्थ'न्ति अपरे, साधिकं दियड्ढसतं वाहाति दळ्हं कत्वा वदन्ति, वीमंसितब्बं,* अ. नि. टी. 1.90; – **चेळक** पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम – *इत्थं सुदं आयस्मा अड्ढचेळको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.134; – **छक्क** त्रि., [अर्धषष्ठ], साढ़े पांच – *अड्ढछक्केसु जातकसतेसु ...,* ध. स. अट्ठ. 33; – **ज्झामक** त्रि., आधा भुना हुआ, अर्धदग्ध – *थोकेनम्हि झामो, अड्ढज्झामकोव मुत्तोति,* जा. अट्ठ. 1.387; – **ड्ढपाद** त्रि., [अर्धाष्टपाद], आठ पादों से आधे अर्थात् चार पैरोंवाला, चतुष्पद, चौपाया – *अड्ढड्ढपदो चतुप्पदस्स, मेण्डो अड्ढनखो अदिस्समानो,* जा. अट्ठ. 6.182; – **ड्ढमक** त्रि., साढ़े सात – *अड्ढड्ढमकधातुयो अरूपपरिग्गहोति रूपारूपपरिग्गहोव कथितो,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.74; – **ड्ढरतन** त्रि., ब. स., साढ़े सात रतनों की ऊंचाई वाला – *सत्तरतनं वा ... नागं अड्ढड्ढमरतनं वा,* स. नि. 1(2).196; *हत्थिनागो सत्तरतनो वा अड्ढड्ढरतनो वा,* अ. नि. 3(2).171; – **तिय** त्रि., [अर्द्धतृतीय], ढाई – *ततियोड्ढतियो तथा,* अभि. प. 477; *अड्ढेन ततियो अड्ढतियो,* मो. व्या. 3.105; क. व्या. 389; *एवं अड्ढतियेसु मासेसु वीतिवत्तेसु अत्तनो सन्तिके ठिते परिचारिके पुच्छि,*

वि॰ व॰ अट्ठ॰ 52; – **तेय्य** त्रि॰, [अर्द्धतृतीय], ढाई – *अड्ढतेय्यो दियड्ढो तु दिवड्ढो दुतियो भवे,* अभि॰ प॰ 478; *राजगहे पटिवसति महतिया परिब्बाजकपरिसाय सद्धिं अड्ढतेय्येहि परिब्बाजकसतेहि,* महाव॰ 45; *सो तं देवनगरं आनेत्वा अड्ढतेय्यानं नाटिकाकोटीनं जेट्ठिकं कत्वा यावतायुकं ठत्वा यथाकम्मं गतो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.203; – *अड्ढतेय्यकोटिसङ्खानं परिचारिकानं मज्झे एकं अलम्बुसं नाम अच्छरं ठपेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.146; *अड्ढतेय्यसते मनुस्से वधित्वा खादिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 2.106; *परिजनकम्मकारेहि सह कम्मन्तं ओसटपरिसा अड्ढतेय्यसहस्सा अहोसि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.110; – **तेरस / तेळस** त्रि॰, [अर्धत्रयोदश], साढ़े बारह – *महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं अड्ढतेलसेहि भिक्खुसतेहि,* दी॰ नि॰ 1.42; स॰ नि॰ 1(1).222; महाव॰ 296; – **दण्डक** पु॰, [अर्धदण्डक], छोटे आकार का डण्डा या छड़ी – *अड्ढदण्डकेहिपि ताळेन्ति,* म॰ नि॰ 1.121; *हत्थेन वा पादेन वा कसाय वा वेत्तेन वा अड्ढदण्डकेन वा छेज्जाय वा हनेय्युं,* पारा॰ 53; – **दुस्स** नपुं॰, [अर्धदुष्य], आधा वस्त्र, वस्त्रखण्ड – *अड्ढदुस्सस्सिदं फलं,* अप॰ 2.76; – **नवम** त्रि॰, [अर्धनवम], साढ़े आठ – *एवं हि अड्ढनवमसहस्सानि जुतिन्धरो कारयित्वाभिसमयं,* म॰ वं॰, 15.201; – **नाळिकमत्त** त्रि॰, [अर्धनालिकामात्र], केवल आधी नालिका की माप या तौल वाला – *भद्दे अड्ढनाळिकतण्डुले गहेत्वा ततो मय्हं यागुञ्च पूवञ्च भत्तञ्च पचाही'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.194; – **नाळिमत्त** त्रि॰, उपरिवत् – *अहञ्हि अड्ढनाळिमत्तं वरकचोरकं कुण्ठकुदालञ्च निस्साय छ वारे पब्बजित्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.176; – **पक्कफल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अर्द्धपक्वफल], आधे पके फलों से युक्त – *तस्मिं अम्बवने अम्बरुक्खा पक्कफला च अड्ढपक्कफला च तरुणफला च फुल्लितायेवाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.162; – **पल्लङ्क** पु॰, [अर्धपर्यङ्क], अर्धपर्यङ्कासन – *अनुजानामि, भिक्खवे, भिक्खुनिया अड्ढपल्लङ्क'न्ति,* चूळव॰ 446; *अड्ढपल्लङ्कमाभुज्ज, निसीदि परमासने,* अप॰ 2.209; – **पोरिस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अर्धपौरुष], आधा पोरसा की ऊंचाई वाला – *होति खो सो, आवुसो, समयो यं महासमुद्दे अड्ढपोरिसम्पि उदकं सण्ठाति ...,* म॰ नि॰ 1.248; – **बेलुव** नपुं॰, [अर्धविल्व], बेल का आधा फल – *तावन्तो गण्ड जायेथ, अड्ढबेलुवसादिसा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.67; – **बेलुवपक्क** नपुं॰, [अर्धविल्वपक्व], पके बेल का आधा फल – *अथस्स तावदेव उदकबिन्दुगणनाय अड्ढबेलुवपक्कप्पमाणा गण्डा उट्ठहिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.70; – **बेलुवाहार** त्रि॰, ब॰ स॰, आधे बेल-फल का आहार ग्रहण करने वाला – *सन्ति खो पन मे, उदायि, सावका कोसकाहारापि अड्ढकोसकाहारापि बेलुवाहारापि अड्ढबेलुवाहारापि,* म॰ नि॰ 2.209; – **भाग** पु॰, [अर्द्धभाग], आधा हिस्सा, आधा भाग, अर्द्धभाग – *भागड्ढभागं दत्वान, मोदामि नन्दने वने,* वि॰ व॰ 113; *भागड्ढभागन्ति अत्तना लद्धपटिवीसतो उपड्ढभागं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 48; – **भुत्त** त्रि॰, [अर्धभुक्त], आधा खाया हुआ, अर्धभक्षित, वह, जिसने या जिसमें से आधा ही भोजन किया गया है – *अड्ढभुत्तं भोजनपातिं आदाय सत्थु सन्तिकं गन्त्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.339; – **मण्डल** नपुं॰, [अर्द्धमण्डल], छोटा मण्डल, आधा मण्डल – *अड्ढमण्डलम्पि नाम करिस्सति,* महाव॰ 378; *अड्ढमण्डलन्ति खुद्दकमण्डलं,* महाव॰ अट्ठ॰ 384; – **टि॰** पांच खण्डों वाले चीवर के प्रत्येक खण्ड को पुनः दो भागों में विभक्त किया जाता है, छोटे टुकड़े को अड्ढमण्डल या खुद्दक-मण्डल कहते हैं और दूसरे वस्त्रखण्ड को मण्डल कहते है, द्रष्ट॰, तदे॰; – **मत / अद्धमत** त्रि॰, [अर्धमृत], आधा मरा हुआ, मृतप्राय, मरणासन्न – *आमतो होतीति अद्धमतो मरितुं आरद्धो होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.361; – **मान** नपुं॰, [अर्द्धमान], आधा मान, प्राचीन काल की एक माप, माप की एक इकाई – *तस्मा हरामि भुसं अड्ढमानं, मा मे मिति जीयित्थ सस्सताय'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.446; *मान'न्ति हि अट्ठन्नं नाळीनं नामं, चतुन्नं अड्ढमानं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.447; – **मास**[1] पु॰, [अर्धमास], आधा महीना, एक पक्ष – *एकं मासं ... अड्ढमासं ... तिट्ठतु, भिक्खवे, अड्ढमासो,* दी॰ नि॰ 2.236; म॰ नि॰ 1.92; *इच्छामहं, भिक्खवे, अड्ढमासं पटिसल्लीयितुं,* स॰ नि॰ 3(2).390; – **मासमत्त** नपुं॰, केवल एक पखवारा-मात्र, आधा महीना – *सो पुन अड्ढमासमत्तं अतिक्कमित्वा राजानं दब्बिया पहरित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.190; – **मासन्तरिक** त्रि॰, [अर्धमासान्तरिक], आधे महीने के अन्तराल वाला – *अद्धमासिकन्ति अद्धमासन्तरिकं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).357; – **मासिक**[1] त्रि॰, [अर्धमासिक], एक पखवारे वाला, आधे महीने से सम्बद्ध – *इति एवरूपं अद्धमासिकम्पि परियायभत्तभोजनानुयोगमनुयुत्तो विहरामि,* म॰ नि॰ 1.111; दी॰ नि॰ 1.150; – **मासूपसम्पन्न** त्रि॰, [अर्धमासोपसम्पन्न], एक पखवारे अथवा आधा महीना पूर्व उपसम्पदा प्राप्त करने वाला – *अचिरूपसम्पन्ने जोतिपाले माणवे अड्ढमासूपसम्पन्ने,* म॰ नि॰ 2.250; – **मास**[2] पु॰, [अर्धमाषा], आधा मासा, माष नामक मुद्रा-विशेष का आधा *अलद्धपुब्बं लद्धान, अड्ढमासं कण्टको,* जा॰ अट्ठ॰ 6.175; *अयं किं अग्घति,*

अड्ढमासकोपिस्सा मूलं न होतीति भूमियं खिपित्वा ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.119; *इति तव अड्ढमासको, मम अड्ढमासकोति मासकोव होति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.394; *त्वं अम्हाकं सतसहस्सग्घनिकं सुवण्णपातिं अड्ढमासग्घनिकम्पि न अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.119; – **मासिक**² त्रि॰, [अर्धमासिक], आधे मासे की तौल वाला, रू॰ सि॰ 360; द्रष्ट॰ मो॰ व्या॰ 4.41; – **मुण्डक** त्रि॰, [अर्धमुण्डक], दासता अथवा पराधीनता-सूचक चिह्न के रूप में आधे मुड़े हुये सिर वाला, आधा मुड़ा हुआ – *सत्त सतानि पुरिसे कारेत्वा अड्ढमुण्डके,* म॰ वं॰ 6.42; – **योजन** नपुं॰, [अर्द्धयोजन], आधे योजन की दूरी, आधा योजन – *आरक्खं वड्ढेत्वा सब्बदिसासु अड्ढयोजने अड्ढयोजने ठपेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.69; *सकटं तक्केसि योजनं तक्केसि अद्धयोजनं तक्केसीति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 187; *तत्थ एका गावुतप्पमाणा, एका अड्ढयोजनप्पमाणा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.64; *सेसजनं आदाय गन्त्वा अड्ढयोजनमत्ते ठाने ठत्वा आगताम्हाति सासनं पहिणि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.220; – **योजनिक** त्रि॰, [अर्द्धयोजनिक], अर्द्धयोजन विस्तार वाला – *तेसु सङ्खो गावुतिको, एलो अड्ढयोजनिको, उप्पलो तिगावुतिको पुण्डरीको योजनिको,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.229; – **रतनिक** त्रि॰, [अर्द्धरत्निक], आधा रत्न माप वाला – *अतिसम्बाधे चङ्कमे वित्थारतो रतनिके वा अड्ढरतनिके वा चङ्कमन्तस्स ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.10; – **रत्त** पु॰, [अर्धरात्र], आधी रात, अर्द्धनिशा, महानिशा – *निसीथो मज्झिमा रत्ति अड्ढरत्तो महानिसा,* अभि॰ प॰ 70; *एतेनुपायेन बद्धं बद्धं विञ्ञापेन्तस्सेवस्स अड्ढरत्तो जातो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.260; *न त्वं राध विजानासि, अड्ढरत्ते अनागते,* जा॰ अट्ठ॰ 1.473; – **रत्तसमय** पु॰, [अर्द्धरात्रसमय], आधी रात का समय – *यो वा तदहुपोसथे पन्नरसे विद्धे विगतवलाहके देवे अभिदो अड्ढरत्तसमयं,* म॰ नि॰ 2.235; *सिद्धत्थकुमारो अज्ज अड्ढरत्तसमये महाभिनिक्खमनं निक्खमिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.70; – **रत्ति** स्त्री॰, [अर्धरात्रि], आधी रात; – **समये** आधी रात में – *अथेकदिवसं कतञ्ञुताय चोदियमानो अड्ढरत्तिसमये ... एकमन्तं अट्ठासि,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 214; – **लाबुसम** त्रि॰, [अर्धलाबुसम], आधी लौकी या कद्दू के समान – *पयोधरा अपतिता, अड्ढलाबुसमा थना,* जा॰ अट्ठ॰ 5.150; – **विवट** त्रि॰, [अर्धविवृत], आधा खुला हुआ – *सा द्वारं अड्ढविवटं कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.283; – **सार** त्रि॰, ब॰ स॰ [अर्धसार], वह सिक्का, जो आधे मूल्य का हो – *अयं छेको, अयं कूटो, अयं अद्धसारोति इमं पन विभागं न जानाति,* विसुद्धि॰ 2.64; – **सोळस** त्रि॰, [अर्धषोडश], साढ़े पन्द्रह – *ततो अड्ढतेलसानं भिक्खुसतानं पटियत्तं अड्ढसोळसन्नं पापुणिस्सतीति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.152; – **ड्ढाळ्हकमत्त** त्रि॰, [अर्धाढकमात्र], केवल आधे आढक की माप वाला – *अड्ढाळ्हकमत्तं वीहिं लभित्वा कोट्टेत्वा एकं तण्डुलनाळिं गहेत्वा ... भूमियं निक्खणित्वा ठपेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.212; – **ड्ढाळ्हकोदन** नपुं॰, [अर्धाढकोदन], आधे आढक माप वाला (चावल या भात) – *उक्कट्ठो नाम पत्तो अड्ढाळ्हकोदनं गण्हाति चतुभागं खादनं तदुपियं ब्यञ्जनं,* पारा॰ 365.

अड्ढता स्त्री॰, भाव॰ [आढ्यता], समृद्धता – *अड्ढता हि अनन्ता मे परलोके भविस्सति,* सद्धम्मो॰ 316.

अड्ढदुक / अड्ढरुक पु॰, नपुं॰, व्यु॰ अनिश्चित, उदर पर केशों की कुछ कतारों को कतरने के बाद छोड़े गये केश – *न अड्ढदुकं कारापेतब्बं,* चूळव॰ 255; *अड्ढदुकन्ति उदरे लोमराजिठपनं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 54.

अड्ढमासकराजा पु॰, गङ्गमाल जातक के नायक एक राजा का नाम – *सो अड्ढमासकराजा नाम अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.396.

अड्ढयोग पु॰, [अर्धयोग], **शा॰ अ॰** आधा, अधूरा निर्माण, **ला॰ अ॰** केवल एक ओर से ही छाया गया भवन, विहार का एक प्रकार, गरुड़ के वक्र पंखों की आकृति के अनुकरण पर वक्राकृति में बना भवन, भिक्षुओं का ऐसा आवासीय भवन जिसकी छत, एक ओर ढाल वाली हो, और जिसके दोनों ओर भित्तियां न हों – *सुपण्णवङ्कसदनमड्ढयोगो,* अभि॰ प॰ 209; *एकपस्से येव छदनतो अड्ढेव योगो अड्ढयोगो, गरुळस्स पक्खेन सदिसछदनगेहं,* अभि॰ प॰ सूची॰; *अतिरेकलाभो - विहारो, अड्ढयोगो पासादो हम्मियं गुहा,* महाव॰ 65; *अड्ढयोगोति सुपण्णवङ्कगेहं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 58.

अड्ढवग्ग पु॰, पांच जातकों वाले पञ्चक निपात के अन्तिम वर्ग का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 3.184-199.

अड्ढवाद पु॰, अपने धनी होने के विषय में बढ़-चढ़कर डींग हांकना – *दलिद्दोव अयमायस्मा समानो अड्ढवादं वदेति,* अ॰ नि॰ 3(2).37; *अड्ढवादं वदेय्याति अड्ढोहमस्मीति वादं वदेय्य,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.298.

अड्ढसमवुत्त त्रि॰, [अर्धसमवृत्त], छन्दों के ऐसे उपवर्ग का नाम जिनमें गाथा का प्रथम एवं तृतीय पाद तथा द्वितीय एवं चतुर्थ पाद सममात्रिक होते है, वुत्तो॰ 106-116.

अड्ढसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के दो सुत्तों का शीर्षक, स॰ नि॰ 3.465-466, पाठा॰ महद्धनसुत्त.

अड्ढुड्ढ त्रि., [अर्धचतुर्थ], साढ़े तीन – *चतुत्थोड्ढेन अड्ढुड्ढो,* अभि. प. 477; *अड्ढेन चतुत्थो अड्ढुड्ढो,* क. व्या. 389; *अड्ढुड्ढानि इत्थिसहस्सानि परिचारिका दिजकञ्ञायो,* जा. अट्ठ. 5.412.

अड्ढुम्मत्त त्रि., [अर्धोन्मत्त], आधा पागल, अर्धविक्षित – *अड्ढुम्मत्तो उदीरेसि, यो सेय्या मञ्ञसित्थियो,* जा. अट्ठ. 5.361; *अड्ढुम्मत्तोति अड्ढुम्मत्तको मञ्जे हुत्वा,* जा. अट्ठ. 5.362.

अड्ढुल्लिखित त्रि., [अर्धोल्लिखित], आधे-अधूरे रूप में अलंकृत या विन्यस्त – *सा उदकबिन्दूहि पग्घरन्तेहेव अड्ढुल्लिखितेहि केसेहि वेगेन गन्त्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.67; उदा. अट्ठ. 136; पाठा. उपड्ढुल्लिखित.

अड्ढेकादस त्रि., [अर्धैकादश], साढ़े दस – *अड्ढारससु धातूसु अड्ढेकादसधातुयो रूपपरिग्गहो, अड्ढुड्ढमकधातुयो,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.74.

अड्ढोचितक त्रि., [अर्धविचितक], वह, जिसमें से आधे पुष्प चुने गये हैं – *तस्स तं दिवसं मालाकारा अड्ढोचितके पुप्फगच्छे दत्वा अगमंसु,* जा. अट्ठ. 1.127.

अणति √अण का वर्त., प्र. पु., ए. व., (केवल ब्राह्मण शब्द के निर्वचन के सन्दर्भ में प्रयुक्त) स्वाध्याय करता है – *ब्रह्मं अणतीति ब्राह्मणो, मन्ते सज्झायतीति अत्थो, इदमेव हि जातिब्राह्मणानं निरुत्तिवचनं,* दी. नि. अट्ठ. 1.197; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).117.

अणिम स्त्री., [अणिमन्], सूक्ष्मता, अणुता, अणु जैसा छोटा, योगी की आठ सिद्धियों में से एक ऐसी दैवी-शक्ति-जिसके बल से मनुष्य 'अणु' जैसा छोटा बन सकता है; द्रष्ट. अण्वादित्विनो मो. व्या. 4.62; – **लधिमादिक** त्रि., अणिमा एवं लधिमादि दैवी शक्तियों वाला, लधिमादि दैवी शक्तियों से सम्पन्न व्यक्ति – *अणिमालधिमादिकं वा लोकियसम्मतं सब्बाकारपरिपूरं अत्थि,* खु. पा. अट्ठ. 88; विसुद्धि. 1.203.

अणु त्रि., [अणु], **1**. सूक्ष्म, लघु, नन्हा, परमाणु से सम्बद्ध – *परित्तं सुखुमं खुद्दं थोकं अप्पं किसं तनु चुल्लं मत्तेत्थियं लेसं लवाणु हि कणो पुमे,* अभि. प. 704-705; *अणुं वा थूलं वा, यं तुम्हे नाधिवासेय्याथा'ति,* म. नि. 1.182; मि. प. 252; **2**. पु., नपुं., **क**. मापने की एक इकाई, छत्तीस परमाणुओं के बराबर की माप वाली एक इकाई – *छत्तिंस परमाणूनमेको'णु,* अभि. प. 194; *एतेसु पन छत्तिंस परमाणवो एकस्स अणुनो पमाणं,* विभ. अट्ठ. 325; **ख**. वैशेषिक-दर्शन में मान्य एक पदार्थ-विशेष – *तित्थियानं अणुपकतिपुरिसादिकस्स वा पञ्ञापनापि अविज्जमान-पञ्ञत्तियेव,* पु. प. अट्ठ. 26; – **क** त्रि., [अणुक], अत्यन्त सूक्ष्म आकार वाला, सूक्ष्मतम, सूक्ष्मातिसूक्ष्म – *दीघा वा ये व महन्ता, मज्झिमा रस्सका अणुकथूला,* सु. नि. 146; *अणुकं वा महन्तं वा, तं सब्बं पूरितं मया,* अप. पृ. 2.201; – **धम्म** पु., निन्दित धार्मिक आचरण, तुच्छ एवं गर्हित धार्मिक प्रक्रिया, जुगुप्सित आचरण – *एवमेसो अणुधम्मो, पोराणो विञ्ञुगरहितो,* सु. नि. 315; *एवमेसो अणुधम्मोति एवं एसो लामकधम्मो हीनधम्मो अधम्मोति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.53; – **परिमितकाय** त्रि., [अणुपरिमितकाय], अणु के समान अत्यन्त सूक्ष्म शरीर वाला – *यथा वा पन, महाराज, आतुरो किसो अणुपरिमितकायो सालककिमि हत्थिनागं ... दिस्वा गिलितुं परिकड्ढेय्य,* मि. प. 286; – **प्पमाण** त्रि., ब. स. [अणुप्रमाण], अत्यन्त सूक्ष्म आकार वाला – *बुद्धानं पन अणुप्पमाणम्पि सङ्खारगतं ञाणेन अदिट्ठ ... नत्थि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).57; – **बीज** त्रि., ब. स., अत्यन्त सूक्ष्म बीजों से युक्त – *इमे खो ते, भिक्खवे, महारुक्खा अणुबीजा महाकाया ...,* स. नि. 3(1).117; – **भेद** पु., [अणुभेद], अणुओं के रूप में विभाजन, अत्यन्त सूक्ष्म खण्डों में विभाजन – *चुण्णितो अणुभेदेन, कोटिसतसहस्ससो,* अप. 1.18; – **मज्झिमा** स्त्री., ब. स., क्षीण कटि वाली, पतली कमर वाली – *सुजाता भुजलट्ठीव, वेदीव तनुमज्झिमा,* जा. अट्ठ. 6.287; – **मत्त** त्रि., ब. स. [अणुमात्र], अत्यन्त सूक्ष्म आकार वाला, अत्यन्त सूक्ष्म, सबसे कम, तनिक भी – *अणुमत्तोपि पुञ्ञेन, अत्थो मय्हं न विज्जति,* सु. नि. 433; *याव हि वनथो न छिज्जति, अणुमत्तोपि नरस्स नारिसु,* ध. प. 284; *अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्सावी,* विभ. 274; – **सहगत** त्रि., [अणुसहगत], अत्यन्त सूक्ष्म, सूक्ष्मातिसूक्ष्म – *अणुसहगतो कामरागो पहीनो ... अणुसहगतो ब्यापादो पहीनो,* कथा. 78; *अणुसहगतस्स अनागामिमग्गेन,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).299.

अण्ड नपुं. [अण्ड], **1**. पक्षिबीज, अण्डा, डिम्ब – *अण्डं तु पक्खिबीजे'थ,* अभि. प. 627; *भुत्वा अण्डञ्च पोतञ्च ...,* जा. अट्ठ. 3.236; *सेय्यथापि, ब्राह्मण, कुक्कुटिया अण्डानि अट्ठ वा दस वा द्वादस वा,* पारा. 4; **2**. पु., अण्डकोष – *कोसे खगादिवीजे'ण्डं,* अभि. प. 1092; *सो गच्छन्तोपि तेव अण्डे खन्धे आरोपेत्वा गच्छति,* पारा. 142; स. उ. प. में कुम्भ., चम्म., फल., मोर., वात. के अन्त. द्रष्ट.; – **क 1**. नपुं., पक्षियों, मधुमक्खियों आदि का अण्डा – *एतेसं अण्डकानि चेव छापके च वरं वरं खादितुं वट्टती'ति,* जा. अट्ठ. 3.235;

अण्डकानि दिस्वा तानि सणिकं अपनेत्वा पुन अदासि, ध. प. अट्ठ. 1.37; 2. नपुं., वृक्ष में होनेवाली अपवृद्धि, वृक्ष पर उभरी हुई बंझा या गांठ - *अण्डकाति यथा सदोसे रुक्खे अण्डकानि उट्ठहन्ति, एवं सदोसताय खुंसनवम्भनादिवचनेहि अण्डका जाता,* ध. स. अट्ठ. 417; *सदोसवण्णे रुक्खे निय्यासपिण्डियो, अहिच्छत्तकानि वा उट्ठितानि अण्डकानी'ति वदन्ति, फेग्गुरुक्खस्स पन कुथितस्स अण्डानि विय उट्ठिता चुण्णपिण्डियो गण्ठियो वा अण्डकानी'ति वेदितब्बा,* ध. स. मू. टी. 177; - **कपाल** नपुं., [अण्डकपाल], अण्डे का खोल, अण्डविवर, अण्डे का आच्छादन - *अण्डकपालानं तनुभावो विय बोधिसत्तभूतस्स भगवतो तिविधानुपस्सनासम्पादनेन अविज्जण्डकोसस्स तनुभावो,* पारा. अट्ठ. 1.102; - **कोस** पु., [अण्डकोष], अण्डकोष, फोता - *मुखतुण्डकेन वा अण्डकोसं पदालेत्वा सोत्थिना अभिनिब्भिज्जेय्य,* पारा. 4; *ये खो ते, सारिपुत्त, सत्ता अण्डकोसं अभिनिब्भिज्ज जायन्ति, अयं वुच्चति, सारिपुत्त, अण्डजा योनि,* म. नि. 1.106; - **च्छेद** पु., बधिया बनाने के लिए पशुओं के अण्डकोषों का छेदन - *अण्डच्छेदा निलछ्छकाति भतिं गहेत्वा बलिवद्दानं अण्डच्छेदका चेव,* जा. अट्ठ. 4.329; - **ज** त्रि., [अण्डज], **क**. चार प्रकार की योनियों में से एक योनि का नाम, अण्डे से उत्पन्न प्राणी - *अण्डजा योनि, जलाबुजा योनि, संसेदजा योनि, ओपपातिका योनि,* म. नि. 1.106; **ख**. चार प्रकार की नागयोनियों में से एक - *अण्डजा नागा, जलाबुजा नागा, संसेदजा नागा, ओपपातिका नागा - इमा खो, भिक्खवे, चतस्सो नागयोनियों,* स. नि. 2(1).238; **ग**. पु., पक्षी - *विहङ्गो विहगो पक्खि विहङ्गमखगाण्डजा,* अभि. प. 624; *अण्डजा मीनपक्खिसु,* तदे. 1079; - **भारी** त्रि., [अण्डहारी], अपने अण्डकोष को कन्धे पर रखकर ढोनेवाला - *अण्डभारि अहु गामकूटकोति,* स. नि. 1(2).235; - **भारितवत्थु** नपुं., पारा. की एक कथा का शीर्षक - *अण्डभारितवत्थुस्मिं गामकूटोति विनिच्छयामच्चो,* पारा. अट्ठ. 2.90; - **सुत्त** नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 1(2).234-235; - **भूत** त्रि., [अण्डभूत], **क**. अण्डे के अन्तर्गत विद्यमान, चारों ओर ढका, परतन्त्र, अनुभव-विहीन, बाह्यजगत के प्रभाव से विरहित - *अविज्जागताय पजाय अण्डभूताय परियोनद्धाय अविज्जण्डकोसं पदालेत्वा,* पारा. 4; **ख**. कभी-कभी आतुर के बाद भी प्रयुक्त - *आतुरो हायं, गहपति, कायो अण्डभूतो परियोनद्धो,* स. नि. 2(1).2; *अण्डभूताभता भरियाति अण्डं वुच्चति बीजं, बीजभूता मातुकुच्छितो अनिक्खन्तकालेयेव आभता आनीता, भताति वा पुट्ठाति अत्थो,* जा. अट्ठ. 1.282; - **जातक** जातक संख्या 62 का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.279-284; - **वुड्ढि / वुद्धि** स्त्री., [अण्डवृद्धि], अण्डकोषों का फूलना या बढ़ना, वातण्डकरोग, जिसमें अण्डकोष फूल जाते हैं - *अण्डवुड्ढिरोगेपि सत्थकम्मं न वट्टति,* महाव. अट्ठ. 354; - **सम्भव** पु., [अण्डसम्भव], अण्डे से उत्पत्ति या जन्म - *अपण्डरो अण्डसम्भवो, सीवथिकाय निकेतचारिको,* थेरगा. 599; - **हारक** त्रि., [अण्डहारक], अण्डों की खोज में निकला हुआ मनुष्य, अण्डों को ढोनेवाला - *सेय्यथापि, गहपति, पुरिसो अण्डहारको गन्त्वा उब्भतेहि अण्डेहि आगच्छेय्य,* म. नि. 2.52.

अण्डुक नपुं., बालों से बना जूड़ा अथवा उसी तरह की कोई गेंडुरी, नेदुआ, गेंडुआ, बालों की लट - केवल स. उ. प. मे द्रष्ट. चेन., वाल. के अन्त.

अण्डुपक नपुं., कपड़े का बना गोलाकार घटाधार, गेंडुआ, नेतुआ, गेंडुरी - *अण्डुपकं चुम्बुटकं,* अभि. प. 458.

अण्ण[1] पु., [अर्णस्], जल की बाढ़, जल-प्रवाह, जलौध - *अण्णो नीरं वनं वालं तोयमम्बु दकं च कं,* अभि. प. 661; मो. व्या. 499.

अण्ण[2] नपुं., [अन्न], अन्न, खाद्य, आहार, स. उ. प. में अपरण्ण, पुब्बण्ण के अन्त. द्रष्ट..

अण्णव पु., [अर्णव], 1. **शा. अ.** समुद्र, सागर - *अण्णवो सागरो सिन्धु समुद्दो रतनाकरो, जलनिध्युदधी,* अभि. प. 659; *कथंसु तरति ओघं, कथंसु तरति अण्णवं,* स. नि. 1(1).248; 2. **ला. अ. क**. संसार - *को सूध तरति ओघं, कोध तरति अण्णवं,* सु. नि. 175; 185; *ये तरन्ति अण्णवं सरं* महाव. 306; **ख**. सरोवर - *किं अण्णवे कानि फलानि भुञ्जे,* जा. अट्ठ. 3.459; *न अण्णवे सन्ति फलानि धङ्क, मंसं कुतो खादितुं चक्कवाके,* जा. अट्ठ. 3.460, स. उ. प. में द्रष्ट., उदक-., खीर-., भव-., मह-., व्यसन-., इत्यादि; - **कुच्छि** स्त्री., समुद्र की तलहटी - *भूरिदत्तनिवेसनं अण्णवकुच्छि विय एकसद्दं अहोसि,* जा. अट्ठ. 7.34; *छब्बण्णबुद्धरस्मियो विस्सज्जेन्तो अण्णवकुच्छिं ओभासयमानो युगन्धरमत्थके बालसूरियो विय आसनमज्झे निसीदि,* जा. अट्ठ. 1.126.

अण्ह पु., [अहन्], दिन, केवल, स. उ. प. में ही प्रयुक्त, द्रष्ट. पुब्ब-., साय-., अपर. के अन्त..

अतक्क-गाह पु., [अतर्कग्राह], बिना तर्क के ही किसी वाद या प्रतिज्ञा का ग्रहण, अतार्किक ग्रहण - *अपण्णके चेव*

सपण्णके चाति द्वीसु अतक्कग्गाह- तक्कग्गाहसङ्खातेसु ठानेसु गुणदोसं बुद्धिहानिं अत्थानत्थं ञत्वाति अत्थो, जा॰ अट्ठ॰ 1.113.

अतक्कावचर त्रि॰, [अतर्कावचर], **शा॰ अ॰** तर्क से परे, तर्क की पहुंच के बाहर, **ला॰ अ॰** विशुद्ध ज्ञान या निर्वाण की अवस्था - *तस्स निस्सरणं सन्तं, अतक्कावचरं धुवं,* इतिवु॰ 28; *अननुभूतपुब्बं परमगम्भीरं अतिदुद्दसं सण्हसुखुमं अतक्कावचरं अच्चन्तसन्तं पण्डितवेदनीयं अतिपणीतं अमतं निब्बानं,* उदा॰ अट्ठ॰ 318; *अधिगतो खो म्यायं धम्मो गम्भीरो दुद्दसो दुरनुबोधो सन्तो पणीतो अतक्कावचरो निपुणो पण्डितवेदनीयो,* दी॰ नि॰ 2.28; म॰ नि॰ 1.226.

अतक्किक त्रि॰, तक्किक का निषे॰ [अतार्किक], कुतर्क से मुक्त, तर्क की प्रक्रिया को ग्रहण न करने वाला - *सभावइसिभत्तिको सुतमन्तपदधरो अतक्किको रोगुप्पत्तिकुसलो अमोघधुवसिद्धकम्मो भिसक्को सल्लकत्तो,* मि॰ प॰ 233.

अतच्छ त्रि॰, तच्छ का निषे॰ [अतथ्य], मिथ्या, अवास्तविक - *इतिपेतं अभूतं, इतिपेतं अतच्छं,* दी॰ नि॰ 1.3; *होति अभूतं अतच्छं अनत्थसंहितं,* दी॰ नि॰ 3.100.

अतण्डुल त्रि॰, तण्डुल का निषे॰, ब॰ स॰, [अतण्डुल], तण्डुल से रहित, चावल के दानों से रहित - *थुसरासिंव अतण्डुलं,* चरिया॰ 3.2.4.

अतथ त्रि॰, तथा का निषे॰ [अतथा], मिथ्या, तथ्यरहित, अयथार्थ - *अतथं वा पन सन्तं तथत्ताय उपकप्पेस्सामी'ति इति वा पनस्स होति,* दी॰ नि॰ 2.50; *एवंमानि अस्स अतथं समानं,* म॰ नि॰ 3.41.

अतन्दित त्रि॰, तन्दित का निषे॰ [अतन्द्रित], अक्लान्त, परिश्रमी, मेहनती, आलस्य से रहित - *एवं विहारिं आतापिं, अहोरत्तमतन्दितं,* म॰ नि॰ 3.227; अप॰ 2.157; *मातरं पितरं पुब्बे, रतिन्दिवमतन्दितो,* अ॰ नि॰ 3(1).76; *अतन्दितोति अनलसो हुत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.355.

अतपनीय त्रि॰, तपनीय का निषे॰, [अतपनीय], शोक या पश्चात्ताप न करने योग्य - *द्वेमे, भिक्खवे, धम्मा अतपनीया,* अ॰ नि॰ 1(1).66; इतिवु॰ 20; *कतमे धम्मा अतपनीया? कायसुचरितं, वचीसुचरितं, मनोसुचरितं - इमे धम्मा अतपनीया, सब्बेपि कुसला धम्मा अतपनीया,* ध॰ स॰ 1312.

अतप्प पु॰, [बौ॰ सं॰ अतप], ऐसा देवलोक या ऐसे देवता, जो शोक या दुःख का अनुभव नहीं करते हैं - *अविहेहि देवेहि सद्धिं येन अतप्पा देवा तेनुपसङ्कमिं,* दी॰ नि॰ 2.40; *तस्स सुतं होति - वेहप्फला देवा ... अविहा देवा ... अतप्पा देवा ... सुदस्सा देवा ...,* म॰ नि॰ 3.145; *न कञ्चि सत्तं तप्पन्तीति अतप्पा,* विभ॰ अट्ठ॰ 494.

अतप्पक त्रि॰, [अतर्पक], वह, जिससे तृप्ति न हो, जिससे मन न भरे - *सन्तोति निब्बुतो; पणीतोति अतप्पको, इदं द्वयं लोकुत्तरमेव सन्ध ाय वुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).77, तुल॰ अटप्पिय.

अतप्पनीय / अतप्पनेय्य त्रि॰, तप्पनीय का निषे॰ [अतर्पणीय], वह, जो तृप्त या संतुष्ट कराने योग्य नहीं हो, असन्तोषी - *एवं अतप्पनीयं ... को ... सुहीतं कयिरा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.54; *अतप्पनेय्यरूपेन, हासभावसमन्विता,* अप॰ 2.217; *सोळस हि अतप्पनीयवत्थूनि नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 3.302.

अतप्पय / अतप्पिय त्रि॰, तप्पय का निषे॰ [अतर्प्य], अतृप्ति को उत्पन्न करने वाला, वह, जिससे कभी भी मन न भरे - *यथापि सागरो नाम, दस्सनेन अतप्पियो, तथेव तस्स पावचनं सवणेन अतप्पियं,* बु॰ वं॰ 8.26; *अतप्पियोति अतित्तिकरो, अतित्तिजननो वा,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 195.

अतम्मय त्रि॰, तम्मय का निषे॰ [अतन्मय], तृष्णा से मुक्त, सांसारिक वस्तुओं में अनासक्त, लगाव-रहित - *सो तादिसो लोकविदू सुमेधो, सब्बेसु धम्मेसु अतम्मयो मुनी'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).174; *अतम्मयो मुनीति सब्बे तेभूमकधम्मे तण्हासङ्खाताय तम्मयताय अभावेन अतम्मयो खीणासवमुनि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.129; *सब्बलोके च अतम्मयो भविस्सामि,* अ॰ नि॰ 2(2).143; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अतन्मयता], सांसारिक वस्तुओं में अनासक्त होने की अवस्था, विगततृष्णता, निस्पृहता - *पठमज्झानसमापत्तियापि खो अतम्मयता वुत्ता भगवता,* म॰ नि॰ 3.91; *तेधातुकेसु कुसलेसु धम्मेसु अतम्मयता इच्छितब्बा,* महानि॰ 138; - **तापज्जन** नपुं॰, लगाव-रहित चित्त की अवस्था की प्राप्ति, वीततृष्णता की अवस्था में प्रवेश - *पच्छिमे अदिट्ठिआदिभेदे सुक्कपक्खिये अतम्मयतापज्जनेन अनुग्गहाय,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.237.

अतरमान त्रि॰, √तर के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अत्वरमान], तीव्र गति से न चलता हुआ, जल्दबाजी न करता हुआ, सावधानी के साथ काम कर रहा - *तेन अप्पसद्दो उपसङ्कमित्वा अतरमानो आळिन्दं पविसित्वा ...,* दी॰ नि॰ 1.78; म॰ नि॰ 2.329; अ॰ नि॰ 3(2).54; महाव॰ 324; *अपि अतरमानानं, फलासाव समिज्झति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.141; *अतरमानानन्ति पण्डितानं ओवादे ठत्वा अतरित्वा ... कम्मं करोन्तानं,* तदे॰.

अतलम्फस्स त्रि॰, [अतलस्पर्शिन्], अगाध, बहुत गहरा - *अगाधं त्वतलम्फस्सं,* अभि॰ प॰ 669; *न हेट्ठिमतलं फुसति यत्र तं अतलम्फस्सं,* अभि॰ प॰ 669 पर सूची.

अतसिताय त्रि., [अत्रास्य], नहीं डरने योग्य, भय न करने योग्य - *इध, ... पुथुज्जनो अतसितायें ठाने तासं आपज्जति,* स. नि. 2(1).52; *अतसितायेति अतसितब्बे, अभायितब्बे ठानम्हि,* स. नि. अट्ठ. 2.244, पाठा. अत्तसिताय.

अतसी स्त्री., [अतसी], तीसी, अलसी - *उम्मा तु अतसी भवे,* अभि. प. 452; - **पुप्फवण्ण** त्रि., तीसी के फूलों जैसे वर्ण वाला - *सचे काळो होतुकामो, नीलुप्पलवण्णो वा अञ्जनवण्णो वा अतसीपुप्फवण्णो वा सियन्ति पत्थेति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.53.

अति निपा., विशे., क्रि. वि., क्रि. तथा ना. प. से पूर्व में प्रयुक्त उप. [अति], अत्यधिक, बहुत अधिक, अतिशय, प्रमुख, पूज्य, अधिक श्रेष्ठ - *अतीति अच्चन्तत्थे निपातो,* उदा. अट्ठ. 181; *बलवं सुट्ठु चातीवातिसये किमुत स्व अति,* अभि. प. 1138; *अन्तोभावभुसत्थातिसयपूजास्वतिक्कमे, भूतभावे पसंसायं दळ्हत्थादो सिया अति,* अभि. प. 1182; - **अग्गता** स्त्री., भाव. [अत्यग्रता], सर्वोत्तमता, सर्वश्रेष्ठता, अनुत्तरता - *बुद्धो अतिअग्गताय अनुपमो,* मि. प. 259; - **अग्गि** पु., अत्यधिक उष्ण अग्नि - *अति अग्गिना ओदनं उत्तरति,* मि. प. 258; - **अच्छेरक** त्रि., [अत्याश्चर्यकर], अध्यधिक आश्चर्यजनक - *इमिना वानरिन्देन अतिअच्छेरकं कत'न्ति चिन्तेत्वा,* जा. अट्ठ. 1.269; - **अञ्छितुं / अच्छितुं** अति + √अञ्ज / अञ्छ का निमि. कृ., ऊंची कीमत मांगने के निमित्त या ठगने के निमित्त - *अति अञ्छितुं न वट्टति,* अ. नि. अट्ठ. 1.189; - **रसभेसज्ज** नपुं., केवल समृद्ध व्यक्तियों के द्वारा ही खरीदने योग्य दवा - *भद्दे इदं अतिरसभेसज्जं, कुतो लभिस्सामी'ति वत्वा चिन्तेसि,* जा. अट्ठ. 5.439; - **अम्बिल** त्रि., [अत्यमल], बहुत खट्टा, अधिक खट्टा - *तस्सा अच्चुण्हअतिसीतअतिअम्बिलादिपरिभोगं वज्जेत्वा सुखेन गब्भं परिहरियमानाय एवरूपो दोहळो उप्पज्जि,* ध. प. अट्ठ. 1.297; - **अरहन्त** पु., अर्हत् से अत्यधिक ऊपर - *अरहन्तानं अतिअरहा भवेय्या'ति,* मि. प. 258; - **असन** नपुं., [अत्यसन], अधिक भोजन करना, अधिक खाना - *अतिअसनेन अति भुत्तेनाति अत्थो,* जा. अट्ठ. 1.184; - **अहित** त्रि., अत्यन्त द्वेषी, अत्यधिक अपकारी, अत्यधिक अहित करने वाला - *नाच्चाहितन्ति न अतिअहितं,* जा. अट्ठ 5.141, द्रष्ट., अच्चाहित; - **आयत** त्रि., अत्यधिक चौड़ा - द्रष्ट. अच्चायत के अन्त.; - **इट्ठ** त्रि., [अतीष्ट], अत्यधिक वाञ्छित, अत्यधिक अभीष्ट, अत्यधिक काम्यमान - *अभिक्कन्तन्ति अतिइट्ठं अतिमनापं अतिसुन्दरन्ति वुत्तं होति,* पारा. अट्ठ. 1.128; दी. नि. अट्ठ. 1.184; - **उग्गत** त्रि., [अत्युद्गत], अत्यधिक ऊपर उठा हुआ - *तत्थ अच्चुग्गताति अतिउग्गता,* जा. अट्ठ. 1.414, द्रष्ट. अच्चुग्गत के अन्त.; - **उच्चं** निपा., क्रि. वि. [अत्युच्चैः], अत्यधिक ऊंचाई में - *सो अञ्ञेसं गिज्झानं सीमं अतिक्कमित्वा अतिउच्चं उप्पति,* जा. अट्ठ. 3.223; *चतुरङ्गिनिया सेनाय नातिउच्चं नातिनीचं उच्चरुक्खानं हेट्ठाभागेन ...,* खु. पा. अट्ठ. 140; - **उण्ह** त्रि., [अत्युष्ण], बहुत अधिक गरम - *अतिसीतं अतिउण्हं अतिसायमिदं अहु,* थेरगा. 231; दी. नि. 3.140, विलो. अतिसीतं; - **उत्तम** त्रि., [अत्युत्तम], सर्वश्रेष्ठ, अतिशय श्रेष्ठ - *अनधिवराति अधिका विसिट्ठा अञ्ञा एतिस्सा नत्थीति अनधिवरा, अतिउत्तमाति अत्थो,* वि. व. अट्ठ. 64; - **उदक** नपुं., अत्यधिक जल या वर्षा - *सेसजनेहि कतसस्सं अतिउदकेन वा अनोदकेन वा नस्सति,* ध. प. अट्ठ. 1.33; तुल. अच्चोदक; - **उदर** नपुं., उन्नत या उठा हुआ पेट - *तव उदरं पन अतिउदरं,* जा. अट्ठ. 4.249; द्रष्ट. अच्चोदर ऊपर, - **उपरि** निपा., [अत्युपरि], बहुत अधिक ऊपर - *द्वारं किर अतिउपरि अमनुस्सा ... कोटेन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.204; - **उस्सूरे** निपा. क्रि. वि. [अत्युत्सूर्य], प्रातः काल देर करके या सूर्य के बहुत ऊपर उठ जाने पर - *अतिउस्सूरे लद्धभत्तताय अक्खीनि भमन्ती'ति,* वि. व. अट्ठ. 51; - **कड्ढेय्यासि** अति + √कड्ढ का विधि. म. पु., ए. व. [अतिकर्षेः], आपत्ति उपस्थित करे, बहुत अधिक खींचातानी करे, अत्यधिक कष्ट दे - *वदेय्याम खो तं, गहपति, सचे त्वं नातिकड्ढेय्यासी'ति,* पारा. 18; *नातिकड्ढेय्यासीति यं ते मयि पेमं पतिट्ठितं, तं कोधवसेन न अतिकड्ढेय्यासि, सचे न कुज्झेय्यासीति वुत्तं होति,* पारा. अट्ठ. 1.162; - **कण्ह** त्रि., [अतिकृष्ण], अत्यधिक काला - *अतिदीघं, अतिरस्सं, अतिकण्हं, अच्चोदातं, एतं हीनं नाम लिङ्गं,* पाचि. 9; - **करुण** त्रि., [अतिकरुण], अत्यधिक करुण या दुर्दशा से ग्रस्त - *अतिकरुणं परिदेवमाना राजानं अनुबन्धि,* जा. अट्ठ. 6.65; - **कस्स** अति + √कस का पू. का. कृ. [अतिकृष्य], अत्यधिक खींचकर, अतिकर्षण करके - *भेत्वान नासं अतिकस्स रज्जुं, नयिंसु मं सम्परिगय्ह लुद्दा,* जा. अट्ठ. 5.166; - **काय** त्रि., ब. स. [अतिकाय], भारी डील डौल वाला, बहुत बड़े शरीर वाला, महाकाय - *अतिकायो महिस्सासो, अज्जुनो केककाधिपो,* जा. अट्ठ. 5.259; - **कर** पु., [अतिकार], अत्यधिक करना, आवश्यकता से कहीं बहुत अधिक काम करना - *अतिकरमकराचरिय,*

मग्हम्पेतं न रुच्चति, जा॰ अट्ठ॰ 1.413; *अतिकरमकराचरियाति आचरिय अज्ज त्वं अतिकरं अकरि, अत्तनो करणतो अतिरेकं करणं अकरीति अत्थो,* तदे॰; – **कालेन** क्रि॰ वि॰ [अतिकालं], बहुत सवेरे, प्रातः काल, तड़के, भोरे-भोरे – *इध, भिक्खवे, अञ्ञतित्थियपुब्बो अतिकालेन गामं पविसति, अतिदिवा पटिक्कमति,* महाव॰ 88-89; *तेन खो पन समयेन आयस्मा नागदत्तो अतिकालेन गामं पविसति,* स॰ नि॰ 1(1).232; *अतिकालेनाति सब्बरत्तिं निद्दायित्वा बलवपच्चूसे कोटिसम्मुञ्जनिया थोकं सम्मज्जित्वा मुखं धोवित्वा यागुभिक्खाय पातोव पविसति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.258; – **किलमामि** अति + √किलम का वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, अत्यन्त क्लान्त या श्रान्त होता हूं – *नितम्मामीति अतिकिलमामि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.253; – **किलिन्न** त्रि॰, अति + √किलम का भू॰ क॰ कृ॰ [अतिक्लिन्न], अत्यधिक गीला, अत्यधिक उबाला हुआ (भात या चावल) – *एकदिवसं थोकं किलिन्नं ... एकदिवसं अतिकिलिन्नं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.338; – **किस** त्रि॰, [अतिकृश], अत्यधिक दुबला-पतला – *सेय्यथापि ... खत्तियकञ्ञा ... नातिकिसा नातिथूला ...,* म॰ नि॰ 1.122, 'अतिथूल' (अतिस्थूल) का विलो॰; – **कुद्ध** त्रि॰, [अतिक्रुद्ध], अत्यधिक क्रोधित – *अच्चुग्गताति अतिकुद्धा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.276; – **कुसल** त्रि॰, [अतिकुशल], अत्यधिक दक्ष, उच्च-रूप में दक्ष – तत्थ ... अतिसये अतिकुसलो, सद्द॰ 3.881; – **कोध** पु॰, [अतिक्रोध], अत्यधिक क्रोध – तत्थ ... भुसत्थे अतिकोधो, सद्द॰ 3.881.

अतिक्कन्त त्रि॰, अति + √कमु का भू॰ क॰ कृ॰, [अतिक्रान्त], 1. बीता हुआ, पार किया हुआ – *तीणि संवच्छरानि अतिक्कन्तानि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.105; *अड्ढमासे अतिक्कन्ते तथेव वुत्ते पुन सत्ताहं आगमेही'ति आह,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 47; 2. अतिक्रमण कर चुका, आगे बढ़ चुका या पार कर चुका – *एवं इमेपि तयो वये अतिक्कन्ता ... मरणं उपगमिस्सन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.73; 3. पराभूत कर चुका, अभिभूत कर चुका – *अरहा सब्बभयमतिक्कन्तो'ति,* मि॰ प॰ 147; *अतिक्कन्ता भया सब्बे,* थेरगा॰ 707; स॰ उ॰ प॰ में अन॰, काला॰, पमाण॰, मासा॰, यामा॰, लोका॰, वेला॰, सत्ताहा॰, हिता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **त्थ** त्रि॰, ब॰ स॰, अपने हित की हानि पहुंचा चुका व्यक्ति – *अतीतमत्थोति अतीतत्थो अतिक्कन्तत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.74; – **मानुसक** त्रि॰, ब॰ स॰, अतिमानवीय, लोकोत्तर, दिव्य, दैवी – *सो दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सामि चवमाने ...,* पारा॰ 5; *मानुसकं वा मंसचक्खुं अतिक्कन्तत्ता अतिक्कन्तमानुसकन्ति वेदितब्बं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.122; – **वनथ** त्रि॰, ब॰ स॰, तृष्णा पर विजय प्राप्त कर चुका व्यक्ति – *अतिक्कन्तवनथा धीरा, नमो तेसं महेसिनं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.53; *तत्थ अतिक्कन्तवनथाति पहीनतण्हा,* तदे॰; – **वर** त्रि॰, ब॰ स॰, वरदान आदि लौकिक अवस्थाओं से ऊपर उठ चुका व्यक्ति – *अतिक्कन्तवरा खो, गोतम, तथागता ति,* महाव॰ 105; – **वेल** त्रि॰, ब॰ स॰, सीमा का उल्लङ्घन करने वाला – *अतिवेलं पभासिताति अतिक्कन्तवेला पमाणातिक्कमेन भासिता,* जा॰ अट्ठ॰ 1.414; – **सञ्ञी** त्रि॰, [अतिक्रान्तसंज्ञिन्], जो बीत चुका है, उसका ज्ञान रखनेवाला, जो अतिक्रान्त हो चुका है उसका बोध रखनेवाला – *सत्ताहातिक्कन्ते अतिक्कन्तसञ्ञी निस्सग्गियं पाचित्तियं,* पारा॰ 376; – **सत्थुक** त्रि॰, वह, जिसका शास्ता दिवंगत हो चुका है – *नयिदं अतीतसत्थुकं पावचनं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 89; – **सील** त्रि॰, ब॰ स॰, शील का उल्लङ्घन कर चुका व्यक्ति – *अच्चन्तसीलासूति अतिक्कन्तसीलासु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.447.

अतिक्कन्तिका स्त्री॰, सदाचार का अतिक्रमण करने वाली नारी, छिनार, कुलटा – *किं ते सच्चबलं अत्थि चोरिया ... हिरिअतिक्कन्तिकाय अन्धजनपलोभिकाया'ति,* मि॰ प॰ 128.

अतिक्कम पु॰, [अतिक्रम], अतिक्रमण, सीमोल्लङ्घन, निरोध, अन्त, अभिभवन, पराभवन – *अतिक्कमो त्वतिपातो उपच्चयो,* अभि॰ प॰ 776; *अन्तोभावभुसत्था – तिसयपूजास्वतिक्कमे,* अभि॰ प॰ 1182; *पज्जोतकरो अतिविज्झ, सब्बट्ठितीनं अतिक्कममद्दस,* स॰ नि॰ 1(1).224; *अतिक्कममद्दसाति अतिक्कमभूतं निब्बानमद्दस,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.246; *दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं,* ध॰ प॰ 191; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अञ्ञा॰, लोकधम्मा॰, अपगमा॰, आकासा॰, आरम्मणा॰, उपचारा॰, काला॰, रूपनिमित्ता॰, वस्साना॰, विञ्ञाणा॰, हिमपाता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अतिक्कमति अति + √कम का वर्त॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [अतिक्रामति/अतिक्रमते/अतिक्राम्यति], 1. **शा॰ अ॰** आगे निकल जाता है, पार कर जाता है, उल्लंघन करता है, कतराकर निकल जाता है – *गामस्स द्वारसमीपेन मग्गेन अतिक्कमति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 57; *मन्दोति सो अञ्ञाणपुग्गलो मातुकुच्छियं वासं नातिक्कमति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.213; – **मिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *पञ्चमत्तानि सकटसतानि आळारं कालामं निस्साय निस्साय अतिक्कमिंसु,* दी॰ नि॰ 2.99; –

क्कमुं अद्य., प्र. पु., ब. व. - *तिंसवस्ससहस्सानि, विपिने मे अतिक्कमुं,* अप. 1.65; **2. ला. अ. क.** अभिभूत कर लेता है, जीत लेता है, किसी अन्य से अधिक श्रेष्ठ हो जाता है; - **मेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *कोधं जहे विप्पजहेय्य मानं, संयोजनं सब्बमतिक्कमेय्य,* ध. प. 221; - **क्कम्म / म्मित्वा** पू. का. कृ. - *अतिक्कम्म भवं समेच्च धम्मं, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य,* सु. नि. 363; *आचरियं निस्साय भातिकसतं अतिक्कमित्वा इदं महारज्जं पत्तोस्मीति उदानं उदानेसि,* जा. अट्ठ. 1.141; **2. ला. अ. ख.** निर्धारित नियमों के विपरीत जाता है, पत्नी के प्रति निष्ठावान् नहीं होता है, परदारा का सेवन करता है; - **म्मन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *भगवतोपि, महाराज, सासनवरे आणं अतिक्कमन्तो अलज्जी ...,* मि. प. 214; - **क्कमितुं** निमि. कृ. - *तस्सा वचनं अतिक्कमितुं असक्कोन्तो,* जा. अट्ठ. 1.419.

अतिक्कमन नपुं. [अतिक्रमण], सीमोल्लंघन, पराभवन, अभिभवन, नियमोल्लंघन - *तस्सातिक्कमनत्थाय अरूपं पटिपज्जति,* अभि. अव. 983; - **क** त्रि., अतिक्रमण या सीमोल्लंघन करने वाला, आगे निकल जानेवाला, सीमा के पार चला जाने वाला - *ततो पट्ठाय पण्णसञ्ञं अतिक्कमनकमिगो नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 1.156, पाठा. अतिक्कमनमिगो; - **चित्त** नपुं., अतिक्रमण-विषयक चित्त, सीमोल्लंघनविषयक चित्त - *अतिकम्मनचित्तञ्च तथेवातिक्कमो पि च,* सद्धम्मो. 64.

अतिक्कामेहि अति + √कम का प्रेर., अनु., प्र. पु., ए. व., अतिक्रमण कराओ - *मय्हं वारं अतिक्कामेही'ति आह,* जा. अट्ठ. 1.155; - **मेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *पमाणं वा अतिक्कामेय्य,* पारा. 229; - **मेत्वा** प्रेर., पू. का. कृ., अतिक्रमण करवा कर, छोड़वा कर - *आयामतो वा वित्थारतो अन्तमसो केसग्गमत्तम्पि अतिक्कामेत्वा करोति वा कारापेति वा,* पारा. 232.

अतिक्खय पु., [अतिक्षय], अतिविनाश, क्रमिक विनाश - *सच्चे ठत्वा पमोचेसिं, ञातीनं तं अतिक्खयं,* चरिया. 3.10.4.

अतिखणथ अति + √खन का अनु., म. पु., ब. व., बहुत गहराई तक खोदें - *एत्तकेनेव सन्तुट्ठा होथ, मा अतिखणथा'ति,* जा. अट्ठ. 2.246; - **खणे** विधि., प्र. पु., ए. व., बहुत गहराई तक खोदे - *तस्मा खणे नातिखणे, अतिखातञ्हि पापकं,* जा. अट्ठ. 2.247.

अतिखण नपुं., [अतिखनन], अत्यधिक गहराई तक उत्खनन - *अतिखातेन नासितन्ति, अतिखणेन तञ्च धनं जीवितञ्च नासितं,* जा. अट्ठ. 2.247.

अतिखर त्रि., [अतिखर], अत्यन्त तीक्ष्ण, बहुत तेज, अत्यन्त तीखा - *यदि हि अभुत्तस्स उप्पज्जिस्सा अतिखरो अभविस्सा,* उदा. अट्ठ. 325; *अतिखरं कत्वा वादेमि मञ्ञे'ति मज्झिममुच्छनाय मुच्छित्वा मज्झिमसरेन वादेसि,* जा. अट्ठ. 2.209.

अतिखात नपुं., [अतिखात], अत्यधिक गहराई तक खनन, गहरा गड्ढा - *अतिखातञ्हि पापकं,* जा. अट्ठ. 2.247.

अतिखिण नपुं., तिखिण का निषे. [अतीक्ष्ण], मृदु, कोमल - *कोमलातितिखिणे मुदु,* अभि. प. 1067.

अतिखिप्पं निपा. क्रि. वि. [अतिक्षिप्र], अत्यधिक शीघ्र, निकट भविष्य में, बहुत जल्द ही - *अतिखिप्पं सुगतो परिनिब्बायिस्सति, अतिखिप्पं चक्खुं लोके अन्तरधायिस्सती'ति,* दी. नि. 2.105.

अतिखीण त्रि., [अतिक्षीण], अत्यधिक दुर्बल, अतिकृश, बहुत कमजोर - *सेन्ति चापातिखीणाव पुराणानि अनुत्थुनं,* ध. प. 156.

अतिखुद्दक त्रि., [अतिक्षुद्रक], बहुत छोटा, अत्यधिक लघु स्वरूप अथवा महत्त्व वाला, बहुत हल्का - *भगवता भिक्खूनं अतिखुद्दकं निसीदनं अनुञ्ञातं,* पाचि. 225; *अतिमटाहकन्ति अतिखुद्दकं,* चूळव. अट्ठ. 56.

अतिगच्छति अति + √गम से व्यु., क्रि. रू. (केवल अच्चगमा या अच्चगा के रूप में अद्य. में ही प्रयुक्त) **1. शा. अ.** जीत लिया, लांघ कर पार कर लिया - *सब्बं अच्चगमा इमं पपञ्चं,* सु. नि. 8; *तिविधं पपञ्चं अच्चगमा अतिक्कन्तो, समतिक्कन्तोति अत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 1.19; **2.** प्रायः 'अच्चयो मं अच्चगमा' के मुहावरे के रूप का अत्यधिक प्रयोग - *अच्चयो मं, भन्ते, अच्चगमा,* दी. नि. 1.75; *योमं पलिपथं दुग्गं, संसारं मोहमच्चगा,* ध. प. 414; - **च्चगुं** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *असेसं परिनिब्बन्ति, असेसं दुक्खमच्चगुं,* इतिवु. 67; **2. ला. अ.** मर जाना, दिवङ्गत हो जाना, इस लोक का अतिक्रमण करना, कालकवलित होना - **तिगा** अद्य., प्र. पु., ए. व., दिवंगत हो गया - *नवमे हायने'तिगा,* म. वं. 41.3; - **गत** भू. क. कृ. [अतिगत], अधिक दूर चला गया हुआ, पार गया हुआ, अतिक्रमण कर चुका या जीत चुका - *नासक्खातिगतो पोसो, पुनदेव निवत्तितुं,* जा. अट्ठ. 3.427.

अतिगतत्त नपुं., भाव. [अतिगतत्व], बहुत दूर चले जाने अथवा समाप्त या व्यतीत हो जाने की अवस्था – *तं अहं रागादीनं ... अतिगतत्ता सङ्गातिगं ... वदामीति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 2.375.

अतिगम्भीर त्रि., कर्म. स. [अतिगम्भीर], अत्यन्त गम्भीर, बहुत अधिक गहरा – *महानामो सक्को भगवन्तं अतिगम्भीरं पञ्हं पुच्छति,* अ. नि. 1(1).250; *अत्तनो पन भिक्खुसङ्घस्स च अतिगम्भीरवित्थतं संसारमहण्णवं तरित्वा ...,* उदा. अट्ठ. 343.

अतिगरु त्रि., [अतिगुरु], अत्यधिक सम्माननीय, परमपूज्य – *अतिगरुनो सम्मासम्बुद्धस्स सन्तिकं उद्धतवेसेन गन्तुं न युत्तं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.250-251.

अतिगाळ्हयति अति + √गाह का वर्त. प्र. पु., ए. व., धीरे-धीरे नष्ट कराता है, विध्वंस कराता है – **न्ति** ब. व. – *वेदेहि वित्तं अतिगाळ्हयन्ति,* जा. अट्ठ. 7.57; *अतिगाळ्हयन्तीति ... वेदेहि तस्स सन्तकं वित्तं अतिगाळ्हयन्ति विनासेन्ति, विद्धंसेन्ति,* जा. अट्ठ. 7.59.

अतिगाळ्ह त्रि., अति + √गाह का भू. क. कृ. [अतिगाढ़], अत्यधिक प्रगाढ़, बहुत अधिक तीव्र, बहुत गहरा, मर्मछेदक – *अयं कप्पना अतिगाळ्हा,* जा. अट्ठ. 1.72; *अगाळ्हेनाति अतिगाळ्हेन मम्मच्छेदकेन थद्धवचनेन,* पु. प. अट्ठ. 63.

अतिगाळ्हित त्रि., अतिगाळ्ह से व्यु., अत्यधिक पीड़ित, कठोरतापूर्वक दबोच दिया गया – *ते भत्तुरत्था अतिगाळ्हिता पुन, दिसा पनस्सन्ति अलद्ध किञ्चनं,* जा. अट्ठ. 5.397; *अतिगाळ्हितातिं ... विद्धस्तसेनवाहना हुत्वा,* तदे..

अतिगुणकारक त्रि., [अतिगुणकारक], अत्यधिक हितकारक, अपरिमेय कल्याण करने वाला – *माता नाम अतिगुणकारिका,* जा. अट्ठ. 5.322.

अतिगुणता स्त्री., भाव. [अतिगुणता], असाधारण गुणसम्पन्नता – *मणि अतिगुणताय कामददो,* मि. प. 258.

अतिघंसति अति + √घंस का वर्त., प्र. पु., ए. व., अत्यधिक रगड़ता है, घिसता है, अतिक्रमण करता है – *बुद्धञाणं देवमनुस्सानं पञ्ञं फरित्वा अतिघंसित्वा तिट्ठति,* पटि. म. 369.

अतिचण्ड त्रि. [अतिचण्ड], अत्यधिक खूंख़ार, अत्यधिक भयानक – *सो पन अतिचण्डो येव,* ध. प. अट्ठ. 2.289.

अतिचरण नपुं., [अतिचरण], नियम-विपरीत आचरण, नियम का उल्लंघन, नियम का अतिक्रमण – *सक्कारे वड्ढितेपि पुन अतिचरणं विय पित्तादीसु एकस्स भेसज्जे करियमाने सेसानं पकोपवसेन पुन साबाधता,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.8.

अतिचरति अति + √चर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अतिचरति], **शा. अ.** सीमा के उस पार चला जाता है, अत्यधिक चारा चरता है; **ला. अ.** नियमों का उल्लंघन करता है, विशेष-रूप से स्त्री-संसर्ग के क्षेत्र में निर्धारित सीमाओं का अतिक्रमण करता है, व्यभिचार करता है – *बाराणसिरञ्ञो अग्गमहेसिया सद्धिं अतिचरति,* जा. अट्ठ. 3.265; *इत्थिरतनं राजानं चक्कवत्तिं मनसापि नो अतिचरति, कुतो पन कायेन,* म. नि. 3.213-14; – **सि** वर्त., म. पु., ए. व. – *नेतं छन्नं पतिरूपं, यं त्वं अतिचरसि मं,* पे. व. 361; – **रामि** उ. पु., ए. व. – *नाहं तं अतिचरामि, कायेन उद चेतसा,* पे. व. 362; – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *रक्खिता अतिचरन्ति सामिकं,* जा. अट्ठ. 5.450; – **मानाय** स्त्री., वर्त. कृ., च. वि., ए. व. – *सो मं अतिचरमानाय सामिको एतदब्रवि,* पे. व. 361; – **रे** विधि., प्र. पु., ए. व. – *कं वापि इत्थी नातिचरे तदञ्ञं'न्ति,* जा. अट्ठ. 5.441; – **रितुं** निमि. कृ. – *तस्स पन गतदिवसतो पट्ठाय ब्राह्मणी अतिचरितुं आरद्धा,* जा. अट्ठ. 1.473; – **रित्वा** पू. का. कृ. – *पुरिसा हि परस्स दारेसु अतिचरित्वा कालं कत्वा ... इत्थिभावं आपज्जन्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.186; – **रिता** पु., क. ना., प्र. वि., ए. व. [अतिचरितृ], व्यभिचारी, व्यभिचारिणी – *नाभिजानामि नकुलपितरं गहपतानिं मनसापि अतिचरिता, कुतो पन कायेन,* अ. नि. 1(2).71; *नाभिजानामि सामिकं मनसापि अतिचरिता,* अ. नि. 2(2).209.

अतिचारी पु., [अतिचारी], व्यभिचारी, दुष्कर्म करने वाला, निर्धारित मर्यादा का अतिक्रमण करने वाला – *अतिचारी च दुस्सीलो, अप्पस्सुतो च कुसीतो,* स. नि. 2(2).238; – **रिनी** स्त्री., व्यभिचारिणी स्त्री – *जारी चेवातिचारिणी,* अभि. प. 238; *सा आनीतदिवसतो पट्ठाय अतिचारिनी अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 2.202; *तस्साहं भरिया आसिं, दुस्सीला अतिचारिनी,* पे. व. 360.

अतिचिण्ण त्रि., भू. क. कृ. [अतिचीर्ण], अतिक्रान्त, उल्लंघित, मर्यादाओं के बाहर जाकर दुराचार के रूप में किया गया – *अतिचिण्णो मया धम्मो, तं मे अक्खाहि पुच्छितो'ति,* जा. अट्ठ. 5.256.

अतिचित्र त्रि., [अतिचित्र], अत्यन्त असाधारण प्रकृति वाला, चित्र-विचित्र – *अतिचित्रानि पञ्हपटिभानानि विसज्जितानी'ति,* मि. प. 25.

अतिचिरं निपा. क्रि. वि. [अतिचिरं], बहुत देरी करके, अधिक विलम्ब करके - *अतिचिरं सम्म, सत्तमासा,* चूळव. 318.

अतिचिरनिवास पु., बहुत अधिक अवधि वाला निवास, लम्बे समय तक एक साथ रहना - *तस्स ते अतिचिरनिवासेन सा सति पमुट्ठा,* म. नि. 1.412; पाठा. अतिचिरनिवास.

अतिचिरायति अतिचिरं से व्यु., ना. धा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [अतिचिरायति], अत्यधिक विलम्ब करता है, अतिशय देरी करता है - *अतिचिरायति मे पियसामिको,* जा. अट्ठ. 4.414; - **यन्ते** पु., वर्त. कृ., सप्त. वि., ए. व. - *तस्मिं अतिचिरायन्ते सरं विचिनापेत्वा दीपालोकेन पुरिसब्भन्तरानिपि ओलोकेत्वा अदिस्वा गतो भविस्सती'ति पक्कामि,* ध. प. अट्ठ. 1.202.

अतिच्च निपा. अति + √इ का पू. का. कृ. [अतीत्य], 1. पार करके, सीमा का अतिक्रमण करके, विजय प्राप्त करके, आरूढ़ होकर - *संसारमतिच्च ... केवली, सो,* सु. नि. अट्ठ. 2.137; *तं सङ्गमतिच्च अरूपसञ्ञी, चतुयोगातिगतो न जातु मेती'ति,* उदा. 153; 2. और भी आगे जाकर, और भी अधिक - *यो चेपि अतिच्च जीवति, अथ खो सो जरसापि मिय्यति,* सु. नि. 810; *कत्वा पापं पुन पटिच्छादनतो अतिच्च आसरन्ति एताय सत्ताति अच्चासरा,* विभ. अट्ठ. 465.

अतिच्छता / अत्रिच्छता अति + इच्छा का भाव., स्त्री. [अतीच्छता], अत्यधिक इच्छापरायणता, प्रबल आसक्तिमयी मनोवृत्ति - *इतरीतरचीवरपिण्डपातसेना-सनगिलान-पच्चयभेसज्जपरिक्खारेहि पञ्चहि वा कामगुणेहि असन्तुट्ठस्स भिय्योकम्यता ... अयं वुच्चति अत्रिच्छता,* विभ. 401-2; *अत्तनो लाभं अतिच्च इच्छनभावो अतिच्छता,* विभ. अट्ठ. 444.

अतिच्छत्त नपुं., [अतिच्छत्र], विशिष्ट रङ्गरूप अथवा अतिरिक्त प्रमाण वाला छाता, विशेष प्रकार का छत्र - *बहूसु छत्तेसु चेव धजेसु च यं अतिरेकप्पमाणं विसेसवण्णसण्ठानञ्च छत्तं, तं अतिच्छत्त'न्ति वुच्चति,* ध. स. अट्ठ. 4; स. उ. प. में द्रष्ट. छत्तातिच्छत्त के अन्त..

अतिच्छा स्त्री., तिच्छा का निषे. अथवा अति + इच्छा = [अतीच्छा, अतृष्या, अतृप्या], अत्यधिक तृष्णा, दृढ़ आसक्ति और अधिक पाने की लालसा, असन्तुष्टि - *अथ त्वं यथालद्धेन असन्तुट्ठो, अत्र उत्तरितरं लभिस्सामी'ति एवं लद्धं लद्धं अतिक्कमनलोभसङ्खाताय अतिच्छाय समन्नागतत्ता अतिच्छो* जा. अट्ठ. 4.5

अतिच्छापेहि अतिच्छति का प्रेर., अनु., म. पु., ए. व., आगे कदम बढ़ाने अथवा आगे बढ़ने को उत्प्रेरित करो - *वन्दित्वा अतिच्छापेही'ति,* जा. अट्ठ. 3.407.

अतिछात त्रि., बहुत अधिक भूखा - *अतिछातोस्मीति कम्मं न करोति,* दी. नि. 3.139.

अतिछेक त्रि., [अतिछेक], अधिक निपुण, अतीव प्रवीण, अतीव दक्ष, अतिशय चतुर - *यथा हि अतिछेको मधुकरो असुकस्मिं रुक्खे पुप्फं पुप्फितन्ति ञत्वा ...,* विसुद्धि 1.132; *तेसे तेसु वादेसु च अतिछेको,* सा. वं. 28.

अतिजगती स्त्री., एक विशेष छन्द का नाम, जिसके अन्तर्गत प्रहर्षिणी तथा रुचिरा आदि प्रभेद आते है - *अतिजगति-म्ना ज्-रा गो तिदसयतिप्पहासिनी सा ...,* वुत्तो. 87-88.

अतिजच्चता स्त्री., भाव. [अतिजातिता], अत्यधिक उच्चगुणसम्पन्नता, अत्यधिक कल्याणकारी होने की दशा - *अगदो अतिजच्चताय पीळाय समुग्घातको रोगानं अन्तकरो,* मि. प. 258.

अतिजव त्रि., [अतिजवन], अत्यधिक वेग वाला, महान् वेग वाला, शीघ्रगामी - *महाजवन्ति अतिजवं सीघगामिं,* वि. व. अट्ठ. 212.

अतिजात त्रि., [अतिजात], बुद्ध, धर्म एवं संघ के प्रति श्रद्धा रखने में अपने माता-पिता से आगे रहने वाला, उच्चकुलोत्पन्न व्यक्ति से भी अधिक उत्तम, अपने पूर्वजों की तुलना में अधिक आगे बढ़ा हुआ - *तयो मे, भिक्खवे, पुत्ता ... अतिजातो अनुजातो अवजातोति,* इतिवु. 47; *अभिजातोति अतिजातो सुद्धजातो,* जा. अट्ठ. 4.287, विलो. अनुजात, अवजात.

अतिजातिता स्त्री., भाव., उत्तम प्रकृति से युक्त होने की अवस्था - *सीहो अतिजातिताय विगतभयो,* मि. प. 258.

अतिजिघच्छपीळित त्रि., [अतिजिघत्सापीळित], अत्यधिक भूखा - *आहारहेतूति अतिजिघच्छपिळितोपि यो पापं लामककम्मं न करोति,* जा. अट्ठ. 7.148.

अतिजोतिता स्त्री., अतिजोति का भाव., अत्यधिक गरमी - *अग्गि अतिजोतिताय डहति,* मि. प. 258.

अतिण्ण त्रि., तिण्ण का निषे. [अतीर्ण], वह, जिसने अभी तक भवसागर पार नहीं किया है - *अतिण्णंयेव याचस्सु, अपारं तात नाविक,* जा. अट्ठ. 3.202; - **पुब्ब** त्रि., ब. स., वह, जिसे पहले पार नहीं किया गया है - *ये दुत्तरं ओघमिमं तरन्ति, अतिण्णपुब्बं अपुनब्भवाया'ति,* सु. नि. 275;

अतिण्णपुब्बन्ति इमिना दीघेन अद्धुना सुपिन्तेनपि अवीतिक्कन्तपुब्बं, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.37.

अतितण्ह त्रि॰, ब॰ स॰ [अतितृष्ण], अत्यधिक लोलुप, प्रबल आसक्ति से भरा – *अतितण्हो तु लोलुपो,* अभि॰ प॰ 729.

अतितरिय अति + √तर का पू॰ का॰ कृ॰ [अतितीर्य], पार करके, अतिक्रमण करके, लांघ करके – *ओघं समुद्दं अतितरिय तादिं,* सु॰ नि॰ 221; *अतितरिय अतितरित्वा अतिक्कमित्वा मग्गभावनाय,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.228.

अतितरुण त्रि॰, [अतितरुण], अत्यधिक युवा, अपरिपक्व अनुभव वाला – *तत्थ कोचि तरुणोपि युवा न होति यथा अतितरुणो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).162; *कुटुम्बं विचारेतुं अप्पटिबलपज्जं अतितरुणिज्जेव समानं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.32.

अतितिक्ख त्रि॰, [अतितीक्ष्ण], अत्यधिक तेज, अतीव सक्षम, अत्यधिक अप्रिय – *परिभूतो मुदु होति, अतितिक्खो च वेरवा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.171; – **भाव** पु॰, [अतितीक्ष्णभाव], अत्यधिक तीक्ष्णता – *संवेगस्स च नातितिक्खभावतो वूपसमि,* उदा॰ अट्ठ॰ 252.

अतितिखिण त्रि॰, [अतितीक्ष्ण], अत्यधिक तेज, अतीव तीक्ष्ण, अतीव सक्षम – *अतितिखिणेन असिना ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.180; – **ता** [अतितीक्ष्णता], अत्यधिक तीखापन, अत्यधिक तीक्ष्णता – *वजिरं अतितिखिणताय विज्झति,* मि॰ प॰ 258.

अतितित्तक त्रि॰, [अतितिक्तक], अत्यधिक तीता – *अतितित्तकन्ति अतिक्कन्ततित्तकं,* महानि॰ 2.129.

अतितुच्छ त्रि॰, [अतितुच्छ], अत्यधिक क्षुद्र, अतीव शून्य, साररहित, अतीव घटिया – *अतितुच्छे पि दिस्सन्ति देसे उच्चाचलूपमा,* सद्धम्मो॰ 430.

अतितुट्ठ त्रि॰, [अतितुष्ट], अतीव सन्तुष्ट, पूर्णतः सन्तुष्ट – *ततो राजा अतिविय तुट्ठपहट्ठो महासत्तस्स गुणं वण्णेन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.295.

अतितुट्ठि स्त्री॰ [अतितुष्टि], अत्यधिक तुष्टि या संतोष – *अतितुट्ठिया हिरोत्तप्पं भिन्दित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.204.

अतितुरित त्रि॰, [अतित्वरित], अधिक ज़ल्दबाज़ी वाला – *आगमेथ ताव'ति वुत्तेपि अतितुरिता निक्खमित्थ,* जा॰ अट्ठ॰ 6.170.

अतितुल त्रि॰, अतुलनीय, वह, जिसकी तुलना न की जा सके, निरुपम, अनुपम – *ब्रह्मभूतं अतितुलं, मारसेनप्पमद्दनं,* सु॰ नि॰ 568; *अतितुलोति तुलं अतीतो उपमं अतीतो, निरुपमोति अत्थो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.158.

अतित्त त्रि॰, तित्त का निषे॰ [अतृप्त], वह, जो तृप्त नहीं है, असन्तुष्ट, वह, जिसकी इच्छाएं कभी पूरी न हों – *अतित्तो कालङ्कतो, न चस्स परिपूरिता इच्छा,* थेरीगा॰ 488; *अतित्तञ्ञेव कामेसु, अन्तको कुरुते वसं,* ध॰ प॰ 48; *ऊनो लोको अतित्तो तण्हादासो,* म॰ नि॰ 2.265; – **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰, असन्तोषी, तृष्णालु – *ओरं समुद्दस्स अतित्तरूपो, पारं समुद्दस्सपि पत्थयेथ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.153.

अतित्ति स्त्री॰, सन्तुष्टि न होना, असन्तोष – **कर** त्रि॰, सन्तुष्टि न देने वाला – *अयं पातोव पस्सन्तानं अतित्तिकरो फलभारभरितो सोभमानो अट्ठासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.333; – **करण** नपुं॰, असन्तोष, असन्तुष्टिकरण – *दस्सनीयतराति दिवसम्पि पस्सन्तानं अतित्तिकरणट्ठेन पस्सितब्बतरा,* उदा॰ अट्ठ॰ 138; – **जनक** त्रि॰, [अतृप्तिजनक], असन्तोष को पैदा करने वाला – *चारुदस्सनोति सुचिरम्पि पस्सन्तानं अतित्तिजनकं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.156.

अतित्थ नपुं॰, तित्थ का निषे॰, **शा॰ अ॰** अप्रयुक्त मार्ग, नदी में उतरने या उतारने के लिये अनुपयुक्त मार्ग – *अतित्थेनेव गावो पतारेसि उत्तरं तीरं सुविदेहानं,* म॰ नि॰ 1.290; **ला॰ अ॰** बुद्ध द्वारा अननुमोदित आचार या मार्ग, बौद्धेतर धर्माचार्यों की मिथ्या दृष्टियां – *अतित्थेति द्वासट्ठिदिट्ठिसङ्खाते अतित्थे नप्पतारेय्य न ओतारेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 5.61; *अतित्थेन पक्खन्दो धम्मकथिकोति न सक्का वत्तुं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.38; – **पक्खन्द** नपुं॰, अनिर्धारित मार्ग पर चलकर, इधर उधर हो जाना – *ता गावो अतित्थपक्खन्दनादिना वा परेसं सालिखेत्तादीनि ओतरित्वा खादनवसेन विनासं आपज्जन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.201.

अतित्थुत त्रि॰, [अतिस्तुत], अति-प्रशंसित, प्रशस्त, अतिसंस्तुत, अधिक खुशामद किया हुआ, द्रष्ट॰ मो॰ व्या॰ 3.13, पाठा॰ अभित्थुतं.

अतिथद्ध त्रि॰, [अतिस्तब्ध], अत्यधिक दर्पशील, घमंडी, गर्वीला – *अतिथद्धो अनिसेधनताय,* मि॰ प॰ 175.

अतिथि पु॰, [अतिथि], अतिथि, मेहमान, पाहुन – *पुमे अतिथि आगन्तु पाहुनावेसिकाप्यथ,* अभि॰ प॰ 424; *अतिथि खो पनम्हेहि सक्कातब्बो गरुकातब्बो मानेतब्बो पूजेतब्बो अपचेतब्बो,* दी॰ नि॰ 1.103; म॰ नि॰ 2.386; *सब्बातिथीयाचयोगो भवित्वाति सब्बेसं अतिथीनं आगतानं आगन्तुकानं यं यं ते याचन्ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.268; – **करणीय** नपुं॰, [अतिथिकरणीय], अतिथि जनों के लिये किया जानेवाला सत्कार या आतिथ्य – *अतिथीनं अतिथिकरणीयं कातब्बं,* म॰

नि॰ 2.403; - **बलि** पु॰, [अतिथिबलि], अतिथियों के लिये दिया जाने वाला उपहार - ... *अरियसावको ... पञ्चबलिं कत्ता होति–ञातिबलिं, अतिथिबलिं, पुब्बपेतबलिं ...*, अ॰ नि॰ 1(2).79; *अतिथिबलिन्ति आगन्तुकानं बलिं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.306.

अतिथूल त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अतिस्थूल], अत्यधिक मोटा - ... *महासुदस्सनस्स इत्थिरतनं पातुरहोसि अभिरूपा ... नातिकिसा नातिथूला ...*, दी॰ नि॰ 2.131, विलो॰ अतिकिसा.

अतिथोक त्रि॰, [अतिस्तोक], बहुत कम, अत्यल्प - *सो पत्तोदकं पटिग्गण्हाति नातिथोकं नातिबहुं,* म॰ नि॰ 2.346.

अतिदप्पित त्रि॰, [अतिदर्पित], अत्यधिक अन्धकारग्रस्त, बहुत अधिक घमंडी - *अतिदप्पितो वतायमायस्मा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.514(रो॰).

अतिदयित त्रि॰, [अतिदयित], बहुत प्यारा - *तस्सा'तिदयिता आसुं ...*, अप॰ 2.250; थेरीगा॰ अट्ठ॰ 78.

अतिदहरत्त नपुं॰, भाव॰, अत्यधिक कम आयु अथवा अपरिपक्व अवस्था - *किं यक्खो कुमारं अतिदहरत्ता न इच्छती'ति भीता पुच्छिंसु,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.202.

अतिदान नपुं॰, [अतिदान], अत्यधिक दान, प्रबल दानपरायणता - *तुम्हेहि ब्रह्मो पकतो, अतिदानेन खत्तियो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.287; *अतिदानं, महाराज, लोके विदूहि वण्णितं थुतं पसत्थं,* मि॰ प॰ 258; - **दायी** त्रि॰, अत्यधिक दान देने वाला, अत्यधिक उदार - *अतिदानदायी लोके कित्तिं पापुणाति,* मि॰ प॰ 258.

अतिदारुण त्रि॰, [अतिदारुण], बहुत निष्ठुर, निर्दय, कठोर, भयंकर - *विचरिं अतिदारुणो सदा, परहिंसाय रतो असञ्ञतो,* पे॰ व॰ 480; *कारेन्तो कम्मकरणं निरये अतिदारुणं,* सद्धम्मो॰ 7; *त्वञ्हि अतिदारुणस्स कम्मस्स कतत्ता अतिसरो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.6; *तदा मे कम्मजा वाता उप्पन्ना अतिदारुणा,* अप॰ 2.227.

अतिदिट्ठिया क्रि॰ वि॰, सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, उत्तम ज्ञान या दृष्टिसम्पन्नता के कारण - *अतिदिट्ठिया दिट्ठिविपन्नो होति,* महाव॰ 82; चूळव॰ 9.

अतिदिवा सप्त॰ वि॰ प्रतिरू॰ निपा॰, दिन बहुत ढल जाने पर, दिन में बहुत देरी करके; विकाल में, अपराह्न में - *अतिदिवा पटिक्कमति,* महाव॰ 89; स॰ नि॰ 1(1).232; अ॰ नि॰ 2(1).108.

अतिदिसति अति + √दिस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, विस्तृतरूप में व्याख्या करता है, स्पष्ट रूप से कहता है; - **स** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *इङ्घ त्वं तत्थ कारणं अतिदिसाति,* मि॰ प॰ 279.

अतिदीघ त्रि॰, [अतिदीर्घ], बहुत लम्बा - *नातिदीघा नातिरस्सा ...*, दी॰ नि॰ 2.131; म॰ नि॰ 1.122; *नातिदीघातिआदीहि छदोसविरहितं सरीरसम्पत्तिं दीपेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).372.

अतिदीन त्रि॰, [अतिदीन], बहुत अधिक दुर्गतिग्रस्त - *सोकेन चातिदीनो व,* अप॰ 2.209.

अतिदुक्कर त्रि॰, [अतिदुष्कर], बहुत कठिन, दुष्कर, बहुत कठिनाई से करने योग्य - *बहुञ्च दुक्करं कम्मं, कतं मे अतिदुक्करं,* अप॰ 2.220, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 216; *इदं मया सतसहस्सकप्पाधिकानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानि अतिदुक्करानि आचरित्वा पारमियो पूरेत्वा ...*, उदा॰ अट्ठ॰ 170.

अतिदुक्ख त्रि॰, [अतिदुःख], अत्यधिक दुःख देने वाला, बहुत अधिक कष्टकारक - *अक्खमो अतिदुक्खो ति अपायो भायितब्बको,* सद्धम्मो॰ 95; - **परेत** त्रि॰, अत्यधिक दुःखों से अभिभूत, बहुत अधिक दुःखों से व्यथित - *अतिदुक्खपरेतो विरवन्तो पच्चति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.267; - **वाच** त्रि॰, अत्यधिक कठोर वचन बोलने वाला - *अतिदुक्खवाचो ति वा पाठो, अतिविय फरुसवचनो मुसावादपेसुञ्ञादिवचीदुच्चरितनिरतो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 13; पाठा॰ अतिदुट्ठवाचो.

अतिदुद्दस त्रि॰, [अतिदुर्दर्श], वह, जिसे खोज पाना, समझना, जानना अथवा देख सकना बहुत कठिन है - ... *परमगम्भीरं अतिदुद्दसं सण्हसुखुमं ... अमतं निब्बानं ...*, उदा॰ अट्ठ॰ 318.

अतिदुब्भिक्खछातक त्रि॰, अत्यधिक भूख एवं दुर्भिक्ष से पीड़ित अथवा परिपूर्ण - *नातिसीतं नातिउण्हं, नातिदुब्भिक्खछातकं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.95.

अतिदूर त्रि॰, [अतिदूर], बहुत दूर, अत्यधिक दूर में स्थित - *सेनासनं नातिदूरं होति नाच्चासन्नं,* अ॰ नि॰ 3(2).13; *थामसम्पन्नता पन अतिदूरं उप्पतति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.426; *नातिदूरे गन्तब्बं,* महाव॰ 52; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, बहुत अधिक दूरी में होना - *विहारानं पन नगरतो नातिदूरताय नाच्चासन्नताय गमनागमनसम्पत्तिया अनाकिण्णविहारट्ठानताय छायूदकसम्पत्तिया ... च रमणीयता दट्ठब्बा,* उदा॰ अट्ठ॰ 264.

अतिदेव[1] पु॰, बुद्ध के गुणों का सूचक विशे॰, देवों के भी अधिष्ठाता देव, भगवान् - *देवानं अतिदेवो भवेय्य,* मि॰ प॰ 258; - **पत्त** त्रि॰, देवों से भी अधिक उत्तम स्थिति को प्राप्त करने वाला - *निरुपधिको अतिदेवपत्तो,* स॰ नि॰ 1(1).167;

अतिदेवपत्तोति देवानं अतिदेवभावं ब्रह्मानं अतिब्रह्मभावं पत्तो, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.182; - **भाव** पु॰, देवों से अधिक उत्तम अवस्था - ... *देवानं अतिदेवभावं* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.182.

अतिदेव² पु॰, रेवत नामक बुद्ध के समय में ब्राह्मणकुलोत्पन्न बोधिसत्त्व का नाम - *तदा बोधिसत्तो अतिदेवो नाम ब्राह्मणो हुत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.45.

अतिदेस पु॰, [अतिदेश], 1. हस्तान्तरण, समर्पण, सुपुर्दगी, एक वस्तु के धर्म का दूसरी वस्तु पर आरोपण, 2. व्याकरण शास्त्र में एक स्थान पर निर्दिष्ट नियम का अपने स्थल के अतिरिक्त अन्यत्र भी लागू होने वाली प्रक्रिया - *अञ्ञदीयधम्मानं अञ्ञत्थ पापनं अतिदेसो,* क॰ व्या॰ 272 पर रू॰ सि॰ 120.

अतिदोस पु॰, [अतिद्वेष], अत्यधिक दृढ़ द्वेषभाव - *अतिदोसेन वज्झो होति,* मि॰ प॰ 258.

अतिधञ्ञ त्रि॰, [अतिधन्य], अत्यधिक कृतकृत्य, अत्यन्त धन्य - *अतिधञ्ञा वत धरणी ... या ते अलत्थ ... पादतलसम्फस्सं,* म॰ बो॰ वं॰ 16(रो॰).

अतिधन्त नपुं॰, अति + √धम का भू॰ क॰ कृ॰, [अतिध्मात], भेरी (ढोल) पर लगातार की जा रही बहुत जोरदार थपथपाहट, ढोल पर जोरदार प्रहार - *अतिधन्तञ्हि पापकं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.273; *अतिधन्तञ्हि ... निरन्तरं भेरिवादनं* ..., तदे॰.

अतिधमे अति + √धम का विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अत्यधिक प्रहार कर बजाए, अत्यधिक फूंक मार कर बजाए - *नातिधमेति अतिक्कमित्वा पन निरन्तरमेव कत्वा न वादेय्य* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.273.

अतिधम्मभार पु॰, धर्म का अत्यधिक प्रभाव, धर्म की प्रबल शक्ति - *अतिधम्मभारेन पथवी चलति,* मि॰ प॰ 224.

अतिधात त्रि॰, अत्यधिक तृप्त, बहुत अधिक सन्तुष्ट - *अतिधातोस्मी'ति कम्मं न करोति,* दी॰ नि॰ 3.139; - **ता** स्त्री॰ भाव॰, अत्यधिक तृप्तिभाव, बहुत अधिक भोजन ले लेने की स्थिति - ... *अतिधातताय किलन्तकायो निद्दायाभिभूतो* ..., जा॰ अट्ठ॰ 2.243, विलो॰ अतिछात.

अतिधावन्ति अति + √धाव का वर्त॰ प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अतिधावन्ति], **शा॰ अ॰** अतिक्रमण करते हैं, उल्लंघन करते हैं, अत्यधिक दूर चले जाते हैं, बहुत तेजी से दौड़कर आगे निकल जाते हैं, **ला॰ अ॰** निरर्थक कल्पनाओं में भागते दौड़ते हैं - ब॰ व॰ - *ओलीयन्ति एके अतिधावन्ति एके* ..., इतिवु॰ 31; *अतिधावन्तीति परमत्थतो भिन्नसभावानम्पि सभावधम्मानं य्वायं हेतुफलभावेन सम्बन्धो, तं अग्गहेत्वा नानत्तनयस्सपि गहणेन तत्थ तत्थेव धावन्ति,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 155; - **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिधम्मे दुप्पटिपन्नो धम्मचिन्तं अतिधावन्तो अचिन्तेय्यानिपि चिन्तेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 26; - **वेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *समञ्ञं नातिधावेय्य,* म॰ नि॰ 3.279; - **वि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *यो नाच्चसारीति यो नातिधावि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.19; - **वित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *चितुप्पादमत्तेनेव कुसलं होतीति अतिधावित्वा दानादीनि अकरोन्तो* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).301; - **वितब्ब** सं॰ कृ॰ - *इधेकच्चो मोघपुरिसो अविद्वा अविज्जागतो तण्हाधिपतेय्येन चेतसा सत्थुसासनं अतिधावितब्बं मञ्ञेय्य,* स॰ नि॰ 2(1).95.

अतिधुति स्त्री॰, [अतिधृति], छन्दों के एक वर्ग का नाम, जिसके अन्त॰ मेघ-विप्फुज्जिता तथा सद्दूलविक्कीळित जैसे अनेक छन्द आते हैं, वुत्तो॰ 101-102.

अतिधोनचारी त्रि॰, बुद्धि का अतिक्रमण कर, स्वच्छन्द अथवा उच्छृङ्खल होकर काम करने वाला - *एवं अतिधोनचारिनं, सानि कम्मानि नयन्ति दुग्गतिं* ध॰ प॰ 240; *अतिधोनचारिनन्ति धोना वुच्चति चत्तारो पच्चये "इदमत्थं एते"ति पच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जनपञ्ञा, तं अतिक्कमित्वा चरन्तो अतिधोनचारी नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.199.

अतिनट्ठ त्रि॰, [अतिनष्ट], अत्यधिक क्षति को प्राप्त, बहुत अधिक हानि को प्राप्त - *अनस्ससन्ति नट्ठो, पनस्ससन्ति अतिनट्ठो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.16.

अतिनामेति अति + √नम का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [बौ॰ सं॰ अतिनामयति], 1. **शा॰ अ॰** समय व्यतीत करा देता है, बिता देता है, पार करा देता है - *सो तेन अभिज्झासहगतेन चेतसा दिवसं अतिनामेति,* अ॰ नि॰ 1(1).235; *न च अनुमोदनस्स कालमतिनामेति,* म॰ नि॰ 2.347; - **मि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *नमस्समानोव रत्तिं अतिनामेमि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.297; - **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अतिनामेन्ति ते खणं,* अ॰ नि॰ 3(1).61; - **मयि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अब्भोकासेतिनामयि,* थेरगा॰ 366; 2. **ला॰ अ॰ क.** भोजन को गले के नीचे पहुंचाता है - *न च ब्यञ्जनेन आलोपं अतिनामेति,* म॰ नि॰ 2.347; 2. **ख.** किसी को ले जाता है - **मेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *सम्बुद्धं ... अस्समं अतिनामेत्वा* ..., अप॰ 1.273; तुल॰ अतिनेति.

अतिनिज्झायितत्त नपुं॰ भाव॰ [अतिनिध्यायितत्व], अत्यधिक सूक्ष्मता अथवा ध्यान के साथ सोचने विचारने की अवस्था - *न अतिनिज्झायितत्तं रूपानन्ति,* म॰ नि॰ 3.199;

अतिनिज्झायितत्तन्ति मय्हं नानाविधानि रूपानि मनसिकरोन्तस्स नानत्तसञ्ञा उदपादि, इट्ठं वा अनिट्ठं वा एकजातिकमेव मनसि करिस्सामीति ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.154.

अतिनिपात पु॰, [अतिनिपात], दृढ़ आत्म-अवमानना, हीनता की बलवती मनोवृत्ति – *मानं, ओमानं, अतिमानं, अधिमानं, थम्भं अतिनिपातं ...,* अ॰ नि॰ 2(2).131; *अतिनिपातन्ति हीनस्स हीनोहमस्मी'ति मानं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.140.

अतिनिवास पु॰, [अतिनिवास], किसी स्थान पर बहुत अधिक समय तक निवास – *पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा अतिनिवासे,* अ॰ नि॰ 2(1).238.

अतिनीच त्रि॰, [अतिनीच], बहुत अधिक निचला, अत्यधिक निम्न, बहुत घटिया – *... भवग्गं अतिनीचं, तव दोसो अतिमहन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.405; *... चतुरङ्गिनिया सेनाय नातिउच्चं नातिनीचं उच्चरुक्खानं हेट्ठाभागेन ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 140; – **क** त्रि॰, बहुत नीचा – *ब्रह्मलोको अतिनीचकोति ओकासो नेसं न भवेय्य,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.176; *चक्कवाळं अतिसम्बाधं, ब्रह्मलोको अतिनीचको,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 53.

अतिन्द्रिय त्रि॰, [अतीन्द्रिय], इन्द्रियों की पहुंच से बाहर वाला, अप्रत्यक्ष – *अपच्चक्खं मनिन्द्रियं,* अभि॰ प॰ 716.

अतिपक्खित्तमज्ज त्रि॰, ब॰ स॰ [अतिप्रक्षिप्तमद्य], वह, जिसमें अत्यधिक मादक-वस्तुएं डाली गयी हों – *तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू अतिपक्खित्तमज्जानि तेलानि पचन्ति,* महाव॰ 280.

अतिपग्गहित त्रि॰, [अतिप्रगृहीत], अत्यधिक दृढ़, दृढ़ प्रयास से युक्त – *इति मे वीरियं न च अतिलीनं भविस्सति, न च अतिपग्गहितं भविस्सति,* स॰ नि॰ 3(2).337.

अतिपच्छा निपा॰, बहुत अधिक पीछे – *अतिपच्छा निसिन्नो सचे दट्ठुकामो होति ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.94.

अतिपणीत त्रि॰, [अतिप्रणीत], बहुत उत्तम, अत्यन्त उत्कृष्ट – *अच्चन्तसन्तं पण्डितवेदनीयं अतिपणीतं अमतं निब्बानं विभावेन्तो,* उदा॰ अट्ठ॰ 318.

अतिपण्डित[1] त्रि॰, व्यङ्ग्यात्मकरूप में प्रयुक्त [अतिपण्डित], बहुत पटु, चालाक – *तुम्हे खो, भन्ते नागसेन, अतिपण्डिता,* मि॰ प॰ 89; *तुम्हे च खो, महाराज, अतिपण्डिता,* मि॰ प॰ 90; – **ता** स्त्री॰, भाव, अत्यधिक पटुता – *त्वं अतिपण्डितताय अत्तनो गेहे पाकभत्तमूलम्पि न निप्फादेसी'ति आह,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.266; – **मानिता** स्त्री॰, [अतिपण्डितमानित्व], अपने को महान पण्डित मानने की मनोवृत्ति – *सो ... अतिपण्डितमानिताय परेहि वुत्तं कप्पियम्पि "अकप्पिय" न्ति वदेति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.301.

अतिपण्डित[2] पु॰, एक प्राचीन सौदागर का नाम – *तस्स अतिपण्डितो'ति नामं अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.387.

अतिपदान नपुं॰, अति + प + दान, द्रष्ट॰ अतिप्पदान (आगे).

अतिपपञ्च पु॰, कर्म॰ स॰ [अतिप्रपञ्च], अत्यधिक विस्तार, अत्यधिक सांसारिक उलझन – *सरीरं आकड्ढित्वा गन्धमालाजटं छिन्दन्तस्स अतिप्पपञ्चो अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.74; *इमस्मिं पनेत्थ वित्थारीयमाने अतिपपञ्चो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).206.

अतिपभाते अ॰, प्रातःकाल होने के बहुत बाद में – *सो अतिरत्तिं वा वसति अतिपभाते वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.254.

अतिपरिच्चाग पु॰, अत्यधिक दान या परित्याग – *अतिपरिच्चागतो ओरमित्वा कम्मन्ते पयोजेन्तो कुटुम्बं सण्ठापेहीति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.8.

अतिपरिप्फन्दनभाव पु॰, मन में अत्यधिक चंचलता का भाव, चित्त की अशान्त वृत्ति – *सन्तवुत्ति विचारो नातिपरिप्फन्दनभावो चित्तस्स,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 160.

अतिपरिसुद्धता स्त्री॰, भाव॰ [अतिपरिशुद्धता], अत्यधिक परिशुद्धि, अत्यधिक निर्मलता – *पदुमं अतिपरिसुद्धताय न उपलिम्पति वारिकद्दमेन,* मि॰ प॰ 258.

अतिपवरता स्त्री॰, भाव॰ [अतिप्रवरता], अत्यधिक सूक्ष्मता, उच्च गुण-सम्पन्नता – *अतिपवरताय दिब्बं वनमूलं गहितम्पि हत्थपासे ठितानं परजनानं न दस्सयति,* मि॰ प॰ 258.

अतिपस्सित्वा अति + √दिस का पू॰ का॰ कृ॰, यथार्थ रूप में देख कर – *रञ्ञो नागं अभिरुहित्वा नागवनं पविसित्वा आरञ्ञकं नागं अतिपस्सित्वा रञ्ञो नागस्स गीवायं उपनिबन्धति,* म॰ नि॰ 3.173.

अतिपातेति अति + √पत का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अतिपातयति], **शा॰ अ॰** हिंसा करता है, प्राण विनष्ट करता है – *यो पाणमतिपातेति, मुसावादञ्च भासति,* ध॰ प॰ 246; **ला॰ अ॰** आड़े-तिरछे उड़वाता है, किसी वस्तु के बीच में से वाण को आर-पार कराता अथवा वाण गिरवाता है – **तेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *दळ्हधम्मा धनुग्गहो सिक्खितो कतहत्थो ... तिरियं तालच्छायं अतिपातेय्य,* म॰ नि॰ 1.116; स॰ नि॰ 1(1).76; अ॰ नि॰ 1(2).55; – **तेस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *यत्र हि नाम दूरतोव सुखुमेन ताळच्छिग्गळेन असनं अतिपातेस्सन्ति,* स॰ नि॰ 3(2).513; – **तेन्तो** वर्त॰ कृ॰,

सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दूरतोव ... असनं अतिपातेन्ते,* स॰ नि॰ 3(2).513.

अतिपातो निपा॰, [अतिप्रातः], बहुत सवेरे, अपेक्षाकृत बहुत पहले – *अतिपातोति कम्मं न करोति,* दी॰ नि॰ 3.139, विलो॰ अतिसायं.

अतिपासादिक त्रि॰, [अतिप्रासादिकः], अत्यन्त प्रसन्न करनेवाला, अधिक श्रद्धा भर देनेवाला – *पासादिको वतायं, भन्ते, धम्मपरियायो, अतिपासादिको ... धम्मपरियायो,* दी॰ नि॰ 3.105; पाठा॰ सुपासादिको.

अतिपीणित त्रि॰, [अतिप्रीण], अत्यधिक संतुष्ट, अत्यन्त प्रसन्न, अत्यन्त सुन्दर – *अतिपीणितमेतं रूपं ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.42.

अतिपीळित त्रि॰, [अतिपीड़ित], अत्यधिक पीड़ा से ग्रस्त, गंभीर रूप से कष्ट को प्राप्त – *अतिगाळितातिं पच्चत्थिकेहि अतिपीळिता विलुत्तसापतेय्या ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.397.

अतिपुञ्ञता स्त्री॰, भाव॰ [अतिपुण्यता], पुण्यफलों की अधिकता, प्रचुरता या कुशलकर्मों को करने की मनोवृत्ति – *राजा अतिपुञ्ञताय अधिपति ...,* मि॰ प॰ 259.

अतिपुण्णत्त नपुं॰, भाव॰ [अतिपूर्णत्व], अत्यधिक परिपूर्णता, ऊपर तक भरपूर होने की स्थिति – *पलिस्सुताहीति अतिपुण्णत्ता पग्घरमानेहि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.225.

अतिपूर पु॰, [अतिपूर], अत्यन्त पूर्ण, अत्यधिक भरापन – *अतिपूरेन नदी उत्तरति,* मि॰ प॰ 258.

अतिप्पगेव निपा॰, [अतिप्रागेव], बहुत जल्दी, भिनसारे, सबेरे-सबेरे – *अतिप्पगेव आगतोसी'ति आह,* जा॰ अट्ठ॰ 1.321; तुल॰ अतिप्पगो, पगेव तथा अतिप्पगा, पाठा॰ अतिप्पगोव.

अतिप्पगो निपा॰, [बौ॰ सं॰ अतिप्रागः], सुबह, बहुत जल्दी, भिनसारे – *अतिप्पगो खो ताव सावत्थियं पिण्डाय चरितुं,* दी॰ नि॰ 1.160; क॰ व्या॰ 36.

अतिप्पदान नपुं॰, [अतिप्रदान], अत्यधिक व्यय, फिजूलखर्ची, अपव्यय – *तस्मा हि दाना धनमेव सेय्यो, अतिप्पदानेन कुला न होन्ति,* पे॰ व॰ 300.

अतिप्पभता स्त्री॰, भाव॰ [अतिप्रभात्व], अत्यधिक प्रभामयता, अतिशय प्रभास्वरता – *सूरियो अतिप्पभताय तिमिरं घातेति,* मि॰ प॰ 258.

अतिप्पभेदगत त्रि॰, [अतिप्रभेदगत], अनेक भेदों-उपभेदों में प्रविभक्त – *तिक्खस्स अतिप्पभेदगतं धम्मानुपस्सनासतिपट्ठानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).250.

अतिप्पमाण त्रि॰, ब॰ स॰ [अतिप्रमाण], अतिशय विशाल – *सब्बायसं कूटमतिप्पमाणं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.125.

अतिप्पसङ्ग पु॰, [अतिप्रसङ्ग], केवल व्याकरण के पारिभाषिक शब्द के रूप में ही प्रयुक्त, किसी व्याकरणीय विधान का अत्यन्त विस्तृत विनियोग – *न चाति प्पसङ्गो योगविभागा इट्ठप्पसिद्धीति,* मो॰ व्या॰ 1.55; 1.58.

अतिप्पसत्थ त्रि॰, [अतिप्रशस्त], अत्यन्त प्रशंसनीय, अत्यन्त उत्तम, अतीव श्रेष्ठ – *मासे जेट्ठोतिवुद्धातिप्पसत्थेसु च तीसु सो,* अभि॰ प॰ 918.

अतिप्पिय त्रि॰, [अतिप्रिय], अत्यधिक प्रिय, अधिक प्यारा – *अयञ्हि मेत्ता अप्पियपुग्गले, अतिप्पियसहायके, मज्झत्ते, वेरीपुग्गलेति इमेसु चतूसु पठमं न भावेतब्बा,* विसुद्धि॰ 1.284.

अतिफरुस त्रि॰, [अतिपरुष], अत्यन्त कर्कश, अतीव कठोर – *त्वं मं कुण्ठसत्थकेन मुण्डेन्तो विय अतिफरुसं कथेसी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.325; – **वचन** नपुं॰, अत्यन्त कर्कश वचन, अत्यन्त कठोर वचन, अतिरुक्खवाचके के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अतिफीत त्रि॰, [अतिस्फीत], अत्यन्त समृद्ध, अत्यन्त धनवान, अतीव धनाढ्य – *पसूता नातिफीतम्हि, सालिं गोपेमहं तदा,* अप॰ 2.223.

अतिबद्ध त्रि॰, [अतिबद्ध], दृढ़ता के साथ बंधा हुआ, पंक्तिबद्ध – *मय्हं बलिबद्दो अतिबद्धं सकटसतं पवट्टेती'ति वत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.190; पाचि॰ 7.

अतिबन्धित्वा अति + √बन्ध का पू॰ का॰ कृ॰, पंक्ति में एक साथ बांधकर, दृढ़ता से बांधकर – *सो ब्राह्मणो सकटसतं अतिबन्धित्वा ...,* पाचि॰ 7.

अतिबल त्रि॰, ब॰ स॰ [अतिबल], अत्यन्त बलवान, अत्यन्त सुदृढ़ – *मग्गेनेव अतिबलो सच्चनिक्कमो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.92; *तं एतं अतिसाहसं अतिबलं नावारियं यो नरो,* म॰ वं॰ 20.58; – **ता** स्त्री॰, अतिबल का भाव॰ [अतिबलता], अत्यधिक दृढ़ता, अतिशय शक्ति-सम्पन्नता – *अच्चुग्गतातिबलता, अतिवेलं पभासिता ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.414.

अतिबलवता स्त्री॰, [अतिबलवन्तता], अत्यधिक शक्तिसम्पन्नता – *मल्लो अतिबलवताय पटिमल्लं खिप्पं उक्खिपति,* मि॰ प॰ 258-259.

अतिबहल त्रि॰, [अतिबहल], अत्यन्त प्रगाढ़, बहुत गाढ़ा, अतीव सघन – *किं भद्दे, अतिबहला यागू'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.193; – **लोट्ठकपोल** त्रि॰, ब॰ स॰, अत्यन्त मोटे होठों और गालों वाला – *अरे खुज्जे अतिबहलोट्ठकपोलं ते मुखं, एवं नाम वदेही'ति आह,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.113.

अतिबहु त्रि॰, [अतिबहु], आवश्यकता से अधिक - *महाराज, अतिबहुभोजनं एवं दुक्खं होती'ति वत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.290; - **क** त्रि॰, ब॰ स॰, बहुसङ्ख्यक, अत्यधिक संख्यावाला - *तत्थ सुबहूपीति अतिबहुकेपि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.457; - **भण्ड** त्रि॰, ब॰ स॰ [अतिबहुभाण्ड], अत्यधिक सामग्री या सामानों वाला - *भन्ते, अयं भिक्खु अतिबहुभण्डो'ति आरोचेसुं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.41.

अतिबाहेति अति + √बह का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, मार्ग प्रदर्शन करता है, मार्ग रक्षण करता है, रक्षार्थ साथ जाता है - **न्ति** ब॰ व॰ - *सत्थे चोराटविं अतिबाहेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.329.

अतिबाळ्हं निपा॰, [अतिवाढं], अत्यधिक, तीव्रता के साथ, दृढ़ता के साथ, प्रचुर मात्रा में - *अतिबाळ्हं खो अयं यक्खो पमत्तो विहरति,* म॰ नि॰ 1.322; *अतिबाळ्हं खो अयं अम्बट्ठो माणवो सक्येसु इब्भवादेन निम्मादेति,* दी॰ नि॰ 1.80.

अतिबुद्धि त्रि॰, ब॰ स॰ [अतिबुद्धि], कुशाग्र बुद्धिवाला, तीक्ष्ण बुद्धिवाला - *भस्सप्पवादो वेतण्डी, अतिबुद्धि विचक्खणो,* मि॰ प॰ 101.

अतिब्रहा त्रि॰, [अतिवृहत्], अत्यन्त विशाल आकार वाला - *दहरो युवा नातिब्रहा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.102.

अतिब्रह्मभाव पु॰, [अतिब्रह्मभाव], ब्रह्मा से अधिक उत्तम अवस्था - *अतिदेवपत्तोति देवानं अतिदेवभावं ब्रह्मानं अतिब्रह्मभावं पत्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.182.

अतिब्रह्मा पु॰, [अतिब्रह्मन्], भगवान् बुद्ध की एक उपाधि, ब्रह्मा से अधिक बढ़ा-चढ़ा हुआ, ब्रह्मा से भी अधिक श्रेष्ठ - *ब्रह्मानं अतिब्रह्मा भवेय्य,* मि॰ प॰ 258; *अहञ्हि ब्रह्मुनापि अतिब्रह्मा'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.283; *देवो सो अतिदेवो'ति वुच्चति, तथारूपो ब्रह्मापि अतिब्रह्मा'ति वुच्चति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 4.

अतिब्राह्मण पु॰, [अतिब्राह्मण], सभी ब्राह्मणों के बीच अतीव श्रेष्ठ, बुद्ध - *ब्राह्मणानं अतिब्राह्मणो भवेय्य,* मि॰ प॰ 258.

अतिब्रूहयि अति + √ब्रह का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, सुदृढ़ किया, प्रोत्साहित किया, ध्वनि को बढ़ाया, जोर से चिल्लाया - *तमापतन्तं दिस्वान, सुमुखो अतिब्रूहयि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.356; *अतिब्रूहयीति अनन्तरगाथाय आगतं मा भायी'ति वचनं वदन्तो अतिब्रूहेसि महासद्दं निच्छारेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.356.

अतिभय नपुं॰, [अतिभय], अत्यधिक भय, अधिक डर - *अतिलोभेन चोरग्गहणमुपगच्छति, अतिभयेन निरुज्झति,* मि॰ प॰ 258; - **ट्टित** त्रि॰, अत्यधिक भयग्रस्त, अधिक भय से संत्रस्त - *जिनो अभयदो आइ यक्खे ते अतिभयट्टिते* म॰ वं॰ 1.25.

अतिभरित त्रि॰, [अतिभरित], परिपूर्ण, अत्यधिक परिपूर्ण, ऊपर तक छलकता हुआ - *अयमिति कप्पटो कप्पटकुरो, अच्छाय अतिभरिताय,* थेरगा॰ 199; *यथा च अतिभरिता उदकभाजना उदकं अकामताय निक्खमति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.164.

अतिभायति अति + √भी का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अधिक डरता है, अधिक भयभीत होता है - **यिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *थेरो बहूसु दिट्ठेसु अतिभायिस्सती'ति सो,* म॰ वं॰ 14.6.

अतिभार पु॰, [अतिभार], बहुत भारी बोझ, अपेक्षा से अधिक बोझ - *आजञ्ञो ... मथितो अतिभारेन संयुगं नातिवत्तति,* थेरगा॰ 659; - **ता** स्त्री॰ भाव॰, अधिक बोझिलपन - *अतिभारताय किलन्तकायो निद्दायाभिभूतो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.243; *सिनेरु अतिभारताय अचलो,* मि॰ प॰ 258; - **भरित** त्रि॰, अधिक भार से लदा हुआ - *सकटस्स अतिभारभरितस्स नाभियो च नेमियो च फलन्ति अक्खो भिज्जति,* मि॰ प॰ 123.

अतिभारिय त्रि॰, [अतिभार्य], अत्यन्त गंभीर पापकर्म - *भातिको मे अतिभारियं कम्मं करोती'ति चिन्तेति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.42.

अतिभिंसन त्रि॰, [अतिभीषण], अत्यधिक भयंकर - *अभिद्दवन्तं अतिभिंसनेन दमेसि यो आलवकम्पि यक्खं,* दा॰ वं॰ 3.47.

अतिभीत त्रि॰, [अतिभीत], अत्यधिक भयग्रस्त - *अतिभीतो अहू राजा, तं अस्सासेतुमागमा,* म॰ वं॰ 4.39.

अतिभीरुक त्रि॰, [अतिभीरुक], बहुत अधिक डरपोक - *किम्पुरिसा नाम अतिभीरुका होन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.94.

अतिभुञ्जति अति + √भुज का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अधिक भोजन करता है, अधिक खाता है - **ञ्जित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *एकच्चे तं येव भोजनं अतिभुञ्जित्वा विसूचिकाय मरन्ती'ति,* मि॰ प॰ 153.

अतिभुत्त त्रि॰, अति + √भुज का भू॰ क॰ कृ॰ [अतिभुक्त], अत्यधिक खाया गया, निर्धारित मात्रा से अधिक मात्रा में लिया गया - *कुप्पमानो दसविधेन कुप्पति सीतेन उण्हेन ... अतिभुत्तेन ...,* मि॰ प॰ 138; *अतिभुत्तेन भोजनं विसमं परिणमति,* मि॰ प॰ 258.

अतिभूमिं सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अतिभूमिं], निर्धारित सीमा के बाहर - *सो ... अतिभूमिं गन्त्वा वेरम्भवातमुखं पत्वा चुण्णविचुण्णभावं पापुणि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.427.

अतिभेरवत्त नपुं॰, भाव॰ [अतिभैरवत्व], अत्यधिक भयानक होने की स्थिति - *अतिभेरवत्ता कम्मट्ठानस्स,* विसुद्धि॰ 1.179.

अतिभोजन नपुं., [अतिभोजन], आवश्यकता से अधिक भोजन, निर्धारित मात्रा से अधिक भोजन - *छ धम्मा थिनमिद्धस्स पहानाय संवत्तन्ति, अतिभोजने निमित्तग्गाहो* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).294.

अतिमञ्च त्रि., वह, जिसे मञ्च या पलङ्ग की कोई आवश्यकता नहीं है - *अतिक्कन्तो मञ्चं अतिमञ्चो,* मो. व्या. 3.132, द्रष्ट. मञ्चातिमञ्च के अन्त.

अतिमञ्ञति अति + √मन का वर्त., प्र. पु., ए. व., अपमानित करता है, उपेक्षा करता है, तिरस्कृत करता है - *अप्पलाभोपि चे भिक्खु, सलाभं नातिमञ्ञति,* ध. प. 366; *बहुस्सुतो अप्पस्सुतं, यो सुतेनातिमञ्ञति,* थेरगा. 1029; - **सि** म. पु., ए. व. - *कल्याणं वत भो सक्खि, अत्तानं अतिमञ्ञसि,* अ. नि. 1(1).174; - **ञ्ञामि** उ. पु., ए. व. - *न किञ्चि अतिमञ्ञामि, धम्मे मे निरतो मनो,* जा. अट्ठ. 4.122; - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *ते दुब्बण्णे सत्ते अतिमञ्ञन्ति,* दी. नि. 3.63; - **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *अतिहीळयानोति अतिमञ्ञन्तो निन्दन्तो गरहन्तो,* जा. अट्ठ. 4.295; **ञ्ञेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *सलाभं नातिमञ्ञेय्य,* ध. प. 365; - **ञ्ञत्थो** अनु., म. पु., ब. व. - *दाठिनि मातिमञ्ञित्थो, सिङ्गालो मम पाणदो,* जा. अट्ठ. 2.23; - **ञ्ञिसं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *साहं पुत्तबलूपेता, सामिकं अतिमञ्ञिसं,* पे. व. 40; - **ञ्ञिसुं** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *न मं ते अतिमञ्ञिसुं,* जा. अट्ठ. 4.139; - **ञ्ञिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. - *पच्छिमा जनता सालिमंसोदनं अतिमञ्ञिस्सती'ति,* पारा. 7; - **ञ्ञितब्बा** सं. कृ. - *एवरूपे, भिक्खवे, पुग्गले उपेक्खा नातिमञ्ञितब्बा,* म. नि. 3.28; - **ते** आत्मने. वर्त., प्र. पु., ए. व. - *पदुट्ठचित्ता अहितानुकम्पिनी, अञ्ञेसु रत्ता अतिमञ्ञते पतिं,* जा. अट्ठ. 2.288; - **ञ्ञेति** वर्त., प्र. पु., ए. व. - *यो नरो सञ्ञातिं अतिमञ्ञेति, तं पराभवतो मुखं,* सु. नि. 104.

अतिमञ्ञना स्त्री., अति + √मन से व्यु. [अवमन्यना], अवमान, तिरस्कार, घमण्ड, अहंकार - *खत्तियो'ति विसेसो नत्थि, सुद्दो'ति अतिमञ्ञना नत्थि,* मि. प. 128.

अतिमटाहक त्रि., बहुत छोटा - *न, भिक्खवे, अतिमटाहकं दन्तकट्ठं खादितब्बं,* चूळव. 259; *अतिमटाहकन्ति अतिखुद्दकं,* चूळव. अट्ठ. 56.

अतिमत्त[1] त्रि., [अतिमत्त], अत्यधिक उन्मत्त, अतिशय अहंकारी - *अतिमत्तोसि सिप्पेन, उरगं नापचायसी'ति,* जा. अट्ठ. 7.39.

अतिमत्त[2] त्रि., ब. स. [अतिमात्र], मात्रा में अत्यधिक - *भुसमतिसयो च दळ्हं तिब्बे कन्तातिमत्तबाळ्हानि,* अभि. प. 41.

अतिमधुर त्रि., [अतिमधुर], बहुत स्वादिष्ट, बहुत मीठा - *अतिमधुरं गण्हथ अतिसादुं गण्हथ,* ध. स. अट्ठ. 248.

अतिमनाप त्रि., [अतिमनाप], अतीव सुन्दर, मन को अत्यन्त प्रिय लगनेवाला - *अभिक्कन्तन्ति अभिकन्तं, अतिइट्ठं अतिमनापं, अतिसुन्दरन्ति ति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 1.122; उदा. अट्ठ. 233; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).138; *अयं अम्हाकं सन्तिके अतिमनापा सुरा,* जा. अट्ठ. 1.260.

अतिमनोरम त्रि., [अतिमनोरम], मन को अत्यधिक सुन्दर लगनेवाला, अतीव सुन्दर - *बोधिसत्तोपि खो रथवरं आरुय्ह महन्तेन यसेन अतिमनोरमेन सिरिसोभग्गेन नगरं पाविसि,* जा. अट्ठ. 1.70.

अतिमनोहर त्रि., [अतिमनोहर], मन को अपनी ओर अत्यधिक खींचने वाला, अतिशय सुन्दर - *दस्सनीया पासादिका परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागता अतिमनोहरकेसकलापी अहोसि,* पे. व. अट्ठ. 40.

अतिमन्द त्रि., [अतिमन्द], अत्यधिक आलसी, अतिशय कोमल, अतीव सुस्त - *अतिमन्दो पि अग्गीव वत्तमानो सकासयं,* सद्धम्मो. 488.

अतिमन्दक त्रि., [अतिमन्दक], उपरिवत् - *सन्दिट्ठिकं फलं बीजा अङ्कुरं वातिमन्दकं,* सद्धम्मो. 273.

अतिमहन्त त्रि., [अतिमहत्], बहुत बड़ा, अत्यधिक विशाल, महान् - *तदा अञ्ञतरस्मिं नातिमहन्ते सरे निदाघसमये उदकं मन्दं अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.218; *किमिदं देवी'ति च पुट्ठा अतिमहति ते, देव, सम्पत्ति,* पे. व. अट्ठ. 64; - **ता** अतिमहन्त का भाव., स्त्री. [अतिमहत्ता], अत्यधिक विशालता - *पथविं अतिमहन्तताय नरोरगमिगपक्खिजलसेलपब्बतदुमे धारेति,* मि. प. 258.

अतिमहासावज्ज त्रि., [अतिमहासावद्य], अत्यन्त पापमय, अतीव निन्दनीय - *तत्थ अहमेव लभेय्यन्ति इच्छा नातिमहासावज्जा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).155.

अतिमान पु., [अतिमान], अत्यधिक अभिमान, प्रबल दर्पभाव - *सातियेसु अनस्सावी, अतिमाने च नो युतो,* सु. नि. 859; *इधेकच्चो परं अतिमञ्ञति जातिया वा गोत्तेन वा ... पे ... अञ्ञतरञ्ञतरेन वा वत्थुना, यो एवरूपो मानो मञ्ञना मञ्ञितत्तं उन्नति उन्नमो धजो सम्पग्गाहो केतुम्यता चित्तस्स- अयं वुच्चति अतिमानो,* महानि. 170; *कदरियता अतिमानो उसूया,* दी. नि. 2.177; *अतिमानो च ओमानो, पहीना सुसमूहता,* थेरगा. 428; - **हत** त्रि., [हत], अत्यधिक

घमण्ड से विनष्ट या पीड़ित - *अतिमानहतो बालोति बालो ... पत्थद्धो उस्सितद्धजो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.93.

अतिमानी त्रि॰, [अतिमानी], दूसरे से स्वयं को अधिक श्रेष्ठ समझकर अभिमान करने वाला व्यक्ति, अहंकारी, घमण्डी - *सक्को उजू च सुहुजू च, सूवचो चस्स मुदु अनतिमानी,* सु॰ नि॰ 143; *थद्धो होति अतिमानी,* दी॰ नि॰ 3.32; *अतिमानीति ... अतिक्कमित्वा मञ्ञनलक्खणेन अतिमानेन च समन्नागतो होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.21.

अतिमायावी त्रि॰, [अतिमायाविन्], अत्यधिक धोखेबाज, कूटयुक्ति का प्रयोग करने वाला, अत्यधिक जालसाज - *ततं मायाविनोति अतिमायाविनो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.53.

अतिमीळ्हज त्रि॰, अति + मिह का भू॰ का॰ कृ॰ [अतिमीढज], मल-मूत्र के ढेर से जन्म लेने वाला शिशु, - *सचे, दोण, ब्राह्मणो गब्भिनिं गच्छति अतिमीळ्हजो नाम सो होति माणवको वा माणविका वा,* अ॰ नि॰ 2(1).210; अतिमीळ्हजोति अतिमीळ्हे महागूथरासिम्हि जातो, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.68.

अतिमुखर त्रि॰, [अतिमुखर], अत्यधिक वाचाल, बातूनी - *तस्मिं काले रञ्ञो पुरोहितो अतिमुखरो होति बहुभाणी,* जा॰ अट्ठ॰ 1.400; *मय्हं पुरोहितो अतिमुखरो अप्पमत्तकेपि वुत्ते बहुं भणन्तो मं उपद्दवेति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.289; **- ता** स्त्री॰, अतिमुखर का भाव॰ [अतिमुखरता], अत्यधिक वाचालता, बातूनीपन - *आचरिय, तुम्हे अतिमुखरताय नाळिमत्ता अजलण्डिका गिलन्ता किञ्चि न जानित्थ,* जा॰ अट्ठ॰ 1.401.

अतिमुत्त पु॰, [अतिमुक्त], अजमोथा, एक प्रकार की लता, वासन्ती-लता, जो आम की प्रिया के रूप में आमवृक्ष से लिपटी रहती है - *वासन्ति'त्थि अतिमुत्तो,* अभि॰ प॰ 577; *अतिमुत्ता असोका च, भगिनीमाला च पुप्फिता,* अप॰ 1.12; *अज्जुना अतिमुत्ता च, महानामा च पुप्फिता,* अप॰ 1.380; **- क** पु॰, [अतिमुक्तक], उपरिवत्, तिनेश वृक्ष का नाम - *अहञ्च अङ्कोलकमोचिनामि, अतिमुत्तकं सत्तलियोथिकञ्च,* जा॰ अट्ठ॰ 4.398; *तिनोसो त्वतिमुत्तको,* अभि॰ प॰ 555; *अतिमुत्तकादिलतामण्डपो,* उदा॰ अट्ठ॰ 163; **- कमाला** स्त्री॰, [अतिमुक्तकमाला], माधवी-लता के फूलों से बनी माला - इत्थी वा पुरिसो वा दहरो, युवा ... वस्सिकमालं वा अतिमुत्तकमालं वा लभित्वा ... उत्तमङ्गे सिरस्मिं पतिट्ठापेय्य, चूळव॰ 419.

अतिमुत्तक पु॰, संकिच्च के एक अन्तेवासी सामणेर का नाम - *सो पन तस्सेव भागिनेय्यो अतिमुत्तकसामणेरो नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.385, पाठा॰ अधिमुत्तसामणेरो.

अतिमुत्तकसुसान नपुं॰, कर्म॰ स॰, वाराणसी के समीप में स्थित एक श्मशान का नाम - *ते तत्थ तीणि चत्तारि वस्सानि वसित्वा ... बाराणसिं पत्वा अतिमुत्तकसुसाने वसिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.26.

अतिमुदुक त्रि॰, [अतिमृदुक], अतीव कोमल, हल्का, दुर्बल - *राजा अतिमुदुको,* जा॰ अट्ठ॰ 1.254; *इमे द्वेपि अतिमुदुका,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.237.

अतिमोदति अति + √मुद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अतिमोदति], और भी अधिक आनन्दित होता है - *इधलोकेपि मोदति, कालं कत्वा इदानि परलोकेपि अतिमोदतियेवाति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.77.

अतिमोह पु॰, [अतिमोह], प्रबल अज्ञान, घनीभूत व्यामोह - *तस्सेसा अतिमोहजालबलता जानम्पि संमुय्हतीति,* म॰ वं॰ 20.58; *अतिमोहेन अनयं आपज्जति,* मि॰ प॰ 258.

अतियक्ख पु॰, [अतियक्ष], यक्ष का अतिक्रमण कर उनसे भी बढ़-चढ़कर मायावी - *अतियक्खा वस्सवरा, इत्थागारा च राजिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.257.

अतियाचक त्रि॰, [अतियाचक], अधिक याचना करने वाला - *तं ते न दस्सं अतियाचकोसि,* पारा॰ 226; जा॰ अट्ठ॰ 2.237.

अतियाचना स्त्री॰, [अतियाचना], अधिक मांगना, अत्यधिक याचना - *विदेस्सो होति अतियाचनाय,* पारा॰ 227.

अतियाति अति + √या का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बगल से होकर निकल जाता है, अतिक्रमण करके या चुपके से बाहर निकल जाता है - **यन्ति** ब॰ व॰ - *अतिक्कमन्तीति भगवतो सवनविसये तं तं मुखारुळ्हं वदन्ता अतियन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 260; **- तुं** निमि॰ कृ॰, - *ब्राह्मणगहपतिकानम्पि तस्मिं समये न फासु होति अतियातुं वा निय्यातुं वा,* अ॰ नि॰ 1(1).84; *अतियातुन्ति बहिद्धा जनपदचारिकं चरित्वा इच्छितिच्छितक्खणे अन्तोनगरं पविसितुं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.42–43.

अतिरच्छानकथिक त्रि॰, [अतिरश्चीनकथिक], निरर्थक अथवा सांसारिक विषयों से सम्बन्धित बातें न करने वाला - *सङ्गतो खो पन अनानाकथिको होति अतिरच्छानकथिको,* अ॰ नि॰ 3(1).4; *अनानाकथिकेन भवितब्बं अतिरच्छानकथिकेन,* परि॰ 311, तिरच्छानकथिक का विलो॰.

अतिरच्छानगामी त्रि., [अतिरश्चीनगामी], तिर्यक् योनि में पुनर्जन्म ग्रहण न करने वाला प्राणी - *सब्बे सोतसमापन्ना, अतिरच्छानगामिनो,* स. नि. 1(1).181.

अतिरतनमार पु., [अतिरत्नभार], रत्नों का अत्यधिक भार या वज़न - *किं नु खो, महाराज, अतिरतनभारेन सकटं भिज्जती'ति,* मि. प. 224.

अतिरत्त त्रि., [अतिरात्र], बीती हुई रात का परवर्ती समय - *अतिक्कन्तो रत्तिं अतिरत्तो,* मो. व्या. 345.

अतिरत्तिं सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., बहुत रात ढल जाने पर, प्रातःकाल से कुछ पूर्व - *अयं अतिरत्तिं वा वस्सति अतिपभाते वा,* जा. अट्ठ. 1.418; 2.254.

अतिरमणीय त्रि., [अतिरमणीय], अत्यन्त सुन्दर - *खं खयं अतिरमणीयं राजक्खयं,* सद्द. 2.327.

अतिरसकपूव पु., कर्म. स. [अतिरसकपूप], अत्यन्त रस भरा पुआ - *अथेकदिवसं तस्मिं घरे अतिरसकपूवे पचिंसु,* जा. अट्ठ. 5.279.

अतिरस्स त्रि., कर्म. स. [अतिह्रस्व], अत्यन्त छोटा - *नातिदीघा नातिरस्सा, नालोमा नातिलोमसा,* जा. अट्ठ. 6.287; *हीनं नाम लिङ्गं अतिदीघं, अतिरस्सं,* पाचि. 9.

अतिराग पु., [अतिराग], अत्यधिक आसक्ति, सुदृढ़ लगाव - *अतिरागेन उम्मत्तको होति,* मि. प. 258.

अतिराज पु., [अतिराजन्], राजाधिराज, बहुत बड़ा राजा - *राजूनं अतिराजा भवेय्य,* मि. प. 258; *आम, जम्बुक, महाराजूनम्पि अतिराजा ति,* ध. प. अट्ठ. 1.283; - **कुमार** पु., राजाधिराज का पुत्र, विशिष्ट शक्ति एवं महिमा से सम्पन्न राजकुमार - *अतिरेकतरो चेव विसेसवन्ततरो च राजकुमारो सो अतिराजकुमारो ति वुच्चति,* ध. स. अट्ठ. 4.

अतिरिच्चति अति + √रिच का वर्त., प्र. पु., ए. व., दूसरे की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ होता है, दूसरे को पारकर आगे बढ़ जाता है - *इच्छाविघातं दुक्खं किं नरकं नातिरिच्चति,* सद्धम्मो. 126; - **च्चेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *किं नु खो नातिरिच्चेय्य मनुस्से जम्बुदीपके,* सद्धम्मो. 23.

अतिरित्त त्रि., अति + √रिच का भू. क. कृ. [अतिरिक्त], अवशिष्ट, शेष, बचा हुआ, बाकी, अधिक - *अतिरित्तो तथाधिको,* अभि. प. 712; *अनुजानामि, भिक्खवे, गिलानस्स च अगिलानस्स च अतिरित्तं भुञ्जितुं,* पाचि. 113; - **भत्त** नपुं., भिक्षुसङ्घ को प्राप्त भोजन का अतिरिक्त भाग - *अत्थि किञ्चि भिक्खुसङ्घस्स अतिरित्तभत्त'न्ति,* ध. प. अट्ठ. 2.152; - **सञ्ञा** स्त्री., किसी भी भोजन को अतिरिक्त भोजन मानना - *अनतिरित्ते अतिरित्तसञ्ञाया ति,* मि. प. 248; - **सञ्ञी** त्रि., अनतिरिक्त भोजन को अतिरिक्त भोजन माननेवाला - *अनतिरित्ते अतिरित्तसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति वा भुञ्जति वा, आपत्ति पाचित्तियस्स,* पाचि. 114; स. उ. प. के रूप में अकता., अन., कता., गिलाना. एवं सुगता. के अन्त. द्रष्ट.; - **टि.** भोजन के साथ प्रयुक्त होने पर यह विनय का एक पारिभाषिक शब्द बन जाता है. भिक्षुसङ्घ को प्राप्त भोजन के अवशिष्ट भाग को अतिरित्तभोजन कहा गया है, अनुमोदित अवस्थाओं में पवारित भिक्षु इस भोजन को ग्रहण कर सकता है, ऐसा भिक्षु अनतिरिक्त भोजन ग्रहण नहीं कर सकता है, पाचि. संख्या 35.

अतिरुचिर त्रि., [अतिरुचिर], अत्यन्त दर्शनीय, अतीव सुन्दर, अतिशय प्रासादिक - *अतिरुचिरसुवग्गु दस्सनेय्यं, पटिलभति दहरो सुसु कुमारो,* दी. नि. 3.114.

अतिरूपिनी स्त्री., अत्यन्त सुन्दरी, अधिक लावण्यमयी - *दिस्वा तमेवं चिन्तेसिं, अहोयमभिरूपिनी,* अप. 2.217, पाठा. अभिरूपिनी.

अतिरेक त्रि., [अतिरेक], अधिक, और भी अधिक, विशिष्ट, अन्य की अपेक्षा अधिक, परित्यक्त, छोड़ा हुआ - *नात्तनो समकं कञ्चि, अतिरेकं च मञ्ञिसं,* थेरगा. 424; *अञ्ञेहि ब्राह्मणेहि अतिरेकं कत्वा पस्सति,* जा. अट्ठ. 3.166; *यथा हि तुलं गहेत्वा ठितो अतिरेकं चे होति, हरति, ऊनं चे होति, पक्खिपति,* ध. प. अट्ठ. 2.228; - **कद्धमास** पु., आधे महीने से भी अधिक वाला समय - *अतिरेकद्धमासे सेसे गिम्हाने कत्वा परिदहितं निस्सग्गियं,* पारा. 378; - **करण** नपुं., [अतिरेककरण], अतिरिक्त कर देना, अतिशय या विशिष्ट कर देना - *अत्तनो करणतो अतिरेकं करणं अकरीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 1.413; - **चतुमासनिविट्ठ** त्रि., चार महीनों से भी अधिक समय के लिये बसा हुआ - *योपि सत्थो अतिरेकचतुमासनिविट्ठो सोपि वुच्चति गामो,* पारा. 52; - **चीवर** अननुमोदित या अननुज्ञात चीवर - *अतिरेकचीवरं नाम अनधिट्ठितं अविकप्पितं,* पारा. 303; - **तर** त्रि., अतिशयार्थ-वाचक पञ्चम्यन्त के साथ प्रयुक्त विशे. [अतिरेकतर], और भी अधिक विशिष्ट अथवा उत्तम - *दानतो अतिरेकतरं पुञ्ञन्ति,* जा. अट्ठ. 7.215; *चतूहि समुद्देहि अतिरेकतरेन अस्सुना भवितब्बन्ति इदं,* ध. प. अट्ठ. 1.304; - **तरपञ्ञ** त्रि., ब. स. [अतिरेकतरप्रज्ञ], अन्य की प्रज्ञा की अपेक्षा अधिक उत्तम प्रज्ञा वाला - *तेहि किर पण्डितेहि अतिरेकतरपञ्ञा पञ्चालरञ्ञो माता,* जा. अट्ठ.

6.227; - **तरवण्ण** त्रि., ब. स. [अतिरेकतरवर्ण], दूसरों की अपेक्षा अत्यधिक सुन्दर रूप वाला - *भिय्यो वण्णवती सियाति अतिरेकतरवण्णा भवेय्यासीति,* जा. अट्ठ. 4.98; - **ता** स्त्री., अतिरेक का भाव., श्रेष्ठता, उत्तमता, उत्कृष्टता - *अत्थि बुद्धानं बुद्धेहि हीनातिरेकताति,* कथा. 489; - **दसवग्ग** त्रि., [अतिरेकदशवर्ग], ऐसा वर्ग (समूह), जिसमें दस से अधिक की संख्या वाले सदस्य या अवयव (भाग) हों - *अनुजानामि, भिक्खवे, दसवग्गेन वा अतिरेकदसवग्गेन वा गणेन उपसम्पादेतुन्ति,* महाव. 66; - **धम्म** त्रि., ब. स., छोड़ने योग्य अथवा त्यागने योग्य बातें या धर्म - *सिया च मे पिण्डपातो अतिरेकधम्मो छड्डनीयधम्मो,* म. नि. 1.17; *अतिरेकोव अतिरेकधम्मो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).101; - **पञ्चक** त्रि., ऐसा समूह, जिसमें पांच से अधिक लोग हों - *न अञ्ञत्र पञ्चकेन वा अतिरेकपञ्चकेन वा तदहेव सञ्छिन्नेन ... अत्थतं होति कथिनं,* महाव. 331-332; - **पञ्चमासक** त्रि., पांच माशा से अधिक वजन वाला या मूल्य वाला - *चोरो नाम यो पञ्चमासकं वा अतिरेकपञ्चमासकं वा ... आदियति,* पारा. 53; - **पञ्ञावेय्यत्तिय** नपुं., आवश्यकता से अधिक बुद्धिमत्ता - *चक्करतने उप्पन्नमत्ते अतिरेकपञ्ञावेय्यत्तियेन समन्नागतो होति,* खु. पा. अट्ठ. 139; - **पण्णास / पञ्ञास** त्रि., पचास से अधिक की संख्या वाला - *कूटतापसो तत्थ अतिरेकपण्णासवस्सानि वसि,* जा. अट्ठ. 2.314; - **पत्त** पु., [अतिरेकपात्र], अतिरिक्त भिक्षापात्र - *अनुजानामि, भिक्खवे, दसाहपरमं अतिरेकपत्तं धारेतुं,* पारा. 365; - **पदसत** नपुं., एक सौ से अधिक गाथापद - *महाकाळनागराजा अतिरेकपदसतेन वण्णं वदन्तो अट्ठासि,* जा. अट्ठ. 1.81; - **पाद** त्रि., ब. स., एक पाद से अधिक मूल्य वाला - *यथारूपं नाम पादं वा पादारहं वा अतिरेकपादं वा,* पारा. 53; - **प्पमाण** त्रि., ब. स. [अतिरेकप्रमाण], असाधारण आकार प्रकार वाला - *अतिरेकप्पमाणं भासति,* जा. अट्ठ. 3.89; - **पूजा** स्त्री., विशिष्ट प्रकार की पूजा - *ते न अतिरेकपूजाय पूजेता होति,* म. नि. 1.284; - **भाग** पु., उचित भाग से अधिक - *अञ्ञतरो भिक्खु अतिरेकभागेन उत्तरितुकामो होति,* महाव. 376; - **लाभ** पु., अतिरिक्त लाभ, अनुमोदित वस्तुओं के अतिरिक्त अन्य का लाभ - *अतिरेकलाभो - सङ्घभत्तं, उद्देसभत्तं, निमन्तनं ...,* महाव. 65; - **वीसतिवग्ग** त्रि., बीस से अधिक संख्या वाला वर्ग या मण्डली - *अतिरेकवीसतिवग्गो भिक्खुसङ्घो,* महाव. 416; - **वीसतिवस्स** त्रि., बीस वर्ष से अधिक आयुवाला - *वीसतिवस्सो वा होति अतिरेकवीसतिवस्सो वा,* अ. नि. 3(1).108; - **सञ्ञी** त्रि., [अतिरेकसञ्ज्ञी], अधिक की संज्ञा रखनेवाला, किसी धर्म के अत्यधिक होने की अवस्था के प्रति सचेष्ट - *अतिरेकद्धमासे सेसे गिम्हाने अतिरेकसञ्ञी कत्वा निवासेति,* पारा. 378; विलो. ऊनकसञ्ञी; - **सत्त** [सप्त], सात से अधिक संख्या वाला - *मम कनिट्ठस्स अतिरेकसत्तमाससत्तदिवसाधि कानि सत्तवस्सानि निक्खन्तस्सा ति ...,* जा. अट्ठ. 5.311.

अतिरोचति अति + √रुच का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अतिरोचति], दूसरों की तुलना में अधिक प्रकाशित होता है, विशिष्ट गुणों के कारण बहुतों के बीच प्रमुख होता है - *अतिरोचति पञ्ञाय, सम्मासम्बुद्धसावको,* ध. प. 59; *भिक्खु दिसम्पि अनुदिसम्पि उद्धम्पि अधोपि तिरियम्पि विरोचति अतिरोचति,* मि. प. 305; *सब्बे तारागणे लोके, आभाय अतिरोचति,* जा. अट्ठ. 5.56.

अतिलहु तृ. वि., प्रतिरू. निपा., क्रि. वि., बहुत हल्केपन से, अत्यन्त शीघ्रता के साथ, बिना सोचे-विचारे ही - *अतिलहुं खो त्वं, मोघपुरिस, बाहुल्लाय आवत्तो, यदिदं गणबन्धिकं,* महाव. 66; - **क** अ., उपरिवत् - *अतिचिरम्पि तिट्ठन्ति, अतिलहुकम्पि तिट्ठन्ति,* चूळव. 358, पाठा. अतिलहुम्पि.

अतिलीन त्रि., अत्यन्त दुर्बल, अत्यन्त क्षीण, अतीव कृश - *इति मे वीरियं न च अतिलीनं भविस्सति, न च अतिप्पग्गहितं भविस्सति,* स. नि. 3(2).337; - **वीरिय** नपुं, अत्यन्त शिथिल पराक्रम, अत्यन्त मन्द प्रयास - *न अच्चारद्धवीरियं, न अतिलीनवीरियं,* म. नि. 3.199.

अतिलूख त्रि., [अतिरूक्ष], अधिक रूखा, अत्यन्त कड़ा, अतिशय कठोर - *सचित्तं परिदूसेन्ति अतिलूखे पि पच्चये,* सद्धम्मो. 409.

अतिलोण त्रि., [अतिलवण], अत्यधिक नमकीन - *ततो पट्ठाय यागुं ददमाना अच्चुण्हं वा अतिसीतलं वा अतिलोणं वा अलोणं वा देति,* जा. अट्ठ. 3.374.

अतिवंक त्रि., [अतिवक्र], अत्यधिक टेढ़ा - *अग्गे अतिवङ्कानीति वङ्कातिवङ्कानि,* जा. अट्ठ. 1.162.

अतिवत्त त्रि., अति + √वत का भू. क. कृ. [अतिवृत्त], हो चुका, पीछे जा चुका, बीत चुका, पार किया जा चुका - *अतिवत्ता लोकधम्मा, तस्मा अरहा न तसति सब्बभयेहि,* मि. प. 147; *मुत्तो अज्ज त्वं इतो पट्ठाय सब्बभयानि अतिवत्तो ...,* जा. अट्ठ. 5.79.

अतिवत्तति अति + √वत्त का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अतिवर्तते], अतिक्रमण करता है, अभिभूत करता है, जीत लेता है, किसी से छिपने की चेष्टा करता है – *अथ एतं पिसाचञ्च पङ्कुलञ्चातिवत्तती'ति,* उदा. 74, *पङ्कुलञ्चातिवत्ततीति ... अक्कुलपक्कुलिकञ्च अतिवत्तति, अतिक्कमति, अभिभवति, तं न भायतीति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 56; – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *केन तं नातिवत्तन्ति ञातिसङ्घा समागता,* जा. अट्ठ. 4.121; – **त्तरे** प्र. पु., ब. व., आत्मने. – *पापञ्चेपि बहुं कत्वा, तं खणं नातिवत्तरे,* जा. अट्ठ. 7.110; – **अच्चवत्तथ** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *तञ्च सो समतिक्कम्म, परमेवच्चवत्तथ,* जा. अट्ठ. 3.427; – **त्तिंसु** ब. व. – *पुथुयञ्ञं यजित्वान, पेतत्तं नातिवत्तिंसु,* जा. अट्ठ. 6.120; – **त्तितब्बा** पु., प्र. वि., ब. व., सं. कृ. – *सुखेन अतिवत्तितब्बा न होन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.216; – **त्तेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *तं तादिसं नातिवत्तेय्य चक्क'न्ति,* जा. अट्ठ. 4.4.

अतिवत्तन नपुं., अति + √वत्त से व्यु. [अतिवर्त्तन], अतिक्रमण, उल्लंघन, पराभवन, अभिभवन, किसी से परित्राण – *संसारतो अतिवत्तनानतिवत्तनदीपकं इमं उदानं उदानेसीति,* उदा. अट्ठ. 282.

अतिवद्ध त्रि., [अतिवृद्ध], पूर्ण विकसित, अतीव वृद्ध – *नातिवद्धंव कुञ्जरं,* जा. अट्ठ. 7.377.

अतिवस त्रि., ब. स. [अतिवश], पूर्णतः पराधीन रहनेवाला – *ममवातिवसा अस्सु, किच्चाकिच्चेसु किस्मिचि,* ध. प. 74.

अतिवस्स नपुं., [अतिवर्ष], अधिक वृष्टि, अधिक वर्षा – *अतिवस्सेन धञ्ञं विनस्सति,* मि. प. 258.

अतिवस्सति अति + √वस्स का वर्त., प्र. पु., ए. व., अत्यधिक वर्षा करता है – *तस्मा छन्नं विवरेथ, एवं तं नातिवस्सति,* थेरगा. 447; चूळव. 397.

अतिवस्सित नपुं., पक्षियों की बहुत जोर की चहचहाहट – *वाचा हनति दुम्मेधं, तित्तिरं वातिवस्सितं,* जा. अट्ठ. 1.414.

अतिवहति अति + √वह का वर्त., प्र. पु., ए. व., **शा. अ.** ढोकर ले जाता है, **ला. अ.** बहकाता है, ठगता है, फुसलाता है, वञ्चित करता है; ब. व. – *मरीचिधम्मं असमेक्खितत्ता, मायागुणा नातिवहन्ति पञ्ञं,* जा. अट्ठ. 7.52.

अतिवाक्य नपुं., [अतिवाक्य], अनार्य-वचन, कठोर वाणी, निन्दापरक वचन, गाली-गलौज़ – *अट्ठानरियवोहारवसेन या पवत्तिता, अतिवाक्यं सिया वाचा सा वीतिक्कमदीपनी,* अभि. प. 122; *अतिवाक्यं तितिक्खिस्सं, दुस्सीलो हि बहुज्जनो,* ध. प. 320; *नेवातिवाक्यं न लभे, भातूहि सखिनीहिपि,* जा. अट्ठ. 7.265.

अतिवात 1. पु., [अतिवात], प्रचण्ड झञ्झावात, तूफानी हवा – *यथा वा पन, महाराज, गगनं ... अतिवातेन फुटितत्ता नदति रवति गळगळायति ...,* मि. प. 123; *विसमं सभयं अतिवातो, पटिच्छन्नं देवनिस्सितं,* मि. प. 103; *अतिवाते सद्दो अविभूतो होति,* मि. प. 102; – **ट्ठान** नपुं., प्रचण्ड वायु का स्थान, प्रचण्ड झञ्झावात का स्थान – *अतिवातट्ठानं परिवज्जनीयं,* मि. प. 102.

अतिवायति अति + √वा का वर्त., प्र. पु., ए. व., आगे की ओर बहता है, विशेष रूप से हवा चलती है, इधर-उधर बहता है – **न्ति ब. व.** – *दिसम्पि अनुदिसम्पि अनुवातम्पि पटिवातम्पि वायन्ति अतिवायन्ति, फरित्वा तिट्ठन्ति,* मि. प. 303.

अतिवाह पु., अति + √वहति से व्यु. 1. निर्देशक, सञ्चालक, परिवहन, वहन, सवारी, वाहन – *सीलं सेट्ठो अतिवाहो, येन याति दिसोदिसं,* थेरगा. 616; 2. हांक, संचालन, प्रेरकबल अधिक भार का वहन – *अतिवाहेन हनन्ति पुङ्गवं,* जा. अट्ठ. 5.430.

अतिविकाल पु., अधिक देर, अधिक विलम्ब या असमय – *अतिविकालो खो, भो, अज्ज समणं गोतमं दस्सनाय उपसङ्कमितुं,* दी. नि. 1.94; *अतिविकालोति सुट्ठु विकालो,* दी. नि. अट्ठ. 1.223; *भद्दे, अहं अज्जेव अतिविकालो जातो, तस्मा गेहं अगन्त्वा मनुस्से उय्योजेत्वा एककोव पविट्ठोस्मि,* जा. अट्ठ. 3.419, तुल. अतिप्पगो.

अतिविज्झति अति + √व्यध का वर्त., प्र. पु., ए. व., अधिक वेधन करता है, विशेष-रूप से छेदन या भेदन करता है, भोंकता है, अधिक चुभाता है, पार करता है, मर्माहत करता है – *एवं अभावितं चित्तं रागो समतिविज्झति,* ध. प. 13.

अतिवित्थार पु. [अतिविस्तार], अत्यधिक विस्तार, अधिक फैलाव – **भय** पु., तृ. वि., ए. व., अधिक विस्तार का भय – *अतिवित्थारभयेन तु संखित्तं,* खु. पा. अट्ठ. 183; – **ता** स्त्री., भाव. सं. [अतिविस्तारता], विस्तार की अधिकता – *आकासो अतिवित्थारताय अनन्तो,* मि. प. 258.

अतिवित्थारित त्रि., [अतिविस्तारित], अत्यधिक विस्तृत किया हुआ, विशेष-रूप से फैलाया हुआ – *पोराणेहि कतोपेसो अतिवित्थारतो क्वचि,* म. वं. 1.2.

अतिविप्फारिक त्रि., [अतिविस्फारिक], अत्यधिक आभास्वर विस्तार वाला, अत्यन्त तेजोमय या ओजस्वी – *कायो च पन तेसं अतिविप्फारिकोव होति,* अ. नि. अट्ठ. 3.165.

अतिविम्हितमानस त्रि., [अतिविस्मितमानस], अत्यधिक आश्चर्यचकित मन वाला, विशेष-रूप से आश्चर्यान्वित मन वाला - *चीवरं पारुपन्ते ते अतिविम्हितमानसो,* म. वं. 14.49.

अतिविय निपा., [अतीव], अत्यधिक, अतिशय रूप में, अतिरेक रूप में - *अतिरोचति अम्हेहीति अत्तना मादिसेहि अतिविय विरोचति,* पे. व. अट्ठ. 122; *न केवलं रागोव दोसमोहमानादयो सब्बकिलेसा तथारूपं चित्तं अतिविय विज्झन्तियेव,* ध. प. अट्ठ. 1.71, पाठा. अतिरिव, अतीव; **क.** क्रियारूपों के पूर्व में प्रयुक्त - *सूरियस्स तापो अतिविय तपति,* मि. प. 255; **ख.** विशे. से पूर्व में प्रयुक्त - *तदा कोसलराजा अतिविय धम्मिको राजा ति ञत्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.255; *अयं मे अतिविय उपकारो ति तं पटिबाहितुं असक्कोन्तो ...,* ध. प. अट्ठ. 1.290; **ग.** तुलनासूचक विशे. से पूर्व आए हुए, तृतीयान्त एवं पञ्चम्यन्त नामपदों से पूर्व में प्रयुक्त - *इमे द्वे पिण्डपाता समसमफला ... अतिविय अञ्ञेहि पिण्डपातेहि महप्फलतरा,* मि. प. 110; दी. नि. 2.103.

अतिविरोचित्थ अति + वि + √रुच का अद्य. म. पु., ब. व., अत्यधिक मात्रा में संशोभित हुआ - *रत्तकम्बलेन पलिवेठेत्वा पीठे ठपिता रत्तसुवण्णघनपटिमा विय अतिविरोचित्थ,* उदा. अट्ठ. 336.

अतिविस स्त्री., [अतिविष], एक औषधीय जड़ी-बूटी का नाम, सोंठ - *मूलबीजं नाम ... अतिविसा,* दी. नि. अट्ठ. 1.75; *अनुजानामि, भिक्खवे, मूलानि भेसज्जानि - हलिद्दिं, सिङ्गिवेरं वचं, वचत्थं, अतिविसं ...,* महाव. 276; पाचि. 53.

अतिविसाल त्रि., [अतिविशाल], अत्यधिक चौड़ा, बहुत फैला हुआ, अतिविस्तृत - *अतिविसाले चङ्कमे चङ्कमन्तस्स चित्तं विधावति,* जा. अट्ठ. 1.10; - **ता** स्त्री., भाव. [अतिविशालता], अतीव विशाल होने की स्थिति - *एकग्गतं न लभतीति अतिविसालता पञ्चमो दोसो,* जा. अट्ठ. 1.10.

अतिविसट्ठवाक्य त्रि., ब. स., प्रवाहमय वचनों को बोलनेवाला - *बिन्दुस्सरो नातिविसट्ठवाक्यो,* जा. अट्ठ. 5.194; पाठा. नातिविस्सट्ठ.

अतिविस्सत्थ त्रि., [अतिविश्वस्त], बहुत भरोसेमन्द, अत्यन्त विश्वसनीय - *मातापितूसु विय अतिविस्सत्था मनुस्सा अहेसुं,* सु. नि. अट्ठ. 2.46.

अतिविस्सासिक त्रि., [अतिविश्वासिक], अत्यधिक निकटवर्ती, अतिशय विश्वासी - *सो किर रञ्ञो सब्बत्थसाधको अमच्चो अब्भन्तरिको अतिविस्सासिको ... सहायो,* जा. अट्ठ. 1.94.

अतिविस्सुत त्रि., [अतिविश्रुत], अत्यधिक विख्यात, बहुत अधिक प्रसिद्ध - *पुण्णो सुनापरन्तो व खन्तिया अतिविस्सुतो,* सद्धम्मो. 473.

अतिवीरिय नपुं., [अतिवीर्य], अत्यधिक दृढ़ पराक्रम, अत्यधिक शौर्य - *बोधिसत्तो अतिवीरियं करोन्तो निरवसेसतो आहारं उपरुन्धि,* मि. प. 230.

अतिवुट्ठि स्त्री., [अतिवृष्टि], अत्यधिक वर्षा - *तत्थ अतिवुट्ठिकाले थले सस्सं सम्पज्जति,* जा. अट्ठ. 4.342.

अतिवुद्ध त्रि., [अतिवृद्ध], अत्यधिक बूढ़ा, अत्यधिक वृद्ध - *मासे जेट्ठोतिवुद्धातिप्पसत्थेसु च तीसु सो,* अभि. प. 918.

अतिवेग पु., [अतिवेग], अत्यधिक वेग, अतिशय वेग, विशेष तेजी - *यथा, महाराज, पुरिसो अद्धानं अतिवेगेन गच्छेय्य,* मि. प. 230.

अतिवेठयन्ति अति + √वेठ का वर्त., प्र. पु., ब. व. [अतिवेष्टयन्ति], बदले में लपेट लेते हैं, प्रतिकार के रूप में दांव में बांध लेते हैं - *रत्तचित्तमतिवेठयन्ति नं, सालमालुवलताव कानने,* जा. अट्ठ. 5.450.

अतिवेलं निपा., क्रि. वि. [अतिवेल], निर्धारित सीमा का उल्लंघन करके, असामयिक रूप में, अनुपयुक्त समय में, आवश्यकता से अधिक रूप में - *ते अतिवेलं हस्सखिड्डारति-धम्मसमापन्ना विहरन्ति,* दी. नि. 1.17; *भिक्खुनीहि सद्धिं अतिवेलं संसट्ठो विहरति,* म. नि. 1.174; *यो वे काले असम्पत्ते, अतिवेलं पभासति,* जा. अट्ठ. 3.88; - **चारी** त्रि., [अतिवेलचारिन्], निर्धारित समय के बाद भी विचरने वाला - *काले पविस्स नागदत्त, दिवा च आगन्त्वा अतिवेलचारी,* स. नि. 1(1).232; - **भाणी** त्रि., असमय में बोलने वाला - *तक्कारिये सोब्भमिमं पतामि, न किरेव साधु अतिवेलभाणी,* जा. अट्ठ. 4.222; - **सायी** त्रि., [अतिवेलशायिन्], प्रातःकाल में बहुत देर तक सोने वाला - *सम्मूळ्हचित्तो अतिवेलसायी, तस्सा पुण्णं कुम्भमिमं किणाथ,* जा. अट्ठ. 5.15; - **लानुरक्खी** त्रि., [अतिवेलानुरक्षी], अत्यधिक सावधान, विशेष रूप से सचेष्ट - *न च अतिवेलानुरक्खी पत्तस्मिं,* म. नि. 2.347.

अतिस पु., एक व्यक्ति का नाम - *अतिसो च भारद्वाजो च अतिसभारद्वाजं,* मो. व्या. 3.23.

अतिसक्क पु., [अतिशक्र], शक्र से अधिक श्रेष्ठ (भगवान् बुद्ध) - *सक्कानं अतिसक्को,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).56; अ. नि. अट्ठ. 1.90.

अतिसक्करी स्त्री., [अतिशक्वरी / अतिशक्करी], वह छन्द, जिस के प्रत्येक चरण में पन्द्रह मात्राएं होती हैं तथा जिसके ससिकला, मणिगुणनिकर, मालिनी और पभद्दक ये चार प्रभेद होते हैं, वुत्तो. 92-95.

अतिसङ्खेप पु., [अतिसंक्षेप], अत्यधिक संक्षेप - *एत्थ अतिसङ्खेपेन वुत्तं ...,* सु. नि. अट्ठ. 2.62.

अतिसज्जन नपुं., [अतिसर्जन], दिशानिर्देश, अनुशासन, शिक्षण, उपदेश - *दिसअतिसज्जने, अतिसज्जनं पवोधनं भवनेन,* सद्द. 2.453.

अतिसञ्चार पु., [अतिसञ्चार], इधर-उधर अधिक घूमना या चक्कर लगाना - *अतिसञ्चारेन न चिरं जीवति,* मि. प. 258, पाठा. अतिसञ्चरणेन.

अतिसणिकं निपा., क्रि. वि., अत्यन्त मन्द गति से, अत्यन्त मन्थर गति से - *नातिसणिकं गच्छति,* म. नि. 2.346.

अतिसण्ह त्रि., [अतिश्लक्षण], अतीव सूक्ष्म, अत्यन्त बारीक - *सोपि नो अतिसण्हं बहुं अभिधम्ममेव कथेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.189.

अतिसन्त त्रि., [अतिशान्त], अत्यधिक शान्त - *नास्मसे अत्तत्थपञ्ञम्हि, अतिसन्तोपि नास्मसे,* जा. अट्ठ. 4.50.

अतिसन्तिके निपा., क्रि. वि., अत्यन्त समीप में अत्यन्त पास में - *महामेघवनुय्यानं नातिदूरातिसन्तिके,* म. वं. 15.8.

अतिसमण पु., [अतिश्रमण], श्रमणों के बीच सर्वश्रेष्ठ (बुद्ध) - *समणानं अतिसमणो भवेय्य,* मि. प. 258.

अतिसम्बाध त्रि., [अतिसम्बाध], बहुत संकुचित, अत्यधिक नियन्त्रित - *चक्कवाळं अतिसम्बाधं,* ध. प. अट्ठ. 1.176; वि. व. अट्ठ. 53, *अतिसम्बाधे ओकासे चतुकोटेन चतुसङ्कुटितेनेव हुत्वा अच्छितब्बं,* जा. अट्ठ. 3.213.

अतिसम्मुखं / अतिसम्मुखा अ., क्रि. वि., [अतिसम्मुखं], अत्यन्त समीप में, एकदम आमने-सामने - *छ निसज्जदोसे वज्जेत्वा सेय्यथिदं – अतिदूरं ... अतिसम्मुखं, अतिपच्छाति,* पारा. अट्ठ. 1.94; *अतिसम्मुखा निसिन्नो सचे दट्ठुकामो होति,* पारा. अट्ठ. 1.94; विलो. अतिपच्छा.

अतिसम्मूळ्ह त्रि., अति + सं + √मुह का भू. क. कृ. [अतिसम्मूढ़], अत्यधिक मोहग्रस्त, प्रगाढ़ अज्ञान से भरा - *मोमूहोति अतिसम्मूळ्हो,* दी. नि. अट्ठ. 1.100.

अतिसय पु., [अतिशय], अधिकता, उत्कर्ष, उन्नति - *उक्कंसो त्वतिसयोथ,* अभि. प. 761; *विसेसमज्झगाति अञ्ञाहि अतिसयं अधिगता,* वि. व. अट्ठ. 111; *समलङ्कततराति सम्मा अतिसयेन अलङ्कता,* पे. व. अट्ठ. 75; *अतिसयेन महद्धनोति महद्धनतरो,* उदा. अट्ठ. 81; - **टि.** अट्ठ. के व्याख्यानों में तुलनात्मक श्रेष्ठता का बोधक; - **तो** प. वि. के अर्थ में निपा., क्रि. वि. [अतिशयतः], अतिशय अथवा अधिक मात्रा में - *अतिसयतो वा सीलं अस्स अत्थीति सीलवा ...,* उदा. अट्ठ. 180; - **यत्थ** पु., कर्म. स., [अतिशयार्थ], महत्त्वपूर्ण विषय, महत्त्व की बात - *मा नो इमं अतिसयत्थं अञ्ञे जानिंसू'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.227; - **निरोध** पु., कर्म. स., [अतिशयनिरोध], पूरी तरह से समाप्ति या उच्छेद - *अतिसयनिरोधो हि नेसं पठमज्झानादिसु ...,* विसुद्धि. 1.159; - **निरोधत्त** नपुं., भाव., [अतिशयनिरोधत्व], अत्यधिक निरोध-प्राप्ति की अवस्था - *... एवं झानेस्वेव निरोधो वुत्तोति? अतिसयनिरोधत्ता,* विसुद्धि. 1.159; - **भरित** त्रि., [अतिशयभरित], अत्यधिक भरा हुआ - *अतिसयभरिता उदकभाजना,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).278, पाठा. अतिभरिता; - **विसुद्ध** त्रि., कर्म. स., [अतिशयविशुद्ध], अत्यधिक स्वच्छ, बहुत अधिक साफ-सुथरा - *अतिसयविसुद्धाहि विज्जाहि,* सु. नि. अट्ठ. 2.148.

अतिसयति अति + √सी का वर्त., प्र. पु., ए. व., [अतिशेते], अतिसेति के अन्त. द्रष्ट..

अतिसरति अति + √सर का वर्त., प्र. पु., ए. व., [अतिसरति], **शा. अ.** अत्यधिक दूर चला जाता है, पार कर जाता है, तेजी से दौड़ता है; **ला. अ.** उल्लंघन करता है, उपेक्षा करता है, पापकर्म करता है, विनय-विपरीत आचरण करता है - **अच्चसारी / अच्चसरा** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *यो नाच्चसारी न पच्चसारी,* सु. नि. 8-13; *एत्थ यो नाच्चसारीति यो नातिधावि,* सु. नि. अट्ठ. 1.19; - *तत्रेको भिक्खु अच्चसरा,* स. नि. 1(1).276; - **रो** अद्य., म. पु., ए. व. - *तत्थ अतिसरोति अतिसरीतिपि अतिसरो,* जा. अट्ठ. 4.6; - **अच्चसरिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *मूळ्हो अच्चसरिं वने,* जा. अट्ठ. 5.64; *अच्चसरिन्ति ... अतिक्कमित्वा ... पाविसिं,* जा. अट्ठ. 5.68; - **रिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. - *अतिसरिस्सतीतिपि अतिसरो,* जा. अट्ठ. 4.6; - **सित्वा** पू. का. कृ. - *अतिसित्वा अञ्ञेन वदन्ति सुद्धिं,* सु. नि. 914.

अतिसल्लेख पु., अति + सं + √लिख से व्यु., [-संलेख?], अत्यन्त कठोर तप, प्रबल अनासक्तिभाव, कठोर ब्रह्मचर्य-वास - *अमोहेन ... धुतङ्गेसु अतिसल्लेख- मुखेन पवत्तं ...,* अ. नि. अट्ठ. 1.130; - **वुत्ति** स्त्री., कर्म. स., अत्यन्त कठोर तप

वाली स्थिति, प्रबल त्यागभाव की अवस्था - ... *अतिसल्लेखवुत्तिया जीविते अनपेक्खो* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 65.

अतिसल्लेखति अतिसल्लेख का ना॰ धा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - अत्यधिक उग्र तप करता है, दृढ़ अनासक्तिभाव से युक्त है, कठोर प्रयास करता है - *अयं समणो ... अतिसल्लेखति, अतिवायामं करोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.118; तुल॰ *अधिसल्लिखतेति अतिविय सल्लिखति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.212; सद्द॰ 2.330.

अतिसहसा निपा॰, [अतिसहसा], अकस्मात् रूप में, बहुत तेजी के साथ, शीघ्रता के साथ, अचानक - *अतिसहसा'पि पविसन्ति,* चूळव॰ 358.

अतिसायं अ॰, [अतिसायं], बहुत देर से, बहुत विलम्ब करके - *अतिसायन्ति कम्मं न करोति,* दी॰ नि॰ 3.139; *अतिसायमिदं अहु,* दी॰ नि॰ 3.140; *अज्ज अतिसायं आगतासीति* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.89.

अतिसायन्ह पु॰, सायंकाल, ढलती हुई शाम - *अज्ज अतिसायन्हो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.309; द्रष्ट॰ अह के अन्त॰, पाठा॰ अतिसायह्न.

अतिसार / अतीसार पु॰, [अतिसार], 1. पेचिश, तरल रूप में मल का अत्यधिक निकलना - *सोको ... कुच्छिडाहं उप्पादेत्वा अतिसारं जनेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.106; 2. अतिक्रमण, दिशान्तरण - *समञ्ञाय च अतिसारो,* म॰ नि॰ 3.283; 3. निर्धारित मापदण्डों या नियमों का उल्लंघन, पापमय आचरण - *अतिसारं न बुज्झन्ति,* स॰ नि॰ 1(1).90; *अत्थि मे तं अतिसारं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.376.

अतिसाहस त्रि॰, ब॰ स॰, [अतिसाहस], अत्यधिक साहस वाला, दुस्साहसी, अधिक उग्र - *तं एतं अतिसाहसं अतिबलं* ..., म॰ वं॰ 20.58.

अतिसिगण पु॰, ऋषियों का बहुत बड़ा समूह - *अति इसिगणो, अतिसिगणो,* क॰ व्या॰ 47; *ति वुत्तरूपो न होति वा अतिसिगणो,* सद्द॰ 3.619.

अतिसिथिल त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अतिशिथिल], बहुत अधिक ढीला-ढाला, अत्यन्त दुर्बल अथवा शिथिल - *वीणाय तन्तियो अतिसिथिला,* अ॰ नि॰ 2(2).86; महाव॰ 254; *अतिसिथिलाति मन्दमुच्छना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.126; - **विरियता** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, अत्यन्त दुर्बल प्रयास वाली मनःस्थिति, क्षीण संकल्प का भाव - *यस्मिं समये अतिसिथिलवीरियतादीहि लीनं चित्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).308, विलो॰ अच्चारद्ध-विरियता.

अतिसीघं अ॰, क्रि॰ वि॰, [अतिशीघ्रं], अत्यधिक शीघ्रतापूर्वक, बहुत तेजी से - *सो नातिसीघं गच्छति,* म॰ नि॰ 2.346; *नातिसीघं पक्कमति,* उदा॰ अट्ठ॰ 335.

अतिसीत त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अतिशीत], अत्यधिक शीतल, बहुत अधिक ठण्डा - *अतिसीतन्ति कम्मं न करोति,* दी॰ नि॰ 3.139; *अतिसीतं अतिउण्हं, अतिसायमिदं अहु,* थेरगा॰ 231; दी॰ नि॰ 3.140; - **ता** स्त्री॰, अतिसीत का भाव॰, [अतिशीतता], अत्यधिक शीतलता अथवा ठण्डक - *उदकं अतिसीतताय निब्बापेति,* मि॰ प॰ 258, विलो॰ अतिउण्ह अथवा अच्चुण्ह.

अतिसीतल त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अतिशीतल], उपरिवत् - *तया कतो अग्गि अतिसीतलो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.47.

अतिसीमचर त्रि॰, सीमा अथवा निर्धारित क्षेत्र के बाहर विचरण करने वाला, सीमा का उल्लंघन करने वाला - *अतिसीमचरो दित्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.224.

अतिसीलवन्तता स्त्री॰, भाव॰ [अतिशीलवत्ता], अच्छे आचरण से युक्त अथवा उत्तम शील से सम्पन्न रहने की स्थिति, सदाचार-परायणता - *भिक्खु अतिसीलवन्तताय ... नमस्सनीयो,* मि॰ प॰ 259.

अतिसुक्ख त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अतिशुष्क], अत्यधिक सूखा - *आमकमत्तेति आमके नातिसुक्खे भाजने,* म॰ नि॰ अट्ठ॰(उप॰प॰) 3.122.

अतिसुखुम त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अतिसूक्ष्म], अत्यधिक सूक्ष्म, बहुत अधिक सूक्ष्म - *अतिसुखुमतिरोहित - विदूरदेसेसुपि रूपधम्मेसु,* उदा॰ अट्ठ॰ 107; - **मोदक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अतिसूक्ष्मोदक], अत्यधिक तेज प्रवाहयुक्त जल वाला / वाली - *सा हि अतिसुखुमोदका, सुखुमत्ता उदकस्स अन्तमसो मोरपिञ्छमत्तम्पि तत्थ पतितं नं सण्ठाति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.121.

अतिसुण पु॰, कर्म॰ स॰ [अतिश्वन्], पागल कुत्ता - *उन्मत्तादितमापन्नो अळक्को तिसुणो मतो,* अभि॰ प॰ 519.

अतिसुन्दर त्रि॰, ब॰ स॰ [अतिसुन्दर], अत्यधिक सुन्दर स्वरूप वाला - *अतिसुन्दरा इमे कम्बला,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.206; *अभिक्कन्तन्ति ... अतिमनापं अतिसुन्दरन्ति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.122.

अतिसूर त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अतिशूर], अत्यधिक वीर, प्रबल साहसी; (पोरिसाद नामक व्यक्ति-विशेष के लिये प्रयुक्त विशे॰) - *पोरिसादो ... अतिसूरो अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.469; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अतिशूरता], अत्यधिक वीरता, अनुपम बहादुरी - *विक्कमो त्वतिसूरता,* अभि॰ प॰ 398.

अतिसेति अति + √सी का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अतिशेते], अतिशय भाव को प्राप्त कर लेता है, अन्यों की तुलना में उत्कृष्ट रहता है, दूसरों से आगे निकल जाता है - *अधिगण्हातीति अधिभवित्वा गण्हाति अज्झोत्थरति अतिसेति,* अ. नि. अट्ठ. 3.16; - **सयित्वा** पू. का. कृ. - *सब्बरतनानि अतिक्कमित्वा अतिसयित्वा, अज्झोत्थरित्वा तिट्ठति,* मि. प. 305; पाठा. अभिभवित्वा.

अतिसेवन्तस्स अति + √सेव का वर्त. कृ., पु., च./ष. वि., ए. व., [अतिसेवन्तस्य], अत्यधिक सेवन करने वाले का या के लिये, अत्यन्त लिप्त व्यक्ति का या के लिये - *बालं अच्चुपसेवतोति बालं अप्पञ्ञं अतिसेवन्तस्स,* जा. अट्ठ. 3.464.

अतिस्सर त्रि., कर्म. स. [अतीश्वर], अत्यधिक सक्षम, बहुत अधिक सशक्त अथवा समर्थ, स्वेच्छाचारी, दबंग - *एते ... अतिस्सरा भविस्सन्ति,* जा. अट्ठ. 4.432.

अतिहट त्रि., अति + √हर का भू. क. कृ. [अतिहृत], अत्यधिक दूर तक ले जाया गया या पहुंचाया गया - *नासक्खतिहटो पोसो,* जा. अट्ठ. 3.427; पाठा. अतिगतो.

अतिहट्ठ त्रि., अति + √हस का भू. क. कृ. [अतिहृष्ट], अत्यधिक प्रसन्न, बहुत अधिक आनन्दित - *तं सुत्वा अतिहट्ठो सो ...,* म. वं. 15.17; सद्धम्मो. 323.

अतिहत्थयति अति + हत्थि का ना. धा., वर्त. प्र. पु., ए. व., [अतिहस्तीयति], हाथी द्वारा पार करता है, लांघता है, हाथी से आक्रमण करता है - *हत्थिना अतिक्कमति मग्गं अतिहत्थयति,* क. व्या. 3.2.8; मो. व्या. 5.12; सद्द. 3.823.

अतिहरति अति + √हर का वर्त., प्र. पु., ए. व., एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर पहुंचाते हैं, ले जाते हैं या प्राप्त कराते हैं - **न्ति** ब. व. - *नगरं अतिहरन्ति द्वारद्वाने,* पाचि. 360; - **रि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - ... *माणविकाय सन्तिकं अतिहरि,* जा. अट्ठ. 1.281; पाठा. अभिहरि; - **रित्वा** पू. का कृ. - *अभिहरित्वा दस्सेसि,* जा. अट्ठ. 5.342; पाठा. अभिहरित्वा; - **रापेय्य** प्रेर., विधि. - *सीघं सीघं अतिहरापेय्य,* अ. नि. 1(1).275; - **रापेय्यासि** म. पु., ए. व. - ... *धञ्ञं अतिहरापेय्यासि,* मि. प. 69; - **य्याथ** ब. व. - *अट्टालकं कारापेय्याथ, धञ्ञं अतिहरापेय्याथा'ति,* मि. प. 89; - **रापेसुं** प्रेर., अद्य., प्र. पु., ब. व. - *मानो अपुत्तकं सापतेय्यं ... अतिहरापेसुं,* पारा. 18; पाठा. अतिहारापेसुं; - **रापेत्वा** प्रेर., पू. का. कृ. - *अतिहरापेत्वा आयतिम्पि वस्सं एवमेव कातब्बं ...,* चूळव. 317; *सीघं सीघं अतिहरापेत्वा,* अ. नि. 1(1).275; पाठा. अतिहारापेत्वा.

अतिहित त्रि., अति + √धा का भू. क. कृ., [अतिहित], कहीं से लाकर रख दिया गया - *अतिहिता वीहि,* थेरगा. 381; *अतिहिता वीहीति वीहयो कोट्ठागारं अतिनेत्वा ठपिता,* थेरगा. अट्ठ. 2.75.

अतिहीन त्रि., कर्म. स. [अतिहीन], अत्यधिक तुच्छ, घटिया, धोखेबाज - *समं जीविकं कप्पेति नाच्चोगाळ्हं नातिहीनं,* अ. नि. 3(1).110.

अतिहीळयानो अति + √हील का वर्त. कृ., आत्मने. [√हेड्, बौ. सं. √हीड्], अत्यधिक अवज्ञा, निन्दा अथवा तिरस्कार कर रहा - *सकं निकेतं अतिहीळयानो,* जा. अट्ठ. 4.295; *अतिहीळयानो'ति अतिमञ्ञन्तो निन्दन्तो गरहन्तो,* जा. अट्ठ. 4.295.

अतिहेट्ठा निपा. क्रि. वि., अत्यधिक नीचे की ओर - *द्वारं ... अतिहेट्ठा दीघजातिका कोटेन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.204, विलो. अतिउपरि.

अतीत त्रि., / नपुं. अति + √इ का भू. क. कृ., [अतीत], 1. क. त्रि., प्रचलित **शा. अ.** वह, जो बीत चुका है या पीछे जा चुका है, इस समय विद्यमान नहीं है - *खणातीता हि* सोचन्ति, ध. प. 315; *अतीतयोब्बनो पोसो,* सु. नि. 110; *एवं रूपो अहोसिं अतीमद्धानन्ति,* स. नि. 2(1).80; 1.ख. नपुं. भूतकाल, व्यतीत हो चुका कालखण्ड या क्षण, भूतकाल से सम्बन्धित कोई बात - *अतीतं नानुसोचन्ति,* स. नि. 1(1).6; *अतीतं* नानुसोचामि, जा. अट्ठ. 6.31; 1.ग. भूतकाल के अर्थ में प्रायः अनागत अथवा पच्चुप्पन्न के साथ विप. के रूप में प्रयुक्त - *अतीतेसु अनागतेसु चापि,* सु. नि. 375; प्रायः तीनों का प्रयोग स. प. में अतीतानागतपच्चुप्पन्न के निर्धारित क्रम में प्राप्त - *अतीतानागतपच्चुप्पन्ने अत्थे चिन्तेतुं* दी. नि. 1.122; कभी-कभी अतीत पच्चुप्पन्न और अनागत के परिवर्तित क्रम में भी प्रयोग - *अतीतं पच्चुप्पन्नं अनागतञ्च अत्तनो पवत्तिं दस्सेन्तो ...,* पे. व. अट्ठ. 89; 2.क. **ला. अ.** त्रि., पूरी तरह से मुक्त हो चुका, अभिभूत कर चुका, पार कर चुका - *सङ्गा जातिजराभयातीतं,* थेरगा. 413; 2.ख. त्रि., वह, जिसका अतिक्रमण कर लिया गया है या जिसे पार कर लिया गया है - *अतीतेसूति पवत्तिं पत्वा अतिक्कन्तेसु पञ्चक्खन्धेसु,* सु. नि. अट्ठ. 2.88; 3. मुहावरे के रूप में उल्लंघक या अतिक्रामक के आशय में प्रयुक्त - *एकं धम्मं* अतीतस्स, ध. प. 176; - **तंस** पु., कर्म. स. [अतीतांश], बीता हुआ भाग अथवा खण्ड, वह विशिष्ट भाग, जो पहले ही व्यतीत हो चुका है - *अतीतंसेन सङ्गहिता,* ध. स. 1044;

– **कप्प** पु., कर्म. स., [अतीतकल्प], बीता हुआ कल्प, व्यतीत हो चुके अनेक कल्प – *अतीतकप्पे चरितं,* चरिया. 1.1.2; – **कालिक** त्रि., [अतीतकालिक], बीत चुके काल से सम्बद्ध – *पुराणं अतीतकालिकं कम्मं,* खु. पा. अट्ठ. 154; *अतीतकालिकानम्पि हि छन्दसि वत्तमानवचनं ... इच्छन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.15; *परोक्खाहिय्यत्तनअज्जतनीविभत्तियो अतीतकालिका,* सद्द. 1.49; – **कालिकता** स्त्री., अतीतकालिक का भाव., बीते हुए काल में विद्यमान होने की स्थिति – *येभूय्येन अतीतप्पवत्तिं सन्धाय कालातिपत्तिविभत्तिया अतीतकालिकता वुत्ता ति,* सद्द. 1.52; – **कोट्ठास** पु., [अतीतकोष्ठांश], काल का बीता हुआ भाग अथवा खण्ड – *अतीतकोट्ठासेन गणनं गता,* ध. स. अट्ठ. 388; – **गत-सत्थु** त्रि., ब. स., वह, जिसका शास्ता या मार्गदर्शक गुरु बहुत पहले ही दिवङ्गत हो चुका है – *अब्भतीतसहायस्स, अतीतगतसत्थुनो,* थेरगा. 1038; – **खन्धा'ति-कथा** स्त्री., कथा. के सातवें अध्याय का शीर्षक, कथा. 127; – **जाति** स्त्री., कर्म. स., [अतीतजाति], पिछला जन्म – *त्वं पुब्बे अतीतजातियं,* पे. व. अट्ठ. 9; – **ञाति** पु., कर्म. स. [अतीतज्ञातृ], दिवङ्गत हो चुके या मृत हो चुके सम्बन्धी अथवा कुटुम्बीजन – *पुब्बपेतकथाति अतीतञातिकथा,* दी. नि. अट्ठ. 1.81; – **त्त** नपुं., भाव. [अतीतत्व], पार कर जाने अथवा पूरी तरह मुक्त हो जाने की स्थिति – *किलेससीमानं अतीतत्ता सीमातिगो,* सु. नि. अट्ठ. 2.221; *अन्तं अतीतत्ता,* अ. नि. अट्ठ. 3.342; – **त्तिक** पु., नपुं., ध. स. की त्रिकमातृकाओं में से एक, जिसमें अतीत, अनागत एवं प्रत्युत्पन्न के त्रिक निर्दिष्ट हैं, ध. स. (पृ.) 4; – **त्थ** त्रि., ब. स. [अतीतार्थ], वह, जो लाभ को खो चुका है अथवा प्रयोजन की हानि को प्राप्त हो चुका है, प्रयोजन को हानि पहुंचा चुका – *वाणिजोव, अतीतत्थो,* अ. नि. 3(1).62; *अतीतत्थोति हापित्थो,* अ. नि. अट्ठ. 3.223; – **द्ध** पु., कर्म. स., [अतीताध्वन्], बीता हुआ अथवा पार किया हुआ मार्ग, अर्थात् पूर्वजन्म – *अतीतद्धादिभेदं पुब्बन्तमनिस्सितो,* सु. नि. अट्ठ. 2.240; – **टि.** भगवान बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद के नय द्वारा अस्तित्व को गोलाकार चक्र के रूप में प्रकाशित करते हुए प्राणी के जन्म-मरण-क्रम को एक सतत प्रवर्तनशील यात्रा के रूप में समझाया. इस यात्रा में प्राणी के पिछले जन्म को वर्तमान जन्म की अपेक्षा से ही अतीतद्ध अथवा पार किया हुआ मार्ग कहा गया; – **पुच्छा** स्त्री., तत्पु. स., [अतीतपृच्छा], भूतकाल के विषय में पूछताछ, अथवा प्रश्न – *अपरापि तिस्सो पुच्छा : अतीतपुच्छा ...,* महानि. 251; *अतीतपुच्छाति अतीते धम्मे आरब्भ पुच्छा,* महानि. अट्ठ. 302; – **भव** पु., कर्म. स. [अतीतभव], बीता हुआ जन्म, पूर्व-जन्म – *मया अतीतभवे,* जा. अट्ठ. 5.380; – **योब्बन** त्रि., ब. स. [अतीतयौवन], वह, जिसकी युवावस्था समाप्त है, वृद्ध – *अतीतयोब्बनोति योब्बनमतिच्च आसीतिको वा नावुतिको वा हुत्वा,* सु. नि. अट्ठ. 1.137; *अतीतयोब्बनो पोसो, आनेति तिम्बरुत्थनिं,* सु. नि. 110; – **वचन** नपुं., कर्म. स. [अतीतवचन], भूतकाल का कथन, जो व्यतीत हो चुका है, उसके विषय में कथन – *संयमिस्सन्ति अनागतवचनञ्च अतीतवचनञ्च,* सद्द. 2.590; – **वत्थु** नपुं., कर्म. स. [अतीतवस्तु], भूतकाल अथवा पूर्वजन्मों से सम्बद्ध कथानक – *अतीतवत्थु दसकनिपाते आवि भविस्सति,* जा. अट्ठ. 3.80; – **टि.** अपने वर्तमान रूप में जातक-कथानक में पांच अङ्ग सन्निविष्ट हैं :– **1.** पच्चुप्पन्नवत्थु **2.** अतीतवत्थु **3.** गाथा **4.** वेय्याकरण **5.** समोधान, इनमें अतीत-वत्थु नामक दूसरे अङ्ग में गौतम बुद्ध के पूर्वजन्मों में से किसी एक जन्म का कथानक रहता है; – **वेल** त्रि. ब. स., वह, जिसका समय समाप्त है, बेमौसमी – *अतिवेलं पन वाचं कालवेलञ्च सीलवेलञ्च अतिक्कन्तं ...,* सु. नि. अट्ठ. 2.266.

अतीताधिवचन नपुं., तत्पु. स. [अतीताधिवचन], अतीत अथवा भूतकाल के अर्थ वाला शब्द, अतीत अर्थ का वाचक शब्द; – **कुसल** त्रि., अतीतार्थक शब्द के प्रयोग में कुशल, भूतार्थक शब्द के व्यावहारिक प्रयोग में कुशल – *अतीताधिवचनकुसलोति अतीतपञ्ञत्तिकुसलो,* नेत्ति. अट्ठ. 227.

अतीतानागत त्रि., अतीत + अनागत [अतीतानागत], भूत एवं भविष्य काल से सम्बन्धित – *रूपं, भिक्खवे, अनिच्चं अतीतानागतं,* स. नि. 2(1).18; – **ते** सप्त. वि., ए. व., क्रि. वि. – *मग्गञाणधम्मेन वा सक्का अतीतानागते नेतुं,* स. नि. अट्ठ. 2.59; – **पच्चुप्पन्न** त्रि., द्व. स., भूत, भविष्य एवं वर्तमान से संबन्धित – *अतीतानागतपच्चुप्पन्ने अत्थे चिन्तेतुं,* दी. नि. 1.122.

अतीतारम्मण त्रि., ब. स., [अतीतालम्बन], अतीत अथवा भूत को आलम्बन बनाने वाला – *इमे धम्मा अतीतारम्मणा,* ध. स. 1047; 1432; *तस्मा अतीतारम्मणं होति,* विसुद्धि. 2. 57; *अतीतारम्मणाय चुतिया अनन्तरा अतीतारम्मणा पटिसन्धि,* विभ. अट्ठ. 149; – **कथा** स्त्री., कथा. के नवम

वर्ग की छठी कथा का नाम; – **त्तिक** पु., अतीतारम्मण से प्रारम्भ होने वाली ध. स. की एक त्रिकमातिका, ध. स. (पु.) 4.

अतीरक त्रि., ब. स., [अतीरक], सीमारहित, असीम, अपरिमित – *अतीरकं ञाणदस्सनं,* दी. नि. 3.100; *अतीरकन्ति अतीरं अपरिच्छेदं महन्तं,* दी. नि. अट्ठ. 3.87.

अतीरणेय्य त्रि., तीर + √नी के सं. कृ. का निषे. [अतीरनेय], तीर न ले जाने योग्य, पूरा न कर सकने योग्य, **ला. अ.** पार न किये जाने योग्य – *अतीरणेय्य यमिदन्ति इदं किलेसजातं नाम न एत्तकेन तीरेतब्बं,* जा. अट्ठ. 6.70.

अतीरदक्खी त्रि., वह, जिसने तट अथवा किनारे को नहीं देखा है – *अतीरदक्खिनिया नावाय,* दी. नि. 1.203; तुल. अ. नि. 2(2).80, अतीर-दस्सी शब्द का समाना.,

अतीरदस्सी त्रि., [अतीरदर्शी], वह व्यक्ति, जिसने तीर अथवा दूसरे तट को नहीं देखा है, निर्वाण का साक्षात्कार न कर सकने वाला व्यक्ति – *अतीरदस्सी अपारदस्सी,* स. नि. 2(1).148; *अतीरदस्सीति तीरं वुच्चति वट्टं, ... पारं वुच्चति निब्बानं, तं न पस्सति,* स. नि. अट्ठ. 2.293; *तत्थ अतीरदस्सीति ... तीरं अपस्सन्तो,* जा. अट्ठ. 6.267.

अतीरित त्रि., √तीर के भू. क. कृ. का निषे., अपरीक्षित, अनुत्तीर्ण, नहीं परखा हुआ, नहीं पार किया हुआ – *अदिट्ठं अतुलितं अतीरितं,* महानि. 250.

अतीतसत्थुक त्रि., ब. स., अतीत + सत्थु + क, बिना शास्ता वाला, भगवान् बुद्ध के बिना – *अतीतसत्थुकं पावचनं, नत्थि नो सत्थाति,* दी. नि. 2.115; मि. प. 110; *अतीतसत्थुकं पावचनन्ति मञ्ञमाना,* पारा. अट्ठ. 1.5; दी. नि. अट्ठ. 1.4; खु. पा. अट्ठ. 73.

अतीतसासन त्रि., ब. स., [अतीतशासन], शिक्षाओं अथवा निर्देशों का उल्लंघन करने वाला – *गिज्झोवातीतसासनो,* जा. अट्ठ. 3.224.

अतीव निपा., [अतीव], अत्यधिक, बहुत अधिक, – *अतीव हदयं निब्बाति,* जा. अट्ठ. 2.197; *अतीव भासन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.121; *अतीव सुद्धिपञ्ञो,* सु. नि. अट्ठ. 2.88; तुल. अतिविय.

अतीसरंदिट्ठि / अतिसारदिट्ठि स्त्री., कर्म. स. [अतिसार-दृष्टि], अन्य धर्माचार्यों के मत, मिथ्या दृष्टियां, ब्रह्मजाल-सुत्त में निर्दिष्ट 62 दृष्टियों में से कोई एक – *अतीसरंदिट्ठियाव सो समत्तो,* सु. नि. 895; *अतिसारदिट्ठियो वुच्चन्ति द्वासट्ठि दिट्ठिगतानि? सब्बा ता दिट्ठियो कारणातिक्कन्ता लक्खणातिक्कन्ता ठानातिक्कन्ता,* महानि. 218; – **टि.** संभवतः अतीसरं अति + √सर का वर्त. कृ. का रूप है। अतीसार के समान इसमें भी 'इ' के स्थान पर 'ई' का प्रयोग अनुमानित है।

अतुच्चं / अतिउच्चं निपा., क्रि. वि., [अत्युच्चैः], बहुत अधिक ऊपर – *अतुच्चं तात पतसीति ... अतिउच्चं गच्छसि,* जा. अट्ठ. 3.223.

अतुच्छ त्रि., तुच्छ का निषे. [अतुच्छ], वह, जो रिक्त, खोखला अथवा घटिया नहीं है, उत्तम, महत्त्वपूर्ण – *अतुच्छो झानमञ्चोम्हि,* अप. 1.346; द्रष्ट. उज्झानमञ्च के अन्त.

अतुज अत्रज का अपपाठ, अत्रज के अन्त. द्रष्ट..

अतुट्ठ त्रि., तुट्ठ का निषे., तत्पु. स. [अतुष्ट], असन्तुष्ट, अप्रसन्न – *अतुट्ठा सिवयो आसुं,* जा. अट्ठ. 7.277; दी. नि. अट्ठ. 1.49; – **मानस** त्रि., ब. स., असन्तुष्ट मन वाला – *अतुट्ठमानसो हुत्वा,* पे. व. अट्ठ. 112; – **वाचा** स्त्री., कर्म. स., असन्तोष से भरी वाणी – *अनत्तमनवाचन्ति अतुट्ठवाचं,* अ. नि. अट्ठ. 2.11; – **ट्ठाकार** पु., असन्तोष अथवा अप्रसन्नता की मानसिक अवस्था – *अप्पच्चयोति अतुट्ठाकारो,* अ. नि. अट्ठ. 2.50.

अतुट्ठि स्त्री., तुट्ठि का निषे., तत्पु. स. [अतुष्टि], असन्तोष, अप्रसन्नता – *अनभिरद्धीति अतुट्ठि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).23.

अतुरित त्रि., तुरित का निषे. [अत्वरित], जल्दबाजी न करने वाला, मन्द, शिथिल – *अतरमानोति अतुरितो,* दी. नि. अट्ठ. 1.204; अ. नि. अट्ठ. 3.304; – **गमन** नपुं., कर्म. स. [अत्वरितगमन], मन्द गति से गमन, धीमी चाल, स्थिर गति – *अतुरितगमनेन चारिकं निक्खमि,* अ. नि. अट्ठ. 1.230; – **चारिका** स्त्री., कर्म. स., शान्त चाल-ढाल, स्थिर गति, (विशेष रूप से बुद्ध के चलने के स्वरूप के लिये प्रयुक्त) – *अतुरितचारिकं पक्कामि,* जा. अट्ठ. 1.95; दी. नि. अट्ठ. 1.194, 1.197; *यं पन गामनिगमपटिपाटिया देवसिकं योजनद्वियोजनवसेन पिण्डपातचरियादीहि लोकं अनुग्गण्हन्तस्स गमनं, अयं अतुरितचारिका नाम,* दी. नि. अट्ठ. 1.195; – **टि.** भगवान् बुद्ध के गमन के दो प्रकार बतलाए गए हैं, 1. तुरित-चारिका तथा 2. अतुरित-चारिका। जब भगवान् बुद्ध किसी सुपात्र को शीघ्र धर्मोपदेश देने हेतु तेजी से उसके पास जाते हैं तब उनका गमन तुरितचारिका कहलाता है परन्तु प्रतिदिन के भिक्षाटन के क्रम में लोक का अनुग्रह करने हेतु गांवों, निगमों आदि में एक अथवा दो योजन तक का उनका गमन अतुरितचारिका कहलाता है।

यह दो प्रकार की है 1. अनिबद्धचारिका तथा 2. निबद्धचारिका.

अतुल¹ त्रि., निषे., ब. स. [अतुल], अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, अतुलनीय, अमोघ - *कस्मा समुद्दो अतुलो अपेय्यो*, जा. अट्ठ. 7.58; *दानं सहत्था अतुलं ददित्वा सद्धे*, पे. व. 254; *अतुलन्ति अप्पमाणं उळारं पणीतं*, पे. व. अट्ठ. 96; *पसन्नचित्ता अतुलाय पीतिया*, वि. व. 299; *अतुलायाति अनुपमाय, अप्पमाणाय*, वि. व. अट्ठ. 104; - **लानुभाव** त्रि., ब. स., अतुलनीय प्रभाव अथवा महिमा वाला - *हन्द च ठानं अतुलानुभावं, मया सह दक्खसि एहि कत्ते*, जा. अट्ठ. 7.210; - **तेज** त्रि., ब. स., [अतुलतेज], अतुलनीय अथवा अनुपम तेज वाला - *भिक्खू ... अतुलतेजा ...*, मि. प. 311; - **बल** त्रि., ब. स. [अतुलबल], अतुलनीय बल वाला - *अतुलबला ...* ; मि. प. 311; - **यस** त्रि., ब. स., [अतुलयश], अनुपम कीर्तिवाला - *अतुलयसा*, मि. प. 311.

अतुल² व्य. सं., 1. एक पुराने चिकित्सक का नाम - *अतुलो पुब्बकच्चायनो*, मि. प. 253; 2. श्रावस्ती के एक उपासक का नाम - *अतुलं नाम उपासकं आरब्भ कथेसि*, ध. प. अट्ठ. 2.189; 3. दो भिन्न-भिन्न बोधिसत्त्व नागराजाओं का नाम - *अतुलो नाम नागराजा अहोसि*, जा. अट्ठ. 1.44; 4. आम्र के एक वृक्ष का नाम - *अतुलं नाम अम्बं मापेत्वा*, जा. अट्ठ. 4.289-90; 5. एक अथवा अनेक थेरों का नाम - *सो पन ... अतुलवंसथेरस्स वंसिको*, सा. वं. 100; 6. एक विहार का नाम - *चतुभूमिकअतुलविहारं कारापेत्वा ...*, सा. वं. 104; - **भूमिवास** एक विहार का नाम - ... *कारापितं अतुलभूमिवासं नाम विहारं ...*, सा. वं. 122.

अतुलित त्रि., तुलित का निषे. [अतुलित], वह, जिसे तौला न गया हो, परीक्षित न किया गया हो, जांचा न गया हो - *अतुलितन्ति तुलाय तुलितं विय न तुलितं*, महानि. अट्ठ. 301;

अतुलिय त्रि., तुल्य का निषे. [अतुल्य], नहीं तौले जाने अथवा मापे जाने योग्य, अमूल्य, अनुपम, बेजोड़ - *अकम्पियं अतुलियं, ... धम्मं*, थेरीगा. 201; *गुणतो एत्तकोति तुलेतुं असक्कुणेय्यताय अत्तना सदिसस्स अभावतो च अतुलियं*, थेरीगा. अट्ठ. 191; *भिक्खुभावो ... अतुलियो अप्पमाणो अनग्घियो*, मि. प. 185; - **गुण** त्रि., ब. स., अतुलनीय गुणों वाला - *यो खो ते, महाराज, भिक्खू ... अतुलगुणा अतुलयसा*, मि. प. 311, पाठा. अतुल्य अथवा अतुल्ल.

अतुल्य¹ त्रि., [अतुल्य], तुलना न करने योग्य, अनुपम, सबसे ऊपर, परमश्रेष्ठ - *मग्गक्खायी कथं अतुल्यो होति*, सु. नि. 85; *सो बोधिसत्तो रतनवरो अतुल्यो*, सु. नि. 688; बु. वं. में 'अतुलियो' रूप में भी प्राप्त - *अप्पमाणो अतुलियो* ..., बु. वं. 14.32; तुल. अतुलिय, अतुल्ल; - **ल्याकार** त्रि., ब. स., [अतुल्याकार], आकार अथवा स्वरूप में अनुपम - *अनुलोमञाणानं अतुल्याकारतो*, उदा. अट्ठ. 29; - **दस्सन** त्रि., [अतुल्यदर्शन], अनुपम सुन्दरता वाला - *सद्धूपमं सेतमतुल्यदस्सनं*, जा. अट्ठ. 5.392.

अतुल्य² व्य. सं., पु., सात चक्रवर्तियों का नाम - *अतुल्या सत्त आसु ते*, अप. 1.275; पाठा. अतुला.

अतुल्ल त्रि., [अतुल्य], उपरिवत्, - *अमितयसो अतुल्यो*, जा. अट्ठ. 4.91, तुल. अतुल्य, अतुलिय.

अतेकिच्छ त्रि., तेकिच्छ का निषे. [अचिकित्स्य], 1. चिकित्सा न करने योग्य, उपचार द्वारा स्वस्थ न होने योग्य, असाध्य रोगी - *त्वं मूलोसधादीहि अतेकिच्छो*, जा. अट्ठ. 2.180; *अत्तनो वा परेसं वा पुरिसकारेन अतेकिच्छं जानेय्य*, जा. अट्ठ. 4.203; 2. नहीं बच सकने योग्य, अनिवर्त्य, पूर्णरूप से पापमग्न - *देवदत्तो आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो*, चूळव. 342; *पञ्च आपायिका नेरयिका परिकुप्पा अतेकिच्छा*, अ. नि. 2(1).138; *अतेकिच्छाति अकत्तब्बपरिकम्मा*, अ. नि. अट्ठ. 3.47.

अतेजवन्तु त्रि., तेजवा का निषे. [अतेजवान् अथवा अतेजस्विन्], वह जो तेजस्वी नहीं है, दुर्बल, मन्द - *तेजस्सिनं हन्ति अतेजवन्तो*, जा. अट्ठ. 5.165.

अतेल त्रि. तेल का निषे., ब. स. [अतैल], तेल से रहित, बिना तेल का - *पवना आभतं पण्णं, अतेलञ्च अलोणिकं*, चरिया. 372; *अलोणं अतेलं अफाणितं कुम्मासं*, जा. अट्ठ. 3.360; पाठा. अस्नेहं; - **त्त** नपुं., भाव. [अतैलत्त्व], तेलरहित होने की अवस्था - न पन ... सिनेहस्स अतेलत्तं वदाम, सद्द. 2.563.

अतेव अ., निपा. क्रि. वि., [अतीव], अत्यधिक, बहुत अधिक, प्रचुरता से - *अतेव मे ... अच्छरियन्ति अतिविय मे अच्छरियं*, जा. अट्ठ. 7.295; प्रायः तृ. वि. के साथ अधिक प्रयोग - *अतेवञ्ञेहि मासेहि*, जा. अट्ठ. 5.56; *अतेवञ्ञे*, मो. व्या. 1.29.

अतो इम का प. वि., प्रतिरू. निपा. [अतः], **क.** इसलिए, यहां से, इस स्थान से, इस बात से, इस कारण से, इससे - अतो सरा निवत्तन्ति, स. नि. 1(1).18; *अतो मता देववरेन*

पेसिता, जा॰ अट्ठ॰ 5.394; **ख.** प्रायः तुल॰ विशे॰ से पूर्व में *इससे अथवा उससे अधिक* अर्थ में प्रयुक्त – *अतो दुल्लभतराहं,* म॰ नि॰ 3.208.

अतोट्ठब्भ त्रि॰, तोट्ठब्भ का निषे॰ [अतोष्टव्य], न सन्तुष्टि देने योग्य, सन्तुष्ट न कराये जाने योग्य, प्रसन्न न कराने योग्य – *धनियं अतोट्ठब्भेन तुस्समानं अञ्ञापदेसेनेव परिभासति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.27, पाठा॰ अतुट्ठब्बेन.

अत्त[1] पु॰, [अर्थ], अत्थ के स्थान पर अप॰, आगे द्रष्ट॰.

अत्त[2] त्रि॰, [आत्त, आ + √दा + क्त अथवा आप्त, √आप् + क्त], प्राप्त किया हुआ, गृहीत – *अत्ता निरत्ता न हि तस्स अत्थि,* सु॰ नि॰ 793; *अत्तं पहाय अनुपादियानो,* सु॰ नि॰ 806; *अत्ता वापि निरत्ता वा, न तस्मिं उपलब्भति,* सु॰ नि॰ 864; निरत्त का विलो॰; – **टि.** सु॰ नि॰ अट्ठ॰ तथा **महानि.** ने अत्त (आप्त, गृहीत, प्राप्त) एवं अत्त (आत्मा) के मध्य विद्यमान श्लेष पर आधारित इस शब्द की द्विविध व्याख्या की है। सम्भव है कुछ स्थलों में प्राप्त एवं गृहीत अर्थ वाले 'अत्त' तथा आत्मार्थक 'अत्त' के मध्य परस्पर-व्यामिश्रण की स्थिति उत्पन्न हो गई हो. अत्तञ्जह, अत्तदण्ड एवं अत्तदान जैसे समस्त पदों में इस प्रकार के संभ्रम की स्थिति सुस्पष्ट है.

अत्त[3] त्रि॰, [आप्त, आप् + क्त], परिपूर्ण, भरपूर, भरा हुआ – *अत्ताहिपि परिपुण्णाहि परिभासाहि ...,* दी॰ नि॰ 3.154; *अत्तभावं उपनेत्वा वुत्ताहि परिपुण्णब्यञ्जनाहि ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.136.

अत्त[4] नपुं॰, [अत्त, अद् + क्त अथवा अत्र], भोजन, अन्न, वह, जो खाया जाए – *इदादीहि तत्रण्,* क॰ व्या॰ 658.

अत्त[5] नपुं॰, भाव॰, [अत्त्व, अ + त्वल्], अकार-वर्ण या स्वर की अवस्था, अकारत्व – *पञ्चादीनमत्तं,* क॰ व्या॰ 90.

अत्त[6] त्रि॰, [आत्म्य], अपने से स्वयं से या आत्मा से सम्बन्धित, अपना, आत्मीय – *अत्तरूपायाति अत्तनो अनुरूपाय ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.41.

अत्त[7] पु॰ [आत्मन्], आत्मा, **विविध अर्थ क.** स्वयं, जीव, स्वभाव, शरीर, पुरुष, व्यु॰ रू॰; – **अत्ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [आत्मा] – *जीवो तु पुरिसो अत्ता,* अभि॰ प॰ 92; *चित्ते काये सभावे च सो अत्ता परमत्तनि,* अभि॰ प॰ 861; **ख.** स्वयं, आप, निज, इस अर्थ में संकेतवाचक सर्व॰ के रूप में तीनों पुरुषों का संकेतक तथा केवल पु॰ के ए॰ व॰ में ही प्रयुक्त; – **अत्तानं / अत्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ [आत्मानं] – *अत्तन्ति अत्तानं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.243; *यं वा तुम्हे इत्थिं गवेसेय्याथ, यं वा अत्तानं ...,* महाव॰ 28; – **अत्तना / अत्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ [आत्मना] – *अत्तनाहि कतं पापं, अत्तना संकिलिस्सति,* ध॰ प॰ 165, 379; – **अत्तनो** च॰ / ष॰ वि॰, ए॰ व॰ [आत्मनः] – *आकङ्खन्त विरागमत्तनो,* ध॰ प॰ 343; *मच्छो मरणमत्तनो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.242; – **अत्तनि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ [आत्मनि] – *अत्तनि वा, ... सति अत्तनियं मे ति अस्सा'ति,* म॰ नि॰ 1. 191; **ग.** बुद्ध के समय में उपनिषदों आदि द्वारा परिकल्पित नित्य, शुद्ध, बुद्ध एवं अविनाशी आत्मतत्त्व – *रूपी अत्ता होति अरोगो परं मरणा असञ्ञी'ति ...,* दी॰ नि॰ 1.27; *अयं अत्ता रूपी ... कायस्स भेदा उच्छिज्जति,* दी॰ नि॰ 1.29; *मनोमयं ... अत्तानं पच्चेमि सब्बङ्गपच्चङ्गिं अहीनिन्द्रिय'न्ति,* दी॰ नि॰ 1.166; **घ.** अन्तरात्मा की आवाज, अपनी अन्तरात्मा अथवा मन की आवाज – *अत्तापि अत्तानं उपवदति,* अ॰ नि॰ 1(1).74; *तं, ... अत्ता सीलतो उपवदति,* स॰ नि॰ 2(1).109; *अत्ता ते पुरिस जानाति, सच्चं वा यदि वा मुसा,* अ॰ नि॰ 1(1).174; **ङ.** अपना प्रतिबिम्ब – ... *जायेय्य अत्ता?,* मि॰ प॰ 54; *अत्ता च मे सो सरणं गती च,* जा॰ अट्ठ॰ 7.176; – **कत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आत्मकृत], 1. स्वयं अपने द्वारा किया हुआ – *मञ्ञे अत्तकतं वेरं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.27; *अत्तकतं वेरन्ति अत्तना कतं पापं,* तदे॰; 2. नपुं॰, अपने द्वारा किया हुआ – *अत्तकतेन पन ते, ... पतन्ति,* मि॰ प॰ 164, परकत का विप॰; – **कम्मफलूपग** त्रि॰, [आत्मकर्म-फलोपग], अपने कर्मों के फलों को भोगने वाला – *अत्तकम्मफलूपगोति अत्तनो कम्मफलेन उपगतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.267; – **म्मापराध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आत्मकर्मापराध], अपने कर्मों का अपराध अथवा दोष – *अत्तकम्मापराधोति अत्तनो कम्मदोसो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.401.

अत्तकाम[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अर्थ-काम], अपने हित अथवा कल्याण की कामना करने वाला, परमार्थ-धर्म या निर्वाण की कामना करने वाला – *यत्थ अत्तकामा कुलपुत्ता सिक्खन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).263; ... *अत्तकामाति अत्तनो हितकामा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.208; *अत्तकामा हि कुलपुत्ता सासने पब्बजित्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).268.

अत्तकाम[2] पु॰, तत्पु॰ स॰ [आत्म-काम], अपने भीतर की अथवा चित्त की कामवृत्ति अथवा काम-भावना, अपना अभिप्राय, अपना प्रयोजन – *अत्तकामन्ति अत्तनो कामं अत्तनो हेतुं अत्तनो अधिप्पायं,* पारा॰ 197; – **ता** भाव॰, स्त्री॰ [आत्मकामता], अपने चित्त में कामवृत्ति की अवस्था – *विग्गहं उत्तरिञ्चेव, दुट्ठुल्लं अत्तकामता,* उत्त॰ वि॰ 299; – **पारिचरिया** स्त्री॰, तत्पु॰ [आत्मकाम-परिचर्या], अपने लिये कामभोगों का सेवन, कामभोगों में लिप्त रहते हुए जीवन-

यापन की दशा, मैथुन-धर्म का सेवन - *अत्तकामपारिचरियाय वण्णं भासती'ति,* पारा॰ 196; *अत्तकामपारिचरियायाति, मेथुनधम्मसङ्खातेन कामेन पारिचरिया कामपारिचरिया, अत्तनो अत्थाय कामपारिचरिया ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.125; - **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰, द्रष्ट॰ अत्तकाम 1 - *तयो कुलपुत्ता अत्तकामरूपा विहरन्ति,* म॰ नि॰ 1.269.

अत्तकार पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ में, नपुं॰ में भी [आत्मकार], 1. अपना स्वयं का पुरुषार्थ, स्वयं का प्रयास - *नत्थि अत्तकारो, नत्थि परकारो'ति,* अ॰ नि॰ 2(2).53; 2. अपना कठोर अथवा दृढ़ प्रयास - *अथत्तकारानि करोन्ति भत्तुसु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.397; - **टि॰** अन्य धर्माचार्यों के मतों के उल्लेखों में प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ में नियः अत्तकारो के स्थान पर मागधी प्रभावचिह्न के रूप में 'अत्तकारे' रूप में भी प्राप्त - *नत्थि अत्तकारे, नत्थि परकारे,* दी॰ नि॰ 1.47.

अत्तकिच्च नपुं॰ [आत्म-कृत्य], अपना निजी काम - *परकिच्चत्तकिच्चानि,* अप॰ 1.355.

अत्तकिलमथ पु॰, तत्पु॰ स॰ [आत्म-क्लमथ], आत्म-उत्पीड़न, स्वयं को कष्ट देना, पीड़ा देना या थका देना, - *भवोति कम्मसुखं, अभवोति अत्तकिलमथो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2. 161, कामसुख का विलो॰; - **थानुयोग** पु॰, [आत्मक्लमथानुयोग], आत्म-उत्पीड़न का अभ्यास, स्वयं को कष्ट देने वाली चर्या में लगाव - *न च अत्तकिलमथानुयोगं अनुयुत्तो,* दी॰ नि॰ 3.84; *अत्तकिलमथानुयोगं अनुयुञ्जेय्य,* म॰ नि॰ 3.280; कामसुखल्लिकानुयोगो का विप॰.

अत्तगतिक त्रि॰, [आत्मगतिक], स्वयं अपने पर ही निर्भर रहने वाला, अपने को ही अपना आश्रय अथवा अपनी शरण बनाने वाला - *अत्तसरणाति अत्तगतिकाव होथ, मा अञ्ञगतिका,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.235.

अत्तगरही त्रि॰, [आत्मगर्ही], **क.** केवल अपनी निन्दा करने वाला - *अत्तगरहिनोयेव होन्ति अनञ्ञगरहिनो,* म॰ नि॰ 2. 207; *अत्तगरहिनो मयं, भन्ते आनन्द, अनञ्ञगरहिनो,* पारा॰ 24; **ख.** व्यक्ति को निन्दनीय बनाने वाला तत्त्व या ऐसे काम जो स्वयं को निन्दायोग्य बना दें - *यदत्तगरही तदकुब्बमानो,* सु॰ नि॰ 784.

अत्तगरु त्रि॰, ब॰ स॰ [आत्मगुरु], स्वयं अपने प्रति गौरवभाव रखने वाला - *अत्तगरुना अत्तनिगारवेन पवत्तितं* विसुद्धि॰ 1.14.

अत्तगारव नपुं॰, [आत्मगौरव], आत्मसम्मान का भाव - *उभोपि पापानं अकरणरसा ... अत्तगारवपर - गारवपदट्ठानाति,* अभि॰ अव॰ 240.

अत्तगुत्त त्रि॰, [आत्मगुप्त], स्वयं अपने द्वारा रक्षित, अपनी रक्षा अपने आप करने वाला, उपस्थित अथवा जागरूक स्मृति के द्वारा स्वयं को रक्षित किया हुआ - *सो अत्तगुत्तो सतिमा,* ध॰ प॰ 379; *अत्तनाव गुत्तताय अत्तगुत्तो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.349; *अत्तगुत्तोति अत्तनाव गुत्तो रक्खितो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.3.

अत्तगुत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आत्मगुप्ति], अपनी स्वयं की सुरक्षा, आत्मरक्षा, अपना परित्राण अथवा संरक्षण - *अत्तगुत्तिया अत्तरक्खाय, अत्तपरित्तायाति,* अ॰ नि॰ 1(2).84; *अत्तगुत्तियाति अत्तनो ... रक्खणत्थाय,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.308.

अत्तघञ्ञ / अत्तघञ्ञा नपुं॰, स्त्री॰ [आत्महन्], अपनी हत्या, आत्मविनाश - *अत्तघञ्ञाय फल्लति,* ध॰ प॰ 164; पाठा॰ अत्तघाताय.

अत्तघात पु॰, [आत्मघात], अपना हनन, अपना विनाश, अपनी हानि - *अत्तनो घातत्थमेव फलति, एवं सोपि अत्तघाताय फल्लतीति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.87.

अत्तचतुत्थ त्रि॰, ब॰ स॰, [आत्मचतुर्थ], अन्य तीन व्यक्तियों के साथ स्वयं चौथे व्यक्ति के रूप में, वह समूह, जिसमें तीन दूसरे हैं चतुर्थ के रूप में स्वयं है - *अधिवासेतु मे, भन्ते, भगवा स्वातनाय अत्तचतुत्थो भत्तन्ति,* म॰ नि॰ 2.63; अ॰ नि॰ 2(1).32.

अत्तंजह त्रि॰, [आत्मजह], आत्मदृष्टि के कारण मिथ्या-रूप से गृहीत धारणाओं को त्यागने वाला, आत्मग्राह से मुक्त, आत्मदृष्टि से मुक्त - *अत्तञ्जहो नयिध पकुब्बमानो,* सु॰ नि॰ 796; *अत्तदिट्ठिया यस्स कस्सचि वा गहणस्स पहीनत्ता अत्तञ्जहो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.220; अट्ठ॰ में 'अत्तदिट्ठि-जहो' तथा 'अत्तगाह-जहो' अर्थों में भी प्राप्त - *अत्तञ्जहोति एतं ममाति ...,* महानि॰ अट्ठ॰ 172.

अत्तज त्रि॰, [आत्मज], **क.** अपने प्रयास से उत्पन्न - *अत्तजं अत्तसंभवं,* ध॰ प॰ 161; *एवमेव अत्तना कतं अत्तनि जातं अत्तसम्भवं ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.84; *अत्तजेन वायामेन ...,* मि॰ प॰ 110; **ख.** पु॰, अपना पुत्र, अपनी निजी सन्तान - *तत्थ पुत्ता अत्रजादयो चत्तारो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.242; *महेसिं अत्तजं कत्वा ...,* म॰ वं॰ 54.69.

अत्तजन पु॰, [आत्मजन], अपने लोग, अपने आदमी, प्रिय लोग, समीपी लोग - *कथञ्हि विञ्ञू ... न वायमे अत्तजनस्स गुत्तियाति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.263.

अत्तजिगुच्छना स्त्री॰, [आत्मजिगुप्सना], स्वयं अपने प्रति अरुचि अथवा घृणा का भाव - *हीळनाति जातिआदीहि अत्तजिगुच्छना,* विभ॰ अट्ठ॰ 458.

अत्तजेट्ठक त्रि., ब. स. [आत्मज्येष्ठक], स्वयं को अथवा अपनी आन्तरिक चेतना को ही श्रेष्ठ अथवा महत्त्वपूर्ण मानने वाला - *अत्तानं जेट्ठकं कत्वा निब्बत्तितं गुणजातं अत्ताधिपतेय्यं,* अ. नि. अट्ठ. 2.128.

अत्तज्झासय पु., तत्पु. स., [आत्माध्याशय], 1. अपना स्वयं का दृढ़ निश्चय, अपना संकल्प, अपनी इच्छा, अपना मानसिक अभिप्राय - *अपुच्छितेन अत्तज्झासयवसेन कथिता अपुच्छितगाथा,* खु. पा. अट्ठ. 100; *द्वयतानुपस्सनादीनञ्हि अत्तज्झासयतो उप्पत्ति,* ..., सु. नि. अट्ठ. 1.39; 2. त्रि., अपने दृढ़ निश्चय अथवा अपनी इच्छा के कारण उद्भूत - *एत्थ च अत्तज्झासयो परज्झासयो पुच्छावसिको, अट्ठुप्पत्तिकोति चत्तारो सुत्तनिक्खेपा वेदितब्बा,* उदा. अट्ठ. 24, परज्झासय का विलो..

अत्तञ्ञू त्रि., [आत्मज्ञ], स्वयं अपने आप को जानने वाला/वाली - *एत्तकोम्हि सीलेन, समाधिना, पञ्ञाया'ति एवं अत्तानं जानातीति अत्तञ्ञू,* दी. नि. अट्ठ. 3.202; *धम्मञ्ञू च होति अत्थञ्ञू च अत्तञ्ञू च,* अ. नि. 2(2).246; - **ञ्ञुता** स्त्री., भाव. [आत्मज्ञता] - *अत्तञ्ञुता पुब्बेकतपुञ्ञताय पदट्ठानं,* नेत्ति. 26.

अत्तट्ठपञ्ञ / अत्तत्थपञ्ञ त्रि., ब. स. [आत्मार्थप्रज्ञ], स्वार्थी मनोवृत्ति वाला, केवल अपने हित पर ध्यान रखने वाला, दूसरों के कल्याण के बारे न सोचने वाला - *अत्तनि ठिता एतेसं पञ्ञा, अत्तानं येव ओलोकेन्ति, न अञ्ञन्ति अत्तट्ठपञ्ञा,* सु. नि. अट्ठ. 1.104; *अत्तनो अत्थाय पञ्ञा, परं अनोलोकेत्वा अत्तनियेव वा ठिता एतेसं पञ्ञाति अत्तत्थपञ्ञा,* जा. अट्ठ. 3.438; अट्ठ. में दो रूपों में व्याख्यातः - 1. अत्त + अत्थ (अट्ठ) अपने हित के लिए, 2. अत्त + ट्ठ (ठित), अपने में ही स्थित.

अत्तट्ठम त्रि., ब. स. [आत्माष्टम], अन्य सात लोगों के साथ स्वयं आठवें के रूप में विद्यमान, वह समूह अथवा वर्ग, जिसमें स्वयं आठवें के रूप में हो - *रेवतत्थेरं अत्तट्ठमं निमन्तेसि,* वि. व. अट्ठ. 123; - **क** त्रि., ऊपर के ही अर्थ में - *अत्तट्ठमकस्स पिण्डपातं दत्वा,* मि. प. 269.

अत्तता स्त्री., भाव. [आत्मता], अपनापन, अपने समान ही दूसरों को मानने की मनोवृत्ति, आत्मसमता - *सब्बत्ततायाति सब्बेसु ... अत्तताय,* विसुद्धि. 1.298.

अत्ततो 'अत्त' से व्यु., प. वि., प्रतिरू. निपा., प्रायः अनुपस्सति, मञ्ञति, अनुविलोकेति, चिन्तेति जैसे क्रि. स. के साथ प्रयुक्त [आत्मतः], आत्मा के रूप में, आत्मा के समान, आत्मप्रकृति वाले रूप में, - *रूपं अत्ततो समनुपस्सति,* म. नि. 1.381; स. नि. 2(1).3; *फस्सपरेतो रोगं वदति अत्ततो,* उदा. 105; *सङ्खारे परतो पस्स, दुक्खतो मा च अत्ततो,* स. नि. 1(1).218.

अत्तत्तनियगाह पु., [आत्मात्मीयग्राह], 'मैं' और 'मेरे' जैसी मिथ्या-धारणाओं में विश्वास, आत्मा एवं आत्मीय दृष्टियों के प्रति मन का अभिनिवेश - *सब्बसङ्खतसभागेकसङ्गहतो अत्तत्तनियगाहवत्थुस्स* ..., विसुद्धि. 2.106.

अत्तत्थ पु., तत्पु. स., [आत्मार्थ], अपना हित, अपना कल्याण, अपना स्वार्थ, अपना प्रयोजन - *सो वत भिक्खु आविलेन चित्तेन अत्तत्थं वा ञस्सति परत्थं वा ञस्सति उभयत्थं वा ञस्सति,* अ. नि. 1(1).12; *अत्तत्थं वा ... अलमेव अप्पमादेन सम्पादेतुं* स. नि. 1(2).27; परत्थ तथा उभयत्थ के साथ प्रयुक्त; - **काम** त्रि., आत्मकल्याण की कामना वाला - *तस्मा अञ्ञोपि अत्तत्थकामो कुलपुत्तो,* विसुद्धि 1.37; - **पटिपत्ति** स्त्री., आत्मकल्याण की प्राप्ति - *अच्चन्तलाभकायापि अत्तत्थपटिपत्तिया,* सद्धम्मो. 28; - **परिपुच्छा** स्त्री., आत्महित-विषयक प्रश्न, द्रष्ट. पटिपुच्छा के अन्त..

अत्तत्थिय त्रि., अत्तत्थ से व्यु. [आत्मार्थिक], स्वार्थी मनोवृत्ति वाला, केवल अपने हित के विषय में ही सोचने वाला - *अत्तत्थियं तं न कदा भविस्सति,* थेरगा. 1100, पाठा. अत्थत्थियं.

अत्तदण्ड 1. त्रि., अत्त[3] + दण्ड का ब. स. [आत्मदण्ड], दण्ड को धारण किया हुआ, दण्ड को ग्रहण करने वाला हिंसक प्रकृति का व्यक्ति, दण्डधारी - *अत्तदण्डेसु निब्बुतं,* ध. प. 406; स. नि. 1(1).273; *अत्तदण्डेसु निब्बुता'ति परविहेठनत्थं गहितदण्डेसु सत्तेसु,* स. नि. अट्ठ. 1.308; 2. पु./नपुं., कर्म. स., धारण किया गया दण्ड, व्यक्ति की हिंसक अथवा द्वेषपरक आत्मचेतना - *अत्तदण्डा भयं जातं,* सु. नि. 941; *अत्तदण्डा भयं जातन्ति ... अत्तनो दुच्चरितकारणा जातं,* महानि. अट्ठ. 344.

अत्तदत्थ[1] पु., [आत्मार्थ], अपना स्वयं का हित, अपना कल्याण, अपनी मुक्ति - *पञ्च कामगुणे हित्वा, अत्तदत्थमचारिसुं* सु. नि. 286; *मन्तज्झनब्रह्मविहार - भावनादिं अत्तनो अत्थं अकंसु,* सु. नि. अट्ठ. 2.45; *अत्तदत्थं परत्थेन, बहुनापि न हापये,* ध. प. 166; *न सो पस्सति अत्तदत्थं परत्थं,* जा. अट्ठ. 2.83;; (अट्ठ. में अत्तदत्थं के लिए "अत्तत्थं"), - **टि.** यह अत्तत्थ का भ्रष्ट रूप तथा मदत्थ, एतदत्थ के

मि॰ सा॰ के आधार पर विरचित शब्दरूप है, द्रष्ट॰ क॰ व॰ 35.

अत्तदत्थ[2] पु॰, एक स्थविर की व्य॰ सं॰ - *अत्तदत्थथेरं आरब्भ कथेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.89; - **थेरवत्थु** ध॰ प॰ में वर्णित अत्तदत्थ नामक एक स्थविर की कथा का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.89

अत्तदन्त त्रि॰, [आत्मदान्त], आत्मसंयमी, आत्मनियन्त्रित, अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाला - *अत्तदन्तस्स पोसस्स, निच्चं सञ्ञतचारिनो ...,* ध॰ प॰ 104; *मनुस्सभूतं सम्बुद्धं, अत्तदन्तं समाहितं* थेरगा॰ 689; अ॰ नि॰ 2(2).60; *अत्तदन्तन्ति अत्तनायेव दन्तं न अञ्ञेहि दमथं उपनीतं* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.113.

अत्तदम पु॰, नपुं [आत्मदमन], आत्म-संयम, स्वयं अपने द्वारा अपनी चित्तवृत्तियों पर नियन्त्रण - *अत्तदमत्थाय, अत्तसमत्थाय ...,* महानि॰ 174; *अत्तदमत्थायाति विपस्सनासम्पयुत्ताय पञ्ञाय अत्तनो दमनत्थाय,* महानि॰ अट्ठ॰ 274; तुल॰ अत्तसमथ, अत्तपरिनिब्बापन.

अत्तदमन नपुं॰, [आत्मदमन], उपरिवत् - *अत्तदमनसङ्खातो दमो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.6.

अत्तदस्स पु॰, ब॰ स॰, [आत्मदर्श], दर्पण, जिसमें स्वयं को देखा जाता है.

अत्तदिट्ठि स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आत्म-दृष्टि], उच्छेदवाद की मिथ्यादृष्टि से विप॰ आत्मा को शाश्वतरूप में ग्रहण करने की मिथ्या-धारणा - *अत्तं पहायाति अत्तदिट्ठिं पहाय,* महानि॰ 77; ... *तस्स हि अत्तदिट्ठि वा उच्छेददिट्ठि वा नत्थि ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.217.

अत्तदिट्ठिञ्जह त्रि॰, [आत्मदृष्टिजह], आत्मदृष्टि से मुक्त हो चुका व्यक्ति - *अत्तञ्जहोति अत्तदिट्ठिजहो,* महानि॰ 64; *अत्तदिट्ठिजहोति 'एसो मे अत्ता'ति गहितदिट्ठिं जहो,* महानि॰ अट्ठ॰ 172, पाठा॰ अत्तदिट्ठिजह, द्रष्ट॰ अत्तदिट्ठि के अन्त॰.

अत्तदीप त्रि॰, ब॰ स॰ [आत्मदीप], स्वयं को ही अपने लिये प्रकाश बनाने वाला व्यक्ति, अपना मार्ग स्वयं निर्धारित करने वाला, आत्मनिर्भर - *ये अत्तदीपा विचरन्ति लोके,* सु॰ नि॰ 506; *अत्तदीपा विहरथ अत्तसरणा, अनञ्ञसरणा,* दी॰ नि॰ 2.78; *अत्तदीपाति महासमुद्दगतदीपं विय अत्तानं दीपं पतिट्ठं कत्वा विहरथ,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.124; *अत्तदीपाति अत्तानं दीपं ताणं लेणं गतिं परायणं पतिट्ठं कत्वा विहरथाति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.237; - **वग्ग** स॰ नि॰ के एक वग्ग का नाम, स॰ नि॰ 2(1).39-48; - **सुत्त** स॰ नि॰ के एक सुत्त का नाम, स॰ नि॰ 2(1).39-41.

अत्तदुक्ख नपुं॰, तत्पु॰ स॰, [आत्मदुःख], अपना दुख - *यो अत्तदुक्खेन परस्स दुक्खं ... दहाति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.208; *सत्तमे अत्तब्याबाधायाति अत्तदुक्खाय,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.86.

अत्तदुतिय त्रि॰, ब॰ स॰, [आत्म-द्वितीय], स्वयं और साथ में एक दूसरा व्यक्ति - ... *आयस्मा आनन्दो ... अत्तदुतियो कुसिनारं पाविसि,* दी॰ नि॰ 2.111; *आयस्मा सारिपुत्तो गमनकाले अत्तदुतियो गतो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.83, तुल॰ अत्तचतुत्थ.

अत्तनगलुविहारवंस पु॰, हत्थवनगल्ल-विहारवंस नामक एक अप्रसिद्ध पालि-रचना का सिंहली भाषा का, गद्य एवं गाथाओं में निबद्ध संस्क॰ **1**. प्रा॰ अनु॰ सहित डी॰ एल्विस द्वारा संपा॰ कोलम्बो संस्क॰, 1887 **2**. कोलम्बो, 1909, द्रष्ट॰ जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰ 1882, पृ॰ 145.

अत्तनिपातनपञ्ह पु॰, मि॰ प॰ के एक खण्डविशेष का नाम, मि॰ प॰ 187-189.

अत्तनिमित्त नपुं॰, [आत्मनिमित्त], आत्मा से सम्बन्धित चिह्न अथवा लक्षण - *विपस्सना हि निच्चनिमित्तं ... अत्तनिमित्तञ्च उग्घाटेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 266; पाठा॰ अत्थनिमित्त.

अत्तनिय त्रि॰, अत्ता से व्यु॰ [आत्मन्य, बौ॰ सं॰ आत्मनीय], आत्मीय, निजी, अपना, स्वयं का, आत्मा से सम्बद्ध, आत्मा से युक्त, आत्मा की प्रकृति वाला, आत्मा के स्वभाव से समन्वित कोई भी धर्म - *निजो सको अत्तनियो,* अभि॰ प॰ 736; *अत्तनिये सो तिलिङ्गिसो,* अभि॰ प॰ 808; *अत्तनि वा ... सति अत्तनि॰ ॰ति अस्सा ति, अत्तनीये वा ... सति अत्ता मेति अस्सा ति,* म॰ नि॰ 1.191; *सुञ्ञमिदं अत्तेन वा अत्तनियेन वाति,* म॰ नि॰ 3.47; *लोकोति ममङ्कारवत्थु, यं अत्तनिय'न्ति वुच्चति,* उदा॰ अट्ठ॰ 280; - **गाह** पु॰, [आत्मन्यग्राह], किसी भी धर्मविशेष को आत्मा से सम्बद्ध मानने का भ्रमात्मक विचार - ... *अत्तत्तनियगाहवसेन च अभिरता,* उदा अट्ठ॰ 173; - **भाव** पु॰, [आत्मन्यभाव], धर्मविशेष को आत्मा से सम्बद्ध मानने वाली मिथ्या मनोवृत्ति - *अत्तभावेन वा अत्तनियभावेन वाति अत्थो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 142; - **सुञ्ञता** स्त्री॰ [आत्मन्यशून्यता], आत्म-स्वभाव से शून्य होने की दशा - *कसे ताव अत्तसुञ्ञता, अत्तनियसुञ्ञता, निच्चभावसुञ्ञताति तिस्सो सुञ्ञता होन्ति,* विभ॰ अट्ठ॰ 247.

अत्तनोपद नपुं॰ [आत्मनेपद], धातुओं में जोड़े जाने वाले काल-भाव-बोधक दो प्रकार के प्रत्ययों में से, ते, अन्ते, से, व्हे, ए, म्हे, इत्यादि - *परान्यत्तनोपदानि,* कच्चा॰ व्या॰ 409, रू॰ सि॰ 423; *भावे च कम्मनि च अत्तनोपदानि होन्ति,* क॰ व्या॰ 456, रू॰ सि॰ 424; *अत्तनोपदानि वज्जेत्वा,* सद्द॰ 2.318.

अत्तन्तप त्रि., [आत्मतप], आत्म-उत्पीड़क, स्वयं को कष्ट देने वाला, उत्पीड़ित करने वाला - *इधावुसो, एकच्चो पुग्गलो अत्तन्तपो होति अत्तपरितापना - नुयोगमनुयुत्तो,* दी. नि. 3.185; म. नि. 2.4; अ. नि. 1(2).235; पु. प. 165, परन्तप का विलो..

अत्तपक्खिय त्रि., [आत्मपक्षीय], अपने पक्ष वाला, अपने समर्थन में रहने वाला - *अत्तपक्खियेसु असारत्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.192; परपक्खिय का विलो..

अत्तपच्चक्ख त्रि., ब. स. [आत्मप्रत्यक्ष], स्वयं अपने द्वारा देखा गया, अनुभव किया गया, अपने द्वारा सुनिश्चित किया गया - *न सद्धोति सामं सयं अभिञ्ञातं अत्तपच्चक्खं धम्मं* ..., महानि. 171; *अत्तपच्चक्खं धम्मन्ति अत्तना पटिविज्झितं पच्चवेक्खितं धम्मं,* महानि. अट्ठ. 273; *सब्बानि किच्चानि अत्तपच्चक्खेनेव कातब्बानि,* जा. अट्ठ. 5.108; - **तो** प. वि. के अर्थ में क्रि. वि. - *सामं विदू अत्तपच्चक्खतोव जानित्वा* ..., जा. अट्ठ. 5.121; *अत्तपच्चक्खतो व अत्वाव,* ध. प. अट्ठ. 2.232; - **ता** स्त्री., भाव., अपने द्वारा प्रत्यक्ष किये जाने की दशा, निर्वाण की साक्षात् क्रिया - *निब्बानस्स सच्छिकिरियायाति ... अत्तपच्चक्खतायाति वुत्तं होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).247; - **वचन** नपुं., स्वयं अपने निजी वचन - *इदञ्हि बुद्धस्स भगवतो अत्तपच्चक्खवचनं न होति,* पारा. अट्ठ. 1.4.

अत्तपच्चत्थिक त्रि., [आत्मप्रत्यर्थिक], आत्मपक्ष एवं विरोधी पक्ष - *उभिन्नं अत्तपच्चत्थिकानं कथं सुत्वा,* जा. अट्ठ. 5.114.

अत्तपञ्चदसम त्रि., ब. स. [आत्मपञ्चदशम], चौदह दूसरे लोगों के साथ पन्द्रहवें के रूप में विद्यमान स्वयं, पन्द्रह लोगों का ऐसा समूह, जिसमें चौदह दूसरे लोग हों तथा पन्द्रहवां सदस्य स्वयं हो - *देसनावसाने कुक्कुटमित्तो ... अत्तपञ्चदसमो सोतापत्तिफले पतिट्ठहि,* ध. प. अट्ठ. 2.16.

अत्तपटिलाभ पु., तत्पु. स. [आत्मप्रतिलाभ], अपने लौकिक अस्तित्व की प्राप्ति, व्यक्तिगत अस्तित्व का एक स्वरूप - *तयो खो मे पोट्ठपाद, अत्तपटिलाभा - ओळारिको ... मनोमयो ... अरूपो ...,* दी. नि. 1.173; - **टि.** भगवान् बुद्ध ने अपने समय में प्रचलित तीन प्रकार की आत्मा-सम्बन्धी धारणाओं (अत्त-पटिलाभ) अथवा स्वरूपों का उल्लेख किया है, **1.** ओळारिक अथवा स्थूल भौतिक शरीर को ही व्यक्तित्व मानने वाला विचार, **2.** मनोमय अर्थात् सम्पूर्ण इन्द्रिय-संपन्न मानसिक शरीर को ही तथा **3.** अरूप संज्ञा को ही, उन्होंने इन तीनों के प्रहाण का उपाय भी कहा है। द्रष्ट. दी. नि. 1, पोट्ठपादसुत्त.

अत्तपरिच्चागी त्रि., [आत्मपरित्यागिन्], स्वयं अपने को त्याग कर देने वाला, शरीर और जीवन के प्रति पूरी तरह से निरपेक्ष - *अत्तपरिच्चागीति काये च जीविते च निरपेक्खो हुत्वा ... अत्तानं परिच्चजन्तो,* जा. अट्ठ. 2.327.

अत्तपरितापन नपुं., [आत्मपरितापन], आत्म-उत्पीड़न, अपने को अत्यधिक कष्ट देने का मार्ग अथवा कर्म - *इधावुसो, एकच्चो पुग्गलो अत्तन्तपो होति ... अत्तपरितापनानुयोगमनुयुत्तो,* दी. नि. 3.185; तुल. अत्तन्तपो.

अत्तपरित्ता स्त्री., [आत्मपरित्राण], अपना परित्राण, अपनी सुरक्षा, एक प्रकार का मन्त्र - *अत्तगुत्तिया अत्तरक्खाय अत्तपरित्ताय ...,* अ. नि. 1(2).84; *अत्तगुत्तिया अत्तरक्खाय अत्तपरित्तं कातुं ...,* चूळव. 227.

अत्तपरित्ताण नपुं., [आत्मपरित्राण], जीवन का परित्राण अथवा रक्षा - *अत्तपरियायन्ति अत्तनो परित्ताणम्पि च कातुं* ..., जा. अट्ठ. 5.364.

अत्तपरिनिब्बापन नपुं., [आत्मपरिनिर्वापन], पूर्णरूप से आत्म-विमुक्ति, अपनी पूर्ण मुक्ति - *अत्तपरिनिब्बापनत्थाय सुत्तन्तं ... विनयं ... अभिधम्मं परियापुणाति,* महानि. 174; - **नत्थ** पु., [आत्मपरिनिर्वापनार्थ], अपनी विमुक्ति का प्रयोजन - *अत्तपरिनिब्बापनत्थो यथत्थो,* पटि. म. 166.

अत्तपरिभव पु., [आत्मपरिभव], आत्म-तिरस्कार, आत्म-अवमानना, अपने प्रति हीनता का भाव - *यो एवरूपो ओमानो, ओमञ्ञना-अत्तपरिभवो - अयं वुच्चति. हीनोहमस्मीति मानो,* विभ. 406; *अत्तपरिभवोति ... अत्तानं परिभवित्वा मञ्ञना,* विभ. अट्ठ. 458.

अत्तपरियाय पु., [आत्मपर्याय], अपना परित्राण, अपना रक्षण - *अत्तपरियायन्ति अत्तनो परित्ताणम्पि च कातुं सक्कोतीति,* जा. अट्ठ. 5.364.

अत्तपीतिरत त्रि., ब. स. [आत्मप्रीतिरत], अपने आनन्दों मे डूबा हुआ, अपने लिये आमोद-प्रमोद जुटा रहा - *अत्तपीतिरतो राजा, मिगो कूटेव ओहितो,* जा. अट्ठ. 6.264; *अत्तपीतिरतोति अत्तनो किलेसपीतिया अभिरतो हुत्वा,* तदे..

अत्तप्पयोग पु., [आत्मप्रयोग], अपना स्वयं का प्रयोग, अपने द्वारा उठाया गया कदम - *सचे अत्तप्पयोगेन, ओहितो हंसपक्खिनं,* जा. अट्ठ. 5.359; ... *अत्तनो पयोगेन अत्तनो अत्थाय ...,* तदे..

अत्तप्पसंसक त्रि., [आत्मप्रशंसक], अपनी प्रशंसा स्वयं करने वाला, डींग हांकने वाला, अपने बारे में बहुत बढ़-चढ़कर बोलने वाला - *अत्तप्पसंसकोति अत्तानं पसंसनसीलो अत्तुक्कंसको पोसो,* जा. अट्ठ. 2.126.

अत्तब्याबाध पु., तत्पु. स. [आत्मब्याबाध], अपनी बाधा, अपनी दुर्दशा अथवा अपना कष्ट, **क.** चेतेति, के साथ प्रयुक्त - *नेव तस्मिं समये अत्तब्याबाधायपि चेतेति, न परब्याबाधायपि चेतेति, न उभयब्याबाधायपि चेतेति,* म. नि. 1.124; स. नि. 2(2).320; अ. नि. 1(1).183; 184; 186; **ख.** संवत्तति के साथ - *तयोमे भिक्खवे, धम्मा अत्तब्याबाधायपि ... परब्याबाधायति उभयब्याबाधायपि संवत्तन्ति,* अ. नि. 1(1).137; *सो च खो अत्तब्याबाधायपि संवत्तति,* म. नि. 1.163; - **टि.** सदा च. वि., ए. व. में ही तथा परब्या. एवं उभयब्या. के साथ ही प्रयुक्त.

अत्तभर त्रि., [आत्मभर], केवल अपना ही भरण-पोषण करने वाला, अपनी ही आवश्यकताओं को पूरा करने वाला, दूसरे का पोषण न करने वाला - *पिण्डपातिकस्स भिक्खुनो, अत्तभरस्स अनञ्ञपोसिनो ...,* उदा. 101; *अत्तभरस्साति ... चतूहि पच्चयेहि अत्तानमेव भरन्तस्स,* उदा. अट्ठ. 162.

अत्तभाव पु., भाव. [आत्मभाव], **1.** शरीर का लाभ, अस्तित्व - *अत्तभावेन वा अत्तनियभावेन वाति अत्थो,* खु. पा. अट्ठ. 142; **2.** शरीर, व्यक्ति की विशिष्ट एवं यथार्थ प्रकृति का अस्तित्व, प्राणी, जीव, जीव का शारीरिक स्वरूप, आत्मा के लोकसम्मत विविध स्वरूप - *सरीरं वपु गत्तं चा'त्तभावो, वोन्दि, विग्गहो,* अभि. प. 151; *सत्तं दब्बात्तभावेसु,* अभि. प. 816; *सुखुमत्ता, भिक्खवे, अत्तभावस्स ...,* स. नि. 3(2).504; - **पटिलाभ** पु., [आत्मप्रतिलाभ], प्राणी के रूप में या शरीर-ग्रहण के रूप में पुनर्जन्म की प्राप्ति, नूतन शरीर का प्रतिलाभ - *तस्स एवरूपो अत्तभावप्पटिलाभो होति,* चूळव. 321; *चत्तारो मे, ... अत्तभावपटिलाभा,* अ. नि. 1(2).184; *तथाभूतो अयं अत्तभावपटिलाभो,* अ. नि. 1(2).218; - **परम्परा** स्त्री., [आत्मभावपरम्परा], पुनर्जन्मों में शरीर-ग्रहण करने की परम्परा, बार बार शरीर धारण करना, पुनर्जन्म-परम्परा - *परम्पि गन्त्वाति आचरियपरम्परा ... अत्तभावपरम्पराति,* अ. नि. अट्ठ. 2.153; - **परियापन्न** त्रि., [आत्मभाव-पर्यापन्न], शरीर के एक भाग के रूप में विद्यमान, शरीर की स्थिति को प्राप्त - *यं सोतं ... चतुन्नं महाभूतानं ... अत्तभावपरियापन्नो ...,* विभ. 78; - **परियाय** पु., [आत्मभाव-पर्याय], आत्मभाव, शरीर - *अत्तभावपरियाये अत्तनि सम्भूता ...,* सु. नि. अट्ठ. 2.36; - **वत्थु** नपुं., आत्मभाव या शरीर के रूप में मिथ्या-रूप में गृहीत पांच स्कन्धों में कोई एक - *चतूसु अत्तभाववत्थूसु, रूपं अत्ततो समनुपस्सति, रूपवन्तं वा अत्तानं, अत्तनि वा रूपं, रूपस्मिं वा अत्तानं,* नेत्ति. 71; - **टि.** रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार एवं विज्ञान, इन पांच स्कन्धों में चार प्रकार से आत्मभाव का विपर्यस्त दर्शन अत्तभाव-वत्थु में विपरीतग्राह है। वस्तुतः पांच उपादान स्कन्ध ही अत्तभाव-वत्थु हैं - *अत्तभाववत्थूसूति पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु, ते हि आहितो अहं मानो एत्थाति अत्ता, अत्ता'ति भवति एत्थ बुद्धि वोहारो चा'ति अत्तभावो, सो एव सुभादीनं विपल्लासस्स च अधिट्ठानभावतो वत्थु चाति, अत्तभाववत्थू'ति वुच्चति,* नेत्ति. अट्ठ. 266-67; - **सन्निस्सय** त्रि., [आत्मभाव-सन्निश्रय], आत्मा की मिथ्या धारणा पर आधारित रहने वाला - *तत्थेते पापका अकुसला धम्मा उप्पज्जन्ति अत्तभावसन्निस्सया,* महानि. 10; - **वाभिनिब्बत्ति** स्त्री., [आत्मभाव-अभिनिर्वृत्ति], पुनर्जन्म - *पुनप्पुनअत्तभावाभिनिब्बत्तिया ...,* महानि. 78; *अत्तभावाभिनिब्बत्तियाति अत्तभावानं अभिनिब्बत्तिया ...,* महानि. अट्ठ. 125.

अत्तभावी त्रि., अत्तभाव से व्यु. [आत्म-भाविन्], आत्मभाव से युक्त, शरीर वाला, शरीरधारी - *एतदग्गं, भिक्खवे, अत्तभावीनं यदिदं-राहु असुरिन्दो,* अ. नि. 1(2).20; *अत्तभावीनन्ति अत्तभाववन्तानं,* अ. नि. अट्ठ. 2.253.

अत्तमज्झा स्त्री., ब. स., [आप्तमध्या], क्षीण कटिप्रदेश वाली नारी - *सब्बत्तमज्झाति सब्बा अत्तमज्झा, पाणिना गहितप्पमाणमज्झाति अत्थो, अट्ठकथायं पन सुमज्झा'ति पाठो,* जा. अट्ठ. 5.164.

अत्तमन त्रि., व्यु. अनिश्चित [आप्तमनस्, बौ. सं. आत्तमनस्], आनन्द युक्त मन वाला, संतुष्ट मन वाला, उत्साही, मंगलकारी - *अत्तमनो पमुदितो उदग्गो पीतिसोमनस्सजातो,* सु. नि. (पृ.) 159; *अत्तमना ते भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति,* दी. नि. 1.41; *अत्तमना ते भिक्खूति ... अत्तमना सकमना, बुद्धगताय पीतिया उदग्गचित्ता हुत्वाति,* दी. नि. अट्ठ. 1.110; - **ता** स्त्री., अत्तमन से व्यु., भाव., प्रसन्नता, आनन्दमयता, मन की नियंत्रित या संयमित अवस्था - *हासो'त्तमनता पीति वित्ति तुट्ठि च नारियं,* अभि. प. 87; *लभेथेव अत्तमनतं, लभेथ चेतो पसादं,* म. नि. 1.162; अ. नि. 2(1).218; *अनभिरद्धस्स हि मनो दुक्खपदट्ठानत्ता अत्तनो मनो नाम न होति, अभिरद्धस्स पन सुखपदट्ठानत्ता अत्तनो*

मनो नाम होति। इति अत्तनो मनता अत्तमनता, सकमनता, ध. स. अट्ठ. 188; – **भाव** पु., तत्पु. स., मन की प्रसन्नता, आनन्दमयता – *अत्तमनभावस्स वा युत्तं वाचं निच्छारेसि उदीरयि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).161; – **वाचा** स्त्री., प्रसन्न अथवा सन्तुष्ट मन से युक्त वाणी, मन के उल्लास को प्रकट कर रही वाणी – *अत्तमनो अत्तमनवाचं निच्छारेसि,* म. नि. 1.39.

अत्तमानी त्रि., [आत्ममानी], आत्मा की सत्ता को वास्तविक अथवा यथार्थ मानने वाला, नाम और रूप-धर्मों को आत्मा मानने वाला – *अनत्तनि अत्तमानिं, पस्स लोकं सदेवकं,* सु. नि. 761; *अनत्तनि नामरूपे अत्तमानिं,* सु. नि. अट्ठ. 2.205.

अत्तमारणीय त्रि., अपनी मृत्यु स्वयं उत्पन्न करने वाला, स्वयं अपना हत्यारा, आत्महत्या करने वाला – *भूनहच्चानि कम्मानि, अत्तमारणियानि च, करोन्ता नावबुज्झन्ति,* अ. नि. 2(2).235.

अत्तमोक्ख पु., [आत्ममोक्ष], अपना निर्वाण, अपनी पूर्ण विमुक्ति – *बुद्धसासनस्स निय्यानिकत्ते सति मिलक्खो अत्तमोक्खं करिस्सति,* सा. सं. 54.

अत्तरक्खा स्त्री., तत्पु. स. [आत्मरक्षा], अपनी रक्षा – *अत्तगुत्तिया अत्तरक्खाय अत्तपरित्तं कातुं,* चूळव. व. 227; *वेस्सन्तरस्स अत्तरक्खा पहीना ...,* मि. प. 123, विलो. पररक्खा.

अत्तरक्खित त्रि., तत्पु. स. [आत्मरक्षित], स्वयं अपने द्वारा रक्षित – *एवं मयं अत्तगुत्ता अत्तरक्खिता ... दस्सेस्साम,* स. नि. 3(1).244.

अत्तरूप[1] त्रि., [आत्मरूप], अपने लिये अनुरूप, अपने लिये शुभ, अपने लिए मङ्गलकारी अथवा हितकारी, अपना हितकामी – *चतूसु, भिक्खवे, ठानेसु अत्तरूपेन अप्पमादो सति, चेतसो आरक्खो करणीयो,* अ. नि. 1(2).137; *अत्तरूपेनाति अत्तनो अनुरूपेन, अनुच्छविकेन, हितकामेनाति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 2.325.

अत्तरूप[2] त्रि., [आप्तरूप], पूर्ण स्वरूप वाला, किसी धर्म-विशेष से समन्वित स्वरूप वाला – *अत्तरूपाय परिभासाय, परिपुण्णाय,* दी. नि. 3.59.

अत्तलाभ पु., तत्पु. स. [आत्मलाभ], जन्म, जन्म की प्राप्ति, पुनर्जन्म में प्राप्त नवीन अस्तित्व अथवा शरीर – *उद्धङ्गमवियोगत्तलाभतितिसमिद्धिसु, पातुभा– वच्चयाभाव,* अभि. प. 1168; *सरूपकथने चेव अत्तलाभे च सत्तियं,* सद्द. 3.881; *अत्तलाभे उप्पन्नं ञाणं,* सद्द. 3.881; *पच्चुप्पन्नेसु च अत्तभावपटिलाभेसु,* स. नि. 1(2).256.

अत्तवग्ग पु., ध. प. के बारहवें वर्ग का शीर्षक, ध. प. 157-166.

अत्तावञ्ञा स्त्री., तत्पु. स. [आत्मावज्ञा], आत्मअवमानना, अपना तिरस्कार अथवा अवमूल्यन – *यो एवरूपो ओमानो ... अत्तावञ्ञा अत्तपरिभवो – अयं वुच्चति, हीनोहमस्मीति मानो,* विभ. 406; *अत्तावञ्ञाति अत्तानं अवजानना,* विभ. अट्ठ. 458.

अत्तवण्ण पु., आत्मप्रशंसा – *न चत्तवण्णं परिसासु ब्याहरे,* थेरगा. 209.

अत्तवध पु., [आत्मवध], आत्महत्या, अपना विनाश – *अत्तवधाय देवदत्तस्स लाभसक्कारसिलोको उदपादि,* चूळव. 324-25; स. नि. 1(2).217.

अत्तवाद पु., [आत्मवाद], आत्मा से सम्बन्धित सिद्धान्त – *रूपं अत्ततो समनुपस्सतीतिआदिनयप्पवत्तेन अत्तवादेन पटिसंयुत्ता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).190; *अत्तवादपटिसंयुत्ता दिट्ठि,* पटि. म. 127; – **दुपादान** नपुं., तत्पु. स., [आत्मवादोपादान], चार उपादानों में से एक – *चत्तारिमानि, आवुसो, उपादानानि – कामुपादानं दिट्ठुपादानं, सीलब्बतुपादानं, अत्तवादुपादानं,* म. नि. 1.64; ... *अत्तनो वादुपादानं अत्तवादुपादानं,* विभ. अट्ठ. 173; – **टि.** उपादान चार है, काम-उपा., दृष्टि-उपा., शीलव्रत-उपा. तथा आत्मवाद-उपा., विशेष द्रष्ट. उपादान के अन्त.

अत्तविपत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आत्मविपत्ति], अपने ऊपर आ पड़ी विपत्ति अथवा संकट – *भिक्खु कालेन कालं ... अत्तविपत्तिं पच्चवेक्खिता होति,* अ. नि. 3(1).10; विलो. परविपत्ति.

अत्तवेतनभत त्रि., [आत्मवेतनभृत्], अपनी आजीविका स्वयं अर्जित करने वाला, आत्मनिर्भर, दूसरे की सेवा में नहीं लगा हुआ – *अत्तवेतनभतोहमस्मि,* सु. नि. 24; *अत्तवेतनभतोति अत्तनियेनेव घासच्छादनेन भतो, अत्तनोयेव कम्मं कत्वा जीवामि,* सु. नि. अट्ठ. 1.32.

अत्तसञ्चेतना स्त्री., तत्पु. स. [आत्मसञ्चेतना], अपने प्रति अपनी चेतना, अपनी स्वयं की चेतना, अपने द्वारा प्रकल्पित चेतना – *अत्थि, भिक्खवे, अत्तभावपटिलाभो, यस्मिं अत्तभावपटिलाभे अत्तसञ्चेतना कमति नो परसञ्चेतना,* अ. नि. 1(2).184; दी. नि. 3.184.

अत्तसञ्जत त्रि., [आत्मसंयत], अपने ऊपर संयम अथवा नियन्त्रण रखने वाला – *सेय्यो सो मुनि अत्तसञ्जतो,* स. नि. 1(1).126; तुल. सञ्जतत्त.

अत्तसञ्ञा स्त्री., [आत्मसंज्ञा], अज्ञान के कारण धर्मों में अनित्यता की अनुपश्यना न होने के कारण धर्मों को आत्मा के रूप में जानना या देखना, वास्तविक सत्ता के विषय में मिथ्या धारणा - *अनिच्चसञ्ञा-दुक्खसञ्ञा-असमनुपस्सनलक्खणा अत्तसञ्ञा,* नेत्ति. 25.

अत्तसन्निय्यातन नपुं., [आत्मसन्निर्यातन], अपने को पूरी तरह से लगा देना या समर्पित कर देना, आत्मपरित्याग - *तत्थ अत्तसन्निय्यातनं नाम अज्जादिं कत्वा अहं अत्तानं बुद्धस्स निय्यादेमि, धम्मस्स, सङ्घस्सा'ति एवं बुद्धादीनं अत्तपरिच्चजनं,* दी. नि. अट्ठ. 1.187; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).141, तुल. अत्तनिय्यातन.

अत्तसन्निस्सित त्रि., [आत्मसन्निश्रित], अपने से सम्बन्धित, अपने पर आश्रित - *अत्तसन्निस्सिता अत्थि, तथेव परनिस्सिता,* उत्त. वि. 463; विलो. परनिस्सित.

अत्तसम त्रि., [आत्मसम], अपने समान, अपने जैसा, अत्यन्त घनिष्ठ साथी, जो अपने जैसा प्रिय हो - *नत्थि अत्तसमं पेमं,* स. नि. 1(1).8; *ततुत्तरिं अत्तसमो'पि होति,* जा. अट्ठ. 1.349; *अत्तना समे निन्नानाकरणेपि पुग्गलेति,* जा. अट्ठ. 3.89.

अत्तसमानता स्त्री., [आत्मसमानता], अपने से समानता, अपना ही जैसा मानना - *अत्तसमानताय तेसु विरोधं विनेन्तो* ..., सु. नि. अट्ठ. 2.192.

अत्तसमुट्ठान त्रि., [आत्मसमुत्थान], अपने से उत्पन्न, अपने भीतर से ऊपर उठकर आने वाला - *सल्लं अत्तसमुट्ठानं, भवनेत्तिप्पभावितं,* थेरगा. 767.

अत्तसम्पत्ति स्त्री., [आत्मसम्पत्ति], अपनी सम्पत्ति, निजी धन-दौलत - *अत्तसम्पत्तिनिगूहनलक्खणता अत्तसम्पत्तिग्गहणलक्खणता वा वेदितब्बा,* ध. स. अट्ठ. 401.

अत्तसम्पदा त्रि., [आत्मसम्पदा], अपने आप में परिपूर्णता, चित्त की सम्पूर्णता - *अरियस्स अट्ठङ्गिकस्स मग्गस्स उप्पादाय एतं पुब्बङ्गमं ... यदिदं-अत्तसम्पदा,* स. नि. 3(1).28.

अत्तसम्भव त्रि., [आत्मसम्भव], अपने से उत्पन्न, अपना स्वयं का अस्तित्व, आत्मभाव - *अत्तनाहि कतं पापं, अत्तजं अत्तसम्भवं,* ध. प. 161; *तं विदित्वा महमत्तसम्भवं,* थेरगा. 260; *अत्तसम्भवं अत्तनि सम्भूतं अतायत्तं* ..., थेरगा. अट्ठ. 1.409; *अभिन्दि कवचमिवत्त - सम्भवन्ति,* उदा. 143.

अत्तसम्भूत त्रि., [आत्मसम्भूत], अपने आप से उत्पन्न, अपने से उत्पन्न, अपने व्यक्तित्व के अन्दर में उदित - *स्नेहजा अत्तसम्भूता, निग्रोधस्सेव खन्धजा,* सु. नि. 274.

अत्तसम्मापणिधान नपुं., अपना किया हुआ सम्यक्-संकल्प, अपने द्वारा किया गया पक्का शुभ इरादा - *अत्तसम्मापणिधानं सीलानं पदट्ठानं,* नेत्ति. 26; *अत्तसम्मापणिधानं हिरिया च विपस्सनाय च साधारणं पदट्ठानं,* नेत्ति. 42.

अत्तसम्मापणिधि स्त्री., उपरिवत् - *पतिरूपदेसवासो च, . .. अत्तसम्मापणिधि च, एतं मङ्गलमुत्तमं,* सु. नि. 263; *इध ेकच्चो अत्तानं दुस्सीलं सीले पतिट्ठापेति, अस्सद्धं सद्धासम्पदाय, पतिट्ठापेति, ... अयं वुच्चति अत्तसम्मापणिधी'ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.15.

अत्तसरण त्रि., ब. स. [आत्मशरण], अपने लिये स्वयं अपने को शरणस्थल बनाने वाला, दूसरे का आश्रय न लेने वाला - *अत्तदीपा, भिक्खवे, विहरथ अत्तसरणा अनञ्ञसरणा,* दी. नि. 3.42.

अत्तसारसार पु., आत्मसार-नामक तथाकथित सार-तत्त्व - *निरयलोको असारो निस्सारो सारापगतो ... अत्तसारसारेन वा निच्चेन वा* ..., महानि. 303.

अत्तसिनेह पु., [आत्मस्नेह], स्वार्थपरता, अपने से स्नेह, स्वार्थी मनोवृत्ति - *यस्मा सन्तासो अत्तसिनेहेन होति, अत्तसिनेहो च तण्हालेपो,* ..., सु. नि. अट्ठ. 1.100.

अत्तसुख नपुं., तत्पु. स., [आत्मसुख], अपना सुख, अपने द्वारा अनुभूत सुख - *अत्तसुखस्स हेतु,* जा. अट्ठ. 1.349; *न पण्डिता अत्तसुखस्स हेतु, पापानि कम्मानि समाचरन्ति,* जा. अट्ठ. 6.204.

अत्त-सुञ्ञता स्त्री., अत्त-सुञ्ञ का भाव. [आत्मशून्यता], तीन शून्यताओं में से एक, किसी भी वस्तु में आत्मा जैसे धर्म का न पाया जाना, आत्मा के स्वभाव की शून्यता - *कतमा ताव अत्तसुञ्ञता, अत्तनिय - सुञ्ञता, निच्चभावसुञ्ञताति तिस्सो सुञ्ञता होन्ति,* विभ. अट्ठ. 247.

अत्तसुद्धि स्त्री., तत्पु. स., [आत्मशुद्धि], अपनी शुद्धि, आत्मशुद्धि - *अत्तसुद्धिअभिलासेन सीलब्बतपरामासदिट्ठिं गण्हापेन्ति,* उदा. अट्ठ. 287.

अत्तहित नपुं., [आत्महित], अपना हित, अपना कल्याण - *अत्तहिताय पटिपन्नो होति नो परहिताय,* दी. नि. 3.185; *अत्तहितपरहितसब्बलोकउभयहितमेव चिन्तयमानो चिन्तेति,* अ. नि. 1(2).207.

अत्तहेतु अ., [आत्महेतु], स्वयं अपने लिये, अपनी भलाई के लिये - *न अत्तहेतु न परस्स हेतु,* ध. प. 84; *अत्तहेतु परहेतु, धनहेतु च यो नरो,* सु. नि. 122; *इति अत्तहेतु वा परहेतु वा ... भासिता होति,* अ. नि. 1(1).151.

अत्ताण / अताण 1. त्रि., ब. स., [अत्राण], वह, जिसके लिये कोई शरण स्थल, कोई आश्रय अथवा कोई भी सहारा या सुरक्षा-साधन न हो, बेसहारा – *हञ्जति निच्चमत्ताणो,* थेरगा. 449; *अत्ताणो लोको अनभिस्सरोति,* म. नि. 2.265; पटि. म. 115; *अताणोम्हि असरणो,* जा. अट्ठ. 1.210; ... *अत्ताणा असरणा असरणीभूता ...,* मि. प. 149; 2. नपुं., कर्म. स., अरक्षण, असुरक्षा – *देवेसुपि अत्ताणं, निब्बानसुखा परं नत्थि,* थेरीगा. 478; – **तो** अ., प. वि., प्रतिरू. निपा., [अत्राणतः], अशरण रूप में, असुरक्षित रूप में – ... *अताणतो अलेणतो असरणतो ...,* महानि. 38; *अताणतो ... उपासितब्बं,* मि. प. 392.

अत्तादान नपुं., अत्त + आदान, [आत्मादान], अपनी इच्छा से किसी भिक्षु द्वारा संघ के समक्ष अधिकरण-विषय को स्वयं प्रस्तुत करना – *अत्तादानं आदातुकामेन, भन्ते, भिक्खुना कतमङ्गसमन्नागतं अत्तादानं आदातब्बन्ति,* चूळव. 407; ... *यं अधिकरणं अत्तना आदियति, तं अत्तादानन्ति वुच्चति,* चूळव. अट्ठ. 124; – **वग्ग** पु., वि. पि. के उपालिपञ्चक के पांचवें अध्याय का शीर्षक, परि. 351–358; – **टि.** संघ की शुद्धि के लिये भिक्षु स्वयं से सम्बद्ध अधिकरण-विषय को संघ के समक्ष प्रस्तुत करता है। इसी को विनय (प्रातिमोक्ष-विधान) में 'अत्तादान' कहा गया है। भगवान् बुद्ध ने पांच परिस्थितियों में ही 'अत्तादान' के लिये अनुमोदन दिया है, द्रष्ट. चूळव. 408–409; तुल. परि. 354–355.

अत्ताधिपतेय्य त्रि., अत्त + आधिपतेय्य, [आत्माधिपत्य], **क.** अपने को अपना स्वयं का स्वामी बनाने वाला, अपनी आन्तरिक चेतना से नियन्त्रित होकर पाप न करने वाला, स्वयं के नियन्त्रण में रहने वाला – *अत्ताधिपतेय्या हिरी,* जा. अट्ठ. 1.134, **ख.** भाव., नपुं., अपनी आधिपत्यता, अपना प्रभुत्व – ... *अत्ताधिपतेय्यं, लोकाधिपतेय्यं, धम्माधिपतेय्यं ...,* दी. नि. 3.176; *अत्तानं अधिपतिं जेट्ठकं कत्वा पापस्स अकरणं अत्ताधिपतेय्यं नाम,* दी. नि. अट्ठ. 3.170; *इदं वुच्चति, भिक्खवे, अत्ताधिपतेय्यं,* अ. नि. 1(1).172.

अत्ताधीन त्रि., तत्पु. स., [आत्माधीन], **क.** स्वतन्त्र, केवल अपने ही अधीन, अपराधीन – *अत्ताधीनो अपराधीनो भुजिस्सो, येनकामंगमो,* दी. नि. 1.64; म. नि. 1.348; **ख.** अधीन रहने वाला, अधीनस्थ, वशवर्ती – ... *अनुगामिकं अत्ताधीनं राजादीनं असाधारणं,* सु. नि. अट्ठ. 2.40.

अत्तानुगत त्रि., [आत्मानुगत], अपने से सम्बद्ध, अपने साथ जुड़ा हुआ, अपना – *तयिदं नामं तदा मय्हं अत्तानुगतमेवाति दस्सेन्तो ...,* पे. व. अट्ठ. 91, पाठा. अत्थानुगत.

अत्तानुदिट्ठि स्त्री., कर्म. स. [आत्मानुदृष्टि], 'नित्य, शाश्वत आत्मा है', इस प्रकार की मिथ्या अवधारणा, अपने अस्तित्व के स्वरूप के विषय में भ्रमात्मक ज्ञान, सत्काय-दृष्टि – *अत्तानुदिट्ठिं ऊहच्च,* सु. नि. 1125; *अत्तानुदिट्ठिं ऊहच्चाति सक्कायदिट्ठिं उद्धरित्वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.294; *अत्तानुदिट्ठिया पहानाय अनत्तसञ्ञा भावेतब्बा,* अ. नि. 2(2).146; *अत्तानुदिट्ठीति अत्तानं अनुगता वीसतिवत्थुका सक्कायदिट्ठि,* अ. नि. अट्ठ. 3.145; – **सुत्त** नपुं., स. नि. के दिट्ठि-वग्ग का सातवां सुत्त, स. नि. 2(1).170–171.

अत्तानुपेक्खी त्रि., अत्त + अनुपेक्खी, [आत्मानुपेक्षी], अपनी उपेक्षा न करने वाला, अपने आप पर नियन्त्रण रखने वाला, अपने कृत एवं अकृत को ठीक से जानने वाला – *अत्तानुपेक्खी च होति, नो परानुपेक्खी,* अ. नि. 2(1).124; *अत्तानुपेक्खीति अत्तनोव कताकतं जाननवसेन अत्तानं अनुपेक्खिता,* अ. नि. अट्ठ. 3.44.

अत्तानुयोग / अत्तानुयोगी 1.पु., [आत्मानुयोग], अपने प्रति लगाव; 2. त्रि., [आत्मानुयोगिन्], अपने पर मन की एकाग्रता रखने वाला, अपने पर मन को लगा देने वाला – *अत्थं हित्वा पियग्गाही, पिहेतत्तानुयोगिनं,* ध. प. 209; ... *पच्छा ये अत्तानुयोगं अनुयुत्ता सीलादीनि सम्पादेत्वा ... सक्कारं लभन्ति,* ध. प. अट्ठ. 2.160.

अत्तानुरक्खी त्रि., [आत्मानुरक्षिन्], अपनी रक्षा या देखभाल स्वयं करने वाला – *अत्तानुरक्खी भव मा अडय्हि,* जा. अट्ठ. 4.261.

अत्तानुवाद पु., तत्पु. स., [आत्मानुवाद], आत्म-निन्दा, आत्म-पश्चात्ताप; – **भय** नपुं., आत्मनिन्दा का भय, अपनी निन्दा होने का भय – *चत्तारिमानि, भिक्खवे, भयानि, ... अत्तानुवादभयं, परानुवादभयं दण्डभयं दुग्गतिभयं,* अ. नि. 1(2).139; *अत्तानुवादभयं, परानुवादभयं, दण्डभयं, दुग्गतिभयं इमानि चत्तारि भयानि,* विभ. 440; *अत्तानुवादभयादिकस्स ...,* जा. अट्ठ. 3.211.

अत्तायत्त त्रि., तत्पु. स., [आत्मायत्त], स्वयं अपने ऊपर निर्भर, अन्य पर निर्भर न रहने वाला – *अत्तसम्भवं अत्तनि सम्भूतं अत्तायत्तं इस्सरादिवसेन अपरायत्तं,* थेरगा. अट्ठ. 1.409.

अत्तायनता स्त्री., भाव. [अत्राणता], सुरक्षा अथवा सहायता न दे सकने वाली अवस्था – *अत्तायनताय चेव*

अलब्भनेय्यखेमताय च अताणतो, महानि॰ अट्ठ॰ 132, पाठा॰ अतायनता.

अत्ताळहिधातुसेन (विहार) पु॰, श्रीलङ्का में एक विहार का नाम - अट्टाळहिधातुसेनो च कस्सिपिट्ठिकपुब्बको, चू॰ वं॰ 38.49.

अत्तिच्छा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आत्मेच्छा], अपने लिये इच्छा अथवा अपनी इच्छा - *नामम्हात्तिच्छत्थो,* क॰ व्या॰ 439.

अत्तुक्कंसक त्रि॰, [आत्मोत्कर्षक], अपनी प्रशंसा करने वाला, अपने को बढ़-चढ़कर बताने वाला - *ये खो केचि समणा वा ब्राह्मणा वा अत्तुक्कंसका परवम्भी,* म॰ नि॰ 1.24; *अत्तप्पसंसकोति अत्तानं पसंसनसीलो अत्तुक्कंसको पोसो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.126.

अत्तुक्कंसना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आत्मोत्कर्षणा], अपनी प्रशंसा, अपने को बढ़-चढ़कर बताना - *अयञ्च मिच्छादिट्ठि ... अरियानं पच्चनीकता ... अत्तुक्कंसना,* परवम्भना, म॰ नि॰ 2.72.; *एवं अत्तुक्कंसनपरवम्भनादीहि उपक्किलिट्ठं वा हीनं,* विसुद्धि॰ 1.14; - **नकम्यता** स्त्री॰, आत्मप्रशंसा करने की इच्छा या कामना, अपने को सबसे ऊपर समझने का घमण्ड - *सद्धम्मबहुमानेन, नात्तुक्कंसनकम्यता,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 2; - **नमान** पु॰, आत्मप्रशंसा में विद्यमान, अहङ्कार - *दुविधेन मानो अत्तुक्कंसनमानो, परवम्भनमानो,* महानि॰ 56; *अत्तुक्कंसनमानोति अत्तानं उपरि ठपनमानो,* महानि॰ अट्ठ॰ 162.

अत्तुञ्ञा स्त्री॰, अत्त + उञ्ञा [आत्मावज्ञा], अपना तिरस्कार, अपना अवमूल्यन, अपने को हीन या तुच्छ मानना - *यो एवरूपो ओमानो ओमञ्ञना ... अत्तुञ्ञा ... अयं वुच्चति हीनोहमस्मीति मानो,* विभ॰ 406; *अत्तुञ्ञाति अत्तानं हीनं कत्वा जानना,* विभ॰ अट्ठ॰ 458.

अत्तुद्देस त्रि॰, ब॰ स॰, केवल अपने उद्देश्य को ध्यान में रखने वाला, केवल अपने ही लिये, (क्रि॰ वि॰), अपने काम में आने वाला - *अत्तुद्देसन्ति अत्तनो अत्थाय,* पारा॰ 229; *मय्हं एसा'ति एवं अत्ता उद्देसो अस्साति अत्तुद्देसा, तं अत्तुद्देसं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.139; - **सिक** त्रि॰, [आत्मोद्देश्यक], अपने को उद्देश्य में रखकर किया गया कार्य - *तेन ... समयेन ... भिक्खू ... कुटियो कारापेन्ति अस्सामिकायो, अत्तुद्देसिकायो,* पारा॰ 224; *अत्तुद्देसिकायोति अत्तानं उद्दिस्स अत्तनो अत्थाय आरद्धायोति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.134.

अत्तुपक्कम नपुं॰, कर्म॰ स॰, स्वयं अपने द्वारा अथवा अपने कारण उत्पन्न किया गया (दुःख) - *अत्तूपक्कमं दुक्खं,* महानि॰ 13; *यं पन ... अत्तनाव अत्तानं वधेन्तस्स अचेलकवतादिवसेन ... कोधवसेन अभुञ्जन्तस्स उब्बन्धन्तस्स च दुक्खं होति, इदं अत्तूपक्कमूलकं दुक्खं,* महानि॰ अट्ठ॰ 56.

अत्तुपलद्धि स्त्री॰, [आत्मोपलब्धि], परमार्थ-धर्म के रूप में आत्मा-विषयक विचार, यथार्थ-धर्म के रूप में आत्मा की उपलब्धि - *अत्तुपलद्धिं न पजहन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).324.

अत्तूपघात पु॰, अत्त + उपघात का तत्पु॰ [आत्मोपघात], स्वयं अपनी हानि, अपना अहित, अपना विनाश - *... मज्जपानसंयमेन अत्तूपघातञ्च विवज्जेत्वा ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 126.

अत्तूपनायिक त्रि॰, अपने चित्त में कुशल धर्मो को लाने वाला, कुशल धर्मों तक स्वयं को ले जाने वाला, आत्मा से सम्बन्धित, स्वयं से सम्बन्धित, आत्म-विषयक - *गाथा अत्तूपनायिका,* थेरगा॰ निदानगाथा 1; *इमा अत्तुपनायिका चतस्सो गाथा अभासि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.214; *उत्तरिमनुस्सधम्मं अत्तुपनायिकं,* पारा॰ 110; *अत्तुपनायिकन्ति ते वा कुसले धम्मे अत्तनि उपनेति अत्तानं वा तेसु कुसलेसु धम्मेसु उपनेति,* पारा॰ 112; - **टि॰** अपने में कुशल धर्मों का संग्रह करने वाला अथवा कुशल धर्मों को अपने में ले आने वाला ही यहां अत्तूपनायिक है। अपने में भावना करने योग्य अहिंसा, शील आदि कुशल धर्म भी अत्तूपनायिक हैं.

अत्तूपम त्रि॰, [आत्मोपम], अपने समान, अपने को उदाहरण बनाने वाला, आत्महित को ही सोचने वाला - *अत्तूपमा हि ते सत्ता, अत्ता हि परमो पियो,* अ॰ नि॰ 2(2).235.

अत्तेय्य पु॰ [आत्रेय], अत्रि के एक वंशज का वंशोपाधिगत नाम, क॰ व्या॰ 348, तुल॰ पाणिनि 4.1.122.

अत्थ(याचने) क [√अर्थ], याचना करना, मांगना - *अत्थ पत्थ याचनायं,* सद्द॰ 2.541; तुल॰ मो॰ धा॰ 497; धा॰ मं॰ 815.

अत्थ[1] अ॰, स्थानसूचक निपा॰ [अत्र], सन्निकटवर्ती स्थल एवं सन्दर्भ का सङ्केतक, यहां, इस विषय में, इस सन्दर्भ में, इस स्थान में, इस सिलसिले में - *इहेधात्र तु एत्थात्थ,* अभि॰ प॰ 1161, व्यु॰ के लिये द्रष्ट॰, क॰ व्या॰ 231, 274, यत्र-तत्र एत्थ तथा तत्थ के अप॰ के रूप में भी प्रयुक्त - एतदेव ख्वेत्थ, अ॰ नि॰ 3(1).223, द्रष्ट॰ अत्र के अन्त॰.

अत्थ[2] पु॰/नपुं॰, [अर्थ], अट्ठ॰ में विविध व्युत्पत्तियां, क॰ √अर से व्यु॰ - *अत्थो ... संखेपतो हेतुफलं, तञ्हि हेतुवसेन*

अरणीयं गन्तब्बं ... तस्मा अत्थोति वुच्चति, विभ॰ अट्ठ॰ 365; **ख.** √अस से व्यु॰ – *सत्थं, वत्थं, अत्थो*, क॰ व्या॰ 662; नपुं॰ में अतिसीमित प्रयोग – *किं किच्चं अत्थं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.476; **शा॰ अ. 1.क.** तात्पर्य, किसी शब्द का मूल अभिप्राय – *पयोजने सद्दाभिधेय्ये वुड्डियं धने वत्थुम्हि कारणे नासे हिते*, अभि॰ प॰ 785; *तत्थ अप्पमादोति पदं महन्तं अत्थं दीपेति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.130; **1.ख. पु.**, किसी विशिष्ट शब्द, वाक्य, कथन अथवा अनुच्छेद के यथार्थ अभिप्राय के स्पष्टीकरण हेतु प्रायः 'ति अत्थो', रूप में शब्द अथवा वाक्य के अन्त में प्रयुक्त, अट्ठ॰ में 'इति अत्थो' के अन्त॰ आए वचन में व्याख्येय अंश की सुस्पष्ट व्याख्या तथा नैरुक्तिक निर्वचन जैसे नए तथ्य रहते हैं – *यदिमे सक्याति यं इमे सक्या न ब्राह्मणे सक्करोन्ति ... तं तेसं ... सब्बं न युत्तं, नानुलोमन्ति अत्थो*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.207; *तत्थ कुसलूपदेसेति कुसलानं उपदेसे, पच्चेकबुद्धानं ओवदे'ति अत्थो*, जा॰ अट्ठ॰ 1.449; **1.ग.** पु., प्रयोजन, उद्देश्य, अभीप्सित, फल, लक्ष्य – *अत्थं समेच्चाति अत्थं ... पापुणित्वा*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.156; *तस्स ... अत्थो परिपूरतीति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.121; *अत्थो भतिया न विज्जति*, सु॰ नि॰ 25; को अत्थो सुपितेन वो, सु॰ नि॰ 333; **1.घ.** पु॰, कल्याण, लाभ, हित, समृद्धि, सर्वोत्तम, भलाई – *अत्थं जहिस्सति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.288; *यत्थ लभेथ अत्थं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.177; *अत्थं विन्दति पण्डितो*, जा॰ अट्ठ॰ 5.116; ... *अत्थं विन्दति, वुड्ढिं पापुणाति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.117–18; *अत्थाय वत मे बुद्धो*, सु॰ नि॰ 193; **1.ङ.** पु॰, बात, वस्तु, पदार्थ, प्रश्न में आया हुआ विषय, विवादविषय, अवसर, काम, व्यापार, कारण – *इममत्थं धनियो अभासथ*, सु॰ नि॰ 30; *पुच्छामि तं, कस्सप, एतमत्थं*, महाव॰ 41; *अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं*, महाव॰ 60; **1.च.** पु॰, धन, समृद्धि, सम्पदा, सुखद भौतिक वस्तु – *अत्था नु ते सम्पचुरा न सन्ति*, स॰ नि॰ 1(1).131; सद्द॰ 1.71; **1.छ.** पु॰, जटिल मामला, आवश्यक काम, उलझा हुआ प्रश्न – *यो च अत्थेसु जातेसु, सहायो होति सो सखा*, दी॰ नि॰ 3. 139; *अत्थेसु जातेसूति तथारूपेसु किच्चेसु समुप्पन्नेसु*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.118; *कस्स त्वं, महाराज, अट्ठं धारेय्यासि*, मि॰ प॰ 46, पाठा॰ अट्ठं; **2.ला॰ अ॰ क.** पु॰, व्यञ्जन अथवा विस्तृत व्याख्यान का विप॰, संक्षिप्त या सारगर्भित कथन – ... *अत्थं येव मे ब्रूहि, अत्थेनेव मे अत्थो, किं काहसि व्यञ्जनं बहुं*, महाव॰ 45; **2.ख.** पु॰, सत्य एवं यथार्थ से भरी बात या तथ्य – *मन्ता अत्थं च भासति*, सु॰ नि॰ 159; *तत्थ अप्पमादोति पदं महन्तं अत्थं दीपेति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.130; **2.ग.** पु॰, धम्म अर्थात् व्यावहारिक आचरण के विप॰ के रूप में धर्म का सैद्धान्तिक अर्थ या अभिप्राय – *अत्थन्ति भासितत्थं, धम्मन्ति पाळिधम्मं*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.61; *अत्थमञ्ञायाति पाळिअत्थमञ्ञाय, धम्ममञ्ञायाति पाळिमञ्ञाय*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.296.

अत्थ[3] पु॰, [अस्त, अस्यन्ते सूर्यकिरणा यत्र √अस् + क्त], **1. शा॰ अ.** पश्चिमी पर्वत अथवा वह स्थान, जहां सूर्य डूब जाता है या अस्त हो जाता है – *मंदारो परसेलोत्थो*, अभि॰ प॰ 606; *अत्थो ... पच्छिमपब्बते*, अभि॰ प॰ 785; **क.** अधिकतर ग्रन्थों में एति, गच्छति जैसे क्रि॰ रू॰ के साथ द्वि॰ वि॰ में 'अत्थं' रूप में ही प्रयुक्त – *पभङ्करो यत्थ च अत्थमेति*, अ॰ नि॰ 1(2).58; ... *अत्थङ्गते सूरिये ओतरन्तानं अन्धकारो अहोसि*, जा॰ अट्ठ॰ 3.383; **ख. ला॰ अ.** विनाश, उपशमन, निरोध, अभाव, नास्तित्त्व, निर्वाण – *अत्थो ... नासे हिते पच्छिमपब्बते*, अभि॰ प॰ 785; *अत्थं अदस्सने*, अभि॰ प॰ 1154; *अत्थं पलेतीति ... परिनिब्बायति*, चूळनि॰ 98; ... *अत्थङ्गतस्स अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बुतस्स* ..., चूळनि॰ 99; *अत्थं गच्छन्तीति ... अत्थं विनासं नत्थिभावं गच्छन्तीति अत्थो*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.188.

अत्थ[4] नपुं॰, [अस्त्र, √अस् + ष्ट्रन], फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार, अस्त्र, वह आयुध, जिसका प्रक्षेपण होता हो, केवल स॰ प॰ में इस्सत्थक आदि रूपों में प्राप्त तथा वहीं द्रष्ट॰.

अत्थ[5] [स्थ], क्रि॰ रू॰√अस्, वर्त॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ 'अत्थि' के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अत्थ[6] त्रि॰, [आर्थ], किसी वस्तु, पदार्थ अथवा धन से सम्बन्ध रखने वाला, अर्थ से सम्बन्धित, अर्थ पर आश्रित, धनी, समृद्ध, निपुण, दक्ष – *किं किच्चमत्थं इधमत्थि तुय्हं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.476.

अत्थकथा त्रि॰, ष॰ तत्पु॰ [अर्थकथा], अर्थयुक्त कथन, उद्देश्य युक्त बातचीत, व्याख्या – *अत्थन्तरो अत्थकथं निसामयि*, दी॰ नि॰ 3.118; *अत्थन्तरोति ... अत्थयुत्तं कथं निसामयि*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.104.

अत्थकर त्रि॰, [अर्थकर], हितकारक, उपयोगी, उद्देश्य प्राप्ति में सहायक, स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰.

अत्थकरण नपुं॰, अत्थ[2] + करण, हितसाधन, भलाई या सेवा करना – *यञ्चेतं सामिकस्स अत्थकरणं नाम*, जा॰ अट्ठ॰ 7. 182; – **णिक** त्रि॰, अर्थसिद्धि अथवा कार्य करने में निपुण,

किसी लक्ष्य की प्राप्ति में कुशल - *एको पुरिसो अत्थकरणिको* ..., मि. प. 246.

अत्थकवि पु., अत्थ² + कवि [अर्थकवि], नीतिपरक कविता का रचयिता कवि, किसी एक उद्देश्य से युक्त कविता को रचने वाला कवि - *चत्तारो मे, भिक्खवे, कवी, ... चिन्ताकवि, सुतकवि, अत्थकवि, पटिभानकवि ...,* अ. नि. 1(2).264; *यो एकं अत्थं निस्साय करोति, अयं अत्थकवि नाम,* अ. नि. अट्ठ. 2.387.

अत्थकाम त्रि., ब. स. [अर्थकाम], हित, कल्याण एवं योगक्षेम की कामना करने वाला, शुभचिन्तक, हितेच्छी - *अत्थकामस्स ... गिलानुपट्ठाकस्स ... नाधिकत्ता होति,* महाव. 394; *बहुजनस्स अत्थकामो अहोसि हितकामो फासुकामो ...,* दी. नि. 3.123; ... *कोचिदेव पुरिसो उप्पज्जेय्य अत्थकामो हितकामो योगक्खेमकामो,* म. नि. 1.167; *सदेवकस्स लोकस्स अत्थमेव कामेतीति अत्थकामो,* उदा. अट्ठ. 166, तुल. अत्तकाम, अत्तत्थकाम, अत्तत्थिय; - **ता** स्त्री. भाव. [आत्मकामता], हितकामता, हित करने की मनोदशा - *अत्थसञ्हितेनाति अत्थकामताय हितकामताय उपेतेन,* दी. नि. अट्ठ. 3.193; - **वग्ग** पु., जातक संग्रह के एक खण्ड-विशेष का नाम, जा. अट्ठ. 1.230-253.

अत्थकामिनी स्त्री., [अर्थकामिनी], हित करने की इच्छा रखने वाली, हितैषिणी, भला चाहने वाली - *देवता अत्थकामिनी,* सु. नि. 992.

अत्थकारण नपुं., [अर्थकारण], लाभ, प्राप्ति या स्वार्थ के कारण - *अत्थवसन्ति अत्थानिसंसं अत्थकारणं,* स. नि. अट्ठ. 1.235; *सेवति अत्थकारणा,* दी. नि. 3.141.

अत्थकाले सप्त. वि., प्रतिरू. निपा. [अर्थकाले], आवश्यकता के समय में, जरूरत आ पड़ने पर, किसी प्रयोजन-विशेष के उत्पन्न होने पर - *अत्थकालेति कस्सचिदेव अत्थस्स कारणस्स उप्पन्नकाले,* जा. अट्ठ. 4.69.

अत्थकिच्च नपुं., कर्म. स. [अर्थकृत्य], सार्थक कार्य, उद्देश्यपूर्ण काम, कर्त्तव्य कर्म - *अत्थेनाति अत्थकिच्चेन,* वि. व. अट्ठ. 121; तुल., *किं किच्चमत्थं इधमत्थि तुम्हं,* जा. अट्ठ. 3.476.

अत्थकुसल त्रि., सप्त. तत्पु., [अर्थकुशल], **क.** अपने कल्याण-साधन में प्रवीण, दक्ष, कुशल - *करणीयं अत्थकुसलेन,* सु. नि. 143; *यो ... अत्तानं सम्मा पयोजेति ... पातिमोक्खसंवरं ... इन्द्रियसंवरं ... पूरेति ... यो वा ... पातिमोक्खसंवरं ... सम्पजञ्ञञ्च सोधेति, अयम्पि अत्थकुसलो ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.158; ... *सेट्ठिनो पुत्तो जातिया सत्तवस्सो पञ्ञवा अत्थकुसलो,* जा. अट्ठ. 1.350; **ख.** त्रिपिटक के वचनों का अर्थ करने में कुशल, व्याख्या में प्रवीण - *भिक्खु अत्थकुसलो च होति, धम्मकुसलो, च ब्यञ्जनकुसलो च, निरुत्तिकुसलो च पुब्बापरकुसलो च,* अ. नि. 2(1).186; *अयं वुच्चति अत्थकुसलो धम्मकुसलो,* नेत्ति. 19.

अत्थक्खायी त्रि., अत्थ² + अक्खायी, [अर्थाख्यायी], हित एवं कल्याण को बतलाने वाला अच्छा मित्र, हितकारक बात कहने वाला साथी, कल्याणमित्र - ... *अत्थक्खायी मित्तो सुहदो वेदितब्बो,* दी. नि. 3.142; *अत्थक्खायी च यो मित्तो,* दी. नि. 3.143; *अत्थक्खायी च या नारी,* अप. 2.265.

अत्थगत / अत्थंगत त्रि., [अस्तङ्गत], नष्ट हो चुका, अदृश्य हो चुका, डूब चुका (सूर्य आदि) - *सूरियोपि अत्थङ्गतो, अन्धकारो जातो,* जा. अट्ठ. 1.284; ... *अत्थङ्गते सूरियेति* ..., पाचि. 79; पे. व. अट्ठ. 47; ... *विधूपिता अत्थगता न सन्ति,* सु. नि. 476, 479; *अत्थगताति अत्थङ्गता,* सु. नि. अट्ठ. 2.123; *राजधीतापि अत्थङ्गते, सुरिये,* जा. अट्ठ. 5.87; **ख. ला. अ.** अदृश्य हो चुका, समाप्त हो चुका, विनष्ट - *अत्थङ्गतो सो न पमाणमेति,* इतिवु. 43; ... *इमम्हि लोके विनीता होन्ति पटिविनीता सन्ता ... अत्थङ्गता,* विभ. 219; - **त्त** नपुं., भाव. अत्थंगत से व्यु. [अस्तङ्गतत्व], विलुप्त, अदृश्य अथवा विनष्ट हो जाने की अवस्था - ... *तेसं निरुद्धत्ता अत्थङ्गतत्ता ...,* खु. पा. अट्ठ. 148; - **सिक्खापद** नपुं., कर्म. स., 22वें पाचित्तिय का शीर्षक, पाचि. 78-80; - **टि.** सूर्यास्त के उपरान्त भी भिक्षुणियों को शिक्षापद प्रदान करने वाले भिक्षु को लगने वाले एक पाचित्तिय अपराध को अत्थङ्गतसिक्खापद कहा गया है.

अत्थगवेसक त्रि., अत्थ² + गवेसक [अर्थगवेषक], अर्थ या तात्पर्य की खोज करने वाला, किसी शब्द, कथन अथवा वचन के अर्थ को खोजने वाला - *तुम्हे पन नो अत्थगवेसका व्यञ्जन-गवेसका गच्छथ,* म. नि. अट्ठ. 3.442(रो.).

अत्थगहण नपुं., अत्थ² + गहण [अर्थग्रहण], अर्थ की समझ या ज्ञान - विञ्ञूनं अत्थगहणे कोसल्लूप्पादनत्थं ..., सद्द. 2.318.

अत्थङ्ग पु., अत्थ + ग [अस्तङ्गम], समाप्ति, निरोध, विनाश - *उप्पादे दारुणे दिस्वा, सासनत्थङ्गसूचके,* अप. 2.121.

अत्थङ्गम / अत्थङ्गमन पु., [अस्तगमन], **क. शा. अ.** डूब जाना, अदृश्य हो जाना, नष्ट हो जाना - *ओक्कमनन्ति अत्थङ्गमनं,* दी. नि. अट्ठ. 1.84; *ते याव सूरियत्थङ्गमना*

गन्त्वा, जा॰ अट्ठ॰ 1.109; ... *सोपि याव सूरियत्थङ्गमना जालमेव मोचेन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.206; **ख. ला. अ.** निरोध, उपशम, विनाश - ... *दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमाय,* अ॰ नि॰ 2(2).32; *यो आपधातुया ... निरोधो वूपसमो अत्थङ्गमो,* स॰ नि॰ 1(2).159.

अत्थंगमित त्रि॰, अत्थ[3] + गमित [अस्तङ्गमित], अस्त कर दिया गया, क्षीण कर दिया गया, डूब चुका - *सूरियो अत्थङ्गतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.368; *सुरियो अत्थङ्गतो, चन्दो उग्गतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.471.

अत्थचर त्रि॰, अत्थ + चर [अर्थचर], परिचारक, उपयोगी, पूर्णतया अनुरक्त, हितकर, सेवारत - *महाजनस्सत्थचरोध पण्डितो,* महाव॰ 484; *नरुत्तमं अत्थचरं नरानं,* स॰ नि॰ 1(1).27; - **क** त्रि॰, उपरिवत् - *एवरूपेन किर, भो, पुरिसो अत्थचरकेन ...,* दी॰ नि॰ 1.93; *कोसलरञ्ञो अत्थचरकं अमच्चं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.175.

अत्थचरिया स्त्री॰, अत्थ[2] + चरिया [अर्थचर्या], हितकारी व्यवहार, मित्रतापूर्ण व्यवहार, सहायतापूर्ण दृष्टिकोण, मित्रता भरी मनोवृत्ति, हितसाधक काम - *दानेन ... अत्थचरियाय समानत्तताय,* दी॰ नि॰ 3.114; *पुत्तो पितु चरति अत्थचरियं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.262.

अत्थचारिका अत्थचरक का स्त्री॰, [अर्थचारिका], सहायिका, सेविका, कल्याणकारिणी स्त्री - ... *अत्तनो अत्थचारिकं धातिं आह,* जा॰ अट्ठ॰ 4.34; *अत्थचारिकाय दासिया अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.214

अत्थचिन्तक त्रि॰, [अर्थचिन्तक], उचित और अनुचित पर विचार करने वाला, हित-चिन्तक, पण्डित, निपुण, बुद्धिमान - ... *निपुणा चत्थचिन्तका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.369; *धीरा निपका निपुणा अत्थचिन्तका,* विभ॰ 499.

अत्थचिन्तावसानुग त्रि॰, हितचिन्तन में लगा हुआ - *अत्थचिन्तावसानुगा,* थेरगा॰ 926; *अत्थचिन्ता - वसानुगाति हितचिन्तावसानुगा हितचिन्तावसिका,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.298.

अत्थच्चय पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थात्यय], धन का विनाश, संपत्ति की हानि - *अत्थच्चये मा अहु सम्पमूळ्हो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.137; *अत्थच्चयेति ... इस्सरिये विगते,* तदे॰.

अत्थच्छाया स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थछाया], परमार्थधर्म की छाया, किसी वास्तविक वस्तु की छाया, अवास्तविक वस्तु - ... *परमत्थतो अविज्जमानापि अत्थच्छायाकारेन चित्तुप्पादानमारम्मणभूता ...,* अभि॰ ध॰ स॰ टी॰ 60; *अत्थच्छायाकारेनाति परमत्थधम्मस्स छायाकारेन पटिभागाकारेन,* अभि॰ ध॰ वि॰ 221.

अत्थच्छेक त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थछेक], अर्थकुशल, लाभकारक अथवा हितकारक, शुभ के निर्णय में चतुर, बुद्धिमान - *अत्थकुसलेन अत्थछेकेनाति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 191.

अत्थजात[1] त्रि॰, अत्थ[2] + जात ब॰ स॰, वह, जिसे कुछ काम अथवा आवश्यकता आ गई हो, जरूरतमन्द, अर्थी, दीन - *किं मित्तं अत्थजातस्स,* स॰ नि॰ 1(1).42; *अत्थजातस्साति उप्पन्नकिच्चस्स,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.84; *सब्बे सत्ता अत्थजाता,* स॰ नि॰ 1(1).261; *अत्थजाताति किच्चजाता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.301.

अत्थजात[2] नपुं॰, [अर्थजात], विशेष प्रकार का धन, उपकरण अथवा वस्तुएं, अर्थ से परिपूर्ण - *केन वा अत्थजातेन, अत्तानं परिमोचयि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.294.

अत्थजापिक त्रि॰, अत्थ[2] + जापिक, वस्तुओं अथवा कार्यों पर आधिपत्य रखने वाला, संपत्ति जीतने वाला, धन-संपत्ति उत्पन्न करने वाला, फल विपाक आदि अर्थों को सक्रिय करने वाला - *कतमा अत्थजापिका पञ्ञा,* विभ॰ 369; *अत्तनो अत्तनो भूमिपरियापन्नं विपाकसङ्खातं अत्थं जापेति जनेति पवत्तेतीति अत्थजापिका,* विभ॰ अट्ठ॰ 386.

अत्थजाल पु॰, ब्रह्मजालसुत्त (दी॰नि॰1) के अनेक अन्य नामों में से एक - *अत्थजालन्तिपि ... धम्मजालन्तिपि ... ब्रह्मजालं ... दिट्ठिजालन्तिपि ...,* दी॰ नि॰ 1.41; *यस्मा इमस्मिं धम्मपरियाये इधत्थोपि परत्थोपि विभत्तो, तस्मातिह त्वं इमं धम्मपरियायं अत्थजाल'न्तिपि नं धारेहि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.109.

अत्थजोतक त्रि॰, [अर्थद्योतक], अर्थ को प्रकाशित करने वाला, वस्तु को उचित स्थान पर विन्यस्त करने वाला - *अत्थजोतको धम्मो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.225; विलो॰ भासितत्थो.

अत्थज्झोगाहन नपुं॰, अत्थ + अज्झोगाहन, ष॰ तत्पु॰ स॰ [अर्थाध्यवगाहन], अर्थ सम्बन्धी गम्भीर अनुचिन्तन - *इमस्स सुत्तस्स अत्थज्झोगाहणं दस्सेतुं ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 127.

अत्थञ्ञू त्रि॰, अत्थ + √ञा से व्यु॰ [अर्थज्ञ], अर्थ का ज्ञाता, ठीक-ठीक अर्थ को जानने वाला - *अत्थञ्ञू च अत्तञ्ञू च,* दी॰ नि॰ 3.199; *तस्स तस्सेव भासितस्स अत्थं जानातीति अत्थञ्ञू,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.202; *अत्थञ्ञू च होति, धम्मञ्ञू च, मत्तञ्ञू च, कालञ्ञू च, परिसञ्ञू च,* अ॰ नि॰ 2(1).140.

अत्थट/अत्थत त्रि॰, [आस्तृत, आङ् + √स्तृ + क्त], अच्छी तरह फैलाया हुआ, - *अत्थतं होति कथिनं,*

महाव॰ 331; *जति एवत्थतञ्चेव*, महाव॰ 353; *उपरिअत्थतेन अजिनचम्मेन ...*, जा॰ अट्ठ॰ 5.403; *सन्थतेति ... कप्पियत्थरणेहि अत्थते*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; – **कथिन** त्रि॰ ब॰ स॰, कठिन-चीवर नामक विधान पूरा कर चुका व्यक्ति, – *अत्थतकथिनानं वो, भिक्खवे, इमानि पञ्च कप्पिस्सन्ति*, महाव॰ 331, द्रष्ट॰ कठिन(कथिन) के अन्त॰.

अत्थतो प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अर्थतः], वास्तविक अभिप्राय की दृष्टि से, आशय के अनुसार अर्थ की दृष्टि से – ... *आयस्मन्तानं अत्थतो चेव नानं ब्यञ्जनतो च नानं*, म॰ नि॰ 3.25; *इमम्पि ... कारणं अत्थतो सम्पटिच्छ ...*, मि॰ प॰ 118.

अत्थत्तिक पु॰, समा॰ द्व॰, स॰ [अर्थत्रिक], अर्थ त्रितय, तिहरा अर्थ – *यो इमं अत्थतिकं सुविभत्तं*, सद्द॰ 1.313; – **विभाग** पु॰ सद्द॰ के 14वें अध्याय का नाम – *विञ्ञूनं कोसल्लत्थाय कते सद्दनीतिप्पकरणे अत्थत्तिविभागो*, सद्द॰ 1.314.

अत्थत्थ पु॰, अत्थ² + अत्थ² [अर्थार्थ], **क**. उपयोगी अथवा हितकारक वस्तु – *अत्थत्थमेवानुविचिन्तयन्तो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.183; **ख**. **अत्थत्थाय** रूप में, लाभ अथवा हित के निमित्त – *या तत्थ तस्स परिसपरियेसना, सा अत्थत्थाय*, मि॰ प॰ 246; – **पटिपुच्छा / परिपुच्छा** स्त्री॰, [अर्थार्थप्रतिपृच्छा], स्वयं के हित अथवा कल्याण के विषय में प्रश्न – *अत्थत्थपरिपुच्छासम्पदा, तित्थवाससम्पदा, ... इमाहि सत्तहि सम्पदाहि समन्नागतो ...*, जा॰ अट्ठ॰ 4.86; पाठा॰ अत्तत्थ॰.

अत्थत्थिकभाव पु॰, [अर्थार्थीभाव], अर्थार्थी होने की दशा, हित-कल्याण को चाहने की अवस्था अथवा मनोवृत्ति – *अत्थेन अत्थिको तस्स अत्थत्थिकभावस्स अनुरूपं ...*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.120.

अत्थदस्स / अत्थदस त्रि॰, अत्थ² + दस्स, [अर्थदर्श], हितकारक बात को देखने अथवा समझने वाला, अपने लिए कल्याणकारक अथवा शुभ को खोजने वाला – *ये पण्डिता अत्थदसा भवन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.150; ... *अत्थदसाति अत्थदस्सनसमत्था*, तदे॰; *अत्थदसोति हितानुपस्सी*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.94, समाना॰ अत्थदस्सी.

अत्थदस्सिमा त्रि॰, अत्थ + दस्सी + मन्तु, सुस्पष्ट दृष्टि वाला, प्रत्युत्पन्नमति – *तं तत्थ गतिमा धितिमा, मतिमा अत्थदस्सिमा*, जा॰ अट्ठ॰ 7.180, तुल॰ अत्थदस्सी.

अत्थदस्सी[1] त्रि॰, अत्थदस्स से व्यु॰ [अर्थदर्शी], उपरिवत् – *ततो च मघवा सक्को अत्थदस्सी*, जा॰ अट्ठ॰ 5.135; *पण्डिता अत्थदस्सिनी*, जा॰ अट्ठ॰ 6.300; *अत्थदस्सिनन्ति अनागतं अत्थं पस्सन्तानं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.284; विलो॰ अनत्थदस्सी.

अत्थदस्सी[2] पु॰, व्य॰ सं॰ **क**. चौदहवें बुद्ध का नाम – *तत्थेव मण्डकप्पम्हि, अत्थदस्सी महायसो*, बु॰ वं॰ 16; *एकस्मिं कप्पे पियदस्सी, अत्थदस्सी, धम्मदस्सी'ति तयो बुद्धा निब्बत्तिंसु*, जा॰ अट्ठ॰ 1.48; *अत्थदस्सी तु भगवा, सयम्भू अपराजितो*, अप॰ 1.85, 97, 171; **ख**. वाराणसी के एक प्राचीन राजा का नाम – *रामो, बिलारथो नाम चित्तदस्सी अत्थदस्सी*, दी॰ वं॰ 3.41; **ग**. श्रीलङ्का के एक स्थविर का नाम – *थेरेन अत्थदस्सिना*, जा॰ अट्ठ॰ 1.2.

अत्थदीपक त्रि॰, [अर्थदीपक], अर्थ को प्रकाशित करने वाला, अर्थ को स्पष्ट करने वाला – *निरुद्धन्ति अत्थदीपकापदवतीति*, सद्द॰ 1.178.

अत्थद्वय नपुं॰ समा॰ द्व॰ स॰ [अर्थद्वय], भिन्न-भिन्न प्रकार के दो अर्थ – *इध पन ... अत्थद्वये युज्जति*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 82.

अत्थद्ध त्रि॰, थद्ध का निषे॰ [अस्तब्ध], घमण्ड-रहित, अहंभाव से मुक्त, हठ न करने वाला – *अत्थद्धो होति अनतिमानी*, दी॰ नि॰ 3.34; म॰ नि॰ 1.137; *अत्थद्धोति थद्धमच्छरियविरहितो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.181, पाठा॰ अथद्ध; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, अहंकार रहित चित्तवृत्ति, निरहंकारता – *अवित्थनताति ... अथद्धता*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 194; *अथद्धताय अनतईसो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.143, पाठा॰ अथद्धता.

अत्थधम्म पु॰, द्व॰ स॰ [अर्थधर्म], अर्थ और धर्म का प्रतिसंवित् ज्ञान – अत्थधम्मस्स कोविदो, जा॰ अट्ठ॰ 3.299; पाठा॰ अत्थं धम्मस्स; – **निरुत्ति** स्त्री॰, समा॰ द्व॰ स॰, [अर्थधर्मनिरुक्ति], प्रथम तीन प्रतिसंवित् ज्ञान – *अत्थधम्मनिरुत्तीसु, पटिभाने तथेव च*, अप॰ 2.212; – **टि॰** अर्हत्व की अवस्था की प्राप्ति होने पर प्राप्त होने वाले चार प्रकार के विशिष्ट ज्ञान प्रतिसंवित् (पटिसंभिदा अथवा पटिसंविहित) हैं। ये विशिष्ट आन्तरिक ज्ञान, **अत्थपटिसंभिदा** या अर्थों का सुस्पष्ट ज्ञान, **धम्म-पटि॰** या हेतुओं, प्रत्ययों तथा हेतु-प्रत्यय-सम्बन्धों का ज्ञान, **निरुत्तिपटि॰** या निर्वचनात्मक व्याख्याओं का ज्ञान तथा **पटिभानपटि॰** या वह बुद्धि जिसके द्वारा प्रथम तीन प्रतिसंवित् ज्ञानों की प्राप्ति का अनुभव होता है, द्रष्ट॰ अ॰ नि॰ 1(2).185; अ॰ नि॰ 2(1).105; पटि॰ म॰ 81; 109; – **पटिसंवेदी** त्रि॰, [अर्थधर्मप्रतिसंवेदी], अर्थ एवं धर्म की गम्भीर समझ रखने वाला – *अत्थधम्मप्पटिसंवेदी हुत्वा ...*, उदा॰ अट्ठ॰ 253; – **विदू** त्रि॰, [अर्थधर्मवित्], अर्थ एवं धर्म को जानने वाला – *अत्थधम्मविदूति पाळिअत्थञ्चेव, पाळिधम्मञ्च जानन्तो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.105; – **म्मानुसत्थि / म्मानुसिट्ठि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, [अर्थधर्मानुशिष्टि], अर्थ एवं

धर्म की शिक्षा - *अत्थधम्मानुसिट्ठिया,* जा॰ अट्ठ॰ 5.52; - **म्मानुसासक** त्रि॰, अर्थ एवं धर्म की शिक्षा देने वाला - *अत्थधम्मानुसासको अमच्चो अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.175; *बोधिसत्तो ... तस्स अत्थधम्मानुसासको अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.81; जा॰ अट्ठ॰ 3.354.

अत्थनय पु॰, अत्थ² + नय ष॰ तत्पु॰ स॰ [अर्थनय], अर्थ स्पष्ट करने की पद्धति - *एतस्स अत्थनयो वुत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).31.

अत्थना स्त्री॰, √अत्थ + अन + आ [अर्थना], अनुरोध, याचना, प्रार्थना, भिक्षा की याचना - *भिक्खा तु याचनात्थना,* अभि॰ प॰ 759.

अत्थनानता स्त्री॰, [अर्थनानात्व], अर्थों में अन्तर, अर्थों की विविधता - *विनापि अत्थनानतं,* सद्द॰ 2.340.

अत्थनिगमन नपुं॰, [अर्थनिगमन], तर्कवाक्य का उपसंहारात्मक वचन - *एत्थ ... पदयोजनाय अत्थनिगमनं करिस्साम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).59.

अत्थनिप्फत्ति स्त्री॰, [अर्थनिष्पत्ति], उद्देश्यपूर्ति, फलप्राप्ति, परिणाम - *किञ्चि अत्थनिप्फत्तिं अपस्सन्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.51(रो॰).

अत्थनिस्सित त्रि॰, [अर्थनिश्रित], अर्थ या हित से भरा हुआ, लाभप्रद, हितकारक, उपयोगी - *अत्थनिस्सितं कथेन्तेनपि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.325; *अत्थसञ्हितन्ति अत्थनिस्सितं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.278.

अत्थन्तर¹ त्रि॰, **क.** अर्थ के अनुकूल रहने वाला, अर्थ के अन्दर रहने वाला, अर्थ से सङ्गति रखने वाला - *अत्थञ्च यो जानाति भासितस्स, अत्थञ्च अत्वान तथा करोति, अत्थन्तरो नाम स होति पण्डितो,* थेरगा॰ 374; **ख.** हित करने में लगा हुआ या परहितानुरागी चित्त वाला - *अत्थो परहितं अन्तरे चित्ते यस्स सो, अत्थन्तरो अत्थकथं निसामयि,* दी॰ नि॰ 3.118; द्रष्ट॰ दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.104.

अत्थन्तर² नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अर्थान्तर], दूसरा अर्थ, अर्थ में भिन्नता - *तत्थ अत्थन्तरं अत्थि,* मि॰ प॰ 157; *नं अत्थन्तरविञ्ञापनत्थञ्च ...,* सद्द॰ 1.38, 266.

अत्थपकासिका स्त्री॰ तत्पु॰ स॰ [अर्थप्रकाशिका], अर्थ को स्पष्ट करने वाली - *अत्थसन्दस्सनीति अत्थप्पकासिका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.246.

अत्थपच्चत्थिक पु॰, द्व॰ स॰ [अर्थप्रत्यर्थिक], अर्थी और प्रत्यर्थी, न्यायाधिकरण में विचारणीय विवाद में वादी और प्रतिवादी - *उभो अत्थपच्चत्थिका सम्मुखीभूता होन्ति,* चूळव॰ 204; ... *उभो अत्थपच्चत्थिके सञ्ञापेतुं,* अ॰ नि॰ 3(2).59; *अत्थपच्चत्थिकानं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.114, पाठा॰ अत्तपच्चत्तिकानं.

अत्थपञ्ञत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थप्रज्ञप्ति], अर्थविषयिणी अवधारणा, अर्थविषयक विचार - ... *सम्मुतिसच्चभूता उपादापञ्ञत्तिसङ्खाता अत्थपञ्ञत्ति वुत्ता,* अभि॰ ध॰ वि॰ 220.

अत्थपटिवेध पु॰, तत्पु॰ स॰, [अर्थप्रतिवेध], अर्थ का गम्भीर ज्ञान, अर्थ की तह तक जाकर प्राप्त किया हुआ ज्ञान, बौद्ध-परम्परा में उल्लिखित 3 प्रकार के ज्ञानों में सबसे गम्भीर स्तर वाला ज्ञान, धर्म की धर्मता का साक्षात्कार कराने वाला गम्भीर ज्ञान - ... *सतिपुब्बङ्गमाय पञ्ञाय अत्थपटिवेधसमत्थता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).8.

अत्थपटिसंवेदी त्रि॰, [अर्थप्रतिसंवेदी], अर्थ का ज्ञाता, धर्म के गम्भीर एवं सूक्ष्म अर्थ का ज्ञाता, बुद्ध-वचनों के अर्थों का ज्ञाता - *तस्मिं धम्मे अत्थपटिसंवेदी च होति धम्मपटिसंवेदी,* दी॰ नि॰ 3.191; *अत्थपटिसंवेदिनोति पाळिअत्थं जानन्तस्स,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.196; *अत्थप्पटिसंवेदीति अट्ठकथं ञाणेन पटिसंवेदी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.134; - **दिता** स्त्री॰, पूर्व से व्यु॰ भाव॰ [अर्थप्रतिसंवेदित्व], अर्थ के गम्भीर आन्तरिक ज्ञान की प्राप्ति की अवस्था - *यस्मा अत्थपटिसंवेदितादीनं गुणानं पदट्ठानं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 113.

अत्थपटिसम्भिदा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थप्रति - संवित्], अर्हत् के चार प्रकार के प्रतिसंवित् आन्तरिक ज्ञानों में से प्रथम, धर्म के पांच अर्थों के विषय में सुस्पष्ट प्रभेदगत ज्ञान - ... *अत्थपटिसम्भिदा सच्छिकता ...,* अ॰ नि॰ 1(2).185; ... *अत्थपटिसम्भिदाति पञ्चसु अत्थेसु पभेदगतं ञाणं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.348; *अत्थपटिसम्भिदाति अत्थे पटिसम्भिदा, अत्थप्पभेदस्स ... पभेदगतं ञाणन्ति अत्थो,* विभ॰ अट्ठ॰ 365; - **पत्त** त्रि॰, प्रथम प्रतिसंवित्-ज्ञान अर्थात् अर्थ-प्रतिसंवित् ज्ञान को प्राप्त किया हुआ व्यक्ति - *अत्थपटिसम्भिदापत्तो होति ...,* अ॰ नि॰ 2(1).105.

अत्थपद नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थपद], त्रिपिटक में आया हुआ हितकारी वचन, कल्याणमय शब्द, गम्भीर अर्थ वाला बुद्धवचन - *एकं अत्थपदं सेय्यो,* ध॰ प॰ 100; ... *अयमायस्मा न चेव गम्भीरं अत्थपदं उदाहरति ...,* अ॰ नि॰ 1(2).218; *यस्स पदस्स अत्थो दुविञ्ञेय्यो तं गण्ठिपदं, यस्स अधिप्पायो सुविञ्ञेय्यो तं अत्थपदं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.79.

अत्थपरिक्खा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थपरीक्षा], अर्थ के सम्बन्ध में छानबीन या जांच-पड़ताल - *गहणेन विना अत्थपरिक्खा नोपजायति,* सद्धम्मो॰ 532.

अत्थपरिग्गहन नपुं., तत्पु. स. [अर्थपरिग्रहण], हितकारक, उपयोगी अथवा शुभ का पूर्णतया ग्रहण अथवा ज्ञान, अर्थ (तात्पर्य) पर अच्छी पकड़, अर्थ का पूर्ण ज्ञान – ... *चित्ते उप्पन्ने चित्तवसेनेव ... अत्थपरिग्गहणं सात्थकसम्पजञ्ञं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).272.

अत्थपरिच्छेद पु., ष. तत्पु. स., [अर्थपरिच्छेद], अर्थ की परिभाषा, अर्थ का लक्षण, अर्थ का विनिश्चय – ... वा अत्थपरिच्छेदो वा ..., सद्द. 2.602.

अत्थपरिदीपना स्त्री., [अर्थपरिदीपन], अर्थ का पूर्ण प्रकाशन, अर्थ की व्याख्या – *गहेत्वाति इमस्स पन पदस्स अयं अत्थपरिदीपना,* विसुद्धि. 1.112, पाठा. अत्थदीपना.

अत्थपुच्छन नपुं., अर्थ के विषय में प्रश्न, वास्तविक महत्त्व के विषय में प्रश्न – *अत्थपुच्छनं पदक्खिणकम्मं,* थेरगा. 36.

अत्थपुरेक्खार त्रि., अर्थ-व्याख्यान को उत्तम रूप से निष्पादित करने मे कुशल, अर्थ-व्याख्याताओं में अग्रगण्य, अट्ठ. का स्वाध्याय करने वाला – *अनापत्ति अत्थपुरेक्खारस्स,* ..., पारा. 192; *अत्थपुरेक्खारस्साति अनिमित्तातिआदीनं पदानं अत्थं कथेन्तस्स, अट्ठकथं वा सज्झायं करोन्तस्स,* पारा. अट्ठ. 2.123.

अत्थप्पभेद पु., तत्पु. स. [अर्थप्रभेद], पदार्थों का वर्गीकरण, अर्थों या तात्पर्यों में विभिन्नता – **पुप्फ** नपुं., विविध अर्थ-रूपी पुष्प – ... *नानप्पकारेहि अत्थप्पभेदपुप्फेहि अतिविय,* खु. पा. अट्ठ. 152; – **पुच्छा** स्त्री., अर्थों में विभिन्नता-विषयक प्रश्न – *कतीति अत्थप्पभेदपुच्छा,* सु. नि. अट्ठ. 1.128.

अत्थबद्ध त्रि., [अर्थबद्ध], किसी बात को अथवा विषय को समझने के लिए अत्यन्त आतुर, किसी बात अथवा प्रयोजन विशेष के साथ जुड़ा हुआ – *सब्बे तयि अत्थबद्धा भवन्ति,* सु. नि. 384; *अत्थबद्धाति अपि नु खो इमं पञ्हं ब्याकरेय्य, इमं कङ्खं छिन्देय्याति एवं अत्थबद्धा भवन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.93.

अत्थमञ्जक त्रि., [अर्थभञ्जक], कल्याण अथवा हित को नष्ट करने वाला, हानि पहुंचाने वाला – *इधलोकपरलोकत्थभञ्जकं अकल्याणमित्तसंसग्गं,* खु. पा. अट्ठ. 100; *परेसं अत्थभञ्जकं मुसावादञ्च भासति,* ध. प. अट्ठ. 2.206.

अत्थमञ्जनक उपरिवत् – *अत्थभञ्जनकट्ठेन अञ्ञेति किलेसा वुच्चन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.94.

अत्थमूत त्रि., [अर्थभूत], हितकारक बात, लाभदायक या कल्याणमय धर्म – *अत्थत्थमेवाति अत्थभूतमेव अत्थं,* जा. अट्ठ. 7.183.

अत्थमि त्रि., [अस्तमित], डूबने की स्थिति वाला, लगभग अस्त होने वाला, (सूर्य) – *परिनिब्बायि सम्बुद्धो, उळुराजाव अत्थमि,* बु. वं. 6.31; *अत्थमीति अत्थङ्गतो, केचि अत्थं गतो ति पठन्ति,* बु. वं. अट्ठ. 182.

अत्थयुत्त त्रि., तत्पु. स., [अर्थयुक्त], उपयुक्त, महत्त्वपूर्ण, सार्थक – *अत्थं अब्भन्तरं कत्वा अत्थयुत्तं कथं निसामयि,* दी. नि. अट्ठ. 3.104; *सहितं मेति मय्हं वचनं सहितं सिलिट्ठं, अत्थयुत्तं कारणयुत्तन्ति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.169.

अत्थयुत्ति स्त्री., [अर्थयुक्ति], किसी भी बात की तार्किक सङ्गति, कथन की युक्ति-युक्तता – *दिस्सतीति विजानेय्य, सद्धिमेवत्थयुत्तिया,* सद्द. 1.44; – **पुच्छा** स्त्री., [अर्थयुक्ति पृच्छा], तर्क-संगत और सार्थक प्रश्न, युक्तिपूर्ण कथन के विषय में प्रश्न, तार्किकता के विषय में प्रश्न – *तत्थ कथं सूति सब्बत्थेव अत्थयुत्तिपुच्छा होति,* सु. नि. अट्ठ. 1.199.

अत्थ-योजना स्त्री., ष. तत्पु. स., [अर्थयोजना], अर्थ-सङ्गति, व्याख्यान, अर्थ की सङ्गति का प्रदर्शन – *तत्रायं भूतमत्थं कत्वा सङ्खेपतो अत्थयोजना,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).220; ... *गाथाद्वयस्स वत्तविपरियायेन अत्थयोजना वेदितब्बा,* पे. व. अट्ठ. 122; पालि ग्रन्थों के कतिपय व्याख्यानों के शीर्षक के रूप में भी प्रयुक्त.

अत्थरक पु., [आस्तरक], गलीचा, बिछावन, चादर – *पटलिकाति घनपुप्फो उण्णामयत्थरको,* अ. नि. अट्ठ. 2.167; ... *चित्तत्थरकादीहि नानावण्णेहि अत्थरकेहि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.13, पाठा. अत्थरणेहि.

अत्थरण नपुं./पु., [आस्तरण], **क.** आच्छादन, फैलाव, आस्तरण, बिछावन, ओढ़ने वाला चादर – *चित्तकन्ति वानविचित्तं उण्णामयत्थरणं, पटिकाति उण्णामयो सेतत्थरणो,* दी. नि. अट्ठ. 1.78; **ख.** गलीचा – *रतनपतिसिब्बितमत्थरणं कमा,* अभि. प. 315; पाठा. अत्थरणक; – **पापुरण / पावुरण** [आस्तरण-प्रावरण], नपुं., द्वन्द्व स., गलीचा एवं चादर – ... *केचि अत्थरणपावुरणं ... देन्ति,* मि. प. 259; ... *मञ्चं वा पीठं वा अत्थरणपापुरणं वा परिभुञ्जित्वा ...,* ध. स. अट्ठ. 119; *एकत्थरणपावुरणापि तुवट्टेन्ति,* चूळव. 22.

अत्थरति आ + √थर से व्यु., वर्त., प्र. पु., ए. व., [आस्तृणाति, आङ् + स्तृज् आच्छादने क्र्यादि], बिछाता है, फैलाता है, ढकता है, आच्छादित करता है – *सङ्घो कथिनं अत्थरति, गणो कथिनं अत्थरति,* परि. 333; – **न्ति** ब. व. – *सेतुं अत्थरन्ति,* जा. अट्ठ. 1.198; – **त्थत** भू. क. कृ., फैलाया हुआ, बिछाया हुआ – ... *अत्थतं होति कथिनं ...,* महाव.

331; - **रापेसि** प्रेर॰, अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सब्बथा मण्डयित्वा तं अत्थरापेसि तत्थ सो,* म॰ वं॰ 3.20; - **रस्सु** अनु॰ म॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ - ... *अत्थरस्सु पलासानि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.159; – **रितुं** निमि॰ कृ॰ – *कथिनं अत्थरितुं* ..., महाव॰ 331; – **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *चङ्कोटके कप्पासपिचुं अत्थरित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.105; – **रितब्बं** सं॰ कृ॰ – ... *कठिनं अत्थरितब्बं* ..., महाव॰ 331; – **रीयति** कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, फैलाया जाता है, बिछाया जाता है – *सक्कस्स देवरञ्ञो आसनं अत्थरीयति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.230(रो॰).

अत्थरस पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थरस], मूल आशय, अर्थ का रस, अर्थ का वास्तविक अथवा मूल आशय, अर्थ की मधुरता अथवा प्रायोगिक स्वरूप – *भागी वा भगवा अत्थरसस्स धम्मरसस्स विमुत्तिरसस्स,* महानि॰ 104; *अत्थरसस्साति हेतुफलसम्पत्तिसङ्खातस्स अत्थरसस्स,* महानि॰ अट्ठ॰ 212; ... *बुद्धवचनं उग्गण्हित्वा अत्थरसं विदित्वा वत्तब्बं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰ प॰) 1(2).258; *पच्चेकबुद्धा ... अत्थरसमेव पटिविज्झन्ति, न धम्मरसं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.43.

अत्थलाभ पु॰, ष॰ तत्पु॰ स॰ [अर्थलाभ], धन-संपत्ति की प्राप्ति – *अहासो अत्थलाभेसु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.411; *अत्थलाभेसूति महन्ते इस्सरिये उप्पन्ने* ..., तदे॰.

अत्थवड्ढि स्त्री॰, [अर्थवृद्धि], धन-सम्पत्ति की वृद्धि, कल्याण अथवा हित की वृद्धि - *अहं भोगवड्ढिं, अत्थवड्ढिं, धम्मवड्ढिं नाम ते कथेस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.202.

अत्थवन्तु त्रि॰, [अर्थवत्], **क.** सार्थक, महत्त्वपूर्ण, उपयोगी, हितसाधक, लाभप्रद, तर्कसंगत – *यथा, महाराज, पितुवचनं पुत्तानं अत्थवन्तं होति ... एवमेव ... तथागतस्स वाचा अत्थवती,* मि॰ प॰ 168; *भासेमत्थवतिं वाचं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.369; **ख**. बुद्धिमान, अर्थ का ज्ञाता – *सो अत्थवा सो धम्मट्ठो,* थेरगा॰ 740; 746.

अत्थवण्णना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थवर्णना], ऐसी व्याख्या, जिसमें प्रत्येक पद के अर्थ को स्पष्ट किया गया हो – *जातकस्स अत्थवण्णना दूरेनिदानं,* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.3; ... *पच्छा अत्थवण्णनं करिस्सामि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 2; ... *मङ्गलसुत्तस्स अत्थवण्णनाक्कमो अनुप्पत्तो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 72; – **टि॰** यह पदवण्णना के पश्चात रहती है तथा अधिपेतत्थवण्णना से भी इसका स्वरूप भिन्न रहता है.

अत्थववत्थान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थव्यवस्थान], पदार्थ-विशेष का निर्धारण, अर्थ का विनिश्चय – *तरसा अत्थववत्थानतो अत्थपटिसम्भिदा अधिगता होति* ..., पटि॰म॰ 360; *अत्थववत्थानतोति यथावुत्तस्स पञ्चविधस्स अत्थस्स ववत्थापनवसेन,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.230.

अत्थवस नपुं, अर्थ, तात्पर्य अथवा अभिप्राय का कारण, विशिष्ट कारण, विशेष अभिप्राय, तार्किक आधार – *कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अत्थवसं पटिच्च* ..., चूळव॰ 342; *दस अत्थवसे पटिच्च,* पारा॰ 22; *इमे खो, भिक्खवे, तयो अत्थवसे सम्पस्समानेन,* अ॰ नि॰ 1(1).176.

अत्थवसवग्ग पु॰, परि॰ के एक वर्ग का नाम, परि॰ 411-412.

अत्थवसिक त्रि॰, [अर्थवशिक], सही एवं यथार्थ अभिप्राय पर निर्भर रहने वाला, तर्कसङ्गत दृष्टिकोण वाला, कारण के आधार पर विचारने वाला – ... *कुलपुत्ता उपेन्ति अत्थवसिका, अत्थवसं पटिच्च,* इतिवु॰ 64; ... *अत्थवसिका कारणवसिका हुत्वा,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 256.

अत्थवसी त्रि॰, [अर्थवशी], किसी विशेष लक्ष्य अथवा उद्देश्य के प्रति समर्पित, विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में लगा हुआ, श्रमण-धर्म की प्राप्ति में पूरी तरह रत – *एको अत्थवसी खिप्पं पविसिस्सामि काननं,* थेरगा॰ 539; *अत्थवसीति इध अत्थोति समणधम्मो अधिप्पेतो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.149, पाठा॰ अत्तवसी.

अत्थवसपकरणं नपुं॰, परि॰ के एक भाग का नाम, परि॰ 274-75.

अत्थवाचक त्रि॰, [अर्थवाचक], अर्थ को कहने वाला, अर्थ स्पष्ट करने वाला – *अत्थवाचक-निपातो* ..., सद्द॰ 1.43, 159.

अत्थवादी त्रि॰, [अर्थवादी], हितकारक एवं कल्याणकारक बात कहने वाला, ऐहलौकिक एवं पारलौकिक कल्याण प्राप्त करने के लिए सदा सार्थक, मङ्गलकारी एवं गम्भीर बातें बोलने वाला, (सदैव कालवादी, भूतवादी एवं धम्मवादी शब्दों के साथ-साथ प्रयुक्त) – *दिट्ठधम्मिकसम्परायिकत्थसन्निस्सितमेव कत्वा वदतीति अत्थवादी,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.71; महानि॰ अट्ठ॰ 261. स्त्री॰ अत्थवादिनी.

अत्थविकप्प पु॰, कर्म॰/तत्पु॰ स॰ [अर्थविकल्प], वैकल्पिक अर्थ, अर्थ-सम्बन्धी विकल्प – *दुतिये अत्थविकप्पे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.459; ... *इमस्मिं अत्थविकप्पे* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.141.

अत्थविचारणा स्त्री॰, ष॰ तत्पु॰ स॰ [अर्थविचारणा], अर्थ के विषय में विचार, अर्थ-विषयक विवेचन, नौ अङ्गों वाले बुद्धशासन के अर्थ का विचार – *सासनस्स परियेट्ठीति सासनस्स अत्थपरियेसना, ... सासनस्स अत्थविचारणाति अत्थो,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 143.

अत्थविञ्ञापन नपुं., तत्पु. स. [अर्थविज्ञापन], अभिप्राय अथवा मन की बात का प्रकाशन, तथ्य का प्रकाशन - *निज्जीवालपनं अप्पं अत्थविञ्ञापने सिया,* सद्द. 1.172; - **नी** स्त्री., अर्थ को स्पष्ट करने वाली या सूचित करने वाली - *विञ्ञापनिन्ति अत्थविञ्ञापनिं,* ध. प. अट्ठ. 2.388; सु. नि. अट्ठ. 2.171.

अत्थविनिच्छय पु., तत्पु. स. [अर्थविनिश्चय], विवाद-विषय का निर्णय, तात्पर्य का निश्चयात्मक अवधारण - ... *तस्स अत्थविनिच्छयस्स ओकासाकरणेन* ..., उदा. अट्ठ. 127; - **ञ्ञू** त्रि., [अर्थविनिश्चयज्ञ], अर्थ-निर्धारण का ज्ञाता, किसी विषय पर निर्णय करने में कुशल - *अत्थविनिच्छयञ्ञूति तस्स तस्स अत्थस्स विनिच्छयकुसलो,* जा. अट्ठ. 3.178; *न वेधती अत्थविनिच्छयञ्ञू* अ. नि. 2(1).52; *अत्थविनिच्छ - यञ्ञूति कारणत्थविनिच्छये कुसलो,* अ. नि. अट्ठ. 3.24.

अत्थविभाग पु., तत्पु. स. [अर्थविभाग], पदार्थों या अर्थों का वर्गीकरण - *तेसं अयं अत्थविभागो,* विभ. अट्ठ. 172.

अत्थविभावना स्त्री., तत्पु. स. [अर्थविभावना], अर्थ-सम्बन्धी विस्तृत व्याख्यान - *तत्रायं अत्थविभावना,* उदा. अट्ठ. 317.

अत्थविभावी त्रि., अर्थ-सम्बन्धी विस्तृत व्याख्यान करने वाला, अर्थों की विभावना करने वाला(चित्त) - *अत्थविभावी ति, अत्थस्स विभावनसीलं चित्तं* ..., सद्द. 1.86; 233.

अत्थविवरण नपुं., तत्पु. स. [अर्थविवरण], अर्थ का विवेचन, व्याख्यान - *साधारणे विहञ्ञन्तीति इदं सब्बं परवसं दुक्खं'न्ति इमस्स पदस्स अत्थविवरणं,* उदा. अट्ठ. 128.

अत्थविसेस पु., तत्पु. स. [अर्थविशेष], अर्थ में अन्तर अथवा विशिष्टता - यत्थ ... लब्भति अत्थविसेसो च ..., सद्द. 1.38.

अत्थव्यञ्जन नपुं., द्व. स., [अत्थ + व्यञ्जन], अर्थ एवं व्यञ्जन - *अत्थव्यञ्जनतो अपहरन्ति,* महानि. 121; - **ग्गहण** नपुं., अर्थों एवं व्यञ्जनों की उपलब्धि - ... *नानत्थब्यञ्जनग्गहणं होति* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).9; - **परिपुण्ण** त्रि., अर्थों एवं व्यञ्जनों से परिपूर्ण - *अत्थब्यञ्जनपरिपुण्णञ्हि धम्मं आदरेन अस्सुणन्तो महता हिता परिबाहिरो होतीति* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).9; - **पारिपूरी** स्त्री., अर्थों एवं व्यञ्जनों के मामले में परिपूर्णता - *तदुभयेनपि अत्थब्यञ्जनपारिपूरिं दीपेन्तो सवने आदरं जनेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).9; खु. पा. अट्ठ. 84; - **सम्पन्न** त्रि., अर्थों एवं व्यञ्जनों से भरपूर - ... *अत्थब्यञ्जनसम्पन्नस्स धम्मकोसस्स* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).8; - **नापगत** त्रि., [अर्थव्यञ्जनापगत], अर्थ एवं व्यञ्जनों से रहित - ... *अत्थब्यञ्जनापगतं भणितन्ति अत्थव्यञ्जनतो अपहरन्ति* ..., महानि. 121; - **टि.** संक्षिप्त और सारगर्भित बात को अर्थ तथा किसी बात के विस्तृत रूप से प्रस्तुत करने की पद्धति को व्यञ्जन कहा गया है.

अत्थव्याख्यान नपुं., ष. तत्पु. स. [अर्थव्याख्यान], पालि के एक ग्रन्थ का नाम, जो चूलबुद्धथेर द्वारा लिखित माना जाता है - *अत्थव्याख्यानं चूळबुद्धथेरो,* सा. वं. 32.

अत्थब्यापत्ति स्त्री., ष. तत्पु. स. [अर्थब्यापत्ति], धन-संपत्ति का क्षय, धनहानि, - *अत्थब्यापत्तीति यदा पन अत्तनो अत्थब्यापत्ति यसविनासो होति, तदा अब्यथो अकिलमनं* ..., जा. अट्ठ. 3.411.

अत्थसंवड्ढनकथा स्त्री., कर्म. स. [अर्थसंवर्धन - कथा], अर्थचर्या, हितकारक अथवा लाभदायक कथन - *अत्थचरियायाति अत्थसंवड्ढनकथाय,* दी. नि. अट्ठ. 3.99.

अत्थसंहित त्रि., [अर्थसंहित], कल्याण से परिपूर्ण, हितकारक, उपयोगी, मङ्गल-कारक, कारण-प्रकाशक - *यं समणो बहुं भासति, उपेतं अत्थसंहितं,* सु. नि. 727; *अत्थसंहितं, अत्थुपेतं धम्मुपेतञ्च हितेन च संहितं,* सु. नि. अट्ठ. 2.197; *अत्थसंहितं तथागता पुच्छन्ति, नो अनत्थसंहितं,* महाव. 66; *अत्थसंहितानि, भिक्खवे, धम्मचेतियानि आदिब्रह्मचरियकानि,* म. नि. 2.333.

अत्थसद्दचिन्ता स्त्री., तत्पु. स. [शब्दार्थचिन्ता], शब्द एवं अर्थ के बीच पाए जाने वाले सम्बन्ध पर विचार - *अत्थसद्दचिन्तायं पन एवं उपलक्खेतब्बं,* सद्द. 1.34.

अत्थसन्दस्सक पु., एक स्थविर का नाम - *इत्थं सुदं आयस्मा अत्थसन्दस्सको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.171.

अत्थसन्दस्सन नपुं., परमार्थ का संदर्शन या स्पष्ट रूप से ज्ञान - *कथं नानाधम्मप्पकासनता पञ्ञा अत्थसन्दस्सने ञाणं,* पटि. म. 96.

अत्थसन्दस्सनी स्त्री., [अर्थसन्दर्शिनी], अर्थ अथवा तात्पर्य को दरसाने वाली या सुस्पष्ट कराने वाली, अर्थप्रकाशिका - *एसा ते उपमा राज, अत्थसन्दस्सनी कता,* जा. अट्ठ. 5.245.

अत्थसन्धि पु., अर्थ के सम्बन्ध में सन्धि, पहले कही हुई बात को बाद में कही गई बात के साथ जोड़ने वाली चार सन्धियों में से एक - *सो चायं पुब्बापरो सन्धि चतुब्बिधो* -

अत्थसन्धि ब्यञ्जनसन्धि देसनासन्धि निद्देससन्धीति, नेत्ति॰ 33; तुल॰ महाव॰ अट्ठ॰ 127.

अत्थसमाग त्रि॰, मूल आशय की दृष्टि से समान, समान तात्पर्य वाला - *इमं पटिगाथं अभासि ब्यञ्जनसभागं नो अत्थसभागं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.25; विलो॰ ब्यञ्जनसभाग.

अत्थसम्पत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थसम्पत्ति], अर्थ की सम्पूर्णता, सार्थकता, अर्थ-समृद्धि - *अत्थसम्पत्तिया सात्थं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.151.

अत्थसम्बन्ध पु॰, [अर्थसम्बन्ध], अर्थज्ञान में सहायक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध, अर्थज्ञान में उपयोगी शब्दों का उपन्यसन-क्रम, अर्थों की सुसंगत योजना - *एवंमत्थसम्बन्धो वेदितब्बो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.366.

अत्थसम्भव पु॰, [अर्थसंभव], किसी एक निश्चित अर्थ की सम्भावना - *द्वीसु तिकेसु अत्थसम्भवतो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 198.

अत्थसल्लापिका स्त्री॰, [अर्थसंलापिका], अर्थ को स्पष्ट कर देने वाली - *तत्थायं अत्थसल्लापिका उपमा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).325 (पृथ्वी एवं आकाश के संवाद के रूप में प्रयुक्त एक उपमा के लिए प्रयुक्त शब्द).

अत्थसाधक त्रि॰, [अर्थसाधक], अपने हित को सिद्ध करने वाला, कल्याणकारी, लाभदायक - ... *तं अत्थसाधकं निब्बानप्पटिसंयुत्तं ... एकम्पि पदं सेय्योयेवाति ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.364; ... *उभयलोकत्थसाधकञ्च कल्याणमित्तसंसग्गं पसंसन्तेन भगवता ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 100; विलो॰ अत्थभञ्जक.

अत्थसाधनता स्त्री॰, अत्थसाधन का भाव॰ [अर्थसाधनता], अर्थोपार्जन या धनार्जन का साधन होना - ... *आयूहितो अत्थसाधनताय अपचितिं न करोति,* मि॰ प॰ 175.

अत्थसालिनी (बर्मी पाण्डुलिपि में सर्वत्र अट्ठसालिनी), स्त्री॰, आचार्य बुद्धघोष द्वारा रचित धम्मसङ्गणि-नामक एक अभिधम्म-प्रकरण की अट्ठ॰, सम्भवतः श्रीलंका जाने के पूर्व में ही विरचित - *धम्मसङ्गणिया कासि कच्चं सो अट्ठसालिनिं,* म॰ वं॰ 37.225; *बुद्धघोसो च आयस्मतो रेवतस्स सन्तिके निसीदन्तो आणोदयं नाम गन्धं अत्थसालिनिञ्च गन्धं अकासि,* सा॰ वं॰ 29.

अत्थसिद्धि स्त्री॰, ष॰ तत्पु॰ स॰ [अर्थसिद्धि], अपने उद्देश्य, लक्ष्य अथवा अभीप्सित की प्राप्ति, इच्छापूर्ति, सफलता - *धुवत्थसिद्धिं पप्पोन्ति,* अप॰ 2.5; ... *मयं अनन्तरायेन अत्थसिद्धिं पत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.170; *अत्थसिद्धि उपगता,* मि॰ प॰ 131. - **कर** त्रि॰, अर्थयुक्त, प्रयोजन की सिद्धि करने वाला, उद्देश्य-युक्त - ... *पटिच्चसद्दो च पनायं समाने कत्तरि पुब्बकाले पयुज्जमानो अत्थसिद्धिकरो होति,* विसुद्धि॰ 2. 148-149.

अत्थसो अ॰ [अर्थशः], विभिन्न उद्देश्यों, अभीप्सितों अथवा तात्पर्यों की दृष्टि से, अर्थों के अनुसार - *विसयग्गाहो च उपनिस्सयमत्थसोति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 315.

अत्थस्सद्वारजातक नपुं॰, एक जातक का शीर्षक अथवा नाम, जा॰ अट्ठ॰ 1.350-351.

अत्थहेतु अ॰ [अर्थहेतु], लाभ अथवा स्वार्थ के कारण - *बहुज्जनो भजति अत्थहेतु,* जा॰ अट्ठ॰ 6.186; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.201.

अत्थाचल पु॰, अत्थ + अचल, कर्म॰ स॰ [अस्ताचल], वह पर्वत, जहां सूर्य अस्त होता है - *रणदस्सनभीतो व लीनो अत्थचले रवि,* चू॰ वं॰ 72.113.

अत्थातिसययोग पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थातिशययोग], अतिरिक्त अथवा विशिष्ट अर्थ के साथ शब्द का सम्बन्ध या प्रयोग - *अत्थातिसययोगे एवं उपलक्खेतब्बं,* सद्द॰ 1.45.

अत्थाधिगम पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थाधिगम], अर्थ की पकड़, समझ या ज्ञान - *अत्थपरिग्गाहकानं अत्थाधिगमो अकिच्छो होति,* सद्द॰ 1.37.

अत्थानतिवत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थानतिवृत्ति], विचाराधीन अथवा प्रसङ्ग-प्राप्त विषय का अनुल्लंघन, अर्थ का अनतिक्रमण - *अत्थानतिवत्तियं यथासत्ति,* मो॰ व्या॰ 3.3, तुल॰ काशिका 2.1.6.

अत्थानुसिट्ठि स्त्री॰, [अर्थानुशिष्टि], अर्थ-सम्बन्धी अनुशासन या अर्थों का नियमसंगत निर्धारण - *अत्थानुसिट्ठीसु परिग्गहेसु च,* दी॰ नि॰ 3.118; *अत्थानुसिट्ठीसु परिग्गहेसु चाति ये अत्थानुसासनेसु परिग्गहा अत्थानत्थं परिग्गाहकानि ञाणानि, तेसूति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.104.

अत्थानत्थ पु॰, द्व॰ स॰ [अर्थानर्थ], लाभ एवं हानि, हित एवं अहित - ... *दानेसु गुणदोसं वुद्धिहानिं अत्थानत्थं ञत्वाति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.113; *सुभासितदुब्भासितं अत्थानत्थं हिताहितं जानितुं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.205; *किं नु मे एत्थ गतेन अत्थो अत्थि नत्थी'ति अत्थानत्थं परिग्गण्हित्वा अत्थपरिग्गहणं ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).264; - **कुसलता** स्त्री॰, [अर्थानर्थकुशलता], हित एवं अहित, वृद्धि एवं हानि के ज्ञान के विषय में कुशलता - ... *पण्डितता अत्थानत्थकुसलताति एवमादीनि फलानि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 24; - **परिग्गण्हन** नपुं॰, [अर्थानर्थपरिग्रहण], लाभ एवं हानि या हित-अहित का यथार्थ ज्ञान - ... *एवं अत्थानत्थपरिग्गहणं*

वेदितब्बं, म॰ नि॰ अट्ठ॰ 1(1).274; – **विचक्खण** त्रि॰, [अर्थानर्थविचक्षण], अर्थ एवं अनर्थ के निर्णय में अतिकुशल – *भूमिया थिरभावत्थं अत्थानत्थविचक्खणो,* म॰ वं॰ 29.4.

अत्थानिसंस पु॰, ष॰ तत्पु॰ स॰ [अर्थानृशंस्य], वस्तु या पदार्थ के अच्छे गुण, वस्तु या पदार्थ में विद्यमान, प्रशंसनीय तत्त्व – *अत्थवसन्ति अत्थानिसंसं अत्थकारणं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.235.

अत्थानुसारी त्रि॰, [अर्थानुसारी], अर्थ या यथार्थ सत्य का अनुसरण करने वाला, अर्थ की प्राप्ति में लगा हुआ – *सद्धम्मं सुणमानस्स यो हि अत्थानुसारिनो,* सद्धम्मो॰ 528.

अत्थानुसासन नपुं॰ अत्थ² + अनुसासन, [अर्थानुशासन], अर्थों या प्रशासनिक विषयों का प्रबंधन – ... *ये अत्थानुसासनेसु परिग्गहा ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.104; – **सन्थागारसाला** स्त्री॰, प्रशासकीय भवन, सभागार – *सन्थागारेति राजकुलानं अत्थानुसासनसन्था – गारसालायं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).169, तुल॰ अत्थानुसिट्ठि.

अत्थापगत त्रि॰, तृ॰ तत्पु॰ स॰ [अर्थापगत], अर्थ से हटा हुआ, अर्थ से रहित, निरर्थक – *अत्थापगतं भणितन्ति अत्थतो अपहरन्ति ...,* महानि॰ 121; *अत्थापगतन्ति अत्थतो अपगतं, अत्थो नत्थीति,* महानि॰ अट्ठ॰ 226.

अत्थापत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थापत्ति], स्त्री॰ सङ्केतित अर्थ, तात्पर्य के आधार पर गृहीत अर्थ, भगवान् बुद्ध के जीवनकाल में तथा उनके परिनिर्वाण के पश्चात् भिक्षुओं के अपराध – *अत्थतो आपादेत्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.169; *अत्थापत्ति दिवा आपज्जति, नो रत्तिं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.224; परि॰ 242.

अत्थापाय पु॰, अत्थ + अपाय तत्पु॰ स॰ [अर्थापाय], कल्याण, हित अथवा लाभ की क्षति – *अत्थापाये जहन्ति नं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.342; *अत्थापाये वड्डिया अपगमने परिहीनकाले,* तदे॰.

अत्थापेति/अत्थापयति [अर्थायति], अत्थ का ना॰ धा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, हितकारक या कल्याणकारक धर्म के विषय में शिक्षा देता है – *अत्थं आचिक्खति, अत्थापयति,* मो॰ व्या॰ 5.13, द्रष्ट॰ सच्चादीहापि.

अत्थाभिसमय पु॰, अत्थ + अभिसमय, [अर्थाभिसमय], हित का लाभ, इस लोक और परलोक दोनों लोकों से सम्बन्धित हितों का लाभ या साक्षात्कार – *अत्थाभिसमया धीरो, पण्डितोति पवुच्चती'ति,* इतिवु॰ 14; *अत्थाभिसमया'ति दुविधस्सपि अत्थस्स हितस्स पटिलाभा,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 71, द्रष्ट॰ अभिसमय.

अत्थार पु॰, [आस्तार, आ + √स्तृ + घञ्], बिछावन, गलीचा, दरी – *न अञ्ञत्र पुग्गलस्स अत्थारा अत्थतं होति कथिनं,* महाव॰ 332, तुल॰ अत्थरण; – **क** त्रि॰, अत्थार + क, [आस्तारक], बिछाने वाला, फैलाने वाला – *द्विन्नं पुग्गलानं अत्थतं होति कथिनं अत्थारकस्स च अनुमोदकस्स च,* परि॰ 326; – **मूलक** त्रि॰, [आस्तारमूलक], संघ द्वारा अनुमोदित एवं प्रशंसित कथिन चीवर – *आनिसंसो महा होति, यस्स अत्थारमूलको,* विन॰ वि॰ 2243; *अत्थारमूलको ... ति यो च ... अनुञ्ञातो तस्मिं विहारे उप्पज्जनकचीवरवत्थानिसंसो,* विन॰ वि॰ टी॰ 2.69.

अत्थावह त्रि॰, [अर्थावह], कल्याणकारी, लाभ, हित या भलाई को लाने वाला, उपयोगी – ... *यत्थ अत्थावहं सुतन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.191.

अत्थि क्रि॰ रू॰, √अस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [अस्ति], **शा॰ अ॰** अस्तित्व में रहता है, पाया जाता है, संभव होता है आदि, **ला॰ अ॰** विविध प्रकार के अर्थ; **क.** प्रायः **ष॰** वि॰ के साथ स्वामित्व-सङ्केतक – *इदं, ब्राह्मण, मे अत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.45; **ख.** निमि॰ कृ॰ के साथ – *गन्तुं न हि तीरमपत्थि,* सु॰ नि॰ 677; **ग.** प्र॰ वि॰ के संज्ञापद के साथ संयोजक क्रि॰ प॰ के रूप में भी – **असि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *बालोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.132; **घ.** तप्रत्ययान्त अथवा तब्ब-प्रत्ययान्त के साथ सहायक-क्रिया के रूप में – *वञ्चितो मेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.132; – **सिया** सप्त॰/प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *पेसकारसाल'न्ति वत्तब्बं सिया,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.99; **ङ.** यदा-कदा उपवाक्यों में सुनिश्चित अर्थवाली अन्य क्रिया के साथ वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त – *अत्थि, भिक्खवे, भिक्खु उम्मत्तको सरतिपि उपोसथं नपि सरति,* महाव॰ 154; – **अस्मि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु अस्मीति अधिगतं,* स॰ नि॰ 2(1).117; *रूपं अस्मीति वदेसि,* तदे॰; *अस्मी'ति, भिक्खु, मञ्ञितमेतं,* म॰ नि॰ 3.295; – **असि** वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *युवा च दहरो चासि,* सु॰ नि॰ 422; *त्वञ्चासि आगन्तुको,* चूळव॰ 285; *केनासि एवं जलितानुभावा ...,* वि॰ व॰ 3; ... *सेतकेतु चण्डालेनासि पादन्तरेन गमितो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.204; – **अस्म/अस्मु/अस्मा** वर्त॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ते'मे न वञ्झा मयमस्म वञ्झा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.177; *तेविज्जा मयमस्मुभो,* सु॰ नि॰ 599; *आरोहपरिणाहेन, तुल्यास्मा वयसा उभो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.338; – **अत्थ** वर्त॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *भातिक, तरुणायेव तावत्थ,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.5; *खेमं पत्तत्थ भिक्खवो,* म॰ नि॰ 1.292; – **सन्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सन्ति सत्ता*

अप्परजक्खजातिका ..., महाव॰ 6; *सन्तेत्थ तयो कुलपुत्ता अत्तकामरूपा विहरन्ति,* म॰ नि॰ 1.269; – **अत्थु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भवमत्थु भवन्तं जोतिपालं ...,* दी॰ नि॰ 2.170; *धि तवत्थु जरे जम्मे,* थेरीगा॰ 106; – **सिया**[1] **/ अस्स** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *वुड्ढापचायी अनुसूयको सिया,* सु॰ नि॰ 327; *जितञ्च रक्खे अनिवेसनो सिया,* ध॰ प॰ 40; *सिया चस्स काये बलमत्ता ...,* दी॰ नि॰ 1.64; *नो चस्स नो च मे सिया,* उदा॰ 161; ख॰ – **सिया**[2] विधि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, – *एवं मच्चुतरो सिया,* सु॰ नि॰ 1125; – **अस्ससि** विधि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *याय त्वं अरहा वा अस्ससि ...,* महाव॰ 37; – **सियं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सदारपसुतो सियं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.351; – **सियुं / सियंसु / अस्सु** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, – *आपा चे सब्बदा सियुं,* उदा॰ 162; ... *सियंसु द्वे भिक्खू अभिधम्मे नानावादा,* म॰ नि॰ 3.25; *ममेवातिवसा अस्सु,* ध॰ प॰ 74; *छदनं अस्सु सत्थुनो,* अप॰ 1.96; – **अस्सथ** विधि॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *एवं पस्सन्ता एतरहि वा पच्चुप्पन्नमद्धानं ... कथंकथी अस्सथ,* म॰ नि॰ 1.336; – **अस्साम** विधि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *मयम्पि एतिस्सा कथाय भागिनो अस्साम सवनाय,* म॰ नि॰ 1.321; – **आसि** अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यं नेसं पकतं आसि,* सु॰ नि॰ 288; ... *इतिह आस, इतिह आसाति ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.200; *मित्तो ममासी विसज्जामहं तं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.209; – **आसिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तत्रपासिं एवंनामो एवंगोत्तो ...,* म॰ नि॰ 1.28; – **आसुं / आसिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *इसयो पुब्बका आसुं ...,* सु॰ नि॰ 286; *पितरो च मे आसुं पितामहा च,* जा॰ अट्ठ॰ 4.31; *अट्ठट्ठासिंसु खत्तिया,* अप॰ 1.283; – **आसि / आसित्थ** अद्य॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अज्जतनीया पन आसि ... आसित्थ ... आदीनि भवन्ति,* सद्द॰ 2.451; – **आसिम्ह** अद्य॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तेन कालेन आसिम्ह सब्बा ब्राह्मणसम्भवा,* अप॰ 2.264; पाठा॰ आहुम्ह, अहेसुम्ह; – **सन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पहु सन्तो न भरति,* सु॰ नि॰ 98; – **सन्ता** ब॰ व॰ – ... *इमे धम्मा नाना सन्ता ...,* मि॰ प॰ 37; – **सती / सन्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मे सती ब्राह्मण वुत्तिरेसा,* सु॰ नि॰ 81; *को नु हासो किमानन्दो, निच्चं पज्जलिते सति,* ध॰ प॰ 146; *एवं सन्ते ... मातातिपि न भविस्सति,* मि॰ प॰ 39; – **सन्तेसु** ब॰ व॰ – *एवं खन्धेसु सन्तेसु, ...,* स॰ नि॰ 1(1).160; – **समानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ – *एकच्चो पुग्गलो साङ्गणोव समानो ...,* म॰ नि॰ 1.31; ... *इतिवुत्तो समानो रथं न सम्पादेति,* मि॰ प॰ 24; स॰ पू॰ प॰ में प्रयोग; – **क्खण** पु॰, अत्थि + क्खण [अस्तिक्षण], भङ्गक्षण से पूर्ववर्ती तथा उत्पत्तिक्षण से परवर्ती धर्म की विद्यमानता का विशेष क्षण – ... *अत्थिक्खणेयेव तं ते धम्मे अनुपालेति ...,* अभि॰ अव॰ 21; – **खीर** त्रि॰, [अस्तिक्षीर], दूध रखने वाला – अत्थिखीरा ब्राह्मणी'ति आदिसु ..., सद्द॰ 1.299, तुल॰ पाणिनि 2.2.24 पर वार्तिक 21; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, [अस्तिता], विद्यमानता, अस्तिभाव, वास्तविकता – *द्वयनिस्सितो ... लोको, ... अत्थितञ्चेव नत्थितञ्च,* स॰ नि॰ 1(2).17; ... *एतस्मिं कुलावके कस्सचि अत्थितं वा नत्थितं वा जानाहीति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.104; ... *तस्मिंयेव समये वुट्ठानकपञ्ञाय अत्थिताय,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 416; विलो॰ नत्थिता; – **धम्म** पु॰ / नपुं॰ [अस्तिधर्म], वस्तुतः अस्तित्व में रहने वाला धर्म (निर्वाण), परमार्थ-धर्म निर्वाण – *अत्थिधम्मं ओपम्मेहि आदीपनीय'न्ति,* मि॰ प॰ 252; ... *यंकिञ्चि नेय्यं नाम अत्थिधम्म'न्ति – आदीसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).241; – **पच्चय** पु॰, अत्थि + पच्चय, वास्तविक कारणता, दो वास्तविक धर्मों के बीच एक का दूसरे के प्रति कारण होना, चौबीस प्रकार के प्रत्ययों के बीच 21वां प्रत्यय – *कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जति अत्थिपच्चया ...,* पट्ठा॰ 1.30; *पच्चुप्पन्नलक्खणेन अत्थिभावेन तादिसस्सेव धम्मस्स उपत्थम्भकत्तेन उपकारको धम्मो अत्थिपच्चयो,* विसुद्धि॰ 2.169; – **टि॰** जिस धर्म की उपस्थिति या विद्यमानता पर दूसरे धर्म की उत्पत्ति निर्भर रहती है, उन दोनों के बीच वाला सम्बन्ध अत्थिपच्चय कहलाता है; – **पच्चयधम्म** पु॰, किसी अन्य धर्म का कारणभूत धर्म – *अत्थिपच्चयधम्मा एव च अविगतभावेन उपकारकत्ता अविगतपच्चयोति ...,* विसुद्धि॰ 2.169; विलो॰ नत्थिपच्चयधम्म; – **भाव** पु॰, [अस्तिभाव], अस्तित्व, विद्यमानता – *धुतङ्गसमादानस्स अत्तनि अत्थिभावं न जानापेतुकामो ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).44; प्रायः 'जानाति' तथा दूसरी समानार्थक धातुओं के साथ प्रयुक्त – *सचे पन सरस्स अत्थिभावं मय्हं न सद्दहथ,* जा॰ अट्ठ॰ 1.218; *गेहे सूकरानं अत्थिभावं ञत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.251; विलो॰ नत्थिभाव; – **सुख** नपुं॰, अत्थि + सुख [अस्तिसुख], मेरे पास कुछ है, इस विचार से उत्पन्न सुख – *कतमानि चत्तारि? अत्थिसुखं, भोगसुखं ...,* अ॰ नि॰ 1(2).80; *अत्थीति उप्पज्जनकसुखं अत्थिसुखं नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.306.

अत्थिक[1] **क**. त्रि॰, अत्थ[2] + इक [अर्थिक], इच्छुक, अभिलाषी, ज़रूरतमन्द, उद्देश्यविशेष अथवा वस्तुविशेष को पाने की इच्छा वाला – ... *अत्थो, एतस्स अत्थीति अत्थिकं,* दी॰ नि॰

अट्ठ. 1.206; *सोतमोधेसिमत्थिको,* थेरगा. 995; ... *एको खो, महाराज, अत्थिको, एको अनत्थिको,* मि. प. 83; *पञ्हेन अत्थिको आगतोम्हि, पञ्हं पुच्छितुकामो आगतोम्हि,* महानि. 349; पाठा. अट्ठिक, अत्थि; **ख.** पु. – *अत्थिकेहि उपञ्ञातं मग्ग'न्ति,* महाव. 45; *अत्थिको विय आयाति, अतिथी नो भविस्सति,* जा. अट्ठ. 7.311; पाठा. अद्धिको; – **जन** पु., अत्थिक¹ + जन कर्म. स. [आर्थिकजन], दरिद्र-जन, निर्धन लोग, याचक – *अत्थिकजनेहि पविवित्तं विरळं दानग्गं अहोसि,* पे. व. अट्ठ. 112; – **भाव** पु., अत्थिक¹ + भाव [अर्थिकभाव], **क.** इच्छा, अभीष्टता – *अत्तनो अत्थिकभावं ... सुणेय्य,* जा. अट्ठ. 5.145; *अट्ठिं कत्वाति अत्थिकभावं कत्वा, अत्थिको हुत्वाति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).296; **ख.** उपयोगिता, लाभदायकता – ... *इमिना वा पिण्डपातमत्तेन अत्थिकभावं,* पु. प. अट्ठ. 95; **ग.** आवश्यकता की स्थिति, दुर्दशा की स्थिति, दयनीय अवस्था – ... *अत्तनो अत्थिकभावं पवेदेन्ता विचरन्ति,* पे. व. अट्ठ. 106; – **वत / वन्तु** त्रि., संभवतः अत्थवन्तु के मिथ्या सादृश्य पर व्यु., ज़रूरतमन्द, जिसे कुछ पाने की अभिलाषा है, चाह करने वाला – *अत्थिकवतो खो पन ते अम्बट्ठ, इधागमनं अहोसि,* दी. नि. 1.79; *अत्थिकमस्स अत्थीति अत्थिकवा,* दी. नि. अट्ठ. 1(1).206.

अत्थिक² त्रि., अत्थि से व्यु. [आस्तिक], नैतिक मूल्यों, परलोक, पुनर्जन्म आदि के अस्तित्व में विश्वास रखने वाला, अत्थिकवाद आदि के स. पू. प. के रूप में ही प्रयुक्त; – **वाद** पु., अत्थिक² + वाद [आस्तिकवाद], **क.** परलोक या ऊंची नैतिकता आदि मूल्यों पर विश्वास रखने वाला सिद्धान्त – *तेसं तुच्छं मुसा विलापो ये केचि अत्थिकवादं वदन्ति,* दी. नि. 1.49; *अत्थिकवादन्ति अत्थि दिन्नं दिन्नफलन्ति इमं अत्थिकवादंयेव ...,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.163; **ख.** त्रि., आस्तिकवाद का प्रतिपादक – *सीलवा पुरिसपुग्गलो, सम्मादिट्ठि अत्थिकवादो,* म. नि. 2.74.

अत्थिय त्रि., [अर्थ्य], अभिलाषी, प्रयोजन वाला, हितकारक, लाभकारक, इच्छुक, केवल स. उ. प. में ही प्रयुक्त., अत्थत्थिय, किमत्थिय, सुखत्थिय के अन्त. द्रष्ट.; – **त्थिया** अत्थिय का स्त्री., के निमित्त, के लिए – *किमत्थिया, भन्ते नागसेन, तुम्हाकं पब्बज्जा,* मि. प. 29; *उपमं ते करिस्सामि, महाराज तवत्थिया,* जा. अट्ठ. 7.120.

अत्थिरत्त नपुं., थिर के भाव. का निषे. [अस्थिरत्व], अस्थिरता – *अत्थिरत्तं कतस्सापि नेकधा सम्पकासयुं,* चू. वं. 68.18.

अत्थिराग(सुत्त) नपुं., स. नि. 1(2) के एक सुत्त का नाम, जिसमें अस्तित्व के प्रति चित्त के लगाव का विवेचन है, स. नि. 1(2).89-91.

अत्थी क. त्रि., [अर्थी], इच्छुक, अभिलाषी – *यावतत्थीति वुच्चति,* सु. नि. 764; *अत्थिपञ्हेन आगमं,* सु. नि. 1049; 1111; **ख.** पु., भिखारी, याचक – *अथ याचनको अत्थी याचको च वणिब्बको,* अभि. प. 740; स. उ. प. के रूप में आमिस., चित्तसमाध., भोजन., वाद., सुख. के अन्त. द्रष्ट..

अत्थुच्चारणविसेस पु., कर्म. स. [अर्थोच्चारणविशेष], अर्थों एवं उच्चारणों में विशिष्टता या अन्तर, विशेष प्रकार के अर्थ और उच्चारण – *एवं पदविभागाविभागवसेन समानसुतिकानं अत्थुच्चारण - विसेसो वेदितब्बो,* सद्द. 1.38.

अत्थुति स्त्री., त्थुति का निषे. [अस्तुति], निन्दा, अकीर्ति, स्तुति का अभाव – *असिलोको अकित्ती च असिलाधा च अत्थुति,* सद्द. 2.380.

अत्थुद्धार पु., ष. तत्पु. स. [अर्थोद्धार], **क.** ध. स., अट्ठ. के चौथे अध्याय का नाम, जिसमें पुस्तक की विषयवस्तु का संक्षेप है – *तदनन्तरं पन तेपिटकस्स बुद्धवचनस्स अत्थुद्धारभूतं ... अट्ठकथाकण्डं नाम,* ध. स. अट्ठ. 8; 428; 443; दी. वं. 5.37; **ख.** अर्थ अथवा विषयवस्तु का सारांश, संक्षेपण, विशेषरूप में किसी एक शब्द अथवा समानार्थक शब्दों के अट्ठ. में प्राप्त अर्थों का संक्षेप-सार, अनेक अर्थों के बीच शब्द के किसी एक अर्थ का विनिश्चायन – ... *एकमेकं पदं अत्थुद्धारपदुद्धारवण्णना - नयेहि विभजित्वा वेदितब्बा,* सु. नि. अट्ठ. 1.201; *इति सद्दस्स अत्थुद्धारो एवं-सद्देन समानत्थताय 'एवं मे सुत'न्ति एत्थ विय,* उदा. अट्ठ. 38; *स्वायमिधापि अरियसच्चे वत्ततीति एवमेत्थ अत्थुद्धारतो'पि विनिच्छयो वेदितब्बो,* विभ. अट्ठ. 80.

अत्थुद्धारण पु., तत्पु. स. [अर्थोद्धारण], शब्दार्थों के संक्षेप-सार अथवा शब्द के अनेक अर्थों मे किसी एक अर्थ के निर्धारण की पद्धति – **नय** पु., अर्थ निर्धारित पद्धति – *लोकसङ्घातत्ता वा तेसं धम्मानं अत्थुद्धारणनयेनेतं वुत्तं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).254.

अत्थुद्धारभूत त्रि., [अर्थोद्धारभूत], विषयवस्तुओं अथवा शब्दों के अर्थों का संक्षेप-सार – *अत्थुद्धारभूतं अट्ठकथाकण्डं,* ध. स. अट्ठ. 8; तुल. दी. वं. 5.37.

अत्थुपेत त्रि., तत्पु. स. [अर्थोपेत], त्रिपिटक के वास्तविक तात्पर्य-निर्णय में निष्णात, अर्थ के सारतत्व को जानने वाला

- ... *एवं अत्थुपेतं ब्यञ्जनुपेतन्ति,* दी॰ नि॰ 3.96; *अत्थुपेतन्ति अत्थेन उपेतं अत्थस्स विञ्ञातारं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.86.

अत्थूपपरिक्खा स्त्री॰, अत्थ + उप + परिक्खा, तत्पु॰ स॰ [अर्थोपपरीक्षा], अर्थ, अनर्थ, हित, अहित, कारण एवं अकारण का परीक्षण, अर्थ की जांच पड़ताल, अर्थ का परीक्षण, किसी वस्तु के महत्व पर अनुचिन्तन - *अत्थूपपरिक्खा बहुकारा,* म॰ नि॰ 2.392; ... *कालेन धम्मस्सवने कालेन अत्थुपपरिक्खाय,* अ॰ नि॰ 2(2).91; *अत्थुपपरिक्खायाति अत्थानत्थं कारणाकारणं उपपरिक्खने,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.128.

अत्थूपपरिक्खी त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थोपपरीक्षिन्], हित-अहित, अच्छे-बुरे की परीक्षा करने वाला, अर्थ का परीक्षण करने वाला - *धातानं धम्मानं अत्थूपपरिक्खी होति ...,* अ॰ नि॰ 1(2).112; *अत्थूपपरिक्खीति अत्थं उपपरिक्खको,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.320.

अत्थूपसंहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अर्थोपसंहित], इस लोक एवं परलोक के कल्याण के साथ जुड़ा हुआ/हुई, मङ्गलमय, हितसाधक - ... *तथागतो ... पुब्बे मनुस्सभूतो समानो अत्थूपसंहितं ... वाचं भासिता अहोसि,* दी॰ नि॰ 3.115; *धम्मो नाम बुद्धभासितो ... अत्थूपसंहितो ...,* पाचि॰ 26; *अत्थूपसंहितं धम्मूपसंहितं ... वाचं मुञ्चेय्य ...,* महानि॰ 382.

अत्थेत / अथेत त्रि॰, थेत का निषे॰, अविश्वसनीय, अस्थिर, धूर्त - *अथेतं सब्बघातिनं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.51; *अथेतन्ति अथिरं अप्पटिट्ठितवचनं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.52.

अत्थेति √अत्थ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अर्थयति], अनुरोध करता है, प्रार्थना करता है, मांगता है, प्रायः 'प' उपसर्ग के साथ प्रयुक्त, पत्थेति, पत्थयति के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अत्थेन त्रि॰, थेन का निषे॰, [अस्त्येन], वह जो चोर नहीं है; द्रष्ट॰ अथेन.

अत्यट्ठि स्त्री॰, [अत्यष्टि], छन्दों के उस एक वर्ग-विशेष का नाम जिसके अन्त॰ शिखरिणी, हरिणी तथा मन्दाक्रान्ता नामक छन्द परिगणित हैं, वुत्तो॰ 97-99, पाठा॰ अच्चट्ठि.

अत्र[1] अ॰, स्थान-बोधक अथवा विषयबोधक निपा॰ [अत्र], यहां, इस स्थान में, इस सन्दर्भ में, इस विषय में - *इहेधात्र तु एत्थात्थ,* अभि॰ प॰ 1161; *इदमासनं अत्र भवं निसीदतु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.163; *अत्र पत्तं निक्खिपाहि, अत्र चीवरं निक्खिपाहि,* चूळव॰ 353, समाना॰ इह, इध, अत्थ, एत्थ.

अत्र[2] नपुं॰, √अद का उणादिप्रत्यय से व्यु॰ रूप [अत्त], भोजन, वह जो खाया गया हो - *छदादीहि तत्रण,* क॰ व्या॰ 658; तेसं मते छत्रं चित्रं ... अत्रं ... इच्चेवमादि, सद्द॰ 3.870.

अत्रज पु॰, [आत्मज], पुत्र, बेटा - *परोसहस्सं न भवन्ति अत्रजा,* दी॰ नि॰ 3.121; *पुत्तो च नामेस अत्रजो, खेत्तजो, अन्तेवासिको, दिन्नकोति चतुब्बिधो, तत्थ अत्तानं पटिच्च जातो अत्रजो नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.140; *गतो मे अत्रजो पुत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.85; *पुत्ताति चत्तारो पुत्ता - अत्तजो पुत्तो, खेत्तजो पुत्तो, दिन्नको पुत्तो, अन्तेवासिको पुत्तो,* महानि॰ 181; - **टि॰** यह सं॰ आत्मज के नियमित पालि-रूपान्तरण अत्तज का सं॰ क्षेत्रज के पालि रूपा॰ खेत्रज के मि॰ सा॰ पर निर्मित अनि॰ शब्द है। 'त्त' के स्थान पर 'त्र' के प्रयोग के लिए द्रष्ट॰, क॰ व्या॰ 5.20; सद्द॰ 3.622; त्त के स्थान त्र के अशुद्ध प्रयोग के उदाहरण के रूप में द्रष्ट॰, अत्रजो, खेत्रजो, वत्रभू तथा गोत्रभू, स॰ उ॰ प॰ में काकण्डकद्विज॰, जिन॰, ब्राह्मण॰, साकिय॰ आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अत्रजा स्त्री॰, [आत्मजा], पुत्री, बेटी - *धीता मय्हस्स अत्रजा,* थेरीगा॰ 151; *वेदेहस्सत्रजा पिया,* जा॰ अट्ठ॰ 7.115.

अत्रभवं [अत्रभवत्], परमादरणीय व्यक्ति का सङ्केतक सर्व॰ - *इदमासनं अत्र भवं निसीदतु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.163.

अत्रहे अ॰, अत्र + अह, स॰ वि॰, ए॰ व॰ का अव्ययीकृत रूप, क्रि॰ वि॰, आज के दिन में, आज - *अज्ज अत्राहे,* अभि॰ प॰ 1155.

अत्रिच्च व्यु॰ अनिश्चित, संभवतः अ + √थर का पू॰ का॰ कृ॰ [आस्तृत्य, बौ॰ सं॰ अत्रित्य आङ् + √स्तृ + ल्यप्], फैलाकर, बिछाकर, व्यवस्थित कर, तैयार कर - *अत्रिच्च कोच्छं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402; *अत्रिच्च कोच्छन्ति एवरूपं कोच्छासनं पण्णसालद्वारे अत्थरित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.403; पाठा॰ अत्रिच्छ.

अत्रिच्छ त्रि॰, व्यु॰ अनिश्चित, [अत्यृच्छ या अतृप्स], अत्यधिक इच्छा रखने वाला, अत्यधिक लोभी - ... *अयं पन ... समुद्दे खित्तो अत्रिच्छो हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.179; *अञ्ञतरोपि अत्रिच्छो अमच्चो ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 446; पाठा॰ अतिच्छ (अति इच्छा वाला), अत्रिच्छ, (अति ईप्सा वाला), तथा अत्रिच्छा, (अति + ईप्सा, अति + इच्छा); - *अत्रिच्छ'न्तिपि पाठो, अत्र अत्र इच्छमानोति अत्थो, अत्रिच्छा'तिपि पाठो अत्रिच्छायाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.5; - **टि॰** पालि के अत्रिच्छ, अत्रिच्छा एवं अत्रिच्छता शब्दों की व्यु॰ लगभग अनिश्चित प्रकृति की है। संभवतः इनमें सं॰ अति + इच्छति, अति + ऋच्छति, अथवा अति + ईप्सति में से किसी एक का अथवा सभी का पालि - ध्वन्यन्तरण संभव है; - **ता** स्त्री॰, अत्रिच्छ अथवा अतिच्छ की भाव॰ [अतीच्छता, अतृप्सता, अत्यर्हता?], अत्यधिक इच्छापरायणता, अत्यधिक

आसक्ति - *अत्रिच्छतामहिच्छतापापिच्छतादीनं पापधम्मानं पहानाधिगमहेतुतो* ..., खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 118; ... *अत्रिच्छतं पजहन्तो* ..., खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 195; *अतिच्च इच्छतीति अतिच्चिच्छो, तस्स भावो अतिच्चिच्छताति वत्तब्बे च्चि-कारलोपं कत्वा अतिच्छता'ति वुत्तं, अतिच्छताति च सा एव वुच्चतीति, तत्रापि नेरुत्तिकविधानेन पदसिद्धि वेदितब्बा, यथालद्धं वा अतिक्कमित्वा अत्र अत्र इच्छानं अत्रिच्छता, सा एव स-कारस्स त-कारं कत्वा अतिच्छता'ति वुत्ता,* विभ॰ अट्ठ॰ मू॰ टी॰ 218-219; - **टि॰** म॰ भा॰ आ॰ भा॰ के ध्वनि-परिवर्तन की अनिश्चित प्रवृत्तियों के आलोक में यह निश्चय करना कठिन है कि सं॰ के अतीच्छ, अतृच्छ अथवा अतृप्स में से किसका समीपतम पालिरूपान्तरण अत्रिच्छ है; - **हत** त्रि॰, तृ॰ तत्पु॰ स॰, इच्छा की अधिकता द्वारा पीड़ित - ... *तं अत्रिच्छताहतं ... रोदमानं दिस्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.194, पाठा॰ अतिच्छता.

अत्रिच्छा त्रि॰, [अतीच्छा, अतृप्सा, अत्यृच्छा?], अत्यधिक लोभ, प्रबल इच्छा, लालच, तृष्णा - *अत्रिच्छं अतिलोभेन,* जा॰ अट्ठ॰ 2.193; तुल॰ अतिच्छा; - **निग्गह** पु॰, लोभ अथवा प्रबल इच्छा का नियंत्रण - ... *अत्रिच्छानिग्गहाय उपोसथं समादियित्वा एकमन्तं निपज्जि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.292; - **च्छाभिभूत** त्रि॰, अत्यधिक इच्छाओं द्वारा पीड़ित - *अत्रिच्छाभिभूतो मल्लरट्ठे पच्चन्तगामं गतो,* तदे॰.

अथ निपा॰ अ॰, [अथ], सातत्य, निरन्तरता, संयोग, अधिकार, निश्चय, बिलगाव एवं प्रश्न आदि का सूचक निपा॰, गाथाओं में केवल पादपूरणार्थ - *अथो'थानन्तरारम्भ-पञ्हेसु पदपूरणे,* अभि॰ प॰ 1190; *अथाति अविच्छेदत्थे,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 91; *अथ इति निपातो अञ्ञाधिकारवचनारम्भे,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.110; **क.** और इससे आगे - *अथद्दसासिं सम्बुद्धं,* सु॰ नि॰ 1151; **ख.** और उससे पूर्व - *अप्पवारितो'व सङ्घो भविस्सति, अथायं रत्ति विभायिस्सती'ति,* महाव॰ 238; *अपरियादिन्नाव ... अस्सु, अथ ... परियादानं गच्छेय्य,* स॰ नि॰ 1(2).161; **ग. अन्य निपा॰ के साथ,** और इसके आगे, और इसके बाद - *अथ परतो महासमुद्दं गम्भीरं वित्थतं* ..., मि॰ प॰ 114; **घ.** तब, ठीक तभी, परिणामस्वरूप, फलस्वरूप, तदनन्तर - *अथस्स नवहि सोतेहि* ..., सु॰ नि॰ 199; *अथ तत्तअयोगुळसन्निभं* ..., सु॰ नि॰ 672; **ङ. प्रश्नपूरक उपवाक्यों में,** तब भला, अब यदि, तब कौन, तब क्यों, तब क्या - *अथ को चरहि जानाति,* सु॰ नि॰ 996; *अथ त्वं ... गज्जसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.391; *अथ त्वन्ति ननु त्वं* ..., तदे॰; **च. अथ खो तेन खो पन समयेन के बाद में प्रयुक्त होने पर,** ठीक तभी, उसी क्षण में, तदनन्तर, उसके बाद, तब - *तेन समयेन बुद्धो भगवा उरुवेलायं विहरति ... अथ खो भगवा बोधिरुक्खमूले सत्ताहं एकपल्लङ्केन निसीदि,* महाव॰ 1; **छ. क्रि॰ वि॰ के रूप में** किन्तु, परन्तु, इससे विपरीत, कम से कम, तो भी - *होतु, ... सेलेहि पासाणो सम्पटिच्छितो, अथ पपटिकायपि अपचिति कातब्बा* ..., मि॰ प॰ 175; **ज. वियोजक-निपात के रूप में** अथवा - *कल्याणमथ पापकं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.35; *देवत्तं अथ मानुसं,* अप॰ 1.55; **झ. वादहेतुसूचक** क्योंकि, चूंकि, यस्मात् - *अथ पापजनं कोधो, पब्बतोवाभिमद्दति,* स॰ नि॰ 1(1).277.

अथकन नपुं॰, थकन का निषे॰, अनाच्छादान, आच्छादित करके न रखना, छिपाकर न रखना, अनियन्त्रण, असुरक्षा - ... *या अगुत्ति या अगोपना यो अनारक्खो यो असंवरो, अथकनं, अपिदहनन्ति अत्थो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 421.

अथब्बणवेद / आथब्बणवेद पु॰, कर्म॰ स॰ [अथर्ववेद, अथर्वन्-वेद], चतुर्थ वेद, अथर्व वेद - *आथब्बणवेदं चतुत्थं कत्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.200; ... *ब्राह्मणमाणवकानं इरुवेदं यजुवेदं सामवेदं अथब्बणवेदं लक्खणं* ..., मि॰ प॰ 173-74.

अथवा अ॰, विकल्पार्थसूचक निपा॰ [अथवा], अथवा, या, पिछले कथन में संशोधन का सूचक - *अथवास्स अगारानि अग्गि डहति पावको,* ध॰ प॰ 140; *अथवा समाधिलाभेन,* ध॰ प॰ 271; - **वापि** अ॰, निपा॰ [अथवापि], अथवा भी - *नीचेय्यो अथवापि सरिक्खो,* सु॰ नि॰ 924; *पिता च माता अथवापि आतका,* पे॰ व॰ 98.

अथावर त्रि॰, थावर का निषे॰ [अस्थावर], अस्थिर, चलायमान, कम्पनशील, हिलता-डुलता, वह, जो सुदृढ़ नहीं है - *पुथुज्जनस्स हि सद्धा अथावरा* ..., अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.130; *अयं अत्तभावो नाम भिज्जनकट्ठेन, अथावरट्ठेन कुलालभाजनसदिसो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.180.

अथिर त्रि॰, थिर का निषे॰ [अस्थिर], परिवर्तनशील, अविश्वसनीय, अस्थिर - *अथेतन्ति अथिरं अप्पतिट्ठितवचनं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.52; - **त्त** नपुं॰, अथिर का भाव॰, [अस्थिरत्व], अस्थिरता, परिवर्तनशीलता; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अस्थिरचित्त], अस्थिर अथवा चञ्चल मन वाला - *हलिद्दिरागन्ति हलिद्दिरागसदिसं अथिरचित्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.127.

अथुस त्रि॰, थुस का निषे॰, ब॰ स॰ [अतुष], भूसीरहित, कणरहित - ... *अकट्ठपाको सालि पातुरहोसि अकणो अथुसो, सुद्धो,* दी॰ नि॰ 3.65.

अथेन त्रि॰ थेन का निषे॰ [अस्तेन], वह, जो चोर नहीं है, चोरी न करने वाला – *अथेनेन सुचिभूतेन अत्तना विहरति,* दी॰ नि॰ 1.4; *थेनेतीति थेनो, न थेनेन अथेनेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.67; – **त्त** नपुं॰, अथेन का भाव॰ [अस्तेनत्व], अचौर्य, चोरी के कर्म से विरति की स्थिति – *अथेनत्तायेव सुचिभूतेन,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰ प॰) 1(2).107; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.67; – **नी** अथेन का स्त्री॰, चोरी के कर्म से युक्त नारी, चोरी न करने वाली स्त्री – ... *तत्थ च भविस्साम ... अथेनी असोण्डी अविनासिकायो'ति,* अ॰ नि॰ 2(1).33; *अथेनी'ति अथेनियो अचोरियो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.19.

अथो अ॰, निपा॰ [अथ], अब, तब, इसके बाद, और, इसी से, इसी से तो, इसी भांति; **क. पदपूरणार्थक** – *स्वागतं ते महाराज, अथो ते अदुरागतं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.492; **ख. अवधारण या निश्चय** – *अथो गहट्ठा घरमावसन्ता,* सु॰ नि॰ 43; *अथो इट्ठे अनिट्ठे च,* सु॰ नि॰ 155; *अथो जातिक्खयं पत्तो,* ध॰ प॰ 423; थेरीगा॰ 64; *अथोति निपातमत्तं, अवधारणत्थे वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 218, तुल॰ अथ, व्यु॰ एवं अर्थनिर्धारणार्थ, द्रष्ट॰ अभि॰ प॰ 1190, रू॰ सि॰ 89; – **पि** अ॰, संयोजक तथा निरन्तरता का सूचक, निपा॰, [अथच], और इसके बाद भी, फिर भी – *अथोपि खादितानि पुत्तमंसानि,* थेरीगा॰ 221; *अथोपि त्वं चित्त न मय्ह तुस्ससि,* थेरगा॰ 1112; **ग. कच्चि ... कच्चि (क्या-क्या) प्रश्न के उत्तर के रूप में दुहराते हुए प्रयोग** – *अथोपि मे अमच्चेसु, दोसो कोचि न विज्जति, अथोपि ते ममत्थेसु नावकङ्खन्ति जीवितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.344.

अद त्रि॰, [अद], खाने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त, किट्ठा॰, कुणपा॰, गूथा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **अदी** त्रि॰, खाने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त, पुरिसा॰, रसा॰, वन्ता॰, विघासा॰, विसा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अदक्खिणेय्यता स्त्री॰, अदक्खिनेय्य का भाव॰ [अदक्षिणेयता], दक्षिणा प्राप्त होने के लिए अयोग्य होने की स्थिति, अनुत्कृष्टता, अपात्रता – *तं पन न अत्तनो पतिमानतस्स अविपाकताय न अदक्खिणेय्यताय ...,* मि॰ प॰ 226.

अदट्ठ / अदट्ठा √दिस का पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, [अदृष्ट्वा], बिना देखे हुए, न देखकर – *नादट्ठा परतो दोसं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.170; *नादट्ठाति न अदिस्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.171; तुल॰ अदिट्ठा.

अदड्ढहि / अदड्ढहि √दह का अनद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, जला दिया, दग्ध कर दिया – *किच्छाकतं पण्णकुटिं अदड्ढहि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.35; पाठा॰ अदय्हि; तुल॰ अलद्ध, अलत्थ.

अदड्ढ √दह का भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अदग्ध], नहीं जलाया हुआ – *अदड्ढे दड्ढसञ्ञी, निस्सग्गियं पाचित्तियं,* पारा॰ 376; *अदड्ढा'पि वुच्चति जाता पथवी,* पाचि॰ 50.

अदण्ड त्रि॰, दण्ड का निषे॰, ब॰ स॰ [अदण्ड], **क.** बिना दण्ड वाला, हिंसक मनोवृत्ति से रहित, अहिंसक, दयालु क्षीणास्रव अर्हत्, वैरभाव से रहित – ... *अवेरा अदण्डा असपत्ता अब्यापज्जा ...,* दी॰ नि॰ 2.203; *अदण्डाति आवुधदण्डधनुदण्डविमुत्ता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.278; *अदण्डेसूति कायदण्डादिरहितेसु खीणासवेसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.40; क्रि॰ वि॰ रूप में तृ॰ वि॰ – *अदण्डेन असत्थेन, धम्मेनमनुसासति,* सु॰ नि॰ 1008; *दण्डेनेके दमयन्ति,* थेरगा॰ 878; – **डारह** त्रि॰, दण्डारह का निषे॰ [अदण्डार्ह], दण्ड नहीं पाने योग्य, अदण्डनीय – *यत्थ परो ... अदण्डारहो ... होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 143; – **डावचर** त्रि॰, दण्डावचर का निषे॰ [अदण्डावचर], **क. शा. अ.** दण्ड की पकड़ अथवा पहुंच के बाहर, बलप्रयोग का अविषय, दण्ड न देने योग्य – *ता च खो अदण्डावचरा, असत्थावचरा,* स॰ नि॰ 1(1).259; *अदण्डावचरं मग्गं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.322; **ख. ला. अ.** अहिंसक व्यक्तियों द्वारा ग्रहण किया जाने वाला (अष्टाङ्गिक मार्ग) – *अदण्डावचरन्ति अदण्डेहि निक्खित्तदण्डहत्थेहि अवचरितब्बं ... अट्ठङ्गिकं मग्गं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 4.322; – **ण्डिय** त्रि॰, दण्डिय का निषे॰ [अदण्ड्य], अदण्डनीय, दण्ड नहीं देने योग्य – *अदण्डियं दण्डयति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.170; *अदण्डियन्ति यो अदण्डपणेतब्बं ...,* तदे॰.

अदति / अदेति √अद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अत्ति], खाता है, अनुभव करता है – *सुखदुक्खं अदति अनुभवतीति अत्ता ति च ...,* सद्द॰ 2.360; – **अदन** नपुं॰, √अद से व्यु॰ [अदन], **क.** भोजन, खाना, भक्षण – *पहूतं चादनं तत्थ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.370; ... *चादनन्ति पहूतञ्च पदुमपुप्फसालिआदिकं अदनं,* तदे॰; **ख.** आदानानि का अप॰, इन्द्रियों के विषय – *अदनानि उपासतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.367; *अदनानीति आदानानि, गोचरग्गहणट्ठानानीति, ...,* तदे॰.

अदनेसना स्त्री॰, अदन + एसना, [अदनैषणा], भोजन की खोज – *चरतो अदनेसनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.367.

अदन्त त्रि॰ दन्त का निषे॰ [अदान्त], असंयमी, अनियन्त्रित, वह, जिस का नियन्त्रण नहीं किया गया है – *अदन्तानं दमेतारं,* थेरीगा॰ 135; *अदन्तं को दमिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.108; – **दमक** त्रि॰, अनियन्त्रित या उच्छृंखल को

नियन्त्रित करने वाला - *एत्थ सो वसते बुद्धो, अदन्तदमको मुनि,* अप॰ 1.353; - **दमन** त्रि॰/नपुं॰, उच्छृंखल का नियन्त्रण या नियन्त्रक - *अदन्तदमनं तादिं, महावादिं महामतिं,* अप॰ 1.78; - **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ के एककनिपात का चौथा वर्ग, अ॰ नि॰ 1.9-10.

अदन्ध त्रि॰, दन्ध का निषे॰ [अतन्द्र?], अशिथिल, आलस्यरहित एवं तन्द्रा-रहित, तीव्र - *लहुञ्च वताति अदन्धञ्च वत* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.388, द्रष्ट॰ दन्ध; - **जातिक** त्रि॰, अशिथिल स्वभाववाला, आलसी प्रकृति से रहित - *अदन्धजातिको विञ्ञुजातिको सततमिध,* सद्द॰ 1.142; - **ता** स्त्री॰ भाव॰, निरालस्यता, विज्ञता, शरीर एवं मन का हलकापन - *कायचित्तानं अदन्धतापच्चुपट्ठाना* ..., ध॰ स॰ अट्ठ॰ 175; - **नता** स्त्री॰, दन्धनता का निषे॰ भाव॰, निरालस्यता, विज्ञता, तीव्रता, पांच स्कन्धों की लघुता या स्कन्धों में हलकापन, भारीपन का अभाव - *या ... वेदनाक्खन्धस्स ... लहुता ... अदन्धनता ... अयं ... कायलहुता होति,* ध॰ स॰ मा॰ 42, पृ॰ 28; *अदन्धनता'ति गरुभावपटिक्खेपवचनमेतं, अभारियता'ति अत्थो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 194; - **धायना** स्त्री॰, दन्धायना का निषे॰, दक्षता, निपुणता, मन्दता का अभाव, तीव्रता - *अथापरेन समयेन ... अदन्धायना भवति,* मि॰ प॰ 59, द्रष्ट॰, विप॰ दन्धायना.

अदब्ब नपुं॰, दब्ब का निषे॰ [अद्रव्य], अद्रव्य, वह, जो द्रव्य अथवा वस्तुभूत नहीं है, अवस्तु - *केचि अदब्बभूतस्स भावस्सेकत्थितो ब्रवुं,* सद्द॰ 1.9; - **वाचकत्त** त्रि॰ [अद्रव्यवाचकत्व], अवस्तुभूत को कहने वाला - *यथा हि वीसति इच्चादीनं संख्यासद्दानं सरूपतो अदब्बवाचकत्तेपि* ..., सद्द॰ 1.300; *अदब्बवाचकत्ता विसेसितब्बपदानं,* सद्द॰ 1.306; - **वुत्ति** त्रि॰, ब॰ स॰ [अद्रव्यवृत्ति], भावात्मक धर्म से असम्बद्ध, वस्तुभूत धर्म से नहीं जुड़ा हुआ - *अदब्बवुत्तिनो भावस्स,* सद्द॰ 2.593.

अदमित त्रि॰, दमित का निषे॰ [अदमायित, अदन्त], अनियंत्रित, वश में न किया हुआ - *तत्थ वसाति अदमितवुड्ढवच्छका,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.32, द्रष्ट॰ दमेति.

अदयापन्न त्रि॰, दयापन्न का निषे॰ [अदयापन्न], निर्दयी, दयारहित, क्रूर, हिंसालु - ... *अदयापन्नो पाणभूतेसु,* म॰ नि॰ 1.359; *अङ्गुलिमालो नाम होति लुद्दो ... अदयापन्नो पाणभूतेसु,* म॰ नि॰ 2.308.

अदर त्रि॰, दर का निषे॰ [अदर, दृणाति दरयतिवा इति दरः, न दरः, यस्मिन् सः], भयरहित, निडर, निर्भीक, अशोक - *यत्थ नत्थि आयतिं जातिजरामरणं असोकं तं, भिक्खवे, अदरं, अनुपायासन्ति वदामि,* स॰ नि॰ 1(2).90.

अदलिद्द/अदळिद्द त्रि॰, दलिद्द का निषे॰ [अदरिद्र], वह, जो दरिद्र नहीं है, संघ के प्रति श्रद्धावान, सरल दृष्टि वाला - *सङ्घे पसादो यस्सत्थि, उजुभूतञ्च दस्सनं अदलिद्दोति तं आहु, अमोघं तस्स जीवितं,* स॰ नि॰ 1(1).268.

अदळ्हदिट्ठि त्रि॰, ब॰ स॰ [अदृढदृष्टि], दृढ़ ग्राह से मुक्त दृष्टिवाला, अनुद्धत, हठ न करने वाला, अड़ियल दृष्टिकोण से मुक्त, सरलता से समझाने बुझाने योग्य - *परो हि पुग्गलो अक्कोधनो अनुपनाही अदळ्हदिट्ठी* ..., म॰ नि॰ 3.27.

अदसक/अदस त्रि॰, ब॰ स॰, [अदशाक], वस्त्र के छोर पर लगी गोट, झालर अथवा मगजी से रहित बैठने के लिए प्रयुक्त चटाई, किनारे पर लगे झालर रहित चटाई - *कप्पति अदसकं निसीदनं,* चूळव॰ 463.

अदसगव नपुं॰, दसगव का निषे॰ [अदशगु], दस बैलों से कम बैलों वाला झुण्ड - *न दसगवं अदसगवं,* क॰ व्या॰ 328.

अदस्सन नपुं॰, दस्सन का निषे॰ [अदर्शन], **1. क**. नहीं देखना, दिखलाई न पड़ना - *अदस्सनं आनन्दा'ति,* दी॰ नि॰ 2.106; *अदस्सनेन बालानं,* ध॰ प॰ 206; *अदस्सनं गतो मन्तबलेन,* मि॰ प॰ 152; **1. ख**. अज्ञान, अन्धत्व, मिथ्या-दर्शन, मोह, मूढ़ता - *अरियसच्चानं यथाभूतं अदस्सना,* दी॰ नि॰ 2.71; **2. क**. विनाश, अन्त - *विनासो तु अदस्सनं,* अभि॰ प॰ 770; ... *निप्फत्तियं चेवावसानम्हि अदस्सने,* अभि॰ प॰ 912; **2 ख**. किसी की दृष्टि से ओझल हो जाना, **ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले पद के साथ** - *अदस्सनं मच्चुराजस्स गच्छे,* ध॰ प॰ 46; *अदस्सनं भोजपुत्तान गच्छ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.160; - **काम** त्रि॰, ब॰ स॰ [अदर्शन-काम], देखने की इच्छा न रखने वाला, समझने या ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से रहित - *रूपानं अदस्सनकामो अस्स,* म॰ नि॰ 1.170; - **परियोसान** त्रि॰, [अदर्शन-पर्यवसान], अदर्शन द्वारा समाप्ति करने वाला, अदृश्य होकर अन्त करने वाला, अन्त में अदृश्य हो जाने वाला - *चोरा पन ... अदस्सनपरियोसाना,* अ॰ नि॰ 3.76.

अदस्सनीय त्रि॰, दस्सनीय का निषे॰ [अदर्शनीय], न देखने योग्य, न दिखलाने योग्य - *यथा ... भिसक्कस्स अदस्सनीयं गुय्हं दस्सेति,* मि॰ प॰ 166.

अदस्सावी त्रि॰, अज्ञानी, न देखने वाला, उपेक्षा करने वाला, धर्म में उचित समझ न रखने वाला, सत्पुरुषों अथवा अर्हतों की उपेक्षा करने वाला, उनकी ओर दृष्टि न डालने वाला,

नासमझ - *अरियानं अदस्सावी,* म॰ नि॰ 1.1; 3.66; ... *अनिच्चादिलक्खणं अपस्सन्तो ... अरियभावस्स च अदिट्ठत्ता ... अदस्सावी'ति ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).25; ... *यो तेसं अरियानं अदस्सनसीलो, न च दस्सने साधुकारी, सो अरियानं अदस्सावीति वेदितब्बो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 380, द्रष्ट॰ दस्सावी.

अदस्सी त्रि॰, [अदर्शी], **क.** नहीं देखने वाला, न समझने वाला, गहरा ज्ञान न रखने वाला - *यथाभूतं अदस्सिनो,* थेरगा॰ 662; **ख.** उपेक्षा करने वाला - *इधलोकदस्सी परलोकमदस्सी,* जा॰ अट्ठ॰ 6.185.

अदातु पु॰, दातु का निषे॰ [अदातृ], दान न करने वाला, कृपण, कंजूस - *अदाता गेधितमनो आमिसस्मिं,* पे॰ व॰ 247; *दीनोति निहीनचित्तो अदानज्झासयो, तेनाह अदाता'ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 94; - **काम** त्रि॰ [अदातृकाम], दूसरों को कुछ भी न देने की इच्छा करने वाला - ... *अप्पसन्नं अदातुकामं ब्राह्मणं ... दातुकामं कत्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.120; - **कामता** स्त्री॰, भाव॰, कृपणता भरी मनोदशा - ... *अत्तनो सन्तकं अदातुकामताय ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 144; *नेव मे अदातुकामतं पस्सेय्या'ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.47.

अदान नपुं॰, दान का निषे॰ [अदान], त्याग करने अथवा दान देने की मनोदशा का अभाव, नहीं देना, उदारता का अभाव, कृपणभाव, कृपणता - *अदानमतिदानञ्च, नप्पसंसन्ति पण्डिता,* पे॰ व॰ 301; ... *तथापि यदिदं अदानञ्च असीलञ्च अरियेहि अकत्तब्बत्ता ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.228, द्रष्ट॰, विप॰ दान; - **नज्झासय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अदानाध्याशय], दान न देने, त्याग न करने, सभी कुछ अपने पास बनाये रखने की मानसिक वृत्ति वाला, कृपणता एवं आसक्ति भरी मनोदशा से युक्त प्राणी - *दीनोति निहीनचित्तो अदानज्झासयो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 94; द्रष्ट॰ अज्झासय; - **नाधिमुत्त** त्रि॰, ब॰ स॰, कृपण अधिमुक्ति अथवा मानसिक अभिप्राय वाला, दान न देने अथवा त्याग न करने की मनोवृत्ति वाला, अदानशील - *अदानसीलाति अदानपकतिका अदानाधिमुत्ता ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.264; - **पकतिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अदानप्रकृतिक], कृपणता अथवा अत्यधिक आसक्ति से भरे हुए स्वभाव वाला, तृष्णालु, जोड़ने बटोरने वाला, स्वभाव से ही कृपण - *अदानसीलाति अदानपकतिका, अदानाधिमुत्ता ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.264; - **सम्मत** त्रि॰, स॰ [अदानसम्मत], देय वस्तु के रूप में अननुमोदित, ऐसी वस्तु का दान, जो बुद्ध द्वारा अनुमोदित नहीं है, दान देने हेतु अननुमोदित दस वस्तुएं - *दस दानानि लोके अदानसम्मतानि,* मि॰ प॰ 259; - **सील** त्रि॰, ब॰ स॰ [अदानशील], स्वभाव से ही अनुदार, कृपण अथवा संग्रह करने के स्वभाव वाला, त्याग की मनोवृत्ति से रहित - *अदानसीला न च देन्ति कस्सचि,* सु॰ नि॰ 247; *अदानसीला न च सद्दहन्ति,* पे॰ व॰ 248; *अदानसीलो मच्छरी तिणग्गेन तेलबिन्दुम्पि अदाता अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5. 380; *अदानसीला मच्छरिनी हुत्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 58; - **सीलता** स्त्री॰, भाव॰ [अदानशीलता], कृपणता - *ताय च पन अदानसीलताय याचितापि ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.264.

अदायक त्रि॰, दायक का निषे॰ [अदायक], अनुदार, अदानशील, कृपण, दान न देने वाला - ... *एको दायको एको अदायको,* अ॰ नि॰ 2(1).28; ... *अदायकोति एको अत्तना लद्धं परस्स अदत्वा परिभुञ्जनको ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.16; *मच्छरिनोति अञ्ञेसं अदायका,* जा॰ अट्ठ॰ 6. 129; - **यिका** स्त्री॰, कृपण या अनुदार नारी - *अदायिका मच्छरिनी कदरिया,* पे॰ व 56; - **वंस** पु॰, दान न देने वालों या कृपणों का वंश - *अदायकवंसो एस भविस्सती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.103.

अदायाद त्रि॰, दायाद का निषे॰, ब॰ स॰ [अदायाद], वह, जिसका कोई उत्तराधिकारी नहीं है, निःसन्तान - *अनपच्चा अदायादा तालावत्थू भवन्ति ते,* स॰ नि॰ 1(1).86; *इदानि दायादानं अभावतो अदायादो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.21.

अदारभरण त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसे पत्नी का भरण-पोषण नहीं करना है, अविवाहित व्यक्ति - *कनिट्ठो अदारभरणो भातु सन्तिकेयेव वसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.279.

अदास पु॰, दास का निषे॰ [अदास], वह, जो अब किसी का दास नहीं है, स्वतन्त्र, अपने अधीन, पराधीनता से मुक्त - *अदासो तु भुजिस्सो'थ ...,* अभि॰ प॰ 516; - **सी** स्त्री॰, [अदासी], दासता से मुक्त नारी - *सचे, जे, सच्चं भणसि, अदासिं तं करोमि,* म॰ नि॰ 2.260.

अदिट्ठ / आदिट्ठ त्रि॰, दिट्ठ का निषे॰, [अदृष्ट], वह, जो देखा नहीं गया है, अज्ञात, अनिर्दिष्ट - *न तुय्हं अदिट्ठं असुतं अमुतं,* सु॰ नि॰ 1128; *अदिट्ठं दक्खितब्बं,* महानि॰ 269; *अदिट्ठं अस्सुतं अपरिसङ्कितं,* महाव॰ 314; - **जोतन** त्रि॰, [अदृष्टद्योतन], **शा॰ अ॰** अज्ञात का प्रकाशन करने वाला, जो ज्ञात नहीं है, उसका स्पष्टीकरण करने वाला; **ला॰ अ॰** तीन अथवा पांच प्रकार की पृच्छाओं (प्रश्नों) में से एक - *तिस्सो पुच्छा – अदिट्ठजोतना पुच्छा, दिट्ठसंसन्दना पुच्छा, विमतिच्छेदना पुच्छा,* महानि॰ 250; ... *एत्थ अदिट्ठ-*

जोतनादिवसेन पुच्छा विभजिता, सु. नि. अट्ठ. 2.254; *तत्थ पुच्छा नाम अदिट्ठजोतना पुच्छा ...,* दी. नि. अट्ठ. 1.64; – **टि.** तीन प्रकार की पृच्छा (प्रश्न) हैं:– **1.** अदृष्टद्योतन प्रश्न, **2.** दृष्टसंसन्दन प्रश्न, **3.** विमतिच्छेदन प्रश्न, जिस धर्म की प्रकृति का लक्षण अज्ञात, अदृष्ट एवं अस्पष्ट आदि है, उसके ज्ञान के लिए पूछा गया प्रश्न अदिट्ठजोतना कहा गया है, द्रष्ट. दी. नि. अट्ठ. 1.64; – **त्त** नपुं., भाव. [अदृष्टत्व], अज्ञात अथवा अदृष्ट होने की अवस्था – *अदिट्ठत्ता, भिक्खवे, चतुन्नं अरियसच्चानं,* स. नि. 3.516; *यथा ते भातरो ... किंसुकस्स अदिट्ठत्ता कङ्खिंसु ...,* जा. अट्ठ. 2.222; – **न्तराय** पु., तत्पु. कर्म. स. [अदृष्टान्तराय], अनिर्दिष्ट या असंकेतित व्यक्ति के दान देने में उत्पन्न विघ्न, अनिर्दिष्ट या अदृष्ट विघ्न-बाधा – *चत्तारो खो महाराज, अन्तराया अदिट्ठन्तरायो ...,* मि. प. 155; – **टि.** अन्तराय चार प्रकार के हैं **1.** अदिट्ठ (अदृष्ट) अन्तराय, **2.** किसी को ध्यान में रखकर तैयार किये भोजन देने में विघ्न, **3.** जो भोजन अप्रतिगृहीत है, उसकी प्राप्ति में विघ्न तथा **4.** जो कुछ परिभोग है उसमें अन्तराय; द्रष्ट. मि. प. 155; – **पुब्ब** त्रि., ब. स. [अदृष्टपूर्व], वह, जिसे पहले नहीं देखा गया है, पूर्वकाल में न देखा गया – *येहि ... भिक्खूहि देवा तावतिंसा अदिट्ठपुब्बा ...,* महाव. 308; *ये ते चक्खुविञ्ञेय्या रूपा अदिट्ठा अदिट्ठपुब्बा ...,* स. नि. 2(2).78; ... *तस्सा वेळुवनं अदिट्ठपुब्बं ... विय च अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 2.312; – **वादी** त्रि., [अदृष्टवादी], वस्तुओं या धर्मों को अज्ञात बतलाने वाला, सब कुछ अज्ञात है, इस विचार का प्रतिपादक, अदृष्ट तथ्यों, भाग्य या ईश्वर का प्रतिपादक – *अदिट्ठे अदिट्ठवादी होति ...,* अ. नि. 1(2).259; – **वादिता** स्त्री., भाव., अदृष्टवादी मनोवृत्ति – *दिट्ठे अदिट्ठवादिता ...,* अ. नि. 3(1).131; – **टि.** यह आठ प्रकार के अनार्य-व्यवहारों में से एक है, द्रष्ट. अनरियवोहार; – **सच्च** त्रि., ब. स. [अदृष्टसत्य], सत्य को न देखने वाला, वह, जिसने सत्य का ज्ञान नहीं पाया है – *अदिट्ठसच्चस्स पन पटिसन्धि नाम भारियाति ...,* ध. प. अट्ठ. 2.18; ... *एतं अदिट्ठसच्चानं तासनीयट्ठानं,* मि. प. 149; – **सहाय** पु., तत्पु. स. [अदृष्टसहाय], अपरिचित सहायक, जिसे पहले नहीं देखा है ऐसे व्यक्ति का साथी, अज्ञात, अपरिचित का साथी, अपरिचितों को साथ देने वाला – ... *अवन्तिया इसिदत्तो नाम कुलपुत्तो अम्हाकं अदिट्ठसहायो ...,* स. नि. 2(2).280; *तस्स किरेको पच्चन्तवासिको सेट्ठि अदिट्ठसहायो अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.360; – **सहायक** पु., तत्पु. स. [अदृष्टसहायक], उपरिवत् – ... *भद्दवतियसेट्ठि नाम घोसकसेट्ठिनो अदिट्ठपुब्बसहायको अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 1.109.

अदिट्ठि स्त्री., दिट्ठि का निषे. [अदृष्टि], सम्यक्-दृष्टि का अभाव – *अदिट्ठिया अस्सुतिया अञाणा,* सु. नि. 845.

अदिति स्त्री., [अदिति], देवताओं की माता, जिनके पुत्र आदित्य अथवा सूर्य भी हैं – *देवमाता पनादिति,* अभि. प. 83, *आदिच्चोति अदितिया पुत्तो ...,* दी. नि. अट्ठ. 3.132.

अदिन्न √दा के भू. क. कृ. का निषे. [अदत्त], नहीं दिया हुआ, बिना अनुमोदन के ही ले लिया गया, चोरी-छिपे ग्रहण किया गया – *यो पन भिक्खु अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियेय्य,* पारा. 51; महाव. 123; ... *थेय्या अदिन्नमादेति,* सु. नि. 119; *लोके अदिन्नमादीयति,* ध. प. 246; – **पुब्ब** त्रि., [अदत्तपूर्व], वह जिसे पहले नहीं दिया गया है – *अज्जाहं अदिन्नपुब्बं दानं दस्सामि,* जा. अट्ठ. 3.46; – **पुब्बक** पु., एक ब्राह्मण का नाम जिसने कभी भी किसी को कुछ भी नहीं दिया – *सावत्थियं किर अदिन्नपुब्बको नाम ब्राह्मणो अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 1.16; – **पुब्बककुल** नपुं., कभी भी दान न करने वाला कुल – *अदिन्नपुब्बककुले ... होन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.264.

अदिन्नादान नपुं., तत्पु. स. अदिन्न + आदान [अदत्तादान], न दी हुई वस्तु को ले लेना, चोरी, डकैती, घूसखोरी आदि जिनमें स्वामी के अनुमोदन एवं सहमति के बिना उसके स्वत्व को ले लिया जाता है – *अदिन्नादानं भिक्खवे आसेवितं ...,* अ. नि. 3(1).78; *अदिन्नादानं पहातब्बं ...,* म. नि. 2.26; *अदिन्नादानं पहाय अदिन्नादाना पटिविरतो होति,* दी. नि. 1.4; – **टि.** बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त पांच शिक्षापदों अथवा पञ्चसीलों में 'अदिन्नादान से पटिविरति' दूसरा शील कहा गया है.

अदिन्नादायी त्रि., दिन्नादायी का निषे. [बौ. सं. अदत्तादायी], जो कुछ इच्छा और खुशी के साथ न दिया गया हो उसे चोरी, लूट, बेईमानी आदि से ले लेने वाला – *अहं ... अदिन्नादायी अस्सं ...,* म. नि. 2.26; ... *अदिन्नादायी होति अब्रह्मचारी होति,* महाव. 108.8; *इध ... अदिन्नादायिनो,* मि. प. 268.

अदीन त्रि., दीन का निषे. [अदीन], वह जो दीन नहीं हैं अथवा जो पीड़ित अथवा निराश नहीं है – *भद्रो आजञ्ञो ... अदीनो वहते धुरं,* थेरगा. 173; – **मनस** त्रि., दैन्यरहित मन वाला – *अदीनमनसो नरो,* थेरगा. 243; *अदीनमानसो,*

अब्यापन्नचेतसो, स॰ नि॰ 3.90; – **सत्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अदीनसत्त्व], मनस्वी, उदात्त चित्त वाला – ... *अलीनसत्ते मम भातुके* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.27, पाठा॰ अलीनसत्त; – **सत्तु** पु॰, एक राजकुमार का नाम – *तत्थ अलीनसत्तुन्ति एवंनामकं कुमारं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.24.

अदुं / अदु सङ्केतवाचक सर्व॰ अदु का नपुं॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, वह – *अदुं चस्स होति तपस्सिताय,* दी॰ नि॰ 3.35; *अदुञ्हि ... अल्लं, कट्ठं* ..., म॰ नि॰ 1.309; *दुस्स अमुस्साति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.46; सद्द॰ 1.278.

अदुक्ख त्रि॰, दुक्ख का निषे॰, ब॰ स॰ [अदुःख], दुख से मुक्त – *अदुक्खो एसो धम्मो अनुपघातो, अनुपायासो, अपरिळाहो,* म॰ नि॰ 3.279-80; – **मसुखा** स्त्री॰, सुख एवं दुख दोनों से मुक्त उपेक्षा-वेदना, जिसमें चित्त अनुकूल अथवा प्रतिकूल, दोनों में से किसी का संवेदन करने की स्थिति में नहीं रहता है, उपेक्षावेदना का सङ्केतक – *तुपेक्खा च अदुक्खमसुखा सिया,* अभि॰ प॰ 159; *न दुक्खा न सुखाति अदुक्खमसुखा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 89; *तिस्सो ... वेदना ... सुखावेदना, दुक्खावेदना, अदुक्खमसुखा वेदना,* इतिवु॰ 34; – **मसुखं** नपुं॰, संज्ञा के रूप में चतुर्थ रूपध्यानके चित्त की अवस्था – *अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं,* दी॰ नि॰ 1.67; *अदुक्खमसुखं* ..., ध॰ स॰ पृ॰ 50; *अदुक्खमसुखं सन्तं,* इतिवु॰ 35; *अदुक्खमसुखन्तिपि विजानाति,* म॰ नि॰ 1.371.; – **टी॰** यहां अदुक्खं के निग्गहीत के स्थान पर सन्धि के कारण 'मदासरे' नियम के आलोक में मकार होने से उक्त शब्दरूप प्रयुक्त है – *मकारो पदसन्धिवसेन वुत्तो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 89; – **मसुख-वेदनीय** त्रि॰, दुख अथवा सुख के अनुभव से रहित, उपेक्षा-वृत्तियुक्त – *अदुक्खमसुख वेदनियं फस्सं पटिच्च उप्पज्जति अदुक्खमसुखवेदना,* स॰ नि॰ 1(2).86; *अयं अदुक्खमसुखवेदनीयो फस्सो,* महानि॰ 37.

अदुट्ठ त्रि॰, दुट्ठ का निषे॰ [अदुष्ट], द्वेष या प्रतिहिंसाभाव से रहित, अदूषित, निर्मल मन वाला – *अदुट्ठस्स हि यो दुब्भे,* इतिवु॰ 62; *अदुट्ठो यो तितिक्खति,* सु॰ नि॰ 628; *यथा तं अदुट्ठस्स,* म॰ नि॰ 2.390; – **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अदुष्टचित्त], क्रोध अथवा द्वेष से रहित चित्त वाला – *अदुट्ठचित्ता विवदन्ति,* चूळव॰ 197; *एकम्पि चे पाणमदुट्ठचित्तो,* अ॰ नि॰ 3(1).2; *अदुट्ठचित्तोति मेत्ताबलेन सुट्ठु विक्खम्भितब्यापादताय ब्यापादेन अदूसितचित्तो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 81.

अदुट्ठुल्ल त्रि॰, केवल स्त्री॰ में अदुट्ठुल्ला रूप में प्राप्त, दुट्ठुल्ल का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अदौष्ठुल्य], गम्भीर दूषण से रहित भिक्षु के अपराध, हलके-फुलके अपराध – *अदुट्ठुल्लं आपत्तिं दुट्ठुल्ला आपत्तीति दीपेति,* महाव॰ 476; चूळव॰ 345; अ॰ नि॰ 1(1).27; – **टि॰** थुल्लच्चय, पाचित्तिय, दुक्कट, पाटिदेसनीय तथा दुब्भासित भिक्षुओं की इन पांच लघु आपत्तियों या अनुचित आचरणों को अदुट्ठुल्ल-आपत्ति कहा गया है, इन्हें लहुका-आपत्ति अथवा देसनागामिनी आपत्ति भी कहा गया है; – **ल्लापत्तिसञ्ञी** त्रि॰, अपराध को गुरु गम्भीर प्रकृति का न मानने वाला – *दुट्ठुल्लाय आपत्तिया अदुट्ठुल्लापत्तिसञ्ञी ... आरोचेति* ..., पाचि॰ 49.

अदुतिय त्रि॰, दुतिय का निषे॰ ब॰ स॰ [अद्वितीय], अकेला, वह जिसके साथ दूसरा नहीं है, असहाय, वह जिसके जैसा कोई दूसरा नहीं है, अप्रतिम, अनुपम, बेजोड़ – *एकाकियो अदुतियो,* थेरगा॰ 541; *अदुतियो, असहायो, अप्पटिमो, अप्पटिसमो ... अप्पटिपुग्गलो, असमो, असमसमो, द्विपदानं अग्गो,* अ॰ नि॰ 1(1).29; *एकोति ... अदुतियट्ठेन एको,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.52.

अदुप्पयुत्त त्रि॰, दुप्पयुत्त का निषे॰ [अदुष्प्रयुक्त], वह जिसे शुद्ध रूप में प्रयुक्त किया गया है, वह, जिसका दोषयुक्त प्रयोग नहीं हुआ है – *अदुप्पयुत्तं येव दुप्पयुत्तो'ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.105(रो॰).

अदुब्भन नपुं॰, दुब्भन का निषे॰ [अद्रोहन], अप्रवञ्चना, विश्वसनीयता, वफादारी, पूर्ण निष्ठा – *एवं मित्तेसु अदुब्भनं नाम* ..., जा॰ अट्ठ॰ 7.208; पाठा॰ अदुब्भन.

अदुरागत त्रि॰, दुरागत का निषे॰, वह जिसका आगमन सुखद या मङ्गलकारक हो (अभिवादन में स्वागत के साथ प्रयुक्त) – *स्वागतं ते, महाराज, अथो ते अदुरागतं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.318; *तस्सा ते स्वागतं भद्दे, ततो ते अदुरागतं,* थेरीगा॰ 338.

अदुस्सना स्त्री॰, [बौ॰ सं॰ अदूषणा], द्वेष-वृत्ति का अभाव, मैत्री भावना; – **नाकार** पु॰, मैत्री भावना से भरा व्यवहार – *अदुस्सनाति अदुस्सनाकारो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 194.

अदुस्सितत्त नपुं॰, दुस्सित के निषे॰ का भाव॰, द्वेषरहितता, द्वेषभाव से मुक्त मन की अवस्था – *अदुस्सितस्स भावो अदुस्सितत्तं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 194.

अदूभ / अदुब्भ / अद्दूभ पु॰, दूभ का निषे॰ [अद्रोह], अद्रोह, द्रोह अथवा विश्वासघात का अभाव, अहानिकरता – *सपथं च अकंसु अदूभाय,* महाव॰ 469; *सपस्सु च मे ... अदुब्भाय,* स॰ नि॰ 1(1).260; *अदुब्भाय सपथं कारेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.180; – **पाणि** पु॰, कर्म॰ स॰ / ब॰ स॰, दोषरहित एवं हितकारी हाथ, प्रवञ्चित न करने वाला मित्र, सच्चा मित्र

– *अदुब्भपाणी दहते मित्तदुब्भिं,* पे॰ व॰ 264; *अदुब्भपाणीति अहिंसकहत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 102; *अदुब्भपाणिं दहते मित्तदुब्भो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.207; *अदुब्भपाणिन्ति अदुब्भकं अत्तनो भुञ्जनहत्थमेव दहन्तो हि मित्तदुब्भी नाम होति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.208.

अदूर त्रि॰, [अदूर], पास में विद्यमान, दूर न रहने वाला, समीपवर्ती – *तत्थेव सा पोक्खरणी अदूरे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.40; तुल॰ अविदूरे; – **गत** त्रि॰, बहुत दूर तक न गया हुआ, बहुत कम दूरी तक ही गया हुआ, समीप गया हुआ – *सद्दे अदूरगते,* मि॰ प॰ 281; – **ट्ठ** त्रि॰, [अदूरस्थ], समीप में स्थित, बहुत दूर में नहीं स्थित – *नाद्दसामि अदूरट्ठं,* अप॰ 2.218; थेरीगा॰ अट्ठ॰ 148.

अदूसक पु॰, दूसक का निषे॰ [अदोषक], निर्दोष, निरपराध, दोष-रहित, दूषित न करने वाला – *अब्भाचिक्खिं अदूसकं,* अप॰ 1.328; *अदूसकेति निद्दोसे निरपराधे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.475; *अदूसके हिंसति पापधम्मो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.43.

अदूसिका स्त्री॰, दोष-हित नारी – *अदूसिकं सीलसम्पन्नं,* थेरीगा॰ 423; *अदूसिकायो हञ्ञन्ति,* सु॰ नि॰ 314.

अदूसितचित्त त्रि॰, दूसितचित्त का निषे॰, ब॰ स॰ [अदूषितचित्त], प्रदूषण-रहित, शुद्ध एवं स्वच्छ चित्त वाला, क्लेशों से रहित एवं निष्पापचित्त वाला – *अदुट्ठचित्तोति किलेसेहि अदूसितचित्तो हुत्वा ....,* जा॰ अट्ठ॰ 2.144.

अदूहल व्यु॰ अनि॰, पु॰/नपुं॰, संभवतः फंसाने वाला एक उपकरण, बंसी, चोरगढ़ा, फन्दा – *अदूहलादीनि विसङ्करित्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.28; *अदूहलं सज्जेन्तो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51; *अदूहलसतं सण्ठपेत्वा ....,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.28; *सज्जेन्तस्स अदूहलं,* विन॰ वि॰ 303; *सूलसतञ्च, पाससतञ्च, अदूहलसतञ्च योजेत्वा,* सा॰ सं॰ 53; – **पाद** पु॰, फंसाने वाला खूंटा – *अदूहलपादे च पासयट्ठियं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51; – **पासाण** पु॰, शिकार को फंसाने वाला पत्थर – *अदूहलपासाणा विय मिगं मारेसुं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.63; – **मञ्च** पु॰, फंसाने के लिए बनाया गया मञ्च – *अदूहलमञ्चं ठपेत्वा ....,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51.

अदेज्झ[1] **/ अद्वेज्झ / अभेज्झ** त्रि॰, [अद्वैध्य / अद्वैध / अभेद्य], दो भागों में विभाजित न किया हुआ, दूसरे द्वारा नहीं बहलाया गया, समग्र, एकाग्र, दुविधा से रहित – *समाधि मनसो अभेज्झो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.6.

अदेज्झ[2] त्रि॰ [अधिज्य], प्रत्यञ्चा चढ़ा हुआ धनुष, ऐसा धनुष जिसमें बाण को प्रत्यञ्चा या डोरी पर चढ़ा दिया गया हो – *धनुं अद्वेज्झं कत्वान,* जा॰ अट्ठ॰ 4.231; *अद्वेज्झं कत्वानाति जियाय च सरेन च सद्धिं एकमेव कत्वा,* तदे॰.

अदेति √अद से व्यु॰, क्रि॰ रू॰, [अत्ति], खाता है; – **सि** वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मं छादयमानो अदेसीति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.30; *न तादिसे भूमिपती अदेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.490; – **मि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न तादिसे भूमिपती अदेमि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.49; – **दन्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तेमे जने काकोलसंघा अदन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.129; *न सुनखस्स ते अदेन्ति मंसं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.181; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एतू भवं अस्समिमं अदेतु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.188; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, खा सके, खा ले, खाइये – *घासत्थिको कक्कटको अदेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 3.259; – **य्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *यं तादिसं जीवमदेय्युं धङ्का ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.102; *अदेय्युन्ति खादेय्युं,* तदे॰.

अदेय्य त्रि॰, देय्य का निषे॰ [अदेय], **क.** नहीं देने योग्य वस्तु – *अदेय्यो कस्सचि बुद्धो,* अप॰ 1.334; *न चापि मे किञ्चिमदेय्यमत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.388; **ख.** दानप्राप्ति के लिए अयोग्य, दान न पाने योग्य व्यक्ति – *अदेय्येसु ददं दानं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.9; *अदेय्येसूति पुब्बे अकतूपकारेसु,* तदे॰.

अदेवसत्त त्रि॰, देवसत्त का निषे॰, [अदेवसत्त्व], ऐसा प्राणी जो देवयोनि के यक्षों, भूतों आदि द्वारा गृहीत या अभिभूत न हो, वह, जिस पर यक्षों, भूतों आदि का प्रभाव न हो गया हो – *नादेवसत्तो पुरिसो थीनं सद्धातुमरहति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.442; *नादेवसत्तो ति ... देवेन अनासत्तो, अयक्खगहितको, अभूतविट्ठो पुरिसो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.443.

अदेस पु॰, देस का निषे॰ [अदेश], अनुपयुक्त स्थान, अनुचित क्षेत्र – *सो पत्तो न अदेसे निक्खिपितब्बो,* पारा॰ 370; *अदेसे वत नो वुट्ठ,* जा॰ अट्ठ॰ 6.270.

अदेसनागामी त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अदेशनागामी], अदेसनागामिनी आपत्ति, केवल पाप-स्वीकरण द्वारा परिमार्जित न होने वाला भिक्षु-अपराध – *अदेसनागामिनिया आपत्तिया कतं होति,* चूळव॰ 4; *अदेसनागामिनियाति पाराजिकापत्तिया वा सङ्घादिसेसापत्तिया वा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 2; – **टि॰** भिक्षु द्वारा किया गया वह अपराध, जिसका प्रायश्चित पाप-स्वीकरण मात्र से न हो, अदेसनागामी आपत्ति कहलाता है, सभी पाराजिक एवं संघादिसेस, इसी के अन्त॰ आते है.

अदोस[1] त्रि॰, दोस का निषे॰ [अदोष], **क.** निर्दोष, निरपराध, दोषरहित, शुद्ध, ठीक-ठाक – *तस्स अरा पि अवङ्का अदोसा ...,* अ॰ नि॰ 1(1).135; **ख.** पु॰, दोष का अभाव, हल्का-फुल्का मामला – *अदोसं दोसमञ्ञाय किमेवं करि भातिक,* म॰ वं॰

25.96; - **त्त** नपुं., भाव. [अदोषत्व], दोष-रहित होने की दशा - *अरानम्पि अवङ्कत्ता अदोसत्ता ...,* अ. नि. 1(1).135.

अदोस² पु., दोस का निषे. [अद्वेष], द्वेष, वैर या प्रतिहिंसा का अभाव, मैत्री-भावना, तीन कुशलमूलों में एक - *तं किं मञ्ञथ ... अत्थि अदोसो?,* अ. नि. 1(1).225; *यदपि ... अदोसो तदपि कुसलमूलं,* अ. नि. 1(1).233; *अदोसामोहेसुपि एसेव नयो,* ध. स अट्ठ. 172; - **टि.** हिंसा, चोरी आदि पाप-कर्मों से मन के विलग रहने के तीन मूल कारण, अलोभ, अद्वेष एवं अमोह बतलाए गए हैं। अदोस इन्हीं तीन कुशल-मूलों में एक है। यह पचीस शोभन चैतसिक धर्मों में एक है; - **ज** त्रि., [अद्वेषज], अद्वेष अथवा मैत्री भावना से उत्पन्न - *यं ... अदोसपकतं कम्मं अदोसजं ...,* अ. नि. 1(1).160; - **सज्झासय** त्रि., ब. स. [अद्वेषाध्याशय], अद्वेष से युक्त मनोवृत्ति वाला - *अदोसज्झासया च बोधिसत्ता दोसे दोसदस्साविनो,* विसुद्धि. 1.113; - **सुस्सद** त्रि., अद्वेष से परिपूर्ण - *इमे सत्ता ... अलोभुस्सदा अदोसुस्सदा अमोहुस्सदा च होन्ति,* विसुद्धि. 1.101; - **निदान** त्रि., ब. स. [अद्वेषनिदान], अद्वेषभाव से उत्पन्न किया गया - *यं ... कम्मं ... अदोस-निदानं ...,* अ. नि. 1(1).160; - **निद्देस** पु., [अद्वेषनिर्देश], अद्वेष का संक्षिप्त रूप में व्याख्यान या कथन - *अदोसनिद्देसे अदुस्सनकवसेन अदोसो,* ध. स. अट्ठ. 194; - **निस्सन्दता** स्त्री., तत्पु. [अद्वेषनिष्यन्दता], अद्वेष के फल या परिणाम होने की अवस्था - *... अदोसनिस्सन्दताय उळारं ...,* वि. व. अट्ठ. 11; - **पकत** त्रि., [अद्वेषप्रकृत], अद्वेष में उत्पन्न होने वाला, वह जिसके मूल में अद्वेष है - *यं अदोसपकतं कम्मं,* अ. नि. 1(1).160; - **पच्चय** त्रि., [अद्वेषप्रत्यय], अद्वेष द्वारा उत्पन्न किया गया - *अदोसपच्चया अनेके कुसला धम्मा सम्भवन्ति,* अ. नि. 1(1).233; - **समुदय** त्रि., ब. स. [अद्वेषसमुदय], वह जिसकी उत्पत्ति अद्वेष में हो - *यं ... कम्मं ... अदोससमुदयं,* अ. नि. 1(1).160.

अद्द¹ क. गति एवं याचना अर्थ वाली एक धातु - *अद्द गतियं, याचने च,* सद्द. 2.377; **ख.** याचना एवं यात्रा आदि अर्थों वाली एक धातु - *अद्द याचनयात्रादिस्वथो,* धा. म. 40; **ग.** हिंसा अर्थ वाली एक धातु - *अद्द हिंसायं,* सद्द. 2.544.

अद्द² / अद्दा √दिस का. अद्य., प्र. पु., ए. व. [अद्राक्], देखा - *यो सुखं दुक्खतो अद्द ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).257; थेरगा. 986; इतिवु. 35; *अद्दा राजानमङ्गतिं,* जा. अट्ठ. 7.131; तुल. अदक्खि, अद्दस, अद्दसा.

अद्द³ / अल्ल त्रि., [आर्द्र], गीला, भीगा हुआ - *तिन्तो'ल्लाद्दकिलिन्नोन्ना,* अभि. प. 753; *अद्दं च पाणिं परिवज्जयस्सु,* जा. अट्ठ. 7.207; *अल्लं तिन्तं पाणिं मा दहि, मा झापयि,* जा. अट्ठ. 7.207.

अद्दक नपुं., [आर्द्रक], हरा अथवा बिना सुखाया हुआ अदरख - *सिङ्गिवेरं तु अद्दकं,* अभि. प. 459; ... *अल्लसिङ्गीवेरलोणजीरकादयो कोट्टेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.238, समाना. अद्द, अल्ल, सिङ्गिवेर.

अद्दन नपुं., [अर्दन], उत्पीड़न, विध्वंस, विघ्न-बाधा, हिंसा - *अद्दनं परिप्लुता,* सद्द. 2.547; *अद्दनं हिंसा,* सद्द. 2.554; *अद्दनं गन्धपिंसनन्ति वदन्ति,* सद्द. 2.565.

अद्दभाव पु., [आर्द्रभाव], गीलापन, नमी, आर्द्रता - *अद्दभावो तिन्तभावो,* सद्द. 2.362.

अद्दस / अद्दसा √दिस अद्य., प्र. पु., ए. व., [अद्रशत्], **क.** उसने देखा - *अद्दसा भगवा आदिं,* सु. नि. 360; *तमद्दसा बिम्बिसारो,* सु. नि. 411; *अजितो अद्दस बुद्धं,* सु. नि. 1022; *तापसो तेसं किरियं सब्बं अद्दस,* जा. अट्ठ. 3.425; - **सुं / संसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *असुभं असुभतद्दसुं,* अ. नि. 1(2).60; *अद्दसंसु खो कुणालस्स सकुणस्स परिचारिका ...,* जा. अट्ठ. 5.417; - **द्दस** अद्य., म. पु., ए. व. - *अम्भो पुरिस, न त्वं अद्दस मनुस्सेसु पठमं देवदूतं पातुभूतन्ति,* म. नि. 3.218; - **स्सथ** अद्य., म. पु., ब. व. - *अपि मे मातरं अद्दस्सथ, अपि मे मातरं अद्दस्सथा ति,* म. नि. 2.318; पाठा. अद्दसथ; - **सं / स्स** अद्य., उ. पु., ए. व., - *अगारस्मिं वसन्तीहं ... अद्दसं विरजं बुद्धं,* थेरीगा. 108; *अद्दसाहं पतिं मतं,* थेरीगा. 218; *अज्झत्तसन्तिं पचिनं अदस्सं,* सु. नि. 843, पाठा. अद्दसं; - **साम / सम्ह** अद्य., उ. पु., ब. व. - *अद्दसाम खो मयं, भो, तं भवन्तं गोतमं गच्छन्तं ...,* म. नि. 2.348; *आम, अद्दसामाति,* जा. अट्ठ. 3.265; पाठा. अद्दसम्ह; *अद्दसम्ह तदारञ्ञे,* अप. 2.121; - **स्सासि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *अद्दस्सासि हरितरुक्खे,* जा. अट्ठ. 5.153; - **संसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *नेव खो, भिक्खवे, अद्दसंसुं नेवापिको च ...,* म. नि. 1.213; - **सारि** अद्य., म. पु., ए. व. - *छ जने येव अद्दसासीति,* मि. प. 269; - **सासिम्हि** अद्य., उ. पु., ए. व. - *पथे अद्दसासिम्हि भोजपुत्ते,* जा. अट्ठ. 5.159.

अद्दसिंगिवेर / अल्लसिंगिवेर नपुं., कर्म. स. [आर्द्रश्रृङ्गवेर], गीला अदरख - ... *अल्लसिङ्गीवेरलोणजीरकादयो ...,* जा. अट्ठ. 1.238.

अद्दा[1] स्त्री॰ [आर्द्रा], नक्षत्रों के बीच छट्ठा नक्षत्र – ... *मिगसिरमद्दा च पुनब्बसु* ..., अभि॰ प॰ 58; अद्दा पुनब्बसु फुस्सो ..., सद्द॰ 2.359.

अद्दा[2] √दा का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, द्रष्ट॰ अद्द के अन्त॰.

अद्दायते / अल्लायते अद्द[2] का ना॰ धा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ [आर्द्रयति], गीला जैसा प्रतीत होता है, भीगा सा लगता है – *अल्लायते अयं रुक्खो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.313; *अल्लायतेति उदकभरितो विय अल्लो हुत्वा पञ्ञायति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.314.

अद्दारिट्ठक पु॰, कर्म॰ स॰ [आर्द्रारिष्टक], अरिष्टक का ताजा बीज; – **वण्ण** त्रि॰, अरिष्टक के ताजे बीज जैसे काले रङ्ग या रूप वाला – *केसा ... कालका अद्दारिट्ठकवण्णा,* विभ॰ अट्ठ॰ 221; विसुद्धि॰ 1.240; *अद्दारिट्ठकवण्णाति अभिनवारिट्ठफलवण्णा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.288; – **समान** त्रि॰, ताजे अरिष्टक के फल जैसा काले रंग वाला – *मज्झेकण्हं होति ... अद्दारिट्ठकसमानं* ..., महानि॰ 261.

अद्दावलेपन त्रि॰, अद्द[2] + अवलेप ब॰ स॰ [आर्द्रावलेपन], नवीन या ताजे अवलेपन वाला – *अद्दावलेपना उपकारियो,* म॰ नि॰ 1.121; *कूटागारं साला वा बहलमत्तिका अद्दावलेपना,* स॰ नि॰ 2(2).187, पाठा॰ अद्दावलिम्पना.

अदि पु॰, [अद्रि], चट्टान, पर्वत, शिलाखण्ड – *पब्बतो गिरि सेलोद्दी,* अभि॰ प॰ 605, *अद्दि सिलुच्चयो चा ति गिरिपिण्णतियो इमा,* सद्द॰ 429.

अद्दिट्ठ त्रि॰, [अदृष्ट], वह, जो देखा नहीं गया है – *दिट्ठा वा येव अदिट्ठा,* सु॰ नि॰ 147; *यदा ते चिरवासिमाता अदिट्ठा,* स॰ नि॰ 2(2).313; – **टि॰** सुद्दिट्ठ (सुदिट्ठ) तथा दुद्दिट्ठ (दुदिट्ठ) की भांति यहां भी दकार का द्वित्वभाव है.

अदित / अट्टित त्रि॰, √अद्द[2] + इ + त [अर्दित], दुष्प्रभावित, पीड़ित, उत्पीड़ित, वह जिसे कष्ट, पीड़ा दी गई हो – *कामरागेन अट्टितो,* थेरगा॰ 406; *बन्धुसोकेन अद्दितो,* सद्धम्मो॰ 281; *तं सुत्वा काळकण्णी अद्दिता हुत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.228.

अदियति / अट्टीयति √अद्द[1] का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, उद्विग्न, व्यग्र, अथवा खिन्न होता है – *अट्टियामि हरायामि,* थेरीगा॰ 140; ... *एवमयं अट्टीयती'ति* ..., थेरीगा॰ अट्ठ॰ 246.

अदिलरट्ठ नपुं॰, एक राष्ट्र का नाम – *अल्लकप्परट्ठे पन दुब्भिक्खे,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.98, पाठा॰ अल्लकप्परट्ठ.

अद्दुव व्यु॰ संदिग्ध, घुटना – *न च अद्दुवेन सङ्घट्टेन्तो गच्छति,* म॰ नि॰ 2.346; *अद्दुवेन अद्दुवन्ति जण्णुकेन जण्णुकं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.274.

अद्ध[1] पु॰/नपुं॰, [अर्ध], आधा, द्रष्ट॰ अड्ढ के अन्त॰.

अद्ध[2] / **अड्ढ** त्रि॰, [आढ्य], धनी, सम्पन्न, समृद्ध – *अड्ढा दलिद्दा च फुसन्ति फस्सं,* थेरगा॰ 783.

अद्ध[3] पु॰, [अध्वन्, पु॰ अध्वान, नपुं॰], **शा॰ अ॰** स्थान एवं काल का क्षेत्र-विस्तार, कालावधि, समय या स्थानविषयक क्षेत्र-विस्तार – *अद्धो भागे पथे काले,* अभि॰ प॰ 994, *मग्गो पन्थो पथो चाद्धा,* अभि॰ प॰ 190; **ला॰ अ॰** मार्ग अथवा भवचक्र में संसरण कर रहे प्राणियों के जीवनकाल की विशिष्ट अवधि, अतीत, प्रत्युत्पन्न एवं अनागत, इन तीन खण्डों में प्राणियों के संसरण की स्थिति का द्योतक – *अतीतो महाराज अद्धा, अनागतो अद्धा, पच्चुपन्नो अद्धा'ति,* मि॰ प॰ 49; – **द्धा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ एवं ब॰ व॰ – *दीघो चद्धा सुदुग्गमो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.285; – **द्धानं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्तकं अद्धानं* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 68; *अद्धानं पटिपन्नस्स* ..., अप॰ 1.84; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अतीतद्धान, अनागतमद्धान, कान्तारद्धान, कालद्धान, गतद्धान आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰; **टि॰** भगवान बुद्ध ने प्रतीत्य-समुत्पाद-नय की 12 अनुलोम कड़ियों द्वारा चक्राकार अस्तित्व (भव-चक्र) में प्राणी के संसरण को प्रकाशित करते हुए यह सङ्केत भी दिया है कि प्राणी के संसरण का एक लम्बा मार्ग है जिसे 'दीघ अद्धा' कहा गया है। अतः 'अद्धा' का विशिष्ट पारिभाषिक तात्पर्य प्रतीत्यसमुत्पाद के आलोक में अवधेय है; – **ग** त्रि॰, [अध्वग], **शा॰ अ॰** मार्ग पर चला हुआ; **ला॰ अ॰** अधिक आयु वाला, वृद्ध – *वुड्ढो हेस्सति अद्धगो,* म॰ वं॰ 40.7; तुल॰ अद्धगू; – **गत** त्रि॰, [अध्वगत], **शा॰ अ॰** अधिक आयु को प्राप्त, भवचक्र के पर्याप्त मार्ग को पार कर चुका, अनुभवी, लम्बे समय को बिता चुका – *अद्धगतोति तयो अद्धे अतिक्कन्तो,* महानि॰ अट्ठ॰ 1[illegible] *अद्धगता ति अद्धं चिरकालं अतिक्कन्ता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.144; ... *चिरपब्बजितो अद्धगतो वयो अनुप्पत्तो* ..., दी॰ नि॰ 1.42; *अद्धगतोति अद्धानं गतो, द्वे तयो राजपरिवट्टे अतीतो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.120; ... *जिण्णो, वुड्ढो, महल्लको, अद्धगतो, वयो अनुप्पत्तो,* दी॰ नि॰ 1.99; **ला॰ अ॰** व्रतों एवं चर्याओं आदि की मर्यादा का अनुल्लंघन करते हुए आचरण करने वाला, अच्छे आचरण के मार्ग में पहुंचा हुआ – *अद्धगतोति मग्गपटिपन्नो ब्राह्मणानं वतचरियादिमरियादं अवीतिक्कम्मचरणसीलो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.228; – **गू** पु॰, [अध्वग], यात्री, भवचक्र द्वारा सङ्केतित जन्म-मरण के यात्रा-पथ का पथिक – *पथावी पथिकोद्धगु,* अभि॰ प॰ 347; *तस्मा न चद्धगू सिया,* ध॰ प॰ 302; *न हेव*

ठितं, नासीनं, न सयानं, न पद्धगुं, जा॰ अट्ठ॰ 3.81, द्रष्ट॰ अष्टा॰ 6.4.40–41 पर काशिका, तुल॰ अद्धग.

अद्धचन्द(क) पु॰, [चांदवाला] वड्ढचन्दक **क.** आधे चन्द्रमा के आकार वाला एक प्रकार का आभूषण – *तथा कलम्बकं कातुं, अद्धचन्दकमेव वा,* विन॰ वि॰ 471; 3030; *छत्तपण्णकेसु मकरदन्तकं वा अद्धचन्दकं वा छिन्दितुं न वट्टति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.232, पाठा॰ अड्ढचन्दक.

अद्धत्तय नपुं॰, समा॰, द्व॰ स॰, [अध्वत्रय], अतीत, प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) एवं अनागत (भविष्य), इन तीन कालों का समुच्चय, तीन काल – *किं अतिक्कमित्वा? अद्धत्तयं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.89.

अद्धद्धमास पु॰, [अर्धार्धमास], महीने का आधा-भाग, महीनों का प्रत्येक पक्ष – *अद्धद्धमासे पन्नरसे,* चरिया॰ 379, पाठा॰ अन्वद्धमासे.

अद्धनख त्रि॰, ब॰ स॰ [अर्धनख], प्रदूषित अथवा सड़ा गला नाखून – *अन्धनखोति पूतिनखो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.320, अपपा॰ अन्धनख.

अद्धनिय त्रि॰, अद्ध से व्यु॰, [बौ॰ सं॰ अध्वानीय], **शा॰ अ॰** यात्रा करने के लिए उपयुक्त (मार्ग) यात्रा करने योग्य – *सुखा उतु अद्धनिया ...,* थेरगा॰ 529; *अद्धनियाति अद्धानगमनयोग्गा उतु,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.145; **ला॰ अ॰** टिकाऊ, देर तक ठहरने योग्य, दीर्घकालिक, चिरस्थितिक – *यथयिदं ब्रह्मचरियं अद्धनियं अस्स चिरट्ठितिकं,* पारा॰ 8; *तत्थ अद्धनियन्ति अद्धानक्खमं दीघकालिकं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.146; ... *यथयिदं सासनं अद्धनियं अस्स चिरट्ठितिकं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 73.

अद्धभूत त्रि॰, [अध्वभूत], **क.** पर-निर्भर, परतन्त्र, अस्वतन्त्र, बन्धन में बंधा हुआ, अभिभूत – *सब्बं अद्धभूतं ... चक्खु ... अद्धभूतं ... जातिया जराय ... अद्धभूतं,* स॰ नि॰ 2(2).19; *अद्धभूतन्ति अधिभूतं अज्झोत्थटं, उपद्दुतं ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.10; **ख.** अधिभूत, ग्रस्त – *अधिभवीयते सो ति अधिभूतो, एवं अद्धभूतो,* सद्द॰ 1.79, पाठा॰ अण्डभूत एवं अद्दभूत.

अद्धर पु॰, [अध्वर], एक प्रकार का यज्ञ-विशेष, सोमयज्ञ, अहिंसकयज्ञ – *अद्धरो नाम यञ्ञविसेसो,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.355.

अद्धरिया पु॰, [आध्वरिक, अध्वर्यु], पुरोहित, यज्ञ में होता, उद्गाता एवं ब्रह्मा के अतिरिक्त चौथा पुरोहित, यज्ञ का सञ्चालक करने वाले ब्राह्मणों का एक वर्गविशेष, यजुर्वेदी यज्ञ-पुरोहित – *अद्धरो नाम यञ्ञविसेसो, तदुपयोगभावतो 'अद्धरिया' त्वेव वुच्चन्ति यजूनि, तानि सज्झायन्तीति 'अद्धरिया' यजुब्बेदिनो,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.355.

अद्धवग्ग पु॰, स॰ नि॰ के देवतासंयुत्त के एक वर्ग का नाम, स॰ नि॰ 1.45–48.

अद्धविहीन त्रि॰, नाबालिग, अपरिपक्व आयु वाला – *अद्धविहीनो अंगविहीनो,* उ॰ वि॰ 435, समाना॰ अद्धानहीन.

अद्धा अ॰, निश्चयार्थक निपा॰ [अद्धा], सचमुच, बिल्कुल, अवश्य, निस्सन्देह, प्रकटतः, स्पष्ट रूप से – *एकंसेद्धा व्ययन्तरे,* अभि॰ प॰ 994; ... *अद्धा कामं जातुचे हवे,* अभि॰ प॰ 1140; *अद्धा, पसंसाम सहायसम्पदं,* सु॰ नि॰ 47; *अद्धाति एकंसवचनं निस्संसयवचनं निक्कङ्खावचनं अद्वेज्झवचनं अद्वेळ्हकवचनं नियोगवचनं अपण्णकवचनं अवत्थापनवचनं,* महानि॰ 2; *अद्धा पटिञ्ञातमेतं तदाहु ...,* पे॰ व॰ 528; *अद्धा'ति एकंसेन,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 193; **अन्य निपा॰ के साथ भी प्रयुक्त क. 'खो' के साथ** – *अद्धा खो, भन्ते, एवं सन्ते ...,* दी॰ नि॰ 1.53; *अद्धाति एकंसवचनमेतं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.140; **ख. 'हवे' के साथ** – *अद्धा हवे सेवितब्बा सपञ्ञा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.268; **ग. 'हि' के साथ** – *अद्धा हि भगवा तथेव एतं,* सु॰ नि॰ 377; **घ. भवि॰ के क्रि॰ रू॰ के साथ** – *अद्धा गमिस्सामि न मेत्थ कंखा,* सु॰ नि॰ 1155; *अद्धा चरिस्सन्ति बहू च सद्धा,* स॰ नि॰ 1(1).149.

अद्धा-कथा स्त्री॰, कथा॰, के 15वें अध्याय के तीसरे खण्ड का नाम, कथा॰ 413–15.

अद्धान नपुं॰, [अध्वन], **शा॰ अ॰** दीर्घकाल की अवधि अथवा लम्बा मार्ग – *काले, दीघञ्जसेद्धानं,* अभि॰ प॰ 1100, *अद्धानं दीघमञ्जसं,* अभि॰ प॰ 192, द्रष्ट॰ अद्धन, **ला॰ अ॰** प्राणी के द्वारा तीनों कालों में किये जा रहे संसरण का मार्गखण्ड, प्रतीत्यसमुत्पाद द्वारा वर्णित संसरण की कभी अन्त न होने वाली यात्रा के तीन खण्ड – *एवमिदं दीघमद्धानं सन्धावितं संसरितं,* दी॰ नि॰ 2.71; *एवमेतं दीघमद्धानं सन्धावितं,* मि॰ प॰ 48; – *अतीतस्स अद्धानस्स किं मूलं ...,* मि॰ प॰ 50; – *अतीतद्धानन्ति अतीते अद्धाने,* जा॰ अट्ठ॰ 3.37; – **इरियापथ** पु॰, लम्बे समय से चल रही शारीरिक क्रिया; दीर्घकालीन गमन, जाने, खड़े होने, बैठने एवं लेटने की चार शारीरिक चेष्टाएं – *अद्धानइरियापथा चिरप्पवत्तिका दीघकालिका इरियापथा,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(1).323; ... *इमस्मिञ्हि ठाने अद्धानइरियापथा कथिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).279; तुल॰ मज्झिमा-इरियापथ तथा चुण्णिक-इरियापथ,

द्रष्ट॰ म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).279, म॰ नि॰ टी॰ (मू.प॰) 1(1).323; – **किलमथ** पु॰, लम्बी यात्रा के कारण उत्पन्न शारीरिक थकान – *सो अद्धानकिलमथं विनोदित्वा ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 157; – **कोविद** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, मार्ग को जानने वाला – *नाहं दुक्खक्खमा राज, नाहं अद्धानकोविदा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.185; – **क्खम** त्रि॰, लम्बे समय तक टिकाऊ, लम्बी दूरी को सहन करने में सक्षम – *... एवञ्हि सो रथो अद्धानक्खमो होति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.143; *अद्धानक्खमो होति,* अ॰ नि॰ 2(1).25; *अद्धानक्खमो होतीति दूरं अद्धानमग्गं गच्छन्तो खमति, अधिवासेतुं सक्कोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.12; – **गमन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, मार्ग पर गमन, यात्रा में गमन – *चारिकं चरमानोति अद्धानगमनं गच्छन्तो,* उदा॰ अट्ठ॰ 148; *एकस्सद्धानगमनं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.373; – **दरथ** पु॰, यात्रा से उत्पन्न कष्ट या व्यथा – *... सब्बं अद्धानदरथं वूपसमेन्तो विय ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.231; – **नन्तरता** स्त्री॰, अद्धान + अनन्तर का भाव॰, कालविस्तार-विषयिणी व्यवधान-रहित समीपता, काल की अनन्तरता – *अद्धानन्तरताय अनन्तरपच्चयो ...,* पट्ठा॰ अट्ठ॰ 345; द्रष्ट॰ कालन्तरता; – **पञ्ह** पु॰, [अध्व-प्रश्न], मि॰ प॰ के दूसरे वग्ग अद्धान-वग्ग के एक खण्ड का नाम, मि॰ प॰ 48-49; – **परिच्छेद** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अध्वपरिछेद], **क.** काल का तीन कालों में बटवारा, समय का समुचित विभाजन – *नो च खो अद्धानपरिच्छेदे कुसलो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1). 128; **ख.** कालविषयक निर्धारण, जीवनावधि का निर्धारण – *... एवं अरिया ... अद्धानपरिच्छेदं कत्वा ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 28; *अद्धानपरिच्छेदोति जीवितद्धानस्स परिच्छेदो,* विसुद्धि॰ 2.348; – **परिञ्ञा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, निर्वाण, निर्वाण के मार्ग का परिज्ञान – *अद्धानपरिञ्ञत्थं खो, आवुसो, भगवति ब्रह्मचरियं वुस्सती'ति ...,* स॰ नि॰ 3(1).26; *अद्धानपरिञ्ञत्थन्ति संसारद्धानं निब्बानं पत्वा परिञ्ञातं नाम होति, तस्मा निब्बानं अद्धानपरिञ्ञा'ति वुच्चति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.168-169; – **परियायपथ** पु॰, अद्धान नामक लम्बा गमनपथ, लम्बी दूरी वाला रास्ता – *... मा नं कुणालं सकुणं अद्धानपरियायपथे किलमथो उब्बाहेत्था'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.412; – **परिस्सम** पु॰, तत्पु॰ स॰, मार्ग पर चलने से होने वाला परिश्रम – *... अद्धानपरिस्समं पटिविनोदेत्वा ...,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 259; – **मग्ग** पु॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अध्वमार्ग, अध्वानमार्ग], यात्रा करने के लिए प्रयुक्त मार्ग, ऊंचा राजमार्ग, राजपथ – *... सावत्थिं उद्दिस्स गिम्हसमये अद्धानमग्गं पटिपन्ना,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 30; – **मग्गपटिपन्न** त्रि॰, राजमार्ग पर जाता हुआ – *... अञ्ञतरो भिक्खु कोसलेसु जनपदे अद्धानमग्गप्पटिपन्नो होति,* महाव॰ 116; *... भगवा अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नाळन्दं अद्धानमग्गप्पटिपन्नो होति,* दी॰ नि॰ 1.1; – **वेमत्तता** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, कालावधि-विषयक विषमता, समय की अवधि का अन्तर, बोधिसत्त्व द्वारा पारमिताओं के परिपाचन हेतु अपेक्षित कालावधि से सम्बन्धित अन्तर – *अयं नेसं अद्धानवेमत्तता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.122.

अद्धापच्चुप्पन्न त्रि॰, कालावधि अथवा क्षण विशेष की दृष्टि से वर्तमान, समय की सन्तति में विद्यमान – *पच्चुप्पन्नञ्च नामेतं तिविधं – खणपच्चुप्पन्नं सन्ततिपच्चुप्पन्नं अद्धापच्चुप्पन्नञ्च,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 435.

अद्धाभवति क्रि॰ रू॰, अधि + √भू अथवा अभि + √भू का स्था॰, अभिभूत करता है, ऊंचे स्तर पर होता है, प्राधानता में होता है, प्रमुख होता है – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अभिभूत करते हुए – *अथप्पियं वा पन अप्पियं वा अद्धाभवन्तो अभिसम्भवेय्य,* सु॰ नि॰ 974; *अद्धाभवन्तो ... ति एवं पियप्पियं अभिभवन्तो ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.265; – **द्धभवि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *किंसु सब्बं अद्धभवि,* स॰ नि॰ 1(1).45; *अद्धभवीति नामं सब्बं अभिभवति अनुपतति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.85; – **द्धभावेति** प्रेर॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *... न हेव अनद्धभूतं अत्तानं दुक्खेन अद्धभावेति,* म॰ नि॰ 3.9.

अद्धिक त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अध्विक], यात्री, पथिक, राहगीर, घुमक्कड़ – *... कन्तारपटिपन्नो याव इच्छितद्धानं न पापुणाति, ताव अद्धिकोयेव,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.341; *... एकं अद्धिकं दिस्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.252; *अद्धिकेति अद्धानं आगते,* जा॰ अट्ठ॰ 4.87.

अद्धुव त्रि॰, ध्रुव का निषे॰ [अध्रुव], अस्थिर, चलनशील, अनिश्चित, अशाश्वत, वह जो स्थिर, टिकाऊ अथवा सदा बना रहने वाला न हो – *... ते मयं अनिच्चा अद्धुवा अप्पायुका ...,* दी॰ नि॰ 1.16; *अनिच्चा वत सङ्खारा, अद्धुवा, तावकालिका,* अना॰ वं॰ 135; *अनिच्चा अद्धुवा कामा,* थेरीगा॰ 491; *... एवं अद्धुवा, भिक्खवे, सङ्खारा ...,* स॰ नि॰ 1(2). 171; – **सील** त्रि॰, ब॰ स॰, अनिश्चित आचार वाला, स्वभाव से ही विनश्वर, अनिश्चित प्रकृति का, अनैतिक – *निच्चं अद्धुवसीलस्स सुखभावो न विज्जति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.63.

अद्धूननव त्रि॰, अद्ध[1] + ऊन + नव [अर्धोननव], साढ़े आठ, नौ में आधा कम, 8.5 – *अद्धूननवमत्ता भाणवारा,* उदा॰ अट्ठ॰ 4, पाठा॰ अड्ढूननव.

अद्धोट्ठ त्रि., ब. स. [अर्धोष्ठ], कटे हुए होठ वाला, खण्डित होठ वाला, खण्डोष्ठ; - **ता**, स्त्री. भाव., खण्डित होठ होने की अवस्था - *ओट्ठद्धोति अद्धोट्ठताय एवंलद्धनामो,* दी. नि. अट्ठ. 1.249.

अद्वय त्रि., [अद्वय], एक, द्वित्वरहित, विभेद रहित, अकेला, दो भागों में अविभक्त - *रूपञ्च अत्तानञ्च अद्वयं समनुपस्सति,* ध. स. अट्ठ. 382; *पठवीकसिणमेको सञ्जानाति उद्धमधो तिरियं अद्वयं अप्पमाणं,* म. नि. 2.217.

अद्वारिक त्रि., द्वारिक का निषे. [अद्वारिक], **क.** बिना द्वार वाला, दरवाजा रहित - *अद्वारिकं घरं पविट्ठो विय चरति,* उदा. अट्ठ. 271; **ख.** पांच इन्द्रिय-द्वारों में से किसी एक से उदित न होने वाली वेदना - *अद्वारिकानञ्च पटिसन्धिभवङ्गचुतिवेदनानं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).230.

अद्वित्त नपुं., द्वित्त का निषे. [अद्वित्व], किसी भी वर्ण-विशेष के द्वित्व का अभाव - *दास्स दं वा मिमेस्वद्वित्ते,* मो. व्या. 4.22.

अद्वेज्झ त्रि., द्वेज्झ का निषे. [अद्वैध्य], द्विधाभाव अथवा दो भागों में विभक्त होने की स्थिति से रहित, असंदिग्ध, दुविधा-रहित, सुस्पष्ट, केवल स. प. के पू. प. के रूप में ही प्रयुक्त; तुल. अदेज्झ[1] एवं अद्वेज्झक; - **कथा** स्त्री., कर्म. स. [अद्वैध्यकथा], दुविधा से रहित सच्चा कथन, सुस्पष्ट कथन - *अद्वेज्झकथाय परिसुद्धकथाय कथितभावमस्स,* दी. नि. अट्ठ. 3.109; - **गामी** त्रि., दुविधा-रहित अथवा सुनिश्चित स्थिति की ओर ले जाने वाला - *अविरुद्धो अद्वेज्झगामी एकंसगाहिको,* म. नि. अट्ठ.(म.प.) 2.84; - **ता** स्त्री., भाव., दुविधा-रहित स्थिति, स्पष्ट स्थिति - *अद्वेज्झता सुहदयं ममन्ति,* जा. अट्ठ. 4.68; - **भाव** पु., दुविधा-रहित अवस्था, सुस्पष्ट स्थिति - *एवं अद्वेज्झभावेन यं जानाति,* जा. अट्ठ. 4.70; - **मानस** त्रि., ब. स. [अद्वैध्यमानस], दुविधा-रहित मन वाला, स्थिर मनोवृति वाला - *तत्थ अद्वेज्झमानसो, सम्बोधिं पापुणिस्सति,* जा. अट्ठ. 1.30; - **वचन** त्रि., ब. स. [अद्वैध्यवचन], **क.** दो तरह की बातें न बोलने वाला, अमोघ वचन बोलने वाला, - *अद्वेज्झवचना बुद्धा, अमोघवचना जिना,* बु. वं. 2. 109; *अमोघवचना बुद्धा भगवन्तो तथवचना अद्वेज्झवचना,* मि. प. 142; **ख.** नपुं., सुनिश्चितता-द्योतक वचन, एकांशवचन - *अद्धा'ति एकंसवचनं .... अद्वेज्झवचनं ...,* महानि. 2; - **वाच** त्रि., अद्वेज्झवचनं का ही समाना. - *अद्वेज्झवाचो अलिकं विवज्जयि,* दी. नि. 3.128.

अद्वेळ्हक त्रि., द्वेळ्हक का निषे. [अद्वैधक अथवा अद्वैढक], दुविधा न रखने वाला, संशय से मुक्त - **वचन** नपुं., [अद्वेज्झवचन], सुनिश्चित अर्थ का वाचक - *अद्धाति ... अद्वेळ्हकवचनं ...,* महानि. 2; *अद्वेळ्हकवचनन्ति द्विहदयाभावेन अद्वेळ्हकं,* महानि. अट्ठ. 15, तुल. अद्वेज्झ.

अधंसिय त्रि., अ + √ध्वंस + य [अध्वंस्य], ध्वंस न करने योग्य, विनाश न करने योग्य - *दुट्ठेहि च अधंसियो,* सद्धम्मो. 308.

अधक्खक नपुं., तत्पु. स. [अधो-अक्ष], हंसुली के नीचे का भाग - *अधक्खकन्ति अक्खकतो पट्ठाय अधो,* पारा. अट्ठ. 2. 122; *अधक्खकन्ति हेट्ठक्खकं,* पाचि. 287; *अधक्खकन्ति अक्खकानं अधो,* पाचि. अट्ठ. 163; द्रष्ट. अक्खक, पाठा. अधक्खकं अ..

अधग्ग त्रि., ब. स., वह ऊपरी दांत जिसका अग्रभाग नीचे की ओर हो - *अधग्गाति उपरिमदन्ता,* जा. अट्ठ. 5.151.

अधञ्ञ त्रि., धञ्ञ का निषे. [अधन्य], अप्रसन्न, दुखी - *अधञ्ञो वतस्मिं ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.120.

अधन त्रि., धन का निषे., ब. स. [अधन], धनविहीन, दरिद्र - ... *विजिते अधना अस्सु ...,* दी. नि. 3.44; *अधनस्स अकिञ्चनस्स,* जा. अट्ठ. 5.242.

अधम त्रि., [अधम], निकृष्टतम, हीनतम, सब से तुच्छ, अत्यधिक घटिया - *अधमोमकगारव्हा,* अभि. प. 700; *अधमो कुच्छिते ऊने,* अभि. प. 1070; ... *सचे अत्तनो उत्तमं अधमञ्च न जानाथाति,* जा. अट्ठ. 5.390; - **मङ्ग** नपुं., कर्म. स. [अधमाङ्ग], शरीर का सबसे नीचे का अङ्ग, पैर; - **जन** पु., कर्म. स. [अधमजन], निम्न या बुरी प्रकृति वाला मनुष्य, तुच्छ जन - *अधमजनूपसेवीति अधमजनं उपसेवी ...,* जा. अट्ठ. 3.284; *यो उत्तमो अधमजनूपसेवी ...,* तदे.; *पस्सुत्तमं अधमजनूपसेवितं,* तदे..

अधमण्ण पु., [अधमर्ण], ऋण लेने वाला कर्जदार - *अधमण्णो तु इणायिको,* अभि. प. 470; विप. उत्तमण्ण.

अधम्म[1] पु., धम्म का निषे. [अधर्म], **1.** अकुशल शारीरिक, वाचिक एवं मानसिक कर्म, अनैतिक आचरण, अननुमोदित वाक्कर्म, पापकर्म, अपुण्य, अनर्थ - *अधम्मो निरयं नेति,* थेरगा. 304; *धम्मं भणे नाधम्मं,* सु. नि. 452; *धम्मो हवे पातुरहोसि पुब्बे, पच्छा अधम्मो उदपादि लोके,* जा. अट्ठ. 4.91; **2.** अस्वभाव, अलक्षण, तत्थ - *धम्मन्ति सभावं, ... अधम्मो नाम असभावो ...,* जा. अट्ठ. 3.325; - **टि.**

पालि-त्रिपिटक तथा अट्ठ० आदि में 'धम्म' शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में हुआ है (द्रष्ट० धम्म, आगे) यद्यपि शब्द-संरचना की दृष्टि से अधम्म पद 'धम्म' का विलोम है परन्तु यह धम्म के सभी सङ्केतित तात्पर्यों का निषे० नहीं है। स्कन्धों, आयतनों आदि के सूचक 'धम्म' के निषे० रू० में अधम्म का प्रयोग साहित्य में नहीं दिखता। यहां 'अधम्म' का तात्पर्य उन अकुशल कर्मों से है जो लोभ, मोह एवं द्वेष नामक तीन अकुशलमूलों से सहगत होकर उत्पन्न होते रहते हैं तथा जिनके एक प्रकार के विपाक के प्रभाव से प्राणी को चार प्रकार की अपायभूमियों में से किसी एक में पुनर्जन्म लेकर दुख भोगने को विवश होना पड़ता है; – **कम्म** नपुं०, कर्म० स० [अधर्मकर्म], धर्म-विपरीत कर्म, अकुशल कर्म, पापकर्म – *न, भिक्खवे, अधम्मकम्मं कातब्बं,* महाव० 143; *अधम्मकम्मे धम्मकम्मसञ्ञी,* पाचि० 56; ... *यस्सं परिसायं अधम्मकम्मानि नप्पवत्तन्ति,* अ० नि० 1(1).90; – **कार** पु०, [अधर्मकार], धर्म-विपरीत क्रिया, अधार्मिक आचरण – *अधम्मकारोति ... ठपितं विनिच्छयधम्मं भिन्दित्वा पवत्ता अधम्मकिरिया,* जा० अट्ठ० 4.358; – **कारक** त्रि०, [अधर्मकारक], धर्म-विपरीत काम करने वाला, प्राणिहिंसादि अकुशल कर्म करने वाला – ... *ते ते अधम्मकारके पक्खन्दित्वा खादितुकामतं विय कत्वा दस्सेति,* जा० अट्ठ० 4.165; – **किरिया** स्त्री०, ष० तत्पु० [अधर्मक्रिया], अधर्म की क्रिया, अन्याय – *अधम्मकारोति ... पवत्ता अधम्मकिरिया,* जा० अट्ठ० 4.358, अधम्मकारो का समाना०; – **गारव** त्रि०, बहु० स० [अधर्मगौरवक], अधर्म में गौरव अनुभव करने वाला – *ये केचि कामेसु असञ्ञता जना, अधम्मिका होन्ति अधम्मगारवा,* अ० नि० 1(2).22; – **चरण** नपुं०, तत्पु० [अधर्मचरण], धर्म-विपरीत आचरण, कपटपूर्ण व्यवहार – *धिरत्थु तं यसलाभं, धनलाभञ्च ब्राह्मण, या वुत्ति विनिपातेन, अधम्मचरणेन वा,* जा० अट्ठ० 2.348; अधम्मकिरिया एवं अधम्मकारो का समाना०; – **चरिया** स्त्री०, तत्पु० [अधर्मचर्या], विसमचर्या, पापाचार, धर्म-विपरीत अनुचित आचरण – *न च सप्पुरिसो कायदुच्चरितादिवसेन अधम्मचरियं चरेय्य,* जा० अट्ठ० 2.348; *अधम्मचरियाविसमचरियाहेतु खो, गहपतयो, ... निरयं उपपज्जन्ति,* म० नि० 1.359; – **चारी** त्रि०, [अधर्मचारी], दस प्रकार के अकुशल कर्म करने वाला, पाप अथवा अधर्म का आचरण करने वाला – *तिविधं खो, गहपतयो, कायेन अधम्मचारी ... चतुब्बिधं वाचाय अधम्मचारी ... तिविधं मनसा अधम्मचारी विसमचारी होति,* म० नि० 1.366; – **टि०** प्राणिहिंसा, अदत्त का आदान एवं अब्रह्मचर्य, ये तीन कायिक पाप कर्म हैं, असत्य-भाषण, चुगली, कठोर वाणी एवं निरर्थक वार्तालाप, ये चार वाणी के पापकर्म हैं तथा लोभ, द्वेष एवं मिथ्या-दृष्टि, ये तीन मानसिक पाप-कर्म हैं. दस प्रकार के इन्हीं पापकर्मों को करने वाला ही 'अधम्मचारी' कहलाता है; – **चुदित** त्रि०, तत्पु० [अधर्मचुदित], अनुचित-रूप से प्रेरित किया गया – *अधम्मचुदितस्स, आवुसो, भिक्खुनो पञ्चहाकारेहि अविप्पटिसारो उपदहातब्बो,* अ० नि० 2(1).182; – **चोदक** त्रि०, ब० स० [अधर्मचोदक], विनय द्वारा निर्धारित मापदण्डों का पालन किए बिना ही दूसरे भिक्षु को विनय की शिक्षा पर चलने हेतु प्रेरित करने वाला – *अधम्मचोदकस्स, आवुसो, भिक्खुनो पञ्चहाकारेहि विप्पटिसारो उपदहातब्बो,* अ० नि० 2(1).183; चूळव० 411; – **टि०** विनय की शिक्षाओं के अनुसार यदि कोई वरिष्ठ भिक्षु किसी कनिष्ठ भिक्षु को विनय शिक्षापदों के अनुरूप आचरण करने को प्रेरित करना चाहता है तो उसे पहले अपने अन्दर पांच धर्मों का प्रत्यवेक्षण करने के उपरान्त ही दूसरे भिक्षु को शुद्ध आचरण हेतु प्रेरित करना चाहिए। उसे निम्नलिखित पांच बातों के बारे में अच्छी तरह स्वयं आत्म-मन्थन कर लेना चाहिए: – 1. क्या मेरे शारीरिक कर्म परिशुद्ध हैं? 2. क्या मेरे वाणी के कर्म परिशुद्ध हैं? 3. क्या मेरे चित्त में साथी भिक्षुओं के प्रति मैत्रीभावना जागृत है ? 4. क्या मैं बहुश्रुत हूं एवं सूत्रान्तों का अच्छा ज्ञान पा चुका हूं? 5. क्या मुझे प्रातिमोक्ष-सूत्रों का सुस्पष्ट ज्ञान है? इसके अतिरिक्त उसे अपने अन्दर कालवादी, भूतवादी, मृदुवादी, अर्थवादी एवं मैत्रीचित्त-सहित वादी, इन पांच धर्मों को जागरूक करके ही अन्यों को मार्ग-दर्शन देना चाहिए. जो भिक्षु ऊपर उल्लिखित पूर्वाधारों के बिना ही दूसरों का विनय के विषय में मार्गदर्शन करता है, वही अधम्मचोदक है; – **ट्ठ** त्रि०, [अधर्मस्थ], अधर्म में स्थित, पापमय जीवन बितानेवाला – *खत्तियो च अधम्मट्ठो, वेस्सो चाधम्मनिस्सितो, ते परिच्चज्जुभो लोके, उपपज्जन्ति दुग्गतिं,* जा० अट्ठ० 3.167; – **त्त** नपुं०, भाव० [अधर्मत्व], धर्म-प्रतिकूलता, धर्म-आचरण से वैपरीत्य, दुष्टता, पाप-परायणता – ... *इदं, भिक्खवे, कम्मं अधम्मत्ता वग्गत्ता कुप्पं अट्ठानारहं,* महाव० 412; तुल० वग्गत्त अथवा वग्गत्ता; – **दिट्ठि** त्रि०, ब० स० [अधर्मदृष्टि], विनय-निर्दिष्ट पांच आपत्तियों या अपराधों में आपतित ऐसा भिक्षु जो धर्मानुकूल आचरण में भी अधर्म की मिथ्या धारणा बनाता है – *पञ्च आपत्तियो*

... *कते वा पन कम्मे अधम्मदिट्ठि होति,* परि॰ 253; – **निविट्ठ** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अधर्मनिविष्ट], अधर्म में पूरी तरह से डूबे हुये चित्त वाला, अज्ञानी – *पुथुज्जनताय अधम्मा निविट्ठा,* थेरगा॰ 1226; *पुथु जनताय अधम्मा निविट्ठा,* स॰ नि॰ 1(1).217; – **निस्सित** त्रि॰, [अधर्मनिश्रित], अधर्म में पूरी तरह से डूबे हुये चित्त वाला, अज्ञानी, पृथग्जन – *वेस्सो चाधम्मनिस्सितो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.167; – **बलि** पु॰, तत्पु॰ [अधर्मबलि], अधर्मपूर्वक लिया गया कर या राजस्व – *अरक्खिता जानपदा, अधम्मबलिना हता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.97; – **राग** पु॰, कर्म॰ स॰ [अधर्मराग], अधर्म से भरा हुआ राग, अनुचित लोभ अथवा अधर्म-प्रेरित आसक्तिभाव, अनुपयुक्त स्थलों के प्रति आसक्तिभाव – *मिच्छादिट्ठिया वेपुल्लं गताय तयो धम्मा वेपुल्लमगमंसु, अधम्मरागो विसमलोभो मिच्छाधम्मो,* दी॰ नि॰ 3.52; *अधम्मरागोति माता मातुच्छा पितुच्छा मातुलानीति आदिके अयुत्तट्ठाने रागो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.33; – **रागरत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अधर्मरागरक्त], अनुपयुक्त लगावों में आसक्त – *एतरहि, ब्राह्मण, मनुस्सा अधम्मरागरत्ता विसमलोभाभिभूता मिच्छाधम्मपरेता,* अ॰ नि॰ 1(1).187; – **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰ [अधर्मरूप], दुष्ट, पापी, अधर्म भरे स्वभाव वाला – *अधम्मरूपो वत ब्रह्मचारी,* जा॰ अट्ठ॰ 5.103; *अधम्मरूपो वत राजसेट्ठो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.178; – **लद्ध** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अधर्मलब्ध], जो न्यायपूर्वक प्राप्त नहीं किया गया है, अधर्म अथवा अनुचित उपायों से प्राप्त – *अधम्मलद्धं पन सहस्सग्घनकम्पि जिगुच्छनीयमेवाति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.77; – **वादी** त्रि॰, [अधर्मवादी], धर्म की त्रुटिपूर्ण व्याख्या करने वाला, धर्म-विपरीत बातों को कहने वाला, संभिन्न-प्रलाप में अन्तर्भूत अकुशल वाक्यप्रयोग को करने वाला – *सम्फप्पलापी खो पन होति, अकालवादी अभूतवादी अनत्थवादी अधम्मवादी अविनयवादी ...,* म॰ नि॰ 1.360; *अञ्ञतरो अधम्मवादी भिक्खु भगवन्तं एतदवोच,* महाव॰ 462; – **वितक्क** पु॰, [अधर्मवितर्क], अधर्म से भरा हुआ अथवा पापमय चिन्तन, कामभोग-विषयक चिन्तन – *धम्मवितक्कञ्ञेव वितक्केति नो अधम्मवितक्कं,* इतिवु॰ 59; – **सञ्ञी** त्रि॰, ब॰ स॰ [अधर्मसंज्ञी], धर्म में भी अधर्म देखने वाला, किसी वस्तुविशेष या कार्यविशेष को धर्म के विपरीत मानने वाला – *द्वेमे, भिक्खवे, बाला ... यो च धम्मे अधम्मसञ्ञी,* अ॰ नि॰ 1(1).102; – **सम्मत** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अधर्मसम्मत], धर्म के रूप में अननुमोदित, धर्म द्वारा अस्वीकृत – *अधम्मसम्मतं खो, पन, वासेट्ठ, तेन समयेन होति, तदेतरहि धम्मसम्मतं,* दी॰ नि॰ 3.66; – **हास** पु॰, [अधर्महास], द्वेषपूर्ण हंसी अथवा द्वेष भरी प्रसन्नता का भाव – *ततियं अधम्महासं वज्जेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.109; – **मादि-वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ के एक वग्गविशेष का नाम, अ॰ नि॰ 1(1). 19–25 में पमादादिवग्ग नाम से, रो॰ सं॰ में अधम्मादिवग्ग पा॰ टे॰ सो॰ 1.16–19; – **माभिरत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अधर्माभिरत], अधर्म में पूरी तरह से डूबा हुआ, पाप कर्म में आनन्द लेने वाला – *अधम्माभिरता विसमचारिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.163.

अधम्म² त्रि॰, [अधार्मिक], धर्म-विपरीत आचरण करने वाला, मिथ्या वितर्क वाला, धर्म से रहित – *पुथुज्जनताय अधम्मा निविट्ठा,* थेरगा॰ 1226; *ते पन मिच्छावितक्का ... अधम्मा, धम्मतो अपेता पुथुज्जनतायं अन्धबाले निविट्ठा ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.440.

अधम्म³ पु॰, व्यक्तिसूचक, यक्ष के रूप में उत्पन्न देवदत्त के पूर्वजन्म का नाम – ... *देवदत्तो अधम्मो नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 4.90; मि॰ प॰ 194.

अधम्मिक त्रि॰, धम्मिक का निषे॰ [अधार्मिक], धर्म में निषिद्ध, धर्म-विरुद्ध, पापी, अधार्मिक, विनय-शिक्षापदों का उल्लंघन करने वाला भिक्षु – *धम्मेन च अलाभो यो, यो च लाभो अधम्मिको,* थेरगा॰ 666; *मा राज अधम्मिको अहु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.365; *कम्मं अधम्मिकं कुप्पं अट्ठानारहं,* महाव॰ 139, तुल॰ अधम्मक; – **कपणराज** पु॰, [अधार्मिक-कृपणराजन्], अधार्मिक एवं कृपण स्वभाव का राजा – *अधम्मिककपणराजानो ... यसं न दस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.322; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अधार्मिकता], अधार्मिकता, पाप भरी मनोवृत्ति अथवा जीवनवृत्ति, अनागत॰ 35(रो॰); – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अधार्मिकत्व], अधार्मिक मनोवृत्ति पापमयी जीवनवृत्ति, अधार्मिक भाव – ... *तुम्हाकं मञ्ञे अधम्मिकत्तेन तं एतरहि उप्पन्न'न्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 130; – **भाव** पु॰, कर्म॰ स॰ [अधार्मिकभाव], उपरिवत् – *मय्हं अधम्मिकभावं विचिनथा'ति आह,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 130.

अधम्मिय त्रि॰, धम्मिय का निषे॰ [अधर्म्य], अधार्मिक, धर्म-प्रतिकूल – *अधम्मियं पटिपदं पटिपन्नो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 208; – **यायमान** त्रि॰, अधम्मिय के ना॰ धा॰ से व्यु॰, वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, निषे॰ [अधर्मीयमान], धर्म के अनुसार आचरण न करने वाली प्रकृति वाला – *भिन्ने, ... सङ्घे अधम्मियायमाने,* महाव॰ 462.

अधर त्रि॰, अधो का तुल॰ वि॰ [अधर], **1**. निचला, अधिक तुच्छ, हीनतर – *अधरो तिस्वधो हीने पुमे दन्तच्छदेप्यथ,*

अभि॰ प॰ 930; *अधरसद्दो पि हेट्ठिमत्थवाचको ववत्थावचनो येव*, सद्द॰ 1.267. **2.** पु॰, नीचे वाला होठ - *दन्तावरणमोट्ठो चाप्यधरो दसनच्छदो*, अभि॰ प॰ 262; - **काय** पु॰, कर्म॰ स॰ [अधरकाय], शरीर के निचले भागों के अङ्ग, शरीर का निचला भाग - *तस्स भोतो गोतमस्स अधरकायोव इञ्जति*, म॰ नि॰ 2.346; - **रारणी** स्त्री॰, अधर + अरणी [अधरारणि], जिन्हें रगड़कर अग्नि उत्पन्न की जाती है उन अरणी नामक दो लकड़ियों में से नीचे वाली लकड़ी - *अयं उत्तरारणी अयं अधरारणी'ति आवज्जेन्तेन अञ्ञविहितकेन भवितब्बं*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).404, द्रष्ट॰ अरणी; - **रुत्तर/रोत्तर** त्रि॰, द्व॰ स॰ [अधरोत्तर], नीचे का एवं ऊपर का - *पुब्बापरानं अधरुत्तरानं*, सद्द॰ 1.272; *अधरो च उत्तरो च अधरुत्तरानं*, क॰ व्या॰ 166; - **रोट्ठ** पु॰, अधर + ओट्ठ कर्म॰ स॰ [अधरोष्ठ], निचला होठ - *तथा तस्स अधरोट्ठे च उत्तरोट्ठे च दण्डकं ठपेत्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 3.22.

अधारणता स्त्री॰, धारण के भाव॰ का निषे॰ [अधारणता], अस्मृति, चित्त में धारण करने में असमर्थता, स्मृति की शिथिलता - *या असति, अननुस्सति ... अधारणता ... इदं वुच्चति मुट्ठसच्चं*, ध॰ स॰ मा॰ 1356.

अधारित त्रि॰, धारित का निषे॰ [अधारित], नहीं धारण किया हुआ - *एत्थन्तरे न जानामि, सेतच्छत्तं अधारितं*, अप॰ 1.406.

अधि अ॰ उप॰ [अधि], **क.** नामों से पूर्व में प्रयुक्त, पू॰ स॰ के रूप में धातुओं से पूर्व में प्रयुक्त, उप॰ के रूप में, **ख.** यदा कदा समाना॰ अति एवं अभि उप॰ के परस्पर-विनिमय या व्यामिश्रण के कारण प्रयुक्त, **ग.** स्वरों से पूर्व प्रायः 'अज्झ' रूप में दृष्टिगत, **घ.** अन्य उपसर्गों के साथ भी प्रयुक्त यथाः **1.** अधि + ओ = अज्झो, **2.** अधि + आ = अज्झा, **3.** अधि + उप = अज्झुप, **4.** अधि + प = अधिप्प, **5.** अधि + सं = अधिसं, **ङ.** आवृत्त्यर्थक समासों के मध्य मे अन्तर्निवेशित, (छत्ताधिछत्त), **च.** विविध अर्थ - तक, पर, की ओर, अतिरेक, आधिक्य, उत्कर्ष - *अधिकिस्सरपाठाधिट्ठानपापुणनेस्वधि, निच्छये, चोपरित्ताधिभवने च विसेसने*, अभि॰ प॰ 1177; *पठवियं अधिसेस्सति*, ध॰ प॰, 41; *भोगक्खन्धं अधिगच्छति*, दी॰ नि॰ 2.67; **छ.** सप्त॰ वि॰ के अर्थ में प्रयुक्त उप॰ के रूप में - *अधि ब्रह्मदत्ते पञ्चाला*, सद्द॰ 3.730; क॰ व्या॰ 316.

अधिक त्रि॰, [अधिक], संख्या, मात्रा, गुणवत्ता आदि में बढ़ा हुआ, अभि उपस॰ के अर्थ में - *अभिमुख्यसिविट्ठुद्धकम्मसारुप्पवुद्धिसु*, अभि॰ प॰ 1176; *अधिकिस्सिरपाठाधिट्ठानपापुणनेस्वधि*, अभि॰ प॰ 1177; उप एवं अधि के तात्पर्य में - *उपाध्यधिकिस्सरवचने*, क॰ व्या॰ 316, *उपाधियोगे अधिक-इस्सरवचने* सद्द॰ 3.729; - **कार** पु॰, परित्याग - *अधिकारोति अधिककारो, परिच्चागोति अत्थो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.41, द्रष्ट॰ अधिकार के अन्त॰; - **क्क** नपुं॰, एक पवित्र स्नान-स्थल का नाम - *बाहुकं अधिकक्कञ्च, गयं सुन्दरिकं अपि*, म॰ नि॰ 1.49; *अधिकक्कन्ति न्हानसम्भारवसेन लद्धवोहारं एकं तित्थं वुच्चति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).187; - **गुणता** स्त्री॰, श्रेष्ठता, उत्तमता - *नक्खत्तेहि अधिकगुणताय नक्खत्तराजा'ति* ..., वि॰ व॰ अट्ठ॰ 70; - **च्छेदन** नपुं॰, कर्म॰ स॰, [अधिकछेदन], अत्यधिक काटना, बहुत अधिक काट-छांट - *अधिकच्छेदनं तस्स, पाचित्तियमुदीरितं*, विन॰ वि॰ 574; - **तर** त्रि॰, अधिक का तुल॰ वि॰ **1.** और भी अधिक, अधिक विख्यात, और भी अधिक संख्या में, तृ॰ वि॰ अथवा प॰ वि॰ के योग में प्रयुक्त - ... *देवदत्तो ... बोधिसत्तेन ... अधिकतरो*, मि॰ प॰ 192; *इतो अधिकतरं दस्सामि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.357; **2.** क्रि॰ वि॰, अत्यधिक मात्रा में और अधिक रूप में - *अधिमत्तन्ति अधिकतरं*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 75; - **त्त** नपुं॰, अधिक + त्त, भाव॰ [अधिकत्व], अधिकता, प्रचुरता, उत्तमत्व - *सब्बचित्तानं अधिकत्ता उत्तमत्ता*, उदा॰ अट्ठ॰ 206 - **प्पयोग** पु॰, कर्म॰ स॰ [अधिकप्रयोग], दिशान्तरण, अपसरण - *को अधिप्पयासोति को अधिकप्पयोगो*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).322; - **मान** पु॰, कर्म॰ स॰ [अधिकमान], अहङ्कार, घमण्ड - *अधिमानेनाति ... अधिकमानेन वा थद्धमानेनाति अत्थो*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.72; - **मानस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अधिकमानस], किसी कार्य के निष्पादन में अत्यधिक सन्नद्ध मन वाला, उन्नत मन वाला - *चागेन अधिकमानसो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.237.

अधिकत त्रि॰, अधि + √कर का भू॰ क॰ कृ॰ [अधिकृत], **1.** प्रमुख अथवा प्रधानरूप में स्थापित, नियुक्त, कार्य निष्पादन-हेतु प्राधिकृत, अध्यक्ष - *अज्झक्खो'धिकतो चेव*, अभि॰ प॰ 343; ... *दानाधिकारे अधिकतो*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 109; **2.** वशीभूत, असुरक्षित, अधीर, अधिकार में ले लिया गया - *जनो सम्मूळ्हो विमतिजातो अधिकतो संसयपक्खन्दो*, मि॰ प॰ 145.

अधिकरण नपुं॰, [अधिकरण], **1.** महत्त्वपूर्ण स्थान पर स्थापन अथवा नियुक्ति, प्रबन्धन-क्षेत्र, अधीक्षण, प्रसार, प्रबन्धन, प्रशासन-पद - *अधिकरणे नियुत्तकपुरिसो*, पे॰ व॰

अट्ठ॰ 182; *सग्गं अधिकरणं कत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.121, पाठा॰ अधिकारं; **2.** न्यायिक विवाद, विवाद-विषय, विनय-विषयक वस्तुओं के सम्बन्ध में भिक्षुसंघ द्वारा विचारणीय प्रश्न अथवा विषय, कथा-वस्तु - *विवादादो'धिकरणं सिया,* अभि॰ प॰ 868; ... *अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चिदेसं लेसमत्तं उपादाय ...,* पारा॰ 263; ... *इमं अधिकरणं विनिच्छितुं वट्टती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.152; *विवादाधिकरणं, अनुवादाकरणं आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं -- इमानि खो, आनन्द, चत्तारि अधिकरणानि,* म॰ नि॰ 3.32; **3.** कारण, आधार - *आधारे च कारणे,* अभि॰ प॰ 868; ... *दुक्खस्सेवाधिकरणं होति, ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).221; **4.** विषय में, फलस्वरूप, के हेतु से, कारण से - ... *न च मं धम्माधिकरणं विहेसेसि,* म॰ नि॰ 2.354; ... *विचिकिच्छाधिकरणञ्च पन मे समाधि,* म॰ नि॰ 3.197; **5.** आधार तथा संश्लिष्ट-सम्बन्ध का सूचक, अधिष्ठान, स्थान, अधिकरण-कारक - *अधिकरणत्थो भावेनभावलक्खणत्थो च सम्भवति ... अधिकरणं हि कालत्थो समूहत्थो च समयो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 86; ... *अधिकरणत्थे भुम्मवचनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.180; - **कारक / कारिका** पु॰ / स्त्री॰, वह भिक्षु जो प्रायः विवादों का विषय खड़ा कर देता है या उपस्थित कराता है, कलह उत्पन्न कराने वाला - *यो सो, भिक्खवे, भिक्खु ... सङ्घे अधिकरणकारको ...,* अ॰ नि॰ 2(1).232; महाव॰ 429; *अधिकरणकारकाति विनिच्छयपापुणनविसेसकारणं करोन्ता ...,* महानि॰ अट्ठ॰ 208; - **जात** त्रि॰, विवादों या कलहों में लगा हुआ, विवादप्रिय प्रकृति वाला - *भण्डनजातानं कलहजातानं विवादापन्नानन्ति अधिकरणजातानं,* पाचि॰ 201; - **निरोध** पु॰, तत्पु॰, विवादों की समाप्ति अथवा उपशमन - *अधिकरणनिरोधं जानाति,* अ॰ नि॰ 3(2).59; - **पच्चयवार** नपुं॰, वि॰ पि॰ के परिवार नामक संग्रह के एक अध्याय का नाम, परि॰ 203-205; - **भूत** त्रि॰, अधिकरण कारक (सप्त॰ वि॰) में विद्यमान - ... *यम्हि चक्खुम्हीति यम्हि अधिकरणभूते चक्खुम्हि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 343; - **वूपसम** पु॰, तत्पु॰ [अधिकरणोपशम], विवादों का शमन - ... *अधिकरणवूपसमादिके वा ... किच्चे उप्पन्ने ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.299; - **समथ** पु॰, [बौ॰ सं॰ अधिकरणशमथ], भिक्षुसंघ के चार प्रकार के विवादग्रस्त मसलों का उपशमन, विवादों को हल करने वाले सात धर्म - ... *न अधिकरणिको होति, अधिकरणसमथस्स वण्णवादी,* अ॰ नि॰ 3(2).142; *सत्त अधिकरणसमथा धम्मा,* पाचि॰ 283; - **टि॰** विवादों के विषयों के उपशमन हेतु निम्नलिखित सात बातें उल्लिखित - **1.** सम्मुख-विनयो, **2.** सति-विनयो, **3.** अमूळ्ह-विनयो **4.** पटिञ्ञात-करण **5.** येभुय्यसिका, **6.** तस्सपापियसिका, **7.** तिणवत्थारक, परि॰ 296; तुल॰ अ॰ नि॰ 1(1).193; दी॰ नि॰ 3.201; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.204; - **समुट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ [बौ॰ सं॰ अधिकरणसमुत्थान], संघ में विवाद-विषयों या कलह के मसलों का उदय अथवा उत्पत्ति - *अधिकरणं न जानाति अधिकरणसमुट्ठानं न जानाति,* परि॰ 344; - **समुदय** पु॰, तत्पु॰ [बौ॰ सं॰ अधिकरणसमुदय], उपरिवत् - ... *अधिकरणसमुदयं न जानाति,* अ॰ नि॰ 3(2).59; - **समुप्पाद** पु॰, तत्पु॰ [बौ॰ सं॰ अधिकरणसमुत्पाद], भिक्षुसंघ में विवाद के मामले की उत्पत्ति - *अधिकरणसमुप्पादवूपसमकुसलो होति,* अ॰ नि॰ 3(2).59.

अधिकरणिक त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अधिकरणिक], विवाद के विषय से जुड़ा हुआ, विवादी, अदालती - *अधिकरणिको होति, अधिकरणसमथस्स न वण्णवादी,* अ॰ नि॰ 3(2).140.

अधिकरणी स्त्री॰, [अधिकरणी], सोनार अथवा लोहार की निहाई, जिस पर धातु-खण्ड रख कर वे काम करते हैं - *मुट्ठ्याधिकरणीत्थियं,* अभि॰ प॰ 527; ... *अधिकरणिं उक्खिपापेत्वा, अधिकरणिया हेट्ठा उदकपातिं ठपापेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.250; ... *चतुन्नं अधिकरणीनं उपरि ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 301.

अधिकरणीय अधि करोति का सं॰ कृ॰, द्रष्ट॰, करणीय के अन्त॰.

अधिकराज पु॰, रतनपुर के दो राजाओं की उपाधि - *रतनपुरनगरे येव अधिकरञ्ञो काले ...,* सा॰ वं॰ 89 (ना॰); *एकं समयं अधिकराजा विहारं गन्त्वा ...,* सा॰ वं॰ 93 (ना॰).

अधिकरोति अधि + √कर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [अधिकरोति], किसी को किसी के विषय में अधिकृत करता है, किसी वस्तुविशेष को अपना प्रमुख अभीप्सित बनाता है - *अधिकरोतीति अधिकरणं, कारणस्सेतं नामं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.80; - **कत्वा / किच्च** पू॰ का॰ कृ॰ - *अधिकत्वा वाहीयति, अभिमुखं वा बाहीयतीति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.118; ... *पञ्चविधं अत्तभावं अधिकिच्च पवत्तत्ता अज्झत्तिकं,* विसुद्धि॰ 2.77.

अधिकार पु॰, [अधिकार], **क.** कार्य, रोजगार, आयोजन, कार्यविशेष के साथ स्वयं का या किसी का लगाव - *युगोधिकारो,* अभि॰ प॰ 1004; *कोचिदेव पुरिसो रञ्ञो अधिकारं करेय्य,* मि॰ प॰ 47; **ख.** पुण्य, कुशल कर्म, परित्याग - *बुद्धो लोके समुप्पन्नो, अधिकारो च नत्थि मे,*

अप॰ 1.294; *अधिकारं महा मय्हं, धम्मराज सुणोहि मे,* अप॰ 2.258; *अहं खो, भन्ते, तस्स ब्राह्मणस्स अधिकारं सरामि,* महाव॰ 62; **ग.** सम्मान, अभिनन्दन, त्याग – *असादियन्तस्स कतो अधिकारो वञ्झो भवति अफलो,* मि॰ प॰ 108; ... *किं नु खो सत्थु अधिकारं करोमी'ति चिन्तेत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.273; तुल॰ अभिकार; **घ.** ऐसा नियन्त्रक-पद जिसकी अनुवृत्ति आने वाले पदों एवं सूत्र-नियमों आदि में की जाए – *अत्थाति अधिकारत्थे निपातो,* उदा॰ अट्ठ॰ 30; ... *पुब्बेवाति अधिकारो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.95, तुल॰ अधिकार-सूत्र, पाणिनीय अष्टाध्यायी; – **कत** त्रि॰, ब॰ स॰ अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर चुका व्यक्ति, पहले उपकार कर चुका व्यक्ति – *अधिकारकतो पुब्बे कतूपकारो होति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.141, तुल॰ कताधिकार; – **रन्तर** नपुं॰, अधिकार + अन्तर, [अधिकारान्तर], नवीन विषय, नूतन परिस्थिति, नया क्षेत्र – *खोति अधिकारन्तरनिदस्सनत्थे निपातो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 91; *खो पनाति इदं पनेत्थ निपातद्वयं पदपूरणमत्तं अधिकारन्तरदस्सनत्थं वाति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.109; – **सुत्त** नपुं॰, व्याकरणों में ही विशेष-रूप में प्रयुक्त, कर्म॰ [अधिकारसूत्र], व्याकरण के छः प्रकार के सूत्रों में से एक, वह सूत्र जिसकी अनुवृत्ति परवर्ती अनेक सूत्रों में की जाती है – *सञ्ञाधिकारपरिभासाविधिसुत्तेसु अधिकारसुत्तन्ति वेदितब्बं,* क॰ व्या॰ 52 पर क॰ व॰, *निपच्चते इच्चेतं अधिकारत्थं वेदितब्बं,* सद्द॰ 3.806.

अधिकारिक त्रि॰, [आधिकारिक], किसी विषय-विशेष से सम्बद्ध के रूप में कार्यरत, अधिकार-क्षेत्र में आया हुआ – *तङ्कणिकन्ति अचिरकालाधि – कारिकं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.127.

अधिकारी पु॰, [अधिकारिन्], अधिकार-प्राप्त व्यक्ति, प्रशासक, अध्यक्ष – *आनपेत्वा ततो मञ्जुअधिकारि नराधिपो,* म॰ वं॰ 74-129.

अधिकिस्सरवचन नपुं॰, अधिकत्व और ईश्वरत्व का अर्थ – *उप-अधि इच्चेतेसं पयोगे अधिकिस्सरवचनेसु सत्तमी विभत्ति होति,* क॰ व्या॰ 316.

अधिकुट्टन नपुं॰, अधि + √कुट्ट से व्यु॰ [अधिकुट्टन], काटना, छेदना, कूटना, पीसना, चूर्ण करना – *असिसूनूपमा कामा अधिकुट्टनट्ठेन,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 311; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).10.

अधिकुट्टना स्त्री॰, कसाई द्वारा प्रयुक्त वह काष्ठफलक या लकड़ी का तख्ता जिस पर वह पशुओं के सिर काटता है, काष्ठमयी वध्यशिला – *सत्तिसूलूपमा कामा, खन्धासं अधिकुट्टना,* स॰ नि॰ 1.152.

अधिकुमारि अ॰, अव्ययी॰ स॰ [अधिकुमारि], कुमारी के सम्बन्ध में – *कुमारिं अधिकिच्च कथा वत्ततीति, अधिकुमारि,* क॰ व्या॰ 322.

अधिकुसल त्रि॰, [अधिकुशल], अत्यधिक पुण्यवान, उच्चरूप में पुण्यमय, – *अञ्ञतरञ्ञतरेसु च अधिकुसलेसु धम्मेसु,* दी॰ नि॰ 3.108; ... *अरतीति अधिकुसलेसु धम्मेसु ... उक्कण्ठा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).169.

अधिकूनक त्रि॰, ब॰ स॰ [अधिकोनक], कुछ अधिकता तथा कुछ न्यूनता से युक्त – *अधिकूनकतो एकक्खरतो च इतो परं,* सद्द॰ 1.235.

अधिकोट्टन नपुं॰, वध हेतु प्रयुक्त काष्ठपीठ – *आघातनं वधट्ठानं, सूणा तु अधिकोट्टनं,* अभि॰ प॰ 521; तुल॰ अधिकुट्टना.

अधिकोपित त्रि॰, [अधिकोपित], अत्यधिक क्रुद्ध कराया गया, बहुत अधिक उत्तेजित किया गया – *मा ते अधिसरे मुञ्च, सुबाळ्हमधिकोपितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.112.

अधिगच्छति अधि + √गम, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अधिगच्छति], प्राप्त करता है, समझ जाता है, ठीक से जान लेता है – *भोगक्खन्धं अधिगच्छति,* दी॰ नि॰ 2.67; *रतिं सो नाधिगच्छति,* ध॰ प॰ 187; *समाधिं नाधिगच्छति,* ध॰ प॰ 365; *सन्तिमेवाधिगच्छति,* इतिवु॰ 59; *समिज्झतीति ... लभति पटिलभति अधिगच्छति विन्दतीति,* महानि॰ 2; – **च्छामि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *निब्बुतिं नाधिगच्छामि,* पे॰ व॰ 38; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एवरूपं उळारं विसेसं अधिगच्छन्ति,* दी॰ नि॰ 1.208; – **च्छ** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अत्तानं अधिगच्छ उब्बिरि,* थेरीगा॰ 51; – **च्छे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अधिगच्छे पदं सन्तं,* थेरगा॰ 11; – **ज्झगा / ज्झगमा / गञ्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तण्हानं खयमज्झगा,* ध॰ प॰ 154; *यो नाज्झगमा भवेसु सारं,* सु॰ नि॰ 5; ... *उळारं विसेसं अधिगञ्छि,* उदा॰ अट्ठ॰ 239, पाठा॰ अधिगच्छि; – **ज्झगू / ज्झगमिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सुतस्स पञ्ञाय च सारमज्झगू,* सु॰ नि॰ 332; *पच्चेकमेवज्झगमंसु बोधिं,* म॰ नि॰ 3.115; – **च्छिस्सामि / च्छिस्स** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *अरियधम्मं आहरिस्सामि ... अधिगच्छिस्सामि,* महानि॰ 48; *ओतारं नाधिगच्छिस्सं,* सु॰ नि॰ 448; – **न्त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *कुसलं धम्मं अधिगन्त्वा,* दी॰ नि॰ 1.205; *सञ्ञावेदयितनिरोधे आनिसंसं अधिगम्म ...,* अ॰ नि॰ 3(1). 250; – **न्तब्बं / मनीय** सं॰ कृ॰ – *निब्बानं अधिगन्तब्बं,*

इतिवु. 75; ... *सुखानि अधिगमनीयानि गिहिना कामभोगिना,* अ. नि. 1(2).80.

अधिगण्हाति / अधिग्गण्हाति क्रि॰ रू॰, अधि + √गह, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अधिगृह्णाति], अभिभूत कर देता है, आधिपत्य स्थापित कर लेता है, बढ़ा चढ़ा हुआ होता है – *दायको ... अदायकं ... पञ्चहि ठानेहि अधिगण्हाति,* अ. नि. 2(1).28; *अधिगण्हातीति अधिभवित्वा गण्हाति अज्झोत्थरति अतिसेति,* अ. नि. अट्ठ. 3.16; *सो तत्थ अञ्ञे देवे ... अधिग्गण्हाति,* दी. नि. 3.108; *अधिग्गण्हातीति अधिभवति, अञ्ञेहि देवेहि अतिरेकं लभतीति ...,* दी. नि. अट्ठ. 3.93; **– य्ह / नण्हत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *तथेवाधिपतेय्येन, अधिगय्ह विरोचहं* अप. 2.206; *ससी अधिग्गय्ह यथा विरोचति,* वि. व. 152; *चन्दपभायेव ता अधिग्गहेत्वा ...,* इतिवु. 16; *अम्हाकं पञ्हं सुट्ठु अधिगण्हित्वा ...,* जा. अट्ठ. 7.152.

अधिगत त्रि॰, अधि + √गम का भू॰ क॰ कृ॰ [अधिगत], 1. **कर्म॰ वा॰ में**, प्राप्त किया हुआ, उपलब्ध, ज्ञात – *अधिगतो खो म्यायं ...,* महाव. 5; *अधिगतो खो म्यायं मग्गो सम्बोधाय,* दी. नि. 2.27; *धनञ्च मे अधिगतं,* जा. अट्ठ. 3.289; 2. **कर्तृवा॰ में** – पहुंच चुका, प्राप्त कर चुका, समझ चुका, ज्ञात कर चुका – *अञ्ञाहि अतिसयं अधिगता,* वि. व. अट्ठ. 111; *तं निरासं विसेसेन अगा अधिगतोति व्यगा,* उदा. अट्ठ. 295; **– त्त** नपुं॰, अधिगत का भाव॰, [अधिगतत्व], ज्ञान प्राप्त हो जाने की अवस्था – *अग्गमग्गस्स अधिगतत्ता,* उदा. अट्ठ. 295; **– पटिसम्भिद** त्रि॰, ब॰ स॰ [अधिगतप्रतिसंवित्], वह, जिसे प्रतिसंवित् ज्ञान प्राप्त है – ... *अधिगतपटिसम्भिदो,* महानि. 130; **– फल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अधिगतफल], वह, जो स्रोतापत्ति, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत् फलों के क्षण में पहुंच चुका है, चार फलों में से किसी एक में पहुंच चुका पुद्गल – *कामरूपारूपभवेसु अधिगतफला तयो सकदागामिनो,* खु. पा. अट्ठ. 145; **– मान** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अधिगतमान], ज्ञान पा लेने का अहंकार – *अधिमानेनाति अधिगतमानेन, अधिगता मयन्ति एवं उप्पन्नमानेनाति अत्थो, अधिकमानेन वा थद्धमानेनाति अत्थो,* पारा. अट्ठ. 2.72; **– रूपदस्सन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अधिगतरूपदर्शन], वह, जिसने बुद्ध के रूप का दर्शन किया है – *अधिगतरूपदस्सनं कप्पायुकं काळं नाम नागराजानं आनयित्वा ...,* पारा. अट्ठ. 1.32; **– वन्तु** त्रि॰, अधि + √गम + तवन्तु [अधिगतवत्], प्राप्त कर चुका, उपलब्ध किया हुआ – *निब्बानमेव वा उपगते, अधिगतवन्तोति अत्थो,* वि. व. अट्ठ. 249; **– सञ्ञी** त्रि॰, [अधिगतसंज्ञिन्], किसी अप्राप्त या अज्ञात-वस्तु विशेष को प्राप्त अथवा पूरी तरह से ज्ञात मानने वाला – *अनधिगते अधिगतसञ्ञिनो,* पारा. 111.

अधिगन्तुकाम त्रि॰, [अधिगन्तुकाम], **शा॰ अ॰** किसी की प्राप्ति करने या उसका ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला – *तं सम्बोधिं बुज्झितुकामस्स ... अधिगन्तुकामस्स,* महानि. 363.

अधिगन्तुमन त्रि॰, [अधिगन्तुमनस्क], मन में कुछ प्राप्त करने की बात सोचने वाला – *सग्गाधिमनाति सग्गं अधिगन्तुमना,* जा. अट्ठ. 5.397.

अधिगम पु॰, [अधिगम], **शा॰ अ॰** प्राप्ति, उपलब्धि, अनुभूति, ज्ञान, आध्यात्मिक उपलब्धि, अर्हत्व-प्राप्ति – ... *एवमेव ... अरियसावकस्स ... अधिगमं उपनिधाय,* स. नि. 1(2).124; *तत्थ अधिगमोति चत्तारो मग्गा, चत्तारि फलानि, चतस्सो पटिसम्भिदा, तिस्सो विज्जा, छ अभिञ्ञाति,* अ. नि. अट्ठ. 1.71; **ला॰ अ॰ क**. चार मार्गों (स्रोतापत्ति, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत्), चार फलों, चार प्रतिसंवित् ज्ञानों, तीन विद्याओं एवं छः अभिज्ञाओं की प्राप्ति – *तत्थ अधिगमो नाम अरहत्तं, तञ्हि पत्तस्स पटिसम्भिदा विसदा होन्ति,* विभ. अट्ठ. 367; **ला॰ अ॰ ख**. अर्हत्व, क्योंकि इसी की प्राप्ति होने पर प्रतिसंवित् ज्ञान अधिक प्रभावित होते है – *अप्पमादञ्हि ... विसेसानं ... अधिगमो होतीति,* ध. प. अट्ठ. 1.158; *तथारूपं पुग्गलं आगमेनपि अधिगमेनपि हित्वा याति,* ध. प. अट्ठ. 1.149; *तञ्च पन बाहिरानं ... अधिगमानं ... विज्जमानतं सन्धाय भासितं,* मि. प. 204; **– कारण** नपुं॰, ष॰ तत्पु॰ स॰ [अधिगमकारण], आध्यात्मिक उपलब्धि के साधन अथवा उत्प्रेरक – *अमतपदन्ति अमतस्स निब्बानस्स पदं अधिगमकारणं,* जा. अट्ठ. 5.95; **– निदान** नपुं॰, दीपंकर बुद्ध द्वारा सुमेध तापस के भावी बुद्ध होने की भविष्यवाणी से लेकर सिद्धार्थ गौतम की बोधि-प्राप्ति तक विस्तृत जातक-निदान-कथा के खण्ड का नाम – *तत्थ अधिगमनिदानं ... दीपङ्करदसबलतो पट्ठाय याव महाबोधिपल्लङ्का वेदितब्बं,* ध. स. अट्ठ. 33; **– नीयता** स्त्री॰, भाव॰, प्राप्यता, उपलभ्यता – *निब्बानस्स किच्छेन अधिगमनीयतं दस्सेति,* उदा. अट्ठ. 319; **– न्तरधान** नपुं॰, अधिगम + अन्तरधान [अधिगमान्तर्धान], आध्यात्मिक उपलब्धि का अदृश्य हो जाना, **क**. तीन प्रकार के अन्तर्धानों में से एक – *तीणिमानि, महाराज, सासनन्तरधानानि ... अधिगमन्तरधानं पटिपत्तन्तरधानं*

लिङ्गन्तरधानं, मि. प. 136; *अधिगमे, महाराज, अन्तरहिते ... सुप्पटिपन्नस्सापि धम्माभिसमयो न होति,* मि. प. 136; **ख.** पांच प्रकार के अन्तर्धानों में एक – *पञ्च अन्तरधानानि नाम, अधिगम अन्तरधानं, पटिपत्ति अन्तरधानं, परियत्ति अन्तरधानं, लिङ्गअन्तरधानं, धातु अन्तरधानन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.70-71; – **पटिभानवा** त्रि., [अधिगमप्रतिभानवत्], प्रतिभान या प्रतिसंवित्ज्ञान को पा चुका, तीन प्रकार के पटिभानों में से एक से युक्त – *तयो पटिभानवन्तो – परियत्तिपटिभानवा, परिपुच्छापटिभानवा, अधिगमपटिभानवा,* महानि. 171; द्रष्ट. पटिभान; – **टि.** जिसे चार स्मृति-प्रस्थानों, चार सम्यक्-प्रधानों, चार ऋद्धि-पादों, पांच इन्द्रियों, पांच बलों, बोधि के सात अङ्गों, मार्ग के आठ अङ्गों, चार आर्यमार्गों, श्रमण-जीवन के चार फलों, चार प्रतिसंवित्ज्ञानों एवं छः अभिज्ञाओं का ज्ञान हो, उसे अर्थ, धर्म एवं निरुक्ति का ज्ञान हो जाता है, उसे ही अधिगमपटिभानवा कहते हैं, द्रष्ट. महानि. पृ. 171; – **प्पिच्छ** त्रि., अधिगम + अप्पिच्छ, [अधिगमाल्पिच्छ], ब. स., अपनी विशिष्ट आध्यात्मिक उपलब्धि दूसरों को विज्ञापित करने हेतु अत्यल्प इच्छा रखने वाला – *यो पन सोतापन्नादीसु अञ्ञतरो हुत्वा सोतापन्नादिभावं जानापेतुं न इच्छति, अयं अधिगमअप्पिच्छो नाम,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).45; द्रष्ट. अप्पिच्छ; – **विपुल-वर-सम्पत्ति** स्त्री., कर्म. स., सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक अवस्था – *या च लोके अधिगमविपुलवरसम्पत्तियो,* मि. प. 326; – **ब्यत्ति** स्त्री., तत्पु स. [अधिगमव्यक्ति], अधिगम या आध्यात्मिक उपलब्धि का सुस्पष्ट प्रकाशन, अधिगम की अभिव्यक्ति – *ताय च आसयसुद्धिया अधिगमब्यत्तिं ...,* खु. पा. अट्ठ. 84; *तञ्च पटिपत्तिया अधिगमब्यत्तितो सत्थं,* सु. नि. अट्ठ. 2.152; – **सद्धम्म-पटिरूपक** नपुं., **शा. अ.** सद्धर्म के अधिगम या उच्च आध्यात्मिक अवस्था का प्रतिरूप – *द्वे सद्धम्मप्पतिरूपकानि अधिगमसद्धम्मपटिरूपकञ्च परियत्तिसद्धम्मप्पतिरूपकञ्च,* स. नि. अट्ठ. 2.176; **ला. अ.** विपश्यना-ज्ञान में उपक्लेशों के आ जाने से उदित सद्धर्म का प्रतिरूपक या मिथ्या स्वरूप – *इदं विपस्सनाञाणस्स उपक्किलेसजातं अधिगमसद्धम्मप्पतिरूपकं,* स. नि. अट्ठ. 2.117; – **सद्धा** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. अधिगमश्रद्धा], चार प्रकार की श्रद्धाओं में से वह श्रद्धा जो स्रोतापन्न, सकृदागामी एवं अनागामी फलों में स्थित आर्य-पुद्गलों के चित्त में उदित होती है – *अधिगमसद्धा अरियपुग्गलानं,* दी. नि. अट्ठ. 2.107; – **सम्पदा** स्त्री., तत्पु. स. [अधिगमसम्पत्], स्रोतापन्न आदि आर्य-फल की अवस्थाओं की प्राप्ति, आध्यात्मिक अवस्था-विशेष की पूर्णता, भिक्षु द्वारा प्राप्त सात प्रकार की सम्पदाओं में से एक – *सो ... आगमसम्पदा, अधिगमसम्पदा, पुब्बहेतुसम्पदा, अत्तत्थपरिपुच्छासम्पदा, तित्थवाससम्पदा, योनिसोमनसिकारसम्पदा, बुद्धूपनिस्सयसम्पदाति इमाहि सत्तहि ... समन्नागतो,* जा. अट्ठ. 4.86; – **सम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [अधिगमसम्पन्न], अधिगम-सम्पदा को प्राप्त, आध्यात्मिक अवस्था-विशेष की पूर्णता तक पहुंचा हुआ – *अधिगमसम्पन्नस्सेव ... अधिगमप्पिच्छता,* सु. नि. अट्ठ. 2.193, द्रष्ट. अधिगमसम्पदा.

अधिगमेतब्ब त्रि., अधि + √गम का प्रेर., सं. कृ., किसी अन्य के द्वारा प्राप्त कराये जाने योग्य, – *न अञ्ञेन केनचि अधिगमेतब्बन्ति अनञ्ञनेय्यं,* महाव. अट्ठ. 243.

अधिग्गहीत / अधिग्गहित त्रि., अधि + √गह का भू. क. कृ. [अधिगृहीत], पूरी तरह से ग्रहण किया हुआ, पूर्णरूप से अभिभूत, पूर्णतया अपने अधीन लिया हुआ – *ये चस्स धम्मा अक्खाता, ... अधिग्गहिता ...,* अ. नि. 1(2).32; *अधिग्गहिता तुट्ठस्स,* इतिवु. 74; *देवानमिन्देन अधिग्गहीता,* जा. अट्ठ. 3.378; *बोधिसत्तेन अधिग्गहितोव,* जा. अट्ठ. 5.97.

अधिचिण्ण त्रि., अधि + √चर का भू. का. कृ., व्यवहृत, अनुष्ठित, पालित, किया हुआ आचरित – *अधिचिण्णं ते विपरावत्तं,* दी. नि. 1.7; *यं तं अधिचिण्णं चिरकालसेवनवसेन पगुणं ...,* महानि. अट्ठ. 229; पाठा. अविचिण्ण.

अधिचित्त नपुं., अव्ययी., [अधिचित्त], उच्च स्तर की चेतना – ... *भागी वा भगवा अत्थरसस्स ... अधिचित्तस्स अधिपञ्ञायाति भगवा,* महानि. 104; **क.1.** चित्त का प्रणीततम स्तर – *कामावचरचित्तं पन चित्तं नाम – तं उपादाय रूपावचरं अधिचित्तं नाम, तम्पि उपादाय अरूपावचरं अधिचित्तं नाम। अपि च सब्बम्पि लोकियचित्तं चित्तमेव, लोकुत्तरं अधिचित्तं,* अ. नि. अट्ठ. 2.206; **क.2.** समाधि का उच्चतर स्तर, लोकुत्तर चित्त – *अधिचित्तन्ति चित्तसीसेन निद्दिट्ठो अधिको समाधि,* पटि. म. अट्ठ. 2.68; *अधिचित्तन्ति विपस्सनापादकसमाधि,* पटि. म. अट्ठ. 2.70; **क.3.** समथ एवं विपश्यना ध्यान वाला शुद्ध चित्त – *अधिचित्तं समथविपस्सनाचित्तमेव,* अ. नि. अट्ठ. 2.220; **क.4.** विपश्यना का संपादक आठ प्रकार का समापत्ति-चित्त अथवा चार मार्गों एवं चार फलों में स्थित आर्य पुद्गलों का चित्त – *विपस्सनापादकं अट्ठसमापत्तिचित्तं पन अधिचित्तन्ति ...*

ततोपि च मग्गफलचित्तमेव अधिचित्तं, महानि॰ अट्ठ॰ 94; **ख. अधिचित्तं** अ॰, अव्ययी॰, चित्त में, चित्त से सम्बन्धित, चित्त के विषय में - *चित्तं अधिकिच्च धम्मा वत्तन्ती ति अधिचित्तं,* क॰ व्या॰ 321; *अधिचित्तसिक्खासमादानं,* अ॰ नि॰ 1(1).261; *अधिचित्तमनुयुत्तेनाति दसकुसलकम्मपथवेसन उप्पन्नं चित्तं चित्तमेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).401; **ग. अधिचित्ते** अ॰, चित्त-विषयक, चित्त में - ... *भिक्खुं ... सीताय छायाय निसिन्नं अधिचित्ते युत्तं,* म॰ नि॰ 2.123; *अधिसीले, अधिचित्ते, अधिपञ्ञाय,* महाव॰ 89; *अधिचित्ते च आयोगो, एतं बुद्धान सासनं,* ध॰ प॰ 185; **घ. अधि उप॰ का समाना॰**; - **प्पवत्ति** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अधिचित्तप्रवृत्ति], ध्यान अथवा समाधि से सम्बन्धित प्रवृत्ति - *अरिया हि अधिचित्तप्पवत्तिकालेपि ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 154; - **सिक्खा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अधिचित्तशिक्षा], चित्त से सम्बन्धित शिक्षा - *अधिसीलसिक्खाय अधिचित्तसिक्खाय,* म॰ नि॰ 1.407; *अधिचित्तसिक्खासमादानं,* अ॰ नि॰ 1(1).261.

अधिचेत त्रि॰, ब॰ स॰ [अधिचेतस्], जागरूक चित्त वाला, चैतन्य, प्रत्युत्पन्नमति - *अधिचेतसो अप्पमज्जतो,* उदा॰ 117; पाचि॰ 79; थेरगा॰ 68.

अधिच्च[1] क्रि॰ वि॰, अकस्मात्, संयोगवश, बिना कारण के, दुर्लभ रूप में (प्रायः स॰ प॰ के पू॰ प॰ में ही प्रयुक्त); - *एवं अधिच्चमिदं, भिक्खवे, यं तथागतो लोके उप्पज्जति अरहं सम्मासम्बुद्धो,* स॰ नि॰ 3(2).516; - **दस्सावी** त्रि॰, कभी-कभी ही अथवा बहुत कम अवसरों पर देखने वाला - *अधिच्चदस्सावी खो पनाहं, भन्ते, भगवतो,* स॰ नि॰ 2(1).2; पाठा॰ अनिच्चदस्सावी; - **लद्ध** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अधीत्यलब्ध], आकस्मिक-रूप में प्राप्त, संयोगवश उपलब्ध, बिना कारण उत्पन्न, बिना हेतु मिला हुआ - *अधिच्चलद्धं परिणामजं ते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.164; *अधिच्चलद्धन्ति अधिच्चसमुप्पत्तिकं, यदिच्छकं लद्धन्ति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 289; *सयंकतं किन्नु अधिच्चलद्धं,* जिना॰ 13; - **समुप्पत्ति** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, [अधीत्यसमुत्पत्ति], आकस्मिक उत्पत्ति, अपने आप से अथवा बिना कारणों के उत्पत्ति - *सस्सताकारञ्च अधिच्चसमुप्पत्तिआकारञ्च निस्साय अतीते ... कप्पेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).74; - **समुप्पत्तिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अधीत्यसमुत्पत्तिक], आकस्मिक अथवा अकारण उत्पत्ति वाला - *तत्थ अधिच्चलद्धन्ति अधिच्चसमुप्पत्तिकं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 289; - **समुप्पन्न** त्रि॰, [अधीत्यसमुत्पन्न], स्वतः उत्पन्न, हेतुओं एवं प्रत्ययों की सामग्री का आश्रय लिये बिना ही उत्पन्न, आकस्मिक रूप से अथवा संयोगवश उत्पन्न - *असयंकारो अपरंकारो अधिच्चसमुप्पन्नो अत्ता च लोको च,* उदा॰ 149; *अधिच्चसमुप्पन्नोति यदिच्छाय समुप्पन्नो केनचि कारणेन विना उप्पन्नोति ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 281; *असयंकारं अपरंकारं अधिच्चसमुप्पन्नं सुखदुक्खं,* दी॰ नि॰ 3.103; - **टि॰** बुद्धकालीन भारतीय चिन्तन में उत्पत्ति के विषय में प्रतिपादित स्वतः उत्पत्ति, परतः उत्पत्ति एवं अहेतुक उत्पत्ति के सिद्धान्तों में अहेतुक उत्पत्ति बतलाने वाला सिद्धान्त ही अधिच्चसमुप्पाद है, तुल॰, पटिच्च-समुप्पन्न; - **समुप्पन्निक** पु॰, ऐसे विचारक जो धर्मों की अहेतुक-उत्पत्ति के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते है; अहेतुक-उत्पत्तिवादी - *एके समणब्राह्मणा अधिच्चसमुप्पन्निका,* दी॰ नि॰ 1.24; *द्वे अधिच्चसमुप्पन्निका,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).317; - **च्चापत्तिक** त्रि॰, अधि°च्च + आपत्तिक, यदा कदा अपराध करने वाला, जब तब विनय-विरुद्ध आचरण करने वाला भिक्षु - *अधिच्चापत्तिको ... अनापत्तिबहुलो,* म॰ नि॰ (म॰प॰) 2.115; *अधिच्चापत्तिकोति कदाचि कदाचि आपत्तिं आपज्जति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.111; - **च्चुप्पत्ति** त्रि॰, कर्म॰ स॰, अत्यल्प प्रयोग, आकस्मिक उत्पत्ति वाला - *अयञ्च बुद्धो उप्पन्नो, अधिच्चुप्पत्तिको मुनि,* अप॰ 1.332.

अधिच्चका स्त्री॰, [अधित्यका], पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि, गिरिप्रस्थ - *उद्धमधिच्चका सेलस्सा,* अभि॰ प॰ 610, तुल॰ पाणिनि 5.2.34.

अधिछिन्दन नपुं॰, [अधिछेदन], टुकड़ों में काट देना, खण्डीकरण - *असिसूनूपमा अधिछिन्दनट्ठेन ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).10; पाठा॰ अधिकुट्टनत्थेन.

अधिजेगुच्छे अ॰, अधि + जेगुच्छ का सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰, घृणास्पद अथवा जुगुप्सित के विषय में - *अधिजेगुच्छे पञ्हं पुट्ठो ब्याकासिं,* दी॰ नि॰ 1.158; *अधिजेगुच्छेति ... पापजिगुच्छनाधिकारे पञ्हं पुच्छि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.269.

अधिट्ठान नपुं॰, [अधिष्ठान], **शा॰ अ॰** वह जिस के ऊपर स्थित हुआ जाए, आधार, पास में स्थित होना, **ला॰ अ॰ क.** प्रतिस्थापना-स्थल, आधार, आवास, आसन अवलम्ब, सहारा, दृष्टिकोण - *अधिट्ठितियमाधारे ठानेधिट्ठानमुच्चते,* अभि॰ प॰ 1032, *अधिट्ठानपापुनेस्वधि ...,* अभि॰ प॰ 1177; *अधिट्ठाने'धिभवने तथा,* सद्द॰ 3.882; **ख.** दृढ़ संकल्प, किसी आलम्बन या विषय पर चित्त का निर्धारण, दृढ़ इच्छाशक्ति - *भगवतो पञ्च महाअधिट्ठानानि कथेसि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.64; *चेतसो अधिट्ठानं अभिनिवेसानुसयं न उपेति,* स॰ नि॰

1(2).17; *चेतसो अधिट्ठानन्ति चित्तस्स पतिट्ठानभूतं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.30; *अधिप्पायञ्च उपविचारञ्च अधिट्ठानं,* अ॰ नि॰ 2(2).76; *दिट्ठिट्ठानाधिट्ठानपरियुट्ठानाभिनिवेसानुसयानं ...,* म॰ नि॰ 1.190; **ग.** चार प्रकार के दृढ़ संकल्प - *चत्तारि अधिट्ठानानि – पञ्ञाधिट्ठानं, सच्चाधिट्ठानं, चागाधिट्ठानं, उपसमाधिट्ठानं,* दी॰ नि॰ 3.183; - **निद्धि** स्त्री॰, [अधिष्ठान-ऋद्धि], सुदृढ़-संकल्प की अलौकिक शक्ति, अपनी इच्छा से अपने शरीर के बाहर मनोमय-काय के निर्माण करने की शक्ति - *अयञ्च नेव बुद्धानं अधिट्ठानिद्धि, न भावनामयिद्धि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 16; - **नुपोसथ** पु॰, [बौ॰ सं॰ अधिष्ठानुपोसथ], उपोसथ का वह प्रकार जिसमें परिस्थिति वश किसी भिक्षु को अकेले ही अपना स्वयं का संकल्प कर उपोसथ करना होता है - *अपरेपि तयो उपोसथा ... अधिट्ठानुपोसथो,* परि॰ 246, तुल॰ पुग्गलुपोसथ; - **चित्त** नपु॰, [अधिष्ठानचित्त], अधिष्ठान से भरा हुआ चित्त, दृढ़ संकल्प वाला मन - ... *अधिट्ठानचित्तेन सहेव सतं होति,* विसुद्धि॰ 2.14; *किं तस्स अधिट्ठानचित्तस्स उप्पादक्खणे गच्छति ...,* विसुद्धि॰ 2.32; - **जवन** नपुं॰, [अधिष्ठानजवन], चित्त द्वारा वस्तु के स्वरूप-निर्धारण की प्रक्रिया का एक विशेष क्षण, द्रष्ट॰ जवन के अन्त॰; - **पवारणा** स्त्री॰,[बौ॰ स॰ अधिष्ठानप्रवारणा], संकल्पित उपोसथ की परिसमाप्ति, विशेष परिस्थिति के कारण किसी अकेले भिक्षु के द्वारा किये गये उपोसथ की परिसमाप्ति - *अधिट्ठानुपोसथो च अधिट्ठानपवारणा च पुग्गलस्सेव कप्पति,* परि॰ अट्ठ॰ 165; द्रष्ट॰ अधिट्ठानुपोसथ; - **पारमी** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अधिष्ठानपारमिता], सुदृढ़-संकल्प सम्बन्धी पारमिता, दस पारमिताओं में आठवीं पारमिता - *मम सीलं न भिन्दिस्सामी'ति अधिट्ठानं अधिट्ठानपारमी,* जा॰ अट्ठ॰ 5.167; *सीलनेक्खम्मपञ्ञावीरियखन्तिसच्च-अधिट्ठानमेत्ताउपेक्खापारमीति इमा दस पारमियो,* उदा॰ अट्ठ॰ 101, द्रष्ट॰ पारमी के अन्त॰; - **बल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अधिष्ठानबल], सुदृढ़ संकल्प लेने का बल - *तत्थ किञ्चि अनवसेसेन्तो अधिट्ठानबलेन झापेत्वा निब्बायि,* उदा॰ अट्ठ॰ 350; *सब्बकिलेसे पजहन्तो अरहत्तमग्गवसेन चित्तं अधिट्ठातीति अधिट्ठानबलं,* पटि॰ म॰ 346; - **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अधिष्ठानभाव], प्रमुख आधार होने की स्थिति - *सीलस्स अधिट्ठानभावतो,* उदा॰ अट्ठ॰ 339; *खन्धापि खन्धमूलकदुक्खस्स अधिट्ठानभावतो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.37; - **मन** नपुं॰, सुदृढ़ संकल्प की शक्ति से भरा हुआ मन - *मनोमयन्ति अधिट्ठानमनेन निम्मितत्ता मनोमयं,* विसुद्धि॰ 2.32; - **वसिता** स्त्री॰, [बौ॰ सं॰ अधिष्ठानवशिता], प्रथम ध्यान आदि ध्यानों की अवस्था को नियन्त्रित करने वाली पांच प्रकार की मानसिक शक्तियों में से एक, वह शक्ति जिसके द्वारा भवङ्ग-चित्त के प्रवाह के वेग को रोक कर एक निर्धारित कालावधि के लिये चित्त को ध्यानस्थ रखने की क्षमता उत्पन्न कर दी जाती है तथा भवङ्ग-पात से चित्त का रक्षण करा दिया जाता है - ... *भवङ्गवेगं उपच्छिन्दित्वा यथापरिच्छिन्नकालं झानं ठपेतुं समत्थता भवङ्गपाततो रक्खणयोग्यता अधिट्ठानवसिता नाम,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 229; - **टि॰** पांच वशिताएं निम्नलिखित हैं : – 1. आवज्जनवसिता 2. समापज्जनव॰ 3. अधिट्ठानव॰, 4. वुट्ठानव॰, 5. पच्चवेक्खणव॰ ; - **विधान** नपुं॰, तत्पु॰ [अधिष्ठानविधान], अधिष्ठान विषयक नियम - *तत्रिदं अधिट्ठानविधानं,* विसुद्धि॰ 2.346; - **सुञ्ञ** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अधिष्ठानशून्य], विभिन्न अधिष्ठानों में प्राप्त धर्मों की शून्यता या अभाव - *नेक्खम्माधिट्ठानं कामच्छन्देन सुञ्ञं ... अरहत्तमग्गाधिट्ठानं सब्बकिलेसेहि सुञ्ञं, इदं अधिट्ठानसुञ्ञं,* पटि॰ म॰ 358; - **हार** पु॰, कर्म॰ स॰, नेत्ति॰ के 16 हारों, अथवा निर्वचन-प्रकारों में से एक; नेत्ति॰ 2; नेत्ति॰ 5; - **हार-सम्पातो** पु॰, नेत्ति॰ के एक खण्डविशेष का नाम, नेत्ति॰ 88-89.

अधिट्ठायक त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अधिष्ठायिक / अधिष्ठायक], पर्यवेक्षक, अधीक्षक, निदेशक, **स॰** प॰ के उ॰ प॰ में कम्माधि॰ कम्मन्ताधि॰, नवकम्माधि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अधिट्ठित त्रि॰, अधि + √ठा का भू॰ क॰ कृ॰ [अधिष्ठित], **क.** कर्म॰ वा॰, किसी के द्वारा अधिकृत, किसी के द्वारा सम्पन्न कर दिया गया था, सञ्चालित, परिरक्षित, अभिभूत, अधिगृहीत - *चोरेहि अधिट्ठितो मग्गो चोरकन्तारं नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.108; *अधिट्ठितं रजनाय रत्तं,* परि॰ 403; *तं मया अधिट्ठितमेव,* जा॰ अट्ठ॰ 2.207; *अनुट्ठिताति अधिट्ठिता,* उदा॰ अट्ठ॰ 264; **ख.** कर्तृ॰ वा॰, अवस्थित, स्थित, आ धमका हुआ, सन्निविष्ट, अपने को लगाया हुआ, विद्यमान; ऊपर स्थित - *न तं धम्मं अधिट्ठितो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.236; *एकचरियं अधिट्ठितो,* सु॰ नि॰ 826; **ग.** नपुं॰, निमि॰ कृ॰ के आशय में प्रयुक्त - *किं गिहीनं कम्मन्तं अधिट्ठितेन,* पारा॰ 107; - **ट्ठान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अधिष्ठितस्थान], किसी के द्वारा गृहीत या अधिकृत पद या स्थान - ... *तेन पदवळञ्जस्स अधिट्ठितट्ठानं पत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.346; - **पत्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अधिष्ठितपात्र], भिक्षु के लिये निर्धारित भिक्षापात्र - *सब्बेहेव*

अधिट्ठितपत्तं गहेत्वा सन्निपतितब्बं, पारा॰ 369; – **सञ्ञी** त्रि॰, [अधिष्ठितसंज्ञी], किसी भी अनिश्चित को सुनिश्चित होने की समझ रखने वाला, अगृहीत को गृहीत मानने वाला – ... *अनधिट्ठिते अधिट्ठितसञ्ञी*, पारा॰ 376.

अधिट्ठिति स्त्री॰, [बौ॰ सं॰ अधिस्थिति], निर्धारण, दृढ़ संकल्प, आधार, स्थान – *अधिट्ठितियमाधारे ठानेधिट्ठानमुच्चते*, अभि॰ प॰ 1032.

अधितिट्ठति / अधिट्ठाति अधि + √ठा, वर्त॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अधितिष्ठति], **क.** व्यावहारिक प्रयोग में लाता है, निष्पादित करता है, हाथ में लेता है, देखभाल करता है – *चेतसो अधिट्ठानं अभिनिवेसानुसयं न उपेति ... नाधिट्ठाति*, स॰ नि॰ 1(2).17; *न सक्कच्चं कम्मन्तं अधिट्ठाति*, अ॰ नि॰ 1(1).138; **ख.** आग्रह करता है, किसी बात पर बल देता है, डटा रहता है, जमा रहता है – **ट्ठाय** पू॰ का॰ कृ॰ – *महाजनो मा पस्सतू'ति अधिट्ठाय*, जा॰ अट्ठ॰ 3.244; **ग.** ध्यान केन्द्रित करता है, किसी पर अपना ध्यान एकाग्र करता है, निश्चय करता है, किसी ओर विचारों को ले जाता है, इच्छा अथवा संकल्प करता है – **ट्ठासि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एवमेवं एता खण्डदन्ता पलितकेसा होन्तू'ति अधिट्ठासी'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.88.

अधित्थि अ॰, अव्ययी॰ स॰ [अधिस्त्रि], स्त्री के विषय में, नारी से सम्बन्धित – ... *यथा लोके इत्थीसु कथा अधित्थीति वुच्चति* ..., विसुद्धि॰ 1.340; क॰ व्या॰ 345, *इत्थीसु एकं अधिकिच्च तथा पवत्तति सा कथा अधित्थि*, सद्द॰ 3.749.

अधिदेव पु॰, देवों के मध्य अधिपति, देवों में ऊंचे स्थान वाला देव – *अतिरेको देवो अतिदेवो, एवं अधिदेवो, अधिसीलं*, सद्द॰ 3.752; – **ञाणदस्सन** नपुं॰, देवों से सम्बन्धित विषयों का ग्रहण करने वाला ज्ञान – *अट्ठपरिवट्टं अधिदेवञाणदस्सनं*, अ॰ नि॰ 3(1).128; – **त्तकर** पु॰, अधिदैवत्व की ओर जाने वाला धर्म या कारण – *अत्तनो च परस्स च अधिदेवत्तकरं सब्बं धम्मजातं वेदीति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.298, तुल॰ अधिदेवकर; – **देवे** अव्ययी॰ अ॰ अधि + देव का सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ अथवा द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, देवताओं के विषय में, देव बनाने वाले धर्मों के विषय में – *अधिदेवे अभिञ्ञाय* ..., सु॰ नि॰ 1154; *अधिदेवे अभिञ्ञायाति अधिदेवकरे धम्मे ञत्वा* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.298; *अधिदेवे मयं ... भगवन्तं अपुच्छिम्ह, अधिदेवे भगवा ब्याकासि*, म॰ नि॰ 2.340.

अधिप पु॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्रयुक्त [अधिप], राजा, शासक, अधिपति – *इस्सरो नायको सामि पतीसाधिपति पभु अय्याधिपाधिभू नेता* ..., अभि॰ प॰ 725, कोसलरट्ठा॰, खमा॰, गणा॰, गरुड़ा॰, जना॰, तारका॰, दिजा॰, धम्मा॰, नरा॰, भूता॰, मनुजा॰, मिगा॰, यक्खा॰, रट्ठा॰, लोका॰, विहगा॰, सुरा॰ आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अधिपच्च नपुं॰, अधिपति का भाव॰ [आधिपत्य], ईश्वरत्व, अधिपति होने की अवस्था – *रज्जञ्च पटिपन्नास्म, आधिपच्चं सुचीरत*, जा॰ अट्ठ॰ 5.50; तुल॰ अधिपतिय.

अधिपज्जति अधि + √पद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अधिपद्यते], प्राप्त करता है, आकर गिर जाता है, आपतित होता है – *अथो अत्थं गहेत्वान, अनत्थं अधिपज्जति*, अ॰ नि॰ 2(2).233.

अधिपञ्ञत्ति अव्ययी॰ अ॰ [अधिप्रज्ञप्ति], **क.** निर्वचन अथवा व्याख्या के विषय में, व्याख्यान-विषयक – *अथ खो अहमेव तत्थ भिय्यो यदिदं अधिपञ्ञत्ति*, दी॰ नि॰ 3.103; **ख.** स्त्री॰, उत्कृष्टतम व्याख्यान – ... *अधिपञ्ञत्ति नाम खन्धपञ्ञत्ति, धातुपञ्ञत्ति, आयतनपञ्ञत्ति, इन्द्रियपञ्ञत्ति, सच्चपञ्ञत्ति, पुग्गलपञ्ञत्तीति एवं वुत्ता छ पञ्ञत्तियो*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.90.

अधिपञ्ञा स्त्री॰, [अधिप्रज्ञा], उच्चस्तरीय प्रज्ञा, प्रज्ञा का उत्तम स्तर, उत्कृष्टतम् प्रज्ञा, प्रज्ञा के विषय में शिक्षा, शिक्षा के तीन प्रकारों में एक – *अधिसीलं अधिचित्तं अधिपञ्ञा*, पटि॰ म॰ 411; *किं सिक्खति? अधिसीलं अधिचित्तं अधिपञ्ञञ्च* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 295; तुल॰ अधिचित्तं; – *अथ खो अहमेव तत्थ भिय्यो, यदिदं अधिपञ्ञं*, दी॰ नि॰ 1.157; अट्ठ॰ की दृष्टि में अधिपञ्ञं वस्तुतः अधिपञ्ञा का लिङ्ग-विपर्यास है – *अधिपञ्ञन्ति एत्थ लिङ्गविपल्लासो वेदितब्बो*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.267; *इध, भिक्खवे, भिक्खु आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं, पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति, अयं वुच्चति, भिक्खवे, अधिपञ्ञा सिक्खा*, अ॰ नि॰ 1(1).268; – *अधिसीले, अधिचित्ते, अधिपञ्ञाय*, महाव॰ 89; *तेपि न सक्खिस्सन्ति विनेतुं अधिसीले अधिचित्ते अधिपञ्ञाय*, अ॰ नि॰ 2(1).99; *ममं सावका अधिपञ्ञाय सम्भावेन्ति*, म॰ नि॰ 2.212; – **धम्मविपस्सना** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, [अधिप्रज्ञधर्मविपश्यना], प्रज्ञा के आलोक में, धर्मों में अनित्य, दुख एवं अनात्म की अनुपश्यना – *न लाभी अधिपञ्ञाधम्मविपस्सनाय*, अ॰ नि॰ 1(2).107; *अधिपञ्ञाधम्मविपस्सनायाति सङ्खारपरिग्गाहकविपस्स-*

नाञाणस्स, तस्मिं अधिपञ्ञासङ्खातञ्च, पञ्चक्खन्धसङ्खातेसु च धम्मेसु विपस्सनाभूतं, तस्मा अधिपञ्ञाधम्मविपस्सना'ति वुच्चतीति, अ. नि. अट्ठ. 2.319; *अनिच्चदुक्खादिवसेन सब्बधम्मतीरणं अधिपञ्ञा धम्मविपस्सना,* अ. नि. टी. 2.250; - **सिक्खा** स्त्री., कर्म. स. [बौ. सं. अधिप्रज्ञाशिक्षा], तीन शिक्षाओं में से एक, अभिधर्म की अमला प्रज्ञा-विषयिणी शिक्षा - *तिस्सो सिक्खा - अधिसीलसिक्खा, अधिचित्तसिक्खा, अधिपञ्ञासिक्खा,* दी. नि. 3.175; म. नि. 1.407.

अधिपतति अधि + √पत का वर्त., प्र. पु., ए. व., [अधिपतति], **क**. तेजी से पार कर जाता है, अदृश्य हो जाता है - *अतिपतति वयो खणो तथेव,* जा. अट्ठ. 4.100; *अतिविय पतति, सीघं अतिक्कमति,* तदे.; **ख**. मर्दन करता है, अभिभूत कर देता है, आक्रमण करता है, किसी के विपरीत आ धमकता है; चढ़ बैठता है; - **तित्वा** पू. का. कृ. - *गावी तरुणवच्छा अधिपतित्वा जीविता वोरोपेसि,* उदा. 78; *अधिपतित्वा'ति अभिभवित्वा, मद्दित्वा,* उदा. अट्ठ. 76.

अधिपतत्त नपुं., 'विदितत्त' के मि. सा. पर अधि + पति से निर्मित भाव. [अधिपतित्व], अधिपति होने की अवस्था; प्रभुत्व, स्वामित्व, मालिकी, अधिपति-भाव से प्रवृत्त होने की अवस्था - *नेक्खम्माधिपतत्ता पञ्ञा,* पटि. म. 99; *नेक्खम्माधिपतत्ता पञ्ञाति नेक्खम्मं अधिकं कत्वा नेक्खम्माधिकभावेन पवत्ता पञ्ञा,* पटि. म. अट्ठ. 1.273.

अधिपतन नपुं., [अधिपतन], किसी का विपरीत दिशा की ओर से उड़ते हुए आ गिरना - *दीपसिखं अधिपतनतो अधिपातका'ति अधिप्पेता,* उदा. अट्ठ. 290.

अधिपति पु., [अधिपति], **क**. शासक, स्वामी, प्रभु - *इस्सरो नायको सामि पतीसाधिपति पभु,* अभि. प. 725; अधिपति के योग मे ष. वि. अथवा सप्त. वि. का प्रयोग - *गोणानं अधिपति गोणेसु अधिपति,* क. व्या. 305; सद्द. 3.724; *गन्धब्बानं अधिपति, ... कुम्भण्डानं अधिपति, ... नागानञ्च अधिपति, ... यक्खानञ्च अधिपति, महाराजा यसस्सिसो,* दी. नि. 2.188-189; **ख. ला. अ.** नियन्त्रक, प्रधान तथ्य, महत्त्वपूर्ण तत्त्व - *सो अत्तानंयेव अधिपतिं करित्वा अकुसलं पजहति,* अ. नि. 1(1).172; *एवं अत्ताधिपति हिरी नाम होति,* ध. स. अट्ठ. 170; *अधिपतिवसेन पन मनो सेट्ठो एतेसन्ति मनोसेट्ठो,* ध. प. अट्ठ. 1.14; - **पच्चय** पु., कर्म. स. [बौ. सं. अधिपतिप्रत्यय], अभिधर्म का पारिभाषिक शब्द, चौबीस प्रकार के प्रत्ययों में से एक, चित्त एवं चेतसिकों की उत्पत्ति के लिए प्रमुख अथवा जेष्ठ बनाया हुआ छन्द, वीर्य, चित्त एवं विमर्श में से कोई एक धर्म - *जेट्ठकट्ठेन उपकारको धम्मो अधिपतिपच्चयो,* विसुद्धि. 2.163; *छन्दाधिपति ... अधिपतिपच्चयेन पच्चयो ... वीमंसाधिपति ..., अधिपतिपच्चयेन पच्चयो,* पट्ठा. 1.2; अभि. अव. 175; - **यं** नपुं., अधिपति का भाव. [आधिपत्य], अधिपति या स्वामी या प्रमुख होने की अवस्था - *अधिपतिनो भावो अधिपतियं,* मो. व्या. 4.60; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट. अत्ताधि., आरम्भणाधि., उळाराधि., चित्ताधि., छद्वाराधि., छन्दाधि., तारकाधि., तावतिंसा., तिदसा., दिपदा., धम्माधि., नागाधि., मग्गाधि., मग्गाधि., मनुजाधि., यक्खाधि., रट्ठाधि. आदि के अन्त.; द्रष्ट. आधिपच्च.

अधिप्पत्थित त्रि., [अधिप्रार्थित], इच्छित, अभीप्सित, वह जिसकी कामना की गई हो, याचित - *यं वत नो अहोसि इच्छितं ... यं अभिपत्थितं ...,* दी. नि. 1.105; 2.173; पाठा. अभिप्पत्थित.

अधिप्पन्न त्रि., अधि + √पद का भू. क. कृ. [अधिपन्न], **क**. आपतित, आ पड़ा हुआ, अनुचित कार्य किया हुआ, आपत्ति या अपराध में फंसा हुआ - *अस्माकं अधिपन्नानं, खमस्सु राजकुञ्जरा'ति,* जा. अट्ठ. 5.376; *अधिपन्नानन्ति दोसेन अपराधेन अज्झोत्थटानं ...,* तदे.; **ख**. त्रि., किसी के आधिपत्य को प्राप्त किया हुआ, अधिगृहीत - *अन्तकेनाधिपन्नस्स,* ध. प. 288; अप. 2.228; स. नि. 1.88; *अन्तकेनाधिपन्नस्साति मरणेन अज्झोत्थटस्स ...,* स. नि. अट्ठ. 1.23; *जीवितन्तकरेन मच्चुना अभिभूतस्स,* जा. अट्ठ. 4.356; **ग**. नपुं., त्रुटि, भ्रम - *यो च अत्तना अधिपन्नं अतिक्कन्तं अञ्ञसिं कतदोसं जानाति,* जा. अट्ठ. 3.33.

अधिपा स्त्री., [अधिपा], नारी स्वामिनी, अध्यक्षा, श्रेष्ठ - *उड्डाय, नारियो पमदाधिपा,* जा. अट्ठ. 5.389; *पमदाधिपा'ति पमदानं उत्तमा,* तदे..

अधिपात[1] पु., अधि + √पत + घञ्, [अधिपात], विभाजन, विखण्डन, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, द्रष्ट. मुद्धातिपात के अन्त..

अधिपात[2] पु., [अधिपतन्ती'ति अधिपाता], शलभ, उड़कर प्रकाश पर आ पड़ने वाला कीट-पतंग - *पतन्ति पज्जोतमिवाधिपातका,* उदा. 155; *डंसाधिपातानं सरीसपानं,* सु. नि. 970; *ततो ततो अधिपतित्वा खादन्ति, तस्मा अधिपाता'ति वुच्चन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.264; - **क** पु., पूर्ववत् - *तेन खो पन समयेन सम्बहुला अधिपातका तेसु ... आपातपरिपातं अनयं आपज्जन्ति,* उदा. 154; *दीपसिखं*

अधिपतनतो अधिपातका'ति अधिप्पेता, उदा॰ अट्ठ॰ 290, पाठा॰ अधिपातिक.

अधिपातयिस्सं अधि + √पत, प्रेर॰ भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, तुड़वा दूंगा, छिन्न-भिन्न करा दूंगा, टुकड़े-टकड़े करा दूंगा – *पासञ्च त्याहं अधिपातयिस्सं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.300; *तत्थ अधिपातयिस्सन्ति छिन्दयिस्सं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.300.

अधिपातिमोक्खे अ॰ अव्ययी॰, प्रातिमोक्ष के विषय में – *तेपि ... सङ्घे विवादं जनेय्युं अज्झाजीवे वा अधिपातिमोक्खे,* म॰ नि॰ 3.31; – **मोक्खं** नपुं॰, प्रातिमोक्ष से संबंधित – *किं तत्थ पातिमोक्खं, किं तत्थ अधिपातिमोक्खन्ति? पञ्ञत्ति पातिमोक्खं, विभत्ति अधिपातिमोक्खं,* परि॰ 2.

अधिप्पग्घरति अधि + प + √घर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अतिप्रघरति], पिघल कर बहता है, ऊपर होकर बहता है – **रन्तं** वर्त॰ कृ॰, नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असकिं सब्बकालं अधिपग्घरन्तं मम इद'न्ति,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 308.

अधिप्पसन्नतर त्रि॰, तुल॰ विशे॰ [अधिप्रसन्न], अत्यधिक शान्त, अत्यधिक प्रसन्न – *महासुखं अभिप्पसन्नतरं कत्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 291; पाठा॰ अभिप्पसन्न.

अधिप्पागा अधि + प + √गम का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, उसने अपने कदम या पद-निक्षेप किसी की ओर मोड़े, किसी ओर गया – *स्वाधिप्पागा भारद्वाजो, विधुरस्स उपन्तिकं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.52; *अधिप्पागा, गतोति अत्थो,* तदे॰.

अधिप्पाय पु॰, [अभिप्राय], मन में विद्यमान आशय या विचार, अभिप्राय – *अपि च खो पन मारस्स यो अधिप्पायो,* मि॰ प॰ 155; – **नय** पु॰, [अभिप्रायनय], एक प्रकार का अर्थ-व्याख्यान, व्याख्यान की एक पद्धति – *देसनानयो अधिप्पायनयेन नीयति,* सद्द॰ 2.396; – **निदस्सन** नपुं॰, [अभिप्रायनिदर्शन], अपने मन के अभिप्राय की सूचना, अभिव्यक्ति या प्रकाशन, तात्पर्य का प्रकाशन – *तेन हीति तस्साधिप्पायनिदस्सनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.141; – **फल** नपुं॰, ष॰ तत्पु॰, [अभिप्रायफल], अपने मन के अभिप्राय अथवा इच्छा का पूरा होना, अभिप्राय का फल – *अधिप्पायफलन्ति अत्तनो अधिप्पायफलं सम्पस्समाना,* जा॰ अट्ठ॰ 6.44; – **योजना** स्त्री॰, [अभिप्राययोजना], शब्द के अभिप्राय की दृष्टि से उसके अर्थ की योजना, पदार्थ की दृष्टि से नहीं, वास्तविक तात्पर्य की योजना – *अयं पनेत्थ अधिप्पाययोजना,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.81; 122; – **विदू** त्रि॰, [अभिप्रायवित्], दूसरे लोगों के अभिप्रायों को जानने वाला – *अधिप्पायविदू जातो, सुगतस्स महामते,* अप॰ 2.112; *बहुस्सुतो महाञाणी, अधिप्पायविदू मुने,* तदे॰; *तस्सा ञत्वा अधिप्पायं अधिप्पायविदू विदू,* म॰ वं॰ 19.81; – **यानुरूपं** अ॰, अव्ययी॰ [अभिप्रायानुरूपं], मन के अभिप्राय के अनुरूप – *यथाधिप्पायन्ति अधिप्पायानुरूपं,* उदा॰ अट्ठ॰ 127; – **यानुसन्धि** स्त्री॰, द्व॰ स॰ [अभिप्रायानुसन्धि], अभिप्राय एवं उसका प्रयोग अथवा अर्थ-वर्णना – *अधिप्पायानुसन्धितो पन एवं वेदितब्बा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.53.

अधिप्पेत त्रि॰, [अभिप्रेत], **क.** अभिप्रेत, मन द्वारा चाहा गया, चिन्तित – *... अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेतो भिक्खू'ति,* पारा॰ 68; *अयं इमस्मिं अत्थे अधिप्पेता भिक्खुनी'ति,* पाचि॰ 297; *... इमस्मिं ठाने बुद्धो'ति अधिप्पेतो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.216; **ख.** इच्छित, अभीप्सित, चाहा गया, चाहने योग्य – *यं वत नो अहोसि इच्छितं, यं आकङ्खितं, यं अधिप्पेतं, यं अभिपत्थितं,* दी॰ नि॰ 1.105; – **तत्थदीपना** स्त्री॰, [अभिप्रेतार्थदीपना], वास्तविक तात्पर्य की दृष्टि से अर्थ का निर्धारण – *अयं अनुपदतो अत्थवण्णना, अयं पनेत्थ अधिप्पेतत्थदीपना,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 201; अनुपदतो अत्थवण्णना का विप॰.

अधिबन्ध पु॰, [अधिबन्ध], बन्धन, कारागार का बन्धन – *उत्तरिपि अधिबन्धं निगच्छेय्य,* म॰ नि॰ 3.209; *अधिबन्धं निगच्छेय्याति ... अत्तना'पि बन्धं निगच्छेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प.) 3.157.

अधिब्रह्मानं अ॰, अव्ययी॰ स॰, [अधिब्रह्माणं], ब्रह्मा के विषय में – *अधिब्रह्माणं मयं, भन्ते, भगवन्तं अपुच्छिम्हा,* म॰ नि॰ 2.340.

अधिभवति / अधिभोति अधि + √भू का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अभिभूत करता है, वशीभूत करता है, अतिशय की स्थिति में रहता है – *मानं नाधिभोति ... मानं अधिभोति,* अ॰ नि॰ 3(2).216; 3(2)250; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *समुदाचरन्तीति अभिभवन्ति अज्झोत्थरित्वा वत्तन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.120; – **भोसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न भिक्खु रूपे ... सद्दे ... गन्धे ... रसे ... फोट्ठब्बे ... धम्मे अधिभोसि,* स॰ नि॰ 2(2).186; – **भोसिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिभोसिं तहिं अज्जे,* अप॰ 2.214; पाठा॰ अभिभोमि; – **भोसुं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अधिभोसुं ति रूपं पि यस्मा दिस्सति पालियं,* सद्द॰ 1.29; – **ज्झभवि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अज्झभवीति अधि अभवि विनासं पापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.66; *मा वो कोधो अज्झभवि,* स॰ नि॰ 1.277; – **ज्झभविं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो वेदजातो अज्झभविं अमित्ते,* जा॰ अट्ठ॰ 2.279; – **ज्झभू** अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यो त्वं दुज्जयमज्झभू,* इतिवु॰ 55; – **भंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ –

भिक्खुं रूपा अधिभंसु, स॰ नि॰ 2(2).186; - **विस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *सुट्ठुतरं वो एते अधिभविस्सन्ती'ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.318; - **वित्वा / भुय्य** पू॰ का॰ कृ॰ - *मं अधिभवित्वा अतिक्कमित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.27; *देवमारब्रह्मुनो सिरिया च तेजसा अभिभुय्य,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 124; *अञ्ञे देवेधिभवित्वा,* अप॰ 1.357; पाठा॰ अभिभवित्वा.

अधिभवन नपुं॰, अधि + √भू का क्रि॰ ना॰, [अभिभवन], अधीनता, अभिभूत हो जाना, अभिभव, पराभव, पराजय - *अभिभवनन्ति परिभुञ्जनं भवन्ति अज्झोत्थरणं,* सद्द॰ 1.86; पाठा॰ अभिभवन.

अधिभासति अधि + √भास का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अधिक चमकता है, प्रभासित होता है - *न चाधिभासति, न च अभिभासति, न चापि भासति,* उदा॰ 156; पाठा॰ अभिभासति.

अधिभू पु॰, [अधिभू], स्वामी, राजा, अधिपति, प्रभु - *अय्याधिपाधिभू नेता ...,* अभि॰ प॰ 725; *भिक्खु रूपाधिभू ... अधिभू ... .अधिभोसि,* स॰ नि॰ 2(2).187; स॰ प॰ के उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰, आगे, अनधि॰, जनाधि॰, तिदिवा॰, मारधेय्या॰ के अन्त॰.

अधिभूत त्रि॰, [अभिभूत], अधीन में किया हुआ, वश में किया हुआ, विजित - *भिक्खु रूपाधिभूतो, ... अधिभूतो, अनधिभू,* स॰ नि॰ 2(2).186; पाठा॰ अभिभूत, स॰ उ॰ प॰ के रूप में अविज्जा॰, तण्हा॰, दोमनस्सा॰, धम्मा॰, फोट्ठब्बा॰, रसा॰, रूपा॰, सद्दा॰ के अन्त॰.

अधिमत्त त्रि॰, [अधिमात्र], **क.** अधिक मात्रा वाला, अत्यधिक, बहुत अधिक - *अधिमत्तं राहुले,* महाव॰ 105; *अधिमत्तो दाहो,* म॰ नि॰ 1.313; *अधिमत्ता सीसे सीसवेदना,* म॰ नि॰ 1.312; **ख.** अधिक बलवान, अधिक श्रेष्ठ, अधिक शक्तिसम्पन्न - *सब्बेसं अधिमत्तञ्च पोरिसं,* अप॰ 1.75; *तस्सिमानि पञ्चिन्द्रियानि अधिमत्तानि,* अ॰ नि॰ 1(2).173; *अधिमत्ता होन्ति बलवतियो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).271; - **कसिम** त्रि॰, अत्यधिक मात्रा में कृश, बहुत अधिक दुर्बल - *अधिमत्तकसिमानं पत्तो,* म॰ नि॰ 1.114; *अधिमत्तकसिमानन्ति अतिविय किसभावं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).362; - **गतिमन्तु** त्रि॰, अत्यधिक मात्रा में गति से सम्पन्न - *एवं अधिमत्तसतिमा अधिमत्तगतिमा अधिमत्तधितिमा सावको ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 17; - **गिलान** त्रि॰, अत्यधिक रुग्ण, गम्भीर-रूप में अस्वस्थ - *अधिमत्तगिलानोति बाळ्हगिलानो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172; - **धितिमन्तु** त्रि॰, अत्यधिक धैर्य वाला - *एवं अधिमत्तसतिमा अधिमत्तगतिमा अधिमत्तधितिमा सावको ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 17; *अधिमत्तधितिमन्तो एवं परमेन पञ्ञावेय्यत्तियेन समन्नागता,* म॰ नि॰ 1.117; - **परित्तता** स्त्री॰, भाव॰, अधिक अल्पमात्रा में होने की स्थिति - *अपि च कोधस्स अधिमत्तपरित्तता वेदितब्बा,* महानि॰ 157; - **भाव** पु॰, बहुतायत, अधिकता - *अधिमत्तभावो परित्तभावो च,* महानि॰ अट्ठ॰ 257; *वेदनानं अधिमत्तभावं विदित्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 327; - **वेदनाप्पत्त** त्रि॰, अत्यधिक पीड़ा से ग्रस्त - *अधिमत्तवेदनाप्पत्तो हुत्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 246; - **सतिमन्तु** त्रि॰, अत्यधिक बुद्धि एवं स्मृति वाला - *एवं अधिमत्तसतिमा अधिमत्तगतिमा अधिमत्तधितिमा सावको ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 17; *एवं अधिमत्तसतिमन्तो ... समन्नागता,* म॰ नि॰ 1.117; - **सिनेह** पु॰, अत्यधिक स्नेह - *सत्थरि अधिमत्तसिनेहेन पञ्हं न पुच्छति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.4; पाठा॰ अभिमत्त.

अधिमत्तं क्रि॰ वि॰, अ॰, **क.** अत्यधिक मात्रा में, बहुत बढ़-चढ़कर - *अधिमत्तं वायति,* मि॰ प॰ 255; **ख.** सर्वोत्कृष्ट रूप में, उच्चतम मात्रा में, अधिकतर रूपों में - *द्वीसु येव दिवसेसु अधिमत्तं,* मि॰ प॰ 172; *अहञ्च खो अधिमत्तं समलङ्कततरा तया,* पे॰ व॰ 139; स॰ उ॰ प॰ के रूप में विसयाधिमत्त के अन्त॰, द्रष्ट॰.

अधिमन त्रि॰, [अभिमनस्], किसी पर मन बना चुका, वह जिसका अभिप्रेत कुछ बन चुका है, प्रसन्न चित्त, ऊपर उठे मन वाला, प्रसन्न अथवा आनन्द भरे मन वाला - *विविधं अधिमना सुणोमहन्ति ... अधिमना पसन्नचित्ता हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.401.

अधिमनस त्रि॰, दृढ़ अभिप्राय वाले मन वाला, निश्चिन्त मानसिक प्रकृति वाला, मनस्वी - *अधिमानसा भवाथ,* सु॰ नि॰ 697, तुल॰ अधिमानस एवं अधिचेतस.

अधिमान / अभिमान पु॰, अहंकार, घमण्ड, दर्प, मिथ्या-भ्रम, छल-प्रपञ्च - **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *येसं अप्पत्ते पत्तसञ्ञाय अधिमानो उप्पज्जति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).192; ... *अरहत्ताधिमानो उप्पज्जती'ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 66; - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मानं, ओमानं, अतिमानं, अधिमानं,* अ॰ नि॰ 2(2).131; - **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अधिमानेन अञ्ञं ब्याकरिंसु,* पारा॰ 111; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अरहत्ताधि॰ सग्गाधि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अधिमानस / अधिमनस त्रि॰, दृढ़ अभिप्राय वाला, पूरी तरह मन लगाया हुआ, आनन्दित अथवा प्रफुल्लित मन वाला - *राजा चागाधिमानसो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.237; *चागेन अधिकमानसो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.237.

अधिमान-सच्च त्रि., भ्रमात्मक-ज्ञान को अथवा प्रतीति को सत्य समझने वाला - *अधिमानिको खो अयमायस्मा अधिमानसच्चो,* अ. नि. 3(2).137.

अधिमानिक त्रि., [अभिमानिक], अभिमानी, घमण्डी, भ्रमजाल में फंसा हुआ - *अनधिगते अधिगतमानेन समन्नागतो अधिमानिको'ति,* अ. नि. अट्ठ. 3.322; *सद्धम्मेसु वा अधिमानिको होति,* अ. नि. 3(2).144; *न हि अधिमानिकस्स भिक्खुनो ञानं ... वा होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).194.

अधिमुच्चति अधि + √मुच, कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व., [बौ. सं. अधिमुच्यते], **क.** छुटकारा दिया जाता है, ढीला किया जाता है, स्वतन्त्र या मुक्त हो जाता है - *ञाणेन अधिमुच्चति,* अप. 1.163; **ख.** किसी के प्रति दृढ़ विश्वास रखता है अथवा उसके बारे मे पूर्णतया सुनिश्चित होता है - *द्वीसु महापुरिसलक्खणेसु ... नाधिमुच्चति,* सु. नि. (पृ.) 167; *अधिमुच्चतीति अधिमोक्खं लभति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).125; **ग.** किसी में आनन्द लेता है, किसी की ओर प्रवृत्त होता है, किसी के प्रति लोभी होता है - **त्तो** भू. क. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *किलेसवसेन अधिमुत्तो गिद्धो होति,* स. नि. अट्ठ. 3.43; - **च्चिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. - *लोको ओनमिस्सति, ओकप्पेस्सति, अधिमुच्चिस्सतीति,* मि. प. 219-220; - **च्चित्वा** पू. का. कृ. - *सत्ता अधिमुच्चित्वा,* उदा. अट्ठ. 171; **घ.** धारणा बनाता है, अनुभव करता है, दृढ़ संकल्प लेता है - **च्चि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *बिम्बिसारस्स पासादं सुवण्णन्ति अधिमुच्चि, सो अहोसि सब्बसोवण्णमयो,* महाव. 285; **ङ.** बोधिसत्व, मार आदि की काया में प्रवेश करता है अर्थात् अभिव्याप्त कर देता या भर देता है - **च्चि** उपरिवत् - *तस्सेव कुमारस्स मातु सरीरे अधिमुच्चि,* जा. अट्ठ. 5.426; *अञ्ञतरस्स ब्रह्मपारिसज्जस्स सरीरे अधिमुच्चि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.308; - **च्चित्वा** पू. का. कृ. - *अधिमुच्चित्वा तत्थ तत्थ उप्पन्ना उच्छिज्जन्ति,* उदा. अट्ठ. 171; *सहस्सो ब्रह्मा ... अधिमुच्चित्वा विहरति,* म. नि. 3.143.

अधिमुच्चन नपुं., अधि + √मुच से व्यु., क्रि. ना., दृढ़ विश्वास, सुदृढ़ धारणा, दृढ़ संकल्प - *को अयं अधिमुच्चनट्ठो?,* ध. स. अट्ठ. 234; *अधिमुच्चनं अधिमोक्खो,* विसुद्धि. 2.93; *यो चित्तस्स अधिमोक्खो अधिमुच्चना,* विभ. 187.

अधिमुच्चितु पु., अधि + √मुच से व्यु. क. ना. [अधिमोक्तृ], श्रद्धावान्, विश्वासी, दृढ़ संकल्प करने वाला - *अधिमुच्चिता होति,* अ. नि. 2(1).155; *अधिमुच्चिता होतीति सद्धाता होति,* पु. प. अट्ठ. 93.

अधिमुच्छित त्रि., अधि + √मूर्छ का भू. का. कृ., [अधिमूर्छित], लोभ अथवा शोक में डूबा हुआ, क्लेशों के प्रभाव से संज्ञा शून्य - *गन्धेसु अधिमुच्छितो,* थेरगा. 732; *अगिद्धा नाधिमुच्छिता,* थेरगा. 923; *एत्थ लोकोधिमुच्छितो, विमुच्छितो,* स. नि. 1(1).135; पाठा. विमुच्छितो; *अधिमुच्छितातिं किलेसमुच्छाय अतिविय मुच्छिता,* जा. अट्ठ. 2.362.

अधिमुत्त[1] त्रि., अधि + √मुच् का भू. क. कृ. [बौ. सं. अधिमुक्त], स्वयं को किसी ओर अथवा किसी में पूरी तरह लगाया हुआ, कठोर प्रयास कर रहा, किसी को अपना अभिप्रेत अथवा अध्याशय बनाया हुआ, दृढ़ विश्वास वाला, अधिमुक्ति-युक्त - *निब्बानं अधिमुत्तानं, अत्थं गच्छन्ति आसवा,* ध. प. 226; *अधिमुत्तानन्ति निब्बानज्झासयानं,* ध. प. अट्ठ. 2.188; *सो छ ठानानि अधिमुत्तो होति,* अ. नि. 2(2)87; *अधिमुत्तो होतीति पटिविज्झित्वा पच्चक्खं कत्वा ठितो,* अ. नि. अट्ठ. 3.126; स. उ. प. के रूप में अव्यापज्झा., असम्मोहा., आकिञ्चञ्ञा., आणञ्जा., उपादानक्खया., करुणा., कामा., तण्हक्खया., दाना., निब्बाना., नेक्खम्मा., पणीता., पविवेका., ब्रह्मलोका., सद्धा., हीना. के अन्त. द्रष्ट.; - **चित्त** त्रि., [अधिमुक्तचित्त], वह जिसका चित्त दृढ़ अथवा श्रद्धा से भरा हो, दृढ़-निश्चयी चित्त वाला - *एवं मं धारेहि अधिमुत्तचित्त'न्ति,* सु. नि. 1155.

अधिमुत्त[2] पु., थेरगा., 114; तथा 705-725; गीतियों के लेखक दो थेरों का नाम, थेरगा. के 114वें तथा 705-725 तक की गाथाओं के रचयिता स्थविर.

अधिमुत्ति स्त्री., अधि + √मुच् से व्यु. [अधिमुक्ति], दृढ़ धारणा अथवा दृढ़ विश्वास, अभिप्राय, आशय, अभिप्रेत, संकल्प, अभिरुचि - *अज्झासयो अधिप्पायो आसयो चाभिसन्धि च, भावो'धिमुत्ति छन्दो'थ ...,* अभि. प. 766, *अज्झासयसभावो अधिप्पेतो, यो अधिमुत्तीतिपि वुच्चति,* इतिवु. अट्ठ. 215; *तथागतो सत्तानं आसयं, अनुसयं, चरितं, अधिमुत्तिं जानाति,* पटि. म. 112; *नेसा बुद्धानं अधिमुत्ति,* मि. प. 159; - **पच्चुपट्ठान** त्रि., [बौ. सं. अधिमुक्तिप्रत्युपस्थान], अधिमुक्ति के द्वारा अभिव्यक्त, साक्षात् रूप में, प्रकाशित या उत्पन्न - *सद्धा ... अधिमुत्तिपच्चुपट्ठाना,* सु. नि. अट्ठ. 1.114; *ओकप्पनलक्खणा सद्धा अधिमुत्तिपच्चुपट्ठाना च,* नेत्ति. 25.

अधिमोक्ख पु., अधि + √मुच् से व्यु. [अधिमोक्ष], पक्का विश्वास, सुदृढ़ धारणा, संकल्प, निर्णय – *अधिमोक्खो तु निच्छयो,* अभि. प. 159, *निच्छये अधिमोक्खो* ..., सद्द. 3.882, *अधिमुच्चनं अधिमोक्खो,* विसुद्धि. 2.93; *विचिकिच्छाय अभावेन पन एत्थ अधिमोक्खो उप्पज्जति,* विसुद्धि. 2.99; अभि. अव. 28, स. उ. प. में अलद्धा., लद्धा. के अन्त. द्रष्ट.; – **किच्च** नपुं., [बौ. सं. अधिमोक्षकृत्य], अधिमोक्ष या सुदृढ़ विश्वास के लिये आवश्यक कृत्य, दृढ़ विश्वास से भरा काम – *अथ नेव सद्धिन्द्रियं अधिमोक्खकिच्चं कातुं सक्कोति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).301; – **चरिया** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. अधिमोक्षचर्या], सुदृढ़-विश्वास से भरा आचरण अथवा चर्या – *अधिमोक्खचरियाय वेसारज्जं* ..., पटि. म. 197; – **बहुलता** स्त्री., भाव., सुदृढ़-विश्वास से भरपूर होने की दशा – *अपिच छ धम्मा विचिकिच्छाय पहानाय संवत्तन्ति बहुस्सुतता ... अधिमोक्खबहुलता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).296; – **मण्ड** पु., अधिमोक्ष का सार-तत्त्व, श्रद्धा-इन्द्रिय – *अधिमोक्खमण्डो सद्धिन्द्रियं,* पटि. म. 268; – **मनसिकार** पु., द्व. स., अधिमोक्ष एवं मनसिकार – *अधिमोक्खमनसिकारा द्वे येवापनका* ..., विसुद्धि. 2.99; अभि. अव. 28; – **लक्खण** त्रि., ब. स. [अधिमोक्षलक्षण], अधिमोक्ष के विशिष्ट लक्षणों वाला – *अधिमोक्खलक्खणे इन्दट्ठं कारेती'ति,* ध. स. अट्ठ. 189; उदा. अट्ठ. 248; – **सद्धा** स्त्री., सुदृढ़ श्रद्धा – ... *अधिमोक्खसद्धा बलवतरा निब्बत्तति,* विसुद्धि. 2.306; – **सम्पसाद** पु., अधिमोक्ष में प्राप्त प्रसन्नता या सन्तोष – *दुविधो सम्पसादो, अधिमोक्खसम्पसादो च पटिलाभसम्पसादो च,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.39; – **सम्भव** पु., अधिमोक्ष का स्वभाव, अधिमोक्ष का उदय अथवा उत्पत्ति – *अधिमोक्खसम्भवतो समाधि बलवा होति,* अभि. अव. 28; पाठा. अधिमोक्खसंभाव, अधिमोक्खसभाव.

अधिमोचेहि अधि + √मुच के प्रेर., अनु., म. पु., ए. व., **क.** अन्य को किसी उद्देश्य-विशेष में पूरी तरह से लगवा दो, रखवा दो या स्थापित करा दो – *चित्तं अधिमोचेही,* स. नि. 3(2).472; *अधिमोचेहीति ठपेहि,* स. नि. अट्ठ. 3.321.

अधिरोह त्रि., स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त [अधिरोह], चढ़ाई – *गिरिसिखरं दुरधिरोहं,* मि. प. 294.

अधिरोहणी स्त्री., सीढ़ी, नसेनी – *सोपानो वारोहणं च निस्सेणी साधिरोहणी,* अभि. प. 216.

अधिरोहति अधि + √रुह् का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अधिरोहति], आरोहण करता या ऊपर चढ़ता है, सवार होता है – *उपरिभावे अधिरोहति,* सद्द. 3.882.

अधिवचन नपुं., [अधिवचन], नाम, उपाधि, **क.** एक धर्म-पर्याय का नाम – *तस्मा इमस्स धम्मपरियायस्स पारायनन्तेव अधिवचनं,* सु. नि. पृ. 246; *तस्मा इमस्स वेय्याकरणस्स सम्पसादनीयं त्वेव अधिवचनन्ति,* दी. नि. 3.86; **ख.** व्युत्पत्ति-परक निर्वचन से रहित शब्द-विशेष – *एत्तावत्ता अधिवचनपथो* ..., दी. नि. 2.49; *सिरिवड्ढको ... आदयो हि वचनमत्तमेव अधिकारं कत्वा पवत्ता अधिवचना नाम,* ध. स. अट्ठ. 98; **ग.** प्रतीकात्मक अथवा रूपकात्मक नाम, प्रतीकात्मक अथवा आलङ्कारिक नाम – *सुखस्सेतं ... अधिवचनं ... यदिदं पुञ्ञानि,* इतिवु. 12; *रागस्सेतं अधिवचनं रजोति,* जा. अट्ठ. 1.124; *पापकानं ... अकुसलानं ... अधिवचनं, यदिदं अङ्गण'न्ति,* म. नि. 1.33; **घ.** सर्वाधिक उपयुक्त पर्यायवाचक शब्द – *वीरियस्सेतं अधिवचनं,* उदा. अट्ठ. 248; *अम्बुचारी, मच्छस्सेतं अधिवचनं,* सु. नि. अट्ठ. 1.91; *मुनातीति मनो, चित्तस्सेतं अधिवचनं,* सु. नि. अट्ठ. 1.116; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट., अनुक्कण्ठिताधि., खन्धाधि., गारवाधि., अतीताधि., कुसलाधि. के अन्त., तुल. अधिवुत्ति, अधिमुत्ति, विप. वेवचन; – **दुक** नपुं., [अधिवचनद्विक], अधिवचनों अथवा पर्यायों का युग्म दुक्का, द्विकमातिका में अधिवचन का उल्लेख – *अधिवचनदुकादयो तयो अत्थतो निन्नानाकरणा* ..., ध. स. अट्ठ. 98; – **पथ** पु., [अधिवचनपथ], उक्ति अथवा कथन के प्रकार, अभिव्यक्ति की विधाएं, वचन-प्रकार – *एत्तावता अधिवचनपथो,* दी. नि. 2.49; *तयो ... मे, निरुत्तिपथा अधिवचनपथा पञ्ञत्तिपथा,* स. नि. 2(1).66; *सब्बेव धम्मा अधिवचनपथा निरुत्तिपथपञ्ञत्तिपथा,* ध. स. अट्ठ. 13–16; तुल. ध. स. अट्ठ. 413; व्याख्या के लिए द्रष्ट. ध. स. अट्ठ. 98; – **पद** नपुं., [अधिवचनपद], कथन वाले पद, अभिव्यक्ति-प्रकाशक शब्द – *अधिमुत्तिपदानीति अधिवचनपदानि,* दी. नि. अट्ठ. 1.90; *अधिवचनपदानीति पञ्ञत्तिपदानि,* लीन. (दी.नि.टी.) 1.125; समाना. अधिमुत्तिपद; – **सम्फस्स** पु., नाम अथवा वचन-प्रकार के साथ सम्पर्क, संस्पर्श का एक प्रभेद-विशेष – *तेसु निमित्तेसु ... असति अपि नु खो रूपकाये अधिवचनसम्फस्सो पञ्ञायेथा'ति,* दी. नि. 2.48; *फस्सो'ति चक्खुसम्फस्सो ... अधिवचनसम्फस्सो* ..., महानि. 37; – **सम्फस्सज** त्रि., अधिवचन अथवा नामप्रयोग के व्यवहार से उत्पन्न सूक्ष्म

संज्ञाओं का एक प्रभेद-विशेष - *अधिवचनसम्फस्सजा सञ्ञा सुखुमा,* विभ. 7; *तयो हि अरूपिनो खन्धा सयं पिट्ठिवट्टका हुत्वा अत्तना सहजाताय सञ्ञाय अधिवचनसम्फस्सजा सञ्ञातिपि नामं करोन्ति,* विभ. अट्ठ. 18.

अधिवचनीय त्रि., [अधिवचनीय], बढ़ा-चढ़ाकर कहने योग्य, प्रशंसनीय - *वचनीयाधिवचनीयेसु,* अ. नि. 1(2).208; *वचनीयाधिवचनीयेसूति वत्तब्बेसु च अतिरेकवत्तब्बेसु च,* अ. नि. अट्ठ. 2.359.

अधिवत्तति अधि + √वत का वर्त., प्र. पु., ए. व., समीप में पहुंच जाता है, नियति अथवा भाग्य के वश में हो जाता है, अभिभूत हो जाता है या कर लेता है - *अधिवत्तति खो तं, ... जरामरणं,* स. नि. 1(1).120; *अधिवत्ततीति अज्झोत्थरति,* स. नि. अट्ठ. 1.147; *धञ्ञं. सुखञ्चेतंधिवत्तति,* अ. नि. 1(2).38; *अधिवत्तमाने ... जरामरणे,* स. नि. 1(1).120.

अधिवत्थ / अधिवुत्थ(ट्ठ) अधि + √वस का भू. क. कृ. अथवा क. ना., **1.क.** शासक, अभिभूत करने वाला देवता अथवा भटकते भूत या प्रेतात्मा के रूप में निवास करने वाला, बलपूर्वक वास कर रहा, स्थान विशेष में निवास करने वाला, कब्जा किया हुआ - *तस्मिञ्च सरीरे पेतो अधिवत्थो होति,* पारा. 68; *अधिवत्थोति साटकतण्हाय तस्मियेव सरीरे निब्बत्तो,* पारा. अट्ठ. 1.301; *अथ खो ककुधे अधिवत्था देवता,* महाव. 34; **1.ख.** किसी के द्वारा आबाद किया हुआ - *आकिण्णनेलमण्डलमहावराहनागकुलकरेणुसङ्घाधिवुट्ठे,* जा. अट्ठ. 5.411; *विज्जाधरसिद्धसमणतापसगणाधिवुट्ठे,* जा. अट्ठ. 5.415; **2.क.** अधिवासेति से व्यु., वह जिसने भोजन ग्रहण करने का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है - *अधिवुट्ठोम्हि ... अम्बपालिया गणिकाय भत्तं,* महाव. 308; पाठा. अधिवुत्थ; तुल. दी. नि. 2.76; **2.ख.** कर्म. वा., वह, जिसके द्वारा वास पूरा कर लिया गया है - *अधिवुत्थो मे वस्सावासो,* म. नि. 2.251.

अधिवसति अधि + √वस् का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अधिवसति], निवास करता है, आबाद करता है, विराजता है - *विहारं अधिवसति,* रू. सि. 287, सद्द. 3.717.

अधिवास[1] पु., [अधिवास], स्वीकरण, दृढ़तापूर्वक ग्रहण, सम्यक् रूप से ग्रहण - *अधिवासो सम्पटिच्छने,* अभि. प. 958.

अधिवास[2] पु., [अधिवास], सुगन्धि - *वासे धूपादिसङ्खारेधिवासो,* अभि. प. 958; - **क** त्रि., 'अधिवासेति' से व्यु. [अधिवासक], सहनशील, सहिष्णु - *परेहि वुत्तानं दुट्ठवचनानं अधिवासको,* जा. अट्ठ. 4.69.

अधिवासन नपुं., सहन करने की मनोवृत्ति, सहनशीलता, स्वीकृति, अनुमोदन, क्षमा - *अधिवासनन्ति इदं अधिवासनं तस्स सोत्थानं निरपराधमङ्गलं पण्डिता वदन्ति,* जा. अट्ठ. 4.69, तुल. अधिवासना; - **खन्ति** स्त्री., शान्ति से भरी सहिष्णुता, शान्ति के साथ सहन करने की क्षमता - *अधिवासनखन्तिया ... समन्नागतो,* जा. अट्ठ. 2.199; *अक्कोधनोति अधिवासनखन्तिया समन्नागतो,* जा. अट्ठ. 3.230; - **ता** स्त्री., भाव, सहिष्णुता, अनुमोदन करने की अवस्था, क्षमावृत्ति - *या खन्ति खमनता अधिवासनता अचण्डिक्कं अनसुरोपो अत्तमनता चित्तस्स - अयं वुच्चति खन्ति,* ध. स. 1348; *अधिवासेन्ति एताय, अत्तनो उपरि आरोपेत्वा वासेन्ति, न पटिबाहेन्ति, न पच्चनीकताय तिट्ठन्तीति अधिवासनता,* ध. स. अट्ठ. 417; - **विरिय / वीरिय** नपुं., उत्साह से भरी सहनशीलता, सहनशीलता का उत्साह, वीर्यपारमिता - *अधिवासनवीरियं वीरियपारमी,* जा. अट्ठ. 5.167.

अधिवासना स्त्री., अधिवासेति से व्यु., [बौ. सं. अधिवासना], **क.** सहमति, स्वीकरण, अनुमोदन - *कम्मस्स किरिया करणं उपगमनं अज्झूपगमनं अधिवासना,* चूळव. 220; *अधिवासनमञ्ञाय, सब्बञ्ञुस्स महेसिनो,* अप. 1.36; *भगवतो अधिवासनं विदित्वा,* म. नि. 1.302; **ख.** सहनशीलता, सहिष्णुता - *अधिवासनं सोत्थानं तदाहु,* जा. अट्ठ. 4.68; *अत्थि आसवा अधिवासना पहातब्बा,* म. नि. 1.10; *कतमे ... आसवा अधिवासना पहातब्बा? इध ... भिक्खु ... खमो होति सीतस्स उण्हस्स ... सारीरिकानं वेदनानं, दुक्खानं,* म. नि. 1.14.

अधिवासेति अधि + √वस का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., **क.** धीरज रखना, सहन करना, क्षमा कर देना, आत्मसमर्पण कर देना - *सा दुक्खाहि ... वेदनाहि फुट्ठा तीहि वितक्केहि अधिवासेति,* उदा. 85; *दन्तो वत, भो, समणो गोतमो ... समुप्पन्ना सारीरिका वेदना ... अधिवासेति अविहञ्ञमानो,* स. नि. 1(1).33; - **सयन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *खुदं पिपासं अधिवासयन्तो,* जा. अट्ठ. 4.294; - **सये / सयेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *अधिवासये भिक्खु अदुट्ठचित्तो,* उदा. 120; *असोचमानो अधिवासयेय्य,* जा. अट्ठ. 3.177; - **सेय्याथ** विधि., म. पु., ब. व. - *पस्सथ नो तुम्हे ... अणुं वा थूलं वा, यं तुम्हे नाधिवासेय्याथ,* म. नि. 1.182; - **सेत्वा** पू. का. कृ. - *सा द्वे तयो पहारे अधिवासेत्वा,* जा. अट्ठ. 3.246; - **सेतब्बं** सं. कृ. - *छिद्दं*

दिस्वा अधिवासेतब्बं, मि॰ प॰ 105; **ख.** सहमति प्रदान करना, स्वीकृति प्रदान करना, किसी के निमन्त्रण को स्वीकार करना; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन,* दी॰ नि॰ 2.66; *मम सङ्कप्पमञ्ञाय, अधिवासेसि नायको,* अप॰ 1.36; – **सेतु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अधिवासेतु नो, भन्ते, भगवा आवसथागारं, तदेव, भो गोतम, अधिवासेहि अज्जतनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.22; – **सेन्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अधिवासेन्तु मे, भन्ते थेरा, स्वातनाय गोकुले भत्त'न्ति,* स॰ नि॰ 2(2).281; – **न्ति** वर्त॰ कृ॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अधिवासेन्ति एताय अत्तनो उपरि आरोपेत्वा वासेन्ति न पटिबाहन्ति, न पच्चनीकताय तिट्ठन्तीति अधिवासन्ता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 417; – **सितं** भू॰ क॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सक्को देवराजा सत्थारा सुभद्दाय निमन्तनं अधिवासित'न्ति ञत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.268, तुल॰ अधिवत्थ, अधिवुत्थ; **ग.** प्रतीक्षा करना; – **सेहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सत्था अधिवासेहि ताव, सारिपुत्तोति गन्तुं न अदासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.354; *अधिवासेहि ताव सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.243; – **सेथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ - *यदि वो धनेनत्थो, अधिवासेथ,* जा॰ अट्ठ॰ 1.247; *'थोकं अधिवासेथा'ति वत्वा पण्णसालं पविसित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.373; – **सापेसि** प्रेर॰, अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, – *अम्भो दुट्ठब्राह्मण, अज्जेसं इदानेव धनं वस्सापेत्वा अम्हे अञ्ञं संवच्छरं अधिवासापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.247; - **सापेतुं** निमि॰ कृ॰ प्रेर॰ - *तं सुत्वा तापसो याव पितु आगमना अधिवासापेतुं गाथमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 5.191.

अधिवाहन नपुं॰, ढोने वाला, ले जाना वाला, वाहन, सवारी - *वीरियं ... योगक्खेमाधिवाहनं,* सु॰ नि॰ 79; *योगक्खेम'न्ति निब्बानं वुच्चति, तं अधिकत्वा वाहीयति, अभिमुखं वा वाहीयतीति अधिवाहनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.118.

अधिविमुत्ति अ॰, अव्ययी॰ स॰, क्रि॰ वि॰ [अधिविमुक्ति], विमुक्ति के विषय में, विमुक्ति के सम्बन्ध में, विमुक्ति को लेकर - *अथ खो अहमेव तत्थ भिय्यो, यदिदं अधिविमुत्ति,* दी॰ नि॰ 1.157; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में कामाधिविमुत्तिता के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अधिवुत्तिपद नपुं॰, रूपक-गर्भित वचन, अधिवृत्ति अथवा सत्य को अभिभूत करके कहे गये मिथ्यादृष्टि को प्रकाशित करने वाले वचन - *अनेकविहितानि अधिवुत्तिपदानि अभिवदन्ति,* दी॰ नि॰ 1.11; म॰ नि॰ 3.17; *तेसं तेसं अधिवुत्तिपदानं सच्छिकिरियाय,* अ॰ नि॰ 3(2).32; *अथ वा भूतं अत्थं अभिभवित्वा ... पवत्तनतो अधिमुत्तियोति दिट्ठियो वुच्चन्ति अधिमुत्तीनं पदानि अधिमुत्तिपदानि, दिट्ठिदीपकानि वचनानीति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; पाठा॰ अधिमुत्तिं.

अधिसयन त्रि॰, [अधिशयन], मञ्च, पलंग अथवा वह स्थान, जिस पर सोया अथवा लेटा जाये - *अथ वा नीलाति ... सुसानभूमि ... तंयेव मञ्चं विय अधिसयनाति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 68.

अधिसयित त्रि॰, अधि + √सी का भू॰ क॰ कृ॰, कर्तृ॰ वा॰ एवं कर्म॰ वा॰, **क.** कर्तृ॰ वा॰ में - किसी पर लेटा हुआ, किसी पर सो रहा - *अधिसयितो खटोपिकं भवं,* मो॰ व्या॰ 5.59; *मगस्स पन अबद्धस्स पासरासिं अधिसयितकालो विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).95; **ख.** कर्म॰ वा॰ में - व्यक्ति द्वारा अधिगृहीत, मुर्गी द्वारा सेवित - *अधिसयिता खटोपिका भोता,* मो॰ व्या॰ 5.59; *ताय जनेत्तिया कुक्कुटिया पक्खे पसारेत्वा तेसं उपरि सयन्तिया सम्मा अधिसयितानि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.101; म॰ नि॰ 1.149; स॰ नि॰ 2(1).137, अ॰ नि॰ 2(2).256; *नागो ते अधिसयितं धनं दस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).33.

अधिसरति अधि + √सर से व्यु॰, क्रि॰ रू॰, अभिभूत कर लेता है, दबोच लेता है, काबू मे कर लेता है; – **रे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *मा ते अधिसरे मुञ्च, सुबाळ्हमधिकोपितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.112; – **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *तव हदयं कुसलं अधिसरित्वा अतिक्कमित्वा ... परेसं अकुसलकम्मे ... कुज्झापितं हुत्वा मा ... पतिट्ठायतू ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.114.

अधिसीलं अ॰, अव्ययी॰ स॰, शील से सम्बन्धित, शील के विषय में, शील को लेकर - *अथ खो अहमेव तत्थ भिय्यो, यदिदं अधिसीलं,* दी॰ नि॰ 1.157; *न अधिसीले सीलविपन्नो होति,* महाव॰ 82.

अधिसील[2] नपुं॰, [अधिशील], उच्च स्तर का शील, उत्तमशील - *अधिसीलसिक्खाति अधिकं उत्तमं सीलन्ति अधिसीलं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.192; - **सिक्खा** स्त्री॰, [अधिशील शिक्षा], शील से सम्बन्धित बुद्ध के वचन अथवा शिक्षापद - *एवं सिक्खितब्बं – तिब्बछन्दो नो भविस्सति अधिसीलसिक्खासमादाने,* अ॰ नि॰ 1(1).261; *कतमा च, भिक्खवे, अधिसीलसिक्खा?,* अ॰ नि॰ 1(1).268.

अधिसेति अधि + √सी [अधि + शी], का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आश्रय लेता है, सहारा लेता है, शरण में जाता है - *यं यं दिसकं अधिसेति,* सु॰ नि॰ 676; *अधिसेतीति गच्छति 'अभिसेती'तिपि पाठो, तत्थ यं यं दिसं अल्लीयति अपस्सयतीति*

अत्थो, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182; – **सयेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – आरञ्ञको मगो बद्धो पासरासिं अधिसयेय्य, म॰ नि॰ 1.233; – **सेस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पथविं अधिसेस्सति,* ध॰ प॰ 41.

अधिस्सर पु॰, [अधीश्वर], अत्यधिक प्रभावशाली, प्रधान, प्रमुख, स्वामी, राजा – *चतुवीसतिया योधसहस्सानं अधिस्सरो,* चू॰ वं॰ 80.59.

अधीत त्रि॰, अधि + √इ का भू॰ क॰ कृ॰ [अधीत], पढ़ा हुआ, पढ़ लिया गया, सीखा हुआ, सीख लिया गया – *परियत्तोति अधीतो, उग्गहितोति अत्थो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.45; *अधिता वेदगू सब्बे,* अप॰ 2.44.

अधीन त्रि॰, [अधीन], वशवर्ती, किसी अन्य पर निर्भर, दूसरे पर आश्रित – *पराधीनो परायत्तो, आयत्तो तु च सन्तको, परिग्गहो अधीनो च,* अभि॰ प॰ 728; *पराधीनोति परेसु अधीनो परस्सेव रुचिया वत्तति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172; *यं खलु धम्ममाधीनं, वसो वत्तति किञ्चनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.346.

अधीयति अधि + √इ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [अध्येति], **शा॰ अ॰** जा पहुंचता है, प्राप्त करता है, **ला॰ अ॰** बाचता है, पढ़ता है, अध्ययन करता है, कण्ठस्थ करता है – *यो च मन्तं अधीयती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.24; *यो चायं मन्तं वाचेति, यो चाधम्मेनधीयति,* पाचि॰ 278; *राजकुमारो पुरोहितस्स सन्तिके विज्जं अधीयति,* मि॰ प॰ 162; – **यसि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कस्मा तुवं ... नाधीयसि भिक्खूहि संवसन्तो,* स॰ नि॰ 1(1).234; – **यामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तत्थ मन्ते अधीयामि, छळङ्गं नाम लक्खणं,* अप॰ 1.377; – **न्तस्स** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्त च मे वस्सानि अधीयन्तस्स, नयिमस्स सिप्पस्स अन्तो पञ्ञायति,* महाव॰ 358; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो कोमारब्रह्मचरियं चरति अधीयमानो,* अ॰ नि॰ 2(1).209; – **यस्सु** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तस्स सन्तिकं गन्त्वा अधीयस्सु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.254; – **यितुं** निमि॰ कृ॰ – *तयोपि वेदा न सक्का एकदिवसेनेव अधीयितुं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.46; *भोतो सोणदण्डस्स सन्तिके ... मन्ते अधियितुकामा,* दी॰ नि॰ 1.99; – **यित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *सो ... ब्रह्ममन्ते अधीयित्वा राजानं ... धीतरं याचि,* दी॰ नि॰ 1.83; *कोमारब्रह्मचरियं चरित्वा, मन्ते अधीयित्वा,* अ॰ नि॰ 2(1).209; – **यितब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बं अधीयितब्बमेवाति दीपेति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.192.

अधीर त्रि॰, धीर का निषे॰ [अधीर], बेचैन, दब्बू, धीरज से रहित, कातर – *अधीरो कातरो चाथ,* अभि॰ प॰ 731.

अधीरित त्रि॰, अधि + √ईर का भू॰ का॰ कृ॰, कहा गया, उच्चारण किया हुआ – *अभिज्झितं, अधीरितं,* क॰ व्या॰ 46; *अभिच्छितं अधीरितं,* सद्द॰ 3.619, तुल॰ अब्भीरित.

अधुत्ती स्त्री॰, धुत्ती का निषे॰ [अधूर्ता], चोरी या लालच आदि द्वारा धननाश न करने वाली नारी, अधूर्त नारी – *यं भत्तु आहरति धनं वा धञ्ञं वा ... तत्थ च होति अधुत्ती अथेनी असोण्डी अविनासिका,* अ॰ नि॰ 3(1).94.

अधुना निपा॰, [अधुना], ठीक अभी, इस समय, नए नए रूप में, तुरन्त पहले – *तत्थ इदानीति अधुना, अम्हाकं आगमनवेलायमेवाति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 308; *ये अधुना आगन्त्वा ... न वदन्ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.155, तुल॰ इदानि, दानि; – **कालकत / कालङ्कत** त्रि॰, अभी अभी मृत, कुछ ही समय पूर्व मरने वाला – *तेन खो पन समयेन निगण्ठो नाटपुत्तो पावायं अधुनाकालङ्कतो होति,* दी॰ नि॰ 3.87; ... *ककुधो नाम कोलियपुत्तो ... अधुनाकालङ्कतो,* अ॰ नि॰ 2(1).114; चूळव॰ 321; – **नागत** त्रि॰, अभी अभी ही आया हुआ, तुरन्त प्रव्रजित अथवा भिक्षुसंघ में प्रविष्ट – *भन्ते, सन्तेत्थ भिक्खू नवा अचिरपब्बजिता अधुनागता इमं धम्मविनयं,* म॰ नि॰ 2.130; – **नाभिसित्त** त्रि॰, राज्यपद पर अभी अभी अभिषिक्त – *खत्तियो ... अधुनाभिसित्तो रज्जेन,* दी॰ नि॰ 2.155; – **नुट्ठित** त्रि॰, अभी अभी उठा हुआ या उत्पन्न – *अधुनुट्ठितेन मारेन पापिमता ...,* मि॰ प॰ 154; – **नूपपन्न** त्रि॰, अभी अभी पुनर्जन्म ग्रहण किया हुआ – *ये ते, भन्ते, देवा ... अधुनूपपन्ना तावतिंसकायं,* दी॰ नि॰ 2.153.

अधुरा त्रि॰, धुरा का निषे॰ [अधुर्या], अप्रधान अथवा असम्मानजनक स्थिति वाला, तुच्छ अथवा अलाभप्रद – *अनयं नयति दुम्मेधो, अधुरायं नियुञ्जति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.216; खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 101.

अधूपन त्रि॰, धूपन का निषे॰, असुगन्धीकरण अथवा धूपबत्ती द्वारा सुवासित न किया हुआ – *अथस्स कप्पो अलोणकेन अधूपनेन उदकमत्तसित्तपण्णेन सद्धिं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.123; तुल॰ विधूपन.

अधो अ॰, निपा॰ [अधः], **1.** नीचे, नीचे की ओर – *हेट्ठा तु च अधो समा,* अभि॰ प॰ 1156; ... *नेव सक्कोति उद्धं कातुं, न पन अधो,* उदा॰ 84; ... *संसीद, भो सप्पितेल, अधो गच्छ, भो ...,* स॰ नि॰ 2(2).301, उद्धं का विप॰; **2.** दस दिशाओं में से एक दिशा, उद्धं (ऊपर) एवं तिरियं (बगल में) का विप॰ – *दिसा चतस्सो विदिसा चतस्सो, उद्धं अधो दस दिसा इमायो,* सु॰ नि॰ 1128; *सचे, भिक्खवे, नन्दस्स पच्छिमा*

... *उद्धं, अधो ... अनुदिसा आलोकेतब्बा होति ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 144.

अधो-ओरोहन त्रि॰, [अधः अवरोहण], नीचे की ओर उतर रहा, अधोगामी – *अधोगमा वाताति अधो-ओरोहनवाता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).127; *अधोगमा वाताति उच्चारपस्सावादिनीहरणका अधो-ओरोहनवाता,* विभ॰ अट्ठ॰ 65-66.

अधोकत त्रि॰, अधोकरोति का भू॰ का॰ कृ॰, नीचे की ओर किया गया, नीचे की ओर पलट दिया गया, अपमानित – *यथापि कुम्भो सम्पुण्णो, यस्स कस्सचि अधोकतो वमते वुदकं निस्सेसं,* बु॰ वं॰ 2.118; जा॰ अट्ठ॰ 1.27.

अधोकूरं त्रि॰, श्रीलङ्का के एक गांव का नाम, 'उद्धाधोकूरं' समास के उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त – *उद्धाधोकुरंगामेसु दुवे दुग्गानि अग्गहि,* म॰ वं॰ 70.171.

अधोकोटिक त्रि॰, नीचे की ओर झुके हुये किनारों वाला (विशेष रूप से ऊपर वाले दांतो के लिये प्रयुक्त) – *ओकासतो उपरिमा उपरिमहनुकट्ठिके अधोकोटिका,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 33; विलो॰ उद्धंकोटिक.

अधोक्खन्ध त्रि॰, ब॰ स॰ [अधस्कन्ध], नीचे की ओर सिर वाला, अधःशीर्षक – *ते पतन्ति अधोक्खन्धा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.262.

अधोगङ्गं अ॰, अव्ययी॰ स॰, गङ्गा में नीचे की ओर – *उभोपि ... अधोगङ्गं गन्त्वा ... वासं कप्पयिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 2.273; ... *पुन मच्छे गण्हन्तो अधोगङ्गं गच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.45; – **गङ्गाय** अ॰, उपरिवत् – *तेसु जेट्ठस्स उपरिगङ्गाय पण्णसाला अहोसि, कनिट्ठस्स अधोगङ्गाय,* जा॰ अट्ठ॰ 2.236, विलो॰, उद्ध-गङ्गाय.

अधोगत त्रि॰, बीत चुका, पीछे की ओर जा चुका – *सुपिनं तात अद्दक्खिं, इतो मासं अधोगतं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.32; *पुत्तं तेय्ये न जानाम, इतो मासं अधोगतं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.33.

अधोगति स्त्री॰, नरक, तिरच्छान, प्रेतयोनि एवं असुरकाय इन चार दुखदायक योनियों में से किसी एक में पुनर्जन्म, नीचे की ओर प्राणी का गमन – *तिर अधोगतियं,* सद्द॰ 2.431.

अधोगम त्रि॰, **शा॰ अ॰** नीचे की ओर जा रहा, **ला॰ अ॰** शरीर में विद्यमान छः वायु-प्रभेदों में से एक – *वायुभेदा इमे छुद्धङ्गमो चाधोगमो तथा ...,* अभि॰ प॰ 38; ... *उद्धङ्गमा वाता, अधोगमा वाता ... अयं वुच्चतावुसो, अज्झत्तिका वायोधातु,* म॰ नि॰ 1.249; *अधोगमा वाताति उच्चारपस्सावादिनीहरणका अधो ओरोहनवाता,* विभ॰ अट्ठ॰ 65-66; *तस्स यानि चेव मूलानि अधोगमानि ...,* स॰ नि॰ 1(2).78.

अधोगमनिय त्रि॰, नीचे की ओर गमन कर रहा, अधःपतन कराने वाला, दुखद जन्मों में पुनर्जन्म देने वाला – *सो तेन अधोगमनियेन कम्मेन अधोनिरयमेव गच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.266.

अधोगलं अ॰, गले के नीचे – ... *उदकं तस्स पेतस्स पापबलेन अधोगळं न ओतिण्णं ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 93.

अधोगामी त्रि॰, **क.** नीचे की ओर बहते हुए जा रहा – *यो पन भिक्खु ... एकं नावं अभिरुहेय्य, उद्धंगामिनिं वा अधोगामिनिं वा,* पाचि॰ 91; **ख.** डूबने वाला, निमग्नप्राय – *तत्र यास्स सक्खरा वा कठला वा सा अधोगामी अस्स,* स॰ नि॰ 2(2).300.

अधोचारी त्रि॰, नीचे की ओर अथवा निम्नक्षेत्रों में विचरण करने वाला – *ओचरको ति अधोचारी,* सद्द॰ 2.423.

अधोजाणुमण्डलं अ॰, घुटनों के नीचे तक – *भिक्खु च नं इत्थिया ... अधोजाणुमण्डलं आदिस्स वण्णम्पि भणति अवण्णम्पि भणति,* पारा॰ 191; *एतस्स असद्धम्मस्स पटिसेवनत्थाय ... अधोजाणुमण्डलं गहणं सादियति,* पाचि॰ 297.

अधोत त्रि॰, धोत का निषे॰ [अधौत], नहीं धुला हुआ, स्वच्छ न किया हुआ – *अधोतेहि पादेहि कथिनं अक्कमन्ति,* चूळव॰ 234.

अधोदिसा स्त्री॰, [अधोदिक्], नीचे के क्षेत्र की दिशा पाताल आदि, अधोभाग, निचले स्थल – *अधो तिरियन्ति अधोदिसम्पि तिरियंदिसम्पि,* विसुद्धि॰ 1.298.

अधोनाभि अ॰, नाभि से नीचे और घुटनों के ऊपर – *यस्स अधोनाभि उब्भजाणुमण्डलं कण्डु वा ... आबाधो ...,* पाचि॰ 226; ... *अधोनाभि ... ति नाभिया हेट्ठा जाणुमण्डलानं उपरि,* पाचि॰ अट्ठ॰ 143.

अधोनीहरण नपुं॰, द्रष्ट॰ अधो-विरेचन के अन्त॰.

अधोपतन नपुं॰, [अधःपतन], नीचे की ओर गिरना, अवनति, विनाश की ओर गमन, धा॰ पा॰ 455, तुल॰ अधोपात द्रष्ट॰ आगे.

अधोपत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [अधःपत्र], नीचे की ओर मुड़े हुये पत्रों वाला – *उद्धंवण्टा अधोपत्ता, छायं कुब्बन्ति सत्थुनो,* अप॰ 2.83.

अधोपुप्फिय पु॰, एक स्थविर का नाम – *अधोपुप्फिय थेरअपदानं,* अप॰ 1.129.

अधोभाग पु., 1. शरीर का नीचे का भाग, धड़ - *तं तेसं सकलसरीरं झापेत्वा अधोभागेन निक्खमति,* जा. अट्ठ. 6.132; *तं कुच्छिं पविसित्वा ... अधोभागेन निक्खमति,* ध. प. अट्ठ. 1.73; ... *मत्थकं भिन्दित्वा अधोभागेन निक्खमित्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.86; 2. भीतरी भाग, अन्तर्भाग - *दस्सनोसाननिक्खन्ताधोभागेस्ववधारणे ...,* अभि. प. 1166.

अधोभागङ्गमनीय त्रि., अधम अथवा दुख-दायक नरक जैसी गतियों पर ले जाने वाला - *ये केचि अकुसला धम्मा सब्बे ते अधोभागङ्गमनीया,* म. नि. 156; विलो. उपरिभागङ्गमनीया.

अधोभागिय त्रि., निचले भाग से सम्बन्धित, निम्न कोटिवाला - ... *इमे पञ्च अधोभागियसंयोजनानि नाम,* अभि. अव. 169.

अधोभाव पु., नीचे के भाग में होने की स्थिति, निम्नश्रेणी में होने की अवस्था - *वियोगे जानने चाधो भावानिच्छयसुद्धिसु, ईसदत्थे परिभवे देसब्यापनहानिसु ...,* अभि. प. 1173; *ततियत्थाधोभावेस्वनुगते हिते ... अनु,* अभि. प. 1174.

अधोभुवन नपुं., नागलोक, पृथ्वी के नीचे स्थित पाताल लोक - *अधोभुवन-पातालं, नागलोको रसातलं,* अभि. प. 649.

अधोमग्ग पु., [अधोमार्ग], शरीर के अधोभाग में स्थित गुदा आदि द्वार, मलद्वार - *अधोमग्गादीहि पन पविसित्वा मुखादीहि निक्खमन्ति,* जा. अट्ठ. 5.267.

अधोमुख त्रि., ब. स., नीचे की ओर मुखवाला - ... *तुण्हीभूतो ... अधोमुखो पज्झायन्तो ...,* स. नि. 1(1).146; ... *निग्रोधो परिब्बाजको ... अधोमुखो ... निसीदि,* दी. नि. 3.38.

अधोमुखं अ., नीचे की ओर - *अधोमुखं ठपित-उदकघटा,* ध. स. अट्ठ. 16, पाठा. अधोमुखठपितउदकघटा.

अधोवातं अ., हवा बहने की दिशा की ओर, वायु-प्रवाह के अनुरूप - *नस्स, चण्डाल, काळकण्णी, अधोवातं याही'ति वत्वा ...,* जा. अट्ठ. 3.204.

अधोवातपस्स नपुं., हवा बहने वाली दिशा का पार्श्व या क्षेत्र - *महासुभद्दा अधोवातपस्से ठिता ...,* जा. अट्ठ. 5.34.

अधोवाते अ., हवा बहने वाली दिशा की ओर - ... *अधोवाते ठत्वा सरीरगन्धं घायित्वा,* जा. अट्ठ. 3.72; ... *सुपुप्फितपदुमं दिस्वा अधोवाते ठत्वा उपसिङ्घि,* जा. अट्ठ. 269; ... *पब्बतस्स उपरिवाते चोरगामको ... अधोवाते अस्समो,* जा. अट्ठ. 4.389.

अधोविम त्रि., धोविम का निषे., पानी से न धोने योग्य - ... *अधोविमं दुस्सयुगं ...,* पारा. अट्ठ. 1.53; *अधोविमं वत्थकोटियं,* दी. वं. 12.2, व्यु. के लिए द्रष्ट. सद्द. 3.866.

अधोविरेचन नपुं., गुदा-मार्ग से विरेचन, जुलाब, विरेचक-औषधि, वस्तिकर्म - ... *उद्धंविरेचनं अधोविरेचनं सीसविरेचनं ...,* दी. नि. 1.10; म. नि. 2.189; *अधोविरेचनन्ति पन सुद्धिवत्थिकसावत्थिआदिवत्थिकिरियापि ... अधो दोसानं नीहरण'न्ति वुत्तत्ता,* लीन. (दी.नि.टी.) 1.116; *उद्धविरेचनअधोविरेचनादीहि किलमति,* ध. स. अट्ठ. 423.

अधोसाखं त्रि., ब. स., नीचे की ओर लटक रही शाखाओं वाला - ... *समूलकम्पि तं रुक्खं उप्पाटेत्वा, उद्धंमूलं अधोसाखं कत्वा गच्छति ...,* ध. प. अट्ठ. 1.45.

अधोसिर त्रि., ब. स. [अधश्शिरस्], नीचे लटक रहे सिर वाला, नीचे की ओर सिर किया हुआ - *तमेनं निरयपाला उद्धंपादं अधोसिरं गहेत्वा वासीहि तच्छन्ति,* म. नि. 3.206; *अधोसिरं धारयि कातियानो,* जा. अट्ठ. 7.203; *यं बलवा पुरिसो उद्धंपादं अधोसिरं गहेत्वा ...,* अ. नि. 2(2).262; *पादे धोवन्तोपि अधोसिरं कत्वा हेट्ठामुखोव धोवेय्य, न रञ्ञो मुखं उल्लोकेय्याति अत्थो,* जा. अट्ठ. 7.193.

अधोसिरं अ., शिर नीचे करते हुए - *धोवे पादे अधोसिरं,* जा. अट्ठ. 7.193.

अधोसीस त्रि., ब. स., सिर को नीचे की ओर रखने वाला, वह, जिसका सिर नीचे की ओर लटका हुआ है - *पन्नगं सो गहेत्वान, अधोसीसं विहेठयं,* अप. 1.39; ... *अहं ... अधोसीसो पतमानोपि न निवत्तिस्सामि,* जा. अट्ठ. 1.228; - **क** त्रि., उपरिवत् - *ते ... पुन ... निरयपालेहि ... विहता ... हुत्वा ... अधोसीसका पतन्ति,* जा. अट्ठ. 5.268; *सो ... निसिन्नं ब्राह्मणं पादे गहेत्वा पिट्ठियं अधोसीसकं ओलम्बेत्वा ... पायासि,* जा. अट्ठ. 5.468.

अन[1] स्वरादि पद से पूर्व लगने वाला निषेधार्थसूचक पू. स. - ... *अनक्कोसस्सिदं फलं,* अप. 1.284 यदा कदा इसके स्थान पर 'न' का प्रयोग, नेक (नैक).

√**अन**[2] धातु, श्वांस लेना, प्राण-धारण करना - *अन पाणने,* सद्द. 2.399; *मान पूजाय वन-सन सम्भमे अन पाणने,* धा. मं. 144.

अनकामरूप त्रि., अनिच्छा नहीं करने वाला - *अञ्ञत्र कण्हा अनकामरूपा,* जा. अट्ठ. 4.30, पाठा. नत्थाकामरूपा.

अनक्कमनभाव नपुं., अनुल्लंघन, ऊपर चढ़कर किसी को रौंदने अथवा कुचलने की स्थिति का अभाव - *थेरो ... वत्थानं अनक्कमनभावं ञत्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 2.75.

अनक्कोस पु., अक्कोस का निषे. [अनाक्रोश], आक्रोश का अभाव, अनिन्दा - *अनक्कोससिसदं फलं,* अप. 1.284.

अनक्ख त्रि., अक्ख का निषे., ब. स. [अनक्ष], जुआ न खेलने वाला, पासों से न खेलने वाला - *अनक्खाकितवे तात, असोण्डे अविनासके,* जा. अट्ठ. 5.111; *अनक्खाकितवेति अनक्खे अकितवे अजुतकरे चेव अकेराटिके च,* जा. अट्ठ. 5.113.

अनक्खात 1. त्रि., अक्खात का निषे. [अनाख्यात], नहीं कहा गया, अवर्णित, अनुद्घोषित - *अनक्खातं कुसलं,* म. नि. 1.414; *अनक्खातस्स मग्गस्स अक्खाता,* स. नि. 1(1).221; *अनक्खातञ्च अक्खासि,* अप. 2.240; 2. नपुं., अनिर्वचनीय अवस्था अर्थात् निर्वाण - *छन्दजातो अनक्खाते,* ध. प. 218; *अनक्खातेति निब्बाने, तञ्हि ... अवत्तब्बताय अनक्खातं नाम,* ध. प. अट्ठ. 2.169.

अनगर पु./नपुं., नगर का निषे., ऐसा स्थान, जो नगर नहीं है, उजड़ा हुआ अथवा निर्जन स्थान - ... *नगरं अनगरं करिस्सामि,* ध. प. अट्ठ. 2.371; ... *नगरापि अनगरा होन्ति,* अ. नि. 1(1).187.

अनगार / अनागार क. त्रि., ब. स., बेघर, बिना घर वाला (परिव्राजक या मुनि का एक लक्षण) - *योध कामे पहन्त्वान, अनागारो परिब्बजे,* सु. नि. 644-645; ध. प. 415; *अनागारा तपस्सिनो,* जा. अट्ठ. 6.119; *असंसट्ठं गहट्ठेहि, अनागारेहि चूभयं,* सु. नि. 633; *अलेणा अनगारा च,* पे. व. 120; **ख.** नपुं., बेघर जीवन, गृहत्यागी जीवन - *यो वा अगारा अनगारमेति,* सु. नि. 378; - **मुनि** पु., गृहत्यागी यति, परिव्राजक - ... *छ मुनिनो - अगारमुनिनो, अनगारमुनिनो, सेखमुनिनो ...,* महानि. 41.

अनगारिक / अनागारिक त्रि., बेघर, प्रव्रजित, भिक्षुभाव को प्राप्त, परिव्राजक - ... *आगारिकेनापि अनागारिकेनापि दीपेतब्बं,* ध. स. अट्ठ. 398; ... *अनगारिकस्स वेज्जकम्मदूतकम्मादीनि वज्जेत्वा धम्मेन समेन भिक्खाचरियाय जीविकं कप्पेन्तस्स,* ध. प. अट्ठ. 1.136; - **मित्त** पु., गृहत्यागी मित्र, प्रव्रजित मित्र - *मित्ताति द्वे मित्ता - अगारिकमित्तो च अनागारिकमित्तो च,* चूळनि. 218; - **रतन** नपुं., रत्न के समान गृहत्यागी या प्रव्रजित - *पुरिसरतनम्पि दुविधं, अगारिकरतनं, अनगारिकरतनञ्च,* खु. पा. अट्ठ. 141; - **विभूसा** स्त्री., गृहत्यागी अथवा प्रव्रजित मुनि की साज-सज्जा या उपकरण - *तत्थ विभूसा दुविधा, अगारिकविभूसा, अनगारिकविभूसा च,* सु. नि. अट्ठ. 1.89.

अनगारिय / अनागारिय 1. नपुं., [अनागारिक], प्रव्रजित या गृहहीन, अनासक्त जीवन - *अगारस्मा अनगारियं पब्बजन्ति,* सु. नि. पृ. 98; *पब्बजितोपि चे होति, अगारा अनगारियं,* सु. नि. 276; ... *अगारस्मा अनगारियं पब्बजितानं,* उदा. 80; 2. त्रि., बिना घर वाला, बेघर - *अनगारियोपि इमस्मिं सासने पब्बजित्वा ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).177; - **पटिपत्ति-दुग्गति** स्त्री., गृहविहीन या प्रव्रजित-जीवन में आया हुआ संकट या कष्ट - *पटिपत्तिदुग्गतिपि अगारियपटिपत्ति-दुग्गति, अनगारियपटिपत्तिदुग्गतीति दुविधा होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).177; - **भाव** पु., गृहत्यागी प्रव्रजित-जीवन की अवस्था - *घरावासं पहाय अनागारियभावं पत्तस्स,* जा. अट्ठ. 5.242; - **मुनि** पु., गृहत्यागी या प्रव्रजित मुनि - अनगारियमुनीति तथारूपोव पब्बजितो, जा. अट्ठ. 1.116, विलो. आगारियमुनि.

अनगारियुपेत त्रि., गृहविहीन, प्रव्रजित जीवन-दशा को प्राप्त किया हुआ भिक्षु या मुनि - *अनगारियुपेतस्स, भिक्खाचरियं जिगीसतो,* सु. नि. 705; ... *अनगारियु - पेतस्स, तुट्ठि होति सुखावहा,* स. नि. 1(1).57; *अनगारियुपेतस्स, विप्पमुत्तस्स ते सतो,* जा. अट्ठ. 3.344.

अनगारी / अनागारी त्रि., उपरिवत् - *अगारा अभिनिक्खम्म, अनागारी भविस्सति,* अप. 2.62.

अनगारूपनिस्सय पु., तत्पु. स., प्रव्रजित जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं - *उत्तिट्ठपिण्डो उञ्छो च, पंसुकूलञ्च चीवरं, एतं खो मम सारुप्पं, अनगारूपनिस्सयो,* थेरीगा. 351, द्रष्ट. उपनिस्सय, आगे.

अनग्ग त्रि., ब. स. [अनग्र], 1. अनुत्तम, तुच्छ, 2. अपरिमित, वह, जिसका न आदि हो, न अन्त हो - *तस्मिं ... अधिकरणे विनिच्छयमाने अनग्गानि चेव भस्सानि जायन्ति ...,* चूळव. 474; - **पाक** पु., एक मुनि या परिव्राजक का नाम - *तस्सपि तेनेव कारणेन अनग्गपाकोति नामं जातं, अप्पमाणपाकोति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 1.195; - **वती** स्त्री., अनुत्तम प्रकार की या तुच्छ-प्रकृति के लोगों वाली सभा - *कतमा च, भिक्खवे, अनग्गवती परिसा?,* अ. नि. 1(1).86.

अनग्गहीत त्रि., अग्गहीत का निषे., अपेक्षित चित्तवृत्ति के साथ अगृहीत - *चत्तञ्च मुत्तञ्च अनग्गहीतं,* अ. नि. 2(1).46, पाठा. अनुग्गहीतं.

अनग्गिपक्क त्रि., अग्गिपक्क का निषे. [अनग्निपक्व], आग में न पका हुआ या कच्चा - *दन्तमूसलिको हुत्वा अनग्गिपक्कमेव खादति,* जा. अट्ठ. 4.8.

अनग्गिपक्किक पु., तापसों या मुनियों का वह वर्ग, जो आग में पकाये बिना कच्चा भोजन खाता है - *तत्थ अट्ठविधा तापसा - सपुत्तभरिया ... अनग्गिपक्किकाति,* सु. नि. अट्ठ. 1.269.

अनग्गी पु., अग्गी का निषे., ब. स., उन तापसों का एक वर्ग, जो आग में न पका कर कच्चा अन्न आदि खाते हैं - *अग्गिपाकी अनग्गी च ...,* अप. 1.15; *एकच्चे अनग्गी अग्गीहि अपचित्वा आमकमेव खादन्ति ...,* अप. अट्ठ. 1.227.

अनग्घ त्रि., अग्घ का निषे. [अनर्घ, अनर्घ्य], बहुमूल्य, अमूल्य - *मयं पुब्बे पथविञ्च रज्जञ्च अनग्घन्ति सञ्जिनो अहुम्ह,* जा. अट्ठ. 1.131; *सो किर मन्तो, अनग्घो महारहो,* जा. अट्ठ. 1.246; - **कारण** नपुं., मूल्यवान न होने का कारण - *अथ नं अनग्घकारणं पुच्छन्तो ...,* जा. अट्ठ. 4.60.

अनग्घिय त्रि., मूल्य न दिये जाने योग्य, बहुमूल्य, मोल-भाव न करने योग्य - *भिक्खुभावो ... लोके अतुलियो अप्पमाणो अनग्घियो,* मि. प. 185, पाठा. अनग्घनिय.

अनघ त्रि., ब. स. [अनघ], पापरहित, विशुद्ध, पुण्यात्मा - *कच्चि त्वं अनघो भिक्खु, कच्चि नन्दी न विज्जति,* स. नि. 1(1).66, द्रष्ट. नीचे अनिघ.

अनङ्गण त्रि., अङ्गण का निषे. [अनङ्गण], दागरहित, कलङ्करहित, निष्पाप, विशुद्ध - *मग्गं विरजं अनङ्गणं,* महाव. 385; *विगतरजमनङ्गणं, विसुद्धं,* सु. नि. 522; *निद्धन्तमलो अनङ्गणो,* ध. प. 236, 238; *अनङ्गणस्स पोसस्स, निच्चं सुचिगवेसिनो,* थेरगा. 652, 1000; *समापत्तिसुखं अनङ्गणं,* जा. अट्ठ. 1.451; *एवं समाहिते चित्ते परिसुद्धे परियोदाते अनङ्गणे,* पारा. 5.

अनङ्गण-सुत्त नपुं., म. नि. के मू. प. के पांचवें सुत्त का नाम, म. नि. 1.31-40.

अनङ्गभङ्ग पु., अनङ्ग अर्थात् मार पर विजय - *अनङ्गभङ्गं समचिन्तयत्थ,* जिना. 52.

अनङ्गव नपुं., ऐसे सगे-सम्बन्धी अथवा छोटे या बड़े भाई, जो अपने नहीं हैं अथवा अपने अङ्ग जैसे नहीं हैं, - *अनङ्गवा हि ते बाला,* जा. अट्ठ. 7.192, *अनङ्गवा हि ते बालाति जेट्ठकनिट्ठभातरो अङ्गसमानताय अङ्ग'न्ति वुत्ता, इमे पन दुस्सीला, तस्मा अङ्गसमाना न होन्ति,* जा. अट्ठ. 7.193; पाठा. अनङ्गाव.

अनट्ठुह त्रि., अट्ठुह का निषे., बिना पूछ का, पूछरहित - *असीसकं अनट्ठुहं, सिङ्गालो हरति रोहितं,* जा. अट्ठ. 3.295, द्रष्ट. अट्ठुह.

अनच्छ त्रि., अच्छ का निषे., मलिन, कलुषित, गन्दा, अस्वच्छ - *अनच्छो कलु साविला,* अभि. प. 669, द्रष्ट. अच्छ.

अनच्छरिय त्रि., अच्छरिय का निषे., ब. स., [अनाश्चर्य], **1. शा. अ.** वह, जो आश्चर्यजनक नहीं है अर्थात् पूरी तरह से स्वाभाविक है - *अनच्छरियं, भिक्खवे, मल्लिकाय ... कोसलरञ्ञो अग्गमहेसिभावाधिगमो,* जा. अट्ठ. 3.360; ... *इस्सरिये ठितस्स इत्थियो नाम होन्तियेव, अनच्छरियमेव एतन्ति,* जा. अट्ठ. 3.59; **2. - यं** अ., क्रि. वि., बिना किसी आश्चर्य के ही - *... अनच्छरियं ते जयसेनो राजकुमारो पसीदेय्य,* म. नि. 3.173; **3.** 'अनच्छरिया ... अस्सुतपुब्बा', जैसे अनेक स्थलों में कुछ विद्वानों ने 'अनच्छरिय' को 'अनाचरिय' अथवा अनाचरियक (स्वतःस्फूर्त, गुरुजनों से अप्राप्त) का प्राचीन अपपाठ माना है, जब कि कुछ दूसरों ने इसे 'अच्छरा' (अक्षर-संविधान) के साथ जोड़कर अनच्छरिया का तात्पर्य अक्षर-विन्यास के प्रयास से मुक्त अर्थात् स्वतःस्फूर्त अर्थ में लिया है. समन्तपासादिका में 'अनु अच्छरिया' तथा सारत्थ. टी. में 'अनच्छरिया' का अर्थ 'वृद्धि' को प्राप्त' किया गया है - *वुद्धिप्पत्ता अच्छरिया वा अनच्छरिया,* सारत्थ. टी. 3.138; महाव. अट्ठ. 233; *अपिस्सु भगवन्तं इमा अनच्छरिया गाथायो पटिभंसु ...,* महाव. 5.

अनज्जतन त्रि., अज्जतन का निषे., तत्पु. [अनद्यतन], वह, जो आज से सम्बद्ध नहीं है, आज के दिन घटित न होने वाला, *व्याकरण के सन्दर्भ में,* भूत. का एक प्रभेद - *अनज्जतने आ ऊ, ओ त्थ, अ म्हा, त्थ त्थुं, से व्हं, इं म्हसे,* मोग्ग. 6.5; - **टि.** क. व्या. 429, में इसको हीयत्तनी नाम से तथा पाणिनीय व्याकरण में अनद्यतन (लङ् लकार) कहा गया है.

अनज्जव पु., अज्जव का निषे., तत्पु., [अनार्जव, नपुं.], असारल्य, कुटिलता - *यो अनज्जवो ... वङ्कता कुटिलता - अयं वुच्चति अनज्जवो,* विभ. 415; *अनज्जवोति अनुजुताकारो,* विभ. अट्ठ. 466; - **ता** स्त्री. भाव., [अनार्जवता], कुटिलता, वक्रता - *यो अनज्जवो अनज्जवता ...,* विभ. 415; *अनज्जवभावो अनज्जवता,* विभ. अट्ठ. 466; द्रष्ट. अज्जव.

अनज्झत्तिकभूत त्रि., अज्झत्तिकभूत का निषे. [अनाध्यात्मिक-भूत], वह, जो अपने साथ जुड़ा हुआ नहीं है, आत्मीय नहीं है, अपरिचित, पराया - *चर पिरेति अपेहि अम्हाकं परे, अनज्झत्तिकभूतेति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.245.

अनज्झाचार पु., अज्झाचार का निषे., पापमय दुराचार का अभाव, सदाचार, अनतिक्रमण - *इमेसं अट्ठन्नं मिच्छत्तानं या अकिरिया ... अनज्झाचारो, इदं वुच्चति सब्बपापस्स अकरणं,* नेत्ति. 38; *एवमेव ... अनज्झाचारेपि परामसनेन गब्भावक्कन्ति होति,* मि. प. 132; *तस्मिं अनज्झाचारो अचलो असम्पवेधी,* दी. नि. अट्ठ. 3.87.

अनज्झापत्ति स्त्री., अकरणीय अथवा वर्जित कामों का न करना, अनतिचार - *या तस्मिं समये चतूहि वचीदुच्चरितेहि ... विरति ... अनज्झापत्ति ... अयं ... सम्मावाचा ...,* ध. स. 299; *पाणातिपाता विरमन्तस्स, या ... पाणातिपाता ... विरति ... अनज्झापत्ति ... इदं वुच्चति पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं,* विभ. 323, द्रष्ट. अज्झापत्ति एवं आपत्ति.

अनज्झापन्न त्रि., अज्झापन्न का निषे., 1. (कर्तृ. वा. में द्वि. वि. के साथ प्रयुक्त) अपराध अथवा अकरणीय कर्म न करनेवाला, अनुचित कर्मों में नहीं आपतित - *सुद्धो होति पुग्गलो ... पाराजिकं धम्मं अनज्झापन्नो,* पारा. 260; 2. कर्म. वा., वह, जिसे किया न गया हो, जिस पर पहुंचा न गया हो, अप्राप्त - *अनज्झापन्ना वा होति, आपज्जित्वा वा वुट्ठिता,* महाव. 131.

अनज्झायक त्रि., अज्झायक का निषे. [अनध्यायक], अध्ययन न करने वाला, वेदों में अपारङ्गत - *यो सो ... माणवको अनज्झायको अनुपनीतो,* म. नि. 2.368.

अनज्झारुळ्ह त्रि., अज्झारुळ्ह का निषे. [अनध्यारूढ़], दूसरों द्वारा अभिभूत नहीं किया हुआ, ऊपर न चढ़ा हुआ एवं अभिभूत न करने वाला, न अत्यधिक फैला हुआ न ही बढ़ा हुआ - *सत्तिमे ... बोज्झङ्गा अनावरणा ... चेतसो अनज्झारुळ्हा भाविता,* स. नि. 3(1).118.

अनज्झावुत्थ त्रि., अज्झावुत्थ का निषे., आबाद न किया हुआ, नहीं बसा हुआ, अधिगृहीत न किया हुआ - *अज्झावुट्ठं वा अनज्झावुट्ठं वा आचिक्खितब्बं,* चूळव. 353; *तेन खो पन समयेन ... राजकुमारस्स कोकनदो नाम पासादो ... अनज्झावुट्ठो समणेन वा ब्राह्मणेन वा ...,* म. नि. 2.287; - **क** त्रि., आबाद न किया हुआ, अनधिगृहीत - ... *अनज्झावुत्थकं दानि इदं'न्ति ... गण्हतोपि ...,* पारा. अट्ठ. 1.280, पाठा. अनज्झावुट्ठ.

अनज्झिट्ठ त्रि., अज्झिट्ठ का निषे. [अनध्येष्ट, न + अधि + √इष् + क्त], अयाचित, अप्रार्थित, अनिवेदित, वह, जिसे कुछ करने हेतु कहा नहीं गया है - *सङ्घमज्झे अनज्झिट्ठा धम्मं भासन्ति,* महाव. 141; *अनज्झिट्ठो वा आरामगतानं भिक्खूनं धम्मं भणति,* महानि. 167; *अनज्झिट्ठो वाति थेरेहि ... अनाणत्तो अनायाचितो च,* महानि. अट्ठ. 270.

अनज्झेसित त्रि., उपरिवत् - *अनानुपुट्ठोति अपुट्ठो ... अयाचितो अनज्झेसितो ...,* महानि. 48.

अनज्झोत्थरण नपुं./त्रि., अज्झोत्थरण का निषे., अभिभूत न करना, अपराभव, अप्रसहन, अभिभूत न करना - *पुन अनज्झोत्थरणभावेन किलेसन्धकारं विद्धंसेतुं असमत्थताय ...,* ध. स. अट्ठ. 97.

अनज्झोपन्न त्रि., अज्झोपन्न का निषे., अविषयीभूत, सरोकार-रहित, निरपराध, शिकार न बनने वाला - *यं पनस्स खमति, तं अगधितो ... अनज्झापन्नो ... परिभुञ्जति,* दी. नि. 3.33, द्रष्ट. अज्झोपन्न, अज्झापन्न.

अनज्झोसान नपुं., अज्झोसान का निषे., अलोभ, अनुपादान, अनासक्ति, रागयुक्त न होना - ... *तेसमयं दिट्ठि असारागाय ... अनज्झोसानाय संत्तिके ...,* म. नि. 2.81.

अनज्झोसित त्रि., अज्झोसित का निषे., वह, जिसके प्रति लोभ, आसक्ति अथवा राग उत्पन्न नहीं हुआ है - *सा अनिच्च ... अनज्झोसिता'ति ... अनभिनन्दिता'ति पजानाति,* म. नि. 3.293; *अनज्झोसितातिं गिलित्वा परिनिट्ठापेत्वा गहेतुं न युत्ताति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.223.

अनञ्जित त्रि., √अञ्ज के भू. क. कृ. का निषे., अपरिमार्जित, अभूषित, मलिन, अपरिष्कृत - *दुम्मक्खरूपाति अनञ्जितामण्डितलूखनिवासनपारुपना ... किलिट्ठरूपाति,* जा. अट्ठ. 3.206; *रम्मरूपन्ति अनञ्जितं अमण्डितं,* जा. अट्ठ. 7.367; *परूळ्हकच्छलोमो सो अनञ्जितअमण्डितो ...,* मि. प. 161; - **क्ख** त्रि., मलिन नेत्रों वाला, धुंधली आंखो वाला - *दुम्मक्खरूपाति अनञ्जितक्खा अमण्डितरूपा लूखसङ्घाटिधरा,* जा. अट्ठ. 4.267, तुल. अक्ख.

अनञ्ञ त्रि., अञ्ञ का निषे., तत्पु. स., पहचान-सूचक सर्व. अथवा अदुतियो या एको जैसे संख्या-सर्व. का स्था. [अनन्य], 1. दूसरा नहीं, अभिन्न, समान, केवल एक, अद्वितीय, - ... *येहि समन्नागतस्स ... द्वेयेव गतियो भवन्ति अनञ्ञा,* दी. नि. 1.77; *एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञं, पाचित्तिय'न्ति,* पाचि. 63; *द्वेव तस्स गतियो भवन्ति अनञ्ञा ...,* मि. प. 162; 2. ब. स. - (न विज्जति अञ्ञो यस्स सो), वह, जिसके लिये कोई दूसरा सेव्य या उपास्य न हो, केवल एक में ही अनुरक्त - *न च अनञ्ञस्स राजिनो,* जा. अट्ठ. 7.191; पाठा. न च अञ्ञस्स; - **गरही** त्रि., [अनन्यगर्ही], किसी दूसरे की निन्दा न करने वाला -

अत्तगरहिनोयेव होन्ति अनञ्ञगरहिनो, म. नि. 2.207; - **त्त** नपुं., भाव. [अनन्यत्व], एक ही होना, अभिन्नता - *चेतनाय अनञ्ञत्ता,* अभि. अव. 107; - **थ** त्रि., अञ्ञथा का निषे., तत्पु., दूसरे रूप में नहीं, यथार्थ रूप में, वास्तविक रूप में - *चत्तारिमानि ... तथानि अवितथानि अनञ्ञथानि,* स. नि. 3(2).493; *इदं दुक्ख'न्ति, भिक्खवे, तथमेतं अवितथमेतं अनञ्ञथमेतं,* पटि. म. 283; *तानि ... भगवतो ञाणानि तस्मिं तस्मिं विसये ... अविसंवादनतो ... अनञ्ञथानि,* उदा. अट्ठ. 111; - **थता** स्त्री., अनञ्ञथ का भाव., यथार्थ रूप में रहने की अवस्था - *या तत्र तथता अवितथता अनञ्ञथता इदप्पच्चयता - अयं वुच्चति, भिक्खवे, पटिच्चसमुप्पादो,* स. नि. 1(2).24; - **था** अ., निपा. [अनन्यथा], दूसरे अथवा विपरीत रूप में नहीं, यथार्थ रूप में - *तञ्च होति भूतं तच्छं अनञ्ञथा,* म. नि. 2.389, विप. मुसा; - **थाभावी** त्रि., [अनन्यथाभावी], दूसरी दशा में अथवा दूसरे रूप में परिवर्तित नहीं होने वाला - *अनञ्ञथाभाविमनञ्ञनेय्यं ...,* महाव. 41; - **धेय्य / थेय्य** त्रि., [अनन्यधेय, अनन्यस्तेय], **शा. अ.** दूसरों द्वारा न चुराये जाने योग्य, दूसरों के पास न रखने योग्य **ला. अ.** पत्नी के समान दूसरे राजाओं के अधिकार में न सौंपे न जाने योग्य पृथ्वी - *एकस्सेव सिया अनञ्ञधेय्या,* जा. अट्ठ. 4.100; *या सीलवती अनञ्ञथेय्या ...,* जा. अट्ठ. 6.209; *अनञ्ञथेय्याति किलेसवसेन अञ्ञेन न थेनितब्बा,* तदे.; पाठा. अनञ्ञधेय्य; - **नेय्य** त्रि., [अनन्यनेय], 1. दूसरों द्वारा न ले जाने अथवा मार्ग दर्शन न कराने योग्य, अपना मार्ग स्वयं खोजने वाला - ... *उप्पन्नञाणोम्हि अनञ्ञनेय्यो ...,* सु. नि. 55 (*अञ्ञेहि इदं सच्चं, इदं सच्च'न्ति न नेतब्बो,* सु. नि. अट्ठ. 1.84); *नेतारमञ्ञेसमनञ्ञनेय्यं,* सु. नि. 215; *अत्तनो पन अञ्ञेन केनचि मग्गं दस्सेत्वा अनेतब्बत्ता अनञ्ञनेय्यं,* सु. नि. अट्ठ. 1.220; 2. निर्वाण, ऐसा पद, जो दूसरों द्वारा पहुंचाये जाने योग्य नहीं है - *अनञ्ञथाभाविमनञ्ञनेय्यं ...,* महाव. 41; *अत्तना भावितेन मग्गेनेव अधिगन्तब्बं, न अञ्ञेन केनचि अधिगमेतब्बन्ति अनञ्ञनेय्यं,* महाव. अट्ठ. 243; - **नेय्यता** स्त्री., अनञ्ञनेय्य से व्यु. भाव., स्वयं मार्ग प्राप्त करने की स्थिति - *अनञ्ञनेय्यताय बुद्धो,* महानि. 344; - **पाचित्तिय** नपुं., (ब. स. में ही), पाचित्तिय के अन्त. परिगणित उन चार आपत्तियों (भिक्षु के पापकर्मों) का नाम, जिन में 'एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञं' का वचन कहा जाए, पाचि. संख्या 16, 42, 77 तथा 78 इसी नाम के अन्त. आते हैं - *चत्तारि अनञ्ञपाचित्तियानि,* परि. 251; *एतदेव पच्चयं करित्वा अनञ्ञं पाचित्तिय'न्ति एवं वुत्तानि ... इमानि चत्तारि,* परि. अट्ठ. 172; - **पोसी** त्रि., [अनन्यपोषी], **क.** वह, जो दूसरों अर्थात् पुत्र, पत्नी आदि का पालन-पोषण न करता हो, गृहत्यागी भिक्षु या मुनि; **ख.** वह, जो अन्यों द्वारा पोषित न हो, अल्प इच्छाओं वाला हो, वीतराग मुनि - *रसेसु गेधं अकरं अलोलो, अनञ्ञपोसी सपदानचारी,* सु. नि. 65; *अनञ्ञपोसीति पोसेतब्बकसद्धिविहारिकादिविरहितो, कायसन्धारणमत्तेन सन्तुट्ठोति,* सु. नि. अट्ठ. 1.93-94; *अकिञ्चनो भिक्खु अनञ्ञपोसी,* स. नि. 1(1).167; - **वाद** त्रि., अन्य लोगों के मतों के साथ नहीं जुड़ा हुआ, मिथ्या-दृष्टि से पूर्ण सिद्धान्तों से मुक्त - *अनञ्ञवादो सारत्थो सद्धम्ममनुरक्खनो,* दी. वं. 4.24; - **सत्थुक** त्रि., किसी भी अन्य को शास्ता अथवा शिक्षक न बनाने वाला, दूसरे शिक्षक से रहित - *अनञ्ञसत्थुकं तीहि सरणगमनेहि सरणं गतं,* उदा. अट्ठ. 235; पारा. अट्ठ. 1.131; - **साधारण** त्रि., [अनन्यसाधारण], वह, जिसमें दूसरों की साधारण बातें न पाई जाएं, विशिष्ट प्रकार का - ... *अनञ्ञसाधारणं ... भगवतो यमकपाटिहारियञाणं,* उदा. अट्ठ. 112; *यस्मा पनेतं सद्धावित्तं अनुगामिकं अनञ्ञसाधारणं ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.196; - **सरण** त्रि., ब. स. [अनन्यशरण], वह, जो किसी दूसरे की शरण नहीं लेता, आत्मदीप, आत्मप्रकाश, आत्मनिर्भर - ... *भिक्खु अत्तदीपो विहरति अत्तसरणो अनञ्ञसरणो,* दी. नि. 2.78; *अत्तदीपो ... अत्तसरणो अनञ्ञसरणो एव भवेय्य,* उदा. अट्ठ. 272.

अनञ्ञात त्रि., अञ्ञात का निषे. [अनाज्ञात], अज्ञात, नहीं जाना हुआ - *अनिमित्तमनञ्ञातं, मच्चानं इध जीवितं,* सु. नि. 579; *अनञ्ञातं मया नत्थि,* अप. 1.40; *धम्मानं अनञ्ञातानं,* ध. स. 296; तुल. अञ्ञात; - **ञस्सामीतिन्द्रिय** नपुं., अनञ्ञात + ञस्सामि + इति + इन्द्रिय, [बौ. सं. अनाज्ञातं आज्ञास्यामीन्द्रिय], किसी अज्ञात धर्म को जानने हेतु संकल्प लेने वाली इन्द्रिय, स्रोतापत्ति-मार्ग की प्रज्ञा - *तीणिमानि, ... इन्द्रियानि ... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं, अञ्ञिन्द्रियं, अञ्ञातावीन्द्रियं,* इतिवु. 39, द्रष्ट. अञ्ञातावीन्द्रिय तथा अञ्ञिन्द्रिय; - **टि.** आर्यमार्ग पर चल रहे आर्यश्रावक की प्रज्ञाइन्द्रिय के क्रमशः सूक्ष्मतर हो रहे स्वरूप का विभाजन अभिधम्म की शैली में अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं, अञ्ञिन्द्रियं तथा अञ्ञातावीन्द्रियं,

इन तीन नामों से विवेचन हुआ है. इनमें "मैं अज्ञात अमृतपद निर्वाण को जानूंगा" इस प्रकार की चेतना वाले स्रोतापत्तिमार्ग-क्षण में प्राप्त आर्यपुद्गल की प्रज्ञा को 'अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रिय' कहा गया है - *अनञ्ञातं अनधिगतं अमतपदं ... जानिस्सामी'ति पटिपन्नस्स ... इन्द्रियं, सोतापत्तिमग्गपञ्ञायेतं अधिवचनं,* इतिवु. अट्ठ. 183; अभि. ध. वि. टी. 197; *यस्मिं समये ... अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं होति – इमे धम्मा कुसला,* ध. स. 277; *या तेसं धम्मानं अनञ्ञातानं ... पञ्ञा ... सम्पजञ्ञं ... पञ्ञाओभासो ... इदं तस्मिं समये अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं होति,* ध. स. 296.

अनट त्रि., अकपटी, पाखण्डरहित, छलरहित, निष्कपट - ... *नानटो नाकुतूहलो,* जा. अट्ठ. 2.347; *लाभं उप्पादेन्तेन नटेन विय भवितब्बं, यथा नटो हिरोत्तप्पं पहाय ... धनं संहरति, एवमेव लाभत्थिकेन ... नानप्पकारं केळिं करोन्तेन विचरितब्बं, यो एवं अनटो ...,* तदे..

अनञ्ञाधीन त्रि., अञ्ञाधीन का निषे. [अनन्याधीन], अपराधीन, स्वाधीन, स्वतन्त्र - *तस्मिं एकस्मिंयेव अनञ्ञाधीना अस्स,* जा. अट्ठ. 4.101.

अनञ्ञपेक्खत्त नपुं., भाव., [अनन्यपेक्षत्व], किसी भी अन्य की अपेक्षा न करने की स्थिति - ... *लिङ्गविपल्लासो इच्छितब्बो अनञ्ञपेक्खत्ता पुत्तधम्मसद्दादीनं,* सद्द. 1.229-30; *तत्थ अट्ठिसत्थिआदीनि पधानलिङ्गानि अनञ्ञपेक्खत्ता,* सद्द. 1.233, पाठा. अनञ्ञपेक्खकत्त.

अनञ्ञाय न + आ + √ञा, पू. का. कृ. [अनाज्ञाय], नहीं जान कर - *सच्चं किर ... थुल्लनन्दा भिक्खुनी ... कारकसङ्घं अनञ्ञाय गणस्स छन्दं ओसारेतीति?,* पाचि. 309; द्रष्ट. अञ्ञाय, तुल. अजानित्वा.

अनट्ठ त्रि., नट्ठ का निषे. [अनष्ट], वह, जो नष्ट नहीं हुआ है - *अनट्ठे नट्ठसञ्ञी,* पारा. 376.

अनड्ढ त्रि., अड्ढ का निषे., तत्पु. [अनाढ्य], निर्धन, दरिद्र - *दुग्गते अधने नड्ढे,* अप. 2.235; पाठा. नड्ढे.

अनण त्रि., [अनृण], **शा. अ.** ऋण से मुक्त, **ला. अ.** पाप से मुक्त, भार से मुक्त, स्वतन्त्र - *अनणा दानि ते मयं,* थेरगा. 138; *इदानि अग्गमग्गपत्तितो पट्ठाय इणभावकराय पहीनत्ता काम ते अनणा मयं,* थेरगा. अट्ठ. 1.278; *अनणो भुञ्जामि भोजनं,* थेरगा. 789, 882; *किलेसइणं पहाय अनणा हुत्वा ...,* थेरीगा. अट्ठ. 8; ... *अनणा निद्दोसा अपगतकिलेसा हुत्वा ...,* थेरीगा. अट्ठ. 120; - **सुख** नपुं., ऋणमुक्त होने अथवा क्लेशादि से मुक्त होने से उत्पन्न सुख - *चत्तारिमानि, ... सुखानि अधिगमनीयानि ... अत्थिसुखं, भोग-सुखं, आनण्यसुखं, अनवज्जसुखं,* अ. नि. 1(2).80; *अनणोस्मीति उप्पज्जनकसुखं आनण्यसुखं नाम,* अ. नि. अट्ठ. 2.306; पाठा. आनण्यसुख.

अनट्ठिक त्रि., अट्ठिक का निषे., ब. स. [अनस्थिक], बिना अस्थियों वाला, बिना गुठली या आंठी वाला - *मोचपानन्ति अनट्ठिकेहि कदलिफलेहि कतपानं,* महानि. अट्ठ. 321.

अनट्ठित-किरियता स्त्री., स्थिरतापूर्वक क्रिया न करने की स्थिति, प्रमाद का एक लक्षण, निरन्तर क्रिया न करना - ... *कुसलानं वा धम्मानं भावनाय असक्कच्चकिरियता ... अनट्ठितकिरियता ... अयं वुच्चति पमादो,* विभ. 401; ... *यो पुग्गलो एकदिवसं दानं वा दत्वा ... न निरन्तरं पवत्तेति, तस्स सा किरिया, अनट्ठितकिरियताति वुच्चति,* विभ. अट्ठ. 443.

अनत त्रि., नत का निषे., [अनत], **1.** नहीं झुका हुआ, किसी के प्रति झुकाव, अभिरुचि अथवा प्रवृत्ति से रहित, तृष्णारहित निब्बान - *दुद्दसं अनतं नाम, न हि सच्चं सुदस्सनं,* उदा. 164, पाठा. अवनथं; *अनतन्ति रूपादिआरम्मणेसु, ... नमनतो तण्हा नता नाम, नत्थि एत्थ नताति अनतं, निब्बानन्ति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 319; **2.** नपुं., (अनृत) असत्य - **भासन** नपुं., [अनृतभाषण], असत्य भाषण, झूठ बोलना - *कुदि अनतभासने,* सद्द. 2.542.

अनतिक्कन्त त्रि., अतिक्कन्त का निषे., [अनतिक्रान्त], नहीं पार किया हुआ क्षेत्र अथवा काल, पार नहीं करने वाला या पार न किया हुआ - ... *सूरिये नभमज्झं अनतिक्कन्तेयेव,* जा. अट्ठ. 4.191; ... *अनोघतिण्णोति कामोघं भवोघं ... अतिण्णे अनतिक्कन्ते,* चूळनि. 107.

अनतिक्कमन नपुं., अतिक्कमन का निषे. [अनतिक्रमण], अनुल्लंघन, ऊपर होकर न बहना - ... *आणा अनतिक्कमनाय ...,* मि. प. 322; ... *पुरिसो महतो तळाकस्स ... आळिं बन्धेय्य, यावदेव उदकस्स अनतिक्कमनाय,* चूळव. 420.

अनतिक्कमनीय त्रि., अतिक्कमनीय का निषे. [अनतिक्रमणीय], अतिक्रमण न करने योग्य, उल्लंघन नहीं करने योग्य - ... *सिक्खापदं ... यावजीवं अनतिक्कमनीयं,* मि. प. 81; *अट्ठ गरुधम्मा ... यावजीवं अनतिक्कमनीया,* चूळव. 420.

अनतिचरिया स्त्री., अतिचरिया का निषे. [अनतिचर्या], परस्त्रीगमन से विरति, अनुचित आचरणों से विरति, अननुमोदित आचरण न करने की अवस्था, पत्नी के प्रति

आचरणीय पांच आचरणों में से एक - *पञ्चहि ... ठानेहि सामिकेन पच्छिमा दिसा भरिया पच्चुपट्ठातब्बा - सम्माननाय अनवमाननाय अनतिचरियाय ...,* दी॰ नि॰ 3.144; *अनतिचरियायाति तं अतिक्कमित्वा बहि अञ्ञाय इत्थिया सद्धिं परिचरन्तो तं अतिचरति नाम, तथा अकरणेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.125; द्रष्ट॰ अतिचरिया.

अनतिचारी त्रि॰, [अनतिचारी], खोट-रहित, अनुचित या अप्रिय आचरण न करने वाला, वफादार, सदाचारी, व्यभिचार न करने वाला - ... *अनतिचारी च होति ...,* स॰ नि॰ 2(2).239; ... *सङ्गहितपरिजना च, अनतिचारिनी च,* दी॰ नि॰ 3.144.

अनतिमान पु॰, तत्पु॰ स॰, अत्यधिक घमण्ड अथवा अहंकार का अभाव, विनम्रभाव - *अनतिमानं निस्साय अतिमानो पहातब्बो ...,* म॰ नि॰ 2.28.

अनतिमानी त्रि॰, [अनतिमानी], अभिमान अथवा अत्यधिक अहंकार से मुक्त, विनम्र - ... *अनतिमानिस्स एवंस ते आसवा विघातपरिळाहा न होन्ति,* म॰ नि॰ 2.28; *सूवचो चस्स मुदु अनतिमानी,* सु॰ नि॰ 143; खु॰ पा॰ पृ॰ 11; *अत्थद्धो होति अनतिमानी,* दी॰ नि॰ 3.34; *महोसधो, ... अक्कोधनो, अनतिमानी ...,* मि॰ प॰ 197.

अनतिरित्त त्रि॰, अतिरित्त का निषे॰ [अनतिरिक्त], भिक्षु द्वारा पूर्वकाल में प्राप्त भोजन के अतिरिक्त नूतन रूप में प्राप्त अन्य भोजन - *अनुजानामि, भिक्खवे ... भुत्ताविना पवारितेन अनतिरित्तं परिभुञ्जितुन्ति,* महाव॰ 290-91; *अट्ठ अनतिरित्ता,* परि॰ 265; *अनतिरित्ते अतिरित्तसञ्ञाया'ति ...,* मि॰ प॰ 248; - **टि॰** वि॰ पि॰ के अनुसार पवारित (अपने भोजन ग्रहण की घोषणा कर चुका) भिक्षु भोजन के बचे हुए भाग (अतिरिक्त भत्त) को कुछ शर्तें पूरी कर लेने पर पुनः ग्रहण कर सकता है, परन्तु वह ताजा भोजन (अनतिरित्त भत्त) का ग्रहण नहीं कर सकता, द्रष्ट॰ पाचि॰ आपत्ति 35; पाचि॰ पृ॰ 116; - **पच्चया** अ॰, क्रि॰ वि॰, अनतिरिक्त अर्थात् ताजे भोजन के कारण से - *अनतिरित्तभोजनापत्तिया दूरभावो,* विसुद्धि॰ 1.69, पाठा॰ अनतिरित्तभोजनपच्चया; - **भोजन** नपुं॰, पूर्व में प्राप्त भोजन का अवशिष्ट भाग न होकर ताजा भोजन - *गामन्तरं गमिस्सामी'ति पवारितेन अनतिरित्तभोजनं भुञ्जितुं कप्पतीति अत्थो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.100; - **सञ्ञी** त्रि॰, अनतिरिक्त भोजन को अनतिरिक्त भी मानने वाला - *अनतिरित्ते अनतिरित्तसञ्ञी खादनीयं वा भोजनीयं वा खादति ... आपत्ति पाचित्तियस्स,* पाचि॰ 114.

अनतिरेकता स्त्री॰, अनतिरेक से व्यु॰ भाव॰, सुनिश्चित माप-तौल से अधिक अथवा उससे अतिरिक्त न होने की स्थिति - ... *केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरिय'न्ति एवमादीसु, अनतिरेकता अत्थो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 93, पाठा॰ अनवसेसता.

अनतिवत्तन नपुं॰, [अनतिवर्तन], रोग आदि से अत्राण, अभिभूत न करते हुए रहना, अनुल्लंघन - ... *जातिआदिदुक्खस्स अनतिवत्तनतो च दुक्खं दुक्खसभावमेवाति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 170; *युगनद्धस्स अनतिवत्तनट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 15;

अनतिसार पु॰, अतिसार का निषे॰, तत्पु॰ स॰, विनय-नियमों का अनुल्लंघन, अपराध का न रहना, दोष से मुक्ति - ... *अप्पणामेन्तो अनतिसारो होति,* महाव॰ 62. विलो॰, सातिसार, द्रष्ट॰ आगे.

अनतीत त्रि॰, अतीत का निषे॰ तत्पु॰, [अनतीत], वह जिसे पार नहीं किया जा सका है, वह, जिसका विषयीभूत है, वह, जिसे अभी तक पार नहीं किया गया, (द्वितीयान्त के साथ प्रयुक्त तथा 'धम्मो' का निषे॰ अनुपूरक) - *जराधम्मो, जरं अनतीतो,* दी॰ नि॰ 2.17; *सब्बे सत्ता मरणधम्मा, मरणपरियोसाना मरणं अनतीता,* स॰ नि॰ 1(1).116; - **सत्थुक** त्रि॰, अतीतसत्थुक का निषे॰, शास्ता अथवा भगवान बुद्ध की विद्यमानता वाला, शास्ता के निर्वाण से पूर्व वाला - *याव च धम्मविनयो तिट्ठति ताव अनतीतसत्थुकमेव पावचनं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.5; खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 73.

अनत्त पु॰, अत्त का निषे॰, ब॰ स॰ [अनात्म], वह सभी कुछ, जिसमें आत्मा नहीं होती है अथवा वह, जो अपने आप में आत्मा का स्वरूप नहीं है, जो अपने वश में नहीं है - *नत्थि एतेसं अत्ता कारकवेदकसभावो, सयं वा न अत्ताति अनत्ता,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 176; *यदनत्ता, तं नेतं मम, नेसोहमस्मि, न मेसो अत्ता'ति ... दट्ठब्बं,* स॰ नि॰ 2(2).2; *सब्बे धम्मा अनत्ता,* ध॰ प॰ 279; - **त्तानं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अत्तनाव अनत्तानं सञ्जानामी'ति वा अस्स सच्चतो ... दिट्ठि उप्पज्जति, अनत्तनाव अत्तानं ...,* म॰ नि॰ 1.11-12; - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनत्ततो अनुपस्सन्तो अत्तसञ्ञं पजहति,* पटि॰ म॰, 400; - **नि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनत्तनि अत्तमानिं, पस्स लोकं सदेवकं,* सु॰ नि॰ 761; - **कत** त्रि॰, अत्तकत का निषे॰ [अनात्मकृत], स्वयं अपने द्वारा नहीं किया गया, दूसरे द्वारा किया गया - ... *अनत्तकतानि कम्मानि कमत्तानं फुसिस्सन्ती'ति,* म॰ नि॰ 3.67; - **गरही** त्रि॰, उपपद॰ स॰ [अनात्मगर्ही], आत्मनिन्दा न करने वाला - ... *न लिम्पति*

लोके अनत्तगरही, सु॰ नि॰ 919; *अनत्तगरहीति कताकतवसेन अत्तानं अगरहन्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.253; - **धम्म** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनात्मधर्म], वह धर्म, जो आत्मा नहीं है, रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान नामक पांच स्कन्ध, जिनमें आत्मा जैसा कोई भी धर्म प्राप्त नहीं होता है, अनात्म-स्वभाव वाले धर्म - *रूपं ... अनत्तधम्मो, वेदना अनत्तधम्मो, सञ्ञा अनत्तधम्मो, सङ्खारा अनत्तधम्मो, विञ्ञाणं अनत्तधम्मो,* स॰ नि॰ 2(1).182; - **निय** त्रि॰, अत्तनिय का निषे॰, तत्पु॰, [अनात्मीय], वह रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार एवं विज्ञान धर्म, जो आत्मा के साथ जुड़ा हुआ न हो - *रूपं ... वेदना ... सञ्ञा ... सङ्खारा ... विञ्ञाणं अनत्तनियं, तत्र ते मे छन्दो पहातब्बो,* स॰ नि॰ 2(1).73; *अनत्तनियन्ति न अत्तनो सन्तकं, अत्तनो परिक्खारभावेन सुञ्ञतन्ति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.249; - **न्तप** त्रि॰, अत्तन्तप का निषे॰, स्वयं को पीड़ित न करने वाला - *सो अनत्तन्तपो अपरन्तपो दिट्ठेव धम्मे ... निब्बुतो ...,* म॰ नि॰ 2.3; 2.81; अ॰ नि॰ 1(2).237; - **मन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनाप्तमनस/अनात्तमनस्], असन्तुष्ट, अप्रसन्न मन वाला, क्रोधित, तिरस्कृत - *तत्र चे तुम्हे अस्सथ कुपिता वा अनत्तमना वा ...,* दी॰ नि॰ 1.3; *कुपितो अनत्तमनो भगवन्तं अभिवादेत्वा ...,* चूळव॰ 326; ... *कुपिता अनत्तमना भाकुटिं अकासि,* म॰ नि॰ 1.177; - **मनता** स्त्री॰, अनत्तमन से व्यु॰ भाव॰, अप्रसन्न मन की दशा, दौर्मनस्यता - ... *तस्मिं समये अनत्तमनता होति दोमनस्सं ...,* स॰ नि॰ 3(2).415; *न च तेन देवताय अनत्तमनता वा अनभिनन्दि वा करणीया,* अ॰ नि॰ 2(2).82; *यो तस्मिं समये दोसो ... विरोधो ... अनत्तमनता चित्तस्स - अयं ... दोसो होति,* ध॰ स॰ 418; - **मनधातुक** त्रि॰, असन्तुष्ट अथवा अप्रसन्न प्रकृति वाला, चिन्तातुर - ... *इदानि अनत्तमनधातुकोसि ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.52; - **मनवाचा** स्त्री॰, मन की अप्रसन्नता को प्रकट कर रही वाणी - ... *अनत्तमनवाचं अनिच्छारेत्वा ...,* दी॰ नि॰ 1.47; म॰ नि॰ 1.178; *अनत्तमनो समानो अनत्तमनवाचं मं सो भिक्खु अवच,* अ॰ नि॰ 1(1).71; पाठा॰ अनत्तमनवचनं; - **लक्खण** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनात्मलक्षण], धर्मों के अनात्म होने का लक्षण, तीन लक्षणों में से एक लक्षण - *अवसवत्तनतो अनत्ताति अनत्तलक्खणं आरोपेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).79; *अनिच्चलक्खणे हि दिट्ठे अनत्तलक्खणं दिट्ठमेव होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 191; ... *अत्तपटिक्खेपेन भणन्तो अत्तसञ्ञाघनपटिच्छन्नं अनत्तलक्खणं दीपेति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.208; - **लक्खणवत्थु** नपुं॰, अनात्म-लक्षण पर प्रकाश डालने वाला बुद्धवचन, एक सुत्त का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.234; - **लक्खणसुत्तन्त** पु॰, अनात्म-लक्षण से सम्बन्धित सूत्र या धर्मोपदेश, महाव॰ के एक उपदेश अनत्तपरियाय का दूसरा नाम, महाव॰ 17-19; स॰ नि॰ 2(1).61-63; *अनत्तलक्खणसुत्तं कथेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.161; *अनत्तलक्खणसुत्तन्तं देसेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.91; - **सञ्ञा** स्त्री॰, [अनात्मसंज्ञा], सारहीन, शून्य एवं तुच्छ धर्मो में अनात्म की अनुपश्यना - *भावेय्य च अनिच्चन्ति, अनत्तसञ्ञं असुभसञ्ञञ्च,* थेरगा॰ 594; *अनिच्चसञ्जिनो हि, मेघिय, अनत्तसञ्ञा सण्ठाति,* उदा॰ 110; *असारकतो अवसवत्तनतो परतो रित्ततो तुच्छतो सुञ्ञतो च सब्बे धम्मा अनत्ता'ति एवं पवत्ता अनत्तानुपस्सनासङ्खाता अनत्तसञ्ञा,* उदा॰ अट्ठ॰ 191; - **सञ्ञी** त्रि॰, तुच्छ, शून्य एवं सारहीन रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार एवं विज्ञान धर्मों में अनात्म की अनुपश्यना करने वाला - ... *अनत्तसञ्ञी अस्मिमानसमुग्घातं पापुणाति दिट्ठेव धम्मे निब्बान'न्ति,* उदा॰ 110; ... *दुक्खे अनत्तसञ्ञी पहानसञ्ञी विरागसञ्ञी निरोधसञ्ञी,* स॰ नि॰ 3(2).413; - **सुत्त** नपुं॰, महाव॰ तथा स॰ नि॰ में संगृहीत अनात्मलक्षण-सम्बन्धी एक उपदेश का शीर्षक, द्रष्ट॰ 'अनत्तलक्खण-सुत्तन्त' (ऊपर); - **त्ताकार** पु॰, [अनात्माकार], अनात्म-लक्षण का आकार अथवा स्वरूप, स्वयं अपने वश में न होने का लक्षण, विपश्यना-ध्यान का एक निमित्त - ... *अत्तनो आणचरितस्स भगवा ... आचिक्खति विपस्सनानिमित्तं, अनिच्चाकारं दुक्खाकारं, अनत्ताकारं,* महानि॰ 264; *अनत्ताकारन्ति अवसवत्तनाकारं,* महानि॰ अट्ठ॰ 312; - **त्ताधीन** त्रि॰, अत्ताधीन का निषे॰ [अनात्माधीन], दूसरों के अधीन, परतन्त्र, दास - ... *दासो अस्स अनत्ताधीनो पराधीनो न येनकामंगमो,* दी॰ नि॰ 1.64; *अनत्ताधीनोति न अत्तनि अधीनो, अत्तनो रुचिया किञ्चि कातुं न लभति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172; - **त्तानत्तनीय** त्रि॰, अनत्ता + अनत्तनीय [अनात्मा-अनात्मीय], न ही आत्मा, न आत्मीय, (पांच स्कन्ध जिनमें से किसी में भी आत्मा एवं आत्मीय जैसा कोई भी सत्य नहीं रहता) - *तं ... वत्थुभूतं खन्धपञ्चकं अञ्ञथा अनत्तानत्तनियमेव होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 169; - **त्तानुपस्सना** स्त्री॰, अनत्त + अनुपस्सना [अनात्मानुपश्यना], पांच स्कन्धों आदि सभी धर्मों में अनात्मभाव की अनुपश्यना - ... *असारकतो, अवसवत्तनतो ... सुञ्ञतो च सब्बे धम्मा अनत्ता'ति एवं पवत्ता अनत्तानुपस्सनासङ्खाता अनत्तसञ्ञा चित्ते सण्ठहति,* उदा॰ अट्ठ॰ 191; *अनत्तानुपस्सना अभिञ्ञेय्या,* पटि॰ म॰ 19;

अनिच्चानुपस्सनातिआदीहि चतुन्नं मग्गानं पुब्बभागविपस्सना वुत्ता, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.140; सु॰ नि॰ 1.143, द्रष्ट॰ अनुपस्सना एवं अनत्त; – **त्तानुपस्सी** त्रि॰, [अनात्मानुपश्यी], पांच स्कन्धों आदि में अनात्म की अनुपश्यना करने वाला – *सब्बेसु धम्मेसु अनत्तानुपस्सी विहरति,* अ॰ नि॰ 2(2).165; *अनत्तानुपस्सीति अवसवत्तनाकारं अनत्ताति अनुपस्सन्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.152; – **त्तुक्कंसक** त्रि॰, [अनात्मुत्कर्षक], अपनी स्वयं की प्रशंसा न करने वाला, अपने विषय में बहुत बढ़-चढ़कर न बोलने वाला – *न खो पनाहं अत्तुक्कंसको ... अनत्तुक्कंसको, अपरवम्भीहमस्मि,* म॰ नि॰ 1.25; *अनत्तुक्कंसका सब्बे, न ते वम्भेन्ति कस्सचि,* अप॰ 1.16; – **त्तुक्कंसना** स्त्री॰, अपनी प्रशंसा न करना, अपने बारे में बढ-चढ़ कर न बोलना – *अयञ्च सम्मादिट्ठि ... अनत्तुक्कंसना, अपरवम्भना,* म॰ नि॰ 2.73.

अनत्थ पु॰, [अनर्थ], अलाभ, दुर्भाग्य, अकल्याण, विपत्ति, अवास्तविक, अनुपयोग, अहित, दुःख – *यो अत्थं पुच्छितो सन्तो, अनत्थमनुसासति,* सु॰ नि॰ 126; *अनत्थमनुसासतीति तस्स अहितमेव आचिक्खति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.43; *बहुनो जनस्स अनत्थाय, अहिताय, दुक्खाय देवमनुस्सानं,* चूळव॰ 197; – **क** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनर्थक], निरर्थक, बेकार, अनुपयोगी, हानिकर, विपत्ति लाने वाला – *अनत्थपदसंहिता ... अनत्थकेहि पदेहि संहिता याव बहुका होति ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.363-64; – **कारक** त्रि॰, [अनर्थकारक], हानिकारक, अनर्थ करनेवाला, द्वेषभाव से परिपूर्ण, विद्वेषी – *उपनाहीति परस्स अपराधं हदये ठपेत्वा सुचिरेनपि तस्स अनत्थकारको,* जा॰ अट्ठ॰ 3.227; *भिक्खवे, भण्डनकलहविग्गहविवादा नामेते अनत्थकारका,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.35; – **कारिता** स्त्री॰, भाव॰ [अनर्थकारिता], हानि करने की स्थिति या अवस्था – *अनत्थताति अनत्थकारिता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.118; – **कुसल** त्रि॰, अत्थकुशल का निषे॰ [अनर्थकुशल], कुशल कर्म करने में अनिपुण, हितसाधक कार्यों के सम्पादन में अकुशल, – *अत्थि अनत्थकुसलो ... उपासिकानं, तथारूपानि कुलानि सेवति भजति पयिरुपासति, अयं अनत्थकुसलो;* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 192; – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ने वे अनत्थकुसलेन, अत्थचरिया सुखावहा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.244; *अनत्थकुसलेनाति अनत्थे अनायतने कुसलेन, अत्थे आयतने कारणे अकुसलेन वाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.244; – **गहण** नपुं॰, [अनर्थग्रहण], अनर्थकारी धर्मों का ग्रहण या स्वीकरण – *अविसेसतो पन ... अनत्थग्गहणतो ... आसीविससदिसता वेदितब्बा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.58; – **त्थङ्गते** त्रि॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ [अनस्तङ्गते], नहीं डूबा हुआ सूर्य, चन्द्र आदि, नहीं अस्त हो चुका सूर्य, चन्द्र – *विसाखापुण्णमाय अनत्थङ्गतेयेव सूरिये ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 26; – **अनत्थङ्गतसूरिय** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जहां अथवा जिस पर सूर्य अस्त नहीं हुआ है – *अनावसूरन्ति न अवसूरं अनत्थङ्गतसूरियन्ति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.49, तुल॰ अत्थ[3]; – **चर** त्रि॰, [अनर्थचर], हित न करने वाला, अहितकारी, अनर्थसम्पादक – *अनत्थचरो त्वं मञ्ञे'ति,* मि॰ प॰ 131; *योपि सुहदयो ... वा यो अनत्थवा अनत्थचरो, सोपि गुय्हं वेदितुं नारहते'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.73; *चत्तारिमानि, ... यानि वत्थूनि किच्चे जाते अनत्थचरानि भवन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.429; – **चरिया** स्त्री॰, [अनर्थचर्या], अनुचित कार्य, असङ्गत या असमीचीन आचरण – *तथागतस्स, ... कतेन ... अनत्थचरियाय वा असमानत्तताय वा ...,* मि॰ प॰ 159; – **जनन** त्रि॰, हानिप्रद, अनर्थोत्पादक, निरर्थक – *अनत्थजननो लोभो, ... दोसो, ... मोहो ...,* इतिवु॰ 61; अ॰ नि॰ 2(2).234; – **जानक** त्रि॰, [अनर्थज्ञ], अनर्थ, हानि अथवा अहित को जाननेवाला, अनर्थज्ञ – *एवं खो, ब्राह्मण, अत्थानत्थजानको नाम मया सदिसो नत्थी'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.373; – **ता** स्त्री॰, अनत्थ का भाव॰ [अनर्थता], अनर्थमय स्थिति, बुरी अवस्था – *उस्सूरसेय्या परदारसेवना, वेरप्पसवो, च अनत्थता च,* दी॰ नि॰ 3.139; *अनत्थताति अनत्थकारिता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.118; – **द** त्रि॰, [अनर्थद], अकल्याणकारी, अहितकारी, अनर्थ को देनेवाला – *अनत्थतो ति अनत्थदो,* महाव॰ अट्ठ॰ 407; – **दस्सी** त्रि॰, [अनर्थदर्शी], अहितकारी परामर्श देने वाला, अहित की ओर ले जानेवाला, अकल्याणकारी सुझाव देनेवाला – *पापं सहायं परिवज्जयेथ, अनत्थदस्सिं विसमे निविट्ठं,* सु॰ नि॰ 57; *परेसम्पि अनत्थं दस्सेतीति अनत्थदस्सी,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 118; – **निस्सित** त्रि॰, [अनर्थनिश्रित], अनर्थयुक्त, निरर्थक विषय से सम्बद्ध, वितण्डावाद अथवा लोकायतिकवाद – *लोकायतिकन्ति अनत्थनिस्सितं सग्गमग्गानं अदायकं अनिय्यानिकं वितण्डसल्लापं लोकायतिकवादं न सेवेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 7.181; – **पदसंहित** त्रि॰, [अनर्थपदसंहित], केवल निरर्थक शब्दों से युक्त, अर्थरहित पदों वाला – *सहस्समपि चे वाचा, अनत्थपदसंहिता,* ध॰ प॰ 100; – **टि॰** आकाशवर्णन, वनवर्णन आदि के प्रकाशक या अभिव्यञ्जक पद मुक्ति या निर्वाण में सहायक न होने से अनर्थपद कहलाते है, अतः ऐसे पदों से युक्त वाणी को बुद्धवचनों में 'अनत्थपदसंहिता' कहा गया है, द्रष्ट॰ ध॰ प॰

अट्ठ॰ 1.363-364; - **पुच्छक** त्रि॰, [अनर्थपृच्छक], निरर्थक अथवा अनुपयोगी धर्मों या बातों को पूछने वाला - *इमं धम्मदेसनं सत्था ... अनत्थपुच्छकं ब्राह्मणं आरब्भ कथेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.372; - **पुच्छकब्राह्मणवत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ के सहस्सवग्ग के चतुर्थ सुत्त का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.372-374; - **युत्त** त्रि॰, [अनर्थयुक्त], अनर्थ से भरा हुआ, निरर्थक, अकल्याणकारक - *अनत्थसञ्हितन्ति अनत्थसंयुत्तं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.72, तुल॰ अनत्थसंहित; - **वा** त्रि॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अनर्थवान्], निरर्थक, मूल्यहीन, विद्वेषी, हानिप्रद - *सुमित्तो च असम्बुद्धं, सम्बुद्धं वा अनत्थवा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.73; - **वस** त्रि॰, [अनर्थवश], अनर्थ अथवा पाप के प्रभाव से प्रभावित, अनर्थ के अधीन - *अनत्थवसमागतन्ति ... अनत्थकारकानं किलेसानं वसं आगतं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.304; - **वादी** त्रि॰, [अनर्थवादिन्], निरर्थक बातों को कहनेवाला - *अकालवादी अभूतवादी अनत्थवादी अधम्मवादी अविनयवादी,* म॰ नि॰ 1.360; अ॰ नि॰ 3(2).233; - **संहित** त्रि॰, [अनर्थसंहित], अनर्थ से युक्त, अलाभकारी, निरर्थक, अनुपयोगी - *यो चायं कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगो हीनो ... अनरियो अनत्थसंहितो,* महाव॰ 13; *अनत्थसंहितोति न अत्थसंहितो, हितसुखावहकारणं अनिस्सितोति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.327; *अत्थसंहितं तथागता पुच्छन्ति, नो अनत्थसंहितं,* महाव॰ 66; - **सन्तान** पु॰, [अनर्थसन्तान], अहितकारी धर्मों की निरन्तरता; अकल्याणकारी धर्मों का सातत्य या अविच्छिन्नता - *ताव तेन तेन ञाणेन तस्स तस्स अनत्थसन्तानस्स पहानं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.8; - **त्थावह** त्रि॰, [अनर्थावह], हानि को लाने वाला, अपने हित अथवा कल्याण के लिये अनुपयोगी, अनर्थकारी, अकल्याणकारी - *... पापं ... असुन्दरं अत्तनो परेसञ्च अनत्थावहं ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 259; - **त्थावहनता** स्त्री॰, भाव॰ [अनर्थावहनता], अनर्थकारी या अनुपयोगी स्थिति में प्राप्त कराने की अवस्था या स्वभाव, अनर्थ को ले आने वाली वृत्ति - *अनत्थावहनताय वेरानुबन्धसपत्तसदिसत्ता सपत्ता,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 267; - **त्थिक** त्रि॰, [अनार्थिक], निराकाङ्क्ष, कोई सरोकार या इच्छा नहीं रखनेवाला, बहुत बड़ी मांग नहीं करनेवाला - *भवेनम्हि अनत्थिको,* थेरगा॰ 122; *दुब्बला ते भविस्सन्ति, हिरीमना अनत्थिका,* थेरगा॰ 956; *न च अनत्थिको पत्तेन होति,* म॰ नि॰ 2.347; तुल॰ अत्थिक[1]; - **त्थुप्पादन** नपुं॰, [अनर्थोत्पादन], अनर्थ, अहित तथा संकट का उत्पादन, संकटमयी अवस्था - *मित्तदुब्भोति मित्तेसु दुब्भनं तेसं अनत्थुप्पादनं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 100.

अनत्थङ्गमित त्रि॰, अत्थङ्गमित का निषे॰ [अनस्तमित], नहीं डूबा हुआ, अस्त नहीं हो चुका, वह, जिसका अस्तङ्गमन न हुआ हो - *सूरिये अनत्थङ्गमितेयेव ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.51; पाठा॰ अनत्थङ्गत, अनत्थमित.

अनत्थट / अनत्थत त्रि॰ [अनास्तृत], नहीं बिछाया हुआ, अनाच्छन्न, नहीं ढका हुआ, अनाच्छादित - *एवं खो, भिक्खवे, अत्थतं होति कथिनं, एवं अनत्थतं,* महाव॰ 331; *अनन्तरहितायाति केनचि अत्थरणेन अनत्थताय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.207.

अनत्थारक त्रि॰, [अनास्तारक], नहीं फैलानेवाला, नहीं बिछानेवाला, वह भिक्षु, जिसने कठिन चीवर का ग्रहण विनय-नियमों के अनुरूप नहीं किया है, - *द्विन्नं पुग्गलानं अनत्थतं होति कथिनं - अनत्थारकस्स च अननुमोदकस्स च,* परि॰ 326; द्रष्ट॰ आगे कठिन-अत्थरण के अन्त॰; - **टि॰** कठिनविधान के अवसर पर भिक्षु को अपने तीन चीवरों में से कोई एक चीवर को फैलाने की घोषणा विधिवत करनी पड़ती है जिसे विनय में कठिनत्थरण कहते हैं, इस विधान के अनुरूप सङ्घाटी आदि को ग्रहण न करने वाले भिक्षु को 'अनत्थारक' कहलाता है.

अनदी स्त्री॰, तत्पु॰ [अनदी], नदी से भिन्न, वह, जो नदी नहीं है - *न तेन अनदी होति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.104.

अनद्दा-अनद्दायना-अनद्दायितत्तं स्त्री॰, तथा नपुं॰, [तुल॰ अनादर], अनादर, असम्मान, तिरस्कार, अवमानना - *यं अनादरियं अनादरता अगारवता ... अनद्दा अनद्दायना अनद्दायितत्तं असील्यं अचित्तीकारो - इदं वुच्चति अनादरियं,* विभ॰ 432; *अनद्दाति अनादियना, अनद्दायनाति अनादियनाकारो, अनद्दाय अयितस्स भावो अनद्दायितत्तं,* विभ॰ अट्ठ॰ 471.

अनद्धगू त्रि॰, [अनध्वग], स्थलमार्ग पर न चलने वाला, वायुमार्ग से गमन करने वाले अर्थात् देवगण - *अनद्धगूनं अपि देवतानं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.14; *या पदसा अद्धानं अगमनेन अनद्धगूनं देवतानं इद्धि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.15.

अनद्धनीय / अनद्धनिक त्रि॰, [अनध्वनीय], वह, जो टिकाऊ न हो, जो चिरकालिक न हो, क्षणिक, अध्रुव प्रभङ्गुर, - *सब्बेपि सङ्खारा ... तत्थ तत्थेव निरुज्झन्ति, तस्मा सब्बेपिमे अनिच्चा ... अनद्धनिया ... निस्सारा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.375; *तत्थ कुम्भूपमन्ति अबलदुब्बलट्ठेन अनद्धनियतावकालिकट्ठेन ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.180.

अनद्धनेय्य त्रि., [अनध्वनेय्य], उपरिवत् - *थले यथा वारि जनिन्द वुट्ठं, अनद्धनेय्यं न चिरट्ठितीकं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.500; *अनद्धनेय्यन्ति न अद्धानक्खमं,* तदे॰.

अनद्धभूत त्रि., अद्धभूत का निषे॰ [अनर्धभूत], स्वतन्त्र, अविभाजित, अखण्डित, मुक्त, वह, जिसका हिस्सा न बांटा जा सके, अनभिभूत - *अनद्धभूतं अत्तानं दुक्खेन अद्धभावेति,* म॰ नि॰ 3.9; *तत्थ अनद्धभूतन्ति अनधिभूतं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प.) 3.6.

अनधिक त्रि., अधिक का निषे॰, तत्पु॰ [अनधिक], वह, जो आवश्यकता से अधिक नहीं है अर्थात् संतुलित, सर्वाकारसम्पन्न, असीम, पूर्ण - *सब्बाकारसम्पन्नं सब्बाकारपरिपूरं अनूनमनधिकं स्वाक्खातं केवलं परिपूरं ब्रह्मचरियं सुप्पकासितं,* दी॰ नि॰ 3.93; *तञ्च खो अत्थतो वा ब्यञ्जनतो वा अनूनमनधिकं,* उदा॰ अट्ठ॰ 10; *तस्मा पञ्चपमाणानि अनूनानि अनधिकानि, पञ्चनङ्गलसतानीति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.109, विलो॰ अनून, अन्यून.

अनधिकरण त्रि., अधिकरण का निषे॰, ब॰ स॰ [अनधिकरण], विवाद-विषय में रुचि न रखने वाला - *अनधिकरणेन भवितब्बं अनवसेसकारिना,* मि॰ प॰ 351.

अनधिगत त्रि., अधिगत का निषे॰, तत्पु॰ [अनधिगत], अप्राप्त, वह, जो प्राप्त नहीं है, अज्ञात, असाक्षात्कृत - *अदिट्ठे दिट्ठसञ्ञिनो अपत्ते पत्तसञ्ञिनो अनधिगते अधिगतसञ्ञिनो असच्छिकते सच्छिकतसञ्ञिनो अधिमानेन अञ्ञं ब्याकरिंसु,* पारा॰ 111; *योगं करोति अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाय,* मि॰ प॰ 33; दी॰ नि॰ 3.203; - **त्त** नपुं., भाव॰ [अनधिगतत्व], अप्राप्ति की स्थिति, प्राप्त न होना - *पटिपत्तिया अधिगन्तब्बस्स अनधिगतत्ता नेव अधिगमो अत्थि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 378; - **निट्ठत्त** त्रि., ब॰ स॰ [अनधिगतनिष्ठात्मन्], वह, जिसमें चित्तस्थैर्य नहीं है, वह, जिसके चित्त में स्थिरता नहीं है - *अब्योसितत्ता हीति अनधिगतनिट्ठत्ता,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.253; - **तारहत्त** त्रि., वह, जिसने अर्हत्व को प्राप्त नहीं किया है, अर्हत्व की अवस्था में न पहुंचा हुआ, शैक्ष्य - *अप्पत्तमानसन्ति अनधिगतारहत्तं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182.

अनधिगम पु., [अनधिगम], अप्राप्ति, अलाभ, असाक्षात्कार - *इमिस्सायेव अरियाय पञ्ञाय अनधिगमा ...,* म॰ नि॰ 1.115.

अनधिट्ठान नपुं., अधिट्ठान का निषे॰, तत्पु॰ [अनधिष्ठान], किसी एक आलम्बन पर चित्त की अनवस्थिति, दृढ़ निश्चय या संकल्प का अभाव, चित्त की एकतानता का अभाव - *पञ्चसु वा कामगुणेसु चित्तस्स वोसग्गो ... अनट्ठितकिरियता ... अनधिट्ठानं अननुयोगो ... अयं वुच्चति पमादो,* विभ॰ 401; *अनधिट्ठानन्ति कुसलकरणे पतिट्ठाभावो,* विभ॰ अट्ठ॰ 443.

अनधिट्ठित त्रि., [अनधिष्ठित], 1. अनिर्धारित, वह, जिसका निर्धारण न किया गया हो अथवा जिसके विषय में विकल्पना न की गयी है - *अतिरेकचीवरं नाम अनधिट्ठितं अविकप्पितं,* पारा॰ 303; 2. वह, जिसके विषय में दृढ़ निश्चय न किया गया हो, असंकल्पित, अविकल्पित - *तस्स चे, भिक्खवे, भिक्खुनो तं चीवरं अनधिट्ठिते अञ्ञो भिक्खु आगच्छति, समको दातब्बो भागो,* महाव॰ 391.

अनधिभू पु., अधिभू का निषे॰, तत्पु॰ [अनधिभू], अप्रभु, अस्वामी, अश्रेष्ठ, अप्रधान, अभिभूत न कर सकने वाला - *अधिभूतो, अनधिभू, अधिभंसु नं पापका अकुसला धम्मा,* स॰ नि॰ 2(2).186.

अनधिभूत त्रि., अधिभूत का निषे॰, तत्पु॰ [अनधिभूत], अपराजित, अविजित, अपराभूत - *अयं वुच्चतावुसो, भिक्खु, रूपाधिभू, सद्दाधिभू, गन्धाधिभू ... अधिभू, अनधिभूतो,* स॰ नि॰ 2(2).187.

अनधिमन त्रि., ब॰ स॰ [अनधिमनस्], वह, जिसका मन किसी के प्रति रागयुक्त नहीं है, अन्यमनस्क, उदास मनवाला, अनुत्फुल्ल मन वाला - *यस्मा च मे अनधिमनोसि सामि, न चापि मे मनसा अप्पियोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.26; *यस्मा त्वं अनधिमनोसि, मं अभिभवित्वा अतिक्कमित्वा अञ्ञं मनेन न पत्थेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.27.

अनधिमुच्छित त्रि., अधिमुच्छित का निषे॰, तत्पु॰ [अनभिमूर्छित], अनासक्त, किसी के प्रति रागयुक्त न रहने वाला, क्लेशरहित - *तस्मिञ्च सुखे अनधिमुच्छितो होति,* म॰ नि॰ 3.9.

अनधिवर त्रि., ब॰ स॰ [अनधिवर], वह, जिससे अधिक अभ्युत्कृष्ट कोई अन्य नहीं है, अतुल, अप्रमेय - *इधागता अनधिवरं नमस्सितुं,* वि॰ व॰ 139; *इद्धी च ते अनधिवरा विहङ्गमा,* वि॰ व॰ 140; *इध अनधिवरा बुद्धा, अभिसम्बुद्धा विरोचन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.208; *अनधिवराति अतुल्या अप्पमेय्या,* जा॰ अट्ठ॰ 4.209.

अनधिवासक त्रि., अधिवासक का निषे॰ [अनधिवासक], धैर्यहीन, सहनशक्ति से विरहित, कष्टों को सहने में अक्षम, केवल स॰ प॰ के पू॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त; - **जातिक** त्रि., [अनधिवासकजातिक], धैर्यहीन प्रकृति वाला, कष्ट सहने में अक्षम स्वभाव वाला - *ऊनवीसतिवस्सो, भिक्खवे,*

पुग्गलो अक्खमो होति ... अमनापानं पाणहरानं अनधिवासकजातिको होति, महाव॰ 98; – **जातिकता** स्त्री॰ भाव॰, धैर्यच्युत होने की अवस्था, असहनशीलता – *अहं अनधिवासकजातिकताय तुम्हेहि सद्धिं कथेसिं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.327; पाठा॰ अनधिवासन॰.

अनधिवासनता स्त्री॰, भाव॰ [अनधिवासनता], अक्षमता, अक्षान्ति, अक्षान्ति की अवस्था, धैर्यहीनता, व्याकुलता – *या अक्खन्ति अक्खमनता अनधिवासनता चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – अयं वुच्चति अक्खन्ति,* विभ॰ 416.

अनधिवासना स्त्री॰, [अनधिवासना], असहनशीलता, अक्षान्ति, असहिष्णुता – *अहुदेव अक्खन्तीति अहोसियेव अनधिवासना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.212.

अनधोमुखता स्त्री॰, भाव॰, नीचे की ओर मुख न करने की स्थिति, पतनशीलता का अभाव – *अपतितक्खन्धता अनधोमुखता इत्थिपुरिसानं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 24.

अननुकूल त्रि॰, अनुकूल का निषे॰ [अननुकूल], विपरीत, प्रतिकूल, अननुरूप, विरुद्ध – *अननुकूलानं च अप्पसिद्धानं छड्डनं,* सद्द॰ 527; – **ता** स्त्री॰ भाव॰, विपरीतता, प्रतिकूलता, विरुद्धता – *विरोधो ति अननुकूलता पतिविरोधो ति पुनप्पुनं अननुकूलता,* सद्द॰ 470.

अननुगत त्रि॰, [अननुगत], 1. पालन या आचरण न किया गया, वह, जिसका अनुगमन नहीं किया गया है, 2. वह, जो दूसरों से मार्गदर्शन प्राप्त नहीं करता है, दूसरों का अनुगमन न करने वाला – *अनन्वयन्ति यं अत्थं दस्सामि, करिस्सामीति च भासति, तेन अननुगतं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.271; *अननुगतन्तरस्साति किलेसे अननुगतचित्तस्स,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.70.

अननुच्छविक / अननुच्छविय त्रि॰, [अननुच्छविक], अनुपयुक्त, अहितकर, प्रतिकूल, अप्रतिरूप, अकरणीय – *अननुच्छविकं ... अननुलोमिकं अप्पतिरूपं, अस्सामणकं अकप्पियं अकरणीयं,* महाव॰ 50; 66; *अननुच्छविकं ते कतन्ति सत्थु सन्तिकं नेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.400; *अननुच्छविकं खो नागसेन परिवितक्कं वितक्केसि,* मि॰ प॰ 12; – **त्त** नपुं॰, भाव॰, अप्रतिरूपता, अनुपयुक्तता, प्रतिकूलता, अकरणीयता – *अननुच्छविकत्ता एव च अननुलोमिकं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.169.

अननुञ्ञा स्त्री॰, [अननुज्ञा], अनुज्ञा या आज्ञा का अभाव, अनुमति का न होना; असमर्थन, अस्वीकरण, अननुमोदन – *तस्सा अननुञ्ञायं ठत्वा अनुञ्ञम्पि पटिक्खिपन्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.139.

अननुञ्ञात त्रि॰, [अननुज्ञात], आज्ञा को अप्राप्त, अनुमोदन न पाया हुआ, अप्राप्त स्वीकृति वाला, वह, जिसे करने की अनुमति न हो – *किं नु खो भगवता पासादपरिभोगो अनुञ्ञातो किं अननुञ्ञातो'ति,* चूळव॰ 299; *अयाचितो ततागच्छि, नानुञ्ञातो इतो गतो,* थेरीगा॰ 129; *न खो, सङ्गामजि, तथागता मातापितूहि अननुञ्ञातं पुत्तं पब्बाजेन्ती'ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 57; – **समुट्ठान** पु॰, वि॰ पि॰ के अन्त॰ परि॰ नामक एक ग्रन्थ के एक समुट्ठान का शीर्षक, परि॰ 187.

अननुतप्प त्रि॰, [अननुताप्य], अनुताप अर्थात् पश्चाताप के अयोग्य, पश्चाताप न करने योग्य – *एवरूपो ... सत्था सावकानं कालङ्कतो अननुतप्पो,* दी॰ नि॰ 3.91.

अननुतापिय त्रि॰, अनुतापिय का निषे॰ [अननुताप्य], अशोच्य, शोक न करने योग्य अशोचनीय – *सो मे अत्थो अनुप्पत्तो, कतं अननुतापियं,* अ॰ नि॰ 1(2).79.

अननुनीत त्रि॰, अनुनीत का निषे॰ [अननुनीत], अनाकृष्ट, वह, जिसको घसीट कर दूर न ले जाया गया है, अप्रतिहत, मध्यस्थ – *अननुनीतो अप्पटिहतो मज्झत्तोयेव हुत्वा गच्छति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.195.

अननुप्पत्त त्रि॰, अनुप्पत्त का निषे॰ [अननुप्राप्त], वह, जो प्राप्त नहीं है, अप्राप्त, नहीं पाया हुआ – *अननुप्पत्तञ्च अनुत्तरं योगक्खेमं नानुपापुणाति,* म॰ नि॰ 1.150.

अननुबुज्झन नपुं॰, अनुबुज्झन का निषे॰ [अननुबोधन], अननुबोध, अज्ञान, ज्ञान का सर्वथा अभाव – *अननुबोधाति ञातपरिञ्ञावसेन अननुबुज्झना,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.76.

अननुबोध[1] पु॰, [अननुबोध], अनुबोध का अभाव, नासमझी, ज्ञानाभाव, अप्रतिवेध, प्रतिवेध-ज्ञान का अभाव – *दुक्खस्स, भिक्खवे, अरियसच्चस्स अननुबोधा अप्पटिवेधा एवमिदं दीघमद्धानं सन्धावितं,* दी॰ नि॰ 2.71; *अननुबोधाति अबुज्झनेन अजानने,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.119.

अननुबोध[2] त्रि॰, ब॰ स॰ [अननुबोध], वह, जिसे आर्यसत्यों के ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई है, प्रतिवेधक-ज्ञान से रहित, अज्ञानी – *पुथुज्जनो अननुबोधोहमस्मि,* वि॰ व॰ 1203; *तत्थापि सच्चानं अनुबोधमत्तस्सापि अभावेन अननुबोधो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 274.

अननुभूत त्रि॰, अनुभूत का निषे॰ [अननुभूत], वह, जो अनुभव में नहीं आया है, अप्राप्त, असाक्षात्कृत, वह, जो अनुभवगम्य नहीं है – *पथविं ... पथवितो अभिञ्ञाय यावता ... अननुभूतं तदभिञ्ञाय पथविं नापहोसिं,* म॰ नि॰ 1.412; *अननुभूतन्ति पथविया पथविसभावेन अननुभूतं अप्पत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).305; – **तारम्मण** नपुं॰,

[अननुभूतालम्बन], पूर्व में अनुभव नहीं किया गया इन्द्रिय एवं अतीन्द्रिय ज्ञान का आलम्बन - *सो पनेस असमुदाचारवसेन वा अननुभूतारम्मणवसेन वा अनुप्पन्नो उप्पज्जतीति वेदितब्बो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.24; – **पुब्ब** त्रि॰, [अननुभूतपूर्व], पूर्व काल में अनुभव नहीं किया गया – *सुपिनन्तेपि अननुभूतपुब्बं परमगम्भीरं ... अमतं निब्बानं,* उदा॰ अट्ठ॰ 318.

अननुमत त्रि॰, [अननुमत], वह, जिसके लिये अनुमति या अनुमोदन प्राप्त नहीं हैं या जो अनुज्ञात नहीं है – *नानुञ्ञातोति अननुमतो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 54; तुल॰ थेरीगा॰ 129.

अननुमोदक त्रि॰, [अननुमोदक], सङ्घकर्म का अनुमोदन न करने वाला भिक्षु, धन्यवाद ज्ञापन न करने वाला – *द्विन्नं पुग्गलानं अनत्थतं होति कथिनं – अनत्थारकस्स च अननुमोदकस्स,* परि॰ 326.

अननुयुञ्जन नपुं॰, [अननुयुञ्जन], किसी में लगाव का न होना, किसी के साथ जुड़ा हुआ न रहना – *अननुयोगेति योगस्स अननुयुञ्जने,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.168.

अननुयुत्त त्रि॰, [अननुयुक्त], अव्यापृत, किसी कार्यविशेष में न जुटा या लगा हुआ – *... अयमायस्मा जागरियं अननुयुत्तो'ति,* म॰ नि॰ 2.145; *... ये ते पुग्गला अस्सद्धा ... भोजने अमत्तञ्ञुनो, जागरियं अननुयुत्ता ...,* म॰ नि॰ 1.39.

अननुयोग पु॰, [अननुयोग], धर्मों के प्रत्यवेक्षण में न लगना, अलगाव, धर्मविषयक परिपन्थ, धर्मों की धर्मता के विषय में प्रमाद – *पमादे अननुयोगे अपच्चवेक्खणाय तिब्बा भयसञ्ञा पच्चुपट्ठिता होति,* अ॰ नि॰ 2(2).199; *कुसलानं वा धम्मानं भावनाय ... अनधिट्ठानं अननुयोगो पमादो,* विभ॰ 401.

अननुयोगक्खम त्रि॰, [अननुयोगक्षम], प्रश्नों का सामना करने में अक्षम, अनुयोग के अयोग्य, सङ्घ के किसी कर्म में लगाये जाने के लिये असमर्थ रुग्ण भिक्षु आदि – *गिलानो च अननुयोगक्खमो वुत्तो भगवता,* महाव॰ 247.

अननुरुद्ध त्रि॰, अनु + √रुध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अननुरुद्ध], अनियन्त्रित, अप्रतिविरुद्ध, अनवरुद्ध, अवरोध-रहित – *सा पनावुसो, निट्ठा अनुरुद्धपटिविरुद्धस्स उदाहु अननुरुद्धअप्पटिविरुद्धस्सा'ति?,* म॰ नि॰ 1.95.

अननुरूप त्रि॰, [अननुरूप], अनुपयुक्त, प्रतिष्ठा के विरुद्ध, अनुचित, अयोग्य, अप्रतिरूप, अस्थानिक – *अट्ठानेन अकारणेन अत्तनो राजभावस्स अननुरूपं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.391; *अत्तनो अननुरूपमेव मरणं पत्तो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.39.

अननुलोमिक त्रि॰, अनुलोमिक का निषे॰ [अननुलोमिक], अनुपयुक्त, प्रतिष्ठा के विरुद्ध, अनुचित, अयोग्य, अप्रतिरूप – *अननुच्छविकं, मोघपुरिस, अननुलोमिकं अप्पतिरूपं अस्सामणकं ...,* महाव॰ 66; ... भिक्खु बालो होति अब्यत्तो ... विहरति अननुलोमिकेहि गिहिसंसग्गेहि, महाव॰ 419; पारा॰ 21; – **त्त** नपुं॰, [अननुलोमिकत्व], अयोग्यता, अनुचित होने की अवस्था – *अननुलोमिकत्ता एव च अप्पतिरूपं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.169.

अननुवज्ज त्रि॰, [अननवद्य], अनिन्दनीय, अगर्ह्य, प्रशंसनीय, निन्दामुक्त, प्रशंसा के योग्य – *चतूहि, ... अङ्गेहि समन्नागता वाचा सुभासिता होति, ... अनवज्जा च अननुवज्जा च विञ्ञूनं,* सु॰ नि॰ पृ॰ 148; *अननुवज्जा चाति अनुवादविमुत्ता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.112; *... अनवज्जो च होति अननुवज्जो च विञ्ञूनं,* अ॰ नि॰ 1(1).331.

अननुवाद त्रि॰, अनुवाद का निषे॰ [अननुवाद], उपरिवत् – *अननुवादो चुदितो भिक्खूति अलं वचनाय,* महाव॰ 243; *एवं ओवदन्तो अननुपवादो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.217, पाठा॰ अननुपवाद.

अननुविच्च अ॰, पू॰ का॰ कृ॰ [अननुविच्य], परीक्षा न करके, विवेचन के बिना, बिना विनिश्चय किये हुए, पर्यवगाहन न करके – *ये ते, भन्ते, बाला अब्यत्ता अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा परेसं वण्णं वा अवण्णं वा भासन्ति,* म॰ नि॰ 2.323; *अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति ...,* अ॰ नि॰ 1(2).98.

अननुवेज्ज त्रि॰, अनु + √विद के सं॰ कृ॰ का निषे॰, न खोजने योग्य, न पाए जाने योग्य – *तथागतं अननुविज्जोति वदामि,* म॰ नि॰ 1.194; *अननुविज्जोति असंविज्जमानो वा अविन्देय्यो वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).22.

अननुसन्धिक त्रि॰, [अननुसन्धिक], अनुसन्धियों अर्थात् जोड़ों से रहित, संयोजक तत्वों से रहित, असम्बद्ध – *न बुद्धानं अननुसन्धिका नाम कथा अत्थि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.113.

अननुसन्धिकगाथा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अननुसन्धिकगाथा], पूर्वापर क्रम-सम्बन्धों से रहित गाथा, वह गाथा, जिसमें पूर्वापरक्रमसम्बन्ध न हो, – *यस्मा चतुब्बिधा गाथा पुच्छितगाथा, ... सानुसन्धिकगाथा अननुसन्धिकगाथाति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 99.

अननुसय पु॰, अनुसेति से व्यु॰, अनुसय का निषे॰ [अननुशय], अनुशय का अभाव – *सो कामनन्दियापि अननुसया ...,* अ॰ नि॰ 2(1).226.

अननुसोचिय त्रि॰, [अननुशोच्य], शोक न करने योग्य – *भूतं सेसं दयितब्बं, वीतं अननुसोचियं'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.81; *अननुसोचियं न अनुसोचितब्बन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.82; – **जातक** नपुं॰, 328वें जा॰ का नाम, जा॰ अट्ठ॰ 3.79-83.

अननुस्सति स्त्री॰, अनुस्सति का निषे॰, तत्पु॰, [अननुस्मृति], अनुस्मृति की अनुपस्थिति या अभाव, स्मृति-विप्रमोष – *या अस्सति अननुस्सति अप्पटिस्सति अस्सति अस्सरणता अधारणता पिलापनता सम्मुसनता – इदं वुच्चति मुट्ठस्सच्चं,* विभ॰ 417; ध॰ स॰ 1356.

अननुस्सुत त्रि॰, [अननुश्रुत], परम्परा में अप्राप्त, वह, जिसे पहले कभी नहीं सुना गया है – *पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु,* दी॰ नि॰ 2.25; *ये ते समणब्राह्मणा पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु सामंयेव धम्मं अभिञ्ञाय,* म॰ नि॰ 2.434; *पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु सामं सच्चानि अभिसम्बुज्झि,* महानि॰ 344; – **धम्म** पु॰, [अननुश्रुतधर्म], पहले, कभी नहीं जाना गया धर्म – *अननुस्सुतधम्मेसु, पुब्बे दुक्खादिकेसु च,* अप॰ 2.284; – **वग्ग** स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 3(1). 253-259.

अनन्त[1] त्रि॰, अन्त का निषे॰, तत्पु॰ [अनन्त], सीमारहित, असीम, निस्सीम, अन्तरहित – *विञ्ञाणं अनिदस्सनं, अनन्तं सब्बतोपभं,* दी॰ नि॰ 1.203; *उप्पादन्तो वा वयन्तो वा ठितस्स अञ्ञथत्तन्तो वा एतस्स नत्थीति अनन्तं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.294; *आकासो अतिवित्थारताय अनन्तो,* मि॰ प॰ 258; *चत्तारि हि अनन्तानि – आकासो अनन्तो, चक्कवाळानि अनन्तानि, सत्तनिकायो अनन्तो, बुद्धञ्ञाणं अनन्तं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 205; *अच्चन्तमनन्तं सन्तं, अमतं अपलोकितं,* अभि॰ अव॰ 104; *अपलोकितं निपुणमनन्तमक्खरं,* अभि॰ प॰ 7; – **क** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तक], सीमारहित, असीम, निस्सीम, अन्तरहित – *अनन्तको च आकासो, एवं बुद्धा अखोभिया,* अप॰ 1.43; – **काय** पु॰, राजा मिलिन्द के एक मन्त्री का नाम – *अथ खो देवमन्तियो च अनन्तकायो च मङ्कुरो च येनायस्मा नागसेनो तेनुपसङ्कमिंसु,* मि॰ प॰ 27; – **गुण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तगुण], अनन्त गुणों से युक्त – *सो भगवा विचित्तपुप्फरासि विय अनन्तगुणो अप्पमेय्यगुणो,* मि॰ प॰ 315; – **गुणसञ्चय** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अनन्त या निस्सीम गुणों का संकलन या संग्रह रखने वाली – *देसेति पवरं धम्मं, अनन्तगुणसञ्चयो,* अप॰ 2.151; – **गुणसागर** त्रि॰, अनन्त या निस्सीम गुणों का समुद्र, अनेक गुणों से परिपूर्ण – *तिस्सं बुद्धं समुद्दिस्स, अनन्तगुणसागरं,* अप॰ 1.128; – **गोचर** त्रि॰, [अनन्तगोचर], वह, जिसके ज्ञानप्रसार का क्षेत्र अनन्त है, अपर्यन्तगोचर, अनन्त गोचरवाला – *तं बुद्धमनन्तगोचरं, अपदं केन पदेन नेस्सथ,* जा॰ अट्ठ॰ 1.88; *अनन्तगोचरन्ति अनन्तारम्मणस्स सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स वसेन अपरियन्तगोचरं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.114; *इच्छा हि अनन्तगोचरा, विगतिच्छान नमो करोमसे'ति* जा॰ अट्ठ॰ 2.216; *इच्छा हि अनन्तगोचराति लद्धं हीळेत्वा अञ्ञमञ्ञं आरम्मणं इच्छन्ती अयं इच्छा नाम तण्हा अनन्तगोचरा,* तदे॰; – **जालि** पु॰, भाजनपालक थेर के पूर्ववर्ती जन्म का नाम – *तेपञ्ञासे इतो कप्पे, अनन्तजालिनामको, सत्तरतनसम्पन्नो, चक्कवत्ती महब्बलो,* अप॰ 1.229; – **जिन** पु॰, [अनन्तजिन], अनन्त अर्थात् निर्वाण पर विजय प्राप्त करने वाला, अनन्त विजेता, अनन्तजयी अर्हत् अथवा बुद्ध के लिये आजीवक उपक द्वारा प्रयुक्त शब्द – *यथा खो त्वं, आवुसो, पटिजानासि, अरहसि अनन्तजिनोति,* महाव॰ 12; *सो तं असहन्तो भद्दे, अहं अनन्तजिनस्स सन्तिकं गच्छामी'ति, मज्झिमदेसाभिमुखो पक्कामि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.218; – **ञाण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तज्ञान], अनन्तज्ञान से युक्त, अनन्तज्ञानान्वित (प्रधानतः बुद्ध के विशेषण के रूप में प्रयुक्त) – *अनन्तञाणं सम्बुद्धं, को दिस्वा नप्पसीदति,* अप॰ 1.170; *सो हि भगवा महापञ्ञो ... अनन्तञाणो अनन्ततेजो ...,* महानि॰ 130; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अनन्तता], निस्सीमता, असीमता, सीमाराहित्य – *अयं आकासो अनन्तो अनन्तोति वदन्ति, कुतस्स अनन्तता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.69; – **तेज** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्ततेजस्], अनन्त तेज से युक्त, अनन्त तेजवान्, असीम तेज वाला – *अनन्ततेजो अमितयसो, अप्पमेय्यो दुरासदो,* बु॰ वं॰ 309; *अनन्ततेजो अमितयसो, भूमिपालो महद्धनो,* अप॰ 1.42; *अनन्ततेजो अनन्तवीरियो अनन्तबलो बुद्धबलपारमिं गतो ...,* मि॰ प॰ 302; – **दस्सी** त्रि॰, [अनन्तदर्शिन्], अनन्त प्रज्ञा वाला, अनन्तदर्शन से सम्पन्न – *अनन्तदस्सी भगवाहमस्मि, जातिजरं सोकमुपातिवत्तो,* स॰ नि॰ 1(1).169; जा॰ अट्ठ॰ 3.318; *अनन्तदस्सी भगवा, गोतमो सक्यपुङ्गवो,* अप॰ 1.93; – **दोसुपद्दव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनन्तदोषोपद्रव], अनन्त दोषों, संकटों तथा हानियों का उपद्रव, अनन्त दोषों या विपत्तियों का उत्पात – *अनन्तदोसूपद्दवतोति आसीविसे निस्साय उप्पज्जनकानञ्हि दोसूपद्दवानं पमाणं नत्थि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.61; – **धिति** स्त्री॰, [अनन्तधृति], अनन्त धैर्य, कभी न अन्त होने वाला धैर्य, निस्सीम धृति – *सो भगवा असमो असमसमो ... अनन्तधिति अनन्ततेजो ... धम्मनगरं मापेसि,* मि॰ प॰ 302; – **नय** त्रि॰, [अनन्तनय], अनन्त नयों वाला, अनन्त पद्धतियों से युक्त – *अनन्तनयं समन्तपट्ठानं विचिनन्तो सत्ताहं वीतिनामेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.87; – **पञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰

[अनन्तप्रज्ञ], अनन्त प्रज्ञा वाला, अपरिमित प्रज्ञा वाला – *तथागतो होति अनन्तपञ्ञो,* सु॰ नि॰ 472; – **पटिभानवन्तु** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तप्रतिभानवत्], अनन्त प्रतिभा से सम्पन्न, अपरिमित प्रतिभा वाला – *तदा अवोच भगवा, अनन्तपटिभानवा,* अप॰ 2.147; – **परिमाण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तपरिमाण], अनन्त मात्रा वाला, अनन्त विस्तार वाला, अपरिमित विस्तार वाला – *अनञ्ञसाधारणे अनन्तापरिमाणे बुद्धगुणे,* उदा॰ अट्ठ॰ 226; – **परिवारता** स्त्री॰, भाव॰ [अनन्तपरिवारता], अनन्त समूह में होने की अवस्था, अनन्त विस्तार में होने की स्थिति – *अनन्तपरिवारता सुरूपता सुसण्ठानता ... एवमादीनि फलानि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 23; – **पभा** स्त्री॰, [अनन्तप्रभा], अनन्त प्रभा, व्याम, अशीति और अनन्त नामक तीन प्रभाओं में से एक – ब्यामासीतिअनन्तपभायुत्ता होन्ति, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.122; – **पोरिस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तपौरुष], असंख्य सेनाओं वाला, वह, जिसके पास विपुल सेना हो – *पहूतयोग्गो धनिमा, अनन्तबलपोरिसो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.102; – **बल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तबल], असीमित शक्ति से सम्पन्न, अत्यधिक बल वाला, अपरिमित बलोपपन्न – ... *सो भगवा असमो असमसमो ... अनन्तबलो बुद्धबलपारमिं गतो,* मि॰ प॰ 302; – **बलवाहन** त्रि॰, [अनन्तबलवाहन], असीमित सेना वाला – *सकलजम्बुदीपे मिलिन्देन रञ्ञा समो कोचि नाहोसि ... महाभोगो अनन्तबलवाहनो,* मि॰ प॰ 4; – **बुद्धवण्णनागाथा** स्त्री॰, [अनन्तबुद्धवर्णनागाथा], एक गाथा का शीर्षक, ग॰ वं॰ 66; – **भोगता** स्त्री॰, भाव॰ [अनन्तभोगता], भोगसाधनों की परिपूर्णता, भोगसाधनों की प्रचुरता – *अदिन्नादाना वेरमणिया महद्धनता ... अनन्तभोगता,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 23; – **यस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तयश], 1. अनन्त यश वाला, अपरिमित कीर्ति से विभूषित या अलंकृत – *अनन्तञाणो अनन्ततेजो अनन्तयसो,* महानि॰ 130; 2. पु॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम – *असीतिकप्पेनन्तयसो, चक्कवत्ती अहोसहं,* अप॰ 1.111.

अनन्त[2] पु॰, एक नागराज का विशेष नाम, शेषनाग का एक अभिधान – *अनन्तो नागराजा,* अभि॰ प॰ 651; *अनन्तभोगसंकाससंनिवेससिलायुता,* चू॰ वं॰ 73.120.

अनन्तर त्रि॰, [अनन्तर], 1. तुरन्त आगे या पीछे विद्यमान, अगला, अग्रवर्ती – *सुखस्सानन्तरं दुक्खं, दुक्खस्सानन्तरं सुखं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.409; *इमस्स अक्खरस्स अनन्तरं इमं अक्खरं कातब्ब'न्ति,* मि॰ प॰ 87; 2. एकदम तैयार, तुरन्त प्रकट होने वाला – *पञ्ञवतो कथेन्तस्स पटिभानं अनन्तरं होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.132; 3. वह, जो बहुत अधिक आन्तरिक नहीं है, जो भीतरी नहीं है, अगूढ़ – *देसितो ... मया धम्मो अनन्तरं अबाहिरं करित्वा,* दी॰ नि॰ 2.78; – **रं** निपा॰, क्रि॰ वि॰ [अनन्तरं], तुरन्त बाद में, बिना किसी व्यवधान के बाद में आने वाला (षष्ठ्यन्त अथवा पञ्चम्यन्त के साथ प्रायः प्रयुक्त) – *अनन्तरं हि जातस्स, जीविता मरणं धुवं,* थेरगा॰ 553; *मय्हं अग्गसावको ... ममानन्तरं सेनासनं लद्धुं अरहति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.215; *मनोद्वारेपि सब्बेसं, जवनानमनन्तरं,* अभि॰ अव॰ 71; – **रातीत** त्रि॰, [अनन्तरातीत], सद्यः-व्यतीत, तुरन्त बीता हुआ, अभी अभी बीता हुआ – *सो किर अनन्तरातीते अत्तभावे ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.204; – **रूपनिस्सय** पु॰, चौबीस प्रत्ययों में से अनन्तर नाम का एक प्रत्यय – *अनन्तरूपनिस्सयो पन अनन्तरपच्चयोव,* अभि॰ अव॰ 175; – **क** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनन्तरक], तुरन्त फल देनेवाला, सद्यः-फलदायी – *पञ्च कम्मानि आनन्तरिकानि,* ध॰ स॰ 1035; *मिच्छत्ततिके आनन्तरिकानीति अनन्तरायेन फलदायकानि, मातुघातककम्मादीनमेतं अधिवचनं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 386; – **गब्भ** पु॰, [अनन्तरगर्भ], अत्यधिक निकटवर्ती प्रकोष्ठ, पास वाला कमरा – *अयम्पि मिगारसेट्ठि अनन्तरगब्भे निसिन्नो धनञ्जयसेट्ठिनो ओवादं अस्सोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.222; – **गाथा** स्त्री॰, [अनन्तरगाथा], तुरन्त बाद में आयी हुई गाथा – *महासत्तोपि तेसं अनन्तरगाथाय कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.127; – **गेहवासी** त्रि॰, [अनन्तरगेहवासिन्], पड़ोसी, प्रतिवेशी, बहुत समीप में स्थित घर में रहने वाला – *अनन्तरगेहवासीनं आरोचेत्वा मग्गं पटिपज्जि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.121; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.137; – **ट्ठपना** स्त्री॰, [अनन्तरस्थापना], क्रमसंगत पद्धति में रखना, क्रमबद्ध पद्धति में विन्यसन, क्रमानुबद्ध संस्थापना – *अट्ठपनाति पठमुप्पन्नस्स अनन्तरट्ठपना मरियादट्ठपना वा,* विभ॰ अट्ठ॰ 464; – **त्तभाव** पु॰, [अनन्तरत्वभाव], इस जन्म के तुरन्त पूर्व वाला जन्म – *अनन्तरत्तभावे पनस्स माता यक्खिनी हुत्वा निब्बत्ता,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.291; – **त्तिक** नपुं॰, [अनन्तरत्रिक], अभिधम्म में प्रयुक्त मातृकाओं के बीच अगली त्रिकमातृका – *अनन्तरत्तिके अतीतं आरम्मणं एतेसन्ति अतीतारम्मणा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 92; – **त्थ** पु॰, तत्पु॰ [अनन्तरार्थ], बाद में आने वाला अर्थ, उत्तरकाल का अर्थ – *एत्थापि ततोति पदपूरणमत्ते निपातो, अनन्तरत्थे वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; – **निरुद्ध** त्रि॰, [अनन्तरनिरुद्ध], सद्यः-निरुद्ध, क्षण के व्यवधान के बिना

ही निरोध को प्राप्त - *अनन्तरपच्चयोति अनन्तरनिरुद्धा चित्तचेतसिका धम्मा,* अभि॰ अव॰ 175; - **पच्चय** पु॰, [अनन्तरप्रत्यय], अत्यासन्न कारण, चौबीस प्रत्ययों में से एक - *अनन्तरपच्चयोति अनन्तरनिरुद्धा चित्तचेतसिका धम्मा,* अभि॰ अव॰ 175; - **पच्चयकथा** स्त्री॰, [अनन्तरप्रत्ययकथा], कथा॰ के चौदहवें वर्ग की तीसरी कथा का एक शीर्षक; कथा॰ 399-402; - **पटिविस्सकघर** नपुं॰, [अनन्तरप्रतिवेशिकगृह], बिल्कुल बगल वाले पड़ोसी का घर, निकटतम प्रतिवेशीगृह - *घरा निक्खमित्वा अनन्तरं पटिविस्सकघरं गन्त्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.444, पाठा॰ अनन्तरं पटिविस्सकघरं; - **पेय्याल** पु॰, नपुं॰ [बौ॰ सं॰ अनन्तरपरियाय], किसी स्थल-विशेष की पुनरावृत्ति, किसी अनुच्छेद या परिच्छेद की पुनरावृत्ति - *अनन्तरपेय्यालं निट्ठितं,* परि॰ 205; पाठा॰ अन्तरपेय्यालं निट्ठितं, परि॰ 205; - **मण्डक** नपुं॰, महाबालुकगङ्गा के एक घाट का नाम - *रक्खणत्थं ठितो तित्थे नामेनन्तरमण्डके,* चू॰ वं॰ 72.16; - **वत्थु** नपुं॰, [अनन्तरवस्तु], ठीक पहले आयी कथा - *सेसं अनन्तरवत्थुसदिसमेव,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 81; - **विमोक्ख** त्रि॰, [अनन्तरविमोक्ष], सद्यः प्राप्त होने वाली विमुक्ति, सद्यः-प्राप्य विमोक्ष - *अट्ठपि विमोक्खा अनन्तरविमोक्खा नाम न होन्ति,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 110; - **सामन्त** पु॰, [अनन्तरसामन्त], पड़ोस का राजा, प्रतिवेशी राजा - *तुच्छं किर रज्जन्ति अनन्तरसामन्तकोसलराजा महतिया सेनाय आगन्त्वा नगरं परिवारेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.17; - **सुत्त** नपुं॰, [अनन्तरसूत्र], पूर्ववर्ती सूत्र - *अनन्तरसुत्ते वुत्तत्थमेव,* उदा॰ अट्ठ॰ 352.

अनन्तरधान नपुं॰, अन्तरधान का निषे॰, तत्पु॰ [अनन्तर्धान], अदृश्य न होना, अन्तर्हित न होना, विलुप्त न होना, अलोप, स्थिति, विद्यमानता - *सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति,* अ॰ नि॰ 1(1).23.

अनन्तरहित त्रि॰, [अनन्तरहित], अतिरोहित, अनाच्छादित, उन्मुक्त, खुला हुआ - *एसो सुदिन्नो अनन्तरहिताय भूमिया निपन्नो,* पारा॰ 15; *न च अनन्तरहिताय भूमिया पत्तो निक्खिपितब्बो,* महाव॰ 52.

अनन्तरा निपा॰, [अनन्तरा], 1. क्रि॰ वि॰, तुरन्त बाद में, आगे - *खयस्मिं पठमं ञाणं, ततो अञ्ञा अनन्तरा,* इतिवु॰ 39; अ॰ नि॰ 1(1).263; *अनन्तराति ततो चतुत्थमग्गञाणतो अनन्तरा अञ्ञा उप्पज्जति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.208; 2. **षष्ठ्यन्त तथा पञ्चम्यन्त के साथ उप॰ के रूप में प्रयुक्त;** अगला, इसके अतिरिक्त, तुरन्त बाद में - *सुमुखो अज्झुपावेक्खि, धतरट्ठस्सनन्तरा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.373; *कुसलो खत्तधम्मानं, ततो पुच्छि अनन्तरा,* तदे॰; *मनोधातुसम्पटिच्छनं पन चक्खुविञ्ञाणादीनं अनन्तरा रूपादिविजाननलक्खणं,* अभि॰ अव॰ 11; - **विमोक्ख** त्रि॰, [अनन्तराविमोक्ष], अग्र-मार्ग के तुरन्त बाद में उत्पन्न विमोक्ष - *अनन्तराविमोक्खासिं, अनुपादाय निब्बुता,* थेरीगा॰ 105; *अनन्तराविमोक्खासिन्ति अग्गमग्गस्स अनन्तरा उप्पन्नविमोक्खा आसिं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 110.

अनन्तरापयुत्त त्रि॰, चार प्रकार के गम्भीर पापकर्मों (आनन्तरीय कर्मों) के लिये उत्तरदायी व्यक्ति, चार गंभीर पापकर्म करने वाला - *अनन्तरापयुत्तो पुग्गलो अभब्बो सम्मत्तनियामं ओक्कमितुन्ति?,* कथा॰ 386; - **कथा** स्त्री॰, कथा॰ के तेरहवें वर्ग की तीसरी कथा का शीर्षक, कथा॰ 386-387.

अनन्तराय त्रि॰, अन्तराय का निषे॰, ब॰ स॰ [अनन्तराय], अन्तराय-रहित, उपसम्पदा की अर्हता के बाधक लक्षणों से रहित, बाधारहित, निर्विघ्न, निर्भय, कालव्यवधान के बिना - *दससु अन्तरायेसु एकेनपि अन्तरायेन अनन्तराया,* पाचि॰ अट्ठ॰ 195; *अक्खतन्ति वा अनाबाधं अनुप्पीळं, अनन्तरायेनाति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 298; - **यिक** त्रि॰, [अनन्तरायिक], बाधारहित, निर्बाध, निर्विघ्न, उपसम्पदा के लिये निर्दिष्ट दस प्रकार के अन्तरायों से मुक्त - *अनन्तरायिकोति यस्स दससु अन्तरायेसु एकोपि नत्थि,* चूळव॰ अट्ठ॰ 20; *अनन्तरायिका आपत्ति जानितब्बा,* परि॰ 236, पाठा॰ अन्तरायिका; - **टि॰** ब्रह्मचर्य आवास की परिपूर्णता में पांच बाधक तत्त्वों को अन्तराय कहते है। ये हैं : - 1. कम्मन्तरायिक 2. किलेसान्तरायिक 3. विपाकान्तरायिक 4. उपवादान्तरायिक 5. आणावितक्कान्तरायिक, इनसे युक्त भिक्षु 146वें पाचित्तिय-आपत्ति में आपतित होता है तथा जो इनसे रहित है वह अनन्तरायिक कहलाता है. इसी प्रकार उपसम्पदा-प्राप्ति के लिये 13 अनर्हताओं से मुक्त भिक्षु को भी अनन्तरायिक कहते हैं द्रष्ट॰ महाव॰ 97; - **यिकिनी** स्त्री॰, अन्तरायों अथवा भिक्षु-जीवन में प्रवेश के लिये अयोग्य बनाने वाले तत्त्वों से रहित भिक्षुणी; विघ्न तथा बाधाओं से सर्वथा मुक्त भिक्षुणी - *या पन भिक्खुनी भिक्खुनिया चीवरं ... सा पच्छा अनन्तरायिकिनी नेव सिब्बेय्य ...,* पाचि॰ 383.

अनन्तरे अ॰, अनन्तरा का सप्तम्यन्त रूप, समीप में, निकट में, पास में - *गङ्गाय चेव एकस्स च जातस्सरस्स अनन्तरे पण्णसालं कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.388; पाठा॰ अन्तरे.

अनन्तवण्ण त्रि., ब. स. [अनन्तवर्ण], अनन्त यश वाला, अप्रमेय यश वाला, अपरिसीम कीर्ति वाला - *अनन्तवण्णो अमितयसो, विचित्तसब्बलक्खणो,* अप. 1.352.

अनन्तवन्तु त्रि., [अनन्तवत्], अनन्त, असीम, निस्सीम, सीमारहित - *अनन्तवा लोको, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञ'न्ति,* उदा. 145; *अन्तवा लोको'ति वा, अनन्तवा लोको'ति वा,* दी. नि. 1.167; *अनन्तवा अत्ता च लोको चाति,* पटि. म. 150; *नेवन्तवा नानन्तवा लोको'ति,* मि. प. 146.

अनन्तवीरिय त्रि., [अनन्तवीर्य], असीमशक्ति से सम्पन्न, निस्सीम वीर्य वाला - *सो भगवा असमो असमसमो ... अनन्ततेजो अनन्तवीरियो ... धम्मनगरं मापेसि,* मि. प. 302.

अनन्तसञ्ञी त्रि., [अनन्तसंज्ञी], धर्मों में अनन्त की संज्ञा रखने वाला, धर्मों को अन्तहीन मानने वाला - *... यथासमाहिते चित्ते अनन्तसञ्ञी लोकस्मिं विहरामि,* दी. नि. 1.20; *... लोको'ति गहेत्वा ... अनन्तसञ्ञी होति ...,* दी. नि. अट्ठ. 1.98.

अनन्तादीनव त्रि., ब. स. [अनन्तादीनव], अन्त न होने वाले दैन्यभावों से युक्त, अनन्त विपदाओं या संकटों से पूर्ण, अनन्त अनर्थों से परिपूर्ण - *अनन्तादीनवो कायो, विसरुक्खसमूपमो,* अप. 2.115; *अनन्तादीनवा कामा, बहुदुक्खा महाविसा,* थेरीगा. 360.

अनन्तेवासिक त्रि., अन्तेवासिक का निषे., ब. स. [अनन्तेवासिक], **शा. अ.** अन्तेवासियों अर्थात् शिष्यों से विहीन उपाध्याय, **ला. अ.** आन्तरिक अपवित्र मनोभावों या क्लेशों से विनिर्मुक्त - *अनन्तेवासिकमिदं ... ब्रह्मचरियं वुस्सति अनाचरियकं,* स. नि. 2(2).139; *अनन्तेवासिकन्ति अन्तो वसनककिलेसविरहितं,* स. नि. अट्ठ. 3.46.

अनन्तोगध त्रि., ब. स. [अनन्तर्गत], वह, जो किसी में अन्तर्भूत नहीं है, बहिर्भूत - *अनन्तोगधसम्पदानत्थत्ता,* सद्द. 1.294.

अनन्दी त्रि., नन्दी का निषे. [अनन्दिन्], आनन्दरहित, मोदरहित - *अनन्दी अनघो भिक्खु, एवं जानाहि आवुसो'ति,* स. नि. 1(1).66.

अनन्ध त्रि., अन्ध का निषे., तत्पु. [अनन्ध], वह, जो अन्धा नहीं है, दृष्टियुक्त, चक्षुष्मान्, आंख वाला - *यथाहं इमम्हा आसना अनन्धो वुट्ठहेय्य'न्ति,* म. नि. 2.189; *कामा नाम अनन्धम्पि अन्धं करोन्ति,* उदा. अट्ठ. 297; *अनन्धेन एव अन्धेन विय भवितब्बं,* मि. प. 333; - **करण** त्रि., [करण], दृष्टियुक्त करना, चक्षुकरण, ज्ञानकरण - *अनन्धकरणो चक्खुकरणो ञाणकरणो,* इतिवु. 60.

अनन्वय त्रि., अन्वय का निषे., ब. स. [अनन्वय], अर्थ के साथ मेल न रखने वाला, तात्पर्य-रहित, बिना परिणाम का, प्रभावरहित - *अनन्वयं पियं वाचं, यो मित्तेसु पकुब्बति,* सु. नि. 257; *अनन्वयन्ति यं अत्थं दस्सामि, करिस्सामीति च भासति, तेन अननुगतं,* सु. नि. अट्ठ. 1.271.

अनन्वाहतचेत (स) त्रि., ब. स. [अनन्वाहतचेतस्], वह, जिसका चित्त भ्रमग्रस्त नहीं है, वह, जिसका चित्त विभ्रान्त या पर्याकुल नहीं है, द्वेष से अप्रतिहत चित्तवाला - *अनवस्सुतचित्तस्स, अनन्वाहतचेतसो,* ध. प. 39; *अनन्वाहतचेतसोति ... दोसेन अप्पटिहतचित्तस्साति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 1.176.

अनपगत त्रि., अपगत का निषे., तत्पु. [अनपगत], दूर न गया हुआ, दूर न ले जाया गया, अदूरीकृत, नहीं हटाया गया - *अनपायोति पटिघवसेन अनपगतो,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.61.

अनपच्च त्रि., अपच्च का निषे., ब. स. [अनपत्य], पुत्ररहित, सन्तानविहीन निस्सन्तान - *अनपच्चा अदायादा, तालावत्थू भवन्ति ते,* स. नि. 1(1).86; *अनपच्चाति भवन्तरेपि अपच्चं वा दायादं वा न लभन्तीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 5.266.

अनपदान त्रि., [अनपदान], अपराध-सम्बन्धी विवेक की बुद्धि न रखने वाला, निर्धारित मार्ग का आश्रय न लेने वाला - *अनपदानो गिहिसंसट्ठो विहरति अननुलोमिकेहि गिहिसंसग्गेहि,* महाव. 419; *बालो होति अब्यत्तो आपत्तिबहुलो अनपदानो,* महाव. 403.

अनपदेस त्रि., अपदेश का निषे., तत्पु. [अनपदेश], तर्करहित, निरर्थक, असंगत, अयुक्त, गहरे अर्थ से रहित - *अनिधानवतिं वाचं ... अनपदेसं अपरियन्तवतिं अनत्थसंहितं,* म. नि. 1.360; *अनपदेसन्ति सुत्तापदेसविरहितं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).227.

अनपनत त्रि., अपनत का निषे., तत्पु. [अनपनत], वह, जो झुका हुआ न हो, अविनत, अविनम्र, उद्दण्ड - *अनपनतं चित्तं ब्यापादे न इञ्जतीति आनेञ्जं,* उदा. अट्ठ. 150; पाठा. अनुपनत.

अनपराध त्रि., अपराध का निषे., ब. स. [अनपराध], निर्दोष, दोषरहित, अपराध-रहित, दोषमुक्त - *अनपराधं वीथियं चरन्तं गहेत्वा घातयितुन्ति,* मि. प. 180; *अदूसियन्ति अनपराधं,* जा. अट्ठ. 5.213.

अनपविद्ध त्रि., अपविद्ध का निषे., तत्पु. [अनपविद्ध], अप्रक्षिप्त, अनवज्ञात, नहीं छितराया हुआ, अनुपेक्षित, अतिरस्कृत, सत्कृत - *सक्कच्चन्ति सादरं, अनपविद्धं अनवञ्ञातं कत्वा*, पे. व. अट्ठ. 118.

अनपाय त्रि., अपाय का निषे., ब. स. [अनपाय], दुर्गतिरहित, चार प्रकार की अपायभूमियों में न पहुंचा हुआ, अपायरहित - *सो तेसु धम्मेसु अनुपायो अनपायो* अनिस्सितो ..., म. नि. 3.74.

अनपायी त्रि., अपायी का निषे., तत्पु. [अनपायिन्], कभी विलग न होने वाला, अपृथग्भूत, सदा साथ रहने वाला - *ततो नं सुखमन्वेति, छायाव अनपायिनी*, ध. प. 2; *छायाव अनपायिनीति ... सरीरप्पटिबद्धत्ता*, ध. प. अट्ठ. 1.25; *अनुग्गता सीलवती, छायाव अनपायिनी*, जा. अट्ठ. 6.304; *उत्तरो माणवो सत्तमासानि भगवन्तं अनुबन्धि छायाव अनपायिनी*, म. नि. 2.343.

अनपुंसक त्रि., नपुंसक का निषे., [अनपुंसक], नपुं. से भिन्न लिङ्गवाला - *अनपुंसकानि लिङ्गानि*, क. व्या. 85.

अनपेक्ख त्रि., अपेक्ख का निषे., ब. स. [अनपेक्ष], इच्छारहित, निष्काम, तटस्थ निरपेक्ष - *अपविद्धो सुसानस्मिं, अनपेक्खा होन्ति ञातयो*, सु. नि. 202; *येन येनेव गच्छति, अनपेक्खोव गच्छति*, थेरगा. 699; *नत्थि चेतसिकं दुक्खं, अनपेक्खस्स गामणि*, थेरगा. 707; *अनपेक्खाव गच्छन्ति, तेन मे समणा पिया*, थेरीगा. 282; *येन येनेव गच्छति, अनपेक्खोव गच्छति*, अ. नि. 2(2).61; - **पद** नपुं., कर्म. स., ऐसे स्वतन्त्र पद, जिनमें बुद्ध का वर्णन विशेषणों के बिना हुआ है - *अनपेक्खपदानीति पदानि दुविधा सियुं*, सद्द. 1.74; - **चित्तता** स्त्री., [अनपेक्षचित्तता], चित्त की अपेक्षारहित स्थिति, निरपेक्षचित्तता, उपेक्षा की अवस्था - *अनपेक्खचित्तताय चित्तेन न उग्गहितन्ति अनुग्गहीतं*, अ. नि. अट्ठ. 3.23; - **ता** स्त्री. भाव. - *काये च जीविते च अनपेक्खताय पेसितत्तो ...*, उदा. अट्ठ. 140; - **वा** त्रि., अपेक्खवा का निषे., तत्पु. [अनपेक्षावत्], उपेक्षा करने वाला, अपेक्षा से रहित, तृष्णारहित, वीततृष्ण - *अनपेक्खवाति वत्थु कामकिलेसकामेसु अपेक्खारहितो विगतच्छन्दरागो नित्तण्हो*, जा. अट्ठ. 1.146; *ये ते, भन्ते, पुग्गला अस्सद्धा ... सामञ्ञे अनपेक्खवन्तो ...*, अ. नि. 2(1).184.

अनपेक्खी त्रि., अपेक्खी का निषे., तत्पु. [अनपेक्षिन्], अपेक्षारहित, अनासक्त, निस्पृह, अतृष्णालु - *सीहंवेकचरं नागं, कामेसु अनपेक्खिनं*, सु. नि. 168; स. नि. 1(1).19; *तं ब्रूमि उपसन्तोति, कामेसु अनपेक्खिनं*, सु. नि. 863; *एतम्पि छेत्वान परिब्बजन्ति, अनपेक्खिनो कामसुखं पहाय*, ध. प. 346; जा. अट्ठ. 3.350.

अनपेत त्रि., अपेत का निषे., तत्पु. स. [अनपेत], अविरहित, अवियुक्त, संयुक्त, विलग नहीं हो चुका - *गिहिधम्मा अनपेतो*, अ. नि. 2(1).36, पाठा. अनपगतो.

अनप्प त्रि., अप्प का निषे., तत्पु. स. [अनल्प], प्रचुर, अधिक - *कुसलफलं अनप्पं*, दा. वं. 4.36; - **क** त्रि., निषे. तत्पु. स. [अनल्पक], प्रचुर, अधिक, प्रभूत, पर्याप्त - *लाभा वत नो अनप्पका, ये मयं भगवन्तं अद्दसाम*, सु. नि. 31; *तुम्हेहि पुञ्ञं पसुतं अनप्पकं*, पे. व. 25; *पहूतभोगेसु अनप्पकेसु, सुखं विराधाय दुक्खज्ज पत्ता'ति*, पे. व. 79; *पहायानप्पके भोगे*, थेरगा. 155; *तस्मिं मते दुक्खमनप्पकं मे*, जा. अट्ठ. 3.259; - **कतर** त्रि., तुल. वि. [अनल्पकतर], अधिक प्रचुर, अधिक उत्तम, अधिक भव्य - *पणीततराति अनप्पकतरा*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.155; पाठा. अतप्पकतरा; - **कपरिवार** त्रि., ब. स. [अनल्पकपरिवार], विशाल परिवार अथवा समूह वाला - *अमितयसाति न मितयसा अनप्पकपरिवारा*, वि. व. अट्ठ. 64; - **रूप** त्रि., ब. स. [अनल्परूप], विशाल रूप वाला, भव्य स्वरूप वाला - *किं भोजनं भुञ्जथ वो अनोमा, बलञ्च वण्णो च अनप्परूपा'ति*, जा. अट्ठ. 3.459; *मञ्ञे धनं लच्छसिनप्परूप'न्ति*, जा. अट्ठ. 4.299; - **सोकातुर** त्रि., निषे., तत्पु. [अनल्पशोकातुर], अत्यधिक शोक से पीड़ित - *निरये पन नेरयिका सत्ता दुक्खा तिब्बा ... अनप्पसोकातुरा ...*, मि. प. 149.

अनप्पमेय्य त्रि., अप्पमेय्य का निषे., तत्पु. [अनप्रमेय], अपरिमेय, अप्रमेय, वह, जिसको मापा न जा सके, अनवगाह्य, वह, जिसकी थाह न ली जा सके - *गोतमो अनप्पमेय्यो, मुळालपुप्फं विमलंव*, थेरगा. 1092; *पमाणकरकिलेसाभावतो अपरिमाणगुणताय च अनप्पमेय्यो*, थेरगा. अट्ठ. 2.387.

अनब्भक्खातुकाम त्रि., ब. स., किसी के विरुद्ध मिथ्या अभियोग लगाने की कामना न करने वाला - *अनब्भक्खातुकामा हि मयं भवन्तं गोतम'न्ति*, दी. नि. 1.146; *अनब्भक्खातुकामाति न अभूतेन वत्तुकामा*, दी. नि. अट्ठ. 1.259.

अनब्भाहतत्त नपुं., भाव. [अनभ्याहतत्व], अनुत्पीड़ित होने की अवस्था, अपीड़ित होना, बाधा-रहित होना - *उप्पादजराहि अनब्भाहतत्ता अजज्जरं*, नेत्ति. अट्ठ. 245.

अनब्भित त्रि., अब्भित का निषे., 1. अनाहूत, अनामन्त्रित, नहीं बुलाया गया - *अनब्भितो ततो आगा, नानुञ्ञातो इतो*

गतो, पे॰ व॰ 87; *अनब्भितोति अनव्हातो, एहि मय्हं पुत्तभावं उपगच्छा'ति एवं अपक्कोसितो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 54; *अनव्हितो अयाचितो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.142, पाठा॰ अनव्हितो; **2.** *विनय के विशेष सन्दर्भ में,* सङ्घ में पुनः प्रविष्ट न होने योग्य, आह्वान (अब्भान) के अयोग्य – *सो च भिक्खु अनब्भितो,* पारा॰ 290; *अनब्भितोति न अब्भितो, असम्पटिच्छितो अकतब्भानकम्मोति वुत्तं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.193; – **टि॰** विनय-आपत्ति में आपन्न भिक्षु मानत्त अथवा परिवास का पालन कर लेने के बाद सङ्घ में पुनः प्रवेश देने के योग्य बन जाता है, तथा ऐसा भिक्खु 'अब्भानारह' भिक्खु कहलाता है, किन्तु जब तक सङ्घ उसे पुनः प्रवेश योग्य नहीं मानता, तब तक वह 'अनब्भित' स्थिति में रहता है.

अनभाव पु॰, [अन्वभाव], पीछे होने वाला अभाव या अनस्तित्व, उच्छेद, निरोध, अविद्यमानता, अनुपस्थिति – *भिक्खु उप्पन्नं कामवितक्कं ... ब्यन्तिं करोति अनभावं गमेति,* दी॰ नि॰ 3.180; म॰ नि॰ 1.15; *अनभावं गमेतीति अनु अनु अभावं गमेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).88; म॰ नि॰ 1.285; अ॰ नि॰ 1(2).16; *न अनभावं गमेतीति न अनुअभावं अवड्ढिं विनासं गमेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.250; महानि॰ 77; – **कत** त्रि॰, [अन्वभावकृत], आगे चलकर निरुद्ध या विनष्ट, बाद में समुच्छिन्न – *ये ते, ब्राह्मण, रूपभोगा ... ते तथागतस्स पहीना ... अनभावंकता आयतिं अनुप्पादधम्मा,* पारा॰ 2; *यथा नेसं पच्छाभावो न होति, तथा कता होन्ति, तस्मा आह- अनभावंकता'ति, अयञ्हेत्थ पदच्छेदो – अनुअभावं कता अनभावंकताति, अनभावं गता तिपि पाठो, तस्स अनुअभावं गताति अत्थो, तत्थ पदच्छेदो अनुअभावं गता अनभावं गताति यथा अनुअच्छरिया अनच्छरियाति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.97, अप॰ अनभावकत.

अनभिज्झा स्त्री॰, अभिज्झा का निषे॰, तत्पु॰ [अनभिध्या], अलोभ, अनासक्ति, तीन कुशलमूलों में से एक, विराग, तृष्णा का अभाव – *चत्तारि धम्मपदानि – अनभिज्झा धम्मपदं, ... सम्मासमाधि धम्मपदं,* दी॰ नि॰ 3.183; *अनभिज्झा धम्मपदं नाम अलोभो वा अलोभसीसेन अधिगतज्झानविपस्सनामग्गफलनिब्बानानि वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.186; *अहमेतं अनभिज्झं धम्मपदं पच्चक्खाय,* अ॰ नि॰ 1(2).35; *अनभिज्झातिआदीसु अभिज्झापटिक्खेपेन अनभिज्झा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.280; – **लु** त्रि॰, [अनभिध्यालु], निस्पृह, निराकांक्ष, तृष्णाविनिर्मुक्त, अलोभी, लोभरहित – *अनभिज्झालूति नित्तण्हो हुत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.280; *अभिज्झालुनोपि अनभिज्झालुनोपि,* दी॰ नि॰ 1.123; *मयमेत्थ अनभिज्झालू भविस्सामा'ति सल्लेखो करणीयो,* म॰ नि॰ 1.53; *अनभिज्झालुस्स अभिज्झा पहीना होति,* नेत्ति॰ 43; – **सहगत** त्रि॰ [अनभिध्यासहगत], लोभरहित, तृष्णाविनिर्मुक्त, अनासक्त – *अनभिज्झासहगतेन चेतसा विहरति,* म॰ नि॰ 3.98.

अनभिज्झित त्रि॰, निषे॰ तत्पु॰ [अनभिध्यित], अभिध्या, आसक्ति तथा लोभादि से रहित, तृष्णा का अनालम्बन या अविषय – *अनभिज्झितं सेरितं पेक्खमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो,* सु॰ नि॰ 40; *एवं सन्तेपि लोभाभिभूतेहि सब्बकापुरिसेहि अनभिज्झिता अनभिपत्थिता पब्बज्जा तं अनभिज्झितं परेसं अवसवत्तनेन धम्मपुग्गलवसेन च सेरितं पेक्खमानो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.67.

अनभिज्झितु पु॰, क॰ ना॰ का निषे॰, अभिध्या, से रहित, आसक्ति-विरहित, लोभादि से मुक्त – *यं तं परस्स परवित्तूपकरणं तं अनभिज्झाता होति,* अ॰ नि॰ 3(2).254.

अनभिञ्ञात त्रि॰, अभिञ्ञात का निषे॰ [अनभिज्ञात], वह, जो अच्छी तरह से ज्ञात न हो अथवा जो अभिज्ञा नामक अर्हत् के ज्ञान का विषय न हो – *अमतं तेसं, भिक्खवे, अनभिञ्ञातं येसं कायगतासति अनभिञ्ञाता,* अ॰ नि॰ 1(1).62; *तत्थ अञ्ञतरोति नामगोत्तवसेन अनभिञ्ञातो अपाकटो एको,* उदा॰ अट्ठ॰ 43.

अनभिञ्ञाय अभि + √ञा के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अनभिज्ञाय], ठीक से न जानकर, अभिज्ञा ज्ञान द्वारा ग्रहण न कर – *एतेते उभो अन्ते अनभिञ्ञाय ओलीयन्ति एके,* उदा॰ 154; *उभो अन्ते अनभिञ्ञायाति ते एते यथावुत्ते उभोपि अन्ते अजानित्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 287.

अनभिनत अभि + √नम के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनभिनत], राग आदि क्लेशों के प्रति असमर्पित या अविषयीभूत, राग आदि क्लेशों से मुक्त – *सतिमतो विपस्सिस्स अनभिनतस्स नो अपनतस्स,* म॰ नि॰ 2.55; *अनभिनतं चित्तं रागे न इञ्जतीति आनेञ्जं,* पटि॰ म॰ 377.

अनभिनन्दन / अनभिनन्दना नपुं॰/स्त्री॰ [अनभिनन्दन, अनभिनन्दना], अप्रसन्नता, अप्रासादिकता, असुमनस्कता – ... *तेसमयं दिट्ठि असारागाय सन्तिके, ... अनभिनन्दनाय सन्तिके अनज्झोसानाय सन्तिके ...,* म॰ नि॰ 2.81.

अनभिनन्दित त्रि॰, अभिनन्दित का निषे॰, तत्पु॰ [अनभिनन्दित], वह, जिसका स्वागत न किया गया हो, अवाञ्छित, वह, जो अभीष्ट न हो, नहीं इच्छित – *सो सुखञ्चे वेदनं वेदेति*

... *अनभिनन्दिता'ति पजानाति,* म॰ नि॰ 3.293; *विञ्ञाणं अनाहारं अनभिनन्दितं अप्पटिसन्धिकं तं निरुज्झति,* नेत्ति॰ 16; *अनभिनन्दितन्ति अभिनन्दनभूताय तण्हाय पहीनत्ता एव अपत्थितं,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 202; *तस्स इधेव, भिक्खवे, सब्बवेदयितानि अनभिनन्दितानि सीति भविस्सन्ति,* इतिवु॰ 28.

अनभिनिब्बत्त त्रि॰, अभिनिब्बत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनभिनिर्वृत्त], अप्रादुर्भूत, अनुत्पन्न, अप्रकट – *ये धम्मा अजाता अभूता असञ्जाता अनिब्बत्ता अनभिनिब्बत्ता अपातुभूता अनुप्पन्ना ... इमे धम्मा अनुप्पन्ना,* ध॰ स॰ 1042.

अनभिनिब्बत्ति स्त्री॰, अभिनिब्बत्ति का निषे॰ [अनभिनिर्वृत्ति], अनुत्पत्ति, अपुनर्भव, अप्रतिसन्धि – *अनभिनिब्बत्तिया ... सति इदं सुखं पाटिकङ्खं,* अ॰ नि॰ 3(2).100; – **सामग्गी** स्त्री॰ [अनभिनिर्वृति-सामग्री], पुनर्जन्म का न होना, अनेक प्रकार की सामग्रियों में से एक – *बहु चेपि भिक्खू ... परिनिब्बायन्ति; न तेसं ... पञ्ञायति ... अयं अनभिनिब्बत्तिसामग्गी,* महानि॰ 95.

अनभिनेय्य अभि + √नी के सं॰ कृ॰ का निषे॰, नहीं ले जाने या प्राप्त कराने योग्य – *सारम्भे चे भिक्खु वत्थुस्मिं ... अनभिनेय्य वत्थुदेसनाय,* पारा॰ 229.

अनभिपत्थित त्रि॰, अभिपत्थित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनभिप्रार्थित], नहीं इच्छित, वह, जिसकी कामना नहीं की गई हो – *सन्तेपि लोभाभिभूतेहि सब्बकापुरिसेहि अनभिज्झिता अनभिपत्थिता पब्बज्जा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.67.

अनभिप्पेत त्रि॰, अभिप्पेत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनभिप्रेत], वह, जो अभिप्रेत न हो, जो अभीष्ट न हो, अनिच्छित, अवाञ्छित – *आसन्ने अनभिप्पेते अयं पुरे-सद्दो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.41, पाठा॰ अनागते.

अनभिभवनीय त्रि॰ अभिभवनीय का निषे॰, तत्पु॰ [अनभिभवनीय], पराभूत न किये जाने योग्य, अनादृत या तिरस्कृत न करने योग्य – *तानियेव अस्सद्धियादीहि अनभिभवनीयतो अकम्पियट्ठेन सम्पयुत्तधम्मेसु थिरभावेन बलानी'ति वेदितब्बानि,* उदा॰ अट्ठ॰ 248; – **ता** स्त्री॰ भाव॰ [अनभिभवनीयता], अनभिभूत होने की स्थिति अपराजेयता – ... *अत्तनो केनचि अनभिभवनीयतमेव ताव दस्सेन्तो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 102; – **त्त** नपुं॰ भाव॰ [अनभिभवनीयत्व], उपरिवत् – *तं पन ठानं सकलेपि इमस्मिं कप्पे अग्गिना अनभिभवनीयत्ता कप्पट्ठियपाटिहारियं नाम जातं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.212; *अजेय्या विहिंसितुम्पि अनभिभवनीयत्ता अजेय्या च अहेसुं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.46.

अनभिभूत त्रि॰, अभि + √भू के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनभिभूत], वह, जो अभिभूत न हो, जो जीता न गया हो, अविजित अपराजित, अप्रभावित – *एसो हि, भिक्खु, ब्रह्मा महाब्रह्मा अभिभू अनभिभूतो ...,* म॰ नि॰ 1.410; दी॰ नि॰ 1.16; *अनभिभूतोति अञ्ञेहि अनभिभूतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).299; *तण्हाभिभूतस्स हि दुक्खा पटिपदा होति, अनभिभूतस्स सुखा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 228.

अनभिमत त्रि॰, अभि + √मन के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनभिमत], अनचाहा, अनभीप्सित – *अनभिमतानि रूपानि,* सद्द॰ 1.122.

अनभिरत त्रि॰, अभि + √रम के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनभिरत], (भिक्षुभाव से) असन्तुष्ट, अप्रसन्न, अनासक्त, गृहस्थ जीवन में आनन्द या प्रमोद प्राप्त न करता हुआ – *न खो अहं, आवुसो, अनभिरतो ब्रह्मचरियं चरामि,* पारा॰ 20; *अनभिरतोति उक्कण्ठितो, गिहिभावं पत्थयमानोति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.167; *कच्चि नो त्वं, आवुसो सेय्यसक, अनभिरतो ब्रह्मचरियं चरसी'ति,* पारा॰ 147; *अनभिरतोति विक्खित्तचित्तो कामरागपरिळाहेन परिडय्हमानो न पन गिहिभावं पत्थयमानो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.95; *अनभिरता ब्रह्मचरियं चरन्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.26; – **सञ्ञा** स्त्री॰, [सञ्ज्ञा], लौकिक सुखों या आनन्दों में शून्यता की संज्ञा – *सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा,* अ॰ नि॰ 2(1).74; *अनभिरतसञ्ञाति सब्बस्मिं तेधातुसन्निवेसे लोके उक्कण्ठितस्स उप्पज्जनकसञ्ञा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.30; – **सञ्ञापरिचित** त्रि॰, लौकिक सुखों में अनासक्ति की संज्ञा से परिचित – *सब्बलोके अनभिरतसञ्ञापरिचितेन,* अ॰ नि॰ 2(2).198.

अनभिरति त्रि॰, अभिरति का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनभिरति], **1. शा॰ अ॰** असन्तुष्टि, मन का उचाट, मन में आनन्द या प्रमोद का अभाव – *यदा ते अनभिरति उप्पज्जति रागो चित्तं अनुद्धंसेति ...,* पारा॰ 147; *यदा ते अनभिरति उप्पज्जतीति ... कामरागवसेन उक्कण्ठितता विक्खित्तचित्तता उप्पज्जति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.95; *सचे उपज्झायस्स अनभिरति उप्पन्ना होति, सद्धिविहारिकेन वूपकासेतब्बो,* महाव॰ 54; **2. ला॰ अ॰** एकान्त-जीवन सहन करने की अक्षमता, संन्यास में भय या उद्वेग – *तस्स ... अनभिरति परितस्सना उपपज्जति,* दी॰ नि॰ 1.15; *अनभिरतीति अपरस्सापि सत्तस्स आगमनपत्थना,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.95; – **जातक** नपुं॰, जा॰ सङ्ख्या 65 तथा 186 का शीर्षक; – **पीळित** त्रि॰, [अनभिरतिपीड़ित], असन्तुष्टि अथवा भिक्षु-जीवन के प्रति अनभिरति के भाव से पीड़ित,

असन्तोष से व्यथित - *इदं सत्था कुणालदहे विहरन्तो अनभिरतिपीळिते पञ्चसते भिक्खू आरब्भ कथेसि*, जा. अट्ठ. 5.408; - **रस** त्रि. ब. स., अनभिरति के कृत्य वाला - *तस्सा अक्खमनलक्खणा वा, तत्थ अनभिरतिरसा*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).114; - **सञ्ञी** त्रि., लौकिक सुखों में अनासक्ति की संज्ञा रखने वाला - *सब्बलोके अनभिरतिसञ्ञी*, अ. नि. 1(2).174; *अनभिरतिसञ्ञीति सब्बस्मिम्पि तेधातुके लोकसन्निवासे अनभिरताय उक्कण्ठितसञ्ञाय समन्नागतो*, अ. नि. अट्ठ. 2.341.

अनभिरद्ध त्रि., अभिरद्ध का निषे., तत्पु. स., अप्रसन्न, अप्रसन्न मन वाला - *कुपितो अनत्तमनो अनभिरद्धो आहतचित्तो खिलजातो ...*, पारा. 255; *अनभिरद्धोति न सुखितो न वा पसादितोति अनभिरद्धो*, पारा. अट्ठ. 2.154; *अनभिरद्धस्स हि मनो दुक्खपदट्ठानत्ता अत्तनो मनो नाम न होति*, ध. स. अट्ठ. 188.

अनभिरद्धि त्रि., अभिरद्धि का निषे., तत्पु. स. असन्तुष्टि, अप्रसन्नता, कोप - *कोधाघाता कोप-रोसा व्यापादो अनभिरद्धि च*, अभि. प. 164; *तत्र तुम्हेहि न अघातो ... न चेतसो अनभिरद्धि करणीया*, दी. नि. 1.3; *नेव अत्तनो न परेसं हितं अभिराधयतीति अनभिरद्धि, कोपस्सेतं अधिवचनं*, दी. नि. अट्ठ. 1.49; *चेतसो आघातो अप्पच्चयो अनभिरद्धि अज्झत्तं अवूपसन्तं होति*, अ. नि. 1(1).94; *अनभिरद्धीति कोपोयेव, सो हि अनभिराधनवसेन अनभिरद्धीति वुच्चति*, अ. नि. अट्ठ. 2.50.

अनभिरमना स्त्री., अभिरमना का निषे., तत्पु. स. [अनभिरमणा], असन्तुष्टि, अप्रसन्नता, मन का उचट जाना - *पन्तेसु वा सेनासनेसु ... अरति अरतिता अनभिरति अनभिरमणा ... अयं वुच्चति अरति*, विभ. 403.

अनभिराध पु., अभिराध का निषे., तत्पु. स. [अनभिराधन], अप्रसन्नता, असंतुष्टि - *अनभिराधवसेन अनभिरद्धीति वुच्चति*, अ. नि. अट्ठ. 2.50, द्रष्ट. अनभिरद्धि.

अनभिसङ्खरोति अभि + सं + √कर के वर्त. प्र. पु., ए. व. का निषे. [अनभिसंस्करोति], चेतना द्वारा अभिसंस्कृत नहीं करता है - **सङ्खच्च** पू. का. कृ. - *तदप्पतिट्ठितं विञ्ञाणं अविरूळ्हं अनभिसङ्खच्चविमुत्तं*, स. नि. 2(1).49; *अनभिसङ्खच्च विमुत्तन्ति पटिसन्धिं अनभिसङ्खरित्वा विमुत्तं*, स. नि. अट्ठ. 2.241; - **ङ्खत** भू. क. कृ. का निषे. [अनभिसंस्कृत], अपरिष्कृत, - **ताभिधान** नपुं., सामान्य जनों की वाणी या अभिधान - ... *अभिसङ्खताभिधानानि अनभिसङ्खताभिधानानीति द्वेधा दिस्सन्तो ...*, सद्द. 1.75.

अनभिसमय पु., अभिसमय का निषे. [बौ. सं. अनभिसमय], अविद्या, अज्ञान, अदर्शन - *रूपे, खो, वच्छ, अनभिसमया ... रूपनिरोधगामिनिया पटिपदाय अनभिसमया ...*, स. नि. 2(1).258; *यं एवरूपं अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो ... अयं वेमत्तता*, नेत्ति. 63-64; *अभिसमयोतिपि पञ्ञा, सा तं आकारं अभिसमेति, अविज्जा पन उप्पज्जित्वा तं अभिसमेतुं न देतीति अनभिसमयो*, नेत्ति. अट्ठ. 256; *अभिमुखो हुत्वा धम्मेन न समेति, न समागच्छतीति अनभिसमयो*, ध. स. अट्ठ. 293; द्रष्ट. अभिसमय के अन्त.

अनभिसमेत त्रि., अभि + सं + √इ के भू. क. कृ. का निषे. [अनभिसमित], प्रज्ञा द्वारा अगृहीत, असाक्षात्कृत, अप्राप्त, अज्ञात, अदृष्ट - *अञ्ञातं अदिट्ठं अप्पत्तं असच्छिकतं अनभिसमेतं*, अ. नि. 3(1).199.

अनभिसमेतावी त्रि., अभि + सं + √इ के भू. क. कृ. (तावी प्रत्यय) का निषे., अज्ञाता, अद्रष्टा, साक्षात्कार न करने वाला; आर्यसत्यों आदि का ज्ञान-दर्शन न करने वाला - *अनभिसमेतावीनं तेसं समुदयसच्चं उप्पज्जित्थ नो च तेसं मग्गसच्चं उप्पज्जित्थ*, यम. 1.317; *अनभिसमेतावीनन्ति चतुसच्चपटिवेधसङ्खातं अभिसमयं अप्पत्तसत्तानं*, यम. अट्ठ. 311.

अनभिसम्बुद्ध त्रि., अभिसम्बुद्ध का निषे., तत्पु. स. [अनभिसम्बुद्ध], 1. **कर्म. वा.** नहीं ज्ञात, नहीं जाना गया, नहीं बूझा गया, अज्ञात, अदृष्ट - *सम्मासम्बुद्धस्स ते पटिजानतो इमे धम्मा अनभिसम्बुद्धाति*, म. नि. 1.104; 2. **कर्तृ. वा.** सम्बोधिज्ञान नहीं पाया हुआ बोधिसत्त्व - *पुब्बेव सम्बोधा, अनभिसम्बुद्धस्स बोधिसत्तस्सेव सतो*, म. नि. 1.127; अ. नि. 1(1).292.

अनभिसर / अनभिस्सर त्रि., ब. स. [अनभिसर], अत्राण, अशरण, असहाय शरणविरहित - *अताणो लोको अनभिसरो*, म. नि. 2.265; *अनभिस्सरोति असरणो अभिसरित्वा अभिगन्त्वा अस्सासेतुं समत्थेन विरहितो*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.216; *अनभिस्सरोति अभिसरित्वा अभिगन्त्वा ब्याहरणेन अस्सासेतुं समत्थेन रहितो असहायोति वा अत्थो*, पटि. म. अट्ठ. 2.13.

अनभिसंभवनीय त्रि., अभिसंभवनीय का निषे., अप्राप्तव्य, अगम्य, अबोध्य, नहीं समझने योग्य - *ब्रह्मुनो पकतिवण्णो, अनभिसम्भवनीयो सो देवानं ...*, दी. नि. 2.154; *अनभिसम्भवनीयो च सो अञ्ञेहीति-असामन्तपञ्ञो*, पटि. म. 367.

अनभिसित्त त्रि., अभिसित्त का निषे. [अनभिषिक्त], वह, जिसका अभिषेक न किया गया हो - *रञ्ञो खत्तियस्स*

मुद्धावसित्तस्स जेट्ठो पुत्तो होति आभिसेको अनभिसित्तो अचलप्पत्तो, अ. नि. 1(1).131; *अनभिसित्तोति अभिसेकारहोपि काणकुणिआदिदोसरहितो सकिं अभिसित्तो पुन अभिसेके आसं न करोति,* अ. नि. अट्ठ. 2.79.

अनमतग्ग त्रि., ब. स. [बौ. सं. अनवराग्र], अवर-कोटि, अग्र-कोटि से रहित और अग्र-रहित, निचली और ऊपरी सीमाओं से रहित, प्रारम्भिकतम एवं अन्तिम कोटि से विनिर्मुक्त, अनादि, अनन्त – *अनमतग्गोयं, भिक्खवे, संसारो,* स. नि. 1(2).161; *अनमतग्गोति अनु अमतग्गो, वस्ससतं वस्ससहस्सं ञाणेन अनुगन्त्वापि अमतग्गो अविदितग्गो, नास्स सक्का इत्तो वा एत्तो वा अग्गं जानितुं अपरिच्छिन्नपुब्बापरकोटिकोति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 2.139; *अथ वा 'संसारचक्कन्ति अनमतग्गं संसारवट्टं वुच्चति,* विसुद्धि. 1.190; *तत्थ अनमतग्गं संसारवट्टन्ति अनु अनु अमतग्गं अविञ्ञातकोटिकं संसारमण्डलं,* विसुद्धि. टी. 1.208; – **टि.** इसका प्रयोग सामान्यतया संसार-सागर के संकेतक के रूप में प्राप्त, आधुनिक विद्वानों द्वारा व्युत्पत्ति-परक निर्वचन अनेक रूपों में प्राप्त, द्रष्ट. पिशेल, प्राकृत भाषाओं का व्याकरण (जर्मन) पृ. 251, पा. टि. 1 तथा सद्द. 2.396, पा. टि. 10; – **कथा** स्त्री., [अनवराग्रकथा], अनादि एवं अनन्त सांसारिक यात्रापथ से सम्बद्ध कथा – *अनमतग्गकथं कथेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.101; – **ता** स्त्री., भाव., संसारचक्र की अनादिता एवं अनन्तता – *एवं वुत्तेन वारेन संसारस्स अनमतग्गता साधिता होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).234; – **त्त** नपुं., भाव., उपरिवत् – *संसारं अनमतग्गतो संसारस्स अनु अमतग्गत्ता ञाणेन अनुगन्त्वापि अमतअग्गत्ता अविदितग्गत्ता,* थेरीगा. अट्ठ. 312; – **धम्मदेसना** स्त्री., [अनवराग्रधर्मदेशना], संसार की अनादिता एवं अनन्तता के विषय में धर्मोपदेश – *सत्थारं उपसङ्कमित्वा अनमतग्ग-धम्मदेसनं सुत्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.268; – **परियाय** पु., [अनवराग्रपर्याय], संसार की अनादिता एवं अनन्तता के विषय में धर्मोपदेश का एक प्रकार – *एवं सत्थरि अनमतग्गपरियायं कथेन्ते ...,* ध. प. अट्ठ. 1.393; – **परियायकथा** स्त्री., [अनवराग्रपर्यायकथा], उपरिवत् – *रक्खितत्थेरो पन ... अनमतग्गपरियायकथाय वनवासिके पसादेसि,* पारा. अट्ठ. 1.48; – **भाव** पु., संसार की अनादिता एवं अनन्तता – *अनमतग्गतोति संसारस्स अनमतग्गभावतो,* थेरीगा. अट्ठ. 313; – **संयुत्त** नपुं., स. नि. के एक संयुत्त का शीर्षक – *संयुत्तं अनमतग्गं कथेसि जनमज्झगो,* म. वं 12.31.

अनमतग्गिय त्रि., नपुं. में प्रयोग में प्राप्त [अनवराग्रीय], संसार की अनादिता एवं अनन्तता-विषयक कथन या वक्तव्य – *अन्तलिक्खे ठितो तत्थ, देसेसि अनमतग्गियन्ति,* पारा. अट्ठ. 1.48; *थेरो ... नन्दनवने अनमतग्गियानि कथेसि,* पारा. अट्ठ. 1.58; – **सुत्त** नपुं., [सूक्त, सूत्र?], उपरिवत् – *अनमतग्गियसुत्तं च चरियापिटकं अनुत्तरं,* दी. वं. 14.45, तुल. म. वं. 15.186.

अनमस्सनभाव पु., नमस्सनभाव का निषे., तत्पु. स. [अनमनभाव], उद्दण्डता, अशालीनता, अविनम्रता, अशिष्टता – ... *नमस्सनभावं वा अनमस्सनभावं वा तुम्हेव जानाथ,* ध. प. अट्ठ. 2.369-370.

अनम्बिल त्रि., अम्बिल का निषे., ब. स. [अनाम्ल], **1.** खटाई के बिना तैयार किया हुआ – *अम्बिलानम्बिलमच्छमंसानं धूपनवासं घायित्वा,* जा. अट्ठ. 1.236; **2.** निषे. तत्पु. स., अम्लरहित, खटाईरहित – *यथा अनम्बिलं तक्कं वा कञ्जिकं वा परिणामवसेन परिवत्तित्वा अम्बिलं होति,* जा. अट्ठ. 4.11.

अनम्हिकाल पु., व्यु. अनिश्चित, अम्हिकाल का निषे., [अस्मयकाल, अमास्मिकाल?], विपत्ति का काल, दुर्गति का समय, अप्रसन्नता का काल, रोदनकाल – *अनम्हिकाले सुसोणि, किन्नु जग्घसि सोभने,* जा. अट्ठ. 3.194; *अनम्हिकालेति रोदनकाले,* जा. अट्ठ. 3.195.

अनय[1] पु., नय का निषे., तत्पु. स. [अनय], दुराचार, अनीति, दुर्नीति, कुमार्ग, विपत्ति, व्यसन – *अनयं नयति दुम्मेधो, अधुरायं नियुञ्जति,* जा. अट्ठ. 4.216; *अनयं नयतीति अकारणं कारणन्ति गण्हाति,* जा. अट्ठ. 4.217; *नयिदं अनयेन जीवितं, नाहारो हदयस्स सन्तिको,* थेरगा. 123; *इदं मम जीवितं अनयेन अञायेन वेळुदानपुप्फदानादिअनेसनाय न होति जीवितकन्तिया अभावतो,* थेरगा. अट्ठ. 1.266.

अनय[2] पु., न एत्थ अयो ति अनयो [अनय], **क.** कुमार्ग, विपत्ति, अनीति, दुर्नीति, अर्थहानि, व्यसन – *अनयो व्यसने चेव सन्दिस्सति विपत्तियं,* अभि. प. 979; *एत्थ न अयोति अनयो, अवड्ढिया एतं नाम,* दी. नि. अट्ठ. 2.95; *अनयमापन्ना ब्यसनमापन्ना यथाकामकरणीया पापिमतो,* म. नि. 1.233; *अयं सकलस्स यूथस्स अनयो अवुड्ढि महाविनासो कतोति,* जा. अट्ठ. 3.315; **ख.** त्रि., महाविनाशकारी, महाविनाश करने वाला – *तस्मा तेसं अनयो महाविनासकारको हुत्वा,* जा. अट्ठ. 4.163; तुल. अगति; – **ब्यसन** नपुं., द्व. स. [अनयव्यसन], अनय और व्यसन, हानि और दुर्भाग्य – *अनयब्यसनं आपादेस्सामी'ति,* दी. नि. 2.56; *हितञ्च सुखञ्च*

वियस्सति विक्खिपतीति ब्यसनं ञातिपारिजुञ्ञादीनं एतं नामं, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.95; – **ब्यसनापत्ति** स्त्री॰, [अनयव्यसनापत्ति], अनर्थ या विपत्तियों का आकर गिरना या उनमें फंस जाना, व्यसनापन्नता – *तासं इत्थीनं अग्गिम्हि अनयब्यसनापत्तिहेतुं,* उदा॰ अट्ठ॰ 313.

अनयूपरम पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनयोपरम], विपत्ति का उपशमन, दुर्भाग्य का अन्त – *विनये अनयूपरमे परमे, सुजनस्स सुखानयने नयने, पटु होति पधानरतो न रतो इध यो पन सारमते रमते,* विन॰ वि॰ 37, उत्त॰ वि॰ 778.

अनरह[1] त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनर्ह], अयोग्य, अपात्र, कुपात्र, अप्रतिरूप – *यो ... पुग्गलो पापिच्छो ... अयुत्तो अप्पत्तो अननुच्छविको अनरहो अप्पतिरूपो धुतङ्गं समादियति,* मि॰ प॰ 322.

अनरह[2] पु॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनर्हत्], वह, जो अर्हत् नहीं है, शैक्ष्य अथवा पृथक्जन, जिसके आस्रव क्षीण नहीं हुए हैं – *यो वे अनरहं सन्तो, अरहं पटिजानाति,* सु॰ नि॰ 135; *अनरहं सन्तोति अखीणासवो समानो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.145.

अनरिय / अनारिय त्रि॰, पु॰, अरिय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनार्य], 1. नीचजन, पृथक्जन, अज्ञानीजन, ग्राम्यजन, असंस्कृत, अपवित्र, निर्लज्ज – *अनरियो तु पुथुज्जनो,* अभि॰ प॰ 435; *अनरियाति निल्लज्जा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.443; *अनरियोति हिरोत्तप्पवज्जितो असप्पुरिसो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.187; 2. हीन, अनर्थसंहित, प्रदुष्ट, ग्राम्य, पापकर, अनर्थकर – *मिच्छा च पटिपज्जति, एतं तस्मिं अनारियं,* सु॰ नि॰ 821; *न च अत्तकिलमथानुयोगमनुयुत्तो दुक्खं अनरियं अनत्थसंहितं,* दी॰ नि॰ 3.84; *अनरियन्ति न निद्दोसं, न वा अरियेहि सेवितब्बं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.72; *अनरियोति न अरियो न विसुद्धो न उत्तमो न वा अरियानं सन्तको,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.327; – **कथा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनार्यकथा], अहितकर कथन, अनर्थपूर्ण कथन – *गुणं घट्टेत्वा कथा हि अनरियकथा नाम, न अरियकथा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182; – **कम्म** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनार्यकर्म्मन्], अविशुद्ध कर्म, अनार्य कर्म, पापमय कर्म, दुष्टजनों के बुरे कर्म – *अनरियानं दुस्सीलानं कम्मं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.52; – **गुण** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनार्यगुण], दोष, पाप, अपराध, दुष्टजनों का गुण – *अनरियगुणमासज्ज, अञ्ञोञ्ञविवरेसिनो,* अ॰ नि॰ 1(1).228; – **चरित** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनार्यचरित], बुरा आचरण, दुराचार, दुष्टजनों का आचार – *यो अनरियचरितानि माचरि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.451; – **धम्म** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनार्यधर्म], तुच्छता, क्षुद्रता बाल-धर्म, अज्ञानी लोगों का स्वभाव – *यो चारियरुदं भासे, अनरियधम्मवस्सितो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.371; *अनरियधम्मोति अनरियसभावो,* महानि॰ अट्ठ॰ 214; – **परियेसना** स्त्री॰, ष॰ तत्पु॰ [अनार्यपर्येषणा], तुच्छ एवं क्षुद्रधर्मों की चार प्रकार की मानसिक अनर्थकारी कामनाएं – *चतस्सो इमा, भिक्खवे, अनरियपरियेसना,* अ॰ नि॰ 1(2).283; *अनरियपरियेसनाति अनरियानं एसना गवेसना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.394; – **भाव** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनार्यभाव], दुष्टता, अनार्यता, अनार्यमयी प्रकृति, पृथग्जनत्व – *अनरियसंयुत्ते ति मित्तदुब्भीहि अहिरिकेहि कत्तब्बताय अनरियभावेन संयुत्ते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.355; – **भूमि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनार्यभूमि], पृथक्जनों की चित्तभूमि, अविद्याग्रस्त चित्तभूमि, कामावचर चित्त की भूमि – *इमस्मिं लोके सब्बत्थ च अनरियभूमियं उपपत्तिपच्चयभूता अविज्जा यथाक्कमं दुतियततियमग्गेहि पहीयति,* उदा॰ अट्ठ॰ 39; – **मग्ग** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनार्यमार्ग], पृथक्जनों द्वारा गृहीत मार्ग, भोगवाद एवं तपवाद के मार्ग – *अकत्तब्बन्ति बुद्धादयो अरिया वदन्ति, त्वं पन मं अनरियं मग्गं आरोचेसीति अधिप्पायो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.111; – **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनार्यरूप], तुच्छ, निर्लज्ज, दुष्ट प्रकृति वाला, अनार्य स्वभाव वाला – *ओपातमागच्छि अनरियरूपो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.42; *अहिरिकभावेन अनरियरूपो ताय चित्तवसानुगाय पयोजितो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.42; *अनरियरूपोति ... असप्पुरिसजातिको निल्लज्जपुरिसो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.265; – **वोहार** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनार्यव्यवहार], अनुचित वक्तव्य या कथन, अनुपयुक्त वाग्व्यवहार, चार प्रकार के वाचिक दुश्चरित – *अनरियवोहाराति अनरियानं बालपुथुज्जनानं वोहारा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 2; *चत्तारो अनरियवोहारामुसावादो पिसुणावाचा, फरुसावाचा, सम्फप्पलापो,* दी॰ नि॰ 3.185; *अनरियवोहाराति अनरियानं लामकानं वोहारा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.189; – **संयुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अनार्यसंयुक्त], अनार्य-धर्म से सम्बद्ध, अनार्यभाव से संयुक्त – *अनरियसंयुत्तेति मित्तदुब्भीहि अहिरिकेहि कत्तब्बताय अनरियभावेन संयुत्ते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.355; *न मं अनरियसंयुत्ते कम्मे योजेतुमरहसि,* तदे॰; – **सुख** नपुं॰, कर्म॰ स॰, कामसुख, सामान्य जनों द्वारा सेवित विषयभोगों का सुख – *इदं वुच्चति कामसुखं मिळ्हसुखं पुथुज्जनसुखं अनरियसुखं न सेवितब्बं न भावेतब्बं,* म॰ नि॰ 2.126; *अनरियसुखन्ति अनरियेहि सेवितसुखं,* म॰ नि॰ 2.121.

अनल[1] पु॰ [अनल], अग्नि, आग, पावक – *जातवेदो सिखी जोति पावको दहनोनलो,* अभि॰ प॰ 33; सद्द॰ 334; *अनलो*

कण्हवत्तनी घतासनो धूमकेतु उत्तमाहेवनन्दहो, जा॰ अट्ठ॰ 5.57.

अनल² त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰, असन्तुष्ट, अतृप्त - *अनला मुदुसम्भासा, दुप्पूरा ता नदीसमा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.270; जा॰ अट्ठ 5.448; *तत्थ अनला मुदुसम्भासाति मुदुवचनेनपि असक्कुणेय्या, नेव सक्का सण्हवाचाय सङ्गण्हितुन्ति अत्थो, पुरिसेहि वा एतासं न अलन्ति अनला, मुदुसम्भासाति हदये थद्धेपि सम्भासाव मुदु एतासन्ति मुदुसम्भासा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.270; *अनलाति तीहि धम्मेहि अलन्ति वचनविरहिता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.449; *अनलोति अतित्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.50.

अनलं निपा॰, **क.** अपर्याप्त, अत्यन्त स्वल्प, कम - *इदं खो अहं, उदायि, अनलन्ति वदामि,* म॰ नि॰ 2.127; *अनलञ्च मे अन्तरायाया'ति,* म॰ नि॰ 3.42; **ख.** त्रि॰, नहीं बनाने योग्य घर वाला - *अनलन्ति वदामीति अकत्तब्बआलयन्ति वदामि, तण्हालयो एत्थ न उप्पादेतब्बोति दस्सेति, अथवा अनलं अपरियत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.122.

अनलंकत त्रि॰, अलंकत का निषे॰ [अनलङ्कृत], वह, जो अलंकृत न हो, असन्तुष्ट, अविभूषित - *अज्झमज्झाभिगिज्झन्ति कामेसु अनलङ्कता,* स॰ नि॰ 1(1).18; *अनलङ्कताति अतित्ता अपरियत्तजाता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.49.

अनलस त्रि॰, अलस का निषे॰, तत्पु॰ [अनलस], सक्रिय, उद्योगी, परिश्रमी, साहसी, पराक्रमी - *उट्ठायिकं अनलसं, सीलवतिं दुस्सते भत्ता, उट्ठायिका अनलसा, किं तुय्हं न रोचते पुत्त,* थेरीगा॰ 415-417; *तत्थ न दक्खो होति, न अनलसो,* महाव॰ 89; *न अनलसोति उट्ठानवीरियसम्पन्नो न होति,* महाव॰ अट्ठ॰ 261; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अनलसता], उद्योगपरायणता, वीर्यवत्ता, अनालस्य, सक्रियता - *सो ... मेधावितांय अनलसताय च ... ब्राह्मणसिप्पे निप्फत्तिं पत्तो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 193; ... *सब्बकिच्चकरणीयेसु खिप्पं पटिजाननता ... अनलसता ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 24.

अनल्ल त्रि॰, अल्ल का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनार्द्र], सूखा हुआ, वह, जो गीला न हो, जो आर्द्र न हो - **केस** त्रि॰, [अनार्द्रकेश], सूखे हुए बालों वाला/वाली - *अपि नु त्वं कदाचि करहचि अनल्लवत्था वा भवेय्यासि, अनल्लकेसा वा ति?,* उदा॰ 176; - **गत्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनार्द्रगात्र], सूखे हुए शरीर वाला या अंगों वाला - *अनल्लगत्ताव तरन्ति पारं,* स॰ नि॰ 1(1).197; - **वत्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनार्द्रवस्त्र], सूखे वस्त्रों वाला - *कदाचि करहचि अनल्लवत्था वा भवेय्यासि ...,* उदा॰ 176.

अनल्लीनत्त नपुं॰, भाव॰ [अनालीनत्व], पूरी तरह लगाव-रहित रहना, अनासक्तता - *सो चित्तेन अनल्लीनत्ता पारं समुद्दस्स वसन्तोपि अन्तोयेव होति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.194.

अनल्लीयन त्रि॰, [अनालीयन], अनासक्त, वह, जो आसक्त न हो अथवा जो काम भोगों में चिपका हुआ न हो - *समुक्खेटितोति इदं सुट्ठु उत्तासेत्वा अणुसहगतस्सापि पुन अनल्लीयनभावदस्सनवसेन वुत्तन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.82.

अनवकार त्रि॰, अवकार का निषे॰, मलरहित, अनुत्पादित, अनिरुद्ध, अविलोपित - **अवकारीकरित्वा** अवकार + √कर का पू॰ का॰ कृ॰, विलुप्त न करके - *पञ्चसु खन्धेसु कञ्चि धम्मं अनवकारीकरित्वा अस्मी'ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).214.

अनवकास/अनोकास त्रि॰, निषे॰ ब॰ स॰ [अनवकाश त्रि॰], अतार्किक, अनुपयुक्त, निराधार - *अट्ठानमेतं, भिक्खवे, अनवकासो यं दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो कञ्चि सङ्खारं निच्चतो उपगच्छेय्य,* अ॰ नि॰ 1(1).38; *अनवकासोति पच्चयपटिक्खेपो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.338; - **कारी** त्रि॰, अवसर प्रदान न करनेवाला, मौका न देने वाला - *अनधिकरणेन भवितब्बं अनवकासकारिना,* मि॰ प॰ 351, पाठा॰ अनवसेसकारिना.

अनवक्कन्त त्रि॰, अवक्कन्त का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनवक्रान्त], अनभिभूत, अपराजित, वश में न किया हुआ - *इमे खो ते, आनन्द, धम्मा ... अरिया लोकुत्तरा अनवक्कन्ता पापिमता,* म॰ नि॰ 3.157; *अनवक्कन्ता पापिमताति पापिमन्तेन मारेन अनोक्कन्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.120; *पथवीधातु चे हिदं, भिक्खवे, एकन्तदुक्खा अभविस्स ... अनवक्कन्ता सुखेन,* स॰ नि॰ 1(2).157.

अनवगम पु॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनवगम], अज्ञान, अबोध, मो॰ व्या॰ 430, 441.

अनवज्ज त्रि॰, अवज्ज का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनवद्य], वह, जिसमें कुछ भी गर्हणीय या निन्दनीय न हो, निर्दोष, दोषरहित - *कतमं अनवज्जबलं ? ... नत्थि किञ्चि वज्जन्ति अनवज्जबलं,* पटि॰ म॰ 345; *चतूहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागता वाचा सुभासिता होति, न दुब्भासिता, अनवज्जा च अननुवज्जा च विञ्ञूनं,* सु॰ नि॰ पृ॰ 148; *अनवज्जानि कम्मानि, एतं मङ्गलमुत्तमं,* सु॰ नि॰ 266; - **क** त्रि॰, [अनवद्यक], उपरिवत् - *छेके कुसलसद्दोयं, आरोग्ये अनवज्जके,* अभि॰ अव॰ 3; - **कम्म** नपुं॰, कर्म॰ स॰, निर्दुष्ट कर्म, विशुद्ध कर्म, कुशल कर्म - *अनवज्जकम्मं वुच्चति सुक्कं सुक्कविपाकं,* महानि॰ 230; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अनवद्यता],

शुद्धता, पवित्रता, निर्दुष्टता - *आतिसङ्गहेन सकजनहितं अनवज्जकम्मन्तताय परजनहितञ्च करोन्ता ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 126; - **गुण** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनवद्यगुण], दोषरहितता, निर्दुष्टता - *अनवज्जगुणबहुलतायपि तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति,* मि॰ प॰ 142; - **त्थपुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनवद्यार्थपृच्छा], उत्तम अर्थविषयक प्रश्न, कुशल धर्मों के विषय में प्रश्न - *अपरापि तिस्सो पुच्छा - अनवज्जत्थपुच्छा, निक्किलेसत्थपुच्छा, वोदानत्थपुच्छा,* महानि॰ 251; - **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰, दोष-रहित प्रकृति वाला, शुद्ध स्वभाव वाला - *... एवमादिके अनेके अत्तनो कुसले अनवज्जधम्मे ... वुड्ढिं गते,* उदा॰ अट्ठ॰ 273; - **पद** नपुं॰, कर्म॰ स॰, धर्म से परिपूर्ण वचन, अर्थात् सैंतीस बोधिपक्षीय धर्म - *अनवज्जपदानि सेवमानो, ततियं भिक्खुनमाहु मग्गजीविं,* सु॰ नि॰ 88; *अणुमत्तस्सापि वज्जस्स अभावतो अनवज्जता, कोट्ठासभावेन च पदत्ता सत्ततिंसबोधिपक्खियधम्मसङ्खातानि अनवज्जपदानि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.130; - **पिण्ड** पु॰, कर्म॰ स॰, अनुमोदित भोजन, नियमसम्मत भोजन - *अनवज्जपिण्डो भोत्तब्बो, न च कोचूपरोधति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.241; *अनेसनं पन पहाय मिच्छाजीवं वज्जेत्वा धम्मेन समेन उप्पादिता ... परिभुत्ता अनवज्जपिण्डो नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 5.242; - **बल** नपुं॰, कर्म॰ स॰, विशुद्धि की शक्ति, प्रज्ञाबल, विशुद्धिबल - *चत्तारिमानि, ... बलानि, ... पञ्ञाबलं, वीरियबलं, अनवज्जबलं, सङ्गहबलं,* अ॰ नि॰ 1(2).163; *अनवज्जबलन्ति निद्दोसबलं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.337; - **भोगी** त्रि॰, अनुमोदित वस्तुओं का प्रयोग करने वाला या शुद्ध जीविका कमाने वाला - *अनवज्जभोगी, गतिविमुत्तो, ... इमेहि तिंसगुणवरेहि समुपेतो होति,* मि॰ प॰ 326; - **भोजी** त्रि॰, उपरिवत् - *एते अलद्धा अनवज्जभोजी,* सु॰ नि॰ 47; *... धम्मेन समेन उप्पन्नं भोजनं भुञ्जन्तो तत्थ च पटिघानुनयं अनुप्पादेन्तो अनवज्जभोजी हुत्वा ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.75; - **भोजिगाथा** स्त्री॰, सु॰ नि॰ की गाथा सङ्ख्या 47 का शीर्षक, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.75; - **रस** त्रि॰, ब॰ स॰, विशुद्धिभाव या पवित्रभाव वाला - *इदं सीलं नाम ... सम्पत्तिअत्थेन रसेन अनवज्जरसन्ति वेदितब्बं,* विसुद्धि॰ 1.9; - **सङ्खात** त्रि॰, कर्म॰ स॰, अनवद्य नाम वाला धर्म, कुशल धर्म - *ये धम्मा कुसला कुसलसङ्खाता ... ये धम्मा अनवज्जा अनवज्जसङ्खाता ... त्यास्स धम्मा पञ्ञाय वोदिट्ठा होन्ति,* अ॰ नि॰ 3(1).181; - **सञ्ञी** त्रि॰, ब॰ स॰, किसी धर्मविशेष को विशुद्ध मानने वाला - *तं अपस्सन्तो अनवज्जसञ्ञी हुत्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.164; - **सुख** नपुं॰, कर्म॰ स॰, सर्वोत्तम आध्यात्मिक सुख, ध्यानसुख, निर्वाणाधिगम सुख - *सो इमिना अरियेन सीलक्खन्धेन समन्नागतो अज्झत्तं अनवज्जसुखं पटिसंवेदेति,* दी॰ नि॰ 1.62; *अनवज्जसुखन्ति अनवज्जं अनिन्दितं कुसलं ... अविप्पटिसारपामोज्जपीतिपस्सद्धिधम्मेहि परिग्गहितं कायिकचेतसिकसुखं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.150; *तेसु पन अनवज्जसुखविपाकलक्खणा कुसला,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 87.

अनवञ्ञत्ति स्त्री॰, अवञ्ञत्ति का निषे॰, तत्पु॰ [अनवज्ञप्ति], अपमान से विमुक्ति, अवहेलना का अभाव, अपरिभव, अपराभव - *अनवञ्ञत्तिपटिसंयुत्तोति एत्थ अनवञ्ञत्तीति अनवञ्ञा परेहि अत्तनो अहीळितता अपरिभूतता ... ताय अनवञ्ञत्तिया पटिसंयुत्तो संसट्ठो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 219; - **काम** त्रि॰, ब॰ स॰, तिरस्कार की कामना न रखनेवाला, सत्कारकामी, स्वागताभिलाषी - *पुन चपरं आनन्द, पापभिक्खु लाभकामो होति सक्कारकामो अनवञ्ञत्तिकामो,* अ॰ नि॰ 1(2).276; - **पटिसंयुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अनवज्ञाभाव से जुड़ा हुआ, लाभ, सत्कार तथा यश पाने की इच्छा से युक्त - *अनवञ्ञत्तिपटिसंयुत्तो वितक्को,* इतिवु॰ 53; *यो तत्थ गेहसितो तक्को वितक्को मिच्छासङ्कप्पो - अयं वुच्चति अनवञ्ञत्तिपटिसंयुत्तो वितक्को,* विभ॰ 412; - **मद** पु॰, द्रष्ट॰ आगे अनवञ्ञातमद के अन्त॰.

अनवञ्ञपटिलाभ पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनवज्ञाप्रतिलाभ], सम्मान का लाभ, सत्कार-प्राप्ति - *सो ... पापिकं इच्छं पणिदहति अनवञ्ञप्पटिलाभाय लाभसक्कारसिलोकप्पटिलाभाय,* अ॰ नि॰ 1(2).165.

अनवञ्ञा स्त्री॰, [अनवज्ञा], अतिरस्कार, सम्मान, अपमान का अभाव - *अनवञ्ञत्तीति अनवञ्ञा ...,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 219, द्रष्ट॰ ऊपर.

अनवञ्ञात त्रि॰, अवञ्ञात का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनवज्ञात], अतिरस्कृत, वह, जिसके प्रति असम्मान का भाव व्यक्त नहीं किया गया है - *अक्खित्तोति जातिं आरब्भ 'किं सो'ति केनचि अनवञ्ञातो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.166; *अनपविद्धं अनवञ्ञातं कत्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 118; - **मद** पु॰, ष॰ तत्पु॰, अतिरस्कृत या अपमानरहित रहने का घमण्ड - *अहं पन अनुञ्ञातो अनवञ्ञातो'ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो अनवञ्ञातमदो नाम,* विभ॰ अट्ठ॰ 442.

अनवट्ठान नपुं॰, अवट्ठान का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनवस्थान], अस्थायित्व, अस्थिरता, अदृढ़ता, टिकाऊ न रहना - *अनवट्ठानेन परिब्भमनतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.37; *एवमेव*

अयम्पि वादो एकस्मिं सभावे अनवट्ठानतो इतो चितो च सन्धावति, गाहं न उपगच्छतीति, सारत्थ॰ टी॰ 1.130.

अनवट्ठित त्रि॰, अव + √ठा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनवस्थित], अस्थिर, अनवस्थित, वह, जो टिकाऊ न हो, अस्थायी, अचिरकालिक - *मायामरीचिसदिसं इत्तरं अनवट्ठितं,* अप॰ 2.203; थेरीगा॰ अट्ठ॰ 164; *भोगा नामेते न सस्सता अनवट्ठिता तावकालिका महायगमनीया,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 76; - **चारिका** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, अस्थिर रूप से की गयी चारिका, किसी एक स्थान पर अधिक देर तक न रुककर किया गया भिक्षाटन - *दीघचारिकं अनवट्ठितचारिकं अनुयुत्तो च होति रूपस्स दस्सनाय,* महानि॰ 269; *अनवट्ठितचारिकन्ति असन्निट्ठानचरणं,* महानि॰ अट्ठ॰ 316; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰, अस्थिर चित्त वाला, चञ्चल चित्त वाला, अनवस्थित चित्त वाला - *अनवट्ठितचित्तस्स, सद्धम्मं अविजानतो,* ध॰ प॰ 38; *अनवट्ठितचित्तस्स लहुचित्तस्स दुब्भिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.63; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, चञ्चलता, अस्थिरता, अस्थायित्व - *एवं चक्खुस्मिं सारज्जन्तस्स चक्खुनो असुभतं अनवट्ठितताय अनिच्चतञ्च विभावेसि,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 281-282.

अनवट्ठ / अनवत्थ त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवस्थ], अस्थिर, अस्थायी - *परमुद्दिस्स यं दानं अनवत्थादि दीयते,* सद्धम्मो॰ 217; - **चारिका** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, अस्थायी रूप से की गई चारिका, किसी एक स्थान पर अधिक देर तक न रुककर किया गया भिक्षाटन - *दीघचारिकं अनवत्थचारिकं अनुयुत्तो विहरति,* अ॰ नि॰ 2(1).161; *अनवत्थचारिकन्ति अनवत्थानचारिकं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.53; *न च पादलोलोति ... दीघचारिकअनवट्ठितचारिकविरतो वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.92, द्रष्ट॰ अनवचरिका.

अनवत्थाय अव + √ठा के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अनवस्थाय], उचित विचार न करके - *अनिसम्म कतं कम्मं, अनवत्थाय चिन्तितं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.407; *अनवत्थाय चिन्तितन्ति अनवत्थपेत्वा अतुलेत्वा अतीरेत्वा चिन्तितं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.408.

अनवमत त्रि॰, अवमत का निषे॰, तत्पु॰ [अनवमत], अतिरस्कृत, अनपमानित सम्मानित, सत्कृत, संपूजित - *अनवमतेन गुणेन याति सग्गं,* दी॰ नि॰ 3.114; *अनवमतेनाति अनवञ्ञातेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.100.

अनवय त्रि॰, **1.शा॰ अ॰** वह, जिसमें कुछ भी अवयवों अर्थात् खण्डों में न हो, समग्र; **2.ला॰ अ॰** वह, जो अपरिपक्व वय वाला न हो अर्थात् अनुभव वाला हो - *लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनवयो,* सु॰ नि॰ पृ॰ 166; *लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनवयो, अवयो न होतीति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.153; ... *अम्बट्ठो नाम माणवो ... लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनवयो ...,* दी॰ नि॰ 1.77; *अनवयोति इमेसु लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनूनो परिपूरकारी, अवयो न होतीति ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.201; म॰ नि॰ 2.341; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.259; मि॰ प॰ 9; *अहं खो पन ... अनवयो सके आचरियके कुम्भकारकम्मे परियोदातसिप्पो,* पारा॰ 47; *अनवयोति अनुअवयो, सन्धिवसेन उकारलोपो, अनु अनु अवयो, यं यं कुम्भकारेहि कत्तब्बं नाम अत्थि, सब्बत्थ अनूनो ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.230; द्रष्ट॰ अवयो; - **टि॰** ट्रेंकनर के अनुसार यह संस्कृत के अनवयव शब्द से समाक्षर-लोप की प्रवृत्ति के प्रभाव के कारण एक वकार के लोप कर देने से पालि में प्रयुक्त है, द्रष्ट॰ ट्रेंकनर, प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पृ॰ 65-66, पा॰ टि॰; दूसरे मत में यह अन + वयस् का संभावित पालि-प्रतिरूप है, संभवतः यह अनुवयस् का नैरुक्तिक प्रक्रियाधारित पालि-प्रतिरूप भी हो सकता है, द्रष्ट॰ निरुक्त, 6.11.

अनवयव पु॰, अवयव का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनवयव], *विशेष रूप से व्याकरणों में प्रयुक्त पद,* संकेतक वर्ण, अक्षर, किसी वास्तविक शब्द के अंग के रूप आया हुआ वर्ण या अनुबन्ध - *सङ्केतो'नवयवो'नुबन्धो,* मो॰ व्या॰ 1.23.

अनवरत त्रि॰, [अनवरत], व्यवधान-रहित, निरन्तर - *सततं निच्चमविरतानारतसन्ततमनवरतं च धुवं,* अभि॰ प॰ 41.

अनवसिञ्चनक त्रि॰, अवसिञ्चनक का निषे॰ [अनवसेचक], ऊपर तक उड़ेलने वाला, उड़ेल कर न बहाने वाला - *अनवसेसकन्ति अनवसिञ्चनकं अपरिस्सावनकं कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.382; *अनवसेसन्ति अनवसिञ्चनकं अपरिसिञ्चनकं कत्वा,* महानि॰ अट्ठ॰ 362.

अनवसित्त त्रि॰, अवसित्त का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनवसिक्त], अप्रभावित, नहीं भीगा हुआ, अलिप्त, अपयश के छीटों से रहित, बेदाग - *अब्यासेकसुखन्ति किलेसेहि अनवसित्तसुखं ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).114.

अनवसीदन नपुं॰, अवसीदन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनवसीदन], **1.शा॰ अ॰** नीचे या बहुत गहराई तक जाकर नहीं डूबना, **2.ला॰ अ॰** अवसाद या खिन्नता का अभाव, शिथिलता का न होना, सक्रियता - *अकुसीतवुत्तीति एतेन ठानआसनचङ्कमनादीसु कायस्स अनवसीदनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.97; द्रष्ट॰ ओसीदन.

अनवसेक त्रि., अवसेक का निषे., तत्पु. स. [अनवसेक], ऊपर होकर न बहने वाला, बाहर की ओर न छलक रहा, अवसेकरहित – *समतित्तिकं अनवसेसकं, तेलपत्तं यथा परिहरेय्य,* जा. अट्ठ. 1.382; जा. अट्ठ. 3.206, अप. अनवसेस.

अनवसेस त्रि., अवसेस का निषे., ब. स. [अनवशेष], समग्र, सम्पूर्ण, समूचा, वह, जिसमें कुछ भी शेष अथवा करने योग्य न बच रहा हो, विनय में प्रज्ञप्त अनेक आपत्तियों या भिक्षु के अपराधों में से एक – *सावसेसं आपत्तिं अनवसेसा आपत्तीति दीपेति,* महाव. 476; अ. नि. 1(1).27; *ये केचि पाणभूतत्थि, तसा वा थावरा वनवसेसा,* सु. नि. 146; *यंकिञ्चीति अनियमितवसेन अनवसेसं परियादियति* ..., खु. पा. अट्ठ. 136; *असेसविरागनिरोधाति ... अग्गमग्गेन अनवसेसअनुप्पादप्पहानाति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 40; – **दोही** त्रि., निचोड़ कर दुह लेने वाला, पूरी तरह से दूध दुहने वाला – ... *गोपालको ... न गोचरकुसलो होति अनवसेसदोही च होति* ..., म. नि. 1.284; – **निरोध** पु., कर्म. स., सम्पूर्ण रूप से निरोध – ... *अरियमग्गेन अविज्जाय अनवसेसनिरोधा,* ... *अविज्जाय अच्चन्तसमुग्घाटतोति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 38; – **परियादान** नपुं., कर्म. स., सभी का ग्रहण – *याति अनवसेसपरियादानं रमन्ति एताय अज्झत्तं उप्पन्नाय बहिद्धा वा उपकरणभूतायाति रति,* खु. पा. अट्ठ. 184; – **पहान** नपुं., पूर्ण रूप से छुटकारा – *यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति ... अविज्जाय अनवसेसप्पहानाय* ..., ध. स. 363, 553; *अनवसेसप्पहानायाति ... निस्सेसपजहनत्थाय,* ध. स. अट्ठ. 281; – **फरण** नपुं., कर्म. स., पूर्ण रूप से व्याप्त हो जाना या पूरी तरह से फैल जाना – ... *अनुक्कमेन उपचारप्पनाभेदं ... एकसत्ते वा अनवसेसफरणेन अप्पमाणं मेत्तं चित्तं भावेन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.129; – **वचन** नपुं., कर्म. स., अप्रमाणता या निसीमता को सङ्केतित करने वाला वचन – *तत्थ ये केचीति अनवसेसवचनं,* खु. पा. अट्ठ. 198; – **व्यापक** त्रि., तत्पु., सर्वत्र व्याप्त रहने वाला, सर्वव्यापी – *अनवसेसब्यापको हि अयं निद्देसो,* पे. व. अट्ठ. 61; – **साधिगम** पु., तत्पु. स., सभी कुछ का ज्ञान, सम्पूर्ण ज्ञान – ... *विपुलाधिगमो च होति,* ... *अनवसेसाधिगमो च होति* ..., नेत्ति. 75; *अत्तना कत्तब्बस्स कस्सचि अनवसेसतो अनवसेसाधिगमो,* नेत्ति. अट्ठ. 278.

अनवस्सव त्रि., ब. स. [अनवस्राव], वह, जो बाहर होकर न बह रहा हो, वह जिसमें बहुत अधिक न भर दिया गया हो, अनभिभूत, अदमित – *तस्सेव पापकस्स विवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवाय पटिपज्जेय्याथ,* चूळव. 196; दी. नि. 3.195; *एवमेतस्स पापकस्स विवादमूलस्स आयतिं अनवस्सवो होति,* अ. नि. 2(2).50.

अनवस्सुत त्रि., अवस्सुत का निषे., तत्पु. [अनवस्रुत], **1. शा. अ.** मलिन पदार्थों के रिसाव रहित, वह, जिसमें से बाहर निकलकर कोई भी मलिन तत्त्व न बहता हो – *उदकपवेसनस्साभावेन अनवस्सुता,* जा. अट्ठ. 4.19; **2. ला. अ.** राग एवं क्लेशों से पूरी तरह मुक्त, विशुद्ध चित्त – ... *रक्खितकायकम्मन्तस्स ... कायकम्मम्पि अनवस्सुतं होति,* अ. नि. 1(1).295; *अनवस्सुतो अपरिडय्हमानो,* सु. नि. 63; ... *ततो एव तत्थ तण्हावस्सुताभावेन अनवस्सुतो,* थेरगा. अट्ठ. 1.298; – **चित्त** त्रि., ब. स., क्लेशों से विनिर्मुक्त चित्त वाला, विशुद्ध-चित्त – *अनवस्सुतचित्तस्स, अनन्वाहतचेतसो,* ध. प. 39; – **परियाय** पु., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 2(2).184, पाठा. अवस्सुत-सुत्त.

अनवोसित त्रि., व्यु. संदिग्ध, केवल स. प. के पू. प. के रूप में ही प्रयुक्त, अनिर्धारित, अपूर्णीकृत, अनिश्चित – **त्त** त्रि., ब. स. [अनव्यवसितात्म], वह, जिसके मन में दृढ़ निश्चय नहीं है, अडिग संकल्प से रहित – *हित्वा गिहित्तं अनवोसितत्तो,* थेरगा. 101; *अनवोसितत्तोति अनुरूपं अवोसितत्तो ... अनुरूपपरिञ्ञादीनं अतीरितत्ता अपरियोसितभावो अकतकरणीयोति,* थेरगा. अट्ठ. 1.224; – **टि.** ट्रेंकनर के मत में व्यव + √सो के भू. क. कृ. का निषे., जिसमें निषे. उप. का द्वित्व कर दिया गया है, संभवतः संस्कृत के अनवसित तथा अनोसित के परस्पर-व्यामिश्रण से उद्‌भूत अथवा सं. समा. अनव्यवसित का पालिरूपान्तरण.

अनव्हित त्रि., अव्हित का निषे., तत्पु. [अनाह्वात], वह, जिसका आह्वान नहीं किया गया हो, जिसे पुकारा न गया हो, अनामन्त्रित – ... *अनव्हितो ततो आगा,* जा. अट्ठ. 3.142; सद्द. 456; *अनव्हितो अयाचितो,* जा. अट्ठ. 3.142; *अनव्हिता ततो आगुं,* अप. 1.365; *अनभितो ततो आगा,* पे. व. अट्ठ. 54.

अनसन नपुं., असन का निषे., तत्पु. [अनशन], उपवास, भोजन को न लेना, भूख – *तयो रोगा पुरे आसुं, इच्छा अनसनं जरा,* सु. नि. 313; *मनुस्सेसु तयो आबाधा भविस्सन्ति, इच्छा, अनसनं, जरा,* दी. नि. 3.55.

अनसुरोप पु., व्यु., संदिग्ध, संभवतः असुररोप में समाक्षर-लोप से व्यु., असुरोप का निषे. अथवा अप्ररोष (सं.) का वर्ण-विपर्ययादि से उद्‌भूत असुरोप से व्यु.; क्षान्ति, सहनशीलता,

वाणी-प्रयोग में उग्रता या कर्कशता का अभाव - *अनसुरोपोति असुरोपा वुच्चति न सम्मारोपितत्ता दुरुत्तवचनं, तप्पटिपक्खतो अनसुरोपो सुरुत्तवाचाति ...,* ध. स. अट्ठ. 417; *या खन्ति खमनता अधिवासनता अचण्डिक्कं अनसुरोपो .... अयं वुच्चति खन्ति,* ध. स. 1348.

अनस्स त्रि., अस्स का निषे., ब. स. [अनश्व], वह, जिसके पास घोड़ा नहीं है - *न अस्सो अनस्सो,* सद्द. 3.774; क. व्या. 336; - **क** त्रि., ब. स. [अनश्वक], बिना घोड़े वाला - *अनस्सको अरथको, दीघमद्धानमागतो,* जा. अट्ठ. 7.274.

अनस्सन-धम्म त्रि., ब. स. [अनश्यनधर्म], अविनाशी प्रकृति वाला, अनश्वर, स्वभाव से ही विनष्ट न होने वाला - *किञ्चि सङ्खारगतं अनस्सनधम्मं नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 4.150.

अनस्सय त्रि., ब. स. [अनाश्रय], आश्रय-रहित, बेसहारा, अशरण - *अनस्सय'न्ति च केचि पठन्ति, सुखस्स अप्पतिट्ठानभूतन्ति,* वि. व. अट्ठ. 285, अप. अनायस.

अनस्सव त्रि., अस्सव का निषे., तत्पु. [अनाश्रव], आज्ञा न मानने वाला, उद्दण्ड, वचनों को न मानने वाला, अववादशिक्षा को न सुनने वाला - *अनस्सवा अवचनकरा पटिलोमवुत्तिनो ....* महानि. 27; *अनस्सवाति ओवादं असुणमाना,* महानि. अट्ठ. 89; *महल्लकस्स ... हत्थपादापि अनस्सवा होन्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.5; *... कस्सचि बहुम्पि धनं देन्तस्स सेना न सुणाति, सा अनस्सवा नाम होति,* अ. नि. अट्ठ. 3.49.

अनस्सावी त्रि., अस्सावी का निषे., तत्पु. स. [अनाश्रावी, अनास्रावी], **क. शा. अ.** न रिसने वाला, रिसकर बाहर की ओर न बह रहा घाव या व्रण - *मा तस्स सप्पायानि भोजनानि भुञ्जतो वणो अस्सावी अस्स,* म. नि. 3.44; **ख. ला. अ.** कामभोगों के प्रति कामना से रहित - *सातियेसु अनस्सावी ...,* सु. नि. 859; *सातियेसु अनस्सावीति सातवत्थूसु कामगुणेसु तण्हासन्थवविरहितो,* सु. नि. अट्ठ. 2.241.

अनस्सासक त्रि., अस्सासक का निषे., तत्पु. स. [अनाश्वासक], पुनः श्वास को वापस लाने में अक्षम, म्रियमाण व्यक्ति, वह, जिसकी श्वास फिर वापस न लौट सके - *सो भिक्खु उत्तन्तो अनस्सासको कालमकासि,* पारा. 103; *अनस्सासकोति निरासासो,* पारा. अट्ठ. 2.63.

अनस्सासिक त्रि., अस्सासिक का निषे., तत्पु. स. [बौ. सं. अनाश्वासिक], आश्वासन न देने वाला, अविश्वसनीय, प्रोत्साहन न देने वाला - *एवं अनस्सासिका खो, आनन्द, सङ्खारा,* दी. नि. 2.146; *अनस्सासिकाति एवं सुपिनके पीतपानीयं विय अनुलित्तचन्दनं विय च अस्सासविरहिता,* दी. नि. अट्ठ. 2.204; ... *चत्तारि च अनस्सासिकानि ब्रह्मचरियानि अक्खातानि,* म. नि. 2.192.

अनहात त्रि., नहात का निषे., तत्पु. स. [अस्नात], न नहाया हुआ - ... *भगवा अनहातोव गन्त्वा ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).42.

अनाकप्पसम्पन्न त्रि., तत्पु. स. [अनाकल्पसम्पन्न], वह, जो उचित रूप में तैयार नहीं है, फूहड़, असामाजिक रूप में वेशभूषा धारण करने वाला - *तेन खो पन ... दुन्निवत्था ... अनाकप्पसम्पन्ना पिण्डाय चरन्ति ...,* महाव. 50; *अनाकप्पसम्पन्नाति न आकप्पेन सम्पन्ना, समणसारुप्पाचारविरहिताति,* महाव. अट्ठ. 247.

अनाकर पु., आकर का निषे., तत्पु. स. [अनाकर], अस्थान, अपात्र, अनुपयुक्त आधार - *अनायतनं वुच्चति लाभयससुखानं अनाकरो दुस्सील्यकम्मं ...,* जा. अट्ठ. 5.119.

अनाकिण्ण त्रि., आकिण्ण का निषे., तत्पु. स. [अनाकीर्ण], नहीं भरा हुआ, अपरिपूर्ण, भीड़भाड़ से रहित, शान्त, खाली - *अप्पसद्दमनाकिण्णं, नानाचङ्कमभूसितं,* अप. 2.216; *अनाकिण्णा गहट्ठेहि, मिगसङ्घनिसेविता,* थेरगा. 1072; *अनाकिण्णाति असंकिण्णा असम्बाधा,* थेरगा. अट्ठ. 2.384, द्रष्ट. आकिण्ण.

अनाकुल त्रि., आकुल का निषे., तत्पु. स. [अनाकुल], **शा. अ.** नहीं भरा हुआ, भीड़भाड़-रहित, बहुलता से रहित - *समाधिस्मिं पुमे एकग्गो'नाकुले,* अभि. प. 1035; *अनाकुले तत्थ नगे रमिस्सं,* थेरगा. 1147; **ला. अ.** अव्याकुल, चित्त की व्यग्रता से रहित, चित्त की एकाग्रता वाला - ... *अलोलोति ... एवं रसविसेसेसु अनाकुलो,* सु. नि. अट्ठ. 1.93; - **कम्मन्तता** स्त्री., भाव., स्थिर अथवा अनुद्विग्न चित्त की क्रियाशीलता, शान्त मन के साथ काम करने की दशा - ... *अनाकुलकम्मन्तताय धनधञ्ञादिसमिद्धिं पापुणन्ता ...,* खु. पा. अट्ठ. 125.

अनागत त्रि., आगत का निषे., तत्पु. स. [अनागत], **1.** भविष्यत्काल, कार्यशीलता को अप्राप्त - *अतीतेसु अनागतेसु चापि ...,* सु. नि. 375; *अनागतेसूति पवत्तिं अप्पत्तेसु पञ्चक्खन्धेसु एव,* सु. नि. अट्ठ. 2.88; *अनागतम्हि कालम्हि,* थेरगा. 950; **2.** वर्तमान क्षण तक नहीं पहुंचा हुआ, इस समय तक अप्राप्त - *अनागतं यो पटिकच्च पस्सति ...,* थेरगा. 547; *तत्थ अनागतन्ति न आगतं, अविन्द'न्ति, अत्थो,* थेरगा. अट्ठ. 2.158; *किन्ति अनागता च अरहन्तो विजितं आगच्छेय्युं ...,* दी. नि. 2.58; मि. प. 123; **3.** अकथित,

अज्ञात, वह, जिसे वर्तमान क्षण तक सीखा नहीं जा सका है, वह, जो ज्ञान के विषय के रूप में अभी तक उपस्थित नहीं है; **4.** अनतिक्रान्त, वह, जो अभी तक पार नहीं कर सका हो - *अङ्गरते अनागते पठमयामेयेव,* जा॰ अट्ठ॰ 1.473; *अनागतेति परियोसानं अप्पत्ते, अनतिक्कन्तेति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.103; **5.** केवल नपुं॰ में संज्ञा-रूप में भी प्रयुक्त, **क.** भविष्यकाल - *अतीतं नान्वागमेय्य, नप्पटिकङ्खे अनागतं,* म॰ नि॰ 3.227; *अतीतं खो, आवुसो, एको अन्तो, अनागतं दुतियो अन्तो,* अ॰ नि॰ 2(2).105; **ख. केवल व्याकरणों में,** किसी क्रिया-पद द्वारा व्यक्त भवि॰ - *अनागते भविस्सन्ती,* क॰ व्या॰ 423; मो॰ व्या॰ 5.68; **तंस** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनागतांश], वर्तमान क्षण तक अप्राप्त कालखण्ड, वर्तमान समय तक न पहुंचा हुआ कोई भी धर्म या भाग - *यं रूपं अजातं ... अनागतंसेन सङ्गहितं ... इदं वुच्चति रूपं अनागतं,* विभ॰ 2; *तीणि ञाणानि – अतीतंसे ञाणं, अनागतंसे ञाणं, पच्चुप्पन्नंसे ञाणं,* दी॰ नि॰ 3.221; - **तंसञाण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, सात अभिज्ञाओं में एक, जो अंश अथवा कालखण्ड वर्तमान क्षण तक अप्राप्त है, उसके विषय में ज्ञान - ... *अनागतंसञाणं पेसेत्वा ओलोकेन्तो ... समिज्झनभावं अद्दस,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.123; *अनागतंसञाणचतुत्थं ... अनागते सङ्खो नाम राजा भविस्सती'ति आदिना नयेन ... नवत्तब्बारम्मणं,* विभ॰ अट्ठ॰ 352; *अनागतंसञाणस्स, यथाकम्मुपगस्स च,* अभि॰ अव॰ 140; - **कालिक** त्रि॰, [अनागतकालिक], अभी तक नहीं आए हुए भविष्यत्काल से सम्बन्धित - *कत्थचि अतीतकालिका कत्थचि अनागतकालिका,* सद्द॰ 1.49; - **कोट्ठास** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनागतकोष्ठांश], काल का अभी तक नहीं आया हुआ भाग, भविष्यकाल का कोई अंश - *अपरन्तं आरब्भाति अनागतकोट्ठासं आरम्मणं करित्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 415; - **ञाणकथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, कथा॰ नामक प्रकरण की पांचवीं कथा के आठवें खण्ड का कुछ संस्करणों में प्राप्त शीर्षक, पृ॰ 262; - **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अनागतत्व], अनधिगमन, अग्रहण या अज्ञान की अवस्था, अज्ञानत्व, अप्राप्तित्व - *राजानं निस्साय गन्थेसु अनागतत्ता,* सा॰ वं॰ 112(ना॰); - **त्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनागतार्थ], अर्थ अथवा परियत्ति एवं पटिवेध के ज्ञान को प्राप्त न किया हुआ, सत्यज्ञानविरहित - *खुद्दञ्च बालं उपसेवमानो, अनागतत्थञ्च उसूयकञ्च,* सु॰ नि॰ 320; *अनागतत्थन्ति अनधिगतपरियत्तिपटिवेधत्थं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.57; - **ताधिवचनकुसल** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, भविष्य के विषय में कुशल, भविष्यत्कालवाचक शब्द के प्रयोग के सम्बन्ध में कुशल - ... *अतीताधिवचनकुसलो, अनागताधिवचनकुसलो* ..., नेत्ति॰ 29; - **तारम्मण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनागतालम्बन], वे चित्त एवं चैतसिक धर्म, जिनका आलम्बन भविष्य हैं, भविष्य को चिन्तन-विषय बनाने वाले चित्त एवं चैतसिक धर्म - *अनागते धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्त-चेतसिका धम्मा – इमे धम्मा अनागतारम्मणा,* ध॰ स॰ 1048, 1433; - **तारम्मणकथा** स्त्री॰, कथा॰ के 9.7, अध्याय का शीर्षक, कथा॰ 328-336; - **पुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनागतपृच्छा], भविष्यत्काल के विषय में पूछताछ - *अपरापि तिस्सो पुच्छा – अतीतपुच्छा, अनागतपुच्छा, पच्चुप्पन्नपुच्छा,* महानि॰ 251; - **प्पजप्पा** स्त्री॰, च॰ तत्पु॰ स॰ संभवतः प्र + √जल् से व्यु॰, भविष्य से सम्बन्धित अनेक प्रकार की मानसिक कामना - *अनागतप्पजप्पाय, अतीतस्सानुसोचना,* स॰ नि॰ 1(1).6; जा॰ अट्ठ॰ 6.31; *अनागतप्पजप्पायाति अनागतस्स पत्थनाय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.27 (द्रष्ट॰ पजप्पा, पजप्पना, आगे) - **फल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनागतफल], वह, जिसने फल को प्राप्त नहीं किया है, अनधिगतफल, फल को अप्राप्त - *आगताफलो अनागताफलो च,* सद्द॰ 2.491; **भय** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनागतभय], भविष्य में आने वाला भय, भविष्य में आशङ्कित सङ्कट या विपत्ति - ... *कामेसु अनागतभयं सम्पस्समाना* ..., म॰ नि॰ 1.387; *पुरा आगच्छते एतं, अनागतं महब्भयं,* थेरगा॰ 978; ... *देवदत्तो लाभसक्कारगिद्धो हुत्वा अनागतभयं न ओलोकेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.144; - **मद्धान** नपुं॰, अनागत + अद्धान [अनागताध्वन्], काल का अभी तक न आया हुआ भाग, भविष्यत्काल - *अनागतमद्धाने द्विन्नम्पि तेसं चक्खूनं अन्तरधानं दिस्वा* ..., मि॰ प॰ 130, द्रष्ट॰ अद्धान; - **रूप** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनागत-रूप], भविष्यत्काल-वाचक कोई शब्दरूप - ... *भविस्सती'ति आदीनि वदतो अनागतरूपं न समेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).182; *अनागतरूपन्ति अभीते अत्थे अनागतसद्दारोपनं अनागतप्पयोगो न समेति,* मू॰ प॰ टी॰ 1(2).196; - **वंस** पु॰, श्रीलङ्का के कस्सप-नामक स्थविर द्वारा रचित भावी बुद्ध मैत्रेय के जीवन-वृत्तान्त से सम्बन्धित एक लघु वंश-ग्रन्थ का नाम; ग॰ वं॰ 61, (जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰ 1886, 33-53 में जे॰ मिनायेफ द्वारा तथा ई॰ लूमन द्वारा मैत्रेय समिति, स्ट्रेसबर्ग 1919, 184-191 में संपादित); - **वचन** नपुं॰, कर्म॰ स॰, भवि॰ वाचक अथवा उससे सम्बन्धित शब्द - *विम्हयत्थवसेन पनेत्थ भविस्सतीति अनागतवचनं कतं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰)

2.182, तुल॰ अनागतरूप; - **समागम** पु॰, तत्पु॰ स॰, भविष्यत्काल का आगमन, भविष्यत्काल में मिलन, भविष्यत्काल - *अम्हं सब्बपति होहि, अनागतसमागमे,* अप॰ 2.261; - **सम्बन्ध** पु॰, तत्पु॰ स॰, भविष्यत्काल के साथ सम्बन्ध - *तस्मा अनागतसम्बन्धं कत्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.67; - **सुखावह** त्रि॰, ब॰ स॰, भविष्य के लिए सुख देने वाला, भविष्य में सुखकारी - *नाब्भतीतहरो सोको, नानागतसुखावहो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.145.

अनागन्तु पु॰ आ + √गम के कर्तृ॰ ना॰ का निषे॰ [अनागन्तृ], लौटकर न आने वाला (अनागामी के स्थानापन्न अथवा निर्वचन के रूप में केवल द्वितीयान्त 'इत्थत्तं के ही साथ प्रयोगों में प्राप्त) - ... *भवयोगयुत्तो अनागामी होति अनागन्ता इत्थत्तं,* इतिवु॰ 68; ... *ब्रह्मा आगन्ता इत्थत्तं, यदि वा अनागन्ता इत्थत्तं ?,* म॰ नि॰ 2.339; ... *सो ततो चुतो अनागामी होति, अनागन्ता इत्थत्तं,* अ॰ नि॰ 1(1).80.

अनागमन नपुं॰, [अनागमन], नहीं आ पहुंचना, वापस न आना, अप्रत्यावर्तन - *असुरानं अनागमनत्थाय,* जा॰ अट्ठ॰ 1.201; *कस्सचि अनागमनभावं ञत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.256; - **दिट्ठिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनागमनदृष्टिक], कर्मों के प्रभाव से पुनः आगमन न होने की मिथ्या-दृष्टि रखने वाला, पुनर्जन्म में विश्वास न रखने वाला - *इध ... असप्पुरिसो ... अनागमनदिट्ठिको दानं देति,* म॰ नि॰ 3.70; *अनागमनदिट्ठिको देति ...,* अ॰ नि॰ 2(1).161-162; *अनागमनदिट्ठिको देतीति कतस्स नाम फलं आगमिस्सतीति न एवं आगमनदिट्ठिं न उप्पादेत्वा देति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.54; *अनागमनदिट्ठिको देतीति न कम्मञ्च फलञ्च सद्दहित्वा देति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.265; - **सील** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनागमनशील], इस लोक में पुनर्जन्म न लेने वाला - *अनागामीति पटिसन्धिग्गहणवसेन कामलोकं अनागमनसीलो ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 249.

अनागमनीय त्रि॰, आ + √गम के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अनागमनीय], नहीं आगमन योग्य, नहीं स्वीकार करने योग्य, अप्रत्यावर्तनीय - *अभब्बो दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो अनागमनीयं वत्थुं पच्चागन्तुं,* अ॰ नि॰ 2(2).139; *अनागमनीयं वत्थुन्ति अनुपगन्तब्बं कारणं, पञ्चन्नं वेरानं द्वासट्ठिया च दिट्ठिगतानमेतं अधिवचनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.143.

अनागवन्तु त्रि॰, आगवन्तु का निषे॰ [अनागस्], पापरहित, दोषरहित, निर्दोष - *महानागं अनागवा,* म॰ वं॰ 37.115, तुल॰; *कथं आगुं न करोतीति - नागो? आगू वुच्चन्ति पापका अकुसला धम्मा ...,* महानि॰ 147.

अनागामी पु॰, आगामी का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनागामी], 1. **शा॰ अ॰** पुनः लौटकर वापस न आने वाला, 2. **ला॰ अ॰** बुद्ध के आर्यमार्ग में प्रविष्ट वह आर्यपुद्गल, जिसने स्रोतापत्ति-फल की अवस्था का साक्षात्कार कर प्रथम तीन संयोजनों का प्रहाण कर लिया है, सकृदागामी-मार्ग फल की अवस्था प्राप्त कर राग एवं द्वेष नामक दो संयोजनों को शिथिल कर लिया है तथा आर्यमार्ग की तृतीय अवस्था को प्राप्त कर राग एवं द्वेष का पूर्ण रूप से प्रहाण कर लिया है, उसे ब्रह्मा के लोक में जन्म प्राप्त होता है, वह इस मानवलोक में उत्पत्ति ग्रहण नहीं करता है - *असुको भिक्खु अनागामी,* पारा॰ 107; *अनागामीति पटिसन्धिग्गहणवसेन कामलोकं अनागमनसीलो ततियफलट्ठो,* उदा॰ अट्ठ॰ 249; *ततियमग्गपञ्ञं भावेत्वा अनागामी नाम होति,* विसुद्धि॰ 2.351; *पटिसन्धिवसेन इध अनागमनतो अनागामी,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.499; - **अरियसावक** पु॰, अनागामी-फल की अवस्था को प्राप्त बुद्ध का आर्यश्रावक - *अनागामिअरियसावकानञ्हि समादानवसेन उपोसथकम्मं नाम नत्थि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.213; - **उपासक** पु॰, अनागामी-फल की अवस्था को प्राप्त बुद्ध का गृहस्थ शिष्य - *छत्तपाणि नामेको अनागामी उपासको ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.365; - **उपासिका** स्त्री॰, अनागामीफल की अवस्था को प्राप्त बुद्ध की गृहस्थ शिष्या - *घरणी नाम इद्धिमन्ती एका अनागामिउपासिका,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.120; - **मिता** स्त्री॰, भाव॰ [अनागामिता], अनागामी की अवस्था - *दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता'ति,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 190; *अनागामितातिं अनागामिभावो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).311; - **त्थेरवत्थु** पु॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.169 में आगत एक कथा का शीर्षक; - **फल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, श्रमण-जीवन के चार फलों में से तीसरा फल, अनागामी मार्ग पर चलने वाले आर्यश्रावक द्वारा प्राप्तव्य फल - *तं भगवा ब्याकरिस्सति सोतापत्तिफले ... अनागामिफले वा ...,* महाव॰ 384; मि॰ प॰ 33; 303; *छन्दरागे उप्पादिते अनागामिफलं पटिविद्धं भविस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.10; - **फलसच्छिकिरिया** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अनागामीफल का साक्षात्कार - *अनागामिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्नो,* चूळव॰ 397; *अनागामिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्ने दानं देति,* म॰ नि॰ 3.305; - **फलुप्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अनागामी फल की

उत्पत्ति - *वुट्ठानन्ति अनागामिस्स अनागामिफलुप्पत्तिया,* विसुद्धि० 2.349; **फलूपनिस्सय** पु०, तत्पु० स०, अनागामी फल प्राप्त करने की योग्यता, अनागामीफल प्राप्त करने का शुभ चिह्न - *... सत्था ... मागण्डियब्राह्मणस्स सपजापतिकस्स अनागामिफलूपनिस्सयं दिस्वा ...,* ध० प० अट्ठ० 1.115; - **भाव** पु०, भाव० [अनागामिता], अनागामीफल की प्राप्ति की अवस्था - *... तस्मिं वा सति अनागामिभावो पटिकङ्खोति दस्सेति,* सु० नि० अट्ठ० 2.200; *अनागामिताति अनागामिभावो,* म० नि० अट्ठ० (मू.प.) 1.311; - **मग्ग** पु०, तत्पु० स०, अनागामीफल की प्राप्ति का मार्ग अथवा आर्यमार्ग के चार चरणों का तीसरा चरण - *अनागामिमग्गं भावेन्तोपि ...,* महानि० 6; *कामरागपटिघसंयोजनानि अनागामिमग्गेन पहीयन्ति,* ध० स० अट्ठ० 401; - **मग्गचित्त** नपुं०, तत्पु० स० [मार्गचित्त], भूमि के आधार पर विभाजित लोकोत्तर-भूमि के चार प्रकार के मार्गचित्तों में से तृतीय मार्गचित्त - *सोतापत्तिमग्गचित्तं ... अनागामिमग्गचित्तं, अरहत्तमग्गचित्तञ्चेति इमानि चत्तारिपि लोकुत्तरमग्गचित्तानि नाम,* अभि० ध० स० 6; *पटिसन्धिवसेन इमं कामधातुं न आगच्छतीति अनागामी, तस्स मग्गो अनागामिमग्गो, तेन सम्पयुत्तं चित्तं अनागामिमग्गचित्तं,* अभि० ध० वि० टी० 95; - **सुख** नपुं०, तत्पु० स०, अनागामीफलस्थ पुद्गल द्वारा संवेद्यमान सुख - *नेक्खम्मसुखन्ति अनागामिसुखं,* ध० प० अट्ठ० 2.230.

अनागु त्रि०, आगु का निषे० [अनागस्], दोषरहित, निर्दोष, निरपराध, निष्पाप - *अनागु झायामि असोचमानो,* स० नि० 1(1).144.

अनाघात त्रि०, आघात का निषे०, ब० स० [अनाघात], प्रतिहिंसा-रहित, आघातविरहित, द्वेषरहित, व्यापादरहित परविनाशचिन्तारहित, विहिंसामुक्त मैत्रीचित्त वाला - *मेत्तं नु खो मे चित्तं पच्चुपट्ठितं सब्रह्मचारीसु अनाघातं,* अ० नि० 3(2).66; चूळव० 409-410; *अनाघातन्ति आघातविरहितं, विक्खम्भनेन विहताघातन्ति अत्थो,* अ० नि० अट्ठ० 3.309.

अनाचरियक त्रि०, आचरियक का निषे०, ब० स० [अनाचार्यक], **क. शा.अ.** आचार्य से रहित, किसी आचार्य पर निर्भर न रहने वाला, अपना मार्गदर्शन स्वयं प्राप्त करने वाला, स्वयंभू बुद्ध - *बुद्धोति यो सो भगवा सयम्भू अनाचरियको ...,* महानि० 344; *अनाचरियकोति सयम्भूपदस्स अत्थविवरणं, यो हि आचरियं विना सच्चानि पटिविज्झति, सो सयम्भू नाम होतीति,* महानि० अट्ठ० 359; *अत्तना वा अनाचरियको हुत्वा ...,* खु० पा० अट्ठ० 153; *सयम्भू, महाराज, तथागतो अनाचरियको,* मि० प० 222; **ख. ला. अ.** बाहरी कर्म-काण्ड के आचरणों से मुक्त, आचार-विचार के जटिल विधि-विधानों से रहित - *अनन्तेवासिकमिदं, भिक्खवे, ब्रह्मचरियं वुस्सति अनाचरियकं,* स० नि० 2(2).139; *अनाचरियकन्ति आचरणकिलेसविरहितं,* स० नि० अट्ठ० 3.46-47.

अनाचरियकुल नपुं०, तत्पु० स०, आचार्य से भिन्न अन्य व्यक्ति का घर या कुल - *अनाचेरकुले वसन्ति आचरियकुलेपि अवसमानो, आचारसिक्खापकं कञ्चि निस्साय अवसितत्ताति अत्थो,* जा० अट्ठ० 1.418.

अनाचरियुपज्झाय त्रि०, ब० स०, आचार्य एवं उपाध्याय से रहित व्यक्ति या भिक्षु - *अनाचरियुपज्झायो, वने वासं उपेमहं,* अप० 2.78.

अनाचार[1] त्रि०, आचार का निषे०, ब० स० [अनाचार], अनैतिक, अपवित्र, पापी, बुद्धशासनप्रदूषक, बुद्ध-शासन को दूषित करने वाला - *अप्पस्सुतो खो पन अयमायस्मा अनाचारो,* अ० नि० 3(2).133; 136; *भिक्खुं भिन्नाजीवं अनाचारं पापमित्तं दुस्सीलं कुसीतं हीनवीरियं कुसला बोधिपक्खिया धम्मा आपातं न उपेन्ति,* मि० प० 276.

अनाचार[2] पु०, निषे०, तत्पु० स० [अनाचार], दुराचार, पापकर्म, दुष्कर्म - *अनाचारं आचरति,* महाव० 63; *कथञ्हि नाम सामणेरा एवरूपं अनाचारं आचरिस्सन्ती'ति,* महाव० 99; *अनाचारं आचरतीति अनेकप्पकारं कायवचीद्वारवीतिक्कमं करोति,* पारा० अट्ठ० 2.178; *दुविधो हि अनाचारो कायिको वाचसिको च,* विसुद्धि 1.18; *सब्बम्पि दुस्सील्यं अनाचारो,* विसुद्धि 1.17; - **क** त्रि०, निषे०, ब० स० [अनाचारक], आचारविहीन, चरित्रविहीन, बुरे आचरण वाला - *अयं पुग्गलो अप्पटिपन्नको अनाचारको,* म० नि० अट्ठ० (उप.प.) 3.671; - **किरिया** स्त्री०, [अनाचारक्रिया], दुराचारकर्म, पापकर्म, अशोभनकर्म - *तं इत्थिं दिस्वा तस्सा अनाचारकिरियं ...,* ध० प० अट्ठ० 1.359.

अनाचिक्खित त्रि०, आचिक्खित का निषे० [अनाख्यात], अकथित, अनुल्लिखित, ध्यान में नहीं आया हुआ, न कहा हुआ - *तस्मा अनाचिक्खितो भगवता,* मि० प० 121; *एत्तकं एत्थ निक्खित्त'न्ति अनाचिक्खितं,* पे० व० अट्ठ० 176.

अनाचिण्ण त्रि०, आचिण्ण का निषे० [अनाचीर्ण], आचरण में न उतारा गया, व्यवहार में न लाया गया, अप्रयुक्त, अव्यवहृत - *अनाचिण्णं तथागतेन,* महाव० 476; चूळव० 195.

अनाजानीय त्रि., अजानीय का निषे. [अनाजानेय], ठीक से न जानने वाला, आज्ञा न मानने वाला, घटिया किस्म या नस्ल का – *मयञ्हि, भन्ते, पुब्बे अञ्ञतित्थिये परिब्बाजके अनाजानीयेव समाने आजानीयाति अमञ्ञिम्ह,* म. नि. 2.33; *अनाजानीयेति गिहिवोहारसमुच्छेदनस्स कारणं अजाननके,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.32; – **भोजन** नपुं., कर्म. स., घटिया किस्म के घोड़ों के लिये दिया गया भोजन – *अनाजानीयभोजनं भोजिम्ह,* म. नि. 2.33; *अनाजानीयभोजनन्ति कारणं अजानन्तेहि भुञ्जितब्बं भोजनं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.32.

अनाजीवभूत त्रि., आजीवभूत का निषे., तत्पु. स., जीविका-साधन के रूप में अग्राह्य, जीविकोपार्जन का निषिद्ध साधन या उपाय – *अनाजीवभूतेन परिभोगेन,* जा. अट्ठ. 5.469.

अनाणत्त त्रि., आणत्त का निषे. [अनाज्ञप्त], आज्ञा न पाया हुआ, अननुमोदित – *अनज्झिट्ठो वाति थेरेहि धम्मं भणाही'ति अनाणत्तो अनायाचितो च,* महानि. अट्ठ. 270; – **त्ता** नपुं., भाव., अयाचितत्त्व, अप्रार्थितत्व – *तेहि पन अनाणत्तता पाराजिकं,* पारा. अट्ठ. 1.269, द्रष्ट. आगे.

अनाणापित त्रि., आणापित का निषे., तत्पु. स. उपरिवत् – *अनज्झेसितोति अनाणापितो, न इच्छितो'ति एके,* महानि. अट्ठ. 155.

अनातापी त्रि., आतापी का निषे., तत्पु. स. [अनातापी], अनध्यवसायी; अनुद्योगी, हीनवीर्य, अनुत्साही, निर्वीर्य, प्रबल अभ्युत्साह से रहित – *अनातापी ... अनोत्तप्पी अभब्बो सम्बोधाय,* स. नि. 1(2).175; *अनातापीति यं वीरियं किलेसे आतपति, तेन रहितो,* स. नि. अट्ठ. 2.146; *अनातापी अनोत्तापी सततं समितं कुसीतो हीनवीरियो'ति वुच्चति,* अ. नि. 1(2).15; *अनातापीति निब्बीरियो,* अ. नि. अट्ठ. 2.251.

अनातुर त्रि., आतुर का निषे. [अनातुर], कष्टरहित, आतुरता-रहित, व्यग्रतारहित, शान्त, स्वस्थ, अनुद्विग्न – *सुसुखं वत जीवाम, आतुरेसु अनातुरा,* ध. प. 198; *किलेसातुरेसु मनुस्सेसु निक्किलेसताय अनातुरा,* ध. प. अट्ठ. 2.148; *विजानन्ति च ये धम्मं, आतुरेसु अनातुरा,* थेरगा. 276; – **ता** स्त्री., भाव. [अनातुरता], आरोग्य, स्वस्थता, निश्चिन्तता – *तत्थ आरोग्यं नाम सरीरस्स चेव चित्तस्स च अरोगभावो अनातुरता,* जा. अट्ठ. 1.350.

अनाथ त्रि., नाथ का निषे., ब. स. [अनाथ], नाथरहित, संरक्षणरहित, असहाय, दयनीय, अभागा, बेचारा – *अपविद्धा अनाथा ते,* स. नि. 1(1).75; *अनाथाति अपतिट्ठा,* स. नि. अट्ठ. 1.104; *तस्मिञ्च म ते विधवा अनाथा होन्ति,* पे. व. अट्ठ. 55; – **थागमन** नपुं., तत्पु. स. [अनाथागमन], अनाथ की भांति आगमन – *द्वे पुत्ते चस्स अनाथागमनेन आगते दिस्वा गन्त्वा राजूनं आचिक्खि,* जा. अट्ठ. 7.273; – **कालकिरिया** स्त्री., ष. तत्पु. [अनाथकालक्रिया], अनाथ की मृत्यु, निस्सहाय का मरण, अनाथ की भांति मरण – *अनाथसालाय अनाथकालकिरियं कत्वा निपन्नो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).253; – **भाव** पु., [अनाथभाव], असहायता का भाव, दैन्य, असहाय स्थिति, दीनता – *करुणा, परदुक्खासहनरसा, ... दुक्खाभिभूतानं अनाथभावदस्सनपदट्ठाना,* ध. स. अट्ठ. 237; – **मनुस्स** पु., [अनाथमनुष्य], असहाय मनुष्य, दीन दरिद्र मनुष्य – *अनाथसालायं निपन्ने अनाथमनुस्से दिस्वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).276; – **मरण** नपुं., कर्म. स. [अनाथमरण], दुःखद मृत्यु, दुर्भाग्यपूर्ण मरण, (प्रायः मरति के साथ प्रयुक्त) – *परेसं हत्थे मरणतो अरञ्ञे अनाथमरणमेव वरतरं,* जा. अट्ठ. 2.158; – **मान** त्रि., अपने को दीन-दरिद्र मानने वाला – *अनाथमानो उपगायति नच्चति,* जा. अट्ठ. 5.15; *अनाथमानोति निरवस्सयो अनाथो विय,* जा. अट्ठ. 5.17; – **वास** पु., [अनाथवास], अनाथों की तरह निवास, असहाय जीवन, दरिद्र जीवन, अकिञ्चन की भांति जीवनवृत्ति – *अनाथवासं वसिम्ह,* पारा. अट्ठ. 1.58; – **सरीर** नपुं., [अनाथशरीर], ऐसा मृत शरीर, जिसकी देखरेख करने वाला कोई नहीं हो, लावारिश मुर्दा – *अनाथसरीरानि पटिजग्गन्ता विचरन्ति,* महाव. अट्ठ. 237; – **साला** स्त्री., तत्पु. स. [अनाथशाला], निराश्रित जनों के लिये विश्रामगृह, दरिद्रों का विश्रामस्थल – ... *अनाथसालायं निपन्ने अनाथमनुस्से दिस्वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).276; *कपालहत्थो ... तस्मिंयेव नगरे अनाथसालायं वसति,* पे. व. अट्ठ. 4.

अनाथपिण्डिक पु., व्य. सं. [बौ. सं. अनाथपिण्डद], **क.** भगवान् बुद्ध के शिष्य तथा श्रावस्ती नगर के निवासी एक प्रसिद्ध धनी व्यापारी सुदत्त का उपनाम, संभवतः अनाथों या दीनदरिद्रों को उदारतापूर्वक दान देने के कारण यह उपनाम प्राप्त हुआ – *सुदत्तो अनाथपिण्डको,* अभि. प. 437; *दायकानं यदिदं सुदत्तो गहपति अनाथपिण्डिको,* अ. नि. 1(1).36; *दायको दानपति हुत्वा तेनेव गुणेन पत्थटनामधेय्यो अनाथपिण्डिको नाम अहोसि,* अ. नि. अट्ठ. 1.285; *निच्चकालं*

अनाथानं पिण्डं अदासि, तेन अनाथपिण्डिकोति सङ्ख्यं गतो, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 90; **ख.** पिता का नाम सुमनसेट्ठी, ज्येष्ठभ्राता का नाम सुभूतिथेर - *सावत्थियं सुमनसेट्ठिस्स गेहे निब्बत्ति, सुभूतीतिस्स नामं अंकसु,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.173; **ग.** महाउपासिका विशाखा के साथ इनका उल्लेख, कभी-कभी सुभूति को महानाथपिण्डिक तथा सुदत्त को चुळअनाथपिण्डिक कहा गया है, जा॰ अट्ठ॰ 1.152; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.81; **घ.** पुञ्ञलखणदेवी का नाम इनकी अग्रमहिषी के रूप में प्राप्त, जा॰ अट्ठ॰ 2.337; **ङ.** राजगृह के एक श्रेष्ठी की बहन के साथ इनके विवाह का उल्लेख प्राप्त होता है, चूळव॰ 282; **च.** पुत्र का नाम काल, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.108; **छ.** तीन पुत्रियों के नाम महासुभद्दा, चूलसुभद्दा एवं सुमनादेवी, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.88; **ज.** बहू का नाम सुजाता, नतिनी का नाम खेमा, जा॰ अट्ठ॰ 2.287; **झ.** उनके मित्रों के रूप में उग्गसेट्ठी एवं काळकण्णि के नाम प्राप्त, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.265 जा॰ अट्ठ॰ 1.348; **ञ.** पुण्णा एवं रोहिणी के नाम उनकी दासियों के रूप में उल्लिखित, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 223; जा॰ अट्ठ॰ 1.242; **ट.** श्रावस्ती में भगवान् बुद्ध को जेतवनविहार का दान तथा इस विहार में अनेक बुद्धोपदेशों के उल्लेख सम्पूर्ण त्रिपिटक के विभिन्न भागों में प्राप्त, जा॰ अट्ठ॰ 1.102; **ठ.** उसके रुग्ण होने का उल्लेख निकायों में मिलता है - *अनाथपिण्डिको गहपति आबाधिको होति दुक्खितो बाळ्हगिलानो,* म॰ नि॰ 3.309; **ड.** उनकी मृत्यु तथा तदुपरान्त देवपुत्र के रूप में तुषित स्वर्ग में उनकी उत्पत्ति के उल्लेख भी प्राप्त - *अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति, ... कालमकासि तुसितं कायं उपपज्जि,* म॰ नि॰ 3.313; - **पुत्तकालवत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ में आगत एक कथानक का शीर्षक, जिसमें अनाथपिण्डिक के पुत्र काल का कथानक वर्णित है, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.108-110; - **वग्ग** पु॰, स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1)62-68; - **सेट्ठिवत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ के एक कथानक का शीर्षक, जिसमें अनाथपिण्डिक से सम्बद्ध एक वृत्तान्त वर्णित है; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.7-9; - **पिण्डिकोवादसुत्त** म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, जिसमें अनाथपिण्डिक के महाप्रयाण के काल में बुद्ध-प्रवेदित उपदेश का वर्णन मिलता है, म॰ नि॰ 3.309-315.

अनादर[1] पु॰, आदर का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनादर], **1.** असम्मान, अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार - *अवमानं तिरोक्कारो परिभवोप्यनादरो, पराभवोप्यवञ्ञा,* अभि॰ प॰ 172; **2.** प्रयोग-नियम के अनुसार अनादर में छट्ठी तथा सप्त॰ वि॰ होती हैं - *अनादरे च,* क॰ व्या॰ 307; *छट्ठी चानादरे,* मो॰ व्या॰ 2.37; *तस्स पस्सन्तस्सेवाति अनादरे सामिवचनं, तस्मिं पस्सन्तेयेवाति अत्थो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.124; *अनादरे हि इदं सामिवचनं,* उदा॰ अट्ठ॰ 310.

अनादर[2] त्रि॰, ब॰ स॰ [अनादर], आदर-रहित, सम्मान का भाव न रखने वाला, अन्यों के प्रति सम्मान प्रकट न करने वाला; असम्मानित - *उक्खित्तं भिक्खुं ... अनादरं अप्पटिकारं अकतसहायं, तमनुवत्तेय्य,* पाचि॰ 293; *दुस्सीललुद्दा फरुसा अनादरा,* सु॰ नि॰ 250; *अनादराति इदानि न करिस्साम, विरमिस्साम एवरूपा ति एवं आदरविरहिता,* सु॰ नि॰ 1.265; *यतो च होति पापिच्छो अहिरीको अनादरो,* इतिवु॰ 26; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अनादरता], असम्मानभाव, तिरस्कारभाव, तिरस्क्रिया - *सहधम्मिके वुच्चमाने ... विप्पटिकूलग्गाहिता ... अनादरियं अनादरता अगारवता ... अयं वुच्चति दोवचस्सता,* ध॰ स॰ 1332; *अनादरस्स भावो अनादरियं, इतरं तस्सेव वेवचनं, अनादियनाकारो वा अनादरता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 415; - **भाव** पु॰, [अनादरभाव], उपरिवत् - *अनादरभावो अनादरियं,* विभ॰ अट्ठ॰ 451.

अनादरिय नपुं॰, अनादर[2] से निष्पन्न [अनादर्य], अनादर का भाव, असम्मानभाव, असावधानी - *अनादरभावो अनादरियं,* वि॰ भ॰ अट्ठ॰ 451; *अनादरियं नाम द्वे अनादरियानि,* पाचि॰ 153; *सो अनादरियं पटिच्च करोति येव,* पाचि॰ 153; ध॰ स॰ 1332; *अनादरियेन वा अजाननेन वा,* मि॰ प॰ 248; - **रिक** त्रि॰, अनादरिय से व्यु॰ [अनादर्यक], उपरिवत् - *पापमित्तसंसग्गेन पन ... अनादरिको हुत्वा ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 6, पाठा॰ अनादरियको; - **कथा** स्त्री॰, विन॰ वि॰ के एक खण्डविशेष का शीर्षक, 1604-1609; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, अनादरभाव, असम्मानभाव, तिरस्कारभाव - *सहधम्मिके वुच्चमाने ... अनादरियं अनादरियता ... अयं वुच्चति दोवचस्सता,* पु॰ प॰ 126, पाठा॰ अनादरियता.

अनादान त्रि॰, आदान का निषे॰, ब॰ स॰, इच्छा न करनेवाला, वीततृष्ण, स्कन्धों के प्रति रागमुक्त, आत्मग्राह से मुक्त मनोदशा वाला, कामनारहित या निष्काम - *वीततण्हो अनादानो, निरुत्तिपदकोविदो,* ध॰ प॰ 352; *अनादानोति खन्धादीसु निग्गहणो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.321; *वीततण्हो अनादानो, सतो भिक्खु परिब्बजे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.316; *पञ्चन्नं खन्धानं अहं ममन्ति गहितत्ता सादानेसु तस्स गहणस्स अभावेन अनादानं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.386.

अनादिकाल पु॰/त्रि॰, स॰ प॰ के पू॰ प॰ के रूप में ही प्रायः प्रयुक्त [अनादिकाल], **क.** काल की वैसी स्थिति, जिसके प्रारम्भिक छोर का पता न हो, सुदीर्घकालावधि, **ख.** निषे॰, ब॰ स॰, वह, जिसके लिये काल का कोई प्रारम्भिक क्षण विद्यमान न हो, आदिरहित, नित्य, शाश्वत, अनादिकाल से चला आ रहा, – **ता** स्त्री॰, भाव॰, शाश्वतता, नित्यता, चिरन्तनता – *तेसं विसयेसु ... सत्ता विपुलविसयताय अनादिकालताय च ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 297; – **पवत्त** त्रि॰, अनादिकाल से चला आ रहा, अनादिकाल से प्रवर्तित – *अनादिकालपवत्तं संसारचक्कं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.147; *अनादिकालपवत्ते दियड्ढसहस्सकिलेसे ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 273; – **भावित** त्रि॰ अनादिकाल से भावित – *अनादिकालभावितेहि किलेसेहि आहितं,* उदा॰ अट्ठ॰ 156.

अनादिण्ण त्रि॰, आदिण्ण का निषे॰ [अनादीर्ण], नहीं फटा हुआ, अविदीर्ण, अखण्डित – *अच्छिन्नं वा अनादिण्णं धारेन्तस्स, तिचीवरं,* विन॰ वि॰ 47.

अनादिन्नत्त नपुं॰, भाव॰, अनादिन्न से व्यु॰ [अनादत्तत्व], नहीं ग्रहण करने की स्थिति या अवस्था – *विसमं अनादिन्नत्ता समाधि,* पटि॰ म॰ 44.

अनादिमन्तु त्रि॰, [अनादिमत्], प्रारम्भ-रहित, नित्य, शाश्वत, चिरन्तन - *अनादिमतिसंसारे,* उदा॰ अट्ठ॰ 318.

अनादियन नपुं॰, आदियन का निषे॰, तत्पु॰ स॰, नहीं लिया जाना, अस्वीकरण, अग्रहण, तिरस्करण – *अनादियनाकारो वा अनादरता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 415; – **नाकार** पु॰, परामर्श के अस्वीकरण की स्थिति - *अनद्दायनाति अनादियनाकारो,* विभ॰ अट्ठ. 471; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, अस्वीकरण का भाव, तिरस्क्रिया, उपेक्षाभाव – *बुद्धादीनं वचनं अनादियनताय,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.212; – **ना** अनादियन का स्त्री॰, उपरिवत् – *अनद्दा ति अनादियना,* विभ॰ अट्ठ॰ 471; – **भाव** पु॰, भाव॰, उपरिवत् - *वन्तोति इदं पुन अनादियनभावदस्सनवसेन,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.81.

अनादीनवदस्स त्रि॰, आदीनवदस्स का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनादीनवदर्शक], विपत्ति या संकट को न देखने वाला, दोषरहितता देखने वाला, किसी तरह का दोष न समझने वाला – *... अनादीनवदस्सो पुराणदुतियिकाय तिक्खत्तुं मेथुनं धम्मं अभिविञ्ञापेसि,* पारा॰ 19; *अनादीनवदस्सोति यं भगवा इदानि सिक्खापदं पञ्ञपेन्तो आदीनवं दस्सेस्सति, तं अपस्सन्तो अनवज्जसञ्ञी हुत्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.164.

अनादीनवदस्सावी त्रि॰, [अनादीनवदर्शी], उपरिवत् – *अनादीनवदस्सावी, सो दुक्खा न हि मुच्चति,* थेरगा॰ 730-731; *अनादीनवदस्सावीति यो ... इट्ठानिट्ठेसु रूपायतनेसु ... यथारुचि पवत्तन्तं चक्खुन्द्रियं अनिवारयं ... आदीनवं दोसं न पस्सति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.234.

अनादीनवदस्सिता स्त्री॰, भाव॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनादीनवदर्शिता], कामसुखों में आनन्द एवं कुशलता को देखने की मनःस्थिति - ... *कामेसु अनादीनवदस्सितं सब्बाकारतो विदित्वा ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 297.

अनादेय्यवाचा स्त्री॰, कर्म॰ स॰, अग्राह्यवाणी, अस्वीकार्य वाग्व्यवहार - *यो सब्बलहुसो सम्फप्पलापस्स विपाको, मनुस्सभूतस्स अनादेय्यवाचासंवत्तनिको होति,* अ॰ नि॰ 3(1).79.

अनाधानगाही त्रि॰, आधानगाही का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनाधानग्राही], अपने किसी विशेष मत पर आग्रह न करने वाला, अनाग्रही - *न सन्दिट्ठिपरामासी होति न आधानग्गाही,* दी॰ नि॰ 3.34; पाठा॰ अनाधानग्गाही; *आधानं वुच्चति दळ्हं सुट्ठु ठपितं, तथा कत्वा गण्हातीति आधानग्गाही,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.21; *भिक्खु असन्दिट्ठिपरामासी होति अनाधानग्गाही सुप्पटिनिस्सग्गी,* म॰ नि॰ 1.137.

अनाधार त्रि॰, आधार का निषे॰, ब॰ स॰ [अनाधार], आधाररहित, निराधार, आश्रयरहित, बेसहारा – *कुम्भो अनाधारो सुप्पवत्तियो होति,* स॰ नि॰ 3(1).20; *पत्ता अज्झोकासे अनाधारा निक्खित्ता,* चूळव॰ 231.

अनानत्तकथिक त्रि॰, नानत्तकथिक का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनानात्वकथिक], बात को सीधे तौर पर कहने वाला, घुमा-फिरा कर बात न करने वाला - *अनानाकथिकोति अनानत्तकथिको होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.195.

अनानाकथिक त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनानाकथिक], बात को घुमा-फिरा कर न कहने वाला, सीधे रूप में कहने वाला, निरर्थक बात न कहने वाला – *सङ्गतो खो पन अनानाकथिको होति अतिरच्छानकथिको,* अ॰ नि॰ 3(1).4; *अनानाकथिकेनाति नानाविधं तं तं अनत्थकथं अकथेन्तेन,* परि॰ अट्ठ॰ 208.

अनानुगिद्ध त्रि॰, अनुगिद्ध का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनानुगृद्ध या अनानुगिद्ध], लोभरहित, लिप्सारहित, आसक्तिरहित, निरासक्त – *निब्बानाभिरतो अनानुगिद्धो,* सु॰ नि॰ 86; *अनानुगिद्धोति कञ्चि धम्मं तण्हागेधेन अनानुगिज्झन्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.129.

अनानुपस्सी त्रि., अनुपस्सी का निषे., तत्पु. स. [अनानुपश्यिन्], **शा. अ.** उचित विचार-विमर्श न करने वाला, अनुचिन्तन न करने वाला, **ला. अ.** रूप आदि धर्मों में 'मैं' और 'मेरे' को न देखने वाला – *उद्धं अधो सब्बधि विप्पमुत्तो, अयंहमस्मीति अनानुपस्सी,* उदा. 157; ... *अनानुपस्सीति ... रूपवेदनादीसु अयं नाम धम्मो अहमस्मी'ति दिट्ठिमानमञ्ञनावसेन एवं नानुपस्सति,* उदा. अट्ठ. 294.

अनानुपुट्ठ त्रि., अनुपुट्ठ का निषे., तत्पु. स. [अनानुपृष्ठ], **क.** वह, जिस से प्रश्न नहीं किया गया – *यो अत्तनो सीलवतानि जन्तु, अनानुपुट्ठोव परेस पाव,* सु. नि. 788; *अनानुपुट्ठोति अपुच्छितो,* सु. नि. अट्ठ. 2.216; **ख.** पुनः पुनः पूछा गया – *यो अत्तनो दुक्खमनानुपुट्ठो, पवेदये जन्तु अकालरूपे,* जा. अट्ठ. 4.202.

अनानुयायी त्रि., अनुयायी का निषे., तत्पु. स. [अनानुयायी], **क. शा. अ.** अनुगमन न करने वाला, **ख. ला. अ.** विषयभोगों के प्रति अनासक्त होकर कामभोगों में प्रवेश न करने वाला, अनासक्त, राग, द्वेष एवं मोह से मुक्त – *सञ्ञाविमोक्खे परमे विमुत्तो, तिट्ठेय्य सो तत्थ अनानुयायी,* सु. नि. 1078; *अनानुयायीति सो पुग्गलो तत्थ आकिञ्चञ्ञायतनब्रह्मलोके अविगच्छमानो तिट्ठेय्य,* सु. नि. अट्ठ. 2.284; *अनानुयायीति ... अरज्जमानो अदुस्समानो अमुय्हमानो अकिलिस्स – मानोति,* चूळनि. 95.

अनानुरुद्ध त्रि., अनुरुद्ध का निषे. [अनानुरुद्ध], वह, जो किसी के प्रति राग या आसक्तिभाव न रखता हो, रागद्वेषविरहित, उपेक्षावान् – *फस्सद्वयं सुखदुक्खे उपेक्खे, अनानुरुद्धो अविरुद्ध केनचि,* स. नि. 2(2).77; *अनानुरुद्धो अविरुद्धो केनचीति केनचि सद्धिं नेव अनुरुद्धो न विरुद्धो भवेय्य,* स. नि. अट्ठ. 3.27.

अनानुलोम त्रि., अनुलोम का निषे., तत्पु. स. [अनानुलोम], विपरीत, अनुचित, अनुपयुक्त, विलोम – *हीनं कायं उपपन्ना भवन्तो, अनानुलोमा भवतूपपत्ति,* दी. नि. 2.201.

अनापज्जन नपुं., आपज्जन का निषे., तत्पु. स. [अनापद्यमान], अप्राप्ति, किसी अन्य के साथ स्थिति का न होना – *अपरितस्सायाति तासं अनापज्जनत्थाय,* अ. नि. अट्ठ. 3.183.

अनापत्ति स्त्री., आपत्ति का निषे. [अनापत्ति], अपराधराहित्य, निर्दोषता, अदण्ड्यता, भिक्षु की विनयविरुद्ध पापकर्मों से रहित होने की स्थिति, निरपराधता – *अनापत्तिं आपत्तीति दीपेति,* महाव. 476; *अनापत्ति, भिक्खवे, असादियन्तिया'ति,* पारा. 40; – **क** त्रि., निषे., ब. स. [अनापत्तिक], आपत्तियों या अपराधों से सर्वथा मुक्त (भिक्षु) – *सुद्धानं भिक्खूनं अनापत्तिकानं,* महाव. 143; – **कर** पु., आपत्ति या अपराध को उत्पन्न न करने वाला – *अन्तोद्वादसहत्थट्ठो, अनापत्तिकरो सिया,* विन. वि. 46; *एकं दुस्ससाणिद्वारमेव अनापत्तिकरं,* पारा. अट्ठ. 1.225; – **दिट्ठि** त्रि., निषे., ब. स., आपत्ति को अनापत्ति माननेवाला – *तस्सा आपत्तिया अनापत्तिदिट्ठि होति,* महाव. 457; *तस्सा आपत्तिया अनापत्तिदिट्ठि अहोसि,* जा. अट्ठ. 3.429; – **बहुल** त्रि., ब. स., अनपराधी प्रकृति वाला, निरपराध स्वभाव वाला – *एकच्चो भिक्खु अधिच्चापत्तिको होति अनापत्तिबहुलो,* म. नि. 2.115; – **भाव** पु., निरपराधता, निर्दोषता, निष्पापता – **वार** पु., पारा. अट्ठ. के प्रथम भाग के एक खण्ड का शीर्षक, पारा. अट्ठ. 1.214–216; – **सञ्ञी** त्रि., आपत्ति या अपराध के प्रति संज्ञावान् न रहनेवाला – *यो च आपत्तिया अनापत्तिसञ्ञी,* अ. नि. 1(1).102.

अनापन्न त्रि., आपन्न का निषे., तत्पु. स. [अनापन्न], अप्राप्त, अप्रभावित, अस्पृष्ट, अछूता – *अनापन्नो वा सङ्घादिसेसं धम्मं,* अ. नि. 1(2).277; *अनुस्सुकाति कत्थचि उस्सुक्कं अनापन्ना,* अ. नि. अट्ठ. 3.179.

अनापर / नापर त्रि., अपर का निषे., ब. स., वह, जिससे अधिक उत्कृष्ट कुछ भी न हो, अतिशय श्रेष्ठ, अद्वितीय, अनुपम – *कथं कथा च यो तिण्णो विमोक्खो तस्स नापरो,* सु. नि. 1095; *अकिञ्चनं अनादानं, एतं दीपं अनापरं,* सु. नि. 1100; *अनापरन्ति अपरपटिभागदीपविरहितं, सेट्ठन्ति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.289.

अनापाथ त्रि., आपाथ का निषे., ब. स. [अनापाथ], पहुंच के बाहर, पकड़ में न आने वाला – *अनिदस्सनो ति चक्खुविञ्ञाणस्स अनापाथो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).7; *अञ्ञेसं अनापाथो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).307; – **गत** त्रि., इन्द्रियों द्वारा अग्राह्य, पकड़ के बाहर – *अनापाथगतो, भिक्खवे, लुद्दस्स,* म. नि. 1.234; *अनापाथगता रूपादयोपि,* ध. स. अट्ठ. 117; – **गतत्त** निषे., भाव. [-गतत्व], अग्राह्यत्व, इन्द्रियगोचरता का सर्वथा अभाव – *तं रूपानं अनापाथगतत्तापि अञ्ञाविहितस्सपि न होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).128.

अनापाद त्रि., ब. स., अविवाहित, अपरिणीत, नहीं ले जाया गया – *बहूसु वत सन्तीसु, अनापादासु इत्थिसु,* जा. अट्ठ. 4.158; *अनापादासूति ... आपादानं आपादो, परिग्गहोति अत्थो, नत्थि आपादो यासं ता अनापादा, अञ्ञेहि अकतपरिग्गहासूति अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.160.

अनापुच्छा अ॰, आ + √पुच्छ के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ अथवा आपुच्छा के निषे॰ का संक्षिप्तीकृत तृतीयान्त रूप, बिना पूछे ही, बिना ध्यान दिये ही, उपेक्षापूर्वक - *न उपज्झायं अनापुच्छा एकच्चस्स पत्तो दातब्बो,* महाव॰ 55; *न, भिक्खवे, उपज्झाये अनापुच्छा आवरणं कातब्बं,* महाव॰ 107; *सो पुग्गलो अनापुच्छा पक्कमितब्बं,* म॰ नि॰ 1.152.

अनापुच्छित त्रि॰, आ + √पुच्छ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनापृष्ट], बिना पूछा हुआ, नहीं कहा गया, बिना अनुमति वाला - *अनापुच्छिते अपुच्छितसञ्ञा पक्कमति,* पाचि॰ 373.

अनाबाध[1] पु॰, आबाध का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनाबाध], बाधा का अभाव, कष्ट का अभाव, सौभाग्य, सुखद स्थिति - ... *डंसमकसादीहि गुन्नं अनाबाधं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.25.

अनाबाध[2] त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अनाबाध], निर्बाध, बाधारहित, विघ्नरहित, अनुत्पीड़ित - *अक्खतन्ति वा अनाबाधं अनुप्पीळं, अनन्तरायेनाति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 298.

अनाभतोदक त्रि॰, ब॰ स॰ [अनाहृतोदक], वह, जो जल नहीं लाया है - *अभिन्नकट्ठोसि अनाभतोदको, अहापितग्गीसि असिद्धभोजनो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.192.

अनाभोग पु॰, आभोग का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनाभोग], **क.** रुचि का अभाव, ध्यान का अभाव, चित्तविक्षेप - *यस्मा च हितूपसंहारअहितापनयनसम्पत्तिमोदनअनाभोगवसेन चतुब्बिधोयेव सत्तेसु मनसिकारो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 240; **ख.** त्रि॰, भोग न करने वाला, अनासक्त - *अनावट्टेन्तस्स होति ... अनाभोगस्स होति,* कथा॰ 286; *अनावट्टिनो अनाभोगो न होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).374.

अनामक त्रि॰, ब॰ स॰ [अनामक], नामरहित, बिना नाम वाला, बेनाम - *यस्स नामं न जानन्ति तम्पि 'अनामको' नामाति वदन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 413-414.

अनामट्ठ त्रि॰, आमट्ठ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनामृष्ट], अभुक्त, किसी दूसरे के द्वारा अगृहीत, नहीं खाया हुआ - *गोणा अनामट्ठतिणं खादिस्सन्ति, मनुस्सानं अनामट्ठं सूपेय्यपण्णं भविस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.107; *अपिच अनामट्ठपिण्डपातो ... इस्सरस्सापि दातब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.61 (*अपब्बजितस्स हत्थतो लद्धो अत्तना अञ्ञेन वा पब्बजितेन अग्गहितअग्गो पिण्डपातो,* सारत्थ॰ टी॰ 2.244).

अनामत / अनमत त्रि॰, आमत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनामृत], मृत्यु का अविषयीभूत, न मरने वाला, अमृत्यु का स्थल - *अस्मिं पदेसे दड्ढानि, नत्थि लोके अनामतं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.45; *तत्थ अनामतन्ति मतट्ठानं ... अनमत'न्तिपि पाठो, लोकस्मिञ्हि अनमतट्ठानं असुसानं नाम नत्थीति अत्थो,* तदे॰.

अनामन्त / अनामन्ता अ॰, आ + √मन्त के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अनामन्त्र्य], अनुमति प्राप्त न करके, परामर्श या अनुमोदन प्राप्त न करके, बिना पूछे ही, बिना आज्ञा लिए ही - *अनामन्त कतं कम्मं, तं पच्छा अनुतप्पती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.157; *अनामन्तोति रहो नन्दादेविया सद्धिं मन्तेन्तेपि मयि अजानापेत्वा सहसाव पविसति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.307.

अनामन्तचार पु॰, अनुमति प्राप्त किये बिना भिक्षाटन - *अत्थतकथिनानं वो, भिक्खवे, पञ्च कप्पिस्सन्ति - अनामन्तचारो, असमादानचारो,* महाव॰ 331; *तत्थ अनामन्तचारोति याव कथिनं न उद्धरियति, ताव अनामन्तेत्वा चरणं कप्पिस्सति,* महाव॰ अट्ठ॰ 366.

अनामय त्रि॰, आमय का निषे॰, ब॰ स॰ [अनामय], **क.** स्वस्थ, शोकरहित, दुःखरहित, नीरोग - *ओदनं वा अनामयो,* उत्त॰ वि॰ 945; *सा पुञ्ञकामा सुखिनी अनामया,* महाव॰ 385; *अनामयाति अरोगा,* महाव॰ अट्ठ॰ 385; **ख.** नपुं॰, स्वास्थ्य, आरोग्य - *कुसलानामयारोग्यं,* अभि॰ प॰ 331; *कुसलञ्चेव नो राज, अथो राज अनामयं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.316; *तत्थ कुसलन्ति आरोग्यं, इतरं तस्सेव वेवचनं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.386.

अनामसित त्रि॰, आमसित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनामृष्ट], **क.** अस्पृष्ट, नहीं छुआ गया, **ख.** वह, जो विचाराधीन नहीं है, विचार का अविषय - *पुब्बे अनामसितखेत्तविसेसं अत्तनो दानमयं पुञ्ञं वत्वा ...,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 91.

अनामसितब्ब त्रि॰, आ + √मस के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अनाम्रष्टव्य], अविचारणीय, अपरामृश्य, विवेचन न करने योग्य - *अनामासानि आमसिन्ति अनामसितब्बट्ठानानि आमसिं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.299.

अनामास त्रि॰, आमास का निषे॰, तत्पु॰ [अनामृष्य], परामर्श न करने योग्य, विवेचन के अयोग्य - *अहं कपिस्मि दुम्मेधो, अनामासानि आमसिं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.299; - **दुक्कट** नपुं, [अनामृष्यदुष्कृत], प्रतिषिद्ध धर्म के सेवन से उत्पन्न दोष, पाचित्तिय के अन्त॰ विशेष प्रकार का अपराध या आपत्ति - *केवलं लोलताय गण्हन्तस्स अनामासदुक्कटं* सारत्थ॰ टी॰ 1.64.

अनामिका स्त्री॰, [अनामिका], अनामिका, कानी तथा बिचली अंगुली के बीच की अंगुली, बिना नाम वाली एक अंगुली - *मज्झिमानामिका चापि कनिट्ठा ति कमा सियुं,* अभि॰ प॰ 266.

अनामिसगरु त्रि., लाभ-निरपेक्ष - *अनामिसगरु हुत्वा धम्मं देसेय्य पण्डितो,* सद्धम्मो. 521.

अनायक त्रि., नायक का निषे., ब. स. [अनायक], नायक-रहित, पथ-प्रदर्शक-विहीन, निर्देशकविहीन - *उद्धरन्तो महादुग्गा, विप्पनट्ठे अनायके,* अप. 2.16.

अनायतन नपुं., आयतन का निषे., तत्पु. स. [अनायतन], अनुपयुक्त स्थल, अविहित क्षेत्र - *पण्डिता अनायतनेपि वीरियं अकंसु,* जा. अट्ठ. 1.178; 1.180; *अनत्थकुसलेनाति अनत्थे अनायतने कुसलेन,* जा. अट्ठ. 1.244; *अनायतनं वुच्चति लाभयससुखानं अनाकरो दुस्सील्यकम्मं,* जा. अट्ठ. 5.119; - **भूत** त्रि., स्वभाव से ही अनाचार कर्म करने वाला, स्वभाव से ही दुराचारी, दुराचारी प्रकृति वाला - *अनायतनसीलस्साति ... दुस्सील्यकम्मेन समन्नागतस्स, अनायतनभूतमेव दुस्सीलपुग्गलं सेवन्तस्स,* जा. अट्ठ. 5.119.

अनायस त्रि., निषे., ब. स. [अनाश्रय], सुखविरहित, अभागा, अयोमय नरकतुल्य, सुख की उत्पत्ति के लिये अनुपयुक्त - *उज्जङ्गलं तत्तमिवं कपालं, अनायसं परलोकेन तुल्यं,* वि. व. 1232; *अनायसन्ति नत्थि एत्थ आयो सुखन्ति अनायं, ततो एव जीवितं सीयति विनासेतीति अनायसं, अथ वा न आयसन्ति अनायसं,* वि. व. अट्ठ. 285.

अनायाचित / अयाचित त्रि., आयाचित अथवा याचित का निषे., तत्पु. स. [अनायाचित], अप्रार्थित, अयाचित, वह, जिसकी याचना न की गयी हो, अनभ्यर्थित - *अनानुपुट्ठोति अपुट्ठो अपुच्छितो अयाचितो अनज्झेसितो अपसादितो,* महानि. 48; *अनज्झिट्ठो वाति थेरेहि'धम्मं भणाही'ति अनाणत्तो अनायाचितो च,* महानि. अट्ठ. 270.

अनायास त्रि., आयास का निषे., तत्पु. स. [अनायास], आयास-विहीन, दुःख-रहित - *उपसन्तो अनायासो,* थेरगा. 1008; *अप्पकोधो अनायासो,* अप. 1.344.

अनायुस्स त्रि., आयुस्स का निषे., तत्पु. स. [अनायुष्य], दीर्घायु को प्रदान न करनेवाला, दीर्घ जीवन प्रदान न करने वाला, आयु-उपच्छेदक - *पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा अनायुस्सा,* अ. नि. 2(1).136; *अनायुस्साति आयुपच्छेदना, न आयुवड्ढना,* अ. नि. अट्ठ. 3.47.

अनायूह त्रि., आयूह का निषे., तत्पु. स. [बौ. सं. अनायूह / अनाव्यूह], प्रयत्नरहित, प्रयासरहित, प्रयत्न न करने वाला, वह, जिसके विषय में प्रयास नहीं किया गया है - *अप्पतिट्ठं अनायूहं, तिण्णं लोके विसत्तिक'न्ति,* स. नि. 1(1).2.

अनायूहन नपुं., आयूहन का निषे., तत्पु. स. [अनायूहन / अनाव्यूहन], अप्रयास, प्रयासरहित्य, प्रयत्नाभाव, अध्यवसायरहित स्थिति - *आयूहने आदीनवं दिस्वा अनायूहने चित्तं पक्खन्दति,* पटि. म. 387; *अकरणाति अनायूहनेन,* अ. नि. अट्ठ. 2.196.

अनारक्ख पु., आरक्ख का निषे., तत्पु. स. [अनारक्ष], **क.** आरक्षा का अभाव, असंवर, असंरक्षण - *या इमेसं छन्नं इन्द्रियानं अगुत्ति अगोपना अनारक्खो असंवरो,* ध. स. 1352; *इमेसं छन्नं इन्द्रियानं या अगुत्ति या अगोपना यो अनारक्खो यो असंवरो, अकथनं, अपिदहनन्ति अत्थो,* ध. स. अट्ठ. 421; पु. प. 127; **ख.** त्रि., निषे., ब. स., असुरक्षित, असावधान, असचेष्ट, अजागरूक - ... *मुट्ठस्सतीनं अनारक्खानं विहरतं न होति पच्चत्तं सहधम्मिको समणवादो,* अ. नि. 1(1).203.

अनारतं अ. [अनारतं], लगातार रूप में, अनवरत रूप में, अनवच्छिन्न रूप में - *सततं निच्चमविरतानारतसन्ततमनवरतं च धुवं,* अभि. प. 41.

अनारद्ध त्रि., आरद्ध का निषे., ब. स. [अनारब्ध], वह, जिसका प्रारम्भ अभी तक नहीं हुआ है, अनागत, भविष्य, भावी - *अनारद्धे अत्थे,* मो. व्या. सू. 6.2 पर वण्णना.

अनारम्भ[1] त्रि., आरम्भ का निषे., ब. स. [अनारम्भ], हानि, भय तथा संकट से रहित - *तेहि भिक्खूहि वत्थु देसेतब्बं - अनारम्भं सपरिक्कमनं,* पारा. 229; *सारम्भं अनारम्भन्ति सउपद्दवं अनुपद्दवं,* पारा. अट्ठ. 2.141.

अनारम्भ[2] पु., निषे. तत्पु. स. [अनारम्भ], कर्म का अप्रारम्भ, आरम्भ-रहित अवस्था अर्थात् निर्वाण - *सब्बारम्भं पटिनिस्सज्ज, अनारम्भे विमुत्तिनो,* सु. नि. 750; *अनारम्भे विमुत्तिनोति अनारम्भे निब्बाने विमुत्तस्स,* सु. नि. अट्ठ. 2.203.

अनारम्मण त्रि., आरम्मण का निषे., ब. स. [अनालम्बन], आलम्बन-रहित, रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य एवं धर्म नामक छः प्रकार के चित्त के विषयीभूत आलम्बनों से रहित, ऐसे धर्म, जो स्वयं में चित्त के आलम्बन हैं परन्तु जिनके अपने कोई आलम्बन नहीं है - *रूपञ्च निब्बानञ्च अनारम्मणा,* ध. स. 1422; *नत्थि एतेसं आरम्मणन्ति अनारम्मणा,* ध. स. अट्ठ. 96; *सब्बं रूपं न हेतु ... अब्याकतं, अनारम्मणं,* विभ. 14; *अरूपधम्मानं विय कस्सचि आरम्मणस्स अग्गहणतो नास्स आरम्मणन्ति अनारम्मणं,* अभि. ध. वि. टी. 180.

अनाराधक त्रि., आराधक का निषे., तत्पु. स. [अनाराधक], भिक्षुओं के मन को सन्तुष्ट न कर सकने वाला, परीक्ष्यमाण

प्रव्रजित – *कथञ्च, भिक्खवे, अञ्ञतित्थियपुब्बो अनाराधको होति,* महाव॰ 88.

अनाराधन त्रि॰, आराधन का निषे॰, ब॰ स॰ [अनाराधन], असन्तोषप्रद, अशोभन, अरुचिकर, अनुपयुक्त, अनुचित – *येन अनाराधकम्मेन अज्ज मं रज्जम्हि त्वं उदस्सये,* जा॰ अट्ठ॰ 5.24.

अनाराधनीय त्रि॰, आराधनीय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनाराधनीय], असफल, अनुमोदन न करने योग्य, समर्थन न करने योग्य, स्वीकार न करने योग्य – *इदं ... सञ्ञातिकं अञ्ञतित्थियपुब्बस्स अनाराधनीयस्मिं,* महाव॰ 89; *मनुस्सभूतो वा एस बुद्धभूतस्स कायवचीद्वारे किं अनाराधनीयं पस्सिस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).275.

अनारुळ्ह त्रि॰, आ + √रुह के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, [अनारूढ], अप्रविष्ट, अगृहीत, नहीं किया गया, अप्राप्त – *तिस्सो पन सङ्गीतियो अनारुळ्हं धातुकथा आरम्मणकथा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177; – **पुब्ब** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनारूढपूर्व], पूर्वकाल में प्राप्त न किया हुआ अथवा पूर्वकाल में अगृहीत – *नेक्खम्मपटिपदं अनारुळ्हपुब्बानं अनेककिच्चपसुतानं,* विसुद्धि॰ 1.131.

अनारोचना स्त्री॰, आरोचना का निषे॰, तत्पु॰ स॰, सूचना का अभाव, सङ्घ द्वारा ज्ञप्ति का अतिक्रमण, अनुद्घोषणा, उद्घोषणा का परित्याग – *सहवासो, विप्पवासो, अनारोचना – इमे ... तयो पारिवासिकस्स भिक्खुनो रत्तिच्छेदा'ति,* चूळव॰ 82; *अनारोचनाति आगन्तुकादीनं अनारोचना,* चूळव॰ अट्ठ॰ 14.

अनालपनता स्त्री॰, भाव॰, आलपनता का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनालपनता], संवादविहीनता, संवादाभाव, अनुकूल बनाने की असमर्थता – *इति हिदं मारस्स च अनालपनताय ब्रह्मुनो च अभिनिमन्तनताय ...,* म॰ नि॰ 1.415; *अनालपनतायाति अनुल्लपनताय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰(मू॰प॰) 1(2).308.

अनालम्ब त्रि॰, आलम्ब का निषे॰, ब॰ स॰ [अनालम्ब], आधार-रहित, आलम्बन-रहित, बेसहारा – *अप्पतिट्ठे अनालम्बे, को गम्भीरे न सीदति,* सु॰ नि॰ 175; *तस्मिञ्च अप्पतिट्ठे अनालम्बे गम्भीरे अण्णवे को न सीदती'ति असेक्खभूमिं पुच्छति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.183; *अप्पतिट्ठे अनालम्बे, गिरिदुग्गस्मि पापतं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.65; *अनालम्बेति आलम्बितब्बट्ठानरहिते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.68; *अप्पतिट्ठं अनालम्बं, दुत्तरं सीघवाहिनं,* अप॰ 2.118; – **चर** त्रि॰, [अनालम्बचर], बिना आधार के विचरण करने वाला, निरालम्ब विचरण – *ये पन ते, महाराज, भिक्खू इद्धिमन्तो ... अनालम्बचरा ...,* मि॰ प॰ 311.

अनालय[1] त्रि॰, आलय का निषे॰, ब॰ स॰ [अनालय], **शा॰ अ॰** बेघर, बिना घर वाला, **ला॰ अ॰** स्वच्छन्द, इच्छारहित, तृष्णारहित, अनासक्त (निर्वाण) – *अनामयाति ... तं लभित्वा अञ्ञत्थ अनालया हुत्वा वसामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.228; *मोक्खो निरोधो निब्बानं – सन्तं सच्चमनालयं,* अभि॰ प॰ 6; **ख.** अमहत्वाकांक्षी, निरपेक्ष, निराकांक्ष – *यथारहं अदा चेव ठानन्तरं अनालयो,* चू॰ वं॰ 42.42; 46.4.

अनालय[2] पु॰, आलय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनालय], अनासक्ति, अनागारिकता, निर्वाण – *यो तस्सा येव तण्हाय असेसविरागनिरोधो, चागो, पटिनिस्सग्गो, मुत्ति, अनालयो,* महाव॰ 14; म॰ नि॰ 3.300; *ओकं वुच्चति आलयो, अनोकं वुच्चति अनालयो, आलयतो निक्खमित्वा अनालयसङ्खातं निब्बानं पटिच्च,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.338; – **गामी** त्रि॰, [अनालयगामिन्], निर्वाणाभिमुख, निर्वाण तथा अनासक्ति की अवस्था की ओर जाने वाला – *अनालयञ्च वो भिक्खवे, देसेस्सामि अनालयगामिञ्च मग्गं,* स॰ नि॰ 2(2).343; – **चार / चारी** [अनालयचारिन्], अनासक्त-जीवन जीने वाला, अपरिग्रही – *अनोकसारिन्ति अनालयचारिं* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.383.

अनालस्स / अनालस्य नपुं॰, आलस्य का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनालस्य], वीर्य, उद्योग, अध्यवसाय, पराक्रम – ... *दस धम्मा आहारा – उट्ठानं अनालस्यं भोगानं आहारो,* अ॰ नि॰ 3(2).113; *अनालस्यछेककुसलभावसङ्खातं दक्खं नाम साधु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.411.

अनालाप पु॰, आलाप का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनालाप], असम्भाषण, सम्भाषण का अभाव, संवादविहीनता, बात-चीत का अभाव – *अनालापो तेसं अञ्ञमञ्ञेही'ति,* मि॰ प॰ 57; *अनालापो, आनन्दा'ति,* दी॰ नि॰ 2.106.

अनालिन्दक / अनाळिन्दक त्रि॰, आलिन्दक का निषे॰, ब॰ स॰ [अनालिन्दक], दरवाजा के सामने वाली चौकोर जगह से रहित, चबूतरा से रहित, ओसारा-रहित – *तेन खो पन समयेन विहारा अनाळिन्दका होन्ति अप्पटिस्सरणा,* चूळव॰ 279; *ओसारकन्ति अनाळिन्दके विहारे वंसं दत्वा ततो दण्डके ओसारेत्वा कतछदनपमुखं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 62.

अनालुलित / अलुलित त्रि॰, आलुलित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनालुलित], अक्षुब्ध, अकम्पित, नहीं हिलाया हुआ, इधर-उधर न कंपाया हुआ – *अनेरितो अघट्टितो अचलितो अलुळितो ...,* महानि॰ 260; *अलुळितोति न कललीभूतो,* महानि॰ अट्ठ॰ 304.

अनालोक क. त्रि॰, आलोक का निषे॰, ब॰ स॰ [अनालोक], प्रकाशरहित, दृष्टिरहित, आलोकरहित, दृष्टिविहीन – *नाहं*

अन्धो अनालोको, मि॰ प॰ 273; **ख.** पु॰, तत्पु॰ स॰, अन्धकार, तमस् – *अप्पदीपेति अनालोके,* पाचि॰ 366.

अनावकूल / अनावकुल त्रि॰, अवकूल / अवकुल का निषे॰, ब॰ स॰, समतल तट वाला, निचली सतह वाले, तट से रहित – *अनावकुला वेळुरियूपनीला,* जा॰ अट्ठ॰ 5.162; *अनावकुलाति न अवकुला अखाणुमा उपरि उक्कुलविकुलभावरहिता वा समसण्ठिता,* तदे॰.

अनावज्जन नपुं॰, आवज्जन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनावर्जन], असावधानी, भूल, प्रमाद – *महाथेरो तस्मिं काले अनावज्जनेन तेसं अदस्सनं सन्धाय वदति,* उदा॰ अट्ठ॰ 200.

अनावट त्रि॰, आवट का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनावृत], खुला हुआ, अनाच्छादित, अनावृत, अनियन्त्रित, असंयमित – *अपिनु'स्स इत्थीसु आवटं वा अस्स अनावटं वा'ति,* दी॰ नि॰ 1.84; *यंनूनाहं इमासु पोक्खरणीसु एवरूपं मालं रोपापेय्यं उप्पलं ... सब्बजनस्स अनावटं,* दी॰ नि॰ 2.134; *अनावटं भगवतो ञाणदस्सनं,* स॰ नि॰ 1(1)63; – **द्वार** ब॰ स॰, [–द्वार], सबों के लिए खुला द्वार – *सद्धो दायको दानपति अनावटद्वारो,* दी॰ नि॰ 1.122; – **द्वारता** स्त्री॰, भाव॰, खुले द्वार वाला होने की स्थिति – *मेत्तेन मनोकम्मेन अनावटद्वारताय आमिसानुप्पदानेन,* दी॰ नि॰ 3.145; *अपिहितद्वारताय,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.126.

अनावट्टित त्रि॰, आवट्टित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनावर्तित], अप्रवर्तित, निष्क्रिय – *किरियमनोधातुया भवङ्गे अनावट्टितेयेव अतिक्कमनआरम्मणानं पमाणं नत्थि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 307.

अनावट्टी त्रि॰, आवट्टी का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनावर्तिन्], आभोगरहित, आसक्ति-रहित, अलिप्त, अनासक्त – *सो नेव ताव अनावट्टी कामेसु होति,* म॰ नि॰ 1.126; *अरियसावको उपरि झानानं ... अनधिगतत्ता नेव ताव कामेसु अनावट्टी होति, अनावट्टिनो अनाभोगो न होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).374, द्रष्ट॰ विलो॰ आवट्टी.

अनावट्टेन्त त्रि॰, अ + √वट्ट, वर्त॰ कृ॰, आसक्ति से रहित होकर जीने वाला, विषय भोगों में न लिपटने वाला – *अनावट्टेन्तस्स होति ... अनाभोगस्स होति,* कथा॰ 286; *तत्थ अनावट्टेन्तस्साति दानचेतनाय पुरेचारिकेन आवज्जनेन भवङ्गं अनावट्टेन्तस्स अपरिवट्टेन्तस्स,* कथा॰ अट्ठ॰ 194.

अनावत्तन / अनावट्टन नपुं॰, आवत्तन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनावर्तन], वापस न लौटना, अप्रत्यावर्तन, पीछे की स्थिति में पुनः न आना – **धम्म** त्रि॰, वापस न लौटने की प्रकृति वाला – *अनावत्तिधम्मोति ततो ब्रह्मलोका पुन पटिसन्धिवसेन अनावत्तनधम्मो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.252; – **समाव** त्रि॰, ब॰ स॰ [–स्वभाव], स्वभाव से ही वापस न लौटने वाला – *अनावत्तिधम्मन्ति अनावत्तनसभावं अनिब्बत्तारहं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.273.

अनावत्ति स्त्री॰, आवत्ति का निषे॰, तत्पु॰ स॰ केवल स॰ प॰ के पू॰ प॰ में ही प्रयुक्त [अनावृत्ति], अप्रत्यावर्तन, वापस लौटकर न आना; – **धम्म** त्रि॰, अप्रत्यावर्तन स्वभाव वाला, पुनः वापस न लौटने वाला – *ओपपातिको होति, तत्थ परिनिब्बायी, अनावत्तिधम्मो तस्मा लोका,* दी॰ नि॰ 1.139; *अनावत्तिधम्मोति ततो ब्रह्मलोका पुन पटिसन्धिवसेन अनावत्तनधम्मो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.252; *तत्थ परिनिब्बायिनो अनावत्तिधम्मा,* म॰ नि॰ 3.125; *अनावत्तिधम्मं मे चित्तं अरूपभवाया'ति,* अ॰ नि॰ 3(1).212.

अनावय्ह त्रि॰, आवय्ह का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनावाह्य], विवाह-संस्कार में जीवनसाथी के रूप अस्वीकार्य – *अमनुस्सा अनावय्हम्पि नं करेय्युं अविवय्हं,* दी॰ नि॰ 3.154; *अनावय्हन्ति न आवाहयुत्तं अविवय्हन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.136.

अनावर त्रि॰, अवर का निषे॰, ब॰ स॰ [अनवर], उत्तम, अद्वितीय, उत्कृष्ट, अनुपम – *जेत्वान मच्चुनो सेनं, विमोक्खेन अनावरं* इतिवु॰ 55; *अञ्ञेहि आवरितुं पटिसेधेतुं असक्कुणेय्यत्ता च अनावरं,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 224.

अनावरण त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अनावरण], खुला हुआ, अनाच्छादित, बाधारहित, निर्विघ्न, व्यवधानरहित – *बोज्झङ्गा अनावरणा अनीवरणा चेतसो अनज्झारुहा,* स॰ नि॰ 3(1).118; *एवं वुड्ढहतीति ञाणं अनावरणं,* नेत्ति॰ 81; – **ञाण** नपुं॰, [अनावरणज्ञान], सर्वव्यापी ज्ञान, अप्रतिरोधी ज्ञान, स्पष्ट ज्ञान – *तत्थ आवरणं नत्थीति – अनावरणञाणं,* पटि॰ म॰ 119; *भगवतो ञाणं ... तत्थावरणाभावतो निस्सङ्गप्पवत्तिमुपादाय अनावरणञाणन्ति वुच्चति,* उदा॰ अट्ठ॰ 115; *अनावरणञाणस्स, सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स पटिवेधाय,* जा॰ अट्ठ॰ 1.87; – **ञाणदस्सन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनावरणज्ञानदर्शन], अनन्तज्ञानदर्शन से सम्पन्न अर्थात् बुद्ध – *अनावरणञाणदस्सना हि बुद्धा भगवन्तो,* नेत्ति॰ 17; – **दस्सन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनावरणदर्शन], अपरिसीम दृष्टि वाला, सुस्पष्ट दृष्टि से सम्पन्न या युक्त – *महावीरो, अनावरणदस्सनो,* अप॰ 2.114; – **दस्सावी** त्रि॰, [अनावरणदर्शिन्], उपरिवत् – *अनावरणदस्सावी, यदि बुद्धो भविस्सति,* सु॰ नि॰ 1011; *अज्झत्तञ्च पजानाति, बहिद्धा च विपस्सति, अनावरणदस्सावी,* थेरगा॰ 472; – **दस्सी** त्रि॰,

[-दर्शिन्], उपरिवत् - *सुद्धेन ञाणेन, अनावरणदस्सिना,* अप॰ 1.18.

अनावरणीय त्रि॰, आवरणीय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनावरणीय], ढक कर न रखने योग्य, तिरस्कृत न करने योग्य, अतिरस्करणीय, अनभिभूत - *चत्तारोमे ... तथागतस्स केनचि अनावरणीया गुणा,* मि॰ प॰ 155.

अनावसूर त्रि॰, अवसूर का निषे॰ [उत्सूर], सूर्यास्त तक, सूर्यास्त-पर्यन्त - *अनावसूरं चिररत्तसंसितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.49; *अनावसूरन्ति न अवसूरं, अनत्थङ्गतसूरियन्ति अत्थो,* तदे॰.

अनावास[1] पु॰, निषे॰ तत्पु॰ स॰ [अनावास], **क.** भिक्षु के लिए निवास न करने योग्य गृह या स्थान - *अनावासोति नवकम्मसालादिको यो कोचि पदेसो,* महाव॰ अट्ठ॰ 329; *न एकच्छन्ने आवासे वा अनावासे वा वत्थब्बं,* चूळव॰ 49; - **टि॰** चूळव॰ के अनुसार चेतियघर, बोधिघर, सम्मज्जनीअट्टक, दारुअट्टक, पानीयमाळ, वच्चकुटि तथा द्वारकोट्ठक आदि को अनावास कहा गया है जिसे भिक्षु के लिये अनपुयुक्त स्थान कहा गया, चूळव॰ अट्ठ॰ 12.

अनावास[2] त्रि॰, ब॰ स॰ [अनावास], **क.** गृहविहीन, बेघर - *अनगाराति अनावासा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 68; **ख.** नहीं बसा हुआ - *वानरिन्दो गामो आवासो अनावासो'ति पुच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.63.

अनाविकम्म नपुं॰, आविकम्म का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनाविष्कर्म], निगूढ़कर्म, माया, सुस्पष्ट प्रकाशन अथवा अभिव्यक्ति का न होना, अप्रकट कर्म - *या एवरूपा माया ... गूहना परिगूहना ... अनाविकम्मं वोच्छादना ... अयं वुच्चति माया,* महानि॰ 56; *न पाकटं कत्वा दस्सेतीति अनाविकम्मं,* महानि॰ अट्ठ॰ 162.

अनाविद्ध / अनपविद्ध त्रि॰, आविद्ध / अपविद्ध का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनाविद्ध], अनुपेक्षित, सत्कृत, सम्मानित, समादृत - *अनपविद्धं अनवञ्ञातं कत्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 118.

अनाविल त्रि॰, आविल का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनाविल], स्वच्छ, प्रसन्न, निर्मल, विशुद्ध, (मूलतः जल एवं चित्त की स्वच्छता का वाचक) - *कच्चि चित्तं अनाविलं,* सु॰ नि॰ 160; *अनाविलन्ति पुच्छन्तो ब्यापादेन आविलभावं सन्धाय अब्यापादतं पुच्छति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.177; *सारम्भा यस्स विगता, चित्तं यस्स अनाविलं,* सु॰ नि॰ 487; *अनाविलन्ति किलेसाविलत्तविरहितं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.172; - **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अनाविलत्व], स्वच्छता, निर्मलता, विशुद्धि - *अनाविलत्ता, भिक्खवे, उदकस्स,* अ॰ नि॰ 1(1).12; - **पसन्नक्ख** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनाविलप्रसन्नाक्ष], निर्मल एवं प्रसन्न दृष्टि वाला - *अनाविलपसन्नक्खो, सब्बरोगविवज्जितो,* अप॰ 1.344; - **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनाविललक्षण], निर्मल स्वभाव वाला, स्वच्छ प्रकृति वाला - *अनाविललक्खणो पसादो,* नेत्ति॰ 25; - **संकप्प** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनाविलसंकल्प], शान्त एवं स्वच्छ संकल्प वाला, अबाधित संकल्प या विनिश्चय वाला - *एवं खो, आवुसो, भिक्खु ... अनाविलसङ्कप्पो,* दी॰ नि॰ 3.215.

अनावुत्थपुब्ब त्रि॰, आवुत्थपुब्ब का निषे॰, तत्पु॰ स॰, पहले आबाद नहीं किया गया वह स्थल, जहां पहले निवास नहीं किया गया हो - *यो मया अनावुत्थपुब्बो इमिना दीघेन अद्धुना ...,* दी॰ नि॰ 2.38.

अनासक / अनसक त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनशक], भोजन ग्रहण न करने वाला, व्रत उपवास करने वाला, भोजन से अनुपस्थित रहने वाला, (ब्राह्मण तपस्वियों के एक वर्ग का नाम) - *अनासका थण्डिलसेय्यका च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.230; *एकच्चे हि मयं अनासका न किञ्चि आहारेमा'ति मनुस्से वञ्चेन्ति,* तदे॰ 5.232-233; *अनासकाति निराहारा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.18; *नानासकाति न अनासका, भत्तपटिक्खेपकाति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.44; *अनासकाति एकाहद्वीहादिवसेन अनाहारका,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.42.

अनासङ्क त्रि॰, आसङ्क का निषे॰, ब॰ स॰ [अनाशङ्क], निश्चिन्त, शङ्का-सन्देहों से रहित, निर्भय, भरोसेमन्द , विश्वसनीय - ... *जने नासङ्कसम्मते,* चू॰ वं॰ 67.58.

अनासत्त त्रि॰, आसत्त का निषे॰, तत्पु॰ [अनासक्त], विषयभोगों के प्रति मानसिक लगाव न रखने वाला, लगावरहित, तृष्णा अथवा आसक्ति से मुक्त - *देवेन अनासत्तो अयक्खगहितको अभूतविट्ठो पुरिसो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.443; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [चित्त], आसक्तिरहित, चित्त वाला या वाली - *असङ्गमानसाति कत्थचिपि आरम्मणे अनासत्तचित्ता,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 282.

अनासन नपुं॰, आसन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनासन], अनुपयुक्त आसन, अयुक्त आसन - *यथारूपे अनासने निसिन्नं,* म॰ नि॰ 1.15; *अनासनेति एत्थ पन अयुत्तं आसनं अनासनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1)87; *सो तञ्च अनासनं तञ्च अगोचरं,* म॰ नि॰ 1.15.

अनासन्न नपुं॰, आसन्न का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनासन्न], दूरवर्ती, निकट में नहीं स्थित - *न सन्तिके न सामन्ता अनासन्ने विवेकट्ठे,* महानि॰ 20; *अनासन्नेति अनच्चन्तसमीपे,* महानि॰ अट्ठ॰ 81.

अनासव शा. अ. नपुं., आसव का निषे., ब. स. [अनास्रव], आस्रवों से मुक्त, चित्त में प्रवहनशील मन को दूषित बनाने वालों, काम, भव, अविद्या एवं दृष्टि नामक चार आस्रवों से मुक्त हो चुका अर्हत् या बुद्ध – *ओघतिण्णमनासवं,* सु. नि. 180; 1151; *चतुन्नं आसवानं अभावेन अनासवन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.228; *पवुड्ढजातिमखिलं, ओघतिण्णमनासवं,* दी. नि. 2.192; *सब्बाकुसलप्पहानवसेन अनासवमुनि,* महानि. अट्ठ. 137, द्रष्ट. आसव; **ला.अ.** निर्वाण, जिसमें सभी आस्रवों का क्षय हो जाता है – *अनासवं धुवमनिदस्सनाकतापलोकितं,* अभि. प. 7; – **कथा** स्त्री., कथा. के तीसरे अध्याय का शीर्षक, कथा. 228-230; – **गामी** त्रि., [-गामिन्], निर्वाण की ओर जाने वाला या मार्ग ... *अनासवगामिञ्च मग्गं* ..., स. नि. 2(2).341; – **चित्त** त्रि., ब. स. [-चित्त], आस्रवों से विमुक्त चित्त वाला – *अनासवचित्तस्स अरियमग्गसमङ्गिनो* ..., म. नि. 3.119.

अनाससान / अनासिसान त्रि., आ + √संस के वर्त. कृ. का निषे. [अनाशंसमान], आशारहित, इच्छा न करने वाला, किसी भी वस्तु के प्रति तृष्णा से रहित, निस्पृह – *सो निरासो अनासिसानो* ..., सु. नि. 371; ... *ततो आसाय अभावेन किञ्चि रूपादिधम्मं नासीसति; तेनाह –'निरासो अनासिसानो'ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.88; द्रष्ट. आससान.

अनासा स्त्री., आसा का निषे., तत्पु. स. [अनाशा], आशा का अभाव, अनिच्छा, निराशा, अकामना – ... *अनासञ्चेपि करित्वा* ..., म. नि. 3.178; *कालेन आसं, कालेन अनासं* ..., म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.146; *निरासं कत्वानाति अनासं कत्वा* ..., जा. अट्ठ. 3.86; *अनासाय लभति, आसाय न लभति,* महाव. 341.

अनासादनीय त्रि., आसादनीय का निषे., तत्पु. स. [अनासादनीय], नहीं प्राप्त करने योग्य, अभिभूत न करने योग्य, अकोपनीय – *केनचिपि अनासादनीयतो च दुरासदो,* वि. व. अट्ठ. 180; *अनासादनीयमासादयित्वा,* मि. प. 196.

अनासित्तक त्रि., आसित्तक का निषे., तत्पु. स. [अनासिक्तक], वह, जिसमें किसी के आसिञ्चन की आवश्यकता नहीं हो, स्वभाव से ही मधुर, आसिञ्चन की अपेक्षा न रखने वाला *असेचनकं अनासित्तकं पकतियाव महारसं,* थेरीगा. अट्ठ. 67; ... *एत्थ पन नास्स सेचनन्ति असेचनको अनासित्तको,* ... *केचि पन असेचनकोति अनासित्तको* ... *सभावेनेव मधुरोति वदन्ति,* पारा. अट्ठ. 2.9; *यथा हि बाहिरानि असम्भिन्नपायासादीनिपि* ... *आसित्तानि योजितानेव मधुरानि* ... *होन्ति, न एवमयं धम्मो,* स. नि. अट्ठ. 1.277.

अनासेवना स्त्री., आसेवना का निषे., तत्पु. स. [अनासेवना], भावना न करना, अव्यवहार, अनभ्यास, अप्रयोग, प्रमाद – ... *कुसलानं वा धम्मानं भावनाय* ... *अनासेवना, अभावना* ... *अयं वुच्चति पमादो'ति,* खु. पा. अट्ठ. 1.115.

अनासेवित त्रि., आसेवित का निषे., तत्पु. स. [अनासेवित], व्यवहार में न उतारा गया, वह, जिसे निजी जीवन में व्यवहार में अवतरित न किया गया हो – *अमतं तेसं, भिक्खवे, अनासेवितं* ..., अ. नि. 1(1).61.

अनाहट त्रि., आहट का निषे., तत्पु. स. [अनाहृत], अव्यवहृत, समीप तक नहीं लाया अथवा पहुंचाया गया – *न अनाहटे कबळे मुखद्वारं विवरितब्बं,* पाचि. 263; *अनाहटेति अनाहरिते मुखद्वारं असम्पापितेति,* पाचि. अट्ठ. 154; *दिन्नाय पारिसुद्धिया अन्तरामग्गे पक्कमति, अनाहटा होति पारिसुद्धि,* महाव. 151.

अनाहरणीय त्रि., आहरणीय का निषे., तत्पु. स. [अनाहरणीय], नहीं ले आने योग्य – *अत्तनो सन्तकं परेहि अनाहरणीयं कातुं सक्कोसी'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.402.

अनाहरित त्रि., आहरित का निषे., तत्पु. स. [अनाहृत], समीप में नहीं लाया हुआ *अनाहटेति अनाहरिते* ... *असम्पापितेति अत्थो,* पाचि. अट्ठ. 154.

अनाहार पु., आहार का निषे., तत्पु. स. [अनाहार], **शा. अ.** ईंधन का अभाव, अनुपयुक्त आहार, अविषय, अनुपयुक्त क्षेत्र – *पञ्चन्नञ्च,* ... *नीवरणानं* ... *आहारञ्च अनाहारञ्च देसेस्सामि,* स. नि. 3(1).123; *को च,* ... *अनाहारो अनुप्पन्नस्स वा कामच्छन्दस्स उप्पादाय* ..., स. नि. 3(1).126; **ला. अ.** त्रि., ब. स., आहार या भोजन न लेने वाला, निराहार, विषय-भोगों में अलिप्त, ईंधन से रहित – *उस्सुस्सति अनाहारो, सोकसल्लसमप्पितो,* सु. नि. 991; *महागिनि पज्जलितो, अनाहारोपसम्मति,* थेरगा. 702; *अनाहारोति अनिन्धनो,* थेरगा. अट्ठ. 2.223; *अनाहाराति निराहारा निरुपादाना,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).127; – **ता** स्त्री., भाव., भोजन न लेने की अथवा भूखे रह जाने की अवस्था – ... *तयो दिवसे अनाहारताय दुब्बलोपि समानो* ..., जा. अट्ठ. 4.213.

अनाहूत / अनव्हित त्रि., आहूत का निषे., तत्पु. स. [अनाहूत], वह, जिसका आह्वान नहीं किया गया है या जिसे बुलाया नहीं गया है – *अनव्हितो ततो आगा,* जा. अट्ठ. 3.142, पाठा. अनाहूत.

अनाळिहय त्रि., आळिहय का निषे., तत्पु. स. [अनाढ्य], निर्धन, दरिद्र, धनरहित - *पुरिसो दलिद्दो अस्सको अनाळिहयो,* म. नि. 2.123; 2.395; *अनाळिहयोति अनड्ढो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.119; *अपि चे दलिद्दा कपणा अनाळिहया,* जा. अट्ठ. 5.91.

अनिकट्ठकाय त्रि., निकट्ठकाय का निषे., ब. स. [अनिकटस्थकाय], वह, जिसका शरीर परिस्थिति-विशेष के अनुकूल या सामञ्जस्यपूर्ण न हो - ... *अनिकट्ठकायो च अनिकट्ठचित्तो* ..., अ. नि. 1(2).157.

अनिकट्ठचित्त त्रि., निकट्ठचित्त का निषे., ब. स. [अनिकटस्थचित्त], वह, जिसका चित्त कहीं और है, अन्यमनस्क - *अनिकट्ठकायो च अनिकट्ठचितो च,* ..., अ. नि. 1(2).157; *अनिकट्ठचित्तोति अनुपविट्ठचित्तो,* अ. नि. अट्ठ. 2.334.

अनीकरत्त/अनीकदत्त पु., वारणवती के एक राजा का नाम - *वारणवतिम्हि, राजा अनीकरत्तो* ..., थेरीगा. 464, 483.

अनिक्कीळितावी त्रि., निकीळितावी का निषे., तत्पु. स., **शा. अ.** वह, जिसकी क्रीड़ा पूर्ण नहीं हुई है, **ला. अ.** वह, जिसने काम-भोगों का अभी तक पूर्ण सेवन नहीं किया है - *पठमेन वयसा अनिक्कीळितावी कामेसु,* स. नि. 1(1).11; *अनिक्कीळितावी कामेसूति कामेसु अकीळितकीळो अभुत्तावी, अकतकामकीळोति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 1.39; *पठमेन वयसा अनिक्कीळिताविनो कामेसु,* स. नि. 1(1).139.

अनिकुब्बन्त त्रि., नि + √कुब्ब के वर्त. कृ. का निषे. [अनिकुर्वत्], धोखाधड़ी न कर रहा, विप्रलम्भित न करने वाला - *परेसं अनिकुब्बतो,* जा. अट्ठ. 2.195.

अनिकेत त्रि., निकेत का निषे., ब. स. [अनिकेत], **शा. अ.** बेघर, गृह-विहीन, **ला. अ.** तृष्णा-रहित, अनासक्ति भाव वाला, रागरहित, निर्वाण को प्राप्त मुनि - *अनिकेतमसन्थवं, एतं वे मुनिदस्सनं,* सु. नि. 209; *अनिकेतं ... असन्थवं ... उभयम्पेतं निब्बानस्साधिवचनं,* सु. नि. अट्ठ. 1.215; *पब्बजितो ... अप्पिच्छो होति ... अनिकेतो ...,* मि. प. 229; - **चारी** त्रि., [अनिकेतचारिन्], संभवतः 'सारी' के स्थान पर अप.; अनासक्ति की अवस्था का पालन कर रहा - *अनिकेतचारीति अपलिबोधचारी नित्तण्हचारी,* सु. नि. अट्ठ. 2.265; - **वासी** त्रि., अनासक्त अथवा तृष्णाविनिर्मुक्त होकर निवास करने वाला, बेघर - *यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि वनचरको अनिकेतवासी,* मि. प. 192; - **विहार** पु., तत्पु. स., अनासक्त जीवन बिताने वाला, बेघर होकर (प्रव्रजितभाव को प्राप्त कर) विचरण करने वाला - *ओकं पहाय अनिकेतसारी,* सु. नि. 850.

अनिक्कड्ढन नपुं., निषे., तत्पु. स. [अनिष्कर्षण], बाहर न निकालना, निकाल बाहर न करना, खण्डन न करना - *इमिस्सा अनिक्कड्ढनं करिस्सामि,* जा. अट्ठ. 3.19.

अनिक्कसाव त्रि., कसाव का निषे., ब. स. [अनिष्काषाय], चित्त के मलों या काषायों से अविनिर्मुक्त कलुषित चित्त वाला - *अनिक्कसावो कासावं, यो वत्थं परिदहिस्सति,* ध. प. 9; *अनिक्कसावोति रागादीहि कसावेहि सकसावो,* ध. प. अट्ठ. 1.49; थेरगा. 969.

अनिक्खन्त त्रि., निक्खन्त का निषे., तत्पु. स., बाहर न निकला हुआ, परित्याग नहीं किया हुआ - ... *मातुकुच्छितो अनिक्खन्तकालेयेव आभता आनीता,* जा. अट्ठ. 1.282; - **राजक** त्रि., ब. स. [-राजक], वह क्षेत्र, जहां से राजा बाहर नहीं निकला है - *अनिक्खन्तराजकेति राजा सयनिघरा अनिक्खन्तो होति,* पाचि. 212; *अनिक्खन्तो राजा इतोति अनिक्खन्तराजकं,* पाचि. अट्ठ. 139.

अनिक्खमन नपुं., निक्खमन का निषे., तत्पु. स. [अनिष्क्रमण], बाहर न निकलना, गृह का परित्याग न करना, गृही या भोगासक्त जीवन, गृहत्याग न करने वाला - *तदा बहि अनिक्खमनकुलानिपि,* ध. प. अट्ठ. 1.218.

अनिक्खित्त त्रि., निक्खित्त का निषे., तत्पु. स. [अनिक्षिप्त], नहीं फेंका हुआ, नीचे न रखा हुआ, स्वीकृत, अपरित्यक्त; - **कसाव** त्रि., ब. स., द्रष्ट. 'अनिद्धन्तकसाव' के अन्त. आगे; - **छन्द** त्रि., ब. स. [अनिक्षिप्तछन्द], शिथिल इच्छा से रहित, सुदृढ़ संकल्प वाला, दृढ़ अध्यवसाय वाला - *अप्पमत्तोति ... अनिक्खित्तछन्दो ... कुसलेसु धम्मेसु,* महानि. 42; - **छन्दता** स्त्री., भाव. [अनिक्षिप्तछन्दता], सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा - *यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो ... असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता,* ध. स. 26; *यस्मा पनेतं वीरियं ... छन्दं न निक्खिपति, धुरं न निक्खिपति ... तस्मा अनिक्खित्तछन्दता,* ध. स. अट्ठ. 191; *अनिक्खित्तछन्दताति कुसलच्छन्दस्स अनिक्खिपनं,* ध. स. अट्ठ. 426; - **धुर** त्रि., कर्म. स. [अनिक्षिप्तधुर], वह, जो भार को नीचे उतार कर न फेंके, प्रबल वीर्य से सम्पन्न, दृढ़ उद्योगी - *आरद्धवीरियो ... थामवा दळ्हपरक्कमो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु,* उदा. 109; *अनिक्खित्तधुरोति अनोरोहितधुरो अनोसक्कितवीरियो,* उदा.

अट्ठ० 190; *चेतसिकवीरियवसेन अनिक्खित्तधुरो,* सु० नि० अट्ठ० 1.200; - **धुरता** स्त्री०, भाव०, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, दृढ़ पराक्रम से युक्त होना - *यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो ... अनिक्खित्तधुरता ...,* ध० स० 36.

अनिक्खिपन नपुं०, निक्खिपन का निषे०, तत्पु० स० [अनिक्षेपण], नीचे नहीं उतार फेंकना, उत्तरदायित्व से दूर न भागना, अपरित्याग - *अनिक्खित्तछन्दताति कुसलच्छन्दस्स अनिक्खिपनं,* ध० स० अट्ठ० 426.

अनिखातकूल / अनिगाधकूल त्रि०, निखातकूल / निगाधकूल का निषे०, ब० स० [अनिखातकूल], ऐसा जलाशय अथवा नदी, जिसके तट गहरे न हों, कम गहरे तीर वाला / वाली - *अनिगाधकूलाति अगम्भीरतीरा,* जा० अट्ठ० 6.132.

अनिगम पु०, निगम का निषे०, तत्पु० स० [अनिगम], निगम से भिन्न, बीरान बस्ती - *निगमापि अनिगमा कता,* म० नि० 2.308.

अनिगूळ्हमन्त / अनिगुय्हमन्त त्रि०, निगूळ्हमन्त / निगुय्हमन्त का निषे०, ब० स० [अनिगूढमन], अपनी योजना अथवा मन की बातों को दूसरों से छिपा कर न रखने वाला, अप्रतिच्छन्नमन्त्र - *अनिगुय्हमन्तन्ति अप्पटिच्छन्नमन्तं,* जा० अट्ठ० 5.73.

अनिग्गतरतनक त्रि०, निग्गतरतनक का निषे०, ब० स० [अनिर्गतरत्नक], वह शयनघर, जहां से स्त्रीरत्न बाहर न निकले हों - *अनिग्गतरतनकेति महेसी सयनिघरा अनिक्खन्ता होति, उभो वा अनिक्खन्ता होन्ति,* पाचि० 212; *रतनं वुच्चति महेसी, निग्गतान्ति निक्खन्तं, अनिग्गतं रतनं इतोति ... सयनिघरेति अत्थो,* पाचि० अट्ठ० 139.

अनिग्गमन नपुं०, निग्गमन का निषे०, तत्पु० स० [अनिर्गमन], बाहर निकलकर नहीं जाना, बाहर न निकलना - ... *आयतनानि अनागमनतो अनिग्गमनतो च दट्ठब्बानि,* विभ० अट्ठ० 44.

अनिग्गह त्रि०, निग्गह का निषे०, ब० स० [अनिग्रह], नियन्त्रण में न लाने योग्य अनियन्त्रणीय - *अनिग्गहासूति निग्गहेन विनेतुं असक्कुणेय्यासु,* जा० अट्ठ० 5.435.

अनिग्गहीत / अनिग्गहित त्रि०, निग्गहीत या निग्गहित का निषे०, तत्पु० स० [अनिगृहीत], अभिभूत न किया गया, अतिरस्कृत, नहीं उपेक्षित - *मया धम्मो देसितो अनिग्गहितो असंकिलिट्ठो ....* अ० नि० 1(1).206; *निग्गण्हन्तो हि हापेत्वा वा दस्सेति, वड्ढेत्वा वा ... यस्मा चत्तारि अरियसच्चानि ... हापेत्वापि ... दस्सेतुं न सक्का, तस्मा ... अनिग्गहितो नाम,* अ० नि० अट्ठ० 2.160.

अनिघ / अनीघ त्रि०, इघ या ईघ का निषे०, ब० स० [अनिघ], निष्पाप, क्रोध अथवा आक्रोश से रहित, निरपेक्ष, सरल, सुरक्षित - *अनिघो तिण्णकथंकथो विसल्लो,* सु० नि० 17; *ईघाभावतो अनीघो,* सु० नि० अट्ठ० 1.21; *सन्तं विधूमं अनीघं निरासं,* सु० नि० 464; *दुक्खाभावेन अनीघं,* सु० नि० अट्ठ० 2.120; *अनीघोति रागादिईघविरहितो,* सु० नि० अट्ठ० 2.279-80; *अनीघोति निद्दुक्खो हुत्वा,* जा० अट्ठ० 3.392; - **टि०** *दुक्खं च कसिरं किच्छं नीघो च ब्यसनं अघं,* अभि० प० 89 में नीघ शब्द पुल्लिङ्ग में निर्दिष्ट है, परन्तु अभि० प० सूची में इसके विविध व्याख्यान, द्रष्ट० मोरिस, जॅ० पा० टे० सो० 1891, 3.41 व्यु० की अनेक संभावनाओं में प्रमुख, **(क)** नीहा (दुख) का निषे०, **(ख)** ईहा, ईघा का निषे०, **(ग)** सं० के निघ का निषे० **(घ)** सं० अनघ का विप० पालि-प्रतिरूप है.

अनिच्च त्रि०, निच्च का निषे०, तत्पु० स० [अनित्य], सदा विद्यमान न रहने वाला, अशाश्वत, क्षणभङ्गुर, अध्रुव - *सब्बे सङ्खारा अनिच्चा ....* ध० प० 277; *सब्बे ते भवा अनिच्चा दुक्खा विपरिणामधम्मा,* उदा० 106; ... *हुत्वा अभावट्ठेन अनिच्चा,* उदा० अट्ठ० 174; *हुत्वा अभावट्ठेन अनिच्चधम्मो,* दी० नि० अट्ठ० 1.178; - **कम्मट्ठानिक** त्रि०, ब० स०, अनित्यता के आलम्बन पर ध्यान करने वाला - *पञ्चसतापि ते अनिच्चकम्मट्ठानिका भिक्खू ...,* अ० नि० अट्ठ० 3.181; - **ट्ठ** त्रि०, उप० स० [अनित्यस्थ], अनित्य के आकार वाला, अनित्य की अवधारणा में अन्तर्भूत - *यावता रूपस्स अनिच्चट्ठं ...,* पटि० म० 119; *अनिच्चट्ठन्ति च अनिच्चाकारं,* पटि० म० अट्ठ० 2.32; - **ता** स्त्री०, भाव० [अनित्यता], अनित्य स्वभाव वाला होने की अवस्था, क्षणभङ्गुरता, उत्पन्न होकर विनष्ट हो जाने का स्वभाव - *रूपानंत्वेव अनिच्चतं विदित्वा,* म० नि० 3.265; *लोके अनिच्चतं ञत्वा,* स० नि० 1(1).75; *अनिच्चतं खयवयतं विदित्वा,* उदा० अट्ठ० 237; *अनिच्चता एसा सब्बलोकविनासिनी,* म० वं० 20.57; *अनिच्चतमुदाहरि,* अप० 1.61; - **ताकथा** स्त्री०, कथा० के ग्यारहवें वर्ग की दसवीं कथा का शीर्षक, कथा० 371-372; - **च्चाकार** पु०, तत्पु० स० / ब० स०, अनित्यता का स्वभाव, अनित्यता के स्वरूप को प्रकाशित करने वाला - *अनिच्चाकारं ... धम्मं देसेसि ...,* जा० अट्ठ० 3.82; - **दस्सावी** त्रि०, अधिच्चदस्सावी के स्थान पर अप०, द्रष्ट० ऊपर; - **धम्म** त्रि०, ब० स० [अनित्यधर्म], स्वभाव से ही अनित्य, अध्रुव प्रकृति वाला,

विनश्वर - *रूपं खो, राध, अनिच्चधम्मो,* स॰ नि॰ 2(1).180; - **पटिसंवेदी** त्रि॰, [अनित्यप्रतिसंवेदी], सभी संस्कृत धर्मों में अनित्यता का अनुभव करने वाला - ... *अनिच्चपटिसंवेदी सततं समितं ...,* अ॰ नि॰ 2(2).164; *अनिच्चाति एवं ञाणेन पटिसंवेदिता अस्साति अनिच्चपटिसंवेदी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.151; - **लक्खण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनित्यलक्षण], भगवान बुद्ध द्वारा प्रवेदित धर्मों के तीन लक्षणों में से सर्वप्रथम, जिसके अनुसार हेतुओं एवं प्रत्ययों से उत्पन्न सभी संस्कृत धर्म अपने हेतु-प्रत्ययों के निरुद्ध होते ही स्वयं भी निरुद्ध हो जाते हैं तथा कोई भी संस्कृत धर्म शाश्वत नहीं है - *अनिच्चलक्खणं दुक्खलक्खणं अनत्तलक्खणञ्चेति तीणि लक्खणानि,* अभि॰ स॰ 66; *अनिच्चतायेव लक्खणं लक्खितब्बं, लक्खीयति अनेनाति वा अनिच्चलक्खणं,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 232; *खणतो उदयब्बयदस्सनेन अनिच्चलक्खणं पाकटं होति ...,* विसुद्धि॰ 2.267; *अनिच्चलक्खणं ताव उदयब्बयानं अमनसिकारा ....* विभ॰ अट्ठ॰ 47; - **लक्खणवत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ की एक कथा का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.233; - **वग्ग** पु॰, स॰ नि॰ के एक खण्ड विशेष का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(1)20-24, 2(2)1-6; - **सञ्ञ** स्त्री॰, [अनित्यसंज्ञा], धर्मों में अनित्यता की अनुपश्यना, अनित्यता की विपश्यना-भावना, 'सभी संस्कृत पदार्थ विनश्वर हैं, नित्य नहीं हैं', इस प्रकार की अनित्यता की अनुपश्यना से उत्पन्न ज्ञान - *अनिच्चसञ्ञा भाविता बहुलीकता ...,* स॰ नि॰ 2(1).139; *अनिच्चसञ्ञाति अनिच्चं अनिच्चन्ति भावेन्तस्स उप्पन्नसञ्ञा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.291; *अनिच्चसञ्ञाति अनिच्चानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.109; ... *अभावतो उदयब्बयवन्ततो पभङ्गुतो तावकालिकतो ... सब्बे सङ्खारा अनिच्चा'ति पवत्तअनिच्चानुपस्सनावसेन अनिच्चसञ्ञिनो,* उदा॰ अट्ठ॰ 191; - **सञ्ञाभावनानुयोग** पु॰, तत्पु॰ स॰, धर्मों में अनित्यता की अनुपश्यना-भावना में स्वयं को लगा देना, अनित्यतानुपश्यना का अभ्यास - *अनिच्चसञ्ञाभावनानुयोगमनुयुत्ता विहरन्ति,* म॰ नि॰ 3.126; - **सञ्ञानुलोम** त्रि॰, ब॰ स॰, अनित्यता की विपश्यना-भावना के अनुरूप या उपयुक्त - *अथ वा अनिच्चं वा अनिच्चसञ्ञानुलोमं वा ...,* महानि॰ 142; ... *ताय सञ्ञाय अनुलोमं अप्पटिकूलं अनिच्चसञ्ञानुलोमं,* महानि॰ अट्ठ॰ 244; - **सञ्ञापरिचित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अनित्यता की विपश्यना-भावना को जानने वाला अथवा उससे परिचित साधक - *अनिच्चसञ्ञापरिचितेन, भिक्खवे, भिक्खुनो चेतसा ...,* अ॰ नि॰ 2(2).198; - **सञ्ञी** त्रि॰, [अनित्यसंज्ञी], अनित्यता की अनुपश्यना करने वाला, संस्कृत धर्मों में अनित्यता का मानसिक प्रत्यक्ष-ज्ञान प्राप्त करने वाला - *सब्बसङ्खारेसु अनिच्चानुपस्सी विहरति, अनिच्चसञ्ञी ...,* अ॰ नि॰ 2(2).165; *अनिच्चाति एवं सञ्ञा अस्साति अनिच्चसञ्ञी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.151; **सभाव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनित्यस्वभाव], स्वभाव से ही अनित्य, विनश्वर या क्षणभङ्गुर - *अनिच्चसभावानं पन खन्धानं जरामरणत्ता अनिच्चं नाम जातं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.37; - **सम्भूत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अनित्यसम्भूत], अनित्य स्वभाव वाले संस्कृत धर्मों से उत्पन्न - *अनिच्चसम्भूतं, भिक्खवे, चक्खु ...,* स॰ नि॰ 2(2).133; - **च्चाकार** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनित्याकार], अनित्य-लक्षण, धर्मों का अनित्य स्वभाव, अध्रुव स्वरूप, विनश्वर प्रकृति - ... *भगवा पुग्गलस्स आचिक्खति विपस्सनानिमित्तं अनिच्चाकारं दुक्खाकारं अनत्ताकारं,* महानि॰ 264; *अनिच्चाकारन्ति हुत्वा अभावाकारं,* महानि॰ अट्ठ॰ 312; - **च्चानुपस्सना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनित्यानुपश्यना], धर्मों के अनित्य स्वभाव को विपश्यना की भावना द्वारा देखना, चार स्मृति-प्रस्थानों में से अन्तिम अर्थात् धर्मों की धर्मता पर अनुपश्यना, पांच स्कन्धों के क्षय एवं व्यय आदि का ज्ञान-दर्शन - *अनिच्चानुपस्सना अभिञ्ञेय्या,* पटि॰ म॰ 10; *अनिच्चानुपस्सना, दुक्खानुपस्सना अनत्तानुपस्सना चेति तिस्सो अनुपस्सना,* अभि॰ ध॰ स॰ 66; *तत्थ अनिच्चस्स, अनिच्चन्ति वा अनुपस्सना अनिच्चानुपस्सना तेभूमकधम्मानं अनिच्चतं गहेत्वा पवत्ताय विपस्सनाय एतं नामं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.323; द्रष्ट॰ अनुपस्सना; - **च्चानुपस्सी** त्रि॰, [अनित्यानुदर्शी, बौ॰ सं॰ अनित्यानुपश्यी], विपश्यना द्वारा धर्मों में अनित्यता का ज्ञान-दर्शन प्राप्त करने वाला - *सब्बसङ्खारेसु अनिच्चानुपस्सिनो विहरथ,* इतिवु॰ 58; ... *अनिच्चलक्खणं नाम, तं आरब्भ पवत्ता विपस्सना अनिच्चानुपस्सना, तं अनिच्चन्ति विपस्सको अनिच्चानुपस्सी,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 234; *अनिच्चन्ति अनुपस्सी, अनिच्चस्स वा अनुपस्सनसीलो अनिच्चानुपस्सीति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.324; - **च्चुच्छादनपरिमद्दनभेदनविद्धंसनधम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनित्युत्सादनपरिमर्दनभेदनविध्वंसनधर्म], वह मानव शरीर, जो स्वभाव से ही अनित्य, अपचय-शील, अपघर्षणशील, टूट जाने वाला एवं विनष्ट हो जाने वाला है - ... *कायस्स अधिवचनं ... अनिच्चुच्छादन-परिमद्दन-भेदन-विद्धंसन-धम्मस्स,* म॰ नि॰ 1.198; ... *हुत्वा अभावट्ठेन अनिच्चधम्मो*

... *तदनुविलेपनेन उच्छादनधम्मो ... खुद्दकसम्बाहनेन ... परिमद्दनधम्मो ... भिज्जति चेव विकिरति च, एवं सभावोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.178; = म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).34.

अनिच्चल-बुद्धि त्रि॰, निच्चलबुद्धि का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिश्चलबुद्धि], चञ्चल अथवा अस्थिर बुद्धि वाला - ... *हरितब्बपञ्ञस्स अनिच्चलबुद्धिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.387; पाठा॰ निच्चं चलबुद्धिनो.

अनिच्छ त्रि॰, ब॰ स॰ [अनिच्छ], इच्छाओं से रहित, तृष्णा-विरहित, कामनाओं से मुक्त - *सदा इच्छाय निच्छातो, अनिच्छो होति निब्बुतो,* सु॰ नि॰ 712; *अनिच्छा पिण्डमेसना, अनिच्छा सयनासनं,* स॰ नि॰ 1(1).75; *अनिच्छाति नित्तण्हा हुत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.104; - **त्त** नपुं॰, भाव॰, [-त्व], तृष्णाविहीनता, इच्छामुक्त स्थिति - ... *अनिच्छत्ता च निच्छातो होति अनातुरो ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.193.

अनिच्छनभाव पु॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिच्छा], इच्छा का अभाव, तृष्णा का न होना - ... *अनिच्छनभावं मम परे न जानन्ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.29.

अनिच्छय पु॰, निच्छय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिश्चय], निश्चय का अभाव, अनिर्णय, ऊहापोह भरी मनःस्थिति, अनिश्चितता; - **पच्चुपट्ठान** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अनिश्चयप्रत्युपस्थान], अनिश्चितता को उपस्थित या उत्पन्न करने वाली विचिकित्सा या सन्देह - *सा संसयलक्खणा ... अनिच्छयपच्चुपट्ठाना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 298; विसुद्धि॰ 2.98.

अनिच्छा स्त्री॰, इच्छा का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिच्छा], **क.** इच्छा का अभाव, अलोभ - *उपेक्खा धुरसमाधि, अनिच्छा परिवारणं,* स॰ नि॰ 3(1).6; ... *अलोभसङ्खाता अनिच्छा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.158; **ख.** हिचकिचाहट, अरुचि, विमुखता - *सचे अहं दानं ददमानो विपाकं असद्दहित्वा अत्तनो अनिच्छाय दम्मि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.29.

अनिच्छित त्रि॰, इच्छित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिच्छित], न चाहा हुआ, अनचाहा, अवाञ्छित, अप्रीतिकर, अप्रार्थित - *एवं सेय्यं अलभित्वा अनिच्छितं परित्तकमेव कालं सेय्यं लभति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.275; *यथा अनिच्छितं न गच्छति, एवं आवरणतो आवरणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.99.

अनिज्झत्तिबल त्रि॰, ब॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अनिध्यप्तिबल], मनवाने में अक्षम, सन्तुष्टि देने में असमर्थ, शान्त कराने में अक्षम - *ते असञ्ञत्तिबला, अनिज्झत्तिबला ...,* अ॰ नि॰ 1(1).90.

अनिज्झानखम त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिध्यानक्षम], सूक्ष्म परीक्षा में खरा न उतरने योग्य, परीक्षण किये जाने पर पूर्णता की स्थिति को अप्राप्त - *हस्सं अनिज्झानक्खमं अतच्छं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.53; *पण्डितानं न निज्झानक्खमं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.55.

अनिञ्जन नपुं॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अनिञ्जन], अचल, अचलन, अकम्पन, निश्चल अथवा स्थिर - *आनेञ्जप्पत्तं सयं अनिञ्जनट्ठेन आनेञ्जन्ति वुच्चति,* उदा॰ अट्ठ॰ 150; *इदं चतुत्थज्झानं अनिञ्जनं अचलनं निप्फन्दनन्ति वदामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.122; - **प्पत्त** त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अनिञ्जनप्राप्त], अचल-भाव को प्राप्त, न चलने योग्य - *आनेञ्जप्पत्तं सयं अनिञ्जनट्ठेन आनेञ्जन्ति वुच्चति,* उदा॰ अट्ठ॰ 150, पाठा॰ आनेञ्जप्पत्त.

अनिञ्जित त्रि॰, इञ्जित का निषे॰, तत्पु॰ [अनिञ्जित], **क.** शान्त, अविचलित, अप्रभावित - *नाहं सीतेन विहञ्ञिस्सं, अनिञ्जितो विहरन्तो,* थेरगा॰ 386; *चित्तस्स इञ्जितकारणानं ब्यापादादीनं सुप्पहीनत्ता पच्चयुप्पन्निञ्जनाय च अभावतो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.76; **ख.** नपुं॰, चतुर्थ ध्यान की शान्त अवस्था - *इदम्पि खो अहं, उदायि, अनिञ्जितस्मिं वदामि,* म॰ नि॰ 2.127; पाठा॰ इञ्जितस्मिं; *चतुत्थज्झानं अनिञ्जनं अचलनं निप्फन्दनन्ति वदामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.122.

अनिट्ठ त्रि॰, इट्ठ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिष्ट], वह, जो मन द्वारा इच्छित नहीं है, अवाञ्छित, अप्रार्थित, अप्रिय - *अथो इट्ठे अनिट्ठे च ...,* सु॰ नि॰ 155; *यं मनोदुच्चरितस्स अनिट्ठो अकन्तो अमनापो विपाको ...,* म॰ नि॰ 3.112; *तं परे अनिट्ठेन अकन्तेन अमनापेन समुदाचरन्ति,* अ॰ नि॰ 1(2).243; *अनिट्ठन्ति अप्पियं, पटिलाभत्थाय वा अपरियेसितं,* विभ॰ अट्ठ॰ 8; - **ट्ठाभिमत** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अनिष्टाभिमत], अनिष्ट अथवा अप्रिय रूप में माना गया, वह, जिसे अभीष्ट नहीं माना गया हो - ... *एकच्चस्स अनिट्ठाभिमतो, एकच्चस्स इट्ठो,* उदा॰ अट्ठ॰ 163; - **गन्ध** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनिष्टगन्ध], अप्रिय गन्ध, दुर्गन्ध - *दुग्गन्धोति अनिट्ठगन्धो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 352; - **निमित्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनिष्टनिमित्त], अनिच्छित अथवा अप्रिय चिह्न, अपशकुन - *अनिट्ठनिमित्तानि अतिघोरानि,* सद्धम्मो॰ 285; - **फल** त्रि॰, ब॰ स॰, अनिच्छित अथवा मन को प्रतिकूल फल देने वाला - *कटुकप्फलानीति अनिट्ठफलानि पापकम्मानि ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 51; - **फस्स** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनिष्टस्पर्श], अप्रिय स्पर्श, अनिच्छित अनुभव - ... *तथेव धीरो इट्ठानिट्ठफस्सं फुट्ठो होति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.252; - **रस** नपुं॰, कर्म॰ स॰, अनिच्छित स्वाद, पसन्द में न आने वाला स्वाद - *असादूति*

अनिट्ठरसो, ध. स. अट्ठ. 353; – **रूप** नपुं., कर्म. स., अनचाही वस्तु, अप्रिय पदार्थ – *यं किञ्चि चक्खुना रूपं पस्सति, अनिट्ठरूपंयेव पस्सति,* स. नि. 2(2).129–130; – **ट्ठाकन्तविपाकत्त** नपुं., भाव. [अनिष्टाकान्तविपाकत्व], अनिष्ट एवं अप्रिय विपाक की अवस्था – ... *विपाककाले अनिट्ठाकन्तविपाकत्ता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).200; – **ट्ठङ्गत / ट्ठागत** त्रि., उप. स. [अनिष्ठागत], अनिश्चय से भरा, शङ्कालु, सन्देहग्रस्त, विचिकित्सा से पीड़ित – *अपि च खो कङ्खी होति विचिकिच्छी अनिट्ठङ्गतो सद्धम्मे,* स. नि. 2(1).91; अ. नि. 1(2).202; *अनिट्ठङ्गतो विचिकिच्छावसेन तिट्ठति,* महानि. 18; *अनिट्ठङ्गतोति विचिकिच्छावसेन,* महानि. अट्ठ. 192; – **ता** स्त्री., भाव. [अनिष्टता], शङ्कालुता, विचिकित्सायुक्त मनोदशा – *या खो पन सा, भिक्खवे, कङ्खिता विचिकिच्छिता अनिट्ठङ्गतता सद्धम्मे सङ्कारो सो,* स. नि. 2(1).91; – **भाव** पु., भाव. [अनिष्टभाव], उपरिवत् – ... *काळारिकानं कणेरुकानं पदं भविस्सतीति अनिट्ठङ्गतभावो विय योगिनो ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).101.

अनिट्ठित त्रि., निट्ठित का निषे., तत्पु. स. [अनिष्ठित], पूर्ण न किया हुआ, समाप्त न किया हुआ, अपूर्णीकृत, अपूर्ण – *तस्स विदत्थिमत्तं अनिट्ठितं,* ध. प. अट्ठ. 2.98; – **छदन** त्रि., ब. स. [अनिष्ठितछदन], ऐसा घर, जिसकी छत अपूर्ण रह गयी है – ... *रञ्ञो उय्याने वासागारं विप्पकतं होति, अनिट्ठितच्छदनं ...,* जा. अट्ठ. 3.279.

अनिट्ठुरी त्रि., निट्ठुरी का निषे., तत्पु. स. [अनिष्ठुरिन्], वह, जो कठोर स्वभाव का न हो, कोमल प्रकृति वाला, ईर्ष्या एवं अहंकार से रहित – *अनिट्ठुरी अननुगिद्धो,* सु. नि. 958; *तत्थ अनिट्ठुरीति अनिस्सुकी,* सु. नि. अट्ठ. 2.260; *यस्सेतं निट्ठुरियं पहीनं ... ञाणग्गिना दड्ढं, सो वुच्चति अनिट्ठुरीति,* महानि. 330.

अनिण / अणण त्रि., इण या अण का निषे., ब. स. [अनृण], ऋण् से मुक्त, वह, जिसके पास किसी का कोई ऋण शेष न हो – *अणणो भुञ्जामि भोजनं,* म. नि. 2.315; *इध किलेसइणानं अभावं सन्धाय 'अणणो'ति वुत्तं, अनिणो'तिपि पाठो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.244.

अनित्तर त्रि., इत्तर का निषे., तत्पु. स. [अनित्वर], वह, जो विनश्वर अथवा अनित्य न हो, स्थिर, चिरस्थायी, अक्रूर, अकठोर, प्रधान, श्रेष्ठ – *अनित्तरा इत्तरसम्पयुत्ता,* जा. अट्ठ. 7.46; *अनित्तराति सुभोग इमस्मिं लोके यञ्ञा च वेदा च अनित्तरा ... ते इत्तरेहि ब्राह्मणेहि सम्पयुत्ता,* जा. अट्ठ. 7.47.

अनित्थी स्त्री., इत्थी का निषे., तत्पु. स. [अस्त्री], **क.** अनारी, नारी से भिन्न कुछ और – *अनित्थी इत्थिपण्डका,* पारा. 223; ... *अञ्ञेन सद्धिं संवासं गता नेव अनित्थी होति,* जा. अट्ठ. 2.104; **ख.** *व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में* स्त्री. से भिन्न, पु. अथवा नपुं. शब्द – *करतो इत्थियमनित्थियं वा अभिधेय्यायं रिरियप्पच्चयो होति वा,* क. व्या. 556; – **गन्ध** 1. पु., एक राजकुमार का नाम – *अनित्थिगन्धोत्वेव सञ्जानिंसु,* सु. नि. अट्ठ. 1.55; *अनित्थिगन्धकुमारं नाम आरब्भ कथेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.164; जा. अट्ठ. 2.272; **2.** स्त्री से कोई भी सम्बन्ध न रखने वाला, नारी के प्रभाव से मुक्त – ... *हिमवति पञ्चसततापसा अनित्थिगन्धा ...,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.47; – **न्धकुमारवत्थु** नपुं., ध. प. अट्ठ. की एक कथा का शीर्षक, ध. प. अट्ठ. 2.164–166; – **गन्धवनसण्ड** पु., स्त्री प्रभाव से मुक्त वनप्रदेश – *पुन दानि अहं अनित्थिगन्धवनसण्डमेव गमिस्सामि,* जा. अट्ठ. 3.443; – **भूत** त्रि., इत्थिभूत का निषे., तत्पु. स. [अस्त्रीभूत], वह, जो स्त्रीत्वभाव वाला नहीं है, स्त्रीलिङ्ग का नही है – *तथाहि अनित्थिभूतोपि समानो 'मातुला'ति इत्थिलिङ्गवसेन रुक्खोपि नामं लभति,* सद्द. 243.

अनित्थिण्ण / अनतिण्ण त्रि., नित्थिण्ण या अतिण्ण का निषे., तत्पु. स. [अनिष्तीर्ण], वह, जिसे पार न किया गया हो, वह, जिसका उद्धार न हुआ हो, अमुक्त, अरक्षित – *सिया च नेसं कन्तारावसेसो अनतिण्णो,* स. नि. 1(2).87.

अनिदस्सन त्रि., निदस्सन का निषे., ब. स. [अनिदर्शन], **क. शा. अ.** वह, जिसे लक्षणों द्वारा व्याख्यात न किया जा सके, वह, जिसे दृष्टान्तों आदि के सहारे दिखलाया न जा सके, **ख. ला. अ.** अदृश्य, अतर्कावचर, वह, जिसे चक्षुविज्ञान द्वारा ग्रहण न किया जा सके, निर्वाण – *विञ्ञाणं अनिदस्सनं,* दी. नि. 1.203; ... *निब्बानस्सेतं नामं, तदेतं निदस्सनाभावतो अनिदस्सनं,* दी. नि. अट्ठ. 1.294; *अनिदस्सनन्ति चक्खुविञ्ञाणस्स आपाथं अनुपगमनतो अनिदस्सनं नाम,* ... *निब्बानमेव वुत्तं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).306; *अनिदस्सनो'ति दस्सनस्स चक्खुविञ्ञाणस्स अनापाथो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).7; *यं चक्खु ... पसादो अत्तभावपरियापन्नो अनिदस्सनो ...,* विभ. 78; *यं तं रूपं बाहिरं, तं अत्थि सनिदस्सनं, अत्थि अनिदस्सनं,* ध. स. 585; **ग.** नपुं., निर्वाण के पर्यायवाचक शब्द के रूप में – *अनासवं धुवमनिदस्सनाकतापलोकितं ...,* अभि. प. 7; – **गामी** त्रि., अनिदर्शन अर्थात् निर्वाण की ओर ले जाने वाला

– *अनिदस्सनञ्च वो, भिक्खवे, देसेस्सामि अनिदस्सनगामिञ्च मग्गं,* स॰ नि॰ 2(2).342.

अनिदान त्रि॰, निदान का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिदान], कारण-रहित, हेतु-प्रत्यय-रहित, निराधार, अनिमित्त – *सनिदानं समणो गोतमो धम्मं देसेति नो अनिदानं,* म॰ नि॰ 2.211; *सनिदानं, भिक्खवे, उप्पज्जति कामवितक्को, नो अनिदानं,* स॰ नि॰ 1(2).133.

अनिदिट्ठ त्रि॰, निदिट्ठ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिर्दिष्ट], विस्तार के साथ अप्रकाशित, वह, जिसका स्पष्ट रूप से संकेत अथवा उल्लेख नहीं किया गया है – *पावचनस्मिं हि गरूहि अनिदिट्ठानिपि अनेकविहितानि निपातपदानि सन्दिस्सन्ति,* सद्द॰ 1.300; – **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके लक्षणों का स्पष्ट रूप से कथन नहीं किया गया है – *ये सद्दा अनिदिट्ठलक्खणा,* क॰ व्या॰ 393; सद्द॰ 3.800.

अनिद्धन्त त्रि॰, निद्धन्त का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिध्मात], नहीं धौंका हुआ, परिशुद्ध न किया हुआ, अविशोधित, फूंक कर न हटाया हुआ – *तं होति जातरूपं धन्तं सन्धतं निद्धन्तं अनिद्धन्तकसावं,* अ॰ नि॰ 1(1).286.

अनिद्धारित त्रि॰, निद्धारित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिर्धारित], निर्धारित न किया हुआ, वह, जिसका निश्चित रूप से निर्धारण नहीं हुआ है; – **सामत्थिय** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसकी सक्षमता का निश्चय नहीं हुआ है – ... *किं अनिद्धारितसामत्थियेन अन्तराभवेन परिकप्पितेन पयोजनं,* उदा॰ अट्ठ॰ 74.

अनिद्धि त्रि॰, इद्धि का निषे॰, ब॰ स॰ [अनृद्धि], ऋद्धि अथवा धनधान्य से रहित, निर्धन, दरिद्र, अभागा – *अनिद्धिनं, महाराज, दमेतस्सेव सारथि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.368; *अनिद्धिं असमिद्धिं दलिद्दपुरिसं नाम ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.363; – **क** त्रि॰, इद्धिक का निषे॰, ब॰ स॰ [अनृद्धिक], उपरिवत् – ... *ते मयं ... अनिद्धिका दन्ता ... असमिद्धि येव नो दमेति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.368; – **मन्तु** त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनृद्धिमत्], **क.** उपरिवत् – *न केवलं ता नारियोव, अथ खो सब्बे अनिद्धिमन्तोपि सत्ता तस्स उपभोगा भवन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.189; **ख.** वह, जिसमें ऋद्धियां अथवा अलौकिक शक्तियां न हों – *यो पन तत्थ अनिद्धिमा ....* मि॰ प॰ 246.

अनिधानगत त्रि॰, निधानगत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिधानगत], असञ्चित, वह, जिसे पुञ्जीभूत अथवा एकत्रित नहीं किया गया है, छिन्न-भिन्न – *अनिधानगता भग्गा, पुञ्जो नत्थि अनागते,* महानि॰ 31; ... *ये खन्धा भिन्ना, ते निधानं निहितं निचयं न गच्छन्तीति अनिधानगता,* महानि॰ अट्ठ॰ 119.

अनिधानवन्तु त्रि॰, निधानवन्तु का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिधानवत्], सुरक्षित करने अथवा संग्रह करने के लिए अनुपयुक्त, वह, जो, सुदृढ़ आधार पर न खड़ा हो, मन में न रखने योग्य गम्भीर तात्पर्य से रहित – *अनिधानवतिं वाचं भासिता होति,* म॰ नि॰ 1.360; *अनिधानवतिं वाचं'ति हदयमञ्जूसायं निधेतुं अयुत्तं वाचं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(2).227; *निधानं वुच्चति ठपनोकासो, निधानमस्सा अत्थीति निधानवती, हदये निधातब्बयुत्तकं वाचं भासिताति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.71; *अनिधानवतिं ... ति न हदये निधेतब्बयुत्तकं ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.259.

अनिन्दारोस पु॰, द्व॰ स॰ [अनिन्दारोष], निन्दा, रोष या क्रोध का अभाव – *अनिन्दारोसं निस्साय निन्दारोसो पहातब्बो,* म॰ नि॰ 2.25; *अनिन्दारोसन्ति अनिन्दाभूतं अघट्टनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प॰) 2.29.

अनिन्दित त्रि॰, निन्दित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिन्दित], वह, जिसकी निन्दा न हो रही हो, अनिन्दनीय, निन्दा-रहित – *नत्थि लोके अनिन्दितो,* ध॰ प॰ 227; *अनिन्दितो सग्गमुपेति ठानं,* स॰ नि॰ 1(1).109; – **तङ्ग** त्रि॰, ब॰ स॰, सुन्दर अङ्गों वाला/वाली – *पासादमारुय्ह ... अनिन्दितङ्गी'ति पादन्ततो याव केसग्गा अनिन्दितसरीरा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.95; – **तब्बलोचन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनिन्दितव्यलोचन], सुन्दर नेत्रों वाला/वाली – *अनिन्दलोचनेति अनिन्दितब्बलोचने,* जा॰ अट्ठ॰ 7.156.

अनिन्दिय त्रि॰, निन्दिय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिन्द्य], अनिन्दनीय, उत्तम, उत्कृष्ट, प्रशंसनीय, परमसुन्दर – *अनिन्दियो धम्मकायो,* अप॰ 2.201; थेरीगा॰ अट्ठ॰ 161, पाठा॰ अनिन्दित.

अनिन्द्रियबद्ध त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिन्द्रियबद्ध], संज्ञाविहीन, चेतनाविहीन, निर्जीव – *अविञ्ञाणकं ... अनिन्द्रियबद्धसुवण्णरजतादि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 141; *असञ्ञकायन्ति अनिन्द्रियबद्धं अचित्तकायञ्च ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.55.

अनिन्धन त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰, [अनिन्धन], बिना ईंधन वाला, जलावन अथवा ईंधन से रहित – *अनेधो धूमकेतूवाति अनिन्धनो अग्गि विय,* जा॰ अट्ठ॰ 4.25; *अनाहारोति अनिन्धनो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.223.

अनिपकवुत्ति त्रि॰, निपकवुत्ति का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिपक-वृत्ति], अविवेक-पूर्ण जीवन जीने वाला – ... *अनेसनाय*

जीविकं कप्पेन्तो अनिपकवुत्ति नाम होति, न पञ्ञाय ठत्वा जीविकं कप्पेति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.4.

अनिपुण त्रि., निपुण का निषे., तत्पु. स. [अनिपुण], **क.** वह, जो निपुण अथवा चतुर नहीं है, अकुशल - *अनिपुणोपेतं सुत्वा अत्तमनो भवेय्य,* मि. प. 225; **ख.** अश्लील, स्थूल, क्षुद्र - ... *थूलञ्च असुखुमं, अनिपुणन्ति* ..., पारा. अट्ठ. 1.170.

अनिप्फत्ति स्त्री., निप्फत्ति का निषे., तत्पु. स. [अनिष्पत्ति], काम का अनिष्पादन, अनुष्ठान का पूरा न होना - *अम्म, तयि करोन्तिया अनिप्फत्ति नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 1.436, तुल. अनिप्फादन.

अनिप्फन्न त्रि., निप्फन्न का निषे., तत्पु. स. [अनिष्पन्न], 1. *व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में* – अव्युत्पन्न, वह शब्द, जिसका उद्भव व्युत्पत्ति द्वारा न बतलाया जा सके - *धातुचिन्ताय ये मुत्ता अनिप्फन्नाति ते मता,* सद्द. 2.586; 2. *अभिधर्म के सन्दर्भ में* – हेतुओं एवं प्रत्ययों से अनुत्पन्न - *अनिप्फन्ना दस चेति,* अभि. ध. स. 43; ... *विना विसुं पच्चयेहि अनिब्बत्तत्ता इमे अनिप्फन्ना* ..., अभि. ध. वि. टी. 180; - **टि.** रूप के विभाजन में चार महाभूत, पांच प्रसादरूप, चार गोचररूप, दो प्रकार के भावरूप, एक प्रकार का हृदयरूप, एक प्रकार का आहाररूप, तथा एक प्रकार का जीवितेन्द्रिय - ये अट्ठारह प्रकार के रूप निप्फन्न-रूप कहलाते हैं क्योंकि इनकी उत्पत्ति कर्म, चित्त, ऋतु एवं आहार इन चार हेतुओं में से किसी एक अथवा अनेक से होती है. परन्तु आकाश, दो प्रकार के विज्ञप्तिरूप, तीन प्रकार के विकार और चार प्रकार के लक्षणरूप - ये दस प्रकार के रूप इन चार कारणों से उत्पन्न न होने से अनिप्फन्न-रूप कहलाते हैं.

अनिप्फल त्रि., निप्फल का निषे., तत्पु. स. [अनिष्फल], वह, जो फलरहित न हो, वह, जो सार्थक अथवा फलदायी हो - ... *उपासिकायो अनिप्फला कालङ्कता,* उदा. 163; ध. प. अट्ठ. 1.127; *अनिप्फलाति न निप्फला, सम्पत्तसामञ्ञफला एव* ..., उदा. अट्ठ. 312; *दायका च अनिप्फला,* पे. व. 11.

अनिप्फाद पु., निप्फाद का निषे., तत्पु. स. [अनिष्पाद], कार्यान्वयन का अभाव, काम का पूरा न होना - *अनिप्फादाय सहेय्य धीरो,* जा. अट्ठ. 6.211.

अनिबद्ध / अनिबन्ध त्रि., निबद्ध / निबन्ध का निषे., तत्पु. स. [अनिबद्ध / अनिर्बन्ध], **क.** अनिर्धारित, अनिश्चित, अनिर्णीत - *जयपराजयोपि अनिबद्धो* ..., जा. अट्ठ. 1.419; ... *भगवतो गोचरगामो अनिबन्धो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2). 144; **ख.** अस्थायी, क्षणभङ्गुर, अनित्य - ... *पुथुज्जनिद्धि नाम चला अनिबद्धा,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.174; - **चारिका** स्त्री., कर्म. स., किसी निश्चित उद्देश्य के लिए न किया जा रहा भ्रमण - *तत्थ यं गामनिगमनगरपटिपाटिवसेन चरति, अयं अनिबद्धचारिका नाम,* दी. नि. अट्ठ. 1.197; - **वास** त्रि., ब. स., अनिश्चित आवास वाला - *वीसति वस्सानि अनिबद्धवासो हुत्वा* ..., अ. नि. अट्ठ. 2.30; - **सयन** त्रि., ब. स., वह, जिसके पास सुनिश्चित शय्या अथवा सोने का स्थान न हो - ... *योगिना योगावचरेन अनिबद्धसयनेन भवितब्बं,* मि. प. 369.

अनिबन्धनीय त्रि., निबंधनीय का निषे., तत्पु. स. [अनिबन्धनीय], नहीं सटने अथवा चिपक जाने योग्य, बांध कर न रखे जाने योग्य - *सेतवण्णो अनिबन्धनीयो होति,* चूळव. 277.

अनिब्बचनीय त्रि., निब्बचनीय का निषे., तत्पु. स. [अनिर्वचनीय], वह, जिसकी व्याख्या शब्दों द्वारा अथवा बुद्धि द्वारा न की जा सके, अव्याख्येय, अनुभवगम्य, प्रत्यात्मवेद्य (निर्वाण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त); - **त्त** नपुं., भाव., अव्याख्येयता - *अनिब्बचनीयत्ता वीच्छासद्दानं,* सद्द. 1.285.

अनिब्बत्त त्रि., निब्बत्त का निषे., तत्पु. स. [अनिर्वृत्त], अभी तक अनुत्पन्न, वह, जो वर्तमान क्षण तक उदित अथवा उत्पन्न नहीं हुआ है, अप्रादुर्भूत, अजात - *ये धम्मा अजाता अभूता ... अनिब्बत्ता ... इमे धम्मा अनुप्पन्ना,* ध. स. 1042; *अनिब्बत्तेन न जातो, पच्चुप्पन्नेन जीवति,* महानि. 30; *अनिब्बत्तेन ... ति अजातेन अपातुभूतेन अनागतक्खन्धेन न जातो न निब्बत्तो,* महानि. अट्ठ. 119; - **फल** त्रि., ब. स., वह, जिसका फल वर्तमान क्षण तक उत्पन्न नहीं हुआ है - ... *यानिमानि रुक्खानि अनिब्बतफलानि,* मि. प. 78.

अनिब्बत्तन नपुं., निब्बत्तन का निषे., तत्पु. स. [अनिर्वर्तन], अप्रादुर्भाव, अनुत्पत्ति, अप्राकटीभाव, उदय का अभाव, असम्पादन - *अञ्ञस्स अत्तभावस्स अनिब्बत्तनेन,* सु. नि. अट्ठ. 1.94.

अनिब्बत्ती / अनिवत्ति त्रि., निब्बत्ती का निषे., तत्पु. स. [अनिर्वर्तिन्], पुनः वापस लौटकर न आने वाला, पुनर्जन्म ग्रहण न करने वाला, पुनर्भाव प्राप्त न करने वाला - *अनिब्बत्ती ततो अस्सं,* जा. अट्ठ. 7.352; पाठा. अनिवत्ति.

अनिब्बत्तित त्रि., निब्बत्तित का निषे., तत्पु. स. [अनिर्वर्तित], अनुत्पादित, वह, जिसे प्रादुर्भूत न किया गया हो; अकृत - *अकतेनाति अनिब्बत्तितेन अत्तना अनुपचितेन,* पे. व. अट्ठ. 131.

अनिब्बानसंवत्तनिक त्रि., निब्बानसंवत्तनिक का निषे., तत्पु. स. [अनिर्वाणसंवर्तनिक], निर्वाण की ओर न ले जाने वाला, निर्वाण-प्राप्ति में असहायक या अनुपयोगी - *कामवितक्को, भिक्खवे, अन्धकरणो ... अनिब्बानसंवत्तनिको,* इतिवु. 60; *पञ्चिमे, भिक्खवे, नीवरणा अन्धकरणा ... अनिब्बानसंवत्तनिका,* स. नि. 3.118; *अनिब्बानसंवत्तनिकाति निब्बानत्थाय असंवत्तनिका,* स. नि. अट्ठ. 3.188; ... *सब्बं रागतमं ... अनिब्बानसंवत्तनिकं नुदित्वा,* ..., महानि. 341; *अनिब्बानसंवत्तनिकन्ति अपच्चयअमतनिब्बानत्थाय न संवत्तनिकं,* महानि. अट्ठ. 359.

अनिब्बिट्ठ त्रि., निब्बिट्ठ का निषे., तत्पु. स. [अनिर्विष्ट], अनासक्त, अलिप्त - *दस्सनतो या अनिब्बिट्ठा वा होतु निब्बिट्ठा,* सद्द. 2.364, तुल. अनिविट्ठ (आगे).

अनिब्बिद्ध त्रि., निब्बिद्ध का निषे., तत्पु. स. [अनिर्विद्ध], वह, जिसे भीतर तक बेधा न गया हो अथवा जो दरार-रहित हो, विषयभोगों अथवा राग आदि से अप्रभावित (चित्त) - *सो ... भावितेन चित्तेन अनिब्बिद्धपुब्बं ... लोभक्खन्धं निब्बिज्झति* ..., स. नि. 3(1).107; - **द्धा** स्त्री., ऐसा मार्ग, जो व्यूह के रूप में हो, सभी के लिए सरल न हो, चतुष्पथ, व्यूह - *व्यूहो रच्छा अनिब्बिद्धा,* अभि. प. 202; *ब्यूहोनिबद्धरच्छायं,* अभि. प. 1007.

अनिब्बिन्दियकारी त्रि., निब्बिन्दियकारी का निषे., तत्पु. स. [अनिर्वेदकारी], निरुत्साह अथवा निराशाभाव के बिना काम करने वाला, अनासक्त होकर कर्म करने वाला, विषय-भोगों के प्रति निरपेक्ष होकर कर्मों में रत - *अनिब्बिन्दियकारिस्स, सम्मदत्थो विपच्चति,* जा. अट्ठ. 5.117, द्रष्ट. न निब्बिन्दियकारी.

अनिब्बिसता स्त्री., निब्बिसता का निषे. [अनिर्विषता], विष से मुक्त न होने की दशा, विषरहित न होने की अवस्था - *अदन्तो ... ति एत्थ पन अनिब्बिसताय अदन्तो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).202.

अनिब्बुत त्रि., निब्बुत का निषे., तत्पु. स. [अनिर्वृत], निर्वाण को अप्राप्त, अमुक्त, अप्रसन्न - ... *निब्बुतस्स अनिब्बुतो,* इतिवु. 66; *रागादिकिलेसपरिळाहाभिभवेन अनिब्बुतो,* इतिवु. अट्ठ. 259; - **किलेसता** स्त्री., भाव. [अनिर्वृतक्लेशता], उस व्यक्ति की अवस्था अथवा मनोदशा, जिसके क्लेश नष्ट नहीं हुए हों, क्लेशों के उपशमन के अभाव वाली मनोदशा - *अनिब्बुतकिलेसताय अपरिनिब्बुतोति वेदितब्बो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).202.

अनिब्बेमतिक त्रि., निब्बेमतिक का निषे., तत्पु. [अनिर्वैमतिक], सन्देहों से अमुक्त, सन्देहग्रस्त, संशयालु; - **भाव** पु., कर्म. स., सन्देहग्रस्त होने की दशा, संशयग्रस्तता - *अथ महाजनो न निब्बेमतिको होति, अथस्स अनिब्बेमतिकभावं विदित्वा* ..., ध. प. अट्ठ. 1.23.

अनिमित्त त्रि., निमित्त का निषे., ब. स. [अनिमित्त], **क.** चिह्नों अथवा विशिष्ट लक्षणों से रहित, असंस्कृत, शून्य (निर्वाण) - *अनिमित्तञ्च भावेहि,* सु. नि. 344, थेरीगा. 20, 105; *अनिच्चानुपस्सनाञाणं निच्चनिमित्ततो विमुच्चतीति अनिमित्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.70; *सुञ्ञतो अनिमित्तो च,* ध. प. 92; *रागादिनिमित्तानं अभावेन अनिमित्तं, तेहि च विमुत्तन्ति अनिमित्तो विमोक्खो,* ध. प. अट्ठ. 1.344; **ख.** रहस्यमय, अज्ञात, विचित्र - *अनिमित्तमनञ्ञातं, मच्चानं इध जीवितं,* सु. नि. 579; *अनिमित्तन्ति किरियाकारनिमित्तविरहितं,* सु. नि. अट्ठ. 2.161; **ग.** कारणरहित, अहेतुक - *सनिमित्ता ... उप्पज्जन्ति पापका अकुसला धम्मा, नो अनिमित्ता,* अ. नि. 1(1).98; *तञ्च अनिमित्तं अनिदानं असङ्खारं अप्पच्चयं* ..., स. नि. 3(2).290; **घ.** पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व के चिह्नों (लिङ्गों) से रहित - *अक्कोसति नाम अनिमित्तासि* ..., पारा. 190; **ङ.** परिसीमन-रहित, असीम - *पथविं सागरपरियन्तं अखिलमनिमित्तं,* दी. नि. 3.108; - **कत** त्रि., वह जिसके विषय में कोई निर्णय नहीं किया गया हो - *अनिमित्तकतेन अत्थतं होति कथिनं,* महाव. 332; - **कतदिस** त्रि., ब. स., अनिर्धारित दिशा की ओर जाने वाला - ... *सा पपटिका ... अनिमित्तकतदिसा* ..., मि. प. 176; - **फलसमापत्ति** स्त्री., अनिमित्त अर्थात् निर्वाण के फल की प्राप्ति - ... *सुञ्ञतफलसमापत्ति अनिमित्तफलसमापत्ति* ..., मि. प. 303; - **मग्ग** पु., कर्म. स. [अनिमित्तमार्ग], लक्षणरहित, नामरहित, चिह्नरहित मार्ग, अनिमित्त की अनुपश्यना वाला मार्ग - ... *अनिमित्तविपस्सना सयं आगमनीयट्ठाने ठत्वा अत्तनो मग्गस्स नामं दातुं न सक्कोतीति अनिमित्तमग्गो न गहितो,* ध. स. अट्ठ. 267; - **रत** त्रि., तत्पु. स., निमित्तरहित (निर्वाणपद) में लगा हुआ - *सुञ्ञताबहुलो तादी, अनिमित्तरतो वसी,* अप. 2.16; - **विमुत्त** त्रि., कर्म. स. [अनिमित्तविमुक्त], अनिमित्त नामक विमुक्ति को प्राप्त करने वाला - ... *सुञ्ञतविमुत्तेन, अनिमित्तविमुत्तेन* ..., नेत्ति. 162; - **विमोक्ख** पु., कर्म. [अनिमित्तविमोक्ष], अनिमित्त नामक विमुक्ति का एक प्रभेद - *अनिच्चानुपस्सनाय हि वसेन अनिमित्तविमोक्खो कथितो,* ध. स. अट्ठ. 266; - **विहारी** त्रि., उप. स.

[अनिमित्तविहारी], त्रि॰ अनिमित्त नामक विमोक्ष की स्थिति में अवस्थित व्यक्ति - ... *तिस्सो ब्रह्मा सत्तमं अनिमित्तविहारिं पुग्गलं देसेति,* अ॰ नि॰ 2(2).219; - **त्तानुपस्सना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनिमित्तानुपश्यना], संसार के धर्मों में अनिमित्त नामक लक्षण पर विपश्यना ध्यान - *अनिमित्तानुपस्सना अभिञ्ञेय्या,* पटि॰ म॰ 19; *अनिमित्तानुपस्सना यथाभूतं ञाणं निमित्ततो सम्मोहा अञ्ञाणा मुच्चतीति* ..., पटि॰ म॰ 229.

अनिमिस / अनिम्मिस त्रि॰, निमिस / निम्मिस का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिमिष], **क.** वे आंखें, जिनकी पलकें न झपकाई गयी हों, एक ही आलम्बन पर टकटकी लगा कर देखने वाली आंखें, अपलक दृष्टि - *यक्खानं अक्खीनि रत्तानि होन्ति अनिम्मिसानि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.31; *बोधिरुक्खञ्च अनिमिसेहि चक्खूहि ओलोकयमानो सत्ताहं वीतिनामेसि,* उदा॰ अट्ठ॰ 42; **ख.** पु॰, देवता का नाम, देवमछली - *निज्जरा, निमिसा दिब्बा,* अभि॰ प॰ 12; *देवमच्छेस्वनिमिसो,* अभि॰ प॰ 1044; - **टि॰** देवों एवं यक्ष आदि अर्ध-दैवी सत्त्वों की आंखे अनिमिस या पलक न झपकाने वाली मानी गई हैं; - **चेतिय** नपुं॰, कर्म॰ स॰, बोधिवृक्ष के निकटवर्ती उस पवित्र स्थल का नाम, जहां एक सप्ताह तक अपलक आंखों से बोधिवृक्ष की ओर टकटकी लगाकर बुद्ध बैठे थे - ... *तं ठानं अनिमिसचेतियं नाम जातं,* उदा॰ अट्ठ॰ 42; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अनिमिषता], आंखों की पलकें न झपकाने की स्थिति, अपलकता - ... *अक्खीनं अनिमिसताय चेव रत्तताय च* ..., जा॰ अट्ठ॰ 6.163; - **नेत्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनिमिषनेत्र], पलकों को न बन्द कर रहे नेत्रों से युक्त, अपलक देखने वाला - *अभीतो अनिमिसनेत्तो, एस सक्को देवराजा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.166.

अनिम्मात त्रि॰, निम्मात का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिर्मातृ], **शा॰ अ॰** किसी का निर्माण, सृजन अथवा उत्पादन न करने वाला, अनुत्पादक; **ला॰ अ॰** किसी भी हेतु एवं प्रत्ययों द्वारा अनुत्पादित या अनिर्मित - *सत्तिमे, महाराज, काया अकटा अकटविधा अनिम्मिता अनिम्माता* ..., दी॰ नि॰ 1.49; *अनिम्माताति अनिम्मापिता, केचि अनिम्मापेतब्बाति* ..., दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.138, पाठा॰ अनिम्मापिता, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.302.

अनिम्मापेतब्ब त्रि॰, निम्मापेतब्ब का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिर्मातयितव्य], निर्माण अथवा सृजन या उत्पादन न करवाने योग्य - *अनिम्माति अनिम्मापिता, केचि अनिम्मापेतब्बाति पदं वदन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.138.

अनिम्मित त्रि॰, निम्मित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिर्मित], दूसरे कारणों आदि द्वारा निर्माण न किया गया या उत्पन्न न किया गया - *अनिम्मिताति इद्धियापि न निम्मिता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.138.

अनियत त्रि॰, नियत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनियत], **क.** अनिश्चित, संदेहग्रस्त, अनियमित, आकस्मिक, परिगणित धर्मों में अन्तर्भूत न होने वाला, अवशिष्ट, अस्थिर, चञ्चल; इधर से उधर उछलने वाला, डांवाडोल - *तयो रासी* ... *अनियतो रासि,* दी॰ नि॰ 3.173; *न नियतो ति अनियतो, अवसेसानं धम्मानमेतं नामं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.158; *तथा अनियतत्ता अनियता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 97; *गच्छती अनियतो गळागळं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.451; **ख.** *विनय के विशिष्ट सन्दर्भ में* - स्त्रियों के प्रति भिक्षु के व्यवहारों से संबंधित दो प्रकार के वे अपराध, जिनकी प्रकृति अनिश्चित होती है - *अनियतोति न नियतो, पाराजिकं वा सङ्घादिसेसो वा पाचित्तियं वा,* पारा॰ 296; - **कथा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, विन॰ वि॰ के तृतीय खण्ड का नाम, विन॰ वि॰ 45-46; - **गतिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनियतगतिक], वह, जिसके विविध जन्मों के मार्ग का निश्चय न हो, वह, जिसके अगले जन्म का स्वरूप अनिश्चित हो - ... *पुथुज्जनकालकिरियं कत्वा अनियतगतिका भविस्सति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.99, नियतगतिक का विलो॰; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰, अस्थिर अथवा चञ्चल चित्त वाला, ढुलमुल चित्त वाला - *अनियताति अनियतचित्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.452; - **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अनियतत्व], अनिश्चितता, चञ्चलता, अस्थिरता - *तथा अनियतत्ता अनियता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 97; - **लिङ्ग** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनियतलिङ्ग], वह शब्द, जिसका कोई एक लिङ्ग निश्चित न हो, विशेषण शब्द - *इदानि अनियतलिङ्गानं नियतलिङ्गेसु,* सद्द॰ 1.78; - **वचन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनियतवचन], अनिश्चयवाचक अथवा संयोजक सर्वनाम (शब्द) - *याति अनियतवचनं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 184; - **सङ्खा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनियतसंख्या], अनिश्चित संख्या - *अनियतसङ्खावसेन बहुवचप्पयोगा वा,* सद्द॰ 1.18; - **तुद्देस** पु॰, वि॰ पि॰ पारा॰ के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, पारा॰ 292.

अनियम / अनियाम पु॰, नियम / नियाम का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनियम, बौ॰ सं॰ अनियाम / अन्याम], नियम का अभाव, अनिश्चितता, अव्यवस्था, अविवेक - *सो नेसादो तत्थ अनियामेन पासे ओड्डेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.332; - **वसेन** क्रि॰ वि॰, बिना किसी क्रम के सामान्य अथवा अनौपचारिक रूप से - *अनियमवसेन भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.469; - **मत्थ** त्रि॰, ब॰ स॰, वह शब्द, जिसका अर्थ

अनिश्चित हो, संयोजक सर्वनाम-शब्द, (य, वा, अञ्जतर एवं अञ्जतम जैसे सर्वनाम) - *अञ्जतर-अञ्जतमसद्दा अनियमत्था,* सद्द॰ 1.266; *तत्थ वासद्दो अनियमत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 261.

अनियामित / अनियमित त्रि॰, नियामित / नियमित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनियमित, बौ॰ सं॰ अनियमित / अनियामित], अनिश्चित, अनियमित, [प्रायः यं एवं तं जैसे संयोजक सर्वनामों के लिए प्रयुक्त], - **निद्देस** पु॰, कर्म॰ स॰, संयोजक सर्वनामों के प्रयोग द्वारा किसी मन्तव्य का उल्लेख - *तत्थ अञ्जतराति अनियमितनिद्देसो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 92; - **पच्चत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, संयोजक सर्वनाम 'य' आदि का प्रथमा विभक्ति में प्रयोग - *यन्ति अनियमितपच्चत्तं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 191; - **परिच्छेद** पु॰, तत्पु॰ स॰, अनिश्चित मात्रा अथवा माप का निर्धारण - *यावाति अनियामितपरिच्छेदो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.155; - **परिदीपन** नपुं॰, अनिश्चय का संसूचन या प्रकाशन - *एकं समयन्ति अनियमितपरिदीपनं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 85; - **वचन** नपुं॰, अनिश्चयवाचक अथवा संयोजक सर्वनाम - *यानीध भूतानि समागतानी'ति अनियमितवचनेन भूतानि परिग्गहेत्वा ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 133 - **वसेन** क्रि॰ वि॰, अनियमित रूप में - *तत्थ ... अनियमितवसेन अनवसेसं परियादियति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 136; - **सङ्खा-निद्देस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनियमित-संख्यानिर्देश], अनिश्चित संख्या का कथन - *बहूति अनियमितसङ्ख्यानिद्देसो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 98; - **तालपन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, किसी अनिश्चित व्यक्ति का आह्वान, किसी विशेष व्यक्ति को सम्बोधित न करना - *तत्थ पस्साति अनियामितालपनमेतं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.152; - **तुद्देसवचन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अनिश्चय वाचक अथवा संयोजक सर्वनाम-पद - *तत्थ येति अनियमितुद्देसवचनं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 146.

अनिय्यातित्तभाव त्रि॰, निय्यातित्तभाव का निषे॰, ब॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अनिर्यातितात्मभाव], वह, जो आत्मभाव के लगाव से बाहर नहीं निकल सका है - *एवं अनिय्यातितत्तभावो हि अतज्जनीयो वा होति ...,* विसुद्धि॰ 1.112.

अनिय्यान नपुं॰, निय्यान का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिर्याण], **शा॰ अ॰** बाहर की ओर कूच करने या बाहर जाने अथवा आक्रमण करने का अभाव, **ला॰ अ॰** संसार-बन्धन से बाहर न आ पाना, मुक्ति का अभाव - *अनिय्यानन्ति विप्पवुत्थानं पुन आगमनं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.84; - **दीपक** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, विमुक्ति पर प्रकाश न डालने वाला - *अनिय्यानदीपकेहि अनत्थकेहि पदेहि ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.364; - **मग्ग** पु॰, तत्पु॰ स॰, संसार-बन्धन से बाहर निकालकर न ले जाने वाला मार्ग - *नानप्पकारका हि अनिय्यानमग्गापि मग्गात्वेव वुच्चन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).248.

अनिय्यानिक / अनीयानिक त्रि॰, निय्यानिक का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिर्याणिक], विमुक्ति अथवा छुटकारा न दिलाने वाला, मुक्ति के लिए अनुपयोगी, छुड़ाकर बाहर निकाल सकने में अप्रतिबल - *इध धम्मो दुरक्खातो होति दुप्पवेदितो अनिय्यानिको,* स॰ नि॰ 3(2).443; *दुरक्खाते धम्मविनये दुप्पवेदिते अनिय्यानिके ...,* दी॰ नि॰ 3.87; *ये खो पन धम्मा अनिय्यानिका, ते निय्यन्ति तक्करस्स सम्मा दुक्खक्खयायाति ...,* नेत्ति॰ 76; *लोकायतिकन्ति अनत्थनिस्सितं सग्गमग्गानं अदायकं अनिय्यानिकं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.181; - **कारण** नपुं॰, कर्म॰ स॰, निष्कर्ष तक न पहुंचाने वाली तर्क-पद्धति - *... दुतियं तक्कग्गाहकारणं अनिय्यानिककारणं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.112; - **त्त** नपुं॰, भाव॰, मुक्ति अथवा छुटकारा न दिलाने की अवस्था - *अनिय्यानिकत्ता सग्गमोक्खमग्गानं तिरच्छानभूता कथाति ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.80; - **भाव** पु॰, मुक्ति अथवा छुटकारा न दिला सकने की स्थिति - *अथ भगवा नेसं अनिय्यानिकभावकथनेन अत्थाभावतो ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).133.

अनिरस्साद त्रि॰, निरस्साद का निषे॰, ब॰ स॰, सन्तुष्ट, असन्तोष से रहित - *यदास्स एवं पटिपज्जतो अलीनं अनुद्धतं अनिरस्सादं ... समथवीथिपटिपन्नं चित्तं होति,* विसुद्धि॰ 1.131; *पञ्ञापयोगसम्पत्तिया, उपसमसुखाधिगमेन च अनिरस्सादं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.149.

अनिराकतज्झान त्रि॰, निराकतज्झान का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिराकृतध्यान], ध्यानभावना को बीच में बाधित न करने वाला, वह, जिसकी ध्यान भावना बीच में नहीं टूटती हो - *पटिसल्लानारामा, भिक्खवे, विहरथ ... अनिराकतज्झाना ...,* इतिवु॰ 29; *अनिराकतज्झानाति बहि अनीहतज्झाना अविनासितज्झाना वा,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 147.

अनिरुद्ध त्रि॰, निरुद्ध का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिरुद्ध], अप्रतिहत, अबाधित, वह, जिसकी समाप्ति अथवा अन्त नहीं हुआ है - *उपेक्खासुखं अनिरुद्धं होति,* म॰ नि॰ 2.127.

अनिरोध त्रि॰, निरोध का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिरोध], वह, जो अभी तक समाप्त नहीं है अथवा जिसका क्षय नहीं हुआ है - *... नत्थिभावविरुद्धो अत्थिभावो अनिरोधोति दस्सितं होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 32.

अनिल पु., [अनिल], वायु, हवा, पवन – *मालुतो पवनो वायु वातोनिलसमीरणो,* अभि. प. 37; *गिरिमिव अनिलेन दुप्पसय्हो,* जा. अट्ठ. 2.184; – **जलवेगसञ्छादित** त्रि., तत्पु. स., वातावरण अथवा हवा की नमी से पूरी तरह ढका हुआ – *यथा वा पन, महाराज, गगनं अनिलजलवेगसञ्छादितं,* मि. प. 123; – **जव** त्रि., ब. स., हवा की गति अथवा वेग वाला – *यथा, महाराज, रञ्ञो अस्साजानीयो भवेय्य सीघगति अनिलजवो,* मि. प. 143; – **लञ्जस** पु., तत्पु. स., हवा का मार्ग, वायुमण्डल – *अम्बरे अनिलञ्जसे,* अप. 1.273; *अगञ्छि अनिलञ्जसा,* अप. 2.4; – **ञ्जसासंखुब्भ** त्रि., तत्पु. स., वायु के वेग से क्षुब्ध या प्रभावित न होने वाला – *अनिलञ्जसासङ्खुब्भो, यथाकासो असङ्गियो,* अप. 1.113; – **पथ** पु., तत्पु. स., आकाश, वायुपथ, वायुमण्डल, अन्तरिक्ष – *वेहासो चानिलपथो आकासो नित्थियं नभं,* अभि. प. 46; ... *सकुणी अनिलपथं लङ्घयित्वा ...,* जा. अट्ठ. 3.338; – **बल** नपुं., हवा की शक्ति – *रुक्खोपि ... अनिलबलवेगाभिहतो भिज्जति,* मि. प. 159; – **बलसमाहत** त्रि., तत्पु. स., हवा की शक्ति द्वारा चोटिल – *यथा वा पन, महाराज, सण्हसुखुमअणुरजो अनिलबलसमाहतो ...,* मि. प. 176; – **लायन** नपुं., तत्पु. स., वायु का मार्ग – *चङ्कमं सुसमारूळ्हो, अम्बरे अनिलायने,* अप. 1.158; – **लूपम-समुप्पात** त्रि., ब. स., हवा के समान तेज, वायु जैसे वेग से युक्त – *अनिलूपमसमुप्पाता, सुदन्ता सोण्णमालिनो,* जा. अट्ठ. 7.105; *अनिलूपमसमुप्पाताति वातसदिसवेगा,* जा. अट्ठ. 7.106; – **लेरित** त्रि., तत्पु. स. [अनिलेरित], हवा द्वारा कंपाया जा रहा, वायु द्वारा प्रकम्पित – *अनिलेरिता लोहितपत्तमालिनी,* जा. अट्ठ. 5.399.

अनिवत्तगमन नपुं., कर्म. स. [अनिवर्त्यगमन], ऐसा गृहत्याग, जिसमें पुनः लौटकर वापस न आना हो, सदा के लिए गृहत्याग, अन्तिम रूप से गृहत्याग – *इदं पन मम अनिवत्तगमनं,* ध. प. अट्ठ. 1.39.

अनिवत्तन नपुं., निवत्तन का निषे., तत्पु. स. [अनिवर्तन], सांसारिक अथवा गृहस्थ जीवन की ओर वापस न आना, अप्रत्यागमन, अप्रत्यावर्तन – *एतेन रत्तिक्खयो नाम जीवितक्खयो तस्स अनिवत्तनतोति दस्सेति,* थेरगा. अट्ठ. 2.102; ... *एवमेव एकादसविधो अग्गि सब्बसत्ते दहन्तो अनिवत्तमानोव गच्छति,* सु. नि. अट्ठ. 1.91; – **धम्म** त्रि., ब. स., वापस अथवा पीछे की ओर न मुड़ने वाला, पलायन न करने वाला, पीठ न दिखाने वाला, जमा रहने वाला – *तदा पन वाराणसिरञ्ञो ... अनिवत्तनधम्मा ... महायोधा होन्ति,* जा. अट्ठ. 1.255; – **भाव** पु., वापस न मुड़ने अथवा पीठ न दिखाने की दशा – *भयभीरुताय अभावेनेव भेरवारम्मणं दिस्वापि अनिवत्तनभावेनाति ...,* जा. अट्ठ. 1.449; – **सभाव** त्रि., ब. स., वापस न लौटने अथवा पीठ न दिखलाने वाला, वीरता के स्वभाव वाला – *भयभीरुताभावेन च अनिवत्तनसभावा अहुम्हा,* जा. अट्ठ. 1.449.

अनिवत्त-ब्रह्मदत्त पु., व्य. सं., वाराणसी के एक राजा का नाम – *बाराणसियं किर अनिवत्तब्रह्मदत्तो नाम राजा अहोसि,* सु. नि. अट्ठ. 1.90.

अनिवत्तिक / अनिवत्तक त्रि., ब. स. [अनिवर्तिक], वापस न लौटने वाला – *याव लोकप्पवत्ति, ताव अनिवत्तका धम्माति ...,* खु. पा. अट्ठ. 123; *अनिवत्ति भविस्सामीति पब्बज्जतो अनिवत्तिको भविस्सामि ...,* अ. नि. अट्ठ. 3.29.

अनिवत्तितग्गहण त्रि., ब. स., बहुत दृढ़ता के साथ विषय-भोगों में आसक्त, सुदृढ़ आसक्ति वाला – *अवत्थितसमादानोति निच्चलगहणो अनिवत्तितगहणो,* दी. नि. अट्ठ. 3.92.

अनिवत्ति-धम्म त्रि., ब. स., अपने वचन पर अडिग रहने वाला, विश्वसनीय, भरोसेमन्द – *तेसं चित्तं उपत्थम्भेत्वा अनिवत्तिधम्मे कत्वा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.77.

अनिवत्तिमानस / अनिवत्तमानस त्रि., निवत्तिमानस का निषे., ब. स., सुदृढ़ अथवा अडिग मन वाला, वह, जिसका मन अविचलित रहे – *अनिवत्तमानसं ञत्वा, सम्बुद्धो एतदब्रवि,* बु. वं. 354.

अनिवत्तिय त्रि., निवत्तिय का निषे., तत्पु. स. [अनिवर्त्य], वापस न लौटने योग्य, पुनः सांसारिक जीवन में वापस आने के लिए अनिच्छुक अथवा अक्षम; – **योध** पु., कर्म. स., पीठ न दिखाने वाला या रणभूमि से वापस भाग कर न आने वाला वीर योद्धा – ... *महानागा, हत्थिआदीसुपि अभिमुखं आगच्छन्तेसु अनिवत्तिययोधानं एतं अधिवचनं,* अ. नि. अट्ठ. 3.182.

अनिवत्ती त्रि., निवत्ती का निषे., तत्पु. स. [अनिवर्तिन्], **क.** वापस न लौटने वाला, अध्यवसायी, दृढ़प्रतिज्ञ – *अनिवत्ति भविस्सामि, ब्रह्मचरियपरायणो,* अ. नि. 1.172; *पब्बज्जतो च सब्बञ्ञुतञ्ञाणतो च न निवत्तिस्सामि, अनिवत्तको भविस्सामि,* अ. नि. अट्ठ. 2.128; ... *सुहदया अनिवत्तिनो हुत्वा युज्झथाति आह,* जा. अट्ठ. 3.4; **ख.** सुधार अथवा उपचार न किये जाने योग्य, लाइलाज, असाध्य, अचिकित्स्य

- ... *तेसं चित्तं उपत्थम्भेत्वा अनिवत्तिधम्मे कत्वा* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.77.

अनिवातवुत्ति त्रि॰, निवातवुत्ति का निषे॰, ब॰ स॰, मिथ्याभिमानी, आडम्बरी, घमण्डी; - **कार** पु॰, मिथ्याभिमान, घमण्ड, दर्प - *एवं वातभरितभस्तसदिसथद्धभावपग्गहितसिरअनिवातवुत्तिकारकरणो थम्भो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).179.

अनिवारित त्रि॰, निवारित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिवारित], वह, जिसके विषय में प्रतिरोध न किया गया हो अथवा वह, जिसका निवारण न किया गया हो - *अक्खरसमये पन तादिसानि रूपानि अनिवारितानि,* सद्द॰ 1.204.

अनिविट्ठ / अनिविद्ध त्रि॰, निविट्ठ / निविद्ध का निषे॰ तत्पु॰ स॰ [अनिर्विष्ट], अस्थापित, निवेशित न किया हुआ, अविवाहित - *कुलकुमारियोति अनिविद्धा तासं धीतरो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.155, तुल॰ अनिब्बिट्ठ.

अनिवेसन त्रि॰, निवेसन का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिवेशन], **शा॰ अ॰** बेघर, आवास-विहीन, **ला॰ अ॰** सांसारिक आसक्ति-भाव से मुक्त, तृष्णा-मुक्त - *जितञ्च रक्खे अनिवेसनो सिया,* ध॰ प॰ 40; *अनिवेसनो सियाति अनालयो भवेय्य,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.180.

अनिसम्म नि + √सम के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अनिशम्य], न सुनकर, ध्यान न देकर, उचित विचार न करते हुए, शान्ति एवं धैर्य से रहित होकर - *निसम्म खत्तियो कयिरा, नानिसम्म दिसम्पति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.91; *तत्थ अनिसम्माति अनोलोकेत्वा अनुपधारेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.408; - **कारी** त्रि॰, बिना सोचे विचारे ही कर्म करने वाला - *अनिसम्मकारी जम्मो,* अभि॰ प॰ 729; *राजा न साधु अनिसम्मकारी,* जा॰ अट्ठ॰ 3.90.

अनिसामय उपरिवत्, संभवतः, अनिसामिय का स्थाना॰, न सुनकर, उचित रूप से विचार न करता हुआ - *बहुस्सुतानं अनिसामयत्थं,* सु॰ नि॰ 322; *अनिसामयत्थन्ति अनिसामेत्वा अत्थं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.58.

अनिसेधनता स्त्री॰, भाव॰ निसेधनता का निषे॰, तत्पु॰, उद्दण्डता, वश्यता, विनम्रता अथवा आज्ञाकारिता का अभाव - ... *अतिथद्धो अनिसेधनताय* ..., मि॰ प॰ 175.

अनिस्सग्गिय त्रि॰, निस्सग्गिय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अनिसर्गिक], अनिवार्य रूप से न त्यागने योग्य, न छोड़ने योग्य - *अनिसग्गियेन अत्थतं होति कथिनं,* महाव॰ 332, द्रष्ट॰ निस्सग्गिया धम्मा, आगे.

अनिस्सट त्रि॰, निस्सट का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिःसृत], बाहर की ओर नहीं निकला हुआ, संसार-बन्धन से मुक्त नहीं हो चुका, अविप्रमुक्त, बन्धन-ग्रस्त - *ये वा पन केचि समणा वा ब्राह्मणा वा विभवेन भवस्स निस्सरणमाहंसु, सब्बे ते अनिस्सटा भवस्मा'ति वदामि,* उदा॰ 106; ... *तेसम्पि एवं विपरीतगाहीनं कुतो भवनिस्सरणं, तेनाह भगवा ... अनिस्सटा* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 172; *अयम्पि अनिस्सटो लोकम्हा,* अ॰ नि॰ 3(1).237.

अनिस्सट्ठ त्रि॰, निस्सट्ठ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिःसृष्ट], अपरित्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ, अपने हाथों से नहीं निकला हुआ - *अदिन्नं नामं यं अदिन्नं अनिस्सट्ठं अपरिच्चत्तं रक्खितं गोपितं ममायितं परपरिग्गहितं,* पारा॰ 52; *अत्तनो हत्थतो वा यथाठितट्ठानतो वा न निस्सट्ठन्ति अनिस्सट्ठं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.241; द्रष्ट॰ निस्सट्ठ (आगे).

अनिस्सय त्रि॰, निस्सय का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिःश्रय], मूलभूत आवश्यक उपकरणों अथवा जीवन-साधनों से विहीन, बेसहारा, बञ्जर, उदास, निर्जन, सुनसान, ऊसर - *अनिस्सयमहीभागे त्विरीणमूसरे सिया,* अभि॰ प॰ 886.

अनिस्सर त्रि॰, इस्सर का निषे॰, तत्पु॰ स॰ / ब॰ स॰ [अनीश्वर], **क.** अप्रभु, अस्वतन्त्र, अशक्त, अक्षम, अवशवर्ती - ... *अरहतो चित्तं यं कायं निस्साय पवत्तति, तत्थ अरहा अनिस्सरो अस्सामी अवसवत्ती'ति,* मि॰ प॰ 236; *सम्हि सरीरे अनिस्सरा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.49; *अनेसमानोति अनिस्सरो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.17; **ख.** बिना स्वामी वाला, वह, जिसका कोई भी नाथ न हो - *सब्बं अनिस्सरं एतं, इति वुत्तं महेसिना,* थेरगा॰ 713; *अनत्ताति ... अस्सामिका अनिस्सराति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.234.

अनिस्सरण नपुं॰, स॰ प॰ मे पू॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त - **दस्सावी** त्रि॰, [अनिश्शरणदर्शिन्], रूप आदि धर्मों को आसक्ति के साथ देखने वाला, स्मृति एवं संप्रजन्य से रहित होकर धर्मों को देखने वाला - *अनिस्सरणदस्सावी, गन्धे चे पटिसेवति,* थेरगा॰ 732; द्रष्ट॰ निस्सरण, आगे; ... *सतिसम्पजञ्ञवसेन रूपायतने पवत्तमानो तत्थ निस्सरणदस्सावी नाम, वुत्तविपरियायेन अनिस्सरणदस्सावी दट्ठब्बो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.234; - **टि॰** जो कायगता एवं वेदनागता अनुस्मृति एवं सम्प्रज्न्य के बिना ही काया, वेदना आदि को देखता है वह उनके प्रति चित्त की आसक्ति को दृढ़ करके उनमें अनिस्सरण-दस्सावी कहलाता है; - **दस्सी** त्रि॰, [अनिश्शरणदर्शी], उपरिवत् - *सो रागानुसयो होति, अनिस्सरणदस्सिनो,* स॰ नि॰ 2(2).203; - **पञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनिश्शरणप्रज्ञ], वह, जिसके पास आसक्तियों के

बाहर आने अथवा उनसे छुटकारा दिलाने वाली प्रज्ञा नहीं है - *इमे खो ... पञ्च कामगुणे तेविज्जा ब्राह्मणा गधिता ... अनिस्सरणपञ्ञा परिभुञ्जन्ति,* दी॰ नि॰ 1.222; *अनिस्सरणपञ्ञाति इदमेत्थ निस्सरणन्ति, एवं परिजाननपञ्ञाविरहिता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.304.

अनिस्सरता स्त्री॰, इस्सरता का निषे॰, भाव॰ [अनीश्वरता], अपना स्वामी स्वयं न होने की अवस्था, अस्वाधीनता, पराधीनता - ... *वचनकरो अनिस्सरताय,* मि॰ प॰ 175.

अनिस्सर-विकप्पी त्रि॰, [अनीश्वर-विकल्पी], स्वयं स्वामी न रहने पर भी स्वामी के समान दान आदि देने का प्रबन्ध करने वाला - *न असन्थवविस्सासी च होति, न अनिस्सरविकप्पी च,* अ॰ नि॰ 2(1).128; *अनिस्सरविकप्पीति अनिस्सरोव समानो इमं देथ, इमं गण्हथा'ति इस्सरो विय विकप्पेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.45.

अनिस्सरिय त्रि॰, निस्सरिय का निषे॰, ब॰ स॰, अक्षम, असमर्थ, प्रभावहीन - *अत्तनो इस्सरिये अवसवत्तनतो अनिस्सरियो,* महानि॰ 2.279,(रो॰).

अनिस्सा स्त्री॰, इस्सा का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनीर्ष्या], ईर्ष्या का अभाव - *अनिस्सा च अमच्छरियञ्च,* अ॰ नि॰ 1(1).116; - **मनिक** त्रि॰, ब॰ स॰, ईर्ष्या-रहित मन वाला - *अनिस्सामनिका खो पन होति, परलाभसक्कारं ... न इस्सं बन्धति,* अ॰ नि॰ 1(2).233; *अनिस्सामनिका अहोसिन्ति इस्साविरहितचित्ता अहोसिं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.370.

अनिस्सायनरस त्रि॰, ब॰ स॰, ईर्ष्यामुक्त स्वभाव वाला - ... *मुदिता, अनिस्सायनरसा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 237; विसुद्धि॰ 1.308.

अनिस्सित त्रि॰, निस्सित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिःश्रित अथवा अनिसित], किसी भौतिक साधन पर आश्रित न रहने वाला, आत्मनिर्भर, आचार्य अथवा उपाध्याय के आश्रय से मुक्त, तृष्णा एवं दृष्टि-ग्राह से मुक्त - *अनिस्सितो छेत्व सिनेहदोसं,* सु॰ नि॰ 66; *एवं समथविपस्सनासम्पन्नो पठममग्गेन दिट्ठिनिस्सयस्स पहीनत्ता अनिस्सितो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.94, द्रष्ट॰ निस्सय, आगे; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनिःश्रितचित्त], तृष्णा एवं दृष्टि आदि से मुक्त चित्त वाला, आसक्ति-रहित चित्त वाला - *अनिस्सितचित्ता न झायन्ति झायमाना,* नेत्ति॰ 34; - **वग्ग** पु॰, परि॰ के उपालिपञ्चक के प्रथम वर्ग का नाम, परि॰ 337-340.

अनिस्सुकी त्रि॰, इस्सुकी का निषे॰, तत्पु॰ स॰, ईर्ष्या से रहित, ईर्ष्यामुक्त चित्त वाला - *पुन चपरं, निग्रोध, तपस्सी अमक्खी होति ... अनिस्सुकी होति अमच्छरी,* दी॰ नि॰ 3.34.

अनिहित त्रि॰, निहित का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनिहित], नहीं त्यागा गया, नहीं स्वच्छ किया गया, अपरिमार्जित, नीचे न रखा गया - *अनिद्धन्तं, अनिहितं, अनिन्नीतकसावं,* अ॰ नि॰ 1.253.

अनीक नपुं॰, [अनीक], सेना, सेना की टुकड़ी - *सत्तहत्थिकञ्च अनीकं,* महाव॰ 257; *सयमेव पत्तचीवरं आदाय अनीका निस्सटो हत्थी विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).136; *यस्स पुब्बे अनीकानि, कणिकाराव पुप्फिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.252; - **कग्ग** नपुं॰, [अनीकाग्र], सेना का अग्रभाग, सेना की अगली पंक्ति - *सोभयन्तो अनीकग्गं, नागसङ्घपुरक्खतो,* सु॰ नि॰ 423; *अनीकग्गन्ति बलकायं सेनामुखं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.102; - **कट्ठ** पु॰, [अनीकस्थ], सेना में स्थित योद्धा या राजा का अङ्गरक्षक, महावत, द्वारपाल - *अनीकट्ठो तु राजूनमङ्गरक्खगणो मतो,* अभि॰ प॰ 342; *अमच्चा पारिसज्जा गणकमहामत्ता अनीकट्ठा दोवारिका ...,* दी॰ नि॰ 3.47; *अनीकट्ठाति हत्थिआचरियादयो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.32; *दोवारिके अनीकट्ठे, अतिवेलं पजग्घति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.303; - **दस्सन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनीकदर्शन], सेना की पंक्तिरचना का प्रदर्शन, सेना-प्रदर्शन, कवायद, जुलूस - *उय्योधिकं बलग्गं ... अनीकदस्सनं,* दी॰ नि॰ 1.6; पाचि॰ 146; *तयो हत्थी पच्छिमं हत्थानीकन्तिआदिना नयेन वुत्तस्स अनीकस्स दस्सनं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.77; - **टि॰** सेना की ऐसी विशिष्ट रचना अनीकदस्सन कही गयी है जिसमें क्रमशः पहले तीन हाथी, तीन घोड़े, तीन रथों तथा अन्त में चार धनुर्धर पैदल सैनिकों को खड़ा किया गया हो, द्रष्ट॰ पाचि॰ 146.

अनीचवुत्ति त्रि॰, ब॰ स॰ [अनीचवृत्ति], अविनम्र, धृष्ट, निर्लज्ज, उद्दण्ड, गुस्ताख, असंगत - *अप्पतिस्सोति अप्पतिस्सयो अनीचवुत्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.26.

अनीति स्त्री॰, ईति का निषे॰ [अनीति], **क.** आकस्मिक संकट या ऋतुजन्य रोगों का अभाव, निरुपद्रवता, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि छह आकस्मिक विपदाओं का अभाव - *अनीतितो निरुपद्दवतो अभयतो खेमतो ... सीतलतो दट्ठब्बं,* मि॰ प॰ 295; **ख.** त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰, आकस्मिक विपदाओं से मुक्त निरुपद्रव, उपद्रव-रहित - *सम्पत्तियो दुवे भुत्वा, अनीति अनुपद्दवो,* अप॰ 1.125; *इद्धा फीता च खेमा च अनीति अनुपद्दवा,* अना॰ वं॰ 40; - **क** त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [अनीतिक], **क.** उपरिवत्, **ख.** नपुं॰, चित्तक्लेश आदि रूपी संकटों से विनिर्मुक्त स्थिति, निर्वाण का विशेषण - *धम्मं ... तण्हक्खयमनीतिकं,* सु॰ नि॰ 1143; *अनीतिकन्ति*

किलेसईतिविरहितं, सु. नि. अट्ठ. 2.297; *अनीतिकन्ति ईति वुच्चन्ति किलेसा च खन्धा च अभिसङ्खारा च ईतिप्पहानं ... अमतं निब्बानन्ति,* चू. नि. 195; *परायणं सरणमनीतिकं तथा,* अभि. प. 7; – **कधम्म** पु., कर्म. स. [अनीतिकधर्म], क्लेशरहित चित्त की स्थिति, निर्वाण की अवस्था – *अनीतिकधम्मञ्च वो, भिक्खवे, देसेस्सामि ...,* स. नि. 2(2).342; – **कधम्मगामी** त्रि., [अनीतिधर्मगामिन्], क्लेशरहित चित्त की स्थिति अथवा निर्वाण की ओर ले जाने वाला मार्ग – *अनीतिकधम्मञ्च वो भिक्खवे, देसेस्सामि अनीतिकगामिञ्च मग्गं,* स. नि. 2(2).342; – **सम्पदा** स्त्री., तत्पु. स. [अनीतिसम्पत्], ऋतुजनित विपदाओं से विमुक्ति, ईतियों से विमुक्ति – *अनीतिसम्पदा होति, विरूळ्ही भवति सम्पदा,* अ. नि. 3(1).71; *अनीतिसम्पदा होतीति कीटकिमिआदिपाणकईतिया अभावो एका सम्पदा होति,* अ. नि. अट्ठ. 3.228.

अनीतिह त्रि., इतिह का निषे., *छन्दानुरोधजनित इकार का दीर्घीकरण,* परम्परा से प्राप्त शिक्षा आदि में अप्राप्त, स्वयं परिकल्पित, स्वयं विचिन्तित, आत्मप्रत्यक्ष से जाना हुआ – *अभिभू हि सो अनभिभूतो, सक्खिधम्ममनीतिहमदस्सी,* सु. नि. 940; *न इतिहितिहं ... सामं सयमभिञ्ञातं अत्तपच्चक्खधम्मं अद्दसि,* महानि. 295; *दिट्ठे धम्मे अनीतिहं,* सु. नि. 1059; *अनीतिहन्ति न इतिहीतिहं,* चूळनि. 67; *अनीतिहन्ति अत्तपच्चक्खं,* सु. नि. अट्ठ. 2.281.

अनीवरण त्रि., नीवरण का निषे., ब. स. [अनीवरण], नीवरणों से मुक्त – *सत्तिमे, भिक्खवे, बोज्झङ्गा अनावरणा अनीवरणा ...,* स. नि. 3(1).114; *अनीवरणाति कुसलधम्मे ... न नीवरन्ति न पटिच्छादेन्तीति अनीवरणा,* स. नि. अट्ठ. 3.187.

अनीवरणीय त्रि., नीवरणीय का निषे., तत्पु. स. [अनीवरणीय], क्लेशों द्वारा दुष्प्रभावित न होने वाला विशुद्ध चित्त धर्म, कुशल धर्म – *अनीवरणिया धम्मा,* ध. स. पृ. 10; *चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना, चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च – इमे धम्मा अनीवरणिया,* ध. स. 1506.

अनीहट / अनीहत त्रि., नीहट का निषे., तत्पु. स. [अनिर्हृत], नहीं हटाया गया, दूर न ले जाया गया, अदूरीकृत, अक्षिप्त, – **ज्झान** त्रि., ब. स. [अनिर्हृत-ध्यान], वह, जिसका ध्यान हटा हुआ न हो अथवा निराकृत न हो, अनिराकृत ध्यान वाला – *अनिराकतज्झानाति वहि अनीहतज्झाना अविनासितज्झाना वा,* इतिवु. अट्ठ. 147; महानि. अट्ठ. 328.

अनीहमान त्रि., √ईह के वर्त. कृ. का निषे. [अनीहमान], चेष्टा न करने वाला, चेष्टाविमुख, प्रयासविमुख, प्रयत्नविमुख – *घरा नानीहमानस्स,* जा. अट्ठ. 2.195; *नानीहमानस्साति निच्चकालं कसिगोरक्खादिकरणेन अनीहमानस्स अवायमन्तस्स घरा नाम नत्थि,* तदे..

अनु[1] **क.** संज्ञाओं के पूर्व में प्रयुक्त उप., प्रायः स्वरादि-संज्ञाओं से पूर्व अन्व के रूप में परिवर्तित, अव्ययी. स. बनाने के लिए *संज्ञा-शब्दों के पूर्व जोड़ा जाने वाला उप.;* साहचर्य, के साथ, साथ ही, पीछे, सम्बन्ध में, विषय में, निरन्तरता या सातत्य में, भाग, हिस्सा, साम्य रखनेवाला, आवृत्ति आदि - *पच्छा भुसत्थ सादिस्सानुपच्छिन्नानुवत्तिसु, हीने च ततियत्थाधोभावेस्वनुगते हिते, देसे लक्खणवीच्छेत्थम्भूतभागादिके अनु,* अभि. प. 1174; **ख. स्वतन्त्र-सम्बन्धबोधक अ. के रूप में कर्मकारक के साथ** क. प्र. नाम से प्रयुक्त – *कम्मप्पवचनीययुत्ते ... पब्बजितमनुपब्बजिंसु,* क. व्या. 301; **ग. लक्षण, इत्थम्भूत, वीप्सा आदि के अर्थ में द्वि. वि. में अन्त होने वाले नाम के साथ स्वतन्त्र अ. के रूप में प्रयुक्त** – *देवदत्तो पसन्नो बुद्धं अनु,* मो. व्या. 2.12; **घ. साथ एवं किसी से कम होने के अर्थ में स्वतन्त्र अ. के रूप में प्रयुक्त** – *अनु उपालित्थेरं विनयधरा,* मो. व्या. 2.14–15; **ङ. अट्ठ. में यदा कदा निषे. अन उप. के स्पष्टीकरण हेतु भी प्रयुक्त** – *अनभावंकता'ति, अयञ्हेत्थ पदच्छेदो अनुअभावं कता ...,* पारा. अट्ठ. 1.97; **च. यत्र तत्र अनु-अनु रूप में द्विरुक्तीकृत,** – *भावेति वड्ढेतीति अनुभावो, अनुभावो एव आनुभावो,* सारत्थ. टी. 1.42; **छ. वीप्सा के अर्थ में** – *अनुपेक्खेति दस्सेति अनुदस्सेति,* चूळव. 174.

अनु[2] त्रि., अणु के लिये अप., सूक्ष्म, बारीक – *तत्थेव पुञ्ञकम्मम्हा अनुम्हा विपुलं फलं,* सद्धम्मो. 271.

अनु अच्छरिय त्रि., (अनच्छरिय के व्याख्यान हेतु प्रयुक्त शब्द), अक्षर-संविधान से मुक्त, स्वतः-स्फूर्त – *अनच्छरियाति अनु अच्छरिया,* महाव. अट्ठ. 233; *तत्थ पदच्छेदो अनुअभावं गता अनभावं गताति, यथा अनुअच्छरिया अनच्छरियाति,* पारा. अट्ठ. 1.97.

अनु अनु आहरित्वा अनु + आ + √हर का पू. का. कृ. [अन्वाहृत्य], सम्यक् रूप से विचार-विमर्श कर सुचिन्तित-रूप में ग्रहण कर – *अथ वा सब्बं चेतसो समन्नाहरित्वाति सब्बस्मा चित्ततो देसनं सम्मा अनु अनु आहरित्वा,* उदा. अट्ठ. 316.

अनु अनु गिज्झति अनुगिज्झति के अर्थ का सुदृढ़ीकृत वर्त॰ क्रि॰ रू॰, किसी के प्रति अत्यधिक तृष्णालु या रागानुरक्त होता है – *अनुगिज्झतीति अनु अनु गिज्झति पुनप्पुनं पत्थेति,* महानि॰ अट्ठ॰ 42.

अनु अनु नयन नपुं॰, पुनः पुनः ले जाना, लुरियाना, ठकुरसुहाती करना, चापलूसी करना – *विसये सत्तानं अनु अनु नयनतो अनुनयो,* महानि॰ अट्ठ॰ 29.

अनु अनु पस्सन नपुं॰, विपश्यना-ध्यान द्वारा पुनः पुनः समभाव से धर्मों को देखना – *पुरिमपुरिमञाणानं अनु अनु पस्सनतो अनुपस्सनाति वुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.33.

अनु अनु सेति अनु + √सी का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, किसी के साथ अत्यधिक या पुनः पुनः संलिप्त होता है – *थामगतट्ठेन अनु अनु सेतीति अनुसयो,* महानि॰ अट्ठ॰ 32.

अनु अभाव पु॰, (अनभाव के व्याख्यान-हेतु अट्ठकथाओं में प्रयुक्त विशिष्ट शब्द) पीछे प्राप्त होने वाला किसी धर्म का अभाव – *तत्थ पदच्छेदो अनुअभावं गता अनभावं गताति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.97.

अनु अमतग्ग त्रि॰, (अनमतग्ग की व्याख्या के रूप में अट्ठकथाओं में प्रयुक्त विशिष्ट शब्द) वह, जिसकी पूर्व एवं अपर कोटि ज्ञान द्वारा अज्ञेय है, संसार – *अनमतग्गोति अनु अमतग्गो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.139.

अनु अवय त्रि॰, (अनवय के व्याख्यान के रूप में प्रयुक्त विशिष्ट शब्द) परिपूर्ण गुण वाला, वह, जिसे किसी शिल्प का पूर्ण ज्ञान है – *अनवयोति अनुअवयो, सन्धिवसेन उकारलोपो, अनु अनु अवयो, यं यं कुम्भकारेहि कत्तब्बं नाम अत्थि, सब्बत्थ अनूनो परिपुण्णसिप्पोति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.230.

अनु अवसन/अनोवस्स त्रि॰, क्रि॰ वि॰ [अनववर्ष, अनववर्षण], वर्षा का अभाव, अवर्षण, सूखे की स्थिति वाला, वर्षा-रहित अवस्था वाला – *देवम्हि वस्समानम्हि, अनोवस्सं भवं अका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.308; *अनोवस्सन्ति अवस्सं, यथा देवो न वस्सति, तथा कतन्ति अत्थो,* तदे॰; पाठा॰ अनुअवसन.

अनुकड्ढन नपुं॰, [अनुकर्षण], पीछे की ओर से पकड़कर ले आना, परिहार करना – *चसद्दग्गहणमनुकड्ढनत्थं,* क॰ व्या॰ 72.

अनुकड्ढित त्रि॰, अनु + √कड्ढ का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुकृष्ट], पीछे लगा हुआ, पीछे पड़ा हुआ, पीछे से घसीटा हुआ, पीछे से खींचा हुआ, छोड़ा हुआ प्रभाव चिह्न – *दुट्ठस्स होति अनुकड्ढितं पदं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.236; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.322; विसुद्धि॰ 1.103; *अनुकड्ढितन्ति पादनिक्खेपसमये कड्ढन्तो विय पादं निक्खिपति, तेनस्स पदं अनुकड्ढितं पच्छतो अञ्छितं होति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.118.

अनुकन्तति अनु + √कन्त का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुकृन्तति], काटता है, फाड़ता है, खरोंचता है – *कुसो यथा दुग्गहितो, हत्थमेवानुकन्तति,* ध॰ प॰ 311; *हत्थं अनुकन्तति फालेति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.277.

अनुकम्पक त्रि॰ [अनुकम्पक], दयालु, करुणा से आर्द्र, कोमल प्रकृति वाला, कृपा करने वाला – *परमत्थसञ्हिता गाथा, यथापि अनुकम्पिका,* थेरीगा॰ 210; *अनुकम्पिकाति ... अनुग्गाहिका,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 195; *आहुनेय्या च पुत्तानं, पजाय अनुकम्पका,* इतिवु॰ 78; *अनुकम्पकाति अत्थकामा हितेसिनो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 164.

अनुकम्पचित्त नपुं॰, कर्म॰ स॰, अनुकम्पा युक्त चित्त, कोमल चित्त – *अनुकम्पं उपादायाति अनुकम्पचित्तेन परिग्गहेत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.148, पाठा॰ अनुकम्पं चित्तेन.

अनुकम्पति अनु + √कम्प का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुकम्पा करता है, दया करता है, कृपा करता है, करुणा से द्रवीभूत होता है, अनुग्रह करता है – *आवासिको भिक्खु गिहीनं अनुकम्पति,* अ॰ नि॰ 2(1).244; – **म्पमानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मित्ते सुहज्जे अनुकम्पमानो, हापेति अत्थं पटिबद्धचित्तो,* सु॰ नि॰ 37; *अनुकम्पमानोति अनुदयमानो, तेसं सुखं अपसंहरितुकामो दुक्खं अपहरितुकामो च,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.59; – **कम्प** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, – *अनुकम्प मं वीर महानुभाव,* पे॰ व॰ 100; *अनुकम्प महावीर, लोकजेट्ठ नरासभ,* अप॰ 1.33; – **म्पस्सु** अनु॰, आत्मने॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अनुकम्पस्सु कारुणिको,* पे॰ व॰ 415; *अनुकम्पस्सूति अनुग्गण्ह अनुदयं करोहि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 157-158; – **म्पेय्याथ** विधि॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ये, आनन्द, अनुकम्पेय्याथ ... ते वो, आनन्द, ... पतिट्ठापेतब्बा'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).253; – **म्पि/म्पित्थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, – *उभयेन वत मं सो भगवा अत्थेन अनुकम्पि,* स॰ नि॰ 1(1).100; *अनुसासि मं अरियवता, अनुकम्पि अनुग्गहि,* थेरगा॰ 334; *सो सत्ते अनुकम्पित्थ भूपति,* म॰ वं॰ 37.109; – **म्पितुं** निमि॰ कृ॰, – *न तं अरहति सप्पञ्ञो, मनसा अनुकम्पितुं,* स॰ नि॰ 1(1).239; – **म्प** पू॰ का॰ कृ॰, – *पणेमि दण्डं अनुकम्प योनिसो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.391; – **म्पितो** भू॰ क॰ कृ॰, – *अहो सुलद्धलाभोम्हि, सुमित्तेनानुकम्पितो,* अप॰ 2.159; *अनुकम्पिम्ह*

भदन्ते, भत्तेनच्छादनेन च, पे॰ व॰ 437; – **म्पितब्बा** सं॰ कृ॰, – *अनुकम्पितब्बा ति मनोभावनिया,* सद्द॰ 2.556.

अनुकम्पन नपुं॰, [अनुकम्पन], दया, करुणा, अनुग्रह, चित्त की कोमलवृत्ति – *पच्छिमजनतं अनुकम्पनतो धम्मगरुभावतो च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).136; – **सील** त्रि॰, दयालु, कृपालु, दयार्द्रचित्त – *ये अनुकम्पनसीला कारुणिका ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 13.

अनुकम्पा स्त्री॰, [अनुकम्पा], करुणा, दया, अनुग्रह – *दयानुकम्पा कारुञ्ञं करुणा च अनुद्दया,* अभि॰ प॰ 160; *पाणेसु अनुद्दया अनुकम्पा अविहेसा भविस्सति,* पारा॰ 48; *अनुकम्पाति परदुक्खेन चित्तकम्पना,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.230; – **म्पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवता ... अनुकम्पकेन अनुकम्पं उपादाय,* उदा॰ 96; – **म्पाय** च॰ / प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तारि अरियसच्चानि, अनुकम्पाय पाणिनं,* थेरगा॰ 492; *साधु निब्बापनं ब्रूहि, अनुकम्पाय गोतम,* थेरगा॰ 1232; – **जातिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुकम्पाजातिक], अनुकम्पा से सम्पन्न स्वभाव वाला, दयालु, कृपालु – *ब्राह्मणा अनुकम्पाजातिकयेव दानं देन्ती'ति,* म॰ नि॰ 2.428.

अनुकम्पी त्रि॰, [अनुकम्पिन्], दया करने वाला, अनुकम्पा करने वाला, दयालु, करुणालु, कृपालु, अनुग्रह करने वाला – *सब्बे च पाणे मनसानुकम्पी, पहूतमरियो पकरोति पुञ्ञं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 135; अ॰ नि॰ 3(1).2.

अनुकरण नपुं॰, [अनुकरण], अनुविधान, अनुकृति, किसी एक को बाद में ज्यों का त्यों ग्रहण करके रख देना – *अनुकरणवसेन पटिच्चसमुप्पादस्स ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 24; *अनुकरणमत्तञ्हेतं,* सद्द॰ 1.262; – **सद्द** पु॰, अनुरणनात्मक ध्वनि या शब्द – *अनुकरणसद्दो हि अयं,* उदा॰ अट्ठ॰ 53; सद्द॰ 3.642.

अनुकरोति अनु + √कर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुकरण करता है, समानता करता है – *एवं गिही नानुकरोति भिक्खुनो,* सु॰ नि॰ 223; *... इत्थी पुरिसं अच्चाचरति ... ददाति, याचति, कतमनुकरोति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.431; *अनुकरोतीति दारकेन कतं कतं अनुकरोति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.434; तुल॰ अनुकुब्बति; – **कुब्ब** वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, – *पस्समानानुकुब्बन्ति, अत्तमत्थं विचक्खणा,* अ॰ नि॰ 1(1).178; – **रोन्तो** उपरिवत् – *देवदत्तो इदानेव मम अनुकरोन्तो विनासं पत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.469.

अनुकस्सति अनु + √कस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रस्तुत करता है, सामने रखता है, उद्धृत करता है, अभिवर्तन करता है – **स्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सिलोकमनुकस्सामि,* दी॰ नि॰ 2.186; *अनुकस्सामीति अक्खरपदनियमितं वचनसङ्खातं पवत्तयिस्सामि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.248.

अनुकार पु॰, [अनुकार], अनुकरण समानता, सदृशता – *तेसञ्च अनुकारेन,* दी॰ वं॰ 5.39.

अनुकारण नपुं॰, गौण-मत, गौण-सिद्धान्त – *धम्मस्स च अनुधम्मं ब्याकरोन्तीति भोता गोतमेन वुत्तकारणस्स अनुकारणं कथेन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.259.

अनुकारी त्रि॰, [अनुकारिन्], अनुकरण करने वाला अन्य के समान या दूसरे जैसा प्रतीत होने वाला – *रजतरज्जुसतानुकारी,* दाठा॰ 5.32; *एवं धामिळयोधा ते मारयोधानुकारिनो,* चू॰ वं॰ 80.70.

अनुकिरिय स्त्री॰, [अनुक्रिया], अनुकरण, नकल, स्वाङ्ग करना – *देवदत्तो इदानेव मम अनुकिरियं करोन्तो विनासं पत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.31; *बुद्धलीळाय धम्मं देसेस्सामी'ति तुम्हाकं अनुकिरियं करोती'ति वुत्ते ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.83.

अनुकुलं अ॰ [अनुकुलं], कुल-परम्परा के अनुरूप, प्रत्येक कुल या परिवार में – *ये च यञ्ञा निरारम्भा, यजन्ति अनुकुलं सदा,* स॰ नि॰ 1(1).93; *अनुकुलन्ति अनुकुलेसु यजन्ति, यं निच्चभत्तादि पुब्बपुरिसेहि पट्ठपितं, तं अपरापरं अनुपच्छिन्नत्ता मनुस्सा ददन्तीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.129.

अनुकुल[1] त्रि॰, वंश परम्परा के अनुरूप चलने वाला – *दुवे धीता चानुकूला कुलानुच्छविका अहुं,* म॰ वं॰ 11.5; – **यञ्ञ** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनुकुलयज्ञ], वंश-परम्परा के अनुरूप किया गया यज्ञ – *निच्चदानानि अनुकुलयञ्ञानि सीलवन्ते पब्बजिते उद्दिस्स दिय्यन्ति,* दी॰ नि॰ 1.128; *अनुकुलयञ्ञानीति – अम्हाकं पितुपितामहादीहि पवत्तितानी'ति कत्वा पच्छा ... वंसपरम्पराय पवत्तेतब्बानि यागानि ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.243.

अनुकुल[2] / **अनुकूल** त्रि॰, [अनुकूल], **शा॰ अ॰** तट के सहारे बढ़ने वाला, तट के किनारे वृद्धि को प्राप्त कर रहा – *जातस्सरस्सानुकूलं, केतका पुप्फिता बहू,* अप॰ 1.381; **ला॰ अ॰** विश्वसनीय, पूर्ण रूप से समर्पित, इच्छुक, उपयुक्त, अनुरूप, नियमानुरूप – *गुणड्ढो अनुकुलो च ...,* सद्धम्मो॰ 312; *अट्ठतिंसारम्मणेसु अत्तनो अनुकूलकम्मट्ठानं गहेत्वा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).177; *अनुकूलानि ... तिलिङ्गानं,* सद्द॰ 266; – **किरिय** त्रि॰, अनुवर्ती, अनुवर्तन करने वाला, दूसरों की क्रियाओं जैसी क्रिया करने वाला – *अनुब्बताति अनुकूलकिरिया,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 235; – **ता** स्त्री॰, अनुकूलता,

स्वीकृति - *एकादस इमे रागचरितस्सानुकूलता,* अभि. अव. 113; पाठा. अनुकूलका; - **भाव** पु., [अनुकूलभाव], अनुकूलता, स्वीकृति, सम्मान, श्रद्धा - *सत्था दहरस्स अत्तनो अनुकुलभावं ञत्वा,* ध. प. अट्ठ. 2.92; *सामिकस्स अनुकूलभावेन वसे वत्तनसीला,* वि. व. अट्ठ. 57; - **मित्त** पु., [अनुकूलमित्र], विश्वासी मित्र, मनोहर या सुखद मित्र - *अनुकूलमित्तो विय,* ध. स. अट्ठ. 172; अभि. अव. 21; - **वत्ती** त्रि., [अनुकूलवर्तिन्], अनुकूल रहने वाला, आज्ञाकारी, अनुवर्ती, अनुवर्तन करने वाला - *सब्बत्थ ते अनुकूलवत्ती भविस्सामीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.233; *समानेन अनुकूलवत्तिना परिजनेन सद्धिं वासो यस्स सो समानवासो,* सु. नि. अट्ठ. 1.24; - **ले** अ., क्रि. वि., अविपरीत रूप में, तट के सहारे - *सुवण्णवण्णं सम्बुद्धं, अनुकूले समाहितं,* अप. 1.277.

अनुकट्ठित उत् + √क्वथ के भू. क. कृ. का निषे. [अनुत्क्वथित], नहीं उबलता हुआ, उबाल की स्थिति में न पहुंचा हुआ - *उदपत्तो अग्गिना असन्तत्तो अनुकट्ठितो अनुस्सदकजातो,* अ. नि. 2(1).216, पाठा. अनुक्कुधितो.

अनुकेवट्ट पु., एक ब्राह्मण का नाम - *तं सुत्वा अनुकेवट्टब्राह्मणो ...,* जा. अट्ठ. 6.235.

अनुक्कट्ठचीवर नपुं., कर्म. स. [अनुत्कृष्टचीवर], वह चीवर, जो नियमानुरूप नहीं है, निर्धारित नियम के विरुद्ध चीवर - *यं हत्थे ठपेत्वा लद्धं, हत्थेयेव ठपितं, तं अनुक्कट्ठचीवरं नाम,* विसुद्धि. 1.61.

अनुक्कण्ठना स्त्री., उक्कण्ठना का निषे., तत्पु. [अनुत्कण्ठा], सन्तुष्टि, संतोष, धैर्य, उत्कण्ठा का सर्वथा अभाव - *राजा पुत्तस्स अनुक्कण्ठनत्थाय तानि पञ्च कुमारसतानि तस्स सन्तिकेयेव ठपेसि,* जा. अट्ठ. 6.5.

अनुक्कण्ठित त्रि., उक्कण्ठित का निषे., तत्पु. [अनुत्कण्ठित], सन्तुष्ट, प्रसन्न - *ततो ततो आगम्म रमन्ति अभिरमन्ति अनुक्कण्ठिता हुत्वा निवसन्तीति अत्थो,* खु. पा. अट्ठ. 90; *सत्ता अत्तनो अत्तनो निब्बत्तट्ठाने अभिरममानाव अनुक्कण्ठिताव जीवितं जहन्ति,* जा. अट्ठ. 3.49.

अनुक्कम पु., [अनुक्रम], **क.** क्रम के अनुरूप, तांता, क्रमबद्धता, उत्तराधिकार, धीरे धीरे, उचित समय में - *इदञ्हि सुत्तं इमिना अनुक्कमेन भगवता अवुत्तम्पि ...,* खु. पा. अट्ठ. 72; *अनुक्कमेन गेहे निसीदापेत्वा ... अन्तोगब्भे निपज्जि,* जा. अट्ठ. 1.159; ... *अनुक्कमेन भद्रयोब्बनं पत्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.50; *ततो परं भङ्गानुपस्सनादिवसेन विपस्सनं उस्सुक्कापेत्वा अनुक्कमेन अरियमग्गं गण्हन्तो ...,* उदा. अट्ठ. 194; **ख.** युद्धभूमि के अश्वों के प्रशिक्षण में अपनाया गया एक विशेष तरीका या प्रकार - *तमेनं अस्सदमको उत्तरि कारणं कारेति अनुक्कमे मण्डले ...,* म. नि. 2.118; *अनुक्कमेति चत्तारोपि पादे एकप्पहारेनेव उक्खिपने च निक्खिपने च,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.114; - **आगत** त्रि., [अनुक्रमागत], परम्परा से प्राप्त, किसी विशिष्ट क्रम में प्राप्त - *अनुक्कमागतं पन पाळिपदं गहेत्वा इधेव कतं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).101.

अनुक्कमति अनु + √कम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुक्राम्यति], **शा. अ.** पीछे जाता है, बगल में चलता है, **ला. अ.** तात्पर्य ग्रहण करता है, धारण करता है, समझता है - **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. - *ये सत्थवाहेन अनुत्तरेन, सुदेसितं मग्गमनुक्कमन्ति,* इतिवु. 58; *अनुक्कमन्तीति ... तस्स देसनानुसारेन अनुगच्छन्ति पटिपज्जन्ति,* इतिवु. अट्ठ. 233; - **क्कमं** वर्त. कृ., पु., प्र. पु., ए. व. - *ददमानो पियो होति, सतं धम्मं अनुक्कमं,* अ. नि. 2(1).36; - **क्कमे** विधि., प्र. पु., ए. व., - *हत्थिक्खन्धावपतितं, कुञ्जरो चे अनुक्कमे,* थेरगा. 194; - **मितवे** निमि. कृ. - *अनुक्कमितवे सक्का, यायं पटिपदा दळ्हा,* स. नि. 1(1).28; - **मित्वा** पू. का. कृ. - *इतो वा एत्तो वा अनुक्कमित्वा ... आरुळ्हो विय च गच्छति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).233.

अनुक्खित्त त्रि., उक्खित्त का निषे., तत्पु. स. [अनुत्क्षिप्त], अबहिर्भूती-कृत, अनिष्कासित, नहीं हटाया गया या दूर न ले जाया गया - *अनुच्चारितकतन्ति कप्पियं कारापेतुं आगतेन भिक्खुना ईसकम्पि अनुक्खित्तं वा अनपनामितं वा कतं,* पाचि. अट्ठ. 85.

अनुक्खिपं अनु + √खिप का वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. [अनुत्क्षिपन्], लुढ़काता हुआ, एक ओर फेंकता हुआ, बगल में कर दे रहा - *दारको वट्टमनुक्खिपं, आसीविसमकोपयि,* चरिया. 403; *वट्टमनुक्खिपन्ति खिपनवट्टसण्ठानताय वट्टन्ति लद्धनामं गेण्डुकं अनुक्खिपन्तो, गेण्डुककीळं कीळन्तोति अत्थो,* चरिया. अट्ठ. 222.

अनुक्खेप पु., अनु + √खिप [अनुक्षेप], **शा. अ.** पीछे की ओर फेंकना, बदले में लौटाना; **ला. अ.** क्षतिपूर्ति करना - *अनुजानामि, भिक्खवे, अनुक्खेपे दिन्ने अतिरेकभागं दातुन्ति,* महाव. 376; *तत्थ अनुक्खेपो नाम यंकिञ्चि अनुक्खिपितब्बं अनुप्पदातब्बं कप्पियभण्डं,* महाव. अट्ठ. 383; - **टि.** यदि किसी भिक्षु को दूसरे भिक्षुओं से अधिक मूल्य वाला चीवर

प्राप्त हो जाता है तो उसके द्वारा क्षतिपूर्ति के रूप में अन्य भिक्षुओं को कोई भी वस्तु दिए जाने को अनुक्खेप कहा गया है.

अनुखुद्दक त्रि., (खुद्दकानुखद्दक से गृहीत संक्षिप्त शब्दरूप), बहुत छोटा, अनुक्षुद्रक, गौण, महत्त्वहीन, छोटा से छोटा – *कतमानि अनुखुद्दकानि सिक्खापदानीति,* मि॰ प॰ 145.

अनुग त्रि., [अनुग], पीछा करने वाला, अनुयायी, अनुगामी, अधीनस्थ, पराधीन, परायत्त – *किञ्चस्स अनुगं होति, छायाव अनपायिनी,* स॰ नि॰ 1(1).88; *न तं अनुगं भविस्सती'ति,* अ॰ नि॰ 3(2).268; *होतु राजा तवानुगो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.384; *तवानुगोति ... तव वसं अनुगतो होतु तया सद्धिं एकट्ठाने वसतु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.385.

अनुगच्छति अनु + √गम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पीछे जाता है, अनुगमन करता है, पीछा करता है, पीछे पड़ जाता है, किसी का शिकार हो जाता है – *सो तमनुगच्छति,* म॰ नि॰ 1.239; – **च्छन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमनुगच्छन्तो पस्सति नागवने महन्तं हत्थिपदं,* म॰ नि॰ 1.239; – **च्छेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो तमनुगच्छेय्य,* स॰ नि॰ 1(2).93; – **अन्वगू** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सोकस्स वसमन्वगू,* सु॰ नि॰ 591; – **अन्वगं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, अनियमित प्रयोग – *तेजो नु ते नान्वगं दन्तमूलं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.165; *दुम्मेधो कामानं वसं अन्वगं,* सद्द॰ 2.464; – **अन्वगा / गमासि / गच्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एको तं वारियन्तो पि राजपुत्तेन अन्वगा,* म॰ वं॰ 7.10; *दिस्वान तंयेव अनुगमासि,* महाव॰ 20; *सो पत्तं गहेत्वा सत्थारं अनुगच्छि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.325; – **अन्वगच्छिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तदास्सहं पिट्ठितो अन्वगच्छिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.160; – **न्वगमुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तं ब्राह्मणा अन्वगमुं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.270; – **च्छिस्ससि** भवि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मं गच्छन्तं अनुगच्छिस्ससि, ठितं उपतिट्ठिस्ससि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(2).300; – **गन्त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *ते पुनप्पुनं याचित्वा ... अनुगन्त्वा परिदेवित्वा निवत्तिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.9; – **गन्तब्बो** सं॰ कृ॰, – *तस्मा न इमेसु दिवसेसु भगवा अनुगन्तब्बो'ति निवारेसि,* उदा॰ अट्ठ॰ 202.

अनुगच्छना स्त्री॰, अनुगमन, पीछे चलना या उत्पन्न होना – *अनुगच्छना च अस्सासं, पस्सासं अनुगच्छना,* पटि॰ म॰ 158.

अनुगज्जति अनु + √गज्ज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, गर्जना करता है, बार-बार चिल्लाता है, जोर देकर किसी बात को दुहराता है – *अप्पेव नाम सियाति एत्थ पठमवचनेन भगवा गज्जति, दुतियवचनेन अनुगज्जति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.296.

अनुगत त्रि॰, [अनुगत], **क.** पीछे जाने वाला, अनुकरण करने वाला, अनुकर्ता, अनुचर, **ख.** व्यवहृत, गृहीत, अनुसृत, सम्बद्ध, किसी विषय के प्रति सर्वथा सहज – *अनुगता मनसो उप्पिलावा,* उदा॰ 110; *अनुगताति चित्तेन अनुवत्तिता,* उदा॰ अट्ठ॰ 192; *परिसास्स होति अनुगता अचला'ति,* दी॰ नि॰ 3.130; *यथा, महाराज, ... रत्तलोहितचन्दनं नाम सवरपुरमनुगतं ओञ्ञातं अवञ्ञातं ... भवति,* मि॰ प॰ 184; – **वेध** एक शल्य-क्रिया के बाद द्वितीय शल्य द्वारा वेधन, दुबारा की गयी शल्य-क्रिया – *अनुवेधं विज्झेय्याति तस्सेव वणमुखस्स अङ्गुलन्तरे वा द्वङ्गुलन्तरे वा आसन्नपदेसे अनुगतवेधं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.114.

अनुगमन / अनुग्गमन नपुं॰, [अनुगमन], किसी के पीछे पीछे जाना, अनुसरण, सेवा में उपस्थित रहना – ... *अट्ठमीचातुद्दसीपन्नरसीनं पच्चुग्गमनानुग्गमनवसेन चत्तारो दिवसा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.287; *पत्तपटिग्गहणं आसनपञ्ञापनं अनुगमनन्ति एवमादिकं मेत्तं कायकम्मं नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 2.288.

अनुगम्मति अनु + √गम का कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, किसी अन्य द्वारा अनुगमन किया जाता है, किसी के साथ अनुगत होता है – **मानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञाहि च देवताहि सेसराजककुधभण्डहत्थाहि अनुगम्ममानो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.63-64.

अनुगव त्रि॰, [अनुगव], बैल के पीछे पीछे – *आयामे नुगवं,* मो॰ व्या॰ 3.48 तुल॰ चान्द्र व्याकरण 4.4.69, अष्टा॰ 5.4.83.

अनुगामिक त्रि॰, [अनुगामिक], **शा. अ.** अनुगमन करने वाला, साथ रहने वाला, अनुचर, कभी भी साथ न छोड़ने वाला – *अनुगच्छतीति अनुगामिको, परलोकं गच्छन्तम्पि तत्थ तत्थ फलदानेन न विजहतीति अत्थो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 179; *यस्मा पनेतं सद्धावित्तं अनुगामिकं अनञ्ञसाधारणं सब्बसम्पत्तिहेतु ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.196; **ला. अ.** कभी समाप्त न होने वाला पिछलग्गू, अनुरूप, अनुकूल, वशवर्ती – *एसो निधि सुनिहितो, अजेय्यो अनुगामिको,* खु॰ पा॰ 10; *न, ... तथागतो परिसाय अनुगामिको, परिसा पन तथागतस्स अनुगामिका,* मि॰ प॰ 158; – **त** त्रि॰, उपरिवत् – *अनुगामिकताछाया,* सद्धम्मो॰ 443, पाठा॰ अनुगामिकतच्छाया; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अनुगामिकत्व], अनुगामी होने की स्थिति, पिछलग्गूपन – *मेत्तादिविहारो सेट्ठत्ता अनुगामिकत्ता*

च ब्रह्मनिधीति वुच्चति, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.45; – **धन** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनुगामिकधन], सदा साथ में रहने वाला धन – *यानिमानि थावरादीनि पञ्च धनानि, तेसु ठपेत्वा दानसीलादिअनुगामिकधनं*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.24; – **निधि** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनुगामिकनिधि], सदा साथ रहने वाला खजाना, सदा साथ रहने वाला कोष – *तं निधिन्ति तं पुञ्ञकम्मं पण्डिता अनुगामिकनिधिं नाम कथेन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.250.

अनुगामिय त्रि॰, अनुगमन करने वाला, पीछे चलने वाला, सदा साथ रहने वाला – *महानिधानं निहितं अक्खयं अनुगामियं*, सद्धम्मो॰ 311.

अनुगामी त्रि॰, [अनुगामिन्], अनुगमन करने वाला, सेवक, किसी विशेष दिशा अथवा वस्तुविशेष को अभिप्रेत बनाने वाला – *पारादिगमिम्हा ति किमत्थं? अनुगामि*, क॰ व्या॰ 536; *अनुयन्ताति अनुगामिनो सेवका*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.157.

अनुगायति अनु + √गा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुगायति], वैदिक मन्त्रों का पाठ करता है, स्तुति करता है, अनुवाचन करता है – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *येपि खो ते ब्राह्मणानं पुब्बका इसयो ... पोराणं मन्तपदं गीतं पवुत्तं समिहितं, तदनुगायन्ति ... वाचितमनुवाचेन्ति*, महाव॰ 322; दी॰ नि॰ 1.91; *तदनुगायन्तीति एतरहि ब्राह्मणा तं तेहि पुब्बे गीतं अनुगायन्ति अनुसज्झायन्ति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221; – **यिस्सं** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, – *पारायनमनुगायिस्सं*, सु॰ नि॰ 1137; *तत्थ अनुगायिस्सन्ति भगवता गीतं अनुगायिस्सं*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.297; – **गीत** भू॰ क॰ कृ॰ – *तेसं सह सच्चमनुगीतेन महामेघो पवस्सति*, मि॰ प॰ 126.

अनुगायन नपुं॰, [अनुगायन], वैदिक-मन्त्रों का पाठ, पूर्व में कथित अथवा गीत का पुनर्कथन या पुनर्गायन – ... *अनुगायनपटिगायनकिरियावसेन सम्पदानं होतीति दट्ठब्बं*, सद्द॰ 3.696.

अनुगार / अन्नभारो एक परिव्राजक का नाम – *अन्नभारो वरधरो सकुलुदायी च परिब्बाजको*, म॰ नि॰ 2.204, पाठा॰ अनुगार.

अनुगाहति अनु + √गाह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रवेश कर रहा है, निमज्जित हो रहा है, गहराई तक प्रवेश कर रहा है – *अप्पमत्तो तु धम्मानं सभावमनुगाहति*, सद्धम्मो॰ 611; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सभावमनुगाहन्तो*, सद्धम्मो॰ 611.

अनुगिज्झति अनु॰ + √गिध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुगृध्यति, अनु + √गृध], किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति लोभ-युक्त होता है, पुनः पुनः कामना करता है, बार-बार इच्छा करता है – *थियो बन्धू पुथु कामे, यो नरो अनुगिज्झति*, सु॰ नि॰ 775; *अनुगिज्झतीति अनु अनु गिज्झति पुनप्पुनं पत्थेति*, महानि॰ अट्ठ॰ 42; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अनानुगिद्धोति कञ्चि धम्मं तण्हागेधेन अननुगिज्झन्तो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.129.

अनुगिणाति अनु + √गि का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुगृणाति], दूसरे के शब्द को दुहराता है, अनुमोदन करता है, सहमति देता है, पीछे बोलता है – *तस्स हि भिक्खुनो जनो अनुगिणाति*, क॰ व्या॰ 279 तुल॰ पाणिनि॰ 1.4.41, सद्द॰ 3.696.

अनुगिद्ध त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [अनुगृद्ध], किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति निरन्तर लोभ से भरा हुआ व्यक्ति, सतत लोभयुक्त – *रसेसु अनुगिद्धस्स, झाने न रमती मनो*, थेरगा॰ 580.

अनुगीति स्त्री॰, अनु + √गा + ति [अनुगीति], पूर्ववर्ती गद्य में कथित वस्तु का गाथाओं में पुनर्कथन अथवा गाथा-रूप में संक्षेपण, पुनरुद्धरण – *अनुगीतीति वुत्तस्सेवत्थस्स सुखग्गहणत्थं अनुपच्छा गायनगाथा*, नेत्ति॰ अट्ठ॰ 149; अयं पनेत्थ अनुगीति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).43.

अनुगीयति अनु + √गा का कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुगीयते], किसी के द्वारा गाया जाता है, अनुगायन किया जाता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तत्थ सिक्खानुगीयन्ति*, सु॰ नि॰ 946; तुल॰ सद्द॰ 3.923.

अनुगु अव्ययी॰ स॰ [अनुगु], गायों के पीछे – *गुन्नं पच्छा अनुगु*, मो॰ व्या॰ 3.48; तुल॰ पाणिनि 5.2.15.

अनुगुण त्रि॰, [अनुगुण], समान गुणों वाला, अनुरूप, समनुरूप – *लोकायतिका विय तदनुगुणं उच्छेददस्सनं अभिनिविसन्ता* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 288.

अनुगुत्त त्रि॰, [अनुगुप्त], संरक्षित, पीछे रक्षा किया गया – *तयानुगुत्तो सिरि जातिमामपि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.395; *तयानुगुत्तोति तया अनुरक्खितो*, तदे॰.

अनुग्गण्हति / अनुग्गण्हाति अनु + √गह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुगृह्णाति], पक्ष लेता है, सहायता करता है, रक्षा करता है, देख-भाल करता है, अनुमोदन करता है, अनुग्रह करता है – *अञ्ञे बहुजने पोसेती'ति वदन्तो अनुग्गण्हति नाम*, जा॰ अट्ठ॰ 1.140; *न खो पन मं सत्था सम्परायिकेनेवत्थेन अनुग्गण्हाति*, जा॰ अट्ठ॰ 2.61; – **ण्हन्तो** वर्त॰ कृ॰, (गरहति के साथ साथ रहने पर गरहन्तो के विप॰ के रूप में) – *इति बोधिसत्तो गरहन्तोपि अनुग्गण्हन्तोपि किञ्च देवो सकं पज'न्ति*

आह, जा॰ अट्ठ॰ 1.140; - **ण्हातु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एवमेव भगवा एतरहि अनुग्गण्हातु भिक्खुसङ्घं*, म॰ नि॰ 2.130; - **ग्गण्ह** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अनुकम्पस्सूति अनुग्गण्ह अनुदयं करोहि*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 157-58; - **ग्गण्हेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हेय्य न अनुग्गण्हापेय्य*, पाचि॰ 446; - **ग्गण्हेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एवमेव एतरहि अनुग्गण्हेय्यं भिक्खुखङ्घ'न्ति*, स॰ नि॰ 2(1).85; - **ग्गहि / ग्गहेसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *यं पत्थयानो धम्मेसु, उपज्झायो अनुग्गहि*, थेरगा॰ 330; *इमिना असाधारणेन अनुग्गहेन अनुग्गहेसि*, दी॰ नि अट्ठ॰ 1.4; - **ग्गण्हिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा ... द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हिस्सति न अनुग्गण्हापेस्सतीति*, पाचि॰ 446; - **ग्गहेस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *परिपूरं वा सीलक्खन्धं तत्थ तत्थ पञ्ञाय अनुग्गहेस्सामि*, अ॰ नि॰ 1(1).148; - **ग्गहेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *अट्ठकथं अनुग्गहेत्वाव ...*, विसुद्धि॰ 1.94; - **ग्गहेतब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उपज्झायेन, भिक्खवे, सद्धिविहारिको सङ्गहेतब्बो अनुग्गहेतब्बो*, महाव॰ 56; - **ग्गहितो** भू॰ क॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सेय्यथापि, भन्ते, भगवता पुब्बे भिक्खुसङ्घो अनुग्गहितो*, म॰ नि॰ 2.130; - **ण्हापेति** प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हाति न अनुग्गण्हापेतीति*, पाचि॰ 446; - **ण्हापेय्य** प्रेर॰, विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हेय्य न अनुग्गण्हापेय्य*, पाचि॰ 446; - **ण्हापेस्सति** प्रेर॰, भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *द्वे वस्सानि नेव अनुग्गण्हिस्सति न अनुग्गण्हापेस्सति*, पाचि॰ 446.

अनुग्गण्हन नपुं॰, पूर्ववर्ती का भावनाम [अनुग्रहण], अनुग्रह, कृपा, पक्षपात, संरक्षण, स्वीकरण, अनुमोदन - *ब्रह्मचरियं नाम तिस्सो सिक्खा, सकलं सासनं, तस्स अनुग्गण्हनत्थाय आहारेति*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 423; *अञ्ञातं ञापनत्थाय ञातं अनुग्गहणत्थाय ...*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.309-10; - **क** त्रि॰, [अनुग्रहणक], अनुकम्पक, उपकारक, सहायक, अनुमोदक - *अनुकम्पकाति सम्परायिकेन अत्थेन अनुग्गण्हका*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 59; - **सील** त्रि॰, [अनुग्रहणशील], उपरिवत् - *एवं अञ्ञेपि ये अनुकम्पका अनुग्गण्हसीला होन्ति*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 36.

अनुग्गत[1] त्रि॰, अनु + उ + √गम का पू॰ का॰ कृ॰ [अनूद्गत], पीछे उत्पन्न, साथ साथ उत्पन्न, समान काल में उत्पन्न, समान काल में समुदित - *अनुग्गतेति दुल्लभवसेन अनुप्पन्ने*, उदा॰ अट्ठ॰ 192; *अनुग्गता'तिपि पाळि, अनुउट्ठिताति अत्थो*, उदा॰ अट्ठ॰ 192.

अनुग्गत[2] त्रि॰, उग्गत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनुद्गत], **शा॰ अ॰** नहीं ऊपर उठा हुआ, ऊपर की ओर नहीं उठ रहा - *अनुग्गतम्हि आदिच्चे*, अप॰ 1.261; *अनुग्गतम्हि आदिच्चेति सूरिये अनुग्गते अनुट्ठिते पच्चूसकालेति अत्थो*, अप॰ अट्ठ॰ 2.190; *उच्चावचन्ति उग्गतञ्च अनुग्गतञ्च*, जा॰ अट्ठ॰ 4.428; **ला॰ अ॰** दर्परहित, विनम्र, घमण्डरहित, (प्रायः अनुगत रूप में भी इसी तात्पर्य में प्राप्त) - *अनुग्गता सीलवती, छायाव अनपायिनी*, जा॰ अट्ठ॰ 6.304; *अनुग्गताति दहरकालतो पट्ठाय अनुगता*, तदे॰; - **लोम** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुद्गतलोम], वह, जिसके रोएं खड़े न हों - *पन्नलोमोति लोमहंसुप्पादकस्स छम्भितत्तस्स अभावेन अनुग्गतलोमो*, उदा॰ अट्ठ॰ 131.

अनुग्गमन नपुं॰, अनुगमन का अप॰ [अनुगमन], किसी के पीछे पीछे जाना, अनुसरण करना - *अट्ठमीचातुद्दसीपन्नरसीनं पच्चुग्गमनानुग्गमनवसेन चत्तारो दिवसा*, जा॰ अट्ठ॰ 4.287, द्रष्ट॰ अनुगमन के अन्त॰.

अनुग्गह[1] पु॰, [अनुग्रह], **क.** कृपा, उपकार, सहायता संक्षेप, संग्रह, पक्षपात, उदारता - *अनुग्गहे तु सङ्खेपे गहणे संगहो मतो*, अभि॰ प॰ 925; *सुखा सङ्घस्स सामग्गी, समग्गानञ्चनुग्गहो*, इतिवु॰ 10; *समग्गानञ्चनुग्गहोति समग्गानं सामग्गिअनुमोदनेन अनुग्गण्हनं सामग्गिअनुरूपं*, इतिवु॰ अट्ठ॰ 62; *द्वेमे, भिक्खवे, अनुग्गहा आमिसानुग्गहो च धम्मानुग्गहो च*, इतिवु॰ 70; **ख.** स्वीकृति, अनुमोदन स्वीकरण - *एत्थ पन किञ्चाति गरहत्थे च अनुग्गहणत्थे च निपातो*, जा॰ अट्ठ॰ 1.140; *किञ्चापीति अनुग्गहगरहवचनं*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).158; द्रष्ट॰ सद्द॰ 3.896; - **बुद्धि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनुग्रहबुद्धि], उपकारभावना, करुणा से भरा विचार, अनुकम्पामयी बुद्धि - *बिम्बिसारो तदा राजा, ममानुग्गहबुद्धिया*, अप॰ 2.215; - **सील** त्रि॰, [अनुग्रहशील], दयालु, करुणा से भरी प्रकृति वाला, सहायता करने की मनोवृत्ति वाला - *तत्थ अनुकम्पिकाति अनुग्गहसीला करुणाधिका*, उदा॰ अट्ठ॰ 66.

अनुग्गह[2] त्रि॰, उग्गह का निषे॰, ब॰ स॰, स्वयं को अध्ययनादि में न लगने वाला, किसी कार्य को हाथ में न लेने वाला - *सन्तो असन्तेसु उपेक्खको सो, अनुग्गहो उग्गहणन्ति मञ्ञे*, सु॰ नि॰ 918; *तत्थ अनुग्गहोति उग्गहणविरहितो, सोपि नास्स उग्गहोति अनुग्गहो, न वा उग्गण्हातीति अनुग्गहो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.253.

अनुग्गहण नपुं., [अनुग्रहण], अनुकूल रूप में किसी वस्तु का स्वीकरण, सहायता-प्रदान, अनुकम्पन - *अनुग्गहायाति अनुग्गहणत्थं,* स. नि. अट्ठ. 2.21, पाठा. अनुग्गहत्थं; - **पच्चुपट्ठान** त्रि., [-प्रत्युपस्थान], अनुग्रह या अनुकम्पा के कारण उत्पादित अनुकूल मानसिक संवेदन से उत्पन्न - *सातलक्खणं सुखं, ... अनुग्गहणपच्चुपट्ठानं,* ध. स. अट्ठ. 162.

अनुग्गहीत त्रि., अनु + √गह का भू. क. कृ. [अनुगृहीत], **क.** वह, जिस पर किसी ने अनुग्रह अथवा कृपा की है, संतुष्ट, सहायता-प्राप्त, अनुमोदित, उपकृत - *कतिहि ... अङ्गेहि अनुग्गहिता सम्मादिट्ठि,* म. नि. 1.373, पाठा. अनुग्गहीता; *अनुग्गहिताति लद्धूपकारा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).242; **ख.** कर्तृ. वा., सहायक, दयालु, कृपालु; - **चित्त** त्रि., ब. स., दयालु चित्तवाला, उदार - *कालेन दानं देति, अनुग्गहितचित्तो दानं देति,* अ. नि. 2(1).162; *अनुग्गहितचित्तोति अग्गहितचित्तो मुत्तचागो हुत्वा,* अ. नि. अट्ठ. 3.54.

अनुग्गाहक त्रि., [अनुग्राहक], सहायक, अनुग्रह करने वाला, अनुकम्पक, उपकारक, प्रोत्साहक - *पण्डिता भिक्खू अनुग्गाहका सब्रह्मचारीनं,* म. नि. 3.297; *भिक्खूनं अनुग्गाहको सब्रह्मचारीनं,* स. नि. 2(1).6; *अनुग्गाहकोति ... द्वीहिपि अनुग्गहेहि अनुग्गाहको,* स. नि. अट्ठ. 2.226; *परमहितानुकम्पकेति ... अनुग्गाहके,* वि. व. अट्ठ. 91.

अनुग्घात पु., उग्घात का निषे., तत्पु. स. [अनुद्घात], **शा. अ.** झटकों अथवा गाड़ी की चाल में धक्कों का अभाव, चोट, ठेस अथवा पीड़ा का अभाव, सवारी की बिना झटकों वाली गति, **ला. अ.** क्रोध, द्वेष आदि के प्रहार या झटकों का अभाव - ... *अनुग्घातीति ... अनुग्घातेन समन्नागतो,* जा. अट्ठ. 7.143.

अनुग्घाती त्रि., झटकों अथवा धक्कों से रहित, अकष्टकर, पीड़ा न देने वाला, क्रोध आदि से रहित, अहिंसक - *अक्कोधनमनुग्घाती,* जा. अट्ठ. 7.142; *ठितं वग्गुमनुग्घाती,* ..., वि. व. 33; *अनुग्घातीति न उग्घाति, अत्तनो उपरि निसिन्नानं ईसकम्पि खोभं अकरोन्तोति,* वि. व. अट्ठ. 27.

अनुघटेति अनु. + √घट का वर्त., प्र. पु., ए. व., साथ में लगा देता है, संलग्न करता है, जोड़ देता है, अनुबद्ध कर देता है - **न्तो** त्रि., वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - ... *जातकं पच्चुप्पन्नेन अनुघटेन्तो ...,* खु. पा. अट्ठ. 158; पाठा. अनुसन्धेन्तो.

अनुघरं क्रि. वि., अ. [अनुगृहं], प्रत्येक घर में, घर घर में - ... *अनुघरं पञ्च पञ्च उदकघटकानि ठपेन्ति ...,* मि. प. 42.

अनुघरकं उपरिवत् - *अनुघरकं अनुघरकं आहिण्डथ,* महाव. 326.

अनुघायित्वा अनु + √घा का पू. का. कृ., सुगन्ध लेकर, सूंघ कर, रसास्वाद ग्रहणकर - *भमराव गन्धमनुघायित्वा पविसन्ति विवित्तकाननं,* मि. प. 311.

अनुचङ्कमति अनु + √कम का अवधारक वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुचङ्क्रम्यते], ऊपर से नीचे की ओर तथा नीचे से ऊपर की ओर चलता है, किसी के साथ विचरण करता है, स्मृति एवं संप्रजन्य के साथ चङ्क्रमण करता है - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *उपसङ्कमित्वा परितो परितो कुटिकाय अनुचङ्कमन्ति अनुविचरन्ति,* स. नि. 2(2).123; - **मानो** वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. पु., ए. व. - *जङ्घविहारं अनुचङ्कममानो,* जा. अट्ठ. 4.7; - **न्तानं** वर्त. कृ., पु., ष. वि., ब. व. - *माणवानं जङ्घविहारं अनुचङ्कमन्तानं अनुविचरन्तानं,* दी. नि. 1.214; - **मिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *बुद्धस्स चङ्कमन्तस्स, पिट्ठितो अनुचङ्कमिं,* थेरगा. 1047; - **मिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *भगवन्तं अभिवादेत्वा भगवन्तं चङ्कमन्तं अनुचङ्कमिंसु,* दी. नि. 3.59; - **मिस्सं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *अनुचङ्कमिस्सं विरजं, सब्बसत्तानमुत्तमं,* थेरगा. 481.

अनुचङ्कमन नपुं., [अनुचङ्क्रमण], बिहार में निर्मित वह पथ, जिस पर साधक भिक्षु स्मृति के साथ चंक्रमण करे - *द्वीसु पस्सेसु रतनमत्तअनुचङ्कमं दीघतो सट्ठिहत्थं ...,* जा. अट्ठ. 1.10.

अनुचङ्कमापेन्ति अनु + √चङ्कम का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ब. व., चङ्क्रमण के लिए प्रेरित करते है, चङ्क्रमण हेतु उत्साहित करते है - *आयस्मन्तं महामोग्गल्लानं वेजयन्ते पासादे अनुचङ्कमापेन्ति अनुविचरापेन्ति,* म. नि. 1.322.

अनुचर पु., [अनुचर], साथी, अनुयायी, अनुगामी, सेवक, भृत्य - *आयसाधको आयुत्तकपुरिसो विय तन्निस्सितो नन्दिरागो अनुचरो नाम,* ध. प. अट्ठ. 2.259.

अनुचरति अनु + √चर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुचरति], पीछे चलता है, साथ-साथ चलता है, आ धमकता है, आक्रमण करता है; आह्वान करता है, इधर-उधर भटकता है - **सि** म. पु., ए. व. - *किं मुण्डो कपालमनुचरसि,* स. नि. 2(2).190; - **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. - *यम्पि, भिक्खवे, दलिद्दो अस्सको अनाळिहको चोदियमानो न देति, अनुचरन्तिपि नं,* अ. नि. 2(2).66 *अनुचरन्तिपि नन्ति*

परिसमज्झगणमज्झादीसु आतपठपनपंसुओकिरणादीहि विप्पकारं पापेन्तो पच्छतो पच्छतो अनुबन्धन्ति, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.117; - **अन्वचारी** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *महिळामुखो पोथयमन्वचारी,* जा॰ अट्ठ॰ 1.187; - **रापेत्वा** प्रेर॰, पू॰ का॰ कृ॰ - *एवं वड्ढिस्सतीति इतो चितो च अनुचरापेत्वा वीमंसाय अनुचरितं धम्मं देसेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).335.

अनुचरित त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [अनुचरित], **क.** परिव्याप्त, भरा हुआ, परिवृत्त, परिपूर्ण, आपूरित, खचित - *गवजमहिंसरुरु ... बिळारससकण्णिकानुचरिते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.411; **ख.** विचारित, विमर्शित, सुचिन्तित - *अनुचरापेत्वा वीमंसाय अनुचरितं धम्मं देसेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).335.

अनुचरिया स्त्री॰, [अनुचर्या], **शा॰ अ॰** सेवा, आराधना, देख-भाल - *सक्कस्स देवानमिन्दस्स अनुचरियं उपागमि,* दी॰ नि॰ 2.194; **ला॰ अ॰** न्यायिक प्रक्रिया, दण्डविधान - *अनुचरियापि, भिक्खवे, दुक्खा लोकस्मिं कामभोगिनो'ति,* अ॰ नि॰ 2(2).66.

अनुचारिका स्त्री॰, [अनुचारिका], सेविका, दासी, देख-रेख करने वाली भार्या - *अनुचारिका वुच्चति भरिया,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.7.

अनुचिण्ण त्रि॰, अनु + √चर का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुचीर्ण], **क.** व्यवहृत, पूर्वकाल में प्रयोग में लाया गया, अधिगत, परिपूर्ण, प्रयुक्त, खचित, भरा हुआ - *तेहानुचिण्णं इसीभि, मग्गं दस्सनपत्तिया,* थेरीगा॰ 206; *इसीहि अनुचिण्णं पटिपन्नं समथविपस्सनामग्गं ञाणदस्सनस्स अधिगमाय ...,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 193; **ख.** कर्तृ॰ वा॰ के तात्पर्य में - आचरण कर रहा, अभ्यास कर रहा - *सो पमाणमनुचिण्णो,* इतिवु॰ 62; *किं तत्थ दुक्खमनुचिण्णेन,* मि॰ प॰ 228.

अनुचिन्तेति अनु + √चिन्त का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुचिन्तयति], अनुचिन्तन करता है, विमर्श करता है, पुनः पुनः सोच विचार करता है - **सि** वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *इङ्घानुचिन्तेसि सयम्पि देव,* जा॰ अट्ठ॰ 7.129; *अनुचिन्तेसीति पुनप्पुनं चिन्तेय्यासि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.130; - **न्ताय** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अयोनिसो पटिनिस्सज्ज, योनिसो अनुचिन्तय,* स॰ नि॰ 1(1).235; - **न्तयुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *ठिताचलट्ठिति थिरा, धम्मतमनुचिन्तयुं,* अप॰ 2.203.

अनुच्चारित त्रि॰, उच्चारित का निषे॰ [अनुच्चारित], वह, जिसे बाहर उड़ेला नहीं गया है, अविनिर्मुक्त, अबहिष्कृत, - **कत** त्रि॰, वह, जिसे बाहर नहीं किया गया, वह, जो अतिरिक्त भाग नहीं है - *अनतिरित्तं नाम ... अनुच्चारितकतं होति,* पाचि॰ 113-114; *अनुच्चारितकतन्ति कप्पियं कारापेतुं आगतेन भिक्खुना ईसकम्पि अनुक्खित्तं वा अनपनामितं वा कतं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 85.

अनुच्चावचसील त्रि॰, [अनुच्चावचशील], वह अर्हत्, जिसका शील न बढ़ सके, न घट सके, अपरिवर्त्य चरित्र वाला, स्थिर आचरण वाला, अविकम्पित आचरण वाला, स्थिर शील वाला अर्हत् - *अनुच्चावचसीलस्स, निपकस्स च झायिनो,* अ॰ नि॰ 1(1).192; *अनुच्चावचसीलस्साति ... खीणासवस्स पन सीलं एकन्तवड्ढितमेव, तस्मा सो अनुच्चावचसीलो नाम होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.146.

अनुच्छिट्ठ / अनुच्चिट्ठ त्रि॰, [अनुच्छिष्ट], वह भोजन, जो जूठा न हो, वह आचरण, जिसका प्रयोग न किया गया हो, अस्पृष्ट, अपरिभुक्त, ताजा - *सो अनुच्छिट्ठं कत्वाव थोकं भत्तं अपनेत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.252; *तत्थ अग्गोदकानीति ... अपीतानि अनुच्छिट्ठोदकानि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.383; *अनुच्छिट्ठं अपरिभुत्तं दातुं वट्टती'ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.225.

अनुअच्छरिय त्रि॰, अप॰ [अनक्षरीय], अक्षरविधान से विनिर्मुक्त, स्वतः-स्फूर्त - *अनच्छरियाति अनुअच्छरिया,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.173.

अनुच्छव / अनुच्छविक त्रि॰, [अनुच्छविक], प्रतिरूप, छवि के अनुरूप, उचित विषय - *इदं मे आसनं वीर, पञ्ञत्तं तवनुच्छवं,* अप॰ 1.66; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.63; - **क** त्रि॰, ब॰ स॰, उपरिवत् - *पतिरूपो'नुच्छविकं,* अभि॰ प॰ 715; *राजा बोधिसत्तस्स तिण्णं उतूनं अनुच्छविके तयो पासादे कारेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.68; *धीतु अनुच्छविकं सब्बालङ्कारं अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.78; - **यत्र तत्र** निमि॰ कृ॰ के साथ भी प्रयुक्त - *नायं मङ्गलहत्थी भवितुं अनुच्छविको,* जा॰ अट्ठ॰ 4.125; - **वोहार** पु॰, कर्म॰ स॰, उपयुक्त व्यवहार, उपयुक्त वाणी का प्रयोग - *अय्यपुत्तो'ति वत्तब्बे पब्बजितानं अनुच्छविकवोहारेन वदति,* उदा॰ अट्ठ॰ 58.

अनुच्छेद / अनुपच्छेद पु॰, निषे॰ तत्पु॰ स॰ [अनुच्छेद या अनुपच्छेद], अविनाश, सातत्य, निरन्तरता, अविच्छिन्नता - *दीपसिखाय अनुच्छेदो अनुपच्छेदो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.700(सि॰).

अनुछमासं अ॰, क्रि॰ वि॰ [अनुषण्मासं], प्रत्येक छह महीने पर - *दीघायुकबुद्धकाले च अनुसंवच्छरं वा अनुछमासं वा भिक्खू उपोसथत्थाय सन्निपतन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.31.

अनुज पु॰, [अनुज], छोटा भाई - *कनिट्ठो कनियो'नुजो,* अभि॰ प॰ 254; - **जा** स्त्री॰, [अनुजा], छोटी बहिन - *अञ्ञातका सचे होन्ति, भातुनो अनुजाय वा,* विन॰ वि॰ 487.

अनुज्जवं पु., अनु + √जु का वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व., पीछे दौड़ता हुआ, मनाता हुआ, पीछे पड़ा हुआ - *हंसराजं यथा धङ्को, अनुज्जवं पतिस्ससी'ति,* जा. अट्ठ. 6.281; *अनुज्जवन्ति ... यथा सुवण्णहंसराजं अनुजवन्तो धङ्को अन्तराव पतिस्सति, एवं पतिस्ससि,* तदे..

अनुजात त्रि., अनु + √जन का भू. क. कृ. [अनुजात], बाद में उत्पन्न, अपने पूर्वजों अथवा आचार्यों के आचरणों का अनुकरण करने वाला - *सारिपुत्तो अनुवत्तेति, अनुजातो तथागतं,* सु. नि. 562; *तत्थ अनुजातो तथागतन्ति तथागतहेतु अनुजातो, तथागतेन हेतुना जातोति अत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 2.158; *अनुजातो पितरं अनोमपञ्ञो,* जा. अट्ठ. 6.210; *कुलपवेणिरक्खको पन अनुजातो,* तदे.; - **पुत्त** पु., [अनुजातपुत्र], योग्य पुत्र, वंशदीपक - *तेपि सब्बेव अनुजातपुत्ता नाम अहेसुं,* ध. प. अट्ठ. 1.75.

अनुजानन नपुं., [अनुजानन], स्वीकृति, अनुमोदन, समर्थन - *तत्थ किञ्चापीति अनुजाननप्पसंसनत्थे निपातो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).103.

अनुजानाति अनु + √ञा का वर्त., प्र. पु., ए. व., **शा. अ.** अनुमति देता है, आज्ञा करता है, स्वीकृति प्रदान करता है, प्रशंसा करता है, संस्तुति करता है - **नन्ति** ब. व. - *न मं मातापितरो अनुजानन्ति अगारस्मा अनगारियं पब्बज्जाया'ति,* म. नि. 2.257; **ला. अ.** विनय-नियमों को प्रज्ञप्त करता है - *न भगवा अनुजानाति मातुगामस्स ... पब्बज्ज'न्ति,* चूळव. 416; - **सि** म. पु., ए. व. - *सुभासितं नानुजानासि मय्ह'न्ति,* जा. अट्ठ. 7.178; - **मि** उ. पु., ए. व. *अनुजानामि, भिक्खवे, दसवग्गेन वा अतिरेकदसवग्गेन वा गणेन उपसम्पादेतुन्ति,* महाव. 66; - **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. पु., ए. व. - *तस्स चित्तं अनुजानन्तोव वन्दनसासनं पहिणि,* जा. अट्ठ. 6.260; पाठा. अजानन्तोव; - **अनानुजानं** वर्त. कृ. का निषे., पु., प्र. पु., ए. व., - *परस्स चे धम्ममनानुजानं,* सु. नि. 886; - **जान** अनु., म. पु., ए. व. - *इदानेव पब्बजिस्सामि, अनुजान, मन्ति,* जा. अट्ठ. 4.438; - **हि** अनु., म. पु., ए. व. - *अनुजानाहि मे ब्रह्मे, नत्थि पञ्चसतानि मे,* सु. नि. 988; - **जञ्ञा / जानेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *न चानुजञ्ञा हनतं परेसं,* सु. नि. 396; *न हारये हरतं नानुजञ्ञा,* सु. नि. 397; *सचे मं उपज्झायो अनुजानेय्य,* उदा. 134; - **जानि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *सत्था साधू'ति अनुजानि,* जा. अट्ठ. 1.304; - **ञ्ञासिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *अनुञ्ञासिं सुखेन च,* जा. अट्ठ. 5.341; - **निस्सामि** भवि., उ. पु., ए. व. - *अनुञ्ञेय्यं स्वाहं भोतो उदेनस्स अनुजानिस्सामि,* म. नि. 2.372; - **नितुं** निमि. कृ. - *अनुजानितुं आगमनाय पण्हे'ति,* जा. अट्ठ. 5.23; - **नित्वा** पू. का. कृ. - *उपोसथादीनि अनुजानित्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.35.

अनुजानेति अनु + √ञा, वर्त., प्र. पु., ए. व., उपरिवत्, - **स्साम** भवि., उ. पु., ब. व. - *आगते भिक्खू अनुजानेस्सामा'ति,* चूळव. 470; - **नेत्वा** पू. का. कृ. - *तदाहं अनुजानेत्वा, पब्बजिं अनगारियं,* अप. 2.239.

अनुजिण्ण त्रि., अनु + √जर का भू. क. कृ., कर्तृ. वा. अथवा कर्म. वा. दोनों ही में प्रयुक्त, [अनुजीर्ण], जीर्ण हो चुका, वृद्धावस्था को प्राप्त - *अनुजिण्णो वसलिं देवदत्तो, अनुजिण्णा वसली देवदत्तेन,* मो. व्या. 5.59; तुल. पाणिनि 3.4.72.

अनुजीवसि अनु + √जीव का वर्त., म. पु., ए. व., किसी दूसरे के सहारे जीवित रहते हो, परनिर्भर हो - *अलीनचित्तस्स तुवं, विक्कन्तमनुजीवसि,* जा. अट्ठ. 4.242; *अनुजीवसीति उपजीवसि, तस्सानुभावेन तया जीवितं लद्धन्ति अत्थो,* तदे..

अनुजीवी त्रि., [अनुजीविन्], परनिर्भर, पराधीन, भृत्य, सेवक, अनुयोगी, अनुचर - *अनुजीवी तु सेवको,* अभि. प. 342; *दासी दासा च भरिया, ये चञ्ञे अनुजीविनो,* अप. 1.347; जा. अट्ठ. 3.224; - **जन** पु., सेवक, पराधीन-जन, परनिर्भर - *यो आचरेय्य अनुजीवीजनस्स अत्थं, ...,* दा. वं. 5.43.

अनुजु / अनुज्ज त्रि., उजु का निषे., तत्पु. स. [अनृजु], शठ, टेढ़ा, वक्र, कुटिल, दुष्ट प्रकृति वाला, मायावी - *निकतो च सठानुजु,* अभि. प. 737; *जिम्हं च रिम्हं अनुजु,* सद्द. 2.323; - **क** त्रि., [अनृजुक], उपरिवत् - *याव अनुजुको चायं चित्तो गहपति, याव सठो चायं चित्तो गहपति ...,* स. नि. 2(2).289; द्रष्ट. अनुज्जुक (आगे); - **ता** स्त्री., भाव. [अनृजुता], कुटिलता, शठता, मायाविता, वक्रता, - **ताकार** पु., कर्म. स., उपरिवत् - *अनज्जवोति अनुजुताकारो,* विभ. अट्ठ. 466; - **भाव** पु., उपरिवत् - *अनज्जवभावो अनज्जवता,* विभ. अट्ठ. 466.

अनुजेट्ठं अव्ययी. स. [अनुज्येष्ठं], वरीयता के क्रम में, ज्येष्ठता के अनुसार - *जेट्ठानुक्कमेनाति अनुजेट्ठं,* मो. व्या. 3.2, क. व्या. 321.

अनुजोतन नपुं., [अनुद्योतन], पीछे किया गया प्रकाशन, सकृदागामी मार्ग में विपश्यना-प्रज्ञा द्वारा बोध्यङ्गों की अनुपश्यना अथवा ज्ञानदर्शन - *कतमो चतुमग्गपञ्ञावसेन*

उज्जोतनानुज्जोतनपटिज्जोतन - सज्जोतनट्ठो, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.87; *एकत्ते जोतनट्ठो अभिञ्ञेय्यो, एकत्ते उज्जोतनट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 17; *एकत्ते अनुजोतनट्ठं बुज्झन्तीति-बोज्झङ्गा,* पटि॰ म॰ 298.

अनुज्जङ्गी / अनुज्झङ्गी स्त्री॰, ब॰ स॰ [नताङ्गी], गोलाकार अङ्गों वाली स्त्री, वर्तुलाकार अङ्गों वाली सुन्दरी, लचकदार अङ्गों वाली सुन्दरी, अनिन्दित अङ्गों वाली, सर्वाङ्गशोभना सुन्दरी - *सा कथज्ज अनुज्झङ्गी, पथं गच्छति पत्तिका,* जा॰ अट्ठ॰ 7.253; *अनुज्झङ्गीति अगरहितअङ्गी,* जा॰ अट्ठ॰ 7.255.

अनुज्जलयि / अनुज्जलयी अनु + √जल का अनद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पंक्ति में प्रज्ज्वलित किया, कतारों में दीपकों को जलाया - *गन्धतेलेन पूरेत्वा, दीपानुज्जलयी तहिं,* अप॰ 2.249.

अनुज्जा स्त्री॰, विधुर की पत्नी का नाम - *अनुज्जाति एवंनामिका,* जा॰ अट्ठ॰ 7.184.

अनुज्जुक त्रि॰, उज्जुक का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनृजुक], कुटिल, वक्र, टेढ़ा प्रदुष्ट, प्रदूषित - *या तिंसति सारमया अनुज्जुका,* जा॰ अट्ठ॰ 3.280.

अनुज्जुगामी त्रि॰, [अनृजुगामिन्], टेढ़ा-मेढ़ा चलनेवाला, वक्रगति से चलने वाला (सर्प) - *अनुज्जुगामी उरगा दुजिव्ह, दाठावुधो घोरविसोसि सप्प,* जा॰ अट्ठ॰ 4.294.

अनुज्जुभूत त्रि॰, [अनृजुभूत], वह, जो सीधा अथवा सरल न हो, वह, जो प्रदुष्ट प्रकृति का हो चुका है - *अनुज्जुभूतेन हरं महन्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.283.

अनुज्झानबहुल त्रि॰, अनु + उज्झान + बहुल [अनुच्छायनबहुल], अकष्टपूर्ण, परछिद्रान्वेषण न करने वाला - *सद्धो होति हिरिमा धितिमा ... अनुज्झानबहुलो मेत्ताविहारी,* मि॰ प॰ 319.

अनुञ्ञा स्त्री॰, [अनुज्ञा], आज्ञा, आदेश, अनुमति, सम्मति, सहमति, अनुमोदन - *सम्मुत्यानुञ्ञा वोहारेस्वथ,* अभि॰ प॰ 1133; मो॰ व्या॰ 6.9; *रञ्ञानुञ्ञाय चारिकं,* म॰ वं॰ 9.8.

अनुञ्ञात त्रि॰, [अनुज्ञात], अनुमति को प्राप्त, अनुमोदित राजा द्वारा आदिष्ट, प्रज्ञप्त, विहित, स्वीकृत - *बिम्बिसारेन अनुञ्ञातं होति,* महाव॰ 94; *यो वो मया गिलानपच्चयभेसज्ज परिक्खारो अनुञ्ञातो,* दी॰ नि॰ 3.96; *अनुञ्ञातोसि पन त्वं, रट्ठपाल, मातापितूहि ...,* म॰ नि॰ 2.256; *अनुञ्ञातो अहं मत्या,* जा॰ अट्ठ॰ 6.18; *भगवता तिचीवरानि अनुञ्ञातानि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.41; **- त्त** नपुं॰, भाव॰ [अनुज्ञातत्व], स्वीकृत या अनुमोदित कर दिये जाने की स्थिति, अनुमोदित अवस्था - *भगवता हि अनुञ्ञातत्तायेव भिक्खूहि ... पणीतचीवरं लद्धं ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).97; **- पटिञ्ञात** त्रि॰, [अनुज्ञातप्रतिज्ञात], अनुमोदित एवं स्वीकृत - *तेन खो पन समयेन ... अम्बट्ठो नाम माणवो ... अनुञ्ञातपटिञ्ञातो सके आचरियके तेविज्जके पावचने,* दी॰ नि॰ 1.76-77; *अनुञ्ञातपटिञ्ञातोति अनुञ्ञातो चेव पटिञ्ञातो च, आचरियेनस्स यं अहं जानामि, तं त्वं जानासी'तिआदिना अनुञ्ञातो, आम आचरिया'ति अत्तना तस्स पटिवचनदानपटिञ्ञाय पटिञ्ञातोति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.201.

अनुञ्ञेय्य त्रि॰, [अनुज्ञेय], अनुमतियोग्य, अनुमोदित होने योग्य, सम्मतियोग्य - *तथागतस्स ... धम्मं देसेन्तस्स सन्तंयेव परियायं अनुञ्ञेय्यं,* दी॰ नि॰ 3.34; (*अनुञ्ञेय्यन्ति अनुजानितब्बं अनुमोदितब्बं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.20); *अनुञ्ञेय्यञ्चेवाहं, भन्ते, भगवतो अनुजानिस्सामि,* अ॰ नि॰ 1(2).227.

अनुटीका स्त्री॰, [अनुटीका], टीका या भाष्य की व्याख्या - *लीनत्थवण्णना नाम अनुटीका,* ग॰ वं॰ 60; स॰ उ॰ प॰ में द्रष्ट॰, अभिधम्म॰ के अन्त॰.

अनुट्ठहति अनु + √ठा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुतिष्ठति], निष्पादित करता है, काम को ठीक से पूरा करता है, उद्योगशील रहता है, देख-रेख या सेवा करता है - *अनुट्ठहति कालेन, कम्मफलं तस्सिज्झति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.117; *तस्मिं तस्मिं काले तं तं किच्चं करोति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.118.

अनुट्ठाता पु॰, उत्तिट्ठति के कर्तृ॰ कृ॰ का निषे॰ [अनुत्थाता], आलसी, अध्यवसाय अथवा पराक्रम से रहित, शक्तिहीन, वीर्य से रहित - *अनुट्ठाता च यो नरो,* सु॰ नि॰ 96; *अनुट्ठाताति वीरियतेजविरहितो उट्ठानसीलो न होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.134; *यत्थालसो अनुट्ठाता, अच्चन्तं सुखमेधति,* स॰ नि॰ 1(1).251.

अनुट्ठान[1] नपुं॰, उट्ठान का निषे॰ [अनुत्थान], आलस्य, प्रमाद, वीर्य या पराक्रम का अभाव - *आलस्यञ्च पमादो च, अनुट्ठानं असंयमो,* स॰ नि॰ 1(1).50; *अनुट्ठानन्ति कम्मसमये कम्मकरणवीरियाभावो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; **- मल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुत्थानमल], आलस्य अथवा शिथिल पराक्रम के मल या दोष वाला - *असज्झायमला मन्ता, अनुट्ठानमला घरा,* अ॰ नि॰ 3(1).37; ध॰ प॰ 241; *उट्ठानवीरियाभावो घरानं मलं नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.215; **- सेय्या** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनुत्थानशय्या], मरणशय्या, पूर्ण रूप से शिथिलता को ला देने वाली मृत्यु की अवस्था - *तत्थ गन्त्वा*

यमकसालानमन्तरे उत्तरसीसके मञ्चके अनुट्ठानसेय्याय निपज्जि, जा॰ अट्ठ॰ 1.374; *तं दिवसमेव पोलजनकस्स सरीरे रोगो उप्पज्जि, अनुट्ठानसेय्यं सयि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.41.

अनुट्ठान² नपुं॰, [अनुष्ठान], काम का निष्पादन, कार्यपद्धति, शील, समाधि एवं प्रज्ञा की शिक्षाओं की वास्तविक व्यवहार में परिणति – *महतिया निब्बानत्थाय अधिसीलादिसिक्खाय अनुट्ठानन्ति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.178; स॰ उ॰ प॰ के रूप में कम्मन्ता॰, कुसलधम्मा॰, परिचरिया॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुट्ठित¹ त्रि॰, उट्ठित का निषे॰ [अनुत्थित], **1. शा॰ अ॰** ऊपर की ओर नहीं उठा हुआ, स्पष्ट रूप से प्रकट न होने वाला, **2. ला॰ अ॰** अप्रकट, अजात, अनुत्पन्न, अभूत – *ये धम्मा अजाता अभूता ... असमुप्पन्ना अनुट्ठिता,* ध॰ स॰ 1042; *यं रूपं अजातं अभूतं ... असमुप्पन्नं अनुट्ठितं* विभ॰ 2.

अनुट्ठित² त्रि॰, अनु + √ठा का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुष्ठित], **क.** ठीक से या उचित रूप से निष्पादित, अच्छी तरह से व्यवहार में उतारा हुआ, सुसमारब्ध, भलीभांति आचरण किया गया – *चत्तारो इद्धिपादा भाविता ... अनुट्ठिता परिचिता,* दी॰ नि॰ 2.79; मि॰ प॰ 142; *अनुट्ठितातिअधिट्ठिता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.129; उदा॰ अट्ठ॰ 264; *अनुट्ठितातिअविजहिता निच्चानुबद्धा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.160; **ख. कर्तृ॰ वा॰** देख-रेख या पालन करने वाला – *अहं पतिञ्च पुत्ते च ... अनुट्ठिता दिवारत्तिं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.338; अनुट्ठितातिपारिचरियानुट्ठानेन अनुट्ठिता अप्पमत्ता हुत्वा पटिजग्गामि, जा॰ अट्ठ॰ 7.339.

अनुट्ठुभा स्त्री॰, [अनुष्टुभ्], समानमात्रायुक्त पादों वाले अथवा समवृत्त छन्दों के अनेक प्रभेदों में से एक प्रमुख छन्द का नाम, जिसके प्रत्येक पाद में आठ-आठ अक्षर रहते हैं तथा जिसके चित्तपदा, विज्जुम्माला, मानवका, समानिका एवं पमाणिका नामक पांच उपभेद छन्दशास्त्र में बतलाए गये हैं – *छन्दो वसे अधिप्पाये वेदेच्छानुट्ठुभादिसु,* अभि॰ प॰ 945; द्रष्ट॰ वुत्तो॰ 47-51(ना॰).

अनुतपति / अनुतप्पति अनु + √तप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, कर्तृ॰ वा॰ एवं कर्म॰ वा॰ दोनों ही के आशय को परस्पर में व्यामिश्रित कर प्रयुक्त [अनुतपति / अनुतप्यते], **क.** बाद में उत्पीड़ित कर देता है, उद्वेलित करता है, अनुताप उत्पन्न कराता है – *किं कम्मजातं अनुतप्पते त्वं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.23; *तं पच्छा अनुतप्पती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.157; *तं पच्छा अनुतप्पतीति ... तं कम्मं पच्छा अनुतापं आवहति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.157-58; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *रत्तिन्दिवा नानुतपन्तिमामं,* स॰ नि॰ 1(1)132; – **पेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यथा तं सुचिण्णं नानुतप्पेय्य पच्छा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.269; **ख.** बाद में शोक या अनुताप करता है, पश्चात्ताप करता है, पछताता है, पीछे दुख को प्राप्त होता है – *न तं कम्मं कतं साधु, यं कत्वा अनुतप्पति,* ध॰ प॰ 67; *कम्मं कत्वा ... अनुतप्पति अनुसोचति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.272; *अमित्तवसमन्वेति, पच्छा च अनुतप्पतीति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.234; – **प्पामि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भयानुतप्पामि महा च मे भया,* जा॰ अट्ठ॰ 7.140; – **प्पथ** वर्त॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *यमेकरत्तं अनुतप्पथेतं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.398; – **प्पाम** वर्त॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *दत्वापि वे नानुतप्पाम पच्छा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.47; – **तपे / तप्पे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यो च दत्वा नानुतप्पे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.300; – **पेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *ददतो मे न खीयेथ, दत्वा नानुतपेय्यं,* पे॰ व॰ 299; *अप्पसादकं दिस्वा तेनहं पच्छा नानुतपेय्यं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 113; – **पिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *वाणिजोव अतीतत्थो, चिरत्तं अनुतपिस्सति,* अ॰ नि॰ 3(1).62; – **पेस्ससि** भवि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एवं सन्ते त्वं दीघमद्धानं सोचन्तो परिदेवन्तो अनुतपेस्ससि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.120; – **प्पितब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ – *दानं नाम दत्वा नेव अनुतप्पितब्बन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.301; – **तप्प** त्रि॰, सं॰ कृ॰ – *सावकानं कालङ्कतो अनुतप्पो होति,* दी॰ नि॰ 3.90; *अनुतप्पो होतीति अनुतापकरो होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.84; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.93; *कालकिरिया बहुनो जनस्स अनुतप्पा होति,* अ॰ नि॰ 1(1)29.

अनुताप पु॰, प्रायः पच्छा के साथ प्रयुक्त [अनुताप], पछतावा, पश्चात्ताप, बाद में मन में उत्पन्न जलन या छटपटाहट – *पच्छातापो अनुतापो च विप्पटिसारो पकासितो,* अभि॰ प॰ 169; *एवं तं कम्मं पच्छा अनुतापं आवहतीति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.158; *अनुतापोति विप्पटिसारो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 149; – **कर** त्रि॰, पश्चात्ताप को उत्पन्न करने वाला, दुखदायक, शोचनीय – *अनुतप्पा होतीति अनुतापकरा होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.93; *तस्स पतत्ता अनुतापकरो न होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.84.

अनुतापी त्रि॰, [अनुतापिन्], पछतावा करने वाला, *केवल पच्छा के स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयोग में प्राप्त* – *भुञ्जाहि कामरतियो, माहु पच्छानुतापिनी,* थेरीगा॰ 57; 190; *हीने चित्तं पणिधाय, साम्हि पच्छानुतापिनी,* वि॰ व॰ 242.

अनुताळयि अनु + √ताळ का अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, बार-बार ताड़ना दी या पीटा – *बाहाय मं गहेत्वान, लट्ठिया अनुताळयि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.233; *यं मं बाहा गहेत्वान, तिक्खत्तुं अनुताळयीति,* तदे॰.

अनुतिट्ठति / अनुट्ठहति अनु + √ठा, वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुतिष्ठति], कार्य को ठीक से पूरा करता है, **ला. अ.** देखभाल या सेवा करता है, सहयोग करता है - *अनुट्ठहति कालेन, कम्मफलं तस्सिज्झति,* जा. अट्ठ. 5.117; *अनुट्ठहतीति तस्मिं तस्मिं काले तं तं किच्चं करोति,* जा. अट्ठ. 5.118; - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *उट्ठाहतो अप्पमज्जतो, अनुतिट्ठन्ति देवता,* जा. अट्ठ. 5.107; - **ट्ठाहि** अनु., म. पु., ए. व. - *सक्कच्चं अनुतिट्ठाहि,* पे. व. अट्ठ. 67; पाठा. अनुपतिट्ठाहि; - **ट्ठथ** अनु., म. पु., ब. व. - *तथा तमनुतिट्ठथ,* अप. 2.201; - **ट्ठन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *थेरेन वुत्तविधिं पन अनुतिट्ठन्तो, ...,* उदा. अट्ठ. 252.

अनुतिट्ठन नपुं., क्रि. ना. [अनुष्ठान], कार्यान्वयन, निष्पादन - *एतेसं अनुतिट्ठनं उपट्ठानं,* उदा. अट्ठ. 286.

अनुतिण्ण अनु + √तर का भू. क. कृ., *केवल स. उ. प. में ही प्रयुक्त* [अनुतीर्ण], पार कर चुका, पार गया हुआ, मुक्त - *सोकावतिण्णो नु वनम्हि झायसि,* स. नि. 1(1).144; पाठा. सोकानुतिण्णो, तुल. ओतिण्ण.

अनुतीरचारी पु., व्य. सं., एक ऊदविलाव का नाम - *तस्मिं खणे गम्भीरचारी च अनुतीरचारी ...,* जा. अट्ठ. 3.293; *अनुतीरचारी भद्दन्ते, सहायमनुधाव मं,* तदे.; *अतीतस्मिं अनुतीरचारी च गम्भीरचारी ...,* ध. प. अट्ठ. 2.77.

अनुतीरे अ., क्रि. वि. [अनुतीरं], नदी आदि के तट के पास में, तीर के समीप में - *अनुतीरे महिया समानवासो,* सु. नि. 18; *अनुतीरे महियेकरत्तिवासो,* सु. नि. 19.

अनुतुज त्रि., उतुज का निषे., तत्पु. स. [अनृतुज], ऋतुओं अथवा भौतिक परिवर्तनों से उत्पन्न न होने वाला, मौसम के परिवर्तन से अप्रभावित - *यं लोके अकम्मजं अहेतुजं अनुतुजं,* मि. प. 250; तुल. उतुज, उतुनिब्बत्त.

अनुतुनी स्त्री., उतुनी का निषे., तत्पु. स. [अनृतुमती], वह स्त्री, जो रजस्वला नहीं है - *सुनखा सुनखिं उतुनिं येव गच्छन्ति, नो अनुतुनिं,* अ. नि. 2(1).207; *न पायमानं गच्छति, न अनुतुनिं गच्छति,* अ. नि. 210; *उतुनिम्पि गच्छति अनुतुनिम्पि गच्छति,* अ. नि. 212.

अनुत्त त्रि., √वच के भू. क. कृ., उत्त का निषे. [अनुक्त], वह, जिसे अभी तक कहा नहीं गया हो, अकथित, अनभिव्यक्त; - **काल** त्रि., [अनुक्तकाल], आख्यात अथवा क्रियापद का वह रूप, जिसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् कालों में से किसी का भी कथन अभिप्रेत न हो - *पच्चुप्पन्नेनुत्तकाले अतीतेनागतेति,* सद्द. 1.50; - **कालिक** त्रि., [अनुक्तकालिक], कालविशेष के तात्पर्य को न कहने वाला शब्द - *अणतिकालिका ति सङ्ख्यं गतं अनुत्तकालिका'ति वुत्तं,* सद्द. 1.57.

अनुत्तण्डुल त्रि., उत्तण्डुल का निषे., ब. स., कच्चे या बिना पके हुए चावलों से रहित (ठीक से पकाया हुआ भात) - *तेहि तण्डुलेहि अनुत्तण्डुलं अकिलिन्नं,* पारा. अट्ठ. 2.256.

अनुत्तर त्रि., उत्तर का निषे., ब. स. [अनुत्तर], वह, जिससे अधिक बढ़-चढ़कर दूसरा न हो, सर्वोत्तम, बेजोड़, सर्वश्रेष्ठ - *उत्तमो पवरो जेट्ठो पमुखानुत्तरो वरो,* अभि. प. 694; *उत्तरविपरीते च सेट्ठे चानुत्तरं तिसु,* अभि. प. 952; ... *तदनुत्तरं-ब्रह्मचरियपरियोसानं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा ...,* सु. नि. (पृ.) 98; दी. नि. 1.159; म. नि. 1.50; *सब्बं तं सरणं यन्ति, त्वं नो सत्था अनुत्तरो,* सु. नि. 181; *सम्बुद्धो, सत्थवाहो अनुत्तरो,* थेरगा. अट्ठ. 1.67; *उपेमि सरणं बुद्धं, धम्मञ्चापि अनुत्तरं,* ध. प. अट्ठ. 1.22; *अत्तनो उत्तरितरस्स कस्सचि अभावतो अनुत्तरं,* थेरगा. अट्ठ. 1.97; *अनुत्तरन्ति सेट्ठं, असदिसन्ति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).45; - **धम्मराजता** स्त्री., अनुत्तरधम्मराज का भाव., धर्म के सर्वोत्तम अथवा अनुपम स्वामी होने की अवस्था - *सम्मासम्बुद्धो पन अत्तनो अनुत्तरधम्मराजताय एकस्मिंयेवस्स अन्तरभत्ते सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं अदासि,* जा. अट्ठ. 1.126; ध. प. अट्ठ. 1.141; *अत्तनो बुद्धसुबुद्धताय अनुत्तरधम्मराजताय एत्तकं सीलं तीसुयेव द्वारेसु पक्खिपित्वा मं गण्हापेसि,* जा. अट्ठ. 1.267; - **भाव** पु., सर्वोत्तम अवस्था - *तत्थ अनुत्तरियन्ति अनुत्तरभावो,* दी. नि. अट्ठ. 3.59.

अनुत्तान त्रि., उत्तान का निषे. [अनुत्तान], **शा. अ.** वह, जो खुला हुआ न हो, **ला. अ.** अस्पष्ट, अप्रकाशित, अव्याख्यात, गूढ़, दुर्बोध - *इतो परं पन एत्तकम्पि अवत्वा यं यं अनुत्तानं, तं तदेव वण्णयिस्साम,* जा. अट्ठ. 1.158; *तासं तासं गाथानं अनुत्तानानि पदानि वण्णेतब्बानि,* जा. अट्ठ. 7. 136; - **पद** नपुं., अस्पष्ट अथवा दुर्बोध पद - *अनुत्तानपदमेव पन वण्णयिस्साम,* जा. अट्ठ. 3.438; - **पदत्थ** पु., दुर्बोध शब्दों का अर्थ - *अयं ताव अनुत्तानपदत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.185; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).138; - **पदवण्णना** स्त्री., दुर्बोध पदों के अर्थ का व्याख्यान - *अयं पनेत्थ अनुत्तानपदवण्णना सेलन्ति मणिवलयं,* जा. अट्ठ. 3.336; - **सभावता** स्त्री., भाव., दुर्बोध, दुरूह अथवा अस्पष्ट होने की अवस्था या प्रकृति - *अनुत्तानसभावताय गम्भीरं,* थेरगा. अट्ठ. 1.39.

अनुत्तानीकत त्रि., उत्तानीकरोति के भू. क. कृ. का निषे. [अनुत्तानीकृत], दुर्बोध अथवा अस्पष्ट बना दिया गया सुस्पष्ट अथवा सरल (विषय, बात) - *अनुत्तानीकतञ्च उत्तानीकरोन्ति*, अ. नि. 1(1).140; 3(1).3; *अनुत्तानीकतञ्च न उत्तानीकरोन्ति*, म. नि. 1.285.

अनुत्तानीकम्म नपुं., असुस्पष्टीकरण, अव्याख्यान, निर्वचन का अभाव, खुलासा करके न कहना - *पटिच्छादना अनुत्तानीकम्मं अनाविकम्मं वोच्छादना पापकिरिया – अयं वुच्चति माया*, पु. प. 126; महानि. 56; *न उत्तानिं कत्वा दस्सेतीति अनुत्तानीकम्मं*, महानि. अट्ठ. 162.

अनुत्तासी त्रि., उत्तासी का निषे. [अनुत्रासिन्], निर्भीक, निडर, भयरहित - *असम्भीतं अनुत्तासिं, मिगराजंव केसरिं*, अप. 1.356; थेरगा. अट्ठ. 1.244.

अनुत्तिण्ण त्रि., उ + √तर के भू. क. कृ., 'उत्तिण्ण' का निषे. [अनुत्तीर्ण], पार न किया हुआ, जल से ऊपर उठकर न आया हुआ - *अनुत्तिण्णो अनुत्तिण्णं दूसेसि*, पाचि. 305; *दिस्वा पदमनुत्तिण्णं*, जा. अट्ठ. 1.172.

अनुत्थुणाति / अनुत्थुनाति[1] अनु + √थु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुस्तनति / अनुस्तनयति], पीछे या बाद में शब्द करता है, कराहता है, विलाप करता है, हुआं-हुआं करता है, दहाड़ता है - *परिदेवति सोचति हीनवादो, उपच्चगा मन्ति अनुत्थुनाति*, सु. नि. 833; *अनुत्थुनातीति सो मं वादेन वादं अतिक्कन्तो'ति आदिना नयेन सुट्ठुतरं विप्पलपति*, सु. नि. अट्ठ. 2.233; - **नामि** उ. पु., ए. व. - *नेवाहमत्तानमनुत्थुनामि, न पुत्तदारं न धनं न रट्ठं*, जा. अट्ठ. 5.474; - **णन्ति** प्र. पु., ब. व. - *परिडय्हमाना झायन्ति अनुत्थुनन्तीति अत्थो*, पे. व. अट्ठ. 51; - **नं** वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - *सेन्ति चापातिखीणाव पुराणानि अनुत्थुनं*, ध. प. 156; - **नन्ता** वर्त. कृ., प्र. वि., ब. व. - *खादितपिवितनच्चगीतवादितादीनि अनुत्थुनन्ता सोचन्ता अनुसोचन्ता सेन्तीति*, ध. प. अट्ठ. 2.73; - **निंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *सन्निपतित्वा अनुत्थुनिंसु*, दी. नि. 3.63; *अनुत्थुनिंसूति अनुभासिंसु*, दी. नि. अट्ठ. 3.47.

अनुत्थुणाति / अनुत्थुनाति / [2]अनुत्थवति अनु + √थु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुस्तौति], प्रशंसा अथवा स्तुति करता है, किसी के बारे में बार-बार कहता है - **नन्ति** ब. स. - *उद्धंसरा सुद्धिमनुत्थुनन्ति, अवीततण्हासे भवाभवेसु*, सु. नि. 907; *सुद्धिमनुत्थुनन्तीति वदन्ति कथेन्तीति*, सु. नि. अट्ठ. 2.251; - **णन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. पु., ए. व. - *अनुत्थुणन्तो आसीनो, भत्तु याचित्थ जीवितं*, जा. अट्ठ. 5.341; - **त्थवि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *यो मं पुप्फेन पूजेसि, आपञ्चापि अनुत्थवि*, अप. 1.19; थेरगा. अट्ठ. 2.325; पाठा. अनुत्थनि.

अनुत्थुना स्त्री., अनु + √थु से व्यु. [अनुस्तनन, नपुं.], वाणी का विप्रलाप, बकवास, विलाप, दहाड़ - *अनुत्थुना वुच्चति वाचा पलापो विप्पलापो लालप्पो*, महानि. 122.

अनुत्रस्त त्रि., उत्रस्त का निषे. [अनुत्रस्त], भय से रहित, निडर, निर्भीक - *अभीतो अनुब्बिग्गो अनुस्सङ्की अनुत्रस्तो*, उदा. 90; पाठा. अनुत्रासी; *सचे अत्थि अनुत्रस्तं, तं मे अक्खाहि पुच्छितो'ति*, स. नि. 1(1).65; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).246.

अनुत्रासी / अनुत्रास त्रि., उत्रासी का निषे. [अनुत्रासिन्], निर्भीक, निडर, भयमुक्त - *सोज्ज भद्दो अनुत्रासी, पहीनभयभेरवो*, थेरगा. 864; *अभीरु अच्छम्भी अनुत्रासी अपलायी*, स. नि. 1(1)118; चूळनि. 91; म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.68; *असङ्कभूतो अभीरु अच्छम्भी अनुत्रासी विगतलोमहंसो परिसं उपसङ्कमति*, मि. प. 307.

अनुथेर पु., महाथेर या सङ्घथेर का विप. [अनुस्थविर], बौद्ध-भिक्षुसङ्घ में निर्धारित वरीयता के क्रम में कनिष्ठ भिक्षु, अमहत्त्वपूर्ण स्थविर - *पिण्डपातं अभुञ्जित्वा अनुथेरेन आभतं भुञ्जिस्सामा'ति*, ध. प. अट्ठ. 1.365; *अनुथेरो चतुत्थदिवसे अनागामी अहोसि*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).26.

अनुथेरं अ., क्रि. वि., अव्ययी. स., वरीयता के क्रम में - *अनुपुब्बो थेरानं अनुथेरं*, बाला. 131.

अनुदक / अनोदक / अनूदक त्रि., उदक का निषे., ब. स. [अनुदक / अनूदक], जल से रहित, सूखा, बिना पानी वाला - *किं मलं ब्रह्मचरियस्स, किं सिनानमनोदक'न्ति*, स. नि. 1(1).44; 1(1).50; *वीतसद्धं न सेवेय्य, उपदानंवनोदकं*, जा. अट्ठ. 5.221; *अनुखणेति सचेपि अनुदकं उदपानं पत्तो पुरिसो ...*, जा. अट्ठ. 5.222; *सा नून चक्कवाकीव पल्ललस्मिं अनोदके*, जा. अट्ठ. 7.33; - **भूत** त्रि., उदकभूत का निषे. [अनुदकभूत], वह, जो वास्तव में जल नहीं है - *यथा अनुदकभूतायपि मरीचिया उदकानुपस्सिनो होन्ति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).253.

अनुदय्हन्ति / अनुडय्हन्ति अनु + √दह / डह का कर्म वा. में वर्त., प्र. पु., ब. व. [अनुदह्यन्ते], बाद में मानसिक रूप से पीडित किये जाते हैं या जलाये जाते हैं - *किं ते इमे कासावं अनुदय्हन्ति*, स. नि. 2(2).190; पाठा. अनुदहन्ति; - **य्हमाना** स्त्री., वर्त. कृ., बाद में मानसिक पीड़ा प्राप्त कर रही - *किलेसेन अनुडय्हमाना खुज्जेन सद्धिं पापं*

करोति, जा॰ अट्ठ॰ 5.422; *उप्पन्नकामरतिया अनुडय्हमाना विय हुत्वा पि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.250.

अनुदसाहं अ॰, क्रि॰ वि॰, अव्ययी॰ स॰ [अनुदशाहं], प्रत्येक दसवें दिन पर – *अन्वड्ढमासं अनुदसाहं अनुपञ्चाहं देवे वस्सन्ते ति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 122; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.362.

अनुदस्सति अनु + √दा का भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुदास्यति], **क.** बदले में या परिणामस्वरूप देगा या लौटा देगा, प्रस्तुत करेगा – *सम्मा धारं पवेच्छन्ते सुबहूनि फलानि अनुदस्सति,* मि॰ प॰ 342; **ख.** प्रदान करेगा, अर्पित करेगा – *बोधिसत्तानं इमे दस गुणे अनुदस्सती'ति,* मि॰ प॰ 257.

अनुदस्सित त्रि॰, अनु + √दिस के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुदर्शित], पूर्ण रूप से प्रदर्शित या अभिव्यक्त – *तथागतस्स सदेवके लोके सेट्ठभावो अनुदस्सितो,* मि॰ प॰ 125.

अनुदस्सेति अनु + √दिस का प्रेर॰ वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुदर्शयति], पुनः पुनः सिखलाता या समझाता है – *सञ्ञापेति निज्झापेति पेक्खेति अनुपेक्खेति दस्सेति अनुदस्सेति,* चूळव॰ 174.

अनुदहति/अनुडहति अनु + √दह/√डह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुदहति], धीरे-धीरे जलाता है, उत्पीड़ित करता है, विनष्ट करता है, शोक में डुबो देता है – *रागो ... सत्ते अनुदहति झापेति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.160; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *किं ते इमे कासावा अनुदहन्ति,* स॰ नि॰ 3(1)63; 3(2)371; *तं तं अनुदहन्ति महाविनासं पापेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.449; – **हितुं** निमि॰ कृ॰ – *तं विसं अनुडहितुं न सक्कोति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.16.

अनुदहन/अनुडहन नपुं॰, अनु + √दह/√डह से व्यु॰ [अनुदहन], अग्निदाह, आग की ज्वाला, जलन, क्षय, विनाश, अग्निकाण्ड – *उक्कोपमा तिणुक्कूपमा अनुदहनट्ठेन,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 311; *तिणुक्कूपमा कामा अनुदहनट्ठेना'ति,* महानि॰ 5; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, जला देने की क्षमता या प्रकृति – *अनुदहनताय रागस्स,* सा॰ सं॰ 130(रो॰); – **बलवता** स्त्री॰, जला डालने की शक्ति – *अनुदहनबलवताय अब्बोहारिकानि होन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.264.

अनुदिट्ठि स्त्री॰, [अनुदृष्टि], गौण मिथ्या-धारणा, संसार की वस्तुओं (धर्मों) के विषय में परिकल्पित अप्रमुख मिथ्या-धारणा – *अनुदिट्ठीनं अप्पहानं सङ्गप्पपरतेजितं,* थेरगा॰ 754; *अनुदिट्ठीनं अप्पहानन्ति अनुदिट्ठिभूतानं सेसदिट्ठीनं अप्पहानकारणं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.242; स॰ उ॰ प॰ में अत्तानु॰, अपरन्तानु॰, परित्तत्तानु॰, पुब्बन्तानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुदिसं अ॰, क्रि॰ वि॰, अव्ययी॰ स॰ [अनुदिशं], सभी दिशाओं की ओर, प्रत्येक दिशा की तरफ – *नन्दो अनुदिसं अनुविलोकेति,* अ॰ नि॰ 3(1).16; *गच्छति अनुदिसं,* दी॰ नि॰ 1.203; अ॰ नि॰ 2(2).80; स॰ नि॰ 1(1).143; स॰ नि॰ 2(1).113.

अनुदिसा स्त्री॰, *संभवतः अनुदिसं (अ॰) के अनुकरण पर भिन्न तात्पर्य में गढ़ा हुआ शब्द,* दिशा-मण्डल का अन्तर्मध्यवर्ती क्षेत्र ईशान, आग्नेय आदि, दिशाओं के चार अन्तर्मध्यवर्ती क्षेत्रों के समूह का सङ्केतक शब्द – *दिसा'थ दक्खिणापाची, विदिसा'नुदिसा भवे,* अभि॰ प॰ 29; *अनुदिसा आलोकेतब्बा होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).272; *पुरत्थिमायपि अनुदिसाय सद्दानं सद्दनिमित्तं मनसि करोति,* पटि॰ म॰ 103; *तस्स चतस्सो दिसा चतस्सो अनुदिसा च गच्छन्तस्सापि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.184; – **पेक्खण** नपुं॰, अनुदिशाओं की ओर दृष्टिपात, विलोकन, इधर-उधर ताकना – *विलोकितं नाम अनुदिसापेक्खणं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.157; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).270.

अनुदीपयित्वा अनु + √दीप के प्रेर॰ का पू॰ का॰ कृ॰ [अनुदीप्य], ज्ञात कराके, प्रकाशित कराके, सुस्पष्ट कराके – *पुब्बकानं सयम्भूनं पवेणिमनुसिट्ठिया धम्माधम्ममनुदीपयित्वा धम्मेन,* मि॰ प॰ 214.

अनुदूत पु॰, [अनुदूत], **शा॰अ॰** साथ चल रहा दूत, **विशेष अर्थ** – भिक्षुसङ्घ द्वारा किसी भिक्षु पर किसी अपराध का विधान किये जाने पर तथा अपराध के निराकरण हेतु उस भिक्षु द्वारा याचना किये जाने पर सङ्घ द्वारा उसके साथ साक्षी के रूप में जाने के लिये दिया गया दूसरा भिक्षु – *सुधम्मस्स भिक्खुनो अनुदूतं देतु,* चूळव॰ 41; *तेन अनुदूतेन भिक्खुना सद्धिं गन्त्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.293; *याचित्वा अनुदूतं सो सह तेन पुरं गतो,* म॰ वं॰ 4.15; *अनुदूतन्ति अत्तदुतियं भिक्खु याचित्वा तं ततो लभित्वा'ति अत्थो,* म॰ वं॰ टी॰ 124 (ना॰).

अनुदेव/अन्वदेव अ॰, [अन्वगेव], **क.** एक ही साथ, साथ साथ ही – *अन्वदेवाति अनुदेव, सहेव एकतो येवाति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.57; *पुब्बङ्गमानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया अन्वदेव अहिरिकं अनोतप्पं ...,* स॰ नि॰ 3(1).2; अ॰ नि॰ 3(2).182; ... *एतं अनुदेव सहेव एकतो'व, न विना तेन उप्पज्जतीति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.153; **ख.** बाद में, तुरन्त पीछे – *मनो अकुसलानं धम्मानं पठमं उप्पज्जति, अन्वदेव अकुसला धम्मा,* अ॰ नि॰ 1(1).13.

अनुद्दयता / अनुदयता स्त्री॰, [अनुद्दयता], कृपालुता, दयाशीलता, हमदर्दी – *खन्तिया, अविहिंसाय, मेतचित्ताय, अनुदयताय – एवं खो, भिक्खवे, परं रक्खन्तो अत्तानं रक्खति,* स॰ नि॰ 3(1).244; *अनुदयतायाति अनुवड्ढिया, सपुब्बभागाय मुदितायाति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.254; *परेसं धम्मो देसेतब्बो, अनुद्दयतं पटिच्च कथं कथेस्सामी'ति,* अ॰ नि॰ 2(1).173; *अनुद्दयतं पटिच्चाति महासम्बाधप्पत्ते सत्ते सम्बाधतो मोचेस्सामी'ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.56.

अनुदयति अनु + √दय का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुदयते], दया या अनुकम्पा करता है, रक्षा करता है, अच्छा लगता है – *अनुदयतीति अनुदया, रक्खतीति अत्थो,* महानि॰ अट्ठ॰ 573; – **दयमानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *करुणायमानोति करुणायमानो अनुदयमानो अनुरक्खमानो अनुग्गण्हमानो अनुकम्पमानोति,* चूळनि॰ 86.

अनुद्दयना / अनुदयना स्त्री॰, अनु + √दय से व्यु॰, मैत्री-भावना, दया, करुणा, अनुकम्पा – *मेत्ताति या सत्तेसु मेत्ति मेत्तायना मेत्तायितत्तं अनुदया अनुदयना अनुदयितत्तं हितेसिता,* महानि॰ 368.

अनुद्दया / अनुदया स्त्री॰, अनु + √दया, *अनुकम्पा के मिथ्या-सादृश्यवश सम्भवतः उप॰ अनु का प्रयोग,* दया, अनुकम्पा, तरश – *दयानुकम्पा कारुञ्ञं करुणा च अनुद्दया,* अभि॰ प॰ 160; *तस्स मोघपुरिसस्स पाणेसु अनुद्दया अनुकम्पा अविहेसा भविस्सति,* पारा॰ 48; *न तेन होति संयुत्तो, यानुकम्पा अनुद्दया'ति,* स॰ नि॰ 1(1).239; – **द्दयं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुद्दयं पटिच्च अनुकम्पं उपादाय परेसं धम्मं देसेसि,* स॰ नि॰ 1(2).178; *अनुदयन्ति रक्खणभावं,* स॰ नि॰ अट्ठ 2.151; – **द्दया** प॰ / तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञत्र अनुद्दया अञ्ञत्र अनुकम्पा,* अ॰ नि॰ 1(1).148; पु॰ प॰ 143; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.263; – **द्दयाय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ सच्चं तदभिञ्ञाय पाणानं येव अनुद्दयाय अनुकम्पाय पटिपन्नो होति,* अ॰ नि॰ 1(2)205; पु॰ प॰ 143; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.263; स॰ उ॰ प॰ के रूप में कारुञ्ञानु॰, कुलानु॰, खन्तिमेत्तानु॰, परानु॰, बलवानु॰, सञ्जातानु॰, सन्तानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुद्दा / अनुदा स्त्री॰, मेत्ता मेत्तायना आदि के मिथ्या-सादृश्य पर गढ़ा हुआ अनु + √दय से व्यु॰, कर्तृ॰ कृ॰, दया, कृपा, अनुकम्पा – *अनुदयतीति अनुद्दा, रक्खतीति अत्थो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 389; *मेत्तायना मेत्तायितत्तं अनुद्दा अनुद्दायना ... हितेसिता अनुकम्पा अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं,* ध॰ स॰ 1062; तुल॰ अनुद्दायना, अनुद्दायित; – **कार** पु॰, दया अथवा करुणा की अवस्था – *अनुद्दाकारो अनुद्दायना ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 389.

अनुद्दायना स्त्री॰, *मेत्तायना के सादृश्य पर अनु + √दय से गढ़ा हुआ ना॰ धा॰,* दया, करुणा – *अनुद्दाकारो अनुद्दायना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 389; तुल॰ अनुदयना, अनुद्दयना.

अनुद्दायित / अनुदयित त्रि॰, अनु + √दया के ना॰ धा॰ अनुदयायति के वर्णव्यत्यय से बने हुए अनुद्दायति का भू॰ क॰ कृ॰, दयालु, अनुकम्पक – *अनुद्दायितस्स भावो अनुद्दायितत्तं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 389; *अनुदयितस्स भावो अनुदयितत्तं,* महानि॰ अट्ठ॰ 374.

अनुद्दिट्ठ[1] त्रि॰, उ + √दिस के भू॰ क॰ कृ॰, उद्दिट्ठ का निषे॰ [अनुद्दिष्ट], किसी विशेष व्यक्ति के लिए अनिर्धारित, वह, जिसका निर्धारण अभी तक नहीं हुआ हो – *सचे अनुद्दिट्ठं तया महामुनि, पुप्फं इमं पारिछत्तस्स ब्रह्मे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.389; *अनुद्दिट्ठन्ति "असुकस्स नाम दस्सामीति न उद्दिट्ठं",* तदे॰.

अनुद्दिट्ठ[2] त्रि॰, अनु + उ + √दिस का भू॰ क॰ कृ॰, दान के रूप में किसी अन्य के लिए अभिप्रेत या सङ्केतित – *समनन्तरानुद्दिट्ठे, विपाको उदपज्जथ,* पे॰ व॰ 64; *समनन्तरानुद्दिट्ठेति अनूति निपातमत्तं, तस्सा दक्खिणाय उद्दिट्ठसमनन्तरमेव,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 43.

अनुद्दिसति / अनुदिसति अनु + उ + √दिस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुदिशति], अपने अभिप्राय के विषय में सङ्केत करता है, पीछे कहता है – *उत्तरो किर माणवो दानं दत्वा एवं अनुद्दिसति इमिनाहं दानेन पायासिं राजञ्ञमेव इमस्मिं लोके समागच्छिं मा परस्मि'न्ति,* दी॰ नि॰ 2.261; *एवं अनुद्दिसतीति एवं उपदिसति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.363.

अनुद्देस पु॰, उद्देस का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनुद्देश], पाठ अथवा संक्षिप्त कथन का अभाव – *परिसाति तिक्खत्तुं थेरेन पातिमोक्खुद्देसस्स याचितत्ता अनुद्देसस्स कारणं कथेन्तो ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 241; द्रष्ट॰ उद्देस.

अनुद्देसिक त्रि॰, अनुद्देस से व्यु॰ [अनुद्देशिक], किसी विशेष अभिप्राय या प्रयोजन से रहित, बिना प्रयोजन वाला, किसी एक को उद्देश्य में न रखकर कहा गया या किया गया – *यो कोचि मरतू'ति एवं अनुद्दिस्सके पहारपच्चया यस्स कस्सचि मरणेन ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 19; पारा॰ अट्ठ॰ 2.40; पाठा॰ अनुद्देसिके.

अनुद्धंसन नपुं॰, अनुचित दोषारोपण, अनुचित अभियोग – *यथा परस्स रोसो होति, एवं अनुद्धंसनवसेन रोसं उप्पादेन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 89; *तं पन अनुद्धंसनं यस्मा अत्तना चोदेन्तोपि परेन चोदापेन्तो पि करोति येव,* पारा॰ अट्ठ॰ 156.

अनुद्धंसेति अनु + √धंस के प्रेर० का वर्त०, प्र० पु०, ए० व० [अनुध्वंसयते], **शा० अ.** धूल से धूसरित कर देता है, मैला कर देता है, **ला. अ. क.** दूषित करता है, नीचे की ओर ले जाता है, दूर फेंक देता है - *यदा ते अनभिरति उप्पज्जति रागो चित्तं अनुद्धंसेति,* पारा० 147; *अनुद्धंसेतीति कामरागो चित्तं धंसेति पधंसेति विक्खिपति चेव मिलापेति च,* पारा० अट्ठ० 2.95; *तस्स मातुगामं दिस्वा दुन्निवत्थं वा दुप्पारुतं वा रागो चित्तं अनुद्धंसेति,* म० नि० 2.134; स० नि० 1(2).209, 246; अ० नि० 1(2).143; 2(1)89; *रागो चित्तं अनुद्धंसेतीति रागो उप्पज्जमानोव समथविपस्सनाचित्तं धंसेति, दूरे खिपति,* अ० नि० अट्ठ० 3.36; - **सेय्य** विधि०, प्र० पु०, ए० व० - *रागो चित्तं अनुद्धंसेय्य,* म० नि० 3.41; *अनुद्धंसेय्याति सोसेय्य मिलापेय्य,* म० नि० अट्ठ० (उप.प.) 3.36; - **सेसि** अद्य०, प्र० पु०, ए० व० - *मा ते वातातपे चारित्तं अनुयुत्तस्स रजोसूकं वणमुखं अनुद्धंसेसि,* म० नि० 3.42; *रागो चित्त अनुद्धंसेसि,* स० नि० 1(1).215; - **सेस्सति** भवि०, प्र० पु०, ए० व० - *तस्स सुभनिमित्तस्स मनसिकारा रागो चित्तं अनुद्धंसेस्सति,* म० नि० 1.32; **ख.** आरोप लगाता है, अभियोग लगाता है - *आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं अमूलिकाय सीलविपत्तिया अनुद्धंसेति,* चूळव० 244; *अनुद्धंसेति यो तस्स, तिस्सो आपत्तियो सियुं,* उत्त० वि० 25; - **न्ति** वर्त०, प्र० पु०, ब० व० - *छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुं अमूलकेन सङ्घादिसेसेन अनुद्धंसेन्ति,* पाचि० 197; *अनुद्धंसेन्तीति ते किर सयं आकिण्णदोसत्ता ... अमूलकेन सङ्घादिसेसेन चोदेन्ति,* पाचि० अट्ठ० 135-36; - **सेय्य** विधि०, प्र० पु०, ए० व० - *अनुद्धंसेय्याति चोदेति वा चोदापेति वा,* पारा० 255.

अनुद्धत त्रि०, उद्धत का निषे० [अनुद्धत], **शा० अ.** वह, जो ऊपर की ओर उठा हुआ नहीं है, **ला० अ.** अहङ्कार-रहित, विनम्र, शान्त - **तो** पु०, प्र० वि०, ए० व० - *अक्कोधनो असन्तासी ... मन्तभाणी अनुद्धतो,* सु० नि० 856; *अनुद्धतोति उद्धच्चविरहितो,* सु० नि० अट्ठ० 2.241; - **तं** नपुं०, प्र० वि०, ए० व० - *उजुं अनुद्धतं अचपलमस्स भासितं,* जा० अट्ठ० 5.193; *अविक्खित्तताय अनुद्धटं, पतिट्ठितताय अचपलं,* जा० अट्ठ० 5.196; - **ता** स्त्री०, प्र० वि०, ए० व० - *निब्बानं नाधिगच्छामि, अकुसीता अनुद्धता,* थेरीगा० 113; *अनुद्धताति अहं सुविसुद्धसीला ... सुसमाहितचित्तताय अनुद्धता च हुत्वा ...,* थेरीगा० अट्ठ० 129; *न उद्धताति अनुद्धता, उद्धच्चरहिता वूपसन्तचित्ता,* थेरीगा० अट्ठ० 244; - **तिन्द्रिय** त्रि०, ब० स० [अनुद्धतेन्द्रिय], शान्त इन्द्रियों वाला - *सन्तानि इन्द्रियानि अस्साति सन्तिन्द्रियो, इद्वारम्मणादीसु रागादिवसेन अनुद्धतिन्द्रियोति वुत्तं होति,* खु० पा० अट्ठ० 196.

अनुद्धटकट्ठ त्रि०, ब० स० [अनुद्धृतकाष्ठ], वह, जिसने लकड़ियों या ईंधन का सञ्चय या भण्डारण नहीं किया है - *अभिन्नकट्ठोसीति सो दानि अज्ज अनुद्धटकट्ठोसि,* जा० अट्ठ 5.192.

अनुद्धरी त्रि०, अनिद्धुरी के स्थान पर कतिपय संस्करणों में प्राप्त अप०, घमण्ड से मुक्त, अहङ्कार रहित - *अनिट्ठुरी अननुगिद्धो अनेजो सब्बधी समो,* सु० नि० 958; पाठा० अनुद्धरी.

अनुधम्म पु०, *अनुलोम, अधिचित्त, अभिधम्म आदि के सादृश्य पर बनाया गया शब्द* [अनुधर्म], **1.** गौण धर्म, सहायक धर्म, औपायिक धर्म, अनुलोम धर्म, लोकोत्तर निर्वाण-धर्म के साक्षात्कार में सहायक या अनुकूल चतुपारिसुद्धिसील एवं धुतङ्गों जैसे धर्म - *धम्मेसु निच्चं अनुधम्मचारी,* सु० नि० 69; *अथ वा धम्माति नव लोकुत्तरधम्मा, तेसं धम्मानं अनुलोमो धम्मोति अनुधम्मो, विपस्सनायेतं अधिवचनं,* सु० नि० अट्ठ० 1.98; *धम्मो नाम अरहत्तमग्गो, अनुधम्मो नाम हेट्ठिमा तयो मग्गा,* म० नि० अट्ठ० (म.प.) 2.280; *अनुधम्मन्ति सीलविसुद्धिआदिपटिपदाधम्मं,* उदा० अट्ठ० 77; *धम्मस्स होति अनुधम्मचारी,* ध० प० 20; *अनुधम्मचारीति ... नवलोकुत्तरधम्मस्स अनुरूपं धम्मं पुब्बभागपटिपदासङ्खातं चतुपारिसुद्धिसीलधुतङ्गआसुभकम्मट्ठानादिभेदं चरन्तो ...,* ध० प० अट्ठ० 1.92; **2.** **समस्त** अङ्गों एवं प्रत्यङ्गों सहित धर्म, समग्ररूप में धर्म (विशेष कर धम्मानुधम्म जैसे स.प. में) - *धम्मानुधम्मपटिपन्नस्स भिक्खुनो अयमनुधम्मो होति वेय्याकरणाय,* इतिवु० 59; *अयमनुधम्मो होतीति अयं अनुच्छविक सभावो पतिरूपसभावो होति ... येन अनुधम्मेन तं धम्मानुधम्मं पटिपन्नोति ...,* इतिवु० अट्ठ० 236; *अयं अनुधम्मोति अयं सभावो,* म० नि० अट्ठ० (म.प.) 2.138; (उप.प.) 3.64; **3.** उचित पद्धति, सुसङ्गत व्याख्यानप्रकार - *धम्मानुधम्मप्पटिपन्नस्स, भिक्खवे, अयमनुधम्मो होति, यं रूपे निब्बिदाबहुलो विहरेय्य,* स० नि० 2(1).38; *नवन्नं लोकुत्तरधम्मानं अनुलोमधम्मं पुब्बभागपटिपदं पटिपन्नस्स, अयमनुधम्मोति अयं अनुलोमधम्मो होति,* स० नि० अट्ठ० 2.236; *इध सब्बञ्ञुतञ्ञाणं धम्मो नाम, महाजनस्स ब्याकरणं अनुधम्मो,* म० नि० अट्ठ० (म.प.) 2.139.

अनुधम्मं अ०, अव्ययी० स०, क्रि० वि० [अनुधर्म], धर्म के अनुसार, धर्म की अनुरूपता में - *अनुपुब्बं अनुधम्मं ब्याकरोहि*

मे, सु॰ नि॰ 515; *धम्मस्स चानुधम्मं ब्याकरोन्ति,* महाव॰ 310; दी॰ नि॰ 1.146; स॰ नि॰ 1(2).30; म॰ नि॰ 2.35; *पच्चपादि धम्मस्सानुधम्मं,* स॰ नि॰ 2(2).69; 3(2).413; उदा॰ 78; म॰ नि॰ 2.354; 3.323.

अनुधम्मचक्कप्पवत्तक पु॰, [अनुधर्मचक्रप्रवर्तक], धर्मचक्र का प्रवर्तन करने वाला अगला व्यक्ति – *सारिपुत्तो मय्हं अग्गसावको अनुधम्मचक्कप्पवत्तको ममानन्तरं सेनासनं लद्धुं अरहति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.214-215.

अनुधम्मचरणसील त्रि॰, धर्म के अनुसार आचरण करने वाला, निर्वाण-प्राप्ति के लिए अनुरूप धर्मों का आचरण करने वाला – *अनुधम्मचारिनोति अनुधम्मचरणसीला,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.130; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.282.

अनुधम्मचारी त्रि॰, [अनुधर्मचारिन्], उपरिवत् – *धम्मेसु निच्चं अनुधम्मचारी,* सु॰ नि॰ 69; *अनुधम्मचारीति ते धम्मे आरब्भ पवत्तमानेन अनुगतं विपस्सनाधम्मं चरमानो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98; *बहुस्सुतो धम्मधरो च होति, धम्मस्स होति अनुधम्मचारी,* थेरगा॰ 373; अ॰ नि॰ 1(2).9; *अनुधम्मचारिनोति सल्लेखिकं तस्सा पटिपदाय अनुरूपं अप्पिच्छतादिधम्मं चरणसीला,* उदा॰ अट्ठ॰ 266.

अनुधम्मता स्त्री॰, अनुधम्म का भाव॰ [अनुधर्मता], धर्म के अनुकूल रहने की दशा, धर्मानुकूलता – *अयं तत्थ सामीचीति अयं तत्थ अनुधम्मता,* पाचि॰ 190; *यो च तेसं तत्थ तत्थ, जानाति अनुधम्मतं,* अ॰ नि॰ 1(2).53.

अनुधम्मभूत त्रि॰, [अनुधर्मभूत], धर्म के अनुरूप हो चुका, लोकोत्तर धर्म (निर्वाण) के लिए अनुलोमभूत विपश्यना या अष्टाङ्गिक-मार्ग – *लोकुत्तरधम्मस्स अनुलोमत्ता अनुधम्मभूतं विपस्सनं भावयमानो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.57; *लोकुत्तरस्स निब्बाणधम्मस्स अनुधम्मभूतं पटिपदं पटिपन्नो, अनुधम्मभूतन्ति अनुरूपसभावभूतं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.31.

अनुधारयुं अनु + √धर के प्रेर॰ का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अन्वधारयन्], पीछे की ओर से पकड़कर धारण किये – *सो विक्कमी सत्त पदानि गोतमो, सेतञ्च छत्तं अनुधारयुं मरु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.58; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).51; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.86.

अनुधावति अनु + √धाव का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुधावति], पीछे भागता है, अनुसरण करता है, (किसी में) प्रवृत्त होता है या लग जाता है – *अथायं इतरा पजा, तीरमेवानुधावति,* ध॰ प॰ 85; स॰ नि॰ 3(1).23; अ॰ नि॰ 3(2).199; *अधोगमं जिम्हपथं, कुम्मग्गमनुधावति,* थेरगा॰ 1183; *यथा, महाराज, वंसो यत्थ वातो, तत्थ अनुलोमेति, नाञ्ञत्थमनुधावति,* मि॰ प॰ 338; – **न्ति** ब॰ व॰ – *कायानुगता धम्मा भवे भवे कायं अनुधावन्ति अनुपरिवत्तन्ति,* मि॰ प॰ 236; – **वि** अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मा सन्दिट्ठिकं हित्वा कालिकं अनुधावी'ति,* स॰ नि॰ 1(1).11; – **वित्थ** अद्य॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मा सन्दिट्ठिकं हित्वा कालिकं अनुधावित्था'ति,* स॰ नि॰ 1(1).139; – **विस्साम** भवि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ते मयं किं सन्दिट्ठिकं हित्वा कालिकं अनुधाविस्साम,* म॰ नि॰ 2.148.

अनुनदीतीरे अ॰, अव्ययी॰ स॰, क्रि॰ वि॰, नदी के तट के पास या समीप, नदी-तट के बगल में – *अनुनदीतीरे गोचरपसुतो अहोसि,* स॰ नि॰ 2(2).180; तुल॰ अनुकूले.

अनुनमति अनु + √नम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुनमति], झुकता है, प्रवृत्त होता है, रुचि लेता है – *यावग्गमूलं समकमेव अनुनमति,* मि॰ प॰ 338; – **मितब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰, नमन किया जाना चाहिए, अभिवादन किया जाना चाहिए – *योगिना योगावचरेन थेरनवमज्झिमसमकेसु अनुनमितब्बं,* मि॰ प॰ 338.

अनुनय पु॰, [अनुनय], **क.** आसक्ति, लगाव, अनुरोध, राग, झुकाव – *यो इमेसु पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु छन्दो आलयो अनुनयो,* म॰ नि॰ 1.251; *यो रागो सारागो अनुनयो,* ध॰ स॰ 1065; **ख.** स्नेह, हितैषिता, मृदुता – *अनुनयवसेन वा न चलन्ति न कम्पन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.331; **ग.** निष्कर्ष, अनुमान – *धम्मन्वयोति पच्चक्खञाणसङ्खातस्स धम्मस्स अनुनयो अनुमानं, अनुबुद्धीति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.251; स॰ उ॰ प॰ में अविज्जानु॰, कामरागानु॰, कोपानु॰, दिट्ठानु॰, पटिघानु॰, भवरागानु॰, मानानु॰, विचिकिच्छानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰, विलो॰ पटिघ; – **न** नपुं॰, अनु + √नी से व्यु॰, अनुनय का समाना॰ [अनुनयन], उपरिवत् – *विसयेसु सत्तानं अनुनयनतो अनुनयो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 389; – **पटिघ** पु॰/नपुं॰, द्व॰ स॰ [अनुनयप्रतिघ], राग और द्वेष – *तथागतो, महाराज, धम्मं देसयमानो अनुनयप्पटिघं न करोति,* मि॰ प॰ 163; – **पटिघविप्पमुत्त** त्रि॰, [अनुनयप्रतिघविप्रमुक्त], राग एवं द्वेष से पूरी तरह से मुक्त – *अनुनयप्पटिघविप्पमुत्तो धम्मं देसेति,* मि॰ प॰ 163; – **पटिघविप्पहीन** त्रि॰, [अनुनयप्रतिघविप्रहीन], राग एवं द्वेष से रहित – *अनुनयपटिघविप्पहीनो,* महानि॰ 82; *अनुनयपटिघविप्पहीनोति सिनेहञ्च कोपञ्च ...,* महानि॰ अट्ठ॰ 194; – **सञ्ञोजन** नपुं॰, [अनुनयसंयोजन], राग या लगाव का मानसिक बन्धन, स्नेह की बेड़ी – *सत्त सञ्ञोजनानि –*

अनुनयसञ्ञोजनं, पटिघसञ्ञोजनं, दिट्ठिसञ्ञोजनं, विचिकिच्छासञ्ञोजनं, मानसञ्ञोजनं, भवरागसञ्ञोजनं, अविज्जासञ्ञोजनं, दी॰ नि॰ 3.201; – **याभाव** पु॰, [अनुनयाभाव], राग या स्नेह का अभाव – *एतेनस्स अनुनयाभावं दस्सेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 151; – **मान** त्रि॰, आत्मने॰, वर्त॰ कृ॰, समझा-बुझा रहा, मार्गदर्शन करता हुआ, अभिप्रेरित करता हुआ – *अनुनयमानो तायं वेलायं इमा गाथायो अभासि,* स॰ नि॰ 1(1).268.

अनुनाद पु॰, [अनुनाद], प्रतिध्वनि, कोलाहल, शब्द, अनुगूंज – *अत्तनोव नादस्स अनुनादं सुणाति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.253.

अनुनासिक त्रि॰, [अनुनासिक], नासिका से उच्चारित प्रत्येक व्यञ्जन-वर्ग का पांचवां व्यञ्जन (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) तथा अनुस्वार या निग्गहीत – *एत्थ च गाथाबन्धसुखत्थं अनुनासिको,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 152; – **लोप** पु॰, [अनुनासिकलोप], अनुनासिक का लोप, अनुनासिक-ध्वनि की समाप्ति – *अनुनासिकलोपो चेत्थ "विवेकजं पीतिसुखन्ति" आदीसु विय न कतो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.123-124; – **कागम** पु॰, [अनुनासिकागम], अनुनासिक का निवेशन, अनुनासिक को अतिरिक्त ध्वनि के रूप में रख देना – *अनुनासिकागमं कत्वा वुत्तं "अपरंकारो"ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 281.

अनुनीत त्रि॰, अनु + √नी का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुनीत], ले जाया गया, प्राप्त कराया गया, अभिप्रेरित – *तेन दिट्ठिच्छन्देन अनुनीतो ताय च दिट्ठिरुचिया निविट्ठो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.215.

अनुनीयमानो पु॰, अनु + √नी का कर्म॰ वा॰ में वर्त॰ कृ॰ [अनुनीयमान], अभिप्रेरित किया जा रहा, प्राप्त कराया जा रहा – *अनुनीयमानोपि सञ्ञत्तिं अनागच्छन्तो पच्छिमदिसाभिमुखो पक्कामि,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 246.

अनुनेता पु॰, अनु + √नी का कर्तृ॰ कृ॰ [अनुनेतृ], नेतृत्व करने वाला, उत्प्रेरक – *नेता विनेता अनुनेता,* दी॰ नि॰ 3.146; *पुनप्पुनं नेतीति अनुनेता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.127; *भगवा हि धम्मानं नेता विनेता अनुनेता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).269.

अनुनेन्ती स्त्री॰, अनु + √नी का वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अनुनयन्ती], अभिप्रेरित कर रही, मार्गदर्शन कर रही, समझा-बुझा रही – *अनुनेन्ती अनिकरत्तं, केसे च छमं खिपि सुमेधा,* थेरीगा॰ 516.

अनुन्नत / अनुण्णत त्रि॰, उन्नत / उण्णत का निषे॰ [अनुन्नत], **शा॰ अ॰** वह, जो ऊपर की ओर उठाया हुआ न हो; **ला॰ अ॰** अहङ्कार से रहित, अभिमान या दर्पभाव से मुक्त – *सन्तो अनुण्णतो चरे,* सु॰ नि॰ 707; *पब्बतो अनुन्नतो अनोनतो,* मि॰ प॰ 356; विलो॰ अनोणतो / अनोनतो [अनवनत].

अनुन्नळ त्रि॰, उन्नळ का निषे॰, अहङ्कार से रहित, घमण्ड से रहित, अनुद्धत – *अनुद्धता अनुन्नळा, अचपला, अमुखरा,* म॰ नि॰ 1.39; *अनुद्धता होन्ति अनुन्नळा,* अ॰ नि॰ 1(1).86.

अनुन्नामिनिन्नामि त्रि॰, उन्नामी + निन्नामी का निषे॰, वह, जो न ऊपर की ओर उठा हुआ है और न ढलानदार है, समतल, चौरस – *इध, भिक्खवे, खेत्तं अनुन्नामानिन्नामि च होति,* अ॰ नि॰ 3(1).70.

अनुपकम्पति अनु + प + √कम्प का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रकम्पति], चलायमान होता है, कांपता है, थरथराता है, हिलता-डुलता है, प्रभावित होता है – *कस्स सेलूपमं चित्तं, ठितं नानुपकम्पति,* थेरगा॰ 191; *यस्स सेलूपमं चित्तं, ठितं नानुपकम्पति,* उदा॰ 114; *लोकधम्मेहि नानुपकम्पति न पवेधति,* उदा॰ अट्ठ॰ 200.

अनुपकार त्रि॰, उपकार का निषे॰, अनुपयोगी, अहितकर, भला न करने वाला – *निरोधं समापज्जनकेन भिक्खुना उपकारानुपकारानि अङ्गानि जानितब्बानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).243; – **धम्म** पु॰, कर्म॰ स॰, अहितकारक बातें, उपकार या भलाई नहीं लाने वाले तत्त्व – *सचे अनुपकारधम्मे पहाय उपकारधम्मे सेवन्तो समापज्जति,* पु॰ प॰ अट्ठ॰ 34; *अजानन्तो उपकारधम्मे नुदति नीहरति, अनुपकारधम्मे सेवति,* तदे॰.

अनुपक्कम पु॰, उपक्कम का निषे॰, तत्पु॰ स॰, **शा॰ अ॰** किसी के समीप न पहुंचना, **ला॰ अ॰** दूसरों के अधार्मिक उपायों का अभाव, किसी के द्वारा अनाक्रमण या आक्रमण का अभाव – *अनुपक्कमेन, भिक्खवे, तथागता परिनिब्बायन्ति,* चूळव॰ 332.

अनुपक्किलेस पु॰, उपक्किलेस का निषे॰ [अनुपक्लेश], उपक्लेशों का अभाव – *यदिमे तपोजिगुच्छा उपक्किलेसा वा अनुपक्किलेसा वा'ति,* दी॰ नि॰ 3.32.

अनुपक्कुट्ठ त्रि॰, उपक्कुट्ठ का निषे॰ [अनुपक्रुष्ट], अनिन्दित, निर्दोष निष्कलङ्क – *अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन,* म॰ नि॰ 2.384; दी॰ नि॰ 1.116; सु॰ नि॰ पृ॰ 173; *याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खितो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन,* अ॰ नि॰ 2(1).208.

अनुपक्खन्दति अनु + प + √खन्ध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रस्कन्दति], **शा॰ अ॰** उछलता है, पीछे ऊपर की ओर

उठता है, छलांग लगाते हुए अनुगमन करता है, आगे बढ़ता है, **ला. अ.** अवहेलना करता है - *भवं सोणदण्डो समणस्सेव गोतमस्स वादं अनुपक्खन्दती'ति,* दी. नि. 1.107; *अनुपक्खन्दतीति अनुपविसति,* दी. नि. अट्ठ. 1.234.

अनुपक्खिपत्वा अनु + प + √खिप का पू. का. कृ. [अनुप्रक्षिप्य], अन्दर, भीतर में या बीच में रखकर - *अन्तरसत्थिम्हि नङ्गुट्ठं अनुपक्खिपित्वा,* अ. नि. 1(2).280; *नङ्गुट्ठं अन्तरसत्थिम्हि पक्खिपित्वा ...,* अ. नि. अट्ठ. 2.392.

अनुपखज्ज अनु + प + √खन्द का पू. का. कृ. [बौ. सं. अनुप्रस्कद्य], 1. अन्यों की उपेक्षा कर अपने को बलपूर्वक आगे करके, अनुचित रूप से अनुप्रवेश करके - *अथ खो छब्बग्गिया भिक्खू थेरे भिक्खू अनुपखज्ज सेय्यं कप्पेन्ति,* पाचि. 63; *अनुपखज्जाति अनुपविसित्वा,* पाचि. 64; *कथं हि नाम छन्नो भिक्खु भिक्खुनीनं अनुपखज्ज भिक्खूहि सद्धिं विवदिस्सति,* चूळव. 195; 2. अतिक्रमण करके, रौंद कर, कुचल कर, उपेक्षा या अवज्ञा कर - *अनुपखज्ज मुच्छिता भोजनानि भुञ्जमाना मदं आपज्जिस्सन्ति,* म. नि. 1.209; *यंनूनाहं अनुपखज्ज जीविता वोरोपेय्य'न्ति,* स. नि. 2(1).103; *अनुपखज्जाति अनुपविसित्वा,* स. नि. अट्ठ. 2.274; - **कथा** स्त्री., विन. वि. के एक खण्ड का शीर्षक, विन. वि. गा. 1089-1099; - **सिक्खापद** नपुं., पाचि. के एक खण्ड का शीर्षक, पाचि. 63-64.

अनुपखज्जन्त उप + √खन्द के वर्त. कृ. का निषे., अतिक्रमण न करते हुए, अवज्ञा न करते हुए - *थेरे भिक्खू अनुपखज्जन्तेन,* परि. 311.

अनुपगच्छति अनु + प + √गम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रगच्छति], विलीन हो जाता है, निकट पहुंच जाता है, संक्रमण कर जाता है, प्रवेश कर जाता है - *पथवी पथवीकायं अनुपेति अनुपगच्छति,* म. नि. 2.193; *अनुपेतीति अनुयायति अनुपगच्छतीति तस्सेव वेवचनं अनुगच्छतीतिपि अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.137.

अनुपगत त्रि., उपगत का निषे. [अनुपगत], समीप तक न पहुंचा हुआ, अप्राप्त, किसी काम के पीछे न लगा हुआ - *अनपायोति पटिघवसेन अनपगतो,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.61; पाठा. अनुपगतो.

अनुपगमन 1. नपुं., उपगमन का निषे. [अनुपगमन], समीप में न पहुंचना, निकटता का अलाभ - *चक्खुविञ्ञाणस्स आपाथं अनुपगमनतो अनिदस्सनं नाम,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).306; 2. त्रि., ब. स., समीप तक न पहुंचने वाला, निकटता को अप्राप्त - *अनुपायोति रागवसेन अनुपगमनो हुत्वा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.61.

अनुपगमनीय त्रि., उपगमनीय का निषे. [अनुपगमनीय], समीप न पहुंचने योग्य, आश्रय न ग्रहण करने योग्य, वह, जिसको पकड़ना संभव न हो - *पयोगासयविपन्नेहि अनुपगमनीयतो च केनचिपि अनासादनीयतो च दुरासदो,* वि. व. अट्ठ. 180.

अनुपगम्म / अनुपगम्म अ., उप + √गम के पू. का. कृ. का निषे. [अनुपगम्य], पास न पहुंच कर, समीप में प्राप्त न होकर, आश्रय ग्रहण न कर, सहारा न लेकर, स्वीकार न कर - *दिट्ठिञ्च अनुपगम्म सीलवा दस्सनेन संपन्नो,* सु. नि. 152; *उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा,* म. नि. 3.279; *तिस्सो नदियो अनुपगम्म ... महासमुद्दं पविसति,* उदा. अट्ठ. 245.

अनुपचार पु., उपचार का निषे., सुदूर, असमीपता, असामीप्य, निर्जनता, पास-पड़ोस या अड़ोस-पड़ोस का न रहना - *मनुस्सानं अनुपचारट्ठानं, यत्थ न कसन्ति न वपन्ति, तेनेवाह - वनपत्थन्ति दूरानमेतं सेनासनानं अधिवचन'न्तिआदि,* दी. नि. अट्ठ. 1.171.

अनुपचित त्रि., उपचित का निषे. [अनुपचित], पुञ्जीभूत या राशीकृत न किया हुआ, अराशीकृत, असञ्चित, अपुञ्जित - *तत्थ अकतेनाति अनिब्बत्तितेन अत्तना अनुपचितेन,* पे. व. अट्ठ. 131; - **कुसलसम्भार** त्रि., ब. स., पुण्यकर्मों को सञ्चित न किया हुआ - *ससादीहि विय महासमुद्दो अनुपचितकुसलसम्भारेहि अलब्भनेय्यप्पतिट्ठा दुप्परियोगाहा च,* उदा. अट्ठ. 10; - **ञाणसम्भार** त्रि., ज्ञान की सम्पदा को सञ्चित न करने वाला - *तत्थ दुद्दसन्ति सभावगम्भीरत्ता अतिसुखुमसण्हसभावत्ता च अनुपचितञाणसम्भारेहि पस्सितुं न सक्काति दुद्दसं,* उदा. अट्ठ. 319.

अनुपचिनन्त त्रि., उप + √चि के वर्त. कृ. का निषे., संग्रह या सञ्चय नहीं करने वाला - *तत्थ अनुपचिनन्ताति सिनेहेन आलयवसेन अनोलोकेन्ता,* जा. अट्ठ. 5.333.

अनुपच्छिन्न त्रि., उपच्छिन्न का निषे. [अनुपच्छिन्न], व्यवधान या अन्तराल से रहित, अव्यवहित, क्रमभङ्गरहित, अबाधित अनवरुद्ध - *पच्छा भुसत्थ सादिस्सानुपच्छिन्नानु वत्तिसु,* अभि. प. 1174; *तत्थ अनुगते अन्वेति, अनुपच्छिन्ने अनुसयो,* सद्द. 3.883.

अनुपजग्घति अनु + प + √जग्घ का वर्त., प्र. पु., ए. व., हँसता है, ठठाकर हँसता है, ठिठोली करता है, मजाक

उड़ाता है - *पुग्गलो पञ्हं पुट्ठो समानो अभिहरति अभिमद्दति अनुपजग्घतीति खलितं गण्हाति,* अ॰ नि॰ 1(1).228; *अनुपजग्घतीति परेन पञ्हे पुच्छितेपि कथितेपि पाणिं पहरित्वा महाहसितं हसति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.181.

अनुपज्जथ अनु + पद का अद्य॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ [अन्वपद्यत], एक साथ सम्मिलित होकर प्रवेश किया, एक साथ दिखाई पड़ा, प्रकट हुआ, साथ-साथ चला - *विज्जू महामेघरिवानुपज्जथ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402.

अनुपज्झायक त्रि॰, उपज्झायक का निषे॰, ब॰ स॰ [अनुपाध्यायक], बिना उपाध्याय वाला, उपाध्याय या उपदेष्टा से रहित - *न भिक्खवे, अनुपज्झायको उपसम्पादेतब्बो, यो उपसम्पादेय्य, आपत्ति दुक्कटस्साति,* महाव॰ 113; *तेन खो पन समयेन भिक्खू अनुपज्झायका अनाचरियका अनोवदियमाना,* महाव॰ 50.

अनुपञ्चाहं अ॰, क्रि॰ वि॰, अव्ययी॰ स॰, प्रत्येक पाँचवें दिन पर - *अनुदसाहं अनुपञ्चाहं देवे वस्सन्तेति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 122.

अनुपटिपज्जनक त्रि॰, अनु + पटि + √पद से व्यु॰, किसी के आचरण का अनुसरण करनेवाला, किसी के व्यवहार या कार्यपद्धति का अनुगमन करनेवाला, किसी के कार्य का अनुवर्त्तन करनेवाला, किसी की कार्यपद्धति का पक्षधर या समर्थक - *तत्थ अनुवत्तकाति तस्स दिट्ठिखन्तिरुचिग्गहणेन अनुपटिपज्जनका,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.177.

अनु-पटिपाटि स्त्री॰, [अनुपरिपाटी], नियमित क्रम, प्रणाली, प्रक्रम, अनुक्रम, परिपाटी - *तत्थ अनुपुब्बेनाति अनुपटिपाटिया,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.197; *एतासु अनुपटिपाटिया विहरितब्बट्ठेन समापज्जितब्बट्ठेन च अनुपुब्बविहारसमापत्तीसु,* उदा॰ अट्ठ॰ 117; - **कथा** स्त्री॰, क्रमशः अथवा क्रमबद्धरूप में विकसित होने वाला व्याख्यान - *अनुपुब्बिं कथन्ति अनुपटिपाटिकथं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.224; - **निरोध** पु॰, क्रमिक प्रक्रिया से प्राप्त निरोध - *अनुपुब्बनिरोधाति अनुपटिपाटिया निरोधा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.209.

अनुपट्ठपेत्वा उप + √ठा के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, जागरूक न कर, उपस्थापित या प्रस्तुत न कर, तैयार न कर, प्रतिष्ठित न कर - *अनुपट्ठिताय सतियाति कायगतासतिं अनुपट्ठपेत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.183.

अनुपट्ठान नपुं॰, उपट्ठान का निषे॰ [अनुपस्थान], स्मृति की जागरुकता का अभाव, किसी की देखभाल करने या सेवा करने का अभाव, अनुपस्थिति, असामीप्य - *वीरियिन्द्रियस्स वसेन एकत्तअनुपट्ठानं वीरियिन्द्रियस्स अत्थङ्गमो होति,* पटि॰ म॰ 196; - **कुसल** त्रि॰, जो उपस्थित नहीं है उसके प्रति कुशल, प्रमाद करने में कुशल - *नवहि आकारेहि अनुपट्ठानकुसलो होति,* पटि॰ म॰ 214; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, स्मृति की जागरुकता के अभाव की दशा, सेवा न करने की मनोवृत्ति, अनुपस्थिति - *अनुपट्ठानताति नेक्खम्मं पटिलद्धस्स कामच्छन्दो न उपट्ठाति,* पटि॰ म॰ 94; विलो॰ उपट्ठान.

अनुपट्ठित त्रि॰, उपट्ठित का निषे॰ [अनुपस्थित], वह, जो सामने उपस्थित न हो, अविद्यमान, वह, जिसकी सेवा न की जा रही है, नहीं जागरुक, शिथिल - *अनुपट्ठिता चेव सति न उपट्ठाति,* म॰ नि॰ 1.150; *अनुपट्ठिताय सतिया,* स॰ नि॰ 1(2).209; - **कायसति** त्रि॰, वह, जिसकी काया सम्बन्धी स्मृति शिथिल है या जागरुक नहीं है - *अनुपट्ठितकायसति च विहरति परित्तचेतसो,* म॰ नि॰ 1.398; - **सति** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुपस्थितस्मृति], वह, जिसकी स्मृति जागरुक नहीं है, शिथिल स्मृतिवाला, प्रमादयुक्त व्यक्ति - *बाधयन्ति अनुपट्ठितस्सतिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.450.

अनुपतति अनु + √पत का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपतति], किसी का पीछा करता है, अनुगमन करता है, प्रवेश करता है, आ धमकता है, आक्रमण करता है, किसी के अन्दर आ जाता है, अन्तर्सन्निविष्ट होता है, किसी दो के अन्तराल में आकर गिर जाता है - *सत्तन्नंत्वेव कायानमन्तरेन सत्थं विवरमनुपतति,* म॰ नि॰ 2.196; ... *एवं सत्तन्नं कायानं अन्तरेन छिद्देन विवरेन सत्थं पविसति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.164; - **न्ति** ब॰ व॰ - *तं नामरूपस्मिमसज्जमानं अकिञ्चनं नानुपतन्ति दुक्खा,* ध॰ प॰ 221; - **माना** वर्त॰, कृ॰ आत्मने॰, स्त्री॰ - *अपि नाम एताय एकपदिया अनुपतमाना पुत्तके ते लहुं पस्सेय्यासीति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.328; - **तेय्यासि** विधि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *तमेवानुपतेय्यासि, अपि पस्सेसि ने लहुं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.327; - **तिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *मक्खिका नानुपतिस्सन्ति नान्वास्सविस्सन्तीति,* अ॰ नि॰ 1(1).315; - **तितुं** निमि॰ कृ॰ - *सचे अनुपतितुकामासि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.327; - **तित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *तमेनं गिज्झापि काकापि कुललापि अनुपतित्वा अनुपतित्वा फासुळन्तरिकाहि वितुडेन्ति,* पारा॰ 140.

अनुपतन नपुं॰, अनु + √पत से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अनुपतन], अनुसरण, आक्रमण, अन्तःप्रवेश, अन्तर्सन्निवेश - *अनुपतनं पवत्तीति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.140; *खणानुपातीति पमादक्खणे अनुपतनसीलो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.461.

अनुपतित त्रि., अनु + √पत का भू. क. कृ. [अनुपतित], आ पड़ा, आकर गिरा हुआ, सहगत, विषयीभूत - *दुक्खानुपतितद्धगू* ध. प. 302; *ये वट्टसङ्खातं अद्धानं पटिपन्नता अद्धगू, ते दुक्खे अनुपतिताव*, ध. प. अट्ठ. 2.264; स. उ. प. के रूप में अनोत्तप्पानुपतित, उपेक्खानु., दुक्खानु., दोमनस्सानु., दोसानु., पञ्ञानु., पमादानु., पितानु., रागानु., विचारानु., वितक्कानु., विरियानु., सतानु., सद्धानु., समाधानु. आदि के अन्त. द्रष्ट..

अनुपद नपुं., [अनुपद], 1. आगे आने वाला या उत्तरवर्ती पद, गाथा का द्वितीय पद, गाथागायन की एक पद्धति, जिसमें प्रथम पाद को छोड़ द्वितीय चरण का गायन होता है; 2. छन्दबद्ध रचना का चतुर्थांश - *पदं अनुपदञ्चापि, अक्खरञ्चापि ब्यञ्जनं*, अप. 1.40; *पदेन पदं कथयिस्सामि, अनुपदेन अनुपदं कथयिस्सामि*, मि. प. 308; - **दं** अ., [अनुपदं], **शा. अ.1**. शब्दशः - *सब्बे बुद्धगुणे अनुपदं अनवसेसतो मनसि कातुं न सक्का*, उदा. अट्ठ. 274; **शा. अ.2**. एक-एक कदम का अनुसरण करते हुए, निरन्तर, कदम से कदम मिलाकर, पीछे-पीछे, कदम के साथ-साथ, तुरन्त पीछे - *पदेनानुपदायन्तं*, अप. 1.140; *पदेनानुपदं यन्तो, विपस्सिस्स महेसिनो*, अप. 1.214; *भण्डसामिका चोरानं अनुपदं गन्त्वा*, ध. प. अट्ठ. 1.271; **ला. अ.** एकदम अनुरूप - *बोधिञाणस्स अनुपदं चरमाना*, जा. अट्ठ. 3.439; - **तो** अ., [अनुपदं], शब्दशः, अक्षरशः - *अयं अनुपदतो अत्थवण्णना*, खु. पा. अट्ठ. 201; विलो. अधिपेतत्थवण्णना, तुल. अनुपदं एवं अनुपदसो; - **धम्मविपस्सना** स्त्री., तत्पु. स. [अनुपदधर्मविपश्यना], एक-एक धर्म के विषय में क्रमशः विकसित विपश्यना ज्ञान - *सारिपुत्तो, भिक्खवे, अड्ढमासं अनुपदधम्मविपस्सनं विपस्सति*, म. नि. 3.74; *तत्रिदं, भिक्खवे, सारिपुत्तस्स अनुपदधम्मविपस्सनायाति या अनुपदधम्मविपस्सनं विपस्सतीति अनुपदधम्मविपस्सना वुत्ता*, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.60; - **टि.** प्रथम ध्यान आदि में ध्यानाङ्ग-रूप में उदित वितर्क, विचार आदि धर्मों के अभिनिरोपण आदि के स्वभाव को जान कर उन्हें चित्त में व्यवस्थापित करना ही अनुपदधम्म-विपस्सना है, द्रष्ट. म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.60-61; - **वग्ग** पु., म. नि. के एक वग्ग का शीर्षक, म. नि. 3.74-147; - **ववत्थित** त्रि., [अनुपदव्यवस्थित], एक-एक करके व्यवस्थित या निर्धारित पद वाला - *त्यास्स धम्मा अनुपदववत्थिता होन्ति*, म. नि. 3.74; - **समवेक्खना** स्त्री., क्रमसङ्गत पद्धति द्वारा किया गया परीक्षण या अनुशीलन - *अयम्पि मे किलेसो पहीनो ... अनुपदपच्चवेक्खणाय पच्चवेक्खमानो भगवा निसिन्नो होति*, उदा. अट्ठ. 273; पाठा. पच्चवेक्खणाय; - **सुत्त** नपुं., म. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, म. नि. 3.74-77; - **दसो** अ., क्रि. वि. [अनुपदशः], एक-एक पद को लेकर, अक्षरशः - *सब्बं वुत्तानुसारेन अनुपदसो पच्चवेक्खितब्बं*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).94.

अनुपदिट्ठ त्रि., उपदिट्ठ का निषे. [अनुपदिष्ट], वह, जिसका उपदेश या कथन नहीं किया गया है - *अनुपदिट्ठानं वुत्तयोगतो*, क. व्या. 51.

अनुपद्दव त्रि., ब. स. [अनुपद्रव], उपद्रवों, आपत्ति-विपत्तियों या बाधाओं से मुक्त, सङ्कटरहित, शुभ - *यथापि मूले अनुपद्दवे दळ्हे*, ध. प. 338; *छेदनफालनपाचनविज्झनादीनं केनचि उपद्दवेन अनुपद्दवे*, ध. प. अट्ठ. 2.306; *सम्पत्तियो दुवे भुत्वा, अनीति अनुपद्दवो*, अप. 1.125; *यायं, भन्ते, दिसा अभया अनीतिका अनुपद्दवा ...*, पारा. 254.

अनुपद्दुत त्रि., उपद्दुत का निषे., बाधाओं, सङ्कटों, हानियों या उपद्रवों से मुक्त, भयमुक्त, अक्षत - *इदं खो, यस, अनुपद्दुतं*, महाव. 20; *अनुपद्दुता अनुपसट्ठा खेमिनो अप्पटिभया गच्छन्तीति वुत्तं होति*, खु. पा. अट्ठ. 125; *अक्खतन्ति अनुपद्दुतं पाटलिपुत्तं*, वि. व. अट्ठ. 298.

अनुपधारेत्वा उप + √धर के प्रेर. के पू. का. कृ. का निषे. [अनुपधार्य], विचाराधीन रूप में न रखकर, बिना उचित सोच-विचार के ही, उचित परीक्षण को न करके - *मग्गपरिस्सयं अनुपधारेत्वाव थूपाभिमुखी गच्छति*, वि. व. अट्ठ. 168; *अहं सामि, अत्तनो बालताय अनुपधारेत्वा अनाथपिण्डिकेन सेट्ठिना सद्धिं कथेसिं*, जा. अट्ठ. 1.225; *अहो वत मे भारियं अनुपधारेत्वा कतकम्म'न्ति महासंवेगो उदपादि*, ध. प. अट्ठ. 2.397.

अनुपधिक / अनूपधीकं त्रि., उपधिक / उपधीक का निषे. [अनुपधिक], आसक्ति, राग या तृष्णा से मुक्त, सांसारिक क्लेशों से रहित (निर्वाण का पद) - *सुकित्तितं गोतमनूपधीकं*, सु. नि. 1063; *एत्थ अनुपधिकन्ति निब्बानं*, सु. नि. अट्ठ. 2.282; *दिस्वा पदं सन्तमनूपधीकं अकिञ्चनं कामभवे असत्तं*, महाव. 41; विलो. सउपधिक.

अनुपनत त्रि., अनपनत का कुछ संस्करणों में प्राप्त अप., उपनुत (अपनत) का निषे. [अनुपनत], बुरे या पापकर्मों में न लगा हुआ - *अनपनतं चित्तं व्यापादे न इञ्जतीति आनेञ्जं*, उदा. अट्ठ. 150; पाठा. अनपनुत.

अनुपनाह पु., उपनाह का निषे. [अनुपनाह], वैर, मात्सर्य या ईर्ष्या का अभाव, अक्रोध, पुरानी बातों को मन में बांध कर न रखना - *अक्कोधो च अनुपनाहो च,* अ. नि. 1(1)116; *उपनन्धनलक्खणो उपनाहो,* अ. नि. अट्ठ. 2.66.

अनुपनाही त्रि., उपनाही का निषे. [अनुपनाही], उपनाह, द्रोह, ईर्ष्या या द्वेष न करने वाला, पुरानी बातों को मन में बांधकर न रखने वाला - *परे उपनाही भविस्सन्ति, मयमेत्थ अनुपनाही भविस्सामा'ति,* म. नि. 1.54; *अक्कोधनोनुपनाही, अमायो रित्तपेसुणो,* थेरगा. 502, 503; *अनुपनाही पुरिसपुग्गलो'ति,* स. नि. 1(2).184.

अनुपनिस त्रि., **क.** *उपनिस्सय के समाना. उपनिसा का निषे.,* हेतुओं एवं प्रत्ययों से अनुत्पन्न, असंस्कृत, अकारण - *विमुत्तिम्पाहं, भिक्खवे, सउपनिसं वदामि, नो अनुपनिसं,* स. नि. 1(2).28; विलो. सउपनिस; **ख.** ध्यान न लगाने वाला - *अनोहितसोतो, भिक्खवे, अनुपनिसो होति,* अ. नि. 1(1).228; तुल. श्रद्धाय उपनिषदा, छान्दोग्य उपनिषद्, 1.1.10.

अनुपनिस्सय त्रि., उपनिस्सय का निषे., ब. स. [अनुपनिःश्रय], उपनिश्रय से रहित, (अर्हत्व-प्राप्ति के लिये आवश्यक) अर्हताओं से रहित, अनर्ह, आधाररहित - *न खो पन बुद्धा सउपनिस्सयानंयेव धम्मं देसेन्ति, अनुपनिस्सयानम्पि देसेन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).11; - **सम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [अनुपनिःश्रय-सम्पन्न], अर्हत्व के प्राप्ति की योग्यता या अर्हता से रहित - *तथागतो हि लोके ओमकसत्तसम्मतानं अनुपनिस्सयसम्पन्नानं विपरीतदस्सनानं ...,* खु. पा. अट्ठ. 140; विलो. उपनिस्सयसम्पन्न.

अनुपनीत / अनूपनीत त्रि., उप + √नी के भू. क. कृ. का निषे. [अनुपनीत], **शा. अ.** समीप न ले जाया गया, पास तक न पहुंचाया गया, अप्रस्तुत, अनुद्धृत - *न कम्मुना नोपि सुतेन नेय्यो, अनूपनीतो स निवेसनेसु,* सु. नि. 852; *अत्ता च अनुपनीतो,* महाव. 257; **ला. अ.** उपाध्याय के समीप नहीं पहुंचाया गया अर्थात दीक्षा को प्राप्त न किया हुआ, अनुपसम्पन्न - *एको अज्झायको उपनीतो एको अनज्झायको अनुपनीतो,* म. नि. 2.368.

अनुपनेय्य त्रि., उप + √नी के पू. का. कृ., उपनेय्य का निषे. अथवा उप + √नी के विधि., प्र. पु., ए. व. का निषे., प्रस्तुत न करा कर, सामने उपस्थापित न करके - *समोति अत्तानमनूपनेय्य, हीनो न मञ्ञेथ विसेसि वापि,* सु. नि. 805.

अनुपथे / अनुपन्थे अ., क्रि. वि., मार्ग के बगल में, मार्ग के सहारे - *अट्ठीनि अम्म याचित्वा, अनुपथे दहाथ नं,* जा. अट्ठ. 5.292; *अनुपथे दहाथनं, जङ्घमग्गमहामग्गानं अन्तरे दहेय्याथति वदति,* जा. अट्ठ. 5.293.

अनुपन्न त्रि., अनु + √पद का भू. क. कृ. [अनुपन्न], अनुगत, प्रविष्ट, प्रादुर्भूत, अनुप्राप्त - *ब्राह्मणानं वचनपथं अनुपन्ना अनुगता,* जा. अट्ठ. 7.61; स. उ. प. के रूप में काव्यपथानु., पन्थानु., मारधेय्यानु. के अन्त. द्रष्ट..

अनुपपत्ति स्त्री., उपपत्ति का निषे. [अनुपपत्ति], पुनर्जन्म की अप्राप्ति, नूतन भव का अभाव - *अनुपपत्ति खेमन्ति अभिञ्ञेय्यं,* पटि. म. 12; *अनुपपत्ति निरामिसन्ति अभिञ्ञेय्यं,* पटि. म. 13; विलो. उपपत्ति; - **क** त्रि., पुनर्जन्म की प्राप्ति की ओर न ले जाने वाला, प्रतिसन्धि न दिलाने वाला - *अनुपवज्जन्ति अनुपपत्तिकं अप्पटिसन्धिकं,* स. नि. अट्ठ. 3.18; पाठा. अप्पवत्तिकं; *अनुपवज्जन्ति अनुप्पत्तिकं अप्पटिसन्धिकं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.243.

अनुपपद पु., उपपद का निषे. [अनुपपद], समास के पू. प. से भिन्न दूसरा पद - *अपिग्गहणेन अनुपपदस्सापि उत्तरपदादिस्स चस्स लोपो होति न वा ...,* क. व्या. 392; *सुतसद्दो सउपसग्गो अनुपसग्गो च अनुपपदेन सुतसद्दो च,* सद्द. 2.491.

अनुपपन्न त्रि., उप + √पद के भू. क. कृ. (उपपन्न) का निषे. [अनुपपन्न], **क.** वह, जिसने कहीं पर प्रवेश नहीं पाया है, पुनर्जन्म को अप्राप्त, नहीं पहुंचा हुआ, पुनर्भव प्राप्त न करने वाला - *इमञ्च कायं निक्खिपति, सत्तो च अञ्ञतरं कायं अनुपपन्नो होति,* स. नि. 2(2).365; *तं ठानं अनुपपन्ना होन्ति,* अ. नि. 3(2).239; **ख.** अपूर्ण, अपरिष्कृत, रहित, अभव्य - *अप्पस्सुतो सुतेन अनुपपन्नो,* अ. नि. 1(2).7; *मातितो हि, भो, ... अनुपपन्नो'ति,* दी. नि. 1.84; **ग.** व्याकरण के नियमों के अनुसार अनिष्पन्न निपात जैसे रूढ़ शब्द - *यदनुपपन्ना निपातना सिज्झन्ति,* क. व्या. 392; सद्द. 3.800.

अनुपब्बजति अनु + प + √बज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रव्रजति], दूसरों की देखा-देखी प्रव्रजित होता है या भिक्षुजीवन में प्रवेश करता है - **न्ति** ब. व. - *अभिञ्ञाता अभिञ्ञाता सक्यकुमारा भगवन्तं पब्बजितं अनुपब्बजन्ति,* चूळव. 316; - **जिं** अद्य. उ. पु., ए. व. - *तदा सो पब्बजी धीरो, अहं तमनुपब्बजिं,* अप. 2.252; - **जिंसु** अद्य. प्र. पु., ब. व. - *बोधिसत्तं अगारस्मा अनगारियं पब्बजितं अनुपब्बजिंसु,*

दी॰ नि॰ 2.23; - **जित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [अनुप्रव्रजित], किसी दूसरे का अनुकरण कर प्रव्रज्या लेने वाला व्यक्ति, दूसरे की देखा-देखी भिक्षु बन चुका व्यक्ति – *अनुपब्बजिंसूति अनुपब्बजितानि सहस्सानि*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.43; *अनुपब्बजितानं तु गणना च न विज्जति*, म॰ वं॰ 5.168; – **जिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे तुम्हेपि ... अहं तं पुरिसं अनुपब्बजिस्सामी'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.67; – **ज्जं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुपब्बज्जमहं, भिक्खवे, तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि*, इतिवु॰ 76; *अनुपब्बज्जन्ति अरियेसु चित्तं पसादेत्वा घरा निक्खम्म तेसं सन्तिके पब्बज्जं*, इतिवु॰ अट्ठ॰ 289.

अनुपम / अनूपम / अनोपम त्रि॰, उपम का निषे॰, ब॰ स॰ [अनुपम], बेजोड़, अद्वितीय, सर्वश्रेष्ठ – *असमसमस्स अनुपमस्स अप्पटिसमस्स*, मि॰ प॰ 155; *महन्तं इदं तथागतसासनं सारं वरं सेट्ठं पवरं अनुपमं*, मि॰ प॰ 231; *बुद्धो अतिअग्गताय अनुपमो*, मि॰ प॰ 259.

अनुपमोदमान त्रि॰, अनु + प + √मुद का वर्त॰ कृ॰ [अनुप्रमोदमान], अन्यों के साथ प्रमोद या आनन्द का अनुभव कर रहा, निरन्तर प्रमुदित हो रहा – *अनुमोदमानोति अनुपमोदमानो, निरन्तरं मोदमानोति अत्थो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98.

अनुपरम पु॰, उपरम का निषे॰ [अनुपरम], असमाप्ति, अविराम, निरन्तरता – *तस्स हेतुस्स तस्स पच्चयस्स अनुपरमा कायिकं दुक्खवेदनं वेदेति*, मि॰ प॰ 43.

अनुपरिधावति अनु + परि + √धाव का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपरिधावति], इधर-उधर या चारों ओर दौड़ता है, चक्कर मारता है – *तमेव थम्भं वा खिलं वा अनुपरिधावति*, म॰ नि॰ 3.20; स॰ नि॰ 2(1).134.

अनुपरिधावन नपुं॰, इधर उधर दौड़ना, चक्कर-मारना, चारों तरफ दौड़ लगाना – *तण्हारज्जुया बन्धित्वा सक्काये उपनिबद्धस्स अनुपरिधावनं वेदितब्बं*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.13.

अनुपरिप्फुट त्रि॰, [अनुपरिस्फुट], चारों ओर फैला हुआ, पूर्ण रूप से व्याप्त, आद्योपान्त व्याप्त – *महता उदकोघेन पक्खन्दपब्बतकुच्छि विय च अनुपरिप्फुटं होति*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 162.

अनुपरियाति अनु + परि + √या का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, चारों तरफ या इधर-उधर जाता है, चक्कर मारता है – *तत्थ यक्खो महिद्धिको, सब्बाभरणभूसितो, समन्ता अनुपरियाति, नारीगणपुरक्खतो*, जा॰ अट्ठ॰ 6.140; – **न्ति / यन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *समन्तानुपरियन्ति, को एति सिरिया जलं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.314; *यं यं मया पुब्बे पत्थितं, सब्बमेव मत्थकं पत्त'न्ति पासादं अनुपरियायन्ती'ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.233; – **यन्ते** वर्त॰ कृ॰, सप्त॰ वि, ए॰ व॰ – *अनुपरियन्तेति एते चन्दिमसूरिये सिनेरुं अनुपरियायन्ते*, जा॰ अट्ठ॰ 7.171; – **यायि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तं पत्तं गहेत्वा तिक्खत्तुं राजगहं अनुपरियायि*, चूळव॰ 228; – **येय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *समन्तानुपरियायेय्युं निप्पोथेन्तो चतुद्दिसा*, स॰ नि॰ 1(1).121.

अनुपरियाय पु॰, अनु + परि + √या से व्यु॰, चतुर्दिक भ्रमण, इधर-उधर चहलकदमी, हवाखोरी; – **पथ** पु॰, किले की भीतरी दीवालों के बगल में बना हुआ चौड़ा मार्ग, जिस पर सैनिक गश्त करते थे तथा इसी पर खड़ा होकर दुर्ग के बाहर की शत्रुसेना से युद्ध करते थे - *रञ्ञो पच्चन्तिमे नगरे अनुपरियायपथो होति उच्चो चेव वित्थतो च*, अ॰ नि॰ 2(2)241; *दोवारिको ... नगरस्स समन्ता अनुपरियायपथं अनुक्कमति*, अ॰ नि॰ 3(2).165.

अनुपरियेति अनु + परि + √इ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपर्येति], **क. शा. अ.** चारों ओर से घेर लेता है, गोल चक्कर काटता है – *द्वारेन अनुपरियेति, घट्टयन्तो मुहुं मुहुं*, थेरगा॰ 125; *समन्ता अनुपरियेति, सागरन्तं इमं महिं*, स॰ नि॰ 1(1).222; **ख. ला. अ.** अनुपरीक्षण करता है, क्रमशः विनिश्चय करता है या पकड़ लेता है – *चेतसा अनुपरियेति, मोग्गल्लानो महिद्धिको*, थेरगा॰ 1259; *अनुपरियेतीति, अनुक्कमेन परिच्छिन्दति*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.446.

अनुपरिवत्तति अनु + परि + √वत का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपरिवर्तते], गतिशील रहता है, चक्कर लगाता है, पीछे चलता है, अनुगमन करता है – *तमेव थम्भं वा खीलं वा अनुपरिधावति अनुपरिवत्तति*, स॰ नि॰ 2(1).134; – **न्ति** ब॰ व॰ – केचि तस्मिं उदके ठत्वा चन्दिमसूरिये अनुपरिवत्तन्ति, उदा॰ अट्ठ॰ 60; देवदत्तो च बोधिसत्तो च एकतो अनुपरिवत्तन्ति, मि॰ प॰ 195; 236.

अनुपरिवत्तन नपुं॰, [अनुपरिवर्तन], पीछे या उत्तर काल में होने वाला रूपान्तरण या परिवर्तन – *विपरिणामानुपरिवत्तजाति विपरिणामस्स अनुपरिवत्तनतो विपरिणामारम्भणचित्ततो जाता*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.201.

अनुपरिवत्ती त्रि॰, [अनुपरिवर्ती], किसी की अनुरूपता में विपरिणत या रूपान्तरित होने वाला – *तस्स*

रूपविपरिणामञ्ञथाभावा रूपविपरिणामानुपरिवत्ति विञ्ञाणं होति, म॰ नि॰ 3.276; *सङ्खारविपरिणामानुपरिवत्ति विञ्ञाणं होति,* स॰ नि॰ 2(1).16.

अनुपरिवत्तियन्ति अनु + परि + √वत के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, अनुकूल रूप में रूपान्तरित किये जाते हैं, उचित रूप में चर्या में उतारे जाते हैं – *ते भावियन्ति चेव अनुपरिवत्तियन्ति च,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.335; – **यमान** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰ – *चत्तारोमे, भिक्खवे, काला सम्मा भावियमाना सम्मा अनुपरिवत्तियमाना अनुपुब्बेन आसवानं खयं पापेन्ति,* अ॰ नि॰ 1(2).161.

अनुपरिवत्तेन्ता अनु + परि + √वत का वर्त॰, कृ॰ प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ [अनुपरिवर्तयन्तः], बार-बार दुहराते हैं, स्वाध्याय करते हैं, आवृत्ति करते हैं – *परिवत्तेन्तीति सज्झायन्ति वाचेन्ति च, अथ वा ... वेदं अनुपरिवत्तेन्ता होमं करोन्ता जपन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 86.

अनुपरिवारेति अनु + परि + √वु के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपरिवारयति], **क.** चारों ओर से घेर लेता है, चारों ओर से घेराबन्दी कर देता है, **ख.** अनुगमन करता है, अनुरूप हो जाता है, अपने में समाविष्ट कर लेता है – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *उक्खेपकेहि वारियमानानम्पि तेसं तं अनुपरिवारेत्वा चरणभावञ्च सत्थु आरोचेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.429; – **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मा ... उक्खित्तकं भिक्खुं अनुवत्तित्थ अनुपरिवारेथा'ति,* महाव॰ 458; – **य्याम** विधि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *दण्डवाकराहि समन्ता सप्पदेसं अनुपरिवारेय्याम,* म॰ नि॰ 1.211; – **सुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *उक्खित्तकं भिक्खुं अनुवत्तिंसु अनुपरिवारेसुं,* महाव॰ 458.

अनुपरिवेणं अ॰, क्रि॰ वि॰ [अनुपरिवेणं], परिवेण या कुटी के आसपास – *थेरो अनुपरिवेणं गन्त्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.53.

अनुपरिवेणियं अ॰, क्रि॰ वि॰, अनुपरिवेण से व्यु॰ [अनुपरिवेणिक], उपरिवत् – *गच्छानन्द, अवापुरणं आदाय अनुपरिवेणियं भिक्खूनं आरोचेहि,* महाव॰ 100; *न, भिक्खवे, अनुपरिवेणियं पातिमोक्खं उद्दिसितब्बं,* महाव॰ 134.

अनुपरिसक्कन नपुं॰, अनु + परि + √सक्क का क्रि॰ ना॰, चतुर्दिक गमन, परिरक्षण – *आयाचनहेतु वा थोमनहेतु वा पञ्जलिका अनुपरिसक्कनहेतु वा,* स॰ नि॰ 2(2).300-301.

अनुपरिसक्केय्य अनु + परि + √सक्क का विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, चारों ओर जाए, साथ रह कर रक्षण करे – *आयाचेय्य थोमेय्य ... अनुपरिसक्केय्य,* स॰ नि॰ 2(2).300.

अनुपरिहरित्वा अनु + परि + √हर का पू॰ का॰ कृ॰, चारों ओर से आच्छादित करके – *सा तं सालं अनुपरिहरित्वा ... विटभिं करेय्य,* म॰ नि॰ 1.388.

अनुपरिहरेय्य अनु + परि + √हर का विधि॰ का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपरिहरेत], चारों ओर से घेर ले, समाविष्ट कर ले, आच्छादित करे – *सा तं सालं अनुपरिहरेय्य,* म॰ नि॰ 1.388.

अनुपरोध पु॰, उपरोध का निषे॰ [अनुपरोध], सहमति, अविपरीतता, अनुकूलता, मेल-मिलाप, समनुरूपता – *यथा अञ्ञेपि जिनवचनानुपरोधेन योजेतब्बा,* क॰ व्या॰ 405; *तेसु आदिमज्झुत्तरेसु जिनवचनानुपरोधेन क्वचि वुद्धि होति,* सद्द॰ 3.809.

अनुपलद्धि स्त्री॰, उपलद्धि का निषे॰ [अनुपलब्धि], अप्राप्ति, उपलब्ध न होना – *निग्गहीतन्तवसेन पठमेकवचनन्तताय अनुपलद्धितो ...,* सद्द॰ 1.230.

अनुपलब्भन नपुं॰, उपलब्भन का निषे॰ [अनुपलम्भ], अस्तित्व में न पाया जाना, अप्राप्ति, अविद्यमानता, अनिश्चय – *अत्तना पियतरस्स अनुपलब्भनवसेन पुथु विसुं विसुं,* उदा॰ अट्ठ॰ 224-25.

अनुपलब्भमान त्रि॰, उप + √लभ के वर्त॰ कृ॰, कर्म॰ वा॰ का निषे॰ [अनुपलभ्यमान], नहीं प्राप्त किया जा रहा, नहीं उपलब्ध हो रहा – *सो अपरमत्थसभावो सच्चिकट्ठपरमत्थवसेन अनुपलब्भमानो अविज्जमानपञ्ञत्ति नाम,* म॰ नि॰ 1.192.

अनुपलित्त / अनूपलित्त त्रि॰, उप + √लिप के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनुपलिप्त], राग आदि के दुष्प्रभाव से अप्रभावित, लगाव-रहित, आसक्ति-रहित, अलिप्त, सर्वथा मुक्त – *सब्बाभिभुं सब्बविदुं सुमेधं, सब्बेसु धम्मेसु अनूपलित्तं,* सु॰ नि॰ 213; स॰ नि॰ 1(2).257; *तेसं लेपानं अभावा तेसु सब्बेसु धम्मेसु अनुपलित्तं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.218; *सब्बाभिभू सब्बविदूहमस्मि, सब्बेसु धम्मेसु अनूपलित्तो,* ध॰ प॰ 353; महाव॰ 11; म॰ नि॰ 1.230; *सब्बेसुपि तेभूमकधम्मेसु तण्हादिट्ठीहि अनूपलित्तो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.322; *अनूपलित्तोति तण्हादिट्ठिलेपेहि अलित्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.122; *अनुपलित्तो लोकेन, तोयेन पदुमं यथा,* अप॰ 2.160; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अनुपलिप्तता], लगावों, चित्त के बन्धनों या आसक्तियों से रहित होने की चित्तावस्था – *पुरिमेन लोके जातस्स लोके संवड्ढभावं, पच्छिमेन लोकेन अनुपलित्ततं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).16.

अनुपलेप त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुपलिप्त], आसक्तियों या लगावों से रहित – *तण्हूपलेपाभावेन अनुपलेपं,* उदा॰ अट्ठ॰ 301.

अनुपवज्ज त्रि., उप + √वद के सं. कृ. उपवज्ज का निषे. [अनुपवद्य], निन्दा नहीं किये जाने योग्य, अनिन्दनीय, दुष्परिणामों को न देने वाला, पुण्य से भरा, शुभ, निन्दा-वचनों का अविषय - *अनिग्गहितो असंकिलिट्ठो अनुपवज्जो अप्पटिकुट्ठो समणेहि ब्राह्मणेहि विञ्ञूहीति,* अ. नि. 1(1).206; *अनुपवज्जोति उपवादविनिमुत्तो,* अ. नि. अट्ठ. 2.155; *इमेहि तीहि ठानेहि अनुपवज्जस्स दिवसो वीतिवत्तती'ति,* मि. प. 361; तुल. अनवज्ज, सउपवज्ज - **ता** स्त्री., भाव. [अनुपवद्यता], अनिन्दनीयता, प्रशस्यता - *छन्नेन सम्मुखायेव अनुपवज्जता ब्याकता'ति,* म. नि. 3.319; स. नि. 2(2).65.

अनुपवत्तक / अनुप्पवत्तक त्रि., [अनुप्रवर्तक], वह, जो पहले से गतिशील को पीछे भी गतिशील बनाए रखता है, गतिशीलता के क्रम को आगे भी जारी रखने वाला - *धम्मेन पवत्तितस्स धम्मचक्कस्स अनुप्पवत्तको सेनापति कोति पुच्छि,* सु. नि. अट्ठ. 2.158; *गोतमस्स भगवतो सासनवरे धम्मचक्कमनुप्पवत्तको जातो,* मि. प. 326; *अतुलतेजा धम्मचक्कानुप्पवत्तका पञ्ञापारमिं गता,* मि. प. 311.

अनुपवत्तन नपुं., अनु + प + वत का क्रि. ना. [अनुप्रवर्तन], अनुष्ठान, गतिशीलता को आगे भी जारी रखना प्रयोग - *बोज्झङ्गानं अनुपवत्तनेन भावनं मज्झिमं वीथिं,* उदा. अट्ठ. 294.

अनुपवत्तन्त त्रि., अनु + प + √वत का वर्त. कृ. [अनुप्रवर्तमान], लगातार आगे की ओर बढ़ रहा, निरन्तर गतिशील हो रहा - *देसनानुसारेन ञाणे अनुपवत्तन्ते,* उदा. अट्ठ. 294.

अनुपवत्तित त्रि., अनु + प + वत का भू. क. कृ., प्रेर. [अनुप्रवर्तित], पीछे अनुष्ठित, आगे की ओर बढ़ते हुए रखा गया, लगातार गतिशील बनाया हुआ, निर्मित, चलाया हुआ - *अनुट्ठितायाति अनुप्पवत्तिताय,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.106.

अनुपवत्तेति / अनुप्पवत्तेति अनु + प + √वत के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रवर्तयति], पहले से गतिशील को आगे या बाद में गतिशील बनाए रखता है, ज़ारी रखता है, निरन्तर गति में रखता है - *तथागतेन अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं सम्मदेव अनुप्पवत्तेती'ति,* म. नि. 3.77; अ. नि. 2(1).141; मि. प. 326; स. नि. 1(1).221; - **य्याथ** विधि., म. पु., ब. व. - *इदं कल्याणं वत्तं निहितं अनुप्पवत्तेय्याथ,* म. नि. 2.279; - **य्यासि** विधि., म. पु., ए. व. - *इदं कल्याणं वत्तं निहितं अनुप्पवत्तेय्यासि,* म. नि. 2.273 - **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *तं कल्याणं वत्तं निहितं, पच्छिमा जनता अनुप्पवत्तेसि,* म. नि. 2.279.

अनुपवाद / अनूपवाद पु., उपवाद का निषे. [अनुपवाद], निन्दा अथवा दुर्वचनों का अभाव, वाणी द्वारा किसी के प्रति बुरा भला न बोलना - *अनूपवादो अनूपघातो, पातिमोक्खे च संवरो,* ध. प. 185; उदा. अट्ठ. 243; उदा. 117; दी. नि. 2.38; पारा. अट्ठ. 1.142; *तत्थ अनूपवादोति वाचाय कस्सचिपि अनुपवदनं,* उदा. अट्ठ. 205; दी. नि. अट्ठ. 2.62; - **क** त्रि., उपवादक का निषे. [अनुपवादक], निन्दा न करने वाला, बुरे वचन न बोलने वाला, अनिन्दक - *अरियानं अनुपवादका सम्मादिट्ठिका,* म. नि. 1.29; 3.217; पटि. म. 105.

अनुपवादापन नपुं., उपवादापन का निषे., निन्दा न करवाना, दुर्वचन न कहलाना, निन्दा करने या दुर्वचन कहने हेतु दूसरों को प्रेरित न करना - *अनूपवादोति अनूपवादनञ्चेव अनूपवादापनञ्च,* ध. प. अट्ठ. 2.136.

अनुपवादी त्रि., उपवादी का निषे. [अनुपवादी], निन्दा न करने वाला, बुरे वचन न बोलने वाला, अनिन्दक - *तत्थाहं अनोवादी अनुपवादी घासच्छादनपरमो विहरामि,* म. नि. 2.24.

अनुपविट्ठ / अनुप्पविट्ठ त्रि., अनु + प + √विस का भू. क. कृ. [अनुप्रविष्ट], प्रवेश किया हुआ, समीप पहुंचा हुआ, पूरी तरह से अन्दर में व्याप्त हो चुका; - **ट्ठो** प्र. वि., ए. व. - *कुच्छिगतो होति कोट्ठमनुपविट्ठो,* म. नि. 1.416; - **ट्ठा** ब. व. - *अविचारेत्वा समवायेन अनुपविट्ठा सप्पविट्ठा,* वि. व. अट्ठ. 285; *तत्थ यस्मा तिलम्हि तेलं विय न वेदनादयो सञ्ञादीसु अनुपविट्ठा,* कथा. अट्ठ. 191; - **ट्ठं** द्वि. वि., ए. व. - *निब्बानं आरम्मणकरणवसेन गतं अनुपविट्ठं,* ध. प. अट्ठ. 2.71; *निब्बानस्स गुणं अञ्ञेहि अनुपविट्ठं,* मि. प. 290; - **ट्ठे** सप्त. वि., ए. व. - *अज्ज नरवरपवरे जिनवरवसभे नगरवरमनुपविट्ठे वीथिया धनपालको हत्थी आपतिस्सति,* मि. प. 199; - **ट्ठेन** अ., क्रि. वि., अन्दर में परिव्याप्त होने के अर्थ में, अन्तर्निविष्ट हो जाने के तात्पर्य में - *अब्भन्तरमनुप्पविट्ठट्ठेन पन अन्तोतुदकट्ठेन दुन्निहरणीयट्ठेन च सल्लं,* सु. नि. अट्ठ. 1.80; - **ता** स्त्री., भाव., भीतर प्रवेश कर जाने की अवस्था, अन्दर अन्दर परिव्याप्त हो जाने की स्थिति - *सङ्घसमयमनुप्पविट्ठतायपि दक्खिणं विसोधेति,* मि. प. 240.

अनुपविट्ठचित्त त्रि., ब. स. [अनुप्रविष्टचित्त], वह, जिसका चित्त इधर-उधर भटका हुआ है, अस्थिर मन वाला - *अनिकट्ठचित्तोति अनुपविट्ठचित्तो,* अ. नि. अट्ठ. 2.334.

अनुपविट्ठपुब्ब त्रि., [अनुप्रविष्टपूर्व], वह, जो पूर्वकाल में किसी के साथ जुड़ा हुआ रह चुका है, या पहले किसी के भीतर समा चुका है - *अनुपाविसिन्ति न कञ्चि अनुपविट्ठपुब्बोस्मि, न मया अञ्ञो कोचि समणो पुच्छितपुब्बोति वदति,* जा. अट्ठ. 6.73.

अनुपविसति अनु + प + √विस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रविशति], प्रवेश करता है, किसी के भीतर जाकर परिव्याप्त हो जाता है, किसी में जाकर समा जाता है, बलपूर्वक मार्ग बनाता है, पहुंच जाता है, जबर्दस्ती घुस जाता है - *घनघातिमन्ति या घातियमाना अधिकरणिं अनुपविसति,* जा. अट्ठ. 3.248; *बुद्धादीनं गुणे ओगाहति, भिन्दित्वा विय अनुपविसतीति ओकप्पना,* ध. स. अट्ठ. 189; *तत्थ संसीदतीति मिच्छावितक्कस्मिं संसीदति अनुप्पविसति,* अ. नि. अट्ठ. 3.35; पु. प. अट्ठ. 94; - **सि** म. पु., ए. व. - *पोक्खरणी'ति लद्धनामं दिब्बसरं जलविहाररतिया अनुपविससि,* वि. व. अट्ठ. 32; - **सेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *छन्नं वा अनुपविसेय्य,* पाचि. 297; - **पाविसिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *समणं ब्राह्मणं वापि, सक्कत्वा अनुपाविसिं'न्ति,* जा. अट्ठ. 6.73; - **विस्स / विसित्वा** पू. का. कृ. - *अहिंसको रेणुमनुप्पविस्स,* जा. अट्ठ. 4.404; *तथारूपं वनसण्डं अनुपविसित्वा अज्झत्तिककम्मट्ठानं,* ध. प. अट्ठ. 1.210; *इदं ठानं पापुणाती'ति अनुपविसित्वा मञ्चपीठं पञ्ञपेत्वा निसीदन्तिपि,* पाचि. अट्ठ. 40; *अनुपखज्जाति अनुपविसित्वा,* स. नि. अट्ठ. 2.274.

अनुपविसन नपुं., अनु + प + √विस से व्यु. [अनुप्रवेशन], अन्दर गहराई तक बेध कर प्रविष्ट हो जाना, भीतर घुस जाना - *तं पन कण्डं अनुपविसनट्ठेन सल्ल'न्ति वुच्चति,* जा. अट्ठ. 1.158.

अनुपवेच्चति / अनुप्पवेच्छति व्यु. अनिश्चित, सम्भवतः अनु + प + √यमु से व्यु. पयच्छति का विकृत रूप अथवा अनु + प + √विस का प्रेर. रूप, वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रयच्छति / अनुप्रवेशयति], **शा. अ.** प्रवेश करता है, भीतर में भर देता या उड़ेल देता है, **ला. अ.** प्रदान करता है, बदले में दे देता है - *दसस्स ठानानि अनुप्पवेच्छति,* महाव. 297; *तमेनं अस्सदमको उत्तरि वण्णियञ्च पाणियञ्च अनुप्पवेच्छति,* म. नि. 2.118; *देवो न सम्माधारं अनुप्पवेच्छति,* अ. नि. 1(1).187; *अनुप्पवेच्छतीति वस्सितब्बयुत्ते काले वस्सं न वस्सति,* अ. नि. अट्ठ. 2.140; - **न्ति** ब. व. - *यं वा पनस्स इतो अनुप्पवेच्छन्ति मित्तामच्चा वा आतिसालोहिता वा,* अ. नि. 3(2).238-39; - **सु** अनु., म. पु., ए. व. - *यस्सिच्छसि तस्सा अनुप्पवेच्छसु,* जा. अट्ठ. 5.390; - **च्छे / च्छेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *देवो च न कालेनकालं सम्माधारं अनुप्पवेच्छेय्य,* दी. नि. 1.66; *जायन्तमस्स नानुप्पवेच्छे,* सु. नि. 210; - **च्छि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *बुद्धानुभावेन देवो सम्माधारं अनुप्पवेच्छि,* पारा. अट्ठ. 1.61.

अनुपवेस / अनुप्पवेस पु., [अनुप्रवेश], बहुत भीतर तक अथवा गहराई तक प्रवेश - *ओगाधप्पत्ताति ओगाधं अनुप्पवेसं पत्ता,* अ. नि. अट्ठ. 3.100; *यस्मा तिण्णं अत्थनयानं अञ्ञमञ्ञं अनुप्पवेसो इच्छितो,* नेत्ति. अट्ठ. 327.

अनुपवेसेय्य अनु + प + √विस के प्रेर. का विधि., प्र. पु., ए. व., दे, प्रदान करे, अन्दर तक प्रवेश कराये या पहुंचाए - *अनुप्पवेच्छेय्याति अनुप्पवेसेय्य,* अ. नि. अट्ठ. 2.105; *न अनुप्पवेच्छेय्याति न च पवेसेय्य, न वस्सेय्याति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.177.

अनुपसग्ग / अनूपसग्ग त्रि., ब. स. [अनुपसर्ग], **क.** विपत्ति या दुर्भाग्य से मुक्त, विपत्ति-रहित - *सउपसग्गो बालो, अनुपसग्गो पण्डितो,* अ. नि. 1(1).124; *केनचि अनुपसज्जितब्बत्ता अनुपसग्गं,* नेत्ति. अट्ठ. 245; **ख. केवल व्याकरण के सन्दर्भ में** - उपसर्गयुक्त समास से रहित शब्द - *सुतसद्दो सउपसग्गो अनुपसग्गो च अनुपपदेन,* सुतसद्दो च, सद्द. 2.491; - **धम्म** त्रि., कर्म. स. - विपत्ति या संकटों से मुक्त निर्वाण-धर्म - *अनूपसग्गनुपसग्गधम्मं, निब्बानमेतं सुगतेन देसितं,* नेत्ति. 46; *अनुपसग्गभावहेतुतो अनुपसग्गधम्मं,* नेत्ति. अट्ठ. 245.

अनुपस्सट्ठ त्रि., उपस्सट्ठ का निषे., तत्पु. स. [अनुपसृष्ट], उपद्रव अथवा सङ्कटों से रहित, भय से मुक्त - *इदं खो, यस, अनुपद्दुतं, इदं अनुपस्सट्ठं,* महाव. 20; *अनुपद्दुता अनुपसट्ठा खेमिनो अप्पटिभया गच्छन्तीति वुत्तं होति,* खु. पा. अट्ठ. 125.

अनुपसम पु., उपसम का निषे. [अनुपशम], अशान्ति, मानसिक बेचैनी या व्यग्रता - *अनुपसमारामा, भिक्खवे, पजा अनुपसमरता अनुपसमसम्मुदिता,* अ. नि. 1(2).149; *उपसमपटिपक्खो अनुपसमो, अनुपसन्तट्ठेन वा वट्टमेव अनुपसमो नाम,* अ. नि. अट्ठ. 2.330; - **संवत्तनिक** त्रि., [अनुपशम-संवर्तनिक], अशान्ति की मनोदशा में परिणत हो जाने वाला, अशान्ति की ओर ले जाने वाला, राग-द्वेष आदि का उपशम करने में असमर्थ - ... *अनिय्यानिके अनुपसमसंवत्तनिके असम्मासम्बुद्धप्पवेदिते भिन्नथूपे*

अप्पटिसरणे, दी॰ नि॰ 3.87; म॰ नि॰ 3.30; स॰ नि॰ 3(2).443; *अनुपसमसंवत्तनिकेति रागादीनं उपसमं कातुं असमत्थे,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.80; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.21; – **रत** त्रि॰, [अनुपशमरत], अशान्ति में डूबा हुआ, शान्ति में आनन्द का अनुभव न करने वाला – *अनुपसमारामा, भिक्खवे, पजा अनुपसमरता अनुपसमसम्मुदिता,* अ॰ नि॰ 1(2).149; – **समाराम** त्रि॰, [अनुपशमाराम], अशान्ति में ही मन को रमाने वाला, शान्ति में आनन्द का अनुभव न करने वाला – *अनुपसमारामा, भिक्खवे, पजा अनुपसमरता अनुपसमसम्मुदिता,* अ॰ नि॰ 1(2).149 – **सम्मुदित** त्रि॰, [अनुपशमसम्मुदित], अशान्ति में आनन्द अनुभव करने वाला, चित्त की शान्ति में आनन्दित न होने वाला – *पजा अनुपसमरता अनुपसमसम्मुदिता,* अ॰ नि॰ 1(2).149.

अनुपसम्पन्न त्रि॰, उपसम्पन्न का निषे॰ [अनुपसम्पन्न], ऐसा श्रामणेर, जिसे अभी तक उपसम्पदा प्राप्त नहीं हुई है – *उपसम्पन्नो ... अनुपसम्पन्नस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति, आपत्ति दुक्कटस्स,* पाचि॰ 25; *अनुपसम्पन्नो नाम भिक्खुञ्च भिक्खुनिञ्च ठपेत्वा अवसेसो अनुपसम्पन्नो नाम,* पाचि॰ 26; – **दूसक** त्रि॰, [अनुपसम्पन्न-दूषक], ऐसी स्त्री को दूषित करने वाला व्यक्ति, जिसे उपसम्पदा प्राप्त नहीं हुई है – *सचे अनुपसम्पन्न-दूसको उपसम्पदं,* विन॰ वि॰ 2539; – **सञ्ञी** त्रि॰, [अनुपसम्पन्न-संज्ञी], उपसम्पदा-प्राप्त भिक्षु को भी उपसम्पदा न पाया हुआ मानने वाला – *उपसम्पन्ने अनुपसम्पन्नसञ्ञी विनयं विवण्णेति आपत्ति पाचित्तियस्स,* पाचि॰ 192; – **सील** नपुं॰, कर्म॰ स॰, उपसम्पदा न पाये हुए श्रामणेरों के लिए निर्धारित दस प्रकार के शील या शिक्षापद – *सामणेरसामणेरीनं दससीलानि अनुपसम्पन्नसीलं,* विसुद्धि॰ 1.16; – **टि॰** उपसम्पदा न पाये हुए श्रामणेरों के लिये भगवान बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त निम्नलिखित दस शिक्षापद अनुपसम्पन्न-सील कहे गये हैं :– 1. प्राणिहत्या से विरति, 2. अप्रदत्त वस्तु को ग्रहण करने से विरति, 3. मैथुन से विरति 4. असत्यभाषण से विरति 5. मादक पदार्थों के सेवन से विरति 6. विकाल-भोजन से विरति 7. नृत्य, गीत आदि से विरति 8. प्रसाधन-सामग्रियों के प्रयोग से विरति 9. बहुमूल्य, बिछावनों/पलङ्गों के प्रयोग से विरति 10. चांदी, सोने को दान में ग्रहण करने से विरति.

अनुपस्सति अनु + √दिस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपश्यति], अनुपश्यना करता है, गम्भीर आन्तरिक अनुचिन्तन करता है, निरीक्षण करता है, आन्तरिकरूप में देखता है – *ठितं आनेञ्जप्पत्तं वयञ्चस्सानुपस्सति,* महाव॰ 256; *अभिस्सीकतमेवस्स चित्तं होति ठितं आनेञ्जप्पत्तं वयञ्चस्सानुपस्सति,* अ॰ नि॰ 2(2).88; *अत्तनो अत्तानं नानुपस्सतीति ञाणसम्पयुत्तेन चित्तेन विपस्सन्तो अत्तनो खन्धेसु अञ्ञं अत्तानं नाम न पस्सति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.124; *येन चक्खुपसादेन रूपानिमनुपस्सति,* अभि॰ अव॰ 84; – **स्सन्त** वर्त॰ कृ॰ – *अनिच्चं दुक्खमनत्ताति, सङ्खारे अनुपस्सतो,* अभि॰ अव॰ 162; – **स्समान** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰ – *कायानुपस्सीति कायमनुपस्सनसीलो, कायं वा अनुपस्समानो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).252.

अनुपस्सन नपुं॰, अनुपश्यना, सम्यक्-दृष्टि, गम्भीर दर्शन – *भवं अङ्गारकासुंव, ञाणेन अनुपस्सनो,* थेरगा॰ 420; – **सील** त्रि॰, अनुपश्यना या गम्भीर अनुचिन्तन करने के स्वभाव वाला – *कायानुपस्सीति कायमनुपस्सनसीलो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).252.

अनुपस्सना स्त्री॰, [अनुपश्यना], गम्भीर ज्ञान-दर्शन, अनुपश्यना, धर्मों का प्रविचयात्मक ज्ञान, अमोह – *अट्ठ अनुपस्सनाञाणानि, अट्ठ च उपट्ठानानुस्सतियो, चत्तारि, ...,* पटि॰ म॰ 178; *अट्ठ अनुपस्सनाञाणानीति दीघं रस्सं सब्बकायपटिसंवेदी पस्सम्भयं कायसङ्खार'न्ति वुत्तेसु चतूसु वत्थूसु अस्सासवसेन चतस्सो, पस्सासवसेन चतस्सोति अट्ठ अनुपस्सनाञाणानि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.105; *अनुपस्सनापि ञाणन्ति, वरञाणेन देसितं,* अभि॰ अव॰ 158; *या पञ्ञा पजानना ... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं वुच्चति अनुपस्सना,* विभ॰ 218; *सत्तविधा अनुपस्सना नाम अनिच्चानुपस्सना, दुक्खानुपस्सना अनत्तानुपस्सना निब्बिदानुपस्सना, विरागानुपस्सना, निरोधानुपस्सना पटिनिस्सग्गानुपस्सनाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).166; *इदं दुक्खं, अयं दुक्खसमुदयोति अयमेकानुपस्सना,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 190; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अनत्तानुपस्सना, अनिच्चानु॰, अनिमित्तानु॰, अप्पणिहितानु॰, आदीनवानु॰, कायानु॰, खयानु॰, चित्तानु॰, दुक्खानु॰, दयतानु॰, धम्मानु॰, निब्बानानु॰, निब्बिदानु॰, निरोधानु॰, पटिनिसग्गानु॰, पटिसङ्खानु॰, वयानु॰, विपरिणामानु॰, विरागानु॰, विवट्टानानु॰, वेदनानु॰, सतिपट्ठानानु॰, सुञ्ञतानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **टि॰** विपश्यना ध्यान-पद्धति में विकसित प्रज्ञा द्वारा धर्मों के यथार्थ स्वरूप का तटस्थभाव से प्रत्यवेक्षण ही अनुपश्यना है.

अनुपस्सयमान त्रि॰, उप + √सी के वर्त॰ कृ॰ उपस्सयमान का निषे॰, आश्रय ग्रहण न करता हुआ, सङ्गति न करने

वाला - *न हि विक्खित्तचित्तो सोतुं सक्कोति, न च सप्पुरिसे अनुपस्सयमानस्स सवनं अत्थीति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.30; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).9; अ॰ नि॰ 1.8.

अनुपस्सी त्रि॰, अनु + √दिस से व्यु॰ [अनुपश्यी], धर्मों की यथार्थता को देखने वाला, सम्यक्-दृष्टि वाला, मोह से रहित, धर्मों का प्रविचयात्मक ज्ञान रखने वाला, देखने वाला, समझने वाला - *न सो मित्तो यो सदा अप्पमत्तो, भेदासङ्की रन्धमेवानुपस्सी,* सु॰ नि॰ 258; जा॰ अट्ठ॰ 3.165; ... *रन्धमेवानुपस्सीति यो भेदमेव आसङ्कमानो कतमधुरेन उपचारेन सदा अप्पमत्तो विहरति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.271; *रन्धमेवानुपस्सीति छिद्दं विवरमेव पस्सन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.166.

अनुपहच्च अ॰, उप + √हन के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, बिना हानि पहुंचाये हुए, नष्ट न करके, क्षत विक्षत न करके - *यंनूनाहं इमस्स नागस्स अनुपहच्च छविञ्च ...,* महाव॰ 29; *अनुपहच्चाति अविनासेत्वा,* महाव॰ अट्ठ॰ 242; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.361; *इमं पुरिसं अनुपहच्च छविञ्च चम्मञ्च ...,* दी॰ नि॰ 2.249; *दक्खो गोघातको वा ... अनुपहच्च अन्तरं मंसकायं अनुपहच्च बाहिरं चम्मकायं,* म॰ नि॰ 3.327.

अनुपहत त्रि॰, उपहत का निषे॰ [अनुपहत], 1. हानि को अप्राप्त, अक्षत - *तीहि धम्मेहि समन्नागतो पण्डितो वियत्तो सप्पुरिसो अक्खतं अनुपहतं अत्तानं परिहरति,* अ॰ नि॰ 1(1).331; *कच्चि पनासि, तात कुम्म, अक्खतो अनुपहतो'ति, अक्खतो, खोम्हि, तात कुम्म, अनुपहतो,* स॰ नि॰ 1(2).206; 2. वह, जिस पर प्रहार न किया गया हो, जिसे हटाया न गया हो, या नीचे न रखा गया हो - *गिम्हे, महाराज, अनुपहतं होति रजोजल्लं, वातक्खुभिता रेणू गगनानुगता होन्ति,* मि॰ प॰ 255; - **जिव्हापसाद** त्रि॰, ब॰ स॰, वह जिसकी जीभ कुण्ठित न हो या हकलाती न हो - *ततो कम्मट्ठानं ... यथा नाम अनुपहतजिव्हापसादो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.269.

अनुपहनन / अनूपघातन नपुं॰, [अनुपहनन], किसी को हानि या क्षति न पहुंचाना, अहिंसा - *अनूपघातोति अनूपघातनञ्चेव अनूपघातापनञ्च,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.136-37.

अनुपहार पु॰, उपहार का निषे॰ [अनुपहार], पास में या समीप में नहीं ले आना, आपूर्ति न करना - *अग्गि ... तस्स च ... अञ्ञस्स च अनुपहारा अनाहारो निब्बुतो ...,* म॰ नि॰ 2.165; स॰ नि॰ 1(2).76.

अनुपाकारे अ॰, क्रि॰ वि॰ [अनुप्राकार], किले की दीवालों के बगल में, दुर्गभित्तियों के बगल में - *अनुपाकारे चङ्कमन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.229; *अनुपाकारमत्थके कललं कत्वा वीहिं तत्थ रोपापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.230; *आचरिय, तुम्हे अनुपाकारे ठत्वा अम्हाकं मनुस्सानं पासादं ओलोकेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.234; *तथा अनुपाकारञ्च द्वारट्टालके अन्तरट्टालके ... कारेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.220.

अनुपात पु॰, अनु + √पत से व्यु॰ [अनुपात], अनुप्रवृत्तियां, अनुपतन, पीछे या बाद में आ जाना - *न च कोचि सहधम्मिको वादानुपातो गारय्हं ठानं आगच्छति,* अ॰ नि॰ 1(1).188; *वादानुपातोति वादस्स अनुपातो, अनुपतनं पवत्तीति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.140; *अनुपातो अनुपच्छा पवत्ति,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.119; द्रष्ट॰ वादानुपात एवं वादानुवाद.

अनुपाती त्रि॰, अनुपात से व्यु॰ [अनुपाती], बाद में या पीछे आने वाला, अचानक आकर टूट पड़ने वाला, त्रासदायक (केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयोग में प्राप्त) - *तं तं असच्चं अविभज्जसेविनिं, जानामि मूळ्हं विदुरानुपातिनिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.395; द्रष्ट॰ खणानु॰, पण्डितानु॰ के अन्त॰.

अनुपादं अ॰, क्रि॰ वि॰, अव्ययी॰ स॰ [अनुपादं], पैरों के समीप, पैरों के बगल में - *एवं तिट्ठमानेनापि नातिदूरे नाच्चासन्ने नानुपादं नानुसीसं ठातब्बं,* विसुद्धि॰ 1.175; विलो॰ अनुसीसं.

अनुपादा अ॰, उप + आ + √दा के पू॰ का॰ कृ॰, उपादाय के संक्षिप्तीकृत रूप का निषे॰, प्रायः संज्ञाओं के पूर्व में प्रयुक्त, 1. **शा॰ अ॰** किसी उपादान या सहायक सामग्री के बिना, 2. **ला॰ अ॰** सांसारिक बन्धनों के प्रति लगाव-रहित होकर, किसी भी प्रकार की आसक्ति या राग के बिना - *यथाभूतं विदित्वा अनुपादाविमुत्तो,* दी॰ नि॰ 1.14; *अनुपादा विमुत्तोति चतूहि उपादानेहि अग्गहेत्वा विमुत्तो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.91; *कथञ्चावुसो, अनुपादा परितस्सना होति,* म॰ नि॰ 3.275; *अनुपादा परितस्सनाति ... 'उपादापरितस्सनञ्च ... अनुपादाअपरितस्सनञ्चा'ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.200; *अनुपादानो अनुपादाविमुत्तो, ... तस्स अभावा किञ्चि धम्मं अनुपादियित्वाव विमुत्तो भिक्खवे तथागतोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.94.

अनुपादान[1] त्रि॰, उपादान से व्यु॰, ब॰ स॰ [अनुपादान], प्रज्वलित करने वाली अथवा जलाने वाली सामग्री से रहित, ईंधन-रहित, भवचक्र में फंसाने वाले रागों, आसक्तियों या लगावों से मुक्त - *अग्गि सउपादानो जलति, नो अनुपादानो,* स॰ नि॰ 2(2).365; *अनुपादानो विय पदीपो अपण्णत्तिकभावं गताति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.338; *अनेजो*

अनुपादानो, सतो भिक्खु परिब्बजे, सु. नि. 756; *निब्बायि अनुपादानो, दीपोव तेलसङ्ख्या,* अप. 1.99; 2.110; *सउपादानस्स ... उपपत्तिं पञ्ञापेमि नो अनुपादानस्स,* स. नि. 2(2).364.

अनुपादान² नपुं., उपादान का निषे. तत्पु. स. [अनुपादान], उपादानों का अभाव, राग से रहित स्थिति, अनासक्ति, बन्धनभूत संभारों या संसाधनों की अविद्यमानता – *अनुपादानाय धम्मो देसितो,* पारा. 20; 148; *अनुपादानायाति अग्गहणत्थाय,* पारा. अट्ठ. 1.167; *अनुपादानाय सन्तिकेति,* म. नि. 2.81; 177.

अनुपादानिय त्रि., उपादानिय का निषे. [अनुपादानीय], आसक्ति या राग आदि का अविषयीभूत, भवबन्धनों में न बांधे जाने योग्य, उपादानों का अविषय – *कतमे धम्मा अनुपादानिया? अपरियापन्ना मग्गा च, मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु– इमे धम्मा अनुपादानिया,* ध. स. 1226; 1556.

अनुपादाय/अनुपादा अ., उप + आ + √दा के पू. का. कृ. उपादाय का निषे. [अनुपादाय], चारों उपादानों से मुक्त होकर, सांसारिक आसक्तियों से विलग होकर – *अनुपादाय अनिस्सितो कुहिञ्चि,* सु. नि. 365; *अनुपादायाति चतूहि उपादानेहि कञ्चि धम्मं अग्गहेत्वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.86; ... *बहिद्धा चस्स विञ्ञाणं अविक्खित्तं ... अनुपादाय न परितस्सेय्य,* इतिवु. 67; *तस्स भिक्खुसहस्सस्स ... एवं अनुसासियमानानं अनुपादाय आसवेहि चित्तानि विमुच्चिंसु,* पारा. 9; महाव. 19; 21; – **सुत्त** नपुं., स. नि. के मग्गसंयुत्त के आठवें सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(1).26.

अनुपादिण्ण/अनुपादिन्न त्रि., उपादिन्न का निषे. [बौ. सं. अनुपात्त], **शा. अ.** वह, जो उपादानों पर आश्रित नहीं है, **ला. अ.** 28 प्रकार के रूपों में प्रथम 18 रूपों को छोड़कर शेष 10 प्रकार के रूप कर्म नामक उपादान के आश्रय के बिना उत्पन्न होने से अनुपादिन्न है – *अनुपादिन्नेसु हि जातिभेदे गहिते उपादिन्नेसु सो पाकटतरो होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.167; *बहिद्धारूपेति बहिद्धा उपादिन्ने वा अनुपादिन्ने वा,* पारा. 150; *अनुपादिन्नेति ताळच्छिद्दादिभेदे,* पारा. अट्ठ. 2.100; *कम्मजं उपादिन्नरूपं, इतरं अनुपादिन्नरूपं,* अभि. ध. स. 44; *कम्मतो जातं अट्ठारसविधं उपादिन्नरूपं ... इतरं अग्गहितग्गहणेनदसविधं अनुपादिन्नरूपं,* अभि. ध. वि. 181; *सद्दायतनं कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति रूपस्स लहुता रूपस्समुदुता रूपस्स कम्मञ्ञता रूपस्स जरता रूपस्स अनिच्चता, यं वा पनञ्ञम्पि अत्थि रूपं न कम्मस्स कतत्ता रूपायतनं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं आकासधातु आपोधातु रूपस्स उपचयो रूपस्स सन्तति कबळीकारो आहारो – इदं तं रूपं अनुपादिण्णं,* ध. स. 653; – **क** त्रि., अनुपादिण्ण से व्यु., [बौ. सं. अनुपात्तक], कर्म आदि कारणों का आश्रय लिये बिना प्रकट होने वाले आकाश आदि रूप, वृक्ष, पौधे आदि पर आश्रित न रहने वाले रूपस्कन्ध आदि – *तं दुविधं होति – उपादिन्नकं अनुपादिन्नकन्ति,* ध. स. अट्ठ. 275; *अनुपादिन्नकानं ताव कथेतुं आरद्धो,* सु. नि. अट्ठ. 2.167; *अनुपादिन्नकापि आहारा मिस्सेत्वा कथिता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).222; *अनुपादिन्नकं मुञ्चित्वा उपादिन्नकं गण्हाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).267; – **दिण्णानुपादानिय** त्रि., उपादानों पर आश्रित न रहने वाले मार्ग, फल एवं निर्वाण, जो न अन्य उपादानों पर आश्रित हैं और न स्वयं तृष्णा आदि के उपादान हैं – *अपरियापन्ना मग्गा च मग्गफलानि च, असङ्खता च धातु – इमे धम्मा अनुपादिण्णअनुपादानिया,* ध. स. 996; *किञ्चापि खीणासवस्स खन्धा ... परेसं उपादानस्स पच्चया होन्ति, मग्गफलनिब्बानानि पन अग्गहितानि अपरामट्ठानि अनुपादिण्णानेव, तानि हि, यथा दिवसं सन्तत्तो, अयोगुळो मक्खिकानं अभिनिसीदनस्स पच्चयो न होति, एवमेव तेजुस्सदत्ता तण्हामानदिट्ठिवसेन गहणस्स पच्चया न होन्ति तेन वुत्तं – इमे धम्मा अनुपादिण्ण-अनुपादानियाति,* ध. स. अट्ठ. 377; – **दिण्णुपादानिय** त्रि., कामावचर, रूपावचर और अरूपावचर भूमियों के आस्रवयुक्त कुशल एवं अकुशल धर्म, तथा वेदनास्कन्ध आदि उपादान होने योग्य हैं परन्तु जो क्रियाचित्त हैं, जो धर्म न कुशल है न अकुशल हैं, न कर्मों के विपाक हैं और कर्म द्वारा उत्पन्न न होने वाला रूप उपादानों पर आश्रित नहीं है, अतः इन धर्मों में कुछ अनुपादिन्न हैं जबकि कुछ उपादान बनने योग्य हैं – *सासवा कुसलाकुसला धम्माकामावचरा ... विञ्ञाणक्खन्धो, ... न च कम्मविपाका, यञ्च रूपं न कम्मस्स कतत्ता – इमे धम्मा अनुपादिण्णुपादानिया,* ध. स. 995.

अनुपादिसेस त्रि., उपादिसेस का निषे. [बौ. सं. अनुपधिशेष], **क.** पांच उपादान-स्कन्धों से मुक्त या रहित, समस्त उपादानों या लगावों से रहित (निर्वाण) – *तेसं पनेके समयं वदन्ति, अनुपादिसेसे कुसला वदाना,* सु. नि. 882; *यो चस्स समुदयप्पहानेन उपहतायतिकम्मफलस्स चरिमचित्ततो च उद्धं पवत्तिखन्धानं अनुप्पादनतो,*

उप्पन्नानञ्च अन्तरधानतो उपादिसेसाभावो, तं उपादाय पञ्ञापनीयतो नत्थि एत्थ उपादिसेसोति अनुपादिसेसं, विसुद्धि॰ 2.138; *अयं अनुपादिसेसो पुग्गलो अनुपादिसेसा च निब्बानधातु,* नेत्ति॰ 90; **ख. शल्यक्रिया के विशेष सन्दर्भ में** – किसी भी प्रकार के दुष्प्रभावी कीटाणुओं से पूरी तरह से मुक्त, समस्त बाधाओं से मुक्त – *उब्भतं खो मे सल्लं, अपनीतो विसदोसो अनुपादिसेसो,* म॰ नि॰ 3.42.

अनुपापित त्रि॰, अनु + प + √आप के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰, प्राप्त कराया गया, पहुंचाया गया, समझाया गया – *तेन तेन सदिसेन कारणेन निरवज्जमनुपापितं जिनसासनं सेट्ठभावेन परिदीपितं,* मि॰ प॰ 236.

अनुपापुणाति अनु + प + √आप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्राप्नोति], अभि तक अप्राप्त को प्राप्त करता है, जा पहुंचता है, भाग्य के अधीन हो जाता है – *अननुप्पत्तञ्च अनुत्तरं योगक्खेमं अनुपापुणाती'ति,* म॰ नि॰ 2.12; अ॰ नि॰ 3(2).309; *सच्चानुप्पत्ति होति, एत्तावता सच्चमनुपापुणाति,* म॰ नि॰ 2.191; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अननुप्पत्तञ्च अनुत्तरं योगक्खेमं नानुपापुणामि,* म॰ नि॰ 1.150; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पहुंचे, प्राप्त करें – *मा च खो त्वं, अय्ये, सेखं अप्पत्तमानसं लाभसक्कारसिलोको अनुपापुणातूति,* स॰ नि॰ 1(2).213; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰, प्राप्त करो – *तुम्हेपि, भिक्खवे, योनिसो मनसिकारा योनिसो सम्मप्पधाना अनुत्तरं विमुत्तिं अनुपापुणाथ,* स॰ नि॰ 1(1)124; – **णेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्राप्त करें, जा पहुंचे – *सो अपरेन समयेन तं कन्तारं नित्थरेय्य सोत्थिना, गामन्तं अनुपापुणेय्य खेमं अप्पटिभयं,* दी॰ नि॰ 1.84; – **पुणि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, जा पहुंचा, प्राप्त हुआ – *तदवसरीति तं पाटलिगामं अवसरि अनुपापुणि,* उदा॰ अट्ठ॰ 330; – **पुणिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰, पहुंचा – *मञ्जुस्सरानं भिक्खूनं, अग्गत्तमनुपापुणिं,* अप॰ 2.141; – **णिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्राप्त करेगा, जा पहुंचेगा – *सावको खो पन ते सउपादिसेसो अनुपादिसेसं निब्बानधातुं अनुपापुणिस्सतीति नेतं ठानं विज्जति,* नेत्ति॰ 76; – **अनुप्पत्वान** पू॰ का॰ कृ॰, जा पहुंचकर, प्राप्त कर – *सो हि नून इतो गन्त्वा, अनुप्पत्वान द्वारकं,* पे॰ व॰ 281; *अनुप्पत्वान द्वारकन्ति द्वारवतीनगरं अनुपापुणित्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 108.

अनुपापेति अनु + प + √आप का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पहुंचा देता है, प्राप्त कराता है – **पय** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रापय], प्राप्त कराओ, पहुंचाओ, समझाओ – *अञ्जलिं ते पग्गण्हाम, याव सामानुपापय,* जा॰ अट्ठ॰ 6.105; – **पयिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, मैंने प्राप्त करवाया – *तमहं उपट्ठहित्वान, आरोग्यमनुपापयिं,* चरिया॰ 403; – **पेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्राप्त करवाये, पहुंचाए – *तेनेव कम्माभिसन्देन इद्धियानं अभिरुय्ह पत्थितं निब्बाननगरं पापुणेय्या'ति,* मि॰ प॰ 257.

अनुपाय[1] त्रि॰, उपाय का निषे॰, ब॰ स॰ [अनुपाय], समीप में नहीं आने वाला, स्वयं को (किसी में) पूरी तरह न लगाने वाला, अनुपगमक, असमर्पक – *सो तेसु धम्मेसु अनुपायो अनपायो अनिस्सितो ...,* म॰ नि॰ 3.74.

अनुपाय[2] पु॰, उपाय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनुपाय], अनुचित उपाय, अनुपयुक्त साधन, किसी उद्देश्य को पाने हेतु अपनायी गयी अनुचित प्रक्रिया – *अनुपायेनूपगता अग्गिदोसेन अट्टिता,* सद्धम्मो॰ 405; *अयम्पि अनुपायो'ति आह,* जा॰ अट्ठ॰ 6.231; *अनुपायेन यो अत्थं, इच्छति सो विहञ्ञति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.248; *अनुपायेन हि आहारेन्तो दवत्थाय ... वा आहारेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 421; – **यापरिग्गह** पु॰, [अनुपायापरिग्रह], अनुचित उपायों या साधनों के चयन या स्वीकरण का अभाव – *मुट्ठस्सति उपायापरिच्चागे अनुपायापरिग्गहे च असमत्थो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).254; – **परिवज्जन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनुपायपरिवर्जन], अनुचित उपायों या साधनों का परित्याग – *असम्पजानो उपायपरिग्गहे अनुपायपरिवज्जने च सम्मुय्हति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).254; – **मनसिकार** पु॰, कर्म॰ स॰, अपने मन के विचारों के प्रसार अथवा उदय का अनुचित तरीका – *अयोनिसोमनसिकारो नाम अनुपायमनसिकारो उप्पथमनसिकारो,* विभ॰ अट्ठ॰ 255.

अनुपायास[1] पु॰, उपायास का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनुपायास], उपायासों या मानसिक व्याकुलता का अभाव, विपत्तियों या बाधाओं का अभाव, शान्त अवस्था, प्रश्रब्धि – *... अपरिदेवो अभिञ्ञेय्यो, अनुपायासो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 11; – **बहुल** त्रि॰, आपत्तियों से पूरी तरह मुक्त, पूर्णतया शान्त – *... मनुस्सभूतो समानो अक्कोधनो अहोसि अनुपायासबहुलो,* दी॰ नि॰ 3.119.

अनुपायास[2] त्रि॰, उपायास का निषे॰, ब॰ स॰ [अनुपायास], मानसिक पीड़ाओं, व्यथाओं अथवा विपत्तियों से मुक्त, पूर्ण रूप से शान्त, उपताप से रहित – *अदुक्खो एसो धम्मो अनुपघातो अनुपायासो अपरिळाहो, सम्मापटिपदा,* म॰ नि॰ 3.279; *असोका ते विरजा अनुपायासाति वदामी'ति,* उदा॰ 177; *असोकं तं, भिक्खवे, अदरं अनुपायासन्ति वदामि,* स॰ नि॰ 1(2).90; – **सं** क्रि॰ वि॰, बिना कष्ट या पीड़ा के, सुख

के साथ - *सुखं विहरति अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं,* स॰ नि॰ 1(2).135.

अनुपारम्भ त्रि॰, उपारम्भ का निषे॰ [अनुपालम्भ], द्वेषमयी या परछिद्रान्वेषी प्रवृत्ति से मुक्त, निन्दा या दुर्वचन न कहने वाला, अनिन्दक, अद्वेषी - *अनासवा अनुपधिकाति निद्दोसा अनुपारम्भा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.70; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुपालम्भचित्त], उलाहना न देने या परनिन्दा न करने की प्रवृत्ति से युक्त चित्त वाला - *अनुपारम्भचित्तो च, सद्धम्मसोतुमिच्छति,* अ॰ नि॰ 2(2).177; *सो अनुपारम्भचित्तो समानो भब्बो मुट्ठस्सच्चं पहातुं ... चेतसो विक्खेपं पहातुं,* अ॰ नि॰ 3(2).123.

अनुपालक त्रि॰, [अनुपालक], पालन करने वाला, रक्षा करने वाला - *कम्मजानं अनुपालको हुत्वा पच्चयो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).218; *जनको हेतु अक्खातो, पच्चयो अनुपालको,* अभि॰ अव॰ 153.

अनुपालन नपुं॰, अनु + √पाल का कर्तृ॰ कृ॰ [अनुपालन], संरक्षण, संधारण, सततरूप में अनुरक्षण - *उस्मं पटिच्च ... जीवितिन्द्रियेन उस्माय अनुपालनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).245; *यथावुत्तप्पकारउपकारुपत्थम्भनानुपालनपरिवारमेव हुत्वा ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 345; विसुद्धि॰ 2.73; *जातिञ्च नामगोत्तञ्च आयुञ्च अनुपालनं,* दी॰ वं॰ 3.2; - **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुपालनलक्षण], पालन करने या संरक्षा करने की प्रकृति वाला, संरक्षण करने के स्वभाव से युक्त - *अनुपालनलक्खणे इन्दट्ठं कारेतीति इन्द्रियं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 168; *तं पन अत्तना अविनिब्भुत्तानं धम्मानं अनुपालनलक्खणं,* अभि॰ अव॰ 21; - **समत्थ** त्रि॰, [अनुपालनसमर्थ], पालन या रक्षा करने में सक्षम - ... *अनुपालनसमत्थतो धम्मभण्डागारिकत्तसिद्धि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).8; - **समत्थता** स्त्री॰, भाव॰ [अनुपालनसमर्थता], रक्षा करने की क्षमता - *धम्मकोसस्स अनुपालनसमत्थताय धम्मभण्डागारिकत्तसिद्धि,* उदा॰ अट्ठ॰ 13; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).8.

अनुपालना स्त्री॰, अनुपालन से व्यु॰, लगातार संरक्षण, सतत संधारण - *ठितीति हि जीवितिन्द्रियसङ्खाताय अनुपालनाय नामं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235; *अञ्ञथत्तं जरा वुत्ता, ठिती च अनुपालना'ति,* तदे॰.

अनुपालित त्रि॰, अनु + √पाल का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुपालित], किसी के द्वारा रक्षित, वह, जिसका पालन या रक्षा किसी के द्वारा की गयी हो - *पुत्ता हि मातापितूहि वड्ढिता चेव अनुपालिता च,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.28.

अनुपालेति अनु + √पाल का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपालयति], अनुपालन करता है, संरक्षित करके रखता है, बरकरार रखता है, मानता रहता है - *याव नं अनुपालेति, ताव सो सुखमेधति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.357; 3.16; *अनुपालेतीति यो कोचि एवरूपं लभित्वा याव रक्खति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.357; ... *धम्मे अनुपालेति उदकं विय उप्पलादीनि,* अभि॰ अव॰ 21; - **लय** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुपालय], अनुपालन करो - *अनुपालय वचसा कम्मुना च,* जा॰ अट्ठ॰ 7.215; - **लेसिं / लयिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, मैंने अनुपालन किया था - *भाजनं अनुपालेसिं, भिक्खुसङ्घस्स तावदे,* अप॰ 1.229; *भाजनं अनुपालयिं,* अप॰ 1.229; - **लियमान** कर्म॰ वा॰, वर्त॰ कृ॰, अनुपालित होता हुआ - *आयुना अनुपालियमानं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 344.

अनुपासिका स्त्री॰, उपासिका का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनुपासिका], वह नारी, जो उपासिका अर्थात् बुद्ध की गृहस्थ अनुयायिनी नहीं है, उपासिका-भिन्न नारी - *सा च अनुपासिका,* महाव॰ 193.

अनुपाहन त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुपाहन], बिना जूतों वाला - *सत्था अनुपाहनो चङ्कमतीति, थेरापि भिक्खू अनुपाहना चङ्कमन्ति,* महाव॰ 260; *राजपुत्ती गिरिद्वारे, पत्तिका अनुपाहना,* जा॰ अट्ठ॰ 7.323; *कथं नु पथं गच्छन्ति, पत्तिका अनुपाहना,* जा॰ अट्ठ॰ 7.370; *थेरानं भिक्खूनं अनुपाहनानं चङ्कमन्तानं सउपाहनो चङ्कमति,* महानि॰ 166; विलो॰ सउपाहन.

अनुपाहार पु॰, देखिए अनुपहार के अन्त॰.

अनुपिय / अनुपिया नपुं॰ / स्त्री॰, संभवतः अनूपिय का अप॰, मल्ल जनपद के एक नगर अथवा आम्रवन का नाम, जहां गृहत्याग के उपरान्त तथा राजगृह जाने से पहले सिद्धार्थ गौतम ने प्रथम सप्ताह बिताया था; **क.** नपुं॰, - ... *अनुपियं नाम मल्लानं निगमो,* चूळव॰ 316; दी॰ नि॰ 3.1; *बोधिसत्तोपि पब्बजित्वा तस्मिंयेव पदेसे अनुपियं नाम अम्बवनं अत्थि, तत्थ सत्ताहं पब्बज्जासुखेन वीतिनामेत्वा ... राजगहं पाविसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.75; **ख.** स्त्री॰, - *एकं समयं भगवा अनुपियायं विहरति अम्बवने,* उदा॰ 89; *तेन समयेन बुद्धो भगवा अनुपियायं विहरति,* चूळव॰ 316; - **नगर** नपुं॰, अनुपिय-नामक मल्ल जनपद में स्थित नगर - ... *इदं सत्था अनुपियनगरं निस्साय अनुपियअम्बवने विहरन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.144; - **अम्बवन** नपुं॰, मल्ल जनपद के एक आम्रवन का नाम - ... *अनुपियअम्बवने विहरन्तो सुखविहारिं भद्दियत्थेरं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.144.

अनुपीळित त्रि., अनु + √पीळ का भू. क. कृ. [अनुपीड़ित], अत्यधिक कष्ट में पीड़ित, बहुत अधिक विपत्तिग्रस्त या व्यथित – *रत्तस्स हि उक्कुटिकं पदं भवे, दुट्ठस्स होति सहसानुपीळितं,* सु. नि. अट्ठ. 2.236; अ. नि. अट्ठ. 1.322; ध. प. अट्ठ. 1.116.

अनुपुच्छति अनु + √पुच्छ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुपृच्छति], प्रश्न करता है, पूछता है, अनुमति लेता है; – **सि** म. पु., ए. व., तूं पूछता है – *एवं मं पहितत्तम्पि, किं जीवमनुपुच्छसि,* सु. नि. 434; – **च्छामि** उ. पु., ए. व., मैं पूछता हूं – *आणं सक्कानुपुच्छामि, कथं नेय्यो तथाविधो,* सु. नि. 1119; आणं सक्कानुपुच्छामीति सक्काति भगवन्तं आलपन्तो आह, सु. नि. अट्ठ. 2.293; – **च्छमानो** वर्त. कृ., पूछ रहा, प्रश्न कर रहा – *दिट्ठिञ्च निस्साय अनुपुच्छमानो, (मागण्डियाति भगवा) समुग्गहीतेसु पमोहमागा,* सु. नि. 847; – **च्छिं** अद्य., उ. पु., ए. व. – *किमेवहं तुण्डिलमनुपुच्छिं, करेय्य सं भातरं काळिकायं,* जा. अट्ठ. 4.223.

अनुपुब्ब त्रि., [अनुपूर्व], क्रमबद्ध, क्रमानुसङ्गत, पूर्वापरक्रम में निबद्ध, अनुक्रमिक – *अनुपुब्बा च ते ऊरू, नागनाससमूपमा,* जा. अट्ठ. 5.150; *किमानुपुब्बं पुरिसो, किं वतं किं समाचारं,* थेरगा. 727; ... *किमानुपुब्बन्ति अनुपुब्बं अनुक्कमो, अनुपुब्बमेव वक्खमानेसु वतसमाचारेसु को अनुक्कमो,* थेरगा. अट्ठ. 2.233; क्रि. वि. के रूप में द्रष्ट. अनुपुब्बं, अनुपुब्बतो, अनुपुब्बसो के अन्त..

अनुपुब्बं अ. क्रि. वि. [अनुपूर्व], नियमित क्रम में, एक-एक करके, क्रमशः – *अनुपुब्बं अनुधम्मं ब्याकरोहि मे,* सु. नि. 515-16; 605; *अनुपुब्बन्ति पञ्हपटिपाटिया अनुधम्मन्ति अत्थानुरूपं पाळिं आरोपेन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.135; *तस्स ब्रह्मा वियाकासि, अनुपुब्बं यथातथं,* म. नि. 1.423; *अनुपुब्बं परिचिता, यथा बुद्धेन देसिता,* थेरगा. 548; 647; *तथा अनुपुब्बं अनुक्कमेन परिचिता आसेविता भाविता,* थेरगा. अट्ठ. 2.158.

अनुपुब्बकथा / अनुपुब्बिकथा / आनुपुब्बिकथा स्त्री., 1. क्रमशः विकसित होने वाला कथन, क्रमानुसङ्गत उपदेश 2. दानकथा, सीलकथा, सग्गकथा तथा मग्गकथा के रूप में क्रमशः स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ने वाले बुद्धवचन या बुद्धोपदेश – *तस्स आविभावत्थं अयमनुपुब्बिकथा,* जा. अट्ठ. 1.61; *तदत्थदीपनत्थाय अनुपुब्बकथा अयं,* म. वं. 22.1.

अनुपुब्बकारण नपुं., कर्म. स., क्रमशः अथवा बारी बारी से कराये जाने वाले करतब या काम – *सो अभिण्हकारणा अनुपुब्बकारणा तस्मिं ठाने परिनिब्बायति,* म. नि. 2.118.

अनुपुब्बकिरिया स्त्री., कर्म. स. [अनुपूर्वक्रिया], क्रमशः या क्रमसङ्गत तरीके से की जाने वाली क्रिया – *इमस्स ... अनुपुब्बसिक्खा अनुपुब्बकिरिया अनुपुब्बपटिपदा ...,* म. नि. 3.50; 2.155; उदा. 130; *एतेसं अञ्ञेनेपि पन अनुपुब्बकिरियाय पञ्ञायतीति दस्सेति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.46.

अनुपुब्बचारी त्रि., [अनुपूर्वचारी], नियमित क्रम में भिक्षाटन में विचरण करने वाला, एक घर के बाद दूसरे घर में बारी-बारी से भिक्षा हेतु जाने वाला – *सपदानचारीति अवोक्कम्मचारी अनुपुब्बचारी,* सु. नि. अट्ठ. 1.94.

अनुपुब्बतनुक त्रि., [अनुपूर्वतनुक], नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः पतला अथवा कृश रहने वाला शिखर – *सिखरसीसो वा उद्धं अनुपुब्बतनुकेन सीसेन समन्नागतो,* महाव. अट्ठ. 294.

अनुपुब्बता स्त्री., भाव., अनुपुब्ब से व्यु. [अनुपूर्वता], **क.** अनुकूलता, क्रमसङ्गत पद्धति से की गयी क्रिया, अनुकूल क्रिया – *अनुपुब्बताति अनुकूलकिरिया,* वि. व. अट्ठ. 235; **ख.** पूर्वापरक्रम, क्रमसङ्गतता, क्रमबद्ध परम्परा, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त, गणनानु., पदानु. के अन्त. द्रष्ट..

अनुपुब्बतो / अनुपुब्बं अ., क्रि. वि. [अनुपूर्वतः], क्रमशः, क्रमसङ्गत पद्धति से, क्रमिक प्रक्रिया के अनुरूप – *अनुपुब्बतो मनसिकरोन्तेनापि च नातिसीघतो मनसिकातब्बं,* विभ. अट्ठ. 216; *तत्थ अनुपुब्बतोति इदञ्हि सज्झायकरणतो पट्ठाय अनुपटिपाटिया मनसिकातब्बं, न एकन्तरिकाय,* विसुद्धि. 1.235; *झानानि पन चत्तारि, समापज्जानुपुब्बतो,* अभि. अव. 137.

अनुपुब्बनिन्न त्रि., तत्पु. स. [अनुपूर्वनिम्न], क्रमशः गहरा होता हुआ, धीरे-धीरे गहराई को प्राप्त हो रहा – *अनुपुब्बनिन्नो अनुपुब्बपोणो अनुपुब्बपब्भारो, न आयतकेनेव पपातो,* उदा. 128; अ. नि. 3(1).39; *अनुपुब्बनिन्नोतिआदीनि सब्बानि अनुपटिपाटिया निन्नभावस्सेव वेवचनानि,* उदा. अट्ठ. 244.

अनुपुब्बनिरोध पु., कर्म. स. [अनुपूर्वनिरोध], (ध्यान-प्रक्रिया में चेतना का) क्रमशः प्राप्त होने वाला निरोध या उपशम – *नव अनुपुब्बनिरोधा, पठमं झानं ...,* दी. नि. 3.211; *अनुपुब्बनिरोधाति अनुपटिपाटिया निरोधा,* दी. नि. अट्ठ. 3.209; *नवयिमे, भिक्खवे, अनुपुब्बनिरोधा,* अ. नि.

3(1).218; *एकादसमे अनुपुब्बनिरोधाति अनुपटिपाटिनिरोधा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.274.

अनुपुब्बपटिपदा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्व-प्रतिपत्], क्रमशः आगे बढ़ने वाली प्रगति, क्रमसङ्गत पद्धति से आगे बढ़ रहा मार्ग – *ब्राह्मणानं दिस्सति अनुपुब्बसिक्खा अनुपुब्बकिरिया अनुपुब्बपटिपदा ...,* म॰ नि॰ 3.50; *इमस्मिं धम्मविनये अनुपुब्बसिक्खा अनुपुब्बकिरिया अनुपुब्बपटिपदा,* उदा॰ 130; *अनुपुब्बपटिपदाय सत्त अनुपस्सना अट्ठारस महाविपस्सना ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 247; *इमस्मिं धम्मविनये अनुपुब्बसिक्खा अनुपुब्बकिरिया अनुपुब्बपटिपदा,* अ॰ नि॰ 3(1).41; (प्रायः अनुपुब्बसिक्खा एवं अनुपुब्बकिरिया के साथ ही प्रयुक्त).

अनुपुब्बपदवण्णना क. स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्व-पदवर्णना], पदों का क्रमसङ्गत पद्धति के सहारे किया गया व्याख्यान, ऐसी व्याख्या, जिसमें एक एक पद के अर्थ का वर्णन मिलता हो – *अयं मातिकाय अनुपुब्बपदवण्णना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 100.

अनुपुब्बपब्भार पु॰, [बौ॰ सं॰ अनुपूर्वप्राग्भार], एक ढलान या प्रपात के बाद दूसरी ढलान वाला, एक के बाद क्रमशः आ रही दूसरी ढलानों से युक्त – *महासमुद्दो, भिक्खवे, अनुपुब्बनिन्नो अनुपुब्बपोणो अनुपुब्बपब्भारो,* उदा॰ 128; चूळव॰ 393; अ॰ नि॰ 3(1).39.

अनुपुब्बपस्सद्धि स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्वप्रश्रब्धि], चार ध्यानों के दौरान क्रमशः प्राप्त शान्ति, क्रम से उदित उपशमभाव – *अनुपुब्बपस्सद्धि अनुपुब्बपस्सद्धीति, आवुसो, वुच्चति ...,* अ॰ नि॰ 3(1).260.

अनुपुब्बपोण त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुपूर्वप्रवण], क्रमशः नीचे की ओर ढालू या ढलानदार हो रहा – *महासमुद्दो, भिक्खवे, अनुपुब्बनिन्नो अनुपुब्बपोणो अनुपुब्बपब्भारो,* उदा॰ 128; चूळव॰ 393; अ॰ नि॰ 3(1).39; तुल॰ अनुपुब्बन्नि तथा अनुपुब्बपब्भार (ऊपर).

अनुपुब्बमुञ्चन नपुं॰, कर्म॰ [अनुपूर्वमोचन], क्रमशः प्राप्त छुटकारा, क्रमबद्ध रूप में प्राप्त मुक्ति – *एवं सत्तधा ... अनुपुब्बतो, ... अनुपुब्बमुञ्चनतो, अप्पनातो, तयो च ... आचिक्खितब्बं,* विभ॰ अट्ठ॰ 216-17; *एवं मनसिकरोन्तो अयमेते धम्मे अनुपुब्बमुञ्चनतो मनसि करोति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 55.

अनुपुब्बववत्थान नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्वव्यवस्थान], क्रमसङ्गत ढङ्ग से किया गया व्यवस्थापन, बातों की क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुति – *अनुपुब्बववत्थाने, कारणञ्च विनिद्दिसे,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 4.

अनुपुब्बविपस्सना स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्वविपश्यना], क्रमशः विकसित विपश्यना-ज्ञान – *तस्सेवं पवत्तानुपुब्बविपस्सनस्सेव सङ्खारारम्मणगोत्रभुञाणानन्तरं फलसमापत्तिवसेन निरोधे चित्तमप्पेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 28-9; विसुद्धि॰ 2.340.

अनुपुब्बविहार पु॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्वविहार], क्रमशः ऊपर की ओर बढ़ रहे समाधि के चरण, ध्यानभावना की क्रमशः अग्रसर हो रही अवस्थाएं – प्रथम ध्यान, द्वितीय ध्यान, तृतीय ध्यान, चतुर्थ ध्यान, आकाशानन्तायतन विज्ञानायतन, नैवसंज्ञानासंज्ञायतन तथा संज्ञावेदयितृनिरोध – *नव अनुपुब्बविहारा,* दी॰ नि॰ 3.211; अ॰ नि॰ 3(1).219; *अनुपुब्बविहाराति अनुपटिपाटिया समापज्जितब्बविहारा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.209; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.275; – **समापत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनुपूर्वविहारसमापत्ति], नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः बढ़ रही ध्यान की प्रथम ध्यान आदि 9 अवस्थाओं में प्राप्त मानसिक उपलब्धियां – *नवयिमा, भिक्खवे, अनुपुब्बविहारसमापत्तियो देसेस्सामि,* अ॰ नि॰ 3(1).219; ... *नवानुपुब्बविहारसमापत्तियो अनुलोमप्पटिलोमं समापज्जीति,* मि॰ प॰ 172; *नवानुपुब्बविहारसमापत्तिञाणानि दसबलञाणानि च तथभावे वेदितब्बानि,* उदा॰ अट्ठ॰ 107.

अनुपुब्बविहारि / अनुपुब्बविहारी त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्वविहारी], ध्यान की प्रथम ध्यान आदि नौ अवस्थाओं में क्रमशः आगे बढ़ने वाला – *अनुपुब्बविहारि तत्थ सो,* उदा॰ 161; *अनुपुब्बविहारि तत्थ सोति एवं तीसुपि ... सङ्खारगते अनुपस्सन्तो अनुक्कमेन ... अनुपुब्बविहारी समानो,* उदा॰ अट्ठ॰ 306.

अनुपुब्बसमापत्ति स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्वसमापत्ति], ध्यान की नौ अवस्थाओं में अनुभव की जाने वाली क्रमशः प्राप्त आध्यात्मिक उपलब्धियां – ... *तिण्णं समाधीनं पठमज्झानसमापत्तिआदीनञ्च नवन्नं अनुपुब्बसमापत्तीनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).342.

अनुपुब्बसिक्खा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनुपूर्वशिक्षा], क्रमशः अथवा व्यवस्थित रूप से दी गयी अथवा प्राप्त की गयी शिक्षा – *इमस्स ... अनुपुब्बसिक्खा अनुपुब्बकिरिया अनुपुब्बपटिपदा यदिदं* म॰ नि॰ 3.50; उदा॰ 130; *तत्थ अनुपुब्बसिक्खाय तिस्सो सिक्खा गहिता,* उदा॰ अट्ठ॰ 246; प्रायः अनुपुब्बकिरिया एवं अनुपुब्बपटिपदा शब्दों के साथ ही प्रयुक्त.

अनुपुब्बसेट्ठिपुत्त पु॰, एक व्यापारी के युवा पुत्र का उपनाम – *सो एवं अनुपुब्बेन पुञ्ञकम्मस्स कतत्ता अनुपुब्बसेट्ठिपुत्तो नाम जातो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.170.

अनुपुब्बसो अ., क्रि. वि. [अनुपूर्वतः], क्रमशः, नियमित क्रम से, व्यवस्थित रूप से, क्रमसङ्गत रूप से – *द्वत्तिंसानि च ब्याक्खाता, समत्ता अनुपुब्बसो,* सु. नि. 1006; *देवानं खन्धमारुव्हा, निय्यन्ति अनुपुब्बसो,* अप. 2.210; *ये वोहं कित्तयिस्सामि, गिराहि अनुपुब्बसो,* दी. नि. 2.187; *अनुपुब्बसोति अनुपटिपाटिया,* दी. नि. अट्ठ. 2.249.

अनुपुब्बाधिगत त्रि., कर्म. स. [अनुपूर्वाधिगत], क्रमशः प्राप्त किया हुआ, क्रमसङ्गत-रूप में उपलब्ध या साक्षात्कृत – *अनुपुब्बाधिगतेन अरहत्तमग्गेन अविज्जण्डकोसं पदालेत्वा* ..., अ. नि. अट्ठ. 3.205.

अनुपुब्बाभिसञ्ञानिरोध पु., कर्म. स. [अनुपूर्वाभिसंज्ञानिरोध], क्रमशः प्राप्त संज्ञा का निरोध, ध्यान की अवस्था में अनुभूत एक आध्यात्मिक उपलब्धि – *एवं खो, पोट्ठपाद, अनुपुब्बाभिसञ्ञानिरोध-सम्पजान-समापत्ति होति,* दी. नि. 1.164; *सम्पजानसञ्ञानिरोधसमापत्तीति सम्पजानन्तस्स अन्ते सञ्ञा निरोधसमापत्ति* ..., दी. नि. अट्ठ. 1.278; द्रष्ट. अभिसञ्ञानिरोध.

अनुपुब्बाभिसमय पु., कर्म. स. [अनुपूर्वाभिसमय], क्रमशः विकसित आन्तरिक ज्ञान, क्रमशः प्राप्त आन्तरिक अनुभूति या अन्तर्दृष्टि – *अनुपुब्बाभिसमयोति,* कथा. 180; *न वत्तब्बं अनुपुब्बाभिसमयोति,* कथा. 185; *तेसं लद्धिविवेचनत्थं अनुपुब्बाभिसमयोति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स,* कथा. अट्ठ. 159; – **कथा** स्त्री., कथा. के दूसरे वर्ग की 9वीं कथा का शीर्षक; कथा. 180-186.

अनुपुब्बी स्त्री., [आनुपूर्वी], क्रमशः आने वाली, क्रमसङ्गत ढङ्ग से की गई प्रस्तुति, द्रष्ट. आनुपुब्बी के अन्त..

अनुपुब्बूपसन्त त्रि., अनुपुब्ब + उपसन्त का कर्म. स. [अनुपूर्वोपशान्त], क्रमशः शान्त हो चुका, क्रमशः समाप्त हो चुका, क्रमशः निरुद्ध, क्रमशः ठण्डा पड़ चुका – *अनुपुब्बूपसन्तस्स, यथा न ञायते गति,* थेरीगा. अट्ठ. 177; उदा. 179; अप. 2.212; *अनुपुब्बूपसन्तस्साति अनुक्कमेन उपसन्तस्स विञ्ञातस्स निरुद्धस्स,* उदा. अट्ठ. 352.

अनुपुब्बेन अ., क्रि. वि. [अनुपूर्वेण], क्रमशः, नियमित रूप में, धीरे-धीरे, कालक्रम में – *अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन कपिलवत्थु तदवसरि,* महाव. 104; म. नि. 2.250; *अनुपुब्बेनाति अनुपटिपाटिया,* ध. प. अट्ठ. 2.197; *सो अनुपुब्बेन वयप्पत्तो* ..., जा. अट्ठ. 2.2; *होतीति हि अयं वारो, अनुपुब्बेन आगतो,* अभि. अव. 61.

अनुपुरोहित पु., [अनुपुरोहित], सहायक पुरोहित, साधारण राजा का पुरोहित, अप्रधान पुरोहित – *तत्थेव ते कत्तब्बं करिस्सन्ती'ति सत्त अनुपुरोहिते ठपेसि,* दी. नि. अट्ठ. 2.229; *उद्दालकं उप्पब्बाजेत्वा उपपुरोहितं करोथ* ..., जा. अट्ठ. 4.271.

अनुपेक्खणता[1] स्त्री., अनुपेक्खण का भाव. [अनुप्रेक्षणता], उपेक्षा न करने की अवस्था, उपेक्षा न करना – *आरम्मणं अनुपेक्खमानो विय तिट्ठतीति अनुपेक्खनता,* ध. स. अट्ठ. 188.

अनुपेक्खणता[2] स्त्री., अनु + पेक्खण का भाव. [अनुप्रेक्षणता], चित्त की सुदृढ़ चिन्तन या गम्भीर चिन्तन में रहने की स्थिति, गम्भीर चिन्तन की अवस्था – *कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं ... विचारो अनुविचारो ... अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं* ..., ध. स. 8; 85; 284; 372; *विचरणवसेन वा उपेक्खनता अनुपेक्खनता,* ध. स. अट्ठ. 188.

अनुपेक्खति अनु + प + √इक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रेक्षते], सावधानी के साथ देखता है, उचित रूप में गहराई के साथ सोचता-विचारता है – *चेतसा अनुवितक्केति अनुविचारेति मनसानुपेक्खति,* दी. नि. 3.192; अ. नि. 2(1).20; 82; – **मान** वर्त. कृ. [अनुप्रेक्षमाण], गहराई के साथ सोच-विचार कर रहा, सावधानीपूर्वक देख रहा – *पापकेन मनसानुपेक्खमानो नेव हत्थियायी भविस्सति,* अ. नि. 2(2).22; – **क्खित** त्रि., भू. क. कृ. [अनुप्रेक्षित], वह जिस पर सावधानीपूर्वक सोच-विचार किया गया है, अच्छी तरह से विचारित, सुचिन्तित – *तथारूपस्स धम्मा बहुस्सुता होन्ति, धाता वचसा परिचिता मनसानुपेक्खिता दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा,* चूळव. 207; म. नि. 1.277; *मनसानुपेक्खिताति चित्तेन अनुपेक्खिता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).150.

अनुपेक्खा स्त्री., उपेक्खा का निषे., तत्पु. स. [अनुपेक्षा], उपेक्षा का अभाव, उचित रुचि प्रकट करना, उचित ध्यान – *उपेक्खाञाणेन अनुपेक्खाय, अनुलोमेन ... पटिलोमभावस्स, ... पहानं,* सु. नि. अट्ठ. 1.8.

अनुपेक्खितु पु., अनुपेक्खति से व्यु., कर्तृ. कृ., अनुप्रेक्षण या गम्भीर सोच विचार करने वाला, समुचित अनुचिन्तन करने वाला – *अत्तानुपेक्खीति अत्तनोव कताकतं जाननवसेन अत्तानं अनुपेक्खिता,* अ. नि. अट्ठ. 3.44.

अनुपेक्खेति अनु + प + √इक्ख के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रेक्षयति], उचित एवं गम्भीर सोच-विचार-हेतु प्रेरित करता है, अनुप्रेक्षण कराता है – *पुग्गलं सञ्ञापेति*

निज्झापेति पेक्खेति अनुपेक्खेति दस्सेति अनुदस्सेति, चूळव. 174; *पेक्खति अनुपेक्खतीति यथा सो तं अत्थं पेक्खति चेव पुनप्पुनञ्च पेक्खति, एवं करोति,* चूळव. अट्ठ. 36.

अनुपेति अनु + प + √इ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रैति], किसी में जाकर घुल-मिल जाता है या विलीन हो जाता है, किसी की ओर अभिमुख हो जाता है – *पथवी पथविकायं अनुपेति अनुपगच्छति, आपो ...,* दी. नि. 1.49; म. नि. 2.192; *अनुपेतीति अनुयायति,* दी. नि. अट्ठ. 1.137; म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.163.

अनुपेसेय्य अनु + प + √इस के प्रेर. का विधि., प्र. पु., ए. व. [अनुप्रेषयेत्], पीछे से भिजवा दे, पीछे लगवा दे, अनुप्रेषण करा दे – *ततो राजा ... अनुपेसेय्य अत्तनो परित्तकाय सेनाय बलं अनुपदं ददेय्य,* मि. प. 34.

अनुपोसथ पु., उपोसथ का निषे. [बौ. सं. अनुपोसथ], उपोसथ के लिये निर्धारित तिथि से भिन्न दिन, प्रत्येक पक्ष की चतुर्दशी एवं प्रत्येक मास की पूर्णमासी के अतिरिक्त कोई दूसरा दिन – *अनुपोसथे उपोसथो कातब्बो,* महाव. 178; *अनुपोसथेति चातुद्दसिको च पन्नरसिको चाति इमे द्वे उपोसथे ठपेत्वा अञ्ञस्मिं दिवसे,* महाव. अट्ठ. 329.

अनुपोसथिक त्रि., उपोसथिक का निषे., स. [बौ. सं. अनुपोसथिक], उपोसथ का पालन न करने वाला, उपोसथ न करने वाला – *ये अनुपोसथिका होन्ति, ते निवारेति ...,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.221.

अनुपोसथिकं अ., क्रि. वि., अनु + उपोसथिक से व्यु., प्रत्येक उपोसथदिवस पर, प्रत्येक पखवारे में – *अन्वद्धमासन्ति अनुपोसथिकं,* पाचि. 193; 430; *तस्मा अनुपोसथिकं'न्ति पदभाजने वुत्तं,* पाचि. अट्ठ. 134.

अनुपोसिय अनु + √पुस के प्रेर. का सं. कृ. [अनुपोष्य], पीछे या बाद में पालन-पोषण किये जाने योग्य – *सब्बसम्पत्तिबीजं मे रोपितं नानुपोसियं,* सद्धम्मो. 318.

अनुप्पगे अ., क्रि. वि., प्रातःकाल, सवेरे-सवेरे – ... *अनुप्पगेयेव सन्निपतितानं काकानं ओरवसद्दं,* महाव. अट्ठ. 358; *अनुप्पगेयेवाति पातोयेव,* सारत्थ. टी. 3.297.

अनुप्पञ्ञत्त त्रि., अनु + प + √ञा के प्रेर. का भू. क. कृ. [अनुप्रज्ञप्त], बाद में प्रज्ञप्त किया गया, अतिरिक्त तौर पर अनुमत अथवा नियोजित – *पञ्ञत्ते अनुपञ्ञत्तं,* परि. 413; अ. नि. 1(1).119; *तेसंयेव अनुपञ्ञत्ति पञ्ञत्ते अनुपञ्ञत्तं,* अ. नि. अट्ठ. 2.69.

अनुप्पञ्ञत्ति स्त्री., [अनुप्रज्ञप्ति], अतिरिक्त रूप में निर्दिष्ट विनयनियम, गौण नियम या आज्ञा – *अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति,* परि. 1; *अधिमानवत्थु अनुपञ्ञत्तियं वुत्तनयमेव,* पारा. अट्ठ. 2.83; *तेसंयेव अनुपञ्ञत्ति पञ्ञत्ते अनुपञ्ञत्तं,* अ. नि. अट्ठ. 2.69; – **टि.,** मूल विनयनियमों पर कुछ समय बाद में किये गये परिवर्तन या परिवर्धन अनुपञ्ञत्ति कहलाते हैं ये अतिरिक्त नियम आपत्तिकार (अपराध से सम्बद्ध अतिरिक्त नियम बनाने हेतु) आपत्ति उपत्थम्भाकार, (विद्यमान नियम को दृढ़ करने हेतु) तथा अनापत्तिकार (विद्यमान नियम में छूट देने हेतु) होते हैं – **वार** पु., अनुप्रज्ञप्ति पर प्रकाश डालने वाले विनय के एक भाग का शीर्षक या नाम – *अनुपञ्ञत्तिवारे – अन्तमसोति सब्बन्तिमेन परिच्छेदेन,* पारा. अट्ठ. 1.206.

अनुप्पत्त त्रि., अनु + प + √आप का भू. क. कृ. [अनुप्राप्त], **क. कर्मवा. के सन्दर्भ में** – किसी के द्वारा प्राप्त किया गया, किसी की समझ या पकड़ में आने योग्य – *सदत्थो मे अनुप्पत्तो, कतं बुद्धस्स सासनं'न्ति,* थेरगा. 112; *स्वायं सदत्थो मे मया अनुप्पत्तो अधिगतो,* थेरगा. अट्ठ. 1.242; *अनुप्पत्तो सच्छिकतो, सयं धम्मो अनीतिहो,* थेरगा. 331; **ख. कर्तृ. वा. के सन्दर्भ में** – प्राप्त कर चुका, पहुंचा हुआ – *तयि जुण्हम्हि अहं एकेन अत्थेन इधानुप्पत्तो,* जा. अट्ठ. 4.87; – **धम्मरज्ज** त्रि., ब. स. [अनुप्राप्तधर्मराज्य], वह, जिसने धर्म के राज्य को प्राप्त कर लिया है, सत्य का साम्राज्य प्राप्त कर चुका – *एवमेवं ... आनुभावेन अनुप्पत्तधम्मरज्जो धम्मराजापि ...,* अ. नि. अट्ठ. 1.110; – **सदत्थ** त्रि., ब. स. [अनुप्राप्तसदर्थ], वह, जिसने अपने परम प्रयोजन अथवा सर्वोच्च लक्ष्य (अर्हत् अवस्था) को प्राप्त कर लिया है – ... *कतकरणीयो ओहितभारो अनुप्पत्तसदत्थो परिक्खीणभवसञ्ञोजनो सम्मदञ्ञा विमुत्तो,* महाव. 255; अ. नि. 1(1).168; *अनुप्पत्तसदत्थोति सदत्थो वुच्चति अरहत्तं, तं अनुप्पत्तो,* अ. नि. अट्ठ. 2.123.

अनुप्पत्ति / अनुपत्ति स्त्री., अनु + प + √आप से व्यु. [अनुप्राप्ति], अपनी इच्छाओं की पूर्ति, प्राप्ति, उपलब्धि – *आकङ्खे चे हदयस्सानुपत्तिं,* स. नि. 1(1)55; 63; *हदयस्सानुपत्तिन्ति अरहत्तं,* स. नि. अट्ठ. 1.94.

अनुप्पत्तिधम्म त्रि., ब. स. [अनुत्पत्तिधर्म], अपुनर्भव की प्रकृति वाला, पुनर्जन्म ग्रहण न करने वाला – *सब्बं तं ... बोधिमूलेयेव पहीनं अनुप्पत्तिधम्मं,* उदा. अट्ठ. 109-110; – **धम्मता** स्त्री., अनुप्पत्तिधम्म का भाव. [अनुत्पत्तिधर्मता].

पुनः जन्म न होने की अवस्था या स्थिति - *अनुप्पत्तिधम्मतं आपज्जन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 172; *अनुप्पत्तिधम्मतापादनेन विक्खम्भेसिन्ति अत्थो,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 37.

अनुप्पदातु पु॰, अनु + प + √दा का कर्तृ॰ कृ॰ [अनुप्रदातृ], **शा॰ अ॰** उन्मुक्त होकर अतिरिक्त दान देने वाला, **ला॰ अ॰** प्रोत्साहित करने वाला, प्रेरित करने वाला, उकसाने वाला – *सहितानं वा अनुप्पदाता समग्गारामो समग्गरतो ...,* दी॰ नि॰ 1.4; *अनुप्पदाताति सन्धानानुप्पदाता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.69; *भिन्नानं वा अनुप्पदाता,* म॰ नि॰ 1.360; *भिन्नानं ... असंसन्दनाय अनुप्पदाता ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).227.

अनुप्पदान/अनुप्पादान नपुं॰, अनुप्पदेति से व्यु॰, कर्तृ॰ कृ॰ [अनुप्रदान], **क.** देना, उपलब्ध कराना, दिलाना, लागू करना – ... *अनुप्पदानं ओसधीनं पटिमोक्खो इति वा इति,* दी॰ नि॰ 1.10; *मूलभेसज्जानं अनुप्पादनन्ति इमिना कायतिकिच्छानं दस्सेति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.86; *चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्ज-परिक्खारानुप्पदानत्थं पधानं,* अ॰ नि॰ 1(1).65; ... *अनुप्पदानत्थं पधानन्ति एतेसं ... अनुप्पदानत्थाय पधानं नाम दुरभिसम्भवन्ति दस्सेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.4; **ख.** दान, व्यय – *अनुप्पदानेनाति लञ्जदानेन,* जा॰ अट्ठ॰ 3.178; *सो मातुगामस्स सयनवत्थालङ्कारादिअनुप्पदानेन बहुपकारो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3. 167; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अलङ्कारानुप्पदान, आभिसानु॰, इस्सरियानु॰, उपायनानु॰, दानानु॰, पक्खभिक्खानु॰, पत्तानु॰, बलानु॰ आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **रत** त्रि॰, [अनुप्रदानरत], दान देने में आनन्द लेने वाला, दान देने के काम में पूरी तरह से लगा हुआ – *एको पुरिसो सद्धो दानपति अनुप्पदानरतो,* अ॰ नि॰ 2(2).219; *अनुप्पदानरतोति पुनप्पुनं दानं ददमानोव रमति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.174.

अनुप्पदिन्न त्रि॰, अनु + प + √दा का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुप्रदत्त], दिया हुआ, प्रदान किया हुआ – *बलञ्च भिक्खूनमनुप्पदिन्नं,* ..., खु॰ पा॰ 9; पे॰ व॰ 25; *बलञ्च भिक्खूनमनुप्पदिन्नन्ति इमिना समुत्तेजेति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 172; *अनुप्पदिन्ना बुद्धेन, सब्बेसं बीजसम्पदा,* अप॰ 1.153.

अनुप्पदेति/अनुपदेति अनु + प + √दा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रददाति], बदले में या अतिरिक्त रूप में देता है, प्रत्यर्पित करता है, वितरण करता है, आपूर्ति करता है – *उप्पन्नेसु किच्चकरणीयेसु तद्दिगुणं भोगं अनुप्पदेति,* दी॰ नि॰ 3.142; *यथिच्छितमनुप्पदेति,* मि॰ प॰ 200; – **सि** वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रददासि], तुम अनुप्रदान करते हो – *अपि नु तेसं अनुप्पदेसि खादनीयं वा भोजनीयं वा सायनीयं वा'ति,* स॰ नि॰ 1(1).189; – **मि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रददामि], मैं अनुप्रदान करता हूँ – *अप्पेकदा नेसाहं, भो गोतम, अनुप्पदेमि खादनीयं वा भोजनीयं वा सायनीयं वा'ति,* स॰ नि॰ 1(1).189; – **देन्त** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰ [अनुप्रददन्], अनुप्रदान करता हुआ, बदले में दे रहा – *अलङ्कारं अनुप्पदेन्तो दारेसु धम्मं चरति नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 5.120; – **देतु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रददातु], अनुप्रदान करे – *तेसं भवं राजा बीजभत्तं अनुप्पदेतु,* दी॰ नि॰ 1.120; – **देहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रदेहि], तूं अनुप्रदान कर – *अम्हाकञ्च कालेन कालं अनुप्पदेहि,* अ॰ नि॰ 1(1).139; – **दज्जुं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अनुप्रदद्युः], अनुप्रदान करें – *तमेनं सामिका रजकस्स अनुपदज्जुं,* स॰ नि॰ 2(1).119; – **य्यासि** विधि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रदद्याः], तू अनुप्रदान करे – *तेसञ्च धनमनुप्पदेय्यासि,* दी॰ नि॰ 3.44; – **दज्जेय्याम** विधि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ [अनुप्रदद्याम], हमें अनुप्रदान करना चाहिए – *अप्पेव नाम मयम्पि आयस्मन्तानं किञ्चिमत्तं अनुपदज्जेय्यामा'ति,* पारा॰ 385; – **दासि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रादासीत्], उसने अनुप्रदान किया – *महन्तञ्चस्स यसं अनुप्पदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.302; – **दंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, उन्होंने अनुप्रदान किया – *ते पनस्स सालीनं भागं अनुप्पदंसु,* दी॰ नि॰ 3.68; – **दस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रदास्यति], अनुप्रदान करेगा – *सचे मे याचमानस्स,* भवं नानुपदस्सति, सु॰ नि॰ 989; – **दस्साम** भवि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ [अनुप्रदास्यामः], हम लोग अनुप्रदान करेंगे – *मयं पन ते सालीनं भागं अनुप्पदस्सामा'ति,* दी॰ नि॰ 3.68; – **दातुं** निमि॰ कृ॰ [अनुप्रदातुं], अनुप्रदान करने के लिए – *अम्हाकञ्च कालेन कालं अनुप्पदातु'न्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).139; – **दत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ [अनुप्रदाय], अनुप्रदान करके – *दिगुणं धनमनुप्पदत्वापि सुरं पिवति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.30; – **दातब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ [अनुप्रदातव्य], अनुप्रदान किये जाने योग्य – *मूलञ्च अनुप्पदातब्ब'न्ति,* म॰ नि॰ 2.395.

अनुप्पन्न त्रि॰, उप्पन्न का निषे॰ [अनुत्पन्न], वह, जो उत्पन्न नहीं हुआ है या प्रकट नहीं हुआ है, वह, जिसका उदय नहीं हुआ है – *अनुप्पन्नं यसं उप्पादेन्तो अतिजातो,* जा॰ अट्ठ॰ 6. 210; *भगवा अनुप्पन्नस्स मग्गस्स उप्पादेता,* म॰ नि॰ 3.56; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).275; *अनुप्पन्नस्स हि लाभस्स उप्पादनं नाम न भारो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.112; – **पञ्ञत्ति** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनुत्पन्नप्रज्ञप्ति], अभी तक उत्पन्न नहीं हुए

विषय पर प्रज्ञप्त नियम – *अत्थि तत्थ पञ्ञत्ति, अनुपञ्ञत्ति, अनुप्पन्नपञ्ञत्ति*, परि॰ 1; *अयञ्हि अनुप्पन्नपञ्ञत्ति नाम अनुप्पन्ने दोसे पञ्ञत्ता*, परि॰ अट्ठ॰ 138; – **पुब्ब** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अनुत्पन्नपूर्व], पूर्व काल में अनुत्पन्न, वह, जिसकी उत्पत्ति पूर्वकाल में नहीं हुई है – *इतो पुब्बे याव सत्तमा राजकुलपरिवट्टा एवरूपं अनुप्पन्नपुब्बं*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 130; – **भोगुप्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनुत्पन्नभोगुत्पत्ति], पहले से अप्राप्त भोगसाधनों की प्राप्ति – *अदिन्नादाना ... अनन्तभोगता अनुप्पन्नभोगु - प्पत्तिता ...*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 23; – **वेवचन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनुत्पन्नविवचन], अनुत्पन्न शब्द का पर्याय – *असञ्जातस्साति इदं अनुप्पन्नवेवचनमेव*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.244.

अनुप्पबन्ध पु॰, अनु + प + √बन्ध से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अनुप्रबन्ध], सातत्य, निरन्तरता, लगातारपन, अविच्छिन्न प्रवृत्ति – *सुखुमट्ठेन अनुमज्जनसभावट्ठेन च घण्टानुरवो विय अनुप्पबन्धो विचारो*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 160; *सतस्स उप्पन्नध म्मानं अनुप्पबन्धवसेन अविच्छेदाय*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).215; – **ता** स्त्री॰, अनुप्पबन्ध का भाव॰ [अनुप्रबन्धता], सातत्यपन, निरन्तरता, अविच्छिन्न प्रवृत्ति की अवस्था या स्थिति – *अनुप्पबन्धता तेसं, सन्ततीति पवुच्चति*, अभि॰ अव॰ 90; – **पच्चुपट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुप्रबन्धप्रत्युपस्थान], निरन्तरता अथवा अविच्छिन्नता से उदित होने वाला – *चित्तस्स अनुपबन्धपच्चुपट्ठानो*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 160; अभि॰ अव॰ 20; – **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनुप्रबन्धभाव], निरन्तरता की दशा – *सुखवोकिण्णत्ता पन अनुपबन्धाभावा च दुज्जानमेतं पुथुज्जनेहीति*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.55; पाठा॰ अनुप्पबन्धभावा.

अनुपबन्धति अनु + प + √बन्ध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुप्रबध्नाति], लगातार जारी रहता है; – **न्त** वर्त॰ कृ॰, लगातार जारी रहता हुआ – *महामेघो अपरापरं अनुप्पबन्धो अभिवस्सेय्य*, मि॰ प॰ 135; पाठा॰ अनुप्पबन्धन्तो; – **न्धेय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, लगातार जारी रहें – *अन्वास्सवेय्युं अनुबन्धेय्युं अज्झोत्थरेय्युं*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 420.

अनुप्पबन्धनता स्त्री॰, अनुप्पबन्धन का भाव॰ [अनुप्रबन्धता], निरन्तरता, लगातारपन – *मेघस्स, भन्ते, अनुप्पबन्धतायाति*, मि॰ प॰ 135.

अनुप्पबन्धना स्त्री॰, अनुप्पबन्धन से व्यु॰ [अनुप्रबन्धन], लगातारपन या निरन्तरता – *ठपना सण्ठपना अनुसंसन्दना अनुप्पबन्धना दळ्हीकम्मं कोधस्स*, पु॰ प॰ 124; विभ॰ 412; *अनुप्पबन्धनाति पुरिमेन सद्धिं पच्छिमस्स घटना*, विभ॰ अट्ठ॰ 464; *अनुप्पबन्धता तेसं, सन्ततीति पवुच्चति*, अभि॰ अव॰ 90.

अनुप्पबन्धापेय्युं अनु + प + √बन्ध के प्रेर॰ का विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, लगातार जारी रखने को प्रेरित करें, निरन्तर बनाए रखने को कहें – *यदि तत्थ ... अपरापरं अनुप्पबन्धापेय्युं अभिवस्सापेय्युं*, मि॰ प॰ 135.

अनुप्पयोग पु॰, [अनुप्रयोग], पूर्ववर्ती शब्द के ही समान अर्थ में दूसरे शब्द का अतिरिक्त रूप में प्रयोग – *ब्यापाराभेदे तु सामञ्ञवचनस्सेव ब्यापकत्ता अनुपयोगो भवति, ओदनं भुञ्ज, यागुम्पिव, धाना खादेत्वेवायमञ्ञो हरति*, मो॰ व्या॰ 6.13; पाठा॰ अनुपयोगो; – **वचन** नपुं॰, कर्म॰ स॰, पूर्ववर्ती शब्द के समान अर्थ में प्रयुक्त शब्द – *तं सरूपतो दस्सेतुं असम्मोहत्थं अनुपयोगवचनं*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.278.

अनुप्पवच्चति देखिए अनुपवेच्चति के अन्त॰.

अनुप्पाद पु॰, उप्पाद का निषे॰ [अनुत्पाद], **शा॰ अ॰** उत्पत्ति का अभाव, अप्रादुर्भाव, अस्तित्व में न आना, निरोध, **ला॰ अ॰** निर्वाण – *यथा च पहीनस्स कामच्छन्दस्स आयतिं अनुप्पादो होति तञ्च पजानाति*, म॰ नि॰ 1.78; *निरोधो होतीति अनुप्पादो होति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).204; *उप्पादो सङ्खारा, अनुप्पादो निब्बानन्ति अभिञ्ञेय्यं*, पटि॰ म॰ 14; *उप्पादो भयं, अनुप्पादो खेमन्तिआदि विपक्खपटिपक्खवसेन उभयं समासेत्वा ...*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.222; – **दाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाय छन्दं जनेति*, म॰ नि॰ 2.213; – **दा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ [अनुत्पादात्], उत्पत्ति न होने के कारण, निरोध हो जाने से – *अनुप्पादा वा तथागतानं*, अ॰ नि॰ 1(1).321; – **दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ [अनुत्पादे], उत्पत्ति न होने पर – *खयेञाणं अनुप्पादेञाणं*, दी॰ नि॰ 3.171; – **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुत्पादधर्म], पुनः पुनर्जन्म को ग्रहण न करने वाला – *... अनभावंकतो आयतिं अनुप्पादधम्मो'ति पजानाति*, दी॰ नि॰ 3.216; पारा॰ 4; – **धम्मता** स्त्री॰, भाव॰ [अनुत्पादधर्मता], पुनः पुनर्जन्म ग्रहण न करने की अवस्था या स्थिति – *सा मग्गस्स भावितत्ता अनुप्पादधम्मतं आपज्जनेन खीणा*, उदा॰ अट्ठ॰ 140; – **निरोध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनुत्पादनिरोध], पूर्णरूप से पुनर्जन्म की समाप्ति या निरोध – *असेसं निस्सेसं विरागेन अरियमग्गेन यो अनुप्पादनिरोधो, तं निब्बानन्ति*, उदा॰ अट्ठ॰ 174; 40; 99.

अनुप्पादन नपुं॰, उप्पादन का निषे॰ [अनुत्पादन], उत्पन्न न करना, उपेक्षा, उत्पादन का न रह जाना – *तम्पि*

अनुप्पन्नुप्पन्नानं अकुसलानं अनुप्पादनपहानवसेन अनुप्पन्नुप्पन्नानं ..., उदा॰ अट्ठ॰ 248.

अनुप्पादनिय त्रि॰, उप्पादनिय का निषे॰ [अनुत्पादनीय], उत्पादन न करने योग्य (निर्वाण का पद) – *अनुप्पादनीयं, महाराज, निब्बानं, तस्मा न निब्बानस्स उप्पादाय हेतु अक्खातो'ति,* मि॰ प॰ 251.

अनुप्पादा अनुपादा का अप॰, अनुपादा के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुप्पादातु अनुप्पदातु के स्थान पर अप॰, अनुप्पदातु के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुप्पादान नपुं॰, द्रष्ट॰ अनुप्पदान के अन्त॰.

अनुप्पादित त्रि॰, उ + √पद के प्रेर॰ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनुत्पादित], उत्पन्न नहीं कराया गया – *अत्तनो केसादीसु अनुप्पादितरूपावचरज्झानोति अत्थो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 235.

अनुप्पादेति द्रष्ट॰ अनुप्पदेति के अन्त॰.

अनुप्पिय[1] नपुं॰, व्य॰ सं॰, द्रष्ट॰ अनुपिय के अन्त॰.

अनुप्पिय[2] त्रि॰/क्रि॰ वि॰ [अनुप्रिय], इच्छित, मनोरम, मनपसन्द, मन को अच्छा लगने वाला – *अनुप्पियञ्च यो आह, अपायेसु च यो सखा,* दी॰ नि॰ 3.142; *अनुप्पियभाणीति अनुप्पियं भणति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.119; – **भाणी** त्रि॰, [अनुप्रियभाणी], मनपसन्द बात बोलने वाला, मीठी वाणी बोलने वाला – *अनुप्पियभाणी अमित्तो मित्तपतिरूपको वेदितब्बो,* दी॰ नि॰ 3.141; *अनुप्पियभाणीति अनुप्पियं भणति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.119; – **भाणिता** स्त्री॰, भाव॰ [अनुप्रियभाणित्व], मन को लुभाने वाली बात बोलने की प्रकृति या दशा, चाटुकारिता, चापलूसीपन – *अनुप्पियभाणितातिं पच्चयवसेन पुनप्पुनं पियवचनभणना,* महानि॰ अट्ठ॰ 340; ... *अनुप्पियभाणिता चाटुकम्यता मुग्गसूप्यता पारिभट्यता,* विभ॰ 404; *अनुप्पियभाणितातिं सच्चानुरूपं वा ... पुनप्पुनं पियभणनमेव,* विभ॰ अट्ठ॰ 456.

अनुप्पिलवन नपुं॰, उप्पिलवन का निषे॰ [अनुत्प्लवन], ऊपर की ओर न उछलना, उछलकूद का अभाव, सुख में आनन्दित हो अत्यधिक न इतराना – *सुखे अनुप्पिलवट्ठेन पण्डितो,* महानि॰ अट्ठ॰ 134.

अनुप्पीळ त्रि॰, उप्पीळ का निषे॰ [अनुत्पीड़], उत्पीड़न से मुक्त, विपत्तियों या बाधाओं से मुक्त, अकण्टक – *खेमट्ठिता जनपदा अकण्टका अनुप्पीळा,* दी॰ नि॰ 1.120; *सुखी अनुप्पीळ पसास मेदिनिं* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.392.

अनुफरण नपुं॰, अनु + √फर से व्यु॰, कर्तृ॰ कृ॰ [अनुस्फुरण], चारों ओर फैली हुई चमक या प्रकाश, अत्यधिक फैली हुई दमक अथवा आग की चिनगारियों का प्रकाश – *अनुफरणट्ठेन महा आनुभावो अस्सातिं महानुभावो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.108; ... *समन्ता सतयोजनानुफरणच्चिवेगा* ..., मि॰ प॰ 149.

अनुफरति अनु + √फर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुस्फुरति], फैलता है, प्रसृत होता है, चारों ओर व्याप्त हो जाता है, सभी ओर फैल जाता है – *तिलफलमत्तोपि आहारो जिव्हग्गे ठपितो सब्बकायं अनुफरति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.36; – **रि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, चारों ओर भर गयी – *पूवखण्डं मुखे ठपितमत्तमेव सत्तरसहरणीसहस्सानि अनुफरि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.78.

अनुफुसायति अनुफुस के ना॰ धा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, चारों ओर फैला सा देता है, अतिरिक्त रूप में बिखेर देता है – *यस्मा च वस्सती देवो, हिमञ्चानुफुसायति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.231.

अनुबद्ध / अनुबन्ध[1] त्रि॰, अनु + √बन्ध का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुबद्ध], **शा॰ अ॰** पीछे की ओर से बांधा हुआ, **ला॰ अ॰ क.** पीछे अथवा आगे विद्यमान, साथ में जुड़ा हुआ या संलग्न – *अनुबन्धे जरामरणे, तस्स घाताय घटितब्बं,* थेरी॰ 495; *देवलोके मनुस्से वा, अनुबन्धा इमे गुणा,* अप॰ 1.339; *अनुबन्धो होति ओतारापेक्खो ओतारं अलभमानो,* स॰ नि॰ 1(1).144; म॰ नि॰ 3.334; *मनुस्सा उच्चासद्दा ... पण्डोलभारद्वाजं पिट्ठितोपिट्ठितो अनुबन्धा,* चूळव॰ 229; स॰ नि॰ 2(2).176; *तथा खो पनस्स चारो च विहारो च अनुबुद्धो होति,* स॰ नि॰ 2(2).188; पाठा॰ अनुबुद्धो; **ला॰ अ॰ ख.** अनुसृत, पीछा किया जा रहा – ... *जनपदमनुस्सेहि अनुबद्धा पलायमाना अरञ्ञं पविसित्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 145; पाठा॰ अनुबद्धा.

अनुबन्ध[2] पु॰, [अनुबन्ध], **क.** अनुप्रबन्ध, निरन्तरता, लगातारपन – *पपञ्चो नाम वुच्चति अनुबन्धो,* नेत्ति॰ 33; **ख.** *केवल व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में* – प्रत्ययों में प्रतीकात्मक रूप से जुड़े हुए अक्षर, जिनका वास्तविक प्रयोग में लोप हो जाता है – *अनुबन्धो तु पकत्तानिवत्ते नस्सनक्खरे,* अभि॰ प॰ 980; *ञनुबन्धो,* मो॰ व्या॰ 1.18; *च-ज इच्चेतेसं ... होन्ति णानुबन्धे पच्चये परे,* क॰ व्या॰ 625.

अनुबन्धति अनु + √बन्ध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुबध्नाति], किसी के कदमों के पीछे लग जाता है, उत्प्रेरित करता है, पीछे लग जाता है, मानसिक तौर पर

किसी के साथ बंध जाता है - *अयं मं अगणेत्वा किन्नरिं अनुबन्धति*, जा. अट्ठ. 2.192; ... *कायिकम्पि चेतसिकम्पि दुक्खमनुबन्धतीति*, ध. प. अट्ठ. 1.15; - **न्ति** वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुबध्नन्ति], - *भिक्खुनियो वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धन्ति*, पाचि. 447; *अतिविय जेगुच्छबीभच्छदस्सना ते अनुबन्धन्ति*, पे. व. अट्ठ. 48; - **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., पीछे लगा हुआ, साथ में लगा हुआ - *तं आणमनुबन्धन्तो, जायते तदनन्तरं*, अभि. अव. 164; *एळारं अनुबन्धन्तो, दक्खिणद्वारमागमि*, म. वं. 25.68; - **मानं** वर्त. कृ., आत्मने. द्वि. वि., ए. व. - *अन्वदेवाति तं अनुबन्धमानमेव*, अ. नि. अट्ठ. 3.331; - **धेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *या पन भिक्खुनी वुट्ठापितं पवत्तिनिं द्वे वस्सानि नानुबन्धेय्य, पाचित्तिय'न्ति*, पाचि. 447; - **धेय्यं** विधि., उ. पु., ए. व. - *यंनूनाहं इमं भिक्खुं पिट्ठितो पिट्ठितो अनुबन्धेय्यं*, महाव. 45; - **न्धि**[1] अद्य., प्र. पु., ए. व. - *अथ खो उत्तरो माणवो सत्तमासानि भगवन्तं अनुबन्धि छायाव अनपायिनी*, म. नि. 2.343; *दारकेहि वनं गन्त्वा अनुबन्धि ससे बहू*, म. वं. 23.65; - **न्धि**[2] अद्य., म. पु., ए. व. - *तत्थ अनुसरीति अनुबन्धि*, जा. अट्ठ. 4.242; - **न्धिसुं** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *ते पेसिता राजदूता, पिट्ठितो अनुबन्धिसुं*, सु. नि. 414; - **न्धिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. - *इतो वा एत्तो वा पलायन्ते तुम्हे अनुबन्धिस्सतीति* ..., पे. व. अट्ठ. 92; - **न्धिस्ससि** म. पु., ए. व. - *सचे मं त्वं, अय्ये, द्वे वस्सानि अनुबन्धिस्ससि*, ..., पाचि. 461; - **न्धिस्सं** उ. पु., ब. व. - *सामिकं अनुबन्धिस्सं, सदा कासायवासिनी*, जा. अट्ठ. 7.265; - **न्धिस्साम** उपरिवत् - *आवुसो आनन्द, सत्था एककोव गतो, मयं अनुबन्धिस्सामा'ति*, उदा. अट्ठ. 202; - **न्धितुं** निमि. कृ. - *न खो, आनन्द, अरहति सावको सत्थारं अनुबन्धितुं*, म. नि. 3.157; - **न्धित्वा** पू. का. कृ. - *सचाहं इध वसिस्सामि, ञातका मं अनुबन्धित्वा पक्कोसिस्सन्ती'ति*, ध. प. अट्ठ. 1.354; - **न्धितब्ब** त्रि., सं. कृ. - *सो पुग्गलो अनापुच्छा पक्कमितब्बं, नानुबन्धितब्बो*, म. नि. 1.152.

अनुबन्धन नपुं., [अनुबन्धन], लगाव, आसक्ति, प्रगाढ़ सम्बन्ध, प्रवृत्ति, मेल-जोल - *महाजनेन अनुबन्धनदुक्खञ्चेव वनपरियोगाहनदुक्खञ्चत्र* ..., जा. अट्ठ. 7.288; *अत्थि च मे इदं सुत्तकं पट्ठितो पट्ठितो अनुबन्ध'न्ति*, स. नि. 1(2). 206; स. उ. प. के रूप में गन्धानुबन्धन के अन्त. द्रष्ट.; - **क** त्रि., लगावयुक्त, आसक्त, मेलजोल करने वाला - *अहो अम्हाकं अय्यो'ति एवं लपनके अनुबन्धनके सस्नेहे करोति*, पारा. अट्ठ. 2.69.

अनुबन्धना स्त्री., क्रमबद्ध क्रम में उपन्यसन, सिलसिलेदार ढङ्ग से रखा जाना - *गणना अनुबन्धना, फुसना ठपना सल्लक्खणा*, पारा. अट्ठ. 2.21; विसुद्धि. 1.266; *अनुबन्धनाति अनुवहना*, विसुद्धि. 1.266.

अनुबल नपुं., [अनुबल], अतिरिक्त शक्ति, सहायक बल - *ममानुबलं भविस्ससि*, मि. प. 130.

अनुबलप्पत्त त्रि., [अनुबलप्राप्त], वह, जिसे सेना की नई टुकड़ी का बल प्राप्त हो गया है - *पच्छा अनुबलप्पत्तो दप्पुल्लो मलयं गतो*, चू. वं. 48.98.

अनुबलप्पदान नपुं., तत्पु. स. [अनुबलप्रदान], पीछे से बल को दे देना, नैतिक या आत्मसंयम के बल का प्रदान - *अनुवादो अनुवदना अनुल्लपना अनुभणना अनुसम्पवङ्कता अब्भुस्सहनता अनुबलप्पदानं*, चूळव. 196.

अनुबलप्पदायक त्रि., [अनुबलप्रदायक], अनुबल या अतिरिक्त शक्ति को प्रदान करने वाला - *ओसधानं वा अनुबलप्पदायिकाति कत्वा ओसधी'ति* ..., पे. व. अट्ठ. 60.

अनुबुज्झति अनु + √बुध का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुबोधति/अनुबोधते], जागता है, जानता है, समझता है, सचेत होता है, बाद में स्मरण करता है, संबोधि प्राप्त करता है - *यो च उप्पतितं अत्थं, न खिप्पमनुबुज्झति*, जा. अट्ठ. 3.114; 234; 388; थेरी. अट्ठ. 117; *यो पुब्बे कतकल्याणो, कतत्थो मनुबुज्झति*, जा. अट्ठ. 3.342; *तत्थ अन्वेतीति अन्वयो, जानाति, अनुबुज्झतीति अत्थो*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).338; - **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व., समझते है, स्मरण करते है - *अनुबुज्झन्तीति - बोज्झङ्गा*, पटि. म. 292; - **न्तु** अनु., प्र. पु., ए. व. [अनुबोधन्तु], जानें, समझें, प्रत्यक्ष करें - *तत्थ अनुमञ्ञन्तूति अनुबुज्झन्तु, साधुकं सुत्वा पच्चक्खं करोन्तूति अत्थो*, जा. अट्ठ. 5.318; - **ज्झि** अद्य., प्र. पु., ए. व., उसने जाना, बूझा, प्रत्यक्ष किया - *सब्बं तं बोधिञाणेन बुज्झि अनुबुज्झि* ..., महानि. 343; - **ज्झिं** अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने जाना या प्रत्यक्ष किया - *सुखमनुबोधिन्ति एवं किलेससेनं जिनित्वा अहं एककोव झायन्तो सुखं अनुबुज्झिं सच्छिअकासिं*, अ. नि. अट्ठ. 3.299; - **बोधिं** अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने साक्षात्कार किया, बोधि ज्ञान में जाना - *एकोहं झायं सुखमनुबोधिं*, अ. नि. 3(2).40.

अनुबुज्झन नपुं., अनु + √बुध से व्यु., क्रि. ना. [अनुबोधन], ज्ञान, समझ, अन्तर्दृष्टि, अनुस्मरण, बोध -

एकत्ते अनुबुज्झनट्ठो अभिञ्ञेय्यो, पटि॰ म॰ 17; *एकत्ते अनुबुज्झनट्ठं बुज्झन्तीति-बोज्झङ्गा,* पटि॰ म॰ 297.

अनुबुद्ध[1] त्रि॰, अनु + √बुध का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुबुद्ध], **क.** जान लिया गया, समझा हुआ – *अनुबुद्धा इमे धम्मा, गोतमेन यसस्सिना,* दी॰ नि॰ 2.93; *सचे मग्गं अनुबुद्धं, खेमं अमतगामिनं,* स॰ नि॰ 1(1).145; *सुणन्तु धम्मं विमलेनानुबुद्धं,* स॰ नि॰ 1(1).163; म॰ नि॰ 1.227; *विमलेनानुबुद्धन्ति इमे सत्ता रागादिमलानं ... सम्मासम्बुद्धेन अनुबुद्धं चतुसच्चधम्मं सुणन्तु ताव भगवाति याचति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.175; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).81; **ख.** वह, जिसके द्वारा जान लिया गया है या जिसे अनुबोध प्राप्त हो चुका है – *सचे त्वं एवं अनुबुद्धो, मा सावके उपनेसि, ... सावकानं धम्मं देसेसि,* म॰ नि॰ 1.414; ... *अनुबुद्धोति सचे त्वं एवं अत्तनाव चत्तारि सच्चानि अनुबुद्धो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).308; *अनुविदितो'ति अनुबुद्धो वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.140.

अनुबुद्ध[2] पु॰, [अनुबुद्ध], बुद्ध के अधीन रहने वाला भिक्षु शिष्य, वह, जिसने बुद्ध के ज्ञान-प्राप्ति के उपरान्त ज्ञान पाया है, बुद्ध का ज्ञानी शिष्य – *अनुबुद्धेन धम्मसेनापतिना सद्धिं मन्तेती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.390; *निब्बानं परमं वदन्ति ... पच्चेकबुद्धा च अनुबुद्धा चाति, इमे तयो बुद्धा निब्बानं ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.136; *अनुबुद्धपच्चेकबुद्धसुतबुद्धसङ्खेसु वा बुद्धेसु सेट्ठोति बुद्धसेट्ठो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 143; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अननु॰, बुद्धानु॰, सानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुबुद्धि स्त्री॰, [अनुबुद्धि], अनुमान, निष्कर्ष, तर्क – *धम्मन्वयोति पच्चक्खञाणसङ्खातस्स धम्मस्स अनुनयो अनुमानं, अनुबुद्धीति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.251; *अन्वयाति अनुबुद्धियो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).280.

अनुबोध पु॰, [अनुबोध], ज्ञान, स्पष्ट अन्तर्दृष्टि, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयोग में प्राप्त, अननु॰ (अज्ञान), मग्गानु॰ (मार्ग का ज्ञान), सच्चानु॰ (सत्य का ज्ञान) के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुबोधन नपुं॰, [अनुबोधन], ज्ञान कराना, जागरूक करना, प्रत्यभिज्ञान की ओर ले जाना – *एकत्ते अनुबोधनट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 17; *अनुबोधनट्ठेन बोज्झङ्गा,* पटि॰ म॰ 292.

अनुबोधि स्त्री॰, [अनुबोधि], बोधिज्ञान, धर्मों के विषय में आन्तरिक ज्ञान; – **पक्खिय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुबोधिपक्षीय], बोधिपक्षीय धर्म, बोधिज्ञान के अङ्ग – एकत्ते अनुबोधिपक्खियट्ठो अभिञ्ञेय्यो, पटि॰ म॰ 17; अनुबोधिपक्खियट्ठेन बोज्झङ्गा, पटि॰ म॰ 292.

अनुबोधेति अनु + √बुध के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुबोधयति], – **अनुबोधेन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अनुबोधयन्ति], अनुबोध कराते हैं, ज्ञान कराते हैं – *अनुबोधेन्तीति – बोज्झङ्गा,* पटि॰ म॰ 292.

अनुब्बजति / अनुवजति अनु + √वज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुव्रजति], साथ-साथ या सहारे से चलता है, अनुगमन करता है; – **जामि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुव्रजामि], चलता हूँ, अनुगमन करता हूँ – *एवम्पहं कामपङ्के ब्यसनो, न भिक्खुनो मग्गमनुब्बजामि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.357; *मग्गन्ति तुम्हाकं ओवादानुसासनीमग्गं नानुब्बजामि पब्बजितुं न सक्कोमि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.358; – **जिस्साम** भवि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ [अनुव्रजिष्याम], हम अनुसरण करेंगे, चलेंगे – *ते तं अनुवत्तिस्सामाति ते मयम्पि तुम्हेयेव अनुवत्तिस्साम, अनुपब्बजिस्सामाति अत्थो, "अनुवजिस्सामा"तिपि पाठो, तस्स अनुगच्छिस्सामाति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.234; – **जे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुव्रजेत्], अनुसरण करे, चले – *साहं कथं नानुवजे पजानन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.439.

अनुब्बत त्रि॰, [अनुव्रत], निष्ठावान्, श्रद्धालु – **ता** स्त्री॰, निष्ठावती या साध्वी नारी, अनुकूल रहने वाली भार्या – *यस्स भरिया तुल्यवया समग्गा, अनुब्बता धम्मकामा पजाता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.68; *अनुब्बताति अनुवत्तिता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.70; *तं चाहं नातिमञ्ञामि, रामं सीतावनुब्बता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.331.

अनुब्बिग्ग त्रि॰, उब्बिग्ग का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनुद्विग्न], वह, जिसका मन उद्विग्न या बेचैन न हो, शान्त मन वाला, व्याकुलता-रहित – *अरञ्ञगतोपि ... अभीतो अनुब्बिग्गो अनुस्सङ्की ... मिगभूतेन चेतसा विहरामीति,* चूळव॰ 320; उदा॰ 90; *अच्छम्भितो अनुब्बिग्गो, अतिरोचति सदेवकेति,* मि॰ प॰ 308.

अनुब्बिलावितत्त / अनुप्पिलावितत्त नपुं॰, उब्बिलावितत्त का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अनौद्विल्यत्व], चित्त में दर्प या अहंभाव न रहने की अवस्था, आनन्द भरी उत्तेजना के न रहने की दशा – *महन्ते इस्सरिये ... अनुप्पिलावितत्तं ततियं साधु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.411.

अनुब्रूहन नपुं॰, [अनुबृहण], वृद्धि, सुदृढ़ीकरण, पुष्टि – ... *सम्मापटिपत्तिया अनुब्रूहनं,* विसुद्धि॰ 1.61; 78; *अपिस्सूति अनुब्रूहनत्थे निपातो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.50; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).78.

अनुब्रूहित अनु + √ब्रूह का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुवृहित], बढ़ा हुआ, सुदृढ़ीकृत, उगा हुआ, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्रयुक्त, द्रष्ट॰ उपेक्खानुब्रूहित के अन्त॰.

अनुब्रूहेति अनु + √ब्रूह के प्रेर. के क्रि. रू. [अनुब्रंहयति, अनुब्रह्यति, अनुबर्हयति], धीरे-धीरे वृद्धि को प्राप्त कराता है, स्वयं को किसी काम में पूरी तरह लगा देता है, आचरण करता है; – **हयं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., क्रमशः बढ़ता हुआ – *सानुं पटिगमिस्सामि, विवेकमनुब्रूहय'न्ति,* थेरगा. 23; 27; जा. अट्ठ. 1.277; *विवेकमनुब्रूहयन्ति पटिपस्सद्धिविवेकं फलसमापत्तिकायविवेकञ्च परिब्रूहयन्तो, तस्स वा परिब्रूहनहेतु गमिस्सामीति,* थेरगा. अट्ठ. 1.83; जा. अट्ठ. 1.278; – **यमानो** वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. पु., ए. व., आचरण करता हुआ, क्रमशः बढ़ाता हुआ – *सत्थु सावको तस्स सत्थु विवेकमनुब्रूहयमानो विवित्तं सेनासनं भजति,* म. नि. 3.158; – **हि** अनु., म. पु., ए. व., क्रमशः बढ़ाओं, अभ्यास करो – *तमेव अनुब्रूहेहि, मा चित्तस्स वसं गमि,* थेरीगा. 163; – **हये**[1] विधि., प्र. पु., ए. व. [अनुब्रंहयेत], बढ़ाए, अभ्यास करे – *सक्कारं नाभिनन्देय्य, विवेकमनुब्रूहये,* ध. प. 75; – **हये**[2] विधि., म. पु., ए. व. [अनुब्रंहयेः], तुम्हें बढ़ाना चाहिए, अभ्यास करना चाहिए – *येन अत्थेन आगच्छि, तमेवमनुब्रूहये'ति,* स. नि. 1(1).207; – **हयिं** अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने अभ्यास किया, वृद्धि को प्राप्त कराया – *तञ्ञेवाधिपतिं कत्वा, संवेगमनुब्रूहयिं,* चरिया. 394; – **हेस्सामि** भवि., उ. पु., ए. व., मैं वृद्धि को प्राप्त कराऊंगा, अभ्यास करूंगा – *पब्बजित्वा विवेकमनुब्रूहेस्सामि,* जा. अट्ठ. 3.27; – **हेस्साम** भवि., उ. पु., ब. व., हम वृद्धि को प्राप्त कराएंगे – *इमं अन्तोवस्सं सुञ्ञागारं अनुब्रूहेस्सामा'ति,* जा. अट्ठ. 3.164; – **हेतुं** निमि. कृ., वृद्धि प्राप्त कराने हेतु – *इदानि मया विवेकमनुब्रूहेतुं वट्टति,* जा. अट्ठ. 1.12.

अनुभणना स्त्री., बाद में बोलकर की गई पुष्टि, वाणी द्वारा अनुमोदन या समर्थन – *यो तत्थ अनुवादो ... अनुभणना ... अनुबलप्पदानं – इदं वुच्चति अनुवादाधिकरणं,* चूळव. 196.

अनुभव पु., [अनुभव], अनुभव – *अनुब्भवो ति, अनुभवनं अनुभवो, किन्तं परिभुञ्जनं,* सद्द. 1.69.

अनुभवति / अनुभोति क. अनु + √भू का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुभवति], प्राप्त करता है, सक्षम वा समर्थ होता है, सुख या दुख का अनुभव करता है – *बीजानुरूपं बीजानुच्छविकमेव फलं हरति गण्हाति अनुभवति,* जा. अट्ठ. 2.169; *यं सो पुरिसो बलीबद्दे दुक्खापेत्वा एवरूपं सुखं अनुभवति,* मि. प. 257; – **वामि** वर्त., उ. पु., ए. व., – *इदानि तव पादे परिचरमाना एवरूपं सम्पत्तिं अनुभवामि,* जा. अट्ठ. 3.367; – **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व., सक्षम होते हैं, योग्य होते हैं – *देवा नानुभवन्ति दस्सनाया'ति,* उदा. 91; *नानुभवन्ति दस्सनायाति ... दट्ठुं नानुभवन्ति न अभिसम्भुणन्ति न सक्कोन्ति,* उदा. अट्ठ. 132; *कलम्पि ते नानुभवन्ति सोळसिं,* अ. नि. 3(1).2; – **भवं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. [अनुभवन्], अनुभव करता हुआ – *एवं परिभवं अभिभवं अनुभवं पभवति पहोति ...,* सद्द. 1.72; – **मानो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., आत्मने., अनुभव करता हुआ – *एवं सत्था ... पुञ्ञं अनुभवमानोव आगमासि,* ध. प. अट्ठ. 1.355; – **वेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., अनुभव करे – *राजा ततोनिदानं किञ्चि सुखं अनुभवेय्य,* मि. प. 258; – **वि** अद्य., प्र. पु., ए. व. [अन्वभूत्], अनुभव किया – *राजकुमारोपि तस्मिं गते पितरं मारापेत्वा महन्तं यसं अनुभवि,* जा. अट्ठ. 5.255; – **विं** अद्य., उ. पु., ए. व. [अन्वभूवम्], मैंने अनुभव किया – *चक्कवत्ती महारज्जं, बहुसोनुभविं अहं,* अप. 2.155; – **विंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व., [अन्वभूवन्], अनुभव किये – *दिट्ठधम्मिकं भोगञ्च यसञ्च अनुभविंसू'ति,* मि. प. 269; – **वित्वा** पू. का. कृ. [अनुभूय], *ताहि सद्धिं दिब्बसम्पत्तिं अनुभवित्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.3; **ख**. – **भोति** अनु + √भू का वर्त., प्र. पु., ए. व., उपरिवत् – *कल्यानकम्मकारी कल्याणं फलमनुभोति, पापकारी च पापकमेव हीनं लामकं अनिट्ठफलं अनुभोति,* जा. अट्ठ. 2.169; *भयेन अरञ्ञे महादुक्खं अनुभोति,* जा. अट्ठ. 2.211; – **त्वा** पू. का. कृ., अनुभव करके – *देवलोके मनुस्से च, अनुभोत्वा उभो यसे,* अप. 2.106; – **मि** वर्त., उ. पु., ए. व., मैं अनुभव करता हूँ – *अनुभोमि विमानस्मिं, तञ्च दानि परित्तकं,* पे. व. 68, (पृ.) 98; *अनुभोमि इदं रज्जं, फीतं धरणिमुत्तम'न्ति,* जा. अट्ठ. 3.364; – **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. [अनुभवन्ति], अनुभव करते हैं – *उभोपि ब्यसनानि अनुभोन्ति,* थेरीगा. 217; – **म** वर्त., उ. पु., ब. व., हम अनुभव करते हैं – *मयं पुत्तदारं पहाय एतस्सत्थाय दुब्भोजनदुक्खसेय्यादीनि अनुभोम,* उदा. अट्ठ. 269; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. [अनुभवन्], अनुभव करता हुआ – *सम्पराये च अपायदुक्खं अनुभोन्तो सो पापो पापानियेव पस्सति,* ध. प. अट्ठ. 2.9; – **हि** अनु., म. पु., ए. व., तुम अनुभव करो – *इमाय मणिपूजाय, अनुभोहि महायसं,* अप. 2.47; – **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व., उसने अनुभव किया था – *इति सो ... महासम्पत्तिं अनुभोसि,* ध. प. अट्ठ. 1.100; – **सिं** अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने अनुभव किया – *सम्पत्तिमनुभोसिं,* अप. 2.125; पाठा. अनुभोमहं; –

स्सति भवि., प्र. पु., ए. व., अनुभव करेगा - *कत्तिकं नानुभोस्सतीति,* जा. अट्ठ. 1.477; - **हिसि** भवि., म. पु., ए. व., तुम अनुभव करोगे - *अनुभोहिसि कामयुत्तो,* थेरीगा. 512.

अनुभवन नपुं., अनु + √भू का कृ. ना. [अनुभवन], अनुभव करना, सुख या दुख की वेदनाओं का संवेदन, कामभोगों का आस्वाद - *अनुभवनन्ति परिभुञ्जनं,* सद्द. 1.86; *इमस्स मे दुक्खस्स अनुभवनत्थाय पुब्बनिमित्तं अहोसि,* जा. अट्ठ. 7.338; *तस्स नन्दनवने सम्पत्तिं अनुभवनकालो विय तथागतस्स* ..., म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.155; स. उ. प. के रूप में इट्ठानिट्ठानुभवन, कम्मविपाकानु., गन्धानु., दुक्खानु., सम्पत्तानु. के अन्त. द्रष्ट.; - **ट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [अनुभवनस्थान], अनुभव का स्थल या विषय - *बहूनं नेरयिकसत्तानं कम्मकरणानुभवनट्ठानं मित्तविन्दकस्स ... हुत्वा उपट्ठासि,* जा. अट्ठ. 4.3; द्रष्ट. कम्मकरण के अन्त.; - **योग्ग** त्रि., [अनुभवनयोग्य], सुख या दुख का अनुभव किये जाने योग्य - *इट्ठस्स च अनिट्ठस्स च अनुभवनयोग्गं,* पे. व. अट्ठ. 198; - **रस** त्रि., ब. स., अनुभव करने की क्रिया करने वाला / वाली - *अनुभवनरसता पन सुखवेदनायमेव लब्भती'ति ... सब्बा अनुभवनरसा'ति वत्वा अयमत्थो दीपितो,* ध. स. अट्ठ. 155; - **लक्खण** त्रि., ब. स. [अनुभवनलक्षण], वह, जिसका लक्षण अनुभव करना हो - *वेदना अनुभवनलक्खणा चा'ति,* मि. प. 61; *अनुभवनलक्खणा वेदना, विसयरसम्भोगरसा, सुखदुक्खपच्चुपट्ठाना, फस्सपदट्ठाना,* उदा. अट्ठ. 35.

अनुभवितु पु., अनु + √भू से व्यु., कर्तृ. कृ., अनुभव करने वाला, भोगों में सुख अनुभव करने वाला - ... *सुखं वा अनुभविता सीलेन वा उपोसथकम्मेन वा'ति,* मि. प. 269; *अनुभवती ति अनुभविता* ..., सद्द. 71.

अनुभवीयते अनु + √भू के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुभूयते], अनुभव किया जाता है - *अनुभवीयते ति सम्पत्ति पुग्गलेन* ..., सद्द. 1.6; - **वियमान** वर्त. कृ., अनुभव किया जा रहा - *अत्तना अनुभवियमानं दुक्खं थेरस्स पवेदेसि,* पे. व. अट्ठ. 29.

अनुभाग पु., [अनुभाग], अपर भाग, बचा हुआ भाग, अनुपूरक भाग - *गहिते अनुभागे अञ्ञो भिक्खु आगच्छति,* चूळव. 297; *अनुभागन्ति पुन अपरम्पि भागं दातुं,* चूळव. अट्ठ. 65.

अनुभाव पु., अनु + √भू से व्यु. [अनुभाव], प्रभाव, क्षमता, शक्ति, सामर्थ्य, कृपा - *अनु अनु तंसमङ्गीनं भावेति वड्ढेतीति अनुभावो, अनुभावो एव आनुभावो, पभावो, महन्तो, आनुभावो येसं ते महानुभावा,* सारत्थ. टी. 1.42; *महानुभावे* ... *एकूनपञ्चसते परिग्गहेसि,* पारा. अट्ठ. 1.6.

अनुभावापेति अनु + √भू के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुभावयति], अनुभव या उपभोग कराता है - *अनुभावापेती ति पुग्गलो पुग्गलेन सम्पत्तिं अनुभावापेति परिभोजेति,* सद्द. 1.6.

अनुभासति अनु + √भास का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुभाषते], पीछे या उत्तरकाल में बोलता है, दोहराता है, कही हुई बात को पुनः कहता है; - **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व., - *तदनुभासन्तीति तं अनुभासन्ति, ... भासितमनुभासन्तीति तेहि भासितं सज्झायितं अनुसज्झायन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.221; ... *तदनुभासन्ति भासितमनुभासन्ति* ..., दी. नि. 1.91; - **सिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व., वे लोग पीछे या बाद में बोले - *अनुत्थुनिंसूति अनुभासिंसु,* दी. नि. अट्ठ. 3.47.

अनुभूत[1] त्रि., अनु + √भू का भू. क. कृ. [अनुभूत], वह, जिसका अनुभव कर लिया गया है या जिसका उपभोग कर लिया गया है - *अनुभूतं सुखदुक्खन्ति आदिसु वेदियने,* सद्द. 1.309; ... *सम्पत्ति मनुस्सलोके मया अनुभूता,* उदा. अट्ठ. 326; *सत्तेव वस्ससतानि, अनुभूतं यतो हि मे,* पे. व. 364, (पृ.) 122.

अनुभूत[2] त्रि., [अणुभूत], वह, जिसे साधारण या गौण बना दिया गया हो - *अनुमञ्ञन्ति अनुभूतं मुदुतिखिणभावानं मज्झं समाचरे,* जा. अट्ठ. 4.171.

अनुभूयते अनु + √भू. का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुभूयते], अनुभव किया जाता है - *सब्बा वित्य आनुभूयते, अभिभवियते अनुभुय्यतेति,* सद्द. 1.21; क. व्या. 21; - **मान / य्यमान** त्रि., वर्त. कृ. [अनुभूयमान], वह, जिसका अनुभव किया जा रहा हो - *यं रूपादिपञ्चकामगुणजातं पत्तं ... एतरहि लद्धं अनुभुय्यमानं,* उदा. अट्ठ. 286; *अनुभूतन्ति अनुभूयमानं मयाति अत्थो,* पे. व. अट्ठ. 138; - **मानत्त** नपुं., भाव. [अनुभूयमानत्व], अनुभव किये जाने की अवस्था, अनुभव किये जाने की स्थिति - ... *इममत्थं पेता एव किर जानन्ति पच्चक्खतो अनुभुय्यमानत्ता, न मनुस्साति,* पे. व. अट्ठ. 91.

अनुभोजन नपुं., भोजन का बचा हुआ भाग, भोजन का अवशिष्ट अंश - *महापालिम्हि दापेसि राजा राजानुभोजनं,* चू. वं. 37.181.

अनुमग्गं अ., क्रि. वि. [अनुमार्ग], मार्ग के सहारे, रास्ते से होते हुए, मार्ग पर - *कटाहकोपि बहुं खादनीयभोजनीयं*

आदाय अनुमग्गं गन्त्वा बहुधनं दत्वा ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.434.

अनुमग्ग-पटिपन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अनुमार्गप्रतिपन्न], मार्ग पर पहुंचा हुआ, मार्ग पर प्राप्त हो चुका या मार्ग पर चलता हुआ – *भगवा विगतवलाहकं नभं पटिपन्नतारकराजा विय, राहुलभद्दो च तारकाधिपतिनो अनुमग्गपटिपन्ना परिसुद्धओसधितारका विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.94.

अनुमग्गे अ॰, क्रि॰ वि॰, मार्ग पर, रास्ते के बगल में, मार्ग से होकर – *अञ्ञे बहू इसयो साधुरूपा, राजीसयो अनुमग्गे वसन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.191; *अञ्ञे पन ... ब्राह्मणिसयो च अनुमग्गे मम अस्समग्गपस्से वसन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.191; *यदि केचि मनुजा एन्ति, अनुमग्गे पटिपथे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.271.

अनुमग्गेन अ॰, क्रि॰ वि॰, क्रमशः, क्रमसङ्गत पद्धति से – *अनुमग्गेन सम्बुद्धो, यं धम्मं अभिनीहरि,* अप॰ 2.256.

अनुमज्जति अनु + √मज्ज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुमार्जति, अनुमार्जयति], **शा॰ अ॰** मलता है, पोंछ डालता है, धो देता है, रगड़ता है, हटा देता है, **ला॰ अ॰** गहराई के साथ चिन्तन या सोच विचार करता है – *सो हि आरम्मणं अनुमज्जतीति वुत्तं, ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 160; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, मलता हुआ, रगड़ता हुआ – *... पाणिना गत्तानि अनुमज्जन्तो तायं वेलायं इमं उदानं उदानेसि,* स॰ नि॰ 1(1).100; *नवङ्गं अनुमज्जन्तो, रत्तिभागे रहोगतो,* मि॰ प॰ 101; – **ज्जथ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰, उपरिवत् – *लताय हत्थे बन्धित्वा, लताय अनुमज्जथ,* जा॰ अट्ठ॰ 7.318; – **ज्जि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, उसने मला या रगड़ा – *अनुमसीति कथिनसूचिं विय कत्वा अनुमज्जि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.223; – **ज्जित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, पोंछ कर, स्वच्छ कर – *उड्डायासना उदकेन अक्खीनि अनुमज्जित्वा दिसा अनुविलोकेय्यासि,* अ॰ नि॰ 2(2).225; – **ज्जेय्यासि** विधि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, तुझे रगड़ना या मलना चाहिए – *पाणिना गत्तानि अनुमज्जेय्यासि,* अ॰ नि॰ 2(2).225.

अनुमज्जन नपुं॰, [अनुमार्जन], गम्भीर अनुचिन्तन, पुनः पुनः चिन्तन, लगातार चिन्तन – *विचारितन्ति अनुमज्जनवसेन पवत्तो विचारो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.104; *सुखुमट्ठेन अनुमज्जनसभावट्ठेन च घण्टानुरवो विय अनुप्पबन्धो विचारो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 160; *... अनुमज्जमानो विचारो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 160; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰ धम्मानुमज्जन; – **लक्खण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनुमार्जनलक्षण], पुनःपुनः अथवा निरन्तर चिन्तन करते रहने का लक्षण – *विचारस्स अनुमज्जनलक्खणं पीतिया फरणलक्खणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.60; *... अनुमज्जनलक्खणो विचारो, फरणलक्खणा पीति, सातलक्खणं सुखं, ... इमे पञ्च धम्मा वत्तन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).243; *किंलक्खणो विचारो'ति? अनुमज्जनलक्खणो, महाराज, विचारो'ति,* मि॰ प॰ 64.

अनुमज्जीयन्ते अनु + √मज्ज के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰ कृ॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰, गम्भीर अनुचिन्तन किये जा रहे को – *... अनुमज्जीयन्ते दिस्वा अज्झुपेक्खि,* मि॰ प॰ 256.

अनुमज्झ त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अनुमध्य], अत्यधिक एवं अत्यल्प के बीच वाला, न बहुत अधिक, न बहुत कम – *अप्पम्हा अप्पकं दज्जा, अनुमज्झतो मज्झकं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.383; *अनुमज्झतो मज्झकन्ति अप्पमत्तकम्पि मज्झे ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.384.

अनुमज्झं अ॰, क्रि॰ वि॰, सन्तुलित रूप में, बहुत अधिक एवं बहुत कम का परिवर्जन कर, मध्यम रूप में – *एतञ्च उभयं ञत्वा, अनुमज्झं समाचरे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.171; *अनुमज्झन्ति अनुभूतं मुदुतिखिणभावानं मज्झं समाचारे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.171.

अनुमञ्ञति अनु + √मन का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुमन्यते], स्वीकृति या अनुमोदन देता है, अनुमति देता है, स्वीकार करता है, हामी भरता है, मंजूरी देता है; – **ञ्ञ** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुमन्यस्व], अपनी अनुमति दो या स्वीकृति दो – *अनुमञ्ञ मं पब्बजितोम्हि दानी'ति,* थेरगा॰ 72; – **न्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अनुमन्यन्ताम्], अनुमति दें – *भवञ्च राजा मनोजो, अनुमञ्ञन्तु मे वचो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.317; *अनुमञ्ञन्तूति अनुबुज्झन्तु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.318; – **ञ्ञासि** विधि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अपि नो अनुमञ्ञासि, अपि नो जीवितं ददे'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.337; *अपि नो अनुमञ्ञासीति चित्तकूटं गन्त्वा ञातके पस्सितुं त्वं अपि नो अनुजानेय्यासि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.337.

अनुमत त्रि॰, अनु + √मन का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुमत], **क. कर्म॰ वा॰ में** – अनुमोदित, स्वीकृत, आज्ञप्त, प्राधिकृत – *सङ्घेन अनुमतेन पुग्गलेन अनुविज्जकेन ... उपज्झायो पुच्छितब्बो,* परि॰ 311; *... सुभासिता नो दुब्भासिता, अत्थसंहिता नो अनत्थसंहिता, अनुमता मया,* दी॰ नि॰ 1.85; *अनुमता मयाति मम सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन सद्धिं संसन्दित्वा देसिता मया अनुञ्ञाता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.216; *तथागतानं अनुमतं एतं,* मि॰ प॰ 179; **ख.** कर्तृ॰ वा॰ में – मन के अनुकूल, सहमत – *भरिया, महाराज, अनुमता ...,* मि॰ प॰ 256; स॰

उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰, अननु॰, वद्धानु॰, वुद्धानु॰ के अन्त॰.

अनुमति स्त्री॰, अनु + √मन से व्यु॰ [अनुमति], स्वीकृति, अनुमोदन, आज्ञा, सहमति – *अनुमतिपक्खाति अनुमतिया पक्खा, अनुमतिदायकाति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.240; – **या**[1] तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, आज्ञा से, अनुमति से – *इमं यक्खं याचित्वा तस्स अनुमतिया वा, सचे सञ्ञत्तिं न गच्छति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 100; – **या**[2] च॰ वि॰, ए॰ व॰, अनुमोदन के लिये – *भगवा भिक्खूनं अनुमतिया पञ्हं पुच्छति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.64; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰ आवासानु॰, आसिट्ठानु॰, यथानु॰, सम्बुद्धनु॰ के अन्त॰; – **कप्प** पु॰, **शा॰ अ॰** कल्पित अनुमोदन, **ला॰ अ॰** भिक्षुसङ्घ की पूर्ण बैठक द्वारा अनुमोदन कर दिये जाने की प्रत्याशा में केवल कुछ एक भिक्षुओं द्वारा किया गया किसी सङ्घकर्म का अनुमोदन – *कप्पति अनुमतिकप्पो,* चूळव॰ 463; *कप्पति अनुमतिकप्पोति अनागतानं आगतकाले अनुमतिं गहेस्सामी'ति तेसु अनागतेसुयेव वग्गेन सङ्घेन कम्मं कत्वा पच्छा अनुमतिं गहेतुं कप्पति,* सारत्थ॰ टी॰ 1.100; *छन्दारहानं सन्तिका अनाहटे येव छन्दे वग्गेन भिक्खुसङ्घेन उपोसथादिकम्मं कत्वा पच्छा तेसमनुमतिं गण्हितुं वट्टती'ति इमं अनुमतिकप्पं च,* म॰ वं॰ टी॰ 123(ना॰); – **गहण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनुमतिग्रहण], अनुमति अथवा स्वीकृति की प्राप्ति, अनुमोदन का मिल जाना – *तं किं मञ्ञसि राजञ्ञा'तिआदीसु विय अनुमतिगहणाकारेन अप्पवत्तत्ता,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 14; *एवं नो'ति ... सन्निट्ठानजननत्थं अनुमतिग्गहणवसेन नो वा कथं वो एत्थ होती'ति ... आविकतं,* उदा॰ अट्ठ॰ 8; – **दायक** त्रि॰, [अनुमतिदायक], अनुमति अथवा स्वीकृति देने वाला, अपना अनुमोदन प्रदान करने वाला – *अनुमतिपक्खाति अनुमतिया पक्खा, अनुमतिदायकाति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.240; – **पक्ख** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनुमतिपक्ष], अनुमति देने वाला वर्ग या समूह, अनुमति-समर्थक दल – *इतिमे चत्तारो अनुमतिपक्खा तस्सेव यञ्ञस्स परिक्खारा भवन्ति,* दी॰ नि॰ 1.121; 126; *अनुमतिपक्खाति अनुमतिया पक्खा, अनुमतिदायकाति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.240; – **पुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनुमतिपृच्छा], सभी की स्वीकृति को जानने की दृष्टि से कनिष्ठ भिक्षु से प्रारम्भ कर वरिष्ठतम भिक्षु तक से किया गया प्रश्न, पांच प्रकार की पृच्छाओं में से एक – *अपिच अनुमतिपुच्छा नामेसा खुद्दकतो पट्ठाय पुच्छितब्बा होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).149; *पञ्चविधाहि पुच्छा – अदिट्ठजोतनापुच्छा, ... अनुमतिपुच्छा, कथेतुकम्यतापुच्छाति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 101; *अयञ्हि पुच्छा ... अत्थस्स महाथेरस्स ... समुग्घातितसंसयत्ता, अनुमतिपुच्छापि न होति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 14.

अनुमदस्सिक त्रि॰, कुछ संस्करणो में अनोमदस्सिक के अप॰ के रूप में प्राप्त, द्रष्ट॰ अनोमदस्सिक के अन्त॰.

अनुमरति अनु + √मर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुम्रियते], पीछे या बाद में मरता है – *यं अनुमीयतीति यं रूपं येन अनुसयेन अनुमरति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235.

अनुमसि अनु + √मस का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्वमार्क्षीत्], स्पर्श किया, छू दिया – *जिव्हं निन्नामेत्वा उभोपि कण्णसोतानि ... नासिकसोतानि अनुमसि पटिमसि,* दी॰ नि॰ 1.92; सु॰ नि॰ पृ॰ 167; *अनुमसीति कथिनसूचिं विय कत्वा अनुमज्जि, तथाकरणेन चेत्थ मुदुभावो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.223; – **मस्स / मास्स** पू॰ का॰ कृ॰ [अनुमृश्य], **शा॰ अ॰** स्पर्श करके, केवल स्पर्शमात्र के द्वारा, **ला॰ अ॰** गम्भीर विचार करके, सोच करके, परामर्श करके – *यस्स विञ्ञू सब्रह्मचारी सत्थु सम्मुखा अनुमस्स अनुमस्स वण्णं भासन्ति,* म॰ नि॰ 1.201; *अनुमस्स अनुमस्साति दस कथावत्थूनि अनुपविसित्वा अनुपविसित्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).52.

अनुमान नपुं॰, अनु + √मा से व्यु॰ [अनुमान], यथार्थ ज्ञान के साधनों या प्रमाणों में से एक, अनुमान, निष्कर्ष, अटकल, अन्दाजा, समानता – *धम्मन्वयोति पच्चक्खञाणसङ्खातस्स धम्मस्स अनुनयो अनुमानं, अनुबुद्धीति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.251; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, अनुमान के द्वारा – *अनुमानेन ञातब्बं, अत्थि सो द्विपदुत्तमो'ति,* मि॰ प॰ 301; *... अनुमानेन जानन्ति छेको वत भो सो नगरवड्ढकी,* मि॰ प॰ 302; *गरूपदेसं लद्धेन अनुमानेन वेदियं,* सद्धम्मो॰ 74; – **पञ्ह** नपुं॰, मि॰ प॰ के पांचवें परिच्छेद का शीर्षक, जिसमें कुल 4 वग्ग और 33 प्रश्न अन्तर्भूत है, मि॰ प॰ 223-316; – **बुद्धि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अनुमानबुद्धि], अनुमान के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष – *अनुमानबुद्धिया पन कतकिरियाय नयग्गाहेन जानाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).68; – **सुत्त** नपुं॰, म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 1.133-144; *अपिचस्स अनुमानसुत्तं, चूळतण्हासङ्खयसुत्तं ... विमानवत्थु पेतवत्थु ... महन्तभावो वेदितब्बो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).144-145.

अनुमासं अ॰, क्रि॰ वि॰ [अनुमासं], प्रत्येक महीने में, एक-एक महीने में – *दीघायुकबुद्धकाले च अनुसंवच्छरं वा*

अनुछमासं वा भिक्खू उपोसथत्थाय सन्निपतन्ति, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.31; पाठा॰ अनुद्दमास.

अनुमित्त पु॰, [अनुमित्र], द्वितीय श्रेणी का मित्र, अत्यन्त साधारण गुणों वाला मित्र – *नानुमित्तो गरुं अत्थं, गुय्हं वेदितुमरहति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.73; *नानुमित्तोति अनुवत्तनमत्तेन यो मित्तो, न हदयेन,* जा॰ अट्ठ॰ 5.73; विलो॰ सुमित्त.

अनुमिनाति अनु + √मा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पीछे या बाद में मापता है अर्थात् मूल्याङ्कन करता है, अन्दाज लगाता है; – **नन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, मापता हुआ, मूल्याङ्कन करता हुआ, अन्दाज लगाता हुआ – *सुत्वाति धम्मं सुत्वा तदनुसारेन नयं नेन्तो अनुमिनन्तो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 197; – **नितब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ [अनुमातव्य], मूल्याङ्कन किया जाना चाहिए – *भिक्खुना अत्तनाव अत्तानं एवं अनुमिनितब्बं ...,* म॰ नि॰ 1.137; *अत्तनाव अत्तानं एवं अनुमिनितब्बन्ति ... अनुमेतब्बो ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).379.

अनुमीयति / अनुमिय्यति अनु + √मर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुम्रियते], पश्चात् या बाद में मरता है – *यं नानुसेति न तं अनुमीयति, यं नानुमीयति न तेन सङ्खं गच्छती'ति,* स॰ नि॰ 2(1).34; *यं अनुमीयतीति यं रूपं येन अनुसयेन अनुमरति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235.

अनुमेतब्ब त्रि॰, अनु + √मा का सं॰ कृ॰ [अनुमातव्य], अनुमान किया जाना चाहिये, मूल्याङ्कन या मूल्यनिर्धारण किया जाना चाहिये, विनिश्चय किया जाना चाहिये – *अनुमिनितब्बन्ति एवं अत्तनाव अत्ता अनुमेतब्बो तुलेतब्बो तीरेतब्बो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).379.

अनुमोदक त्रि॰, अनु + √मुद से व्यु॰ [अनुमोदक], अनुमोदन करने वाला, बाद में समर्थन करने वाला – *तेहि अनुमोदकेहि भिक्खूहि एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा ... एवमस्स वचनीयो,* परि॰ 332-33; *अनुमोदकेन कथं पटिपज्जितब्बं,* परि॰ 332; *द्विन्नं पुग्गलानं अत्थतं होति कथिनं-अत्थारकस्स च अनुमोदकस्स च,* परि॰ 326.

अनुमोदति अनु + √मुद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुमोदते], अनुमोदन करता है, आनन्द के साथ स्वीकार करता है, आनन्दित होता है, प्रसन्न होता है, धन्यवाद ज्ञापित करता है – *निस्सीमट्ठो अनुमोदति, अनुमोदेन्तो न वाचं भिन्दति,* परि॰ 331; *सो भुत्तावी अनुमोदति,* म॰ नि॰ 2.347; *गुणाराधितचित्तो यं अनुमोदति मोदको,* सद्धम्मो॰ 510; – **सि** वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, तू अनुमोदन करता है – *विज्जाचरणसम्पन्नं, धम्मतो अनुमोदसि,* सु॰ नि॰ 165; – **दामि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, मैं अनुमोदन करता हूँ – *धम्मिको कथिनत्थारो, अनुमोदामीति,* परि॰ 333; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, वे अनुमोदन करते हैं – *सब्बे देवानुमोदन्ति,* सु॰ नि॰ 548; – **दथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰, अनुमोदन करें – *अनुमोदथ तुम्हे तं तुम्हाकं च यतो मधु,* म॰ वं॰ 5.56; – **दरे** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, आत्मने॰, उपरिवत् – *पहूते अन्नपानम्हि, सक्कच्चं अनुमोदरे,* खु॰ पा॰ 7.4 (पृ॰) 8; – **दाम** वर्त॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰, हम अनुमोदन करते हैं – *धम्मिको कथिनत्थारो, अनुमोदामा'ति,* परि॰ 333; – **दमानो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *धीरो च दानं अनुमोदमानो,* ध॰ प॰ 177; – **दाहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, तू अनुमोदन कर – *धम्मिको कथिनत्थारो, अनुमोदाही'ति,* परि॰ 333; – **मोदि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, उसने अनुमोदन कर दिया – *केणियं जटिलं भगवा इमाहि गाथाहि अनुमोदि,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 170; – **दित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, अनुमोदन करके – *... ते भिक्खू आयस्मतो सारिपुत्तस्स भासितं अभिनन्दित्वा अनुमोदित्वा ... पञ्हं अपुच्छुं,* म॰ नि॰ 1.60; – **दितुं** निमि॰ कृ॰, अनुमोदन करने के लिये – *अनुजानामि, भिक्खवे, भत्तग्गे अनुमोदितु'न्ति,* चूळव॰ 354; – **दितब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰, अनुमोदन किये जाने योग्य – *केन नु खो भत्तग्गे अनुमोदितब्ब'न्ति,* चूळव॰ 354; – **दिस्सरे** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, आत्मने॰, अनुमोदन करेंगे – *अनुमोदिस्सरे देवा, सम्पत्ते कुसलब्भवे,* अप॰ 1.92; – **देय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुमोदन करना चाहिए – *सुभासितं अनुमोदेय्य,* अ॰ नि॰ 1(1).229; – **देय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, मुझे अनुमोदन करना चाहिये – *अहो वत अहमेव भत्तग्गे भुत्तावी अनुमोदेय्यं,* म॰ नि॰ 1.35; – **देय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, वे अनुमोदन करें – *यदि ते अत्थतो जानेय्युं, तेपि अनुमोदेय्युं,* मि॰ प॰ 256; सु॰ नि॰ (पृ॰) 170.

अनुमोदन नपुं॰, अनु + √मुद से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अनुमोदन], स्वीकृति, पुष्टि, समर्थन, "हां ऐसा ही है" कहकर दी गयी स्वीकृति, "ठीक है" या "बहुल अच्छा" (साधु) कह कर दिया गया अनुमोदन, भिक्षा या अन्य दानों को पाने के बाद भिक्षुओं द्वारा आशीर्वचन अथवा साधुवाद देने के रूप में प्रकट किये गये वचन – *सत्था भत्तकिच्चावसाने अनुमोदनं करोन्तो ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.97; *अयं ते अनुमोदनं करिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.125; *भत्तग्गे मनुस्सानं अनुमोदनं अकत्वा पक्कमन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.227; *सो भुत्तावी मुहुत्तं तुण्ही निसीदति, न च अनुमोदनस्स कालमतिनामेति,* म॰ नि॰ 2.347; *न च अनुमोदनस्साति यो हि भुत्तमत्तोव दारकेसु*

भत्तत्थाय ... अनुमोदनं आरभति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.277; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰; कतानु॰, कतभत्तानु॰, खण्डानु॰, तिरोकुड्डानु॰, दानानु॰, परकतपुञ्ञानु॰, भत्तानु॰, सत्तानु॰ के अन्त॰; – **करण** नपुं॰, [अनुमोदनकरण], धन्यवाद का ज्ञापन, स्वीकृतिप्रदान – *सुमनो बुद्धप्पमुखं भिक्खुसङ्घं परिविसित्वा अनुमोदनकरणत्थाय पत्तं अग्गहेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.120; – **गाथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अनुमोदन को प्रकाशित करने वाली गाथाएं – *पच्चेकबुद्धानं किर इधाव द्वे गाथा अनुमोदनगाथा नाम होन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.115; *अनुमोदनगाथावण्णनायमेव आविभविस्सति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.58; – **ज** त्रि॰, [अनुमोदनज], अनुमोदन अथवा स्वीकृति से उत्पन्न – *अनुमोदनजं पुञ्ञं चित्तायत्तमहाफलं,* सद्धम्मो॰ 516; – **धम्मदेसना** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, अनुमोदन (या भोजन ग्रहण करने के उपरान्त साधुवाद-ख्यापन) के रूप में दिया गया धर्मोपदेश – *सत्था अनुमोदनधम्मदेसनं आरभि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.120; – **मत्त** त्रि॰, [अनुमोदनमात्र], केवल अनुमोदन, केवल धन्यवाद का ज्ञापन – ... *परेन कतस्स दानस्स सक्कच्चं अनुमोदनमत्तेन हेतुना इदानि मय्हं हत्थो ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 106; – **सद्द** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनुमोदनशब्द], अनुमोदन या स्वीकृति का शब्द, हामी भरने का शब्द, स्वीकरण – ... *एवमेतं भगवा एवमेतं सुगता'ति अनुमोदनसद्दं अस्सोसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).195.

अनुमोदना स्त्री॰, अनुमोदन, स्वीकृति, भोजनग्रहणोपरान्त या दान प्राप्ति के उपरान्त आशीर्वचन अथवा साधुवाद को प्रकट करने के रूप में प्रकाशित अनुमोदन – *न मे तुम्हेहि दानानुच्छविका अनुमोदना कता, ति?* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.107; *अनुमोदेय्यान्ति अनुमोदनं करेय्यं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).156; *दानानुमोदनाय महाजनो महन्तं विसेसं पापुणीति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.290; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰ पत्तानु॰, यागुदानानु॰, वस्सकारानु॰, विहारदानानु॰, वेळुवनदानानु॰ के अन्त॰ (आगे).

अनुमोदनानिसंसगाथा सद्धम्मो॰ के ग्यारहवें अनुच्छेद का शीर्षक, सद्धम्मो॰ गाथा संख्या 510-516 तक.

अनुमोदनावसान नपुं॰, अनुमोदन + अवसान, तत्पु॰ स॰ [अनुमोदनावसान], आशीर्वचनात्मक अनुमोदन की क्रिया की समाप्ति – *अनुमोदनावसाने चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयो अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.61.

अनुमोदनीय त्रि॰, अनु + √मुद का सं॰ कृ॰ [अनुमोदनीय], **शा॰ अ॰** अनुमोदन करने या आशीर्वचन देने योग्य कृत्य, **ला॰ अ॰** अनुमोदन आदि के रूप में प्रकाशित वाणी का कर्म – *अनुमोदनीयंकासि, नागकञ्ञा महिद्धिका,* अप॰ 2.222; ... *अनुमोदनियादिवसेन पवत्तितं वचीकम्मं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.22.

अनुमोदित त्रि॰, अनु + √मुद का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुमोदित], धन्यवाद या साधुवाद के साथ स्वीकृत, वह, जिसका अनुमोदन कर दिया गया है – ... *पानीयं दिन्नं अनुमोदितं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 65-66.

अनुम्मत्त त्रि॰, उम्मत्त का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अनुन्मत्त], वह, जो उन्माद या पागलपन से ग्रस्त नहीं है, उन्मादरहित, पागलपन से रहित – *नानुम्मत्तो नापिसुणो, नानटो नाकुतूहलो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.347; *तत्थ नानुम्मत्तोति न अनुम्मत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.347; *को वा ते वचनं आदियति अनुम्मत्तो,* मि॰ प॰ 128; – **क** त्रि॰, उम्मत्तक का निषे॰ [अनुन्मत्तक], उपस्थित् – ... *खिप्पं ... उपट्ठितसतिता अनुम्मत्तकता आणवन्तता अनलसता ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 24.

अनुयागी त्रि॰, अनु + √यज से व्यु॰ [अनुयाजी], किसी दूसरे के अनुकरण पर यज्ञ करने वाला – *राजा खो महाविजितो महायञ्ञं यजति, हन्दस्स मयं अनुयागिनो होमा'ति,* दी॰ नि॰ 1.126.

अनुयात त्रि॰, अनु + √या का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुयात], **क. कर्म॰ वा॰ में** – वह, जिसका अनुगमन दूसरों द्वारा किया गया है – ... *मग्गं पुराणञ्जसं पुब्बकेहि मनुस्सेहि अनुयातं,* स॰ नि॰ 1(2).93; *एस मग्गो महन्तेहि, अनुयातो महेसिभि,* अ॰ नि॰ 1(2).31; **ख. कर्तृ॰ वा॰ में** – अनुगमन करने वाला, अनुकरण कर रहा, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त, द्रष्ट॰ महिस्सर जटामकुटानुयायी के अन्त॰.

अनुयाति / अनुयायति अनु + √या का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुयाति], अनुगमन करता है, बराबर साथ या पीछे चलता है – *अनुपेतीति अनुयाति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.300; *अनुपेतीति अनुयायति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.137; – **न्ता** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, अनुगमन करने वाले – *खत्तिया भोगिराजानो, अनुयन्ता भवन्तु ते,* सु॰ नि॰ 558; – **याथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ [अनुयात], तुम लोग अनुगमन करो – *इत्थागारं अज्झभासि, सब्बाव अनुयाथ मं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.27; – **यिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, अनुगमन करेंगे – *यन्तं मं नानुयिस्सन्ति, तं कुदास्सु भविस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.59.

अनुयायति अनु + √या का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुशासन करता है, आधिपत्य करता है – *चक्कवत्ती ... महापथविं*

अनुयायति कल्याणपापकानि विचिनमानो, मि॰ प॰ 360; *पञ्चालमनुयायन्ति, अकामा वसिनो गता,* जा॰ अट्ठ॰ 6.226.

अनुयायी त्रि॰, अनु + √या से व्यु॰ [अनुयायिन्], अनुगमन या अनुसरण करने वाला, विषयीभूत, वशवर्ती, अधीनस्थ - *कथं नु यातं अनुयायि होति, अल्लञ्च पाणिं दहते कथं सो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.207; *तस्सेव अत्थं पुरिसो करेय्य, यातानुयायीति तमाहु पण्डिता,* तदे॰; *यातानुयायीति पुब्बकारिताय यातस्स पुग्गलस्स अनुयायी,* जा॰ अट्ठ॰ 7.208; ..., *ब्राह्मणस्सेव अनुयायिनो होथा'ति,* ..., मि॰ प॰ 263; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अनानु॰, जरामरणानु॰, यातानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुयुञ्जति अनु + √युज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुयुनक्ति], **क**. किसी के साथ स्वयं को जोड़ देता है, किसी का अत्यधिक सेवन करता है, किसी में अत्यधिक अनुरक्त होता है, स्वयं को किसी में पूरी तरह से लगा देता है, किसी चीज का आदी बन जाता है - *सुरामेरयपानञ्च, यो नरो अनुयुञ्जति,* ध॰ प॰ 247; *अनुयुञ्जतीति सेवति बहुलीकरोति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.206; - **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *पमादमनुयुञ्जन्ति, बाला दुम्मेधिनो जना,* ध॰ प॰ 26; *ते पमादे आदीनवं अपस्सन्ता पमादं अनुयुञ्जन्ति पवत्तेन्ति, पमादेन कालं वीतिनामेन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.146; - **ञ्जं** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, पूर्णरूप से स्वयं को लगाता हुआ, स्वयं को समर्पित करता हुआ - *अहोरत्तं अनुयुञ्जं, जीवितं अनिकामयं,* स॰ नि॰ 1(1).143; - **ञ्जन्तो** उपरिवत् - *कम्मट्ठानं पन उग्गहेत्वा अनुयुञ्जन्तो बहुस्सुतोव,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.70; - **ञ्ज** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, स्वयं को लगा दो - *कतपुञ्ञोसि त्वं, आनन्द, पधानमनुयुञ्ज, खिप्पं होहिसि अनासवो'ति,* दी॰ नि॰ 2.109; - **ञ्जथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰, अपने को पूरी तरह से जोड़ दो - *सारत्थे घटथ अनुयुञ्जथ, सारत्थे अप्पमत्ता आतापिनो पहितत्ता विहरथ,* दी॰ नि॰ 2.107; - **ञ्जस्सु** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰, उपरिवत् - *पुब्बापररत्तमप्पमत्तो, अनुयुञ्जस्सु दळ्हं करोहि योगं,* थेरगा॰ 413; - **ञ्जेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, स्वयं को पूरी तरह से लगा दे, जोड़ दे, समर्पित कर दे - *सो यानि सम्मा निब्बानाधिमुत्तस्स असप्पायानि तानि अनुयुञ्जेय्य,* म॰ नि॰ 3.41; - **ञ्जेथ** उपरिवत्, आत्मने॰ - *मा पमादमनुयुञ्जेथ, मा कामरतिसन्थवं,* ध॰ प॰ 27; *मा कामरतिसन्थवन्ति वत्थुकामकिलेसकामेसु रतिसङ्खातं तण्हासन्थवम्पि मा अनुयुञ्जेथ मा चिन्तयित्थ मा पटिलभित्थ,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.146; - **ञ्जि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, (निपा॰ 'मा' के साथ परिवर्जन के आशय में) जोड़ो, स्वयं को लगा दो - *मा च वातातपे चारित्तं अनुयुञ्जि,* म॰ नि॰ 3.42; - **ञ्जित्थ** अद्य॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰, (निषेधा॰ निपा॰ मा के साथ मना करने के विशेष आशय में) उपरिवत् - *मा खिड्डारतिञ्च मा निद्दं, अनुयुञ्जित्थ झाय कातियान,* थेरगा॰ 414; - **ञ्जिस्साम** भवि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰, हम स्वयं को पूरी तरह से लगा देंगे, समर्पित कर देंगे - *इतो अञ्ञस्मिं रत्तिभागे वा दिवसभागे वा अप्पमत्ता कम्मट्ठानमनुयुञ्जिस्सामा'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.381; - **ञ्जित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, पूरी तरह से स्वयं को लगाकर - *एको दमयन्ति रत्तिट्ठानादीसु कम्मट्ठानं अनुयुञ्जित्वा मग्गफला ... दमेन्तोति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.269; - **ञ्जितब्बं** त्रि॰, सं॰ कृ॰, स्वयं को लगाया जाना चाहिए, जोड़ दिया जाना चाहिए - *एतञ्हि उपासकेन पुब्बभागे अनुयुञ्जितब्बं बुद्धसासनं नाम,* उदा॰ अट्ठ॰ 252; **ख**. स्वयं को किसी के साथ पूरी तरह से जोड़ देना अथवा किसी बात का गम्भीर परीक्षण करना या जांचना - **ञ्जन्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, परीक्षण करते हुए, जांचते हुए, पूछते हुए - *अथ नं भगवा अनुयुञ्जन्तो किन्ति पन ते, अग्गिवेस्सन, कायभावना सुताति आह,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).182; - **ञ्जाहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, तुम परीक्षा करो, प्रश्न करो - *इमं पब्बजितं अनुयुञ्जाही'ति,* महाव॰ 109; - **ञ्जथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰, प्रश्न करो, परीक्षा करो - *इमे च भिक्खू अनुयुञ्जथा'ति,* पारा॰ 254; - **ञ्जितुं** निमि॰ कृ॰, परीक्षा करने हेतु, प्रश्न करने हेतु - *इमे नाम ... सह धम्मेन अनुयुञ्जितुं समत्थो नत्थि,* उदा॰ अट्ठ॰ 109.

अनुयुञ्जन नपुं॰, अनु + √युज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अनुयुञ्जन], सम्पूर्ण रूप से किसी के प्रति लगाव, दृढ़ निष्ठा - *अनुयोगोति अनुयुञ्जनं,* महानि॰ अट्ठ॰ 148; 329; *धम्मानुयोगन्ति दानादिकुसलधम्मस्स अनुयुञ्जनं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 293; - **ना** स्त्री॰, उपरिवत् - *अकम्मं हेतं ... किलेसयुद्धं, सदत्थमनुयुञ्जना, एतं जिनपुत्तानं करणीयं, ... पूजा करणीया,* मि॰ प॰ 173.

अनुयुञ्जीयति अनु + √युज के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, दूसरों द्वारा परीक्षित किया जाता है, उत्तर देने के काम के साथ जोड़ दिया जाता है - *न हि, यो परेहि अनुयुञ्जीयति,* सद्द॰ 2.374; - **ञ्जियमानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, परीक्षित किया जा रहा, पूछा जा रहा - *अथ खो सो ... उपालिना अनुयुञ्जियमानो एतमत्थं आरोचेसि,* महाव॰ 109; *अनुयुञ्जियमानोति एकमन्तं नेत्वा*

केसमस्सुओरोपनकासायपटिग्गहणसरणगमनउपज्झायग्गहणकम्मवाचानिस्सयधम्मे पुच्छियमानो, महाव॰ अट्ठ॰ 282; – **ञ्जियमाना** स्त्री॰, कर्म॰ वा॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, जांची जा रही, पूछी जा रही – *एवमनुयुञ्जियमाना सा, रहिते धम्मदेसनाकुसला,* थेरीगा॰ 406; *अनुयुञ्जियमानाति पुच्छियमाना, सा इसिदासीति योजना,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 289.

अनुयुत्त त्रि॰, अनु + √युज का भू॰ क॰ कृ॰, द्वि॰ वि॰ में अन्त होने वाले पद के साथ प्रयुक्त [अनुयुक्त], **1.** स्वयं को किसी में लगाया हुआ, किसी के प्रति पूर्णरूप से समर्पित – *... ते एवरूपं बीजगामभूतगामसमारम्भं अनुयुत्ता विहरन्ति,* दी॰ नि॰ 1.6; *..., यस्स समारम्भं अनुयुत्ता विहरन्तीति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.75; *... ते एवरूपं जूतप्पमादट्ठानानुयोगं अनुयुत्ता विहरन्ति,* दी॰ नि॰ 1.6; *ये अत्तानुयोगं अनुयुत्ता सीलादीनि सम्पादेत्वा देवमनुस्सानं सन्तिका सक्कारं लभन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.160; **2.** अनुसरण या अनुगमन करने वाला, अधीनस्थ, आज्ञाकारी, सेवक – *यो लोभगुणे अनुयुत्तो, सो वचसा परिभासति अञ्ञे,* सु॰ नि॰ 668; *अनुयुत्तोति अग्गसावकानं भेदकामताय,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.180; – **त्ते** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो यावता जम्बुदीपे पदेसराजानो ते सब्बे अनुयुत्ते अकासि,* मि॰ प॰ 193; स॰ उ॰ के रूप में अननु॰, चेतोसमथानु॰, जागरियानु॰, झानानु॰, सरीरमण्डनानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुयोग पु॰, अनु + √युज से व्यु॰ [अनुयोग], **क.** पूर्ण रूप से समर्पण, पूर्ण निष्ठा, सुदृढ़ लगाव, पुनः पुनः योग – *अनुयोगे किलिन्ने च सुतोभिधेय्यलिङ्गिको,* अभि॰ प॰ 797; *... अनुयोगमन्वाय अप्पमादमन्वाय सम्मामनसिकारमन्वाय तथारूपं चेतोसमाधिं फुसति,* दी॰ नि॰ 1.11; *पुनप्पुनं युत्तवसेन अनुयोगोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; **ख.** प्रश्न, परीक्षण, जांच पड़ताल – *पञ्हो तीस्वनुयोगो च पुच्छा, प्यथ निदस्सनं,* अभि॰ प॰ 115; *एतस्मिञ्च पाठे ... सम्बन्धित्वा पुन कस्मा'ति अनुयोगं दस्सेत्वा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 179; **ग.** √दा से व्यु॰, क्रि॰ रू॰ के साथ प्रयुक्त – परीक्षा देना या उत्तीर्ण होना – *..., अङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो अनुयोगो न दातब्बो'ति,* परि॰ 360; *सो आचरियस्स अनुयोगं दत्वा बाराणसिं पच्चागच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.368; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अत्तकिलमथानु॰, अत्तपरितापनानु॰, अननु॰, अभिञ्ञानु॰, असुभभावनानु॰, आतपनानु॰, उदकोरोहणानु॰, उपादानपञ्ञत्तानु॰, उपेक्खभावनानु॰, कामसुखल्लिकानु॰, कामसुखानु॰, कायभावनानु॰, किलमथानु॰, केसमस्सुलोचनानु॰, जागरियानु॰, जूतपमादट्ठानानु॰, दूतेय्यपहिणगमनानु॰, देवदूतानु॰, धम्मानु॰, पञ्ञत्तानु॰, पधानानु॰, परपरितापनानु॰, परियायभत्तभोजनानु॰, भावनानु॰, मण्डनानु॰, सतिपट्ठानभावनानु॰, सिक्खत्तयानु॰, सोमनस्सानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **क्खम** त्रि॰, [अनुयोगक्षम], वह जो परीक्षण अथवा प्रश्न पूछने की स्थिति का सामना करने में सक्षम या समर्थ है, परीक्षा या जांच का सामना करने में समर्थ – *नो अनुयोगक्खमो, नो विमज्जनक्खमोति अनुयोगं वा वीमंसं वा न खमति,* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.68; *तस्स भगवतो वादो ..., अनुयोगक्खमो च विमज्जनक्खमो चा'ति,* म॰ नि॰ 2.54; – **दापन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, परीक्षण करवाना, प्रश्न पुछवाना, जांच पड़ताल कराना – *तेन नं भगवा अनुयोगक्खमो अय'न्ति ञत्वा सीहनादे अनुयोगदापनत्थं इमम्पि देसनं आरभि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.56; *... अनुयोगं दापनत्थं, अनुयोगं दत्वा, दानं दत्वा,* सद्द॰ 2.480; – **भयभीत** त्रि॰, परीक्षण या प्रश्नों को पूछे जाने से भयग्रस्त – *तथेव भगवतो अनुयोगभयेन भीतो अञ्ञोपि अत्तनो सहायके आचिक्खन्तो पठमं गाथमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 3.316; पाठा॰ अनुयोगभयेन भीती; – **वन्तु** त्रि॰, [अनुयोगवत्], पूरी तरह से स्वयं को लगा देने वाला, पूर्णरूप से समर्पित, सुदृढ़ निष्ठा वाला – *... सततं सब्बकालं अनुयोगवन्ता, ते पुञ्ञवन्तो केवलं ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 180; – **वत्त** नपुं॰, [अनुयोगवृत्त], अनुयोग या परीक्षण या जांच पड़ताल सम्बन्धी प्रक्रिया, सङ्घसम्बन्धी किसी विषय का विनिश्चय – *अनुयोगवत्तं निसामय, कुसलेन बुद्धिमता कतं,* परि॰ 302; 313; *... भगवा अनुयोगवत्तं दस्सेन्तो सा पनावुसो, ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).322; *समनुयुञ्जतीति अनुयोगवत्तं आरोपेन्तो पुच्छति, ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.118; *अनुयोगवत्तन्ति अनुयोगे कते वत्तितब्बवत्तं, आरोपेन्तोति कारापेन्तो, अत्तनो पुच्छं उद्दिस्स पटिवचनं दापेन्तो पुच्छति,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.106.

अनुयोगी त्रि॰, अनु + √युज से व्यु॰ [अनुयोगी], निष्ठावान्, समर्पित, स्वयं को पूरी तरह से किसी में लगा देने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त – *अत्थं हित्वा पियग्गाही, पिहेतत्तानुयोगिनं,* ध॰ प॰ 209; *ये च ते सततानुयोगिनो, धुवं पयुत्ता सुगतस्स सासने,* पे॰ व॰ 487; *सततानुयोगिनोति ओसानगाथाय अयं सङ्खेपत्थो – अहम्पि नाम रतियं पाणवधमत्ततो विरतो एवरूपंसम्पत्तिं अनुभवामि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 179–180; *पिहेतत्तानुयोगिनन्ति ताय पटिपत्तिया सासनतो चुतो गिहिभावं पत्वा पच्छा ये अत्तानुयोगं अनुयुत्ता*

सीलादीनि सम्पादेत्वा देवमनुस्सानं सन्तिका सक्कारं लभन्ति, ध. प. अट्ठ. 2.160.

अनुयोजन नपुं., [अनुयोजन], किसी के साथ, पीछे किया गया, जोड़, अन्य के साथ योग – ..., *तत्थ सहजातानुयोजनरसो,* ..., विसुद्धि. 1.137; *सहजातानं अनुयोजनं आरम्मणे अनुविचारणसङ्खातअनुमज्जन-वसेनेव वेदितब्बं,* विसुद्धि. महाटी. 1.156.

अनुय्योजेत्वा अनु + √युज के प्रेर. का पू. का. कृ., अनुयोजित कराके, किसी अन्य के साथ जुड़वा कर या सङ्गति बैठवा कर – ... *अप्पेव नाम अत्तनो धम्मतायेपि सल्लक्खेय्या'ति अनुय्योजेत्वा तिट्ठ, तात, याव ते यागुभत्तं सम्पादेमि,* ध. प. अट्ठ. 2.291; स. नि. अट्ठ. 1.269.

अनुय्यान नपुं., संभवतः अनु + उय्यान से व्यु. [अनूद्यान], छोटा सा उद्यान, साधारण बाग – *अनेकानुभवाधारे नानानुय्यानसुन्दरे,* चू. वं. 68.58; संभवतः नानाउय्यानसुन्दरे के स्थान पर भ्रष्ट पाठ.

अनुय्युत त्रि., उय्युत का निषे. [अनुद्युत], सार्थक, विषय या सन्दर्भ के सर्वथा अनुरूप, समयानुरूप – *अत्थं न हापेति अनुय्युतं भणं,* महाव. 483; *अनुय्युतं भणन्ति अनुञ्ञातं अनपगतं भणन्तो,* महाव. अट्ठ. 410.

अनुरक्ख पु., [अनुरक्ष], सुरक्षा, सुरक्षण – *विजयो विजितो च सो नावं अनुरक्खेन च,* दी. वं. 9.32.

अनुरक्खक त्रि., अनु + √रक्ख से व्यु. [अनुरक्षक], सुरक्षा करने वाला, सुरक्षित रखने वाला, संधारक – केवल स. उ. प. में ही प्राप्त, वंसानु. के अन्त. द्रष्ट..

अनुरक्खण क. नपुं., अनु + √रक्ख से व्यु., क्रि. ना. [अनुरक्षण], संरक्षण, सुरक्षा, संधारण, जो उपलब्ध है या उत्पन्न है उसको ठीक से सुरक्षित रखना – *अम्हाकं ... अम्हाकं अनुरक्खणत्थाय अरञ्ञवासं अनुजानि,* जा. अट्ठ. 1.138; ... *या च लद्धस्स अनुरक्खणा, ... उप्पन्नस्स पन अनुरक्खणमेव भारो,* जा. अट्ठ. 5.112; **ख.** त्रि., संरक्षक, संधारक, सुरक्षितरूप में रखने वाला – *अञ्ञवादो सारत्थो सद्धम्ममनुरक्खणो,* दी. वं. 4.30; स. उ. प. के रूप में इन्द्रियानु., चित्तानु., वण्णानु., वुत्तानु., सत्तानु., सीलानु. के अन्त. द्रष्ट.; – **रक्खणा / रक्खना** स्त्री., संरक्षण, सुरक्षा – *संवरो च पहानञ्च, भावना अनुरक्खणा,* अ. नि. 1(2).19; *अलद्धस्स च यो लाभो, लद्धस्स चानुरक्खणा,* जा. अट्ठ. 5.111; ..., *या च लद्धस्स अनुरक्खणा,* जा. अट्ठ. 5.112; – **पधान / प्पधान** नपुं. तत्पु. स. [अनुरक्षणप्रधान], सुरक्षा या संधारण हेतु किया जा रहा दृढ़ प्रयास, समाधि के निमित्त की सुरक्षा करने वाले के चित्त में उत्पन्न वीर्य – *चत्तारिमानि, ..., पधानानि, ..., संवरप्पधानं, पहानप्पधानं, भावनाप्पधानं, अनुरक्खणाप्पधानं,* अ. नि. 1(2).18; 19; दी. नि. 3.180; *अनुरक्खणाप्पधानन्ति समाधिनिमित्तं अनुरक्खन्तस्स उप्पन्नवीरियं,* अ. नि. अट्ठ. 2.253; – **णभब्ब** त्रि., वह, पुद्गल या व्यक्ति जिसकी विमुक्ति अथवा चित्तविशुद्धि की अर्हता अनुरक्षण पर आधारित नहीं रहती है – *सचे न अनुरक्खति, परिहायति ताहि समापत्तीहि – अयं वुच्चति पुग्गलो अनुरक्खणाभब्बो,* पु. प. 118; *अनुरक्खणाभब्बोति अनुरक्खणाय अपरिहानिं आपज्जितुं भब्बो,* पु. प. अट्ठ. 34.

अनुरक्खति अनु + √रक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुरक्षति], रक्षा करता है, सुरक्षित बनाए रखता है, देखभाल करता है, निगरानी करता है, ठीक-ठाक करके या विशोधित करके रखता है – *भिक्खु ... समाधिनिमित्तं अनुरक्खति अट्ठिकसञ्ञं ... उद्धुमातकसञ्ञं,* अ. नि. 1(2).19; दी. नि. 3.181; *अनुरक्खतीति समाधिपारिपन्थिकधम्मे रागदोसमोहे सोधेन्तो रक्खति,* अ. नि. अट्ठ. 2.253; दी. नि. अट्ठ. 3.184; *सचे अनुरक्खति, न परिहायति ताहि समापत्तीहि,* पु. प. 118; *सचे अनुरक्खतीति सचे अनुपकारधम्मे पहाय उपकारधम्मे सेवन्तो समापज्जति,* पु. प. अट्ठ. 34; – **ते** वर्त., प्र. पु., ए. व., आत्मने., उपरिवत् – *माताव पुत्तं अनुरक्खते पतिं,* अ. नि. 2(2).230; – **न्त** वर्त. कृ., सुरक्षित या नियन्त्रित रखता हुआ – *सच्चवाचानुरक्खन्तो, जीवितं चजितुमुपागमिं,* चरिया. 404; – **न्तेन** वर्त. कृ., तृ. वि., ए. व. – *तुम्हाकं चित्तं अनुरक्खन्तेन मया एवं वुत्तं नेवेत्थ तुम्हाकं दोसो अत्थि, न मय्हं,* ध. प. अट्ठ. 1.351; – **क्ख** अनु., म. पु., ए. व., तू रक्षा कर, सुरक्षित बनाकर रख – ..., *तमेव त्वं साधुकमनुरक्खा'ति,* दी. नि. 3.25; – **क्खथ** अनु., म. पु., ब. व., तुम लोग रक्षा करो, सुरक्षित अथवा नियन्त्रित करके रखो – *अप्पमादरता होथ, सचित्तमनुरक्खथ,* ध. प. 327; – **क्खे** विधि., प्र. पु., ए. व., सुरक्षित रूप में रखे, रक्षा करे – *माता यथा नियं पुत्तमायुसा एकपुत्तमनुरक्खे,* सु. नि. 149; – **क्खेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., उपरिवत् – *पञ्ञं नप्पमज्जेय्य, सच्चमनुरक्खेय्य, चागमनुब्रूहेय्य, सन्तिमेव सो सिक्खेय्या'ति,* म. नि. 3.288; – **क्खिसामि** भवि., उ. पु., ए. व., मैं सुरक्षा करूंगा, सुरक्षित रखूंगा, संयमित करके रखूंगा – ..., *तमेवाहं साधुकमनुरक्खिसामी'ति,* दी. नि. 3.25; – **क्खिस्सते**

भवि., प्र. पु., ए. व., आत्मने., उपरिवत् - *एवं कुसलधम्मानं, अनुरक्खिस्सते अयं,* अप. 2.258; - **क्खितुं** निमि. कृ., रक्षा करने के निमित्त - *कीळितुं अभिसित्तानं चरितं चानुरक्खितुं,* म. वं. 26.7; - **क्खितब्बं** सं. कृ., अनुरक्षण या सुरक्षा की जानी चाहिए, अनुरक्षण करने योग्य - ..., *कायिकं वाचसिकं अनुरक्खितब्बं,* ..., मि. प. 102.

अनुरक्खमानक त्रि., अनु + √रक्ख के वर्त. कृ., आत्मने. से व्यु., संधारक, रक्षा करने वाला, सुरक्षित रखने वाला - *तथेव सीलं अनुरक्खमानका, सुपेसला होथ सदा सगारवा'ति,* सद्धम्मो. 621; विसुद्धि. 1.33; दी. नि. अट्ठ. 1.53.

अनुरक्खा स्त्री., [अनुरक्षा], सुरक्षा, रखवाली - *ननु, भन्ते, भगवा अनेकपरियायेन कुलानं अनुद्दयं वण्णेति, अनुरक्खं वण्णेति,* स. नि. 2(2).309; *अत्तानुरक्खाय भवन्ति हेते, हत्थारोहा रथिका पत्तिका च,* जा. अट्ठ. 5.481.

अनुरक्खित अनु + √रक्ख का भू. क. कृ. [अनुरक्षित], वह, जिसकी रक्षा की गयी है या जिसे सुरक्षित अथवा नियन्त्रित करके रखा गया है - *तयानुगुत्तोति तया अनुरक्खितो,* जा. अट्ठ. 5.395.

अनुरक्खिय अनु + √रक्ख का सं. कृ. [अनुरक्ष्य], रक्षा किये जाने या नियन्त्रित करने योग्य, केवल स. उ. प. में ही प्राप्त, दुरनुरक्खिय के अन्त. द्रष्ट..

अनुरक्खिस्सते अनु + √रक्ख के कर्म. वा. का भवि., प्र. पु., ए. व., आत्मने. सुरक्षित या नियन्त्रित करके रखा जाएगा - *एवं कुसलधम्मानं, अनुरक्खिस्सते अयं,* अप. 2.258.

अनुरक्खी त्रि., सुरक्षा करने वाला, संयम या नियन्त्रण रखने वाला, सुरक्षित स्थिति में रखने वाला - *गुय्हमनुरक्खी चाहं यावाहं जीविस्सामि ताव गुय्हमनुरक्खिस्सामि,* मि. प. 105.

अनुरञ्जन्त अनु + √रञ्ज का वर्त. कृ., अलङ्कृत अथवा प्रभासित करता हुआ, प्रज्वलित होता हुआ, सुशोभित होता हुआ - *पभाहि अनुरञ्जन्तो, लोके लोकन्तगू जिनो,* अप. 2.146; थेरगा. अट्ठ. 2.430; *पभाहि अनुरञ्जन्तोति सो पदुमुत्तरो भगवा नीलपीतादिछब्बण्णपभाहि रंसीहि अनुरञ्जन्तो जलन्तो सोभयमानो विज्जोतमानोति अत्थो,* अप. अट्ठ. 1.251.

अनुरत्त त्रि., अनु + √रञ्ज का भू. क. कृ. [अनुरक्त], लगाव या राग से युक्त, किसी के प्रति पूरी तरह से समर्पित - *अनुरत्ता भत्तारं, तस्साहं विदेसनमकासिं,* थेरीगा. 448; *अनुरत्ता भत्तारन्ति भत्तारं अनुवत्तिका,* थेरीगा. अट्ठ. 294.

अनुरथं अ., क्रि. वि. [अनुरथं], रथ के पीछे-पीछे - ... *पच्छात्थे अनुरथं, भुसत्थे अनुरत्तो,* ..., सद्द. 3.883; मो. व्या. 3.2.

अनुरव पु., अनु + √रु से व्यु., क्रि. ना. [अनुरव], एक ध्वनि होने के बाद में उत्पन्न अनुगूंज या आवाज, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त, घण्टानुरव के अन्त. द्रष्ट..

अनुरवति अनु + √रु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुरौति], गूंजता है, बाद में आवाज करता रहता है - *यथा, महाराज, कंसथालं आकोटितं पच्छा अनुरवति अनुसन्दहति,* मि. प. 64; *यथा, महाराज, भेरी आकोटिता अथ पच्छा अनुरवति अनुसद्दायति,* ध. स. अट्ठ. 159-60.

अनुरवना स्त्री., अनु + √रु से व्यु. [अनुरवन, नपुं.], गूंज, बाद में उत्पन्न आवाज - *यथा अनुरवना एवं विचारो दट्ठब्बो'ति,* मि. प. 64.

अनुरहो अ., निपा., क्रि. वि. [अनुरहसं], छिपे हुए रूप से, एकान्त में, गुप्त रूप से, अप्रकट रूप से - *आपत्तिञ्च वत आपन्नो अस्सं, अनुरहो मं भिक्खू चोदेय्युं, नो सङ्घमज्झे'ति,* म. नि. 1.34; *अनुरहो मन्ति पुरिमसदिसमेव भिक्खुं गहेत्वा विहारपच्चन्ते सेनासनं पवेसेत्वा द्वारं थकेत्वा चोदेन्ते इच्छति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).154.

अनुराज पु., राजतिलक किया गया सहायक अथवा साधारण शासक, गौण या छोटा राजा - *मुद्धाभिसित्तो अनुराजा उपराजा ति भासितो,* सद्द. 2.347; *बहूहि अमच्चेहि सद्धिं तत्थ गन्त्वा अनुराजभावेन रज्जं कारापेसि,* सा. वं. 49(ना.).

अनुराध व्य. सं., [अनुराध], **क.** एक स्थविर का नाम, उसी से सम्बद्ध, स. नि. के कुछ सुत्तों का शीर्षक - ... *आयस्मा अनुराधो भगवतो अविदूरे अरञ्ञकुटिकायं विहरति,* स. नि. 2(1).106-108; 2(2).349-353; **ख.** श्रीलङ्का के प्रथम शासक विजय के एक साथी का नाम - *निवासट्ठानुराधानं अनुराधपुरं अहु,* म. वं. 10.76; *नगरस्स तोहि कारणेहि नामं ठपेन्तो निवासत्तानुराधनं'ति आदिमाह, तत्थ ... देविया भातु अनुराधो चा ति इमेसं द्विन्नं अनुराधानं निवसितत्ता अनुराधनक्खत्तेन पतिट्ठापितताय च अनुराधपुरं नाम अहोसी ति अत्थो,* म. वं. टी. 254(ना.); *नक्खत्तनामको मच्चो मापेसि अनुराधपुरं,* दी. वं. 9.35; **ग.** एक शाक्यवंशीय राजकुमार का नाम - *उरुवेलानुराधानं निवासा च तथा*

तथा, म॰ वं॰ 9.9; *तेसं उरुवेल-अनुराधानं निवासा च तथा उरुवेलअनुराधा ति वुच्चन्ती ति अत्थो, ..., सो अनुराधो वासिं कारेसी ति सम्बन्धो*, म॰ वं॰ टी॰ 237(ना॰); *रामो तिस्सो अनुराधो च महालि दीघावु रोहिनि*, दी॰ वं॰ 10.6; **घ.** अनुराधपुर का संक्षिप्तीकृत रूप – *उपतिस्सगामं मापेसि अनुराधस्स उत्तरे*, म॰ वं॰ 7.44; – **गाम** पु॰, [अनुराधग्राम], श्रीलङ्का के प्राचीन नगर अनुराधपुर का ही दूसरा नाम – *अनुराधगामं तन्नामो कदम्बनदियन्तिके*, म॰ वं॰ 7.43; – **नगर** नपुं॰, अनुराधपुर का ही एक अन्य नाम – *ततो'नुराधनगरं अभिगम्म यथाविधिं*, चू॰ वं॰ 59.8; *गन्त्वा'नुराधनगरं सयञ्च विधिकोविदो*, चू॰ वं॰ 74.7.

अनुराधपुर नपुं॰, श्रीलङ्का की प्राचीन राजधानी का नाम, जिसे अनुराध ने स्थापित किया था, अनुराधपुर एवं अनुराराम रूप में भी उल्लिखित – *नक्खत्तनामको मच्चो मापेसि अनुराधपुरं*, दी॰ वं॰ 9.35; *निवासट्ठानुराधानं अनुराधपुरं अहु, नक्खत्तेनानुराधेन पतिट्ठापितताय च*, म॰ वं॰ 10.70; *थेरो तस्स ... वेहासं उप्पतित्वा अनुराधपुरस्स पुरत्थिमदिसाय मिस्सकपब्बते पतिट्ठहि*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.51; – **रक्खक** पु॰, तत्पु॰ स॰, अनुराधपुर नगर का रक्षक – *अथ, एकदा महामच्चो'नुराधपुररक्खको*, चू॰ वं॰ 72.65.

अनुराधा स्त्री॰, [अनुराधा], 27 नक्षत्रों की सूची में सातवें नक्षत्र का नाम – *विसाखानुराधा जेट्ठा मूलासाळ्हा दुवे तथा*, अभि॰ प॰ 59; ... *विसाखा अनुराधा जेट्ठा मूलं पुब्बासाळ्हं उत्तरासाळ्हं ...*, सद्द॰ 2.359.

अनुराराम पु॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का के रोहण में स्थित अनुराधपुर विहार का ही दूसरा नाम – *कारेसि अनुरारामं महागामस्स सन्तिके*, म॰ व॰ 35.83; *कारेसिनुराधारामं ति महागामस्स सन्तिके ततो उत्तरदिसाभागे अनुराधनामकं विहारं च कारेसि*, म॰ वं॰ टी॰ 608(ना॰); *कारेसि पोसथागारं अनुरारामसव्हये*, म॰ व॰ 36.37; 30.

अनुरुज्झति अनु + √रुधि का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, [अनुरुध्यते], अनुरक्त होता है, सन्तुष्ट या आनन्दित होता है, स्वीकृति देता है या अनुमोदन करता है, सहमत होता है – *सो उप्पन्नं लाभं अनुरुज्झति, अलाभे पटिविरुज्झति ...*, अ॰ नि॰ 3(1).9; *अनुरुज्झतीति अनुरोधो, कामेतीति अत्थो*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 389.

अनुरुद्ध[1] त्रि॰, अनु + √रुधि का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुरुद्ध], सहमति को प्राप्त, अनुमोदित, समर्पित, राग से युक्त, लगाव रखने वाला, स॰ उ॰ प॰ के रूप में अननुरुद्ध के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **पटिविरुद्ध** त्रि॰, राग एवं विरोध से युक्त – *सा पनावुसो, निद्दा अनुरुद्धप्पटिविरुद्धस्स उदाहु अननुरुद्धअप्पटि-विरुद्धस्सा'ति*, म॰ नि॰ 1.95; *अनुरुद्धपटिविरुद्धस्साति रागेन अनुरुद्धस्स कोधेन पटिविरुद्धस्स*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).322.

अनुरुद्ध[2] पु॰, **क.** एक बुद्ध का नाम – *अनुरुद्धो नाम सम्बुद्धो, सयम्भू अपराजितो*, अप॰ 1.385; **ख.** कौण्डिन्य बुद्ध के उपस्थापक या सेवक का नाम – *अनुरुद्धो नामुपट्ठाको, कोण्डञ्ञस्स महेसिनो*, बु॰ वं॰ 4.30; *कोण्डञ्ञस्स बुद्धस्स पन रम्मवती नाम नगरं ... भद्दो च सुभद्दो च द्वे अग्गसावका, अनुरुद्धो नामु-पट्ठाको, तिस्सा च उपतिस्सा च द्वे अग्गसाविका, ... वस्ससतसहस्सं आयुप्पमाणं अहोसि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.40; **ग.** बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में से एक का नाम, जो कि शाक्यवंशीय था – *इत्थं सुदं आयस्मा अनुरुद्धो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति*, अप॰ 1.33; **घ.** अनुरुद्धसतक, नामरूपपरिच्छेद, परमत्थविनिच्छय तथा अभिधम्मत्थसङ्गह नामक ग्रन्थों के रचयिता एक सिंहली भिक्षु का नाम – *अभिधम्मावतारं ... बुद्धदत्तथेरो, विनयसंगहं सारिपुत्तथेरो, ... परमत्थविनिच्छयं नामरूपपरिच्छेदं अभिधम्मत्थसङ्गहञ्च अनुरुद्धथेरो ... संवण्णितत्ता सुखेन च लक्खणियत्ता लक्खणगन्धा ति वुच्चन्ति*, सा॰ वं॰ 31(ना॰); **ङ.(1)**. अनेक राजाओं का नाम, उदयभद्द के उत्तराधिकारी पुत्र तथा मुण्डक के पिता का नाम – *उदयभद्दपुत्तो तं घातेत्वा अनुरुद्धको*, म॰ वं॰ 4.2; *अजातसत्तु बिम्बिसारं घातेसि, उदयो अजातसत्तुं, तस्स पुत्तो महामुण्डिको नाम उदयं, तस्स पुत्तो अनुरुद्धो नाम महामुण्डिकं*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.128; **ङ.(2).** श्रीलङ्का के अरिमद्दनपुर के एक शासक का नाम – *सो च सिरिसङ्घबोधिराजा अम्हाकं मरम्मरट्ठे अरिमद्दननगरे अनुरुद्धेन नाम रञ्ञा समकालवसेन रज्जसम्पत्तिं अनुभवि*, सा॰ वं॰ 23(ना॰); **ङ.(3).** हंसावती नगर (श्रीलङ्का) के राजा, अनेक सेतिमिन्द के एक राजकुमार का नाम – ..., *बलिभुञ्जनत्थाय जेट्ठपुत्तस्स अनुरुद्धस्स नाम राजकुमारस्स दत्वा*, ..., सा॰ वं॰ 49(ना॰); – **संयुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ के आठवें संयुत का नाम, 365–377; – **सुत्त** नपुं॰, म॰ नि॰ तथा स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक या नाम; म॰ नि॰ 3.185–191; स॰ नि॰ 1(1).231–232.

अनुरुध अनु + √रुध का धा॰, रुधादि एवं दिवादिगण की धातुओं में परिगणित [अनुरुध, रुधादिगण], इच्छा करना, कामना करना, अनुकूल होना, किसी के प्रति निष्ठावान

होना - *अनुरुद्ध कामे, काम इच्छा, अनुपुब्बो रुधधातु इच्छायं वत्तति, अनुरुद्धो अनुरोध, अनुरसा ति किं विरोधो तत्थ अनुरुद्धो ति अनुरुज्झति पणीतं पणीतं वत्थुं कामेती ति अनुरुद्धो, अनुरोधो ति अनुकूलता, अयं पाळी, सो उप्पन्नं लाभं अनुरुज्झति अलाभे पटिविरुज्झती'ति,* सद्द॰ 2.485; प्रयोग के लिए द्रष्ट॰ अनुरुज्झति, अनुरुद्ध आदि के अन्त॰.

अनुरूप त्रि॰, [अनुरूप], उचित या समान प्रकृति वाला, एकदम मिलता-जुलता, योग्य, उपयुक्त, अनुकूल, सुखद (ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले पदों के साथ या समास में प्रयुक्त) - *अत्थेन अत्थिको तस्स अत्थत्थिकभावस्स अनुरूपं किलेसग्गिवूपसमेन सन्तं,* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.120; *तस्मास्स अनुरूपसेनासनं दस्सेन्तो भगवा अरञ्ञगतो वा'तिआदिमाह,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).259; ... *अननुरूपं विहारं पहाय अनुरूपे विहारे विहरन्तेन* ..., विसुद्धि॰ 1.88; *अञ्ञञ्च बहुं अत्तनो अनुरूपं वदन्तो अट्ठासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.100; *पुब्बे पन तेन कतस्स कम्मस्स अनुरूपमेव मरणं पत्तो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.39; - **पा** स्त्री॰, उपयुक्त समान, एकदम मिलती जुलती - *सण्हतुङ्गसदिसी चाति सण्हा तुङ्गा सेसमुखावयवानं अनुरूपा च,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 235; - **पं** नपुं॰, क्रि॰ वि॰, ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले पदों के साथ अथवा स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त [अनुरूपं], सरलतापूर्वक, सुखदरूप में, अनुकूलता में, अनुरूपं, मो॰ व्या॰ 3.2; - **तो** प॰ वि॰ प्रतिरू॰ निपा॰, क्रि॰ वि॰, सप्त॰ वि॰ में अन्त होने वाले पदों के साथ अथवा स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त [अनुरूपतः], सङ्गति में, सरलता के साथ, अनुकूल रूप में - *उक्कंसस्सावकंसस्स, अन्तरे अनुरूपतो,* अभि॰ अव॰ 100; *अत्थानुरूपतो सद्दं, अत्थं सद्दानुरूपतो,* सद्द॰ 1.44; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अज्झासयानु॰, अत्थानु॰, अननु॰, अधिप्पायानु॰, अपराधानु॰, अभिसमयानु॰, आविभावानु॰, इच्छानु॰, ओकासानु॰, कम्मानु॰, कालानु॰, ञाणबलानु॰, तथानु॰, तदनु॰, पञ्ञानु॰, पटिञ्ञानु॰, पाळिनयानु॰, मगधभासानु॰, यथानु॰, योगानु॰, वचीदुच्चरितानु॰, वयानु॰, विभावानु॰, सकसकभासानु॰, सद्दानु॰, सानु॰, सुभानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अनुरूपत्व], समानता, अनुकूलता, हितकरता - *मतिया अनुरूपत्ता, अनुमज्जनलक्खणो,* अभि॰ अव॰ 122; - **सभावभूत** त्रि॰, [अनुरूपस्वभावभूत], किसी की प्राप्ति में सहायक स्वभाव वाला, अनुरूप स्वभाव वाला - *धम्मानुधम्मप्पटिपन्नोति लोकुत्तरस्स निब्बानधम्मस्स अनुधम्मभूतं पटिपदं पटिपन्नो, अनुधम्मभूतन्ति अनुरूपसभावभूतं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.31.

अनुरोदति अनु + √रुद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुरोदति], किसी वस्तु की चाह में रोता है, अभीप्सित को उद्देश्य बना कर रोता है - *यथापि दारको चन्दं, गच्छन्तमनुरोदति,* पे॰ व॰ 91; जा॰ अट्ठ॰ 3.143; *सो हि विज्जमानचन्दं अनुरोदति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.143; *अनुरोदतीति मय्हं रथचक्कं गहेत्वा देही'ति अनुरोदति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 55.

अनुरोध पु॰, अनु + √रुध से व्यु॰ [अनुरोध], विनती, आराधना, इच्छापूर्ति-हेतु निवेदन, लिहाज, विचार, समरूपता, अनुकूलता - *थानुरोधोनुवत्तनं,* अभि॰ प॰ 345; ... *अनुरोधो ति अनुकूलता,* विसुद्धि॰ 2.485; ... *समानताय च अत्तनि अनुरोधं विनेन्तो एवं* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.192; *अनुरोधोति अनुकूलता,* सद्द॰ 2.485; - **विरोध** पु॰, ए॰ व॰ एवं ब॰ व॰ में प्रयुक्त, द्व॰ स॰ [अनुरोधविरोध], **शा॰ अ॰** अनुकूल एवं विपरीतभाव, स्वीकृति एवं निषेध, **ला॰ अ॰** राग एवं द्वेष - *सो एवं अनुरोधविरोधं समापन्नो यं किञ्चि वेदनं वेदेति सुखं वा दुक्खं वा* ..., म॰ नि॰ 1.338; *अनुरोधविरोधन्ति रागञ्चेव दोसञ्च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(2).206; *अनुरोधविरोधेहि, विप्पमुत्तो तथागतो'ति,* स॰ नि॰ 1(1).132; *चतुत्थे अनुरोधविरोधेसूति रागपटिघेसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.156; - **विप्पमुत्त** त्रि॰, राग और द्वेष की अकुशल चित्तवृत्तियों से पूरी तरह से मुक्त - *योगानुभावो हि एस, यदिदं अनुरोधविरोधविप्पमुत्तो अरतिरतिसहो अभूतपक्खेपभूतापनयनविरहितो च होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).255; - **विप्पहीन** त्रि॰, वह, जिसने राग और द्वेष को पूरी तरह से नष्ट कर लिया है - *अनुरोधविरोधविप्पहीनो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य,* सु॰ नि॰ 364; *ततियगाथाय अनुरोधविरोधविप्पहीनो'ति सब्बवत्थूसु पहीनरागदोसो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.86; 192; - **समतिक्कन्त** त्रि॰, [अनुरोधविरोधसमतिक्रान्त], वह, जो राग और द्वेष के अकुशल मनोभावों को पार कर चुका है, राग एवं द्वेष पर विजय पा चुका व्यक्ति - *अनुनयपटिघविप्पहीनो उग्घातिनिघातिवीतिवत्तो अनुरोधविरोधसमतिक्कन्तो,* महानि॰ 82; *अनुरोधविरोधसमतिक्कन्तोति अनुनयञ्च पटिघञ्च सम्मा अतिक्कन्तो,* महानि॰ अट्ठ॰ 194; - **समापन्न** त्रि॰, [अनुरोधविरोधसमापन्न], राग और द्वेष से ग्रस्त - *सो एवं अनुरोधविरोधसमापन्नो न परिमुच्चति जातिया जराय मरणेन ... दोमनस्सेहि उपायासेहि,* अ॰ नि॰ 3(1).9; म॰ नि॰ 1.338.

अनुलग्ग त्रि॰, [अनुलग्न], साथ में लगा हुआ, पीछे से जोड़ा हुआ, अनुगत - *अन्वासत्ताति अनुलग्गा वोकिण्णा,* उदा॰ अट्ठ॰ 177.

अनुलतिस्स पब्बत पु., श्रीलङ्का के गङ्गराजि-क्षेत्र में स्थित एक पर्वत तथा एक विहार का नाम – *पाचीनतो अनुळतिस्सपब्बतं गङ्गराजियं ति पाचीनदिसायं गङ्गराजियं अनुळातिस्सपब्बतं नाम विहारं न नियेलतिस्सारागमं चा ति नियेलतिस्सपब्बतरामविहारं च,* म. वं. टी. 616(ना.).

अनुला / अनुळा स्त्री., व्य. सं., 1. कश्यप बुद्ध की एक प्रमुख शिष्या या अग्रश्राविका का नाम – *तस्स भगवतो जातनगरं बाराणसी नाम अहोसि, ब्रह्मदत्तो नाम ब्राह्मणो पिता, धनवती नाम ब्राह्मणी माता, तिसो च भारद्वाजो च द्वे अग्गसावका, सब्बमित्तो नामुपट्ठाको, अनुळा च उरुवेला च द्वे अग्गसाविका, निग्रोधरुक्खो बोधि,* ...., जा. अट्ठ. 1.53; *अनुळा उरुवेळा च, अहेसुं अग्गसाविका, बोधि तस्स भगवतो, निग्रोधोति पवुच्चति,* बु. वं. 26.39; 2. वाराणसी के चूळसेट्ठी की एक पुत्री का नाम - *बाराणसियं ... चूळसेट्ठि नाम अहोसि, सो कालं कत्वा पेतेसु निब्बत्ति, तस्स कायो ... अहोसि, धीता पनस्स अनुला ...,* पे. व. अट्ठ. 93; 3. श्रीलङ्का के शासक देवानम्पिय तिस्स के भाई महानाग की रानी तथा मुटसीव की उस पुत्री का नाम, जिसने सङ्घमित्रा से प्रव्रज्या ग्रहण की – ... *अनुळा देवी पब्बजितुकामा हुत्वा रञ्ञो आरोचेसि,* ..., पारा. अट्ठ. 1.63; 4. खल्लाहनाग एवं वट्टगामिणि की रानी का नाम - *महाचूळिकनामं तं पुत्तट्ठाने ठपेसि च, तम्मातरं अनुळादेविं महेसिं च अकासि सो,* म. वं. 33.35-36; 5. चोरगाग, सिव एवं वटुक की रानी का नाम – *चोरनागस्स देवी तु विसमं विसमानुला,* ...., म. वं. 34.16-29.

अनुळाप पु., अनु + √लप से व्यु. [अनुलाप], कथन की पुनरावृत्ति, पुनरुक्ति – *मुहुम्भासानुलापो,* अभि. प. 123.

अनुळार त्रि., उळार का निषे. [अनुदार], छोटा, हल्का, वह, जो बड़ा अथवा विशाल नहीं है; – **क** त्रि., उपरिवत् – *चतुरासीतिसहस्सानि पूजा च अनुळारिका,* म. वं. 34.59; – **त्त** नपुं., भाव. [अनुदारत्व], हल्का-फुल्का या साधारण होने की अवस्था – *तस्स च अप्पकत्ता अनुळारत्ता च आसनकं न्ति आह,* वि. व. अट्ठ. 18.

अनुलित्त त्रि., अनु + √लिम्प का भू. क. कृ. [अनुलिप्त], वह, जिसे सुगन्धित तेल आदि का लेप लगाया गया है अथवा उबटन किया गया है – *राजा न्हातानुलित्तो सुमण्डितप्पसाधितो नानग्गरसभोजनं भुञ्जि,* जा. अट्ठ. 1.257; *जातिसुमनमल्लिकादीनं विय पुप्फं नहातानुलित्तस्स, जिघच्छितस्स विय पणीतभोजनं,* मि. प. 323; *येन सीलगन्धेन अनुलित्ता भगवतो पुत्ता सदेवकं लोकं सीलगन्धेन धूपेन्ति सम्पधूपेन्ति,* मि. प. 303; स. उ. प. के रूप में चन्दनगन्धरसानुलित्त, चन्दनसारानु., चन्दनानु. आदि के अन्त. द्रष्ट.; – **सीलगन्ध** त्रि., ब. स. [अनुलिप्तशीलगन्ध], वह, जिसे शील रूपी सुगन्धित पदार्थ का लेप या उबटन किया गया है, शीलवान् - *परूळ्हकच्छलोमो सो अनञ्जितअमण्डितो अनुलित्तसीलगन्धो,* मि. प. 161.

अनुलिम्पति अनु + √लिम्प का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुलिम्पति, अनुलिम्पते], लेप करता है, उबटन करता है, लीपता या पोतता है, लेप लगाता है, आच्छादित कर देता है – *कुसलो भिसक्को ... अन्तोसल्लं सुसिरगतं ... वणं वूपसमेन्तो वणमुखं ... भेसज्जेन अनुलिम्पति परिपच्चनाय,* ..., मि. प. 120; – **म्पिं** अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने अवलेपन किया – *फलं बुद्धस्स दत्वान, अगळुं अनुलिम्पहं,* अप. 1.383; *काळानुसारियं गय्ह, अनुलिम्पिं तथागतं,* अप. 1.356; – **म्पेत्वा** पू. का. कृ., लेप लगाकर – *सम्बुद्धमनुलिम्पेत्वा, सन्थविं लोकनायकं,* अप. 1.356; – **म्पितब्ब** सं. कृ., लेप किया जाना चाहिए – *एवमेव खो, महाराज, योगिना ... मेत्ताभेसज्जेन मानसं अनुलिम्पितब्बं,* मि. प. 364; – **म्पन** नपुं., क्रि. ना. [अनुलेपन], लेप या उबटन लगाने की क्रिया – *सत्तग्गहणछेदनलेखनवेधनसल्लुद्धरणवणधोवनसोसनभेसज्जानुलिम्पनवमनविरेचनानुवासनकिरियमनुसिक्खित्वा* ..., मि. प. 320; – **म्पेति** प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुलिम्पयति], लेप लगवाता है, मलहम के लेप को लगवाता है - ... *अनुलेपनीयं अनुलिम्पेति, अनुवासनीयं अनुवासेति,* मि. प. 166; *ते सदेवकं लोकं सीलवरचन्दनगन्धेन अनुलिम्पयन्ती'ति,* मि. प. 236.

अनुलेप पु., अनु + √लिप से व्यु., क्रि. ना. [अनुलेप], मलहम लगाकर पट्टी या प्लास्टर बांध देना - *निट्ठिते नवकम्मे च, अनुलेपमदासहं,* अप. 1.269; *दिस्सन्ति, भन्ते नागसेन, वेज्जानं उपक्कमा भेसज्जपानानुलेपा,* मि. प. 152.

अनुलेपदायक पु., व्य. सं., दो स्थविरों के लिये प्रयुक्त उपाधि – *इत्थं सुदं ... अनुलेपदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.176; 269-70.

अनुलेपनमत्तिका स्त्री., तत्पु. स. [अनुलेपनमृत्तिका], लीपने-पोतने के काम में प्रयुक्त मिट्टी – *मत्तिकन्ति अनुलेपमत्तिकं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).128.

अनुलेपनीय त्रि., अनु + √लिप का सं. कृ. [अनुलेपनीय], लेप किये जाने योग्य, लिपाई-पोताई किये जाने योग्य - *अनुलेपनीयं अनुलिम्पेति,* मि. प. 166.

अनुलोकी/अनुलोकिक त्रि., देखने वाला, दृष्टिपथ में रखने वाला - *सीसानुलोकिनो हुत्वा अनुगता होन्तीति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.39; *सारिपुत्तत्थेरोपि तस्स गमनं सुत्वा सीसानुलोकिको गन्त्वा ओकासं सल्लक्खेत्वा तं ... सत्तविसुद्धिक्कमं पुच्छि,* अ. नि. अट्ठ. 1.159.

अनुलोम त्रि., विविध रूपों में प्रयोग [अनुलोम], **शा. अ.** बालों के अनुरूप, **ला. अ. क.** बालों की तरह ऊपर से नीचे की ओर आने वाला, नियमित या स्वाभाविक क्रम के अनुसार, अनुकूल, सीधे क्रम में - *वताति अनुलोमवचनत्थे निपातो,* पटि. म. अट्ठ. 1.304; *अपि नु मे तं ... अनुलोमं अभविस्स ञाणस्स उप्पादाय-सब्बे धम्मा अनत्ता'ति,* स. नि. 2(2).366; **- मेन** तृ. वि., ए. व., अनुलोम या सीधे क्रम के द्वारा - *अनुलोमेन धम्मट्ठितियं निब्बाने च पटिलोमभावस्स,* सु. नि. अट्ठ. 1.8; **- तो** प. वि. प्रतिरू. निपा., अनुलोमक्रम से, क्रमसङ्गत रूप से, सीधे क्रम से - *बोधिपक्खियधम्मानं, उद्धञ्च अनुलोमतो,* अभि. अव. 162; **ख. - मं** अ., क्रि. वि., नियिमित क्रम के अनुसार, सीधे क्रम से - *अथ खो भगवा ... पठमं यामं पटिच्चसमुप्पादं अनुलोमं साधुकं मनसाकासि,* उदा. 69; *अथ वा आदितो पट्ठाय ... अनुलोमतो अनुलोमो, तं अनुलोमं, साधुकं मनसाकासीति सक्कच्चं मनसि अकासि,* उदा. अट्ठ. 31; **ग.** पु./नपुं., *अनुधम्मं* से निर्मित *अनुधम्म के अनुकरण पर* व्यु., सीधा या नियमित क्रम - *अथ वा आदितो पट्ठाय अन्तं पापेत्वा वुत्तत्ता पवत्तिया वा अनुलोमतो अनुलोमो, तं अनुलोमं,* उदा. अट्ठ. 31; *अनुलोमपटिलोमन्ति अनुलोमञ्च पटिलोमञ्च,* महाव. अट्ठ. 226; **घ.** नपुं., तीसरा जवनचित्त, गोत्रभू से पूर्व की चित्त की एक अवस्था - *अप्पनायानुलोमत्ता, अनुलोमानि एव च, तदेव, अनुलोमेन धम्मट्ठितियं निब्बाने च पटिलोमभावतो,* उदा. अट्ठ. 27; *यस्मिञ्हि जवनवारे अरियमग्गो उप्पज्जति, तत्थ यदा द्वे अनुलोमानि, तदा ततियं गोत्रभु, चतुत्थं मग्गचित्तं, ततो परं तीणि फलचित्तानि होन्ति,* उदा. अट्ठ. 27; *ततियं जवनचित्तं, अनुलोमन्ति सञ्जितं,* अभि. अव. 162; *तस्मा तीणि फलानि हि, अनुलोमा तयो होन्ति,* अभि. अव. 165; स. उ. प. के रूप में अनत्तसञ्ञानु., अनिच्चसञ्ञानु., कप्पियानु., कसिणानु., झानानु., दुक्खसञ्ञानु., निब्बिदानु., पच्चनीयानु., पाठानु., विमोक्खानु., सच्चानु., सासनानु. तथा सुत्तानु. के अन्त. द्रष्ट.; **- क** नपुं., तीसरा जवनचित्त, गोत्रभू से तुरन्त पूर्ववर्ती चित्त - *दुतियं उपचारं तं, ततियं अनुलोमकं,* अभि. अव. 120; **- खन्ति** स्त्री., उचित क्रम में भावना करने योग्य क्षान्ति - *अनुलोमखन्तिं लद्धान, मोदती तिदिवं गतो'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.363; **- चित्त** नपुं., कर्म. स., तीसरा जवनचित्त, गोत्रभू से सद्यः-पूर्ववर्ती चित्त - *तस्मा सब्बन्तिमेन परिच्छेदेन द्वीहि अनुलोमचित्तेहि भवितब्बं,* विसुद्धि. 2.313; **- ञाण** नपुं. कर्म. स., विपश्यना कर्मस्थान के दस ज्ञानों में दसवां ज्ञान, 9 ज्ञानों के कृत्यनिष्पादन में तथा बाद में 37 बोधिपक्षीय धर्मों के लिये अनुकूल विपश्यना कर्मस्थान का एक ज्ञान - *निरन्तरं समाहितो अनुलोमञाणानन्तरं गोत्रभुञाणोदयतो पट्ठाय,* उदा. अट्ठ. 154; *सम्मसनञाणं उदयब्बयञाणं भङ्गञाणं भयञाणं आदीनवञाणं निब्बिदाञाणं मुच्चितुकम्यताञाणं पटिसङ्खाञाणं सङ्खारुपेक्खाञाणं अनुलोमञाणञ्चेति दस विपस्सनाञाणानि,* अभि. ध. स. 66; *पुरिमानं नवन्नं किच्चनिप्फत्तिया, उपरि च सत्ततिंसाय बोधिपक्खियधम्मानं अनुकूलंञाणं अनुलोमञाणं,* अभि. ध. वि. टी. 232; **- ठपना** स्त्री., अपने प्रतिपाद्य की स्थापना के लिए उपयुक्त अथवा अनुकूल तार्किक स्थापना - *अयं ताव परवादीपक्खस्स ठपनतो निग्गहपापनारोपनानं लक्खणभूता अनुलोमठपना नाम,* कथा. अट्ठ. 110; **- त्त** नपुं., भाव. [अनुलोमत्व], अनुकूलता, उपयुक्तता, अनुकूल या उपयुक्त रहने की स्थिति - *अप्पनायानुलोमत्ता, अनुलोमानि एव च, यं तं सब्बन्तिमं एत्थ, गोत्रभूति पवुच्चति,* अभि. अव. 899(गा.); *धम्मानुधम्मं पटिपज्जमानोति लोकुत्तरधम्मस्स अनुलोमत्ता अनुधम्मभूतं विपस्सनं भावयमानो,* सु. नि. अट्ठ. 2.57; **- धम्म** पु., कर्म. स. [अनुलोमधर्म], अनुकूल धर्म, उपयुक्त प्रत्यवेक्षण - *अयमनुधम्मोति अयं अनुलोमधम्मो होति,* स. नि. अट्ठ. 2.236; **- नय** पु., कर्म. स. [अनुलोमनय], अपनी तार्किक स्थापना के लिये अनुकूल तर्क-पद्धति - *इदानि धम्मेन ... दस्सेतुं अनुलोमनये पुच्छा सकवादिस्स, अत्तनो लद्धिं निस्साय पटिञ्ञा परवादिस्स,* कथा. अट्ठ. 113; **- पक्ख** पु., कर्म. स. [अनुलोमपक्ष], तार्किक स्थापना में अनुकूल पक्ष - *तेन वत रेतिआदि अनुलोमपक्खे निग्गहस्स पापितत्ता अनुलोमपापना नाम,* कथा. अट्ठ. 110; **- पच्चनीय** नपुं., दुकपट्ठान की एक प्रकार की गणनापद्धति का शीर्षक - *यथा कुसलत्तिके अनुलोमपच्चनीयगणना, एवं गणेतब्बं,* पट्ठा. 2.34; **- पञ्चक** नपुं., कथा. की पुग्गलकथा

की कुछ वर्णनाओं का शीर्षक, कथा॰ 2; – **पटिपदा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनुलोम-प्रतिपत्], उपयुक्त अथवा उपयुक्त मार्ग, अनुकूल प्रक्रिया, सीधी तर्क-पद्धति – *सम्मापटिपदाय अनुलोमपटिपदाय अपच्चनीकपटिपदाय ... सीलेसु परिपूरिकारिताय इन्द्रियेसु गुत्तद्वारताय भोजने मत्तञ्ञुताय,* महा॰ नि॰ 10; *अनुलोमपटिपदायाति अविरुद्धपटिपदाय, न पटिलोमपटिपदाय,* महानि॰ अट्ठ॰ 50; *समणसामीचिप्पटिपदाति समणानं अनुच्छविका समणानं अनुलोमप्पटिपदा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).221; – **पटिलोम** त्रि॰, सीधे तथा उलटे क्रम वाला, आगे की ओर से तथा पीछे की ओर से प्रारम्भ होने वाला; – **मं** अ॰, क्रि॰ वि॰, सीधे एवं उलटे क्रम से, नियमित क्रम में एवं विपरीत क्रम में – *अथ खो भगवा रत्तिया पठमं यामं पटिच्चसमुप्पादं अनुलोमपटिलोमं मनसाकासि,* महाव॰ 1; *अनुलोमपटिलोमन्ति अनुलोमञ्च पटिलोमञ्च,* महाव॰ अट्ठ॰ 226; *एवं अनुलोमपटिलोमं छसु देवलोकेसु सम्पत्तिं अनुभवन्ता विचरन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.431; *छसु कामावचरसग्गेसु अनुलोमपटिलोमेन महन्तं देविस्सरियं अनुभवन्ता विचरन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.284; – **पट्ठान** नपुं॰, पट्ठा॰ अट्ठ॰ के एक खण्ड का शीर्षक, पट्ठा॰ अट्ठ॰ 490; – **पापना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अनुलोमपक्ष में निग्रह की प्राप्ति – *तेन वत रेतिआदि अनुलोमपक्खे निग्गहस्स पापितत्ता अनुलोमपापना नाम,* कथा॰ अट्ठ॰ 110; – **रोपना** स्त्री॰, अनुलोम-पक्ष की तर्क-पद्धति में निग्रह का आरोपण या दोष का आविष्करण – *यं तत्थ वदेसीतिआदि अनुलोमपक्खे निग्गहस्स आरोपितत्ता अनुलोमरोपना नाम,* कथा॰ अट्ठ॰ 110; – **मावसान** नपुं॰, अप्पनावीथि के तृतीय चरण अनुलोम का अन्त या समाप्ति – *अनुलोमावसानम्हि, सूरं तिक्खं विपस्सनं,* अभि॰ अव॰ 1325.

अनुलोमिक 1. त्रि॰, [अनुलोमिक], उचित क्रम में आया हुआ, क्रमसङ्गत, स्वाभाविक अथवा नियमित क्रम में प्राप्त, ठीक या नियमित क्रम वाला, सीधे क्रम के हिसाब से रखा गया – *एस दीघनिकायोति, पठमो अनुलोमिको,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 27; *अयं अनुलोमिकायं खन्तियं ठितो,* उदा॰ अट्ठ॰ 111; *ये चरस धम्मा अक्खाता, सामञ्ञस्सानुलोमिका,* इतिवु॰ 74; ... *पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसु अनुलोमिका खन्ति पटिलद्धा होति यथाभूतं ञाणं,* विभ॰ 389; 2. नपुं॰, चार महाप्रदेश – *सुत्ते विनये अनुलोमे, पञ्ञत्ते अनुलोमिके,* परि॰ 302; *अनुलोमिकं नाम चत्तारो महापदेसा,* परि॰ अट्ठ॰ 202; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अननु॰, तदनु॰, नेत्तिधम्मानु॰, पब्बजितानु॰, भेदानु॰, सच्चानु॰, सिक्खापदानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुलोमेति अनुलोम के ना॰ धा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुलोमयति], **क.** *प्रायः द्वि॰ वि॰ में अन्त होने वाले नामों के साथ प्रयुक्त,* ठीक-ठाक अथवा अनुकूल कर देता है, अनुकूल दिशा की ओर ले जाता है – *यागुं देन्तो आयुं देति ... वातं अनुलोमेति ... दसानिसंसा यागुया'ति,* महाव॰ 297; – **मेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰, अनुकूल बनाकर, ठीक दिशा की ओर ले जाकर – *वातं अनुलोमेतीति वातं अनुलोमेत्वा हरति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.79; **ख.** किसी के द्वारा अनुकूल बना दिया जाता है या नियन्त्रित कर दिया जाता है – *भगवतो हि वाचाय कायो अनुलोमेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 103; *तं चे अकप्पियं अनुलोमेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.179; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, अनुकूल या अनुरूप बना देते हैं, विनियमित कर देते हैं – *ये ते, भिक्खवे, भिक्खू सुग्गहितेहि सुत्तन्तेहि ब्यञ्जनप्पतिरूपकेहि अत्थञ्च धम्मञ्च अनुलोमेन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).85; – **यित्वा / मेत्वान** पू॰ का॰ कृ॰, अपने अनुरूप बना कर – *तं अनुलोमयित्वा कप्पिये अनवज्जे ठत्वा समणधम्मं येव परियेसितब्बं,* मि॰ प॰ 338; *नवङ्गं बुद्धवचनं, अनुलोमेत्वान सब्बदा,* मि॰ प॰ 338; **ग.** ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले नाम के साथ आने पर, अनुकूल या अनुरूप बन जाता है – *अननुलोमिकोति सासनस्स न अनुलोमेतीति अननुलोमिकं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.76; *भगवतो हि वाचाय कायो अनुलोमेति, कायस्सापि वाचा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).55; **घ.** सही या अनुकूल दिशा की ओर चलता है, अनुकूल हो जाता है – *यथा, महाराज, वंसो यत्थ वातो, तत्थ अनुलोमेति ...,* मि॰ प॰ 338.

अनुल्लपनता स्त्री॰, उल्लपन के भाव॰ का निषे॰, स्वयं को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहना, डींग न हांकना – *अनालपनतायाति अनुल्लपनताय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).308; तुल॰ अनालपनता.

अनुल्लपना स्त्री॰, अनु + √लप से व्यु॰, पीछे कहा गया कथन, अनुकरण पर बोला हुआ वचन, अनुवाद – *यो तत्थ अनुवादो अनुवदना अनुल्लपना अनुभणना ...,* चूळव॰ 196; *अनुल्लपना अनुभणनाति उभयं अनुवदनवेवचनमतमेव,* चूळव॰ अट्ठ॰ 39; *आलपना लपना सल्लपना उल्लपना समुल्लपना ... अनुप्पियभाणिता ...,* विभ॰ 404; – **नाधिप्पाय** त्रि॰, ब॰ स॰, स्वयं को बढ़ा-चढ़ाकर दिखलाने की प्रवृत्ति से रहित – *अनापत्ति अधिमानेन, अनुल्लपनाधिप्पायस्स, उम्मत्तकस्स, खित्तचित्तस्स, वेदनाट्टस्स आदिकम्मिकस्साति,* पारा॰ 134.

अनुवंस पु., [अनुवंश], वंशज, वंशपरम्परा में आगे उत्पन्न होने वाली संतान - *अपच्चोति अनुवंसो,* सु. नि. अट्ठ. 2.273.

अनुवग्ग त्रि., [अनुवर्ग], अपने समूह के अनुरूप, वर्ग के साथ सङ्गति रखने वाला - *तुलासङ्घाटानुवग्गा, सोवण्णफलकत्थता,* बु. वं. 1.14 (पृ.) 288; *अनुवग्गाति अनुरूपा,* बु. वं. अट्ठ. 45.

अनुवजति अनु + √वज का वर्त., प्र. पु., ए. व., द्रष्ट. अनुब्बजति के अन्त..

अनुवज्ज त्रि., अनु + √वद का सं. कृ. [अनुवाद्य], निन्दनीय, केवल स. उ. प. में प्रयुक्त, अनवज्ज तथा सावज्ज के अन्त. द्रष्ट..

अनुवड्ढि स्त्री., [अनुवृद्धि], बाद में होने वाली वृद्धि, उन्नति या सौभाग्य - *अनुदयतायाति अनुवड्ढिया, सपुब्बभागाय मुदितायाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 3.254.

अनुवत्तक त्रि., अनु + √वत से व्यु., [अनुवर्तक], **क.** अनुगमन या अनुसरण करने वाला, निष्ठावान, परिचारक, पूर्णरूप से लगा हुआ - *तथापि लोकाचरियो, लोको तस्सानुवत्तको,* अप. 2.155; - **का** प्र. वि., ब. व., अनुगमन करने वाले, वफादार - *कथञ्हि नाम भिक्खू देवदत्तस्स सङ्घभेदाय परक्कमन्तस्स अनुवत्तका भविस्सन्ति वग्गवादका'ति,* पारा. 274; *अनुवत्तकाति यंदिट्ठिको सो होति यंखन्तिको यंरुचिको तेपि तंदिट्ठिका होन्ति तंखन्तिका तंरुचिका,* पारा. 275; - **त्तिका** स्त्री., अनुगमन करने वाली - *तस्स कम्मस्स ओसाने, उक्खित्तस्सानुवत्तिका,* विन. वि. 1994; **ख. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में** - अनुरूप रहने वाला, अविपरीत प्रकृति वाला - *यस्मा पन ... अभिधेय्यलिङ्गानुवत्तकानि भवन्ति,* सद्द. 1.247.

अनुवत्तति अनु + √वत का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुवर्तते], अनुगमन करता है, आज्ञाकारी होता है, अनुरूप रहता है, प्रसन्न करता है, किसी के प्रति पक्षपात करता है - *थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं अरट्ठं भिक्खुं गद्धबाधिपुब्बं अनुवत्तति,* पाचि. 293; *यो पोसो लहुचित्तस्स मित्तस्स वा ञातिनो वा अनुविधीयति अनुवत्तति,* जा. अट्ठ. 3.315; *समानाधिकरणपदं नाम कत्थचि पधानलिङ्गं अनुवत्तति कत्थचि नानुवत्तति,* सद्द. 1.102; - **सि** म. पु., ए. व. - *नो चे धम्मं निरंकत्वा अधम्ममनुवत्तसि,* जा. अट्ठ. 5.374; - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *सब्बे ममनुवत्तन्ति, आदेय्यवचना अहुं,* अप. 2.186; - **मानो** पु., वर्त. कृ., अनुगमन करता हुआ - *तं कुल्लवत्तं अनुवत्तमानो, माहं कुले अन्तिमगन्धनो अहुं,* जा. अट्ठ. 4.31; - **रे** वर्त., प्र. पु., ब. व., आत्मने., अनुसरण करते हैं - *निवातमनुवत्तरे,* जा. अट्ठ. 7.103; - **त्ताम** वर्त., उ. पु., ब. व., हम अनुगमन करते हैं - *हन्द नं अनुवत्तामाति अनुवत्तिंसु,* दी. नि. अट्ठ. 1.232; - **न्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व., अनुगमन करता हुआ - *सो किर पुब्बे राजानं अनुवत्तन्तो एकं तण्डुलनाळिं अस्सानं अग्घमकासि,* जा. अट्ठ. 1.131; - **न्तेहि** पु., वर्त. कृ., तृ. वि., ब. व. - *मं अनुवत्तन्तेहि भिक्खूहि सद्धिं आवेणिकं उपोसथं सङ्घकम्मानि च करिस्सामीति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 258; - **त्तेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., अनुगमन या अनुसरण करे - *या पन भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं भिक्खुं ... तमनुवत्तेय्य, ...,* पाचि. 293; - **त्तेय्युं** विधि., प्र. पु., ब. व., अनुगमन करें - *अथ खो यो नेसं पाणकानं बलवतरो अस्स तस्स ते अनुवत्तेय्युं ... वसं गच्छेय्युं,* स. नि. 2(2).197; - **त्ति** अद्य., प्र. पु., ए. व., अनुगमन किया - *माय्ये, एतं भिक्खुं अनुवत्ती'ति,* पाचि. 293; - **त्तिसं** अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने अनुगमन किया - *अत्थं धम्मं निराकत्वा, अधम्ममनुवत्तिसं,* पे. व. 504; - **त्तिंसु** ब. व., हमने अनुगमन किया - *तथेव तं उक्खित्तकं भिक्खुं अनुवत्तिंसु अनुपरिवारेसुं,* महाव. 458; - **त्तिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व., अनुगमन करेगा - *कथञ्हि नाम अय्या थुल्लनन्दा भिक्खुनी समग्गेन सङ्घेन उक्खित्तं अरिट्ठं भिक्खुं ... अनुवत्तिस्सती'ति,* पाचि. 293; - **त्तिस्साम** उ. पु., ब. व., हम अनुगमन करेंगे - *ते तं अनुवत्तिस्साम, सत्था गोविन्द नो भवं,* दी. नि. 2.179; - **त्तितुं** निमि. कृ., अनुगमन के निमित्त - *अनुजानामि, भिक्खवे, राजूनं अनुवत्तितुन्ति,* महाव. 182; - **त्तिय** पू. का. कृ., अनुगमन करके - *एवं धम्मा अपक्कम्म, अधम्ममनुवत्तिय,* स. नि. 1(1).71.

अनुवत्तन नपुं., [अनुवर्तन], अनुसरण, आज्ञापालन, अनुरूप बनना, अनुग्रह, स्वीकृति - *विद्देसी च दिसो दिट्ठो'थानुरोधो'नुवत्तनं,* अभि. प. 345; *धम्मानुवत्ती चाति तिविधस्स सुचरितधम्मस्स अनुवत्तनं,* जा. अट्ठ. 1.351; ... *तिस्सन्नं सिक्खानं अनुवत्तनवसेन सिक्खितब्बं,* उदा. अट्ठ. 72; स. उ. प. के रूप में अननु., उग्गतपानु., धम्मानु., परचित्तानु., लोकधम्मानु., वेदानु., सुचरितधम्मानु. के अन्त. द्रष्ट..

अनुवत्तापक त्रि., अनु + √वत के प्रेर. से व्यु., व्याकरण में पूर्वसूत्रों से अनुवृत्ति कराने वाला, व्याकरणगत संगति की अपेक्षा रखने वाला - *वाच्चलिङ्गानं अनुवत्तापकस्स*

भिधेय्यलिङ्गभूतस्स आपसद्दस्स कञ्ञाय चित्तानी ति ... पुंसकलिङ्गरूपानं अभावतो, सद्द॰ 1.115.

अनुवत्ति स्त्री॰, [अनुवृत्ति], **क.** अनुरूपता, अनुगामिता, निरन्तरता, सहमति, **ख. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में** – अगले नियम में पिछले नियम की पुनरुक्ति, पिछले नियम का आगामी नियम पर निरन्तर जारी रहने वाला प्रभाव, पुनरुक्ति – *पच्छा भुसत्थ सादिस्सानुपच्छिन्नानुवत्तिसु,* अभि॰ प॰ 1174; *धम्मानुवत्ती च अलीनता च, अत्थस्स द्वारा पमुखा छळेते'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.350; *धम्मानुवत्ती चाति तिविधस्स सुचरितधम्मस्स अनुवत्तनं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.351.

अनुवत्तिक त्रि॰, अनुवत्ती से व्यु॰, [अनुवर्तिक], अनुयायी, अधीन, वशवर्ती, आज्ञाकारी, पूर्णरूप से निष्ठावान – *अञ्ञतरा मारकायिकाति नामवसेन ... मिच्छादिट्ठिका मारपक्खिका मारस्सनुवत्तिका एवमयं मारधेय्यं मारविसयं ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.7; स॰ उ॰ प॰ के रूप में किलेसानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुवत्तित त्रि॰, अनु + √वत के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰, वह, जिसका अनुगमन या अनुसरण किसी के द्वारा किया गया है, अनुगत – *अनुगताति चित्तेन अनुवत्तिता,* उदा॰ अट्ठ॰ 192.

अनुवत्ती त्रि॰, [अनुवर्तिन], अनुगामी, आज्ञाकारी, अनुरूप केवल कर्म॰ स॰ के उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त, उग्गतपान॰, करुणान॰, धम्मानु॰, भत्तुवसानु॰, मारपासानु॰, वेदनानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुवत्तेति अनु + √वत के प्रेर॰ का वर्त, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुवर्तयति], अनुगमन या अनुसरण करता है, गतिशील बनाए रखता है, निरन्तर गतिशील रहने हेतु प्रेरित करता है, किसी के द्वारा गतिशील किये गये को आगे भी गतिशील कराता है – *मया पवत्तितं चक्कं, (सेलाति भगवा) धम्मचक्कं अनुत्तरं, सारिपुत्तो अनुवत्तेति, अनुजातो तथागतं,* थेरगा॰ 826; 827; सु॰ नि॰ 561-62; – **स्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुगमन कराएगा – *अनुवत्तेस्सति सम्मा, वस्सेन्तो धम्मवुट्ठियो,* अप॰ 1.20; – **त्तये** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुसरण करे – *पहाय इस्सरमदं, निवातमनुवत्तये,* पे॰ व॰ 764; – **त्तिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, अनुवर्तन किया, अनुगमन किया – *..., हन्द नं अनुवत्तामाति अनुवत्तिंसु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.232.

अनुवदति अनु + √वद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुवदति], **क.** सहमत होता है, समर्थन करता है, प्रशंसा करता है – *मातापि पुत्तं अनुवदति,* चूळव॰ 202; – **न्ति** ब॰ व॰ – *सुद्धो होति भिक्खु अनापत्तिको, अनुवदन्ति च नं,* चूळव॰ 183; **ख.** निन्दा करता है, आरोप लगाता है, आलोचना करता है – **ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अमूलकेन अब्रह्मचरियेन अनुद्धंसेतीति तस्मिं पुग्गले अविज्जमानेन अन्तिमवत्थुना अनुवदति चोदेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.69; – **दियमानो** कर्म॰ वा॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, निन्दित या आरोपित किया जा रहा – *चित्तेन अनुवदियमानो सन्थम्भेतुं न सक्खिस्सामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).293.

अनुवदना स्त्री॰, अनु + √वद से व्यु॰, किसी कथन की पुनरुक्ति, पीछे बोला गया वचन या कथन, पीछे कहा गया निन्दात्मक अथवा प्रशंसापरक कथन – *यो तत्थ अनुवादो अनुवदना अनुल्लपना अनुभणना अनुसम्पवङ्कता अब्भुस्सहनता अनुबलप्पदानं – इदं वुच्चति अनुवादाधिकरणं,* चूळव॰ 196; *अनुवदनाति आकारनिदस्सनमेतं, उपवदनाति अत्थो,* चूळव॰ अट्ठ॰ 39; तुल॰ अनुवाद, उपवाद.

अनुवसति अनु + √वस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुवसति], किसी (स्थान) के बगल में बसता है – *गामं उपवसति, गामं अनुवसति,* सद्द॰ 3.717; – **वासेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुकरण करे – *सक्कच्चं अनुवासेय्य, स राजवसतिं वसे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.191; *अनुवासेय्याति उपोसथवासं वसन्तो अनुवत्तेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 7.192; – **सित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, रह कर, निवास कर – *हिय्योपि इधेव आगन्तब्बं भविस्सती'ति, तत्थेव अनुवसित्वा अनुवसित्वा आवसथपिण्डं भुञ्जन्ति,* पाचि॰ 98.

अनुवस्स[1] त्रि॰, वह भिक्षु, जिसने एक वर्षावास पूरा किया है – *अनुवस्सिको पब्बजितो, पस्स धम्मसुधम्मतं,* थेरगा॰ 24; *तत्थ अनुवस्सिकोति अनुगतो उपगतो वस्सं अनुवस्सो, अनुवस्सोव अनुवस्सिको,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.84; तुल॰ अनुवस्सिक.

अनुवस्स[2] नपुं॰, बाद में आने वाला वर्षावास, अभी तक न आया हुआ वर्षावास – *अथ वा अनुगतं पच्छागतं अपगतं वस्सं अनुवस्सं, तं अस्स अत्थीति अनुवस्सिको,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.84.

अनुवस्सं अ॰, क्रि॰ वि॰ [अनुवर्षम्], प्रत्येक वर्षा-ऋतु में, वार्षिक रूप में – *तेन खो पन समयेन भिक्खू अनुवस्सं सन्थतं कारापेन्ति,* पारा॰ 344; *कथञ्हि नाम भिक्खुनियो अनुवस्सं वुट्ठापेस्सन्ति, उपस्सयो न सम्मती'ति,* पाचि॰ 465; *या पन भिक्खुनी अनुवस्सं वुट्ठापेय्य पाचित्तियं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.112.

अनुवस्सक त्रि., अनुवस्स से व्यु. [अनुवार्षिक], वार्षिक, प्रतिवर्ष वाला - *निवेसेसि, बलिं तेसं अञ्ञेसं चानुवस्सकं*, म. वं. 10.86; *अनुवस्सं सहुमुत्तं सतसहस्सद्वयारहं* म. वं. 7.73.

अनुवस्सिक त्रि., वह भिक्षु, जिसने एक वर्षावास पूरा किया है, एक वर्षावास को पूर्ण किया हुआ भिक्षु या प्रव्रजित व्यक्ति - *अनुवस्सिको पब्बजितो, पस्स धम्मसुधम्मतं*, थेरगा. 24; *पब्बजितोति पब्बज्जं उपगतो, पब्बजितो हुत्वा उपगतवस्समत्तो एकवस्सिकोति अत्थो*, थेरगा. अट्ठ. 1.84.

अनुवहना स्त्री., अनु + √वह से व्यु., एक दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ क्रम, तांता, सिलसिला, अनुक्रम - *अनुबन्धनाति अनुवहना*, विसुद्धि. 1.266; पारा. अट्ठ. 2.21.

अनुवाक पु., [अनुवाक], वैदिक-संहिता के उपविभागों में से एक का नाम, वेद के उपभाग या अध्याय - *देवदत्तस्स विसयोनुवाको*, मो. व्या. 4.16; *मासमधीतोनुवाको न चानेन गहितोति*, मो. व्या. 2.3.(पृ.) 27.

अनुवाचेति अनु + √वच के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., पूर्वकाल में पढ़ाए गए विषय को पुनः पढ़ाता है, अनुवाचन करता है, बाद में पाठ करता है - *तदनुगायन्ति तदनुभासन्ति भासितमनुभासन्ति वाचितमनुवाचेन्ति*, दी. नि. 1.91; म. नि. 2.388; *वाचितमनुवाचेन्तीति तेहि अञ्ञेसं वाचितं अनुवाचेन्ति*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.298; दी. नि. अट्ठ. 1.221.

अनुवात पु., भिक्षु के चीवर में की गयी अतिरिक्त सिलाई - *पिमिअनुवातारोपनमत्तेनाति दीघतो अनुवातस्स आरोपनमत्तेन*, वि. वि. टी. 2.182; *अनुजानामि, भिक्खवे, अनुवातं परिभण्डं आरोपेतुन्ति*, महाव. 388; *अनुवातं परिभण्डन्ति अनुवातञ्चेव परिभण्डञ्च*, महाव. अट्ठ. 386; *सो पच्चेकबुद्धो तत्थ चीवरकम्मं करोन्तो अनुवाते अप्पहोन्ते संहरित्वाव ठपेतुं आरद्धो*, पे. व. अट्ठ. 62; - **करण** नपुं., भिक्षु के चीवर की अतिरिक्त सिलाई अथवा उसकी आपूर्ति - *न अनुवातकरणमत्तेन अत्थतं होति कथिनं*, महाव. 331; *अनुवातकरणमत्तेनाति पट्टिअनुवातारोपनमत्तेन*, महाव. अट्ठ. 369.

अनुवातं अ., क्रि. वि. [अनुवातं], हवा बहने की दिशा में, वायुप्रवाह के अनुकूल रूप में, अनुकूल रूप में - *अनुवातं योजनसतं गन्धो गच्छति*, अ. नि. 2(2).250; *येसं अनुवातं येव गन्धो गच्छति, नो पटिवातं*, अ. नि. 1(1).256; ..., *येन सीलगन्धेन अनुलित्ता भगवतो पुत्ता सदेवकं लोकं सीलगन्धेन धूपेन्ति सम्पधूपेन्ति, दिसम्पि अनुदिसम्पि अनुवातम्पि पटिवातम्पि वायन्ति अतिवायन्ति*, मि. प. 303; *तस्स हि गन्धो अनुवातं गच्छति*, अ. नि. अट्ठ. 2.198; विलो. पटिवातं; - **पटिवातं** अ., क्रि. वि. [अनुवातप्रतिवातं], हवा के बहने की दिशा में तथा हवा बहने की प्रतिकूल दिशा में - *किञ्चि गन्धजातं यस्स अनुवातम्पि गन्धो गच्छति, पटिवातम्पि गन्धो गच्छति, अनुवातपटिवातम्पि गन्धो गच्छती'ति*, अ. नि. 1(1).256.

अनुवातकरण नपुं., भिक्षु-चीवर की अतिरिक्त सिलाई अथवा अनुवात का प्रबन्ध - *न अनुवातकरणमत्तेन अत्थतं होति कथिनं*, महाव. 331; *अनुवातकरणमत्तेनाति पट्टिअनुवातारोपनमत्तेन*, महाव. अट्ठ. 369.

अनुवातमग्ग पु., कर्म. स. [अनुवातमार्ग], हवा के बहने वाली दिशा की ओर जा रहा मार्ग - *सचे अनुवातमग्गेन न सक्का होति गन्तुं*, ..., विसुद्धि. 1.175.

अनुवाते अ., अव्ययी. स., हवा के बहने वाली दिशा में, वह दिशा, जिसकी ओर हवा हो, अनुकूल स्थिति में, अप्रतिकूल दशा में - *परिगण्हिस्सामि नन्ति अनुवाते ठत्वा तस्स सरीरगन्धं घायित्वा अयं अम्हे मारेत्वा मंसं खादितुकामो*, जा. अट्ठ. 2.315; *सक्को देवानमिन्दो ... खग्गं ... सीलवन्ते कल्याणधम्मे अनुवातं पञ्जलिको नमस्समानो अट्ठासि*, स. नि. 1(1).261; *यो समं अनुवाते च, पटिवाते च वायति*, विसुद्धि. 1.10.

अनुवाद पु., [अनुवाद], **क.** निन्दा, दोषारोपण - *न पकतत्तस्स भिक्खुनो उपोसथो ठपेतब्बो, ..., न अनुवादो पट्ठपेतब्बो, न ...,* चूळव. 10; *न अनुवादोति विहारे जेट्ठकट्ठानं न कातब्बं*, चूळव. अट्ठ. 9; *यो तत्थ अनुवादोति यो अनुवदन्तेसु उपवादो*, चूळव. अट्ठ. 39; **ख.** ऐश्वर्य या आधिपत्य के भाव से किया गया दोषारोपण - ... *भिक्खुनियो भिक्खूनं उपोसथं ठपेन्ति, ..., अनुवादं पट्ठपेन्ति, ओकासं कारेन्ति, चोदेन्ति, सारेन्ति*, चूळव. 441; *अनुवादन्ति इस्सरियट्ठानं*, वजिर. टी. 490; **ग.** समर्थन, पक्षग्रहण, पक्ष के समर्थन में बोलना - *यो तत्थ अनुवादो अनुवदना अनुल्लपना ... अनुबलप्पदानं - इदं वुच्चति अनुवादाधिकरणं*, चूळव. 1.96; *यो तत्थ अनुवादोति यो तेसु अनुवदन्तेसु उपवादो*, चूळव. अट्ठ. 39; *विपत्तियो चतस्सोव ... अनुवादो उपागतो*, विन. वि. 2762; 2766; 2768; स. उ. प. के रूप में अत्तानु., परानु., वादानु., सानु. के अन्त. द्रष्ट.; - **मूल** नपुं., निन्दा या दोषारोपण का कारण - *छ अनुवादमूलानि अनुवादाधिकरणस्स मूलं*, चूळव. 197; - **विमुत्त** त्रि., निन्दा अथवा दोषारोपण से मुक्त - *अननुवज्जा चाति अनुवादविमुत्ता*, सु. नि. अट्ठ. 2.112;

– **दाधिकरण** नपुं., चार प्रकार के अधिकरणों अथवा विवाद-विषयों में से एक, निन्दा के कारण उत्पन्न वैधानिक प्रश्न अथवा विवाद का विषय – *अनुवादाधिकरणं कतिहि समथेहि सम्मति अनुवादाधिकरणं चतूहि ...., सिया अनुवादाधिकरणं द्वे समथे अनागम्मअमूळ्हविनयञ्च, तस्सपापियसिकञ्च,* चूळव. 211; *अधिकरणानन्ति विवादाधिकरणं अनुवादाधिकरणं आपत्ताधिकरणं किच्चाधिकरणन्ति इमेसं चतुन्नं,* दी. नि. अट्ठ. 3.204; – **टि.** सीलविपत्ति (शीलों का उल्लंघन), आचारविपत्ति (सदाचरण का अतिक्रमण), दिट्ठिविपत्ति (मिथ्या धारणाओं से ग्रस्त हो जाना) तथा आजीवविपत्ति (जीविका कमाने के उचित साधनों से भिन्न अनुचित साधन अपनाना), इन चार अपराधों में से किसी एक के अपराधी भिक्षु के विरुद्ध की गई निन्दा या भर्त्सना के कारण उत्पन्न वैधानिक मसला अनुवादाधिकरण कहा गया है. इसके अन्तर्गत अपराधी भिक्षु के विरुद्ध प्रयुक्त सभी प्रकार के अनुवाद (निन्दा), अनुलोपना (दोषों की प्राप्ति), अनुभणना (दोष-विषयक वार्तालाप), अनुसम्पवङ्कता, अब्भुस्सहनता तथा अनुबलप्पदान, ये सभी आ जाते हैं. अनुवादाधिकरण का समाधान सम्मुखविनय, सतिविनय, अमूळ्हविनय तथा तस्सपापिय्यसिका, इन चार उपायों द्वारा करणीय कहा गया है.

अनुवासति अनु + √आस का वर्त., प्र. पु., ए. व., **शा. अ.** पीछे बैठता है, बगल में बैठ जाता है, **ला. अ.** अनुकूल रूप में रहता है, उपस्थित होता है, अनुवर्तन करता है; – **सेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., अनुकरण करे, अनुगमन करे – *सक्कच्चं अनुवासेय्य, स राजवसतिं वसे,* जा. अट्ठ. 7.191; *अनुवासेय्याति उपोसथवासं वसन्तो अनुवत्तेय्य,* जा. अट्ठ. 7.192.

अनुवासन नपुं., [अनुवासन], तेल-भरी वर्तिका द्वारा विरेचन कराना – ... *वमनविरेचनानुवासनकिरियमनुसिक्खित्वा ....,* मि. प. 320.

अनुवासनीय त्रि., अनु + √वास का सं. कृ., तेलमयी वर्तिका द्वारा विरेचन कराये जाने योग्य – *अनुवासनीयं अनुवासेति,* मि. प. 166.

अनुवासरं अ., क्रि. वि. [अनुवासरं], प्रतिदिन – *मणिमुत्तादिकं वित्तं महग्घं अनुवासरं,* चू. वं. 62.32.

अनुवासित त्रि., अनु + √वास का भू. क. कृ., वह, जिसका विरेचन तेलभरी बत्ती डाल कर कराया गया हो – *वन्तस्स विरित्तस्स अनुवासितस्स आतुरस्स सप्पायकिरिया इच्छितब्बा होति,* मि. प. 203.

अनुवासेति अनु + √वास का वर्त., प्र. पु., ए. व., तेल की बत्ती डालकर विरेचन कराता है – *अनुवासनीयं अनुवासेति,* मि. प. 166.

अनुविक्खित्त त्रि., अनु + वि + √खिप का भू. क. कृ. [अनुविक्षिप्त], चारों ओर छितराया हुआ अथवा बिखेरा हुआ, इधर-उधर भागा हुआ – *पञ्च कामगुणे आरब्भ अनुविक्खित्तो अनुविसटो,* स. नि. 3(2).349; *अनुविक्खित्तो ति इध भिक्खु छन्दं उप्पादेत्वा कम्मट्ठानं मनसिकरोन्तो निसीदति,* स. नि. अट्ठ. 3.288.

अनुविगणेति अनु + वि + √गण का वर्त., प्र. पु., ए. व., अनुचिन्तन करता है, तर्क-वितर्क करता है – *न नूनायं परमहितानुकम्पिनो, रहोगतो अनुविगणेति सासनं,* थेरगा. 109; *अनुविगणेतीति एत्थ 'न नूना'ति पदद्वयं आनेत्वा सम्बन्धितब्बं नानुविगणेति नूना'ति, न चिन्तेसि मञ्ञे,* थेरगा. अट्ठ. 1.236.

अनुविचरति अनु + वि + √चर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुविचरति], **शा. अ.** अनुविचरण करता है, आस पास विचरण करता है, ऊपर नीचे विचरण करता है, **ला. अ.** चिन्तन करता है, अन्वेषण करता है – *रत्तिं अनुवितक्केति अनुविचारेति – अयं रत्तिं धूमायना,* म. नि. 1.198; *यं दिवसं ब्राह्मणो नगरं अनुविचरति, ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).96; – **न्ति** वर्त., प्र. पु., **ब. व.** – *अनुपरियन्तीति अनुविचरन्ति,* पे. व. अट्ठ. 164; *इमं लोकं अनुविचरन्ती'ति,* अ. नि. अट्ठ. 2.121; – **रन्ते** वर्त. कृ., सप्त. वि., ए. व. – *अनुचङ्कमन्तेपि अनुविचरन्तेपि,* म. नि. 1.350; – **रमान** वर्त. कृ., आत्मने., अनुविचरण करता हुआ – *दण्डपाणिपि खो सक्को जङ्घाविहारं अनुचङ्कममानो अनुविचरमानो येन महावनं तेनुपसङ्कमि,* म. नि. 1.155; – **रि** अद्य., प्र. पु., ए. व., इधर उधर विचरण किया – *यहिमनुविचरि राजा, परिकिण्णो इत्थागारेहि,* जा. अट्ठ. 5.180; – **रिं** अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने इधर उधर विचरण किया – *सन्धाविस्सं संसरिं, अपरापरं अनुविचरिन्ति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 2.71; –**रितुं** निमि. कृ., इधर उधर विचरने के निमित्त – *समत्थो च सो खणेन सागरजलपरियन्तं महिं अनुविचरितुं,* मि. प. 143; – **रित्वा** पू. का. कृ., इधर उधर या बहुत दूर तक विचरण करके – *अयं हयवरो सागरजलपरियन्तं महिं अनुविचरित्वा खणेन इधागच्छेय्या'ति,* मि. प. 143; – **रापेन्ति** प्रेर. वर्त., प्र. पु., ब. व.

[अनुविचारयन्ति], इधर-उधर या चारों तरफ विचरण कराते हैं – *महामोग्गल्लानं वेजयन्तो पासादे अनुचङ्कमापेन्ति अनुविचरापेन्ति,* म॰ नि॰ 1.322; – **रित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰, वह, जिस पर अच्छी तरह से अनुचिन्तन किया गया हो, वह, जिसकी पूरी तरह परीक्षा कर ली गयी हो – *दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातं पत्तं परियेसितं अनुविचरितं मनसा,* दी॰ नि॰ 3. 100; *अनुविचरितं मनसाति चित्तेन अनुसञ्चरितं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.88; *वीमंसानुचरितन्ति ताय वुत्तप्पकाराय वीमंसाय अनुचरितं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.92; *अनुविचरितन्ति वीमंसाय अनुपवत्तितं, वीमंसानुगतेन वा विचारेन अनुमज्जितं,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.129.

अनुविचार पु॰, [अनुविचार], पुनः-पुनः अनुचिन्तन, बारम्बार किया गया अनुप्रेक्षण, चिन्तनप्रक्रिया की निरन्तरता – ... *चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धनता अनुपेक्खनता* ..., ध॰ स॰ 22; *अनुगन्त्वा विचरणवसेन अनुविचारो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 188.

अनुविचारापेत्वा अनु + वि + √चर के प्रेर॰ का पू॰ का॰ कृ॰, अनुविचरण अथवा लगातार चिन्तन हेतु प्रेरित कर – *अत्थस्स पुत्तो ... अजानन्तो अनुविचारापेत्वा असुकट्ठाने नाम वसती'ति ञत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.157.

अनुविचारेति अनुविचार के ना॰ धा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, विचार करता है, सूक्ष्म परीक्षण करता है, अनुचिन्तन करता है – *भिक्खु बहुलमनुवितक्केति अनुविचारेति, तथा तथा नति होति चेतसो,* म॰ नि॰ 1.164.

अनुविचिन्तित त्रि॰, अनु + वि + √चिन्त का भू॰ क॰ कृ॰, वह, जिसका अनुचिन्तन अथवा परीक्षण कर लिया गया है, सुपरीक्षित – *पुरिसा ते महाराज, मनसानुविचिन्तिता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.203; *अनुविचिन्तितातिं नालं इमे मं दुक्खा मोचेतु'न्ति मया ञाता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.203.

अनुविचिन्तेत्वा अनु + वि + √चिन्त का पू॰ का॰ कृ॰, ध्यान में चढ़ाकर, अनुचिन्तन कर – *एको रहो अनुविचिन्तेत्वा,* दी॰ नि॰ 2.150.

अनुविच्च व्यु॰, संदिग्ध, संभवतः अनु + √विद के पू॰ का॰ कृ॰, अनुविज्ज का ही अनु + √इ के पू॰ का॰ कृ॰ अन्विच्च के अप॰ अनुविच्च के मिथ्यासादृश्य पर निर्मित शब्द [अनुविद्य], अच्छी तरह जान कर, भली भांति परीक्षण कर, ठीक से नाप-जोख कर – *अनुविच्च पपञ्चनामरूपं, अज्झतं बहिद्धा च रोगमूलं,* सु॰ नि॰ 53; *यं चे विञ्ञू पसंसन्ति, अनुविच्च सुवे सुवे,* ध॰ प॰ 229; *यं पन पण्डिता दिवसे दिवसे अनुविच्च निन्दकारणं वा पसंसकारणं वा जानित्वा पसंसन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.190; *अनुविच्चापि मं विञ्ञू गरहेय्युं पाणातिपातपच्चया,* म॰ नि॰ 2.25; *अनुविच्चापि मं विञ्ञू गरहेय्युन्ति एवरूपे नाम सासने पब्बजित्वा पाणातिपातमत्ततोपि ओरमितुं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.29; – **कार** पु॰, अच्छी तरह सोच विचार कर या पूर्ण छानबीन कर किया गया काम, सुचिन्तित कृत्य – *अनुविच्चकारं खो, गहपति, करोहि, अनुविच्चकारो तुम्हादिसानं ञातमनुस्सानं साधु होती'ति,* म॰ नि॰ 2.48; *अनुविच्चकारन्ति अनुविचारेत्वा चिन्तेत्वा तुलयित्वा कातब्बं करोहीति वुत्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.64.

अनुविज्जा स्त्री॰, अनुविज्झति से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, परीक्षण, जांच-पड़ताल, विचारण – *चोदना अनुविज्जा च, आदि मूलेनुपोसथो, गति चोदनकण्डम्हि, सासनं पतिट्ठापयन्ति,* परि॰ 310.

अनुविज्जापेत्वा अनु + √विध के प्रेर॰ का पू॰ का॰ कृ॰, जांच-पड़ताल या छानबीन करा कर – *अथस्स पुत्तो पितरं दट्ठुकामो गतट्ठानं अजानन्तो अनुविज्जापेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.157; पाठा॰ अनुविचारापेत्वा.

अनुविज्जोतते अनु + वि + जुत के आत्मने॰ का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुविद्योतते], किसी के अगल-बगल में प्रकाश बिखेर रही है या चमक रही है – *रुक्खं अनु विज्जोतते विज्जु,* सद्द॰ 3.883.

अनुविज्झक / अनुविज्जक पु॰, दोषारोपण करने वाले (चोदक) एवं आरोपित भिक्षु से प्रश्नकर्ता या परीक्षक के रूप में भिक्षुसंघ द्वारा चुना गया भिक्षु, दोनों पक्षों के बीच मध्यस्थ की भूमिका को ग्रहण करने वाला भिक्षु – *मा खो पटिघं जनयि, सचे अनुविज्जको तुवं,* परि॰ 302; *सचे अनुविज्जको तुवन्ति सचे त्वं सङ्घमज्झे ओतिण्णं अधिकरणं विनिच्छितुं निसिन्नो विनयधरो,* परि॰ अट्ठ॰ 202; *अनुविज्जकेन चोदको पुच्छितब्बो,* परि॰ 305; – **किच्चवण्णना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, वि॰ पि॰ परि॰ के चोदनाकाण्ड के प्रथम खण्ड का शीर्षक, परि॰ अट्ठ॰ 205.

अनुविज्झति / अनुविज्जति अनु + √विध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुविध्यति], **शा॰ अ॰** पीछे या बाद में बेधता या छेदता है, आगे चल कर दुखाता है या सालता है, ताना मारता है या खिल्ली उड़ाता है, **ला॰ अ॰** परीक्षण अथवा खोजबीन करता है, विचार करता है, गहराई तक जाकर जांचता है; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *महोसध अतीतेन, नानुविज्झन्ति पण्डिता,* जा॰ अट्ठ॰ 6.266; *नानुविज्झन्तीति*

अतीतदोसं गहेत्वा मुखसत्तीहि न विज्झन्ति, जा॰ अट्ठ॰ 6.266; – **जन्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, विचारता हुआ – *अनुविज्जन्तोति विचारेन्तो,* अ॰ नि॰ टी॰ 1.193; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, आत्मने॰, उपरिवत् – *एवञ्च पन अनुविज्जको अनुविज्जमानो सत्थु चेव सासनकरो होति,* परि॰ 312; – **ज्जितुकाम** त्रि॰, विचारने या अनुचिन्तन करने की इच्छा वाला – *अनुविज्जकेन अनुविज्जितुकामेन न उपज्झायो पुच्छितब्बो,* परि॰ 311; – **ज्जित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, विचार कर, परीक्षण कर – *अनुविज्जित्वा गहितं पन विनिच्छयट्ठानं नयन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.119; – **ज्जितब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰, विचारणीय, परीक्षण किया जाना चाहिये – *कालेन अनुविज्जितब्बं नो अकालेन,* परि॰ 311.

अनुवितक्केति अनु + वि + √तक्क का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुवितर्कयति], कल्पना करता है, अटकल या अन्दाज लगाता है, तर्क या विमर्श करता है, विचार करता है – *भिक्खु बहुलमनुवितक्केति अनुविचारेति,* म॰ नि॰ 1.165; *छन्दरागट्ठानिये धम्मे आरब्भ चेतसा अनुवितक्केति अनुविचारेति,* अ॰ नि॰ 1(1).298; – **न्ति** ब॰ व॰ – *भिक्खू यथासुतं यथापरियत्तं धम्मं चेतसा अनु वितक्केन्ति अनुविचारेन्ति मनसानुपेक्खन्ति,* अ॰ नि॰ 2(1).167; – **क्कये** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अनुस्सरेय्य सम्बुद्धं धम्मञ्चानुवितक्कये,* अ॰ नि॰ 2(1).198; – **क्कयतो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ / च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपि च खो मे अतिचिरं अनुवितक्कयतो अनुविचारयतो कायो किलमेय्य,* म॰ नि॰ 1.164-65; – **क्केत्वा** पू॰ का॰ कृ॰, विचार-विमर्श करके, ठीक से सोच करके – *रत्तिं अनुवितक्केत्वा अनुविचारेत्वा दिवा कम्मन्ते पयोजेति कायेन वाचाय मनसा – अयं दिवा पज्जलना,* म॰ नि॰ 198.

अनुविदित त्रि॰, अनु + √विद का भू॰ क॰ कृ॰ [अनुविदित], वह, जिसे गहरा एवं पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त है, अच्छी तरह से जानने वाला – *अनुविदितो'ति अनुबुद्धो वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.140; *अनुविदितं केन कथञ्च वीरियवाति,* सु॰ नि॰ 533; *अनुविदितो तादि पवुच्चते तथत्ता,* सु॰ नि॰ 533; – **विच्चकार** पु॰, विचार विमर्श करके, ठीक से सोचकर एवं तुलना करके कोई भी काम करने वाला – *अनुविच्चकारं खो, सीहं, करोहि, अनुविच्चकारो तुम्हादिसानं ञातमनुस्सानं साधु होती'ति,* महाव॰ 313; *अनुविच्चकारन्ति अनुविदित्वा चिन्तेत्वा तुलयित्वा कातब्बं करोहीति वुत्तं होति,* महाव॰ अट्ठ॰ 357.

अनुविदित्वा अनु + √विद का भू॰ क॰ कृ॰, ठीक से जान कर, भली भांति ज्ञान प्राप्त कर – ... *अनिच्चानुपस्सनादीहि अनुविच्च अनुविदित्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.140.

अनुविद्ध त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰, साथ में गूंथा हुआ या पिरोया हुआ, सुसज्जित किया हुआ, सजाया हुआ – *मनिचन्दकप्पितन्ति मणिमयमण्डलानुविद्धं चन्दमण्डलसदिसेन मणिना अनुविद्धं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 233; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट, मणिमयचन्दकानु॰, मणिमयमण्डलानु॰ के अन्त॰.

अनुविधा अनु + वि + √धा धातु, अनुकरण करना – *अनुविधा अनुकरणे अनुविपुब्बो धाधातु अनुकिरियायं वत्तति,* सद्द॰ 2.484-85.

अनुविधान नपुं॰, [अनुविधान], क्रमसङ्गत रूप में अथवा आदेश आदि के अनुरूप कार्य करना, अनुरूप या उपयुक्त रूप में कार्यों का निष्पादन – *अनुविधायेय्युन्ति अनुगच्छेय्युं ... अनुविधानं आपज्जेयुन्ति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.108.

अनुविधायी त्रि॰, अनु + वि + √धा से व्यु॰, [अनुविधायिन्], अभिप्राय एवं आदेशादि के अनुरूप कार्य निष्पादन करने वाला, आज्ञाकारी, विनीत – *वुत्तअधिप्पायानुविधायी आदिं कत्वा सत्थुचरियानुविधायकत्ता, सकलसासनपटिग्गाहकत्ता च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).17.

अनुविधीयति / अनुविधिय्यति अनु + वि + √धा के कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुविधीयते], आदेशादि के अनुरूप कार्य निष्पादन करता है, अनुशिक्षण पाता है, अनुकरण या अनुसरण करता है, अधीन हो जाता है – *पोराणं पकतिं हित्वा, तस्सेवानुविधिय्यती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.81; *अनुविधिय्यतीति अनुसिक्खति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.81; *यो पोसो लहुचित्तस्स मित्तस्स वा ञातिनो वा अनुविधीयति अनुवत्तति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.315; – **यतो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिसो वे लहुचित्तस्स, पोसस्सानुविधीयतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.314; – **यन्तु** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सुणन्तु धम्मं कालेन, तञ्च अनुविधीयन्तु,* म॰ नि॰ 2.314; – **येय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, अनुरूप कार्य विधान करें – *तस्स ते अनुवत्तेय्युं अनुविधायेय्युं,* स॰ नि॰ 2(2).197.

अनुविधीयना स्त्री॰, अनुविधीयति से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, अनुरूपता में कार्य का निष्पादन – *को पन वादो कायेन वाचाय अनुविधीयनासु,* म॰ नि॰ 1.54; *एकन्तहितसुखावहत्ता अनुविधियनानं हेतुत्ता च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).199.

अनुविलोकन नपुं॰, अनु + वि + √लोक से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अनुविलोकन], इधर-उधर ताकना या देखना, चारों ओर

दृष्टिपात करना – *सब्बा च दिसाति इदं सत्तपदवीतिहारूपरि ठितस्स विय सब्बदिसानुविलोकनं वुत्तं, न खो पनेवं दट्ठब्बं,* दी. नि. अट्ठ. 2.27.

अनुविलोकेति अनु + वि + √लोक का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुविलोकयति], **शा. अ.** इधर-उधर निगाह डालता है, इधर-उधर ताकता है, **ला. अ.** मनन करता है, अनुचिन्तन करता है, तलाशता है, ढूंढ़ता है – *सब्बं चेतसा समन्नाहरित्वा नन्दो अनुदिसं अनुविलोकेति,* अ. नि. 3(1).16; *यतो यतो वा अनुविलोकेति, ततो ततो तुण्हीभूतं, तुण्हीभूतं वाचाय, पुन तुण्हीभूतं कायेन,* सु. नि. अट्ठ. 2.199; *सेतम्हि छत्ते अनुधारियमाने सब्बा च दिसा अनुविलोकेति, आसभिं वाचं भासाति,* दी. नि. अट्ठ. 1.57; – **कयतो / केन्तस्स** वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व., इधर-उधर देख रहे का – *एवं मे अनुदिसं अनुविलोकयतो नाभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सविस्सन्तीति,* अ. नि. 3(1).16; *सब्बं तं परिसं अनुविलोकेन्तस्स ... एतदहोसि,* मि. प. 18; – **कयमाना** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ब. व., इधर-उधर देखने वाले – *इध मयं, मारिस, सदेवकं लोकं अनुविलोकयमाना ... न पस्साम,* मि. प. 7; – **केय्यासि** विधि., म. पु., ए. व. – ... *उट्ठायासना उदकेन अक्खीनि अनुमज्जित्वा दिसा अनुविलोकेय्यासि,* अ. नि. 2(2).225; – **केय्यं** विधि., उ. पु., ए. व., मैं इधर उधर दृष्टिपात करूं – *विजम्भित्वा समन्ता चतुद्दिसा अनुविलोकेय्यं,* दी. नि. 3.16; – **केसि** अद्य., प्र. पु., ए. व., उसने चारों ओर दृष्टिपात किया – *उट्ठायासना समन्ता चतुद्दिसा अनुविलोकेसि,* सु. नि. (पृ.) 149; – **केसुं** अद्य., प्र. पु., ब. व., उन्होंने इधर-उधर ताका – *सेतच्छत्ते धारियमाने सब्बाव दिसा अनुविलोकेसुं,* उदा. अट्ठ. 101; – **केत्वा** पू. का. कृ., इधर उधर देख कर – *समन्ता चतुद्दिसा अनुविलोकेत्वा तिक्खत्तुं सीहनादं नदति,* स. नि. 2(1).79; – **केतब्ब** सं. कृ., अनुविलोकन किया जाना चाहिये, अनुविलोकन करने योग्य – *अनुदिसा अनुविलोकेतब्बा होति,* अ. नि. 3(1).16.

अनुविवट्ट नपुं., [बौ. सं. अनुविवर्त], भिक्षु के चीवर के चार खण्डों में से मध्यवर्ती खण्ड या विवट्ट के दोनों पार्श्वभागों वाले दो खण्ड अथवा दोनों पार्श्वभाग वाले दो-दो खण्डों अर्थात् चीवर के चारों खण्डों का नाम – ... *अड्ढमण्डलम्पि नाम करिस्सति, विवट्टम्पि नाम करिस्सति, अनुविवट्टम्पि नाम करिस्सति, ... छिन्नकं भविस्सति,* महाव. 378; *अनुविवट्टन्ति तस्स उभोसु पस्सेसु द्वे खण्डानि, ... अनुविवट्टन्ति विवट्टस्स एकपस्सतो द्विन्नं एक पस्सतो द्विन्नन्ति चतुन्नम्पि खण्डानमेतं नामं,* महाव. अट्ठ. 384; *विवट्टं अनुविवट्टं, बाहन्तम्पि च भिक्खुनो,* विन. वि. 563.

अनुविसट नपुं., अनु + वि + √सर का भू. क. कृ. [अनुविसृत], इधर-उधर बिखरा हुआ, विक्षिप्त, चारों ओर फैला हुआ – *छन्दो बहिद्धा पञ्च कामगुणे आरब्भ अनुविक्खित्तो अनुविसटो,* स. नि. 3(2).349; *इमस्स हि भिक्खुनो दीघरत्तं रूपादीसु आरम्मणेसु अनुविसटं चित्तं कम्मट्ठानवीथिं ओतरितुं न इच्छति,* दी. नि. अट्ठ. 2.317; *सब्बा दिसा अनुविसटोहमस्मि, महब्बलो अमित यसो अतुल्यो,* जा. अट्ठ. 4.91; *अनुविसटोति अहं चतस्सो दिसा चतस्सो अनुदिसाति सब्बा दिसा अत्तनो गुणेन पत्थटो पञ्ञातो पाकटो,* जा. अट्ठ. 4.92.

अनुवुत्ति स्त्री., [अनुवृत्ति], अगले व्याकरणसूत्र में पिछले सूत्र से ले ली गयी सूत्र की वृत्ति या व्याख्या, नए सूत्र में पिछले सूत्र का वृत्ति की पुनरुक्ति – *अयं पनाधिप्पायविञ्ञापिका अनुवुत्ति,* सद्द. 3.655, 685.

अनुवुत्थ त्रि., अनु + √वस का भू. क. कृ. [अनूषित], किसी के साथ रह रहा अथवा निवास कर रहा, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, चिरानुवुत्थ के अन्त. द्रष्ट., तुल. अधिवुसित (पीछे).

अनुवेध पु., एक बार शल्यक्रिया किये गए व्रणद्वार के समीप में ही की गयी दूसरी शल्यक्रिया – *तमेनं दुतियेन सल्लेन अनुवेधं विज्झेय्य,* स. नि. 2(2).205; *अनुवेधं विज्झेय्याति तस्सेव वणमुखस्स अङ्गुलन्तरे वा द्वङ्गुलन्तरे वा आसन्नपदेसे अनुगतवेधं,* स. नि. अट्ठ. 3.114.

अनुव्यञ्जन नपुं., [बौ. सं. अनुव्यञ्जन], **क.** निमित्तों अथवा विशिष्ट लक्षणों से भिन्न गौण-लक्षण या विशिष्टता, बुद्ध के 80 गौण चिह्नों में से कोई एक चिह्न – *भगवतो असीतिअनुब्यञ्जनानि ब्यामप्पभा द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि,* दी. नि. अट्ठ. 3.91; *भगवा द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणेहि समन्नागतो असीतिया च अनुब्यञ्जनेहि परिरञ्जितो,* मि. प. 81; *अनुब्यञ्जनग्गाहीति किलेसानं अनुब्यञ्जनतो पाकटभावकरणतो अनुब्यञ्जनन्ति लद्धवोहारं हत्थपादसितहसितकथितआलोकितविलोकितादिभेदं आकारं गण्हाति,* ध. स. अट्ठ. 420; ..., *अनुब्यञ्जनेन अनुब्यञ्जनं कथयिस्सामि,* ..., मि. प. 308; **ख.** आगे आया हुआ वचन, अनुवर्तिनी अभिव्यक्ति, आगे कही जाने वाली बात का कथन – *पदसो नाम पदं, अनुपदं, अनवक्खरं, अनुब्यञ्जनं,*

पाचि॰ 26; *अनुब्यञ्जनं नाम रूपं अनिच्चन्ति वुच्चमानो, वेदना अनिच्चा'ति सद्दं निच्छारेति*, पाचि॰ अट्ठ॰ 7; **ग.** अट्ठ॰ में अनु + वि + √अञ्ज के क्रि॰ ना॰ के रूप में भी प्रयुक्त, स्पष्ट रूप से प्रकाशन अथवा अभिव्यक्त होना – *अनुब्यञ्जनग्गाहीति किलेसानं अनुब्यञ्जनतो पाकटभावकरणतो अनुब्यञ्जनन्ति लद्धवोहारं*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 420; – **ग्गाह** पु॰, विवरणों के साथ ग्रहण, किसी बात का सभी विशेषताओं के साथ विवेचन – *निमित्तग्गाहोति हि संसन्देत्वा गहणं, अनुब्यञ्जनग्गाहोति विभत्तिगहणं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.51; *यो हि पुग्गलो निमित्तग्गाहं अनुब्यञ्जनग्गाहं गण्हन्तो नखा सोभना'ति गण्हाति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.44; – **ग्गाही** त्रि॰, विवरणों अथवा प्रत्येक लक्षण के साथ धर्मों को ग्रहण करने वाला, हंसने, देखने, ताकने, सिकोड़ने, पसारने जैसी विभिन्न क्रियाओं के आकार या स्वरूप को इन्द्रियों द्वारा ग्रहण करने वाला – *भिक्खु चक्खुना रूपं दिस्वा न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाही*, दी॰ नि॰ 1.62; ... *न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाही*, स॰ नि॰ 2(2).110; *अनुब्यञ्जनग्गाहीति किलेसानं अनुअनुब्यञ्जनतो पाकटभावकरणतो अनुब्यञ्जन्ति लद्धवोहारं हत्थपादसितहसितकथितआलोकितविलो-कितादिभेदं आकारं गण्हाति*, महानि॰ अट्ठ॰ 316; – **विचित्र** त्रि॰, सौन्दर्य के तमाम छोटे-मोटे लक्षणों के कारण पूर्ण रूप से भव्य या उत्कृष्ट – *रूपप्पमाणिका हि पुग्गला भगवतो लक्खणखचितमनुब्यञ्जनविचित्रं समुज्जलितकेतु-मालाब्यामप्पभाविनद्धमलङ्कारत्थमिव लोकस्स* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.205; – **धर** त्रि॰, सुन्दरता अथवा उत्तमता के समस्त गौण-लक्षणों को भी धारण करने वाला – *अनुब्यञ्जनधरं बुद्धं, आहुतीनं पटिग्गहं*, अप॰ 1.226; – **समुज्जल** त्रि॰, सुन्दरता / भव्यता के सम्पूर्ण गौण-लक्षणों द्वारा प्रभाषित अथवा जगमगाता हुआ – ... *लक्खणविचित्तं अनुब्यञ्जनसमुज्जलं* ..., *सत्थु सरीरं ... इत्थिरूपं अद्दस*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.64; – **सम्पन्न** त्रि॰, भव्यता के समस्त गौण-लक्षणों या चिह्नों से युक्त – *अनुब्यञ्जनसम्पन्नं, द्वत्तिंसवरलक्खणं*, बु॰ वं॰ 353; अप॰ 2.107; *अनुब्यञ्जनसम्पन्नन्ति तम्बनखतुङ्गनासवट्टङ्गुलितादीहि असीतिया अनुब्यञ्जनेहि सम्पन्नं*, ..., बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 283.

अनुव्यञ्जनसो अ॰, क्रि॰ वि॰, **क.** सुन्दरता या भव्यता के सभी गौण-लक्षणों की दृष्टि से, अनुव्यञ्जनों के आधार पर – *अट्ठमे अनुब्यञ्जनसो निमित्तग्गाहोति हत्था सोभना पादा सोभना'ति एवं अनुब्यञ्जनवसेन निमित्तग्गाहो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.51; **ख.** अ॰, क्रि॰ वि॰, प्रत्येक अक्षर एवं पद के विवेचन की दृष्टि से – ... *सुत्तसो अनुब्यञ्जनसो* ..., महाव॰ 83; *अनुब्यञ्जनसोति अक्खरपदपारिपूरिया* ..., पाचि॰ अट्ठ॰ 49.

अनुव्यञ्जनस्सादगथित त्रि॰, विषयभोगों के भेद-प्रभेदों में अनुभूत आनन्द में लिप्त या बंधा हुआ – *निमित्तस्सादगथितं वा, ... विञ्ञाणं* ..., *अनुब्यञ्जनस्सादगथितं वा तस्मिञ्चे समये कालं करेय्य*, ..., स॰ नि॰ 2(2).172.

अनुसंयायति / अनुसञ्ञायति अनु + सं + √या का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, **क.** चारों ओर जाता है, आर-पार जाता है, पार करके जाता है; – **न्तेन** वर्त॰ कृ॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, किसी को पार कर या किसी में होकर जाने वाले के साथ – ... *चक्करतनं पुरक्खत्वा चत्तारो दीपे अनुसंयायन्तेन सद्धिं आगमंसु*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).235; – **यायित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, अनुसंचरण करके, घूम-फिर कर, चक्कर लगाकर – *सकलजम्बुदीपं अन्तन्तेन अनुसंयायित्वा वाराणसिं पापुणि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.191; **ख.** निरीक्षण करता है, निगरानी रखता है; – **ञ्ञायमानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, निगरानी करता हुआ, निरीक्षण कर रहा – *ब्राह्मणो मगधमहामत्तो राजगहे कम्मन्ते अनुसञ्ञायमानो येन दारुगहे गणको तेनुपसङ्कमि*, पारा॰ 49; *अनुसञ्ञायमानोति अनुसञ्ञायमानो, कताकतं जानन्तोति अत्थो, अनुविचरमानो वा*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.48; – **ञ्ञातुं** निमि॰ कृ॰, निगरानी करने के निमित्त, निरीक्षण के निमित्त – *तस्मिं, भिक्खवे, समये रञ्ञो न फासु होति अतियातुं वा निय्यातुं वा पच्चन्तिमे वा जनपदे अनुसञ्ञातुं*, अ॰ नि॰ 1(1).84; **ग.** साथ में जाता है, पास जाता है; – **यायी** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, साथ साथ गया – *अनुसंयायी सो वीरो, मातुच्छं यावकोट्ठकं*, अप॰ 2.208.

अनुसंवच्छरं अ॰, क्रि॰ वि॰, अव्ययी॰ स॰ [अनुसंवत्सरं], प्रत्येक वर्ष में, एक-एक वर्ष में – ..., *अनुसंवच्छरं ते सतसहस्सपरिच्चागेन बलिकम्मं करिस्सामी'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.77; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.244; *राजगहे च अनुसंवच्छरं गिरग्गसमज्जो नाम अहोसि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.52; *अनुसंवच्छरं कातुं एवमेव नियोजयि*, चू॰ वं॰ 37.88.

अनुसंसन्दना स्त्री॰, अनु + सं + √सन्द का क्रि॰ ना॰, धारा के प्रवाह की निरन्तरता, प्रवाह-सातत्य, पूर्ववर्ती एवं परवर्ती का एकीकरण, लगातार जारी रहना – *यो एवरूपो ... सण्ठपना अनुसंसन्दना अनुप्पबन्धना दळ्हीकम्मं कोधस्स* –

अयं वुच्चति उपनाहो, विभ. 412; *अनुसंसन्दनाति पठमुप्पन्नेन कोधेन सद्धिं अन्तरं अदस्सेत्वा एकीभावकरणा,* विभ. अट्ठ. 464.

अनुसंसावना स्त्री., अनु + सं. + √सु के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना., विनम्रभाव से संलाप करते हुए किसी के साथ चलना अथवा उसका अनुगमन – *दुग्गतिं नाभिजानामि, अनुसंसावना फलं,* अप. 1.264.

अनुसंसावयिं अनु + सं + √सु का प्रेर., अद्य., उ. पु., ए. व., विनम्रता के साथ संभाषण किया, कुछ दूर तक विनतभाव से पूज्य व्यक्ति का सहगामी हुआ – *वन्दित्वा सत्थुनो पादे, अनुसंसावयिं पुरे* अप. 1.221; *अनुसंसावयिं बुद्धं, उत्तमत्थरस पत्तिया,* अप. 1.264; तुल. अनुसंयायति, ऊपर.

अनुसंगीत त्रि., फिर से गायन किया हुआ, वह, जिसकी मौखिक पुनरावृत्ति फिर से की गयी हो, दोहराया गया, दुबारा कहा गया – *पञ्चहि या सङ्गीता, अनुसङ्गीता च पच्छापि,* दी. नि. अट्ठ. 1.2; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).2; ध. स. अट्ठ. 3.

अनुसज्झायन्ति अनु + सज्झाय का ना. रू., वर्त., प्र. पु., ब. व., पुनः स्वाध्याय करते हैं, फिर से कण्ठस्थ करते हैं, फिर से आवृत्ति करते हैं या कहते हैं – *भासितमनुभासन्तीति तेहि भासितं सज्झायितं अनुसज्झायन्ति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.298; ... *तदनुगायन्ति ... सज्झायितमनुसज्झायन्ति वाचितमनुवाचेन्ति ...,* अ. नि. 2(1).209.

अनुसञ्चरण नपुं., अनु + सं + √चर से व्यु., क्रि. ना. [अनुसञ्चरण], **शा. अ.** किसी के पीछे घूमते रहना, किसी के अगल-बगल टहलना, **ला. अ.** किसी के विषय में चित्त में उत्पन्न विभिन्न रूपों के संकल्प-विकल्प – *विचरणं वा विचारो, अनुसञ्चरणन्ति वुत्तं होति,* अभि. अव. 20; ध. स. अट्ठ. 160.

अनुसञ्चरति अनु + सं + √चर का वर्त., प्र. पु., ए. व., अनुसञ्चरण करता है, किसी तक जा पहुंचता है, सहचरण करता है, घूमता है, मार्ग को पकड़ता है, विचार का अनुसरण या उस पर अनुचिन्तन करता है; – **सि** म. पु., ए. व. – *किं मुण्डो कपालमनुसंचरसि,* स. नि. 3(1).63; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., किसी तक पहुंचता हुआ, प्राप्त होता हुआ – *तस्मा यथा नाम ... खेत्तं अनुसञ्चरन्तो यत्थ वा तत्थ वा ... सतिणमत्तिकपिण्डं देति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).125; – **माना** वर्त. कृ., आत्मने., प्र. वि., ब. व., ऊपर की ओर जा पहुंचते हुए – *किपिल्लिका विय थम्भं सिनेरुं अनुसञ्चरमाना उट्ठहिंसु,* जा. अट्ठ. 1.200; – **रितुं** निमि. कृ., पास पहुंचने के लिये – *अथस्सा धञ्ञा ... गन्त्वा एवरूपे चेतियङ्गणे अनुसञ्चरितुं एवरूपञ्च मधुरं धम्मकथं सोतुं ... उदपादि,* ध. स. अट्ठ. 161; – **रित** त्रि., भू. क. कृ., **क.** वह, जिसके विषय में चित्त द्वारा सोचा-विचारा गया हो, चित्त द्वारा सुचिन्तित, चिन्तन का विषयीभूत – *अनुविचरितं मनसाति चित्तेन अनुसञ्चरितं,* दी. नि. अट्ठ. 3.88; स. नि. अट्ठ. 2.299; **ख.** वह, जिसने या जिसके आसपास प्राणी चलते-फिरते हों या पहुंचते रहते हों – *पुनचपरं, महाराज, आकासो इसितापसभूतदिजगणानुसञ्चरितो,* मि. प. 356.

अनुसञ्चेतेति अनु + सं + √चित का वर्त., प्र. पु., ए. व., ध्यान को किसी एक पर केन्द्रित करता है, ध्यान को दृढ़तापूर्वक स्थिर रखता है – *सचे अनुसञ्चेतेति, न परिहायति ताहि समापत्तीहि,* पु. प. 118; *अनुसञ्चेतेतीति, सचे समापज्जति, समापत्तिञ्हि समापज्जन्तो अनुसञ्चेतेति नाम,* पु. प. अट्ठ. 34.

अनुसञ्ञायति द्रष्ट. अनुसंयायति के अन्त..

अनुसट त्रि., अनु + √सर का भू. क. कृ. [अनुसृत], **क.** वह, जिसका अन्य लोगों द्वारा अनुसरण या अनुगमन किया गया है, या ग्रहण किया गया है, आच्छादित, ढका हुआ – *सत्तहि अनुसयेहि अनुसटो लोकसन्निवासोति-पस्सन्तानं,* पटि. म. 118; ... *पदुमेहि अनुसटं विप्पकिण्णं, ...,* वि. व. अट्ठ. 27; **ख.** कर्तृ. वा. में, अनुसरण करने वाला, व्याप्त हो जाने वाला – *अङ्गमङ्गानुसारिनोति धमनीजालानुसारेन सकलसरीरे अङ्गमङ्गानि अनुसटा ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).127; **ग.** विकीर्ण, छितराया हुआ, असंयत – *सरितानीति अनुसटानि पयातानि,* ध. प. अट्ठ. 2.307.

अनुसति स्त्री., अनुस्सति का अप., द्रष्ट. अनुस्सति के अन्त..

अनुसत्थि / अनुसिट्ठि / अनुसट्ठ स्त्री., पालि एवं अशोकीय प्राकृत में अनु + √सास से व्यु., क्रि. ना. [अर्धमागधी में अणुसट्ठि एवं अणुसिट्ठि], अनुशासन, शिक्षण, आज्ञा, मार्गदर्शन, शिक्षा – *भवदुक्खपटिपीळिता सत्ता धातुरतनञ्च धम्मञ्च विनयञ्च अनुसिट्ठञ्च पच्चयं करित्वा ...,* मि. प. 110; *तेन हि, महाराज, तथागतानं अनुसिट्ठि सम्मानुसिट्ठि होती'ति,* मि. प. 180; *अनुसासनन्ति अनुसिट्ठिं,* स. नि. अट्ठ. 1.93; *एवमेव खो, महाराज, तथागतो सब्बकिलेसब्याधिवूपसमाय अनुसिट्ठिं देति,* मि. प. 168; स. उ. प. के रूप में

अत्थधम्मानु., आचरियानु., जिनानु., धम्मानु., लाभानु. के अन्त. द्रष्ट.; - **कर** त्रि., अनुशासन का पालन करने वाला - ... *सत्थु करुणागुणदीपकं भगवतो अनुसिट्ठिकरानं कायकम्मवचीकम्मविप्फन्दितविनयनं विनयपिटकं पकासेसि,* पारा. अट्ठ. 1.71; - **दायक** त्रि., अनुशासन देने वाला - *अनुसासिकाति अनुसिट्ठिदायिका,* अ. नि. अट्ठ. 3.100; - **पद** नपुं., तत्पु. स., अनुशासन-प्रकाशक वचन, शिक्षापद - *सिट्ठिपदेति अनुसिट्ठिपदे,* स. नि. अट्ठ. 1.99.

अनुसत्थु पु., [अनुशास्तृ], अनुशासन या शिक्षण देने वाला, शिक्षक, आचार्य - **त्थारं** द्वि. वि., ए. व. - *आचरियमनुसत्थारं सब्बकामरसाहरं* जा. अट्ठ. 4.159; *अनुसत्थारन्ति अनुसासकं,* जा. अट्ठ. 4.160.

अनुसद्दायति अनु + सद्द के ना. धा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुशब्दायते], बाद में गूंजता रहता है, अनुरव या अनुगूंज करता है - *भेरी आको-टिता अथ पच्छा अनुरवति अनुसद्दायति,* ध. स. अट्ठ. 160.

अनुसद्दायना स्त्री., अनुगूंज, आवाज का गूंजते रहना - *यथा पच्छा अनुरवना अनुसद्दायना एवं विचारो दट्ठब्बो'ति,* ध. स. अट्ठ. 160.

अनुसन्तत त्रि., अनु + सं + √तन का भू. क. कृ. [अनुसन्तत], निरन्तर रूप में विद्यमान, सतत रूप में जारी - *तत्थ दिट्ठिचरितो ... पब्बजितो सल्लेखानुसन्ततवुत्ति भवति सल्लेखे तिब्बगारवो,* नेत्ति. 92; *तण्हा चरितो ... पब्बजितो सिक्खानुसन्ततवुत्ति भवति सिक्खाय तिब्बगारवो,* नेत्ति. 92.

अनुसन्दति अनु + सं + √धा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुसंदधाति], अनुसन्दहति का अप., द्रष्ट., अनुसन्दहति के अन्त..

अनुसन्दहति अनु + सं + √धा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुसंदधाति], अभियोजित करता है, लगा देता है, जोड़ देता है, समर्पित कर देता है, बाद में जारी रहता है - ... *चित्तं अनुसन्दहति अप्पटिकुल्यता सण्ठाति,* अ. नि. 2(2).196; *अनुसन्दहतीति पवत्तति,* अ. नि. अट्ठ. 1.168; *कंसथालं आकोटितं पच्छा अनुरवति अनुसन्दहति,* ..., मि. प. 64; - **हित्वा** पू. का. कृ. - *अनुसन्दहित्वा ठपनतो चित्तस्स अनुसन्धानता,* ध. स. अट्ठ. 1.88.

अनुसन्धानता स्त्री., अनु + सं + √धा से व्यु., भाव., चित्त का किसी आलम्बन पर सतत रूप में स्थिर रहना - *यो तस्मिं समये ... चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता,* ध. स. 284, 372; ... *अनुसन्दहित्वा ठपनतो चित्तस्स अनुसन्धानता,* ध. स. अट्ठ. 188.

अनुसन्धि पु., अनु + सं + √धा से व्यु. [अनुसन्धि], **क.** परस्पर सम्बन्ध, जोड़, त्रिपिटक के विभिन्न खण्डों का पूर्वापर-सम्बन्ध अथवा तार्किक सम्बन्ध, निष्कर्ष, प्रयोग - *तयो हि सुत्तस्स अनुसन्धी-पुच्छानुसन्धि, अज्झासयानुसन्धि, यथानुसन्धीति,* दी. नि. अट्ठ. 1.104; **ख.** "अनुसन्धिं घटेति" वाक्य के मुहावरे में, निष्कर्ष निकालता है, जातककथा की अतीतवत्थु एवं पच्चुप्पन्नवत्थु के बीच तर्कसङ्गत सम्बन्ध बतलाता है - *सत्था इमं धम्मदेसनं ... कथेत्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेत्वा दस्सेसि,* जा. अट्ठ. 1.113, 188, 207, 216, 295; *द्वे वत्थूनि कथेत्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि,* जा. अट्ठ. 1.149; स. उ. प. के रूप में अज्झासयानु., अधिप्पयानु., कथानु., तिविधानु., पुच्छानु., पुब्बापरानु., यथानु., वचनानु., वत्तानु., विनिच्छयानु. के अन्त. द्रष्ट.; - **कुसल** त्रि., तत्पु. स. [अनुसन्धिकुशल], सङ्गति बैठाने में कुशल, जोड़ या सम्बन्ध को प्रकाशित करने में कुशल - *पस्सति हि भगवा ... परिसति अनुसन्धिकुसलो एको भिक्खु सुप्पबुद्धस्स ... पुच्छिस्सति,* उदा. अट्ठ. 237; *सो किर अनुसन्धिकुसलो, भगवता यथा दण्डपाणी न जानाति,* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).388; - **कुशलता** स्त्री., भाव. [अनुसन्धिकुशलता], सङ्गति या परस्पर-सम्बन्ध के बैठाने में कुशलता - *तथागतं ... भिक्खुसङ्घस्स पाकटं करिस्सामीति चिन्तेत्वा अनुसन्धिकुसलताय एवमाह,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.191; - **क्कमयोजना** स्त्री., तत्पु. स. [अनुसन्धिक्रमयोजना], परस्पर-सम्बन्धों अथवा प्रयोगों के क्रम या पूर्वापर-क्रम की योजना - *एस नयो सुक्कपक्खेपि, अयं तावेत्थ अनुसन्धिक्कमयोजना,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).108; - **नय** पु., तत्पु. स. [अनुसन्धिनय], परस्पर-सम्बन्ध बैठाने या परस्पर में सङ्गति बैठाने की पद्धति - *अनुसन्धिनया एते, मज्झिमस्स पकासिता'ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).4; - **पुब्बापर** नपुं., तत्पु. स. [अनुसन्धिपूर्वापर], परस्पर-सम्बन्ध में प्राप्त पूर्वापरक्रम - *अनुसन्धिपुब्बापरे पन सीलं आदिं कत्वा आरद्धे सुत्तन्ते मत्थके छसु ...,* अ. नि. अट्ठ. 3.61; - **योजना** स्त्री., तत्पु. स. [अनुसन्धियोजना], परस्पर-सम्बन्ध बैठाने की योजना, सम्बन्धों अथवा प्रयोगों के विषय में कथन - *अनुसन्धियोजनापि चेत्थ संसग्गगाथाय वुत्तनयेनेव वेदितब्बा,* सु. नि. अट्ठ. 1.68; ..., *न*

अनुसन्धियोजनाक्कमेन वित्थारो, सु. नि. अट्ठ. 1.194; - **वचन** नपुं., तत्पु. स. [अनुसन्धिवचन], भगवान् बुद्ध के वचनों के साथ जुड़े हुए श्रावकों के वचन - *किं ... अनुसन्धिवचनं नीतत्थं नेय्यत्थं संकिलेसभागियं निब्बेधभागियं असेक्खभागियं,* नेत्ति. 20; *अनुसन्धिवचनन्ति सावकभासितं तञ्हि भगवतो वचनं अनुसन्धेत्वा पवत्तनतो "अनुसन्धिवचन"न्ति वुत्तन्ति,* नेत्ति. अट्ठ. 208; - **वचनपथ** पु., तत्पु. स. [अनुसन्धिवचनपथ], परस्परसम्बन्ध या प्रयोग को दरसाने वाले वचन के प्रकार - ..., *अनुसन्धिवचनपथं न जानाति,* परि. 255; *अनुसन्धिवचनपथन्ति कथानुसन्धि - विनिच्छयानुसन्धिवसेन वत्थुं न जानाति,* परि. अट्ठ. 177.

अनुसन्धीयति अनु + सं + √धा के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुसन्धीयते], सम्बद्ध कराया जाता है, सुसङ्गतरूप में जोड़ दिया जाता है - *केचि निब्बानं वदन्ति, तं पुरिमपदेन नानुसन्धीयति,* खु. पा. अट्ठ. 124; - **न्धेतो** वर्त. कृ. [अनुसन्धीयमान], अनुसन्धि या परस्पर-सम्बन्ध को सुसङ्गतरूप में बैठाता हुआ - ... *अनुसन्धेन्तो भिक्खूनं धम्मकथं कथेसि,* खु. पा. अट्ठ. 158.

अनुसम्पवङ्कता स्त्री, अनु + सम्पवङ्क का भाव. [अनुसम्पर्यङ्कता], घनिष्टता, निकटता, अत्यन्त निकटवर्ती होना, परस्पर-सम्बन्ध का रहना - *यो तत्थ अनुवादो अनुवदना ... अनुसम्पवङ्कता अब्भुस्सहनता अनुबलप्पदानं ...,* चूळव. 196, 202; *अनुसम्पवङ्कताति पुनप्पुनं कायचित्तवाचाहि तत्थेव सम्पवङ्कता, अनुवदनभावोति अत्थो,* चूळव. अट्ठ. 39.

अनुसम्भति द्रष्ट., अनुसुम्भाति के अन्त., आगे.

अनुसय पु., अनु + √सी से व्यु. [अनुशय], चित्त में निष्क्रिय-रूप में विद्यमान राग, द्वेष आदि क्लेश या कुछ अकुशल चित्तवृत्तियां, मानसिक अभिप्राय, क्लेशों के मूल या बीज, कामराग, पटिघ (द्वेष), मान, दिट्ठि, विचिकिच्छा, भवराग एवं अविज्जा नामक सात प्रकार की मन की सूक्ष्म दुष्प्रवृत्तियां - *पच्छातापानुबन्धेसु रागादोअनुसयोभवे,* अभि. प. 853; *थामगतट्ठेन अनुसेतीति अनुसयो,* ध. स. अट्ठ. 392; *अनुसयो हि भवपवत्तिया मूलं,* उदा. अट्ठ. 303; *सत्त अनुसया कामरागानुसयो, पटिघानुसयो, दिट्ठानुसयो, विचिकिच्छानुसयो, मानानुसयो, भवरागानुसयो, अविज्जानुसयो,* दी. नि. 3.200; *अप्पहीनट्ठेन अनुसयन्तीति अनुसया,* दी. नि. अट्ठ. 3.204; *इध तथागतो सत्तानं आसयं जानाति, अनुसयं जानाति चरितं जानाति, अधिमुत्तिं जानाति, ...,* उदा. अट्ठ. 112; *अनुसया अकुसलमूलानि, इमे उप्पन्ना पापका अकुसला धम्मा,* नेत्ति. 18; *पञ्ञाय अनुसया पहीयन्ति,* नेत्ति. 14; स. उ. प. के रूप में अधिट्ठानाभिनिवेशानु., अननु., अविज्जानु., अहङ्कारम्मकारमानानु., कामरागानु., तण्हानु., दिट्ठानु., दिट्ठिमानानु., मानानु., रागानु., विचिकिच्छानु., व्यापादानु., सक्कायदिट्ठानु., सानु., सीलब्बतपरामासानु. के अन्त. द्रष्ट.; - **जालमोत्थत** त्रि., अनुशयों अथवा चित्तसन्तति में सोये हुए अकुशल मनोभावों के जाल में फंसा हुआ - *ओघसंसीदनो कायो, अनुसयजालमोत्थतो,* थेरगा. 572; *तेसं जालेन ओत्थतो अभिभूतोति अनुसयाजालमोत्थतो,* थेरगा. अट्ठ. 2.170; - **पटिपक्ख** पु., तत्पु. स. [अनुशयप्रतिपक्ष], अनुशयों का अभाव या उच्छेद - *पञ्ञाय अनुसयपटिपक्खो,* विसुद्धि. 1.6; - **पजहन** नपुं., अनुशयों का परित्याग या विनाश - *मग्गस्स हि एकमेव किच्चं अनुसयप्पजहनं,* ध. स. अट्ठ. 275; - **पहान** नपुं., तत्पु. स. [अनुशयप्रहाण], अनुशयों का उच्छेद या निरोध - *अविज्जानिरोधाति अरियमग्गेन अविज्जाय अनवसेसनिरोधा, अनुसयप्पहानवसेन अग्गमग्गेन अविज्जाय ...,* उदा. अट्ठ. 38-39; - **यमक** नपुं., यम. के एक खण्ड का शीर्षक जिसमें अनुशयों का विवेचन हुआ है, यम. 2.77-369; - **वग्ग** पु., अ. नि. के अनुशयविवेचनपरक एक वर्ग का शीर्षक, अ. नि. 2(2).161-167; - **वार** पु., यम. के अनुसययमक के प्रथम उपखण्ड का शीर्षक, यम. 78-134; - **समुग्घाटन** नपुं., तत्पु. स. [अनुशयसमुद्घाटन], अनुशयों को उखाड़ फेंकना या अनुशयों का पूर्णरूप से उच्छेद - *अनुसयसमुग्घाटनत्थं खो, आवुसो, भगवति ब्रह्मचरियं वुस्सती"ति,* स. नि. 3(1).26; - **समुग्घात** पु., तत्पु. स. [अनुशयसमुद्घात], उपरिवत् - ..., *केन सोता पिधीयरे"ति अनुसयसमुग्घातं पुच्छति,* नेत्ति. 14; *सो च तस्सन्नं ... पदब्यञ्जनेहि अनुप्पबन्धेहि अनुसयसमुग्घाताय,* म. नि. 1.277; *अनुसयसमुग्घातायाति सत्तन्नं अनुसयानं समुग्घातत्थाय,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).151; *इन्द्रियानि भावितानि बहुलीकतानि अनुसयसमुग्घाताय संवत्तन्ति,* स. नि. 3(2). 309; - **यानुक्कमसहित** त्रि., तत्पु. स. [अनुशयानुक्रमसहित], अनुशयों के साथ - *सन्दानं सहनुक्कमन्ति अनुसयानुक्कमसहितं द्वासट्ठिदिट्ठिसन्दानं,* ..., ध. प. अट्ठ. 2.376; सु. नि. अट्ठ. 2.170.

अनुसयिक / अनुसायिक त्रि., अनु + √सी से व्यु., शेष, बचा हुआ, स्वाभाविक अथवा जन्म से ही विद्यमान, पुराना,

चिरकालिक - *अत्थि ते कोचि अनुसायिको आबाधो'ति, अत्थि मे, भो रट्ठपाल, अनुसायिको आबाधो,* म॰ नि॰ 2.266; *थेरस्स किर वातपित्तसेम्हवसेन अनुसायिको आबाधो अत्थि,* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.161; *सो हि आयस्मा ... अप्पमत्तो आतापी ... पुसित्वा एकस्स अनुस्सायिकस्स रोगस्स वसेन ततो परिहायि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.242; अप॰ आनुसायिक, अनुस्सायिक.

अनुसयित त्रि॰, अनु + √सी से व्यु॰, लम्बे समय से जुड़ा हुआ, जन्म से ही विद्यमान, स्वाभाविक रूप से भीतर विद्यमान - *कण्हस्स सोतं दीघरत्ता नु सयितं,* सु॰ नि॰ 357; थेरगा॰ 1284; *दीघरत्तानुसयितं, दिट्ठिगतमजानतं, पकप्पितं नामगोत्तं,* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.174; *अजानन्तानं सतानं हदये दीघरतं दिट्ठिगतमनुसयितं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.310; - **त्त** नपुं॰, अनुसयित का भाव॰, स्वाभाविक रूप में भीतर विद्यमान रहने की अवस्था - *तस्स अनुसयितत्ता तं नामगोतं अजानन्ता नो पब्रुन्ति,* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.310; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.174.

अनुस्सरण नपुं॰, [अनुस्मरण], बाद में होने वाला स्मरण, पीछे आने वाली किसी की याद - *फलदानेन बुद्धस्स, गुणानुस्सरणेन च,* अप॰ 2.141; अप॰ अनुसरण.

अनुस्सरति / अनुसरति अनु + √सर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, यदा-कदा सं॰ अनुस्मरति के पालि-प्रतिरूप के रूप में भी प्रयुक्त [अनुस्मरति], अनुसरण करता है, अनुगमन करता है, किसी के पीछे दौड़ता भागता है, किसी की ओर लग जाता है - *धम्मं अनुस्सरतीति धम्मानुसारी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.150; - **न्ति** ब॰ व॰ - *उदाहु ते तक्कमनुस्सरन्ति,* सु॰ नि॰ 891; - **रं / रन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *याव अनुस्सरं कामे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.154; *अनुस्सरन्ति अनुस्सरन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.155; - **री** अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, पीछे लग गया - *यं त्वं अनुसरी पुरे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.242; *तत्थ अनुसरीति अनुबन्धि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.242; - **रित / सट** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [अनुसृत], वह जिसका अनुसरण या अनुगमन किया गया है - *सरितानीति अनुसटानि पयातानि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.307; *तण्हानुसयेन अनुसटो लोकं सन्निवासोति* ..., पटि॰ म॰ 116, 118.

अनुसवाति अनु + √सु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुश्रृणोति], द्रष्ट॰ अनुस्सवति के अन्त॰.

अनुसार[1] पु॰, अनु + √सर से व्यु॰ [अनुसार], **शा॰ अ॰** समनुरूपता, अनुगमन, के अनुसार, प्रयोग के अनुरूप, की अनुरूपता - *एतेनानुसारेन पच्चेकबुद्धअरियसावकानम्पि पूजाय हितसुखावहता वेदितब्बा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 104; **ला॰अ॰ क.** नक्शे कदम पर, दिशा का अनुसरण, पदचिह्नों का अनुसरण - *मनुस्सा उक्कं आदाय चोरस्स पदानुसारेन तत्थ आगन्त्वा तस्स ... चोरो इतो आगतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.29; *नन्दा देसनानुसारेन ञाणं पेसेत्वा सोतापत्तिफलं पापुणि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.65; **ला॰अ॰ ख.** के बगल से, के पार्श्व में - *गिरिकन्दरानुसारेन अत्तनो निवासानुरूपं फासुकट्ठानं* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.11; **ला॰अ॰ ग.** के द्वारा, से होकर - *इध पनस्स सोतद्वारानुसारेन उपधारित'न्ति वा उपधारण'न्ति वा अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 11; **ला॰अ॰ घ.** की अनुरूपता में - *वित्थारो पन अस्सलायनसुत्तानुसारेन वेदितब्बो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.121.

अनुसार[2] पु॰, अनुस्सार का भाव॰ [अनुस्वार], स्वर के बाद आने वाली बिन्दु या निग्गहीत-ध्वनि, जिसका उच्चारण नासिका का निग्रहण कर किया जाता है - ... *आगमवसेन एवानुसारो होति न सभावतो ति दट्ठब्बं,* सद्द॰ 1.162.

अनुसारी त्रि॰, अनुसार[1] से व्यु॰ [अनुसारी], अनुसरण या अनुगमन करने वाला, किसी उद्देश्य या प्राप्ति के पीछे लगा हुआ, किसी की अनुरूपता में कार्य कर रहा - **रिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, अनुसरण करने वाले, सेवक, अनुचर, अनुयायी - *तस्स तं वचनं सुत्वा, पण्डितस्सानुचारिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.272; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अङ्कमङ्गानु॰, अङ्गानु॰, अत्थानु॰, उजुमग्गानु॰, धम्मानु॰, धम्मनिमित्तानु॰, परघोसानु॰, पीतिसुखानु॰, भवसोतानु॰, रूपन्तिमित्तानु॰, वट्टानु॰, विपथानु॰, सतानु॰, सद्धानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अनुसारेति अनु + √सर का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुसारयति], अनुसरण कराता है, पीछे भेजता है या पीछे लगा देता है; - **रेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पीछे से भिजवा दे, पीछे लगवा दे - *ततो राजा अञ्ञमञ्ञं अनुसारेय्य अनुपेसेय्य अत्तनो परित्तकाय सेनाय बलं अनुपदं ददेय्य,* मि॰ प॰ 34.

अनुसास पु॰, अनुसासनी का अप॰, अनुशासन, शिक्षा - *भिक्खुं भगवा पकासेसि, नो च भिक्खुनो अनुसास'न्ति,* स॰ नि॰ 1(1).54; *अनुसासन्ति अनुसिट्ठिं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.93.

अनुसासक पु॰, अनु + √सास से व्यु॰ [अनुशासक], अनुशासन या शिक्षा देने वाला, बुद्ध के निर्वाण के उपरान्त शिक्षा प्रदान करने वाला, शिक्षक, आचार्य - *तत्थ अनुसासिता मे न भवेय्य पच्छाति अनुसासको ओवादको न भवेय्य दुल्लभत्ता ओवादकानं,* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.337; *किं पनेत्थ अनुसासको*

किञ्चि दोसं आपज्जती'ति? न हि भन्तेति, मि॰ प॰ 180; *अनुसत्थारन्ति अनुसासकं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.160; *तथागतानं अन्तरधानेन असति अनुसासके मग्गो अन्तरधायि,* मि॰ प॰ 206.

अनुसासति अनु + √सास का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अनुशास्ति], शिक्षण प्रदान करता है, घोषित करता है, कहता है, मार्गदर्शन देता है, परामर्श देता है, भर्त्सना करता है, शासन करता है, पथप्रदर्शन करता है, प्रतिपादित करता है - *यो अत्थं पुच्छितो सन्तो, अनत्थमनुसासति,* सु॰ नि॰ 126; *अदण्डेन असत्थेन, धम्मेनमनुसासति,* सु॰ नि॰ 1008; *अनत्थमनुसासतीति तस्स अहितमेव आचिक्खति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.143; *अत्तानं चे तथा कयिरा, यथाञ्ञमनुसासति,* ध॰ प॰ 159; - **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एवं चे कण्ह जानासि, यदञ्ञमनुसाससि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.77; - **सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *सब्बत्थ अनुसासामि, मासु कुज्झ रथेसभा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.201; - **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *समणा मनुसासन्ति, इसी धम्मगुणे रता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.122; - **सरे** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, आत्मने॰ - *अनुसासरे किन्ति सुखी भवेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 4.357; - **सं / सन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, पु॰, अनुशासन देता हुआ - *राजा कालिङ्गो चक्कवत्ति, धम्मेन पथविमनुसासं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.208; - **मानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, - *केवलं परमेव अनुसासमानो परतो निन्दं लभित्वा किलिस्सति नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.78; - **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अनुसासतु मं भवं,* सु॰ नि॰ 465; - **सेय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अनुसासमाना च सुखं अनुसासेय्युं,* मि॰ प॰ 223; - **सेमु** विधि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰, हम अनुशासन दें - *येनद्धुना अनुसासेमु पुत्ते,* जा॰ अट्ठ॰ 7.182; - **सासि¹** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुशासन दिया, शिक्षा दी - *आयस्मा महामोग्गलानो ... भिक्खू धम्मिया कथाय ओवदि अनुसासि,* महाव॰ 340; - **सासि²** म॰ पु॰, ए॰ व॰, तूने अनुशासन या शिक्षण दिया - *अनुसासि मं अरियवता,* थेरगा॰ 334; - **सासिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰, मैंने शिक्षा दी - *ततो भिक्खु सहस्सानि, अनुसासिमहं तदा,* अप॰ 2.118; - **सिसुं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, उन्होंने अनुशासन (शासन) किया - *विसुं विसुं पुरे रज्जं कमतो अनुसासिसुं,* म॰ वं॰ 2.11; - **सिस्ससि** भवि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, तूं अनुशासन या शिक्षण देगा - *चतुद्दीपमनुसासिस्सतीति,* मि॰ प॰ 265; - **सितुं** निमि॰ कृ॰, अनुशासन के लिये - *अनुजानामि, ..., यावतके वा पन उस्सहति ओवदितुं अनुसासितुं तावतके उपट्ठापेतुन्ति,* महाव॰ 106; *मतिं करोहि त्वं देव, रज्जस्स मनुसासितुन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.276; - **सित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, अनुशासन करके, शिक्षा देकर - *आवुसो, असुका ... भिक्खुनी अञ्ञं अनुसासित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.411; - **सियो** सं॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, पु॰, अनुशासन या शिक्षण पाने योग्य - *कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, अञ्ञेहि ओवदियो अनुसासियो अञ्ञं ओवदितुं अनुसासितुं मञ्ञिस्ससि,* महाव॰ 66; - **सनीयो** उपरिवत् - *किस्स पन चोरो अनुसासनीयो अनुमतो तथागतान'न्ति,* मि॰ प॰ 180; - **सितब्बो** उपरिवत् - *सो भिक्खूहि नेव वत्तब्बो, न ओवदितब्बो, न अनुसासितब्बो'ति,* दी॰ नि॰ 2.115.

अनुसासन नपुं॰, अनु + √सास से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अनुशासन], **क.** हितकारी शिक्षा, "यह करो, यह न करो" के रूप में भिक्षुओं को दी जाने वाली शिक्षा, आज्ञा, प्रशिक्षण, **ख.** प्रशासन, राज्यशासन - *ओवादो चानुसिट्ठित्थी पुमवज्जेनुसासनं,* अभि॰ प॰ 354; *आणायं आगमे लेखे सासनं अनुसासने,* अभि॰ प॰ 992; *यं किञ्चि पथविया ... छेज्जभेज्जजनमनुसासनं ...,* मि॰ प॰ 323; *मुखञ्चिदं सब्बजिनानुसासने, यो सीलक्खन्धो वरपातिमोक्खियो,* मि॰ प॰ 31; *सत्थाति दिट्ठधम्मिकसम्परायिकपरमत्थेहि सत्तानं अनुसासनतो सत्था,* उदा॰ अट्ठ॰ 327; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अत्थानु॰, लङ्कादीपानु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **कर** त्रि॰, शिक्षा देने वाला, शिक्षा के अनुसार काम करने वाला - *ममानुसासनकरा, तेपि आसुं अनासवा,* अप॰ 2.118; - **विधा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, शिक्षा के प्रकार, शिक्षण के प्रभेद या विधियां, स्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत्, इन चार प्रकार के व्यक्तियों को ध्यान में रखकर बुद्ध द्वारा दी जा रही शिक्षा के चार प्रकार - *चतस्सो इमा भन्ते अनुसासनविधा, ...,* दी॰ नि॰ 3.79.

अनुसासनी स्त्री॰, अनुसासन से व्यु॰ तथा अधिक प्रयुक्त, यदा-कदा ओवाद के पर्याय के रूप में भी प्राप्त, शिक्षा, हितकारिणी शिक्षा, शीलसम्बन्धी शिक्षा, इस लोक और परलोक में कल्याण कराने के उद्देश्य से दी गयी शिक्षा - *एत्थ च सकिंवचनं ओवादो, पुनप्पुनवचनं अनुसासनी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.55; *सम्मुखावचनम्पि ओवादो, पेसेत्वा परम्मुखा वचनं, अनुसासनी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.56; *तेविज्जा अथ बुद्धासिं, कता ते अनुसासनी,* थेरगा॰ 180; *तस्साहं वचनं सुत्वा, करोन्ती अनुसासनिं,* थेरीगा॰ 172; ..., *खमो पदक्खिणग्गाही अनुसासनिं* ..., म॰ नि॰ 1.135; ..., *अनुसासनिया वा अनुसासनि'न्ति?* ..., म॰ नि॰ 1.118; -

निकर त्रि., शिक्षा के अनुरूप आचरण करने वाला - *सत्थुसासनकरोति सत्थु अनुसासनिकरो,* अ. नि. अट्ठ. 1.55; - **पाटिहारिय** नपुं., [अनुशासनप्रातिहार्य], बुद्ध की तीन प्रकार के ऋद्धिबलों में से एक, शिक्षा प्रदान करने से सम्बन्धित ऋद्धि या अलौकिक शक्ति - *तीणि खो इमानि, ..., कतमानि तीणि? इद्धिपाटिहारियं, आदेसनापाटिहारियं, अनुसासनीपाटिहारियं,* दी. नि. 1.196; अ. नि. 1(1).198; - **पुरेक्खार** त्रि., अनुशासन या विनय की शिक्षा के प्रति सम्मानभाव रखने वाला अथवा उसे प्रधानता देने वाला - *अनापत्ति अत्थपुरेक्खारस्स, धम्मपुरेक्खारस्स, अनुसासनिपुरेक्खारस्स, उम्मत्तकस्स, आदिकम्मिकस्साति,* पारा. 192; *अनुसासनिपुरेक्खारस्साति इदानिपि अनिमित्तासि उभतोब्यञ्जनासि अप्पमादं इदानि करेय्यासि, ...,* पारा. अट्ठ. 2.123.

अनुसासिकजातक नपुं., जा. अट्ठ. की एक जातककथा का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.410-412.

अनुसासिका स्त्री., एक प्रकार का पक्षी, एक प्रकार के पक्षी का नाम - *सकुणसङ्घो तस्सा अनुसासिका'तेव नामं अकासि,* जा. अट्ठ. 1.411.

अनुसासित त्रि., अनु + √सास का भू. क. कृ. [अनुशिष्ट], वह, जिसे शिक्षा या अनुशासन दिया गया है, नियन्त्रित, नियमपरायण, सुशिक्षित - *सुसिट्ठेनाति आचरियेहि सुट्ठु अनुसासितेन,* जा. अट्ठ. 3.3; तुल. अनुसिट्ठ.

अनुसासितु त्रि., अनु + √सास का कर्तृ. कृ. [अनुशास्तृ], शिक्षक, अनुशासन देने वाला, शासक, दण्डविधान करने वाला, नियन्त्रक - *अयमेव कालो न हि अञ्ञो अत्थि, अनुसासिता मे न भवेय्य पच्छा,* जा. अट्ठ. 3.337; *तत्थ अनुसासिता मे न भवेय्य पच्छाति अनुसासको ओवादको ... ओवादकानं, ...,* जा. अट्ठ. 3.337; तुल. अनुसत्थु.

अनुसासीयति अनु + √सास के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुशास्यते], अनुशासन किया जाता है, शिक्षण दिया जाता है, प्रशासन अथवा राज्य का शासन किया जाता है - *... अपि च धम्मानुसिट्ठिया अनुसासीयति, ...,* मि. प. 180; - **अननुसासियमाना** वर्त. कृ., प्र. वि., ब. व. का निषे., अनुशासन न दिये जा रहे - *... अनुपज्झायका अनाचरियका अनोवदियमाना अननुसासियमाना ...,* महाव. 50.

अनुसिक्खति अनु + √सिक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुशिक्षते], **क.** दूसरे की बात को सीखता है, दूसरों के उदाहरण का अनुसरण या अनुकरण करता है - *यथारूपानं सद्धासम्पन्नानं सद्धासम्पदं अनुसिक्खति,* अ. नि. 3(1).110; - **न्ति** ब. व. - *ये पि तस्स अनुसिक्खन्ति तेपि कायस्स भेदा परं मरणा ... निरयं उपपज्जन्ति,* मि. प. 63; - **क्खरे** वर्त., प्र. पु., ब. व., आत्मने. - *युञ्जं गोतमसासने, अप्पमत्ता नु सिक्खरे'ति,* स. नि. 1(1).63; - **क्खन्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व., दूसरों से सीखता हुआ - *..., यञ्च अनुसिक्खन्तो सद्धाय वड्ढति, ...,* उदा. 182; - **क्खथ** अनु., म. पु., ब. व. - *अधिट्ठहाथाति अनुसिक्खथ इदं सेरीसकमहन्ति दस्सेति,* वि. व. अट्ठ. 293; - **क्खे** विधि., प्र. पु., ए. व., दूसरों से सीखे - *अप्पमत्तो सदा नमस्समनुसिक्खे'ति,* सु. नि. 940; स. नि. 1(1).224; **ख. सक. क्रि. के रूप में** — अनुशासन या शिक्षण देता है - *एहि तं अनुसिक्खामि,* जा. अट्ठ. 5.340; *तत्थ अनुसिक्खामीति अनुसासामि,* जा. अट्ठ. 5.341; - **क्खापेत्वा** प्रेर. का पू. का. कृ., सिखला कर - *... अनुसिक्खापेत्वा रञ्ञो सन्तिके उपासनं आराधयित्वा ...,* मि. प. 319.

अनुसिट्ठ त्रि., अनु + √सास का भू. क. कृ. [अनुशिष्ट], शिक्षित, प्रशिक्षित, नियन्त्रित, आदिष्ट, वह, जिसको शिक्षा दी गयी है, वह, जो अन्य द्वारा सिखलाया गया है - *अनुसिट्ठो सो मया,* महाव. 120; *तेनानुसिट्ठो हितमनेन तादिना,* सु. नि. 702; *... येहि अनुसिट्ठो बोधिसत्तो तत्थ तत्थ दिवसं वीतिनामेसि,* मि. प. 221; *अयं पुग्गलो यथानुसिट्ठं तथा पटिपज्जमानो ... सकदागामी भविस्सति,* दी. नि. 3.79.

अनुसिट्ठि स्त्री., अनु + √सास से व्यु., क्रि. ना. [अनुशिष्टि], अनुशासन या शिक्षा देना, धर्म एवं विनय की शिक्षा, आत्मनियन्त्रण की शिक्षा, संसार के दुःखों का नाश कराने वाला वचन - *सास अनुसिट्ठियं - यो अनुसासनी ति च अनुसिट्ठी ति च वुच्चति,* सद्द. 2.451; *ओवादो चानुसिट्ठित्थी पुमवज्जेनुसासनं,* अभि. प. 354; *बुद्धानं सावकानं वचनं ब्यप्पथं देसनं अनुसिट्ठिं नादियन्तीति - अवदानिया,* महानि. 26; *भवदुक्खं नासेत्वा कथनं अनुसिट्ठि नाम,* महानि. अट्ठ. 89; स. उ. प. के रूप में अत्थानुसिट्ठि के अन्त. द्रष्ट., तुल. अनुसत्थि.

अनुसिब्बन्त त्रि., अनु + √सिव का वर्त. कृ., एक दूसरे के साथ लिपटा हुआ या गुंथा हुआ - *इतरेपि गवक्खजालसदिसं अनुसिब्बन्ता निक्खन्ता ...,* पारा. अट्ठ. 1.66.

अनुसिस्स[1] पु., [अनुशिष्य], शिष्यों का शिष्य, प्रशिष्य - *ततो उद्धं तेसंयेव सिस्सानुसिस्सेहीति एव ताव जम्बुदीपतले आचरियपरम्पराय आभतो,* ध. स. अट्ठ. 33.

अनुसिस्स[2] पु., व्य. सं., सरभङ्ग के प्रमुख शिष्यों में से एक तापस-शिष्य का नाम - *तस्सोवादे ठत्वा ... सालिस्सरो ... पब्बतो काळदेविलो किसवच्छो अनुसिस्सो नारदोति सत्त जेट्ठन्तेवासिनो अहेसुं*, जा. अट्ठ. 5.128; *अनुसिस्सो च आनन्दो, किसवच्छे च कोलितो*, जा. अट्ठ. 5.145.

अनुसीसं अ., क्रि. वि., सिर के ऊपर, सिर पर - *अनुपादं वा अनुसीसं वा ठितस्स सब्बं असुभं समं न पञ्ञायति*, विसुद्धि. 1.175.

अनुसुय्यक / अनुसूयक त्रि., उसूयक का निषे. [अनसूयक], ईर्ष्या न करने वाला, ईर्ष्या-भाव से मुक्त - *वुड्ढापचायी अनुसूयको सिया, कालञ्ञू चस्स गरूनं दस्सनाय*, सु. नि. 327; *अनुसूयको अहं देव, अमज्जपायको अहं*, जा. अट्ठ. 2.61; *लाभा नो, आवुसोति अनुसूयको किरेस कालामो*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).75; *पोराणकत्थेरा हि अनुसूयका होन्ति*, ..., दी. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).241; *उट्ठानवीरिये पोसे, रमाहं अनुसूयके*, जा. अट्ठ. 5.107.

अनुसुय्यति / अनुसूयति अनु + √सु के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुश्रूयते], सुना जाता है, परम्परा में कहा जाता है - *एवमक्खायति एवमनुसूयति*, जा. अट्ठ. 5.411; - **यते** उपरिवत्, आत्मने. - *तं यथानुसूयते - अत्थि योनकानं* ..., मि. प. 2; - **य्यरे** ब. व., आत्मने. - *विप्पनट्ठा ब्रह्मरञ्ञे, अन्धाव अनुसुय्यरे*, अप. 1.152; *अन्धाव चक्खुविरहिताव अनुसुय्यरे विचरन्तीति सम्बन्धो*, अप. अट्ठ. 126.

अनुसेट्ठी पु., [अनुश्रेष्ठिन्], साधारण व्यापारी, छोटा सेठ - *सो एकदिवसं राजूपट्ठानं गच्छन्तो अनुसेट्ठिं आदाय गमिस्सामी'ति तस्स गेहं अगमासि, तस्मिं खणे अनुसेट्ठि* ..., जा. अट्ठ. 5.381.

अनुसेति अनु + √सी का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुशेते], **क. व्यक्ति के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने पर**, आसक्त हो जाता है, किसी के प्रति लगावयुक्त हो जाता है, किसी के विषय में मन में संकल्प-विकल्प करता है - *यञ्च ... चेतेति यञ्च पकप्पेति यञ्च अनुसेति, आरम्मणमेतं होति विञ्ञाणस्स ठितिया*, स. नि. 1(2).58; *यं खो, भिक्खु, अनुसेति, तेन सङ्खं गच्छति, यं नानुसेति, न तेन सङ्खं गच्छती'ति*, स. नि. 2(1).33; **ख. वस्तुओं या आलम्बनों के सन्दर्भ में** - निष्क्रिय अथवा प्रसुप्त अवस्था में चित्त में अनुशय के रूप में पड़ा रहता है, निरन्तर प्रकट होता है - *रागं तेन पजहति, न तत्थ रागानुसयो अनुसेति*, म. नि. 1.385; *न तत्थ पटिघानुसयो अनुसेतीति तत्थ एवरूपे दोमनस्से पटिघानुसयो नानुसेति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).263; - **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व., भीतर सोये हुए या निष्क्रिय रूप में पड़े रहते हैं - *यथा च पन कामेहि विसंयुत्तं विहरन्तं तं ब्राह्मणं अकथंकथिं छिन्नकुक्कुच्चं भवाभवे वीततण्हं सञ्ञा नानुसेन्ति* ..., म. नि. 1.155.

अनुसेवित त्रि., अनु + √सेव का भू. क. कृ. [अनुसेवित], अर्जित, व्यवहृत, किया हुआ, व्यवहार में लाया गया - *पुब्बानुसेवितं कम्मं, पुञ्ञं वापुञ्ञमेव वा*, अभि. अव. 77.

अनुसोचति अनु + √सोच का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुशोचति], शोक करता है, पछताता है, खेद अनुभव करता है, विलाप करता है - *निरासत्ति अनागते, अतीतं नानुसोचति*, सु. नि. 857; - **सि** म. पु., ए. व. - *सक्का आनयितुं कण्ह, यं पेतमनुसोचसी'ति*, जा. अट्ठ. 4.77; - **चामि** उ. पु., ए. व. - *अतीतं नानुसोचामि, नप्पजप्पामिनागतं*, जा. अट्ठ. 6.31; - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *अतीतं नानुसोचन्ति, नप्पजप्पन्ति नागतं*, स. नि. 1(1).6; - **चन्त** त्रि., वर्त. कृ. - *महती ... अत्तानं अनुसोचन्तो रोदामी'ति आह*, जा. अट्ठ. 1.65; - **चेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *तं तं चे अनुसोचेय्य, यं यं तस्स न विज्जति*, जा. अट्ठ. 3.81; - **अननुसोचिय** त्रि., सं. कृ. का निषे. [अननुशोच्य], नहीं सोचने योग्य, नहीं पछताने योग्य - *वीतं अननुसोचिय'न्ति*, जा. अट्ठ. 3.81.

अनुसोचन नपुं., अनु + √सोच से व्यु., क्रि. ना. [अनुशोचन], पश्चात्ताप, पछतावा, शोकविलाप, बाद में सोचना-विचारना - *एकित्थिन्ति यं एवरूपो भवं एकं इत्थिं अनुसोचेय्य, इदं अनुसोचनं न पञ्ञवतं इव*, ..., जा. अट्ठ. 5.362; *एवंसम्पदमेवेतन्ति यो पेतं मतं अनुसोचति, तस्सेतं अनुसोचनं एवंसम्पदं एवरूपं*, ..., पे. व. अट्ठ. 55; *अनागतप्पजप्पाय, अतीतस्सानुसोचना*, स. नि. 1(1).6; स. उ. प. के रूप में कताकतानु. के अन्त. द्रष्ट.; - **पच्चुपट्ठान** त्रि., तत्पु. स. [अनुशोचनप्रत्युपस्थान], बीती बात को सोचने-विचारने या पछतावा करने से उत्पन्न या उदित - *अन्तोनिज्झानलक्खणो सोको, चेतसो निज्झानरसो, अनुसोचनपच्चुपट्ठानो*, उदा. अट्ठ. 35.

अनुसोतं अ., क्रि. वि. [अनुस्रोतस्], धारा के बहने की दिशा में, अनुकूल रूप में, पानी के नीचे की ओर होने वाले प्रवाह की दिशा में - *सो तत्थ अनुसोतम्पि वुय्हति*, ..., *अनुसोतपटिसोतम्पि वुय्हति*, म. नि. 3.224; ..., *अनुसोतं गच्छतू'ति वत्वा नदीसोते पक्खिपि*, जा. अट्ठ. 1.79; ...

गङ्गाय नदिया अनुसोतं नावाय आगच्छन्तो तं पेतं तथा गच्छन्तं दिस्वा पुच्छन्तो, पे. व. अट्ठ. 147; द्रष्ट. विलो. पटिसोत; - **गामी** त्रि., [अनुस्रोतगामी], अनुकूल दिशा की ओर जाने वाला, लकीर का फकीर, किसी स्थापित परम्परा का अनुसरण करने वाला - *सो वुय्हमानो अनुसोतगामी, किं सो परे सक्खति तारयेतुं,* सु. नि. 321; *अनुसोतगामिं भन्ते नागसेन, देवदत्तं तथागतो पटिसोतं पापेसि,* मि. प. 120; *चत्तारोमे, भिक्खवे, ... कतमे चत्तारो? अनुसोतगामी पुग्गलो,* ..., अ. नि. 1(2).6; *पुनप्पुनं जातिजरूपगामि ते, तण्हाधिपन्ना अनुसोतगामिनो,* अ. नि. 1(2).6; - **पटिसोतं** अ., क्रि. वि., धारा के बहाव की तथा इसके प्रतिकूल दिशा में, अनुकूल एवं प्रतिकूल रूप में - ... *अनुसोतपटिसोतम्पि वुय्हति,* म. नि. 3.224.

अनुस्वार पु., [अनुस्वार], द्रष्ट. अनुस्सार के अन्त..

अनुस्सङ्की त्रि., उस्सङ्की का निषे. [अनुशङ्की], शङ्काओं से मुक्त, निर्भय, निःशङ्क - ... *अभीतो अनुब्बिग्गो अनुस्सङ्की अनुत्रस्तो,* ..., चूळव. 320; उदा. 90; *महाबलपरिबळ्हो, अनुस्सङ्की परक्कमि,* म. वं. 10.40.

अनुस्सङ्कित त्रि., उस्सङ्कित का निषे. [अनुत्शङ्कित], शङ्काओं से मुक्त, निडर, निःशङ्क - ... *अनुस्सङ्कितापरिसङ्किते हट्ठपहट्ठे उदग्गुदग्गे* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).119.

अनुस्सतानुत्तरिय नपुं., तत्पु. स. [अनुस्मृत्यनुत्तर्य], अनुस्मृतियों की अनुत्तरता या सर्वोत्तमता, अनुस्मृतियों का सर्वोत्तम आदर्श, छः प्रकार के अनुत्तर्य-धर्मों में से एक; बुद्ध, धर्म एवं सङ्घ, इन तीन रत्नों के स्मरण की अनुत्तरता - *छ अनुत्तरियानि – दस्सनानुत्तरियं, ..., पारिचरियानुत्तरियं, अनुस्सतानुत्तरियं,* दी. नि. 3.197; अ. नि. 2(2).6; *खत्तियादीनं गुणानुस्सरणं नानुस्सतानुत्तरियं तिण्णं पन रतनानं गुणानुस्सरणं अनुस्सतानुत्तरियं नाम,* दी. नि. अट्ठ. 3.200.

अनुस्सति / अनुसति स्त्री., [अनुस्मृति], पुनः पुनः उत्पन्न स्मृति, पूर्व में अनुभूत धर्मों का स्मरण, मानसिक अनुचिन्तन, ध्यान-प्रक्रिया में सतत रूप में भावनीय अभ्यास की एक क्रिया, बुद्ध, धर्म एवं सङ्घ आदि का पुनःपुनः मानसिक स्मरण, अनुस्मरण - *भावेहि बुद्धानुस्सतिं, भावनानमनुत्तरं,* अप. 1.66; विसुद्धि. 189-221; 220-282; *उस्सोळ्हि त्वधिमत्तेहा, सति त्वनुस्सति थियं,* अभि. प. 158; *या सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता ... सतिइन्द्रियं सतिबलं ..., अयं वुच्चति सति,* महानि. 7; *तत्थ पुनप्पुनं उप्पज्जनतो सति एव अनुस्सति,* महानि. अट्ठ. 27; *तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि, अनुस्सतिम्पाहं ... बहुकारं वदामि,* स. नि. 3(1).85; *यं यं दानादिकुसलं अनुस्सरति भावतो, तस्स तस्सानुरूपं हि यसञ्चानुस्सती फलं,* सद्धम्मो. 582; स. उ. प. के रूप में अननु., उपट्ठानानु., उपसमानु., गुणानु., चागानु., देवतानु., धम्मानु., पुब्बेनिवासानु., पुरिमजातिअनु., बुद्धानु., मरणानु., रतनानु., सङ्घानु., सप्पुरिसानु., सीलानु. के अन्त. द्रष्ट.; - **कम्मट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [अनुस्मृतिकर्मस्थान], ध्यान के आलम्बन के रूप में अनुस्मृतियां, *केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त,* बुद्धानुस्सतिकम्मट्ठान तथा बुद्धधम्मसङ्घानुस्सतिकम्मट्ठान के अन्त. द्रष्ट.; - **निद्देस** पु., विसुद्धि. के आठवें अध्याय का शीर्षक, विसुद्धि. 1.220-282.

अनुस्सतिट्ठान नपुं., तत्पु. स. [अनुस्मृतिस्थान], ध्यान-भावना के क्रम में अनुस्मृतियों की भावना के छः प्रकार के कारण या आधार - *छ अनुस्सतिट्ठानानि – बुद्धानुस्सति, धम्मानुस्सति, सङ्घानुस्सति, सीलानुस्सति, चागानुस्सति, देवतानुस्सति,* दी. नि. 3.198; अ. नि. 2(2).6; *अनुस्सतिट्ठानानीति अनुस्सतिकारणानि,* अ. नि. अट्ठ. 3.103.

अनुस्सतिवग्ग पु., अ. नि. के एक वर्ग का शीर्षक, अ. नि. 3(2)296-322.

अनुस्सतिविसेस पु., कर्म. स. [अनुस्मृतिविशेष], विशेष प्रकार की अनुस्मृति, विशेष रूप में भावित अनुस्मृति - *अनुस्सतिविसेसस्स सब्बा सम्पत्तियो फलं,* सद्धम्मो. 231.

अनुस्सद त्रि., उस्सद का निषे., अहङ्काररहित, उभाड़ या वृद्धि से रहित, तृष्णा, मान आदि अकुशल धर्मों की वृद्धि या प्रधानता से रहित - *अक्कोधनं वतवन्तं, सीलवन्तं अनुस्सदं,* सु. नि. 629; ध. प. 400; *तण्हाउस्सदाभावेन अनुस्सदं,* ध. प. अट्ठ. 2.378; सु. नि. अट्ठ. 2.170; *तं वे कल्याणधम्मोति आहु भिक्खुं अनुस्सदं,* इतिवु. 70.

अनुस्सदकजात त्रि., उस्सदकजात का निषे., वह, जो उष्ण या गर्म नहीं हुआ, वह, जिससे ऊपर उठकर बुलबुले नहीं निकल रहे हों - ..., *उदपत्तो अग्गिना असन्तत्तो अनुक्कुथितो अनुस्सदकजातो,* अ. नि. 2(1).216; *उदपत्तो अग्गिना सन्तत्तो पक्कुथितो उस्सुदकजातो,* स. नि. 3(1).143; अ. नि. 2(1).214.

अनुस्सरण नपुं., अनु + √सर से व्यु., क्रि. ना. [अनुस्मरण], अनुस्मृति, किसी बीती हुई बात का मन में स्मरण होना, पिछली बातों को मन में याद करना - *तेसं भिक्खूनं*

बहूपकारं वदामि, अनुस्सरणम्पहं, भिक्खवे, तेसं भिक्खूनं बहूपकारं वदामि ..., इतिवु. 76; *अनुस्सरणन्ति रत्तिट्ठानदिवाट्ठानेसु निसिन्नस्स इदानि अरिया ... दिब्बविहारादिगुणविसेसारम्मणं अनुस्सरणं,* इतिवु. अट्ठ. 288; ..., *तस्स सो चित्तप्पसादोपि तं अनुस्सरणमत्तम्पि महप्फलं महानिसंसमेव होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).169; स. उ. प. के रूप में गुणानु., पुब्बेनिवासानु. के अन्त. द्रष्ट.; – **नय** पु., तत्पु. स. [अनुस्मरणनय], बीती बातों को स्मरण करने की पद्धति या तरीका – *तत्रायं अनुस्सरणनयो ...,* विसुद्धि. 1.190; – **वत्थु** नपुं., तत्पु. स. [अनुस्मरणवस्तु], अनुस्मरण का विषय, वह वस्तु या व्यक्ति, जिसका स्मरण बाद में किया जा रहा है – *एवं भगवा पेतानं दक्खिणानिय्यातने कारणभूतानि अनुस्सरणवत्थूनि दस्सेन्तो,* खु. पा. अट्ठ. 170; *यस्मा तेसं इमानि अनुस्सरणवत्थूनि अनुस्सरन्तो कुलपुत्तो दक्खिणं दज्जाति दस्सेन्तो,* पे. व. अट्ठ. 25; – **समता** स्त्री., तत्पु. स. [अनुस्मरणसमता], अनुस्मरण की समानता या एकरूपता – *परिनिब्बानसमताय समापत्तिसमताय अनुस्सरणसमताय च,* उदा. अट्ठ. 328; 329; – **णानिसंसगाथा** स्त्री., सद्धम्मो. के अट्ठारवें खण्ड का शीर्षक, सद्धम्मो. 580–587.

अनुस्सरति अनु + √सर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुस्मरति], बार-बार स्मरण करता हे, पूर्ववर्ती जन्मों या पूर्व काल की बातों का मन में स्मरण करता है, मन में बीती बातों को लाता है या धारण करता है, पूर्व में घटित घटनाओं आदि का मन में अनुचिन्तन करता है, बारी-बारी से या एक-एक करके स्मरण करता है – *अरियसावको तथागतं अनुस्सरति ...,* अ. नि. 1(1).236; *तथागतं अनुस्सरतीति अट्ठहि कारणेहि तथागतगुणे अनुस्सरति,* अ. नि. 2.188; ..., *यथा समाहिते चित्ते अनेकविहितं पुब्बेनिवासं* अनुस्सरति, दी. नि. 1.11; – **रामि** उ. पु., ए. व., मै अनुस्मरण करता हूं – *इति साकारं सउद्देसं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरामि,* पारा. 5; म. नि. 1.28; *अनुस्सरामीति एकम्पि जातिं द्वेपि जातियोति एवं जातिपटिपाटिया अनुगन्त्वा अनुगन्त्वा सरामि,* पारा. अट्ठ. 1.118; – **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व., अनुस्मरण करते हैं – *यं मं ञाती सालोहिता पेता कालङ्कता पसन्नचित्ता अनुस्सरन्ति तेसं तं महप्फलं ...,* म. नि. 1.41; – **रं / रन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., अनुस्मरण करता हुआ – *भरन्ति मातापितरो, पुब्बे कतमनुस्सरं,* अ. नि. 2(1).39; *अपतनो गमनमनुस्सरन्तो, अकल्यरूपो गळयति असमुकानि,* सु. नि. 696; *अनुस्सरन्तो सम्बुद्धं, अग्गं दन्तं समाहितं,* थेरगा. 354; – **रन्तिया** स्त्री., वर्त. कृ., ष. वि., ए. व., अनुस्मरण कर रही स्त्री – *तस्सा इदं सुत्वा लाभा वत मे'ति अनुस्सरन्तिया बलवपीतिसोमनस्सं उदपादि,* उदा. अट्ठ. 329; – **रमानो** वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व., अनुस्मरण कर रहा – *सो तमनुस्सरमानो अरञ्ञगतोपि रुक्खमूलगतोपि सुञ्ञागारगतोपि अभिक्खणं उदानं उदानेसि,* उदा. 89; – **रियमान** वर्त. कृ., कर्म. वा., अनुस्मरण किया जा रहा – *अनुस्सरियमानसुखतो च सारणीयं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).117; – **स्सर** अनु., म. पु., ए. व. [अनुस्मर], स्मरण करो – *सब्बं अनुस्सरेवं ते सुखं सज्जु भविस्सति,* म. वं. 23; – **रथ** ब. व. [अनुस्मरत], अनुस्मरण करें – ... *तिण्णं रतनानं गुणे अनुस्सरथा'ति ...,* जा. अट्ठ. 2.121; – **स्सरे** विधि., प्र. पु., ए. व. [अनुस्मरेत्], अनुस्मरण करना चाहिए – *अत्थं धम्मं संयमं ब्रह्मचरियं, अनुस्सरे चेव समाचरे च,* सु. नि. 328; – **रेय्य** उपरिवत् – *अनुस्सरेय्य सम्बुद्धं, धम्मञ्चानुवितक्कये,* अ. नि. 2(1).198; – **रेय्यासि** म. पु., ए. व., तुम अनुस्मरण करोगे – *इध त्वं, महानाम, तथागतं अनुस्सरेय्यासि – इतिपि ... विज्जाचरणसम्पन्नो ... देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति,* अ. नि. 3(2).296; – **रेय्यं** उ. पु., ए. व., मैंने अनुस्मरण किया – *अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरेय्यं,* म. नि. 1.44; – **रि** प्र. पु., ए. व., उसने अनुस्मरण किया – *मयि एवं सरन्तम्हि, भगवापि अनुस्सरि,* अप. 1.387; – **रिं** उ. पु., ए. व., मैंने अनुस्मरण किया – *चरिमे वत्तमानम्हि, सरणं तं अनुस्सरिं,* अप. 1.72; – **रुं** प्र. पु., ब. व., उन लोगों ने अनुस्मरण किया – *दिस्वा मं वाणिजा भीता, बुद्धसेट्ठमनुस्सरुं,* अप. 2.69; – **रित्थ** म. पु., ए. व., आत्मने., तूने अनुस्मरण किया – *मास्सु पुब्बे रतिकीळितानि, हसितानि च अनुस्सरित्थ,* जा. अट्ठ. 5.182; – **रिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व., वह अनुस्मरण करेगा – ... *अतीते बुद्धे ... परियादिन्नवट्टे सब्बदुक्खवीतिवत्ते जातितोपि अनुस्सरिस्सति,* दी. नि. 2.6–7; – **रिस्सामि** उ. पु., ए. व., मैं अनुस्मरण करुंगा – *कुतो पनाहं अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरिस्सामि,* म. नि. 2.233; – **रितुं** निमि. कृ., अनुस्मरण करने हेतु – *यावतकम्पि मे इमिना अत्तभावेन पच्चनुभूतं तम्पि नप्पहोमि साकारं सउद्देसं अनुस्सरितुं,* म. नि. 2.233; – **रित्वा** पू. का. कृ., अनुस्मरण करके – *अनुस्सरित्वा सम्बुद्धं, पदुमुत्तरनायकं,* अप. 1.153; – **रितब्ब** सं. कृ., अनुस्मरण किया जाना चाहिये, अनुस्मरण करने योग्य –

विज्जति यं ... उपोसथं उपवसित्वा ... चातुमहाराजिकानं ... एवमादीनि चेत्थ सुत्तानि अनुस्सरितब्बानि, खु. पा. अट्ठ. 114; **- रणीय** सं. कृ., उपरिवत् - *तस्मानुस्सरणीयेसु बुद्धादिसु सगारवो,* सद्धम्मो. 587.

अनुस्सरित त्रि., अनु + √सर का भू. क. कृ. [अनुस्मृत], वह, जिसका अनुस्मरण या अनुचिन्तन किया गया है, बाद में अथवा अनुकूल रूप में स्मरण किया गया - *अननुस्सरिताव, भिक्खवे, तेहि कप्पा अस्सु, ...,* स. नि. 1(2).165.

अनुस्सरितु पु., अनु + √सर से व्यु., कर्तृ. ना. [अनुस्मर्तृ], अनुस्मरण करने वाला, बहुत पहले किये गये काम अथवा बोले हुए वचनों को स्मरण रखने वाला - ... *चिरकतम्पि चिरभासितम्पि सरिता अनुस्सरिता,* म. नि. 2.20; अ. नि. 2(1).10; *सरिता अनुस्सरिताति तस्मिं कायेन चिरकते कायो नाम कायविञ्ञत्ति, चिरभासिते वाचा नाम वचीविञ्ञत्ति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.22; *अनुस्सरिताति अनुगन्त्वा सरिता, अपरापरं सरितुं समत्थोति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 2.288.

अनुस्सव पु., अनु + √सु से व्यु. [अनुश्रव], परम्परा से सुनी हुई बात, किंवदन्ती, वह कथन, जो परम्परा में लोग सुनते आ रहे हैं - *सद्धा, रुचि, अनुस्सवो, आकारपरिवितक्को, दिट्ठिनिज्झानक्खन्ति ...,* म. नि. 2.388; *अनुस्सवं इदानि वदेसि,* म. नि. 2.388; *सम्मुखाति सम्मुखतो, न अनुस्सवेन न परम्परायाति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 328; *सा च खो युत्तिवसेनेव, न अनुस्सववसेन,* सु. नि. अट्ठ. 1.81; **- कथा** स्त्री., तत्पु. स. [अनुश्रवकथा], परम्परा से सुना गया कथन, पूर्वकाल से लोगों द्वारा कही जा रही बात - *अनुस्सवेनाति अनुस्सवकथायपि मा गण्हित्थ,* अ. नि. अट्ठ. 2.176.

अनुस्सवति अनु + √सु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुस्रवति], **शा. अ.** पीछे पिघल कर बहता है, तरल रूप में बहना जारी रखता है, **ला. अ.** अभिभूत कर देता है; **- न्ति** ब. व., अभिभूत करते हैं, वश में कर लेते हैं - *सब्बुपादानकथा ... विहरन्तं आसवा नानुस्सवन्ति,* ..., स. नि. 1(1).47; *आसवा नानुस्सवन्तीति चक्खुतो रूपे सवन्ति आसवन्ति सन्दन्ति ... नानुस्सवन्ति नानुप्पवड्ढन्ति,* ..., स. नि. अट्ठ. 2.57.

अनुस्सवप्पसन्न त्रि., तत्पु. स. [अनुश्रवप्रसन्न], किंवदन्ती की बात पर विश्वास या भरोसा रखने वाला - *अनुस्सवप्पसन्नानं यदिदं काळी उपासिका कुलघरिका'ति,* अ. नि. 1(1).37; ... *ठानन्तरेसु ठपेन्तो इमं उपासिकं अनुस्सवप्पसन्नानं अग्गट्ठाने ठपेसीति,* अ. नि. अट्ठ. 2.337.

अनुस्सवसच्च त्रि., ब. स., वह जिसके लिये किंवदन्तियां या लोगों के बीच परम्परा से सुनी गयी बात ही सत्य हो - *इधेकच्चो सत्था अनुस्सविको होति अनुस्सवसच्चो,* म. नि. 2.198; *अनुस्सवसच्चोति सवनं सच्चतो गहेत्वा ठितो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.166.

अनुस्सव-सुत त्रि., तत्पु. स. [अनुश्रव-श्रुत], परम्परा से सुनी जा रही बातों के द्वारा सुना गया, किंवदन्तियों द्वारा सुना गया - *सो खो पनस्स आयस्मा सामं दिट्ठो वा होति अनुस्सवस्सुतो,* म. नि. 2.137; 138.

अनुस्सविक त्रि., अनुस्सव से व्यु. [आनुश्रविक], परम्परा से सुनी हुई बातों का अनुयायी, परम्परा से शिक्षा लेने वाला, परम्परा की बातों को सत्य मानने वाला - *इधेकच्चो सत्था अनुस्सविको होति अनुस्सवसच्चो,* म. नि. 2.198; *अनुस्सविको होतीति अनुस्सवनिस्सितो होती,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.166; **- पसाद** पु., किंवदन्तियों पर विश्वास, परम्परा पर श्रद्धा - ... *अनुस्सवप्पसादं उप्पादेत्वा परस्स वड्ढितं भोजनं भुञ्जमाना विय सोतापत्तिफले पतिट्ठासि,* अ. नि. अट्ठ. 1.186; 337; *अनुस्सविकप्पसादन्ति अनुस्सवतो आगतप्पसादं,* अ. नि. टी. 1.196.

अनुस्सविय त्रि., अनुस्सव से व्यु., परम्परा का अनुयायी, परम्परा में सुनी सुनाई बातों को सत्य मानने वाला - *अनुस्सवियोति व आमन्ता, ननु भगवा सयम्भूति? आमन्ता, हञ्चि भगवा सयम्भू ... अनुस्सवियो'ति,* कथा. 241; *अनुस्सवियोति अनुस्सवेन पटिविद्धधम्मो,* कथा. अट्ठ. 178.

अनुस्सवूपलब्भमत्तेन अ., क्रि. वि., केवल परम्परा या किंवदन्ती से प्राप्त ज्ञान द्वारा - ... *चक्खुविञ्ञाणेन दिट्ठिदस्सनेनेव वा दिट्ठे अनुस्सवूपलब्भमत्तेनेव च सुते ...,* उदा. अट्ठ. 290.

अनुस्सार / अनुस्वार पु., अनु + सर से व्यु. [अनुस्वार], स्वर के बाद में आने वाली निग्गहित-नामक व्यञ्जनध्वनि, जिसका उच्चारण नासिका का निग्रहण कर होता है तथा जिसे अनुनासिक एवं बिन्दु भी कहा गया है - *सद्दसत्थे पन तं अनुस्वारो ति वदन्ति,* सद्द. 3.606; **- सुति** स्त्री., तत्पु. स. [अनुस्वारश्रुति], अनुस्वार की ध्वनि - *चित्तं पुरिसं कञ्ञन्ति आदीनं अनुस्सारसुतिवसेन अञ्ञमञ्ञं ...,* सद्द. 1.222.

अनुस्सावक पु., अनु + √सु के प्रेर. से व्यु., कर्तृ. ना. [अनुश्रावक], **शा. अ.** पाठ करके सुनाने वाला, कहने वाला, **ला. अ.** विनय के कम्मवाचा का पाठ करने वाला

वरिष्ठ भिक्षु - *उपज्झायस्स, देव, सीसं छेतब्बं, अनुस्सावकस्स जिव्हा उद्धरितब्बा,* ..., महाव. 93.

अनुस्सावन / अनुसावन नपुं., अनु + √सु के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [अनुश्रावण], **क.** विनय के कम्मवाचा अथवा ञत्ति (प्रस्ताव) का पाठ, उद्घोषणा - *हन्द, मयं, आवुसो, सब्बेव एकानुस्सावने करोमा'ति,* महाव. 118; *द्वे एकानुस्सावनेति द्वे एकतो अनुस्सावने, एकेन एकस्स अञ्ञेन इतरस्साति एवं द्वीहि वा आचरियेहि एकेन वा एकक्खणे कम्मवाचं* ..., महाव. अट्ठ. 298; *तीहि आचरियेहेव, एकतो अनुसावनं,* विन. वि. 2545; **ख.** संघ में विभाजन उत्पन्न कराने के अभिप्राय से पुनः पुनः की गयी घोषणा या प्रचार - *कम्मेन, उद्देसेन वोहरन्तो, अनुस्सावनेन, सलाकग्गाहेन,* परि. 371; *अनुस्सावनेनाति ननु तुम्हे जानाथ मय्हं उच्चाकुला पब्बजितभावं बहुस्सुतभावञ्च,* ..., *किं अहं अपायतो न भायामी'ति आदिना नयेन कण्णमूले वचीभेदं कत्वा अनुस्सावनेन,* अ. नि. अट्ठ. 1.340; परि. अट्ठ. 225; - **विपन्न** त्रि., तत्पु. स. [अनुश्रावणविपन्न], विनय के कम्मावाचा के पाठ से रहित - *ञत्तिविपन्नम्पि कम्मं करोन्ति अनुस्सावनसम्पन्नं, अनुस्सावनविपन्नम्पि कम्मं करोन्ति ञत्तिसम्पन्नं,* महाव. 412; विलो. अनुस्सावनसम्पन्न; - **सम्पदा** स्त्री., तत्पु. स. [अनुश्रावणसम्पत्], विनय के कर्मकाण्ड के वचनों वाली सम्पत्ति - *सत्थुसासनेनाति ञत्तिसम्पदाय अनुस्सावनसम्पदाय,* परि. 322; महाव. अट्ठ. 402; - **सम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [अनुश्रावणसम्पन्न], विनयकर्मकाण्डीय वचनों के पाठ से युक्त - *ञत्तिविपन्नम्पि कम्मं करोन्ति अनुस्सावनसम्पन्नं,* ..., महाव. 412; विलो. अनुस्सावनविपन्न.

अनुस्सावना स्त्री., अनुस्सावन से व्यु., उपरिवत् - ..., *ञत्तिया अनुस्सावनं न जानाति,* ..., परि. 346; *यथा मया ञत्ति च अनुस्सावना च पञ्ञत्ता,* महाव. 461; *ञत्तिया अनुस्सावनन्ति इमिस्सा ञत्तिया एका अनुस्सावना,* परि. अट्ठ. 221.

अनुस्सावित त्रि., अनु + √सु के प्रेर. का भू. क. कृ. [अनुश्रावित], उद्घोषित, वह, जिसमें (अथवा जिसका) विनय के कर्मकाण्डीय वचनों का पाठ किया गया है - *एवमेवं एवरूपाय परिसाय यावततियं अनुस्सावितं होति,* महाव. 131.

अनुस्सावियति अनु + √सु के प्रेर. का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुश्राव्यते], अनुश्रवण अथवा विनय के कर्मकाण्डीय वचनों का पाठ कराया जाता है; - **माने** वर्त. कृ., सप्त. वि., ए. व., अनुश्रवण कराया जा रहा - *यो पन भिक्खु यावततियं अनुस्सावियमाने सरमानो सन्तिं आपत्तिं नाविकरेय्य, सम्पजानमुसावादस्स होति,* महाव. 131.

अनुस्सावेति अनु + √सु के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अनुश्रावयति], **शा. अ.** अनुश्रवण कराता है, विनय के कर्मकाण्डीय वचनों की उद्घोषणा कराता है, **ला. अ.** व्यक्ति को उपसम्पदा दिलाने हेतु भिक्षुसङ्घ के समक्ष प्रस्तुत करता है, सभी को सुना कर ञत्ति (प्रस्ताव) अथवा कम्मावाचा का पाठ करता है - *ञत्तिचतुत्थे चे, भिक्खवे, कम्मे द्वीहि ञत्तीहि कम्मं करोति, न च कम्मवाचं अनुस्सावेति* - *अधम्मकम्मं,* महाव. 413; *सुमनो तिस्सथेरस्स अनुस्सावेसि साधुकं,* विन. वि. 2549; - **वेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., अनुश्रवण कराए, सुनाए - *सो साधु सामी'ति ... ठत्वा तिक्खत्तुं सद्दमनुस्सावेय्य यावता गामे गामिका,* ..., मि. प. 148; 233; - **वेत्वा** पू. का. कृ., अनुश्रवण कराकर, सुनाकर, घोषितकर - *एकतो अनुसावेत्वा, कतम्पि च न कुप्पति,* विन. वि. 2547; - **वेसि** अद्य., प्र. पु., ए. व., उसने उद्घोषित किया, पाठ किया, सुनाया - *अथ खो, आनन्द, अन्तरहितो यक्खो सद्दमनुस्सावेसि,* दी. नि. अट्ठ. 2.151; - **वेसुं** ब. व., उन्होंने सुनाया - *एकम्हि वस्से निक्खन्ते देवता सद्दमनुस्सावेसुं,* दी. नि. 2.37.

अनुस्साह पु., उस्साह का निषे. [अनुत्साह], उत्साह का अभाव, अक्षमता, वीर्यहीनता - *अथ खो आयस्मा* ... *पञ्ञापियमाने भिक्खुसङ्घे सिक्खं समादियमाने अनुस्साहं पवेदेसि,* म. नि. 2.109; ... *पितरं वन्दित्वा गारवेनेव अरञ्ञवासे अनुस्साहं पवेदेन्तो* ..., जा. अट्ठ. 4.198; - **लक्खण** त्रि., ब. स. [अनुत्साहलक्षण], वह, जिसका लक्षण अथवा विशिष्ट प्रकृति अनुत्साह है - *तत्थ थिनं अनुस्साहलक्खणं, वीरियविनोदनरसं संसीदनपच्चुपट्ठानं,* विसुद्धि. 2.96; अभि. अव. 26; - **संहननता** स्त्री., तत्पु. स., प्रयास की कमी के कारण उत्पन्न संकुचन अथवा ह्रास - *अनुस्साहसंहननता असत्तिविघातो वाति अत्थो,* विसुद्धि. 2.96; अभि. अव. 26.

अनुस्साहित त्रि., उस्साहित का निषे. [अनुत्साहित], वह, जो उत्साहित नहीं है, ढीला-ढाला, शिथिल प्रयास करने वाला, उत्साहहीन - *परस्स भण्डं वा हरति सभावतिक्खेनेव अनुस्साहितेन चित्तेन,* अभि. अव. 7.

अनुस्सित त्रि., उस्सित का निषे. [अनुच्छ्रित], **शा. अ.** वह, जो ऊपर की ओर बढ़ा हुआ या उठा हुआ नहीं है, **ला. अ.** वह, जो घमण्डी नहीं है या अभिमानी नहीं है - *तं कथं कथये धीरो, अविरुद्धो अनुस्सितो,* अ. नि. 1(1).229.

अनुस्सुक / अनुस्सुक्क त्रि., उस्सुक का निषे. [अनुत्सुक], वह जो उत्सुकता से रहित है, इच्छा-रहित, सुरक्षित, अपेक्षा-रहित, आसक्ति-रहित - *खीणासवा अरहन्तो, ते लोकस्मिं अनुस्सुका'ति,* स. नि. 1(1).18; *यत्थ भुत्वा पिवित्वा च, सयेय्याथ अनुस्सुको'ति,* जा. अट्ठ. 2.194; *सयेय्याथ अनुस्सुकोति येसु अलङ्कतसिरिसयनपिट्ठे अनुस्सुको हुत्वा सयेय्यासि, ते घरा नाम अतिविय सुखाति,* जा. अट्ठ. 2.195; - **ता** स्त्री., भाव. [अनुत्सुकता], उत्सुकता का अभाव, इच्छाओं या आसक्तियों का अभाव, विगततृष्णता - *अनञ्ञपोसिनोति आमिससङ्गण्हनेन अञ्ञे सिस्सादिके पोसेतुं अनुस्सुक्कताय अनञ्ञपोसिनो,* उदा. अट्ठ. 162.

अनुस्सुत[1] त्रि., अनु + √सु का भू. क. कृ. [अनुश्रुत], परम्परा से सुना हुआ, *केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त* - *सुरुचितंयेव होति ... स्वानुस्सुतंयेव होति ...,* म. नि. 2.389.

अनुस्सुत[2] **/ अनुस्सद** त्रि., संभवतः अनवस्सुत का रूपान्तरण, अवस्सुत का निषे. [अनवस्रुत], **शा. अ.** ऊपर छलक कर न बहने वाला, **ला. अ.** लोभ या राग के अकुशल धर्म से मुक्त, तृष्णा या आसक्ति से रहित - *अक्कोधनं वतवन्तं, सीलवन्तं अनुस्सदं,* ध. प. 400; सु. नि. 629; *तण्हाउस्सदाभावेन अनुस्सदं,* ध. प. अट्ठ. 2.378.

अनुस्सुतिक त्रि., अनुस्सुति से व्यु. [आनुश्रुतिक], परम्परा में सुनी सुनाई बातों के आधार पर तार्किक निष्कर्ष निकालने वाला, चार प्रकार के तर्कविशारदों में से एक - *तत्थ चतुब्बिधो तक्की - अनुस्सुतिको, जातिस्सरो, लाभी, सुद्धतक्किकोति, तत्थ ... सस्सतो अत्ता'ति तक्कयन्तो दिट्ठिं गण्हाति, अयं अनुस्सुतिको नाम,* दी. नि. अट्ठ. 1.92.

अनुस्सुय्यक त्रि., उस्सुय्यक का निषे., ईर्ष्यारहित, द्रष्ट. अनुसुय्यक के अन्त.

अनुहायनं अ., क्रि. वि. [अनुहायनं], प्रत्येक वर्ष पर, हर साल, वार्षिक तौर पर - *महादानञ्च सद्धाय चीवरं चानुहायनं,* चू. वं. 91.23.

अनूदक त्रि., ब. स. [अनुदक], जलरहित, द्रष्ट. अनुदक के अन्त.

अनून त्रि., ऊन का निषे., तत्पु. स. [अनून], अन्यून, सम्पूर्ण, परिपूर्ण, भरा-पूरा, समूचा, अखण्ड - *अनवयोति इमेसु लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनूनो परिपूरकारी, अवयो न होतीति वुत्तं होति,* दी. नि. अट्ठ. 1.201; *परिपुण्णानीति अनूनानि,* पे. व. अट्ठ. 248; *नापदानं पञ्ञायतीति अलायितं हुत्वा अनूनमेव पञ्ञायति,* दी. नि. अट्ठ. 3.47; - **क** त्रि., अनून से व्यु. [अनूनक], अनल्प, पूर्ण, सम्पूर्ण, अखण्ड, भरपूर - *अनूनकं दानवरं, यो मे पादासि माणवो,* अप. 1.337; *हत्थस्सरथयोधेहि पत्तीहि च अनूनको,* म. वं. 5.81; *ददामहं कुमारस्स, वीसकोटी अनूनका,* अप. 1.327; - **नंग** त्रि., ब. स. [अन्यूनाङ्ग], शरीर की विकलाङ्गता से रहित, अविकलाङ्ग शरीर वाला, सम्पूर्ण अङ्गों वाला - *अचलो होमि मेत्ताय, अनूनङ्गो भवामहं,* अप. 1.355; *अभिरूपो सुचि होमि, सम्पुण्णङ्गो अनूनको,* अप. 2.104; - **ता** भाव., अनून से व्यु. [अनूनता], परिपूर्णता, अखण्डता, अविकलता, भरापूरापन, अङ्गों की स्वस्थता - *अनूनतं मे पस्सित्वा, काळकण्णी'ति निन्दिसुं,* चरिया. 399; *अनूनतन्ति हत्थादीहि अविकलतं,* चरिया. अट्ठ. 201; - **त्त** नपुं., अनून से व्यु. [अनूनत्त्व], उपरिवत् - ..., *सो तेसं धम्मानं अनूनत्ता परिपुण्णत्ता सम्पन्नत्ता ... ओक्कमति,* ..., मि. प. 161; - **नाम** पु., व्य. सं., परिपूर्ण नाम वाला, पुण्णक का श्लेषपरक उपनाम - *अनूननामो लभतज्ज दारं, अज्जेव तं कुरुयो पापयातू'ति,* जा. अट्ठ. 7.220; *अनूननामोति सम्पुण्णनामो पुण्णको यक्खसेनापति,* जा. अट्ठ. 7.220; *कच्चायनो माणवकोस्मि, राज, अनूननामो इति मव्हयन्ति,* जा. अट्ठ. 7.165; *तत्थ अनूननामोति न ऊननामो,* तदे.; - **भोग** त्रि., भरपूर विषय-भोगों का आनन्द लेने वाला - *अनूनभोगो हुत्वान, देवरज्जं करिस्सति,* अप. 1.37; 396; - **मनसंकप्प** त्रि., ब. स. [अनूनमनसङ्कल्प], वह, जिसके मन के सङ्कल्प परिपूर्ण हों - *अनूनमनसङ्कप्पो, तिक्खपञ्ञो भविस्सति,* अप. 2.60; - **सत** नपुं., कर्म. स. [अनूनशत], पूरे एक सौ - *सोचयन्तो ... थिरसारदण्डं अनूनसतसलाकालङ्कतं उस्सापेति पण्डरविमलसेतच्छत्तं,* ..., मि. प. 213; - **नाधिक** त्रि., द्व. स. [अनूनाधिक], न कम, न अधिक, उपयुक्त मात्रा अथवा संख्या वाला - *अनूनाधिकतोति कस्मा पन भगवता पञ्चेव खन्धा वुत्ता अनूना अनधिकाति,* विसुद्धि. 2.106; ..., *विचक्खणताय अनूनाधिकं अविपरीतञ्च गहेत्वा वित्थारिकं करोति,* सु. नि. अट्ठ. 1.199; ..., *अनूनाधिके दस मासे गब्भवासं वसन्तो पि उप्पज्जमानो नाम,* अ. नि. अट्ठ. 1.81; *अनूनाधिकतो चेव, विञ्ञातब्बो विभाविना,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).89; - **नाधिकवचन** नपुं., कर्म. स.

[अनूनाधिकवचन], न कम और न अधिक विस्तार वाला वचन, सन्तुलित वचन, परिपूर्ण वचन - *परिपुण्णन्ति अनूनाधिकवचनं*, दी॰ नि॰ 1.145; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).105.

अनूप/अनोप त्रि॰, अनु + आप से व्यु॰ [अनूप], जलीय क्षेत्र, जल की बहुलता वाला स्थान या प्रदेश, नदी का तटवर्ती क्षेत्र, दलदली क्षेत्र - *अनूपो सलिलप्पायो कच्छं पुमनपुंसके*, अभि॰ प॰ 187; *मन्दवुट्ठिकाले थले खेत्ते विपज्जति, निन्ने थोकं सम्पज्जति, अनूपखेत्ते सम्पज्जतेव*, जा॰ अट्ठ॰ 4.342; - **खेत्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनूपक्षेत्र], जल की बहुलता वाला क्षेत्र या स्थान, दलदली क्षेत्र, कछार - *थले च निन्ने च वपन्ति बीजं, अनूपखेत्ते फलमासमाना*, जा॰ अट्ठ॰ 4.342; *अनूपखेत्ते नदिञ्च तळाकञ्च निस्साय कतं ओघेन वुय्हति*, तदे॰; *तस्सा चानुपखेत्तम्हि, सयम्भू वसते तदा*, अप॰ 1.194; - **तित्थ** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनूपतीर्थ], नदी के जल की बहुलता वाला तट, दलदली किनारा - *अनूपतित्थे जायन्ति, पदुमुप्पलका बहू*, अप॰ 1.380; - **भूमि** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अनूपभूमि], पानी की बहुलता वाली भूमि - *हरितानूपाति उदकनिद्धमनस्स उभोसु पस्सेसु हरिततिणसञ्छन्ना अनूपभूमियो*, जा॰ अट्ठ॰ 4.321.

अनूपघात पु॰, उपघात का निषे॰, [अनुपघात], उपघात या हिंसा का अभाव, अद्वेष, अनुत्पीड़न, क्षति या हानि का अभाव, अप्रहार - *अनूपवादो अनूपघातो*, ध॰ प॰ 185; *अनूपघातोति अनूपघातनञ्चेव अनूपघातापनञ्च*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.136-137; *अनूपवादो अनूपघातो, पातिमोक्खे च संवरो*, उदा॰ 117; *इति मय्हञ्च अविहेसा भविस्सति परस्स च पुग्गलस्स अनूपघातो*, म॰ नि॰ 3.27.

अनूपघातन नपुं॰, उपघातन का निषे॰ [अनुपघातन], उपरिवत् - *अनूपघातनञ्चेव अनूपघातापनञ्च*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.136-137.

अनूपम[1]**/अनुपम** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुपम], बेजोड़, वह, जिसकी किसी से उपमा न दी जा सके, श्रेष्ठ, उत्तम - *पूजा पूजं सब्बोपहारेहि करोन्तो च अनूपमं*, महाव॰ 37.72.

अनूपम[2] पु॰, व्य॰ सं॰, थेरगा॰ की दो गीतियों के रचयिता एक स्थविर कवि का नाम, थेरगा॰ 213-14; थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.364-65.

अनूपय त्रि॰, उप + √इ से व्यु॰ उपय (ऊपय) का निषे॰ [अनुपय, उप + √इण् + अच् = उपय का निषे॰], **शा॰ अ॰** वह, जो किसी के पास पहुंचने वाला नहीं हैं, **ला॰ अ॰** सभी प्रकार की आसक्तियों से मुक्त, लगाव से रहित - *मायञ्च मोहञ्च पहाय धोनो, स केन गच्छेय्य अनूपयो सो*, सु॰ नि॰ 792; *तत्थ उपयोति तण्हादिट्ठिनिस्सितो ... अनूपयं केन कथं वदेय्याति तण्हादिट्ठिपहानेन अनूपयं खीणासवं केन रागेन ... दुट्ठो'ति वा वदेय्य*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.217; *सब्बं लोकं अभिञ्ञाय, ... विसंयुत्तो, सब्बलोके अनूपयो*, अ॰ नि॰ 1(2).28.

अनूपलित्त त्रि॰, उप + √लिप के भू॰ क॰ कृ॰, उपलित्त का निषे॰ [अनुपलिप्त], द्रष्ट॰ अनुपलित्त के अन्त॰ (ऊपर).

अनूपवदन/अनूपवाद/अनूपवादक द्रष्ट॰ अनुपवाद के अन्त॰ (ऊपर).

अनूपादि त्रि॰, सस्सती के अर्थ को स्पष्ट करने हेतु प्रयुक्त, बराबर विद्यमान रहने वाला, आदि और अन्त से रहित, शाश्वत - *तीस्वनूपाद्ययो चन्द-सूरादो सस्सतीरितो*, अभि॰ प॰ 189.

अनूलका स्त्री॰, व्य॰ सं॰, द्रष्ट॰ अनुला के अन्त॰, (ऊपर).

अनूसय पु॰, द्रष्ट॰ अनुसय के अन्त॰ - *चरितं अधिमुत्तिञ्च आसञ्च अनूसयं*, दी॰ वं॰ 1.42.

अनूसर त्रि॰, ऊसर का निषे॰ [अनूषर], नमक या रेहकणों से रहित, वह भूमि, जो बञ्जर न हो - *इध, भिक्खवे, खेत्तं अनुन्नामानिन्नामि च होति, ..., अनूसरञ्च होति, ...*, अ॰ नि॰ 3(1).70.

अनूहत त्रि॰, उ + √हन के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनुदधृत अथवा अनुद्धत], अनुत्पाटित, वह, जिसे उच्छिन्न नहीं कर दिया गया है अथवा हटाया न गया हो - *एवम्पि तण्हानुसये अनूहते, निब्बत्तती दुक्खमिदं पुनप्पुनं*, ध॰ प॰ 338; *एवमेव छद्वारिकाय तण्हाय अनुसये अरहत्तमग्गञाणेन अनूहते ... पुनप्पुनं निब्बत्ततियेवाति अत्थो*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.306-7; *नपि पस्सं निपातेस्सं, तण्हासल्ले अनूहते*, थेरगा॰ 223.

अनेक त्रि॰, एक का निषे॰ [अनेक], एक की संख्या से अधिक संख्या वाला, कई एक, बहुत सारे, असंख्य - *केचि पन एत्थ ... चिन्तयित्वान अनेककोटिसत धनन्ति एत्थ ...*, सद्द॰ 3.631; *एवमस्सिमे अनेके पापका अकुसला धम्मा सम्भवन्ति मिच्छादिट्ठिपच्चया*, म॰ नि॰ 2.72; *अस्माभिजप्पन्ति जना अनेका'ति*, स॰ नि॰ 1(1).169; यदा कदा 'नेक' रूप में भी प्रयुक्त.

अनेकंस पु॰, एकंस का निषे॰, अनिश्चितता, सन्देह - *ब्राह्मणो नाम संसयमनेकंसं विमतिपथं वीतिवत्तो ...*, मि॰ प॰ 212; - **ग्गाह** पु॰, एकंसग्गाह का निषे॰, किसी एक

सुनिश्चित तत्त्व या बात को ग्रहण न करना, सन्देहपूर्ण मनोवृत्ति, संकल्प का अभाव - ... *कङ्खा कङ्खायना कङ्खायितत्तं ... अनेकंसग्गाहो आसप्पना ... चित्तस्स मनोविलेखो,* ध. स. 425; *सा संसयलक्खणा, कम्पनरसा, अनिच्छयपच्चुपट्ठाना अनेकंसगाहपच्चुपट्ठाना वा,* ..., ध. स. अट्ठ. 298; - **ग्गाहपच्चुपट्ठान** नपुं., ब. स., सन्देह या शङ्का से परिपूर्ण मानसिकता से व्यक्त होने वाला - *सा संसयलक्खणा, कम्पनरसा, ..., अनेकंसगाहपच्चुपट्ठाना वा, ... दट्ठब्बा,* विसुद्धि. 2.98.

अनेकंसिक त्रि., एकंसिक का निषे., **क.** अनिश्चित, अनिर्धारित, संदिग्ध, **ख.** अनेक दृष्टिकोणों से सम्बद्ध, अनेक खण्डों वाला - *एकंसिकापि हि खो, पोट्ठपाद, मया ... अनेकंसिकापि हि खो, पोट्ठपाद, मया धम्मा देसिता पकासिता,* दी. नि. अट्ठ. 1.169; *अनेकंसिकाति न एककोट्ठासा एकेनेव कोट्ठासेन सस्सताति ... अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 2.282; - **ता** स्त्री., भाव., अनिश्चित मानसिक प्रकृति या अवस्था, संदिग्ध मनःस्थिति या दशा - ... *पण्डको अनेकंसिकताय मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति,* ..., मि. प. 104; - **भाव** पु., उपरिवत् - *सत्था इमाय ... कल्याणपापकानं अनेकंसिकभावं पकासेत्वा जातकं समोधानेसि,* जा. अट्ठ. 1.437.

अनेकंसिकत त्रि., एकंसीकरोति के भू. क. कृ., एकंसिकत का निषे., वह, जिसका निश्चय अभी तक नहीं किया गया है, अनिश्चयीकृत, सुनिश्चित तथ्य को प्रकाशित न करने वाला - *अनियतो न नियतो, अनेकंसिकतं पदं,* परि. 284; *अनेकंसिकतं पदं, यस्मा इदं सिक्खापदं अनेकंसेन कतन्ति अत्थो,* परि. अट्ठ. 192.

अनेककारणेन तृ. वि., प्रतिरू. निपा. [अनेककारणेन], कई एक पद्धतियों या तरीकों द्वारा - *तत्थ अनेकपरियायेनाति अनेककारणेन,* दी. नि. अट्ठ. 3.3; पारा. अट्ठ. 1.167.

अनेककोटिसङ्ख त्रि., ब. स. [अनेककोटिसंख्य], कई करोड़ों की संख्या वाला - ... *सुमेधो नाम ब्राह्मणकुमारो हुत्वा ... मातापितूनं अच्चयेन अनेककोटिसङ्खं धनं परिच्चजित्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.49.

अनेककोटिसन्निचय त्रि., तत्पु. स. [अनेककोटिसन्निचय], अनेक करोड़ की पूंजी को जमा कर लेने वाला - *अनेककोटिसन्निचयो, पहूतधनधञ्ञवा,* जा. अट्ठ. 1.4.

अनेककोट्ठास त्रि., ब. स. [अनेककोष्ठांश], अनेक भागों या खण्डों वाला - *अनेकभागेन गुणेनाति अनेककोट्ठासेन आनिसंसेन,* पे. व. अट्ठ. 193.

अनेकगुण त्रि., ब. स. [अनेकगुण], बहुत सारे अच्छे गुणों से युक्त - *एवरूपो, महाराज, बहुगुणो अनेकगुणो अप्पमाणगुणो गुणरासि गुणपुञ्जो सत्तानं* ..., मि. प. 188.

अनेकग्गचित्त त्रि., एकग्गचित्त का निषे. [अनेकाग्रचित्त], चित्त को किसी एक आलम्बन पर स्थिर करके न रखने वाला, चञ्चल अथवा बिखरे हुए चित्त वाला - ..., *अनेकग्गचित्ता अयोनिसो च मनसि करोति,* अ. नि. 2(1).164; - **ताकार** पु., तत्पु. स., चित्त की चञ्चलता की दशा, विक्षिप्तचित्तता की अवस्था - *तेसं एवं विचरन्तानं विक्खित्तभावो अनेकग्गताकारो नाम,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.74; *उपद्दवोति अनेकग्गताकारो,* अ. नि. अट्ठ. 2.71; - **भाव** पु., तत्पु. स. [अनेकाग्रभाव], चित्त की चञ्चलता की अवस्था, चित्त में एकाग्रता का न होना - *असमाधीति अनेकग्गभावो,* अ. नि. अट्ठ. 3.138.

अनेकचित्त[1] त्रि., ब. स. [अनेकचित्त], चञ्चल चित्त वाला, बिखरे हुए अथवा अस्थिर चित्त वाला - *सुरक्खितं मेति कथं नु विस्ससे, अनेकचित्तासु न इत्थि रक्खणा,* जा. अट्ठ. 3.467; *नरानमारामकरासु नारिसु, अनेकचित्तासु अनिग्गहासु च,* जा. अट्ठ. 5.432.

अनेकचित्त[2] त्रि., एकचित्त का निषे., ब. स. [अनेकचित्र], बहुत सारी सजावटों अथवा चित्रों से युक्त, अनेक अलङ्करणों वाला - *अनेकचित्तन्ति अनेकेहि उय्यानकप्परुक्खपोक्खरणिआदीहि विमानेसु च अनेकेहि भित्तिविसेसादीहि चित्तं,* वि. व. अट्ठ. 45; *अनेकचित्तन्ति नानाविधचित्तरूपं,* वि. व. अट्ठ. 273; *अनेकचित्ताति अनेकविधचित्ततायुत्ता,* वि. व. अट्ठ. 86; *सुवण्णवण्णा जलिता महायसा, विमानमोरुय्ह अनेकचित्ता,* वि. व. अट्ठ. 85; - **त्तावत** त्रि., तत्पु. स. [अनेकचित्रावृत], अनेक प्रकार के चित्रों या अलङ्करणसाधनों से ढका हुआ, अलङ्करण-सामग्रियों से परिपूर्ण - *अनेकचित्तावततो रथो अयं, पुथू च नेमी च सहस्सरंसिको,* वि. व. अट्ठ. 229; *अनेकचित्तावततोति अनेकेहि मालाकम्मादिचित्तेहि आवततो समोकिण्णो,* वि. व. अट्ठ. 232.

अनेकजातिसंसार पु., तत्पु. स. [अनेकजातिसंसार], अनेक जन्मों में से होकर संसरण, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने का अन्तहीन सिलसिला - *अनेकजातिसंसारं, सन्धाविस्सं अनिब्बिसं,* ध. प. 153; *अनेकजातिसंसारं अनेकजातिसतसहस्ससङ्खातं इमं संसारवट्टं अनिब्बिसं ...,* अट्ठ. 71; *अनेकजातिसंसारं, सन्धावन्ति अविद्दसू,* थेरीगा.

164; *अनेकजातिसंसारन्ति अयं गाथा भगवता अत्तनो सब्बञ्ञुतञ्ञाणपदट्ठानं अरहत्तप्पत्तिं पच्चवेक्खन्तेन एकूनवीसतिमस्स पच्चवेक्खणञाणस्स अनन्तरं भासिता,* सारत्थ॰ टी॰ 1.58.

अनेकज्झासय त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकाध्याशय], अनेक या बहुत से मानसिक अभिप्राय रखने वाला, अनेक प्रकार के संकल्पों वाला – *दुतियं अनेकज्झासयानुसयचरियाधिमुत्तिका सत्ता यथानुलोमं ... यथानुलोमसासनं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.17; *अनेकज्झासयातिआदीसु आसयोव अज्झासयो,* सारत्थ॰ टी॰ 66.

अनेकट्ठान त्रि॰, ब॰ स॰, अनेक स्थानों अथवा अनेक आलम्बनों से सम्बद्ध – *अप्पगब्भाति न पगब्भा, अट्ठट्ठानेन कायपागब्भियेन ..., अनेकट्ठानेन मनोपागब्भियेन च विरहितााति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.149; खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 196; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.130; *अनेकट्ठानं मनोपागब्भियं नाम तेसु ... कायवाचाहि अज्झाचारं अनापज्जित्वा पि मनसा व कामवितक्कादीनं वितक्कनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.149.

अनेकताल त्रि॰, ब॰ स॰, अनेक या असंख्य ताड़ के वृक्षों की ऊंचाई वाला – *अनेकताले, गम्भीरे च सुदुत्तरे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.173; *तत्थ अनेकतालेति अनेकतालप्पमानो,* तदे॰.

अनेकत्थ त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकार्थ], **क.** एक से अधिक अर्थ कहने वाला (शब्द) – ... *अनवसेसयेभुय्यअब्यामिस्सानतिरेकदळ्हत्थविसंयोगादि अनेकत्थो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 92-3; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).30; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.231; **ख.** बहुवचन का अर्थ, एक से अधिक की संख्या का अर्थ – *द्वि इच्चेवमादितो कप्पच्चयो होति अनेकत्थे च, ते निपातना सिज्झन्ति,* क॰ व्या॰ 394.

अनेकत्थपदस्सित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अनेकार्थपदनिःश्रित], बहुत सारे हितकारक धर्मों से भरपूर, अनेक हितकारक धर्मों से युक्त – *इङ्घ एकपदं तात, अनेकत्थपदस्सितं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.198; *अनेकत्थपदस्सितन्ति अनेकानि अत्थपदानि कारणपदानि निस्सितं,* तदे॰; *दक्खेय्येकपदं तात, अनेकत्थपदस्सितं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.199; *अनेकत्थपदस्सितन्ति एवं वुत्तप्पकारं वीरियं अनेकेहि अत्थपदेहि निस्सितं,* तदे॰.

अनेकधा अ॰, निपा॰ [अनेकधा], अनेक प्रकार से, बहुत सारे तरीकों से – *अंधकारं पकासञ्च, दस्सयित्वा अनेकधा,* अप॰ 2.157; *सीलनं लक्खणं तस्स, भिन्नस्सापि अनेकधा, सनिदस्सनत्तं रूपस्स, यथा भिन्नस्सनेकधा,* विसुद्धि॰ 1.8; *यथा हि नीलपीतादिभेदेन अनेकधा भिन्नस्सापि रूपायतनस्स सनिदस्सनत्तं लक्खणं,* तदे॰; तुल॰ नेकधा.

अनेकधातु[1] पु॰, प्रायः ब॰ व॰ में ही प्रयुक्त, कर्म॰ स॰ [अनेकधातु], बहुत सारी धातुएं, अनेक आलम्बन या स्वभाव – *अनेकधातूसु पुथू सदासितं,* स॰ नि॰ 1(1).211; *अनेकधातूसूति अनेकसभावेसु आरम्मणेसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.234; *आसा च पिहा अभिनन्दना च, अनेकधातूसु सरा पतिट्ठिता,* नेत्ति॰ 22; 44.

अनेकधातु[2] त्रि॰, ब॰ स॰, अनेक धातुओं अथवा नाना प्रकार के मानसिक अभिप्रायों वाला – *अनेकधातु नानाधातु खो,* दी॰ नि॰ 2.208; *अनेकधातूति अज्झासयधातु उत्तरपदलोपेन वुत्ता, ... अनेकज्झासयो नानाज्झासयो'ति,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.254.

अनेकधातुपटिवेध पु॰, तत्पु॰ स॰ [अनेकधातुप्रतिवेध], बहुत सी धातुओं का गम्भीर आन्तरिक ज्ञान, चक्षु, रूप आदि धातुओं का शमथ एवं विपश्यना द्वारा आन्तरिक ज्ञान – *अनेकधातुपटिवेधो होति, नानाधातुपटिवेधो होति, ...,* अ॰ नि॰ 1(1).30; *अनेकधातुपटिवेधोति चक्खुधातु रूपधातूतिआदीनं अट्ठारसन्नं धातूनं बुद्धुप्पादेयेव पटिवेधो होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.97; *समथो च विपस्सना च – अनेकधातुपटिवेधाय संवत्तिस्सन्ति,* म॰ नि॰ 2.172.

अनेकधातुपटिसम्भिदा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अनेकधातुप्रतिसंवित्], विभिन्न धातुओं का प्रतिसंवित्-ज्ञान अथवा प्रविचयात्मक ज्ञान, धातुओं के प्रभेदों के विषय में ज्ञान – *एकधम्मे, ... बहुलीकते अनेकधातुपटिवेधो होति ... नानाधातुपटिवेधो होति ... अनेकधातुपटिसम्भिदा होति,* अ॰ नि॰ 1(1).59; *अनेकधातुपटिसम्भिदा होतीति इमिना धातुभेदञाणं कथितं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.398.

अनेकनाम त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकनाम], एक से अधिक नामों वाला, बहुत से नामों वाला – *एको पि हि अत्थो ... अनेकसद्दप्पवत्ति-निमित्तताय अनेकनामोति दट्ठब्बं,* सद्द॰ 2.378-79.

अनेकप / नेकप पु॰, [अनेकप], एक से अधिक सूड़ों से पीने वाला, हाथी – *मातङ्गो द्विरदो सट्ठिहायनो नेकपो इभो,* सद्द॰ 2.345.

अनेकपरियाय पु॰, कर्म॰ स॰, केवल तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ में ही प्रयुक्त [अनेकपर्याय], अनेक तरीकों से, बहुत से समानान्तर कथनों द्वारा – *एवमेवं भोता गोतमेन अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 98; म॰ नि॰ 2.90; *भगवता अनेकपरियायेन विरागाय धम्मो देसितो, नो सरागाय,* पारा॰

20; *अनेकपरियायेनाति अनेककारणेन,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.166.

अनेकपुनरुत्तक त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकपुनरुक्तिक], बहुत सारी पुनरुक्तियों से परिपूर्ण - *अतीव क्वचि सङ्गितो, अनेकपुनरुत्तको,* म॰ वं॰ 1.2.

अनेकप्पकार त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकप्रकार], अनेक प्रकारों वाला, बहुत सारे भेदों और प्रभेदों वाला - *निवासागारं पन ... महागन्धकुटिकरेरिमण्डलमाळको सम्ब-कुटिचन्दनमालादिअनेकप्पकारं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.118; *पस्समानानंयेव ञातीनं अम्म ... पुथु अनेकप्पकारकं लालपतंयेव मच्चानं एकमेको ... नीयति, ... लोकोति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.164.

अनेकभाग त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकभाग], बहुत सारे हिस्सों या खण्डों वाला - *अनेकभागो समुप्पादि अरहन्तेव दक्खिणा,* दी॰ नि॰ 2.196; *अनेकभागेन गुणेन सेय्यो, अयमेव सूलो निरयेन तेन,* पे॰ व॰ 525; *अनेकभागेन गुणेनाति अनेककोट्ठासेन आनिसंसेन,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 193; - **सो** अ॰, क्रि॰ वि॰, बहुत सारे तरीकों से, अनेक प्रकारों से - *नप्पवेधति अनेकभागसो, सब्बसो च मुखभावमेव सो'ति,* मि॰ प॰ 388.

अनेकभारपरिमाण त्रि॰, ब॰ स॰, बहुत अधिक वजन की माप वाला, अत्यधिक वजन वाला - *पहूतं मे जातरूपन्ति सुवण्णम्पि पहूतं अनेकभारपरिमाणं अहोसीति सम्बन्धो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 91.

अनेकभाव त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकभाव], अनेक प्रकार का, बहुत सारे भेदों, प्रभेदों वाला - *अनेकभावो समुप्पादि, अरहन्तेव दक्खिणा,* दी॰ नि॰ 2.196; *अनेकभावो सम्मुप्पादीति अनेकविधो जातो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.265.

अनेकभूमिका स्त्री॰, कर्म॰ स॰, कई मञ्जिलें, बहुत सारे तल - *सङ्गेति अनेकभूमिके दस्सेत्वा अद्धरत्तअङ्गयुत्ते तत्थ त्वं पुब्बे सयीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.499.

अनेकमाय त्रि॰, अनेक + माया से व्यु॰, ब॰ स॰, बहुत सारी माया करने वाला, अनेक छल-बल करने वाला - *मिगं तिपल्लत्थमनेकमायं, अट्ठक्खुरं अड्ढरत्तापपायिं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.165; *अनेकमायन्ति बहुमायं बहुवञ्चनं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.165; *राजानो च नाम अनेकमाया कुसलेहि धनुग्गहेहि विज्झापेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.283.

अनेकमुख त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकमुख], **शा॰ अ॰** अनेक मुखों वाला, **ला॰ अ॰** अनेक उपायों को अपनाने वाला, अनेक दृष्टिकोणों से प्रकाशित - *अनेकमुखा हि देसना पटिसम्भिदापभेदेन देसनाविलासप्पत्तानं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 62.

अनेकयोजनन्तरिक त्रि॰, ब॰ स॰, अनेक योजनों की दूरी पर स्थित - *पक्कमन्ति दिसोदिसन्ति दिसतो दिसं अनेकयोजनन्तरिकं ठानं पक्कमन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 151.

अनेकरतन त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकरत्न], बहुत सारे रत्नों से परिपूर्ण, अनेक रत्नों से युक्त - *पुन चपरं भिक्खवे, महासमुद्दो बहुरतनो अनेकरतनो,* चूळव॰ 394; उदा॰ 129; - **विचित्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अनेक प्रकार के रत्नों से अलङ्कृत - *सो हि ... मत्तिकाभाजनं छड्डेत्वा अनेकरतनविचित्तं पभस्सररंसिजाल ... वुत्तप्पकारं ... यथावुत्तं ... पटिलभीति,* उदा॰ अट्ठ॰ 238.

अनेकरसव्यञ्जन त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकरसव्यञ्जन], बहुत से रसीले व्यञ्जनों वाला (भोजन) - *भुञ्जामि कामकामिनी, अनेकरसब्यञ्जनं,* पे॰ व॰ 109; ..., *अनेकरसब्यञ्जनं भत्तं भुञ्जामीति योजना,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 62.

अनेकरूप[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकरूप], अनेक रूपों वाला, विभिन्न प्रकारों वाला - *उपाधिनिदाना पभवन्ति दुक्खा, ये केचि लोकस्मिमनेकरूपा,* सु॰ नि॰ 733; 1056; ... *अनेकरूपा नानाविधा इमस्मिं सत्तलोके दिस्सन्ति उपलब्भन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 347.

अनेकरूप[2] नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अनेकरूप], **शा॰ अ॰** अनेक प्रकार के रूप-धर्म - *फुट्ठो अनेकरूपेहि, नातुमानं विकप्पयं तिट्ठे,* सु॰ नि॰ 924; **ला॰ अ॰** मांगलिक अनुष्ठानों या उत्सवों के विभिन्न स्वरूप - *सीलब्बतेनापि वदन्ति सुद्धिं, अनेकरूपेन वदन्ति सुद्धिं,* सु॰ नि॰ 1085-87; *तत्थ अनेकरूपेनाति कोतूहलमङ्गलादिना,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.286; *अनेकरूपम्पि पहाय सब्बं, तण्हं परिञ्ञाय अनासवासे,* सु॰ नि॰ 1088-89.

अनेकलिङ्ग त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकलिङ्ग], अनेक चिह्नों या लक्षणों वाला, बहुत सारी विशिष्टताओं से युक्त - *एकङ्गदस्सी दुम्मेधोति एवं अनेकलिङ्गे अनेकलक्खणे अत्थे ...,* थेरगा॰ 232; *एको पि ञेय्यत्तो अनेकलिङ्गो सतलिङ्गस्स अत्थस्स ...,* सद्द॰ 2.379.

अनेकवचन नपुं॰, कर्म॰ स॰, **व्याकरण के सन्दर्भ में प्रयुक्त** - नाम अथवा आख्यातपदों का बहुवचन - *पुथुवचनं अनेकवचनन्ति च इमस्स एव नामं,* सद्द॰ 1.17; 92.

अनेकवण्ण त्रि॰, ब॰ स॰ [अनेकवर्ण], अनेक रङ्गों वाला, चित्र-विचित्र, अनेक स्वरूपों वाला - ..., *अनेकवण्णो'ति नं देवता सञ्जानिंसु,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 273; - **देवपुत्त** पु॰, व्य॰ सं॰, अनेकवण्णविमान के नायक एक देवपुत्र का नाम -

बुद्धुप्पादे ... अनेकवण्णदेवपुत्तोति इमे तयो समानदेवपुत्ता मम आसन्नट्ठाने निब्बत्ता, मया तेजवन्ततरा, ध. प. अट्ठ. 1.239; उदा. अट्ठ. 161.

अनेकवण्णविमान नपुं., अनेक विमानों में से एक का नाम, वि. व. अट्ठ. की एक वर्णना का शीर्षक; वि. व. अट्ठ. 271-274; *अनेकवण्णं दरसोकनासनं विमानमारुय्ह अनेकचित्तं,* वि. व. 1199; *अनेकवण्णं दरसोकनासनन्ति अनेकवण्णविमानं,* वि. व. अट्ठ. 271.

अनेकवस्सगण पु., तत्पु. स. [अनेकवर्षगण], कई एक वर्षों का सिलसिला या अटूट क्रम - *नेकवस्सगणेति अनेकवस्सगणे,* जा. अट्ठ. 3.438.

अनेकवस्सगणिक त्रि., अनेकवस्सगण से व्यु. [अनेकवर्षगणिक], अनेक वर्षों के दौरान उत्पन्न या सञ्चित, बहुत सारे वर्षों की गणना वाला, बहुत पुराना - *सेय्यथापि, भिक्खवे, गण्डो अनेकवस्सगणिको,* अ. नि. 3(1).200; ..., *अनेके वस्सगणा उप्पन्ना अस्साति अनेकवस्सगणिको,* अ. नि. अट्ठ. 3.264; *सेय्यथापि, भिक्खवे, जम्बाली अनेकवस्सगणिका,* अ. नि. 1(2).192; *अनेकवस्सगणिकाति गामस्स वा नगरस्स वा उप्पन्नकालेयेव उप्पन्नत्ता अनेकानि वस्सगणानि उप्पन्नाय एतिस्साति अनेकवस्सगणिका,* अ. नि. अट्ठ. 2.352.

अनेकवारं अ., क्रि. वि. [अनेकवारं], अनेक बार में, कई बार, पुनःपुन, बारम्बार - *भोजि जे त्वं अनेकवारं मम सन्तिकं आगता, चोरा यथारुचितं हरन्तु,* ध. प. अट्ठ. 2.342; *अहं पन यक्खिनी हुत्वा अनेकवारं ...,* उदा. अट्ठ. 236; विलो. एकवारं.

अनेकविध / नेकविध त्रि., [अनेकविध], कई तरह का, बहुत से प्रभेदों या रूपों वाला - *चित्तम्पि हि बहुं अनेकविधं नानप्पकारकं,* म. नि. 2.227; *सो पनेस अगारियमुनि, ... पच्चेकबुद्धमुनि, मुनिमुनीति अनेकविधो,* जा. अट्ठ. 1.116-17; ..., *बहुविधानि अनेकविधानि दुक्खानि संसारगतो अनुभवति,* मि. प. 189; - **सूप** त्रि., कर्म. स. [अनेकविधसूप], अनेक प्रकार के रसों वाला - *अनेकसूपोति मुग्गमासादिसूपेहि चेव खज्जविकतीहि च अनेकविधसूपो,* उदा. अट्ठ. 160.

अनेकविहित त्रि., बहुत से प्रभेदों वाला, कई तरह का, विभिन्न प्रकारों का - *सो अनेकविहितं इद्धिविधं पच्चनुभोति ...,* दी. नि. 1.69; *तथारूपं चेतोसमाधिं फुसति, यथासमाहिते चित्ते अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति,* दी. नि. 1.11; *... उच्चासद्दमहासद्दाय अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेन्तिया,* म. नि. 2.231; *अनेकविहिता दिट्ठियो लोके उप्पज्जन्ति,* म. नि. 1.51; *पुब्बन्तं आरब्भ अनेकविहितानि अधिमुत्तिपदानि अभिवदन्ति ...,* दी. नि. 1.11; ..., *अनेकविहितेसु च कङ्खाठानीयेसु धम्मेसु कङ्खं न पटिविनोदेन्ति,* म. नि. 1.286.

अनेकव्यञ्जन त्रि., ब. स. [अनेकव्यञ्जन], अनेक प्रकार के व्यञ्जनों वाला, बहुत सारे स्वादिष्ट खाद्य-पदार्थों वाला (भोजन) - *सो अहोसि पिण्डपातो अनेकसूपो अनेकब्यञ्जनो अनेकरसब्यञ्जनो,* उदा. 101; *अनेकब्यञ्जनोति नानाविधउत्तरिभङ्गो,* उदा. अट्ठ. 160; ... *भुञ्जति विचितकाळकं अनेकसूपं अनेकब्यञ्जनं,* म. नि. 1.48.

अनेकव्यसनानुबन्धत्त नपुं., भाव. [अनेकव्यसनानुबन्धत्व], अनेक प्रकार की विपत्तियों से ग्रस्त होने की स्थिति - ..., *तं अनिच्चादिविपरिणामसभावत्ता अनेकब्यसनानुबन्धत्ता च भवहेतुभावतो अतिविय भयानकट्ठेन भयं,* उदा. अट्ठ. 170.

अनेकसत त्रि., [अनेकशत], कई सौ की संख्या वाला - *सा, एसा, भगव, परिसा महा होति अनेकसता अनेकसहस्सा,* दी. नि. 3.12; ... *अनेकसताय परिसाय धम्मं देसेता,* म. नि. 1.317; ... *अनेकसतं खत्तियपरिसं उपसङ्कमिता,* दी. नि. 2.84; - **कण्ण** त्रि., तत्पु. स. [अनेकशतकर्ण], कई सौ कानों वाला - ..., *पुन अट्ठकण्णो भवित्वा अनेकसतकण्णोपि भविस्सती'ति वत्वा ...,* जा. अट्ठ. 6.222; - **क्खत्तुं** अ., क्रि. वि. [अनेकशतकृत्वः], कई सौ बार - *अनेकसतक्खत्तुञ्च, चक्कवत्ती अहोसहं,* अप. 2.47.

अनेकसफ त्रि., ब. स. [अनेकशफ], फटे हुए या विदीर्ण खुरों वाला - *एकखुरं कत्वाति अनेकसफम्पि एकसफं विय कत्वा,* लीन. (दी.नि.टी.) 3.141.

अनेकसभाव त्रि., ब. स. [अनेकस्वभाव], अनेक प्रकार की प्रकृति वाला, विविध अवस्थाओं वाला - *अनेकधातूसूति अनेकसभावेसु आरम्मणेसु,* स. नि. अट्ठ. 1.234.

अनेकसम्भार त्रि., ब. स. [अनेकसम्भार], विविध प्रकार की साधनसामग्रियों अथवा आवश्यक उपकरणों वाला - *वीणा नाम अनेकसम्भारा महासम्भारा,* स. नि. 2(2).195.

अनेकसरसता स्त्री., अनेकसरस का भाव., विविध प्रकार के स्वभावों वाला होना, विविध प्रकार के कृत्यों वाला होना - *अनेकसरसताति अनेकसभावता, अनेककिच्चता वा,* अ. नि. टी. 3.177.

अनेकसलाक त्रि., ब. स. [अनेकशलाक], अनेक शाखाओं अथवा शलाकाओं से युक्त - ... *अनेकसाखन्ति अनेकसलाकं,* सु. नि. अट्ठ. 2.187.

अनेकसहस्स त्रि., द्वि. स. [अनेकसहस्र], **क. एकवचनान्त नामों के साथ आने पर**, कई हजारों वाला, कई हजारों से युक्त - *सा एसा, भग्गव, परिसा महा होति अनेकसता अनेकसहस्सा*, दी. नि. 3.12; ... *सो अनेकसहस्सं भिक्खुसङ्घं परिहरिस्सति*, मि. प. 157; **ख. बहुवचनान्त नामों के साथ प्रयुक्त होने पर**, अनेक सहस्र, कई हजार - *अथापि सो सत्तो ... ओलोकेन्तस्स अनेकसहस्सानं सत्तानं मज्झे ठितोपि* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).350.

अनेकसाख त्रि., ब. स. [अनेकशाख], बहुत सी कमानियों या तिल्लियों वाला - *अनेकसाखञ्च सहस्समण्डलं, छत्तं मरू धारयुमन्तलिक्खे*, सु. नि. 693; *अनेकसाखन्ति रतनमयानेकसतपटिट्ठानहीरकं*, लीन. (दी.नि.टी.) 2.26.

अनेकसारीरिक त्रि., [अनेकशारीरिक], अनेक शरीरों से सम्बद्ध, अनेक शरीरों से उत्पन्न, बहुत सारे लोगों के हितों से जुड़ा हुआ - *सब्बेते अनेकसारीरिकं पुञ्ञप्पटिपदं पटिपन्ना होन्ति*, अ. नि. 1(1).196; *अनेकसारीरिकन्ति अनेकसरीरसम्भवं*, स. नि. अट्ठ. 2.174.

अनेकसाहस्सधन त्रि., ब. स. [अनेकसहस्रधन], कई हजारों की संख्या में धन रखने वाला - *इद्धानि फीतानि कुलानि अस्सु, अनेकसाहस्सधनानि लोके*, जा. अट्ठ. 5.16.

अनेकसूप त्रि., ब. स. [अनेकसूप], अनेक प्रकार के रसीले खाद्य पदार्थों से युक्त, अनेक प्रकार की चटनियों से युक्त (भोजन) - *सो अहोसि पिण्डपातो अनेकसूपो अनेकब्यञ्जनो अनेकरसब्यञ्जनो*, उदा. 101; *अनेकसूपोति मुग्गमासादिसूपेहि चेव खज्जविकतीहि च अनेकविधसूपो*, उदा. अट्ठ. 160; ... *पिण्डपातं भुञ्जति विचितकाळकं अनेकसूपं अनेकब्यञ्जनं*, म. नि. 1.48; - **रसब्यञ्जन** त्रि., ब. स. [अनेकसूपरसव्यञ्जन], अनेक प्रकार की चटनियों, रसीले पदार्थों तथा व्यञ्जनों से युक्त - *अनेकसूपरसब्यञ्जनोति अनेकेहि सूपेहि चेव ब्यञ्जनेहि च मधुरादिमूलरसानञ्चेव सभिन्नरसानञ्च अभिब्यञ्जको, नानग्गरससूपब्यञ्जनोति अत्थो*, उदा. अट्ठ. 160; - **ब्यञ्जन** त्रि., ब. स. [अनेकसूपव्यञ्जन], अनेक तरह की चटनियों एवं व्यञ्जनों वाला - *सा अनेकसूपब्यञ्जनं बहुभत्तं पचि*, जा. अट्ठ. 6.194.

अनेकसेतिमिन्द पु., व्य. सं., पेगू एवं म्यां-मां के शासक बयिन्नौङ्ग का नाम - *अनेकसेतिभिन्दो किर राजा योनकरट्ठं विजयकाले पठमं सासनस्स पतिट्ठानभूतं इदं तिकत्वा* ..., सा. वं. 49(ना.).

अनेकसो अ., क्रि. वि. [अनेकशः], कई बार, बारम्बार, पुनःपुनः - *लोलवत्थु अनेकसो वित्थारितमेव*, जा. अट्ठ. 3.196.

अनेकस्सर त्रि., ब. स. [अनेकस्वर], एक से अधिक स्वरों वाला, बहुस्वरीय - *धातुस्स अन्तो क्वचि लोपो होति यदानेकस्सरस्स, अनेकसरस्सेति किमत्थं, पाति, याति, दाति, भाति, वाति*, क. व्या. 523.

अनेकाकार त्रि., ब. स. [अनेकाकार], अनेक आकारों या स्वरूपों वाला, प्रायः स. प. के पू. प. के रूप में प्रयुक्त; - **वोकार** त्रि., ब. स. [अनेकाकारव्यवकार], विभिन्न आकारों एवं विशेषताओं वाला - *एवं महाथेरो अनेकाकारवोकारं रतनत्तयगुणेसु अविभूतेसु ... पटिसंवेदन्तो निसीदि*, उदा. अट्ठ. 217-18; ... *अनेकाकारवोकारं असुभभावनानुयोगमनुयुत्ता विहरन्ति*, पारा. 81; *पुब्बेव मया ... वत्वा अनेककारवोकारं वचीदुच्चरितसन्निस्सितं आदीनवं*, पे. व. अट्ठ. 10; - **वोकिण्ण** त्रि., तत्पु. स. [अनेकाकारव्यवकीर्ण], उपरिवत् - *अनेकाकारवोकिण्णो अनेककारणसम्मिस्सोति वुत्तं होति*, पारा. अट्ठ. 2.5; - **सम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [अनेकाकारसम्पन्न], अनेक प्रकार के अच्छे गुणों से परिपूर्ण, बहुत सारी विशिष्टताओं से युक्त - *अनेकाकारसम्पन्ने, सारिपुत्तम्हि निब्बुते*, थेरगा. 1167; *अनेकाकारसम्पन्नं, पयिरुपासन्ति गोतमन्ति*, थेरगा. 1260; *अनेकाकारसम्पन्नन्ति अनेकेहि गुणेहि समन्नागतं*, स. नि. अट्ठ. 1.250; - **सम्मिस्स त्रि., ब. स.**, अनेक प्रकार के आकारों एवं विशिष्टताओं से समन्वित - *अनेकाकारवोकिण्णो अनेककारणसम्मिस्सोति वुत्तं होति*, पारा. अट्ठ. 2.5.

अनेकादीनव त्रि., ब. स., बहुत सारी विपत्तियों से परिपूर्ण - ... *समुद्दो अनेकादीनवो, मा गमी'ति निवारेसि*, जा. अट्ठ. 4.2.

अनेकाधिवचन नपुं., तत्पु. स. [अनेकाधिवचन], बहुवचन को सूचित करने वाली अभिव्यक्ति, केवल स. प. के पू. प. के रूप में प्रयुक्त; - **कुसल** त्रि., तत्पु. स., बहुवचनवाचक शब्दों के प्रयोग में कुशल - *अयञ्च वुच्चति अत्थकुसलो ... एकाधिवचनकुसलो अनेकाधिवचनकुसलो, ... जनपदनिरुत्तियो*, नेत्ति. 29.

अनेकानत्थानुबन्ध त्रि., ब. स. [अनेकानर्थानुबन्ध], अनेक प्रकार के अनर्थों अथवा अहितकारक बातों के साथ जुड़ा हुआ, बहुत से हानिकारक एवं विघ्नकारक तत्त्वों से युक्त - ... *तेसं मनुस्सानं आपानभूमिरमणीयेसु ... अनेकानत्थानुबन्धेसु घोरासव्हकटुकफलेसु* ..., उदा. अट्ठ. 297.

अनेकानिसंस त्रि., ब॰ स॰, अनेक प्रकार के लाभों या हितकारक धर्मों से परिपूर्ण – *सो पन पिण्डपातो बहुगुणो अनेकानिसंसो,* मि॰ प॰ 171.

अनेकानुसन्धिक त्रि., ब॰ स॰ [अनेकानुसन्धिक], अनेक प्रकार की अनुसन्धियों से युक्त, अनेक प्रकार के तार्किक सम्बन्धों या प्रायोगिक अभिप्रायों से युक्त – *यं अनेकानुसन्धिकं तत्थ अनुसन्धिवसेन धम्मक्खन्धगणना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 29; *अनेकानुसन्धिकस्स सुत्तस्स पठमानुसन्धि आदि, अन्ते अनुसन्धि परियोसानं, ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).103; *अनेकानुसन्धिकस्स पठमो अनुसन्धि आदि, ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98.

अनेकिभिन्द पु., व्य॰ सं॰, सिरिखेत्तनगर के एक बौद्ध-स्तूप का नाम – *तञ्च चेतियं रतनचेतियं ति पञ्ञापेसि, हत्थिरूपबाहुल्लताय पन अनेकिभिन्दो ति पाकटं अहोसि,* सा॰ वं॰ 87(ना॰).

अनेज[1] त्रि., एजा का निषे॰ अथवा √एज के निषे॰ के रूप में व्यु॰, ब॰ स॰, तृष्णा से मुक्त, इच्छारहित, आसक्तियों या सांसारिक लगावों से मुक्त, अप्रकम्पित, अप्रभावित, स्थिर, दृढ़ – *तं कङ्खछिदं मुनिं अनेजं, दुतियं भिक्खुनमाहु मग्गदेसिं,* सु॰ नि॰ 87; *स वे अनेजो अखिलो अकङ्खो, तथागतो अरहति पूरळासं,* सु॰ नि॰ 481; *ओकञ्जहं तण्हच्छिदं अनेजं,* सु॰ नि॰ 1107; *अनेजन्ति लोकधम्मेसु निकम्पं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.291; *सुखञ्हि वङ्क मुनयो, अनेजा छिन्नसंसया,* थेरीगा॰ 205; *एजासङ्खाताय तण्हाय अभावेन अनेजा,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 193; *ते तुसिता जेत्वा मारं सवाहिनिं ते अनेजा,* अ॰ नि॰ 1(2).18; *ते अनेजाति ते खीणासवा तण्हासङ्खाताय एजाय अनेजा निच्चला नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.252.

अनेज[2] नपुं., तृष्णा से विमुक्ति, आसक्तियों से छुटकारा, अर्हत्-अवस्था का फल अर्हत्व – *अनेजं उपसम्पज्ज, रुक्खमूलम्हि झायति,* थेरीगा॰ 364; *अनेजन्ति पटिप्पस्सद्ध एजताय अनेजन्ति लद्धनामं अग्गफलं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 269; *अनेजस्स वसिप्पत्तस्स, भगवतो तस्स सावको हमस्मि,* म॰ नि॰ 2.55; *ननु चत्तारो अरूपा अनेजा वुत्ता भगवताति? आमन्ता,* कथा॰ 272; *अनेजं ते अनुप्पत्ता, चितं तेसं अनाविलं,* स॰ नि॰ 2(1).77; *अनेजन्ति एजासङ्खाताय तण्हाय पहानभूतं अरहत्तं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.250; – **त्त** नपुं., भाव॰, तृष्णा या आसक्तियों से रहित होना – *अनेजत्तायेव सब्बकिलेसेहि परवादवातेहि च अकम्पनीयत्ता ठितो एकग्घनपब्बतसदिसो,* उदा॰ अट्ठ॰ 151.

अनेजका पु., प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, देवताओं के एक वर्ग का नाम – *वरुणा सहधम्मा च, अच्चुता च अनेजका,* दी॰ नि॰ 2.191; *अच्चुता च अनेजकाति अच्चुतदेवता च अनेजकदेवता च,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.254.

अनेध त्रि., एध का निषे॰, ब॰ स॰ [अनिन्धन], **शा॰ अ॰** ईंधन से रहित, **ला॰ अ॰** अकुशल-मूलों से रहित, क्रोध आदि से मुक्त – *अनेधो धूमकेतूव, कोधो यस्सूपसम्मति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.25; *अनेधो धूमकेतूवाति अनिन्धनो अग्गि विय,* तदे॰.

अनेरित त्रि., ईरित का निषे॰ [अनीरित], अप्रकम्पित, अगतिशील, अप्रेरित – *अनेरितो अघट्टितो अचलितो अलुळितो अभन्तो वूपसन्तो तत्र ऊमि नो जायति, ठितो होति समुद्दोति,* महानि॰ 260.

अनेळ/अनेल त्रि., अट्ठ॰ में अनेळक, अनेळगल एवं अनेळमूग के व्याख्यान के क्रम में ही स्वतन्त्र शब्द के रूप में प्रयुक्त, एळ अथवा एल का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अनेला], निर्दोष, चित्त की अकुशल चित्तवृत्तियों से मुक्त – *इलति, एलं एला, एत्थ एलं वुच्चति दोसो, केन अत्थेन ...,* सद्द॰ 2.438; *अनेलगलायाति अनेलाय अगलाय निद्दोसाय चेव अक्खलितपदब्यञ्जनाय च,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.242; *अनेळमूगोति अलालामुखो, अथ वा अनेळो च अमूगो च, पण्डितो व्यत्तोति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98; द्रष्ट॰ अनेळक, अनेळमूग, अनेलगल आगे.

अनेळक/अनेलक/अनीळक/अनीलक त्रि., अनेळ/अनेल से व्यु॰ [बौ॰ सं॰ अनेळक, सं॰ अनीडक], शुद्ध, निर्दोष, स्वच्छ, अविशुद्धियों से रहित, मधुमक्खियों के अण्डों एवं उनकी लार से रहित स्वच्छ मधु – *सेय्यथापि खुद्दमधुं अनीलकं एवमस्सादं,* पारा॰ 7; *सेय्यथापि खुद्दमधुं अनीळकन्ति इदं पनस्स मधुरताय ओपम्मनिदस्सनत्थं वुत्तं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.138; *इसिमुग्गानि पिसित्वा, मधुखुद्दे अनीळके,* अप॰ 1.199.

अनेळकसप्प पु., कर्म॰ स॰, एक जहरीला सर्प, अत्यधिक विषैले सर्प का एक वर्ग – *अनेळकसप्पो नाम महासीविसो,* स॰ नि॰ टी॰ 3.41.

अनेलगल/अनेळगल/अनेळगळ त्रि., एलगल का निषे॰, ब॰ स॰, **शा॰ अ॰** लार के बहाव या टपकाव से रहित, **ला॰ अ॰** पूर्णतया परिशुद्ध, सुस्पष्ट अथवा दोषरहित (विशेष रूप से वाणी के विशे॰ के रूप में प्रयुक्त) – *..., अनेलगलाय, अत्थस्स विञ्ञापनिया,* महाव॰ 270; *भवञ्हि सोणदण्डो ...*

वाचाय समन्नागतो विस्सट्ठाय अनेलगलाय अत्थस्स विञ्ञापनिया ..., दी॰ नि॰ 1.99; *अनेलगलायाति एलगळेनविरहिताय,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.227; *अनेलगळायाति एला वुच्चति दोसो, तं न पग्घरतीति अनेलगळा, ताय निद्दोसायाति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 255; *अनेलगलायाति यथा दन्धमनुस्सा मुखेन खेळं गळन्तेन वाचं भासन्ति, न एवरूपाय, अथ खो निद्दोसाय विसदवाचाय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.210.

अनेलमूग / अनेळमूग त्रि॰, एळमूग का निषे॰ [अनेडमूक], **शा॰ अ॰** वह, जो बधिर एवं मूक न हो, **ला॰ अ॰** बुद्धिमान, पण्डित, निपुण - *तण्हक्खयं पत्थयमप्पमत्तो, अनेळमूगो सुतवा सतीमा,* सु॰ नि॰ 70; *अप्पका ते सत्ता ... अजळा अनेळमूगा पटिबला सुभासितदुब्भासितस्स अत्थमञ्ञातुं,* अ॰ नि॰ 1(1).48; *येसं एळा मुखतो न गळति, ते अनेळमूगा नाम अनेळमुखा निद्दोसमुखाति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.366.

अनेसना स्त्री॰, एसना का निषे॰ [अनेषणा, अणेसणा], **शा॰ अ॰** (भोजन को) अनुचित साधनों द्वारा पाने की कामना, **ला॰ अ॰** चीवर, पिण्डपात आदि को प्राप्त करने हेतु अपनाए गये अनुचित उपाय, अनुचित कामना, अप्रतिरूप इच्छा - ..., *न च चीवरहेतु अनेसनं अप्पतिरूपं आपज्जति,* दी॰ नि॰ 3.179; *अनेसनन्ति, दूतेय्यपहिनगमनानुयोगप्पभेदं नानप्पकारं अनेसनं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.178; *दायकस्स हि निमन्तनं एकवीसतिया अनेसनासु अञ्ञतराय ... नाम होति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.336; *आचारसीलसम्पन्नोति एकवीसतिया अनेसनाहि जीविककप्पनं अनाचारो नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 3.365; *यो पन इमस्मिं सासने पब्बजित्वा एकवीसतिअनेसनं पहाय चतुपारिसुद्धिसीले पतिट्ठाय बुद्धवचनं* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).136.

अनेसमान त्रि॰, √ईस के वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰ का निषे॰, स्वयं अपना स्वामी न होता हुआ, अपने पर नियन्त्रण न करने वाला, अनीश्वर - *यं पित्वा चित्तस्मिं अनेसमानो, आहिण्डती गोरिव भक्खसादी,* जा॰ अट्ठ॰ 5.15; *अनेसमानोति अनिस्सरो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.17.

अनोक त्रि॰, ओक का निषे॰, ब॰ स॰ [अनौक], **क. शा॰ अ॰** बेघर, गृहविहीन, **ला॰ अ॰** सांसारिक आसक्तियों एवं इच्छाओं से पूरी तरह से मुक्त - *सो तेहि फुट्ठो बहुधा अनोको, वीरियं परक्कम्मदळ्हं करेय्य,* सु॰ नि॰ 972; *अनोकोति अभिसङ्खारविञ्ञाणादीनं अनोकासभूतो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.265; **ख.** पु॰ / नपुं॰, गृहविहीनता, बेघर होने की स्थिति, प्रव्रजित अवस्था, अनागारिक स्थिति - *ओका अनोकमागम्मा विवेके यत्थ दूरमं,* ध॰ प॰ 87; *ओका अनोकमागम्याति ओकं वुच्चति आलयो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.338; - **सारी** त्रि॰, बेघर या गृहत्याग कर विचरण करने वाला - *तस्मा तथागतो अनोकसारी'ति वुच्चति, एवं खो, गहपति, अनोकसारी होति,* स॰ नि॰ 2(1).10; *अनोकसारी होतीति एवं कम्मविञ्ञाणेन ओकं असरन्तेन अनोकसारी नाम होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.228; *अनोकसारिमप्पिच्छं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं,* सु॰ नि॰ 633.

अनोकास क. पु॰, ओकास का निषे॰ [अनवकाश], स्थान अथवा क्षेत्र का अभाव, अनुपयुक्त स्थान या विषय, अविषय, अगोचर - *अनोकासं कारेत्वा,* मो॰ व्या॰ 3.12; *इधेकच्चो भिक्खु कुलानि उपगन्त्वा अनोकासे ठितो ठानं भञ्जति,* मि॰ प॰ 215; **ख.** त्रि॰, पर्याप्त स्थान से रहित, स्थान न पाने वाला - *द्वारानि अनोकासानि अहेसुं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.252; *ततो एकच्चे द्वारेसु ओकासं अलभमाना पाकारं भिन्दित्वा पलाता,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 132; - **कत** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवकाशकृत], वह, जिसे अनुमति या अनुमोदन प्राप्त नहीं हुआ है, सङ्घ द्वारा अननुमोदित - *कथञ्हि नाम, भिक्खवे, भिक्खुनियो अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छिस्सन्ति,* पाचि॰ 477; *अनोकासकतन्ति असुकस्मिं नाम ठाने पुच्छामीति एवं अकतओकासं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 219; - **कतसिक्खापद** नपुं॰, कर्म॰ स॰, वि॰ पि॰ पाचि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, पाचि॰ 477; - **त्त** नपुं॰, अनोकास का भाव॰ [अनवकाशत्त्व], प्रयोग का क्षेत्र न होना, प्रयोग-हेतु उपयुक्त स्थान न होना - *ईदिसे ठाने परभूतानं यो अंनादीनं वचनानं अनोकासत्ता,* ..., सद्द॰ 1.140; - **भूत** त्रि॰, [अनवकाशभूत], प्रयोग हेतु उचित स्थान न बनने वाला, अनुपयुक्त स्थान बना हुआ, वह, जो किसी धर्म के लिये उपयुक्त स्थल नहीं है - *अनोकोति अभिसङ्खारविञ्ञाणादीनं अनोकासभूता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.265.

अनोक्कन्त त्रि॰, अव + √कमु के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनवक्रान्त], द्रष्ट॰ अनवक्कन्त के अन्त॰ - *धम्मा एकन्तकुसला कुसलायातिका अरिया लोकुत्तरा अनवक्कन्ता पापिमता,* म॰ नि॰ 3.157.

अनोग्गत त्रि॰, अव + √गम के भू॰ क॰ कृ॰ (अवगत) का निषे॰ [अनवगत], सूर्य के समान नहीं डूबा हुआ, सूर्य की तरह अस्त न हो चुका - *अनोग्गतस्मिं सूरियस्मिं, ततो चित्तं विमुच्चि मे,* थेरगा॰ 477; *अनोग्गतस्मिं सूरियस्मिन्ति सूरिये अनत्थङ्गतेयेव,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.116.

अनोघतिण्ण त्रि., ओघतिण्ण का निषे. [अनोघतीर्ण], वह, जिसमें क्लेशों अथवा अकुशलधर्मों के जलप्रवाह को पार नहीं किया है, क्लेशों से ग्रस्त चित्त वाला - *ते चे मुनि ब्रूसि अनोघतिण्णे, अथ को चरहि देवमनुस्सलोके,* सु. नि. 1087.

अनोज/अणोज स्त्री., व्य. सं., लाल पुष्पों वाले एक वृक्ष या पौधे का नाम, जिसके पुष्पों की मालाएं बनाई जाती हैं - *चङ्कोटके ठपेत्वान, अनोजं पुप्फमुत्तमं,* अप. 1.117; *कोरण्डका अनोजा च, पुप्फिता नागमल्लिका,* जा. अट्ठ. 7.304; - **पुप्फ** नपुं., तत्पु. स., अनोज-नामक पौधे का फूल - ... *अनोजपुप्फचङ्कोटकं गहेत्वा अनुमोदनकाले सत्थारं अनोजपुप्फेहि पूजेत्वा तं साटकं सत्थु पादमूले ठपेत्वा,* ..., ध. प. अट्ठ. 1.314; *चङ्कोटके ठपेत्वान, अनोजं पुप्फमुत्तमं* ..., अप. 1.117; - **पुप्फचङ्कोटक** पु., तत्पु. स., अनोज-नामक पौधे के फूलों की टोकरी या मञ्जूषा - *अतिरेकतरं कत्वा सत्थारं पूजेस्सामी'ति अनोजपुप्फवण्णेन सहस्समूलेन साटकेन सद्धिं अनोजपुप्फचङ्कोटकं गहेत्वा,* ..., ध. प. अट्ठ. 1.314; - **पुप्फदाम** नपुं., तत्पु. स., अनोज, नामक पौधे के फूलों से बनी हुई माला - *तत्थ अलातो एतदब्रवीति सो किर कस्सपदसबलस्स चेतिये अनोजपुप्फदामेन पूजं कत्वा ... संसारे संसरन्तो ... बहुं पापमकासि,* जा. अट्ठ. 7.111; - **पुप्फवण्ण** त्रि., अनोज-नामक पौधे के फूलों के समान रङ्गवाला - ... *अतिरेकतरं कत्वा सत्थारं पूजेस्सामी'ति अनोजपुप्फवण्णेन सहस्समूलेन साटकेन सद्धिं ...,* ध. प. अट्ठ. 1.314; - **पुप्फसदिसवण्णता** स्त्री., भाव., अनोज-नामक पौधे के फूलों के समान वर्ण या रङ्ग होने की अवस्था - ... *अनोजापुप्फसदिसवण्णताय पनस्सा अनोजादेवीत्वेव नामं अहोसि,* अ. नि. अट्ठ. 1.240.

अनोजका/अनोजक स्त्री./पु., लाल रङ्ग के फूलों वाले एक वृक्ष का नाम - *पदुमकुमुदुप्पलकुवलयं, योधिकबन्धुकनोजका च सन्ति,* वि. व. 649; *अनोजकापि सन्ती'ति पाठं वत्वा अनोजकापीति वुत्तं होती'ति अत्थं वदन्ति,* वि. व. अट्ठ. 133.

अनोजवन्तु त्रि., ओजवन्तु का निषे. [अनोजवत], तेज से विहीन, शक्ति या बल को न देने वाला, निष्प्रभावी - ..., *तावतकमेव असमयेन भुत्तं अनोजवन्तं होति,* अ. नि. 2(1).240; *अनोजवन्तं होतीति अकाले भुत्तं ओजं हरितुं न सक्कोति,* अ. नि. अट्ठ. 3.84.

अनोजा स्त्री., व्य. सं., अनोज-नामक वृक्ष के फूलों के अनुकरण पर रखा गया एक राजकुमारी का नाम - ..., *अनोजा एव च मे नामं होतू'ति पत्थनं पट्ठपेसि,* ध. प. अट्ठ. 1.314; *सा वयप्पत्ता महाकप्पिनरञ्ञो गेहं गन्त्वा अनोजादेवी नाम अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 1.315; *अनोजापुप्फसदिसवण्णताय पनस्सा अनोजादेवीत्वेव नामं अहोसि,* स. नि. अट्ठ. 1.240.

अनोञ्ञात त्रि., अव + √ञा के भू. क. कृ. अवञ्ञात का निषे. [अनवज्ञात], वह, जो तिरस्कृत या अपमानित नहीं किया गया, अनुपेक्षित - *तेसु तेसु वा पन जनपदेसु अनोञ्ञातं अनवञ्ञातं अहीळितं अपरिभूतं चित्तीकतं, एतं उक्कट्ठं नाम,* पाचि. 8; तुल. एवं द्रष्ट. अनवञ्ञात तथा अनुञ्ञात.

अनोणत/अनोनत त्रि., ओनत का निषे. [अनवनत], **शा. अ.** वह, जो नीचे को झुका हुआ न हो, **ला. अ.** अशिष्ट, अविनम्र, उद्दण्ड - *पुन चपरं, महाराज, पब्बतो अनुन्नतो अनोनतो, एवमेव खो, ... न करणीया,* मि. प. 356; *अनोणतं चित्तं कोसज्जे न इञ्जतीति आनेञ्जं,* उदा. अट्ठ. 150; *अनोनतेन पविसितुं न सक्का,* ध. प. अट्ठ. 1.324.

अनोणमन नपुं., ओनमन का निषे. [अनवनमन], **शा. अ.** नीचे की ओर नहीं झुकना, **ला. अ.** किसी के प्रति आदरभाव प्रकट न करना, किसी की ओर प्रवृत्त न होना - *एत्थ च ... सुविदूरभावतो इद्धिया मूलभूतेहि अनोणमनादीहि सोळसहि ... आनेञ्जप्पत्तं ... आनेञ्जन्ति वुच्चति,* उदा. अट्ठ. 150.

अनोणमितदण्डजात त्रि., गैर-लचीली छड़ी या कड़े एवं सख्त डण्डे के समान, सख्त, दुर्नम्य एवं कठोर रूप में उत्पन्न - *सो धातो पीणितो परिपुण्णो निरन्तरो तन्दिकतो अनोणमितदण्डजातो पुनदेव तत्तकं भोजनं भुञ्जेय्य,* मि. प. 224; अ. नि. अट्ठ. 1.345; *अनोणमितदण्डजातोति यावदत्थं भोजनेन ओणमितुं असक्कुणेय्यताय अनोणमनदण्डो विय जातो,* अ. नि. टी. 1.203; पाठा. अनोन..

अनोतत्त पु., व्य. सं., प्रायः दह के साथ स. प. रूप में प्रयुक्त, यदा-कदा अनवतत्त रूप में भी प्रयुक्त [बौ. सं. अनवतप्त], हिमालय पर्वत में अवस्थित सात विशाल सरोवरों में से एक, जिस पर सूर्य एवं चन्द्रमा का प्रकाश सीधा न पड़ने से तथा जल के सदा शीतल रहने से 'अनोतत्त' नाम पड़ा - *चन्दिमसूरिया दक्खिणेन वा उत्तरेन वा गच्छन्ता पब्बतन्तरेण तं ओभासेन्ति, उजुं गच्छन्तो न ओभासेन्ति, तेनेवस्स "अनोतत्त"न्ति सङ्खा उदपादि,* सु. नि. अट्ठ. 2.145; *अनोतत्तो तथा कण्णमुण्डो च रथकारका,*

छद्दन्तो च कुणालो च वुत्ता मन्दाकिणीत्थियं, अभि॰ प॰ 679; *सरानीति अनोतत्तादीनि महासरानि खीयन्तियेव,* जा॰ अट्ठ॰ 4.450; *सेय्यथिदं-अनोतत्ता, सीहपपाता, रथकारा कण्णमुण्डा, ..., ता उस्सुस्सन्ति विसुस्सन्ति, न भवन्ति,* अ॰ नि॰ 2(2).238; *अनोतत्तम्हा महासरा पभवन्तीति,* सद्द॰ 3.702; *यत्थ आयामेन वित्थारेन गम्भीरताय च पण्णासयोजनप्पमाणो दियड्डयोजनसतपरिमण्डलो अनोतत्तदहो कण्णमुण्डदहो रथकारदहो, छद्दन्तदहो कुणालदहो मन्दाकिनीदहो सीहपपातदहोति सत्ता महासरा पतिट्ठिता,* उदा॰ अट्ठ॰ 244; – **उदक** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ स॰ अनवतप्तोदक], अनवतप्त, नामक जलाशय या झील का जल – ... *पूरेत्वा अनोतत्तउदकञ्च नागलतादन्तपोणञ्च गहेत्वा तेसं सन्तिकं आगन्त्वा आह,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.132; ... *इतो पट्ठाय अनोतत्तउदकेन अत्थे सति तुम्हाकं आगमनकिच्चं नत्थि, ... वत्वा पक्कामि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.359; – **त्तोदक** नपुं॰, उपरिवत् – *अनोतत्तोदकं कञ्ञं, उत्तमं हरिचन्दनं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.53; – **त्तोदकाज** पु॰, तत्पु॰ स॰, अनवतप्त झील के जल को ढोने वाले पात्र या उन पात्रों के बोझ – *अनोतत्तोदकाजेसु सङ्घस्स चतुरो अदा,* म॰ वं॰ 5.84; *अनोतत्तोदकाजं च गङ्गासलिलमेव च,* म॰ वं॰ 11.30 – **दह** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनवतप्तहृद], अनवतप्त-नामक हिमालय की एक झील या बड़ा जलाशय – *सीतोदकं उप्पलिनिं सिवं नदिन्ति अनोतत्तदहतो निक्खन्तनदिमुखं सन्धाय वदति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 110; – **दहउदक** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनवतप्तहृदोदक], अनवतप्त-नामक झील का जल – ..., *सामणेर, सत्था अनोतत्तदहउदकेन पादे धोवितुकामो, कुटं आदाय किर उदकं आहरा'ति आह,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.360; – **दहपिट्ठ** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनवतप्तहृदपृष्ठ], अनवतप्त झील का तट या किनारा – *एतस्मिं अनोतत्तदहपिट्ठे पन्नगनागराजेन सद्धिं मम सङ्गामो भविस्सति,* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.358; – **पानीय** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनवतप्तपानीय], अनवतप्त-नामक झील का पानी – *अनोतत्तपानीयत्थाय आगतो भविस्सति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.357; – **पिट्ठि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अनवतप्त झील का तट – ... *अनोतत्ते कीळिस्सामा'ति अनोतत्ततित्थं अगच्छिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 2.225; पाठा॰ तित्थं; – **वापी** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, श्रीलङ्का के एक सरोवर का नाम – *अनोतत्तवापीतो भागीरथिं च निग्गतं,* म॰ वं॰ 79.49; – **सर** पु॰ / नपुं॰, कर्म॰ स॰, अनवतप्त-नामक सरोवर – *अनोतत्तसरासन्ने, रमणीये सिलातले,* अप॰ 1.328; उदा॰ अट्ठ॰ 213.

अनोतिण्ण त्रि॰, ओतिण्ण का निषे॰ [अनवतीर्ण], सामने अविद्यमान, अविचाराधीन, अप्रासङ्गिक – *ओतिण्णे वा अनोतिण्णे वा वत्थुस्मिं तन्ति ठपनवसेन वचनं अनुसासनी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.56; *अनुसासनीति ओतिण्णे वत्थुस्मिं,* महाव॰ अट्ठ॰ 251.

अनोत्तप्प नपुं॰, अव + √तप के सं॰ कृ॰ ओत्तप्प का निषे॰ [अनवत्राप्य], मानसिक घबड़ाहट या उद्वेग का अभाव, भय का अभाव, अविवेक, अत्रास – *अग्गितो सलभो विय ततो अनुत्तासलक्खणं अनोत्तप्पं,* अभि॰ ध॰ वि॰ 103; ... *अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, ..., इमे धम्मा अकुसला,* ध॰ स॰ 365; ... *अस्मिमानो आसयो, अनोत्तप्पं आसयो, उद्धच्चं आसयो,* महानि॰ 379; *पुब्बङ्गमा अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया अन्वदेव अहिरिकं अनोत्तप्पं,* ..., इतिवु॰ 26; *कतमे छ? अस्सद्धियं, अहिरिकं, अनोत्तप्पं, कोसज्जं, मुट्ठस्सच्चं, दुप्पञ्ञतं – इमे खो, ... अनागामीफलं सच्छिकातुन्ति,* अ॰ नि॰ 2(2).124; *बालदुकनिद्देसे बालेसु अहिरिकानोत्तप्पानि पाकटानि, मूलानि च सेसानं बालधम्मानं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 412; – **बल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अनवत्राप्यबल], अनवत्राप्य-नामक अकुशल चैतसिक का बल – *अनोत्तप्पमेव बलं अनोत्तप्पबलं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 289; – **मूलक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवत्राप्यमूलक], अनवत्राप्य-नामक अकुशल चैतसिक पर आधारित – *दसमे अनोत्तप्पमूलका तयो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.126; – **मूलकसुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ के एक धातुसंयुत्त के दूसरे वग्ग के सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(2).146-147; – **प्पानुपतित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अनवत्राप्यानुपतित], बुरे कामों को निर्भय होकर करने के काम में आ पड़ा हुआ – ... *अनोत्तप्पानुपतितन्ति? न हेवं वत्तब्बे* ..., कथा॰ 337.

अनोत्तप्पी / अनोतापी त्रि॰, अव + √तप से व्यु॰, ओतापी का निषे॰ [अनवत्रापिन्], वह, जो पापकर्मों में उद्वेग या मानसिक व्याकुलाहट का अनुभव न हीं करता है, बुरे कर्मों को करने में निर्भय एवं लज्जारहित रहने वाला, अविवेकी – *जिगुच्छति नाहिरिको, पापा गूथाव सूकरो, न भायति अनोत्तप्पी, सलभो विय पावको'ति,* अभि॰ ध॰ वि॰ 103; *अहिरिको अनोत्तप्पी, तं जञ्ञा वसलो इति,* सु॰ नि॰ 133; *नास्स पापजिगुच्छनलक्खणा हिरी, नास्स उत्तासनतो उब्बेगलक्खणं ओत्तप्पन्ति अहिरिको अनोत्तप्पी,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 145; *अहिरिकोयं, भिक्खवे, अनोतापी पमत्तो होति,* अ॰ नि॰ 3(2).121; *अहिरिको हि अनोतप्पी च न किञ्चि अकुसलं*

न करोति नामाति, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 412; *अनोतप्पीति निब्भयो किलेसुप्पत्तियो कुसलानुप्पत्तितो च भयरहितो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.146; *अनोत्तापिस्स पुरिसपुग्गलस्स ओत्तप्पं होति परिनिब्बानाय ...,* म॰ नि॰ 1.56; 58; *परे अनोत्तापी भविस्सति, मयमेत्थ ओत्तापी भविस्सामा'ति सल्लेखो करणीयो,* म॰ नि॰ 1.54; *अनोत्तप्पिनो अनोत्तप्पीहि सद्धिं संसन्दन्ति समेन्ति,* स॰ नि॰ 1(2).147.

अनोत्थत त्रि॰, अव + √थर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनवस्तृत], वह, जो किसी के द्वारा ढक नहीं दिया गया है, वह, जिसके ऊपर कुछ फैला नहीं दिया गया है, अनाच्छादित – *अनज्झापन्नोति तण्हाय अनोत्थतो अपरियोनद्धो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.178.

अनोत्थरण त्रि॰/नपुं॰, ओत्थरण का निषे॰ [अनवस्तरण], अनाच्छादन, फैलाव या विस्तार का अभाव, ऊपर में फैलाव का न रहना – *यथा हि लोके उदकोघेन अनोत्थरणट्ठानं थलो ति वुच्चति,* सद्द॰ 2.438.

अनोत्थरणीयत्त नपुं॰, अव + √थर के सं॰ कृ॰ (ओत्थरणीय) के निषे॰ का भाव॰ [अनवस्तरणीयत्त्व], किसी के द्वारा आच्छादित अथवा दुष्प्रभावित न होने योग्य रहने की अवस्था – *एवं किलेसोघेन अनोत्थरणीयत्ता पब्बज्जा निब्बानञ्च थलेति वुच्चति,* सद्द॰ 2.438.

अनोदक त्रि॰, द्रष्ट॰ अनुदक के अन्त॰ (पीछे).

अनोदरिक त्रि॰, ओदरिक का निषे॰ [अनौदरिक], वह, जो पेटू न हो, अत्यधिक भोजन न करने वाला, सदा पेट को भरने में न लगा रहने वाला – *अनोदरिकस्स भावो अनोदरिकत्तं,* कथा॰ 362; *एवं अनोदरिकत्तं इच्चादि,* सद्द॰ 3.791; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अनौदरिकत्व], पेटूपन से मुक्त होने की अवस्था, अधिक भोजनप्रियता का अभाव, अल्पाहारता – *अप्पाहारो होति अनोदरिकत्तं अनुयुत्तो,* अ॰ नि॰ 2(1).112; *अनोदरिकत्तन्ति न ओदरिकभावं अमहग्घसभावं अनुयुत्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.41.

अनोदिस्स अ॰, अव + √दिस के पू॰ का॰ कृ॰ (अवदिस्स/ओदिस्स) का निषे॰ [अनुद्दिश्य], किसी विशिष्ट व्यक्ति या वस्तु के सन्दर्भ के बिना, सामान्य रूप से, सार्वभौम रूप से – *अनोदिस्सेव पञ्ञत्ते, यावदत्थेव भिक्खुना,* विन॰ वि॰ 1199; *अनोदिस्स अदस्सनेन अनभिसङ्कतं कोचि अन्तरायं करोति किं परस्स दिन्नेनाति, अयं अदिट्ठन्तरायो नाम,* मि॰ प॰ 155.

अनोदिस्सक त्रि॰, ओदिस्सक का निषे॰ [अनुद्देसिक], किसी एक विशेष को उद्देश्य में न रखने वाला, सामान्य, सार्वभौम, अविशिष्ट प्रकृति वाला – *ओदिस्सकअनोदिस्सकदिसाफरणानञ्हि अञ्ञतरवसेन मेत्तं उग्गण्हन्तस्सापि ब्यापादो पहीयति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.332; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).293; – **कं** नपुं॰, क्रि॰ वि॰, सामान्य रूप से, अविशिष्ट रूप से – *अनोदिस्सकमोपातं खणतो होति दुक्कटं,* उत्त॰ वि॰ 125; *भिक्खुना नाम सब्बसत्तेसु ओदिस्सकानोदिस्सकवसेन मेत्ता भावेतब्बा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.50; *सत्था पञ्ञत्तासने निसीदित्वा अनोदिस्सकं कत्वा "कामवितक्कं वितक्कयित्था"ति अवत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.102; – **नय** पु॰, कर्म॰ स॰ [अनुद्देसिकनय], सामान्य-कथन की पद्धति, किसी एक धर्म को विषय न बनाकर सर्वसंग्राहक पद्धति – *एवरूपा दिब्बसम्पत्ति नाम पुञ्ञकम्मवसेनेवाति ओदिस्सकनयेन वत्वा पुन अनोदिस्सकनयेन दस्सेन्ती "सुखं अकतपुञ्ञान"न्ति गाथमाह,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 77.

अनोधि क. त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवधि], **शा॰ अ॰** बिना किसी अवधि या सीमा वाला, सम्पूर्ण रूप वाला, **ला॰ अ॰** अर्हत्व का वह मार्ग, जिसमें बिना किसी अवधि या सीमा के समस्त क्लेशों का अनवशेष रूप से प्रहाण कर दिया जाता है – *ओधीति हेट्ठा तयो मग्गा वुच्चन्ति ... अरहत्तमग्गो पन किञ्चि किलेसं अनवसेसेत्वा पजहति, तस्मा अनोधीति वुच्चति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).182; **ख.** अ॰, क्रि॰ वि॰, किसी प्रकार की सीमा, निर्धारित न करके, अपवाद के बिना, सम्पूर्ण रूप में पूरी तरह से – *"सब्बे सङ्खारा अनोधिं कत्वा कुक्कुला"ति,* कथा॰ 177; *छ, भिक्खवे, आनिसंसे सम्पस्समानेन अलमेव भिक्खुना सब्बसङ्खारेसु अनोधिं करित्वा दुक्खसञ्ञं उपट्ठापेतुं,* अ॰ नि॰ 2(2).143; *अनोधिं करित्वाति एत्तकाव सङ्खारा अनिच्चा, न इतो परे'ति एवं सीमं मरियादं अकत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.143; – **जिन** त्रि॰, ओधिजिन का निषे॰, पृथक्जन या अज्ञानी जन, जिन्होंने असीम रूप से या पूर्णरूप से क्लेशों का प्रहाण नहीं किया है – *चक्खुना रूपं दिस्वा उप्पज्जति उपेक्खा बालस्स मूळ्हस्स पुथुज्जनस्स अनोधिजिनस्स अविपाकजिनस्स ...,* म॰ नि॰ 3.266; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 238; ... *तस्स तस्स अपायगमनीयकिलेसोधिस्स अनवसेसत्ता जितत्ता खीणासवो निप्परियायतो ओधिजिनो नाम, तदभावतो पुथुज्जनो निप्परियायतोव अनोधिजिनो नाम,* म॰ नि॰ टी॰ (उप॰प॰) 3.167.

अनोधिसो अ., क्रि॰ वि॰, अनोधि से व्यु॰ [अनवधितः], बिना किसी अवधि या सीमा के, सम्पूर्ण रूप से, निस्सीम रूप से – *ओधिसो अनोधिसो दिसाफरणवसेन मेत्तं भावेतस्सापि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).293; *अत्थि अनोधिसो फरणा मेत्ताचेतोविमुत्ति,* पटि॰ म॰ 304.

अनोप त्रि॰, [अनूप], जल से भरा अथवा जल के समीप वाला क्षेत्र, नदी तट, कछार – *इमा ता हरितानूपा, इमा नज्जो सवन्तियो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.320.

अनोपम[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुपम], वह, जिसकी कोई उपमा न हो, लाजवाब, सर्वोत्तम – *सिद्धत्थं लोकपज्जोतं, अप्पमेय्यं अनोपमं,* अप॰ 1.76; *अनोपमस्स विरजस्स, भगवतो तस्स सावकोहमस्मि,* म॰ नि॰ 2.54; ... *अनोपमाय बुद्धसिरिया विरोचमानं दिस्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.98.

अनोपम[2] नपुं॰, व्य॰ सं॰, वेस्सभू बुद्ध के पिता राजा सुप्पतीत की राजधानी का नाम – *सुप्पतितस्स रञ्ञो अनोपमं नाम नगरं राजधानी अहोसि,* दी॰ नि॰ 2.6; पाठा॰ अनोम.

अनोपमा स्त्री॰, व्य॰ सं॰, थेरीगा॰ की 152वीं तथा 153वीं गीतियों की रचनाकर्त्री एक थेरी का नाम – *पितु मे पेसयी दूतं, देथ मय्हं अनोपमं,* थेरीगा॰ 152-53; *तस्सा रूपसम्पत्तिया अनोपमाति नामं अहोसि,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 153-54.

अनोभासनीय त्रि॰, अव + √भास के सं॰ कृ॰, ओभासनीय का निषे॰ [अनवभासनीय], अप्रकाश्य, वह, जिसे प्रकाशित करना आवश्यक न हो, अवभासित नहीं करने योग्य – ... *तमसा विसंसट्ठत्ता केनचि अनोभासनीया लोकसभावाभावतो* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 120.

अनोभासित त्रि॰, अव + √भास के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनवभासित], अप्रकाशित, आभा या उजाला से रहित – *अप्पदीपेति पदीपचन्दसूरियअग्गीसु ऐकनापि अनोभासिते,* पाचि॰ अट्ठ॰ 191.

अनोम[1] त्रि॰, ओम का निषे॰ [अनवम], वह, जो तुच्छ या निकृष्ट न हो, घटिया न हो, उत्कृष्ट, उत्तम, हर तरह से परिपूर्ण – *अयं मग्गो निय्यानिको ति सयंसमत्तं करोति परिपुण्णं करोति अनोमं करोति* ..., महानि॰ 46; *किं भोजनं भुञ्जथ वो अनोमा, बलञ्च वण्णो च अनप्परूपा ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.459.

अनोम[2] पु॰, व्य॰ सं॰, **1.** सोभित बुद्ध के उपस्थापक या सेवक का नाम – *तस्स पन भगवतो सुधम्मं नाम नगरं अहोसि ... अनोमो नामुपट्ठाको* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.45; **2.** अनोमदस्सी बुद्ध के एक अग्रश्रावक या प्रधान शिष्य का नाम – *अनोमदस्सिस्स पन भगवतो चन्दवती नाम नगरं अहोसि ... निसभो च अनोमो च द्वे अग्गसावका* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.46; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.61; **3.** एक चक्रवर्ती राजा का नाम – *पञ्चपञ्ञासकप्पम्हि अनोमो नाम खत्तियो,* अप॰ 1.363; **4.** एक तापस का नाम – *पब्भारकूटं निस्साय, अनोमो नाम तापसो,* अप॰ 1.386; **5.** नपुं॰, एक नगर का नाम – *तस्स भगवतो अनोमं नाम नगरं अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.49.

अनोमगुण त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवमगुण], उत्तम गुणों वाला, उत्तम गुणों से विभूषित – *अनोमगुणो सो भवं गोतमो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.232.

अनोमज्जति अनु + अव + √मज्ज का वर्त॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्वमार्जयति, अन्वमार्ष्टि], ऊपर से नीचे की ओर मलता है या रगड़ता है, साफ या स्वच्छ करता है, धोता है, निर्मल करता है – *मागण्डियो परिब्बाजको सकानेव सुदं गत्तानि पाणिना अनोमज्जति,* म॰ नि॰ 2.187; – **ज्जामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो खो ... तमेव कायं अस्सासेन्तो पाणिना गत्तानि अनोमज्जामि,* म॰ नि॰ 1.114; – **न्त** वर्त॰ कृ॰ – *तस्स ... पाणिना गत्तानि अनोमज्जतो पूतिमूलानि* ..., म॰ नि॰ 1.114; 314; *भगवतो गत्तानि पाणिना अनोमज्जन्तो भगवन्तं एतदवोच,* स॰ नि॰ 3.292.

अनोमदस्सिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवमदर्शिक], दिखने में अत्यन्त सुन्दर, सौन्दर्य में निकृष्ट न दिखने वाला, उत्कृष्ट सौन्दर्य से युक्त – *या महेसित्तं कारेय्य, चक्कवत्तिस्स राजिनो, नारी सब्बङ्गकल्याणी, भत्तु चानोमदस्सिका,* वि॰ व॰ 191; *भत्तु चानोमदस्सिकाति सामिकस्स अलामकदस्सना सातिसयं दस्सनीया पासादिका,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 83.

अनोमदस्सी[1] त्रि॰, सर्वोत्तम ज्ञान से युक्त, सर्वोत्तम पद अर्थात् प्रत्येकबोधि को देख चुके बुद्ध या प्रत्येकबुद्ध – *न किरत्थि अनोमदस्सिसु, पारिचरिया बुद्धेसु अप्पिका,* जा॰ अट्ठ॰ 3.361; 1.224; *तत्थ अनोमदस्सिसूति अनोमस्स अलामकस्स पच्चेकबोधिञाणस्स दिट्ठत्ता पच्चेकबुद्धा ... अनोमदस्सिनो नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 3.361.

अनोमदस्सी[2] पु॰, व्य॰ सं॰, **क.** सातवें बुद्ध का नाम – *सोभितस्स अपरेन सम्बुद्धो द्विपदुत्तमो, अनोमदस्सी अमितयसो, तेजस्सी दुरतिक्कमो,* बु॰ वं॰ 322; 323; 324; 366; अप॰ 2.52; जा॰ अट्ठ॰ 1.46; *एकस्मिं येव कप्पे तयो बुद्धा निब्बत्तिंसु अनोमदस्सी पदुमो नारदोति* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.45; 54; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.49; 61; 64; अप॰ 1; 42; 352; **ख.** म्यां-मार के

सुधम्मपुर निवासी एक थेर का नाम - *सुधम्मपुरे हि समापत्तिलाभी अनोमदस्सी नाम थेरो ... निसीदि,* सा॰ वं॰ 58(ना॰); **ग.** श्रीलङ्का के हत्थवनगल्लविहार के एक थेर का नाम - *अनोमदस्सिनामस्स महासामिस्स धीमतो,* चू॰ वं॰ 86.38.

अनोमनाम त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवमनाम], **शा॰ अ॰** वह व्यक्ति, जो अपने सम्पूर्ण गुणों एवं ज्ञान की उत्तमता के आधार पर अत्यधिक प्रसिद्ध हों, **ला॰ अ॰** गौतम बुद्ध तथा पदुमुत्तर बुद्ध की एक उपाधि - *अनोमनामं सत्थारं, हन्द पस्साम गोतमं,* सु॰ नि॰ 153; *तत्थ अनोमेहि अलामकेहि सब्बाकारपरिपूरेहि गुणेहि नामं अस्साति अनोमनामो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.173; *अनोमनामं निपुणत्थदस्सिं, पञ्ञाददं कामालये असत्तं,* स॰ नि॰ 1(1).37; 272; *पञ्चमे अनोमनामन्ति सब्बगुणसमन्नागतत्ता अवेकल्लनामं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.76.

अनोमनिक्कम त्रि॰, ब॰ स॰, अत्यन्त उत्कृष्ट वीर्य अथवा पराक्रम से युक्त - *पब्बजम्पि च अनोमनिक्कमो, अग्गतं वजति सब्बपाणिनं,* दी॰ नि॰ 3.116; *दुरन्नयो सङ्घो अथोपि उज्जयो, अपरो मुनि सव्हो अनोमनिक्कमो,* म॰ नि॰ 3.116; *अनोमनिक्कमोति सव्हो नाम सो बुद्धो, अनोमवीरियत्ता पन अनोमनिक्कमोति वुत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.92-93.

अनोमपञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवमप्रज्ञ], महती प्रज्ञा वाला, परिपूर्ण या सर्वोत्तम प्रज्ञा वाला, परिपूर्ण प्रज्ञा वाला - *पुच्छाम सत्थारमनोमपञ्ञं, दिट्ठेव धम्मे ...,* सु॰ नि॰ 345; *अनोमपञ्ञन्ति ओमं वुच्चति परित्तं लामकं, न ओमपञ्ञं, अनोमपञ्ञं, महापञ्ञन्ति अत्थो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.73; *एवं करोन्ति ये सद्दहन्ति, वचनं अनोमपञ्ञस्स,* थेरीगा॰ 524; *ये सद्दहन्ति वचनं अनोमपञ्ञस्सा'ति, ... परिपुण्णपञ्ञस्स सम्मासम्बुद्धस्स वचनं ये ...,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 318.

अनोमबुद्धिपुत्त पु॰, तत्पु॰ स॰, सर्वोत्कृष्ट अथवा परिपूर्ण प्रज्ञा वाले बुद्ध का पुत्र अथवा पुत्रस्थानीय - *न सम्मासम्बुद्धपुत्तोति मं धारेहि, ... न अनोमबुद्धिपुत्तो, ... मं धारेही'ति ... सिक्खापच्चक्खानं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.202.

अनोममानी त्रि॰, स्वयं को परिपूर्ण एवं अद्वितीय मान कर अभिमान करने वाला - *परिपुण्णमानीति परिपुण्णमानी समत्तमानी अनोममानीतिमानेन मत्तो परिपुण्णमानी,* महानि॰ 219.

अनोमवण्ण त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवमवर्ण], अत्यन्त उत्तम स्वरूप या आकृति वाला, अत्यधिक सुन्दर - *आजञ्ञमारुय्ह अनोमवण्णो, पक्कामि वेहायसमन्तलिक्खे'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.163; *दद्दल्लमानं सिरिया अनोमवण्णं, दस्सेसु पुत्तं असितव्हयस्स,* सु॰ नि॰ 691; *महासनं देवमनोमवण्णं, यो सप्पिना असक्खि भोजेतुमग्गिं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.48.

अनोमविरियत्त नपुं॰, अनोमवीरिय का भाव॰ [अनवमवीर्यत्व], अत्यन्त श्रेष्ठ वीर्य या पराक्रम वाला होना - *अनोमनिक्कमोति सव्हो नाम सो बुद्धो, अनोमविरियत्ता पन अनोमनिक्कमोति वुत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.92-93.

अनोमविहारी त्रि॰, [अनवमविहारी], उत्तम या श्रेष्ठ व्यवहार करने वाला, निकृष्ट रूप में आचरण न करने वाला, घटिया जीवन न जीने वाला - *अनोमनिक्कमोति अनोमविहारी सेट्ठविहारी,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.101.

अनोमसत्त / अनोमकसत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अनोमसत्त्व], **शा॰ अ॰** अत्यन्त उत्कृष्ट जीव, परिपूर्ण प्राणधारी, **ला॰ अ॰** बुद्ध, बोधिसत्त्व, प्रत्येक-बुद्ध, अर्हत् एवं चक्रवर्ती राजा - *तमत्थं विदित्वा अनोमसत्तानं कम्मं नाम एवं विसुज्झती'ति सत्था ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.407; - **परिभोग** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अनोमसत्त्वपरिभोग], परिपूर्ण जीवधारी, उत्तम व्यक्ति द्वारा अनुभव किये जाने योग्य भोगसाधन या संपत्ति - *अनोमसत्तपरिभोगं, रतनं तेन वुच्चती'ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 136; उदा॰ अट्ठ॰ 247; - **सम्मत** त्रि॰, कर्म॰ स॰, अन्य लोगों द्वारा परमश्रेष्ठ प्राणी के रूप में माना गया व्यक्ति - *तथागतो हि लोके अनोमकसत्तसम्मतानं अनुपनिस्सयसम्पन्नानं ... छन्नं सत्थारानं ... अपरिभोगो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 140.

अनोमा स्त्री॰, व्य॰ सं॰, **क.** नारद बुद्ध की माता का नाम - अनोमा नाम जनिका नारदस्स महेसिनो, बु॰ वं॰ 327; **ख.** एक नदी का नाम - *बोधिसत्तो एकरत्तेनेव तीणि रज्जानि अतिक्कम्म तिंसयोजनमत्थके अनोमानदीतीरं पापुणि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.74; *अङ्गरत्तसमये छन्नसहायोव कण्टकमारुय्ह निक्खमित्वा अनोमानदीतीरे पब्बजित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.108; *अनोमानदीतीरे खग्गेन केसे छिन्दित्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.100; - **टि॰** इसी नदी को पार कर राजकुमार सिद्धार्थ ने राजकीय वेश एवं अलङ्कारों आदि सारथि छन्न को सौंप दिए थे तथा उससे एवं कन्थक-नामक अश्व से अन्तिम विदा ली थी.

अनोरपार त्रि॰, ब॰ स॰, **शा॰ अ॰** वह, जिसका इस ओर का तट तथा पार दिखलाई न पड़े, बिना ओर छोर वाला, असीम, अनन्त - *पुन चपरं, महाराज, महासमुद्दो महन्तो अनोरपारो,* मि॰ प॰ 292.

अनोरमन्त, अनोरमित्वा द्रष्ट॰ ओरमति के अन्त॰.

अनोरोपक त्रि॰, ओरोपक का निषे॰ [अनवरोपक], नीचे न रख देने वाला, न उतार फेंकने वाला – *अनिक्खित्तधुरोति वीरियधुरस्स अनोरोपको,* महानि॰ अट्ठ॰ 329.

अनोरोपितधुर त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवरोपितधुर], वह, जिसने बोझे या भार को नहीं उतार फेंका हो, वीर्यवान, अध्यवसायी – *अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसूति कुसलेसु धम्मेसु अनोरोपितधुरो अनोसक्कितवीरियो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.2.

अनोरोहितधुर त्रि॰, ब॰ स॰, उपरिवत् – *अनिक्खित्तधुरोति अनोरोहितधुरो अनोसक्कितवीरियो,* उदा॰ अट्ठ॰ 190.

अनोलग्ग त्रि॰, अव + √लग के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनवलग्न], अलिप्त, अप्रभावित, राग, तृष्णा आदि में मन को लिप्त न करने वाला – *अकम्पितो अनोलग्गो, एवमेवमदासहं,* चरिया॰ 372.

अनोलीन त्रि॰, ओलीन का निषे॰ [अनवलीन], वह, जो संकुचित चित्त वाला न हो, उदारचित्त, निम्न मनोवृत्ति न रखने वाला – *अकम्पितो अनोलीनो, ददेय्य दानमुत्तमं,* चरिया॰ 372; *अनोलीनो विहरति, उपसन्तो सदा सतो'ति,* मि॰ प॰ 363; – **मानस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवलीनमानस], वह, जिसका मन संकुचित या संकीर्ण नहीं है, उदार मन वाला – *असज्जित्वा अबज्झित्वा अनोलीनमानसो हुत्वा गिरिं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.347; – **विरिय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवलीनवीर्य], सुदृढ़ पराक्रम वाला, उद्योगी, अशिथिल – *एवं त्वम्पि ... दळ्हवीरियो अनोलीनवीरियो समानो बुद्धो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.29; – **वुत्तिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनवलीनवृत्तिक], अशिथिल अथवा दृढ़ जीवनवृत्ति वाला, उद्योगी एवं अशिथिल मनोवृत्ति वाला – ... *अनोलीनवुत्तिको च होति असाथलिको,* म॰ नि॰ 1.264; *अप्पमत्तोति ... अट्ठितकारी अनोलीनवुत्तिको अनिक्खित्तच्छन्दो अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसु,* महानि॰ 42; – **वुत्तिता** स्त्री॰, भाव॰ [अनवलीनवृत्तिता], कर्तव्य पालन के लिये शिथिलता – *अनोलीनवुत्तितााति अलीनजीविता, अलीनपवत्तिता वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 426; ... *अनोलीनवुत्तिता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता आसेवना भावना बहुलीकम्मं,* ध॰ स॰ 1379.

अनोलेकेन्त त्रि॰, अव + √लोक के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, अवलोकन करता हुआ, द्रष्ट॰ ओलोकेति के अन्त॰.

अनोळारिकसभावता स्त्री॰, भाव॰ ओळारिकसभावता का निषे॰, वह, जो स्थूल नहीं है, सूक्ष्मता – *दारुणा न होन्तीति अनोळारिकसभावताय सुखुमाति वुत्ता,* उदा॰ अट्ठ॰ 192.

अनोवट त्रि॰, ओवट का निषे॰ [अनावृत], **शा॰ अ॰** बन्द नहीं किया हुआ, खुला खुला, **ला॰ अ॰** अवर्जित, अप्रतिषिद्ध – *अनोवटो भिक्खूनं भिक्खुनीसु वचनपथो,* पाचि॰ 76; चूळव॰ 419; अ॰ नि॰ 3(1).106; *अनोवटोति अपिहितो अवारितो अप्पटिक्खित्तो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 58.

अनोवट्ठ / अनोवड्ढ त्रि॰, अव + √वस्स के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनववृष्ट], वह क्षेत्र या प्रदेश, जहां पर वर्षा नहीं हुई है, बिना वर्षा वाला समय या स्थल – *अनोवट्ठेन उदकं महिया उब्भिज्जि तावदे,* बु॰ वं॰ 300; जा॰ अट्ठ॰ 1.24; *अनोवट्ठेनाति अनोवट्ठे, भुम्मत्थे करणवचनं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 116.

अनोवदितुकाम त्रि॰, ओवदितुकाम का निषे॰ [अनववदितुकाम], अववाद की शिक्षा देने की इच्छा न रखने वाला – *ते पुत्तेन मिगमाया उग्गहिता'ति वत्वा इदानि पि तं अनोवदितुकामोव हुत्वा, इमं गाथमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 1.162.

अनोवदियमान त्रि॰, अव + √वद के कर्म॰ वा॰ के वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰ का निषे॰, वह, जिसे अववाद की शिक्षा प्राप्त नहीं हो रही है, अववाद-शिक्षा न पा रहा भिक्षु – *तेन खो पन समयेन सद्धिविहारिका अनुपज्झायका अनाचरियका अनोवदियमाना,* महाव॰ 50.

अनोवस्स त्रि॰, ओवस्स का निषे॰ [अनववर्ष, निरावर्ष], वर्षा के जल से अप्रभावित रहने वाला, बराबर सूखा बना रहने वाला, वर्षा-रहित – *घटिकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं अनोवस्सं आकासच्छदनं अहोसि,* मि॰ प॰ 210; *देवम्हि वस्समानम्हि, अनोवस्सं भवं अका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.308; *सचे आरञ्ञकेनापि, अनोवस्से च नो सति,* विन॰ वि॰ 1066; – **क** त्रि॰, अनोवस्स से व्यु॰ [अनववर्षक], उपरिवत् – *यो देसो अनोवस्सको होति,* चूळव॰ 354; *तेन हि घटिकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं अनोवस्सकं अहोसि ... वचनं पच्छा,* मि॰ प॰ 210; *तिणपण्णच्छदनं अनोवस्सकं मण्डलमाळो'ति वदन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 163; पाचि॰ 373.

अनोवस्सिक त्रिं॰, [अनववर्षिक], वर्षा से सर्वथा अप्रभावित स्थान – *परित्तञ्च अनोवस्सिकं, महा च मेघो उग्गतो,* महाव॰ 239.

अनोवादक त्रि॰, ओवादक का निषे॰ [अनववादक], **क.** वह व्यक्ति, जिसका कोई मार्गदर्शक न हो या जिसे करने योग्य एवं न करने योग्य की शिक्षा न मिली हो – *अनोवादका मनुस्सा फरुसा अहेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.266; **ख.** परामर्श या मार्गदर्शन को ग्रहण न करने वाला, अप्रशिक्षित – *तस्स*

अनोवादकस्स मा चिन्तयि, जा॰ अट्ठ॰ 1.162; *न करोति सासनन्ति अनुसिट्ठं न करोति, दुब्बचो अनोवादको होति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.235; – **त्त** नपुं॰, अनोवादक का भाव॰ [अनववादकत्व], उचित मार्गदर्शन का अभाव – *मिगालोपो अनोवादकत्ता पितु वचनं अकत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.223.

अनोवादकर त्रि॰, ओवादकर का निषे॰ [अनववादकर], दी गयी शिक्षा अथवा मार्गदर्शन के अनुसार आचरण न करने वाला, उच्छृंखल – ..., *दुब्बचो वा अनोवादकरो, येनकामंगमो वा आचरियं अनापुच्छाव यत्थिच्छति,* विसुद्धि॰ 1.112; *अनोवादकरे दिजेति तस्मिं मिगालोपे ... गन्त्वा विनासं पापुणिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.224.

अनोवादी त्रि॰, ओवादी का निषे॰ [अनववादी], वह, जिसे परामर्श देने अथवा आज्ञा देने की आवश्यकता नहीं है, करने अथवा न करने की अववाददेशना न देने वाला – *तत्थाहं अनोवादी अनुपवादी घासच्छादनपरमो विहरामि,* म॰ नि॰ 2.360; *अनोवादी अनुपवादीति ताता, कसथ, वपथ, वणिप्पथं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.28.

अनोवुड्ढ/अनोवड्ढ त्रि॰, ओवुड्ढ का निषे॰, द्रष्ट॰ अनोवट्ट/अनोवुड्ढ के अन्त॰, ऊपर.

अनोसक्कन नपुं॰, ओसक्कन का निषे॰, अव + √सक्क से व्यु॰ [अनपसर्पण, अनपष्वक्षण], **शा॰ अ॰** पीछे की ओर कदम न खींचना, वापस न भागना, **ला॰ अ॰** पराजित न होना, हिचकिचाहट न करना – *एवं अनोसक्कनं समग्गभावेन अमेज्जचित्तानं, वीरियञ्च पुरिसपरक्कमो च थिरो अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.6; – **ता** स्त्री॰, ओसक्कनता का निषे॰ [अनपसर्पणत्व], पीछे की ओर कदम न खींचना, पराजित न होना – *अप्पटिवानिता च पधानस्मिन्ति अरहत्तं अपत्वा पधानस्मिं अनिवत्तनता अनोसक्कनता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 100; – **भाव** पु॰, उपरिवत् – ... *छन्नं बोज्झङ्गानं अनोसक्कनअनतिवत्तनभावसाधको ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 296.

अनोसक्कना स्त्री॰, ओसक्कना का निषे॰ [अनपसर्पण], उपरिवत् – *तत्थ अप्पटिवानिताति अप्पटिक्कमना अनोसक्कना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.5.

अनोसक्कमान त्रि॰, अव + √सक्क के आत्मने॰, वर्त॰ कृ॰, ओसक्कमान का निषे॰ [अनपसर्पणत्], अपसरण अथवा पीछे की ओर पलायन न करता हुआ, पराजित न होता हुआ, विचलित न होता हुआ – *दासिया वुत्तगाथाय सब्बसमागतानन्ति सब्बेसं ... अविकम्पमाना अनोसक्कमाना,* जा॰ अट्ठ॰ 4.277.

अनोसक्किकतमानस त्रि॰, ओसक्किकतमानस का निषे॰, ब॰ स॰, मन की शिथिलता से रहित, प्रबल उत्साहभाव से मुक्त – *तेनाह अनोसक्किकतमानसो'ति, पहानत्थायाति समुच्छिन्नत्थाय,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ टी॰ 3.2; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, प्रबल उत्साहशीलता – *आरद्धवीरियोति पग्गहितवीरियो अनोसक्किकतमानसो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.2; *धुरं न निक्खिपति, ... अनोसक्किकतमानसतं आवहति,* महानि॰ अट्ठ॰ 332.

अनोसक्किकतवीरिय त्रि॰, ओसक्किकतवीरिय का निषे॰, ब॰ स॰, प्रबल वीर्य या पराक्रम वाला, उद्योगी, उत्साही – *अनिक्खित्तधुरोति अनोरोहितधुरो अनोसक्किकतवीरियो,* उदा॰ अट्ठ॰ 190; *अनिक्खित्तधुरो कुसलेसु धम्मेसूति ... अनोरोपितधुरो अनोसक्किकतवीरियो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.2.

अनोसक्कियमान त्रि॰, अव + √सक्क के कर्म॰ वा॰ में वर्त॰ कृ॰ [अनपसृप्यमान], वह, जो किसी के द्वारा विचलित या अनुत्साहित नहीं किया जा रहा है – **मानस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनपसृप्यमानमानस], वह, जिसका मन किसी के भी द्वारा विचलित या उत्साहहीन नहीं बनाया जा सकता है – *अनिवत्तमानसन्ति अनोसक्कियमानमानसं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 287.

अनोसारित त्रि॰, ओसारित का निषे॰, वह भिक्षु, जिसे सङ्घ में पुनः प्रवेश की अनुमति नहीं मिली है, सङ्घ से बहिष्कृत एवं पुनर्वास की अनुमति को अप्राप्त भिक्षु – *अकटानुधम्मो नाम उक्खित्तो अनोसारितो,* पाचि॰ 183.

अनोसित त्रि॰, अव + √सि के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनवश्रित], **क.** वह, जो किसी का आश्रय या शरणस्थल नहीं है, **ख.** अड्डा या आश्रय न बना लेने वाला, अपने प्रसार का क्षेत्र न बनाने वाला – *इच्छं भवनमत्तनो, नाद्दसासिं अनोसितं,* सु॰ नि॰ 220; *नाद्दसासिं अनोसितन्ति किञ्चि ठानं जरादीहि अनज्झावुत्थं नाद्दक्खिं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.258.

अनोसीदन नपुं॰, अव + √सद से व्यु॰ (अवसीदन) का निषे॰ [अनवसीदन], **शा॰ अ॰** नहीं डूबना, **ला॰ अ॰** निरुत्साह या विषाद से ग्रस्त न होना; – **पच्चुपट्ठान** नपुं॰, ब॰ स॰ [अनवसीदनप्रत्युपस्थान], उत्साह या वीर्य के भाव से प्रकाशित होने वाला – *तं पग्गहलक्खणं, उपत्थम्भनरसं, अनोसीदनपच्चुपट्ठानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).90-91.

अनोहितसोत त्रि॰, ब॰ स॰, ओहितसोत का निषे॰ [अनवहितश्रोत], कान लगाकर ध्यान से न सुनने वाला, किसी बात को ध्यान से न सुनने वाला – *अनोहितसोतो, भिक्खवे, अनुपनिसो होति,* अ॰ नि॰ 1(1).228.

अन्त[1] पु॰ / नपुं॰, [अन्त], *अनेक अर्थों में प्रयुक्त,* समीप, छोर, आखिरी किनारा, भीतर, समाप्ति, मृत्यु आदि प्रमुख अर्थ - *पदपूरणसमीपउम्मग्गादीसुपि हि अन्तसद्दो दिस्सति,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.125; *तत्थ अन्तोति अयं सद्दो अन्तअब्भन्तरमरियादलामकपरभागकोट्ठासेसु दिस्सति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.89; *अन्तो निथि समीपे चावसाने पदपूरणे,* अभि॰ प॰ 791; **प्रयोगगत अर्थ** – **क.** किसी भी वस्तु का सब से अन्तिम किनारा या आखिरी छोर, असन्तुलित दृष्टि (कोटि के पर्याय के रूप में प्रयुक्त) - *कायबन्धनस्स अन्तो जीरति ...,* चूळव॰ 257; *इदानि पनिमस्स मूलपरियायस्स अन्तं वा कोटिं वा न जानाम न पस्साम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).61; **ख.** सीमा, पार्श्वभाग, भीतर, अन्दर - *एकमन्तं निसिन्नो खो मिलिन्दो राजा आयस्मन्तं नागसेनं एतदवोच,* मि॰ प॰ 28; *... अन्तं ओरतो भोगं कत्वा चीवरं निक्खिपितब्बं,* महाव॰ 52; *ते थोकंयेव ओदातं अन्ते आदियित्वा तथेव सुद्धकाळकानं ... कारापेन्ति,* पारा॰ 342; **ग.** एक दूसरे से विरुद्ध दो बातें, दो प्रतिद्वन्द्वी या परस्पर, विरुद्ध धर्म - *द्वेमे, भिक्खवे, अन्ता पब्बजितेन न सेवितब्बा,* महाव॰ 13; *एते खो, भिक्खवे, उभो अन्ते अनुपगम्म, मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा,* महाव॰ 13; *एते ते, कच्चान, उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झेन तथागतो धम्मं देसेति,* स॰ नि॰ 1(2).17; *वीततण्हो पुरा भेदा, पुब्बन्तमनिस्सितो,* सु॰ नि॰ 855; *पुब्बन्तमनिस्सितोति अतीतद्धादिभेदं पुब्बन्तमनिस्सितो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.241; **घ.** सीमा, परिमाण, निश्चित संख्या, ओर-छोर - *नत्थि अन्तो कुतो अन्तो, न अन्तो पटिदिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.40; *नत्थि अन्तोति ... कालपरिच्छेदो नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.41; ..., *पविसन्तानञ्च निक्खमन्तानञ्च अन्तो नत्थि, ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.473; **ङ.(1)** समाप्ति, जीवन का अवसान या मृत्यु - *तस्स तस्सेव पज्हस्स, अहं अन्तं करोमि ते'ति,* सु॰ नि॰ 517; *एतज्हि तुम्हे पटिपन्ना, दुक्खस्सन्तं करिस्सथ,* ध॰ प॰ 275; *निधनो नितियं नासो कालो'न्तो चवनं मवे,* अभि॰ प॰ 404; *अन्तेनाति मरणेन,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.74; **ङ.(2)**. अन्तिम लक्ष्य या निर्वाण - *यो वेदि जातिमरणस्सं अन्तं,* सु॰ नि॰ 471; *जातिमरणस्स अन्तं नाम निब्बानं वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.121; *असङ्खतं अन्तं अनासवं, सच्चञ्च पारं निपुणं सुदुद्दसं,* स॰ नि॰ 2(2).343; पाठा॰ अनतं; **च.** *व्याकरण के विशेष सन्दर्भ* में स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त, असमान॰, एकवचन॰, ततिय॰, तद्धित॰, धात्व॰, निग्गहित॰, बहुवचन॰, व्यञ्जन॰, सर॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **छ.** स॰ उ॰ प॰ के रूप में पदपूरणार्णक रूप में प्राप्त, यदा-कदा पूर्णता समस्तता के अर्थ का सूचक - *अन्तो सेदस्स अत्थिता वा नत्थिता वा कथं सक्का आतुन्ति कङ्कं करेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).177; स॰ उ॰ प॰ के रूप में कम्म॰ (कर्म की परिपूर्णता), सुत्त॰ (सम्पूर्ण सुत्तपिटक), वन॰ (सम्पूर्ण वनक्षेत्र), आदि में ला॰ अ॰ में सम्पूर्णता या समाप्ति का सूचक.

अन्त[2] त्रि॰, [अन्त्य], **शा॰ अ॰** सबसे अन्त में आने वाला, वह, जिसका अपना कोई अन्त, छोर या सीमा न हो (प्रायः निषे॰ अनन्त में इसी अर्थ में प्राप्त) - *तथागतो होति अनन्तपञ्ञो,* सु॰ नि॰ 472; *अनित्थियन्तो परियन्तो पन्तो च पच्छिमान्तिमा,* अभि॰ प॰ 714; **ला॰ अ॰** घटिया, सब से नीचे आने वाला, तुच्छ - *अन्तो निथि समीपे चावसाने पदपूरणे,* अभि॰ प॰ 791; *अन्तमिदं, भिक्खवे, जीविकानं यदिदं पिण्डोलयं,* इतिवु॰ 64; स॰ नि॰ 2(1).86.

अन्त[3] नपुं॰, [आन्त्र], आंत, छोटी आंत, बड़ी आंत - *अन्तं अन्तगुणं उदरियं करीसं मत्थलुङ्गं,* खु॰ पा॰ (पृ॰) 2; *अन्तन्ति पुरिसस्स द्वत्तिंस हत्था, इत्थिया ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 229; *तत्थ अन्तस्स पूरो अन्तपूरो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.209; *अथस्स अन्तानि परिवत्तित्वा मुखेन निक्खमनाकारप्पत्तानि विय अहेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.76.

अन्तक[1] पु॰, [अन्तक], **शा॰ अ॰** अन्त कर देने वाला, मृत्यु, मरण, **ला॰ अ॰** ब्राह्मण-परम्परा में यम तथा बौद्ध-परम्परा में मार - *अन्तका वसवत्ती च पापिमा च पजापति,* अभि॰ प॰ 43; *अतित्तञ्ञेव कामेसु, अन्तको कुरुते वसं,* ध॰ प॰ 48; *अन्तको कुरुते वसन्ति मरणसङ्खातो अन्तको कन्दन्तं परिदेवन्तं गहेत्वा गच्छन्तो अत्तनो वसं पापेतीति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.206; *एवं जानाहि पापिम, निहतो त्वमसि अन्तका'ति,* थेरीगा॰ 59; *ततो एव बलविधमनविसयातिक्कमनेहि अन्तक लामकाचार, मार त्वं मया निहतो बाधितो असि ...,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 71.

अन्तक[2] नपुं॰, परिसमाप्ति, क्रम-विच्छेद - *दिसा दसविधा लोके, यायतो नत्थि अन्तकं,* अप॰ 1.6.

अन्तक[3] नपुं॰, आंत, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्रयुक्त - *द्वे कायबन्धनानि – पट्टिकं, सूकरन्तकं'न्ति,* चूळव॰ 257.

अन्तकम्म नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अन्तकर्मन्], अन्त कर देना, समाप्त या विनष्ट कर देना - *सो अन्तकम्मनि,* सद्द॰ 2.504; *सा अन्तकम्मनि,* सद्द॰ 2.489.

अन्तकर त्रि॰, [अन्तकर], अन्त कर देने वाला, उच्छेद या निरोध कर देने वाला - *सद्धाय घरा निक्खम्म, दुक्खस्सन्तकरो*

मव, सु॰ नि॰ 339; *जुतिमा मुतिमा पहूतपञ्ञो, दुक्खस्सन्तकरं*, सु॰ नि॰ 544; *जातिमरणस्स पारगू, दुक्खस्सन्तकरा भवामसे*, सु॰ नि॰ 32; *मानञ्च पहाय असेसं, विज्जायन्तकरो समितावी'ति*, स॰ नि॰ 1(1).217; *विज्जायन्तकरोति विज्जाय किलेसानं अन्तकरो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.238; स॰ उ॰ प॰ के रूप में जीवित॰, दुक्ख॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अन्तकरण नपुं॰, [अन्तकरण], अन्त कर देना, विनाश, उच्छेद या निरोध - *अन्तकिरियायाति वट्टदुक्खस्स अन्तकरणत्थाय*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.201.

अन्तकिरिया स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अन्तक्रिया], अन्त करा देने वाली क्रिया, उच्छेद, निरोध, विनाश - ..., *अप्पेव नाम इमस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स अन्तकिरिया पञ्ञायेथा'ति*, इतिवु॰ 64; *न खो पनाहं आवुसो अप्पत्वा लोकस्स अन्तं दुक्खस्स अन्तकिरियं वदामि*, स॰ नि॰ 1(1).76; *दुक्खस्सन्तकिरियाय, सा वे वाचानमुत्तमा'ति*, सु॰ नि॰ 456; *अभब्बा ते अन्तकिरियाय, ते वे जातिजरूपगा*, सु॰ नि॰ 730; *अन्तकिरियायाति वट्टदुक्खस्स अन्तकरणत्थाय*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.201.

अन्तक्खर पु॰, कर्म॰ स॰ [अन्त्याक्षर], अन्त में आया हुआ अक्षर या वर्ण - *अन्तक्खरतो पुब्बक्खरं उपदा, अन्तक्खरतो पुब्बक्खरं उपेक्खासञ्ञं भवति*, सद्द॰ 3.861.

अन्तगण्ठाबाध पु॰, तत्पु॰ स॰, आंत या आहारनली में आई हुई मोच, आंत की ग्रन्थि से सम्बन्धित बीमारी - *तेन खो पन समयेन बाराणसेय्यकस्स सेट्ठिपुत्तस्स मोक्खचिकाय कीळन्तस्स अन्तगण्ठाबाधो*, महाव॰ 363.

अन्तगण्ठि पु॰, तत्पु॰ स॰ [आन्त्रग्रन्थि], आंत में उभरी हुई गांठ - *अन्तगण्ठिं विनिवेठेत्वा अन्तानि पटिपवेसेत्वा उदरच्छविं सिब्बित्वा आलेपं अदासि*, महाव॰ 364.

अन्तगत त्रि॰, [अन्तगत], अन्त तक गया हुआ, पार किया हुआ, पूरी तरह से कार्य को किया हुआ - *सो पारं गतो पारप्पत्तो अन्तगतो अन्तप्पत्तो कोटिगतो ... अभयप्पत्तो . .. निब्बानप्पत्तो*, महानि॰ 15; *अन्तगतोति मग्गेन सङ्खारलोकन्तं गतो*, महानि॰ अट्ठ॰ 65; *दुक्खन्तगुनाति वट्टदुक्खस्स अन्तगतेन*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; *भवन्ती'ति इमं गाथं महासत्तो अन्तोगतमेव भासति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.198; - **त्त** नपुं॰, अन्तागत से व्यु॰, भाव॰ [अन्तगतत्व], किसी काम या स्थान के अन्त तक जाना - *यो वट्टदुक्खस्स तीहि परिञ्ञाहि अन्तगतत्ता अन्तगू* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.119.

अन्तगमक त्रि॰, [अन्तगमक], अन्त या परिसमाप्ति कर देने वाला - *ओसानेत्वेव ब्यारुद्धे, दिस्वा मे अरती अहूति योबञ्ञादीनं ओसाने एव अन्तगमके एव विनासके ... अरति मे अहोसि*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.258.

अन्तगुण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आन्त्रगुण], आंत की नली, आहार-नली - *अन्तं अन्तगुणं उदरियं करीसं मत्थलुङ्गं*, खु॰ पा॰ (पृ॰) 3; *ततो परं अन्तोसरीरे अन्तन्तरे अन्तगुणं वण्णतो सेतं दकसीतलिकमूलवण्णन्ति ववत्थपेति*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 43; *अयमेतस्स सभागपरिच्छेदो, विसभागपरिच्छेदो पन केससदिसो एवाति एवं अन्तगुणं वण्णादितो ववत्थपेति*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 44; - **भाग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आन्त्रगुणभाग], आंत की नली का एक भाग - *परिच्छेदतो अन्तगुणं अन्तगुणभागेन परिच्छिन्नन्ति ववत्थपेति*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 44.

अन्तगू[1] त्रि॰, अन्त कर देने वाला, उच्छेद या नाश कर देने वाला - *यदन्तगू वेदगू यञ्ञकाले, यस्साहुतिं लभे तस्सिज्झेति ब्रूमि*, सु॰ नि॰ 462; *तत्थ यदन्तगूति यो अन्तगू ओकारस्स अकारो*, ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 119; *अन्तगूसि, पारगू दुक्खस्स, अरहासि सम्मासम्बुद्धो खीणासवं तं मञ्ञे*, सु॰ नि॰ 544; ..., *अन्तगूसि पारगू दुक्खस्सा'ति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.143.

अन्तगू[2] पु॰, व्य॰ सं॰, मृत्यु की ओर ले जाने वाले मार के लिये प्रयुक्त उपाधि - *कण्होति यो सो मारो कण्हो अधिपति अन्तगू नमुचि पमत्तबन्धु*, महानि॰ 369; *मरणं पापनतो अन्तगू*, महानि॰ अट्ठ॰ 374.

अन्तग्गत त्रि॰, [अन्तर्गत], किसी वर्ग, समूह या श्रेणी के भीतर आने वाला, अन्तर्निविष्ट - *अन्तग्गते तु परियापन्नं अन्तोगधो गधा*, अभि॰ प॰ 742.

अन्तग्गाहिका स्त्री॰, दिट्ठि के विशे॰ के रूप में प्रयुक्त [अन्तग्राहिका], शाश्वतवाद एवं उच्छेद्वाद जैसे अन्तों को ग्रहण करने वाली दृष्टि, मिथ्यादृष्टि - *मिच्छादिट्ठिको होति अन्तग्गाहिकाय दिट्ठिया समन्नागतो*, दी॰ नि॰ 3.32; *अन्तग्गाहिकाति सायेव दिट्ठि उच्छेदन्तस्स गहितत्ता अन्तग्गाहिका'ति वुच्चति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.21; ..., *दसवत्थुका अन्तग्गाहिका दिट्ठि*, ..., महानि॰ 81; *अन्तग्गाहिकादिट्ठीति सस्सतो लोको इदमेव सच्चं, ... गहेत्वा पवत्ता दिट्ठि*, महानि॰ अट्ठ॰ 192.

अन्तच्छिन्न त्रि॰, ब॰ स॰ [अन्तछिन्न], ऐसा वस्त्र या चिथड़ा, जिसके किनारे फटे हुए हों - *पंसुकूलन्ति सोसानिकं, पापणिकं ... अन्तच्छिन्नं, दसछिन्नं, ... देवदत्तियन्ति तेवीसति पंसुकूलानि वेदितब्बानि*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.270.

अन्तजन पु॰, कर्म॰ स॰ [अन्तःजन], घर के भीतर के लोग, अपने लोग, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त; -

सुसङ्गहितन्तजन त्रि॰, ब॰ स॰, दान आदि द्वारा अपने जनों को ठीक से रखने वाला - *सुसङ्गहितन्तजनोति, तात, यस्स हि रञ्ञो अत्तनो अन्तोजनो अत्तनो वलञ्जनकपरिजनो च दानादीहि असङ्गहितो होति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.113.

अन्तजातक नपुं॰, एक जातक का नाम, जा॰ अट्ठ॰ 2.364-65.

अन्तति √अति का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्तति], बांधता है - *अति बन्धने, अन्तति, अन्तं,* सद्द॰ 2.360.

अन्ततो अ॰, क्रि॰ वि॰ [अन्ततः], अन्त से लेकर, आखिरी छोर से - ..., *अन्ततो पन मज्झतो वा पट्ठाय आदिं पापेत्वा अवुत्तत्ता इतो अञ्ञेनत्थेनेत्थ पटिलोमता न युज्जति,* उदा॰ अट्ठ॰ 38.

अन्तद्वय नपुं॰, द्वि॰ स॰ [अन्तद्वय], दो अन्त, दार्शनिक वादों या अवधारणाओं के दो छोर - *लोकुत्तरकुसलसम्मादिट्ठियेव हि अन्तद्वयमनुपगम्म उजुभावेन गतत्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).204; *तेसं यदग्गेन ततो अन्तद्वयतो संसारसुद्धि न होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 287; - **यूपनिस्सय** पु॰, [अन्तद्वयोपनिश्रय], दो प्रकार के अन्तों का आश्रय या उनपर दृढ़ विश्वास - *एवं अन्तद्वयूपनिस्सयेन तण्हाअविज्जानं दिट्ठिवङ्कता वेदितब्बा,* उदा॰ अट्ठ॰ 287; - **निपतित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तद्वयनिपतित], दो प्रकार के अन्तों के जाल में फंसा हुआ - *यथा हि तेसं समणब्राह्मणानं ... नत्थी'ति अन्तद्वयनिपतितानं तण्हादिट्ठिवसेन सम्परितसितविप्फन्दितमत्तं,* उदा॰ अट्ठ॰ 172; - **वन्तु** त्रि॰, [अन्तद्वयवत्], दो विभिन्न विभक्ति-प्रत्ययों के अन्त से युक्त - *यस्मा पन मयं पाळिनयानुसारेन अन्तद्वयवतो आपसद्दस्स पुल्लिङ्गत्तं नपुंसकलिङ्गत्तञ्च विदधाम,* सद्द॰ 1.116; - **वज्जन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तद्वयवर्जन], दो प्रकार के अन्तों का परित्याग या परिवर्जन - *एत्तावता हि ... तेविज्जतादीनं उपनिस्सयो, अन्तद्वयवज्जनमज्झिमपटिपत्तिसेवनानि,* ..., विसुद्धि॰ 1.5; - **विवज्जनानय** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तद्वयविवर्जननय], दो प्रकार के अन्तों के परित्याग का प्रकार, पद्धति या तरीका - *तत्थत्तनयो पत्तिनयो देसनानयो अन्तद्वयविवज्जनानयो अचिन्तेय्यनयो अधिप्पायनयो ति,* सद्द॰ 2.396.

अन्तन्त त्रि॰, छोटा से छोटा - *एथ अहं तुम्हे ... निस्साय अन्तन्ते गामे पहरन्तो दामरिकभावं जानापेत्वा* ..., अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.72; पाठा॰ अन्तमन्ते.

अन्तन्तेन अ॰, क्रि॰ वि॰ [अन्तन्तेन], एक किनारे या छोर से लेकर दूसरे किनारे या छोर तक, चारों ओर - *सो हि एकं ... मद्दन्तो विय अन्तन्तेन चरित्वा परेपातरासमेव आगन्त्वा अत्तनो सम्पादितं भत्तं भुञ्जितुं समत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.74; ... *भगवन्तं उपसङ्कमित्वा अन्तन्तेनेव चरन्तो सब्बरत्तिं नानप्पकारं* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 53.

अन्तपटल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आन्त्रपटल], आंत का फैलाव या विस्तारण - *उदरं नाम उभतो निप्पीळियमानस्स अल्लसाटकस्स मज्झे सञ्जातफोटकसदिसं अन्तपटलं,* ..., खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 44.

अन्तपूर त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आन्त्रपूर्ण], आंत या अंतड़ी से भरा हुआ - *अन्तपूरो उदरपूरो, यकनपेळस्स वत्थिनो,* सु॰ नि॰ 197; *तत्थ अन्तस्स पूरो अन्तपूरो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.209; जा॰ अट्ठ॰ 1.150.

अन्तप्पत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तप्राप्त], अन्त को पा चुका, छोरों तक पहुंच चुका, फल को प्राप्त कर चुका, जीवन के अन्त या मृत्यु को प्राप्त कर चुका - *सो पारं गतो पारप्पत्तो अन्तप्पत्तो कोटिगतो कोटिप्पत्तो परियन्तगतो* ..., महानि॰ 15; *अन्तप्पत्तोति तमेवं कोकन्तं फलेन पत्तो,* महानि॰ अट्ठ॰ 65.

अन्तबिल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आन्त्रबिल], आंत की नली, भोजन जाने वाली नली, आहारनलिका - *एवमेव यं किञ्चि आमासये पतितं ... आपज्जित्वा अन्तबिलेन ओगळित्वा ओमद्दित्वा ... हुत्वा तिट्ठति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 45.

अन्तभार पु॰, कुछ संस्करणों में अन्नभार का अप॰, अन्न का भार - *सेय्यथिदं अन्नभारो वरधरो सकुलुदायी च परिब्बाजको ... परिब्बाजका,* अ॰ नि॰ 1(2).204; पाठा॰ अन्तभार.

अन्तभूत त्रि॰, [अन्तर्भूत], अन्त में आया हुआ, अन्तिम - *णम्हि पच्चये परे रञ्ज इच्चेतस्स धातुस्स अन्तभूतस्स ञ्जकारस्स जो आदेसो होति वा भावकरणेसु,* क॰ व्या॰ 592.

अन्तभोग पु॰, तत्पु॰ स॰ [आन्त्रभोग], आंत की कुण्डली या घुमावदार आंत - *अन्तगुणन्ति अन्तभोगट्ठानेसु बन्धनं,* विभ॰ अट्ठ॰ 229; ... *एकवीसतिया ठानेसु अन्तभोगानं अन्तरा ठितं,* विभ॰ अट्ठ॰ 229; *ओकासतो कुदालफरसुकम्मादीनि ... यन्तफलकानि अन्तभोगे एकतो अग्गळन्ते ... एकवीसतिया अन्तभोगानं अन्तरा ठितन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 43; पाठा॰ अन्तभाग.

अन्तमन्त त्रि॰, बहुत दूर-दूर वाले, बहुत दूर-दूर के, सुदूरवर्ती - *सेय्यथापि नाम गोकाणा परियन्तचारिणी अन्तमन्तानेव सेवति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.27; *अन्तमन्तानेवाति कोचि मं पञ्हं पुच्छेय्याति पञ्ञाभीतो अन्तमन्तानेव पन्तसेनासनानि सेवति,*

दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.17; ... *अन्तमन्ते गामे पहरन्तो दामरिकभावं जानापेत्वा अनुपुब्बेन निगमेपि जनपदेपि पहरति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.72.

अन्तमन्तेन अ॰, क्रि॰ वि॰, बहुत दूर-दूर तक, अन्तिम छोर तक, सुदूरवर्ती क्षेत्रों या विषयों तक – *समुद्दं अन्तमन्तेन, इस्सरियं वत्तयामहं,* बु॰ वं॰ (पृ॰) 310; *समुद्दं अन्तमन्तेनाति एत्थ चक्कवाळपब्बतं सीमं मरियादं कत्वा ठितं समुद्दं अन्तं कत्वा इस्सरियं वत्तयामीति अत्थो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 158.

अन्तमसो अ॰, **क. प्रायः पुष्टिकारक निपा॰ 'अपि' के साथ प्रयुक्त** [अन्तमशः/अन्तिमशः, अन्तशः], यहां तक कि, कम से कम, अधिक से अधिक – *पिण्डपातो नाम यागुपि भत्तम्पि खादनीयम्पि ... दसिकसुत्तम्पि, अन्तमसो धम्मम्पि भणति,* पारा॰ 360; *अलङ्कारलोलताय ... अन्तमसो उदकतेलकेनपि केसे ओसण्डेत्वा मुखं परिमज्जति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.30; *अन्तमसो अत्तनो सरीरम्पि नानुगच्छति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.94; ... *अन्तमसो तिणकुटिकापि तिणसन्थारकम्पि,* उदा॰ अट्ठ॰ 186; **ख. मत्तम्पि के साथ अन्वित होने पर**, कम से कम केवल इतनी मात्रा में, अधिक से अधिक इतनी मात्रा में ही – *पटिसेवति नाम यो निमित्तेन ... अङ्गजातं अन्तमसो तिलफलमत्तम्पि पवेसेति, एसो पटिसेवति नाम,* पारा॰ 31; *अयञ्हि मूलसद्दो मूलानि उद्धरेय्य उसीरनाळमत्तानिपी'ति आदीसु मूलमूले दिस्सति,* उदा॰ अट्ठ॰ 22; **ग. 'उपादाय' के साथ अन्वित होने पर**, यहां तक कि, अमुक को लेकर भी, अमुक के सहित भी – ..., *अन्तमसो कुन्थकिपिल्लिकं उपादाय पस्सन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 138; *अहं इधोतिण्णं अन्तमसो सकुणिकं उपादाय न किञ्चि भुञ्जामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.172.

अन्तर[1] त्रि॰, [आन्तर], भीतर वाला, अन्दर में विद्यमान, आन्तरिक, भीतरी, आध्यात्मिक, चित्त की सन्तति से जुड़ा हुआ – *अहं खो, भन्ते, सम्मसामि अन्तरं सम्मसन्ति,* स॰ नि॰ 1(2).94; *अन्तरं सम्मसन्ति अब्भन्तरं पच्चयसम्मसनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.104; *भिक्खु सिनातो अन्तरेन सिनानेना'ति,* म॰ नि॰ 1.49; *तत्थ अन्तरेन सिनानेनाति अब्भन्तरेन किलेसवुट्ठानसिनानेन,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).186; *तयोमे भिक्खवे, अन्तरामला अन्तराअमित्ता अन्तरासपत्ता अन्तरावधका अन्तरापच्चत्थिका,* इतिवु॰ 60.

अन्तर[2] नपुं॰, [अन्तर], **क.** अट्ठ॰ में कारण, क्षण, चित्त, वैमध्य तथा विवर आदि अनेक अर्थों के सूचक के रूप में व्याख्यात – *सन्निवेसो च सण्ठानं, अथाब्भन्तरमन्तरं,* अभि॰ प॰ 771; *अन्तरं मज्झवत्थाञ्ञखणोकासो'धिहेतुसु, व्यवधाने विना'त्थे च भेदे छिद्दे मनस्यपि,* अभि॰ प॰ 802; **ख.** **1.** स्थानविषयक अन्तराल एवं दूरी – *किं ते ऊरुनमन्तरस्मिं, सुपिच्छितं कण्हखिप्पकासति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.188; **2.** कालविषयक अन्तराल, समय का व्यवधान – *यं एतस्मिं अन्तरे भासति लपति निद्दिसति,* इतिवु॰ 85; *तस्स कम्मस्स कुसलस्स, विपाकं दीघमन्तरं,* पे॰ व॰ 67; *दीघमन्तरन्ति मकारो पदसन्धिकरो, दीघअन्तरं दीघकालन्ति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 45; *यावतकेन अन्तरेन चम्पं गतागतं करिस्सति सब्बानि तानि ... पातुकरिस्सति,* म॰ नि॰ 2.3; **3. (क)** भेद, फूट, विभाजन – *इसीनमन्तरं कत्वा, भरुराजाति मे सुतं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.143; *तत्थ अन्तरं कत्वाति छन्दागतिवसेन विवरं कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.144; *अयं पनेत्थ अत्थो इसीनमन्तरं कत्वा,* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.114; **(ख)** छिद्र अथवा कमजोर पक्ष, दोषपूर्ण पक्ष – *ता तस्सा अन्तरं परियेसिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.440; *अन्तरन्तरा खीरं अदत्वा एकसंवच्छरं वीमंसन्तापिस्स अन्तरं न पस्सिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 6.5; *सा तस्स अन्तरं ओलोकेन्तियो विचरन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.297; *ञातिसङ्घस्स मन्तरन्ति अम्हेहि द्वीहि जनेहि विरहितस्स मम ञातिसङ्घस्स अन्तरं छिद्दं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.348; **4.** भेद, वैविध्य, भिन्नता, विशेषता – *किं पनेत्थ, महाराज, अन्तरं को विसेसो कुमुदभण्डिकाय च सालीनञ्चा'ति?,* मि॰ प॰ 270; *सञ्ञाविञ्ञाणपञ्ञानं, को विसेसो किमन्तरं,* अभि॰ अव॰ 1174; **5.** समूह के बीच का अन्तराल, दो स्थानों के बीच में, किसी स्थान के अन्दर – ... *भिक्खूनं अन्तरं पविसित्वा अम्हाकं सरभाणं न पापेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.54; *अभिवादेत्वाति छब्बण्णानं घनबुद्धरस्मीनं अन्तरं पविसित्वा ... विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.2; **6.** भीतर अर्थात् मन या चित्त – *तत्थ यस्सन्तरतो न सन्ति कोपाति यस्स अरियपुग्गलस्स अन्तरतो अब्भन्तरे अत्तनो चित्ते ... अनेकभेदा ... न विज्जन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 131; **7.** भेद, भीतर की बात, रहस्य, गुप्त बात, किसी विषय की भीतरी या वास्तविक स्थिति – *देव, एते न मय्हं पुत्ता, उपसागरस्स पुत्ताति तं अन्तरं आरोचेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.73; *इमं अन्तरं पभावतिया मा कथाहीति दळ्हं वत्वा उय्योजेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.278; *मनुस्सा तं अन्तरं, अजानन्ता अहो पतिब्बता'तिआदीनि वत्वा तं अनाचारिनिं वण्णयिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 2.99; *ते तस्स वण्णसम्पत्तिमेव दिस्वा अन्तरं अजानन्ता ... तं गण्हित्वा गच्छन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.217.

अन्तर[3] द्रष्ट॰ अन्तो के अन्त॰.

अन्तरं अ., क्रि. वि., अन्तर/अन्तरा से व्यु. [अन्तरं], **शा. अ.** बीच में, मध्य में - *अहं खलु महाराज, नागराजारिवन्तरं*, जा. अट्ठ. 5.346; *तत्थ नागराजारिवन्तरन्ति पेळाय अब्भन्तरं पविट्ठो नागराजा विय*, जा. अट्ठ. 5.347; **ला. अ. (क).** √**कर के क्रि. रू. के साथ** (मुहावरे के रूप में) अतिक्रमण (करना), पार करना - ..., *इमे इमं सीमं अन्तरं कत्वा वसन्ता पस्सन्तु*, ..., जा. अट्ठ. 2.178; ... *दस द्वे योजनानि अन्तरं कत्वा अहु*, पे. व. अट्ठ. 122; **(ख).** अन्दर या मन के भीतर (करना), अन्दर या मन की एकाग्रता का आलम्बन (बनाना) - *सो कामरागंयेव अन्तरं करित्वा झायति पज्झायति निज्झायति अपज्झायति*, म. नि. 3.62; *ततो एकं ... आचरियस्स अन्तरं कत्वा नं भिन्दिस्सामा'ति तयो ... वन्दित्वा अट्ठंसु*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.235.

अन्तरंस नपुं., [अन्तरांस], दो कन्धों के बीच वाला प्रदेश अर्थात् वक्षस्थल या सीना - *चितन्तरंसोति अन्तरंसं वुच्चति द्विन्नं कोट्ठानं अन्तरं, तं चितं परिपुण्णं अन्तरंसं अस्साति चितन्तरंसो*, दी. नि. अट्ठ. 2.35; *विततन्तरंसोति पुथुलअन्तरंसो*, जा. अट्ठ. 7.14.

अन्तरकप्प पु., कर्म. स. [अन्तर्कल्प], महाकल्प के 64 उपप्रभेदों में से एक, प्रलय के काल एवं पुनःसृष्टि के कालों के बीच की संक्षिप्त समयावधि - ... *कम्मे च अट्ठकम्मे च द्विट्ठिपटिपदा द्वट्ठन्तरकप्पा छळाभिजातियो अट्ठ पुरिसभूमियो* ..., दी. नि. 1.47-48; *द्वट्ठन्तरकप्पाति एकस्मिं कप्पे चतुसट्ठि अन्तरकप्पा नाम होन्ति*, दी. नि. अट्ठ. 1.134; *अन्तरकप्पो च नामेस दुब्भिक्खन्तरकप्पो रोगन्तरकप्पो सत्थन्तरकप्पोति तिविधो*, दी. नि. अट्ठ. 3.34; *यो पन दुब्भिक्खकाले वा परिहीनसम्पत्तिकाले वा अन्तरकप्पे वा मनुस्सेसु निब्बत्तति*, ..., अ. नि. अट्ठ. 2.112.

अन्तरकरण नपुं., अन्तरं करोति से व्यु., क्रि. ना., मन में कर लेना, ध्यान में कर लेना - *अयं मं निस्साय अन्तरकरणं लभती'ति*, दी. नि. अट्ठ. 1.264; अ. नि. अट्ठ. 2.238; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).357.

अन्तरकाजक पु., [अन्तरकाचक], दो ढोने वालों के बीच में बांस के डण्डे पर रस्सी से बंधा हुआ बोझा - *न वहे उभतोकाजं, वट्टतन्तरकाजकं*, विन. वि. 2818.

अन्तरखज्जक नपुं., कर्म. स. [अन्तरखाद्यक], प्रातःकाल के अल्पाहार एवं मध्याह्न-भोजन के बीच में खाया जाने वाला आहार - *मनापं अन्तरखज्जकन्ति वा तण्हापरितस्सनाय परितस्सति*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.276; ... *तेसं अन्तरखज्जकं खादित्वा निसिन्नकाले वन्दित्वा एकमन्तं निसिन्नो समत्थिं पुच्छि*, जा. अट्ठ. 1.378; - **वेला** स्त्री., प्रातः एवं मध्याह्न-काल के बीच में खाए जाने वाले आहार को ग्रहण करने का समय - *पुटबद्धानि मज्झमही ति च पुब्बण्हे अन्तरखज्जकवेलायमेव पेसेत्वा चेतियट्ठानम्हि मज्झे पुटबन्धानि साटकानि ठपापयी ति अत्थो*, म. वं. टी. 479(ना.).

अन्तरगङ्गा स्त्री., व्य. सं. [अन्तरगङ्गा], एक स्थान का नाम, जहां पर नदी का प्रवाह भूमि के भीतर में है - *अन्तरगङ्गाय पन महावाचकालउपासको नाम अहोसि*, अ. नि. अट्ठ. 2.109.

अन्तरगब्भ पु., अनन्तरगब्भ का अप., द्रष्ट. अनन्तरगब्भ के अन्त.

अन्तरगवेसी त्रि., [अन्तर्गवेषिन्], परछिद्रान्वेषी, दूसरों की कमी को खोजते रहने वाला - *रन्धमेसीति अन्तरगवेसी*, महानि. अट्ठ. 227.

अन्तरघरं / अन्तरघरे अ. क्रि. वि., **क.** दो घरों के बीच में या गांव के अन्दर, **ख.** घर के भीतर, घर में - *यो पन भिक्खु ... भिक्खुनिया अन्तरघरं पविट्ठाय हत्थतो खादनीयं वा ... पटिग्गहेत्वा खादेय्य वा भुञ्जेय्य वा*, पाचि. 232; *अन्तरघरन्ति न पल्लत्थिकाय अन्तरघरे निसीदिस्सामी'ति एत्थ अन्तोनिवेसनं अन्तरघरं*, स. नि. अट्ठ. 2.31; *भिक्खू तिण्णं चीवरानं अञ्ञतरं चीवरं अन्तरघरे निक्खिपित्वा अतिरेकछारत्तं विप्पवसन्तीति*, पारा. 390; *अन्तरघरे निक्खिपितुन्ति अन्तोगामे निक्खिपितुं*, पारा. अट्ठ. 2.280; *पासादिको होति अभिक्कन्तपटिक्कन्ते सुसंवुतो अन्तरघरे निसज्जाय*, अ. नि. 3(2).171.

अन्तरघरप्पवेसन नपुं., घरों के भीतर में प्रवेश - *अट्ठट्ठानं ... सङ्गणपुग्गल ... अन्तरघरप्पवेसनेसु कायेन अप्पतिरूपकरणं*, खु. पा. अट्ठ. 196.

अन्तरघरसंयुत्त त्रि., घर के भीतर के विषयों से जुड़ा हुआ, सम्बन्धित - *अन्तरघरसंयुत्ता, सेसपञ्ञत्तियो पन*, उ. वि. 612.

अन्तरङ्ग नपुं., [अन्तरङ्ग], किसी शब्द या नियम का आवश्यक या भीतरी भाग - **त्त** नपुं., अन्तरङ्ग का भाव. [अन्तरङ्गत्व], किसी शब्द या नियम का आवश्यक या भीतरी भाग होना - *अन्तरङ्गत्ता अकारस्स*, मो. व्या. 2.116; - **धुर** नपुं., कर्म. स., भीतरी मामलों या आन्तरिक विषयों से सम्बन्धित प्रशासनिक प्रमुख - *अन्तरङ्गधुरं नाम कत्वा मच्चम्हि ठापयि*, चू. वं. 69.32-35.

अन्तरचक्क नपुं., [अन्तरचक्र], प्राचीन काल की एक विद्या का नाम, ज्योतिषशास्त्र की एक विशेष शाखा, जिसमें चक्र के आन्तरिक भागों को विभक्त कर फलाफल का निर्धारण होता था - ... *जोतिसं लोकायतिकं साचक्कं मिगचक्कं अन्तरचक्कं मिस्सकुप्पादं सकुणरुतरवितं सिक्खा करणीया,* मि. प. 174.

अन्तरचर त्रि., [अन्तश्चर], भीतर की ओर गतिशील, अन्दर की ओर चलने वाला या फैल जाने वाला - *छट्ठो अन्तरचरो वधको उक्खित्तासिको पिट्ठितो पिट्ठितो ... पातेस्सामीति,* स. नि. 2(2).177; *छट्ठो अन्तरचरो वधकोति पठमं आसीविसेहि अनुबद्धो इतो चितो च ते वञ्चेन्तो पलायि,* ..., स. नि. अट्ठ. 3.56.

अन्तरट्टालक पु., कर्म. स., मध्यवर्ती निरीक्षण-स्तम्भ, बीच वाली अट्टालिका - *तथा अनुपाकारञ्च द्वारट्टालके अन्तरट्टालके उदकपरिखं ... परिखायो कारेसि,* जा. अट्ठ. 6.220.

अन्तरट्ठक क. पु., अट्ठ. के अनुसार माघ एवं फाल्गुन मासों के मध्य में पड़ने वाला आठ दिनों का वह काल, जिसमें माघ के अन्तिम चार दिन तथा फाल्गुन के प्रारम्भ वाले चार दिन अन्तर्भूत रहते हैं - *सीता, भन्ते, हेमन्तिका रत्ति, अन्तरट्ठको हिमपातसमयो,* ..., अ. नि. 1(1).161; *अन्तरट्ठकोति माघफग्गुणानं अन्तरे अट्ठदिवसपरिमाणो कालो, माघस्स हि अवसाने चत्तारो दिवसा, फग्गुणस्स आदिम्हि चत्तारोति अयं अन्तरट्ठको'ति वुच्चति,* अ. नि. अट्ठ. 2.116; उदा. अट्ठ. 59; ... *सीतासु हेमन्तिकासु रत्तीसु अन्तरट्ठके हिमपातसमये गयायं ... इमिना सुद्धीति,* उदा. 75; *रत्तियो सीता हेमन्तिका अन्तरट्ठका हिमपातसमया तथारूपासु रत्तीसु रत्तिं अब्भोकासे विहरामि,* म. नि. 1.113; **ख.** त्रि., आधुनिक कोशकारों के अनुसार प्रत्येक मास की पूर्णमासी के बाद के आठ दिनों का समुच्चय अट्ठक है अतः शब्द का अर्थ "इस समुच्चय के बीच में आने वाली या पड़ने वाली" रात किया गया है.

अन्तरतो अ., क्रि. वि. [अन्तरतः], भीतर में, आन्तरिक रूप में, चित्त या चेतना के स्तर पर - *यस्सन्तरतो न सन्ति कोपा, इतिभवाभवतञ्च वीतिवत्तो'ति,* सु. नि. 6; *ततो यस्सन्तरतो न सन्ति कोपाति ततिय मग्गेन समूहतत्ता यस्स चित्ते न सन्ति कोपाति अत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 1.18; *भयमन्तरतो जातं, तं जनो नावबुज्झति,* अ. नि. 2(2).234; *अन्तरतो जातन्ति अब्भन्तरे उप्पन्नं,* अ. नि. अट्ठ. 3.179.

अन्तरदीप पु., कर्म. स. [अन्तरद्वीप], नदी की धारा के बीच में स्थित टापू या द्वीप - *यत्थ गोदावरी द्विधा भिज्जित्वा तियोजनप्पमाणं अन्तरदीपमकासि,* सु. नि. अट्ठ. 2.270; *यं ओकासं अन्तरदीपं अकासि,* सु. नि. अट्ठ. 1.23; - **वासी** त्रि., द्वीप में निवास करने वाला - *एवं काले गच्छन्ते एकदिवसं अन्तरदीपकवासी एको इद्धिमन्ततापसो ... आकासे ... उपरिभागं ... ओतरि,* जा. अट्ठ. 4.429; पाठा. अन्तरदीपकवासी.

अन्तरदीपक पु., नदी की धारा के बीच में निकला हुआ छोटा सा टापू या द्वीप - *नदीविदुग्गन्ति नदीनं दुग्गमट्ठानं अन्तरदीपकं, यत्थ सक्का होति ... सद्धिं निलीयितुं,* अ. नि. अट्ठ. 2.136; *द्वे जयम्पतिका एकं फलकं गहेत्वा अन्तरदीपकं पविसिंसु, सेसा सब्बे तत्थेव मरिंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.75; - **के** सप्त. वि., ए. व. - *तासम्पि वचनं अकत्वा परतो गच्छतो अन्तरदीपके एकं यक्खनगरं अद्दस,* जा. अट्ठ. 1.235; *एहि, सम्म, अन्तरदीपके महाफले खादितुं गच्छामा'ति,* जा. अट्ठ. 3.113.

अन्तरद्वारे अ., क्रि. वि., दो द्वारों के बीच में, द्वारों के बीच में से, द्वार के सामने - *अरे बाल, ब्राह्मण, किं तव ञातका अन्तरद्वारे कहापणं ठपेन्ति, परतो मं हरा'ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).327; ... *नगरतो बहि गच्छन्तो अन्तरद्वारा दसबलं दिस्वा पादेसु पतित्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.296.

अन्तरधा अदर्शनार्थक अन्तर + √धा धातु - *अन्तरधा अदस्सने,* सद्द. 2.481.

अन्तरधान नपुं., अन्तर + √धा से व्यु., क्रि. ना. [अन्तर्धान], **शा. अ.** अचानक अदृश्य या तिरोहित हो जाना, अकस्मात् दृष्टिपथ से ओझल हो जाना - *यदि एवं कथं समिञ्जनादिनिदस्सनं? तं अन्तरधाननिदस्सनन्ति गहेतब्बं,* उदा. अट्ठ. 138; *तिरोधानअन्तराधानपिधानच्छादनानि च,* अभि. प. 51; *अथ नेसं सत्थुनो अन्तरधानं होति,* दी. नि. 3.90; *अन्तरायायाति लोकुत्तरकुसलधम्मानं अन्तरायाय अन्तरधानाय लोकियकुसलधम्मानं परिच्चागाय,* महानि. अट्ठ. 51; **ला. अ. क.** एक जन्म से बिलग हो दूसरे जन्म का ग्रहण - *चुति चवनता, भेदो अन्तरधानं मच्चु मरणं किरिया,* म. नि. 1.62; *रूपस्स खयो वयो भेदो परिभेदो अनिच्चता अन्तरधानं,* ध. स. 644; *अन्तरधायति एत्थाति अन्तरधानं,* ध. स. अट्ठ. 361; **ला. अ. ख.** क्रमशः हो रहा क्षय, अपक्षय या हानि - *न ताव, कस्सप, सद्धम्मस्स अन्तरधानं होति याव न सद्धम्मप्पतिरूपकं लोके उप्पज्जति,* स. नि. 1(1).203;

ओक्कमनिया धम्मा सद्धम्मस्स सम्मोसाय अन्तरधानाय संवत्तन्ति, स. नि. 1(1).204; *उपधारेन्तो अद्दस अनागतमद्धाने द्विन्नम्पि तेसं चक्खूनं अन्तरधानं, दिस्वा ते एवमाह एकं मे,* ..., मि. प. 130.

अन्तरधानमन्त पु., तत्पु. स. [अन्तर्धानमन्त्र], वह मन्त्र, जिसके प्रयोग द्वारा किसी को अदृश्य कर दिया जाए, अदृश्य बना देने वाला मन्त्र – ... *अयं आभाय अन्तरधानमन्तं जानाति मञ्ञे'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.393.

अन्तरधापना स्त्री., अन्तरधापेति से व्यु., क्रि. ना., अदृश्य या तिरोहित करा देना, अप्रकट करा देना – *अयं विभावना नाम, अन्तरधापनाति अत्थो,* ध. स. अट्ठ. 208; *अथ वा विभावना ति अभावना अन्तरधापना,* सद्द. 1.81.

अन्तरधापेति अन्तर + √धा के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., **शा. अ.** अदृश्य या अप्रकट करा देता है, **ला. अ.** विनष्ट या विलुप्त करा देता है, उपशान्त बना देता है – *तमेनं महाअकालमेघो ठानसो अन्तरधापेति वूपसमेति,* स. नि. 3(2).60; ... *सद्धम्मं अन्तरधापेति,* स. नि. 1(2).204; – **न्ति** ब. व. – *ते चिमं सद्धम्मं अन्तरधापेन्ती'ति,* अ. नि. 1(1).25; – **पेथ** अनु., म. पु., ब. व., उपशान्त करा दो – *सा च पन मे दुक्खेन लद्धा, मा नं अन्तरधापेथ,* जा. अट्ठ. 1.152; – **पेसुं** अद्य., प्र. पु., ब. व. – *ते तं ब्रह्मचरियं खिप्पञ्ञेव अन्तरधापेसुं,* पारा. 8; *अन्तरधापेसुन्ति वग्गसङ्गहपण्णासससङ्गहादीहि असङ्गण्हन्ता यं यं अत्तनो रुच्चति, तं* ..., पारा. अट्ठ. 1.143.

अन्तरधायति अन्तर + √धा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अन्तर्दधाति], **शा. अ.** भीतर में ले जाकर रख देता है, **ला. अ.** अदृश्य हो जाता है, विलुप्त हो जाता है, शान्त हो जाता है, नष्ट हो जाता है – *अथ खो आयस्मा ... सेय्यम्पि कप्पोति धूमायतिपि पज्जलतिपि अन्तरधायतिपि, तञ्चेव उदानं ... बुद्धवचनं,* पाचि. 79; *तत्थ अन्तरधायतिपीति अन्तरधायतिपि अदस्सनम्पि गच्छतीति अत्थो,* पाचि. अट्ठ. 60; *तं पाटिहारियं ... भगवन्तं खमापेसुं, तङ्खणञ्ञेव उदकोघो अन्तरधायि,* वि. व. अट्ठ. 36; *उपज्झाया अन्तरधायति सिस्सो, मातरा च पितरा च अन्तरधायति पुत्तो,* क. व्या. 276; सद्द. 3.704; – **यामि** उ. पु., ए. व. – *एसा अन्तरधायामि, कुच्छिं वा पविसामि ते,* स. नि. 1(1).156; – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *एवं ते कामा हायन्ति परिहायन्ति ... अन्तरधायन्ति विप्पलुज्जन्ति,* महानि. 4; – **मान** त्रि., वर्त. कृ., आत्मने. – *सद्धम्मे अन्तरधायमाने बहुतरानि चेव सिक्खापदानि होन्ति,* म. नि. 2.117; – **स्सु** अनु., म. पु., ए. व. – *हन्द चरहि मे त्वं, ब्रह्मे, अन्तरधायस्सु, सचे विसहसी'ति,* म. नि. 1.413; – **येय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *सो सद्दो अन्तरधायेय्य,* मि. प. 109; – **यि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *इदं वत्वा तत्थेवन्तरधायि,* म. नि. 1.198; – **यथ** अद्य., प्र. पु., ए. व., आत्मने. – *ततो सो दुम्मनो यक्खो, तत्थेवन्तरधायथाति,* सु. नि. 451; – **यिसुं** अद्य., प्र. पु., ब. व. – *ठानं खन्धं ठपयित्वान साखा अन्तरधायिसुं,* म. वं. 18. 34; – **यिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *सत्ताहस्स अच्चयेन अन्तरधायिस्सति,* महाव. 49; – **यिस्सन्ति** ब. व. – *तं हत्थे गण्ह, अवसेसा अन्तरधायिस्सन्तीति,* जा. अट्ठ. 1.125; – **यिस्सामि** उ. पु., ए. व. – *अथ खो, भिक्खवे, बको ब्रह्मा अन्तरधायिस्सामि समणस्स गोतमस्स ... नेवस्स मे सक्कोति अन्तरधायितुं,* म. नि. 1.413; – **यित्वा** पू. का. कृ. – *पुरतो गन्त्वा विय सक्को अन्तरधायित्वा सकट्ठानमेव गतो,* जा. अट्ठ. 6.40; विलो. पातुभवति.

अन्तरन्तरा अ., क्रि. वि. [अन्तरन्तरा], अन्तराल में, बीच-बीच में, कभी-कभी, समय-समय पर, किसी विशेष अवसर पर – *अन्तरन्तरा हि भिक्खू तं आयस्मन्तं दूरतोव आगच्छन्तं दिस्वा* ..., जा. अट्ठ. 1.164; *एवं अन्तरन्तरा खीरं अदत्वा एकसंवच्छरं वीमंसन्तापिस्स अन्तरं न पस्सिंसु,* जा. अट्ठ. 6.5; *यथा पन अन्तरन्तरा ठितासुपि निसिन्नासुपि विज्जमानासुपि,* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).219; – **कथा** स्त्री., **ओपातेति के साथ प्रयुक्त**, बीच में रुकावट उत्पन्न करने वाली बात – *न उपज्झायस्स भणमानस्स अन्तरन्तराकथा ओपातेतब्बा,* महाव. 52; ... *अन्तरन्तराकथा ओपातेतब्बाति अन्तरघरे वा* ..., महाव. अट्ठ. 248; ... *एवं जानन्ता एवं पस्सन्ता अन्तरन्तराकथं ओपातेय्युन्ति,* म. नि. 2.212.

अन्तरन्तरे अ., क्रि. वि., **क.** समय समय पर, एक निश्चित समय पर, बीच बीच में – *ततो पट्ठाय इमिनाव नियामेन अन्तरन्तरे तत्थ गन्त्वा देवतामङ्गलिको विय पूजं करोति,* जा. अट्ठ. 1.252; *अन्तरन्तरा कथं ओपातेय्युन्ति मम कथावारं पच्छिन्दित्वा अन्तरन्तरे अत्तनो कथं पवेसेय्युन्ति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.171; **ख.** ष. वि. में अन्त होने वाले पद के साथ, मध्य में, बीच में – ... *वनसण्डस्स अन्तरन्तरेन विचरति,* ध. प. अट्ठ. 1.36; ... *अञ्ञिस्सा कथाय अन्तरन्तरे कतरा कथा उप्पज्जीति पुच्छति,* अ. नि. अट्ठ. 2.148.

अन्तरन्तरेन अ., तृ. वि., प्रतिरू. निपा., सीधे बीच में से होकर, मध्यभाग से होकर – *नागो भिक्खूनं अन्तरन्तरेन*

गन्त्वा सत्थु पुरतो तिरियं अट्ठासि, ध. प. अट्ठ. 1.39; *तेहि खित्ता सरा विटटूभस्स पुरिसानं अन्तरन्तरेन गच्छन्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.202.

अन्तरपरिखा स्त्री., कर्म. स., मध्यवर्ती खाई या नाली - *ओकिण्णन्तरपरिखं, दळ्हमट्टालकोट्ठकं,* जा. अट्ठ. 4.95; *तत्थ ओकिण्णन्तरपरिखन्ति इदं द्वादसयोजनिकं सुरुन्धनपुरं अन्तरन्तरा उदकपरिक्खानं ....,* जा. अट्ठ. 4.95.

अन्तरपेय्याल नपुं., स. नि. के एक खण्ड का शीर्षक; स. नि. 1(2).115-118.

अन्तरबाहिर त्रि., अन्दर और बाहर दोनों स्थानों के साथ सम्बद्ध - ... *तस्सा तण्डुलनाळिकाय बाराणसिं सन्तरबाहिरं अग्घमकासि,* जा. अट्ठ. 1.131; *बाराणसिं सन्तरबाहिरं, अयमग्घति तण्डुलनाळिका'ति,* तदे..

अन्तरभत्त / अन्तराभत्त नपुं., **क**. प्रातःकालीन अल्पाहार एवं मध्याह्नभोजन के मध्य दिया जाने वाला भोजन - *बाराणसिरञ्ञो किर सूदो अन्तरभत्तं पचित्वा उपनामेसि ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.84; **ख**. भोजनकाल में, भोजन समाप्त करने से पूर्व - ... *एकस्मिंयेवस्स अन्तरभत्ते सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं अदासि,* ध. प. अट्ठ. 1.141; जा. अट्ठ. 1.126; *अन्तराभत्तस्मिंयेव ब्राह्मणस्स चत्तारो पुत्ता सन्तिके निसीदित्वा आहंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.288; - **समये** भोजनकाल में - ... *यागुखज्जकं दत्वा अन्तराभत्तसमये एतमत्थं आरोचेसि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).186; *सत्था पन ... निसीदित्वा अन्तरभत्तसमये महाधम्मपालजातकं कथेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.252.

अन्तरभोगिक त्रि., दो राज्यों के बीच वाले कुछ गांवों या क्षेत्रों के स्वामी - ... *पदेसराजा मण्डलिका अन्तरभोगिका अक्खदस्सा महामत्ता, येवा ...,* पारा. 53; *अन्तरभोगिका नाम द्विन्नं राजूनं अन्तरा कतिपयगामसामिका,* पारा. अट्ठ. 1.247.

अन्तरमेगिरि पु., श्रीलङ्का के एक विहार का नाम - *पाचीनकम्बविट्ठि च तथा अन्तरमेगिरिं,* चू. वं. 38.48.

अनन्तररट्ठ पु., कर्म. स., किसी एक राज्य के बाद में आने वाला राष्ट्र, पड़ोसी राज्य - *अथ तस्स रट्ठस्स अनन्तररट्ठाधिपतिनो कालिङ्गो, अट्ठको, ...,* जा. अट्ठ. 5.130.

अन्तरवत्थु नपुं., कर्म. स., घर के भीतर वाला आंगन, गृहप्राङ्गण - *तस्मिं समये ... जलवातपानं विवरित्वा अन्तरवत्थुं ओलोकेन्तो अट्ठासि,* अ. नि. अट्ठ. 1.332; *अन्तरवत्थुन्ति गेहङ्गणं,* अ. नि. टी. 1.194; ... *तङ्खणञ्जेव आगन्त्वा अन्तरवत्थुम्हि असीतिहत्थमत्तं अङ्गारकासुं निम्मिनि,* जा. अट्ठ. 1.228.

अन्तरवस्स नपुं., तत्पु. स., वर्षा ऋतु के ही बीच में आने वाला समय, वर्षावास के अन्दर का समय - *अथ खो आयस्मा भद्दियो तेनेव अन्तरवस्सेन तिस्सो विज्जा सच्छाकासि,* चूळव. 319; उदा. 96; *तेनेवन्तरवस्सेनाति तस्मिंयेव अन्तरवस्से महापवारणं अनतिक्कमित्वाव,* उदा. अट्ठ. 147.

अन्तरवार पु., त्रिपिटक के संग्रह का एक उपविभाजन - ... *चतुवीसतिया अन्तरवारेहि पटिमण्डेत्वा द्वेभाणवारपरिमाणाय तन्तिया अवोच,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).61.

अन्तरवासक पु., कर्म. स. [अन्तर्वासय, नपुं.], **शा. अ.** भीतरी परिधान या वस्त्र, **ला. अ.** (विनय के विशेष सन्दर्भ में) बौद्ध भिक्षु के तीन चीवर परिधानों में सबसे नीचे वाला परिधान, भिक्षु का अधोवस्त्र, जिसे कायबन्ध या कमर-पट्टी द्वारा बांध कर धारण किया जाता है - *निवासनान्तरीयान्यन्तरमन्तरवासको,* अभि. प. 292; *सङ्घाटि, उत्तरासङ्गो, अन्तरवासको,* परि. 330; *निवत्थो अन्तरवासकेन,* परि. 401; *इमिना अन्तरवासकेन कथिनं अत्थरामी'ति एतेन वचीभेदेन,* परि. अट्ठ. 216; *उदकं आहर अन्तरवासकं धोविस्सामी'ति,* मि. प. 129.

अन्तरविट्ठि पु., श्रीलङ्का के एक गांव का नाम - *गामं अन्तरविट्ठिं च तथा सङ्गाटगामकं,* चू. वं. 60.68; *गन्त्वा अन्तरविट्ठिम्हि वेरिनो च पलापयुं,* चू. वं. 70.322.

अन्तरविट्ठिक पु., उपरिवत् - *युज्झापेत्वान घातेत्वा गामे अन्तरविट्ठिके,* चू. वं. 61.46.

अन्तरविरहित त्रि., [अन्तरविरहित], अन्तराल से रहित, व्यवधानरहित, भेदरहित, समान - *अनन्तराति अन्तरविरहिता, अत्तनो कुलेन सदिसाति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 3.43.

अन्तरवीथि स्त्री., [अन्तर्वीथि], सड़क, छोटा मार्ग, गली, भीतर की सड़क, नगर की सड़क - *अन्तरवीथिचतुक्कराजद्वारादीसु निसीदित्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.325; *तस्मिं खणे सेट्ठि ... सत्तमे द्वारकोट्ठके अन्तरवीथिं ओलोकेन्तो चङ्कमति,* जा. अट्ठ. 4.57; ध. प. अट्ठ. 1.186; *ते अन्तरवीथियं ठत्वा किं समणो गोतमोव बुद्धो, ...,* ध. प. अट्ठ. 2.102.

अन्तरसत्थि क्रि. वि., अव्ययी. स., जांघों के बीच में - ... *एकस्मिं ठपेत्वा नङ्गुट्ठं अन्तरसत्थिम्हि पक्खिपित्वा ... ठपेत्वा सयति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).212; *रञ्ञो नागो ... उदकं गहेत्वा ... सकिं उभोसु पस्सेसु सकिं अन्तरसत्थियं पक्खिपन्तो कीळित्थ,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).170; *अहं*

तरुणपोतककाले इमं निग्रोधगच्छं अन्तरसत्थीसु कत्वा गच्छामि, जा॰ अट्ठ॰ 1.215.

अन्तरसमुद्द पु॰, व्य॰ सं॰, एक क्षेत्र-विशेष का नाम - *अथञ्ञो भिक्खु अन्तरसमुद्दं गन्त्वा तस्मिं विहारे पटिवसन्तो ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.245.

अन्तरसाटक पु॰, कर्म॰ स॰, अन्दर पहना जाने वाला वस्त्र या परिधान - *इध पन अन्तरसाटका'तिआदीसु विय उत्तरिये दट्ठब्बो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 137.

अन्तरसोब्भ द्रष्ट॰, अन्तरासोब्भ के अन्त॰.

अन्तरहित त्रि॰, अन्तर + √धा का भू॰ क॰ कृ॰ [अन्तर्हित], **शा॰ अ॰** अन्दर या भीतर में रख दिया गया, **ला॰ अ॰** विलुप्त, नष्ट, अदृश्य, सामने अविद्यमान - *अन्तरहितो सो, भन्ते, सद्दो'ति,* उदा॰ 120; *इमस्स खो पुग्गलस्स कुसला धम्मा अन्तरहिता,* अ॰ नि॰ 2(2).111; *सापि अनुपुब्बेनेव इदम्पि अन्तरहितं, ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.64; *अन्तरहिताय गोधाय इति चिन्तसि सो तहिं,* म॰ वं॰ 28.10.

अन्तरा[1] अ॰, निपा॰, अनेकार्थक [अन्तरा], **1. क्रि॰ वि॰ क. परिमाणसूचक** अन्दर में, भीतरी माप के प्रमाण से - *दीघसो द्वादस विदत्थियो, सुगतविदत्थिया तिरियं सत्तन्तरा,* पारा॰ 229; *तिरियं सत्तन्तराति अब्भन्तरिमेन मानेन,* पारा॰ 229; *अन्तराति इमस्स पन अयं निद्देसो, अब्भन्तरिमेन मानेना'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.139-40; **ख. स्थानसूचक**, बीच रास्ते में ही, मार्ग पर, बीच में ही, अन्तराल में - *सरभोव गिरिदुग्गस्मिं, अन्तरायेव सीदति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.387; *अन्तरेनन्तरा अन्तो,* अभि॰ प॰ 1150; ... *अन्तरापि परिवसन्ति,* महाव॰ 134; *इमं निग्रोधं अन्तरा सत्थीनं करित्वा अतिक्कमामि,* चूळव॰ 290; *उभिन्नमन्तरा एतं अब्बोहारिकमेव तं,* अभि॰ अव॰ 1321; **ग. कालवाचक** - इस बीच में, मध्यवर्ती समयावधि में - *न चन्तरा पापको अत्थि रोगो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.399; *न चन्तराति अम्हाकं वस्ससहस्सं आयु, अन्तरा च नो पापको जीवितन्तरायकरो रोगोपि नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.400; *अन्तरा मेथुनं धम्मं, ...,* सु॰ नि॰ 293; **घ.** पहले ही, पूर्वकाल में ही, अन्ततः, आखिरकार - ..., *अथन्तरा मे भविस्सति कालकिरिया,* सु॰ नि॰ 699; *गन्त्वा अप्पत्वाव लोकस्स अन्तं अन्तराव कालङ्कतो,* सु॰ नि॰ 1(1).76; *अन्तराव कालङ्कतोति चक्कवाळलोकस्स अन्तं अप्पत्वा अन्तराव मतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.105; **2.क. द्वि॰ वि॰ में अन्त होने वाले दो नामपदों के साथ अन्वित,** दो स्थानों के मध्य में - *एकं समयं भगवा अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नाळन्दं अद्धानमग्गप्पटिपन्नो होति ...,* दी॰ नि॰ 1.1; *उपको आजीवको अन्तरा च गयं अन्तरा च बोधिं अद्धानमग्गप्पटिपन्नं,* म॰ नि॰ 1.230; *अन्तरा च गयं अन्तरा च बोधिन्ति गयाय च बोधिस्स च विवरे तिगावुतन्तरे ठाने,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).90; **2.ख. कालसूचक निपा॰**, एक सुनिश्चित कालावधि के अन्दर - *तेन खो ... भिक्खू वस्सं उपगन्त्वा अन्तरावस्सं चारिकं चरन्ति,* महाव॰ 182; **2.ग.** व्यवधान रूप में, बाधा के रूप में - *न तेसं अन्तरा गच्छे, स राजवसतिं वसे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.189; *न तेसं अन्तरा गच्छेति तेसं लाभस्स अन्तरा न गच्छे, अन्तरायं न करेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 7.190.

अन्तरा[2] स्त्री॰, [अन्तरीय], ऊपरी वस्त्र, उत्तरीय, उत्तरासङ्ग, ऊपर रखा जाने वाला चादर या गमछा - *अन्तरा उत्तरियं उत्तरासङ्गो उपसंब्यानन्ति परियायसद्दा एते,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 137.

अन्तराअमित्त पु॰, भीतरी शत्रु, अपने चित्त के अन्दर रहने वाली शत्रु-रूपी मानसिक दुष्प्रवृत्तियां - *अन्तरामला अन्तराअमित्ता अन्तरासपत्ता अन्तरावधका अन्तरापच्चत्थिका,* इतिवु॰ 60.

अन्तराअहोसि अन्तरा + √हु या √भू का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बाधित हुआ - *तेन सद्देन धम्मकथा अन्तरा अहोसि,* चूळव॰ 261; *अन्तरा अहोसीति अन्तरिता अहोसि पटिच्छन्ना,* चूळव॰ अट्ठ॰ 57.

अन्तराकथा स्त्री॰, अन्तरा[1] + कथा, **क.** किसी एक विषय पर चल रही बातचीत के बीच में आने वाली विषयान्तर की बातचीत, **ख.** प्रारम्भ एवं समाप्ति के बीच में आपतित अन्य विषयों की बातचीत - *का च पन वो अन्तराकथा विप्पकता'ति,* म॰ नि॰ 1.220; *अन्तरा कथाति कम्मट्ठानमनसिकारउद्देसपरिपुच्छादीनं अन्तरा अञ्ञा एका कथा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).73; ... *अनुविचरन्तानं अयमन्तराकथा उदपादि,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 173; *अयमन्तराकथाति यं अत्तनो सहायकभावानुरूपं कथं कथेन्ता अनुविचरिंसु, तस्सा कथाय अन्तरा ... वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.166; *अन्तराकथाति अवसानं अप्पत्वा आरम्भस्स च अवसानस्स च वेमज्झट्ठानं पत्तकथा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 67; *अयं खवज्ज, भो गोतम, राजन्तेपुरे राजपुरिसानं सन्निपतितानं सन्निसिन्नानं सन्निपतितानं अन्तराकथा उदपादि,* अ॰ नि॰ 1(1).197; *अन्तराकथा उदपादीति अञ्ञिस्सा कथाय अन्तरन्तरे कतरा कथा उप्पज्जीति पुच्छि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.148.

अन्तराकम्म नपुं., बीच वाले समय का कर्म - *ततो पट्ठाय इमेसं उभिन्नम्पि अन्तराकम्मं न कथितं,* अ. नि. अट्ठ. 1.124.

अन्तराकाज पु., दो भारवाहकों के बीच में लटक रहा बोझा, दो भारवाहकों द्वारा ढोया जा रहा वह भार, जो दोनों के मध्य में लटक रहा हो - *एकतोकाजं अन्तराकाजं सीसभारं ... ओलम्बक'न्ति,* चूळव. 258; *अन्तराकाजन्ति मज्झे लग्गेत्वा द्वीहि वहितब्बभारं,* चूळव. अट्ठ. 56.

अन्तराकिलेस पु., आन्तरिक क्लेश, चित्त की सन्तति में विद्यमान अकुशल चित्तवृत्तियां - *यायं अरिया पञ्ञा अन्तरा किलेसं संयोजनं अन्तरा बन्धनं ...,* म. नि. 3.328; *अन्तरकिलेसमेवाति अन्तरे चित्ते जातत्ता सत्तसन्तानन्तोगधताय अब्भन्तरभूतकिलेसमेव,* म. नि. टी. (उप.प.) 3.206.

अन्तरागङ्ग पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक बौद्धविहार का नाम - *अन्तरागङ्गसव्हस्स चुल्लमातिकगामकं,* चू. वं. 44.100.

अन्तरातीत त्रि., अनन्तरातीत का अप., द्रष्ट., अनन्तरातीत के अन्त..

अन्तराधान नपुं., अदृश्य या तिरोहित हो जाना - *तिरोधानन्तराधानपिधानच्छादनानि च,* अभि. प. 51.

अन्तरान्हारु पु., शरीर के अन्दर विद्यमान स्नायु या नस - *यं यदेव तत्थ अन्तरा विलिमंसं अन्तरा न्हारु अन्तरा बन्धनं तं तदेव तिण्हेन ... सञ्छिन्देय्य ...,* म. नि. 3.327.

अन्तरापच्चत्थिक पु., आन्तरिक शत्रु, अपने चित्त के भीतर विद्यमान शत्रु - *अन्तरामलं अन्तराअमित्तो अन्तरासपत्तो अन्तरावधको अन्तरापच्चत्थिको,* महानि. 11.

अन्तरापण पु., कर्म. स. [अन्तरापण], बाज़ार की दो दुकानों के बीच वाला स्थान, बाज़ार, बाज़ार के बीच वाला स्थल - *तमेनं ... मनुस्सकुणपं ... अञ्ञिस्सा कंसपातिया पटिकुज्जित्वा अन्तरापणं पटिपज्जेय्युं,* म. नि. 1.38; *अन्तरापणन्ति आपणानमन्तरे महाजनसंकिण्णं रच्छामुखं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).159; *सुवण्णवण्णं सम्बुद्धं, गच्छन्तं अन्तरापणे,* अप. 1.314.

अन्तरापत्ति स्त्री., कर्म. स. [अन्तरापत्ति], विनय-शिक्षा-पदों में अथवा उनके अन्दर में प्रज्ञप्त आपत्ति या भिक्षु द्वारा किया गया अपराध - *विनये अत्थि वत्थु, ..., अत्थि अन्तरापत्ति, ... तत्थ एकमेको कोट्ठासो, एकमेको धम्मक्खन्धोति वेदितब्बो,* पारा. अट्ठ. 1.23; *अन्तरापत्तीति पटिलातं उक्खिपति, आपत्ति दुक्कटस्सा'ति एवमादिना सिक्खापदन्तरेसु पञ्ञत्ता आपत्ति,* सारत्थ. टी. 96.

अन्तरापरिनिब्बायी पु., निर्धारित अवधि से पूर्व ही परिनिर्वाण को प्राप्त करने वाला, आयु के प्रथमार्द्ध को बिना पार किये ही निर्वाण पाने वाला - *नो चे पञ्चन्नं ओरम्भागीयानं संयोजनानं परिक्खया अन्तरापरिनिब्बायी होति,* स. नि. 3(1).86; अ. नि. 2(2).213; *अन्तरापरिनिब्बायीति यो आयुवेमज्झं अनतिक्कमित्वा परिनिब्बायति सो तिविधो होति,* स. नि. अट्ठ. 3.180; *अन्तरापरिनिब्बायीति उपपत्ति समनन्तरतो पट्ठाय आयुनो वेमज्झं अनतिक्कमित्वा एत्थन्तरे किलेसपरिनिब्बानेन परिनिब्बुतो होति,* अ. नि. अट्ठ. 3.173; *अयं वुच्चतीति अयं एवरूपो पुग्गलो आयुवेमज्झस्स अन्तरायेव परिनिब्बायनतो अन्तरापरिनिब्बायीति वुच्चति,* पु. प. अट्ठ. 48.

अन्तराबन्धन नपुं., शरीर के भीतर वाला स्नायुओं का बन्धन, अस्थिबन्ध - *यं यदेव तत्थ अन्तरा विलिमंसं अन्तरा न्हारु अन्तराबन्धनं तं तदेव तिण्हेन गोविकन्तनेन सञ्छिन्देय्य ...,* म. नि. 3.327.

अन्तराभत्ते अ., सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., भोजन-ग्रहण करने के समय में, भोजन समाप्त करने से पूर्व में - *दानं ददमानो अन्तराभत्ते उय्याने चरितुकामा चरन्तू'ति आह,* जा. अट्ठ. 2.321; *घटसतेन न्हातो विय तेजोधातु ... पत्तञ्च मुखञ्च धोवित्वा अन्तराभत्ते कम्मट्ठानं ... परिभुञ्जित्वा ... गहेत्वा आगच्छति,* दी. नि. अट्ठ. 1.153-54.

अन्तराभव पु., मृत्यु एवं पुनर्जन्म के मध्यवर्ती अस्तित्व की अवस्था, पूर्वशैलीय एवं साम्मितीय बौद्ध शाखाओं की दृष्टि में अन्तरापरिनिब्बायी का पर्यायभूत वचन - *कामभवस्स च रूपभवस्स च अन्तरे अत्थि अन्तराभवोति ? न हेवं वत्तब्बे ...,* कथा. 300; ... *अन्तराभवोति पुट्ठो यस्मा निरयूपगअसञ्ञसत्तूपग- अरूपूपगानं अन्तराभवं न इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति,* कथा. अट्ठ. 202; - **कथा** स्त्री., व्य. सं., कथा. के आठवें वर्ग की दूसरी कथा का शीर्षक, कथा. 300-303.

अन्तरामग्गतो अ., प. वि., प्रतिरू. निपा., बीच रास्ते से ही, पूरा मार्ग पार किये बिना ही - *राजा काले सेनं उय्योजेत्वा अन्तरामग्गतो निवत्तापेति,* अ. नि. 3(2).68.

अन्तरामग्गे अ., सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., मार्ग पर, रास्ते में ही, बीच रास्ते में, मार्ग के बीचो-बीच - *अन्तरामग्गे चोरा निक्खमित्वा एकच्चा भिक्खुनियो अच्छिन्दिंसु, एकच्चा भिक्खुनियो दूसेसुं,* महाव. 112; *सो एकदिवसं न्हानतित्थं न्हत्वा नत्वा आगच्छन्तो अन्तरामग्गे सम्पन्नपत्तसाखं एकं वनप्पतिं दिस्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.3.

अन्तरामरण नपुं., निर्धारित समय के पहले ही बीच में हो जाने वाली मृत्यु, असामयिक मृत्यु - *अन्तरामरणं नत्थि, तेसं निस्सन्दतो मम,* अप. 1.341; *ते तस्स कम्मस्स निस्सन्देन तत्थ तत्थ अन्तरामरणं पापुणिंसु,* उदा. अट्ठ. 236.

अन्तरामल पु., चित्तसन्तति में विद्यमान लोभ, द्वेष एवं मोह जैसी अकुशल मनोवृत्तियां - *तयोमे, भिक्खवे, अन्तरामला अन्तराअमिता अन्तरासपत्ता अन्तरावधका अन्तरापच्चत्थिका,* इतिवु. 60; महानि. 11; *यथा चेते लोभादयो सत्तानं चित्ते उप्पज्जित्वा मलिनभावकरा नानप्पकारसंकिलेसविधायकाति अन्तरामला,* इतिवु. अट्ठ. 241; - **सुत्त** इतिवु. के चौथे वर्ग के नौवें सुत्त का शीर्षक, इतिवु. 60-62.

अन्तरामुत्तक त्रि., बीती हुई प्रवारणा तथा अगले वर्षावास के बीच में खाली पड़ा हुआ या छोड़ा हुआ (निवास) - *तयो मे, भिक्खवे, सेनासनग्गाहा – पुरिमको, पच्छिमको, अन्तरामुत्तको,* चूळव. 207; *अपरज्जुगताय पवारणाय आयतिं वस्सावासत्थाय अन्तरामुत्तको गाहापेतब्बो'ति आह,* चूळव. अट्ठ. 65; *पुरिमिको पच्छिमिको, तथेवन्तरामुत्तको,* विन. वि. 2842.

अन्तराय पु., [अन्तराय], **शा. अ.** विघ्न, बाधा, दुर्भाग्य, मृत्यु, विध्वंस, विनाश, **ला. अ. विनय के विशेष सन्दर्भ में** – उपोसथ एवं पवारणा जैसे सङ्घकर्मों के निष्पादन में उत्पन्न विघ्न या बाधाएं, निम्नलिखित बाधाएं अन्तराय के अन्तर्गत परिगणितः, राजन्तराय, चोरन्तराय, उदकन्तराय, अग्यन्तराय, मनुस्सन्तराय, अमनुस्सन्तराय, वाळन्तराय, सरीसपन्तराय, जीवितन्तराय, ब्रह्मचरियन्तराय - *अन्तरायो च पच्चूहो, विकारो च विकत्यपि,* अभि. प. 765; *इति बालो विचिन्तेति, अन्तरायं न बुज्झति,* ध. प. 286; *अन्तरायन्ति असुकस्मिं नाम काले वा ... मरिस्सामी'ति अत्तनो जीवितन्तरायं न बुज्झतीति,* ध. प. अट्ठ. 2.246; *बोधिसत्तो तस्मिम्पि चिरायन्ते अन्तरायेन भवितब्ब'न्ति सयं गन्त्वा ... अयं सरो ... धनुं गहेत्वा अट्ठासि,* ध. प. अट्ठ. 2.42; ..., *अञ्ञत्र पकतत्तेन, अञ्ञत्र अन्तराया,* चूळव. 79; *अनुभावेन सोसेत्वा, अन्तराये असेसतो,* ध. स. अट्ठ. 2; स. उ. प. के रूप में – अग्य., अदिट्ठ., अमनुस्स., उदक., उद्दिस्सकट., उपक्खट., उपोसथ., उप्पत्त., कम्मट्ठान., खीर., गमन., चोर., जीवित., परिभोग., बाधक., ब्रह्मचरिय., भत्त., भोग., मङ्गल., मनुस्स., रज्ज., राज. आदि के अन्त. द्रष्ट..

अन्तरायकर त्रि., विघ्नकारक, बाधा खड़ी करने वाला, बाधक, अहितकर - *अन्तरायकरो समानो हितानुकम्पी वा तेसं होति अहितानुकम्पी वा'ति? अहितानुकम्पी,* दी. नि. 1.207; *अन्तरायकरोति लाभन्तरायकरो,* दी. नि. अट्ठ. 1.297; *मा मे माता तरन्तस्स, अन्तरायकरा, अहू'ति,* जा. अट्ठ. 4.111; *अम्हाकं एवरूपस्स मन्तस्स अन्तरायकरं पच्चामित्तं गण्हिस्साम,* जा. अट्ठ. 6.224.

अन्तरायकरण नपुं., [अन्तरायकरण], विघ्न या बाधा उत्पन्न करना, बाधक बनना - ... *अनुपगन्त्वा एतस्स अन्तरायं कातुन्ति अन्तरायकरणत्थं नानाकारणेहि संसग्गमाविकत्वा दळ्हं करित्वा पच्छा अन्तरायं करोति,* जा. अट्ठ. 4.52.

अन्तरायाभाव पु., तत्पु. स. [अन्तरायाभाव], किसी प्रकार के विघ्न या बाधा का अभाव - *राजकुमारस्स नामगहणदिवसे लक्खणपाठके ब्राह्मणे पक्कोसापेत्वा ... कुमारस्स अन्तरायाभावं पुच्छि,* जा. अट्ठ. 6.3.

अन्तरायविमोचन नपुं., तत्पु. स. [अन्तरायविमोचन], विघ्नबाधाओं से छुटकारा - *अत्थी'ति सङ्घो आचिक्खि अन्तरायविमोचनं,* म. वं. 35.73; *अन्तराय विमोचनं ति आयुस्ससन्तराय पटिमोचनं अत्थि महाराजा'ति सङ्घो आचिक्खि,* ..., म. वं. टी. 607(ना.).

अन्तरायिक त्रि., अन्तराय से व्यु. [बौ. सं. अन्तरायिक, आन्तरायिक], विघ्न-बाधा लाने वाला, अमङ्गल-कारक, बाधक, रुकावट खड़ी करने वाला - *दारुणो, भिक्खवे, लाभसक्कारसिलोको कटुको फरुसो अन्तरायिको अनुत्तरस्स योगक्खेमस्स अधिगमाय,* स. नि. 1(2).205; *अन्तरायिकोति अन्तरायकरो,* स. नि. अट्ठ. 2.181; *अन्तरायिका आपत्ति जानितब्बा,* परि. 236; *सग्गमोक्खानं अन्तरायं करोन्तीति अन्तरायिका,* पाचि. अट्ठ. 125; *उपसम्पादेन्तेन तेरस अन्तरायिके धम्मे पुच्छितुं,* महाव. 118; - **धम्म** पु., कर्म. स. [आन्तरायिकधर्म], निर्वाण एवं सुखद गतियों की प्राप्ति में बाधक 5 प्रकार के धर्म तथा भिक्षु-उपसम्पदा की प्राप्ति में बाधक 13 प्रकार की अयोग्यताएं - *अन्तरायिकधम्मे वा जानता, निय्यानिकधम्मे पस्सता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).320; *अनुजानामि, भिक्खवे, उपसम्पादेन्तेन तेरस अन्तरायिके धम्मे पुच्छितुं,* महाव. 118; - **टि.** स्वर्ग-प्राप्ति या निर्वाण के साक्षात्कार के मार्ग में 5 प्रकार के अन्तरायिक या बाधक तत्त्व हैं, कम्मन्तरायिक, किलेसन्तरायिक, विपाकन्तरायिक, उपवादन्तरायिक एवं आणावीतिक्कमन्तरायिक के अन्त. द्रष्ट., भिक्षु उपसम्पदा में 13 तथा भिक्षुणी की उपसम्पदा में 24 प्रकार के अन्तरायिक भी उल्लिखित हैं.

अन्तराराम अ., अव्ययी. स., आराम के अन्दर, गांव के भीतर स्थित विहार की ओर - *अन्तरारामन्ति अन्तोगामे विहारो होति, तं गच्छति,* पाचि. अट्ठ. 112; *अनापत्ति समये, ... अन्तरारामं गच्छति, ... आदिकम्मिकस्साति,* पाचि. 138.

अन्तराल नपुं., [अन्तराल], मध्यवर्ती स्थल, बीच वाली जगह; - **पथे** अ., सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., बीच रास्ते में, मार्ग के मध्य में - *अन्तरालपथे येव गुत्तहालकमण्डलो,* चू. वं. 61.12; 66.114.

अन्तरावधक पु., चित्त-सन्तति में विद्यमान वध या विनाश करने वाले मलिन मनोभाव, आन्तरिक रूप में विनाशक तत्त्व - *अन्तरामला अन्तराअमित्ता अन्तरासपत्ता अन्तरावधका अन्तरापच्चत्थिका,* इतिवु. 60; महानि. 11.

अन्तरावास पु., तत्पु. स., आवास की भीतरी क्षेत्र, अन्तःपुर - *कालासोकस्स दसवस्से तम्बपण्णिअन्तरावासे वस्सं एकादसं भवे,* दी. वं. 5.80.

अन्तरावोसान नपुं., आ + √पद से व्यु., क्रि. रू. के साथ प्रयुक्त, बीच में ही छोड़ देना, आधे रास्ते में ही काम की परिसमाप्ति - *भिक्खू न ओरमत्तकेन विसेसाधिगमेन अन्तरावोसानं आपज्जिस्सन्ति,* ..., दी. नि. 2.61; *सम्पुतेजेतीति एतं दुक्करं दुरभिसम्भवन्ति मा सम्मापटिपत्तियं पमादं अन्तरावोसानं आपज्जथ,* ..., उदा. अट्ठ. 310.

अन्तरावोसानगमन नपुं., बीच में ही परिसमाप्ति की प्रवृत्ति - *अन्तरा वोसानगमनं खो पन तथागतप्पवेदिते धम्मविनये परिहानमेतं,* अ. नि. 3(2).132.

अन्तरासंयोजन नपुं., कर्म. स., आन्तरिक बन्धन, मानसिक बन्धन - *यायं अरिया ... अन्तरा संयोजनं अन्तरा बन्धनं सञ्छिन्दति सङ्कन्तति सम्पकन्तति सम्परिकन्तति,* म. नि. 3.328.

अन्तरासपत्त पु., कर्म. स., भीतरी शत्रु, चित्त के अन्दर विद्यमान क्लेशों के रूप में शत्रु, आन्तरिक दुष्प्रवृत्तियां - *अन्तरामला अन्तराअमित्ता अन्तरासपत्ता अन्तरावधका अन्तरापच्चत्थिका,* इतिवु. 60; महानि. 11.

अन्तरासोब्भ पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक क्षेत्र का नाम - *महाकोट्ठं अन्तरासोब्भे, दोणे गल्हरमग्गहि,* म. वं. 25.11; *कत्वा अन्तरासोब्भम्हि देवनामं विहारकं,* चू. वं. 48.4.

अन्तरिका स्त्री., अन्तर से व्यु., मध्यवर्ती क्षेत्र या स्थल, अन्तराल - *अत्थि द्विन्नं निब्बानानं उच्चनीचता हीनपणीतता उक्कंसावको सीमा वा भेदो वा अन्तरिका वाति?,* कथा. 190; *तपोदा द्विन्नं महानिरयानं अन्तरिकाय आदीसु विवरे,* उदा. अट्ठ. 86.7; स. उ. प. के रूप में अग्गळ., अङ्गुल., आसन., झान., ताल., पखुम., फासुल. आदि के अन्त. द्रष्ट..

अन्तरित त्रि., अन्तर + √इ का भू. क. कृ., प्रायः तृ. वि. में अन्त होने वाले पद के साथ कर्म. वा. के रूप में प्रयुक्त [अन्तरित], व्यवहित, विभाजित, दूरीकृत, दूरी में स्थित - *असतिअमनसिकारोति यथा सो पुग्गलो न उपट्ठाति, कुट्टादीहि अन्तरितो विय होति,* अ. नि. अट्ठ. 3.57; *मातापितुस्स अट्ठउसभमत्तेन ठानेन अन्तरिता,* ..., म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.238; *अनेकेहितं भवसहस्सेहि अन्तरितं,* ..., मि. प. 269; *पाकारकुट्टादिअन्तरिकस्स पन पनस्स अपाकटकालोपि अत्थि,* ध. स. अट्ठ. 129; - **त्त** नपुं., अन्तरित का भाव. [अन्तरितत्व], व्यवहित या विभाजित होना या किया जाना - *मुसावादेन अन्तरितत्ता सच्चं सच्चेन न घटीयति,* ..., दी. नि. अट्ठ. 1.68.

अन्तरीप नपुं., [अन्तरीप], जलप्रवाहों के मध्य में अवस्थित भूक्षेत्र, द्वीप, टापू - *दीपोन्तरीपपज्जोतपतिट्ठानिब्बुतीसु च,* अभि. प. 998.

अन्तरीय नपुं., [अन्तरीय], अधोवस्त्र, भीतरी परिधान - *निवासनान्तरीयान्यन्तरमन्तरवासको,* अभि. प. 292.

अन्तरुद्धि / अन्तरुधी स्त्री., संभवतः अन्तवट्टि के स्थान पर प्रयुक्त, अतड़ी, आंत - *दुग्गन्धभावेन पनस्स अन्तरुधीनं निक्खमनकालो विय अहोसि,* ..., जा. अट्ठ. 6.8.

अन्तरुब्भार पु., कर्म. स., भिक्षु-संघ से तात्कालिक निष्कासन, कुछ ही समय के लिये किया गया निलम्बन - *द्वे कथिनुब्भारा अन्तोसीमाय उब्भरिय्यन्ति - अन्तरुब्भारो, सहुब्भारो,* परि. 336; *सुणाति चन्तरुब्भारं, सा होति सवनन्तिका,* विन. वि. 2715.

अन्तरुस्सव पु., कर्म. स., बीच-बीच में आयोजित होने वाले छोटे उत्सव, विशिष्ट अवसर पर आयोजित उत्सव - *छणेसूति आवाहविवाहमङ्गलादीसु अन्तरुस्सवेसु,* पारा. अट्ठ. 2.194; *अन्तरुस्सवेसूति महुस्सवस्स अन्तरन्तरा पवत्तितउस्सवेसु,* सारत्थ. टी. 2.335.

अन्तरुपट्ठान नपुं., कर्म. स., बीच-बीच में या सुनिश्चित अन्तरालों पर की जाने वाली सेवा या देख भाल - *अञ्ञानिपि अन्तरन्तरुपट्ठानानि होन्तियेव,* जा. अट्ठ. 1.222.

अन्तरे अ., सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., क्रि. वि., **क.** भीतर में, अन्दर में - *सो भेरवयक्खरूपं ... तं पातेत्वा दाठानं अन्तरे कत्वा खादितुकामो विय अहोसि,* जा. अट्ठ. 7.202;

ख. अन्तरा के आशय में, बीच रास्ते पर, मार्ग के मध्य में – *तस्मिं अत्थते थेरो – इदं कूटागारं अन्तरे अप्पतिट्ठहित्वा रञ्ञा दिट्ठकालेयेव ... परिनिब्बायि*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.131; ... *पुरे वा पच्छा वा अन्तरे वा अनन्तरे वा . .. धनं देति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प.) 2.11; **ग. ष. वि. में अन्त होने वाले पद के साथ प्रयुक्त**, दो या अनेकों, मध्य में, बीचो-बीच – *द्विन्नं पन नगरानं अन्तरे उभयनगरवासीनम्पि लुम्बिनीवनं नाम मङ्गलसालवनं अत्थि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.63; ... *सावत्थिया च जेतवनस्स च अन्तरे सकटानि मोचयिंसु*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.41; ... *एकसट्ठिया अरहन्तानं अन्तरे पञ्चवग्गियानं अब्भन्तरो ... अगतो*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.53; *अम्हाकं पनन्तरे राजा नाम नत्थि*, ..., जा॰ अट्ठ॰ 2.291; **घ.** साथ में, विषय में, बारे में – ..., *तया किर मम अन्तरे एवं वुत्त'न्ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.238; *अहिंसकमानवो तुम्हाकं अन्तरे दुब्भतीति मञ्ञामाति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प.) 2.235.

अन्तरेन अ॰, अन्तर से व्यु॰, तृ॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, क्रि॰ वि॰ [अन्तरेण], **क.** बीच से होकर, मध्य में, बीच में, कालावधि में – *अन्तरेन हत्थं पवेसेत्वा*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.495 (सिआमी सं॰); **ख. द्वि॰ वि॰ में अन्त होने वाले पद के साथ**, बीच में, मध्य में – *चुतूपपाते असति नेविध न हुरं न उभयमन्तरेन*, स॰ नि॰ 2(2).65; *ये पन उभयमन्तरेना'ति वचनं गहेत्वा अन्तराभवं इच्छन्ति, तेसं* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.19; **ग. ष. वि. में अन्त होने वाले पद के साथ**, बीच में, मध्य में – *सत्तन्नं त्वेव कायानमन्तरेन सत्थं विवरमनुपतती'ति*, दी॰ नि॰ 1.50; ..., *अन्तरेन यमकसालानं उत्तरसीसकं मञ्चकं पञ्ञपेहि*, दी॰ नि॰ 2.104; *समतित्तिको तेलपत्तो अन्तरेन च महाजनकायस्स* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.376; **घ. प. वि. में अन्त होने वाले पदों के साथ प्रयुक्त होने पर**, बिना या वर्जन के अर्थ वाला निपा॰ – *अन्तरेन परोपदेसा सामं येव सच्चानि अभिसम्भुज्झि इच्च एवमादि*, सद्द॰ 3.733; *तु विना नाना अन्तरेन रितेपुथु*, अभि॰ प॰ 1137.

अन्तलिक्ख नपुं॰, [अन्तरिक्ष], आकाश एवं पृथ्वी के बीच वाला प्रदेश, वायुमण्डल, वातावरण, आकाश, नभमण्डल – *अन्तलिक्खं खमादिच्चपथो'ब्भं गगनाम्बरं*, अभि॰ प॰ 45; *आकासो अम्बरं अब्भं अन्तलिक्खं अघं नभं*, सद्द॰ 2.442; *सूरियोव ओभासयमन्तलिक्ख'न्ति*, उदा॰ 71; ..., *यथा सूरियो अब्भुग्गतो अत्तनो पभाय अन्तलिक्खं ओभासेन्तोव अन्धकारं विधमेन्तो तिट्ठति*, उदा॰ अट्ठ॰ 41; *यानीध भूतानि समागतानि, भुम्मानि वा यानि च अन्तलिक्खे*, सु॰ नि॰ 224; – **ग** त्रि॰, [अन्तरिक्षग], अन्तरिक्ष में गमन करने वाला, आकाशमार्ग पर चलने वाला – *तमोनुदा ते पन अन्तलिक्खगा*, अ॰ नि॰ 1(1).244; *अन्तलिक्खगाति आकासङ्गमा*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.193; – **चर** त्रि॰, [अन्तरिक्षचर], आकाशमार्ग पर विचरण करने वाला – *अन्तलिक्खचरो आसिं, चक्कवत्ती महब्बलो*, बु॰ वं॰ 14.11; *अन्तलिक्खचरोति चक्करतनं पुरक्खत्वा आकासचरो*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 235; *अन्तलिक्खचरो पासो य्वायं चरति मानसो'ति*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 185; – **भवन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तरिक्षभवन], आकाश में स्थित भवन – *नान्तलिक्खभवनेन, नाङ्गपुत्तपिनेन वा*, जा॰ अट्ठ॰ 3.191.

अन्तलिक्खेचर त्रि॰, अन्तलिक्खचर का अप॰ [अन्तरिक्षचर], अन्तरिक्ष या आकाश में विचरण करने वाला – ... *मनोमया पीतिभक्खा सयंपभा अन्तलिक्खेचरा सुभट्ठायिनो चिरं दीघमद्धानं तिट्ठन्ति*, अ॰ नि॰ 3(2).50.

अन्तलुत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तलुप्ति], अन्तिम वर्ण का लोप – *दिसा स्वानस्वान्तलुत्ति च*, सद्द॰ 3.857.

अन्तलोप पु॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तलोप], अन्तिम वर्ण (स्वर या व्यञ्जन) का लोप – *दिसा स्वानस्वान्तलोपो च*, क॰ व्या॰ 601.

अन्तवन्तु त्रि॰, अन्त से व्यु॰ [अन्तवत्], वह, जिसका अन्त या विनाश अवश्य होता है, परिसीमित, वह, जिसका कोई न कोई छोर या किनारा रहता है, सुनिश्चित प्रमाण वाला, असर्वगत – *अन्तवा अयं लोको परिवटुमो*, दी॰ नि॰ 1.19; *अन्तवा अत्ता होति*, दी॰ नि॰ 1.26; *अन्तवा लोको, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति*, उदा॰ 145; *अन्तवाति सपरियन्तो परिवटुमो परिच्छिन्नपमाणो, न सब्बगतोति अत्थो*, उदा॰ अट्ठ॰ 277.

अन्तवग्ग पु॰, स॰ नि॰ के खन्धसंयुत्त के 11वें वग्ग का नाम, स॰ नि॰ 2(1).141-42.

अन्तवट्टि स्त्री॰, कर्म॰ स॰, उदर के भीतर विद्यमान आंत या अंतड़ी – ... *एकवीसतिया ठानेसु ओभग्गा अन्तवट्टि*, विभ॰ अट्ठ॰ 229; ... *अन्तवट्टीहि रुक्खं परिक्खिपित्वा लोहितपञ्चङ्गुलिकानि करोम*, जा॰ अट्ठ॰ 3.138.

अन्तवण्ण पु॰, ब॰ स॰ [अन्त्यवर्ण], सबसे अधम जाति में उत्पन्न मनुष्य, अन्तिम वर्ण में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति – *सुद्दोन्तवण्णो वसलो, कंकिण्ण मागधादयो*, अभि॰ प॰ 503.

अन्तविरहित त्रि., तत्पु. स. [अन्तविरहित], वह, जिसका कोई ओर-छोर न हो, अनन्त, अप्रमाण, असीम - ..., *अन्तविरहिते संसारे भवादीसु सत्ते जवापेतीति अविज्जा,* उदा. अट्ठ. 34.

अन्तसञ्ञी त्रि., ब. स. [अन्तसंज्ञिन्], वह, जो धर्मों को अन्त वाला अथवा परिसीमित मानता हो - *यथासमाहिते चित्ते अन्तसञ्ञी लोकस्मिं विहरति,* दी. नि. 1.19; *अवड्ढेत्वा तं लोको'ति गहेत्वा पटिभागनिमित्तं चक्कवाळपरियन्तं अन्तसञ्ञी लोकस्मिं विहरति,* दी. नि. अट्ठ. 1.98.

अन्तसर पु., कर्म. स. [अन्त्यस्वर], पद के अन्त में आया हुआ स्वरवर्ण - *आकारन्तानं धातूनं अन्तसरस्स आय-आदेसो होति ...,* क. व्या. 594.

अन्तातीत त्रि., अच्चन्त के लिये प्रयुक्त पर्यायभूत वचन [अन्तातीत], वह, जिसने अन्त का अतिक्रमण कर लिया है, अविनाशी - *अच्चन्तन्ति अन्तातीतं अविनासधम्मं,* जा. अट्ठ. 5.453.

अन्तानन्त त्रि., द्व. स. [अन्तानन्त], **क.** अन्तवाला एवं अन्त से रहित, **ख.** अन्त एवं अनन्त होने की अवस्था - *यं आगम्म यं आरब्भ एके समणब्राह्मणा अन्तानन्तिका अन्तानन्तं लोकस्स पञ्ञपेन्ति,* दी. नि. 1.19; - **वाद** पु., तत्पु. स. [अन्तानन्तवाद], लोक एवं आत्मा के अन्तवान् एवं अन्तरहित होने के तथ्य को प्रतिपादित करने वाला बुद्धकालीन सिद्धान्त - *अन्तानन्तिकाति अन्तानन्तवादा,* दी. नि. अट्ठ. 1.98; - **न्तिक** त्रि., अन्तानन्त से व्यु. [अन्तानन्तिक], वह, जो लोक एवं आत्मा आदि धर्मों की अन्तवत्ता एवं अनन्तता का प्रतिपादन करता है, अन्तानन्तवादी बुद्धकालीन धर्माचार्य - *यं आगम्म यं आरब्भ एके समणब्राह्मणा अन्तानन्तिका अन्तानन्तं लोकस्स पञ्ञपेन्ति, अन्तानन्तिकाति अन्तानन्तवादा,* दी. नि. अट्ठ. 1.98.

अन्तावसान नपुं., तत्पु. स. [अन्त्रावसान], आंतो का छोर या किनारा, अंतड़ियों के शिरे - *पक्कासयो नाम हेट्ठा नाभिपिट्ठिकण्टकमूलानं अन्तरे अन्तावसाने उब्बेधेन अट्ठङ्गुलमत्तो वंसनळकब्भन्तरसदिसो पदेसो,* खु. पा. अट्ठ. 45.

अन्ति / अन्तिम अ., अन्त से व्यु., क्रि. वि. [अन्ते], समीप में, निकट में, पास में, उपस्थिति में - *सुधाविवादेन तवन्तिमागता, तं मं सुधाय वरपञ्ञ भाजय,* जा. अट्ठ. 5.394; *तवन्तिमागताति तव सन्तिकं आगता,* जा. अट्ठ. 5.395.

अन्तिक त्रि., अन्त से व्यु. [अन्तिक], समीपवर्ती, निकटवर्ती, पास वाला - *अन्तिकस्स नेदो,* क. व्या. 266.

अन्तिकभाव पु., कर्म. स. [अन्तिकभाव], सामीप्य, निकटता - *उदकस्स अन्तिकभावेन ओदकन्तिकं,* खु. पा. अट्ठ. 174.

अन्तिके अ., अन्तिक से व्यु., सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., **प्रायः ष. / सप्त वि. में अन्त होने वाले पद के साथ प्रयुक्त** [अन्तिके], समीप में, निकट में, पास में - *एहि गच्छाम पितु ममन्तिके, एसोव ते एतमत्थं पवक्खती'ति,* जा. अट्ठ. 7.156; *जीवञ्च नं गहेत्वान, आनयेहि ममन्तिके'ति,* जा. अट्ठ. 4.247; *तस्मिं रुक्खे निब्बत्तदेवताय, सन्तिके पुत्तधीतुयसधनादीसु यं यं इच्छति, तं ते पत्थेन्तं,* जा. अट्ठ. 1.252; पाठा. सन्तिके; *एवं सदेवका लोका, ओसरन्तु तवन्तिके,* बु. वं. 2.186; तुल. अन्तिकं, सन्तिके.

अन्तिम[1] त्रि., अन्त से व्यु. [अन्तिम], **क.** अन्त में आया हुआ, **ख.** सबसे निचला, **ग.** सबसे अधिक निकटवर्ती - *अनित्थन्तो परियन्तो पन्तो च पच्छिमान्तिमा,* अभि. प. 714; *सरीरञ्च अन्तिमं धारेति, पत्तो च सम्बोधिमनुत्तरं सिवं,* सु. नि. 482; *अच्छिन्दि भवसल्लानि, अन्तिमोयं समुस्सयो,* ध. प. 351; *अन्तिमे वत्तमानम्हि, सो निवासो भविस्सति,* दी. नि. 2.212; *अन्तिमे वत्तमानम्हीति अन्तिमे भवे वत्तमाने,* दी. नि. अट्ठ. 2.298; *उभिन्नं भावितत्तानं, सरीरन्तिमधारिनं'न्ति,* सं. नि. 1(1).74; *धारेति अन्तिमं देहं, जेत्वा मारं सवाहिनि'न्ति,* इतिवु. 37; - **गन्धन** त्रि., कुल में सबसे निकृष्ट या अधम - *तं कुल्लवत्तं अनुवत्तमानो, माहं कुले अन्तिमगन्धनो अहुं,* जा. अट्ठ. 4.31; *माहं कुले अन्तिम गन्धनो अहुन्ति अहं अत्तनो कुले सब्ब पच्छिमको चेव कुलपलापो च मा अहुन्ति सल्लक्खेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.31; - **जीविक** त्रि., ब. स. [अन्तिमजीविक], जीविका उपार्जन के निकृष्ट साधनों के सहारे जीने वाला - *सा एवमाह ... पाटलिपुत्ते गणिका रूपूपजीविनी अन्तिमजीविका,* मि. प. 127; - **देहधर** त्रि., अन्तिम देह या शरीर को धारण करने वाला - *अहमस्मि, भिक्खवे, ब्राह्मणो याचयोगो सदा पयतपाणि अन्तिमदेहधरो अनुत्तरो भिसक्को सल्लकत्तो,* इतिवु. 73; - **देहधारी** त्रि., उपरिवत् - *खीणासवो अन्तिमदेहधारी, तथागतो अरहति पूरळासं,* सु. नि. 475; *यो होति भिक्खु अरहं कतावी, खीणासवो अन्तिमदेहधारी,* स. नि. 1(1).16; *सो वुत्थवासो परिपुण्णमानसो, खीणासवो अन्तिमदेहधारी,* जा. अट्ठ. 1.183; - **पच्छिमगतिक** त्रि., ब. स. [अन्तिमपश्चिमगतिक], सबसे निकृष्ट या अधम अवस्था वाला, निकृष्टतम स्थिति

में आपतित - ... *अताणा असरणा असरणीभूता अनप्पसोकातुरा अन्तिमपच्छिमगतिका एकन्तसोकपरायणा ...,* मि॰ प॰ 149; - **पुरिस** पु॰, कर्म॰ स॰ [अन्तिमपुरुष], **क.** कुल का अन्तिम व्यक्ति, **ख.** सबसे घटिया या अधम मनुष्य - ..., *मा खो मे त्वं अन्तिमपुरिसो अहोसि,* म॰ नि॰ 2.273; *तस्सायं अनुत्तानपदत्थो ... पुरिसन्त अन्तिमपुरिस ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.180; - **भव** पु॰, कर्म॰ स॰ [अन्तिमभव], अन्तिम जन्म - *सोयं अन्तिमभवो अनुप्पत्तो परिपक्कं बोधिञाणं छहि वस्सेहि बुद्धो ... अग्गपुग्गलो,* मि॰ प॰ 266; - **वत्थु** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अन्तिमवस्तु], **शा॰ अ॰** अन्तिम मामला, **ला॰ अ॰** गम्भीरतम अपराध, पाराजिक आपत्ति - *अन्तिमवत्थुं अज्झापन्नको पटिजानाति,* महाव॰ 151; *अन्तिमवत्थुना आसि भूतत्था सङ्घमज्झगा,* म॰ वं॰ 37.38; *सङ्घमज्झगा ति पाराजिकावत्थुवीतिक्कमवसेन भूतत्था सच्चत्था अन्तिमवत्थुना चोदना विनिच्छय करणत्थाय सङ्घमज्झं गता आसि अहोसीति अत्थो,* म॰ वं॰ टी॰ 641(ना॰); - **समुस्सय** पु॰, कर्म॰ स॰, अन्तिम संग्रह या सञ्चय, अन्तिम देह - *अन्तिमसमुस्सयमत्तावसेसं दुक्खं अकासीति वुत्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).94; - **सरीरधारिता** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, शरीर को अन्तिम बार धारण करना - ..., *तेन संसारकारणसमुच्छेदो अन्तिमसरीरधारिता, ञाणदस्सिताय सब्बगुणसम्भवो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.124; - **सारीर** त्रि॰, ब॰ स॰, अपने अन्तिम शरीर को धारण करने वाला - *स वे अन्तिमसारीरो,* ध॰ प॰ 352; *स वे अन्तिमसारीरोति एस कोटियं ठितसरीरो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.320; - **सेय्या** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अन्तिमशय्या], अन्तिम शय्या, मृत्यु की शय्या - *यदा अन्तिमसेय्याय जरारोगाभिपीळितो,* सद्धम्मो॰ 278; - **मण्डल** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अन्तिममण्डल], सबसे अन्दर वाला मण्डल, सबसे छोटा मण्डल या क्षेत्र, अनेक क्षेत्रों के मध्य में अवस्थित सभी के भीतर का क्षेत्र - *जनपदचारिकं चरन्ता च महामण्डल मज्झिममण्डल अन्तिममण्डल इमेसं तिण्णं मण्डलानं अञ्ञतरस्मिं मण्डले चरन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.150; *तत्थ अन्तिममण्डलन्ति, खुद्दकमण्डलं, इतरेसं वा मण्डलानं अन्तोगधत्ता अन्तिममण्डलं, अब्भन्तरिममण्डलन्ति वुत्तं होति,* सारत्थ॰ टी॰ 1.396.

अन्तीयति √अन्त के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बांधा जाता है - *अन्तीयति बन्धीयति अन्तगुणेना ति अन्तं,* सद्द॰ 2.360.

अन्तुरेळि पु॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का के एक प्राचीनकालीन ग्राम का नाम - *अन्धकारं अन्तुरेळिं बालवं द्वारनायकं,* चू॰ वं॰ 46.13.

अन्ते अ॰, क्रि॰ वि॰ [अन्ते], पास में, समीप में, प्रायः स॰ उ॰ प॰ में पू॰ प॰ के रूप में प्राप्त - *एत्थ अन्ते वसतीति अन्तेवासी,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.36; *सो गेहं पविसित्वा अन्तोउम्मारे ठत्वा दोवारिकं पक्को सापेत्वा, ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.335; पाठा॰ अन्तो.

अन्तेपुर / अन्तोपुर नपुं॰, [अन्तःपुर], **शा॰ अ॰** नगर का भीतरी भाग, भीतरी नगर, **ला॰ अ॰ क.** राजकीय प्रासाद, शाही महल - *सो साकियानं विपुलं जनेत्वा पीतिं, अन्तेपुरम्हा निग्गमा ब्रह्मचारी,* सु॰ नि॰ 700; *रञ्ञो अन्तेपुरे आसिं, गोपको अभिसम्मतो,* अप॰ 1.185; *सारथि विपस्सिस्स कुमारस्स पटिस्सुत्वा ततोव अन्तेपुरं पच्चनिय्यासि,* दी॰ नि॰ 2.20; *कारापिया यन्तु अन्तेपुरन्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.404; **ख.** प्रासाद का वह भाग, जहां रानियां रहती हैं, रनिवास - *इत्थागारं तु ओरोधो सुद्धन्तोन्तेपुरं पि च,* अभि॰ प॰ 215; *बहिपि अन्तेपुरे रक्खा सुसंविहिता अहोसि,* उदा॰ 90; *अन्तेपुरेति इत्थागारस्स सञ्चरणट्ठानभूते राजगेहस्स अब्भन्तरे यत्थ राजा न्हानभोजनसयनादि करोति,* उदा॰ अट्ठ॰ 150; **ग.** राजा की रानियां, रानियों का समूह - *तत्थ महाजने आगते राजापि अगमासि सद्धिं अन्तेपुरेन,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.57; - **कथा** स्त्री॰, विन॰ वि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, विन॰ वि॰ 1177-1183; - **जन** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तःपुरजन], राजा के महल में रहने वाले लोग - *अत्थस्स छत्तचामरादिहत्थो परिजनो चेव अन्तेपुरजनो च ततो नानाकारक ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.190; - **द्वार** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तःपुरद्वार], राजा के महल का द्वार, अन्तःपुर का द्वार - *राजा पसेनदि ... निक्खमित्वा अन्तेपुरद्वारा पठमं रथविनीतं अभिरुहेय्य,* म॰ नि॰ 1.206; - **पालक** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तःपुरपालक], राजा के अन्तःपुर का रक्षक, राजप्रासाद का रक्षक - *सो सपिवारो ... नागदन्तकेसु ओलग्गिते अन्तेपुरपालके च ... भाजनानि भिन्दित्वा ... रतनघरद्वारानि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.286; - **प्पवेसन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, राजप्रासाद या अन्तःपुर में प्रवेश - *अपिच अन्तेपुरप्पवेसने वुत्तादीनववसेनपेत्थ अत्थो वेदितब्बो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.200; - **सिक्खापद** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, **क.** अन्तःपुर से सम्बन्धित विनय शिक्षापद, **ख.** पाचि॰ के 9वें वर्ग के पहले सुत्त का शीर्षक, पाचि॰ 209-213.

अन्तेपुरिका स्त्री॰, अन्तेपुर से व्यु॰ [अन्तःपुरिका], राजा के रनिवास में रहने वाली नारी - *ततो सोळससहस्सा अन्तेपुरिका*

तात महापदुमकुमार, ..., ... महाविरवं विरविंसु, जा॰ अट्ठ॰ 4.170; *तत्थ रूपूपजीविनियो मातुगामा अन्तेपुरिकादयो च सप्पिफाणितं नाम पिवन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 422; – **कपारुत** नपुं., तत्पु॰ स॰, अन्तःपुर में रहने वाली नारियों का घूंघट – *तत्थ यं किञ्चि सेतपटपारु तं ... अन्तेपुरिकपारुतं ... सब्बमेतं गिहिपारुतं नाम ... यथा च अन्तेपुरिकायो अक्खितारकमत्तं दस्सेत्वा ओगुण्ठिकं पारुपन्ति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 56.

अन्तेपुरित्थी स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तःपुरस्त्री], राजा के रनिवास में रहने वाली नारी – *रञ्ञा थेरगुणं सुत्वा रञ्ञो अन्तेपुरित्थियो,* म॰ वं॰ 14.46.

अन्तेवासी पु॰, [अन्तेवासिन], **शा. अ.** स्वामी या आचार्य के समीप में बसने वाला, **ला. अ.** शिष्य, शिशिक्षु, सेवक, सहायक, परिचारक – *सोत्थियो छन्दसो सो, अथसिसाअन्तेवासिनो,* अभि॰ प॰ 408; *अमोघो तुय्हमोवादी, अन्तेवासिम्हि सिक्खितो ति,* थेरगा॰ 334; *आहरियिस्स ति घरं गन्त्वा अन्तेवासिं आणापेसि,* महाव॰ 293; ... *राजागारके एकरत्तिवासं उपगच्छि सद्धिं अन्तेवासिना ब्रह्मदत्तेन माणवेन,* दी॰ नि॰ 1.2; *अञ्ञदेव आचरियो अन्तेवासिस्स भासति तं तदेवस्स अन्तेवासी अब्भनुमोदति,* म॰ नि॰ 2.317; *एत्थ अन्ते वसतीति अन्तेवासी समीपचारो सन्तिकावचरो सिस्सोति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.36; तुल॰ अन्तेवासिक.

अन्तेवासिक पु॰/स्त्री॰, [अन्तःवासिक], शिष्य, शिशिक्षु – *सन्तिके सिप्पुग्गण्हनको अन्तेवासिको नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.140; *अन्तेवासिको आचरियम्हि पितुचित्तं उपट्ठापेस्सति,* महाव॰ 68; *अन्तेवासिकं वा सद्धिविहारिकं वा न सम्मा वत्तन्तं निक्कड्ढति वा निकड्ढापेति वा,* पाचि॰ 67; *यथा अन्तेवासिकस्स आचरियो अत्थि, ...,* मि॰ प॰ 250; *सम्मा पटिपन्ने अन्तेवासिके ये आचरियानं पञ्चवीसति आचरियगुणा,* मि॰ प॰ 105; – **ता** स्त्री॰, अन्तेवासिक का भाव॰ [अन्तेवासिकता], शिष्यत्व, शिशिक्षुत्व, अधीनता – ..., *ते महल्लककालेपि अन्तेवासिकताय माणवकात्वेव वुत्ता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.41; – **माणव** पु॰, कर्म॰ स॰, युवा ब्राह्मण-शिष्य – *तेसु पुरोहितस्स अन्तेवासिकमानवो पण्डितो ब्यत्तो आचरियं आह,* जा॰ अट्ठ॰ 1.328; पाठा॰ अन्तेवासिकमानव; – **कम्यता** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, शिष्य प्राप्त करने की कामना, शिष्य बनाने की इच्छा – ..., *एवमस्स – अन्तेवासिकम्यता नो समणो गोतमो एवमाहा ति,* दी॰ नि॰ 3.40; *अन्तेवासिकम्यताति अन्तेवासिकम्यताय, अम्हे अन्तेवासिके इच्छन्तो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.24; ..., *न पक्खहेतु, न अन्तेवासिकम्यताय, अथ खो अनुकम्पाय ... धम्माभिसमयो ... माणवकसतानन्ति,* मि॰ प॰ 178-79; – **वत्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तेवासिकव्रत], महाव॰ के महाखन्धक में अन्तर्भूत एक खण्ड का शीर्षक, जिसमें भिक्षु-शिष्यों के कर्तव्यों का विवरण है; महाव॰ 73-77; – **वास** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अन्तेवासिकवास], शिष्य के समान जीवनवृत्ति – ..., *अन्तेवासिकवासो विय भविस्सति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 11; – **सिका** स्त्री॰, शिष्या – *कथञ्हि नाम अन्तेवासिका आचरियेसु न सम्मा वत्तिस्सन्ती ति,* चूळव॰ 375; – **कामिसेक** पु॰, तत्पु॰ स॰, शिष्य के रूप में अभिषेक – *ये एत्थ सत्थु सम्मुखा अन्तेवासिकाभिसेकेन,* दी॰ नि॰ 2.115; *ये एत्थाति ये तुम्हे एत्थ सासने सत्थारा सम्मुखा अन्तेवासिकाभिसेकेन अभिसिता, ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 162; – **सिवास/सीवास** पु॰, तत्पु॰ स॰, शिष्य के समान जीवन-दशा, शिष्यत्व – *मा भवं, उदायि, आचरियो हुत्वा अन्तेवासीवासं वसी ति,* म॰ नि॰ 2.241; *मानवोति अन्तेवासिवासं अनतीतभावेन वुच्चति, जातिया पन महल्लको,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.126; तुल॰ अन्तेवासिकवास; – **सूपद्दव** पु॰, तत्पु॰ स॰, शिष्य के ऊपर आया हुआ सङ्कट या विपत्ति – ... *आचरियूपद्दवो होति, एवं सन्ते अन्तेवासूपद्दवो होति,* ..., म॰ नि॰ 3.158.

अन्तो अ॰, क्रि॰ प॰ के साथ उप॰ की भांति प्रयुक्त, सम्बन्धसूचक अ॰ [अन्तर], 1. क्रि॰ वि॰, बीच में, मध्य में या अन्दर में, भीतर में – *अन्तरेनन्तरा अन्तो,* अभि॰ प॰ 1150; *अन्तो चे, ... वुट्ठं वहिपक्कं, सामं पक्कं तञ्चे परिभुञ्जेय्य, आपत्ति द्विन्नं दुक्कटानं,* महाव॰ 287; *तस्मा कत्वा पुरं अन्तो सीमं बन्धथसज्जुकं,* म॰ वं॰ 15.183; 2. क्रि॰ प॰ के साथ उप॰ के रूप में, **क. ष. वि. में अन्त होने वाले पदों के साथ** में – *अन्तो अस्स वसन्तीति अस्स पुग्गलस्स अन्तो अब्भन्तरे चित्ते वसन्ति पवत्तन्ति,* स॰ नि॰ टी॰ 3.34; *त्यास्स अन्तो वसन्ति, अन्तरस्स ... अकुसला धम्माति,* स॰ नि॰ 2(2).139; *अनन्तेवासिकन्ति अन्तो वसनककिलेसविरहितं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.46; *त्यस्स अन्तो वसन्ति अन्वासवन्ति पापका अकुसला धम्माति,* महानि॰ 10; *अन्तो वसन्तीति अब्भन्तरे चित्ते निवसन्ति,* महानि॰ अट्ठ॰ 52; **ख. द्वि. वि. में अन्त होने वाले पदों के साथ** – *सो तं सत्ताहं अन्तो सन्निवत्तं करोति,* महाव॰ 204; **ग. अव्ययी. स. के पू. प. के रूप में प्रायः सप्त. वि., द्वि. वि. तथा प. वि. में अन्त होने वाले नामपदों के साथ प्रयुक्त** – *तस्मिं समये अन्तोअटवियं चोरा मनुस्से विलुम्पित्वा पलायिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.294; *निच्चले बुद्धे ... योजनसतिके*

अन्तो अवीचिम्हि योजनसतुब्बेधमेवस्स सरीरं निब्बत्ति, ध. प. अट्ठ. 1.86; *थेरो नासाय तेलं आसिञ्चन्तो निसिन्नकोव आसिञ्चित्वा अन्तोगामं पाविसि,* ध. प. अट्ठ. 1.6; **ग.3.** यत्र-तत्र संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त, पु., अन्दर, भीतर, भीतरी भाग - *सच्चे इमस्स कायस्स अन्तो बाहिरको सिया,* जा. अट्ठ. 1.151; *अन्तोपि सो होति पसन्नचित्तो, पारं समुद्दस्स पसन्नचित्तो,* जा. अट्ठ. 4.194; - **अमच्च** पु., तत्पु. स., आन्तरिक मन्त्री, विश्वासपात्र मन्त्री - *अन्तो अमच्चेन एकेन कारापितं विहारं आणालङ्कारसद्धम्मधजमहा-धम्मराजगुरुथेरस्स अदासि,* सा. वं. 122(ना.); - **अरुण** पु., तत्पु. स., सूर्यास्त होने से पूर्व का समय, सूर्यास्त होने तक का समय - *तेसु पातरासभत्तं ..., इतरं मज्झन्हिकतो उद्धं अन्तोअरुणेन,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).109; - **आराम** पु., तत्पु. स. [अन्तराराम], आराम का भीतरी भाग - *अज्झारामो नाम परिक्खित्तस्स आरामस्स अन्तो आरामो,* पाचि. 216; - **अवसथ** पु., तत्पु. स., किसी भी आवासीय भवन का भीतरी भाग - *अज्झावसथो नाम परिक्खित्तस्स आवसथस्स अन्तो अवसथो,* पाचि. 216.

अन्तोउट्ठितससन नपुं., कर्म. स. [अन्तरुत्थितश्वसन], भीतर से उठी हुई श्वांस-प्रक्रिया - *एतेसु द्वीसु ... अन्तो उट्ठितससनं अस्सासो,* सद्द. 2.399.

अन्तोउदरगत त्रि., तत्पु. स., पेट के भीतर तक जा चुका, उदर में पहुंचा हुआ - *हदयन्तरनिस्सिता अन्तोउदरगतापि दानवं अतिचरि, एवं अतिचरन्ति,* जा. अट्ठ. 5.452.

अन्तोकरण नपुं., [अन्तःकरण, भिन्नार्थक], अन्दर में अन्तर्भूत कर लेना, अपने भीतर कर लेना, अन्तर्निवेशन - *अन्तोकरणत्थो हि अयं आकारो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).66; ध. प. अट्ठ. 95.

अन्तोकसम्बु त्रि., तत्पु. स., **शा. अ.** भीतर में अपवित्र या दूषित, **ला. अ.** आन्तरिक क्लेशों से मलिन - *अन्तोकसम्बु सङ्किलिट्ठो, कुहनं उपनिस्सितो,* स. नि. 1(1).193; *अन्तोकसम्बूति अन्तो किलेसपूतिसभावेन पूतिको,* स. नि. अट्ठ. 1.204.

अन्तोकुच्छि स्त्री., तत्पु. स., पेट की कोंख, उदर का कोठा, पेट - *अन्तोकुच्छि विपरिवत्तमाना महारवं रवि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).176; *अन्तोघरे कुसूले च कोट्ठोन्तोकुच्छियं प्यथ,* अभि. प. 862; *हत्थिनो अन्तोकुच्छियं सट्ठि पुरिसा अपरापरं चङ्कमन्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.112; - **गत** त्रि., तत्पु. स., मां की कोख में गया हुआ या विद्यमान - *तिरोकुच्छिगतन्ति अन्तोकुच्छिगतं,* दी. नि. अट्ठ. 2.25.

अन्तोकोट्ठागारिक त्रि., ब. स., अपने पास धन-धान्य का संग्रह करने वाला - *अन्तोकोट्ठागारिका इमे समणा सक्यपुत्तिया, सेय्यथापि राजा ... बिम्बिसारो'ति,* पारा. 375; *अन्तोकोट्ठागारिकाति अब्भन्तरे संविहितकोट्ठागारा,* पारा. अट्ठ. 2.262.

अन्तोगत त्रि., [अन्तर्गत], **शा. अ.** बीच में या अन्दर में गया हुआ, अन्दर आया हुआ, **ला. अ.** भीतर में या आन्तरिकरूप में केन्द्रित, बाहर की ओर नहीं बिखरा हुआ, अविक्षिप्त - *ततो त्वं, मोग्गल्लान, पच्छापुरेसञ्ञी चङ्कमं अधिट्ठहेय्यासि अन्तोगतेहि इन्द्रियेहि अबहिगतेन मानसेन,* अ. नि. 2(2).225; *अन्तोगतेहि इन्द्रियेहीति बहि अविक्खित्तेहि अन्तो अनुपविट्ठेहेव पञ्चहि इन्द्रियेहि,* अ. नि. अट्ठ. 3.175; *अन्तमसो पत्तपरियापन्नमत्तम्पीति ... पत्तस्स अन्तोगतं द्वत्तिकटच्छुभिक्खामत्तम्पि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).289; *झानस्स वड्ढितस्सन्तो-गतं रूपं तु योगिना,* अभि. अव. 1091.

अन्तोगतं अ., अव्ययी. स., अन्दर ही अन्दर, मन में, वाणी के प्रयोग के बिना - *भवन्ती'ति इमं गाथं महासत्तो अन्तोगतमेव भासति,* जा. अट्ठ. 5.198.

अन्तोगध त्रि., [बौ. सं. अन्तोगत, अन्तर्गत], अपने अन्दर में ग्रहण किया हुआ, अन्तःसन्निविष्ट, अन्तःस्थित, बीच में या मध्य में आया हुआ - *अन्तग्गते तु परियापन्नं अन्तोगधोगधा,* अभि. प. 742; *तथा हि तं दुक्खसच्चपरियापन्नत्ता दुक्खे अन्तोगधं, दुक्खसच्चञ्चस्स ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).233; ..., *अन्तोगधावास्स कुसला धम्मा ये केचि विज्जाभागिया,* म. नि. 3.138; *अन्तोगधावास्साति तस्स भिक्खुनो भावनाय अब्भन्तरगताव होन्ति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.105; *अन्तोगधानं पभेदो, उपमातो चतुक्कतो,* विभ. अट्ठ. 77; - **नियम** त्रि., ब. स., वह, जिसके अन्तर्गत नियम रहते हों, नियमों या नियन्त्रणों का सङ्केतक - *तेनेतं लक्खणं अन्तोगधनियमं इध पटिच्चसमुप्पादस्स वुत्तन्ति दट्ठब्बं,* उदा. अट्ठ. 32; ... *अन्तोगधनियमेहि वचनेहि अभिहितं मुञ्चित्वा अञ्ञो पच्चयभावो नाम अत्थि,* उदा. अट्ठ. 34; - **नियमता** स्त्री., अन्तोगध-नियम का भाव., नियम का सङ्केतक होना - *इमस्स उप्पादा एव, न निरोधा'ति, अन्तोगधनियमता दस्सिता,* उदा. अट्ठ. 38; - **साम्यत्थत्त** नपुं., भाव., ष. वि. के स्वामी अर्थ को

सूचित करना, स्वामी अर्थ को अपने अन्तर्गत रखना – *अन्तगधसम्पदानत्थत्ता अन्तोगधसाम्यत्थत्ता पन ममको इच्चेव पञ्जति वत्तब्बा सिया,* सद्द॰ 1.294; – **हेतुअत्थ** त्रि॰, प्रेर॰ अर्थ को सूचित करने वाला या उसका सङ्केतक – *ओभाससीति वा अन्तोगधहेतुअत्थवचनं, ओभासेसीति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 10.

अन्तोगेहगत त्रि॰, तत्पु॰ स॰, घर के अन्दर लाया हुआ, घर के भीतर पहुंचा हुआ – ... *कुमुदभण्डिका नाम धञ्ञजाति मासलूना अन्तोगेहगता होति,* मि॰ प॰ 270.

अन्तोगेहप्पवेसन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, घर के भीतर में प्रवेश करना या प्रवेश – *अन्तोगेहपवेसनस्सेव हि अयं दोसो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.21.

अन्तोगेहाभिमुख त्रि॰, ब॰ स॰, घर के अन्दर की ओर अपना मुख किया हुआ व्यक्ति – *तस्मिं खणे मट्ठकुण्डली अन्तोगेहाभिमुखो निपन्नो होति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.17.

अन्तोघर नपुं॰, अव्ययी॰ स॰, घर का भीतरी भाग, भीतरी प्रकोष्ठ – *अन्तोघरे कुसूले च कोट्ठोन्तो कुच्छियं प्यथ,* अभि॰ प॰ 862; *आमन्तयि अनुलादेविं सह अन्तोघरे जने,* दी॰ वं॰ 12.82; – **चारी** त्रि॰, घर के अन्दर चलने-फिरने वाला, घर के साथ सम्बद्ध – *राजा अन्तोघरचारिनो मणिं परियेसित्वा देथा'ति बन्धापेसि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.129; – **जन** पु॰, तत्पु॰ स॰, घरेलू लोग, घर के लोग – *अथ देवेसु च मनुस्सेसु च ... देवता ... समचिन्तेसुं ... नाम घरसामिको अन्तोघरजनानं, गामसामिको गामवासीनं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 97.

अन्तोजटा त्रि॰, ब॰ स॰, आन्तरिक रूप में उलझनों से उलझा हुआ, मानसिक जटिलता से पीड़ित – *अन्तोजटा बहिजटा, जटाय जटिता पजा,* स॰ नि॰ 1(1).15; 1(1).292; *अन्तोजटाति गाथायं जटाति तण्हाय जालिनिया अधिवचनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.46.

अन्तोजन पु॰, तत्पु॰ स॰, घर के भीतर के लोग, अपने परिवार के लोग – *अन्तोजनस्स च अत्तनो च पक्कमत्तं सब्बं दापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.162; ... *गुत्तिं संविदहस्सु अन्तोजनस्मिं बलकायस्मिं खत्तियेसु अनुयन्तेसु ... मिगपक्खीसु,* दी॰ नि॰ 3.44; *इदानि यत्थ सा संविदहितब्बा, तं दस्सेन्तो अन्तोजनस्मिन्तिआदिमाह,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.31; *यो सो भत्तु अब्भन्तरो अन्तोजनो दासाति वा ...,* अ॰ नि॰ 2(1).33.

अन्तोजात / अन्तोजातक त्रि॰, [अन्तर्जात], स्वामी के घर में ही उत्पन्न एक प्रकार का दास, दासों की 3 या 4 प्रकार की श्रेणियों में से एक, घर की दासी का पुत्र – *एत्थ चत्तारो दासा – अन्तोजातो, धनक्कीतो, करमरानीतो, सामं दासब्यं उपगतो'ति, तत्थ अन्तोजातो नाम जातिदासो घरदासिया पुत्तो,* महाव॰ अट्ठ॰ 268; *अन्तोजातो धनक्कीतो दासब्योपगतो सयं,* अभि॰ प॰ 515; *तत्थ दासाति अन्तोजातका वा धनक्कीता वा ... दासब्यं उपगता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.6.

अन्तोजालीकत त्रि॰, **शा॰ अ॰** जाल के अन्दर फंसा कर लाया हुआ, **ला॰ अ॰** ठीक से समझा हुआ – *अन्तोजालीकता एते, तव ञाणम्हि चक्खुम,* अप॰ 1.18; *सब्बे ते इमेहेव द्वासट्ठिया वत्थूहि अन्तोजालीकता,* दी॰ नि॰ 1.40; *अन्तोजालीकताति इमस्स मय्हं देसनाजालस्स अन्तोयेव कता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.108.

अन्तोठित त्रि॰, [अन्तःस्थित], अन्दर में स्थित, भीतर विद्यमान – *अन्तो ठितमनुस्सा वेगेन पलापेसुं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.112; *अन्तोठितानि उग्गन्त्वा पथवीतलमारुहुं,* म॰ वं॰ 11.8.

अन्तो-तापनकिलेस पु॰, कर्म॰ स॰, भीतर मन को जलाने वाले क्लेश – *अन्तो तापनकिलेसानं अभावा सीतलो जातोति सीतिभूतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.7.

अन्तोतुदक त्रि॰, भीतर ही भीतर चुभने वाला या पीड़ादायक – *अब्भन्तरमनुप्पविट्ठट्ठेन पन अन्तोतुदकट्ठेन दुन्निहरणीयट्ठेन च सल्लं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.80.

अन्तोदाह पु॰, [अन्तर्दाह], मन के अन्दर जल रही आग की जलन, शोक, द्वेष आदि की अग्नि का दाह – ... *अन्तोसोको अन्तोपरिसोको अन्तोदाहो अन्तोपरिदाहो चेतसो परिज्झायना दोमनस्सं सोकसल्लं,* महानि॰ 92; *अन्तोदाहोति अब्भन्तरदाहो,* महानि॰ अट्ठ॰ 201.

अन्तोदुस्सन नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अन्तर्दूषण], आन्तरिक प्रदूषण, मानसिक अविशुद्धि – *अन्तोदुस्सनट्ठेन गण्डतो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.276; *अन्तोदोसट्ठेन गण्डतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.105.

अन्तोदेवता स्त्री॰, **शा॰ अ॰** घर के भीतर के देवता, **ला॰ अ॰** सास, श्वसुर एवं पति – *अन्तोदेवता नमस्सितब्बा'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.222; *अन्तोदेवता नमस्सितब्बा'ति इदम्पि सस्सुञ्च ससुरञ्च सामिकञ्च देवता विय दट्ठुं वट्टतीति सन्धाय वुत्तं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.226; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.307.

अन्तोदोस पु॰, कर्म॰ स॰ [अन्तर्दोष], आन्तरिक प्रदूषण, मानसिक प्रदूषण – *सो हि सब्बदारुणो ... अन्तोदोसो अन्तोपुब्बलोहितोव होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.44-45; *भिन्देतं अन्तोदोससल्ल'न्ति,* मि॰ प॰ 295.

अन्तोनगर नपुं., अव्ययी. स., नगर का भीतरी क्षेत्र - *अन्तोनगरं सम्बाधं, अम्हाकं परिजनो महन्तो,* ध. प. अट्ठ. 1.217.

अन्तोनिज्झान / अन्तोनिज्झायन नपुं., मन की बेचैनी, आन्तरिक कष्ट, चित्त का सन्ताप - *सोकोति सोचनं चित्तसन्तापो, अन्तोनिज्झानन्ति अत्थो,* पे. व. अट्ठ. 15; *तत्थ अन्तोनिज्झायनलक्खणो सोको,* दी. नि. अट्ठ. 1.103.

अन्तोनिमुग्गपोसी त्रि., अव्ययी. स., पानी के अन्दर डूबे रहते हुए पुष्टि को प्राप्त करने वाला - ... *उदके जातानि उदके संवड्ढानि उदकानुग्गतानि अन्तोनिमुग्गपोसीनि,* दी. नि. 1.66; *अन्तोनिमुग्गपोसीनीति उदकतलस्स अन्तो निमुग्गानियेव हुत्वा पोसीनि, वड्ढीनीति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.177.

अन्तोनिरोध पु., कर्म. स., आन्तरिक रूप में निरोध या विनाश, निरोध का आन्तरिक पक्ष - *ततो चित्तसङ्खारोति ततो परं चित्तसङ्खारो अन्तोनिरोधे निरुज्झति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).260; *पञ्चिमानि, आवुसोति इध किं पुच्छति? अन्तोनिरोधस्मिं पञ्च पसादे ...,* म. नि. अट्ठ. 1(2).244.

अन्तो-निसीदनयोग्ग त्रि., अन्दर बैठने योग्य - ... *पुत्तदारस्स अन्तो निसीदनयोग्गं गरुळसकुणं कत्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 2.74.

अन्तोपब्बतेन अ., अव्ययी. स., क्रि. वि., पर्वत के भीतर से होकर - *ततो ... पब्बतं पविसित्वा तासेन्तो वग्गन्तो अन्तोपब्बतेन उग्गन्त्वा महासत्तं पादे दळ्हं गहेत्वा ... विस्सज्जेसि,* जा. अट्ठ. 7.203.

अन्तोपरिदाह पु., कर्म. स., आन्तरिक जलन, मन के अन्दर शोक आदि से उत्पन्न जलन या चुभन - *सोकोति ... सोको सोचना सोचितत्तं अन्तो सोको अन्तोपरिसोको अन्तोदाहो अन्तोपरिदाहो चेतसो ... सोकसल्लं,* महानि. 92.

अन्तोपविट्ठ त्रि., [अन्तःप्रविष्ट], घर के अन्दर प्रवेश कर चुका या प्रवेश किया हुआ - *तत्थ एकेन छिद्देन गोधा अन्तो पविट्ठा,* ध. प. अट्ठ. 2.240; *मिगे अन्तो पविट्ठे द्वारं पिदहिंसु,* जा. अट्ठ. 1.160; - **हनुक** त्रि., भीतर की ओर धंसे हुए चिबुक वाला, कुछ कम उभाड़ वाले चिबुक वाला - *ते इमिना ... कथितभावं जनो जानातूति अन्तोपविट्ठहनुका वा वङ्कहनुका वा ... होन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.110.

अन्तोपविसनवात पु., कर्म. स., बाहर से भीतर की ओर खींची गयी श्वांस, प्रश्वास - *पस्सासो ति अन्तोपविसनवातो ति विनयट्ठकथायं वुत्तं,* सद्द. 2.399; *पस्सासोति अन्तो पविसनवातोति विनयट्ठकथायं वुत्तं,* विसुद्धि. 1.260; *पस्सासोति अन्तोपविसनवातो,* पारा. अट्ठ. 2.13.

अन्तोपवेसन नपुं., [अन्तःप्रवेशन], अन्दर में प्रवेश कराना या रख देना, अन्दर खोद कर गाड़ देना, भीतर घुसा देना - *अन्तोपवेसने निखातो, नीहरणे निद्धारणं,* सद्द. 3.885.

अन्तोपुब्बलोहित त्रि., ब. स., अन्दर में पीब एवं रक्त से भरा हुआ - *सो हि ... दुत्तिकिच्छो अन्तोदोसो अन्तोपुब्बलोहितोव होति,* स. नि. अट्ठ. 1.45.

अन्तोपूति त्रि., [अन्तःपूति], अन्दर से प्रदुष्ट या सड़ा हुआ, चित्त के भीतर अकुशल एवं मलिन मनोभावों से परिपूर्ण - *एकच्चो दुस्सीलो होति ... अस्समणो ... ब्रह्मचारिपटिञ्ञो अन्तोपूति अवस्सुतो कसम्बुजातो,* स. नि. 2(2).183; *अन्तोपूतीति वक्कहदयादीसु अपूतिकस्सपि गुणानं पूतिभावेन, अन्तोपूति,* स. नि. अट्ठ. 3.84; *इधेकच्चो पुग्गलो दुस्सीलो होति पापधम्मो ... अन्तोपूति अवस्सुता ...,* महानि. 168; *अन्तोपूतीति अब्भन्तरे कुसलधम्मविरहितत्ता अन्तोपूतिभावमापन्नो,* महानि. अट्ठ. 270; - **भाव** पु., तत्पु. स. [अन्तःपूतिभाव], आन्तरिक अपवित्रता - *को थले उस्सादो, ... को आवट्टग्गाहो, को अन्तोपूतिभावोति,* स. नि. 2(2).182; *अन्तोपूतीति अब्भन्तरे कुसलधम्मविरहितत्ता अन्तोपूतिभावमापन्नो,* महानि. अट्ठ. 270.

अन्तोफेग्गू त्रि., [अन्तःफल्गु], भीतर में तत्त्वहीन या सारहीन, अन्दर से बिना गूदे वाला हृदयरूपी काष्ठ - *तिणा लतानि ओसझोति अन्तोफेग्गुबहिसारतिणानि च लतानि च अन्तोसारओसधियो च,* जा. अट्ठ. 5.88; *तिणादीसु तिणं नाम अन्तोफेग्गु बहिसारं तालनाळिकेरादि,* स. नि. अट्ठ. 2.234.

अन्तोभत्तिक त्रि., ब. स., अन्दर में भोजन ग्रहण करने वाला - *राजा पण्डितं पुच्छि तात, अन्तोभत्तिको भविस्ससि, उदाहु बहिभत्तिको'ति,* जा. अट्ठ. 6.173.

अन्तोभविक त्रि., किसी के अन्तर्गत आने वाला, किसी में अन्तर्भूत होने वाला - *न परिनिब्बुतो बुद्धो संयुत्तो लोकेन अन्तोभविको लोकस्मिं लोकसाधारणो,* मि. प. 107.

अन्तोभाग पु., [अन्तर्भाग], भीतरी हिस्सा, आन्तरिक भाग - *सामीप्ये बन्धने छेकान्तोभागोपरीतीसु च,* अभि. प. 1166.

अन्तोभाव पु., [अन्तर्भाव], किसी के अन्तर्गत रहना, किसी में अन्तर्भूत होना - *अन्तोभावभुसत्थातिसयपूजास्वतिक्कमे,* अभि. प. 1182; *हिंसा पकारन्तोभाववियोगावयवेसु च,* अभि. प. 1163; *पकारे अभिनिप्फन्ने अन्तोभावे च तप्परे,* सद्द. 3.881; *अन्तोभावे पक्खित्तं,* तदे.

अन्तोभूमिगत त्रि., [अन्तर्भूमिगत], भूमि के अन्दर गाड़ दिया गया या रख दिया गया - ..., *अन्तोभूमिगतानि पन चिरतरं तिट्ठन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 2.326; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).284.

अन्तोमज्झन्हिक पु., [अन्तर्मध्याह्निक], मध्याह्न समय वाला, मध्याह्न काल का - *अट्ठमे पच्छाभत्तन्ति ... पातोव भुत्तानं अन्तोमज्झन्हिकोपि पच्छाभत्तमेव, ... वेदितब्ब,* उदा. अट्ठ. 163; *तेसु पातरासभत्तं अन्तोमज्झन्हिकेन परिच्छिन्नं, ... अन्तोअरुणेन,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).109; अ. नि. अट्ठ. 2.191.

अन्तोमण्डल नपुं., कर्म. स., बुद्ध की अतुरितचारिका का तीन सौ योजनों की परिधि वाला भीतरी मण्डल या क्षेत्र - *वुत्तनयेनेव इतरेसु द्वीसु मण्डलेसु सक्कारो अन्तोमण्डले ओसरति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).55; दी. नि. अट्ठ. 1.196; तुल. अन्तिममण्डल.

अन्तोमन त्रि., ब. स. [अन्तर्मनस्], दुःखी मन वाला, विषादग्रस्त मन वाला - *सो दानि ... किसो ... धमनिसन्थतगत्तो अन्तोमनो लीनमनो दुक्खी दुम्मनो विप्पटिसारी पज्झायसि,* पारा. 20; *अन्तोमनोति अनुसोचनवसेन अब्भन्तरेयेव ठितचित्तो,* पारा. अट्ठ. 1.167.

अन्तोमानुसक पु., कर्म. स., अपने घर के अन्दर के मनुष्य, निजी लोग, अपने लोग - ... *तं अन्तोमानुसकानं न कथेतब्बं ...,* अ. नि. अट्ठ. 1.307.

अन्तोमुखं अ., क्रि. वि., भीतर से, अन्दर से, भीतरी रूप में - *आकड्ढियस्स धनुदण्डस्स विय पादानं अन्तोमुखं कुटिलताय अन्तोवङ्कपादता,* लीन. (दी. नि. टी.) 3.98.

अन्तोमुट्ठिगत त्रि., [अन्तर्मुष्ठिगत], मुट्ठी के अन्दर में विद्यमान, मुट्ठी के अन्दर पहुंचा हुआ - *चित्तं न परियादाय ठस्सन्तीति ... चित्तं अन्तोमुट्ठिगतं करोन्तो विय परियादायं ... सोभामि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.100.

अन्तोयुधनायक पु., तत्पु. स. [अन्तर्युद्धनायक], आन्तरिक सुरक्षा का प्रमुख - *एवं पन चिन्तेत्वा, अन्तोयुधनायकं अमच्चं पधानं कत्वा तेसं तेसं थेरानं ... आरोचापेसि,* सा. वं. 121(ना.).

अन्तोयुद्धविहार पु., व्य. सं., एक विहार का नाम - *अपरभागे ... ञाणं नाम भिक्खुं आनेत्वा अन्तोयुद्धविहारं नाम कारापेत्वा तस्स अदासि,* सा. वं. 121(ना.).

अन्तोरुक्खता स्त्री., अन्तोरुक्ख का भाव., वृक्षों के समूह में या वृक्षों के बीच में एक वृक्ष होने की अवस्था, वृक्षों की मध्यवर्तिता, पांच प्रकार के दोषों में से एक - *पञ्चदोसविवज्जितन्ति पञ्चमे ... नाम – थद्धविसमता, अन्तोरुक्खता, गहनच्छन्नता, अतिसम्बाधता, अतिविसालताति,* जा. अट्ठ. 1.10; *पञ्चदोसविवज्जितन्ति ..., थद्धविसमता, अन्तोरुक्खता, गहनच्छन्नता, अतिसम्बाधता, अतिविसालताति इमेहि पञ्चहि दोसेहि विवज्जितं,* बु. वं. अट्ठ. 88.

अन्तोलीन त्रि., अन्तर्निष्ठ, सहज रूप में सङ्केतित, क्रम-प्राप्त, स्वाभाविक रूप से प्राप्त - *कोयं पुब्बरामो, कथञ्च पुब्बरामो, का च मिगारमाता, कथञ्चस्सा पासादो अहोसीति एतस्मिं अन्तोलीने अनुयोगे,* लीन. (दी.नि.टी.) 3.33.

अन्तोलोहित त्रि., अन्दर ही अन्दर अत्यधिक जमे हुए रक्त से युक्त - *फरसुना पहटो विय पादो अन्तोलोहितोयेव अहोसि,* अ. नि. अट्ठ. 1.341; विभ. अट्ठ. 402.

अन्तोवङ्क त्रि., भीतर से वक्र या टेढ़ा, आन्तरिक रूप में नतोदर या मुड़ा हुआ - *तत्थ सुदस्सनकूटं सुवण्णमयं द्वियोजनसतुब्बेधं अन्तोवङ्कं काकमुखसण्ठानं तमेव सरं पटिच्छादेत्वा ठितं,* सु. नि. अट्ठ. 2.145; म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.26.

अन्तोवङ्कगत त्रि., ब. स., **शा. अ.** वह, जिसने मछली पकड़ने वाला कांटा अन्दर निगल लिया है, मछली पकड़ने वाले कांटे या अंकुड़ा को अन्दर कर लेने वाला, **ला. अ.** वह, जिसके चित्त में क्लेश रूपी कांटे विद्यमान हैं - *अन्तोवङ्कगतो आसि, मच्छोव घसमामिसं,* थेरगा. 749; *अन्तोवङ्कगतो आसीति वङ्कं वुच्चति दिट्ठिगतं मनोवङ्कभावतो, सब्बेपि वा किलेसा अन्तोति हदयवङ्कस्स अत्थो, ...,* थेरगा. अट्ठ. 2.241.

अन्तोवङ्कपाद त्रि., भीतर की ओर वक्र या टेढ़े पैरों वाला - ... *तं कम्मं जनो जानातूति अन्तोवङ्कपादा वा बहिवङ्कपादा वा ... भवन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 3.97; *आकड्ढियस्स धनुदण्डस्स विय पादानं अन्तोमुखं कुटिलताय अन्तोवङ्कपादता,* लीन. (दी. नि. टी.) 3.98.

अन्तोवण्ट त्रि., ब. स. [अन्तर्वृन्त], भीतर की ओर मुड़े हुए फूलों या पत्तों के डंठल वाला - *ततो सा पुप्फकञ्चुका, अन्तोवण्टा बहिमुखा,* अप. 1.156; थेरगा. अट्ठ. 1.192.

अन्तोवण्ण त्रि., ब. स. [अन्तर्वर्ण], भीतर में सुन्दर रूप वाला, सद्‌गुणसम्पन्न, कुशलधर्मों से युक्त चित्त वाला - *न ब्राह्मणो बहिवण्णो, अन्तोवण्णो हि ब्राह्मणो,* थेरगा. 140.

अन्तोवन त्रि., [अन्तर्वन], वन का भीतरी भाग - *सो या ता ... निहरेय्य, अन्तोवनं सुविसोधितं विसोधेय्य,* म. नि. 1.177.

अन्तोवळञ्ज पु., कर्म. स., भीतर वाला आवास, आवास का भीतरी भाग - *बोधिसत्तो चिन्तेसि – इदं पिळन्धनं अन्तोवळञ्जे नट्ठं,* ..., जा. अट्ठ. 1.368.

अन्तोवळञ्जनक त्रि., आवास के भीतरी भाग में निवास करने वाला - *सब्बे अन्तोवलञ्जनके मनुस्से गहेत्वा चूळामणिं आहरापेथा'ति,* जा. अट्ठ. 1.366; *अमच्चा मातुगामे उपादाय अन्तोवलञ्जनके किलमेन्ति,* जा. अट्ठ. 1.366; *तस्मा अन्तोवळञ्जनकानम्पि तं गहेत्वा पलायितुं न सक्का, एवं नेव बहिवळञ्जनकानं, न अन्तो, उय्याने वळञ्जनकानं गहणूपायो दिस्सति,* जा. अट्ठ. 1.368.

अन्तोवसनक त्रि., भीतर निवास करने वाला, चित्त में विद्यमान - *अनन्तेवासिकन्ति अन्तोवसनककिलेसविरहितं,* स. नि. अट्ठ. 3.46.

अन्तोवस्स नपुं., अव्ययी. स., वर्षा ऋतु के भीतर आने वाला काल, वर्षा ऋतु - ... *इदानि कित्तकं अन्तोवस्सं अवसिट्ठेन्ति,* वि. व. अट्ठ. 52; ... *भिक्खुनियो अन्तोवस्सं चारिकं चरन्ति,* पाचि. 405; ... *चरमानो ततो तिंसयोजनिके ठाने खदिरवनं गन्त्वा अन्तोवस्सेयेव तेमासब्भन्तरे सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणि,* ध. प. अट्ठ. 1.355; *दिस्वा च पन उपकट्ठे अन्तोवस्से आकासेन गन्त्वा गामद्वारे ओतरि,* ध. प. अट्ठ. 2.356; – **भाव** पु., वर्षा ऋतु के काल का होना, वर्षावास की कालावधि का होना – *ते अन्तोवस्सभावेन सत्थु सन्तिकं गन्तुं अविसहन्ता* ..., ध. प. अट्ठ. 1.36.

अन्तोविहाराभिमुख त्रि., ब. स., विहार के भीतर की ओर अभिमुख या अग्रसर - *अयं सा यक्खिनी'ति,* ... *सण्ठातुं असक्कोन्ती निवत्तेत्वा अन्तोविहाराभिमुखी पक्खन्दि,* ध. प. अट्ठ. 1.32.

अन्तोसङ्केप पु., कर्म. स., **शा. अ.** आन्तरिक सङ्कोच, **ला. अ.** मन की शिथिलता, मन में उत्साह एवं पराक्रम का अभाव - ... *अनातापिनो अन्तोसङ्खेपो अन्तरायकरो होति,* दी. नि. अट्ठ. 2.313; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).254; *अन्तो सङ्खेपो अन्तोओलीयनो, कोसज्जन्ति अत्थो,* लीन. (दी. नि. टी.) 2.273.

अन्तोसमोरोध पु., [अन्तस्समवरोध], आन्तरिक रुकावट, मानसिक अवरोध, मानसिक निष्क्रियता या शिथिलता, चित्तवृत्तियों की शिथिलता - *मिद्धन्ति* ... *ओनाहो परियोनाहो अन्तोसमोरोधो मिद्धं सुप्पं पचलायिका सुप्पं सुप्पना सुप्पितत्तं,* महानि. 314; *अब्भन्तरे समोरुन्धतीति अन्तोसमोरोधो,* महानि. अट्ठ. 352.

अन्तोसल्ल त्रि., ब. स. [अन्तःशल्य], **शा. अ.** वह, जिसके अन्दर बाण का नुकीला किनारा चुभा हुआ हो, **ला. अ.** वह चित्त, जिसे राग, द्वेष आदि के सात प्रकार के शल्य या बाण बेध रहे हों - *अन्तोसल्लं सुसिरगतं* ... *भेसज्जेन अनुलिम्पति परिपच्चनाय,* मि. प. 120.

अन्तोसाणितो अ., प. वि., प्रतिरू. निपा., पर्दे के अन्दर से – *बोधिसत्तं परिवारेत्वा निसिन्ना धातियो रञ्ञो सम्पत्तिं पस्सिस्सामा'ति अन्तोसाणितो बहि निक्खन्ता,* जा. अट्ठ. 1.68.

अन्तोसार त्रि., [अन्तःसार], **क. शा. अ.** भीतर में सारतत्त्व रखने वाला - *तिणा लतानि ओसझोति अन्तो फेग्गुबहिसारतिणानि च लतानि च अन्तोसारओसधियो च,* जा. अट्ठ. 5.88; **ख. ला. अ.** आन्तरिक गुणों से परिपूर्ण – *न कण्हो तचसा होति, अन्तोसारो हि ब्राह्मणो,* जा. अट्ठ. 4.9; *अन्तोसारोति अब्भन्तरे सीलसमाधिपञ्ञाविमुत्ति* ... *समन्नागतो,* तदे..

अन्तोसीमगत त्रि., तत्पु. स. [सीमान्तर्गत], संघकर्म उपोसथ आदि के लिए निर्धारित सीमा के अन्दर विद्यमान – *यावतिका भिक्खू अन्तोसीमगता तेहि भाजेतब्बं,* महाव. 404; *तत्थ सीमाय देतीति, अन्तोसीमं गतेहि तु,* विन. वि. 2728.

अन्तोसुद्ध त्रि., [अन्तःशुद्ध], आन्तरिक रूप से विशुद्ध, विशुद्ध चित्त वाला - *अन्तोसुद्धं बहिसुद्धं, अधिमुत्तमनासवं,* अप. 1.107.

अन्तोसोक पु., कर्म. स. [अन्तःशोक], भीतरी शोक, आन्तरिक शोक - ... *सोको सोचना सोचितत्तं अन्तोसोको अन्तोपरिसोको, अयं*..., दी. नि. 2.228; म. नि. 3.299; पटि. म. 33; विभ. 113.

√**अन्द** बन्धन अर्थ वाली एक धातु - *अदि बन्धने,* सद्द. 2.377.

अन्दति √अन्द का वर्त., प्र. पु., ए. व., बांधता है – *अन्दति, अन्दू,* सद्द. 2.377.

अन्दु पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक प्राचीन ग्राम का नाम – *अन्दूति विस्सुतं मन्दपञ्ञो गामं पुरन्तिके,* चू. वं. 59.5.

अन्दु/अन्दू स्त्री., [अन्दू], हाथों अथवा पैरों को बांधने वाली बेड़ी या हथकड़ी - *अन्दुसद्दो पन एत्थ इत्थिलिङ्गो गहेतब्बो, पालियं इत्थिलिङ्गपयोगदस्सनतो,* सद्द. 2.377; *सो ओरिमतीरे दळहाय अन्दुया पच्छाबाहं गाळहबन्धनबद्धो,* सद्द. 3.377; दी. नि. 1.222; *अप्पेकच्चे रज्जूहि अप्पेकच्चे अन्दूहि अप्पेकच्चे सङ्खलिकाहि,* स. नि. 1(1).93; *अन्दूबन्धनसङ्खातं दारुजं, पञ्च* ... *रज्जुबन्धनं,* ध. प. अट्ठ. 2.311.

अन्दुक पु॰, [अन्दुक], हाथों या पैरों को बांधने वाली बेड़ी, हाथी के पैरों को बांधने वाली जञ्जीर - *नीत्थी तु निगळोन्दुको,* अभि॰ प॰ 364.

अन्दुकहापण पु॰, तत्पु॰ स॰ [अन्दुकार्षापण], कैदी के बेड़ी से मुक्त होने पर प्राप्त शुल्क या पुरस्कार - *अन्दुबन्धनेन बद्धस्स विस्सज्जनेन लब्भमानकहापणो बन्धकहापणो,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(2).251.

अन्दुघर नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अन्दुगृह], कारागार - *तथेव त्वं सब्बभवे, पस्स अन्दुघरे विय,* बु॰ वं॰ 303; *तत्थ अन्दुघरेति बन्धनागारे,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 121; *यथा अन्दुघरे पुरिसो, चिरवुत्थो दुखट्टितो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.28.

अन्दुबन्धन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अन्दुबन्धन], बेड़ी द्वारा बांध दिया जाना, बेड़ी का बन्धन - *बन्धनगता सब्बसत्ता अन्दुबन्धनादीहि मुच्चिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.62; *बन्धेय्युं वाति रज्जुबन्धनेन वा, अन्दुबन्धनेन वा सङ्खलिकबन्धनेन वा ... बन्धेय्यु, पारा॰ 53; अन्दुबन्धनेन बद्धस्स विस्सज्जनेन लब्भमानकहापणो बन्धनकहापणो,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(2).251; *भन्ते, अज्ज अम्हेहि पिण्डाय चरन्तेहि बन्धनागारे बहू चोरा अन्दुबन्धनादीहि बद्धा महादुक्खं अनुभवन्ता दिट्ठा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.310.

अन्धोलि स्त्री॰, बांस के दण्ड पर लटक रही पालकी - *अन्धोलिधवलच्छत्तचामराधीनि सो तदा,* चू॰ वं॰ 88.88.

अन्दोलिका स्त्री॰, पालकी - *पाटङ्किन्ति अन्दोलिकायेतं अधिवचनं,* सारत्थ॰ टी॰ 3.263.

√**अन्ध¹** द्रष्टि के विनष्ट होने के अर्थ वाली एक धातु - *अन्ध दिट्ठूपसंहारे,* सद्द॰ 2.548.

अन्ध² त्रि॰, √अन्ध धातु से व्यु॰ [अन्ध], **शा॰ अ॰** दोनों नेत्रों की दृश्यशक्ति से रहित, अन्धा - *अन्धोति अन्धेतीति अन्धो द्विन्नं चक्खूनं एकस्स वा वसेन नट्ठनयनो,* सद्द॰ 2.548; *अन्धो द्वयेन थ,* अभि॰ प॰ 321; *सब्बानिपि चे ओस्सजेय्य अन्धोव सिया, समविसमस्स अदस्सनतो,* थेरगा॰ 321; *अन्धं पब्बाजेन्ति,* महाव॰ 115; *अन्धोति जच्चन्धो वुच्चति,* महाव॰ अट्ठ॰ 296; ..., *अन्धस्स सतो पुन दिब्बचक्खूनि उप्पन्नाति,* मि॰ प॰ 125; *अन्धा मातापिता मय्हं, ते भरामि ब्रहावने,* जा॰ अट्ठ॰ 6.95; *यञ्च अन्धे न पस्सामि, मञ्ञे हिस्सामि जीवित'न्ति,* तदे॰; **ला॰ अ॰क**. मानसिक रूप में विक्षिप्त, अज्ञानी, मूर्ख, मोह से ग्रस्त, अविद्या से ग्रस्त, प्रज्ञाचक्षु से रहित - *कामरागो पातुरहु, अन्धोव सवती अहुं,* थेरगा॰ 316; *अन्धोव सवती अहुन्ति तस्मिं कळेवरे नवहि द्वारेहि असुचिं ... अन्धो विय अहोसिं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.33; *अञ्ञतित्थिया, भिक्खवे, परिब्बाजका अन्धा अचक्खुका,* उदा॰ 146; *भिक्खु अन्धमकासि मारं, ...,* म॰ नि॰ 1.217; *अन्धमकासि मारन्ति न मारस्स अक्खीनि भिन्दी,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).67; **ला॰ अ॰ ख**. नपुं॰, **तम अथवा तिमिसा के साथ प्रयुक्त होने पर**, अंधेरा, घना अंधेरा, अज्ञान का अंधकार, धुंधलापन - *अन्धन्तमं धनतमं,* अभि॰ प॰ 72; *अन्धतमं तदा होति, यं लोभो सहते नरं,* इतिवु॰ 61; **ला॰ अ॰ ग**. त्रि॰, नहीं देख सकने वाला, देखने में अक्षम - *उभोपि नेत्ता नयना, अन्धा उपहता मम,* चरिया॰ 377; **ङ**. अतीक्ष्ण, भोथड़, स्थूल, केवल स॰ प॰ में पू॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त, अन्धनख के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **करण** नपुं॰, [अन्धकरण], **शा॰ अ॰** अन्धा कर देना या बना देना, **ला॰ अ॰** संशयग्रस्त कर देना, अज्ञान में ला देना, प्रज्ञा का निरोध कर देना, यथाभूतदर्शन का निरोध - *अन्धकरणो अचक्खुकरणो अञ्ञाणकरणो पञ्ञानिरोधिको विघातपक्खिको अनिब्बानसंवत्तनिको,* इतिवु॰ 60; अ॰ नि॰ 1(1).247; *अन्धकरणोतिआदीसु यस्स रागो उप्पज्जति, तं यथाभूतदस्सननिवारणेन अन्धं करोतीति अन्धकरणो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.194; - **कारक** त्रि॰, अंधा या अज्ञानी बना देने वाला - *ते अन्धकारके कामे, बहुदुक्खे महाविसे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.442; *तत्थ अन्धकारके ति पञ्ञाचक्खुविनासनतो अन्धभावकरे,* तदे॰; - **कारी** त्रि॰, [अन्धकारिन्], अंधा बनाने वाला, अज्ञान से भर देने वाला - *अन्धकाराति अन्धकारगतसदिसी, जानितुकामे च अन्धकारिनी,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.243; - **चक्खुक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अन्धचक्षुष्क], अंधी आंखों वाला, अन्धा - *अन्धचक्खुकानं यक्खानं मेत्तानुभावेन चक्खुं लभापेसि,* सा॰ वं॰ 69(ना॰); - **ज्जन** पु॰, कर्म॰ स॰, पुथुज्जन के मि॰ सा॰ पर जकार को द्वित्व [अन्धजन], अंधे लोग, अज्ञानी लोग, अविद्या से ग्रस्त लोग - *अन्धज्जननानं हदयन्धकारं, विद्धंसनं दीपमिमं जलन्तं,* अभि॰ अव॰ 66; - **ज्जनपलोभिक** त्रि॰, [अन्धजनप्रलोभक], अज्ञानी लोगों को प्रलोभित करने वाला या ललचाने वाला - *राजा आह ... छिन्निकाय पापिया भिन्नसीलाय हिरिअतिक्कन्तिकाय अन्धजनपलोभिकाया'ति,* मि॰ प॰ 128; - **तम** नपुं॰, अन्ध¹ (ग) के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **नख** त्रि॰, ब॰ स॰ [अन्धनख], गन्दे या काले नखों वाला, अतीक्ष्ण नखों वाला - *बलङ्कपादो अन्धनखो, अथो ओवद्धपिण्डिको,* जा॰ अट्ठ॰ 7.319; *अन्धनखोति पूतिनखो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.320; -

धन्धं अ॰, क्रि॰ वि॰, धुंधले रूप में, टिमटिमाते हुए - *सो काय ... उद्धच्चकुक्कुच्चस्सापि न सुप्पटिविनीतत्ता अन्धन्धं विय झायति,* म॰ नि॰ 3.190; - **पुथुज्जन** पु॰, कर्म॰ स॰ [अन्धपृथग्जन], अज्ञानी लोग, सम्यक्-दृष्टि से रहित या अविद्या से ग्रस्त अज्ञानी जन - *यो हि अन्धपुथुज्जनो पापजनसेवी अयोनिसोमनसिकारबहुलो अकतकुसलो अकतपुञ्ञो, ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 219; *ते होन्ति परपत्तियाति ते ... मञ्ञमाना बाला अन्धपुथुज्जना विञ्ञाणपदस्स अप्पत्तताय ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.67; - **प्पवेणी / वेणी** स्त्री॰, [अन्धप्रवेणी], अन्धे लोगों की श्रृङ्खला या कतार - *अन्धवेणीति अन्धपवेणी,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.302; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.298; - **बधिर** त्रि॰, द्व॰ स॰ [अन्धवधिर], अन्धा और बहरा मनुष्य - ... *अन्धबधिरं पब्बाजेन्ति ...,* महाव॰ 115; 420; - **बाल** त्रि॰, कर्म॰ स॰, अज्ञानी एवं मूर्ख, प्रज्ञाविहीन, मोहग्रस्त - *सो अन्धबालो हिताहितं अजानन्तो परेसं ... अड्डासि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 4; *अहो अन्धबाला एवरूपे ठाने इमं सिरिसम्पत्तिं नानुभवति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 53; *मच्छरिनो हि अन्धबाला एवरूपेसु दानं ददमानेसु ... विय निरये निब्बत्तन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.300; *अन्धबाले, त्वं पुब्बेपि पापकम्मं कत्वा यक्खिनी जातासि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.163; ... *समणं गोतमं पटिच्च गब्भो मे लद्धो'ति अन्धबाले गाहापेत्वा ... दस्सेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.167; *पुब्बे कतानं कम्मानं, विपाको मथये मनन्ति ... अकुसलकम्मानं फलं उळारं हुत्वा उप्पज्जमानं अन्धबालानं चित्तं मथयेय्य अभिभवेय्य,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 230; - **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अन्धभाव], **शा॰ अ॰** अन्धापन, **ला॰ अ॰** अज्ञान, अविद्या, मिथ्यादृष्टि - *इति भगवा ... पञ्ञाचक्खुवेकल्लतो अन्धभावं दस्सेत्वा इदानि तमत्थं ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 278; - **कर** त्रि॰, [अन्धभावकर], अन्धा अथवा अज्ञानी कर देने वाला - *अन्धतमन्ति अन्धभावकरं तमं बहलतमं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.179; *दसमे अन्धकरणाति अन्धभावकरणा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.188; - **करण** नपुं॰, [अन्धभावकरण], अंधा या अज्ञानी कर देना - *अन्धकारतिमिसाति चक्खुविञ्ञाणुप्पत्तिनिवारणेन अन्धभावकरणं बहलतमं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.44; - **भावकरणतिमिस** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अन्धभावकरणतमस], अंधा या अज्ञानी कर देने वाली अविद्या का अन्धकार - *अन्धकारतिमिसाति चक्खुविञ्ञाणुप्पत्तिनिवारणतो अन्धभावकरणतिमिसेन समन्नागता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.23; - **भावकारक** त्रि॰, [अन्धभावकारक], अन्धापन या अज्ञान उत्पन्न कर देने वाला - *तत्थ अन्धकारतिमिसायन्ति अन्धभावकारके तमे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.384; - **भावलक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अन्धभावलक्षण], अन्धापन या अज्ञान के लक्षण वाला - *मोहो चित्तस्स अन्धभावलक्खणो अञ्ञाणलक्खणो वा, ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 289; - **भूत** त्रि॰, [अन्धभूत], अंधा हो चुका, अज्ञान में डूबा हुआ - *अन्धभूतो अयं लोको, तनुकेत्थ विपस्सति,* ध॰ प॰ 174; *तत्थ अन्धभूतो अयं लोकोति अयं लोकियमहाजनो पञ्ञाचक्खुनो अभावेन अन्धभूतो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.100; *एवं सङ्गाभूतेसु, अन्धभूते पुथुज्जने,* ध॰ प॰ 59; *अविज्जानिवुता पोसा, अन्धभूता अचक्खुका,* अ॰ नि॰ 1(2).83; - **महल्लक** त्रि॰, द्व॰ स॰, अंधेपन से ग्रस्त वृद्ध व्यक्ति, अंधा और वृद्ध - *इमेसं अन्धमहल्लकानं एतं कम्मं, ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.39; - **महिंस** पु॰, कर्म॰ स॰ [अन्धमहिष], अंधा भैंसा - *वने अन्धमहिसोव, चरेय्य बहुको जनो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.326; *एवं सन्ते ... वने अन्धमहिसो गोचरागोचरं सासङ्कनिरासङ्कञ्च ठानं अजानन्तो चरति,* तदे॰; - **मूग** त्रि॰, द्व॰ स॰ [अन्धमूक], अंधा और गूंगा - ... *अन्धमूगं पब्बाजेन्ति ...,* महाव॰ 115; 420; - **मूगबधिर** त्रि॰, द्व॰ स॰ [अन्धमूकवधिर], अंधा, गूंगा और बहरा - ... *अन्धमूगबधिरं पब्बाजेन्ति,* महाव॰ 115; 420; - **वण्ण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अन्धवर्ण], अन्धे मनुष्य जैसे छद्मवेश वाला, अन्धे के स्वरूप वाला - *अन्धवण्णोव हुत्वान, राजानं उपसङ्कमि,* चरिया॰ 377;(1.8.6); - **वन** नपुं॰, व्य॰ सं॰, श्रावस्ती नगर के समीप के एक उपवन का नाम - *तेन खो ... भिक्खु सावत्थिया अन्धवने दिवाविहारगतो निपन्नो होति,* पारा॰ 44; *अन्धवनेति एवं नामके वने,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).27; *अथ खो आयस्मा पुण्णो मन्ताणिपुत्तो अन्धवनं अज्झोगाहेत्वा ... रुक्खमूले निसीदि,* म॰ नि॰ 1.202; - **वेणि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अन्धवेणी], एक दूसरे को पकड़कर एक दूसरे के पीछे चल रहे अन्धों की कतार, अन्धों की पंक्ति - ..., *अन्धवेणि परम्परसंसत्ता पुरिमोपि न पस्सति,* दी॰ नि॰ 1.217; *अन्धवेणीति अन्धपवेणी, ... एकोअन्धो गण्हाति, ... अन्धा पटिपाटिया घटिता अन्धवेणीति वुच्चति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.302; - **वेणूपम** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, **शा॰ अ॰** अन्धों की पंक्ति के समान, **ला॰ अ॰** बिना परीक्षण के परम्परा का अनुसरण करने वाला - ..., *अन्धवेणूपमं मञ्ञे तेविज्जानं ब्राह्मणानं भासितं,* दी॰ नि॰ 1.217; - **वेणूपमता** स्त्री॰, अन्धवेणूपम का भाव॰, गतानुगतिकता, लकीर का फकीर होना, अन्धानुकरण करना - ... *अभावेन*

अन्धवेणूपमतं सद्दमत्तेनेव तानि गहेत्वा ..., अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.155; - **वेस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अन्धवेश], अन्धे मनुष्य की वेशभूषा, अन्धे मनुष्य का रूप - *... वधभयेन अन्धवेसं गहेत्वा पण्णसालं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.370.

अन्ध[3] पु॰, ए॰ व॰ एवं ब॰ व॰ में प्राप्त, व्य॰ सं॰ [अन्ध/आन्ध्र], आधुनिक आन्ध्र प्रदेश, उस प्रदेश के निवासी तथा वहां की भाषा - *मिलक्खकं नाम यो कोचि अनरियको अन्धदमिलादि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.203; - **किय** त्रि॰, आन्ध्र क्षेत्र में नियुक्त या उस क्षेत्र से सम्बन्धित व्यक्ति - *अन्धे नियुत्तो अन्धकियो,* क॰ व्या॰ 335; - **भासा / कभासा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आन्ध्रभाषा], आन्ध्र जनपद की भाषा, तमिल भाषा/तेलुगु भाषा - *ये अन्धकभासादीसु अञ्ञतराय, तेसं ताय ताय भासाय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).147; - **रट्ठ / करट्ठ** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आन्ध्रराष्ट्र], आधुनिक काल का आन्ध्र राज्य - *महिंसकमण्डलं अन्धरट्ठन्ति वदन्ति,* वजिर॰ टी॰ 25.

अन्धक पु॰, [आन्ध्रक], **क.** आन्ध्र प्रदेश का निवासी - *माता दमिळी, पिता अन्धको, ... सचे पितुकप्पं पठमं सुणाति, अन्धकभासं भासिस्सति,* विभ॰ अट्ठ॰ 366; *अन्धका मुण्डका सब्बे, कोटला हनुविन्दका,* अप॰ 1.394; **ख.** बौद्ध धर्म की अट्ठारह शाखाओं या निकायों में से एक - *अन्धका नाम पुब्बसेलिया, अपरसेलिया, राजगिरिया, सद्धत्थिकाति इमे पच्छा उप्पन्ननिकाया,* कथा॰ अट्ठ॰ 153; *सब्बे धम्मा सतिपट्ठाना'ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं,* तदे॰; - **कट्ठकथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, बौद्धधर्म की अन्धक शाखा के विनय पर लिखी गयी एक प्राचीन अट्ठकथा, जो वर्तमान में अप्राप्त है - *अन्धकट्ठकथायं पन परतीरतो नदिं ओतरित्वा दस्सनूपचारतो दारुनि, पण्णनित्वा मग्गित्वा आनेति, अनापत्ति,* वजिर॰ टी॰ 327; - **कट्ठकथापाठ** पु॰, तत्पु॰ स॰, अन्धक-शाखा की प्राचीन अट्ठकथा में प्राप्त पाठ - *विकालगामप्पवेसनसिक्खापदेपि कत्थचि उपचारं अतिक्कमन्तस्सा'ति पाठो दिस्सतीति, सो अन्धकट्ठकथापाठतो गहितोति आचरियो,* वजिर॰ टी॰ 326; - **भासा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आन्ध्र प्रदेश की भाषा - *अन्धकभासं भासिस्सति,* विभ॰ अट्ठ॰ 366; - **रट्ठ** नपुं॰, कर्म॰ स॰, वर्तमानकालीन आन्ध्र प्रदेश, अन्य प्राचीननाम अहिंसक मण्डल या महीशासक मण्डल भी - *महिंसकमण्डलं नाम अन्धकरट्ठं यं यक्खपुररट्ठं ति वुच्चति,* सा॰ वं॰ 11(ना॰).

अन्धकमकस पु॰, द्व॰ स॰, काली मक्खियां एवं मच्छर - *अन्धकमकसा न विज्जरे, कच्छे रुळ्हतिणे चरन्ति गावो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 20; *तत्थ अन्धकाति काळमक्खिकानं अधिवचनं, पिङ्गलमक्खिकानन्ति एके,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.28.

अन्धविन्द पु॰, व्य॰ सं॰, मगध-क्षेत्र के एक प्राचीन नगर या ग्राम का नाम - *तेन ... महाकस्सपो अन्धकविन्दा राजगहं उपोसथं आगच्छन्तो ... वूळ्हो अहोसि,* महाव॰ 137; *तेन ... वेलट्ठो कच्चानो राजगहा अन्धकविन्दं अद्धानमग्गप्पटिपन्नो होति,* महाव॰ 300; *भगवता अन्धकविन्दे दसानिसंसे सम्पस्समानेन यागु अनुञ्ञाता,* तदे॰ 384; - **ब्राह्मण** पु॰, अन्धकविन्द नामक गांव का ब्राह्मण - *सकटसतेहि ... ओकासं ... गावुतप्पमाणेपि ... अनुबन्धन्ति च अन्धकविन्दब्राह्मणादयो विय,* उदा॰ अट्ठ॰ 88; - **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ 2(1) के पञ्चकनिपात के एक वग्ग का नाम, अ॰ नि॰ 2(1).128-133; - **सुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ 1(1) के सगाथवग्ग के अर्न्तगत ब्रह्मसंयुत्त के दूसरे वग्ग के तीसरे सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).181-2.

अन्धकवेण्ड पु॰, व्य॰ सं॰ [अन्धकवृष्णि], देवगब्भा के एक सेवक का नाम, जो नन्दिगोपा का पति था - *नन्दिगोपा ... परिचारिका अहोसि, अन्धकवेण्डो नाम दासो तस्सा सामिको आरक्खमकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.71; *कण्हदीपायनासज्ज, इसिं अन्धकवेण्डयो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.259; - **दासपुत्त** पु॰, तत्पु॰ स॰, देवगब्भा के वे दस पुत्र, जिनका पालन अन्धकवेण्ड तथा उसकी भार्या नन्दिगोपा ने किया था - *मनुस्सा सन्निपतित्वा अन्धकवेण्डदासपुत्ता दस भातिका रट्ठं विलुम्पन्ती'ति राजङ्गे उपक्कोसिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.73; - **पुत्त** पु॰, तत्पु॰ स॰, उपरिवत् - *यं वे पित्वा अन्धकवेण्डपुत्ता समुद्दतीरे परिचारयन्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.17; *अन्धकवेण्डपुत्ताति दस भातिकराजानो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.18.

अन्धकार[1] पु॰/नपुं॰, [अन्धकार], अंधेरा, अन्धापन - *अन्धकारो तमो नित्थि तिमिसं तिमिरं मतं,* अभि॰ प॰ 70; *तेन समयने होति अन्धकारो अन्धकारतिमिसा,* दी॰ नि॰ 3.63-64; *अन्धकारोति तमो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.44; *अन्धकारा विधंसिता,* अप॰ 1.90; *..., अन्धकारं व खायति,* थेरगा॰ 1037; *अन्धकारेन ओनद्धा, तण्हादासा सनेत्तिका,* चूळव॰ 465; *पुरिसो अन्धकारा वा अन्धकारं गच्छेय्य,* स॰ नि॰ 1(1).112; *एतम्हा अन्धकारा अञ्ञो अन्धकारो महन्ततरो च भयानकतरो चा'ति,* स॰ नि॰ 3(2).515; *अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य,* पारा॰ 6; *अन्धकारेति काळपक्खचातुद्दसी अड्ढरत्त-घनवनसण्ड-मेघपटलेहि चतुरङ्गे तमासि,* पारा॰ अट्ठ॰ 129.

अन्धकार[2] त्रि॰, अंधीभूत, धुंधला, अस्पष्ट, अंधा, अज्ञानी,

तमभूत – *यापि ता ... अन्धकारा अन्धकारतिमिसा,* म॰ नि॰ 3.162; *अन्धकाराति तमभूता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.130; *यो अन्धकारे तमसि पभङ्करो,* स॰ नि॰ 1(1).61; *अन्धकारेति चक्खुविञ्ञाणुप्पत्ति निवारणेन अन्धभावकरणे,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.97.

अन्धकार[3] पु॰, श्रीलङ्का के एक प्राचीन ग्राम का नाम – *अन्धकारं अन्तुरेळिं बालवं द्वारनायकं,* चू॰ वं॰ 46.13.

अन्धकारगब्भ पु॰, अन्धकार से भरा हुआ प्रकोष्ठ या कमरा – *इतरेपि चत्तारो पण्डिता अन्धकारगब्भं पविट्ठा विय न किञ्चि पस्सिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 6.179-80.

अन्धकारतमोनुद त्रि॰, गहरे अन्धकार को मिटा देने वाला – *बुद्धो अयं अनुप्पत्तो, अन्धकारतमोनुदो,* अप॰ 1.46; *चक्खु सब्बस्स लोकस्स, अन्धकारे तमोनुदो,* थेरगा॰ 1051.

अन्धकारतिमिसा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अन्धकारतमिस्रा], काली अंधियारी रात, गहरा अज्ञान – *तेन समयेन होति अन्धकारो अन्धकारतिमिसा,* दी॰ नि॰ 3.62-63; *अन्धकारतिमिसाति चक्खुविञ्ञाणुप्पत्तिनिवारणेन अन्धभावकरणं बहलतमं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.44; *अन्धकारतिमिसायं, तुङ्गे उपरिपब्बते,* जा॰ अट्ठ॰ 3.383; *तत्थ अन्धकारतिमिसायन्ति अन्धभावकारके तमे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.384; अप॰ अन्धकारतिमिस्सा.

अन्धकारपरेत त्रि॰, ब॰ स॰ [अन्धकारपरेत], अंधेरे में डूबा हुआ, अन्धकार से अभिभूत – *अन्धकारपरेतोति चतुरङ्गसमन्नागतेन अन्धकारेन किञ्चि अत्तत्थं वा परत्थं वा कातुं असक्कुणेय्यभावेन अभिभूतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.444.

अन्धकारपीळित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अन्धकारपीड़ित], अंधेरे से पीड़ित – *निक्खममानो ... निक्खमति अन्धकारपीळितो वा आलोकत्थाय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.252.

अन्धकारवग्ग पु॰, पाचि॰ के अर्न्तगत भिक्खुनी विभङ्ग के पाचित्तियकण्ड के दूसरे वग्ग का शीर्षक, पाचि॰ 366-380.

अन्धकारसमाकुल त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अज्ञान के अन्धकार से भ्रमग्रस्त – *समुद्धरसिमं लोकं, अन्धकारसमाकुलं,* अप॰ 1.85.

अन्धकाराभिनिवेस त्रि॰, ब॰ स॰, अन्धेपन या अज्ञान की ओर प्रवृत्त, अज्ञान के प्रति लगाव रखने वाला – *आदानाधिप्पाया ... अन्धकाराभिनिवेसा अदस्सनपरियोसाना'ति,* अ॰ नि॰ 2(2).76; *अन्धकारत्थाय एतेसं चित्तं अभिनिवसतीति, अन्धकाराभिनिवेसा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.122.

अन्धीकत त्रि॰, अन्ध + √कर का भू॰ क॰ कृ॰ [अन्धीकृत], **शा॰ अ॰** अन्धा कर दिया गया व्यक्ति, वह, जो पहले अन्धा नहीं था, बाद में अन्धा बना दिया गया है, **ला॰ अ॰** मोहग्रस्त, अविद्याग्रस्त – *... अन्धा कताति अन्धीकता,* उदा॰ अट्ठ॰ 298; *तेन खो पन समयेन ... अज्झोपन्ना अन्धीकता सम्मत्तकजाता कामेसु विहरन्ति,* उदा॰ 158; *अन्धीकताति कामा नाम अनन्धम्पि अन्धं करोन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 297; *मूळ्हा सम्मूळ्हा सम्पमूळ्हा अविज्जाय अन्धीकता आवुता ... पटिकुज्जिता,* महानि॰ 19; *अविज्जाय अन्धीकताति अट्ठसु ठानेसु अञ्ञाणाय अविज्जाय अन्धीकता,* महानि॰ अट्ठ॰ 75.

अन्धेति / अन्धयति √अन्ध (दृष्टि का उपसंहरण) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्धयति], 1. अंधा होता है, 2. अंधा कर देता है या अंधा बनाता है – *अन्धो ति अन्धेती अन्धो,* सद्द॰ 2.548; – **यिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अन्धोति अन्धयति चक्खूनि अन्धयिंसु,* सद्द॰ 2.548.

अन्धनारक पु॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का के एक गांव का नाम – *कतकं च तुलाधारं अन्धनारकं एव च,* म॰ वं॰ 46.12.

अन्न नपुं॰, √अद से व्यु॰ [अन्न], वह जो खाया जाए, भोजन, भात – *ओदनो वा कुरं भत्तं भिक्खा चान्नं,* अभि॰ प॰ 465; 1103; *सालीनमन्नं परिभुञ्जमानो, सो ...,* सु॰ नि॰ 243; 244; *अन्नमेवाभिनन्दन्ति, उभये देवमानुसा,* स॰ नि॰ 1(1).36; *वत्थानि गन्धमाला च अन्नानि मधुराणि च,* म॰ वं॰ 29.21; *अन्नानमथो पानानं, खादनीयानं अथोपि वत्थानं,* सु॰ नि॰ 930; *ततो च पातो उपवुत्थुपोसथो, अन्नेन पानेन च भिक्खुसङ्घं,* सु॰ नि॰ 405; *अन्नेनाति यागुभत्तादिना,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; – **कथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अन्नकथा], भोजन से सम्बन्धित कथन या खाने पीने के बारे में बातचीत – *... राजकथं चोरकथं ... अन्नकथं पानकथं ... इत्थिकथं ... इतिभवाभवकथं इति वा इति,* दी॰ नि॰ 1.7; – **किच्च** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अन्नकृत्य], भोजन-ग्रहण करने की क्रिया – *कतन्नकिच्चो सरणेसु ते उभो,* दा॰ वं॰ 1.59; – **न्नग्ग** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अन्नाग्र], उत्तम भोजन, मनपसन्द भोजन – *अप्पका ते सत्ता ये अन्नग्गरसग्गानं लाभिनो,* अ॰ नि॰ 1(1).50; – **न्नट्ठिक** त्रि॰, [अन्नार्थिन्], अन्न की इच्छा रखने वाला, भोजन की तलाश करने वाला – *यंनूनाहं इमासं पोक्खरणीनं तीरे एवरूपं दानं पट्ठपेय्यं अन्नं अन्नट्ठिकस्स, पानं पानट्ठिकस्स ...,* दी॰ नि॰ 2.134; – **द** पु॰, [अन्नद], अन्न या भोजन देने वाला – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अन्नदो बलदो होति, ...,* स॰ नि॰ 1(1).36; *भुत्वा पन दुब्बलोपि हुत्वा बलसम्पन्नो होति, तस्मा अन्नदो बलदो'ति आह,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.74; – **दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अन्नदा बलदा चेता,* सु॰ नि॰ 299; *तस्मा अन्नदा बलदा वण्णदा*

सुखदा चेताति वेदितब्बा, सु. नि. अट्ठ. 2.49; – **दायक** त्रि., [अन्नदायक], अन्न या भोजन प्रदान करने वाला – *अन्नं ददाती ति अन्नदायको,* क. व्या. 529; – **भच्च** पु., [अन्नभृत्य], भोजन के निमित्त बनने वाला सेवक, अन्न द्वारा भरण-पोषण किया जाने वाला भृत्य या सहायक – *अन्नभच्चा चभच्चा च, योध उद्दिस्स गच्छति,* जा. अट्ठ. 2.306; *तत्थ अन्नभच्चा चभच्चा चाति पुरिसं उपनिस्साय जीवमाना यागुभत्तादिना अन्नेन भरितब्बाति अन्नभच्चा,* जा. अट्ठ. 2.307; – **भार**[1] त्रि., ब. स., अन्न के भार को ढोने वाला, घसियारा, जौ से बने भोजन के भार को उठाने वाला – *अन्नभारनेसादानन्ति एत्थ अन्नं वुच्चति यवभत्तं, तं भारो एतेसन्ति अन्नभारा,* अ. नि. अट्ठ. 3.42; – **भार**[2] पु., व्य. सं., 1. एक परिव्राजक का नाम – *अन्नभारो वरधरो सकुलुदायी च परिब्बाजको अञ्ञे च अभिञ्ञाता ... परिब्बाजका,* म. नि. 2.204; *अन्नभारोति एकस्स परिब्बाजकस्स नामं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.168; 2. अनुरुद्ध थेर का पूर्वजन्मों में से एक जन्म का नाम – *अन्नभारो पुरे आसिं, दलिद्दो घासहारको,* थेरगा. 910; – **भारनेसाद** पु., द्व. स., घसियारे एवं पक्षी पकड़ने वाले बहेलिए या निषाद – *तथागतो धम्मं देसेति अन्तमसो अन्नभारनेसादानम्पि,* अ. नि. 2(1).114; *अन्नभारनेसादानन्ति एत्थ अन्नं वुच्चति यवभत्तं, तं भारो एतेसन्ति अन्नभारा,* अ. नि. अट्ठ. 3.42; – **संसावक** पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम; अप. 1.75-76; 281; – **सन्निधि** पु., [अन्नसन्निधि], अनाज का संग्रह या भण्डारण – *अन्नसन्निधिं पानसन्निधिं ... इति वा इति,* दी. नि. 1.6.

अन्नपान नपुं., द्व. स. [अन्नपान], भोजन और पीने योग्य वस्तु या पान – *ममन्नपानं विपुलं उळारं, उप्पज्जतीमस्स मनिस्स हेतु,* जा. अट्ठ. 2.237; *तत्थ ममन्नपानन्ति मम यागुभत्तादिदिब्बभोजनं अट्ठपानकभेदञ्च दिब्बपानं,* तदे.; *पहूते अन्नपानम्हि, खज्जभोज्जे उपट्ठिते,* खु. पा. (पृ.) 8; *अन्ने च पानम्हि च अन्नपानम्हि,* खु. पा. अट्ठ. 164; – **खादनिय** त्रि., द्व. स. [अन्नपानखादनीय], भात, पेय वस्तुएं एवं कौर निगल कर खाया जाने वाला भोजन – *नगरवासिनो बहुं अन्नपानखादनीयं आदाय विहारं गन्त्वा महादानं पवत्तयिंसु,* जा. अट्ठ. 5.331; – **भोजन** नपुं., द्व. स. [अन्नपानभोजन], भात, पेय पदार्थ या तरल पदार्थ तथा भोजन – *चण्डालकुले ... वा दलिद्दे अन्नपानभोजने कसिरवुत्तिके,* स. नि. 1(1).112; – **समायुत्त** त्रि., तत्पु. स. [अन्नपानासमायुक्त], वह, जिसे भोजन एवं पेय पदार्थ प्रदान कर दिये गये है, खाद्यों एवं पेयों से परिपूर्ण – *दसहि सद्देहि अविवित्तं, अन्नपानसमायुतं,* खु. पा. अट्ठ. 89; – **नादिक** त्रि., ब. स. [अन्नपानादिक], अन्न एवं पेय इत्यादि – *अन्नपानादिकस्स हि दसविधस्स दातब्बवत्थुनो एतं नामं,* पे. व. अट्ठ. 7; – **नादिविधि** पु., तत्पु. स. [अन्नपानादिविधि], अन्न एवं पीने के पदार्थों का विधान – *सो उपगन्त्वा ... सत्तमाय ... सिरिसयनं पञ्ञापेत्वा सब्बं अन्नपानादिविधिं उपट्ठपेत्वा देवकञ्ञायो विय ... होन्तु,* जा. अट्ठ. 7.183; – **पासनमङ्गल** नपुं., तत्पु. स. [अन्नप्राशनमङ्गल], शिशु को प्रथम बार अन्न ग्रहण कराए जाने का मङ्गलमय संस्कार, अन्नप्राशन का माङ्गलिक संस्कार – *कण्णवेधमहं चेव अन्नपासनमङ्गलं,* चू. वं. 62.53.

अन्ना स्त्री., मां – *भोति अम्मा, भोति अन्ना, ..., भोति ताता,* सद्द. 3.652; क. व्या. 115.

अन्वक्खर नपुं., अन्वक्खरं का संक्षिप्तीकृत रूप [अन्वक्षर], **शा. अ.** एक-एक अक्षर, प्रत्येक अक्षर, **ला. अ.** किसी विशेष प्रकार के पाठ का एक-एक अक्षर – *पदसो नाम पदं, अनुपदं, अन्वक्खरं, अनुब्यञ्जनं,* पाचि. 26; *अन्वक्खरन्ति एकेकमक्खरं,* पाचि. अट्ठ. 7.

अन्वग त्रि., अनुगत के संक्षिप्तीकृत रूप अनुग के मि. सा. पर अन्वगत का संक्षिप्तीकृत शब्दरूप, पीछे पीछे जाने वाला, अनुसरण करने वाला – *भयं नु ते अन्वगतं महन्तं, तेजो नु ते नान्वगं दन्तमूलं,* जा. अट्ठ. 5.165; *तेजो नु ते नान्वगं ... तेजो ... भयं महन्तं अन्वगतं, उदाहु विसं दन्तमूलं न अन्वगतं,* जा. अट्ठ. 5.167.

अन्वगत त्रि., अनु + √गम का भू. क. कृ. [अनुगत], उपरिवत् – *भयं नु ते अन्वगतं महन्तं, तेजो नु ते ...,* जा. अट्ठ. 5.165.

अन्वगू अनु + √गम का अद्य., प्र. पु., ए. व., अनुगच्छति के अन्त. द्रष्ट. – *अनुत्थुनन्तो कालङ्कतं, सोकस्स वसमन्वगू,* सु. नि. 591; *वसमन्वगूति वसं गतो,* सु. नि. अट्ठ. 164.

अन्वचारी अनुचरति के अन्त. द्रष्ट..

अन्वड्ढमासं / अन्वद्धमासं अ., अनु + अद्ध + मास से व्यु., क्रि. वि. [अन्वर्धमासं], प्रत्येक पखवारे में, प्रत्येक पन्द्रह दिनों में, आधे महीने में – *वीच्छायं-अन्वद्धमासं,* मो. व्या. 3.2; *अन्वड्ढमासं अनुदसाहं अनुपञ्चाहं देवे वस्सन्तेति अत्थो,* पे. व. अट्ठ. 122.

अन्वड्ढमासे / अन्वद्धमासे अ., सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., क्रि. वि., उपरिवत् - ..., *अन्वद्धमासे पण्णरसे पुण्णमाये उपोसथे पच्चयं नागं आरुय्ह दानं दातुं उपागमिन्ति* ..., सद्द. 1.243; *अन्वद्धमासे पन्नरसे,* ..., चरिया. 391; *तत्थ अन्वद्धमासेति अनुअद्धमासे,* चरिया. अट्ठ. 77.

अन्वत्थ / अन्वट्ठ त्रि., अनु + अत्थ से व्यु. [अन्वर्थ], अर्थ के अनुरूप, आशय या अभिप्राय के अनुरूप, उपयुक्त, सटीक - *अन्वट्ठं यत्थ नामं पि तं लङ्कातिलकं इति,* चू. वं. 78.53; - **नामधेय्य** त्रि., ब. स., लक्षण या प्रकृति के अनुरूप नाम वाला - *अन्वत्थनामधेय्यत्ता लक्खुय्यानं ति संमतं,* चू. वं. 79.4; - **पटिपत्ति** स्त्री., कर्म. स. [अन्वर्थप्रतिपत्ति], उपयुक्त, आचारण या अनुकूल व्यवहार - *तत्थ अन्वत्थपटिपत्तियाति सयं पच्चासीसितलद्धपटिपत्तिया, निब्बानलद्धभावेनाति, अत्थो,* चूळनि. अट्ठ. 8; - **पटिपदा** स्त्री., कर्म. स. [अन्वर्थप्रतिपत्], उपयुक्त मार्ग, उपयुक्त साधन या उपाय - *सम्मापटिपदाय ... अन्वत्थपटिपदाय ..., सीलेसु परिपूरिकारिताय इन्द्रियेसु गुत्तद्वारताय भोजने मत्तञ्ञुताय,* महानि. 10; *अन्वत्थपटिपदायाति अत्थअनुगताय पटिपदाय, उपरूपरि वड्ढिताय पटिपदाय,* महानि. अट्ठ. 50; - **सञ्ञा** स्त्री., कर्म. स. [अन्वर्थसंज्ञा], अर्थ या स्वभाव के अनुरूप नामकरण - *थेरिकेति इदं ..., पचुरेन अन्वत्थसञ्ञाभावतो पन थिरे सासने थिरभावप्पत्ते, थिरोहि ... समन्नागतेति अत्थो,* थेरीगा. अट्ठ. 6.

अन्वदेव अ., निपा. [अन्वगेव], बाद में, पीछे से, अनुकूल रूप में - *एत्थ अनुअन्दति अनुबन्धतीति अन्वदि, अन्वदि एव अन्वदेवा ति कितविग्गहो सन्धिविग्गहो च वेदितब्बो,* सद्द. 2.377; *पुब्बङ्गमा अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया अन्वदेव अहिरिकं अनोत्तप्पं,* इतिवु. 26; *अन्वदेव राजा महासुदस्सनो सद्धिं चतुरङ्गिनिया सेनाय,* दी. नि. 2.129; *अनुदेवाति अनु एव, द-कारो पदसन्धिवसेन आगतो,* सारत्थ. टी. 1.341; पाठा. अनुदेव.

अन्वय पु., अनु + √इ से व्यु. [अन्वय], **क.** पु., **शा. अ.** पीछे जाना, अनुगमन, साहचर्य, मेलजोल, **ला. अ.** वंशपरम्परा, वंशावली, बाद में सतत रूप से चल रही शृंखला - *कुलं वंसो च सन्तानाभिजना गोत्तमन्वयो,* अभि. प. 332; 1090; *यस्स पन आदिकालतो पभुति अन्वयवसेन सो एव जनपदो निवासो,* सु. नि. अट्ठ. 103; **ख.** पु. / त्रि., अनुगामी, अनुसरण करने वाला, आगे चलकर या बाद में अनुसरण करने वाला - *सत्था हि लोके पठमो महेसि, तस्सन्वयो सावको भावितत्तो,* इतिवु. 58; *गाथासु तस्सन्वयोति तस्सेव सत्थु पटिपत्तिया धम्मदेसनाय च अनुगमनेन तस्सन्वयो अनुजातो,* इतिवु. अट्ठ. 233; **ग.** त्रि., केवल स. उ. प. के रूप में, अनुगामी., अनुपालक., परिचर., काया., चित्त., तद., साक्यकुल., स्नेह. के अन्त. द्रष्ट.; **घ.** पु., **तर्क या हेतुविद्या के सन्दर्भ में**, तार्किक या युक्तियुक्त सम्बन्ध, तर्कसङ्गत नैरन्तर्य, हेतु और साध्य की सतत सहवर्तिता, विधानात्मक प्रतिज्ञा - *चत्तारि ञाणानि-धम्मे ञाणं, अन्वये ञाणं,* ..., दी. नि. 3.181; *अन्वये ञाणन्ति चत्तारि सच्चानि पच्चक्खतो दिस्वा यथा इदानि,* ..., दी. नि. अट्ठ. 3.184; *के पनायस्मतो आकारा, के अन्वया, येनायस्मा एवं वदेसि,* म. नि. 1.400; *अन्वयाति अनुबुद्धियो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).280; *के ... आकारा के अन्वया'ति,* म. नि. टी. (मू.प.) 1(2).280; *नामन्वयेन आगच्छुं, ये चञ्ञे सदिसा सह,* दी. नि. 2.192; **ङ.** पु., **व्यतिरेक के साथ प्रयुक्त,** अनुमानवाक्य में विधायक-प्रतिज्ञा, स्वीकारात्मक प्रतिज्ञा या सहमति, अंगीकारसूचक सामान्यपद - ... *च गाथाद्वयेन ब्यतिरेकतो अन्वयतो च विभावेति,* पे. व. अट्ठ. 197; - **संसग्ग** पु., तत्पु. स. [अन्वयसंसर्ग], विधानात्मक तार्किक सम्बन्ध की स्थापना - *इति चेति चे सद्दो अन्वयसंसग्गेन परिकप्पेतीति आह* ..., लीन. (दी.नि.टी.) 2.237; - **यागत** त्रि., तत्पु. स. [अन्वयागत], वंशपरम्परा से प्राप्त, पूर्वजों से प्राप्त - *तेन अन्वयागतम्पि भोगसम्पत्तिं दीपेति,* सु. नि. अट्ठ. 2.103.

अन्ववेक्खन नपुं., अनु + अव + √इक्ख से व्यु., केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त [अन्ववेक्षण], जांच-पड़ताल, परीक्षण - *पातिमोक्खसंवरो इन्द्रियानुरक्खणं, पच्चयान्ववेक्खनं जीवसुद्धि एव च,* सद्धम्मो. 449.

अन्वहं अ., क्रि. वि. [अन्वहं], प्रतिदिन - *अन्वहं पूजयी बोधिं, पटिमायो च कारयिं,* चू. वं. 41.29; 73.24; *अवसि सुगतधातुं अन्वहं वन्दमानो,* दा. वं. 4.8.

अन्वगच्छि अनु + आ + √गम का अद्य., प्र. पु., ए. व., पीछे-पीछे गया - *पुरिसो च ते पिट्ठितो अन्वगच्छि,* पे. व. 742(गा.).

अन्वागन्त्वान अनु + आ + √गम का पू. का. कृ., बाद में पुनः वापस आकर - *अन्वागन्त्वान दूसेय्य, भुञ्ज भोगे कटाहका'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.207.

अन्वागत त्रि., अनु + आ √गम का भू. क. कृ. [अन्वागत], **क. कर्म. वा. में,** किसी के द्वारा अनुगत या रक्षित,

परवर्ती काल में प्राप्त या अधिगत, किसी से परिपूर्ण या भरपूर - *तुम्हेव पादे सरणं गतास्मि, अन्वागता पुत्तसोकेन,* जा॰ अट्ठ॰ 4.346; *कतं किच्चं रतं रम्मं, सुखेनन्वागतं सुखन्ति,* थेरगा॰ 63; **ख. कर्तृ॰ वा॰ में, 1.** वापस लौटा हुआ, पुनः आया हुआ - *यक्खा हवे सन्ति महानुभावा, अन्वागता इसयो साधुरूपा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.346; *अन्वागताति अनु आगता,* तदे॰; **2.** वह, जिसने किसी का अनुगमन किया है अथवा किसी को अभिभूत कर लिया है - *यं मं पण्डारकनागं सुपण्णो अन्वागतोति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.73; ... *भयं महन्तं अन्वगतं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.167.

अन्वागमेति अनु + आ + √गम के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्वागमयति], आने देता है, वापस आने हेतु प्रेरित करता है, पुनः आने देता है - *कथञ्च, भिक्खवे, अतीतं अन्वागमेति?,* म॰ नि॰ 3.228; - **मेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्वागमयेत्], पुनः आने दे - *अतीतं नान्वागमेय्य, नप्पटिकङ्खे अनागतं,* म॰ नि॰ 3.227; *नान्वागमेय्याति तण्हादिट्ठीहि नानुगच्छेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.176.

अन्वाचय पु॰, अनु + आ + √चि से व्यु॰ [अन्वाचय], प्रधान वाक्य में एक क्रिया द्वारा मुख्य कार्य का कथन करके पुनः उपवाक्य की क्रिया द्वारा गौण कार्य का कथन, मुख्य कथ्य के साथ गौण कथ्य को जोड़ना, 'च' निपात का एक अर्थ - *तत्थ केवलसमुच्चये अन्वाचये च समासो न होति,* सद्द॰ 3.768; *तत्र अन्वाचये भिक्खञ्च देहि गवञ्चानेहीति वा दानञ्च देहि सीलञ्च रक्खाहीति वा इति अन्वाचयो भिक्खकिरियविसये दट्ठब्बो,* सद्द॰ 3.887.

अन्वादिट्ठ त्रि॰, अनु + आ + √दिस का भू॰ क॰ कृ॰ [अन्वादिष्ट], पुनः निर्दिष्ट, पूर्व में उल्लिखित शब्द या विचार का पुनः सङ्केत या उल्लेख - *एत्थाति अनन्तरवुत्तधम्माव अन्वाधिट्ठाति आह कण्हसुक्क ...,* लीन॰ (दी.नि.टी॰) 3.35.

अन्वादिसाहि अनु + आ + √दिस का अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्वादिस], पुनः संपुष्टि करो - *देहि पुत्तक मे दानं, दत्वा अन्वादिसाहि मे,* पे॰ व॰ 121; *अन्वादिसाहि मेति यथा दिन्नं दक्खिणं मय्हं उपकप्पति, तथा उद्दिस पत्तिदानं देहि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 69.

अन्वादेस पु॰, अनु + आ + √दिस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अन्वादेश], अनुकथन, पूर्वोक्त शब्द या कथन की पुनरुक्ति - *अथोति अन्वादेसेपि स्वागतं ते महाराज अथो ते अदुरागतं,* सद्द॰ 3.892.

अन्वाधिक त्रि॰, अनु + अधिक से व्यु॰, *वकार में दीर्घीकरण अच्चाहित के मि॰ सा॰ के कारण,* अधिक या अतिरिक्त प्रदान करने वाला - *अन्वाधिकम्पि आरोपेतुं,* महाव॰ 389; *अन्वाधिकम्पि आरोपेतुन्ति आगन्तुकपत्तम्पि दातुं* महाव॰ अट्ठ॰ 386; *सब्बेसु अप्पहोन्तेसु देय्यमन्वाधिकम्पि वा,* विन॰ वि॰ 561.

अन्वानयन्ति अनु + आ + √नी का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अन्वानयन्ति], बार-बार लाते हैं, पुनः पुनः प्राप्त कराते हैं - *सब्बेव ते निन्दमन्वानयन्तीति,* महानि॰ 224; *तत्थ अन्वानयन्तीति अनु आनयन्ति पुनप्पुनं आहरन्ति,* महानि॰ अट्ठ॰ 295.

अन्वामद्दि अनु + आ + √मद्द का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अनुमर्दन किया, निचोड़ दिया, दबा दिया, चाप दिया - *गलकं अन्वावमद्दि, नत्थि दुट्ठे सुभासितं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.425; पाठा॰ अन्वावमद्दि.

अन्वाय अ॰, अनु + आ + √इ का पू॰ का॰ कृ॰, आदेति से आदाय, निधेति से निधाय आदि के मि॰ सा॰ के द्वारा व्यु॰, *द्वि॰ वि॰ में अन्त होने वाले नामपद के पश्चसर्ग के रूप में प्रयुक्त;* **क.** के पश्चात्, के परिणाम-स्वरूप, के फलस्वरूप - *अथ खो सालवती गणिका गब्भस्स परिपाकमन्वाय पुत्तं विजायि,* महाव॰ 375; 464; ..., *तेसं संवासमन्वाय पुत्तो जायेथ,* दी॰ नि॰ 1.84; *न खो सो, भिक्खवे, कुमारो वुद्धिमन्वाय इन्द्रियानं परिपाकमन्वाय यानि तानि कुमारकानं कीळापनकानि तेहि कीळति,* म॰ नि॰ 1.337; **ख.** के द्वारा, माध्यम से, के फलस्वरूप, सहारा लेकर - *एकच्चो ... आतप्पमन्वाय ... सम्मामनसिकारमन्वाय तथारूपं चेतोसमाधिं फुसति,* दी॰ नि॰ 1.11; *एवं तिप्पभेदं वीरियं अन्वाय आगम्म पटिच्चाति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90.

अन्वायिक त्रि॰, अनु + √इ से व्यु॰, अनुगमन करने वाला, अनुयायी, पीछे लगा रहने वाला - *महास्स जनो अन्वायिको होति,* दी॰ नि॰ 3.127; ... *दुक्खं अन्वेति अनुगच्छति अन्वायिकं होति,* महानि॰ 13; *सीलं सिरी चापि सतञ्च धम्मो, अन्वायिका पञ्ञवतो भवन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.142; ... *अन्वायिका पञ्ञवतो भवन्ति पञ्ञवन्तमेव अनुगच्छन्ति,* तदे॰.

अन्वारुहि अनु + आ + √रुह का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आरोहण किया, किसी अन्य के साथ प्रवेश किया - *तं नागकञ्ञा चरितं गणेन, अन्वारुही कासिराजा पसन्नो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.420.

अन्वावज्जना स्त्री॰, अनु + आ + √वज्ज से व्यु॰, पुनः पुनः होने वाली प्रतिकूलता या विरुद्धता - *सच्चविप्पटिकूलेन वा*

चित्तस्स आवज्जना अन्वावज्जना अभोगो समन्नाहारो मनसिकारो, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.26.

अन्वावट्टन्ति / अन्वावत्तन्ति अनु + आ + √वत का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, किसी के आस-पास रहते हैं, चारों ओर से घेर लेते हैं, पास पहुंच जाते हैं – *तस्स तथावूपकट्ठस्स विहरतो अन्वावत्तन्ति ब्राह्मणगहपतिका नेगमा चेव जानपदा च,* म॰ नि॰ 3.158; *अन्वावत्तन्तीति अनुआवत्तन्ति उपसङ्कमन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.121.

अन्वावट्टना स्त्री॰, अनु + आ + √वत से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अन्वावर्तना], चारों ओर मडराते रहना, समीप पहुंच जाना, उपसंक्रमण – *सच्चविप्पटिकुसलेन वा चित्तस्स आवट्टना अनावट्टना आभोगो समन्नाहारो मनसिकारो,* विभ॰ 435; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).70; *अनुअनु आवट्टेतीति अनावट्टना,* विभ॰ अट्ठ॰ 472; पाठा॰ अनावट्टना.

अन्वाविसित्वा अनु + आ + √विस का पू॰ का॰ कृ॰, अभिभूत करके, ग्रस्त करके – *मारो पापिमा अञ्ञतरं ब्रह्मपारिसज्जं अन्वाविसित्वा मं एतदवोच,* म॰ नि॰ 1.410.

अन्वाविट्ठ त्रि॰, अनु + आ + √विस का भू॰ क॰ कृ॰ [अन्वाविष्ट], बुरी तरह से अभिभूत, ग्रस्त, पीड़ित – *अन्वाविट्ठा खो, भिक्खवे, णगहपतिका दूसिना मारेन,* म॰ नि॰ 1.419; *अन्वाविट्ठाति आवट्टिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).311.

अन्वाविसति अनु + आ + √विस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, भीतर प्रवेश कर जाता है, अभिभूत कर लेता है, वश में कर लेता है – **सेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *यंनूनाहं ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसेय्यं,* म॰ नि॰ 1.417-418; – **विसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि,* मि॰ प॰ 155.

अन्वासत्त त्रि॰, अनु + आ + √सञ्ज का भू॰ क॰ कृ॰ [अन्वासक्त], बन्धन में बांध दिया गया, जाल में फंसा लिया गया, अभिभूत कर लिया गया, वशीभूत किया हुआ – ... *तीहि पापकेहि अकुसलेहि वितक्केहि अन्वासत्ता,* अ॰ नि॰ 3(1).176; उदा॰ 108; *अन्वासत्ताति अनुबद्धा सम्परिवारिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.258; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, वशीभूतता, बन्धनबद्धता – *सत्था पन तीहि वितक्केहि अन्वासत्तताय* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.163.

अन्वास्सव अनु + आ + √सु से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अन्वास्रव], **शा॰ अ॰** ऊपर होकर निकल रहा बहाव, प्रचुर बहाव, **ला॰ अ॰** चित्त के सन्तान में क्लेशों या अकुशल धर्मों की प्रचुरता – *अन्वस्सुतोति इमाय पटिपत्तिया तेसु तेसु आरम्मणेसु किलेसअन्वास्सवविरहितो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.92.

अन्वास्सवति / अन्वासवति अनु + आ + √सु से व्यु॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्वास्रवति], **शा॰ अ॰** बाहर निकल कर या ऊपर होकर बहता है, प्रचुरता के साथ रिसता या टपकता रहता है, **ला॰ अ॰** अत्यधिक अभिभूत कर लेता है, किसी का अनुगमन कर उसके भीतर में भर जाता है; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *त्यस्स अन्तो वसन्ति अन्वासवन्ति पापका अकुसला धम्माति* ..., महानि॰ 11; *अन्वासवन्तीति, किलेससन्तानं अनुगन्त्वा भुसं सवन्ति अनुबन्धन्ति,* महानि॰ अट्ठ॰ 52; – **यिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एवं मे* ... *नाभिज्झादोमनस्सा पापका धम्मा अन्वास्सविस्सन्तीति,* अ॰ नि॰ 3(1).15; – **येय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं तस्स संवराय पटिपज्जति,* स॰ नि॰ 2(2).110.

अन्वास्सवन नपुं॰, अनु + आ + √सु से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, ऊपर से होकर बहाव या तरल पदार्थ का बहना, चित्तसन्तान में अकुशल धर्मों का भर जाना – ... *पुग्गलं एतेसं हीनधम्मानं वस्सनतो सिञ्चनतो अन्वास्सवनतो वसलो'ति नानेय्याति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.141.

अन्वाहत त्रि॰, अनु + आ + √हन का भू॰ क॰ कृ॰ [अन्वाहत], **शा॰ अ॰** पीछे या बाद में पीटा गया या प्रहार किया गया, **ला॰ अ॰** व्याकुल, उद्विग्न, अशान्त, केवल निषे॰ स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त, अनन्वाहतचेतसो के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अन्वाहिण्डति अनु + आ + √हिड का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अन्वाहिण्डते], इधर-उधर भटकता है या घूमता है, कुछ खोजते हुए इधर से उधर जाता है, विचरता है – ... *महामोग्गल्लानो आयस्मा च आनन्दो अवापुरणं आदाय विहारे आहिण्डन्ति,* अ॰ नि॰ 3(1).190; पाठा॰ आहिण्डति; – **न्त** वर्त॰ कृ॰, इधर उधर विचरता हुआ – ... *महानामो* ... *भगवतो* ... *पटिस्सुत्वा कपिलवत्थुं पविसित्वा केवलकप्पं कपिलवत्थुं अन्वाहिण्डनतो नाद्दस कपिलवत्थुस्मिं* ... *विहरेय्य,* अ॰ नि॰ 1(1).312; *अन्वाहिण्डन्तोति विचरन्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.230; ... *उसभो छिन्नविसाणो* ... *रथियाय रथियं सिङ्घाटकेन सिङ्घाटकं अन्वाहिण्डन्तो न किञ्चि हिंसति* ..., अ॰ नि॰ 3(1).192.

अन्विच्छा स्त्री॰, [अन्विच्छा], बार बार हो रही इच्छा, मन में पुनः पुनः उत्पन्न इच्छा – *पुनप्पुनं इच्छा अनविच्छा,* सद्द॰ 2.447; पाठा॰ अनविच्छा.

अन्वेत त्रि., अनु + √इ का भू. क. कृ. [अन्वित], वह, जिसका किसी के द्वारा अनुगमन किया जा रहा हो, उपगत, युक्त, सहित – *यथा वा विस्सासवसेन सीहं मिगमातुका अन्वेता उपगताति अत्थो,* जा. अट्ठ. 1.371.

अन्वेति अनु + √इ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अन्वेति], अनुगमन करता है, पीछा करता है, पीछे लगा रहता है – *ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्कंव वहतो पद'न्ति,* ध. प. 1; सु. नि. 776; *ततो नं दुक्खमन्वेतीति ततो तिविधदुच्चरिततो तं पुग्गलं दुक्खं अन्वेति, दुच्चरितानुभावेन चतूसु अपायेसु, मनुस्सेसु ... कायिकचेतसिकं विपाकदुक्खं अनुगच्छति,* ध. प. अट्ठ. 1.15; ..., *तेनेव मारो अन्वेति जन्तुं,* सु. नि. 1109; *तेनेव मारो अन्वेति जन्तुन्ति तेनेव उपादानपच्चय-निब्बत्तकम्माभिसङ्खारनिब्बत्तवसेन पटिसन्धिक्खन्धमारो तं सत्तं अनुगच्छति,* सु. नि. अट्ठ. 2.291; – **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. – ... *निन्दमेव अन्वेन्ति, गरहमेव अन्वेन्ति, अकित्तिमेव अन्वेन्ति, ... –सब्बेव ते निन्दमन्वानयन्ति,* महानि. 224; – **तु** अनु., प्र. पु., ए. व. [अन्वेतु], – *तस्सा सा वसमन्वेतु, या ते अम्बे अवाहरी'ति,* जा. अट्ठ. 3.118; *तस्स एवरूपस्स महल्लकस्स सा वसं अन्वेतु, तथारूपं पतिं लभतु,* तदे.; – **न्तु** अनु., प्र. पु., ब. व. – *नेगमा च मं अन्वेन्तु, गच्छं पुत्तनिवेदको,* जा. अट्ठ. 6.26; – **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *सिविमग्गेन अन्वेसि, पुत्ते आदाय लक्खणा'ति,* जा. अट्ठ. 7.268; *अन्वेसीति तं अगमासि, पासादा ओतरित्वा रथं ... अत्थो,* तदे.; – **तुं** निमि. कृ. – ... *पाणिं विसं अन्वेतुं न सक्कोति,* ध. प. अट्ठ. 2.17.

अन्वेसति अनु + √इस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अन्विष्यति], व्यु. क्रि. रू. - **सं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. [अन्विष्यन्], खोज करता हुआ, ढूंढ़ता हुआ, अन्वेषण करता हुआ – *भिक्खुं सइन्दा देवा सब्रह्मका सपजापतिका अन्वेसं नाधिगच्छन्ति,* म. नि. 1.194; *तत्थ अन्वेसन्ति अन्वेसन्ता गवेसन्ता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).22; – **न्त** त्रि., वर्त. कृ., उपरिवत् – *ततो सो वट्टगतं मग्गं, अन्वेसन्तो कुमारको,* चरिया. 403; *तत्थ अन्वेसन्ति अन्वेसन्ता गवेसन्ता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).22; – **मान** त्रि., वर्त. कृ., आत्मने., उपरिवत् – *कुसलानुएसीति कुसलधम्मे अन्वेसमानो,* सु. नि. अट्ठ. 2.264; *फलमन्वेसमाना ते, अलभिंसु फलं तदा,* अप. 1.325.

अन्वेसन नपुं., अनु + √इस से व्यु., क्रि. ना. [अन्वेषण], खोज, तलाश – *मग अन्वेसने,* सद्द. 2.524.

अन्वेसना स्त्री., अन्वेसन से व्यु. [अन्वेषणा], उपरिवत् – *परियेसनान्वेसना परियेट्ठि गवेसना,* अभि. प. 428.

अन्वेसी त्रि., [अन्वेषिन्], अन्वेषण या किसी वस्तु की खोज करने वाला, इच्छा या अभिलाषा करने वाला, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त – *कुसलानुएसीति कुसलधम्मे अन्वेसमानो,* सु. नि. अट्ठ. 2.264; पाठा. कुसलानुएसी.

अन्वेसित त्रि., अनु + √इस का भू. क. कृ., चाहा गया, प्रार्थित, अभीष्ट, वाञ्छित – *मग्गितं परियेसितं, अन्वेसितं गवेसितं,* अभि. प. 753.

अन्ह पु., अण्ह का अप. [अहन्], दिन, केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, पुब्बण्ह, मज्झन्ह, अपरण्ह के अन्त. द्रष्ट..

√**अप**¹ प्राप्ति अर्थ वाली एक धातु – *अप सम्भु च पापुणने ...,* धा. मं. 117; *अप पापुणे,* सद्द. 2.493.

अप² अ., उप. [अप], **क.** क्रि. प. एवं ना. प. के पूर्व में प्रयुक्त एक उप., यत्र-तत्र अव के स्थान पर भी प्रयुक्त, वर्जन, निवारण, प्रदूषण, गर्हा या निन्दा, अर्थों का संकेतक – *अपसद्दो अपगते गरहावज्जनेसु च, पदुस्सने पूजनादिअत्थेसु पि च दिस्सति,* सद्द. 3.884; *निद्देसे वज्जने पूजापगतेवारणे पि च,* अभि. प. 1184; **ख. निन्दा अर्थ में** – *अपगब्भो समणो गोतमो'ति,* पारा. 4; **ग. वर्जन या मना करने के अर्थ में** – *अपसालाय आयन्ति वाणिजा,* सद्द. 3.702; **घ. प्रदूषण अर्थ में** – *अपरद्धा सुद्धिमकेवली ते,* सु. नि. 897; *गन्तुं न हि तीरमपत्थि, सब्बसमा हि समन्तकपल्ला,* सु. नि. 677; *गन्तुं न हि तीरमपत्थीति अपगन्तुं न हि तीरं अत्थि,* सु. नि. अट्ठ. 2.182; **ङ. प. वि. में अन्त होने वाले पद से पूर्व में प्रयुक्त** – से दूर, से बाहर, के बिना, से रहित – *अप सालाय आयन्ति वणिजा,* क. व्या. 274; सद्द. 702.18; *कल्याणिनामनगरा अप दक्खिणस्मिं,* चू. वं. 91.6; **च.** *अव्ययी. स. के पद के रूप में* द्वि. वि. अथवा प. वि. के स. प. के पू. प. के रूप में प्राप्त, उपरिवत् – *अपपब्बतं वस्सि देवो, अपपब्बतो,* मो. व्या. 3.5.

अपकट्ठ त्रि., अप + √कस का भू. क. कृ. [अपकृष्ट], खींचकर दूर ले जाया गया, दूर हटा दिया गया, दृढ़ता के साथ नहीं जुड़ा हुआ – *न च कायस्मिं अल्लीनं न च कायस्मा अपकट्ठं, ...,* म. नि. 2.347; *अपकड्ढन्ति खलिसाटको विय कायतो मुच्चित्वापि न तिट्ठति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.278.

अपकड्ढन्ति अप + √कड्ढ का वर्त., प्र. पु., ब. व. [अपकर्षन्ति], खींच कर दूर ले जाते हैं, दूर हटा देते हैं, दूर तक खींच

ले जाते हैं – *पुरिसस्स सञ्ञं उपकड्डन्तिपि,* दी॰ नि॰ 1.162; *ततियो नं निसेधेत्वा आथब्बणपयोगं सन्धाय उपकड्डन्तिपि अपकड्डन्तिपी'ति आह,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.275; *तानि भिक्खू उदकेन तेमेत्वा ... अपकड्डन्ति,* महाव॰ 277; – **ड्डाम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰, बाहर खींच कर ले आते हैं – *तानि मयं उदकेन तेमेत्वा तेमेत्वा अपकड्डामा'ति,* महाव॰ 277; 387; – **ड्डन्त** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰, खींच कर बाहर ले जा रहा, बाहर निकाल रहा – ... *छन्दरागं अपकड्डन्तो विचेस्सति विचिनिस्सति विजानिस्सति पटिविज्झस्सति सच्छिकरिस्सति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.190; *अद्दसा ... आहिण्डन्तो ... चीवरानि उदकेन तेमेत्वा तेमेत्वा अपकड्डन्ते,* महाव॰ 277; 387; – **ड्डेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, निकाल बाहर करे – *इदमेत्थ अपकड्डेय्य, एवं तं परिसुद्धतरं अस्साति, इति हेतं न पस्सति,* दी॰ नि॰ 3.94; – **ड्ढि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, खींच कर बाहर कर दिया, निकाल बाहर किया – *अथ खो जीवको कोमारभच्चो सेट्ठिभरियाय सत्तवस्सिकं सीसाबाधं एकेनेव नत्थुकम्मेन अपकड्ढि,* महाव॰ 360; – **ड्ढित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *सो थेरं वन्दनकाले कम्बलतो अङ्गुलिं अपकड्ढित्वा कम्बलं थेरस्स पादमूले पातेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.298.

अपकड्डन अप + √कड्ड से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपकर्षण], निकाल बाहर करना, दूर कर देना – *तेसु दोसं दिस्वा छन्दरागस्सापकड्डनं पहानपरिञ्ञा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.149.

अपकड्डापेत्वा अप + √कड्ड के प्रेर॰ का पू॰ का॰ कृ॰, दूर करा कर, निकाल बाहर करा कर, हटवा कर – ... *गीवायं गहेत्वा अपकड्डापेत्वा अत्तनो पमाणं न जानाथ,* जा॰ अट्ठ॰ 1.327; ... *खाणुकण्टकं अपकड्डापेत्वा भूमिं समं ... अपरभागे ... नगरं मापेति,* मि॰ प॰ 31.

अपकत त्रि॰, अप + √कर का भू॰ क॰ कृ॰ [अपकृत], वह, जिसके साथ अनुचित कार्य या व्यवहार किया गया हो, अपमानित, पीड़ित, ग्रस्त – *इच्छापकतस्साति इच्छाय अपकतस्स, उपद्दुतस्साति अत्थो,* विभ॰ अट्ठ॰ 453.

अपकतञ्ञू त्रि॰, अप्पकतञ्ञू के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपकतिभोजन नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अप्रकृतिभोजन], असामान्य भोजन, अप्राकृतिक आहार – *महाविकटभोजनस्मिन्ति महन्ते विकटभोजने, अपकतिभोजनेति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).359.

अपकस्सति अप + √कस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपकर्षति], **क. सक॰ क्रि॰ के रूप में** – खींच कर दूर ले जाता है, दूर कर देता है, हटा देता है, शान्त कर देता है; – **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ [अपकर्षत], शान्त कर दो, दूर कर दो – *कारण्डवं निद्धमथ, कसम्बुं अपकस्सथ,* सु॰ नि॰ 283; ..., *तं कचवरभूतं पुग्गलं कचवरमिव अनपेक्खा निद्धमथ, सकटभूतञ्च ... पथिन्नपग्घरितकुट्ठं चण्डालं विय अपकस्सथ, हत्थे वा सीले वा गहेत्वा निकड्ढथ,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.42; – **स्स** पू॰ का॰ कृ॰ [अपकृष्य], दूर करके, शान्त करके, हटाकर – *अपकस्सेव कायं, अपकस्स चित्तं, निच्चनवका कुलेसु अप्पगब्भा,* स॰ नि॰ 1(2).177; *अपकस्स चित्तन्ति तेनेव सन्थवादीनं अकरणेन कायञ्च चित्तञ्च अपकस्सित्वा अपनेत्वाति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.148; **ख. अक॰ क्रि॰ के रूप में** – दूर हटा देता है, विलग हो जाता है या कर देता है, इधर उधर कर देता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ते इमेहि अट्ठारसहि वत्थूहि अपकस्सन्ति, अवपकस्सन्ति, आवेनिं उपोसथं करोन्ति, ..., एत्तावता खो, उपालि सङ्घो भिन्नो होति,* चूळव॰ 345; *तत्थ अपकस्सन्तीति परिसं आकड्डन्ति, विजटेन्ति, एकमन्तं उस्सारेन्ति च,* चूळव॰ अट्ठ॰ 114.

अपकार पु॰, अप + √कर का क्रि॰ ना॰ [अपकार], अहित उत्पन्न करने वाला काम, गिरा हुआ नीच कर्म, दूसरे की हानि करना या कष्ट पहुंचाना – *बुद्धस्स अपकारेन, दुग्गन्धा वदनेन च,* अप॰ 2.251; थेरीगा॰ अट्ठ॰ 79; *पापानं दुट्ठचित्तानं अपकारे कतं बहू,* चू॰ वं॰ 46.8; – **रोपकार** पु॰, अपकार + उपकार का द्व॰ स॰ [अपकारोपकार], दूसरे को कष्ट देने वाला काम तथा हितकारक काम – *सुकम्मं समुपट्ठाति अपकारोपकारतो,* सद्धम्मो॰ 283.

अपकीरितून अप + √किर का पू॰ का॰ कृ॰ [अपकीर्य], निरर्थक या तुच्छ रूप में इधर-उधर फेंक कर या बिखेर कर – *तस्सेतं कम्मफलं, यं मं अपकीरितून गच्छन्ति,* थेरीगा॰ 449; *यं मं अपकीरितून गच्छन्तीति यं दासी विय सक्कच्चं उपट्ठहन्ति मं तत्थ तत्थ पतिनो अपकिरित्वा छड्डेत्वा अनपेक्खा अपगच्छिन्ति,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 294.

अपक्क त्रि॰, √पच के भू॰ क॰ कृ॰ (पक्क) का निषे॰ [अपक्व], **शा॰ अ॰** वह जो उबला हुआ नहीं हो, कच्चा, नहीं पकाया हुआ, सूखा – ... *भिक्खू न जानन्ति रजनं पक्कं वा अपक्कं वा,* महाव॰ 376; *अनग्गिपक्किकाति अग्गिना अपक्कपत्तफलानि खादित्वा यापेन्ता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.270; **ला॰ अ॰** परिपाक की अवस्था को अप्राप्त कर्म, विपाक की स्थिति को अप्राप्त कर्म – *न खो, राजञ्ञ, समणब्राह्मणा सीलवन्तो कल्याणधम्मा, अपक्कं परिपाचेन्ति,* दी॰ नि॰

2.247; *अपक्कं न परिपाचेन्तीति अपरिणतं अखीणं आयुं अन्तराव न उपच्छिन्दन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.360; *न च अरहन्तो अपक्कं पातेन्ति,* मि॰ प॰ 44; – **भाव** पु॰, कर्म॰ स॰ [अपक्वभाव], न पके हुए होने की अवस्था, कच्चा रहने की स्थिति

अपक्कट्ठ त्रि॰, द्रष्ट॰ अपकट्ठ के अन्त॰ ऊपर.

अपक्कन्त त्रि॰, अप + √कम का भू॰ क॰ कृ॰ [अपक्रान्त], दूर ले जाया गया, विमुक्त कर दिया गया, पृथक् या अलग कर दिया गया, हट चुका, भागा हुआ – *अरियधम्मा अपक्कन्तो, यथा पेतो तथेवहं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.413; *अञ्ञाय ... सक्यपुत्तिकानं ... धम्मविनया अपकन्तोति,* अ॰ नि॰ 1(1).213; *मोघपुरिसा अपक्कन्ता इमम्हा धम्मविनया,* म॰ नि॰ 2.155; 205.

अपक्कम पु॰, अप + √कम का क्रि॰ ना॰ [अपक्रम], दूर चला जाना, भाग जाना, हट जाना, पलायन करना – *पराजयो रणे भङ्गो, पलायनमपक्कमो,* अभि॰ प॰ 402.

अपक्कमति अप + √कम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपक्राम्यति], दूर भाग जाता है, पलायन कर जाता है, चला जाता है, हट जाता है, छोड़ जाता है, वियुक्त हो जाता है; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अपक्राम्यन्ति], दूर भाग जाते हैं – *अलिकं भासमानस्स, अपक्कमन्ति देवता,* जा॰ अट्ठ॰ 3.402; *अपक्कमन्ति ..., सचे अलिकं भणिस्सति; चत्तारो देवपुत्ता ... अन्तरधायिस्सन्तीति ...,* तदे॰; – **मे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अनुसूयमनक्कोसं, सणिकं तम्हा अपक्कमे'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.23; – **मेय्य** उपरिवत् – *यथा तं आपायिकोति यथा अपाये निब्बत्तनारहो सत्तो अपक्कमेय्य, एवमेव अपक्कमीति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.3; – **क्कमि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अलद्धा तत्थ अस्सादं, वायसेत्तो अपक्कमि,* सु॰ नि॰ 450; स॰ नि॰ 1(1).145; *अथ खो तत्थ अस्सादं अलभित्वाव वायसो एत्तो अपक्कमेय्य,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.164; – **क्कमिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तं धम्म अनलङ्करित्वा तस्मा धम्मा निब्बिज्ज अपक्कमिं,* म॰ नि॰ 1.224; *अपक्कमिन्ति अगमासिं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).76; – **क्कमुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सुत्वा नेलपतिं वाचं, वाळा पन्था अपक्कमुं'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.332; – **क्कमितुं** निमि॰ कृ॰ – ... *बुद्धानं सन्तिका अपक्कमितुकामो हुत्वा ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.119; – **क्कम्म** पू॰ का॰ कृ॰ – *ततो च सो अपक्कम्म, वेदेहस्स उपन्तिका,* जा॰ अट्ठ॰ 6.244.

अपक्कोसित त्रि॰, पक्कोसित का निषे॰ [अप्रक्रुष्ट], वह, जिसे पुकारा नहीं गया हैं या बुलाया नहीं गया है – *एहि मय्हं पुत्तभावं उपगच्छा'ति एवं अपक्कोसितो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 54.

अपक्ख[1] त्रि॰, पक्ख का निषे॰, ब॰ स॰ [अपक्ष], वह, जो किसी एक का पक्ष नहीं ले रहा हो, पक्षपातरहित; – **ता** स्त्री॰, अपक्ख का भाव॰, पक्षपात से रहित होने की दशा – *दुब्बल्याति अपक्खता,* पाचि॰ 327.

अपक्ख[2] त्रि॰, पक्ख का निषे॰, ब॰ स॰, विकलाङ्गता से रहित, वह, जिसके अङ्गों में कोई व्याधि न हो – *अमूगो मूगवण्णेन, अपक्खो पक्खसम्मतो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.20.

अपक्खिक त्रि॰, अपक्ख[1] से व्यु॰ [अपक्षिक], बिना प्रतिपक्ष वाला, ऐसा वाद, जिसमें कोई प्रतिपक्ष न रहे – ... *अपक्खिको वादो न सोभती'ति ...,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 113.

अपगच्छति अप + √गम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपगच्छति], दूर चला जाता है, नष्ट हो जाता है, एक ओर को हो जाता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अपगच्छन्ति], दूर चली जाती हैं। चले जाते हैं – *सब्बा ईतियो अपगच्छन्तीति,* मि॰ प॰ 152; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपगच्छतु], दूर चला जाए, हट जाए – *पुन थोकं निद्दायित्वा वट्टितो वातवुट्ठि विय तालवण्टवातं असहन्तो को एस? अपगच्छतू'ति आह,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 225; – **च्छामि** अनु॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपगच्छामि], पलायन कर जाऊं – *तत्थ अपायामीति अपगच्छामि, पलायामीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 28; – **च्छ** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपगच्छ], पलायन कर जाओ, भाग जाओ – *अपगच्छा'ति तज्जेसि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 225; – **च्छथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ [अपगच्छत], पलायन कर जाओ, भाग जाओ – *अपगच्छथा'ति अच्छरं पहरि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.238; – **च्छाम** अनु॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ [अपगच्छाम], भाग जाएं – *हन्द मयं अपगच्छाम,* मि॰ प॰ 199; – **गमि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपागमत्], दूर भाग गया – ... *वसितुं असक्कोन्तो अपगमि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.85; – **च्छिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [अपागमन्], दूर भाग गए – *ते एक वचनेनेव अपगच्छिंसु,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 225; – **न्तुं** निमि॰ कृ॰, दूर भागने के लिए – *गन्तुं न हि तीरमपत्थीति अपगन्तुं न हि तीरं अत्थि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182; – **न्त्वा** पू॰ का॰ कृ॰, पलायन कर, दूर जा कर – ..., *एवं अपगन्त्वा अट्ठासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.224.

अपगत त्रि॰, अप॰ + √गम का भू॰ क॰ कृ॰ [अपगत], दूर गया हुआ, हटाया हुआ, वियुक्त कर दिया गया, से रहित – *निद्देसे वज्जने पूजापगतेवारणे पि च,* अभि॰ प॰ 1184; *अपगता इमे सामञ्ञा, अपगता इमे ब्रह्मञ्ञा,* उदा॰ 119; *अपगताति अपेता परिभट्ठा,* उदा॰ अट्ठ॰ 210; *तेनाहं लिङ्गेन दूरमपगतो'ति अरहति उपासको सोतापन्नो भिक्खुं पुथुज्जनं*

अभिवादेतुं पुच्छितुं, मि॰ प॰ 161; *अपगता च ते, भिक्खवे, भिक्खू इमस्मा धम्मविनया,* इतिवु॰ 80; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अत्था॰, अनुसया॰, अहङ्कारममकारमाना॰, दूरा॰, सब्बनिमित्ता॰, सामञ्ञा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **तकाळक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतकालक], **शा॰ अ॰** काले धब्बों या काले दागों से रहित, **ला॰ अ॰** चित्त के मलिन तत्त्वों या अकुशल धर्मों से मुक्त, परिशुद्ध – *सेय्यथापि नाम सुद्धं वत्थं अपगतकाळकं सम्मदेव रजनं पटिग्गण्हेय्य,* महाव॰ 20; 22; *एवं तिवस्सं परिवुत्थस्स सगन्धरत्तसालिनो अपगतकाळके सुपरिसुद्धे तण्डुले गहेत्वा ... पटिमादियिंसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.201; *भिक्खुसङ्घो निरादीनवो अपगतकालको सुद्धो सारे पतिट्ठितो,* पारा॰ 10; *अपगतकालळकोति काळका वच्चन्ति दुस्सीलायेव, ... तेसं अभावा अपगतकाळको, अपहतकाळकोतिपि पाठो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.149; – **त्त** नपुं॰, अपगतकालक का भाव॰ [अपगतकालकत्व], काले धब्बों या अकुशल धर्मों से रहित होने की अवस्था - *सुद्धोति अपगतकाळकत्तायेव सुद्धो परियोदातो पभस्सरो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.149; – **केस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतकेश], केशों से रहित, बिना केशों वाला – *निवुत्तकेसोति अपनीतकेसो, ओहरितकेसमस्सूति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.118; पाठा॰ अपनीतकेसो; – **कोतूहलमङ्गलिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतकौतूहलमाङ्गलिक], **शा॰ अ॰** कौतूहल भरे माङ्गलिक अनुष्ठानों में विश्वास न रखने वाला, **ला॰ अ॰** अन्धविश्वासों या मिथ्यादृष्टि से मुक्त, सम्यक् दृष्टि वाला – *सम्मादिट्ठिको होति, अपगतकोतूहलमङ्गलिको जीवितहेतुपि न अञ्ञं सत्थारं उद्दिसति,* मि॰ प॰ 106; – **खील** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतकील], **शा॰ अ॰** खूंटे से रहित; **ला॰ अ॰** क्लेशों से रहित – *विगतखिलोति अपगतखिलो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.26; – **गब्भा** स्त्री॰, ब॰ स॰ [अपगतगर्भा], गर्भ धारण न करने वाली नारी, बन्ध्या नारी – ... *अञ्ञतरा इत्थी अपगतगब्भा भिक्खू निमन्तेत्वा दुस्सं पञ्ञपेत्वा एतदवोच,* चूळव॰ 248; *मङ्गलत्थाय याचियमानेनाति अपगतगब्भा वा होतु गरुगब्भा वा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 53; – **जिम्ह** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतजिह्म], टेढ़ेपन से रहित, वक्रता से रहित – *एवायं नेमि अपगतवङ्का अपगतजिम्हा अपगतदोसा सुद्धा अस्स सारे पतिट्ठिता'ति,* म॰ नि॰ 1.39; – **जीवित** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतजीवित], प्राण–रहित, जीवनरहित, मृत – *तत्थ मञ्ञे ओक्कन्तसत्तं मन्ति एवं सन्ते अहं मं अपगतजीवितं सल्लक्खेमि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.253; – **तचपपटिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतत्वक्पर्पटीक], भीतरी एवं बाहरी त्वचा से रहित, ऊपरी आवरणों से मुक्त, परिशुद्ध, सहज – *एवमेव भोतो गोतमस्स पावचनं अपगतसाखापलासं अपगततचपपटिकं अपगतफेग्गुकं सुद्धं, सारे पतिट्ठितं,* म॰ नि॰ 2.166; – **दोस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतदोष], दोषरहित – *एवायं नेमि अपगतवङ्का अपगतजिम्हा अपगतदोसा सुद्धा अस्स सारे पतिट्ठिता'ति,* म॰ नि॰ 1.39; – **पटलपिळक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतपटलपिड़क], जाला एवं गूमड़ा से रहित – *मंसचक्खुम्पि हिस्स परिसुद्धं वट्टति अपगतपटलपिळकं, पञ्ञाचक्खुम्पि असारभावदस्सन-समत्थं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.284; – **फेग्गुक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतफल्गुक], खोखली या साररहित लकड़ी से रहित, निस्सारता से रहित, सारवान् – *एवमेव ... अपगतसाखापलासं अपगततचपपटिकं अपगतफेग्गुकं सुद्धं, सारे पतिट्ठितं,* म॰ नि॰ 2.166; – **मंसलोहित** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतमांसलोहित], मांस एवं रक्त से रहित – ... *अट्ठिकसङ्खलिकं अपगतमंसलोहितं न्हारुसम्बन्धं ...,* दी॰ नि॰ 2.219; *अपगतमंसलोहितं न्हारुसम्बन्धन्ति एका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.326; – **मेघ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतमेघ], मेघों से रहित, बिना बादलों वाला – *विगतवलाहकन्ति अपगतमेघं,* उदा॰ अट्ठ॰ 80; महाव॰ अट्ठ॰ 231; – **रज** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतरज], धूलरहित, स्वच्छ, मलिनता-रहित – *अरजविरजहेमजालछन्नन्ति सयं अपगतरजं विरजेन निद्दोसेन कञ्चनजालेन छादितं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 198; – **लज्ज** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतलज्ज], निर्लज्ज, लज्जारहित – *अथ सा ... पदेसे वासं कप्पेन्ती कतिपाहच्चयेन अपगतलज्जा ... जीविकं कप्पेसि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 40; – **वङ्क** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतवक्र], वक्रता या टेढ़ेपन से रहित – *एवायं नेमि अपगतवङ्का अपगतजिम्हा अपगतदोसा सुद्धा अस्स सारे पतिट्ठिता'ति,* म॰ नि॰ 1.39; – **वत्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतवस्त्र], वस्त्रों से रहित, नग्न – ..., *एकच्चा अपगतवत्था, पाकटबीभच्छसम्बाधट्ठाना,* जा॰ अट्ठ॰ 1.71; – **विञ्ञाण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतविज्ञान], चेतना से रहित, मृत – *अचिरं कायो अपेतविञ्ञाणोति अयं कायो अचिरेनेव अपगतविञ्ञाणो सुसानं निब्बुय्हति उपनीयति,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 308; *न ओग्गतत्तस्स भवन्ति मित्ताति अपगतविञ्ञाणस्स मतस्स मित्ता नाम न होन्ति मित्तेहि कातब्बकिच्चस्स अतिक्कन्तत्ता,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 191; *यथा हि जीवितिन्द्रियुपच्छेदेन मता दारुक्खन्धसदिसा अपगतविञ्ञाणा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.130-31; – **सम्बन्ध** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतसम्बन्ध], जोड़ने वाले सम्बन्धों से विहीन, जोड़ों से रहित, संयोजक तत्त्वों से

रहित - *अट्ठिकानि अपगतसम्बन्धानि दिसा विदिसा विक्खित्तानि,* दी॰ नि॰ 2.219; *अट्ठिकानि अपगतसम्बन्धानीति आदिका एका अट्ठिकानि सेतानि सङ्खवण्णपटिभागानीति एका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.326; - **साखापलास** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतशाखापलाश], शाखाओं तथा पत्तों एवं पंखुड़ियों से रहित, बिना शाखाओं एवं पत्तों वाला - *एवमेव भोतो गोतमस्स पावचनं अपगतसाखापलासं अपगततचपपटिकं अपगतफेग्गुकं सुद्धं, सारे पतिट्ठितं,* म॰ नि॰ 2.166; - **सुक्कधम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतशुक्लधर्म], कुशलधर्मों से रहित, अच्छे गुणों से विहीन - *कथञ्हि नाम मे तातो अपगतसुक्कधम्मं निल्लज्जं नग्गभोग्गं उपसङ्कमित्वा पञ्हं पुच्छिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.116; - **सोक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपगतशोक], शोक-रहित, शोक न करने वाला - *अत्थस्स सत्था सोकविनोदनं धम्मकथं कत्वा अपगतसोकं कल्लचित्तं विदित्वा ... अगमासि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 33.

अपगब्भ त्रि॰, [अपगर्भा], 1. देवलोक में उत्पत्ति देने वाले गर्भ में न आने वाला, हीन गर्भ वाला - *गब्भतो अपगतोति अपगब्भो, अभब्बो देवलोकूपपत्तिं पापुणितुन्ति अधिप्पायो हीनो वा गब्भो अस्सातिं अपगब्भो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.202; 2. भविष्य में गर्भग्रहण न करने वाला - *गब्भतो अपगतोति अपगब्भो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.202; *अपगब्भताय धम्मं देसेति,* अ॰ नि॰ 3(1).28; महाव॰ 311; *तस्मा सो तं अपगब्भतं अत्तनि सम्पस्समानो अपरम्पि परियायं अनुजानाति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.100.

अपगब्भ त्रि॰, पगब्भ का निषे॰, अप्पगब्भ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपगम पु॰, अप + √गम का क्रि॰ ना॰ [अपगम], दूर चला जाना, अदृश्य हो जाना, विलुप्त हो जाना, नाश - *भुसत्थापगमाधिक्यपुब्बकम्मनिवत्तिसु,* अभि॰ प॰ 1185; ... *सुखदुक्खानं अपगमे सातासातप्पटिक्खेपवसेन ... पाकटा होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).288; *पण्डुपलासो बन्धना पवुत्तो'तिआदीसु अपगमे,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(1).166; *आकासे पवत्तितविञ्ञाणस्स अपगमातिक्कमतो चतुत्थाति सब्बथा ... वेदितब्बा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 253.

अपगमन नपुं॰, [अपगमन], उपरिवत् - *पच्छिमेन पञ्ञाय अपगमनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).15; खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 91.

अपग्घरणक त्रि॰, पग्घरणक का निषे॰ [अप्रघ्ररणक], पिघल कर बाहर की ओर न बहने वाला - *मासातिक्कमेन पनस्सा सोकेन अस्सूनं अपग्घरणकालो नाम नाहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.31.

अपङ्ग/अवङ्ग/अपाङ्ग पु॰/नपुं॰, [अपाङ्ग], 1. आंख का बाहरी छोर या किनारा, आंख का प्रान्तभाग, नेत्र का पर्यन्तभाग - *नेत्तन्ते चित्तकेपाङ्गं, सिद्धत्थो सापने जिने,* अभि॰ प॰ 1116; 2. नपुं॰, आंखों के छोरों या किनारों पर लगाए गए काजल की रेखा - *नेत्तन्ते चित्तकेपाङ्गं, सिद्धत्थो सासपे जिने,* अभि॰ प॰ 1116; *अवङ्गं करोन्तीति अक्खी अञ्जन्तियो अवङ्गदेसे अधोमुखं लेखं करोन्ति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 129-130.

अपच त्रि॰, [अपच], **शा॰ अ॰** नहीं पकाने वाला, **ला॰ अ॰** गृहस्थ जीवन की तुच्छ वृत्तियों को ग्रहण न करने वाला - *अनागारे पब्बजिते, अपचे ब्रह्मचारयो,* अ॰ नि॰ 3(1).76; *अपचे ब्रह्मचारयोति ब्रह्मचारिणो अपचयति, नीचवुत्तिं नेसं आपज्जति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.130.

अपचन्त त्रि॰, √पच के वर्त॰ कृ॰, पचन्त का निषे॰ [अपचन्], **शा॰ अ॰** नहीं पकाने वाला, **ला॰ अ॰** पवित्र जीवन-वृत्ति वाला - *पचन्तो अपचन्तस्स, अममस्स सकिञ्चनो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.334; *अपचन्तापि दिच्छन्ति, सन्तो लद्धान भोजनं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.58; *अपचन्तापीति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो एकं दानवित्तं भिक्खुं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.56; *अपचन्तापि सन्तो सप्पुरिसा भिक्खाचरियाय लद्धम्पि भोजनं दातुं इच्छन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.58.

अपचय पु॰, अप + √चि से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपचय], **शा॰ अ॰** क्षय, हानि, ह्रास, घटाव, कमी - *खयेच्चने चापचयो, कालो समयमच्चुसु,* अभि॰ प॰ 1082; *तस्स असारत्तस्स ... विहरतो आयतिं पञ्चुपादानक्खन्धा अपचयं गच्छन्ति,* म॰ नि॰ 3.348; **ला॰ अ॰** 1. कर्मों का क्षय, पुनर्जन्म का निरोध - *आचयाय संवत्तन्ति नो अपचयाय,* चूळव॰ 422; *सेक्खो अपचयेन न तप्पति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.302; ... *अपचयस्स वीरियारम्भस्स वण्णं भासित्वा भिक्खूनं तदनुच्छविकं ... आमन्तेसि,* महाव॰ 51; **ला॰ अ॰** 2. अर्चना, सम्मान - *खयेच्चने चापचयो, कालोसमयमच्चुसु,* अभि॰ प॰ 1082; - **गामी** त्रि॰, [अपचयगामिन्], **शा॰ अ॰** क्षय या ह्रास की ओर ले जाने वाला, **ला॰ अ॰** कर्म अथवा पुनर्जन्म के क्षय की ओर ले जाने वाला - *सम्मादिट्ठि ... सम्माविमुत्ति - अयं वुच्चति, ... अपचयगामी धम्मो'ति,* अ॰ नि॰ 3(2).210; *कुसला अपचयगामिनी पहानतण्हा,* नेत्ति॰ 72; - **याराम** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपचयाराम], कर्मों या पुनर्भवों के क्षय में आनन्द अनुभव करने वाला, कर्मों के क्षय में रत - *सेक्खा अपचयारामा, अप्पमत्तानुसिक्खरे,* स॰ नि॰ 1(1).272; *अपचयारामाति वट्टविद्धंसने रता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.307.

अपचायति अप + √चाय का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपचायति], पूजा-अर्चना करता है, कृतज्ञतापूर्वक सम्मान प्रकट करता

है, हीन कर्म को प्रदर्शित करता है - *एवं सो सुहितो होति, यो वुड्डमपचायति,* जा. अट्ठ. 2.370; - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *न ब्राह्मणे अपचायन्ति,* दी. नि. 1.79; *न अपचायन्तीति अभिवादनादीहि नेसं अपचितिकम्मं नीचवुत्तिं न दस्सेन्ति तयिदन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.207; - **सि** म. पु., ए. व., सम्मान प्रकट करते हो - *अरियवत्तसि वक्कङ्ग, यो पिण्डमपचायसि,* जा. अट्ठ. 5.358; - **यन्ती** स्त्री., वर्त. कृ., सम्मान प्रकट कर रही - *धम्मं अपचायन्ती खणं न पस्सि,* मि. प. 197; - **यमान** त्रि., वर्त. कृ., आत्मने., उपरिवत् - *धम्मं अपचायमानो,* दी. नि. 3.44; *धम्मं अपचायमाना सुवचा भविस्साम,* म. नि. 1.179; - **यिस्ससि** भवि., म. पु., ए. व. - *सो दानि त्वं कुसीतो विहरन्तो न तं पिण्डं अपचायिस्ससि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).303.

अपचायन/अपचायना पु./स्त्री., अप + √चाय से व्यु., क्रि. ना. [अपचायन], सम्मान करना, पूजा या अर्चना करना, परिचर्या करना - *तत्थ कालुट्ठितस्स मे सतोति काले ... अपचायनपरिचरियादिवसेन उट्ठानवीरियसम्पन्नस्स मे समानस्स,* पे. व. अट्ठ. 113; *अपचायति पूजावसेन सामीचिं करोति एतेनाति अपचायनं,* अभि. ध. स. 159; *अञ्जलिं सिरसि पग्गण्हन्ती गुणविसिट्ठानं अपचायनं अकासिन्ति अत्थो,* वि. व. अट्ठ. 18; - **कर** त्रि., [अपचायनकर], सम्मान प्रकट करने वाला, पूजा-अर्चना करने वाला - *कुले जेट्ठापचायिकाति कुले जेट्ठकानं अपचायनकरा,* पे. व. अट्ठ. 92; - **प्पत्त** त्रि., तत्पु. स. [अपचायनप्राप्त], पूजा-सत्कार को पाया हुआ, सम्मानित, पूजित - *अपचितोति अपचायनप्पत्तो,* उदा. अट्ठ. 64.

अपचायित त्रि., अप + √चाय का भू. क. कृ. [अपचायित], सम्मानित, सत्कृत, पूजित - *अपचायितो च महितो पूजितारहिताच्चिता,* अभि. प. 750; ... *पूजितो, अपचायितो, मानितो, ... ञातो,* क. व्या. 645.

अपचायिता स्त्री., अप + √चाय से व्यु., क. ना., अपचायी का भाव. [अपचायित्व], सम्मान करने की स्थिति, पूजा अर्चना करने की दशा, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त, जेट्ठापचायिता एवं वद्धापचायिता के अन्त. द्रष्ट..

अपचित त्रि., अप + √चि का भू. क. कृ. [अपचित], पूजित, सम्मानित, सत्कृत - ... *मानितो, अपचितो, वन्दितो, सक्कारितो, ञातो,* क. व्या. 645; *उक्काधारो मनुस्सानं, कच्चि अपचितो तया,* सु. नि. 337-338; *अपचितोति अभिप्पसन्नचित्तेहि मग्गदानआसनाभिहरणादिवसेन अपचितो,* उदा. अट्ठ. 63; *सक्कारो गरुकारो च, देवानं अपचिता अहं,* वि. व. 40; *अपचिताति पूजिता,* वि. व. अट्ठ. 29; *मेत्ताय निच्चं अपचितानि होन्ति, भूतेसु वे सोत्थानं तदाहू'ति,* जा. अट्ठ. 4.68; - **ताकार** पु., तत्पु. स., सम्मान या सत्कार के भाव को व्यक्त करने वाला स्वरूप या मुखाकृति - *पुरोहिते पन अत्तनो उपट्ठानं आगच्छन्ते तस्मिं गारवेन अपचिताकारं दस्सेसि,* जा. अट्ठ. 3.401.

अपचिति स्त्री., अप + √चि से व्यु., क्रि. ना. [अपचिति], सम्मान या सत्कार का भाव, पूजा, पूजन, अर्चना, आदर-प्रदर्शन - *बुद्धेसु सगारवता, धम्मे अपचिति यथाभूतं,* थेरगा. 589; ... सक्करोन्ति ... अपचित्तिं करोन्ति, महानि. 52; *अपचितिं करोन्तीति अपचितिप्पत्तं करोन्ति,* महानि. अट्ठ. 158; - **कम्म** नपुं., तत्पु. स. [अपचितिकर्मन्], सम्मान या आदर प्रकट करने वाला कर्म, पूजाकर्म - *ये केचि सत्ता जेट्ठापचितिकम्मे छेका कुसला गुणसम्पन्नानं वयोवुड्ढानं अपचितिं करोन्ति,* जा. अट्ठ. 1.216; - **करण** नपुं., तत्पु. स. [अपचितिकरण], उपरिवत् - *तस्मा तादिसानं वुड्ढानं अपचितिकरणेन वुड्ढापचायी,* सु. नि. 2.61; - **कारक** त्रि., तत्पु. स. [अपचितिकारक], आदर करने वाला, पूजा-सत्कार करने वाला - *ते इमस्मिञ्च अत्तभावे जेट्ठापचितिकारकाति पसंसं वण्णनं थोमनं लभन्ति,* जा. अट्ठ. 1.216; - **दस्सन** नपुं., तत्पु. स. [अपचितिदर्शन], सम्मान या पूजा-सत्कार करना - *थेरो पुच्छितमत्तकेनेव अकथेत्वा दसबलस्स अपचितिदस्सनत्थं सेय्यथापि ...,* ध. स. अट्ठ. 6; - **प्पत्त** त्रि., तत्पु. स. [अपचितिप्राप्त], वह, जिसे आदर या पूजा-सम्मान प्राप्त है - *अपचितिं करोन्तीति अपचितिप्पत्तं करोन्ति,* महानि. अट्ठ. 158; तुल. अपचय.

अपचिनाति अप + √चि का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपचिनोति], हटा देता है, कम कर देता है, हानि या नाश कर देता है, छांट देता है - *रूपं अपचिनाति, नो आचिनाति ...,* स. नि. 2(1).83; - **नन्त** त्रि., वर्त. कृ., घटा रहा, विध्वंस कर रहा - ... *तेन चितचितट्ठानं अपचिनन्तो विद्धंसेन्तो एव गच्छेय्य,* ध. स. अट्ठ. 258; ... *वट्टञ्च अपचिनन्तं गच्छतीति अपचयगामि,* कथा. अट्ठ. 198; *एवं अपचिनतो दुक्खं, सन्तिके निब्बानं वुच्चति,* थेरगा. 807; - **नेथ** विधि., प्र. पु., ए. व., नष्ट करें, क्षीण करें - *अपचिनेथेव कामानं, अप्पिच्छस्स अलोलुपो,* जा. अट्ठ. 4.154; - **नेय्य/चेय्य/उपचेय्य** त्रि., सं. कृ. [अपचेय], पूजा-सम्मान या आदर पाने योग्य, पूजनीय - *अपचितोपचेय्यानं, तस्स इच्छामि हातवे'ति,*

थेरगा॰ 186; *अपचितो अपचेय्यानं, तस्स इच्छामि हातवे'ति,* स॰ नि॰ 1(1).204.

अपचेतब्ब त्रि॰, अप + √चि से व्यु॰, सं॰ कृ॰ [अपचेतव्य], पूजार्ह, आदर पाने योग्य, सम्मान प्राप्त करने योग्य - *अतिथी खो पनम्हेहि सक्कातब्बा गरुकातब्बा मानेतब्बा पूजेतब्बा अपचेतब्बा,* दी॰ नि॰ 1.103; 119.

अपच्च नपुं॰, यत्र तत्र लिङ्गविपर्यासवश पु॰, [अपत्य], सन्तान, पुत्र, सुत - *थापच्चं पुत्तोत्तजो सुतो,* अभि॰ प॰ 240; *अपच्चो ओक्काकराजस्स, सक्यपुत्तो पभङ्करो,* सु॰ नि॰ 997; *मनुनो अपच्चाति मनुस्सा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 98; *अक्खरचिन्तका पन "ब्रह्मुनो अपच्चं ब्राह्मणो"ति वदन्ति,* सद्द॰ 2.357; *वा णप्पच्चे,* क॰ व्या॰ 346.

अपच्चक्कोसन नपुं॰, पच्चक्कोसन का निषे॰ [अप्रत्याक्रोशन], बदले में या पलट कर बुरी भली बातें न कहना - *एतदकिञ्चि सेय्योति यं खीणासवस्स अक्कोसन्तं वा अपच्चक्कोसनं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.368.

अपच्चक्ख त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रत्यक्ष], **क. शा॰ अ॰** आंखों के सामने अविद्यमान, आंखों से ओझल, **ला॰ अ॰** इन्द्रिय-जन्य ज्ञान की पकड़ के बाहर - *अपच्चक्खं मनिन्द्रियं,* अभि॰ प॰ 716; *अञ्ञानमेतं यं बुद्धा अनुपधारेत्वा अपच्चक्खं कत्वा किञ्चि कथेय्युं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.43; **ख. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में,** परोक्ष भूत या परोक्खा विभत्ति का अर्थ, वक्ता द्वारा अपनी आंखों से न देखा गया पूर्वकाल - *अपच्चक्खे अतीते काले परोक्खा विभत्ति होति,* क॰ व्या॰ 419; *अपच्चक्खे परोक्खाय अतीते इति हि लक्खणे,* सद्द॰ 1.53; 3.816; मो॰ व्या॰ 6.6; - **कत** त्रि॰, [अप्रत्यक्षकृत], आंखों के सामने नहीं लाया गया या उपस्थित न किया गया, असाक्षात्कृत - *असच्छिकतानन्ति अपच्चक्खकतानं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 262; - **कम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रत्यक्षकर्मन्], साक्षात् अनुभव न रखने वाला, प्रत्यक्ष अनुभव से रहित - *रूपे खो, वच्छ, ... रूपसमुदये ... रूपनिरोधे अप्पच्चक्खकम्मा,* स॰ नि॰ 2(1).260; - **कारी** त्रि॰, [अप्रत्यक्षकारिन्], अपनी सूझबूझ से काम न करने वाला - *पण्डिता नाम तादिसेन परपत्तियेन अपच्चक्खकारिना सद्धिं न वसन्ती'ति वत्वा तस्स अनाचारं पकासेन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.220; *तस्मा यदिपि तत्थ अपच्चक्खकारीनम्पि विञ्ञुनं कङ्खा ... नत्थियेव,* उदा॰ अट्ठ॰ 321.

अपच्चक्खात त्रि॰, पच्चक्खात का निषे॰ [अप्रत्याख्यात], अप्रतिषिद्ध, अनिषिद्ध, अपरित्यक्त - *दुब्बल्याविकम्मञ्चेव होति सिक्खा च अपच्चक्खाता,* पारा॰ 26.

अपच्चक्खाय अ॰, पच्चक्खाति के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रत्याख्याय], प्रत्याख्यान न करके, त्याग या निषेध न करके, सहारा लेकर, उपेक्षा न करके - ... *अपच्चक्खाय दुब्बल्यं अनाविकत्वा मेथुनं धम्मं पटिसेवेय्य अन्तमसो तिरच्छानगतायपि,* पारा॰ 25; *अम्बं अपच्चक्खाय पच्छिमेन अम्बेन सो पुरिसो दण्डप्पत्तो भवेय्या'ति,* मि॰ प॰ 45; पाठा॰ अप्पचक्खाय.

अपच्चत्तवचनत्त नपुं॰, अपच्चत्तवचन का भाव॰, प्र॰ वि॰ से भिन्न विभक्तियों में रहना - *यत्थ सति पि नामस्स साधक वाचकत्ते ... अपच्चत्तवचनत्ता आख्यातपदेन तुल्याधिकरणता न लब्भति,* सद्द॰ 1.21; 22.

अपच्चनीकता स्त्री॰, अपच्चनीक का भाव॰ [अप्रत्यनीकता], अविरुद्धता अविपरीतता, अप्रतिकूलता, अनुकूलता - *सुसील्यं पच्चुपट्ठितं अयञ्च सम्मादिट्ठि ... अरियानं अपच्चनीकता सद्धम्मसञ्ञत्ति अनत्तुक्कंसना अपरवम्भना,* म॰ नि॰ 2.73; 77; - **पटिपत्ति** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अप्रत्यनीकप्रतिपत्ति], अविपरीत आचरण, अनुकूल व्यवहार - *तत्थ पटिपादितोति आभिसमाचारिकवत्तं आदिं कत्वा सम्मा अपच्चनीकपटिपत्तियं योजितो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.3; - **पटिपदा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अप्रत्यनीकप्रतिपत्], उपयुक्त मार्ग, अनुकूल उपाय - *सम्मापटिपदाय अनुलोमपटिपदाय अपच्चनीकपटिपदाय अविरुद्धपटिपदाय अन्वत्थपटिपदाय धम्मानुधम्मपटिपदाय,* महानि॰ 10; *अपच्चनीकपटिपदायाति न पच्चनीकपटिपदाय, अपच्चत्थिकपटिपदाय,* महानि॰ अट्ठ॰ 50.

अपच्चवेक्खना / अपच्चवेक्खणा स्त्री॰, पच्चवेक्खणा का निषे॰ [अप्रत्यवेक्षण], अपरीक्षण, अज्ञान, सूक्ष्म जांच पड़ताल न करना, मोह - *यं अञ्ञाणं अदस्सनं ... अपरियोगाहणा असमपेक्खणा अपच्चवेक्खणा अपच्चक्खकम्मं ... मोहो ... अविज्जायोगो ... अकुसलमूलं – इदं वुच्चति असम्पजञ्ञं,* पु॰ प॰ 127; *धम्मानं सभावं पति न अपेक्खतीति अपच्चवेक्खणा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 294.

अपच्चवेक्खित त्रि॰, पच्चवेक्खति के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रत्यवेक्षित], सूक्ष्म रूप से अपरीक्षित, गहराई के साथ न जांचा गया - *तस्स ता विनसुन्ति तस्स ता एवं अपच्चवेक्खन्तस्स सीहपरिपन्थादितो अरक्खियमाना अजा सीहपरिपन्थादीहि विनस्सिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.356; - **परिभोग** पु॰, कर्म॰ स॰, किसी वस्तु का बिना जांच-पड़ताल के उपयोग, परीक्षण के बिना ही उपभोग - *लित्तं परमेन*

तेजसाति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो अपच्चवेक्खितपरिभोगं आरब्भ कथेसि, जा॰ अट्ठ॰ 1.363.

अपच्चवेक्खित्वा अ॰, पच्चवेक्खति के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, पूरी पूरी जांच पड़ताल न करके, सूक्ष्म परीक्षण न करके – *तस्मिं किर काले भिक्खू चीवरादीनि लभित्वा येभुय्येन अपच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.363; *अनगारियानम्पि चत्तारो पच्चये अपच्चवेक्खित्वा परिभुञ्जन्तानं पञ्चकामगुणवसेन अनरियपरियेसना होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).94.

अपच्चागमन नपुं॰, पच्चागमन का निषे॰ [अप्रत्यागमन], पुनः वापस न लौटना, फिर लौट कर वापस न आना – *तत्थ यस्मिं सङ्गामे देवा पुन अपच्चागमनाय असुरे जिनिंसु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.297.

अपच्चास त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रत्याश], प्रत्याशा न करने वाला, बदले में कुछ पाने की आशा न रखने वाला – *निरालयो अपच्चासो, सम्बोधिमनुपत्तिया'ति,* चरिया॰ 374; *अपच्चासो किञ्चिपि अपच्चासीसमानो,* चरिया॰ अट्ठ॰ 43.

अपच्चासीसन नपुं॰, पच्चासिंसन का निषे॰ [अप्रत्याशंसन], प्रत्याशा न रखना, बदले में कुछ पाने की इच्छा न करना – *मिगभूतेन चेतसा विहरन्तीति अपच्चासीसनपक्खे ठिता हुत्वा विहरन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.119.

अपच्चुद्धारक त्रि॰, पच्चुद्धारक का निषे॰ [अप्रत्युद्धारक], दान में न देने वाला, दान में नहीं प्रदत्त – *अपच्चुद्धारकं वापि, आविस्सासेन तस्स वा,* विन॰ वि॰ 1644; – **सञ्जी** त्रि॰, [अप्रत्युद्धारकसंज्ञिन्], प्रदत्त वस्तु में अप्रदत्त की समझ रखने वाला – *पच्चुद्धारकवत्थेसु, अपच्चुद्धारसञ्जिनो,* विन॰ वि॰ 1646.

अपच्चुपलक्खण नपुं॰, [अप्रत्युपलक्षण], किसी प्रकार का विभेदक लक्षण प्रकट न करना – *रूपे खो, वच्छ, अपच्चुपलक्खणा ...,* स॰ नि॰ 2(1).260; – **णादिसुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ 2(1) के खन्ध-संयुत्त के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(1).260.

अपच्चुपेक्खण नपुं॰, पच्चुपेक्खण का निषे॰ [अप्रत्यवेक्षण], प्रत्यवेक्षण नहीं करना, सूक्ष्म जांच पड़ताल न करना – *... वेदनानिरोधगामिनिया पटिपदाय अपच्चुपेक्खणा ...,* स॰ नि॰ 2(1).260.

अपच्चोरोहणता स्त्री॰, अपच्चोरोहण का भाव॰ [अप्रत्यवरोहणता], अशिथिलता, उद्योगशीलता – *अपरेहिपि चतूहि कारणेहि सतो ..., सतिया अपच्चोरोहणताय सतो,* महानि॰ 7; *अपच्चोरोहणतायाति अनिवत्तनभावेन अपच्चोसक्कनभावेन,* महानि॰ अट्ठ॰ 39.

अपच्चोसक्कनभाव पु॰, पच्चोसक्कनभाव का निषे॰ [अप्रत्यवष्कनभाव], अशिथिला का भाव, उद्योगशीलता, ढीले-ढालेपन का अभाव – *अपच्चोरोहणतायाति अनिवत्तनभावेन अपच्चोसक्कनभावेन,* महानि॰ अट्ठ॰ 39.

अपच्छा अ॰, पच्छा का निषे॰, क्रि॰ वि॰, न पीछे, बाद में नहीं, पीछे नहीं – *सच्छिकिरिया च अपच्छा अपुरे अहोसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.210; *अपुब्बं अचरिमन्ति अपुरे अपच्छा, एकप्पहारेनेवाति अत्थो,* पु॰ प॰ अट्ठ॰ 37; – **अपुरिम** त्रि॰, न पीछे वाला, न पहले वाला – *बोधिसत्तस्स ... काकस्स ... उरे निलीयनञ्च अपच्छाअपुरिमं अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.258.

अपजापतिक त्रि॰, पजापतिक का निषे॰, अविवाहित, बिना पत्नी वाला – *यत्थ पस्सति कुमारकं वा अपजापतिकं, ...,* पारा॰ 200.

अपजित त्रि॰/नपुं॰, [अपजित], **1.** त्रि॰, युद्ध अथवा द्यूतक्रीड़ा आदि में हारा हुआ, **2.** नपुं॰, हानि, क्षय – *जितं अपजितं कयिरा, तथारूपस्स जन्तुनो,* ध॰ प॰ 105; *... अहमस्स जितं अपजितं करिस्सामि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.374.

अपज्झायति अप + √झा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपध्यायति], चिन्तन में निमग्न हो जाता है, सोच विचार में डूब जाता है – *सेय्यथापि नाम उलूको रुक्खसाखायं मूसिकं मग्गयमानो झायति पज्झायति निज्झायति अपज्झायति,* म॰ नि॰ 1.418.

अपञ्चगव नपुं॰, पञ्चगव का निषे॰ [अपञ्चगव], पांच से कम संख्या वाला गायों का समूह या झुण्ड – *न पञ्चगवं अपञ्चगवं,* क॰ व्या॰ 328.

अपञ्चपूली स्त्री॰, पञ्चपूली का निषे॰, पांच से कम संख्या वाले गुच्छों का ढेर – *ते च उभो दिगु-कम्मधारयसमासा तप्पुरिससञ्ञा होन्ति: अपञ्चवस्सं, असत्तगोदावरं, अपञ्चपूली,* सद्द॰ 3.759; *न पञ्चपूली अपञ्चपूली,* क॰ व्या॰ 328.

अपञ्चवस्स त्रि॰, पञ्चवस्स का निषे॰ [अपञ्चवर्ष], वह व्यक्ति, जो पांच वर्षों की आयु वाला न हो, पांच वर्षों से कम आयु वाला – *नस्स पदस्स तप्पुरिसे उत्तरपदे अत्तं होति, अब्राह्मणो, अवसलो अभिक्खु, अपञ्चवस्सो, अपञ्चगवं,* क॰ व्या॰ 335; *न पञ्चवस्सं अपञ्चवस्सं,* क॰ व्या॰ 328.

अपञ्जस त्रि॰, ब॰ स॰ [अपाञ्जस्], गलत रास्ते पर चलने वाला, कुमार्गगामी, सत्पथ से भ्रष्ट – *विसमं वातेसु वायन्तेसु विसमेसु अपञ्जसेसु देवता परिकुपिता भवन्ति,* अ॰ नि॰

1(2).87; *अपञ्जसाति मग्गतो अपगता, उम्मग्गगामिनो हुत्वा वायन्तीति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.309.

अपञ्ञ / अप्पञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रज्ञ], प्रज्ञा से रहित, मूर्ख, अज्ञानी, मन्द प्रज्ञा वाला – *मन्दोति मन्दपञ्ञो अपञ्ञस्सेवेतं नामं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.100; *बालं अच्चुपसेवतोति बालं अप्पञ्ञं अतिसेवन्तस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 3.464; – **क** त्रि॰, अपञ्ञ से व्यु॰, ब॰ स॰ [अप्रज्ञक], प्रज्ञाविहीन, मन्द प्रज्ञा वाला, मूर्ख – *अम्बं पुट्ठा लबुजं वा ब्याकरिंसु अपञ्ञका,* दी॰ वं॰ 6.30.

अपञ्ञायन नपुं॰, पञ्ञायन का निषे॰ [अप्रज्ञापन], ज्ञात न कराया जाना, ज्ञान का विषय न बनाया जाना, सूचित न किया जाना – ..., *तस्सा अपञ्ञायनतो संसारस्स अनमतग्गता सिद्धा होतीति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).234.

अपटु त्रि॰, पटु का निषे॰ [अपटु], वह, जो चतुर या निपुण नहीं है, अचतुर – *मन्दो भाग्यविहीने चाप्पके मूळ्हापटुस्वापि,* अभि॰ प॰ 892.

अपट्ठपेत्वा अ॰, अप + √ठा का पू॰ का॰ कृ॰ [अपस्थाय], **शा॰ अ॰** दूर में या एक ओर रख कर, **ला॰ अ॰** अपेक्षा न करके, उपेक्षा करके – *अहं अञ्ञे अपट्ठपेत्वा अत्तानञ्ञेव सोधेतुं लभामी'ति पुच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.274.

अपठवी / अपथवी स्त्री॰, पथवी / पठवी का निषे॰ [अपृथ्वी], पृथ्वी से भिन्न, भूमि से इतर – *अहं इमं महापथविं अपथविं करिस्सामी'ति,* म॰ नि॰ 1.179; *अपथविं करेय्याति एवं कायेन च वायाय च पयोगं कत्वापि सक्कुणेय्य अपथविं कातुन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ (मू॰प॰) 1(2).7; *अपथविया पथविसञ्ञी, ..., अपथविसञ्ञी,* पाचि॰ 51.

अपण्डर त्रि॰, पण्डर का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अपाण्डर], वह, जो उज्ज्वल-धवल वर्ण का न हो, कृष्ण वर्ण वाला – *अपण्डरो अण्डसम्भवो, सीवथिकाय निकेतचारिको,* थेरगा॰ 599; *अपण्डरो काळवण्णो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.183; *अपण्डरा लोहितन्ता, जिञ्जूकफलसन्निभा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.150; *अपण्डराति कण्हा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.151.

अपण्डित त्रि॰, पण्डित का निषे॰ [अपण्डित], मूर्ख, अश्रुत, अज्ञानी, स॰ प॰ के पू॰ प॰ में प्रयुक्त – **जातिक** त्रि॰, ब॰ स॰, अज्ञान-भरी प्रकृति वाला, मूढ़ प्रकृति वाला – *तत्थ असाभिरूपोति अपण्डितजातिको,* जा॰ अट्ठ॰ 6.241; – **पुरिस** पु॰, कर्म॰ स॰ [अपण्डितपुरुष], मूर्ख पुरुष, अज्ञानी पुरुष – *बालो हि अपण्डितपुरिसो रज्जं वा ओपरज्जं वा अञ्ञं वा पन महन्तं ठानं पत्थेन्तो कतिपये अत्तना सदिसे विधवपुत्ते महाधुत्ते गहेत्वा ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.72.

अपण्णक त्रि॰, व्यु॰ संदिग्ध [अपर्णक, पत्तों से रहित अपण्यक (बहुमूल्य) या अप्रश्नक?], **क.** अविरुद्ध, पवित्र, सन्देहों से रहित, विवादमुक्त, सुस्पष्ट, सार्वभौम, परिपूर्ण, एकमात्र रूप में सुरक्षित – *मेज्झं पूतं पवित्तो वा, अविरुद्धो अपण्णको,* अभि॰ प॰ 698; *एतम्पि दिस्वा पब्बजितोम्हि राज, अपण्णकं सामञ्ञमेव सेय्यो'ति,* म॰ नि॰ 2.271; *अपण्णकं सामञ्ञमेव सेय्योति अविरुद्धं अद्वेज्झगामिं एकन्तनिय्यानिकं सामञ्ञमेव सेय्यो उत्तरितरञ्च पणीततरञ्चाति ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.218; *अपण्णकं ठानमेके, दुतियं आहु तक्किका,* जा॰ अट्ठ॰ 1.111; *तत्थ अपण्णकन्ति एकंसिकं अविरुद्धं निय्यानिकं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.111; *कतमो च गहपतयो अपण्णको धम्मो?,* म॰ नि॰ 2.71; *अपण्णकोति अविरुद्धो अद्वेज्झगामी एकंसगाहिको,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.84; **ख. पाशा के विशे॰ के रूप में** – *सेय्यथापि, भिक्खवे, अपण्णको मणि उद्धं खित्तो येन येनेव पतिट्ठाति सुप्पतिट्ठितं येव पतिट्ठाति,* अ॰ नि॰ 1(1).304; *अपण्णको मणीति छहि तलेहि समन्नागतो पासको,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.226; – **टि॰** संभवतः मूलरूप में अपण्णक पाशा की प्राचीन भारतीय क्रीड़ा से सम्बन्धित प्रतीत होता है, आगे चलकर यह मौलिक अर्थ पूरी तरह विलुप्त हो गया प्रतीत होता है; – **कं** अ॰, क्रि॰ वि॰, निश्चित रूप से, बिना किसी सन्देह के – *अपण्णकं मे तत्रूपपत्ति भविस्सति,* म॰ नि॰ 2.80; – **कङ्ग** नपुं॰, कर्म॰ स॰, अनुपम या बहुमूल्य अङ्ग – *दानं देन्तस्स सीलं पूरेन्तस्स योगे कम्मं करोन्तस्स चत्तारि अपण्णकङ्गानेव लब्भन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 177; *चत्तारि अपण्णकङ्गानि हापेत्वा पाळियं आगतानि द्वत्तिंसमेव,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 290; – **गाह** पु॰, तत्पु॰ स॰, अत्यन्त सुरक्षित तत्त्व का ग्रहण, बहुमूल्य तत्त्व का चयन – *अपण्णकग्गाहं पन एकंसिकग्गाहं अविरुद्धग्गाहं गाहितमनुस्सा ... अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.107; – **ग्गाहगाही** त्रि॰, अत्यन्त सुरक्षित अथवा अत्यधिक मूल्यवती धारणा या मान्यता को ग्रहण करने वाला – *अपण्णकग्गाहगाहिनो पन अमनुस्सानं हत्थतो मुच्चित्वा सोत्थिना इच्छितट्ठानं गन्त्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.111; – **जातक** नपुं॰, एक जातक का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 1.104-133; *सा पनेसा निदानकथा याव लट्ठिवने उरुवेलकस्सपसीहनादा अपण्णकजातके कथिता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.252; *अपण्णकजातकादीनि पञ्ञासाधिकानि पञ्चजातकसतानि जातकन्ति वेदितब्बं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.24; *अपण्णकादीनि पुरा, जातकानि महेसिना,* जा॰ अट्ठ॰ 1.2; – **ट्ठान** नपुं॰, वादविधि का सुरक्षित स्थल – *सब्बम्पेतं*

अपण्णकट्ठानं ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.111; – **ता** स्त्री॰, अपण्णक का भाव॰, सुनिश्चितता, परिपूर्णता, अविरुद्धता – *सचे तस्स भोतो सत्थुनो सच्चं वचनं, अपण्णकताय मय्हं ...,* स॰ नि॰ 2(2).328; *अपण्णकताय मय्हन्ति अयं पटिपदा मय्हं अपण्णकताय अनपराधकताय एव संवत्ततीति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.146; – **धम्मदेसना** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, उत्तम धर्मोपदेश, सुस्पष्ट एवं सुनिश्चित अर्थ वाला धर्मोपदेश – *इमं ताव अपण्णकधम्मदेसनं भगवा सावत्थिं उपनिस्साय जेतवनमहाविहारे विहरन्तो कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.104; 113; ... *इमिस्सा अपण्णकधम्मदेसनाय अभिसम्बुद्धो हुत्वा इमं गाथमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 1.111; – **पटिपदा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, पूरी तरह से सुरक्षित मार्ग, जटिलता से मुक्त मार्ग, अष्टाङ्गिकमार्ग – *सब्बम्पेतं अपण्णकट्ठानं अपण्णकपटिपदा, निय्यानिकपटिपदाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.111; *धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अपण्णकपटिपदं पटिपन्नो होति,* अ॰ नि॰ 1(2).89; *ततियवग्गस्स पठमे अपण्णकप्पटिपदन्ति अविरुद्धप्पटिपदं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.311; – **वग्ग** पु॰, व्य॰ सं॰, **1**. जा॰ अट्ठ॰ के एक खण्ड का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 1.104-146; **2**. अ॰ नि॰ के एक वर्ग का नाम, अ॰ नि॰ 1(2).89-96; – **वचन** नपुं॰, कर्म॰ स॰, निश्चय का अर्थ कहने वाला वचन, सार-तत्त्व से परिपूर्ण वचन – *अद्धाति एकंसवचनं ... अपण्णकवचनं अवत्थापनवचनमेतं अद्धाति,* महानि॰ 2; *अपण्णकवचनन्ति पलासरहितं सारवचनं अविरुद्धकारणं अपण्णकं ठानमेके'तिआदीसु विय,* महानि॰ अट्ठ॰ 15; – **सुत्त** नपुं॰, **1**. म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 2.71-83; **2**. अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(1).136-137.

अपतन[1] त्रि॰, पतन का निषे॰ [अपतन], उड़ने में अक्षम, न उड़ने योग्य – *सन्ति पक्खा अपतना, सन्ति पादा अवञ्चना,* जा॰ अट्ठ॰ 1.211; *तत्थ सन्ति पक्खा अपतनाति मय्हं पक्खा नाम अत्थि उपलब्भन्ति,* तदे॰.

अपतन[2] नपुं॰, पतन का निषे, नहीं गिरना, केवल स॰ प॰ के पू॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त; – **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपतनधर्म], पतन की ओर न जाने वाला, बुरी गतियों में पतित न होने वाला – *अविनिपातधम्मोति चतूसु अपायेसु अपतनधम्मो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.252; – **समाव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपतनस्वभाव], उपरिवत् – *चतूसु अपायेसु उपपज्जनवसेन अपतनसभावोति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 236.

अपतमान त्रि॰, √पत के वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰ का निषे॰ [अपतमान], **शा॰ अ॰** नीचे की ओर न गिरने वाला, **ला॰ अ॰** चार प्रकार की अधम गतियों में उत्पन्न न होने वाला – ... *चतूसु अपायेसु अपतमाने धारेतीति धम्मो,* उदा॰ अट्ठ॰ 234.

अपतिका / अपतीका स्त्री॰, ब॰ स॰ [अपतिका], बिना पति वाली विधवा अथवा अविवाहित कुमारी – *वेधवेराति विधवा अपतिका,* जा॰ अट्ठ॰ 4.165; *कुमारिकं वा अपतिकं,* पारा॰ 200.

अपत्तक त्रि॰, ब॰ स॰ [अपात्रक], बिना भिक्षापात्र वाला, भिक्षापात्र न रखने वाला – ... *भिक्खू अपत्तकं उपसम्पादेन्ति,* महाव॰ 114; *न, भिक्खवे, अपत्तको उपसम्पादेतब्बो,* तदे॰.

अपत्तचीवरक त्रि॰, ब॰ स॰ [अपात्रचीवरक], भिक्षापात्र एवं चीवर से विहीन – ... *भिक्खू अपत्तचीवरकं उपसम्पादेन्ति,* महाव॰ 114.

अपत्तिक त्रि॰, अपत्ति से व्यु॰ [अप्राप्तिक], दूसरों द्वारा फल का भाग नहीं प्राप्त किए जाने योग्य (दान आदि) – *इत्थीहि अपत्तिकं करोमा'ति एते वदन्तीति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.274.

अपत्तियायेत्वा पत्तियायति के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, विश्वास न करके, भरोसा न करके – *अपरप्पच्चयाति न परप्पच्चयेन, अञ्ञस्स अपत्तियायेत्वा अत्तपच्चक्खञाणमेवस्स एत्थ होतीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.30.

अपत्थ[1] त्रि॰, अप + अत्थ[2] का ब॰ स॰ [अपार्थ], निरर्थक, बिना अर्थ या तात्पर्य वाला – *ब्याहतं पुनरुत्तं वा, अपत्थं वा निरत्थकं,* अप॰ 2.154.

अपत्थ[2] त्रि॰, अप + √अस के भू॰ क॰ कृ॰ से व्यु॰ [अपास्त], दूर फेंक दिया गया, बेकार समझ कर छोड़ दिया गया – *यानिमानि अपत्थानि, अलाबूनेव सारदे,* ध॰ प॰ 149; *तत्थ अपत्थानीति छड्डितानि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.62.

अपत्थट त्रि॰, अप + √थर का भू॰ क॰ कृ॰ [अपस्तृत], ढक दिया गया, पिनद्ध, पिहित, बन्द – *रहदेहमस्मि ओगाळ्हो, अहारियजमत्तिके, मायाउसूयसारम्भ, थिनमिद्धमपत्थटे,* थेरगा॰ 759.

अपत्थद्ध त्रि॰, अप + √थम्भ का पू॰ का॰ कृ॰ [अवस्तब्ध], अपने ऊपर दर्प या अभिमान करने वाला, घमण्ड करने वाला – *सकुणग्घि सके बले अपत्थद्धा सके बले असंवदमाना लापं सकुणं पमुञ्चि,* स॰ नि॰ 3(1).225; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.27; *अपत्थद्धाति अवगाळहत्थम्भा सञ्जातत्थम्भा,* लीन॰(दी॰नि॰टी॰) 3.23.

अपत्थनकाल नपुं., पत्थनकाल का निषे. [अप्रार्थनाकाल], इच्छाओं या कामनाओं के अभाव का काल, अनिच्छा या तृष्णा के अभाव का काल - *तस्स मानुसकानं पञ्चन्नं कामगुणानं अपत्थनकालो विय तथागतस्स चतुत्थज्झानिकफलसमापत्तिरतिया वीतिनामेन्तस्स हीनजनसुखस्स अपत्थनकालोति*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.156.

अपत्थरति अप + √थर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपस्तृणाति], आच्छादित करता है, ढक लेता है; - **राम / अवत्थराम** उ. पु., ब. व. - *आदाय वत्थं मणिकुण्डलञ्च, हन्त्वान साखाहि अवत्थरामा'ति*, जा. अट्ठ. 4.390; *हन्त्वानाति राजानं मारेत्वा ... एकमन्ते साखाहि पटिच्छादेमाति*, जा. अट्ठ. 4.390; - **रिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *वाकचीरं गहेत्वान, पादमूले अपत्थरिं*, अप. 1.356.

अपत्थित त्रि., √पत्थ के भू. क. कृ. का निषे. [अप्रार्थित], नहीं चाहा गया, अवाञ्छित, अनिश्चित, कामनाओं का अविषयीभूत - *आवाहविवाहकानं अपत्थितो होति*, दी. नि. 3.139; - **तित्थिक** त्रि., मनचाही नारी को प्राप्त न करने वाला - *सपत्तबहुलो होति सदा चापत्थितित्थिको*, सद्धम्मो. 79.

अपत्थिय त्रि., √पत्थ के सं. कृ. का निषे. [अप्रार्थ्य], इच्छा न करने योग्य, नहीं चाहने योग्य - *बालो खो त्वंसि माणव, यो त्वं पत्थयसि, अपत्थियं*, जा. अट्ठ. 4.55; *अपत्थियं यो पत्थयसि, चन्दतो ससमिच्छसी'ति*, जा. अट्ठ. 4.76; *बालो खो त्वं असि माणव, यो त्वं पत्थयसे अपत्थियं*, ध. प. अट्ठ. 1.19.

अपथ क. नपुं., पथ का निषे. [अपथ], अनुपयुक्त या अनिर्धारित मार्ग, कुमार्ग, **ख.** त्रि., मार्गरहित स्थान, ऐसा व्यक्ति, जिसके सामने कोई मार्ग न रहे - *सुप्पथो तु सुपन्थो च, उप्पथं त्वपथं भवे*, अभि. प. 193; *आकासो ... वेहायसं वायुपथो अपथो अनिलञ्जसं*, सद्द. 2.442; *अपथम्पि पथं कत्वा, गच्छामि अनिलञ्जसे*, अप. 1.385; *दुप्पयाताति दुट्ठु पयाता अपथे गता, ततो एव अपरद्धमग्गा*, वि. व. अट्ठ. 286.

अपद त्रि., ब. स. [अपद], **क.** बिना पैरों वाला, रेंगने वाला, सरीसृप - *सत्ता अपदा वा द्विपदा वा चतुप्पदा वा बहुप्पदा वा ...*, इतिवु. 63; *अपदाति अपादका*, इतिवु. अट्ठ. 248; **ख.** नपुं., बिना पैरों वाला प्राणी - ... *पाणो अपदं द्विपदं चतुप्पदं बहुप्पदं ओचरको ओणिरक्खो संविदावहारो सङ्केतकम्मं निमित्तकम्मन्ति*, पारा. 54; *अपदेसु अहि नाम सस्सामिको अहितुण्डिकादीहि गहितसप्पो*, पारा. अट्ठ. 1.290; *मच्छो केवलं इध अपदग्गहणेन आगतो*, पारा. अट्ठ. 1.291; **ग.** त्रि., चिह्नरहित, बिना निशान वाला, कोई भी चिह्न अपने पीछे न छोड़ने वाला - *तेसञ्हि जाननं अपदे आकासे पददस्सनं विय होति*, दी. नि. अट्ठ. 3.56; *तं बुद्धमनन्तगोचरं, अपदं केन पदेन नेस्सथ*, ध. प. 179-80; **घ.** त्रि., कदम रखने या पादनिक्षेप के लिये आवश्यक आधार से रहित, शून्य, आलम्बनरहित - *अपदेन पदं याति, अन्तलिक्खचरो दिजो*, जा. अट्ठ. 4.383; ... *अपदे आकासे पदं कत्वा याति*, तदे.; *अपदे पदं करोन्तो विय, आकासे पदं दस्सेन्तो विय ...*, पारा. अट्ठ. 1.227; *अपदं वधित्वा मारचक्खुं अदस्सनं गतो पापिमतो*, म. नि. 1.217; *यथा मारस्स चक्खु अपदं होति निप्पदं, अप्पतिट्ठं, निरारम्मणं*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).67.

अपदकथा स्त्री., पारा. अट्ठ. के एक खण्ड का शीर्षक, पारा. अट्ठ. 1.290-291.

अपदान[1] नपुं., [बौ. सं. अवदान], **शा. अ.** छेदन, विखण्डन, व्यवधान या भेदन - *दानं वुच्चति अवखण्डनं अपेतं दानतोति अपदानं अनवखण्डनन्ति अत्थो*, विसुद्धि. 1.58; *खण्डने त्वपदानं च इतिवुत्ते च कम्मनि*, अभि. प. 943; *अपदानं वुच्चति परिच्छेदो*, महाव. अट्ठ. 404; **ला. अ. 1.** साहस भरे वे पुण्यकार्य या कुशलकर्म, जिनके द्वारा पापमयी प्रवृत्तियां अथवा अकुशल धर्म छिन्न-भिन्न कर दिए जाएं, अकुशलधर्मों को काट देने वाले दान आदि उत्तम कार्य या लक्षण - *कम्मलक्खणो पण्डितो, अपदानसोभनी पञ्ञाति*, अ. नि. 1(1).124; *यं भगवा सद्धस्स सद्धापदानानि भासेय्य*, अ. नि. 3(2).303; *सद्धानं पुग्गलानं अपदानेसु लक्खणेसु*, अ. नि. अट्ठ. 3.344; *बालस्स बाललक्खणानि बालनिमित्तानि बालापदानानि*, अ. नि. 1(1).125; *बालापदानानीति बालस्स अपदानानि*, अ. नि. अट्ठ. 2.73; *अपदानं वुच्चति विख्यात कम्मं, दुच्चिन्तितचिन्तितादीनि च बाले विख्यातानि असाधारणभावेन, तस्मा बालस्स अपदानानी'ति*, अ. नि. टी. 2.70; **ला. अ. 2.** क्लेशों को काट देने वाली शिक्षा - *तुम्हापदाने विहरं, विहरामि अनासवो'ति*, थेरगा. 47; *विहरामि अनासवोति तुम्हं तव अपदाने ओवादे गतमग्गे पतिपत्तिचरियाय विहरं ...*, थेरगा. अट्ठ. 1.126; *सुगतापदानेसूति सुगतलक्खणेसु सुगतस्स सासनसम्भूतासु तीसु सिक्खासु*, दी. नि. अट्ठ. 3.11; *नापदानं पञ्ञायति*, दी. नि. 3.65; **ला. अ.**

3. साहस भरे कुशल कर्मों से, सम्बन्धित कथानक – *द्वेनवुते इतोकप्पे, अपदानं पकित्तयिं,* अप. 1.257.

अपदान² नपुं., [बौ. सं. अवदान], खु. नि. के 13वें संग्रह का नाम, जिसके अन्तर्गत बुद्धापदान, पच्चेकबुद्धापदान, थेरापदान के साथ साथ बुद्ध के पूर्वजन्मों के उत्तम एवं त्यागपरायण कर्मों, थेरी-अपदान तथा अन्य बौद्ध सन्तों के पूर्व जन्मों के उत्तम कर्मों के कथानक गाथाओं में हैं, इनमें से अनेक कथानक थेरगा. अट्ठ. एवं थेरीगा. अट्ठ. में भी उपलब्ध हैं तथा बौ. सं. के दिव्यावदान, अवदानशतक एवं अवदानकल्पलता में प्राप्त होते हैं; - **अट्ठकथा** स्त्री., अप. की अपेक्षाकृत उत्तरकालीन एवं अपूर्ण अट्ठ., परम्परा के अनुसार इसका नाम विसुद्धजनविलासिनी है तथा लेखक आचार्य बुद्धघोष हैं, ग. वं. 59; 69(रो.).

अपदानसोभन त्रि., तत्पु. स., परिणाम, विपाक या उत्तम कर्मों से शोभित होने वाला, या प्रकाशित होने वाला - ..., *अपदानसोभनी पञ्ञाति,* अ. नि. 1(1).124; *अपदानसोभनी पञ्ञाति या पञ्ञा नाम अपदानेन सोभति, बाला च पण्डिता च अत्तनो अत्तनो चरितेनेव पाकटा होन्तीति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 2.73; *तेन सोभतीति अपदानसोभनी,* अ. नि. टी. 2.70.

अपदानिय पु., व्य. सं. एक स्थविर का नाम - *इत्थं सुदं आयस्मा अपदानियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.257.

अपदायन्ति अप + √दा का वर्त., प्र. पु., ब. व., विशोधित करते हैं, क्लेशों का अवखण्डन कर देते हैं - *ते अपदायन्ति सोधेन्ति सत्तसन्तानं एते हीति, सुगतापदानानि, तिस्सो सिक्खा,* लीन. (दी.नि.टी.) 3.10.

अपदिसति अप + √दिस का वर्त., प्र. पु., ए. व., सङ्केतित करता है, निर्धारित करता है, नियोजित कर देता है - *अयं भणे लोके अग्गपुग्गलं सत्थारं सक्खिं अपदिसति, न युत्तं एतस्स दोसं आरोपेतुं,* ध. प. अट्ठ. 1.272; *सत्थारं अपदिसति, जिनवचनं अप्पेति,* उदा. अट्ठ. 15; - **सामि** उ. पु., ए. व. - *दिसापामोक्खं आचरियं अपदिसामी'ति चिन्तेत्वा मुसावादं ... दिसापामोक्खाचरियस्स ... पच्चक्खासि,* जा. अट्ठ. 4.181; - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *ते सञ्चिच्च दूरे अपदिसन्ति,* पारा. 251; - **सथ** म. पु., ब. व. - *तुम्हे नत्थिधम्मं निब्बानं अपदिसथ नत्थि निब्बान'न्ति,* मि. प. 252; - **सन्तो** त्रि., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - *तं कारणभावेन अपदिसन्तो आह यस्मा मम भासितं नाम अतिदुल्लभं अट्ठक्खणपरिवज्जितस्स खणस्स दुल्लभत्ता,* खु. पा. अट्ठ. 134; - **सन्ता** उपरिवत्, ब. व. - ... *तं तं कम्मं अपदिसन्तायेव तेमासं वीतिनामेसुं,* जा. अट्ठ. 1.212; - **सेय्युं** विधि., प्र. पु., ब. व. - ... *अञ्ञे बाले अब्यत्ते अपदिसेय्युं,* महाव. 149; - **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *कस्मा पन सत्था एवं दूरट्ठानं अपदिसी'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.118; - **सिंसु** ब. व. - *तत्थ एकच्चे छ सत्थारे अपदिसिंसु एतेहि ओक्कन्तमत्ते वूपसमेस्सती'ति,* खु. पा. अट्ठ. 130; - **सित्वा** पू. का. कृ. - *इमिना चतुपच्चयदायका गहट्ठा पच्चये अपदिसित्वा धम्मिकसमणब्राह्मणेहि ... दीपेति,* जा. अट्ठ. 3.205; - **सितब्ब** त्रि., सं. कृ. - *अपदिसितब्बा विसुं कातब्बा ववत्थपेतब्बा, विञ्ञूहि ... होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).99; *अपदिसितब्बाति हेट्ठा कत्वा वत्तब्बाति,* म. नि. टी. (मू.प.) 1(1).164.

अपदिस्सति अप + √दिस के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व., सङ्केत किया जाता है, निर्धारित किया जाता है - *एत्थ च दिस्सति अपदिस्सति अस्स अयन्ति वोहरीयतीति देसो,* पारा. अट्ठ. 2.167.

अपदीयन्ति अप + √दा के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ब. व., काट दिए जाते हैं, विनष्ट कर दिए जाते है, छिन्न-भिन्न कर दिये जाते है - *अपदीयन्ति दोसा एतेन रक्खीयन्ति, लूयन्ति छिज्जन्ति वाति अपदानं,* अ. नि. टी. 2.70.

अपदेस पु., अप + √दिस से व्यु., क्रि. ना. [अपदेश], 1. अभिव्यक्ति, कथन, सङ्केत - *अपदेसो निमित्ते च छले च कथने मतो,* अभि. प. 860; *तत्थ इधाति देसापदेसे निपातो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).22; *तत्थ तेन हीति कारणापदेसो,* अ. नि. अट्ठ. 2.195; 2. कारण, बहाना, व्याज - *अथ नं मनुस्सानं ... अपदेसं कत्वा मुहुत्तं वीतिनामेत्वा मनुस्सेसु ... नगरं पाविसि,* जा. अट्ठ. 3.51; *पुनपि थोकं गन्त्वा तेनेव अपदेसेन ओतरित्वा अभिरुहि, ... अकासि,* ध. प. अट्ठ. 1.354; *आवुसो मोग्गल्लाना'तिआदिना इद्धानुभावमहन्ततापकासनापदेसेन अत्तनो ... दीपेति,* उदा. अट्ठ. 200; - **रहित** त्रि., तत्पु. स. [अपदेशरहित], बहाना रहित, छद्म-रहित, हेतुरहित - *अनपदेसन्ति अपदेसरहितं,* अ. नि. अट्ठ. 2.259.

अपधारेसि अप + √धर का अद्य., प्र. पु., ए. व., अनुचिन्तन किया, मन में धारण किया, सोचा विचारा - *सहसा वोहारं मा पधारेसि,* परि. 302; ... *पधारेसीति यो एतेसं सहसा वोहारो होति, सहसा भासितं तं मा पधारेसि, मा गण्हित्थ,* परि. अट्ठ. 203.

अपनत त्रि., अप + √नम का भू. क. कृ. [अपनत], अप्रवृत्त, दूर हटा हुआ, अप्रदुष्ट - *समाधि न चाभिनतो न चापनतो न च ससङ्खारनिग्गय्हवारितगतो*, अ. नि. 3(1).235; *दोसवसेन न अपनतो*, अ. नि. अट्ठ. 3.278; *अपनतं चित्तं ब्यापादानुपतितं-समाधिस्स परिपन्थो*, पटि. म. 159; *सतिमतो विपस्सिस्स, अनभिनतस्स नो अपनतस्स*, म. नि. 2.55; *नो अपनतस्साति अदुट्ठस्स*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.70; विलो., अभिनत; पाठा. अपणत.

अपनमति अप + √नम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अवनमति], **शा. अ.** दूर होकर झुक जाता है, नीचे झुक जाता है, **ला. अ.** दूर हट जाता है, अप्रवृत्त होता है; - **तु** अनु., प्र. पु., ए. व., नीचे की ओर झुक जाए - *सचे अयं सम्मासम्बुद्धस्स धातु छत्तं अपनमतु, ...*, पारा. अट्ठ. 1.60; - **मि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *सह रञ्ञो चित्तुप्पादेन छत्तं अपनमि*, पारा. अट्ठ. 1.60; - **मिस्सन्ति** भवि., प्र. पु., ब. व. - *कप्पञ्जहं अभिमाचे सुमेधं, सुत्वान नागस्स अपनमिस्सन्ति इतो*, सु. नि. 1107; ... *अपनमिस्सन्ति इतोति नागस्स तव भगवा वचनं सुत्वा इतो पासाणकचेतियतो बहू जना पक्कमिस्सन्तीति अधिप्पायो*, सु. नि. अट्ठ. 2.291.

अपनयति अपनेति के अन्त., द्रष्ट. (आगे).

अपनयन नपुं., अप + √नी से व्यु., क्रि. ना. [अपनयन], दूर ले जाना, हटाना, दूर कर देना, शान्त कर देना, उपसंहरण, उपशम - *ओण अपनयने*, सद्द. 2.358; 2.362; *ओसधीनं पटिमोक्खोति खारादीनि दत्वा तदनुरूपे वणे गते तेसं अपनयनं*, दी. नि. अट्ठ. 1.86; ... *असुभासुखभावादीनं अपनयनस्स च पहानं वुत्तं*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).255.

अपनामेति अप + √नम के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपनामयति]. **1.** दूर ले जाता है, हटवा देता है, शान्त करा देता है - *असप्पायं अपनामेति सप्पायं उपनामेति*, महाव. 395; *बहिद्धा कथं अपनामेति*, म. नि. 1.134; 138; *बहिद्धा कथं अपनामेतीति इत्थन्नामं आपत्तिं आपन्नोसी'ति ... पुच्छाम, आपत्तिं पुच्छामा'ति ... आपत्तिं आपन्नोसीति, ... बहिद्धा विक्खिपति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).379; - **न्ति** ब. व., दूर हटा देते हैं - *नागा वा अपनामेन्ति, यक्खा वापि हरन्ति नं*, खु. पा. 9.(8.4); - **न्तो** वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व., दूर हटाता हुआ - *पच्छतो अपनामेन्तो पटिक्कमति नाम*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).264; दी. नि. अट्ठ. 1.151; - **य्यं** विधि., उ. पु., ए. व., मैं दूर हटा दूं - *बहिद्धा कथं अपनामेय्यं*, म. नि. 1.138-39; - **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व., दूर कर दिया, हटवा दिया - *बहिद्धा कथं अपनामेसि*, म. नि. 1.319; - **स्सति** भवि., प्र. पु., ए. व., दूर हटवा देगा - *बहिद्धा कथं अपनामेस्सति*, अ. नि. 1(1).215; *बहिद्धा अञ्ञं आगन्तुककथं आहरन्तो पुरिमकथं अपनामेस्सति*, अ. नि. अट्ठ. 2.174; - **स्सामि** भवि., उ. पु., ए. व., दूर करा दूंगा - *न बहिद्धा कथं अपनामेस्सामि*, म. नि. 1.139; **2.** नीचे रख देता है, छोड़वा देता है - **य्यं** विधि., उ. पु., ए. व. - *अहञ्चेव खो पन, भो गोतम, यानगतो समानो छत्तं अपनामेय्यं*, दी. नि. 1.111; - **त्वा** पू. का. कृ. - ... *छत्तं अपनामेत्वा सीसं विवरित्वा सीसे चीवरं ... पविसितब्बो*, चूळव. 350.

अपनिधान नपुं., अप + नि + √धा से व्यु., क्रि. ना., अदृश्य कर देना, छिपा देना, दूर हटाकर रख देना, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, चीवरापनिधान के अन्त. द्रष्ट..

अपनिधापेति अप + नि + √धा के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., छिपा कर रखा देता है, दूर हटवा कर रखा देता है, अदृश्य करा देता है - *अनुपसम्पन्नस्स पत्तं वा चीवरं वा अञ्ञं वा परिक्खारं अपनिधेति वा अपनिधापेति वा, ...*, पाचि. 167; - **य्य** विधि., प्र. पु., ए. व., छिपा कर रखा दे, दूर हटवा दे, अदृश्य करा दे - *यो पन ... चीवरं वा ... सूचिघरं वा कायबन्धनं वा अपनिधेय्य वा अपनिधापेय्य वा*, पाचि. 166.

अपनिधेति अप + नि + √धा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपनिदधाति], दूर रख देता है, एक ओर कर देता है, छिपा देता है, अदृश्य कर देता है - *अञ्ञं परिक्खारं अपनिधेति वा अपनिधापेति वा, ...*, पाचि. 167; *अपनिधेति, पयोगे दुक्कटं, अपनिधिते आपत्ति पाचित्तियस्स*, परि. 70; - **न्ति** ब. व., छिपा देते हैं, हटाकर रख देते हैं - *छब्बग्गिया भिक्खू अम्हाकं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेन्ती'ति*, पाचि. 165; *अपनिधेन्तीति अपनेत्वा निधेन्ति*, पाचि. अट्ठ. 119; - **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., छिपा रहा, दूर हटाकर रखने वाला - *भिक्खुस्स पत्तं वा चीवरं वा निसीदनं वा सूचिघरं वा कायबन्धनं वा अपनिधेन्तो द्वे आपत्तियो आपज्जति*, परि. 70; - **न्तस्स** ष. वि., ए. व., उपरिवत् - *भिक्खुस्स पत्तं ... कायबन्धनं वा अपनिधेन्तस्स पाचित्तियं कथं पञ्ञत्तन्ति*, परि. 33; *अञ्ञं अपनिधेन्तस्स, होति आपत्ति दुक्कटं*, विन. वि. 1651; - **य्य** विधि., प्र. पु., ए. व., दूर हटा कर रख दे, छिपा दे - ... *कायबन्धनं वा अपनिधेय्य वा अपनिधापेय्य वा*, पाचि. 166; - **सुं** अद्य., प्र.

पु., ब. व., छिपा कर रख दिए - *छब्बग्गिया भिक्खू ... चीवरम्पि अपनिधेसुं, तस्मिं वत्थुस्मिं,* परि. 33-34; - **स्सथ** भवि., म. पु., ब. व., छिपा कर रखोगे - *भिक्खूनं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेस्सथ,* पाचि. 165; - **स्सन्ति** भवि., प्र. पु., ब. व., दूर हटा देंगे, छिपा देंगे - *कथञ्हि नाम ... भिक्खूनं पत्तम्पि चीवरम्पि अपनिधेस्सन्ती'ति,* पाचि. 165; - **अपनिहित / धित** भू. क. कृ. [अपनिहित], हटाया हुआ, दूर में रखा गया, छिपा कर रखा हुआ - *तेनापनिहिते तस्स, पाचित्तिं परिदीपये,* विन. वि. 1650; *अपनिधिते आपत्तिं पाचित्तियस्स,* परि. 70; - **त्त** नपुं., अपनिहित का भाव. [अपनिहितत्व], दूर हटा कर रख देने की अवस्था, छिपा कर रख देने की स्थिति - *साटकस्स पन अपनिहितत्ता नग्गो अहोसि,* पे. व. अट्ठ. 216.

अपनीत त्रि., अप + √नी का भू. क. कृ. [अपनीत], दूर ले जाया गया, हटा दिया गया, छिपाया हुआ, अदृश्य बनाया हुआ - *अपनीतो अविज्जाविसदोसो,* म. नि. 3.41; *इदानेव मया इमस्स सोको अपनीतो, पुब्बेपि अपनीतोयेवा'ति वत्वा तेहि याचितो अतीतं आहरि,* पे. व. अट्ठ. 34; *दिट्ठिगतन्ति खो, वच्छ, अपनीतमेतं तथागतस्स,* म. नि. 2.163; *किन्ते छत्तुपाहनं अपनीतं'न्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.214; *अपनीतन्ति नीहटं अपविद्धं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.141; - **त्त** नपुं., अपनीत का भाव. [अपनीतत्व], दूर ले जाना, तिरोहित कर देना - *तनुबन्धमुद्धरन्ति तनुकं ... तित्तकस्स अनपनीतत्ता तं असादुमेव कयिरा,* जा. अट्ठ. 3.281; निषे. अनपनीतत्त; - **ता** स्त्री., भाव., उपरिवत्, निषे. अनपनीतता - *तस्स जातदिवसे गब्भमलस्स धोवित्वा अनपनीतताय केसा जटिता हुत्वा अट्ठंसु,* ध. प. अट्ठ. 406; - **कसाव** त्रि., ब. स. [अपनीतकाषाय], चित्त के कलुषित विचारों को हटा चुका, निर्मल चित्त वाला - *सब्बवङ्कदोसनिहितनिन्नीतकसावोति निहितसब्बवङ्कदोसो चेव अपनीतकसावो च,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.145; - **काळक** त्रि., ब. स., काले धब्बों या मस्सों से रहित, अकुशल तत्त्वों से मुक्त - *विचितकाळकन्ति अपनीतकाळकं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).183; *तत्थ विचितकाळकन्ति विचिनित्वा अपनीतकाळकं,* दी. नि. अट्ठ. 1.221; - **पाणि** त्रि., ब. स. [अपनीतपाणि], हाथ को हटाया हुआ, भोजन समाप्ति पर पात्र से हाथ को हटा चुका - *ओनीतपत्तपाणिन्ति पत्ततो अपनीतपाणिं, धोतपत्तपाणि'न्तिपि पाठो, धोतपत्तहत्थन्ति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 196; - **मान** त्रि., ब. स. [अपनीतमान], घमण्ड को नष्ट कर चुका, निरहङ्कार, अभिमान न करने वाला - *निहतमानन्ति अपनीतमानं,* थेरीगा. अट्ठ. 290; - **हत्थ** त्रि., ब. स. [अपनीतहस्त], अपने हाथ को भोजनपात्र से हटा चुका व्यक्ति - *ओनीतपत्तपाणिन्ति पत्ततो ओनीतपाणिं, अपनीतहत्थन्ति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.159; दी. नि. अट्ठ. 1.224.

अपनीयति अप + √नी के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपनीयति], दूर ले जाया जाता है, हटा दिया जाता है, शान्त कर दिया जाता है - *अस्सोव जिण्णो निब्भोगो, खादना अपनीयति,* स. नि. 1(1).205; *खादना अपनीयतीति अस्सो हि यावदेव तरुणो होति जवसम्पन्नो, ..., जिण्णं निब्भोगं ततो अपनेन्ति,* स. नि. अट्ठ. 1.230.

अपनुदति / अपनुदेति अप + √नुद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपनुदति], छोड़ देता है, हटा देता है, भगा देता है - *ततो योगवचरो अहिते धम्मे अपनुदेति, हिते धम्मे उपग्गण्हाति,* मि. प. 35; ध. स. अट्ठ. 166; - **नुज्ज** पू. का. कृ., हटा कर, त्याग कर, दूर कर - *ते भगवा अपनुज्ज एकारामं अनुयुत्तो विहरति,* दी. नि. 2.164; *अपनुज्जाति तेसं ... विहरन्तो चित्तेन अपनुज्ज,* दी. नि. अट्ठ. 2.220; - **नुदितु** पु., क. ना., नष्ट कर देने वाला, मिटा देने वाला, हटा देने वाला - ..., *उब्बेगउत्तासभयं अपनुदिता,* दी. नि. 3.110; *उब्बेगउत्तासभयापनूदनो,* तदे.; - **पानुदि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *यो मे सोकपरेतस्स, पितुसोकं अपानुदि,* जा. अट्ठ. 3.135; *सच्चं अहम्पि जानामि, दुस्सं मे त्वं अपानुदि,* पे. व. 148; - **पानुदिं** उ. पु., ए. व. - *तस्सा त्याजानमानाय, दुस्सं त्याहं अपानुदिं,* पे. व. 147; पाठा. अपनुदेति.

अपनूदन त्रि., अप + √नुद से व्यु. [अपनोदन], दूर हटा देने वाला, मिटा देने वाला, शान्त कर देने वाला - *उब्बेगउत्तासभयापनूदनो,* दी. नि. 3.110; *ते तस्स धम्मं देसेन्ति, सब्बदुक्खापनूदनं,* चूळव. 273; उदा. अट्ठ. 339; तुल. अपनुदितु.

अपनेति अप + √नी का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपनयति], दूर कर देता है, हटा या मिटा देता है, रोक देता है, उतार फेंकता है, निरस्त कर देता है, बहिर्भूत कर देता है - ... *आणिं अञ्ञाय ... हत्थादीहि सञ्चालेत्वा अपनेति,* उदा. अट्ठ. 139; ..., *भयमपनेति,* ..., मि. प. 141; - **न्ति** ब. व. - ..., *तमेनं अपनेन्ति, अपनेत्वा आतकानं नेन्ति,* अ. नि. 2(1).88; 90; - **हि** अनु.,म. पु., ए. व., निकाल बाहर करो, हटा दो - *तं तेसं गरहं परिभवं विनोदेहि अपनेहि*

निच्छारेही'ति, मि॰ प॰ 242; – **थ** ब॰ व॰ – ... *तुम्हाकं सकटं अपनेथा'ति* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.90; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, मिटा देना चाहिए – *एसनिय ..., अपनेय्य विसदोसं सउपादिसेसं*, म॰ नि॰ 3.42; – **य्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, उपरिवत् – ..., *एतं अट्ठिं अपनेय्यं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.22; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, दूर कर दिया, हटा दिया – *सोवण्णपादुकाति इमानि पञ्च राजककुधभण्डानि अपनेसि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.257; – **स्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, दूर कर देंगे, मिटा देंगे, त्याग देंगे – *ते इमं भोजनं भुञ्जित्वा कामरूपारूपभवेसु सब्बं तण्हमपनेस्सन्ती'ति*, मि॰ प॰ 232; – **नयितुं** निमि॰ कृ॰, दूर करने के लिये – *किं न समत्थो इद्धिया अत्तनो उपघातं अपनयितुं*, मि॰ प॰ 182; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰, दूर ले जाकर, एक ओर हटा कर – ... *तं भिक्खुं बाहायं गहेत्वा एकमन्तं अपनेत्वा तं भिक्खु एतदवोच*, दी॰ नि॰ 1.202; *सो संवेगप्पत्तो कासायानि अपनेत्वा गिहिनियामेन परिदहित्वा* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.10; – **य्य** त्रि॰, सं॰ कृ॰, दूर किये जाने योग्य, हटाने योग्य, त्यागने योग्य, भगा देने का पात्र – *अपनेय्येसो, भिक्खवे, पुग्गलो*, अ॰ नि॰ 3(1).17; – **तब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰, दूर करने योग्य, मिटाने या हटाने योग्य – *साकटा पीळेत्वा अपनेतब्बाकारप्पत्ता अहेसुं*, जा॰ अट्ठ॰ 1.143; – **नयितब्ब** उपरिवत् – *अचिन्तियेन अचिन्तियं अपनयितब्बं*, मि॰ प॰ 182.

अपन्थक पु॰, पन्थक का निषे॰, पथभ्रष्ट, राह भटका हुआ व्यक्ति – *पन्थकोपि अपन्थकोपि मग्गमूळ्हो होति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.385.

अपपञ्चित त्रि॰, पपञ्चित का निषे॰, प्रपञ्चों के जाल में नहीं फंसा हुआ, घरेलू जीवन आदि के झमेलों से मुक्त – *वनन्तमभिहारयेति अपपञ्चितो गिहिपपञ्चेन वनं एव गच्छेय्य*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.193.

अपपतित त्रि॰, प + √पत के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रपतित], नहीं भटका हुआ, भटकाव या संभ्रम में नहीं फंसा हुआ – *धम्मेहि समन्नागतो इमस्मा धम्मविनया अपपतितो'ति वुच्चति*, अ॰ नि॰ 1(2).3.

अपबोधति व्यु॰ संदिग्ध, अप + √बुध अथवा आ + प + √बुध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, निवारण या बचाव करता है, रोक देता है, अपने को बचाते हुए जानता है – *यो निन्दं अपबोधति, अस्सो भद्रो कसामिवा'ति*, स॰ नि॰ 1(1).9; ध॰ प॰ 143; *यो निन्दं अपबोधतीति यो गरहं अपहरन्तो बुज्झति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 35; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.48.

अपब्बजन नपुं॰, पब्बजन का निषे॰, क्रि॰ ना॰ [अप्रव्रजन], गृहत्याग न करना, प्रव्रजित जीवन का ग्रहण न करना – *अहं इमस्स ... इदानिस्स अपब्बज्जनत्थाय सरीरवण्णं वण्णयिस्सामी'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.348.

अपब्बजितुं प + √बज के निमि॰ कृ॰ का निषे॰, प्रव्रजित न होने के लिए – *न हि सक्का अम्हेसु एकेन अपब्बजितु'न्ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.79.

अपब्बजित त्रि॰, पब्बजित का निषे॰ [अप्रव्रजित], वह, जिसने गृहस्थ जीवन को त्याग प्रव्रज्या ग्रहण नहीं की है या भिक्षुसङ्घ में प्रवेश नहीं पाया है, गृहस्थ – *अपब्बजितोपि अयं मोघपुरिसो कप्पट्ठियमेव कम्मं आयूहिस्सतीति कारुञ्ञेन देवदत्तं पब्बाजेसी'ति*, मि॰ प॰ 117; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ चराति अपब्बजिता एव पब्बजितरूपेन रट्ठपिण्डं भुञ्जन्ता पटिच्छन्नकम्मन्तत्ता*, उदा॰ अट्ठ॰ 271.

अपब्बज्जा स्त्री॰, पब्बज्जा का निषे॰ [अप्रव्रज्या], प्रव्रज्या का अभाव, प्रव्रज्या को ग्रहण न करना, गृहस्थ जीवन – *गेहञ्चावसति नरो अपब्बज्जं*, दी॰ नि॰ 3.120; *अपब्बज्जमिच्छन्ति अपब्बज्जं गिहिभावं इच्छन्तो*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.105.

अपब्बहित्वा अप + वि √ऊह का पू॰ का॰ कृ॰, हटा करके, रास्ते से अलग करके – *एकदिवसं अत्तनोव ... सन्निपतितट्ठाने कचवरं उभयतो अपब्बहित्वा तं ठानं अतिरमणीयमकासि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).197.

अपब्भार त्रि॰, पब्भार का निषे॰, ब॰ स॰ [अप्राग्भार], तीक्ष्ण ढलान से रहित, खड़ी ढलान न रखने वाला, अप्रपाती, समतल तटों वाला/वाली – ..., *जाता पोक्खरणी सिवा, अकक्कसा अपब्भारा, साधु अप्पटिगन्धिका*, जा॰ अट्ठ॰ 5.401; अप॰ 1.12.

अपभङ्गु त्रि॰, पभङ्गु का निषे॰ [अप्रभङ्गुर], अविनाशी, क्षण-क्षण में भग्न या नष्ट न होने वाला – *यो तस्स निरोधो वूपसमो अत्थङ्गमो, इदं अप्पभङ्गु*, स॰ नि॰ 2(1).31.

अपभस्सर त्रि॰, पभस्सर का निषे॰ [अप्रभास्वर], आभा या दीप्ति से रहित, चमक-दमक से विहीन – *कण्हाति काळका, चित्तस्स अपभस्सरभावकरणा*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 98.

अपमाण त्रि॰, अप्पमाण के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपमार/अपस्मार पु॰, [अपस्मार], मिर्गी का रोग, मूर्छा का रोग – *अपमारो अपस्मारो*, अभि॰ प॰ 325; ... *पञ्च आबाधा उस्सन्ना होन्ति – कुट्ठं, गण्डो, किलेसो, सोसो,*

अपमारो, महाव. 91; *अपमारोति पित्तुम्मारो वा चक्खुमारो वा,* महाव. अट्ठ. 264.

अपमारिक त्रि., अपमार से व्यु. [अपस्मारिन्], मिर्गी के रोग से पीड़ित रोगी – *कुट्ठिकं गण्डिकं किलासिकं सोसिकं अपमारिकं,* पाचि. 12; *कुट्ठिं गण्डिं किलासिञ्च, सोसिञ्च अपमारिकं,* विन. वि. 2.484; *सन्ति इधेकच्चे कुट्ठिका गण्डिका किलासिका सोसिका अपमारिका'ति भणति,* पाचि. 16.

अपमुट्ठ त्रि., प + √मुस के भू. क. कृ. का निषे. [अप्रमुष्ट], वह, जिसे भुलाया नहीं गया है, या जो स्मृति-पटल से विलुप्त नहीं हुआ है, अनुपेक्षित, जागरुक – *अप्पमुट्ठं येसं कायगतासति अप्पमुट्ठा'ति,* अ. नि. 1(1).61; *उपट्ठिता सति असम्मुट्ठा,* म. नि. 1.165-66.

अपयाति अप + √या का वर्त., प्र. पु., ए. व., दूर चला जाता है, वापस चला जाता है; – **यन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., वापस लौट रहा – *महासमुद्दो, भिक्खवे, अपयन्तो महानदियो अपयापेति,* स. नि. 1(2).104; *अपयन्तोति अपगच्छन्तो ओसरन्तो,* स. नि. अट्ठ. 2.108; – **न्ती** स्त्री., उपरिवत्, वापस जा रही, क्षीण हो रही – *अविज्जा अपयन्ती सङ्खारे अपयापेति,* स. नि. 1(2).104; *अविज्जा अपयन्तीति अविज्जा अपगच्छमाना ओसरमाना उपरि सङ्खारानं पच्चयो भवितुं न सक्कुणन्तीति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 2.108; – **यन्तं** नपुं., उपरिवत् – *विञ्ञाणं अपयन्तं नामरूपं अपयापेति,* स. नि. 1(2).104; – **यन्ता** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ब. व. – *सङ्खारा अपयन्ता विञ्ञाणं अपयापेन्ति,* स. नि. 1(2).104; – **यन्तियो** स्त्री., उपरिवत् – *महानदियो अपयन्तियो कुन्नदियो अपयापेन्ति,* स. नि. 1(2).104; – **पायामि** अनु., उ. पु., ए. व. – *हन्द दानि अपायामि, नाहं अज्ज तया सह,* जा. अट्ठ. 7.28; *तत्थ अपायामीति अपगच्छामि पलायामीति अत्थो,* तदे.; – **पायंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. – *देवा अपायंस्वेव उत्तरेनमुखा,* स. नि. 1(1).259.

अपयान नपुं., अप + √या से व्यु., क्रि. ना. [अपयान], वापस पलायन, पीछे की ओर भागना – *बाहिरानं रञ्ञं अपयानं भविस्सति,* दी. नि. 1.9.

अपयापेति अप + √या के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., वापस या पीछे की ओर लौटाता है, वापस कराता है, हटाता या दूर करता है – *महासमुद्दो, भिक्खवे, अपयन्तो महानदियो अपयापेति,* स. नि. 1(2).104; ... *रञ्ञो अहिते च हिते च ञत्वा अहिते अपयापेति,* ध. स. अट्ठ. 166; – **तुं** निमि. कृ. – *अपयापेतब्बं अपयापेतुं,* दी. नि. 2.132; – **तब्ब** सं. कृ., वापस लौटाने योग्य – *अपयापेतब्बं अपयापेतुं,* दी. नि. 2.132.

अपयिरुपासना स्त्री., पयिरुपासना का निषे. [अपर्युपासना], सेवा या देखभाल न करना, असम्मान, असत्कार – *तत्थ असेवनाति अभजना अपयिरुपासना,* खु. पा. अट्ठ. 99.

अपरं अ., क्रि. वि. [अपरम्], पुनः, फिर से, भविष्य में, इसके अतिरिक्त, और आगे – *त्वञ्च मे दीपमक्खाहि, यथायिदं नापरं सिया,* सु. नि. 1098; *यथायिदं नापरं सियाति यथा इदं दुक्खं पुन न भवेय्य,* सु. नि. अट्ठ. 2.289; *ततो नं अपरं कामे, धम्मे तण्हं व विन्दति,* जा. अट्ठ. 4.153; *अपरन्ति परभागदीपनं,* जा. अट्ठ. 4.154; *पुनापरं यदा होमि, ब्राह्मणो सङ्खसव्हयो,* चरिया. 74; 75; – **कार** पु., परकार का निषे., *सयंकार के मि. सा. पर परंकार में अनुस्वार का आगम,* दूसरों द्वारा अनिर्मित, अपने आप उत्पन्न या निर्मित – *असयंकारो अपरंकारो अधिच्चसमुप्पन्नो अत्ता च लोको च,* दी. नि. 1.103; उदा. 149; *अनुनासिकागमं कत्वा वुत्तं अपरंकारो'ति,* उदा. अट्ठ. 281; *असयंकारं अपरंकारं अधिच्चसमुप्पन्नं सुखदुक्खं,* दी. नि. 103; उदा. 150.

अपर[1] त्रि., [अपर], अपश्चाश्रयी, पश्चात् या बाद में न आने वाला, अनुवर्ती – *तस्मा तेना पि नयेन पदतो अपरानि पि तानि कदाचि सियुं,* सद्द. 1.276; – **त्त** नपुं., अपर का भाव. [अपरत्व], पश्चात् या बाद में नहीं होने की स्थिति – *पदतो अपरत्ते पि नासंसद्दस्स दस्सना,* सद्द. 1.276.

अपर[2] त्रि., कुछ अर्थों में सर्व. की भांति प्रयुक्त [अपर], – *तथा हि पुब्ब परापर-दक्खिण-उत्तरसद्दा पुल्लिङ्गत्ते यत्थारहं काल-देसादिवचना,* सद्द. 1.267; **क.** दूसरा, अन्य – ..., *विमोक्खो तस्स नापरो,* सु. नि. 1095; *तत्थ विमोक्खो तस्स नापरोति तस्स अञ्ञो विमोक्खो नत्थि,* सु. नि. अट्ठ. 2.288; *जन्तुगामन्ति एवं नामकं तस्सेव विहारस्स अपरं गोचरगामं,* ..., उदा. अट्ठ. 175; *सो तेसं किरियं ... गच्छामहं पण्डिता'ति वत्वा अपरेन अरे दुट्ठब्राह्मण,* ..., जा. अट्ठ. 6.240; *अपरस्स चक्कवत्तिस्स सम्मापटिपत्तिया उपगच्छति,* मि. प. 206; *अपरं दीपकं ... उपायेन अपरस्मिं दीपके मणिविमाने सोळस,* जा. अट्ठ. 4.3; *तत्थ कतमे अपरेपि तयो सत्थारो?,* पु. प. 145; **ख.** एक और, दूसरा और, इसके अतिरिक्त कुछ और – *अपरम्पि सम्म ते बाल्यं, यो मुत्तो न पलायसि,* जा. अट्ठ. 3.244; *तं ते अपलायनं अपरम्पि बाल्यं,* जा. अट्ठ. 3.245; *कतं करणीयं, नापरं इत्थत्तया'ति अब्भञ्ञासि,* सु. नि. (पृ.) 98; *अपरोपि बाराणसियं अजपालानं पमादेन*

गोचरभूमियं ... सीसेहि मरिस्सन्ति, जा॰ अट्ठ॰ 4.223; *अपरेपिस्स तयो सहाया अहेसुं ...,* तदे॰ 3.44; **ग. काल एवं देश की दृष्टि से,** बाद वाला, अगला, उत्तर-कालीन, पिछला, अन्तिम – *विपस्सी बोधिसत्तो अपरेन समयेन पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु उदयब्बयानुपस्सी विहासी,* दी॰ नि॰ 2.27; *अपरेन समयेनाति एवं पच्चयञ्च पच्चयनिरोधञ्च विदित्वा ततो अपरभागे,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.46; *सो किर तापसो अपरस्मिं काले एकं पच्चन्तगामं निस्साय नदी तीरे वनसण्डे विहासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.319; *दिट्ठे वा धम्मे उपपज्ज वा अपरे वा परियाये,* अ॰ नि॰ 1(1).159; – **काल** पु॰, कर्म॰ स॰ [अपरकाल], आगे आने वाला समय, बाद वाला काल, भविष्य – *पुब्बकालं कोधो, अपरकालं उपनाहो,* विभ॰ 412; *वुत्तञ्चेतं – पुब्बकाले कोधो, अपरकाले उपनाहो'तिआदि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).113; – **क्खर** पु॰/नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अपराक्षर], बाद में आने वाला अक्षर, पश्चाश्रयी अक्षर – *पुब्बक्खरेन अपरक्खरं जानाति नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.321; – **गोयान** नपुं॰/पु॰, व्य॰ सं॰ [बौ॰ सं॰ अपरगोदान], बौद्धों की ब्रह्माण्ड-व्याख्या में सिनेरु (सुमेरु) से पश्चिम की ओर स्थित एक महाद्वीप का नाम – *पुब्बविदेहो चापरगोयानं जम्बुदीपो च, उत्तरकुरु चेति सियुं चत्तारो मे महादीपा,* अभि॰ प॰ 183; *सत्तयोजनसहस्सपरिमण्डलंयेव अपरगोयानं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 141; *अपरगोयानतो आगतमनुस्सेहि आवसितपदेसो अपरन्तजनपदोति नामं लभि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).236; *अपरगोयाने मज्झिमयामो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.46; *सहस्सं अपरगोयानानं,* अ॰ नि॰ 1(1).258; – **गोयानदीप** पु॰, कर्म॰ स॰, उपरिवत् – *गोयानियेति अपरगोयानदीपं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.171; *अपरगोयानदीपे उग्गमनकालो इध मज्झन्हिको,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.46; – **गोयानका** पु॰, अपरगोयन नामक महाद्वीप के निवासी – *ते जम्बुदीपका, अपरगोयानका, उत्तरकुरुका, पुब्बविदेहकाति चतुबिधा, इध जम्बुदीपका अधिप्पेता,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 98; *... भूमिसया नरा नाम अपरगोयानका च उत्तरकुरुका च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).316; – **चेतना** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अपरचेतना], किसी भी कर्म की आधारभूत तीन प्रकार की चेतनाओं में से तीसरे प्रकार की चेतना, दान आदि कर्मों को करते समय अपरभाग में दाता के चित्त में उदित चेतना – *... पुब्बचेतना, मुञ्चचेतना, अपरचेतनाति तिविधेन उप्पज्जति,* विभ॰ अट्ठ॰ 390; *पुञ्ञन्ति पुब्बचेतना च मुञ्चनचेतना च, पुञ्ञमहीति अपरचेतना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.172; *अहो वत मे जानी'ति अपरचेतनं परिपुण्णं कातुं नासक्खि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.262; *... इमे ताव तयो पुब्बचेतनाय च अपरचेतनाय चाति द्विन्नं चेतनानं वसेन दुक्खवेदना होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).270; तुल॰ अपरभागचेतना; – **रज्जु** अ॰, क्रि॰ वि॰ [अपरेद्युः], अगले दिन, दूसरे दिन – *अपरस्मिं काले अपरज्ज, अपरज्जु, अपरस्मिं वा,* क॰ व्या॰ 573; *अज्जतना भिक्खुनिसङ्घं पवारेत्वा अपरज्जु भिक्खुसङ्घं पवारेतु'न्ति,* चूळव॰ 440; *सायं वा निक्खमति अपरज्जु वा काले,* स॰ नि॰ 1(1).216; *अपरज्जु वा कालेति दुतियदिवसे वा भिक्खाचारकाले,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.237; – **रज्जुगत** त्रि॰, अगले दिन पड़ने वाला, अगले दिन घटित होने वाला/वाली – *अपरज्जुगताय आसाळ्हिया पुरिमिका उपगन्तब्बा, ... पच्छिमिका उपगन्तब्बा,* महाव॰ 181; – **रज्जुदिवसपुब्बभाग** पु॰, तत्पु॰ स॰, दूसरे दिन का पूर्वभाग – *पातोति अपरज्जुदिवसपुब्बभागे,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; – **रट्ठम** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अपराष्टम], दूसरा या अन्य आठवां – *पटिसम्भिदारहत्तञ्च, एतं मे अपरट्ठमं,* अप॰ 1.355; – **रण्ण** नपुं॰, अपर + अन्न का स॰ प॰ [अपरान्न], सात प्रकार के खाद्यान्नों से इतर साग सब्जी, दाल आदि खाद्य पदार्थ – *खेत्तं नाम यत्थ पुब्बण्णं वा अपरण्णं वा जायति,* पारा॰ 57; *तत्थ पुब्बण्णन्ति सालिआदीनि सत्त धञ्ञानि, अपरण्णन्ति मुग्गमासादीनि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.272; *खेत्तं नाम यस्मिं पुब्बण्णं रुहति, वत्थु नाम यस्मिं अपरण्णं रुहति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.72; – **जाति** स्त्री॰, उपरिवत् – *हरेणुकाति अपरण्णजाति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402; – **निस्सित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, दालों या सब्जियों के खेतों के समीप में स्थित – *..., अपरण्णनिस्सितं वा होति, ..., एतं सारम्भं नाम,* पारा॰ 231; *एसेव नयो अपरण्णनिस्सितादीसुपि,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.141; – **रण्ह** पु॰, अपर + अण्ह का स॰ प॰ [अपराह्ण], दिन का मध्याह्न के बाद वाला भाग – *... पुब्बन्हो, अपरण्हो, अज्जन्हो, ...,* मो॰ व्या॰ 110; – **तो** अ॰, [अपरतः], पश्चिम दिशा की ओर – *सर काणकच्छपं पुब्बसमुद्दे, अपरतो च युगछिद्दं,* थेरीगा॰ 502; – **दिवस** पु॰, कर्म॰ स॰ [अपरदिवस], दूसरा दिन, अगला दिन – *सा पेती तं ... सब्बकामसमिद्धा च हुत्वा अपरदिवसे आयस्मतो ... वन्दित्वा अट्ठासि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 69; – **दीपन/दीपना** नपुं॰/स्त्री॰, अन्य पद्धतियों द्वारा किसी पद की दूसरी व्याख्या या भिन्न निर्वचन, पूर्व-पद का परवर्ती पद द्वारा व्याख्यान या अर्थ का सुदृढ़ीकरण –

एत्तकेन हि सब्बम्पि अपरदीपनं सिद्धं होति, विभ॰ अट्ठ॰ 8; *अपरस्स अपरस्सा'ति दीपनं अपरदीपनं,* विभ॰ मू॰ टी॰ 8; *अपरदीपना पनेत्थ द्वे ठानानि गच्छति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 182; *अपरेन वा पुरिमत्थस्स दीपना अपरदीपना,* ध॰ स॰ मू॰ टी॰ 90; – **रड्ढ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरार्ध], किसी गाथा या वाक्य का बाद में आने वाला आधा भाग, उत्तरार्ध – *ततियगाथायपि पुब्बड्ढं तत्थ वुत्तनयमेव अपरड्ढे सङ्गोति सज्जनट्ठानं, लग्गनन्ति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.283.

अपरज्झति अप + √राध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपराध्यति], **1**. हिंसा करता है, प्रदूषित कर्म करता है – *रज्झति विरज्झति अपरज्झति, अपराधो,* सद्द॰ 2.484; **क**. किसी के विरुद्ध पाप-कर्म करता है – *कोचि पुरिसो किस्मिञ्चिदेव पकरणे अपरज्झति,* मि॰ प॰ 183; – **ज्झामि** तदे॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *क्याहं अय्यानं अपरज्झामि?,* चूळव॰ 180; – **ज्झन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अपराध कर रहा, पाप कर्म कर रहा – *तुम्हेसु च देविया च अपरज्झन्तो इमे निस्साय एतेसं ... पापकम्मं करिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.235; – **ज्झन्तं** उपरिवत्, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तम्पि तथेव अत्तनि अपरज्झन्तं चोरं दिस्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 197; – **ज्झन्तेन** तदे॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिं पच्चेकबुद्धे अपरज्झन्तेन तया कतस्स पापकम्मस्स अनुच्छविकमेवेतं फलं तुम्हं उपनीतं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 2.50; – **ज्झि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अपराध किया – *मम पुत्तो हुत्वा अग्गमहेसिया अपरज्झि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.170; – **ज्झिं** तदे॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तत्थ भिय्योति यस्मा तादिसे परिसुद्धसीलगुणसम्पन्ने तयि अपरज्झिं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.113; *नपिहं अपरज्झिन्ति नपि अहं तस्स किञ्चि अपरज्झिं,* थेरी॰ अट्ठ॰ 291; – **ज्झिंसु** उपरिवत्, ब॰ व॰ – *अपरद्धुन्ति अपरज्झिंसु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.207; – **ज्झिम्हा** तदे॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – ..., *येसं अपरज्झिम्हा,* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).121; – **ज्झित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, अपराध करके – *सो पुरिसो महासत्ते अपरज्झित्वा कुट्ठी हुत्वा दिट्ठधम्मेयेव मनुस्सपेतो अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.62; **ख**. न्यूनीभूत, पराजित, रहित, वञ्चित, खो चुका, द्रष्ट॰ अपरज्झन तथा अपरद्ध के अन्त॰.

अपरज्झन नपुं॰, अप + √राध से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, केवल पू॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त, किसी के विरुद्ध दुष्कृत्य या अनुचित कृत्य – **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰, अपराध कर देने की अवस्था, दुष्कृत्य कर देने की दशा – *कलिंव कितवा सठोति एत्थ सकुणेसु अपरज्झनभावेन अत्तभावो कलि नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.216.

अपरड्ढ त्रि॰, अपरद्ध का अप॰, परिभ्रष्ट, च्युत, वञ्चित – *अपरद्धोति अरहत्तमग्गप्पत्तितो पड्ढाय परिभट्ठो चुतो न अभिनिब्बत्तिस्सति, अपरड्ढो'ति वा पाठो, अपगतसमिद्धितो समुच्छिन्नकारणत्ता अपगतोति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.185.

अपरद्ध त्रि॰, अप + √राध का भू॰ क॰ कृ॰, **क**. किसी अभिप्रेत की प्राप्ति से वञ्चित, परिभ्रष्ट, रिक्त, तुच्छ, पराजित व्यक्ति – *त्वं, ... समनुयुञ्जियमानो ... रित्ते तुच्छो अपरद्धो,* म॰ नि॰ 1.299; *अपरद्धोति पराजितो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).177; *असुद्धो मञ्ञसि सुद्धो, सुद्धिमग्गा अपरद्धो'ति,* स॰ नि॰ 1(1).122; *अपरद्धोति दूरे त्वं सुद्धिमग्गा'ति वदति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.149; *भगवता सके ... समनुभासियमाना रित्ता तुच्छा अपरद्धा'ति,* म॰ नि॰ 2.236; *यस्स ..., याव अपरद्धञ्च ते इदं आचरियस्स ब्राह्मणस्स पोक्खरसातिस्स,* दी॰ नि॰ 1.90; *अपरद्धोति अरहत्तमग्गप्पत्तितो पड्ढाय परिभट्ठो चुतो न अभिनिब्बत्तिस्सति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.185; **ख**. कर्तृ॰ वा॰ में, अपराध कर चुका, पापकर्म कर चुका, दुष्कृत्य कर चुका – *यदि पन तस्सा पुत्तो अपरद्धो होति वेलातिवत्तो,* मि॰ प॰ 153; *येन एवं ... भिक्खुसङ्घे अपरद्ध'न्ति तमत्थं तस्स ... गच्छ,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 168; **ग**. कर्म॰ वा॰ में, वह, जिसके द्वारा अपराध या पापकर्म किया गया है – *किस्स तया अपरद्धं, भण विस्सट्ठा यथाभूतं,* थेरीगा॰ 419.

अपरद्धमेसी त्रि॰, [अपराधगवेषिन्], दूसरों के गुणों को न देख उनके दोषों को खोजने वाला, परछिद्रान्वेषी – *रन्धमेसीति विरन्धमेसी अपरद्धमेसी खलितमेसी गळितमेसी विवरमेसीति,* महानि॰ 121; *अपरद्धमेसीति गुणं अपनेत्वा दोसमेव गवेसी,* महानि॰ अट्ठ॰ 227.

अपरन्त पु॰, कर्म॰ स॰ [अपरान्त], **1**. पश्चिम दिशा – *सो कदाचि पुब्बन्ततो अपरन्तं गच्छति, कदाचि अपरन्ततो पुब्बन्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.107; ... *पुब्बन्तापरन्तं गच्छन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.352; **2**. भविष्य, जीवन का आगे आने वाला भाग – *एके समणब्राह्मणा अपरन्तकप्पिका अपरन्तानुदिट्ठिनो, अपरन्तं आरब्भ अनेकविहितानि अधिमुत्तिपदानि अभिवदन्ति चतुचत्तारीसाय वत्थूहि,* दी॰ नि॰ 1.26; *तत्थ अनागतकोट्ठाससङ्खातं अपरन्तं कप्पेत्वा गण्हन्तीति अपरन्तकप्पिका, अपरन्तकप्पो वा एतेसं अत्थीति अपरन्तकप्पिका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101; **3**. पश्चिमी भारत के एक क्षेत्र का प्राचीन नाम – *अपरगोयानतो आगतमनुस्सेहि आवसितपदेसो अपरन्तजनपदो'ति नामं लभि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.65; *अपरन्ते जनपदे कुमुदभण्डिका नाम धञ्ञजाति मासलूना*

अन्तोगेहगता होति, मि॰ प॰ 270; *सुरङ्गा अपरन्ता च, आगच्छन्ति ममं घरं,* अप॰ 1.394.

अपरन्तकप्प पु॰, [अपरान्तकल्प], भावी जीवन के विषय में कल्पना, जीवन के भविष्य से सम्बन्धित मत – *तत्थ अनागतकोट्ठाससङ्खातं अपरन्तं कप्पेत्वा गण्हन्तीति अपरन्तकप्पिका, अपरन्तकप्पो वा एतेसं अत्थीति अपरन्तकप्पिका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101.

अपरन्तकप्पिक त्रि॰, अपरन्तकप्प से व्यु॰ [अपरान्तकल्पिक], भविष्य में जीवन की विद्यमानता का प्रतिपादन करने वाला, या उनमें विश्वास रखने वाला – *समणब्राह्मणा अपरन्तकप्पिका अपरन्तानुदिट्ठिनो,* दी॰ नि॰ 1.26; *तत्थ अनागतकोट्ठाससङ्खातं अपरन्तं कप्पेत्वा गण्हन्तीति अपरन्तकप्पिका, अपरन्तकप्पो वा एतेसं अत्थी ति अपरन्तकप्पिका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101.

अपरन्तप त्रि॰, परन्तप का निषे॰ [अपरन्तप], दूसरों को कष्ट या पीड़ा न देने वाला – *सो अनत्तन्तपो अपरन्तपो दिट्ठेव धम्मे निच्छातो निब्बुतो सीतीभूतो सुखप्पटिसंवेदी ब्रह्मभूतेन अत्तना विहरति,* दी॰ नि॰ 3.185; म॰ नि॰ 2.3; 81; 376-77.

अपरन्तसहगत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अपरान्तसहगत], भविष्य या जीवन में आगे आने वाले भाग से सम्बन्धित – *येपि ते, चुन्द, अपरन्तसहगता दिट्ठिनिस्सया, ...,* दी॰ नि॰ 3.102; *इमेसञ्च, चुन्द, पुब्बन्तसहगतानं दिट्ठिनिस्सयानं इमेसञ्च अपरन्तसहगतानं दिट्ठिनिस्सयानं पहानाय ..., देसिता पञ्‍ञत्ता,* दी॰ नि॰ 3.104-05.

अपरन्तानुदिट्ठि[1] स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अपरान्तानुदृष्टि], भविष्य-विषयक, मिथ्या-दृष्टिकोण या मत, आगे आने वाले जीवन के भाग से सम्बन्धित मिथ्या अवधारणा – *अपरन्तं अनुगता दिट्ठि अपरन्तानुदिट्ठि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 98; *इमिना तत्थेव आगता चतुचत्तालीस अपरन्तानुदिट्ठियो गहिता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 415; *पुब्बन्तानुदिट्ठीनं असति, अपरन्तानुदिट्ठियो न होन्ति,* स॰ नि॰ 2(1).42; *अपरन्तानुदिट्ठीनं असति, थामसो परामासो न होति,* तदे॰.

अपरन्तानुदिट्ठि[2] त्रि॰, ब॰ स॰, भविष्य के जीवन के विषय में दृष्टिकोण रखने वाला या उस पर विश्वास रखने वाला – *ते च भोन्तो ... अपरन्तकप्पिका अपरन्तानुदिट्ठिनो अपरन्तं आरब्भ अनेकविहितानि ... चतुचत्तारीसाय वत्थूहि,* दी॰ नि॰ 1.26.

अपरन्तिका स्त्री॰, [अपरान्तिका], एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक पाद में 12 वर्ण रहते हैं – *अस्स या समकता परान्तिका,* वुत्तो॰ 35.

अपरपच्चय अपरप्पच्चय के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपरपजा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अपरप्रजा], आगे जन्म लेने वाली सन्तानें, पौत्र, पौत्री आदि, भावी सन्ततियां, अगली पीढ़ी – ..., *अपरपजा चस्स पटिपूजेन्ति,* दी॰ नि॰ 3.145; *अपरपजा चस्स पटिपूजेन्तीति सहायस्स पुत्तधीतरो पजा नाम, तेसं पन पुत्तधीतरो च नत्तुपनत्तका च अपरपजा नाम,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.125.

अपरपट्टिय अपरप्पट्टिय के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपरपरियाय / अपरापरियाय पु॰, कर्म॰ स॰, अपरापरिय का अप॰ [अपरापर्य], जीवन की आगे चलने वाली यात्रा, अगला जन्म, पुनर्जन्म – *निरयम्पि गच्छतीतिआदि निरयादीहि अविप्पमुत्तत्ता अपरपरियायवसेन तत्थ गमनं सन्धाय वुत्तं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.225; – **वेदनीय** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अपरापर्यवेदनीय], जन्मान्तरों में अनुभव किये जाने योग्य, बारी-बारी से अनुभव किये जाने योग्य, एक एक कर अनुभव किये जाने योग्य – *उभिन्नमन्तरे पञ्चजवनचेतना अपरापरियवेदनीयकम्मं नाम होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.242; *दिट्ठधम्मवेदनीयं उपपज्जवेदनीयं अपरपरियायवेदनीयं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.105; *यं पन अपरपरियायवेदनीयं, तं अञ्‍ञत्र अपरपरियाये वेदयितब्बफलं होति ... अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 209; – **वेदनीयकम्म** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अपरापर्यवेदनीयकर्मन्], भावी जन्मों में अथवा क्रमशः अनुभव किये जाने योग्य विपाक वाला कर्म – *उभिन्नं अन्तरे पन पञ्चजवनचेतना अपरपरियायवेदनीयकम्मं नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.106; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.242.

अपरपाद पु॰, केवल ब॰ व॰ में प्राप्त, पीछे वाले पैर – *ततो अपरपादेसु, दळ्हं, बन्धं लतागुणं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.330; *अपरपादेसूति पच्छापादेसु,* तदे॰.

अपरप्पच्चय[1] त्रि॰, परपच्चय का निषे॰, ब॰ स॰ [अपरप्रत्यय], दूसरों पर आश्रित या निर्भर न रहने वाला, आत्मनिर्भर, दूसरों पर श्रद्धा या भरोसा न रखने वाला – *दिट्ठधम्मा ... तिण्णविचिकिच्छा ... वेसारज्जप्पत्ता अपरप्पच्चया सत्थुसासने भगवन्तं एतदवोचुं,* महाव॰ 16; *नास्स परो पच्चयो, न परस्स सद्धाय एत्थ वत्ततीति अपरप्पच्चयो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.224; *अपरप्पच्चयाति परप्पच्चयो वुच्चति परसद्धा परपत्तियायना, ताय विरहिताति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.100; *सच्छिकत्वाति अत्तनायेव पञ्‍ञाय पच्चक्खं कत्वा, अपरप्पच्चयं ञत्वाति अत्थो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.124; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.76; *यो सारो ब्रह्मचरियस्स, तस्मिं अपरपच्चया,* स॰ नि॰

2(1).78; *तस्मिं अपरपच्चयाति तस्मिं अरियफले, न अञ्ञं पत्तियायन्ति, पच्चक्खतोव पटिविज्झित्वा ठिता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.251; – **भाव** पु॰, [अपरप्रत्ययभाव], आत्मनिर्भरता, किसी अन्य के प्रति श्रद्धावान् न होने की अवस्था – *तं किन्ति केन कारणेन अहं अवेच्च अपरपच्चयभावेन सद्दहेय्यं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 196-197.

अपरप्पच्चय² पु॰, कर्म॰ स॰ [अपरप्रत्यय], आत्मनिर्भरता, अन्य के प्रति श्रद्धा का अभाव, दूसरों पर आश्रय का अभाव – *सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वाति अत्तनायेव पञ्ञाय पच्चक्खं कत्वा, अपरप्पच्चयेन ञत्वाति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 140; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).173-74; ... *अपरपच्चया ञाणमेवस्स एत्थ होति,* स॰ नि॰ 1(2).17; *अपरप्पच्चयाति न परप्पच्चयेन, अञ्ञस्स अपतियायेत्वा अत्तपच्चक्खञाणमेवस्स एत्थ होतीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.30.

अपरप्पत्तिय त्रि॰, अपरपच्चय का ही वैकल्पिक शब्द, परप्पत्तिय का निषे॰ [अपरपत्तिक], किसी अन्य पर श्रद्धाभाव न रखने वाला – *अपरप्पच्चयोति अपरप्पत्तियो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).178; *न परो पत्तियो सद्दहातब्बो एतस्स अत्थीति अपरप्पत्तियो,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(2).194; *अनीतिहन्ति इतिहपरिवज्जितं, अपरपत्तियन्ति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267; *रञ्ञा नाम ..., अपरपत्तियेन हुत्वा सब्बानि किच्चानि अत्तपच्चक्खेनेव कातब्बानि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.108.

अपरभाग पु॰, कर्म॰ स॰ [अपरभाग], **क. काल के सन्दर्भ में**, आगे आने वाला समय, भावी समय; **1. क्रि॰ वि॰ के रूप में सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ में** – आगे चलकर, बाद में, फलस्वरूप – *चक्खादीनं ... पुब्बभागे ... एव अपरभागे अवस्समुप्पत्तितो आरम्मणाधिग्गहितुप्पन्नन्ति वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.7; *सा अपरभागे अञ्ञम्पि पुत्तं लभि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.3; **2. ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले पद के उपरान्त प्रयुक्त** – के पीछे, के उपरान्त – *तस्स सत्थुनो अपरभागे कोण्डञ्ञो मङ्गलो सुमनो रेवतो ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.49; *दीपङ्करस्स पन भगवतो अपरभागे एकं असङ्ख्येय्यं कोण्डञ्ञो नाम सत्था उदपादि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.40; **ख.** बाद वाला भाग, परवर्ती भाग – ..., *तस्सेव अपरभागेन कङ्खावितरणेन कथंकथीभावस्स,* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.8; **ग.** पश्चिम दिशा – *अपरभागे विसाणाय राजधानिया रज्जं कारेसि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.135.

अपररत्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अपररात्र], रात्रि का उत्तरार्द्ध, रात का अन्तिम प्रहर – *रत्तिया पुब्बं पुब्बरत्तं, रत्तिया अपरं अपररत्तं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.178.

अपरवत्त नपुं॰, [अपरवक्त्रा], एक छन्द का नाम, जिसके प्रत्येक पाद में 11 वर्ण रहते हैं तथा जो अर्धसमवृत्त नामक छन्द-वर्ग के अन्तर्गत वेतालिय का एक प्रभेद है – *यदि ननरलगा न जा जरा, यदि च तदापरवत्तमिच्छति,* वुत्तो॰ 114.

अपरवम्भना स्त्री॰, परवम्भना का निषे॰, दूसरों की अवज्ञा का अभाव, अन्य लोगों की उपेक्षा या तिरस्कार न करना – *अयञ्च सम्मादिट्ठि ... अरियानं अपच्चनीकता सद्धम्मसञ्ञत्ति अनत्तुक्कंसना अपरवम्भना,* म॰ नि॰ 2.73; 78.

अपरवम्भी त्रि॰, परवम्भी का निषे॰, दूसरों की अवज्ञा या निन्दा न करने वाला – ..., *अनत्तुक्कंसका अपरवम्भी अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि ... अञ्ञतरो'ति,* म॰ नि॰ 1.25; *पुन चपरं, भिक्खु अनत्तुक्कंसको होति अपरवम्भी,* म॰ नि॰ 1.135; – **म्भिता** स्त्री॰, अपरवम्भी का भाव॰, दूसरों की निन्दा न करने की प्रकृति – *अनत्तुक्कंसकतं अपरवम्भितं अत्तनि सम्पस्समानो भिय्यो पल्लोममापादिं अरञ्ञे विहाराय,* म॰ नि॰ 1.25.

अपरसेल पु॰, कर्म॰ स॰ [अपरशैल], 1. पश्चिम की दिशा में स्थित पर्वत – *मंदारो परसेलोत्थो,* अभि॰ प॰ 606; 2. एक विहार का नाम, अपरसेलिय के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपरसेलिय त्रि॰, अपरसेल से व्यु॰ [बौ॰ सं॰ अपरशैलीय], अशोक के समय तक विकसित 18 बौद्ध-निकायों में से एक निकाय तथा उसके अनुयायी – *अपरापरं पन हेमवतिका, ..., अपरसेलिया, वाजिरियाति अञ्ञेपि छ आचरियवादा उप्पन्ना,* कथा॰ अट्ठ॰ 105; *अन्धका नाम पुब्बसेलिया, अपरसेलिया, ..., इमे पच्छा उप्पन्ननिकाया, तदे॰; पुब्बसेलियभिक्खू च तथा अपरसेलिया,* म॰ वं॰ 5.12.

अपराजित¹ त्रि॰, परा + √जि के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपराजित], वह, जो पराजित नहीं हुआ है, नहीं हराया गया, अनभिभवनीय; – **तो पु॰**, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि सक्यकुले जातो, सम्बुद्धो अपराजितो,* थेरीगा॰ 192; *अत्थदस्सी तु भगवा, सयम्भू अपराजितो,* अप॰ 1.85; 375; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एका वासि मया दिन्ना, सयम्भुं अपराजितं,* अप॰ 1.233; – **ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एतादिसानि कत्वान, सब्बत्थमपराजिता,* सु॰ नि॰ 272; *सब्बत्थमपराजितााति सब्बत्थ खन्धकिलेसाभिसङ्खारदेवपुत्तमारप्पभेदेसु चतूसु पच्चत्थिकेसु एकेनापि अपराजिता हुत्वा, सयमेव ते चत्तारो मारे पराजेत्वाति वुत्तं होति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 125; – **ते** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पच्चेकबुद्धेनेकसते, सयम्भू अपराजिते,* अप॰ 1.3; – **द्वान**

नपुं., तत्पु. स. [अपराजितस्थान], अपराजेय प्राणी का स्थान - *अपराजितट्ठानम्हि, बोधिपल्लङ्कमुत्तमे,* बु. वं. 361; अप. 2.361; - **पल्लङ्क** पु., तत्पु. स. [अपराजितपर्यङ्क], अपराजेय व्यक्ति का पालथी लगाकर बैठना, बोधिवृक्ष के नीचे सिद्धार्थ का ध्यान की अवस्था में शान्तभाव से विशेष आसन बना कर बैठना - ... *अपराजितपल्लङ्कं आभुजित्वा निसीदि,* जा. अट्ठ. 1.81; ... *बोधिरुक्खमूले अपराजितपल्लङ्के ... उदपादि,* सु. नि. अट्ठ. 1.117; - **संघ** पु., कर्म. स. [अपराजितसङ्घ], अपराजेय अर्हतों का समूह - *आगतम्ह इमं धम्मसमयं, दक्खिताये अपराजितसङ्घ'न्ति,* स. नि. 1(1).31; *दक्खिताये अपराजितसङ्घन्ति केनचि अपराजितं अज्जेव तयो मारे मद्दित्वा विजितसङ्गामं इमं अपराजितसङ्घं दस्सनत्थाय आगतम्हाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 1.69.

अपराजित[2] पु., व्य. सं., **1.** एक चक्रवर्ती राजा का नाम - *इतो च सत्तमे कप्पे, एकोसिं अपराजितो,* अप. 1.225; **2.** एक गृहस्थ का नाम - *कनिट्ठस्स अपराजितोति,* ध. प. अट्ठ. 2.399; ... *अपराजितोयेव नाम भागिनेय्यो उपसङ्कमित्वा,* ध. प. अट्ठ. 2.400.

अपराजिता स्त्री., [अपराजिता], **1.** एक जड़ी या औषधीय पादप का नाम, गिरिकर्णी नाम की जड़ी का दूसरा नाम - *गिरिकण्ण्यपराजिता,* अभि. प. 584; **2.** सक्करी वर्ग के अन्त. परिगणित एक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक पाद में 14 वर्ण रहते हैं - *न-न-र-स-लहु-गा सरेहि'पराजिता,* वुत्तो. 89.

अपराध पु., अप + √राध से व्यु., क्रि. ना. [अपराध], अपराध, पाप से भरे-बुरे काम, दोषमय क्रियाकलाप, बाधक कार्य - *आगु वुत्तमपराधो,* अभि. प. 355; - **धो** प्र. वि., ए. व. - *किं चिन्तयमानो दुम्मनोसि, नून देव अपराधो अत्थि मय्ह'न्ति,* जा. अट्ठ. 6.214; - **धं** द्वि. वि., ए. व. - *अत्थं करिस्स'न्ति मुसा अभाणिं, एकापराधं खम राजसेट्ठ,* जा. अट्ठ. 3.348; - **धेन** तृ. वि., ए. व. - *सत्ता च अत्तनो अपराधेन न तथा विहञ्ञन्ति,* उदा. अट्ठ. 265; - **धस्स** ष. वि., ए. व. - *अकारकाति अपराधस्स न कारका,* उदा. अट्ठ. 211; - **धे** सप्त. वि., ए. व. - *यो पन ... तस्मिं तस्मिं अपराधे अपराधानुरूपं वधबन्धनछेदनताळनादिवसेन करोति,* जा. अट्ठ. 2.195; - **क** त्रि., अपराध से व्यु. [अपराधक], अपराध करने वाला, बुरे काम करने वाला - *अपराधका दूसका हेठका च, लभन्ति ते राजिनो निज्झपेतुं,* जा. अट्ठ. 4.448; - **कारक** त्रि., [अपराधकारक], उपरिवत्; - **रिका** स्त्री., अपराध करने वाली नारी - *अहं रञ्ञो महापतापस्स अपराधकारिका,* ..., जा. अट्ठ. 3.153; - **रहित** त्रि., [अपराधरहित], निरपराधी, बेकसूर - *अनापराधकम्मन्तन्ति कामकम्मादीसु अपराधरहितं,* जा. अट्ठ. 6.309; - **धानुरूपं** अ., क्रि. वि., किये गये अपराध के अनुसार - *अपराधे अपराधानुरूपं वधबन्धनछेदनताळनादिवसेन करोति,* जा. अट्ठ. 2.195; *अपराधं पन अनुविज्जित्वा अपराधानुरूपं असाहसेन विनिच्छयं करोन्ता ...,* ध. प. अट्ठ. 2.219.

अपराधी त्रि., अपराध से व्यु. [अपराधिन्], अपराध करने वाला - ... *राजापराधिनो हुत्वा अरञ्ञं पविसित्वा चोरिकाय जीविकं कप्पेन्ता ...,* उदा. अट्ठ. 344.

अपराधिक त्रि., अपराध से व्यु., प्रायः स. उ. प. में प्रयुक्त [अपराधिन्], **शा. अ.** किसी के विरुद्ध अपराधकर्म करने वाला - *ते तं सासनं सुत्वा संसारे विचरन्तानं न पुत्तो न धीता नाम नत्थि, ते अम्हाकं महापराधिका,* ..., जा. अट्ठ. 1.122; अ. नि. अट्ठ. 1.167; *तस्स इस्सरापराधिकस्स पुरिसस्स कतदोसो अहन्ति जानन्तस्स ... उप्पज्जेय्या'ति,* मि. प. 150; *अनेकदिवसं उपरिगङ्गाय राजापराधिकं चोरं हत्थपादे च कण्णनासञ्च छिन्दित्वा ... पवाहेसुं,* जा. अट्ठ. 2.97; *वेस्सवणापराधिको विय यक्खो,* मि. प. 20; **ला. अ.** च्युत हो जाने वाला, परिभ्रष्ट, वञ्चित - *अविज्जानिवुतो पोसो, सद्धम्मं अपराधिको,* अ. नि. 3(1).62; ..., *अहमेवेत्थ अपराधिको,* अ. नि. अट्ठ. 2.11.

अपराधिकता स्त्री., अपराधिक का भाव., अपराधी होना, अपराधी होने की अवस्था - *किं तत्थ कारणं? अपराधिकता, एवमेव ... पवत्तेति,* मि. प. 183.

अपराधित त्रि., अप + √राध के प्रेर. का भू. क. कृ., खो चुका, खो दिया गया, अपराध किया गया - *अत्थञ्च धम्मं अनुसास मं इसे, अतीतमद्धा अपराधितं मया,* जा. अट्ठ. 7.140; ... *अपराधितं मया ति एकंसेन मया अतीतं कम्मं अपराधितं विराधितं,* तदे.; *किं ते अपराधितं मया, यं मं ओवरियान तिट्ठसि,* थेरीगा. 369; - **कम्म** नपुं., कर्म. स., अकुशल कर्म, अनुचित कर्म, बुरा काम - *इदं वा राजापराधितकम्मं तया कतन्ति एवरूपं दारुणं अब्भक्खानं वा,* ध. प. अट्ठ. 2.40.

अपराधीन त्रि., पराधीन का निषे. [अपराधीन], स्वतन्त्र, वह जो दूसरों के सहारे पर नहीं है, स्वाधीन, आत्मनिर्भर - ... *अत्ताधीनो अपराधीनो भुजिस्सो येनकामंगमो,* दी. नि. 1.64; म. नि. 1.348; - **ता** स्त्री., अपराधीन का भाव.

[अपराधीनता], स्वाधीनता, स्वतन्त्रता, आत्मनिर्भरता – *यं पनेत्थ सब्बत्थेव अपराधीनताय लभति चित्तसुखं,* उदा॰ अट्ठ॰ 128; – **वुत्ति** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपराधीनवृत्ति], स्वतन्त्र जीवन-वृत्ति वाला व्यक्ति, वह, जिसकी जीवन-पद्धति किसी दूसरे पर आश्रित नहीं है – *इमं उदानन्ति इमं पराधीनापराधीनवुत्तीसु आदीनवानिसंसपरिदीपकं उदानं उदानेसि,* उदा॰ अट्ठ॰ 127.

अपराधेति अप + √राध के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपराधयति], **शा॰ अ॰** अनुचित रूप में होने या करने हेतु प्रेरित करता है, असफल उकसाता है, **ला॰ अ॰** उपेक्षा करता है – *चेतसा विहरन्तो अकिच्चं करोति, किच्चं अपराधेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1(2).77; *किच्चं अपराधेतीति कत्तब्बयुत्तकं किच्चं अकरोन्तो तं अपराधेति नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.305; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰, उपेक्षा करके – *सो तस्सापि वचनं ... तमेव अपराधेत्वा कालं कत्वा पदुमनिरये उप्पज्जि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.178.

अपरापर त्रि॰, [अपरापर], लगातार क्रम वाला, एक के बाद दूसरा, कई एक, बहुत सारे, विविध प्रकार के – *अपि च अपरापरं निब्बाहनं सोतुकामो न सम्पाटिच्छि'न्ति,* मि॰ प॰ 283; – **रे** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपरापरे पन ब्राह्मणा पाणातिपातादीनि पक्खिपित्वा तयो वेदे भिन्दित्वा बुद्धवचनेन ... अकंसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.298; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221; *अपरापरे पनाति अट्ठकादीहि अपरा परे पच्छिमा ओक्काकराजकालादीसु उप्पन्ना,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.273; – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रत्तियो पत्थयन्तेन, उळारा अपरापरा,* स॰ नि॰ 1(1).104; – **रेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मा तस्स भगवा अपरापरेसुपि दिवसेसु पिण्डाय चरितब्बं,* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.194.

अपरापरं अ॰, क्रि॰ वि॰ [अपरापरं], **क.** इधर-उधर, इस छोर से उस छोर, एक किनारे से दूसरे किनारे तक – *अपरापरं परियेसन्ति,* महानि॰ 271; *अपरापरं परियेसन्तीति उपरूपरि गवेसन्ति,* महानि॰ अट्ठ॰ 320; *सो पासादो ... अपरापरं कम्पति चलति न सन्तिट्ठति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).199; *सो हत्थी ... अपरापरं करोन्तो कीळति, उक्खिपित्वा कुम्भे पतिट्ठापेति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.188; *ते अपरापरं संसरन्ता एकं बुद्धन्तरं देवलोके खेपेत्वा अम्हाकं भगवतो काले ... निब्बति,* उदा॰ अट्ठ॰ 145; **ख.** पुनः पुनः, बार-बार, और भी आगे – *रञ्ञा विनिच्छितकालतो पट्ठाय अट्टो अपरापरं न सञ्चरति, राजवचनेनेव छिज्जति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).150; ... *महामेघो अपरापरं अनुप्पबन्धो अभिवस्सेय्य,* मि॰ प॰ 135; **ग.** शनैः शनैः, क्रमशः, एक-एक करके – *अपरापरं पनेत्थ मनुस्सा भिक्खुसङ्घस्स रत्तिट्ठानदिवाट्ठानमण्डपचङ्कमादीनि करिंयिसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).135; *तस्स अपरापरं पीति उप्पज्जति,* मि॰ प॰ 273; *अपरे पन ... अपरापरं जरामरणेहि सिवथिकवड्ढना'ति अत्थं वदन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 287.

अपरापरिम नपुं॰, अपरापर से व्यु॰ [अपरापर्य], लगातार चली आ रही परम्परा, पुनर्जन्मों का लगातार चल रहा सिलसिला – *दिट्ठेव धम्मे गरहं सम्पराये दुग्गतिं अपरापरिये उम्मादञ्च पापुणाति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 115; – **वेदनीय** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अपरापर्यवेदनीय], पुनर्जन्मों में अनुभव किया जाने वाला, चार प्रकार के कर्मों में से वह कर्म जिसके विपाकों का संवेदन अगले जन्मों में होता है – *अपरापरियवेदनीयं कम्मं अपरापरियवेदनीयट्ठेन नियतन्ति?,* कथा॰ 492; *दिट्ठधम्मवेदनीयं उपपज्जवेदनीयं अपरापरियवेदनीयं अहोसिकम्मञ्चेति पाककालवसेन चत्तारि कम्मानि नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ 36; *अपरे अपरे दिट्ठधम्मतो अञ्ञस्मिं यत्थ कत्थचि अत्तभावे वेदितब्बं कम्मं अपरापरियवेदनीयं,* अभि॰ ध॰ स॰ 155; – **वेदनीयकम्म** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अपरापर्यवेदनीयकर्मन्], अगले जन्मों में अनुभव में आने वाला कर्म – *विपाकं दत्वाव नस्सतीति अपरापरियवेदनीयकम्मं सन्धायाह,* जा॰ अट्ठ॰ 4.353; *उभिन्नमन्तरे पञ्चजवनचेतना अपरापरियवेदनीयकम्मं नाम,* अभि॰ अव॰ 154; – **वेपक्क** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अगले जन्मों में विपाक को प्राप्त करने वाला कर्म – *अप्पट्ठियं कम्मं अपरापरियवेपक्कन्ति?,* कथा॰ 364.

अपरापरियाय द्रष्ट॰ अपरपरियाय के अन्त॰.

अपरापरूप्पत्तिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरापरोत्पत्तिक], शनैः शनैः अथवा क्रमशः उत्पन्न होने वाला/वाली – *अपरापरूप्पत्तिका वनथा नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.243.

अपरापरूप्पन्न त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अपरापरोत्पन्न], उत्तर-काल में उत्पन्न, क्रमशः उत्पन्न, हेतु-प्रत्ययों की अपेक्षा से उत्पन्न – *सा अपरापरूप्पन्नाय अविज्जाय उपनिस्सयपच्चयो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 1(1).233.

अपरामट्ठ त्रि॰, परामट्ठ का निषे॰ [अपरामृष्ट], **शा॰ अ॰** स्पर्श न किया हुआ, **ला॰ अ॰** अप्रभावित, अदूषित, अगृहीत – ... *सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि ... अपरामट्ठानि समाधिसंवत्तनिकानि ...,* दी॰ नि॰ 2.63; *तण्हादिट्ठीहि*

अपरामट्ठत्ता - इदं नाम त्वं आपन्नपुब्बो'ति केनचि परामट्ठं असक्कुणेय्यत्ता च अपरामट्ठानि, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.113; *दिट्ठिया पहीनत्ता दिट्ठिपरामासेन अग्गहितत्ता अपरामट्ठा,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.171; 183; *अरियकन्तेहि ... अखण्डेहि ... अपरामट्ठेहि समाधिसंवत्तनिकेहि,* स॰ नि॰ 3(2).411; *अपरामट्ठेहीति इदं नाम तया कतं, इदं वीतिक्कन्त'न्ति एवं परामसितुं असक्कुणेय्येहि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.307; *सीलं अखण्डं अच्छिद्दं ... अपरामट्ठं कत्वा परिपूरेन्तो ... वदति,* उदा॰ अट्ठ॰ 218; *परामासेहि आरम्मणकरणवसेन परामट्ठता परामट्ठा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 96; *मग्गफलनिब्बानानि पन अग्गहितानि अपरामट्ठानि अनुपादिण्णानेव,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 377; - **त्त** नपुं॰, अपरामट्ठ का भाव [अपरामृष्टत्व], प्रभावित न होने की अवस्था, प्रदुष्ट न होने की दशा - *तण्हादिट्ठीहि अपरामट्ठत्ता-इदं नाम त्वं आपन्नपुब्बो'ति केनचि परामट्ठं असक्कुणेय्यत्ता च अपरामट्ठानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.113; - **पारिसुद्धिसील** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अपरामृष्टपरिशुद्धिशील], सर्वथा अप्रदुष्ट विशुद्धियों से सम्बन्धित शील, शील का एक प्रभेद - *परियन्तपारिसुद्धिसीलं, ... सत्तन्नं सेक्खानं-इदं अपरामट्ठपारिसुद्धिसीलं,* पटि॰ म॰ 37.

अपरामस / अपरामसन्तु त्रि॰, परा + मस के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरामृशन्], **शा॰ अ॰** स्पर्श न कर रहा, नहीं छू रहा, **ला॰ अ॰** किसी प्रकार का महत्त्व नहीं दे रहा, महत्त्वहीन मान रहा, तृष्णा, मान एवं दृष्टि की पकड़ से मुक्त रहता हुआ, वितर्क या संकल्प-विकल्प न करता हुआ - **सं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *लोकपञ्ञत्तियो, याहि तथागतो वोहरति अपरामस'न्ति,* दी॰ नि॰ 1.178; *याहि तथागतो वोहरति अपरामसन्ति याहि लोकसमञ्ञाहि लोकनिरुत्तीहि तथागतो तण्हामानदिट्ठिपरामासानं अभावा अपरामसन्तो वोहरतीति देसनं विनिवट्टेत्वा अरहत्तनिकूटेन निट्ठापेसि,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.285; ... *अममायन्तो अगण्हन्तो अपरामसन्तो अनभिनिविसन्तो चरेय्य ... यापेय्याति,* महानि॰ 36; *अपरामसन्तोति वितक्केन ऊहनं अकरोन्तो,* महानि॰ अट्ठ॰ 128; - **सन्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं ब्राह्मणं दिट्ठिमनादियन्तं अगण्हन्तं अपरामसन्तं अनभिनिवेसन्तन्ति,* महानि॰ 80; *अपरामसन्तन्ति तण्हामानदिट्ठीहि न परामसन्तं,* महानि॰ अट्ठ॰ 192; - **सतो** पु॰, च॰ / ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपरामसतो चस्स पच्चत्तञ्ञेव निब्बुति विदिता,* दी॰ नि॰ 1.14; ... *अपरामसतो चस्स अपरामासपच्चया सयमेव अत्तनायेव तेसं परामासकिलेसानं निब्बुति विदिता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.93; - **समानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अनुपादियमानो अगण्हमानो अपरामासमानो अनभिनिविसमानोति,* महानि॰ 77.

अपरायत्तता स्त्री॰, अपरायत्त का भाव॰ [अपरायत्तता], दूसरों के अधीन न होने की स्थिति, स्वायत्तता, आत्मनिर्भरता; - **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सेरितन्ति सच्छन्दवुत्तितं अपरायत्ततं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.66.

अपरायण त्रि॰, परायन का निषे॰ [अपरायण], बेसहारा, आश्रयविहीन, बन्धु-बान्धवों से विहीन; - **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सोहं सहस्सजीनोव, अबन्धु अपरायणो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.413; *अपरायणोति असरणो, निप्पतिट्ठोति अत्थो,* तदे॰; - **यिनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सा नूनाहं मरिस्सामि, अबन्धु अपरायिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 3.341; *अपरायिनीति अप्पतिट्ठा अप्पटिसरणा,* तदे॰.

अपरिकथाकत त्रि॰, परिकथाकत का निषे॰ [अपरिकथाकृत], वह कठिन चीवर जो चीवर के महत्त्व को प्रकाशित करने वाली कथा द्वारा प्राप्त नहीं हुआ हो - *अपरिकथाकतेन अत्थतं होति कथिनं,* महाव॰ 332; *परिकथाकतेनाति कथिनं नाम दातुं वट्टति, कठिनदायको बहुं पुञ्ञं पसवती'ति एवं परिकथाय उप्पादितेन,* महाव॰ अट्ठ॰ 369.

अपरिकुपित त्रि॰, परिकुपित का निषे॰ [अपरिकुपित], कोप या क्रोध से मुक्त, तीव्र कोप से रहित - *देवतासु अपरिकुपितासु देवो सम्मा धारं अनुप्पवेच्छति,* अ॰ नि॰ 1(2).87.

अपरिक्कमन नपुं॰, परिक्कमन का निषे॰ [अपरिक्रमण], **क.** घूमने-फिरने के विस्तृत क्षेत्र या मैदान से रहित - *सारम्भे चे भिक्खु वत्थुस्मिं अपरिक्कमने सञ्ञाचिकाय कुटिं कारेय्य,* पारा॰ 229; *सपरिक्कमनं अपरिक्कमनन्ति सउपचारं अनुपचारं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.141; **ख.** बचने के उपायों से रहित, त्राण के उपायों से रहित - *सपरिक्कमनो अयं धम्मो, नायं धम्मो अपरिक्कमनो,* अ॰ नि॰ 3(2).231.

अपरिक्खत त्रि॰, परिक्खत का निषे॰ [अपरिक्षत], क्षति-रहित, हानि अथवा क्षय को अप्राप्त - ... *तं अक्खतं केनचि अपरिक्खत्तं मनुस्सरूपेनेव पाटलिपुत्तं नयिस्सामि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 238; - **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिक्षयधर्मन्], कभी भी क्षय को प्राप्त न होने वाला, स्वभाव से ही अक्षय - *अक्खयधम्ममत्थुति अपरिक्खयधम्मं होतु,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 208.

अपरिक्खित्त त्रि॰, परि + √खिप के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिक्षिप्त], ऐसा आवास, जो चारों ओर से घिरा हुआ न हो, घेराबन्दी से रहित - *अपरिक्खित्तस्स गामस्स घरूपचारे*

ठितस्स मज्झिमस्स पुरिसस्स लेड्डुपातो, पारा॰ 52; *तस्मा ... अपरिक्खितस्से गामस्स घरूपचारे ठितस्स ... वुत्तं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.240; ..., *अपरिक्खित्तस्स उपचारो,* पाचि॰ 216.

अपरिक्खीण त्रि., परिक्खीण का निषे॰ [अपरिक्षीण], पूरी तरह से क्षय को अप्राप्त, पूरी तरह से समाप्त न होने वाला, अप्रयुक्त – *यावकीवञ्च मेति यत्तकं कालं मम सकं मुत्तकरीसं अपरिक्खीणं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).359; *अपरिक्खीणा च आसवा न परिक्खयं गच्छति,* म॰ नि॰ 1.150; *सति वा उपादिसेसेति उपादानसेसे वा सति अपरिक्खीणे,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).311; – **ता** स्त्री॰, अपरिक्खीण का भाव॰ [अपरिक्षीणता], पूरी तरह क्षीण न होना, समाप्त न होना – *यानि तेसु संयोजनानि अखीणासवानं तेसं अपरिक्खीणता च,* उदा॰ अट्ठ॰ 32.

अपरिक्खोभ त्रि., परिक्खोभ/परिखोभ का निषे॰, ब॰ स॰ [अपरिक्षोभ], परिक्षोभ अथवा बाधक तत्त्वों से मुक्त, क्लेश आदि से मुक्त – *किलेसपरिखोभाभावेन अपरिखोभं,* उदा॰ अट्ठ॰ 301.

अपरिगमनता स्त्री॰, अपरिगमन का भाव॰, जन्म-मरण के चक्र में आने जाने से मुक्ति, भवचक्र से मुक्ति, आवागमन से छुटकारा – *अपरिगमनताय ठितो,* महानि॰ 16; *अपरिगमनतायाति संसारे अगमनभावेन पुनागमनाभावेनाति अत्थो,* महानि॰ अट्ठ॰ 70.

अपरिगुत्ति स्त्री॰, परिगुत्ति का निषे॰ [अपरिगुप्ति], सुरक्षा का अभाव, असुरक्षा – *ये तत्थ अपरिगुत्तिया च ... आबाधं न करोन्ति,* विसुद्धि॰ 1.32.

अपरिग्गह त्रि., ब॰ स॰ [अपरिग्रह], **शा॰ अ॰** परिग्रह अथवा धन-सम्पत्ति आदि भौतिक साधनों से रहित, मन के लगाव से मुक्त, "मेरा है" इस प्रकार के मनोभाव से मुक्त – *मनुस्सा तत्थ जायन्ति, अममा अपरिग्गहा,* दी॰ नि॰ 3.151; *अपरिग्गहाति इत्थिपरिग्गहेन अपरिग्गहा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.133; *अममा अपरिग्गहा, नियतायुका,* अ॰ नि॰ 3(1).207; *अपरिग्गहाति "इदं मय्ह"न्ति परिग्गहरहिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.271; **ला॰ अ॰** पत्नी-रहित, अविवाहित – *सपरिग्गहो वा ब्रह्मा अपरिग्गहो वा'ति?,* दी॰ नि॰ 1.223; *अपरिग्गहो भो गोतमातिआदीसुपि कामच्छन्दस्स अभावतो इत्थिपरिग्गहेन अपरिग्गहो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.304; *सा अपरिग्गहापि न सेवितब्बा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.445; ... *सपरिग्गहा, अपरिग्गहा'ति पुच्छापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.176; – **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अपरिग्रहभाव], **क.** स्त्री, धन आदि के "यह मेरा है" इस रूप में मन द्वारा पकड़ कर नहीं रखना, **ख.** अविवाहित रहने की स्थिति – *सो अपरिग्गहभावं ञत्वा समीपं गन्त्वा भद्दे, का नाम त्व'न्ति पुच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.192; – **रस** त्रि., ब॰ स॰, वह जिसका कृत्य पकड़ कर या बांधकर रखना न हो – *अपरिग्गहणरसो मुत्तभिक्खु विय,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 172.

अपरिग्गहित त्रि., परि + √गह के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिगृहीत], **क.** अविवाहित, गृहस्थ जीवन के आवरण से रहित – *अवावटाति अपेतावरणा अपरिग्गहा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.202; **ख.** "यह मेरा है" इस रूप में मन द्वारा अचिन्तित, मन द्वारा अगृहीत – ... *अपरिग्गहिता कामा,* महानि॰ 2; *अपरिग्गहिताति तथा अपरिग्गहिता उत्तरकुरुकानं कामा,* महानि॰ अट्ठ॰ 13.

अपरिचक्खितु पु., परि + √चक्ख से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [अपरिचष्ट्र], वह, जो सावधान या चौकन्ना नहीं है, सूक्ष्म परीक्षण न करने वाला – *विकिण्णवाचं अनिगुय्हमन्तं, असञ्ञतं अपरिचक्खितारं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.72; *अपरिचक्खितारन्ति अयं मया कथितमन्तं रक्खितुं सक्खिस्सति न सक्खिस्सती'ति पुग्गलं ओलोकेतुं उपपरिक्खितुं असक्कोन्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.73.

अपरिचरित्वान परि + √चर के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, परिचर्या न करके, उचित देखभाल न करके, उपेक्षा करके – *मातरं अपरिचरित्वान, किच्छं वा सो निगच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.324; *मिच्छा चरित्वानाति मातरं अपटिजग्गित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.326.

अपरिचारक त्रि., परिचारक का निषे॰ [अपरिचारक], ठीक से सेवा या देखभाल न करने वाला, उपेक्षा करने वाला – *एवं किच्छा भतो पोसो, पितु अपरिचारको,* जा॰ अट्ठ॰ 5.324.

अपरिचिण्ण त्रि., परि + √चर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिचीर्ण], वह, जिसकी उचित देख भाल नहीं की गयी है, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त; – **ट्ठान** नपुं॰, कर्म॰ स॰, ऐसा स्थान या अवसर, जहां किसी की सेवा या सम्मान न किया गया हो – *बुद्धानं पन अपरिचिण्णट्ठाने आसनपञ्ञत्तिं आचिक्खन्तेन एकेन भिक्खुना पठमतरं गन्तुं वट्टति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.43; – **पुब्ब** त्रि., ब॰ स॰, वह, जिसकी पहले कभी भी ठीक से सेवा-सुश्रूषा या देखभाल नहीं की गयी है – *अग्गि सुलभरूपो यो मया अपरिचिण्णपुब्बो इमिना दीघेन अद्धुना,* म॰ नि॰ 1.116.

अपरिचितकुसलता स्त्री॰, अपरिचितकुसल का भाव॰, कर्म॰ स॰, कुशल कर्मों या शील के विषय में अपरिचय, शील–

विषयक अज्ञान - *सा पनेसा अस्सद्धकुसलस्स धीता चिरकालं अपरिचितकुसलताय साधुजनाचारविरहिता अनादरा अलक्खिका विय अट्ठासि,* पे. व. अट्ठ. 57.

अपरिच्चत्त त्रि., परि + √चज के भू. क. कृ. का निषे. [अपरित्यक्त], **शा. अ.** वह, जिसका परित्याग न किया गया हो, **ला. अ.** वह, जिसे दान में न दे दिया गया हो - ... *अदिन्नं अनिस्सट्ठं अपरिच्चत्तं रक्खितं गोपितं ममायितं परपरिग्गहितं,* पारा. 52; *यथाठाने ठितम्पि अनपेक्खताय न परिच्चत्तन्ति अपरिच्चत्तं,* पारा. अट्ठ. 1.241; *अपरिच्चत्तं खो रञ्ञो नागस्स जीवित'न्ति,* म. नि. 1.85; *अपरिच्चत्तन्ति अनिस्सट्ठं, परेसं जयं अम्हाकञ्च पराजयं पस्सीति मञ्ञति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.92.

अपरिच्छिन्नपुब्बापरकोटिक त्रि., ब. स. [अपरिच्छिन्नपूर्वापरकोटिक], वह, जिसके पूर्वान्त एवं अपरान्त (भविष्य) की कोटियां या सिरे अपरिमित हों - ... *अपरिच्छिन्नपुब्बापरकोटिकोति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 2.138.

अपरिच्छिन्नप्पमाण त्रि., अपरिमित प्रमाण वाला - *अप्पमाणिकायोति एत्तकेन निट्ठं गच्छिस्सन्ती'ति एवं अपरिच्छिन्नप्पमाणायो, ... अत्थो,* पारा. अट्ठ. 2.134.

अपरिच्छिन्नक त्रि., परिच्छिन्नक का निषे. [अपरिच्छिन्नक], परिच्छेद या सुनिश्चित माप तौल या निश्चित सीमा से रहित, अपरिमित, असीम - *अपरिच्छिन्नसङ्ख्यत्ता सङ्ख्यामहत्तेनपि महता,* उदा. अट्ठ. 195.

अपरिच्छेद त्रि., ब. स. [अपरिच्छेद], उपरिवत् - *महावनेति महावनं नाम सयंजातं अरोपिमं अपरिच्छेदं महन्तं वनं,* उदा. अट्ठ. 148.

अपरिजानं / अपरिजानन्त त्रि., परि + √ञा के वर्त. कृ. का निषे. [अपरिजानन्], अच्छी तरह से या पूर्ण रूप से नहीं जान रहा - *अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय,* इतिवु. 4; *अपरिजानन्ति न परिजानन्तो,* इतिवु. अट्ठ. 47; *अनभिजानं अपरिजानं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय,* स. नि. 2(2).96.

अपरिञ्ञाणधम्म त्रि., ब. स. [अपरिज्ञानधर्मन्], ज्ञान की क्षमता से रहित, स्वभाव से ही अज्ञानी - *सचे बालो अपरिञ्ञातधम्मो सीलादिगुणा परिबाहिरो तित्थायतने पब्बजितो* ..., ध. प. अट्ठ. 1.284, पाठा. अपरिञ्ञातधम्मों.

अपरिञ्ञात त्रि., परि + √ञा के भू. क. कृ. का निषे. [अपरिज्ञात], पूरी तरह से या अच्छी तरह से नहीं जाना या समझा हुआ, तीन परिज्ञाओं द्वारा ग्रहण न किया गया - *अमतं तेसं, भिक्खवे, अपरिञ्ञातं येसं कायगतासति अपरिञ्ञाता,* अ. नि. 1(1).62; *अपरिञ्ञातन्ति ञातपरिञ्ञावसेन अपरिञ्ञातं,* अ. नि. अट्ठ. 1.404; *यत्थ सासवं विञ्ञाणं अपरिञ्ञातं तत्थ वीजत्थो,* नेत्ति. 66; *अपरिञ्ञातं तस्सातिवदामि,* म. नि. 1.2; - **त्त** नपुं., अपरिञ्ञात का भाव. [अपरिज्ञातत्व], तीन प्रकार की परिज्ञाओं द्वारा ज्ञात न होने की अवस्था - *वाचावत्थुमत्तस्सेव भाणिनो अत्थस्स अपरिञ्ञातत्ता,* उदा. अट्ठ. 260; - **धम्म** त्रि., ब. स. [अपरिज्ञातधर्मन्], स्वभाव से ही धर्मों का परिज्ञान न रखने वाला, अज्ञानी, पृथग्जन - *सचे बालो अपरिञ्ञातधम्मो सीलादिगुणा परिबाहिरो तित्थायतने पब्बजितो* ..., ध. प. अट्ठ. 1.284; - **वत्थुक** त्रि., ब. स. [अपरिज्ञातवस्तुक], वह, जिसे वस्तुओं का परिज्ञान नहीं है, धर्मों को यथार्थरूप में न जानने वाला - *स्वायं इध यस्मा पुथुज्जनो अपरिञ्ञातवत्थुको,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).28.

अपरिञ्ञामूलिक त्रि., ब. स. [अपरिज्ञामूलक], वह, जिसके मूल में अज्ञान रहे - *अपरिञ्ञामूलिका च इधाधिप्पेतानं सब्बधम्मानं मूलभूता मञ्ञना होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).28.

अपरिडय्हमान त्रि., परि + √डह के कर्म. वा. के वर्त. कृ., आत्मने. का निषे. [परिदह्यमान], नहीं जलाया जा रहा, राग एवं द्वेष की अग्नि से नहीं जल रहा - *अनवस्सुतो अपरिडय्हमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो,* सु. नि. 63; *अपरिडय्हमानोति एवं अन्वास्सवविरहाव किलेसग्गीहि अपरिडय्हमानो,* सु. नि. अट्ठ. 1.92; चूळनि. अट्ठ. 121; *अपरिडय्हमानोति रागजेन परिळाहेन अपरिडय्हमानो,* चूळनि. 261; - **चित्त** त्रि., ब. स. [अपरिदह्यमानचित्त], वह, जिसका चित्त क्लेशों की अग्नि द्वारा जलाया नहीं जा रहा है - ... *अभिनिब्बुतत्तोति गुत्तचित्तो अपरिडय्हमानचित्तो च,* सु. नि. अट्ठ. 2.73.

अपरिणत त्रि., परि + √नम के भू. क. कृ. का निषे. [अपरिणत], **शा. अ.** नहीं पका हुआ, अपरिवर्तित, **ला. अ. क.** वह, जो किसी एक को उद्देश्य बनाकर नहीं दिया गया है, या उचित रूप में विनियोजित नहीं किया गया है - *अपरिणते परिणतसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स,* पारा. 394; **ला. अ. ख.** अक्षीण, क्षय को अप्राप्त - *अपक्कं न परिपाचेन्तीति अपरिणतं अखीणं आयुं अन्तराव न उपच्छिन्दन्ति,* दी. नि. 2.360; - **भोजी** त्रि., बिना पकी हुई चीजों को

खाने वाला - *सप्पाये मत्तं न जानाति, अपरिणतभोजी च होति,* अ॰ नि॰ 2(1).136.

अपरिणायक त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिणायक], नेता-रहित, मार्गदर्शक या नायक से रहित - *एकचिन्तितोयमत्थो, बालो अपरिणायको,* जा॰ अट्ठ॰ 2.189; *बालो अपरिणायकोति अयं खुज्जो बालो,* ..., तदे॰; **- यिका** स्त्री॰, नेतृत्वरहित या मार्गदर्शक-रहित नारी - *सा नूनसा कपणिका, अन्धा अपरिणायिका,* जा॰ अट्ठ॰ 4.83; *ते हि नून मरिस्सन्ति, अन्धा अपरिणायका,* जा॰ अट्ठ॰ 4.372.

अपरितस्स पु॰, परितस्स = परितास का निषे॰ [अपरित्रास, बौ॰ सं॰ अपरितास], अकम्पन, तृष्णा एवं दृष्टियों के भय से मुक्ति, निडरता, अनुद्वेग, बेचैनी का अभाव - *रञ्ञो पच्चन्तिमे नगरे बहुं सालियवकं सन्निचितं होति अब्भन्तरानं रतिया अपरितस्साय फासुविहाराय बाहिरानं पटिघाताय,* अ॰ नि॰ 2(2).242; *अपरितस्सायाति तासं अनापज्जनत्थाय,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.183; *एवमेवं ... विहरतो रतिया अपरितस्साय फासुविहाराय ओक्कमनाय निब्बानस्स,* अ॰ नि॰ 3(1).64; *अपरितस्सायाति तण्हादिट्ठिपरितस्सनाहि अपरितस्सनत्थाय,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.225.

अपरितस्सं/अपरितस्सन्त/अपरितस्समान त्रि॰, परि + √तस के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरित्रसन्], व्याकुल न होता हुआ, उद्विग्न न रहता हुआ, भय न करता हुआ - *अनुपादयं न परितस्सति, अपरितस्सं पच्चत्तञ्ञेव परिनिब्बायति,* दी॰ नि॰ 2.53; म॰ नि॰ 1.98; *अपरितस्सन्ति अपरितस्समानो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.88; **- स्सन्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भगवता अज्झत्तक्खन्धविनासे अपरितस्सन्तं खीणासवं दस्सेत्वा देसना निट्ठापिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).17; **- स्सतो** च॰/ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विञ्ञाणे ... असण्ठिते अनुपादाय अपरितस्सतो आयतिं जातिजरामरणदुक्खसमुदयसम्भवो न होती'ति,* इतिवु॰ 67; **- स्समानं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमिना भगवा अज्झत्तक्खन्धविनासे अपरितस्समानं खीणासवं दस्सेन्तो देसनं मत्थकं पापेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).16.

अपरितस्सक त्रि॰, अपरितस्स से व्यु॰ [बौ॰ सं॰ अपरितासक], परित्रास न करने वाला, मन में व्याकुलता न लाने वाला, भयरहित - *अज्झत्तं अपरितस्सन्ते ... परिक्खारविनासे परितस्सकेन अपरितस्सकेन चापि भवितब्बं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).17.

अपरितस्सना स्त्री॰, अपरितस्सन से व्यु॰ [अपरित्रसन], भय या मानसिक व्याकुलता का अभाव, परित्रास का न होना; **- नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उपादापरितस्सनञ्च ..., देसेस्सामि अनुपादाअपरितस्स - नञ्च,* स॰ नि॰ 2(1).15; ... *अपरितस्सनन्ति अग्गहणेन अपरितस्सनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.231; *कथञ्चावुसो, अनुपादाना अपरितस्सना होति,* म॰ नि॰ 3.276; स॰ नि॰ 2(1).16; **- वार** पु॰, तत्पु॰ स॰, व्याकुलता या उद्विग्नता के अभाव की बारी या अवसर - *अपरितस्सनावारे न एवं होतीति येहि किलेसेहि एवं भवेय्य, तेसं पहीनत्ता न एवं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).17.

अपरितस्सी त्रि॰, परितस्सी का निषे॰, परित्रास न करने वाला, व्याकुलता से रहित, मन में भय या चिन्ता न लाने वाला - *सो अछम्भी अकम्पी अवेधी अपरितस्सी विगतलोमहंसो,* म॰ नि॰ 2.346.

अपरित्त त्रि॰, परित्त का निषे॰ [अपरीत्त], **शा॰ अ॰** अनल्प, असीम, अधिक, अप्रमाण, **ला॰ अ॰** कामावचरभूमि से ऊपर वाले महग्गत चित्त - *एकच्चो पुग्गलो ... भावितपञ्ञो अपरित्तो महत्तो अप्पमाणविहारी,* अ॰ नि॰ 1(1).282-283; *अपरित्तोति न परित्तगुणो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.218; *तेसं पहाना अपरित्तञ्च मे चित्तं भविस्सति अप्पमाणं सुभावितं'न्ति,* म॰ नि॰ 3.46; *अपरित्तन्ति कामावचरचित्तं परित्तं नाम, तस्स पटिक्खेपेन महग्गतं अपरित्तं नामं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.39.

अपरिदेव पु॰, परिदेव का निषे॰, विलाप या रोने कलपने का अभाव - *अपरिदेवो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 11; *परिदेवा वुट्ठहित्वा अपरिदेवं पक्खन्दतीति - गोत्रभु,* पटि॰ म॰ 60.

अपरिनिट्ठित त्रि॰, परि + नि + √ठा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिनिष्ठित], पूर्णता को अप्राप्त, पूर्ण न किया हुआ, आधे-अधूरे रूप में तैयार - *मम आगमनपच्चया अपरिनिट्ठिता सिखं अप्पत्ता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.47; *दस पारमियो ... अननुच्छविकमेत'न्ति अपरिनिट्ठताव मालायो गहेत्वा ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.150.

अपरिनिप्फन्न त्रि॰, परि + नि + √पद के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिनिष्पन्न], हेतुओं एवं प्रत्ययों द्वारा उत्पन्न न किया गया, अवास्तविक - *रूपं अपरिनिप्फन्नन्ति? आमन्ता,* कथा॰ 505; ... *पन्नरस रूपानि परिनिप्फन्नानि नाम, दस अपरिनिप्फन्नानि नाम,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 373; **- कथा** स्त्री॰, कथा॰ की एक कथा का शीर्षक, कथा॰ 505-506.

अपरिनिब्बुत त्रि॰, परिनिब्बुत का निषे॰ [अपरिनिर्वृत], पूर्ण रूप से मुक्ति को अप्राप्त, परिनिर्वाण को अप्राप्त, पूर्णतया अविमुक्त - *अत्तना अदन्तो अविनीतो अपरिनिब्बुतो परं*

दमेस्सति विनेस्सति ... विज्जति, म॰ **नि॰** 1.51; ... *अपरिनिब्बुतोति एत्थ पन अनिब्बिसताय अदन्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).202; - **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अपरिनिर्वृतत्व], पूर्णतया परिनिर्वाण न पाने की अवस्था - *सारिपुत्तत्थेरो तथागतस्स सन्तिके अपरिनिब्बुतत्ता बुद्धानं सन्तिका महन्तं न लभि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.123-124.

अपरिमितपानभोजन त्रि॰, ब॰ स॰, बिना सीमा के अत्यधिक भोजनों और पेय पदार्थों का उपभोग करने वाला - *अपरिमितपानभोजना होन्ति,* अ॰ नि॰ 1(2).285.

अपरिपक्क त्रि॰, परि + √पच के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिपक्व], **शा॰ अ॰** कच्चा, वह, जो पूरी तरह से पका नहीं है, **ला॰ अ॰** हज़म न किया हुआ, प्रौढ़ता या गम्भीरता से रहित - *सो पनायमाहारो एवरूपे ओकासे निधानमुपगतो भाव अपरिपक्को होति,* विसुद्धि॰ 1.335; *एवमेव ... सेम्हपटलपरियोनद्धो ... उपगन्त्वा तिट्ठतीति एवं अपरिपक्कतो पटिक्कूलता पच्चवेक्खितब्बा,* विसुद्धि॰ 1.336; *अपरिपक्काम, ..., चेतोविमुत्तिया पञ्च धम्मा परिपाकाय संवत्तन्ति,* उदा॰ 109; **- त्त** नपुं॰, अपरिपक्क का भाव॰ [अपरिपक्वत्व], परिपक्वता का अभाव, कच्चापन, अपूर्णता, परिपाक या विपाक प्राप्त न करने की अवस्था - *सब्बमेतं ञाणस्स अपरिपक्कत्ता तस्स कामानं दुप्पहानताय सम्मापटिपत्तियं योग्यं कारापेतुं वदति,* उदा॰ अट्ठ॰ 252; *पटिपस्सम्भीति इन्द्रियानं अपरिपक्कत्ता, संवेगस्स च नातितिक्खभावतो वूपसमि,* उदा॰ अट्ठ॰ 252; - **ञाणत्त** नपुं॰, भाव॰ [अपरिपक्वज्ञानत्व], मानसिक रूप से अविकसित रहने की स्थिति - *अयं पन अपरिपक्कञाणत्ता ब्राह्मणकुले उग्गहितवोहारवसेनेव हीळेन्तो एवमाह,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.199; - **वेदनिय** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अपक्ववेदनीय], विपाकक्षण उदित होने से पूर्व ही अनुभव में आने योग्य - *तं मे कम्मं अपरिपक्कवेदनीयं होतू'ति,* अ॰ नि॰ 3(1).197; *अपरिपक्कवेदनीयन्ति अलद्धविपाकवारं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3. 263; - **न्द्रिय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिपक्वेन्द्रिय], वह, जिसकी इन्द्रियां पूरी तरह से परिपक्व नहीं है, शिथिल या अक्षम इन्द्रियों वाला - *सचे पन चतुमासं वुड्ढवस्सस्सापि भगवतो वेनेय्यसत्ता अपरिपक्किन्द्रिया होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).55.

अपरिपुच्छा स्त्री॰, परिपुच्छा का निषे॰ [अपरिपृच्छा], प्रश्न का न होना, पूछताछ का अभाव - *असुस्सूसा अपरिपुच्छा पञ्ञाय परिपन्थो,* अ॰ नि॰ 3(2).113.

अपरिपुण्ण त्रि॰, परिपुण्ण का निषे॰ [अपरिपूर्ण], **क.** वह, जो पूर्ण नहीं है, गोलाकार से रहित - *अञ्ञेसञ्हि अक्खिभण्डा अपरिपुण्णा होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.273; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.37; **ख.** अत्यल्प, बहुत अधिक नहीं, छोटा-मोटा, हल्का - ... *परिभासाय परिपुण्णाय, नो अपरिपुण्णाया'ति,* दी॰ नि॰ 3.59; *नो अपरिपुण्णायाति अन्तरा अट्ठपिताय निरन्तरं पवत्ताय,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.41; **ग.** अपूर्ण, तुच्छ, हीन, घटिया - *अकेवली सो असमत्तो सो अपरिपुण्णो सो हीनो निहीनो ...,* महानि॰ 210; *अपरिपुण्णोति न सम्पुण्णो,* महानि॰ अट्ठ॰ 290; *अरियो सीलक्खन्धो परिपुण्णो नो अपरिपुण्णो,* दी॰ नि॰ 1.183; *अपरिपुण्णस्स खो सीलक्खन्धस्स पारिपूरिया ... उपनिस्साय विहरेय्यं,* स॰ नि॰ 1(1).165; **घ.** अप्राप्त - *इमि इम अपरिपुण्णो वत्तमानयो,* सद्द॰ 2.319; - **कम्मन्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिपूर्णकर्मन्], वह, जिसने अपना काम पूर्ण रूप से नहीं किया है - *अपरिपुण्णकम्मन्ता विप्पटिसारिनियो पच्चानुतापिनियो हीनं कामं उपपन्ना'ति,* अ॰ नि॰ 3(1).203; - **पत्तचीवर** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिपूर्णपात्रचीवर], वह व्यक्ति, जिसके पास पात्र और चीवर नहीं है - *तथागता अपरिपुण्णपत्तचीवरं उपसम्पादेन्ती'ति,* म॰ नि॰ 3.296; - **सीस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपूर्णशीर्ष], अपूर्ण सिर वाला, वह, जिसका सिर उचित या पूर्ण बनावट वाला नहीं है - *अञ्ञे पन जना अपरिपुण्णसीसा होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.273; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.38; - **ण्णायतन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिपूर्णायतन], वह, जिसकी इन्द्रियां पूर्णरूप से सक्षम नहीं है, अक्षम इन्द्रियों वाला - *जातिवारे जाति सञ्जातीति ... जाति, सा अपरिपुण्णायतनवसेन युत्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).226.

अपरिपूर त्रि॰, परिपूर का निषे॰, अपूर्ण, दोषपूर्ण, दूषित, अधूरा - *अद्धानहीनो, अङ्गहीनो, ... अपरिपूरो,* परि॰ 253; *सद्धो च, ..., एवं सो तेनङ्गेन अपरिपूरो होति,* अ॰ नि॰ 3(1).138; *अपरिपूरं वा सीलक्खन्धं परिपूरेस्सामि,* पु॰ प॰ 143; *एवमिदं ब्रह्मचरियं अपरिपूरं अभविस्स तेनङ्गेन,* म॰ नि॰ 2.170; - **कारी** त्रि॰, पूर्ण रूप से काम को न करने वाला, आधा-अधूरा करने वाला - *सरणानि सक्को सिक्खाय अपरिपूरकारी अहोसी'ति,* स॰ नि॰ 3(2).441.

अपरिप्फन्द पु॰, परिप्फन्द का निषे॰ [अपरिष्पन्दन, नपुं॰], धड़कन या फड़कन का अभाव, उछल-कूद का अभाव, स्थिरता - ..., *आयचित्तानं अपरिप्फन्दनभूतसीतिभाव पच्चुपट्ठाना,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).91.

अपरिप्फन्दन नपुं., परिप्फन्दन का निषे. [अपरिष्पन्दन], उपरिवत् - *संयतहत्थपादताय ... अभावतो अपरिफन्दनेन ठितेन करजकायेन चाति ... ठितेन,* उदा. अट्ठ. 261; - **न्दन्त** त्रि., वर्त. कृ., न धड़कता हुआ, न उछलता-कूदता हुआ - *सो च सुसिक्खितत्ता अपरिप्फन्दन्तो निपज्जि,* उदा. अट्ठ. 279.

अपरिप्फुटालाप त्रि., ब. स. [अपरिष्फुटालाप], सुस्पष्ट बातचीत न करने वाला - *मम्मनाति अप्परिप्फुटतलापा,* लीन. (दी.नि.टी.) 3.111.

अपरिभासनेय्य / अपरिभासिय त्रि., परि + √भास के सं. कृ. का निषे. [अपरिभाषनीय / अपरिभाष्य], निन्दा न करने योग्य, अनिन्दनीय, निर्दोष - *सो वचसा परिभासति अञ्ञं अभासनेय्यम्पि पुग्गलं,* सु. नि. अट्ठ. 2.180; पाठा. अभासनेय्य; *तथागता वत्थुं याचन्ति, ताय अवत्थुयाचनाय अपरिभासिया भवन्ती'ति,* मि. प. 211.

अपरिभिन्न त्रि., परि + √भिद के भू. क. कृ. का निषे. [अपरिभिन्न], स्वस्थ, सही-सलामत, अपीड़ित - *चक्खुं अपरिभिन्नं होति,* म. नि. 1.251.

अपरिभुत्त त्रि., परि + √भुज के भू. क. कृ. का निषे. [अपरिभुक्त], **क.** वह, जिसका आनन्द न लिया गया हो या जिसका अनुभव न किया गया हो, अननुभूत - *अमतं तेसं, ..., अपरिभुत्तं येसं कायगतासति अपरिभुत्ता,* अ. नि. 1(1).61; **ख.** प्रयोग न किया गया, अप्रयुक्त - *अनुच्छिट्ठं अपरिभुत्तं दातुं वट्टती'ति अत्तनो वसनट्ठानेयेव एकपस्से अपरिभुत्तपल्लङ्कञ्च सेनासनञ्च पञ्ञापेसि,* जा. अट्ठ. 225; - **काम** त्रि., ब. स., वह, जिसने सांसारिक भोगों का पूरा-पूरा उपभोग न किया हो - *अनिकीळिताविनो कामेसूति ... कामकीळा, तं अकीळितपुब्बा, अपरिभुत्तकामाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 3.39.

अपरिभोग[1] त्रि., ब. स. [अपरिभोग], **शा. अ.** उपभोग न करने योग्य, उपभोग न करने वाला - *तीहि ठानेहि मंसं अपरिभोगन्ति वदामि,* म. नि. 2.35; *तथागतो ... एवरूपानं सुपिनन्तेपि अपरिभोगो,* खु. पा. अट्ठ. 140; **ला. अ.** निरर्थक, तुच्छ, त्याज्य - *तथेव भिन्दति वा छड्डेति वा झापेति वा अपरिभोगं वा करोति,* पारा. 54; *अपरिभोगं वा करोतीति अखादितब्बं वा अपातब्बं वा करोति,* पारा. अट्ठ. 1.257; *अमुं उदपानं अपरिभोगं करिस्साम,* उदा. अट्ठ. 308.

अपरिभोग[2] पु., परिभोग का निषे. [अपरिभोग], उपभोग न करना, त्याग - *अपरिभोगदुप्परिभोगादिवसेन विनासेति,* ध. स. अट्ठ. 399; - **गारह** त्रि., [अपरिभोगार्ह], परिभोग या उपभोग न करने योग्य - *तेन अभिहटभिक्खाय परेसं अपरिभोगारहतो च तथा वत्तुं वट्टतीति दस्सितं होति,* उदा. अट्ठ. 324.

अपरिमण्डल त्रि., ब. स. [अपरिमण्डल], **शा. अ.** परिमण्डल से रहित, **ला. अ.** उपयुक्त स्वरूप से रहित, अपूर्ण आकार वाला - *तस्स कथा अपरिमण्डला नाम होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).151; - **लं** अ., क्रि. वि., (अन्तरावासक के) नाभि से घुटनों तक लटक रहे घेरे के बिना, परिमण्डल के बिना - *अथ खो परिमण्डलंयेव निवासेस्सामीति विरज्झित्वा अपरिमण्डलं निवासेन्तस्स अनापत्ति,* पाचि. अट्ठ. 150.

अपरिमाण त्रि., ब. स. [अपरिमाण], वह, जिसकी कोई माप न हो या सीमा न हो, असीम, अत्यधिक प्रचुर, असंख्य, कालातीत - *खीणकुलीने कपणे, अनुभूतं ते दुखं अपरिमाणं,* थेरीगा. 220; *एवम्पि सब्बभूतेसु, मानसं भावये अपरिमाणं,* सु. नि. 149; 150; *न अस्स परिमाणन्ति अपरिमाणं,* खु. पा. अट्ठ. 201; *अखुद्दावकासोति एत्थ भगवतो अपरिमाणोयेव दस्सनाय ओकासोति वेदितब्बो,* दी. नि. अट्ठ. 1.229; *तस्मिं दिवसे अपरिमाणेसु चक्कवाळेसु अपरिमाणा सत्ता सब्बे सुवण्णवण्णाव अहेसुं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).87; ... *पठमे धम्मदेसने अट्ठारस ब्रह्मकोटियो अपरिमाणा च देवतायो,* मि. प. 317; - **गणन** त्रि., ब. स., गणना न करने योग्य संख्या वाला, बहुत ऊंची संख्या वाला - *अनेकसहस्सानि सहस्सेहिपि अपरिमाणगणना,* दी. नि. अट्ठ. 3.9; - **वण्ण** त्रि., ब. स. [अपरिमाणवर्ण, भिन्न अर्थ में], असीम या अपरिमित प्रशंसा का पात्र, असीम या अत्यधिक स्तुतियों का विषय, अप्रमेय स्तुति या प्रशंसा पाने योग्य गुणों वाला - *अपरिमाणवण्णो हि सो भवं गोतमो'ति,* दी. नि. 1.103; *अपरिमाणवण्णोति तथारूपेनेव सब्बञ्ञुनापि अप्पमेय्यवण्णो ...,* दी. नि. अट्ठ. 1.232; - **सत्तारम्मण** त्रि., ब. स. [अप्रमेयसत्त्वालम्बन], असंख्य प्राणियों को अपना आलम्बन बनाने वाला - *तञ्च अपरिमाणसत्तारम्मणवसेन एकस्मिं वा सत्ते अनवसेसफरणवसेन अपरिमाणं भावेयेति,* खु. प. अट्ठ. 201.

अपरिमित त्रि., परि + √मा के भू. क. कृ. का निषे. [अपरिमित], **शा. अ.** वह, जिसे मापा-जोखा न जा सके, असीमित, वह, जो मापा हुआ या नपा-तुला न हो, **ला. अ.** प्रचुर, अत्यधिक, सीमाओं से परे - *पेतेसु च निरयेसु च, अपरिमिता दिस्सरे धाता,* थेरीगा. 477; *अपरिमितञ्च दुक्खं,*

बहूनि च चित्तदोमनस्सानि, थेरीगा॰ 512; *अपरिमितञ्च दुक्खन्ति अपरिमाणं एत्तक'न्ति परिच्छिन्दितुं असक्कुणेय्यं,* ..., थेरीगा॰ अट्ठ॰ 316; *यस्सानुभावं अपरिमितं ममयिदं, तयानुदिट्ठं अतुलं दत्वा सङ्घे,* पे॰ व॰ 256; ... *अपरिमितं ... मम इदं अपरिमाणं दिब्बानुभावं यस्सा'ति अत्तनो सम्पत्तिं पच्चक्खतो रञ्ञो दस्सेन्तो वदति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 97; – **जलधर** त्रि॰, [अपरिमितजलधर], अत्यधिक जल को धारण करने वाला, न मापने योग्य जल को रखने वाला – *महासमुद्दो अपरिमितजलधरो गोपदे उदकं विय,* मि॰ प॰ 266; – **ञाणवरधर** त्रि॰, [अपरिमितज्ञानवरधर], सीमा-रहित या अत्यधिक उत्तम ज्ञान रखने वाला, असीम उत्तम ज्ञान से युक्त – *भिक्खु अपरिमितञाणवरधरा असङ्गा अतुलगुणा अतुलयसा ... धम्मचक्कानुप्पवत्तका पञ्ञापारमिं गता,* मि॰ प॰ 311; – **दस्सी** त्रि॰, [अपरिमितदर्शिन्], असीम ज्ञान-दर्शन से युक्त, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी – *अपरिमितदस्सिना गोतमेन, बुद्धेन देसितो धम्मो'ति,* थेरगा॰ 91; – **पञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिमितप्रज्ञ], असीम प्रसार वाली प्रज्ञा से युक्त, अनन्त प्रज्ञा से युक्त – *अनन्तपञ्ञोति अपरिमितपञ्ञो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.122.

अपरिमुत्त त्रि॰, परि + √मुच के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिमुक्त], वह, जो पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हुआ है – *अपरिमुत्तो सो दुक्खस्माति वदामि,* स॰ नि॰ 1(2).158; ... *अपरिमुत्तोव निरया, अपरिमुत्तो तिरच्छानयोनिया, अपरिमुत्तो पेत्तिविसया, अपरिमुत्तो अपायदुग्गतिविनिपाता,* उदा॰ अट्ठ॰ 86.

अपरिमेय्य त्रि॰, परि + √मा के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिमेय], नहीं मापने-जोखने योग्य, वह, जिसका सही-सही स्वरूप निर्धारण न किया जा सके, वह, जिसकी संख्या का निर्धारण न किया जा सके, असीम, विशाल – *अपरिमेय्युपादाय, पत्थेमि तव सासनं,* अप॰ 1.40; 37; *हिमवावापरिमेय्यो, सागरोव दुरुत्तरो,* अप॰ 1.113; *अप्परिमेय्ये इतो कप्पे, ओक्काककुलसम्भवो,* अप॰ 1.363.

अपरियत्त त्रि॰, परियत्त का निषे॰ [अपर्याप्त], 1. अपर्याप्त, नहीं पर्याप्त – *अथ वा अनलं अपरियत्तं ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.122; *इदम्पि एत्तकं वत्थु एकस्सेव अपरियत्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.154; अप॰ अपरियन्तं; 2. असंतुष्ट, अतृप्त – *अनलङ्कताति अतित्ता अपरियत्तजाता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.49; – **कर** त्रि॰, सन्तोष या तृप्ति प्रदान न करने वाला – *इदं सरीरं इदानेव ओलोकेन्तानं अपरियत्तकरं हुत्वा इदानेव खयं पत्तं ... खयवयं सम्पस्समानो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.43; अप॰ अपरियन्तकरं.

अपरियन्त त्रि॰, ब॰ स॰ [अपर्यन्त], वह, जिसका कोई ओर-छोर न रहे, असीम, अन्तरहित – *अनन्तो अयं लोको अपरियन्तोति,* दी॰ नि॰ 1.20; *अनन्तवाति अपरियन्तो, सब्बगतोति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 277; – **ता** स्त्री॰, अपरियन्त से व्यु॰, भाव॰ [अपर्यन्तता], असीमता, ओर-छोर से रहित होना – ... *संसारस्स अपरियन्ततं कम्मस्सकतञ्च विभावेन्तेन देसितं धम्मं सुत्वा ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 145; ... *कम्मन्तानं अपरियन्तताय अक्खाताय तेन हि त्वञ्ञेव घरावासं वस,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.79; – **कत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अपर्यन्तकृत], अन्तरहित अथवा अनन्त विपाकों वाला (कर्म) – *तं भगवा ... इमस्स अपरियन्तकतं कम्मं मम सासने पब्बजितस्स परियन्तकतं भविस्सति,* मि॰ प॰ 117; – **गोचर** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपर्यन्तगोचर], अनन्त आलम्बनों या विषयों वाला, प्रत्येक विषय को अपना आलम्बन बनाने वाला – *अनन्तगोचरन्ति अनन्तारम्मणस्स सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स वसेन अपरियन्तगोचरं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.114; – **धनधञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपर्यन्तधनधान्य], असीम धनसम्पदा वाला – *पहूतधनधञ्ञासेति तिण्णं चतुन्नं ... अत्थाय ... धनधञ्ञस्स वसेन अपरियन्तधनधञ्ञा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 86; – **पारिसुद्धि** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अपर्यन्तपरिशुद्धि], पूर्ण विशुद्धि, असीम शुद्धि – *एवं गणनवसेन सपरियन्तम्पि ... अदिट्ठपरियन्तभावञ्च सन्धाय अपरियन्तपारिसुद्धि-सीलन्ति वुत्तं,* विसुद्धि॰ 1.44; – **पारिसुद्धिसील** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अपर्यन्तपरिशुद्धिशील], शीलों का एक प्रभेद, जिसका पालन यश जैसे दिखलाई देने वाले प्रयोजनों के कारण नहीं किया जाता – ... *पञ्चसीलानि-परियन्तपारिसुद्धिसीलं, अपरियन्तपारिसुद्धिसीलं, परिपुण्णपारिसुद्धिसीलं, अपरामट्ठपारिसुद्धिसीलं पटिप्पस्सद्धिपारिसुद्धिसील'न्ति,* विसुद्धि॰ 1.12; *उपसम्पन्नानं अपरियन्तसिक्खापदानं – इदं अपरियन्तपारिसुद्धिसीलं,* पटि॰ म॰ 37; *छट्ठदुके लाभयसञातिअङ्गजीवितवसेन दिट्ठपरियन्तं सपरियन्तं नाम, विपरीतं अपरियन्तं,* विसुद्धि॰ 1.13; – **वती** स्त्री॰, [अपर्यन्तवती], ओर-छोर या सीमा से रहित, निरर्थक – *अनिधानवतिं वाचं भासिता होति अकालेन अनपदेसं अपरियन्तवतिं अनत्थसंहितं,* म॰ नि॰ 1.360; *अपरियन्तवतिन्ति अपरिच्छेदं,* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).227; – **सिक्खापद** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपर्यन्तशिक्षापद], वह, जिसके

लिए विनय के शिक्षापदों का पालन बिना किसी नियन्त्रण के अवश्य ही करणीय हो - *उपसम्पन्नानं अपरियन्तसिक्खापदानं - इदं अपरियन्तपारिसुद्धिसीलं,* पटि॰ म॰ 37; - **तादीनव** त्रि॰, ब॰ स॰, अनन्त विपदाओं, सङ्कटों या बाधाओं से भरा हुआ - *अनन्तादीनवाति लोभनं ... उण्हस्स पुरक्खतो'तिआदीना च दुक्खक्खन्धसुत्तादीसु वुत्तनयेन अपरियन्तादीनवा बहुदोसा,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 269.

अपरियादान नपुं॰, परियादान का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अपर्यादान], **शा॰ अ॰** अग्रहण, पूर्णरूप से ग्रहण न किया जाना, **ला॰ अ॰** अप्रयोग, असमाप्ति, क्षय का अभाव, अभिभूत न किया जाना - *चेतसो अपरियादाना आरद्धं होति वीरियं असल्लीनं,* स॰ नि॰ 2(2).129.

अपरियादिन्न / अपरियादिण्ण त्रि॰, परि + आ + √दा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अपर्यादत्त], **शा॰ अ॰** अगृहीत, अप्रयुक्त, पूर्णरूप से ग्रहण न किया हुआ, **ला॰ अ॰** नहीं समाप्त किया गया, क्षय को अप्राप्त, अनभिभूत, अपरिक्षीण - *सकं मुत्तकरीसं अपरियादिन्नं होति,* म॰ नि॰ 1.113; *अपरियादिन्नंयेवस्स तथागतस्स पञ्हपटिभानं,* म॰ नि॰ 1.117; *अपरियादिन्नायेवाति अपरिक्खीणायेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).365; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसका चित्त पूरी तरह से प्रभावित या अभिभूत नहीं हुआ है, अनभिभूत या अदुष्प्रभावित चित्त वाला - *पुरिसपुग्गलो लोभेन अनभिभूतो अपरियादिन्नचित्तो नेव पानं हनति,* अ॰ नि॰ 1(2).219.

अपरियापन्न त्रि॰, परि + आ + √पद के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अपर्यापन्न], अप्राप्त, अन्तर्भूत या अन्तर्सन्निविष्ट न किया हुआ, असम्बद्ध, अनभिभूत - *दिट्ठिगतं अपरियापन्नन्ति,* कथा॰ 409; *अपरियापन्ना धम्मा,* ध॰ स॰ 16; *तस्मिं न परियापन्नाति अपरियापन्ना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 97; - **कथा** स्त्री॰, व्य॰ सं॰, कथा॰ के चौदहवें वग्ग की 9वीं कथा का शीर्षक, कथा॰ 409; - **हेतु** पु॰, कर्म॰ स॰, काम, रूप एवं अरूप इन तीन लोकों से असम्बद्ध हेतु, 3 कुशल हेतु और 3 अव्याकृत हेतु - *तत्थ कतमे छ अपरियापन्नहेतू? तयो कुसलहेतू, तयो अब्याकतहेतू, इमे छ अपरियापन्न हेतू,* ध॰ स॰ 1072; *कतमे धम्मा हेतू? ... छ अपरियापन्नहेतू,* ध॰ स॰ 1059.

अपरियापुट त्रि॰, परियापुट का निषे॰, नहीं पढ़ा गया, कण्ठस्थ न किया गया, वह, जिसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं किया गया है - *अनुद्दिट्ठं इदं वरं, ..., अपरियापुटं इदं वरं, ... विनयो वा अन्तरधायतु,* पाचि॰ 192.

अपरियिट्ठ त्रि॰, परि + √इस के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अपर्यिष्ट], वह, जिसकी खोज-बीन नहीं की गयी है, वह, जिसको पाने की कोई कामना या इच्छा नहीं है, अप्रार्थित, नहीं खोजा हुआ - *तं मे इदं अपरियिट्ठंयेव सत्थहारकं लद्ध'न्ति,* म॰ नि॰ 3.322; स॰ नि॰ 2(2).68.

अपरियेसित त्रि॰, उपरिवत् - *पटिलाभत्थाय वा अपरियेसितं,* विम॰ अट्ठ॰ 8.

अपरियोगाहणा स्त्री॰, परि + अव + √गाह के क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [अपर्यवगाहन], **शा॰ अ॰** नीचे उतर कर गहरे पानी में प्रवेश न करना, **ला॰ अ॰** सूक्ष्म परीक्षण या जांच पड़ताल न करना, गहरी परीक्षा न करना - *यं अञ्ञाणं ... अप्पटिवेधो असङ्गाहणा अपरियोगाहणा ... अपच्चवेक्खणकम्मं ... असम्पजञ्ञं मोहो पमोहो ... अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं,* पु॰ प॰ 127; ध॰ स॰ 390; महानि॰ 306-07; *परियोगाहितुं असमत्थताय अपरियोगाहणा,* महानि॰ अट्ठ॰ 349.

अपरियोगाहेत्वा परि + अव + √गाह के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अपर्यवगाह्य], पर्यवगाहन या सूक्ष्म परीक्षण न करके, गम्भीर-रूप से जांच पड़ताल न करके - *एवं पुग्गलो अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासिता होति,* पु॰ प॰ 158; *अपरियोगाहेत्वाति पञ्ञाय गुणे अनोगाहेत्वा,* पु॰ प॰ अट्ठ॰ 74.

अपरियोदात त्रि॰, परि + अव + √दा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपर्यवदात], पूरी तरह से स्वच्छ या पवित्र न किया हुआ, पूर्ण रूप से विशुद्धि को अप्राप्त - ... *अपरियोदातस्स चित्तस्स परियोदपनाय,* अ॰ नि॰ 197.

अपरियोनद्ध त्रि॰, परि + अव + √नह के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपर्यवनद्ध], **शा॰ अ॰** वह, जिसे पूरी तरह से नाथा नहीं गया है या जिसको नकेल नहीं डाली गयी है, **ला॰ अ॰** पूरी तरह से बन्धनों से न बंधा हुआ - *इति विवटेन चेतसा अपरियोनद्धेन सप्पभासं चित्तं भावेति,* दी॰ नि॰ 3.178; *अपरियोनद्धेनाति समन्ततो अनद्धेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.172; *अनज्झापन्नोति तण्हाय अनोत्थतो अपरियोनद्धो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.178.

अपरियोसित त्रि॰, परि + अव + √सा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपर्यवसित], समाप्ति तक न ले जाया गया, अपूर्ण, पूर्णता को अप्राप्त, स॰ प॰ के पू॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त; - **संकप्प** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपर्यवसितसंकल्प], वह, जिसका संकल्प पूरा नहीं हुआ है - *अपरियोसितसङ्कप्पो, विचिकिच्छो*

कथंकथी, दी॰ नि॰ 2.212; *अपरियोसितसङ्कप्पोति अनिट्ठितमनोरथो*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.298; *अपरियोसितसङ्कप्पो, कुतित्थे सञ्चरिं अहं*, अप॰ 1.23; – **सिक्खत्त** नपुं॰, भाव॰ [अपर्यवसितशिक्षात्व], शिक्षा की अपूर्णता की अवस्था, शिक्षा का अपूर्ण रहना – *सो हि अपरियोसितसिक्खत्ता तदधिमुत्तता च सिक्खा सा एतस्स सीलन्ति सेखो*, उदा॰ अट्ठ॰ 295.

अपरिळाह त्रि॰, परिळाह का निषे॰ [अपरिदाह], मन में उत्पन्न दाह या जलन से रहित, मानसिक बेचैनी से रहित, मानसिक व्यग्रता या व्याकुलता से मुक्त – *अदुक्खो एसो धम्मो अनुपघातो अनुपायासो अपरिळाहो, सम्मापटिपदा*, म॰ नि॰ 3.279; ... *सुखो विहारो अविघातो अनुपायासो अपरिळाहो*, स॰ नि॰ 2(1).8; *अपरिळाहोति निद्दाहो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.228; ... *सुखं विहरति अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं*, स॰ नि॰ 1(2).135.

अपरिवज्जन नपुं॰, परि + √वज्ज के क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [अपरिवर्जन], परिवर्जन न करना, छोड़ न देना, दूरीकरण का अभाव, स्वीकरण – *एतमत्थं विदित्वाति एतं पापानं अपरिवज्जने आदीनवं*, उदा॰ अट्ठ॰ 239.

अपरिवार त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिवार], समूह या झुण्ड से रहित, बिना परिवार वाला, निपट अकेला – *बुद्धानुबुद्धेसु ... अपरिवारेन एककेनेव ठातब्बं होति*, उदा॰ अट्ठ॰ 264.

अपरिवेसन नपुं॰, परि + √विस के क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [अपरिवेषण], प्रतीक्षा न करना, प्रतीक्षा का अभाव, सेवा-सुश्रूषा का न होना – *यम अपरिवेसने, यमेति यमयति, यमो*, सद्द॰ 2.557.

अपरिव्यत्त त्रि॰, परि + वि + √अञ्ज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिव्यक्त], पूरी तरह से स्पष्ट या सुव्यक्त न रहने वाला, अस्पष्ट – *अपरिव्यत्तञ्हि तस्सा तत्थ किच्चं*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 218; – **किच्च** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिव्यक्तकृत्य], वह, जिसके क्रिया-कलाप पूरी तरह से स्पष्ट न हों – *सा कस्मा न वुत्ताति? अपरिब्यत्तकिच्चतो*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 218.

अपरिसङ्कित त्रि॰, परि + √सङ्क के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिशङ्कित], समस्त शङ्काओं और सन्देहों का अविषयीभूत, वह, जिसके विषय में किसी प्रकार की शङ्का न हो – *तिकोटिपरिसुद्धं मच्छमंसं– अदिट्ठं असुतं अपरिसङ्कित'न्ति*, पारा॰ 270; *अपरिसङ्कितं पन दिट्ठपरिसङ्कितं सुतपरिसङ्कितं तदुभयविमुत्तपरिसङ्कितञ्च अत्वा तब्बिपक्खतो जानितब्बं*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.172; *अमूलकं नाम अदिट्ठं असुतं अपरिसङ्कितं, अपरिसङ्कितं नाम चित्तेन अपरिसङ्कितं*, पारा॰ अट्ठ॰ 155.

अपरिसमत्त त्रि॰, परिसमत्त का निषे॰ [अपरिसमाप्त], पूरी तरह से समाप्त न किया हुआ, पूर्णता को अप्राप्त, आधे-अधूरे तौर पर किया हुआ – *वत्तमाने आरद्धापरिसमत्ते अत्थे वत्तमानतो क्रियत्था त्यादयो होन्ति*, मो॰ व्या॰ 6.1.

अपरिसावचर त्रि॰, परिसा + अवचर का निषे॰, भीड़-भाड़ या जनसमूह के बीच आनन्द न लेने वाला, एकान्तप्रेमी, सभाभीरु – *अपरिसावचरो समणो गोतमो*, दी॰ नि॰ 3.27; *अपरिसावचरोति अविसारदत्ता परिसं ओतरितुं न सक्कोति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.17.

अपरिसिञ्चनक त्रि॰, परिसिञ्चनक का निषे॰, चारों ओर पानी न डालने वाला, अवसिञ्चन न करने वाला, पानी न छिड़कने वाला – *अनवसेकन्ति अनवसिञ्चनकं अपरिसिञ्चनकं कत्वा*, महानि॰ अट्ठ॰ 362.

अपरिसुद्ध त्रि॰, परि + √सुध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिशुद्ध], वह, जो पूरी तरह शुद्ध नहीं है या शुद्ध नहीं किया गया है – *अपरिसुद्धा, आनन्द, परिसा'ति*, चूळव॰ 392; *अनरियन्ति अरियगरहितं सब्बं असुन्दरं अपरिसुद्धं कम्मं परिवज्जयाम*, जा॰ अट्ठ॰ 4.48; *अन्तो असुद्धाति अब्भन्तरतो रागादीहि अपरिसुद्धा*, महानि॰ अट्ठ॰ 358; – **कायकम्मन्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिशुद्धकायकर्मान्त], वह, जिसके शारीरिक कर्म पूरी तरह शुद्ध नहीं हुए हैं – ... *समणा वा ब्राह्मणा वा अपरिसुद्धकायकम्मन्ता अरञ्ञवनपत्थानि ... पटिसेवन्ति*, म॰ नि॰ 1.22; – **कायसमाचार** त्रि॰, उपरिवत् – *समणब्राह्मणा अपरिसुद्धकायसमाचारा ... अपरिसुद्धाजीवा*, अ॰ नि॰ 1(2).230; – **ञाणदस्सन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिशुद्धज्ञानदर्शन], वह, जिसके ज्ञान एवं अन्तर्दृष्टि में पूर्ण विशुद्धि नहीं हुई है – ... *सत्था अपरिसुद्धञाणदस्सनो समानो परिसुद्धञाण-दस्सनोम्ही'ति पटिजानाति परिसुद्धं ... असंकिलिट्ठ'न्ति*, अ॰ नि॰ 2(1).117; – **धम्मदेसन** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके धर्मोपदेश में पूर्ण शुद्धि नहीं आ सकी है – ... *सत्था अपरिसुद्धधम्मदेसनो समानो परिसुद्धधम्मदेसनोम्ही'ति पटिजानाति ... असंकिलिट्ठा'ति*, अ॰ नि॰ 2(1).116; – **मनोकम्मन्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिशुद्धमनःकर्मान्त], वह, जिसके मानसिक कर्म पूरी तरह शुद्ध नहीं हो सके हैं – ... *समणा वा ब्राह्मणा वा अपरिसुद्धवचीकम्मन्ता ... पे॰ ... अपरिसुद्धमनोकम्मन्ता ... पे॰ ... पटिसेवन्ति*, म॰ नि॰ 1.23; – **मनोसमाचार** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिशुद्धमनःसमाचार],

वह, जिसका मानसिक आचरण पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं है – *समणब्राह्मणा अपरिसुद्धकायसमाचारा ... अपरिसुद्धमनोसमाचारा अपरिसुद्धाजीवा,* अ॰ नि॰ 1(2).230; – **वचीकम्मन्त** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके वाणी के कर्म पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं है – ... *समणा वा ब्राह्मणा वा अपरिसुद्धवचीकम्मन्ता ... पे॰ ... अरञ्ञवनपत्थानी पन्तानि सेनासनानि पटिसेवन्ति,* म॰ नि॰ 1.23; – **वचीसमाचार** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसकी वाणी के प्रयोग पूरी तरह से शुद्ध नहीं है – *समणब्राह्मणा अपरिसुद्धकायसमाचारा अपरिसुद्धवचीसमाचारा ... अपरिसुद्धाजीवा,* अ॰ नि॰ 1(2).230; – **वेय्याकरण** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके व्याख्यान या निर्वचन पूरी तरह से शुद्ध नहीं हैं – *इधेकच्चो सत्था अपरिसुद्धवेय्याकरणो समानो परिसुद्धवेय्याकरणोम्ही'ति पटिजानाति परिसुद्धं ... असंकिलिट्ठ'न्ति,* अ॰ नि॰ 2(1).116; – **वोहार** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिशुद्धव्यवहार], वह, जिसका व्यवहार पूरी तरह से शुद्ध नहीं है – *अपरिसुद्धवोहारो अयमायस्मा,* अ॰ नि॰ 1(2).217; – **सील** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिशुद्धशील], वह, जिसका शील पूरी तरह से विशुद्ध नहीं है – *एकच्चो सत्था अपरिसुद्धसीलो समानो परिसुद्धसीलोम्ही'ति पटिजानाति परिसुद्धं ... असंकिलिट्ठ'न्ति,* अ॰ नि॰ 2(1).115; – **द्धाजीव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिशुद्धाजीव], वह, जिसके जीविका अर्जित करने के साधन पूरी तरह से शुद्ध नहीं हैं – *न खो पनाहं अपरिसुद्धाजीवो अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवामि, परिसुद्धाजीवोहमस्मि,* म॰ नि॰ 1.23; *आजीववारे अपरिसुद्धाजीवाति अपरिसुद्धेन वेज्जकम्मदूतकम्मवड्ढिपयोगादिना एकवीसतिअनेसनभेदेन आजीवने समन्नागता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).122.

अपरिसेस त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिशेष], कुछ भी शेष न रखने वाला, सभी कुछ अपने में अन्तर्भूत कर लेने वाला, सारा का सारा – *एत्थेते पापका अकुसला धम्मा अपरिसेसा निरुज्झन्ती'ति,* म॰ नि॰ 1.156-57; – **सं** क्रि॰ वि॰, समग्ररूप में, पूरी तरह से, बिना कुछ छोड़े हुए – *एत्थ चुप्पन्नं दुक्खिन्द्रियं अपरिसेसं निरुज्झति,* स॰ नि॰ 3(2).290; *कथं चुप्पन्नं दोमनस्सिन्द्रियं ... सोमनस्सिन्द्रियं अपरिसेसं निरुज्झति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 220; *नाटपुत्तो सब्बञ्ञू सब्बदस्सावी अपरिसेसं ञाणदस्सनं पटिजानाति,* म॰ नि॰ 1.130.

अपरिस्सावनक[1] त्रि॰, परिस्सावनक का निषे॰ [अपरिस्रव], ऊपर निकल कर न बहने वाला – *अनवसेसकन्ति अनवसिञ्चनकं अपरिस्सावनकं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.382.

अपरिस्सावनक[2] त्रि॰, ब॰ स॰, जल को छानने वाले जलशुद्धिकारक उपकरण (छन्नी) से रहित भिक्षु – *अपरिस्सावनकेन अद्धानो पटिपज्जितब्बो,* चूळव॰ 237; *अपरिस्सावनको आह, अयं, भन्ते, अन्तरामग्गे मया सद्धिं विवादं कत्वा परिस्सावनं नादीसी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.197.

अपरिहान नपुं॰, परिहान का निषे॰ [अपरिहाण], हानि का न होना, घाटा न होना, अवनति या अधःपतन की अवस्था का न होना, लाभ की स्थिति, उत्कर्ष – *सद्धो पुरिसपुग्गलो'ति, भन्ते, अपरिहानमेतं, हिरिमा ...,* स॰ नि॰ 1(2).184; *धम्मा सेखस्स भिक्खुनो अपरिहानाय संवत्तन्ति,* इतिवु॰ 52; – **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिहाणधर्मन्], परिहानि को न पाने वाला, घाटे में न रहने वाला, क्षति न पाने वाला – *राजा समानो किं लभति? अपरिहानधम्मो होति, न परिहायति ... सब्बसम्पत्तिया,* दी॰ नि॰ 3.123; – **धम्मता** स्त्री॰, भाव॰ [अपरिहाणधर्मता], हानि से मुक्त रहने की स्थिति, लाभ की स्थिति – *असहानधम्मतन्ति अपरिहीनधम्मं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.107; पाठा॰ असहानधम्मतन्ति.

अपरिहानि स्त्री॰, परिहानि का निषे॰ [अपरिहानि], पूर्ण हानि का अभाव, घाटा न होना, अधःपतन की स्थिति का न रहना – *यं पन उपचारप्पनाभेदस्स समाधिनो याव अत्तनो अपरिहानिपवत्ति, ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.8-9; – **कर** त्रि॰, हानि न करने वाला, वृद्धि करने वाला – *अपरिहानियेति अपरिहानिकरे, वुद्धिहेतुभूतेति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.102.

अपरिहानिय त्रि॰, अपरिहान से व्यु॰, हानि न देने वाला, हानि की ओर न ले जाने वाला, सर्वथा सक्षम – *अपरिहानिये धम्मे देसेस्सामि, ..., भासिस्सामी'ति,* दी॰ नि॰ 2.59; *अपरिहानियेति अपरिहानिकरे, वुद्धिहेतुभूतेति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.102; *सत्त अपरिहानिया धम्मा,* उदा॰ अट्ठ॰ 273; – **सभाव** त्रि॰, ब॰ स॰, स्वभाव से ही अहानिकर, स्वभाव से ही वृद्धि की ओर ले जाने वाला – *एवं परिहानियसभावा मनुस्सलोका चवित्वा अपरिहानियसभावं एवरूपं देवलोकं गमिस्ससीति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.98.

अपरिहारी त्रि॰, परि + √हर से व्यु॰, परिहारी का निषे॰ [अपरिहारिन्], अपने साथ जल आदि को न ले जाने वाला – *एको उदकमणिको अच्छिद्दो अहारी अपरिहारी,* स॰ नि॰ 2(2).302; *अहारी अपरिहारीति उदकं न हरति न परिहरति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.142.

अपरिहीन त्रि॰, परिहीन का निषे॰ [अपरिहीन], नहीं छोड़ दिया गया, अशिथिल, अनुपेक्षित, अपरित्यक्त – *अमतं तेसं,*

भिक्खवे, अपरिहीनं येसं कायगतासति अपरिहीना'ति, अ॰ नि॰ 1(1).60; *दानपथो च मे अपरिहीनो भविस्सति,* मि॰ प॰ 261; *अहापेत्वा अलम्बित्वाति अपरिहीनं अलम्बितं कत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.311; – **ज्झान** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिहीनध्यान], कभी भी न टूटने वाले ध्यान से युक्त – *हेट्ठूपपत्तिको ... समापत्तियो निब्बत्तेत्वा अपरिहीनज्झानो कालं कत्वा चतुत्थज्झानभूमियं ... निब्बत्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(2).301-02; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.183; – **पदव्यञ्जन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिहीनपदव्यञ्जन], ऐसी वाणी, जिसमें पदों एवं व्यञ्जनों के प्रयोगों में कोई स्खलन या त्रुटि न रहे – *अथ वा अनेलगळायाति अनेलाय च अगळाय च निद्दोसाय अगळितपदब्यञ्जनाय, अपरिहीनपदब्यञ्जनायाति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 255; *अनेलगळायाति ... चेव अक्खलितपदब्यञ्जनाय च,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.242.

अपरूपक्कम त्रि॰, पर + उपक्कम से व्यु॰, परूपक्कम का निषे॰, ब॰ स॰, वह, जहां दूसरे पास न फटक सकें, अन्य प्राणियों द्वारा न छुए जाने योग्य – *गुणा एकरसा अरोगा अकुप्पा अपरूपक्कमा अफुसानि किरियानि,* मि॰ प॰ 156.

अपरूपघाती त्रि॰, परूपघाती का निषे॰ [अपरोपघातिन्], दूसरों की हत्या न करने वाला, दूसरों को कष्ट या पीड़ा न पहुंचाने वाला – *अप्पम्पि चे निब्बुतिं भुञ्जती यदि, असाहसेन अपरूपघाती,* जा॰ अट्ठ॰ 3.461.

अपरेन अ॰, अपर सर्व॰ से व्यु॰, तृ॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अपरेण], अनेक अर्थों एवं रूपों में प्रयोग, **क.1. ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले पदों के साथ,** अगला, बाद में, आगे का (स्थान, क्षेत्र) – *पुरत्थिमाय दिसाय गजङ्गलं नाम निगमो तस्सापरेन महासालो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.142; *मज्झिमदेसो नाम – पुरत्थिमाय दिसाय ... निगमो, तस्स अपरेन महासालो, ..., ओरतो मज्झे,* जा॰ अट्ठ॰ 1.60; **क. 2. काल के सन्दर्भ से**, बाद में, बाद वाले समय में, भविष्य में – *दीपङ्करस्स अपरेन, कोण्डञ्ञो नाम नायको,* बु॰ वं॰ 4.1; *तत्थ दीपङ्करस्स अपरेनाति दीपङ्करस्स सत्थुनो अपरभागेति अत्थो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 153; **ख. प॰ वि॰ के 'ततो' के साथ प्रयुक्त** – बाद में, आगे आने वाले समय में – *ततो अपरेन दासिभोगेन भुञ्जन्ति,* पारा॰ 201; *तमेन पस्सामिपरेन नारिन्ति तमेनं नारिं अपरेन समयेन जरं पत्तं अन्तरहितरूपसोभग्गप्पत्तं पस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.349; **ग. पश्चिम** दिशा की ओर – *उत्तरेन वसिवन्तो, जनोघमपरेन च,* दी॰ नि॰ 3.152; *जनोघमपरेन चाति एतस्स अपरभागे जनोघं नाम अञ्ञं नगरं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.134.

अपलाप त्रि॰, पलाप का निषे॰, ब॰ स॰ [अप्रलाप], वह स्थल, जहां प्रलाप या निरर्थक बातचीत न हो, सत्पुरुषों से युक्त स्थान – *अपलापायं, ..., परिसा निप्पलापायं, ..., परिसा सुद्धा सारे पतिट्ठिता,* अ॰ नि॰ 1(2).211; म॰ नि॰ 3.125; *अपलापाति पलापरहिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.360.

अपलायन नपुं॰, पलायन का निषे॰ [अपलायन], पलायन का अभाव, नहीं भाग जाना – *तं तं अपलायनं अपरम्पि बाल्यं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.245.

अपलायी त्रि॰, पलायी का निषे॰ [अपलायिन्], पलायन न करने वाला, भयरहित, शङ्कारहित – *अथ आगच्छेय्य खत्तियकुमारो सुसिक्खितो कतहत्थो कतयोग्गो कतूपासनो अभीरु अच्छम्भी अनुत्रासी अपलायी,* स॰ नि॰ 1(1).118; – **यिनो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सकमित्तस्स कम्मेन, सहायस्सापलायिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.264; *सहायस्सापलायिनोति सहायस्स अपलायिनो मिगराजस्स,* तदे॰; – **यिनं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समन्ता परिकिरेय्युं, सहस्सं अपलायिनं,* स॰ नि॰ 1(1).214; – **यीनं** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सहस्सं अपलायिनन्ति ये ते समन्ता सरेहि परिकिरेय्युं, तेसं अपलायीनं सङ्कं दस्सेन्तो सहस्स'न्ति आह,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.236; – **यिनि** स्त्री॰ संबो॰ – *त्वञ्च खो मेव अक्खाहि, अत्तानमपलायिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 5.4; *अपलायिनीति अपलायित्वा मम सम्मुखे ठितेति तं देवतं आलपति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.5.

अपळाल/अपलाल पु॰, व्य॰ सं॰, बुद्ध द्वारा दमित एक नागराजा का नाम – *तथा हि भगवता तिरच्छानपुरिसापि अपलाको नागराजा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.87; – **दमन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अपलाल-नामक नागराज का बुद्ध द्वारा दमन – *आलवकङ्गुलिमाल-अपलालदमनं पि च,* म॰ वं॰ 30.84.

अपलाळेति अप + √लळ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बहका कर दूर ले जाता है, फुसला कर किसी के पास से दूर करा देता है; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तेन खो ... छब्बग्गिया भिक्खू थेरानं भिक्खूनं सामणेरे अपलाळेन्ति,* महाव॰ 108; *अपलाळेन्तीति तुम्हाकं पत्तं दस्साम, चीवरं दस्सामा'ति ... सङ्गण्हन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 280; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यो अपलाळेय्य, आपत्ति दुक्कटस्साति,* महाव॰ 108; – **तब्बा** सं॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न, भिक्खवे, अञ्ञस्स परिसा अपलाळेतब्बा,* महाव॰ 108; *न*

भिक्खवे अञ्ञस्स परिसा अपलाळेतब्बाति एत्थ सामणेरा वा होन्तु उपसम्पन्ना वा, महाव॰ अट्ठ॰ 280.

अपळास पु॰, पळास का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अपदास], द्वेष या दुर्भाव का अभाव, क्षमाशीलता, मनमुटाव का न रहना – ... *अमक्खो च अपळासो च ...,* अ॰ नि॰ 1(1).116; *अनुन्नतेन मनसा, अपळासो असाहसो,* अ॰ नि॰ 1(1).220; *अपळासोति युगग्गाहपळासवसेन अपळासो हुत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182.

अपलासि पु॰, व्य॰ सं॰, एक व्यक्ति का नाम – *छहासीतितिम्हितो कप्पे, अपिलासिसनामको,* अप॰ 1.209.

अपळासी त्रि॰, अपळास से व्यु॰ [बौ॰ सं॰ अपदासिन्], द्वेषरहित, क्षमाशील, मनमुटाव न रखने वाला – *भिक्खु अमक्खी होति अपळासी,* म॰ नि॰ 1.136; 139; 142; दी॰ नि॰ 3.34; अ॰ नि॰ 2(1).104; *कतमो च पुग्गलो अपळासी? ..., यस्स पुग्गलस्स अयं पळासो पहीनो – अयं वुच्चति पुग्गलो अपळासी,* पु॰ प॰ 128-29; *मयमेत्थ अपळासी भविस्सामा'ति सल्लेखो करणीयो,* म॰ नि॰ 1.54.

अपलिखति / अपलेखति / अपलिहति अप + √लिख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपलिखति], खुरच देता है, रगड़ देता है, छील देता है, मिटा देता है, चाट लेता है – *उच्चारं वा कत्वा हत्थस्मिञ्ञेव दण्डकसञ्ञी हुत्वा हत्थेन अपलिखति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.263; *अपलिखति अपलिहति उदकेन अधोवनतो,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.313; – **खामि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *हत्थापलेखनोति हत्थे पिण्डम्हि ठिते जिव्हाय हत्थं अपलिखामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).356; *उच्चारं वा कत्वा हत्थस्मिञ्ञेव दण्डकसञ्ञी हुत्वा हत्थेन अपलिखामीति दस्सेति,* तदे॰.

अपलिपपलिपन्न त्रि॰, पलिपपलिपन्न का निषे॰ [अप्रलेपपरिपन्न], **शा॰ अ॰** भयानक दलदल या कीचड़ में नहीं फंसा हुआ, **ला॰ अ॰** पांच कामगुणों में अलिप्त – *सो वत, चुन्द, अत्तना अपलिपपलिपन्नो परं पलिपपलिपन्नं उद्धरिस्सती'ति ठानमेतं विज्जति,* म॰ नि॰ 1.56; *(पलिपपलिपन्नोति गम्भीरकद्दमे निमुग्गो वुच्चति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).201).

अपलिबुद्ध त्रि॰, परि + √बुद्ध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपरिरुद्ध?], रुकावट से रहित, विघ्न बाधाओं से मुक्त, सुस्पष्ट, बिना रुकावट वाला / वाली; – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासो अलग्गो असत्तो अप्पतिट्ठितो अपलिबुद्धो, ... योगिना योगावचर ... पलिबोधे पच्चये ... अनासत्तेन अप्पतिट्ठितेन अपलिबुद्धेन भवितब्बं,* मि॰ प॰ 356-57; – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवतानञ्हि सुचरितकम्मनिब्बत्तं पित्तसेम्हरुहिरादीहि अपलिबुद्धं दूरेपि आरम्मणसम्पटिच्छनसमत्थं दिब्बं पसादचक्खु होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 58; – **द्धा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवतानञ्हि ... अपलिबुद्धा ... दिब्बपसादसोतधातु होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 162; – **द्धेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं पुब्बे ... अद्दसं सेम्हादीहि अपलिबुद्धेन सुवण्णक्खन्धसदिसेन अत्तभावेन समन्नागता,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.114; – **द्धाय** स्त्री॰, च॰ / ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गुणपरिपुण्णाय अपलिबुद्धाय अदोसाय अगळितपदब्यञ्जनाय अत्थं विञ्ञापेतुं समन्नागतो न होतीति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.320; – **कथ** त्रि॰, ब॰ स॰, बिना रुकावट के सुस्पष्ट रूप से बोलने वाला – *तत्थ विसट्ठवचनोति अपलिबुद्धकथो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.25.

अपलिबोध[1] पु॰, पलिबोध का निषे॰ [अपरिरोध], परिरोध या रुकावट का न रहना, बाधाओं का अभाव, सु-अवसर – *द्वे कथिनस्स अपलिबोधा,* महाव॰ 352; परि॰ 239.

अपलिबोध[2] त्रि॰, ब॰ स॰ [अपरिरोध], परिरोध या अड़चन से रहित, सुस्पष्ट, बाधारहित – **धं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्जवन्तोपि ... पट्ठाय ... उट्ठाय अकिञ्चनं अपलिबोधं रमणीयं पब्बज्जं उपगन्तुं नं सक्कोन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.210; – **धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एते चत्तारो पच्चेकबुद्धा रज्जं पहाय पब्बजित्वा अकिञ्चना अपलिबोधा पब्बज्जासुखेन वीतिनामेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 336.

अपलिहति / अपलिखति द्रष्ट॰ अपलिखति के अन्त॰ (ऊपर) – *हत्थापलेखनोति हत्थे पिण्डम्हि ठिते जिव्हाय हत्थं अपलिखति, उच्चारं वा कत्वा ... अपलिखति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.263; *जिव्हाय हत्थं अपलिखति अपलिहति उदकेन अधोवनतो,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 1.313.

अपलेखन / अवलेखन नपुं॰, [अपलेखन], खरोच देना, मिटा देना, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त, हत्थापलेखन के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपलोकति अपलोकेति के अन्त॰ द्रष्ट॰ (आगे).

अपलोकन नपुं॰, अप + √लोक से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपलोकन], **1**. इधर-उधर देखना, पीछे की ओर देखना – *ककुसन्धो ... नागापलोकितं अपलोकेसि ... सहापलोकनाय ..., दूसी मारो तम्हा च ठाना चवि ...,* म॰ नि॰ 1.420-21; *सहापलोकनायाति ककुसन्धस्स ... अपलोकनेनेव सह तङ्खणञ्ञेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).314; *तस्मा पच्छतो*

अपलोकनकाले न सक्का होति गीवं परिवत्तेतुं, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.138; **2.** किसी सङ्घकर्म को सम्पादित करने के लिए सङ्घ से अनुमति प्राप्त करने हेतु किया गया निवेदन या दिया गया आवेदन - *अपलोकनन्ति सङ्घं अपलोकेत्वा ति आदिसु विय जानापनं,* सद्द॰ 2.520; - **कम्म** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, सङ्घ से अनुमति प्राप्त कर किया जा रहा सङ्घकर्म - ... *अपलोकनकम्मं, ञत्तिकम्मं,* ..., चूळव॰ 196; 201; *अपलोकनकम्मं नाम सीमट्ठकसङ्घं सोधेत्वा छन्दारहानं छन्दं आहरित्वा समग्गस्स सङ्घस्स अनुमतिया तिक्खत्तुं सावेत्वा कत्तब्बकम्मं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 40; *चत्तारि अपलोकनकम्मानि जानितब्बानि,* परि॰ 317; *यं सङ्घस्स अपलोकनादीनं चतुन्नं कम्मानं करणं, इदं किच्चाधिकरणं नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.28; *तत्थ कम्मेनाति अपलोकनकम्मादीसु चतूसु कम्मेसु अञ्ञतरेन कम्मेन,* उदा॰ अट्ठ॰ 258.

अपलोकी त्रि॰, अप + √लोक से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, अनुमति प्राप्त कर कर्म करने वाला, परामर्श कर काम करने वाला - *योगिना ... सब्बकायेन अपलोकिना भवितब्बं,* मि॰ प॰ 368-69.

अपलोकिक त्रि॰, अप + √लोक से व्यु॰, सम्भवतः अपलोकित² का अप॰, द्रष्ट॰ अपलोकित² के अन्त॰ द्रष्ट॰ - *अब्यापज्झं सिवं खेमं निपुणं अपलोकिकं,* सद्द॰ 1.70.

अपलोकित¹ नपुं॰, अप + √लोक का भू॰ क॰ कृ॰ [अपलोकित], **1.** नपुं॰, पीछे की ओर मुड़कर देखना, पीछे की ओर शरीर घुमाकर फेंकी गयी दृष्टि - *नागापलोकितं अपलोकेसि,* म॰ नि॰ 1.420-21; *नागापलोकितं अपलोकेसीति ... गीवं अपरिवत्तेत्वा सकलसरीरेनेव निवत्तित्वा अपलोकेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).313; *वेसालियं पिण्डाय चरित्वा ... नागापलोकितं वेसालिं अपलोकेत्वा आयस्मन्तं ... आमन्तेसि,* दी॰ नि॰ 2.93; **2.** वह, जिससे अनुमति या परामर्श लिया गया हो, वह, जिससे कुछ करने हेतु पूछा गया हो; - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपलोकितो पन वो, ..., सारिपुत्तो'ति?,* स॰ नि॰ 2(1).6; *अपलोकितोति आपुच्छितो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.226; - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *किं हिमे करिस्सन्ति निगण्ठा अपलोकिता वा अनपलोकिता वा?,* अ॰ नि॰ 3(1).26; - **ताय** स्त्री॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किं मे इमाय अपलोकिताय वा अनपलोकिताय वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.335.

अपलोकित² त्रि॰, व्यु॰ संदिग्ध, संभवतः प + √लुज के भू॰ क॰ कृ॰ (पलुज्जित) के स्थान पर भ्रष्ट प्रयोग का निषे॰ [अपलुज्जित], विनाश या क्षय से रहित, अच्युत पद निर्वाण - *अपकितं निपुणमनन्तमक्खरं,* अभि॰ प॰ 7; *कतमञ्च, ..., अपलोकितं ... अनिदस्सनञ्च,* स॰ नि॰ 2(2).342; *अपलुज्जनताय अपलोकितं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.149; *अजज्जरं धुवं अपलोकितं, अनिदस्सनं निप्पपञ्च सन्तं,* स॰ नि॰ 2(2).343; - **गामी** त्रि॰, ध्रुव एवं अच्युत पद निर्वाण की ओर ले जाने वाला - *देसेस्सामि अपलोकितगामिञ्च मग्गं,* स॰ नि॰ 2(2).342.

अपलोकेति / अवलोकेति अप + √लोक का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवलोकयति], **क.** पूरे शरीर को पीछे की ओर घुमा कर देखता है, किसी की ओर देखता है - *हत्थी सब्बकायेनेव अपलोकेति,* मि॰ प॰ 368; - **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰ - *अपलोकेन्तो खो पन सो भवं गोतमो सब्बकायेनेव अपलोकेति,* म॰ नि॰ 2.346; - **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *सो निमीलेय्य वा अञ्ञेन वा अपलोकेय्य,* म॰ नि॰ 1.170; - **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अथ खो भगवा आयस्मन्तं आनन्दं अपलोकेसि,* म॰ नि॰ 2.288; - **केतुकामो** त्रि॰, देखने की इच्छा कर रहा - *निक्खमित्वा च पुन नगरं ओलोकेतुकामो जातो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.73; - **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *अथ खो भगवा अपलोकेत्वा आयस्मन्तं राहुलं आमन्तेसि,* म॰ नि॰ 2.91; *तं सन्धाय अथ खो भगवा अपलोकेत्वा'तिआदि वुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.96; **ख.** सम्मानपूर्वक सेवासत्कार करता है, देखरेख करता है - **त्वा** उपरिवत् - *जनपदकल्याणी घरा निक्खमन्तस्स उपड्ढुल्लिखितेहि केसेहि - अपलोकेत्वा मं एतदवोच,* उदा॰ 93; *अपलोकेत्वाति सिनेहरसविप्फारसंसूचकेन अड्ढक्खिना आबन्धन्ती विय ओलोकेत्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 138; **ग.** अनुमति पाने हेतु याचना करता है - **म** वर्त॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ - *वस्संवुट्ठा, अपलोकेम, ... अपिच, यो देय्यधम्मो सो न दिन्नो,* पारा॰ 11; - **यमाना** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ते तेन ... सम्मदपिता समुत्तेजिता सम्पहंसिता उट्ठायासना पक्कमन्ति अवलोकयमानायेव अविजहितत्ता,* म॰ नि॰ 2.348; - **हि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *तेपि ताव अपलोकेहि, यथा ते ... करिस्सन्तीति,* महाव॰ 37; *अत्थी'ति वत्वा तेन हि अपलोकेहि न'न्ति वुत्ते,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.41; - **थ** ब॰ व॰ - *अपलोकेथ, भिक्खवे, सारिपुत्तं,* स॰ नि॰ 2(1).6; *अपलोकेथाति आपुच्छथ,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.226; - **केस्साम** भवि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ - *आयामानन्द, वेरञ्जं ब्राह्मणं अपलोकेस्सामा'ति,* पारा॰ 10; *अपलोकेस्सामाति चारिकं चरणत्थाय आपुच्छिस्साम,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.151; - **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *एवं महासत्तो ... राजानो पलापेत्वा कनिट्ठभातरं*

अपलोकेत्वा कामे पहाय इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा ... ब्रह्मलोकूपगो अहोसि, जा॰ अट्ठ॰ 2.74; – **अनप** पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, बिना अनुमति पाए हुए – *न ते अनपलोकेत्वा जनपदचारिकं पक्कमन्ति,* पारा॰ 10; – **तब्बो** पु॰, सं॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा नाम यत्थ राजा अनुसासति, राजा अपलोकेतब्बो,* पाचि॰ 303; *नत्थि ते कोचि अपलोकेतब्बो'ति वुत्ते,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.41.

अपवग्ग पु॰, [अपवर्ग], अन्तिम रूप से विमुक्ति, पूर्ण रूप से विशुद्धि, निर्वाण – *अपवग्गो परिच्चागावसानेसु विमुत्तियं,* अभि॰ प॰ 910; *अपवग्गो विसङ्खारो सभि सुद्धि विसुद्धि च,* विसुद्धि॰ 1.70.

अपवज्जन नपुं॰, अप + √वज्ज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपवर्जन], **शा॰ अ॰** परित्याग, **ला॰ अ॰** दान – *चागो विसज्जनं दानं ... विस्सरणं वितायिता पवज्जनं,* अभि॰ प॰ 420.

अपवदति अप + √वद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपवदति], **शा॰ अ॰** बुरा बोलता है, अनुचित रूप से बोलता है, **ला॰ अ॰** बुरा भला कहता है, निन्दा करता है, खण्डन कर देता है, बात को काट देता है – *अपवदतेव भवं सोणदण्डो वण्णं, अपवदति मन्ते, अपवदति, जातिं एकंसेन,* दी॰ नि॰ 1.106; *अपवदतीति पटिक्खिपति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.134; – **न्ति** ब॰ व॰ – *यमाहु नत्थि वीरियन्ति, अहेतुञ्च पवदन्ति ये,* जा॰ अट्ठ॰ 5.230.

अपवहति अप + √वह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपवहति], दूर ले जाता है, हटा देता है – *यानि पन ... तानि वातो एकमन्तं अपवहति,* अ॰ नि॰ 3(1).18; *न च तस्स भोतो गोतमस्स कायम्हा वातो चीवरं अपवहति,* म॰ नि॰ 2.347.

अपवाद पु॰, अप + √वद से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपवाद], बुरा भला बोलना, निन्दा, खण्डन – *कलङ्कोङ्कापवादेसु, देसे जनपदो जने,* अभि॰ प॰ 1089; – **भय** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अपवादभय], निन्दा का भय – ... *परेसं अपवादादिभयेन परिनिब्बानाय चेतेन्ति ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 349; पाठा॰ उपवादादि.

अपवारण नपुं॰, अप + √वु से व्यु॰ [अपवारण], ढक्कन, आच्छादन – *छद अपवारणे, छादेति छादयति, ...,* सद्द॰ 2.544; *जल अपवारणे, ...,* सद्द॰ 2.563.

अपवारित[1] त्रि॰, अप + √वु का भू॰ क॰ कृ॰, फटा हुआ, खुला हुआ, उद्‌घाटित – *विच्छिद्दं वुच्चति द्विधा छिन्दनेन अपवारितं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 242; पाठा॰ अपधारितं.

अप्पवारित / अपवारित[2] त्रि॰, पवारित का निषे॰ [अप्रवारित], वह, जिसने पवारणा नामक सङ्घकर्म सम्पादित नहीं किया, पवारणा न किया हुआ भिक्षु या भिक्षुसङ्घ – *अप्पवारितोव सङ्घो भविस्सति,* महाव॰ 239.

अपवारेन्त त्रि॰, पवारेन्त का निषे॰, पवारणा नामक सङ्घकर्म को नहीं कर रहा – *महापवारणाय अप्पवारेन्तो जुण्हे आपज्जति नो काले,* परि॰ अट्ठ॰ 164; *आपज्जतापवारेन्तो, जुण्हे न पन काळके,* उत्त॰ वि॰ 490.

अपवाहेति अप + √वह के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपवाहयति], दूर करा देता है, हटवा या मिटवा देता है – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *कललकद्दमं अपवाहेत्वा परिसुद्धविमलदेसमुपगन्त्वा तत्थ परमसुखं लभेय्य,* मि॰ प॰ 296.

अपविद्ध त्रि॰, अप + √विध का भू॰ क॰ कृ॰ [अपविद्ध], दूर फेंक दिया गया, तुच्छ या घटिया समझ कर परित्यक्त, उपेक्षित, तिरस्कृत, अनुपयोगी; – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपविद्धो सुसानस्मिं, अनपेक्खा होन्ति ञातयो,* सु॰ नि॰ 202; *अपविद्धोति गहेतब्बाभावं दस्सेति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.210; – **द्धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *पुरिसो'ति विचिनन्तो तम्पि पटिच्छन्नट्ठाने अपविद्धं दिस्वा ... पत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.248; *अपविद्धं ब्रहारञ्ञे, चन्दंव पतितं छमा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.107; *तत्थ अपविद्धन्ति रञ्ञा निरत्थकं छड्डितं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.108; – **द्धा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा दानि सब्बस्स कुलस्स इस्सरा, अहं पनम्हि अपविद्धा एकिका'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.377; *अपविद्धाति छड्डिता अनाथा हुत्वा एकिका वसामि,* तदे॰; *अथ खो पायासि ... दानं दत्वा अपविद्धं दानं दत्वा कायस्स भेदा ... देवानं ... विमानं,* दी॰ नि॰ 2.261.

अपवियूहति / अपव्यूहति / अपब्बूहति / अपब्यूहति अप + वि + √ऊह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, रास्ते से हटा देता है, दूर कर देता है, खण्डों में विभाजित कर देता है – *अपब्यूहेति तत्थेव, तस्स थुल्लच्चयं सिया,* विन॰ वि॰ 54; – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपि च इतो चितो च अपब्यूहन्तोपि फन्दापेतियेव, सो थुल्लच्चयं आपज्जति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.253; *अपब्यूहन्तोति हेट्ठा ठितं गण्हिस्सामी'ति हत्थेन द्विधा करोन्तो,* सारत्थ॰ टी॰ 2.120; – **हि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सोपि सिङ्गालो मरणभयभीतो चतूहि पादेहि रञ्ञो उपरिभागे अपब्यूहि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.256; – **हित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *सो तं ... सेवालपणकं अपवियूहित्वा अञ्जलिना पिवित्वा पक्कमेय्य,* अ॰ नि॰ 2(1).175; *अपवियूहित्वाति अपनेत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.58; – **हापेसि** प्रेर॰, अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, हटवाया – *इदानि नं गण्हिस्सामा'ति तरुणसूकरे पक्कोसित्वा रुक्खमूलतो पंसुं अपब्यूहापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.310.

अपसक्कति अप + √सक्क का वर्त., प्र. पु., ए. व., दूर चला जाता है, बगल से होकर चला जाता है, विदा हो जाता है – *तेसञ्च डयमानानं, एकेत्थ अपसक्कति,* जा. अट्ठ. 4.309; *एकेत्थ अपसक्कतीति एको एतेसु ओसक्कित्वा वा एकपस्सेन वा विसुं गच्छति,* तदे.; – **न्ति** ब. व. – *तित्थिया अपसक्कन्ति,* पाचि. 98; *अपसक्कन्तीति अपगच्छन्ति,* पाचि. अट्ठ. 68; – **न्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. – *अपसक्कन्तो च अकारणेनेव अन्धबालो महन्तं अनत्थं अत्तनो अकासी'ति ... रञ्ञो ... करिस्ससी'ति,* पे. व. अट्ठ. 265; – **ता** स्त्री., भू. क. कृ. – *तेहि भिक्खूहि सा भिक्खुनी अपसादेतब्बा-अपसक्कताव,* पाचि. 234; – **क्कित्वा** पू. का. कृ. – *मग्गा ओक्कम्माति मग्गतो अपसक्कित्वा,* उदा. अट्ठ. 308; *थेरो एकपदनिक्खेपमत्तं अपसक्कित्वा अट्ठासि,* वि. व. अट्ठ. 80.

अपसम्मज्जति अप + सं + √मज्ज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपसम्मार्ष्टि], झाड़ू लगाकर साफ कर देता है, झाड़ू लगा देता है, स्वच्छ कर देता है; – **न्ति** ब. व. – *तमेनं सामिका सम्मज्जनिं गहेत्वा भिय्योसोमत्ताय अपसम्मज्जन्ति,* अ. नि. 3(1).18; *अपसम्मज्जन्तीति सारधञ्ञानं एकतो दुब्बलधञ्ञानं ... अपसम्मज्जन्ति, अपसम्मज्जनिसङ्खातेन वातग्गाहिना सुप्पेन वा वत्थेन वा निहरन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 3.197.

अपसम्मज्जनी स्त्री., अप + सं + √मज्ज से व्यु. [अपसम्मार्जिनी], धान को साफ कर देने वाला सूप, झाड़ू – *तमेनं सामिका सम्मज्जनिं गहेत्वा भिय्योसोमत्ताय अपसम्मज्जन्ति,* अ. नि. 3(1).18; *अपसम्मज्जनिसङ्खातेन वातग्गाहिना सुप्पेन वा वत्थेन वा नीहरन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 3.197.

अपसरति अप + √सर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपसरति], बाहर निकल रहा है, निर्गत कर रहा है; – **न्तेन** वर्त. कृ., पु., तृ. वि., ए. व. – *तेजसापसरन्तेन जनानं पविकासयं,* चू. वं. 65.20.

अपसव्य / अपसब्य त्रि., ब. स. [अपसव्य], **क.** वह, जो वामभाग का नहीं है, दाहिना – *वामं कलेव सव्यं, अपसव्यं तु दक्खिणं,* अभि. प. 719; **ख.** दाहिनी ओर अवस्थित, दक्षिण-भागीय – *निट्ठुभित्वा अपसब्यतो करित्वा पक्कामि,* उदा. 125; *अपसब्यतो करित्वाति पण्डिता तादिसं पच्चेकबुद्धं दिस्वा वन्दित्वा पदक्खिणं करोन्ति, अयं पन अविञ्ञुताय परिभवेन तं अपसब्यं कत्वा अत्तनो अपसब्यं अपदक्खिणं कत्वा गतो, अपसब्यामतो'तिपि पाठो,* उदा. अट्ठ. 238; *... दिस्वा निट्ठुभित्वा अपसब्यं कत्वा दीघरत्तं ... ब्याकरित्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.270; – **करण** नपुं., [अपसव्यकरण], किसी की ओर दक्षिणभाग कर लेना – *तस्स कम्मस्साति ... हीळेत्वा निट्ठुभनअपसब्यकरणवसेन पवत्तपापकम्मस्स,* उदा. अट्ठ. 238.

अपसाद पु., [अप्रसाद], अप्पसाद के अन्त. द्रष्ट..

अपसादना स्त्री., अप + √सद के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [अपसादन], किसी को कम करके आंकना, तिरस्कार, अवमूल्यन – *उस्सादनञ्च ञत्वा अपसादनञ्च ञत्वा नेवुस्सादेय्य,* म. नि. 3.279; *अयं आमिसगिद्धो ... एवमस्स गेहसितवसेन अपसादनापि नत्थीति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).280; *न चेव नाम सधम्मुक्कंसना भविस्सति, न च परधम्मापसादना,* अ. नि. 1(1).249.

अपसादित त्रि., अप + √सद के प्रेर. का भू. क. कृ. [अपसादित], **क.** दूरीकृत, अस्वीकृत, तिरस्कृत, दूर हटा दिया गया, बहिष्कृत; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एवं अपसादितो च पन पुण्णमुखो पुस्सकोकिलो ततोमेव पटिनिवत्ति,* जा. अट्ठ. 5.417; – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अथ खो सा गणकी तेहि आजीवकसावकेहि अपसादिता पुनदेव सावत्थिं पच्चागच्छि,* पारा. 201; **ख.** निन्दित, डांटा-फटकारा गया – *अय्येन किर महाकस्सपेन अय्यो आनन्दो वेदेहमुनि कुमारकवादेन अपसादितो'ति,* स. नि. 1(2).197; *गहपती'ति वत्वा गहपतिना काकोपमाय अपसादितो कुज्झित्वा एसो ते,* ध. प. अट्ठ. 1.292.

अपसादियमान त्रि., अप + √सद के प्रेर. के कर्म. वा. का वर्त. कृ., अस्वीकृत या तिरस्कृत किया जा रहा, भर्त्सना किया गया; – **ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *ते भिक्खूहि अपसादियमाना रोदन्ति,* महाव. 99.

अपसादेति अप + √सद के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपसादयति], **क.** दूर हटा देता है, निकाल बाहर करता है, अस्वीकार कर देता है – *भिक्खु चोदितो चोदकेन चोदकं अपसादेति,* म. नि. 1.134; *अपसादेतीति किं नु खो तुम्हं बालस्स अब्यत्तस्स भणितेन ... एवं घट्टेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).378; **ख.** निन्दा करता है, डांटता-फटकारता है, अभियोग लगाता है, अपमानित करता है – *मं भगवा परिसाय खेळासकवादेन अपसादेति,* चूळव. 326; – **न्ति** ब. व. – *भिक्खू अपसादेन्ति,* महाव. 99; *धम्मयोगा भिक्खु झायी भिक्खू अपसादेन्ति,* अ. नि. 2(2).69; *अपसादेन्तीति घट्टेन्ति हिंसन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 3.119; – **न्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. – *किं नाम त्वं वरं दस्ससी'ति अपसादेन्तो गाथमाह,* जा. अट्ठ. 5.488; – **न्ता** प्र. वि., ब. व. – *ते सब्बेपि*

अपसादयन्ता अञ्ञे एवमाहंसु, दी. नि. अट्ठ. 2.189; - **य्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *न अपसादेय्य धम्ममेव देसेय्य,* म. नि. 3.279; *न अपसादेय्याति गेहसितवसेन कञ्चि पुग्गलं नेव उक्खिपेय्य न अवक्खिपेय्य,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.202; - **य्यं** उ. पु., ए. व. - *अहञ्चेव खो पन चोदितो चोदकेन चोदकं अपसादेय्यं,* म. नि. 1.138; - **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *एवं वुत्ते कुणालो सकुणो तं पुण्णमुखं फुस्सकोकिलं एवं अपसादेसि,* जा. अट्ठ. 5.417; - **स्सामि** भवि., उ. पु., ए. व. - *भिक्खुना चोदितो चोदकेन चोदकं न अपसादेस्सामी'ति चित्तं उप्पादेतब्बं,* म. नि. 1.138; - **तुं** निमि. कृ. - *एकस्स चेपि भिक्खुनो न पटिभासेय्य तं भिक्खुनिं अपसादेतुं,* पाचि. 234; - **तब्बा** स्त्री., सं. कृ., - *तेहि भिक्खूहि सा भिक्खुनी अपसादेतब्बा,* पाचि. 234; - **तु** पु., प्रेर. का क. ना. [अपसादयितृ], डांटने-फटकारने वाला, निन्दा या भर्त्सना करने वाला - *तपस्सी अञ्ञतरं समणं वा ब्राह्मणं वा नापसादेता होति,* दी. नि. 3.33.

अपस्मार/अपमार पु., [अपस्मार], मिरगी का रोग - *अपमारो अपस्मारो,* अभि. प. 325; ... *अतेकिच्छेन वातापमारादिना रोगेन समन्नागतो निद्दापत्तगिलानो कथितो,* अ. नि. अट्ठ. 2.90; *वातापमाररोगेनाति वातरोगेन च अपमाररोगेन च वातनिदानेव वा अपमाररोगेन,* अ. नि. टी. 2.84; - **वाता** पु., प्र. वि., ब. व., मिरगी के दौरे - *तस्स वाता वलीयन्तीति तस्स हदयं अपस्मारवाता अवत्थरन्तीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.75.

अपस्सं/अपस्सन्त √दिस के वर्त. कृ. का निषे. [अपश्यत्], **शा. अ.** नहीं देख रहा, अन्धा, **ला. अ.** अज्ञानी, मूर्ख; - **स्सं** प्र. वि., ए. व. - *अपस्सं अरियसच्चानि, अन्धभूतो पुथुज्जनो,* थेरगा. 215; *अपस्सं बज्झते मूळ्हो, बज्झमानो न मुच्चती'ति,* दी. नि. अट्ठ. 2.373; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).106; महानि. अट्ठ. 35; - **तो** ष. वि., ए. व. - *नो अजानतो नो अपस्सतो,* इतिवु. 74; - **तं/तानं** ष. वि., ब. व. - *निवुतानं तमो होति, अन्धकारो अपस्सतं,* स. नि. 2(2).131; *तेसं भगवन्तं अपस्सन्तानं सिया अञ्ञथत्तं,* म. नि. 2.130.

अपस्सय पु., केवल एक स्थल में नपुं. [अपश्रय/अपाश्रय], सिर, पीठ अथवा केहुनी को रखने के लिए सहारा, सिरहाना, गद्दी, तकिया, बिछावन, तपस्वियों द्वारा प्रयुक्त कांटों से भरा बिछावन या शय्या - *तस्स चन्दनमयो अपस्सयो अहोति,* ध. प. अट्ठ. 2.211; *सत्तङ्गो नाम तीसु दिसासु अपस्सयं कत्वा कतमञ्चो,* चूळव. अट्ठ. 59; - **यानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *अपस्सेनानीति अपस्सयानि,* दी. नि. अट्ठ. 3.173.

अपस्सयति/अपस्सेति अप + आ + √सी का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपाश्रयति], सहारा लेता है, आश्रय लेता है, पीछे की ओर या पीठ के बल सहारा लेता है, किसी पर टिक कर लेट जाता है - *तत्थ यं यं दिसं अल्लीयति अपस्सयतीति अत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 2.182; - **न्ति** ब. व. - *तेन खो ... परिकम्मकतं भित्तिं अपस्सेन्ति,* चूळव. 308; - **न्तं** वर्त. कृ., द्वि. वि., ए. व. - *तस्मिं अपस्सेने यथा अपस्सयन्तं विज्झति वा छिन्दति वा ... सत्थं ठपेति, दुक्कटं,* पारा. अट्ठ. 2.51; - **य्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *यो अपस्सेय्य, आपत्ति दुक्कटस्स,* चूळव. 308; - **यिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *जनित्तं मे भवित्तं मे, इति पङ्के अपस्सयिं,* जा. अट्ठ. 2.66; पाठा. अवस्सयिं; - **स्साय पू.** का. कृ. - *तेन खो पन ... महावने दिवाविहारगतो अपस्साय निपन्नो होति,* पारा. 45; - **तब्बा** स्त्री., सं. कृ. - *न, भिक्खवे, परिकम्मकता भित्ति अपस्सेतब्बा,* चूळव. 308; - **यनीय** उपरिवत् - ... *अपस्सयनीयट्ठेन अपस्सेनं नाम,* पारा. अट्ठ. 2.51.

अपस्सयन/अवस्सयन नपुं., अप + √सी से व्यु., क्रि. ना. [अवश्रयण], अवलम्ब, सहारा, निर्भरता, विश्वास - *सप्पुरिसावस्सयोति बुद्धादीनं सप्पुरिसानं अवस्सयनं सेवनं भजनं, न राजानं,* अ. नि. अट्ठ. 2.282; पाठा. अवस्सयनं; *अपस्सेनानीति अपस्सयानि,* दी. नि. अट्ठ. 3.173.

अपस्सयपीठक नपुं., तत्पु. स. [अवश्रयपीठक], सिर को टिका देने वाले उपकरण से युक्त आसन - *एकच्चे मन्ते ... विचारेत्वा सयं पक्कसालद्वारे अपस्सयपीठके निसीदित्वा ... कथेसि,* जा. अट्ठ. 3.206.

अपस्सयिक त्रि., अपस्सय से व्यु., बिछावन, शय्या या तकिया का सहारा लेकर लेटा हुआ - *कण्टकापस्सयिकोपि होति कण्टकापस्सये सेय्यं कप्पेति,* दी. नि. 1.150; *एकपस्सयिकोपि होति रजोजल्लधरो,* तदे..

अपस्सित त्रि., अप + √सी का भू. क. कृ. [अपाश्रित], सहारा, आश्रय या अवलम्बन लिया हुआ, किसी का सहारा लेकर लेटा हुआ, किसी पर आश्रित, किसी पर भरोसा रखने वाला - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तात माणवको एसो, तालमूलं अपस्सितो,* जा. अट्ठ. 2.57; *तालमूलं अपस्सितोति तालक्खन्धं निस्साय ठितो,* तदे.; *अनुभोत्वान तं पुञ्ञं, सककम्मं अपस्सितो,* अप. 1.101; - **ता**[1] स्त्री., प्र. वि., ए.

व॰ – *दलिद्दा कपणा नारी, परागारं अपस्सिता,* वि॰ व॰ 185; *परागारं अपस्सिताति परगेहं निस्सिता,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 81; – **ता²** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञे च उत्तरकुरुं सकं बलमवस्सिता,* अप॰ 1.383.

अपस्सितब्बयुत्तक नपुं॰, कर्म॰ स॰, अमङ्गल-कारक दृश्य, अशुभ प्रकाशित करने वाला दृश्य – *ता ते चण्डालपुत्ते ... चण्डालपुत्ता'ति सुत्वा अपस्सितब्बयुत्तकं वत पस्सिम्हा'ति ... निवत्तिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.350.

अपस्सेतु पु॰, अप + √सी से व्यु॰, क॰ ना॰ [अवश्रयितृ], किसी के सहारे टिकने वाला, किसी का सहारा लेकर स्थित या लेटा हुआ – ... *नाभिजानामि अपस्सेनकं अपस्सयिता ... कप्पेता,* म॰ नि॰ 3.168.

अपस्सेन¹ नपुं॰, अप + √सी से व्यु॰ [अपाश्रयण], **शा॰ अ॰** दीवाल पर टिकने हेतु प्रयुक्त लकड़ी या धातु की पट्टी, **ला॰ अ॰** निर्भरता, भरोसा, अनुपालन – *अपस्सेनं नाम अपस्सेने सत्थं वा उपेति विसेन वा मक्खेति ... उपेति,* पारा॰ 91; 88; *अपस्सेने सत्थं वाति एत्थ अपस्सेनं नाम निच्चपरिभोगो ... अपस्सेनकत्थम्भो ... आलम्बनरुक्खो ... अपस्सयनीयट्ठेन अपस्सेनं नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51; *हत्थिनागे च पल्लङ्के, अपस्सेनञ्चनप्पकं,* अप॰ 1.302; – **नानि** ब॰ व॰ – *चत्तारि अपस्सेनानि, ... सङ्खायेकं पटिसेवति, ... अधिवासेति ... परिवज्जेति, ... विनोदेति,* दी॰ नि॰ 3.179; *अपस्सेनानीति अपस्सयानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.173; *कथञ्चावुसो, भिक्खु चतुरापस्सेनो होति,* ..., दी॰ नि॰ 3.215; तुल॰ अपस्सय, ऊपर; – **त्थम्भ** पु॰, कर्म॰ स॰ [अपाश्रयणकस्तम्भ], टिकने के लिये सहारा देने वाला स्तम्भ या खम्भा – *अपस्सेने सत्थं वाति एत्थ अपस्सेनं नाम ... अपस्सेनफलकं वा दिवाट्ठाने निसीदन्तस्स अपस्सेनकत्थम्भो वा तत्थजातकरुक्खो वा चङ्कमे अपस्साय अपस्साय तिट्ठन्तस्स ... अपस्सयनीयट्ठेन अपस्सेनं नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51; – **फलक** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अपाश्रयणफलक], विहार की रंगी-पुती दीवालों पर सिर या पीठ टिकाने हेतु प्रयुक्त लकड़ी का तख्ता या धातु से निर्मित पट्टिका – *अपस्सेनफलकं नीहरित्वा एकमन्तं निक्खिपितब्बं,* महाव॰ 53; *अपस्सेने सत्थं वाति एत्थ अपस्सेनं नाम ... पीठं वा अपस्सेनफलकं वा दिवाट्ठाने निसीदन्तस्स अपस्सेनकत्थम्भो वा ... आलम्बनफलकं वा सब्बम्पेतं अपस्सयनीयट्ठेन अपस्सेनं नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51.

अपस्सेन² पु॰, व्य॰ सं॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम – *इतो छट्ठम्हि कप्पम्हि, अपस्सेनसनामको,* अप॰ 1.225.

अपह त्रि॰, अप + √हा से व्यु॰ [अपह], नष्ट करने वाला, विनाशक, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त, अघापह आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपहत त्रि॰, अप + √हन का भू॰ क॰ कृ॰ [अपहत], नष्ट कर दिया गया, हटा दिया गया, मिटाया हुआ, पीड़ित, व्यथित – *तेन पुत्तकं गच्छस्सु, मा सोकापहतो भवा'ति,* थेरगा॰ 82; – **काळक** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसकी कालिमा या दूषित तत्त्व हटा दिए गये हैं, काले धब्बों से रहित, क्लेशों से मुक्त – *अपहतकाळकोतिपि पाठो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.149.

अपहत्तु पु॰, अप + √हर से व्यु॰, क॰ ना॰ [अपहर्तृ], अपहरण करने वाला, हटा देने वाला, मिटा देने वाला, नष्ट कर देने वाला; – **त्ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहूनं वत नो भगवा दुक्खधम्मानं अपहत्ता बहूनं ... उपहत्ता ...,* म॰ नि॰ 2.120; *अपहत्ताति अपहारको,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.117; विलो॰ उपहत्तु.

अपहरण नपुं॰, अप + √हर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपहरण], दूर ले जाना, चुरा कर ले जाना, लूट कर ले जाना – *सो या ता साललट्ठियो कुटिला ओजापहरणियो ता छेत्वा बहिद्धा नीहरेय्य, ... विसोधेय्य,* म॰ नि॰ 1.177; *ओसधसमो सत्तानं किलेसब्याधिवूपसमे, उदकसमो सत्तानं किलेसरजोजल्लापहरणे,* मि॰ प॰ 188.

अपहरति अप + √हर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपहरति], **1.** दूर ले जाता है, हटा देता है, रोक देता है, निवारण करता है – *कसामिवाति यथा भद्रो अस्सो अत्तनि पतमानं कसं अपहरति, अत्तनि पतितुं न देति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.48; – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो निद्दन्ति अप्पमत्तो समणधम्मं करोन्तो अत्तनो उप्पन्नं निद्दं अपहरन्तो बुज्झतीति अपबोधेति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.48; *यो निन्दं अपबोधतीति यो गरहं अपहरन्तो बुज्झति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.35; *अपहरन्तोति अपनेन्तो ... एवं परिहरन्तोति अत्थो,* स॰ नि॰ टी॰ 1.72; – **रितुं / हातुं** निमि॰ कृ॰ – *अप्पम्पि तस्स अपहातुमिच्छति,* अ॰ नि॰ 2(2).230; – **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *पुन चपरं, महाराज, तच्छको फेग्गुं अपहरित्वा सारमादियति,* ..., मि॰ प॰ 386; **2.** मना कर देता है, आपत्ति खड़ी कर देता है; – **न्ति** वर्त॰ प्र॰ पु॰ ब॰ व॰ – *ये ते पञ्हवीमंसका परिसा पारिसज्जा पासारिका, ते अपहरन्ति, अत्थापगतं भणित'न्ति अत्थतो अपहरन्ति, ... अत्थो ते दुन्नीतो,* महानि॰ 121; *अपहरन्तीति पटिबाहन्ति,* महानि॰ अट्ठ॰ 226.

अपहानधम्म त्रि., ब. स. [अप्रहाणधर्म], वह, जिस के धर्म का प्रहाण या क्षय नहीं हो सकता है, परिपूर्ण शैक्ष्य, जिसका अधःपतन संभव नहीं है और जिसकी शील, समाधि एवं प्रज्ञा की शिक्षाएं पूर्ण हो चुकी हैं - *परिपुण्णसिक्खं अपहानधम्मं, पञ्ञुत्तरं जातिखयन्तदस्सिं,* इतिवु. 30.

अपव्यूहापेसि अप + वि + √ऊह के प्रेर. का अद्य., प्र. पु., ए. व., रास्ते से हटवा दिया, अलग करा दिया, अदृश्य करा दिया - *इदानि नं गण्हिस्सामा'ति तरुणसूकरे पक्कोसित्वा रुक्खमूलतो पेसुं अपब्यूहापेसि,* जा. अट्ठ. 4.310.

अपहाय / अवहाय अव + √हा का पू. का. कृ., त्याग कर, छोड़ कर - *बहुभण्डं अवहाय, मग्गं अप्पटिवेक्खिय,* जा. अट्ठ. 4.4.

अपहारक पु., अप + √हर से व्यु., क. ना. [अपहारक], अपहरण करने वाला, हटा देने वाला, विनष्ट करने वाला - *अपहत्ताति अपहारको,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.116.

अपहारी[1] अप + √हर के प्रेर. का अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने हटवा दिया या मिटवा दिया, मैंने विनष्ट करा दिया - *चिररत्तं न्हापितं लद्धा, लोमं तं अज्ज हारयिं'न्ति,* जा. अट्ठ. 3.276; *अज्ज हारयिन्ति अज्ज हारेसिं,* तदे..

अपहारी[2] त्रि., केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त [अपहारिन्], नष्ट करने वाला, मिटा देने वाला, दूर कर देने वाला - *नदतो परिसाय ते, वादितब्बपहारिनो,* अप. 2.202; थेरीगा. अट्ठ. 163.

अपहास पु., द्रष्ट. अवहास के अन्त..

अपाक 1. त्रि., ब. स. [अपाक], नहीं पका हुआ, कच्चा, अपरिपक्व, नहीं पकाया हुआ - *भन्ते, एकिस्सायेव कुम्भिया पच्चमानं ओदनं अपाकं अद्दसं अपाक'न्ति,* जा. अट्ठ. 1.325; *उसभा रुक्खा गावियो गवा च, अस्सो कंसो सिङ्गाली च कुम्भो, पोक्खरणी च अपाकचन्दनं,* जा. अट्ठ. 1.321; 2. पु., तत्पु. स., नहीं पकना, विपाक को प्राप्त न होना - *अपाकं अविपाकस्स, छधा छट्ठस्स पच्चयो,* विभ. अट्ठ. 166.

अपाकट त्रि., पाकट का निषे., तत्पु. स. [अप्रकट], अस्पष्ट, अव्यक्त, अज्ञात - *तत्थ अञ्ञतरोति नामगोत्तवसेन अनभिञ्ञातो अपाकटो एको,* उदा. अट्ठ. 43; *अञ्ञतरोति नामगोत्तेन अपाकटो, तस्सं परिसायं निसिन्नो एको भिक्खु,* उदा. अट्ठ 47; *रहोति पटिच्छन्नं अपाकटवसेन,* पे. व. अट्ठ. 92; *अप्पञ्ञातोति अञ्ञातो अपाकटो,* स. नि. अट्ठ. 3.16; - **गुण** त्रि., ब. स., वह, जिसके गुण सुव्यक्त नहीं हो, अज्ञात गुणों वाला - *तत्थ अञ्ञातोति अपाकटगुणो अविदितकम्मावदानो,* जा. अट्ठ. 7.186; - **ता** स्त्री., अपाकट का भाव. [अप्रकटता], अज्ञातता, अव्यक्त होना *तथागतेन भया ओसक्कितं, उदाहु अपाकटताय ओसक्कितं, उदाहु दुब्बलताय ओसक्कितं,* मि. प. 218; - **त्त** नपुं., अपाकट का भाव., [अप्रकटत्व], उपरिवत् *आगतत्ता पच्चत्तेकवचनबहुवचनभावस्स पन अपाकटत्ता वेभूय्यप्पवत्तिं सन्धाय ...,* सद्द. 1.126; - **पाटिहारिय** नपुं., कर्म. स. [अप्रकटप्रातिहार्य], ऋद्धिबल का वह चमत्कार, जिसमें ऋद्धि ही दिखलाई दे, ऋद्धिमान् नहीं - *अपाकटपाटिहारिये इद्धि येव पञ्ञायति न इद्धिमा,* विसुद्धि. 2.21; - **टीभूत** त्रि., [अप्रकटीभूत], अप्रकट बन चुका, अव्यक्त या अप्रादुर्भूत हो चुका - *अपातुभूतन्ति अपाकटीभूतं,* स. नि. अट्ठ. 2.247.

अपाकटिक त्रि., [अप्राकृतिक], अव्यवस्थित अथवा अप्राकृतिक अवस्था वाला / वाली, अस्त व्यस्त - *इन्द्रियानि अपाकतिकानि, किलन्तरूपानि विय पञ्ञायन्ती'ति पुच्छि,* ध. प. अट्ठ. 1.254.

अपागत नपुं., आ + √गम का भू. क. कृ., **शा. अ.** ठीक से नहीं आना, **ला. अ.** नियमों का अतिक्रमण या उल्लङ्घन, भ्रम - *कस्सच्चया न विज्जन्ति, कस्स नत्थि अपागतं,* स. नि. 1(1).29.

अपाची / अवाची स्त्री., [अपाची / अवाची], दक्षिण दिशा - *पाची पतीच्युदीचित्थी पुब्ब पच्छिम उत्तरा, दिसा'थ दाक्खिणा'पाची,* अभि. प. 29.

अपाचीन त्रि., [अवाचीन], नीचे की ओर अवस्थित; - **नं** नपुं., क्रि. वि., नीचे की ओर - *उद्धं तिरियं अपाचीनं, नन्दी तेसं न विज्जति,* स. नि. 2(1).78; *उद्धं तिरियं अपाचीनं, यावता जगतो गति,* इतिवु. 84; अ. नि. 1(2).18.

अपाटली / आपाटली स्त्री., एक पुष्प का नाम - *अपाटलिं अहं पुप्फं उज्झितं सुमहापथे,* अप. 1.119.

अपाटुम / अपाटुक त्रि., व्यु. संदिग्ध [अप्रतिम / अपटुक?], असंयत स्वभाव वाला, असभ्य, अनुचित व्यवहार करने वाला, प्रतिभा से सम्बन्ध न रखने वाला, अपटु - *नेकतिका वञ्चनिका, कूटसक्खी अपाटुका,* थेरगा. 940; *अपाटुकाति वामका, असंयतवुत्तीति अत्थो,* थेरगा. अट्ठ. 2.301.

अपाणातिपात पु., पाणातिपात का निषे., तत्पु. स. [बौ. सं. अप्राणातिपात], प्राणों का हनन न करना, प्राणि-हिंसा न करना - *अपाणातिपातं निस्साय पाणातिपातो पहातब्बो'ति,* म. नि. 2.25.

अपाणी त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्राण], निर्जीव, प्राणरहित; - **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *मन्ददसकादीसु पाणीनं विय च, पुप्फफलपल्लवादीसु च अपाणीनं विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).205; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 360.

अपातब्ब त्रि॰, √पा के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अपातव्य], नहीं पीने योग्य, अपेय - *अपरिभोगं वा करोतीति अखादितब्बं वा अपातब्बं वा करोति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.257.

अपातुभ त्रि॰, प्रादुर्भाव से रहित, उत्पत्ति से रहित - सुकच्छवी वेधवेरा थूलबाहू अपातुभा ... अपातुभाति अपातुभावा धनुप्पादरहितापि अत्थो, जा॰ अट्ठ॰ 4.164-165.

अपातुभाव पु॰, पातुभाव का निषे॰ [अप्रादुर्भाव], प्रकट न होना, अदृश्य स्थिति में होना - *अपातुभावो बुद्धस्स सद्धम्मामतदायिनो,* सद्धम्मो॰ 6; *दुतियज्झानक्खणे अपातुभावाति वुत्तं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 213.

अपातुभूत त्रि॰, पातुभूत का निषे॰ [अप्रादुर्भूत], वह, जो प्रकट या स्पष्ट रूप से दृश्य नहीं है, अप्रकाशित, अव्यक्त - *यं, भिक्खवे, रूपं अजातं अपातुभूतं भविस्सती'ति तस्स सङ्खा,* स॰ नि॰ 2(1).66; *यं एवं अभावितं अपातुभूतं महतो अनत्थाय संवत्तति यथयिदं, भिक्खवे, चित्तं, चित्तं, भिक्खवे, अभावितं अपातुभूतं महतो अनत्थाय संवत्तती'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).7; *ये धम्मा अजाता अभूता असञ्जाता अनिब्बत्ता अनभिनिब्बत्ता अपातुभूता अनुप्पन्ना,* ध॰ स॰ 1042.

अपातुभोन्त त्रि॰, पातु + √भू के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रादुर्भवत्], प्रकट रूप में नहीं दिख रहा, स्पष्ट रूप से दिखलाई न पड़ने वाला - *ते लाभसक्कारे अपातुभोन्ते, सन्धापिता जन्तुभि सन्तिधम्मं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.53.

अपाथेय्य त्रि॰, ब॰ स॰ [अपाथेय], मार्ग के लिए आवश्यक सामग्रियों से रहित, यात्रा के बीच उपयोगी भोजन, जल आदि को न रखने वाला, आवश्यक अपकरणों से रहित - *मग्गा कन्तारा, अप्पोदका अप्पभक्खा, न सुकरा अपाथेय्येन गन्तुं,* महाव॰ 321; 358.

अपादक त्रि॰, ब॰ स॰ [अपादक], **शा॰ अ॰** बिना पैरों वाला, **ला॰ अ॰** रेंगने वाला सर्प आदि - *मा मं अपादको हिंसि, मा मं हिंसि द्विपादको,* चूळव॰ 227; *अपादकेहि मे मेत्तं, मेत्तं द्विपादकेहि मे,* अ॰ नि॰ 1(2).84; जा॰ अट्ठ॰ 2.120.

अपादकथा स्त्री॰, विन॰ वि॰ की गाथा संख्या 231 से 236 तक के खण्ड का शीर्षक, विन॰ वि॰ (पृ॰) 20; पारा॰ अट्ठ॰ की एक कथा का शीर्षक, पारा॰ अट्ठ॰ 1.290.

अपादान नपुं॰, अप + आ + √दा से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपादान], *व्याकरण के सन्दर्भ में* पञ्च॰ वि॰ के कारक का नाम - *यस्मा वा अपेति, यस्मा वा भयं जायते यस्मा वा आदत्ते तं कारकं अपादानसञ्ञं होति,* क॰ व्या॰ 273; *अपादानकारके पञ्चमी विभत्ति होति,* क॰ व्या॰ 297; *अपादाने पञ्चमी,* सद्द॰ 1.60; - **कारक** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अपादानकारक], उपरिवत् - *अपादानकारके पञ्चमी विभत्ति होति,* क॰ व्या॰ 297; - **विसयत्त** नपुं॰, भाव॰ [अपादानविषयत्व], अपादान-कारक का विषय या क्षेत्र होना - *एत्थ पन अपादानविसयत्ते पि गवावयवभूतस्स विसाणस्स विसं गहेत्वा गवं खीरं दुहन्तो'ति,* सद्द॰ 2.599; - **सञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अपादानसंज्ञक], अपादान संज्ञा वाला - *तं कारकं अपादानसञ्ञो होति,* क॰ व्या॰ 273.

अपान नपुं॰, [अपान], नीचे की ओर अभिमुख होकर बाहर को निकलने वाली प्राण वायु, प्रश्वास - *अथो अपानं पस्सासो, अस्सासो आनमुच्चते,* अभि॰ प॰ 39.

अपानक त्रि॰, पानक का निषे॰ [अपानक], कोई भी पेय न पीने वाला, पान न करने वाला, प्राचीन काल के तपस्वियों का एक वर्ग - *अपानकोपि होति अपानकत्तमनुयुत्तो,* दी॰ नि॰ 1.150; *अपानकोति पटिक्खित्तसीतुदकपानो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.265; *अपरे अपानकत्ता होन्ति, मयं पानीयं न पिवामा'ति वदन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.233; - **त्त** नपुं॰, अपानक का भाव॰ [अपानकत्व], कुछ भी नहीं पीने की अवस्था - *परियायभत्तञ्च अपानकत्ता, पापाचारा अरहन्तो वदाना,* जा॰ अट्ठ॰ 5.230; *अपानकोपि होति अपानकत्तमनुयुत्तो,* दी॰ नि॰ 3.29.

अपानुभ त्रि॰ मिथ्या अहंकार से ग्रस्त - इमे, भन्ते, लिच्छविकुमारका चण्डा फरुसा अपानुभा, अ॰ नि॰ 2(1).70; अपानुभाति अवड्ढिनिस्सिता मानथद्धा, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.29.

अपापक त्रि॰, ब॰ स॰, पाप रहित, अदयनीय, दुर्गति से रहित, अकुरूप - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपापकं ते मरणं भविस्सति,* स॰ नि॰ 2(1).111; *अपापकन्ति अलामकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.277; - **केहि** पु॰/नपुं॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सकेहि कम्मेहि अपापकेहि, पुञ्ञेहि मे लद्धमिदं विमान'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.213; *तत्थ अपापकेहीति अलामकेहि,* तदे॰; - **पिका** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दहरा च अपापिका चसि, किं ते पब्बज्जा करिस्सति,* थेरीगा॰ 372; *अपापिका चसीति रूपेन अलामिका च असि, उत्तमरूपधरा चाहोसीति अधिप्पायो,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 276.

अपापकम्म / अपापकम्मी त्रि., ब. स., पापकम्म का निषे. [अपापकर्मन् / अपापकर्मिन्], पाप-कर्मों को न करने वाला, कुशल-कर्मों को करने वाला - *तत्थ अपापकम्मिनोति अपापकम्मा सत्ता एवं विसुज्झन्ति ... अद्दसंसु,* जा. अट्ठ. 5.407.

अपापतं अप + आ + √पत का वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. [अपापतन्], उड़ते हुए आकर किसी के अन्दर गिर रहा, आकर गिर रहा - *कीटोव अग्गिं जलितं अपापतं, उपपज्जति मोहमूळ्हो नग्गभावं,* जा. अट्ठ. 7.120; *अपापतन्ति अपि आपतं, पतन्तोति अत्थो,* तदे..

अपापदस्सना स्त्री., ब. स. [अपापदर्शना], शीलवती नारी, वह नारी, जिसको देखना कल्याणकारक हो अथवा जो कल्याणमय स्वरूप वाली हो - *सञ्जाता च धम्मजीविनी, सीलवती च अपापदस्सना,* जा. अट्ठ. 3.366; *अपापदस्सनाति कल्याणदस्सना पियधम्मा,* जा. अट्ठ. 3.367.

अपापपुरेक्खार त्रि., पापपुरेक्खार का निषे. [अपापपुरष्कार], **शा. अ.** पापरहित धर्मों को आगे करके विचरण करने वाला, **ला. अ.** किसी के विरुद्ध पापमय विचार न रखने वाला, पाप-कर्म की इच्छा न रखने वाला - *गोतमो कम्मवादी किरियवादी अपापपुरेक्खारो ब्रह्मञ्ञाय पजाय ... पे. ...,* दी. नि. 1.101; म. नि. 2.386; *अपापपुरेक्खारोति अपापे नव लोकुत्तरधम्मे पुरतो कत्वा विचरति,* दी. नि. अट्ठ. 1. 231; *अपापपुरेक्खारोति न पापपुरेक्खारो, न पापं पुरतो कत्वा चरति, पापं इच्छतीति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.297.

अपापसत्तूपनिसेवी त्रि., उप. स. [अपापसत्त्वोपसेविन्], निष्पाप प्राणियों का साथ सङ्ग करने वाला, सज्जनों का पक्षधर - **विनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सिराह देवी मनुजेहि पूजिता, अपापसत्तूपनिसेविनी सदा,* जा. अट्ठ. 5.394; *अपापसत्तूपनिसेविनीति अनवज्जसद्धाय च एकन्तपत्तियायनुसभावार परेसुपि ... नामं,* जा. अट्ठ. 5.398.

अपापायि अप + √पा का अद्य., प्र. पु., ए. व., पान किया, पिया - *तं सिङ्गालो अपापायि, जानं सीहेन रक्खितं'न्ति,* जा. अट्ठ. 2.104; *अपापायीति अप-इति उपसग्गो, अपायीति अत्थो,* तदे..

अपापुणि अप + √आप का अद्य., प्र. पु., ए. व., प्राप्त किया या साक्षात्कार कर लिया - *तत्थेव सो ठितो थेरो, अरहत्तं अपापुणि,* विसुद्धि. 1.21; - **णिं** अद्य उ. पु., ए. व. - *तत्थ चित्तं विमुच्चि मे, अरहत्तं अपापुणिं,* अप. 1.56; 61; **णित्वा** पू. का. कृ. का निषे. [अप्राप्य], नहीं प्राप्त कर, साक्षात्कार न करके - *यं तं पुरिसथामेन ... पुरिसपरक्कम्मेन पत्तब्बं न तं अपापुणित्वा वीरियस्स सण्ठानं भविस्सती'ति,* म. नि. 2.156; स. नि. 1(2).27; 250.

अपापुरण / अवापुरण नपुं., अप / अव + आ + √पू से व्यु., क्रि. ना. [अपावरण], **शा. अ.** वह उपकरण, जिसके द्वारा द्वार खोले जाएं, **ला. अ.** चाभी, कुञ्जी - *ताळोवापुरणं चाथ वेदिका कथ्यते,* अभि. प. 222; *अवापुरणन्ति अवापुरन्ति विवरन्ति द्वारं एतेना ति अवापुरणं,* सद्द. 2.430; *अवापुरणं आदाय अनुपरिवेणियं भिक्खूनं आरोचेहि,* महाव. 100; म. नि. 3.169; अ. नि. 3(2).190; *अवापुरणं आदायाति कुञ्चिकं गहेत्वा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.142.

अपापुरति / अवापुरति अप / अव + आ + √पू का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अपावरति / अपावृणोति], खोल देता है, द्वार को उद्घाटित कर देता है - *पुरति पुरं पुरी, अवापुरति, अवापुर एतं अमतस्स द्वारं,* सद्द. 2.430; - **न्ति** ब. व. - *अपापुरन्ति अमतस्स द्वारं, योगा पमोचेन्ति बहुज्जनं ते,* इतिवु. 58; *अपापुरन्तीति उग्घाटेन्ति,* इतिवु. अट्ठ. 233; - **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *अत्थस्स द्वारानि अवापुरन्तो, तेनाहं तुस्सामि यवोदनेन,* जा. अट्ठ. 6.202; - **न्तं** द्वि. वि., ए. व. - *अवापुरन्तं अमतस्स द्वारं, देवातिदेवं सतपुञ्ञलक्खणं,* वि. व. 1042; *अवापुरन्तं अमतस्स द्वारन्ति ... अरियमग्गं विवरन्तं,* वि. व. अट्ठ. 237; - **र** अनु., म. पु., ए. व. - *अपापुरेतं अमतस्स द्वारं* महाव. 6; म. नि. 1.227; *अपापुरेतन्ति विवर एतं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).81; - **रितुं** निमि. कृ. - *तेन ... भिक्खू न सक्कोन्ति कवाटं अपापुरितुं,* चूळव. 273; - **रित्वा** पू. का. कृ. - *तमेनं उड्ढहित्वा अपापुरित्वा ओलोकेय्य,* म. नि. 1.38; *अपापुरित्वाति विवरित्वा,* म. नि. अट्ठ. 1(1).159; - **रित्वान** उपरिवत् - *द्वारं अपापुरित्वानहं, मातापितरो अनीकरत्तञ्च,* थेरीगा. 496; - **रापेत्वा** प्रेर., पू. का. कृ., खुलवा कर, उद्घाटित करा कर - *नगरद्वारानि अवापुरापेत्वा सद्धिं अमच्चसहस्सेन महातले पल्लङ्कमज्झे निसीदि,* जा. अट्ठ. 1.255; पाठा. विवरापेत्वा; - **रीयति** कर्म. वा. में वर्त., प्र. पु., ए. व., खुलाया जाता है, उद्घाटित किया जाता है - *... महानिरयस्स पच्छिमं द्वारं ... उत्तरं ... दक्खिणं द्वारं अपापुरीयति,* म. नि. 3.223; *सचे द्वारं न अवापुरीयित्थ, ... सम्पादेय्य,* जा. अट्ठ. 1.73.

अपापेतब्ब त्रि., प + √आप के प्रेर. के सं. कृ. (पापेतब्ब) का निषे. [अप्रापयितव्य], प्राप्त न करवाने योग्य - *तत्थ*

अपारनेय्यन्ति वायामेन मत्थकं अपापेतब्बं, जा॰ अट्ठ॰ 6.43.

अपापेस्सं प + आप के प्रेर॰ के काला॰ का उ॰ पु॰, ए॰ व॰, यदि मैं प्राप्त कराऊं – ... *इधेवं तं जीवितक्खयं अपापेस्सं, इदानि ... डंसितुं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.10.

अपाभत त्रि॰, अप + आ + √भर का भू॰ क॰ कृ॰ [अपाहृत], दूर ले जाया गया, दूर से ले आया गया – *दुस्स मे खेत्तपालस्स, रत्तिभत्तं अपाभतं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.46; चरिया॰ अट्ठ॰ 102; *अपाभतन्ति आभतं आनीतं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.46; *रत्तिभत्तं अपाभतन्ति रत्तिभोजनतो अपनीतं,* चरिया॰ अट्ठ॰ 102.

अपामग्ग पु॰, अप + आ + √मज से व्यु॰ [अपामार्ग], चिड़चिड़ी-नामक एक औषधीय पौधा – *अपामग्गो सेखरिको,* अभि॰ प॰ 583.

अपाय पु॰, अप + √इ से व्यु॰, अथवा अप + पय से व्यु॰ अथवा पाय का निषे॰ [अपाय], **शा॰ अ॰** दूर चला जाना, अधोगमन, बाहर की ओर निकास, **ला॰ अ॰** पतन, ह्रास, अवनति, संपत्ति या शील की क्षति, भवचक्र में संसरण करने के क्रम में उपस्थित दुखदायक गति, नरक; – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ अपायोति नत्थि पायो वुद्धि एत्थ ति अपायो,* सद्द॰ 2.403; 421; *अपायोति अवुड्ढि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.169; – **या** ब॰ व॰ – *निरयादयो हि वड्ढिसङ्खाततो अयतो अपेतत्ता अपाया,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.120; – **येसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनुप्पियञ्च यो आह, अपायेसु च यो सखा,* दी॰ नि॰ 3.142; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपन्ना,* पारा॰ 5; *अपायन्ति एवमादि सब्बं निरयवेवचनं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.125; ... *अपायं दुग्गतिं विनिपातं संसारं नातिवत्तति,* दी॰ नि॰ 2.43; *तत्थ अपायोति निरयतिरच्छानयोनिपेत्तिविसयअसुरकाया,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.77; *तत्थ चत्तारो अपाया नाम निरयतिरच्छानपेत्तिविसयअसुरकाया,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 150; *पमत्तस्स हि चत्तारो अपाया सकघरसदिसा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.148; – **ये** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मतमता चत्तारो अपाये पूरेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.118; – **येहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतूहापायेहि च विप्पमुत्तो, छच्चाभिठानानि अभब्ब कातुं,* सु॰ नि॰ 234; ..., *तप्पहाना तस्सापि पहानं दीपेन्तो आह चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.250; – **कुसल** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अपायकुशल], मन में अनुत्पन्न अकुशल धर्मों को मन में उत्पन्न न होने देने में कुशल, चार प्रकार की कुशलताओं में से एक से सम्पन्न – *आयकुसलो अपायकुसलो उपायकुसलो महता कोसल्लेन समन्नागतोति,* नेत्ति॰ 19; – **कोसल्ल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अपायकौशल्य], अकुशल धर्मों को मन से दूर ले जाने की कुशलता – *तीणि कोसल्लानि – आयकोसल्लं, अपायकोसल्लं, उपायकोसल्लं,* दी॰ नि॰ 3.176; *तत्थ कतमं अपायं कोसल्लं? इमे धम्मे मनसिकरोति अनुप्पन्ना चेव कुसला धम्मा न उप्पज्जन्ति ... इदं वुच्चति अपायकोसल्लं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.170; विभ॰ 371; *एवं अपायकोसल्लम्पि पञ्ञा एवाति वेदितब्बं,* विभ॰ अट्ठ॰ 392; – **गत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अपायगत], नरक आदि दुखदायक गतियों में गया हुआ, दुर्गति को प्राप्त, विपत्तिग्रस्त – *भूमिं गतो भूमिगतो, सब्बरत्तिं सोभनो सब्बरत्तिसोभनो अपायं गतो अपायगतो इस्सरेन कतं इस्सरकतं,* क॰ व्या॰ 329; *समासे ताव-भूमिगतो, अपायगतो, इस्सरकतं, सल्लविद्धो, कठिनदुस्सं, चोरभयं, धञ्ञरासि, संसारदुक्खं पुब्बा च अपरा च पुब्बापरं,* क॰ व्या॰ 573; – **गमनीय** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अपायगमनीय], दुखद अवस्था की ओर ले जाने वाला, नरक आदि दुख भरी योनियों में जन्म दिलाने वाला – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोतापत्तिमग्गेन अनवसेसो दिट्ठासवो खीयति, अपायगमनीयो कामासवो खीयति, अपायगमनीयो भवासवो खीयती, अपायगमनीयो अविज्जासवो खीयति,* पटि॰ म॰ 87; *स्वाहं कत्थचि असन्तुट्ठो लोभमेव वड्ढेमि, लोभो च नामेस अपायगमनीयो धम्मो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीलब्बतपरामासं, अपायगमनीयं रागं अपायगमनीयं दोसं, अपायगमनीयं मोहं,* अ॰ नि॰ 2(2). 138; *अभूतं वितथं अलिकं विरुद्धं विपरीतं दुक्खदायकं दुक्खविपाकं अपायगमनीयन्ति,* मि॰ प॰ 110; *सचाहं गन्त्वा न ओवादेय्यं, माता मे अपायगमणीयं अपुञ्ञं विचिनित्वा चतूसु अपायेसु उप्पज्जेय्या'ति,* सा॰ वं॰ 34(ना॰); *कामुपादानं अपायगमनीयं पठमेन कामरागभूतं बहलं दुतियेन, सुखुमं ततियेन,* उदा॰ अट्ठ॰ 173; – **गामी** त्रि॰, [अपायगामिन्], नरक आदि दुखदायक गतियों में जाने वाला – *यो तं दानं देति, सो अपायगामी होति,* मि॰ प॰ 259; – **नो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पब्बजितुकामापि न पब्बजिस्सन्ति, वचनं च मे न सद्दहिस्सन्ति, असद्दहन्ता ते मनुस्सा अपायगामिनो भविस्सन्ति,* मि॰ प॰ 254; *तथा मरणजालेन ओत्थटेसु सत्तेसु बहू अपायगामिनो होन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.100; – **दुक्ख** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अपायदुःख], नरक आदि की कष्टदायिनी योनियों में प्राप्त होने वाला दुख – *अथ दिट्ठधम्मे*

विविधाकम्मकारणा, सम्पराये च अपायदुक्खं अनुभोन्तो सो पापो पापानियेव पस्सति, ध. प. अट्ठ. 2.9; *इध लोके अपायदुक्खं अनुभवन्तो परलोके च अनुतप्पति,* जा. अट्ठ. 5. 114; - **क्खेहि** तृ. वि., ब. व. - *इमिना पुञ्ञकम्मेन सब्बेहि अपायादिदुक्खेहि मोचेय्यामि,* सा. वं. 106(ना.); - **दुग्गतिविनिपात** पु., द्व. स. [अपायदुर्गतिविनिपात], अधःपतन, दुखद-गति एवं अवनति अर्थात् नरक - *अथ खो सो परिमुत्तो निरया परिमुत्तो तिरच्छानयोनिया परिमुत्तो पेत्तिविसया परिमुत्तो अपायदुग्गतिविनिपाता,* स. नि. 3(2). 410; *अपरिमुत्तो पेत्तिविसया अपरिमुत्तो अपायदुग्गतिविनिपाता'ति,* अ. नि. 3(1).194; - **द्वार** नपुं., तत्पु. स. [अपायद्वार], नरक का द्वार - *अम्हाकञ्च अपायद्वारानि विवटानेव, तस्मा अञ्ञत्र पातो भिक्खाचारवेलं,* ध. प. अट्ठ. 1.381; *करोति अथ खोपायद्वारानिपि विधेति च,* अभि. अव. 164; - **पटिसन्धि** पु., तत्पु. स. [अपायप्रतिसन्धि], नरक आदि दुखदायक योनियों में पुनर्जन्म, पुनर्जन्म के चार प्रभेदों में सबसे अधम पुनर्भव - *अपायपटिसन्धि कामसुगतिपटिसन्धि रूपावचरपटिसन्धि अरूपावचरपटिसन्धि चेति चतुब्बिधा पटिसन्धि नाम,* अभि. ध. स. 33; - **परायण** त्रि., तत्पु. स. [अपायपरायण], निश्चित रूप से नरक प्राप्ति में लगा हुआ, निश्चित रूप से नरक को प्राप्त करने वाला - *एवं अकरोन्तस्स पन अत्ता पियो नाम न होति, अपायपरायणमेव नं करोति,* ध. प. अट्ठ. 2.76; - **परिपूरक** त्रि., [अपायपरिपूरक], नरक को परिपूर्ण कर देने वाला, नरक को प्राप्त होने वाला - *ततो संवेगमापज्जित्वा पुन अहं इमं तण्हं वड्ढेन्तो अपायपरिपूरको भविस्सामि,* सु. नि. अट्ठ. 1.91; - **परिपूरणत्त** नपुं., भाव. [अपायपरिपूर्णत्व], नरक को पूरी तरह से भर देना - *अनेकसतानं अपायपरिपूरणत्तं अत्तनो सासने पब्बजितानञ्च देवदत्तादीनं ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).98; - **परिमुत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [अपायपरिमुक्ति], नरक आदि दुखदायक गतियों से पूर्ण मुक्ति - *तस्मा तेसं अपाया-परिमुत्तिं सब्बगुणसम्पत्तिञ्च इच्छन्तो आह,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).98; - **पूरक** त्रि., तत्पु. स. [अपायपूरक], नरक को भर देने वाला - *एवं ते मनुस्सा दिट्ठदिट्ठट्ठाने सीलवन्ते अक्कोसन्ता अपुञ्ञं पसवित्वा अपायपूरका अहेसुं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).311; *अम्हेसु पदुट्ठचित्तो महाजनो अपायपूरको भवेय्य,* अ. नि. अट्ठ. 1.142; - **भय** नपुं., तत्पु. स. [अपायभय], नरक का भय, नरक से डर - *एवं अपायभयं पच्चवेक्खन्तस्सापि वीरियसम्बोज्झङ्गो उप्पज्जति,* विभ. अट्ठ. 264; *भयन्ति अपायभयं, तेन सभावेन सण्ठितं ओत्तप्पं,* ध. स. अट्ठ. 171; *ते मिच्छातपं चरन्ते दिस्वा अपायभयम्हा मुत्ता'ति पसीदित्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.267; - **भय-पच्चवेक्खणता** स्त्री., भाव. [अपायभयप्रत्यवेक्षणता], नरक के भय पर अनुचिन्तन - *अपिच एकादस धम्मा विरियसम्बोज्झङ्गस्स उपादाय संवत्तन्ति - अपायभयपच्चवेक्खणता सत्थुमहत्तपच्चवेक्खणता,* विभ. अट्ठ. 264; - **भय-विनिमुत्तता** स्त्री., भाव., तत्पु. स. [अपायभयविनिर्मुक्तता], नरक आदि के भय से पूरी तरह मुक्त होने की दशा - *लमिता सुखसयनता सुखप्पटिबुज्झनता अपायभयविनिमुत्तता इत्थिभावप्पटिलाभस्स वा,* खु. पा. अट्ठ. 24; - **भूमि** स्त्री., तत्पु. स. [अपायभूमि], प्राणियों द्वारा जन्म ग्रहण करने की चार भूमियों में से वह भूमि, जिसमें अकुशल कर्म करने वाले प्राणी को तिरच्छान, पेत्तिविसय, असुरकाय एवं निरय, इन चार दुखदायक गतियों में उत्पन्न होना पड़ता है - *देवाचेव मनुस्सा च, तिस्सो वापायभूमियो,* अभि. अव. 40; *ये केचि बुद्धं सरणं गतासे, नते गमिस्सन्ति अपायभूमिं,* स. नि. 1(1).31; खु. पा. अट्ठ. 8; जा. अट्ठ. 1.105; *दोसेहि सीदापेन्तस्स तथेवापायभूमियं,* सद्धम्मो. 43; - **मग्ग** पु., तत्पु. स. [अपायमार्ग], नरक की ओर ले जाने वाला मार्ग, कुमार्ग - *एत्थ यथा मग्गकुसलो पुरिसो पठमं वज्जेतब्बं अपायमग्गं दस्सेन्तो,* म. नि. अट्ठ.(मू.प.) 1(2).73; *सुपिहितसग्गद्वारो, अपायमग्गं समारूळ्हो,* विसुद्धि. 1.55; - **मुख** नपुं., तत्पु. स. [अपायमुख], जल की निकासी का विवर या द्वार, पानी के बाहर जाने का निकास मार्ग, अधःपतन का द्वार - *तस्सा पुरिसो यानि चेव आयमुखानि तानि पिदहेय्य, यानि च अपायमुखानि तानि विवरेय्य, देवो च न सम्मा धारं अनुप्पवेच्छेय्य,* अ. नि. 1(2).192; *अपायमुखानीति अपवाहनच्छिद्दानि,* अ. नि. अट्ठ. 2.352; *अनुत्तराय विज्जाचरणसम्पदाय चत्तारि अपायमुखानि भवन्ति,* दी. नि. 1.88; - **लोक** पु., कर्म. स. [अपायलोक], दुखदायक गति वाले तिरच्छान, पेत्ति-विसय, असुरकाय तथा नरक नाम वाले चार लोक - *लोकेति अपायलोके मनुस्सलोकदेवलोके, खन्धलोके धातुलोके आयतनलोके,* महानि. 7; *यमलोकञ्चाति चतुब्बिधं अपायलोकञ्च,* ध. प. अट्ठ. 1.189; **समुद्द** पु., तत्पु. स. [अपायसमुद्र], दुःख से परिपूर्ण विपदाओं के रूप वाला समुद्र, विपत्तियों का

समुद्र - *अपरिपुण्णज्झासये एव महोघो विय परिकड्डमानो अपायसमुद्दे पक्खिपती'ति वत्वा धम्मं देसेन्तो,* ध. प. अट्ठ. 2.247; - **सम्पन्न** त्रि., तत्पु. स. [अपायसम्पन्न], जल की निकासी वाले द्वार से युक्त, जल को बाहर निकालने वाले विवर वाला - *न आयसम्पन्नं होति, न अपायसम्पन्नं होति, न मातिकासम्पन्नं होति, न मरियादसम्पन्नं होति,* अ. नि. 3(1).70; *न अपायसम्पन्नन्ति पच्छाभागे उदकनिग्गमनमग्गसम्पन्नं न होति,* अ. नि. अट्ठ. 3.228; - **सम्पापक** त्रि., तत्पु. स. [अपायसम्प्रापक], नरक आदि दुःखदायक योनियों को प्राप्त कराने वाला, दुःखदायक गतियों के रूप में परिणत होने वाला - *पञ्च छिन्देति हेट्ठाअपायसम्पापकानि पञ्चोरम्भागियसंयोजनानि पादे बद्धरज्जुं पुरिसो सत्थेन विय हेट्ठामग्गत्तयेन छिन्देय्य,* ध. प. अट्ठ. 2.345; - **सहाय** पु., तत्पु. स., दुःखदायक गतियों या विपदाओं में ले जाने वाला साथी, भोगसाधनों को विनष्ट करने में सहायक साथी - *अनुप्पियभाणी अमित्तो मित्तपतिरूपको वेदितब्बो, अपायसहायो अमित्तो मित्तपतिरूपको वेदितब्बो,* दी. नि. 3.141; *चतूहि ठानेहि अपायसहायो अमित्तो मित्तपतिरूपको वेदितब्बो'ति,* दी. नि. 3.142; *अपायसहायोति भोगानं अपायेसु सहायो होति,* दी. नि. अट्ठ. 3.119.

अपायिम्हवग्ग पु., जा. अट्ठ., के एक वग्ग का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.344-362.

अपायूपपत्ति स्त्री., तत्पु. स. [अपायोत्पत्ति], नरक आदि दुःखदायक योनियों में पुनर्जन्म का ग्रहण - *मनुस्सदोभग्गं वा हि अपायुप्पत्ति वा सब्बा पमादमूलिकायेवाति,* ध. प. अट्ठ. 1.158.

अपायेसि √पा के प्रेर. का अद्य., प्र. पु., ए. व., द्रष्ट. पिवति के अन्त..

अपार[1] नपुं., पार का निषे. [अपार], **शा. अ.** नदी का इस ओर वाला तट, जिसे पार न करना पड़े - *ओरं त्वपारमुच्चते,* अभि. प. 665; *न चस्स नावा सन्तारणी उत्तरसेतु वा अपारा पारं गमनाय,* स. नि. 2(2).177; *एहि पारापारन्ति अम्भो पारं अपारं एहि, अथ मं सहसाव गहेत्वा गमिस्ससि,* दी. नि. अट्ठ. 1.303; *तथा यो पटिपज्जेय्य, गच्छे पारं अपारतो,* सु. नि. 1135; *अपारा पारं गच्छेय्य, भावेन्तो मग्गमुत्तमं,* सु. नि. 1136; **ला. अ.** यह लोक, मृत्यु से पूर्ववर्ती वर्तमान जीवन वाला संसार, छः बाहरी इन्द्रियां या आयतन - *यस्स पारं अपारं वा, पारापारं न विज्जति,* ध. प. 385; *एवं मे भयजातस्स, अपारा पारमेसतो,* थेरगा. 763; *तत्थ पारन्ति अज्झत्तिकानि छ आयतनानि, अपारन्ति बाहिरानि छ आयतनानि,* ध. प. अट्ठ. 2.364; विलो. पार, तुल. ओर.

अपार[2] त्रि., ब. स. [अपार], **1**. तट-रहित, असीम, पहुंच के बाहर, अजेय, पार करने हेतु अतिकठिन - *अथ परतो महासमुद्दं गम्भीरं वित्थतं अगाधमपारं दिस्वा भायेय्य,* मि. प. 114; *अपारमतिघोरञ्च, सोसेति च असेसतो,* अभि. अव. 1335; **2**. वह जिसने नदी या सागर को पार नहीं किया है, उस पार न गया हुआ - *अतिण्णंयेव याचस्सु, अपारं तात नाविकं,* जा. अट्ठ. 3.202; *तत्थ अपारन्ति तात, नाविकं परतीरं अतिण्णमेव जनं ओरिमतीरे ठितञ्ञेव वेतनं याचस्सु,* जा. अट्ठ. 3.202; - **नेय्य** त्रि., पारनेय्य का निषे. [अपारनेय], **शा. अ.** वह, जिसे नदी के उस पार न ले जाया सके, **ला. अ.** फल-प्राप्ति की अवस्था को अप्राप्त, भवसागर के उस पार नहीं ले जाने योग्य *अपारनेय्यं यं कम्मं, अफलं किलमथुद्दयं,* जा. अट्ठ. 6.43; *तत्थ अपारनेय्यन्ति वायामेन मत्थकं अपापेतब्बं,* जा. अट्ठ. 6.43; - **दस्सी** त्रि., पारदस्सी का निषे. [अपारदर्शिन्], **शा. अ.** उस पार को न देखने वाला, **ला. अ.** भवसागर का दूसरा तट अर्थात् निर्वाण का साक्षात्कार न करने वाला अज्ञानी जन - *अस्सुतवा पुथुज्जनो ... अतीरदस्सी अपारदस्सी,* स. नि. 2(1).148; *अपारदस्सीति पारं वुच्चति निब्बानं, तं न पस्सति,* स. नि. अट्ठ. 2.293; - **पारगू** त्रि., [अपारपारङ्गत], अपार या असीम संसार-सागर के उस पार पहुंच चुका (बुद्ध की एक उपाधि) - *अपुच्छि सत्थारमपारपारगुं, निरङ्गणं ञातिगणस्स मज्झे,* बु. वं. अट्ठ. 1.

अपारिवासिक त्रि., पारिवासिक का निषे., ताजा, रात भर संग्रह कर या संजोकर नहीं रखा गया, गर्म (भोजन), वह भोजन, जो बासी न हो - *पच्चग्घन्ति अभुण्हं अपारिवासिकं,* जा. अट्ठ. 2.360.

अपारुत त्रि., अप + आ + √वु के भू. क. कृ. पारुत का निषे. [अपावृत], नहीं ढका हुआ, अनाच्छादित, खुला हुआ, खोल कर रखा हुआ, खोल दिया गया - *अपारुता तेसं अमतस्स द्वारा,* दी. नि. 2.31; *अपारुताति विवटा,* दी. नि. अट्ठ. 2.55; 214; *अपारुतं तेसं अमतस्स द्वार'न्ति केचि पठन्ति,* लीन. (दी.नि.टी.) 2.58; ... *अपारुता अमतस्स द्वारा'ति ...,* दी. नि. 2.160; - **घर** त्रि., ब. स. [अपावृतगृह], खुले हुए द्वारों वाला घर - *मनुस्सा मुदा मोदमाना उरे पुत्ते*

नच्चेन्ता अपारुतघरा मञ्ञे विहरिस्सन्ती'ति, दी॰ नि॰ 1.120; *अपारुतघराति चोरानं अभावेन द्वारानि असंवरित्वा विवटद्वाराति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.239; – **द्वार** त्रि॰, उपरिवत् – ... *अपारुतद्वारे निवेसने ... गच्छथ,* जा॰ अट्ठ॰ 1.255-56.

अपालम्ब पु॰, अप + आ + √लम्ब से व्यु॰ [अपालम्ब], आलम्बन, सहारा, पकड़ने का सहारा, रथ पर लकड़ी से बनी हुई वे पट्टिकाएं, जिनका सहारा लेकर लोग रथ पर बैठते हैं *हिरी तस्स अपालम्बो, सत्यस्स परिवारणं,* स॰ नि॰ 1(1).37; *तस्स अपालम्बोति यथा बाहिरकरथस्स रथे ठितानं योधानं अपतनत्थाय दारुमयं अपालम्बनं होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.79; *बाहुसच्चमपालम्बोति अत्थसन्निस्सितबहुस्सुतभावमयेन अपालम्बेन समन्नागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.143; *बाहुसच्चमपालम्बो, ठितचित्तमुपाधियो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.142.

अपालम्बन नपुं॰, उपरिवत् – *तस्स अपालम्बोति ... दारुमयं अपालम्बनं होति, एवं इमस्स ... हिरोत्तप्पं अपालम्बनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.79.

अपालयुं √पाल का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, पालन किए, रक्षा की – *सज्झायधनधञ्ञासुं, ब्रह्मं निधिमपालयुं,* सु॰ नि॰ 287.

अपाळिनयत्त नपुं॰, अपाळिनय का भाव॰, त्रिपिटक में निर्धारित नीतियों के विपरीत मार्ग का रहना, बुद्धवचनों से विपरीत पद्धति का होना – *अपाळिनयत्ता, अभिरुपाय कञ्ञा देय्याति अयं हि सद्दसत्थतो आगतो नयो,* सद्द॰ 1.130-31.

अपासाणसक्खरिक त्रि॰, पासाणसक्खरिक का निषे॰, ब॰ स॰ [अपाषाणशर्करिक], कंकड़ों एवं पत्थरों से रहित (खेत) – *खेत्तं अनुन्नामानिन्नामि च होति, अपासाणसक्खरिकञ्च होति,* अ॰ नि॰ 3(1).70.

अपासादिक त्रि॰, पासादिक का निषे॰ [अप्रासादिक], असन्तोषजनक, मन में प्रसन्नता न लाने वाला, मन को न खिला देने वाला – ..., *आदिनवा अपासादिके,* अ॰ नि॰ 2(1).235; *सत्तमे अपासादिकेति अपासादिकेहि कायकम्मादीहि समन्नागते,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.82.

अपासि √पा के अद्य॰ का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पिवति के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अपाहत / अपहत त्रि॰, अप + आ + √हर का भू॰ क॰ कृ॰ [अपहृत], **शा॰ अ॰** दूर कर दिया गया, विनाशित, **ला॰ अ॰** तार्किक दोषों के आधार पर निराकृत या खण्डित, अस्वीकृत, तिरस्कृत – *यमस्स वादं परिहीनमाहु, अपाहतं पञ्हविमंसकासे,* सु॰ नि॰ 833; *तत्थ परिहीनमाहु अपाहतन्ति अत्थब्यञ्जनादितो अपाहतं परिहीनं वदन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.233; *अपाहतस्मिं पन मङ्कु होति, निन्दाय सो कुप्पति रन्धमेसी,* सु॰ नि॰ 832; *अपाहतस्मिन्ति पञ्हवीमंसकेहि अत्थापगतं ते भणितं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.233.

अपाहाय / अवहाय अप + आ + √हा का पू॰ का॰ कृ॰ [अपहाय], छोड़ कर, त्याग करके – *उजुमग्गं अवहाय, कुम्मग्गमनुधावति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.121.

अपि[1] अ॰, निपा॰, स्वरों से पूर्व अप्, अप्य अथवा अप्प रूप में प्राप्त, कहीं कहीं 'पि' अथवा 'प्' रूप में भी प्राप्त [अपि], सम्भावना, अपेक्षा, प्रश्न, समुच्चय, गर्हा या निन्दा, आशङ्का या शङ्का तथा संवरण आदि अर्थों का सूचक – *अपि सम्भावनापेक्खा पञ्हं समुच्चयेसु च, गरहादिसु च अत्थेसु वत्तती ति पकासये, ... अपि महाकं पण्डितका'ति,* सद्द॰ 3.884; *सम्भावने च गरहापेक्खासु च समुच्चये पञ्हे सञ्चरणे चेव आसंसत्थे अपीरितं,* अभि॰ प॰ 1183; 1. **संभावना के अर्थ में** – *अपि दिब्बेसु कामेसु, रतिं सो नाधिगच्छति,* ध॰ प॰ 188; *मेरुञ्चपि विनिविज्झित्वा गच्छेय्य,* सद्द॰ 3.884; 2. **उपेक्षा अर्थ में** *अयम्पि धम्मो अनियतो'ति,* पारा॰ 297; 3. **समुच्चय अर्थ में** *अन्तम्पि अन्तगुणम्पि आदाय अधोभागा निक्खमति,* म॰ नि॰ 3.224; *उपरिअत्थं उपादाय सम्पिण्डनत्थो पिकारो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).261; 4. **गर्हा या निन्दा के अर्थ में** – *अपि महाकं पण्डितकाति,* सद्द॰ 3.884; 5. **प्रश्न का संसूचक** – *अपि किञ्चि लभित्था'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.28-29; **पालि-साहित्य में 'अपि' एवं 'पि' के कुछ विशिष्ट प्रयोग – 1. आरम्भ में या आदि में प्रयुक्त;** क. भी, में भी, और भी – *अपि दिब्बेसु कामेसु, रतिं सो नाधिगच्छति,* ध॰ प॰ 187; *अपि अतरमानानं, फलासाव समिज्झति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.141; *अपि अग्गिं पविसिस्सामि, नेवत्तना एकवारं जहितविसं पच्चाहरिस्सामी'ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.298; **ख.** संभावनार्थक निपा॰, प्रायः वर्त॰ अथवा विधि॰ के क्रि॰ रु॰ के साथ प्रयुक्त; संभवतः, शायद, हो सकता है कि – *अपेत्थ मुदुं विन्देम, अपि अस्सादना सिया,* सु॰ नि॰ 449; *तदाहं सुखितो मुत्तो, अपि पस्सेय्य मातर'न्ति, ... अपि नाम मातरं पस्सेय्यन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.239; **ग. पर्यालोचन या विमर्श का सङ्केतक** – *अपाहं बुद्धं पच्चक्खेय्य'न्ति वदति,* पारा॰ 27; *अपाहं सियन्ति होति, अपाहं इत्थं सियन्ति होति, अपाहं एवं सियन्ति होति, अपाहं अञ्ञथा सियन्ति होति,* विभ॰ 460; **घ. पूर्वकथन से**

वैपरीत्य का सूचक – परन्तु, यदि, ऐसा है तो, बल्कि – *अपि नो किसानि मंसानि*, जा॰ अट्ठ॰ 7.368; **ङ. अनुशीलन या पुष्टि का सङ्केतक** – निश्चित रूप से, वास्तव में, क्योंकि - *अपि मेय्य, एवं होति, अय्यं उपनन्दं चीवरेन अच्छादेस्सामी'ति*, पारा॰ 327; *अपाहं पुग्गलं अद्दसं इध पाणातिपातिं अदिन्नादायिं*, म॰ नि॰ 3.259; *अपि नु हनुका सन्ता, मुखञ्च परिसुस्सति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.242; **च. प्रश्नसूचक निपा॰ के रूप में, प्रायः 'नु खो' के पूर्व में अथवा संबो॰ नाम से पूर्व में प्रयुक्त** *अपि भन्ते, पिण्डो लब्भती'ति*, चूळव॰ 23; *अपय्याहि चीवरं लद्ध'न्ति*, पाचि॰ 333; *मिगराज नमो त्यत्थु, अपि किञ्चि लभामसे*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.84; **छ. अनु॰ या आज्ञा की पुष्टि करने वाले निपा॰ के रूप में** – *चेतासमथमनुयुत्तो, अपि मुद्धनि तिट्ठतु*, थेरगा॰ 988; *अपि भीरुके अपि जीवितुकामिके, किम्पुरिसि गच्छ हिमवन्तं*, जा॰ अट्ठ॰ 4.255; **ज. वाक्य के अन्दर लघु उपवाक्य के प्रारम्भ में प्रयुक्त** – यहां तक कि, भी *अदेय्यो, गहपति, आरामो अपि कोटिसन्थरेना'ति*, चूळव॰ 287; *को दिस्वा नप्पसीदेय्य, अपि कण्हाभिजातिको*, सु॰ नि॰ 568; *न सक्का पुञ्ञं सङ्खातुं, इमेत्तमपि केनचि*, अप॰ 1.133; ध॰ प॰ 196; **झ. अपि खो पन/अपि च खो पन** और तब, केवल, यद्यपि, दूसरी ओर, किसी भी स्थिति में – *अपिच खो पनाहं तुम्हे योग्गं कारेस्सामी'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 2.137; *अपि च खो पन सकेन सकेन लक्खणेन उपट्ठहन्ती'ति*, मि॰ प॰ 66; **ञ. प्रायः निषे॰ उपवाक्य के पश्चात् अपि च रूप में प्रयुक्त** – फिर भी, तो भी, परन्तु तब भी - *अपि च मेत्थ पुग्गलवेमत्तता विदिता'ति*, सु॰ नि॰ (पृ॰) 164; दी॰ नि॰ 1.159; *अपि च खो महाराज सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो*, मि॰ प॰ 22; **ट. अपि च खो रूप में** – इसके विपरीत, लेकिन, किन्तु, परन्तु, इस सबके बावजूद, यह होने पर भी, फिर भी, इसके अतिरिक्त – *अपि च ते सम्फस्सो पापको'ति*, सु॰ नि॰ (पृ॰) 125; *अपि च, ख्वस्स तथेव पापकम्मं पवेदेन्ति*, अ॰ नि॰ 2(1).194; **ठ. अपि चापि के रूप में** – और भी, इसके अतिरिक्त भी – *अपि चापि सो पुरिमदिसं अगच्छि, सच्चप्पटिञ्ञो इसि साधुरूपो'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.345; **ड. अपि चे/अपि चे पि रूप में** – और यदि, इसके अतिरिक्त भी यदि, और भी संभवतः – *अपि वस्ससतं जीवे, भिय्यो वा पन माणवो*, सु॰ नि॰ 594; *अपि चे होति तेविज्जो, मच्चुहायी अनासवो*, थेरगा॰ 129; **ढ. अपि नाम रूप में** – सम्भवतः, शायद, हो सकता है कि - *अपि नामेत्थ किञ्चि भवेय्या'ति निग्रोधरुक्खाभिमुखो पायासि*, जा॰ अट्ठ॰ 2.168; *अपि नाम मातरे पस्सेय्यन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.239; **ण. अपि नु/अपि नु खो** प्रश्नसूचक, क्या ? *अपि नु सो पुरिसो अमुं बिळारभस्तं मद्दितं सुमद्दितं सुपरिमद्दितं*, म॰ नि॰ 1.181; *अपिनु त्वं इमञ्चेव अनुत्तरं विज्जाचरणसम्पदं ...*, दी॰ नि॰ 189; **त. अपि नूनं** भले ही, चाहे – *अपि नूनहं मरिस्सं, नाहं राजपुत्त तव हेस्सं*, जा॰ अट्ठ॰ 4.255; **थ. अपि पन** प्रश्नसूचक, क्या ? – *अपि पन ते ... दापितं अत्थीति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.447; *अपि पन ते किञ्चि दिन्न'न्ति पुच्छि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.437; **द. अपिस्सु** और तब, और इसके अतिरिक्त, और तब आगे *अपिस्सु भगवन्तं इमा अनच्छरिया गाथायो पटिभंसु पुब्बे अस्सुतपुब्बा*, महाव॰ 5; *अपिस्सु वाणिजा एका, नारियो पण्णवीसति ...*, जा॰ अट्ठ॰ 4.313; **ध. अपिस्सुदं** वास्तव में, नहीं तो, बल्कि – *अपिस्सुदं मनुस्सा कित्तयमानरूपा विहरन्ति*, दी॰ नि॰ 2.149; **न. अपिहा नून** निश्चित रूप से, न तो ... न ही ... *अपिहा नून मयिपि, वनथो ते न विज्जति*, थेरगा॰ 338; **प. अप्पेव** शायद, सम्भवतः – *संसयत्थमम्हि अप्पेव अप्पेवनाम नु ति च*, अभि॰ प॰ 1158; *सन्तं विधूमं अनीघं निरासं, अप्पेविध अभिविन्दे सुमेधं*, सु॰ नि॰ 464; **फ. 'अपिच' के साथ सम्बद्ध**, न केवल ... बल्कि - *मयं खो ..., बहुकिच्चा ... अप्पेव सकेन करणीयेन, अपि च देवानंयेव तावतिंसानं करणीयेन*, म॰ नि॰ 1.321; *अपि च देवानंयेव तावतिंसानं करणीयेनाति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).196; **ब. अप्पेवनाम** संभवतः निश्चित रूप से – *संसयत्थमम्हि अप्पेव अप्पेवनाम नु ति च*, अभि॰ प॰ 1158; *दिस्वान अत्तमनो उदग्गो पमुदितो पीतिसोमनस्सजातो अप्पेव नामायं पब्बजितो कञ्चि सारं जानेय्या'ति येनायस्मा रोहणो तेनुपसङ्कमि*, मि॰ प॰ 10; **भ. अप्पेव नं** संभवतः, हो सकता है कि – *गन्त्वान तं पटिकरेमु अच्चयं, अप्पेव नं पुत्त लभेमु जीवित'न्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.345; **2. गाथाओं में सामान्यतः प्रयुक्त 'पि' के स्थानापन्न पूर्वाश्रयी निपा॰ के रूप में प्रयुक्त**; क. भी, यहां तक कि ... भी – *निसज्ज तत्थ इदमवोचासि सक्ये, कुहिं कुमारो अहमपि दट्ठुकामो*, सु॰ नि॰ 690; *दिस्वान तण्ह अरतिं रगञ्च, नाहोसि छन्दो अपि मेथुनस्मिं*, सु॰ नि॰ 841; **ख.** प्रायः पूर्ववर्ती अकार के साथ सन्धि के प्रभाववश 'पि' रूप में संक्षिप्तीकृत, यत्र-तत्र प्रश्नवाचक, अन्यत्र उपरिवत् – *अज्जापि नून समणो गोतमो अवीतरागो अवीतदोसो अवीतमोहो*, म॰ नि॰ 1.29; *अज्जापि च अरञ्ञवासं न*

विजहति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).136; *ये ब्राह्मणा ये च समणा, अञ्ञे वापि वणिब्बका*, जा॰ अट्ठ॰ 7.257; **3. 'पि' के रूप में सन्धि-प्रभाववश संक्षिप्तीकृत पूर्वाश्रयी निपा.**, अनेक तात्पर्यों में अनेक रूपों में प्रयुक्त, स्वरों से पूर्व 'प्' रूप में भी प्राप्त – ... *पिसद्दो पि निपातेसु इच्छितब्बो, अपिसद्दो पि च निपातपक्खिको कातब्बो यत्थ किरियावाचकपदतो पुब्बो न होति*, सद्द॰ 3.904; **3.क. 'चि' निपा. के समान प्रश्नवाचक सर्व. 'किं' के शब्दरूपों के उ. प. में प्रयुक्त**, अनिश्चित सत्त्व, स्थान या वस्तु का संकेतक – जो कोई भी, जिस किसी को भी – *कम्पि मञ्ञे भणति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).108-109; *कम्पि चञ्ञं सन्धाय केवलिनं महेसिं* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.125; **ख. 'अञ्ञ' आदि दूसरे सर्व के शब्दरूपों के पश्चात् भी प्रयुक्त**, यहां तक कि ... भी – *अविदूरे पनस्स अञ्ञोपि पञ्चसतमिगपरिवारो साखमिगो नाम वसति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.154; *उदका पन अनुग्गतानि अञ्ञानिपि सरोगउप्पलादीनि नाम अत्थि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).83; **ग. निपा. एवं ना. प. के पश्चात् भी प्रयुक्त** – उपरिवत् – *इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो ... बुद्धो भगवा*, पारा॰ 1; *इतिपि सो भगवाति आदीसु पन अयं ताव योजना – सो भगवा अरहं इति पि अरहं*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.79; **घ. वाक्य-विन्यास की किसी भी इकाई में सामान्य तथा प्रथम शब्द के उपरान्त प्रयुक्त**, भी – *दुस्सङ्गहा पब्बजितापि एके, अथो गहट्ठा घरमावसन्ता*, सु॰ नि॰ 43; *हत्थिपालो तायपि परिसाय आकासे ठत्वा धम्मं देसेसि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.439; **ङ. संख्यावाचक अथवा समुदायबोधक शब्दों के बाद में प्रयुक्त होने पर समग्रता या सम्पूर्णता का पुष्टिकारक**, सब मिलाकर, कुल मिलाकर – *मरन्ता उभोपि मरिस्साम*, जा॰ अट्ठ॰ 1.219; *अञ्ञथत्तं अट्ठ नेव पोत्थकेसुपि तीसु पि*, चू॰ वं॰ 37.241; **च.** संभवतः, शायद, हो सकता है कि मैं यह कह सकता हूं कि – *आयुञ्च वो कीवतको नु सम्म, सचेपि जानाथ वदेथ आयु*, जा॰ अट्ठ॰ 4.399; *अयं पब्बजित्वापि भरियं जहितुं न सक्कोती'ति, गरहिस्सन्ति मं*, जा॰ अट्ठ॰ 6.77; **छ.(1) प्रायः विधि के क्रि॰ रू॰ के पूर्व में प्रयुक्त** – *सिया खो पन भिक्खवे सत्थुगारवेनापि न पुच्छेय्याथ, सहायकोपि, भिक्खवे, सहायकस्स आरोचेतू'ति*, दी॰ नि॰ 2.116; *अयं मय्हं पुत्तानं पापकम्पि चिन्तेय्या'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.132; **छ.(2). कभी-कभी विधि; के क्रि॰ रू॰ के अनन्तर भी प्रयुक्त** *कुज्झेय्यपि मे अयं*, जा॰ अट्ठ॰ 4.32; *चण्डोयं राजा घातापेय्यापि मं*, महाव॰ 365; **छ.(3). भवि॰ के क्रि॰ रू॰ से पूर्व में प्रयुक्त** – *लक्खणेन अङ्केत्वा दासपरिभोगेनापि परिभुञ्जिस्सन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.433; *इदानि को जानाति, कित्तकापि आगमिस्सन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.473; **ज.** यद्यपि ... तथापि, रहते हुए भी – *अहं मनुस्सभूतोपि समानो तुम्हाकं गुणे न जानामि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.257; *एवं सन्तेपिस्स फलं तित्तकं जातं*, जा॰ अट्ठ॰ 2.86; *जानन्तो पि न सक्का'ति राजानं आह वङ्को*, म॰ वं॰ 30.32; **झ.** फिर भी, तो भी, कम से कम – *अप्पेव नाम पुत्तो सुदिन्नो तुय्हम्पि वचनं करेय्या'ति*, पारा॰ 18; *अप्पेवनाम स्वेपि उपसङ्कमेय्याम कालञ्च समयञ्च उपादाया'ति*, दी॰ नि॰ 1.181; **ञ.** प्रश्न-सूचक वाक्यों में, यहां तक कि ... भी – *को इमस्स उपगतस्स पिण्डकम्पि दस्सति*, चूळव॰ 23; पारा॰ 282; *भिक्खवे, अपि नायं अरिट्ठो भिक्खु गद्धबाधिपुब्बो उस्मीकतोपि इमस्मिं धम्मविनये'ति?*, म॰ नि॰ 1.186; **ट.** किसी कथानक की निरन्तरता बनाए रखने वाले सन्दर्भ में किसी नूतन उद्भावना या घटना का सूचक – *सत्थापि अन्तरामग्गे रञ्ञोयेव पिण्डपातं परिभुञ्जि, थेरोपि भत्तकिच्चावसाने दिवसे*, ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.96; *हंसराजापि अत्तनो वसनट्ठानमेव गतो*, जा॰ अट्ठ॰ 1.205; **ठ. पि ... पि** – चाहे ... चाहे, भले ही – *तंयेव वा पुरिमं रज्जसुखं समनुस्सरन्तो अरञ्ञगतोपि रुक्खमूलगतोपि सुञ्ञागारगतोपि अभिक्खणं उदानं उदानेसि*, चूळव॰ 319; *इत्थियापि पुरिसस्सापि नामम्पि गोतम्पि पुच्छितब्बं अहोसि*, म॰ नि॰ 2.198; **ड. पि ... पि न / ... नो पि**, प्रायः यदा एवं तदा निपा॰ के उपरान्त प्रयुक्त, जब भी ..., तब भी नहीं – *यदापि आसी असुरेहि सङ्गमो, जयो सुरानं असुरा पराजिता, तदापि नेतादिसो लोमहंसनो, किमब्भुतं दट्ठु मरु पमोदिता*, सु॰ नि॰ 686; *तयि मारेन्तिपि अमारेन्तेपि न सक्का अज्ज मया मरणा मुच्चितु'न्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.169; **ढ.(1) पि न, पि ... न / पि ... अ** ... यहां तक कि ... में भी नहीं – *मया न तादिसो खन्तिमेत्तानुद्दयसम्पन्नो मनुस्सेसुपि दिट्ठपुब्बो*, जा॰ अट्ठ॰ 1.155; *अस्सोपि ते नानुच्छविको*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.46; **ढ.(2). नापि, न ... न पि / न ... पि न तो** ... न ही – *इध कच्चो न हेव खो निमित्तेन आदिसति, नापि मनुस्सानं ... अपि च खो ... आदिसति*, दी॰ नि॰ 3.76; *न खो, भिक्खु, ... नापि ... उपादानं, यो खो*, ..., म॰ नि॰ 3.64; *इमे ते मनुस्सा नेव ञातका, न दासकम्मकरा, नापि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).303; **ण.(1). पि खो, खो** से पूर्व में

प्रयुक्त, वास्तव में, निश्चित रूप से – *एत्तावतापि खो, आवुसो, अरियसावको सम्मादिट्ठि होति,* म॰ नि॰ 1.59; *चिरम्पि खो तं खादेय्य, गद्रभो हरितं यवं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.91; **ण.(2).** **च** से पूर्व में प्रयुक्त, और ... (में) भी – *सरणेसु ठितो पञ्च सीले पि चापरे,* म॰ वं 25.110; *भद्दवग्गियपब्बज्जं जटिलानं दमनं पि च,* म॰ वं॰ 30.79; **ण.(3). पि ताव**, कम से कम, हर हालत में – *एत्थपि ताव दिस्सति ... च,* मि॰ प॰ 192; **ण.(4). पि नाम**, संभवतः ... भी – *एवम्पि नाम भवेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).91; *बहूनं वसनट्ठाने अफासुकम्पि नाम होति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.6; **ण.(5). पि रे**, अपमान, अवज्ञा या तिरस्कार पर जोर देने वाला – *चर पिरे विनस्सा'ति,* पाचि॰ 185; **त.** कभी-कभी पुनरुक्ति जैसा, अथवा – *हन्देहि दानि तरमानरूपो, दीघो हि अद्धापि अयं पुरत्था,* जा॰ अट्ठ॰ 7.198; **थ.(1).** कभी-कभी अपि या पि संवरणार्थक धातुओं या क्रि॰ ना॰ के पू॰ स॰ के रूप में भी प्रयुक्त – *यतो चायं गङ्गा नदी पभवति यत्थ च महासमुद्दं अप्पेति ...,* स॰ नि॰ 1(2).165; **थ.(2).** कभी कभी धारणार्थक √धा तथा उससे व्यु॰ शब्दों के पूर्व से प्रयुक्त – *गङ्गं मे पिदहिस्सन्ति, न तं सक्कोमि ब्राह्मण,* जा॰ अट्ठ॰ 5.53; *तमहं महासिन्धुं अपिधेतुं न सक्कोमि,* तदे॰; **थ.(3).** √नह या लुह तथा उससे व्यु॰ शब्दों से पूर्व में प्रयुक्त – *अपिलटह मञ्जरिन्ति सपल्लवं असोककण्णिकं कण्णे पिळिन्धित्वाति वुत्तं होति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.396.

अपिण्डपातिक त्रि॰, पिण्डपातिक का निषे॰ [अपिण्डपातिक], 'पिण्डपातिक' भिक्षुसमूह से भिन्न समूह वाला भिक्षु, भिक्षाटन कर भोजन ग्रहण न करने वाला भिक्षु – *किं पन अपिण्डपातिकानं अयं नयो न लब्भतीति,* उदा॰ अट्ठ॰ 164.

अपिण्डित त्रि॰, √पिण्ड के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपिण्डित], पिण्ड के आकार को अप्राप्त, एक साथ मिलाकर पिण्ड का एक गोला न बनाया हुआ – *... अनुत्तण्डुलं अकिलिन्नं अपिण्डितं सुविसदं, ... पक्खिपितब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.256.

अपितिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अपितृक], बिना पिता वाला, पिता से रहित – *अमातिको अपितिको, रुक्खमूलस्मि झायती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.240.

अपिदहन नपुं॰, पिदहन का निषे॰ [पिधान], अनाच्छादन, अनियन्त्रण, असंयम – *... यो असंवरो, अथकनं अपिदहनन्ति अत्थो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 421.

अपिधान नपुं॰, [अपिधान], आच्छादन, ढक्कन – *अपिधानं निपतति,* महाव॰ 278-79; *तिणचुण्णेहिपि पंसुकेहिपि ओकिरिय्यति ... पे॰ ..., ... अपिधानन्ति,* चूळव॰ 241; *पस्सावकुम्भी आपरुता दुग्गन्धा होति ... अपिधानन्ति,* चूळव॰ 262.

अपिधीयति अपि + √धा के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, ढक दिया जाता है, आच्छादित कर दिया जाता है, अदृश्य बना दिया जाता है – *नवेन सुखदुक्खेन, पोराणं अपिधीयति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.130; *पोराणं अपिधीयतीति, ..., नवेन हि सुखेन पोराणं सुखं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.130.

अपिधेतुं अपि + √धा का निमि॰ कृ॰, ढक देना, आच्छादित कर देना – *अपिधेतुं महासिन्धुं, तं कथं सो भविस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.53; *तमहं महासिन्धुं अपिधेतुं न सक्कोमि,* तदे॰.

अपिरत्ते अ॰, सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [वै॰ अपिरात्रे], तड़के, बहुत सबेरे, ऊषा-काल में, प्रत्यूष वेला में – *अपि रत्तेव मे मनोति अपि बळवपच्चूसे सुपिनं पस्सन्तिया विय मे मनो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.336.

अपिळद्ध / अपिळन्ध त्रि॰, पिळद्ध का निषे॰ [अपिनद्ध], **शा॰ अ॰** न छेदा हुआ, न ढका हुआ, अनाच्छादित, **ला॰ अ॰** अनलंकृत, असुसज्जित, नहीं सजाया हुआ *अपिळन्धाव सोभसीति त्वं इमेहि अलङ्कारेहि अनलङ्कतापि अतनो रूपसम्पत्तियाव सोभसि,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 137.

अपिलद्धपुब्ब / अपिळन्धपुब्ब त्रि॰, ब॰ स॰ [अपिनद्धपूर्व], वह अलङ्करण, जिसके द्वारा किसी को पूर्वकाल में अलङ्कृत नहीं किया गया हो – *यथा च पकतिया अपिळन्धपुब्बं मालं पिळन्धित्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 261.

अपिळन्धन नपुं॰, संभवतः अपि + √नह या ळह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, अट्ठ॰ के अनुसार पिळन्धन का निषे॰, अलङ्करण के लिए अनुपयुक्त अलङ्कार – *दहरा वियलङ्कारं, धारेति अपिळन्धनं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.303; *अपिळन्धनन्ति पिळन्धितुं अयुत्तं अलङ्कारं धारेति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.303; *वातस्स वेगेन च सम्पकम्पिता, भुजेसु माला अपिळन्धनानि च,* वि॰ व॰ 1032; *रथस्स घोसो अपिळन्धनान च, खुरस्स नादो अभिहिसंनाय च,* वि॰ व॰ 1024; *अपिळन्धनान चाति अकारो निपातमत्तं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 233-34.

अपिळय्ह अपि + √नह का पू॰ का॰ कृ॰ [अपिनह्य], बांध कर, अन्तर्जटित कर, पहन कर – *ओसित्तवण्णं परिदय्ह सोभसि, कुसग्गेरत्तं अपिळय्ह मञ्जरिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.396; *अपिलय्ह मञ्जरिन्ति सपल्लवं असोकमञ्जरिं कण्णे पिळन्धित्वाति वुत्तं होति,* तदे॰.

अपिलाप पु॰, √पिळु से व्यु॰, पिलाप का निषे॰ अथवा अपि + √लप से व्यु॰ [अप्लाव / अपिलाप], **शा॰ अ॰** नहीं बहना,

बहाव का अभाव, छलांग-रहित, **ला॰ अ॰** अविस्मरण, नहीं भूल जाना, पुनः पुनः बोलना - *अपिलापे करोति अपिलापेति,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(1).155.

अपिलापन नपुं॰, √पिळु के प्रेर॰ से व्यु॰ पिलापन का निषे॰ अथवा अपि + √लप से व्यु॰ [अप्लावन], **शा॰ अ॰** बाढ़ या जल-प्रलय में निमग्न नहीं हो जाना या डूब न जाना, बार-बार दुहराना **ला॰ अ॰** अविस्मरण, नहीं भूल जाना, अप्रभोष - *अपिलापनं असम्मोसो निमुज्जित्वा विय आरम्मणस्स ओगाहणे वा,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 220; *सा पजाननट्ठेन पञ्ञा, यथादिट्ठं अपिलापनट्ठेन सति,* नेत्ति॰ 15; *आरम्भट्ठेन वीरियं अपिलापनट्ठेन सति अविक्खेपट्ठेन समाधि, पजाननट्ठेन पञ्ञा,* नेत्ति॰ 45; - **किच्च** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अविस्मरण का कृत्य, नहीं भूल जाने का कार्य, स्मृति को जागृत रखने की क्रिया - *सतिया च अपिलापनकिच्चं साधेन्तिया लद्धूपकारो हुत्वा सक्कोति,* विभ॰ अट्ठ॰ 84; - **ता** स्त्री॰, अपिलापन का भाव॰ [अप्लावनता], अविस्मरण की अवस्था, नहीं भूल जाना, अविप्रमोष, स्मृति की जागरूकता - *सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति,* ध॰ स॰ 14; 23; 290; *तेनेव सद्धा ओकप्पनाति वुत्ता, सति अपिलापनताति, समाधि अवट्ठितीति, पञ्ञा परियोगाहनाति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 188; - **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰, उपरिवत् - *अनुपविसनसङ्खातेन ओगाहनट्ठेन अपिलापनभावो अपिलापनता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 191; - **रस** त्रि॰, ब॰ स॰, विस्मृत न कर देने का कार्य करने वाला, वह, जिसका कार्य स्मृति को विलुप्त न होने देना है - *इमे चत्तारो सतिपट्ठाना'ति वित्थारो, अपिलापनरसा, किच्चवसेनेव हिस्स एतं लक्खणं थेरेन वुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).90; - **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्लावनलक्षण], वह, जिसका लक्षण स्मृति को मिटाना या धुंधला करना न हो - *अपिलापनलक्खणा सति, तस्सा सतिपट्ठानं पदट्ठानं,* नेत्ति॰ 25; *सा पनेसा उपट्ठानलक्खणा, अपिलापनलक्खणा वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).89; *अपरो नयो – अपिलापनलक्खणा सति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 167.

अपिलापिस पु॰, व्य॰ सं॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम - *छळासीतिम्हितो कप्पे, अपिलासिसनामको,* अप॰ 1.209.

अपिलापेति प + √लप के प्रेर॰ के वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ का निषे॰ [अप्रलापयति / अभिलापयति], **शा॰ अ॰** छिपाकर नहीं रखवाता है, टालमटोल नहीं कराता है, बार-बार दुहराता है; **ला॰ अ॰** विलुप्त नहीं होने देता है, भुलाने नहीं देता है, स्मृति में ला देता है - *सति कुसले धम्मे अपिलापेति – इमे चत्तारो सतिपट्ठाना,* ..., ध॰ स॰ अट्ठ॰ 166; *सति उप्पज्जमाना कुसलाकुसलसावज्जानवज्जहीनपणीतकण्हसुक्कसप्पटिभागधम्मे अपिलापेति,* मि॰ प॰ 35.

अपिवन्तियो स्त्री॰, √पा के वर्त॰ कृ॰ का प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, (पिबन्तियो) का निषे॰ [अपिबन्त्यः], नहीं पी रहीं, जल का पान न ही कर रहीं - *यथा ता तिणं अखादन्तियो पानीयं अपिवन्तियो सयन्ति, तथा सयन्तीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.18.

अपिसुण त्रि॰, पिसुण का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अपिशुन], **शा॰ अ॰** चुगली न करने वाला, **ला॰ अ॰** चुगलखोरी से रहित, सज्जन, निष्ठावान् व्यक्ति - *नानुम्मत्तो नापिसुणो, नानये नाकुतूहलो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.347; *नापिसुणोति एत्थापि यो पिसुणो होति,* तदे॰; *अपिसुणं वाचं निस्साय पिसुणा वाचा पहातब्बा'ति,* म॰ नि॰ 2.26.

अपिह त्रि॰, पिहा का निषे॰, ब॰ स॰ [अस्पृह], स्पृहा या इच्छा से रहित, कामनाओं से मुक्त - *अपिहा नूनं मयिपि, वनथो तेन विज्जति,* थेरगा॰ 338; - **नसील** त्रि॰, ब॰ स॰ [अस्पृहणशील], स्वभाव से ही लोभ-लालच से मुक्त, स्वभाव से ही कामनाओं से रहित - *अपिहालूति अपिहनसीलो, पत्थनातण्हाय रहितोति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.241.

अपिहा स्त्री॰, पिहा का निषे॰ स॰ [अस्पृहा], कामना या तृष्णा का अभाव - *अपिहा नूनं मयिपि, वनथो ते न विज्जति,* थेरगा॰ 338; - **गिध** त्रि॰, ब॰ स॰ [अस्पृहगृध], ईर्ष्या, द्वेष एवं लोभ-लालच से रहित, राग और द्वेष से मुक्त चित्त वाला - *विचरन्तं तमद्दक्खिं पिण्डत्थं अपिहागिधं,* अप॰ 2.126; - **लु** त्रि॰, [अस्पृहालु], अत्यधिक तृष्णा या आसक्ति को न रखने वाला - *अपिहालूति अपिहनसीलो, पत्थनातण्हाय रहितोतिवुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.241; *पतिलीनो अकुहको, अपिहालु अमच्छरी,* सु॰ नि॰ 858; *दब्बो चिररत्तसमाहितो, अकुहको निपको, अपिहालु,* स॰ नि॰ 1(1).217; - **लुक** त्रि॰, अपिहालु से व्यु॰, उपरिवत् - *तेन अलङ्करणेन अनपेक्खणसीलो, अपिहालुको, नित्तण्हो, विभूसनट्ठाना विरतो सच्चवादी एको चरेति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.89.

अपिहित[1] त्रि॰, पिहित का निषे॰ [अपिहित], खुला हुआ, नहीं वर्जित, नहीं बन्द किया हुआ - *अनोवटोति अपिहितो अवारितो अप्पटिक्खित्तो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 58; - **द्वारता** स्त्री॰, भाव॰, द्वारों का खुला हुआ होना, द्वारों का बन्द न रहना - *अनावटद्वारतायाति अपिहितद्वारताय,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.126.

अपिहित[2] त्रि., आ + अपि + √धा से व्यु. [आपिहित], बन्द, अवरुद्ध - *सब्बे अपिहिता द्वारा, ओरुद्धोस्मि यथा दिजो,* जा. अट्ठ. 4.4; *अपिहिताति थकिता,* तदे..

अपीठसप्पी त्रि., पीठसप्पी का निषे. [अपीठसर्पिन्], वह, जो लंगड़ा लूला या विकलाङ्ग नहीं है, अविकलाङ्ग - *तात तेमियकुमार, मयं तव अपीठसप्पिआदिभावं जानाम,* जा. अट्ठ. 6.9.

अपीत त्रि., √पा के भू. क. कृ. पीत का निषे. [अपीत], नहीं पिया हुआ, शुद्ध - *अञ्ञेहि मिगेहि पठमतरं अपीतानि अनुच्छिट्ठोदकानि,* जा. अट्ठ. 3.383; **पुब्ब** त्रि., ब. स. [अपीतपूर्व], वह जल, जिसे पूर्वकाल में नहीं पिया गया है, पहले कभी न पिया गया - *अपीतपुब्बानि च पाणीयानि पिवेय्य'न्ति,* अ. नि. 3(1).225.

अपीळियमान त्रि., √पीळ के कर्म. वा. का वर्त. कृ. [अपीड्यमान], पीड़ा द्वारा पीड़ित नहीं किया जा रहा - *अपरापरं परिवत्तनं अकरोन्तो अपीळियमानो अदुक्खियमानो विय अधिवासेसि,* उदा. अट्ठ. 325; *अविहञ्ञमानोति अपीळियमानो, सम्परिवत्तसायिताय वेदनानं वसं अगच्छन्तो,* स. नि. अट्ठ. 1.71.

अपुच्चण्डता स्त्री., भाव. [अपूत्यण्डता], **शा. अ.** सड़े गले अण्डे की अवस्था में न रहना, **ला. अ.** स्वस्थ मानसिक स्थिति - *अपुच्चण्डताय समापन्नो, भब्बो अभिनिब्भिदाय, भब्बो सम्बोधाय,* म. नि. 2.21; *अपुच्चण्डतायाति अपूतिअण्डताय,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.23.

अपुच्छित त्रि., √पुच्छ के भू. क. कृ. पुच्छित का निषे., नहीं पूछा गया, अयाचित, अप्रार्थित - *अनानुपुट्ठोति अपुच्छितो,* सु. नि. अट्ठ. 2.216; *अनानुपुट्ठोति अपुट्ठो अपुच्छितो अयाचितो अनज्झेसितो अपसादितो,* महानि. 48.

अपुच्छितब्ब त्रि., √पुच्छ के सं. कृ., पुच्छितब्ब का निषे. [अपृष्टव्य], नहीं पूछने योग्य, प्रश्न करने हेतु अनुपयुक्त - *महाराज, विसज्जको अत्थी'ति अपुच्छितब्बं पुच्छि, किस्स आकासो निरालम्बो,* मि. प. 272.

अपुञ्ञ 1. त्रि., ब. स., कलुषित व्यक्ति, पाप करने वाला, पापमय, पुण्य या कुशल कर्मों से रहित *अपुञ्ञं चे सङ्खारं अभिसङ्खरोति,* स. नि. 1(2).74; *अपुञ्ञं चे सङ्खारन्ति द्वादसचेतनाभेदं अपुञ्ञाभिसङ्खारं अभिसङ्खरोति,* स. नि. अट्ठ. 2.69; 2. नपुं., निषे. स. [अपुण्य], पाप कर्म, अकुशल कर्म *अपुञ्ञाकुसलं कण्हं कलुसं दुरितागु च,* अभि. प. 84; *अपुञ्ञं वुच्चति सब्बं अकुसलं,* महानि. 64; *बहुञ्च त्वं देवते, अपुञ्ञं पसवेय्यासि,* पाचि. 52; - **कर** त्रि., उप. स. [अपुण्यकृत्], पुण्यकर्म न करने वाला, अकुशल कर्मों को करने वाला - *अप्पस्सुतापुञ्ञकरो, अप्पस्मिं इध जीविते,* इतिवु. 44; *अपुञ्ञकरोति ततो एव अरियधम्मस्स अकोविदताय किब्बिसकारी पापधम्मो,* इतिवु. अट्ठ. 193; **किरिया** स्त्री., कर्म. स. [अपुण्यक्रिया], पुण्य न देने वाला कर्म, स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त; - **वत्थूनि** नपुं., प्र. वि., ब. व., अपुण्य कराने वाले प्राणि-हत्या आदि दस प्रकार के दुराचार - *अपुञ्ञकिरियवत्थूनि दस होन्तीति दीपये,* सद्धम्मो. 54; - **ता** स्त्री., अपुञ्ञ का भाव. [अपुण्यता], पुण्य कर्मों को न करने की अवस्था, पापमयता - *अप्पपुञ्ञताति अपुञ्ञता अकतकल्याणता,* पे. व. अट्ठ. 236; - **पटिपदा** स्त्री., कर्म. स., दुराचार का मार्ग, पापमय मार्ग - *निरयं पापकम्मन्ता'ति अपुञ्ञप्पटिपदा, ... तत्थ या च पुञ्ञप्पटिपदा या च अपुञ्ञप्पटिपदा ...,* नेत्ति. 79; - **भागिय** त्रि., अपने पाप कर्मों के अनुरूप रहने वाला - *दुच्चरितपारिपूरिया अपाये निब्बत्तस्स अत्तभावो अपुञ्ञभागियो नाम,* अ. नि. अट्ठ. 3.137; *वेदियमानो तज्जं तज्जं अत्तभावं अभिनिब्बत्तेति पुञ्ञभागियं वा अपुञ्ञभागियं वा,* अ. नि. 2(2).116; - **लाभ** पु., तत्पु. स. [अपुण्यलाभ], अकुशल कर्मों के फलस्वरूप नरक आदि में पुनर्जन्म के रूप में अकुशल-विपाक का लाभ - *अपुञ्ञलाभं न निकामसेय्यं, निन्दं ततीयं निरयं चतुत्थं,* ध. प. 309; *अपुञ्ञलाभन्ति अकुसललाभं,* ध. प. अट्ठ. 2.275; *अपुञ्ञलाभो च गती च पापिका, भीतस्स भीताय रती च थोकिका,* ध. प. 310; *अपुञ्ञलाभो चाति एवं तस्स अयञ्च अपुञ्ञलाभो, तेन च अपुञ्ञेन निरयसङ्खाता पापिका गति होति,* ध. प. अट्ठ. 275; - **वन्तु** त्रि., [अपुण्यवत्], पुण्यों का संग्रह न करने वाला, पुण्यकर्म न करने वाला, पापी - *... पुञ्ञवन्तं वा अपुञ्ञवन्तं वा ब्रह्मचरियवन्तं वा अब्रह्मचरियवन्तं वा ... पब्बाजेतुं वा'ति,* म. नि. 2.338; - **वत्थु** नपुं., कर्म. स., अपुण्य कर्म या अकुशलकर्म, पुण्यरहित प्राणातिपात आदि दस अकुशलधर्म - *दस चापुञ्ञवत्थूनि यथा फलवसेन हि,* सद्धम्मो. 75; - **ञ्ञाभिसङ्खार** पु., तत्पु. स. [अपुण्याभिसंस्कार], अकुशल कर्मों का समुच्चय या राशि, अकुशल कर्मों का चेतना द्वारा अभिसंस्करण - *तयो सङ्खारा-पुञ्ञाभिसङ्खारो, अपुञ्ञाभिसङ्खारो, आनेञ्जाभिसङ्खारो,* दी. नि. 3.174; *अपुञ्ञो च सो अभिसङ्खारो चाति अपुञ्ञाभिसङ्खारो,* दी. नि. अट्ठ. 3.164; *... न अपुञ्ञाभिसङ्खारं अभिसङ्खरोति न आनेञ्जाभिसङ्खारं अभिसङ्खरोति,* स. नि.

1(2).74; – **ञ्ञायतन** नपुं., तत्पु. स. [अपुण्यायतन], अपुण्य का आगमन-द्वार, अपुण्य की आधार-स्थली – *एतं अपुञ्ञायतनं विवज्जये, उम्मादनं मोहनं बालकन्तं,* सु. नि. 401; – **ञ्ञूपग** त्रि., उप. स. [अपुण्योपग], अपुण्य कर्म के विपाक के समीप पहुंच रहा, अकुशल विपाक को कर रहा – *अपुञ्ञूपगं होति विञ्ञाणं,* स. नि. 1(2).74.

अपुट्ठ त्रि., √पुच्छ के भू. क. कृ. पुट्ठ का निषे. [अपृष्ट], नहीं पूछा हुआ, वह, जिसे किसी ने पूछा नहीं है – *अपुट्ठोति मूलपदं, तस्स अपुच्छितोति अत्थो,* महानि. अट्ठ. 155.

अपुत्त पु., निषे. तत्पु. स. [अपुत्र], वह, जो पुत्र नहीं है, पुत्र से भिन्न कोई और – *अपुत्तं पुत्तं इव आचरति पुत्तीयति सिस्सं आचरियो,* सद्द. 2.587; – **क¹** त्रि., ब. स. [अपुत्रक], पुत्ररहित, बिना पुत्रों वाला – ... *राजा अपुत्तको हुत्वा अत्तनो इत्थियो पुत्तपत्थनं करोथा'ति आह,* जा. अट्ठ. 2.272; *तं अपुत्तको सेट्ठि तस्स मातापितूनं धनं दत्वा पुत्तं कत्वा अग्गहेसि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).284; *सो हि राजकुमारो अपुत्तको, सुतञ्चानेन अहोसि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.229; – **क²** पु., व्य. सं., एक व्यापारी का नाम – *हनन्ति भोगाति इमं धम्मदेसनं ... विहरन्तो अपुत्तकसेट्ठिं नाम आरब्भ कथेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.325; – **त्तिका** स्त्री., बिना पुत्रों वाली स्त्री – *दुग्गताहं पुरे आसिं, विधवा च अपुत्तिका,* थेरीगा. 122; *सा पन अपुत्तिका, तेनस्सा थञ्ञं नत्थि,* जा. अट्ठ. 5.425; – **कं** नपुं., प्रायः सापतेय्यं के विशे. के रूप में प्रयुक्त, उत्तराधिकारी-रहित, वारिस रहित – *मा नो अपुत्तकं सापतेय्यं लिच्छवयो अतिहरापेसुं'न्ति,* पारा. 18; *मा नो अपुत्तकं सापतेय्यं लिच्छवयो अतिहरापेसुन्ति मयञ्हि लिच्छवीनं गणराजूनं रज्जे वसाम,* पारा. अट्ठ. 1.163; – **कता** स्त्री., भाव. [अपुत्रकता], पुत्रहीनता, सन्तानरहितता, निपूतापन, वंशोच्छेद – *अपुत्तकताय पटिपन्नो समणो गोतमो,* महाव. 48; – **भाव** पु., किसी के पुत्र या वारिश न होने की दशा – *अथ नं विनिच्छयं नेत्वा अपुत्तभावं कत्वा नीहरापेसि,* जा. अट्ठ. 5.464; – **सुत्त** नपुं., स. नि. के दो सुत्तों के शीर्षक, स. नि. 1(1).107-109; तथा 109-111; – **सेट्ठिवत्थु** नपुं., ध. प. अट्ठ. के एक कथानक का शीर्षक, ध. प. अट्ठ. 2.325-327.

अपुथुज्जनसेवित त्रि., पुथुज्जनसेवित का निषे. [अपृथग्जनसेवित], सामान्य अज्ञानी जनों द्वारा नहीं अपनाया गया, अज्ञानियों द्वारा अगृहीत *अकम्पियं अतुलियं, अपुथुज्जनसेवितं,* थेरीगा. 201.

अपुनगेय्य त्रि., पुनगेय्य का निषे. [अपुनर्गेय], फिर दुबारा न दुहराने योग्य अथवा न पाठ करने योग्य – *बहुलाधिकारतो असमत्थेहि पि केहिचि होति – अपुनगेय्या गाथा,* मो. व्या. 3.12.

अपुनप्पुनं अ., अकार निपातमात्र, नहीं बारम्बार, नहीं और आगे – *नाहं पुनं न च पुनं, न चापि अपुनप्पुनं,* जा. अट्ठ. 1.479; *तत्थ न चापि अपुनप्पुनन्ति अकारो निपातमत्तो,* जा. अट्ठ. 1.480.

अपुनब्भव पु., पुनब्भव का निषे. [अपुनर्भव], **शा. अ.** पुनर्जन्म का अभाव, **ला. अ.** पूर्ण विमुक्ति, निर्वाण – *ते दुत्तरं ओघमिमं तरन्ति, अतिण्णपुब्बं अपुनब्भवाया'ति,* सु. नि. 275; *ये च नं विनोदेन्ति, ते दुत्तरं ओघमिमं तरन्ति अतिण्णपुब्बं अपुनब्भवाय,* सु. नि. अट्ठ. 2.37; *मग्गञ्च लद्धा अपुनब्भवाय, न पुनप्पुनं जायति भूरिपञ्ञो'ति,* स. नि. 1(1).203; ... *अपुनब्भवायाति अपुनब्भवाय मग्गो नाम निब्बानं तं लभित्वाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 1.227; – **भूत** त्रि., [अपुनर्भवभूत], पुनर्जन्म से रहित, पुनर्जन्म न लाने वाला – *अभिनिब्बत्ति च नाम यस्मा पुनब्भवभूतापि अपुनब्भवभूतापि,* पारा. अट्ठ. 1.100; अ. नि. अट्ठ. 3.202.

अपुनरावत्ती त्रि., पुनरावत्ती का निषे. [अपुनरावर्तिन्], गृहस्थ जीवन / सांसारिक जीवन में पुनः वापस न लौटने वाला – *गिही येव ... यदा अपुनरावत्ति होति तदा सो पब्बाजेतब्बो,* मि. प. 231; – **त्तिता** स्त्री., अपुनरावत्ति का भाव., गृही जीवन में पुनः वापस न लौटना, गृही या सांसारिक जीवन के प्रति अनासक्तिभाव – *अगेधता निरालयता चागो पहानं अपुनरावत्तिता सुखुमता ... बुद्धधम्मस्स,* मि. प. 257; – **गमनदीपनीयमकगाथा** स्त्री., जिना. के एक गाथासमुच्चय का शीर्षक, जिना. (12) 78-86.

अपुनागमन नपुं., पुनागमन का निषे. [अपुनरागमन], **शा. अ.** इस लोक में पुनः नहीं आना, पुनर्जन्म का न होना, वापस न लौटना, **ला. अ.** निर्वाण – *येसु पमत्तो अपुनागमनं, अनागतो पुरिसो मच्चुधेय्या'ति,* स. नि. 1(1).26; *अपुनागमनं ... तेभूमकवट्टसङ्खाता मच्चुधेय्या अपुनागमनसङ्खातं निब्बानं अनागता,* स. नि. अट्ठ. 1.57.

अपुप्फित त्रि., पुप्फित का निषे. [अपुष्पित], फूलों को धारण न किया हुआ, नहीं फूला हुआ – **ट्ठान** नपुं., [अपुष्पित स्थान], ऐसा स्थान, जहां पुष्प फूले न हों – *मूलतो पट्ठाय याव अग्गा अपुप्फितट्ठानं नाम नत्थि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).148.

अपुब्ब त्रि॰, ब॰ स॰ [अपूर्व], एकदम नया, सर्वथा अभिनव, जो पहले स्थित नहीं था - *सलाकग्गं च पासादं अपुब्बं येव कारयि,* चू॰ वं॰ 49.32; *महाधातुकथायं अपुब्बं नत्थि अप्पमत्तिकाव तन्ति अवसेसा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 5; *एवमत्थन्तिआदीसुपि अपुब्बं नत्थि अनन्तरसुत्ते वुत्तनयेनेव वेदितब्बं,* उदा॰ अट्ठ॰ 352; - **पदवण्णना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अपूर्वपदवर्णन], पूर्व में अप्राप्त या अव्याख्यात पदों की व्याख्या - *अयं ताव चतूसु अभिभायतनेसु अपुब्बपदवण्णना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 233; *अयमेत्थ अपुब्बपदवण्णना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 236; *अभिसम्बुद्धोति वदामीति एत्थ अपुब्बपदवण्णनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).51; *तेस दानि करिस्सामि, अनुपुब्बपदवण्णनं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.198; **ब्बानुत्तानपदवण्णना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, पूर्व में अव्याख्यात अस्पष्ट पदों का वर्णन या व्याख्या - *अपुब्बानुत्तानपदवण्णनामत्तमेव हि इतो परं करिस्साम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).205; - **ब्यपुम** त्रि॰, पुम का निषे॰, पुलिङ्ग से भिन्न लिङ्ग वाला, स्त्रीलिङ्ग अथवा नपुं॰ लिङ्ग वाला - *अनुक्कमो परियायो अनुपुब्ब्यपुमे कमो,* अभि॰ प॰ 429.

अपुरक्खत त्रि॰, पुर + √कर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अपुरस्कृत], **शा॰ अ॰** आगे या सामने नहीं रखा गया, **ला॰ अ॰** 1. वह, जिस पर विशेष ध्यान न दिया गया हो, उपेक्षित, तृष्णा अथवा मिथ्या दृष्टि से सर्वथा अप्रभावित - *तं तस्स अपुरक्खतं, तस्मा वादेसु नेजति,* सु॰ नि॰ 865; *न तण्हाय वा न दिट्ठिया वा परिवारितो चरतीति तं तस्स अपुरक्खतं,* महानि॰ 182; *तं रागादिवज्जं तस्स अरहतो अपुरक्खतं,* महानि॰ अट्ठ॰ 281; **ला॰ अ॰ 2.** अप्रभावित, अनभिभूत, तटस्थ - *तस्मा विनेय्य सारम्भं, झायेय्य अपुरक्खतो'ति,* थेरगा॰ 37; *कप्पाकप्पेसु कुसलो, चरेय्य अपुरक्खतो'ति,* थेरगा॰ 251.

अपुराण त्रि॰, पुराण का निषे॰ [अपुराण], वह, जो पुराना न हो, नया, अभिनव; - **णं** नपुं॰, *अपोराणं वत भो राजा, सब्बभुम्मो दिसम्पति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.52; - **वण्णी** त्रि॰, वृद्ध व्यक्ति जैसा स्वरूप न रखने वाला, तरुण या नवयुवक सा दिखने वाला - *अमरसुजातो अपुराणवण्णी, आधाररूपञ्च पनस्स कण्ठे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.192.

अपुरे अ॰, पुरे निपा॰ का निषे॰, नहीं सामने, नहीं आगे, नहीं पूर्वकाल में, नहीं पहले - *अपुब्बं अचरिमन्ति अपुरे अपच्छा एकतो नुप्पज्जन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.73; *अपुब्बं अचरिमन्ति अपुरे अपच्छा एकक्खणेयेव,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.151.

अपुरेक्खरान पुरे + √कर के आत्मने॰, वर्त॰ कृ॰, पुरेक्खरान का निषे॰ [अपुरस्कुर्वत्], **शा॰ अ॰** सामने या आगे न करता हुआ, विशेष ध्यान न देता हुआ, विशेष महत्व न देता हुआ, **ला॰ अ॰** उपेक्षा कर रहा, अप्रभावित हो रहा - *कामेहि रित्तो अपुरेक्खरानो, कथं न विग्गय्ह जनेन कयिरा,* खु॰ नि॰ 850; *अपुरेक्खरानोति आयतिं अत्तभावं अनभिनिब्बत्तेन्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.238; *एवं खो, गहपति, अपुरेक्खरानो होति,* महानि॰ 146; *अपुरेक्खरानोति वट्टं पुरतो अकुरुमानो,* महानि॰ अट्ठ॰ 248.

अपूजनीय त्रि॰, √पूज के सं॰ कृ॰, पूजनीय का निषे॰ [अपूजनीय], पूजा अथवा सम्मान-सत्कार न पाने योग्य, उपेक्षा करने योग्य, स्वीकार न करने योग्य, ग्रहण न करने योग्य - *तस्मा तादिसी सद्दरचना अपूजनीया,* सद्द॰ 1.54; *तत्थ अपूजन्ति अपूजनीयं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.71.

अपूति त्रि॰, पूति का निषे॰ [अपूति], वह, जो दुर्गन्ध-युक्त अथवा सड़ा-गला न हो, सुदृढ़, ठोस, पवित्र *पञ्च बीजजातानि अखण्डानि अपूतिकानि अवातातपहतानि सारादानि सुखसयितानि,* स॰ नि॰ 2(1).50; *अपूतिकानीति उदकतेमनेन अप्पूतिकानि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.241; - **अण्डता** स्त्री॰, अपूतिअण्ड का भाव॰, **शा॰ अ॰** अण्डे की सड़ा-गला न रहने वाली दशा, **ला॰ अ॰** सामान्य स्थिति, स्वस्थ उद्भव, स्वस्थता - *अपुच्चण्डतायाति अपूतिअण्डताय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.23; - **क** त्रि॰, अपूति से व्यु॰ [अपूतिक], स्वच्छ, पवित्र, दुराचार से मुक्त, दुर्गन्ध एवं सड़न-गलन से रहित - *होति बलवं बन्धनं, दळ्हं बन्धनं, थिरं बन्धनं, अपूतिकं बन्धनं, थूलो, कलिङ्गरो,* म॰ नि॰ 2.121; *गम्भीररूपो ते वणो सलोहितो, अपूतिको वणगन्धो महा च, ... अपूतिकोति पूतिमंसरहितो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.189; - **कायकम्मन्त** त्रि॰, ब॰ स॰, विशुद्ध या पवित्र कायकर्म करने वाला - *तस्स अपूतिकायकम्मन्तस्स अपूतिवचीकम्मन्तस्स अपूतिमनोकम्मन्तस्स भद्दकं मरणं होति, ...,* अ॰ नि॰ 1(1).296.

अपूप / पूव पु॰, [अपूप / पूप], पुआ, पिट्ठा - *अथो सत्तु च गन्धो च पूपा पुपा तु पिट्ठको,* अभि॰ प॰ 463; *मंसोदनं, सप्पिपायासं भुञ्ज, खादस्सु च त्वं मधुमासपूवे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.19; - **खादन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अपूपखादन], पुए का खाना, पुए का भोजन करना - *आपूपिको'ति एत्थ अपूपसद्देन अपूपखादनं विय ...,* सारत्थ॰ टी॰ 1.71; - **जाति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, एक प्रकार का पुआ, पुए का एक प्रभेद; - **तीहि**

तृ. वि., ब. व. - *नानग्गरसभत्तेहि नानग्गापूपजातीहि,* चू. वं. 85.115; - **भक्खणसील / भक्खसील** त्रि., ब. स. [अपूपभक्षणशील], पुए खाने का शौकीन - *यथा अपूपभक्खनसीलो आपूपिको,* अ. नि. टी. 2.210; *अथ वा सीलद्वेन इक-सद्देन गमियत्थत्ता किरियावाचकस्स सद्दस्स अद्दस्सनं दट्ठब्बं यथा अपूपभक्खनसीलो आपूपिको ति,* विभ. मू. टी. 68.

अपूरणीयभाव पु., [अपूरणीयभाव], कभी भी संतुष्ट न होने की प्रकृति, अपूरणीयता, असन्तुष्टिभाव - *एवं तण्हाय अपूरणीयभावं जानाहीति दीपेति,* जा. अट्ठ. 4.101.

अपूरेसि √पूर का अद्य., प्र. पु., ए. व., भर दिया, भरपूर कर दिया - *खिप्पं पत्तं अपूरेसि, सम्पजानो पटिस्सतो,* सु. नि. 415; **अपूरयिं** उ. पु., ए. व. - *पसन्नचित्तो सुमनो पानीघटमपूरयिं,* अप. 2.77.

अपेक्ख / अपेख त्रि., ब. स., अपेक्षा रखने वाला, इच्छा करने वाला, ध्यान में रखने वाला, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त.

अपेक्खक त्रि., अप + √इक्ख से व्यु., *व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त* [अपेक्षक], संज्ञा अथवा विशे. की अपेक्षा रखने वाला पद - *विसेसकपदानन्तु अपेक्खकपदानि च,* सद्द. 1.74; *एवं विसेसपदापेक्खकानि भवन्ति,* सद्द. 1.75; - **त्त** नपुं., भाव. [अपेक्षकत्व], अपेक्षा करना, निर्भर होना, सापेक्ष रहना - *गहपति-धम्मानं अपेक्खकत्तं तेसन्ति निट्ठं एत्थावगन्तब्बं,* सद्द. 1.230.

अपेक्खता स्त्री., भाव., केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, उपरिवत् - *हसापेक्खतायपि नाम दवकम्यताय वा मुसावादं अकरणसासने पब्बजित्वा,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.30.

अपेक्खते अप + √इक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व., आत्मने. [अपेक्षते], आशा करता है, इच्छा करता है, अपेक्षा करता है, आसक्ति या लगाव रखता है - *कामेसु नापेक्खते चित्तं, यस्स सत्तस्स सुद्धतं,* सु. नि. 437; - **ति** उपरिवत् पर. - *आलयकरणवसेन अपेक्खतीति अपेक्खा,* ध. स. अट्ठ. 391; - **क्खानो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - *साहं धम्मं अपेक्खानो, धम्मा चत्थं समुट्ठितं,* जा. अट्ठ. 5.334; - **मानो** उपरिवत् - *एकोव तिब्बानि सहेय्य धीरो, सच्चं हिरोत्तप्पमपेक्खमानो ति,* जा. अट्ठ. 4.202; *अत्थि च मे हिरी ओत्तप्पन्ति ... अपेक्खमानोव अञ्ञस्स ... धीरोति,* जा. अट्ठ. 4.203; - **माना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *पतिमानेन्तीति अपेक्खमाना,* पाचि. अट्ठ. 163; - **न्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - *अपेक्खानोति अपेक्खन्तो,* जा. अट्ठ. 5.336; - **न्ती** स्त्री., उपरिवत् - *यथाभूतमवेक्खन्ती, खन्धानं उदयब्बयं,* थेरीगा. 96; *यथाभूतमवेक्खन्तीति एवं जातसंवेगा विपस्सनं पट्ठपेत्वा अनिच्चादिमनसिकारेन यथाभूतमवेक्खन्ती,* थेरीगा. अट्ठ. 100; - **क्खिय** पू. का. कृ. - *एवं चलितं असण्ठितं, सुखदुक्खं मनुजेस्वपेक्खिय,* जा. अट्ठ. 3.49; - **क्खित्वा** उपरिवत् - *तं तं अत्थमपेक्खित्वा, भुम्मेन करणेन च,* दी. नि. अट्ठ. 1.34.

अपेक्खन नपुं., अप + √इक्ख से व्यु., क्रि. ना. [अपेक्षण], इच्छा, लगाव, अपेक्षा, सरोकार, अनुयोग ... *च चित्तसतिपट्ठानसद्धादीनं गहपति धम्मादीनं अपेक्खनवसेन निच्चं पुल्लिङ्गभावस्स इच्छितत्ता,* सद्द. 1.229.

अपेक्खवन्तु त्रि., [अपेक्षावत्], अपेक्षाओं या इच्छाओं से युक्त, आसक्ति-युक्त, स्नेह-युक्त; - **वा** पु., प्र. वि., ए. व. - *सुखं चे जीवितुं इच्छे, सामञ्ञस्मिं अपेक्खवा,* थेरगा. 228; *सामञ्ञस्मिं अपेक्खवाति सामञ्ञस्मिं समणभावे अपेक्खवा सिक्खाय ... इच्छेय्य चे,* थेरगा. अट्ठ. 1.379; ... *अपेक्खवा अनुपादाय च न परितस्सति,* म. नि. 3.276; *अपेक्खवाति सालयो ससिनेहो,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.201; - **वती** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अपेक्खवतीति तस्सेव रागस्स वसेन तस्मिं पुरिसे पवत्ताय अपेक्खाय समन्नागता,* पाचि. अट्ठ. 163.

अपेक्खा स्त्री., अप + √इक्ख से व्यु. [अपेक्षा], स्नेह, लगाव, आसक्ति, इच्छा - *सम्भावने च गरहापेक्खासु च समुच्चये,* अभि. प. 1183; *वंसो विसालोव यथा विसत्तो पुत्तेसु दारेसु च या अपेक्खा,* सु. नि. 38; *या अपेक्खाति या तण्हा यो स्नेहो,* चूळनि. अट्ठ. 99; *या मे मातापितूसु अपेक्खा सा पहीना ति,* स. नि. 3(2).472; - **य** तृ. वि., ए. व. - *सुत्तन्ति इमिना एवंसद्दसन्निधानतो वक्खमानापेक्खाय वा सोतब्बभेदप्पटिवेधदीपकेन ... दीपेति,* उदा. अट्ठ. 15; - **रहित** त्रि., तत्पु. स. [अपेक्षारहित], अपेक्षा, आसक्ति या लगाव से रहित - *... अनपेक्खवाति वत्थु ... अपेक्खारहितो विगतच्छन्दरागो नित्तण्हो एवरूपो पुग्गलो ... विहरति महाराजाति,* जा. अट्ठ. 1.146.

अपेक्खी त्रि., [बौ. सं. अवेक्षिन्], अपेक्षा करने वाला, लगाव रखने वाला, प्रयोजन रखने वाला, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, अनपेक्खी, आमिसपेक्खी के अन्त. द्रष्ट..

अपेक्खिक त्रि., [बौ. सं. अवेक्षिक], उपरिवत् - *ताणं लेणनन्ति आदीनि पेक्खिकानि भवन्ति हि,* सद्द. 1.70.

अपेक्खित त्रि., अप + √इक्ख का भू. क. कृ. [अपेक्षित], वह, जिस पर अत्यधिक ध्यान दिया जाए या जिस पर अत्यधिक प्रेम किया जाए, आवश्यक - *मा जेट्ठपुत्तं अवधी अपेक्खितं,* जा. अट्ठ. 6.153(रो.).

अपेच्च अप + √इ का भू. क. कृ. [अपेत्य], दूर जाकर, अलग हटकर, रहित होकर, अपेत्ति के अन्त. द्रष्ट..

अपेत त्रि., अप + √इ का भू. क. कृ. [अपेत], **शा. अ.** दूर गया हुआ, **ला. अ.** हटाया हुआ, रहित - *अपेतो दमसच्चेन न सो कासावमरहति,* ध. प. 9; *अपेतो ... इन्द्रियदमसङ्खातेन दमेन च ... निब्बानसङ्खातेन च परमत्थसच्चेन अपेतो परिवज्जितो,* जा. अट्ठ. 2.166; *अपेतो दमसच्चेनाति इन्द्रियदमेन चेव ... अपेतो, वियुत्तो परिच्चत्थोति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 1.49; - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *तञ्चणञ्ञेव ... दुक्खतो अपेता उळारसम्पत्तिं पटिलभित्वा ... अत्तानं दस्सेसि,* पे. व. अट्ठ. 30; - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अपेता ते च ब्रह्मञ्ञा, न ते वुच्चन्ति ब्राह्मणा,* जा. अट्ठ. 4.324; 325; 326; 327; - **कद्दम** त्रि., ब. स. [अपेतकर्दम], कीचड़-रहित, स्वच्छ - *रहदोव अपेतकद्दमो, संसारा न भवन्ति तादिनो,* ध. प. 95; - **कम्मावरण** त्रि., ब. स. [अपेतकर्मावरण], कर्मों के आवरणों से मुक्त - *तञ्च पन सावसेसायुकस्स वयसम्पन्नस्स अपेतकम्मावरणस्स,* मि. प. 151; - **चित्त** त्रि., ब. स., विपर्यस्त मन वाला, उखड़े हुए चित्त वाला, विक्षिप्त चित्त वाला - *चजे चजन्तं वनथं न कयिरा, अपेतचित्तेन सम्भजेय्य,* जा. अट्ठ. 2.172; 3.93; *अपेतचित्तेनाति विगतचित्तेन विपल्लत्थचित्तेन,* तदे.; - **जातरूपरजत** त्रि., ब. स., सोना और चांदी से रहित, सोना और चांदी का प्रयोग न करने वाला - *कुम्भकारो निक्खितमणिसुवण्णो अपेतजातरूपरजतो,* म. नि. 2.252; *निक्खित्तमणिसुवण्णा समणा सक्यपुत्तिया अपेतजातरूपरजता'ति,* स. नि. 2(2).310; - **त्त** नपुं., अपेत का भाव. [अपेतत्व], रहित होने की स्थिति, विलगाव की हालत, अविद्यमानता - *निरयो हि सग्गमोक्खहेतुभूता पुञ्ञसङ्खाता अया अपेतत्ता,* उदा. अट्ठ. 338; *मनुस्सत्तभावतो अपेतत्ता पेतपरियायोपि लब्भति एवाति तस्स वत्थु ... दट्ठब्बं,* पे. व. अट्ठ. 81; - **दरथ** त्रि., ब. स., शारीरिक एवं मानसिक व्यथाओं से मुक्त - *सोहं अपेतदरथो, ब्यन्तीभूतो दुखक्खमो,* जा. अट्ठ. 5.4; *अपेतदरथोति विगतकायचित्तदरथो,* जा. अट्ठ. 5.5; - **पापक** त्रि., ब. स., पापरहित, निष्पाप - *एवम्पि वोहारसुचिं असाहसं, विसुद्धकम्मन्तमपेतपापकं,* जा. अट्ठ. 3.281; *अपेतपापकन्ति अपगतपापकम्मं,* जा. अट्ठ. 3.282; - **भयसन्तास** त्रि., ब. स. [अपेतभयसन्त्रास], भय एवं त्रास से मुक्त, भयमुक्त, संकट से मुक्त - *अपेतभयसन्तासो, भवेहं सब्बतो भवे,* अप. 2.105; - **भेरव** त्रि., ब. स. [अपेतभैरव], भयजनक अवस्थाओं से मुक्त, भयकारक परिस्थियों से मुक्त - *विजितावी अपेतभेरवो हि, दब्बो सो परिनिब्बुतो ठितत्तो'ति,* थेरगा. 5; 7; *अपेतभेरवोति पञ्चवीसतिया भयानं सब्बसो अपेतत्ता अपगतभेरवो अभयूपरतो,* थेरगा. अट्ठ. 1.45; - **मनपापक** त्रि., ब. स., मन की पापमयी दुष्प्रवृत्तियों से रहित, विशुद्ध मन वाला/वाली - **पिका** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *विसुद्धमनसा अज्ज, अपेतमनपापिका,* अप. 2.190; 198; थेरीगा. अट्ठ. 57; - **लोमहंस** त्रि., ब. स. [अतीतरोमहर्ष], **क.** रोमांच से रहित, कपकपी या थरथराहट से मुक्त - *विजितावी अपेतलोमहंसो, रक्खं कायगतासतिं धितिमा'ति,* थेरगा. 6; **ख.** संकोच या घबराहट से रहित, बुरे काम करते समय भय से रहित, अनाचारी - *अपेतलोमहंसस्स, रञ्ञो कामानुसारिनो,* जा. अट्ठ. 5.112; *अपेतलोमहंसस्साति अत्तानुवादादिभयेहि निब्भयस्स,* जा. अट्ठ. 5.115; - **वत्थ** त्रि., ब. स. [अपेतवस्त्र], वस्त्रों या परिधानों से रहित, उचित वेशभूषा को धारण न करने वाला - *यं पित्वा भासेय्य अभासनेय्यं, सभायमासीनो अपेतवत्थो,* जा. अट्ठ. 5.15; - **विञ्ञाण** त्रि., ब. स. [अपेतविज्ञान], चेतना से रहित, मृत, मूर्छित, प्राणहीन - *छुद्धो अपेतविञ्ञाणो, निरत्थंव कलिङ्गरं,* ध. प. 41; *निब्बुय्हति सुसानं, अचिरं कायो अपेतविञ्ञाणो,* थेरीगा. 470; *अचिरं कायो अपेतविञ्ञाणोति अयं कायो अचिरेनेव अपगतविञ्ञाणो सुसानं निब्बुय्हति उपनीयति,* थेरीगा. 308; - **विञ्ञाणत्त** नपुं., भाव. [अपेतविज्ञानत्व], चेतना से विहीन हो जाना, मृत या निष्प्राण हो जाना - *कल्याणकम्मं पूरेस्सामी'ति आभोगो वा पत्थना वा परियुट्ठानं वा नत्थि अपगतविञ्ञाणत्ता,* जा. अट्ठ. 5.95; - **सोक** त्रि., ब. स. [अपेतशोक], शोक से रहित - *सोकावतिण्णं जनतमपेतसोको, अवेक्खस्सु जातिजराभिभूतं,* दी. नि. 2.31; महाव. 6; इतिवु. 25; *अत्थ समेच्चाहमपेतसोको, एको विवित्ते सयनासनम्हि, सयामहं सब्बभूतानुकम्पी,* स. नि. 1(1).131; - **तावरण** त्रि., ब. स. [अपेतावरण], **शा. अ.** आवरण या आच्छादित करने वाले वस्त्र आदि उपकरणों से मुक्त, अनाच्छादित, खुला हुआ, **ला. अ.** मन को चञ्चल बनाने वाले 5 प्रकार के नीवरणों से मुक्त, संयोजनों आदि

द्वारा नहीं बंधा हुआ - *अवावटाति अपेतावरणा अपरिग्गहा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.202.

अपेति अप + √इ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपेति], **शा॰ अ॰** दूर चला जाता है या भाग जाता है, **ला॰ अ॰** हट जाता है, उचट जाता है, अदृश्य हो जाता है, विनष्ट हो जाता है, विदा ले लेता है - *उपेति समुपेति वेति अपेति अवेति अन्वेति समेति अभिसमेति,* सद्द॰ 2.315; *सा तेन अट्टीयमाना अपेति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.281; *यस्मिं पन पुग्गले मनो न निविसति अपेति, सो सन्तिके वसन्तोपि दूरेयेव,* जा॰ अट्ठ॰ 4.194; - **न्ति** ब॰ व॰ - *सद्धा च पीति च मनो सति च, नापेन्ति मे गोतमसासनम्हा,* सु॰ नि॰ 1149; - **हि** अनु॰, **म॰** पु॰, ए॰ व॰ - *अपेहीति अपयाहि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.164; *अपेहि गच्छ त्वमेवेको, किमञ्ञमनुसाससी'ति,* स॰ नि॰ 1(1).145; *अपेहि त्वं, उपक, विनस्स, मा तं अद्दस'न्ति,* अ॰ नि॰ 1(2).210; **यामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपयानि], - *हन्द दानि अपायामि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.28; *तत्थ अपायामीति अपगच्छामि, पलायामीति अत्थो,* तदे॰.

अपेत्तेय्य त्रि॰, पेत्तेय्य का निषे॰ [अपैतृक], पिता का हित न करने वाला, पिता के प्रति सम्मानभाव न रखने वाला - **य्यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयं, देव, पुरिसो अमत्तेय्यो अपेत्तेय्यो असामञ्ञो अब्रह्मञ्ञो,* अ॰ नि॰ 1(1).163; - **य्या** ब॰ व॰ - *अथ खो एतेव बहुतरा सत्ता ये अपेत्तेय्या ... पे॰,* स॰ नि॰ 3(2).525; - **ता** स्त्री॰, अपेतेय्य का भाव॰, पिता के प्रति असम्मान का भाव या अहितकारिता - *अमत्तेय्यता अपेत्तेय्यता असामञ्ञता अब्रह्मञ्ञता न कुले जेट्ठापचायिता,* दी॰ नि॰ 3.51; *अपेत्तेय्यतादि एसेव नयो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.33.

अपेय्य त्रि॰, पेय्य का निषे॰ [अपेय], **शा॰ अ॰** नहीं पीने योग्य - *तं परित्तं उदकं अमुना लोणकपल्लेन लोणं अस्स अपेय्य'न्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).283; *सो अमुना लोणकपल्लेन लोणो न अस्स अपेय्यो'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).283; *तीरे समुद्दसुदकं स जन्तं, तं सागरो तेनापेय्यो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.51; **ला॰ अ॰** पीकर खाली न कर सकने योग्य - *नास्स नायति पीतन्तो, अपेय्यो किर सागरो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.366.

अपेसल त्रि॰, पेसल का निषे॰ [अपेशल], अकृपालु, अप्रिय स्वभाव वाला, अप्रसन्न चित्त, असामाजिक - *एते अगुणा येसु च सन्ति सब्बे तानीध खेत्तानि अपेसलानि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.343; *अपेसलानीति एवरूपा पुग्गला आसीविसभरिता विय वम्मिका अप्पियसीला होन्ति,* तदे॰.

अपेसित त्रि॰, पेसित का निषे॰ [अप्रेषित], काम करने हेतु प्रेरित नहीं किया गया - *न मोहागतिं गच्छेय्य, न भयागतिं गच्छेय्य, पेसितापेसितञ्च जानेय्य,* चूळव॰ 310-311.

अपेसियमान त्रि॰, प + √ईस के कर्म॰ वा॰ के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रेष्यमाण], काम पर लगने हेतु प्रेरित नहीं किया गया, - **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सामणेरा अपेसियमाना कम्मं न करोन्ति,* चूळव॰ 310.

अपेसुञ्ञ नपुं॰, पेसुञ्ञ का निषे॰ [अपैशुन्य], चुगली का अभाव, इधर की बात उधर न करना - *सच्चवाक्यसमत्तङ्गो, अपेसुञ्ञसुसञ्ञतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.142; *अपेसुञ्ञेन सुट्ठु सञ्ञतो समुस्सितो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.143.

अपेसुण त्रि॰, पेसुण का निषे॰, ब॰ स॰ [अपैशुन], चुगली न करने वाला, इधर की बात उधर न कहने वाला - *अक्कोधनो असङ्कुट्ठो, सच्चो सण्हो अपेसुणो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.190.

अपोरिसता स्त्री॰, अपोरिस का भाव॰ [अपौरुषता], पुरुष के प्रयास या पुरुष के पराक्रम से रहित होना, मानवीय प्रयास से अनिर्मित होना, अपने आप उत्पन्न होना - *सो पन अपोरिसताय अकित्तिमो सयंजातो केनचि अघटितोयेव,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 231.

अपोसन नपुं॰, पोसन का निषे॰ [अपोषण], पालन या पोषण का अभाव - *अञ्ञस्स अत्तभावस्स अपोसनेन अनञ्ञपोसीति दस्सेति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.94; पाठा॰ अनिब्बत्तनेन; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अपोषणता], किसी दूसरे का पोषण या पालन नहीं किया जाना - *इमं अत्तभावं अञ्ञस्स अत्तभावस्स वा पुत्तदारस्स वा अपोसनताय अनञ्ञपोसी,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.182.

अपोह पु॰, अप + √ऊह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपोह], **शा॰ अ॰** दूर कर देना, हटा देना, **ला॰ अ॰** अनावश्यक बातों को विचार की कोटि से बाहर निकाल देना, निषेधात्मक तार्किक स्थापना - *ऊहनं आयूहनं व्यूहो अपोहो,* सद्द॰ 2.457; *सब्बं अनत्थं अपोहति, अपोहो,* सद्द॰ 2.459.

अपोहति अप + √ऊह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपोहते], दूर कर देता है, तर्क-कोटि से बाहर कर देता है, खण्डन कर देता है - *सब्बं अनत्थं अपोहति,* अपोहो, सद्द॰ 2.459.

√अप्प् प्राप्ति या पाने के अर्थ की सूचक एक धातु [√आप्लृ], - *अप्प पापुणे, अपोति, आपो, एत्थ आपोति अप्पोति तं तं ठानं विसरती'ति आपो,* सद्द॰ 2.508.

अप्प त्रि॰, प्रायः निषे॰ 'अ' का समानार्थक [अल्प], कम, बहुत कम, थोड़ा सा, तनिक सा, छोटा, नहीं के बराबर -

अप्पिच्छन्ति अनिच्छं, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.307; *अप्पाबाधतन्ति निराबाधतं, अप्पातङ्कतन्ति निद्दुक्खतं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).3; *तेनाहं अप्पोदके'ति, अप्प-सद्दो हेत्थ अभावत्थो अप्पिच्छो अप्पनिग्घोसो'तिआदीसु विय,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 284; *सुद्धपंसु सुद्धमत्तिका अप्पपासाणा अप्पसक्खरा अप्पकठला अप्पमरुम्बा अप्पवालिका, येभुय्येनपंसुका, येभुय्येनमत्तिका,* पाचि॰ 50; *परित्तं सुखुमं खुद्दं थोकं अप्पं किसं तनु,* अभि॰ प॰ 704; – **पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकुणो जालमुत्तोव, अप्पो सग्गाय गच्छति,* ध॰ प॰ 174; *अप्पो हुत्वा बहु होति, वड्ढते सो अखन्तिजो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.10; – **पं**[1] नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पं दानं न हीळेय्य, दातारं नावजानिया,* सु॰ नि॰ 718; – **पं**[2] अ॰, क्रि॰ वि॰, बहुत कम ही, कभी-कभी ही – *इमाहं पञ्च धम्मे पब्बजितेसु बहुलं समनुपस्सामि अप्पं गहट्ठेसु,* म॰ नि॰ 2.428; – **पेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमोघं दिवसं कयिरा, अप्पेन बहुकेन वा,* थेरगा॰ 451; – **पस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पस्स कम्मस्स फलं ममेदं, उदयो अज्झागमा महत्तपत्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.398; – **पस्मा** पु॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पस्मा दक्खिणा दिन्ना, सहस्सेन समं मिता'ति,* स॰ नि॰ 1(1).22; जा॰ अट्ठ॰ 4.59; – **पम्हा** उपरिवत् – *अप्पम्हा अप्पकं दज्जा, अनुमज्झतो मज्झकं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.383; – **पस्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ अप्पस्मेके पवेच्छन्तीति ... पण्डितपुरिसा अप्पस्मिम्पि देय्यधम्मे पवेच्छन्ति, ददन्तियेवाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.59; *अप्पस्मेके पवेच्छन्ति, बहुनेके न दिच्छरे,* तदे॰; – **पा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पापि सन्ता बहुके जिनन्ति, ... ददाति,* स॰ नि॰ 1(1).24; *अप्पापि सन्ता बहुके जिनन्तीति यथा च युद्धे अप्पकापि वीरपुरिसा बहुके भीरुपुरिसे जिनन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.56; – **पानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारिमानि, ..., अप्पानि च सुलभानि च, तानि च अनवज्जानि,* अ॰ नि॰ 1(2).32; *सत्तमे अप्पानीति परित्तानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.268; – **क** त्रि॰, अप्प से व्यु॰ [अल्पक], उपरिवत् – *मन्दो भाग्यविहीनेचाप्पके मूळ्हापटुस्वपि,* अभि॰ प॰ 892; – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पको वत मे सन्तो, कामो वेल्लितकेसिया,* दी॰ नि॰ 2.196; *अप्पको वत मे सन्तोति पकतियाव मन्दो समानो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.265; *न सोचनाय परिदेवनाय, अत्थोव लब्भो अपि अप्पकोपि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.177; – **प्पिका** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गुणवन्तानं समणब्राह्मणानं ... दिन्नपदक्खिणा अप्पिका नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.362; *न किरत्थि अनोमदस्सिसु, पारिचरिया बुद्धेसु अप्पिका,* जा॰ अट्ठ॰ 3.361; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पकं जीवितं मय्हं, जरा ब्याधि च मद्दति,* थेरीगा॰ 95; *अप्पकं जीवितं मय्हन्ति ... जीवितं अप्पकं परित्तं लहुकं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 100; *अप्पकम्पि कतं कारं, विपुलं होति तादिसु,* अप॰ 2.15; – **केन**[1] तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पकेनपि मेधावी, पाभतेन विचक्खणो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.128; *तत्थ अप्पकेनपीति थोकेनपि परित्तकेनपि,* तदे॰; – **केन**[2] क्रि॰ वि॰, बहुत थोड़े से लाभ के लिए – *अप्पकेन तुवं यक्ख, थुल्लमत्थं जहिस्ससि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.288; – **कस्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मं चरे योपि समुञ्जकं चरे, दारञ्च पोसं ददमप्पकस्मिं,* स॰ नि॰ 1(1).23; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पका ते मनुस्सेसु, ये जना पारगामिनो,* स॰ नि॰ 3(1).23; *अप्पका ते सत्ता लोकस्मिं ये उळारे उळारे भोगे लभित्वा न चेव मज्जन्ति,* स॰ नि॰ 1(1).90; – **कठल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पकठर, बौ॰ सं॰ अल्पकठल्य], **शा॰ अ॰** बहुत कम कठोर, लगभग नहीं के बराबर कठोर, **ला॰ अ॰** मिट्टी के बर्तनों या भाण्डों के टुकड़ो या ठीकरों से लगभग रहित, बहुत कम कपालखण्डों वाला/वाली; **कठला** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... अप्पपासाणा अप्पसक्खरा अप्पकठला अप्पमरुम्बा अप्पवालिका, येभुय्येनपंसुका, येभुय्येनमत्तिका,* पाचि॰ 50; *कथलाति कपालखण्डानि,* पाचि॰ अट्ठ॰ 19.

अप्पकतञ्ञू त्रि॰, पकतञ्ञू का निषे॰ [अप्रकृतज्ञ], जो कुछ निर्धारित किया गया है उसे न जानने वाला, प्रधान या महत्वपूर्ण बात को न जानने वाला, – **ञ्ञुनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भगवता सिक्खापदं अपञ्ञत्तं, ते वा भिक्खू अप्पकतञ्ञुनो'ति,* पाचि॰ 151; *अप्पकतञ्ञुनोति यं भगवता पकतं पञ्ञत्तं, तं न जानन्तीति अत्थो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 116; *ये पिमे गोचरे अप्पकतञ्ञुनो तेदानिमे गोचरे पकतञ्ञुनो,* महाव॰ 407; *... वज्जिपुत्तका ... नवका चेव होन्ति अप्पकतञ्ञुनो,* चूळव॰ 338-39; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अप्रकृतज्ञत्व], महत्वपूर्ण या प्रमुख बात को न जानने की स्थिति – *... मन्दत्ता मोमूहत्ता अपकतञ्ञुत्ता पक्खलन्तस्स अञ्ञं भणिस्सामी'ति अञ्ञभणनं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.203.

अप्पकसिरेन अ॰, क्रि॰ वि॰, तृ॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰ [अल्पकृच्छ्रेण], कम कठिनाई से, सरलता के साथ, आसानी से, सुखपूर्वक – *गच्छन्ति अप्पकसिरेन, सुखे लद्धे निरामिसे'ति,* थेरगा॰ 16; ... *खिप्पं लहुं अप्पकसिरेनेव पारं गच्छेय्य,* महानि॰ 15; *अप्पकसिरेनेवाति निदुक्खेनेव,* महानि॰ अट्ठ॰

64; *बलवा पुरिसो अप्पकसिरेनेव अच्छरं पहरेय्य,* म॰ नि॰ 3.362.

अप्पकार त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रकार], कुरूप, भयानक रूप वाला, बेडौल शरीर वाला, भद्दी आकृति वाला – *दुद्दसी अप्पकारोसि, दुब्बण्णो भीमदस्सनो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.63; *अप्पकारोसीति सरीरप्पकाररहितोसि, दुस्सण्ठानोति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.64.

अप्पकासन नपुं॰, पकासन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रकाशन], सुस्पष्ट रूप में नहीं दिखलाई पड़ना, नहीं चमकना या प्रभासित होना – *केनस्सु नप्पकासती'ति लोकस्स अप्पकासनं पुच्छति,* नेत्ति॰ 11; *नेनस्सु निवुतो लोको, केनस्सु नप्पकासति,* सु॰ नि॰ 1038.

अप्पकिच्च त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पकृत्य], बहुत कम दायित्व वाला, थोड़े से ही कामकाज को हाथ में लिया हुआ – **च्चो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्तुस्सको च सुभरो च, अप्पकिच्चो च सल्लहुकवुत्ति,* सु॰ नि॰ 144; *अप्पं किच्चमस्साति अप्पकिच्चो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.161; *तस्मा हि अप्पकिच्चस्स, अप्पमिद्धो अनुद्धतो,* इतिवु॰ 52.

अप्पकिण्ण / अप्पाकिण्ण त्रि॰, पकिण्ण का निषे॰ अथवा अप्प + आकिण्ण का स॰ प॰ [अप्रकीर्ण / अल्पाकीर्ण], भीड़-भाड़ से नहीं भरा हुआ, कम भीड़ वाला, अत्यधिक नहीं भरा हुआ, बाधाओं से रहित, – **किण्णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेनासनं नातिदूरं होति नाच्चासन्नं गमनागमनसम्पन्नं दिवा अप्पाकिण्णं रत्तिं अप्पसद्दं ...,* अ॰ नि॰ 3(2).13; *दिवाअप्पाकिण्णन्ति दिवसभागे महाजनेन अनाकिण्णं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.287; *दिवा अप्पाकिण्णं, रत्ति अप्पसद्दं अप्पनिग्घोसं विजनवातं,* महाव॰ 44; – **किण्णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ मयं अप्पसद्दा अप्पाकिण्णा फासुं विहरेय्यामा'ति,* अ॰ नि॰ 3(2).111.

अप्पकिलमथेन पु॰, अप्पकिलमथ का तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ [अल्पक्लमथेन], बिना किसी थकावट के, सरलता से, सुखपूर्वक, आराम से – *कच्चिसि अप्पकिलमथेन अद्धानं आगतो, न च पिण्डकेन किलन्तोसी'ति,* उदा॰ 135; *अप्पकिलमथेनाति अनायासेन इमं एत्तकं अद्धानं कच्चि आगतोसि,* उदा॰ अट्ठ॰ 254; *खमनीयं कच्चि यापनीयं कच्चिसि अप्पकिलमथेन अद्धानं आगतो?,* पारा॰ 227; महाव॰ 66.

अप्पकिलेस / अप्पक्लेस त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पक्लेश], क्लेशों से रहित, बहुत कम क्लेशों से युक्त – *सो पुरिमनयेनेव अप्पकिलेसो होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 306; *धम्मकामो सदा होमि, अप्पक्लेसो अनासवो,* अप॰ 1.339; *अप्परजक्खजातिकाति पञ्ञाचक्खुम्हि अप्पकिलेसरजसभावा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.152.

अप्पकोध त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पक्रोध], बहुत कम या नहीं के बराबर क्रोध से युक्त, क्रोधरहित – *अप्पकोधो अनायासो, संसरन्तो भवे अहं,* अप॰ 1.344.

अप्पक्खता स्त्री॰, भाव॰, द्रष्ट॰ अपक्ख के अन्त॰.

अप्पक्खर त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पाक्षर], बहुत कम अक्षरों वाला, कुछ ही अक्षरों वाला – *यस्मा च सुत्तेन नाम अप्पक्खरेन असंदिद्धेन सारवन्तेन,* सद्द॰ 1.150.

अप्पगंध त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पगन्ध], गन्धरहित, बिना गन्ध वाला – *लोहितचन्दनस्स एकदेसं पूतिकं होति अप्पगन्धं,* मि॰ प॰ 236.

अप्पगब्भ त्रि॰, पगब्भ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रगल्भ], हठ या दुराग्रह से मुक्त, शरीर, वाणी एवं मन की प्रगल्भता से रहित, अनुद्धत – *सारदो सरदुब्भूते अप्पगब्भे मतो तिसु,* अभि॰ प॰ 984; *सन्तिन्द्रियो च निपको च, अप्पगब्भो कुलेस्वननुगिद्धो,* सु॰ नि॰ 144; खु॰ पा॰ 9.2; *अप्पगब्भोति कायपागब्भियादिविरहितो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.241; *अप्पगब्भो अजेगुच्छोति, पागब्भियन्ति तीणि पागब्भियानि – कायिकं पागब्भियं वाचसिकं पागब्भियं, चेतसिकं पागब्भियं,* महानि॰ 165.

अप्पगुण / अपगुण त्रि॰, 1. पगुण का निषे॰ [अप्रगुण], **शा॰ अ॰** प्रकृष्ट या उत्तम गुणों से रहित, **ला॰ अ॰** असरल, वक्र, अकुशल, अविशारद – *तत्थपरित्तं परित्तारम्मणन्तिआदीसु यं अप्पगुणं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 229; 2. अप्प + गुण से व्यु॰, ब॰ स॰ [अल्पगुण], गुणहीन, बहुत कम गुणों से युक्त, अमहत्वपूर्ण, तुच्छ – *गुणवन्तेसु मनुस्सादीसु अप्पगुणे पाणे अप्पसावज्जो, महागुणे महासावज्जो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.65; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).206; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 143; – **ज्झान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अल्पगुणध्यान], अनुपयुक्त रूप से किया गया ध्यान – *सुट्ठु अपरिसोधितत्ता दुब्बलमेव समापत्तिं वळञ्जित्वा अप्पगुणज्झाने ठितो कालं कत्वा परित्ताभेसु निब्बत्तति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰ प॰) 3.147.

अप्पग्घ त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पार्घ], कम मूल्य वाला, निचली कीमत वाला, – **घो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नवोपि पोत्थको दुब्बण्णो चेव होति दुक्खसम्फस्सो च अप्पग्घो च, मज्झिमोपि ... जिण्णोपि ... अप्पग्घो च,* पु॰ प॰ 140; – **घं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वाकचीरस्मिञ्हि द्वादस आनिसंसा – अप्पग्घं सुन्दरं कप्पियन्ति अयं ताव एको आनिसंसो,* जा॰ अट्ठ॰

1.12; - **घेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पग्घेन लक्खेन जूतं न कीळिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.162; - **घानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *उच्चावचानीति महग्घअप्पग्घानि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.329; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अल्पार्घता], कम मूल्य वाला होना - *इदमस्स अप्पग्घताय,* पु॰ प॰ 141; *इदमस्स अप्पग्घताय वदामि,* अ॰ नि॰ 1(1).280-281.

अप्पचिन्त त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पचिन्तिन्], कम चिन्ता करने वाला - **तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *आहारचिन्तारहितानं अप्पचिन्तानमरियानं सुखं अत्थीति अप्पचिन्तसुखो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.275; - **सुख** त्रि॰, बहुत कम चिन्ताओं के कारण सुख का अनुभव करने वाला, इच्छामुक्त एवं निश्चिन्त मनोवृत्ति के फलस्वरूप सुखी - *अप्पिच्छस्स हि पोसस्स, अप्पचिन्तसुखस्स च,* ... *अप्पचिन्तसुखस्साति आहारचिन्तारहितानं अप्पचिन्तानमरियानं सुखं अस्सत्थीति अप्पचिन्तसुखो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.275.

अप्पचिन्ता स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अल्पचिन्ता], चिन्ता का अभाव, चित्त की शान्त अवस्था - *अप्पिच्छा अप्पचिन्ताय, अदूरगमनेन च,* ... *अप्पचिन्तायाति अज्ज कहं आहारं लभिस्सामि, स्वे कह'न्ति एवं आहारचिन्ताय अभावेन,* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.275.

अप्पचिन्ती पु॰, व्य॰ सं॰, एक मत्स्य (मछली) का नाम - *बहुचिन्ती, अप्पचिन्ती, मितचिन्तीति तेसं नामानि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.409; *बहुचिन्ती अप्पचिन्ती, उभो जाले अबज्झरे,* ... *तदा बहुचिन्ती च अप्पचिन्ति च इमे द्वे अहेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.410.

अप्पच्चय[1] पु॰, कर्म॰ स॰ [अप्रत्यय], भू आदि धातुगणों में भ्वादिगण का विकरण 'अ', जो इस गण की धातुओं के बाद में जोड़ा जाता है - *भू इच्चेवमादितो धातुगणतो अप्पच्चयो होति कत्तरि,* क॰ व्या॰ 447; *रुधिइच्चेवमादितो धातुगणतो अप्पच्चयो होति कत्तरि,* क॰ व्या॰ 448.

अप्पच्चय[2] पु॰, पच्चय का निषे॰, तत्पु स॰ [अप्रत्यय], अविश्वास, सन्देह, शङ्का, असन्तुष्टि, निरुत्साह - *तथागतस्स न होति आघातो न अप्पच्चयो न चेतसो अनभिरद्धि,* म॰ नि॰ 1.194; *परवादेसु आघातो अप्पच्चयो व्यापादो कायगन्थो,* महानि॰ 70; - **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ते तञ्चेव नप्पजहन्ति, मयि च अप्पच्चयं उपट्ठापेन्ति,* म॰ नि॰ 2.122.

अप्पच्चय[3] त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रत्यय], **क**. कारणों से रहित, हेतुओं एवं प्रत्ययों से उत्पन्न न होने वाला, असंस्कृत - **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *तञ्च अनिमित्तं अनिदानं असङ्खारं अप्पच्चयं दुक्खिन्द्रियं उप्पज्जिस्सतीति,* स॰ नि॰ 3(2).290; - **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *कतमे धम्मा अप्पच्चया? असङ्खता धातु - इमे धम्मा अप्पच्चया,* ध॰ स॰ 1090; - **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यो येव सो धम्मो अप्पच्चयो, सो एव सो धम्मो असङ्खतो,* ध॰ स॰ 1092; - **त्त** नपुं॰, भाव॰, अकारणता, हेतु-प्रत्यय-निरपेक्षता, असंस्कृत धर्म होना - *अपच्चयत्ता वा उप्पादाभावो,* उदा॰ अट्ठ॰ 318; *जातिआदीनं जातिया अप्पच्चयत्ता,* विभ॰ अट्ठ॰ 197; - **निब्बान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अप्रत्ययनिर्वाण], उपादान रहित निर्वाण, निर्वाण की वह स्थिति जिसमें समस्त उपादान स्कन्ध भी निरुद्ध हो जाते हैं - *अनुपादापरिनिब्बानन्ति अप्पच्चयनिब्बानं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.173; - **परिनिब्बान** नपुं॰, कर्म॰ स॰, उपरिवत् - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनुपादापरिनिब्बानन्ति अप्पच्चयपरिनिब्बानं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.303; - **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *परिनिब्बायिस्सतीति अप्पच्चय-परिनिब्बानेन परिनिब्बायिस्सति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.205; 225; - **भावना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, हेतु-प्रत्ययों से मुक्त असंस्कृत निर्वाण की अनुभूति या साक्षात्कार - ... *सत्तानं अप्पच्चयभावना न सुकराति,* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 319.

अप्पच्चोसक्कित त्रि॰, पटि + अव + √सक्क के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, **शा॰ अ॰** पीछे की ओर वापस कदम न खींचने वाला, **ला॰ अ॰** अश्रान्त, अत्यधिक आसक्त - *दसमे अप्पटिवानीति अनुकण्ठितो अपच्चोसक्कितो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.50.

अप्पजहन्तु त्रि॰, प + √हा के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रजहत्], त्याग न करता हुआ, नहीं छोड़ता हुआ, - **हं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सोकमप्पजहं जन्तु, भिय्यो दुक्खं निगच्छति,* सु॰ नि॰ 591; *अनभिजानं अपरिजानं तत्थ चित्तं अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय,* इतिवु॰ 4; *अप्पजहन्ति विपस्सनापञ्ञासहिताय मग्गपञ्ञाय तत्थ पहातब्बयुत्तकं किलेसवट्टं अनवसेसतो न पजहन्तो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 47.

अप्पजहित्वा प + √हा के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रहाय], नहीं त्याग कर, नहीं छोड़कर - *इदमप्पहायाति इदं इदानि वक्खमानं दुविधं पापसमाचारं अप्पजहित्वा,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 153.

अप्पजानन्तु त्रि॰, प + √ञा के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रजानत्], ठीक से या पूर्ण रूप से नहीं जान रहा, - **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *निरोधं अप्पजानन्ता, आगन्तारो पुनब्भवं,* सु॰ नि॰ 759.

अप्पञ्ञत्त त्रि॰, पञ्ञत्त का निषे॰ [अप्रज्ञप्त], नहीं बतलाया गया, ज्ञात नहीं कराया गया, अविहित, अस्थापित, अनिर्दिष्ट, अप्रकाशित - **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पञ्ञत्तं तथागतेन*

अपञ्ञत्तं तथागतेनाति दीपेति, महाव॰ 476; *वज्जी अपञ्ञत्तं न पञ्ञपेन्ति,* दी॰ नि॰ 2.57; ... *पुब्बे अकतं सुङ्कं वा बलिं वा दण्डं वा आहरापेन्ता अपञ्ञत्तं पञ्ञपेन्ति नाम,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.97; – **त्तेन** पु॰ / नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुपसम्पन्ने पञ्ञत्तेन वा अपञ्ञत्तेन वा वुच्चमानो,* पाचि॰ 153; *अपञ्ञत्तेनाति सुत्ते वा अभिधम्मे वा आगतेन,* पाचि॰ अट्ठ॰ 116; – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुराणदुतियिकाय बाहायं गहेत्वा महावनं अज्झोगाहेत्वा अपञ्ञत्ते सिक्खापदे आदीनवदस्सो ... अभिविञ्ञापेसि,* पारा॰ 19; *अपञ्ञत्ते सिक्खापदेति पठमपाराजिकसिक्खापदे अट्ठपिते,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.164; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अप्रज्ञप्तत्व], अनिर्दिष्ट, नहीं बतलाया गया होना – *अनुपोसथे उपोसथो कातब्बो तिसिक्खापदस्स अपञ्ञत्तता,* उदा॰ अट्ठ॰ 241.

अप्पञ्ञत्ति / अप्पण्णत्ति स्त्री॰, पञ्ञत्ति / पण्णत्ति का निषे॰ [अप्रज्ञप्ति], अप्रकाशन, सूचित न किया जाना, अप्रादुर्भाव, तिरोभाव, अस्त हो जाना – *निरुद्धा सा अच्चि अप्पञ्ञत्तिं गता'ति,* मि॰ प॰ 79; – **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰, प्रकाशन अथवा संसूचन का न रहना, नहीं ज्ञात कराया जाना, नहीं प्रकट किया जाना – *यथा तस्मिं वत्थुस्मिं ... पञ्ञायत्ति, एवं पुन अपञ्ञत्तिभावं नीताति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).20-21.

अप्पञ्ञत्तिक / अपण्णत्तिक त्रि॰, पञ्ञत्तिक का निषे॰ [अप्रज्ञप्तिक], **शा॰ अ॰** नामकरण नहीं किए जाने योग्य, बिना नाम वाला, बिना पहचान वाला – *न यत्थ कत्थचि सङ्कं उपेति अञ्ञदत्थु अनुपादानो विय जातवेदो परिनिब्बानतो उद्धं अपञ्ञत्तिकोव होतीति,* उदा॰ अट्ठ॰ 174; – **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रज्ञप्तिकभाव], नाम आदि द्वारा जानने योग्य नहीं रह जाना, नामकरण या उपाधि आदि से ऊपर उठ जाना, पहचान-रहित हो जाना – *अपण्णत्तिकभावं गमिस्सतीति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.109; *सो गामोपि छड्डितो अपण्णत्तिकभावं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.456; ... *तेसं वट्टं अपञ्ञत्तिभावं गतं निप्पञ्ञत्तिकं जातं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).24; उदा॰ अट्ठ॰ 288; **ला॰ अ॰** किसी विशेष वाद या सिद्धान्त को प्रतिपादित न करने वाला, केवल विनय के नियमों के आचरण की शिक्षा देने वाला, अप्रत्यक्ष निर्वाण को बतलाने वाला – *न सो भगवा वेनयिको अप्पञ्ञत्तिको'ति,* अ॰ नि॰ 3(2).162; *अपञ्ञत्तिकोति न किञ्चि पञ्ञापेतुं सक्कोति; अथ वा वेनयिकोति सत्तविनासको, अपञ्ञत्तिकोति अपच्चक्खं निब्बानं पञ्ञापेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.327; – **वाचकत्त** नपुं॰, अपञ्ञत्तिवाचक का भाव॰ [अप्रज्ञप्तिवाचकत्व], किसी नाम को कहने वाला न होना, नाम का वाचक न रहना – *कस्मा अपञ्ञत्तिवाचकत्ता ति दट्ठब्बं,* सद्द॰ 1.174.

अप्पञ्ञात त्रि॰, पञ्ञात का निषे॰ [अप्रज्ञात], अज्ञात, अल्प रूप में विख्यात, भिक्षा आदि के सत्पात्र के रूप में अप्रसिद्ध, – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *विहरे अञ्ञतरो भिक्खु नवो अप्पञ्ञातो आबाधिको दुक्खितो बाळ्हगिलानो,* स॰ नि॰ 2(2).50; *अप्पञ्ञातोति अञ्ञातो अपाकटो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.16; *अप्पञ्ञातोति नं बाला, अवजानन्ति, अजानता,* थेरगा॰ 129; – **ता** ब॰ व॰ – *अयं अनाथा अप्पञ्ञाता,* पाचि॰ 308; *इमे पनञ्ञे भिक्खू अप्पञ्ञाता अप्पेसक्खा'ति,* म॰ नि॰ 1.253; *अपञ्ञाताति छिन्नं जनानं ठितट्ठाने न पञ्ञायन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).130; – **क** नपुं॰, [अप्रज्ञातत्व], प्रसिद्ध या विख्यात न होना, अप्रसिद्धि, अप्रकाशन, – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन च अपञ्ञातकेन नो परितस्सति,* अ॰ नि॰ 2(1).125; *अपञ्ञातकेनाति अपञ्ञातभावेन अपाकटताय मन्दपुञ्ञताय,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.44; – **भाव** पु॰, उपरिवत् – *अपञ्ञातकेनाति अपञ्ञातभावेन अपाकटताय मन्दपुञ्ञताय,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.44.

अप्पञ्ञातिक[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पज्ञातिक], बहुत कम सगे-सम्बन्धियों वाला – *इदानि अप्पञातिकं अप्पपक्खं जात'न्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.65.

अप्पञ्ञातिक[2] नपुं॰, अपञ्ञातक के स्थान पर अप॰, द्रष्ट॰ अपञ्ञातक के अन्त॰.

अप्पटिकम्म[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिकर्मन्], **क.** अशुभ, अमङ्गल, अमङ्गलसूचक, असाध्य, लाइलाज – *सप्पटिकम्मा, अप्पटिकम्मा'ति? कामं एते सुपिना अतिफरुसत्ता अप्पटिकम्मा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.320; **ख.** अक्षम्य, प्रायश्चित्त न किये जाने योग्य – *अप्पटिकम्मा आपत्ति जानितब्बा,* परि॰ 236; *सप्पटिकम्मं अप्पटिकम्मं आपत्तिं न जानाति,* परि॰ 345; *कतेत्थ अप्पटिकम्मा वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना,* परि॰ 387.

अप्पटिकम्म[2] नपुं॰, पटिकम्म का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रतिकर्मन्], प्रायश्चित्त का अभाव, निराकरण का न होना, शुद्धि की प्राप्ति का न होना – *भिक्खु आपत्तिया अप्पटिकम्मे उक्खित्तको विब्भमति,* महाव॰ 124; *आपत्तिया अप्पटिकम्मे, उक्खेपनीयकम्मं करोतुं ...,* चूळव॰ 55.

अप्पटिकार त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिकार], **1.** वह, जिसने अपने अपराध का प्रायश्चित्त नहीं किया है, अपने अपराध कर्म की

विशुद्धि न चाहने वाला *भिक्खुं धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन अनादरं अप्पटिकारं अकतसहायं तमनुवत्तेय्य,* पाचि॰ 293; **2.** किए हुए उपकार का बदला न देने वाला, प्रत्युपकार के रूप में कुछ न करने वाला **रिकायो** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *कतविनासनेन मित्तदुब्भिताय कतस्स अप्पटिकारिकायोति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.414; **3.** असाध्य, लाइलाज, उपचार न किये जा सकने योग्य, अनिवार्य, - **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मरणं नाम सब्बसाधारणं अप्पटिकारञ्च, तस्मा मा त्वं पितरि अतिबाळ्हं सोचि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 239; - **क** त्रि॰, उपरिवत् - **रिकायो** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *लहुचित्तायो कतस्स अप्पटिकारिकायो अनिलो विय येनकामंगमायो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.413.

अप्पटिकूल / अप्पटिक्कूल त्रि॰, पटिकूल का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रतिकूल], अनुकूल, हितकर, विरोधरहित, मनोहर, उपयोगी, आपत्ति-रहित, - **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चारुदस्सनोति ... अप्पटिकूलं रमणीयं चारु एव दस्सनं अस्साति चारुदस्सनो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.156; - **ला**[1] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *गन्तुं अप्पटिकूलासि,* उदा॰ 96; *अप्पटिकूलाति न पटिकूला, मनापा मनोहराति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 149; - **ला**[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *मेत्ताय भावितत्ता सत्ता अप्पटिकूला होन्ति,* पटि॰ म॰ 225; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 235; - **लानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सुभान्यप्पटिकूलानि, फोट्ठब्बानि अनुस्सरं,* थेरगा॰ 734; - **गंध** कर्म॰ स॰ [अप्रतिकूलगन्ध], सुगन्ध, मन को प्रिय लगने वाली गन्ध - *अप्पटिगन्धिकाति अपटिक्कूलगन्धेन उदकेन समन्नागता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402; - **गाहिता** स्त्री॰, [अप्रतिकूलग्राहित्व, नपुं॰], विपरीत रूप में किसी बात को ग्रहण न करने की अवस्था, बातों को प्रतिकूल रूप में या विपरीत आशय में ग्रहण न करना - *सहधम्मिके वुच्चमाने सोवचस्सायं सोवचस्सियं सोवचस्सता अप्पटिकूलग्गाहिता अविपच्चनीकसातता सगारवता,* ध॰ स॰ 1334; पु॰ प॰ 130; - **वादी** त्रि॰, [अप्रतिकूलवादी], प्रतिकूल या विपरीत रूप में न बोलने वाला, पुरानी बातों को मन में बांध कर द्वेष आदि से प्रभावित होकर न बोलने वाला, अनुकूल रूप में बोलने वाला, कटु वचनों से अप्रभावित हो स्वयं मृदु वचन बोलने वाला - *खन्ता दुरुत्तानमप्पटिकूलवादी, अधिवासनं सोत्थानं तदाहु* जा॰ अट्ठ॰ 4.68; *अप्पटिकूलवादीति अक्कोच्छि मं अवधि म'न्ति युगग्गाहं अकरोन्तो अनुकूलमेव वदति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.69; - **सञ्जी** त्रि॰, [अप्रतिकूलसंज्ञिन्], प्रतिकूल घृणित या अहितकर को अनुकूल हितकर या शुभ समझने वाला *सो सचे आकङ्खति - पटिकूले अप्पटिकूलसञ्जी विहरेय्य'न्ति, अप्पटिकूलसञ्जी तत्थ विहरति,* म॰ नि॰ 3.364; *भिक्खु कालेन कालं पटिकूले अप्पटिकूलसञ्जी विहरेय्य,* अ॰ नि॰ 2(1).159.

अप्पटिकोपयन्त त्रि॰, पटि + √कुप के प्रेर॰ के वर्त॰ कृ॰, पटिकोपयन्त का निषे॰ [अप्रतिकोपयत्], नहीं तोड़ता हुआ, भग्न न करता हुआ - *एतादिसं दुक्खमहं तितिक्खं, उपोसथं अप्पटिकोपयन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.166.

अप्पटिक्कमना स्त्री॰, पटिक्कमन के स्त्री॰ का निषे॰ [अप्रतिक्रमण], **शा॰ अ॰** पीछे की ओर वापस न जाना, पीछे की ओर कदम न मोड़ना, **ला॰ अ॰** शक्ति से रहित न हो जाना, क्षमता, सामर्थ्य - *अप्पटिवानिताति अप्पटिक्कमना अनोसक्कना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.5.

अप्पटिक्कुज्झन्त त्रि॰, पटि + √कुध के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिक्रुध्यत्], बदले में क्रोध नहीं कर रहा *कुद्धं अप्पटिकुज्झन्तो, सङ्गामं जेति दुज्जयं,* थेरगा॰ 442.

अप्पटिक्कूल ऊपर द्रष्ट॰, अप्पटिकूल के अन्त॰.

अप्पटिक्कोसना स्त्री॰, पटि + √कुस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [अप्रतिक्रोषण], उपेक्षा, तिरस्कार या डांट-फटकार का अभाव, बदले में किसी को खरी-खोटी न सुनाना या डांट-डपट नहीं करना - *उपगमनं अज्झुपगमनं अधिवासना अप्पटिकोसना - इदं तत्थ पटिञ्ञातकरणस्मिं,* चूळव॰ 216; 220.

अप्पटिक्कोसित त्रि॰, पटि + √कुस के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिक्रुष्ट], नहीं तिरस्कृत, नहीं निराकृत, अनुमोदित, अनुमत, समर्थित - *एसा सद्धम्मविदूहि गरूहि अप्पटिकोसिता अनुमता सम्पटिच्छिता,* सद्द॰ 1.57.

अप्पटिकोसित्वा पटि + √कुस के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिक्रुष्य], बुरा-भला न कह कर, खण्डन न करके, स्पष्ट रूप से अस्वीकार न करके - *अनभिनन्दित्वा अप्पटिक्कोसित्वा उट्ठायासना पक्कामि,* म॰ नि॰ 2.225; म॰ नि॰ 3.256; *अनभिनन्दित्वा अप्पटिक्कोसित्वा पञ्हो पुच्छितब्बो,* म॰ नि॰ 3.78.

अप्पटिक्खित्त त्रि॰, पटि + √खिप के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिक्षिप्त], अप्रतिषिद्ध, नहीं अस्वीकृत, नहीं वर्जित, अनुमोदित - *इदं न कप्पती'ति अप्पटिक्खित्तं तञ्चे अकप्पियं अनुलोमेति,* महाव॰ 327.

अप्पटिक्खिप्प त्रि., पटि + √खिप के सं. कृ. का निषे. [अप्रतिक्षेप्य], अस्वीकृत या निषिद्ध नहीं होने योग्य, स्वीकरणीय - **खिप्पा** पु., प्र. वि., ब. व. - *सब्बे ते अप्पटिक्खिप्पा, पुब्बाचरियवचो इदं, ... तथा उद्दिस्स गच्छन्ता सचेपि बहू होन्ति, तथापि तेन पुरिसेन सब्बे ते अप्पटिक्खिप्पा,* जा. अट्ठ. 2.306-307.

अप्पटिगन्धिक / अप्पटिगन्धिय त्रि., पटिगन्धिक का निषे., ब. स. [अप्रतिगन्धिक], दुर्गन्ध से रहित, सुगन्ध से युक्त, - **न्धिका** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अकक्कसा अपब्भारा, साधु अप्पटिगन्धिका,* जा. अट्ठ. 5.401; *अप्पटिगन्धिकाति अप्पटिक्कूलगन्धेन उदकेन समन्नागता,* जा. अट्ठ. 5.402; - **न्धियं** द्वि. वि., ए. व. - *समञ्च चतुरंसञ्च, सादुं अप्पटिगन्धियं,* जा. अट्ठ. 7.279; - **न्धिया** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *सेतोदका सुप्पतित्था, सीता अप्पटिगन्धिया,* पे. व. 114; *अप्पटिगन्धियाति पटिकूलगन्धरहिता सुरभिगन्धा,* पे. व. अट्ठ. 66.

अप्पटिग्गहित त्रि., पटिग्गहित का निषे. [अप्रतिगृहीत], किसी के द्वारा औपचारिक रूप से ग्रहण नहीं किया गया - *अनतिरित्तं नाम अकप्पियकतं होति, अप्पटिग्गहितकतं होति अनुचारिकतं होति,* पाचि. 113; *भिक्खुना अप्पटिग्गहितंयेव पुरिमनयेनेव अतिरित्तं कतं,* पाचि. अट्ठ. 85.

अप्पटिग्गहितकसञ्ञी त्रि., ब. स. [अप्रतिगृहीतसंज्ञिन्], इस बात का ज्ञान या समझ रखने वाला कि कोई वस्तु विधिपूर्वक न दान दी गयी है और न ही स्वीकार की गयी है - *अप्पटिग्गहितके अप्पटिग्गहितकसञ्ञी अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहारेति,* पाचि. 124.

अप्पटिघ त्रि., ब. स. [अप्रतिघ], **क.** चित्त की विशुद्धि में बाधक नीवरणों या बाधाओं से मुक्त, भयों से मुक्त - *चातुद्दिसो अप्पटिघो च होति, सन्तुस्समानो इतरीतरेन,* सु. नि. 42; अप. 1.9; *तासु दिसासु कत्थचि सत्ते वा सङ्खारे वा भयेन न पटिहञ्ञतीति अप्पटिघो,* सु. नि. अट्ठ. 1.69; **ख.** प्रतिरोध से रहित, रुकावट से रहित - *कतमे धम्मा अप्पटिघा,* ध. स. 1460; *सनिदस्सनसप्पटिघं रूपं, अनिदस्सनसप्पटिघं रूपं, अनिदस्सनं अप्पटिघरूपं,* दी. नि. 3.174; *नास्स पटिघोति अप्पटिघं,* दी. नि. अट्ठ. 3.163; *अघेति अप्पटिघे ठाने,* जा. अट्ठ. 4.287; - **ता** स्त्री., भाव. [अप्रतिघता], बाधा-रहित होना, घात-प्रतिघात की स्थिति से रहित होना - *तस्सेव सप्पटिघअप्पटिघताय दसके नयो दिन्नो,* ध. स. अट्ठ. 369; - **त्त** नपुं., भाव. [अप्रतिघत्व], उपरिवत् *अप्पटिघत्ता अछम्भी च होतीति एवं पटिपत्तिगुणं दिस्वा,* सु. नि. अट्ठ. 1.70.

अप्पटिच्च अ., पटि + √इ के पू. का. कृ., पटिच्च का निषे. [अप्रतीत्य], अपेक्षा न करके, निर्भर न होकर, हेतुओं एवं प्रत्ययों के बिना - *सा च खो पटिच्च, नो अप्पटिच्च,* म. नि. 1.246; 249.

अप्पटिच्छन्न त्रि., पटि + √छद के भू. क. कृ. का निषे. [अप्रतिच्छन्न], नहीं ढका हुआ, खुला हुआ, अनाच्छादित, उन्मुक्त, सुस्पष्ट, रहस्यमय, अगूढ़ - *नच्चन्तो अप्पटिच्छिन्नो अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.205; *एकं आपत्तिं आपन्नो होति सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं अप्पटिच्छन्नं,* चूळव. 98; - **कम्मन्त** त्रि., ब. स. [अप्रतिच्छन्नकर्मान्त], छिपाकर कर्म न करने वाला, पारदर्शितायुक्त क्रियाकलाप करने वाला, - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अप्पटिच्छन्नकम्मन्तस्स, भिक्खवे, द्विन्नं गतीनं अञ्ञतरागति पाटिकङ्खा,* अ. नि. 1(1).77; *छट्ठे पटिच्छन्नकम्मन्तस्साति पापकम्मस्स,* अ. नि. अट्ठ. 2.26; - **किलोमक** नपुं., ब. स. [अप्रतिच्छन्नक्लोमन्], खुला हुआ फुप्फुसावरण या दाहिना फेफड़ा - *अप्पटिच्छन्नकिलोमकं सकलसरीरे चम्मस्स हेट्ठतो मंसं परियोनन्धित्वा ठितन्ति,* खु. पा. अट्ठ. 41; विभ. अट्ठ. 57; - **परिवास** पु., कर्म. स. [बौ. सं. अप्रतिच्छन्नपरिवास], परिवास (बौद्ध भिक्षुसङ्घ में प्रवेश के लिये निर्धारित परीक्ष्यमाण अवधि) के अनेक प्रभेदों में से एक, अन्य धर्मावलम्बियों को दिया जाने वाला परिवास - *पटिच्छन्नपरिवासो, अप्पटिच्छन्नपरिवासो सुद्धन्तपरिवासो समोधानपरिवासो,* परि. 249; *महाखन्धकेवुत्तो तित्थियपरिवासो अप्पटिच्छिन्नपरिवासो नाम,* परि. अट्ठ. 6; द्रष्ट. परिवास के अन्त. (आगे), - **मन्त** त्रि., ब. स. [अप्रतिच्छन्नमन्त्र], अपने रहस्यों को छिपाकर न रखने वाला - *अनिगुय्हमन्तन्ति अप्पटिच्छन्नमन्तं,* जा. अट्ठ. 5.73; - **मानत्त** नपुं., कर्म. स. [बौ. सं. अप्रतिच्छन्नमानाप्य], छिपाकर कर किया गया मानत्त-नामक तप या प्रायश्चित्त, चार प्रकार के मानत्तों में से एक - *चत्तारो मानत्ता - पटिच्छन्नमानत्तं, अपटिच्छन्नमानत्तं, पक्खमानत्तं समोधानमानत्तं,* परि. 249; *तत्थ अप्पटिच्छन्नमानत्तं नाम - यं अप्पटिच्छन्नाय आपत्तिया परिवासं अदत्वा केवलं आपत्तिं आपन्नभावेनेव मानत्तारहस्स मानत्तं दिय्यति,* परि. अट्ठ. 16; द्रष्ट. मानत्त के अन्त. आगे.

अप्पटिजग्गन्त / अपटिजग्गन्त त्रि., पटि + √जाग के वर्त. कृ. का निषे., किसी के प्रति जागरुक न रहने वाला, उचित ध्यान या देखरेख न रखने वाला, - **न्तानं** ष. वि.,

ब॰ व॰ – *धनकामानं उप्पन्नं धनम्पि मातरं अपटिजग्गन्तानं नस्सतीति मे सुतन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.326; **ग्गित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, उचित देखभाल न कर, उचित रूप में ध्यान न देकर – *मिच्छा चरित्वानाति मातरं अपटिजग्गित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.326; **ग्गिय** त्रि॰, सं॰ कृ॰, असाध्य, अनुपचार्य, लाइलाज – *पूतिगत्ततिस्सत्थेरोत्वेवस्स नामं उदपादि, अथस्स अपरभागे अट्ठीनि भिज्जिंसु, सो अप्पटिजग्गियो अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.181.

अप्पटिजानन्त त्रि॰, पटि + √ञा के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिजानत्], वचन न देते हुए, प्रतिज्ञा नहीं कर रहा, अनुमोदन नहीं कर रहा, सहमत नहीं हो रहा – ... *अत्तना उप्पादितभावं अप्पटिजानन्तो* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 15.

अप्पटिञ्ञा स्त्री॰, पटिञ्ञा का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रतिज्ञा], प्रतिज्ञा का अभाव, अनुमोदन या स्वीकृति का अभाव, अस्वीकृति – *पटिञ्ञायकरणीयं कम्मं अपटिञ्ञाय करोति* ..., महाव॰ 424; *अप्पटिञ्ञाय कतं होति* – ... *समन्नागतं तज्जनीयकम्मं अधम्मकम्मञ्च होति, अविनयकम्मञ्च, दुवूपसन्तञ्च,* चूळव॰ 4; *ब्राह्मणा अप्पटिञ्ञाय तेसं समणब्राह्मणानं,* म॰ नि॰ 2.395.

अप्पटिनाद पु॰/त्रि॰, [अप्रतिनाद], अद्वितीय नाद या गर्जना – *तत्थ सीहनादन्ति सेट्ठनादं अभीतनादं अप्पटिनादं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.175.

अप्पटिनिस्सग्ग पु॰, पटिनिस्सग्ग का निषे॰ [अप्रतिनिःसर्ग], अपरित्याग, अपलायन, पीछे की ओर पैर नहीं खींचना – *यो पळासो पळासायना ... विवादट्ठानं युगग्गाहो अप्पटिनिस्सग्गो, अयं वुच्चति पळासो,* पु॰ प॰ 125; तथा अप्पटिनिस्सग्गे, पापिकाय हि दिट्ठिया, उत्त॰ वि॰ 516; 932; – **मन्ती** त्रि॰, [अप्रतिनिसर्गमन्त्रिन्], परित्याग करने की बात नहीं सोचने वाला, वाद-विवाद में अपनी स्थापना को नहीं छोड़ने वाला – *ते असञ्ञत्तिबला अनिज्झत्तिबला अप्पटिनिस्सग्गमन्तिनो तमेव अधिकरणं थामसा परामासा अभिनिविस्स वोहरन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).90; *इमे पन न तथा मन्तेन्तीति अप्पटिनिस्सग्गमन्तिनो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.48.

अप्पटिनिस्सज्ज पटि + नि + √सज के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, क्षमा याचना न करके, अपने पापकर्म के लिए पश्चात्ताप का भाव प्रकट न करके – *सारिपुत्तो आसज्ज अप्पटिनिस्सज्ज चारिकं पक्कन्तो'ति,* अ॰ नि॰ 3(1).190; *अप्पटिनिस्सज्जाति अक्खमापेत्वा अच्चयं अदेसेत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.261.

अप्पटिनिस्सज्जन नपुं॰, पटि + नि + √सज के क्रि॰ ना॰ का निषे॰, अपरित्याग – *अप्पटिनिस्सग्गोति अत्तना गहितस्स अप्पटिनिस्सज्जनं,* विभ॰ अट्ठ॰ 465; – **रस** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसका कार्य परित्याग को न होने देना है – *उपनन्हनलक्खणो उपनाहो, वेर अप्पटिनिस्सज्जनरसो, कोधानुपबन्धभावपच्चुपट्ठानो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).113.

अप्पटिनिस्सज्जित्वा पटि + नि + √सज के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, परित्याग न करके, नहीं छोड़ कर – ... *दिट्ठिं अप्पटिनिस्सज्जित्वा समणस्स गोतमस्स सम्मुखीभावं गच्छेय्यन्ति,* दी॰ नि॰ 3.9; *अप्पटिनिस्सट्ठतण्हाति* ... *अनुसयकिलेसं अप्पटिनिस्स-ज्जित्वा ठितत्ता अप्पटिनिस्सट्ठतण्हा,* महानि॰ अट्ठ॰ 125.

अप्पटिनिस्सट्ठ त्रि॰, पटि + नि + √सज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिनिःसृष्ट], **क.** कर्म॰ वा॰ में – वह, जिसका परित्याग नहीं किया गया है, नहीं त्यागा गया या छोड़ा गया, **ख.** कर्तृ॰ वा॰ – नहीं त्यागने वाला – *जानं ... दिट्ठिं अप्पटिनिस्सट्ठेन सद्धिं सम्भुञ्जिस्सथापि संवसिस्सथापि सहापि सेय्यं कप्पेस्सथ,* पाचि॰ 183; – **तण्ह** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसने अभी तक तृष्णा का त्याग नहीं किया है – *अप्पटिनिस्सट्ठतण्हाति निस्सरणप्पहानाभावेन भवे पतिट्ठितं अनुसयकिलेसं अप्पटिनिस्सज्जित्वा ठितत्ता अप्पटिनिस्सट्ठतण्हा,* महानि॰ अट्ठ॰ 125; *अमुत्ततण्हा अप्पहीनतण्हा अप्पटिनिस्सट्ठतण्हाति – अवीततण्हासे भवाभवेसु,* महानि॰ 35.

अप्पटिपक्खभाव पु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रतिपक्षभाव], विरोध का अभाव, किसी एक तार्किक प्रतिज्ञा के विरुद्ध विरोधी द्वारा स्थापित विपरीत प्रतिज्ञा का अभाव – *ञानस्स पापहेतूनं अप्पटिपक्खभावतो,* उदा॰ अट्ठ॰ 61.

अप्पटिपज्जन नपुं॰, पटिपज्जन का निषे॰, अनभ्यास, व्यवहार में नहीं उतारना, स्वयं को नहीं लगा देना – *यथानुसिट्ठं अप्पटिपज्जनतो पदक्खिणेन अनुसासनिं न गण्हातीति अप्पदक्खिणग्गाही अनुसासनिं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.179.

अप्पटिपज्जमान त्रि॰, पटिपज्जमान का निषे॰ [अप्रतिपद्यमान], अभ्यास नहीं कर रहा, व्यवहार में आचरण न करने वाला, स्वयं को न लगा देने वाला – *सद्धाविरहितो ... अत्तनो विषये अपटिपज्जमानो विसेसं नाधिगच्छति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.113.

अप्पटिपहरण नपुं॰, पटिप्पहरण का निषे॰ [अप्रतिप्रहार], उलटकर प्रहार न करना, पलट कर वार न करना – *पहरन्तं वा अप्पटिपहरणं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.368.

अप्पटिपुग्गल त्रि., ब. स. [अप्रतिपुद्गल], वह, जिसके समान कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है, अद्वितीय, अनुपम, – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अत्थि सक्यकुले जातो, बुद्धो अप्पटिपुग्गलो,* थेरीगा. 185; *यत्थ एतादिसो सत्था, लोके अप्पटिपुग्गलो,* दी. नि. 2.117; *अप्पटिपुग्गलोति पटिभागपुग्गलविरहितो,* दी. नि. अट्ठ. 2.167; *अप्पटिपुग्गलोति अञ्ञो कोचि अहं बुद्धोति एवं पटिञ्ञं कातुं समत्थो पुग्गलो नत्थीति अप्पटिपुग्गलो,* अ. नि. अट्ठ. 1.94; – **लं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *ताहं दिसं नमस्सिस्सं, जिनं अप्पटिपुग्गलं,* अप. 1.157; – **लस्स** पु., ष. वि., ए. व. – *तथागतस्सप्पटिपुग्गलस्स, उप्पज्जि कारुञ्ञता सब्बसत्ते,* बु. वं. 1.2; – **त्त** नपुं., भाव. [अप्रतिपुद्गलत्व], अनुपम या अद्वितीय होना, अपने जैसे किसी अन्य व्यक्ति का न रहना - *असमोति अप्पटिपुग्गलत्ताव सब्बसत्तेहि असमो,* अ. नि. अट्ठ. 1.94.

अप्पटिपुच्छा अ., क्रि. वि., पटिपुच्छा का निषे. [अप्रतिपृच्छा], उत्तर दिए बिना, जांच-पड़ताल के बिना, बिना कहे हुए ही – *समग्गो सङ्घो पटिपुच्छाकरणीयं कम्मं अप्पटिपुच्छा करोति,* महाव. 425; *अप्पटिपुच्छा कतं होति, ... तीहङ्गेहि समन्नागतं तज्जनीयकम्मं अधम्मकम्मञ्च होति, अविनयकम्मञ्च, दुवूपसन्तञ्च,* चूळव. 4.

अप्पटिबद्ध त्रि., पटि + √बन्ध के भू. क. कृ. का निषे. [अप्रतिबद्ध], किसी के साथ नहीं जुड़ा हुआ या बंधा हुआ, स्वतन्त्र, बन्धनमुक्त, – **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *अनिस्सितो अप्पटिबद्धो विप्पमुत्तो विसञ्ञुत्तो विमरियादिकतेन चेतसा विहरति,* चूळनि. 59; *अप्पटिबद्धोति मानेन न बद्धो,* महानि. अट्ठ. 16; – **द्धं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अप्पटिबद्धं चित्तं छन्दरागे न इञ्जतीति – आनेञ्जं,* पटि. म. 377; – **चित्त** त्रि., ब. स. [अप्रतिबद्धचित्त], नहीं जुड़े हुए या बंधे हुए चित्त वाला, बन्धनमुक्त चित्त वाला, आसक्ति या लगावों से मुक्त चित्त वाला - *कुले कुले अप्पटिबद्धचित्तो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो,* सु. नि. 65; *कुले कुले अप्पटिबद्धचित्तोति खत्तियकुलादीसु यत्थ कत्थचि किलेसवसेन अलग्गचित्तो, चन्दूपमो निच्चनवको हुत्वाति अत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 1.94; *कामेसु अप्पटिबद्धचित्ता, उद्धंसोताति वुच्चती'ति,* थेरीगा. 12.

अप्पटिबल त्रि., ब. स. [अप्रतिबल], अक्षम, असमर्थ, - **पञ्ञ** त्रि., ब. स. [अप्रतिबलप्रज्ञ], अक्षम या निर्बल प्रज्ञा वाला – *तत्थ असमत्थपञ्ञन्ति, कुटुम्बं विचारेतुं अप्पटिबलपञ्ञं अतितरुणिञ्ञेव समानं,* जा. अट्ठ. 4.32.

अप्पटिबाहनीय त्रि., पटि + √बाह के सं. कृ. का निषे., वह, जिसे बाहर न किया जा सके या जिससे बचा जा सके, अनिवारणीय – *तस्मा ... सम्मासम्बुद्धेनपि अप्पटिबाहनीयमेतन्ति दस्सेति,* पे. व. अट्ठ. 250.

अप्पटिबाहित त्रि., पटि + √बाह के भू. क. कृ. का निषे., अनिन्दित, अनुपेक्षित, अनिवारित – *अप्पटिकुट्ठाति अप्पटिबाहिता,* स. नि. अट्ठ. 2.247; – **बाहित्वा** पटि + √बाह के पू. का. कृ. का निषे., निन्दा न करके, बुरा-भला न कह कर, तिरस्कार न करके *अप्पटिक्कोसित्वाति बालदुब्भासितं तया भासितन्ति एवं अप्पटिबाहित्वा,* दी. नि. अट्ठ. 1.133; – **बाहिरभाव** पु., निन्दा न करना, तिरस्कार न करना, खण्डन न करना, अप्रतिषेध, स्वीकृति - *चतुत्थवारे ... विसपक्खिपनपापकम्मस्स अप्पटिबाहिरभावं ञत्वा चतुत्थवारे न अगमासि,* जा. अट्ठ. 4.138.

अप्पटिभय त्रि., ब. स. [अप्रतिभय], वह, जिससे किसी प्रकार का भय न हो, निर्भीक, भयरहित – **यो** पु., प्र. पु., ए. व. *सप्पटिभयो बालो, अप्पटिभयो पण्डितो, ...,* म. नि. 3.108; – **यं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *गामन्तं अनुप्पत्तो खेमं अप्पटिभयं'ति,* दी. नि. 1.64; – **या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *एवमस्स ... दिसा पटिच्छन्ना होति खेमा अप्पटिभया,* दी. नि. 3.144; – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *पारिमं तीरं खेमं अप्पटिभयं,* म. नि. 1.188; – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *अनुपद्दुता अनुपसट्ठा खेमिनो अप्पटिभया गच्छन्तीति वुत्तं होति,* खु. पा. अट्ठ. 125.

अप्पटिभाग त्रि., ब. स. [अप्रतिभाग], वह, जिसका प्रतिभागी कोई न हो अथवा जिसके समान कोई न हो, अतुलनीय, बेजोड़, – **गो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एतेसन्ति ... सीलवन्तानं सप्पुरिसानं सीलगन्धोव अनुत्तरो असदिसो अपटिभागोति,* ध. प. अट्ठ. 1.237; *अप्पटिभागो बुद्धो'ति,* मि. प. 225; – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. *अप्पटिभागं, ..., निब्बानं,* मि. प. 289.

अप्पटिमान त्रि., ब. स. [अप्रतिभान], किंकर्तव्यविमूढ़, उलझन भरे चित्त वाला, कुछ भी सोचने में असमर्थ, उत्तर देने में अक्षम, भौंचक्का – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरिट्ठो भिक्खु गद्धबाधिपुब्बो तुण्हीभूतो मङ्कुभूतो पत्तक्खन्धो अधोमुखो पज्झायन्तो अप्पटिभानो निसीदि,* म. नि. 1.186; *अप्पटिभानोति किञ्चि पटिभानं अपस्सन्तो भिन्नपटिभानो एवरूपम्पि नाम निय्यानिकसासनं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.)

1(2).11; - **नं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अथ खो दुम्मुखो ... सच्चकं ... अप्पटिभानं विदित्वा भगवन्तं एतदवोच,* म. नि. 1.299; - **ना** पु., प्र. वि., ब. व. - *सङ्घाटिपल्लत्थिकाय निसीदिंसु तुण्हीभूता मङ्कुभूता पत्तक्खन्धा अधोमुखा पज्झायन्ता अप्पटिभाना,* पारा. 253; - **ता** स्त्री., भाव. [अप्रतिभानत्व], किंकर्तव्यविमूढ़ता, जड़ता, निरुत्तर हो जाना, भौचक्का हो जाना - *सो अप्पटिभाणताय एवं भविस्सती'ति पक्कामि,* जा. अट्ठ. 4.12.

अप्पटिम त्रि., ब. स. [अप्रतिम], अतुलनीय, लाजवाब, बेजोड़, अनोखा, - **मो** पु., प्र. वि., ए. व. - *ओगाहि सत्था सुकिलन्तरूपो, तथागतो अप्पटिमोध लोके,* उदा. 168; *अप्पटिमोध लोकेति अप्पटिमो इध इमस्मिं सदेवके लोके,* उदा. अट्ठ. 327; *विधुरोति विगतधुरो, अप्पटिमोति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.273; *उत्तमो बुद्धो'ति, पवरो बुद्धो'ति असमो बुद्धो'ति, असमसमो बुद्धो'ति अप्पटिमो बुद्धोति, अप्पटिभागो बुद्धो'ति,* मि. प. 225.

अप्पटिमंस त्रि., पटिमस्स के अप. का निषे. [अप्रतिमृश्य], **शा. अ.** स्पर्श नहीं करने योग्य, अंगुलि से संकेत नहीं करने योग्य, **ला. अ.** दोषरहित, निर्दुष्ट, - **सेन** पु., तृ. वि., ए. व. - *परिसुद्धेन कायसमाचारेन समन्नागतो - अच्छिद्देन अप्पटिमंसेन,* चूळव. 409; *परिसुद्धेनम्हि वचीसमाचारेन समन्नागतो अच्छिद्देन अप्पटिमंसेन,* अ. नि. 3(2).65; *अप्पटिमंसेनातिआदीसु येन केनचिदेव पहटो वा होति,* अ. नि. अट्ठ. 3.309.

अप्पटिरूप / अप्पतिरूप त्रि., ब. स. [अप्रतिरूप], अनुपयुक्त, नहीं अनुकूल, प्रतिकूल, मर्यादा या प्रतिष्ठा के विपरीत, **पो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अयुत्तो अप्पत्तो अननुच्छविको अनरहो अप्पतिरूपो धुतङ्गं समादियति,* मि. प. 322; - **पं**[1] पु., द्वि. वि., ए. व. - *न च चीवरहेतु अनेसनं अप्पतिरूपं आपज्जति,* स. नि. 1(2).174; महानि. 375; - **पं**[2] नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अननुलोमिकत्ता एव च अप्पतिरूपं,* पारा. अट्ठ. 1.169; - **त्त** नपुं., भाव. [अप्रतिरूपत्व], अनुपयुक्तता, अनुकूल न होना, अनुरूप न होना - *अप्पतिरूपत्ता एव च अस्सामणकं, समणानं कम्मं न होति,* पारा. अट्ठ. 1.169.

अप्पटिलद्ध त्रि., पटि + √लभ के भू. क. कृ. का निषे. [अप्रतिलब्ध], अभी तक अप्राप्त, अभी तक प्राप्त नहीं किया गया, - **द्धाय** स्त्री., ष. वि., ए. व. - *हेतु अट्ठ पच्चया आदिब्रह्मचरियिकाय पञ्ञाय अप्पटिलद्धाय पटिलाभाय,* अ. नि. 3(1).3; - **द्धस्स** पु., ष. वि., ए. व. - *इति रूपा'ति - अप्पटिलद्धस्स पटिलाभाय चित्तं पणिदहति,* महानि. 24.

अप्पटिलोमवुत्ति त्रि., ब. स. [अप्रतिलोमवृत्ति], वह, जो विपरीत स्वभाव वाला न हो, अनुपूरक, वह, जो अनुकूल प्रकृति वाला हो - *असङ्कुसकवुत्तिस्साति अप्पटिलोमवुत्ति अस्स,* जा. अट्ठ. 7.193.

अप्पटिवत्तिय त्रि., पटि + √वत्त के सं. कृ. का निषे. [अप्रतिवर्त्य], नहीं पलटने योग्य, नहीं रोक देने योग्य, नहीं पीछे की ओर पुनः वापस ले जाने योग्य, - **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *धम्मेन चक्कं वत्तेमि, चक्कं अप्पटिवत्तियं,* सु. नि. 559; मि. प. 178; *इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं अप्पटिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा,* म. नि. 3.297; *आसभीवाचाभासनं अप्पटिवत्तियवर- धम्मचक्कप्पवत्तनस्स पुब्बनिमित्तं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).51; - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *धम्मपरियायो पवत्तितो अप्पतिवत्तियो समणेन वा ब्राह्मणेन वा,* म. नि. 3.123.

अप्पटिवान 1.नपुं., पटिवान का निषे. [अप्रतिवारण], **शा. अ.** उत्कण्ठा का अभाव, अविरोध, अप्रतिकूलता, बाधा का अभाव, **ला. अ.** थकावट का अभाव, अप्रतिक्रमण, असन्तुष्टि, अतृप्ति, अनुत्कण्ठा - *तुम्हे चे पि, भिक्खवे, अप्पटिवानं पदहेय्याथ,* अ. नि. 1(1).66; **2.** त्रि., ब. स., असन्तुष्ट - *धम्मानं अतित्तो अप्पटिवानो कालङ्कतो,* अ. नि. 1(1).314; *अप्पटिवानोति अनिवत्तो अनुक्कण्ठितो,* अ. नि. अट्ठ. 2.232; *अतित्तो अप्पटिवानो मातुगामो कालं करोति,* अ. नि. 1(1).93; *तिण्णं धम्मानं अतित्तो अप्पटिवानो मातुगामं कालं करोती'ति,* जा. अट्ठ. 2.270; - **चित्त** त्रि., ब. स., उत्कण्ठा से मुक्त चित्त वाला, अविचल चित्त वाला - *अप्पटिवानचित्तोति अनुक्कण्ठितचित्तो,* अ. नि. अट्ठ. 3.20; *तस्मा ददे अप्पटिवानचित्तो, यत्थ दिन्नं महप्फलं,* अ. नि. 2(1).37.

अप्पटिवानिता स्त्री., भाव., अविचलता, पीछे कदम न ले जाना, बाधारहित अथवा निर्मुक्त प्रयास करने की दशा *तत्थ अप्पटिवानिताति अप्पटिक्कमना अनोसक्कना,* अ. नि. अट्ठ. 2.5; *अप्पटिवानिता च पधानस्मिन्ति अरहत्तं अपत्वा पधानस्मिं अनिवत्तनता अनोसक्कनता,* ध. स. अट्ठ. 100; *असन्तुट्ठिता च कुसलेसु धम्मेसु अप्पटिवानिता च पधानस्मिं,* दी. नि. 3.171; *अप्पटिवानिता च पधानास्मिन्ति कुसलानं धम्मानं भावनाय सक्कच्चकिरियता,* दी. नि. अट्ठ. 3.150.

अप्पटिवानिय / अप्पटिवानीय त्रि., [बौ. सं. अप्रतिवाणीय], नीरसता या उबाऊपन नहीं लानेवाला, प्रतिबाधित न होने

योग्य, नहीं रोके जा सकने योग्य - *तञ्च अप्पटिवानीयं, असेचनकमोजवं,* थेरीगा॰ 55; अप॰ 2.277; *तञ्च पन अप्पटिवानीयन्ति तञ्च पन धम्मं अप्पटिवानीयं देसेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.277.

अप्पटिवानी[1] त्रि॰, अप्पटिवान से व्यु॰ [अप्रतिवारणिन्], अविचल चित्त वाला, उत्कण्ठारहित या सुदृढ़ प्रयास करने वाला - *अप्पटिवानी सुदाहं, भिक्खवे पदहामि,* अ॰ नि॰ 1(1).66.

अप्पटिवानी[2] स्त्री॰, अप्पटिवानिता के स्थान पर प्रयुक्त [बौ॰ सं॰ अप्रतिवाणिः], अनुत्कण्ठता, दृढ़ता, वापस कदम न लौटाना, अविचलता - *वायामो च उस्साहो च उस्सोळ्हिञ्च अप्पटिवानी च सति च सम्पजञ्ञञ्च करणीयं,* अ॰ नि॰ 1(2).108; अ॰ नि॰ 2(2).25; *जरामरणं, भिक्खवे अजानता ... पे ... अप्पटिवानी करणीया ... पे ...,* स॰ नि॰ 1(2). 117; *अप्पटिवानीति अनिवत्तनता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.317.

अप्पटिविजानन्तु त्रि॰, पटि + वि + √ञा के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिविजानत्], सुख और दुःख का संवेदन न करने वाला - *अप्पटिविजानन्तस्स सुपिनो न होति,* मि॰ प॰ 275.

अप्पटिविज्झन नपुं॰, पटि + √विध के क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [अप्रतिवेध], गहरी पैठ का अभाव, उचित ध्यान का अभाव, तीरण एवं प्रहाण परिज्ञा द्वारा धर्मों की यथार्थता के ज्ञान का अभाव - *अप्पटिवेधाति अप्पटिविज्झनेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.119; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.329; *अप्पटिवेधाति तीरणप्पहानपरिञ्ञावसेन अप्पटिविज्झना,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.84; - **क** त्रि॰, धर्मों की यथार्थ प्रकृति की गहराई तक जाकर प्रतिवेध-ज्ञान द्वारा उनके यथार्थ का ज्ञानदर्शन न करने वाला - *चतुन्नं अरियसच्चानं अप्पटिविज्झनकमोहञ्च अतीतो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.395; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.172.

अप्पटिविज्झन्तु त्रि॰, पटि + √विध के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, प्रतिवेध-ज्ञान द्वारा सत्य का ज्ञानदर्शन नहीं करने वाला - *उत्तरि अप्पटिविज्झन्तो ब्रह्मलोकूपगो होति,* अ॰ नि॰ 3(2).308; पटि॰ म॰ 304; मि॰ प॰ 190.

अप्पटिविज्झिय पटि + √विध के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिविध्य], प्रतिवेध-ज्ञान द्वारा नहीं जान कर - *बाला च मोहेन रसानुगिद्धा, अनागतं अप्पटिविज्झियत्थं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.148; *अप्पटिविज्झियत्थन्ति अप्पटिविज्झित्वा अत्थं, पठममेव कतब्बं अकत्वाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.149.

अप्पटिविदित त्रि॰, पटि + √विद के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिविदित], प्रतिवेध-ज्ञान द्वारा अथवा परिज्ञा द्वारा अज्ञात, गहन आन्तरिक ज्ञान द्वारा नहीं जाना गया - *येसं धम्मा अप्पटिविदिता, परवादेसु नीयरे,* स॰ नि॰ 1(1).4; *अप्पटिविदिताति ञाणेन अप्पटिविद्धा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.24.

अप्पटिविद्ध त्रि॰, पटि + √विध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिविद्ध], **शा॰ अ॰** गहराई तक नहीं बेधा गया, बहुत गहरे जाकर नहीं छेदा गया, स्वस्थ, घायल अवस्था को अप्राप्त - ... *तव सेनं ब्रह्मदत्तेन दिन्नं अप्पटिविद्धं आनेस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.275; **ला॰ अ॰** गहराई के साथ नहीं समझा गया, ठीक से नहीं जाना गया - *अयम्पि खो ते, भद्दालि, समयो अप्पटिविद्धो अहोसि,* म॰ नि॰ 2.110; *भद्दालीति, ... कारणं अत्थि, तम्पि ते न पटिविद्धं न सल्लक्खितन्ति दस्सेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.108; - **चतुसच्च** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिविद्धचतुःसत्य], वह, जिसने चार सत्यों का गहराई के साथ ज्ञान प्राप्त नहीं किया है - *अनभिसम्बुद्धस्साति अप्पटिविद्धचतुसच्चस्स,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).120.

अप्पटिविभत्त त्रि॰, पटि + वि + √भज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिविभक्त], विभक्त नहीं किया हुआ, विभाजित नहीं किया गया, समान भागों में अविभाजित, समान रूप से ग्राह्य - *यं ... कुले देय्यधम्मं सब्बं तं अप्पटिविभत्तं भविस्सति ...,* स॰ नि॰ 2(2).293; *अप्पटिविभत्तन्ति इदं भिक्खूनं दस्साम, इदं अत्तना भुञ्जिस्सामा'ति एवं अविभत्तं भिक्खूहि सद्धिं साधारणमेव भविस्सतीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.139; - **भोग** पु॰, कर्म॰ स॰ [अप्रतिविभक्तभोग], विभाजित न करके वस्तुओं का समान रूप से उपभोग - *ते किर अञ्ञमञ्ञं अप्पटिविभत्तभोगा परमविस्सासिका अहेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.350; - **भोगी** त्रि॰, पटिविभत्तभोगी का निषे॰ [अप्रतिविभक्तभोगिन्], विभाजित न किये गये भोजन, वस्त्र आदि का उपभोग करने वाला, सामान्य रूप में किसी भी भेदभाव के बिना का भोग करने वाला - *तथारूपेहि लाभेहि अप्पटिविभत्तभोगी होति, सीलवन्तेहि सब्रह्मचारीहि साधारणभोगी,* म॰ नि॰ 1.404; *तदुभयम्पि अकत्वा यो अप्पटिविभत्तं भुञ्जति, अयं अप्पटिविभत्तभोगी नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).290; *ये ते लाभा ... लाभेहि अप्पटिविभत्तभोगी भविस्सन्ति सीलवन्तेहि सब्रह्मचारीहि साधारणभोगी,* दी॰ नि॰ 2.63.

अप्पटिविरत त्रि॰, पटि + वि + √रम के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिविरत], किसी काम से पूरी तरह नहीं हटा हुआ, वह, जो पूरी तरह से बिलग नहीं हुआ है - *पाणातिपाता अप्पटिविरता अदिन्नादाना अप्पटिविरता, ... दुस्सीला*

पापधम्मा, इतिवु॰ 47; *नपटिविरताति अप्पटिविरता,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 203; *सुरामेरयपाना अप्पटिविरता ...,* चूळव॰ 465.

अप्पटिविरुद्ध त्रि॰, पटि + वि + √रुध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिविरुद्ध], अविरुद्ध, वह, जो किसी के विरोध में नहीं है, अनुकूल – *निद्दा अनुरुद्धप्पटिविरुद्धस्स उदाहु अननुरुद्धअप्पटि-विरुद्धस्सा'ति?,* म॰ नि॰ 1.95.

अप्पटिवुट्ठ त्रि॰, पटि + √कुस के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिक्रुष्ट], अतिरस्कृत, अनुपेक्षित, अनिन्दित, वह, जिसे डांटा-फटकारा न गया हो, वह, जिसे खरी-खोटी बातें न कही गयी हों, – **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असंकिलिट्ठो अनुवज्जो अप्पटिवुट्ठो समणेहि ब्राह्मणेहि विञ्ञूहीति,* अ॰ नि॰ 1(1).206; – **ट्ठा** ब॰ व॰ – *न सङ्कीयन्ति, न सङ्कीयिस्सन्ति, अप्पटिवुट्ठा समणेहि ब्राह्मणेहि विञ्ञूहि,* स॰ नि॰ 2(1).66; कथा॰ 285.

अप्पटिवेक्खित्वा / अप्पटिवेक्खिय पटि + वि + √इक्ख के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रत्यवेक्ष्य], प्रत्यवेक्षण न करके, उचित सोच-विचार न करके, स्वयं प्रत्यक्ष रूप में उचित अनुचिन्तन न करके – *अप्पटिवेक्खित्वा मंसं परिभुञ्जिस्ससि,* महाव॰ 294; *सामं अप्पटिवेक्खियाति परस्स वचनं गहेत्वा अत्तनो पच्चक्खं अकत्वा पथविस्सरो राजा दण्डं न पणये न पट्ठपेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 4.171; *बहुभण्डं अवहाय, मग्गं अप्पटिवेक्खिय,* जा॰ अट्ठ॰ 4.4.

अप्पटिवेदित त्रि॰, पटि + √विद के प्रेर॰ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिवेदित], वह, जिसके बारे में पहले से घोषणा नहीं की गयी है, असूचित, नहीं बतलाया गया – *अनामन्तो पविसति, पुब्बे अप्पटिवेदितो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.307.

अप्पटिवेध पु॰, पटिवेध का निषे॰ [अप्रतिबेध], अज्ञान, प्रतिवेधस्तरीय ज्ञान का अभाव, गहरी पैठ का अभाव, गम्भीर आन्तरिक ज्ञान का अभाव, – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं अञ्ञाणं ... असम्बोधो अप्पटिवेधो असङ्गाहणा ... मोहो पमोहो सम्मोहो ... मोहो अकुसलमूलं–,* पु॰ प॰ 127; – **धा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियसच्चानं अननुबोधा अप्पटिवेधा एवमिदं दीघमद्धानं ... तुम्हाकञ्च,* दी॰ नि॰ 2.71; *अप्पटिवेधाति अप्पटिविज्झनेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.119; द्रष्ट॰ पटिवेध के अन्त॰.

अप्पटिसंविदित त्रि॰, पटि + सं + √विद के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिसंविदित], वह, जिसे किसी (विषय या व्यक्ति आदि) का पूरा-पूरा अनुभव नहीं है या वह, जिसके विषय में ठीक-ठीक ज्ञान नहीं है, अनुद्घोषित, असूचित, अविज्ञात, – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *पुब्बे अप्पटिसंविदितो इन्दखीलं अतिक्कामेय्य,* पाचि॰ 212; ... *योहं पुब्बे अप्पटिसंविदितो समणं गोतमं दस्सनाय उपसङ्कमेय्य'न्ति,* म॰ नि॰ 2.349-50; *अप्पटिसंविदितोति अविञ्ञातआगमनो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.279; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुब्बे अप्पटिसंविदितं मं, ... पञ्हं अपुच्छि,* स॰ नि॰ 1(2).48; *पुब्बे अप्पटिसंविदितन्ति इदं नाम पुच्छिस्सतीति पुब्बे मया अविदितं अञ्ञातं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.58; – **विदित्वा** पटि + सं + √विद के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिसंवेद्य], संवेदन या अनुभव न करके, ज्ञान न पाकर, बिना जाने हुए ही – *सञ्चेतनिकानं कम्मानं कतानं उपचितानं अप्पटिसंवेदित्वा दुक्खस्सन्तकिरियं वदामि,* अ॰ नि॰ 3(2).260; 262.

अप्पटिसंवेदन त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिसंवेदन], वेदनारहित, किसी प्रकार की वेदना का अनुभव न करने वाला – *अप्पटिसंवेदनो मे अत्ता'ति इति वा हि,* दी॰ नि॰ 2.52; *अप्पटिसंवेदनो मे अत्ताति इमिना रूपक्खन्धवत्थुका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.85.

अप्पटिसंहरणा / अप्पटिङ्करणा स्त्री॰, पटिसंहरणा का निषे॰ [अप्रतिसंहरण], पीछे की ओर पैर या कदम न मोड़ना, अविचलता, स्थिरता, अकम्पता, छोड़कर न भाग जाना, अपरित्याग – *अप्पटिवानीति अनुक्कण्ठना अप्पटिसङ्करणा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.101.

अप्पटिसङ्खा[1] स्त्री॰, पटिसङ्खा का निषे॰ [अप्रतिसंख्या], जागरुक चेतना का अभाव, सुनिश्चित निर्णय या ज्ञान का अभाव, प्रज्ञा द्वारा ज्ञात नहीं किया जाना, यथार्थ ज्ञान का अभाव, – **ङ्खा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधेकच्चो अप्पटिसङ्खा अयोनिसो आहारं आहारेति दवाय मदाय मण्डनाय विभूसनाय,* ध॰ स॰ 1353; *रागादीनं अविनयो असंवरो अप्पहानं अपटिसङ्खाति अयं अविनयो नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.70; – **ङ्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पटिसङ्खं पजहतो पटिसङ्खानुपस्सनावसेन धम्मा अञ्ञमञ्ञं नातिवत्तन्तीति,* पटि॰ म॰ 29; – **ङ्खाय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वतिं भिन्दित्वा गावीनं पविसनं विय सहसा अप्पटिसङ्खाय पमादं आगम्म रागस्स उप्पज्जनं,* उदा॰ अट्ठ॰ 191.

अप्पटिसङ्खाय / अप्पटिसङ्खा[2] अ॰, क्रि॰ वि॰, मूल रूप में पटि + सं + √खा के पू॰ का॰ कृ॰ अप्पटिसङ्खाय का ही संक्षिप्तीकृत रूप [अप्रतिसंख्याय], बिना चेतना के, ठीक से जाने-बूझे बिना ही, प्रत्यवेक्षण के बिना, उचित सोच-विचार किये बिना – *सो तं आपानीयकंसं सहसा अप्पटिसङ्खा*

पिवेय्य, स॰ नि॰ 1(2).96; *अप्पटिसङ्खाति अपच्चवेक्खित्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.105; *सो तं उदकरहदं सहसा अप्पटिसङ्खा पक्खन्देय्य,* अ॰ नि॰ 3(2).172.

अप्पटिसन्धि स्त्री॰, पटिसन्धि का निषे॰ [अप्रतिसन्धि], पुनर्जन्म का अभाव, पुनर्जन्म से मुक्ति, निर्वाण, अपुनर्भव, - **न्धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पटिसन्धि अभिञ्ञेय्या,* पटि॰ म॰ 11; – **न्धिया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाञ्ञं पत्थयते किञ्चि, अञ्ञत्र अप्पटिसन्धिया'ति,* महानि॰ 328; *अप्पटिसन्धियाति निब्बानं ठपेत्वा,* महानि॰ अट्ठ॰ 355.

अप्पटिसन्धिय / अप्पटिसन्धिक त्रि॰, पटिसन्धिय / अपटिसन्धिक का निषे॰ [अप्रतिसन्धेय], 1.**शा॰ अ॰** वह, जिसे एक साथ जोड़ कर न रखा जा सके, **ला॰ अ॰** ठीक न करने योग्य, असाध्य, मूल रूप में वापस न लाने योग्य, फिर से नहीं जोड़े जाने योग्य, - **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथापि ब्रह्मे उदकुम्भो, भिन्नो अप्पटिसन्धियो,* पे॰ व॰ 93; जा॰ अट्ठ॰ 3.143; *भिन्नो अप्पटिसन्धियोति ब्राह्मण सेय्यथापि उदकघटो मुग्गरप्पहारादिना भिन्नो अप्पटिसन्धियो पुन पाकतिको न होति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 56; - **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि नाम पुथुसिला द्विधा भिन्ना अप्पटिसन्धिका होति,* पारा॰ 87; 2. त्रि॰, अपटिसन्धि से व्यु॰ [अप्रतिसन्धिक], पुनर्जन्म की ओर न ले जाने वाला, पुनर्भव का अविषय, - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुपवज्जन्ति अप्पवत्तिकं अप्पटिसन्धिकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.18; - **केन** पु॰ / नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रूपायतनादिगोचरताय रूपसञ्ञादिभेदा सब्बापि सञ्ञा अप्पटिसन्धिकेन निरोधेन निरुज्झि,* उदा॰ अट्ठ॰ 350; - **कत्त** नपुं॰, अप्पटिसन्धिक का भाव॰ [अप्रतिसन्धिकत्व], पुनर्जन्म की ओर नहीं ले जाना, पुनर्भव का कारण न होना – *किलेसाभावेनेव कम्मं अप्पटिसन्धिकत्ता अवस्सट्ठं नाम होतीति ... कम्मं पजहि,* उदा॰ अट्ठ॰ 269; – **कभाव** पु॰, उपरिवत् – *तं त्वन्ति तस्स मय्हं त्वं सुखेनेव निब्बानगामिमग्गं आरुय्ह अपटिसन्धिकभावं पत्थेन्तस्स तं अत्थञ्च ... अक्खाहि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.51.

अप्पटिसन्धेय्य त्रि॰, पटि + सं + √धा के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिसन्धेय], फिर नहीं जोड़ने योग्य, मरम्मत न करने योग्य – *पुन अप्पटिसन्धेया, द्विधा भिन्ना सिला विय,* विन॰ वि॰ 1995.

अप्पटिसम त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिसम], वह, जिसके समान कोई भी दूसरा न हो, बेजोड़, अनुपम, - **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथागतो ... अदुतियो असहायो अप्पटिमो अप्पटिसमो ... असमो असमसमो द्विपदानं अग्गो'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).29; *सो भगवा ... अप्पटिसमो असदिसो अतुलो ... अनन्तबलो ... उप्पादेत्वा ... पापुणित्वा ... धम्मनगरं मापेसि,* मि॰ प॰ 302; - **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... बुद्धं भगवन्तं ... असमं असमसमं अप्पटिसमं अप्पटिभागं ... पुरिसनिसभं ... पटिलभिं,* चूळनि॰ 189-90; *अप्पटिसमन्ति अत्तनो सदिसविरहितं,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 77; – **माय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवा इमं ... बुद्धलीळाय अपटिसमाय बुद्धसिरिया जेतवनविहारं पाविसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.102; – **मस्स** पु॰ / नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं तथागतस्स ... अग्गपुग्गलवरस्स ... असमसमस्स अनुपमस्स अप्पटिसमस्स छवकं लाभकं परित्तं पापं ... लाभन्तरायमकासी'ति,* मि॰ प॰ 155; तुल॰ असम, अप्पटिम.

अप्पटिसरण त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिशरण], **क.** बेसहारा, आश्रयहीन, सुरक्षा से रहित, आधारहीन, अनाथ – *सो दलिद्दो अप्पटिसरणो हुत्वा भरियं आदाय सङ्कसेट्ठिं पच्चयं कत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.445; *तुम्हेसु पक्कन्तेसु जेतवनविहारो अप्पटिसरणो होति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.204; **ख.** आश्रय-स्थल अथवा शरण स्थल प्रदान न करने वाला, शरण स्थल से रहित, - **णा** पु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *तेन खो पन समयेन विहारा अनाळिन्दका होन्ति अप्पटिसरणा,* चूळव॰ 279.

अप्पटिसिद्ध त्रि॰, पटिसिद्ध का निषे॰ [अप्रतिषिद्ध], वह, जिसका निषेध नहीं किया गया है, अनुमोदित, स्वीकृत – *इतरथा हि चक्खु अत्ता वा अत्तनियं वाति अप्पटिसिद्धमेव सिया,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 142.

अप्पटिसेट्ठ त्रि॰ ब॰ स॰ [अप्रतिश्रेष्ठ], वह, जिससे अधिक श्रेष्ठ कोई दूसरा न हो, सर्वश्रेष्ठ, श्रेष्ठ प्रतिद्वन्द्वी रहित, अनुत्तर, - **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अतुलियं धुतगुणं अप्पमेय्यं असमं अप्पटिसमं अप्पटिभागं अप्पटिसेट्ठं उत्तरं सेट्ठं विसिट्ठं,* मि॰ प॰ 322.

अप्पटिस्स / अप्पतिस्स त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिश्रव / अप्रतिश्रय, बौ॰ सं॰ अप्रतीश], अविनीत, आज्ञा पालन न करने वाला, वश में न रहने वाला, उद्दण्ड, श्रेष्ठ-जनों के प्रति गौरव-भाव न रखने वाला, - **स्सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पतिस्सोति पतिस्सयरहितो कञ्चि जेट्ठकठाने अट्ठपेत्वाति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.179; *सो सत्थरिपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, धम्मेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो, सङ्घेपि अगारवो विहरति अप्पतिस्सो,* चूळव॰ 196; – **स्सा** ब॰ व॰ – *भिक्खूसु अगारवा*

अप्पतिस्सा असभागवुत्तिका विहरिस्सन्ती'ति, महाव॰ 106; *यं मयं अञ्ञमञ्ञं अगारवा अपतिस्सा असभागवुत्तिनो विहरेय्याम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.215.

अप्पटिस्सति स्त्री॰, पटिस्सति का निषे॰ [अप्रतिस्मृति], स्मृति का अभाव, अनुस्मृति का अभाव, चित्त की जागरूकता का अभाव - *या अस्सति अननुस्सति अप्पटिस्सति अस्सति अस्सरणता अधारणता,* पु॰ प॰ 127; ध॰ स॰ 1356; *अननुस्सति अप्पटिस्सतीति उपसग्गवसेन पदं वड्ढितं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 424.

अप्पटिस्सय त्रि॰, अट्ठ॰ में अप्पटिस्स के निर्वचन के सन्दर्भ में सदा अप्पटिस्स के साथ प्रयुक्त [अप्रतिश्रय], **शा॰ अ॰** स्वीकृतिपरक उत्तर न देने वाला, **ला॰ अ॰** आज्ञापालन न करने वाला, उद्दण्ड, हठी, - **स्सया** पु॰, **प्र॰** वि॰, ब॰ व॰ - *अप्पतिस्साति अप्पतिस्सया अनीचवुत्तिका,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 179; *अप्पतिस्सोति अप्पतिस्सयो अनीचवुत्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.198; - **वुत्तिरस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिश्रयवृत्तिरस], आज्ञापरायणता से च्युत होने की क्रिया करने वाला, उद्दण्डता या हठधर्मिता की क्रिया करने वाला - *थम्भो अप्पतिस्सयवुत्तिरसो अमद्दवता पच्चुपट्ठानो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).114.

अप्पटिस्सव/अप्पतिस्सव त्रि॰, ब॰ स॰, अप्पटिस्स का समाना॰ [अप्रतिश्रव], स्वीकृतिपरक वचन न बोलने वाला, आज्ञा का पालन न करने वाला, उद्दण्ड - *चतुत्थ सिक्खापदे – अप्पतिस्साति अप्पतिस्सवा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 7; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अप्रतिश्रवता], उद्दण्डता, आज्ञा का पालन न करना, हठधर्मिता - *अनादरियं अनादरियता अगारवता अप्पतिस्सवता – अयं वुच्चति दोवचस्सता,* पु॰ प॰ 126; *अनादरियं अनादरता अगारवता अप्पटिस्सवता – अयं वुच्चति दोवचस्सता,* ध॰ स॰ 1332; - **भाव** पु॰, उपरिवत् - *सजेट्ठकवासं अवसनवसेन उप्पन्नो अप्पटिस्सवभावो अप्पटिस्सवता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 415; - **वास** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रतिश्रववास], **शा॰ अ॰** उत्तरदायित्व से रहित समाज में निवास, **ला॰ अ॰** राजा से रहित समाज में निवास - *अम्हाकं पनन्तरे राजा नाम अत्थि, अप्पतिस्सवासो नाम न वट्टति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.291.

अप्पटिहत त्रि॰, पटि + √हन के भू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रतिहत], रुकावटों से मुक्त, बाधाओं से मुक्त, बिना रुकावट वाला, बे-रोक-टोक, अप्रभावित, अतिरस्कृत, सर्वव्यापी, - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *फलं लद्धापि अलद्धापि अननुनीतो अप्पटिहतो मज्झतो येव हुत्वा गच्छति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.195; *सब्बत्थ अप्पटिहतो निसभो'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.33; - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अतीते बुद्धस्स भगवतो अप्पटिहतं ञाणं, अनागतेबुद्धस्स भगवतो अप्पटिहतं ञाणं,* पटि॰ म॰ 368; - **चार** त्रि॰, बिना रुकावट के चारों ओर विचरण करने वाला - *येन कामञ्च पक्कमति अप्पटिहतचारो,* उदा॰ अट्ठ॰ 131; - **चारता** स्त्री॰, भाव॰, बिना रुकावट के या उन्मुक्त रूप से विचरना, स्वतन्त्र रूप से विचरना - *इमिना कत्थचि अप्पटिहतचारतं दस्सेति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 11; - **चित्त** नपुं॰, [अप्रतिहतचित्त], राग एवं द्वेष आदि से अप्रभावित चित्त, अबाधित विशुद्ध चित्त - *आगतट्ठाने दोसेन चित्तस्स पहतभावो वुत्तो, इध पन दोसेन अप्पटिहतचित्तस्साति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.176; - **ञाण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रतिहतज्ञाण], बाधा-रहित अथवा बिना रुकावट के सर्वत्र प्रसृत ज्ञान से युक्त - *लोकस्स अग्गपुग्गलो अतीतादीसु अप्पटिहतञाणो सत्था वसति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.254; - **ञाणचारता** स्त्री॰, भाव॰, बाधा रहित ज्ञान का सर्वत्र फैलाव होना, ज्ञान का अबाधित रूप से प्रसार - *अत्थो अत्थि सब्बत्थ अप्पटिहतञाणचारताय एकप्पमाणत्ता ञेय्यधम्मेसु,* उदा॰ अट्ठ॰ 23; - **परिमोक्खता** स्त्री॰, भाव॰, प्रातिमोक्ष का अबाधित रूप से नियमित अनुष्ठान होना - *पसन्नानञ्च भिय्योभावाय साधारणं पदट्ठानं, अप्पटिहतपातिमोक्खता दुम्मङ्कूनञ्च पुग्गलानं निग्गहाय,* नेत्ति॰ 42; - **भाव** पु॰, बिना बाधा वाला या बिना रुकावट वाला होना, निर्बाधता, उन्मुक्तता - *नत्वेवाति इमिना सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स अप्पटिहतभावं दस्सेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.315.

अप्पट्ठ त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पार्थ], छोटे-छोटे विषयों से सम्बद्ध, अल्प महत्व वाला, छोटे-मोटे प्रयोजनों वाला, अमहत्वपूर्ण - *कम्मट्ठानं अप्पट्ठं अप्पकिच्चं अप्पाधिकरणं अप्पसमारम्भं विपज्जमानं अप्पफलं होति,* म॰ नि॰ 2.422; *अप्पट्ठो अप्पकिच्चो अप्पाधिकरणो अप्पसमारम्भो,* म॰ नि॰ 2.428; *भिक्खु अप्पट्ठो होति अप्पकिच्चो सुभरो सुसन्तोसो जीवितपरिक्खारेसु,* अ॰ नि॰ 2(1).112; - **तर** त्रि॰, तुल॰ वि॰, तुलनात्मक रूप से कम कठिन अथवा कम आपत्तिप्रद, - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सोळसपरिक्खाराय अप्पट्ठतरो च अप्पसमारम्भतरो च महप्फलतरो च,* दी॰ नि॰ 1.127; - **तरा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कतमा पटिपदा खमति अप्पत्थतरा च महप्फलतरा,* अ॰ नि॰ 1(1)196.

अप्पट्ठम त्रि॰, पठम का निषे॰ [अप्रथमा], प्रथमा विभक्ति से भिन्न अन्य विभक्ति-प्रत्ययों वाला - *तेहि तुम्हाम्हेहि यो अप्पठमो आकं होति वा,* क॰ व्या॰ 162.

अप्पणिधान नपुं., पनिधान का निषे. [अप्रणिधान], सुदृढ़ संकल्प का अभाव, दृढ़ इच्छाशक्ति का अभाव - *चेतसो अप्पणिधानपच्चया न तदभिनन्दति,* महानि. 156; *अप्पणिधानपच्चयाति न पत्थनाठपनकारणेन,* महानि. अट्ठ. 256.

अप्पणिहित त्रि., पणिहित का निषे., प्रायः सुञ्ञत एवं अनिमित्त के साथ प्रयुक्त [अप्रणिहित], **शा. अ.** प्रणिधान या सुदृढ़ संकल्प से रहित, किसी सुनिश्चित उद्देश्य से रहित, **ला. अ.** किसी विशेष इच्छा को मन में रखकर नहीं की गयी (समाधि), इच्छामुक्त चित्त द्वारा की गयी समाधि, प्रणिधियों एवं राग आदि से मुक्त (चित्त की समाधि), इच्छाओं से मुक्त (निर्वाण), - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सुञ्ञतो समाधि, अनिमित्तो समाधि, अप्पणिहितो समाधि – अयं वुच्चति* ..., स. नि. 2(2).335; *सुञ्ञतो ..., अनिमित्तो ..., अप्पणिहितो समाधि,* दी. नि. 3.175; मि. प. 306; *रागपणिधिआदीनं अभावा अप्पणिहितोति अयं सगुणतो कथा,* दी. नि. अट्ठ. 169; ... *सब्बपणिधीहि अप्पणिहितो होति निरोधगोचरो,* पटि. म. 280; - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अयं विपस्सना अप्पणिहिता नाम होति,* ध. स. अट्ठ. 265; **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - ... *पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं,* ध. स. 351; 507; - **हितेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. - *तत्थ कामयोगो ... अप्पणिहितेन विमोक्खमुखेन पहानं गच्छन्ति,* नेत्ति. 97; ध. स. 352-356; *सुञ्ञतञ्चानिमित्तञ्च, विमोक्खञ्चाप्पणिहितं,* मि. प. 385; - **पटिपदा** स्त्री., तत्पु. स. [अप्रणिहित-प्रतिपत्], 1. इच्छामुक्त निर्वाण की अवस्था तक पहुंचाने वाला मार्ग - *इतो परं ... सुद्धिकअप्पणिहिता अप्पणिहितपटिपदाति अयं देसनाभेदो होति,* ध. स. अट्ठ. 264; **2.** ध. स. की मातिका संख्या 523-527 का शीर्षक, ध. स. (पृ.) 133-135 ; - **फलसमापत्ति** स्त्री., तत्पु. स., इच्छामुक्त निर्वाण के फल की प्राप्ति - *सेय्यथीदं ... सुञ्ञतफलसमापत्ति अनिमित्तफलसमापत्ति अप्पणिहितफलसमापत्ति,* मि. प. 303; - **मूलकपटिपदा** स्त्री., ध. स. 352-356 का शीर्षक, ध. स. (पृ.) 94-95; - **विमुत्त** त्रि., अप्रणिहित समाधि द्वारा विमुक्त व्यक्ति, - **त्तेन** तृ. वि., ए. व. - *असेक्खभागियं ... सद्धाविमुत्तेन, ..., सुञ्ञतविमुत्तेन, अनिमित्तविमुत्तेन, अप्पणिहितविमुत्तेन, ...* चाति, नेत्ति. 162; - **विमोक्ख** पु., [अप्रणिहितविमोक्ष], अप्रणिहित समाधि द्वारा प्राप्त मुक्ति, इच्छा-रहित चित्त वाली निर्वाण की अवस्था, - **क्खो** प्र. वि., ए. व. - *सुञ्ञतो अनिमित्तो चाति एत्थ अप्पणिहितविमोक्खोपि गहितोयेव,* ध. प. अट्ठ. 1.344; - **स्स** ष. वि., ए. व. *अप्पणिहितविमोक्खस्स वसेन कायसक्खी,* पटि. म. 246; - **विमोक्खपटिपक्ख** पु., तत्पु. स. [अप्रणिहितविमोक्षप्रतिपक्ष], अप्रणिहित निर्वाण का विरोधी - *अप्पणिहितविमोक्खपटिपक्खो हि कामासवो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).73; - **विमोक्खमुख** नपुं., तत्पु. स. [अप्रणिहितविमोक्षमुख], अप्रणिहित निर्वाण के मार्ग का प्रारम्भिक चरण - ..., *अप्पणिहितविमोक्खमुखं सीलक्खन्धो,* नेत्ति. 75; - **तानुपस्सना** स्त्री., तत्पु. स. [अप्रणिहितानुपश्यना], धर्मों में अनित्यता की अनुपश्यना के उपरान्त सुख की इच्छा से मुक्त दुःख की अनुपश्यना - ..., *अप्पणिहितानुपस्सना अभिञ्ञेय्या,* पटि. म. 19; *अप्पणिहितानुपस्सनाति अनिच्चानुपस्सनानन्तरं पवत्ता दुक्खानुपस्सनाव सुखपत्थनापजहनवसेन पणिधिअभावा अप्पणिहितानुपस्सना नाम होति,* पटि. म. अट्ठ. 1.89.

अप्पतर त्रि., अप्प से व्यु., तुल. विशे. [अल्पतर], और भी अधिक कम, अपेक्षाकृत कम, और भी अधिक कम संख्या वाला, और भी अधिक छोटा, **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यस्स रत्या विवसाने, आयु अप्पतरं सिया,* जा. अट्ठ. 6.32; *यस्स मातुकुच्छिम्हि ... रत्तिदिवातिक्कमेन अप्पतरं आयु होति,* जा. अट्ठ. 6.33; - **रेन** पु./नपुं., तृ. वि., ए. व. - *अप्पेव नाम भगवा अवन्तिदक्खिणापथे अप्पतरेन गणेन उपसम्पदं अनुजानेय्य,* महाव. 269; - **रे** पु., सप्त. वि., ए. व. - *एवं सत्तन्नं ... ततो अप्पतरेपि काले दस्सेन्तो तिट्ठन्तु, भिक्खवे'तिआदिमाह,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).311; - **रानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - ... *पुब्बे अप्पतरानि चेव सिक्खापदानि अहेसुं बहुतरा च भिक्खु अञ्ञाय सण्ठहिंसु,* म. नि. 2.117.

अप्पता स्त्री., अप्प का भाव. [अल्पता], (कमी) न्यूनता, हलकापन - *सो यमत्थं भञ्जति तस्स अप्पताय अप्पसावज्जो,* ध. स. अट्ठ. 144.

अप्पटिक्ख त्रि., [अप्रतीक्ष्य], **शा. अ.** वह, जिसकी प्रतीक्षा न की जा सके, **ला. अ.** सम्मान न पाने योग्य, बुरे कर्म करने वाला - *स वे तादिसको भिक्खु, अप्पटिक्खोति वुच्चति,* परि. 313; ... *लद्धपक्खो, ... अहिरिको, ... कण्हकम्मो, ... अनादरो, स वे तादिसको भिक्खु अपटिक्खोति वुच्चति न पटिक्खितब्बो न ओलोकेतब्बो, न सम्मन्नित्वा इस्सरियाधिपच्चजेट्ठकट्ठाने ठपेतब्बोति अत्थो,* परि. अट्ठ. 212.

अप्पतिट्ठ त्रि., ब. स. [अप्रतिष्ठ], **शा. अ.** बिना नींव वाला, आधार-रहित, आधारशिला-रहित, आलम्बन-रहित - **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *न उपपत्तिं, अप्पतिट्ठं, अप्पवत्तं, अनारम्मणमेवेतं,* उदा. 164; *केवलं पन तं अरूपसभावत्ता अपच्चयत्ता च न कत्थचि पतिट्ठितन्ति अप्पतिट्ठं,* उदा. अट्ठ. 318; - **ट्ठं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *अप्पतिट्ठं अनालम्बं, दुत्तरं सीघवाहिनिं,* अप. 2.118; - **ट्ठे** पु./नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *अप्पतिट्ठे अनालम्बे, को गम्भीरे न सीदति,* सु. नि. 175; - **ट्ठा** स्त्री., प्र. पु., ब. व. *असंवुताति हेट्ठापि अप्पतिट्ठा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.130; - **ट्ठे** पु., द्वि. वि., ब. व. - *अप्पतिट्ठेव नो कत्वा समणो गोतमो खिपेय्या'ति अत्तमना भवन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).99; **ला. अ.** बे-सहारा, निराश्रय, अनाथ, - **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. - *यथा एस अप्पतिट्ठो होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).169; *अयं अप्पतिट्ठो अनालम्बो होतु,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.141; - **ट्ठा**[1] स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अपरायिनीति अप्पतिट्ठा अप्पटिसरणा,* जा. अट्ठ. 3.341; - **ट्ठा**[2] पु., प्र. वि., ब. व. - *अनाथाति अपतिट्ठा,* स. नि. अट्ठ. 1.104; - **ट्ठे** पु., द्वि. वि., ब. व. - *ब्राह्मणा तं दिस्वा ... अम्हे अप्पतिट्ठे करिस्सती'ति,* जा. अट्ठ. 4.349.

अप्पतिट्ठं / अप्पतिट्ठन्तु पति + √ठा के वर्त. कृ. का निषे. [अप्रतिष्ठत्], बिना पैर जमाए हुए, आधार-रहित - *अप्पतिट्ठं अनायूहं, तिण्णं लोके विसत्तिक'न्ति,* स. नि. 1(1).2; *अथस्सा भगवा पञ्हं विस्सज्जेन्तो अप्पतिट्ठं ख्वाहन्तिआदिमाह,* स. नि. अट्ठ. 1.17.

अप्पतिट्ठानता स्त्री., पतिट्ठान के निषे. का भाव. [अप्रतिष्ठानत्व], आधार-हीनता, आधार-रहित होना, आलम्बन से रहित होना - *पथवीपब्बतादि विय अपतिट्ठानताय न ठिति,* उदा. अट्ठ. 318; - **भूत** त्रि., [अप्रतिष्ठानभूत], वह, जो किसी के लिये आधार या आश्रय न हो - *अनस्सय'न्ति च केचि पठन्ति, सुखस्स अप्पतिट्ठानभूतन्ति अत्थो,* वि. व. अट्ठ. 285.

अप्पतिट्ठित त्रि., पतिट्ठित का निषे. [अप्रतिष्ठित], आधार से रहित, अच्छी तरह से स्थित नहीं रहने वाला, क्षीण, दुर्बल - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तदप्पतिट्ठितं विञ्ञाणं अविरूळ्हं अनभिसङ्खच्चविमुत्तं,* स. नि. 2(1).49; - **तेन** पु./नपुं., तृ. वि., ए. व. - *अप्पतिट्ठितेन च, भिक्खवे, विञ्ञाणेन गोधिको कुलपुत्तो परिनिब्बुतो'ति,* स. नि. 1(1).143; *अप्पतिट्ठितेनाति पटिसन्धिविञ्ञाणेन अप्पतिट्ठितेन, अप्पतिट्ठितकारणाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 1.163; - **वचन** त्रि., ब. स. [अप्रतिष्ठितवचन], विश्वास न करने योग्य वचन बोलने वाला - *अथेतन्ति अथिरं अप्पतिट्ठितवचनं,* जा. अट्ठ. 4.52.

अप्पतीत त्रि., पति + √इ के भू. क. कृ. का निषे. [अप्रतीत], **शा. अ.** किसी की ओर नहीं गया हुआ, किसी के समीप नहीं पहुंचा हुआ, **ला. अ.** असन्तुष्ट, अप्रसन्न, द्वेषभाव से भरा हुआ, सुख आदि से रहित, - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो पन भिक्खु भिक्खुं दुट्ठो दोसो अप्पतीतो अमूलकेन पाराजिकेन धम्मेन अनुद्धंसेय्य--,* पारा. 255; *अप्पतीतोति नप्पतीतो पीतिसुखादीहि वज्जितो, न अभिसटोति अत्थो,* पारा. अट्ठ. 2.154; - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अप्पतीता होन्ति तेन अतुट्ठा असोमनस्सिकाति अप्पच्चयो,* दी. नि. अट्ठ. 1.49; - **ता** स्त्री., भाव., अप्रसन्नता दौर्मनस्यता, मन की खिन्नता *अप्पच्चयन्ति अप्पतीतता, दोमनस्सन्ति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.134.

अप्पत्त / अपत्त त्रि., पत्त का निषे. [अप्राप्त], 1. *कर्म. वा.* में, वह, जिसे किसी के द्वारा प्राप्त नहीं किया गया है, किसी के द्वारा नहीं समझा हुआ, अगृहीत, - **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यदतीतं पहीनं तं अप्पत्तञ्च अनागतं,* म. नि. 3.227; अप. 2.157; *यञ्च मारेन सम्पत्तं अप्पत्तं यञ्च मच्चुना,* म. नि. 1.292; - **त्तस्स** पु., ष. वि., ए. व. - *अप्पत्तस्स पत्तिया अत्थि आयामं,* स. नि. 3(1).13; - **त्ते** पु., सप्त. वि., ए. व. - *अप्पत्ते पत्तसञ्ञी अकते कतसञ्ञी, अनधिगते अधिगतसञ्ञी,* अ. नि. 3(2).138; 2. *कर्तृ. वा. में,* **शा. अ.** नहीं पहुंचा हुआ, नहीं पाया हुआ, नहीं समझा हुआ - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *भिक्खु विस्सासमापादि, अप्पत्तो आसवक्खयं,* ध. प. 272; - **त्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - ... *अप्पत्ताव सकं गेहं पन्थे विजायित्वान पतिं मतं अद्दसं अहन्ति योजना,* थेरीगा. अट्ठ. 198; 200; - **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अपत्तञ्ञेव तं ओधिं, नळो छिन्नोव सुस्सति,* जा. अट्ठ. 4.355; - **त्ते** सप्त. वि., ए. व. - *अनागतेति परियोसानं अप्पत्ते,* जा. अट्ठ. 7.103; **ला. अ.** अक्षम, अपात्र - *अपिस्सा होति अप्पत्तो उच्छिट्ठमपि भुञ्जितुं,* जा. अट्ठ. 7.264; - **काल** पु., कर्म. स., अनुपयुक्त समय *अकाले अयुत्तप्पत्तकाले परस्स पियभण्डं याचनाय मित्ता जीरन्ति नाम,* जा. अट्ठ. 5.222; - **परिभवन** त्रि., ब. स., पराभव या तिरस्कार को अभी तक प्राप्त न करने वाला, अभी तक अनुत्तेजित - *एत्थ मनंपरिभूतो ति ईसकं अप्पत्तपरिभवनो*

वुच्चति, सद्द॰ 1.79; – **त्तब्ब** त्रि॰, प + √आप के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्राप्तव्य], प्राप्त न करने योग्य, नहीं पाने योग्य – *अनभिसम्भवनीयोति अपत्तब्बो, न तं देवा तावतिंसा पस्सन्तीति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.209; – **मानस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्राप्तमानस], **शा॰ अ॰** वह, जिसके मन की इच्छाएं पूरी नहीं हुई हों, – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *येपि ते सिविसेट्ठस्स, दायादापत्तमानसा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.369; *दायादाअपत्तमानसा असम्पुण्णमनोरथा हुत्वा,* तदे॰; **ला॰ अ॰** स्रोतापन्न, सकृदागामी और अनागामी अवस्थों में स्थित व्यक्ति, जिसे अभी तक अर्हत के चित्त की पूर्ण विशुद्धि नहीं मिली है, – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अप्पत्तमानसो सेक्खो, कालं कयिरा जनेसुता'ति,* स॰ नि॰ 1(1).142; *सेक्खो अप्पत्तमानसो अनुत्तरं योगक्खेमं पत्थयमानो विहरति,* म॰ नि॰ 1.5; – **सानं** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उभतो कोटिको एसो पञ्हो, नेसो विसयो अप्पत्तमानसानं,* मि॰ प॰ 107; – **त्तारहत्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्राप्तार्हत्व], अर्हत अवस्था में नहीं पहुंचा हुआ, शैक्ष्य – *तेन अप्पत्तारहत्तोति वुत्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).45; *अप्पत्तमानसोति अप्पत्तअरहत्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.162.

अप्पत्वा प + √आप के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्राप्य], नहीं प्राप्त करके, नहीं पहुंच कर – *न च अप्पत्वा दुक्खन्तं, विस्सासं एय्य पण्डितो,* थेरगा॰ 585; *वस्ससतं गन्त्वा अप्पत्वाव लोकस्स अन्तं अन्तराव कालङ्कतो,* स॰ नि॰ 1(1).76; *मम पुत्तस्स बोधितले बुद्धत्तं अप्पत्वा परिनिब्बानं नाम नत्थी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.45.

अप्पत्थ पु॰, तत्पु॰ स॰ [अल्पार्थ], अप्प (अल्प) शब्द का अर्थ – *सम्मा भुस सहाप्पत्थाभिमुखत्थेसु सङ्गते,* अभि॰ प॰ 1170; – **वाचक** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अल्पार्थवाचक], अल्पता के अर्थ को कहने वाला – *सकदागामिमग्गचित्तन्ति आदिसु पन तनुसद्दो अप्पत्थवाचको,* सद्द॰ 2.506.

अपत्थाम / अप्पथाम त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पस्थामन्], कम बल वाला, स्वल्प शक्ति वाला, दुर्बल, – **मा**[1] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुब्बलाति अप्पथामा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.153; – **मा**[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *हंसा सकजातिकानं मंसं खादित्वा अप्पथामा जाता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.467; – **क** त्रि॰, अप्पत्थाम से व्यु॰, उपरिवत् – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्कन्दति परोदति, दुब्बलो अप्पथामको,* स॰ नि॰ 2(2).204; – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अबलं पुग्गलं दुब्बलं अप्पबलं अप्पथामकं हीन निहीनं,* महानि॰ 9.

अप्पदक्खिणग्गाही त्रि॰, [अप्रदक्षिणग्राहिन्], उचित सम्मानभाव के साथ ग्रहण न करने वाला, शिक्षा को ठीक से ग्रहण न करने वाला – *यथानुसिट्ठं अप्पटिपज्जनतो पदक्खिणेन अनुसासनिं न गण्हातीति अप्पदक्खिणग्गाही अनुसासनिं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.179; *धम्मेहि समन्नागतो अक्खमो अप्पदक्खिणग्गाही अनुसासनिं,* पारा॰ 278; म॰ नि॰ 1.133; *ओवदियमानो दुब्बचो अहोसि अक्खमो अप्पदक्खिणग्गाही अनुसासनिं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.426.

अप्पदस्स त्रि॰, [अल्पदृक्], सीमित ज्ञान रखने वाला, कम सूझबूझ वाला, दुर्बल अन्तर्दृष्टि वाला, – **स्से** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं पहं अप्पदस्से पहाय, महोदधिं हंसोरिव अज्झपत्तो,* सु॰ नि॰ 1140; चूळनि॰ 19; 190; *अप्पदस्से पहायाति यो च बावरी ब्राह्मणो,* चूळनि॰ 189.

अप्पदान नपुं॰, पदान का निषे॰ [अप्रदान], प्रदान नहीं करना, नहीं देना, स्वीकृति या अनुमति नहीं देना – *तस्स याथावलक्खणप्पटिवेधनिवारणेन, ञाणप्पवत्तिया चेत्थ अप्पदानेन,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).233; *उक्कण्ठितुं अप्पदानतो सहायट्ठेन दुतिया,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 390.

अप्पदालित त्रि॰, प + √दल के प्रेर॰ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रदालित], भग्न न किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े नहीं किया हुआ, – **पुब्ब** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रदालितपूर्व], पहले भग्न या नष्ट नहीं किया हुआ, अभी तक भग्न नहीं किया गया – *सो सतिसम्बोज्झङ्गं भावितेन चित्तेन अनिब्बिद्धपुब्बं अप्पदालितपुब्बं लोभक्खन्धं निब्बिज्झति,* स॰ नि॰ 3(1).107.

अप्पदीप त्रि॰, पदीप का निषे॰, ब॰ स॰ [अप्रदीप], दीपक से रहित, बिना प्रदीप का, अप्रकाशित, प्रकाश-विहीन – *भिक्खुनी रत्तन्धकारे अप्पदीपे पुरिसेन सद्धिं एकेनेका सन्तिट्ठतिपि, सल्लपतिपीति,* पाचि॰ 366; *अप्पदीपेति पदीपचन्दसूरियअग्गीसु एकेनापि अनोभासिते,* पाचि॰ अट्ठ॰ 191.

अप्पदुक्खविहारी त्रि॰, [अल्पदुःखविहारिन्], 1. कम या थोड़े से दुःख के साथ जीवन बिता रहा, 2. थोड़े से पापकर्म के कारण भी दुःख के साथ जी रहा – *एकच्चो पुग्गलो ... परित्तो अप्पातुमो अप्पदुक्खविहारी,* अ॰ नि॰ 1(1).282; *अप्पदुक्खविहारीति अप्पकेनपि पापेन दुक्खविहारी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.218; *एकच्चं तपस्सिं अप्पदुक्खविहारिं पस्सामि दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन ... निरयं उपपन्नं,* दी॰ नि॰ 1.146.

अप्पदुक्खेन तृ॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, क्रि॰ वि॰ [अल्पदुःखेन], कम दुःख के साथ, कम कठिनाई के साथ – *अप्पकसिरेनाति अप्पदुक्खेन,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).310.

अप्पदुट्ठ त्रि., प + √दुस के भू. क. कृ. का निषे. [अप्रदुष्ट], प्रदूषणों से रहित, लोभ आदि चित्तमलों से अदूषित, विशुद्ध चित्त वाला, पापरहित, - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *यो अप्पदुट्ठस्स नरस्स दुस्सति, सुद्धस्स पोसस्स अनङ्गणस्स,* सु. नि. 667; *किञ्च भिय्यो – यो अप्पदुट्ठस्साति,* सु. नि. अट्ठ. 2.180; - **ट्ठेसु** सप्त. वि., ब. व. - *यो दण्डेन अदण्डेसु, अप्पदुट्ठेसु दुस्सति,* ध. प. 137; *अप्पदुट्ठेसूति परेसु वा अत्तनि वा निरपराधेसु,* ध. प. अट्ठ. 2.40; - **चित्त** त्रि., ब. स. [अप्रदुष्टचित्त], प्रदूषणों या मलों से मुक्त विशुद्ध चित्त वाला, - **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *ते अञ्ञमञ्ञं अप्पदुट्ठचित्ता अकिलन्तकाया अकिलन्तचित्ता,* दी. नि. 1.18; - **पदोसी** त्रि., **क**. अप्रदूषित या निर्दोष व्यक्ति को प्रदूषित करने वाला *तस्मा यो अप्पदुट्ठस्स नरस्स दुस्सति, ... ति एवं वुत्तो अप्पदुट्ठपदोसी पुग्गलो,* स. नि. अट्ठ. 1.45; **ख**. निरपराध, निर्दोष, विशुद्ध - **सिनं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *एतादिसं खो कटुकं, अप्पदुट्ठप्पदोसिनं,* पे. व. 762; *अप्पदुट्ठप्पदोसिनं इसिं सुब्बतं आसज्ज आसादेत्वा पापकम्मन्ता पुग्गला ... पच्चन्तीति योजना,* पे. व. अट्ठ. 231; - **मनसङ्कप्प** त्रि., ब. स. [अप्रदुष्टमनसङ्कल्प], अप्रदूषित मानसिक संकल्प वाला, वह, जो अपने मन में बुरे विचारों को न लाए - *अब्यापन्नचित्तो खो पन होति अप्पदुट्ठमनसङ्कप्पो,* म. नि. 1.362.

अप्पदुस्सिय त्रि., प + √दुस के सं. कृ. का निषे. [अप्रदूष्य], दूषित नहीं किए जाने योग्य - *आपदासु सहायो मे अभेज्जो अप्पदुस्सियो,* सद्धम्मो. 312.

अप्पधंसिक त्रि., पधंसिक का निषे. [अप्रध्वंस्य], गुणों से अथवा स्थान से बिलग न किए जाने योग्य, ध्वस्त या विनष्ट नहीं किए जाने योग्य - *अप्पधंसिको होतीति गुणतो वा ठानतो वा पधंसेतुं चावेतुं असक्कुणेय्यो,* दी. नि. अट्ठ. 3.110; - **ता** स्त्री., भाव., गुणों या अच्छे कर्मों से बिलग न रहना, गुण-सम्पन्नता - *अप्पधंसिकता आनिसंसो,* दी. नि. अट्ठ. 3.110.

अप्पधंसित त्रि., प + √धंस के भू. क. कृ. का निषे. [अप्रध्वस्त], अनुल्लंघित, वह, जिसे ध्वस्त या अभिभूत न किया गया हो - ..., *कच्चिसि अप्पधंसिता'ति, अप्पधंसिताम्हि अय्ये'ति,* पाचि. 305; 306.

अप्पधंसिय त्रि., ध्वस्त नहीं करने योग्य, स्थान से या गुणों से रहित न बनाने योग्य - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *न सुप्पसय्होति अप्पधंसियो,* पे. व. अट्ठ. 103; - **या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *इदानेसा केनचि अप्पधंसिया जाता'ति अरञ्ञतो ... निसीदि,* वि. व. अट्ठ. 175; - **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *बोधिसत्तो नगरं पटिसङ्खरित्वा परेहि अप्पधंसियं अकासि,* जा. अट्ठ. 3.137; - **या** पु., प्र. वि., ब. व. - *परेहि अप्पधंसियाति अत्थो,* जा. अट्ठ. 1.314.

अप्पधन त्रि., ब. स. [अल्पधन], कम धन वाला, दरिद्र - *अत्थम्पि चे भासति भूरिपञ्ञो, अनाळ्हियो अप्पधनो दलिद्दो,* जा. अट्ठ. 6.189.

अप्पधान त्रि., पधान का निषे. [अप्रधान], गौण, अन्य सापेक्ष, अप्रमुख, दूसरे पर निर्भर, नामपद के रूप में प्रयुक्त, अप्रधान पद - *नामभूतेहि अप्पधानेहि च सब्बादीहि यं वुत्तं ...,* मो. व्या. 2.141; - **लिङ्ग** नपुं., कर्म. स., [अप्रधानलिङ्ग], अप्रधान या विशेषणभूत नामपद - *अविभावी धम्मविभावीआदीनि अप्पधानलिङ्गानि,* सद्द. 1.233.

अप्पना / अप्पणा स्त्री., [अर्पण, नपुं.], **क**. किसी एक आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता, ध्यान में चित्त को लगा देना, गम्भीर ध्यान, समाधि के दो प्रभेदों में से एक, जिसमें पूर्ण रूप से एकाग्र चित्त को किसी एक आलम्बन पर स्थिर कर दिया जाता है - **ना** प्र. वि., ए. व. - *एकग्गं चित्तं आरम्मणे अप्पेतीति अप्पना,* ध. स. अट्ठ. 187; *यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो व्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो,* ध. स. 7; 21; 298; - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *सह निमित्तुप्पादेनेवेत्थ अप्पनं निब्बत्तेतीति अत्थो,* ध. स. अट्ठ. 232; - **नाय** तृ. वि., ए. व. - *तत्थ किञ्चापि अन्तोअप्पनाय सुभ'न्ति आभोगो नत्थि,* ध. स. अट्ठ. 265; - **तो** प. वि., ए. व. - *अप्पनातो'ति अप्पनाकोट्ठासतो,* विभ. अट्ठ. 219; **ख**. तर्क, निगमन, व्याख्या - *इमानि तानीति अप्पनं करोति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).343; *अप्पनन्ति निगमनं,* म. नि. टी. (मू.प.) 1(2).22; - **उपचार** पु., तत्पु. स., अर्पणा समाधि से पूर्ववर्ती समाधि का चरण - *देसेसीति ... लभति, समापत्तिं एवं निब्बत्तेतीति अप्पनाउपचारं पापेत्वा एककसिणपरिकम्मं कथेसि,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.144; - **कम्मट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. अर्पणाकर्मस्थान], समाधि की अर्पणा स्थिति की चर्या या साधना - **नानि** प्र. वि., ब. व. - *तत्थ आनापानपब्बं ... द्वे अप्पनाकम्मट्ठानानि, ... द्वादसपि उपचारकम्मट्ठानानेवाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).285; - **कोट्ठास** नपुं., कर्म. स. [बौ. सं. अर्पणाकोष्ठांश], अर्पणा समाधि में चित्त के लिए आलम्बन बनाया गया रूप का कोष्ठांश - *अप्पनातो'ति अप्पनाकोट्ठासतो,* विभ. अट्ठ.

219; – **कोसल्ल** नपुं., भाव. [अर्पणाकौशल्य], अर्पणा-समाधिविषयिणी कुशलता – ..., *दसविधं अप्पनाकोसल्लं, वीरियसमता, अप्पनाविधानन्ति इमे नव आकारा कथेतब्बा,* विसुद्धि. 1.114; 125; 132; 274; – **चित्त** नपुं., तत्पु. स. [अर्पणाचित्त], अर्पणा-समाधि में विद्यमान चित्त – *तस्मा तं अप्पनाचित्तं, दिवसम्पि पवत्तति,* अभि. अव. 880; – **चेत** नपुं., तत्पु. स., उपरिवत् – *अप्पनाचेतसो तानि, परिकम्मोपचारतो,* अभि. अव. 898; – **जवन** नपुं., तत्पु. स., अप्पना-समाधि में स्थित योगी का जवनचित्त – *दुहेतुकानमहेतुकानञ्च पनेत्थ किरियजवनानि चेव अप्पनाजवनानि च लब्भन्ति,* अभि. ध. स. 30; विशेष द्रष्ट. जवन के अन्त.; – **झान** नपुं., तत्पु. स. [अर्पणाध्यान], अर्पणा-नामक ध्यान, समाधि-प्रक्रिया की अर्पणा नामक अवस्था – *झानं भावेतीति एकचित्तक्खणिकं अप्पनाझानं भावेति जनेति वड्ढेति,* ध. स. अट्ठ. 258; – **नाधिगम** पु., तत्पु. स., समाधि-प्रक्रिया में अर्पणा-नामक अवस्था की प्राप्ति – *उप्पन्ने निमित्ते तं वड्ढेत्वा अप्पनाधिगमो भारो, सतेसु सहस्सेसु वा एकोव सक्कोति,* ध. स. अट्ठ. 231–32; – **प्पत्त / पत्त** त्रि., तत्पु. स. [अर्पणाप्राप्त], वह, जिसने अर्पणा समाधि की अवस्था को पा लिया है – **त्तं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *सो तं ... तं परमसुखुमं अप्पनाप्पत्तं सञ्ञं पापुणाति,* ध. स. अट्ठ. 251; – **त्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *निप्फन्ना अप्पनापत्ता, पञ्ञा सा भावनामया,* अभि. अव. 1185; – **त्ताय** स्त्री., तृ. वि., ए. व. – *मेत्ताय ... सब्बे सत्ता दसदिसाफरणवसेन पवत्ताय अप्पनाप्पत्ताय मेत्ताभावनाय अपचिता होन्ति,* जा. अट्ठ. 4.68; – **परिच्छेद-जाननक-पञ्ञा** स्त्री., कर्म. स., अर्पणा के विभिन्न चरणों का ज्ञान कराने वाली प्रज्ञा – *सह परिकम्मेन अप्पनापरिच्छेदजाननकपञ्ञा पन समापत्तिकुसलता नाम,* ध. स. अट्ठ. 416; – **मन** नपुं., तत्पु. स. [अर्पणामनस्], समाधि के अर्पणा-नामक चरण में स्थित मन – *चतुत्थं गोत्रभुं दिट्ठं, पञ्चमं अप्पनामनो ... ततियं गोत्रभुं दिट्ठं चतुत्थं अप्पनामनो,* अभि. अव. 121; – **मानस** नपुं., उपरिवत् – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *सहजातं तु यं ञाणं अप्पनामानसेन हि,* अभि. अव. 1064; – **लक्खण** त्रि., ब. स. [अर्पणालक्षण], आलम्बन पर चित्त को रख देने या बैठा देने के लक्षण वाला – *एवमेव खो, महाराज, अप्पनालक्खणो वितक्को ति,* मि. प. 64; – **वत** नपुं., तत्पु. स. [अर्पणाव्रत], अर्पणा-नामक समाधि से सम्बन्धित व्रत – **ते** सप्त. वि., ए. व. *तपस्सिनो ब्रह्मचारी, चोदेन्ता अप्पनाव ते,* अप. 1.399; – **नावह** त्रि., अर्पणा-नामक समाधि-प्रभेद के अनुकूल – *उपचारवहा वुत्ता, सेसा, सेसा ते अप्पनावहा,* अभि. अव. 113; – **वारपरिहानि** स्त्री., तत्पु. स., अर्पणा-समाधि में आई हुई हानि – *सब्बत्थ अप्पनावार-परिहानि कता मया,* उत्त. वि. 63; – **विधान** नपुं., तत्पु. स., अर्पणा समाधि का अभ्यास – *पनेत्थ कसिणकरणञ्चेव परिकम्मञ्च अप्पनाविधानञ्च सब्बं विसुद्धिमग्गे वित्थारतो वुत्तमेव,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.182; – **वीथि** स्त्री., तत्पु. स., चित्तवीथियों का एक प्रभेद, अर्पणा-समाधि के चित्त द्वारा विषयों के ग्रहण करने की प्रक्रिया – *यथाभिनीहारवसेन यं किञ्चि जवनं अप्पनावीथिमोतरति,* अभि. ध. स. 27; – **समाधि** पु., तत्पु. स., समाधि का एक चरण, जिसमें चित्त को आलम्बन पर पूर्णरूप से एकाग्र किया जाता है – *इधेकच्चो पठमं उपचारसमाधिं वा अप्पनासमाधिं वा उप्पादेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).116.

अप्पनिग्घोस त्रि., ब. स. [अल्पनिर्घोष], कम कोलाहल वाला, हल्ला-गुल्ला से रहित, शान्त – **सं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *विवित्तं अप्पनिग्घोसं, मत्तञ्ञू होहि भोजने,* सु. नि. 340; *विवित्तं अप्पनिग्घोसं, वाळमिगनिसेवितं,* थेरगा. 577; – **सेसु** सप्त. वि., ब. व. – *अप्पसद्देसु अप्पनिग्घोसेसु विजनवातेसु मनुस्सराहस्सेय्यकेसु पटिसल्लानसारुप्पेसु,* महानि. 277.

अप्पन्नपानभोजन त्रि., ब. स. [अल्पान्नपानभोजन], अत्यल्प खाद्यों एवं पेयों को रखने वाला, दरिद्र – **ने** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *रथकारकुले वा पुक्कुसकुले वा दलिद्दे अप्पन्नपानभोजने कसिरवुत्तिके,* पु. प. 161; अ. नि. 1(1).131.

अप्पपंसु त्रि., ब. स. [अल्पपांसु], कम ढीली मिट्टी वाला, दोमट मिट्टी से रहित – *अजाता नाम पथवी — ... सुद्धपालिका अप्पपंसुका अप्पमत्तिका, येभुय्येनपासाणा येभुञ्ञेनसक्खरा येभुय्येनकठला, येभुञ्ञेनमरुम्बा येभुय्येनवालिका,* पाचि. 50.

अप्पपक्ख त्रि., ब. स. [अल्पपक्ष], वह, जिसके पक्ष लेने वाले बहुत कम लोग हों, बहुत कम समर्थकों वाला – **क्खं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *असुकं नाम कुलं पुब्बे बहुञातिकं अहोसि बहुपक्खं, इदानि अप्पञातिकं अप्पपक्खं जातन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.65.

अप्पपञ्च त्रि., ब. स. [अप्रपञ्च], जटिलता से रहित, प्रपञ्च-रहित, नहीं उलझन भरा – *इति वदं अप्पपञ्च*

पपञ्चेति, अ॰ नि॰ 1(2).187; *अप्पपञ्चं पपञ्चेतीति न पपञ्चेतब्बट्ठाने पपञ्चं करोति, अनाचरितब्बं मग्गं चरति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.349.

अप्पपञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पप्रज्ञ], कम बुद्धि वाला, मूर्ख, अज्ञानी – *तस्सप्पपञ्ञो अभिसद्दहन्तो, उपेति गब्भञ्च परञ्च लोकं,* थेरगा॰ 785; *सिङ्गाल बाल दुम्मेध, अप्पपञ्ञोसि जम्बुक,* जा॰ अट्ठ॰ 3.195; *गिरिदुग्गचरं छेतं, अप्पपञ्ञं अचेतसं,* स॰ नि॰ 1(1).230.

अप्पपरिक्खार त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पपरिष्कार], अत्यल्प साधनों से सम्पन्न, बहुत कम आवश्यकता रखने वाला – *यो अप्पपरिक्खारो होति, पत्तचीवरादि अट्ठसमणपरिक्खारमत्तमेव परिहरति, दिसापक्कमनकाले पक्खी सकुणो विय समादायेव पक्कमति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 196.

अप्पपरिवार त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पपरिवार], बहुत छोटे समूह वाला, बहुत कम लोगों से घिरा रहने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *अप्पेसक्खाति अप्पपरिवारा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).130; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.369; *अप्पेसक्खाति अप्पपरिवारा, पुरतो वा पच्छतो वा गच्छन्तं न लभन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).130.

अप्पपासाण त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पपाषाण], बहुत कम पत्थरों से युक्त, कम कंकड़-पत्थर वाला/वाली – *जाता नाम पथवी – सुद्धपंसु सुद्धमत्तिका अप्पपासाणा अप्पसक्खरा ...,* पाचि॰ 50.

अप्पपुञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पपुण्य], बहुत कम पुण्यकर्म करने वाला – **ञ्ञो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पपञ्ञातोति अपाकटो अप्पपुञ्ञो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.44; *किं पनायं अप्पपुञ्ञो अप्पेसक्खो न लाभी चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारानन्ति,* महानि॰ 292; – **ञ्ञा** ब॰ व॰ – *मयमेवम्हा अलक्खिका मयं अप्पपुञ्ञा, ये मयं एवं स्वाखाते धम्मविनये पब्बजित्वा ...,* पारा॰ 24.

अप्पपुरिस त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पपुरुष], बहुत कम पुरुषों वाला – **लानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कुलानि बहुत्थिकानि अप्पपुरिसानि तानि सुप्पधंसियानि होन्ति,* स॰ नि॰ 1(2).241.

अप्पपुरिसक त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पपुरुषक], उपरिवत् – **सिकानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कुलानि बहुत्थिकानि अप्पपुरिसकानि, तानि सुप्पधंसियानि होन्ति,* अ॰ नि॰ 3(1).107; चूळव॰ 419-20.

अप्पफल त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पफल], बहुत कम फल देने वाला, कम लाभदायक – *महाकिच्चं महाधिकरणं महासमारम्भं विपज्जमानं अप्पफलं होति,* म॰ नि॰ 2.422; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, बहुत कम फलदायक होना, कम लाभप्रद होना – *अप्पफलताय वा तुट्ठिं न जनेति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 122.

अप्पबल त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पबल], कम बल वाला, अल्प शक्ति से युक्त, दुर्बल – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अबलाति अबला किलेसा दुब्बला अप्पबला अप्पथामका हीना निहीना ओमका लामका छतुक्का परित्ता,* महानि॰ 8.

अप्पबुद्धि त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पबुद्धि], दुर्बुद्धि, मूर्ख, कम बुद्धि वाला – **द्धीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यसो च अप्पबुद्धीनं, विञ्ञूनं अयसो च यो, अयसोव सेय्यो विञ्ञूनं न यसो अप्पबुद्धीनं,* थेरगा॰ 667.

अप्पबुद्धिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पबुद्धिक], उपरिवत् – *महासेट्ठि मातुगामो नाम अप्पबुद्धिको,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.405.

अप्पभ त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रभ], प्रभा-रहित, तेज या चमक से रहित, धूमिल – **भे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अयोघरम्हि संवड्ढो, अप्पभे चन्दसूरिये,* चरिया॰ 396; *अप्पभे चन्दसूरियेति चन्दसूरियानं पभारहिते अयोघरे,* चरिया॰ अट्ठ॰ 180.

अप्पभक्ख त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पभक्ष], भोजन अन्न आदि से रहित, अभाव-पीड़ित – **क्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते तं कन्तारमागम्म, अप्पभक्खं अनोदकं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.312; – **क्खा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पोदका अप्पभक्खा, न सुकरा अपाथेय्येन गन्तुं,* महाव॰ 321; – **कन्तार** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अल्पभक्षकान्तार], भोजन आदि से रहित बीहड़ वन – *कन्तारन्ति चोरकन्तारं वाळकन्तारं अमनुस्सकन्तारं निरुदककन्तारं अप्पभक्खकन्तारन्ति पञ्चविधं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.91.

अप्पभवन्तु त्रि॰, प + √भू के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रभवत्], प्रभाव से रहित, बिना प्रभाव वाला – *सोहं अप्पभवं तत्थ, साखं हत्थेहि अग्गहिं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.330; सद्द॰ 1.72.

अप्पभाव पु॰, तत्पु॰ स॰ [अल्पभाव], संख्या में कम होना, प्रसार या फैलाव में छोटा होना – *पुट्ठ चुट्ठ अप्पभावे, ... अप्पं भवतीति अत्थो,* सद्द॰ 2.532.

अप्पभास त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रभास], प्रकाश से रहित, उजाला से रहित – **से** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिमिरे अन्धकारे अप्पभासे सुपरिसुद्धेपि आदासे छाया न दिस्सति,* मि॰ प॰ 275-76.

अप्पभिक्खुक त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पभिक्षुक], वह स्थान, जहां भिक्षु कम संख्या में हों – ... *अवन्तिदक्खिणापथो*

अप्पभिक्खुको होति, उदा॰ 134; *तत्थ अप्पभिक्खुकोति कतिपयभिक्खुको,* उदा॰ अट्ठ॰ 253; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अल्पभिक्षुकत्व], भिक्षुओं की संख्या कम होना – *यावजीवं ... अप्पभिक्खुकत्ता दक्खिणापथे तिण्णं वस्सानं अच्चयेन लद्धूपसम्पदो सत्थारं सम्मुखा ... अभणि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.340.

अप्पभोग त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पभोग], कम भोगसाधनों वाला, स्वल्प धनसम्पदा वाला, दरिद्र – **गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पभोगो महातण्हो, खत्तिये जायते कुले,* सु॰ नि॰ 114; *अप्पभोगो नाम सन्निचितानञ्च भोगानं आयमुखस्स च अभावतो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.137; – **गा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दलिद्दा च होति अप्पस्सका अप्पभोगा* ..., सद्द॰ 1.96; – **गे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कपणम्हि अप्पभोगे, धनिकपुरिसपातबहुलम्हि,* थेरीगा॰ 445; – **गा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ..., *अञ्ञे अप्पभोगा, अञ्ञे महाभोगा,* ..., मि॰ प॰ 68; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अल्पभोगत्व], दरिद्रता, धनसम्पदा की कमी – *अप्पभोगसंवत्तनिका पटिपदा अप्पभोगत्तं उपनेति,* म॰ नि॰ 3.255.

अप्पभोजन त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पभोजन], ऐसा स्थान या घर, जहां बहुत कम भोजन मिलता हो – *नीचे कुलम्हि जातोहं, दलिद्दो अप्पभोजनो,* थेरगा॰ 620.

अप्पमंस त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पमांस], वह, जिसके शरीर में बहुत कम मांस रहे, – **तर** त्रि॰, तुल॰ विशे॰, वह, जिसके शरीर में और भी कम मांस हो *अथिमं खुद्दकं पक्खिं, अप्पमंसतरं मया,* जा॰ अट्ठ॰ 3.352; – **लोहित** त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पमांसलोहित], कम मांस एवं कम रक्त वाले शरीर वाला, बलहीन, दुर्बल – *तत्थ को तुम्हाकन्ति ... इमेसूकरा अप्पमंसलोहिता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.307; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अल्पमांसलोहितत्व], बलहीनता, बहुत कम मांस और रक्त का होना *पेता हि अप्पमंसलोहितत्ता अट्ठिसङ्घातजटिता एकेन पस्सेन सयितुं न सक्कोन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).212.

अप्पमज्जं / अप्पमज्जन्त प + √मद के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रमाद्यत्], प्रमाद नहीं कर रहा, सुदृढ़ प्रयास करने वाला, अध्यवसायी – **ज्जतो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधिचेतसो अप्पमज्जतो, मुनिनो मोनपथेसु सिक्खतो,* पाचि॰ 79; *अप्पमज्जतोति नप्पमज्जतो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 60; *उट्ठाहतो अप्पमज्जतो, अनुतिट्ठन्ति देवता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.107; – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं दायकोपि ... परिचरियाय च अप्पमज्जन्तो उळारं विपुलञ्च दानफलं पटिलभति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 7.

अप्पमज्जन नपुं॰, पमज्जन = पमाद का निषे॰, अप्रमाद, स्मृति की जागरुकता – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *संयमनं संयमो अप्पमज्जनं अप्पमादो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 114; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पमादं पसंसन्तीति ... अप्पमादं अप्पमज्जनं पण्डिता सप्पञ्ञा बुद्धादयो पसंसन्ति, वण्णेन्ति थोमेन्ति,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 71; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पमादरताति ... अप्पमज्जने रता अभिरता तत्थ अप्पमादेनेव रत्तिन्दिवं वीतिनामेन्ता,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 148.

अप्पमञ्ञति अप्प + √मन का वर्त॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अवमन्यते], तिरस्कार करता है, निचली दृष्टि से देखता है, अवज्ञापूर्वक देखता है, – **ञ्ञेथ** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ – *मावमञ्ञेथ पापस्स, न मन्तं आगमिस्सति,* ध॰ प॰ 121; *तत्थ मावमञ्ञेथाति न अवजानेय्य, पापस्साति पापं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.10.

अप्पमञ्ञा स्त्री॰, व्यु॰ संदिग्ध, संभवतः अप्पमाण का भाव॰, मेत्ता, करुणा आदि की भावना का सङ्केतक होने के कारण संभवतः स्त्री॰ का निर्धारण [अप्रामाण्य], **शा॰ अ॰** प्रमाणरहित होना, सीमारहित होना, **ला॰ अ॰** मेत्ता, करुणा, मुदिता एवं उपेक्खा नाम के चार ब्रह्मविहार, जिनके प्रसार का क्षेत्र असीम तथा जिनके आलम्बनभूत प्राणियों की संख्या भी अप्रमाण रहती है – **ञ्ञा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपेक्खा अप्पमञ्ञा च अरूपा चेव पच्छिमे,* अभि॰ अव॰ 830; – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रत्तिन्दिवं सततमप्पमत्तो, सब्बा दिसा फरति अप्पमञ्ञं,* सु॰ नि॰ 512; – **यो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *फुसिस्सं चतस्सो अप्पमञ्ञायो, ताहि च सुखितो विहरिस्सं,* थेरगा॰ 386; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भागी वा भगवा चतुन्नं झानानं चतुन्नं अप्पमञ्ञानं चतुन्नं अरूपसमापत्तीनन्ति भगवा,* महानि॰ 104; *चतुन्नं अप्पमञ्ञानन्ति मेत्तादीनं फरणप्पमाणविरहितानं चतुन्नं ब्रह्मविहारानं,* महानि॰ अट्ठ॰ 212; – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दानस्मिं ब्रह्मचरियं अप्पमञ्ञासु सासने,* अभि॰ प॰ 782; – **गाथा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, सु॰ नि॰ की 73वीं गाथा का सु॰ नि॰ अट्ठ॰ में बतलाया गया शीर्षक – *अप्पमञ्ञागाथावण्णना समत्ता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.102; – **विभङ्ग** पु॰, विभ॰ के तेरहवें अध्याय का शीर्षक, जिसमें मेत्ता आदि 4 ब्रह्मविहारों का विवेचन है, विभ॰ 307–322; विभ॰ अट्ठ॰ 356–380; – **विरति** स्त्री॰, तीन प्रकार के विरति चैतसिक तथा ब्रह्मविहार *अप्पमञ्ञाविरतियो पनेत्थ पञ्चपि पच्चेकमेव योजेतब्बा,* अभि॰ ध॰ स॰ 13.

अप्पमत्त[1] त्रि., पमत्त का निषे. [अप्रमत्त], वह, जो प्रमाद-युक्त या असावधान न हो, जागरुक, चैतन्य, उत्साही, दीर्यवान् – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तण्हक्खयं पत्थयमप्पमत्तो, अनेळमूगो सुतवा सतीमा,* सु. नि. 70; *अप्पमत्तोति सातच्चकारी सक्कच्चकारी,* सु. नि. अट्ठ. 1.98; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो,* सु. नि. (पृ.) 190; *तस्स मे अप्पमत्तस्स, संसारा विनळीकता,* थेरगा. 216; – **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *सारत्थो अप्पमत्ता आतापिनो पहीतत्ता विहरथ,* दी. नि. 2.107; – **त्तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *साधु, केवलं ते अप्पमत्तेन भवितब्ब'न्ति,* जा. अट्ठ. 1.237; – **स्स** पु., च. वि., ए. व. – *यत्थ अमोघा पब्बज्जा, अप्पमत्तस्स सिक्खतो,* थेरगा. 837; – **त्ताय** स्त्री., च. वि., ए. व. – *तस्सा मे अप्पमत्ताय, विचिनन्तिया योनिसो,* थेरीगा. 85; – **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *धीरा समधिगच्छन्ति, अप्पमत्ता विचक्खणा'ति,* थेरगा. 4; *अप्पमत्ता न मीयन्ति, ये पमत्ता यथा मता,* ध. प. 21.

अप्पमत्त[2] त्रि., ब. स. [अल्पमात्र], बहुत कम मात्रा वाला, प्रसार में छोटा, कम संख्या या कम मूल्य वाला, महत्वहीन, तुच्छ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अप्पमत्तो अयं कलि, यो अक्खेसु धनपराजयो,* सु. नि. 664; पाठा. अप्पमत्तकी.

अप्पमत्तक 1. त्रि., अप्पमत्त से व्यु., उपरिवत् – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अप्पमत्तको सो भिक्खवे कलिग्गहो यं सो अक्खधुत्तो पठमेनेव कलिग्गहेन पुत्तम्पि जीयेथ,* म. नि. 3.209; *अप्पमत्तकोपि गूथो दुग्गन्धो होति,* अ. नि. 1(1).48; – **के** पु., सप्त. वि., ए. व. – *ते अप्पमत्तकेपि दुक्खधम्मे उप्पन्ने अत्तना कन्दमाना रोदमाना,* जा. अट्ठ. 3.49; – **त्तिका** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *महाधातुकथायं अपुब्बं नत्थि, अप्पमत्तिकाव तन्ति अवसेसा,* ध. स. अट्ठ. 5; – **कं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *यंकिञ्चि अप्पमत्तकम्पि वेदनं अनुभवति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).194; – **केसु** पु., सप्त. वि., ब. व. – *भयदस्सावीति अप्पमत्तकेसु वज्जेसु भयदस्सावी,* पाचि. अट्ठ. 47; – **कस्स** पु./नपुं., ष. वि., ए. व. – *किं पनिमस्स अप्पमत्तकस्स ओरमत्तकस्स अधिसल्लिखतेवायं समणो'ति,* म. नि. 2.121; 2. नपुं., अल्प मात्रा, अल्पमात्रा वाली वस्तु – *तस्मा अम्हेहि अप्पमत्तकानि येव दस्सितानि,* सद्द. 1.142; 3. – **मत्तकेन** अ., तृ. वि., प्रतिरू., क्रि. वि., क्षुद्र कारण से, मामूली सी बात से – *ते आकुलचित्ता अप्पमत्तकेनपि तसन्ति वित्तसन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).122; – **परिच्चाग** पु., तत्पु. स., बहुत कम का त्याग, थोड़ी सी या अमहत्वपूर्ण वस्तु का परित्याग – *अपिच खो पुब्बे अप्पमत्तकपरिच्चागानुभावेन निब्बत्तो'ति,* खु. पा. अट्ठ. 156; – **विस्सज्जक** त्रि., बहुत साधारण वस्तुओं का दान देने वाला – *भिक्खुं अप्पमत्तकविस्सज्जकं सम्मन्नितुं ...,* चूळव. 310.

अप्पमत्तता स्त्री., अप्पमत्त[1] का भाव. [अप्रमत्तता], चित्त की जागरुकता, प्रमाद से रहित होने की अवस्था – *अनेलमूगता अमत्तता अप्पमत्तता असम्मोहता अच्छम्भिता,* खु. पा. अट्ठ. 24.

अप्पमत्ता स्त्री., कर्म. स., [अल्पमात्रा], बहुत कम मात्रा – *अप्पमत्ता एतस्साति अप्पमत्तकं,* दी. नि. अट्ठ. 1.52; – **मत्ताय** प. वि., ए. व. – *नारहतायस्मा अम्बट्ठो इमाय अप्पमत्ताय अभिसज्जितु'न्ति,* दी. नि. 1.80.

अप्पमत्तिक त्रि., ब. स. [अल्पमृत्तिक], बहुत कम मिट्टी वाला/वाली – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अजाता नाम पथवी – ... सुद्धवालिका अप्पपंसुका अप्पमत्तिका येभुय्येन पासाणा,* पाचि. 50.

अप्पमरुम्ब त्रि., ब. स. [अल्पमरूव], कम कंकरीली बालू वाली, कम चूने वाले कङ्कड़ों वाली – जाता नाम पथवी – ... *अप्पसक्खरा अप्पकठला अप्पमरुम्बा अप्पबालिका,* पाचि. 50; *मरुम्बाति कटसक्खरा,* पाचि. अट्ठ. 19.

अप्पमाण[1] त्रि., ब. स. [अप्रमाण], 1. नहीं मापने जोखने योग्य, असीम, अनन्त, असंख्य, सर्वव्यापी – **णं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *सो वीतरागो पविनेय्य दोसं, मेत्तं चित्तं भावयप्पमाणं,* सु. नि. 512; *मेत्तचित्तञ्च भावेथ, अप्पमाणं दिवा च रत्तो च,* जा. अट्ठ. 5.182; – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *यो वे मेत्तेन चित्तेन सब्बलोकानुकम्पति, उद्धं अधो च तिरियं, अप्पमाणेन सब्बसो अप्पमाणं हितं चित्तं परिपुण्णं सुभावितं,* जा. अट्ठ. 2.50; *सोहं अप्पमाणेन चक्खुना अप्पमाणञ्चेव ओभासं सञ्जानामि, अप्पमाणानि च रूपानि पस्सामि,* म. नि. 3.201; – **णा** पु., प्र. वि., ब. व. – *तत्थ अपरिमाणा वण्णा अपरिमाणा ब्यञ्जना अपरिमाणा सङ्कासना-,* स. नि. 3(2).493; *नवमे अपरिमाणा वण्णाति अप्पमाणानि अक्खरानि,* स. नि. अट्ठ. 3.328; 2. त्रि., अतुलनीय, बेजोड़ – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अप्पमाणो बुद्धो अप्पमाणो धम्मो, अप्पमाणो सङ्घो, पमाणवन्तानि सरीसपानि,* अ. नि. 1(2).85; महाव. 227; *अप्पमाणो बुद्धोति एत्थ बुद्धोति बुद्धगुणा वेदितब्बा, ते हि अप्पमाणा नाम,* अ. नि. अट्ठ. 2.308; – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *अतुलन्ति अप्पमाणं उळारं पणीतं,* पे. व. अट्ठ. 96;

णा स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पमाणा चेतोविमुत्ति या च महग्गता चेतोविमुत्ति,* म॰ नि॰ 186; – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मुदुना कम्मञ्ञेन चित्तेन अप्पमाणो समाधि होति सुभावितो,* अ॰ नि॰ 3(1).228; *अप्पमाणो समाधीति चतुब्रह्मविहारसमाधिपि मग्गफलसमाधिपि अप्पमाणो समाधि नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.276; – **णानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अज्झत्तं ... पस्सति अप्पमाणानि सुवण्णदुब्बण्णानि,* दी॰ नि॰ 2.85; *अप्पमाणानीति वड्ढितप्पमाणानि, महन्तानीति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.136.

अप्पमाण[2] नपुं॰, निषे॰ तत्पु॰ स॰ [अप्रमाण], वह, जो यथार्थज्ञान का उचित साधन या आधार नहीं है, प्रमाण का अभाव, नहीं प्रमाण – *एत्थ च यस्मा अविञ्ञू परे अप्पमाणं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 197; *एतेसं वचनं अप्पमाणं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.267; *काळपक्खो वा जुण्हपक्खो वा एत्थ अप्पमाणन्ति वुत्तं होति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.167.

अप्पमाणक त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमाणक], बिना प्रमाण वाला, प्रमाण-रहित, असङ्गत – *पाळं पत्वान तेसन्तु वचणं अप्पमाणकं,* सद्द॰ 1.9; – **गुण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमाणगुण], असंख्य गुणों से युक्त – *बहुगुणो अनेकगुणो अप्पमाणगुणो गुणरासि गुणपुञ्जो सत्तानं ...,* मि॰ प॰ 188; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अप्रमाणगुणत्व], असंख्य गुणों से भरपूर होना – *... तिण्णं रतनानं अप्पमाणगुणतं दस्सेत्वा सप्पमाणे सत्ते दस्सेतुं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.121; – **गोचरता** स्त्री॰, अप्पमाणगोचर का भाव॰ [अप्रमाणगोचरता], अपरिमेय विषयों वाला होना, आलम्बनों या विषयों की अपरिमेयता – *एवं अप्पमाणगोचरताय एकलक्खणासु चापि एतासु पुरिमा ... होन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 241; – **चित्त / चेतस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमाणचित्त / अप्रमाणचेत], **शा॰ अ॰** वह व्यक्ति, जिसका चित्त अप्रमेय हो अर्थात् प्रमाणों द्वारा ग्राह्य न हो, **ला॰ अ॰** लोकोत्तर चित्त वाला, क्लेशों से मुक्त चित्त वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपट्ठितकायस्सति च विहरति, अप्पमाणचेतसो तञ्च चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं ...,* स॰ नि॰ 2(2).125-26; म॰ नि॰ 1.341; *अप्पमाणचेतसोति उपट्ठितसतिताय निक्किलेसचित्तेन अप्पमाणचित्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.43; *तत्थ अप्पमाणचेतसोति अप्पमाणं लोकुत्तरं चेतो अस्साति अप्पमाणचेतसो, मग्गचित्तसमङ्गीति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).207; – **दस्स** त्रि॰, [अप्रमाणदर्शी], प्रमाणों से अग्राह्य निर्वाण को देखने वाला, प्रमाणों के अविषयीभूत निर्वाण का साक्षात्कार करने वाला, – **दस्सं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... बुद्धं भगवन्तं अप्पमाणदस्सं अग्गदस्सं ... असमं असमसमं अप्पटिसमं ... पटिलभिं,* चूळनि॰ 189-190; *अप्पमाणदस्सन्ति पमाणं अतिक्कमित्वा अप्पमाणं निब्बानदस्सं,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 77; – **पाक** त्रि॰, ब॰ स॰, अनग्गपाळ नाम की सार्थकता को प्रकाशित करने हेतु प्रयुक्त, पकाए हुए भोज्य पदार्थों को बिना किसी सोच विचार के जिस किसी को भी दान देने वाला – *तस्सपि तेनेव कारणेन अनग्गपाळोति नामं जातं, अप्पमाणपाकोति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.195; – **विहारी** त्रि॰, [अप्रमाणविहारिन्], **शा॰ अ॰** प्रमाणों को अतिक्रमण कर चुकी स्थिति में विहार करने वाला, **ला॰ अ॰** आस्रवों को नष्ट कर चुका अर्हत्, प्रमाण या परिसीमन करने वाले राग आदि से मुक्त चित्त-भूमि में विहार करने वाला अर्हत्, राग आदि से मुक्त अर्हत्वफल में विहार करने वाला – *... भावितकायो होति भावितसीलो भावितचित्तो भावितपञ्ञो अपरित्तो महत्तो अप्पमाणविहारी,* अ॰ नि॰ 1(1).283; *अप्पमाणविहारीति खीणासवस्सेतं नाममेव, सो हि पमाणकरानं रागादीनं अभावेन अप्पमाणविहारी नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.218; – **रिनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ *समाधि न विकम्पति, अप्पमाणविहारिनो,* स॰ नि॰ 1(2).210; *अप्पमाणविहारिनोति अप्पमाणेन फलसमाधिना विहरन्तस्स,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.183; – **सञ्ञी** त्रि॰, [अप्रमाणसंज्ञिन्], **शा॰ अ॰** प्रमाण से परे अथवा अत्यधिक विपुलविषय की संज्ञा रखने वाला, **ला॰ अ॰** ऐसी आत्मा, जो अत्यधिक विपुल विषय की संज्ञा कर सके, सांख्य एवं वैशेषिक दर्शनों में प्रतिपादित सर्वज्ञ पुरुष या आत्मा – *अप्पमाणसञ्ञी अत्ता होति,* दी॰ नि॰ 1.26; *विपुलकसिणवसेन अप्पमाणसञ्ञीति वेदितब्बा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.102; *कपिलकणादादयो विय अत्तानो सब्बगतभावपटिजाननवसेन अप्पमाणो सञ्ञी चाति अप्पमाणसञ्ञीति ...,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.152; – **सत्तारम्मण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमाणसत्त्वालम्बन], अप्रमाण या असंख्य प्राणियों को अपना आलम्बन बनाने वाला – *अप्पमाणन्ति अप्पमाणसत्तारम्मणं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.183; – **त्त** नपुं॰, अप्पमाणारम्मण का भाव॰ [अप्रमाणालम्बनत्व], अप्रमाण या असीम आलम्बनों वाला होना – *अप्पमाणेनाति अप्पमाणसत्तानं अप्पमाणारम्मणत्ता अप्पमाणेन,* जा॰ अट्ठ॰ 2.50; – **समाधि** पु॰, कर्म॰ स॰ [अप्रमाणसमाधि], अर्हत्व के मार्गक्षण में स्थित साधक द्वारा की जा रही समाधि – *अभियुय्ह दिसा सब्बा, अप्पमाणसमाधिना,* अ॰ नि॰ 1(1).269;

अप्पमाणसमाधिनाति अरहत्तमग्गसमाधिना, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.211; - **सुभ** पु॰, रूप ब्रह्मलोकों में से एक में निवास करने वाले अनन्त शोभा से युक्त देवताओं के एक वर्ग का नाम - **भा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *एकतलवासिनो एव चेते सब्बेपि परित्तसुभा अप्पमाणसुभा सुभकिण्हाति वेदितब्बा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).39; - **भानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *अप्पमाणसुभानं देवानं* ..., म॰ नि॰ 1.364; - **णाभ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमाणाभ], अत्यन्त देदीप्यमान आभा वाले रूपब्रह्मलोकों में से एक के निवासी देवगण - **भानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *अप्पमाणाभानं देवानं* ..., म॰ नि॰ 1.363; *आभानं देवानन्ति* ..., *परित्ताभअप्पमाणाभ आभस्सरानमेतं अधिवचनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).229; - **णारम्मण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमाणालम्बन], विपुल विषय को आलम्बन बनाने वाला, अप्रमाण या लौकिक सीमाओं के ऊपर जा चुके धर्म (निर्वाण) को आलम्बन बनाने वाली समाधि, प्रज्ञा या सम्यक्दृष्टि - **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अत्थि परित्तारम्मणो, अत्थि महग्गतारम्मणो अत्थि अप्पमाणारम्मणो,* विभ॰ 18; - **णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पमाणे धम्मे आरब्भ या उप्पज्जति पञ्ञा पजानना ... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि- अयं वुच्चति अप्पमाणारम्मणा पञ्ञा,* विभ॰ 373; - **णं** नपुं॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं विपुले आरम्मणे पवत्तं तं वुड्ढिप्पमाणत्ता अप्पमाणं आरम्मणं अस्साति अप्पमाणारम्मणं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 229; - **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *अप्पमाणे धम्मे आरब्भ ये उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा-इमे धम्मा अप्पमाणारम्मणा,* ध॰ स॰ 1031; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अप्रमाणालम्बनता], विपुल आलम्बन वाला होना, लोकोत्तर धर्म (निर्वाण) को आलम्बन बनाने की स्थिति - *विपरियायेन अप्पमाणारम्मणता वेदितब्बा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 253.

अप्पमाणिक त्रि॰, अप्पमाण से व्यु॰ [अप्रमाणिक], निर्धारित मानदण्डों से रहित, प्रामाणिक माप-जोख से रहित, बहुत बड़ी या बहुत छोटी - **णिकायो** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *सञ्ञाचिकायो कुटियो कारापेन्ति अस्सामिकायो अनुद्देसिकायो अप्पमाणिकायो,* पारा॰ 224; *अप्पमाणिकायोति एत्तकेन निट्ठं गच्छिस्सन्ती'ति एवं अपरिच्छिन्नप्पमाणायो, बुद्धिप्पमाणायो वा महन्तप्पमाणायोति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.1.134; - **णिकानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *भगवता निसीदनं अनुञ्ञातं'न्ति अप्पमाणिकानि निसीदनानि धारेन्ति,* पाचि॰ 224.

अप्पमाद पु॰, पमाद का निषे॰ [अप्रमाद], चित्त की जागरुकता, स्मृति की जागरुकता, प्रमाद या चित्त की शिथिलता या विक्षिप्तता का न रहना - **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *आतप्पं पधानं अधिट्ठानं अनुयोगो अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसु,* महानि॰ 42-43; *अप्पमादोति नप्पमज्जनं, सतिया अविप्पवासो,* महानि॰ अट्ठ॰ 148; *अप्पमादो वुच्चति सतिया अविप्पवासो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; - **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सद्धाय तरति ओघं, अप्पमादेन अण्णवं,* सु॰ नि॰ 186; *तस्मा अप्पमादेन अण्णव'न्ति इमिना पदेन भवोघतरणं सकदागामिमग्गं सकदागामिञ्च पकासेति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 198; - **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पमादञ्च मेधावी, धनं सेट्ठंव रक्खति,* थेरगा॰ 883; - **दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पमादे पमोदन्ति, अरियानं गोचरे रता,* ध॰ प॰ 22; - **गरु / गारव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमादगौरव], अप्रमाद में गौरव अनुभव करने वाला, अप्रमाद को सम्मान देने वाला - *अप्पमादगरु भिक्खु, पटिसन्थारगारवो,* अ॰ नि॰ 2(2).47; 181; - **गारवता** स्त्री॰, भाव॰ [अप्रमादगौरवता], अप्रमाद में सम्मान या गौरव का भाव - *अप्पमादगारवताति अप्पमादे गरुभावो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.108; - **गुण** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रमादगुण], अप्रमाद का गुण - **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पमादगुणे युत्तो, तदा कालङ्कतो अहं,* अप॰ 1.164; - **धम्म** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रमादधर्म], अप्रमाद का धर्म - ... *अप्पमादधम्मो देसितो एवं अप्पमादधम्मं येव थेरो देसेसि,* सा॰ वं॰ 56(ना॰); - **पटिपत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रमादप्रतिपत्ति], अप्रमाद की चर्या, अप्रमाद का अभ्यास, - **त्तियं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनुसासमाना च अप्पमादप्पटिपत्तियं अनुसासन्ति,* मि॰ प॰ 223; - **पद** नपुं॰, [अप्रमादपद], अप्रमादविषयक वचन, कथन या वाक्य - **दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *ओवादं सब्बं एकस्मिं अप्पमादपदेयेव पक्खिपित्वा अदासि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.166; - **फल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रमादफल], अप्रमाद का फल - **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमेसं भिक्खूनं अप्पमादफलं सम्पस्समानो अप्पमादेन करणीय'न्ति वदामि,* म॰ नि॰ 2.152; - **मूलक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमादमूलक], अप्रमाद में अपनी जड़ रखने वाला, अप्रमाद के कारण उदित होने वाला - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ये केचि कुसला धम्मा, सब्बे ते अप्पमादमूलका अप्पमादसमोसरणा,* स॰ नि॰ 3(1).49; - **रत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रमादरत], अप्रमाद में आनन्द लेने वाला - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पमादरतो भिक्खु, पमादे भयदस्सिवा,* ध॰ प॰ 31; - **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पमादरतं दिस्वा, उत्तमत्थं गवेसकं,* अप॰ 1.65; - **ताय** स्त्री॰, चतु॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बहूहि दुक्खधम्मेहि,*

अप्पमादरताय मे, थेरीगा॰ 36; *अप्पमादरतायाति ताय एव दुक्खोतिण्णताय ... अप्पमादे रताय*, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 46; - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अप्पमादरता सन्ता, पमादे भयदस्सिनो*, इतिवु॰ 29; *अप्पमादरताति वुत्तप्पकाराय समथविपस्सनाभावनाय अप्पमज्जने रता ... वीतिनामेन्ता*, इतिवु॰ अट्ठ॰ 148; - **लक्खण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रमादलक्षण], अप्रमाद का लक्षण, - **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पमत्ता पन अप्पमादलक्खणं वड्ढेत्वा खिप्पं मग्गफलानि सच्छिकत्वा दुतियततियअत्तभावेसु न निब्बत्तन्ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.130; - **वग्ग** पु॰, ध॰ प॰ के द्वितीय वर्ग का शीर्षक, जिसमें अप्रमाद से सम्बन्धित बुद्धवचनों का संग्रह कुल बारह गाथाओं में किया गया है - ध॰ प॰ 21-32; - **ग्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रञ्ञो अनुरूपं धम्मपदे अप्पमादवग्गं अनुमोदनत्थाय अभासि*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.34; *तस्सप्पमादवग्गं सो सामणेरो अभासथ*, म॰ वं॰ 68; - **वग्गवण्णना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, ध॰ प॰ के अप्पमादवग्ग की अट्ठ॰ का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.94-162; - **विहार** पु॰, तत्पु॰ स॰, अप्रमाद के साथ जीवनवृत्ति - **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमं उदानन्ति इमं पमादविहारे अप्पमादविहारे च यथाक्कमं आदीनवानिसंसविभावनं उदानं उदानेसि*, उदा॰ अट्ठ॰ 193; - **विहारी** त्रि॰, अप्रमाद से युक्त होकर जीवनयापन करने वाला - **री** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *... अप्पमादविहारी त्वेव सङ्खं गच्छति*, स॰ नि॰ 2(2).85; - **रिनो** पु॰, च॰/ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं मे विहरन्तस्स, अप्पमादविहारिनो*, अप॰ 1.65; - **नियो** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *एवं इमा अप्पमादविहारिनियो भविस्सन्ती'ति ... सम्पटिच्छापेसुं*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.56; - **रिनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तेसं सम्पन्नसीलानं, अप्पमादविहारिनं*, ध॰ प॰ 57; - **समोसरण** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अप्रमाद में आकर एक जुट हो जाने वाला, अप्रमाद में अन्तर्भूत हो जाने वाला - **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सब्बे ते अप्पमादमूलका अप्पमादसमोसरणा*, स॰ नि॰ 3(1).49; - **सम्पदा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रमादसम्पत्], अप्रमाद की पूर्णरूप से प्राप्ति - *यदिदं - सीलसम्पदा, ... अत्तसम्पदा, ... अप्पमादसम्पदा*, स॰ नि॰ 3(1).28; *अप्पमादसम्पदाति कारापकअप्पमादसम्पत्ति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.169; - **सुदेसना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अप्रमादविषयक बुद्ध का उत्तम उपदेश - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विलोकयी तेपिटकं महारहं, तमद्दस अप्पमादसुदेसनं*, दी॰ वं॰ 50; - **दाधिकरण** त्रि॰, ब॰ स॰, अप्रमाद के फलस्वरूप प्राप्त - **णं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सीलवा सीलसम्पन्नो अप्पमादाधिकरणं महन्तं भोगक्खन्धं अधिगच्छति*, दी॰ नि॰ 2.67; - **दाधिगत** त्रि॰, [अप्रमादाधिगत], अप्रमाद के द्वारा प्राप्त - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *योपिस्स सो होति यसो अप्पमादाधिगतो*, अ॰ नि॰ 2(2).233; - **दानिसंसगाथा** स्त्री॰, सद्धम्मो॰ उन्नीसवें अध्याय का शीर्षक, सद्धम्मो॰ (गा॰) 588-621; - **दाभाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रमादाभाव], अप्रमाद का अभाव - **वा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पमत्तस्सपि अप्पमादाभावाति तस्मा उभोपेते एकसदिसाव*, जा॰ अट्ठ॰ 5.94; - **दोवाद** पु॰, अप्रमाद-विषयक बुद्धोपदेश - *अप्पमादो अमतपदं, पमादो मच्चुनो पदन्ति, अप्पमादोवादञ्च कथेसि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.60.

अप्पमायु त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पायुष्], अल्प आयु वाला *उपनीयति जीवितमप्पमायु, जरूपनीतस्स न सन्ति ताणा*, जा॰ अट्ठ॰ 4.357; स॰ नि॰ 1(1).3; अ॰ नि॰ 1(1).181.

अप्पमारिस पु॰, [अल्पमारिष], एक औषधीय पौधा, चिड़चिड़ी - *तण्डुलेय्योप्पमारिसो*, अभि॰ प॰ 594.

अप्पमिद्ध त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पमृद्ध, बौ॰ सं॰ अल्पमिद्ध], अल्प आलस्य या तन्द्रा वाला, अनिद्रालु, जागरुक, चौकन्ना, अध्यवसायी - **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *तस्मा हि अप्पकिच्चस्स, अप्पमिद्धो अनुद्धतो*, इतिवु॰ 52; *अप्पमिद्धोति दिवसं चङ्कमेन निसज्जाया'तिआदिना वुत्तजागरियानुयोगेन निद्दारहितो अस्स*, इतिवु॰ अट्ठ॰ 218; - **द्धेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *योगिना योगावचरेन अप्पमिद्धेन भवितब्बं*, मि॰ प॰ 384.

अप्पमेय्य त्रि॰, प + √मा के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रमेय], माप-जोख द्वारा निर्धारण नहीं किए जाने योग्य, असीम, अनन्त, अप्रमाण - **य्यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तिम्बरुसकवण्णाभो, अप्पमेय्यो अनूपमो*, अप॰ 1.68; - **य्यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बुद्धमप्पमेय्यं अनुस्सर पसन्नो*, थेरगा॰ 382; 383; 384; - **य्या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वसुधा यथाप्पमेय्या, चित्ता वनवटंसका*, अप॰ 1.113; - **य्यानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सत्तानञ्च अप्पमेय्यानं दुस्सीला विरतो जनो*, सद्धम्मो॰ 338; - **गुण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रमेयगुण], असीम या असंख्य गुणों वाला - **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सो भगवा विचित्तफुप्फरासि विय अनन्तगुणो अप्पमेय्यगुणो*, मि॰ प॰ 315.

अप्पमोचन नपुं॰, पमोचन का निषे॰ [अप्रमोचन], विमुक्ति का अभाव, छुटकारा का न होना - *यथा तव ... अनागतसंवच्छरे वा योजेतब्बतो अप्पमोचनमेव होन्ति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.117.

अप्पयस त्रि., ब. स. [अल्पयशस्], कम प्रसिद्धि वाला, अल्प रूप में सम्मानित या सत्कृत – **यसा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अप्पेसक्खा च अप्पलाभा चाति भो पब्बज्जा नाम अप्पयसा चेव*, दी. नि. अट्ठ. 2.235.

अप्परज त्रि., ब. स. [अल्परजस्], कम धूल भरी/भरा, कम धूल वाली/वाला **रजा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *नीचत्तिणा अप्परजा च भूमि, पासादिका यत्थ जहन्ति सोकं*, जा. अट्ठ. 5.162; *अप्परजाति पंसुरहिता*, तदे..

अप्परजक्ख त्रि., ब. स., अट्ठ. के अनुसार अप्प + रज + अक्खि से व्यु. [अल्परजस्क अथवा अल्परजक्ष], **शा. अ.** कम धूल भरा, कम धूल भरी आंखों वाला, **ला. अ.** (राग आदि के) अल्प मलों वाला, वह, जिसकी प्रज्ञाचक्षु में राग आदि की धूल बहुत कम रह गयी है – **क्खो** पु., प्र. वि., ए. व. – *भिक्खु दीघरत्तं अप्परजक्खो इमस्मिं धम्मविनये*, अ. नि. 3(2).163; – **क्खे** पु., द्वि. वि., ब. व. – *विपस्सी भगवा अरहं ... बुद्धचक्खुना लोकं वोलोकेन्तो अद्दस सत्ते अप्परजक्खे महारजक्खे ... अप्पेकच्चे ... विहरन्ते*, दी. नि. 2.30; *अप्परजक्खेतिआदीसु येसं वुत्तनयेनेव पञ्ञाचक्खुम्हि रागादिरजं अप्पं ते अप्परजक्खा*, दी. नि. अट्ठ. 2.52; – **क** त्रि., उपरिवत् – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *देसकस्स अभावेन यतो अप्परजक्खका*, सद्धम्मो. 519; – **जातिक** त्रि., ब. स. [बौ. सं. अल्परजस्कजातिय], वह, जिसमें स्वभाव से ही राग आदि की धूल अत्यल्प हो, राग आदि से अत्यल्प रूप में प्रभावित स्वभाव वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *सन्ति सत्ता अप्परजक्खजातिका*, दी. नि. 2.30; *अप्परजक्खजातिकाति पञ्ञामये अक्खिम्हि अप्पं परित्तं रागदोसमोहरजं एतेसं, एवं सभावाति अप्परजक्खजातिका*, दी. नि. अट्ठ. 2.30; *सन्तीध सत्ताप्परजक्खजातिका, देसेहि धम्मं अनुकम्पिमं पजं*, बु. वं. 1.1.

अप्परुळ्हहरित त्रि., [अप्ररूढहरित], ऐसा स्थान, जहां हरी-भरी घास बहुत कम उगी हो – **ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *अप्पहरितेति अप्परुळ्हहरिते*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).101; – **तिण** त्रि., उपरिवत् – **णे** उपरिवत् – *अप्परुळ्हहरिततिणे वा पासाणपिट्ठिसदिसे*, सु. नि. अट्ठ. 1.121.

अप्पलाभी त्रि., [अल्पलाभिन्], कम लाभ पाने वाला – **भी** पु., प्र. वि., ए. व. – *अहो लोसकतिस्सत्थेरो अप्पपुञ्ञो अप्पलाभी*, जा. अट्ठ. 1.232; – **भिभाव** पु., कम लाभ पाने की स्थिति – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *अत्तनो अप्पलाभिभावञ्च अरियधम्मलाभिभावञ्च सयमेव एस अकासीति ... समोधानेसि*, जा. अट्ठ. 1.236.

अप्पवज्ज त्रि., [अल्पवद्य], कम निन्दनीय, अल्प रूप में प्रदूषित – **ज्जो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सावज्जो, वज्जबहुलो, अप्पवज्जो, अनवज्जो*, अ. नि. 1(2).155.

अप्पवत्त 1. त्रि., पवत्त का निषे. [अप्रवृत्त], निष्क्रिय, काम में नहीं लगा हुआ – **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. *अप्पवत्तं चित्तं सुखदुक्खं नप्पजानाति*, मि. प. 275; – **वत्ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. *अप्पवत्ते चित्ते सुपिनं न पस्सति*, मि. प. 276; – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *पुरिसस्स जालापवत्ते उक्कण्ठित्वा उदकप्पहारेन जालं अप्पवत्तं कत्वा छारिकाय अङ्गारे पिधाय ... निरोधसमापज्जनं*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).245; **2.क**. नपुं., निर्वाण के पर्याय के रूप में – *अप्पवत्तं अभिञ्ञेय्यं*, पटि. म. 11; *अप्पवत्तं सुखं ... खेमं ... निब्बानं*, पटि. म. अट्ठ. 1.82; *सो अप्पवत्तत्थाय मग्गं आयूहति गवेसति भावेति बहुलीकरोति*, मि. प. 297; – **वत्तस्स** ष. वि., ए. व. – *अप्पवत्तस्स गुणं पवत्ते च भयं दीपयमानो*, मि. प. 189; – **वत्ते** सप्त. वि., ए. व. – *पवत्ते भयदस्साविस्स अप्पवत्ते चित्तं पक्खन्ति ... निस्सरणन्ति*, मि. प. 297; **2.ख**. अप्रवृत्ति, निष्क्रियता, अनुत्पाद – **त्ताय** च. वि., ए. व. *एतेसं अप्पवत्ताय, देसेसि मग्गमुत्तमं*, थेरगा. 767; *एतेसं अप्पवत्तायाति यथावुत्तानं पापधम्मानं अप्पवत्तिया अनुप्पादाय*, थेरगा. अट्ठ. 2.245.

अप्पवत्तन नपुं., पवत्तन का निषे. [अप्रवर्तन], **क**. आगे जारी नहीं रहना – **नं** प्र. वि., ए. व. – ... *किलेसवट्टभावतो कम्मवट्टस्स अप्पवत्तनं*, उदा. अट्ठ. 296; – **भाव** पु., [अप्रवर्तनभाव], उपरिवत् – **वं** द्वि. वि., ए. व. – ... *आयुसङ्खारं ओलोकेन्तो तस्स अप्पवत्तनभावं ञत्वा सत्थारं आह*, ध. प. अट्ठ. 2.45; **ख**. घटित न होना, प्रयोग में न आना – **तो** प. वि., ए. व. – *रुळ्हिवसेन ते पवत्ता पकतिआपादिसु अत्थेसु अप्पवत्तनतो*, सद्द. 1.108.

अप्पवत्तन्त त्रि., प + √वत के वर्त. कृ. का निषे. [अप्रवर्तत्], आगे को नहीं बढ़ रहा या नहीं पहुंच रहा – **न्ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *सो सोतापन्नो हुत्वा उपरिविसेसे अप्पवत्तन्ते भविस्सति ... आह*, ध. प. अट्ठ. 1.54.

अप्पवत्ति स्त्री., पवत्ति का निषे. [अप्रवृत्ति] सक्रिय नहीं रहना, आगे कार्यरत न होना – **त्ति** प्र. वि., ए. व. – *उभिन्नं अप्पवत्ति निरोधसच्चं*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).213-14; – **त्तिं** द्वि. वि., ए. व. – *एवं दिट्ठादीनवाय तण्हाय एव*

अप्पवत्तिं, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98; – **त्तिया¹** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *फस्सहेतुकेसु ... तण्हादीनं अप्पवत्तिया संवुतो,* उदा॰ अट्ठ॰ 154; – **त्तिया²** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतेसं अप्पवत्तायाति यथावुत्तानं पापधम्मानं अप्पवत्तिया अनुप्पादाय,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 245; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यतिन्द्रियोति चक्खादीनं छन्नं इन्द्रियानं अभिज्झाद्यप्पवत्तितो, संयमेन यतिन्द्रियो,* उदा॰ अट्ठ॰ 166; – **कत** त्रि॰, [अप्रवृत्तिकृत], निष्क्रिय कर दिया गया, वह, जिसे निष्क्रिय बना दिया गया है – *महावते ... पवाहेत्वा अप्पवत्तिकतकालो विय ... अप्पटिसन्धिकभावेन ... वेदितब्बो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.115; – **करण** नपुं॰, [अप्रवृत्तिकरण], निष्क्रिय कर देना, क्रियाविहीन बना देना – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेतं ञानञ्च आरम्मणञ्चाति उभयम्पि अप्पवत्तिकरणेन च ... विहातब्बं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 250.

अप्पवत्तिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रवृत्तिक], प्रवृत्ति या क्रियाशीलता से रहित, आगे जारी न रहने वाला – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुपवज्जन्ति अप्पवत्तिकं अप्पटिसन्धिकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.18.

अप्पवारित त्रि॰, पवारित का निषे॰ [अप्रवारित], अभुक्त, भोजन नहीं कर चुका (भिक्षु), वह, जिसे पहले दान के रूप में कुछ नहीं दिया गया है – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथञ्हि नाम ... पुब्बे अप्पवारितो गहपतिकं उपसङ्कमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जिस्सती'ति,* पारा॰ 327; *पुब्बेव हुत्वा पन अप्पवारितो,* उत्त॰ वि॰ 40; – **सञ्ञा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रवारितसंज्ञा], भोजन कर चुके को भोजन न किया हुआ मानना – **ञ्ञाय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पवारिते अप्पवारितसञ्ञाय,* मि॰ प॰ 248.

अप्पवालिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पबालुक], कम बालू वाला / वाली – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जाता नाम पठवी – सुद्धपंसु सुद्धमत्तिका अप्पपासाणा ... अप्पमरुम्बा अप्पवालिका, ... येभुय्येनमत्तिका,* पाचि॰ 50.

अप्पवाहन त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पवाहन], बहुत कम वाहनों वाला, – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दीघीति नाम ... दलिद्दो अप्पधनो अप्पभोगो अप्पबलो अप्पवाहनो अप्पविजितो अपरिपुण्णकोसकोट्ठागारो,* महाव॰ 463.

अप्पविजित त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पविजित], वह, जिसके अधीन बहुत कम जीता हुआ क्षेत्र हो – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, उपरिवत्.

अप्पविट्ठ त्रि॰, प + √विस के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रविष्ट], वह, जिसने भीतर प्रवेश नहीं किया अथवा जो किसी पर आश्रित नहीं है – **ट्ठानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कतमानि कानिचि ओकारन्तपदानि पुरिसनये सब्बथा अप्पविट्ठानि,* सद्द॰ 1.105; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, प्रविष्ट न होना, अन्तर्भूत न होना - *तस्मा ... पुरिसनये सब्बथा गोसद्दस्स अप्पविट्ठता वुत्ता,* सद्द॰ 1.106.

अप्पविपाक त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पविपाक], बहुत हलका फल या परिणाम देने वाला – **कं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पविपाकं वा तुलं,* उदा॰ अट्ठ॰ 268.

अप्पविसय त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पविषय], केवल कुछ सीमित विषयों में ही प्रयुक्त – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कतरसद्दो हि अप्पविसयो,* सद्द॰ 1.270; – **यानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पविसयानि इतरानि चतुचित्तसम्पयोगा,* विभ॰ अट्ठ॰ 174.

अप्पवेदनीय त्रि॰, [अल्पवेदनीय], बहुत कम मात्रा में अनुभव किये जाने योग्य - **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं मे कम्मं अप्पवेदनीयं होतू'ति,* अ॰ नि॰ 3(1).197.

अप्पसक्खर त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पशर्कर], बहुत कम रोड़ी या कंकड़ों वाला / वाली – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुद्धपंसु सुद्धमत्तिका अप्पपासाणा अप्पसक्खरा अप्पकठला अप्पमरुम्बा अप्पवालिका,* पाचि॰ 50.

अप्पसच्च नपुं॰, भाव॰ [अल्पश्रुत्य], बहुत कम पढ़ा लिखा होना, अज्ञान - **च्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पसच्चं खो पन तथागतप्पवेदिते धम्मविनये परिहानमेतं,* अ॰ नि॰ 3(2).133; 136.

अप्पसत्थ¹ त्रि॰, पसत्थ का निषे॰ [अप्रशस्त], अप्रशंसित, जुगुप्सित – **त्थं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ..., *अमनुञ्ञगन्धं बहूनं अकन्तं, ... तदप्पसत्थं द्विरसञ्ञु भुञ्जे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.53.

अप्पसत्थ² त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पसार्थ], वह, जिसके पास कमजोर रक्षा साधन हों या बहुत छोटा सा समूह हो – **त्थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वाणिजोव भयं मग्गं, अप्पसत्थो महद्धनो,* ध॰ प॰ 123.

अप्पसद्द त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पशब्द], बहुत कम कोलाहल वाला, कोलाहल-रहित, शान्त; **क.** स्थान, आसन आदि – **द्देसु** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अथासनेसु सयनेसु, अप्पसद्देसु भिक्खु विहरेय्य,* सु॰ नि॰ 931; – **द्दानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरञ्ञकानि सेनासनानि, पन्तानि अप्पसद्दानि,* थेरगा॰ 592; – **द्दं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेनासनं नातिदूरं होति नाच्चासन्नं गमनागमनसम्पन्नं दिवा अप्पाकिण्णं रत्तिं अप्पसद्दं अप्पनिग्घोसं ...,* अ॰ नि॰ 3(2).13; – **द्दे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पसद्दे अप्पनिघोसे विजनवाते मनुस्सराहस्सेय्यके*

पटिसल्लानसारुप्पे सेनासनेति, महानि॰ 351; **– द्दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किमिदं अप्पसद्दोव, अस्समो पटिभाति मं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.334; **ख.** शान्त, मौन एवं कोलाहल न करने वाला व्यक्ति – **द्दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसद्दो अन्तरघरे गमिस्सामीति सिक्खा करणीया'ति,* पाचि॰ 249; *तेन अप्पसद्दो उपसङ्कमित्वा अन्तरमानो आलिन्दं पविसित्वा ... आकोटेहि,* दी॰ नि॰ 1.78; **– द्देन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसद्देन अन्तरघरे गन्तब्बं,* पाचि॰ 249; **– द्दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पसद्दा आयस्मन्तो होथ,* पु॰ प॰ 142; **– द्दं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसद्दं परिसं विदित्वा ... मञ्ञेय्या'ति,* दी॰ नि॰ 1.161; **– द्दे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पसद्दे कत्वाति निरये अपसद्दे कत्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.18; **ग.** नपुं॰, उपरिवत् प्रशान्ति – **द्दस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसद्दकामो खो सो आयस्मा अप्पसद्दस्स वण्णवादी,* दी॰ नि॰ 1.161; **घ.** पु॰, व्याकरण के सन्दर्भ में – 'अप्प' शब्द – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसद्दो हेत्थ अभावत्थो अप्पिच्छो अप्पनिग्घोसो'तिआदीसु विय,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 284; **– काम** त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पशब्दकाम], शान्तिप्रिय, कोलाहल-रहित अवस्था या स्थान की कामना करने वाला – **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसद्दकामो खो सो आयस्मा अप्पसद्दस्स वण्णवादी,* दी॰ नि॰ 1.161; **– मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पसद्दकामा खो पनेते आयस्मन्तो अप्पसद्दविनीता,* दी॰ नि॰ 3.27; **– विनीत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, शान्त अवस्था में संयम की शिक्षा को प्राप्त – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, उपरिवत् – *अप्पसद्दकामा खो पनेते आयस्मन्तो अप्पसद्दविनीता,* दी॰ नि॰ 3.27.

अप्पसन्न त्रि॰, पसन्न का निषे॰ [अप्रसन्न], **1.** अस्वच्छ, मलिन, अविशुद्ध – **न्ने** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथोदके आविले अप्पसन्ने, न पस्सति सिप्पिकसम्बुकञ्च,* जा॰ अट्ठ॰ 2.83; *अप्पसन्नेति तायेव आविलताय अविप्पसन्ने,* तदे॰ **2.** वह व्यक्ति, जिसका चित्त किसी के प्रति विश्वास से युक्त नहीं है, या जो किसी सिद्धान्त पर श्रद्धा नहीं रखता है, अविश्वासी, अश्रद्धावान् – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *त्वं पन तदा मयि अप्पसन्नो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 193; **– न्नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पसन्नमेव सेवेय्य, अप्पसन्नं विवज्जये,* जा॰ अट्ठ॰ 5.221; **– न्नस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अद्धा पटिञ्ञातमेतं तदाहु, नाचिक्खना अपसन्नस्स होति,* पे॰ व॰ 528; *अप्पसन्नस्स होतीति अकथना अप्पसन्नस्स होति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 193; **– न्ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *गणिका अस्सद्धा अप्पसन्ना मच्छेरमलपरियुट्ठितचित्ता तेहि मनुस्सेहि* ..., पे॰ व॰ अट्ठ॰ 173; **– न्ने** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जोतिपालो माणवो अस्सद्धे अप्पसन्ने कुले पच्चाजातो,* मि॰ प॰ 210; **– न्नानि** नपुं॰, प्र॰/द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *कुलानि अस्सद्धानि अप्पसन्नानि अनोपानभूतानि ...,* महानि॰ 357; **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मातापितरो पन नेसं अस्सद्धा अप्पसन्ना समणब्राह्मणेसु ... अहेसुं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 47; **– न्नानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पसन्नानं पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय,* पारा॰ 22; *अप्पसन्नानं वा पसादाय, पसन्नानं भिय्योभावाय ...,* पाचि॰ 20; **– भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रसन्नभाव], अप्रसन्नता, अविश्वास या अश्रद्धा का भाव – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसादं पवेदेय्युन्ति अप्पसन्नभावं जानापेय्युं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.252.

अप्पसमारम्भ त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पसमारम्भ], अपेक्षाकृत कम कष्टसाध्य, कम क्रियाकलापों के रहने से अल्प पीड़ादायक – **म्भं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कम्मट्ठानं अप्पट्ठं अप्पकिच्चं अप्पाधिकरणं अप्पसमारम्भं सम्पज्जमानं महप्फलं होति,* म॰ नि॰ 2.422; **– म्भो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पट्ठो अप्पकिच्चो अप्पाधिकरणो अप्पसमारम्भो, सततं समितं सच्चवादी होति,* म॰ नि॰ 2.428; **– तर** त्रि॰, तुल॰ विशे॰, अपेक्षाकृत कम पीड़ादायक – **तरो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञो अञ्ञो ... अप्पट्ठतरो च अप्पसमारम्भतरो च महप्फलतरो ... चा'ति,* दी॰ नि॰ 1.127; **– तरा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्विन्नं पटिपदानं ... अप्पत्थतरा च अप्पसमारम्भतरा च महप्फलतरा ... चा'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).197; **– ता** स्त्री॰, भाव॰, कम कष्टकरता, स्वल्प रूप में पीड़ादायकता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्रिमे दस गुणा-अप्पसमारम्भता एको गुणो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.13.

अप्पसय्ह त्रि॰, प + √सह के सं॰ कृ॰ पसय्ह का निषे॰ [अप्रसह्य], नहीं रोके जा सकने योग्य, अनिवार्य, नहीं बच सकने योग्य – **य्हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसय्हो सदा होमि, सब्बारक्खेहि रक्खितो,* अप॰ 1.344; *कुसलो बुद्धधम्मेहि, अपसय्हो परेहि सो,* अप॰ 1.351; **– य्हं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जायेथ नो ये नरकेसु सत्तो, तत्थग्गिदाहादिकमप्पसय्हं,* विभ॰ अट्ठ॰ 90.

अप्पसाद पु॰, तत्पु॰ स॰, पसाद का निषे॰ [अप्रसाद], असन्तोष, अविश्वास, श्रद्धा का अभाव – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *उपासके सद्धे पसन्ने अक्कोसामि, परिभासामि, अप्पसादं करोमि,* चूळव॰ 466; *यो च विनेय्य सारम्भं, अप्पसादञ्च चेतसो,* स॰ नि॰ 1(1).209; **– देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मे अप्पसादेन समन्नागतो अस्सुतवा पुथुज्जनो कायस्स भेदा*

परं मरणा ... उपपज्जति, स॰ नि॰ 3(2).445; – **न्नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पसन्नानञ्चेव अप्पसादाय,* पारा॰ 22; – **दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कूट अप्पसादे, कूटेति कूटयति, ... कूटतापसो,* सद्द॰ 2.532; – **क** पु॰, अप्पसाद से व्यु॰, अल्परूप में अविश्वास, हलकी अश्रद्धा – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दत्वा ... किञ्चिदेव अप्पसादकं दिस्वा ... नानुतपेय्यं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 113; – **नीय** त्रि॰, प + √सद के प्रेर॰ के सं॰ कृ॰, पसादनीय का निषे॰ [अप्रसादनीय], प्रसन्न न कराने योग्य, अविश्वसनीय, अश्रद्धेय – **ये** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अप्पसादनीये ठाने पसादं उपदंसेति,* अ॰ नि॰ 1(2).3; – **बहुल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रसादबहुल], अत्यधिक अविश्वासी, अत्यधिक अश्रद्धावान् – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खूसु अप्पसादबहुलो होति,* अ॰ नि॰ 2(1).251.

अप्पसार त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पसार], अत्यल्प मूल्य वाला, कम महत्त्व रखने वाला – **रानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यानम्हाकं सत्थे अप्पसारानि पणियानि,* दी॰ नि॰ 2.255; *अप्पसारानीति अप्पग्घानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.361.

अप्पसावज्ज त्रि॰, [अल्पसावद्य], छोटे-मोटे पापकर्मों के कारण निन्दनीय, कम निन्दनीय – **ज्जो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो गुणविरहितेसु तिरच्छानगतादीसु पाणेसु खुद्दके पाणे अप्पसावज्जो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).206; *सो यमत्थं भञ्जति तस्स अप्पताय अप्पसावज्जो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 144; तुल॰ अप्पवज्ज, विलो॰ अनवज्ज.

अप्पसिद्ध त्रि॰, पसिद्ध का निषे॰ [अप्रसिद्ध], व्याकरण की सामान्य प्रक्रिया में अप्रचलित, असामान्य, अनावश्यक – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थापच्चयो पावचने अप्पसिद्धो,* सद्द॰ 3.805; – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उकारन्तं पुल्लिङ्गं तु भूधातुमयं अप्पसिद्धं,* सद्द॰ 1.61; 62; – **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एत्थ मे अप्पसिद्धा'ति ये ये सद्दा पकासिता,* सद्द॰ 1.63; – **द्धानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्तमीरूपादीनि सब्बथा अप्पसिद्धानि,* सद्द॰ 2.319; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अप्रसिद्धता], सामान्य नियमों में प्रचलित न होना, असामान्यता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं अञ्ञतरा पि पसिद्धता च अप्पसिद्धता च उपपरिक्खितब्बा,* सद्द॰ 2.593; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अप्रसिद्धत्व], उपरिवत् – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... उकारन्तपुल्लिङ्गानं अप्पसिद्धत्ता अञ्ञेसं उकारन्तपुल्लिङ्गानं वसेन ...,* सद्द॰ 1.189.

अप्पसिनेह / अप्पस्नेह त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पस्नेह], कम चिकनाई वाला, कम आर्द्रता वाला – **हानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *लूखानि तिणबीजानि, अप्पस्नेहानि भुञ्जसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.274; *अप्पस्नेहानीति मन्दोजानि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.275; पाठा॰ स्नेहानि.

अप्पसुखवेदना स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अल्पसुखवेदना], सुख की अत्यल्प अनुभूति – **नाय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्मत्तकजातानि कामेसु पातब्यतं आपज्जन्ता अप्पसुखवेदनाय सम्मत्तका सुट्ठु मत्तका जाता,* उदा॰ अट्ठ॰ 296.

अप्पसुत त्रि॰, [अल्पश्रुत], कम ज्ञान वाला, अज्ञानी – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहुस्सुतो अप्पस्सुतं, यो सुतेनातिमञ्ञति,* थेरगा॰ 1029; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पस्सुतायं पुरिसो, बलिबद्दोव जीरति,* थेरगा॰ 1028; तुल॰ अप्पस्सुत, विलो॰ बहुस्सुत.

अप्पसूप त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पसूप], कम रसीले यूष से युक्त, कम चटनी से युक्त – **पं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... अप्पसूपं यवभत्तं भुञ्जमानं पस्सि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.202; *न तायते भाववसूपनितं, यो यवकं भुञ्जसि अप्पसूप'न्ति,* तदे॰.

अप्पसेन त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पसेन], बहुत छोटी सेना वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पसेनो महासेनं, कथं विग्गय्ह ठस्ससि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.275; *अप्पसेनोपि चे मन्ती, महासेनं अमन्तिनं,* तदे॰; विलो॰ महासेन.

अप्पस्सक त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पस्वक], दरिद्र, बहुत कम संपत्ति वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकच्चो दलिद्दो होति अप्पस्सको अप्पभोगो,* अ॰ नि॰ 1(1).284; 285; – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दलिद्दा च होति अपस्सका अप्पभोगा अप्पेसक्खा च?* अ॰ नि॰ 1(2).232; 233.

अप्पस्साद त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पास्वाद], बहुत कम आनन्द देने वाला, दुःखभरा, अत्यल्प मात्रा में सुख से पूर्ण – **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सङ्गो एसो परित्तमेत्थ सोख्यं, अप्पस्सादो दुक्खमेत्थ भिय्यो,* सु॰ नि॰ 61; *अप्पस्सादो ..., इमे पञ्च कामगुणे पटिच्च उप्पज्जति सुखं सोमनस्सं, ... अस्सादो ति वुत्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; – **दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पस्सादा दुखा कामा, इति विञ्ञाय पण्डितो,* ध॰ प॰ 186; *अप्पस्सादाति सुपिनसदिसताय परित्तसुखा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.138; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, बहुत कम मात्रा में आनन्दमयता, अत्यल्प सुखमयता – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुखसम्मतस्सापि ... विपरिणामदुक्खतं अपस्सादतञ्च अपस्सन्तोपि तप्पच्चयं ... दीपसिखाभिनिपातं,* विभ॰ अट्ठ॰ 137.

अप्पस्सुत 1. त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अप्पसुत का पाठा॰ [अल्पश्रुत], **शा॰ अ॰** वह, जिसने बहुत कम सुना है, **ला॰ अ॰** अत्यल्प

रूप में शिक्षित, अशिक्षित, अज्ञानी – तं पु., प्र. वि., ए. व. – *बहुस्सुतो अप्पस्सुतं, यो सुतेनातिमञ्ञति,* थेरगा. 1029; – तो पु., प्र. वि., ए. व. – *अप्पस्सुतायं पुरिसो बलिबद्दोव जीरति,* ध. प. 152; थेरगा. 1028; *अप्पस्सुतो अनादरो, केन लोकस्मि किं सिया,* थेरगा. 987; *परे अप्पस्सुता भविस्सन्ति,* म. नि. 1.54; – ता पु., प्र. वि., ब. व. – *अप्पं सुतमेतेसन्ति अप्पस्सुता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).198; – स्स पु., ष. वि., ए. व. – *दुतियगाथा पन अप्पस्सुतस्सपि योनिसोमनसिकारे कम्मं करोन्तस्स कारकपुग्गलस्स वसेन कथिता,* ध. प. अट्ठ. 1.92; 2. नपुं., अल्पज्ञान, अल्पश्रुतता – ते सप्त. वि., ए. व. – *परञ्च अप्पस्सुते समादपेति,* अ. नि. 1(2).248.

अप्पहरित त्रि., कर्म. स. [अल्पहरित], कम हरा-भरा, बहुत कम घास वाला, ऊसर – ते नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *तेन हि त्वं, ब्राह्मण, तं पायासं अप्पहरिते वा छड्डेहि,* सु. नि. (पृ.) 97; *अप्पहरितेति परित्तहरिततिणे, अप्परुळ्हिततिणे वा पासाणपिट्ठिसदिसे,* सु. नि. अट्ठ. 1.121; *ततो चे उत्तरिं अप्पहरितेपि ठितो अधिट्ठहेय्य पाचित्तियन्ति,* पाचि. 69; *अप्पहरिते ठितेनाति अहरिते ठितेन,* पाचि. अट्ठ. 44; – तं नपुं., क्रि. वि., द्वि. वि., ए. व. – *इमं ठानं अप्पहरितं कातुं वट्टती'ति अकासि,* ध. प. अट्ठ. 2.196; – **कारक** पु., [अल्पहरितकारक], भूमि को तृणरहित अथवा ऊसर बना देने वाला – को प्र. वि., ए. व. – *कप्पियकारकोति मं धारेहि, ... अप्पहरितकारको, ... खज्जकभाजकोति मं धारेही'ति ... होति,* पारा. अट्ठ. 201.

अप्पहातब्ब त्रि., प + √हा के सं. कृ., पहातब्ब का निषे. [अप्रहातव्य], वह, जिससे छुटकारा न पाया जा सके, नष्ट न किये जाने योग्य – ब्बं नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तदङ्गादिवसेन पहातब्बताभावतो अप्पहातब्बं,* अभि. ध. स. टी. 180; ... *अहेतुकं ... अप्पहातब्बमेवाति एकविधम्पि अज्झत्तिकबाहिरादिवसेन बहुधा भेदं ग्च्छति,* अभि. ध. स. 43.

अप्पहान नपुं., पहान का निषे. [अप्रहाण], अपरित्याग, छुटकारा न होना, अविमुक्ति – नं प्र. वि., ए. व. – *अनुदिट्ठीनं अप्पहानं, सङ्कप्पपरतेजितं,* थेरगा. 754; *अनुदिट्ठीनं अप्पहानन्ति अनुदिट्ठिभूतानं सेसदिट्ठीनं अप्पहानकारणं,* थेरगा. अट्ठ. 2.242; – हाना प. वि., ए. व. – *समणमालानं ... आपायिकानं ठानानं दुग्गतिवेदनियानं अप्पहाना न समणसामीचिप्पटिपदं पटिपन्नो वदामि,* म. नि. 1.353; – **धम्म / अपहानधम्म** त्रि., [अप्रहाणधर्मन्], अविचल या अनश्वर प्रकृति वाला, अविनाशशील, वह, जिसकी विमुक्ति अचल प्रकृति की है, परिपूर्ण शैक्ष्य-पुद्गल – म्मं पु., द्वि. वि., ए. व. – *परिपुण्णसिक्खं अप्पहानधम्मं, पञ्ञुत्तरं जातिखयन्तदस्सिं,* इतिवु. 30; *पहानधम्मोति हि हानधम्मो कुप्पधम्मो न पहानधम्मोति अपहानधम्मो, अकुप्पधम्मो अप्पहानधम्मो'ति पि पाळि, सो एव अत्थो,* इतिवु. अट्ठ. 149.

अप्पहीन त्रि., पहीन का निषे. [अप्रहीण], क. पूरी तरह से नष्ट नहीं हो चुका, अपरित्यक्त, अनुत्पाद की स्थिति को अप्राप्त, अक्षीण, पूर्ण निरोध को अप्राप्त – नो पु., प्र. वि., ए. व. – *रागो ..., दोसो ..., मोहो अप्पहीनो,* इतिवु. 42; *रागो अप्पहीनोति रञ्जनट्ठेन रागो समुच्छेदवसेन न पहीनो, मग्गेन अनुप्पत्तिधम्मतं न आपादितो,* इतिवु. अट्ठ. 189; – ना ब. व., उपरिवत् – ... *पञ्च चेतोखिला अप्पहीना,* म. नि. 1.145; 353; – नानि नपुं., प्र. वि., ब. व. – ... *तीणि संयोजनानि अप्पहीनानि,* पु. प. 119; – ने पु., द्वि. वि., ब. व. – *विञ्ञू सब्रह्मचारी ते पापके अकुसले धम्मे अप्पहीने समनुपस्सन्ति,* अ. नि. 3(2).142; – **तण्ह** त्रि., ब. स. [अप्रहीणतृष्ण], वह, जिसकी तृष्णा पूरी तरह नष्ट नहीं हुई है – ण्हा पु., प्र. वि., ब. व. – *अमुत्ततण्हा अप्पहीनतण्हा अप्पटिनिस्सट्ठतण्हाति,* महानि. 35; *अप्पहीनतण्हाति पटिप्पस्सद्धिप्पहानाभावेन न पहीनतण्हा,* महानि. अट्ठ. 125; – **त्त** नपुं., भाव. [अप्रहीणत्व], विनष्ट नहीं होना, शान्त न होना – त्ता प. वि., ए. व. – *अप्पहीनत्ताति तेसं वुत्तप्पकारानं कम्माभिसङ्खारानं न पहीनभावेन,* महानि. अट्ठ. 166; – **विपल्लास** त्रि., ब. स. [अप्रहीणविपर्यास], वह, जिसकी विपर्यस्त-दृष्टि या मिथ्या-दृष्टि नष्ट नहीं हुई है – सानं पु., ष. वि., ब. व. – *अप्पहीनविपल्लासानञ्हि चितं मारस्स यथाकामकरणीयं होति,* दी. नि. अट्ठ. 3.25; – **विपल्लासत्त** नपुं., भाव. [अप्रहीणविपर्यासत्व], विपर्यस्त दृष्टि अथवा विपरीत रूप में संसार को देखने की दृष्टि का विनष्ट न होना – त्ता प. वि., ए. व. – *यस्मा असातं ... सङ्खारजातं अप्पहीनविपल्लासत्ता अयोनिसोमनसिकारेन इट्ठं विय पियं ...,* उदा. अट्ठ. 126.

अप्पहेय्य त्रि., प + √हा के सं. कृ., पहेय्य का निषे. [अप्रहेय], नहीं नष्ट करने योग्य, उच्छिन्न न होने योग्य – तो प. वि., ए. व. – *तस्स अप्पहेय्यतो न कोचि भवमूलं जहेय्य,* सु. नि. अट्ठ. 1.6.

अप्पहोनक त्रि., पहोनक का निषे., अपर्याप्त, न्यून – के सप्त. वि., ए. व. – *इदं पन अप्पहोनके आरोपेतब्बं,* महाव.

अट्ठ॰ 386; – **भाव** पु॰, न्यूनता, कमी, अपर्याप्तता – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पहोनकभावेन सासनट्ठितिमानसो,* चू॰ वं॰ 60.4.

अप्पहोन्त त्रि॰, प + √हु के वर्त॰ कृ॰, पहोन्त का निषे॰ [अप्रभवत्], **क.** असमर्थ या अक्षम रहता हुआ – **न्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो एकदिवसं ... सिङ्गालं पलायितुं अप्पहोन्तं उरेन निपन्नं दिस्वा किं,* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.282; ... *अप्पहोन्तातीतकमापाथमागतं आरम्मणं महन्तं नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ 26; *अप्पहोन्तातीतकन्ति अप्पहोन्तं हुत्वा अतीतं,* अभि॰ ध॰ स॰ टी॰ 133; – **न्ते** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ब्राह्मणी ... नत्तुमत्तेपि अप्पहोन्ते चत्तारो कुमारके गहेत्वा आगतोसी'ति,* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.385; **ख.** अपर्याप्त, किसी (गुण आदि) से विहीन – **न्ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिं च समये ... अनुवाते अप्पहोन्ते सङ्घरित्वा ठपेतुं आरद्धो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.134; - **न्तेसु** उपरिवत्, ब॰ व॰ – *सब्बेसु अप्पहोन्तेसु, देय्यमन्वाधिकम्पि वा,* विन॰ वि॰ 561.

अप्पाटिक्कुल्यता स्त्री॰, भाव॰ [अप्रातिकूल्यत्व, नपुं॰], अनुकूलता, अविपरीतता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स सह दस्सनेने मनापता च सण्ठहेय्य, अप्पाटिकुल्यता च सण्ठहेय्य,* म॰ नि॰ 1.38; *भिक्खुनो आहारे ... विहरतो रसतण्हाय चित्तं अनुसन्दहति अप्पाटिकुल्यता सण्ठाति,* अ॰ नि॰ 2(2).197.

अप्पाटिहारिय त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रातिहार्य], चमत्कार-रहित, प्रभाव से रहित, तार्किक हेतुओं से रहित – **यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सप्पाटिहारियं समणो गोतमो धम्मं देसेति नो अप्पटिहारिय'न्ति,* म॰ नि॰ 2.211; *सप्पाटिहारियन्ति पुरिमस्सेवेतं वेवचनं, सकारणन्ति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.171.

अप्पाटिहीरकत त्रि॰, [अप्रतिहारीकृत], प्रभाव या चमत्कार से रहित कर दिया गया, निर्मूल, निरर्थक – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ननु ... समणब्राह्मणानं अप्पाटिहीरकतं ... सम्पज्जती'ति,* दी॰ नि॰ 1.170; ... *अप्पाटिहीरकतं पटिहरणविरहितं, अनिय्यानिकन्ति वुत्तं होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.282.

अप्पाणक त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्राणक], कीड़े-मकोड़े से रहित, क्षुद्र जन्तुओं से रहित – **के** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अप्पाणके वा उदके ओपिलापेही'ति,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 97; *अप्पाणकेति निप्पाणके,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.121.

अप्पतङ्क / अप्पातङ्क 1. पु॰, कर्म॰ स॰ [अल्पातङ्क], आतङ्क की अल्पता, रोग या व्याधि का अभाव – **ङ्कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुभो ... अप्पाबाधं अप्पातङ्कं लहुट्ठानं बलं फासुविहारं पुच्छती'ति,* दी॰ नि॰ 1.180; *अप्पातङ्कोति किच्छजीवितकरो रोगो वुच्चति, तस्सापि अभावं पुच्छाति वदति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.287; **2.** त्रि॰, ब॰ स॰, रोग से लगभग मुक्त, व्याधिमुक्त – **ङ्को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अप्पाबाधो अहोसि अप्पातङ्को* ..., दी॰ नि॰ 2.133; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अल्पातङ्कता], नीरोग होना, व्याधिमुक्त होना, दुखमुक्त होना – **ङ्कतं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भुञ्जमानो अप्पाबाधतञ्च सञ्जानामि अप्पातङ्कतञ्च ... फासुविहारञ्च,* म॰ नि॰ 1.176; *अप्पातङ्कतन्ति निदुक्खतं* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).3.

अप्पातुम त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पात्मन्], क्षुद्र या गुणरहित व्यक्तित्व वाला – **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ ... *परित्तो अप्पातुमो अप्पदुक्खविहारी,* अ॰ नि॰ 282; *अप्पातुमोति आतुमा वुच्चति अत्तभावो, तस्मिं महन्तेपि गुणपरित्तताय अप्पातुमोयेव,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.218.

अप्पाधिकरण त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पाधिकरण], सीमित कार्यक्षेत्र वाला, हल्के-फुल्के कार्यक्षेत्र वाला, अल्प अधिकार वाला – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कम्मट्ठानं अप्पट्ठं अप्पकिच्चं अप्पाधिकरणं ... होति,* म॰ नि॰ 2.422; **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पब्बजितो* ..., *अप्पट्ठो अप्पकिच्चो अप्पाधिकरणो अप्पसमारम्भो,* म॰ नि॰ 2.428.

अप्पानक / अप्पाणक त्रि॰, ब॰ स॰, प्राचीन योगसाधना या ध्यानप्रक्रिया के सन्दर्भ में ही प्रयुक्त [अल्पानक / अप्राणक, बौ॰ सं॰ आस्फानक], प्राणवायु या श्वसन प्रक्रिया से रहित, मुख एवं नासिका से आश्वास तथा प्रश्वास के निरोध की प्रक्रिया को करने वाला – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यंनूनाहं अप्पाणकंयेव झानं झायेय्य'न्ति,* म॰ नि॰ 1.311; 2.441; *अप्पाणकन्ति निस्सासकं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).186.

अप्पानुभाव त्रि॰, ब॰ स॰ [अल्पानुभाव], कम प्रभाव वाला, अल्प शक्ति वाला, दुर्बल – **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पानुभावा तं महानुभावं, तेजस्सिनं हन्ति अतेजवन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.165; *अप्पानुभावाति भोजपुत्ते सन्धायाह,* जा॰ अट्ठ॰ 5.167.

अप्पाबाध 1. पु॰, कर्म॰ स॰ [अल्पाबाध], छोटी या हलकी विपत्ति, नीरोगता – **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुभो ... अप्पाबाधं अप्पातङ्कं लहुट्ठानं बलं फासुविहारं पुच्छती'ति,* दी॰ नि॰ 1. 180; *अप्पाबाधन्तिआदीसु आबाधोति विसभागवेदना वुच्चति,* ... *गण्हति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.287; **2.** त्रि॰, ब॰ स॰, विपत्तियों या रोगों से लगभग मुक्त – **धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ...

अप्पाबाधो अहोसि अप्पातङ्को ... अञ्ञेहि मनुस्सेहि, दी. नि. 2.133; **धा** ब. व., उपरिवत् - *अञ्ञे बह्वाबाधा अञ्ञे अप्पाबाधा,* मि. प. 68; - **धता** स्त्री, भाव. - *... अप्पिच्छता ... अप्पाबाधता'ति,* अ. नि. 1(1).53; *पाणातिपाता वेरमणिया ... अच्छम्भिता ... सुसण्ठानता अप्पाबाधता असोकिता ... फलानि,* खु. पा. अट्ठ. 23; - **त्त** नपुं., भाव. [अल्पाबाधत्व], उपरिवत् - **त्तं** द्वि. वि., ए. व. - *सो तं ... खेमतञ्च सुभिक्खतञ्च अप्पाबाधतञ्च पुच्छेय्य,* म. नि. 3.39.

अप्पाय त्रि., ब. स. [अल्पाय], कम आय अर्जित करने वाला, कम राजस्व पाने वाला - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *कुलपुत्तो अप्पायो समानो उळारं जीविकं कप्पेति,* अ. नि. 3(1).111.

अप्पायति आ + √पाय का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आप्यायते], पूरा भर देता है, सन्तुष्ट कराता है, बढ़ा देता है - *अप्पायतीति ब्रूहेति,* विसुद्धि. महाटी. 1.416; - **न्ति** तदेव, ब. व. - *न ता मनं अप्पायन्ति वड्ढन्तीति अमनापा,* स. नि. अट्ठ. 1.71; - **यितुं** निमि. कृ. - *अमनापानन्ति मनं अप्पायितुं वड्ढेतुं असमत्थानं,* अ. नि. अट्ठ. 3.51.

अप्पायन नपुं., आ + √पाय से व्यु., क्रि. ना. [आप्यायन], पूरा भरना, संतुष्टि, तृप्ति - **ने** सप्त. वि., ए. व. - *पूरी अप्पायने, पूरेति पूरयति,* सद्द. 2.599.

अप्पायुक त्रि., ब. स. [अल्पायुस्क], अल्प आयु वाला, वह, जिसकी आयु बहुत कम बची है - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *याव अप्पायुका हि, भन्ते, भगवतो माता अहोसि,* उदा. 123; *याव अप्पायुकाति यत्तकं परित्तायुका, अतिइत्तरजीविताति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 225; - **की** उपरिवत् - *अप्पायुकी कालकता ततो चुता, उपपन्ना तिदसगणं यसस्सिनी,* वि. व. 710; *अप्पायुकीति ईदिसं नाम उळारं पुञ्ञं कत्वा न तया एतस्मिं दुक्खबहुले ... सञ्जाताभिसन्धिना विय परिक्खयं गतेन कम्मुना अप्पायुका समाना,* वि. व. अट्ठ. 152; - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *ते मयं अनिच्चा अद्धुवा अप्पायुका चवनधम्मा इत्थत्तं आगता'ति,* दी. नि. 1.16; - **तर** त्रि., तुल. विशे., तुलनात्मक रूप में कम आयु वाला/वाली - **तरा** पु., प्र. वि., ब. व. - *ते अप्पायुकतरा च होन्ति दुब्बण्णतरा अप्पेसक्खतरा च,* दी. नि. 1.16; - **त्त** नपुं., भाव., अल्प आयु वाला होना - **त्तं** द्वि. वि., ए. व. *अप्पायुकसंवत्तनिका पटिपदा अप्पायुकत्तं उपनेति,* म. नि. 3.255; - **बुद्ध** पु., कर्म. स., उस कल्प में उत्पन्न बुद्ध, जिसमें मनुष्य अल्प आयु वाले होते थे - **द्धा** प्र. वि., ब. व. - *अप्पायुकबुद्धा पन यस्मा बहुतरेन जनेन अदिट्ठा एव परिनिब्बायन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.169; - **संवत्तनिक** त्रि., [अल्पायुस्संवर्तनिक], अल्पायुता में परिणत होने वाला, अल्पायु बना देने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो सब्बलहुसो पाणातिपातस्स विपाको, मनुस्सभूतस्स अप्पायुकसंवत्तनिको होति,* अ. नि. 3(1).78; - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अप्पायुकसंवत्तनिका एसा, मानव, पटिपदा यदिदं - ...,* म. नि. 3.251; - **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *पाणातिपातकम्मं नाम निरये तिरच्छानयोनियं ... निब्बत्तेति, मनुस्सेसु निब्बत्तनिब्बत्तट्ठाने अप्पायुकसंवत्तनिकं होती'ति ... आदीनवं,* जा. अट्ठ. 1.265.

अप्पायुत्त नपुं., अप्पायु का भाव. [अल्पायुत्व], अल्प आयु वाला होने की दशा - **त्तं** प्र. वि., ए. व. - *अप्पायुत्तं च सत्तानं भमन्तानं भवण्णवे,* म. वं. 73.145.

अप्पावसेस त्रि., ब. स. [अल्पावशेष], वह, जिसका बहुत कम भाग शेष बचा है - **सं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तञ्च दानि परित्तकन्ति ... इदानि परित्तकं अप्पावसेसं,* पे. व. अट्ठ. 45.

अप्पासी त्रि./पु., प्र. वि., ए. व., [अल्पाशिन्], कम मात्रा में खाने वाला - *अप्पासी निपको सूरो, स राजवसतिं वसे'ति,* जा. अट्ठ. 7.190; *अप्पासीति भोजनमत्तञ्ञू,* तदे..

अप्पाहार 1. पु., कर्म. स. [अल्पाहार], कम मात्रा का भोजन - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *खन्तिं हवे भासति नागराजा, अप्पाहारं गरुळो वेनतेय्यो,* जा. अट्ठ. 7.151; 2. त्रि., ब. स. [अल्पाहार], कम मात्रा में भोजन लेने वाला, भोजन लेने में संयत - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अप्पाहारो समणो गोतमो,* म. नि. 2.209; 207; *अहं एकस्मिं काले अप्पाहारो अहोसिं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.170; - **रं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *एणिजङ्घं किसं वीरं, अप्पाहारं अलोलुपं,* सु. नि. 167; - **रा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अप्पिच्छा निपका एते, अप्पाहारा अलोलुपा,* अप. 1.178; - **ता** स्त्री., भाव. [अल्पाहारता], कम मात्रा में भोजन लेने की प्रवृत्ति या मनोदशा - **तासङ्खातं** नपुं., प्र. वि., ए. व., अल्पाहारता रूप में विख्यात - *अप्पाहारतासङ्खातं आहारहेतु पापस्स अकरणं,* जा. अट्ठ. 7.151; - **ताधम्मेन** पु., तत्पु. स., तृ. वि., ए. व. [अल्पाहारताधर्म], अल्प आहार लेने की प्रवृत्ति के द्वारा - *इमिना धम्मेनाति इमिना अप्पाहारताधम्मेन,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.170.

अप्पिच्छ त्रि., ब. स. [अल्पेच्छ], बहुत कम इच्छाएं रखने वाला, इच्छाओं पर नियन्त्रण कर चुका व्यक्ति - **च्छो** पु.,

प्र० वि०, ए० व० - *अप्पिच्छो चेव सन्तुट्ठो, पविवित्तो वसे मुनि,* थेरगा० 581; - **च्छा** ब० व० - *अप्पिच्छा होथ सन्तुट्ठा, झायी झानरता सदा,* अप० 1.28; - **च्छं** पु०, द्वि० वि०, ए० व० - *अनोकसारिमप्पच्छं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं,* सु० नि० 633; - **स्स** पु०, ष० वि०, ए० व० - *अप्पिच्छस्स सन्तुट्ठस्स सल्लेखस्स ... वण्णं भासित्वा,* पारा० 22; - **कथा** स्त्री०, तत्पु० स०, प्र० वि०, ए० व० [अल्पेच्छकथा], इच्छाओं पर नियन्त्रण रखने से सम्बन्धित कथन या उपदेश, कम इच्छाएं रखने के विषय में उपदेश - *अप्पिच्छकथा, सन्तुट्ठिकथा ... अकसिरलाभी,* उदा० 109; अ० नि० 3(1).172; *एवमेतेसं अप्पिच्छानं या अप्पिच्छता, ... तप्पटिपक्खस्स अत्रिच्छादिभेदस्स इच्छाचारस्स आदीनवविभावनवसेन च पवत्ता कथा अप्पिच्छकथा,* उदा० अट्ठ० 185; - **ता** स्त्री०, भाव० [अल्पिच्छता], इच्छाओं की स्वल्पता, इच्छाओं पर संयम - **ता** प्र० वि०, ए० व० - *तत्थ अप्पिच्छता च सन्तुट्ठिता च अलोभो,* अ० नि० अट्ठ० 1.130; *अञ्ञं ... कुसला धम्मा ... अकुसलाधम्मा परिहायन्ति यथयिदं, ..., अप्पिच्छता,* अ० नि० 1(1).15; - **तं** द्वि० वि०, ए० व० - *अप्पिच्छतं अत्तनि सम्पस्समानो भिय्यो पल्लोममापादिं अरञ्ञे विहाराय,* म० नि० 1.25; - **ताय¹** च० वि०, ए० व० - *नग्गियं अनेकपरियायेन अप्पिच्छताय सन्तुट्ठिताय सल्लेखाय धुतताय पासादिकताय अपचयाय वीरियारम्भाय संवत्तति,* महाव० 397; - **ताय²** ष० वि०, ए० व० - *अत्तना च अप्पिच्छो होति अप्पिच्छताय च वण्णवादी,* म० नि० 1.278; - **पटिपत्ति** स्त्री०, तत्पु० स० [अल्पेच्छाप्रतिपत्ति], अल्पेच्छता की व्यावहारिक साधना, इच्छाओं पर संयम रखने का व्यावहारिक अभ्यास - **त्तिं** द्वि० वि०, ए० व० - *भगवता ... अप्पिच्छप्पटिपत्तिं पकित्तयमानेन ... चा'ति,* मि० प० 227; - **भाव** पु०, तत्पु० स० [अल्पेच्छभाव], इच्छाओं पर संयमन, सन्तुष्टिभाव - **वं** द्वि० वि०, ए० व० - *सक्को तस्स परमप्पिच्छभावं ञत्वा,* ध० प० अट्ठ० 1.161; - **सन्तुट्ठ** त्रि०, द्व० स० [अल्पेच्छसन्तुष्ट], कम इच्छाएं रखने वाला और सन्तुष्ट - **ट्ठो** पु०, प्र० वि०, ए० व० - *तं खादित्वा ... पिवित्वा परमप्पिच्छसन्तुट्ठो हुत्वा अञ्ञत्थ न गच्छति,* जा० अट्ठ० 3.433; - **सन्तुट्ठभावगुणेन** पु०, तत्पु० स०, तृ० वि०, ए० व० [अल्पेच्छसन्तुष्टिभावगुण], कम इच्छाओं और सन्तोष-भाव के गुण द्वारा - *तस्स अप्पिच्छसन्तुट्ठभावगुणेन सक्कस्स भवनं कम्पि,* जा० अट्ठ० 3.433.

अप्पिच्छा स्त्री०, कर्म० स० [अल्पेच्छा], कम इच्छा, सन्तोष, सन्तुष्टि, इच्छा पर नियन्त्रण - **च्छं** द्वि० वि०, ए० व० - *यावदेव अप्पिच्छञ्ञेव निस्साय सन्तुट्ठिञ्ञेव ... आरञ्ञिको, होति,* महानि० 174; - **च्छा = च्छाय** तृ० वि०, ए० व० - *अप्पिच्छा अप्पचिन्ताय, अदूरगमनेन च,* जा० अट्ठ० 3.275; *तत्थ अप्पिच्छाति आहारेसु अप्पिच्छताय नित्तण्हताय, ... आहाराहरणतायाति अत्थो,* जा० अट्ठ० 275.

अप्पित त्रि०, √अप्प का भू० क० कृ० [अर्पित], 1. किसी आलम्बन पर केन्द्रित, किसी विषय की ओर उन्मुखीकृत, किसी के साथ दृढ़तापूर्वक बांध दिया गया - **ता** पु०, प्र० वि०, ब० व० - *कामबन्धनेहि वा समप्पिताति सुट्ठु अप्पिता अल्लीना,* उदा० अट्ठ० 271; - **तं¹** द्वि० वि०, ए० व० - *सामावतीपि रञ्ञा अत्तनो अप्पितं कण्डं ... पटिबाही'ति ... कथेसि,* अ० नि० अट्ठ० 1.328; *अप्पितञ्च सुवीतञ्च सुप्पवायितञ्च सुविलेखितञ्च सुवितच्छितञ्च करोही'ति,* पारा० 384; - **तं²** नपुं०, प्र० वि०, ए० व० - *चित्तं समाधियतीति ... अप्पितं विय अचलं तिट्ठति,* म० नि० अट्ठ० (मू०प०) 1(1).183; 2. नष्ट कर दिया गया, बहिष्कृत, समाप्त किया हुआ - **ता** पु०, प्र० वि०, ब० व० - *इति ... सन्ता ... अत्थङ्गता अब्भत्थङ्गता अप्पिता ब्यप्पिता ... ब्यन्तीकता,* विभ० 219; *अप्पिताति विनासिता, अप्पवत्तियं ठपितातिपि अत्थो,* विभ० अट्ठ० 248; - **चित्त** नपुं०, कर्म० स० [अर्पितचित्त], किसी एक आलम्बन पर एकाग्र होकर स्थित चित्त - **त्तं** द्वि० वि०, ए० व० - *मग्गं अप्पितचित्तञ्च ठपेत्वा भावनामये,* सद्धम्मो० 233.

अप्पित्थिक त्रि०, ब० स०, अप्प + इत्थी से व्यु० [अल्पस्त्रीक], बहुत कम नारियों से युक्त - **त्थिकानि** नपुं०, प्र० वि०, ब० व० - *यानि कानिचि कुलानि अप्पित्थिकानि बहुपुरिसानि ... कुम्भत्थेनकेहि,* स० नि० 1(2).241.

अप्पिय¹ क. त्रि०, पिय का निषे०, तत्पु० स० [अप्रिय], वह, जो मन के अनुकूल न हो, मन में आनन्द न देने वाला, प्रतिकूल रूप में मन द्वारा वेदनीय - **यो** पु०, प्र० वि०, ए० व० - *अयं मे पुग्गलो अप्पियो अमनापो,* म० नि० 1.137; - **या** ब० व०, उपरिवत् - ... *परेसं अप्पिया अमनापा,* म० नि० 2.64; - **यं¹** पु०, द्वि० वि०, ए० व० - *हित्वान पियञ्च अप्पियञ्च, अनुपादाय अनिस्सितो कुहिञ्चि,* सु० नि० 365; - **यं²** नपुं०, उपरिवत् - *पियंयेव भासति नो अप्पियं,* सु० नि० (पृ०) 148; - **येहि** पु०, तृ० वि०, ब० व० - *मा पियेहि समागच्छि, अप्पियेहि कुदाचनं,* ध० प० 210; - **यानं** पु०, ष० वि०, ब० व० - *पियानं अदस्सनं दुक्खं, अप्पियानञ्च दस्सनं,* ध० प० 210; **ख.** पु०, शत्रु, वैरी - **यो** पु०, प्र० वि०, ए० व०

– *सतञ्हि सो पियो होति, असतं होति अप्पियो,* थेरगा॰ 994; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *गन्था तेसं न विज्जन्ति, येसं नत्थि पियाप्पियं,* ध॰ प॰ 211; **करण** नपुं॰, अप्पिय + अकरण के योग से व्यु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रियाकरण], हानि नहीं करना, मन को प्रतिकूल रूप में अनुभव होने वाला काम न करना – **णं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बं तेति विकुद्धभावञ्च इदानि अप्पियकरणञ्च उभयं ते इदं सब्बमेव पटिजानामि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.300; – **मनापसद्द** पु॰, अप्पिय + अमनाप + सद्द के योग से व्यु॰, कर्म॰ स॰ [अप्रियामनापशब्द], अप्रिय एवं मन को अच्छा न लगने वाला शब्द – **द्दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भेरण्डकंयेवाति अप्पियअमनापसद्दमेव,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.11; *तेनाह अप्पियअमनापसद्दमेवा'ति,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 3.10; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अप्रियता], प्रतिकूलता, अप्रिय होने की दशा – **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिञ्च मे अप्पियताय अज्ज, पितरञ्च ते नत्थि कोचि विसेसो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.30; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न चापि मे अप्पियतं अवेदि, अञ्ञत्र कामा परिचारयन्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.32; – **पसंसी** त्रि॰, [अप्रियप्रशंसिन्], अप्रिय जनों या पदार्थों की प्रशंसा करने वाला – **पसंसी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पियपसंसी च होति, पियगरही च,* अ॰ नि॰ 3(1).6; *ततिये अप्पियपसंसीति अप्पियजनस्स पसंसको वण्णभाणी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.195; – **पुग्गल** पु॰, कर्म॰ स॰ [अप्रियपुद्गल], अप्रिय व्यक्ति – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयञ्हि मेत्ता अप्पियपुग्गले ... इमेसु चतूसु पठमं न भावेतब्बा,* विसुद्धि॰ 1.284; – **भाव** पु॰, कर्म॰ स॰ [अप्रियभाव], अप्रियता, प्रतिकूलता, प्रिय नहीं होना – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिञ्च आसीविसे तव ... पितरि च अप्पियभावेन मय्हं कोचि विसेसो नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.30; – **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रियरूप], मन को अच्छा न लगने वाले आकार या स्वरूप वाला – **पे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पियरूपे रूपे न ब्यापज्जति,* म॰ नि॰ 1.341; – **वचन** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अप्रियवचन], अच्छा न लगने वाला वचन – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतेन अदानेन वा अप्पियवचनेन वा अनत्थचरियाय वा असमानत्तताय वा ... सुतपुब्बं,* मि॰ प॰ 159; – **वादी** त्रि॰, [अप्रियवादिन्], अप्रिय वचनों को बोलने वाला, गाली गलौज, डांट-फटकार या निन्दा करने वाला – *मुखरो दुम्मुखो बद्धमुखो चाप्पियवादिनि,* अभि॰ प॰ 735; – **सम्पयोग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रियसम्प्रयोग], अप्रिय-जनों के साथ संयोग या मेल-मिलाप – **गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पियसम्पयोगो नाम अमनापेहि सत्तसङ्खारेहि समोधानं,* विसुद्धि॰ 2.133; – **सील** त्रि॰, ब॰ स॰ [अप्रियशील], मन को अच्छा न लगने वाले स्वभाव से युक्त – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपेसलानीति एवरूपा पुग्गला आसीविसभरिता विय वम्मिका अप्पियसीला होन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.343.

अप्पिय[2] त्रि॰, √अप्प का सं॰ कृ॰ [अर्प्य], प्रमुख तत्त्व के रूप में रखे जाने योग्य, प्रमुख वचन अथवा अभिधेय शब्द के रूप में रखा जाने योग्य – **यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायोति वा सरीरन्ति वा, सरीरन्ति वा कायोति वा, कायं अप्पियं करित्वा एसोसे एकट्ठे समे समभागे तज्जातेति,* कथा॰ 31; *तत्थ कायं अप्पियं करित्वाति कायं अप्पेतब्बं अल्लीयापेतब्बं एकीभावं उपनेतब्बं अविभजितब्बं कत्वा पुच्छामीति अत्थो,* कथा॰ अट्ठ॰ 121.

अप्पियायन्त त्रि॰, पिय के ना॰ धा॰ पियायति के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अप्रियायत्], प्रेम न करता हुआ, अप्रिय रूप में या बुरे रूप में आचरण कर रहा – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *कल्याणकम्मं दुस्सन्तो अप्पियायन्तो अट्टीयन्तो न करोति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.109.

अप्पीति स्त्री॰, पीति का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अप्रीति], प्रीति का अभाव, द्वेष, वैर-भाव – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिसी अप्पीतियं "धम्मं देस्सति",* सद्द॰ 2.452; *दुस अप्पीतियं, दुस्सति पदुस्सति, दोसो ...,* सद्द॰ 2.489.

अप्पीभाव पु॰, [अल्पीभाव], **क.** छोटा हो जाना, कम हो जाना, कुटिल हो जाना – **वे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ *कुञ्च कोटिल्ल अप्पीभावेसु,* सद्द॰ 2.335; **ख.** कम हो जाना, च्युत होना, बिलग होना – *चुट अप्पीभावे, चोटति,* सद्द॰ 2.353; **ग.** क्षमा करना – *मस अप्पीभावे, खमायञ्च, मस्सति,* सद्द॰ 2.489; **घ.** क्षीण हो जाना, घट जाना – *लिस अप्पीभावे, लिस्सति, लेसो,* सद्द॰ 2.489.

अप्पीयति √अप्प के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अर्प्यते], बैठाया जाता है, स्थिर किया जाता है, दृढ़ता के साथ जोड़ दिया जाता है – *तादिसञ्हि आरम्मणं मनस्मिं न अप्पीयति,* विभ॰ अट्ठ॰ 8.

अप्पेक त्रि॰, अपि + एक के योग से व्यु॰, कुछ-एक-लोग – **के** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पेके सतमद्दक्खुं, सहस्सं अथ सत्तरिं, ... अप्पेकेनन्तमद्दक्खुं, दिसा सब्बा फुटा अहु,* दी॰ नि॰ 2.187; *अप्पेके सतमद्दक्खुन्ति तेसु भिक्खूसु एकच्चे भिक्खू अमनुस्सानं सतं अद्दसंसु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.249.

अप्पेकच्च त्रि॰, अपि + एकच्च के योग से व्यु॰, प्रायः ब॰ व॰ में ही प्रयोग में द्रष्ट; **1.** और भी कुछेक, और भी कुछ – **च्चो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपेत्थेकच्चो भिक्खु न परिनिब्बायेय्या'ति?*, म॰ नि॰ 3.48; – **च्चे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पेकच्चे न परलोकवज्जभयदस्साविने विहरन्ते*, दी॰ नि॰ 2.30; – **च्चा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सपत्तिकम्पि हि दुक्खं, अप्पेकच्चा सकिं विजातायो*, थेरीगा॰ 216; – **च्चानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उप्पलिनियं वा ... अप्पेकच्चानि उप्पलानि वा पदुमानि ... अन्तोनिमुग्गपोसीनि*, दी॰ नि॰ 1.66; *अप्पेकच्चानि सेदफुसितानि नलाटा मुत्तानि*, म॰ नि॰ 1.299; **2.** *कभी-कभी वाक्य में आवृत्ति*, कुछ एक ... जबकि कुछ दूसरे – **च्चे** ... **च्चे** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अप्पेकच्चे उद्धनानि खणन्ति, ... अप्पेकच्चे कट्ठानि ..., भाजनानि ..., उदकमणिकं ..., ... आसनानि पञ्ञापेन्ति*, सु॰ नि॰ (पृ॰) 165; – **च्चानि** ... **च्चानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पेकच्चानि उप्पलानि वा पदुमानि ... अप्पेकच्चानि समोदकं ठितानि*, दी॰ नि॰ 2.30.

अप्पेकदा अ॰, कालसूचक निपा॰, अपि + एकदा के योग से व्यु॰ [अप्येकदा], कभी-कभी, जब-तब – *यं तस्मिं ... खादनीयं वा भोजनीयं वा ... विस्सज्जेत्वा अप्पेकदा अनसिता अच्छन्ति*, पाचि॰ 235; ... *अप्पेकदा तथागतं धम्मदेसना पटिभाति, अप्पेकदा न पटिभाति?*, अ॰ नि॰ 3(1).158.

अप्पेति √अप्प का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अर्पयति], **शा॰ अ॰** किसी के बीच में या भीतर में बैठा देता है या अन्तर्निविष्ट कर देता है, बैठा देता है, जोड़ देता है, स्थापित कर देता है – *यथा वड्ढकी सुपरिकम्मकतं दारुं सन्धिस्मिं अप्पेति*, मि॰ प॰ 64; *न तासु मनो अप्पेति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.71; *फलसमापत्तिवसेन निरोधे चित्तं अप्पेति*, उदा॰ अट्ठ॰ 29; – **न्ति** ब॰ व॰ – *अप्पेन्ति निम्बमूलस्मिं, तस्मिं मे सङ्गते मनो'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.30; *गण्ठितफलकम्पि पासकफलकम्पि अन्ते अप्पेन्ति*, चूळव॰ 258; *एकग्गं चित्तं आरम्मणे अप्पेन्तीति अप्पना*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 187; – **न्ती** स्त्री॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सामिकेन ... नामुद्दितं सञ्ञाणञ्च अप्पेन्ती*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 88; – **प्पिय / प्पेतब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ – *कायं अप्पियं करित्वा ...*, कथा॰ 31; *कायं अप्पेतब्बं अल्लीयापेतब्बं ...*, कथा॰ अट्ठ॰ 121; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *गण्ठिकफलकं अन्ते अप्पेतुन्ति*, चूळव॰ 258; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *असिथिलं ... फलसमापत्तिं अप्पेत्वा उपधिविवेकं परिपूरयमानो विहरति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).110; **ला॰ अ॰ क.** निदर्शित करता है, सङ्गति बैठाने हेतु प्रकशित करता है – *जिनवचनं अप्पेति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.31; *अप्पेतीति निदस्सेति*, लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.40; **ला॰ अ॰ ख.** तेजी के साथ आ मिलता है या आ गिरता है, विलीन हो जाता है, आकर एक जुट हो जाता है – *यतो चायं गङ्गा नदी पभवति यत्थ महासमुद्दं अप्पेति*, स॰ नि॰ 1(2).165; – **न्ति** ब॰ व॰ – ... *सवन्तियो महासमुद्दं अप्पेन्ति*, अ॰ नि॰ 3(1).40; *अप्पेन्तीति अल्लीयन्ति ओसरन्ति*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.218; **ला॰ अ॰ ग.** 'अप्पना'-नामक समाधि में स्थापित कर दिया जाता है – *केचि पन "इद्धिम्पि चित्तं अप्पेतीति वदन्ति*, उदा॰ अट्ठ॰ 28; – **न्ति** ब॰ स॰ – *अञ्ञे अभिञ्ञा अप्पेन्ति, अभिञ्ञा वसिभाविता*, अप॰ 1.4; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *न सक्कोतीति आपेतुं, वेदितब्बं विभावना*, अभि॰ अव॰ 906; **ला॰ अ॰ घ.** (वैर का) बदला लेने में लग जाता है, बदला लेने लगता है – **य्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अयं खवस्स कालो योहं वेरं अप्पेयन्ति कोसिया खग्गं निब्बाहि*, महाव॰ 467; **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इति फन्दनरुक्खोपि वेरं अप्पेसि तावदे*, जा॰ अट्ठ॰ 4.188.

अप्पेसक्ख त्रि॰, व्यु॰ संदिग्ध, अट्ठ॰ के निर्वचनों के आलोक में अप्पे + सक्ख से व्यु॰ [अल्पसाख्य, बौ॰ सं॰ अल्पेशाख्य, अल्प + ईश + आख्य], साधारण, अमहत्त्वपूर्ण, अल्प रूप में सम्मानित, अल्प ऐश्वर्य वाला, छोटे परिवार वाला, छोटी मित्रमण्डली वाला – **क्खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *किं पनायं अप्पपुञ्ञो अप्पेसक्खो ...*, महानि॰ 292; *अप्पेसक्खोति परिवारविरहितो*, महानि॰ अट्ठ॰ 341; *ततियवाचा इदानि अकतपुञ्ञताय दुग्गतो दुब्बण्णो अप्पेसक्खो*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.79-80; *सचे मनुस्सत्तं आगच्छति यत्थ यत्थ पच्चाजायति अप्पेसक्खो होति*, म॰ नि॰ 3.252; *अप्पेसक्खोति अप्पपरिवारो*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.188; **क्खा'** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अप्पपुञ्ञा अप्पेसक्खा न लाभियो चीवर-पिण्डपात-सेनासन-गिलानप्पच्चय-भेसज्ज – परिक्खारान'न्ति*, स॰ नि॰ 1(2).207; *इमे पनञ्ञे भिक्खू अप्पञ्ञाता अप्पेसक्खा'ति*, म॰ नि॰ 1.253; *अप्पेसक्खाति अप्पपरिवारा*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).130; – **क्खा²** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अप्पेसक्खा च अप्पलाभा चाति भो पब्बज्जा नाम अप्पयसा चेव*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235; *अप्पेसक्खा च ... पब्बज्जा नाम अप्पयसा चेव*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235; – **क्खेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *न सक्का अप्पेसक्खेहि अज्झोगाहितुन्ति वुत्तं होति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).199;

- **तर** त्रि., तुल. विशे., और भी अधिक कम परिवार या छोटी मित्रमण्डली वाला - **तरा** पु., प्र. वि., ब. व. *ते अप्पायुकतरा च होन्ति दुब्बण्णतरा च अप्पेसक्खतरा च,* दी. नि. 1.16; - **त्त** नपुं., भाव. [अल्पेशाख्यत्व], कम प्रभाव वाला होना, छोटे परिवार वाला होना - **त्तं** द्वि. वि., ए. व. - *अप्पेसक्खसंवत्तनिका पटिपदा अप्पेसक्खत्तं उपनेति,* म. नि. 3.255; - **संवत्तनिक** त्रि., कम महत्वपूर्ण होने या स्वल्प प्रभावशीलता की ओर ले जाने वाला / वाली - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अप्पेसक्खसंवत्तनिका पटिपदा अप्पेसक्खत्तं,* म. नि. 3.255.

अप्पोति √आप का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आप्नोति], प्राप्त करता है, जा पहुंचता है, व्याप्त हो जाता है - *अप्पोति, आपो, एत्थ आपो अप्पोति तं तं ठानं विसरती ति आपो,* सद्द. 2.508; ... *विसन्दनभावेन तं तं ठानं आपोति अप्पोती ति आपो,* सद्द. 1.111.

अप्पोदक त्रि., ब. स. [अल्पोदक], बहुत कम पानी से युक्त, अल्प जल वाला, कम जल वाला स्थान - **के** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *मच्छेव अप्पोदके खीणसोते,* सु. नि. 783; महानि. 36; *अप्पोदकेति मन्दोदके,* महानि. अट्ठ. 127; - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *मग्गा कन्तारा अप्पोदका अप्पभक्खा,* महाव. 321; - **कं** द्वि. वि., ए. व. - ... *सब्बं अप्पोदकं मधुपायासं परिभुञ्जि,* जा. अट्ठ. 1.79.

अप्पोदवण्ण त्रि., ब. स. [अल्पोदकवर्ण], कम पनीले स्वरूप वाला, कम तरल या कम ढीले आकार वाला - **ण्णे** पु., द्वि. वि., ब. व. - *अप्पोदवण्णे कुम्मासे, सिङ्गिं विदलसूपियो,* जा. अट्ठ. 4.313.

अप्पोस्सुक्क / अप्पोस्सुक त्रि., कर्म. स. [अल्पोत्सुक], कम उत्सुक, निरपेक्ष, अकर्मण्य, निश्चिन्त प्रकृति वाला, अनुद्विग्न - **क्को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अप्पोस्सुक्को परपुत्तेसु हुत्वा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो,* सु. नि. 43; - **क्का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अप्पोस्सुका घटिस्सं, जातिमरणप्पहानाय,* थेरीगा. 459; *अप्पोस्सुक्काति अञ्ञकिच्चेसु निरुस्सुक्का,* थेरीगा. अट्ठ. 307; - **क्के** पु., द्वि. वि., ब. व. - *भिक्खू ... पीणिन्द्रियो अप्पोस्सुक्के पन्नलोमे परदत्तवुत्ते मिगभूतेन चेतसा विहरन्ते,* म. नि. 2.330-31; - **ता** स्त्री., भाव. [अल्पोत्सुकता], कम उत्सुकता, निरपेक्षता - **ताय** तृ. वि., ए. व. - *यत्र हि नाम ... अप्पोस्सुक्कताय चित्तं नमति, नो धम्मदेसनायाति,* दी. नि. 2.29; *अप्पोस्सुक्कतायाति निरुस्सुक्कभावेन, अदेसेतुकामतायाति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 2.50; - **भाव** पु., उपरिवत् - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *परे ... धम्मदेसनाय अप्पोस्सुक्कभावं आपन्ने भगवति ... आगन्त्वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).175.

अप्फुट त्रि., √फर के भू. क. कृ. का निषे. [अस्पृष्ट], अछूता, अप्रभावित, नहीं भरा हुआ, नहीं व्याप्त - **टं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *नास्स किञ्चि सब्बावतो कायस्स समाधिजेन पीतिसुखेन अप्फुटं होति,* म. नि. 1.349; दी. नि. 1.65; *कायस्साति ... अणुमत्तम्पि ठानं पठमज्झानसुखेन अप्फुटं नाम न होति,* दी. नि. अट्ठ. 1.176; - **टो** पु., प्र. वि., ए. व. - *नत्थि सो पदेसो ... देवताहि अप्फुटो,* दी. नि. 2.105; *अप्फुटोति असम्फुट्ठो अभरितो वा,* दी. नि. अट्ठ. 2.152; *चतुत्थदुतियेसु परस्वेसं चतुत्थदुतियानं तब्बग्गे ततियपठमा होन्ति, पच्चासत्त्या, ..., अप्फुटं, अब्भुग्गतो ... ?* मो. व्या. 1.35.

अप्फुट्ठ त्रि., √फुस के भू. क. कृ. का निषे. [अस्पृष्ट], **1.** नहीं स्पर्श किया गया, **2.** *व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में,* अघोष - *सिथिलं अप्फुट्ठं, धनितं फुट्ठं,* सद्द. 3.607; - **त्त** नपुं., भाव. [अस्पृष्टत्व], अघोष वर्ण होना - **त्तं** द्वि. वि., ए. व. - *सासनिका पन वग्गानं येव फुट्ठत्तञ्च अफुट्ठत्तञ्च च वदन्ति,* सद्द. 3.607.

अप्फोटन नपुं., अप्फोटेति का क्रि. ना. [आस्फोटन], ताली बजाना, करतलध्वनि, ताल ठोकना, वाएं हाथ को हृदय पर रख दाहिने हाथ की हथेली से शब्द उत्पन्न करना - *देवता अत्तनो ... अप्फोटनसेळनचेलुक्खेपादीहि महाकीळकं कीळिंसु,* दी. नि. अट्ठ. 2.28; *अप्फोटनं वुच्चति भुजहत्थसङ्घट्टनसद्दो अत्थतो पन वामहत्थं उरे ठपेत्वा दक्खिणेन पुथुपाणिना हत्थताळनेन सद्दकरणं,* लीन. (दी.नि.टी.) 2.27; *देवतानं अप्फोटनादीहि कीळनं पमोदुप्पत्ति भवन्तगमनेन,* लीन. (दी.नि.टी.) 2.28; *द्वादसयोजनिकं ... सद्देन ब्रह्मअप्फोटनं नाम अप्फोटेस्सामीति,* ध. प. अट्ठ. 2.120; - **घोस** पु., तत्पु. स. [आस्फोटनघोष], करतलध्वनि, ताल ठोकने से उत्पन्न आवाज - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *असुरानं अप्फोटनघोसं,* उदा. अट्ठ. 53-54.

अप्फोटा स्त्री., [आस्फोटा], जङ्गली चमेली का पौधा - *अप्फोटा वनमल्लिका,* अभि. प. 575; *अप्फोटा सूरियवल्ली च, काळीया मधुगन्धिया,* जा. अट्ठ. 7.304; *अप्फोटाति अप्फोटवल्लियो,* जा. अट्ठ. 7.305.

अप्फोटेति आ + √फुट का वर्त॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [आस्फुटयति], ताली बजाता है, करतल-ध्वनि करता है, अंगुलियां चटकाता है – **न्ति** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तं दिस्वा महाजना वग्गन्ति नदन्ति अप्फोटेन्ति सेळेन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.125; *रथस्सापि.., उरसेळेन्तिपि, अप्फोटेन्तिपि, ... नच्चकिं एवं वदन्ति-*, चूळव॰ 22; – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *वग्गन्तो गज्जन्तो अप्फोटेन्तो विचरि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.79; **न्तं** पु॰, वर्त॰ कृ॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तञ्च तत्थ विजम्भन्तं अप्फोटेन्तं रञ्ञो अन्तेपुरे ... उदिक्खिंसूति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.301; – **न्ता** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चक्कातिचक्कं मञ्चातिमञ्चं ... वग्गन्ता गज्जन्ता अप्फोटेन्ता विचरिंसु*, जा॰ अट्ठ॰ 4.73; – **न्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *वादेन्तु वग्गन्तु सेळेन्तु नदन्तु नच्चन्तु गायन्तु अप्फोटेन्तु*, जा॰ अट्ठ॰ 6.229; – **सि**[1] अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो उट्ठाय वग्गित्वा गज्जित्वा अप्फोटेसि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.73; – **सि**[2] म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कस्मा, सामि, एत्तकं धनं विस्सज्जेत्वा कतगन्धकुटिया झामकाले अप्फोटेसी'ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.36; – **सिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *हट्ठो हट्ठेन चित्तेन, अप्फोटेसिं अहं तदा*, अप॰ 1.148; – **सुं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ब्रह्मानो अप्फोटेसुं*, मि॰ प॰ 12; – **स्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ ... *ब्रह्मअप्फोटनं नाम अप्फोटेस्सामी'ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.120; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *आयुपालं तुण्हीभूतं दिस्वा अप्फोटेत्वा उक्कुट्ठिं कत्वा योनके एतदवोच*, मि॰ प॰ 18; – **टित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आस्फोटित], – *तस्स वामहत्थं समज्जित्वा दक्खिणहत्थेन अप्फोटितकाले आकासा ... वस्सति*, जा॰ अट्ठ॰ 2.257.

अफन्दन त्रि॰, फन्दन का निषे॰ [अस्पन्दन], नहीं हिल-डुल रहा, नहीं चल फिर रहा, नहीं फड़क रहा, कम्पनहीन, जड़ – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बसहा अफन्दना अकुप्पा, तथित्थियो तायो न विस्ससे नरो*, जा॰ अट्ठ॰ 5.420.

अफरुस त्रि॰, फरुस का निषे॰ [अपरुष], अकठोर, कोमल, मृदु, विनम्र – **सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकक्कसं अफरुसं, खरधोतं सुपासियं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.247; *सुमट्ठताय अफरुसं*, तदे॰; – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *मुदूति कायवाचाचित्तेहि अफरुसो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.181; **वाचता** स्त्री॰, भाव॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, कोमल अथवा मृदुवाणी बोलने की अवस्था, मीठी वाणी बोलना – *या तत्थ सण्हवाचता ... सिथिलवाचता अफरुसवाचता*, महानि॰ 286; *अफरुसवाचताति मधुरवचनता*, महानि॰ अट्ठ॰ 340.

अफल त्रि॰, ब॰ स॰ [अफल], निष्फल, निरर्थक, अलाभदायक – **ला** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं सुभासिता वाचा, अफला होति अकुब्बतो*, ध॰ प॰ 51; – **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मोघं वत नो तपो, अफलं ब्रह्मचरियं*, म॰ नि॰ 2.369; *अफलं पधानं*, म॰ नि॰ 3.8; – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं सन्ते आयस्मन्तानं निगण्ठानं अफलो उपक्कमो होति*, म॰ नि॰ 3.8; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, द्रष्ट॰ फलाफल के अन्त॰.

अफस्सक त्रि॰, ब॰ स॰ [अस्पर्शक], वह, जिसका स्पर्श न किया जा सके, स्पर्श करने की क्षमता न रखने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असञ्ञसत्ता देवा अहेतुका अनाहारा अफस्सका अवेदनका ... पातुभवन्ति*, विभ॰ 491.

अफस्सयि फस्स के ना॰ धा॰ का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, स्पर्श कर लिया, छू लिया, अनुभव कर लिया – *यो सो अट्ठ विमोक्खानि, पुरेभत्तं अफस्सयि*, थेरगा॰ 1181; *यो महानेरुनो कूटं विमोक्खेन अफस्सयि*, थेरगा॰ 1211.

अफस्सित त्रि॰, फस्स के ना॰ धा॰ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, **शा॰ अ॰** स्पर्श न किया गया, **ला॰ अ॰** प्रज्ञा आदि द्वारा अगृहीत, अनुपलब्ध, अप्राप्त, असाक्षात्कृत – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अफस्सितो पञ्ञाय दुक्खन्तो नत्थीति*, पटि॰ म॰ 121; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञातं अभिविस्स अदिट्ठं अविदितं असच्छिकतं अफस्सितं पञ्ञाय*, म॰ नि॰ 2.150.

अफासु त्रि॰, फासु का निषे॰ [अस्फास्नु], असरल, कठिन, कष्टप्रद – **सु** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अञ्ञतरस्स भिक्खुनो यानुग्घातेन बाळ्हतरं अफासु अहोसि*, महाव॰ 265; – **सुं** तदेव, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या पन भिक्खुनी भिक्खुनिया सञ्चिच्च अफासुं करेय्य, पाचित्तिय'न्ति*, पाचि॰ 396; – **क** त्रि॰, प्रायः नपुं॰ के नाम के रूप में प्रयुक्त, कष्ट, कठिनाई, असुविधा, परेशानी – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुत्तस्स ते अफासुकं जात'न्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.281; *मय्हं अञ्ञं अफासुकं नत्थि*, तदे॰; – **केन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ ... *केनचि अफासुकेन भवितब्ब'न्ति ...*, जा॰ अट्ठ॰ 2.230; *अपिच खो पनेकेन अफासुकेन जीवितक्खयं पत्तो*, जा॰ अट्ठ॰ 4.46; – **काम** त्रि॰, ब॰ स॰, सुख या आनन्द की कामना न करने वाला – **मानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *कुलानि अस्सद्धानि ... अफासुकामानि ... उपासिकानं*, महानि॰ 357; *अफासुकामानीति फासुकं न इच्छन्ति, अफासुकमेव इच्छन्ति*, महानि॰ अट्ठ॰ 370; – **विहार** पु॰, कर्म॰ स॰, कष्टमय या दुखमय जीवनवृत्ति – **राय** चतु॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहिताय दुक्खाय अफासुविहाराय*, महानि॰ 12; स॰ नि॰ 1(1).86 87;

अफासुविहारायाति तदुभयेन न सुखविहारत्थाय, महानि॰ अट्ठ॰ 52.

अफुट्ठ त्रि॰, √फुस के भू॰ क॰ कृ॰ फुट्ठ का निषे॰ [अस्पृष्ट], **शा॰ अ॰** नहीं स्पर्श किया गया, **ला॰ अ॰** अप्रभावित, पूरी तरह मुक्त **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धीरोपि तथेव मरणफस्सेन फुट्ठो अफुट्ठो नाम नत्थि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.217; – **ट्ठं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अफुट्ठं फुसितब्बं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.152.

अफुसिं √फुस का अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, मैंने स्पर्श किया, अनुभव किया, साक्षात्कृत किया – *मातरा चोदितो सन्तो, अफुसिं सन्तिमुत्तमं,* थेरीगा॰ 328.

अफुस/अफुस्स त्रि॰, √फुस के सं॰ कृ॰, फुस्स का निषे॰ [अस्पृश्य], अछूत, स्पर्श या अनुभव न किये जाने योग्य – **सानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बेपेते, ..., गुणा एकरसा अरोगा अकुप्पा अपरूपक्कमा अफुसानि किरियानि,* मि॰ प॰ 156.

अफेग्गुक त्रि॰, ब॰ स॰ [अफल्गुक], सारहीन या खोरवली लकड़ी से रहित, ठोस या अच्छी लकड़ी वाला – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *सा सिंसपा, सारमया अफेग्गुका, कुहिं ठिता उप्परितो न धंसती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.279.

अफेग्गुसार पु॰/नपुं॰, व्य॰ सं॰, हंसावती के एक स्थविर द्वारा रचित एक रचना का नाम – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थेव अञ्ञतरो थेरो अफेग्गुसारं नाम गन्थं अकासि,* सा॰ वं॰ 45(ना॰).

अबद्ध त्रि॰, √बन्ध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अबद्ध], नहीं बंधा हुआ, बन्धनों से मुक्त – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मिगो अरञ्ञम्हि यथा अबद्धो, येनिच्छकं गच्छति गोचराय,* सु॰ नि॰ 39; *अबद्धोति रज्जुबन्धनादीहि अबद्धो, एतेन विस्सत्थचरियं दीपेति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.66; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असितस्साति अबद्धस्स,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.70; – **पित्त** नपुं॰, नहीं बंधा हुआ पित्त, खुला हुआ पित्त – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अबद्धपित्तं मिलातबकुलपुप्फवण्णन्तिपि एके,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 46; – **माला** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अबद्धमाला], खुला हुआ माला का अलङ्करण – *मालाति बद्धमाला वा अबद्धमाला वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.79; – **मुख** त्रि॰, ब॰ स॰, अप्रियवादी, बकवास करने वाला, खुले हुए मुख वाला – **खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मुखरो दुम्मुखो बद्धमुखो चाप्पियवादिनि,* अभि॰ प॰ 735; – **सन्धि** त्रि॰, ब॰ स॰ [अबद्धसन्धि], वह, जिसके शरीर के सन्धिभाग सुगठित न हो, ढीले-ढाले सन्धिभागों वाला *विकटोति विकटपादो, अबद्धसन्धी'तिपि वुत्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.320.

अबद्धसीमविहार त्रि॰, ब॰ स॰ [अबद्धसीमविहार], ऐसे विहार में रहने वाले भिक्षु, जिसकी सीमा सङ्घ द्वारा निर्धारित नहीं की गई हो – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ये अबद्धसीमविहारा, तेसु भिक्खू एकज्झं सन्निपातेतब्बा, छन्दारहानं छन्दो आहरापेतब्बो,* महाव॰ अट्ठ॰ 306.

अबद्धसीमा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अबद्धसीमा], किसी भी सङ्घकर्म के लिये निर्धारित वह सीमा, जिसकी न कोई निश्चित हद रहती है और न किसी ञत्तिदुतियकम्म द्वारा पुष्टि भी आवश्यक होती है जैसे ही भिक्षुसङ्घ उपोसथ या किसी भी सङ्घकर्म के लिए एकत्रित होता है तो यह सीमा स्वतः बन जाती है. गामसीमा, सत्तब्भन्तरसीमा तथा उदकुक्खेपसीमा इसी के अन्तर्गत आती है – **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सङ्घमज्झे ओसरन्तीति अबद्धसीमाय कथितं, बद्धसीमायं पन वसन्ता अत्तनो वसनट्ठानेयेव उपोसथं करोन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.171.

अबधिर त्रि॰, बधिर का निषे॰ [अबधिर], वह, जो बहरा नहीं है – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अबधिरोपि बधिरो विय होहि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.4; *केवलञ्हि इध इत्थीपि पुरिसोपि यो कोचि विञ्ञू अनन्धो अबधिरो अन्तोद्वादसहत्थे ओकासे ठितो ... करोति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.197.

अबन्धन त्रि॰, ब॰ स॰ [अबन्धन], **शा॰ अ॰** बिना बन्धनों वाला (भिक्षापात्र) – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ऊनपञ्चबन्धनो नाम पत्तो अबन्धनो वा एकबन्धनो वा द्विबन्धनो वा तिबन्धनो वा चतुबन्धनो वा,* पारा॰ 369; **ला॰ अ॰** भवबन्धनों या संयोजनों से मुक्त – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न सो सोचति नाज्झेति, छिन्नसोतो अबन्धनो,* सु॰ नि॰ 954; – **ना** उपरिवत्, ब॰ व॰ – *तादी तत्थ न रज्जन्ति, छिन्नसुत्ता अबन्धना'ति,* थेरगा॰ 282; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, उपरिवत् – *अनीघं पस्स आयन्तं, छन्नसोतं अबन्धन'न्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 159.

अबन्धनोकास त्रि॰, ब॰ स॰ [अबन्धनावकाश], वह, जिसमें बन्धन के लिये कोई भी अवसर न रहे **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अबन्धनोकासो नाम पत्तो यस्स द्वङ्गुला राजि न होति,* पारा॰ 369.

अबन्धितब्बयुत्तक त्रि॰, वह, जिसे बांधा जाना या कारागार में डालना उचित नहीं है, कारागार आदि में बांधने के लिए अनुपयुक्त – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अन्धबालानं नाम अवत्थुकेन वचनेन अबन्धितब्बयुत्तकापि पण्डिता पच्छाबाहं*

बद्धा, जा॰ अट्ठ॰ 1.421; – **के** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, उपरिवत् – *एवं बाला नाम अबन्धितब्बयुत्तकेपि बन्धापेन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.421.

अबन्धु त्रि॰, ब॰ स॰ [अबन्धु], बन्धु-बान्धवों से रहित, बिना साथियों वाला, मित्र-रहित – **न्धु¹** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोहं सहस्सजीनोव, अबन्धु अपरायणो*, जा॰ अट्ठ॰ 3.413; – **न्धु²** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा नूनाहं मरिस्सामि, अबन्धु अपरायिनी*, जा॰ अट्ठ॰ 3.341; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पतिट्ठा वुय्हतं ओघे, त्वञ्हि नाथो अबन्धुनं*, अप॰ 1.357.

अबब¹ नपुं॰, व्यु॰ अनिश्चित, एक बड़ी संख्या, एक-सौ हजार निन्नहुत की एक बड़ी संख्या – **बं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहहं अबबं चेवाटटं सागेन्धिकुप्पलं*, अभि॰ प॰ 475.

अबब² पु॰, एक नरक का नाम – **बो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति निरब्बुदा निरया एवमेको अबबो निरयो*, सु॰ नि॰ (पृ॰) 182; – **बा** ब॰ व॰ – *सेय्यथापि भिक्खु वीसति अबबा निरया एवमेको अहहो निरयो*, सु॰ नि॰ (पृ॰) 182.

अबल¹ पु॰, मूर्ख, बुद्धिहीन – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अबलबलो वियाति अबलो किर बोन्दो वुच्चति*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.186.

अबल² त्रि॰, ब॰ स॰ [अबल], बलहीन, शक्तिहीन, कमजोर, दुर्बल – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जिण्णोहमस्मि अबलो वीतवण्णो*, सु॰ नि॰ 1126; *तत्थजिण्णोहमस्मि अबलो वीतवण्णोति सो किर ब्राह्मणो जराभिभूतो वीसवस्ससतिको जातिया*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.295; – **ला¹** स्त्री॰, नारी, स्त्री – *पमदा सुन्दरी कन्ता रमणी दयिताबला*, अभि॰ प॰ 230; – **ला²** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बे सत्ता ... सब्बे जीवा अवसा अबला अवीरिया ... सुखदुक्खं पटिसंवेदेन्ति*, दी॰ नि॰ 1.47; *अवसा अबला अवीरियाति तेसं अत्तनो वसो वा बलं वा वीरियं वा नत्थि*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.134; *अबला नं बलीयन्ति, मद्दन्तेनं परिस्सया*, सु॰ नि॰ 776; – **लानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकूनासीतिया सत्त, सोळसेवाबलानि तु*, अभि॰ अव॰ 125; – **लं¹** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अबलं तं बलं आहु, यस्स बालबलं बलं*, स॰ नि॰ 1(1).256; 258; – **लं²** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तञ्हि तस्सा अबलं बन्धनं, दुब्बलं ..., पुतिकं ..., असारकं बन्धनन्ति*, म॰ नि॰ 2.122; – **सङ्खात** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अबलसंख्यात], निर्बल या बलहीन के रूप में जाना गया – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अबलसङ्खाता किलेसा बलीयन्ति सहन्ति मद्दन्ति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.208.

अबलबल त्रि॰, अट्ठ॰ के अनुसार अबल + अबल के आमेण्डित स॰ से व्युत्पन्न, अत्यधिक मूर्ख, नासमझ – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *क्वायं अबलबलो विय मन्दमन्दो विय भाकुटिकभाकुटिको विय?*, पारा॰ 282; *अबलबलो वियाति अबलो किर बोन्दो वुच्चति, अतिसयत्थे च इदं आमेण्डितं, तस्मा अतिबोन्दो वियाति वुत्तं होति*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.186; *बोन्दो ति लोलो, मन्दधातुकोति अत्थो*, वि॰ वि॰ टी॰ 1265; ... *अबलबलो विय हुत्वा किञ्चि अजानन्तो विय* ..., जा॰ अट्ठ॰ 2.196.

अबलस्स पु॰, कर्म॰ स॰ [अबलाश्व], कमजोर या बलहीन घोड़ा – **स्सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अबलस्संव सीघस्सो, हित्वा याति सुमेधसो*, ध॰ प॰ 29; *अबलस्संवाति कुण्ठपादं छिन्नजवं दुब्बलस्सं सीघजवो सिन्धवाजानीयो विय*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.149.

अबहि अ॰, क्रि॰ वि॰ [अबहिः], अन्दर, भीतर, मन में, आन्तरिक रूप में – *अबहीति अब्भन्तरं, चित्ते एवाति अत्थो*, नेत्ति॰ अट्ठ॰ 162; ... *अन्तोगतेहि इन्द्रियेहि अबहिगतेन मानसेन*, अ॰ नि॰ 2(2).225; *गुत्तिन्द्रियो ज्ञानरतो, अबहिग्गतमानसो*, वि॰ व॰ 840; *ततो एव ... निब्बाने च ओगाळ्हचित्तताय अबहिग्गतामानसो*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 180.

अबहुकत त्रि॰, बहुकत का निषे॰ [अबहुकृत], बहुत अधिक मतलब या प्रयोजन न रखने वाला, अधिक सम्मान न देने वाला – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *पुब्बे अगारिकभूतो समानो अबहुकतो अहोसिं धम्मेन अबहुकतो सङ्घेन*, स॰ नि॰ 3(1).110; *दसमे अबहुकतोति अकतबहुमानो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.186.

अबहुमत / अबहुमान त्रि॰, तत्पु॰ स॰, ब॰ स॰ [अबहुमत], उपेक्षित, बहुत अधिक नहीं चाहा गया – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो ... पुत्तदारेन अबहुमतो पब्बजित्वा कालं ... याचि*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.246.

अबहुलीकत त्रि॰, बहुल + √कर के भू॰ क॰ कृ॰ बहुलीकत का निषे॰ [अबहुलीकृत], वह, जिसने किसी बात को विकसित नहीं किया है या बढ़ाया नहीं हैं या उसका भरपूर अभ्यास नहीं किया है – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कामेसु खो मे आदीनवो अदिट्ठो, सो च मे अबहुलीकतो*, अ॰ नि॰ 3(1).244; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्स कस्सचि कायगतासति अभाविता अबहुलीकता*, म॰ नि॰ 3.138; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञं ... अभावितं अबहुलीकतं महतो अनत्थाय संवत्तति यथयिदं* ..., चित्तं, अ॰ नि॰ 1(1).7-8; – **कम्म** नपुं॰, पूरी तरह से नहीं करना, विकसित न करना, अनभ्यास – **म्मं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अभावना, अबहुलीकम्मं अनधिट्ठानं अननुयोगो, पमादो*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 115.

अबाध त्रि., ब. स. [अबाध], रुकावटरहित, बाधारहित, बन्धनरहित - **धं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अबाधं तु निराग्गलं,* अभि. प. 717.

अबालजातिक त्रि., ब. स. [अबालजातीय], बचपने की प्रकृति से रहित, मूर्खता से रहित - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *ये ते कक्कटा अबालजातिका अलोलजातिका,* स. नि. 3(1).226.

अबाळ्ह त्रि., आ + √बह का भू. क. कृ. [आबाढ़], अकोमल, कठोर, कर्कश, रूक्ष, बलवती - **ळ्हं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *अबाळ्हं गिरं सो न भणि परुसं,* दी. नि. 3.131; *अबाळ्हं ... एत्थ अकारो परतो भणिसद्देन योजेतब्बो,* दी. नि. अट्ठ. 3.110; *अबाळ्हन्ति वा एत्थ अकारो बुद्धिअत्थो असेक्खा धम्मा'तिआदीसु विय, तस्मा अतिविय बाळ्हं परुसं गिरन्ति एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो,* लीन. (दी.नि.टी.) 3.111.

अबाहिर त्रि., बाहिर का निषे. [अबाह्य], नहीं बाहरी, वह जो बाहर की ओर उन्मुख न हो, बाहर के कर्मकाण्ड आदि से मुक्त - **रं** द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. - *मया धम्मो अनन्तरं अबाहिरं करित्वा ...,* दी. नि. 2.78; *अनन्तरं अबाहिरन्ति धम्मवसेन वा पुग्गलवसेन वा उभयं अकत्वा,* दी. नि. अट्ठ. 2.123.

अबीज त्रि., ब. स. [अबीज], **शा. अ.** बीजरहित (कच्चा फल), **ला. अ.** उत्पादक या प्रजनन की शक्ति से रहित - **जं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अबीजं निब्बत्तबीजं अकतकप्पं फलं परिभुञ्जितुन्ति,* महाव. 291; *अबीजन्ति तरुणफलं, यस्स बीजं न अङ्कुरं जनेति,* महाव. अट्ठ. 354; *अग्गिपरिचितं ..., अबीजं, निब्बत्तबीजञ्ञेव पञ्चमं,* चूळव. 226; - **जे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *अबीजे बीजसञ्ञी आपत्ति दुक्कटस्स,* पाचि. 53; **सञ्ञी** त्रि., [अबीजसंज्ञिन्], बीजरहित के रूप में जानने वाला - **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. - *अबीजे अबीजसञ्ञी, अनापत्ति,* पाचि. 53.

अबुज्झन नपुं., √बुज्झ से व्यु. क्रि. ना. बुज्झन का निषे. [अबोधन], अज्ञान - **नेन** तृ. वि., ए. व. - *अननुबोधाति अबुज्झनेन अजाननेन,* दी. नि. अट्ठ. 2.119.

अबुज्झि √बुध का अद्य., प्र. पु., ए. व., जाना, साक्षात्कृत किया - *यो ञानमबुज्झि बुद्धो, पटिलीननिसभो मुनी'ति,* अ. नि. 3(2).252; *यो ञानमबुज्झीति यो ञानं अबुज्झि,* अ. नि. अट्ठ. 3.281.

अबुद्धवचन नपुं., बुद्धवचन का निषे. [अबुद्धवचन], बुद्ध द्वारा नहीं कहा गया वचन - **नं** प्र. वि., ए. व. - *अबुद्धवचनं नामेतं पद'न्ति बीजनिं ... आरभि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).183; ... *अबुद्धवचनं परियत्तिसद्धम्मप्पतिरूपकं नाम,* स. नि. अट्ठ. 2.177; - **नि** तदेव, ब. व. - *वण्णपिटक ... वेदल्लपिटकानि पन अबुद्धवचनानियेवाति वुत्तं,* पाचि. अट्ठ. 8.

अबुद्धिक त्रि., ब. स. [अबुद्धिक], बिना बुद्धि वाला, बुद्धिहीन - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *किं पन, महाराज, ब्रह्मा सबुद्धिको अबुद्धिको'ति,* मि. प. 82.

अबुद्धिमन्तु त्रि., बुद्धिमन्तु का निषे. [अबुद्धिमत्], उपरिवत् - **मा** पु., प्र. वि., ए. व. - *नाकासिं सकलानुसासनिं, चिरपापाभिरतो, अबुद्धिमा,* पे. व. 483.

अबोध त्रि., ब. स. [अबोध], अज्ञानी, नासमझ, मूर्ख - **धं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *भयं तमन्वेति सयं अबोधं, नागं यथा पण्डरकं सुपण्णो,* जा. अट्ठ. 5.72.

√**अब्ब** गति एवं हिंसा अर्थ वाली एक धातु - *अब्ब सब्ब हिंसायञ्च गत्यापेक्खाय चकारो, अब्बति सब्बति,* सद्द. 2.405.

अब्बजे आ + √वज का विधि., प्र. पु., ए. व. [आव्रजेत्], आव्रजन करे, किसी नई अवस्था या स्थल में आए या जाए - *यक्खत्तं येन गच्छेय्यं, मनुस्सत्तञ्च अब्बजे,* अ. नि. 1(1).44; उदा. अट्ठ. 142.

अब्बण त्रि., ब. स. [अव्रण], व्रणरहित, घावों या जख्मों से रहित - **णं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *नाब्बणं विसमन्वेति, नत्थि पापं अकुब्बतो,* ध. प. 124; *नाब्बणं विसमन्वेति अवणञ्हि पाणिं विसं अन्वेतुं न सक्कोति,* ध. प. अट्ठ. 2.17.

अब्बत 1. त्रि., ब. स. [अव्रत], शीलों एवं धुतङ्गों से रहित - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *न मुण्डकेन समणो, अब्बतो अलिकं भणं,* ध. प. 264; *अब्बतोति सीलवतेन च धुतङ्गवतेन च विरहितो,* ध. प. अट्ठ. 2.225; 2. नपुं., शीलों से रहित अवस्था, शीलहीनता, व्रतरहितता - **ता** प. वि., ए. व. - *अदिट्ठिया अस्सुतिया अञ्ञाणा, असीलता अब्बता नोपि तेन,* सु. नि. 845; *अब्बताति धुतङ्गवतं विना,* सु. नि. अट्ठ. 2.237.

अब्बहति / अब्बूहति अ(आ) + √ब्रह / ब्रूह का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवृहति], बाहर की ओर खींचता है, निकालकर बाहर कर देता है - **ह** अनु., म. पु., ए. व. - *ओमद्द खिप्पं पलिघं, एसिकानि च अब्बह,* जा. अट्ठ. 2.78; *एसिकानि च अब्बहाति नगरद्वारे सोळसरतनं अट्ठरतनं भूमियं पवेसेत्वा ... एसिकत्थम्भा होन्ति, ते खिप्पं उद्धर ...,* जा. अट्ठ. 2.78;

– **हेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, निकाल बाहर करे – *अप्पमादेन विज्जाय, अब्बहे सल्लमत्तनोति,* सु॰ नि॰ 336; *अब्बहे सल्लमत्तनो'ति तस्सत्थो – यस्मा एवमेसो सब्बदापि पमादो रजो, तस्मा ... अप्पमादेन ... कुलपुत्तो उद्धरे ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.66; *अत्तनो सुखमेसानो, अब्बहे सल्लमत्तनो,* सु॰ नि॰ 597; *अब्बहेति उद्धरे,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.165; *तस्स सो भिसक्को सल्लकत्तो सल्लं अब्बुहेय्य,* म॰ नि॰ 3.3; – **ही / हि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, निकाल बाहर कर दिया – *अब्बही वत मे सल्लं, यमासि हदयस्सितं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.135; थेरीगा॰ 52; ... *लद्धनामं सोकं तण्हञ्च अब्बही वत नीहरि वत,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 62; *सुतवा अरियसावको अब्बुहि सविसं सोकसल्लं,* अ॰ नि॰ 2(1).51; – **हिंसु** ब॰ व॰, निकाल बाहर किए – *तं दिस्वा असिग्गाहा थेरस्स सीसं पातेस्सामा'ति कोसतो, असिं अब्बाहिंसु,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.41; *अब्बाहिंसूति आकड्ढिंसु,* सारत्थ॰ टी॰ 1.125; – **बुह्य** पू॰ का॰ कृ॰, बाहर निकालकर – *तमेव सल्लमब्बुय्ह, न धावति न सीदति,* सु॰ नि॰ 945; *तमेव सल्लमब्बुय्ह, ... उद्धरित्वा ता च दिसा न धावति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 259; – **हित्वा / हित्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *खग्गं अब्बाहित्वा पहरिस्सामि ... पतिट्ठपेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.396; *सोहं खन्धे परिञ्ञाय, अब्बहित्वान जालिनिं,* थेरगा॰ 162.

अब्बाहन / अब्बूहण नपुं॰, अ(आ) + √ब्रह / √ब्रूह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आबर्हण], निकाल बाहर करना, उच्छेदन, निर्मूलीकरण – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञाय सल्लकन्तनन्ति रागसल्लादीनं कन्तनं निम्मथनं अब्बूहणं एतं मग्गं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.232; *महतो तण्हासल्लस्स अब्बहनं,* महानि॰ 252; – **हेतु** अ॰, बाहर निकाले जाने के कारण से – *सो सल्लस्सपि अब्बुहनहेतु दुक्खा तिब्बा कटुका वेदना वेदियेय्य,* म॰ नि॰ 3.3–4.

अब्बाहेति / अब्बाहयति अ(आ) + √ब्रह / √ब्रूह के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, खींच कर बाहर निकालता है, निकाल बाहर करवाता है – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *वेस्सपथेसु तिट्ठन्ति, सत्थं अब्बाहयन्तिपि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.327; *सत्थं अब्बाहयन्तीति सत्थवाहानं हत्थतो सतम्पि सहस्सम्पि गहेत्वा सत्थे चोराटविं अतिबाहेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.329; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बाहर निकाला – *अथस्स सीसं छिन्दिस्सामी'ति असिगाहो असिं अब्बाहेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.264; – **हित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, बाहर निकालकर – *किच्चपरियोसाने चोरजेट्ठको असिं अब्बाहित्वा सामणेरं उपसङ्कमि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.383.

अब्बु नपुं॰, उपद्रव, उथल-पुथल – *अब्बु वुच्चति उपद्दवं, तं देतीति अब्बुदं,* स॰ नि॰ टी॰ 1.123.

अब्बुद नपुं॰, [अर्बुद], **शा॰ अ॰** सूजन, नाना प्रकार की गांठ, दस करोड़ की संख्या, **ला॰ अ॰ 1.** गर्भाधान के बाद वाले दूसरे सप्ताह में विकसित भ्रूण की अवस्था का नाम – **दा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्बुदा जायते पेसि, पेसि निब्बत्तती घनो,* स॰ नि॰ 1(1).238; *अब्बुदा जायते पेसीति तस्मापि अब्बुदा सत्ताहच्चयेन विलीनतिपुसदिसा पेसि नाम सञ्जायति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.264; – **दं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्बुदं नाम सम्पज्जतीति अत्थो,* स॰ नि॰ टी॰ 1.269; *कलला होति अब्बुदं, अब्बुदा जायती पेसी'ति च "हिमवता गङ्गा पभव"न्ति ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 33; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किं नु खो, महाराज, अञ्ञा एव कललस्स माता, अञ्ञा अब्बुदस्स माता,* मि॰ प॰ 39; **ला॰ अ॰ 2.** मल, अपयश, घोटाला, काम, संकट – **दं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुदिन्नेन कलन्दपुत्तेन अब्बुदं उप्पादितं,* पारा॰ 19; ... *उप्पज्जिस्सति नु खो अनागतेपि सासनस्स एवरूपं अब्बुदन्ति ओलोकयमाना इमं अद्दसंसु,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.27; *अब्बुदन्ति उपद्दवं उपद्दवं वदन्ति चोरकम्मम्पि भगवतो वचनं थेनेत्वा अत्तनो वचनस्स दीपनतो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.101–102; – **दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ (लिङ्गविपर्यय) – *कोधो सत्थमलं लोके, चोरा लोकस्मिमब्बुदा,* स॰ नि॰ 1(1).51; *अब्बुदन्ति विनासकारणं, चोरा लोकस्मिं विनासकाति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; **3.** एक बहुत बड़ी संख्या, एक सौ हजार निन्नहुतों वाली संख्या – *अक्खोहिणी'त्थियं बिन्दु अब्बुदं च निरब्बुदं,* अभि॰ प॰ 475; *सतं सतसहस्सनिन्नहुतानि एकं अब्बुदं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.178–179; – **दानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सतं सहस्सानं निरब्बुदानं, छत्तिंसति पञ्च च अब्बुदानि,* सु॰ नि॰ 665; **4.** पु॰, एक ऐसे नरक का नाम, जहाँ पर पापी प्राणी एक अर्बुद वर्षों तक रहते हैं – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नत्वेव एको अब्बुदो निरयो,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 182; ... *अब्बुदो नाम कोचि पच्चेकनिरयो नत्थि, अवीचिम्हियेव अब्बुदगणनाय पच्चनोकासो पन अब्बुदो निरयो'ति वुत्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.178; – **दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वीसति अब्बुदा निरया एवमेको निरब्बुदो निरयो,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 182; – **गणना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, एक अर्बुद वर्षों की गणना – **नाय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवीचिम्हियेव अब्बुदगणनाय पच्चनोकासो पन अब्बुदो निरयो'ति वुत्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.178; – **जात** त्रि॰, मलिन बना दिया गया, अशुद्ध हो चुका – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदानि*

भिक्खुसङ्घो अब्बुदजातो, अपरिसुद्धा पुग्गला उपोसथं आगच्छन्ति, उदा॰ अट्ठ॰ 243.

अब्बुळ्ह / अब्बूळ्ह त्रि॰, अ(आ) + √ब्रह / √ब्रूह का भू॰ क॰ कृ॰, वह, जिसे बाहर खींचकर निकाला गया है, निराकृत, हटाया हुआ, अपनीत – **ळ्हं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विचिकिच्छाकथंकथासल्लं, तञ्च भगवता अब्बुळ्हन्ति,* दी॰ नि॰ 2.209; *अब्बूळ्हं अघगतं विजितं, एकञ्चे ओस्सजेय्य कलीव सिया,* थेरगा॰ 321; – **ळ्हे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतस्मिञ्हि अब्बूळ्हे सल्ले अब्बूळ्हसल्लो ... निब्बापेसि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.165; – **त्त** नपुं॰, भाव॰, बाहर निकाल दिया जाना, हटा दिया जाना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अब्बूळ्हत्ता अब्बूळ्हसल्लो सतिवेपुल्लप्पत्तिया अप्पमत्तो चरं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.213; – **सल्ल** त्रि॰, ब॰ स॰ [आवृढशल्य], वह, जिसके अन्दर से चुभने वाला कांटा या अकुशल मनोभाव बाहर निकाल दिया गया है – **ल्लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्बुळ्हसल्लो असितो, सन्तिं पप्पुय्य चेतसो,* सु॰ नि॰ 598; *एतस्मिञ्हि अब्बूळ्हे सल्ले अब्बूळ्हसल्लो ... निब्बापेसि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.165; *सोहं अब्बूळ्हसल्लोस्मि, वीतसोको अनाविलो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.136; – **सोकसल्ल** त्रि॰, ब॰ स॰ [आवृढशोकशल्य], वह, जिसका शोकरूपी चुभने वाला कांटा बाहर निकाल दिया गया है – **ल्लं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असोकन्ति निस्सोकं अब्बूळ्हसोकसल्लं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 123.

अब्बूळ्हेसिक त्रि॰, ब॰ स॰ [आवृढेसीक], वह, जिसका इच्छारूपी स्तम्भ या खम्भा नष्ट कर दिया गया है, वह, जिसके मन में गहराई तक प्रविष्ट तृष्णा-रूपी वाण को खींचकर बाहर निकाल दिया गया है – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु अब्बूळ्हेसिको होति?,* म॰ नि॰ 1.194; *तण्हाति वट्टमूलिका तण्हा अयञ्हि गम्भीरानुगतट्ठेन एसिकाति वुच्चति-तेनेस तस्सा अब्बूळ्हत्ता लुञ्चित्वा छड्डितत्ता अब्बूळ्हेसिकोति वुत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).21.

अब्बेति / अब्बति √अब्ब का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, उपभोग करता है, अनुभव करता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *गन्धं अब्बन्ति परिभुञ्जन्तीति गन्धब्बा,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.85.

अब्बोकिण्ण 1. त्रि॰, वोकिण्ण का निषे॰ [अव्यवकीर्ण], नहीं छितराया हुआ, चारों ओर नहीं बिखरा हुआ, व्यवधान-रहित, बाधामुक्त, अमिश्रित, लगातार चलने वाला – **ण्णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *इध, पुण्ण, एकच्चो कुक्कुरवतं भावेति परिपुण्णं अब्बोकिण्णं,* म॰ नि॰ 2.57; *अब्बोकिण्णन्ति निरन्तरं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.72; – **ण्णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्ञा किच्चकारी होति होति अचला असिथिला अब्बोकिण्णा अहिरिकेन,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.116; – **ण्णानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खुनो पञ्च जातिसतानि अब्बोकिण्णानि ब्राह्मणकुले पच्चाजातानि,* उदा॰ 100; *अब्बोकिण्णानीति खत्तियादिजातिअन्तरेहि अवोमिस्सानि अनन्तरितानि,* उदा॰ अट्ठ॰ 156; – **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सुखो च विहारोति एत्थ पन नास्स सेचनन्ति असेचनको अनासित्तको अब्बोकिण्णो पाटेक्को ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.9; **2**. अ॰, क्रि॰ वि॰, निरन्तर रूप में, लगातार रूप में, सतत रूप में – *अनिच्चसंवेदी सततं समितं अब्बोकिण्णं चेतसा अधिमुच्चमानो पञ्ञाय परियोगाहमानो,* अ॰ नि॰ 2(2).164; *अब्बोकिण्णन्ति निरन्तरं अञ्ञेन चेतसा असंमिस्सं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.151.

अब्बोच्छिन्न / अब्भोच्छिन्न 1. त्रि॰, वि + अव + √छिद के भू॰ क॰ कृ॰ बोच्छिन्न का निषे॰ [अव्यवच्छिन्न], बीच में किसी भी व्यवधान से रहित, सतत-रूप में प्रवर्तित – **न्नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसस्स च विञ्ञाणसोतं पजानाति, उभयतो अब्बोच्छिन्नं इध लोके अप्पतिट्ठितञ्च परलोके अप्पतिट्ठितञ्च,* दी॰ नि॰ 3.78; *दस्सनं अविजहित्वा गमनं अब्बोच्छिन्नं कत्वा पच्छतो पच्छतो इरियापथानुबन्धनेन अनुबन्धि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.94; – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्जापि तु अब्बोच्छिन्नो, पुब्बाचरियनिच्छयो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 2; – **न्नाय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्बोच्छिन्नाय सन्ततिया न सक्का तानि कम्मानि दस्सेतुं ...,* मि॰ प॰ 78; **2**. नपुं॰, क्रि॰ वि॰, निरन्तर रूप में, अबाधित रूप में – *अब्बोच्छिन्नं वत्तमाना, संसारोति पवुच्चती'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.136; – **निरन्तरविरिय** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अव्यवच्छिन्ननिरन्तरवीर्य], बिना रुकावट वाला वीर्य, लगातार सक्रिय वीर्य या पौरुष, अप्रतिहत पौरुष – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धितिया दळ्हाय चाति दळ्हाय धितिया च, थिरेन अब्बोच्छिन्ननिरन्तरवीरियेन चाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.449; *अब्बोच्छिन्नवीरियेन धितिमा, भूरिसमाय विपुलाय पञ्ञाय मतिमा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.180.

अब्बोहार त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्यवहार], व्यवहार में किसी भी काम में न आने वाला, निरर्थक, अनुपयोगी – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्बोहारोव सो अन्तो, पूवादीसुपि कण्णकं,* विन॰ वि॰ 1019; *कमल्लिकासु दिन्नासु अब्बाहारोति वट्टति,* विन॰ वि॰ 1521; – **नय** पु॰, [अव्यवहारनय], व्यावहारिक तौर पर अनुपयोगी या निरर्थक पद्धति – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰

व॰ – *तथा पत्तस्स वण्णो वा, अब्बोहारनयो अयं,* विन॰ वि॰ 1452.

अब्बोहारिक / अब्बोहारिय त्रि॰, बोहारिक / बोहारिय का निषे॰ [अव्यवहार्य], व्यवहार में नहीं लाने योग्य, व्यावहारिक तौर पर अनुपयोगी, – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तञ्च खो एतं अब्बोहारिकन्ति,* पारा॰ 111; ... *अब्बोहारिकन्ति ... आपत्तिपज्जापने वोहारं न गच्छति, आपत्तिया अङ्गं न होतीति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.72; – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थेसा, भिक्खवे, चेतना, सा च खो अब्बोहारिकाति,* पारा॰ 149; *अब्बोहारिका ति ... आपत्तिया अङ्गं न होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.96; – **का** तदेव, ब॰ स॰ – *तेहि पन चित्तेहि सहजाता अभिज्झाब्यापादमिच्छादिट्ठियो चेतनापक्खिका वा भवन्ति अब्बोहारिका वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 136; – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यथा पन जिव्हग्गे छ मधुबिन्दूनि सत्तमस्स तम्बलोहबिन्दुनो अनुदहनबलवत्ताय अब्बोहारिकानि होन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.264; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सन्ताय समापत्तिया वुट्ठितस्स भिक्खुनो अस्सासपस्सासा अब्बोहारिका होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).260; – **ट्ठान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अव्यावहारिकस्थान], व्यवहार या प्रयोग के लिये अनुपयुक्त स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि दुक्खवेदनाय पन बलवभावेन सा अब्बोहारिकट्ठाने ठिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.92; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अव्यावहारिकता], व्यवहार में न आने योग्य होना – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुप्फितं तु अहिच्छत्तं, अब्बोहारिकतं गतं,* विन॰ वि॰ 1021; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अव्यवहारिकत्व], उपरिवत् – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ब्याधिपच्चया पुप्फं वा फलं उपसिङ्घति, अब्बोहारिकत्ता वट्टति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 107; – **नय** पु॰, कर्म॰ स॰ [अव्यावहारिकनय], व्यवहार के लिये अनुपयुक्त पद्धति – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *इदानि अब्बोहारिकनयो वुच्चति – भुञ्जन्तानञ्हि दन्ता खिय्यन्ति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 102; – **पक्ख** पु॰, कर्म॰ स॰ [अव्यावहारिकपक्ष], व्यवहार में न लाने योग्य श्रेणी या वर्ग – **क्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे सुखुमं आमिसं होति, रसो न पञ्जायति, अब्बोहारिकपक्खं भजति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 107; **भाव** पु॰, कर्म॰ स॰ [अव्यावहारिकभाव], व्यवहार में नहीं आने योग्य अवस्था – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति भगवा सुपिनन्ते चेतनाय अब्बोहारिकभावं दस्सेत्वा, एवञ्च पन भिक्खवे इमं सिक्खापदं उद्दिसेय्याथ,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.96.

अब्भ नपुं॰, [अभ्र], 1. आकाश, गगन, नभ – *अन्तलिक्खं खमादिच्चपथोब्भं गगनाम्बरं,* अभि॰ प॰ 45; *आकासो अम्बरं अब्भं अन्तलिक्खं अघं नभं,* सद्द॰ 2.442; *अब्भं रजो अच्छादेसि, उय्युत्ता सिविवाहिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 7.364; **2.क.** बादल, मेघ – **ब्भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ अब्भो ति मेघो, सो हि अब्भति अनेकसतपटलो हुत्वा गच्छतीति अब्भो ति वुच्चति,* सद्द॰ 2.407; *अब्भुट्ठितोव सो याति, स गच्छं न निवत्तति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.446; – **ब्भा** ब॰ व॰ – *आकासेपि अब्भा सुबहुला होन्ति,* मि॰ प॰ 255; **2. ख.** स्त्री॰, धुआं, धूल – *यं रूपं ... अब्भा महिका धूमो रजो,* ध॰ स॰ 617; **2.ग.** नपुं॰, राहु, चन्द्र एवं सूर्य को ग्रसने वाला धूमरज – *अब्भं भिक्खवे चन्दिमसुरियानं उपक्किलेसो,* चूळव॰ 464; *अब्भं, महाराज, सूरियस्स रोगो,* मि॰ प॰ 254; – **ब्भा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भा मुत्तोव चन्दिमा,* म॰ नि॰ 2.314; – **क** नपुं॰, अभ्रक, अबरक – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रीरित्थी आरकुटो वा, अमलं त्वब्भकं भवे,* अभि॰ प॰ 492; तुल॰ – *गवलं माहिषं श्रृङ्गम्, अभ्रकं गिरिजामले, स्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने,* अमर॰ 2.9.100; – **कूट** पु॰ / नपुं॰, [अभ्रकूट], बादल का ऊपरी भाग, मेघशिखर – **टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलङ्कते मल्यधरे सुवत्थे, ओभाससि विज्जुरिवब्भकूटं,* वि॰ व॰ 1; – **टा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उग्गता अब्भकूटाव, नीला अञ्जनपब्बता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.292; – **कूटसम** त्रि॰, [अभ्रकूटसम], मेघों के शिखर या शीर्ष जैसा – **मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अब्भकूटसमा उच्चा, कण्टकनिचिता दुमा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.138; – **पटल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अभ्रपटल], बादलों की पतली चादर – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकदागामिनो हि रागादयो अब्भपटलं विय मच्छिकापत्तं विय न तनुका होन्ति, न बहला,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.209; *मन्दमन्दा उप्पज्जन्ति तनुकाकारा हुत्वा अब्भपटलमिव मक्खिकापत्तमिव च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).172; – **सञ्चरणहेतु** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अभ्रपटलसञ्चरणहेतु], बादलों की हल्की चादर के इधर-उधर सञ्चरण का कारण – **तवो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तथा केवलं अब्भपटलसञ्चरणहेतवो अब्भवलाहका,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.224; **मण्डप** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अभ्रमण्डप], बादलों का मण्डप, मेघों का झुण्ड, बादलों का मण्डप जैसा दिखने वाला फैलाव – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भं होतीति अब्भमण्डपो होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.315; *अब्भमण्डपोति मण्डपसदिसअब्भपटलवितानमाह,* स॰ नि॰ टी॰ 2.252; – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भमण्डपं कत्वा देवो एकमेकं फुसायतू'ति ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.131; *अब्भमण्डपं कत्वाति समन्ततो छादनवसेन मण्डपं विय मेघपटलं*

उप्पादेत्वा, स॰ नि॰ टी॰ 3.85; – **माली** त्रि॰, [अभ्रमाली], बादलों की माला को धारण कर रहा, बादलों से घिरा हुआ – **मालिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *मिगो यथा सेरि सुचित्तकानने, रम्मं गिरिं पावुस अब्भमालिनिं,* थेरगा॰ 1147; – **मुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अभ्रमुक्त], मेघरहित, बिना बादलों वाला, स्वच्छ – **त्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *सूरियं तपन्तं सरदरिवब्भमुत्तं, आनन्दजातो विपुलमलत्थ पीतिं,* सु॰ नि॰ 692; – **लाहक** पु॰, केवल ब॰ व॰ में प्रयुक्त, अन्तरिक्ष के देवों का वर्ग, जो मेघपटल पर सञ्चरण करते हैं – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सीतवलाहका देवा, सन्ति उण्हवलाहका देवा, सन्ति अब्भवलाहका देवा, सन्ति वातवलाहका देवा, सन्ति वस्सवलाहका देवा,* स॰ नि॰ 2(1).251; *आगुं मन्दवलाहकाति ..., अब्भवलाहका, ... एते सब्बेपि वलाहकायिका मन्दवलाहका नाम वुच्चन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.254; *तथा केवलं अब्भपटलसञ्चरणहेतवो अब्भवलाहका,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.224; – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अब्भवलाहकानं देवानं, ...,* स॰ नि॰ 2(1).252; – **सम** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अभ्रसम], बादलों या आकाश जितना ऊँचा – **मं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थद्दसं महन्तं पब्बतं अब्भसमं सब्बे पाणे निप्पोथेन्तो आगच्छति,* स॰ नि॰ 1(1).119; *अब्भसमन्ति आकाससमं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.147; – **सम्पिलाप** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अभ्रसंप्लव], बादलों की बाढ़, बादलों का झुण्ड, मेघमण्डप, बादलों की झड़ी – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भसम्पिलापो च अस्स, देवो च एकमेकं फुसायेय्या'ति,* स॰ नि॰ 2(2).281.

अब्भक्खाति / अब्भाचिक्खति अभि + आ + √ख्या का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभ्याचिक्षति], चुगली करता है, झूठा आरोप लगाता है – *अब्भक्खाति अभूतेन, अलिकेनाभिसारयं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.206; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एवं अञ्ञमञ्ञं अभूतेन अब्भाचिक्खन्ति, अलिकेन सारेन्ति चोदेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.206; – **चिक्खि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अब्भाचिक्खि अभूतेन, जनकायस्स अग्गतो,* उदा॰ अट्ठ॰ 214.

अब्भक्खान नपुं॰, [अभ्याख्यान], झूठा आरोप, मिथ्या दोषारोपण – *राजतो वा उपसग्गं, अब्भक्खानञ्च दारुणं,* ध॰ प॰ 139; *अब्भखानं मया लद्धं, सुन्दरिकाय कारणा,* अप॰ 1.328; *अब्भक्खानन्ति अदिट्ठअसुतअचिन्तितपुब्बं 'इदं सन्धिच्छेदादिकम्मं, इदं वा राजापराधितकम्मं तया कत'न्ति एवरूपं दारुणं अब्भक्खानं वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.40.

अब्भघन पु॰, कर्म॰ स॰ [अभ्रघन, त्रि॰], घना बादल – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वातो यथा अब्भघनं विहानं,* सु॰ नि॰ 350; – **ना** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चन्दो अब्भघना मुत्तो, परिसासु विरोचरे'ति,* इतिवु॰ 48; *अब्भघनाति अब्भसङ्खाता घना, घनमेघपटला वा ...,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 208; *चन्दोवब्भघना मुत्तो, विचरामि अहं सदा,* अप॰ 1.366; – **ना** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तिदिवोकचराव अच्छरा, विज्जुवब्भघना विनिस्सटा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.161.

अब्भङ्ग पु॰, [अभ्यङ्ग], शरीर पर तेल की मालिश, लेप, उबटन – **ङ्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं यस्मा वेळुपेसिका विय अब्भङ्गं परस्स गुणं निप्पेसेति निपुञ्छति,* विभ॰ अट्ठ॰ 457; *अब्भङ्गन्ति अब्भञ्जनं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.51.

अब्भच्चनारह त्रि॰, [अभ्यर्चनार्ह], पूजा करने योग्य, सम्मान देने योग्य, पूज्य – **हं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महाविहारे तस्सेव निच्चं अब्भच्चनारहं, देहनिक्खेपट्ठानं च ओलोकेन्तो पुनप्पुनं,* चू॰ वं॰ 88.54.

अब्भछादित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अभ्राच्छादित], मेघों से ढका हुआ, अत्यधिक बादलों वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उमापुप्फेन समाना, गगनावब्भछादिता,* थेरगा॰ 1071; *गगनावब्भ छादिताति ततो एव सरदस्स गगनअब्भा विय काळमेघसञ्छादिता, नीलवण्णाति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.384.

अब्भञ्जति अभि + √अञ्ज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभ्यनक्ति], तेल की मालिश लगाता है, लेप लगाता है, आंखों में काजल लगाता है, उबटन मलता है – **ञ्जेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, काजल लगा दे – *सेय्यथा वा पन अक्खं अब्भञ्जेय्य यावदेव भारस्स नित्थरणत्थाय,* स॰ नि॰ 2(2).180; – **ञ्जित** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, मालिश कर दी – *सिरिमं ओवदित्वा उण्होदकेन न्हापेत्वा सतपाकतेलेन अब्भञ्जि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.181; – **ञ्जिंसु** ब॰ व॰, मालिश की – *तत्थ निसिन्नानं गन्धोदकेन पादे धोवित्वा सतपाकेन तेलेन अब्भञ्जिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.373; – **ञ्जित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, मालिश करा के – *तेलेन गत्तानि अब्भञ्जित्वा किलिट्ठवत्थं निवासेत्वा गिलानालयं कत्वा दासियो आणापेसि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.420.

अब्भञ्जन नपुं॰, अभि + √अञ्ज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभ्यञ्जन], चिकने पदार्थों को शरीर पर मलना, मालिश करना, आंखों में काजल डालना, उबटन, लेप – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भञ्जनं मया दिन्नं, द्विपदिन्दस्स तादिनो,* अप॰ 1.250; *अनुजानामि, भिक्खवे, अब्भञ्जनं अधिट्ठातुन्ति,* महाव॰ 281.

अब्भञ्जनदायक पु., दो स्थविरों के लिये प्रयुक्त उपाधि या उपनाम - **को** प्र. वि., ए. व. - *इत्थं सुदं आयस्मा अब्भञ्जनदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.250; *इत्थं सुदं आयस्मा अब्भञ्जनदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति, अब्भञ्जनदायकत्थेरस्सापदानं चतुत्थं,* अप. 2.102.

अब्भञ्जापेत्वा अभि + √अञ्ज के पू. का. कृ. का प्रेर., उबटन लगवा कर, तेल की मालिश कराकर - *परिसुद्धसरीरं सहस्सपाकतेलेन अब्भञ्जापेत्वा सयनपिट्ठे एळकचम्मं सन्थरापेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 3.329.

अब्भति √अब्भ (गत्यर्थक) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्रति], जाता है, इधर-उधर घूमता है - *अब्भति, अब्भो, वब्भति, मब्भति, ... सो हि अब्भति अनेकसतपटलो हुत्वा गच्छती ति अब्भो ति वुच्चति,* सद्द. 2.407.

अब्भतिक त्रि., [अभ्यतिक / अभ्यधिक], अधिक श्रेष्ठ, ऊंची श्रेणी या पद वाला, अधिक सम्मानित - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *समानसा होथ मयाव सब्बे, कोनीध रञ्ञो अब्भतिको मनुस्सो,* जा. अट्ठ. 7.185; *इध राजकुले तुम्हेहि अञ्ञो को नु रञ्ञो अब्भतिको मनुस्सो'ति अत्तनो आसने निसीदापेय्य,* तदे..

अब्भतिक्कन्त त्रि., अभि + अति + √कम का भू. क. कृ. [अभ्यतिक्रान्त], बहुत पहले ही इस लोक को पार कर चुका, विदा हो चुका, मृत - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *ये बुद्धा अब्भतिक्कन्ता, सम्पत्ता कालपरियायं,* जा. अट्ठ. 5.372; *अब्भतिक्कन्ताति इमं मनुस्सलोकं अतिक्कन्ता,* तदे..

अब्भतीत त्रि., अभि + अति + √इ का भू. क. कृ. [अभ्यतीत], **क. कर्म. वा.**, वह, जिसका उल्लंघन किया गया है या अतिक्रमण किया गया है - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *बद्धा कुलीका मितमाळकेन, अक्खा जिता संयमो अब्भतीतो,* जा. अट्ठ. 3.477; *अब्भतीतो जीवितवुत्तिं निस्साय पब्बजन्तेनेव सीलसंयमो अतिक्कन्तो,* तदे.; **ख.** नपुं., वह, जिसे पार किया जा चुका है *अदिट्ठं अब्भतीतं, बहुकेहि कप्पनहुतेहि,* अप. 1.22; **ग.** अकर्मक, बीत चुका - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *बहुका खो, भिक्खवे, कप्पा अब्भतीता अतिक्कन्ता,* स. नि. 1(2).165; *अब्भतीता च ये बुद्धा, वत्तमाना अनागता,* अप. 1.280; - **सहाय** त्रि., ब. स. [अभ्यतीतसहाय], वह, जिसके साथी-सङ्गी इस लोक से जा चुके हैं - **यस्स** पु., ष. वि., ए. व. - *अब्भतीतसहायस्स, अतीतगतसत्थुनो,* थेरगा. 1038; - **हर** त्रि., [अभ्यतीतहर], बीते हुए समय को खींचकर सामने ले आने वाला - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *नाब्भतीतहरो सोको, नानागतसुखावहो, ... तत्थ नाब्भतीतहरोति नाब्भतीताहारो, अयमेव वा पाठो, सोको नाम अब्भतीतं अतिक्कन्तं निरुद्धं अत्थङ्गतं पुन नाहरति,* जा. अट्ठ. 3.145.

अब्भत्त त्रि., अभि + √अञ्ज का भू. क. कृ. [अभ्यक्त], वह, जिसका उबटन किया गया है या जिसके शरीर पर तेल की मालिश की गयी है - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *कुच्छिसञ्ञमनब्भत्तोति कुच्छिसंयमसङ्खातेन मितभोजनमयेन तेलेन अब्भत्तो,* जा. अट्ठ. 7.143.

अब्भत्थं अ., क्रि. वि., **केवल 'गच्छति' के साथ ही प्रयुक्त** [अभ्यस्त], **शा. अ.** घर की ओर जाता है, **ला. अ.** अस्त हो जाता है, डूब जाता है, क्षीण हो जाता है, अदृश्य हो जाता है - *भिक्खवे, पटिसञ्चिक्खतो अब्भत्थं गच्छति,* म. नि. 1.163; *अब्भत्थं गच्छतीति खयं नत्थिभावं गच्छति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).395; *एवं अकुसलापि धम्मा एकलक्खत्ता पहानं अब्भत्थं गच्छन्ति,* नेत्ति. 28; - **गत** त्रि., अस्त हो चुका, समाप्त हो चुका, डूब चुका, क्षीण हो चुका, शान्त हो चुका - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सन्तो निरुद्धो अत्थंगतो अब्भत्थंगतो ति आदीनि पयोगानि,* सद्द. 1.178; *निरुद्ध निरोधेति, विगतं विगमेति, खीणं खेपेति, अत्थङ्गतं अत्थङ्गमेति, अब्भत्थङ्गतं अब्भत्थङ्गमेतीति?,* कथा. 464; *इमम्हि लोके विनीता होन्ति पटिविनीता सत्ता समिता वूपसत्ता अत्थङ्गता अब्भत्थङ्गता अप्पिता ब्यप्पिता सोसिता विसोसिता ब्यन्तीकता,* विभ. 219; ध. स. अट्ठ. 214.

अब्भत्थता स्त्री., अब्भत्थ का भाव [अभ्यस्तता], अदृश्यता, विलुप्तता, मृत्यु - **तं** द्वि. वि., ए. व. - *अभुत्तपरिभोगेन, सब्बे अब्भत्थतं गता, ... अब्भत्थतं गताति सब्बे मरणमेव पत्ता,* जा. अट्ठ. 5.466.

अब्भनुजानाति अभि + अनु + √ञा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्यनुजानाति], किसी के बारे में सहमत होता है, किसी के साथ सहमति रखता है, बात को स्वीकार करता है - *किं पनायस्मा सारिपुत्तो एकच्चं अब्भनुजानाति, एकच्चं न अब्भनुजानाती'ति,* दी. नि. 3.84-85; *किं पन, ब्राह्मण, सब्बो लोको ब्राह्मणानं एतदब्भनुजानाति – इमा चतस्सो पारिचरिया पञ्ञपेन्तू'ति,* म. नि. 2.395; *किं पनानन्द, पूरणस्स कस्सपस्स सब्बो लोको एतदब्भनुजानाति इमा छळभिजातियो पञ्ञापेतु'न्ति,* अ. नि. 2(2).93.

अब्भनुमोदति अभि + अनु + √मुद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्यनुमोदति], अनुमोदन करता है, धन्यवाद देते हुए

हर्षपूर्वक किसी की बात को स्वीकार करता है, 'साधु, साधु' कहते हुए समर्थन करता है, प्रशंसा करता है – *कस्मा पन भवं कूटदन्तो समणस्स गोतमस्स सुभासितं सुभासिततो नाब्भनुमोदती'ति?*, दी॰ नि॰ 1.127; *यस्स विञ्ञू सब्रह्मचारी सत्थु सम्मुखा अनुमस्स अनुमसस वण्णं भासन्ति, तञ्च सत्थ अब्भनुमोदति*, म॰ नि॰ 1.201; **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *किं पन त्वं, सम्म अभय, आयस्मतो आनन्दस्स सुभासितं सुभासिततो नाब्भनुमोदसी'ति?*, अ॰ नि॰ 1(1).252; – **देन्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अनुमोदन करते हुए – *अथस्स भगवा सरभञ्ञपरियोसाने अब्भनुमोदेन्तो – साधु साधु, भिक्खू'ति साधुकारं अदासि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.340; – **मानो** उपरिवत् *भगवतो धम्मदेसनं अब्भनुमोदमानो भगवन्तं एतदवोच*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.122; – **देय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मुद्धापि तस्स विपतेय्य, यो समणस्स गोतमस्स सुभासितं सुभासिततो नाब्भनुमोदेय्य*, दी॰ नि॰ 1.127; – **मोदि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अथ खो भगवा आयस्मतो सोणस्स सरभञ्ञपरियोसाने अब्भानुमोदि*, महाव॰ 270; **दिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आयस्मतो आनन्दस्स सुभासितं सुभासिततो नाब्भनुमोदिस्सामि*, अ॰ नि॰ 1(1).252; – **दित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *अथस्स भगवा ... तं तं वचनं सम्पटिच्छित्वा अब्भनुमोदित्वा ...*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).120.

अब्भनुमोदन नपुं॰, अभि + अनु + √मुद से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभ्यनुमोदन], समर्थन, आनन्द से परिपूर्ण अनुमोदन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परेहि दिन्नाय पत्तिया व अञ्ञाय वा पुञ्ञकिरियाय साधु साधू'ति अनुमोदनवसेन अब्भनुमोदनं वेदितब्बं*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 203; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भनुमोदने हि अयमिध अभिक्कन्तसद्दो ... यस्मा च अब्भनुमोदनत्थे, तस्मा साधु साधु भो गोतमाति वुत्तं होतीति वेदितब्बं*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.122; – **ना** स्त्री॰, उपरिवत् – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मही व पुत्तदानम्हि दिन्नस्सब्भनुमोदना*, सद्धम्मो॰ 218.

अब्भनुमोदित त्रि॰, अभि + अनु + √मुद का भू॰ क॰ कृ॰ [अभ्यनुमोदित], अनुमोदित, समर्थित, वह, जिसकी स्वीकृति या पुष्टि कर दी गई है – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं सब्बेहि पि तेहि पुब्बाचरियेहि अब्भनुमोदिता अप्पटिकोसिता*, सद्द॰ 1.57.

अब्भन्तर[1] नपुं॰, [अभ्यन्तर], **शा॰ अ॰** मध्यवर्ती क्षेत्र, बीच वाला स्थान, भीतरी क्षेत्र, अन्तराल – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्निवेसो च सण्ठानं, अथाब्भन्तरमन्तरं*, अभि॰ प॰ 771; *गब्भसेय्यकानं मातुकुच्छितो निक्खमनकाले पठमं अब्भन्तरवातो बहि निक्खमति*, सद्द॰ 2.399; **ला॰ अ॰** 1. भीतर स्थित हृदय, मन या चित्त – *अब्भन्तरं ते गहनं, बाहिरं परिमज्जसि*, ध॰ प॰ 394; *अब्भन्तरन्ति अब्भन्तरम्हि ते रागादिकिलेसगहनं*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.373; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भन्तरे पीति उप्पज्जि*, जा॰ अट्ठ॰ 6.12; **2. 28 ला॰ अ॰** 2. हाथों की बराबरी वाली माप की इकाई – *सत्तब्भन्तराति एत्थ एकं अब्भन्तरं अट्ठवीसति हत्थं होति*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.213; *परसतो अब्भन्तरं न विजहितब्बं*, पारा॰ 310; *अब्भन्तरं तु हत्थानट्ठवीसप्पमाणतो*, अभि॰ प॰ 197; *अरञ्ञे समन्ता सत्तब्भन्तरा, अयं तत्थ समासंवासा एवुपोसथा*, महाव॰ 139; *तत्थ एकं अब्भन्तरं अट्ठवीसति हत्थप्पमाणं होति, मज्झे ठितस्स समन्ता सत्तब्भन्तरा विनिब्बेधेन चुद्दस होन्ति*, महाव॰ अट्ठ॰ 315.

अब्भन्तर[2] त्रि॰, [आभ्यन्तर], **शा॰ अ॰** भीतरी, अन्दर में विद्यमान – **रानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वज्जी यानि तानि वज्जीनं वज्जिचेतियानि अब्भन्तरानि चेव बाहिरानि च*, दी॰ नि॰ 2.58; *अब्भन्तरानीति अन्तोनगरे ठितानि*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स पन अब्भन्तरस्स वा बाहिरस्स वा ञाणसम्पन्नो मूलवधाय परक्कमतीति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.183; **ला॰ अ॰ क.** घर के भीतर रहने वाला, अपना निजी व्यक्ति, विश्वासपात्र व्यक्ति – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रञ्ञो अन्तेपुरे अब्भन्तरा गुय्हमन्ता बहिद्धा सम्भेदं गच्छन्ति*, पाचि॰ 211; *त्वं मेसि माता च पिता अळार, अब्भन्तरो पाणददो सहायो*, जा॰ अट्ठ॰ 5.161; ... *अब्भन्तरोति हदयमंससदिसो*, जा॰ अट्ठ॰ 5.162; *सासनस्स दायादो होमि, न होमीति सासनस्स ञातको अब्भन्तरो होमि, न होमीति अत्थो*, पारा॰ अट्ठ॰ टी॰ 1.120; **ला॰ अ॰ ख.** अनेक भीतरी लोगों में से एक, अन्यतर – ... *असीतिया महाथेरानं अब्भन्तरो अहोसि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.454; – **अम्ब** पु॰, कर्म॰ स॰ [आभ्यन्तराम्र], देवताओं का वह आम्रवृक्ष, जिसे हिमालय के भीतरी प्रदेश में लगाया गया था – **म्बं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाहं देव अब्भन्तरअम्बं जानामि*, जा॰ अट्ठ॰ 2.325; **म्बस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भन्तरअम्बस्स अत्थिभावं जानाथा'ति पुच्छि, ब्राह्मणा आहंसु – देव अब्भन्तरअम्बो नाम देवतानपरिभोगो*, जा॰ अट्ठ॰ 2.326; – **अम्बपक्के** नपुं॰, कर्म॰ स॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰, पके हुए देवों के आम्रवृक्ष के फल में – *सामि, अम्हाकं रञ्ञो देविया अब्भन्तरअम्बपक्के दोहळो उप्पन्नो*, जा॰ अट्ठ॰ 2.328; – **अम्बफलं** नपुं॰, तत्पु॰

स., प्र. वि., ए. व., देवों के आम्र-वृक्ष का फल - *अब्भन्तरअम्बफलं देवा'ति,* जा. अट्ठ. 2.325.

अब्भन्तर³ नपुं., [अभ्रान्तर], मेघों के बीच वाला अन्तराल - **रे** सप्त. वि., ए. व. - *तदा जिनसासनं अब्भन्तरे चन्दो विय अति परिसुद्धं न अहोसि,* सा. वं. 109(ना.).

अब्भन्तरं अ., क्रि. वि. [अभ्यन्तरं], आन्तरिक रूप में, भीतर में, भीतरी तौर पर - *अब्भन्तरं पुरे आसि, ततो मज्झे ततो बहि, ... अब्भन्तरन्ति पठमं मम अब्भन्तरं आसनं आसि,* जा. अट्ठ. 5.211-222; *अन्तरन्ति अब्भन्तरं,* दी. नि. अट्ठ. 1.241.

अब्भन्तर-गत त्रि., तत्पु. स. [अभ्यन्तरगत], भीतर गया हुआ, आन्तरिक रूप में विद्यमान - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अब्भन्तरगतो अवेक्खति, बहिद्धा निक्खमित्वा अवेक्खतीति? अब्भन्तरगतो अवेक्खतीति,* कथा. 64; *तत्थ अब्भन्तरगतोति रूपस्स अन्तोगतो, इतो वा एत्तो वा अनिक्खमित्वा रूपपरिच्छेदवसेनेव ठितो हुत्वाति अत्थो,* कथा. अट्ठ. 133; - **ता** ब. व. - *एकविमानब्भन्तरगता द्वे महाब्रह्मानो विय, एकस्मिं गगनट्ठाने ठितानि द्वे चन्दमण्डलानि विय,* उदा. अट्ठ. 198.

अब्भन्तर-जातक नपुं., एक जातक का शीर्षक, जा. अट्ठ. 2.323-328.

अब्भन्तरदाह पु., तत्पु. स. [आभ्यन्तरदाह], भीतर में जलन, मन में जलन, आन्तरिक दाह - **हो** प्र. वि., ए. व. - *अन्तोदाहोति अब्भन्तरदाहो,* महानि. अट्ठ. 201.

अब्भन्तरधातुप्पकोप पु., तत्पु. स. [आभ्यन्तरधातुप्रकोप], शरीर के भीतर की धातुओं की गड़बड़ी, आन्तरिक अङ्गों में उत्पात - *अब्भन्तरधातुप्पकोपवसेन वा सीतं होति ... अब्भन्तरधातुप्पकोपवसेन वा उण्हं होति,* महानि. 367; *अब्भन्तरधातुपकोपवसेन वाति सरीरब्भन्तरे आपो धातुक्खोभवसेन वा अञ्ञधातुक्खोभवसेन वा,* महानि. अट्ठ. 373.

अब्भन्तरभूत त्रि., [आभ्यन्तरभूत], अन्तर्गत आने वाला, किसी वर्ग या समूह के अन्दर स्थित - **ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *अन्तरट्ठके हिमपातसमयेति हेमन्तस्स उतुनो अब्भन्तरभूते माघमासस्स अवसाने चत्तारो फग्गुणमासस्स आदिम्हि चत्तारोति अट्ठदिवसपरिमाणे हिमस्स पतनकाले,* उदा. अट्ठ. 59.

अब्भन्तरमण्डल नपुं., कर्म. स. [आभ्यन्तरमण्डल], भीतरी घेरा - **लं** प्र. वि., ए. व. - *अन्तिममण्डलन्ति अब्भन्तरमण्डलं,* पारा. अट्ठ. वजिर. टी. 56.

अब्भन्तरमातिका स्त्री., धातु. के अन्तर्गत आए हुए विषयों की विस्तृत सूची - *तत्थ मातिका उद्देसो सा पञ्चविधा - नयमातिका, अब्भन्तरमातिका नयमुखमातिका, लक्खणमातिका, बाहिरमातिकाति,* धातु. अट्ठ. 2; ... *अयं पञ्चवीसाधिकेन पदसतेन निक्खित्ता अब्भन्तरमातिका नाम,* तदे.

अब्भन्तरवग्ग पु., जातक के एक खण्ड का शीर्षक, जा. अट्ठ. 2.323-355.

अब्भन्तरवात पु., तत्पु. स. [आभ्यन्तरवात], भीतर की वायु - **तो** प्र. वि., ए. व. - ... *गब्भसेय्यकानं मातुकुच्छितो निक्खमनकाले पठमं अब्भन्तरवातो बहि निक्खमति पच्छा बाहिरवातो ...,* सद्द. 2.399.

अब्भन्तरसीमा स्त्री., कर्म. स. [आभ्यन्तरसीमा], भीतरी सीमा, 15 प्रकार की सीमाओं में नौवीं सीमा, 28 हाथों की माप वाली सीमा - **मा** प्र. वि., ए. व. - *सीमाय देतीति एत्थ ताव खण्डसीमा, ..., अब्भन्तरसीमा, ..., चक्कवाळसीमाति पन्नरस सीमा वेदितब्बा,* महाव. अट्ठ. 392.

अब्भन्तरापस्सय त्रि., ब. स. [आभ्यन्तरपश्रय], हृदय के अन्दर विद्यमान, अन्दर विद्यमान - **स्सयं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *को मे असत्थो अवणो, सल्लमब्भन्तरपस्सयं,* थेरगा. 757; *अब्भन्तरपस्सयन्ति अब्भन्तरसङ्खातं हदयं निस्साय ठितं,* थेरगा. अट्ठ. 2.242; पाठा. अब्भन्तरपस्सयं.

अब्भन्तरिक त्रि., [आभ्यन्तरिक], भीतरी, अत्यन्त घनिष्ट या समीपी, विश्वस्त, भरोसेमन्द - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *सो किर रञ्ञो सब्बत्थसाधको अमच्चो अब्भन्तरिको अतिविस्सासिको ... सहायो,* जा. अट्ठ. 1.94; - **का** तदेव, ब. व. - *अब्भन्तरिका तरुणदारका जानिस्सन्ती'ति उप्पन्नानि कम्मानि न करिस्सन्ति,* जा. अट्ठ. 1.323; विलो. बाहिरक.

अब्भन्तरिम त्रि., [अभ्यन्तरिम], **शा. अ.** भीतरी, अन्दर वाला, भीतर में स्थित - **मेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. - *तिरियं सत्तन्तराति अब्भन्तरिमेन मानेन,* पारा. 229; *अब्भन्तरिमेन मानेना'ति, कुट्टस्स ... अब्भन्तरिमेन अन्तेन ... वुत्तं होति,* पारा. अट्ठ. 2.40; - **मा** पु., प्र. वि., ब. व. - *न अब्भन्तरिमा बहि निक्खमन्ति, न बाहिरा अन्तो पविसन्ति,* जा. अट्ठ. 5. 77; **ला. अ.** अत्यन्त निकटवर्ती या घनिष्ट - **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अहं तं ... विस्सासिकं अब्भन्तरिकं करिस्सामीति* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).300; - **मन्त** पु., कर्म. स. [आभ्यन्तरिमान्त], भीतर वाला किनारा या क्षेत्र - **मन्ते** सप्त. वि., ए. व. - *अब्भन्तरिमन्ते पञ्ञासससहस्सगघनिका,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).27.

अब्भन्तरे अ., क्रि. वि., अब्भन्तर (1) का सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., **क.** अन्दर में, भीतर में, चित्त के अन्दर, हृदय में - *अब्भन्तरे वातो जीवो ... निक्खमति च,* मि. प. 27; 244; *अब्भन्तरे अत्ता नाम ... नत्थि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).272; *अब्भन्तरे रागादीनं उपसन्तताय,* ध. प. अट्ठ. 2; **ख.** ष. वि. में अन्त होने वाले नाम के पश्चात् प्रयुक्त, बीच में, के साथ, में से एक - *तस्सेवं ... ञातिसङ्घस्स अब्भन्तरे अयं तथा उदपादि,* जा. अट्ठ. 1.68; *अभिक्खुके ... भिक्खुनुपस्सयतो अड्ढयोजनब्भन्तरे ओवाददायका ... न वसन्ति,* पाचि. अट्ठ. 51; *तस्सा पुब्बे ... पविट्ठमत्ताय उम्भारब्भन्तरे सकलसरीरं उग्घाटितवच्चकुटि विय दुग्गन्धं जातं,* अ. नि. अट्ठ. 1.134.

अब्भाकुटिक / अभ्भाकुटिक त्रि., भाकुटिक का निषे. [अभ्राकुटिक], भौंहे नहीं तानने वाला, अहंकार-रहित, दर्परहित, विनम्र - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *गोतमो एहिस्वागतवादी सखिलो सम्मोदको अब्भाकुटिको उत्तानमुखो पुब्बभासी,* दी. नि. 1.102; *अब्भाकुटिकोति यथा एकच्चे परिसं पत्वा थद्धमुखा सङ्कुटितमुखा होन्ति, न एदिसो, परिसदस्सनेन ... होति,* दी. नि. अट्ठ. 1.231; *समणो किर गोतमो अब्भाकुटिको उत्तानमुखो सुखसम्भासो पटिसन्थारकुसलो,* ध. प. अट्ठ. 2.286; - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *अम्हाकं ... सण्हा ... एहिस्वागतवादिनो अब्भाकुटिका उत्तानमुखा पुब्बभासिनो,* पारा. 282; *अब्भाकुटिका ति इमिना भाकुटिकभाकुटिकाकारस्स अभावो दस्सितो,* पारा. अट्ठ. 2. 187.

अब्भागत त्रि., अभि + आ + √गम का भू. क. कृ. [अभ्यागत], **शा. अ.** अपनी ओर आया हुआ, **ला. अ.** अतिथि, आगन्तुक - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *निक्खन्ता अब्भागता, सब्बेपि ते तं ... भोजनं न लभिंसु,* मि. प. 155; - **ते** पु., द्वि. वि., ब. व. - *ते ... पूजेस्साम अब्भागते च आसनोदकेन पटिपूजेस्सामा ति,* अ. नि. 2(1).33; *अब्भागतेति अत्तनो सन्तिकं आगते,* अ. नि. अट्ठ. 1.18; - **तानं** पु., ष. वि., ब. व. - *समण ब्राह्मणानं पन अब्भागतानं आसनं दत्वा पादधोवनञ्च दातब्बं,* अ. नि. अट्ठ. 1.19; *अहं मनुस्सेसु मनुस्सभूता, अब्भागतानासनकं अदासिं,* वि. व. 5; *अब्भागतानन्ति अभिआगतानं, सम्पत्तआगन्तुकानन्ति अत्थो,* वि. व. अट्ठ. 18.

अब्भागमन नपुं., अभि + आ + √गम से व्यु., क्रि. ना. [अभ्यागमन], **शा. अ.** अपनी ओर किसी का आना, आ पहुंचना, आगमन - **नं** प्र. वि., ए. व. - *कच्चित्थ, भोन्तो कुसलं अनामयं, चिरस्समब्भागमनञ्हि इधा ति,* जा. अट्ठ. 3.466; *चिरस्समब्भागमनञ्हि वो इधाति अज्ज तुम्हाकं इध अब्भागमनञ्च चिरं जातं,* तदे.; *भिक्खुसङ्घस्स अब्भागमनं आरोचेसी ति,* अ. नि. 2(2).208; **ला. अ.** मैथुन-कर्म हेतु सम्पर्क - *पुरिसस्स वा अब्भागमनं सादियेय्य,* पाचि. 297.

अब्भाघातनिस्सित त्रि., अभि + आ + √हन से व्यु., अब्भाघात + निस्सित का तत्पु. स. [अभ्याघातनिःश्रित], वधस्थल में स्थित - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *पुब्बण्णनिस्सितं वा होति, अपरण्णनिस्सितं वा होति, अब्भाघातनिस्सितं वा होति,* पारा. 231; *एत्थ पन अब्भाघातन्ति कारणाघरं, वेरिघरं,* पारा. अट्ठ. 2.141.

अब्भाचिक्खति अभि + आ + √चिक्ख का वर्त., प्र. वि., ए. व. [अभ्याचष्टे], आरोप लगाता है, किसी बात को अनुचित रूप में प्रस्तुत करता है - *अत्तनादुग्गहितेन अम्हे येव अब्भाचिक्खति,* पारा. अट्ठ. 1.20; *अब्भचिक्खतीति अम्हाकञ्च अब्भाचिक्खनं करोति,* पारा. टी. 1.80; - **सि** म. पु., ब. व. - *अत्तना दुग्गहितेन अम्हे चेव अब्भाचिक्खसि,* म. नि. 1.185; - **क्खामि** उ. पु., ए. व. - *न च भगवन्तं अभूतेन अब्भाचिक्खामि,* म. नि. 3.179; - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *न च भवन्तं गोतमं अभूतेन अब्भाचिक्खन्ति, धम्मस्स चानुधम्मं ब्याकरोन्ति,* दी. नि. 1.146; *एवंवादिं खो मं ... एके समणब्राह्मणा असता तुच्छा मुसा अभूतेन अब्भाचिक्खन्ति,* दी. नि. 3.25; *अब्भाचिक्खन्तीति अभिआचिक्खन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 3.13; - **न्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व., दोषारोपण करने वाला - *तत्थ अभूतवादीति ... मुसावादं कत्वा तुच्छेन परं अब्भाचिक्खन्तो,* ध. प. अट्ठ. 2.272; - **न्ता** उपरिवत्, ब. स. - *न च ... भगवन्तं ... अभूतेन अब्भाचिक्खन्ता,* महाव. 314; - **क्खेय्याथ** विधि., म. पु., ब. व. - *न च भगवन्तं अभूतेन अब्भाचिक्खेय्याथ,* स. नि. 2(1).6; - **क्खेय्याम** विधि., उ. पु., ब. व. - *न च भगवन्तं अभूतेन अब्भाचिक्खेय्याम,* म. नि. 2.158; - **क्खन्तेसु** पु., वर्त. कृ., सप्त. वि., ब. व. - *यस्मा इमे ... फरुसाहि वाचाहि अब्भाचिक्खन्तेसुपि ... दस्सेन्ति,* उदा. अट्ठ. 211; - **क्खि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - ..., *अब्भाचिक्खि अभूतेन,* उदा. अट्ठ. 214; - **क्खिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *पच्चेकबुद्धं सुरभिं, अब्भाचिक्खिं अदूसकं,* अप. 1.328; - **क्खितो** पु., भू. क. कृ., प्र. वि., ए. व. - *अयञ्च मे अभूतेन अब्भाचिक्खितो,* ध. प. अट्ठ. 2.66.

अब्भाचिक्खन नपुं., अभि + आ + √चिक्ख से व्यु., क्रि. ना. [अभ्याख्यान], मिथ्या दोषारोपण – **नं** प्र. वि., ए. व. – *न युत्तं बुद्धादीनं गरूनं अब्भाचिक्खनं,* सद्द. 1.95; – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *येपि च ... अभूतेन अब्भाचिक्खणेन ... पुथुज्जना,* उदा. अट्ठ. 351.

अब्भादिउपक्किलेसरहित / अब्भादिमलविरहित त्रि., तत्पु. स., निष्कलङ्क, बेदाग, विशुद्ध, मलरहित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *विसुद्धन्ति अब्भादिउपक्किलेसरहितं,* सु. नि. अट्ठ. 2.187; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *विमलोति अब्भादिमलविरहितो,* जा. अट्ठ. 5.57.

अब्भान नपुं., *विनय का पारिभाषिक शब्द* [बौ. सं. आह्वान], **शा. अ.** वापस बुलाना, आमन्त्रण, **विनय के सन्दर्भ में**, सङ्घ से निष्कासित भिक्षु को सङ्घ में पुनः प्रवेश देने वाला सङ्घकर्म, जिस भिक्षु ने सङ्घादिसेस के अन्तर्गत आने वाला कोई भी अपराध कर 6 रातों तक मानत्त नामक प्रायश्चित पूरा किया है, उसे सङ्घ में पुनः प्रवेश का कर्म ही अब्भान है – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *मज्झिमेसु जनपदेसु उपसम्पदं अब्भानं, ..., ठपेत्वा एकं कम्मं – अब्भानं,* महाव. 416; ... *पातिमोक्खं ... अब्भानं पञ्ञत्तं,* अ. नि. 1(1).119; *चिण्णमानत्तस्स अब्भानं पञ्ञत्तं,* अ. नि. अट्ठ. 2.69; – **स्स** च. वि., ए. व. – ... *मानत्तदानस्स ... अब्भानस्स ...,* परि. 272; – **कम्म** नपुं., तत्पु. स. [आह्वानकर्मन्], भिक्षु को सङ्घ में पुनः वापस बुलाने का सङ्घ का विधान – *ततो परं सब्बा अन्तरापत्तियो योजेत्वा अब्भानकम्मं दस्सितं,* परि. 33; *अब्भानकम्मवसेन ओसारेतब्बोति वुत्तं होति,* पारा. अट्ठ. 2.193; – **सञ्ञित** त्रि., अब्भान नाम वाला (संघकर्म) – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *उपसम्पदककम्मञ्च, कम्ममब्भानसञ्ञितं,* विन. वि. 3010; – **नारह** त्रि., [आह्वानार्ह], संघ में पुनः वापस बुलाए जाने योग्य – **हो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सचे उपज्झायो अब्भानारहो होति,* महाव. 55; 59; – **हं** तदेव, द्वि. वि., ए. व. – ... *अब्भानारहं उपसम्पादेति,* महाव. 424; – **हेन** तदेव, तृ. वि., ए. व. – *अब्भानारहेन भिक्खुना सद्धिं एकच्छन्ने आवासे वत्थब्बं,* चूळव. 82; – **हा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अब्भानारहा भिक्खू सादियिस्सन्ति पकतत्तानं भिक्खूनं अभिवादनं पच्चुट्ठानं,* चूळव. 95; – **चतुत्थ** त्रि., कर्म. स. [आह्वानार्हचतुर्थ], चौथी बार संघ में पुनः प्रवेश देने योग्य – **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अब्भानारहचतुत्थो चे ..., परिवासं ददेय्य, ... अकम्मं न च करणीयं,* महाव. 418.

अब्भामत्त त्रि., ब. स. [अभ्रमात्र], वह, जिसकी मात्रा महामेघ के समान हो, अत्यधिक मात्रा वाला – **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *वालग्गमत्तं पापस्स, अब्भामत्तंव खायती'ति,* स. नि. 1(1).237; *अब्भामत्तं वाति वलाहककूटमत्तं विय,* स. नि. अट्ठ. 1.262; *अब्भामत्तं खायतीति महामेघप्पमाणं हुत्वा उपट्ठाति,* जा. अट्ठ. 3.270.

अब्भास पु., [अभ्यास], **क.** पुनरावृत्ति, बार-बार दोहराना – **से** सप्त. वि., ए. व. – *मन अब्भासे,* सद्द. 2.397; **ख. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में**, किसी धातु के द्वित्व किए गए वर्णों का प्रथम वर्ण – **से** सप्त. वि., ए. व. – *अब्भासे वत्तमानो सरो रस्सो होति,* सद्द. 3.826; **सञ्ञ** त्रि., ब. स. [अभ्याससंज्ञक], वह, जिसकी संज्ञा 'अभ्यास' हो – **ञ्ञो** पु., प्र. वि., ए. व. – *द्वेभूतस्स धातुस्स यो पुब्बो सो अब्भाससञ्ञो होति, दधाति, ददाति, बभूव,* क. व्या. 461.

अब्भाहत त्रि., अभि + आ + √हन का भू. क. कृ. [अभ्याहत], बुरी तरह से पीटा गया, अभिभूत, दुर्गतिग्रस्त, विपत्तिग्रस्त – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एवमब्भाहतो लोको, मच्चुना, मच्चुना च जराय च,* सु. नि. 586; *यत्थाति अभिवेगब्भाहतो विचरन्तो यम्हि पदेसे पतिट्ठं लभति,* जा. अट्ठ. 6.267; – **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *जराय अनुसटं, मरणेन अब्भाहतं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.221; – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *इमिना पन अब्भाहता सन्तो न कम्पन्ति न पवेधेन्ति,* जा. अट्ठ. 2.159.

अब्भित त्रि., वापस बुलाया गया, पुनः प्रवेश-प्राप्त, पुनर्वास को प्राप्त – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अब्भेय्य विधिना भिक्खु, पकतत्तो पुनब्भितो,* विन. वि. 538; *अनब्भितोति न अब्भितो,* पारा. अट्ठ. 2.193.

अब्भिद त्रि., √भिद के सं. कृ. का निषे. [अभेद्य], नहीं टूटने या काटने योग्य, नष्ट न होने योग्य – **दं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सीलमाभरणं सेट्ठं, सीलं कवचमब्भुतं,* थेरगा. 614; *सपाणपरित्तानतो कवचमब्भिदं,* थेरगा. अट्ठ. 2.188; पाठा. अब्भुतं.

अब्भिदा √भिद के अद्य. का प्र. पु., ए. व., तोड़ दिया, नष्ट कर दिया – *मकसं वधिस्स'न्ति हि एळमूगो, पुत्तो पितु अब्भिदा उत्तमङ्ग'न्ति,* जा. अट्ठ. 1.241; *यत्थब्भिदा गरुळो उत्तमङ्ग'न्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.84.

अब्भीरित त्रि., अभि + √ईर का भू. क. कृ. [अभीरित], कहा हुआ, उच्चारित, कथित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *वा ति कस्मा? अब्भीरितं, अज्झिणमुत्तो,* क. व्या. 46.

अब्भुक्किरण नपुं., अभि + उ + √किर से व्यु. [अभ्युत्किरण], छिड़काव, पानी का छिड़काव, पवित्रीकरण की क्रिया – *सज विसग्गपरिसज्जनब्भु क्करणेसु, सजति, लोक्यं सजन्तं उदकं,* सद्द. 2.348.

अब्भुक्किरति अभि + उ + √किर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्युत्किरति], छिड़कता है, छिड़काव करता है – *दक्खिणेन हत्थेन चक्करतनं अब्भुक्किरति,* म. नि. 3.211; *अत्तनो उपरि सीसे सजन्तं अब्भुकिरति,* जा. अट्ठ. 7.51; – **रि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *पुन उदकं गहेत्वा दक्खिणाय पच्छिमाय उत्तरायाति एवं चतूसु दिसासु अब्भुक्किरि,* पे. व. अट्ठ. 64.

अब्भुग्गच्छति अभि + उ √गम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्युद्गच्छति], **क.** चारों ओर फैलता है, जहां-तहां फैलता है, ऊपर की ओर उठ जाता है – *दुस्सीलस्स सीलविपन्नस्स पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति,* महाव. 303; – **च्छेय्य** विधि., प्र. वि., ए. व. – *कस्स नु खो कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छेय्य यो वा सो पुरिसो अस्सद्धो मच्छरी कदरियो परिभासको,* अ. नि. 2(2).220; – **च्छि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *गहपतनिया अपरेन समयेन एवं पापको कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छि चण्डी वेदेहिका गहपतानीति,* म. नि. 1.178; – **हेत्वा** पू. का. कृ. – *सोण्डाय भिसमुळालं अब्भुहेत्वा न सुविक्खालितं विक्खालेत्वा ...,* स. नि. 1(2).245; **ख.** समीप जाता है, भेंट करने जाता है – **गञ्छि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *पञ्चहि सेट्ठिसतेहि सद्धिं भगवन्तं अब्भुग्गञ्छि,* जा. अट्ठ. 1.102.

अब्भुग्गत त्रि., भू. क. कृ. [अभ्युद्गत], ऊपर की ओर उठा हुआ, आगे गया हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तं खो पन भवन्तं गोतमं कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो,* पारा. 1; *कतत्ता बोधिसत्तस्स कित्तिसद्दो दससहस्सिया लोकधातुया सदेवमनुस्सेसु अब्भुग्गतो,* मि. प. 257; – **तानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *कथं अब्भुग्गतानीति न चिन्तेतब्बं,* जा. अट्ठ. 1.70; – **त्त** नपुं., भाव., ऊपर की ओर उठ जाना, समुन्नत हो जाना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *पीतिमा पन पुग्गलो कायचित्तानं उग्गतत्ता अब्भुग्गतत्ता उदग्गोति वुच्चति,* ध. स. अट्ठ. 188.

अब्भुज्जलन नपुं., अभि + उ + √जल से व्यु., क्रि. ना. [अभ्युज्ज्वलन], **शा. अ.** ऊपर की ओर आग का जलना, **ला. अ.** ऐन्द्रजालिक प्रक्रिया के द्वारा मुख से अग्निज्वाला को निकालना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *अब्भुज्जलनन्ति मन्तेन मुखतो अग्गिजालानीहरणं,* दी. नि. अट्ठ. 1.10.

अब्भुट्ठाति अभि + उ + √ठा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्युत्तिष्ठति], आगे की ओर जाने के लिये बढ़ता है, आगे जाने के लिये समुद्यत होता है – **ट्ठासि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *भगवा विहारा निक्खम्म चङ्कमं अब्भुट्ठासि,* दी. नि. 1.92.

अब्भुट्ठित त्रि., अभि + उ + √ठा का भू. क. कृ. [अभ्युत्थित], ऊपर की ओर उठ रहा, बादल के समान ऊपर की ओर उठता हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अब्भुट्ठितोव सो याति, स गच्छं न निवत्तति,* जा. अट्ठ. 4.446; *अब्भुट्ठितोव सो यातीति सो माणवो यथा नाम वलाहकसङ्खातो अब्भो उट्ठितो निब्बत्तो,* जा. अट्ठ. 4.449.

अब्भुण्ह त्रि., [अभ्युष्ण], अधिक गर्म, ताजा, अपनी उष्णता को सुरक्षित रखने वाला – **ण्हं** नपुं., प्र. वि., ए. व. *पच्चग्घन्ति अब्भुण्हं अपरिवासिकं,* जा. अट्ठ. 2.360; – **ण्हे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *अभिन्ने सरीरेति अब्भुण्हे अल्लसरीरे पंसुकूलं न गहेतब्बं,* पारा. अट्ठ. 1.302.

अब्भुत[1] त्रि., [अद्भुत], **क.** विस्मयकारी, आश्चर्यजनक, अभूतपूर्व, अलौकिक – *विम्हयेच्छरियाब्भुता,* अभि. प. 736; *अब्भुतोच्छरिये तीसु पणे चेवाब्भुतो पुमे,* अभि. प. 1023; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अच्छरियं, वत भो, अब्भुतं, वत भो, ...,* दी. नि. 1.53; उदा. 86; *अभूतपुब्बं भूतन्ति अब्भुतं,* उदा. अट्ठ. 101; – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *अट्ठिमे, भिक्खवे, महासमुद्दे अच्छरिया अब्भुता धम्मा, ...,* उदा. 128; **ख.** पु., नाट्य या काव्य के नौ रसों में एक, अद्भुत रस – *सिङ्गारो करुणो वीरब्भुतहस्सभयानका, सन्तो बीभच्छरुद्दानि नव नाट्यरसा इमे,* अभि. प. 102; सुबोधा. 353; **ग.** नपुं., आश्चर्य, विस्मय, इन्द्रजाल, ऋद्धि का चमत्कार – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *तस्मिं ठाने कता साला पकासेतुं तमब्भुतं,* म. वं. 19.27; **घ.** बुद्धवचनों के नवाङ्ग-विभाजन का एक अङ्ग, ऋद्धि चमत्कारों अथवा अलौकिक बातों का उल्लेख करने वाले बुद्धवचन – ... *जातकब्भुतवेदल्लं नवङ्गं सत्थुसासनं,* दी. वं. 4.20; **ङ.** नपुं., निर्वाण का सङ्केतक पद – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *अब्भुतञ्च वो, भिक्खवे, देसेस्सामि अब्भुतगामिञ्च मग्गं,* स. नि. 2(2).342; – **गामी** त्रि., [अद्भुतगामिन्], अलौकिक अथवा पूर्व में अप्राप्त निर्वाण-पद की ओर ले जाने वाला (मार्ग) – **मिं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अब्भुतञ्च वो, भिक्खवे, देसेस्सामि अब्भुतगामिञ्च मग्गं,* स. नि. 2(2).342; – **चित्तजात** त्रि., आश्चर्यचकित, अभूतपूर्व सन्तुष्टिभाव से युक्त, – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सा*

परिसा अब्भुतचित्तजाता अहोसि, स. नि. 1(1).207; *अब्भुतचित्तजाताति अभूतपुब्बसन्तुट्ठिया समन्नागता,* स. नि. अट्ठ. 1.232; - **धम्म¹** पु., कर्म. स. [अद्भुतधर्म], आश्चर्यजनक धर्म, उत्तम एवं प्रणीत धर्म - **म्मं** द्वि. वि., ए. व. - ... *भन्ते, भगवतो अच्छरियं अब्भुतधम्मं धारेमि,* म. नि. 3.162; - **म्मेन** तृ. वि., ए. व. - *यदा मम भाता महन्तेन अब्भुतधम्मेन समन्नागतो विज्जाधरो ...,* जा. अट्ठ. 3.401; - **धम्म²** नपुं., विषय एवं शैली के आधार पर बुद्धवचनों का विभाजन करने वाले नौ अङ्गों में से एक, आश्चर्य, ऋद्धिप्रातिहार्य एवं लोकोत्तर तत्त्वों से भरपूर बुद्धवचन - **म्मं** प्र. वि., ए. व. - ... *सब्बेपि अच्छरियब्भुतधम्मपटिसंयुत्तसुत्तन्ता अब्भुतधम्मन्ति वेदितब्बं,* दी. नि. अट्ठ. 1.24; - **धम्मसमन्नागत** त्रि., तत्पु. स., विलक्षण अथवा अद्भुत धर्मों से परिपूर्ण - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *तथागता अब्भुतधम्मसमन्नागता चा ति,* म. नि. 3.162; - **धम्मसो** अ., निपा., अब्भुत धम्म नामक अङ्ग की दृष्टि से - *यदि अब्भुतधम्मसो - ततो ततो लभतेव अत्तमनतं, लभति चेतसो पसादं,* अ. नि. 2(1).218.

अब्भुत² पु./नपुं., बाजी, दांव, शर्त - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *पणो'ब्भुतो,* अभि. प. 532; *पणे चेवाब्भुतो पुमे,* अभि. प. 1023; प्रायः √कर के क्रि. रू. के साथ प्रयुक्त, बाजी लगाता है, दांव पर लगा देता है - *करिस्सति न करिस्सती ति अब्भुतमकंसु,* पारा. 203; *सेट्ठिना सद्धिं सहस्सेन अब्भुतं करोहि,* पाचि. 7; *होतु नो अब्भुतं तत्थ,* जा. अट्ठ. 7.37.

अब्भुतोरुगुणाकर पु., [अद्भुतगुणाकर], आश्चर्यकर एवं विस्तृत गुणों की खदान - **रो** प्र. वि., ए. व. - *अवज्झवादी अतुलो अब्भुतोरुगुणाकरो,* सद्धम्मो. 345.

अब्भुदाहासि अभि + उद + आ + √हर का अद्य., प्र. पु., ए. व., प्रकाशित किया, प्रकट किया, स्पष्ट रूप से कहा - *इमं कथावत्थुं राजन्तेपुरे अब्भुदाहासीति,* म. नि. 2.335.

अब्भुदित त्रि., अभि + उद + √इ का भू. क. कृ. [अभ्युदित], **शा. अ.** उठा हुआ, उगा हुआ, **ला. अ.** सौभाग्यशाली, शुभ, माङ्गलिक - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *तेसं अब्भुदिता कालसम्पदा येव केवलं,* चू. वं. 64.49.

अब्भुदीरित त्रि., अभि + उद + √ईर का भू. क. कृ. [अभ्युदीरित], कहा हुआ, उक्त - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अब्भुदीरितं अब्भुग्गच्छति,* क. व्या. 44; सद्द. 3.619.

अब्भुदीरेति अभि + उद + √ईर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्युदीरयति], कहता है, बोलता है - **रयं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *अहो दानन्ति बहुसो उदानं अब्भुदीरयं,* सद्धम्मो. 514; - **रयी** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *अट्ठङ्गुपेतं गिरमब्भुदीरयी,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).51; - **रेसुं** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *इमा गिरा अब्भुदीरेसुं,* थेरीगा. 404.

अब्भुदेति / अब्भुदेति अभि + उद + √इ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्युदेति], उगता है, ऊपर की ओर उठता है, सूर्य के समान उदित होता है - *वेरोचनो अब्भुदेति यत्थ च अत्थमेति,* अ. नि. 1(2).57; *यदा च रस्मिसम्पन्नो, अब्भुदेति पभङ्करो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).316; - **यं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *अब्भुदयन्ति अभिउग्गच्छन्तो, अब्भुदसन्ति पि पाठो,* वि. व. अट्ठ. 235; *ओभासयन्ती दस सब्बसो दिसा, अब्भुदयं सारदिको'व भाणुमा,* वि. व. 1031.

अब्भुदय पु., [अभ्युदय], विकास, उन्नति, प्रगति, सफलता - **यं** द्वि. वि., ए. व. - *इधलोकपरलोकेसु वुद्धिं अब्भुदयं नावबुज्झन्ति,* उदा. अट्ठ. 278.

अब्भुद्धरण नपुं., [अभ्युद्धरण], ऊपर की ओर उठाना, बाहर की ओर ले जाना - *अग्गियाधाने ठितो अग्गि कतब्भुद्धरणो समिधापक्खेपं बीजनवातञ्च लभित्वा ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.338.

अब्भुन्नत त्रि., अभि + उ + √नम का भू. क. कृ. [अभ्युन्नत], उठा हुआ, ऊंचा किया हुआ, ऊपर की ओर उभरा हुआ - **ता** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *अब्भुन्नता समा होन्ति, को दिस्वा न पसीदति,* अप. 2.44.

अब्भुन्नति स्त्री., अभि + उ + √नम से व्यु. [अभ्युन्नति], दर्पशीलता, अतिमानिता, अहंकार, घमण्ड - **लक्खण** त्रि., ब. स., अत्यधिक अहङ्कारी, घमण्डी स्वभाव वाला - **क्खणो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अब्भुण्णतिलक्खणो अतिमानो, अतिविय अहङ्काररसो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).114.

अब्भुन्नदित त्रि., अभि + उ + √नद का पू. का. कृ. [अभ्युन्नदित], निनादित, प्रतिध्वनित, अनुगुञ्जित - **दिता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अब्भुन्नदिता सिखीहि, ते सेला रमयन्ति मं,* थेरगा. 1068; *अब्भुन्नदिता सिखीहीति मधुरस्सरेन उन्नदिता,* थेरगा. अट्ठ. 2.383.

अब्भुन्नमित्वा अभि + उ + √नम का पू. का. कृ., ऊपर की ओर छलक कर, फूट कर बाहर निकल कर - *उदकसालतो पि अब्भुन्नमित्वा भगवतो चितकं निब्बापेसि,* दी. नि. 2.123.

अब्भुन्नामेत्वा अभि + उ + √नम के प्रेर. का पू. का. कृ., ऊपर की ओर तान कर, सीधा खड़ा कर - *पुरिमं कायं अब्भुन्नामेत्वा पच्छिमं कायं अनुविलोकेति,* अ. नि. 1(2).280.

अब्भुन्नामेय्यं अभि + उ + √नम के प्रेर॰ का विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, ऊपर की ओर कर दूं, खड़ा कर दूं – *यानगतो समानो पतोदलट्ठिं अब्भुन्नामेय्यं,* दी॰ नि॰ 1.111.

अब्भुय्यात त्रि॰, अभि + उ + √या का भू॰ क॰ कृ॰, कूच कर चुका, बाहर की ओर निकल चुका, किसी की ओर अभिमुख होकर चल चुका – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा पसेनदि सेनाय अब्भुय्यातो होति,* पाचि॰ 142; *अब्भुय्यातोति अभिउय्यातो; परसेनं अभिमुखो ... निग्गतोति अत्थो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 113; *वेदेहिपुत्तो चतरङ्गिनिं सेनं सन्नय्हित्वा ममं अब्भुय्यातो,* स॰ नि॰ 1(1).100.

अब्भुसक्कमान त्रि॰, अभि + उ + √सक्क का वर्त॰ कृ॰, ऊपर की ओर उठता हुआ, ऊपर की ओर चढ़ रहा – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवो आदिच्चो नभं अब्भुसक्कमानो दुद्दिक्खो होति ...,* दी॰ नि॰ 2.137; इतिवु॰ 16; *नभं अब्भुस्सक्कमानोति उदयट्ठानतो आकासं उल्लङ्घन्तो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 79; **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वनन्ततो अब्भुस्सक्कमानं चन्दं भिन्दित्वा ... पुरतो हुत्वा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.54.

अब्भुस्सहनता स्त्री॰, अपने को उत्तेजित या उत्साहित करने की प्रयत्नशीलता, उत्साहवर्द्धन – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुसम्पवङ्कता अब्भुस्सहनता अनुबलप्पदानं ... अनुवादाधिकरणं कुसलं,* चूळव॰ 200; *अब्भुस्सहनताति कस्मा एवं न उपवदिस्सामि, उपवदिस्सामियेवा'ति उस्साहं कत्वा अनुवदना,* चूळव॰ अट्ठ॰ 39.

अब्भुस्साह पु॰, [अभ्युत्साह], शक्ति, बल, प्रबल उत्साह – **हं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भुस्साहं जनेन्तो समुत्तेजेसि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.152.

अब्भुस्साहितहदय त्रि॰, ब॰ स॰ [अभ्युत्साहितहृदय], अत्यधिक उत्साह से भरपूर हृदय वाला – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *केवलन्तु महाकरुणाय अब्भुस्साहितहदयो सत्तानं परमहिताय अदेसयीति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 152.

अब्भेति आ + √व्हे का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आह्वयति], आह्वान करता है, बुलाता है, आमन्त्रित करता है, अस्थायी रूप से निष्कासित भिक्षु को पुनः सङ्घ में बुलाता है या प्रतिष्ठित करता है – *मानत्तारहं अब्भेति ... अब्भानारहं उपसम्पादेति,* महाव॰ 424; *उपसम्पदारहं अब्भेति,* महाव॰ 426; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सङ्घो उदायिं भिक्खुं अब्भेतु,* चूळव॰ 100; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एकेनापि वीसतिगणो भिक्खुसङ्घो तं भिक्खुं अब्भेय्य,* पारा॰ 290; – **तब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ – *अब्भेतब्बोति अभिएतब्बो सम्पटिच्छितब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.193.

अब्भोकास पु॰, [अभ्यवकाश], खुला स्थान, खुली जगह, खुला आकाश – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्बाधो घरावासो रजोपथो, अब्भोकासो पब्बज्जा,* दी॰ नि॰ 1.55; *अलग्गनट्ठेन अब्भोकासो वियाति अब्भोकासो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.148; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भोकासन्ति अच्छन्नं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.171; – **गत** त्रि॰, खुले स्थान में स्थित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भोकासगतो खो, देव, आरञ्ञको नागो'ति,* म॰ नि॰ 3.173; *सुञ्ञागारगतोपि ... अब्भोकासगतोपि,* अ॰ नि॰ 3(2).101; – **सय** त्रि॰, खुले स्थान या आकाश के नीचे लेटा हुआ – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भोकाससयो जन्तु, वजन्त्या खीरपायितो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.358.

अब्भोकासिक त्रि॰, [आभ्यवकासिक, तुल॰ अभ्रावकाशिक], खुले स्थान में रहने वाला, किसी विशिष्ट तापस का पदनाम या अभिधान – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भोकासिकोपि होति यथासन्थतिको,* दी॰ नि॰ 1.150; – **कस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाहं, भिक्खवे, अब्भोकासिकस्स अब्भोकासिकमत्तेन सामञ्ञं वदामि,* म॰ नि॰ 1.354; – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रुक्खमूलिका अब्भोकासिका पळालपुञ्जिका,* मि॰ प॰ 309; – **कङ्ग** नपुं॰, खुले स्थान पर रहने वाले तापसों की चर्या का एक अङ्ग – *छन्नरुक्खमूलानि पटिक्खिपित्वा अब्भोकासिकङ्गसमादानेन अब्भोकासिको,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.274.

अब्भोकासी त्रि॰, [अभ्यवकाशिन्], खुले स्थान में रहने वाला, आकाश के नीचे निवास करने वाला – **सी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भोकासी सातातिको ...,* थेरगा॰ 853.

अब्भोकिरति अभि + अव + √किर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभ्यवकिरति], चारों ओर से ढकता है, आच्छादित करता या फैलाता है – **रिस्सं** भ॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अब्भोकिरिस्सं पत्तेहि पसन्ना सेहि पाणिभि,* वि॰ व॰ 39; *अब्भोकिरिस्सन्ति अभिओकिरिं अभिप्पकिरिं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 29.

अब्भोकिरण नपुं॰, अभि + अव + किर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, मुखौटा, चारों ओर से ढक देना या लपेट देना – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोभनकन्ति नटानं अब्भोक्किरणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.77.

अब्रह्म त्रि॰, [अब्राह्म], अपवित्र, अशुद्ध, हीन, अश्रेष्ठ, सांसारिक, घटिया – **ह्मं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्रह्मं हीनं लामकधम्मं चरन्तीति अब्रह्मचारी,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).196.

अब्रह्मचरिय नपुं., [अब्रह्मचर्य], पापाचार, दुराचार, हीन जीवनपद्धति, ब्रह्मचर्य का अभाव, अपरिशुद्ध जीवन - **यं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अब्रह्मचरियं परिवज्जयेय्य, अङ्गारकासुं जलितं व विञ्ञू,* सु. नि. 398; *अब्रह्मचरियं पहाय ब्रह्मचारी समणो गोतमो,* दी. नि. 1.4; - **या** प. वि., ए. व. - *अब्रह्मचरिया विरमेय्य मेथुना,* सु. नि. 402; - **येन** तृ. वि., ए. व. - *परिसुद्धं ब्रह्मचरियं ... अब्रह्मचरियेन अनुद्धंसेति,* पारा. 109-110; - **वास** पु., [अब्रह्मचर्यवास], अधार्मिक जीवन, अपवित्र जीवन, ब्रह्मचर्यवास के विपरीत जीवन - **सो** प्र. वि., ए. व. - *सो अब्रह्मचरियवासो ... ब्रह्मचरिया निब्बिज्ज पक्कमति,* म. नि. 2.197; - **सा** ब. व. - *तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन चत्तारो अब्रह्मचरियवासा अक्खाता,* म. नि. 2.192.

अब्रह्मचारी त्रि., [अब्रह्मचारिन्], उत्तम चर्या का पालन न करने वाला, व्यभिचारी, ब्रह्मचर्य या परिशुद्ध जीवन न जीने वाला, दुराचारी - **री** पु., प्र. वि., ए. व. - *समणपटिञ्ञा अब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिपटिञ्ञो अन्तोपूति,* महानि. 168; *अब्रह्मचारीति सेट्ठचरिया विरहितो,* महानि. अट्ठ. 270; - **री** प्र. वि., ब. व. - *अब्रह्मं हीनं लामकधम्मं चरन्तीति अब्रह्मचारी,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).196.

अब्रह्मञ्ञ त्रि., [अब्राह्मण्य], ब्राह्मण अर्थात् आस्रवों का क्षय कर चुके अर्हतों के प्रति असौहार्दपूर्ण, अर्हतों के प्रति आदर भाव न रखने वाला, ब्राह्मणों का सम्मान न करने वाला - **ञ्ञो** पु., प्र. वि., ए. व. - *पुरिसो अमत्तेय्यो अपेत्तेय्यो असामञ्ञो अब्रह्मञ्ञो,* अ. नि. 1(1).163; *अब्रह्मञ्ञोति एत्थ च खीणासवा ब्राह्मणा नाम, तेसु मिच्छा पटिपन्नो अब्रह्मञ्ञो नाम,* अ. नि. अट्ठ. 2.118; - **ता** स्त्री., अब्राह्मण्य का भाव, अर्हतों एवं ब्राह्मणों के प्रति असौहार्दपूर्णता - **ता** प्र. वि., ए. व. - *असामञ्ञता अब्रह्मञ्ञता न कुले जेट्ठापचायिता,* दी. नि. 3.52.

अब्राह्मण पु., [अब्राह्मण], वह व्यक्ति जो ब्राह्मण नहीं है, ब्राह्मणत्वविरहित व्यक्ति, ब्राह्मण के गुणों एवं धर्म से सर्वथा रहित - **णो** प्र. वि., ए. व. - *न जच्चा ब्राह्मणो होति, न जच्चा होति अब्राह्मणो, कम्मुना ब्राह्मणो होति, कम्मुना होति अब्राह्मणो,* सु. नि. 655; - **णं** द्वि. वि., ए. व. - *ब्राह्मणो हि चे त्वं ब्रूसि, मञ्च ब्रूसि अब्राह्मणं,* सु. नि. 460; - **णे** द्वि. वि., ब. व. - *ब्राह्मणा"इमेहि चण्डालुच्छिट्ठकं पीत"न्ति अब्राह्मणे करिंसु,* जा. अट्ठ. 4.348; - **करण** त्रि., वह अवस्था जो ब्राह्मणकारी न हो, ब्राह्मण न करने वाला या न बनाने वाला धर्म - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *ये धम्मा अब्राह्मणकारका,* दी. नि. 1.222.

अभक्ख त्रि., [अभक्ष्य], वह, जो भक्षण योग्य न हो, न खाने योग्य, अखाद्य जो भोजन के रूप में उपयुक्त न हो - **क्खो** पु., प्र. वि., ब. व. - *न चापि मे सीवलि सो अभक्खो ...,* जा. अट्ठ. 6.77; *अभक्खोति सो पिण्डपातो मम अभक्खो नाम न होति,* तदे.; - **सम्मतभाव** पु., अभक्ष्य के रूप में समझा जाना, अभक्ष्य के रूप में अनुमोदित रहना - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *अत्तनो सरीरमंसस्स अभक्खसम्मतभावं दस्सेतुं ...,* जा. अट्ठ. 6.91.

अभच्च त्रि., [अभृत्य], वह, जो भृत्य न हो या भरण-पोषण योग्य न हो - **च्चा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अन्नभच्चा चभच्चा च, योध उद्दिस्स गच्छति,* जा. अट्ठ. 2.306; *इतरे तथा अभरितब्बत्ता अभच्चा,* जा. अट्ठ. 2.307.

अभजना स्त्री., असेवन, असाहचर्य, असम्पर्क, असंसर्ग - **ना** प्र. वि., ए. व. - *असेवनाति अभजना अपयिरुपासना,* खु. पा. अट्ठ. 99.

अभजन्त त्रि., √भज के वर्त. कृ. का निषे. [अभजत्], अनिच्छुक, अप्रवृत्त, किसी तरह का सरोकार न रखने वाला, प्रतिपक्षी - **न्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *भजे भजन्तं पुरिसं, अभजन्तं न भज्जये,* जा. अट्ठ. 5.221; *अभजन्तन्ति पच्चत्थिकं,* जा. अट्ठ. 5.222.

अभण्डन नपुं., [अभण्डन], अविग्रह, अकलह, सामञ्जस्य, मैत्रीभाव - **नं** प्र. वि., ए. व. - *इति अभण्डनं इति अविग्गहो इति अकलहो,* स. नि. 1(1).259.

अभद्दक 1. त्रि., [अभद्र], अमाङ्गलिक, अकल्याणकारक, अनर्थकारी - **कं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *तस्स हीनेन मनसा, वाचं भासिं अभद्दकं,* अप. 1.99; *अग्गसावकस्स हीनेन लामकेन मनसा चित्तेन अभद्दकं असुन्दरं अयुत्तकं ...,* अप. अट्ठ. 2.68; 2. नपुं., अकल्याण, बुराई - **कं** द्वि. वि., ए. व. - *तस्स पुग्गलस्स अभद्दकं अनत्थं मनसापि न चिन्तेय्य न पिहेय्य,* पे. व. अट्ठ. 102; - **केन** तृ. वि., ए. व. - *अपरभागे पापेन अभद्दकेन अनत्थकेन बाधति,* पे. व. अट्ठ. 102.

अभन्त त्रि., [अभ्रान्त], प्रशान्त, भ्रम में नहीं पड़ा हुआ, व्युपशान्त - **न्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अभन्तं होति मे चित्तं, अखिलो होमि कस्सचि,* अप. 1.355.

अभब्ब त्रि., [अभव्य], **क.** अक्षम, असमर्थ नहीं हो सकने योग्य - **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. - *चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो*

छच्चाभिठानानि अभब्बो कातुं, सु॰ नि॰ 234; *अभब्बो सो तस्स पटिच्छदाय, अभब्बता दिट्ठपदस्स वुत्ता,* सु॰ नि॰ 235; **ख.** अयोग्य, अनाड़ी – **ब्बा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *ये पन सत्ता अभब्बा, ते धम्मामतेन हञ्ञन्ति पतन्ती ति,* मि॰ प॰ 164; **ग.** अकुशल, विपाक न देने वाला, दुर्बल *अत्थि कम्मं अभब्बं अभब्बाभासं,* म॰ नि॰ 3.263; *अभब्बन्ति भूतविरहितं अकुसलं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.193; – **ट्ठान** नपुं॰, [अभव्यस्थान], **क.** अनुपयुक्त अवस्था, अनर्ह अवस्था **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमे अट्ठ अत्तनो किरियाय विपन्नत्ता अभब्बट्ठानं पत्ताति पाराजिकाव,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.93; *अभब्बट्ठाने वज्जेत्वा वारयन्ती अनाचारं,* अप॰ 2.221; **ख.** अकरणीय बातें, अनैतिक आचरण – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्च अभब्बट्ठानानि,* दी॰ नि॰ 3.187; – **ट्ठानत्त** नपुं॰, [अभव्यस्थानत्व], अनुपयुक्त अवस्था का होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्ता हि अरूपसमापत्तिलाभिनो हुत्वापि अभब्बट्ठानत्ता आरुप्पे न निब्बत्तन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.388; – **ता** स्त्री॰, अभब्ब का भाव॰, अनुपयुक्तता, अयोग्यता, अक्षमता – *अभब्बता वुत्ता,* अ॰ नि॰ 1(1).263; *न हि मया ... अरियपुग्गलस्स अभब्बता कथिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.208; – **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ *रज्जुमालापि अत्तानं विनिपातेतुं अभब्बताय खन्तिमेत्तानुद्दयसम्पन्नताय ...,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 175; – **त्त** नपुं॰, अभब्ब का भाव॰ [अभव्यत्व], उपरिवत् **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मातरं जीविता वोरोपनादीनं अभब्बत्ता ञायेन कारणेन ... अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.297; – **पुग्गल** पु॰, [अभव्यपुद्गल], अकुशल कर्मों को करने वाला व्यक्ति, अनुत्तम व्यक्ति, अयोग्य या असमर्थ व्यक्ति – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ *"अभब्बपुग्गलेन मया भवितब्ब"न्ति वीरियं ओस्सजित्वा आगतोम्हीति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.114; – **ला** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *एकादस अभब्बपुग्गला,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.93; – **ब्बागमन** त्रि॰, ब॰ स॰, उच्च आध्यात्मिक अवस्था तक पहुंचने में अयोग्य, आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करने के लिये अक्षम – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमो च पुग्गलो अभब्बागमनो ? ये ते पुग्गला कम्मावरणेन समन्नागता,* पु॰ प॰ 119; *अभब्बागमननिद्देसे सम्मत्तनियामागमनस्स अभब्बोति अभब्बागमनो,* पु॰ प॰ अट्ठ॰ 36; – **ब्बापत्तिक** त्रि॰, ब॰ स॰, भिक्षुसंघ द्वारा निर्धारित किसी भी अपराध का दोषी न होने योग्य **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभब्बापत्तिको को च, भब्बापत्तिकोपुग्गलो,* उत्त॰ वि॰ 433; **ब्बाभास** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभव्याभास], दूसरे दुर्बल अकुशल को अभिभूत कर लेने वाला – **सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि कम्मं अभब्बं अभब्बाभासं ...,* म॰ नि॰ 3.263; *अभब्बाभासन्ति अभब्बं आभासति अभिभवति पटिबाहतीति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.193; – **ब्बुपपत्तिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभव्युत्पत्तिक], पुनः जन्म न लेने वाला, पुनः उत्पन्न न होने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पटिपस्सद्धो अभब्बुप्पत्तिको ञाणग्गिना दड्ढो,* महानि॰ 38; *अभब्बुप्पत्तिकोति पुन उप्पज्जितुं अभब्बो,* महानि॰ अट्ठ॰ 133.

अभय[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अभय], भय-रहित, सुरक्षित, निर्भय, भयमुक्त – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *खेमी अवेरी अभयो, पण्डितोति पवुच्चति,* ध॰ प॰ 258; – **या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिसा अभया अनीतिका अनुपद्दवा,* पारा॰ 254; – **यानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *येन येन सुभिक्खानि, सिवानि अभयानि च,* थेरगा॰ 82.

अभय[2] नपुं॰, [अभय], **शा॰ अ॰** भय का अभाव, **ला॰ अ॰** कल्याण की अवस्था, निर्वाण – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभये भयदस्सिनो, भये चाभयदस्सिनो,* ध॰ प॰ 317; *भया पमुत्तो अभये विमुत्तो,* स॰ नि॰ 1(1).181; *अभयेति निब्बाने,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.194; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *ओलोकेन्तो द्वे सुवण्णमिगे दिस्वा तेसं अभयं अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.154.

अभय[3] पु॰, [अभय], **1.क.** अत्थदस्सी बुद्ध का प्रधान सेवक या उपस्थापक – *अभयो नामुपट्ठाको, अत्थदस्सिस्स सत्थुनो,* बु॰ वं॰ 16.19; जा॰ अट्ठ॰ 1.49; **ख.** लिच्छवी राजकुमार का नाम – *अभयो च लिच्छवि येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु,* अ॰ नि॰ 1(2).229; **ग.** एक राजकुमार का नाम, जो बिम्बिसार तथा पदुमावती का पुत्र था – *अभयो नाम राजकुमारो कालस्सेव राजुपट्ठानं गच्छन्तो ...,* महाव॰ 357; – **राजकुमारवत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ का एक खण्ड का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.94–95; – **राजकुमारसुत्त** नपुं॰, म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 2.62; **घ.** श्रीलंका के अनेक राजाओं या महान् व्यक्तियों का नाम, **1.** ओजदीप के अभयपुर के एक राजा का नाम – *ओजदीपेभयपुरे अभयो नाम खत्तियो,* दी॰ वं॰ 15.37; *कदम्बनदिया पारे तत्थ राजाभयो अहु,* म॰ वं॰ 15.59; **2.** पाण्डवों या पाण्डुवासुदेव के ज्येष्ठपुत्र का नाम – *सब्बजेट्ठोभयो नाम,* म॰ वं॰ 9.1; **3.** मुटसीव के पुत्र का नाम – *मुटसीवस्स अत्रजा अथञ्ञे दस भातुका,* दी॰ वं॰ 11.7; **4.** दुट्ठगामणि अभय – *दुट्ठगामणि सद्देन पाकटो भयनामको,* म॰ वं॰ 15.172; दी॰ वं॰ 19.24; **5.** देव (खञ्जदेव) के पिता का नाम – *अभयस्सन्तिमो पुत्तो देवो नामासि*

थामवा, म॰ वं॰ 23.78; **6.** यट्ठालायक तिस्स का पुत्र - *तस्स पुत्तो भयो तथा,* म॰ वं॰ 22.10; **7.** कुटिकण्ण के पुत्र (एक राजकुमार) का नाम - *पूजिता कुटिकण्णेन अभयेन यसस्सिना,* दी॰ वं॰ 18.38; *कुटिकण्णस्स अत्रजो अभयो नाम खत्तियो,* दी॰ वं॰ 21.1; **8.** वट्टगामणि अभय - *वट्टगामणी अभयो एवं द्वादसवस्सकं,* दी॰ वं॰ 20.19; **9.** आमण्डगामणी का पुत्र - *आमण्डगामणी भयो महादाठिकअच्चये,* म॰ वं॰ 35.1; **10.** चूळाभय - *आमण्डगामणीपुत्तो चूळाभयो ति विस्सुतो ... रज्जं कारेसि वस्सेकं चूळाभयमहीपति,* दी॰ वं॰ 21.38; **11.** अभयनाग - *अभयस्सच्चये भातु ... द्वे वस्सानि सिरिनागो लङ्कारज्जं अकारयि,* म॰ वं॰ 36.54.

अभयगत त्रि॰, [अभयगत], **शा॰ अ॰** सुरक्षा की स्थिति में पहुंचा हुआ, भयरहित स्थिति को प्राप्त; **ला॰ अ॰** निर्वाण की अवस्था को प्राप्त - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सरणगतो सरणप्पत्तो अभयगतो ... निब्बानप्पत्तो,* महानि॰ 15; *अभयगतोति मग्गेन निब्भयं गतो,* महानि॰ अट्ठ॰ 65.

अभयगल्लक पु॰, श्रीलङ्का के एक विहार का नाम - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मण्डवापिविहारं सो तथा अभयगल्लकं ... कारयि,* म॰ वं॰ 34.8.

अभयगिरि पु॰, [अभयगिरि], अभय के द्वारा निर्मित श्रीलंका के एक विहार या सङ्घाराम का नाम - **विहारं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभयगिरिविहारं सो पतिट्ठापेसि भूपति,* म॰ वं॰ 33.81; **- पब्बत** पु॰, विजयपुर में अवस्थित अभयगिरि नाम का एक पर्वत - **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कच्चायनवण्णनं पन विजयपुरेयेव अभयगिरिपब्बते निसिन्नो महाविजितावी नाम थेरो अकासि,* सा॰ वं॰ 85(ना॰); **- वासी** पु॰, अभयगिरि में रहने वाले भिक्षुओं का वर्ग - **सीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *महासेनस्स नाम रञ्ञो काले अभयगिरिवासीनं भिक्खूनं* ..., सा॰ वं॰ 24(ना॰); **- वासिगण** पु॰, अभयगिरि में निवास करने वाले भिक्षुओं का एक गण - **णतो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिसङ्खरित्वा अभयगिरिवासिगणतो विसुं एको गणो अहोसि,* सा॰ वं॰ 23(ना॰); **- विहारवासी** त्रि॰, उसी विहार में रहने वाला - *सो च दुविधो पुब्बारामविहारवासी - अभयगिरिविहारवासीवसेनाति,* सा॰ वं॰ 156(ना॰).

अभयगिरिक पु॰, अभयगिरि में निवास करने वाला भिक्षुसङ्घ, स्थविरवाद से फूट कर निकली हुई भिक्षुओं की एक शाखा - **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *एवं तेभयगिरिका निग्गता थेरवादतो,* म॰ वं॰ 33.97; **- केहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *पभिन्नाभयगिरिकेहि दक्खिणविहारका यती,* म॰ वं॰ 33.98.

अभयघोसना स्त्री॰, [अभयघोषणा], उन्मुक्ति की घोषणा, निरापदता या असंक्राम्यता की उद्घोषणा - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चतूसु कण्णेसु देवसिकं अभयघोसनं घोसापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.382.

अभयङ्कर त्रि॰, [अभयङ्कर], अभयदान देने वाला, सुरक्षा करने वाला, भगवान् बुद्ध का एक अभिधान - **र** संबो॰, ए॰ व॰ - *नमो ते सब्बलोकग्ग, नमो ते अभयङ्कर,* अप॰ 2.147.

अभयद त्रि॰, [अभयद], सुरक्षादायक, सुरक्षा देने वाला - **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपिच अभयदो विय वीरपुरिसो बुद्धो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 12; **- दस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्साभयस्साभयदस्स भातु राजाभिसेकं अकरुं उळारं,* म॰ वं॰ 9.29.

अभयदक्खिणा स्त्री॰, [अभयदक्षिणा], सुरक्षित या भयरहित स्थिति का उपहार, अभयदान - **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दत्वा अभयदक्खिणं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.234.

अभयदस्सी त्रि॰, [अभयदर्शिन्], अभयदर्शी, किसी में या कहीं भी भय न देखने वाला, निर्भीक - **स्सिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभये भयदस्सिनो, भये चाभयदस्सिनो,* ध॰ प॰ 317.

अभयदान नपुं॰, [अभयदान], उन्मुक्ति का दान, निर्भयता का दान, निर्भीकता का उपहार - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभयदक्खिणं याचेय्यामाति अभयदानं याचेय्याम,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.302; **- प्पकासन** नपुं॰, भयरहित अवस्था की घोषणा, निर्भयता का प्रकाशन - *रञ्ञो सन्तिके वसित्वा नगरे सब्बसत्तानं अभयदानपकासनत्थं सुवण्णभेरिं चरापेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.240.

अभयदायक त्रि॰, [अभयदायक], उन्मुक्ति देने वाला, सुरक्षा देने वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एसो वीसति वस्सानि अभयो भयदायको,* म॰ वं॰ 10.52.

अभयनाग पु॰, श्रीलङ्का के एक राजा का नाम - *विस्सुतोभयनागो ति कनिट्ठो तस्स राजिनो,* म॰ वं॰ 36.42.

अभयपुर नपुं॰, ओजद्वीप में अवस्थित श्रीलंका के अभय नामक राजा की राजधानी का नाम - **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *राजा अभयो नाम, नगरं अभयपुरं नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.60; **- रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ओजदीपेभयपुरे अभयो नाम खत्तियो,* दी॰ वं॰ 15.37.

अभयपत्त त्रि॰, [अभयप्राप्त], निर्भयभाव को प्राप्त, क्षेमप्राप्त, सुरक्षा प्राप्त, वह, जिसने सुरक्षा प्राप्त कर ली है, निर्वाण की अवस्था को प्राप्त कर चुका - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असमनुपस्सन्तो खेमप्पत्तो अभयप्पत्तो वेसारज्जप्पत्तो विहरामि,* म॰ नि॰ 1.105; *सो पारं गतो पारप्पत्तो ... अभयगतो अभयप्पत्तो,* महानि॰ 15.

अभयप्पद त्रि., [अभयप्रद], उन्मुक्ति देने वाला, सुरक्षा प्रदान करने वाला, निर्भय भाव को देने वाला – **दो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अनाथानं भवं नाथो, भीतानं अभयप्पदो,* अप. 2.147.

अभयभीरुता स्त्री., भयभीरु के भाव. का निषे., भयों से नहीं डरना, कायरता या डरपोकपन का अभाव – **य** तृ. वि., ए. व. – *कुसलूपदेसे ... अनिवत्तितत्ता भयभीरुताय च,* जा. अट्ठ. 1.449; *अनिवत्तितत्ता भयभीरुताय चाति भयभीरुताय अनिवत्तितताय च,* तदे.; *कुसलूपदेसे ... अनिवत्तितत्ताभयभीरुताय च,* ध. प. अट्ठ. 2.329.

अभयमाता स्त्री., अभयमातु थेरी-गाथा की रचयित्री एक थेरी, थेरीगा. 33-34.

अभयराजव्ह त्रि., ब. स., विजयबाहु द्वारा निर्मित वनग्गामपासादमठ का अभयराज-नामक एक परिवेण – **व्हं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *राजा तत्थ वनग्गामपासादव्हविहारकं ... कारेत्वाभयराजव्हं परिवेणं च तस्स सो ... अदा,* चू. वं. 88.51-52.

अभयवापी स्त्री., अनुराधपुर की एक बावड़ी या सरोवर का नाम, अनुराधपुर के विस्तृत आयताकार जलाशय का नाम – **पिया** ष. वि., ए. व. – *यक्खं तु चित्तराजानं हेट्ठा अभयवापिया,* म. वं. 10.84; *पादे पितट्ठपेत्वापि जले अभयवापिया,* म. वं. 26.20.

अभयवास पु., निश्चिन्त भाव से निवास, शान्ति के साथ निवास, सुरक्षित निवास – *मिगानं पन अभयवासत्थाय दिन्नत्ता मिगदायोति वुच्चति,* दी. नि. अट्ठ. 2.55.

अभयसञ्ञा स्त्री., किसी चीज को भयरहित मानना, भय से रहित होने की समझ – **ञ्ञाय** तृ. वि., ए. व. – *भयदस्सनेन सभयेसु अभयसञ्ञाय,* सु. नि. अट्ठ. 1.8.

अभयसुत्त नपुं., म. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, म. नि. 2.62.

अभया[1] स्त्री., [अभया], हर्रे, हरीतकी – *अभया तु हरीतकी,* अभि. प. 569.

अभया[2] स्त्री., एक थेरी (स्थविरा) का नाम, थेरीगा. की एक गीति की रचना करने वाली कवयित्री का नाम, थेरीगा. 35-36.

अभयाचल पु., [अभयाचल], एक पर्वत का नाम, अभयगिरि – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *महालेखं च कारेसि परिवेणं अभयाचले,* चू. वं. 48.135.

अभयाभिसेक पु., [अभयाभिषेक], म. वं. के एक अध्याय का शीर्षक, म. वं. परिच्छेद 10.

अभयुत्तर पु., **क.** श्रीलंका के अभयगिरि में अवस्थित एक मठ का नाम – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *अनुसम्पवच्छरं नेत्वा विहारं अभयुत्तरं, तेसं पूजाविधिं कातुं एवंरूपं नियोजयि,* म. वं. 37.97; *धातुं विहारं अभयुत्तरमेव नेत्वा पूजं विधातुं अनुवच्छरमेवरूपं,* दाठा. वं. 5.67; **ख.** एक महास्तूप का नाम – *अभयुत्तरं महाथूपं वड्ढेत्वा चिनापयि,* म. वं. 35.119; **ग.** एक परिवेण (कक्ष, कोठरी) का नाम – *कप्पूरपरिवेणं सो कारेसि अभयुत्तरे,* चू. वं. 45.29.

अभयूपरत त्रि., [अभयोपरत], किसी भय के कारण वैराग्य को ग्रहण न करने वाला, भयरहित होकर वैराग्य लेने वाला – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *ततो न उत्तरिं समन्नेसति अभयूपरतो ... तमेनं समन्नेसमानो एवं जानाति – अभयूपरतो अयमायस्मा,* म. नि. 1.400; *अभयूपरतोति अभयो हुत्वा उपरतो, अच्चन्तूपरतो सततूपरतोति अत्थो, न वा भयेन उपरतोतिपि अभयूपरतो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).279; *सो हि सब्बसो समुच्छिन्नभयो, तस्मा अभयूपरतोति,* पु. प. अट्ठ. 36.

अभयूवर त्रि., अदण्डनीय, अभय-प्राप्त – **रा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अभयूवरा इमे समणा सक्यपुत्तिया, नयिमे लब्भा किञ्चि कातुं,* महाव. 94; – **भाणवार** नपुं., महा. के एक भाग का शीर्षक, महाव. 91-104.

अभरित त्रि., [अभरित], नहीं भरा हुआ, भीड़-भाड़ से रहित – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अप्फुटो असम्फुटो अभरितो वा,* दी. नि. अट्ठ. 2.152.

अभव पु., [अभव], विपत्ति, विनाश, दुर्भाग्य, हानि, अवृद्धि – **वो** प्र. वि., ए. व. – *भवो च रञ्ञो अभवो च रञ्ञो, दासाहं देवस्स परम्पि गन्त्वा,* जा. अट्ठ. 7.178; – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *अभवेनस्स न नन्दति, भवेनस्स नन्दति,* दी. नि. 3.143.

अभस्सथ √भस्स से निष्पन्न, अद्य., प्र. पु., ए. व., गिर पड़ा, गिर गया – *तस्स सोकपरेतस्स, वीणा कच्छा अभस्सथ,* सु. नि. 451.

अभाजनभूत त्रि., [अभाजनभूत], अयोग्य, पात्रताविहीन, अक्षम, असमर्थ, अपात्र, नालायक, निकम्मा – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अयं अभाजनभूतोति मुखबन्धमस्स अकासि,* सु. नि. अट्ठ. 2.232.

अभाजित त्रि., √भज के प्रेर. का भू. क. कृ. [अभाजित], वह, जो आवण्टित न हो, जो बांटा न गया हो, जिसका विभाजन न किया गया हो - *भाजिताभाजितं न जानाति,* अ. नि. 2(1).258.

अभायनक त्रि., √भी से व्यु., क्रि. ना. का निषे., नहीं डरने वाला, भय न करने वाला - *मरणस्स अभायनकसत्तो नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 5.29.

अभायितब्ब त्रि., √भाय के सं. कृ. का निषे., नहीं डराए जाने योग्य, भयभीत न किए जाने योग्य, भयाक्रान्त न होने वाला - **तब्बं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *किर अभायितब्बं भायन्ति गण्डुप्पादो किकी कुन्तनी ब्राह्मणाति,* सु. नि. अट्ठ. 2.47; - **तब्बे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *अतसितब्बे अभायितब्बे ठानम्हि, ...,* स. नि. अट्ठ. 2.244.

अभारिक पु., [अभारिक], भार-रहित, अकठिन, आसान - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अगरूति अभारिको,* दी. नि. अट्ठ. 1.204.

अभारियता स्त्री., अभारिय का भाव., बोझिल नहीं होना, भारी न होना, अकठिनता - *अदन्धनताति गरुभावपटिक्खेपवचनमेतं, अभारियताति अत्थो,* ध. स. अट्ठ. 194.

अभाव पु., [अभाव], अविद्यमानता, अस्तित्व का न होना, अस्तित्व का अभाव, विध्वंस, क्षय - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *परिक्खयं अभावं गच्छन्तीति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 2.258; *कामगुणेति कामकोट्ठासे हुत्वा अभावट्ठेन अनिच्चतो,* जा. अट्ठ. 5.143; - **वेन** तृ. वि., ए. व. - *पारुपनस्स हि अभावेन न सक्का अम्हेहि एकतो गन्तुन्ति,* ध. प. अट्ठ. 2.2; *अभावोधिपतीनञ्च, अयमेव विसेसको,* अभि. अव. 12; - **क** त्रि., **क.** लैङ्गिक-विभेदन से रहित, हिजड़ा, नपुंसक, पण्डक - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो पन पटिसन्धियंयेव अभावको उप्पन्नो,* महाव. अट्ठ. 282; - **गब्भसेय्यक** त्रि., लिङ्ग-विहीन भ्रूण - **कानं** पु., ष. वि., ब. व. - *नामरूपे यस्मा अभावकगब्भसेय्यकानं अण्डजानञ्च पटिसन्धिखणे वत्थुकायवसेन,* विभ. अट्ठ. 160; *अभावगब्भसेय्यानं, अण्डजानञ्च वीसति,* अभि. अव. 99; **ख.** अभाव वाला - **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *एता हि रूपमाकासं, विञ्ञाणं तदभावकं,* अभि. अव. 133; - **करण** नपुं., विनाश, विध्वंस, अपनयन, निरोध, अप्रसारण, अवसान, समापन - **णं** द्वि. वि., ए. व. - *गत्यवसारणं गतिया अवसारणं ओसारणं अभावकरणं ...,* सद्द. 2.352; - **ता** स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व., अवर्तमानता, अविद्यमानता *सुखविहारिता अकुतोभयता पियविप्पयोगा भावताति एवमादीनि,* खु. पा. अट्ठ. 24; - **धम्म** त्रि., ब. स. [अभावधर्म], विनाशशील, अनित्य, विकारी, विनश्यमान - **म्मं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *इदं पन अनिच्चं हुत्वा अभावधम्मं,* जा. अट्ठ. 3.137.

अभावना स्त्री., **क.** कुशलधर्मों को विकसित करने के प्रयास का अभाव, ध्यानभावना का अभाव - *कुसलानं वा धम्मानं भावनाय असक्कच्चकिरियता ... अभावना,* खु. पा. अट्ठ. 115; **ख.** अभावेति का क्रि. ना., विनष्ट कर देना, तिरोधानता, अन्तर्धानता - *अथ वा विभावना ति अभावना अन्तरधापना,* सद्द. 1.81.

अभावनीय त्रि., √भू के प्रेर. के सं. कृ. का निषे. [अभावनीय], असम्माननीय, जो आदरणीय न हो, अप्रिय - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *धम्मेहि समन्नागतो कुलूपको भिक्खु कुलेसु अप्पियो च होति अमनापो च अगरु च अभावनीयो,* अ. नि. 2(1).128.

अभावाकार पु., [अभावाकार], अनस्तित्व की अवस्था या स्थिति, अस्तित्वहीनता की अवस्था **रेन** तृ. वि., ए. व. - *अनिच्चाति आदीसु हुत्वा अभावाकारेन अनिच्चा,* स. नि. अट्ठ. 2.135.

अभावी त्रि., [अभाविन्], **क.** न होने वाला, विनश्यमान, वह, जिसके होने की कोई आशा नहीं है - **विनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *ननु अनिच्चा सब्बे सङ्खारा हुत्वा अभाविनोति,* जा. अट्ठ. 4.45-46; **ख.** नपुंसक, हिजड़ा, लैङ्गिक-प्रभेद से रहित - **विनो** ष. वि., ए. व. - *तत्थेवन्धबधिरस्स, पञ्च होति अभाविनो,* सच्च. 65.

अभावित त्रि., √भू के प्रेर. के भू. क. कृ. का निषे. [अभावित], ध्यान-भावना द्वारा विशुद्ध न किया हुआ, असंस्कृत, अपरिष्कृत - **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *एवं अभावितं चित्तं रागो समतिविज्झति,* ध. प. 13; *अभावितन्ति तं अगारं वुट्ठि विय भावनाय रहितत्ता अभावितं चित्तं रागो समतिविज्झति,* ध. प. अट्ठ. 1.71; - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *भिक्खुनो मेत्ताचेतोविमुत्ति अभाविता सो सुप्पधंसियो होति अमनुस्सेहि,* स. नि. 1(2).241; - **काय** त्रि., अपरिशुद्ध कायिक कर्मों वाला - *एकच्चो पुग्गलो अभावितकायो होति,* अ. नि. 1(1).282; *अभावितकायोतिआदीहि कायभावनारहितो वट्टगामी पुथुज्जनो दस्सितो,* अ. नि. अट्ठ. 2.218; - **कायगतासति** त्रि., ब. स., वह, जिसकी कायविषयक स्मृति सुविकसित या सुपरिशोधित नही है - **तिं** पु., द्वि.

वि॰, ए॰ व॰ *एवं अभावितकायगतासतिं पुग्गलं अल्लमतिकपुञ्जादीहि उपमेत्वा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.106; **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभावितचित्त], अपरिशोधित चित्त वाला - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभावितचित्तो तसति रवति भेरवरावमभिरवति,* मि॰ प॰ 237; - **पञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभावितप्रज्ञ], अपरिशोधित प्रज्ञा वाला - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सद्दो अभावितकायस्स ... अभावितपञ्ञस्स काये नमिते विरमिस्सति,* मि॰ प॰ 95; - **सील** त्रि॰, ब॰ स॰, असंस्कृत आचरण वाला - **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *अभावितकाया अभावितसीला अभावितचित्ता अभावितपञ्ञा ...,* स॰ नि॰ 2(2).119.

अभावेति अभाव के ना॰ धा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, विनष्ट या तिरोहित कर देता है, विलुप्त कर देता है - *अट्ठ वा विभावेति अभावेति अन्तरधापेति,* सद्द॰ 1.5; द्रष्ट॰ अभावना.

अभासन नपुं॰, [अभाषण], चुप्पी, मौन, निःशब्दता - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मोनं अभासनं तुण्ही भावो,* अभि॰ प॰ 429; *तुण्ही इति अभासने तुण्हीभूतो उदिक्खेय्य,* सद्द॰ 3.899.

अभासनेय्य त्रि॰, √भास के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अभाषणीय], न बोले जाने योग्य, न कहने योग्य - **य्यं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं पित्वा भासेय्य अभासनेय्यं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.15.

अभासित त्रि॰, √भास के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अभाषित], नहीं कहा गया, अकथित, वह, जिसका कथन न किया गया हो - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभासितं अलपितं तथागतेन भासितं लपितं तथागतेनाति दीपेति,* महाव॰ 476; - **तानं** स्त्री॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *कथं नु कथानं अभासितानं, अत्थं नयेय्युं कुसला जनिन्दा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.150.

अभासितब्ब त्रि॰, √भास के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अभाषितव्य], न कहने योग्य, वह, जिसे न कहा जाना चाहिये, अनिर्वचनीय - **तो** नपुं॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कस्मा? अभासितब्बतो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.112.

अभि अ॰, धातुओं एवं क्रि॰ ना॰ से पूर्व लगाया जाने वाला अनेकार्थवाचक उप॰ [अभि], **1.** परम्परागत अर्थ - *अयञ्हि अभिसद्दो वुड्ढिलक्खणपूजितपरिच्छिन्नाधिकेसु दिस्सति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.18; *अभिमुख्यविसिट्ठुद्धकम्मसारुप्पवुड्ढिसु, पूजाधिककुलासच्चलक्खणादिम्हि चाप्यभि,* अभि॰ प॰ 1176; **2.** कुछ प्रमुख अर्थ **क.** की ओर, की दिशा में, अभिमुख - *अभिमुखीभावे अभिमुखो, अभिक्कमति,* सद्द॰ 3.883; **ख.** विशिष्ट, प्रधान, प्रमुख, अतिरिक्त - *केनट्ठेन अभिधम्मो? धम्मातिरेकधम्मविसेसट्ठेन,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 4; **ग.** ऊर्ध्वकर्म, ऊपर से, ऊपर होकर, ऊपर की ओर, उत्तम, उत्कृष्ट - *राजापि दन्तमेव अभिरुहति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.284; **घ.** (सारूप्य या सौन्दर्य की) उत्कृष्टता का द्योतक - *अभिरूपोति दस्सनीयङ्गपच्चङ्गो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.101; **ङ.** (कुल की) उत्तमता, श्रेष्ठता या विशिष्टता का सूचक - *रञ्ञो खत्तियस्स अभिजातकुलकुलीनस्स खत्तियाभिसेकेन अभिसित्तस्स परिचरन्ति,* मि॰ प॰ 323; *खत्तियं जातिसम्पन्नं, अभिजातं यसस्सिनं,* स॰ नि॰ 1(1).85; **च.** (पूजन, वन्दन अथवा आदरभाव की) गम्भीरता का सङ्केतक - *यथानगाव सावत्थिं गन्त्वा भिक्खू अभिवादेन्ति,* पारा॰ 322; **छ.** अधिकता या प्रचुरता का बोधक - *सा पुञ्ञधारा विपुला, दातारं अभिवस्सति,* स॰ नि॰ 1(1).119; **ज.** भेदबोधक विशिष्ट चिह्न, लक्षण या संकेत का सूचक - *रुक्खं अभिविज्जोतते विज्जु,* सद्द॰ 3.883; **झ.** किसी के प्रति, किसी के विषय में - *साधु देवदत्तो मातरं अभि,* सद्द॰ 3.883; **ञ.** चारों ओर, चतुर्दिक, सभी ओर - *रुक्खं रुक्खं अभिविज्जोतते चन्दो,* सद्द॰ 3.883.

अभिआचिक्खन्ति अभि + आ + √चिक्ख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, स्पष्ट रूप से कहते हैं - *अब्भाचिक्खन्तीति अभिआचिक्खन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.13.

अभिआगत त्रि॰, [अभ्यागत], किसी की ओर उन्मुख होकर आया हुआ, अतिथि - **तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अब्भागतानन्ति अभिआगतानं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 18.

अभिकंखति अभि + √कंख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिकाङ्क्षति], अत्यधिक इच्छा करता है, प्रबल अभिलाषा करता है, प्रतीक्षा करता है, अपेक्षा करता है - *सा जम्मी लामिका सुप्पमुसलेहि सद्धिं उदुक्खलं अभिकङ्खति इच्छतीति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.353; - **सि** वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *केन कस्सप, धीरस्स दस्सनं अभिकङ्खसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.216; - **ङ्खामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *वाचाभिकङ्खामि महेसि तुय्हं,* सु॰ नि॰ 1067; *निस्नेहमभिकङ्खामि, एते मे चतुरो वरे'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.10; - **न्तं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतं अभिकङ्खन्तं, कतं कत्तब्बकं मया,* थेरगा॰ 330; - **ता** वर्त॰ कृ॰, पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *हि अत्तकामेन महत्तमभिकङ्खता,* स॰ नि॰ 1(1).166; *महत्तमभिकङ्खताति महन्तभावं पत्थयमानेन ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.180.

अभिकंखन नपुं॰, अभि + √कंख से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभिकांक्षन], आकांक्षा, इच्छा, अभिलाषा - *अत्थुप्पत्तिकालं अभिकङ्खनत्थाय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).55; - **सभाव** त्रि॰, ब॰ स॰,

स्वभाव से ही इच्छाएं रखने वाला, स्वभाव से ही स्पृहालु - **वेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. - *गिद्धाति अभिकङ्खनसभावेन अभिज्झनेन गिद्धा गेधं आपन्ना,* उदा. अट्ठ. 296.

अभिकंखा स्त्री., [अभिकाङ्क्षा], कामना, इच्छा, लालसा - **यं** सप्त. वि., ए. व. - *गिधु अभिकंखायं,* सद्द. 2.484; *गद्ध अभिकंखायं,* सद्द. 2.548.

अभिकंखी त्रि., [अभिकाङ्क्षिन्], लालसा करने वाला - **खी** पु., प्र. वि., ए. व. - *तस्स च पुरिसस्स पाहुनको आगच्छेय्य भत्तारहो भत्ताभिकङ्खी,* मि. प. 116; - **ङ्खिनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *तदा मुदितचित्ताहं, तं ठानमभिकङ्खिनी,* अप. 2.226.

अभिकंखित त्रि., [अभिकाङ्क्षित], चाहा हुआ, इच्छित, अभिलषित, अभिप्रार्थित - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अनभिच्छिताति न अभिकङ्खिता,* वि. व. अट्ठ. 169; - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *नाभिकंखामि मरणं, अभिकंखितं धनं,* सद्द. 2.330.

अभिकिण्ण त्रि., अभि + √किर का भू. क. कृ. [अभिकीर्ण], आच्छन्न, आच्छादित, भरा हुआ, व्याप्त - **ण्णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सकलविहारो मिस्सकपुप्फेहि अभिकिण्णो विय अहोसि,* अ. नि. अट्ठ. 2.32; - **ण्णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *पुप्फाभिकिण्णन्ति पुप्फेहि अभिकिण्णं,* वि. व. अट्ठ. 29; - **ण्णे** सप्त. वि., ए. व. - *पुप्फाभिकिण्णम्हीति गन्थितेहि च ... च अभिकिण्णे,* वि. व. अट्ठ. 238.

अभिकिरति / अभिकीरति अभि + √किर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिकिरति], **शा. अ.** ऊपर तक भर जाता है, पूरी तरह से भर जाता है, **ला. अ.** अभिभूत करता है, विनष्ट कर देता है - *दीपं कयिराथ मेधावी, यं ओघो नाभिकीरति,* ध. प. 25; *यं ओघो नाभिकीरतीति यं ... अभिकिरितुं विद्धंसेतुं न सक्कोति,* ध. प. अट्ठ. 1.145; - **कीररे** वर्त., प्र. पु., ब. व., आत्मने. - *कन्दितरुदितं निरत्थकं, किं वो सोकगणाभिकीररे,* जा. अट्ठ. 3.49.

अभिकीळति अभि + √कीळ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिक्रीड़ति], खेलता है, क्रीड़ा करता है - *बहुविधं धम्मकीळमभिकीळति,* मि. प. 324.

अभिकूजति अभि + √कूज का वर्त., प्र. पु., ए. व., कूजता है, शब्द करता है, मधुर ध्वनि करता है - **जन्ति** ब. व. - *अभिकूजन्ति ते तत्थ, सोभयन्ता ममस्समं,* अप. 1.403.

अभिकूजित त्रि., अभि + √कूज का भू. क. कृ. [अभिकूजित], कूजन किया हुआ, शब्दित, ध्वनित, पक्षियों की चहचहाहट से भरा हुआ - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *हंसकोञ्चाभिरुदा, च चक्कवक्काभिकूजिता,* पे. व. 350.

अभिक्कन्त[1] त्रि., अभि + √कम का भू. क. कृ. [अभिक्रान्त], **शा. अ.** पार किया हुआ, बीत चुका, प्रिय, सम्मोहक, अभिरूप, प्रशंसनीय - *अभिकन्तसद्दो खयसुन्दराभिरूपअब्भनुमोदनेसु दिस्सति,* पारा. अट्ठ. 1.128; - **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *वाच्चलिङ्गो अभिक्कन्तो सुन्दरस्मिमभिक्कमे,* अभि. प. 836; **विशेष अर्थ में** - **क.** काफी आगे बढ़ा हुआ, पार किया हुआ, बीत चुका, क्षीण हो चुका - **न्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अभिक्कन्ता खो ... रत्ति,* दी. नि. 2.68; *अभिक्कन्ताति अतिक्कन्ता खीणा खयवयं उपेता,* दी. नि. अट्ठ. 2.116; - **न्ताय** ष. वि., ए. व. - *आयस्मा आनन्दो अभिक्कन्ताय रत्तिया ...,* उदा. 97; **ख.** आ पहुंचा, आ धमका - **न्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *देवकाया अभिक्कन्ता, ते विजानाथ भिक्खवो,* दी. नि. 2.187; - **क्कन्ते** पु., द्वि. वि., ब. व. - *दस्सनाय अभिक्कन्ते, नानावेरज्जके बहू,* थेरगा. 1040; *तं सुत्वा थेरो दस्सनाय अभिक्कन्ते'ति अपरं गाथमाह,* थेरगा. अट्ठ. 2.362; **ग.** श्रेष्ठ, उत्तम, प्रशंसनीय - **न्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अभिक्कन्ता हेसा, भो गोतम, यदिदं उपेक्खा'ति,* अ. नि. 1(2).116; *अभिक्कन्ता हेसा ... यदिदं तत्थ कालञ्ञुता,* तदे.; - **न्ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *ममं सावका अभिक्कन्ते आणदस्सने,* म. नि. 2.211; **घ.** अतिसुन्दर, भव्य, शानदार, वैभवशाली, मनपसन्द - **न्तेन** पु., तृ. वि., ए. व. - *अभिक्कन्तेन वण्णेन, या त्वं तिट्ठसि देवते,* वि. व. 75; *अभिक्कन्तेनाति अतिकन्तेन अतिमनापेन अभिरूपेनाति,* वि. व. अट्ठ. 40; **ङ.** नपुं., प्रशंसा एवं वाहवाही देने हेतु प्रयुक्त, आश्चर्य, विस्मय अथवा अनुमोदन को सूचित करने के लिए प्रयुक्त, सुन्दर, भव्य, अतिसुन्दर, वाह वाह! - *अभिक्कन्तं, भन्ते, अभिक्कन्तं, भन्ते,* दी. नि. 1.74; *अभिक्कन्तं भो, गोतमा ति आदीसु अब्भनुमोदने,* दी. नि. अट्ठ. 1.184; *अभिक्कन्तं, भो गोतम अभिक्कन्तं भो गोतमा'ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.122; *अथ वा अभिक्कन्तन्ति अभिकन्तं अतिइट्ठं, अतिमनापं अतिसुन्दरन्ति वुत्तं होति,* तदे.; - **तर** त्रि., [अभिक्रान्ततर], अधिक सुन्दर, अधिक रमणीय - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *इमेसं उभिन्नं वण्णानं अभिक्कन्ततरो च पणीततरो चा'ति,* म. नि. 2.235; - **रा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *नच्चाय ... अभिक्कन्ततरा च पणीततरा,* अ. नि. 3(2).172; - **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *इमेहि सन्दिट्ठिकेहि सामञ्ञफलेहि अभिक्कन्ततरञ्च पणीततरञ्चा'ति,* दी. नि. 1.55.

अभिक्कन्त[2] नपुं., **क**. आगे की ओर बढ़ना, विकास की ओर बढ़ना, विकास, आगे की ओर बढ़ रहा कदम, प्रगति - **न्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिक्कन्तं ते सेय्यो नो पटिक्कन्तं'न्ति,* चूळव॰ 283; *एकच्चस्स पुग्गलस्स पासादिकं होति अभिक्कन्तं पटिक्कन्तं ... पसारितं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1(2).120; - **न्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पसादिकेन अभिक्कन्तेन ... पसारितेन,* महाव॰ 45; *पासादिकेन अभिक्कन्तेनाति आदीसु ... वेदितब्बं,* महाव॰ अट्ठ॰ 245.

अभिक्कन्तदस्सावी त्रि॰, शुभ या मङ्गलमय देखने वाला, दृष्टि की उत्तम क्षमता रखने वाला, उत्तम रूप में देखने वाला - **विं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं अभिक्कन्तदस्साविं, अत्थि पञ्हेन आगमं,* सु॰ नि॰ 1124; *अभिक्कन्तदस्साविन्ति एवं अग्गदस्साविं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.294.

अभिक्कन्तवण्ण त्रि॰, ब॰ स॰ [अभिक्रान्तवर्ण], अतीव सुन्दर आभा वाला, अत्युत्कृष्ट दीप्ति या चमक से युक्त, भव्य-सौन्दर्य से परिपूर्ण - **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिक्कन्तवण्णो केवलकप्पं गिज्झकूटं ... तेनुपसङ्कमि,* दी॰ नि॰ 2.162; *अभिक्कन्तवण्णोति अतिइट्ठकन्तमनापवण्णो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.215; - **ण्णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं ... तेनुपसङ्कमि,* उदा॰ 94; *अभिक्कन्तवण्णाति अतिउत्तमवण्णा,* उदा॰ अट्ठ॰ 141.

अभिक्कम पु॰, आगे बढ़ना, विकास, प्रगति, उन्नति, पास आना या पहुंचना, प्रयत्न, आरम्भ - **मे** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वाच्चलिङ्गो अभिक्कन्तो सुन्दरस्मिमभिक्कमे,* अभि॰ प॰ 836; - **क्कमो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिक्कमोसानं पञ्ञायति नो पटिक्कमो,* म॰ नि॰ 2.410; *मया अभिक्कमो निब्बत्तितो'ति वा सम्मुय्हन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1.271.

अभिक्कमति अभि + √कम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आगे की ओर बढ़ता है, पास आ पहुंचता है, आक्रान्त हो जाता है, पीड़ित हो जाता है - *सतोव अभिक्कमति सतोव पटिक्कमति,* अ॰ नि॰ 2(2).41; *सतोव अभिक्कमतीति गच्छन्तो सतिपञ्ञाहि समन्नागतोव गच्छति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.106; - **मामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अहं अभिक्कमामि ... सम्मुय्हन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.156-157; *अभिक्कमामी'ति चित्ते उप्पज्जमाने तेनेव ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.157; - **मथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अभिक्कमथायस्मन्तो अभिक्कमथायस्मन्तो,* महाव॰ 472; - **मन्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अभिक्कमन्तु भोन्तो लिच्छवी,* म॰ नि॰ 1.294; - **मिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अभिक्कमिस्सामि पटिक्कमिस्सामी'ति हि चित्तं ... समुट्ठापेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 127; - **क्कम** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अभिक्कम गहपति अभिक्कम गहपति,* चूळव॰ 283; - **मथ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ - *अभिक्खमथ वेगेन, दिजसत्तु दिजाधिपे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.334; - **क्कम्म** पू॰ का॰ कृ॰ - *सो च वेगेनभिक्कम्म, आसज्ज परमे दिजे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.334; - **मितब्ब / मनीय** त्रि॰, सं॰ कृ॰ - *एवं ते अभिक्कमितब्बं,* म॰ नि॰ 2.132; *अत्थिकानं अत्थिकानं मनुस्सानं अभिक्कमनीयं,* चूळव॰ 286.

अभिक्कमन नपुं॰, [अभिक्रमण], आगे बढ़ना, उत्कर्ष, उन्नति, प्रगति - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिक्कमनं ते सेय्यो, नो पटिक्कमन'न्ति,* स॰ नि॰ 1(1).244.

अभिक्कमापेति अभि + √कम के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आगे की ओर बढ़ने के लिये प्रेरित करता है, आगे की ओर बढ़ाता है - *अत्तना सहजातं रूपकायं सन्थम्भेति ... अभिक्कमापेति पटिक्कमापेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 127.

अभिक्खण नपुं॰, अभि + √खण का क्रि॰ ना॰, प्रबल, उत्साह या उमङ्ग - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिक्खणन्ति खो, ... वीरियारम्भस्सेतं अधिवचनं,* म॰ नि॰ 1.199.

अभिक्खणं निपा॰, अ॰ [अभीक्ष्णं], पुनः पुनः, बारम्बार, निरन्तर, लगातार - *अभिक्खणं उदानं उदानेन्तस्स ...,* उदा॰ 89; *अभिक्खणन्ति बहुलं,* उदा॰ अट्ठ॰ 129; *धम्मपरियायं अभिक्खणं भासेय्यासि ... उपासकानं,* दी॰ नि॰ 3.86; *अभिक्खणं भासेय्यासीति पुनप्पुनं भासेय्यासि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.79.

अभिक्खणन्त त्रि॰, अभि + √खन का वर्त॰ कृ॰, **शा॰ अ॰** चारों ओर से खोदता हुआ, **ला॰ अ॰** पूरा प्रयास करता हुआ, भरपूर जोर लगा रहा - **णन्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिक्खणन्तो सुमेधो सत्थं ... कुम्मं,* म॰ नि॰ 1.197.

अभिक्खणातङ्क त्रि॰, ब॰ स॰, निरन्तर रोगी बना रहने वाला, निरन्तर विपत्ति में पड़ा हुआ - **तङ्को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जिण्णो वुड्ढो ... आतुरकायो अभिक्खणातङ्को,* स॰ नि॰ 2(1).2; *अभिक्खणातङ्कोति अभिण्हरोगो निरन्तररोगो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.220.

अभिक्खिपन्त त्रि॰, अभि + √खिप का वर्त॰ कृ॰ [अभिक्षिपत्], **शा॰ अ॰** नीचे या इधर उधर फेंकता हुआ, **ला॰ अ॰** अपमानित या तिरस्कृत करता हुआ - **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न भगवन्तं अभिक्खिपन्तो भणति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.112; पाठा॰ अवक्खिणन्तो.

अभिक्खिपित्वा अभि + √खिप का पू॰ का॰ कृ॰, उपरिवत् - *अभिक्खिपित्वा कतवा तहिं धातुं,* दा॰ वं॰ 3.60.

अभिक्खु पु., तत्पु. स. [अभिक्षु], वह व्यक्ति, जो भिक्षु नहीं है, अभिक्षु, भिक्षुभाव-रहित - *नस्स पदस्स तत्पुरिसे उत्तरपदे अत्तं होति ... अबसलो, अभिक्खु,* क. व्या. 335; - **क** त्रि., ब. स. [अभिक्षुक], उपदेश देने वाले भिक्षुओं से रहित, शून्य विहार, वह आवास, जहाँ भिक्षु न हो - **के** पु., सप्त. वि., ए. व. - *न भिक्खुनिया अभिक्खुके आवासे वस्सं वसितब्बं,* पाचि. 76; *अभिक्खुके आवासेति एत्थ सचे भिक्खूनुपरसयतो अड्डयोजनब्भन्तरे ओवाददायका ... अभिक्खुको आवासो नाम,* पाचि. अट्ठ. 51; - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *सभिक्खुका आवासा अभिक्खुको आवासो ... गन्तब्बो,* चूळव. 79; *अभिक्खुको आवासोति सुञ्ञविहारो,* चूळव. अट्ठ. 11.

अभिख्या स्त्री., [अभिख्या], **क.** नाम, अभिधान **ख.** दीप्ति, चमक-दमक, शोभा, कान्ति, प्रकाशरश्मि - *अमते तु सुधा लेपे, अभिख्या नामरंसिसु,* अभि. प. 1052.

अभिगच्छति अभि + √गम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिगच्छति], किसी की ओर जाता है, समीप जाता है - **गच्छिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *दीपा दीपं उपप्लविन्ति सत्थारादितो सत्थारादिं अभिगच्छिं,* सु. नि. अट्ठ. 2.298.

अभिगज्जति अभि + √गज्ज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिगर्जति], गरजता है, दहाड़ता या चिल्लाता है, घोर गर्जन करता है - **न्ति** ब. व. - *कुसुमितसिखरा च पादपा अभिगज्जन्तिव मालुतेरिता,* थेरीगा. 374; *अभिगज्जन्तिव मालुतेरिताति वातेन सञ्चलिता ... अभित्थनिता विय तिट्ठन्ति,* थेरीगा. अट्ठ. 276; - **ज्जं / ज्जन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *अभिगज्जमेति पटिसूरमिच्छन्ति यथा सो पटिसूरं ... अभिगज्जन्तो एति,* सु. नि. अट्ठ. 2.233; - **ज्जिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *वाळा च ... अभिगज्जिंसु तावदे,* अप. 1.375.

अभिगज्जी त्रि., गरजने वाला, आनन्द के साथ कूजने वाला, गर्जनशील - **ज्जिनो** पु., प्र. वि., ब. व. केवल स. उ. प. में - *महिन्दघोसत्थनिताभिगज्जिनो ... झायिनं,* थेरगा. 1111; *महिन्दघोसत्थनिताभिगज्जिनोति जलघोसत्थनितेन ... गज्जनसीला,* थेरगा. अट्ठ. 2.396.

अभिगन्तब्ब त्रि., अभि + √गम का सं. कृ. [अभिगन्तव्य], सेवनीय, समीप में जाने योग्य, सम्पर्क या साथ करने योग्य - **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अरियोति निब्बानत्थिकेहि अभिगन्तब्बो,* खु. पा. अट्ठ. 68.

अभिगमन नपुं., [अभिगमन], विरोध में गमन, आक्रमण - *घु अभिगमने अभिगमनं अधिगमनं,* सद्द. 2.334.

अभिगमनीय त्रि., अभि + √गम का सं. कृ. [अभिगमनीय], समीप में पहुंचने योग्य, आश्रय लेने योग्य, साथ-सङ्ग करने योग्य - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अभिगमनीयो च होति विस्सासनीयो,* पे. व. अट्ठ. 8; *लोकेन अरणीयतो अभिगमनीयतोति वुत्तं होति,* खु. पा. अट्ठ. 64.

अभिगिज्झति अभि + √गिज्झ का वर्त., प्र. पु., ए. व., **क.** के प्रति आसक्त होता है, लालच करता है, अभिलाषा करता है - **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *सेखो अभिगिज्झन्तो असमुप्पन्नञ्च किलेसं उप्पादेति,* नेत्ति. 18; - **ज्झेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. *कामेसु नाभिगिज्झेय्य ...,* सु. नि. 1045; **ख.** ईर्ष्या करता है, डाह करता है, आपस में एक दूसरे से जलता है, स्पर्द्धा करता है - **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. - *अञ्ञमञ्ञाभिगिज्झन्ति, कामेसु अनलङ्कता,* स. नि. 1(1).18; *अञ्ञमञ्ञाभिगिज्झन्तीति अञ्ञमञ्ञं अभिगिज्झन्ति पत्थेन्ति पिहेन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.49; - **गिद्धभाव** पु., लालचीपन - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *सब्बेनपि कामेसु अभिगिद्धभावमेव पकासेति,* उदा. अट्ठ. 270.

अभिगीत त्रि., अभि + √गा का भू. क. कृ. [अभिगीत], **शा. अ.** गुञ्जित, पक्षियों के कलरव या कूजन से भरा हुआ, मधुर स्वर के निनाद या सङ्गीत से परिपूर्ण - **तं**[1] नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *समन्ततो किम्पुरिसाभिगीतं,* जा. अट्ठ. 5.190; - **तं**[2] नपुं., प्र. वि., ए. व. - *मधुरस्सरेन गायन्तेहि विय नानाविधेहि सकुणेहि अभिरुदं, अभिगीतन्ति अत्थो,* जा. अट्ठ. 7.163; **ला. अ. क.** प्रभावशाली गाथाओं द्वारा बांधा हुआ - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *बुद्धगाथाभिगीतोम्हि, नो चे मुञ्चेय्य चन्दिम'न्ति,* स. नि. 1(1).61; **ला. अ. ख.** नपुं., गाथाओं को कहकर प्राप्त - *गाथाभिगीतं पनुदन्ति बुद्धा,* सु. नि. 81; *गाथाभिगीतन्ति गाथाहि अभिगीतं ... लद्धन्ति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 1.119.

अभिगुत्त त्रि, अभि + √गुप का भू. क. कृ. [अभिगुप्त], अभिरक्षित, सुरक्षित, नियन्त्रित - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *थलूदके होहि मयाभिगुत्तो,* जा. अट्ठ. 5.79; *मया अभिगुत्तो रक्खितो होहीति,* तदे.

अभिघात पु., अभि + √हन् से निष्पन्न [अभिघात], **क.** प्रहार, आघात, धक्का, केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, द्रष्ट. उदकवेगा., कसा., घण्टा., दण्डा., मुसला., लगुळा., वातवेगा., सक्खरा. के अन्त.; **ख.** सम्पर्क, स्पर्श का प्रभाव, केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, गन्धा., फोट्ठब्बा., रसा., रूपा., सद्दा. के अन्त. द्रष्ट.; - **जसद** पु., सम्पर्क से

उत्पन्न शब्द, अभिघात या प्रहार से उत्पन्न शब्द - **दस्स** ष० वि०, ए० व० - *अभिघातजसद्दस्स समानकालता एत्थ लब्भति,* सद्द० 1.312.

अभिघुट्ठ त्रि०, अभि + √घुस का भू० क० कृ० [अभिघुष्ट], **क.** घोषित, उदघोषित, वह, जिसकी घोषणा कर दी गयी हो - **ट्ठे** नपुं०, सप्त० वि०, ए० व० - *वस्संवुत्थस्स भगवतो अभिघुट्ठे पवारणे,* बु० वं० 6.12; अना० वं० 80; **ख.** पु०/नपुं०, पक्षियों के मधुर संगीत के साथ अभिगुञ्जित - **ट्ठं** नपुं०, द्वि० वि०, ए० व० *दिजाभिघुट्ठं दिजसङ्घसेवितं,* जा० अट्ठ० 5.195; - **ट्ठा** पु०, प्र० वि०, ब० व० - *मधुरस्सरेहि दिजेहि अभिघुट्ठा,* जा० अट्ठ० 5.402.

अभिचरण नपुं०, अभि + √चर से व्यु०, क्रि० ना० [अभिचरण], मनोरञ्जन के साधनों को देखने जाना या भ्रमण करना, नृत्यगीतादि का दर्शन; केवल स० उ० प० के रूप में प्रयोग - *आदीनवा समज्जाभिचरणे,* दी० नि० 3.138; *समज्जाभिचरणे सहायो होति,* जा० अट्ठ० 3.142; *समज्जाभिचरणन्ति नच्चादिदस्सनवसेन समज्जागमनं,* जा० अट्ठ० 3.115.

अभिचिन्तयन्त त्रि०, अभि + √चिन्त का वर्त० कृ० [अभिचिन्तयत्], अच्छी तरह से विचार कर रहा, गंभीर चिन्तन कर रहा - **यं/न्तेन्तो** पु०, प्र० वि०, ए० व० - *गम्भीरपञ्हं मनसाभिचिन्तयं, नाच्चाहितं कम्म करोति लुद्दं,* जा० अट्ठ० 5.140; *मनसाभिचिन्तयंति मनसा अभिचिन्तेन्तो अत्थं पटिविज्झित्वा ... पाकटं कत्वा,* तदे०.

अभिचेत नपुं०, उत्तम चित्त, सर्वथा विशुद्ध चित्त - **तो** प्र० वि०, ए० व० - *अभिचेतसिकानन्ति अभिचेतोति अभिक्कन्तं विसुद्धचित्तं वुच्चति ...,* म० नि० अट्ठ० (मू.प.) 1(1).170.

अभिचेतसि सप्त० वि०, प्रतिरू० निपा०, चित्त में, मन में - *अभिचेतसि जातानि आभिचेतसिकानि,* म० नि० अट्ठ० (मू.प.) 1(1).170; तुल० अभिधम्मे.

अभिछन्न त्रि०, अभि + √छद का भू० क० कृ० [अभिछन्न], ढका हुआ, आच्छादित, आच्छन्न - **न्नो** पु०, प्र० वि०, ए० व० - *सत्तो गुहायं बहुनाभिछन्नो ... पगाळ्हो,* सु० नि० 778; - **न्नं** नपुं०, प्र० वि०, ए० व० - *अलङ्कतं हेमजालाभिछन्नं,* जा० अट्ठ० 2.307; *हेमजालाभिछन्नन्ति सुवण्णजालेन अभिच्छन्नं,* तदे०; - **न्ना** पु०, प्र० वि०, ब० व० - *परोसतं हेमजालाभिछन्ना,* जा० अट्ठ० 2.39.

अभिच्छा स्त्री०, [अभीप्सा], इच्छा, आकांक्षा, कामना, लालसा - *संपटिच्छनं इच्छा अभिच्छा,* सद्द० 2.453.

अभिजच्चबल नपुं०, तत्पु० स० [अभिजात्यबल], उत्तम कुल में जन्म लेने की शक्ति, अभिजाति-सम्पत्ति - **लं** द्वि० वि०, ए० व० - *अभिजच्चबलञ्चेव, तं चतुत्थं असंसयं,* जा० अट्ठ० 5.116; *अभिजच्चबलन्ति तीणि कुलानि ... जातिसम्पत्ति,* जा० अट्ठ० 5.117.

अभिजन पु०, [अभिजन], कुल, वंश, जन्मभूमि, उत्तम कुल में उत्पत्ति - *कुलं वंसो च सन्तानाभिजना गोत्तमन्वयो,* अभि० प० 332; *कुले त्वभिजनो वुत्तो उप्पत्तिभूमियं पि च,* अभि० प० 855.

अभिजनेति अभि + √जन के प्रेर० का वर्त०, प्र० पु०, ए० व० [अभिजनयति], उत्पन्न कराता है, प्रजनन कराता है, पैदा करता है या पैदा कराता है - *पटिसल्लानं पटिसल्लीयमानं अत्तानं रक्खति ... वीरियमभिजनेति,* मि० प० 141; - **हि** अनु०, म० पु० ए० व० - *तत्थ छन्दमभिजनेहि ... निग्गहाया'ति,* मि० प० 125.

अभिजप्प पु०, [अभिजल्प], बुदबुदाहट, फुसफुसाहट - **प्पेन** तृ० वि०, ए० व० - *मन्ताभिजप्पेन पुरे हि तुय्हं ... ब्रह्मो,* जा० अट्ठ० 4.182.

अभिजप्पति अभि + √जप्प का वर्त०, प्र० पु०, ए० व० [अभिजल्पति], कामना करता है, प्रार्थना करता है, अनुनयपूर्वक कहता है, चिरौरी करता है - *अत्था - अत्थाति लोको हि किमत्थमभिजप्पति,* सद्धम्मो० 99; - **न्ति** ब० व० - *आसीसन्ति थोमयन्ति, अभिजप्पन्ति जुहन्ति,* सु० नि० 1052; *अभिजप्पन्तीति रूपादिपटिलाभाय वाचं भिन्दन्ति,* सु० नि० अट्ठ० 2.279; - **प्पेय्य** विधि० प्र० पु०, ए० व० - *भवञ्च नाभिजप्पेय्य ... सम्पवेधेय्य,* सु० नि० 929; *भवञ्च नाभिजप्पेय्याति तस्स ... न पत्थेय्य,* सु० नि० अट्ठ० 2.255; - **मानस्स** पु०, वर्त० कृ०, ष० वि०, ए० व० - *सादियमानस्स ... अभिजप्पमानस्साति कामं कामयमानस्स,* महानि० 2.

अभिजप्पन नपुं०, [अभिजल्पन], जाप, सम्मोहन, वशीकरण, मन्त्रमुग्ध करना, मोहित करना - हत्थाभिजप्पनन्ति हत्थानं परिवत्तनत्थं मन्तजप्पनं; दी० नि० अट्ठ० 1.86; केवल स० उ० प० के रूप में हत्था० आदि के अन्त० द्रष्ट०.

अभिजप्पप्पदारण त्रि०, प्राणियों के चित्तों को व्यथित करने वाला (तृष्णाबाण), इच्छाओं की पूर्ति न होने से मन को फाड़ देने वाला - **णं** नपुं०, द्वि० वि०, ए० व० - *कोधप्पत्तमनत्थद्धं, अभिजप्पप्पदारणं,* थेरगा० 752; *इच्छितालाभदिवसेन हि तण्हा सत्तानं चित्तं पदालेन्ती विय पवत्तति,* थेरगा० अट्ठ० 2.242.

अभिजप्पा स्त्री., प्र. वि., ए. व. इच्छा, कामना, लालसा, अभिलाषा, आकांक्षा, तृष्णा - *अभिजप्पा खो मे उदपादि,* म. नि. 3.199; *अभिजप्पाति देवलोकाभिमुखं ... तण्हा उदपादि,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.153; *अभिजप्पा'ति करित्वा तत्थ लोको अभिलित्तो नाम भवति,* नेत्ति. 13.

अभिजप्पी त्रि., चाह कर रहा, आकांक्षी अभिलाषी - **प्पिनं** पु. ष. वि., ब. व. - *एतञ्हि बन्धनं दुक्खं, कामलाभाभिजप्पिनं,* अ. नि. 2(2).67; *कामलाभाभिजप्पिनन्ति कामलाभं पत्थेन्तानं,* अ. नि. अट्ठ. 3.118.

अभिजवति अभि + √जू का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रसन्नता के साथ तीव्र गति से आगे की ओर बढ़ता है, वेग के साथ आगे को बढ़ता है - **न्ति** ब. व. - *नाभिजवन्ति न ताणमुपेन्ति,* सु. नि. 673; *नाभिजवन्तीति न सुमुखभावेन अभिमुखा जवन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.181.

अभिजात त्रि., अभि + √जन का भू. क. कृ. [अभिजात], ऊंचे कुल में उत्पन्न, कुलीन - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *बुधे'भिजातो कुलजे,* अभि. प. 1074; *अभिजातोति ... अतिक्कमित्वा उपोसथकुले जातो,* जा. अट्ठ. 4.209; - **ता** पु., ब. व. *अभिजाता च कुञ्जरा,* जा. अट्ठ. 4.208; - **तं** द्वि. वि., ए. व. - *खत्तियं जातिसम्पन्नं, अभिजातं यसस्सिनं,* स. नि. 1(1).85; - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *खत्तियो च विदेहानं अभिजाता समुद्दजा'ति,* जा. अट्ठ. 7.7; - **कुलकुलीन** त्रि., उच्चकुल वाले परिवार से सम्बद्ध, उत्तम वंश में उत्पन्न - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *रञ्ञो खत्तियस्स अभिजातकुलकुलीनस्स ... अभिसित्तस्स,* मि. प. 323; - **ट्ठान** नपुं., जन्मस्थान, उद्भव स्थान - **ने** सप्त. वि., ए. व. - *अभिजातट्ठाने किमिपरिगतोव हुत्वा अट्ठो अट्ठितो,* थेरीगा. अट्ठ. 293.

अभिजाति स्त्री., **क.** बुद्ध का जन्म, श्रेष्ठ जन्म - **तिं** द्वि. वि., ए. व. - *विसाखपुण्णमाय पच्चूससमये अभिजातिं पापुणि,* उदा. अट्ठ. 118; - **तीनं** ष. वि., ब. व. - *संगतिया धन्नं अभिजातीनं तं तं अभिजातिं उपगमनेन,* जा. अट्ठ. 5.225; - **क्खण** पु., [क्षण], किसी के जन्म का क्षण - *अभिजातिक्खणे पनस्स पटिसन्धिग्गहणक्खणे ... पातुरहेसुं,* उदा. अट्ठ. 119; **ख.** प्राणियों की प्रजाति या जन्माधारित प्रभेद - **यो** प्र. वि., ब. व. - *छळाभिजातियो,* दी. नि. 1.48; *छळाभिजातियोति कण्हाभिजाति ... इमा छ अभिजातियो वदति,* दी. नि. अट्ठ. 1.134; - **तीसु** सप्त. वि., ए. व. - ... *छस्वेवाभिजातीसु सुखदुक्खं पटिसंवेदेन्ति,* दी. नि. 1.47; - **वत्तित** त्रि., प्रत्येक अभिजाति या प्रजाति विशेष में आचरण किया गया - **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *सब्बभवाभवगतीसु अभिजातिवत्तितमनुचरितं जानाति,* मि. प. 213; **हेतु** प. वि., प्रतिरू. निपा., किसी विशेष प्रजाति में जन्म ग्रहण करने के कारण से - *सत्ता अभिजातिहेतु सुखदुक्खं पटिसंवेदेन्ति,* म. नि. 3.8; केवल स. उ. प. के रूप में कण्हा., नीला., परमसुक्का., लोहित., सुक्का., हलिद्दा., के अन्त. द्रष्ट..

अभिजातिता स्त्री., अभिजाति का भाव. [अभिजातित्व], जन्म ग्रहण करना, उत्पन्न होना, उत्पत्तिभाव - **य** तृ. वि., ए. व. - *सम्मासम्बुद्धस्स उरे वायामजनिताभिजातिताय ओरसपुत्ती,* वि. व. अट्ठ. 182.

अभिजातिपरिसुद्ध त्रि., [अभिजातिपरिशुद्ध], स्वभाव से ही परिशुद्ध, शुद्ध प्रकृति वाला - **द्धस्स** पु., ष. वि., ए. व. - *जातिमन्तस्स अभिजातिपरिसुद्धस्स मज्जननिधंसन-परिसोधनेन करणीयं न होति,* मि. प. 203.

अभिजानन नपुं., अभि + √ञा का क्रि. ना. [अभिजानन], अभिनिश्चयन, निश्चयात्मक ज्ञान - **नाय** च. वि., ए. व. - *अभिञ्ञायाति सब्बस्सापि अभिञ्ञेय्यस्स अभिजाननाय,* उदा. अट्ठ. 184.

अभिजानाति अभि + √ञा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिजानाति], **क.** अभिज्ञा नामक विशिष्ट आन्तरिक ज्ञान द्वारा जानता है, ज्ञात-परिज्ञा द्वारा धर्मों को अनित्य, दुख एवं अनात्म रूप में जानता है - *सो सब्बं धम्मं अभिजानाति,* म. नि. 1.320; *सोपि पथविं पथवितो अभिजानाति,* म. नि. 1.5; *अभिजानातीति ... अभिविसिट्ठेन ञाणेन जानाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).46; *अभिजानातीति अनिच्चं दुक्खं अनत्ताति ञातपरिञ्ञाय अभिजानाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).194; **ख.** स्मरण करता है, ध्यान में किसी तथ्य के प्रति जागरुक या चैतन्य होता है - **नामि** वर्त., उ. पु., ए. व. - *नाभिजानामि सङ्कप्पं अनरियं दोससंहितन्ति,* थेरगा. 48; *मेत्तञ्च अभिजानामि, अप्पमाणं सुभावितं,* थेरगा. 647; *अभिजानामीति, अभिमुखतो जानामि,* थेरगा. अट्ठ. 2.204; **नासि** म. पु., ए. व. - *अभिजानासि नो त्वं, महाराज, इमं पञ्हं अञ्ञे समणब्राह्मणे पुच्छिता'ति?,* दी. नि. 1.46.

अभिजायति अभि + √जन का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिजायति, अभि + जन का भा. वा.], हो जाता है, बन जाता है, (किसी विशेष) अभिजाति का हो जाता है - *यो ओगहणे थम्भोरिवाभिजायति,* सु. नि. 216; *एकच्चो सुक्काभिजातियो*

समानो कण्हं धम्मं अभिजायति, अ॰ नि॰ 2(2).94; *कण्हं धम्मं अभिजायतीति कण्हसभावो हुत्वा जायति निब्बत्तति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.128.

अभिजिक / अभिञ्जिक पु॰, एक व्यक्ति का नाम, स्थविर आनन्द का एक शिष्य – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भण्डञ्च नाम भिक्खुं आनन्दस्स सद्धिविहारिं अभिजिकञ्च ...,* स॰ नि॰ 1(2).182.

अभिजिगिंसति / अभिजिगीसति अभि + √जि के इच्छा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, जीतने की इच्छा करता है, विजय पाने की इच्छा करता है – *अलम्पायनो ... ममं अभिजिगीसति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.38; *अभिजिगीसतीति युद्धे जिनितुं इच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.39; *उच्चावचेहुपायेहि परेसमभिजिगीसति,* थेरगा॰ 743; *परेसमभिजिगीसतीति परेसं सन्तकं आहरितुं इच्छति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.237.

अभिजीवति अभि + √जीव का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिजीवति], किसी के सहारे जीता है, किसी के सहारे बना रहता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *अभिजीवनिकस्साति येन सिप्पेन अभिजीवन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 346.

अभिजीवनिक त्रि॰, जीवन-यापन का सहारा देने वाला, जीविका प्रदान करने वाला – **कस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओदातवत्थवसनका अभिजीवनिकस्स सिप्पस्स ... विहरिस्सन्ति,* महाव॰ 260; *अभिजीवनिकस्साति येन सिप्पेन अभिजीवन्ति ...,* महाव॰ अट्ठ॰ 346.

अभिजीहना स्त्री॰, [अभिजेहन, नपुं॰], दृढ़ प्रयत्न, प्रबल प्रयास – **नाय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कालञ्च ञत्वा अभिजीहनाय,* जा॰ अट्ठ॰ 6.202; *अभिजीहनायाति वीरियकरणस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 6.203.

अभिजोतये अभि + √जुत के प्रेर॰ का विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिद्योतये], प्रकाशित कराए, दिखलाए – *तादिसे सञ्चजं पाणं, कमत्थमभिजोतये,* जा॰ अट्ठ॰ 5.333; *पाणसञ्चजने त्वं पाणं सञ्चजन्तो कमत्थं जोतेय्यासीति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.336.

अभिज्जनक त्रि॰, अभेद्य, वह, जिसका भेदन न किया जा सके, अविनाशी, अक्षय – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लञ्जं लभित्वा अभिज्जनको नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.141; *लोके धनदानेन अभिज्जनकसत्तो नाम नत्थि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.108; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नापि ठितं अभिज्जनकं नाम अत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.375.

अभिज्जमान त्रि॰, √भिद के कर्म॰ वा॰ के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, बिना भीगे हुए, अप्रभावित रहते हुए – **ने** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उदकेपि अभिज्जमाने गच्छति सेय्यथापि पथविया,* दी॰ नि॰ 1.69; *अभिज्जमाने उदके, अगञ्छि महिया यथा,* अप॰ 2.205.

अभिज्जमानपेतवत्थु नपुं॰, पे॰ व॰ की एक कथा का शीर्षक, पे॰ व॰ 125; – **वण्णना** स्त्री॰, पे॰ व॰ अट्ठ॰ के एक खण्ड का शीर्षक, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 147-154.

अभिज्जलति अभि + √जल का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिज्वलति], चमकता है, अभिप्रकाशित होता है, पूर्ण प्रज्ज्वलित होता है – **लन्ती** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दद्दल्लमानाति अतिविय अभिजलन्ती,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 164; – **न्तं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *सच्चेन दावग्गिमभिज्जलन्तं,* दा॰ वं॰ 3.43.

अभिज्झति अभिज्झा के ना॰ धा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, किसी वस्तु की आकांक्षा, इच्छा या अभिलाषा करता है, लोभ करता है – *सोतेन सद्दं सुत्वा मनापं नाभिज्झति नाभिहंसति,* स॰ नि॰ 3(1).90; *मनापं नाभिज्झतीति इट्ठारम्मणं नाभिज्झायति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.182.

अभिज्झा स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अभिध्या], तृष्णा, आकांक्षा, लोभ, राग – *अभिज्झा वनथो वानं लोभो रागो च आलयो,* अभि॰ प॰ 163; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ *अभिज्झाय चित्तं परिसोधेति,* दी॰ नि॰ 3.35; – **ज्झं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिज्झं पजहेय्याम,* दी॰ नि॰ 3.54.

अभिज्झाकायगन्थ पु॰, पुनः पुनः नाम काय को जन्म एवं मरण के भवचक्र में बांधने वाली मन की गांठ के रूप में विद्यमान लोभ की चित्तवृत्ति, चार प्रकार की मन की गांठों में से एक, राग या आसक्ति – **न्थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तारो गन्था अभिज्झा कायगन्थो, ब्यापादो कायगन्थो, सीलब्बतपरामासो कायगन्थो, इदं सच्चाभिनिवेसो कायगन्थो,* ध॰ स॰ 1140; – **न्थस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलोभेन अभिज्झाकायगन्थस्स पभेदनं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 173; – **न्था** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नानप्पकारेसु आरम्मणेसु पवत्तमाना अभिज्झाकायगन्था,* जा॰ अट्ठ॰ 4.12.

अभिज्झातु पु॰, (स्त्री॰ / नपुं॰) अभि + √झे का कर्तृ॰ कृ॰, विषय-भोगों में आकांक्षा रखने वाला, लोभी, तृष्णालु, लालची – **ज्झाता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परस्स परवित्तूपकरणं तं अभिज्झाता होति,* म॰ नि॰ 1.360; *अभिज्झाता होतीति अभिज्झाय ओलोकेता होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).228; तुल॰ अभिज्झितं अधीरितं, क॰ व्या॰ 46.

अभिज्झादोमनस्स नपुं॰, द्व॰ स॰ [अभिध्यादौर्मनस्य], लोभ तथा दौर्मनस्य, राग एवं द्वेष का समुच्चय – **स्सं** द्वि॰ वि॰,

ए॰ व॰ - *कायानुपस्सी ... विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं,* दी॰ नि॰ 2.74; *विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सन्ति वुत्तं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.313; - **स्सा** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिज्झादोमनस्सा पापका अकुसला धम्म ...,* दी॰ नि॰ 1.62.

अभिज्झापरियुट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अभिध्यापर्युत्थान], (मन में) लोभ या राग का अत्यधिक ऊपर उठना, लोभ की प्रबलता - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झापरियुट्ठानं खो पन तथागतप्पवेदिते धम्मविनये परिहानमेतं,* अ॰ नि॰ 3(2).138.

अभिज्झापरियुट्ठित त्रि॰, लोलुपता से घिरा हुआ, लिप्सा से आवृत - **तेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झापरियुट्ठितेन चेतसा बहुलं विहरति,* अ॰ नि॰ 3(2).138.

अभिज्झायति अभि + √झा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिध्यायति], लोभ, लालच या लिप्सा करता है, राग भरे चित्त से आलम्बन का अनुचिन्तन करता है - *अभिज्झायतीति अभिज्झा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.131; *अभिज्झायति एतायाति अभिज्झा,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 307; - **न्ति** ब॰ व॰ - *ते चतुप्पभेदा अभिज्झायन्ति एताय, सयं वा अभिज्झायति, अभिज्झायनमत्तमेव वा एसाति अभिज्झा,* महानि॰ अट्ठ॰ 186; - **यिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अभिज्झायिंसु ब्राह्मणा,* सु॰ नि॰ 302; *अभिज्झायिंसूति ... तण्हं वड्ढेत्वा अभिपत्थयमाना झायिंसु,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.50; - **न्ता** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सत्ते अभिज्झायन्ता परेसं दारेसु चारित्तं आपज्जिंसु,* दी॰ नि॰ 3.50; - **ज्झाय** पू॰ का॰ कृ॰ - *तं विमानं अभिज्झाय,* जा॰ अट्ठ॰ 7.17; *अभिज्झायाति पत्थेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.18.

अभिज्झायन नपुं॰, अभि + √झा से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभिध्यान], लालच, लोभ अथवा राग से भरा हुआ मानसिक अनुचिन्तन - **नट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰, रागसहित मानसिक चिन्तन का तात्पर्य या आशय - **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झायनट्ठेन अभिज्झा,* महानि॰ अट्ठ॰ 32; - **सील** त्रि॰, लालच या लोभ की प्रवृत्ति वाला, अभिध्यालु - **लु** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ अभिज्झालूति परभण्डादि अभिज्झायनसीला,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).122.

अभिज्झायितु पु॰, अभिज्झायति का क॰ ना॰, लालची, लालच से भरा हुआ, अभिध्यालु - **यिता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झालूति परभण्डानं अभिज्झायिता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267.

अभिज्झालु त्रि॰, [अभिध्यालु], लालची, तृष्णालु, लोभी प्रकृति वाला, तीव्र राग से युक्त - **लु** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झा अस्स पकति अभिज्झालु, अभिज्झा अस्स बहुला वा अभिज्झालु,* क॰ व्या॰ 361; - **लुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अभिज्झालुं कामेसु तिब्बसारागं समणं ... विज्जति,* अ॰ नि॰ 1(2).35; - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सङ्घाटिधारणमत्तेन अभिज्झालुस्स अभिज्झा पहीयेथ,* म॰ नि॰ 1.354; - **नी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अभिज्झालुनी होति,* अ॰ नि॰ 3(2).257; - **लू / लुनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *अभिज्झालू कामेसु तिब्बसारागा,* म॰ नि॰ 1.23; *अभिज्झालूति परभण्डादि अभिज्झायनसीला,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).122; *अभिज्झालुनोपि अनभिज्झालुनोपि,* दी॰ नि॰ 1.123.

अभिज्झाविनय पु॰, [अभिध्याविनय], लालच का संयमन, लोभ का नियन्त्रण, लिप्सा का निराकरण, अर्हत्त्व - **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झाविनये सिक्खं,* अ॰ नि॰ 1(2).37; *अभिज्झाविनये सिक्खन्ति अभिज्झाविनयो वुच्चति अरहत्तं ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.281.

अभिज्झाविसमलोभ 1. पु॰, **शा॰ अ॰** तृष्णा से युक्त अनुचित लोभ, **ला॰ अ॰** अपनी धनसम्पति में राग या लगाव तथा दूसरों की संपत्ति के प्रति लोभ - **भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झाविसमलोभो चित्तस्स उपक्किलेसो,* म॰ नि॰ 1.46; *तत्थ सकभण्डे छन्दरागो अभिज्झा, परभण्डे विसमलोभो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).178; 2. नपुं॰, द्व॰ स॰, अभिध्या या लालच नामक अनुचित लोभ - **भं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झाविसमलोभन्ति अभिज्झासङ्खातं विसमलोभं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.305; - **भाभिभूत** त्रि॰, तृष्णा तथा अन्यायपूर्ण लोभ से पराभूत या हारा हुआ - **तेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झाविसमलोभाभिभूतेन ... चेतसा विहरन्तो* अ॰ नि॰ 1(2).77.

अभिज्झाब्यापाद पु॰, द्व॰ स॰ [अभिध्याव्यापाद], राग एवं द्वेष - **दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *मनुस्सेसु अभिज्झाब्यापादा वेपुल्लमगमंसु,* दी॰ नि॰ 3.51; *अभिज्झाब्यापादाति अभिज्झा च ब्यापादो च,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.33; *अभिज्झाब्यापादो विगतो होति,* अ॰ नि॰ 1(2).17.

अभिज्झासहगत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अभिध्यासहगत], लोभ से युक्त, राग से सम्पृक्त, रागान्वित - **तेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिज्झासहगतेन चेतसा दिवसं अतिनामेति,* अ॰ नि॰ 1(1).235.

अभिञ्जिक / अभिजिक पु॰, एक भिक्षु का नाम, आयुष्मान अनुरुद्ध का एक शिष्य - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिजिकञ्च भिक्खुं अनुरुद्धस्स सद्धिविहारिं आमन्तेहि,* स॰ नि॰ 1(2).182; द्रष्ट॰ आभिञ्जिक.

अभिञ्ञ त्रि॰, [अभिज्ञ], जानने वाला, जानकार, दक्ष, सर्वोच्च ज्ञान रखने वाला - **ञ्ञानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिञ्ञानि च सब्बानि,* अभि॰ अव॰ 171.

अभिञ्ञट्ठ पु., [अभिज्ञार्थ], अलौकिक ज्ञान का अर्थ, लोकोत्तर ज्ञान या अभिज्ञा ज्ञान का तात्पर्य – **ट्ठो** प्र. वि., ए. व. – *अभिञ्ञाय अभिञ्ञट्ठो ञातो दिट्ठो ... पञ्ञाय,* पटि. म. 330.

अभिञ्ञतर त्रि., [अभिज्ञतर], अतीव बुद्धिमान, पूर्ण रूप से प्रज्ञावान् – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *भगवता भिय्योभिञ्ञतरो यदिदं सम्बोधिय'न्ति,* दी. नि. 2.64.

अभिञ्ञत्थ त्रि., [अभिज्ञार्थ], अभिज्ञा के लिए उपयोगी, पूर्ण ज्ञान के लिये अनिवार्य – **त्था** पु., प्र. वि., ब. व. – *अभिञ्ञत्था परिञ्ञत्था पहानत्था'ति,* म. नि. 1.373; – **त्थं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *अभिञ्ञत्थं परिञ्ञत्थं, ब्रह्मचरियं अनीतिहं,* इतिवु. 23; *अभिञ्ञत्थन्ति कुसलादिविभागेन खन्धादिविभागेन च सब्बधम्मे ... जाननत्थं,* इतिवु. अट्ठ. 98.

अभिञ्ञप्पत्त त्रि., [अभिज्ञाप्राप्त], वह, जिसने अभिज्ञा अर्थात् पूर्णज्ञान को पा लिया है, अलौकिक ज्ञान या सर्वोच्च ज्ञान को प्राप्त – **त्तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *अभिञ्ञाप्पत्तेन एकेन रूपावचरकिरियेनाति ...,* ध. स. अट्ठ. 356.

अभिञ्ञा स्त्री., अभि + √ञा का क्रि. ना. [अभिज्ञा], उच्चतम ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, लोकोत्तर ज्ञान; 1. उपचार समाधि की अवस्था से लेकर अर्पणा-समाधि की अवस्था तक सक्रिय प्रज्ञा, इद्धिविध, दिव्यस्रोत, परचित्त-विजानन, पूर्वजन्मों का अनुस्मरण, दिव्यचक्षु या प्राणियों के मरने एवं जन्म लेने का ज्ञान, ये पांच प्रकार के विशिष्ट आन्तरिक-ज्ञान – **ञ्ञा** प्र. वि., ए. व. – *उपचारतो पट्ठाय याव अप्पना ताव पवत्ता पञ्ञा अभिञ्ञा'ति वुच्चति,* ध. स. अट्ठ. 227; – **ञ्ञं** द्वि. वि., ए. व. – *अरहतो अभिञ्ञं उप्पादेन्तस्स समापत्तिं ...,* विभ. 369; – **य** च. वि., ए. व. – *एकन्तनिब्बिदाय ... अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय संवत्तति?,* म. नि. 2.279; **हि** तृ. वि., ब. व. – *अरहत्तं पापुणि ... चेव अभिञ्ञाहि च,* ध. प. अट्ठ. 1.277; – **यो** द्वि. वि., ब. व. – *पञ्चाभिञ्ञायो निब्बत्तेत्वा ब्रह्मलोकूपगो अहोसी'ति,* मि. प. 208; **सु** सप्त. वि., ब. व. – ... *आसवानं खये ञाणं इमा छसु अभिञ्ञासु पञ्ञा,* विभ. 382; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट. आसवक्खया., क्रिया., छळ., झाना., पञ्चा., मग्गफलविज्जा., मग्गा., मुण्डाकथा., रूपारूपभवा., लोकिका., लोकियपञ्चा., सब्बाभिञ्ञाबलप्पत्त इत्यादि के अन्त.; **ख.** अभिप्राय, इच्छा या रुचि केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त – *यथाभिञ्ञं करिस्सती'ति,* जा. अट्ठ. 5.360; *यथाभिञ्ञन्ति यथाधिप्पाययंयथारुचिं,* तदे.; **ग.** नाम, संज्ञा, अभिधान, चिह्न, केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, द्रष्ट. किमभिञ्ञ के अन्त.; जा. अट्ठ. 6.151; **कथा** स्त्री., [अभिज्ञाकथा], अभिज्ञा के विषय में उपदेश – **थं** द्वि. वि., ए. व. – *तस्मा अभिञ्ञाकथं ताव आरभिस्साम,* विसुद्धि. 2.1; – **कुसल** नपुं., अभिज्ञा से युक्त कुशल चित्त – *पञ्चमज्झानसङ्खातं अभिञ्ञाकुसलञ्चेति,* अभि. ध. स. 22; – **चक्खु** नपुं., [अभिज्ञाचक्षु], दिव्यचक्षु, पाँच प्रकार के अभिज्ञाबलों में से पांचवीं अभिज्ञा – **क्खुं** द्वि. वि., ए. व. – *अभिञ्ञाचक्खुं तादिसन्ति दिब्बं वियाति दिब्बं,* उदा. अट्ठ. 58; – **चित्त** नपुं., [अभिज्ञाचित्त], अभिज्ञा-ज्ञान के साथ कार्यरत महग्गतभूमि का चित्त, इद्धिविध आदि पांच प्रकार की लौकिक अभिज्ञाओं से युक्त चित्त – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *चत्तारो ञाणसंयुत्ताभिञ्ञाचित्तञ्च पुञ्ञतो,* अभि. अव. 54; – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *कामावचरेहि अभिञ्ञाचित्तेन चाति नवहि कसुलचित्तेहि,* ध. स. अट्ठ. 356; **चित्तज** त्रि., [अभिज्ञाचित्तज], अभिज्ञा-युक्त महग्गत चित्त से उत्पन्न, दिव्यचित्त से उत्पन्न – **जा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अभिञ्ञाचित्तजा पञ्ञा, दिब्बचक्खुन्ति वुच्चति,* अभि. अव. 82; – **चेतना** स्त्री., [अभिज्ञाचेतना], अभिज्ञा ज्ञान अथवा पांच प्रकार के लौकिक अभिज्ञाबलों से युक्त चित्त की चेतना, प्र. वि., ए. व. – *यथा च अभिञ्ञाचेतना, एवं उद्धच्चचेतनापि न होति,* विभ. अट्ठ. 136; *यदि हि अभिञ्ञाचेतना विपाकं उप्पादेय्य ...,* अभि. अव., अभि. टी. 2.67; – **ञाण** नपुं., [अभिज्ञाज्ञान], अभिज्ञा का ज्ञान या बोध, विशिष्ट आन्तरिक ज्ञान, इद्धिविध आदि पांच या छ प्रकार का विशिष्ट ज्ञान – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *पञ्चाभिञ्ञाञाणेन वा तण्हाबन्धुं वा दिट्ठिबन्धुं ...,* महानि. 241; – **णानं** ष. वि., ब. व. – *छन्नं अभिञ्ञाञाणानं,* पटि. म. 364; – **द्वय** नपुं., दो प्रकार का अभिज्ञा-ज्ञान – **यं** प्र. वि., ए. व. – *तथाभिञ्ञाद्वयञ्चेव क्रियावोट्ठब्बनम्पि च,* अभि. अव. 52; – **द्वयचित्त** नपुं., दो प्रकार की अभिज्ञा से युक्त चित्त – **त्तस्स** ष. वि., ए. व. – *अभिञ्ञाद्वयचित्तस्स, कामपाकक्रियस्स च,* अभि. अव. 56; – **निद्देस** पु., अभि. अव. के सोलहवें परिच्छेद तथा विसुद्धि. के एक भाग का शीर्षक, अभि. अव. 134-140; विसुद्धि. 2.35-62; – **ञ्ञानिसंस** त्रि., ब. स. [अभिज्ञानिशंस], अभिज्ञा-नामक विशिष्ट ज्ञान के उत्तम लाभ-वाला – **सा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – ... *अप्पनासमाधिभावना अभिञ्ञानिसंसा होति,* विसुद्धि. 1.363; – **ञ्ञानुयोग** पु., कथा. के एक स्थल का शीर्षक, जिसमें अभिज्ञा-ज्ञान के विषय में विरोधी का प्रश्न

है, कथा॰ 56-57; - **पञ्ञत्ति** स्त्री॰ [अभिज्ञाप्रज्ञप्ति], सभी धर्मों के विषय में प्राप्त अभिज्ञा-ज्ञान की अभिव्यक्ति या प्रकाशन, अभिज्ञा-ज्ञान द्वारा धर्मों का प्रकाशन - *अभिञ्ञापञ्ञत्ति सब्बधम्मानं,* नेत्ति॰ 51; - **पञ्ञा** स्त्री॰, इद्धिविध आदि पांच अभिज्ञा-ज्ञानों को प्राप्त करने वाली प्रज्ञा - *कथं अभिञ्ञापञ्ञा ञातट्ठे ञाणं,* पटि॰ म॰ 80; - **पटिपाटि** स्त्री॰, [अभिज्ञापरिपाटि], अभिज्ञाओं का अनुक्रम, अभिज्ञाओं का सिलसिला - **टिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *खीणासवस्स अभिञ्ञापटिपाटिं दस्सेन्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.276; - **परिञ्ञेय्य** त्रि॰, अभिज्ञा ज्ञान के द्वारा जानने योग्य, सर्वोच्चज्ञान के द्वारा परिज्ञेय - **य्यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सब्बं अभिञ्ञापरिञ्ञेय्यं,* स॰ नि॰ 2(2).30; - **पादक** त्रि॰, [अभिज्ञापादक], अभिज्ञा के लिए आधारभूत - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिञ्ञापादकं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 231; - **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिञ्ञपादके झाने वुत्ते ... वारो आगतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).170; - **झान** नपुं॰, [अभिज्ञापादकध्यान], अभिज्ञा-ज्ञान के लिए आधारभूत ध्यान - *अभिञ्ञापादकज्झानं समापज्जित्वा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.54; - **पारगू** त्रि॰, [अभिज्ञापारग], अभिज्ञा अर्थात् उच्चतम ज्ञान के द्वारा पूर्णता को प्राप्त कर चुका - **गू** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिञ्ञापारगू परिञ्ञापारगू ... समापत्तिपारगू* महानि॰ 15; *अभिञ्ञापारगूति अधिगतेन ञाणेन ञातपरिञ्ञाय निब्बानपारं गन्तुकामो गच्छति,* महानि॰ अट्ठ॰ 64; - **पारमी** स्त्री॰, [बौ॰ सं॰ अभिज्ञापारमी], अभिज्ञा में पूर्णता, उच्चतम ज्ञान की आदर्श पराकाष्ठा, अभिज्ञा ज्ञान की पारमिता - **मिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिञ्ञापारमिं गन्त्वा ब्रह्मलोकं अगच्छिहं,* अप॰ 1.21; - **मिप्पत्त** त्रि॰, अभिज्ञा-ज्ञान की पूर्णता को प्राप्त - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिञ्ञापारमिप्पत्तो ... विसोधिता,* थेरगा॰ 1271; *अभिञ्ञापारमिप्पत्तोति छन्नम्पि अभिञ्ञानं पारमिं उक्कंसं अधिगतो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.448; - **पारिपूरी** स्त्री॰, [बौ॰ सं॰ अभिज्ञापारिपूरी], अभिज्ञा की पूर्णता - **रिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिञ्ञापारिपूरिं कत्वा दस्सेतुम्पि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).173; - **बल** नपुं॰, अभिज्ञा अथवा उच्चतम ज्ञान की शक्ति - **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अट्ठगुणसमूपेतं अभिञ्ञाबलमाहरिं,* बु॰ वं॰ 2.29; - **बलप्पत्त** त्रि॰, उच्चतम ज्ञान की शक्ति या बल को प्राप्त, अभिज्ञा की शक्ति को प्राप्त - **त्तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिञ्ञाबलप्पत्तानं, निब्बुतानं तपस्सिनं,* बु॰ वं॰ 9.11; *अभिञ्ञाबलप्पत्तानन्ति अभिञ्ञानं बलप्पत्तानं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 199; - **बलपारग** त्रि॰, उच्चतम ज्ञान या अभिज्ञा में पूर्ण, अभिज्ञा की शक्ति से सम्पन्न, छह प्रकार के अभिज्ञा-बलों में परिपूर्ण - **गा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सङ्घमित्ता महाथेरी अभिञ्ञाबलपारगा,* म॰ वं॰ 19.20; *अभिञ्ञाबलपारगा ति छसु अभिञ्ञाबलेसु ... अधिप्पायो,* म॰ वं॰ टी॰ 361 (ना॰); - **मानस** नपुं॰, [अभिज्ञानमानस], अभिज्ञा या उच्चतम ज्ञान से युक्त महग्गत चित्त, ध्यानभूमि के अभिज्ञा-ज्ञान से युक्त चित्त - **सं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तथा दस क्रिया कामे, अभिञ्ञामानसं द्वयं,* अभि॰ अव॰ 36; - **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिञ्ञामानसा द्वेपि,* अभि॰ अव॰ 53; - **ञ्ञारम्मणनिद्देस** पु॰, अभि॰ अव॰ का सत्रहवां परिच्छेद, जिसमें अभिज्ञाओं के आलम्बनों (ग्राह्यविषयों) का वर्णन है, अभि॰ अव॰ 140-146; - **लाभी** त्रि॰, [अभिज्ञालाभिन्], उच्चतम अभिज्ञा से युक्त, उच्चतम ज्ञान या अभिज्ञा का लाभ पाने वाला - **भी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यथाकथितं भूतं हुत्वा अयं अभिञ्ञालाभी ति पाकटो अहोसि,* सा॰ वं॰ 49(ना॰); *पक्कोसनतो अयं अभिञ्ञालाभी ति कित्तिघोसो अहोसि,* तदे॰; - **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिञ्ञालाभीनं ... गमनागमनवसेन सूरियोभासं,* सा॰ वं॰ 30(ना॰); - **वसिभावितु** त्रि॰, वह, जिसने अभिज्ञा-ज्ञान पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया है, वह, जिसने अभिज्ञा को वशीभूत कर लिया है - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अञ्ञे अभिञ्ञा अप्पेन्ति, अभिञ्ञा वसिभाविता,* अप॰ 1.32; *अभिञ्ञा पञ्च अभिञ्ञायो वसिभाविता वसीकरिंसु,* अप॰ अट्ठ॰ 1.116; - **वोसानपारमिप्पत्त** त्रि॰, वह, जिसने अभिज्ञा के द्वारा पूर्ण प्रवीणता या दक्षता को पा लिया है - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *धम्मेसु अभिञ्ञावोसानपारमिप्पत्तो पटिजानामि,* अ॰ नि॰ 2(1).9; *अभिञ्ञावोसानपारमिप्पत्तो पटिजानामीति चतूसु ... अभिजानित्वा वोसानपारमिं ... पारं पत्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.4; - **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सावका बहू अभिञ्ञावोसानपारमिप्पत्ता विहरन्ति,* म॰ नि॰ 2.213; *अभिञ्ञावोसानपारमिप्पत्ताति ... अरहत्तं पत्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.172; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में दिट्ठधम्मा॰ आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **वोसित** त्रि॰, [अभिज्ञाव्यवसित], अभिज्ञा-ज्ञान के द्वारा पूर्ण रूप से मुक्त हो चुका अर्हत्, जन्म के क्षय को प्राप्त अर्हत् - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिञ्ञा वोसितो मुनि,* म॰ नि॰ 2.353; *अभिञ्ञा वोसितोति तं अरहत्तं अभिजानित्वा वोसितो वोसानप्पत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.279; - **सच्छिकरणीय** त्रि॰, अभिज्ञा के द्वारा साक्षात्कार

करने योग्य या अनुभवनीय - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *यस्स यस्स अभिञ्ञासच्छिकरणीयस्स धम्मस्स ... अभिञ्ञासच्छिकिरियाय,* म. नि. 3.139; *अभिञ्ञासच्छिकरणीयस्साति अभिञ्ञाय सच्छिकातब्बस्स,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.106; - **येसु** पु., सप्त. वि., ब. व. - *अभिञ्ञा सच्छिकरणीयेसु धम्मेसु,* स. नि. 2(1).229; *अभिञ्ञा सच्छिकरणीयेसु धम्मेसूति ... छळभिञ्ञाधम्मेसु,* स. नि. अट्ठ. 2.309; - **सच्छिकिरिया** स्त्री., अभिज्ञा-ज्ञान द्वारा साक्षात् ज्ञान या दर्शन - **याय** च. वि., ए. व. - *धम्मस्स चित्तं अभिनिन्नामेति अभिञ्ञासच्छिकिरियाय,* म. नि. 3.140; - **समापत्तिलाभी** त्रि., अभिज्ञाओं तथा समापत्तियों का लाभ पाने वाला - **भिनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *सब्बेव अभिञ्ञासमापत्तिलाभिनो'ति,* जा. अट्ठ. 6.122; - **हदय** नपुं., अभिज्ञाज्ञानयुक्त चित्त, अभिज्ञामानस - **दया** प्र. वि., ब. व. - *अभिञ्ञाहदया द्वेपि,* अभि. अव. 53; - **ञ्ञारम्मणनिद्देस** पु., अभिधम्मावतार के एक परिच्छेद का शीर्षक, अभि. अव. 140-146.

अभिञ्ञाण नपुं., [अभिज्ञान], चिह्न, पहचान-चिह्न पहचानने का साधन, घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करने का साधन, स्वीकार करने का साधन - *कलङ्को लञ्छनं लक्खं अङ्को भिञ्ञाणलक्खणं,* अभि. प. 55; - **ञ्ञाणेन** तृ. वि., ए. व. - *सो इमिना अभिञ्ञाणेन इदं इत्थिया सीसं,* जा. अट्ठ. 6.167; *अभिञ्ञाणेन पस्सितब्बं पस्सामीति अत्थो,* इतिवु. अट्ठ. 67; **ञ्ञाणं** द्वि. वि., ए. व. - *दारुम्हि अभिञ्ञाणं कत्वा ... तेन अभिञ्ञाणेन तं पच्चाभिजाननकाले,* ध. स. अट्ठ. 156.

अभिञ्ञात त्रि., अभि + √ञा का भू. क. कृ. [अभिज्ञात], **क.** जाना हुआ, पूर्ण रूप से समझा बूझा हुआ, विशिष्ट या अधिक ज्ञान के द्वारा जाना हुआ - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अभिञ्ञेय्यं अभिञ्ञातं ... भावितं,* सु. नि. 563; महानि. 15; *अभिञ्ञातन्ति अधिकेन ञाणेन ञातं,* महानि. अट्ठ. 66; **ख.** प्रख्यात, सुप्रसिद्ध, योग्य, विशिष्ट, यशस्वी - *ख्यातो पतीतो पञ्ञातो'भिञ्ञातो पथितो सुतो,* अभि. प. 724; - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *जेतो कुमारो अभिञ्ञातो ञातमनुस्सो,* चूळव. 287; - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - ... *चेव अभिञ्ञातस्स च ब्राह्मणस्स,* दी. नि. 1.78; *अभिञ्ञातस्साति रूपजातिमन्तकुलापदेसेहि पाकटस्स,* दी. नि. अट्ठ. 1.204; - **ता**[1] स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *पाकटा अभिञ्ञाता परिब्बाजिका,* उदा. अट्ठ. 210; - **ता**[2] पु., प्र. वि., ब. व. - *सम्बहुला अभिञ्ञाता ... ब्राह्मणमहासाला मनसाकटे,* दी. नि. 1.214; *अभिञ्ञाता अभिञ्ञाताति कुलचारित्तादिसम्पत्तिया तत्थ तत्थ पञ्ञाता,* दी. नि. अट्ठ. 1.300; - **तेहि** पु., तृ. वि., ब. व. - *अभिञ्ञातेहि अभिञ्ञातेहि थेरेहि सावकेहि सद्धिं,* म. नि. 1.276; - **तानं** पु., ष. वि., ब. व. - *अभिञ्ञातानं अभिञ्ञातानं योधानं,* महाव. 92; - **कोलञ्ञ** त्रि., ब. स. [अभिज्ञातकौलीन्य], यशस्वी कुल का, विशिष्ट कुल या वंश का, प्रख्यात कुलोत्पन्न - **ञ्ञो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अम्बट्ठो माणवो अभिञ्ञातकोलञ्ञो,* दी. नि. 1.78; *अभिञ्ञातकोलञ्ञोति पाकटकुलजो,* दी. नि. अट्ठ. 1.203.

अभिञ्ञावग्ग पु., अ. नि. के एक वग्ग का एक शीर्षक, अ. नि. 1(2).283-289.

अभिञ्ञेय्य त्रि., अभि + √ञा का सं. कृ., ज्ञातव्य, ज्ञातपरिज्ञा द्वारा जानने योग्य - **य्यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अयं एको धम्मो अभिञ्ञेय्यो,* दी. नि. 3.218; *अभिञ्ञेय्यो ति ञातपरिञ्ञाय अभिजानितब्बो,* दी. नि. अट्ठ. 3.219.

अभिठान नपुं., अभि + √ठा से निष्पन्न, गम्भीर दुष्कर्म, मातृहनन तथा पितृहनन जैसे जघन्य कर्म या अपराध, छह पापकर्मों (मातृहत्या, पितृहत्या, अर्हतों की हत्या, बुद्धशरीर से लोहितोत्पाद, सङ्घभेद और अन्य धर्मों की शरण में जाना) में से एक - **नानि** द्वि. वि., ब. व. - *छच्चाभिठानानि अभब्बकातुं,* खु. पा. 6.11; सु. नि. 231.

अभिञ्ञानिद्देस पु., अभि. अव. के एक खण्ड का शीर्षक, अभि. अव. 134-140; विसुद्धि. के एक स्थल का भी शीर्षक, विसुद्धि. 2.35-62.

अभिञ्ञानुयोग पु., कथा. के एक खण्ड का शीर्षक, कथा. 56-57.

अभिण्हं निपा., [अभीक्ष्णम्], लगातार, निरन्तर, बार-बार, पुनः-पुनः, - *पुनप्पुनं अभिण्हं ... मुहु,* अभि. प. 1137; *ते च पापेसु कम्मेसु अभिण्हमुपदिस्सरे,* सु. नि. 140; *राहुलं इमाहि गाथाहि अभिण्हं ओवदतीति,* सु. नि. 138.

अभिण्हं-सन्निपात त्रि., बार-बार समूह में एकत्रित होने वाला, अनेक बार बैठक बुलाने वाला - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *बज्जी अभिण्हं सन्निपाता सन्निपातबहुला'ति,* दी. नि. 2.57; *अभिण्हं-सन्निपाता भविस्सन्ति सन्निपातबहुला,* अ. नि. 2(2).168.

अभिण्हकारण नपुं., निरन्तर प्रशिक्षण, बार-बार का अभ्यास - **णा** प. वि., ए. व. - *अभिण्हकारणा ... ठाने परिनिब्बायति,* म. नि. 2.118.

अभिण्हजातक नपुं., एक जातक-कथा का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.188-190.

अभिण्हदस्सन नपुं., निरन्तर सम्पर्क, बारम्बार समागम, लगातार संसर्ग - **नं** प्र. वि., ए. व. - *मातुगामस्स अभिण्हदस्सनं ...*, अ. नि. 2(1).239; - **ना** प. वि., ए. व. - *अभिण्हदस्सना, नागो स्नेहमकासि कुक्कुरे'ति*, जा. अट्ठ. 1.189; **स्स** ष. वि., ए. व. - *अद्धानपरिकप्पेन अभिण्हदस्सनस्स उपायं दस्सेति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).62.

अभिण्हरोग त्रि., ब. स., रोग से निरन्तर पीड़ित रहने वाला, निरन्तर रुग्ण रहने वाला - **गो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अभिक्खणातङ्कीति अभिण्हरोगो निरन्तररोगो*, स. नि. अट्ठ. 2.220; - **ता** स्त्री., भाव., निरन्तर या लगातार रोग से ग्रस्त रहना - **ताय** तृ. वि., ए. व. - *अभिण्हरोगताय पनस्स ब्याधातुरता इध अधिप्पेता*, स. नि. अट्ठ. 2.220.

अभिण्हसंवास पु., निरन्तर सहवास, लगातार (किसी के) साथ निवास - **सा** प्र. वि., ब. व. - *कच्चि अभिण्हसंवासा नावजानासि पण्डितं*, सु. नि. 337.

अभिण्हसंसग्ग पु., [अभीक्ष्णसंसर्ग], निरन्तर चल रहा संसर्ग, लगातार सम्पर्क - **ग्गेन** तृ. वि., ए. व. - *अभिण्हसंसग्गवसेन परन्तपेन सद्धिं अतिचरि*, जा. अट्ठ. 3.369; *अच्चाभिक्खणसंसग्गाति अतिविय अभिण्हसंसग्गेन*, जा. अट्ठ. 5.222.

अभिण्हसो निपा., निरन्तर, बार-बार, पुनः पुनः लगातार - *दुल्लभं दस्सनं होति, सम्बुद्धानं अभिण्हसो*, सु. नि. 564; *येसं वे दुल्लभो लोके, पातुभावो अभिण्हसो*, सु. नि. 565; *सुतं नेतं अभिण्हसो*, दी. नि. 3.149; *सुतं नेतं अभिण्हसोति एतं अम्हेहि अभिक्खणं सुतं*, सु. नि. अट्ठ. 3.132.

अभिण्हापत्तिक त्रि., निरन्तर अपराध करने वाला, निरन्तर आपत्ति-बहुल होने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अभिण्हापत्तिको होति आपत्तिबहुलो*, म. नि. 2.114; *अभिण्हापत्तिकोति निरन्तरापत्तिको*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.110.

अभिण्होवाद पु., निरन्तर प्रबोधन, अभिण्ह-संवास के विषय में बार बार दिया गया आदेश - **दं** द्वि. वि., ए. व. - *पियपुत्तस्स राहुलत्थेरस्स अभिण्होवादं ...*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).274.

अभितक्कयित्वा अभि + √तक्क का पू. का. कृ., पाने हेतु प्रयत्न कर - *यं धम्मिकं नरवरं अभितक्कयित्वा*, दा. वं. 5.4.

अभितत्त त्रि., अभि + √तप का भू. क. कृ. [अभितप्त], झुलसाया हुआ, अत्यधिक तपाया हुआ, चारों ओर से गर्म किया हुआ, गर्मी से बुरी तरह पीड़ित, केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त - *उण्हाभितत्ता द्वारं ... पपतन्ति*, चूळव. 364; *घम्माभितत्ता तलसा पपीळिता*, जा. अट्ठ. 2.187; *घम्माभितत्ता तलसा पपीळिताति घम्मेन अभितत्ता पादतलेन च पीळिता*, तदे..

अभितप्पयति अभि + √तप्प के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभितर्पयति], पूर्ण रूप से तृप्त या सन्तुष्ट करता है - **यन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *सकललोकमभितप्पयन्तो ... चारिकं चरमानो ... अनुप्पत्तो*, मि. प. 18.

अभिताप पु., [अभिताप], अधिक गरमी, विशेष ताप, भयानक ताप, केवल स. उ. प. के रूप में द्रष्ट. महा. (जा. अट्ठ. 5.137); सीसा., (पारा. 99) के अन्त..

अभितिट्ठति अभि + √ठा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभितिष्ठति], जीतता है, पराजित करता है, पराभूत करता है - सहस्सं ब्रह्मलोकानं महाब्रह्माभितिट्ठति, दी. नि. 2.193; - **ट्ठाय** पू. का. कृ. - *आभतं पररज्जेभि, अभिट्ठाय बहुं धनं*, जा. अट्ठ. 6.305.

अभितुन्न / अभितुण्ण त्रि., अभि + √तुद का भू. क. कृ., विशेष रूप से कष्टापन्न, पूर्ण रूप से व्यथित **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *महावेदनाहि अभितुन्नो विसञ्ञीभूतो*, जा. अट्ठ. 1.77; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अस्सासेनाभितुन्नस्स पस्सासपटिलाभे मुच्छना*, पटि. म. 158.

अभितो निपा., [अभितः], चारों ओर, दोनों ओर, समीप में - *यो ब्रह्मं परिपुच्छति, सुधम्मायाभितो सभं*, म. नि. 1.422; *अभितो गामं वसति*, सद्द. 3.716; *उय्यानभूमिं अभितो अनुक्कमं*, वि. व. 1015; *उय्यानभूमिं अभितोति उय्यानभूमिया समीपे*, वि. व. अट्ठ. 231.

अभितोसयति अभि + √तुस का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रेर. [अभितोषयति], सन्तुष्ट करता है, सन्तोष देता है, अधिक सन्तुष्ट करता है - **यं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - सन्तुष्ट करता हुआ - *अत्तानमभितोसयं*, सु. नि. 714; *अत्तानमभितोसयन्ति ... सिया ... अत्तानं अतीव तोसेन्तो झायेथ*, सु. नि. अट्ठ. 2.194.

अभित्थनति अभि + √थन के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिस्तनति], घोर गर्जन करता है, ठनका ठनकता है, बिजली कड़कती है - **न्तं** नपुं., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - *अभित्थनन्तं विज्जुलता निच्छारेन्तं, अधोमुखं*, जा. अट्ठ. 1.315; - **नन्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अभित्थनन्तो विज्जुलता निच्छारेन्तो वस्सापेहीति*, जा. अट्ठ. 1.317; -

त्थनय अनु., म. पु., ए. व. - *अभित्थनय पज्जुन्न,* जा. अट्ठ. 1.317; *अभित्थनय पज्जुन्नाति पज्जुन्नो वुच्चति मेघो* ..., तदे..

अभित्थरति अभि + √तर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभित्वरति], शीघ्रता करता है, जल्दीबाजी करता है - **रेथ** विधि., म. पु., ब. व. - *अभित्थरेथ कल्याणे,* ध. प. 116; *अभित्थरेथाति तुरिततुरितं सीघसीघं करेय्याति,* ध. प. अट्ठ. 2.3.

अभित्थव पु., [अभिस्तव], प्रशंसा, संस्तवन - *थु अभित्थवे थुनाति अभित्थुनाति, थुति अभित्थुति, थवना अभित्थवना, थुतो अभित्थुतो,* सद्द. 2.496.

अभित्थवति अभि + √थु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिस्तौति], प्रशंसा करता है, संस्तवन करता है - **वन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., प्रशंसा करता है - *अभित्थवन्तो अरहत्तनिकूटेन देसनं,* सु. नि. अट्ठ. 2.115; - **न्ता** ब. व. - *अञ्जलिं पग्गय्ह अभित्थवन्ता* ..., ध. प. अट्ठ. 2.141; - **मानो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *अभित्थवमानो कथंकथापमोक्खं याचन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.283; - **वेय्यं** विधि., उ. पु., ए. व. - *सारुप्पाहि गाथाहि अभित्थवेय्यं,* सु. नि. 167; - **त्थवि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *भगवन्तं सम्मुखा सारुप्पाहि गाथाहि अभित्थवि,* सु. नि. (पृ.) 148; - **वित्वा** पू. का. कृ. - *अभित्थवित्वा सिखिनं* ..., अप. 1.275.

अभित्थवना स्त्री., प्रशंसा, संस्तवन - *थवना अभित्थवना थुति अभित्थुति,* सद्द. 2.363.

अभित्थवीयति अभि + √थव का भाव., वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रशंसा की जाती है - *सो हि महाजुतिताय अक्कीयति अभित्थवीयाति तप्पसन्नेहि जनेही ति अत्थो,* सद्द. 2.522; - **वियमानो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *गाथाहि अभित्थवियमानो राजगहं पविसित्वा* ..., पे. व. अट्ठ. 19.

अभित्थुत त्रि., अभि + √थव का भू. क. कृ. [अभिस्तुत], प्रशंसा किया हुआ, प्रशंसित - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अभित्थुतं, अतित्थुतं* मो. व्या. 3.13; - **गुण** त्रि., ब. स., वह, जिसके गुण की प्रशंसा की जा चुकी है - **णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *काळेन नागराजेन अभित्थुतगुणो बोधिमण्डं* ..., ध. प. अट्ठ. 1.51.

अभित्थुति स्त्री., [अभिस्तुति], प्रशंसा - *उदेतयं चक्खुमाति आदिना अभित्थुति दिस्सति,* सद्द. 2.522.

अभित्थुनाति अभि + √थु का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रशंसा या स्तुति करता है - **निंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *बोधिसत्तं नानप्पकाराहि थुतीहि अभित्थुनिंसु,* जा. अट्ठ. 1.21.

अभिथोमयिं अभि + √थोम के ना. धा. का अद्य., उ. पु., ए. व. मैंने प्रशंसा की या गुणगान किया - *एकनवुतितो कप्पे, यं बुद्धमभिथोमयिं,* अप. 1.160.

अभिदक्खिण त्रि., [अभिदक्षिणम् निपा.], दक्षिण की ओर, दक्षिणाभिमुख - *हञ्चि कप्पट्ठो चेतियं अभिदक्खिणं करेय्य,* कथा. 385.

अभिदन्त पु., ऊपर का दांत - **न्तं** द्वि. वि., ए. व. - *दन्तेभिदन्तमाधायाति हेट्ठादन्ते उपरिदन्तं ठपेत्वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).185.

अभिदहरत्त नपुं., भाव., [अभिदहरत्व], अधिक युवा होना, तरुणत्व, किशोरत्व - **त्ता** प. वि., ए. व. - *सो एव अभिदहरत्ता कुमारको,* सद्द. 2.559.

अभिदेय्य त्रि., अभि + √दा का सं. कृ. [अभिदेय], केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, सब्बाभिदेय्य के अन्त. द्रष्ट..

अभिदो 1. निपा. [अभितः], निकट, की ओर, चारों ओर, दोनों ओर - *यो वा तदहुपोसथे पन्नरसे विद्धे विगतवलाहके देवे अभिदो अड्ढरत्तसमयं चन्दो* ..., म. नि. 2.235-236; *अभिदो अड्ढरत्तसमयन्ति अभिन्ने अड्ढरत्तसमये,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.193; *अभिदो अद्धरत्तन्ति अभिअद्धरत्तं अद्धरत्ते अभिमुखीभूते,* अ. नि. अट्ठ. 3.136; *अभिदोति अभिसद्धेन समानत्थनिपातपदन्ति आह "अभिअड्ढरत्तन्ति",* अ. नि. टी. 3.127; 2. त्रि., ब. स. [अभेद्य], नहीं भिन्न, समान - *नत्थि एतस्स भिदाति वा अभिदो ... तस्मा अभिदो अड्ढरत्तन्ति अभिन्ने अड्ढरत्तिसमयेति अत्थो,* अ. नि. टी. 3.127.

अभिदोस पु., [प्रदोष और अभिदोषम्, निपा.], गोधूलि का काल, प्रदोष, रात्रिभाग, गोधूलि का समय, पिछली रात का प्रथम भाग, पिछली रात्रि का मध्य भाग - *अभिदोसो पदोसोऽथ,* अभि. प. 68; - **सं** द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. - *दोसन्ति अभिदोसं, रत्तिभागोति,* जा. अट्ठ. 6.215; - **कालकत** त्रि., वह, जो बीते प्रदोष काल में मर चुका है, बीती हुई सन्ध्या में मर चुका - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अभिदोसकालङ्कतो उद्दको रामपुत्तो'ति,* म. नि. 1.229; *अभिदोसकालङ्कतोति अड्ढरत्ते कालङ्कतो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).88; - **सगत** त्रि., वह, जो बीती हुई रात में चला गया है, वह, जो बीती रात में प्रस्थान कर चुका हो, वह, जो कल की रात में चला गया हो, बीती रात के प्रथम प्रहर में जा चुका - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अभिदोसगतो दानि एहिसि,* जा. अट्ठ. 6.215; *अभिदोसगतोति हिय्यो पठमयामे गतो इदानि आगतो,* तदे..

अभिद्दवति अभि + √द्रु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिद्रवति], हमला करता है, आक्रमण करता है - **वन्तं** वर्त. कृ., पु., द्वि. वि., ए. व. - *अभिद्दवन्तं अतिभासनेन ... दमेसि यो आळवकम्पि यक्खं*, दा. वं. 3.47.

अभिधमति अभि + √धम का वर्त., प्र. पु., ए. व., फूंकता है, धौंकता है, फूंक मार कर आग को उद्दीप्त करता है - *कालेन कालं अभिधमति*, अ. नि. 1(1).290; - **मेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *तमेनं कालेन कालं अभिधमेय्य*, म. नि. 3.292.

अभिधम्म पु., [बौ. सं. अभिधर्म], विशिष्ट धर्म, अतिरेक धर्म, **क.** अभिविनये के साथ साथ अभिधम्मे रूप में शब्द का प्राचीनतम प्रयोग, धर्म के विषय में, धर्म के सम्बन्ध में, (अर्थों में प्राप्त) - **म्मे** सप्त. वि., ए. व. - *अभिधम्मे अभिविनये उळारपामोज्जो*, दी. नि. 3.213; *अभिधम्मे विनये अभिविनये च उळारपामोज्जोति बहुलपामोज्जो होतीति अत्थो*, दी. नि. अट्ठ. 3.210; *सियंसु द्वे भिक्खू अभिधम्मे नानावादा*, म. नि. 3.25; *अभिधम्मेति विसिट्ठे धम्मे*, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.18; **ख.** अभिधम्मपिटक तथा इसके सात प्रकरण - **म्मं** द्वि. वि., ए. व. - *पिटके तीनि देसयि, सुत्तन्तमभिधम्मञ्च, विनयञ्च महागुणं*, परि. 179; **म्मे** सप्त. वि., ए. व. - *अभिधम्मे अभिविनयेति अभिधम्मपिटके चेव विनयपिटके च* ..., म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.132; *अभिधम्मे विनेतुं*, महाव. 82; *अभिधम्मेति नामरूपपरिच्छेदे विनेतुं न पटिबलोति अत्थो*, महाव. अट्ठ. 259; **ग.** पु. (नपुं.), [बौ. सं. अभिधर्म], उच्चतर या विशिष्ट धर्म, अतिरिक्त या विशिष्ट रूप में निवर्चन किया गया धर्म - **म्मो** प्र. वि., ए. व. - *अभिधम्मो तेन अक्खातो'ति*, दी. नि. अट्ठ. 1.18; *केनट्ठेन अभिधम्मो: धम्मातिरेक-धम्म-विसेसट्ठेन अभिधम्मो*, ध. स. अट्ठ. 4; *अभिधम्मो नाम न सावकविसयो, न सावकगोचरो ... बुद्धगोचरो*, ध. स. अट्ठ. 428; - **म्मं**[1] नपुं., लिङ्ग-विपर्यय, प्र. वि., ए. व. - *सुत्तन्तं अभिधम्मञ्च, विनयञ्चापि केवलं*, अप. 1.41; *सुत्तन्तं अभिधम्मञ्चाति तव तुम्हं एत्थ धम्मनगरे सुत्तन्तं अभिधम्मं विनयञ्च ...*, अप. अट्ठ. 1.295; - **म्मं**[2] द्वि. वि., ए. व. - *आभिधम्मिका अभिधम्मं*, खु. पा. अट्ठ. 122; *सेट्ठिस्स अभिधम्मं देसेसि*, मि. प. 15; - **तो** प. वि., ए. व. - *अभिधम्मतो सुत्तं आहरित्वा धम्मं कथेन्तो*, ध. स. अट्ठ. 30; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *नानानयविचित्तस्स, अभिधम्मस्स आदितो*, ध. स. अट्ठ. 3; *पदेसविहारसुत्तन्तवसेन अभिधम्मस्स निदानं कथेसि*, ध. स. अट्ठ. 32; - **म्मे** सप्त. वि., ए. व. - *अभिधम्मेति विसिट्ठे धम्मे* ..., म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.18; *अभिधम्मे सुप्पटिपन्नो पञ्ञासम्पदं निस्साय* ..., ध. स. अट्ठ. 26; *पठमं विनये वा सुत्तन्ते वा अभिधम्मे वा*, मि. प. 11.

अभिधम्मकथा स्त्री., अभिधर्म का उपदेश, शील आदि उत्तम धर्मों का कथन - **थं** द्वि. वि., ए. व. - *अभिधम्मकथं कथेन्ति*, म. नि. 1.278; *अभिधम्मकथं वेदल्लकथं कथेन्ता* ..., अ. नि. 2(1).100; *अभिधम्मकथन्ति सीलादिउत्तमधम्मकथं*, अ. नि. अट्ठ. 3.37; - **था** प्र. वि., ए. व. - *अभिधम्मकथा नाम अतिसण्हा* ..., ध. प. अट्ठ. 2.189; - **मग्ग** पु., अभिधर्मकथा का मार्ग या पद्धति - **ग्गं** द्वि. वि., ए. व. - *अभिधम्मकथामग्गं देवानं सम्पवत्तयि*, ध. स. अट्ठ. 2.

अभिधम्मगत त्रि., अभिधर्म में आया हुआ अभिधर्म से सम्बद्ध - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *तस्साभिधम्मगता पन अत्था*, अभि. अव. 39.

अभिधम्मटीका स्त्री., आनन्द-थेर द्वारा मधुरसारत्थदीपनी नामक अभिधम्म की टीका - **काय** ष. वि., ए. व. - *आनन्दथेरो मधुरसारत्थदीपनिं नाम अभिधम्मटीकाय संवण्णनं* ..., सा. वं. 45(ना.); - **यं** सप्त. वि., ए. व. - *तथा हि अभिधम्मटीकायं मग्गो ति उपायो*, सद्द. 2.525.

अभिधम्मतन्ति स्त्री., अभिधम्म का पिटकीय खण्ड - **न्तिं** द्वि. वि., ए. व. - *अभिधम्मतन्तिं पच्चवेक्खन्तानं अनन्तं* ..., ध. स. अट्ठ. 13.

अभिधम्मत्थगण्ठिपद नपुं., महाकस्सप थेर के द्वारा विरचित एक ग्रन्थ का नाम, जॅ. पा. टे. सो. 1910-12, (पृ.) 122.

अभिधम्मत्थविभावनी (विनी) स्त्री., सुमङ्गल के द्वारा विरचित अभिधम्मत्थसङ्गह की टीका - **निं** द्वि. वि., ए. व. - *अभिधम्मत्थविभाविनिं नाम लक्खणटीकं उग्गण्हापेसि*, सा. वं. 91(ना.).

अभिधम्मत्थसङ्गह पु., अनुरुद्धथेर के द्वारा विरचित एक ग्रन्थ का नाम - **हं** द्वि. वि., ए. व. - *परमत्थविनिच्छयं नामरूपपरिच्छेदं अभिधम्मत्थसङ्गहञ्च अनुरुद्धथेरो*, सा. वं. 31(ना.).

अभिधम्मदेसना स्त्री., अभिधर्म का उपदेश - *अभिधम्मदेसनत्थं पण्डुकम्बलसिलायं वस्सं उपगतं*, ध. प. अट्ठ. 2.125; - **परियोसान** नपुं., अभिधर्मदेशना का अन्त या पर्यवसान - **नं** प्र. वि., ए. व. *सम्मासम्बुद्धस्स अभिधम्मदेसनापरियोसानञ्च तेसं भिक्खूनं सत्तप्पकरणाउग्गहणञ्च* ..., ध. स. अट्ठ. 18.

अभिधम्मनय पु., अभिधर्म की पद्धति - **येन** तृ. वि., ए. व. - *अभिधम्मनयेन चत्तारो आसवा वेदितब्बा,* उदा. अट्ठ. 142; - **ये** सप्त. वि., ए. व. - *अभिधम्मनये दूरासदे ...,* अभि. अव. 30; - **ञ्ञू** त्रि., अभिधर्म की पद्धति का ज्ञाता - **हं** पु., प्र. वि., ए. व. - *अभिधम्मनयञ्ञूहं, कथावत्थुविसुद्धिया,* अप. 1.34; - **समुद्द** पु., अभिधर्मनय का सागर, अभिधर्म की पद्धति का समुद्र - **द्दं** द्वि. वि., ए. व. - *अभिधम्मनयसमुद्दं अधिगच्छि,* ध. स. अट्ठ. 82.

अभिधम्मनिद्देस पु., तत्पु. स., अभिधर्म की विस्तृत व्याख्या या विश्लेषण - **तो** प. वि., ए. व. - ... *सुत्तन्तपरियायतो अभिधम्मनिद्देसतोति दुविधं,* विभ. अट्ठ. 7.

अभिधम्मपद नपुं., अभिधर्म का शब्द या पद, अभिधर्म का उद्धरण - **दानि** द्वि. वि., ब. व. - *आभिधम्मिको, भण, तात, अभिधम्मपदानी'ति,* मि. प. 15.

अभिधम्मपरिचय पु., अभिधर्म-विषयक विचार-विमर्श, अभिधर्म का गम्भीर अनुचिन्तन - *रतनधरसत्ताहे पन अभिधम्मपरिचयवसेनेव विहासीति,* उदा. अट्ठ. 42.

अभिधम्मपरियाय पु., अभिधर्म की व्याख्या का विशिष्ट स्वरूप, अभिधम्म का विशिष्ट निर्वचन-प्रकार - **यो** प्र. वि., ए. व. - *सुत्तन्तपरियायो च अभिधम्मपरियायो च,* दी. नि. अट्ठ. 3.157; - **यं** द्वि. वि., ए. व. - *अभिधम्मपरियायं पत्वा कोसल्लसम्भूतनिद्दरथसुखविपाकट्ठेन,* दी. नि. अट्ठ. 3.60; - **येन** तृ. वि., ए. व. - *अभिधम्मपरियायेन अनिमित्तमग्गो नाम नत्थीति,* ध. स. अट्ठ. 267.

अभिधम्मपाळि स्त्री., अभिधम्मपिटक - **लियं** सप्त. वि., ए. व. - *अभिधम्मपाळियमेव वुत्तं तेवीसतिविधं रूपं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).231.

अभिधम्मपिटक नपुं., बुद्धवचनों के तीन पिटकों में किए गए विभाजन में तीसरा ग्रन्थ; इसमें सात ग्रन्थ समाहित हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं — धम्मसङ्गणि, विभङ्ग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठान; इसमें परमार्थ देशना (परमत्थदेसना) है; - **के** सप्त. वि., ए. व. - *अभिधम्मपिटके अधिपञ्ञासिक्खा,* दी. नि. अट्ठ. 1.20; - **कं** प्र. वि., ए. व. - *अन्तरधायति तदा पठमं अभिधम्मपिटकं नस्सति,* विभ. अट्ठ. 407.

अभिधम्मभाजनीय नपुं., विभङ्ग में अध्यायों की विषयवस्तु के विवेचन के तीन प्रकारों में से एक, अभिधम्म या अभिधम्ममातिका के आधार पर धर्मों का विवेचन - *इदानि अभिधम्मभाजनीयं होति,* विभ. अट्ठ. 33; तुल. सुत्तन्तभाजनीय एवं पञ्हापुच्छक.

अभिधम्ममहण्णवपार नपुं., अभिधर्म के महान सागर का दूसरी ओर का तट, अभिधर्ममहार्णव का दूसरी ओर का तट - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *सो अभिधम्ममहण्णवपारं, दुत्तरमुत्तरमुत्तरतेव,* अभि. अव. 57.

अभिधम्ममहापुर नपुं., अभिधर्म का महान् नगर - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *भिक्खूनं पविसन्तानं, अभिधम्ममहापुरं,* अभि. अव. 2.

अभिधम्ममहोदधि पु., [अभिधर्ममहोदधि], अभिधर्म का महान् सागर, अभिधर्म का महार्णव, अभिधर्म का विराट समुद्र - **धिं** द्वि. वि., ए. व. - *सुदुत्तरं ... अभिधम्ममहोदधिं,* अभि. अव. 2.

अभिधम्ममिस्सक त्रि., [अभिधर्ममिश्रक], अभिधर्म से मिला हुआ, अभिधर्म से मिश्रित - **कं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *अभिधम्मकथन्ति अभिधम्ममिस्सकं कथं,* अ. नि. अट्ठ. 3.133.

अभिधम्मविनयोगाळ्ह त्रि., [अभिधर्मविनया-वगाढ], अभिधर्म और विनय की गंभीरता में डूबा हुआ अभिधर्म एवं विनय के साथ सङ्गति रखने वाला/वाली - **ळ्हा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अभिधम्मविनयोगाळ्हा, सुत्तजालसमत्तिता नागसेनकथा चित्रा,* मि. प. 1.

अभिधम्मविरोध पु., अभिधर्म के साथ विरोध या असहमति - **धो** प्र. वि., ए. व. - *सुत्तो पस्सति अभिधम्मविरोधो आपज्जति,* पारा. अट्ठ. 2.98.

अभिधम्मसंयुत्त त्रि., [अभिधर्मसंयुक्त], अभिधर्म के साथ जुड़ा हुआ, अभिधर्म के प्रतिपाद्यों से युक्त - **त्ताय** तृ. वि., ए. व. - *अभिधम्मसंयुत्ताय कथाय ...,* मि. प. 57.

अभिधम्मसिङ्घाटक त्रि., ब. स. [अभिधर्मश्रृङ्गाटक], अभिधर्म-रूपी चौराहा वाला - *अभिधम्मसिङ्घाटकं ... सतिपट्ठानवीथिकं,* मि. प. 302.

अभिधम्मावतार पु., बुद्धदत्त द्वारा विरचित अभिधर्म से सम्बद्ध एक संग्रह-ग्रन्थ - **रेन** तृ. वि., ए. व. - *अभिधम्मावतारेन, अभिधम्ममहोदधिं,* अभि. अव. 17; - **टीका** स्त्री., **क.** वाचिस्सर महासामी के द्वारा विरचित पोराणटीका, **ख.** सुमङ्गल थेर द्वारा विरचित अभिनवटीका - **कायो** द्वि. वि., ब. व. - *अभिधमत्थसङ्गहाभिधम्मावतारभिनवटीकायो सुमंगलसामिथेरो,* सा. वं. 32(ना.).

अभिधम्मिक त्रि., [अभिधार्मिक], अभिधर्म का अध्येता, अभिधर्म को पढ़ने वाला, आभिधर्मिक, अभिधर्म के गूढ़ रहस्यों को जानने वाला - **म्मिको** पु., प्र. वि., ए. व. - *विनयमधीते ति वेनयिको, विनयमधीते वा, एव सुत्तन्तिको,*

आभिधम्मिको, क॰ व्या॰ 353; *गोदत्तो अभिधम्मिको,* अभि॰ अव॰ 121; – **क** पु॰, संबो॰ ए॰ व॰ – *वद त्वं अभिधम्मिक,* अभि॰ अव॰ 65; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिधम्मिकं उपसङ्कमित्वा कप्पियाकप्पियं पुच्छति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).161; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अभिधम्मिका पनाहु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.87.

अभिधान नपुं॰, [अभिधान], नाम, संज्ञा, उपाधि – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमस्मिं पकरणे परियायवचनन्ति च अभिधानं ति च सञ्ञा ति आदीनि,* सद्द॰ 1.65; *एकाभिधाने परो पुरिसो गहेतब्बो,* क॰ व्या॰ 411.

अभिधानप्पदीपिका स्त्री॰, महामोग्गल्लानथेर द्वारा विरचित 1203 गाथाओं का पालि-पर्यायकोश, – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिधानपदीपिकं पन महामोग्गल्लानथेरो ...,* सा॰ वं॰ 32(ना॰); – **टीका** स्त्री॰, विजयपुर के निवासी चतुरङ्गबल द्वारा अभिधानप्पदीपिका पर लिखी गयी टीका – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनेव आह अभिधानप्पदीपिकाटीकायं ...,* सा॰ वं॰ 84(ना॰).

अभिधारेति अभि + √धर के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिधारयति], धारण करता है, बरकरार रखता है – **यि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तमं लोके निहन्त्वान, धम्मोक्कमभिधारयि,* बु॰ वं॰ 312.

अभिधावति अभि + √धाव का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, (किसी) की ओर दौड़ता है, शीघ्रता करता है, तेज गति से आगे की ओर दौड़ता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *समन्ता अभिधावन्ति ..., दारके,* जा॰ अट्ठ॰ 7.333; – **रे** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, आत्मने॰ – *वनग्गा ... बुद्धरंसीभिधावरे,* अप॰ 2.83; – **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अभिधावथ चूपधावथ च,* जा॰ अट्ठ॰ 2.182; *अभिधावथ भद्दन्ते,* जा॰ अट्ठ॰ 4.111.

अभिधावी त्रि॰, [अभिधाविन्], दौड़कर या शीघ्रतापूर्वक किसी की ओर जाने वाला – **विनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्वे मिगा विय उक्कण्णा, समन्ता अभिधाविनो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.333.

अभिधेय्य क. त्रि॰, अभि + √धा का सं॰ कृ॰ [अभिधेय], कहने योग्य, अभिव्यक्त करने योग्य – **य्यायं** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सञ्ञायमभिधेय्यायं दाधातो इप्पच्चयो होति,* क॰ व्या॰ 553; **ख.** नपुं॰, तात्पर्य, निहितार्थ, आशय, अर्थ – **य्यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिधेय्यं न कथेस्साम,* सद्द॰ 1.65; – **कथन** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अभिधेयकथनं], अर्थपूर्ण कथन, अर्थगर्भित वक्तव्य – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सद्दा निब्बचनाभिधेय्यकथनं,* सद्द॰ 1.64; – **लिङ्ग** नपुं॰, प्रधान लिङ्ग, नाम-पद का लिङ्ग – **ङ्गानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अभिधेय्यलिङ्गानी ति पधानलिङ्गानि ... वा लिङ्गानि,* सद्द॰ 1.247; *तब्भावे चाप्यभिधेय्यलिङ्गो सहगतो भवे,* अभि॰ प॰ 833; – **लिङ्गभूत** त्रि॰, प्रधान लिङ्ग बना हुआ – **तस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वाच्चलिङ्गानं ... अभिधेय्यलिङ्गभूतस्स,* सद्द॰ 1.115; – **लिङ्गानुगतत्त** नपुं॰, [अभिधेयलिङ्गानुगतत्व], प्रधान लिङ्ग के अनुरूप रहना, नामपद (संज्ञापद) के लिङ्ग के अनुरूप होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो रूपानि अभिधेय्यलिङ्गानुगतत्ता यथासकं लिङ्गवसेन ...,* सद्द॰ 1.217; – **लिङ्गानुरूप** त्रि॰, व्याकरण में प्रधान लिङ्ग के अनुरूप रहने वाला – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धातुमयानि च वाच्चलिङ्गानि अभिधेय्यलिङ्गानुरूपतो योजेतब्बानि,* सद्द॰ 1.247; – **लिङ्गानुवत्तक** त्रि॰, [अभिधेयलिङ्गानुवर्तक], प्रधान लिङ्ग का अनुवर्त्तक, नामपद के लिङ्ग का अनुवर्तन या अनुगमन करने वाला – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अथ खो अभिधेय्यलिङ्गानुवत्तकानि वाच्चलिङ्गानि,* सद्द॰ 1.101; – **लिङ्गानुवत्तित्त** नपुं॰, भाव॰ [अभिधेयलिङ्गानुवर्तित्व], प्रधान लिङ्ग का अनुवर्ती होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गुणसद्दस्स अभिधेय्यलिङ्गानुवत्तिता पुल्लिङ्गवसेन वा ... इत्थिलिङ्गनिद्देसो दिस्सति,* सद्द॰ 1.96.

अभिनत / अभिणत त्रि॰, अभि + √नम का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनत], **शा॰ अ॰** किसी की ओर झुका हुआ, **ला॰ अ॰** राग आदि से ग्रस्त, कामभोगों में लगा हुआ या लिप्त – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिनतं चित्तं रागानुपतितं,* पटि॰ म॰ 159; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, – *समाधि न चाभिनतो न चापनतो,* अ॰ नि॰ 3(1).235; *न चाभिनतोति आदीसु रागवसेन न अभिनतो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.278; विलो॰ अपनत.

अभिनदति अभि + √नद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनदति], उन्मुख होकर नाद करता है, ध्वनि करता है, कूकता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मोरा कारम्भियं अभिनदन्ति,* थेरगा॰ 22; *अभिनदन्तीति पावुस्सकाले ... केकासद्दं करोन्ता ... हंसादिके अभिभवन्ता विय नदन्ति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.81; – **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, नाद करते हुए, शब्द या ध्वनि करते हुए – *समन्ता मभिनादितोति समन्ता अभिनदन्ता विचरन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.296.

अभिनदित नपुं॰, अभि + √नद का भू॰ क॰ कृ॰, प्रतिध्वनित, शब्दों या कलरवों से परिपूर्ण, निनादित – *चिहचिहाभिनदिते, सिप्पिकाभिरुतेहि च,* थेरगा॰ 49.

अभिनन्दति अभि + √नन्द का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिनन्दति], **क.** इच्छा करता है, अभिकांक्षा करता है, आनन्दमिश्रित राग रखता है - *रूपं अभिनन्दति अभिवदति* ..., स. नि. 2(1).13; *अभिनन्दतीति पत्थेति,* स. नि. अट्ठ. 2.230; *सो तं वेदनं अभिनन्दति अभिवदति अज्झोसाय तिट्ठति,* म. नि. 1.338; - **न्दामि** उ. पु., ए. व. - *नाभिनन्दामि मरणं* ..., थेरगा. 196; *तत्थ नाभिनन्दामि मरणन्ति मरणं न अभिकङ्खामि,* थेरगा. अट्ठ. 1.347; - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - ... *अज्झत्तिकबाहिरे आयतने अभिनन्दन्ति अभिवदन्ति अज्झोसाय तिट्ठन्ति,* मि. प. 72; - **दितुं** निमि. कृ. - *यदनिच्चं तं नालं अभिनन्दितुं, नालं अभिवदितुं, नालं अज्झोसितुं'न्ति,* म. नि. 3.47; **ख.** उठकर और आगे बढ़कर (आने वाले का) स्वागत करता है, शिष्टाचार के रूप में प्रणाम अभिवादन करता है या कुशल-मङ्गल पूछता है - *आगतं अभिनन्दति,* जा. अट्ठ. 4.177; ब. व. - *ञातिमित्ता सुहज्जा च, अभिनन्दन्ति आगतं'न्ति,* ध. प. 219; *अभिनन्दन्ति आगतन्ति नं दिस्वा ... गेहसम्पत्तं पन नानप्पकारपण्णकाराभिहरणवसेन अभिनन्दन्ति,* ध. प. अट्ठ. 2.171; **ग.** "बहुत अच्छा है" या "साधु साधु" कह कर किसी के द्वारा कथित कथन पर आनन्द भरी प्रतिक्रिया प्रकट करता है, "साधु साधु" कहकर अनुमोदन करता है - **न्दि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *भगवतो भासितं अभिनन्दीति,* म. नि. 1.117; - **न्दिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - ... *भासितं नेव अभिनन्दिं नप्पटिक्कोसिं,* दी. नि. 1.48; - **न्दुं / न्दिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *अभिनन्दुन्ति अनुमोदिंसु चेव सम्पटिच्छिंसु च,* दी. नि. अट्ठ. 1.110; - **न्दित्वा** पू. का. कृ. - ... *भासितं अभिनन्दित्वा अनुमोदित्वा उट्ठायासना पक्कामि,* दी. नि. 2.59; - **न्दितब्बं** नपुं., सं. कृ. - *तस्स, भिक्खवे, भिक्खुनो भासितं नेव अभिनन्दितब्बं नप्पटिकोसितब्बं,* दी. नि. 2.94; *नेव अभिनन्दितब्बन्ति हट्ठतुट्ठेहि साधुकारं दत्वा पुब्बेव न सोतब्बं,* दी. नि. अट्ठ. 2.139; **घ.** अनुग्रह या कृपा करता है - **न्दतु** अनु., प्र. पु., ए. व. - *अभिनन्दतु, भन्ते, भगवा भिक्खुसङ्घं,* म. नि. 2.130; **ङ.** आनन्दित या सन्तुष्ट होता है - **न्दिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. *मातापितरोपि अभिनन्दिंसु,* दी. नि. 2.259; *अभिनन्दिंसूति तुस्सिंसु,* दी. नि. अट्ठ. 2.362.

अभिनन्दन नपुं., अभि + √नन्द से व्यु., क्रि. ना. [अभिनन्दन], प्रहर्षण, अभिवादन, स्वागत करना, प्रशंसा करना, अनुमोदन - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *मञ्ञनं अभिनन्दनञ्च वत्वा ... मञ्ञति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).32; - **नाय** च. वि., ए. व. - *अभिनन्दनाय सन्तिके,* म. नि. 2.81; - **रसा** स्त्री., आनन्द उत्पन्न कराने का कार्य करने वाली - *हेतुभावलक्खणा तण्हा अभिनन्दनरसा,* उदा. अट्ठ. 35; - **वसेन** पु., तृ. वि., ए. व., आनन्द लेने के कारण, अभिनन्दन हेतु - *तेसु कामानं अभिनन्दवसेन ... कामवितक्को,* उदा. अट्ठ. 177; - **सद्दो** पु., प्र. वि., ए. व., अभिनन्दन शब्द - *अयञ्हि अभिनन्दसद्दो अभिनन्दति अभिवदती ति आदीसु तण्हायम्पि आगतो,* दी. नि. अट्ठ. 1.110; - **सीला** पु., प्र. वि., ब. व. अभिनन्दन या आनन्दानुभूति की प्रकृति वाले - *कामस्सादाभिनन्दिनोति कामगुणेसु ... अभिनन्दनसीला,* पे. व. अट्ठ. 227.

अभिनन्दना स्त्री., अभिलाषा, कामना, तृष्णा - **ना** प्र. वि., ए. व. - *या काचि कङ्खा अभिनन्दना वा,* स. नि. 1(1).211; *अभिनन्दनाति अभिनन्दनवसेन तण्हाव वुत्ता,* स. नि. अट्ठ. 1.234; - **नाय** तृ. वि., ए. व. - *अभिवदतीति ताय अभिनन्दनाय,* स. नि. अट्ठ. 2.230.

अभिनन्दित त्रि., [अभिनन्दित], स्वागत किया गया, सत्कृत, चाहा गया, प्रार्थित, आनन्द के साथ अनुभूत - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *देवलोकेन अभिनन्दितो हुत्वा* ..., जा. अट्ठ. 4.245; - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *बालानं अभिनन्दितं,* थेरगा. 394; *बालानं अभिनन्दितन्ति बालेहि ... अहं मम'न्ति अभिनिविस्स नन्दितं,* थेरगा. अट्ठ. 2.80.

अभिनय पु., [अभिनय], हाव-भाव, अङ्गविक्षेप, नाटकीय प्रदर्शन, किसी मनोभाव या आवेश को दृष्टि संकेत या मुद्रा आदि से प्रकट करना - *अभिनयो सुच्चसूचनं,* अभि. प. 101.

अभिनव त्रि., [अभिनव], बिल्कुल नया, महार्घ, ताजा, तुरन्त प्राप्त, अतिरिक्त रूप में प्राप्त, दूसरे या पुराने से अलग हटकर कुछ और - **वो** पु., प्र. वि., ए. व. - *पच्चग्घो नूतनो भिनवो नवो,* अभि. प. 713; *अभिनवो नयो उदपादि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.7; - **वं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - ... *पच्चग्घन्ति अभिनवं, महग्घं वा,* पे. व. अट्ठ. 76; - **करण** नपुं., नवीनीकरण, पुनरुज्जीवित करना, पुनः प्रारम्भ करना - **वसेन** तृ. वि., ए. व. - *अभिनवकरणवसेनाति तङ्खणे करियमानं विय अत्तानं अभिनवकरणवसेन,* अभि. ध. वि. टी. 169; - **वङ्कुर** पु., सर्वथा नवीन अंखुआ या कल्ला, नया अंकुर - **रा** प्र. वि., ब. व. - *महाबोधिस्स अभिनवङ्कुरा पातुरहेसुं,* पारा. अट्ठ. 1.67; - **चुल्लनिरुत्ति** स्त्री., सिरिसद्धम्मालंकार द्वारा विरचित व्याकरणग्रन्थ का शीर्षक

– **टीका** स्त्री॰, एक उत्तर-कालीन, अनुटीका - **यो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिधम्मत्थसङ्गहाभिधम्मावताराभिनवटीकायो सुमंगलसामिथेरो,* सा॰ वं॰ 32(ना॰); - **योब्बन** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अभिनवयौवन], नवयौवन, किशोरावस्था, तरुणाई - नं द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभियोब्बनं पतीति सुन्दरे अभिनवयोब्बनकाले सा नासिका इदानि जराय ... वरत्ता विय च जाता,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 235.

अभिनादित त्रि॰, अभि + √नद के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनादित], ध्वनिपूर्ण, शब्दों या गूंजों से भर दिया गया, कोलाहल से परिपूर्ण किया हुआ - **ता**[1] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *भमरा पुप्फगन्धेन, समन्ता अभिनादिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.294; *समन्ता अभिनादिताति समन्ता अभिनदन्ता विचरन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.296; - **ता**[2] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *हंसेहि च कोञ्चेहि च अभिनादिता,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 136.

अभिनादेति अभि + √नद के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनादयति], ध्वनि से भर देता है, कोलाहल से परिपूर्ण बना देता है - *को नु सद्देन महता, अभिनादेति दद्दरं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.55; *अभिनादेति दद्दरन्ति दद्दरं रजतपब्बतं एकनादं करोति,* तदे॰; - **न्ति** वर्त्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अभिनादेन्ति पवनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.294; - **यित्थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *दिसा इमायो अभिनादयित्थ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.404; *अभिनादयित्थाति यानसद्देन एकनिन्नादं अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.405.

अभिनिकूजति अभि + नि + √कूज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिकूजति], शब्द करता है, कूजन करता है - **जिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *मञ्जुनाभिनिकूजहं,* अप॰ 2.140; *मञ्जुनाभिनिकूजहन्ति मधुरेन ... अभिनिकूजिं ... अहन्ति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.241.

अभिनिकूजित अभि + नि + √कूज का भू॰ क॰ कृ॰, पशुओं या पक्षियों के कलरव या कूजन से प्रतिध्वनित - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पिङ्गलेनाभिकूजितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.220; *अभिकूजितन्ति एतेन तव सुनखेन ... न जानाति,* तदे॰; - **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰, पशुओं या पक्षियों के कूजन से प्रतिध्वनित होने पर - *कोकिलाभिनिकूजिते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.294; *कोकिलाभिनिकूजितेति कुसराजकुले ... कोकिलेहि अभिनिकूजिते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.295.

अभिनिक्खन्त त्रि॰, अभि + नि + √कम का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनिष्क्रान्त], **शा॰ अ॰** वह, जो घर से बाहर निकल गया है, **ला॰ अ॰** वह, जिसने सांसारिक जीवन छोड़ दिया है, प्रव्रजित, गृहत्यागी, आसक्ति-रहित - **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बोधिसत्तो नेक्खम्ममभिनिक्खन्तो अपरिपक्कं ञाणं ...,* मि॰ प॰ 264.

अभिनिक्खम पु॰, [अभिनिष्क्रम], निकलना, बाहर आना, उत्पन्न होना, प्रसव - **मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जातितो अभिनिक्खमे,* बु॰ वं॰ 1.70; *अभिनिक्खमेति मातुकुच्छितो अभिनिक्खमने पसवे,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 66.

अभिनिक्खमति अभि + नि + √कम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिष्क्राम्यति], **शा॰ अ॰** बाहर की ओर जाता है, बाहर निकलता है, गर्भ से बाहर निकलता है, **ला॰ अ॰** गृहत्याग करता है, प्रव्रजित होता है - **म्मेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *गब्भो न सोत्थिना अभिनिक्खमेय्या'ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 136; - **क्खमिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अभिनिक्खमिं अमतपदं जिगीसं,* थेरगा॰ 1113; - **मिस्सं** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अज्जेव तात'भिनिक्खमिस्सं,* थेरीगा॰ 480; - **मित्वा / क्खम्म** पू॰ का॰ कृ॰ - *सद्धाय अभिनिक्खम्म,* थेरगा॰ 249; *कासायवत्थो अभिनिक्खमित्वा,* सु॰ नि॰ 64; *अभिनिक्खमित्वा सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो,* उदा॰ अट्ठ॰ 21.

अभिनिक्खमन नपुं॰, [अभिनिष्क्रमण], **शा॰ अ॰** बाहर निकल जाना, प्रसव, **ला॰ अ॰** सांसारिक या गृहस्थ जीवन को छोड़ना, प्रव्रजित होना - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मातुकुच्छितो अभिनिक्खमने पसवे,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 66; - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *महाभिनिक्खमनं नाम अनच्छरियं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.2; *साततिकाति अभिनिक्खमनकालतो पट्ठाय ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.131; *बोधिया महाभिनिक्खमनं निक्खन्तो,* मि॰ प॰ 264; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰, कता॰, गब्भा॰, महा॰ के अन्त॰.

अभिनिक्खिपति अभि + नि + √खिप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिक्षिपति], उतार फेंकता है, नीचे की ओर फेंकता है - **पिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *तं ... अभिनिक्खिपिंसु,* दा॰ वं॰ 3.12.

अभिनिग्गण्हना स्त्री॰, अभि + नि + √गह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, किसी को पकड़ लेना, अङ्ग को पकड़ कर ऐंठना, मजबूती के साथ पकड़ना, सुदृढ़ पकड़ - *अभिनिग्गण्हना नाम अङ्गं गहेत्वा निप्पीळना,* पारा॰ 174; - **नाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिनिग्गण्हनाय हत्थे वा बाहाय वा दळ्हं गहेत्वा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.111.

अभिनिग्गण्हाति अभि + नि + √गह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिग्रहणाति], **शा॰ अ॰** कस कर पकड़ लेता है - *इत्थिया कायेन कायं आमसति ... अभिनिग्गण्हाति*

अभिनिप्पीळेति, पारा॰ 175; **ला॰ अ॰** अभिभूत कर देता है, दमित करता है, खण्डन करता है – *वादेन अधम्मिकं वादं अभिनिग्गण्हाति,* अ॰ नि॰ 3(2).197; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हामि ... अभिसन्तापेमि,* म॰ नि॰ 1.311; – **ण्हतो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हतो ... अभिसन्तापयतो,* म॰ नि॰ 1.171; – **ण्हेय्य** प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिनिग्गण्हेय्य अभिनिप्पीळेय्य अभिसन्तापेय्य,* म॰ नि॰ 1.171; – **ण्हेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हेय्यं अभिनिप्पीळेय्यं अभिसन्तापेय्य'न्ति,* म॰ नि॰ 1.311; – **ण्हितब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हितब्बं अभिनिप्पीळेतब्बं अभिसन्तापेतब्बं,* म॰ नि॰ 1.171.

अभिनिघात पु॰, [अभिनिघात], दमन, उन्मूलन, निरोध, पूर्ण रूप से विनाश – **पञ्ञत्ति** स्त्री॰, [अभिनिघातप्रज्ञप्ति], दमन या उन्मूलन की अभिव्यक्ति या प्रकाशन – *अभिनिघातपञ्ञत्ति पापकानं अकुसलानं धम्मानं,* नेत्ति॰ 50; *अभिनिघातपञ्ञत्तीति समुग्घातपञ्ञत्ति,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 248.

अभिनिद्दिसति अभि + नि + √दिस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिर्दिशति], अच्छी तरह बताता है, निर्देश करता है, दिखाता या सूचित करता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *पियदस्सनोति अभिनिद्दिसन्ति नं,* दी॰ नि॰ 3.126.

अभिनिन्नामेति अभि + नि + √नम के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [बौ॰ सं॰ अभिनिर्णामयति], किसी ओर प्रवृत्त कराता है या ले जाता है, झुका देता है या फैला देता है – *चित्तं अभिनीहरति अभिनिन्नामेति,* दी॰ नि॰ 1.67; – **मेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिनिन्नामेय्य तं तदेव ते कुमारका,* स॰ नि॰ 1(1).145; – **मेस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञं अभिनिन्नामेस्सति,* स॰ नि॰ 2(2).181; – **सिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चित्तं अभिनिन्नामेसिं* पारा॰ 5; *चित्तं अभिनिन्नामेसिन्ति परिकम्मचित्तं नीहरिं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.121.

अभिनिपज्जति अभि + नि + √पद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिपद्यते], लेटता या नीचे लेटता है, किसी के पास होकर लेट जाता है, पड़ा रहता है – *आसने अभिनिसीदतिपि अभिनिपज्जतिपि,* पाचि॰ 373; *अभिनिसीदति अभिनिपज्जति अज्झोत्थरति,* अ॰ नि॰ 2(1).86; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अभिनिसीदन्ति न अभिनिपज्जन्ति,* पाचि॰ 373; – **ज्जेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आसने ... वा अभिनिपज्जेय्य वा,* पाचि॰ 374; – **ज्जिस्सति** भवि॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिनिसीदिस्सतिपि अभिनिपज्जिस्सतिपी'ति ... पे॰ ... सच्चं किर,* पाचि॰ 373; – **ज्जितुं** निमि॰ कृ॰ – *अभिनिसीदितुं वा अभिनिपज्जितुं वा,* अ॰ नि॰ 3(1).32; – **पज्जियमानो** कर्म॰ वा॰, वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, लिटाया जा रहा – *सो मातुगामेन अभिनिसीदियमानो अभिनिपज्जियमानो ... मेथुनं धम्मं पटिसेवति,* अ॰ नि॰ 2(1).86; – **पज्जापेय्य** प्रेर॰, विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बिछवा दे, लिटवा दे, रखा दे – *तत्तं अयोमञ्चं वा अयोपीठं वा अभिनिसीदापेय्य वा,* अ॰ नि॰ 2(2).261.

अभिनिपतति अभि + नि + √पत का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आकर गिरता है, प्रारम्भ होता है, प्रवृत्त, सक्रिय या तत्पर होता है – ... *तं कम्मं कातुं अभिनिपतति पक्खन्दति पटिपज्जति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.7; *पटिसन्धिविञ्ञाणञ्च यस्मिं यस्मिं ठाने अभिनिपतति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).219.

अभिनिपात पु॰, [अभिनिपात], आकर गिरना, टकराहट, भिड़न्त, प्रवृत्ति, सक्रियता – **तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना कारणेन विञ्ञाणाहारे अभिनिपातोयेव भयन्ति ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).219; *चेतसो पठमाभिनिपातो वितक्को,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 160; ... *तस्मिं आरम्मणे चित्तचेतसिकानं पठमाभिनिपातो तं आरम्मणं फुसन्तो उप्पज्जमानो फस्सो पाकटो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).286; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अभिनिपातत्व], प्रवृत्तिभाव, सक्रियता – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पठमाभिनिपातत्ता चित्तस्सारम्मणे किर,* अभि॰ अव॰ 18.

अभिनिपातन नपुं॰/त्रि॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त [अभिनिपातन], नीचे फेंक देना, पछाड़ देना, दण्डसत्था॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; *न च ताव दण्डसत्थअभिनिपातनो होति,* महानि॰ 157.

अभिनिपाती त्रि॰, [अभिनिपातिन्], आकर टूट पड़ने वाला, अत्यन्त वेग के साथ काम प्रारम्भ कर देने वाला – **तिनं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुरिताभिनिपातिनं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.6; *तुरिताभिनिपातिनन्ति यो पुग्गलो यं कम्मं कत्तुकामो होति, तत्थ ... वेगेनेव तं कम्मं कातुं अभिनिपतति पक्खन्दति पटिपज्जति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.7.

अभिनिप्पतति अभि + नि + √पत का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिष्पतति], शीघ्रता से बाहर लाता है, (अन्तिम) परिणति बन जाता है – **प्पतं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मच्चु यस्साभिनिप्पत'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.43; *मच्चु यस्साभिनिप्पतन्ति यस्स अड्ढाने वायामकरणस्स मरणमेव निप्फन्नं,* तदे॰.

अभिनिप्पीळना स्त्री॰, अभि + नि + √पीळ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभिनिष्पीड़ना], परस्पर में दबाना, परस्पर में रगड़ना,

ऐंठना या चापना – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिनिप्पीळना नाम केनचि सह निप्पीळना*, पारा॰ 174; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिनिप्पीळनाय वत्थेन वा आभरणेन वा सद्धिं ... थुल्लच्चयं*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.111.

अभिनिप्पीळेति अभि + नि + √पीळ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिप्पीडयति], **शा॰ अ॰** चांपता है, दबाता या दबोचता है, रगड़ता है – *नं इत्थिया कायेन कायं आमसति परामसति ... अभिनिग्गण्हाति अभिनिप्पीळेति ...*, पारा॰ 175; **ला॰ अ॰ क**. खण्डन करता है, संत्रस्त या दमित करता है, अभिभूत कर लेता है, बाध्य कर देता है – *इध, भिक्खवे, एकच्चो अधम्मिकेन वादेन अधम्मिकं वादं अभिनिग्गण्हाति अभिनिप्पीळेति*, अ॰ नि॰ 3(2).197; – **ळेमि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिनिग्गण्हामि अभिनिप्पीळेमि अभिसन्तापेमि*, म॰ नि॰ 1.311; – **ळयतो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिनिग्गण्हतो अभिनिप्पीळयतो अभिसन्तापयतो ...*, म॰ नि॰ 1.311; – **ळेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिनिग्गण्हेय्य अभिनिप्पीळेय्य अभिसन्तापेय्य*, तदे॰; – **ळेय्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हेय्यं अभिनिप्पीळेय्यं*, तदे॰; **ला॰ अ॰ ख**. कष्ट देता है, व्यथित कर देता है, उत्तेजित कर देता है – **ळेसि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अथ किञ्चरहि त्वं ... तथागतं यावततियकं अभिनिप्पीळेसी'ति*, दी॰ नि॰ 2.89.

अभिनिप्फज्जति अभि + नि + √पद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिष्पद्यते], सफल होता है, पूरा होता है, तैयार हो जाता है – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *वायमतो ते भोगा नाभिनिप्फज्जन्ति*, म॰ नि॰ 1.120; *नाभिनिप्फज्जन्तीति न निप्फज्जन्ति, हत्थं नाभिरुहन्ति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).369.

अभिनिप्फन्न / अभिनिप्पन्न त्रि॰, अभि + नि√पद का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनिष्पन्न], तैयार किया हुआ, उत्पादित, पूर्ण रूप से तैयार किया हुआ, परिपक्व बनाया हुआ – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खो पन तस्स भगवतो लाभो अभिनिप्फन्नो सिलको*, दी॰ नि॰ 2.164; – **न्नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्गसस्सं अभिनिप्फन्नं*, मि॰ प॰ 8.

अभिनिप्फादक त्रि॰, उत्पन्न करने वाला, निष्पन्न करने वाला, सम्पन्न करने वाला, पूरा कराने वाला – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुगतियम्पि दुक्खविसेसस्स अभिनिप्फादकं*, अभि॰ अव॰ 8.

अभिनिप्फादित त्रि॰, अभि + नि + √पद के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनिष्पादित], पूर्णरूप से निष्पादित, पूरा किया हुआ, ठीक से पूर्ण किया हुआ – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अतिरेकछक्खत्तुं ठानेन अभिनिप्फादितं निस्सग्गियं*, पारा॰ 337.

अभिनिप्फादेति अभि + नि + √पद के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिष्पादयति], उत्पन्न करता है, पूरा करता है, सम्पादित करता है, प्राप्त करता है, अर्जित करता है, उपार्जित करता है, अनुभव में लाता है – *कामावचरसुगतियं भवभोगसम्पत्तिं अभिनिप्फादेति*, अभि॰ अव॰ 5; *सचे अभिनिप्फादेति, इच्चेतं कुसलं नो चे अभिनिप्फादेति*, पारा॰ 337; – **न्ति** ब॰ व॰ – *धम्मा नाना सन्ता एकं अत्थं अभिनिप्फादेन्ति*, मि॰ प॰ 37; – **देय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तं तदेव करेय्य अभिनिप्फादेय्य*, दी॰ नि॰ 1.69; *चोदयमानो सारयमानो तं चीवरं अभिनिप्फादेय्य*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.229; – **देसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *देवदत्तो पोथुज्जनिकं इद्धिं अभिनिप्फादेसि*, चूळव॰ 319; – **स्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *इद्धिपदेसं अभिनिप्फादेस्सन्ति सब्बे ते ... बहुलीकतत्ता*, स॰ नि॰ 3(2).329.

अभिनिब्बज्जियाथ अभि + नि + √वज्ज का अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰, वर्जित कर दो, मना कर दो, हटवा दो, रोक दो – *सब्बे समग्गा हुत्वान अभिनिब्बज्जियाथ नं*, सु॰ नि॰ 283; *तत्थ अभिनिब्बज्जियाथाति विवज्जेय्याथ मा ... अभिनिब्बज्जनमत्तेनेव अप्पोस्सुक्कतं आपज्जेय्याथ*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.42.

अभिनिब्बत्त त्रि॰, अभि + नि + √वत्त का भू॰ क॰ कृ॰, पूर्ण रूप से उत्पन्न, पुनर्जात या उत्पादित, पूर्णता के साथ प्रादुर्भूत, तैयार, पूर्ण – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उत्तरारणिं आदाय अग्गिं अभिनिब्बत्तो*, म॰ नि॰ 2.366; – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सञ्जाता निब्बत्ता अभिनिब्बत्ता पातुभूता उप्पन्ना*, ध॰ स॰ 1041.

अभिनिब्बत्तति अभि + नि + √वत्त का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिर्वर्तते], पूरी तरह तैयार होकर सामने आता है, या उदित होता है, उत्पन्न किया जाता है, जन्म या पुनर्जन्म प्राप्त करता है – ... *उस्मा जायति तेजो अभिनिब्बत्तति*, स॰ नि॰ 2(2).212; – **त्तिस्सथ** काला॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *नामरूपं इत्थत्ताय अभिनिब्बत्तिस्सथा'ति*, दी॰ नि॰ 2.49.

अभिनिब्बत्तनत्थ पु॰, तत्पु॰ स॰ [अभिनिर्वतनार्थ], पुनर्जन्म प्राप्त करने का प्रयोजन, पुनर्जन्म ग्रहण करने का आशय या तात्पर्य – **त्थाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसं तत्थ तत्थ अभिनिब्बत्तनत्थाय कड्ढति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.296; – **नट्ठेन**

तृ. वि., ए. व. - *निब्बत्तिसङ्खातेन अभिनिब्बत्तनट्ठेन अभिनिब्बत्ति,* विभ. अट्ठ. 89.

अभिनिब्बत्ति स्त्री., [अभिनिर्वृत्ति], जन्म, पुनर्जन्म, स्कन्धों का प्रादुर्भाव, आयतनों का प्रतिलाभ, अस्तित्व का लाभ - *जाति सञ्जाति ओक्कन्ति अभिनिब्बत्ति खन्धानं पातुभावो,* विभ. 112; *खत्तियकुले चे अत्तभावस्स अभिनिब्बत्ति होति,* म. नि. 2.398; - **या** च. वि., ए. व. - *दिब्बानं भवानं अभिनिब्बत्तिया ...,* दी. नि. 1.208; - **गुण** पु., पुनर्जन्म की प्राप्ति का गुण या महत्व - **णं** द्वि. वि., ए. व. - *पूरेत्वा तुसितभवने अभिनिब्बत्तिगुणं तत्थ निवासगुणं,* सु. नि. अट्ठ. 1.220; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट. अत्तभावा., अन., पुनब्भवा. के अन्त..

अभिनिब्बत्तित त्रि., अभि + नि + √वत्त का भू. क. कृ., सम्यक्-रूप से परिनिष्ठित भाव को प्राप्त, अच्छी तरह से उत्पादित या सामने लाया गया - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *या पुथुज्जनकालस्मिं, अभिनिब्बत्तिता पन,* अभि. अव. 16; *या ... पन पुथुज्जनकालस्मिं पुथुज्जनभावट्ठितेन योगिना अभिनिब्बत्तिता या रूपारूपसमापत्ति,* अभि. अव. टी. 14.

अभिनिब्बत्तिभाव पु., भाव., पुनर्जन्म की प्राप्ति, पुनर्जन्म ग्रहण करना - **तो** प. वि., ए. व. - *ये पन धम्मा कम्मादीहि निब्बत्तन्ति तेसं अभिनिब्बत्तिभावतो जातिया तप्पच्चयवोहारो अनुमतो,* ध. स. अट्ठ. 371.

अभिनिब्बत्तिमत्त नपुं., पुनर्जन्म लेना मात्र, पुनर्जन्म की घटना मात्र, केवल पुनर्जन्म का ग्रहण - **त्तं** प्र. वि., ए. व. - *जायमानस्स हि अभिनिब्बत्तिमत्तं जाती'ति,* ध. स. अट्ठ. 371.

अभिनिब्बत्तिवोहार पु., व्यवहार में अभिनिब्बत्ति शब्द का प्रयोग, अभिनिब्बत्ति वचन का व्यावहारिक प्रयोग - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *धम्मानं अभिनिब्बत्ति ... अभिनिब्बत्तिवोहारञ्च लभति,* ध. स. अट्ठ. 371.

अभिनिब्बत्तेति अभि + नि + √वत्त का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रेर. [अभिनिर्वर्तयति], उत्पन्न होने के लिये प्रेरित करता है, उत्पन्न करता है, उत्पादित करता है - *सम्मा विप्पसन्नो बहिद्धा परधम्मेसु ञाणदस्सनं अभिनिब्बत्तेति,* दी. नि. 2.159; *अभिनिब्बत्तेतीति अत्तनो कायतो परस्स कायाभिमुखं ञाणं पेसेति,* दी. नि. अट्ठ. 2.213; - **त्तेन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *अस्सुतवा ... अभिनिब्बत्तेन्तो अभिनिब्बत्तेति,* स. नि. 2(1).136; - **यतो** वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व. - *अत्तभावपटिलाभं अभिनिब्बत्तयतो ... परिहायन्ति,* म. नि. 3.100; - **न्तु** अनु., प्र. पु., ब. व., उत्पन्न करें, तैयार करें - *अग्गिं अभिनिब्बत्तेन्तु तेजो पातुकरोन्तु,* म. नि. 2.366; - **त्तेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., उत्पन्न करे, प्रादुर्भूत करे - *उत्तरारणिं आदाय अभिमन्थेन्तो अग्गिं अभिनिब्बत्तेय्य,* म. नि. 3.138; - **त्तेसुं** अद्य., प्र. पु., ब. व., उत्पन्न किये, प्रादुर्भत किये - *एके समणब्राह्मणा ... अभिनिब्बत्तेसुं,* अ. नि. 3(2).40; *एके समणब्राह्मणा अत्थीति अभिनिब्बत्तेसुन्ति ... अत्थीति गहेत्वा अभिनिब्बत्तेसुं,* अ. नि. अट्ठ. 3.299.

अभिनिब्बाति अभि + नि + √वा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिनिर्वाति], **शा. अ.** बुझ जाता है, **ला. अ.** पूर्ण रूप से शान्त हो जाता है, तृष्णा से मुक्ति पा लेता है, निर्वाण का अधिगम करता है - *अभिनिब्बाति अतन्दितो घटन्तो,* सद्धम्मो. 450; तुल. अभिनिब्बुत.

अभिनिब्बज्जन नपुं., अभि + नि + √विध से व्यु. [अभिनिर्वेधन], विवेचन के द्वारा प्राप्त विभेद-परक ज्ञान, त्याग - *मा चस्स अभिनिब्बज्जनमत्तेनेव अप्पोस्सुक्कतं आपज्जेय्याथ,* सु. नि. अट्ठ. 2.42.

अभिनिब्बुत त्रि., अभि + नि + √वा अथवा √वु का भू. क. कृ. [अभिनिर्वृत], पूर्णरूप से शान्त, पूर्णतः व्युपशान्त, प्रशान्त - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अददन्ता चिरं ठातुं लज्जितावाभिनिब्बुता,* सद्धम्मो. 35; - **चित्त** त्रि., ब. स. [अभिनिर्वृतचित्त], प्रशान्त मन वाला, व्युपशान्त चित्त से युक्त - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *किलेसपरिनिब्बानेन अभिनिब्बुतचित्तो सीतिभूतो,* उदा. अट्ठ. 157; - **त्त** त्रि., ब. स. [अभिनिर्वृतात्मन्], प्रशान्त आत्मभाव वाला - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *ञातो यसस्सी अभिनिब्बुतत्तो,* सु. नि. 345; *अभिनिब्बुतत्तोति गुत्तचित्तो अपरिडय्हमानचित्तो वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.73.

अभिनिब्बिज्झ अभि + नि + √विध का पू. का. कृ. [अभिनिर्विध्य], **शा. अ.** पूरी तरह खण्ड खण्ड करके, **ला. अ.** विखण्डन या विभाजन द्वारा विभक्त करके - *ततो सकाय पञ्ञाय, अभिनिब्बिज्झ दक्खिसं,* थेरीगा. 84; ... *घनविनिब्भोगकरणेन अभिनिब्बिज्झ ...,* थेरीगा. अट्ठ. 96.

अभिनिब्बिज्झन नपुं., अभि + नि + √विध से व्यु., क्रि. ना. [अभिनिर्वेधन], भञ्जन, तोड़कर बाहर आ जाना - **तो** प. वि., ए. व. - *न च भब्बो अभिनिब्बिधा गन्तुन्ति किलेसाभिसङ्खारानं अभिनिब्बिज्झनतो ... न च भब्बो,* नेत्ति. अट्ठ. 288.

अभिनिब्भिज्जति अभि + नि + √भिद् का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिनिर्भिद्यते], तोड़कर बाहर निकलता है, भेदन

करते हुए बाहर आता है – **ज्जेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., भेदन करे, खण्डित करे, तोड़कर बाहर निकल जाए – *अण्डकोसं पदालेत्वा सोत्थिना अभिनिब्भिज्जेय्य,* पारा. 4; – **ज्जेय्युं** ब. व. – *अण्डकोसं पदालेत्वा सोत्थिना अभिनिब्भिज्जेय्युं,* म. नि. 1.149; – **तुं** निमि. कृ., – *अण्डकोसं पदालेत्वा सोत्थिना अभिनिब्भिज्जितुं,* तदे.; – **ज्ज** पू. का. कृ. – *अण्डकोसं अभिनिब्भिज्ज जायन्ति,* म. नि. 1.106; *अभिनिब्भिज्ज जायन्तीति भिन्दित्वा निक्खमनवसेन जायन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).348.

अभिनिब्भिदा स्त्री., [बौ. सं. अभिनिर्भेद], **शा. अ.** सफल भञ्जन या निर्भेदन, **ला. अ.** ज्ञान-प्राप्ति की क्रमशः विकसित होने वाली अवस्थाएं, मन के क्लेशों का भञ्जन करके प्राप्त ज्ञान की अवस्था – *अयमस्स पठमाभिनिब्भिदा होति कुक्कुटच्छापकस्सेव अण्डकोसम्हा,* म. नि. 2.22; *पठमाभिनिब्भिदाति पठमो ञाणभेदो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.23; – **दाय** च. वि., ए. व. – *उस्सोळ्हीपन्नरसङ्गसमन्नागतो भिक्खु भब्बो अभिनिब्बिदाय,* म. नि. 1.149; *अभिनिब्भिदायाति ञाणेन किलेसभेदाय,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).382; – **पञ्ञत्ति** स्त्री., प्र. वि., ए. व., अभिनिर्भेद की प्रज्ञप्ति या प्रकाशन, – *अभिनिब्बिदापञ्ञत्ति चित्तस्स,* नेत्ति. 51.

अभिनिमन्तनता स्त्री., अभिनिमन्तन का भाव. [अभिनिमन्त्रणत्व, नपुं.], अनुरोध किया जाना, प्रार्थना किया जाना, अनुनय से भरे वचनों को कहा जाना – **य** तृ. वि., ए. व. – *इति हिदं मारस्स च ... अभिनिमन्तनताय ...,* म. नि. 1.415; *ब्रह्मुनो च अभिनिमन्तनतायाति बकब्रह्मुनो च ... कायकेन ब्रह्मट्ठानेन निमन्तनवचनेन,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).308.

अभिनिमन्तेति अभि + नि + √मन्त का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिनिमन्त्रयते], साथ लाई हुई वस्तुओं को स्वीकार करने हेतु अनुरोध करता है, देय वस्तु के ग्रहण करने हेतु आमन्त्रित करता है – **त्तेय्याम** विधि., उ. पु., ब. व. – *अभिनिमन्तेय्यामपि नं चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारेहि,* दी. नि. 1.53; *अभिनिमन्तेय्यामपि नन्ति अभिहरित्वापि नं निमन्तेय्याम,* दी. नि. अट्ठ. 1.140.

अभिनिम्मदन नपुं., अभि + नि + √मद से व्यु. क्रि. ना., घोड़े या हाथी को वश मे लाना या दमन करना, संशोधन, सुधार, ठीक करना, सही करना – **नाय** च. वि. ए. व. – *आरञ्ञकं नागं दमयाहि ... सीलानं अभिनिम्मदनाय,* म. नि. 3.173; *यानि खो पनस्स होन्ति साठेय्यानि ... तेसमस्स सारथि अभिनिम्मदनाय वायमति,* अ. नि. 3(1).32-33.

अभिनिम्मान नपुं., [अभिनिर्माण], अभिज्ञाबल द्वारा निर्माण या रचना, इन्द्रजाल (इद्धिविध) द्वारा निर्माण, – **नाय** च. वि. ए. व. – *मनोमयं कायं अभिनिम्मानाय ... अभिनिन्नामेति,* दी. नि. 1.68.

अभिनिम्मित त्रि., अभि + नि + √मा का भू. क. कृ. [अभिनिर्मित], अभिज्ञाबल या ऋद्धिबल के द्वारा निर्मित या बनाया हुआ, ऋद्धिबल के द्वारा विरचित – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *अभिनिम्मिता पञ्चरथासता च ते,* वि. व. 137 (पृ.) 13; *अभिनिम्मिताति तव पुञ्ञकम्मेन निम्मिता निब्बत्ता,* वि. व. अट्ठ. 63.

अभिनिम्मिनाति अभि + नि + √मा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [बौ. सं. अभिनिर्मिमीते एवं अभिनिर्मिणोति], अभिज्ञाबल द्वारा, निर्माण करता है या उत्पन्न करता है, आकार (आकृति) प्रदान करता है – *अञ्ञं कायं अभिनिम्मिनाति रूपिं ... अहीनिन्द्रियं,* दी. नि. 1.68; – **न्ति** ब. व. – *अञ्ञं कायं अभिनिम्मिनन्ति रूपिं मनोमयं,* म. नि. 2.219; – **नन्तानं** वर्त. कृ., ष. वि., ब. व. – *मनोमयं कायं अभिनिम्मिनन्तानं यदिदं,* अ. नि. 1(1).32; – **नित्वा** पू. का. कृ. – *ओळारिकं अत्तभावं अभिनिम्मिनित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा ...,* अ. नि. 1(1).314; – **नेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *पुरिसरूपं वा अभिनिम्मिनेय्य सब्बङ्गपच्चङ्गं,* स. नि. 1(2).90.

अभिनिरोपन / अभिनिरोपना अभि + नि + √रुह के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [अभिनिरोपण], **क.** नपुं. / स्त्री., आलम्बनों पर चित्त का लगाव या चित्त को रख देना – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *ठितकण्टको विय अभिनिरोपनो वितक्को,* पटि. म. अट्ठ. 1.154; – **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सुतत्ता अभिनिरोपना विपाकमनोधातु विञ्ञाणचरिया,* पटि. म. 73; *यो खो, भिक्खवे, अरियचित्तस्स ... तक्को वितक्को ... चेतसो अभिनिरोपना वचीसङ्खारो ...,* म. नि. 3.120; *आरम्मणे चित्तं अभिनिरोपेति पतिट्ठापेतीति चेतसो अभिनिरोपना,* ध. स. अट्ठ. 187; – **लक्खण** नपुं., अभिनिरोपण की विशिष्टता या लक्षण – **णं** प्र. वि., ए. व. – *वितक्कस्स अभिनिरोपनलक्खणं,* दी. नि. अट्ठ. 1.60; पटि. म. अट्ठ. 1. 176; **ख.** त्रि., ब. स., वह, जिसका लक्षण (किसी पर) अभिनिरोपित कर दिया जाना या रख दिया जाना हो – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सम्मा अभिनिरोपनलक्खणो सम्मासङ्कप्पो,* दी. नि. अट्ठ. 1.252.

अभिनिरोपित त्रि., अभि + नि + √रुह के प्रेर. का भू. क. कृ., किसी पर जड़ा हुआ या बैठाया हुआ, किसी पर रखा हुआ - **त्त** नपुं., भाव., अभिनिरोपित या आबद्ध रहना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *अभिनिरोपितत्ता ... विञ्ञाणचरिया गन्धेसु,* पटि. म. 73; *अभिनिरोपितत्ताति रूपारम्मणं अभिरुळ्हत्ता,* पटि. म. अट्ठ. 1.241.

अभिनिरोपेति अभि + नि + √रुह का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रेर. [अभिनिरोपयति], चित्त को जमा देता है, लगा देता है या बैठा देता है – (चित्त को) प्रतिष्ठापित कर देता है – *आरम्मणे चित्तं अभिनिरोपेति पतिट्ठापेती'ति चेतसो अभिनिरोपना,* ध. स. अट्ठ. 187; *आरम्मणं चित्तं अभिनिरोपेतीति वितक्को,* उदा. अट्ठ. 177; *सम्पयुत्तधम्मे च सम्मा अभिनिरोपेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).112.

अभिनिलीयि अभि + नि + √ली का अद्य., प्र. पु., ए. व. [अभ्यनिलीयत], अपने को छिपाया, प्रच्छन्न होकर पड़ा रहा - *पलायित्वा ... अभिनिलीयि सो,* म. वं. 33.48.

अभिनिवज्जेति / अभिनिवत्तेति अभि + नि + √वज्ज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिनिवर्जयति], अलग पड़ा रहता है, दूर रहता है, बचता है, बचकर रहता है, परिहार करता है, टालता है, एक तरफ पड़ा रहता है - *तदभिनिवत्तेतीति तं अभिनिवत्तेति,* अ. नि. अट्ठ. 2.223; – **वत्तेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *अभिनिहनेय्य अभिनीहरेय्य अभिनिवत्तेय्य,* म. नि. 1.169; – **ज्जेय्यासि** विधि., म. पु., ए. व. – *तेसं सुत्वा यं अकुसलं तं अभिनिवज्जेय्यासि,* दी. नि. 3.44; *अभिनिवज्जेय्यासीति गूथं विय ... सुट्ठु वज्जेय्यासि,* दी. नि. अट्ठ. 3.31; – **त्वा** पू. का. कृ., दूर रहकर, बचकर – *इरियापथं अभिनिवज्जेत्वा सुखुमं ... कप्पेय्य,* म. नि. 1.171; *अभिनिवेज्जेत्वा उपेक्खको ... सम्पजानो'ति,* इतिवु. 59.

अभिनिवट्टेति / अभिनिवत्तेति अभि + नि + √वत्त के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिनिवर्तयति], पीछे की ओर लौटता है, रुक जाता या ठहर जाता है - **त्तेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., पीछे की ओर लौटे, रुके या ठहरे – *अभिनिहनेय्य अभिनीहरेय्य अभिनिवत्तेय्य,* म. नि. 1.169.

अभिनिविट्ठ त्रि., अभि + नि + √विस का भू. क. कृ. [अभिनिविष्ट], किसी के साथ आसक्त, किसी में जड़ जमा चुका - **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. – *दिवसेसु परदारिककम्मे अभिनिविट्ठो,* जा. अट्ठ. 5.54; – **ट्ठा** पु., ब. व., विशेष रूप से जम चुके या जड़ जमा चुके - *अज्झोसिताति तण्हावसेन अभिनिविट्ठा,* थेरीगा. अट्ठ. 308; *समत्ता समादिन्ना ... अभिनिविट्ठा अज्झोसिता,* महानि. 46; *अभिनिविट्ठाति विसेसेन लद्धप्पतिट्ठा,* महानि. अट्ठ. 151.

अभिनिविसति अभि + नि + √विस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिनिविशते], **शा. अ.** में प्रवेश करता है, बस जाता है, डेरा डाल देता है - **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. – *देवता अभिनिविसन्ति ... ता देवता अभिरमन्ती'ति,* म. नि. 3.188; *अभिनिविसन्तीति वसन्ति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.148; **ला. अ.** किसी के प्रति आसक्त होता है, किसी में लिप्त होता है या लगावयुक्त हो जाता है - *आकारेन अभिनिविसतीति इदंसच्चाभिनिवेसो,* ध. स. अट्ठ. 401; *सब्बाव एता दिट्ठिसम्मुतियो नेति न उपेति ... न परामसति नाभिनिविसतीति ...,* महानि. 226; – **तस्स** वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व. – *रूपमुखेन अभिनिविसन्तस्स रूपधम्मपरिग्गहतो,* उदा. अट्ठ. 262; – **सन्ता** वर्त. कृ., पु., प्र. वि. , ब. व. - *उच्छेददस्सनं अभिनिविसन्ता ... अतिधावन्ति नाम,* उदा. अट्ठ. 288; – **समानो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *अपरामासमानो अनभिनिविसमानोति ... अनुपादियानो,* महानि. 77; – **स्सथ** अनु., म. पु. ब. व. – *कल्याणे अभिनिविस्सथ,* चरिया. 382; – **सेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *गण्हेय्य परामसेय्य अभिनिविसेय्य अत्ता मेति,* महानि. 226; – **निविस्स / त्वा** पू. का. कृ. – *थामसा परामासा अभिनिविस्स वोहरति,* म. नि. 1.184; *अभिनिविस्स वोहरतीति अधिट्ठहित्वा वोहरति दीपेति वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).10; *किं उपादाय, किं अभिनिविस्स एतं मम, एसोहमस्मि,* स. नि. 2(1).166; *कत्थचि अभिनिविसित्वा इतरम्पि ... वट्टति,* ध. स. अट्ठ. 267.

अभिनिवुट्ठ त्रि., अभि + नि + √वस का भू. क. कृ., रह चुका या निवास कर चुका - **पुब्ब** त्रि., पूर्वकाल में रह चुका या निवास कर चुका - **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यस्मिं यस्मिं अत्तभावे अभिनिवुट्ठपुब्बो होति,* दी. नि. 3.82.

अभिनिवेस पु., [अभिनिवेश], **शा. अ.** पूर्ण रूप से कहीं पर प्रवेश, व्यापक विस्तार, **ला. अ.** प्रवृत्ति, झुकाव, चिपकाव, आसक्ति, भरोसा, विश्वास, दृढ़ धारणा, दृढ़ लगाव - **सो** प्र. वि., ए. व. – *निग्रोधराजस्स द्वादसयोजनानि अभिनिवेसो अहोसि,* अ. नि. 2(2).80-81; *अभिनिवेसोति पत्थरित्वा ठितसाखानं निवेसो,* अ. नि. अट्ठ. 3.123; *गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो,* ध. स. 381; *गण्हातीति गाहो पतिट्ठहनतो पतिट्ठाहो ... गण्हाति निच्चादिवसेन अभिनिविसतीति अभिनिवेसो,* ध. स. अट्ठ. 293; – **सं** द्वि.

वि॰, ए॰ व॰ – *यो जातितो ब्राह्मणोति अभिनिवेसं करोन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.309; – **साय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बे धम्मा नालं अभिनिवेसाया'ति,* म॰ नि॰ 1.320; *सब्बे धम्मा नालं अभिनिवेसायाति ... ते सब्बेपि तण्हादिट्ठिवसेन अभिनिवेसाय नालं न परियत्ता न समत्था न युत्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).194; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुद्धीति अभिनिवेसतो ... अयमेत्थ सङ्खेपो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).228; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुञ्ञतानुपस्सनाय अभिनिवेसस्स* ..., पटि॰ म॰ 42; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अकता॰, अज्झत्त॰, अतिधावना॰, अत्ता॰, अधिट्ठाना॰, अनत्ता॰, आळया॰, इदंसच्चा॰, ओलीयना॰, तण्हा॰, दिट्ठिठाना॰, सारागा॰, मिच्छा॰, विपस्सना॰, सञ्ञोगा॰, सम्मोहा॰, सारागा॰, सारादाना॰, अन्धकारा॰, आकिञ्चञ्ञा॰, उप्पादा॰, कम्मन्ता॰, यञ्ञा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **करणपच्चुपट्ठान** त्रि॰, अभिनिवेश का प्रकटीकरण या प्रत्यक्षीकरण कराने वाला, लगाव को प्रकट करने वाला या लगाव को उदित कराने वाला – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथागहितनिमित्तवसेन अभिनिवेसकरणपच्चुपट्ठाना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 156; – **पञ्ञत्ति** स्त्री॰, अभिनिवेश की प्रज्ञप्ति (काम-भोगविषयक तृष्णा में) मन के दृढ़ लगाव का प्रकाशन – *"कामेसु सोजन्तु कथं नमेय्या"ति वेवचनपञ्ञत्ति च कामतण्हाय अभिनिवेसपञ्ञत्ति च,* नेत्ति॰ 51; – **परामास** पु॰, अभिनिवेश का सुदृढ़ प्रभाव, मानसिक आसक्ति का सङ्ग या दुष्प्रभाव – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिट्ठीति अभिनिवेसपरामासो दिट्ठि,* पटि॰ म॰ 123; – **भूत** त्रि॰, अभिनिवेशयुक्त, मानसिक आसक्ति बन चुका – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अधिट्ठानभूता चेव अभिनिवेसभूता च अनुसयभूता च,* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.228; – **लक्खण** त्रि॰, अभिनिवेश के लक्षण से युक्त – **णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बधम्मअभिनिवेसलक्खणा अनत्तसञ्ञा,* नेत्ति॰ 25; – **साकार** पु॰, अभिनिवेश का ही एक आकार या स्वरूप – **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दिट्ठिगतिकानं अभिनिवेसाकारानं निस्सया,* उदा॰ अट्ठ॰ 276; – **सानुसय** पु॰, द्व॰ स॰ [अभिनिवेसानुसय], अभिनिवेश एवं अनुशय – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतसो अधिट्ठानं अभिनिवेसानुसयं न उपेति,* स॰ नि॰ 1(2).17; *अभिनिवेसानुसयन्ति अभिनिवेसभूतञ्च अनुसयभूतञ्च,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.30.

अभिनिसिन्न त्रि॰, अभि + नि + √सद का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनिसिन्न], **क.** कर्तृ॰ वा॰ में – किसी पर बैठा हुआ, किसी के ऊपर आसीन – **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पण्डुकम्बलसिलं अभिनिसिन्ना द्वे सक्का विय* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).59; **ख.** कर्म॰ वा॰ में – किसी के द्वारा स्थापित, रखा गया या लगाया गया – **न्नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजकुमारेन अभिनिसिन्नं दारुक्खन्धं पत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.310.

अभिनिसीदति अभि + नि + √सद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिषीदति], बैठता है, आसन पर बैठता है – *उपसङ्कमित्वा अभिनिसीदति अभिनिपज्जति अज्झोत्थरति,* अ॰ नि॰ 2(1).86; *अभिनिसीदतीति अभिभवित्वा सन्तिके वा एकासने वा निसीदति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.35; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदसी'ति,* पाचि॰ 67; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आसने नेव अभिनिसीदन्ति न अभिनिपज्जन्ति,* पाचि॰ 373; – **देय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मञ्चं वा पीठं वा अभिनिसीदेय्य वा अभिनिपज्जेय्य वा,* पाचि॰ 67; – **दिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदिस्सति,* पाचि॰ 67; – **दिस्ससि** भवि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदिस्ससि,* पाचि॰ 67; – **दितुं** निमि॰ कृ॰ – *गिहिविकतं अभिनिसीदितुं,* महाव॰ 267; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *अङ्गजाते अभिनिसीदित्वा यावदत्थं कत्वा पक्कामि,* पारा॰ 44; – **दियमानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, कर्म॰ वा॰, बैठाया जा रहा – *अभिनिसीदियमानो अभिनिपज्जियमानो अज्झोत्थरियमानो ... धम्मं पटिसेवति,* अ॰ नि॰ 2(1).86.

अभिनिसीदन नपुं॰, अभि + नि + √सद से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, पर बैठना, चारों ओर से मंडराते हुए बैठना – **नस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मक्खिकानं अभिनिसीदनस्स पच्चयो न होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 377.

अभिनिसीदापेय्य अभि + नि + √सद के प्रेर॰ का विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिसीदयेत], रखा दे, बैठवा दे – *अयोपीठं वा अभिनिसीदापेय्य वा अभिनिपज्जापेय्य वा,* अ॰ नि॰ 2(2).261.

अभिनिसीदेति / अभिनिसीदापेति अभि + नि + √सद के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिषीदयति], रखवाता है, बैठवाता है, प्रवेश कराता है, स्थित कराता है – **देन्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *पस्सावमग्गेन ... मुखेन अङ्गजातं अभिनिसीदेन्ति,* पारा॰ 33; *मनुस्सित्थिं भिक्खुस्स सन्तिके आनेत्वाति ... वच्चमग्गेन तस्स भिक्खुनो अङ्गजातं अभिनिसीदेन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.208-209.

अभिनिस्सट त्रि॰, अभि + नि + √सर का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनिःसृत], पूर्ण रूप से बाहर जा चुका, पूर्णतया बहिर्गत

या असम्बद्ध, पूर्णतः अनासक्त या निर्लिप्त, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त, तिभवा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिनिहत त्रि॰, अभि + नि + √हन का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनिहत], पूर्ण रूप से आघात को प्राप्त, प्रहृत, ताड़ित, पीटा गया - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चक्काभिनिहतो अहन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.4; *चक्काभिनिहतोति चक्केन अभिनिहतो,* तदे॰.

अभिनिहनन्तो अभि + नि + √हन का वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिनिर्हनत्], निकाल बाहर कर रहा, भगा दे रहा, बहिष्कृत करा या हटा रहा - *अभिनीहरेय्याति एवं अभिनिहनन्तो फलकतो नीहरेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).403.

अभिनीत त्रि॰, अभि + √नी का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनीत], **शा॰ अ॰** समीप में लाया गया, **ला॰ अ॰ क.** परिपूर्ण, परिष्कृत, परिसज्जित, **ख.** पुकारा या बुलाया गया, न्यायालय के समक्ष (साक्ष्य के लिये) लाया गया - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिनीतो सक्खिपुट्ठो,* महानि॰ 111; *अभिनीतोति पुच्छनत्थाय नीतो,* महानि॰ अट्ठ॰ 218; **ग.** (राजा, चोर या रोग के भय से) अभिभूत, पीड़ित, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त राजा॰, चोरा॰, वातरोगा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **वास** त्रि॰, ब॰ स॰, आचरण में सर्वोत्तम, उत्तम आचरण वाला - **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अकुप्पधम्मो अभिनीतवासो,* मि॰ प॰ 325.

अभिनील त्रि॰, [अभिनील], सुन्दर नीले रंग वाला - **नेत्त** त्रि॰, ब॰ स॰, सुन्दर नीले नेत्रों वाला, कुछ कुछ नीले नेत्रों वाला (बुद्ध) - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कुमारो अभिनीलनेत्तो* ..., दी॰ नि॰ 2.14; *अभिनीलनेत्तोति न सकलनीलनेत्तो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.37; - **नेत्तनयन** त्रि॰, ब॰ स॰, सुन्दर नयनों वाला - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिनीलनेत्तनयनो सुदस्सनो,* दी॰ नि॰ 3.126; - **मायत** त्रि॰, ब॰ स॰, सुन्दर नीले और चौड़ी आंखों वाला, सुन्दर एवं दीर्घायत नयनों वाला - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *नेत्तहेसुमभिनीलमायता,* थेरीगा॰ 257; *अभिनीलमायताति अभिनीला हुत्वा आयता,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 234.

अभिनीहट त्रि॰, अभि + नि + √हर का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिनिर्हृत], तैयार किया हुआ, तैयार करके रखा हुआ, चालू किया हुआ - **टं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *धम्मचक्कं अभिनीहरति नाम, अभिनीहटं नाम, ... पवत्तितं नामाति अयं पभेदो वेदितब्बो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98.

अभिनीहरण नपुं॰, अभिनीहरति का क्रि॰ ना॰, निष्कासन, निकालना, बाहर करना, किसी ओर ले जाना - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *गमनवसेन कायस्साभिनीहरणं गमनाभिहारो,* म॰ नि॰ टी॰ (म॰प॰) 2.119.

अभिनीहरति अभि + नि + √हर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, **क.** खीच कर बाहर निकालता है, बाहर निकाल फेंकता है - **रेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *आणिं अभिनिहनेय्य अभिनीहरेय्य अभिनिवत्तेय्य,* म॰ नि॰ 1.169; *अभिनीहरेय्याति एवं अभिनिहनन्तो फलकतो नीहरेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).403; **ख.** कार्यान्वित करता है, सक्रिय करता है - **रि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *ततियम्पि गमनं अभिनीहरि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 411; *सो ... "पठविं उपेस्सामी"ति पादं अभिनीहरि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.219; *दुतियम्पि गमनं अभिनीहरि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 411; **ग.** लगाता है, की ओर उन्मुख करता है - ... *ञाणदस्सनाय चित्तं अभिनीहरति अभिनिन्नामेति,* दी॰ नि॰ 1.67; *चित्तं अभिनीहरतीति विपस्सनाचित्तं तन्निन्नं तप्पोणं तप्पभारं करोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.182; **घ.** उत्पादित करता है, निष्पादित करता है, पूरा करता है - *पवत्तितन्ति एत्थ धम्मचक्कं अभिनीहरति नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98; - **रिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *यं कम्मं अभिनीहरिं,* अप॰ 1.51.

अभिनीहार पु॰, अभिनीहरति से व्यु॰ [बौ॰ सं॰ अभिनिर्हार], **क.** गति, गतिशीलता - **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वायोधातुविप्फारेन सकलकायस्स पुरतो अभिनीहारो गमनन्ति वुच्चति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).262; **ख.** अभिप्राय - *उम्मग्गो यथा च अभिनीहारो ... पञ्हासमुदाहारो,* अ॰ नि॰ 1(2).218; *अभिनीहारोति पञ्हाभिसङ्करणवसेन चित्तस्स अभिनीहारो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.363; **ग.** उत्कट, आकांक्षा, अभिलाषा, प्रणिधान, बुद्धत्व की प्राप्ति हेतु दृढ़ संकल्प - *अभिनीहारो नरुत्तम,* बु॰ वं॰ 1.75; *अभिनीहारोति अभिनीहारो नाम बुद्धभावत्थं मानसं बन्धित्वा बुद्धब्याकरणं अलद्धा ... वीरियमधिट्ठाय निपज्जनं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 69; - **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कल्लतापरिचितं ... अभिनीहारं खमतीति युज्जति देसना,* नेत्ति॰ 24; - **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिनीहारेन ते भगवन्तो आगता,* उदा॰ अट्ठ॰ 101; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *महन्तेन वायामेन अभिनीहारस्स समिज्झनतो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.135; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में कता॰, गमना॰, पुब्बपत्थना॰, महा॰, समिद्धा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; - **करण** नपुं॰, अभिनीहार का प्रदर्शन, सुदृढ़ संकल्प का लेना - **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पत्थयतो अभिनीहारकरणे ... इच्छितब्बा,* सु॰

नि॰ अट्ठ॰ 1.42; - **कारण** नपुं॰, अभिनीहार का कारण - **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अधिकारो छन्दता एते अभिनीहारकारणा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.42; - **कुसल** त्रि॰, अभिनीहार के निर्माण में निपुण, दृढ़ संकल्प लेने में कुशल - **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *समाधिस्स अभिनीहारकुसलो,* अ॰ नि॰ 2(2).30; - **ला** ब॰ व॰ - *चन्दसूरियपरिमज्जका विकुब्बनाधिट्ठानाभिनीहारकुसला इद्धिया पारमिं गता,* मि॰ प॰ 311; - **क्खम** त्रि॰, अभिनीहार करने में सक्षम - **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अभिनीहारक्खमं कत्वा,* अभि॰ अव॰ 138; - **गुणपारमी** स्त्री॰, अभिनीहार के गुण से युक्त पारमिता - *अभिनीहारगुणपारमियो पूरेत्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.220; - **दीपनीगाथा** स्त्री॰, जिनालंकार की गाथाओं के एक समुच्चय का शीर्षक, जिना॰ 5.13-22; - **नानत्तता** स्त्री॰, अभिनीहार का नानात्व, विविधता या नानारूपता - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चतुत्थं ञानं भावेत्वा ... अभिनीहारनानत्तता,* विभ॰ 498; - **पच्चुपट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰, गतिशीलता द्वारा प्रकाशित होने वाला - **ट्ठाना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वित्थम्भनलक्खणा वायोधातु ... अभिनीहारपच्चुपट्ठाना,* अभि॰ अव॰ 81; - **परिपुच्छादिविनिच्छयादिविनिमुत्त** त्रि॰, अभिनीहार के विषय में प्रश्न आदि एवं निश्चय आदि से विमुक्त - **त्तस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *परेसञ्हि अभिनीहारपरिपुच्छादिविनिच्छयादिविनिमुत्तस्सेव ... अट्ठुप्पत्तिभावेन,* उदा॰ अट्ठ॰ 25; - **समिद्धि** स्त्री॰, अभिनीहार का कार्यान्वयन, अभिनीहार की सिद्धि या उपलब्धि - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अट्ठधम्मसमोधानेन अभिनीहारसमिद्धितो पभुति ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).120; - **सम्पन्न** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसने अभिनीहार को उपलब्ध कर लिया है, अभिनीहार से युक्त, सुदृढ़ संकल्प वाला - **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पत्थितपत्थनो अभिनीहारसम्पन्नो सावको,* जा॰ अट्ठ॰ 2.117; - **न्ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सेट्ठिधीता ... पत्थितपत्थना अभिनीहारसम्पन्ना,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.220; - **न्नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पत्थितपत्थनं अभिनीहारसम्पन्नं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.393.

अभिन्दितब्बपरिस त्रि॰, वह, जिसके अनुगामी अपने आप में विभक्त होने योग्य नहीं हैं; एकताबद्ध अनुयायियों वाला, एकजुट होकर रहने वाले समूह वाला - **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभेज्जपरिसोति अभिन्दितब्बपरिसो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.190.

अभिन्न त्रि॰, √भिद के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अभिन्न], **शा॰ अ॰** अविभक्त, अखण्डित, अनटूटा, पूर्ण, समान - **न्ने** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिदो ... अभिन्ने अड्ढरत्तसमये,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.193; **ला॰ अ॰ क**. वह, जो बिखरा हुआ न हो, जो छिन्न-भिन्न न हुआ हो, ताजा मृत शरीर, गीला मृतशरीर - ... *अञ्ञतरो भिक्खु सुसानं गन्त्वा अभिन्ने सरीरे पंसुकूलं अग्गहेसि,* पारा॰ 68; *अभिन्ने सरीरेति अब्भुण्हे अल्लसरीरे ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.302; **ला॰ अ॰ ख**. वह, जो अस्त-व्यस्त न हो, जिसका क्रम गड़बड़ न हो, संभ्रमरहित - **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनाकुलो अनाकिण्णो अभिन्नो छेकेन चित्तकारेन तूलिकाय परिच्छिन्दित्वा पञ्ञत्तो विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.151; *हत्थपादसीसेहि ... पहटेन न चलितो अभिन्नो,* म॰ नि॰ टी॰ (म॰प॰) 2.103; **ला॰ अ॰ ग**. वह मार्ग, जो गड़बड़ या टूटा-फूटा न हो - **न्नेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मग्गेन अभिन्नेनेव गमिस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.107; - **कट्ठ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभिन्नकाष्ठ], वह, जिसका अग्निकाष्ठ विदीर्ण या विदलित न हो, वह, जिसके पास काटी हुइ लकड़ियां न हों - **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिन्नकट्ठोसि अनाभतोदको,* जा॰ अट्ठ॰ 5.192; - **सण्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसकी आकृति भिन्न न हो, जिसका रूप भिन्न न हो, एक जैसी शारीरिक बनावट वाला - **नानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिन्नसण्ठानानि तिट्ठन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 35; - **सरीरवत्थु** नपुं॰, सद्यःमृत शरीर की कथा या विषय - **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिन्नसरीरवत्थुस्मिं अधिवत्थोति ... सरीरे निब्बत्तो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.301.

अभिपत्थियना स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, विश्वास, प्रतीति, आस्था, श्रद्धा - *अभिपत्थियना सद्दहनमेव,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 220.

अभिपत्थित त्रि॰, [अभिप्रार्थित], आकांक्षित, अभिलषित, वाञ्छित, चाहा हुआ, इच्छित - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चेतसो अभिपत्थितो,* थेरगा॰ 514; - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं किञ्चि अभिपत्थितन्ति,* म॰ नि॰ 2.351; - **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दहरा त्वं रूपवती, पुरिसानंभिपत्थिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.283; - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *लोकनाथेन अभिपत्थिता पवत्तिता च,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 117.

अभिपत्थेति / अभिपत्थयति अभि + √पत्थ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिप्रार्थयति], इच्छा करता है, चाहता है, आकांक्षा करता है - **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *यं यदेवाभिपत्थेन्ति, सब्बमेतेन लब्भति,* खु॰ पा॰ 10; - **यं / मानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न कामे अभिपत्थयं,* सु॰ नि॰ 425; *निब्बानपदाभिपत्थयानो,* सु॰ नि॰ 367; *निब्बानपदाभिपत्थयानोति ... खन्धपरिनिब्बानपदं पत्थयमानो,*

सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.87; - **येय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *यदि हि अहं कामे अभिपत्थयेय्यं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.103; - **त्थये** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *... पेतं कालकताभिपत्थये'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.55.

अभिपस्सति अभि + √दिस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिपश्यति], **शा॰ अ॰** अच्छी तरह से देखता है, **ला॰ अ॰** सम्मान देता है, स्वीकार करता है, विचारता है, छानबीन करता है, लक्ष्य बनाता है, खोज करता है - **स्ससि** वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *कं तेन त्वाभिपस्ससी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.200; *कं तेन त्वाभिपस्ससीति तेन ... पियं कतमं पुग्गलं ... अभिपस्ससीति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.206; - **स्सतो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *निब्बानं अभिपस्सतो,* अ॰ नि॰ 1(1).172.

अभिपातेति अभि + √पत का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिपातयति], गिरवा देता है, उड़वाता है, फेंकवा देता है, मरवा देता है - *पलालसकटस्स वा पच्छाभागेन कण्डं पवेसेत्वा पुरेभागेन अतिपातेति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.75.

अभिपारक पु॰, [अभिपारग], राजा शिवि के सेनापति का नाम, राजा शिवि का सेनानी - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिपारकं सेनापतिट्ठाने ... रज्जं कारेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.200; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्सेसा भरियाभिपारकस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 5.202.

अभिपारुत त्रि॰, अभि + प + आ + √वु का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिप्रावृत], वस्त्रों से ढंका हुआ, वस्त्राच्छन्न, कपड़ों से सज्जित या सजा-धजा - **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पवरुत्तमं पवररुचिकासिककासावमभिपारुतं दिस्वा न पूजयि,* मि॰ प॰ 209.

अभिपालयति अभि + √पाल का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिपालयति], देखभाल करता है, पालन करता है, रक्षा करता है - **न्ति** ब॰ व॰ - *यञ्चापि मे ... अभिपालयन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.210; - **लिता** भू॰ का॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, पूर्ण रूप से रक्षित या प्रतिपालित - *मोदन्ति वा देववराभिपालिता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.388; *देववराभिपालिताति सक्केन रक्खिता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.389.

अभिपीळयति अभि + √पीळ का वर्त॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अभिपीड़यति], कष्ट पहुंचाता या सताता है, तंग करता या यातना देता है - *सत्ते बोधेन्तो धम्मयन्तमभिपीळयति,* मि॰ प॰ 164; - **ळित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰, पीड़ित, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त, उण्हा॰, जरा-रोगा॰, महाहिक्का॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिपुच्छति अभि + √पुच्छ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिपृच्छति], पूछता या पूछ-ताछ करता है, परिपृच्छा करता है, प्रश्न करता है - **च्छ** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *उट्ठेहि नं पञ्जलिकाभिपुच्छ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.17; *पञ्जलिकाभिपुच्छाति अञ्जलिको हुत्वा अभिपुच्छ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.17; - **च्छित / पुट्ठ** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰, पूछा गया, प्रश्न किया गया - **तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पञ्हं अभिपुच्छितेन सता ब्याकतं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).142; *तमेनं भगवता पञ्हाभिपुट्ठेन ब्याकत'न्ति,* म॰ नि॰ 1.273.

अभिपूजयति / अभिपूजेति अभि + √पूज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिपूजयति], आदर, सम्मान या पूजा करता है, यज्ञ या आराधना करता है - **जेमि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *तं त्राणं अभिपूजेमि,* अप॰ 1.167; - **याम** ब॰ व॰ - *यं तं वालधिनाभिपूजयाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.471; - **यि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *बोधिसत्तो तिरच्छानगतो समानो कासावं अभिपूजयि,* मि॰ प॰ 209; - **यिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *पुप्फेहि अभिपूजयिं,* अप॰ 1.122.

अभिपूरयित्वा अभि + √पूर का पू॰ का॰ कृ॰, परिपूर्ण करके, पूरी तरह से भरकर - *भोजनं भुञ्जेय्य छादेन्तं याव कण्ठमभिपूरयित्वा,* मि॰ प॰ 224; *पंसूहि सम्मा अभिपूरयित्वा,* दा॰ वं॰ 3.60.

अभिप्पकिण्ण अभि + प + √किर का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिप्रकीर्ण], सर्वत्र बिखरा हुआ, सर्वत्र छितराया हुआ, सर्वत्र फैला हुआ - *पुप्फानं अम्बणमत्तेन अभिप्पकिण्णसयने पुत्तस्स ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.72.

अभिप्पकिरति अभि + प + √किर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिप्रकिरति], सर्वत्र बिखेरता है, सर्वत्र छितराता है, बार-बार बिखेर देता है या चारों ओर छितरा देता है - **रन्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *तथागतस्स सरीरं ओकिरन्ति ... अभिप्पकिरन्ति तथागतस्स पूजाय,* दी॰ नि॰ 2.104; अभिप्पकिरन्तीति अभिण्हं पुनप्पुनं पकिरन्तियेव, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.149; - **रिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अब्भोकिरिस्सन्ति अभिओकिरिं अभिप्पकिरिं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 29; - **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, बिखेर कर, छितरा कर - *लाजपञ्चमेहि पुप्फेहि अभिप्पकिरित्वा ... उपेत्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).96-97.

अभिप्पमोद पु॰, [अभिप्रमोद], अत्यधिक आनन्द, अतिशय आह्लाद, हर्षातिरेक - **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चित्तस्स अभिप्पमोदो,* पटि॰ म॰ 182; *द्वीहाकारेहि अभिप्पमोदो होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.32.

अभिप्पमोदति अभि + प + √मुद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिप्रमोदति], अतिशय प्रसन्न होता है, मोद के मनोभाव से भर जाता है – ... *दुट्ठा मयी अञ्ञमभिप्पमोदयि*, जा. अट्ठ. 3.467; *दुट्ठा मयीति इदानि मयि ... अञ्ञं पुरिसं अभिप्पमोदति*, जा. अट्ठ. 3.468.

अभिप्पमोदयति अभि + प + √मुद का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रेर. [अभिप्रमोदयति], प्रसन्न या आनन्दित करता है, हर्षोत्फुल्ल बनाता या प्रहर्षित कर देता है – **यं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *अभिप्पमोदयं चित्तं ... समादहं*, पारा. 83; *अभिप्पमोदयं चित्तन्ति चित्तं मोदेन्तो ... पहासेन्तो*, पारा. अट्ठ. 2.32.

अभिप्पलम्बन्ति अभि + प + √लम्ब का वर्त., प्र. पु., ब. व. [अभिप्रलम्बन्ति], नीचे की ओर लटकते हैं – *ओलम्बन्ति अज्झोलम्बन्ति अभिप्पलम्बन्ति*, म. नि. 3.204.

अभिप्पवट्ट / अभिप्पवुट्ठ त्रि., अभि + प + √वस्स का भू. क. कृ. [अभिप्रवृष्ट], वर्षा कर चुका, अत्यधिक बरस चुका – **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कन्तारे महामेघो अभिप्पवट्टो*, दी. नि. 2.255; *उपरिपब्बते महामेघो अभिप्पवुट्ठो होति*, म. नि. 2.327; – **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *पावुस्सकेन मेघेन अभिप्पवट्टं*, म. नि. 1.388; **ट्ठानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *पावुसकेन मेघेन अभिप्पवुट्ठानि ... भवन्ति*, स. नि. 2(1).139; *पावुस्सकेन मेघेन अभिप्पवट्ठानि ... परिहायन्ति*, अ. नि. 2(2).258.

अभिप्पवस्सति अभि + प + √वस्स का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिप्रवर्षति], अत्यधिक बरस रहा है – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., अत्यधिक बरस रहा – *अभिप्पवस्सन्तो महामेघो विय निन्नानि*, पे. व. अट्ठ. 115; – **स्सेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व., जमकर बरसे – *उपरिपब्बते महामेघो अभिप्पवस्सेय्य*, मि. प. 33; – **स्सि** अद्य., प्र. पु., ए. व., जम कर बरसा – *महामेघो अभिप्पवस्सि*, मि. प. 8; – **स्सिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व., जम कर बरसे – *दिब्बानि च मन्दारवपुप्फानि अभिप्पवस्सिंसु*, मि. प. 12; – **स्सित्वा** पू. का. कृ., खूब बरस कर – *महतिमहामेघो अभिप्पवस्सित्वा निब्बापेय्य*, मि. प. 280.

अभिप्पसन्न त्रि., अभिप्रसीदति का भू. क. कृ. [अभिप्रसन्न], पूर्ण रूप से प्रसन्न, अतिशय प्रसन्न, किसी के प्रति अत्यधिक श्रद्धा से परिपूर्ण – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *त्वञ्च ब्राह्मणेसु अभिप्पसन्नो'ति*, सु. नि. (पृ.) 165; *निविट्ठसद्धो निविट्ठपेमो एकन्तगतो अभिप्पसन्नो*, अ. नि. 2(2).42; *अभिप्पसन्नोति अतिविय पसन्नो*, अ. नि. अट्ठ. 3.107; – **न्ना**[1] स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *पटिवसति अभिप्पसन्ना बुद्धे ... सङ्घे च*, म. नि. 2.433; *नाळन्दा इद्धा चेव फीता च ... भगवति अभिप्पसन्ना*, दी. नि. 1.195; – **न्ना**[2] पु., प्र. वि., ब. व. – *मनुस्सा च अभिप्पसन्ना ... पे. ...*, दी. नि. 1.102; – **न्ने** पु., द्वि. वि., ब. व. – *सब्बे च ... सासने अभिप्पसन्ने अकासि*, पे. व. अट्ठ. 124; – **चित्त** त्रि., अत्यधिक श्रद्धा से भरे चित्त वाला, अत्यन्त निर्मल चित्त वाला – **त्तेहि** पु., तृ. वि., ब. व. – *अपचितोति अभिप्पसन्नचित्तेहि ... अपचितो*, उदा. अट्ठ. 63.

अभिप्पसाद पु., अभि + प + √सद से निष्पन्न [अभिप्रसाद], अत्यधिक श्रद्धा या विश्वास – **दो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो*, ध. स. 12; *सयं वा अभिप्पसीदतीति अभिप्पसादो*, ध. स. अट्ठ. 189.

अभिप्पसादेहि अभि + प + √सद का अनु., म. पु., ए. व., प्रेर. [अभिप्रसादय], श्रद्धा से भर दो, स्वच्छ या निर्मल बना दो – *अभिप्पसादेहि मनं*, वि. व. 196, (पृ.) 19.

अभिप्पसारेय्यासि अभि + प + √सर का विधि., म. पु., ए. व., प्रेर. [अभिप्रसारयेः], आगे की ओर फैला दे, किसी की ओर पसार दे – *मा खो त्वं ... येन राजा तेन पादे अभिप्पसारेय्यासि*, महाव. 251.

अभिप्पसीदति अभि + प + √सद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिप्रसीदति], अत्यधिक श्रद्धावान होता है, किसी के प्रति श्रद्धा रखता है – **दिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *भगवति अभिप्पसीदिस्सती'ति*, दी. नि. 1.195; *सयं वा अभिप्पसीदतीति*, ध. स. अट्ठ. 189.

अभिप्पहारणी / अभिप्पहारिणी विशे., स्त्री., प्र. वि., ए. व. [अभिप्रहारिणी], प्रहार करने वाली, आक्रमण करने वाली, विघ्न या बाधा खड़ा करने वाली – *कण्हस्साभिप्पहारिनी*, सु. नि. 441; *कण्हस्साभिप्पहारिनी'ति ... समणब्राह्मणानं घातनी निप्पोथनी, अन्तरायकरीति अत्थो*, सु. नि. अट्ठ. 2.107.

अभिभव पु., [अभिभव], **क.** दमन, पराभव, आक्रान्त होना, प्रभावित होना – **वे** सप्त. वि., ए. व. – *जि अभिभवे*, सद्द. 2.344; **ख.** पराजय, हार – **वो** प्र. वि., ए. व. – *सब्बे मदे अभिभवोस्मि*, अ. नि. 1(1).172; पाठा. अभिभोस्मि.

अभिभवति / अभिभोति अभि + √भू का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिभवति], पराजित करता है, हरा देता है, अभिभूत करता है, पार करता है, मर्दित करता है, श्रेष्ठ हो जाता

है, स्वामी होता है - *अभिभोति अभिभवती ति ... मद्दति,* सद्द॰ 1.5; *सो पच्चामित्तं अभिभवति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.271; - **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - ... *वड्ढन्ति अभिभवन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 83; - **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दावग्गि अभिभवन्तो विय विरवन्तो आगच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.209; - **मानं** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सिरिया सिरिं अभिभवमानं विय विरोचित्थ,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.16; - **वेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अनुद्धंसेय्याति धंसेय्य पधंसेय्य अभिभवेय्य अज्झोत्थरेय्य,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.156; - **वि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अभिभवती ति ... किं अभिभवि,* सद्द॰ 1.76; - **विं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अज्जे अभिभविं अहं,* अप॰ 2.206; - **हेस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *कवचमभिहेस्सति अधम्मितो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.82; *कवचमभिहेस्सतीति ... अभिहनिस्सति भिन्दिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.83; - **वितब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेन अभिभवितब्बं अत्तनो लाभयसजीवितं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.297; - **भुय्य / भूय्य** पू॰ का॰ कृ॰, वश में करके - *अभिभुय्य सब्बानि परिस्सयानि,* ध॰ प॰ 328.

अभिभवन नपुं॰, किसी का किसी पर हावी होना, पराजित होना, पराभूत होना, पराभवन, पराजय - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिभवनं ति विधमनं,* सद्द॰ 1.86; *बलक्कारो नाम अत्तनो ... दुब्बलस्स अभिभवनं,* सद्द॰ 2.355; - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जीवितुपच्छेदवसेन सब्बेसं सत्तानं अभिभवनतो मच्चुराजसङ्खातस्स ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 262; - **नत्थसाधका** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, विधमन या पराजय के भाव को सिद्ध करने वाला - *अभिभवनत्थसाधका ... ति अत्थो,* सद्द॰ 2.344; - **कारण** नपुं॰, पराभूत होने का कारण - **णानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिभायतनानीति अभिभवनकारणानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.135; - **क्रिया** स्त्री॰, अभिभूत करने की क्रिया - *सो च खो ... अभिभवनक्रियायासति पुब्बे,* सद्द॰ 1.76; - **नादिक** त्रि॰, अभिभव आदि से सम्बद्ध - **दिके** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिभवनादिके वा किच्चे उप्पन्ने ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.299.

अभिभवव्यापार पु॰, [अभिभवव्यापार], किसी को अभिभूत करने की क्रिया या कृत्य, किसी को अपने वश में करने की क्रिया - **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपि च निच्चेतनभावेन अभिभवव्यापारे असति पि पुब्बे ...,* सद्द॰ 1.76.

अभिभवित त्रि॰, [अभिभूत], पराभूत, हारा हुआ, विजित, पराजित, वश में लाया हुआ - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिभायतनञ्हेतं ... अभिभवितं आयतनन्ति कथितं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.30.

अभिभवितु त्रि॰, अभि + √भू से व्यु॰, क॰ ना॰ [अभिभवितृ], अभिभूत करने वाला, दूसरों से आगे निकल जाने वाला, परास्त करने वाला, दमन करने वाला - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिभवती'ति अभिभविता परं अभिभवन्तो यो कोचि ...,* सद्द॰ 1.71; *वत्रभूति वत्रस्स नाम असुरस्स अभिभविता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.146.

अभिभायतन नपुं॰, [अभिभ्वायतन], आधिपत्य का क्षेत्र, प्रभुत्व का स्थान या आयतन, आठ प्रकार के ध्यानों में से एक, - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकेकस्मिं अभिभायतने एको सुद्धिकनवको,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 234; - **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अट्ठ खो इमानि ... अभिभायतनानि,* दी॰ नि॰ 2.85; *अभिभायतनानीति अभिभवनकारणानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.135; - **नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अट्ठन्नं अभिभायतनानं नवन्नं ... भगवा,* महानि॰ 104; *अभिभायतनानन्ति ... झानानन्ति अभिभायतनानि,* महानि॰ अट्ठ॰ 212; - **नेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ - *चतूसु अभिभायतनेसु अपुब्बपदवण्णना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 233; *एकेकस्मिं अभिभायतने एको सुद्धिकनवको,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 234; - **कथा** स्त्री॰, ध॰ स॰ अट्ठ॰ के अभिभू आयतन पर प्रकाश डालने वाले खण्ड का शीर्षक, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 232-234; - **देसना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अभिभूआयतन-विषयक उपदेश - *अट्ठ अभिभायतनदेसना,* उदा॰ अट्ठ॰ 273; - **सङ्खात** त्रि॰, अभिभायतन नाम वाला - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अञ्ञम्पि अभिभायतनसङ्खातं रूपावचरकुसलं पवत्तति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 232.

अभिभावापेति अभि + √भू का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिभावयति], दूसरों के द्वारा पराभूत कराने के लिये प्रेरित करता है, दूसरों से अभिभूत कराता है - *पुग्गलो पुग्गलेन सपत्तं अभिभावापेति अज्झोत्थरापेति,* सद्द॰ 1.5.

अभिभावेति अभि + √भू का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिभावयति], उपरिवत् - **न्ति** ब॰ व॰ - *अभिभावेन्ति पुरिसा पुरिसे पाणजातिकं,* सद्द॰ 1.12.

अभिभासति अभि + √भू का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिभाषते], बोलता है, सम्बोधित करता है, भाषण करता है - *न किञ्चि-मभिभासति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.98; - **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *त्वञ्च मं नाभिभाससि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.336.

अभिभासन नपुं॰, अभि + √भास का क्रि॰ ना॰ [अभिभाषण], सम्प्रसादन, तुष्टीकरण - *चित्तस्स अभिभासनं,* थेरगा॰ 613.

अभिभुय्यचारी त्रि॰, सबको पराभूत कर विचरण करने वाला - **री** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *राजा मिगानं अभिभुय्य चारी,*

सु॰ नि॰ 72; *यो कामे हित्वा अभिभुय्यचारी,* सु॰ नि॰ 471; *अभिभुय्यचारीति तेसं पहीनत्ता वत्थुकामे अभिभुय्यचारी,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.121.

अभिभू[1] त्रि॰, [अभिभू], सर्वश्रेष्ठ, प्रधान, पराभूत या पराजित करने वाला शासक, **क.** महाब्रह्मा के लिये प्रयुक्त – *ब्रह्मा महाब्रह्मा अभिभू अनभिभूतो,* दी॰ नि॰ 1.16; *अभिभूति अभिभवित्वा ठितो जेट्ठकोहमस्मीति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.96; **ख.** बुद्ध के सन्दर्भ में प्रयुक्त, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *तथागतो अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थुदसो वसवत्ती,* अ॰ नि॰ 1(2).28; *तत्थ अभिभूति रूपादीनं अभिभविता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.257; – **भुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिभुं अकथंकथिं विमुत्तं,* सु॰ नि॰ 539; *इमाय पटिपदाय किलेसे किलेसङ्खानिये च धम्मे अभिभवित्वा अभिभूति सङ्खं गतो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.141.

अभिभू[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, **क.** रूपब्रह्मलोक के एक असंज्ञी देवता का नाम – *अभिभूति अभिभवतीति अभिभू असञ्ञसत्तो,* सद्द॰ 1.76; – **भुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिभुं अभिभूतो सञ्जानाति,* म॰ नि॰ 1.3; – **भुस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिभुस्स अभिभुत्तेन अननुभूतं,* म॰ नि॰ 1.413; – **सद्द** पु॰, अभिभू का शब्द, ध्वनि या उच्चारण – **द्दस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिभूसद्दस्स असञ्ञिसत्ताभिधानत्ते अभिभुं अभिभूतो मञ्ञती'ति,* सद्द॰ 1.77; **ख.** शिखी बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों में से एक का नाम – *अभिभू च सम्भवो च द्वे अग्गसावका,* जा॰ अट्ठ॰ 1.52; *सिखिस्स खो पन भिक्खवे, भगवतो ... अभिभूसम्भवं नाम सावकयुगं अहोसि,* स॰ नि॰ 1(1).182.

अभिभूत[1] त्रि॰, अभि + √भू का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिभूत], पराभूत, पराजित, परास्त, वशीभूत – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिभूतो मारो विजितसङ्गामो,* उदा॰ 106; ... *खन्धमारो मच्चुमारो पञ्चविधो मारो ... अभिभूतो पराजितो,* उदा॰ अट्ठ॰ 174; – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तण्हाय पातितं अभिभूतं परियादिन्नचित्तं,* महानि॰ 34; *उपादिण्णकरूपं संयोगं विय तण्हाय अभिभूतं,* महानि॰ अट्ठ॰ 124; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कोधेन अभिभूतस्स,* अ॰ नि॰ 2(2).234; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ थिनमिद्धेन परियुट्ठिता अभिभूताति थिनमिद्धपरियुट्ठिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).197; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में अञ्ञाणरागा॰, अन॰, अभिज्झातिसमलोभा॰, अयसा॰, आसा॰, उद्धच्चकुकुच्चा॰, कुट्ठरोगा॰, कोधा॰, कोसज्जा॰ आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिभूत[2] पु॰, एक थेर का नाम, थेरगा॰ की एक कविता के रचियता स्थविर का नाम, थेरगा॰ 206-207.

अभिभूति स्त्री॰, [अभिभूति], प्रमुखता, प्रभुत्व, प्रचण्डशक्ति – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिभूतिं असक्कोन्तो कातुं दुम्मनतं गतो,* चू॰ वं॰ 57.58.

अभिभूयति / अभिभुय्यति अभि + √भू का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, भा॰ वा॰ [अभिभूयते], **क.** *भा॰ वा॰ में* दुःखी, पीड़ित, आक्रान्त अथवा पराभूत किया जाता है, – *उपादिन्नकसरीरं नाम खण्डिच्चादीहि अभिभुय्यति,* उदा॰ अट्ठ॰ 264; – **य्यमानानं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नयिदं युत्तं मनुस्सानम्पि पेतानं विय खुप्पिपासादीहि अभिभुय्यमानानं दिस्समानत्ता,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 91; **ख.** *कर्तृ॰ वा॰ में,* अभिभूत कर लेता है, दबोच लेता है – *रागं अभिभुय्यतीति अभिभुय्य वत्ततीति अभिभवति अज्झोत्थरति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.124.

अभिमङ्गल त्रि॰, [अभिमङ्गल], भाग्यवान्, सौभाग्यशाली, शुभ, माङ्गलिक, मङ्गलकारी – **रूपदस्सन** नपुं॰, माङ्गलिक स्वरूप का दर्शन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमञ्ञो अभिमङ्गलरूपदस्सनं मङ्गलं नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 4.66; – **सम्मत** त्रि॰, शुभ या माङ्गलिक माना जाने वाला – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरोगपुत्ता अरोगनत्ता अभिमङ्गलसम्मता,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.229; – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अभिमङ्गलसम्मतं सब्बसेतं हत्थिपोतकं आनेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.234; – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं वा पनञ्ञम्पि किञ्चि एवरूपं अभिमङ्गलसम्मतं रूपं पस्सति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 95.

अभिमण्डित त्रि॰, अभि + √मण्ड का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिमण्डित], सुन्दर ढंग से विभूषित, पूर्णरूप से समलङ्कृत – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुगन्धं पियं पत्थितं पसत्थं जलकद्दममनुपलित्तं अणुपत्तकेसरकण्णिकाभिमण्डितं,* मि॰ प॰ 325.

अभिमत त्रि॰, अभि + √मन का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिमत], अभीष्ट, प्रिय, रुचिकर, स्वीकृत, अनुमित, आकलित – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्वे भावना अभिमता विनिच्छयो तत्थ ञातब्बो,* विसुद्धि॰ 2.332; – **देस** पु॰, कर्म॰ स॰ [अभिमतदेश], वाञ्छित प्रदेश, अभीष्ट भू-भाग – **सम्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तवाभिमतदेसम्हि संगामो वा करीयतं,* चू॰ वं॰ 60.31.

अभिमद्दति अभि + √मद्द का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिमृदनाति], मर्दन करता है, रौंदता है, कुचलता या पीस देता है, परास्त करता या दबाता है – *अथ पापजनं कोधो, पब्बतोवाभिमद्दती'ति,* स॰ नि॰ 1(1).277; *पब्बतोवाभिमद्दतीति लामकजनं पब्बतो विय कोधो अभिमद्दतीति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.310; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मिगसङ्घं अभिमद्दमानो दीपि विय च अञ्ञे भिक्खू तत्थ विज्झन्तो ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰)

1(2).279; - **द्दे** विधि., प्र. पु., ए. व. - *नाभिहरे नाभिमद्दे न वाचं पयुतं भणे,* अ. नि. 1(1).229; - **द्दथ** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *एवं विहरमानं मं, मच्चुराजाभिमद्दथ,* अप. 2.79.

अभिमद्दन नपुं., अभि + √मद्द का क्रि. ना. [अभिमर्दन], रगड़ना, कुचलना, दमन - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *सो हि पुरिसो विय ... न पुंसेति अभिमद्दनं कातुं न सक्कोती'ति नपुंसकोति वुच्चति,* सद्द. 2.566; **द्दने** सप्त. वि., ए. व. - *पुस अभिमद्दने नकारो निग्गहीतत्थं,* सद्द. 2.566.

अभिमद्दित त्रि., अभि + √मद्द का भू. क. कृ. [अभिमर्दित], कुचला हुआ, दमन किया हुआ, सम्मर्दित, रगड़ा हुआ - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *ताव मनोरमं बिम्बं, जराय अभिमद्दितं,* स. नि. 3(2).293.

अभिमन त्रि., [अभिमनस्], वह, जो किसी की ओर अपने मन को किये हुए हो, किसी की ओर अभिमुख मन वाला - **नो** पु., - *दुक्खा हि कामा कटुका महब्भया, निब्बानमेवाभिमनो चरिस्सं,* थेरगा. 1125; *निब्बानमेवाभिमनो चरिस्सं तस्मा निब्बानमेव उद्दिस्स अभिमुखचित्तो विहरिस्सं,* थेरगा. अट्ठ. 2.399.

अभिमनाप त्रि., अतीव सुन्दर, रमणीय, रोचक, प्रीतिकर, सुखद, मनोहर - **पेन** पु./नपुं., तृ. वि., ए. व. - *अभिक्कन्तेनाति अतिमनापेन, अभिरूपेनाति अत्थो,* पे. व. अट्ठ. 60; - **तर** त्रि., तुल., विशे., अपेक्षाकृत अधिक मनभावन - **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अभिक्कन्ततरन्ति अभिमनापतरं अतिसेट्ठतरन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.141.

अभिमन्थति / अभिमत्थति अभि + √मन्थ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिमन्थति, अभिमथ्नाति], **शा. अ.** रगड़ देता है, कुचल देता है, पीस देता है, **ला. अ.** पीड़ित करता है, उत्पीड़ित करता है, विनष्ट करता है - *अभिमत्थति दुम्मेधं वजिरं'वस्ममयं मणिं'ति,* ध. प. 161; *अभिमत्थति कन्तति विद्धंसेतीति,* ध. प. अट्ठ. 2.84; - **त्थथ** म. पु., ए. व. - *बाला कुमुदनाळेहि, पब्बतं अभिमत्थथ,* स. नि. 1(1).149; - **त्थं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *स्वस्स गोमयचुण्णानि अभिमत्थं तिणानि च,* जा. अट्ठ. 6.200; *अभिमत्थन्ति हत्थेहि धंसित्वा आकिरन्तो ...,* जा. अट्ठ. 6.201; - **न्थेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *बलवा पुरिसो तिण्हेन सिखरेन मुद्धनि अभिमन्थेय्य,* म. नि. 1.312; - **त्थियमानो** भा. वा., वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *मत्थको सिखरेन अभिमत्थियमानो विय जातो,* जा. अट्ठ. 4.413; - **मन्थेन्तो** प्रेर., वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., पूर्ण शक्ति लगाकर मथ रहा या रगड़ रहा - *अमुं अल्लं कट्ठं ... उत्तरारणिं आदाय अभिमन्थेन्तो अग्गिं अभिनिब्बत्तेय्य,* म. नि. 2.437.

अभिमान पु., [अभिमान], **क.** दर्प, अहङ्कार, घमण्ड, गर्व **ख.** भ्रान्त धारणा - *गब्बो'भिमानो हङ्कारो,* अभि. प. 171; - **नेन** तृ. वि., ए. व. - *अभिवदतीति अभिमानेन उपवदति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.16; - **वसीकत** त्रि., प्र. वि., ए. व. [अभिमानवशीकृत], घमण्ड या अभिमान के वश में रहने वाला - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - पदुट्ठमनसङ्कप्पा अभिमानवसीकता, चू. वं. 74; 135.

अभिमानी त्रि., [अभिमानिन्], घमण्डी, अहङ्कारी, हेकड़ी भरने वाला, अक्खड़, महत्त्वाकांक्षी - *ततो अभिमानी सेनानी सेनं सो तत्थ पेसयि,* चू. वं. 57.55; - **निनो** ब. व. - *पधानामच्चसामन्तभटादिस्वभिमानिनो,* चू. वं. 66.142.

अभिमार[1] पु., बुद्ध की हत्या का प्रयास करने वाला, बुद्ध का वधिक या गुप्तघाती - **रे** द्वि. वि., ब. व., गुप्तघातियों या छलघातियों को - *अभिमारे पेसेत्वा धनपालं मुञ्चापेत्वा ...,* दी. नि. अट्ठ. 1.127; - **पयोजन** नपुं., गुप्तघाती का प्रयोजन - **ना** प. वि., ए. व. - *देवदत्तस्स वत्थु याव अभिमारप्पयोजना खण्डहालजातके आविभविस्सति,* जा. अट्ठ. 1.147.

अभिमार[2] पु., मार की एक उपाधि - *खेरभेरोरभिमारभेखे, खेरभेरेखि भेखे खे,* जिना. 98.

अभिमुख त्रि., [अभिमुख], वह, जो किसी की ओर मुख किये हुए हो, की ओर, किसी की ओर मुड़ा हुआ, सामने **क.** *द्वि. वि. में अन्त होने वाले नामपद के साथ अन्वित* - **खो** पु., प्र. वि., ए. व. - *गिरिमारञ्जरं पतीति आरञ्जरं नाम गिरिं अभिमुखो हुत्वा ...,* जा. अट्ठ. 7.244; **ख.** *ष. वि. में अन्त होने वाले पद के साथ अन्वित* - **खं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *एकदिवसेनेव देवगणं अत्तनो अभिमुखमकासि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.225; - **खा** पु., प्र. वि., ब. व. - *नाभिजवन्तीति न सुमुखभावेन अभिमुखा जवन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.181; स. उ. प. के रूप में अन्तोगेहा., अन्तोविहारा., अस्समा., आगतमग्गा., आरम्मणा., आरामा., उत्तरदिसा., उत्तरा., उय्याना., कम्मट्ठाना., कामा. आदि के अन्त. द्रष्ट..

अभिमुखं निपा., [अभिमुखम्], आगे की ओर, किसी दिशा में, के सामने, की उपस्थिति में, के निकट - *तदा पन बाराणसिरञ्ञो मत्तवारणेपि अभिमुखं आगच्छन्ते ...,* जा. अट्ठ. 1.255; स. उ. प. के रूप में आघातना., आपणा., उत्तरा., गगनतला., पुरत्था., भूमितला. तथा सिविरट्ठा. के अन्त. द्रष्ट..

अभिमुखकरण नपुं., [अभिमुखकरण], सामने की ओर का सङ्केत, समीपवर्ती की सूचना - *यदिदन्ति अभिमुखकरणत्थे निपातो, तेन एसाति उद्दिट्ठं निद्दिसितुं या एसाति अभिमुखं करोति,* खु. पा. अट्ठ. 186.

अभिमुखत्थ पु., [अभिमुखार्थ], विद्यमान होने या सामने मौजूद रहने का अर्थ अथवा तात्पर्य - *सम्मा भुस सहाप्पत्थाभिमुखत्थेसु सङ्गते,* अभि. प. 1170.

अभिमुखभाव पु., [अभिमुखभाव], सामने विद्यमान रहना - **वे** सप्त. वि., ए. व., **क**. *अभि उप. के अर्थ में - विसिट्ठे अभिमुखीभावे उद्धकम्मे तथेव च,* सद्द. 3.883; **ख**. *'आ' उप. के अर्थ में,* **ग**. *'स' उप. के अर्थ का सूचक* - **पच्चुपट्ठान** त्रि., ब. स., सामने विद्यमान होने के रूप में प्रकाशित होने वाला - **नानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *सद्दादीसु अभिमुखभावपच्चुपट्ठानानि,* अभि. अव. 11.

अभिमुखयुद्ध नपुं., खुला युद्ध, आमने सामने की लड़ाई - **द्धेन** तृ. वि., ए. व. - *अभिमुखयुद्धेन गहेतुं न सक्काति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 2.100; *अभिमुखयुद्धेनाति अभिमुखं उजुकमेव सङ्गामकरणेन,* लीन. (दी. नि. टी.) 2.111.

अभियाचति अभि + √याच का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभियाचते], मांगता है, अनुनय विनय करता है, चिरौरी करता है, घिघियाता है - **चाम** उ. पु., ब. व. - *एवं तं अभियाचाम, पुन कयिरासि परियाय'न्ति,* जा. अट्ठ. 4.194; - **चे** उ. पु., ए. व., आत्मने. - *कप्पञ्जहं अभियाचे सुमेध,* सु. नि. अट्ठ. 1107; अभियाचेति अतिविय याचामि, सु. नि. अट्ठ. 2.291.

अभियाति अभि + √या का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभियाति], विरोध में अभियान करता है, आक्रमण करता है, धावा बोल देता है - **यन्ति** प्र. पु., ब. व. - *एते, तात सुवीर, असुरा देवे अभियन्ति,* स. नि. 1(1).250; - **यातुकाम** त्रि., आक्रमण करने की इच्छा रखने वाला - **मो** पु., प्र. वि., ए. व. *राजा मागधो अजातसत्तु वेदेहिपुत्तो वज्जी अभियातुकामो होति,* दी. नि. 2.56; *अभियातुकामोति अभिभवनत्थाय यातुकामो,* दी. नि. अट्ठ. 2.95.

अभियुञ्जति अभि + √युज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभियुङ्क्ते], झूठा दावा ठोकता है, नालिश करता है - *आरामं अभियुञ्जति, आपत्ति दुक्कटस्स,* पारा. 56; *आरामं अभियुञ्जतीति परसन्तकं मम सन्तको अय'न्ति मुसा भणित्वा अभियुञ्जति,* पारा. अट्ठ. 1.270; - **ञ्जिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. - *यं किञ्चि नट्ठं सब्बं अम्हे अभियुञ्जिस्सती'ति,* पाचि. 415; - **त्वा** पू. का. कृ. *अम्हाकं सन्तकानि एतानी'ति अभियुञ्जित्वा तेसु ...,* जा. अट्ठ. 1.327.

अभियुत्त त्रि., अभि + √युज का भू. क. कृ. [अभियुक्त], अत्यन्त निपुण, पूर्ण रूप से परिचित - **त्तेहि** पु., तृ. वि., ब. व. - *सयं वा कारकादिभावेन अभियुत्तेहि लोकियतीति लोकोति अधिप्पेतो,* उदा. अट्ठ. 276.

अभियोग पु., [अभियोग], **क**. प्रयत्न, उद्यम, प्रयास, चित्त की एकाग्रता - **गो** प्र. वि., ए. व. - *यतो मङ्गलत्थिकेन एत्थेव अभियोगो कातब्बो,* खु. पा. अट्ठ. 72; - **गं** द्वि. वि., ए. व. - *गन्ताभियोगं कत्वान,* चू. वं. 44.113; **ख**. दोषारोपण, आरोप, मुकदमा - **गो** प्र. वि., ए. व. - *आरामादिथावरेसु पन येभुय्येन अभियोगवसेनेव गहणसम्भवतो एत्थेव पालियं अभियोगो वुत्तो,* वि. वि. टी. 1.159; - **करण** नपुं., [अभियोगकरण], दोषारोपण कर देना, दोष लगा देना - **णं** प्र. वि., ए. व. - ... *इदं अभियोगकरणं परेसं भूमट्ठभण्डादीसु पि कातुं वट्टति येव,* वि. वि. टी. 1.159.

अभियोगी त्रि., [अभियोगिन्], अच्छा अभ्यास किया हुआ, एकाग्र या दत्तचित्त, किसी के साथ पूरी तरह से जुड़ा हुआ - **गिनो** पु., प्र. वि., ब. व. *अभियोगिनो च निपुणा,* दी. नि. 3.126; *अभियोगिनोति लक्खणसत्थे युत्ता,* दी. नि. अट्ठ. 3.108.

अभियोब्बन नपुं., [अभियौवन], खिला हुआ यौवन, उत्फुल्ल यौवन, चढ़ी हुई जवानी - **नं** प्र. वि., ए. व. - *सोभते सु अभियोब्बनं पति,* थेरीगा. 258; *सु अभियोब्बनं पतीति सुन्दरे अभिनवयोब्बनकाले ...,* थेरीगा. अट्ठ. 235.

अभिरक्खति अभि + √रक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिरक्षति], रक्षा करता है, देखभाल करता है, पूरी तरह से रक्षा करता है - **तु** अनु., प्र. पु., ए. व. *अथोपि तं महाराजा, सञ्जयो अभिरक्खतू'ति,* जा. अट्ठ. 7.374.

अभिरक्खा स्त्री., [अभिरक्षा], सुरक्षा, पूर्ण रक्षा - **क्खा** प्र. वि., ब. व. - *पञ्चविधा ठपिता अभिरक्खा,* स. नि. 1(1). 247; जा. अट्ठ. 1.201.

अभिरत त्रि., अभि + √रम का भू. क. कृ. [अभिरत], किसी वस्तु में आनन्द प्राप्त करने वाला, किसी से संतुष्ट होने वाला, पूरी तरह से लगा हुआ या समर्पित - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *समग्गरति अभिरतो,* क. व्या. 588; *अभिरतो पविवेके,* दी. नि. 1.53; - **तेन** पु., तृ. वि., ए. व. - *अभिरतेन पनावुसो, किं दुक्कर'न्ति,* स. नि. 2(2).254; - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *रत्तस्स यथाभिरतस्स रूपस्स*

... *सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सूपायासा* ..., म॰ नि॰ 3.154; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अभिरता होन्तीति अत्थो*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.131.

अभिरति स्त्री॰, [अभिरति], आनन्द, अनुराग, लगाव – **ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवञ्हिस्स तदत्थं ब्रह्मचरियवासे विसेसतो अभिरति भविस्सतीति*, उदा॰ अट्ठ॰ 138; – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं मे परो अनभिरतिं विनोदेत्वा अभिरतिं उप्पादेय्य*, स॰ नि॰ 1(1).215; *तत्राभिरतिमिच्छेय्य*, ध॰ प॰ 88; – **तिया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिज्झाविनयेन च काये अभिरतिया*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).255; – **तियं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं ब्रह्मचरियं पुब्बे वुत्तं ... अभिरतियं आदरजननत्थं अभिरम*, उदा॰ अट्ठ॰ 139; स॰ उ॰ प॰ के रूप में पविवेका॰, वत्ता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **कारक** त्रि॰, आनन्द या लगाव उत्पन्न करने वाला/वाली – **रिकासु** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामकरासूति अभिरतिकारिकासु*, जा॰ अट्ठ॰ 5.435; – **कारण** नपुं॰, आमोद से भरपूर रहने का कारण – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *केसवस्स अभिरतिकारणं पुच्छि*, जा॰ अट्ठ॰ 3.123; – **सञ्ञा** स्त्री॰, [अभिरतिसंज्ञा], आनन्द के भरपूर रहने की समझ या मान्यता – **ञ्ञाय** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निब्बिदानुपस्सनेन अभिरतिसञ्ञाय* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.8; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अन॰, एकत्ता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिरत्त त्रि॰, [अभिरक्त], **क.** लगा हुआ, सम्बद्ध, लिप्त, आसक्त – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सन्दिट्ठिरागेन हि तेभिरत्ता*, सु॰ नि॰ 897; *यस्मा सकेन दिट्ठिरागेन अभिरत्ताति वुत्तं होति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.249; **ख.** लाल, सुर्ख लाल – **भाव** पु॰, लालपन, लालरंग में रंगा होना – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिरत्तभावेन जिव्हासदिसं ते ओट्ठपरियोसानन्ति वदति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.151; – **लोचन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभिरक्तलोचन], लाल आंखों वाला – **ना** पु॰ प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विसालनेत्ता अभिरत्तलोचना*, वि॰ व॰ 1026; *अभिरत्तलोचनाति विसेसतो रत्तराजीहि उपसोभितनयना*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 234.

अभिरद्ध त्रि॰, अभि + √राध का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिराद्ध], संतुष्ट या प्रसन्न कर दिया गया, आह्लादित – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुद्धस्स ... अवण्णे भञ्ञमाने अत्तमनो होति उदग्गो अभिरद्धो*, महाव॰ 89; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिरद्धस्स पन सुखपदट्ठानत्ता अत्तनो मनो नाम होति*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 188; **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अय्यस्स नन्दकस्स अत्तमना अभिरद्धा यं नो अय्यो नन्दको पवारेती'ति*, म॰ नि॰ 3.329; *अय्यास्स नन्दकस्स अत्तमना अभिरद्धा* ..., म॰ नि॰ 3.329.

अभिरन्तं अ॰, इच्छानुसार, अपनी रुचि के अनुसार – *अथ खो भगवा अम्बलट्ठिकायं यथाभिरन्तं विहरित्वा, आयस्मन्तं आनन्दं आमन्तेसि*, दी॰ नि॰ 2.64; *यथाभिरन्तं विहरे अरञ्ञे*, सु॰ नि॰ 53.

अभिरमति अभि + √रम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिरमते], सुखानुभव करता है, आनन्द का अनुभव करता है, प्रेम में मग्न हो जाता है, मजा लेता है – *सा तत्थ न रज्जति, तत्र नाभिरमति*, अ॰ नि॰ 2(2).203; *एवं अयम्पि हत्थिनागो ... विवेकं उपब्रूहयमानो इदानि एको असहायो वने अरञ्ञे रमति अभिरमति*, उदा॰ अट्ठ॰ 203-204; **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *नागयोनियं अभिरमसीति पुच्छि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.205; – **मामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *जनपदकल्याणिया पटिबद्धचित्तो हुत्वा नाभिरमामी'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 2.76; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अपि च यत्थ ... मक्खिका अभिनिविसन्ति ... मक्खिका अभिरमन्ति*, म॰ नि॰ 3.188; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो ताय सद्धिं अभिरमन्तो धम्मे चित्तमत्तम्पि अनुप्पादेत्वा* ..., पे॰ व॰ अट्ठ॰ 4; – **मानो** उपरिवत् – *इदानि पन आगन्त्वा सङ्गणिकाय अभिरममानो चरसि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.114; – **माना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अभिरममानाव अनुक्कण्ठिताव जीवितं जहन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.49; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिरमतु, भन्ते, अय्यो गग्गो मन्ताणिपुत्तो*, म॰ नि॰ 2.311; – **मेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मया सद्धिं इध अभिरमेय्या'ति तस्सा दिब्बभोगसम्पत्तिया अनुभवनहेतुं वीमंसन्तो* ..., पे॰ व॰ अट्ठ॰ 127; – **मेय्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचाहं, भन्ते, पब्बजितो अस्सं, अभिरमेय्यामहं*, महाव॰ 201; – **य्युं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तथारूपा चक्खुविञ्ञेय्या रूपा ये दिस्वा दिस्वा अभिरमेय्युं*, म॰ नि॰ 3.355; – **मेय्याथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तुम्हाकं पतिरूपं ... अनगारियं पब्बजितानं यं तुम्हे अभिरमेय्याथ ब्रह्मचरिये*, म॰ नि॰ 2.135; – **मि/मित्थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *गतकाले तेन सद्धिं किलेसवसेन अभिरमि*, जा॰ अट्ठ॰ 3.161; *कुमारो उय्यानभूमिया अभिरमित्थ*, दी॰ नि॰ 2.17; – **मिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सब्बं तं तक्कवड्ढनं, नाहं तत्थ अभिरमिं*, सु॰ नि॰ 1090; – **मिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे रट्ठपालो कुलपुत्तो नाभिरमिस्सति अगारस्मा अनगारियं पब्बज्जाय*, म॰ नि॰ 2.259; – **मिस्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिरमिस्सामि ब्रह्मचरियवासे'ति*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 52; – **मितुं** निमि॰ कृ॰ –

दुरभिरमन्ति अभिरमितुं न सुखं, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).120.

अभिरमण नपुं॰, [अभिरमण], किसी वस्तु में आनन्द प्राप्त करना या मन को रमा देना – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तव कामेहि अभिरमणं मम चित्तमत्तं न होति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.105.

अभिरमापन नपुं॰, आनन्द से परिपूर्ण कराना, मन को पूरी तरह रमा देना – **नाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिरमापनाय मनुस्सकन्तेसु सीलेसु समादपनाय ...,* म॰ नि॰ 3.173.

अभिरमापेति अभि + √रम के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिरमयति], किसी वस्तु में आराम या सुख पाने के लिये प्रेरित करता है, आनन्द से भर देता है, तृप्त कराता है, आनन्द दिलवाता है, मजा दिलाता है, पूरी तरह रमा देता है – *गतगतट्ठाने पियसहायो विय अभिरमापेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 390; – **पेन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं मं अभिरमापेन्तो कप्पो अलोणकं ... सामाकनीवारयागुं पायेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.124; – **पेन्तियो** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *... सम्परिवारयित्वा अभिरमापेन्तियो नच्चगीतवादितानि पयोजयिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.71; – **पेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *राजानं पत्तियापेत्वा मया सद्धिं अभिरमापेय्य'न्ति चिन्तेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.347; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *नच्चगीतेहि चेव मधुरवचनादीहि च नानप्पकारेहि अभिरमापेतुं वायमिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 6.9; – **पेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *... चित्तं अभिरमापेत्वा पच्छा सीले नियोजेन्ति,* मि॰ प॰ 215.

अभिरमेहि अभि + √रम का अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, रमण करो, मौज करो, मस्ती करो – *इमं मणिं गहेत्वा अञ्ञत्थ न अभिरमेहीति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.176.

अभिरवति अभि + √रु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिरौति], जोर से चिल्लाता है, नाद करता है – *अभावितचित्तो तसति रवति भेरवरावमभिरवति,* मि॰ प॰ 237; – **न्ति** ब॰ व॰ – *तेपञ्ञुभो अभिरवन्ति, धुवं बुद्धो भविस्ससि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.23.

अभिराज पु॰, [अधिराज], सर्वश्रेष्ठ राजा, राजाधिराज – **जा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजाभिराजा मनोजो, इन्दोव जयतं पति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.314; *राजाभिराजाति एकसतराजूनं पूजितो, तेसं वा अधिको राजाति राजाभिराजा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.315.

अभिराधन पु॰, थेर सम्भूत के तीन मित्रों में से एक का नाम – *भूमिजो जेय्यसेनो च, सम्भूतो अभिराधनो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.46.

अभिराधयति अभि + √राध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिराधयति], प्रसन्न या संतुष्ट करता है, सिद्ध कराता है, प्राप्त करने में सफल रहता है – *नेव अत्तनो न परेसं हितं अभिराधयतीति अनभिरद्धि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.49; – **ये** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सब्बं चे पथविं दज्जा, नेव नं अभिराधये'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.308; *नेव नं अभिराधयेति एवं करोन्तोपि एवरूपं ... वा पसादेतुं वा न सक्कुणेय्याति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.308; – **यि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *बाहिया हि सुहन्नेन, राजानमभिराधयी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.403; *राजानमभिराधयीति देवं अभिराधयित्वा इमं सम्पत्तिं पत्ताति,* तदे॰; – **यिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *वहन्ती नाभिराधयिं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.341.

अभिराधित त्रि॰, अभि + √राध का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिराद्ध], सफलतापूर्वक प्राप्त किया हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मानुसोपि च भवोभिराधितो,* थेरगा॰ 259; *मानुसोपि च भवोभिराधितोति ... मया तादिसेन कुसलकम्मुना समवायेन अभिराधितो साधितो अधिगतो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.409.

अभिराधी त्रि॰, प्रसन्न कर देने वाला, सन्तुष्ट कर देने वाला, केवल मित्ताभिराधी के स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त – *मित्ताभिराधीति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.245.

अभिरुचि स्त्री॰, [अभिरुचि], इच्छा, आनन्द, प्रहर्ष, प्रवृत्ति, मानसिक आशय – **चिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिचित्तं विराजेत्वाति इत्थिभावे चित्तं अज्झासयं अभिरुचिं विराजेत्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 146.

अभिरुचित त्रि॰, अभि + √रुच का भू॰ क॰ कृ॰, मनचाहा, मनपसंद – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जनपदचारिकं चरित्वा अत्तनो अभिरुचितं एकं मङ्गलनामं गहेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.385; – **तेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *लक्खणेसु अत्तनो अभिरुचितेहि लक्खणेहि भगवन्तं थुनन्तो ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.157.

अभिरुद त्रि॰, [अभिरुत], आनन्दपूर्ण ध्वनि, चिल्लाहट, कोलाहल, पक्षियों का मधुर कलरव – **रुदा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वारणाभिरुदा रम्मा, उभो कालूपकूजिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.308; *वारणाभिरुदा रम्माति रम्माभिरुदा वारणा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.309; स॰ उ॰ प॰ के रूप में सकुन्ता॰, कुञ्जा॰, हंसकोञ्चा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिरुय्ह अभि + √रुह का पू॰ का॰ कृ॰ [अभिरुह्य], चढ़ कर, सवार होकर – *अभिरुय्ह गजवरं सुकप्पितं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 212; *पुन अभिरुय्हाति एत्थ ... दट्ठब्बो, अभिरुय्हं आरोहनीयन्ति वुत्तं होति,* तदे॰.

अभिरुहनक त्रि॰, पास वाले पौधे को अभिभूत करके उगने वाला या बढ़ने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ –

अभिरुहनकाति समीपरुक्खे अभिभवित्वा रुहनका, लीन॰ प॰ (स॰ नि॰ टी॰) 2(2).136.

अभिरूप त्रि॰, [अभिरूप], सुन्दर ढंग से निर्मित, अतीव सुन्दर, रमणीय, मनोहर – **पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमं भोन्तो निसामेथ, अभिरूपो ब्रह्मा सुचि*, सु॰ नि॰ 412; *अभिरूपोति दस्सनीयङ्गपच्चङ्गो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.101; – **पेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा अभिक्कन्तेनाति अतिकन्तेन अतिमनापेन, अभिरूपेनाति अत्थो*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 40; – **पा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स पन सुवण्णहंसराजस्स धीता हंसपोतिका अभिरूपा अहोसि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.204; – **पं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सा विहारं पविसनसमये एकं पन अभिरूपं इत्थिं* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.64; – **च्छवि** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभिरूपछवि], चौंधियाने वाली सुन्दरता वाला, चकित या विस्मित करने वाली छवि से युक्त – **वि** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन अभिक्कन्तवण्णा अभिरूपच्छवि इट्ठवण्णा मनापवण्णाति वुत्तं होति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.14; – **तर** त्रि॰, तुल॰ विशे॰ [अभिरूपतर], और भी अधिक सुन्दर, अत्यधिक सुन्दर – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असितो देवलो इसि अभिरूपतरो चेव होति*, म॰ नि॰ 2.369; – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमा नु खो अभिरूपतरा*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.69; – **रानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्च अच्छरासतानि अभिरूपतरानि चेव ... पासादिकतरानि चा'ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.69; – **ता** स्त्री॰, अभिरूप का भाव॰ [अभिरूपता], सुन्दरता, अत्यधिक सुन्दर रूप से युक्त होता – **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिरूपताय पन रूपनन्दाति पञ्ञायि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.63; – **नन्दा** स्त्री॰, थेरीगा॰ में बुद्ध द्वारा उद्‌बोधित, खेमक की पुत्री – **न्दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं भगवा अभिरूपनन्दं सिक्खमानं ... अभिण्हं ओवदतीति*, थेरीगा॰ 20; – **न्दाय** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतुरं असुचिं ... अभिरूपनन्दाय सिक्खमानाय गाथा*, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 26; – **वती** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अभिरूपवती], अतीव सुन्दरी – *नच्चन्तवण्णाति अभिरूपवती*, जा॰ अट्ठ॰ 5.444.

अभिरुळ्ह त्रि॰, अभि + √रुह का पू॰ का॰ कृ॰ [अभिरुढ़], **क**. *कर्तृ॰ वा॰ में* – चढ़ चुका, आरूढ़ हो चुका, सवार हो चुका – **ळ्हे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकस्मिं पुरिसे अभिरुळ्हे सा नावा समुपादिका भवेय्य*, मि॰ प॰ 223; – **ळ्हाय** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्छतो महापथविया योजनमत्तं अभिरुळ्हाय गोतमो नाम बुद्धो उप्पज्जिस्सति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.60; **ख**. *भा॰ वा॰ में* – वह सवारी या हाथी आदि जिस पर कोई चढ़ा हुआ है – **ळ्हं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिया अभिरुळ्हं सङ्कमं सारत्तो सञ्चालेसि*, पारा॰ 187.

अभिरूहति / अभिरुहति अभि + √रुह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिरोहति / अभिरुहति], चढ़ता है, सवार होता है, आरोहण करता है – *दन्तं नयन्ति समितिं, दन्तं राजाभिरूहति*, ध॰ प॰ 321; *राजाति तथारूपेहेव वाहनेहि गच्छन्तो राजापि दन्तमेव अभिरूहति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.284; – **न्ति** ब॰ व॰ – *इतरा पकतियानकं वा अभिरुहन्ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.219; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चङ्कमं अभिरुहन्तो, तत्थेव पपतिं छमा*, थेरगा॰ 271; – **मानो** उपरिवत्, आत्मने॰ – *ततियं पासादं अभिरुहमानो सोपानसीसे ठत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.105; – **माना** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अभिरुहमाना सब्बसाखा पलिवेठेन्ती मत्थकं पत्वा* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).266; – **रुह** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अरियानं दानाभिरतानं बुद्धादीनं मग्गं अभिरुह*, जा॰ अट्ठ॰ 5.385; – **तु** प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिरुहतु सुगतो दुस्सानि*, म॰ नि॰ 2.288; – **न्तु** ब॰ व॰ – *निरालया इमं पब्बतं अभिरुहन्तू'ति वत्वा* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 64; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मया सद्धिं रथं अभिरुहथ*, जा॰ अट्ठ॰ 3.420; – **हेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो तं नावं अभिरुहेय्य*, मि॰ प॰ 223; – **रुहि / रूहि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यत्र हि नाम जातस्स जरा ... ततोव पटिनिवत्तित्वा पासादमेव अभिरुहि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.69; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *तं पन ठानं नेव हेट्ठाभागेन अभिरुहितुं* ..., जा॰ अट्ठ॰ 4.297; – **रुय्ह** पू॰ का॰ कृ॰ – *देवयानं अभिरुय्ह, विरजं सो महापथं*, सु॰ नि॰ 139.

अभिरूहन / अभिरूहण नपुं॰, अभि + √रुह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभिरोहण], ऊपर सवार होना, चढ़ना, आरोहण – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदा च मग्गमद्दक्खिं, नावाय अभिरूहनं*, थेरगा॰ 766; *नावाय अभिरूहनन्ति अरियमग्गनावाय अभिरूहनूपायभूतं ... अद्दक्खिं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.244; – **नाय** चतु॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सामञ्ञत्थसेलसिखरमुद्धनि अभिरूहनाय*, मि॰ प॰ 322; – **मग्ग** पु॰, [अभिरोहणमार्ग], चढ़ने का मार्ग या सीढ़ी, सोपान, निःश्रयणी – **ग्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो एकेन पस्सेन अभिरूहनमग्गं कत्वा अभिरूहित्वा दारकं गण्हि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.96.

अभिरोचति / अभिरोचयति अभि + √रुच का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आनन्द पाता है, पसन्द करता है – **चामि / चयामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न वासमभिरोचामि*, जा॰ अट्ठ॰ 7.313; *न चाहमेतं अभिरोचयामि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.210; – **ये** उपरिवत्,

आत्मने॰ *न दानाहं तया सद्धिं संवासमभिरोचये,* जा॰ अट्ठ॰ 3.165.

अभिरोपेति अभि + √रुह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिरोपयति], **शा॰ अ॰** पौधे रोपता है, पौधा लगाता है, **ला॰ अ॰ क.** अलङ्करण के रूप में धारण करता है या अपने ऊपर रखता है – **पेहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कासिकसुखुमानि धारय, अभिरोपेहि च मालवण्णकं,* थेरीगा॰ 379; *अभिरोपेहीति मण्डनविभूसनं वा सरीरं आरोपय,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 277; **ला॰ अ॰ ख.** उपहार के रूप में सामने रखता है या प्रस्तुत करता है, पूजा सामग्री के रूप में चढ़ाता है – **यिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तिंसकप्पसहस्सम्हि यं पुप्फमभिरोपयिं,* अप॰ 1.96; – **पित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बरं मे बुद्धसेट्ठस्स, ञाणम्हि अभिरोपितं,* अप॰ 2.186.

अभिलक्खित त्रि॰, अभि + √लक्ख का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिलक्षित], जाना गया, चिह्नित किया गया, सङ्केतित, देखा गया – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्ज अभिलक्खितो महाउपोसथदिवसो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.2; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यंनूनाहं या ता रत्तियो अभिञ्ञाता अभिलक्खिता,* म॰ नि॰ 1.27; – **तेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञातुञ्छेनाति अभिलक्खितेसु इस्सरजनगेहेसु ....,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.211; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अभिलक्षितत्व], सङ्केतित होना, अभिलक्षित होना, दृष्टिपथ में आ जाना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं अभिलक्खितत्ता अयं पदेसो कामावचरो त्वेव वुच्चति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 108.

अभिलङ्घति / अभिलङ्घति अभि + √लङ्घ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिलङ्घति], लांघ जाता है, ऊपर की ओर उठता या चढ़ता है – *पुण्णचन्दमिथुनं पुब्बापरियेन गगनतलं अभिलङ्घती'ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.189; – **मानं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विसुद्धं गगनतलं अभिलङ्घमानं चन्दमण्डलं दिस्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.102.

अभिलपीयति अभि + √लप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, कर्म॰ वा॰ [अभिलप्यते], कहा जाता है, उच्चारित किया जाता है, घोषित किया जाता है – *उदीरियति अभिलपीयती ति अत्थो ति वदन्ति,* सद्द॰ 2.543.

अभिलम्बति अभि + √लम्ब का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिलम्बति], सहारे खड़ा या टिका रहता है, दोनों ओर अवस्थित रहता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *उभतो अभिलम्बन्ति, दुग्गं वेतरणिं नदिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.261; – **न्ता** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उभतो अभिलम्बन्ता, सोभयन्ति ममस्समं,* अप॰ 1.12; – **न्तं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पपातमभिलम्बन्तं, सम्पन्नफलधारिनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.64; – **म्बिता** स्त्री॰, भू॰ क॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में, नीलदुमा॰, नीले वृक्ष की डाली पर लिपटी हुई या चिपकी हुई – *सा सुत्तचा नीलदुमाभिलम्बिता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402.

अभिलसति अभि + √लस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, कामना करता है, इच्छा करता है – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कत्तुं अभिलसन्तो पि राजा एवं अचिन्तयि,* चू॰ वं॰ 81.64.

अभिलाप पु॰, [अभिलाप], कथन, उल्लेख नाम, अभिव्यक्ति, उक्ति – *सङ्खा समञ्ञा ... नामधेय्यं निरुत्ति ब्यञ्जनं अभिलापो,* ध॰ स॰ 1314; – **पे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सा अभिलापे तं सभावनिरुत्तिं सद्दं आरम्मणं कत्वा ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 366; – **नानत्त** नपुं॰, अभिव्यक्ति की विविधता या विभिन्नता – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नानज्झासयताय पन सत्तानं देसनाविलासेन अभिलापनानत्तेन देसनानानत्तं वेदितब्बं,* उदा॰ अट्ठ॰ 48; – **मत्त** नपुं॰, केवल अभिव्यक्ति का एक तरीका – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिलापमत्तमेव चेतं, अत्थतो पन पितामहायेव पितामहयुगं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.166; **मत्तभेद** पु॰, केवल अभिव्यक्ति या कथन का एक रूपान्तरण या प्रभेद – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकं समयं'न्ति वा अभिलापमत्तभेदो एस, सब्बत्थ भुम्ममेव अत्थोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).13.

अभिलाव पु॰, [अभिलाव], काटना, कटाई, लवन – *लवोभिलवो लवनं,* अभि॰ प॰ 770; पाठा॰ अभिलवो.

अभिलास पु॰, [अभिलाष], आकांक्षा, इच्छा, कामना, उत्कण्ठा, अनुराग – *पिहा मनोरथो इच्छा भिलासो कामदोहळा,* अभि॰ प॰ 163; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में फातिकरणा॰, विमुत्ता॰, सञ्जाता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिलासी त्रि॰, [अभिलाषिन्], कामना या इच्छा करने वाला, चाहने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में – **सककम्माभिलासिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, अपने काम को पूरा करने की अभिलाषा रखने वाले – *पटिपूजेन्ति पुलिनं, सककम्माभिलासिनो,* अप॰ 2.65.

अभिलित्त अभि + √लिप का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिलिप्त], **शा॰ अ॰** पूर्ण रूप से लीपा हुआ या पोता हुआ, **ला॰ अ॰** अनुरक्त, आसक्त, लगावयुक्त – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोको अभिलित्तो नाम भवति,* नेत्ति॰ 13.

अभिलिम्पति अभि + √लिप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, चिपका देता है, सटा देता है, शिकार को फंसाता है या उसे फंसाने

के लिये लासा लगाता है - *सा कथं अभिलिम्पति?,* नेत्ति॰ 12; *अभिलिम्पतीति मक्कटालेपो विय मक्कटं दारुसिलादीसु पुरिसं रूपादिविसये अल्लीयापेतीति अत्थो,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 195.

अभिलेखति अभि + √लिख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिलेखयति], उत्कीर्ण करने या खोदने के लिये प्रेरित करता है, लिखवाता, है, उत्कीर्ण कराता है - **यि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अभिलेखयि चारित्तलेखं,* दाठा॰ 5.67.

अभिलेपन नपुं॰, अभि + √लिप से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, प्रायः स॰ उ॰ के रूप में प्रयुक्त, बन्दर को पकड़ने के लिये प्रयुक्त लेप या लासा - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किस्साभिलेपनं ब्रूसि,* सु॰ नि॰ 1038; *किस्साभिलेपनं ... अस्स लोकस्स अभिलेपनं वदेसि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.276; *जप्पाभिलेपनं ब्रूमि, दुक्खमस्स महब्भयं,* सु॰ नि॰ 1039; *जप्पाभिलेपनन्ति तण्हा अस्स लोकस्स मक्कटलेपो विय अभिलेपनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.276.

अभिवग्ग पु॰, सैकड़ों तेज दांतो वाला एक प्रकार का उठाऊ फाटक - **ग्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिवग्गेनपि ओमद्दन्ति,* म॰ नि॰ 1.121; *अभिवग्गेनाति सतदन्तेन,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).370.

अभिवज्जित त्रि॰, [अभिवर्जित], मुक्त, विवर्जित, रहित - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेहि तीहि दोसेहि अभिवज्जितो,* म॰ वं॰ टी॰ 1.47(रो॰).

अभिवट्ठ/अभिवुट्ठ त्रि॰, अभि + √वस्स का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिवृष्ट], **कर्तृ॰ वा॰** — वह, जिस पर भारी वृष्टि की गई है, बरसा से सराबोर - **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिवट्ठंव बीरणं,* ध॰ प॰ 335; *पुनप्पुन वस्सन्तेन देवेन अभिवट्ठं बीरणतिणं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.304; - **ट्ठा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिवुट्ठा रम्मतला नगा,* थेरगा॰ 1068; - **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिवुट्ठं उदकं,* मि॰ प॰ 189; **कर्म॰ वा॰** — खूब वर्षा कर चुका - **ट्ठे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिवुट्ठे महामेघे,* मि॰ प॰ 171.

अभिवड्ढति अभि + √वड्ढ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवर्धते], अधिक से अधिक बढ़ता है, विकसित होता है, समृद्ध होता है, विस्तृत होता है - *सञ्ञतस्स धम्मजीविनो, अप्पमत्तस्स यसोभिवड्ढति,* ध॰ प॰ 24; *तदा मुच्छा पिपासा च जरो च अभिवड्ढति,* सद्धम्मो॰ 288; *धम्मो पदीयमानो हि उभयत्थाभिवड्ढति,* सद्धम्मो॰ 523; - **न्ति** ब॰ व॰ - *अनिट्ठा, अकन्ता अमनापा धम्मा अभिवड्ढन्ति,* म॰ नि॰ 1.391; - **मान** वर्त॰ कृ॰ - *भिय्योसोमत्ताय अभिवड्ढमानदानज्झासयो ... महादानं पवत्तेसि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 116; - **ड्ढेय्यं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *इट्ठा कन्ता मनापा धम्मा अभिवड्ढेय्युं'न्ति,* म॰ नि॰ 1.391; - **ड्ढि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *भगवतो पकतिदुब्बले सरीरे खीणे आयुसङ्खारे उप्पन्नो रोगो भिय्यो अभिवड्ढि,* मि॰ प॰ 171; - **यिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अब्भन्तरे सुञ्ञागारे, धम्मतो अभिवड्ढयिं'न्ति,* मि॰ प॰ 343; - **स्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *समणस्स गोतमस्स यसो अभिवड्ढिस्सति,* दी॰ नि॰ 1.98; - **स्सन्ति** भवि॰, ब॰ व॰ - *वोदानिया धम्मा अभिवड्ढिस्सन्ति,* दी॰ नि॰ 1.173; - **तुं** निमि॰ कृ॰ - *योगिना योगावचरेन अरहत्ते अभिवड्ढितुकामेन मनसा ... अरहत्ते अभिवड्ढितब्बं,* मि॰ प॰ 341; - **ड्ढितब्ब** सं॰ कृ॰ - *मनसा आरम्मणं आलम्बित्वा अरहत्ते अभिवड्ढितब्बं,* मि॰ प॰ 341.

अभिवड्ढन त्रि॰, अभि + √वड्ढ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभिवर्धन], बढ़ाने वाला, वृद्धि कराने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में, - **रट्ठाभिवड्ढन** संबो॰, ए॰ व॰, राष्ट्र की वृद्धि कराने वाला - *यं त्वं रट्ठाभिवड्ढन,* जा॰ अट्ठ॰ 5.6; *रट्ठाभिवड्ढनाति रट्ठस्स अभिवड्ढन,* जा॰ अट्ठ॰ 5.7; - **रागदोसाभिवड्ढनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ राग और द्वेष को बढ़ाने वाली - *दोसाभिवड्ढनी,* सद्धम्मो॰ 68.

अभिवड्ढि स्त्री॰, [अभिवृद्धि], अत्यधिक वृद्धि या विकास - **ड्ढिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जिनसासनपरिहानिं दिस्वा अभिवड्ढिं इच्छसि,* मि॰ प॰ 106; - **या** च॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिभवड्ढिया वायमति,* मि॰ प॰ 106; तुल॰ अभिवुड्ढि.

अभिवड्ढित त्रि॰, अभि + √वड्ढ का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिवर्धित], अच्छी तरह से विकसित, कद में अधिक बढ़ा हुआ - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उरूळ्हवाति अभिवड्ढितो आरोहसम्पन्नो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.92.

अभिवड्ढेति अभि + √वड्ढ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिवर्धयति], बढ़ने के लिये प्रेरित करता है, बढ़ाता है - *तदग्गेन ते उपादानक्खन्धे अभिवड्ढेतीति अधिप्पायो,* उदा॰ अट्ठ॰ 287.

अभिवण्णित त्रि॰, अभि + √वण्ण का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिवर्णित], प्रशंसित, संस्तुत, अतिशय प्रशंसित - **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अतिप्पसत्थं बहुनाभिवण्णितं एतम्हि नानाकुसुमं व गन्थितं,* दी॰ वं॰ 1.4.

अभिवण्णेति अभि + √वण्ण का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवर्णयति], प्रशंसा करता है, गुणगान गाता है, सराहना करता है, गुणानुवाद करता है - **ण्णयि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *नायको निधिकण्णम्हि विसेसेनाभिवण्णयि,* सद्धम्मो॰ 588.

अभिवदति अभि + √वद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवदति], **क.** सम्बोधित करता है, विशिष्ट रूप से बोलता है - **देथ** अनु॰, म॰ पु॰ ब॰ व॰ - *मञ्जुनाभिवदेथ मं'न्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 6.112; *मञ्जुनाति मधुरस्सरेन मं अभिवदेथ*, तदे॰; - **दी** अद्य॰, म॰ वि॰ ए॰ व॰ - *यं माणवोत्याभिवदी जनिन्द*, जा॰ अट्ठ॰ 7.223; **ख.** विषय में बोलता है, चर्चा करता है, विशेष बल देता है, निश्चयपूर्वक या बलपूर्वक कहता है, दावे के साथ कहता है, प्रतिपादित करता है, खुले आम कहता है, स्वीकार करता है, मानता है - **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं अभिवदन्ति*, म॰ नि॰ 1.277; **ग.** मंजूर करता है, अनुमोदन करता है, स्वागत करता है - **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अज्झत्तिकबाहिरे आयतने अभिनन्दन्ति अभिवदन्ति अज्झोसाय तिट्ठन्ति*, मि॰ प॰ 72; - **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अभिनन्दतु, भन्ते, भगवा भिक्खुसङ्घं, अभिवदतु, भन्ते, भगवा भिक्खुसङ्घं*, म॰ नि॰ 2.130; - **तुं** निमि॰ कृ॰ - *यदनिच्चं तं नालं अभिनन्दितुं, नालं अभिवदितुं*, म॰ नि॰ 3.47; - **तब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एत्थ चे नत्थि अभिनन्दितब्बं अभिवदितब्बं*, म॰ नि॰ 1.156.

अभिवन्दति / अभिवन्देति अभि + √वन्द का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवन्दति], आदरपूर्वक नमस्कार करता है - **वन्दे / वन्दामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *कोकनदाहमस्मि अभिवन्दे*, स॰ नि॰ 1(1).34; *अभिवन्देति भगवा तुम्हाकं पादे वन्दामि*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.73; - **दिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *सब्बे मं उपसङ्कम्म, पुनापि अभिवन्दिंसु*, जा॰ अट्ठ॰ 1.35; - **त्वा / न्दिय** पू॰ का॰ कृ॰ - *अभिवन्दिय, अभिवन्दित्वा*, क॰ व्या॰ 599; *सेट्ठं तिलोकमहितं अभिवन्दियग्गं*, क॰ व्या॰ (पृ॰) 1; - **न्दनीयो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *राजा नाम उपगतसम्पत्तजनानं बहूनमभिवन्दनीयो भवति*, मि॰ प॰ 213; *भगवापि, महाराज, उपगतसम्पत्तदेवमनुस्सानं बहूनमभिवन्दनीयो*, मि॰ प॰ 213.

अभिवन्दन नपुं॰, [अभिवन्दन], आदरपूर्वक नमन, सम्मानपूर्वक नमन, पूजन, वन्दना - *नमस्सा तु नमक्कारो वन्दना चाभिवादनं*, अभि॰ प॰ 426; पाठा॰ अभिवन्दनं.

अभिवन्दना स्त्री॰, उपरिवत्, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वन्दति अभिवन्दति अभिवन्दना वन्दनं वन्दको*, सद्द॰ 2.381.

अभिवन्दित त्रि॰, अभि + √वन्द का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिवन्दित], वह, जिसे आदरपूर्वक नमन किया गया है, सम्मानपूर्वक अभिवादित, नमस्कृत, स्तुत - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ब्रह्मुना अभिवन्दितो*, थेरगा॰ 177; *ब्रह्मुना अभिवन्दितोति महाब्रह्मुना सदेवकेन लोकेन च अभिमुखेन हुत्वा ...*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.414; *अभिवन्दितो सि थुतिवन्दनाय*, वि॰ व॰ 971(रो॰).

अभिवस्सक त्रि॰, संवर्षण या मूसलाधार वर्षा करने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में पुप्फाभिवस्सक के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिवस्सति अभि + √वस्स का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवर्षति], जोरदार पानी पड़ता है, मूसलाधार पानी बरसता है, प्रचुर मात्रा में बरसता है - *पज्जुन्नोरिव भूतानि, भोगेहि अभिवस्सति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.193; - **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *महामेघोव हुत्वान, सावके अभिवस्ससि*, थेरगा॰ 1249; - **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *विचित्तपुप्फा गगना, अभिवस्सन्ति तावदे*, जा॰ अट्ठ॰ 1.23; - **स्सं / न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *थलं निन्नञ्च पूरेति, अभिवस्सं वसुन्धरं*, अ॰ नि॰ 2(1).30; *महतिमहामेघो अभिवस्सन्तो न सक्कोति तेमयितुं*, मि॰ प॰ 191; - **मानो** उपरिवत् - *यं महामेघो अभिवस्समानो न तं तेमेति*, मि॰ प॰ 191; - **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एतेन सच्चवज्जेन, पज्जुन्नो अभिवस्सतु*, चरिया॰ 402; - **स्सेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *महामेघो अपरापरं अनुप्पबन्धो अभिवस्सेय्य*, मि॰ प॰ 135; - **थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ - *पुप्फवुट्ठी च गगना अभिवस्सथ मेदनिं*, अप॰ 2.209.

अभिवस्सापेति अभि + √वस्स का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰, जमकर पानी बरसाता है, मूसलाधार वर्षा कराता है, - **पेय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *बुद्धपुत्ता आचारसीलगुणवत्तपटिपत्तिमेघवस्सं अपरापरं अनुप्पबन्धापेय्युं अभिवस्सापेय्युं*, मि॰ प॰ 135.

अभिवस्सी त्रि॰, [अभिवर्षिन्], जलाभिवर्षी, जल बरसाने वाला - *सब्बत्थ अभिवस्सीति, वुच्चरे चक्कवत्तिनो*, अप॰ 1.242.

अभिवस्सेति अभि + √वस्स का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिवर्षयति], पानी बरसाता है, मूसलाधार या व्यापक वृष्टि कराता है - **यित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *योगिना योगावचरेन ... धम्ममेघमभिवस्सयित्वा अधिगमकामानं मानसं परिपूरयितब्बं*, मि॰ प॰ 383.

अभिवादन नपुं॰, [अभिवादन], सम्मान-भाव के साथ नमन, पूज्यजनों या गुरुजनों के समक्ष आदरसहित नमन - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सिरसा मे तं भवं गोतमो अभिवादनं धारेतु*, दी॰ नि॰ 1.111; *उत्तमङ्गेन अभिवादनं करोहि*, उदा॰ अट्ठ॰ 99; - **पच्चुट्ठान** नपुं॰, द्व॰ स॰ [अभिवादनप्रत्युत्थान], सम्मान के साथ नमन तथा आगे बढ़कर स्वागत करना -

... *अभिवादनपच्चुट्ठानअञ्जलिकम्मसामीचिकम्मानि च करिस्साम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.215; ... *अभिवादनपच्चुट्ठानादीनि सब्बकिच्चानि अकंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.90; – **सम्पटिच्छन** नपुं॰, अभिवादन तथा स्वीकरण – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिवदन्तीति अभिवादनसम्पटिछनेन वड्ढितवचनेन वदन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267; – **सीली** त्रि॰, [अभिवादनशील], स्वभाव से ही विनम्र, स्वभाव से ही गुरुजनों के प्रति सम्मानभाव रखने वाला – **लिस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिवादनसीलिस्स, निच्चं वुड्ढापचायिनो,* ध॰ प॰ 109; *अभिवादनसीलिस्साति वन्दनसीलिस्स,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.379.

अभिवादापेति अभि + √वद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिवादयति], अभिवादन कराता है, विनम्र बनाता है, अभिवादन करने हेतु प्रेरित करता है – **पयेथ** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कथं नो अभिवादेय्य, अभिवादापयेथ वे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.212; *कथं वा तेन अत्तानं अभिवादापयेथ वे,* तदे॰; – **पेतब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे नवको होति, अभिवादापेतब्बो,* चूळव॰ 350.

अभिवादित / अभिवदित त्रि॰, अभि + √वद के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिवादित], वह जिसका अभिवादन या सम्मानपूर्वक नमन किया गया है, नमस्कृत – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिवदितो सक्को देवानमिन्दो भगवतो इन्दसालगुहं पविसित्वा* ..., दी॰ नि॰ 2.198; *अभिवदितोति वड्ढितवचनेन वुत्तो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267.

अभिवादिय अभि + √वद के प्रेर॰ का पू॰ का॰ कृ॰ [अभिवाद्य], आदरपूर्वक या ससम्मान प्रणाम करके – *अभिवादिय भासिस्सं, अभिधम्मत्थसङ्गहं,* अभि॰ ध॰ स॰ 1.

अभिवादेति अभि + √वद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवादयति], आगमन तथा प्रस्थान इन दोनों अवसरों पर आसन से उठकर ससम्मान नमस्कार करता है, अभिवादन करता है, वन्दना करता है – *अभिवादेतब्बं न अभिवादेति,* म॰ नि॰ 3.253; – **देसि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *व्यम्हितो नाभिवादेसि, नयिदं पञ्ञवतामिवा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.212; – **देमि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिवादेमि तं भन्ते, सम्बुलाहं नमत्थु ते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.84; – **देन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *यथानग्गाव सावत्थिं गन्त्वा भिक्खू अभिवादेन्ति,* पारा॰ 322; – **देय्य / दये** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न वज्झो अभिवादेय्य, वज्झं वा नाभिवादये,* जा॰ अट्ठ॰ 7.212; – **देय्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भवन्तं गोतमं अभिवादेय्यं,* दी॰ नि॰ 1.111; – **दयिं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *दसङ्गुली नमस्सित्वा, सिरसा अभिवादयिं,* अप॰ 1.2; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *वज्झो पन अभिवादेतुं* ..., जा॰ अट्ठ॰ 7.212; – **देत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि,* उदा॰ 125; – **देतब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, द्वि॰ वि॰ ए॰ व॰ – *अभिवादेतब्बं न अभिवादेति,* म॰ नि॰ 3.253.

अभिवायति अभि + √वा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवाति], चारों ओर या आर-पार होकर हवा बहती है, फैल जाती है, व्याप्त होती है – *वायु सुपुप्फितवनसण्डन्तरं अभिवायति,* मि॰ प॰ 353.

अभिवारेति अभि + √वु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवारयति], रोकता या रोक रखता है, निवारण करता है, दूर रखता या नियन्त्रित करता है – *तं मन्ति तं मं ... सोणपण्डितो तम्हा पुञ्ञा अभिवारेति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.318.

अभिवाहेति अभि + √वह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिवाहयति], हटा देता है, दूर करा देता है, निकलवा देता है – **यि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तत्थ सब्बकिलेसानि, असेसमभिवाहयि,* बु॰ वं॰ 11.5; *अभिवाहयीति मग्गोधिना च ... सब्बे किलेसे अभिवाहयि,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 211.

अभिविजिनाति अभि + वि + √ जि का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिविजयते], पूरी तरह से जीत लेता है, पूर्णरूप से विजय पाता है, पराभूत करता है – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सङ्गामे परसेनं अभिविजिनन्ति,* मि॰ प॰ 38; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिविजिनातु भवं चक्करतन'न्ति,* दी॰ नि॰ 2.129; – **नितुं** निमि॰ कृ॰ – *सक्का च तावतकेनेव बलमत्तेन अभिविजिनितुं,* म॰ नि॰ 2.268; – **नित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *तं सङ्गामं अभिविजिनित्वा विजितसङ्गामो ततो पटिनिवत्तित्वा वेजयन्तं नाम पासादं मापेसि,* म॰ नि॰ 1.321.

अभिविञ्ञापेति अभि + वि + √ञा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिविज्ञापयति], अच्छी तरह से विज्ञापित करता है, प्रकट या प्रकाशित करता है, व्यक्त करता है, प्रवर्तित करता है – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पुराणदुतियिकाय तिक्खत्तुं मेथुनं धम्मं अभिविञ्ञापेसि,* पारा॰ 19; *अभिविञ्ञापेसीति पवत्तेसि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.164.

अभिवितरति अभि + वि + √तर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवितरति], विवेचन या अच्छी तरह से निश्चय करता है – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *पुच्छित्वा अभिवितरन्ति,* महाव॰ 175; – **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *सञ्चिच्चाति जानन्ती सञ्जानन्ती चेच्च अभिवितरित्वा वीतिक्कमो,* पाचि॰ 396.

अभिविधि पु॰, *व्याकरण का पारि॰ शब्द* [अभिविधि], पूर्ण रूप से अन्तर्भाव – *मरियादाभिविधत्था यावयोगे ... याव इति*

निपातेन च योगे तं कारकं ... होति, सद्द॰ 3.703; विलो॰ मरियादा.

अभिविनय पु॰, **क.** विशिष्ट प्रकार का अथवा उच्च स्तर का विनय, भिक्षुओं का अत्यन्त उदात्त आत्मनियन्त्रण - **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किलेसवूपसमं कारणं अभिविनयो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.210; **ख.** वि॰ पि॰ के खन्धक एवं परिवार नामक संग्रह *अभिविनयोति खन्धकपरिवारा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.210; **ग.** *अभिविनये रूप में प्राप्त होने पर,* विनय के विषय में, केवल विशुद्ध विनय के सम्बन्ध में – *अभिधम्मे अभिविनये उळारपामोज्जो,* दी॰ नि॰ 3.213; *पटिबलो विनेतुं अभिधम्मे अभिविनये"ति आदीसु परिच्छिन्ने, अञ्ञमञ्ञसङ्करविरहिते धम्मे च विनये चाति वुत्तं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 21; पारा॰ अट्ठ॰ 1.16.

अभिविन्दति पु॰, अभि + √विद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पाता है, प्राप्त करता है, उपलब्ध करता है - **विन्दे** विधि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अप्पेविध अभिविन्दे सुमेधं,* सु॰ नि॰ 464; *अभिविन्दे लच्छसि अधिगच्छिस्ससि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.120.

अभिविसिट्ठ त्रि॰, [अभिविशिष्ट], अतिविशिष्ट, सर्वोत्तम, परमश्रेष्ठ – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ *सयमेव अभिविसिट्ठेन ञाणेन पच्चक्खं कत्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.87; **ट्ठाय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ये इमञ्च लोकं परञ्च लोकं अभिविसिट्ठाय पञ्ञाय सयं पच्चक्खं कत्वा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).228.

अभिविसज्जि / अभिविस्सजि / अभिविसज्जेसि अभि + वि + √सज के प्रेर॰ का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पूर्णरूप से त्याग दिया, पूर्ण रूप से हटवा दिया – *पुरिमतरभवे ठितो अभिविस्सजि,* दी॰ नि॰ 3.119; *अभिविस्सजीति अभिविस्सज्जेसि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.105.

अभिविस्सत्थ त्रि॰, अभि + वि + √सस का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिविश्वस्त], अत्यधिक विश्वस्त, आत्मविश्वासपूर्ण, निश्चयी, अतीव विश्वस्त – **त्थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्स मे कस्सपो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो एवं अभिविस्सत्थो'ति,* म॰ नि॰ 2.253; *अभिविस्सत्थोति अतिविस्सत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.203.

अभिविहच्च अभि + वि + √हन का पू॰ का॰ कृ॰ [अभिविहत्य], चारों ओर विखेर कर, तितर-वितर कर, छिन्न भिन्न कर, विनष्ट कर, हटा कर, दूर कर – *आदिच्चो नभं अब्भुस्सक्कमानो सब्बं आकासगतं तमगतं अभिविहच्च भासते च तपते च विरोचते,* म॰ नि॰ 1.398; *अभिविहच्चाति अभिहन्त्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).272.

अभिविहत अभि + वि + √हन का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिविहत], बुरी तरह से मारा हुआ, अभिभूत, पराजित, आहत, परास्त – **तानं** पु॰, ष॰ पु॰, ब॰ व॰ · *भोगपारिजुञ्ञेन वा ब्याधिपारिजुञ्ञेन वा अभिहतानं ....,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 113; पाठा॰ अभिहतानं.

अभिवुड्ढ अभि + √वड्ढ का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिवृद्ध], पूर्णरूप से पाला पोसा हुआ, सुख में स्थित, बढ़ाया हुआ – **ड्ढा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, – *सुखेधिता'ति पाठो, सुखेन अभिवुड्ढा फीताति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 131.

अभिवुद्धि स्त्री॰, [अभिवृद्धि], अत्यधिक वृद्धि, अभ्युदय, सफलता, विकास, सम्पन्नता – **द्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिवुद्धिं अथो ... सयं,* चू॰ वं॰ 81.64; – **या** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतं विञ्ञूजनस्सासस्सासनस्साभिवुद्धिया,* सद्द॰ 1.265; – **कामा** स्त्री॰, ब॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, किसी के विकास या संवर्धन की कामना करने वाली *दहरस्स अभिवुद्धिकामा होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 240.

अभिवेदेति क. अभि + √विद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिवेत्ति], किसी के बारे में ज्ञान रखता है, ध्यान रखता है या जानता है - **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तं मं मतं वा जीवं वा, नाभिवेदेन्ति ञातका,* जा॰ अट्ठ॰ 7.18; *नाभिवेदेन्तीति न जानन्ति, कथेन्तोपि नेसं नत्थि,* तदे॰; **ख.** प्रेर॰, [अभिवेदयति], के बारे में सूचित करता है, दिखाता है, प्रकट करता है – **यित्थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ *अभिवेदयित्थ मग्गं,* दा॰ वं॰ 5.2.

अभिव्यञ्जक त्रि॰, [अभिव्यञ्जक], प्रकट करने वाला, प्रकाशन करने वाला, सुस्पष्ट कर देने वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनेकरसब्यञ्जनोति अनेकेहि सूपेहि ... सम्भिन्नरसानञ्च अभिब्यञ्जको,* उदा॰ अट्ठ॰ 160.

अभिव्यञ्जेति अभि + वि + √अञ्ज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिव्यञ्जयति], प्रकट या सुव्यक्त करता है, सुस्पष्ट कर देता है – *अञ्जति तत्थ ठितं अतिसुन्दरताय अभिब्यञ्जेतीति हि अङ्गणं,* सद्द॰ 2.333; - **व्यत्त** भू॰ क॰ कृ॰ [अभिव्यक्त], प्रकट किया हुआ, प्रकाशित, उद्घोषित – **ताय** स्त्री॰, भाव॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमेहि पन पदेहि कालातिक्कमेयेव अभिब्यत्तताय ... पकतिया दीपिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).224.

अभिब्यापेति अभि + वि + √आप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिव्यापयति], चारों ओर भर देता है, फैलाता है, विस्तृत कराता है – *त समन्ता विधूपेति अभिब्यापेति,* मि॰ प॰

236; - **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *ते सदेवकं लोकं सीलवरगन्धेन अभिब्यापेन्ति,* मि॰ प॰ 235; - **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *ब्याममत्तप्पदेसं अभिब्यापेत्वा चन्दिमसूरियालोकं ... अन्धकारं विधमित्वा तिट्ठति,* उदा॰ अट्ठ॰ 289.

अभिव्याहट त्रि॰, अभि + वि + आ + √हर का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिव्याहृत], कहा हुआ, सम्बोधित, उच्चारित - *रञ्ञम्मतो रञ्ञमिट्ठो रञ्ञम्बुद्धो, रञ्ञं पूजितो ... आकुट्ठो, रुट्ठो, रुसितो, अभिव्याहटो दयितो ... अमतो,* मो॰ व्या॰ 5.60.

अभिसंविसति अभि + सं + √विस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिसंविशति], सहवास करता है, मन में ले आता है, मन में धारणा बनाता है - **सेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - ... *सवनगन्धं भयानकं कुणपं, अभिसंविसेय्यं भस्तं,* थेरीगा॰ 468; *कुणपं अभिसंविसेय्यं भस्तन्ति कुणपभरितं चम्मपसिब्बकं ... असकिं सब्बकालं ... मम इद'न्ति अभिनिवेसेय्यं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 308.

अभिसंसति अभि + √सस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिशंसति], काट देता है, मार डालता है, पीड़ित करता है - **ससि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *कच्चि नु ते नाभिससि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.31; *कच्चि नु ते नाभिससीति कच्चि नु तं कोचि न अभिससि अक्कोसेन वा ... विहिंसीति पुच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.31 32; - **सासिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *स्वाहं सके अभिस्ससिं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.260; *स्वाहं सके अभिस्ससिन्ति सो अहं अत्तनो नगरवासिनोयेव ... पीलेसिं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.261.

अभिसंहरिं अभि + सं + √हर का अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, सौंपा, वितरण किया, प्रस्तुत किया - *उच्छङ्गे पाटलिपुप्फं, कत्वान अभिसंहरिं,* अप॰ 1.122.

अभिसङ्खत / अभिसङ्खट अभि + सं + √कर का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिसंस्कृत], व्यवस्थित किया गया, तैयार किया गया, धार्मिक अनुष्ठान की पूर्णता से युक्त, सोच-समझकर प्रकाशित किया हुआ, हेतु-प्रत्ययों द्वारा उत्पादित, सञ्चित या पुञ्जित, चेतना द्वारा चित्त का आलम्बन बनाया गया - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं खो पन किञ्चि अभिसङ्खतं अभिसञ्चेतयितं,* म॰ नि॰ 2.13; *अभिसङ्खतन्ति पच्चयेहि अभिसमागन्त्वा कतं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.46; - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रञ्ञा पञ्हो अभिसङ्खतो'ति सन्निट्ठानं कत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.180; - **ते** पु॰, द्वि॰ वि॰ ब॰ व॰ - *खत्तियपण्डितादीहि अभिसङ्खते सुखुमपञ्हे भिन्दित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.146; - **ता** नपुं॰ ब॰ व॰ - *पकप्पितानीति कप्पिता पकप्पिता अभिसङ्खता सण्ठपितातिपि पकप्पिता,* महानि॰ 136; - **ताभिधान** नपुं॰, कृत्रिम पद, कृत्रिम अभिव्यक्ति, कृत्रिम अभिधान - **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अभिसङ्खताभिधानानि अनभिसङ्खताभिधानानीति द्वेधा दिस्सनतो ...,* सद्द॰ 1.75; स॰ उ॰ प॰ के रूप में सप्पिमधुफाणिता॰, सप्पिमधुसक्करा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिसङ्खरण नपुं॰, अभि + सं + √कर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभिसंस्करण], सुव्यवस्थित करना, तैयार करना, अभिसंस्करण - *सङ्खारो सङ्खते पुञ्ञाभिसङ्खारादिके पि च पयोगे कायसङ्खाराद्यभिसङ्खरणेसु च,* अभि॰ प॰ 832.

अभिसङ्खरोति अभि + सं + √कर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिसंस्करोति], अभिसंस्कृत करता है, आलम्बनों के ग्रहण के क्रम में चित्त की प्रतिक्रिया के रूप में कर्म की तात्त्विक ऊर्जा तैयार करता है, व्यवस्थित करता है, ऊर्जा तैयार कर देता है - **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *ते पञ्हं अभिसङ्खरोन्ति,* म॰ नि॰ 1.237; *पञ्हं अभिसङ्खरोन्तीति दुपदम्पि तिपदम्पि चतुप्पदम्पि पञ्हं करोन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).99; - **न्ता** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ततो पट्ठाय मनुस्सा नगरं अभिसङ्खरोन्ता सक्कच्चं उपट्ठातुं ओकासं न लभिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.279; **रेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अहञ्चेव खो पन चेतेय्यं, अभिसङ्खरेय्यं,* दी॰ नि॰ 1.164; *यंनूनाहं न चेव चेतेय्यं न च अभिसङ्खरेय्य'न्ति,* दी॰ नि॰ 1.164; - **ङ्खासि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अथ खो भगवा तथारूपं इद्धाभिसङ्खारं अभिसङ्खासि,* दी॰ नि॰ 1.92; - **ङ्खासिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *तथारूपं इद्धाभिसङ्खारं अभिसङ्खासिं एत्तावता ब्रह्मा च ... सद्दञ्च मे सोस्सन्ति,* म॰ नि॰ 1.413; - **ङ्खरितुं / ङ्खातुं** निमि॰ कृ॰ - *अनुजानामि, ... पज्जं अभिसङ्खरितुन्ति,* महाव॰ 281; *पज्जं अभिसङ्खरितुन्ति येन फालितपादा ... पक्खिपित्वा पज्जं अभिसङ्खरितुं,* महाव॰ अट्ठ॰ 353; *तंसमुट्ठाना पन वितक्कविचारा वाचं अभिसङ्खातुं न सक्कोन्तीति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).261; - **ङ्खच्च / ङ्खरित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *अभिसङ्खच्च भोजनं,* स॰ नि॰ 1(1).119; *अभिसङ्खच्चाति अभिसङ्खरित्वा समोधानेत्वा रासिं कत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.146; *अभिसङ्खरित्वा कुहको, भेखं सो अकित्तयि,* सु॰ नि॰ 990; *अभिसङ्खरित्वाति गोमयवनपुप्फकुसतिणादीनि आदाय सीघं सीघं ... कुहनं कत्वाति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.272.

अभिसङ्खार पु॰, [बौ॰ सं॰ अभिसंस्कार], **शा॰ अ॰** तैयारी, प्रभावपूर्ण अथवा फलदायक बनाना - **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बीजानं अभिसङ्खारो, एतस्सत्थस्स साधको,* अभि॰ अव॰ 610; **ला॰ अ॰ क॰** कर्म एवं कर्म-विपाक के उत्प्रेरक या जनक

तत्त्व के रूप में चित्तवृत्तियों (चेतना) सहित चित्त की क्रियाशीलता – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं पवत्तितं समानं यावतिका अभिसङ्खारस्स गति तावतिकं गन्त्वा* ..., अ॰ नि॰ 1(1).134; *अभिसङ्खारस्स गतीति पयोगस्स गमनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.82; **ला॰ अ॰ ख.** चेतना के स्तर पर, कर्म का संचय – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते अभिसङ्खारा अप्पहीना,* महानि॰ 58; *ते अभिसङ्खारा अप्पहीनाति ये पुञ्ञापुञ्ञआनेञ्जाभिसङ्खारा, ते अप्पहीना,* महानि॰ अट्ठ॰ 166; – **रे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बे किलेसे, सब्बे दुच्चरिते, सब्बे अभिसङ्खारे ... अभिभुय्यतीति भूरिपञ्ञा,* पटि॰ म॰ 369; **ला॰ अ॰ ग.** चित्त की विशुद्धि की तैयारी – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तयो खो, आवुसो, पच्चया अनिमित्ताय च धातुया मनसिकारो, पुब्बे च अभिसङ्खारो,* म॰ नि॰ 1.377; ... *पुब्बे च अभिसङ्खारोति अद्धानपरिच्छेदो वुत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(2).247; **ला॰ अ॰ घ.** दृढ़ संकल्प या तैयारी, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में अकुसला॰, अन॰, अपुञ्ञा॰, आणञ्जा॰, आनेञ्जा॰, इद्धा॰, कम्मा॰, खन्धकिलेसा॰, गमिका॰, पब्बज्जा॰, पुञ्ञा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **भार** पु॰, अभिसंस्कार का भार – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यतो खन्धभारो च किलेसभारो च अभिसङ्खारभारो च पहीना होन्ति,* महानि॰ 246; – **लक्खण** त्रि॰, ब॰ व॰, अभिसंस्कार के लक्षण या विशिष्ट चिह्न वाला – **क्खणं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं किञ्चि चित्तसम्भूतं, अभिसङ्खारलक्खणं,* अभि॰ अव॰ 1200 (पृ॰)149; – **विञ्ञाण** नपुं॰, नये जन्म के निर्माण में हेतुभूत चित्त या चेतना – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोतापत्तिमग्गञाणेन अभिसङ्खारविञ्ञाणस्स निरोधेन सत्त भवे ठपेत्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 277; – **सहगतविञ्ञाण** नपुं॰, कुशल अथवा अकुशल चेतना से सहगत चित्त – **णस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनोकोति अभिसङ्खारसहगतविञ्ञाणस्स ओकासं न करोतीतिपि अनोको,* महानि॰ 368; *अभिसङ्खारसहगतविञ्ञाणस्साति कुसलाकुसलचेतनासम्पयुत्तचित्तस्स ओकासं न करोतीति अवकासं पतिट्ठं न करोति,* महानि॰ अट्ठ॰ 373; – **रूपधि** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ भव या अस्तित्व की निर्धारक चेतना – *उपधीति चत्तारो उपधयो – कामूपधि, खन्धूपधि किलेसूपधि, अभिसङ्खारूपधीति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.36.

अभिसङ्खारिक त्रि॰, विशेष रूप से या उपयुक्त ढंग से तैयार किया हुआ, उचित ढंग से बनाया हुआ – **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनुस्सा इच्छन्ति थेरानं भिक्खूनं अभिसङ्खारिकं पिण्डपातं ... तेलम्पि उत्तरिभङ्गम्पि,* पारा॰ 252; *अभिसङ्खारिकन्ति नानासम्भारेहि अभिसङ्खरित्वा कतं सुसज्जितं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.150; – **खादनीय** नपुं॰, ठीक से तैयार किया गया खाद्य पदार्थ – **नीयानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सङ्खतियोति अभिसङ्खारिकखादनीयानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प.) 2.117.

अभिसङ्खित्त त्रि॰, अभि + सं + √खिप का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिसंक्षिप्त], संग्रह किया हुआ, एकत्रीकृत – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ममापिदं पहूतं सापतेय्यं धम्मिकेन बलिना अभिसङ्खतं,* दी॰ नि॰ 1.126.

अभिसङ्खिपित्वा अभि + सं + √खिप का पू॰ का॰ कृ॰ [अभिसंक्षिप्य], अत्यधिक संक्षिप्त बना कर, राशि के रूप में एक साथ रखकर – *तदेकज्झं अभिसञ्ञूहित्वा अभिसङ्खिपित्वा अयं वुच्चति रूपक्खन्धो,* विभ॰ 2.

अभिसङ्ग / अभिस्सङ्ग पु॰, [अभिष्वङ्ग, अभिषङ्ग / अभिसङ्ग], **क.** आसक्ति या चिपकाव, मजबूत लगाव, झुकाव, रुचि – *अभिलासे तु किरणे अभिस्सङ्गे रुचित्थियं,* अभि॰ प॰ 873; *मा रोचय मभिसङ्गं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.6; *मा रोचयाति एवं तण्हाभिसङ्गं मा रोचय,* जा॰ अट्ठ॰ 5.7; **ख.** अभिशाप, आक्रोश, दुर्वचन, मिथ्या दोषारोपण, लाञ्छन – *अक्कोसनमभिसङ्गो,* अभि॰ प॰ 759; स॰ उ॰ प॰ के रूप में तण्हा॰, सुखा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **रस** त्रि॰, सुदृढ़ लगाव या आसक्ति का कार्य करने वाला – *तेसु लोभो ... अभिसङ्गरसो तत्तकपाले खित्तमंसपेसि विय,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 289; – **हेतुक** त्रि॰, दृढ़ आसक्ति के कारण उत्पन्न या उसी पर आश्रित – **कस्स** नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं विनासेन अभिसङ्गहेतुकस्स दुक्खस्स अभावा* ..., ध॰ स॰ अट्ठ॰ 174.

अभिसङ्गी पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, **क.** चिपकाव रखने वाला, आसक्ति से परिपूर्ण, **ख.** आघात या आक्रमण करने वाला – *भिक्खु कोधनो होति कोधहेतु अभिसङ्गी,* म॰ नि॰ 1.133.

अभिसज्जति अभि + √सज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, कर्म॰ वा॰ [बौ॰ सं॰ अभिसज्यते], **शा॰ अ॰** किसी के साथ बुरी तरह चिपक जाता है या अटक जाता है, **ला॰ अ॰** क्रोध या द्वेष को प्रकट करता है – *अप्पम्पि वुत्ता समाना अभिसज्जति कुप्पति ब्यापज्जति पतित्थीयति,* अ॰ नि॰ 1(2).233; – **ज्जेय्य / ज्जेथ / जे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *नाभिसपित्थाति ... कोचि तं न अक्कोसि न परिभासीति पुच्छति "नाभिसज्जेथा"तिपि पाठो, न कोपेसीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.168; *गामे च नाभिसज्जेय्य, लाभकम्या जनं न लपयेय्य,* सु॰ नि॰ 935; *गामे च नाभिसज्जेय्याति गामे च ... गिहिसंसग्गादीहि नाभिसज्जेय्य,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.256; ...

याय नाभिसजे कञ्चि, ध॰ प॰ 408; *नाभिसजेति याय गिराय अञ्ञं कुज्झापनवसेन न लग्गापेय्य,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.172; - **सज्जि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अप्पम्पि वुत्तो समानो अभिसज्जि कुप्पि ब्यापज्जि पतिट्ठयि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.20-21; – **सज्जिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अप्पम्पि वुत्ता समाना अभिसज्जिं ... अप्पच्चयञ्च पात्वाकासिं,* अ॰ नि॰ 1(2).235; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *नारहतायस्मा अम्बट्ठो इमाय अप्पमत्ताय अभिसज्जितु'न्ति,* दी॰ नि॰ 1.80; *अभिसज्जितुन्ति कोधवसेन लग्गितुं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.208.

अभिसज्जना स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, सटाव, चुभन, लगाव, आसक्ति – *वाचाभिलापो अभिसज्जना वा,* सु॰ नि॰ 49; *तस्मिं सिनेहवसेन अभिसज्जना च जाता ... सहममस्स वाचाभिलापो अभिसज्जना वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.78.

अभिसज्जनी स्त्री॰, कठोर, कर्कश, कटु, चुभने वाली – *अपसन्नकारिणी पराभिसज्जनीति कुटिलकण्टकसाखा विय चम्मेसु विज्झित्वा परेसं अभिसज्जनी,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 417; स॰ उ॰ प॰ के रूप में पराभिसज्जनी – *या सा वाचा अण्डका कक्कसा परकटुका पराभिसज्जनी कोधसामन्ता असमाधिसंवत्तनिका,* म॰ नि॰ 1.360.

अभिसञ्चेय्यं अभि + सं + √चि का विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, पूर्ण रूप से सञ्चित कर लूं – *तं चाहं अभिसञ्चेय्यं,* वि॰ व॰ 531(रो॰).

अभिसञ्चेतयति अभि + सं √चित का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिसञ्चेतयति], पूर्णरूप से चेतना द्वारा ग्रहण करता है, चेतना द्वारा अच्छी तरह से ग्रहण करता है, आलम्बन के प्रति चैतन्य हो जाता है – *सो नेव तं अभिसङ्खरोति न अभिसञ्चेतयति भवाय विभवाय वा,* म॰ नि॰ 3.293; – **तयित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰, प्रकल्पित, सोचा हुआ, चेतना द्वारा गृहीत, विचारित – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं पि पठमं झानं अभिसङ्खतं अभिसञ्चेतयितं,* म॰ नि॰ 2.13; – **तयिता** उपरिवत् स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं पि खो मेत्ता चेतोविमुत्ति अभिसङ्खता अभिसञ्चेतयिता,* म॰ नि॰ 2.14.

अभिसञ्छन्न त्रि॰, अभि + सम् + √छद् का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिसंछन्न], चारों ओर से ढका हुआ, चारों ओर से आच्छन्न; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में हेमजाला॰, नानालता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिसञ्ञानिरोध पु॰, चित्त का क्षणिक या स्थायी निरोध, चित्त का विराम या विरमन, चित्त का निरोध - **निरोधो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथं नु खो, भो, अभिसञ्ञानिरोधो होती'ति,* दी॰ नि॰ 1.161; – **धे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिसञ्ञानिरोधेति एत्थ अभीति उपसग्गमत्तं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.274.

अभिसञ्ञूहित्वा अभि + सं + √ऊह का पू॰ का॰ कृ॰, एक साथ जुटकर या जोड़कर – *तदेकज्झं अभिसञ्ञूहित्वा अभिसङ्खिपित्वा ...,* विभ॰ 2.

अभिसट त्रि॰, अभि + √सर का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिसृत], **क.** *कर्म॰ वा॰* – बार बार देखा हुआ, वह, जिसके समीप पुनःपुनः जाया जाए, सरलता से पहुंचने या सम्पर्क करने योग्य - **टा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिसटा अत्थिकानं अत्थिकानं मनुस्सानं पटिसतेन च रत्तिं गच्छति,* महाव॰ 357; **ख.** *कर्तृ॰ वा॰* – एक साथ आ जुटा, एकत्रित – **टो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *कत्थेसो अभिसटो जनो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.69; *कत्थेसोति किमत्थं एस महाजनो अभिसटो सन्निपतितो,* तदे॰.

अभिसत्त त्रि॰, अभि + √सप का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिशप्त], अभिशाप पाया हुआ, आक्रुष्ट, विनिन्दित – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्छा इसिना अभिसत्तो परिहीनसभावो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.406; – **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभिशप्तरूप], शापित, भयङ्कर आकार वाला – **पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लुद्दानमावासमिदं पुराणं, भूमिप्पदे सो अभिसत्तरूपो,* वि॰ व॰ 1232; *अभिसत्तरूपोति "एवं लूखो घोराकारो होतू"ति पोराणेहि इसीहि सपितसदिसो, दिन्नसपो वियाति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 285.

अभिसत्तिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अभिषक्ति], अत्यधिक आसक्ति या लगाव रखने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त देवकञ्ञा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिसत्थ / अभिसत्त त्रि॰, अभि + √संस का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिशप्त / अभिशिष्ट], आज्ञप्त, अनुशासित, प्रशस्त – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिसत्तोव निपतति,* थेरगा॰ 118; *तत्थ अभिसत्तोवाति "त्वं सीघं गच्छ मा तिट्ठा'ति देवेहि अनुसिट्ठो आणत्तो विय,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.255.

अभिसद्दहति वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिश्रद्दहति], श्रद्धा रखता है, भरोसा रखता है, दृढ़ विश्वास रखता है – *एवं पजानित्वा पजानित्वा एवं अभिसद्दहति,* स॰ नि॰ 3(2).301; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तदप्पपञ्ञा अभिसद्दहन्ति, पस्सन्ति तं पण्डिता अत्तनाव,* जा॰ अट्ठ॰ 7.53; – **हं / हन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिसद्दहं कम्मफलं उळारं,* म॰ नि॰ 3.307; *तस्सप्पपञ्ञो अभिसद्दहन्तो,* म॰ नि॰ 2.270; – **न्ता**

प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कम्मफलं अभिसद्दहन्ता चित्तीकारं अविजहन्ता,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 23; – **हेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सब्बम्पि ताहं अभिसद्दहेय्यं,* पे॰ व॰ 529; *सब्बम्पि ताहं अभिसद्दहेय्यन्ति सब्बम्पि ... अञ्ञं वा अभिसद्दहेय्यं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 194; – **हेय्युं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ये चापि तेसं अभिसद्दहेय्युं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.56.

अभिसन्तापेति अभि + सं + √तप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिसन्तापयति], पूर्ण सन्ताप देता है, यातना देता है, उत्पीड़ित करता है, कष्ट पहुचाता या सताता है – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हामि, अभिनिप्पेळेमि अभिसन्तापेमि,* म॰ नि॰ 1.311; – **यतो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हतो अभिनिप्पीळयतो अभिसन्तापयतो ...,* म॰ नि॰ 1.171; – **सेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सीसे वा गले वा ... गहेत्वा अभिनिग्गण्हेय्य अभिनिप्पीळेय्य अभिसन्तापेय्य,* म॰ नि॰ 1.171; – **य्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हेय्यं अभिनिप्पीळेय्यं अभिसन्तापेय्य'न्ति,* म॰ नि॰ 1.311; *अभिसन्तापेय्यन्ति तापेत्वा वीरियनिम्मथनं करेय्यं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).185; – **तब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हितब्बं अभिनिप्पीळेतब्बं अभिसन्तापेतब्बं,* म॰ नि॰ 1.172.

अभिसन्द पु॰, [अभिस्यन्द], **क.** बाढ़ जलौघ, जलप्लावन, निःस्राव, बहिर्गमन, *केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त* कम्मा॰, कुसल॰, पुञ्ञा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **ख.** स॰ नि॰ के तीन सुत्तों का शीर्षक, स॰ नि॰ 3(2).454–455.

अभिसन्दति अभि + √सन्द का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिस्यन्दते], रिसता है, बाहर की ओर बहता है, जल का स्राव होता है – *आपो ति संखं गतं सलिलं सुचिं सुगन्धं हुत्वा तथा अभिसन्दती'ति,* सद्द॰ 1.108; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *बहुका नागवित्तोदा, अभिसन्दन्ति वारिना,* जा॰ अट्ठ॰ 5.6; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थलं निन्नञ्च, पूरेति अभिसन्दन्तोव वारिना,* इतिवु॰ 49.

अभिसन्दन नपुं॰, अभि + √सन्द से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभिष्यन्दन], जल से सराबोर कर देना, जलप्रवाहन, परिपूरण जल का संवर्षण – *सुखस्स अभिसन्दनट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 16.

अभिसन्दहति अभि + सं + √धा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिसंदधाति], **शा॰ अ॰** किसी को अपना लक्ष्य बनाता है या अभिसन्धान करता है, किसी को अपने दृष्टिपथ पर रखता है, **ला॰ अ॰** पुनः एक साथ जोड़ देता है या सङ्गति बैठा देता है – *चेतयतीति चेतना सद्धिं अत्तना सम्पयुत्तधम्मे आरम्मणे अभिसन्दहतीति अत्थो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 157; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *एसा निसिन्ना अभिसन्दहित्वा,* थेरगा॰ 151; – **न्धाय** उपरिवत्, अपना लक्ष्य बनाकर ध्यान में रखकर – *तत्थ किमत्थमभिसन्धायाति किं नु खो कारणं पटिच्च किं सम्पस्समानो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.317.

अभिसन्देति अभि + √सन्द का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रेर॰ [अभिस्यन्दयति], तर-बतर कर देता है, सराबोर कर देता है, संतृप्त करता है, पूरी तरह भिंगो देता है, भर देता है – *कायं विवेकजेन पीतिसुखेन अभिसन्देति परिसन्देति,* म॰ नि॰ 1.348; *अभिसन्देतीति तेमेति स्नेहेति, सब्बत्थ पवत्तपीतिसुखं करोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.176; – **न्दयमानं** वर्त॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकलसरीरं खोभेन्तं मद्दन्तं फरमानं अभिसन्दयमानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).287; – **देय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सीतेन वारिना अभिसन्देय्य परिसन्देय्य परिपूरेय्य परिप्फरेय्य,* म॰ नि॰ 1.349.

अभिसन्धान नपुं॰, [अभिसन्धान], सोद्देश्य उद्घोषणा, प्रतिज्ञा, उद्देश्य, प्रयोजन – *अभिधेय्यधनकारणपयोजननिवत्याभिसन्धानादिवचनो पन पुल्लिङ्गो,* सद्द॰ 1.255.

अभिसन्धि पु॰, [अभिसन्धि], लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य अध्याशय, अभिप्राय, आशय – *अज्झासयो अधिप्पायो आसयो चाभिसन्धि च,* अभि॰ प॰ 766; – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना च अभिसन्धिना वरबुद्धासने निसिन्नं दिस्वा ... इसिनिसभं भगवन्तं ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.190.

अभिसन्न / अभिस्सन्न त्रि॰, अभि + √सन्द का भू॰ क॰ कृ॰, (प्रीति) से संप्लावित, तर-बतर, संतृप्त, आनन्द या दुःख से अत्यधिक अभिभूत – **न्नो** पु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पीतिया च अभिस्सन्नो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.22; बु॰ वं॰ 2.78; *पीतिया च अभिस्सन्नोति पीतिपरिप्फुटो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 114; – **न्नानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तानि याव चग्गा याव च मूला सीतेन वारिना अभिसन्नानि परिसन्नानि ...,* म॰ नि॰ 1.349; – **काय** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसका शरीर हानिकारक द्रवों या तरलों से भरा है – **यो** पु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतरो भिक्खु अभिसन्नकायो होति,* महाव॰ 282; *अभिसन्नकायोति उस्सन्नदोसकायो,* महाव॰ अट्ठ॰ 353.

अभिसपति अभि + √सप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिशपति], सरापता है, शाप देता है, कोसता है, दोष लगाता है या दोषारोपण करता है, अभियोग लगाता है – *उपसम्पन्नाय वेमतिका निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपति,* पाचि॰ 379;

– **पाम** अनु॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *हन्द, नं अभिसपामा'ति,* म॰ नि॰ 2.369; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *इति तं गरहित्वा इदानि अभिसपन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.82; – **पथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मय्हं दोसो नत्थीति मम वदन्तस्सेव तुम्हे अभिसपथ,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.27; – **पेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अत्तानं वा परं वा निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपेय्य,* पाचि॰ 378; - **पि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तुम्हाकं कुलूपको तापसो मं निरपराधं अभिसपि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.349; – **पिंसु** ब॰ व॰ *सत ब्राह्मणिसयो असितं देवलं इसिं अभिसपिंसु,* म॰ नि॰ 2.369; **पिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *अयं मे अभिसपिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.154; – **पिस्सामि** उ॰ पु॰ , ए॰ व॰ – *अभिसपिस्सामि त'न्ति वुत्ते ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.27; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ *अभिसपित्वा च पन कस्स नु खो उपरि अभिसपो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.28.

अभिसपथ पु॰, अभिशाप **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सपथो अभिसपथो अभिसपितो सपनको,* सद्द॰ 2.403.

अभिसपन नपुं॰, अभिशाप – *एतं ते परलोकस्मिं ... अभिसपनवसेन कतं पापकम्मं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 126.

अभिसमय पु॰, [बौ॰ सं॰ अभिसमय], **क** बोध, चार आर्यसत्यों का यथार्थ बोध या यथाभूत प्रतिवेध, सम्यक्-दृष्टि – **यो** प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सच्चानं अभिसमयो, एतं समणस्स पतिरूपं,* थेरगा॰ 593; *सच्चानं अभिसमयोति दुक्खादीनं अरियसच्चानं ... पटिवेधो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.179; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सह दोमनस्सेन चतुन्नं अरियसच्चानं अभिसमयं वदामि,* स॰ नि॰ 3(2).503; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तारि सच्चानि एकपटिवेधेनेव पटिविज्झाति एकाभिसमयेन अभिसमेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).79; – **याय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बे ते चतुन्नं अरियसच्चानं यथाभूतं अभिसमयाय ...,* स॰ नि॰ 3(2).479; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अत्था॰, अनुपुब्बा॰, अभिरोपना॰, एका॰, किच्चा॰, चतुराच्चा॰, दस्सना॰, परिञ्ञा॰, पहाणा॰, फस्सा॰, भावना॰, महाजना॰, माना॰, सच्चा॰, सच्छिकिरिया॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिसमयकथा स्त्री॰, पटि॰ म॰ के एक खण्ड का शीर्षक, पटि॰ म॰ 384-387.

अभिसमयजाति स्त्री॰, यथार्थबोध युक्त जन्म – **तियं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पनस्स पच्छिमे भवे अभिसमयजातियं मग्गं आरब्भ सतिसम्मोसो हेस्सति,* मि॰ प॰ 268.

अभिसमयट्ठ पु॰, [अभिसमयार्थ], यथार्थबोध का आशय या अर्थ – **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिसमयट्ठो इमेहि ... आकारेहि अभिसमयट्ठेन चत्तारि सच्चानि एकसङ्गहितानि,* पटि॰ म॰ 286.

अभिसमयन्तरायकर त्रि॰, अभिसयम या यथार्थबोध में विघ्न (अन्तराय) लाने वाला, यथार्थबोध में विघ्नकारक – **करं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजानन्तेनपि कतं पापं अभिसमयन्तरायकरं होति,* मि॰ प॰ 239; – **पञ्ह** पु॰, मि॰ प॰ के एक खण्ड का शीर्षक, मि॰ प॰ 238 240.

अभिसमयवग्ग पु॰, स॰ नि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, स॰ नि॰ 3(2).518-523.

अभिसमयसंयुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(2).119-124.

अभिसमयसद्द पु॰, अभिसमय का शब्द या ध्वनि – **द्दस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ *समयसद्दस्स अत्थुद्धारे अभिसमयसद्दस्स गहणे कारणं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं,* उदा॰ अट्ठ॰ 17.

अभिसमयहेतु पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ अभिसमय का हेतु या कारण – *एवमेव खो, महाराज, तस्स तेन दोसेन अभिसमयहेतु समुच्छिन्नो,* मि॰ प॰ 239.

अभिसमागच्छति अभि + सं + आ + √गम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिसमागच्छति], यथार्थबोध के लिए आता है, समझने के लिए आता है, उद्देश्य-विशेष के साथ आता है – **ति** – *अभिसमेतीति ञाणेन अभिसमागच्छति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.36; – **गन्त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *अभिसमेच्चाति अभिसमागन्त्वा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 191.

अभिसमाचार पु॰, अभिसमाचारं का सं॰ रू॰ [बौ॰ सं॰ अभिसमाचार], विशिष्ट मार्गशील एवं फलशील, आचरण-सम्बन्धी विशिष्ट वचन, आचरण से सम्बद्ध विशिष्ट या अतिरिक्त नियम – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधिको समाचारो अभिसमाचारो ...,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.30; *अधिसी–लसिक्खापरियापन्नत्ता अभिविसिट्ठो समाचारोति अभिसमाचारोति आह "उत्तमसमाचारो"ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.31; – **रं** द्वि॰ वि॰ ए॰ व॰ – *अभिसमाचारं वा आरब्भ पञ्ञत्तं आभिसमाचारिकं,* विसुद्धि॰ 1.12.

आभिसमाचारिक 1. त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आभिसमाचारिक], **शा॰ अ॰** उत्तम आचरण, उत्तम आचरण से सम्बद्ध; **ला॰ अ॰ क॰** सामान्य उदात्त परम्परा से चला आ रहा (धर्म), – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञिको ... सङ्घे विहरन्तो आभिसमाचारिकम्पि धम्मं न जानाति,* म॰ नि॰ 2.143; *आभिसमाचारिकम्पि धम्मन्ति अभिसमाचारिकं वत्तपटिपत्तिमत्तम्पि ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.131; **ला॰**

अ. ख. खन्धकों में निर्दिष्ट शिक्षा-पद या शिक्षा, उत्तम-आचरण से सम्बद्ध नियम, आचरण के विशिष्ट नियमों के साथ जुड़ा हुआ, मार्गशील एवं फलशील की दृष्टि से प्रज्ञप्त - **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अधिको समाचारो अभिसमाचारो तत्थ नियुत्तं, सो वा पयोजनं एतस्साति आभिसमाचारिकं,* विसुद्धि. महाटी. 1.30; - **काय** स्त्री., सप्त. वि., ए. व. - *पटिबलो ... सद्धिविहारिं वा आभिसमाचारिकाय सिक्खाय सिक्खापेतुं,* महाव. 83; *आभिसमाचारिकाय सिक्खायाति खन्धकवत्ते विनेतुं न पटिबलो होतीति अत्थो,* महाव. अट्ठ. 259; - **का** प्र. वि., ए. व. - *मया सावकानं आभिसमाचारिका सिक्खा पञ्ञत्ता,* अ. नि. 1(2).278; *आभिसमाचारिकाति उत्तमसमाचारिका,* अ. नि. अट्ठ. 2.392; 2. नपुं., खन्धकों में संगृहीत क्षुद्रकानुक्षुद्रक शिक्षापद - *खुद्दानुखुद्दकं आभिसमाचारिकमुच्चते,* अभि. प. 431; - **कं** प्र. वि., ए. व. - *अभिसमाचारोव आभिसमाचारिकं,* विसुद्धि. महाटी. 1.31; *एवं आभिसमाचारिक - आदिब्रह्मचरियकवसेन दुविधं,* विसुद्धि. 1.12; - **केसु** सप्त. वि., ब. व. - *असंसट्ठो आभिसमाचारिकेसु सक्कच्चकारी गरुचित्तीकारबहुलो विहरति,* उदा. अट्ठ. 182; - **धम्मपूरण** नपुं., परम्परा-प्राप्त उदात्त धर्म को पूरा करना या उसका अनुपालन करना - **णं** प्र. वि., ए. व. - *भिक्खूनञ्हि मेत्तचित्तेन आभिसमाचारि– कधम्मपूरणं मेत्तं कायकम्मं ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).288; - **वत्त** नपुं., उत्तम आचरण से सम्बद्ध व्रत या नैतिक आचरण - **त्तं** द्वि. वि., ए. व. - *आभिसमाचारिकवत्तञ्हि पूरेन्तोयेव अरियफलादीनि सच्छिकरोति,* ध. प. अट्ठ. 2.90; *गामन्तमभिहारयेति आभिसमाचारिकवत्तं कत्वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.194; - **त्तो** प. वि., ए. व. - *आयस्मा सारिपुत्तो ... वसेन आभिसमाचारिकवत्ततो पट्ठाय ...,* म. नि. अट्ठ (म.प.) 2.132; - **वत्तपटिवत्त** नपुं., प्र. वि., ए. व. छोटे-मोटे आचरणीय नियम - *अभिसमाचारिकवत्तपटिवत्तं मम अकासि,* जा. अट्ठ. 5.224.

अभिसमाचित त्रि., अभि + सं + आ + √चि का भू. क. कृ. [अभिसमाचित], संग्रहीत, एक साथ पुञ्जीभूत किया हुआ, केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त चिरकाला. के अन्त. द्रष्ट..

अभिसमित त्रि., अभिसमेति का भू. क. कृ., समझा हुआ, बूझा हुआ, जाना हुआ, पता लगाया हुआ - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अम्हाकं धम्मो अम्हाकं अय्यपुत्तेन धम्मो अभिसमितो ति,* पारा. 278; ... *पन अत्तनो सन्तकभावे युत्तिं दस्सेन्तो अम्हाकं अय्यपुत्तेन धम्मो अभिसमितो ति,* आह, पारा. अट्ठ. 2.178; - **त्त** नपुं., भाव., समझा हुआ अथवा जाना हुआ रहना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *धम्मस्स सुतत्ता सच्चानञ्च अभिसमितत्ता मनुस्सेसु दिब्बेसु चाति ... अरतिं उक्कण्ठितं अधिगच्छिं,* थेरीगा. अट्ठ. 265.

अभिसमेक्खति अभि + सं + √इक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिसमीक्षते], भली-भांति देखता है, अवलोकन करता है, अनुचिन्तन करता है, गहराई के साथ विचारता है - **से** म. पु., ए. व., आत्मने. - *यं त्वं सुखेनाभिसमेक्खसे मं,* जा. अट्ठ. 4.18; *यं त्वन्ति यस्मा त्वं सुखेन मं अभिसमेक्खसे,* तदे.; - **क्ख** अनु., म. पु., ए. व. - *त्वं नोत्तमेवाभिसमेक्ख नारद,* जा. अट्ठ. 5.390; *त्वं नोत्तमेवाति उत्तममहामुनि त्वमेव नो उपधारेहि,* तदे..

अभिसमेतु पु., अभि + सं + √इ से व्यु. क. ना., अच्छी तरह से जानने या समझने वाला - **तारो** प्र. वि., ब. व. - *पुथुज्जनानम्पि भिक्खु भिक्खुनी उपासकउपासिकानं धम्मदेसनं सुत्वा होन्तियेव धम्मं अभिसमेतारो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).201.

अभिसमेतब्ब त्रि., अभिसमेति का सं. कृ., ठीक से समझने योग्य - **तो** प. वि., ए. व. - *पटिवेधोति हि अभिसमेतब्बतो अभिसमयो,* उदा. अट्ठ. 17; - **भाव** पु., ठीक से या पूर्ण रूप से समझे जाने योग्य होना - **वेन** तृ. वि., ए. व. - *अभिसमयट्ठोति ... अभिसमेतब्बभावेन एकीभावं उपनेत्वा वुत्तानि,* उदा. अट्ठ. 17.

अभिसमेतावी त्रि., पूर्ण रूप से समझ चुका, अच्छी तरह से ज्ञान पा चुका - **विनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *दिट्ठिसम्पन्नस्स पुग्गलस्स अभिसमेताविनो ...,* स. नि. 1(2).119; *अभिसमेताविनोति पञ्ञाय अरियसच्चानि अभिसमेत्वा ठितस्स,* स. नि. अट्ठ. 2.113; - **विनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सद्धेय्यवचसा नाम आगतफला अभिसमेताविनी विञ्ञातसासना,* पारा. 294; *अभिसमेताविनीति पटिविद्धचतुसच्चा,* पारा. अट्ठ. 2.195.

अभिसमेति[1] अभि + सं + √इ का वर्त., प्र. पु., ए. व., **शा. अ.** किसी के पास ठीक से जा पहुंचता है, **ला. अ.** ठीक से समझता है, अच्छी तरह से जान जाता है - **न्ति** प्र. पु., ब. व. - *ये च तं सुत्वा धम्मं अभिसमेन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).201; - **न्तेन** वर्त. कृ., पु., तृ. वि., ए. व. - *सच्छिकिरियाभिसमयवसेन अभिसमेन्तेन विसयतो किच्चतो च आरम्मणतो च ... पटिविद्धं,* उदा. अट्ठ. 319; - **मेसि**

अद्य., प्र. पु., ए. व. - *नानानयेहीभिसमेसि सत्ते,* जिना. 177; - **मेसुं** ब. व. - *सब्बे ते चत्तारि अरियसच्चानि यथाभूतं अभिसमेसुं,* स. नि. 3(2).479; - **स्ससि** भवि., म. पु., ए. व. - *दिवसे दिवसे तीहि तीहि ... वस्ससतस्स अच्चयेन अनभिसमेतानि चत्तारि अरियसच्चानि अभिसमेस्ससी'ति,* स. नि. 3(2).503; - **स्सन्ति** प्र. पु., ब. व. - *सब्बे ते चत्तारि अरियसच्चानि यथाभूतं अभिसमेस्सन्ति,* स. नि. 3(2).480; - **मेच्च** पू. का. कृ., ठीक से समझकर - *सम्मा परियन्तदस्सावी सम्मदत्थं अभिसमेच्च दिट्ठेव धम्मे दुक्खस्सन्तकरो होति,* अ. नि. 3(2).43; - **मेत्वा** पू. का. कृ., ठीक से जान-बूझकर *अभिसम्बुज्झित्वा अभिसमेत्वा आचिक्खति देसेति ... विवरति विभजति उत्तानीकरोति,* स. नि. 1(2).24.

अभिसमेति[2] अभि + √सम का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रेर. [अभिशमयति], शान्त कर देता है, सन्तुष्ट कर देता है - **मेसि** म. पु., ए. व. - *नानानयेहीभिसमेसि सत्ते,* जिना. 177.

अभिसम्पत्त त्रि., अभि + सं + प + √आप का भू. क. कृ. [अभिसम्प्राप्त], वह, जिसने अच्छी तरह से प्राप्त कर लिया है, वह, जिसने पा लिया या अधिगत कर लिया है - *अभिसम्बुद्धोति पच्चञ्ञासिन्ति "अभिसम्बुद्धो अभिसम्पत्तो पटिविज्झित्वा ठितो"ति एवं पटिजानिं,* स. नि. अट्ठ. 2.136; पाठा. अहं पत्तो.

अभिसम्पराय पु., [बौ. सं. अभिसम्पराय], पारलौकिक अवस्था, मृत्यु के उपरान्त प्राप्त होने वाली पारलौकिक गति - **यो** प्र. वि., ए. व. - *तस्स का गति, को अभिसम्परायो'ति,* म. नि. 2.354; - **यं** द्वि. वि., ए. व. - *भिक्खू कोसम्बियं पिण्डाय चरन्ता तं पवत्तिं ञत्वा पच्छाभत्तं भगवतो आरोचेत्वा तासं अभिसम्परायं पुच्छिंसु,* उदा. अट्ठ. 312.

अभिसम्परायं सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., आगे आने वाले जीवन या अस्तित्व में, आगामी जीवन में, मृत्यु के उपरान्त प्राप्त होने वाले जीवन में - *दिट्ठे चेव धम्मे अभिसम्परायञ्च,* दी. नि. 3.61; *आसवा अस्सवेय्युं अभिसम्पराय'न्ति,* अ. नि. 1(2).226; *कायस्स भेदा अभिसम्परायं,* जा. अट्ठ. 4.43.

अभिसम्बन्धित्वा अभि + सं + √बन्ध का पू. का. कृ., समवेत कर, सम्मिश्रित कर, जोड़ कर, संयोजित कर - *अभिसम्बन्धित्वा चतुत्थपादो ... वुत्तोपि वेदितब्बो,* सु. नि. अट्ठ. 1.58.

अभिसम्बुज्झति अभि + सं + √बुध (जागना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिसम्बुध्यते], **शा. अ.** अच्छी तरह से या सम्पूर्ण रूप से जानता है, समझता है, पूर्ण तथा प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करता है, **ला. अ.** पूर्णरूप से सम्बोधिज्ञान को पाता है, बुद्ध की अवस्था पा लेता है, पूर्ण रूप से ज्ञान एवं दर्शन पा लेता है - *अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झति,* दी. नि. 2.101; - **न्ति** ब. व. - *सब्बे ते ... अरियसच्चानि यथाभूतं अभिसम्बुज्झन्ति,* स. नि. 3(2).497; - **ज्झिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *याव न सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झिं,* स. नि. अट्ठ. 1.224; - **ज्झिंसु** प्र. पु., ब. व. - *भावेत्वा अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झिंसु,* दी. नि. 2.65; - **धं / धानो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *यं धम्मं अभिसम्बुधं,* स. नि. 1(1).243; *फेणूपमं कायमिमं विदित्वा, मरीचिधम्मं अभिसम्बुधानो,* ध. प. 46; - **स्सामि** भवि., उ. पु., ए. व. - *इदानाहं मनुस्सयोनियं ... अभिसम्बुज्झिस्सामी'ति,* उदा. अट्ठ. 118; - **स्सन्ति** प्र. पु., ब. व. - *अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झिस्सन्ति,* दी. नि. 2.66; - **त्वा** पू. का. कृ. - *अभिसम्बुज्झित्वा अभिसमेत्वा आचिक्खति देसेति,* स. नि. 1(2).24.

अभिसम्बुज्झन नपुं., अभि. + सं + √बुध से व्यु., क्रि. ना. [अभिसम्बोधन], सम्बोधिज्ञान की प्राप्ति, पूर्ण बोधिज्ञान की प्राप्ति - **काल** पु., तत्पु. स. [अभिसम्बोधनकाल], पूर्ण सम्बोधि-ज्ञान की प्राप्ति का काल - **लो** प्र. वि., ए. व. - *सिद्धत्थकुमारस्स अभिसम्बुज्झनकालो आसन्नो,* जा. अट्ठ. 1.69; - **दिवस** पु., तत्पु. स. [अभिसम्बोधनदिवस], सम्बोधिज्ञान प्राप्त करने का दिन - **से** सप्त. वि., ए. व. - *अनेकेसं बोधिसत्तसहस्सानं अभिसम्बुज्झनदिवसे ओतरित्वा* ..., जा. अट्ठ. 1.79.

अभिसम्बुज्झनक त्रि., [अभिसम्बोधनक], सम्बोधिज्ञान को पाने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *सम्बोधिपरायनोति ... तं सम्बोधिं अवस्सं अभिसम्बुज्झनकोति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 2.65.

अभिसम्बुद्ध त्रि., अभि + सं + √बुध का भू. क. कृ. [अभिसम्बुद्ध], **क.** पूर्णरूप से समझा हुआ, बोधिज्ञान में पूर्णतया ज्ञात या अनुभव किया हुआ - **द्धा** पु., प्र. वि., ब. व. - *इति इमे दस धम्मा भूता तच्छा तथा अवितथा अनञ्ञथा सम्मा तथागतेन अभिसम्बुद्धा,* दी. नि. 3.218; इतिवु. 85; **ख.** वह, जिसने सर्वोच्च ज्ञान (बोधिज्ञान) को पा लिया है, पूर्णतः सम्बुद्ध, बुद्धत्व को प्राप्त - **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तेन समयेन बुद्धो भगवा उरुवेलायं विहरति नज्जा नेरञ्जराय तीरे बोधिरुक्खमूले पठमाभिसम्बुद्धो,* महाव. 1; - **काल** पु., तत्पु. स. [अभिसम्बुद्धकाल], बुद्धों द्वारा

अभिसम्बोधि की प्राप्ति के बाद का समय या काल - **तो** प. वि., ए. व. - *भगवतो अभिसम्बुद्धकालतो,* सा. वं. 33(ना.); - **गाथा** स्त्री., तत्पु. स., बुद्ध के द्वारा कही गयी गाथा, जातक-कथानकों में बोधिप्राप्ति के अनन्तर स्वयं बुद्ध द्वारा कही गई बोधिसत्व के रूप में अपने पूर्व-जीवनों पर प्रकाश डालने वाली इतिहास-गाथा - **था** द्वि. वि., ब. व. - *सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा इमा अभिसम्बुद्धगाथा वत्वा जातकं समोधानेसि,* जा. अट्ठ. 2.206; *इमा चतस्सो ध म्मराजेन भासिता अभिसम्बुद्धगाथा,* जा. अट्ठ. 4.52; - **था** प्र. वि., ए. व. - *तमत्थं दीपयमाना ओसाने अभिसम्बुद्धगाथा ठपिता,* जा. अट्ठ. 3.436; - **त्त** नपुं., भाव. [अभिसम्बुद्धत्व], अभिसम्बोधि-ज्ञान का प्राप्त होना, बोधिज्ञान-प्राप्ति की अवस्था - **त्ता** प. वि., ए. व. - *चतुन्नं अरियसच्चानं यथाभूतं अभिसम्बुद्धत्ता तथागतो,* स. नि. 3(2).496; *तस्मापि तथानं धम्मानं अभिसम्बुद्धत्ता तथागतोति वुच्चति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).54.

अभिसम्बुधं / अभिसम्बुधन्त त्रि., अभि + सं + √बुध (जानना) से व्यु., वर्त. कृ., पूर्णरूप से ज्ञान प्राप्त कर रहा, गहराई तक प्रवेश कर सत्य को जानने वाला, पूर्णरूप से या स्पष्टता के साथ ज्ञान पाने वाला - **धं** पु., प्र. वि., ए. व. - *जरामरणमोक्खाय, यं धम्मं अभिसम्बुधं, तं धम्मं सोतुमिच्छामि* ..., स. नि. 1(1).243; *अभिसम्बुधन्ति अभिसम्बुधन्तो, तेनाहं "अभिसम्बुद्धो"ति,* स. नि. टी. 1.275.

अभिसम्बोध पु., केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त [अभिसम्बोध], असाधारण ज्ञान, पूर्ण ज्ञान - **धेन** तृ. वि., ए. व. - *सच्चाभिसम्बोधेन असाधारणञाणेन च अदक्खि,* सु. नि. अट्ठ. 2.297.

अभिसम्बोधि स्त्री., [अभिसम्बोधि], पूर्णज्ञान, सर्वोच्च-ज्ञान, परम-ज्ञान, सम्यक्-सम्बुद्ध अथवा प्रत्येकबुद्धों द्वारा प्राप्त ज्ञान - *अभिसम्बोधि, सम्बोधि'इति नामद्वयं पन, पच्चेकबुद्धसब्बञ्ञुबुद्धानं येव रूहति,* सद्द. 1.83; - **धिं** द्वि. वि., ए. व. - *महापधानं अभिसम्बोधिं ... चतुब्बिधं मग्गञाणं* ..., सु. नि. अट्ठ. 1.220; - **धिया** ष. वि., ए. व. - *अभिसम्बोधिया वा अधिगतत्ता ततो अञ्ञं उत्तरि करणीयं नाम नत्थि,* उदा. अट्ठ. 176; - **तो** प. वि., ए. व. - *अम्हाकं भगवा अभिसम्बोधितो सत्तमे संवच्छरे* ..., पे. व. अट्ठ. 119; - **धियं** सप्त. वि., ए. व. - *अभिनिक्खमनेपि अभिसम्बोधियम्पि ... दससहस्सिलोकधातु अकम्पित्थ,* स. नि. अट्ठ. 3.197; - **ञाण** नपुं., [अभिसम्बोधिज्ञान], सम्यक्-सम्बुद्ध द्वारा प्राप्त ज्ञान - **णं** द्वि. वि., ए. व. - *अभिसम्बोधिञाणं देतीति एवमादिं दानगुणपटिसंयुत्तं कथं* ..., म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.65; - **समय** पु., तत्पु. स. [अभिसम्बोधिसमय], सम्बोधि-ज्ञान पाने का समय - **यो** प्र. वि., ए. व. - *ये वा इमे गब्भोक्कन्तिसमयो ... मारविजयसमयो अभिसम्बोधिसमयो,* उदा. अट्ठ. 18; स. नि. अट्ठ. 1.10.

अभिसम्भव पु., स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, वशीकरण, अधीनीकरण, दुरभिसम्भव आदि के अन्त., द्रष्ट..

अभिसम्भवति / अभिसम्भोति क. अभि + सं + √भू (होना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिसम्भवति], प्राप्त करता है, अभिभूत कर लेता है, प्राप्त करने में सक्षम होता है, सहन कर लेता है, सिद्ध कर लेता है, पूरा कर लेता है - ... *कम्मन्ते अभिसम्भोति,* दी. नि. 2.171; *भावनामयं पुञ्ञकिरियवत्थुं नाभिसम्भोति,* अ. नि. 3(1).73; *नाभिसम्भोतीति न निप्फज्जति,* अ. नि. अट्ठ. 3.229; - **न्ति** ब. व. - *अथ खलु, भो, ता दिजकञ्ञायो तं कुणालं सकुणं आरामेनेव आरामं, ... खिप्पमेव अभिसम्भोन्ति रतित्थाय,* जा. अट्ठ. 5.413; - **म्भोम** उ. पु., ब. व. *तानि चे नाभिसम्भोम,* जा. अट्ठ. 3.120; - **भोन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *लूखम्पि अभिसम्भोन्तो, विहरिस्सामि कानने,* थेरगा. 351; *लूखम्पि अभिसम्भोन्तोति अरञ्ञावासजनितं ... दुस्सहम्पि पच्चयलूखं अभिभवन्तो अधिवासेन्तो,* थेरगा. अट्ठ. 2.52; - **भोन्ती** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *एतानि अभिसम्भोन्ती, परलोके अनासवा,* थेरीगा. 330; - **न्तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अभिसम्भोन्तन्ति पापुणन्तं,* अभि. ध. वि. 236; - **म्भवे / म्भवेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *ये भिक्खु अभिसम्भवे, पन्तम्हि सयनासने,* सु. नि. 966; *अभिसम्भवे ति अभिभवेय्य,* सु. नि. अट्ठ. 2.264; *अद्धा भवन्तो अभिसम्भवेय्य,* सु. नि. 974; - **म्भवेम** उ. पु., ब. व. - *यथा गतिं ते अभिसम्भवेमा'ति,* जा. अट्ठ. 5.143; - **म्भवेथ** म. पु., ब. व. - *यथा गतिं मे अभिसम्भवेथा'ति,* जा. अट्ठ. 5.144; - **म्भोसि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *येपिस्स पिता कम्मन्ते अभिसम्भोसि,* दी. नि. 2.171; - **म्भोसिं** उ. पु., ए. व. *आवासं अभिसम्भोसिं, पत्वान अस्समं अहं,* अप. 1.129; - **म्भोस्सं** भवि., उ. पु., ए. व. - *सब्बानि अभिसम्भोस्सं गच्छञ्ञेव, रथेसभ,* जा. अट्ठ. 7.264; - **म्भवितुं / म्भोतुं** निमि. कृ. - *अत्थे च धम्मे च निरुत्तिया च ... न अञ्ञो कोचि सक्कोति अभिसम्भवितुं* पटि. म. 367; *यदि नं कातुं वा अभिसम्भोतुं वा सुखं भवेय्य,* सु. नि. अट्ठ. 2.190; - **म्भवित्वा** पू. का. कृ. - *सब्बानिपेतानि*

अभिसम्भवित्वा, सु॰ नि॰ 52; ख. – **अभिसम्भुणाति** उपरिवत्, पापुणाति के मि॰ सा॰ पर निर्मित, पूरा कर देता है, सिद्ध कर देता है, प्राप्त करता है, लाभ पाता है – *न किञ्चि अत्थं अभिसम्भुणाति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.3; ... *सीहळदीपतो अञ्ञदीपवासिनो भिक्खुगणस्स किञ्चि अत्थं पयोजनं यस्मा नाभिसम्भुणाति न सम्पादेति, न साधेति,* सारत्थ॰ टी॰ 1.18; – **णन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *देवा नानुभवन्ति दस्सनायाति ... दट्ठुं नानुभवन्ति न अभिसम्भुणन्ति न सक्कोन्ति ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 132.

अभिसम्मत 1. त्रि॰, अभि + सं + √मन का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिसम्मत], अनुमोदित, सत्कृत, सम्मानित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञो अन्तेपुरे आसिं, गोपको अभिसम्मतो,* अप॰ 1.185; 2. **क.** पु॰, एक यक्ष का नाम – *देवेहि ठपितो यक्खो, अभिसम्मतनामको,* अप॰ 1.70; **ख.** पु॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम – *इतो तेसट्ठिकप्पम्हि अभिसम्मतनामको, सत्तरतनसम्पन्नो चक्कवत्ती महब्बलो,* अप॰ 1.123.

अभिसर पु॰, [अभिसर], साथी, अङ्गरक्षक, अनुगामी, अनुचर – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न मे अभिसरेनत्थो, नगरेन धनेन वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.369; *तत्थ अभिसरेनाति आरक्खपरिवारेन,* जा॰ अट्ठ॰ 5.370.

अभिसरण नपुं॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त [अभिशरण], शरण या आश्रय, तण्हाभिसरण आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अभिसरणता स्त्री॰, भाव॰, किसी के आश्रय में जाना, किसी के समीप मिलने के लिए पहुँचना – **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अभिसरणताय अभिसारिका नाम हुत्वा एकिका अदुतिया गावुतद्विगावुतमत्तं दीघं अद्धानं गच्छतु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.119.

अभिसल्लेखन्ति अभि + सं + √लिख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, किसी को विशिष्ट रूप से उल्लिखित करती हैं, किसी को अधिक महत्व देती हैं – *अभिसल्लेखन्तीति अभिसल्लेखिका,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.255.

अभिसल्लेखिक त्रि॰, अत्यन्त कठोर संयम पर विशेष बल देने वाला/वाली – **का** स्त्री॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *यायं कथा अभिसल्लेखिका चेतोविवरणसप्पाया,* अ॰ नि॰ 3(1).172; *अभिसल्लेखिकाति अतिविय किलेसानं सल्लेखनी,* उदा॰ अट्ठ॰ 183.

अभिसाधेति अभि + √साध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिसाधयति], कार्यान्वित करता है, इन्द्रजाल के द्वारा उपलब्ध कर देता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ते इमेहि पयोगेहि सामञ्ञत्थमभिसाधेन्ति,* मि॰ प॰ 246; – **धये** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सुधारितो सुनिक्खित्तो सब्बत्थमभिसाधये,* जा॰ अट्ठ॰ 7.23.

अभिसपति वर्त॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, अभिशाप देता है, आक्रोश प्रकट करता है, कोसता है – ... *निरयेन वा ब्रह्मचरियेन वा अभिसपति,* पाचि॰ 379; – **पिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *ब्रह्मचरियेनपि अभिसपिस्सति,* पाचि॰ 378; – **पेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *ब्रह्मचरियेन वा अभिसपेय्य, पाचित्तिय्यन्ति,* पाचि॰ 378.

अभिसाप पु॰, [अभिशाप], शाप, कोसना, गाली या अपभाषण का शब्द, आक्रोश – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिसापोयं भिक्खवे, लोकस्मिं-पिण्डोलो विचरसि पत्तपाणी'ति,* इतिवु॰ 64; *अभिसापोति अक्कोसो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 256.

अभिसप्पित/अभिसापित त्रि॰, अभि + √सप का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिशापित], अभिशप्त, अभिशाप पाया हुआ – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पयोगे दुक्कटं वुत्तं, पाचित्ति अभिसप्पिते,* उत्त॰ वि॰ 214.

अभिसापयिं अभि + √सप के प्रेर॰ का अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, अभिशाप दिया, आक्रोश प्रकट किया – *विमुत्तचित्तं कुपिता, भिक्खुनिं अभिसापयिं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 237.

अभिसाम पु॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम – *इतो पन्नरसे कप्पे अभिसामसमव्हयो, सत्तरतनसम्पन्नो चक्कवत्ती महब्बलो,* अप॰ 1.229.

अभिसारये अभि + √सर के प्रेर॰ का विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिस्मारयेत्], उलाहना दे, भर्त्सना करे, डाँटे, निन्दा करे – *अब्भक्खाति अभूतेन, अलिकेनाभिसारये,* जा॰ अट्ठ॰ 6.207.

अभिसारिका/अभिसारिया स्त्री॰, [अभिसारिका], वह स्त्री, जो अपने प्रिय से मिलने को जाती है, प्रिय के द्वारा नियत स्थान की ओर जाने वाली – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अभिसरणताय अभिसारिका नाम हुत्वा एकिका अदुतिया गावुतद्विगावुतमत्तं दीघं अद्धानं गच्छतु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.119; *ε त्वत्थिनी तु संकेतं याति या साभिसारिका,* अभि॰ प॰ 232.

अभिसिञ्चति अभि √सिच का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिसिञ्चति], **शा॰ अ॰** चारों ओर छिड़कता है, पानी के छींटें देता है, **ला॰ अ॰** शान्त करता है, भरपूर कर देता है, सन्तुष्ट करता है, राज्यतिलक करता है, राजा को सिंहासन पर प्रतिष्ठित कराता है *यथा महाराज, कोचि अयुत्तो अप्पत्तो ... कुजातिको खत्तियाभिसेकेन अभिसिञ्चति,* मि॰ प॰ 323; *अहं पण्डितो ति अभिसिञ्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.248; – **न्ति** ब॰ व॰ – *ततो पट्ठाय किर यावज्जतना राजानो ...*

तीहि सङ्खेहि अभिसिञ्चन्ति, जा॰ अट्ठ॰ 2.335; - **ञ्च** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *सिञ्चाति महामेघो विय वुट्ठिया भोगेहि अभिसिञ्च*, जा॰ अट्ठ॰ 7.361; - **ञ्चेय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *अहो वत मं रज्जे अभिसिञ्चेय्युं'न्ति*, महाव॰ 42; - **ञ्चि¹** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अमतेन अभिसिञ्चि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.257; - **ञ्चि²** अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *ततो अमतमादाय, अभिसिञ्चि महीरुहं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.438; - **ञ्चिंसु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *तच्छकं अभिसिञ्चिंसु, त्वं नो राजासि इस्सरो ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.311; - **ञ्चिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *पेत्तिके तं ठाने ठपेस्सामि, गोविन्दिये अभिसिञ्चिस्सामीति*, दी॰ नि॰ 2.170; - **ञ्चिस्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *"कुदास्सु नाम मम्पि खत्तिया खत्तियाभिसेकेन अभिसिञ्चिस्सन्ती"ति*, अ॰ नि॰ 1(1).131; - **तुं** निमि॰ कृ॰ - *परिकिण्णो अमच्चेहि पुत्तं सिञ्चितुमागमि*, जा॰ अट्ठ॰ 7.367; - **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *देव, तुम्हे इमं रज्जं कारेथा'ति नगरं पवेसेत्वा रतनरासिम्हि ठपेत्वा अभिसिञ्चित्वा तक्कसिलराजानं अकंसु*, जा॰ अट्ठ॰ 1.381; - **तब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ - ... *आरहत्ताभिसेकेन अभिसिञ्चितब्बो विपस्सनाविञ्ञाणराजपुत्तो दट्ठब्बो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.102.

अभिसित्त त्रि॰, अभि + √सिच का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिषिक्त], छिड़काव युक्त, आर्द्र किया हुआ, वह, जिसका राज्याभिषेक हो चुका हो, राज्यतिलक प्राप्त कर चुका शासक - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सयमेव सामं मनसाभिसित्तो*, महानि॰ 219; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.79; - **त्ता** ब॰ व॰ - *येन अमतेन अभिसित्ता देवमनुस्सा*, मि॰ प॰ 305; - **त्तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *कीळितुं अभिसित्तानं चरितं चानुरक्खितं*, म॰ वं॰ 26.7; स॰ उ॰ प॰ के रूप में पठमा॰, एकमासा॰, मुद्धा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; - *सरसि त्वं, महाराज, पठमाभिसित्तो एवरूपिं वाचं भासिता*, पारा॰ 50; एकमासा एक - *अभिसेकेन एकमासाभिसित्तो*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.54; *गहेत्वा रञ्ञो खत्तियस्स मुद्धाभिसित्तस्स दस्सेसुं*, दी॰ नि॰ 3.48; - **गत्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभिषिक्तगात्र], अभिषेक किए हुए शरीर वाला - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *राजा अमतेनेव अभिसित्तगत्तो विय परमेन पीतिपामोज्जेन समन्नागतो हुत्वा पुच्छि*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.60; - **मत्त** त्रि॰, तुरन्त राज्याभिषेक किया हुआ - **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *राजानो किर अभिसित्तमत्तायेव धम्मभेरिं चरापेन्ति* ..., पारा॰ अट्ठ॰ 1.236; - **हदय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभिषिक्तहृदय], सुसिञ्चित अथवा आर्द्र हृदय वाला/वाली - **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अमतेनेव अभिसित्तहदयो अत्तमनो ... हुत्वा* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.140.

अभिसुणोति/अभिसुणाति अभि + √सु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, निचोड़ता है, पीड़ित करता है, दबाव देता है, पेरता है - *अभिसुणोति, अभिसुणाति*, क॰ व्या॰ 450; *अभिसुणोति संवुणोति*, सद्द॰ 3.830.

अभिसुत नपुं॰, सिरका, कांजी, कंजिका - *सोवीरं कञ्जियं वुत्तं, आरनाळं थुसोदकं, धञ्ञम्बिलं बिलङ्गो'थ*, अभि॰ प॰ 460.

अभिसेक¹ पु॰, [अभिषेक], **क**. पानी का छिड़काव, राज्यतिलक, राजाओं का सिंहासनारोहण - **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बुद्धानं पन सब्बगुणसम्पत्तिं देति अभिसेको विय रञ्ञो सब्बलोकस्सरियभावं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.136; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.79; - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *त्वं अज्जेव मुद्धनि अभिसेकं अभिसिञ्चयस्सु*, जा॰ अट्ठ॰ 5.24; - **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्साभिसेकेन समं बहूनच्छरियानहुं*, म॰ वं॰ 11.7; - **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिसेकारहोपि काणकुणिआदिदोसरहितो सकिं अभिसित्तो पुन अभिसेके आसं न करोति*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.79; - **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असोकरञ्ञा पेसितेन अभिसेकेन एकमासाभिसित्तो होति*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.54.

अभिसेक² पु॰, अभयगिरि में प्रतिष्ठित बुद्ध की प्रतिमा का नाम - रंसिचुळमणिञ्चेव अभिसेकव्हयस्स च, चू॰ वं॰ 38.66.

अभिसेकउदक नपुं॰, [अभिषेकोदक], अभिषेक का जल, अभिषेकार्थ जल - **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - अभिसेकउदकं आसित्तं, सूकरिमेवस्स अग्गमहेसिं करिंसु, जा॰ अट्ठ॰ 4.311.

अभिसेककरण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अभिषेककरण], पवित्रीकरण, राज्याभिषेक करना - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ततो पट्ठाय उदुम्बरभद्दपीठे निसीदापेत्वा दक्खिणावट्टसङ्खेन अभिसेककरणं पवत्तं*, जा॰ अट्ठ॰ 4.311.

अभिसेककिच्च नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अभिषेककृत्य], राज्याभिषेक का कार्य - **च्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एतिस्सा पादधोवनउदकेन सकलजम्बुदीपे राजूनं अभिसेककिच्चं करिस्सामीति चिन्तेत्वा पुन चिन्तेसि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.52-53.

अभिसेकगेहप्पवेसनमङ्गल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अभिषेकगृहप्रवेशनमंगल], अभिषेक-कक्ष या राज्याभिषेक के गृह में प्रवेश से सम्बन्धित मांगलिक अनुष्ठान - *दुतियदिवसे पन नन्दस्स राजकुमारस्स अभिसेकगेहप्पवेसनविवाहमङ्गलेसु वत्तमानेसु* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.100.

अभिसेकट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अभिषेकस्थान], राजा का अभिषेक किए जाने का स्थान - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ -

अभिसेकिकन्ति रञ्ञो अभिसेकट्ठाने छड्डितचीवरं विसुद्धि॰ 1.61.

अभिसेकद त्रि॰, राज्याभिषेक को कार्यान्वित करने वाला, राज्याभिषेक देने वाला – **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *महाब्रह्मा ठितो तत्थ रजतच्छत्तधारको, विजयुत्तरसङ्खेन सक्को च अभिसेकदो,* म॰ वं॰ 30.74.

अभिसेकमङ्गल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अभिषेकमङ्गल], अभिषेक का महोत्सव, अभिषेक का मांगलिक समारोह – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *नन्दकुमारं अभिसेकमङ्गलं न तथा पीळेसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.238; – **निद्देस** पु॰, चू॰ वं॰ के 72वें परिच्छेद का शीर्षक – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति ... महावंसे अभिसेकमङ्गलनिद्देसो नाम द्वासत्ततिमो परिच्छेदो,* चू॰ वं॰ (पृ॰) 322; – **पोक्खरणी** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अभिषेकमङ्गलपुष्करिणी], राज्याभिषेक जैसे मांगलिक उत्सवों पर प्रयोग में लाया जाने वाला सरोवर, वैशाली में स्थित लिच्छवी राजकुमारों का एक सरोवर – **णियं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अभिसेकमङ्गलपोक्खरणियं ओतरित्वा न्हत्वा पानीयं पातुकामाम्हिसामो'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.198.

अभिसेकमण्डप पु॰, राज्याभिषेक के महोत्सव के अवसर पर खड़ा किया गया मण्डप – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते तावदेव अभिसेकमण्डपं कत्वा राजधीतरं सब्बालङ्कारेहि अलङ्करित्वा उय्यानं आनेत्वा कुमारस्स अभिसेकं अकंसु,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 64.

अभिसेकारह त्रि॰, [अभिषेकार्ह], अभिषेक करने के लिए सर्वथा योग्य या उपयुक्त – **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभिसेकोति जेट्ठोपि न अभिसेकारहो आसं न करोति* ..., अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.79.

अभिसेकासा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अभिषेकाशा], अभिषेक की आशा – *पुब्बे अनभिसित्तस्स अभिसेकासा सा पटिप्पस्सद्धा,* अ॰ नि॰ 1(1).131.

अभिसेकित त्रि॰, अभिसेक का भू॰ क॰ कृ॰, अभिषिक्त, राज्याभिषिक्त, अभिषेक किया हुआ – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना अभिसेकेन अभिसेकितं महाराजं करोन्ति,* म॰ वं॰ टी॰ 305.

अभिसेकिय त्रि॰, [अभिषेक्य], अभिषेक के स्थान या अभिषेक की क्रिया के साथ जुड़ा हुआ – **यं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थूपचीवरिकञ्चेव, तथेव अभिसेकियं,* उत्त॰ वि॰ 664; तुल॰, अभिसेकिक.

अभिसेकोपकरण नपुं॰, [अभिषेकोपकरण], राज्याभिषेक के लिये आवश्यक उपकरण या सामग्री, राजा के राज्याभिषेक के लिए आवश्यक वस्तुएं – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिसेकोपकरणं परिवारविसेसितं,* म॰ वं॰ 11.32.

अभिसेचन नपुं॰, अभि + √सिच से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अभिषेचन], अभिषेक, राज्याभिषेक – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अग्गहिं मत्तिकापत्तं, इदं दुतियाभिसेचनं'न्ति,* थेरगा॰ 97; – **कम्म** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अभिषेचनकर्म], राज्याभिषेक का कार्य – **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपो सिञ्चं यजं उस्सेति यूपन्ति अभिसेचनककम्मं करोन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.269.

अभिसेचयुं अभि + √सिच का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, प्रेर॰, राज्याभिषेक कराया, राजपद पर अभिषिक्त किया – *मा मं रज्जाभिसेचयुं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.19; *चेता रज्जेभिसेचयुं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.277.

अभिसेति अभि + √सि का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अधिश्रयति], शरण ग्रहण करता है, आश्रय ग्रहण करता है, सहारा लेता है – *अभिसेतीतिपि पाठो ... अल्लीयति अपस्सयतीति अत्थो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182.

अभिसेवन नपुं॰, स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त [अधिसेवन], अनुसरण, अनुसेवन, लगाव, लाग लपेट – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुञ्जकम्मं विवज्जेत्वा पापकम्माभिसेवनं,* सद्धम्मो॰ 210.

अभिस्सवति अभि + √सु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिस्रवति], किसी दिशा की ओर बहता या प्रवाहित होता है, भीतर की ओर बहता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *तत्थ नज्जोति निन्ना हुत्वा सन्दमाना अन्तमसो कुन्नदियोपि गङ्गं अभिस्सवन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.187.

अभिहंसति अभि + √हंस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिहंसति/अभिहृष्यति], प्रहर्षित होता है, आनन्दमग्न होता है, प्रमुदित हो जाता है – *सोतेन सद्दं सुत्वा ... मनापं नाभिज्झति नाभिहंसति,* स॰ नि॰ 3(1).90; *नाभिहंसतीति न सामिसाय तुट्ठिया अभिहंसति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.182.

अभिहट त्रि॰, अभि + √हर का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिहृत], लाया गया, भेंट या उपहार के रूप में लाया गया – **टं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न एहिभद्दन्तिको, न तिट्ठभद्दन्तिको, नाभिहटं,* दी॰ नि॰ 1.150; *अभिहटन्ति पुरेतरं गहेत्वा आहटं भिक्खं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.264; *दिस्वा अभिहटं अग्गं,* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.373; – **टानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अभिहारानन्ति सतं वा सहस्सं वा उक्खिपित्वा अभिहटानं दायानं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.232; – **टे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको अभिहटे भत्ते पवारणाय भीतो हत्थं अपनेत्वा* ..., पाचि॰ अट्ठ॰ 83.

अभिहत त्रि., अभि + √हन का भू. क. कृ. [अभिहत], चोट खाया हुआ, प्रभावित, पीड़ित, विनाशित - **तो** प्र. वि., ए. व. - *ब्याधिना अभिहतो,* अ. नि. अट्ठ. 2.119; - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *ते जरायभिहता न सोभरे,* थेरीगा. 257; *जरायभिहताति जराय अभिहता,* थेरीगा. अट्ठ. 234; - **तानं** नपुं., ष. वि., ब. व. - *ताव तेनाभिहतानं नीवरणानं यथासकं ... अनुप्पत्तिसङ्खातं पहानं,* सु. नि. अट्ठ. 1.9.

अभिहनति / अभिहन्ति अभि + √हन का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभिहन्ति], मारता है, प्रहार करता है, आघात पहुंचाता है, घायल करता है, विनष्ट करता है, भगा देता है, तितर-बितर कर देता है, दूर करता है - *सा तं लेड्डुदण्डादीहि मुट्ठिआदीहि च अभिण्हं अभिहनति,* वि. व. अट्ठ. 174; - **न्ति** ब. व. - ... *"उच्छुं गहेस्सामी"ति उपगतमत्ते तं उच्छूं अभिहनन्ति,* पे. व. अट्ठ. 223; - **नन्ता** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ब. व. - *पासाणा निरन्तरा अञ्ञमञ्ञं अभिहनन्ता पतन्ति,* स. नि. अट्ठ. 1.155; - **नि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *दुग्गन्धो नासापुटं अभिहनि,* स. नि. अट्ठ. 1.275; - **निस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. - ... *सङ्गामं पविसित्वा पच्चामित्तानं कवचं अभिहनिस्सति भिन्दिस्सति ... सपत्तानं कवचं हनिस्सति,* जा. अट्ठ. 4.83; - **न्तुं** निमि. कृ. - ... *मम विसतेजो अञ्ञस्स तेजेन अभिहन्तुम्पि न सक्का,* जा. अट्ठ. 5.167; - **न्त्वा** पू. का. कृ. - *अभिविहच्चाति अभिहन्त्वा विधमित्वा,* इतिवु. अट्ठ. 79.

अभिहरति अभि + √हर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अभ्याहरति], **शा. अ.** (किसी की ओर) ले जाता है, **ला. अ. क.** उपहार के तौर पर ले जाता है, उपहार के रूप में देता है - *उय्यानपालो उय्याने नानप्पकारानि पुप्फफलानि गहेत्वा दिवसे दिवसे रञ्ञो अभिहरति,* जा. अट्ठ. 1.60; - **न्ति** ब. व. - *सब्बानि तानि उद्धं ओजं अभिहरन्ति,* स. नि. 1(2).78; *उद्धं ओजं अभिहरन्तीति ... आपोरसञ्च उपरि आरोपेन्ति,* स. नि. अट्ठ. 2.74; *सचे गामं पविट्ठस्स पातिसतेहिपि भत्तं अभिहरन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.194; - **रन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. - *गमने ताव पुरतो कायं अभिहरन्तो अभिक्कमति नाम,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).264; - **रन्तं** द्वि. वि., ए. व. - *अपरो भत्तं अभिहरन्तं भिक्खुं सल्लक्खेत्वा ...,* पाचि. अट्ठ. 83; - **न्तु** अनु., प्र. पु., ब. व. - *अन्नपानञ्च खज्जञ्च, खिप्पं अभिहरन्तु ते,* जा. अट्ठ. 7.103; - **रेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *पुरिसो रञ्ञो चक्कवत्तिस्स मधुं वा मधुपिण्डकं वा अञ्ञं वा उपायनं अभिहरेय्य,* मि. प. 154; - **रेय्याथ** म. पु., ब. व. - *तेन मे अभिहरेय्याथ यमस्स, पतिरूपं मञ्ञेय्याथा'ति,* म. नि. 1.302; - **अब्भिहासि** [अभ्यहार्षीत], अद्य., प्र. पु., ए. व. - *अचोदिता आसनमब्भिहासि,* जा. अट्ठ. 5.163; *अब्भिहासीति अभिहरि, अत्थरीति वुत्तं होति,* तदे.; - **अभिहासिं** उ. पु., ए. व. - *सुधाभिहासिं तुरितो महामुनि,* जा. अट्ठ. 5.393; - **हरि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *राजा अलङ्कतपटियत्तं कुमारं आहरापेत्वा तापसं वन्दापेतुं अभिहरि,* जा. अट्ठ. 1.65; - **हरिं** अद्य., उ. पु., ए. व. - *तत्थ सुधाभिहासिन्ति इमं सुधाभोजनं तुय्हं अभिहरिं,* जा. अट्ठ. 5.393; - **हरिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *थालिपाकसतानि भत्ताभिहारं अभिहरिंसु,* म. नि. 1.302; - **रितुं** निमि. कृ. - *न सक्का केनचि तव पण्णाकारत्थाय अभिहरितुन्ति अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.379; - **हारितुं** निमि. कृ. - *न ते सो अभिहारितुं'न्ति,* जा. अट्ठ. 4.379; - **हरितब्ब** त्रि., सं. कृ. - *भत्ताभिहारोति अभिहरितब्बंभत्तं,* दी. नि. अट्ठ. 2.202; स. नि. अट्ठ. 2.186; - **हरित्वा** पू. का. कृ. - *एको समंसकं रसं अभिहरित्वा "रसं गण्हथा"ति वदति,* पाचि. अट्ठ. 83; **ला. अ. ख.** (खाने-पीने में) साझीदार या भागीदार होता है, पकड़ने के लिए हांथ पसारता है, पास ले जाता है *पवारितो नाम असनं पञ्ञायति, भोजनं पञ्ञायति, हत्थपासे ठितो अभिहरति,* पाचि. 113; *अभिहरतीति हत्थपासब्भन्तरे ठितो गहणत्थं उपनामेति,* पाचि. अट्ठ. 82; *इमस्स वा अभिहरति,* स. नि. 3(1).227; *अभिहरतीति गहणत्थाय हत्थं पसारेति,* स. नि. अट्ठ. 3.232; **ला. अ. ग.** इधर-उधर से (उद्धरण) लाकर व्याख्यान कर देता है - *सचायं, भिक्खवे, पुग्गलो पञ्हं पुट्ठो समानो अभिहरति ...,* अ. नि. 1(1).228; *अभिहरतीति इतो चितो सुत्तं आहरित्वा अवत्थरति,* अ. नि. अट्ठ. 2.181.

अभिहरीयति अभि + √हर का वर्त., प्र. पु., ए. व., कर्म. वा. [अभिह्रियते], ले आया जाता है - *पञ्च च ... भत्ताभिहारो अभिहरीयति,* चूळव. 321; - **रियित्थ** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *अहेसुं सायं पातं भत्ताभिहारो अभिहरियित्थ,* दी. नि. 2.140.

अभिहार पु., [अभिहार], कहीं से लाया हुआ उपहार या भेंट, राशि, बन्धन, समूह, किसी के समीप जा पहुंचना - **रो** प्र. वि., ए. व. - *उपहारोभिहारेपि चयो बन्धनरासिसु,* अभि. प. 1128; *तत्थ दुविधो अभिहारो – वाचाय चेव कायेन च,* दी. नि. अट्ठ. 1.140; *अभिहारो पञ्ञायति,* पाचि. अट्ठ. 98; - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *अव्हानं नाभिनन्देय्य, अभिहारञ्च गामतो,* सु. नि. 715; *अभिहारं इमं दज्जा, अत्थधम्मानुसिट्ठियाति,*

जा॰ अट्ठ॰ 5.52; *अभिहारञ्च गामतोति सचे गामं पविट्ठस्स जातिसतेहिपि भत्तं अभिहरन्ति, तस्मिं नाभिनन्देय्य*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.194; – **हारे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुक्कटं अभिहारे च, गहणे इतरस्स हि*, विन॰ वि॰ 1315; – **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *न लाभी अभिहारानं*, स॰ नि॰ 3(1).228; *अभिहारानन्ति सतं वा सहस्सं वा उक्खिपित्वा अभिहटानं दायानं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.232; – **हारा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एत्थ द्वे अभिहारा वाचाभिहारो च पच्चयाभिहारो च*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).162; – **क** त्रि॰, [अभिहारक], दिये गये उपहार को स्वीकार करने वाला – **कस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महासुमनत्थेरो ताव 'अभिहारकस्स गमनं पठमं उपच्छिन्नं, तस्मा पवारेती'ति आह*, पाचि॰ अट्ठ॰ 84.

अभिहारेति अभि + √हर, प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिहारयति], **क.** उपहार के रूप में किसी के समीप ले आने या ले जाने देता है, अभिहरण के लिए प्रेरित करता है, अभिहरण कराता है, भिजवाता है – **रेसुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *हंसानं अभिहारेसुं, अग्गरञ्ञो पवासितन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.373; *अभिहारेसुन्ति उपनामेसुं*, तदे॰ – **रयिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *गेहतो निक्खमित्वान उय्यानमभिहारयिं*, थेरीगा॰ 146; *उय्यानमभिहारयिन्ति नक्खत्तकीळावसेन उय्यानं उपनेसिं*, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 153; – **रयुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *बहु अन्नञ्च पानञ्च, पण्डितस्साभिहारयुं*, जा॰ अट्ठ॰ 7.226; *तत्थ अभिहारयुन्ति पेसेसुं*, तदे॰; **ख.** क्रम में किसी स्थान पर पहुंचाता है, उपहार या दान देने हेतु प्रेरित करता है, विचरण करता है – **रेसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पिण्डाय अभिहारेसि, आकिण्णवरलक्खणो*, सु॰ नि॰ 410; *पिण्डाय अभिहारेसीति भिक्खत्थाय तस्मिं नगरे चरि*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.101; – **रये** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *स पिण्डचारं चरित्वा, वनन्तमभिहारये*, सु॰ नि॰ 713; *वनन्तमभिहारयेति अपपञ्चितो गिहिपपञ्चेन वनं एव गच्छेय्य*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.193; – **रेसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पण्डवं अभिहारेसि, एत्थ वासो भविस्सति*, सु॰ नि॰ 416; *पण्डवं अभिहारेसीति तं पब्बतं अभिरुहि*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.102; **ग.** पहुंचना, समीप में पहुंचा देना अथवा प्राप्त करा देना – **हारये** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अत्तना चोदयत्तानं, निब्बानमभिहारये*, थेरगा॰ 637; *निब्बानमभिहारयेति, अत्तानं निब्बानं अभिहरेय्य उपनेय्य*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.200.

अभिहित त्रि॰, अभि + √धा का भू॰ क॰ कृ॰ [अभिहित], कह दिया गया, बोला गया, घोषित किया गया, सम्बोधित किया गया, अभिव्यक्त – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भासितं लपितं वुत्ताभिहिताख्यातजप्पिता*, अभि॰ प॰ 755; – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न निरोधा'ति अन्तोगधनियमेहि वचनेहि अभिहितं* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 34; – **कत्ता** पु॰, [अभिहितकर्ता], क्रिया या आख्यात द्वारा कहा गया कर्ता – *तत्थ पुरिसो मग्गं गच्छति, अयं अभिहितकत्ता, आख्यातेन कथितत्ता*, सद्द॰ 3.691; – **कम्मं** नपुं॰, कर्म॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अभिहितकर्म], क्रिया द्वारा कहा गया कर्म – *"नागो मणिं याचितो ब्राह्मणेन"इच्चेवमादिसु बुद्धादयो अभिहितकम्मं नाम"*, सद्द॰ 3.693.

अभीत त्रि॰, अभि + √भी के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अभीत], निर्भय, भयमुक्त, निडर – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्छम्भी च अभीतो च, व्याकासिं सत्थुनो अहं*, थेरगा॰ 482; *अभयं सम्म ते दम्मि, अभीतो भण सारथि*, जा॰ अट्ठ॰ 6.24; – **नाद** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अभीतनाद], भयमुक्त व्यक्ति का गर्जन या दहाड़, निर्भय मनुष्य का ठहाका या अट्टहास – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ सीहनादन्ति सेट्ठनादं अभीतनादं अप्पटिनादं*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.175; – **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰, भयमुक्त या निडर चेहरे-मोहरे वाला – **पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभीतरूपो तत्थासिं, मिगराजा चतुक्कमो*, अप॰ 1.47; – **पं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभीतरूपं सीहंव, गरुळग्गंव पक्खिनं*, अप॰ 1.117; – **पा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰/ब॰ व॰ – *अभिरूपा विचराम अण्णवे'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.459.

अभीरु त्रि॰, [अभीरु], भयमुक्त, निडर – **रु** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *कतूपासनो अभीरु अच्छम्भी अनुत्रासी अपलायी*, स॰ नि॰ 1(1).118; – **नो** ब॰ व॰ – *सूरा ति अभीरुनो*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.177; – **जातिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अभीरुजातिक], निर्भय स्वभाव का – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा भीरुकजातिको भिक्खु खिप्पमेव तत्थ* ..., पारा॰ अट्ठ॰ 1.301; – **का** ब॰ व॰ – *सूराति अभीरुकजातिका*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.202.

अभुजिस्सभावकरण नपुं॰, मुक्ति – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तवणिज्जा अभुजिस्सभावकरणतो* ..., लीन॰(दी॰ नि॰ टी॰) 1.250.

अभुञ्जितब्ब त्रि॰, √भुज के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अभोक्तव्य], न खाने योग्य, अभक्ष्य, अखाद्य – **ब्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभोजनेय्यन्ति अभुञ्जितब्बं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.205; *नियतेतं अभुत्तब्बन्ति एतं नियतिवसेन तया अभुञ्जितब्बं भविस्सति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.118.

अभुत्त त्रि., √भुज के भू. क. कृ. का निषे. [अभुक्त], वह, जिसने खाया नहीं है, वह भोजन, जो अभी तक खाया नहीं गया है, वे विषयभोग या गतियां, जिनका अनुभव अभी तक नहीं किया गया है - **त्तेन** पु., तृ. वि., ए. व. - *नेन पवारणप्पहोनकं भोजनं अभुत्तेन कतं,* पाचि. अट्ठ. 85.

अभुत्तब्ब त्रि., √भुज के सं. कृ. का निषे. [अभोक्तव्य], न खाने योग्य, नहीं भोगने योग्य - **तब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *नियतेतं अभुत्तब्बन्ति एतं नियतिवसेन तया अभुञ्जितब्बन्ति भविस्सति,* जा. अट्ठ. 7.118.

अभुत्तावी त्रि., √भुज के पू. का. कृ. का निषे., **क.** वह, जिसने पूरी तरह तृप्त होकर नहीं खाया, छककर भोजन न किया हुआ व्यक्ति - **ना** पु., तृ. वि., ए. व. - *अभुत्ताविना कतन्ति यो"अलमेतं सब्ब"न्ति अतिरित्तं करोति, तेन पवारणप्पहोनकं भोजनं अभुत्तेन कतं,* पाचि. अट्ठ. 85; *अभुत्ताविना कतं होति,* पाचि. 114; **ख.** विषयभोगों का आनन्द न लेने वाला - **वी** पु., प्र. वि., ए. व. *अनिक्कीळितावी कामेसूति कामेसु अकीळिकीळो अभुत्तावी, अकतकामकीळोति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 1.39.

अभू क. स्त्री., वृद्धि का अभाव, हानि, **ख.** त्रि., पूर्वकाल में घटित न होने वाला / वाली - *अभूति वुड्ढिविरहिता कथा न भूतपुब्बाति वा अभू,* सद्द. 1.84.

अभूत त्रि., √भू के भू. क. कृ. का निषे. [अभूत], **क.** अभी तक अस्तित्व में न आया हुआ, वह, जो हुआ ही न हो, अजन्मा, **ख.** अवास्तविक, मिथ्या, अयथार्थ, वितथ, असत्य, मृषा - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अत्थि, भिक्खवे, अजातं अभूतं अकतं असङ्खतं,* इतिवु. 27; - **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अहं अभूतं न पस्सामि,* जा. अट्ठ. 5.350; - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सा अञ्ञाव अभूता अतच्छा,* जा. अट्ठ. 1.260-61; - **तं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *यं तथागतो वाचं जानाति अभूतं अतच्छं ...,* म. नि. 2.64; *अभूतन्ति अभूतत्थं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.79; - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *ये धम्मा अजाता अभूता असञ्जाता,* ध. स. 1045; - **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *त्वं अभूतं वत्वा वेदे च यञ्ञे च ब्रह्मणो च वण्णेसि,* जा. अट्ठ. 7.52; - **तेन** तृ. वि., ए. व., क्रिं. वि., अयथार्थ रूप में - *... अभूतेन अतच्छेन परं अब्भाचिक्खन्तो,* उदा. अट्ठ. 211; *अभूतेनाति-वादञ्च जातं,* महानि. 44; - **तक्खान** नपुं., कर्म. स. [अभूताख्यान], असत्य का कथन, जो वास्तव में नहीं है उसका कथन *मुसावादो अभूतब्यक्खानसंवत्तनिको,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.48; - **गुणकथा** स्त्री., तत्पु. स. [अभूतगुणकथा], चापलूसी भरी बात - **थं** द्वि. वि., ए. व. - *"यंनूनाहं एतस्स अभूतगुणकथं कथेत्वा मंसं खादेय्य"न्ति चिन्तेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 2.364; - **तब्भाव** पु., [अभूततद्भाव], जो पहले विद्यमान न हो उसका होना, बनना या बदलना - **वे** सप्त. वि., ए. व. - *कत्तुतो अभूततब्भावे आयो होति बहुलं,* ..., मो. व्या. 5.9; - **पुब्ब** त्रि., [अभूतपूर्व], वह, जो पहले न हुआ हो या जिससे आगे कोई भी न बढ़ा हो, अद्भुत - **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तत्थ अब्भुतोति अभूतपुब्बो,* जा. अट्ठ. 6.125; - **ब्बा** स्त्री., प्र. वि., ए. व., अद्वितीय नारी - *पुरिसा हि इत्थियो, इत्थियो वा पुरिसा अभूतपुब्बा नाम नत्थि,* ध. प. अट्ठ. 1.186; - **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अभूतपुब्बं भूतन्ति अब्भुतं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.2; - **तब्भक्खानसंवत्तनिक** त्रि., [अभूताख्यानसंवर्तनिक], जो वास्तव में नहीं है, उसके कथन में परिणत होने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *मुसावादो अभूतब्भक्खानसंवत्तनिको,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.48; - **भाव** पु., [अभूतभाव], पूर्वकाल में अविद्यमानता, पहले विद्यमान नहीं रहना - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *... तस्स अभूतभावं ञत्वा समग्गा हुत्वा अनुक्कमेन तमेव आवासं पच्चागमिंसु,* पे. व. अट्ठ. 12; - **वेन** तृ. वि., ए. व. - *यं अभूतं, तं अभूतभावेनेव, अपनेतब्बं,* दी. नि. अट्ठ. 1.50; - **वाद** पु., [अभूतवाद], मिथ्या कथन, असत्य कथन - **देन** तृ. वि., ए. व. - *नो अभूतवादेनाति,* मि. प. 168; - **वादी** त्रि., [अभूतवादिन्], असत्यवादी, अपनी कही बात को पूरा न करने वाला - **दी** पु., प्र. वि., ए. व. - *अभूतवादी निरयं उपेति, यो वापि कत्वा न करोमि चाह,* ध. प. 306; - **विपाक** पु., [अभूतविपाक], निरर्थक विपाक, अवास्तविक विपाक - **का** प्र. वि., ब. व. - *द्वेधाविपाकाति भूतविपाका वा अभूतविपाका वा,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.299; - **ताकार** पु., कर्म. स. [अभूताकार], अयथार्थ स्वरूप, अवास्तविक प्रकृति - **रेन** तृ. वि., ए. व. - *... मायामरीचिआदयो विय अभूताकारेन अग्गहेतब्बो भूतड्डो,* कथा. अट्ठ. 108; - **तारोचन** नपुं., तत्पु. स. [अभूतारोचन], मिथ्या या अवास्तविक कथन, मिथ्या घोषणा - **ने** सप्त. वि., ए. व. - *अभूतारोचने तस्स, गरुकापत्ति दीपिता,* उत्त. वि. 445.

अभूमि स्त्री., [अभूमि], अनुपयुक्त स्थान या स्थल, अपात्र, अनुचित क्षेत्र - **मि** प्र. वि., ए. व. - *इतो परं तुम्हं अभूमि,* दी. नि. अट्ठ. 201; - **मिं** द्वि. वि., ए. व. - *अभूमिं तात सेवसि,* जा. अट्ठ. 3.223.

अभेज्ज त्रि., √भिद के सं. कृ. का निषे. [अभेद्य], **शा. अ.** नहीं टूटने या फूटने योग्य, अविभाज्य, अखण्ड्य, **ला. अ.** विश्वासपात्र (मित्र), किसी के भी द्वारा विलग न करने योग्य (मित्र), फूट न डालने योग्य – **ज्जं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *वजिरस्स नत्थि किञ्चि अभेज्जं मणि वा पासाणो वा*, अ. नि. 1(1).147; – **ज्जो** पु., प्र. वि., ए. व. – *विस्सासो थिरो अहोसि केनचि अभेज्जो*, जा. अट्ठ. 3.8; **ज्जा**' स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *निच्चा धुवा सस्सता अच्छेज्जा अभेज्जा अक्खया'ति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).299; – **ज्जा**² ब. व. – *अभेज्जास्स होन्ति परिसा*, दी. नि. 3.129; – **कवच-जालिका** स्त्री., कर्म. स., अभेद्य कवच – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *इध, महाराज, पुरिसो सङ्गामसूरो अभेज्जकवचजालिकं सन्नय्हित्वा सङ्गामं ओतरेय्य*, मि. प. 190; – **कायता** स्त्री., भाव., शरीर का अभेद्य रहना – **ताय** तृ. वि., ए. व. – *अभेज्जकायताय परुपक्कमेन चम्मच्छेदं कत्वा* ..., अ. नि. अट्ठ. 1.341; – **चित्त** त्रि., ब. स. [अभेद्यचित्त], अविकृत चित्त वाला, वह व्यक्ति, जिसके चित्त या मन को भ्रष्ट या प्रदुष्ट न किया जा सके – **त्तानं** ष. वि., ब. व. – *अनोसक्कनं समग्गभावेन अभेज्जचित्तानं ... थिरो अहोसि*, जा. अट्ठ. 3.6; – **परिवार** त्रि., ब. स. [अभेद्यपरिवार], वह, जिसके परिवार या अनुगामियों को भिन्न या विलग न किया जा सके, एकता के सूत्र से बंधे हुए समूह वाला – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अभेज्जपरिवारो सो जायते थिरमानसो*, प. ग. दी. 97(रो.); – **परिस** त्रि., ब. स. [अभेद्यपरिषद], एकताबद्ध अनुयायियों वाला, वह, जिसके अनुयायियों एवं साथियों में भेद न डाला जा सके – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अभेज्जपरिसो होति, अभेज्जास्स होन्ति परिसा, ब्राह्मणगहपतिका*, दी. नि. 3.129; *अभेज्जपरिसोति अभिन्दितब्बपरिसो*, दी. नि. अट्ठ. 3.109; – **परिसता** स्त्री., भाव., अनुयायियों या साथियों की एकजुटता – **ता** प्र. वि., ए. व. – *अभेज्जपरिसता आनिसंसो*, दी. नि. अट्ठ. 3.109; *लोकपियता नेलता अभेज्जपरिसता अच्छम्भिता*, खु. पा. अट्ठ. 23; – **परिस-पञ्ह** पु., मि. प. के एक खण्ड का शीर्षक, जिसमें बुद्ध के भिक्षुसंघ की अभेद्यता या एकजुटता के विषय में राजा मिलिन्द का प्रश्न है, मि. प. 159; – **मन्त** त्रि., ब. स., वह, जिसकी गुप्त बातें बाहर प्रकट न हो सकें – **तस्स** पु., ष. वि., ए. व. – *अमच्चबलन्ति अभेज्जमन्तस्स सूरस्स ... अत्थिता*, जा. अट्ठ. 5.117; – **वरसूर** पु., [अभेद्यवरशूर], विश्वासी एवं उत्तम वीर – **रा** प्र. वि., ब. व. – *रज्जं गहेतुं समत्था सहस्समत्ता अभेज्जवरसूरा महायोधा होन्ति*, जा. अट्ठ. 1.255; – **रूप** त्रि., ब. स. [अभेद्यरूप], विश्वस्त चरित्र वाला, भरोसेमन्द स्वभाव से युक्त – **पेहि** पु., तृ. वि., ब. व. – *अभेज्जरूपेहि सुचीहि मन्तिभि*, जा. अट्ठ. 3.280; – **समाधि** पु., [अभेद्यसमाधि], शान्त समाधि, निर्विकार समाधि, अविचलित समाधि – **धि** प्र. वि., ए. व. – *समग्गभावेन मनसो अभेज्जो, अभेज्जसमाधि*, जा. अट्ठ. 3.6; – **सहाय** पु., [अभेद्यसहाय], विश्वासपात्र मित्र, कभी साथ न छोड़ने वाला साथी – **यो** प्र. वि., ए. व. – *सद्धिं अभेज्जसहायो हुत्वा यावजीवं समग्गवासं वसि*, जा. अट्ठ. 3.43; – **हदय** त्रि., ब. स. [अभेद्यहृदय], एकजुटता के भाव से भरपूर चित्त वाला, निष्ठावान हृदय वाला – **येहि** पु., तृ. वि., ब. व. – ... *मन्तीहि अभिज्जहदयेहि सुसङ्गहितो सिरितो न धंसति*, जा. अट्ठ. 3.280.

अभेदनमुख नपुं., खुला निर्गम-द्वार, जो काट कर न बनाया गया हो – **खानि** प्र. वि., ब. व. – *तस्सस्सु गण्डस्स नव वणमुखानि नव अभेदनमुखानि*, अ. नि. 3(1).200; *अभेदनमुखानीति न केनचि भिन्दित्वा कतानि*, अ. नि. अट्ठ. 3.264.

अभेद पु., केवल स. पू. प. के रूप में ही प्राप्त [अभेद], भेद का अभाव, अभिन्नता, समानता – **दोपचार** पु., औपचारिक रूप में या लाक्षणिक अर्थ में अभेद – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *अभेदोपचारेन पन अक्खरस्स खत्तियसद्दस्सापि सेट्ठताति*, लीन. (दी. नि. टी.) 3.44.

अभेदि √भिद का अद्य., प्र. पु., ए. व., **क.** कर्तृ. वा., टूट गया, नष्ट हो गया – ... *भिक्खु न गिलितबळिसो मारस्स अभेदि* ..., स. नि. 2(2).163; **ख.** कर्म. वा., तोड़ दिया गया, नष्ट किया गया – *अभेदि कायो निरोधि सञ्ञा*, उदा. 178; *तत्थ अभेदि कायोति सब्बो भूतुपादायपभेदो चतुसन्ततिरूपकायो भिज्जि*, उदा. अट्ठ. 350

अभेसज्ज नपुं., [अभैषज्य], औषधि या दवा से भिन्न कोई दूसरी वस्तु, दवा के रूप में काम न आने वाला – **ज्जं** प्र. वि., ए. व. – *यं किञ्चि अभेसज्जं पस्सेय्यासि तं आहरा'ति*, महाव. 358.

अभोग पु., [अभोग], गलत प्रयोग, अनुचित नियोजन – **गेन** तृ. वि., ए. व. – ... *सचे अदेसे वा निक्खिपति अभोगेन वा भुञ्जति विस्सज्जेति वा* ..., पारा. 370; *न*

अभोगेनाति ... अपरिभोगेन न परिभुञ्जितब्बो, पारा॰ अट्ठ॰ 2.261; *अपरिभोगेनाति अयुत्तपरिभोगेन,* सारत्थ॰ टी॰ 2.380.

अभोजन नपुं॰, [अभोजन], भोजन नहीं करना, नहीं खाना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजज्जितन्ति अभोजनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).186; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स अभोजनेन सुद्धिकामो हुत्वा तं न भुञ्जति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.266.

अभोजनीय / अभोजनेय्य त्रि॰, √भुज के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अभोजनीय], अभोज्य, अखाद्य, खाने के अयोग्य, भोजन के लिए सर्वथा निषिद्ध, अपवित्र – **य्यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गाथाभिगीतं मे अभोजनेय्यं,* सु॰ नि॰ 81; *अभोजनेय्यन्ति भुञ्जनारहं न होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.119; – **य्यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहुम्पि भुञ्जेय्य अभोजनेय्यं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.15; *अभोजनेय्यन्ति भुञ्जितुं अयुत्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.17.

अभ्यावहरण / अज्झोहरण नपुं॰, [अभ्यवहरण], भोजन करना, खाना, गले के नीचे ले जाना – **णेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भुज पालनाभ्यावहरणेसु,* सद्द॰ 2.471.

अभ्यास¹ पु॰, [अभ्यास], बार बार दुहराना, पुनरावृत्ति प्रशिक्षण, शिक्षा, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त, सराभ्यास आदि के अन्त॰, द्रष्ट॰ (आगे).

अभ्यास² पु॰, [अभ्याश], समीपता, निकटता, आसन्नता, नजदीकी, पड़ोस – *समीपं निकटासन्नो पकट्ठाभ्याससन्तिके,* अभि॰ प॰ 705.

√**अम¹** √अमगमने [अं गतौ], जाने के अर्थ में प्रयुक्त एक धातु – *अम दम हम्म मीम छम गतिम्हि,* सद्द॰ 2.412; *अम याते ...,* धा॰ मं॰ 55; *अम गमने,* मो॰ धा॰ 192; *हन-जन-भा-रि-खनु-अम-वे-धे-धा-सि-कि-हि इच्चेवमादीहि धातूहि नु-णु-तु इच्चेते पच्चया होन्ति,* क॰ व्या॰ 673.

√**अम²** रोग के अर्थ में प्रयुक्त एक धातु – *अम रोगे, गेति अमयति, अन्धो,* सद्द॰ 2.558; *अमरोगतादिसु,* धा॰ मं॰ 139; *खाद-अम-गमु इच्चेतेसं धातूनं खन्ध-अन्ध-गन्धादेसा होन्ति कप्पच्चयो च,* क॰ व्या॰ 666.

अमकस त्रि॰, ब॰ स॰ [अमशक], मच्छड़रहित मच्छड़ों से मुक्त – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते हि सोत्थिं गमिस्सन्ति, कच्छे वामकसे मगा,* स॰ नि॰ 1(1).62; *ते अमकसे पब्बतकच्छे वा नदीकच्छे वा मगा विय सोत्थिं गमिस्सन्तीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98.

अमक्ख पु॰, [अम्रक्ष], उपेक्षा या तिरस्कार का अभाव, अनिन्दा, अनवज्ञा – **क्खो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमक्खो च अपळासो च ...,* अ॰ नि॰ 1(1).116.

अमक्खी त्रि॰, अनिन्दक, निन्दा न करने वाला, अवज्ञा या उपेक्षा न करने वाला – **क्खी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यम्पावुसो भिक्खु अमक्खी होति अपळासी,* म॰ नि॰ 1.136; *भिक्खु अमक्खी होति, मक्खविनयस्स वण्णवादी,* अ॰ नि॰ 3(2).142.

अमक्खिकमधु नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अमक्षिकमधु], मधुमक्खियों से रहित मधु – **धुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमक्खिकमधुं पस्सामि तं खादन्तो नत्थी'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.50.

अमक्खित त्रि॰, √मक्ख के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, नहीं लीपा-पोता गया, दूषित न किया गया, अकलुषित, अभ्रष्ट, अपवित्रता से रहित, शुद्ध, असंलिप्त – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विसदोव निक्खमति अमक्खितो उदेन अमक्खितो सेम्हेन अमक्खितो रुहिरेन अमक्खितो केनचि असुचिना सुद्धो विसदो,* म॰ नि॰ 3.165.

अमक्खेत्वा √मक्ख के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, न बिगाड़ कर, विनाश न करके, कलुषित या दूषित न करके, अशुद्ध न करके – *व्यञ्जनं अमक्खेत्वा तया कथितगाथानं पन मय्हं अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.242; *व्यञ्जनं अमक्खेत्वा सुट्ठु भासितानं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.243.

अमक्खेन्त √मक्ख के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, विकृत न करते हुए, विनष्ट न करते हुए, दूषित न करते हुए – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुब्बापरञ्च अमक्खेन्तो आचरियेहि दिन्ननये ठत्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).151; *अमक्खेन्तोति अविनासेन्तो,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(2).176.

अमग्ग पु॰ [अमार्ग], अनिर्धारित मार्ग, कुमार्ग, अनुचित मार्ग – **ग्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमग्गेन पथं मापेत्वा याम,* जा॰ अट्ठ॰ 5.370; – **ग्गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मग्गामग्गववत्थानेन अमग्गे मग्गसञ्ञाय,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.8; – **कुसल** त्रि॰, [अमार्गकुशल], वह, जो मार्ग के विषय में निपुण न हो, मार्ग का अज्ञाता – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको पुरिसो अमग्गकुसलो ... तमेनं सो अमग्गकुसलो पुरिसो अमुं मग्गकुसलं पुरिसं मग्गं पुच्छेय्य,* स॰ नि॰ 2(1).99.

अमङ्कु त्रि॰, [अमङ्कु], घबराहट-रहित, पछतावारहित, निराशा से मुक्त, विशारद – **भाव** पु॰, [अमङ्कुभाव], निर्भीकता, तेजस्वी होना – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविप्पटिसारो*

उपदहाब्बोति अमङ्कुभावो उपमेतब्बो, अ. नि. अट्ठ. 3.61; – **भूत** त्रि., निराशा से मुक्त हो चुका, पश्चात्ताप से रहित हो चुका – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *विसारदो उपसङ्कमति अमङ्कुभूतो,* अ. नि. 2(1).35; *अमङ्कुभूतोति न नित्तेजभूतो,* अ. नि. अट्ठ. 3.20; **ते** द्वि. वि., ब. व. – *अभीते अमङ्कुभूते योनके दिस्वा ...,* मि. प. 18.

अमच्च पु., [अमात्य], **शा. अ.** सुख और दुख में सदा साथ रहने वाला, **ला. अ.** राजा का सहचर या अनुयायी, राजा का मन्त्री, राजा के साथ रहने वाला – **च्चो** प्र. वि., ए. व. – *तस्सेको अमच्चो अन्तेपुरे ... अपरभागे पाकटो जातो,* जा. अट्ठ. 1.254; पे. व. अट्ठ. 82; – **च्चा** ब. व. – *सुखदुक्खेसु अमा सह भवाति अमच्चा, सहायसदिसा उपट्ठाका,* इतिवु. अट्ठ. 219; *अमच्चा ञातिसङ्घा च, ये चस्स अनुजीविनो,* अ. नि. 1(1).178; *ब्राह्मणगहपतिका नेगमजानपदा ... अमच्चा पारिसज्जा राजानो भोगिया कुमारा,* दी. नि. 3.133; चूळव. 245; पे. व. अट्ठ. 24; अ. नि. 1(1).178; जा. अट्ठ. 1.254; दी. नि. 1.121; अ. नि. 1(1).167; – **च्चं** द्वि. वि., ए. व. – *राजा परिग्गण्हन्तो ... ञत्वा तं अमच्चं पक्कोसापेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.254; ... *विस्सज्जेत्वा सब्बकम्मिकं अमच्चं पक्कोसापेत्वा ...,* पे. व. अट्ठ. 6.9; – **च्चे** द्वि. वि., ए. व. – *मित्तामच्चेति मित्ते च कम्मकरे च,* सु. नि. अट्ठ. 2.152; – **च्चेहि** तृ. वि., ब. व. – *सहनन्दी अमच्चेहि आरा संयोजनक्खया,* इतिवु. 53; *वेदेहो सहमच्चेहि उमङ्गेन गमिस्सती'ति,* जा. अट्ठ. 6.272; – **च्चेसु** सप्त. वि., ब. व. – *तेसुपि अमच्चेसु एवं बन्धित्वा नीयमानेसु ...,* जा. अट्ठ. 1.256; – **कुल** नपुं., तत्पु. स. [अमात्यकुल], मन्त्रियों का कुल या वंश – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *सोपि तत्थेव ... एकस्मिं अमच्चकुले निब्बत्तो ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).190; – **गणपरिवुत** त्रि., [अमात्यगणपरिवृत], मन्त्रियों के समूह के साथ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सो एकम्पि पटिसत्तुं अपस्सन्तो ... अमच्चगणपरिवुतो ...,* जा. अट्ठ. 1.255; – **गणना** स्त्री., [अमात्यगणना], मन्त्रियों की गिनती या गणना – **नाय** तृ. वि., ए. व. – *तेसं छ येव जना अमच्चगणनाय गणीयन्ति ...,* मि. प. 122; – **जन** पु., [अमात्यजन], सुख-दुख में सदा साथ रहने वाले लोग, मन्त्री लोग *सनेगमजानपदभटबल-ब्राह्मणगहपतिकअमच्चजनमज्झे ...,* मि. प. 143; – **परिवारित** त्रि., [अमात्यपरिवृत], मन्त्रियों से घिरा हुआ, मन्त्रिगण से युक्त – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *चक्कवत्ती यथा राजा, अमच्चपरिवारितो,* थेरगा. 1244; – **पुत्त** पु., [अमात्यपुत्र], मन्त्री का पुत्र – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *एको किर अमच्चपुत्तो गामियेहि परिवारितो गाममज्झे ठत्वा कम्मं करोति,* स. नि. अट्ठ. 2.117; – **बल** नपुं., [अमात्यबल], मन्त्री का बल – **लं** प्र. वि., ए. व. – *अमच्चबलञ्च दीघावु ततियं वुच्चते बलं,* जा. अट्ठ. 5.116; – **मण्डल** नपुं., [अमात्यमण्डल], मन्त्रिमण्डल, मन्त्रियों का समूह – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *अमच्चमण्डलं रज्जं, फीतं अन्तेपुरं मम,* चरिया. 405.

अमच्चुधेय्य नपुं., मच्चुधेय्य का निषे. [अमृत्युधेय], वह, जो मृत्यु का क्षेत्र नहीं है, अमर्त्यता का क्षेत्र, निर्वाण, मृत्यु की पकड़ के बाहर वाला – **य्यं**[1] प्र. वि., ए. व. – *अमच्चुधेय्यं नव लोकुत्तरधम्मा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).164; – **य्यं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *अमच्चुधेय्यं पुच्छन्ति, ये जना पारगामिनो,* स. नि. 1(1).145; *अमच्चुधेय्यन्ति मच्चुनो अनोकासभूतं निब्बानं,* स. नि. अट्ठ. 1.164; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *अकुसला मच्चुधेय्यस्स अकुसला अमच्चुधेय्यस्स,* म. नि. 1.290.

अमच्छरी त्रि., [अमत्सरिन्], मात्सर्य भाव से सर्वथा विमुक्त, अद्वेषी, मात्सर्यविरहित उदार, अकृपण – **री** पु., प्र. वि., ए. व. *पतिलीनो अकुहको, अपिहालु अमच्छरी,* सु. नि. 858; *अमच्छरीति सब्बमच्छरियानं बोधिमूलेयेव सुप्पहीनत्ता मच्छेररहितो,* इतिवु. अट्ठ. 282; – **च्छरिं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *पुत्तं लभेथ वरदं याचयोगं अमच्छरिं,* जा. अट्ठ. 7.231; – **रिनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अनिस्सुकिनी च होति, अमच्छरिनी च, सद्धादेय्यं न विनिपातेति,* अ. नि. 2(1).132; – **रिता** स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व. [अमात्सर्यता], अमात्सर्य का भाव, द्वेष का अभाव, ईर्ष्या एवं डाह का अभाव, उदारता का भाव – *कतञ्ञुता कतवेदिता अमच्छरिता चागवन्तता सीलवन्तता उजुता ...,* खु. पा. अट्ठ. 24.

अमच्छरिय नपुं., [अमात्सर्य], अमात्सर्य, अद्वेष, ईर्ष्या एवं डाह का अभाव, कृपणता का अभाव – **यं** प्र. वि., ए. व. – *अनिस्सा च अमच्छरियञ्च ...,* अ. नि. 1(1).116.

अमज्ज त्रि., [अमद्य], मद्य-विरहित, नशा-रहित, नशीलेपन से मुक्त – **ज्जं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अमज्जं अरिट्ठं पिवति,* पाचि. 150; *अमज्जं अरिट्ठन्ति यो अरिट्ठो मज्जं न होति,* पाचि. अट्ठ. 115; – **प** त्रि., [अमद्यप], मद्य न पीने

वाला, अमद्यपायी, वह, जो मदिरा या सुरा न पीता हो – **पो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कच्चि अमज्जपो तात ...*, जा. अट्ठ. 6.28; *अमज्जपो अहं पुत्त*, तदे.; – **पा** ब. व. – *अमज्जपा मज्जरहा पिवन्तु*, जा. अट्ठ. 7.225; – **पायक** त्रि., [अमद्यपायक], मद्य न पीने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अनुसूयको अहं देव, अमज्जपायको अहं*, जा. अट्ठ. 2.160; – **सञ्ञी** त्रि., मद्य की संज्ञा न रखने वाला, 'यह नशीलेपन से मुक्त है', इस प्रकार से समझने वाला – **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. – *अमज्जे अमज्जसञ्ञी अनापत्ति*, पाचि. 150.

अमणि त्रि., ब. स. [अमणि], मणिरहित, मणि से भिन्न – **णिं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *यथा मायाकारो अमणिंयेव उदकं मणिं कत्वा दस्सेति*, ध. स. अट्ठ. 334.

अमण्डनसील त्रि., [अमण्डनशील], वह, जो मण्डन या विभूषण का प्रेमी न हो अथवा शौकीन मिज़ाज़ का न हो, सरल, सादगी प्रिय – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अचपलोति अमण्डनसीलो*, जा. अट्ठ. 7.188.

अमण्डना स्त्री., प्र. वि., ए. व. [अमण्डना], अविभूषिता, अनलंकृता वह, जो अनलंकृत या विभूषित न हो, साज-सजावट से रहित – *अमण्डना अविभूसना वण्णस्स परिपन्थो*, अ. नि. 3(2).112.

अमण्डित त्रि., [अमण्डित], वह, जो विभूषित न हो, अनलंकृत, अलंकरण-विरहित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *रम्मरूपन्ति अनञ्जितं अमण्डितं*, जा. अट्ठ. 7.367; – **रूप** त्रि., ब. स. [अमण्डितरूप], अलङ्करणों से रहित रूप वाला, सजावट या प्रसाधन से रहित रूप वाला – **पा** पु., प्र. वि., ब. व. – *दुम्मक्खरूपाति अनञ्जितक्खा अमण्डितरूपा लूखसङ्घाटिधरा*, जा. अट्ठ. 4.267.

अमत नपुं., [अमृत], **शा. अ.** मृत्यु से मुक्त करा देने वाला, देवताओं का प्रिय पेय, अमृतत्व-प्रदायक पेय, सुधा, पीयूष – **तं** प्र. वि., ए. व. – *पीयूसममतं सुधा*, अभि. प. 25; *अपवग्गे च सलिले सुधायं अमतं मतं*, अभि. प. 975; *पुन चपरं, महाराज, अमदो अमतं*, मि. प. 291; *सुगम्भीरमवितथं मधुरं अमतं विय*, सद्धम्मो. 530; – **तेन** तृ. वि., ए. व. – *भगवता धम्मिया कथाय अमतेन अभिसित्तो'ति*, स. नि. 2(1).2; *अमतेनेव अभिसित्तहदयो अत्तमनो विप्पसन्निन्द्रियो निहतमानो हुत्वा ...*, सु. नि. अट्ठ. 1.140; – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *अमतम्हि विज्जमाने, किं तव पञ्चकटुकेन पीतेन*, थेरीगा. 505; **ला. अ. क.** मुक्ति, निर्वाण, मृत्यु की पकड़ के बाहर की अवस्था, मृत्यु से मुक्ति की अवस्था – *असङ्खतं सिवममतं सुदुद्दसं*, अभि. प. 7; *अपवग्गे च सलिले सुधायं अमतं पदं*, अभि. प. 975; – **तं**[1] प्र. वि., ए. व. – *ओदहथ, भिक्खवे, सोतं, अमतमधिगतं*, महाव. 12-13; *अमतं अज्जापि च लभनीयमिदं*, थेरीगा. 515; *खेमं अमतगामिनन्ति एत्थ खेमन्तिपि अमतन्तिपि निब्बानस्सेव नामं*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.157; *अमतमधिगतन्ति अमतं निब्बानं मया अधिगतन्ति दस्सेति*, महाव. अट्ठ. 236; – **तं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *यो पठमं अमतं अधिगच्छति ...*, महाव. 45; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *सत्था नो अमतस्स कोविदो*, थेरगा. 21; *भावेति मग्गं अमतस्स पत्तिया'ति*, थेरगा. 35; – **ते** सप्त. वि., ए. व. – *तस्मिञ्चे अमते अक्खाते ...*, स. नि. 1(1).223; **ला. अ. ख.** जल, पानी – *अपवग्गे च सलिले सुधायं अमतं मतं*, अभि. प. 975; *नीरञ्च केबुकं पानि अमतं एलमेव च*, सद्द. 2.408; **2.** त्रि., [अमृत], अमृत के समान मधुर एवं उत्तम – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सच्चं वे अमता वाचा*, सु. नि. 455; *अमताति अमतसदिसा सादुभावेन ... निब्बानामतपच्चयत्ता वा अमता*, सु. नि. अट्ठ. 2.114.

अमतंसक पु., चौबीस बहुमूल्य रत्नों में से एक – **को** प्र. वि., ए. व. – *अमतंसको, पियको, ब्राह्मणी चाति चतुब्बीसति मणि नाम*, उदा. अट्ठ. 81.

अमतकभाव पु., भाव. [अमृतकभाव], अभी तक मृत्यु प्राप्त न होने की अवस्था – **वो** प्र. वि., ए. व. – *इमिना कारणेन तव मतकभावो वा अमतकभावो वा दुज्जानो'ति वत्वा ...*, जा. अट्ठ. 1.467; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *अयं मम अमतकभावं जानाती'ति उट्ठाय दण्डं खिपि*, जा. अट्ठ. 1.468.

अमतगत त्रि., [अमृतगत], परम सुख तथा अमृतत्व की अवस्था (निर्वाण) को प्राप्त कर चुका व्यक्ति – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अमतगतो अमतप्पत्तो निब्बानगतो निब्बानप्पत्तो*, महानि. 15; *अमतगतोति मरणरहितं निब्बानं मग्गेन गतो*, महानि. अट्ठ. 65.

अमतगामी त्रि., [अमृतगामिन्], निर्वाण या मुक्ति की ओर जाने वाला, निर्वाणगामी – **मी** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरियो अट्ठङ्गिको अमतगामी*, थेरीगा. 222; – **मिनं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *सचे मग्गं अनुबुद्धं, खेमं अमतगामिनं*, स. नि. 1(1).145; *विवेकप्पटिसंयुत्तं खेमं अमतगामिनिं*, अ. नि. 2(2).44; – **मिनो** पु., प्र. वि., ब. व. – *... खेमगामिनो च*

अमतगामिनो चाति लद्धिवसेन गहिता, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.157; **मिनं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अट्ठङ्गिको च मग्गानं, खेमं अमतगामिनन्ति,* म॰ नि॰ 2.186.

अमतग्ग त्रि॰, [अमताग्र], वह, जिसके प्रारम्भ के बारे में सोचा नहीं जा सकता है, वह, जिसका आरम्भ अज्ञात हो या विदित न हो, अविदिताग्र - **ग्गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वस्ससतं ... अनुगन्त्वापि अमतग्गो अविदितग्गो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.139.

अमतघटिका स्त्री॰, [अमृतघटिका], **शा॰ अ॰** अमृत का घट, पीयूषघट, सुधाकलश; **ला॰ अ॰** धर्मदेशना - **कायं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतघटिकायं धम्मकटमत्तो, कतपदं झानानि ओचेतुं,* थेरगा॰ 199; *अमतघटिकायं मम अमतघटे तहं तहं वस्सन्ते अमतमधिगतं अहमनुसासामि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.349.

अमतट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अमृतस्थान], वह स्थान, जहां कोई मरा नहीं हो - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमेसञ्हि सत्तानं पथवियं निपज्जित्वा अमतट्ठानं नाम नत्थी'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.304.

अमतदस त्रि॰, [अमृतदृक्], निर्वाण को देखने वाला - **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं अहं अमतदसम्हि देवता,* वि॰ व॰ 147; *अमतदसम्हीति अमतदसा निब्बानदस्साविनी अम्हि,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 67.

अमतदस्सी त्रि॰, निर्वाण को देखने वाला, निर्वाणदर्शी - **स्सी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उत्तमे दमथे दन्तो, अमतदस्सी भविस्सति,* अप॰ 1.22.

अमतदुन्दुभि पु॰, [अमृतदुन्दुभि], अमृत की भेरी, निर्वाण के लाभ का आवाज करने वाला नगाड़ा या बड़ा ढोल - **भी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतदुन्दुभी तिपि नं धारेहि,* म॰ नि॰ 3.113; **भिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आहञ्छं अमतदुन्दुभि'न्ति,* म॰ नि॰ 1.230; *आहञ्छं अमतदुन्दुभि'न्ति धम्मचक्कपटिलाभाय अमतभेरिं पहरिस्सामीति गच्छामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).91.

अमतद्दस त्रि॰, [अमृतद्दश], अमृतपद का दर्शन करने वाला, निर्वाण का साक्षात्कार करने वाला - *अरहा दक्खिणेय्योम्हि, तेविज्जो अमतद्दसो,* थेरगा॰ 296; *अमतद्दसो ति निब्बानस्स दस्सावी,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 21; ... *तथागते निट्ठङ्गतो अमतद्दसो अमतं सच्छिकत्वा इरियतीति,* अ॰ नि॰ 2(2).150; *अमतं अद्दसाति अमतद्दसो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.145.

अमतद्वार नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अमृतद्वार], निर्वाण का द्वार, अमृतपद के द्वार के रूप में अष्टाङ्गिक मार्ग, आर्यमार्ग - **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विवटं अमतद्वारं, खेमं निब्बानपत्तिया,* म॰ नि॰ 1.292; *अमतद्वारन्ति अरियमग्गो,* म॰ नि॰ (मू॰प॰) 1(2).165; - **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमेसं एकादसन्नं अमतद्वारानं एकेकेनपि अमतद्वारेन सक्कुणिस्सामि अत्तानं सोत्थिं कातुं,* म॰ नि॰ 2.17; - **रानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *एकं अमतद्वारं गवेसन्तो सकिदेव एकादस अमतद्वारानि अलत्थं भावनाय,* म॰ नि॰ 2.17.

अमतधम्म पु॰, [अमृतधर्म], अमृत अर्थात् निर्वाण का लोकोत्तर धर्म - *अहं एतं अमतधम्मं तम्पि जानापेस्सामी'ति तव सन्तिकं आगतोस्मि, सम्माति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.185.

अमतनिट्ठ त्रि॰, [अमृतनिष्ठ], निर्वाण में परिणत होने वाला, निर्वाण में पर्यवसान प्राप्त करने वाला - **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतपरियोसान'न्ति अमतनिट्ठं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.275.

अमतनिब्बत्तिक त्रि॰, [अमृतनिष्पत्तिक], निर्वाण का फल लाने वाला, निर्वाण की प्राप्ति कराने वाला, निर्वाण प्रापक - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतपरायणन्ति अमतनिब्बत्तिकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.275.

अमतनिब्बान नपुं॰, [अमृतनिर्वाण], अमृतपद निर्वाण, मृत्युरहित स्थिति वाला, निर्वाण का पद - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *परमं खेमन्तभूमिं अमतं महानिब्बानं पापुणाति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.176; - **महातळाक** नपुं॰, मृत्युरहित निर्वाण का महासरोवर या तड़ाग - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतनिब्बानमहातळाकस्स दोसो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.6.

अमतन्तळ पु॰/नपुं॰, अमततळाकतल का सं॰ रूप॰, निर्वाण के सरोवर की तलहटी या अमृत-पद निर्वाणरूपी तड़ाग - **ळे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं किलेसमलधोव, विज्जन्ते अमतन्तळे,* बु॰ वं॰ 2.14; जा॰ अट्ठ॰ 1.6; *अमतन्तळेति अमतसङ्खातस्स तळाकस्स, सामि अत्थे भुम्मवचनं दट्ठब्बं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 83.

अमतंदद त्रि॰, [अमृतद], मुक्ति को देने वाला, मुक्ति-प्रदायक, अमृतपद निर्वाण को देने वाला - **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतं ददो च सो होति,* स॰ नि॰ 1(1).36; *अमतंददो च सो होतीति पणीतभोजनस्स पत्तं पूरेन्तो विय अमरणदानं नाम देति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.75.

अमतप त्रि॰, [अमृतप], अमृत का पान करने वाला (देवता) - **पा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सुरा मरु-दिवोका चामतपा सग्गवासिनो,* अभि॰ प॰ 11.

अमतपद नपुं., [अमृतपद], अमृत या निर्वाण का पद, जन्म एवं मरण से मुक्त अमृतपद निर्वाण की प्राप्ति का उपाय – **दं** प्र. वि., ए. व. – *अप्पमादो अमतपदं पमादो मच्चुनो पदं,* जा. अट्ठ. 5.94; ध. प. 21; *अमतपदन्ति अमतस्स निब्बानस्स पदं अधिगमकारणं,* जा. अट्ठ. 5.95; *अमतपदन्ति अमतं वुच्चति निब्बानं ... अमतस्स पदं अमतपदं, अमतस्स अधिगमूपायोति वुत्तं होति,* ध. प. अट्ठ. 1.130.

अमतपरायन त्रि., वह, जिसका परम प्रयोजन निर्वाण की प्राप्ति हो, निर्वाण का अधिगम या प्राप्ति कराने वाला – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *सम्मासमाधिं भावेति अमतोगधं अमतपरायनं अमतपरियोसानं,* स. नि. 3(1).45; *अमतपरायनन्ति अमतनिब्बत्तिकं,* स. नि. अट्ठ. 3.275.

अमतपरियोसान त्रि., [अमृतपर्यवसान], वह, जिसकी परिणति निर्वाण में हो – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अमतोगधं होति अमतपरायणं अमतपरियोसानं,* स. नि. 3(2).296; *अमतपरियोसानन्ति अमतनिट्ठं,* स. नि. अट्ठ. 3.275.

अमतपान नपुं., [अमृतपान], अमृत का पान, अमरत्व धर्म का पान, अमृत-रूपी धर्म का पान – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा सच्चानि पकासेत्वा बहू जने अमतपानं पायेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 3.351; *यो भगवतो धम्मदेसनं सुत्वा पटिविज्झति अमतपानं पिवति, तस्स ...,* उदा. अट्ठ. 264.

अमतपायी त्रि., [अमृतपायिन्], अमृत का पान करने वाला देवता, सुधा पीने वाला देवता – **यी** पु., प्र. वि., ए. व. – *दिवोको'मतपायी च सग्गट्ठो देवता पि च,* सद्द. 2.477.

अमतपुब्बपदेस पु., [अमृतपूर्वप्रदेश], वह स्थान, पहले जहाँ मनुष्य मरे ही न हों – **से** सप्त. वि., ए. व. – *आनन्दत्थेरस्सदिसा पन अमतपुब्बपदेसे परिनिब्बायन्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.305.

अमतप्पकासन त्रि., [अमृतप्रकाशन], अमृतपद (निर्वाण) को प्रकाशित करने वाला, निर्वाण का निर्देशक – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अमतप्पकासनो सद्धम्मो मज्झिमबुद्धवचनं नाम,* ध. स. अट्ठ. 19.

अमतप्पत्त त्रि., [अमृतप्राप्त], अमृतत्व या निर्वाण की अवस्था को प्राप्त, निर्वाण-प्राप्त – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अमतप्पत्तोति तं फलेन पत्तो,* महानि. 65.

अमतफल / अमतप्फल त्रि., ब. स. [अमृतफल], अमृत के फल को देने वाला, अमरत्व के फल का दायक, निर्वाण के फल को देने वाला – **लं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *अमतफलं करित्वा आगमिस्सामि,* जा. अट्ठ. 3.434; – **फला** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सा होति अमतप्फला,* सु. नि. 80; *सा होति अमतप्फला, सा एसा कसि अमतप्फला होति, अमतं वुच्चति निब्बानं, निब्बानानिसंसा होतीति अत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 1.119; – **फलं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तेन ते सुखिता होन्ति, ये कीता अमतप्फलं'न्ति,* मि. प. 304.

अमतब्भन्तर त्रि., [अमृताभ्यन्तर], अमृत या निर्वाण के अन्तर्गत विद्यमान – **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *चतुत्थे अमतोगधन्ति अमतब्भन्तरं ...,* स. नि. अट्ठ. 3.275.

अमतभावसाधन त्रि., [अमृतभावसाधन], निर्वाण की अवस्था की प्राप्ति में सहायक या साधनभूत – **तो** प. वि., ए. व. – *अमतभावसाधनतो अनामतं नाम,* जा. अट्ठ. 2.45.

अमतभेरी स्त्री., [अमृतभेरी], निर्वाण की प्राप्ति के लिये दुन्दुभि, निर्वाण की भेरी, निर्वाण का नक्कारा (नगाड़ा) – **रिं** द्वि. वि., ए. व. – *तदा अमतभेरिं सो, आहनी मेखले पुरे,* बु. वं. 6.2; *तत्थ अमतभेरिन्ति अमताधिगमाय निब्बानाधिगमाय भेरिं,* बु. वं. अट्ठ. 176.

अमतमग्गद त्रि., [अमृतमार्गद], मुक्ति के मार्ग को देने वाला, निर्वाण के पथ को प्रशस्त करने वाला – **दं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *सब्बलोकगरुं वीरं हितं अमतमग्गदं,* सद्धम्मो. 1.

अमतमग्गदेसक त्रि., अमृतपद निर्वाण की ओर ले जाने वाले मार्ग का उपदेश करने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *कोचि वो अमतमग्गदेसको लद्धो'ति पुच्छि,* ध. प. अट्ठ. 1.55.

अमतगद पु., [अमृतगद], सर्पों का एक प्रकार – **दा** प्र. वि., ब. व. – ... *अमतं वुच्चति अगदं, तेन मज्जन्तीति अमतमदा, सप्पा ...,* थेरगा. अट्ठ. 2.28.

अमतमधुर त्रि., [अमृतमधुर], अमृत (सुधा) के समान मधुर या मीठा – **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अमतमधुरं सवनूपगं अकासि,* मि. प. 241.

अमतमहानिब्बान नपुं., मृत्यु-रहित महानिर्वाण, ऐसा महानिर्वाण, जिसके साक्षात्कार के उपरान्त जन्म एवं मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *एवंभूतेन मया अजातिं अजरं अब्याधिं ... अमतमहानिब्बानं परियेसितुं वट्टति,* जा. अट्ठ. 1.5; *अमतमहानिब्बानं सच्छिकत्वा महन्तं सुखं अनुभवन्तीति,* जा. अट्ठ. 2.167; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *एवं बुद्धानं ओवादकरा संसारपारं निब्बानं गच्छन्तीति अमतमहानिब्बानेन धम्मदेसनाय कूटं गण्हि,* जा. अट्ठ. 2.107; – **तळाक** पु., [अमृतमहानिर्वाणतटाक], अमृतत्व से युक्त महानिर्वाण का महासरोवर या झील – **के** सप्त.

वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेव किलेसमलधोवने अमतमहानिब्बानतळाके विज्जन्ते* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.6.

अमतम्बु नपुं॰, अमृत से युक्त धर्म कथा का जल, अमृत का जल, अमृत की वर्षा, अमृत जैसे धर्म वचनों का जल – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ *सदेवकं तप्पयन्तो अभिवस्सि अमतम्बुना,* बु॰ वं॰ 20.2; *अमतम्बुनाति अमतसङ्खातेन धम्मकथासलिलेन तप्पयन्तो पावस्सीति अत्थो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 267.

अमतरंस त्रि॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त, अमृत की किरणों से युक्त, अमृत का रस – *परिपीतामतरंसं सद्धम्मोसधभाजनं,* सद्धम्मो॰ 571; पाठा॰ अमतरस.

अमतरस पु॰, [अमृतरस], अमृत का रस, निर्वाण का रस – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सराजिकानं रट्ठवासिनं अमतरसं अदासि,* सा॰ वं॰ 34(ना॰); *अमतरसं पायेसि,* सा॰ वं॰ 154(ना॰); – **भागी** त्रि॰, [भागिन्], निर्वाण के रस का भागीदार, निर्वाण के रस का भाग पाने वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सुत्वा सत्ता अमतरसभागिनो भवन्तीति,* सद्द॰ 1.161.

अमतरहद पु॰, [अमृतह्रद], अमृत का सरोवर, निर्वाण का सरोवर, निर्वाण का ह्रद – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमतरहदं गवेसमाना परिसति निसिन्नं अतिविसारदं नारदसम्मासम्बुद्धं अद्दसंसु,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 213.

अमतवग्ग पु॰, स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 3(1).259-265.

अमतवस्सा स्त्री॰, [अमृतवर्षा], अमृत जैसे धर्म-वचनों की वर्षा – **स्सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मं देसेति अमतवस्सं वस्सन्तो विय,* रस॰ 1.6(रो॰).

अमतवाद त्रि॰, [अमृतवाद], निर्वाण का कथन करने वाला, निर्वाण को अमृतपद बतलाने वाला – **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमतवादो ति निब्बानवादो – एवं मुनि सन्तिवादो,* महानि॰ 148.

अमतसदिस त्रि॰, [अमृतसदृश], अमृत के समान, अमृत जैसा मधुर या स्वादिष्ट – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अतिमधुरो अमतसदिसो* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.133; – **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमताति अमतसदिसा सादुभावेन,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.114.

अमतसभाव त्रि॰, ब॰ स॰ [अमृतस्वभाव], स्वभाव से ही अविनाशी, प्रकृत्या, अविनश्वर – **त्त** नपुं॰, भाव॰, अविनाशी स्वभाव वाला होना *ततो अमतसभावत्ता चवनाभावो,* उदा॰ अट्ठ॰ 318.

अमतसम त्रि॰, [अमृतसम], अमृत-सदृश, अमृत के समान – **मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमतसमं, महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं सब्बकिलेसविसनासनट्ठेन,* मि॰ प॰ 320.

अमता स्त्री॰, [अमृता], आमलक, आंवला, एक प्रकार की लता – *अमतामलकी तिसु,* अभि॰ प॰ 569.

अमताकार त्रि॰, [अमृताकार], अमृत के समान मधुर आकार वाला – **रं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न पुनो अमताकारं पस्सिस्सामि मुखं तव,* अप॰ 2.208; थेरीगा॰ अट्ठ॰ 172.

अमताधिगत त्रि॰, [अमृताधिगत], अमृतपद निर्वाण को प्राप्त, अच्युतपद को प्राप्त – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमताधिगतो कच्चि, निब्बानमच्चुतं पदं,* अप॰ 1.23.

अमताधिगमहेतु पु॰, तत्पु॰ स॰ [अमृताधिगमहेतु], निर्वाण के अधिगम का कारण, निर्वाण की प्राप्ति का कारण – **तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमताधिगमहेतुतो च मङ्गलन्ति वुच्चति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 115.

अमतापण नपुं॰, [अमृतापण], अमृत अर्थात सुधा की मंडी या दुकान, सुधा का भण्डार – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ब्याधितं जनतं दिस्वा, अमतापणं पसारयि,* मि॰ प॰ 305.

अमताभिसेक पु॰, [अमृताभिषेक], सुधा का छिड़काव, अमृत के छींटे देना – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमताभिसेको ति दट्ठब्बो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.221; – **सदिस** त्रि॰, [-सदृक्], अमृत के छिड़काव जैसा – **सेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ *पण्डितजनहदयानं अमताभिसेकसदिसेन ब्रह्मस्सरेन भासमानस्सापि* ..., म॰ नि॰ (मू॰प॰) 1(1).61.

अमतारम्मण त्रि॰, [अमृतालम्बन], अमृत के आलम्बन वाला – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमतारम्मणं संयोजनन्ति? आमन्ता,* कथा॰ 328; – **कथा** स्त्री॰, कथा॰ के एक भाग का शीर्षक, कथा॰ 328-330.

अमतावह त्रि॰, [अमृतावह], अमृत अर्थात् निर्वाण को लाने वाला – **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तसारवरे तस्मिं पसादो अमतावहो,* अप॰ 2.109.

अमतासित्त त्रि॰, [अमृताषिक्त], अमृत या सुधा से आर्द्र किया हुआ, सुधा से अच्छी तरह सिञ्चित या गीला कर दिया गया – *धम्मजं उग्गहदयं अमतासित्तसन्निभं,* अप॰ 2.112.

अमति √अम (जाना) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, जाता है, आगे बढ़ता है – *अम गतियं, अमति,* सद्द॰ 2.412.

अमतप्पत्तिपटिपदा स्त्री॰, [अमृतप्राप्तिप्रतिपत्], निर्वाण की प्राप्ति का मार्ग, निर्वाण के अधिगम का मार्ग या प्रतिपदा –

दं द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *अमतपत्तिपटिपदं कथेत्वा देति, इदं धम्मदानं नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.61; *अमतपत्तिपटिपद'न्ति अमतप्पतिहेतुभूतं सम्मापटिपदं,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.53.

अमतोगध क. पु॰/नपुं॰, अमृतपद निर्वाण की गम्भीरता, निर्वाण की तलहटी - **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतोगधमनुप्पत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं,* सु॰ नि॰ 640; ध॰ प॰ 411; *अमतं निब्बानं ओगहेत्वा अनुप्पत्तं, तमहं ब्राह्मणं वदामीति अत्थो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.172; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.390; **ख.** त्रि॰, निर्वाण में अवगाहन करने वाला, निर्वाण में गहराई तक बढ़ा हुआ - **धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतोगधो मग्गो अरियसच्चान्ति मं अवोचाति सम्बन्धो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 181; - **धं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *त्वञ्च मे मग्गमक्खाहि, अञ्जसं अमतोगधं,* थेरगा॰ 168; *अमते निब्बाने सम्पापकभावेन पतिट्ठिता अमतोगधं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.318; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमतोगधस्स निब्बानस्स परियोसानलक्खणं तथं अवितथं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.61; - **धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अमतोगधा सब्बे धम्मा, निब्बानपरियोसाना सब्बे धम्मा,* अ॰ नि॰ 3(2).89.

अमतोसध नपुं॰, [अमृतौषध], अमृत के समान लाभदायक औषधि, दिव्य दवाई - **धं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *हरीतकं आमलकं महग्घं अमतोसधं,* म॰ वं॰ 11.31; *नहानोदकं पन ते अमतोसधं भविस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.340; - **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *देथ, सामि, अमतोसधन्ति सुवण्णसरकं उपनामेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.347; मि॰ प॰ 232.

अमत्त¹ त्रि॰, √मद के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अमत्त], वह, जो मतवाला न हो, अप्रमत्त, मदरहित, मतवालापन से रहित - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कच्चि रूपादीसु कामगुणेसु अमत्तो अप्पमत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.375.

अमत्त² नपुं॰, [अमत्र], घड़ा, कलश, पात्र - **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमत्तं पत्तो'थ भाजनं,* अभि॰ प॰ 457; - **त्तानि** ब॰ व॰ - *अमत्तानि वुच्चन्ति भाजनानि, तानि ये विक्किणन्ति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 197; केवल उ॰ प॰ के रूप में - *यथा कुम्भकारो आमके आमकमत्ते,* म॰ नि॰ 3.160; *आमकमत्ते'ति नातिसुक्खे भाजने,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.122; जा॰ अट्ठ॰ 3.326.

अमत्तञ्ञू त्रि॰, [अमात्रज्ञ], भोजन के ग्रहण में मात्रा का ज्ञान न रहने वाला, अमर्यादित भोजन करने वाला, 'यह भोजन धर्मसङ्गत है या अधर्मसङ्गत' इसका विवेचन न करने वाला - **ञ्ञू** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भोजनम्हि अमत्तञ्ञू इन्द्रियेसु असंवुतो,* इतिवु॰ 18; - **ञ्ञुं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भोजनम्हि चामत्तञ्ञुं, कुसीतं हीनवीरियं,* ध॰ प॰ 7; *अपिच पच्चवेक्खणमत्ता विस्सज्जनमत्ताति इमिस्सापि मत्ताय अजाननतो अमत्तञ्ञुं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.45; - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *भोजने अमत्तञ्ञुनो,* म॰ नि॰ 1.39; *भोजने अमत्तञ्ञुनोति भोजने या मत्ता जानितब्बा परियेसनपटिग्गहणपरिभोगेसु युत्तता तस्सा अजाननका,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).161; - **ञ्ञूहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अगुत्तद्वारेहि भोजने अमत्तञ्ञूहि जागरियं ... चारिकं चरसि,* स॰ नि॰ 1(2).197; *ततो तत्थेव संसीदि, अमत्तञ्ञूहि सो अहु,* जा॰ अट्ठ॰ 2.244; **ञ्ञुता** स्त्री॰, भाव॰ [अमात्रज्ञता], असंयम का भाव - *इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता च भोजने अमत्तञ्ञुता च,* दी॰ नि॰ 3.170; - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भोजने अमत्तञ्ञुताय च,* इतिवु॰ 18; - **भावो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, भोजन की मात्रा या उपयुक्तता का ज्ञान न रहना - *अमत्तञ्ञुताति अमत्तञ्ञुभावो पमाणसञ्ञाताय मत्ताय अजाननं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 421.

अमत्तता स्त्री॰, भाव॰, प्रमत्त न होने का भाव, मतवाला न होना - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमत्तता अप्पमत्तता,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 24.

अमत्तेय्य त्रि॰, माता के प्रति आदरभाव न रखने वाला, मां के प्रति अनिष्ठावान् - **य्यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयं, देव पुरिसो अमत्तेय्यो अपेत्तेय्यो असामञ्ञो अब्रह्मञ्ञो, न कुले जेट्ठापचायी,* अ॰ नि॰ 1(1).163; *न मत्तेय्योति अमत्तेय्यो, मातरि मिच्छा पटिपन्नोति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.118; - **य्या** ब॰ व॰ - *मनुस्सेसु ये ते भविस्सन्ति अमत्तेय्या अपेत्तेय्या,* दी॰ नि॰ 3.52; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ *अमत्तेय्यता अपेत्तेय्यता,* दी॰ नि॰ 3.51.

अमथित त्रि॰, [अमथित], जो मथा न गया हो, अविलोड़ित (दूध) - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आवासानुमताचिण्णममथितं जलोगि च,* म॰ वं॰ 4.10; - **कप्प** पु॰, नहीं मथे हुए दूध आदि को लेने की अनुज्ञा - **प्पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कप्पति अमथितकप्पो,* चूळव॰ 463.

अमद त्रि॰, [अमद], दर्परहित, अभिमान मुक्त - **दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *मदा निम्मदा अमदा होन्ति विनस्सन्ति, तस्मा निम्मदनन्ति वुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 168.

अमद्दव पु॰, [अमार्दव], अकोमलता, कठोरता, हठधर्मिता, कर्कशता - **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ कतमो अमद्दवो? या अमुदुता अमद्दवता कक्खलियं फारुसियं कक्खलता, कठिनता, उजुचित्तता अमुदुता – अयं वुच्चति अमद्दवो,* विभ॰ 415.

अमद्दवता स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व. [अमार्दवता], उपरिवत् - *या अमुदुता अमद्दवता,* विभ. 415.

अमद्दवनिद्देस पु., [अमार्दवनिर्देश], अमार्दव की व्याख्या, अमृदुता की व्याख्या - **से** सप्त. वि., ए. व. - *अमद्दवनिद्देसे न मुदुभावो अमुदुता,* विभ. अट्ठ. 466.

अमद्दवाकार पु., [अमार्दवाकार], कठोर स्वरूप, कठोर प्रकृति, कर्कश आकार - **रो** प्र. वि., ए. व. - *अमद्दवाकारो अमद्दवता,* विभ. अट्ठ. 466.

अमधुर त्रि., [अमधुर], वह, जो मीठा न हो, जो स्वादिष्ट न हो, तिक्त, तीता, अस्वादिष्ट - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अमधुरो तित्तको जातो,* जा. अट्ठ. 2.83; - **रेन** पु., तृ. वि., ए. व. - *असातेन अमधुरेन निम्बरुक्खेन सद्धिं,* जा. अट्ठ. 2.83; - **नं** पु., ष. वि., ब. व. - *असातानन्ति अमधुरानं,* अ. नि. अट्ठ. 2.136.

अमनसिककरण नपुं., मनन नहीं करना, हृदयङ्गम नहीं करना - **णेन** तृ. वि., ए. व. - *अप्पवत्तिकरणेन अमनसिकरणेन च,* ध. स. अट्ठ. 250.

अमनसिकारोन्त वर्त. कृ., पु., मनसिकरोति का निषे., उपेक्षा करता हुआ, अवहेलना करता हुआ, अवज्ञा करता हुआ, मन या विचार में नहीं ला रहा - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अमनसिकारोन्तस्स होति,* कथा. 286; *अमनसिकरोन्तस्साति मनं अकरोन्तस्स,* कथा. अट्ठ. 194.

अमनसिकार पु., [अमनसिकार], मनोयोग का अभाव, ध्यान का अभाव, सावधानी का अभाव - **रो** प्र. वि., ए. व. - *सब्बनिमित्तानञ्च अमनसिकारो,* म. नि. 1.377; - **रा** ब. व. - *यस्मिं, आनन्द, समये तथागतो सब्बनिमित्तानं अमनसिकारा ... उपसम्पज्ज विहरति,* दी. नि. 2.78; - **बहुलीकार** पु., न तो मनोयोग, न ही अभ्यास - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तत्थ अमनसिकारबहुलीकारो - अयमनाहारो,* स. नि. 3(1).127.

अमनाप त्रि., [अमनाप], मन को प्रसन्न करने में असमर्थ, असुन्दर, अप्रिय - **पो** पु., *यं मनोदुच्चरितस्स अनिट्ठो अकन्तो अमनापो विपाको निब्बत्तेय्य,* म. नि. 3.112; अ. नि. 1(1).40; *अमनापो च अगरु च अभावनीयो च,* अ. नि. 2(1).128; - **पं** द्वि. वि., ए. व. - *चक्खुना खो पनेव रूपं दिस्वा अमनापं न मङ्कु होति,* स. नि. 3(1).90; - **सेन** पु., तृ. वि., ए. व. *तं परे अनिट्ठेन अकन्तेन अमनापेन समुदाचरन्ति,* अ. नि. 1(2).243; - **पा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *परेसं अप्पिया अमनापा न तं तथागतो वाचं भासति,* म. नि. 2.64; - **पा** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *सारीरिका वेदना ... कटुका असाता अमनापा,* स. नि. 1(1).31; - **पानं** स्त्री., ष. वि., ब. व. - *खरानं कटुकानं असातानं अमनापानं,* अ. नि. 1(1).178; *अमनापानन्ति मनं वड्ढेतुं असमत्थानं,* अ. नि. अट्ठ. 2.136; - **गन्ध** पु., कर्म. स. [अमनापगन्ध], मन के लिए अप्रिय गन्ध - **धा** प्र. वि., ब. व. - *हिमवन्ते विसरुक्खानं मूलादिगन्धा च अमनापगन्धा, ...,* पारा. अट्ठ. 2.53; - **ता** स्त्री., भाव. [अमनापता], मन के लिए अप्रियता, अननुकूलता - *तस्स सहदस्सनेन अमनापता च सण्ठहेय्य,* म. नि. 1.38; - **फोट्ठब्ब** पु., कर्म. स. [अमनापस्पृष्टव्य], मन के लिए अरुचिकर स्पृष्टव्य वस्तु - **ब्बा** प्र. वि., ब. व. - *विसफस्स महाकच्छुफस्सादयो अमनापफोटब्बा,* पारा. अट्ठ. 2.54; - **रस** त्रि., ब. स. [अमनापरस], मन को अप्रिय लगने वाली रसभरी वस्तु - **सा** पु., प्र. वि., ब. व. - *पटिकूलमूलरसादयो अमनापरसा,* पारा. अट्ठ. 2.54; - **रूप** त्रि., ब. स. [अमनापरूप], मन को अच्छा न लगने वाले स्वरूप वाला, कुरूप - **पं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अमनापरूपंयेव पस्सति, नो मनापरूपं,* स. नि. 2(2).130; - **वास** पु., [अमनापवास], असह्य निवास, अप्रिय निवास - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *अमनापवासं वसि, जिण्णेन पतिना सह,* जा. अट्ठ. 7.282; - **सद्द** पु., कर्म. स. [अमनापशब्द], अप्रिय शब्द, मन को प्रिय न लगने वाली ध्वनि - **द्दा** प्र. वि., ब. व. - *केवलञ्हेत्थ अमनुस्ससद्दादयो उत्रासजनका अमनापसद्दा,* पारा. अट्ठ. 2.53; - **सद्दसंवत्तनिक** त्रि., [अमनापशब्दसंवर्तनिक], अप्रिय शब्द या ध्वनि के रूप में परिणत होने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो ..., मनुस्सभूतस्स अमनापसद्दसंवत्तनिको होति,* अ. नि. 3(1).79; - **सम्पयोग** पु., तत्पु. स. [अमनापसंप्रयोग], अप्रिय-जन के साथ भेंट या मुलाकात - **गा** प्र. वि., ए. व. - *... यं वा वो ... संसरतं अमनापसम्पयोगा ... अस्सु पस्सन्नं पग्घरितं,* स. नि. 1(2).162.

अमनापिय त्रि., [अमनाप], उपरिवत् - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अमनापियो फोट्ठब्बो दुक्खसम्फस्सो कायविञ्ञेय्यं रूपं,* ध. स. 974.

अमनुञ्ञ त्रि., [अमनोज्ञ], अप्रिय, अरुचिकर, मन को अनुकूल संवदेन न देने वाला - **ञ्ञा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अमनुञ्ञा अपरिभोगारहाति अत्थो,* जा. अट्ठ. 5.222; - **गन्ध** त्रि., ब. स., अप्रिय गन्ध, अच्छी न लगने वाली गन्ध - **न्धं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *लोकापचितो समानो,*

अमनुञ्ञगन्धं वहूनं अकन्तं, जा॰ अट्ठ॰ 7.53; – **सभाव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमनोज्ञस्वभाव], बेदर्द, कठोर स्वभाव वाला, दया से सर्वथा विरहित प्रकृति वाला - **वं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं इदानि परिवत्तित्वा अमनुञ्ञसभावं जातं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.153.

अमनुस्स¹ त्रि॰, [अमनुष्य], मानव-रहित, मनुष्यों से रहित - **स्सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमनुस्सो गामो,* पारा॰ 53; - **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमनुस्सम्हि कानने,* अप॰ 1.240.

अमनुस्स² पु॰, [अमनुष्य], मनुष्य से भिन्न प्राणी, राक्षस, यक्ष, किन्नर देव आदि – **स्सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बे सो यक्खो अमनुस्सो भक्खेसि,* दी॰ नि॰ 2.254; – **स्सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं न लब्भा मनुस्सेन अमनुस्सेन वा पुन,* जा॰ अट्ठ॰ 4.77; - **स्सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अमनुस्सा द्वारं विवरिंसु,* महाव॰ 19; – **स्से** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अक्खरानि लिखित्वा अमनुस्से च भेरवसद्दे ... सकट्ठानमेव गतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.280; – **स्सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो सुप्पधंसियो होति अमनुस्सेहि,* स॰ नि॰ 1(2).241; – **स्सानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपि च खो मनुस्सानं वा अमनुस्सानं वा देवतानं वा सद्दं सुत्वा आदिसति,* अ॰ नि॰ 1(1).198; – **क** त्रि॰, मनुष्यों से रहित – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रम्मे पदेसे रमणीये विवित्ते अमनुस्सके,* चरिया॰ 389; - **कन्तार** पु॰/नपुं॰ [अमनुष्यकान्तार], भुतहा जङ्गल, भूताविष्ट कान्तार – **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कन्तारं नाम – चोरकन्तारं वाळकन्तारं निरुदककन्तारं, अमनुस्सकन्तारं, अप्पभक्खकन्तारन्ति पञ्चविधं ... अमनुस्साधिट्ठितं अमनुस्सकन्तारं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.108; - **जातिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमनुष्यजातिक], मनुष्य से भिन्न जाति से सम्बद्ध, मनुष्य से भिन्न वर्ग का – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भूतोति एवंनामको अमनुस्सजातिको सत्तविसेसो,* सद्द॰ 1.64; - **ट्ठान** नपुं॰, [अमनुष्यस्थान], बीहड़ जङ्गल, ऊसर प्रदेश, अरण्यप्रदेश, निर्जन स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमनुस्सट्ठाने उदकंव सीतं तदपेय्यमानं परिसोसमेति,* स॰ नि॰ 1(1).109; – **दस्सन** नपुं॰, [अमनुष्यदर्शन], मनुष्येतर प्राणियों का दर्शन, देवता का दर्शन - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ किञ्चापि अमनुस्सदस्सनं नाम मनुस्सानं सप्पटिभयं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प.) 3.131; – **स्सन्तराय** पु॰, मनुष्य से भिन्न प्राणियों से खतरा या कष्ट – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमनुस्सन्तरायो,* महाव॰ 141; *भिक्खुं यक्खो गण्हाति, अयं अमनुस्सन्तरायो,* महाव॰ अट्ठ॰ 320; - **पथ** पु॰, [अमनुष्यपथ], निर्जन प्रदेश, वीरान मार्ग, आबादी से रहित रास्ता - **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमनुस्सपथं गन्त्वा महासमुद्दं पविसन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 245; – **परिग्गह** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमनुष्यपरिग्रह], भूतों से आविष्ट, दुष्ट आत्माओं से अभिभूत, भूताविष्ट - **हं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमनुस्सपरिग्गहं अटविं पाविसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.234; – **परिग्गहीत** त्रि॰, [अमनुष्यपरिगृहीत], मनुष्येतर प्राणियों से भरपूर - **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं दुब्बलो, अन्तरामग्गे च अमनुस्सपरिग्गहीता अटवी अत्थि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.9; - **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमनुस्सपरिग्गहिते कन्तारे यक्खभक्खा हुत्वा महाविनासं पत्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 1.106-7; – **तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *लामकसेनासनानि चेव अमनुस्सपरिग्गहितानि च,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.293; – **पुच्छा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अमनुष्यपृच्छा], मानव से भिन्न प्राणी द्वारा पूछा गया प्रश्न – *कतमा अमनुस्सपुच्छा? अमनुस्सा भगवन्तं उपसङ्कमित्वा पञ्हं पुच्छन्ति, नागा पुच्छन्ति, सुपण्णा पुच्छन्ति ... देवतायो पुच्छन्ति अयं अमनुस्सपुच्छा,* महानि॰ 250; - **वच** नपुं॰, दिव्य वाणी, देववाणी या ध्वनि – **चो** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमनुस्सवचो सुत्वा, तस्माहं न गहे रमे,* दी॰ नि॰ 2.178; - **विद्ध** त्रि॰, [अमनुष्यविद्ध], दुष्टात्मा या भूतादि के द्वारा घायल किया या चोट पहुंचाया हुआ – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमनुस्सपविद्धस्स करोन्ति पण्डिता,* जा॰ अट्ठ॰ 2.180; पाठा॰ अमनुस्सविद्ध; – **सद्द** पु॰, [अमनुष्यशब्द], मनुष्य से भिन्न अन्य प्राणियों की आवाज, भूत, प्रेत, दानव आदि का शब्द - **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनुस्ससद्दो अमनुस्ससद्दो,* ध॰ स॰ 621; - **द्दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं दिवाट्ठानं अमनुस्ससद्दं अस्सोसिं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.178; – **सेवित** त्रि॰, [अमनुष्यसेवित], मनुष्य से भिन्न दूसरे प्राणी के द्वारा उपभुक्त या सेवित - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उप्पलं वुदका समुग्गतं, यथा तं अमनुस्ससेवितं,* थेरीगा॰ 381; *यथा तं अमनुस्ससेवितं तञ्च रक्खसपरिग्गहिताय पोक्खरणिया जातत्ता निम्मनुस्सेहि सेवितं केनचि अपरिभुत्तमेव भवेय्य,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 278.

अमनुस्सिकाबाध पु॰, मनुष्येतर प्राणी या दानव के द्वारा उत्पन्न कराया गया रोग, वेदना या दुःख, दानवों के द्वारा उत्पन्न मनस्ताप - **धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्स भिक्खुनो अमनुस्सिकाबाधो होति,* महाव॰ 278; - **धे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि भिक्खवे, अमनुस्सिकाबाधे आमकमंसं आमकलोहितन्ति,* महाव॰ 278.

अमनुस्सित्थी स्त्री., अमानवी स्त्री, मनुष्य-योनि से भिन्न योनि की स्त्री - **त्थी** प्र. वि., ए. व. - *किं मनुस्सित्थि उदाहु अमनुस्सित्थीति पुच्छति*, पे. व. अट्ठ. 41; - **त्थियो** ब. व. - *अथ नं ता अमनुस्सित्थियो दूरतोव आगच्छन्तं दिस्वा एस मम परिग्गहो, एस मे परिग्गहोति, उपधाविंसु*, पे. व. अट्ठ. 134.

अमनुस्सुस्सदट्ठान नपुं., मानवेतर प्राणियों की भीड़ से भरा हुआ स्थान - **नानि** प्र. वि., ब. व. - *द्वेपि चेतानि ठानानि अमनुस्सस्सदठानानि होन्ति, तस्मा वज्जेतब्बानि*, अ. नि. अट्ठ. 3.131.

अमनुस्सूपद्दव त्रि., [अमनुष्योपद्रव], भूतों या दुष्टात्माओं के उत्पातों से बाधित, भूतों से बाधित या ग्रस्त - **वो** पु., प्र. वि., ए. व. - *भन्ते, अमनुस्सुपद्दवो मग्गो, तुम्हे च अन्धा परिणायका, कथं इधं वसिस्सथा"ति?*, ध. प. अट्ठ. 1.10.

अमनोरम त्रि., [अमनोरम], वह, जो मन को रमाने योग्य न हो, असुन्दर, अप्रीतिकर, अप्रिय, अरुचिकर - **मं**[1] पु., द्वि. वि., ए. व. - *नाभिजानामि उप्पन्नं, आबाधं अमनोरमं*, जा. अट्ठ. 5.316; - **मं**[2] स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *एत्थन्तरे न जानामि, चेतनं अमनोरमं*, अप. 2.60.

अमन्ती पु., [अमन्त्रिन्], दुष्ट मन्त्री, दुष्ट अमात्य - **नं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अप्पसेनोपि चे मन्ती, महासेनं अमन्तिनं*, जा. अट्ठ. 6.275.

अमथ्यमान त्रि., √मथ / मन्थ के कर्म. वा. के वर्त. कृ. का निषे. [अमथ्यमान], अग्नि के समान रगड़ या संघर्षण से उत्पन्न न किया हुआ - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *नामत्थमानो अरणीनरेन, नाकम्मुना जायति जातवेदो*, जा. अट्ठ. 7.52; *नामत्थमानोति नापि अरणिहत्थेन नरेन अमत्थियमानो निब्बत्तति*, जा. अट्ठ. 7.54.

अमन्द त्रि., वह, जो थोड़ा न हो, वह, जो अत्यल्प न हो, अत्यधिक, व्यापक, सुविस्तृत - *अमन्दचन्दनत्थम्भसोभितेन विजम्भिना*, चू. वं. 73.106.

अमम त्रि., [अमम], निर्धन, ममता से विरहित, अहंकार-विहीन, तृष्णारहित, स्वार्थरहित - **मो** पु., प्र. वि., ए. व. - *गिही दारपोसी अममो च सुब्बतो*, सु. नि. 222; *अममो च सुब्बतो, पुत्तदारेसु तण्हादिट्ठिममत्तविरहितो*, सु. नि. अट्ठ. 1.228; **म** पु., संबो., ए. व. - *पुनरागमनेनेत्थ वासभूमिं ममामम*, म. वं. 1.66; *तत्थ वासभूमिं ममाममा ति वासभूमिं मम अमम इति पदच्छेदो, अमम महादय एत्थ मम ... सम्बन्धो कातब्बो*, म. वं. टी. 84(ना.); - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *अममस्स ठितस्स तादिनो*, उदा. 92; *अममस्साति रूपादीसु कत्थचि ... अममस्स ममङ्काररहितस्स*, उदा. अट्ठ. 134; - **मेसु** पु., सप्त. वि., ब. व. - *दीघायुकेसु अममेसु पाणिसु*, नेत्ति. 119; - **गा** पु., प्र. वि., ब. व. - *वितरेय्य ओघं अममा चरन्ति*, सु. नि. 500.

अममायन्त त्रि., ममायति का वर्त. कृ. का निषे., तृष्णा अथवा आसक्ति न करता हुआ - ... *चक्खुं अममायन्तो सोतं अममायन्तो घानं* महानि. 36; *अममायन्तोति तण्हादिट्ठीहि आलयं अकरोन्तो*, महानि. अट्ठ. 128.

अममायित त्रि., ममायति के भू. क. कृ. का निषे., नहीं दुलराया हुआ, नहीं पुचकारा हुआ, नहीं अपनाया गया - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अममायिता कामा*, महानि. 2; *अममायितताति वुत्तपटिपक्खा*, महानि. अट्ठ. 13.

अमर[1] त्रि., [अमर], अमर्त्य, वह, जो मृत्यु का विषय न हो, कभी न मरने वाला, अविनाशी - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *न चत्थि सत्तो अमरो पथब्या*, जा. अट्ठ. 5.75; *अमरोति अमरणसभावो सत्तो नाम नत्थि*, तदे.; - **रा** ब. व. - *चरिम्हा अमरा विय*, जा. अट्ठ. 7.124; - **रा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *न मरतीति अमरा*, दी. नि. अट्ठ. 1.98; - **राय** ष. वि., ए. व. - *अमराय दिट्ठिया वाचाय च विक्खेपोति अमराविक्खेपो*, दी. नि. अट्ठ. 1.98; - **रं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *सुद्धिमग्गं अजानन्तो, अकासिं अमरं तपं*, थेरगा. 219; - **रा** प्र. वि., ब. व. - *ये वापि लोके अमरा बहू तपा*, सु. नि. 252; *अमरा ति अमरभावपत्थनताय पवत्तकायकिलेसा*, सु. नि. अट्ठ. 1.266.

अमर[2] पु., [अमर], **क.** देवता - *तिदसा त्वमरा देवा विबुधा च सुधासिनो*, अभि. प. 11; सद्द. 2.477; **ख.** एक मछली, अत्यधिक चिकनी होने से जिसे मारना अत्यन्त कठिन होता है - **रो** प्र. वि., ए. व. - *यथा अमरो नाम मच्छो उदके गहेत्वा मारेतुं न सक्का ....*, विभ. अट्ठ. 463; - **कोस** पु., [अमरकोश(ष)], अमरसिंह के द्वारा विरचित एक संस्कृत शब्दकोश का नाम - **से** सप्त. वि., ए. व. - *पहुण्णं कोसेय्यविसेसो ति हि अमरकोसे वुत्तं*, लीन. (दी.नि.टी.) 3.199; तुल., *पत्त्रोर्णं धौतकौशेयम्*, अमर. 2.6.113; - **गिरि** पु., अत्थदस्सी बुद्ध के प्रासादों में एक प्रासाद का नाम - *अमरगिरि सुगिरि वाहना तयो पासादमुत्तमा*, बु. वं. 339; - **तप** नपुं., [अमरतप], अमर होने के लिये की गई तपस्या - **पं** प्र. वि., ए. व. - *अमरं तपन्ति अमरतपं*

अमरभावत्थाय कतं लूखतपं, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.149; - **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अमरत्व], अमरता, देवत्त्व, देवावस्था - **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न चापाहं अधम्मेन अमरत्तमभिपत्थये,* जा॰ अट्ठ॰ 5.210; - **त्ताय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमरत्ताय वितक्को अमरो वा वितक्को वा ति अमरवितक्को,* महानि॰ अट्ठ॰ 339; - **नगर** नपुं॰, सिद्धार्थ बुद्ध के समय में राजा सम्बहुल (सम्बल) और सुमित्त की राजधानी का नाम - **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमररुचिरदस्सने अमरनगरे नाम सम्बलो च सुमित्तो च द्वे भातरो रज्जं कारेसुं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 257; - **पुर** नपुं॰, [अमरपुर], **क.** देवताओं का नगर या वासस्थान - *अमरपुरसदिसं सोभनं नगरं पविसित्वा ...,* म॰ बो॰ वं॰ 45(रो॰); **ख.** 1781 ई॰ में बोदोह द्वारा म्यां-मा में स्थापित एक राजधानी का नाम - *काळपक्खद्वादसमियं अङ्गारवारे उत्तरफग्गुणीनक्खत्तेन योगे अमरपुरं नाम महाराजट्ठानीनगरं मापेसि,* सा॰ वं॰ 122(ना॰); - **पुरनिकाय** पु॰, अमरपुर-निवासी भिक्षुओं की एक विशेष शाखा के साथ जुड़ा हुआ - **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमरपुरनिकायो ति तत्थेरपभवो ति,* सा॰ वं॰ 131; - **यिक** त्रि॰, अमरपुर-निवासी, भिक्षुओं की शाखा - **कानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *... पन सङ्घराजा महाथेरो सीहळदीपे अमरपुरनिकायिकानं भिक्खूनं आदिभूतो आचरियो,* सा॰ वं॰ 122(ना॰); - **पुरमापक** पु॰, अमरपुर नगर का निर्माण कराने वाला - **कस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेसु गुणसिरीथेरो अमरपुरमापकस्स रञ्ञो काले ...,* सा॰ वं॰ 149(ना॰); - **भाव** पु॰, अमर्त्यता, अमरता, अमरत्व - **वत्थाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰, अमर अवस्था पाने के लिए - *अमरंतपन्ति अमरतपं अमरभावत्थाय कतं लूखतपं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1; - **भावपत्थनता** स्त्री॰, अमर अवस्था पाने की इच्छा - **य** च॰ वि॰, ए॰ व॰ - *... अमरभावपत्थनताय पवत्तकायकिलेसा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.266.

अमरमन्तु पु॰, [अमरमन्तृ], देवों को मन्त्रणा देने वाला, (बृहस्पति) देवों का अमात्य - **तारं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, *बुद्धिया'मरमन्तारं सुद्धिया सरदम्बरं,* चू॰ वं॰ 42.3.

अमरमन्ती पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अमरमन्त्रिन्], देवों का मन्त्री या अमात्य - *वत्ता सोमरमन्तीव चागवा धनदो विय,* चू॰ वं॰ 52.38.

अमरवती / अमरावती स्त्री॰, [अमरावती], **क.** इन्द्र की नगरी, शक्र की नगरी - *मसक्कसारो वस्सोकसारा चेवामरावती,* अभि॰ प॰ 21; - **तिया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *... देवलोके अमरवतिया राजधानिया सिरितो अधिकतरसस्सिरीकं विय नगरं कातुकामेन ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.35; **ख.** सुमेध बोधिसत्त्व का नगर - **तिया** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नगरे अमरवतिया सुमेधो नाम ब्राह्मणो, अनेककोटिसन्निचयो पहूतधनधञ्ञवा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.4; **ग.** कौण्डिन्य बुद्ध के समय का एक नगर - *पुन भगवा अमरवतीनगरद्वारे ...,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 141; *अमरं नाम नगरन्ति अमर'न्ति च अमरवती'ति च लद्धनामं नगरं अहोसि,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 78.

अमरवर त्रि॰, [अमरवर], देवों में सर्वश्रेष्ठ, देवश्रेष्ठ - **रेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *पुप्फुत्तमं अमरवरेहि सेवितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.389; *अमरवरेहीति सक्कं सन्धाय वुत्तं,* तदे॰.

अमरवितक्क पु॰, [अमरवितर्क], अमरत्व के विषय में विचार, अमरता के लिये तर्क-वितर्क - **क्को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमरताय वितक्को अमरो वा वितक्को अमरवितक्को,* महानि॰ अट्ठ॰ 339.

अमरण नपुं॰, [अमरण], मरण का अभाव, मृत्यु न होना - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नत्थिं जातस्स अमरणं,* स॰ नि॰ 1(1).129; *इमस्स मरणम्पि अमरणं विय भविस्सती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.96; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, नहीं मरना, मृत्यु न होना - *पाणातिपाता वेरमणिया चेत्थ अङ्गपञ्चङ्गसम्पन्नता ... अमरणता एवमादीनि फलानि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 23.

अमरा[1] स्त्री॰, **क.** एक मछली का नाम, जिसे उसकी चपल गति के कारण पकड़ना सर्वथा कठिन है - *न मरतीति अमरा ... अमरा नाम एक मच्छजाति सा उम्मुज्जननिमुज्जनादिवसेन उदके सन्धायमाना गहेतुं न सक्काति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98.

अमरा[2] स्त्री॰, महौषध (महोसध) की पत्नी का नाम - *पुन च कथीयति महोसधस्स भरिया अमरा नाम इत्थी गामके ठपिता,* मि॰ प॰ 196.

अमरादेवीपञ्ह पु॰, [अमरादेवीप्रश्न], 112वें जातक का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 1.407; मि॰ प॰ 196-197.

अमराधिप पु॰, [अमराधिप], देवों का राजा, देवों का स्वामी इन्द्र - **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एतं हन्त्वा मनुस्सिन्द भवस्सु अमराधिपो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.244.

अमराविक्खेप पु॰, टाल-मटोल भरा उत्तर, अनिश्चित या अस्पष्ट उत्तर या कथन - *अमराय दिट्ठिया वाचाय च विक्खेपो ति अमराविक्खेपो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98; *अमरा नाम एका मच्छजाति, सा ... गहेतुं न सक्काति, एवमेव अयम्पि वादो इतोचितो च सन्धावति,* तदे॰; - **दिट्ठि** स्त्री॰ भगवान बुद्ध के समय में भारत में विचारकों द्वारा गृहीत 62 मिथ्या

या भ्रान्त धारणाओं में से एक - *नेव होति न नहोतीति गण्हतो चतुत्था अमराविक्खेपदिट्ठि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 396; - **धम्म** पु॰, ढुलमुल प्रकृति - **म्मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं तस्मिं पुग्गले अनरियधम्मो ... अमराविक्खेपधम्मो, यदिदं मिच्छापटिपदाति,* महानि॰ 105.

अमरविक्खेपिक त्रि॰, अस्पष्ट या अनिश्चित उत्तर देनेवाला, टालमटोल करने वाला, ढुलमुल सिद्धान्त प्रतिपादित करने वाला - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *सो एतेसं अत्थीति अमराविक्खेपिका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98; *अमराविक्खेपिनो एव अमराविक्खेपिका,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 3.143.

अमरिका स्त्री॰, एक नदी का नाम - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नदिं अमरिकं नाम उपगन्त्वानहं तदा,* अप॰ 2.78.

अमरितुकाम त्रि॰, ब॰ स॰, मरने की इच्छा या कामना न करने वाला - **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अथ पुरिसो आगच्छेय्य जीवितुकामो अमरितुकामो सुखकामो दुक्खपटिकूलो,* म॰ नि॰ (उप.प.) 3.45; - **मे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *अमरितुकामे सुखकामे दुक्खपटिकूले,* दी॰ नि॰ 2.246.

अमरिन्द पु॰, [अमरेन्द्र], देवों का स्वामी या राजा, इन्द्र, अमरेन्द्र - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अहोसिं अमरिन्दस्स महेसी दयिता तहिं,* अप॰ 2.206; - **सुनन्दन** त्रि॰, देवताओं के राजा इन्द्र को आनन्दित कर देने वाला - **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुदिट्ठं नन्दनं तेन, अमरिन्दसुनन्दनं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 145.

अमरिसन नपुं॰, [अमर्षण], अधीरता, व्यग्रता, अधैर्य, असहनशीलता - *अत्थि नामाति अमरिसनत्थे निपातो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.60.

अमरुय्यान नपुं॰, [अमरोद्यान], अमरनगर में अवस्थित एक उद्यान, देवों का उद्यान - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दस्सेत्वा अमरुय्यानं गन्त्वा परमरमणीये अत्तनो करुणासीतले सिलातले निसीदि,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 257.

अमल[1] नपुं॰, अभ्रक - *अमलं त्वब्भकं भवे,* अभि॰ प॰ 492; तुल॰ अमर॰ 2.9.

अमल[2] त्रि॰, [अमल], निर्मल, क्लेशों के मलों से रहित, धब्बारहित, बेदाग, निष्कलङ्क, विमल, कलङ्करहित, पवित्र - **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमलोति किलेसमलविरहितो,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 74; - **ट्ठ** पु॰, [अमलार्थ], मलों से रहित निर्वाण का प्रयोजन - **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमलट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 17; *अमलनिब्बानारम्मणत्ता अमलट्ठो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.87; - **धम्म** पु॰, [अमलधर्म], विशुद्ध वाद या मत, विमल धर्म - *सिक्खेय्यामलधम्मसागरतटे निब्बानतित्थूपगे,* सद्द॰ 1.129; - **मज्झिम** त्रि॰, निर्दोष कटिवाला, निर्दोष कमर वाला/वाली - **मे** स्त्री॰, संबो॰, ए॰ व॰ - *तं वुय्हमानं सोतेन दिस्वानामलमज्झिमे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.4; *अमलमज्झिमेति विमलमज्झे,* तदे॰; - **मति** त्रि॰, [अमलमति], विशुद्ध मति वाला, राग आदि के मलों से रहित बुद्धि वाला, निर्मल मन वाला - **तिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *राजा सो सुमतिं महामहिन्दथेरं आगम्मामलमतिमेत्थ कारयित्वा ...,* म॰ वं॰ 15.214; *अमलमतिं ति रागादिसब्बकिलेसविरहितत्ता परिसुद्धमतिं ...,* म॰ वं॰ टी॰ 328.

अमलिन त्रि॰, [अमलिन], स्वच्छ, पवित्र, क्लेश के मलों से मुक्त - **नं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकदिवसम्पि किलेसमलेन अमलिनं कत्वा चरिमकचित्तं पापेतब्बताय एकन्तपरिसुद्धं,* उदा॰ अट्ठ॰ 251.

अमल्ल पु॰, [अमल्ल], वह, जो योद्धा या पहलवान न हो - **ल्लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमल्लम्हि अमल्लोम्ही ति वदन्तमेव नाहं तव मल्लभावं वा अमल्लभावं जानामीति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.73; - **भाव** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अमल्लभावं वा जानामीति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.73.

अमस्सुक त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्मश्रुक], दाढ़ी-रहित, श्मश्रुहीन - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *द्वे द्वे गहपतयो गेहे, एको तत्थ अमस्सुको,* जा॰ अट्ठ॰ 2.154.

अमस्सुजात त्रि॰, [अश्मश्रुजात], वह, जिसे अभी तक दाढ़ी या मूंछ नहीं आई है, तरुण, युवा - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमस्सुजातो अपुरावण्णी, आधाररूपञ्च पनस्स कण्ठे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.192; *अमस्सुजातो ति न तावस्स मस्सु जायति, तरुणोयेव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.195.

अमहग्गत त्रि॰, महग्गत का विलो॰ [बौ॰ सं॰ अमहद्गत], **शा॰ अ॰** अविस्तीर्ण, विस्तृत न किया गया, परिसीमित, परिमित, **ला॰ अ॰** कामावचर-भूमि का चित्त - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमहग्गतं चित्तं पजानाति,* दी॰ नि॰ 1.70.

अमहग्घसभाव पु॰, महग्घसभाव का निषे॰, पेटूपन का अभाव, अत्यधिक खाने पीने की प्रवृत्ति का अभाव - **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *अनोदरिकन्ति न ओदरिकभावं अमहग्घसभावं अनुयुत्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 41.

अमा निपा॰, [अमा], से निकट, पास, के साथ, से मिलकर - *सह सद्धिं समं अमा,* अभि॰ प॰ 1136; *सह, सद्धिं, अमा इच्चेते समकिरियायं,* सद्द॰ 3.899.

अमातापितरसंवद्ध / अमातापितरिसंवड्ढ त्रि., **शा. अ.** माता पिता के द्वारा असंवर्द्धित या असम्पोषित, **ला. अ.** माता पिता से शिक्षा न पाया हुआ - **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तत्थ अमातापितरसंवद्धोति मातापितरो निस्साय तेसं ओवादं अग्गहेत्वा संवड्ढो,* जा. अट्ठ. 1.418; - **संवड्ढत्त** नपुं., भाव., माता एवं पिता द्वारा पोषित न होना, पारिवारिक शिक्षा से रहित होना - *तुम्हे पन अमातापितरिसंवड्ढत्ता आचरियकुले च अनिवुट्ठत्ता एतं ...,* सद्द. 1.95.

अमातापुत्तिक त्रि., मां एवं पुत्र के साथ नहीं जुड़ा हुआ, माता एवं पुत्र द्वारा न बचाए जाने योग्य - **कानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *अमातापुत्तिकानि भयानीति अस्सुतवा पुथुज्जनो भासति,* अ. नि. 1(1).206; *अमातापुत्तिकानीति माता च पुत्तो च मातापुत्तं परित्तातुं समत्थभावेन नत्थि एत्थ मातापुत्तन्ति अमातापुत्तिकानि,* अ. नि. अट्ठ. 2.161.

अमातिक त्रि., [अमातृक], माताविहीन, मातारहित - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अमातिको अपितिको,* जा. अट्ठ. 5.240.

अमानना स्त्री., [अमानन], अनादर, निरादर, असम्मान - **ना** प्र. वि., ए. व. - *अमानना यत्थ सिया,* जा. अट्ठ. 3.217; *माननस्स अभावेन अमानना,* तदे..

अमान पु., [अमान], अभिमान या अहंभाव का अभाव - **सत्त** त्रि., अहंभाव के कारण पदार्थों में आसक्ति या लगाव न रखने वाला - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो मानसत्तेसु अमानसत्तो,* सु. नि. 477.

अमानुस[1] त्रि., [अमानुष], मनुष्य से असम्बद्ध, अतिमानवीय, अलौकिक, दैवी, दिव्य, चमत्कारी - **सो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अमानुसो वायति गन्धो,* पे. व. 657; - **सी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अमानुसी रति होति,* ध. प. 373; *धम्मं विपस्सन्तस्स विपस्सनासङ्खाता अमानुसी रति दिब्बा रति उप्पज्जतीति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 2.345; - **सिं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *अनुभोमि रतिं अमानुसिं,* पे. व. 486; - **सा** पु., प्र. वि., ब. व. - *भुत्ता अमानुसा कामा,* पे. व. 367; - **से** पु., द्वि. वि., ब. व. - *भुञ्ज अमानुसे कामे,* पे. व. 366.

अमानुस[2] पु., [अमानुष], मानवेतर यक्ष, गन्धर्व, देव आदि प्राणी - **सो** प्र. वि., ए. व. - *अमानुसो मानुसकेन सद्धिं,* पे. व. 564; वि. व. 955; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अमानुसस्सेव तवज्ज वण्णो,* जा. अट्ठ. 7.204; *अमानुसस्सेव तवज्ज वण्णोति अज्ज तव इदं कारणं अमानुसस्सेव,* तदे.; - **सा** प्र. वि., ब. व. - *चतुद्दिसा दुन्दुभियो, नादयिंसु, अमानुसा,* अप. 2.121.

अमामक त्रि., [अमामक], वह, जो मेरा अपना नहीं हो, मुझसे प्रेम न रखने वाला - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *ओवदियमानापि मम ... अपटिग्गहणेन अतिक्कमनेन अमामका,* ध. प. अट्ठ. 1.40.

अमाय त्रि., ब. स. [अमाय], छल-प्रपञ्चरहित, मायारहित - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सच्चो सिया अप्पगब्भो, अमायो रित्तपेसुणो,* सु. नि. 947.

अमाया स्त्री., [अमाया], माया या छलप्रपञ्च का अभाव - **या** प्र. वि., ए. व. - *मायाविस्स पुरिसपुग्गलस्स अमाया होति,* म. नि. 1.56.

अमायावी त्रि., [अमायाविन्], माया-रहित, धोखेबाजी या छल से काम न लेने वाला, कपटयुक्ति का प्रयोग न करने वाला - **वी** पु., प्र. वि., ए. व. - *भिक्खु असठो होति अमायावी,* म. नि. 1.137; *यम्पावुसो भिक्खु असठो होति अमायावी,* तदे.; - **विना** पु., तृ. वि., ए. व. - *असठेन अमायाविना हुत्वा कल्याणज्झासयेन भवितब्बं,* ध. प. अट्ठ. 1.42; - **विनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *असठा अमायाविनो अकेतबिनो,* म. नि. 1.39.

अमारधेय्य नपुं., मार का अविषय, मार की पकड़ का अक्षेत्र - **य्यं** प्र. वि., ए. व. - *अमारधेय्यं नव लोकुत्तरधम्मा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).164; - **य्यस्स** ष. वि., ए. व. - *अकुसला मारधेय्यस्स अकुसला अमारधेय्यस्स,* म. नि. 1.290.

अमारितभाव पु., नहीं मार दिए जाने की अवस्था, अमृतत्व - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *अग्गपादेहि गन्त्वा परस्स अमारितभावं पन तथागतस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति,* दी. नि. अट्ठ. 3.97.

अमावसी / अमावासी स्त्री., अमावासिय का सं. रू. [अमावसी], नूतन चन्द्रमा का दिन, वह दिन, जब सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों एक साथ रहते हैं, प्रत्येक चान्द्रमास के कृष्णपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि, अमावस्या - *अमावसीप्यमावासी,* अभि. प. 73; ग्रन्थों में केवल, सप्त. वि., ए. व. में ही प्रयुक्त - ... *महामोग्गल्लानो कत्तिकमासस्सेव कालपक्खअमावसियं,* जा. अट्ठ. 1.374.

अमिञ्जक त्रि., मिगी या गूदा से रहित, साररहित, सुविकसित आंठी से रहित (लहसुन आदि) - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अमिञ्जको, अङ्कुरमत्तमेव हि तस्स होति,* पाचि. अट्ठ. 185.

अमित[1] त्रि., [अमित], सीमा-रहित, असीमित, प्रभूत, अत्यधिक, असंख्य - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अनोमनामो*

अमितो, अप॰ 2.113; – **ता** ब॰ व॰ – ... *भोगा च अमिता मम,* अप॰ 1.354; – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लभामि अमितं धनं,* अप॰ 1.414; – **गुण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमितगुण], अनन्त गुणों वाला, अनेक गुणों से युक्त – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यद्दि बुद्धो अमितगुणो असमप्पटिपुग्गलो,* अप॰ 2.187; – **प्पभ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमितप्रभ], अनन्तप्रभा से युक्त - **भो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदा च बुद्धो लोकस्मिं उदेति अमितप्पभो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).316; – **बुद्धिमन्तु** त्रि॰, अनन्त बुद्धिमान्, अत्यन्त तीव्र बुद्धि से युक्त – **मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं वत्वान पक्कामि सोणको अमितबुद्धिमा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.247; – **भोग** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमितभोग], असीमित भोगसाधनों से सम्पन्न – **गा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्च अमितभोगा नाम अहेसुं जोतिको जटिलो मेण्डको पुण्णो काकवलियोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.301; – **यस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमितयशस्], अपरिमित यश वाला, अतुलनीय कीर्ति वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनन्ततेजो अमितयसो, अप्पमेय्यो दुरासदो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.40; – **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *केनच्छसि त्वं अमितयसा सुखेधिता,* वि॰ व॰ 140; *अमितयसाति न मितयसा अनप्पकपरिवारा,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 64; – **ताभ**[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अमिताभ], असीम आभा से युक्त, अनन्त वैभव या असीम दीप्ति से सम्पन्न – **भा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *झायिनो अमिताभा ये पीतिभक्खा महिद्धिका,* सद्धम्मो॰ 255; – **ताभ**[2] पु॰, एक चक्रवर्ती का नाम – *अमिताभोति नामेन चक्कवत्ती महब्बलो,* अप॰ 1.219; – **तोदक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमितोदक], अपरिमित या असीम जल से भरा हुआ – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्खोभं अमितोदकं जलरासिं ...,* चूळनि॰ 51(रो॰); – **तोदन** पु॰, [अमृतोदन], एक शाक्य राजकुमार का नाम, सीहहनु का पुत्र शुद्धोधन का भाई, बुद्ध का चाचा – *सीहहनुरञ्ञो किर पञ्च पुत्ता अहेसुं – सुद्धोदनो अमितोदनो धोतोदनो सक्कोदनो सुक्कोदनो'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.81; – **तोदय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमितोदय], प्रभूत सफलता को प्राप्त, असीम सफलता पाने वाला – *समुद्धरसिमं लोकं, सयम्भू अमितोदय,* अप॰ 1.17.

अमित[2] पु॰, एक चक्रवर्ती का नाम – *अहोसि अमितोगतो,* अप॰ 1.243.

अमितञ्जल पु॰, एक चक्रवर्ती का नाम – *इतो चुद्दसकप्पम्हि अहोसिं अमितञ्जलो,* अप॰ 1.230.

अमिता[1] स्त्री॰, पद्मोत्तर बुद्ध की अग्रश्राविका का नाम – *अमिता च असमा च द्वे अग्गसाविका,* जा॰ अट्ठ॰ 1.47.

अमिता[2] स्त्री॰, बुद्ध की चाची तथा तिष्यस्थविर की माता का नाम – *अमिता नाम देवी तेसं भगिनी,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).373.

अमित्त पु॰, [अमित्र], शत्रु, वैरी, दुश्मन – *अमित्तो रिपु वेरी च सपत्तो'राति सत्तवरी,* अभि॰ प॰ 344; सद्द॰ 2.452; – **त्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यो अमित्तो मेधावी यञ्चे बालानुकम्पको,* जा॰ अट्ठ॰ 1.242; – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिखिणेन असिना अमित्तं गीवाय पहरन्तो ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 189; – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चरन्ति बाला दुम्मेधा, अमित्तेनेव अत्तना,* ध॰ प॰ 66; *अमित्तेनेव अत्तना ति अमित्तभूतेन विय वेरिना हुत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.271; – **त्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अमित्ता वधका कामा, अग्गिखन्धूपमादुखा,* थेरीगा॰ 353; – **त्ते** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यो चापिमित्ते अथवा अमित्ते, सेट्ठे सरिक्खे अथवा पि हीने,* जा॰ अट्ठ॰ 3.230; – **त्तेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कच्चामित्तेहि पकतो, दीघमद्धानमागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.274; – **त्तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अमित्तानंव हत्थत्थं, सिवि पप्पोति मामिव,* जा॰ अट्ठ॰ 3.412; – **गाम** पु॰, शत्रु का ग्राम, दुश्मन का गांव – **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ केन वण्णेन अमित्तगामं तुवमिच्छसि उत्तमपञ्ञ गन्तु'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.209; – **जनन** त्रि॰, शत्रुओं को उत्पन्न करने वाला, वैरी तैयार कर देने वाला – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं अमित्तजनना, तापना संकिलेसिका,* थेरीगा॰ 358; *अमित्तजनना ति अमित्तभावस्स निब्बत्तनका,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 268; – **जाति** त्रि॰, बन्धुओं एवं मित्रों से विहीन – **ति** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमित्तजाति, महाराज, पुग्गलो ...,* मि॰ प॰ 267; – **तापन** त्रि॰, [अमित्रतापन], शत्रुओं को पीड़ित करने वाला – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मा त्वं सोचि अमित्ततापना,* जा॰ अट्ठ॰ 7.154; – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमञ्च आजञ्ञ अमित्ततापनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.165; – **दुब्भी** त्रि॰, [अमित्रद्रोहिन्], अपने मित्र के साथ विश्वासघात न करने वाला – **नो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमित्तदुब्भिनो गुणकथं कथेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.16; – **भाव** पु॰, शत्रुभाव, दुश्मनी का भाव – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथं नु खो सक्का मया इमस्स मित्तभावं वा अमित्तभावं वा जानितुन्ति ... न सक्खिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.175; – **मज्झे** सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, शत्रुओं के मध्य में – *अमित्तमज्झे वसतो, तेसु आमिसमेसतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.274; – **लक्खण** नपुं॰, [अमित्तलक्षण], शत्रु का लक्षण – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स अमित्तलक्खणं कथेन्तो आह,* जा॰ अट्ठ॰ 4.176; – **वस** पु॰, [अमित्रवश], शत्रु की अधीनता – **सं** द्वि॰ वि॰,

ए॰ व॰ - *अमित्तवसमन्वेति, पच्छा च अनुतप्पति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.114; *अत्थं खिप्पं अजानन्तो अमित्तवसं गच्छति,* तदे॰; - **विजय** पु॰, [अमित्रविजय], अपने शत्रु पर विजय - **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमित्तविजयेन विय तुट्ठो सकलगामे कटच्छुमत्तम्पि भतं ... उपसङ्कमि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 158; - **सङ्घ** पु॰, शत्रुओं का समूह - **ङ्घं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सोचयन्तो अमित्तसङ्घं,* मि॰ प॰ 213; - **समागम** पु॰, [अमित्रसमागम], शत्रुओं के साथ मिलन, शत्रुओं से भेंट - *अमित्तस्स वसनट्ठानं अमित्तसमागमं'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.209; - **हत्थ** पु॰, शत्रु का हाथ - **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमित्तहत्थं पुनरागतोसि, नखत्तधम्मे कुसलोसि राजा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.484; - **त्थगता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, शत्रुओं के हाथों में जा चुकी - *अमित्तहत्थगता तचसारसमप्पिता,* जा॰ अट्ठ॰ 3.177; *अमित्तहत्थगताति अमित्तानं हत्थगता,* तदे॰.

अमित्ततापन पु॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम - *अमित्ततापनो नाम चक्कवत्ती महब्बलो,* अप॰ 1.171.

अमित्ततापना स्त्री॰, जूजक नामक एक ब्राह्मण की पत्नी का नाम - *अमित्ततापना चिञ्चमाणविका,* जा॰ अट्ठ॰ 7.381.

अमित्ता स्त्री॰, अमित्ततप्पना का संक्षिप्त रूप [अमित्रा], एक स्त्री-शत्रु - *अमित्ता नून ते माता, अमित्तो नून ते पिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.281.

अमिलात[1] त्रि॰, मिलायति के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अम्लात], नहीं कुम्हलाया हुआ, नहीं मुरझाया हुआ वह, जो तेजरहित न हो - **तं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आनीतुप्पलमालं च, अमिलातं पिलन्धितुं,* म॰ व॰ 22.46.

अमिलात[2] पु॰, [अम्लान], दुपहरिया पुष्प का वृक्ष, आंवला का वृक्ष - **तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तिलबीजसासपभत्तकसेवालोपि उदकतो उद्धतो अमिलातो अग्गबीजसङ्गहं गच्छति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 25.

अमिस्स त्रि॰, [अमिश्र], अमिश्रित, वह, जो मिश्रित न हो - **स्सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं भन्ते, नागसेन, रज्जसुखं, दुक्खेन अमिस्सं, अञ्ञं तं रज्जसुखं अञ्ञं, दुक्खन्ति,* मि॰ प॰ 288; - **कता** स्त्री॰, भाव॰, बिना किसी मिलावट वाला होना, परिशुद्ध होना, मिश्रणरहितता - *अमिस्सकतावसेनाति कोट्ठासन्तरेहि अवोमिस्सकतावसेन,* विसुद्धि॰ टी॰ 1.284; *लोमापि न केसाति एवं अमिस्सकतावसेन ... वेदितब्बो,* विसुद्धि॰ 1.234.

अमिस्सित त्रि॰, [अमिश्रित], वह, जो मिश्रित या मिला हुआ न हो - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमिस्सितो किलेसेहि,* मि॰ प॰ 285.

अमिस्सीकत त्रि॰, [अमिश्रीकृत], वह, जो मिलाया हुआ न हो, अमिश्रीकृत - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमिस्सीकतमेवस्स चित्तं होति,* महाव॰ 256; - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *लोमा न केसाति एवं अवसेसएकतिंसकोट्ठासेहि अमिस्सीकता केसा नाम पाटियेक्को ...,* विसुद्धि॰ 1.240.

अमु त्रि॰, सङ्केतक सर्व॰ का एक शब्द-रूप, इम का विलोम [अदस्], ऐसा ऐसा व्यक्ति या वस्तु या पदार्थ, (जब नाम से सम्बोधित न किया जाय), फ़लां फ़लां व्यक्ति, वस्तु या स्थान - *परस्मिं चात्र तीस्वमु,* अभि॰ प॰ 1089; *अमुसद्दो दूरवचनो,* सद्द॰ 1.267.

अमु/असु पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, वह फ़लां फ़लां - *अमु, हि, भो गोतम, पुरिसो नळकारगामे जातवद्धो,* म॰ नि॰ 2.430; *असु अमुत्र उपपन्नो, असु अमुत्र उपपन्नो'ति,* म॰ नि॰ 2.137; - **असु** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असु हि, भन्ते, सत्ति तिण्हफला ...,* स॰ नि॰ 1(2).242; - **अमुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *... भब्बो नु खो सो पुरिसो अमुं सत्तिं तिण्हफलं पाणिना वा मुट्ठिना वा पटिलेणेतुं ...,* स॰ नि॰ 1(2).241; - **मुना** पु॰/नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपि नु तं परित्तं उदकं अमुना लोणकपल्लेन लोणं अस्स अपेय्य'न्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).283; *अमुना अकथितं इमस्स वदन्तानं पिसुणवाचानं वसेन भिन्नानं मनुस्सानं,* उदा॰ अट्ठ॰ 341; - **अमुया** स्त्री॰, तृ॰/प॰/ष॰/सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुया अमूहि अमूभि,* सद्द॰ 1.278; *अमुस्सा अमुया अमूसं ... अमुया अमुयं अमुस्सं अमूसु,* तदे॰; - **अमुस्स** पु॰/नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *... परिचारयमानो अमुस्स गहपतिस्स वा गहपतिपुत्तस्स वा पिहेय्य,* म॰ नि॰ 2.183; - **अमुस्सा** स्त्री॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पुरिसो अमुस्सा इत्थिया सारत्तो ... तिब्बच्छन्दो तिब्बापेक्खो,* म॰ नि॰ 3.9; - **अमुस्मा** पु॰/नपुं॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुस्मा अमुम्हा अमूहि अमूभि,* सद्द॰ 1.277; - **अमुस्मिं** पु॰/नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पमत्ता समाना ... अहेसुं नेवापिकस्स अमुस्मिं निवापे,* म॰ नि॰ 1.209; *अमुम्हि - गच्छ, अमुम्हि ओकासे तिट्ठाहीति,* महाव॰ 119; - **अमुया/अमुयं/अमुस्सं** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुया अमुयं अमूसु इदं इत्थिलिङ्गे,* सद्द॰ 1.278; - **अमू** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *उपसङ्कमन्ता खो अमू, आवुसो रेवत, सप्पुरिसा येनायस्मा सारिपुत्तो तेन धम्मस्सवनाय, ...,* म॰ नि॰ 1.276; - **अमूनि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अमुं निवापं निवुत्तं मारस्स अमूनि च लोकामिसानि ... भुञ्जिंसु,* म॰ नि॰ 1.213; **अमूहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इदञ्चिदञ्च वुत्ताति अमूहि कथितं ... पवेसेय्याति,* म॰ नि॰

अट्ठ॰ (उप.प.) 3.20; - **अमूसं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अमुत्त वा सुत्वा न इमेसं अक्खाता अमूसं भेदाय,* दी॰ नि॰ 1.4.

अमुक त्रि॰, सङ्केतक सर्व॰, अमु से व्यु॰ [अमुक], कोई व्यक्ति या पदार्थ, ऐसा व्यक्ति या पदार्थ, फलां फलां - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असु राजा, अमुको राजा,* क॰ व्या॰ 173; सद्द॰ 3.661; - **कं**[1] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुकं नाम जनपद'न्ति,* दी॰ नि॰ 2.254; - **कं**[2] स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुकं नाम गणकिं धीतरं याचिम्हा अम्हाकं कुमारकस्स,* पारा॰ 201; - **म्हा** पु॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुकम्हा जनपदा'ति,* दी॰ नि॰ 2.254; - **स्स** पु॰/नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुकस्स कुलस्स कुमारिका अभिरूपा दस्सनीया पासादिका पण्डिता,* पारा॰ 200; - **स्मिं** पु॰/नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुकस्मिं एवं सुखापितो'ति सरति,* मि॰ प॰ 87; श॰ रू॰ के लिए द्रष्ट॰, सद्द॰ 1.277-78; 3.661; क॰ व्या॰ 173.

अमुख त्रि॰, ब॰ स॰ [अमुख], मुखविहीन, मुंहरहित - **खे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *चन्दनिकाय पक्खित्ते अमुखे रवणघटे चन्दनिकरसो पविसति,* विभ॰ अट्ठ॰ 235.

अमुखर त्रि॰, [अमुखर], बकवास न करने वाला, बहुत अधिक बातें न करने वाला, वह, जो वाचाल न हो - **रेन** पु॰/नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *भिक्खुना सङ्घगतेन सङ्घे विहरन्तेन अमुखरेन भवितब्बं अविकिण्णवाचेन,* म॰ नि॰ 2.145; - **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *कुलपुत्ता सद्धा अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता असठा अमायाविनो अकेतविनो ... अमुखरा अविकिण्णवाचा,* म॰ नि॰ 1.39.

अमुच्चन्त त्रि॰, √मुच के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, न छोड़ते हुए, त्याग न करते हुए - **ते** पु॰/नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुच्चन्ते थुल्लच्चयमेव,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.223.

अमुच्चितुकम्यता स्त्री॰, मुक्ति पाने की अनिच्छा, मुक्ति न पाने की इच्छा - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मुच्चितुकम्यताञाणेन अमुच्चितुकम्यताय,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.8.

अमुच्छित त्रि॰, [अमूर्च्छित], मोह से मुक्त, वह, जो मूर्च्छित, सम्भ्रमित या किंकर्त्तव्यविमूढ़ न हो, तृष्णारहित - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुच्छितो यो नयते नयानयं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.390; *अमुच्छितोति छन्दादीहि अगतिकिलेसेहि अमुच्छितो अनभिभूतो हुत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.391; *अमुच्छितोति अधिमत्ततण्हाय मुच्छं अनापन्नो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.273.

अमुञ्चनरस त्रि॰, ब॰ स॰, मुक्त न होने देने का कार्य करने वाला - **सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *गहणलक्खणं उपादानं अमुञ्चनरसं ... तण्हापदट्ठानं,* विभ॰ अट्ठ॰ 128.

अमुञ्चित्वा √मुच के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, न छोड़ करके, विमुक्त न करके - *इस्सासो दण्डकसञ्ञं अमुञ्चित्वाव सरं खिपित्वा फलकसतं निब्बिज्झति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 275.

अमुण्ड त्रि॰, ब॰ स॰ [अमुण्ड], मुण्डन-रहित सिर वाला, वह, जो गंजा न हो, नहीं मुड़े हुए सिर वाला - **डो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *महामाताय पुत्तो अमुण्डो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).75.

अमुत त्रि॰, मुनाति का भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, [अमत], चित्त के द्वारा अचिन्तित, अबोधित या अविचारित, इन्द्रियों द्वारा अगृहीत - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुतं मुतं मेति,* पाचि॰ 2.3; *घानादिवसेन मुनित्वा तीहि इन्द्रियेहि एकाबद्धं विय कत्वा अग्गहितं अमुतं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 3; - **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुते अमुतवादी होति,* अ॰ नि॰ 1(2).259; - **वादी** त्रि॰, [वादिन्], किसी चीज को अचिन्तित कहने वाला - **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुते अमुतवादी होति,* अ॰ नि॰ 1(2).259; - **वादिता** स्त्री॰, भाव॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, आठ अनार्य-व्यवहारों में से एक - *अट्ठिमे अनरियवोहार ... मुते अमुतवादिता,* अ॰ नि॰ 3(1).131.

अमुत्त त्रि॰, √मुच के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अमुक्त], **क.** वह, जिसके बन्धन खोले न गये हों, जो जाने में स्वतन्त्र न हो, जन्म-मरण के बन्धन से जिसे मुक्ति न मिली हो अथवा जिसे निर्वाण प्राप्त न हुआ हो - **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *असुरं पेत्तिविसयं अमुत्ता मारबन्धना,* इतिवु॰ 66; **ख.** वह, जिसे निष्कासित न किया गया हो या जो फेंका न गया हो - **त्ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुत्ते थुल्लच्चयन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.222; - **ग. त्तं** नपुं॰, एक हथियार (चाकू या तलवार आदि), जो सदैव पकड़ा जाता है, फेंका नहीं जाता (है), चार आयुधों में से एक - *अमुत्तं छुरिकादिकं,* अभि॰ प॰ 387; - **तण्ह** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमुक्ततृष्ण], तृष्णा से सर्वथा अविमुक्त - **तण्हा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अमुत्ततण्हाति अप्पहीनतण्हा,* महानि॰ 35; *अमुत्ततण्हाति मच्चन्तसमुच्छेदप्पहानाभावेन न मुत्ततण्हा,* महानि॰ अट्ठ॰ 125.

अमुत्र स्थानसूचक निपा॰, इध का विप॰ [अमुत्र], **क.** वहां, उस स्थान पर, फलां फलां स्थान पर, परलोक में, आगामी जीवन में - *अमुत्रासिं एवंनामो एवंगोत्तो,* पारा॰ 5; *कथं? "अमुत्रासि"न्तिआदिना नयेन, तत्थ अमुत्रासिन्ति अमुम्हि संवट्टकप्पे अहं अमुम्हि भवे वा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.119; *इध गच्छ, अमुत्रागच्छ, इदं हर, अमुत्र इदं आहरा'ति इति वा*

इति ..., दी॰ नि॰ 1.8; **ख**. एक स्थान से दूसरे स्थान में, अन्यत्र - *अमुत्रागच्छाति ततो असुकं नाम ठानं आगच्छ, ... अमुत्र इदं आहराति असुकट्ठानतो इदं नाम इध आहर,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.82.

अमुदु त्रि॰, [अमृदु], वह, जो अतीव कोमल न हो, वह, जो अतिशय सुकुमार न हो या अतीव विनम्र न हो, अतीक्ष्ण - **दु** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुदु अतिक्खो हुत्वा रज्जं कारेय्याति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.171; - **क** त्रि॰, मजबूत, पक्का, टिकाऊ - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पटिथद्धन्ति थद्धं अमुदुकं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.248; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमृदुचित्त], जिद्दी, हठधर्मी, अड़ियल, कठोर चित्त वाला - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेन थद्धो होति अमुदुचित्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).115; - **चित्तता** स्त्री॰, भाव॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, चित्त का कठोर या हठी होना - *अमुदुता अमद्दवता कक्खळियं फारुसियं कक्खळता कठिनता उजुचित्तता अमुदुता अयं वुच्चति अमद्दवो,* विभ॰ 415; *अमद्दवनिद्देसे न मुदुभावो अमुदुता,* विभ॰ अट्ठ॰ 466.

अमुय्हमान त्रि॰, √मुह के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अमुह्यमान], भ्रान्त न होता हुआ, मोहग्रस्त न होता हुआ, अविभ्रान्त - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *एवं अरज्जमानो अदुस्समानो अमुय्हमानो अकिलिस्समानोति,* चूळनि॰ 86.

अमूग त्रि॰, [अमूक], वह, जो गूंगा न हो, वह, जो मूक या मौन न हो - **गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *स पत्तपाणि विचरन्तो अमूगो मूगसम्मतो,* सु॰ नि॰ 718; *अथ वा अनेळो च अमूगो च, पण्डितो ब्यत्तोति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98.

अमूल नपुं॰, [अमूल], **क**. मूल या आधार का अभाव, जड़ का न रहना, आधार-हीनता - **ला** पु॰/नपुं॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सङ्घो तं वत्थुं अविनिच्छिनित्वा अमूला मूलं गन्त्वा सङ्घसामग्गिं करोति,* महाव॰ 482; **ख**. त्रि॰, बिना मूल्य का, बिना भुगतान का - **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमूलं एत्थ कम्मं च न कातब्बं ति आपयि,* म॰ वं॰ 30.17.

अमूलक त्रि॰, [अमूलक], **शा॰ अ॰** जड़-रहित, निर्मूल - **लिका** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एका अमूलिका लता होति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 26; **ला॰ अ॰ क**. निराधार, वस्तुतः अविद्यमान, अवास्तविक - **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमूलकेन अब्रह्मचरियेन अनुद्धंसेति,* पारा॰ 110; *अमूलकेन अब्रह्मचरियेन अनुद्धंसेतीति तस्मिं पुग्गले अविज्जमानेन अन्तिमवत्थुना अनुवदति चोदेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.69; - **लिकाय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आयस्मन्तं दब्बं मल्लपुत्तं अमूलिकाय सीलविपत्तिया अनुद्धंसेस्सन्तीति,* चूळव॰ 181; **ला॰ अ॰ ख**. निरर्थक, व्यर्थ, बेकार - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमूलकं सुराभत्तं नट्ठन्ति कोधाभिभूतो ... पक्कामि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.339; **ला॰ अ॰ ग**. निःशुल्क, बिना मूल्य का, मुफ्त - **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तुम्हे निस्साय मयं अमूलकानि सुराभत्तादीनि न लभिम्हाति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.350.

अमूलक-कथा स्त्री॰, विन॰ वि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, विन॰ वि॰ 141.

अमूलकभूतगाम पु॰, कर्म॰ स॰, बिना जड़ वाले पेड़ पौधे - **मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमूलकभूतगामे सङ्गहं गच्छति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 26.

अमूलकवल्ली स्त्री॰, एक लता का नाम - *अमूलकवल्लि चतुरस्सवल्लिकणवीरादीनि फळुबीजानि,* पाचि॰ अट्ठ॰ 24.

अमूलकसिक्खापद नपुं॰, पाचि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, पाचि॰ 197-198.

अमूल'न्तिमवत्थु नपुं॰, वस्तुतः अविद्यमान पाराजिक अपराध, अकारण या निराधार रूप में आरोपित पाराजिक अपराध - **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चोदनाय गरुं भिक्खुं अमूल'न्तिमवत्थुना,* उत्त॰ वि॰ 65.

अमूलवल्ली स्त्री॰, बिना जड़ की लता *अमूलवल्लिआदीनमयमेव विनिच्छयो,* विन॰ वि॰ 1016.

अमूलिक त्रि॰, [अमूल्य], अत्यधिक मूल्य वाला, अमूल्य - **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमूलिकञ्च वजिरवलयं देवदत्तियं,* चू॰ वं॰ 55.17.

अमूळ्ह त्रि॰, √मुह के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अमूढ], **शा॰ अ॰** मोह-मुक्त, मोह-रहित, मोह से अनभिभूत, **ला॰ अ॰ क**. पूर्ण चेतना से युक्त - **ळ्हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमूळ्हो गब्भमेस्सामि,* दी॰ नि॰ 2.211; *अमूळ्हो गब्भमेस्सामीति नियतगतिकत्ता अमूळ्हो हुत्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.297; **ला॰ अ॰ ख**. चेतना को पुनः प्राप्त कर चुका, फिर से होश में वापस लौटा हुआ व्यक्ति - **स्स ष॰** वि॰, ए॰ व॰ - *सङ्घो मग्गस्स भिक्खुनो अमूळ्हस्स अमूळ्हविनयं देतु,* चूळव॰ 183; **ला॰ अ॰ ग**. चतुर, कुशल, दक्ष - **हा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अमूळ्हा अजळा नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.366; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अमूढचित्त], मोह से अनभिभूत या अप्रभावित चित्त वाला - **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अमूळ्हचित्ता विवदन्ति,* चूळव॰ 196; - **विनय** पु॰, पागलपन की अवस्था में किसी भिक्षु द्वारा किए गए अपराध के मसले को हल करने हेतु किया जाने वाला संघकर्म - **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰

– ... *अमूळ्हविनयो दातब्बो,* पाचि॰ 283; – **विनयारह** त्रि॰, [अमूढविनयार्ह], अमूळ्ह-विनय नामक संघकर्म द्वारा आपत्ति या अपराध का समाधान पाने योग्य (भिक्षु) - **रहस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सतिविनयारहस्स अमूळ्हविनयं देति ... अमूळ्हविनयारहस्स तस्सपापियसिकाकम्मं करोति ...,* महाव॰ 424.

अमेज्झ क. त्रि॰, [अमेध्य], अपवित्र, अशुद्ध, **ख.** नपुं॰, मल, विष्ठा, मैला - **ज्झेन** पु॰/नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चतुत्थे असुचिनाति गूथसदिसेन अपरिसुद्धेन अमेज्झेन,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.237; - **पोत्थकाकार** त्रि॰, ब॰ स॰, मिट्टी या लकड़ी से बने अपवित्र खिलौने जैसा - **रं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमेज्झपोत्थकाकारं तनुच्छविविमोहिता,* सद्धम्मो॰ 363; - **भरित** त्रि॰, अपवित्रता से पूर्ण या भरा हुआ - **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जाता अमेज्झभरिता, अहो रूपमसस्सतं,* अप॰ 2.245.

अमेतब्ब त्रि॰, √मा के सं॰ कृ॰ का निषे॰, नहीं मापने योग्य, अपरिमेय, वह, जिसका माप न किया जा सके या जिसे तौला न जा सके - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *निक्करिसं नाम करिसमत्तेना पि अमेतब्बतो लहुभावो येव,* सद्द॰ 2.435.

अमेति √अम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, रोगग्रस्त होता है, रुग्ण होता है, बीमार पड़ जाता है - *अम रोगे अमेति अमयति,* सद्द॰ 2.558.

अमोघ त्रि॰, अचूक, अव्यर्थ, फलप्रद, अनिष्फल, प्रभावोत्पादक - **घो** पु॰, - *अमोघो अय्यायोवादो, तेविज्जाम्हि अनासवा ति,* थेरीगा॰ 126; - **घं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमोघं दिवसं कयिरा,* थेरगा॰ 451; *अमोघं दिवसं कयिरा ... पवत्तितेन विपस्सनामनसिकारेन अमोघं आवज्झं दिवसं करेय्य,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.102; - **घा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अद्धा अमोघा मम पुच्छना अहु,* सु॰ नि॰ 509; *दक्खिणेय्ये सुत्वा'अत्तमानो ब्राह्मणो आह अद्धा अमोघा'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.129; - **कथा** स्त्री॰, कभी निष्फल न होने वाला कथन - **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अद्वेज्झकथं अमोघकथं निय्यानिककथं कथेन्तेन ... पच्चनीकग्गाहं गण्हितु'न्ति ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(2).99; - **धुवसिद्धकम्म** त्रि॰, ब॰ स॰, सफल एवं निश्चित रूप से सिद्ध होने वाले कर्म को करने वाला, फलदायक कर्म का कर्ता - **म्मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सभावइसिभत्तिको ... रोगप्पत्तिकुसलो अमोघधुवसिद्धकम्मो भिसक्को सल्लकत्तो,* मि॰ प॰ 233; - **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *पुरिसो परमब्याधितो रोगुप्पत्तिकुसलं अमोघधुवसिद्धकम्मं भिसक्कं सल्लकत्तं दिस्वा ...,* मि॰ प॰ 232; - **वचन** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अमोघवचन], कभी बेकार न होने वाले वचन बोलने वाला, अव्यर्थ वचन बोलने वाला - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमोघवचनो धम्मकायो माराभिभू,* सद्द॰ 1.74; - **ना** ब॰ व॰ - *अमोघवचना बुद्धा भगवन्तो तथवचना अद्वेज्झवचना,* मि॰ प॰ 142.

अमोसधम्म त्रि॰, ब॰ स॰ [अमृषाधर्म], कभी असत्य न होने की प्रकृति वाला, कभी विनष्ट न होने की प्रकृति से युक्त, स्वभाव से ही अविनाशी या अपरिवर्तनशील (निर्वाण) - **म्मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमोसधम्मं निब्बानं, तदरिया सच्चतो विदू,* सु॰ नि॰ 763.

अमोह[1] पु॰, [अमोह], मोह का अभाव, सम्यक्-प्रजानन, प्रज्ञा, सम्यक्-दृष्टि - **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि इदं वुच्चति सम्पजञ्ञं,* पु॰ प॰ 131; *पटिभानममोहो,* अभि॰ प॰ 153; *पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञबलं अमोहो सम्मादिट्ठि च,* सद्द॰ 1.82; - **ज** त्रि॰, प्रज्ञा या ज्ञान से उत्पन्न होने वाला - **जं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमोहपकतं कम्मं अमोहजं अमोहनिदानं अमोहसमुदयं,* अ॰ नि॰ 1(1).160; - **जा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इतिस्समे अमोहजा अमोहनिदाना ... अनेके कुसला धम्मा सम्भवन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).233; - **ज्झासया** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, मोह-रहित चित्तवृत्ति वाले - *अमोहज्झासया च बोधिसत्ता मोहे दोसदस्साविनो,* विसुद्धि॰ 1.113; - **निदान** त्रि॰, मोह से अनुत्पन्न - **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमोहपकतं कम्मं अमोहजं अमोहनिदानं अमोहसमुदयं,* अ॰ नि॰ 1(1).160; - **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमोहजा अमोहनिदाना अमोहसमुदया अमोहपच्चया ... धम्मा सम्भवन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).233; - **निस्सन्दता** स्त्री॰, भाव॰, अमोह, प्रज्ञा या सम्यक्-दृष्टि का फल होना - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमोहनिस्सन्दताय मनोजवं गच्छति येनकामं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 11; - **पकत** त्रि॰, (अमोह) या प्रज्ञा के प्रभाव द्वारा निष्पन्न या किया गया - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमोहपकतं कम्मं अमोहजं अमोहनिदानं अमोहसमुदयं,* अ॰ नि॰ 1(1).160; - **पच्चय** त्रि॰, अमोह या प्रज्ञा के द्वारा निर्धारित, अमोह पर आधारित - **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इतिस्समे अमोहसमुदया अमोहपच्चया अनेके कुसला धम्मा सम्भवन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).233; - **समुदय** त्रि॰, अमोह से उदित होने वाला - **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कम्मं अमोहजं अमोहनिदानं अमोहसमुदयं,* अ॰ नि॰ 1(1).160; - **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इतिस्समे अमोहजा अमोहनिदाना अमोहसमुदया*

अमोहपच्चया अनेके कुसला धम्मा सम्भवन्ति, अ॰ नि॰ 1(1).233; - **हुस्सद** त्रि॰, प्रज्ञा अथवा ज्ञान से परिपूर्ण, प्रज्ञा अथवा ज्ञान की प्रधानता को लिए हुए - **दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *लोभुस्सदा दोसुस्सदा मोहुस्सदा अलोभुस्सदा अदोसुस्सदा अमोहुस्सदा च होन्ति*, विसुद्धि॰ 1.101.

अमोह² त्रि॰, ब॰ स॰ [अमोह], मोह से मुक्त, अज्ञानरहित - **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सो अरागो अदोसो अमोहो अनङ्गणो असंकिलिट्ठचित्तो कालं करिस्सति*, म॰ नि॰ 1.32.

अमोहयि √मुह के प्रेर॰ का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, मोहजाल में फंसा लिया, मूर्ख बना दिया, धोखा दिया - *अमोहयि मच्चुराजन्ति ब्रूमी'ति*, इतिवु॰ 43; - **यित्थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ - *मच्चुराजा अमोहयित्थ वसानुगे*, सु॰ नि॰ 334.

अम्ब क. पु॰ / नपुं॰, [आम्र], आम्रवृक्ष, आम का पेड़ - **म्बो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अम्बो चूतो, सहो त्वेसो सहकारो सुगन्धता*, अभि॰ प॰ 557; *तस्सा अविदूरे अम्बो*, महाव॰ 35; - **म्बं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *साधू'ति अम्बं उपगन्त्वा सत्तपदमत्थके ठितो*, जा॰ अट्ठ॰ 4.181; - **म्बस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मूलं अम्बस्सुपागच्छिं*, जा॰ अट्ठ॰ 6.74; - **म्बा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अम्बा कपित्था पनसा, साला जम्बू विभीतका*, जा॰ अट्ठ॰ 7.293; - **म्बेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अलं मेतेहि अम्बेहि*, जा॰ अट्ठ॰ 2.132; **ख.** नपुं॰, आम का फल - **म्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सेय्यथापि तं अम्बं आमं आमवण्णि ...*, पु॰ प॰ 154; - **म्बं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सामि, इच्छामहं अम्बं खादितु'न्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.24; - **म्बा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अम्बाव पतिता छमा*, जा॰ अट्ठ॰ 7.251; *अम्बाव पतिता छमाति भूमियं पतितअम्बपक्कानि विय*, तदे॰ - **म्बे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अम्बे आमलकानि च*, थेरगा॰ 938; - **म्बानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *पविट्ठे अम्बचोरका अम्बानि पातेत्वा खादित्वा च गहेत्वा च गच्छन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.117.

अम्मकञ्जिक नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अम्लकञ्जिक], खट्टी काँजी - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अम्बकञ्जिकं अहमदासिं*, वि॰ व॰ 517; *अम्बकञ्जिकन्ति अम्बिलकञ्जिकं*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 121.

अम्बकट्ठ नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आम्रकाष्ठ], आम की लकड़ी का टुकड़ा, आम्रकाष्ठ - **ट्ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अथापरो पुरिसो सुक्खं अम्बकट्ठं आदाय अग्गिं अभिनिब्बत्तेय्य*, म॰ नि॰ 2.337.

अम्बकपञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [अम्बिकाप्रज्ञ], स्त्री होने के नाते अन्य स्त्री की ही तरह चतुर या बुद्धिमती - **ञ्ञा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उपासिका बाला अब्यत्ता अम्मका अम्मकपञ्ञा*, अ॰ नि॰ 2(2).63; *अम्मका अम्मकपञ्ञाति इत्थी हुत्वा इत्थिसञ्ञाय एवं समन्नागता*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.116; अम्मक के अन्त॰.

अम्बका स्त्री॰, [अम्बिका], नारी, स्त्री - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जितम्हा वत भो अम्बकाय पराजितम्ह वत भो अम्बकाया'ति*, महाव॰ 308; *अम्बकायाति मातुगामेन, उपचारवचनञ्हेतं, इत्थीसु यदिदं अम्बका मातुगामो जननिकाति*, सारत्थ॰ टी॰ 3.291.

अम्बगन्धी पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [आम्रगन्धी], एक वृक्ष का नाम, जिसकी गन्ध आम की गन्ध के समान होती है - *नयिता अम्बगन्धी च*, अप॰ 1.13.

अम्बगहपतिस्स पु॰, एक श्रामणेर का नाम - **स्सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कलियुगे पन ... सीहलदीपतो अम्बगहपतिस्सो . .. वातुरगम्भो ति इमे छ सामणेरा ... आगता ...*, सा॰ वं॰ 124(ना॰).

अम्बगाम पु॰, **क.** वैशाली और भोगनगर के बीच में स्थित एक गांव का नाम - *येन हत्थिगामो, येन अम्बगामो ... भोगनगरं तेनुपसङ्कमिस्सामा'ति*, दी॰ नि॰ 2.94; **ख.** श्रीलङ्का में स्थित एक प्राचीन गांव का नाम - **ग्गामे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अम्बग्गामे चतुत्तिंसहत्थायामं मनोहरं*, चू॰ वं॰ 86.23; पाठा॰ अम्बग्गाम.

अम्बगोपक पु॰, [आम्रगोपक], आम्रवृक्षों की रक्षा करने वाला - **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पुब्बेपेस अम्बगोपको हुत्वा ...*, जा॰ अट्ठ॰ 3.117.

अम्बङ्कुर पु॰, [आम्राङ्कुर], आम का अङ्कुर या अंखुआ - **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अम्बङ्कुरवण्णन्ति अम्बङ्कुरेन समानवण्णं*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 350.

अम्बङ्गण नपुं॰, श्रीलङ्का के एक स्थान का नाम - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ओकासे सङ्घस्स अनागते अम्बङ्गणं नाम सन्निपातट्ठानं भविस्सति*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.70.

अम्बचोरक पु॰, [आम्रचोरक], आम के फलों को चुराने वाला - **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *भिक्खाचारं पविट्ठे अम्बचोरका अम्बानि पातेत्वा खादित्वा च गहेत्वा च गच्छन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.117; - **वत्थु** नपुं॰, वि॰ पि॰ के एक खण्ड का शीर्षक - *सत्तसु अम्बचोरकादिवत्थूसु पंसुकूलसञ्ञाय गहणे अनापत्ति*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.307.

अम्बट्ठ पु॰, ब्राह्मण-जाति में उत्पन्न, पोक्खरसाति नामक ब्राह्मण आचार्य के एक शिष्य का नाम - **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰

व॰ – *ब्राह्मणस्स पोक्खरसातितस्स अम्बट्ठो नाम माणवो अन्तेवासी होति,* दी॰ नि॰ 1.76; – **कुल** नपुं॰, अम्बट्ठ का परिवार या कुल – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बट्ठकुलस्स खत्तिय, ... अट्ठ,* जा॰ अट्ठ॰ 3.366; *अम्बट्ठकुलस्साति कुटुम्बियकुलस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 3.367.

अम्बट्ठकोलक पु॰, श्रीलङ्का के एक जिला का नाम – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जम्बुदीपा इध आगम्म देसे अम्बट्ठकोलके,* चू॰ वं॰ 39.21; – **लेणम्हि** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरतो दक्खिणे पस्से अड्ढयोजनमत्थके, अम्बट्ठकोललेणम्हि रजतं उपपज्जथ,* म॰ वं॰ 28.20.

अम्बट्ठज पु॰, चौदह चक्रवर्ती राजाओं का पदनाम – *सत्तसत्ततिकप्पसते, अम्बट्ठजसनामका,* अप॰ 1.116.

अम्बट्ठवंस पु॰, अम्बट्ठ गोत्र के मनुष्यों की कुलपरम्परा या वंश – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं सक्यवंसं पकासेत्वा इदानि अम्बट्ठवंसं पकासेन्तो ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.212.

अम्बट्ठवेस्स पु॰, द्व॰ स॰, सदा ब॰ व॰ में, अम्बष्ठ लोग एवं वैश्य लोग – **स्सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *समा अम्बट्ठवेस्सेहि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.326.

अम्बट्ठसुत्त नपुं॰, दी॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, दी॰ नि॰ 1.76-96.

अम्बट्ठा[1] स्त्री॰, [अम्बष्ठा], एक पौधे का नाम, जूही का पौधा - *अम्बट्ठा च तथा पाठा कटुका अटुकरोहिणी,* अभि॰ प॰ 582.

अम्बट्ठा[2] स्त्री॰, जादू-टोने की एक विद्या - **ट्ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धनुअगमीनयं अम्बट्ठं नाम विज्जं अदासि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.214.

अम्बट्ठि नपुं॰, [आम्रास्थि], आम की गुठली या आंठी – **ट्ठिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"इमं अम्बट्ठिं इधेव पंसुं वियूहित्वा रोपेही"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.119; – **ट्ठीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कण्डम्बो नाम अय'न्ति वत्वा ते उच्छिट्ठअम्बट्ठीहि पहरिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.119; – **क** नपुं॰, उपरिवत् - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बट्ठिकं अदा राजा तं सयं तत्थ रोपयि,* म॰ वं॰ 15.42.

अम्बण नपुं॰, पानी मापने का छोटी डोंगी जैसा एक जलपात्र, द्रोण या द्रोणी जैसा जलपात्र – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दीघफलकं ... दण्डमुग्गरो, अम्बणं राजनदोणि ... सङ्घे दिन्नं गरुभण्डं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 82; *अम्बणन्ति फलकेहि पोक्खरणीसदिसं कतपानीयभाजनं,* सारत्थ॰ टी॰ 3.366.

अम्बति √अबि का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, शब्द करता है, ध्वनि करता है – *अबि सद्दे अम्बति, अम्बा अम्बु,* सद्द॰ 2.406.

अम्बतरुण नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आम्रतरुण], आम का कोमल फल, जिसका प्रयोग अम्बपान बनाने के लिए होता था – **णानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आमेहि करोन्तेन अम्बतरुणानि भिन्दित्वा उदके पक्खिपित्वा, ...,* महाव॰ अट्ठ॰ 361.

अम्बतित्थ[1] नपुं॰, चेतिय क्षेत्र के भद्दवतिका के समीप में स्थित एक तीर्थ – **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवा अम्बतित्थं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.344.

अम्बतित्थ[2] पु॰, अम्बतित्थ का निवासी एक जटिल – *अथ खो आयस्मा सागतो येन अम्बतित्थस्स जटिलस्स अस्समो तेनुपसङ्कमि,* पाचि॰ 148.

अम्बतित्थक क. पु॰, एक नाग - **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बतित्थे जटिलस्स अस्समे अम्बतित्थको नाम नागो आसीविसो घोरविसो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.344; **ख**. नपुं॰, श्रीलङ्का का एक स्थान – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गहेत्वा दमिळे तत्थ आगन्त्वा अम्बतित्थकं,* म॰ वं॰ 25.7.

अम्बत्थल नपुं॰, श्रीलङ्का में मिस्सक पर्वत का एक पठार – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठासि सीलकूटम्हि रुचिरम्बत्थले वरे,* म॰ वं॰ 13.20; – **मग्ग** पु॰, अम्बत्थल की ओर जाने वाला मार्ग – **ग्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मिगो अम्बत्थलमग्गं गहेत्वा पलायितुं आरभि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.52; – **महाथूप** पु॰, अम्बत्थल पर स्थित एक विशाल स्तूप – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बत्थलमहाथूपं कारापेसि महीपति,* म॰ वं॰ 34.71.

अम्बदान नपुं॰, [आम्रदान], आम के फलों का दान – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना मधुदानेन अम्बदानेन चूभयं,* अप॰ 1.116.

अम्बदायक पु॰, एक स्थविर, जिसने बुद्ध को आम के फलों का दान दिया था – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा अम्बदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.116.

अम्बदुग्गमहावापी स्त्री॰, श्रीलङ्का के एक सरोवर का नाम – **पिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बदुग्गमहावापिं भयोलुप्पलमेव च,* म॰ वं॰ 34.33.

अम्बदोहळिनी विशे॰, [आम्रदोहदिनी], आमों की अत्यधिक इच्छा करने वाली गर्भवती स्त्री – **नी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स भरिया अम्बदोहळिनी हुत्वा तं आह,* जा॰ अट्ठ॰ 3.24.

अम्बपक्क नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आम्रपक्व], पका हुआ आम का फल – **क्कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बपक्कं दकं सितं,* सद्द॰ 1.237; – **क्कानि** ब॰ व॰ – *अम्बे रक्खन्तो पतितानि अम्बपक्कानि खादन्तो विचरति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.117.

अम्बपन्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आम्रपंक्ति], आमों की कतार या पंक्ति – **तीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो आवासो समन्ततो*

अम्बपन्तीहि परिक्खित्तो छायूदकसम्पन्नो ..., वि॰ व॰ अट्ठ॰ 166.

अम्बपल्लवसङ्कास त्रि॰, [आम्रपल्लवसङ्काश], आम के पल्लवों के समान - **सं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बपल्लवसङ्कासं, अंसे कत्वान चीवरं*, थेरगा॰ 197; *अम्बपल्लवसङ्कासं, अंसे कत्वान चीवरन्ति अम्बपल्लवाकारं पवाळवण्णं चीवरं ... उत्तरासङ्गं करित्वा*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.348.

अम्बपान नपुं॰, [आम्रपान], आम के फलों से बना हुआ एक मादक पेय - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बपानं जम्बुपानं चोचपानं ... फारुसकपानं*, महाव॰ 322; *अम्बपानन्ति आमेहि वा पक्केहि वा अम्बेहि कतपानं*, महाव॰ अट्ठ॰ 361.

अम्बपानक नपुं॰, उपरिवत् – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्था अम्बपानकं पिवित्वा कण्डं आह*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.119.

अम्बपालक पु॰, [आम्रपालक], आम की रक्षा करने वाला – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अम्बपालका भिक्खूनं अम्बफलं देन्ति*, पारा॰ 77.

अम्बपाली स्त्री॰, वैशाली की एक विश्वसुन्दरी गणिका - **ली** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बपाली च गणिका अभिरूपा होति दस्सनीया पासादिका परमाय वण्णपोक्खरताय समन्नागता*, महाव॰ 356; – **लि** संबो॰, ए॰ व॰ *देहि, जे अम्बपालि, अम्हाकं एतं भत्तं सतसहस्सेना'ति*, महाव॰ 308; – **लिवग्ग** पु॰, स॰ नि॰ के सतिपट्ठानसुत्त-संयुत्त का एक खण्ड, जिसमें कुल 10 ऐसे सुत्तों का संग्रह है जिनका उपदेश वैशाली के आम्रपाली के उद्यान में दिया गया था, स॰ नि॰ 3(1).220-234; – **लिवन** नपुं॰, अम्बपाली का उद्यान या वन - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति अम्बपालिवने*, स॰ नि॰ 3(1).220.

अम्बपासाणवासी पु॰, श्रीलङ्का में अवस्थित एक विहार का निवासी – *दक्खिणदिसाभागे ... अम्बपासाणवासि-चित्तगुत्तत्थेरो नाम पुथुज्जनकाले विचित्तपटिभाणो परिसावचरो ...*, म॰ वं॰ टी॰ 511(ना॰).

अम्बपिण्डी स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [आम्रपिण्डी], आम के फलों का गुच्छा, आम्रस्तवक - *अम्बपिण्डी मया दिन्ना, विपस्सिस्स महेसिनो*, अप॰ 1.264; – **ण्डिधर** त्रि॰, आम के गुच्छों को धारण करने वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकेकस्मिं ठाने परिपक्कअम्बपिण्डिधरो अहोसि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.119; – **ण्डिदण्डक** पु॰, आम के गुच्छों का डण्ठल या वृन्त – अम्बपिण्डिदण्डकानुवत्तकानि भवन्तीतिपि अत्थो, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.123.

अम्बपिण्डिय पु॰, दो थेरों (स्थविरों) का नाम - **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा अम्बपिण्डियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति*, अप॰ 1.264; 2.22.

अम्बपेतवत्थु नपुं॰, पे॰ व॰ अट्ठ॰ के एक खण्ड का शीर्षक, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 238-241.

अम्बपेसिका स्त्री॰, [आम्रपेशिका], आम के फलों का रेसा – **यो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सूपे अम्बपेसिकायो पक्खित्ता होन्ति*, चूळव॰ 226.

अम्बपोतक पु॰, [आम्रपोतक], आम का छोटा (तरुण) पौधा – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अन्तमसो तदहुजातम्पि अम्बपोतकं उप्पाटेत्वा अरञ्ञे खिपापेसुं*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.118; – **रस** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मधुरं अम्बपक्कं ... अम्बपोतकस्स समन्ता उदककोट्ठकं थिरं कत्वा बन्धति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).242.

अम्बफल नपुं॰, [आम्रफल], आम का फल – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *राजूनं अम्बफलं पेसेन्तो अट्ठितो रुक्खनिब्बत्तनभयेन ...*, जा॰ अट्ठ॰ 2.86; – **लानि** द्वि॰ वि॰ ब॰ व॰ – *पक्खित्तानि अम्बफलानि कानिचि तापसा गण्हिंसु*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 133; – **लानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अम्बफलानं तित्तकभावं ञत्वा उय्यानपालो पलायि*, जा॰ अट्ठ॰ 2.86.

अम्बफलिक पु॰, आमों का विक्रेता, आम बेचने वाला – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सालाकिको, तिन्दुकिको अम्बफलिको ... नाळिकेरिको इच्चेवमादि*, क॰ व्या॰ 353.

अम्बबीज नपुं॰, [आम्रबीज], आम का बीज, आम की गुठली या आंठी – **जं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मधुरम्बबीजं रोपेत्वा समन्ता मरियादं बन्धित्वा ...*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.8.

अम्बमाल पु॰, श्रीलङ्का के रोहण में स्थित एक प्राचीन विहार – *अम्बमालविहारादिविहारे कारयी बहू*, चू॰ वं॰ 45.55.

अम्बयाग पु॰, [आम्रयाग], आम के फल का नैवेद्य, आम के फल का दान – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्बुद्धं यन्तं दिस्वान अम्बयागं अदासहं*, अप॰ 1.232.

अम्बयागु स्त्री॰, [आम्रयवागू], आम का यवागू (दलिया) – **गुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्चेकबुद्धं दिस्वान, अम्बयागुं अदासहं*, अप॰ 1.309.

अम्बयागुदायक पु॰, एक स्थविर, जिसने बुद्ध को आम के दलिया का दान दिया था – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं*

अम्बयागुदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति, अप॰ 1.309.

अम्बर नपुं॰, [अम्बर], **क.** आकाश, आदित्यपथ, तारापथ – आकासो अम्बरं अब्भं ..., सद्द॰ 2.442; – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *छादितं होति अम्बरं,* अप॰ 1.15; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गच्छन्ति अम्बरे तदा,* अप॰ 1.15; **ख.** वस्त्र, कपड़ा – *पटोचोलो साटको च, वासो वसनमंसुकं, दुस्समच्छादनं वत्थं, चेलं वसनि अम्बरं,* सद्द॰ 2.353; – **म्बरे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मणिसङ्खमुत्तारतनं, नानारत्ते च अम्बरे,* जा॰ अट्ठ॰ 6.115.

अम्बर / अम्बरवती स्त्री॰, उत्तरकुरु के एक नगर का नाम – **तियो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नवनवुतियो अम्बर-अम्बरवतियो ... नाम राजधानी,* दी॰ नि॰ 3.152.

अम्बरंससनाम त्रि॰, ब॰ स॰, अम्बरंसस नाम वाले 35 चक्रवर्ती राजा – **मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अम्बरंससनामा ते, चक्कवत्ती महब्बला,* अप॰ 1.169.

अम्बरंसि पु॰, वाराणसी का एक प्राचीन राजा – *तस्स पुत्तो अम्बरंसि नाम ... अहोसी ति इमे सोळस राजानो बाराणसियमेव कताभिसेका ति दट्ठब्बा,* म॰ वं॰ टी॰ 100(ना॰).

अम्बरस पु॰, [आम्ररस], आम के फलों का रस – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो ततो पट्ठाय थेरिया निबद्धं अम्बरसं दापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.324; – **दान** नपुं॰, आम के रस का दान – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *जेतवने विहरन्तो सारिपुत्तत्थेरस्स ... अम्बरसदानं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.323.

अम्बरावचर त्रि॰, [अम्बरावचर], आकाश में विचरण करने वाला, आकाश या गगन में सञ्चरण करने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अम्बरावचरा सब्बे, वसन्ति अस्समे तदा,* अप॰ 1.399.

अम्बरियविहारवासी त्रि॰, श्रीलङ्का के अम्बरिय-नामक विहार का निवासी – **नो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बरियविहारवासिनो पिङ्गलबुद्धरक्खितत्थेरस्स, सन्तिके ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 149.

अम्बरुक्ख पु॰, [आम्रवृक्ष], आम का पेड़ – **खो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वारसमीपे तरुणअम्बरुक्खो अत्थि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.41; – **क्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हत्थगतभावं ञत्वा अम्बरुक्खं ... फग्गववल्लियो च रोपेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.86; – **क्खे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रमणीयं आवासं कारेत्वा तस्स समन्ततो अम्बरुक्खे रोपेसि,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 166; – **मत्थक** पु॰, आम के पेड़ का शिखर, आम्रवृक्ष की चोटी – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *महतिमहन्ते अम्बरुक्खमत्थके फलापिण्डि भवेय्य,* मि॰ प॰ 246; – **सण्ड** [आम्रषण्ड], पु॰, आम के पेड़ों का वन – **ण्डे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बवनेति तरुणअम्बरुक्खसण्डे,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.300.

अम्बलकोट्ठक / अम्बणकोट्ठक नपुं॰, आसनशाला, बैठक घर – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जेतवने विहरन्तो अम्बणकोट्ठके आसनसालाय भत्तभुञ्जनसुनखं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.206.

अम्बलट्ठिका स्त्री॰, [आम्रयष्टिका], तरुण आम्रवृक्ष, एक स्थान विशेष का नाम, जो राजगृह तथा नालन्दा के बीच अवस्थित था तथा जिसमें राजा का विश्रामगृह या राजागारक एवं एक उद्यान भी था – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थसमीपं गतो सूरियो'ति अम्बलट्ठिकायं राजागारके एकरत्तिवासं उपगच्छि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.41; – **द्वार** नपुं॰, अम्बलट्ठिका का प्रवेश-द्वार – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *बुद्धलीलाय गच्छमानो अनुपुब्बेन अम्बलट्ठिकाद्वारं पापुणित्वा सूरियं ओलोकेत्वा ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.41; – **पासाद** पु॰, अनुराधपुर में लौहप्रासाद का एक भाग, अम्बलट्ठिका-प्रासाद – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बलट्ठिकपासादो तस्स मज्झे सुभो अहु,* म॰ वं॰ 27.17; *तस्स मज्झे ति तस्स पासादस्स मज्झे सुभो अम्बलट्ठिकपासादो अहू ति सम्बन्धो,* म॰ वं॰ टी॰ 462 (ना॰).

अम्बलट्ठिकाराहुलोवादसुत्त नपुं॰, म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 2.84-96.

अम्बललव्हय त्रि॰, ब॰ स॰, श्रीलङ्का के रोहण में निर्मित अम्बलल नाम वाला एक प्रासाद – **यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निक्खमित्वा ततो ठानं गतो अम्बललव्हयं,* चू॰ वं॰ 74.58.

अम्बवन नपुं॰, [आम्रवन], आम का वन, ककुधा नदी के पास अवस्थित आमों का एक उद्यान – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपसङ्कमित्वा ककुधं नदिं ... पच्चुत्तरित्वा येन अम्बवनं तेनुपसङ्कमि,* दी॰ नि॰ 2.102; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निसीदम्बवने रम्मे, याव कालप्पवेदना,* थेरगा॰ 563; *अम्बवनेति, अम्बवने जीवकेन कतविहारे,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.166; – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रम्मानि च अम्बवनानि भागसो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.221.

अम्बवनव्ह त्रि॰, श्रीलङ्का में राजा कस्सप तृतीय के द्वारा निर्मित अम्बवन नाम वाला प्रधान घर – **व्हं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा अम्बवनव्हं च पधानघरं उत्तमं ...,* चू॰ वं॰ 48.25.

अम्बवापी स्त्री॰, श्रीलङ्का में अवस्थित एक प्राचीन तालाब का नाम – **पिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बूककल्ले अम्बवापिं,* चू॰ वं॰ 46.20.

अम्बविमानवत्थु नपुं., **क.** वि. व. के एक खण्ड का शीर्षक, वि. व. अट्ठ. 165-167; **ख.** वि. व. के ही एक अन्य स्थल का शीर्षक, वि. व. अट्ठ. 259-261.

अम्बसक्कर पु., एक लिच्छवी राजा का नाम - **रो** प्र. वि., ए. व. - *भगवति जेतवने विहरन्ते अम्बसक्करो नाम लिच्छविराजा मिच्छादिट्ठिको ... वेसालियं रज्जं कारेसि,* पे. व. अट्ठ. 188; - **अम्बसक्खरपेतवत्थु** नपुं., पे. व. का एक स्थल, पे. व. अट्ठ. 188-210.

अम्बसण्ड पु., [आम्रषण्ड], आमों का उद्यान - **ण्डानं** ष. वि., ब. व. - *सो किर गामो अम्बसण्डानं अविदूरे निविट्ठो,* दी. नि. अट्ठ. 2.260.

अम्बसण्डा पु., राजगृह के एक ब्राह्मणग्राम का नाम, जो कि आम्रवनों के समीप स्थित था - ... *भगवा मगधेसु विहरति, पाचीनतो राजगहस्स अम्बसण्डा नाम ब्राह्मणगामो,* दी. नि. 2.194; *सो किर गामो अम्बसण्डानं अविदूरे निविट्ठो, तस्मा "अम्बसण्डा"त्वेव वुच्चति,* दी. नि. अट्ठ. 2.260.

अम्बसामणेर पु., श्रीलङ्का के सिलाकाल राजा का उपनाम - *तं अम्बसामणेरादिसिलाकालो ति वोहरुं,* चू. वं. 41.27.

अम्बसामिक त्रि., आम के वन का स्वामी या अधिपति - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *तमेनं अम्बसामिको गहेत्वा रञ्ञो दस्सेय्य ...,* मि. प. 45.

अम्बसिञ्चक त्रि., [आम्रसिञ्चक], आम के पेड़ों को सींचने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *तञ्च दिस्वान आयन्तं, अवोचं अम्बसिञ्चको,* वि. व. 1153; *अवोचं अहं तदा अम्बसिञ्चको हुत्वाति योजना,* वि. व. अट्ठ. 261.

अम्बसेचन नपुं., [आम्रसेचन], आम्रवृक्षों की सिंचाई - *तथा हि एकेनोदकघटेन अम्बसेचनयतिनहापनादि भवति,* सद्द. 3.675-676.

अम्बा स्त्री., प्र. वि., ए. व. [अम्बा], माता, जननी - *भोति अम्मा, भोति अन्ना, भोति अम्बा, भोति ताता,* क. व्या. 115.

अम्बाटक पु., [आम्रातक], आमड़ा का वृक्ष और उसका फल - **को** प्र. वि., ए. व. - *अम्बाटको पीतनको मधुको तु मधुद्दुमो,* अभि. प. 554; - **का** ब. व. - *अम्बाटका बहू तत्थ, वल्लिकारफलानि च,* अप. 1.381; - **कं** द्वि. वि., ए. व. - *पसन्नचित्तो सुमनो, अम्बाटकमपूजयिं,* अप. 2.27; *अम्बाटकं गहेत्वान, सयम्भुस्स अदासहं,* अप. 2.20; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *सतावरि कसेरुनं, कन्दो अम्बाटकस्स च,* विन. वि. 1330; - **ट्ठि** नपुं., तत्पु. स., आमड़ा की आंठी या गुठली - *पनसम्बाटकट्ठीनि, सालट्ठि लबुजट्ठि च,* विन. वि. 1359; - **दायक** पु., एक स्थविर (थेर) का नाम - **को** प्र. वि., ए. व. - *आयस्मा अम्बाटकदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 2.21; - **पिट्ठ** नपुं., आमड़ा का पेठा या पिष्टान्न - **ट्ठं** प्र. वि., ए. व. - *पिट्ठं पनसपिट्ठं लबुजपिट्ठं अम्बाटकपिट्ठं सालपिट्ठं धोतकतालपिट्ठञ्च ... पिट्ठानि यावकालिकानि,* पाचि. अट्ठ. 92.

अम्बाटकवन नपुं., मच्छिकासण्ड में अवस्थित एक आमड़ा के वृक्षों का वन, जिसे चित्तगृहपति ने भिक्षुसङ्घ को दान में दे दिया था - **नं** प्र. वि., ए. व. - ... *अय्यो सुधम्मो मच्छिकासण्डे, रमणीयं अम्बाटकवनं ...,* चूळव. 37.

अम्बाटकाराम पु., आम्रातकवन में अवस्थित एक आराम - **मे** सप्त. वि., ए. व. - *परे अम्बाटकारामे, वनसण्डम्हि भद्दियो,* थेरगा. 466; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *सो किर अम्बाटकारामस्स पिट्ठिभागे होति,* स. नि. अट्ठ. 3.130.

अम्बाटकिय पु., एक स्थविर, जिसने आमड़ा वृक्ष की पूजा कर यह नाम पाया - **यो** प्र. वि., ए. व. - *इत्थं सुदं आयस्मा अम्बाटकियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 2.27.

अम्बाराम पु., [आम्राराम], आम का उद्यान, आमों का बाग - **मं** द्वि. वि., ए. व. - *अय्यो इमं अम्बारामं पविसित्वा मुहुत्तं विस्समित्वा ... गच्छथ अनुकम्पं उपादाया'ति,* वि. व. अट्ठ. 259.

अम्बिल त्रि., [अम्ल], खट्टा, छः रसों में से एक - **लो** पु., प्र. वि., ए. व. - *कसावो नित्थियं तित्तो मधुरो लवणो इमे, अम्बिलो कटुको चेति छ रसा तब्बती तिसु,* अभि. प. 148; - **लं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तं एकजातिकम्पि समानं अम्बिलं अनम्बिलन्ति नाना वुच्चति,* जा. अट्ठ. 4.11; *परिणामवसेन परिवत्तित्वा अम्बिलं होति,* तदे.; - **लेन** तृ. वि., ए. व. - *तमस्स अम्बिलेन पहरित्वा तम्बमलं विय पदुमपलासतो उदकबिन्दुं विय विनिवत्तेत्वा, ...,* जा. अट्ठ. 3.303; - **कञ्जी** स्त्री., खट्टी कांजी - **ञ्जियं** सप्त. वि., ए. व. - *अविस्सासिकेन हि दिन्नं चतुमधुरम्पि विस्सासिकेन दिन्नं अम्बिलकञ्जियं न अग्घतीति,* जा. अट्ठ. 3.124; - **कोट्ठास** त्रि., अत्यधिक खट्टेपन से भरा हुआ, खट्टेपन की प्रचुरता लिया हुआ - **सेहि** तृ. वि., ब. व. - *अम्बिलग्गेहीति अम्बिलकोट्ठासेहि,* स. नि. अट्ठ. 3.232; - **लग्ग** त्रि., [अम्लाग्र], उपरिवत् - **ग्गं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अम्बिलग्गं वा मधुरग्गं वा तित्तकग्गं वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).146; - **ग्गेहि** तृ. वि., ब. व. - *राजानं वा*

राजमहामत्तं वा नानच्चयेहि सूपेहि पच्चुपट्ठितो अस्स- अम्बिलग्गेहिपि ... अलोणिकेहिपि, स. नि. 3(1).228; – **लत्त** नपुं., भाव. [अम्लत्व], खट्टापन, अम्लत्व, अम्लता – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – ... *अब्भन्तरे सो ... जानेय्य अम्बिलत्तं ... कसायत्तं वा मधुरत्तं वा'ति,* मि. प. 56; – **पस्सव** पु., एक विहार का नाम – **वं** द्वि. वि., ए. व. *विहारं तंसमीपम्हि कत्वा अम्बिलपस्सवं,* चू. वं. 42.17; – **फल** नपुं., [अम्लफल], खट्टा फल **लं** प्र. वि., ए. व. – *अज्ज किञ्चि अम्बिलफलं आहरिस्सामी'ति,* जा. अट्ठ. 3.24; – **भाजन** नपुं., [अम्लभाजन], खट्टी चीजों को रखने के लिए प्रयुक्त पात्र – **नं** द्वि. वि., ए. व. – ... *यावं दधिभाजनादिकं अम्बिलभाजनं न पापुणाति,* ध. प. अट्ठ. 1.287; – **यागु**[1] स्त्री., [अम्लयवागु], खट्टे चावल का मांड़ या दलिया – **गुं** द्वि. वि., ए. व. – *साकपण्णं पक्खिपित्वा कणतण्डुलेहि अम्बिलयागुं पचित्वा ठपेहि,* स. नि. अट्ठ. 3.195; **यागु**[2] पु., श्रीलङ्का के प्राचीन गांव का नाम – **गुम्हि** सप्त. वि., ए. व. – *गामे अम्बिलयागुम्हि वासं पुत्ते दुवे लभि,* चू. वं. 38.15; – **सुरा** स्त्री., [अम्लसुरा], खट्टा मद्य, खट्टी मदिरा **राय** तृ. वि., ए. व. – *आदाय पीठके निसीदित्वा अम्बिलसुराय कोसकं पूरेत्वा,* जा. अट्ठ. 1.334.

अम्बिलापिक पु., एक गांव का नाम – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *कस्सपस्स गिरिस्सापि आहारं अम्बिलापिकं,* चू. वं. 44.98.

अम्बिलिकाफल नपुं., [अम्लिकाफल], इमली का फल – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *एको कबिट्ठफलञ्च अम्बिलिकाफलञ्च,* अ. नि. अट्ठ. 2.50; *अम्बिलिकाफलञ्च अद्दसाति आनेत्वा सम्बन्धो, अम्बिलिकाफलन्ति तिन्तिणीफलन्ति वदन्ति,* अ. नि. टी. 2.41.

अम्बिलपदर पु., एक गांव का नाम – **रं** द्वि. वि. ए. व. – *अम्बिल्लपदरं चादा चेतियस्स गिरिस्स सो ...,* चू. वं. 44.122.

अम्बु नपुं., [अम्बु], जल, पानी *पानीयं उदकं तोयं, जलं पातो च अम्बु च,* सद्द. 2.408; – **म्बु** प्र. वि., ए. व. – *अम्बूति उदकं,* सु. नि. अट्ठ. 1.91; – **ना** तृ. वि., ए. व. – *अम्बुना नेक्खम्मनिन्नो तिभवाभिनिस्सटो,* थेरगा. 1092; ... *विमलंव अम्बुनाति यथा ... निम्मलं विरजं ... उदकेन न लिम्पति,* थेरगा. अट्ठ. 2.387; – **नि** सप्त. वि., ए. व. – *फलं पतति अम्बुनि,* जा. अट्ठ. 5.6; *सोतस्साति यं उभतो तीरे जातरुक्खेहि फलं मम अम्बुनि पतति,* जा. अट्ठ. 5.7; **म्बूनि** प्र. वि., ब. व. – *अच्छा सवन्ति अम्बूनि,* जा. अट्ठ. 7.169; – **चारी** त्रि., [अम्बुचारिन्], जल में विचरण करने वाला / वाली मछली, मत्स्य – **री** पु., प्र. वि., ए. व. – *जालंव भेत्वा सलिलम्बुचारी,* सु. नि. 62; *सलिले अम्बुचारी सलिलम्बुचारी,* सु. नि. अट्ठ. 1.91.

अम्बुज त्रि., [अम्बुज], जल में उत्पन्न **क.** पु., मछली, मीन (इस अर्थ में संस्कृत में अप्रयुक्त) – **जो** प्र. वि., ए. व. – *मच्छो मीनो जलचरो पुथुलोमो'म्बुजो झसो,* अभि. प. 671; *पटिगन्तुं न सक्कोमि, वङ्कघस्तोव अम्बुजो,* दी. नि. 2.196; **ख.** कमल – **जं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *जातं यथा पोक्खरणीसु अम्बुजं,* जा. अट्ठ. 3.281; *अम्बुजन्ति पदुमस्सेव वेवचनं,* तदे..

अम्बुजिनी स्त्री., कमलों वाला तालाब – **नी** प्र. वि., ए. व. – *सेवालो नीलिका चाथ भिसिन्यम्बुजिनी भवे,* अभि. प. 689.

अम्बुट्ठी स्त्री., प्र. वि., ए. व., व्य. सं., श्रीलङ्का का एक प्राचीन सरोवर – *वलाहस्सं च अम्बुट्ठी गोण्डिगाम्हि वापिकं,* चू. वं. 37.185.

अम्बुद पु., [अम्बुद], **शा. अ.** जल देने वाला, **ला. अ.** मेघ, बादल – **दो** प्र. वि., ए. व. – *मेघो बलाहको देवो पज्जुन्नो'म्बुधरो घनो, धाराधरो च जीमूतो, वारिवाहो तथाम्बुदो,* अभि. प. 47; *पियो दानपति होति गिम्हकाले व अम्बुदो,* सद्धम्मो. 275.

अम्बुधर पु., [अम्बुधर], मेघ, बादल – **रो** प्र. वि., ए. व. – *मेघो बलाहको देवो पज्जुन्नोम्बुधरो घनो,* अभि. प. 47; – **बिन्दु** पु., वर्षा की बूंद – *यदि वदनसंयोगे चुविधातु वत्तति कथं ... अम्बुधरबिन्दुचुम्बितकूटो ति एत्थ अवचने ...,* सद्द. 2.405.

अम्बुय्यान नपुं., श्रीलङ्का में अवस्थित एक प्राचीन बौद्धविहार का नाम – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. *अम्बुय्यानम्हि आवासं कत्वा दप्पुलपब्बतं,* चू. वं. 49.30.

अम्बुसेवालसञ्छन्न त्रि., [अम्बुशैवालसञ्छन्न], पानी और सेवार (शैवाल) से ढका हुआ, जल और सेवार से आच्छादित – **न्ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *अम्बुसेवालसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मं'न्ति,* थेरगा. 113; *अम्बुसेवालसञ्छन्नाति पसवनतो सततं पग्घरमानसलिलताय तहं तहं उदकसेवालसञ्छादिता,* थेरगा. अट्ठ. 1.244.

अम्बूपम त्रि., ब. स. [आम्रोपम], आम जैसा, आम के फलों के समान – **मा** पु., प्र. वि., ब. व. – *चत्तारो अम्बूपमा पुग्गला सन्तो संविज्जमाना लोकस्मिं,* अ. नि. 1(2).122.

√अम्म[1] 'शब्द करने' के अर्थ वाली एक धातु - *देभ अभि दभि सद्दे*, सद्द० 2.408; *अम्ब सद्दे*, मो० धा० 168.

अम्म[2] नपुं., [अम्भस्], जल - *एत्थ च अम्भो वुच्चति उदकं ... अम्भति सद्दं करोतीति अम्भो ति वुच्चति*, सद्द० 2.408.

अम्भो / हम्भो अ०, निपा०, विस्मय, तिरस्कार, प्रशंसा जैसे अनेक अर्थों का सूचक [बौ० सं० हम्भो / हम्भोः], **क.** किसी व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए या उसे पुकारने हेतु प्रायः संबो०, ए० व० में प्रयुक्त नाम के साथ प्रयुक्त, ऐ, ओ, अरे - *अम्भो पुरिसाति आलपनाधिवचनमेतं*, पारा० 87; *'अम्भो पुरिस, किं तुय्हिमिना पापकेन दुज्जीवितेन*, पारा० 86; ... *अम्भो पुरिस, भरियं नेसी'ति*, मि० प० 46; *आवुसो, अम्भो हम्भो, हरे अरे हे इच्चेते एकवचनपुथुवचनवसेन पुरिसानं आमन्तणे*, सद्द० 3.894-95; **ख.** चेतावनी देने, डांटने-फटकारने तथा किसी बात पर आपत्ति प्रकट करने तथा तिरस्कार जैसे अर्थों का सूचक - ... *अम्भो न किर सद्धेय्यं, यं वातो पब्बतं वहे*, जा० अट्ठ० 3.52; *"अम्भो पुरिस यं त्वं जनपदकल्याणिं इच्छसि कामेसि*, म० नि० 2.234; *अम्भो, रुक्ख-पुब्बे त्वं ओलम्बकं चारेन्तो विय उजुकमेव फलानि पातेसि*, जा० अट्ठ० 1.175; *"अम्भो, समण, तव पिसितासनो पिसाचो उपट्ठितो"ति महन्तं ... अत्तानं सन्धाय यक्खो वदति*, उदा० अट्ठ० 54; **ग.** कभी-कभी प्रशंसा एवं अनुमोदन का भी सूचक, अहा हा ! वाह, क्या कहना - *अम्भो अम्भो नाममिदं इमिस्सा*, जा० अट्ठ० 5.203; *तमेनं जनो दिस्वा एवं वदेय्य "अम्भो, किमेविदं हरीयति जज्जजज्जं विया'ति*, म० नि० 1.38.

अम्भोद पु., [अम्भोद], **शा० अ०** जल देने वाला, **ला० अ०** मेघ, बादल - *हारहंसहिमम्भोदपण्डरायातिचारुया* .... चू० वं० 73.134.

अम्भोधर पु., [अम्भोधर], **शा० अ०** जल को धारण करने वाला, **ला० अ०** मेघ, बादल - *महीतलावतिण्णम्भोधरसंसयकारिहि यन्तरूपेहि हत्थीहि हत्थालंकारधारिहि*, चू० वं० 85.18.

अम्भोधि पु., [अम्भोधि], **शा० अ०** जल को संजोकर रखने वाला, **ला० अ०** समुद्र, सागर - *निजपुञ्ञमहम्भोधिनिनदब्भमकारिहि ... निनादेहि विवड्ढितं*, चू० वं० 85.45.

अम्भोरासि पु., [अम्भोराशि], **शा० अ०** जल का ढेर, **ला० अ०** समुद्र, सागर - *इत्थं राजा बुद्धिमा बुद्धसङ्घो संसारम्भोरासिसंतारसेतुं निस्सेणिं वासेससग्गाय गन्तुं ... अकासि*, चू० वं० 85.122.

अम्म अ०, मूलतः स्त्रियों को बुलाने हेतु प्रयुक्त अम्मा का संबो०, ए० व० [अम्ब], निम्नलिखित रूप से नारियों के आमन्त्रण या उन्हें बुलाने / पुकारने हेतु प्रयुक्त निपा०, **क. सन्तानों द्वारा मां के लिए प्रयुक्त** - *"मतं वा अम्म रोदन्ति ... जीवन्तं मं अम्म पस्सन्ती, कस्मा मं अम्म रोदसी"ति*, थेरगा० 44; *अम्म, रोदन्ता नाम ञातका मित्ता वा अत्तनो ञातकं मित्तं वा मतं उद्दिस्स रोदन्ति परलोकं गतत्ता*, थेरगा० अट्ठ० 1.120; **ख. पुत्री के लिए प्रयुक्त** - *"अम्म, पब्बजितुं सक्खिस्ससी"ति आह*, ध० प० अट्ठ० 1.277; *पिता पनस्सा सालं गच्छन्तो आह-"अम्म परसन्तको मे साटको आरोपितो* ..., ध० प० अट्ठ० 2.98; **ग. सामान्य रूप से किसी भी नारी के लिए प्रयुक्त** - *"अम्म, किं वदेसि, मय्हं उपट्ठानपुप्फेहि तेन पूजा कता"ति*, ध० प० अट्ठ० 1.275; **घ.** प्रायः 'तात' के साथ प्रयोग में आने पर माता-पिता को सम्बोधित करने हेतु प्रयुक्त - *अम्मताता न मय्हं एवरूपायत्थो* ..., ध० प० अट्ठ० 2.39; *"अम्मताता, अनुजानाथ मं पब्बजितु"न्ति आह*, उदा० अट्ठ० 57; **ङ. "अम्मा" के रूप में प्रयोग में आने पर किन्हीं भी अन्य लोगों को सम्बोधित करने हेतु प्रयुक्त** - *अम्मा, तुम्हेपि उद्धहथ, यागुं पचथ, भत्तं पचथा'ति विचरित्वा आरोचेही'ति*, ध० प० अट्ठ० 1.132; **च.** कभी कभी 'अम्मताता' रूप में भी प्रयुक्त होने पर बहुत सारे लोगों के समूह का सम्बोधन - *"अम्मताता, एकेककुलतो एकेको पुरिसो फरसुवासिआदीनि गहेत्वा अरञ्ञं ... आहरित्वा अय्यानं वसनट्ठानं करोतू"ति*, ध० प० अट्ठ० 1.313.

अम्मण नपुं., [तुल० अर्मण], **क.** द्रोणी, डोंगी - **णं** प्र० वि०, ए० व० - *दोणी त्विथ्यो तथाम्मणं*, अभि० प० 668; *अम्मणं दोनियं चेकादसदोणप्पमाणके*, अभि० प० 1032; **ख.** नहाने के लिए प्रयुक्त डोंगी के आकार की नांद, कण्डाल या बालटी - **णं** द्वि० वि०, ए० व० - *सत्था अम्बणं आहरापेत्वा उण्होदकं आसिञ्चित्वा* ..., ध० प० अट्ठ० 1.182; **ग.** ग्यारह द्रोणों की बराबरी वाली बड़ी माप की एक इकाई, भारी वजन - **णं** प्र० वि०, ए० व० *चेकादस दोणा तु अम्मणं*, अभि० प० 484; *पिंसापयित्वा निसदे एकं पंसूनमम्मणं*, म० वं० 30.9; - **णानि** ब० व० *वीहीनं अड्ढचूळञ्च वाहा वीहिसत्तम्बणानि द्वे च तुम्बा* ..., मि० प० 112; *ततो उपपड्ढपड्ढं च पंसू द्वे अम्मणानि च*, म० वं० 30.7.

अम्मणक नपुं., अम्मण (डोंगी) से व्यु०, डोंगी, छोटी नौका, द्रोणी - **के** सप्त० वि०, ए० व० - *एकस्मिं अम्बणके निपज्जापेत्वा*

महागङ्गाय पवाहेसु, जा॰ अट्ठ॰ 2.97; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में चतुरस्स अम्बणकताळ के अन्त॰, द्रष्ट॰.

अम्मणपिट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्मणपृष्ठ], डोंगी का ऊपरी या ऊंचाई वाला भाग, डोंगी का पृष्ठभाग – **ट्ठे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सयन्तो अम्बणपिट्ठे सयति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.286.

अम्मणमत्त / अम्बणमत्त नपुं॰, [अर्मणमात्र], एक अम्बण की माप – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राहुलमाता सुमनमल्लिकादीनं पुप्फानं अम्बणमत्तेन ... हत्थं ठपेत्वा निद्दायति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.72.

अम्मतातवदन्तु त्रि॰, [अम्बाततवादिन्], "ओ मां, ऐ पिता जी" बोलने वाला – **न्तरं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पस्सामि वोहं दहरं, अम्मतात वदन्तरं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.32; *अम्म तात वदन्तरन्ति "अम्म, ताता"ति वदन्तं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.33.

अम्मा स्त्री॰, [अम्बा], मां – **म्मा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्माम्बा जननी माता जनेत्ती जनिका भवे,* अभि॰ प॰ 244; *अम्मा सब्बो च मे ञातिगणवग्गो,* थेरीगा॰ 426; – **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यञ्च अम्मं न पस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.95; – **म्म / म्मा / म्मे** संबो॰, ए॰ व॰ – *को तं अम्म कोपेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.175; – **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"गच्छ अम्माय अफासुकं जानाही"ति पेसेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.347; – **यो** संबो॰ / प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अम्मा भोतियो अम्मा अम्मायो ति आदिना योजेतब्बं,* सद्द॰ 1.198.

अम्ह[1] / अस्म पु॰, [अश्मन्], पत्थर, चट्टान, शिलाखण्ड – **स्मो / म्हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थ ब्भ पासाणस्मोपलो सिला,* अभि॰ प॰ 605; विशेष प्रयोग अस्म के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अम्हं अम्ह स॰ ना॰ का द्वि॰ / च॰ / ष॰ वि॰, ब॰ व॰ [अस्माकं, अस्मभ्यं, अस्मान्], हमें, हमारे लिए, हमारा – *तस्मा हि अम्हं दहरा नमिय्यरे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.262; *लाभो अम्हं न विज्जति,* अप॰ 2.56.

अम्हमय त्रि॰, [अश्ममय], पाषाणों या पत्थरों से निर्मित, अस्ममय के अन्त॰, द्रष्ट॰ (आगे).

अम्हसद्द पु॰, [अस्मत्शब्द], विभक्तिचिह्नरहित, उत्तमपुरुषसूचक सर्वनाम 'अम्ह' शब्द – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बस्सेव अम्हसद्दस्स सविभत्तिस्स ममं-आदेसो होति से विभत्तिम्हि,* क॰ व्या॰ 120; – **द्देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्हेन योगो मय्योगो, अम्हसद्देन योगो इच्चेव अत्थो,* सद्द॰ 1.290.

अम्हाकं स॰ ना॰ अम्ह से व्यु॰, ष॰ वि॰, ब॰ [अस्माकं], हमें, हमारा, हमारे लिए – *अम्हाकं पस्ससि, अम्हे पस्ससि वा,* क॰ व्या॰ 162; *किं अम्हाकं चिन्तेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.218.

अम्हादिस त्रि॰, हमारे जैसा – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"मतका नाम अम्हादिसा नेव होन्ती"ति वदिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.135; – **सेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सुदुक्करन्ति तस्मिं खणे एस अम्हादिसेहि अनरियेहि सुदुक्करं अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.343; *दुप्पटिमन्तियाति अम्हादिसेहि अधम्मवादीहि दुक्खेन पटिमन्तितब्बा होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.287; – **सानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ अम्हादिसानं अप्पेसक्खानं ... ओकासोति दस्सेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.41.

अम्हानं अम्ह के प्र॰ / द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ के नियमित रूपों का स्थानापन्न रूप, हम, हमें – *कच्चायने तुम्हानं अम्हानन्ति च पठमा-दुतियाबहुवचनं,* सद्द॰ 1.289.

अम्हि √अस का वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ [अस्मि], मैं हूँ, द्रष्ट॰, अत्थि के अन्त॰.

अम्हे अम्ह स॰ ना॰ का प्र॰ / द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰, हम, हमें – *कथं अम्हे करोमसे'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.6; *याय नो अनुकम्पाय, अम्हे पब्बाजयी मुनि,* थेरगा॰ 176.

अम्हेसु अम्ह का सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ [अस्मासु], हम लोगों में, हम लोगों के बीच, हमारे विषय में – *यानस्मेसूति यानि वज्जानि अम्हेसु न विज्जन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.376; द्रष्ट॰ अहं के अन्त॰ (आगे).

अम्हेहि अम्ह का तृ॰ / प॰ वि॰, ब॰ व॰ [अस्माभिः / अस्मत्], हमारे द्वारा, हम से – *अम्हेहि अम्हेभि,* सद्द॰ 1.289; द्रष्ट॰ अहं के अन्त॰, (आगे).

अय[1] पु॰, [अय], **शा॰ अ॰** गमन, गति, चलना फिरना, **ला॰ अ॰ क**. अच्छा भाग्य, सुख, **ख**. हेतु, कारण – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोति सुखं, न अयो अनयो, दुक्खं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.360; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं कुसलधम्मानं, अनुरक्खिस्सते अयं,* अप॰ 2.258; – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निरयो हि सग्गमोक्खहेतुभूता पुञ्ञसङ्खाता अया अपेतत्ता ... अपायो,* उदा॰ अट्ठ॰ 338; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वायमितब्बनसज्जिते अये वा इरियनतो ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 64; *अयसद्दो कारणं दीपेति,* विसुद्धि॰ 2.122.

अय[2] नपुं॰, [अयस्], लौह, लौहधातु, धातु – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोहो नित्थि अयो कायसं,* अभि॰ प॰ 493; *तत्थ अयोति लोहं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.181; *कतमे पञ्च-अयो, लोहं, तिपु, सीसं,* अ॰ नि॰ 2(1).15; – **सा** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोपाकारपरियन्तो अयसा पटिकुज्जितो,* महानि॰ 299.

अयं पु॰ / स्त्री॰, अस / इस सर्व॰ से व्यु॰, सङ्केतक सर्व॰ [अयं / इयं], **शा॰ अ॰** यह पुरुष, यह स्त्री, यह फल आदि;

ला. अ. क. *वक्ता के ठीक सामने विद्यमान व्यक्ति, वस्तु, अवस्था या स्थान आदि का सूचक,* ठीक यही, एकदम यही, एकदम यह – **यं** पु., प्र. वि., ए. व. – *निब्बन्ति धरा यथायं पदीपो,* सु. नि. 238; – **यं** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अयं तासं धम्मता,* जा. अट्ठ. 2.106; – **इदं / इमं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं,* सु. नि. 226; – **मं** पु./स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *इममत्थं पकासेन्तो* ..., जा. अट्ठ. 2.132; *सत्था इमं धम्मदेसनं आहरित्वा* ..., जा. अट्ठ. 2.134; – **स्मा** पु., प. वि., ए. व. – *अस्मा लोका परं लोकं, कथं पेच्च न सोचति,* सु. नि. 187; – **इमस्स / अस्स** पु./नपुं., च./ष. वि., ए. व. – *इमस्स मच्छे नेत्वा सरे विस्सज्जनं नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 1.219; *अथस्स रूपसोभग्गप्पत्तं अत्तभावं ओलोकेत्वा* ..., जा. अट्ठ. 2.46; – **स्मिं** पु., सप्त. वि., ए. व. – *अस्मिं लोके परम्हि च,* सु. नि. 639; **ला. अ. ख.** *वक्ता के कथन के तुरन्त पहले कही गई बात का सूचक,* पूर्ववर्ती वाक्य में सङ्केतित तात्पर्य का सूचक – **इदं नपुं.**, प्र. वि., ए. व. – *यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा, सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं ... इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं,* सु. नि. 226; – **इमेसु** पु., सप्त. वि., ब. व. – *इमेसु दिवसेसु जेतवने वसति,* जा. अट्ठ. 2.342; – **यं** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अयं तासं धम्मता,* जा. अट्ठ. 2.106; **ला. अ. ग.** *तुरन्त बाद में कहे जाने वाले विचार, समय या सम्बन्ध का सूचक* – **यं** पु., प्र. वि., ए. व. – *अयमेव अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो सेय्यथीदं* ..., महाव. 13; – **इमे** पु., प्र. वि., ब. व. – *द्वेमे, भिक्खवे, अन्ता पब्बजितेन न सेवितब्बा,* महाव. 13; **ला. अ. घ.** *व्यंग्य हास्य एवं अवमानना के पुट के साथ वक्ता एवं अभिधेय के मध्य अत्यन्त निकटवर्ती सम्बन्ध का सूचक,* इस इस तरह का, ऐसा ऐसा – **यं** पु., प्र. वि., ए. व. – *अयं पासाणो इदानि उच्चतरो खायति,* जा. अट्ठ. 1.269; *"अयञ्च अयञ्च अम्हाकं रञ्ञो सीलाचारो"ति,* जा. अट्ठ. 2.3; – **मस्स** पु., ष. वि., ए. व. – *अय्य, इमस्स वानरिन्दस्स हदयमंसे दोहळो उप्पन्नो"ति,* जा. अट्ठ. 1.269; **ला. अ. ङ.** *संयोजक सर्व. के साथ अन्वित रहने पर सामान्यीकरण* (जो कोई भी, जो यह, जिस किसी प्रकार का/की) *अथवा विशिष्टीकरण का सूचक* – **यं** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *यायं तण्हा पोनोब्भविका नन्दीरागसहगता तत्रतत्राभिनन्दिनी सेय्यथिदं-कामतण्हा, भवतण्हा, विभवतण्हा,* महाव. 14; – **इमे** पु., प्र. वि., ब. व. – *ये केचिमे तित्थिया वादसीला,* सु. नि. 383; *ये केचिमे ब्राह्मणा वादसीला,* तदे. 384; **ला. अ. च.** *तीनों लिंगों की ष. वि. में प्रायः 'तस्स' के ही समानार्थक के रूप में प्रयुक्त* – **अस्स** पु., ष. वि., ए. व. – *आसवास्स न विज्जन्ति,* सु. नि. 1106; – **स्सा** स्त्री., ष. वि., ए. व. – *"सीलमस्सा भिन्दापेस्सामी"ति,* जा. अट्ठ. 1.280.

अयकण्टक पु., [अयस्कण्टक], कांटेदार बर्छी, कंटीली मत्स्यमाला, मछली पकड़ने के लिए प्रयुक्त लोहे से बना कांटा – **टको** प्र. वि., ए. व. – ... *गहितो कण्णिकसल्लसण्ठानो, अयकण्टको, यस्मिं वेगेन पतित्वा कटाहे अग्गमत्ते दण्डको निक्खमति* ..., स. नि. अट्ठ. 2.182; *अयकण्टकोति अयोमयवङ्कटको,* स. नि. टी. 2.153.

अयकन्तपासाण पु., [अयस्कान्तपाषाण], चुम्बक पत्थर, कीमती पत्थर – **णेहि** तृ. वि., ब. व. – *तत्थ अयकन्तपासाणेहि परिच्छिन्दित्वा कतचङ्कमो अत्थि,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.247; – **णेसु** सप्त. वि., ब. व. – *तत्थ समुद्दवीचियो आगन्त्वा अयकन्तपासाणेसु पहरित्वा महासद्दं करोन्ति,* तदे..

अयकार पु., [अयस्कार], लोहार, लोहे का काम करने वाला – **रा** प्र. वि., ब. व. – *लोहकारा वट्टकारा अयोकारा ... रथकारा दन्तकारा रज्जुकारा,* मि. प. 301.

अयकूटजातक नपुं., जा. अट्ठ. की एक जातक कथा, जा. अट्ठ. 3.125-126.

अयक्खगहितक त्रि., यक्खगहित का निषे. [अयक्षगृहीतक], वह, जो यक्षों अथवा भूत-प्रेतों से ग्रस्त नहीं है, भूत-प्रेतों आदि से अनभिभूत – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *देवेन अनासत्तो अयक्खगहितको अभूतविट्ठो ... सद्धातुं नारहति,* जा. अट्ठ. 5.443.

अयखाणुक पु., [अयस्थाणुक], लोहे का खम्भा, लोहे का खूंटा – **के** द्वि. वि., ब. व. – *अयखाणुके भूमियं आकोटेत्वा नगरस्स उप्पतनकाले नङ्गलानि गहेत्वा ... अयसङ्खलिकं अयखाणुके बन्धेय्याथ,* जा. अट्ठ. 4.74.

अयगुळिका स्त्री., प्र. वि., ए. व. [अयस्गुडिका], लोहे का छोटा सा गोला – *सासपप्पमाणापि सक्खरा वा अयगुळिका वा उदकरहदे पक्खित्ता उदकपिट्ठे उप्लवितुं, न सक्कोति,* अ. नि. अट्ठ. 2.106.

अयगूथ पु., [अयस्गूथ], लोहे का कचड़ा, लोहे पर लगा हुआ जंग – *गण्ठिपदे पन चम्मकारा उदके तिपुमलं अयगूथञ्च पक्खिपित्वा चम्मं कालं करोन्ति,* सारत्थ. टी. 3.74.

अयचुण्ण नपुं., [अयस्चूर्ण], लोहे का चूरा – **ण्णं** द्वि. वि., ए. व. – *पटिच्छन्नकूटं नाम तुलं सुसिरं कत्वा अन्तो*

अयचुण्णं पक्खिपित्वा गण्हन्तो तं पच्छाभागे करोति, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.73.

अयजी √यज के अद्य॰ का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, उसने यज्ञ किया – *यो धम्मयागं अयजी अमच्छरी,* इतिवु॰ 73.

अयति √इ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [एति], जाता है, क्रियाशील होता है – *अयती ति आयो,* क॰ व्या॰ 530; *यथावुत्तेहि कल्याणपुग्गलेहेव सब्बिरियापथेसु सह अयति पवत्तति,* उदा॰ अट्ठ॰ 179; – **न्ति** ब॰ व॰ – *संयुत्ता अयन्ति पवत्तन्ति सत्ता ... समयो दिट्ठि,* उदा॰ अट्ठ॰ 17.

अयथाभूतपजानना स्त्री॰, [अयथाभूतप्रजानन, नपुं॰], धर्मों के यथार्थ या वास्तविक स्वरूप का ज्ञान न होना – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतित्थियानं धम्मस्स अयथाभूतपजाननं पकासेन्तो ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 278.

अयथासभाव त्रि॰, ब॰ स॰ [अयथास्वभाव], धर्मों के यथार्थ स्वभाव के अननुरूप – **वं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अयथासभावं मुसावादं करोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).389.

अयदण्ड पु॰, [अयस्दण्ड], लोहे का मुद्‌गर, लोहे का मूसल – **ण्डेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महापथवी तावदेव अयदण्डेन पहतं कंसथालं विय ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).86; – **ण्डेहि** ब॰ व॰ – *गीवं सम्परिवत्तकं लुञ्चित्वा जलितअयदण्डेहि ... जलितलोहरसेप क्खिपित्वा तुट्ठहट्ठा होन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.132.

अयदाम नपुं॰, [अयस्दामन्], लोहे की जञ्जीर – **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुम्हे"ति वत्वा अयदामं छिन्दित्वा मत्तहत्थी ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.452.

अयन नपुं॰, [अयन], **शा॰ अ॰** जाना, हिलना, गति – *पज्जो'यनं च पदवी वत्तनी पद्धतीत्थियं,* अभि॰ प॰ 191; ... *था'यनं गमने पदे,* अभि॰ प॰ 1101; – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयनं पवत्ति अवट्ठानन्ति समूहो समयो यथा समुदायोति,* उदा॰ अट्ठ॰ 17; – **नो** पु॰, (लिङ्ग विपर्यय) प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकायनोति एकस्सेव अयनो एकपदिकमग्गो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.332; **ला॰ अ॰ क॰** मार्ग, राह, पथ **ख॰** स्थान, प्रवेशद्वार, सूर्य का मार्ग, **ग॰** व्यक्तिगत दृष्टिकोण, निजी धारणा – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मग्गो पन्थो पथो पज्जो अञ्जसं वटुमायनं अद्धानं अद्धा पदवी वत्तनी च एव सन्तती ति इमानि नामानि, पटिपदामग्गस्स पन,* सद्द॰ 2.525; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰ अनिलायन, उत्तरायन, एकायन आदि के अन्त॰.

अयनङ्गल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अयस्लाङ्गल], लोहे का हल – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चम्मस्स दड्ढकाले अयनङ्गलेन कसापेत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.127; – **लेहि** ब॰ व॰ – *चतूसु द्वारेसु ठिता चतूहि अयनङ्गलेहि गहेत्वा नङ्गलबद्धा अयसङ्खलिका खाणुकेसु बन्धिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.74.

अयपच्छि स्त्री॰, लोहे की टोकरी – **च्छीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *निमुग्गानं महतीहि अयपच्छीहि आदाय उपरिअङ्गारे ओकिरन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.130.

अयपट्ट पु॰/नपुं॰, [अयस्पट्ट], लोहे की पट्टी – **ट्टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकङ्गुलबहलं अयपट्टं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.126; – **ट्टेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *यं बलवा पुरिसो तत्तेन अयोपट्टेन आदित्तेन ... कायं सम्पलिवेठेय्या'ति,* अ॰ नि॰ 2(2).260; ... *भीतो अयपट्टेन कुच्छिं परिक्खिपित्वा चरति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).168; – **क** नपुं॰, [अयस्पत्र], लोहे का आरा, लकड़ी चीरने वाला आरा – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमस्स पन अयपट्टकेन छिन्नसङ्खपटलं विय सप्पा भविस्सन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.36; *अथस्स पासो पादं अयपट्टकेन कड्ढन्तो विय आबन्धित्वा गण्हि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.332.

अयपथवी स्त्री॰, [अयस्पृथिवी], लोहे वाला धरातल, लोहे की फर्श – **वितो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं ततो पतनकाले हेट्ठा अयपथवितो सूलानि उट्ठहित्वा तेसं मत्थकं पटिच्छन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.268; – **वियं** सप्त॰ वि॰ ए॰ व॰ – ... *महाहत्थिप्पमाणा जलितअयपथवियं नेरयिकसत्ते मिगे विय अनुबन्धित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.129; *पादा याव गोप्फका हेट्ठा अयपथवियं पविट्ठा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.86.

अयपब्बत पु॰, [अयस्पर्वत], लोहे का पर्वत – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जलितं अयपब्बतं आरोपेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.139.

अयपोत्थक/आयपोत्थक नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आयपुस्तक], आय को लिखने वाली पुस्तक, बहीखाता – **त्थकं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स रासिवड्ढको अमच्चो आयपोत्थकं आहरित्वा, ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.3.

अयफलक नपुं॰, [अयस्फलक], लोहे का पटरा या तख्ता – **केसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *जलितेसु अयफलकेसु ठपेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.134.

अयफाल पु॰, [अयस्फाल], हल में लगा लोहे का फाल या फाली – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मूसिका पन अयफाले खादन्ती'ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.152.

अयबलिस पु॰, [अयस्बलिश], लोहे का अंकुड़ा, लोहे का अंकुश, लोहे का छल्ला – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जलमाने*

फाले आदाय मुखं विक्खम्भेत्वा विवरित्वा रज्जुवद्धं अयबलिसं खिपित्वा ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.266; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अथ ने पज्जलितेहि अयबलिसेहि उद्धरित्वा ...*, जा॰ अट्ठ॰ 6.128.

अयमकचिवाल पु॰, लोहे के तारों का गुच्छा या जाली – **लेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वालेहीति अयमकचिवालेहि वेठेत्वा अययन्तेन पीळयन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.267.

अयमुग्गर / अयोमुग्गर पु॰, [अयस्मुद्गर], लोहे का मूसल, लोहे का हथौड़ा – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोण्डायपि कम्मं करोतीति अयमुग्गरं वा खदिरमुसलं वा गहेत्वा ...*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.92; – **रे** ब॰ व॰ – *महन्ते अयोमुग्गरे गहेत्वा अज्जमज्जं आकोटेन्ति*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 47; – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *निप्पोथयन्ताति जलितेहि अयमुग्गरेहि पहरन्ता*, जा॰ अट्ठ॰ 5.267.

अयमुसल पु॰, [अयस्मुसल], लोहे का मूसल या हथौड़ा – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दीघासिलट्ठिया वा अयमुसलेन वा छेदनभेदनं ...*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.92.

अययन्त नपुं॰, [अयस्यन्त्र], लोहे का यन्त्र, लोहे की मशीन – **न्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वालेहीति अयमकचिवालेहि वेठेत्वा अययन्तेन पीळयन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.267.

अयस पु॰, [अयश], अकीर्ति, बदनामी – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लाभो च अलाभो च यसो च अयसो च, निन्दा च*, दी॰ नि॰ 3.206; *लाभो अलाभो अयसो यसो च*, जा॰ अट्ठ॰ 7.58; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वज्जं पिदहति अयसमपनेति यसमुपनेति*, मि॰ प॰ 141; – **साय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यसाय वा अयसाय वा*, मि॰ प॰ 275; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उप्पन्नुप्पन्ने वत्थुस्मिं अयसे पाकटे दोसे वित्थारिके*, मि॰ प॰ 254.

अयसंखलिका स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अयश्शृङ्खलिका], लोहे की जञ्जीर – **लिकं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नङ्गलबद्धं अयसङ्खलिकं अयखाणुके बन्धेय्याथ*, जा॰ अट्ठ॰ 4.74; – **का** ब॰ व॰ – *नङ्गलबद्धा अयसङ्खलिका खाणुकेसु बन्धिंसु*, जा॰ अट्ठ॰ 4.74.

अयसाभिभूत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अयशाभिभूत], अपकीर्ति या बदनामी से पीड़ित, असम्मानित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पाकटो च अयसाभिभूतो गामसतम्पि पविसित्वा, ...*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).153.

अयसिङ्घाटक / अयोसिङ्घाटक / अयसङ्घाटक नपुं॰, [अयश्शृङ्गाटक], लोहे का अंकुश, लोहे की बर्छी या भाला – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि नाम पुरिसस्स अयोसिङ्घाटकं कण्ठे विलग्गं*, म॰ नि॰ 2.62; – **कानि** ब॰ व॰ – *तस्सानन्तरा महन्तानि अयसङ्घाटकानि निरन्तरं भूमियं ओदहिंसु*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.342; – **केहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वासिफरसु-कुद्दाल-निखादन ... असिलोहदण्डककचखाणुक-अयसिङ्घाटकेहि अत्थो*, जा॰ अट्ठ॰ 5.40.

अयसूचिमुख त्रि॰, ब॰ स॰ [अयस्सूचिमुख], लोहे की सुई जैसे मुख वाला – **खा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अयोमुखाति अयसूचिमुखा*, जा॰ अट्ठ॰ 5.267.

अयसूल / अयोसूल नपुं॰, [अयःशूल], लोहे का खूंटा, लोहे से बनी शूली – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महातालक्खन्ध-परिमाणं अयसूलं पच्छिमभित्तितो निक्खमित्वा, ...*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.86; – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोसङ्कुनाति अयसूलेन*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.51; – **लानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *निरयपाला तालक्खन्धपमाणानि अयसूलानि आदित्तानि ... गहेत्वा ...*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).314; – **लेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तिण्हेहि अयसूलेहि कोट्टेत्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 5.266; – **समप्पित** त्रि॰, [अयःशूलसमर्पित], लोहे की शूली पर रखा हुआ – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सन्निपब्बेसु अधिमत्तं अयसूलसमप्पितं विय तिट्ठति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.53.

अयाच त्रि॰, √याच के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अयाच्य], याचना नहीं किए जाने योग्य, नहीं मांगे जाने योग्य – **चं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयाचं याचते धनं*, जा॰ अट्ठ॰ 6.304.

अयाचक त्रि॰, [अयाचक], याचना न करने वाला, न मांगने वाला, समृद्ध – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो पन अयाचको समिद्धो*, सद्द॰ 2.366.

अयाचित त्रि॰, √याच के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अयाचित], नहीं मांगा गया, वह, जिसकी याचना न की गई हो या जिसे नहीं कहा गया या पुकारा गया – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं तात मया परलोकतो अनव्हितो अयाचितो*, जा॰ अट्ठ॰ 3.142.

अयाचितब्बरूप त्रि॰, ब॰ स॰ [अयाचितव्यरूप], याचना न किए जाने योग्य स्वरूप वाला – **पं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं अयाचितब्बरूपं मय्हं देही ति याचति*, जा॰ अट्ठ॰ 6.304.

अयाथाव त्रि॰, [अयथावत्], अयथार्थ, गलत – **वं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुच्छं एतं, मुसा एतं ... अयाथावं एतन्ति*, महानि॰ 213; – **क** त्रि॰, उपरिवत् – **स्मिं** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयाथावकस्मिं याथावकन्ति गाहो ...*, महानि॰ 35; – **अनिय्यानिक-अकुसलसंकप्प** पु॰, कर्म॰ स॰, अयथार्थ, अकल्याणकारी एवं अकुशल संकल्प – **प्पा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मिच्छासङ्कप्पाति अयाथावअनिय्यानिकअकुसलसङ्कप्पा*, म॰

नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).196; - **दिट्ठि** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अयथावद्दृष्टि], अयथार्थ दृष्टि, मिथ्या-दृष्टि, गलत धारणा - **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मिच्छादिट्ठिकोति नत्थि दिन्नन्तिआदिनयप्पवत्ताय अयाथावदिट्ठिया उपेतो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.21; - **पटिपदा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अयथावत्प्रतिपत्], मिथ्या मार्ग, गलत मार्ग - **दा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मिच्छापटिपदाति अयाथावपटिपदा अकुसलपटिपदा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.202; - **पथ** पु॰, कर्म॰ स॰ [अयथावत्पथ], अयथार्थ मार्ग, गलत रास्ता - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयाथावपथतो मिच्छापथो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 293; - **मान** पु॰, कर्म॰ स॰ [अयथावत्मान], निराधार अभिमान - **ना** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इतरे द्वे अयाथावमाना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 397; - **लद्धिकता** स्त्री॰, भाव॰, किसी मत या विचार को मिथ्या या अयथार्थ रूप में ग्रहण किया जाना - **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तक्किका हि अयाथावलद्धिकताय दुद्दिट्ठिनो ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 292; - **सक्खी** पु॰, कर्म॰ स॰ [अयथावत्साक्षिन्], गलत या झूठा गवाह, झूठा साक्षी - **क्खिनो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *कूटसक्खीति अयाथावसक्खिनो,* थेरगा॰ 2.301.

अयानक **क**. त्रि॰, ब॰ स॰ [अयानक], बिना वाहन वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरथकोति अयानको,* जा॰ अट्ठ॰ 7.274; **ख**. पु॰, अकुशल सारथि - **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *भञ्जन्ति रथं अयानका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.430.

अयाम √इ का अनु॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰, आयाम के स्थान पर अप॰, हम जाएं - *आयामाति एहि याम अयामा तिपि पाठो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.144.

अयामकालिक त्रि॰, यामकालिक का निषे॰ [अयामकालिक], रात के एक याम की समयावधि तक सीमित न रहने वाला, रात के एक याम तक ही टिका न रहने वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञो फलरसो नत्थि, अयामकालिको इध,* विन॰ वि॰ 228.

अयिट्ठपुब्ब त्रि॰, ब॰ स॰, पूर्वकाल में न किया गया, पहले असम्पादित - **ब्बो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यञ्ञो सुलभरूपो यो मया अयिट्ठपुब्बो इमिना दीघेन अद्धुना,* म॰ नि॰ 1.116.

अयिर / अय्यिर पु॰, [आर्य], स्वामी, सम्माननीय व्यक्ति, उत्तम गुणों से सम्पन्न व्यक्ति - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयिरो हि दासस्स जनिन्द इस्सरो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.196; - **रस** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तदुत्तरिं न भासेय्य दासो अयिरस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 5.247; पाठा॰ दासोवय्यस्स; - **रं** पु॰ / नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयिरञ्च कयिराय सुखागमाय,* जा॰ अट्ठ॰ 4.264; - **रा** संबो॰, ब॰ व॰ - *जालिनो मुञ्चथायिरा मं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.148; - **रे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *वन्दामि ते अयिरे पसन्नचित्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.132; - **क** पु॰, [आर्यक], उपरिवत् - **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पञ्चहि ठानेहि अय्यिरकेन हेट्ठिमा दिसा दासकम्मकरा पच्चुपट्ठिता,* दी॰ नि॰ 3.145; - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पञ्चहि ठानेहि अय्यिरकं अनुकम्पन्ति-पुब्बुट्ठायिनो च होन्ति ...,* दी॰ नि॰ 3.145; - **य्यिको** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अय्यिको नो राजा मन्धाता'ति ... समाना दासायेव,* जा॰ अट्ठ॰ 2.259.

अयिरा / अय्या स्त्री॰, [आर्या], भार्या, घर की मालकिन, गृहस्वामिनी - **य्या** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अय्या च भरिया'ति च सा पवुच्चति,* अ॰ नि॰ 2(2).230; *चोरीति अय्याति च या पवुच्चति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.289.

अयुज्झपुर[1] नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अयोध्यपुर], युद्ध द्वारा नहीं जीत सकने योग्य नगर, अभेद्य या दुर्भेद्य नगर - **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अन्तरा द्विन्नं अयुज्झपुरानं, पञ्चविधा ठपिता अभिरक्खा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.201; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.295; - **रानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *द्वे नगरानिपि युद्धेन गहेतुं असक्कुणेय्यताय अयुज्झपुरानि नाम जातानि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.202.

अयुज्झपुर[2] नपुं॰, एक नगर का नाम - ... *तं राजानो कुसावती अयुज्झपुर ... वाराणसीनगरन्ती'ति इमानि एकूनवीसति नगरानि,* म॰ वं॰ टी॰ 100(ना॰).

अयुज्झानगर नपुं॰, एक नगर का नाम - **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *महारज्जं अकारेसुं अयुज्झानगरे पुरे,* दी॰ वं॰ 3.15.

अयुञ्जितब्ब त्रि॰, √युज के सं॰ कृ॰ का निषे॰, नहीं जोड़ने योग्य, नहीं लगाने योग्य - **तब्बे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ अयोगेति अयुञ्जितब्बे योनिसोमनसिकारे,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.160.

अयुत्त त्रि॰, √युज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अयुक्त], **क**. अनुचित, अनुपयुक्त, अननुरूप - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कोचि अयुत्तो अप्पत्तो अननुच्छविको अनरहो ... हीनो कुजातिको,* मि॰ प॰ 323; - **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनासनेति एत्थ पन अयुत्तं आसनं अनासनं ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).86; - **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *असञ्ञुताति जयम्पतिका भवितुं अयुत्ता असम्बन्धा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.233; **ख**. तार्किक दृष्टि से असङ्गत, अयुक्तियुक्त, अतार्किक - **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनिट्ठे पन हि ठाने, अयुत्तन्ति पकासितं,* अभि॰ अव॰ 1132; *भिक्खूहि सद्धिं उपसङ्कमितुं अयुत्त'न्ति चिन्तेत्वा ते भिक्खू बहि ठपेत्वा, ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰

1.37; – **त्तानि** ब॰ व॰ – *अचिन्तेय्यानीति चिन्तेतुं अयुत्तानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.312; – **प्पत्तकाल** पु॰, कर्म॰ स॰ [अयुक्तप्राप्तकाल], अनुपयुक्त काल, अनुचित समय – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकालेति अयुत्तप्पत्तकाले परस्स पियभण्डं याचनाय मित्वा जीरन्ति नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 5.222; – **जन** पु॰, कर्म॰ स॰ [अयुक्तजन], अनुपयुक्त व्यक्ति, अनधिकारी व्यक्ति, अपात्र – **नस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *युत्तजनस्सेव दातब्बो न अयुत्तजनस्सा'ति वत्वा अभिसम्बुद्धो हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.203; – **परिभोगकम्मूपचय** पु॰, [अयुक्तपरिभोगकर्मोपचय], अनुपयुक्त विषयभोगों के कर्मों की राशि – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधुना कतं अयुत्तपरिभोगकम्मूपचयं निस्साय ...,* विसुद्धि॰ 1.31.

अयुत्ति स्त्री॰, [अयुक्ति], उपयुक्त नहीं रहना, अनुपयुक्तता, अतार्किकता, केवल स॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त – *सद्दनीति नाम सद्दानत्थानञ्च युत्तायुत्तिप्पकासनत्थं ... सब्बं,* सद्द॰ 1.144.

अयुद्धपराजित त्रि॰, बिना युद्ध किए ही पराजित हो जाने वाला, बिना लड़े ही हार जाने वाला – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मा भवं अस्सलायनो अयुद्धपराजितं पराजयी'ति,* म॰ नि॰ 2.363.

अयुद्धय नपुं॰, म्यां-मां में स्थित एक प्राचीन क्षेत्र या प्रदेश, केवल स॰ प॰ के अन्त॰ प्राप्त – *कम्बोज-खेमावर-हरिभुञ्ज-अयुद्धयादीसु ... सासनं पतिट्ठापेसि,* सा॰ वं॰ 46 (ना॰) .

अयोकटाह पु॰, तत्पु॰ स॰ [अयस्कटाह], लोहे की कड़ाही – **हे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसो दिवससन्तत्ते अयोकटाहे ... उदकफुसितानि निपातेय्य,* म॰ नि॰ 2.125; – **म्हि** उपरिवत् – *निपातोति अयोकटाहम्हि पतनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.120-121.

अयोकण्टसीस त्रि॰, ब॰ स॰ [अयस्कण्टकशीर्ष], लोहे के कांटा या अंकुश से युक्त सिरे वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुत्तवेगहतं वियाति तुत्तं वुच्चति अयोकण्टकसीसो दीघदण्डो ...,* चरिया॰ अट्ठ॰ 192.

अयोकन्त पु॰, [अयस्कान्त], चुम्बक पत्थर – **न्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोकन्ततीति अयोकन्तो,* सद्द॰ 1.118.

अयोकपाल / अयकपल्ल नपुं॰, [अयस्कपाल], लोहे का पात्र या कटोरा – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोकपालमादित्तं, सन्तत्तं जलितं यथा,* महानि॰ 300; – **ल्लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीसं याव कण्णसक्खलितो उपरि अयकपल्लं पाविसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.86; – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, भिक्खवे, दिवससन्तत्ते अयोकपाले हञ्ञमाने पपटिका निब्बत्तित्वा निब्बायेय्य,* अ॰ नि॰ 2(2).213.

अयोकाय पु॰, तत्पु॰ स॰ [अयस्काय], लोहे का ढेर, लौह-प्रचय – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चम्मकायो, दारुकायो, लोहकायो, अयोकायो, वालिककायो, उदककायो, फलककायोति इमे सत्त महाकाया नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 2.75.

अयोकुम्भी स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अयस्कुम्भी], लोहे की गगरी, लोहे की भट्ठी, केवल स॰ प॰ के अन्त॰ में प्रयुक्त – *अयोपट्टअयोगुळअयोमञ्चअयोपीठअयोकुम्भी उपमाहि ... दुक्खं दस्सेति,* विसुद्धि॰ 1.53.

अयोकूट / अयकूट नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अयस्कूट], लोहे का हथौड़ा – **टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *त्वं वीरियं अनोस्सजन्तो इमं अयकूटं गहेत्वा आवाटं ओतरित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.116; – **टेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना ते जलितेन अयकूटेन सीसं ... राजानं तज्जेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.200; – **टेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्तीहि लोहकूटेहि, नेत्तिसेहि उसूहि च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.262; – **योत्तकसण्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰, लोहे के हथौड़े की पट्टियों के समान बनावट वाला – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *हेट्ठिमहनुकट्ठि कम्मारानं अयोकूटयोत्तकसण्ठानं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 38.

अयोखील / अयोखिल पु॰, [अयस्कील], लोहे की खूंटी, लोहे की कांटी या कील – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोखीलो वा इन्दखीलो वा ... अचलो असम्पकम्पी,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 147; – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्तं अयोखिलं हत्थे गमेन्ती'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.181.

अयोग[1] पु॰, योग का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अयोग], एकाग्रता या चित्त की स्थिरता का अभाव, अनुपयुक्त ध्यानाभ्यास – **गा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *योगा वे जायती भूरि, अयोगा भूरिसङ्खयो,* ध॰ प॰ 282; – **गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोगे युञ्जमत्तानं,* ध॰ प॰ 209; *अयोगेति अयुञ्जितब्बे अयोनिसोमनसिकारे,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.160.

अयोग[2] त्रि॰, अनुपयुक्त, योग से रहित, चित्त की एकाग्रता से रहित – **गं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अयोगन्ति कत्वा सब्बमत्थीति,* कथा॰ 106; *अयोगन्ति अयुत्तं,* कथा॰ अट्ठ॰ 145.

अयोगक्खेमकाम त्रि॰, ब॰ स॰ [अयोगक्षेमकाम], योगक्षेम अर्थात् मङ्गलमय पद निर्वाण की कामना न करने वाला – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहितकामो अयोगक्खेमकामोति,* म॰ नि॰ 1.167; *अयोगक्खेमकामोति चतूहि योगेहि खेमं निब्भयट्ठानं,*

..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).398; – **मा** ब॰ व॰ – ... *अनत्थकामा अहितकामा अफासुकामा अयोगक्खेमकामा* ..., पटि॰ म॰ 34; – **मानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनत्थकामानि अहितकामानि ... अयोगक्खेमकामानि,* विभ॰ 277.

अयोगक्खेमी त्रि॰, [अयोगक्षेमिन्], योगक्षेम अर्थात् भयरहित निर्वाण के पद के साक्षात्कार से बहुत दूर रहने वाला – **मिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते योगयुत्ता मारस्स, अयोगक्खेमिनो जना,* अ॰ नि॰ 1(2).60.

अयोगी त्रि॰, [अयोगिन्], वह, जो योग के साथ नहीं जुड़ा है, योग न करने वाला, चित्त के उपशमन हेतु योगाभ्यास न करने वाला – **गिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बाला सूरा अयोगिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.49; *सूरा अयोगिनोति अयोनिसोमनसिकारेन सूरा, योगेसु अयुत्तताय अयोगिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.49.

अयोगुळ / अयोगुळह पु॰, [अयोगुड], लोहे का गोला – **ळो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यो अयोगुळो भुत्तो,* ध॰ प॰ 274; *तत्तो आदित्तो अग्गिवण्णो अयोगुळोव भुत्तो सेय्यो सुन्दरतरो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.274; – **ळं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न गण्हाति भवं किञ्चि, सुतत्तं व अयोगुळं,* थेरगा॰ 714; – **ळहं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं मुखे तत्तं अयोगुळहं पक्खिपन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.128; *हत्थे तत्तं अयोगुळं निक्खिपेय्य,* मि॰ प॰ 44; – **ळे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा, महाराज, पुरिसो दिवससन्तत्ते अयोगुळे जलिते तत्ते कठिते ...,* मि॰ प॰ 296; – **कीळा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अयोगुड़क्रीड़ा], लोहे की गोली से खेला जाने वाला एक खेल – *चण्डालन्ति अयोगुळकीळा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.77.

अयोग्ग पु॰, [अयोग्र], लोहे का मूसल, धान कूटने वाला मूसल – **ग्गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोग्गो मुसलो नित्थी,* अभि॰ प॰ 455; तुल॰ अमर॰ 2.9.

अयोघन पु॰/नपुं॰, [अयोघन], लोहे का घन या हथौड़ा – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कूटं वा अयोघनो,* अभि॰ प॰ 526; – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोघनहतस्सापि अयो हञ्ञति एतेनापि अयोघनं,* उदा॰ अट्ठ॰ 352; – **हत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अयोघनहत], लोहे के घन या मूसल से कूटा गया – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोघनहतस्सेव जलतो जातवेदसो,* उदा॰ 179.

अयोघर नपुं॰, [अयोगृह], लोहे का घर – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोघरं अलङ्कारापेत्वा तं आदाय अयोघरं पाविसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.445.

अयोघरकुमार पु॰, एक बोधिसत्व राजकुमार – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोघरकुमारो त्वेवस्स नामं करिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.445.

अयोघरचरिय नपुं॰, जा॰ अट्ठ॰ के एक कथानक का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 4.444-452.

अयोघरपण्डित पु॰, जातक कथानक में उल्लिखित एक बोधिसत्व – **तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोघरपण्डितो पन अहमेव अहोसि'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.452.

अयोजित त्रि॰, √युज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अयोजित], नहीं जोड़ा गया, नहीं मिलाया गया या रखा गया – **तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पदमालाय अयोजितानि पि तत्थ तत्थ नयतो योजितानि,* सद्द॰ 1.247.

अयोज्झ त्रि॰, √युध के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अयोध्य], युद्ध द्वारा पराजित नहीं किए जाने योग्य, अजेय, अपराजेय – **ज्झं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परमकुसलं उत्तमपत्तिपत्तं समणं अयोज्झं ...,* म॰ नि॰ 2.225; *अयोज्झन्ति वादयुद्धेन युज्झित्वा चालेतुं असक्कुणेय्यं अचलं निक्कम्पं थिरं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.187; – **पुर** नपुं॰, **1**. आधुनिक उ॰प्र॰ में स्थित नगर अयोध्या – *रामन्वयसमुब्भूतो, तदा'योज्झपुरागतो,* चू॰ वं॰ 56.13; **2**. सिआम (थाई देश) की प्राचीन राजधानी अयुथ्या – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दत्वा अमच्चे पेसेसि, अयोज्झपुरमुत्तमं,* चू॰ वं॰ 100.60.

अयोज्झा / अयुज्झा स्त्री॰ [अयोध्या], गङ्गा नदी के तट पर स्थित बुद्धकालीन नगर का नाम – **युज्झायं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवा अयुज्झायं विहरति गङ्गाय नदिया तीरे,* स॰ नि॰ 2(1).126.

अयोधी त्रि॰, युद्ध न करने वाला, युद्ध करने में अक्षम – **धिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *'अयोधिनो'तिपि पाठो, किलेसमारेन सद्धिं युज्झितुं असमत्थाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.49.

अयोनि स्त्री॰, [अयोनि], अनुपयुक्त पद्धति, अप्रभावकारी उपाय – **नि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोनि हेसा, भूमिज, तेलस्स अधिगमाय,* म॰ नि॰ 3.180; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निस्सितचित्ता अयोनिया च अयोनिसोमनसिकारेन च निद्दिसितब्बा,* नेत्ति॰ 34; – **संविधान** नपुं॰, अनुचित या अनुपयुक्त तरीके से किया गया कार्य-निष्पादन – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयोनि संविधानेन बालो दुक्खं निगच्छति,* थेरगा॰ 291; *अयोनिसंविधानेनाति ... अनुपायसंविधानेन उपायसंविधानाभावेन बालो ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.18; – **सुद्धि** स्त्री॰, अनुपयुक्त उपाय से प्राप्त की जाने वाली चित्त की

सुद्धि - **द्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयोनिसुद्धिमन्वेसं, अग्गिं परिचरिं वने,* थेरगा॰ 219; *तत्थ अयोनीति अयोनिसो अनुपायेन, सुद्धिन्ति संसारसुद्धिं भवनिस्सरणं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.370.

अयोनिसो अ॰, निपा॰, क्रि॰ विशे॰, *प्रायः मनसि करोति एवं 'मनसिकारो' के साथ प्रयुक्त* [बौ॰ सं॰ अयोनिशः], उपयुक्त सोच-विचार के बिना, अविवेकपूर्ण ढङ्ग से, बिना ठीक से सोचे-विचारे, मिथ्या रूप से, भ्रान्त रूप में, बिना किसी उपाय के ही - *अयोनिसो दायज्जं गवेसन्ती ...,* दी॰ नि॰ 2.247; *अयोनिसोति अनुपायेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.360; *अयोनिसो, भिक्खवे, मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव आसवा उप्पज्जन्ति ...,* म॰ नि॰ 1.10; - **चित्त** नपुं॰, [बौ॰ सं॰ अयोनिशःचित्त], भ्रान्त चित्त, ठीक से न सोचने विचारने वाला चित्त - **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *याव अयोनिसो चित्तं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.230; - **मनसिकार** पु॰, अविवेकपूर्ण चिन्तन, अनुपयुक्त रूप में आलम्बन की ओर चित्त की प्रवृत्ति, उखड़े हुए चित्त का विषय (आलम्बन) की ओर उन्मुखीभाव, भ्रान्त अथवा मिथ्या रूप से आलम्बनों का ग्रहण, भ्रमपूर्ण मनन - *कतमो एको धम्मो हानभागियो? अयोनिसो मनसिकारो ...,* दी॰ नि॰ 3.218; *अयोनिसो मनसिकारोति अनिच्चे निच्चन्ति आदिना नयेन पवत्तो उप्पथमनसिकारो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.220; *अस्सादमनसिकारलक्खणो अयोनिसोमनसिकारो,* नेत्ति॰ 25; - **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *निस्सितचित्ता अयोनिया च अयोनिसोमनसिकारेन च निद्दिसितब्बा,* नेत्ति॰ 34; - **रा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयोनिसो मनसिकारा, कामरागेन अट्टिता,* थेरीगा॰ 77; *अयोनिसो मनसिकाराति अनुपायमनसिकारेन,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 88; - **मनसिकारपदट्ठान** त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अयोनिशःमनस्कारपदस्थान], वह, जिसका आसन्न कारण भ्रान्त मानसिक चिन्तन हो, मिथ्या चिन्तन को अपना आसन्न कारण बनाने वाला (मोह या अज्ञान) - **ट्ठानो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असम्मापटिपत्तिपच्चुपट्ठानो अन्धकारपच्चुपट्ठानो वा, अयोनिसोमनसिकारपदट्ठानो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 289; - **मनसिकारबहुलीकार** त्रि॰, भ्रान्त अथवा निराधार मानसिक चिन्तन की बहुलता वाला, भ्रान्त चिन्तन से भरपूर - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ अयोनिसोमनसिकारबहुलीकारो–अयमाहारो ... ब्यापादस्स उप्पादाय ...,* स॰ नि॰ 3(1).82; - **मनसिकारमूलक** त्रि॰, ब॰ स॰, असङ्गत या अयथार्थ चिन्तन से उत्पन्न होने वाला (अकुशल धर्म) - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सब्बेते अयोनिसोमनसिकारमूलका'ति असाधारणत्ता एकं हेतुमाह,* विभ॰ अट्ठ॰ 139; - **मनसिकारसम्भूत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, मिथ्या या भ्रान्त चिन्तन से उत्पन्न - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मय्हं सूरियेन सद्धिं जवनं नाम निरत्थकं अयोनिसोमनसिकारसम्भूतं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.191; - **मनसिकारहेतु** अ॰, प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, मिथ्या अथवा भ्रान्त चिन्तन के कारण से - *इमस्स अयमायस्मतो दिट्ठि अत्तनो वा अयोनिसोमनसिकारहेतु उप्पन्ना परतोघोसपच्चया वा,* अ॰ नि॰ 3(2).159.

अयोपटल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अयस्पटल], लोहे की परत, लोहे का पटरा - **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयसा पटिकुज्जितन्ति अयोपटलेनेव उपरि पिहितं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 45.

अयोपत्त पु॰, [अयस्पात्र, नपुं॰], लोहे का पात्र, लोहे का कटोरा या तश्तरी - **त्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पत्तो नाम द्वे पत्ता अयोपत्तो मत्तिकापत्तोति,* पारा॰ 365; *अयोपत्तो पञ्चहि पाकेहि ... पाकेहि पक्को अधिट्ठानुपगो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.257.

अयोपाकारपरियन्त त्रि॰, ब॰ स॰ [अयस्प्राकारपर्यन्त], लोहे की दीवालों से घिरा हुआ - **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयोपाकारपरियन्तो पटिकुज्जितो,* अ॰ नि॰ 1(1).166; - **न्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयोपाकारपरियन्तं अयसा पटिकुज्जितं,* पे॰ व॰ 70; *अयसाकारपरियन्तन्ति अयोमयेन पाकारेन परिक्खित्तं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 45.

अयोपिण्ड पु॰, [अयस्पिण्ड], लोहे का पिण्ड, लोहे का गोला - **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नाल्लीयन्ति सन्तत्तं अयोपिण्डं व मक्खिका,* सद्धम्मो॰ 529.

अयोपीठ नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अयःपीठ], लोहे का पीढ़ा या आसन - **ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्तं अयोमञ्चं वा अयोपीठं वा अभिनिसीदापेय्य वा अभिनिपज्जापेय्य,* अ॰ नि॰ 2(2).262.

अयोपोक्खरपत्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अयःपुष्करपत्र], लोहे से निर्मित कमल का पत्ता - **त्तानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सूलानं हेट्ठा उदकपिट्ठे जलितानि ... तिखिणानि अयोपोक्खरपत्तानि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.127-128.

अयोमञ्च पु॰, तत्पु॰ स॰ [अयोमञ्च], लोहे का पलंग या मञ्च - **ञ्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्तं अयोमञ्चं वा अयोपीठं वा ... अभिनिपज्जापेय्य वा,* अ॰ नि॰ 2(2).261.

अयोमय त्रि॰, [अयोमय], लोहे से निर्मित - **या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्स अयोमया भूमि, जलिता तेजसा युता,* अ॰ नि॰ 1(1).166; - **येन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ -

अयोपाकारपरियन्तन्ति अयोमयेन पाकारेन परिक्खित्तं, पे. व. अट्ठ. 45; – **या** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *अयोमया सिम्बलियो,* जा. अट्ठ. 5.261; – **येहि** पु., तृ. वि., ब. व. – *अयोमयेहि वालेहि,* जा. अट्ठ. 5.261; – **कूट** पु., तत्पु. स. [अयोमयकूट], लोहे से बना हुआ हथौड़ा – **टेभि** तृ. वि., ब. व. – *तत्थ हनन्ति अयोमयकूटेभि,* सु. नि. 674; – **त्त** नपुं., भाव. [अयोमयत्व], लोहे से बना हुआ होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *समन्ततो अयोमयत्ता आयसञ्च ...,* वि. व. अट्ठ. 285; – **पट्ट** पु., लोहे से निर्मित पट्टिकाएं, लोहे की तख्ती – **ट्टा** प्र. वि., ब. व. – *साटका च जलिता अयोमयपट्टा होन्तू'ति,* पे. व. अट्ठ. 37; – **विज्झनकण्टक** पु., कर्म. स., लोहे का बेधने वाला कांटा – *अग्गे तु सिखरं चायोमयविज्झनकण्टके,* अभि. प. 993.

अयोमुख त्रि., ब. स. [अयोमुख], लोहे के कांटे के समान तीव्र मुख वाला, लोहे की सुई जैसी चोंच वाला – **खा** पु., प्र. वि., ब. व. – *धङ्का भेरण्डका गिज्झा, काकोला च अयोमुखा,* जा. अट्ठ. 5.263; *अयोमुखाति अयसूचिमुखा,* जा. अट्ठ. 5.267.

अयोमुट्ठि पु., प्र. वि., ए. व. [अयोमुष्टि], लोहे का मुद्गा, लोहे की हथौड़ी – *कम्मारानं अयोकूटं अयोमुट्ठि च,* उदा. अट्ठ. 352.

अयोलोहमय त्रि., [अयोलोहमय], लोहे या तांबे से निर्मित – **यं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तथा अयोलोहमयं पट्टं द्विचतुरङ्गुलं,* म. वं. 23.87.

अयोसंकु पु., [अयश्शङ्कु], लोहे की कांटी, लोहे की नुकीली कील या तीखी संड़सी – **ना** तृ. वि., ए. व. – *निरयपाला तत्तेन अयोसङ्कुना मुखं विवरित्वा ...,* म. नि. 3.224; *अयोसङ्कुनाति सण्डासेन,* विसुद्धि. महाटी. 1.80; – **ङ्कू** प्र. वि., ब. व. – *सतं आसि अयोसङ्कू सब्बे पच्चत्तवेदना,* म. नि. 1.421; – **समाहतट्ठान** नपुं., कर्म. स., लोहे की तीक्ष्ण संड़सियों से भरा हुआ स्थान (नरक) – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *अयोसङ्कुसमाहतट्ठानं तिण्हधारमयसूलमुपेति,* सु. नि. 672.

अयोसलाका स्त्री., तत्पु. स. [अयश्शलाका], लोहे की सलाई – **य** तृ. वि., ए. व. – *तस्मा वरं भिक्खवे, तत्ताय अयोसलाकाय आदित्ताय सम्पज्जलिताय ... सम्पलिमट्ठ'न्ति वित्थारेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 3.469.

अयोसुकतनेमि त्रि., ब. स. [अयस्सुकृतनेमिक], लोहा से भली-भांति मढ़े हुए पहियों की परिधि या घेरों वाला (रथ) – **यो** पु., द्वि. वि., ब. व. – *अयोसुकतनेमियो सुवण्णचितपक्खरे,* जा. अट्ठ. 7.362; *अयोसुकतनेमियोति अयेन सुट्ठु परिक्खित्तनेमियो,* तदे..

अय्य 1. पु., [आर्य], उत्तम व्यक्ति, सम्माननीय व्यक्ति, आदरणीय भिक्षु, स्वामी, प्रभु, धनी – *अय्याधिपाधिभू नेता,* अभि. प. 725; – **य्यो** प्र. वि., ए. व. – *अय्यो हुत्वा दासो होति, दासो हुत्वा अय्यो होती'ति,* म. नि. 2.363-64; *तुम्हं सो किं होती'ति अय्यो मे, सामी'ति,* जा. अट्ठ. 3.143; *अय्यो देवदत्तो आह तथा करेय्याथा'ति,* चूळव. 329; – **य्यं** द्वि. वि., ए. व. – *'अय्यं पस्सिस्सामी'ति पुन आगतोम्हि,* ध. प. अट्ठ. 1.95; – **य्येन** तृ. वि., ए. व. – *अहम्पि अय्येन सद्धिं गच्छन्ती ... लभिस्सामि,* ध. प. अट्ठ. 1.11-12; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *सचाहं एवरूपस्स ... अय्यस्स सन्तिकं न गमिस्सामि, ...,* ध. प. अट्ठ. 1.11; – **य्या** प्र. वि., ब. व. – *सचे अय्या इमं तेमासं इध वसेय्युं,* ध. प. अट्ठ. 1.6; – **य्ये** द्वि. वि., ब. व. – *अयिरेति, अय्ये,* जा. अट्ठ. 5.132; – **य्यानं** ष. वि., ब. व. – *अपि नु खो अय्यानं ... कोचि उपद्दवो अत्थी'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.95; – **य्य** संबो., ए. व. – *किं अय्य, चिन्तेन्तो निसिन्नोसी'ति पुच्छिंसु,* जा. अट्ठ. 1.218; – **य्या** संबो. ब. व. – *कोमारसामिको मे, अय्या'ति,* जा. अट्ठ. 1.380; **2**. त्रि., सम्माननीय, आदरणीय, पूज्य, सज्जन, सभ्य – *कुलीनो सज्जनो साधु सभ्यो चाय्यो महाकुलो,* अभि. प. 333; – **पुत्त** पु., [आर्यपुत्र], **क. किसी स्त्री के सन्दर्भ में,** उसका पति – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *खन्तिमेत्तानुद्दयसम्पन्नो मे अय्यपुत्तो,* जा. अट्ठ. 3.143; – **त्त** संबो., ए. व. – *अहं अय्यपुत्त, फलाफलानि आदाय आगच्छन्ती एकं दानवं पस्सिं,* जा. अट्ठ. 5.89; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *यञ्च मे अय्यपुत्तस्स, मनो हेस्सति अञ्ञथा'ति,* जा. अट्ठ. 5.89; **ख. सेवकों एवं अधीनस्थों आदि के सन्दर्भ में** – राजकुमार, धनी घर का युवा स्वामी – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *'अय्यपुत्तो रट्ठपालो अनुप्पत्तो'ति,* म. नि. 2.260; *मय्हं अय्यपुत्तो अज्ज महाभिनिक्खमनं ... भविस्सती'ति,* जा. अट्ठ. 1.72; – **त्त** संबो., ए. व. – *अहं अय्यपुत्त, छन्नो ति आह,* जा. अट्ठ. 1.72; – **त्ता** संबो. ब. व. – *"तथा हि पन मे, अय्यपुत्ता, भगवा निमन्तितो स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना"ति,* दी. नि. 2.76.

अय्यउत्तिय पु., तिस्स का भाई तथा कल्याणी का राजकुमार – **नामको** पु., प्र. वि., ए. व., अय्य उत्तिय नाम वाला – *भीतो ततो पलायित्वा अय्यउत्तियनामको,* म. वं. 22.14;

अय्य उत्तियनामकोति अय्यस्स उत्तियस्स नामको उत्तियनामको ति वुच्चति, म. वं. टी. 390 (ना.).

अय्यक पु., [आर्यक], **क.** पितामह, कोई भी आदरणीय व्यक्ति – *अय्यको तु पितामहो,* अभि. प. 247; – **को** प्र. वि., ए. व. – *'धम्मेन मे गोतम अय्यकोसी'ति,* थेरगा. 536; *अय्यकोसीति पितामहो असि,* थेरगा. अट्ठ. 2.147; *ततो मे अय्यको तुट्ठो,* अप. 2.237; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *अय्यकं चोदेन्तो इमं गाथमाह,* जा. अट्ठ. 7.360; – **केन** तृ. वि., ए. व. – *अय्यकेन सद्धिं निपज्जि,* जा. अट्ठ. 4.41; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *पिता मे अय्यकस्स मतकालतो पट्ठाय सोकाभिभूतो, चरति,* जा. अट्ठ. 3.134; **ख.** स्वामी, प्रभु, अधिपति – **कानं** ष. वि., ब. व. – ... *अय्यकानं दण्डभयेन भीता,* थेरीगा. अट्ठ. 227; – **कुल** नपुं., तत्पु. स. [आर्यककुल], पितामह का कुल, दादा का वंश – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *दारका अय्यककुले वड्ढन्ति,* जा. अट्ठ. 1.122; – **पय्यक** पु., द्व. स. [आर्यकप्रार्यक], पितामह एवं प्रपितामह, दादा एवं परदादा – **दयो** प्र. वि., ब. व. – *इमं एत्तकं धनरासिं अय्यकपय्यकादयो अत्तना सद्धिं गहेत्वा* ..., अ. नि. अट्ठ. 1.194; – **कानं** ष. वि., ब. व. – *एत्तकं अय्यकपय्यकान'न्ति याव सत्तमा कुलपरिवट्टा धनं आचिक्खित्वा* ..., जा. अट्ठ. 1.3.

अय्यका / अय्यिका स्त्री., अय्यक से व्यु., **क.** नानी मां, मातामही – *मातामही तु अय्यका,* अभि. प. 245; – **का** प्र. वि., ए. व. – *पसेनदिस्स कोसलस्स अय्यिका कालङ्कता होति,* चूळव. 299; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *रेवतस्स अय्यिकं वन्दापेत्वा* ..., अ. नि. अट्ठ. 1.175; – **य** तृ. वि., ए. व. – *एका दारिका अय्यिकाय सद्धिं अवसेसा अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.118.

अय्यकाकाळक पु., वृषभ के रूप में जन्म ग्रहण करने वाला एक बोधिसत्त्व – **को** प्र. वि., ए. व. – *सो अय्यकाकाळको त्वेव नाम पञ्ञायित्थ,* जा. अट्ठ. 1.193.

अय्यकानी स्त्री., अय्यका का समाना., नानी मां – *मातुल इच्चेवमादीनमन्तो आनत्तमापज्जते ईकारप्पच्चये परे, मातुलानी, अय्यकानी, वरुणानी,* क. व्या. 98.

अय्यमित्त पु., मित्तथेर का दूसरा नाम – **स्स** ष. वि., ए. व. – *तव भातिकस्स अय्यमित्तस्स आगतकाले भत्तं पचित्वा* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).304.

अय्यवोसाटितक त्रि., दादा, परदादा आदि पूर्वजों को अर्पित, पितरों को अर्पित (पिण्ड) – **कानि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *सुसानेपि ... उम्मारेपि अय्यवोसाटितकानि सामं गहेत्वा* ..., पाचि. 123; *अय्यवोसाटितकानीति एत्थ अय्या वुच्चन्ति कालकता पितिपितामहा वोसाटितकानि वुच्चन्ति तेसं अत्थाय सुसानादीसु छड्डितकानि खादनीयभोजनीयानि,* पाचि. अट्ठ. 97; *दसमे अय्यवोसाटितकानीति पितुपिण्डस्सेतं अधिवचनं,* सारत्थ. टी. 3.63.

अय्यसमा स्त्री., प्र. वि., ए. व. [आर्यासमा], मालकिन के समान, स्वामिनी जैसा / जैसी, सात प्रकार की भार्याओं में से एक – *कतमा सत्त ? वधकसमा, चोरीसमा, अय्यसमा, मातासमा ... दासीसमा,* अ. नि. 2(2).229.

अय्या स्त्री., [आर्या], उदात्त या उत्तम स्थिति वाली नारी, गृहस्वामिनी, स्वामिनी, मालकिन, भिक्षुणी – **य्या** प्र. वि., ए. व. – *अथ अय्या जिनदत्ता,* थेरीगा. 429; *सुखुमाली वत अय्या,* जा. अट्ठ. 7.273; – **य्ये** संबो., ए. व. – *सुणातु मे, अय्ये, सङ्घो,* पाचि. 324; *सन्तप्पयित्वा अवचं, अय्ये इच्छामि पब्बजितुं,* थेरीगा. 431; – **य** च. / ष. वि., ए. व. – *यस्सा अय्याय खमति इत्थन्नामाय च भिक्खुनीनं समनुसासना* ..., पाचि. 324; – **य्या** संबो., ए. व. – *अय्या छब्बग्गिया इधेव आगन्त्वा अम्हे ओवदन्ती'ति,* पाचि. 429; – **यो** संबो. ब. व. – *उद्दिट्ठा खो, अय्यायो, अट्ठ पाराजिका धम्मा,* पाचि. 298; – **नं** ष. वि., ब. व., – *भिक्खुनिया निस्सग्गियो अय्यानं निस्सट्ठो,* पाचि. 331.

अय्यक पु., [आर्यक], किसी दास का स्वामी – **का**[1] प्र. वि., ब. व. – *अय्यका पस्सित्वा एवमाहंसु,* महाव. 96; – **का**[2] स्त्री., प्र. वि., ए. व. [आर्यिका], मालकिन, स्वामिनी – *अय्यका च पुरे अहुं,* थेरीगा. 159.

√**अर** गमन या गति अर्थ वाली एक धातु – *अर नासे गते च,* धा. मं. 61; *अर गतियं अरति अत्थं अत्थो उतु,* सद्द. 2.432.

अर पु., [अर], गाड़ी के पहिए का अर या तिल्ली, पहिए का अर्धव्यास – **रो** प्र. वि., ए. व. – *एको सतिसङ्खातो अरो एतस्साति एकारो,* उदा. अट्ठ. 301; – **रानं** ष. वि., ब. व. – *अरानं चक्कनाभीनं, ईसानेमिरथस्स च,* जा. अट्ठ. 4.187; *अरानम्पि सवङ्कता सदोसत्ता सकसावत्ता* ..., अ. नि. 1(1). 135; – **रा** प्र. वि. ब. व. – *अरापि अवङ्का अदोसा अकसावा,* अ. नि. 1(1).135.

अरं अ., क्रि. वि. [अरं], शीघ्रता से, जल्दी से, तेजी से – *आसु तुण्हमरं,* अभि. प. 40; तुल. अमर. 1.1.

अरक पु., एक प्राचीन धर्माचार्य या तीर्थङ्कर – **को** प्र. वि., ए. व. – *अरको नाम सत्था सावकानं ब्रह्मलोकसहब्यताय धम्मं देसेति,* अ. नि. 2(2).264.

अरकजातक नपुं., जा. अट्ठ. का एक कथानक, जा. अट्ठ. 2.49.

अरकपण्डित पु., बुद्धकालीन धर्माचार्य या शास्ता – **काल** पु., धर्माचार्य अरक का काल – **ले** सप्त. वि., ए. व. – ... *तथा विधुरपण्डितकाले ... अरकपण्डितकाले ... पञ्ञापारमिताय पूरितत्तभावानं परिमाणं नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 1.56.

अरक्खित त्रि., √रक्ख के भू. क. कृ. का निषे. [अरक्षित], रक्षा न की गई (भूमि) अनियन्त्रित (मन या इन्द्रियां) – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अरक्खितं महतो अनत्थाय संवत्तती'ति,* अ. नि. 1(1).9; – **तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *अरक्खितेन कायेन,* उदा. अट्ठ. 111; – **ताय** स्त्री., तृ. वि., ए. व. – *अरक्खितेनेव कायेन अरक्खिताय वाचाय अनुपट्ठिताय सतिया* ..., म. नि. 2.134; – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *एते हि द्वारा विवटा अरक्खिता,* विसुद्धि. 1.34; – **तानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *अरक्खितानि अहिताय, रक्खितानि हिताय च,* थेरगा. 728; – **भाव** पु., [अरक्षितभाव], रक्षित अथवा नियन्त्रित नहीं होना – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *छविञ्ञाणकायस्स अरक्खितभावं सन्धायाह,* उदा. अट्ठ. 194.

अरक्खिय त्रि., √रक्ख के सं. कृ. का निषे. [अरक्ष्य], **क.** वह, जिसकी रक्षा न की जा सके या जिस पर नियंत्रण न रखा जा सके – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *मातुगामो नाम अरक्खियो,* जा. अट्ठ. 3.77; – **या** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *भिक्खु, इत्थियो नाम अरक्खिया,* जा. अट्ठ. 1.279; **ख.** वह, जिसे रक्षा की अपेक्षा ही न हो, किसी प्रकार की रक्षा की अपेक्षा न करने वाला – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *अरक्खिया ... तथागता'ति,* चूळव. 333.

अरक्खेय्य त्रि., वह, जिसकी रक्षा करने की कोई भी आवश्यकता ही न रहे – **य्यानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *तीणि तथागतस्स अरक्खेय्यानि,* दी. नि. 3.173; *अरक्खेय्यानीति न रक्खितब्बानि,* दी. नि. अट्ठ. 3.159.

अरज[1] त्रि., ब. स. [अरजस्क], **शा. अ.** धूल-रहित, मल या गन्दगी से रहित, स्वच्छ, पवित्र – **जं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *अरजं भूमिमक्कमा'ति,* जा. अट्ठ. 6.151; *अरजं भूमिमक्कमाति अरजं ... दिब्बभूमिं दिब्बयानेन अक्कम,* तदे.; – **जा** पु., प्र. वि., ब. व. – *सरजा अरजा चपि,* स. नि. 2(2).214; **ला. अ.** क्लेशों से रहित, चित्त के मलिन भावों से मुक्त – **जो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरणोति अरजो निक्किलेसो,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.203; – **जं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अरजं रजसा वच्छं* ..., जा. अट्ठ. 5.259.

अरज[2] पु., व्य. सं., धम्मदस्सी बुद्ध के अनेक प्रासादों में से एक – **जो** प्र. वि., ए. व. – *अरजो विरजो सुदस्सनो,* बु. वं. 17.14.

अरज्जन नपुं., रज्जन का निषे. [अरञ्जन], अलगाव, अनासक्ति, अप्रवृत्ति, केवल स. प. के रूप में प्रयुक्त – *आरम्मणेसु अरज्जनादिवसेन पवत्तति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).126.

अरज्जन्त त्रि., √रज्ज के वर्त. कृ. का निषे., आसक्त न होता हुआ, लगाव या राग से मुक्त रहता हुआ – **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *नामे च रूपे च अरज्जन्तो असज्जन्तो असोचन्तो भिक्खु नाम होती'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.339.

अरञ्जर पु., [अलञ्जर/अलिञ्जर], घड़ा, भाण्ड, मिट्टी का बर्तन, मटका – *कोलम्बो चाथ मणिकं, भाणको च अरञ्जरो,* अभि. प. 456; तुल. अमर. 2.9; – **रो** प्र. वि., ए. व. – *एत्थ पन भाणकन्ति अरञ्जरो वुच्चति,* चूळव. अट्ठ. 76; *अरञ्जरोति बहुउदकगण्हनका महाचाटिजलं गण्हितुं अलन्ति अरञ्जरो,* सारत्थ. टी. 3.365.

अरञ्जरगिरि / आरञ्जरगिरि पु., पर्वतों के नाम के रूप में प्रयुक्त मध्यदेश की एक पर्वतमाला का नाम – **रिम्हि** सप्त. वि., ए. व. – *मज्झिमदेसे आरञ्जरगिरिम्हि पब्बतजालन्तरे ... गुहालेणे वसि,* जा. अट्ठ. 3.408.

अरञ्ञ नपुं., [अरण्य], वन, जङ्गल – *अरञ्ञं काननं दायो गहनं विपिनं वनं,* अभि. प. 536; तुल. अमर. 11.4; – **ञ्ञो** पु., प्र. वि., ए. व. – *पुब्बे किर सो वनसण्डो अरञ्ञो अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.171; (लिङ्गविपर्यय के कारण पु.); – **ञ्ञं** प्र. वि., ए. व. – *अरञ्ञं नाम यं मनुस्सानं परिग्गहितं होति, तं अरञ्ञं,* पारा. 58; *अरञ्ञं नाम ठपेत्वा गामञ्च गामूपचारञ्च अवसेसं नाम,* पारा. 52; – **ञ्ञं** द्वि. वि., ब. व. – *मयञ्हि एतं निस्साय इमं अरञ्ञं पविट्ठा,* ध. प. अट्ठ. 2.43; – **ञ्ञा / ञ्ञतो** प. वि., ए. व. – *यो पन भिक्खु गामा वा अरञ्ञा वा अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियेय्य,* पारा. 52; ... *यथा परिच्छिन्ने काले अरञ्ञतो आगन्त्वा* ..., विसुद्धि. 1.71; – **ञ्ञे** सप्त. वि., ए. व. – *गामे कट्ठत्थं फरति न अरञ्ञे,* इतिवु. 65; – **ञ्ञम्हि** सप्त. वि., ए. व. – *वसितं मे अरञ्ञेसु,* थेरगा. 602; *मिगो अरञ्ञम्हि यथा अबद्धो,* सु.

नि॰ 39; – **ञ्ञायतन** नपुं॰, [अरण्यायतन], जङ्गली निवास स्थल, वन में बना हुआ आवास – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकस्मिं अरञ्ञायतने फलानि खादन्तो वसति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.174; – **कुटिका** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यकुटिका], वन में बनाई हुई कुटी – **कायं / काय** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हिमवन्तपदेसे अरञ्ञकुटिकाय ओतरि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.356; *कोसलेसु विहरन्ति हिमवन्तपस्से अरञ्ञकुटिकाय उद्धता,* स॰ नि॰ 1(1).75; *हिमवन्तपदेसे अरञ्ञकुटिकायं विहरन्तो मारं आरब्भ कथेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.298; – **कोक** पु॰, जङ्गली कुत्ता, भेड़िया – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सुनखमंसन्ति एत्थ अरञ्ञकोका नाम सुनखसदिसा होन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 355; – **गत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यगत], वन में विद्यमान, जङ्गल में गया हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा ... इति पटिसञ्चिक्खति,* म॰ नि॰ 1.405; *अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा* ..., पारा॰ 83; – **तं**[1] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञगतं वा ... सुञ्ञागारतं वा,* अ॰ नि॰ 2(2).67; – **तं**[2] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञगतं अरञ्ञे नस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.187; – **गतसञ्ञी** त्रि॰, **शा॰ अ॰** वन में जाकर एकान्त-सेवन की बात सोचने वाला, **ला॰ अ॰** चित्त को क्लेशों से मुक्त एवं विशुद्ध बनाने की इच्छा करने वाला, अनासक्ति-भाव के विकास का प्रबल संकल्प करने वाला – **ञ्ञिनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं अरञ्ञगतसञ्ञिनो नेक्खम्मसङ्कप्पबहुलस्साति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.238; – **गतसुदेसक** त्रि॰, जङ्गल में कुशल मार्गदर्शक – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *असम्मोहपच्चुपट्ठाना अरञ्ञगतसुदेसको,* अभि॰ अव॰ 21; *अरञ्ञगतसुदेसको विय अरञ्ञे गतो मग्गसुदेसको विय,* अभि॰ अव॰ पु॰ टी॰ 18; – **गामक** पु॰, [अरण्यग्रामक], जंगल में स्थित छोटा सा गांव – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ *एकस्मिं अरञ्ञगामके पिण्डाय चरन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).277; – **गोण** पु॰, तत्पु॰ स॰, जंगली बैल – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गोणसिराति अरञ्ञगोणा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.306.

अरञ्ञज त्रि॰, [अरण्यज], वन में उत्पन्न – **जो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गामिकेहि अरञ्ञजो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.102; – **जा** ब॰ व॰ – *अपि रुक्खा अरञ्ञजा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.314; – **जातक** नपुं॰, जा॰ अट्ठ॰ का एक कथानक, जा॰ अट्ठ॰ 3.126-128; – **ज्झासय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अरण्याध्याशय], **शा॰ अ॰** वन के एकान्तवास में मानसिक अभिरुचि रखने वाला, **ला॰ अ॰** एकान्तप्रेमी, लगावरहित चित्त के विकास में अभिरुचि रखने वाला – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बुद्धा नाम अरञ्ञज्झासया अरञ्ञारामा,* उदा॰ अट्ठ॰ 331; – **ञ्ञट्ठ** त्रि॰, [अरण्यस्थ], वन में स्थित, जङ्गल में मौजूद – **ट्ठं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञट्ठं नाम भण्डं अरञ्ञे चतूहि ठानेहि निक्खित्तं,* पारा॰ 58; – **ट्ठं**[2] नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञट्ठं भण्डं अवहरिस्सामीति थेय्यचित्तो दुतियं वा परियेसति गच्छति वा,* पारा॰ 58; – **ट्ठकथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, पारा॰ अट्ठ॰ के एक भाग का शीर्षक, पारा॰ अट्ठ॰ 1.275; – **ञ्ञट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यस्थान], जङ्गली स्थान, वन-क्षेत्र – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञट्ठाने पञ्चसता पेसनकचोरा नाम पन्थघातं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.246; *छायूदकसम्पन्ने अरञ्ञट्ठाने वासं उपगच्छिंसु,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 27; – **निदानक** त्रि॰, ब॰ स॰, वन में निवास पर आधारित, (बुद्ध के) अरण्यनिवास के साथ जुड़ा हुआ – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञनिदानकं नामेतं सुत्तन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).144; – **पाल** पु॰, [अरण्यपाल], वन का रक्षक – **ला** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *अरञ्ञपाला च मयं ... तापसानञ्च भागं अगण्हन्ता,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.275; – **लानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरञ्ञपालानं देय्यधम्मं दत्वा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.275.

अरञ्ञपीति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यप्रीति], वन में रहने की सुखदायक अनुभूति – **ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सद्दं सुणतो अरञ्ञरति नाम उप्पज्जतीति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.177; पाठा॰ अरञ्ञरति; – **बिळार** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यबिडाल], जंगली बिल्ली – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बिळाराति अरञ्ञबिळारा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.169; – **भूत** त्रि॰, [अरण्यभूत], जंगल हो चुका, वन में बदल चुका – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दण्डकीरञ्ञं कालिङ्गारञ्ञं ... मातङ्गारञ्ञं अरञ्ञं अरञ्ञभूतन्ति,* म॰ नि॰ 2.47; – **भूतभाव** पु॰, वन बन जाना, जंगल के रूप में दिखलाई पड़ना – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मज्झारञ्ञस्स अरञ्ञभूतभावो वेदितब्बो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.63; – **मास** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यमाष], जंगली उड़द का पौधा, जंगली उड़द का बीज या फल – **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *केणूति अरञ्ञमासा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402; – **लक्खण** नपुं॰, [अरण्यलक्षण], जंगल का विशिष्ट चिह्न, जंगल की पहचान का विशेष लक्षण, केवल स॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त – *पञ्चधनुसतिकं पच्छिमन्ति वुत्तअरञ्ञलक्खणयोगतो अरञ्ञे* ..., थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.96; – **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(1).204-206; – **वनपत्थ** नपुं॰, द्व॰ स॰

सदा ब॰ व॰ में ही प्रयुक्त [अरण्यवनप्रस्थ], **क.** जंगल एवं पठार में स्थित वन, **ख.** जंगलों एवं वनों में विद्यमान आश्रय-स्थल - **नि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अरञ्ञवनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि,* म॰ नि॰ 1.22; *अरञ्ञवनपत्थानीति अरञ्ञानि च वनपत्थानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).119; *अरञ्ञवनपत्थानीति अरञ्ञकङ्गयुत्तताय अरञ्ञानि, महावनसण्डताय वनपत्थानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.360; *अरञ्ञवनपत्थानीति अरञ्ञलक्खणप्पत्तानि वनपत्थानि,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.24.

अरञ्ञवास 1. पु॰, [अरण्यवास], **क.** वनवासी या वानप्रस्थ-जीवन, तपस्वी जीवन, भिक्षुभाव - **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्स अरञ्ञवासो न इज्झति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).144; *अरञ्ञवासो नाम बुद्धादीहि वण्णितो थोमितो ति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.96; - **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अम्हाकं अनुरक्खणत्थाय अरञ्ञवासं अनुजानि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.138; - **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किं करिस्सामि अरञ्ञवासेन,* जा॰ अट्ठ॰ 1.114; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरञ्ञवासस्स पच्चयसम्पत्तिं दस्सेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).114; - **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरतिन्ति अरञ्ञवासे उक्कण्ठितत्तं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.413; - **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्मा अरञ्ञवासम्हि रतिं कयिराथ पण्डितोति,* विसुद्धि॰ 1.72; **2.** त्रि॰, ब॰ स॰, तापस जीवन बिताने वाला, वानप्रस्थ, वन में वास करने वाला साधक, वनवासी - **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अरञ्ञवासा अहेसुं ... उत्तमत्थगवेसका,* मि॰ प॰ 130; - **वासी** त्रि॰, [अरण्यवासिन्], वन में निवास करने वाला, तपस्वी जीवन बिताने वाला - **सिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अरञ्ञवासिनो पन दुब्बलमनुस्सा ... न सक्कोन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).137; - **वासिको** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, उपरिवत् - *अरञ्ञवासिको एको तापसो झानलाभी,* जा॰ अट्ठ॰ 1.286; - **विहार** पु॰, [अरण्यविहार], **क.** वन में निवास - **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अत्तमनो होमि अरञ्ञविहारेन,* अ॰ नि॰ 2(2).57; **ख.** वन में विद्यमान आवास-गृह **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकस्स अरञ्ञविहारस्स पिट्ठिभागे पादे ... पलिबुद्धो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.292; - **सङ्गामगत** त्रि॰, [अरण्यसंग्रामगत], जङ्गल में हो रहे युद्ध में पहुंचा हुआ - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरञ्ञसङ्गामगतो अवसेसधुतायुधो,* विसुद्धि॰ 1.72; - **सञ्ञा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अरण्यसंज्ञा], **शा॰ अ॰** वन में एकान्तसेवन से सम्बन्धित सोच-विचार, **ला॰ अ॰** लगावरहित या अनासक्त जीवन की इच्छा, अनासक्तिभाव के लिए संकल्प - *मिगसूकरादिसद्देन अरञ्ञसञ्ञा उप्पज्जति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.68; - **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरञ्ञसञ्ञंयेव मनसि करिस्सति एकत्तन्ति,* अ॰ नि॰ 2(2).57; - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरञ्ञसञ्ञाय चित्तं पक्खन्दति ... अधिमुच्चति,* म॰ नि॰ 3.148; - **सञ्ञी** त्रि॰, [अरण्यसंज्ञिन्], लगावरहित जीवन की इच्छा करने वाला, अनासक्तिभाव के लिए सुदृढ़ संकल्प करने वाला - **ञिनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विवेककामस्स अरञ्ञसञ्ञिनो,* थेरगा॰ 110; - **सत्थ** पु॰, एक चक्रवर्ती राजा का नाम - **त्थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरञ्ञसत्थो नामेन, चक्कवत्ती महब्बलो,* अप॰ 1.281; - **सामिक** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यस्वामिन्], जंगल का स्वामी - **मिका** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अरञ्ञसामिका एतेसं अनिस्सरा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.274; - **सुनख** पु॰, तत्पु॰ स॰, जंगली कुत्ता, भेड़िया - **खो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एत्थ कोकोति अरञ्ञसुनखो,* सद्द॰ 2.325; - **सेनासन** नपु॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यशयनासन], जंगल में बना निवास-स्थान - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेनस्स परक्कमजवयोग्गभूमिं अरञ्ञसेनासनं दस्सेन्तो भगवा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.12; - **अस्स** पु॰, [अरण्याश्व], जंगली घोड़ा - **स्सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *हत्थी अरञ्ञहत्थी अस्सा अरञ्ञअस्सा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.240.

अरञ्ञानी स्त्री॰, [अरण्यानी], विशाल वन, बीहड़ जंगल, बड़ा जंगल, विस्तृत मरुभूमि - **नियं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ब्रहावनेति महारुक्खगच्छगहनताय महावने अरञ्ञानियं ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.96.

अरञ्ञायतन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अरण्यायतन], वन में मौजूद (वन्य पशुओं अथवा तपस्वियों का) आश्रय-स्थल, वन्य निवासस्थली - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रमणीयं अरञ्ञायतनं ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 36; - **नानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *भयभोगा पटिविरता अरञ्ञायतनानि अज्झोगाहेत्वा,* म॰ नि॰ 1.209; **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *याजेय्याति सचे त्वं अरञ्ञायतनतो इसि लोमसकस्सपं आनेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.454; - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकस्मिं अरञ्ञायतने फलानि खादन्तो वसति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.174.

अरञ्ञाराम त्रि॰, ब॰ स॰ [अरण्याराम], वनवासी जीवन में भरपूर आनन्द अनुभव करने वाला - **मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *बुद्धा हि नाम अरञ्ञज्झासया अरञ्ञारामा अन्तोगामे ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.13.

अरट्ठ नपुं॰, रट्ठ का निषे॰ [अराष्ट्र], राष्ट्र की स्थिति से भिन्न, राष्ट्र से इतर – **ट्ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रट्ठं अरट्ठमकंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.349.

अरण त्रि॰, ब॰ स॰ [अरण, भिन्नार्थक], क्लेशों से मुक्त, विशुद्ध – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा एसो धम्मो अरणो,* म॰ नि॰ 3.286; – **णा** ब॰ व॰ – *अरणा धम्मा,* ध॰ स॰ 100; *तेनाकारेन नत्थि एतेसं रणाति अरणा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 97; *केसूध अरणा लोके,* स॰ नि॰ 1(1).52; – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्तं समाधि अरणं निसेवतो,* नेत्ति॰ 150.

अरणञ्जह पु॰, 16 चक्रवर्ती राजाओं की उपाधि के रूप में प्रयुक्त – **हा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्ततिंसम्हितो कप्पे, सोळस अरणञ्जहा,* अप॰ 1.206.

अरणविभङ्ग पु॰, तत्पु॰ स॰ 'अरण' का व्याख्यानात्मक विवेचन – **ङ्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरणविभङ्गं वो ... देसेस्सामि,* म॰ नि॰ 3.279; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयमुद्देसो अरणविभङ्गस्स,* म॰ नि॰ 3.279; – **सुत्त** नपुं॰, म॰ नि॰ का एक सुत्त, जिसमें क्लेशों से विमुक्ति के उपाय का उपदेश प्राप्त होता है, म॰ नि॰ 3.279–286.

अरणविहार पु॰, साधक के चित्त की वह शुद्ध अवस्था, जिसमें रहते हुए ध्यानों द्वारा मन के नीवरण, वितर्क, विचार आदि को तथा धर्मों में अनित्य, दुःख और अनात्म की अनुपश्यना द्वारा नित्य, सुख एवं आत्मा की संज्ञाएं हर ली जाती हैं – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पठमेन झानेन नीवरणे हरती ति अरणविहारो,* पटि॰ म॰ 89; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथं दस्सनधिपतेय्यं सन्तो च विहाराधिगमो पणीताधिमुत्तता पञ्ञा अरणविहारे ञाणं,* पटि॰ म॰ 89; – **ञाणनिद्देस** पु॰, पटि॰ म॰ का एक परिच्छेद, जिसमें अरणविहार में साक्षात्करणीय ज्ञान पर प्रकाश डाला गया है, पटि॰ म॰ 89–90.

अरणविहारी त्रि॰, क्लेशमुक्त या विशुद्ध चित्त के साथ विहार कर रहा साधक, अर्हत् – **री** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुञ्ञस्स खेत्तं अरणविहारी,* पे॰ व॰ 549; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एतदग्गं अरणविहारीनं यदिदं सुभूति,* अ॰ नि॰ 1(1).32.

अरणि / अरणी पु॰ / स्त्री॰, [अरणि, अरणी], आग उत्पन्न करने वाली लकड़ी, शमी की लकड़ी के टुकड़े, जिनके घर्षण से आग जलाई जाती थी – *यूपो थूणाय निम्मन्थ्यदारुम्हि त्वरणी द्विसु,* अभि॰ प॰ 419; तुल॰ अमर॰ 11.7; – **णि** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरणि न सिया,* मि॰ प॰ 54; – **णिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरणिं मन्थेत्वा अग्गिं निब्बत्तेत्वा धूमं करिंसु,* जा॰ 4.259; – **णी** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरणी फलपीठे च पत्तपिधानथालके,* अप॰ 1.333; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *छिन्नं कट्ठानन्ति छिन्नं अरणीनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.270; – **क** नपुं॰, [अरणिक], लकड़ियों के घर्षण द्वारा आग उत्पन्न करने में उपयोगी उपकरण, अरणिधनुक – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनापत्ति गण्ठिकाय, अरणिके, विधे ... आदिकम्मिकस्साति,* पाचि॰ 221; *अरणिकेति अरणिधनुके,* पाचि॰ अट्ठ॰ 142; – **धनुक** नपुं॰, आग जलाने के लिए घूमती हुई अरणि-लकड़ियों को सक्रिय रखने में प्रयुक्त धनुष – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरणिकेति अरणिधनुके,* पाचि॰ अट्ठ॰ 142; – **पोतक** पु॰, दोनों अरणिकाष्ठों का एक छोटा भाग – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरणिपोतको न सिया,* मि॰ प॰ 54; *अरणिपोतको सिया,* तदे॰; – **मथनयोग** पु॰, [अरणिमथनयोग], अरणि-नामक लकड़ियों के घर्षण के काम में लगाव – **गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *योगयुत्तोति अरणिमथनयोगेन युत्तो हुत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.54; – **णीयुगळ** नपुं॰, [अरणियुगल], ऊपर तथा नीचे की दोनों अरणि-नामक लकड़ियां – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरणीसहितन्ति अरणीयुगळं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.361; *अरणी युगळन्ति उत्तरारणी, अधरारणीति अरणीद्वयं,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.327; – **योत्तक** नपुं॰, [अरणियोक्त्र], दोनों अरणि लकड़ियों को एक साथ बांध कर रखने वाली लकड़ी – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरणियोत्तकं न सिया,* मि॰ प॰ 54; *अरणियोत्तकं सिया,* तदे॰; – **णीसहित** नपुं॰, आग उत्पन्न करने वाली अरणि-नामक दो लकड़ियां – **तं** प्र॰ / द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं वासी इमानि कट्ठानि इदं अरणिसहितं,* दी॰ नि॰ 2.252; *अरणीसहितन्ति अरणीयुगळं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.361; – *अरणिसहितं नीहरित्वा अग्गिं करोन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.209; – **तानि** ब॰ व॰ – *थविकतो अरणिसहितानि नीहरित्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).404; – **तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरणिसहितेन अग्गिं निब्बत्तेत्वा ... अग्गिक्खन्धं कत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.382; – **हत्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अरणिहस्त], अपने हाथों में अरणि नामक लकड़ियों के टुकड़ों को लिया हुआ – **त्थेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नामत्थमानोति नापि अरणिहत्थेन नरेन अमत्थियमानो निब्बत्तति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.54; – **णीनर** पु॰, अरणियों को लिया हुआ मनुष्य – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नामत्थमानो अरणीनरेन,* जा॰ अट्ठ॰ 7.52.

अरणीय त्रि॰, √अर का सं॰ कृ॰, प्राप्त करने योग्य, जाकर पाने योग्य, प्राप्तव्य, साक्षात्कार किए जाने योग्य – **यं** नपुं॰,

प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *तव्हि हेतुवसेन अरणीयं गन्तब्बं पत्तब्बं,* विभ॰ अट्ठ॰ 365; **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं सब्बं अरणीयतो अत्थोति वुच्चति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 191; *सदेवकेन च लोकेन अरणीयतो बुद्धा च ... च वुच्चन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.221; - **त्त** नपुं॰, भाव॰, प्राप्त करने योग्य होना, समीप पहुँचने योग्य होना - **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सदेवकेन लोकेन अरणीयत्ता अरिया,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 39.

अरत त्रि॰, √रम के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अरत], नहीं रमा हुआ, आसक्ति या लगाव से मुक्त, राग से रहित - **तो पु॰**, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *निब्बनथो अरतो स हि भिक्खु,* स॰ नि॰ 1(1).216; *अरतोति तण्हारतिरहितो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.237.

अरति √अर (जाना) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, जाता है, निष्पादित करता है - *तं तं सत्तकिच्चं अरति वत्तेती ति उतु,* सद्द॰ 2.432.

अरती[1] स्त्री॰, रति का निषे॰ [अरति], **शा॰ अ॰** राग या तृष्णा का अभाव, लगाव या आसक्ति का अभाव, आनन्द के अनुभव का अभाव, मन का उचटाव या अनभिरुचि, **ला॰ अ॰** विषयभोगों को पाने की उत्कण्ठा एवं कुशल धर्मों के प्रति अनुत्कण्ठा - **रती** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कच्चि तं एकमासीनं अरती नाभिकीरती'ति,* स॰ नि॰ 1(1).66; *अरती नाभिकीरतीति उक्कण्ठिता नाभिभवति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101; *अरतीति अकुसलपक्खा उत्कण्ठितता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.33; *भिय्यो नो अरती सिया,* जा॰ अट्ठ॰ 3.142; - **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एको रमे अरतिं विप्पहाया'ति,* स॰ नि॰ 1(1).209; *उप्पन्नं अरतिं अभिभुय्य अभिभुय्य विहरेय्य'न्ति,* म॰ नि॰ 1.42; - **या**[1] तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरतिया यदिदं मुदिताचेतोविमुत्ती'ति,* अ॰ नि॰ 2(2).13; - **या**[2] ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरतिया पहानाय मुदिता भावेतब्बा,* अ॰ नि॰ 2(2).147.

अरति / अरती[2] स्त्री॰, मार की एक पुत्री का नाम - **ति / ती** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तण्हा च अरति च रगा च मारधीतरो,* स॰ नि॰ 1(1).146; *तण्हा च अरती रगा,* स॰ नि॰ 1(1).150; - **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दिस्वान तण्हं अरतिं रगञ्च,* सु॰ नि॰ 841.

अरतिस्सह त्रि॰, अरति या अनुत्कण्ठा को सहन करने वाला - **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *धीरो हि अरतिस्सहो,* अ॰ नि॰ 1(2).34; *धीरो हि अरतिस्सहोति अरतिसहत्ता हि सो धीरो नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.279.

अरतिका / अरतिता स्त्री॰, अरति का भाव॰, रति या राग का न रहना, उत्कण्ठा या आसक्ति का अभाव होना आनन्द का अनुभव न करना - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अधिकुसलेसु धम्मेसु अरति अरतिता अनभिरति ... उक्कण्ठिता,* विभ॰ 403; *अरतितति अरमणाकारो,* विभ॰ अट्ठ॰ 452.

अरतिबहुल त्रि॰, ब॰ स॰ [अरतिबहुल], अरति या अनुत्कण्ठा के भाव से भरा हुआ, अत्यधिक अरति रखने वाला - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *मुदिता अरतिबहुलस्स,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 240.

अरतिरति स्त्री॰, द्व॰ स॰ [अरतिरति], अनासक्ति एवं आसक्ति, मन का बिलगाव और लगाव - *न च मं अरतिरति सहेय्य,* अ॰ नि॰ 3(2).110; - **सह** त्रि॰, अनासक्ति एवं राग दोनों को सहन करने में सक्षम - **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरतिरतिसहो हि ... धीरो'ति,* अ॰ नि॰ 1(2).33; *अरतिरतिसहोति अरतिञ्च पञ्चकामगुणरतिञ्च सहति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.279.

अरतिवन्तु त्रि॰, [अरतिमत्], अरति या अनुत्कण्ठा से युक्त - **तिवा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विहेसवा अस्स अरतिवा अस्स पटिघवा ... अनभावंकतो आयतिं अनुप्पादधम्मो,* म॰ नि॰ 2.37.

अरतिविघातपच्चुपट्ठान त्रि॰, ब॰ स॰, अरति या भोगों के प्रति अनुत्कण्ठा के विनाश से उदित होने वाला / वाली **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सत्तेसु पमोदनलक्खणा मुदिता ... अरतिविघातपच्चुपट्ठाना सत्तानं सम्पत्तिदस्सनपदट्ठाना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 237.

अरतिवूपसम पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरत्युपशम], अरति का उपशमन, अरति की समाप्ति - **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरतिवूपसमो तस्सा सम्पत्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 237.

अरत्त त्रि॰, √रज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अरक्त], **शा॰ अ॰** नहीं रंगा हुआ, **ला॰ अ॰** राग या लगाव से मुक्त, तृष्णा एवं आसक्ति से रहित - **त्तो** पु॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, - *सो तत्थ अरत्तो तत्त अनभिरतो,* अ॰ नि॰ 2(2).204; - **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सा तत्थ अरत्ता तत्त अनभिरता,* अ॰ नि॰ 2(2).203.

अरथक त्रि॰, ब॰ स॰ [अरथक], बिना रथ वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनस्सको अरथको दीघमद्धानमागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.274; *अरथको अयानको,* तदे॰.

अरनेमि पु॰, एक ब्राह्मण आचार्य, एक धर्माचार्य - *अरनेमि च ब्राह्मणो,* अ॰ नि॰ 2(2).83; *अरनेमि नाम सत्था अहोसि,* अ॰ नि॰ 2(2).82.

अरन्तर नपुं॰, [अरान्तर], रथ के अरों के बीच वाला अन्तराल - **रानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अरपि अरन्तरानिपि नेमियोपि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).152.

अरमणट्ठान नपुं., तत्पु. स. [अरमणस्थान], आनन्द का अनुभव न कराने वाला स्थान, मन को रमाने में अक्षम स्थान, सांसारिक मौजमस्ती न देने वाला स्थान – **नं** प्र. वि., ए. व. – *कामगवेसकानं अरमणट्ठानमेव वीतरागानं रमणट्ठानं होती'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.359.

अरमणाकार पु., तत्पु. स. [अरमणाकार], मौजमस्ती के न होने की स्थिति, अनभिरुचि या असन्तुष्टि की अवस्था – **रो** प्र. वि., ए. व. – *अरतिताति अरमणाकारो,* विभ. अट्ठ. 452.

अरवाळ पु., [बौ. सं. अरवाड], एक नागराज का नाम – **ळो** प्र. वि., ए. व. – *कस्मीरगन्धाररट्ठे सस्सपाकसमये अरवाळो नाम नागराजा करकवस्सं नाम वस्सापेत्वा ...,* पारा. अट्ठ. 1.46.

अरवालदह पु., हिमालय में स्थित एक जलाशय – **दहे** सप्त. वि., ए. व. – *अरवालदहे वारिपिट्ठे चङ्कमणादिके,* म. वं. 12.11.

अरविन्द नपुं., [अरविन्द], कमल – *सरोरुहं सतपत्तं अरविन्दं च वारिजं,* अभि. प. 684.

अरस त्रि., ब. स. [अरस], रस-रहित, नीरस केवल स. प. के पू. प. में ही प्राप्त – **जातिक** त्रि., ब. स. [अरसजातिक], रुखे-सूखे स्वभाव वाला, नीरस प्रकृति का – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *तस्मा अरसरूपो भवं गोतमो अरसजातिको अरससभावोति,* पारा. अट्ठ. 1.96; – **पटिसंवेदी** त्रि., [अरसप्रतिसंवेदिन्], रस के स्वाद का संवेदन या अनुभव न करने वाला – **दी** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरसपटिसंवेदी तरमानो भुञ्जति,* विसुद्धि. 1.104; – **रूप** त्रि., ब. स., रुखे-सूखे स्वभाव का, नीरस, असामाजिक – **पो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरसरूपो भवं गोतमो'ति,* पारा. 2; – **सभाव** त्रि., ब. स. [अरसस्वभाव], उपरियत् – **पो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तस्मा अरसरूपो भवं गोतमो, अरसजातिको अरससभावोति,* पारा. अट्ठ. 1.96.

अरह / आरह त्रि., [अर्ह], योग्य, पात्र, अधिकारी, आदरणीय, उचित, उपयुक्त, **क. निमि. कृ. के साथ** – *मणिं धारेतुमारहो,* जा. अट्ठ. 7.23; *धारेतुमारहो'ति धारेतुं अरहो,* तदे.; **ख. ष. वि. ब. व. में अन्त होने वाले नपुं. नामों के साथ** – *बहुविविधा गिहीनं अरहानि,* दी. नि. 3.123; *अरहानीति बहू विविधानि गिहीनं अनुच्छविकानि पटिलभति,* दी. नि. अट्ठ. 3.107.

अरह त्रि./पु., [अर्हत्], **क.** त्रि., उपरिवत् – **रहा** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरहा भवं वत्तुं,* सद्द. 3.862; **ख.** पु., आस्रवों या चित्तमलों को पूरी तरह नष्ट कर चुका वह बौद्ध साधक, जिसने विशुद्धि के मार्ग को पार कर लिया है, अशैक्ष्य हो चुका है, लगभग बुद्धत्व की स्थिति तक पहुंच चुका है, स्रोतापन्न, सकृदागामी एवं अनागामी नामक तीन शैक्ष्य आर्य पुद्गलों की स्थिति से ऊपर वाली मानसिक विशुद्धि को पा चुका है तथा बुद्ध, श्रावक, प्रत्येक-बुद्ध, सुक्खविपस्सक एवं समथयानिक जैसे विविध प्रभेदों में वर्णित है; **श. रू.** – **रहं / रहा** प्र. वि., ए. व. – *यो वे अनरहं सन्तो, अरहं पटिजानाति,* सु. नि. 135; *योपि सो, भिक्खवे, भिक्खु, अरहं खीणासवो ...,* म. नि. 1.6; *असुको भिक्खु अरहा, असुको भिक्खु तेविज्जो,* पारा. 107; – **हन्तं** द्वि. वि., ए. व. – *... अरहन्तं जीविता वोरोपेय्य,* म. नि. 3.111; – **हता / न्तेन** तृ. वि., ए. व. – *... तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन ...,* दी. नि. 1.2; – **हतो / हन्तस्स** ष. वि., ए. व. – *अपि नु खो, भन्ते, अरहतो अनादरियं होति,* मि. प. 278; *अञ्ञस्स अरहन्तस्स आगमनं भवेय्य वा न वा भवेय्य,* मि. प. 247; – **हन्ते / हन्तम्हि** सप्त. वि., ए. व. – *अनेकभावो समुप्पादि अरहन्तेव दक्खिणा,* दी. नि. 2.196; *अभिप्पसादेहि मनं, अरहन्तम्हि तादिने,* थेरगा. 1182; – **हन्तो / हन्ता** प्र. वि., ब. व. – *अरहन्तो एते, भिक्खवे, भिक्खू,* महाव. 112; *'अम्हो पुब्बे छ सत्थारो लोके'मयं अरहन्तम्हा'ति विचरिंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.116; – **हन्ते** द्वि. वि., ब. व. – *नेतं, महाराज, वचनं भगवता अरहन्ते उपादाय भणितं,* मि. प. 147; – **हन्तेहि** तृ. वि., ब. व. – *अस्सादो द्वे समुदया अरहन्तेहि अपरे द्वे,* स. नि. 2(1).96; – **हतं / हन्तानं** ष. वि., ब. व. – *अञ्ञतरो खो पनायस्मा सेनियो अरहतं अहोसीति,* म. नि. 2.61; *नत्थि अरहन्तानं सतिसम्मोसो,* मि. प. 248; – **हन्तेसु** सप्त. वि., ब. व. – *यावकीवञ्च, लिच्छवी, वज्जीनं अरहन्तेसु धम्मिका ...,* अ. नि. 2(2).169.

अरहग्गत त्रि., **क.** अर्हतों से सम्बन्धित, **ख.** सभी सम्मानों को पाने योग्य त्रिरत्न के प्रति देय (सम्मान-भाव) – **ग्गतं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *अरहग्गतं आयस्मन्तो सतिं उपट्ठापेथा'ति,* अ. नि. 2(1).244; *अरहग्गतन्ति सब्बसक्कारानं अरहे रतनत्तयेव गतं,* अ. नि. अट्ठ. 3.85.

अरहटघटियन्त नपुं., तत्पु. स. [अरघट्टघटीयन्त्र], रहट, जिसमें लगे हुए डोलों (जल भरे डिब्बों) द्वारा कुएं से पानी निकाला जाता है – *चक्कवट्टकन्ति अरहटघटियन्तं,* चूळव. अट्ठ. 52; *अरहटघटियन्तं नाम सकटचक्कसण्ठानं अरे अरे*

घटिकानि बन्धित्वा एकेन द्वीहि वा परिभमियमानं यन्तं, सारत्थ॰ टी॰ 3.351.

अरहति √अरह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, द्वि॰ वि॰ में अन्त होने वाले नामों तथा निमि॰ कृ॰ के साथ प्रयुक्त [अर्हति], **क.** (सम्मान आदि को पाने के लिए) योग्य है, अधिकारी है, **ख.** (अन्य लोगों की) समानता पाने योग्य है, **ग.** म॰ पु॰ में, परामर्श या अनुरोध का सङ्केतक तथा 'चाहिए' अर्थ का प्रकाशक, **घ.** सक्षम है, पर्याप्त है – *ते मारो वत्तुमरहति*, सु॰ नि॰ 433; *अपेतो दमसच्चेन, न सो कासावमरहति*, ध॰ प॰ 9; – **सि** म॰ पु॰ ए॰ व॰ – *यथा खो त्वं, आवुसो, पटिजानासि, अरहसि अनन्तजिनोति*, महाव॰ 12; – **हामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तञ्चारहामि वत्तवे*, जा॰ अट्ठ॰ 3.270; – **हन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न इमे मम सरीरे उपयोगं अरहन्ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.2; – **हथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आम, महाराज, अरहथ भगवन्तं दट्ठुं*, सा॰ वं॰ 34 (ना॰); – **हाम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *यथा मयमेव अरहाम तं समणं गोतमं दस्सनाय उपसङ्कमितुं*, म॰ नि॰ 2.385.

अरहत्त[1] नपुं॰, अरहन्त की व्यु॰ को स्पष्ट करने के क्रम में प्रयुक्त, अरह का भाव॰ [अर्हत्व], योग्यता, सक्षमता, पात्रता – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आरकत्ता अरीनं, अरानञ्च हतत्ता पच्चयादीनं अरहत्ता ... इमेहि ताव कारणेहि सो भगवा अरहन्ति वेदितब्बोति ...*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.122-123; पारा॰ अट्ठ॰ 1.79; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.147.

अरहत्त[2] नपुं॰, अरहन्त का भाव॰ [अर्हत्व], अर्हत् की अवस्था, बुद्ध-चर्या के अनुयायी द्वारा प्राप्य चित्तविशुद्धि की सर्वोत्तम अवस्था, आस्रवों के क्षय के ज्ञान की स्थिति, अन्तिम आर्यफल की अवस्था – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञा तु अरहत्तं च*, अभि॰ प॰ 436; *विमुत्तिरतनं खो ... अरहत्तं वुच्चति*, मि॰ प॰ 307; – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणि*, मि॰ प॰ 16; – **त्ताय** च॰ वि॰ ए॰ व॰ – *भगवा अरहा चेव अरहत्ताय च धम्मं देसेती'ति*, उदा॰ 76; – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तंपजाननो मग्गो मग्गसच्चन्ति चतुसच्चकम्मट्ठानं अट्ठारसधातुवसेन ... अरहत्ता मत्थकं पापेत्वा ...*, विभ॰ अट्ठ॰ 67; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवा अरहत्तस्स मच्छरायती'ति*, दी॰ नि॰ 3.5; *अरहत्तस्सापि रागादीनं खयमत्तपसङ्गदोसापत्तितो*, अभि॰ अव॰ 102; – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तण्हक्खयरतोति अरहत्ते चेव निब्बाने च अभिरतो होति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.138; *अरहत्ते वा सम्पक्खन्दति योगं करोति*, मि॰ प॰ 33; – **ग्गहण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वग्रहण], अर्हत्व-फल में स्थिति, अर्हत् की अवस्था की प्राप्ति – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहत्तग्गहणन्ति इदं विपस्सनाधुरं*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.5; – **निकूट / कूट** पु॰ / नपुं॰, अर्हत्व के फल को शीर्षस्थ बनाने वाली धर्मोपदेश-पद्धति, अर्हत्व-फल में परिणत होने वाली धर्मदेशना – **टेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्था अरहत्तकूटेन देसनं निट्ठापेत्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 1.268; *अरहत्तनिकूटेनेव भगवा देसनं निट्ठापेसि*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.22; *इमम्पि सुत्तं अरहत्तनिकूटेनेव देसेसि*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.282; – **पटिवेध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वप्रतिवेध], अर्हत्व का प्रतिवेधात्मक ज्ञानदर्शन, अर्हत अवस्था का आन्तरिक साक्षात्कार – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहत्तपटिवेधो नाम नत्थि*, उदा॰ अट्ठ॰ 247; – **परियाय** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वपर्याय], अर्हत्व को प्रकाशित करने वाली उपदेश-पद्धति अथवा व्याख्यान-प्रकार – **येहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरहत्तपरियायेहीति चतुसट्ठिया कारणेहि अलङ्करित्वा*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).234; – **प्पत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वप्राप्त], अर्हत्-अवस्था को प्राप्त कर चुका (साधक) – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *आयस्मा अनुरुद्धो अरहत्तप्पत्तो तायं ...*, अ॰ नि॰ 3(1).67; – **त्ता** ब॰ व॰ – *अरहत्तप्पत्ता पन एकन्तविप्पसन्नाव होन्तीति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.333; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहत्तप्पत्तस्स सुखं होति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.302; **त्तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरहत्तप्पत्तानं पन नेसं ...*, अ॰ नि॰ 2(1).29; – **प्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वप्राप्ति], अर्हत् अवस्था अथवा अर्हत्-फल की प्राप्ति – *एवं याव अरहत्तप्पत्ति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.193; – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मम सन्तिके अरहत्तप्पत्तिं ब्याकरोति*, अ॰ नि॰ 1(2).181; – **या** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देसेति धम्मं अरहत्तपत्तिया*, अप॰ 2.126; – **निट्ठ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अर्हत्वप्राप्तिनिष्ठ], अर्हत्व की प्राप्ति में परिणत होने वाला – **ट्ठं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुनो अरहत्तप्पत्तिनिट्ठं ... सेनासनवत्तञ्च कथेन्तो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.193.

अरहत्तफल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वफल], बुद्ध के आर्यमार्ग के पथिक द्वारा पाया जाने वाला चौथा और अन्तिम फल, अर्हत्व-मार्ग पर चल रहे आर्य श्रावक द्वारा प्राप्य चरम फल, श्रमण-जीवन में प्राप्य चार आर्य फलों में से अन्तिम फल **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोतापत्तिफलं सकदागामिफलं ... अरहत्तफलं सुञ्ञतफलसमापत्ति ... अप्पणिहितफलसमापत्ति*, मि॰ प॰ 303; *चत्तारि सामञ्ञफलानि – सोतापत्तिफलं, सकदागामिफलं, अनागामिफलं, अरहत्तफलं*, दी॰ नि॰

3.182; – **स्स** ष. वि., ए. व. *अनागामिफलस्स सच्छिकिरिया अरहत्तस्स सच्छिकिरिया,* पारा. 114; – **कामी** त्रि., [अर्हत्वफलकामिन्], अर्हत्व-फल की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प करने वाला – **मिना** पु., तृ. वि., ए. व. – *तथेव बुद्धपुत्तेन अरहत्तफलकामिना,* मि. प. 341; – **क्खण** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वफलक्षण], अर्हत्व के फल में स्थित होने का क्षण, अर्हत्व-फल में स्थित आर्यपुद्गल का चित्तक्षण – **क्खणे** सप्त. वि., ए. व. – *अरहत्तफलक्खणे दस्सनं विसुद्धं,* पटि. म. 97; – **धम्म** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वफलधर्म], अर्हत्व का फल – **म्मं** द्वि. वि., ए. व. – *सच्छिकरोति एकं धम्मन्ति एकं अरहत्तफलधम्मं निरोधमेव वा पच्चक्खं करोति,* अ. नि. अट्ठ. 2.181; – **पञ्ञा** स्त्री., कर्म. स. [अर्हत्वफलप्रज्ञा], अर्हत्वफल को प्राप्त आर्यश्रावक की प्रज्ञा – *समाधिविपस्सनापञ्ञाहि अरहत्तफलपञ्ञा उत्तरितरा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.223; – **विमुत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [अर्हत्वफलविमुक्ति], अर्हत्वफल में स्थित व्यक्ति द्वारा पाई गई विमुक्ति – *एत्थ हि विमुत्तीति अरहत्तफलविमुत्ति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.224; – **विमोक्ख** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वफलविमोक्ष], उपरिवत् – **क्खं** द्वि. वि., ए. व. – *नयेन कारणेन अरहत्तफलविमोक्खं ञाणफस्सेन फुसति,* अ. नि. अट्ठ. 2.181; – **सच्छिकिरिया** स्त्री., तत्पु. स. [अर्हत्वफलसाक्षात्क्रिया], अर्हत्वफल की साक्षात् अनुभूति – *अरहत्तफलसच्छिकिरिया होती'ति,* अ. नि. 1(1).30; – **य** च. वि., ए. व. – *एको धम्मो ... अरहत्तफलसच्छिकिरियाय संवत्तती'ति,* अ. नि. 1(1).59; – **समाधि** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वफलसमाधि], अर्हत्वफल से सम्बद्ध समाधि – *अरहत्तफलसमाधि नामेसो वुत्तो भगवताति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 3.278; – **लाधिगम** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वफलाधिगम], अर्हत्वफल की प्राप्ति – **मं** लिङ्गविपर्ययवश, नपुं., प्र. वि., ए. व. – *धम्मकामस्स विय अरहत्तफलाधिगममनुत्तरं,* मि. प. 323.

अरहत्तमग्ग पु., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्ग], स्रोतापत्ति, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत्, इन चार लोकोत्तर अवस्थाओं की प्राप्ति में लगे हुए चार आर्य साधकों में से अन्तिम द्वारा ग्रहण किया गया वह मार्ग, जिसका अनुसरण कर रहा योगी पांच अपर-भागीय संयोजनों के क्षय के लिए प्रयत्नशील रहता है – **ग्गो** प्र. वि., ए. व. – *अरहत्तमग्गोपि वड्डतियेव,* दी. नि. अट्ठ. 1.181; *सत्तविधं अनुपस्सनं भावेन्तस्स अरहत्तमग्गो उप्पज्जित्वा फलं देति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).242; – **ग्गं** द्वि. वि., ए. व. – *ये वत लोके अरहन्तो वा अरहत्तमग्गं वा समापन्ना,* महाव. 45; – **ग्गेन** तृ. वि., ए. व. – *अरहत्तमग्गेनेव हि सा अनवसेसं पहीयतीति,* उदा. अट्ठ. 39; *पठमेन झानेन नीवरणे निरोधेति ... अरहत्तमग्गेन सब्बकिलेसे निरोधेति,* पटि. म. 93; – **ग्गा** प. वि., ए. व. – ... *पट्ठाय याव अरहत्तमग्गा सततं पवत्तकायिकचेतसिकवीरिया,* ध. प. अट्ठ. 1.131; – **ग्गस्स** ष. वि., ए. व. – *अनुप्पन्नस्स अरहत्तमग्गस्स उप्पादाय* ..., पटि. म. 96; – **क्खण** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गक्षण], अर्हत्वमार्ग पर चल रहे साधक का चित्तक्षण – **क्खणे** सप्त. वि., ए. व. – *अरहत्तमग्गक्खणे दस्सनं विसुज्झति,* पटि. म. 97; – **खन्ति** स्त्री., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गक्षान्ति], अर्हत्वमार्ग के क्षण की क्षान्ति या सहनशीलता – *पठमज्झानखन्ति नीवरणेहि सुञ्ञा ... अरहत्तमग्गखन्ति सब्बकिलेसेहि सुञ्ञा,* पटि. म. 358; – **चित्त** नपुं., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गचित्त], अर्हत्वफल की प्राप्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग के पथिक का चित्त या चित्तक्षण – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *तेन सम्पयुत्तं चित्तं अरहत्तमग्गचित्तं,* अभि. ध. स. 95; – **ञाण** नपुं., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गज्ञान], अर्हत्वमार्ग में प्राप्त किया गया ज्ञान – **णं** प्र. वि., ए. व. – *सब्बदुक्खक्खये ञाणं नाम अरहत्तमग्गेञाणं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.224; पाठा. ग्गे ञाणं; – **ट्ठ** त्रि., [अर्हत्वमार्गस्थ], अर्हत्वमार्ग में स्थित, अर्हत्व-प्राप्ति के मार्ग पर पहुंचा हुआ – **ट्ठा** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *याव अरहत्तमग्गट्ठा छब्बिधो होति,* अ. नि. अट्ठ. 3.149; – **पटिलाभ** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गप्रतिलाभ], अर्हत्वमार्ग की प्राप्ति – **भो** प्र. वि., ए. व. – *सुञ्ञो ... अरहत्तमग्गपटिलाभो सब्बकिलेसेहि सुञ्ञो,* पटि. म. 357; – **पटिवेध** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गप्रतिवेध], अर्हत्वमार्ग की गहराई तक जाकर प्रवेश – **धो** प्र. वि., ए. व. – ... *अरहत्तमग्गप्पटिवेधो सब्बकिलेसेहि सुञ्ञो,* पटि. म. 357; – **परिग्गह** पु., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गपरिग्रहण], अर्हत्वमार्ग का भली-भांति ग्रहण – **ग्गहो** प्र. वि., ए. व. – ... *अरहत्तमग्गपरिग्गहो सब्बकिलेसेहि सुञ्ञो,* पटि. म. 357; – **परियोगाहण** नपुं., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गपर्यवगाहन], अर्हत्व-मार्ग की गहराई तक जाकर डूब जाना, अर्हत्वमार्ग में निमग्न हो जाना – **णं** प्र. वि., ए. व. – ... *अरहत्तमग्गपरियोगाहणं सब्बकिलेसेहि सुञ्ञं,* पटि. म. 358; – **फल** नपुं., तत्पु. स. [अर्हत्वमार्गफल], अर्हत्वमार्ग द्वारा

प्राप्य फल, केवल स॰ प॰ के अन्त॰ प्रयुक्त - *अभिञ्ञाकुसलञ्चेति अरहत्तमग्गफलवज्जितसब्बारम्मणानि,* अभि॰ ध॰ स॰ 22; - **वज्झक** त्रि॰, अर्हत्वमार्ग में बाधक, अर्हत्वमार्ग में बाधा खड़ी करने वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मानोति अरहत्तमग्गवज्झको मानो एव,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 281; - **विज्जा** स्त्री॰, [अर्हत्वमार्गविद्या], अर्हत्वमार्ग में प्राप्त ज्ञान - **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विज्जुप्पादाति अरहत्तमग्गविज्जाय उप्पादेन,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).243; - **ग्गाधिट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वमार्गाधिष्ठान], अर्हत्वमार्ग पर पहुंचने के लिए किया गया दृढ़ संकल्प - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुञ्ञं ... पे॰ ... अरहत्तमग्गाधिट्ठानं सब्बकिलेसेहि सुञ्ञं,* पटि॰ म॰ 358; - **ग्गेकत्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वमार्गैकत्व], अर्हत्वमार्ग में विद्यमान एकत्व - **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरहत्तमग्गेकत्तं चेतयतो सब्बकिलेसेहि सुञ्ञं,* पटि॰ म॰ 358; - **ग्गेसना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वमार्गैषणा], अर्हत्वमार्ग पर पहुंचने की इच्छा - *अरहत्तमग्गेसना सब्बकिलेसेहि सुञ्ञा,* पटि॰ म॰ 357; - **वग्ग** पु॰, **क.** स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(1).68-75; **ख.** अ॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(2).131-135; - **विमोक्ख** पु॰, [अर्हत्वविमोक्ष], अर्हत्व अवस्था की प्राप्ति द्वारा प्राप्य विमोक्ष या मुक्ति - **क्खो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञाविमोक्खं पब्रूहीति अञ्ञाविमोक्खो वुच्चति अरहत्तविमोक्खो ...,* चूळनि॰ 141; - **ब्याकरण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अर्हत्व की प्राप्ति से सम्बन्धित निर्वचन या व्याख्या - **णानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अञ्ञाब्याकरणानीति अरहत्तब्याकरणानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.41; - **संखात** त्रि॰, [अर्हत्वसंखात], अर्हत्व नामक, अर्हत्व नाम से ज्ञात - **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मग्गामग्गस्स कोविदं अरहत्तसङ्खातं उत्तमत्थं ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.381.

अरहत्ताधिगम पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वाधिगम], अर्हत् अवस्था की प्राप्ति - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सा च अरहत्ताधिगमतो ओरं वेदितब्बा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.193.

अरहत्ताधिमान पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वाभिमान], अपने अर्हत् होने का अभिमान - **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किलेसानं असमुदाचारतो अरहत्ताधिमानो उप्पज्जती'ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 66.

अरहत्तानिसंस त्रि॰, अर्हत्व को लाभकारी बतलाने वाला, अर्हत्व के लाभ का प्रशंसक - **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरहत्तानिसंसो भिक्खु अरहत्तं पत्थेन्तो झायी भवेय्य ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.94.

अरहत्तासन्नगत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हत्वासन्नगत], अर्हत् अवस्था के समीप पहुंचा हुआ - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरहत्तासन्नगतोति अरहति उपासको ... अभिवादेतुं पच्चुट्ठातुं,* मि॰ प॰ 161.

अरहत्तुप्पत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हतुत्पत्ति], अर्हत्व का उदय या प्रादुर्भाव - *पटिपाटिया पन ... पूरेत्वाव अरहत्तुप्पत्तीति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 247.

अरहत्तूपनिस्सय पु॰, [अर्हत्वोपनिःश्रय], अर्हत्व का आधारभूत लक्षण, अर्हत्व की आधारभूत पात्रता - *अन्तोघटे पदीपो विय तस्सा हदये अरहत्तूपनिस्सयो जलति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.149.

अरहद्धज क. पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हद्ध्वज], किसी अर्हत् का विशिष्ट चिह्न, अर्हत् द्वारा धारण किया जाने वाला चीवर अथवा काषायवस्त्र - **जं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अजेगुच्छं विमुत्तेहि सुरत्तं अरहद्धजं,* थेरगा॰ 961; *अरहन्तानं बुद्धादीनं चिण्णताय अरहद्धजं जिगुच्छिस्सन्ति कासावं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.310; - **जे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आभते अरहद्धजे गहितमत्तेयेव ... राजगहं पत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.116; **ख.** त्रि॰, ब॰ स॰, काषाय-वस्त्रों या चीवरों को धारण करने वाला, अर्हत् - *अरहद्धजो सब्भि अवज्झरूपो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.43; *अरहद्धजो नाम सब्भि पण्डितेहि अवज्झरूपो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.44.

अरहन्त पु॰, [अर्हत्], चित्त के क्लेशों को नष्ट कर चुका क्षीणास्रव अर्हत् - **न्तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अरहन्तानं वण्णेन अमनुस्सा पाणं हनन्ति ... पे॰ ... अदिन्नं आदियन्ति,* कथा॰ 502; - **घात** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ [अर्हद्घात], अर्हत् की हत्या - *तदभावे अरहन्तघातो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.342; - **घातक** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अर्हद्घातक], अर्हत् की हत्या करने वाला - *अरहन्तघातको ... अनुपसम्पन्नो न उपसम्पादेतब्बो,* महाव॰ 112; - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न पितुघातकस्स ... पे॰ ... न अरहन्तघातकस्स ... पे॰ ...,* महाव॰ 178; - **भूमि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अर्हत्व की स्थिति, अर्हत्व की अवस्था - *सो तेसं धम्मानं अनूनत्ता परिपुण्णत्ता ... असेक्खभूमिं अरहन्तभूमिं ओक्कमति,* मि॰ प॰ 161; - **वग्ग** पु॰, **क.** ध॰ प॰ का एक वर्ग, जिसमें अर्हतों से सम्बद्ध गाथाएं संगृहीत हैं, ध॰ प॰ 24-25; **ख.** स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).187-200; - **वाद** पु॰, तत्पु॰ स॰, 'अर्हत्' कहकर सम्बोधन, 'अर्हत्' कह कर पुकारना - **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयञ्च ब्राह्मणो अम्हे अरहन्तवादेन समुदाचरति,* पारा॰ 138; - **वादपटिसंयुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰

[अर्हत्ववादप्रतिसंयुक्त], 'अर्हत्' कह कर पुकारने की आदत वाला, 'अर्हत्' सम्बोधन से युक्त - **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यंकिञ्चि वदन्तो अरहन्तवादपटिसंयुत्तमेव वदति,* ध. प. अट्ठ. 2.362; - **सञ्ञी** पु., [अर्हत्संज्ञिन्], अर्हत् समझने वाला - *अयं अम्हेसु अरहन्तसञ्ञी'ति चिन्तयिंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.362; - **न्तूपसञ्हित** त्रि., [अर्हदुपसंहित], अर्हतों से सम्बन्धित, अर्हत्-विषयक - **ञ्हिता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *बुद्धूपसञ्हिता ... अरहन्तूपसञ्हिता कामूपसञ्हिता,* दी. नि. 2.195.

अरहरूप त्रि., ब. स. [अर्हरूप], योग्य प्रकृति से युक्त, उपयुक्त अथवा उदात्तस्वरूप वाला **तो** प. वि., ए. व. - ... *सारेतुं निरन्तरं पवत्तेतुं अरहरूपतो सरितब्बभावतो च साराणीयं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).117.

अरहसञ्ञी त्रि., रहसञ्ञी का निषे. [अरहःसंज्ञिन्], अरहस्यमय या अगुप्त रूप में जानने वाला, एकदम खुले रूप में या स्पष्ट रूप में जानने वाला - **ञ्ञिनो** पु., ष. वि., ए. व. - *अनन्धे सति विञ्ञुस्मिं ठितस्सारहसञ्ञिनो,* विन. वि. 547.

अरहस्स त्रि., ब. स. [अरहस्य], छिपा कर न रखने वाला, उन्मुक्त, खुला हुआ - **स्सं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *पुरिसं विवटं पाकटं अकिरियं अरहस्सं रहस्सकामा परिवज्जेन्ति,* मि. प. 276; - **कारी** त्रि. [अरहस्यकारी], लुक-छिप कर काम न करने वाला - **रिना** पु., तृ. वि., ए. व. - ... *अरहस्सकारिना भवितब्बं,* मि. प. 105; - **वचन** नपुं., कर्म. स. [अरहस्यवचन], ऐसा वचन, जो किसी से भी छिपाए जाने योग्य न हो - **नं** प्र. वि., ए. व. - *तिण्णं सन्निपाता गब्भस्स अवक्कन्ति होती'ति असेसवचनमेतं ... अरहस्सवचनमेतं,* मि. प. 128.

अरहित त्रि., √अरह का भू. क. कृ. [अर्हित], सम्मानित, पूजित, सत्कृत - *अपचायितो च महितो पूजितारहिताच्चिता,* अभि. प. 750.

अरहो अ., क्रि. वि., रहो का निषे. [अरहः], अगुप्त या अरहस्यमय रूप में, दूसरों से बिना छिपाए हुए - *अरहो अरहोसञ्ञी,* पारा. 88; *अरहो रहोसञ्ञीनिद्देसादीसु अरहो'ति सम्मुखे,* पारा. अट्ठ. 2.46; - **पेक्ख** त्रि., ब. स., रहस्यमयता की इच्छा न करने वाला, किसी बात को गुप्त रखने की इच्छा न करने वाला - **क्खा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अनापत्ति यो कोचि विञ्ञू दुतियो होति अरहोपेक्खा अञ्ञविहिता सन्तिट्ठति वा सल्लपति वा,* पाचि. 367; *अरहोपेक्खा अञ्ञविहितापि न रहो अस्सादापेक्खा रहो अस्सादतो अञ्ञविहिताव हुत्वा ...,* पाचि. अट्ठ. 191.

अराग त्रि., [अराग], राग से रहित, आसक्ति या लगाव से मुक्त - *सो अरागो अदोसो अमोहो ... कालं करिस्सति,* म. नि. 1.32.

अराज[1] √राज के अद्य. का प्र. पु., ए. व., *महाराज शब्द के निर्वचनक्रम में प्रयुक्त,* प्रभासित हुआ, सुशोभित हुआ - *महि अराज महाराजा ति च छेदो,* सद्द. 2.346.

अराज[2] पु., राज का निषे. [अराजन्], अशासक, अनृपति - **ञ्ञो** ष. वि., ए. व. - *तुम्हं पन अरञ्ञोपि सतो अधिवासनभारो जातो,* जा. अट्ठ. 2.174.

अराजक त्रि., ब. स. [अराजकं], बिना राजा वाला - **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *सोपि न अराजकं चक्कं वत्तेती'ति,* अ. नि. 2(1).141; *अराजकं रज्जं न वट्टति,* अ. नि. अट्ठ. 1.136; - **के** सप्त. वि., ए. व. - *अरञ्ञेति अराजके सुञ्ञे,* जा. अट्ठ. 5.68.

अराजिक त्रि., ब. स. [अराजक], बिना राजा वाला - **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *नग्गं रट्ठं अराजिकं,* जा. अट्ठ. 7.265; - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *संवच्छरं तदा आसि तम्बपण्णि अराजिका,* दी. वं. 11.11.

अराति पु., [अराति], शत्रु, बैरी - *अमित्तो रिपु वेरी च सपत्तोराति सत्तवो,* अभि. प. 344.

अरि पु., [अरि], शत्रु - *खेमं यहिं तत्थ अरी उदीरितो,* जा. अट्ठ. 1.450; - **रिं** द्वि. वि., ए. व. - *दुट्ठचित्तो वसमागतं अरिं,* जा. अट्ठ. 5.451; *तं अरिं मद्दनिपञ्ञाति भूरिपञ्ञा,* पटि. म. 369; - **री** प्र. वि., ब. व. - *अरी असेसा दमथं उपेन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 2.191; - **रीनं** ष. वि., ब. व. - *अरीनं वा हतत्ता अरहं,* उदा. अट्ठ. 67.

अरिकारिविहार पु., श्रीलङ्का के एक प्राचीन विहार का नाम - **रे** सप्त. वि., ए. व. - *अरिकारिविहारे च पटिसंखासि जिण्णकं,* चू. वं. 49.32.

अरिञ्चमान त्रि., √रिञ्च के वर्त. कृ. का निषे., रिक्त या खाली न करता हुआ, नहीं छोड़ता हुआ, नहीं त्यागता हुआ - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *पटिसल्लानं झानमरिञ्चमानो,* सु. नि. 69; एवमेतं *पटिसल्लानञ्च झानञ्च अरिञ्चमानो,* सु. नि. अट्ठ. 1.98.

अरिट्ठ[1] पु./नपुं., [अरिष्ट], **क.** मादक तरल पेय, मादक शराब, आसव - **ट्ठो** प्र. वि., ए. व. - *यो अरिट्ठो मज्जं न होति, तस्मिं अनापत्ति,* पाचि. अट्ठ. 115; *अरिट्ठो आसवे*

काके ... च पेणिलद्दुमे, अभि॰ प॰ 822; – **ट्ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमज्जं अरिट्ठं पिवति,* पाचि॰ 150; **ख**. जंगली कौआ – *अरिट्ठो आसवे काके निम्बे च पेणिलद्दुमे,* अभि॰ प॰ 822; *एत्थ 'काको धङ्को वायसो बलिभोजी अरिट्ठो'ति इमानि काकाभिधानानि,* सद्द॰ 2.325; **ग**. रीठे का पेड़ – *अरिट्ठो फणिलो भवे,* अभि॰ प॰ 555; **घ**. नीम का पेड़ – *निम्बो अरिट्ठो पुचिमन्दो,* अभि॰ प॰ 570.

अरिट्ठ[2] नपुं॰, [अरिष्ट], **क**. तर्क, तोड़ – *तक्के मरणलिङ्गे च अरिट्ठमसुभे'सुभे,* अभि॰ प॰ 822; **ख**. मरण का चिह्न, दुर्भाग्य का चिह्न, उपरिवत्; **ग**. अशुभ, दुर्भाग्य, उपरिवत्; **घ**. शुभ, सुख, सौभाग्य, उपरिवत्.

अरिट्ठ[3] पु॰, **क**. अनेक व्यक्तियों के नाम के रूप में प्राप्त **1**. एक प्रत्येकबुद्ध – *अरिट्ठो उपरिट्ठो तगरसिखी यसस्सी,* म॰ नि॰ 3.115; **2**. एक भिक्षु – *आयस्मा अरिट्ठो भगवतो पच्चस्सोसि,* स॰ नि॰ 3(2).385; **3**. एक नाग – *तस्स अरिट्ठो'ति नामं करिंसु ... चत्तारो पुत्ते विजायित्वापि नागभवनभावं न जानाति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.11; **4**. श्रीलङ्का के राजा देवानम्पिय तिस्स के भतीजे तथा भिक्षु महेन्द्र के शिष्य एक अमात्य का नाम – **ट्ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमच्चं सेनापतिं अरिट्ठं सालं च परंचपब्बतं,* दी॰ वं॰ 11.32; **ख**. अनेक स्थानों या क्षेत्रों के नाम के रूप में प्राप्त **1**. श्रीलङ्का के एक पर्वत का नाम – *युद्ध सज्जा अरिट्ठं तं उपसङ्कम्म पब्बतं,* म॰ वं॰ 10.64; **2**. श्रीलङ्का के एक विहार का नाम – *अरिट्ठविहारं कारेसि तथा कुञ्जरहीनकं,* म॰ वं॰ 33.27.

अरिट्ठक[1] त्रि॰, अरिट्ठ (1ग) से व्यु॰ [अरिष्टक], रीठे के कड़े फल के समान कृष्ण वर्ण वाला, रीठा जैसे काले रङ्ग का – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि नाम महा अरिट्ठको मणि ...,* स॰ नि॰ 1(1).123; *अरिट्ठकोति काळको,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.150; *अरिट्ठकोति अरिट्ठकवण्णो,* लीन॰ (स॰ नि॰ टी॰) 1.177.

अरिट्ठक[2] पु॰, ब॰ व॰ में ही प्राप्त, देवताओं का एक वर्ग – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरिट्ठका च रोजा च उमापुप्फनिभासिनो,* दी॰ नि॰ 2.191; *अरिट्ठका च रोजा चाति अरिट्ठकदेवा च रोजदेवा च,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.254.

अरिट्ठकण्डकसदिस त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अरिष्टकण्टकसदृक्], दुखदायक कांटों जैसा, असौभाग्यदायक या पीड़ाप्रद कांटों सरीखा – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तमे बुद्धानम्पि अतेकिच्छो अनिवत्ती अरिट्ठकण्डकसदिसो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.98; – **सा** ब॰ व॰ – *सत्तमे बुद्धानम्पि अतेकिच्छा अनिवत्तिनो अरिट्ठकण्टकसदिसा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.88.

अरिट्ठकथा स्त्री॰, विन॰ वि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, विन॰ वि॰ 137–138.

अरिट्ठजनक पु॰, महाजनक का पुत्र, मिथिला का राजा – *रञ्ञो अच्चयेन अरिट्ठजनको राजा हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.38.

अरिट्ठपुर नपुं॰, सिविरट्ठ में अवस्थित एक नगर – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वातवेगेन सिविरट्ठे अरिट्ठपुरं नाम गन्त्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.246.

अरिट्ठसिक्खापद नपुं॰, अरिट्ठ नामक एक भिक्षु के अनुचित आचरण को पाचित्तिय नामक आपत्ति (अपराध) प्रज्ञप्त करने वाला शिक्षापद, पाचि॰ 178–182.

अरित्त[1] त्रि॰, √रिञ्च के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अरिक्त], नहीं खाली किया हुआ, अव्यर्थ, विपाक से अशून्य, अमुक्त – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कामेहि अरित्तो होति,* स॰ नि॰ 2(1).11; *किलेसकामेहि अरित्तो होति अन्तो कामानं भावेन अतुच्छो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.229; – **ज्झान** त्रि॰, ब॰ स॰ [अरिक्तध्यान], ध्यान को नहीं छोड़ा हुआ – **ज्झानो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु अरित्तज्झानो विहरति ... ओवादपतिकरो,* अ॰ नि॰ 1(1).13; *अरित्तज्झानोति अतुच्छज्झानो अपरिच्चत्तज्झानो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.55; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अरिक्तता], नहीं खाली कर देना, नहीं त्याग देना, मुक्त न होना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसयस्स अरित्तताय अनिग्गते ... दुक्खाहि वेदनाहि फुट्ठो,* उदा॰ अट्ठ॰ 93.

अरित्त[2] नपुं॰, [अरित्र], नौकाओं को आगे बढ़ाने में प्रयुक्त पतवार, डांड या लंगर – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरित्तं केनिपातो'थ,* अभि॰ प॰ 667; तुल॰ अमर॰ 1.10; *तत्थ अरीयति तेन नावाति अरित्तं पाजनदण्डो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.310; – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विना अरित्तेन न सक्का ठपेतुं,* विसुद्धि॰ 1.185; *यो पन ... थेय्यचित्तो अरित्तेन वा फियेन वा पाजेति, पाराजिकं,* पारा॰ अट्ठ 1.266; – **बल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अरित्रबल], लङ्गर या पतवार की शक्ति – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि नाम अपरिसण्ठितजलाय सीघसोताय नदिया अरित्तबलेनेव नावा तिट्ठति,* विसुद्धि॰ 1.185; *अरित्तबलेनाति पाजनदण्डबलेन,* विसुद्धि॰ टी॰ 1.203; – **त्तूपत्थम्भन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, लंगर द्वारा (नौकाओं का) ठहराव या आगे बढ़ने से विराम करा देना – **नवसेन** तृ॰

वि., ए. व. – *अरित्तूपत्थम्भनवसेन चण्डसोते नावाठपनमिव,* पारा. अट्ठ. 1.22.

अरिन्दम[1] त्रि., राजाओं अथवा आयुधों की उपाधि के रूप में प्रयुक्त [अरिंदम], शत्रुओं का दमन करने वाला, शत्रुओं को पराभूत कर देने वाला – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरिं दमेती ति अरिन्दमो,* क. व्या. 527; *दायको ससराजा व नरिन्दोरिन्दमो विय,* सद्धम्मो. 276; – **म** पु., संबो., ए. व. – *जातिं पस्सेमुरिन्दम,* जा. अट्ठ. 5.348; – **मं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अरिन्दमं नाम नराधिपस्स,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.162.

अरिन्दम[2] पु., व्य. सं., **क**. महासम्मत के वंशज एक सौ राजाओं में सबसे अन्तिम राजा – *तेसं पच्छिमको राजा अरिन्दमो नाम खत्तियो,* दी. वं. 3.15; **ख**. शिखी बुद्ध के समय का एक बोधिसत्व – *अहं तेन समयेन, अरिन्दमो नाम खत्तियो,* बु. वं. 22.9; **ग**. शिखी बुद्ध के समय का वाराणसी का एक राजा – *नामग्गहणदिवसे चस्स अरिन्दमकुमारो'ति नामं करिंसु,* जा. अट्ठ. 5.236; **घ**. एक चक्रवर्ती राजा – *एकतालीसकप्पम्हि एको आसिं अरिन्दमो,* अप. 1.95.

अरिभू पु., *केवल भूरी के व्यु. निर्वचनक्रम में प्रयुक्त,* शत्रुओं को अभिभूत कर देने वाला – *एत्थ पन गोत्रभू'ति पदमिव अरिभू'ति वत्तब्बेपि ...,* सद्द. 1.82.

अरिभूत त्रि., [अरिभूत], शत्रु हो चुका, बैरी बन चुका – **ते** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *कम्मट्ठानट्ठाने पतिट्ठापेत्वान चित्तमरिभूते ...,* सद्धम्मो. 493.

अरिमद्दननगर नपुं., म्यां-मां के शासक अनुरुद्ध की राजधानी – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *सो च ... अरिमद्दननगरे अनुरुद्धेन नाम रञ्ञा समकालवसेन रज्जसम्पत्तिं अनुभवि,* सा. वं 23.

अरिमद्दनराज पु., अरिमद्दन नगर का राजा – **जिनो** ष. वि., ए. व. – *इच्चामच्चे समाहूय अरिमद्दनराजिनो,* चू. वं. 76.38.

अरिमद्दनवासी त्रि., अरिमद्दन नगर में निवास करने वाला **सिनो** पु., ष. वि., ए. व. – *पेसेतवान नरिन्दस्स अरिमद्दनवासिनो,* चू. वं. 80.6.

अरिमद्दविजयग्गाम पु., श्रीलङ्का का एक प्राचीन गांव – **मग** त्रि., अरिमद्दन गांव गया हुआ / गई हुई – **गं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *तथारिमद्दविजयग्गामगं मातिकं पि च ...,* चू. वं. 79.56.

अरिय त्रि., [आर्य], **क. व्यक्ति के सन्दर्भ में** – आदरणीय, उच्चकुलीन, पूरी तरह से विशुद्ध चित्त वाला (बुद्ध, प्रत्येकबुद्ध या अर्हत्) क्लेशमुक्त, उदात्त, प्रणीत, स्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत् – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सोतापन्नादिके अग्गे अरियो तीसु द्विजे पुमे,* अभि. प. 1002; *अरियो दस्सनसम्पन्नो, स लोकं भजते सिव'न्ति,* सु. नि. 115; *पराभवसङ्खाते अनये न इरियतीति अरियो, येन दस्सनेन याय पञ्ञाय पराभवे दिस्वा विवज्जेति तेन सम्पन्नत्ता दस्सनसम्पन्नो,* सु. नि. अट्ठ. 1.137-138; *अरियो अनरियं कुब्बन्तं,* जा. अट्ठ. 2.233; – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *यावता आनन्द अरियं आयतनं,* महाव. 304; *अरियं परमं सीलं,* दी. नि. 1.157; *अरियन्ति निरुपक्किलेसं परमविसुद्धं,* दी. नि. अट्ठ. 1.267; – **येन** पु., तृ. वि., ए. व. – *अरियेन वेदेनाति सुन्दरेन पटिलाभेन,* जा. अट्ठ. 3.233; – **याय** स्त्री., तृ. वि. , ए. व. – *अरियाय जातिया जातो,* म. नि. 2.313; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *दिट्ठधम्मसुखविहारा एते अरियस्स विनये वुच्चन्ति,* म. नि. 1.51; *अरियस्स विनये बुद्धस्स भगवतो सासने वुड्ढि नाम,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.109; *अरियस्स अरियेन समेति सख्यं,* जा. अट्ठ. 5.489; *अरियस्साति आचारअरियस्स,* तदे.; – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *अमोसधम्मं निब्बानं, तदरिया सच्चतो विदू,* सु. नि. 763; *यं परे सुखतो आहु, तदरिया आहु दुक्खतो,* सु. नि. 767; – **येभि** पु., तृ. वि., ब. व. – *सुखं दिट्ठमरियेभि, सक्कायस्स निरोधनं ... सब्बलोकेन पस्सतं,* स. नि. 2(2).131; *को नु अञ्ञत्र अरियेभीति ठपेत्वा अरिये को नु अञ्ञो निब्बानपदं जानितुं अरहति,* स. नि. अट्ठ. 3.45; – **यानं** पु., ष. वि., ब. व. – *अरियानं उपवादका ... मिच्छादिट्ठिकम्मसमादाना,* पारा. 5; – **येसु** पु., सप्त. वि., ब. व. – *कालेन दिन्नं अरियेसु उजुभूतेसु तादिसु,* अ. नि. 2(1).37; **ख. त्याग, मार्ग, धर्म आदि उत्तम अमूर्त भावों के सन्दर्भ में** – उत्तम, प्रणीत, उदात्त – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *परमो अरियो चागो,* म. नि. 3.294; *अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो,* खु. पा. 3; – **यं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अरियं चट्ठङ्गिकं मग्गं,* ध. प. 191; *अरियं लोकुत्तरं धम्मं पुरिसस्स सन्धनं पञ्ञपेमि,* म. नि. 2.398; – **येन** पु., तृ. वि., ए. व. – *अरियेन इन्द्रियसंवरेन समन्नागतो,* दी. नि. 1.62; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *अरियस्स ... पञ्चङ्गिकस्स सम्मासमाधिस्स भावनं देसेस्सामि,* अ. नि. 2(1).21; *अरियस्साति विक्खम्भनवसेन पहीनकिलेसेहि आरका ठितस्स,* अ. नि. अट्ठ. 3.10; – **ये** पु., सप्त. वि., ए. व. – *अरिये पथे कममानं महेसिं,* सु. नि. 179; *अरिये पथेति अट्ठङ्गिके*

मग्गे, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.185; – **या¹** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरिया निय्यानिका सम्बोधगामिनोति उपगन्तब्बट्ठेन अरिया,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.200; – **या²** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धि अनासवा अनुपधिका अरिया'ति वुच्चति,* दी॰ नि॰ 3.83; – **याय¹** स्त्री॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियाय ... पञ्ञाय अननुबोधा अप्पटिवेधा एवमिदं ...,* दी॰ नि॰ 2.93; – **याय²** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्ता सुपरिहीना ये अरियाय परिहीना,* इतिवु॰ 26; *वड्ढीहि वड्ढमाना अरियसाविका अरियाय वड्ढिया वड्ढति,* स॰ नि॰ 2(2).244; – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियं उच्चासयनमहासयनं,* अ॰ नि॰ 1(1).210; – **येन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियेन ञाणेन ...,* अ॰ नि॰ 2(2).150; *अरियेनाति निद्दोसेन लोकुत्तरसीलेन,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.145; – **स्स** नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियस्स सीलस्स अननुबोधा ... ममं चेव तुम्हाकञ्च,* दी॰ नि॰ 2.93; – **स्मिं** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वसिप्पत्तो पारमिप्पत्तो अरियस्मिं सीलस्मिं,* म॰ नि॰ 3.77; – **यानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियानि सच्चानीतिपि अरियसच्चानि,* विसुद्धि॰ 2.122.

अरिय¹ पु॰, एक प्रत्येकबुद्ध – *केतुम्भरागो च मातङ्गो अरियो,* म॰ नि॰ 3.116.

अरिय² पु॰, एक मछुआरा – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकं अरियं नाम बालिसिकं आरब्भ कथेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.228; – **बालिसिकवत्थु** नपुं॰, अरिय नामक मछुआरे का कथानक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.228-229.

अरिय³ नपुं॰, आर्यभाषा, उत्तम एवं सभ्य भाषा – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियं ब्रुवानो वक्कङ्गो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.357; *अरियन्ति सुन्दरं निद्दोसं,* तदे॰.

अरियक त्रि॰, अरिय से व्यु॰ [आर्यक], आर्य या उत्तम जनों से सम्बन्धित (जन्म भाषा आदि), मागधी भाषा, म्लेच्छों से भिन्न उत्तम जनों से सम्बद्ध – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियकं नाम अरियवोहारो मागधभासा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.203; – **केन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियकेन मिलक्खस्स सन्तिके सिक्खं पच्चक्खाति,* पारा॰ 30; ... *अरियकेना'ति आदिमाह ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.203.

अरियकन्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यकान्त], आर्यों या उत्तम ज्ञानी जनों के लिए प्रिय (शील), विशुद्ध चित्त वाले उत्तम जनों द्वारा इच्छित – **न्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियकन्तं पसंसितं,* थेरगा॰ 507; *अरियकन्तन्ति अरियानं कन्तं पियायितं भवन्तरेपि अविजहनतो ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.131; – **न्तानि** ब॰ व॰ – *अरियकन्तानि सीलानि तेसं अग्गमक्खायति,* अ॰ नि॰ 2(1).31; – **न्तेहि** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियकन्तेहि सीलेहि समन्नागतो होति,* दी॰ नि॰ 2.74; *अरियकन्तेहीति अरियानं कन्तेहि पियेहि मनापेहि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.120; – **न्तेसु** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियकन्तेसु सीलेसु परिपूरकारिनो,* अ॰ नि॰ 2(1).31; *अरियकन्तेसु सीलेसु परिपूरकारिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).321.

अरियकमनुस्स पु॰, केवल ब॰ व॰ में प्राप्त, आर्य जाति वाले मनुष्य, आर्यदेशवासी मनुष्य – **स्सानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियकमनुस्सानं ओसरणट्ठानं नाम अत्थि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.117; *अरियकमनुस्सानन्ति अरियदेसवासिमनुस्सानं,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 2.123.

अरियकरधम्म पु॰, कर्म॰ स॰ [आर्यकरधर्मन्], आर्य बना देने वाला आचरण या ज्ञान, आर्य बना देने वाली बातें – **म्मानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियकरधम्मानं अरियभावस्स च अदिट्ठत्ता ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.222.

अरियकोटिय त्रि॰, अरियकोटि नामक क्षेत्र में रहने वाला, स॰ प॰ के अन्तर्गत प्राप्त – *तिट्ठति अरियकोटियवासीमहादत्तत्थेरो विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).169; *अरियकोटियमहादत्तो अमनुस्सभयेन गतोति वचनतो लज्जामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).170.

अरियगण पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यगण], उत्तम या उदात्त जनों का समूह, ब्राह्मणों का समूह – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कदाहं अरियगणे च वतवन्ते अलङ्कते,* जा॰ अट्ठ॰ 6.59; *अरियगणेति ब्राह्मणगणे ते किर तदा अरियाचारा अहेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.64; – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कदास्सु मं अरियगणा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.62.

अरियगब्भ पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यगर्भ], उत्तम जनों का जन्म, आर्यजनों का उदय – **ब्भं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियगब्भं वड्ढेमी'ति एकं कुलपुत्तं अत्तनो सन्तिके पब्बाजेत्वा ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.208.

अरियगरहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यगर्हित], उत्तम जनों द्वारा निन्दित – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनरियन्ति अरियगरहितं सब्बं असुन्दरं अपरिसुद्धं कम्मं परिवज्जयाम,* जा॰ अट्ठ॰ 4.48.

अरियगोत्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यगोत्र], आर्यों का गोत्र या कुलनाम – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अरियगोत्तमभिसम्भोन्तञ्च पवत्तति,* अभि॰ ध॰ स॰ 68.

अरियचङ्कम पु॰, [आर्यचंक्रम], आर्यों के समान चंक्रमण -

फलसमापत्तिञ्हि ... वुट्ठितस्सापि चङ्कमादयो अरियचङ्कमादयो, अ. नि. अट्ठ. 2.168.

अरियचित्त त्रि., ब. स. [आर्यचित्त], उत्तम चित्त वाला, विशुद्ध चित्त वाला - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *अरियचित्तस्स अनासवचित्तस्स अरियमग्गसमङ्गिनो अरियमग्गं भावयतो* ..., म. नि. 3.119.

अरियजनसेवित त्रि., तत्पु. स. [आर्यजनसेवित], आर्यजनों द्वारा सेवन किया गया - **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अरियकन्तं अरियजनसेवितमेव असंकिलिट्ठं सुखं नामकायेन पटिसंवेदेति तस्मा,* ध. स. अट्ठ. 219.

अरियञाण नपुं., कर्म. स. [आर्यज्ञान], यथार्थ का ग्रहण कराने वाला ज्ञान, अर्हत् अवस्था प्राप्त होने पर उत्पन्न ज्ञान *अरियसावकस्स अरियञाणं उप्पन्नं होति,* स. नि. 3(2).303; - **दस्सन** नपुं., [आर्यज्ञानदर्शन], उत्तम ज्ञान एवं दर्शन, यथार्थ या सत्य का ग्रहण कराने वाला ज्ञान एवं आन्तरिक दर्शन - *अरियं विसुद्धं उत्तमं ञाणदस्सनन्ति अरियञाणदस्सनं,* पारा. अट्ठ. 2.73.

अरियञ्जस पु., आर्यों का सीधा सपाट मार्ग - **ञ्जसा** प्र. वि., ब. व. - *अरियवंसा अरियतन्तियो ... अरियञ्जसा ... सुत्तन्तं विनिवट्टेत्वा,* अ. नि. अट्ठ. 2.279.

अरियट्ठ पु., तत्पु. स. [आर्यार्थ], आर्य शब्द का अर्थ या तात्पर्य, विशुद्ध अर्थ - *अरियट्ठो नाम परिसुद्धट्ठोति परिसुद्धतापि अरिया,* पु. प. अट्ठ. 39.

अवमङ्गल त्रि., ब. स. [अवमङ्गल], मङ्गलरहित, अशुभ, अनिष्ट, अप्रिय - **लं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *मङ्गलकिच्चेसु समणदस्सनं अवमङ्गलन्ति एवंदिट्ठिको,* सु. नि. अट्ठ. 1.140; - **भूत** त्रि., अवृद्धिभूत, अमङ्गल से परिपूर्ण - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अवभूतावाति अवड्ढिभूता अवमङ्गलभूतायेव,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.318.

अरियतन्ति स्त्री., तत्पु. स., आर्यों की परम्परा की कतार, आर्य-वंश, श्रेष्ठ जनों की अविच्छिन्न परम्परा - **न्ति** प्र. वि., ए. व. - *एवं अयम्पि अट्ठमो अरियवंसो अरियतन्ति अरियपवेणी नाम होति,* अ. नि. अट्ठ. 2.268; दी. नि. अट्ठ. 3.173; - **न्तियो** ब. व. - *इमे चत्तारो अरियवंसा अरियतन्तियो अरियपवेणियो अरियञ्जसा,* अ. नि. अट्ठ. 2.279.

अरियदेवता स्त्री., कर्म./तत्पु. स., ब. व. में ही प्राप्त [आर्यदेवता], **क.** श्रेष्ठ या उत्तम देवता, **ख.** आर्यजनों के देवता - *अरियदेवता चिन्तयिंसु - एकिस्सा लोकधातुया द्वे बुद्धा नाम नत्थि,* दी. नि. अट्ठ. 2.247.

अरियदेसवासी त्रि., [आर्यदेशवासिन्], आर्य देश का निवासी - **सिमनुस्स** पु., तत्पु. स. [आर्य-देशवासी मनुष्य], आर्य देश में निवास करने वाला मनुष्य **स्सानं** ष. वि., ब. व. - *अरियकमनुस्सानन्ति अरियदेसवासिमनुस्सानं,* लीन. (दी.नि.टी.) 2.123.

अरियदेसीस पु., तत्पु. स. [आर्यदेशेश], आर्य देश का स्वामी या शासक - **सो** प्र. वि., ए. व. *वीरो अरियदेसीसो वीरदेवो ति पाकटो,* चू. वं. 61.36.

अरियदेही त्रि., [आर्यदेहिन्], आर्य व्यक्ति, स्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत्, इन चार अवस्थाओं में पहुंचा हुआ व्यक्ति - **हिनं** पु., ष. वि., ब. व. - *पुथुज्जनानं तिण्णम्पि, चतुन्नं अरियदेहिनं,* अभि. अव. 48.

अरिद्दस / अरियद्दस त्रि., [आर्यद्रक्], चार आर्यसत्यों एवं निर्वाण का साक्षात्कार करने वाला व्यक्ति - **सा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अरियद्दसा वेदगुनो, सम्मदञ्ञाय पण्डिता,* इतिवु. 67; *अरियं निब्बानं, अरियं चतुसच्चमेव वा दिट्ठवन्तोति अरियद्दसा,* इतिवु. अट्ठ. 261.

अरियधन नपुं., कर्म. स. [आर्यधन], **शा. अ.** उत्तम धन, **ला. अ.** श्रद्धा, शील, ह्री, अपत्राप्य, श्रुत, त्याग एवं प्रज्ञा का धन - **नं** प्र. वि., ए. व. - *नेतं समणसारुप्पं, न एतं अरियद्धनं,* थेरीगा. 344; *महन्तं खो पनेतं सत्थु दायज्जं, यदिदं सत्तअरियधनं नाम, तं न सक्का कुसीतेन गहेतुं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).305; - **नानं** ष. वि., ब. व. - *सद्धाधनं सीलधनं हिरिधनं ओत्तप्पधनं सुतधनं चागधनं पञ्ञाधनन्ति इमेसं सत्तन्नं अरियधनानं,* ... ... विसुद्धि. महाटी. 2.456; - **दायज्ज** नपुं., तत्पु. स. [आर्यधनदायाद्य], श्रद्धा आदि उत्तम संपत्तियों की धरोहर - **ज्जं** द्वि. वि., ए. व. - *एवं कुसीतोपि इदं अरियधनदायज्जं न लभति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).305.

अरियधम्म[1] पु., तत्पु./कर्म. स. [आर्यधर्म], बुद्ध द्वारा उपदिष्ट उत्तम धर्म, आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग, उत्तम अवस्था की ओर ले जाने वाला धर्म, आर्य बनाने वाला धर्म - **म्मो** प्र. वि., ए. व. - ... *इमिना येसं अञ्ञो अरियधम्मो नत्थि, तथागते पन सद्धामत्तं पेममत्तमेव होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).25; - **म्मं** द्वि. वि., ए. व. - *परोवरं अरियधम्मं विदित्वा,* सु. नि. 355; *अरियधम्मन्ति चतुसच्चधम्मं,* सु. नि. अट्ठ. 2.75; - **म्मेन** तृ. वि., ए. व. - *यमरियधम्मेन पुनन्ति बुद्धा,* जा. अट्ठ. 4.69; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अरियधम्मस्स अकोविदोति सतिपट्ठानादिभेदे अरियधम्मे अकुसलो,* ध. स.

अट्ठ॰ 380; – **म्मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतं अनुस्सरं मच्चो, अरियधम्मे ठितो नरो,* अ॰ नि॰ 1(2).80; – **पकासिका** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [आर्यधर्मप्रकाशिका], उत्तम धर्म को प्रकाशित करने वाली – *सुञ्ञतापटिसंयुत्ता, अरियधम्मप्पकासिका,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.2; – **पदट्ठान** नपुं॰, उत्तम धर्म का सबसे निकटवर्ती या समीपी कारण – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बानेव च लोलुप्पविद्धंसनरसानि, निल्लोलुप्पभावपच्चुपट्ठानानि अप्पिच्छतादिअरियधम्म-पदट्ठानानि,* विसुद्धि॰ 1.59; *अरियधम्मपदट्ठानानीति परिसुद्धसीलादिसद्धम्म-पदट्ठानानि,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.84; *एतं यथावुत्तपरिग्गहवत्थु सद्धादिधनं विय अरियधम्ममयम्पि धनं न होति,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 266; – **लाभिभाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यधर्मलाभित्व], आर्यजनों अथवा अर्हतों के धर्मों के लाभ प्राप्त होने की अवस्था – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एसो भिक्खु अत्तनो अलाभिभावञ्च अरियधम्मलाभिभावञ्च अत्तनाव अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.232; – **विपाक** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यधर्मविपाक], स्रोतापत्ति आदि चार आर्यमार्गों पर विद्यमान आर्यपुद्गल का विपाक – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ अरियधम्मविपाकोति मग्गसङ्खातस्स अरियधम्मस्स विपाको,* कथा॰ अट्ठ॰ 198; – **विपाककथा** स्त्री॰, कथा॰ के 7वें वर्ग की एक कथा का शीर्षक, कथा॰ 296-297; – **सन्निस्सित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यधर्मसन्निश्रित], स्रोतापत्ति आदि लोकोत्तर मार्ग पर आधारित धर्म से जुड़ा हुआ – **तं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं मं जनो सम्भावेस्सती ति अरियधम्मसन्निस्सितं वाचं भासति,* महानि॰ 164; *अरियधम्मसन्निस्सितन्ति लोकुत्तर-धम्मपटिबद्धं,* महानि॰ अट्ठ॰ 269; – **सवन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यधर्मश्रवण], लोकोत्तर धर्म का सुनना – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो अरियधम्मस्सवनं आगम्म योनिसोमनसिकारं धम्मानुधम्मप्पटिपत्तिं असंसट्ठो विहरति,* दी॰ नि॰ 2.158.

अरियधम्म[2] त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्यधर्मन्], आर्यधर्म अथवा बुद्ध के लोकोत्तर मार्ग का अनुसरण करने वाला – **म्मं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमरियधम्मं कुसला वदन्ति,* सु॰ नि॰ 789; – **म्मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स तं अकत्थनं 'अरियधम्मो एसो'ति बुद्धादयो खन्धादिकुसला वदन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.216.

अरियनिसेवित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यसेवित], वह, जिसका व्यावहारिक प्रयोग अर्हत् आदि आर्यजन करते हैं, आर्यजनों द्वारा आचरित या सेवित – **तं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति सन्तं समापत्तिं, इमं अरियनिसेवितं,* विसुद्धि॰ 2.350; *अरियेहि एव निसेवितब्बता अरियनिसेवितं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.498.

अरियन्वयसम्भूतकुमार पु॰, कर्म॰ स॰ [आर्यान्वयसम्भूतकुमार], आर्यवंश में उत्पन्न राजकुमार – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियन्वयसंभूतकुमारेन सहामुना?,* चू॰ वं॰ 63.15.

अरियपञ्ञा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यप्रज्ञा], आर्यजनों अथवा मार्गस्थ एवं फलस्थ आर्यश्रावकों की प्रज्ञा, विशुद्ध प्रज्ञा, निर्मल प्रज्ञा – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सद्दहाना अरहतं, अरियपञ्ञाय झायिनो,* इतिवु॰ 79; *अरियपञ्ञायाति सुविसुद्धपञ्ञाय,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 297.

अरियपटिपदा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ / तत्पु॰ स॰ [आर्यप्रतिपत्], **क**. उत्तम या श्रेष्ठ मार्ग, **ख**. आर्यजनों द्वारा गृहीत मार्ग – *इमानि अरियपटिपदानि पूरेन्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.4; पाठा॰ पटिपदानि में लिङ्ग-विपर्यय.

अरियपटिविद्ध त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यप्रतिविद्ध], बुद्धों एवं अर्हतों द्वारा गहराई तक प्रवेश कर खोजा गया – **द्धानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियसच्चानीति अरियभावकरानि, अरियपटिविद्धानि वा सच्चानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.158.

अरियपथ पु॰, कर्म॰ स॰ / तत्पु॰ स॰ [आर्यपथ], **क**. उत्तम लोकोत्तर मार्ग, **ख**. बुद्धों एवं अर्हतों द्वारा गृहीत मार्ग, **ग**. आर्य बनाने वाला मार्ग – **थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एसो हि धम्मो सुमुख, यं त्वं अरियपथे ठितो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.355; *अरियपथे तिरियं निपतित्वा महाजनस्स अहिताय दुक्खाय पटिपन्नो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1.(2)201.

अरियपरियेसनसुत्त नपुं॰, कुछ संस्करणों में म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, जिसमें भगवान् बुद्ध ने गृहत्याग के उपरान्त ज्ञान-प्राप्ति के लिये स्वयं द्वारा किये गए प्रयासों का तथा बोधिज्ञान की प्राप्ति आदि का वर्णन किया है, अनेक संस्करणों में इसी सुत्त को पासरासिसुत्त नाम दिया है, द्रष्ट॰ पासरासिसुत्त के अन्त॰, म॰ नि॰ 1.219-235; *वित्थारो पन साट्ठकथानं अरियपरियेसनपब्बज्जसुत्तादीनं वसेन वेदितब्बो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 82.

अरियपरियेसना स्त्री॰, कर्म॰ स॰ / तत्पु॰ स॰ [आर्यपर्येषणा], **क**. उत्तम पद या निर्वाण की खोज, **ख**. बुद्धों एवं अर्हतों आदि आर्यजनों द्वारा की जा रही शान्तपद की तलाश – **ना** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतस्सो इमा, भिक्खवे, अरियपरियेसना,* अ॰ नि॰ 1(2).284; – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ भगवा अयं तुम्हाकं परियेसना अरियपरियेसना नामा'ति दस्सेतुं इमं देसनं आरभि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).73.

अरियपरिहार पु., तत्पु. स., आर्यजनों को प्राप्त विशेष सुविधा या सम्मान, आर्यजन की विशेष देखभाल - **रेन** तृ. वि., ए. व. - *एकपस्से अरियपरिहारेन पठमतरं न्हायित्वा पच्चुत्तरित्वा ठितो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.199; *अरियपरिहारेनाति अरियानं परिहारेन अनागामीनं न्हानकाले अत्तनो कायस्स परिहारनियामेनाति अत्थो,* म. नि. टी. (म.प.) 2.135.

अरियपवेणी स्त्री., तत्पु. स. [आर्यप्रवेणी], आर्य-वंश, आर्यों की कुल परम्परा - **णी** प्र. वि., ए. व. - *एवं अयम्पि अट्ठमो अरियवंसो अरियतन्ति अरियपवेणी नाम होति,* दी. नि. अट्ठ. 3.173; अ. नि. अट्ठ. 2.268; - **णियो** ब. व. - *इमे चत्तारो अरियवंसा अरियतन्तियो अरियपवेणियो अरियञ्जसा,* अ. नि. अट्ठ. 2.279.

अरियपुग्गल पु., कर्म. स. [आर्यपुद्गल], उत्तम प्रकृति का व्यक्ति, बुद्ध के लोकोत्तर मार्ग में प्रविष्ट तथा फलस्थ स्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी और अर्हत् - **ला** प्र. वि., ब. व. - *कतमो च पुग्गलो अरियो? अट्ठ अरियपुग्गला अरिया,* पु. प. 120; *सब्बेपि अरियपुग्गला अरिये विमोक्खे असमया विमुत्ता,* पु. प. 17; *द्वे पुग्गला अभब्बा सञ्चिच्च आपत्तिं आपज्जितुं-भिक्खू च भिक्खुनियो च अरियपुग्गला,* परि. 239; - **लेन** तृ. वि., ए. व. - *येन अरियपुग्गलेन अरियमग्गसेतुना सब्बो दिट्ठिपङ्को संसारपङ्को ...,* उदा. अट्ठ. 144; - **लानं** ष. वि., ब. व. - *पाणं घातेस्सामी'ति अरियपुग्गलानं चित्तम्पि नुप्पज्जतीति,* ध. स. अट्ठ. 149; - **विभाग** पु., तत्पु. स. [आर्यपुद्गलविभाग], श्रद्धानुसारी, श्रद्धाविमुक्त कायसाक्षी, उभतः भागविमुक्त, धर्मानुसारी, दृष्टिप्राप्त तथा प्रज्ञाविमुक्त इन सात शीर्षकों में आर्यपुद्गलों का विभाजन - *यं पन वुत्तं सत्तअरियपुग्गलविभागाय पच्चयो होती'ति, तत्थ सद्धानुसारी, सद्धाविमुत्तो कायसक्खि ..., इमे ताव सत्त अरियपुग्गला ...,* विसुद्धि. 2.295-96.

अरियपुथुज्जन पु., द्व. स. [आर्यपृथग्जन], ज्ञानसम्पन्न स्रोतापन्न से अनागामि तक आर्यजन तथा अविद्या से ग्रस्त साधारण जन - **ना** प्र. वि., ब. व. - *गणनावीतिवत्ता ते संसारियपुथुज्जना,* म. वं. 5.113; - **नेहि** तृ. वि., ब. व. - *सब्बेहि पि अरियपुथुज्जनेहि भिक्खूहि उपसम्पदमालके आदितो व चत्तारि अकरणीयानि आचिक्खितब्बानीति ...,* सा.वं. 143.

अरियप्पत्त त्रि., तत्पु. स., पृथग्जन की अवस्था से ऊपर उठकर स्रोतापत्ति आदि आर्यजनों की अवस्था को प्राप्त व्यक्ति - **त्ता** प्र. वि., ब. व. - *भिक्खू इमस्मिं भिक्खुसङ्घे अरियप्पत्ता विहरन्ति,* अ. नि. 1(2).212; *अरियप्पत्ताति पुथुज्जनभावं अतिक्कम्म अरियभावं पत्ता,* अ. नि. अट्ठ. 2.361.

अरियप्पवेदित त्रि., तत्पु. स. [आर्यप्रवेदित], आर्यजनों द्वारा सिखलाया गया या ज्ञान कराया गया - **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. - *अरियप्पवेदिते धम्मे, सदा रमति पण्डितो,* ध. प. 79; *धम्मे च ये अरियप्पवेदिते रता, अनुत्तरा ते वचसा मनसा कम्मुना च,* जा. अट्ठ. 3.390.

अरियफल नपुं., तत्पु. स. [आर्यफल], स्रोतापत्ति, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत् मार्ग पर स्थित आर्यजन द्वारा प्राप्त स्रोतापत्तिफल, सकृदागामिफल, अनागामिफल एवं अर्हत्वफल, श्रमणजीवन के चार लोकोत्तर फल - **लं** प्र. वि., ए. व. - *अरियफलन्ति हि सोतापत्तिफलादि सामञ्ञफलं वुच्चति,* विसुद्धि. 2.339; - **लेन** तृ. वि., ए. व. - *अरियफलेन निब्बानं सच्छिकरोन्तो धीरा पण्डिता ताय विपाकफुसनाय फुसन्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.131; *आभिसमाचारिकवत्तञ्हि पूरेन्तोयेव अरियफलादीनि सच्छिकरोति,* ध. प. अट्ठ. 2.90; - **पटिलाभकरत्त** नपुं., भाव. [आर्यफलप्रतिलाभकरत्व], आर्यफलों अथवा स्रोतापत्ति आदि श्रामण्यफलों का प्रतिलाभ कराने वाला होना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *अरियो अट्ठङ्गिको मग्गोति तंतंमग्गवज्झकिलेसहि आरकत्ता अरियभावकरत्ता अरियफलपटिलाभकरत्ता च अरियो,* उदा. अट्ठ. 249; - **रसानुभवन** नपुं., तत्पु. स. [आर्यफलरसानुभवन], आर्यफलों के रस का अनुभव करना - **वं** प्र. वि., ए. व. - *अरियफलरसानुभवनन्ति न केवलञ्च किलेसविद्धंसनञ्ञेव, अरियफलरसानुभवनम्पि पञ्ञाभावनाय आनिसंसो,* विसुद्धि. 2.339.

अरियभाव पु., तत्पु. स. [आर्यभाव], स्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत्व की अवस्था - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *अरियप्पत्ताति पुथुज्जनभावं अतिक्कम्म अरियभावं पत्ता,* अ. नि. अट्ठ. 2.361; - **वाय** च. वि., ए. व. - ... *अरियभावाय समत्थोति वुत्तं होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).334; - **वे** सप्त. वि., ए. व. - *न अलमरियाति अरियभावे असमत्था,* दी. नि. अट्ठ. 3.42; - **कर** त्रि., [आर्यभावकर], आर्यभाव अथवा स्रोतापत्ति आदि की अवस्था को उत्पन्न करने वाला - **रानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *अरियसच्चानीति अरियभावकरानि, अरियपटिविद्धानि वा सच्चानि,* अ. नि. अट्ठ. 2.158; *अवितथभावेन सच्चानि चाति अरियं सच्चानि,*

अरियभावकरानि वा सच्चानि अरियसच्चानि, इतिवु॰ अट्ठ॰ 75; – **करत्त** नपुं॰, भाव॰, आर्यभाव को उत्पन्न करना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियोति तंतंमग्गवज्झकिलेसेहि आरकत्ता अरियभावकरत्ता अरियफलपटिलाभकरत्ता च अरियो,* उदा॰ अट्ठ॰ 249; महानि॰ अट्ठ॰ 51; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.352; – **सिद्धि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यभावसिद्धि], स्रोतापन्न आदि आर्य-अवस्थाओं की सिद्धि या पूर्णता – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ वा एतेसं अभिसम्बुद्धत्ता अरियभावसिद्धितोपि अरियसच्चानि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 64; – **वावह** त्रि॰, [आर्यभावावह], आर्य अवस्था अथवा स्रोतापत्तिमार्ग एवं फल आदि की अवस्था को लाने वाला – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सद्धादिधनं विय अरियधम्ममयम्पि धनं न होति, न अरियभावावहतो,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 266.

अरियभूमि स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आर्यभूमि], स्रोतापत्ति-मार्ग एवं स्रोतापत्ति-फल आदि की आठ लोकोत्तर अवस्थाएं – **मिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *निद्धन्तमलो अनङ्गणो, दिब्बं अरियभूमिं उपेहिसि,* ध॰ प॰ 236; *पठमबोधिञ्हि दसबलस्स पुथुभूतेसु सावकेसु अपरिमाणेसु देवमनुस्सेसु अरियभूमिं ओक्कन्तेसु* ..., जा॰ अट्ठ॰ 4.166; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.102; – **प्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यभूमिप्राप्ति], स्रोतापत्ति आदि लोकोत्तर अवस्थाओं की प्राप्ति – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *चित्तस्स उप्पादयमाना अरिभूमिप्पत्तिया अन्तरायं करोतीति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).214.

अरियमग्ग पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यमार्ग], स्रोतापत्ति-मार्ग, सकृदागामी-मार्ग, अनागामी-मार्ग एवं अर्हत्त्व-मार्ग, लोकोत्तरमार्ग – **ग्गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चसीलारियमग्गोपोसथङ्गधितीसु च,* अभि॰ प॰ 783; *वीरियेन नं पणामेत्वा, अरियमग्गो विसुज्झती'ति,* स॰ नि॰ 1(1).9; *अरियमग्गोति लोकुत्तरमग्गो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.33; *फलनिब्बत्तको हेतु, अरियमग्गो च भासितं,* अभि॰ अव॰ 148; – **ग्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियचित्तस्स अनासवचित्तस्स अरियमग्गसमङ्गिनो अरियमग्गं भावयतो पञ्ञा* ..., म॰ नि॰ 3.119; – **ञाणग्गि** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यमार्गज्ञानाग्नि], आर्य-मार्ग में प्राप्त ज्ञान की अग्नि – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं अरियमग्गञाणग्गिनापि महन्तानि च खुद्दकानि च संयोजनानि डहन्तेन गन्तब्बं भविस्सतीति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.159; – **त्तय** नपुं॰, [आर्यमार्गत्रय], स्रोतापत्ति-मार्ग, सकृदागामी-मार्ग तथा अनागामी का मार्ग, अर्हत्वमार्ग को छोड़ शेष तीन लोकोत्तर-मार्ग – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कत्थचि धम्मचक्खुम्हि विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादी'ति हि एत्थ अरियमग्गत्तयपञ्ञा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.150; – **प्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यमार्गप्राप्ति], लोकोत्तर-मार्ग को पा जाना, स्रोतापत्ति आदि आर्यमार्गों पर स्थित हो जाना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अरियमग्गप्पत्तितो अपरभागेयेवाति वुत्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).120; – **समङ्गी** त्रि॰, आर्यमार्ग या लोकोत्तर-मार्ग से युक्त – **ङ्गिनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियचित्तस्स अनासवचित्तस्स अरियमग्गसमङ्गिनो अरियमग्गं भावयतो* ..., म॰ नि॰ 3.121; – **ङ्गिस्स** उपरिवत् – *अरियमग्गसमङ्गिस्स मग्गङ्गानि उपेच्चा* ..., ध॰ स॰ 1039; – **सम्पयुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यमार्गसम्प्रयुक्त], लोकोत्तर आर्यमार्ग के साथ जुड़ा हुआ – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं लोकियलोकुत्तरवसेन दुविधोतिआदीसु अरियमग्गसम्पयुत्तो समाधि वुत्तो,* विसुद्धि॰ 1.88; – **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अरियमग्गसम्पयुत्ता पन विरति समुच्छेदविरती'ति वेदितब्बा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 149; – **सम्भारभाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यमार्गसम्भारभाव], लोकोत्तर-मार्ग अथवा स्रोतापत्ति आदि मार्गों के लिए आवश्यक आधारभूत सामग्री – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा अत्रिच्छतामाहिच्छतापापिच्छतादीनं पापधम्मानं पहानाधिगमहेतुतो, सुगतिहेतुतो, अरियमग्गसम्भारभावतो, चातुद्दिसादिभावहेतुतो च मङ्गलन्ति वेदितब्बा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 118; – **सोत** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यमार्गस्रोत], आर्यमार्ग की धारा – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोतापन्नाति अरियमग्गसोतं आपन्ना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.315; – **ग्गाधिगमन** नपुं॰ तत्पु॰ स॰ [आर्यमार्गाधिगमन], आर्यमार्ग की प्राप्ति, आर्यमार्ग पर स्थिति – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बाकुसलेहि च सब्बथा विमुत्तो अरहा अरियमग्गाधिगमनतो पुब्बे सुपिनन्तेपि अतिण्णपुब्बं* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 295.

अरियमण्डल पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यमण्डल], बुद्धों तथा उनके शैक्ष्य एवं अशैक्ष्य शिष्यों का समूह – **ला** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तप्पिता परमन्नेन, सब्बे ते अरियमण्डला,* अप॰ 1.3.

अरियमनुस्स पु॰, ब॰ व॰ में प्राप्त, कर्म॰ स॰ [आर्यमनुष्य], आर्यदेश के निवासी मनुष्य – **स्सानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियं आयतनन्ति यत्तकं अरियमनुस्सानं ओसरणट्ठानं नाम अत्थि,* उदा॰ अट्ठ॰ 341; *अरियकमनुस्सानन्ति अरियदेसवासिमनुस्सानं,* दी॰ नि॰ महाटी॰ 2.123.

अरियरतन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यरत्न], 8 प्रकार के आर्यजनरूपी रत्न – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियरतनम्पि दुविधं सेखासेखवसेन,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 141.

अरियरुद नपुं., कर्म. स. [आर्यरुत], उत्तम वचन, सुन्दर वचन – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *यो चारियरुदं भासे, अनरियधम्मवस्सितो,* जा. अट्ठ. 5.371; *अरियरुदन्ति मुखेन अरियवचनं सुन्दरवचनं भासति,* जा. अट्ठ. 5.372.

अरियरूप नपुं., तत्पु./कर्म. स. [आर्यरूप], आर्यजनों की वाणी अथवा उनका आचरण – **पं** प्र. वि., ए. व. – *अरियरूपं महाभूतानं उपादायाति?,* कथा. 402; *तत्थ अरियानं रूपं, अरियं वा रूपन्ति अरियरूपं,* कथा. अट्ठ. 239; – **कथा** स्त्री., कथा. के एक वर्ग की चौथी कथा का शीर्षक, कथा. 402–403; *अरियरूपकथा निट्ठिता,* कथा. 403.

अरियवंस[1] पु., कर्म. स./तत्पु. स. [आर्यवंश], **शा. अ.** उत्तम, कुल-परम्परा, **ला. अ. 1**. बुद्धों, प्रत्येकबुद्धों एवं अर्हतों की गुरुशिष्य-परम्परा – **सो** प्र. वि., ए. व. – *एकस्मिं किर गामे अरियवंसो होति,* विसुद्धि. 1.64; – **सा** ब. व. – *चत्तारो मे, भिक्खवे, अरियवंसा अग्गञ्ञा रत्तञ्ञा वंसञ्ञा पोराणा असंकिण्णा असंकिण्णपुब्बा, न संकीयन्ति, न संकीयिस्सन्ति, अप्पटिकुट्ठा समणेहि ब्राह्मणेहि विञ्ञूहि,* अ. नि. 1(2).32; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).247; *अनेके च कुसले धम्मेति ... चतस्सो पटिसम्भिदा चतुयोनिपरिच्छेदकञाणं, चत्तारो अरियवंसा, चत्तारि वेसारज्जञाणानि,* उदा. अट्ठ. 273; **ला. अ. 2**. दी. नि. एवं म. नि. के अरियवंस-सुत्त में निर्दिष्ट भिक्षुओं की वह परम्परा, जिसमें चार प्रकार के उत्तम आचरण हों – *अरियवंसोति अरियवंससुत्तपटिसंयुत्ता धम्मकथा,* विसुद्धि. महाटी. 1.88.

अरियवंस[2] पु., म्यां-मा के कुछ स्थविरों के लिए प्रयुक्त नाम, **क.** उत्तराजीव के शिक्षक का नाम – *सो पन रामञ्ञरट्ठवासिनो अरियवंसथेरस्स सद्धिविहारिको,* सा. वं. 37; **ख.** पन्द्रहवीं सदी की पागान (म्यां-मा) की छपदशाखा का अनुयायी तथा मणिसारमञ्जूसा, मणिदीप, गन्धाभरण, महानिस्सर एवं जातकविसोधन नामक पांच ग्रन्थों का लेखक एक थेर – *सो च अरियवंसथेरो मणिदीपं नाम गन्थं गन्धाभरणञ्च जातकविसोधनञ्च पाळिभासाय अकासि,* सा. वं. 92–93; – **कथा** स्त्री., तत्पु. स., अरियवंससुत्त का उपदेश – **थं** द्वि. वि., ए. व. – *जनपदविहारं गन्त्वा पणीतपरिक्खारे भिक्खू दिस्वा अरियवंसकथं कथेत्वा, ...,* जा. अट्ठ. 2.365; – **ठान** नपुं., तत्पु. स., वह स्थान, जहां अरियवंससुत्त का उपदेश दिया जा रहा हो – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *अरियवंसकथाठाने लङ्कादीपे खिले पि च,* म. वं. 36.38; – **यं** सप्त. वि., ए. व. – *अरियवंसकथायं पन ... मातिकं ठपेत्वा अयं नयो दस्सितो,* विसुद्धि. 2.262; – **त्तय** नपुं., द्व. स. [आर्यवंशत्रय], आर्यवंश का सदस्य होने के लिए अपेक्षित चार लक्षणों में प्रथम तीन से युक्त तीन प्रकार के आर्यवंशीय-भिक्षु – **ये** सप्त. वि., ए. व. – *इति अनवज्जसीलब्बतगुणपरिसुद्धसब्बसमाचारो पोराणे अरियवंसत्तये पतिट्ठाय,* विसुद्धि. 1.57; – **देसना** स्त्री., तत्पु. स., अरियवंससुत्त का उपदेश – **य** तृ. वि., ए. व. – *यथा च अरियवंसदेसनाय चत्तारोमे, भिक्खवे, अरियवंसा अग्गञ्ञा रत्तञ्ञा वंसञ्ञा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).247; – **पटिपदा** स्त्री., तत्पु. स., अरियवंससुत्त में उपदिष्ट मार्ग या पद्धति – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *भिक्खूनं पच्चयसन्तोसदीपकं अरियवंसपटिपदं कथेसि,* जा. अट्ठ. 3.292; *अहं चन्दोपमप्पटिपदञ्चेव अरियवंसप्पटिपदञ्च कथेन्तो ...,* ध. प. अट्ठ. 1.342; – **सुत्त** नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 1(2)32–34; – **सुत्तपटिसंयुत्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व., तत्पु. स., अरियवंस-सुत्त से जुड़ी हुई – *अरियवंसोति अरियवंससुत्तपटिसंयुत्ता धम्मकथा,* विसुद्धि. महाटी. 1.88; – **सानुपालक** त्रि., [आर्यवंशानुपालक], आर्यवंशीय होने के लिए आधारभूत चार बातों का पालन करने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *चीवरादिसु सन्तुट्ठो'रियवंसानुपालको,* सद्धम्मो. 474; – **सालङ्कार** पु., ञाणाभिवंस-नामक म्यां मा के एक भिक्षु की रचना – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *अरियवंसालङ्कारं नाम गन्थञ्च अकासि,* सा. वं. 124.

अरियवंसिक त्रि., अरियवंससुत्त का उपदेशक – **के** पु., द्वि. वि., ब. व. – *मिच्छाजीवानं उस्सन्नट्ठाने अरियवंसिके पेसेत्वा अरियवंसं कथापेन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 2.102; अ. नि. अट्ठ. 3.159.

अरियवचन नपुं., तत्पु./कर्म. स. [आर्यवचन], उत्तम जनों अथवा बुद्धों, प्रत्येकबुद्धों एवं अर्हतों का वचन, उत्तम वचन – **नं** प्र. वि., ए. व. – *अरियरुदन्ति मुखेन अरियवचनं सुन्दरवचनं भासति,* जा. अट्ठ. 5.372.

अरियवट्टुम नपुं., कर्म. स. [आर्यवर्त्मन्], उत्तम मार्ग, आर्यो द्वारा गृहीत मार्ग, बुद्धों, अर्हतों का मार्ग – **मानि** प्र. वि., ब. व. – *इमे चत्तारो अरियवंसा अरियतन्तियो अरियपवेणियो अरियञ्जसा अरियवटुमानीति सुत्तन्तं विनिवट्टेत्वा ...,* अ. नि. अट्ठ. 2.279.

अरियवण्णी त्रि., ब. स. [आर्यवर्णिन्], आर्यो जैसे स्वरूप वाला, सुन्दर रूप वाला – **ण्णी** पु., प्र. वि., ए. व. – *दुब्बण्णरूपं तुवमरियवण्णी, पुरक्खत्वा पञ्जलिको नमस्ससि,*

जा॰ अट्ठ॰ 3.266; *तत्थ अरियवण्णीति सुन्दररूपो*, तदे.

अरियवत त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्यव्रत], आर्यजनों अथवा बुद्धों एवं अर्हतों द्वारा गृहीत शील आदि व्रतों का पालन करने वाला - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अनुसासि मं अरियवता, अनुकम्पि अनुग्गहि*, थेरगा॰ 334; *अरियवताति सुविसुद्धसीलादिवतसमादानेन*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.43.

अरियवत्ति[1] स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आर्यवृत्ति], उत्तम आचरण, उत्तम शील - **त्ती** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ठितमरियवत्ती सुवचो अकोधनो*, जा॰ अट्ठ॰ 3.392; *ठितमरियवत्तीति ठितअरियवत्ति, अरियवत्ति नाम दसराजधम्मसङ्खातं पोराणराजवत्तं*, तदे॰.

अरियवत्ति[2] त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्यवृत्ति], उत्तम शीलों वाला, उत्तम आचरण वाला, आर्य के उत्तम आचरणों एवं गुणों से युक्त - **त्ती** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरियवत्तसि वक्कङ्ग, यो पिण्डमपचायसि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.358; *तत्थ अरियवत्तसीति मितधम्मरक्खणसङ्खातेन आचारअरियानं वत्तेन समन्नागतोसि*, तदे॰.

अरियवास पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यवास], बुद्धों एवं अर्हतों द्वारा पालन किए गए ब्रह्मचर्य-जीवन में निवास, शील समाधि एवं प्रज्ञा की शिक्षाओं का अनुपालन - **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *दस अरियवासा, इधावुसो, भिक्खु पञ्चङ्गविप्पहीनो होति*, दी॰ नि॰ 3.214; 249; *अरियवासाति अरिया एवं वसिंसु वसन्ति वसिस्सन्ति एतेसूति अरियवासा*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.214; - **भाणक** त्रि॰, ब्रह्मचर्य-जीवन में वास से सम्बन्धित सुत्तों का पाठ करने वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सो वत्तब्बो त्वं अरियवासभाणको होसि न होसी'ति*, विभ॰ अट्ठ॰ 433.

अरियविनय पु॰, कर्म॰ स॰ [आर्यविनय], विनय के उत्तम नियम, आर्यों अथवा बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त विनय - **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तथेव अरियविनये, सद्धा यस्स न विज्जति*, अ॰ नि॰ 2(2).67; *सद्धम्मे सुप्पवेदिते सम्मासम्बुद्धेन सुट्ठु पवेदिते अरियविनये अहं पब्बजिता*, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 266.

अरियविहार पु॰, तत्पु॰/कर्म॰ स॰ [आर्यविहार], उत्तम विहार, आर्यजनों अथवा बुद्धों, प्रत्येकबुद्धों एवं अर्हतों की जीवनवृत्ति, मन की उत्तम अवस्था - **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सम्मा वदमानो वदेय्य - अरियविहारो इतिपि, ब्रह्मविहारो इतिपि, तथागतविहारो इतिपि*, स॰ नि॰ 3(2).395-396; - **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तदा अरियविहारेन विहरति तेसं अमोहकुसलमूलुप्पादनत्थं*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.108; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अदोसो ब्रह्मविहारस्स, अमोहो अरियविहारस्स*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 174; - **पुब्बङ्गम** त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्यविहारपूर्वङ्गम], वह, जिसके पूर्वाधार के रूप में उत्तम विहार या आर्यजनों द्वारा अनुपालित ब्रह्मचर्यवास रहता हो - **माय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं समयं अरियविहारपुब्बङ्गमाय धम्मपच्चवेक्खणाय भगवा विहासि*, उदा॰ अट्ठ॰ 19; - **समङ्गिता** स्त्री॰, भाव॰, आर्यविहारों से भरपूर होना - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इरियापथेसु आसनसङ्खातं इरियापथसमायोगपरिदीपनं अरियविहारसमङ्गिता-परिदीपनञ्चाति वेदितब्बं*, उदा॰ अट्ठ॰ 22.

अरियवीथि स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आर्यवीथि], आर्यजनों का मार्ग, उत्तम लोकोत्तर मार्ग, बुद्धों, प्रत्येकबुद्धों एवं अर्हतों का चित्तविशुद्धि प्राप्त कराने वाला मार्ग - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असेसअरियवीथितोपि तथागता पटिसल्लानं सेवन्ति*, मि॰ प॰ 142.

अरियवुत्ति त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्यवृत्ति], उत्तम जीवन जीने वाला, उत्तम आचरण या व्यवहार वाला - **त्तिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरियवुत्तिं मेधाविं, हीनजच्चम्पि पूजये*, स॰ नि॰ 1(1).118; - **त्तिने** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कतञ्ञुम्हि च पोसम्हि, सीलवन्ते अरियवुत्तिने*, जा॰ अट्ठ॰ 4.38; - **त्तिनं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इच्चेवं मन्तयन्तानं अरियानं अरियवुत्तिनं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.334; 356.

अरियवोहार पु॰, **क.** कर्म॰ स॰ [आर्यव्यवहार], उत्तम वाणी का प्रयोग, शिष्ट वाग्व्यवहार, सभ्य भाषा का प्रयोग, असत्यभाषण, चुगली, कठोरवाणी एवं निरर्थक बातचीत से मुक्त वाग्व्यवहार - **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भगिनियोति अरियवोहारेन आलपनं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.418; - **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *चत्तारो अरियवोहारा'ति एत्थ चेतना*, उदा॰ अट्ठ॰ 271; *चत्तारोमे, भिक्खवे, अरियवोहारा ... अदिट्ठे अदिट्ठवादिता असुते असुतवादिता अमुते अमुतवादिता अविञ्ञाते अविञ्ञातवादिता*, अ॰ नि॰ 1(2).281; परि॰ 248; **ख.** जनसाधारण के लिए प्रयुक्त आर्यजनों की भाषा का प्रयोग - *अयमेवेका यथाभुच्चब्रह्मवोहारअरियवोहारसङ्खाता मागधभासा न परिवत्तति*, विभ॰ अट्ठ॰ 367.

अरियसङ्घ पु॰, तत्पु॰/कर्म॰ स॰ [आर्यसङ्घ], आर्यों अथवा उत्तम शील आदि से सम्पन्न भिक्षुओं का सङ्घ, उत्तम सङ्घ - **ङ्घं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *खेत्तं जनानं कुसलत्थिकानं, तमरियसङ्घं सिरसा नमामि*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.2; *वन्दे अरियसङ्घं तं, पुञ्ञक्खेत्तं अनुत्तरं*, उदा॰ अट्ठ॰ 1; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सत्तमो पुग्गलो एसो, अरियसङ्घस्स वुच्चति*, अ॰ नि॰

2(2).84; – **गुण** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यसङ्घगुण], उत्तम भिक्षुसङ्घ का गुण – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति एवं अरियसङ्घगुणाति अनुस्सरितब्बा,* विसुद्धि॰ 1.210; *अरियसङ्घगुणाति आरकत्ता किलेसेहि, ... अरियानं वा सङ्घो अरियसङ्घो, तस्स गुणा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.262.

अरियसच्च नपुं॰, कर्म॰/तत्पु॰ स॰ [आर्यसत्य], **क.** उत्तम सत्य, **ख.** बुद्धों एवं अर्हतों जैसे शुद्धचित्त आर्यों द्वारा देखा गया सत्य, **ग.** क्लेशरहित चित्त की अवस्था तक पहुंचाने वाला सत्य अथवा आर्य बना देने वाला सत्य – **च्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं खो पन, भिक्खवे, दुक्खं अरियसच्चं ... दुक्खसमुदयं अरियसच्चं ... दुक्खनिरोधं ... दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं,* महाव॰ 14; – **च्चानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियसच्चानीति परिच्छिन्न-धम्मनिदस्सनं, दुक्खं अरियसच्चन्ति आदिम्हि पन उद्देसवारे,* विभ॰ अट्ठ॰ 77; *चत्तारो धम्मा अभिञ्ञेय्या – चत्तारि अरियसच्चानि,* पटि॰ म॰ 6; *यो च बुद्धञ्च धम्मञ्च सङ्घञ्च सरणं गतो, चत्तारि अरियसच्चानि सम्मप्पञ्ञाय पस्सति,* ध॰ प॰ 190; – **च्चान** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तपो च ब्रह्मचरियञ्च, अरियसच्चान दस्सनं,* खु॰ पा॰ 5.11; – **च्चेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *... भिक्खु धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति चतूसु अरियसच्चेसु,* म॰ नि॰ 1.84; – **देसना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, तत्पु॰ स॰, चार आर्यसत्यों का उपदेश – *का च पन सातिं? अरियसच्चदेसना, तेनेवाह – दुक्खं समुदयं निरोधं मग्ग'न्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 231; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.66.

अरियसदिस त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्यसदृश], आर्यजन जैसा, उत्तम जनों के समान – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियावकासोति रूपेन अरियसदिसो देववण्णो हुत्वा चरसि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.204.

अरियसमाचार त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्यसमाचार], उत्तम आचरण वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियो अरियसमाचारो, बाळ्हं त्वं मम रुच्चसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.321; *अरियसमाचारोति सुन्दरसमाचारोपि जातो,* तदे॰.

अरियसम्मत त्रि॰, कर्म॰ स॰ [आर्यसम्मत], लोगों के बीच 'आर्य' या उत्तम व्यक्ति के रूप में पहचान रखने वाला, आर्य के रूप में माना गया व्यक्ति – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्ततिंसबोधिपक्खियअरियधम्मसमायोगतो वा अरियसम्मता बुद्धपच्चेकबुद्धबुद्धसावका एतानि पटिविज्झन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 64.

अरियसावक पु॰, कर्म॰ स॰ [आर्यश्रावक], **शा॰ अ॰** उत्तम शिष्य, **ला॰ अ॰** स्रोतापत्ति, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत्व के मार्ग पर मौजूद चार प्रकार के शैक्ष्य शिष्य, बुद्धों, अर्हतों आदि के धर्मोपदेश को सुना हुआ व्यक्ति – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एते च पटिविज्झि यो गहट्ठो, सुतवा अरियसावको सपञ्ञो,* सु॰ नि॰ 90; *तस्सेव लक्खणस्स अरियानं सन्तिके सुतत्ता अरियसावको,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.131; *एवं पस्सं, भिक्खवे, सुतवा अरियसावको रूपस्मिम्पि निब्बिन्दति,* महाव॰ 19; 39; *अरियसावकोति अरियस्स बुद्धस्स सावको,* विभ॰ अट्ठ॰ 111.

अरियसाविका स्त्री॰, कर्म॰ स॰, अरियसावक से व्यु॰ [आर्यश्राविका], **शा॰ अ॰** बुद्धों एवं अर्हतों जैसे आर्यों से धर्म सुन चुकी भिक्षुणी, **ला॰ अ॰** स्रोतापत्ति आदि चार लोकोत्तर मार्गों पर स्थित भिक्षुणी – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चहि, भिक्खवे, वड्ढीहि वड्ढमाना अरियसाविका अरियाय वड्ढिया वड्ढति,* स॰ नि॰ 2(2).244; *सा हि भगवतो अग्गुपट्ठायिका पणीतदायिकानं साविकानं एतदग्गे ठपिता सोतापन्ना अरियसाविका,* उदा॰ अट्ठ॰ 97; *सा किर सोतापन्ना अरियसाविका भारद्वाजगोत्तस्स ब्राह्मणस्स भरिया,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.317.

अरियसीलवत त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्यशीलव्रत], बुद्धों एवं अर्हतों द्वारा उपदिष्ट शीलों एवं व्रतों का पालन करने वाला, आर्यजनों के शीलों एवं व्रतों से युक्त – **वतो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न चाहं तस्मिं दुब्भेय्यं, अरियसीलवतो हि सो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.240; ... *अरियसीलवतोति अरियेन सीलवतेन अरियाय च आचारसम्पत्तिया समन्नागतो,* तदे॰.

अरियसीली त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्यशील], अर्हत् आदि आर्यजनों के शीलों से युक्त, उत्तम शीलों का आचरण करने वाला – **ली** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गोतमो सीलवा अरियसीली कुसलसीली कुसलसीलेन समन्नागतो,* दी॰ नि॰ 1.101; *चतुपारिसुद्धिसीलेन सीलवा, तं पन सीलं अरियं उत्तमं परिसुद्धं तेनाह 'अरियसीली'ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.230.

अरियसुख नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आर्यसुख], उत्तम सुख, सदाचार एवं चित्त की विशुद्धि से प्राप्त सुख – **खं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमानि, भिक्खवे सुखानि ... अरियसुखञ्च अनरियसुखञ्च ... एतदग्गं, भिक्खवे, इमेसं द्विन्नं सुखानं यदिदं अरियसुख'न्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).96; *छट्ठे अरियसुखन्ति अपुथुज्जनसुखं, अनरियसुख'न्ति पुथुज्जनसुखं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.52.

अरियसेट्ठ त्रि., तत्पु. स. [आर्यश्रेष्ठ], आर्यों के बीच में श्रेष्ठ – **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तं कुंजराजञ्जहयानुचिण्णं, पावेक्खि अन्तेपुरमरियसेट्ठो'ति, ... अरियसेट्ठोति आचारअरियेसु उत्तमो पुण्णको यक्खो पण्डितस्स अन्तेपुरं पाविसि,* जा. अट्ठ. 7.182-183.

अरियाकरि पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक प्राचीन बौद्ध-विहार का नाम – **करिस्स** ष. वि., ए. व. – *दत्वारियाकरिस्सेस गामं सो मालवत्थुकं,* चू. वं. 45.60.

अरियाचरित त्रि., तत्पु. स. [आर्याचरित], आर्यों अथवा अर्हतों आदि द्वारा आचरण में लाया गया – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – ... *अरियाचरितं सुकोसले अरहन्तो मे मनापाव पस्सितु न्ति, ... अरियाचरितन्ति अरियेहि बुद्धादीहि आचिण्णं,* जा. अट्ठ. 3.365-366.

अरियाचार क. पु., तत्पु. स. [आर्याचार], उत्तम आचरण, आर्यजनों का आचरण – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *तत्थ मनुस्सो ... ... वा, अरियाचारे ठितो आचारअरियो नाम,* जा. अट्ठ. 2.234; **ख.** त्रि., ब. स., उत्तम आचरण वाला – **रा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अरियगणेति ब्राह्मणगणे, ते किर तदा अरियाचारा अहेसुं, तेन ते एवमाह,* जा. अट्ठ. 6.64.

अरियाधिगत त्रि., तत्पु. स. [आर्याधिगत], आर्यजनों या अर्हत् आदि द्वारा साक्षात्कृत, आर्यजनों द्वारा प्राप्त किया हुआ – **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अरियाधिगतञ्च धम्मं अनधिगच्छन्तो अरियकरधम्मानं अरियभावस्स च अदिट्ठता, अरियानं अदस्सावी'ति वेदितब्बो,* स. नि. अट्ठ. 2.222.

अरियायतन नपुं., तत्पु. स. [आर्यायतन], आर्यजनों का क्षेत्र-प्रसार, अर्हतों आदि की भूमि (मध्य-देश) – **तने** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *तथागतप्पवेदितस्स धम्मविनयस्स देसेता पुग्गलो दुल्लभो लोकस्मिं, अरियायतने पच्चाजाति दुल्लभा लोकस्मिं,* अ. नि. 2(2).141; *दसमस्स पठमे अरियायतनेति मज्झिमदेसे,* अ. नि. अट्ठ. 3.143.

अरियालंकारथेर पु., व्य. सं., **क.** अनेक पालि-रचनाओं को बर्मी-भाषा में रूपान्तरित करने वाले एक स्थविर का नाम – *अरियालङ्कारथेरो पन धातुपच्चयविभागट्ठाने अधिकोति दट्ठब्बो,* सा. वं. 100; **ख.** एक सामणेर का नाम – ... *पेसेसुं सद्धिं अरियालङ्कारेन नाम सामणेरेन,* सा. वं. 146.

अरियावकास त्रि., ब. स., सुन्दर स्वरूप वाला, उत्तम एवं भव्य आकृति वाला – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरियावकासोसि पसन्ननेत्तो, मञ्ञे भवं पब्बजितो कुलम्हा,* जा. अट्ठ. 2.234; जा. अट्ठ. 5.159; *तत्थ अरियावकासोसीति निद्दोससुन्दरसरीरावकासोसि, अभिरूपोसीति अत्थो,* तदे.; *अरियावकासोसि अनरियोवासि असञ्ञतो सञ्ञतसन्निकासो, ... अरियावकासोसीति अरिपटिरूपकोसि,* जा. अट्ठ. 5.81-82; *अरणन्ति अरणियेहि देवेहि सदिसवण्णो अरियावकासोति अत्थो,* पे. व. अट्ठ. 183-184.

अरियिद्धि स्त्री., तत्पु. स. [आर्यऋद्धि], अर्हतों आदि आर्यजनों की ऋद्धि, उत्तम ऋद्धि – *इद्धिनाम चेसा – अधिट्ठानिद्धि, विकुब्बनिद्धि, मनोमयिद्धि, ञाणविप्फारिद्धि समाधिविप्फारिद्धि, अरियिद्धि, कम्मविपाकयिद्धि, पुञ्ञवतो इद्धि, विज्जामयिद्धि,* ध. स. अट्ठ. 136-137; – **बल** नपुं., तत्पु. स., आर्य-जनों की ऋद्धियों का बल – **लेन** तृ. वि., ए. व. – *तं थेरस्स अरियिद्धिबलेन परिक्खयं न अगमासि,* जा. अट्ठ. 1.232; – **योग** पु., तत्पु. स., आर्यजनों की ऋद्धियों के साथ जोड़ या सम्बन्ध – **गेन** तृ. वि., ए. व. – *यतिन्द्रियन्ति सुपरिसुद्धमनो समाचारताय अरियिद्धियोगेन अब्यावटअप्पटिसङ्खानुपेक्खाभावतो च मनिन्द्रियवसेन यतिन्द्रियं,* उदा. अट्ठ. 69.

अरियूपवाद पु., तत्पु. स. [आर्योपवाद], आर्यजनों अथवा बुद्धों एवं अर्हतों आदि की निन्दा, आर्यजनों के विषय में बुरा-भला कहना – **दो** प्र. वि., ए. व. – *महासावज्जो हि अरियूपवादो, आनन्तरियसदिसत्ता,* विसुद्धि. 2.54; – **धम्म** त्रि., ब. स., स्वभाव से ही आर्यजनों का निन्दक – **म्मा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अरियूपवादधम्मा उपवादन्तरायिका नाम ते पन याव अरिये न खमापेन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).9.

अरियूपोसथ पु., तत्पु. स. [आर्योपवसथ], आर्यों का उपोसथ, ऐसा उपोसथ, जिसमें आर्यजनों की समीपता प्राप्त हो – **थो** प्र. वि., ए. व. – *गोपालकुपोसथो, निगण्ठुपोसथो, अरियुपोसथो,* अ. नि. 1(1).235; *अरियुपोसथोति अरियानं उपवसनउपोसथो,* अ. नि. अट्ठ. 2.187.

अरियूपवादी त्रि., [आर्योपवादिन्], अर्हतों जैसे आर्यजनों की निन्दा करने वाला – **दी** प्र. वि., ए. व. – *भिक्खु अक्कोसकपरिभासको अरियूपवादी सब्रह्मचारीनं, तस्स पञ्च आदीनवा पाटिकङ्खा,* अ. नि. 2(1).232; – **दिनो** पु., ष. वि., ए. व. – *यं मुसा भणतो पापं, यं पापं अरियूपवादिनो,* स. नि. 1(1).260; *अरियूपवादिनोति कोकलिकस्स विय पापं,* स. नि. अट्ठ. 1.300.

अरिस नपुं., [अर्शस्], बवासीर का रोग – **सं** प्र. वि., ए. व. – *दुन्नामकं च अरिसं, छद्दिकावमथूदितो,* अभि. प. 327;

अस्सावोति अरिसभगन्दरमधुमेहादीनं वसेन असुचिपग्घरणकं, पाचि॰ अट्ठ॰ 143.

अरिसक त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अरिस्वक], शत्रुओं से सम्बद्ध, शत्रुभूत, शत्रु जैसा - **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *लोभस्स न वसं गच्छे हनेय्यारिसकं मनं, ... हनेय्यारिसकं मनन्ति अन्तो उप्पज्जमानानं नानाविधानं लोभसत्तूनं सन्तकं मनं, लोभसम्पयुत्तचित्तं हनेय्याति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.316.

अरिसरोग पु॰, तत्पु॰ स॰ [अर्शरोग], बवासीर का रोग - **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अंसाति अरिसरोगो,* महानि॰ अट्ठ॰ 47; सद्द॰ 2.567.

अरिसङ्गर पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरिसङ्गर], शत्रुओं के साथ संग्राम - **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रम्मे पुलत्थिनगरे, वसं वीतारिसंगरे,* चू॰ वं॰ 74.181.

अरिसङ्घ पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरिसङ्घ], शत्रुओं का समूह - **घा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सूरा पुरे रणमुखे विजितारिसंघा,* तेल॰ 16–17.

अरु पु॰/नपुं॰, [अरुष], व्रण, घाव, जख्म - *उेय्यं त्वरु वणो नित्थी, फोटो तु पिळका भवे,* अभि॰ प॰ 324; - **रु** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कायो वा काये अरु वा न मक्खेतब्बं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.269; - **रूनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तेसंयेव अरूनं पक्कत्ता पक्कगत्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.107.

अरुकूपमचित्त त्रि॰, ब॰ स॰, पुराने व्रण या घाव के समान चित्त वाला - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरुकूपमचित्तो पुग्गलो, विज्जूपमचित्तो पुग्गलो, वजिरूपमचित्तो पुग्गलो,* अ॰ नि॰ 1(1).147; *अरुकूपमचित्तोति पुराणवणसदिसचित्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.93.

अरुकाय पु॰, कर्म॰ स॰, ऐसा शरीर, जिसमें व्रण ही व्रण हों, घावों से भरा शरीर - **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पस्स चित्तकतं बिम्बं, अरुकायं समुस्सितं,* ध॰ प॰ 147; थेरगा॰ 769; *अरुकायन्ति नवन्नं वणमुखानं वसेन अरुभूतं कायं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.60.

अरुक्ख त्रि॰, ब॰ स॰ [अवृक्ष], वृक्षरहित, बिना पेड़ वाला/वाली - **क्खं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ते मं परियोनन्धिस्सन्ति, अरुक्खं मं करिस्सरे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.352; *करिस्सरेति अथेवं परियोनन्धित्वा मं अरुक्खमेव करिस्सन्ति सब्बसो भञ्जिस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.353.

अरुगत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [अरुगात्र], वह, जिसके शरीर के विभिन्न अङ्गों में घाव ही घाव हों - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कुट्ठी पुरिसो अरुगत्तो पक्कगत्तो किमीहि खज्जमानो,* म॰ नि॰ 2.184; *सेय्यथापि, भिक्खवे, पुरिसो अरुगत्तो पक्कगत्तो सरवनं पविसेय्य,* स॰ नि॰ 2(2).196; *अरुगत्तो ति वणसरीरो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.107.

अरुचि स्त्री॰, [अरुचि], **शा॰ अ॰** रुचि का अभाव, अप्रियता, अच्छा या मन पसन्द न लगना, **ला॰ अ॰** भूख की कमी, अजीर्णता - **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कुमारो निवत्तितुकामो अरुचिया गच्छन्तो सत्थुगारवेन पत्तं गण्हथा'ति वत्तुं न सक्कोति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.67; *भन्ते, तुम्हे एतेसं अरुचिया सीलं देथ,* जा॰ अट्ठ॰ 3.147; **सूचनत्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अरुचिसूचनार्थ], अरुचि या असहमति के अर्थ वाला - **त्थे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किर इति अनुस्सवत्थे अरुचिसूचनत्थे च,* सद्द॰ 3.898.

अरुच्चन नपुं॰, √रुच से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ का निषे॰, **शा॰ अ॰** रुचिकर न लगना, अच्छा न लगना, **ला॰ अ॰** आहार अच्छा न लगना - **रोग** पु॰, कर्म॰ स॰, ऐसा रोग, जिसमें भोजन अच्छा न लगे - **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरोचको आहाररसा अरुच्चनरोगो,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.172.

अरुच्चनक त्रि॰, √रुच से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ रुच्चन से व्यु॰, रुच्चनक का निषे॰ [अरोच्यनक], अरुचिकर, अनुपयुक्त, रुचि उत्पन्न न कराने वाला - **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कायकम्मादीसु कोचि दोसो'ति पच्चवेक्खन्तो अत्तनो अरुच्चनकं किञ्चि कम्मं अदिस्वा,* ध॰प॰ अट्ठ॰ 1.143; *अम्हाकं छाया विय तुम्हे अमुञ्चित्वा विचरन्तानं अरुच्चनकं नाम अत्थि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.247.

अरुज त्रि॰, ब॰ स॰ [अरुज], नीरोग, स्वस्थ, व्याधिमुक्त, बाधामुक्त - **जं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमरं अजरं अरजं अरुजं अधिगच्छति सन्तिपदं पन सो,* विन॰ वि॰ 2443.

अरुण[1] पु॰/नपुं॰ तथा त्रि॰, [अरुण, सूर्य का सारथि], **क.** प्रभातकाल में सूर्योदय से पूर्व आकाश पर प्रकट लालिमा, दिन की पहली किरण या आभा - **णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *सूरस्सोदयतो पुब्बट्ठितरंसि सिया'रुणो,* अभि॰ प॰ 65; *इदानि अरुणो उग्गमिस्सती'ति सम्मासम्बोधिं पापुणि, सब्बञ्ञुतापत्तिसमनन्तरमेव च अरुणो उग्गच्छति,* उदा॰ अट्ठ॰ 41; **ख.** *उट्ठापेसि 'के साथ प्रयुक्त होने' पर* प्रातःकाल होने की प्रतीक्षा की, सूर्य को उदित कराया - **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *ठितकोव अरुणं उट्ठापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.111; ... *अरुणं नो उट्ठापेही'ति कन्दिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.27; - **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भिज्जमाने, रुणे वस्सि महामेघो महीतले,* म॰ वं॰ 37.197; **ग.** नपुं॰, 1. सूर्य, प्रातःकालीन लालिमा - *बोधिसत्तस्सपि धम्मं कथेन्तस्सेव अरुणं उट्ठहि,*

जा॰ अट्ठ॰ 5.378; 2. नाग लोक में खिलने वाला कमल - *नागानं पवरं पुप्फं, अरुणं नाम उप्पलं,* अप॰ 2.222; तुल॰ अमर॰ 1.5.15; - **उतु** पु॰, कर्म॰ स॰ [अरुणर्तु], प्रातःकाल का मौसम, प्रातःकालीन वायु - **तुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *सा मेघउतुञ्च पब्बतउतुञ्च अरुणउतुञ्च गहेत्वा जातत्ता पुत्तस्स उतेनोति नामं अकासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.96; - **णग्ग / रुणुग्ग** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अरुणाग्र], प्रभात की पहली किरण, ऊषाकाल - **ग्गं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सूरियस्स, भिक्खवे, उदयतो एतं पुब्बङ्गमं एतं पुब्बनिमित्तं, यदिदं अरुणुग्गं,* अ॰ नि॰ 3(2).203; स॰ नि॰ 3(1).27; *सूरियपेय्याले अरुणुग्गं विय कल्याणमित्तता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.169; - **निभ** त्रि॰, ब॰ स॰, सूर्य के समान, सूर्य जैसा - **भाय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरुणवण्णाय अरुणनिभाय, अरुणप्पभावण्णायाति अत्थो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.134; - **पुर** नपुं॰, एक नगर का नाम - **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तदारुणपुरे रम्मे, ब्राह्मञ्ञकुलसम्भवा,* अप॰ 2.283; थेरीगा॰ अट्ठ॰ 237; - **प्पभरञ्जित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अरुणप्रभारञ्जित], सूर्य की प्रभा से रंगा हुआ या लाल रङ्ग का हो चुका - **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *सुवण्णघटतो निक्खममाना खीरधारा विय अरुणप्पभारञ्जिते गगनतले ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).273; *अरुणप्पभारञ्जिते गगनप्पदेसे ओसधितारका विय च अतिमनोहराय सिरिया विरोचति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.38; - **वण्ण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अरुणवर्ण], प्रभातकालीन नभ-लालिमा के समान लाल रङ्ग वाला - **ण्णाय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्मा ... अरुणवण्णाय मत्तिकाय कसिणं कातब्बं,* विसुद्धि॰ 1.120; - **वण्णमत्तिका** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अरुणवर्णमृत्तिका], लालरङ्ग की मिट्टी, ऊबड़-खाबड़ पृथ्वी - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरुणवण्णमत्तिकं अञ्जनं नागमाहटं,* दी॰ वं॰ 12.3; पारा॰ अट्ठ॰ 1.53; *हरिचन्दनं अरुणवण्णमत्तिकं, अञ्जनं हरीतकं, आमलकन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.53; **सिख** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अरुणशिखा], सूर्य की पहली किरण, प्रातःकाल की लालिमा - **खाय** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अथ थेरो अरुणसिखाय पज्जायमानाय महापथविं उन्नादयन्तो अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बायि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.128; - **णाराम** पु॰, वह आराम, जहां, वेस्सभू-बुद्ध ने प्रथम धर्मोपदेश दिया था - **मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वत्ति चक्कं महावीरो, अरुणारामे नरुत्तमो,* बु॰ वं॰ 23.22; - **णुग्गमन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अरुणोद्गमन], सूर्योदय, ऊषाकाल - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इति पयोगासयसुद्धस्स आगमाधिगमसम्पन्नस्स वचनं अरुणुग्गमनं विय,* उदा॰ अट्ठ॰ 14; *विभाताय पन रत्तिया वलाहकविगमो च अरुणुग्गमनञ्च तस्सा गब्भवुट्ठानञ्च एकक्खणेयेव अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.96; - **ना** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *याव अरुणुग्गमना सयित्वा अरुणुग्गमनवेलाय सत्तिं गहेत्वा निक्खमि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.127; - **णुग्गमनकाल** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरुणोद्गमनकाल], सूर्योदय का समय - **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न्हापेत्वा मण्डेत्वा दिब्बभोजनं भोजेत्वा दिब्बसयने सयापेत्वा अरुणुग्गमनकाले बद्धाकारेनेव निपज्जापेत्वा अन्तरधायि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.353; - **णुग्गमनवेला** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अरुणोद्गमनवेला], सूर्योदय का समय - ... *याय सब्बो सो ओकासो अरुणुग्गमनवेला विय सञ्जातालोको होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.195.

अरुण² पु॰, व्य॰ सं॰, अनेक व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त एक नाम, **क**. अरुणवती के शासक तथा शिखी बुद्ध के पिता का नाम - *नगरं अरुणवती नाम, अरुणो नाम खत्तियो,* बु॰ वं॰ 22.15; *तस्स भगवतो अरुणवती नाम नगरं अहोसि, अरुणो नाम खत्तियो पिता, पभावती नाम माता,* जा॰ अट्ठ॰ 1.52; *नगरे अरुणवतिया, अरुणो नाम खत्तियो,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 72; **ख**. अस्सक राष्ट्र के शासक का नाम - ... *सो हि रज्जे पतिट्ठितकाले रट्ठनामवसेन अस्सको नाम जातो, कुलदत्तियं पनस्स नामं अरुणोति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.3.

अरुणवत पु॰, व्य॰ सं॰, एक राजा का नाम - *रञ्ञो खो पन, भिक्खवे, अरुणवतो अरुणवती नाम राजधानी अहोसि,* स॰ नि॰ 1(1).182.

अरुणवती स्त्री॰, व्य॰ सं॰, राजा अरुणवत की राजधानी का नाम - *रञ्ञो खो पन, भिक्खवे, अरुणवतो अरुणवती नाम राजधानी अहोसि,* स॰ नि॰ 1(1).182; *अरुणवतिनगरे अरुणवतो रञ्ञो पभावतिया नाम महेसिया कुच्छिस्मिं निब्बत्तित्वा ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.199; - **सुत्तन्त** पु॰, स॰ नि॰ के ब्रह्मसंयुत्त के दूसरे वग्ग के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).182-184; *अरुणवतिसुत्तन्तो केन कथितोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.199; - **न्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरुणवतिसुत्तन्ते अत्थुप्पत्तियं आनन्दत्थेरस्स पुच्छाय कथितं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.199; - **विहार** पु॰, एक विहार का नाम - *तदा आयस्मा सारिपुत्तत्थेरो तमेव गामं उपनिस्साय अरुणवतीविहारे विहरन्तो,* ..., पे॰ व॰ अट्ठ॰ 57.

अरुणा पु॰, अरुण का प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, सदा ब॰ व॰ में ही प्राप्त, देवताओं के एक वर्ग का नाम - *सुक्का करम्भा अरुणा, आगुं वेघनसा सह,* दी॰ नि॰ 2.192.

अरुणाभ त्रि., ब. व. [अरुणाभ], लाल रङ्ग की चमक वाला, सूर्य के समान आभा वाला - **भं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. *नागाहटं अञ्जनं च अरुणाभं च मत्तिकं*, म. वं. 11.29.

अरुणुट्ठान नपुं., तत्पु. स. [अरुणोत्थान], सूर्य का ऊपर की ओर उठना, दिन निकलना - **नं** प्र. वि., ए. व. - *भगवतो किर धम्मदेसनापरिनिट्ठानञ्च अरुणुट्ठानञ्च रस्मिविस्सज्जनञ्च एकक्खणे अहोसि*, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.225; - **वेला** स्त्री., तत्पु. स. [अरुणोत्थानवेला], सूर्योदय का समय, दिन के निकलने का समय - **य** सप्त. वि., ए. व. - *सचे अरुणुट्ठानवेलाय तेसं आबाधो वड्ढति, तेसंयेव किच्चं कातब्बं*, विसुद्धि. 1.71.

अरुणुट्ठापन नपुं., तत्पु. स., सूर्य का ऊपर उठ कर आना, प्रातःकाल होना, दिन निकलना - **नं** प्र. वि., ए. व. - *भगवतो हि चारिकाचरणम्पि अरुणुट्ठापनम्पि नियतं, मज्झिमपदेसेयेव चारिकं चरति*, स. नि. अट्ठ. 3.309.

अरुणोदय पु., तत्पु. स., [अरुणोदय], सूर्योदय, प्रातःकाल **यो** प्र. वि., ए. व. - *अथ रत्ति विभासि, अरुणोदयो जातो*, जा. अट्ठ. 7.342; - **ये** सप्त. वि., ए. व. - *अथ खुज्जस्स सब्बरत्तिं सीतासिहतस्स अरुणोदये सरीरे वातो कुप्पि*, जा. अट्ठ. 2.189.

अरुप्पल पु., व्य. सं., एक प्राचीन सिंहली ग्राम - **लं** द्वि. वि., ए. व. - *विहारस्स समीपम्हि अरुप्पलं ति नामकं, गामं एकं च अञ्ञानि गामक्खेत्तानि च बहू*, चू. वं. 100-212.

अरुभूत त्रि., [अरुषभूत], केवल व्रणों या घावों ही घावों से भरपूर, घावों के रूप में परिवर्तित - **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अरुकायन्ति नवन्नं वणमुखानं वसेन अरुभूतं कायं*, ध. प. अट्ठ. 2.60.

अरुमक्खन नपुं., तत्पु. स. [अरुषम्रक्षण], घावों पर लगाया जाने वाला मलहम या तेल - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *तेलञ्च वसञ्च मुद्धनितेलं वा अब्भञ्जनं वा मधुं अरुमक्खनं फाणितं घरधूपनं अधिट्ठति, अनापत्ति*, पारा. अट्ठ. 2.269.

अरूप क. नपुं., तत्पु. स. [अरूप], **1**. रूपस्कन्ध के अन्तर्गत न आने वाले सम्पूर्ण लौकिक एवं अलौकिक धर्म, चित्त, चेतसिक एवं निर्वाण - **पं** प्र. वि., ए. व. - *ताणं लेणमरूपं च सन्तं सच्चमनालयं*, अभि. प. 1.6; सद्द. 1.70. *अनालयमरूपञ्च पदमच्चुतमक्खरं*, अभि. अव. 104; *रूपसभावाभावतो अरूपं*, तदे.; - **प** संबो. ए. व. - *अरूप दूरङ्गम एकचारि*, थेरगा. 1125; *रूपाभावतो अरूपा चित्तस्स हि, तादिसं खण्ठानं नीलादिवण्णभेदो वा नत्थि, तस्मा वुत्तं अरूपाति*, थेरगा. अट्ठ. 2.398; **2**. अरूप-ध्यान, जिसमें चित्त को आकाररहित आकाश आदि चार आलम्बनों पर एकाग्र किया जाता है - *तस्सातिक्कमनत्थाय, अरूपं पटिपज्जति*, अभि. अव. 128; *अरूपन्ति अरूपावचरभावनं*, अभि. अव., अभि. टी. 2.190; **ख**. त्रि., ब. स. [अरूप], आकार या रूप से रहित, अशरीरी, अभौतिक - **पो** पु., प्र. वि., ए. व. - *वण्णसङ्खातं रूपं अस्स अत्थीति रूपी, न रूपीति अरूपीति आह 'अरूपो'ति*, म. नि. टी. (म.प.) 1(2).77; - **पा** ब. व. - सरूपा, भिक्खवे, उप्पज्जन्ति पापका अकुसला धम्मा, नो अरूपा, अ. नि. 1(1).98; - **क** त्रि., अरूप से व्यु., रूप या आकार से रहित - **कानं** पु., ष. वि., ब. व. - *अरूपकानं उपपज्जन्तानं तेसं मनायतनं उप्पज्जति*, यम. 1.127; - **कम्मट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. अरूपकर्मस्थान], चित्त की एकाग्रता हेतु रूपरहित आलम्बन - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *इति भगवा रूपकम्मट्ठानं कथेत्वा अरूपकम्मट्ठानं कथेन्तो ... वेदनावसेन ... कथेसि*, दी. नि. अट्ठ. 2.327, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).286; - **कसिणलाभी** त्रि., [अरूपकृत्स्नलाभिन्], चित्त की एकाग्रता के आलम्बन के रूप में रूपरहित धर्मों को ग्रहण करने वाला - **भिं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अरूपिन्ति एत्थ पन अरूपकसिणलाभिं, अरूपक्खन्धगोचरं वाति एवमत्थो दट्ठब्बो*, दी. नि. अट्ठ. 2.85; - **कायिक** त्रि., ब. स. [अरूपकायिक], रूप या आकार से रहित (प्राणी), बिना रूप-रङ्ग वाले प्राणी - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *'अत्थि देवेसु अरूपकायिका नाम देवा'ति*, मि. प. 290; - **क्खन्ध** पु., तत्पु. स. [अरूपस्कन्ध], पांच स्कन्धों में रूपस्कन्ध को छोड़कर शेष चार रूप या आकाररहित स्कन्ध, वेदना, संज्ञा, संस्कार एवं विज्ञान स्कन्ध - **धा** प्र. वि., ब. व. - *अरूपक्खन्धा हि इध भवोति आगता*, विभ. अट्ठ. 196; *तं परिग्गण्हतो उप्पन्ना फस्सपञ्चमकाधम्मा चत्तारो अरूपक्खन्धा*, स. नि. अट्ठ. 2.96; - **क्खन्धगोचर** त्रि., ब. स. [अरूपस्कन्धगोचर], रूपस्कन्ध से भिन्न वेदना आदि चार स्कन्धों को अपना आलम्बन बनाने वाला - **रं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अरूपिन्ति एत्थ पन अरूपकसिणलाभिं, अरूपक्खन्धगोचरं वाति एवमत्थो दट्ठब्बो*, दी. नि. अट्ठ. 2.85; - **जीवित** नपुं., कर्म. स. [अरूपजीवित], अभौतिक जीवन, रूपस्कन्ध से भिन्न स्कन्धों से जुड़ा हुआ जीवन - **ते** सप्त. वि., ए. व. - *अरूपजीविते वुत्त नयेनेव च तं वदे*, अभि. अव. 87; - **ज्झान** नपुं., कर्म. स. [अरूपध्यान], रूप या आकार से

रहित चार प्रकार के आलम्बनों वाला वह ध्यान, जो रूप ध्यान के उपरान्त किया जाता है तथा जिस में मन को स्थूल से सूक्ष्म की ओर ले जाने वाले चार अङ्ग रहते हैं - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चित्तमरूपज्झानस्स आलम्बा चतुरो मता,* सद्धम्मो॰ 464; - **ट्ठायी** त्रि॰, [अरूपस्थायिन्], अरूपी ब्रह्मलोकों में निवास करने वाला - **यिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ये च रूपूपगा सत्ता, ये च अरूपट्ठायिनो,* इतिवु॰ 46; स॰ नि॰ 1(1).155; - **तण्हा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपतृष्णा], अरूप-भूमि में निवास करने की तृष्णा - *अपरापि तिस्सो तण्हा – रूपतण्हा, अरूपतण्हा, निरोधतण्हा,* दी॰ नि॰ 3.172; *अरूपभवे छन्दरागो अरूपतण्हा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.155; *कामतण्हा, भवतण्हा, विभवतण्हा, रूपतण्हा, अरूपतण्हा निरोधतण्हा,* महानि॰ 6; - **धम्म** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपधर्म], रूपलोक से ऊपर वाले लोक का धर्म - **म्मा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इमे च अरूपधम्मा छसट्ठि च रूपधम्माति सब्बेपि समोधानेत्वा ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.157; *ताव किञ्चापि अरूपधम्मा विय रूपधम्मापि कम्मसमुट्ठाना अत्थि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 377; - **धातु** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अरूपधातु], रूप से रहित प्राणियों वाला लोक या क्षेत्र - **तुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमं लोकं नासीसति कामधातुं, परं लोकं नासीसति रूपधातुं अरूपधातुं,* महानि॰ 43; - **तु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रूपधातु एतं मम ... अरूपधातु एतं मम,* पटि॰ म॰ 125; - **या** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरूपधातुया चत्तारो खन्धा, द्वे आयतनानि,* विभ॰ 475; - **धातुकथा** स्त्री॰, कथा॰ की एक कथा का शीर्षक - *अरूपधातुकथा, अरूपिनो धम्मा अरूपधातूति, ... अरूपधातुकथा निट्ठिता,* कथा॰ 3.08-309; - **धातुपटिसंयुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपधातुप्रतिसंयुक्त], अरूपधातु के साथ जुड़ा हुआ - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रूपधातुअरूपधातुपटिसंयुत्तो रागो सारागो चित्तस्स सारागो - अयं वुच्चति भवतण्हा,* विभ॰ 423; *अभिधम्मे पनेता कामधातुपटिसंयुत्तो ... अरूपधातुपटिसंयुत्तो'ति एवं वित्थारिता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.154; - **धातुवेपक्क** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपधातुवैपाक्य], अरूपधातु में विपाक प्राप्त करने वाला - **क्कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरूपधातुवेपक्कञ्च, आनन्द, कम्मं नाभविस्स, अपि नु खो अरूपभवो पञ्जायेथा'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).254; - **परिग्गह** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपपरिग्रह], अरूपधातु या अरूपलोक का कर्मस्थान के रूप में दृढ़ता से ग्रहण, कर्मस्थान - **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रूपपरिग्गहो अरूपपरिग्गहोतिपि एतदेव वुच्चति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).286; *अट्ठारससु धातूसु अड्ढेकादसधातुयो रूपपरिग्गहो अड्ढट्ठमकधातुयो अरूपपरिग्गहोति रूपारूपपरिग्गहोव कथितो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.74; - **हं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरूपकम्मट्ठानन्ति अरूपपरिग्गहं,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(1).329; - **पुञ्ञ** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपपुण्य], अरूप लोक में किया गया पुण्य - **ञ्ञानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *चत्तारारूपपुञ्ञानि, सब्बे पाका अनुत्तरा,* अभि॰ अव॰ 47; *यानि चारूपपुञ्ञानि, सरूपेनीरितानि तु,* अभि॰ अव॰ 128; - **प्पटिसंयुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपप्रतिसंयुक्त], अरूपलोक के साथ जुड़ा हुआ - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अरूपप्पटिसञ्ञुत्तो विमोक्खो - अयं निरामिसो विमोक्खो,* पटि॰ म॰ 227; - **भव** पु॰, कर्म॰ स॰ [अरूपभव], तीन प्रकार के भवों या अस्तित्वों में से एक, अरूपलोक में प्राप्त होने वाला भव - **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपि नु खो अरूपभवो पञ्जायेथा'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).254; *सेय्यथिदं - कामभवो वा रूपभवो वा अरूपभवो वा,* दी॰ नि॰ 2.45; - **वे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बुद्धसतेनपि बुद्धसहस्सेनपि गन्त्वा बोधेतुं असक्कुणेय्ये अरूपभवे निब्बतिस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.64; - **वा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *द्वे अरूपभवाति अपरेनपि परियायेन सङ्गहतो छ भवा?,* विभ॰ अट्ठ॰ 177; - **मग्गसमङ्गी** त्रि॰, अरूपलोक में उत्पत्ति प्राप्त कराने वाले मार्ग से युक्त - **ङ्गी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चित्तं अभिनीहरति अभिनिन्नामेति आरुप्पमग्गसमङ्गीति,* महानि॰ 204; *आरुप्पमग्गसमङ्गीति अरूपसमापत्तिया गमनमग्गेन अपरिहीनो,* महानि॰ अट्ठ॰ 288; - **राग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपराग], अरूपलोक में उत्पत्ति के प्रति मानसिक लगाव, अर्हत्व-मार्ग पर चल रहे साधक द्वारा नष्ट किये जाने योग्य पांच ऊर्ध्वभागीय संयोजनों में से एक - **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पञ्च उद्धम्भागियानी सञ्ञोजनानि - रूपरागो अरूपरागो, मानो, उद्धच्चं, अविज्जा,* दी॰ नि॰ 3.187; *अरहत्तमग्गेन रूपरागो, अरूपरागो, मानो, उद्धच्चं अविज्जा - इमानि पञ्च सञ्ञोजनानि पहीयन्ति,* पटि॰ म॰ 275; - **लोक** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अरूपलोक], रूप और आकार से रहित ब्रह्माओं का लोक - **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रूपगरुभारमुज्झिय अरूपलोके पि सङ्गमपहाय,* सद्धम्मो॰ 494; - **विपाक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अरूपविपाक], अरूप-भव से प्राप्त विपाक - **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *चत्तारि अरूपविपाकानीति एवं चतुब्बिधं विञ्ञाणं होतीति,* विभ॰ अट्ठ॰ 144; - **विभाग** पु॰, रूपा॰ वि॰ के एक भाग का शीर्षक, रूपा॰ वि॰ 151-159; - **सङ्खात** त्रि॰, ब॰ स॰ [अरूपसंख्यात],

वह, जो रूप या आकार से रहित धर्म के रूप में प्रसिद्ध हो, रूप-आकार से रहित कहा जाने वाला – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सा उप्पज्जिस्सतीति अरूपसङ्खातो अत्ता नत्थीति सङ्ख्यं अगन्त्वा तिट्ठतेव नामाति जातो,* ध. स. अट्ठ. 388; – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अरूपेन युत्ता धातु अरूपधातु, अरूपसङ्खाता वा धातु, अरूपधातु,* महानि. अट्ठ. 34; – **सञ्ञी** त्रि., रूपसञ्ञी का निषे. [अरूपसंज्ञिन्], रूप में परिकर्म की संज्ञा न रखने वाला – **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. – *अज्झत्तं अरूपसञ्ञीति अलाभिताय वा अनत्थिकताय वा अज्झत्तरूपे परिकम्मसञ्ञाविरहितो,* दी. नि. अट्ठ. 2.136; *न रूपसञ्ञी अरूपसञ्ञी, सञ्ञासीसेन झानं वदति,* लीन. (दी. नि. टी.) 2.143; – **सन्तति** स्त्री., तत्पु. स. [अरूपसन्तति], रूप-रहित धर्मों की निरन्तरता या लगातारपन – *संयुत्तभाणका पन रूपसन्तती'ति अरूपसन्तती'ति द्वे सन्ततियो वत्वा ...,* ध. स. अट्ठ. 436; – **समापत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [अरूपसमापत्ति], अरूपलोक की प्राप्ति, अरूपलोक में उत्पत्ति – **या** तृ. वि., ए. व. *अरूपसमापत्तिया गमनमग्गेन अपरिहीनो,* महानि. अट्ठ. 288; *अरूपसमापत्तिया रूपकायतो विमुत्तो, मग्गेन नामकायतो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.134; – **यो** प्र. वि., ब. व. – *चत्तारि च झानानि, चतस्सो च अरूपसमापत्तियो – अयं सामयिको विमोक्खो,* पटि. म. 226; – **सत्तकसम्मसनकथा** स्त्री., विसुद्धि. के एक खण्ड का शीर्षक, विसुद्धि. 2.260-264; – **सहगत** त्रि., तत्पु. स. [अरूपसहगत], अरूप-ध्यान के साथ विद्यमान – **तानं** स्त्री., ष. वि., ब. व. – *रूपसहगतानं वा अरूपसहगतानं वा समापत्तीनं, ...,* पु. प. 117; *अरूपसहगतानन्ति रूपतो अञ्ञं, न रूपन्ति अरूपं,* पु. प. अट्ठ. 32; – **पारम्मण** त्रि., ब. स. [अरूपालम्बन], रूप-रहित या निराकार आलम्बनों वाला – **णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *रूपारम्मणञ्च सुखं अरूपारम्मणञ्च सुखं,* अ. नि. 1(1).97; – **पावचर 1.** पु., अरूप ब्रह्मलोक – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *ये अरूपावचरं उपपज्जित्वा परिनिब्बायिस्सन्ति तेसं धम्मायतनं उप्पज्जिस्सति,* यम. 1.144; 149; **2.** त्रि., अरूपलोक के साथ जुड़ा हुआ, अरूप ब्रह्मलोक में अनुभूत, अरूप-ब्रह्मलोक में अत्यधिक घटित होने वाला – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कामावचरो फस्सो रूपावचरो फस्सो अरूपावचरो फस्सो सुञ्ञतो फस्सो,* महानि. 37; *कामञ्च रूपञ्च पहाय अरूपे अवचरती'ति अरूपावचरो, कुसलाब्याकतवसेन द्वादसां रूपावचरचित्तसम्पयुत्तो,* महानि. अट्ठ. 131; **3.** त्रि., उपरिवत्, स. पू. प. में ही प्राप्त; – **कुसल** त्रि., अरूपभूमि का कुशल चेतसिकों से सम्प्रयुक्त चित्त – **लं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अरूपावचरकुसलं,* ध. स. 78; – **ज्झान** नपुं., कर्म. स. [अरूपावचरध्यान], रूपरहित चार आलम्बनों पर चित्त को एकाग्र कराने वाला ध्यान – *यस्मा रूपावचरचतुत्थज्झानम्पि दुवङ्गिकं उपेक्खासहगतं, अरूपावचरज्झानम्पि तादिसमेव,* दी. नि. अट्ठ. 2.93; **देवता** स्त्री., अरूप ब्रह्मलोक के देवता – *मन्दा न सन्निपतिता असञ्ञा अरूपावचरदेवता समापन्नदेवता च,* दी. नि. अट्ठ. 2.243; – **भूमि** स्त्री., कर्म. स., चित्त की क्रियाशीलता का वह चरण, जिसमें चित्त रूपरहित आलम्बनों पर एकाग्र होता है – *चतस्सो भूमियो – कामावचरा भूमि, रूपावचरा भूमि, अरूपावचरा भूमि, अपरियापन्ना भूमि,* पटि. म. 77; – **लोक** पु., कर्म. स., रूपरहित ब्रह्मा का लोक – **के** सप्त. वि., ए. व. – *तस्स रूपावचरे कङ्खा नत्थि, अरूपावचरलोके अत्थि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.88; – **समाधिभावनानिद्देस** पु., तत्पु. स., अभि. अव. के पन्द्रहवें परिच्छेद का शीर्षक, अभि. अव. 128-134.

अरूपी त्रि., रूपी का निषे. [अरूपी], रूपरहित, अभौतिक, निराकार – *रूपी च अरूपी च अत्ता होति ... पे. ... नेवरूपी नारूपी अत्ता होति,* दी. नि. 1.26; *अयञ्हि, भन्ते, आकासो अरूपी अनिदस्सनो,* म. नि. 1.180; – **पिनो** पु., प्र. वि., ब. व. – *रूपिनो वा अरूपिनो वा सञ्ञिनो वा असञ्ञिनो वा नेवसञ्ञीनासञ्ञिनो वा,* मि. प. 205; – **पिसु** पु., सप्त. वि., ब. व. – *पञ्च रूपभवेयेव, चत्तारेव अरूपिसु,* अभि. अव. 40.

अरूपिक त्रि., बिना रूप वाला, अभौतिक, रूपस्कन्ध से असम्बद्ध (केवल स. प. के रूप में ही प्राप्त) – *रूपारूपिकपुञ्ञन्तु रूपारूपभवावहं,* सद्धम्मो. 236.

अरूपिब्रह्म पु., कर्म. स., केवल ब. व. में प्राप्त [अरूपिब्रह्मन्], अरूप-लोक के ब्रह्मा – **नो** द्वि. वि., ब. व. – *एवं सो असञ्ञे च अरूपिब्रह्मानो च ठपेत्वा सब्बत्थ मुहुत्तेनेव आहिण्डित्वा आरोचेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.358.

अरूपिम त्रि., रूपिम का निषे., सुन्दर रूप से विहीन, कुरूप – **मं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *पस्सामि पोसं अलसं महग्घसं, सुदुक्कुलीनम्पि अरूपिमं नरं,* जा. अट्ठ. 5.395.

अरूपूपपत्ति स्त्री., तत्पु. स. [अरूपोपपत्ति], **क.** अरूपलोक में जन्म की प्राप्ति, **ख.** अरूपध्यान की प्राप्ति – **या** च./ष. वि., ए. व. – *यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति,* ध. स. 266; 267; 268; विभ. 195; *अरूपूपपत्तियाति*

अरूपभवो अरूपं, अरूपे उपपत्ति अरूपूपपत्ति, तस्सा अरूपूपपत्तिया, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 245.

अरे / हरे / रे अ॰, [अरे रे], आश्चर्य, घबराहट, असन्तोष, डांट-फटकार एवं तिरस्कार का सूचक निपा॰, अपने से छोटी श्रेणी वाले लोगों के लिए प्रयुक्त सम्बोधन – *अव्हाने भो अरे अम्भो हम्भो रे जेङ्ग आवुसो, हे हरे थ,* अभि॰ प॰ 1139; *आवुसो, अम्भो हम्भो हरे अरे हे इच्चेते एकवचनपुथुवचनवसेन पुरिसानं आमन्तणे,* सद्द॰ 3.894; 895; *अहो वत रे छेका आचरिया, ईदिसानिपि नाम सिप्पानि करिस्सन्ती'ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 251; *सा नून पुन रे पक्का, विकाले भत्तमाहरि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.99; *महाजनो अरे दुट्ठअन्तेवासिक, त्वं आचरियेन सद्धिं सारम्भं करोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.187.

अरोग / आरोग त्रि॰, ब॰ स॰ [अरोग], **शा॰ अ॰** रोग से मुक्त, स्वस्थ, हट्टा कट्टा, अच्छा, भला – **गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोम्हि अरोगो विब्भमिस्सामी'ति ... तं भिक्खु चेव उपट्ठहिंसु, जीवको च कोमारभच्चो तिकिच्छि सो अरोगो विब्भमि,* महाव॰ 91-92. *येन येन भेसज्जेन आतुरो अरोगो होति, तेन तेन भेसज्जेन आतुरं उपसङ्कमति,* मि॰ प॰ 166; – **गा** ब॰ व॰ – *पुत्ता च मे समानिया अरोगा,* सु॰ नि॰ 24; **ला॰ अ॰** अक्षुण्ण, नित्य, मृत्यु के उपरान्त रोग आदि से सर्वथा मुक्त एवं शुद्ध आत्मा – *अरूपी अत्ता होति अरोगो परं मरणा सञ्ञी'ति नं पञ्ञपेन्ति,* दी॰ नि॰ 1.26; *तत्थ अरोगोति निच्चो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101; *एवं वण्णो अत्ता होति अरोगो परं मरणा'ति,* म॰ नि॰ 2.235; – **गा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुखिनी होतु सुप्पवासा कोलियधीता, अरोगा अरोगं पुत्तं विजायतू'ति,* उदा॰ 86; *तावदेवस्स माता अरोगा अहोसि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 149; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अरोगता], स्वस्थ होना, उपद्रवों से मुक्त होना, रोग-रहित होना – *सोभनानं अत्थिता होतु अरोगता निरुपद्दवताति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 142; *आयु अरोगता वण्णं, सग्गं उच्चाकुलीनता,* मि॰ प॰ 309; – **नत्तु** त्रि॰, ब॰ स॰ [अरोगनप्तृ], वह, जिसके नाती स्वस्थ या नीरोग हों – **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन विसाखा मिगारमाता बहुपुत्ता होति बहुनत्ता, अरोगपुत्ता अरोगनत्ता अभिमङ्गलसम्मता,* पारा॰ 292; – **भाव** पु॰, स्वस्थ होना, रोगों से रहित अवस्था, कुशलता – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा मातापितूनञ्च भरियाय च पुत्तानञ्च अरोगभावं पुच्छि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.186; *अथस्स मम अरोगभावं कथेत्वा तं आदाय आगच्छेय्याथ,* जा॰ अट्ठ॰ 3.52.

अरोगी त्रि॰, रोगी का निषे॰ [अरोगिन्], रोगरहित, स्वस्थ, कुशल, क्षय-मुक्त – **गी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरोगी मद्दितं चम्मं, धन्तहेमं निदस्सनं,* अभि॰ अव॰ 90.

अरोचक / अरोचिक पु॰, [अरोचक], भूख का कम लगना, भोजन के प्रति अरुचि या जुगुप्सा – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरोचको आहाररस्स अरुच्चनरोगो,* लीन॰ (दी.नि.टी.) 2.172; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भत्ताच्छादकेनाति भत्तं अरोचिकेन,* महाव॰ अट्ठ॰ 351.

अरोचयति √रुच के वर्त॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पसन्द करता है, मन के लिए रुचिकर मानता है **यिंसु** अद्य॰ प्र॰ पु॰ ब॰ व॰ – *तम्हा च कम्मा विरमिंसु एके, एके च पब्बज्जमरोचयिंसु,* थेरगा॰ 724.

अरोदनकारण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अरोदनकारण], नहीं रोने का कारण – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं सुत्वा सा अरोदनकारणं कथेन्ती ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 54.

अरोदमान त्रि॰, √रुद के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अरोदमान्], नहीं रो रहा / रही – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *केन कारणेन त्वं रोदितुं युत्तकाले अरोदमानाव महाहसितं हसासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.195.

अरोपितजात त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अरोपितजात], बिना रोपे हुए स्वयं उत्पन्न (जंगली फसल) – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *चीनकानीति अटविपब्बतपादेसु अरोपितजाता चीनमुग्गा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.261.

अरोपिम त्रि॰, उपरिवत् – **नं** नपुं॰, प्र॰ / द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महावनं नाम सयंजातं अरोपिमं सपरिच्छेदं महन्तं वनं,* उदा॰ अट्ठ॰ 148; पारा॰ अट्ठ॰ 2.2.

अरोसनेय्य त्रि॰, √रुस के सं॰ कृ॰ रोसनेय्य का निषे॰, वह, जिसे किसी भी तरह रुष्ट या क्रोधित न किया जा सके – **य्यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरोसनेय्यो न सो रोसेति कञ्चि, तं वापि धीरा मुनि वेदयन्ति,* सु॰ नि॰ 218; ... *सो खीणासवमुनि अरोसनेय्यो धीतुमारको'ति वा पेसकारो ति वा एवमादिना नयेन कायेन वा वाचाय वा रोसेतुं, घट्टेतुं, बाधेतुं अरहो न होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.224.

√अल क. तन्द्रा, रोकना, दूर रखना अर्थ वाली एक धातु – *कलिले अलकल द्वयं,* धा॰ मं॰ 66; *मनु-पूर-सुण कु-सु-इल-अल-मह-सि-कि इच्चेवामादीहि धातूहि पाटिपदिकेहि च उस्स-नुस-इस इच्चेते पच्चया होन्ति,* क॰ व्या॰ 675; **ख.** अलङ्करण अर्थ वाली एक धातु – अल भूसने, सद्द॰ 2.434.

√अलि बन्धन अर्थ वाली एक धातु - *अलि बंधने,* धा॰ मं॰ 66.

अळ / अल नपुं॰ / पु॰ [अल], केकड़ें के पञ्जे का शिरा, बिच्छू की पूंछ पर लगा डंक - **ळं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यञ्ञदेव हि सो, भन्ते, कक्कटको अळं अभिनिन्नामेय्य तं तदेव ते कुमारका वा कुमारिका वा, ...,* म॰ नि॰ 1.300; *एवं अळं सिथिलं करिस्सामि, काकं पन नेव विस्सज्जेस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.260; - **ळेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *उप्पलमकुळं विय अळेहि उभिन्नम्पि सीसं कप्पेत्वा जीवितक्खयं पापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.260-261; *सचाहं अळेहि तव गीवं गहेतुं लभिस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.219; - **च्छिन्न** त्रि॰, ब॰ स॰, **क.** पंजे या डंक से रहित; वह, जिसका डंक या पंजा गिर चुका है - **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उद्धटदाठो विय सप्पो, अळच्छिन्नो विय कक्कटको, छिन्नविसाणो विय च उसभो अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.481; **ख.** कटे हुए अंगूठों वाला - **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अळछिन्नोति यस्स चतूसु अङ्गुट्ठकेसु अङ्गुलियं वुत्तनयेनेव एको वा वहू वा अङ्गुट्ठका छिन्ना होन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 292; - **न्नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अळच्छिन्नं पब्बाजेन्ति,* महाव॰ 115; *हत्थच्छिन्नमळच्छिन्नं, पादच्छिन्नञ्च पुग्गलं,* विन॰ वि॰ 2486.

अलं / हलं अ॰, निपा॰, वै॰ अरं का रूपान्तरण [अलं], अनेक प्रकार के आशयों में प्रयोग, **क.** पर्याप्त, यथेष्ट, काफी, युक्त, उपयुक्त, सक्षम, तुल्य (प्रायः निमि॰ कृ॰ अथवा च॰ वि॰ में अन्त होने वाले नामों के साथ प्रयुक्त) - *निपातभूतो पन अयं सद्दो परियत्तिनिवारणत्थवाचको दिस्सति, 'अलं एतं सब्बं' ...,* सद्द॰ 2.434. *अलञ्च पन ते पटिसेवतो अन्तरायाय,* म॰ नि॰ 1.183; *अलं ते अविप्पटिसाराय,* चूळव॰ 411; *अलमेव सद्धेन कुलपुत्तेन दस्सनाय उपसङ्कमितुं अपि पुटोसेना'ति,* दी॰ नि॰ 1.103; *तत्थ अलमेवाति युत्तमेव,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.232; **ख.** निषेध या वर्जन के अर्थ का सङ्केतक, बस, व्यर्थ, हो चुका, रहने भी दो, बेकार - *निसेधे न अ नो मा'लं नहि, चे तु सचे यदि,* अभि॰ प॰ 1147; *न नो मा अ अलं हलं इच्चेते पटिसेधनत्थे,* सद्द॰ 3.889. अनेक रूपों में प्रयोग, **1. निमि॰ कृ॰ के साथ अन्वित** - *तस्मा हि यागुं अलमेव दातुं, निच्चं मनुस्सेन सुखत्थिकेन,* महाव॰ 297; *पञ्चहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो सद्धिविहारिको अलं पणामेतुं,* महाव॰ 61; **2. संबो॰ के साथ अन्वित रहने पर चेतावनी या प्रतिक्षेप अर्थ का सङ्केतक** - *अलं देवदत्त! मा ते रुच्चि सङ्घभेदो,* चूळव॰ 337; *सुत्वा च पन सुभद्दस्सेव अत्थाय महता उस्साहेन आगतत्ता अलं आनन्दाति आदिमाह,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.161; *अलन्ति पटिक्खेपत्थे निपातो,* तदे॰; **3. तृ॰ वि॰ में अन्त होने वाले नामों तथा पू॰ का॰ कृ॰ के साथ अन्वित रहने पर प्रायः बस, बेकार, जैसे अर्थों का सङ्केतक** - *'होतु, भन्ते, अलं एत्तकेना'ति,* मि॰ प॰ 16; *"अलं मे बुद्धेन, अलं मे धम्मेन, अलं मे सङ्घेना'ति वदेही'ति",* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.269; - **मत्थ / मत्त** त्रि॰, ब॰ स॰, उपयोगी, अत्यधिक लाभप्रद, क्षमता या सामर्थ्य से युक्त - *... त्वं वीसतिवस्सुद्देसिकोपि . .. उरुबली बाहुबली अलमत्तो सङ्गामावचरो,* म॰ नि॰ 2.266. - **कम्मनीय** त्रि॰, पूर्णरूप से उपयुक्त - *... उपसङ्कमित्वा तस्सा कुमारिकाय सद्धिं एको एकाय रहो पटिच्छन्ने आसने अलंकम्मनीये निसज्जं कप्पेसि ...,* पारा॰ 292; - **वचनीय** त्रि॰, तिरस्कार या अवमानना के साथ सम्बोधित किये जाने योग्य, अपमान-प्रकाशक शब्दों से सम्बोधित - **यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *परिसमज्झे अलंवचनीयं कत्वा मा पुन गेहं पाविसी'ति विस्सज्जेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.8; - **या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, किसी एक के प्रति समर्पित, परित्यक्ता नारी, गर्हित स्त्री - *तस्स कुकुच्चं अहोसि ... पे ... अलंवचनीया, भिक्खू'ति?,* पारा॰ 223; *नालंवचनीयाति न परिच्चत्ताति अत्थो, या हि यथा यथा येसु येसु जनपदेसु परिच्चत्ता परिच्चत्ताव होति, भरियाभावं अतिक्कमति, अयं अलंवचनीया'ति, वुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.134; - **वचनीयत्त** नपुं॰, भाव॰, अपमानजनक शब्दों से सम्बोधित होना - **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अलंवचनीयत्तं वा, पण्णत्तिं वा अजानतो,* विन॰ वि॰ 376; - **समक्खाता** पु॰, किसी बात को पर्याप्त रूप से प्रकाशित करने वाला, सक्षम शिक्षक - **तारो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ओवादका विञ्ञापका सन्दस्सका समादपका समुत्तेजका सम्पहंसका अलंसमक्खातारो सद्धम्मस्स दस्सम्पहं,* इतिवु॰ 76; *अलंसमक्खातारोति अलं परियत्तं यथावुत्तं अपरिहापेत्वा सम्मदेव अनुग्गहाधिप्पायेन अक्खातारो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 288; - **समुग्गह** त्रि॰, ब॰ स॰, भिक्षुसङ्घ के दूत आदि के कर्मों को अपने हाथ में लेने में सक्षम - **ग्गहो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दूतेय्यकम्मेसु अलं समुग्गहो, सङ्घस्स किच्चेसु च आहु नं यथा,* महाव॰ 484; *दूतेय्यकम्मेसु अलन्ति अट्ठहि दूतङ्गेहि समन्नागतत्ता सङ्घस्स दूतेय्यकम्मेसु समत्थो, सुट्ठ उग्गण्हातीति समुग्गहो,* महाव॰ अट्ठ॰ 411; - **साकच्छ** त्रि॰, किसी सार्थक संभाषण में संलाप करने में सक्षम - **च्छो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलंसाकच्छो सब्रह्मचारीनं,* अ॰ नि॰ 2(1).75; *पञ्चमे*

अलंसाकच्छोति साकच्छाय युत्तो, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.31; – **साजीव** त्रि॰, भिक्षुसङ्घ में अन्य भिक्षुओं के साथ ठीक से निवास करने तथा अन्य क्रियाकलापों में सक्षम – **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु अलंसाजीवो सब्रह्मचारीनं,* अ॰ नि॰ 2(1).76; *छट्ठे अलंसाजीवोति साजीवाय युत्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.31; – **साटक** त्रि॰, ब॰ स॰, पांच प्रकार के पेटुओं या अत्यधिक मात्रा में भोजन लेने वालों में से एक, पेटूपन के कारण उठी हुई तोंद के कारण ठीक से वस्त्र धारण करने में अक्षम – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महग्घसो चाति महाभोजनो आहरहत्थकअलंसाटकत-त्रवट्टककाकमास-कभुत्तवमितकानं अञ्ञतरो विय,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.290; *यो भुञ्जित्वा अच्चुद्धुमातकुच्छिताय अट्ठितोपि साटकं निवासेतुं न सक्कोति, अयं अलंसाटको,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.56.

अलक¹ पु॰, [अलक], घुंघराले बाल, बालों की लटें, जुल्फें, मस्तक के घूंघर – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कस्स वातेन छुपिता, निद्धन्ता मुदुकाळका,* जा॰ अट्ठ॰ 7.63.

अळक² पु॰, व्य॰ सं॰, एक राजा का नाम – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो अस्सकस्स विसये, अळकस्स समासने,* सु॰ नि॰ 983; *अळकस्स पतिट्ठानं, पुरिमाहिस्सतिं तदा,* सु॰ नि॰ 1017.

अलकमंदा / आळकमन्दा स्त्री॰, [अलकनन्दा], कुबेर (वेस्सवन महाराज) की राजधानी – *देवानं आळकमन्दा नाम राजधानी इद्धा चेव होति फीता च बहुजना च ...,* दी॰ नि॰ 2.110-111; *आळकमन्दाव देवानं, सावत्थिपुरमुत्तमन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 90; *अलका लकमन्दा स्स पुरी, पहरणं गदा,* अभि॰ प॰ 32.

अलका स्त्री॰, [अलका], उपरिवत् – *अलकेव कुबेरस्स सक्कस्सेवामरावती,* चू॰ वं॰ 80.5.

अळक्क¹ पु॰, [अलर्क], सफेद मदार, अकवन – **क्को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्को विकिरणो तस्मिं, त्वळक्को सेतपुप्फके,* अभि॰ प॰ 581; – **माला** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अलर्कमाला], मदार के पुष्पों की माला – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वानरेन वुत्तगाथाय अलक्कमालीति अहितुण्डिकेन कण्ठे परिक्खिपित्वा ठपिताय अलक्कमालाय समन्नागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.277; – **माली** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अलर्कमालिन्], मदार के पुष्पों की माला को धारण करने वाला – *अलक्कमाली तिपुकण्णविद्धो, लट्ठीहतो सप्पमुखं उपेतु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.276; ... *अलक्कमालीति ... अलक्कमालाय समन्नागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.277.

अलक्क² पु॰, [अलर्क], पागल कुत्ता – *स्वानो सुवानो साळूरो सूनो सानो च सा पुमे, उन्मत्तादितमापन्नो अळक्को तिसुणो मनो,* अभि॰ प॰ 519; तुल॰, *शुनको भषकः श्वा स्यात्, अलर्कस्तु स योगितः,* अमर॰ 2(10).22.

अलक्खिक त्रि॰, [अलक्षक, अलक्ष्मक], **शा॰ अ॰** चिह्नों या लक्षणों से रहित, नहीं दिखाई देने योग्य, **ला॰ अ॰** वह, जिसके अशुभ लक्षण स्पष्ट रूप में दिखलाई न पड़ें, अमङ्गलसूचक, दुर्भाग्यजनक, मूर्ख, प्रज्ञाहीन – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *याव पापो अयं देवदत्तो, अलक्खिको,* चूळव॰ 335; *अलक्खिकोति एत्थ न लक्खेतीति अलक्खिको, न जानातीति अत्थो, अहं पापकम्मं करोमीति न जानाति, न लक्खितब्बोति वा अलक्खिको, न पस्सितब्बोति अत्थो,* चूळव॰ अट्ठ॰ 109; – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं काळी अलक्खिका, काळकण्णीति मं विदू ... अलक्खिकाति निप्पञ्ञा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.226; – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कस्मा एवरूपं अलक्खिकं रञ्ञो पच्छिमासने निसीदापेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.277-78; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अलक्ष्यता, अलक्ष्मीकता], ऐश्वर्य-विहीनता, धनसंपत्ति आदि से रहित होना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ नाहं अलक्ख्याति अलक्खिकताय निस्सिरीकताय नाहं गेहतो निक्खमिन्ति योजना,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.399.

अलक्खिपुरिस पु॰, कर्म॰ स॰ [अलक्ष्मीकपुरुष], ऐश्वर्य या सौभाग्य से रहित पुरुष, अभागा, पापी – **स** संबो॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसन्त अन्तिमपुरिस, कलि अलक्खिपुरिस, अवजात अवजातपुत्त,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.180.

अलक्खी स्त्री॰, [अलक्ष्मी], **क.** दुर्भाग्य, विपत्ति, दुर्दशा, बुरी हालत – **क्खिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नहि लक्खिं अलक्खिं वा, अञ्ञो अञ्ञस्स कारको ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.230; *अलक्खिं नुद महाराज, लक्ख्या भव निवेसनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.107; **ख.** कालकर्णी, अपशकुन, दुर्भाग्यसूचक लक्षण, असमृद्धि की देवी – *अलक्खी काळकण्णीत्थी, अथ लक्खी सिरित्थियं,* अभि॰ प॰ 82; *सिरी तात अलक्खी च, पुच्छिता एतदब्रवुं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.107.

अलक्खिय पु॰, व्य॰ सं॰, एक तमिल-प्रमुख का नाम – *तथा ताड़िगप्पेरुमाळो अळक्खियरायरव्हयो,* चू॰ वं॰ 76.145.

अलगक्कोनार पु., व्य. सं., एक राजकुमार का नाम, जो श्रीलङ्का के शासक विक्कमबाहु चतुर्थ का समकालीन, पेरद्दोषी (आधुनिक पेरादेनिय) का निवासी तथा जयवड्डनकोट्ट नामक नगर का संस्थापक था - *गिरिवंसाभिजातो सो अलगक्कोनारनामको,* चू. वं. 91.3.

अलगद्द पु., [अलगर्द], पानी का सांप, गेंडुअन सांप की कृष्ण-वर्ण वाली प्रजाति का एक सांप - *सिरिंसपो फणी सप्पा'लगद्दा भोगिपन्नग्गा,* अभि. प. 653; तुल., *अलगर्दो, जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ,* अमर. 1(8).5; - **द्दो** प्र. वि., ए. व. - *तस्स सो अलगद्दो पटिपरिवत्तित्वा हत्थे वा बाहाय वा अञ्ञतरस्मिं येवा अङ्गपच्चङ्गे डंसेय्य,* म. नि. 1.187; *गदोति हि विसस्स नामं, तं तस्स अलं परिपुण्णं अत्थीति अलगद्दो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).13; *अलं परियत्तो गदो अस्साति अलगद्दो,* म. नि. टी. (मू.प.) 1(2).83; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *तं किस्स हेतु? दुग्गहितत्ता भिक्खवे, अलगद्दस्स,* म. नि. 1.187; - **द्दत्थिक** त्रि., [अलगर्दार्थिक], पानी के जहरीले सांप की चाह करने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *सेय्यथापि, भिक्खवे, पुरिसो अलगद्दत्थिको अलगद्दगवेसी अलगद्दपरियेसनं चरमानो* ..., म. नि. 1.187; *अलगद्दत्थिकोति आसिविसअत्थिको,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).13; - **परियत्ति** स्त्री., कर्म. स. [अलगर्दपर्याप्ति], जहरीले सांप को पकड़ने में प्राप्त फल के समान लाभ-सम्मान पाने के लिए बुद्धवचनों का ज्ञान पाना - *तिस्सो हि परियत्तियो अलगद्दपरियत्ति नित्थरणपरियत्ति भण्डगारिकपरियत्तीति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).13; *तत्थ यो बुद्धवचनं उग्गहेत्वा एवं चीवरादीनि वा लभिस्सामि, चतुपरिसमज्झे वा मं जानिस्सन्तीति लाभसक्कारहेतु परियापुणाति, तस्स सा परियत्ति अलगद्दपरियत्ति नाम,* तदे.; - **सुत्तन्त** पु., म. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, जिसमें बुद्ध ने अरिट्ठ को उसकी मिथ्या धारणा के विषय में समझाते हुए यह बतलाया है कि जैसे जहरीले सर्प को ठीक से न पकड़ने वाले व्यक्ति को सांप काट लेता है उसी प्रकार बुद्ध वचनों के सही आशय को न पकड़ने वाला व्यक्ति हानि को प्राप्त करता है; म. नि. 1.183-196; - **द्दूपमा** स्त्री., प्र. वि., ए. व., जहरीले सर्प को पकड़ने जैसी - *तत्थ या दुग्गहिता उपारम्भादिहेतु परियापुटा अयं अलगद्दूपमा,* ध. स. अट्ठ. 25.

अलग्ग त्रि., √लग के भू. क. कृ. का निषे. [अलग्न], नहीं लिपटा हुआ, नहीं जुटा हुआ, किसी के साथ नहीं बंधा हुआ, नहीं अवलम्बित - **ग्गो** पु., प्र. वि., ए. व. - *आकासो अलग्गो असत्तो अप्पतिट्ठितो अपलिबुद्धो, ... सब्बकिलेसे च सब्बत्थ अलग्गेन भवितब्बं,* मि. प. 356-357; ... *गच्छन्तो राजहंसो विय कत्थचि अलग्गोयेव मम पुत्तो'ति ...,* ध. प. अट्ठ. 1.343; *एवं सो कत्थचि अलग्गो बहि निक्खमति,* उदा. अट्ठ. 97; **चित्त** त्रि., ब. स. [अलग्नचित्त], इच्छारहित चित्त वाला, आसक्ति-रहित चित्त वाला, अनपेक्ष - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. *एवं करुणं परिदेवन्ते तत्थ तत्थ अनपेक्खो अलग्गचित्तो,* चरिया. अट्ठ. 169; - **ता** स्त्री., भाव. [अलग्नता], अनासक्ति, बिलगाव की स्थिति, निरपेक्षता - **य** तृ. वि., ए. व. - *तमहं अलग्गताय असत्तं पटिपत्तिया सुट्ठु गतत्ता सुगतं, चतुन्नं सच्चानं बुद्धताय बुद्धं ब्राह्मणं वदामीति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 2.414; - **भाव** पु., [अलग्नभाव], उपरिवत् - **वो** प्र. वि., ए. व. - *सब्बं पच्चुपट्ठपेत्वा कमलदले जलबिन्दु विय सब्बत्थ अलग्गभावो,* उदा. अट्ठ. 188; - **भाव-लक्खण** त्रि., ब. स. [अलग्नभावलक्षण], बिलगाव, निरपेक्षता या अनासक्ति के लक्षण वाला - **णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अलग्गभावलक्खणो वा कमलदले जलबिन्दु विय,* ध. स. अट्ठ. 172.

अलग्गनट्ठ त्रि., ब. स. [अलग्नार्थ], अलिप्तता या बिलगाव के अर्थवाला **ट्ठेन** पु., तृ. वि., ए. व. - *अलग्गनट्ठेन अब्भोकासो वियाति अब्भोकासो,* दी. नि. अट्ठ. 1.148.

अलग्गमान त्रि., √लग के वर्त कृ. का निषे., नहीं लगाव रखने वाला, लिप्त न रहने वाला **नं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *असज्जमानन्ति अलग्गमानं,* ध. प. अट्ठ. 2.174.

अळग्वानगिरि पु., सिंहल के राजा परक्कमबाहु प्रथम द्वारा विजित क्षेत्र - **रिं** द्वि. वि., ए. व. - *अळग्वानगिरिं गण्हि महाबलपरक्कमो,* चू. वं. 77.12.

अलंक/अलङ्क पु./नपुं., विशेष प्रकार का आभूषण या गहना - *इमिस्सं हि कवीनं कब्बरचनायं अलंकसद्दो भूसनविसेसं वदति,* सद्द. 2.434.19.

अलंकत्त/अलङ्कत त्रि., अलं + √कर का भू. क. कृ. [अलङ्कृत], **शा. अ.** पर्याप्तरूप से निर्मित, अच्छी तरह से तैयार किया गया, **ला. अ.** सुसज्जित कर दिया गया, विभूषित **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अलङ्कतो चेपि समं चरेय्य,* ध. प. 142; *तत्थ अलङ्कतोति वत्थाभरणेहि पटिमण्डितो,* ध. प. अट्ठ. 2.47; *एकदिवसं नगरं सज्जापेत्वा सक्को देवराजा विय अलङ्कतो अलङ्कतएरावणपटिभागस्स मत्तवरवारणस्स खन्धे निसीदित्वा ...,* जा. अट्ठ. 3.346; *अलङ्कतो मट्ठकुण्डली, मालधारी हरिचन्दनुस्सदो, ... तत्थ*

अलङ्कतोति नानाभरणविभूसितो, जा॰ अट्ठ॰ 4.54; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.18; – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीलालङ्कारेन हि अलङ्कतं सीलकुसुमपिळन्धितं सीलगन्धानुलित्तं सदेवको लोको आलोकेन्तो ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 230; – **तत्तभाव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अलङ्कृतात्मभाव], वस्त्रों एवं आभूषणों आदि से सुसज्जित शरीर वाला/वाली – **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बाहुसच्चसिप्पविनयेहि अलङ्कतत्तभावा, विनयानुरूपं सुभासितं भासमाना,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 125; – **पटियत्त** त्रि॰, पूर्णरूप से सजाया हुआ, सभी तरह से अलङ्कृत – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्ततिमहामत्तो गाथावसाने अरहत्तं पत्वा अलङ्कतपटियत्तोयेव आकासे निसीदित्वा परिनिब्बुतो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.46; *ततो पट्ठाय याव जेतुत्तरनगरा निरन्तरं अलङ्कतप्पटियत्तोव ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.379; – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उप्पीळेत्वा बद्धमालाकपालो विय अलङ्कतप्पटियत्तं मालासनं विय च,* उदा॰ अट्ठ॰ 119; – **रजत-दाम-सदिस** त्रि॰, [अलङ्कृतरजतदामसदृक्], अलंकृत चांदी की पट्टी के समान सुन्दर – **सं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'इतो एथा'ति वत्वा अलङ्कतरजतदामसदिसं हत्थिसोण्डं गहेत्वा तेसं हत्थे ठपेत्वा उदकं पातेत्वा अलङ्कतवारणं ब्राह्मणानं अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.237; – **राजपुत्तगण** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अलङ्कृतराजपुत्रगण], अलङ्कृत या सजे संवरे राजपुत्रों का समूह – **णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलङ्कतराजपुत्तगणो विय सद्धम्मालङ्कतो सङ्घो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 13; – **वारण** पु॰, कर्म॰ स॰ [अलङ्कृतवारण], पूरी तरह से सजाया हुआ हाथी – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... उदकं पातेत्वा अलङ्कतवारणं ब्राह्मणानं अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.237; – **सयन** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अलङ्कृतशयन], अच्छी तरह से सजायी गई सेज या शय्या – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न मे अलङ्कतसयनं सादियिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.2.

अलङ्कम्मनिय त्रि॰, कर्म॰ स॰ [अलंकर्मण्य], काम करने हेतु पूरी तरह से उपयुक्त, हाथ में ले लेने योग्य, काम करने के लिये अच्छा – **ये** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सा कुमारिकाय सद्धिं एको एकाय रहो पटिच्छन्ने आसने अलंकम्मनिये निसज्जं कप्पेसि,* पारा॰ 292; *अलंकम्मनियेति कम्मक्खमं कम्मयोग्गन्ति कम्मनियं, अलं परियत्तंकम्मनियभावायाति अलंकम्मनियं, तस्मिं अलंकम्मनिये, यत्थ अज्झाचारं करोन्ता सक्कोन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.194.

अलङ्करण नपुं॰, [अलङ्करण], **क.** अलङ्कृत करना, सजाना संवारना – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलङ्कारेनाति पटिजग्गनपुब्बकेन अलङ्करणेन,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.203; **ख.** सन्तुष्टि या आनन्द पाना, केवल स॰ पू॰ प॰ के रूप में, अनलङ्करण के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **चुण्ण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अलङ्करणचूर्ण], सजने-संवरने के उपयोग में लाया जाने वाला चूर्ण या पाउडर – **ण्णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वड्ढमानन्ति अलङ्करणचुण्णं,* वजिर॰ टी॰ 25.

अलङ्करोति अलं + √कर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अलङ्करोति], सजाता है, वस्त्र या आभूषण धारण करता है, अलङ्कृत करता है – **ङ्करुमानो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्मासम्बुद्धो छब्बण्णबुद्धरस्सियो विस्सज्जेत्वा पुब्बकोट्ठकनदीतीरे लोकं अलङ्करुमानो अट्ठासि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.113; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पाचीनसमुद्दजलतलं छिन्दमानं विय आकासं अलङ्करुमानं विय दिब्बं चक्करतनं पातुभवति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.157; – **ङ्कर** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तेन हि, वधु, येन अलङ्कारेन अलङ्कता पुत्तस्स मे सुदिन्नस्स पिया अहोसि, मनापा तेन अलङ्कारेन अलङ्करा'ति,* पारा॰ 17; – **ङ्करोहि** उपरिवत् – *उय्यानं गन्त्वा महापुरिसे दिब्बालङ्कारेहि अलङ्करोही'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.70; – **ङ्करित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *राजा सब्बालङ्कारं अलङ्करित्वा अमच्चगणपरिवुतो नङ्गलकरणट्ठानं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.68; – **अनलङ्क–** पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ – *खिड्डं रतिं कामसुखञ्च लोके, अनलङ्करित्वा अनपेक्खमानो,* सु॰ नि॰ 59; *अनलङ्करित्वा अलन्ति अकत्वा, एतं तप्पकन्ति वा सारभूतन्ति वा एवं अग्गहेत्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.89; – **ङ्करापेतुं** प्रेर॰, निमि॰ कृ॰ – **कामो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अलङ्कृत करवाने की कामना वाला – *अत्थङ्गते सूरिये मङ्गलसिलापट्टे निसीदि अत्तानं अलङ्कारापेतुकामो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.70; – **ङ्करापेत्वा** प्रेर॰, पू॰ का॰ कृ॰, अलङ्कृत कराके – *मग्गं समं कारेत्वा कदलिपुण्णघट-धजपटाकादीहि अलङ्कारापेत्वा देवि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.62.

अलङ्कार पु॰, अलं + √कर से व्यु॰ [अलङ्कार], **शा॰ अ॰** पर्याप्त रूप से तैयार कर देना, **ला॰ अ॰** सजावट, गहना, आभूषण – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयमस्स पच्छिमो अलङ्कारो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.70; – **राय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलङ्काराय संवत्तन्ति,* पटि॰ म॰ 42; *अविप्पटिसारादिपवत्तिया मूलकारणं हुत्वा समाधिस्स सद्धिन्द्रियादिअलङ्कारसाधनेन अलङ्काराय संवत्तन्ति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.193; – **चुण्ण** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अलङ्कारचूर्ण], मुख को सजाने हेतु लगाया जाने वाला चूर्ण या पाउडर – **ण्णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वड्ढमानं ति*

अलङ्कारचुण्णं, म॰ वं॰ टी॰ 265; – **जनितसोभारागी** त्रि॰, [अलङ्कारजनितशोभारागिन्], अलङ्कारों से उत्पन्न शोभा के प्रति राग या लगाव रखने वाला – **गिनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोहिनकं लोहितमक्खितपटिक्कूलभावप्पकासनतो अलङ्कारजनित-सोभारागिनो सप्पायं,* विसुद्धि॰ 1.185; – **रञ्जन** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अलङ्काराञ्जन], साज-सजावट या अलङ्करणहेतु प्रयुक्त अञ्जन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्जनन्ति अलङ्कारञ्जनमेव,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.79; – **त्थम्भ** पु॰, कर्म॰ स॰ [अलङ्कारस्तम्भ], सजावट के लिये खड़ा किया गया स्तम्भ या खम्भा – *एसिकत्थम्भो इन्दखीलो नगरसोभनो अलङ्कारथम्भो,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 2.175; – **दण्डक** पु॰, कर्म॰ स॰ [अलङ्कारदण्डक], घूमने के समय प्रयुक्त मनोहर या सुन्दर छड़ी – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरे चतुहत्थदण्डं वा अञ्ञं वा पन अलङ्कतदण्डकं गहेत्वा विचरन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.80; – **दान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अलङ्कारदान], अलङ्कारों का दान – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलङ्कारानुप्पदानेनाति अत्तनो विभवानुरूपेन अलङ्कारदानेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.125; – **पटिमण्डित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अलङ्कारप्रतिमण्डित], गहनों से सजा/सजी – **मण्डिता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तावदेव नं सहजाता सट्ठिसहस्सा अमच्चा सब्बालङ्कारप्पटिमण्डिता परिवारयिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 7.374; – **परिभोगूपग** त्रि॰, अलङ्कारों के उपभोग के लिये उपयोगी – **पगं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं इमेहि द्वीहि पदेहि यं मनुस्सानं वोहारूपगं अलङ्कारपरिभोगूपगञ्च जातरूपरजतमुत्तामणिवेळुरियपवाळलोहितङ्कमसार-गल्लादिकं* ..., खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 136; – **पलिबोध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अलङ्कारपरिरोध], अलङ्करण के लिये रुकावट या बाधा – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलङ्कारपलिबोधो मण्डनपलिबोधो तेलमक्खनपलिबोधो धोवनपलिबोधो मालापलिबोधो,* मि॰ प॰ 10; – **भण्डक** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अलङ्कारभाण्डक], अलङ्करण करने हेतु प्रयुक्त सामग्री या साजोसामान, सजावट की सामग्रियां – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्तस्स तुस्सित्वा ब्राह्मणस्स सोळस गोणे अलङ्कारभण्डकं निवासगामञ्चस्स ब्रह्मदेय्यं दत्वा महन्तेन यसेन ब्राह्मणं उय्योजेसीति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.69; जा॰ अट्ठ॰ 2.138; – **रथ** पु॰, कर्म॰ स॰ [अलङ्काररथ], सजाया हुआ शाही रथ, अलङ्कृत रथ – **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रथो च नामेसो दुविधो होति – योधरथो, अलङ्काररथोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).96; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.156; *अलङ्काररथो महा होति, दीघतो दीघो, पुथुलतो पुथुलो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).96; – **लोल** त्रि॰, ब॰ स॰ [अलङ्कारलोल], अलङ्कारों के प्रति लोभ या लालच रखने वाला/वाली – **ला** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनागतस्मिञ्हि इत्थियो पुरिसलोला सुरालोला अलङ्कारलोला विसिखालोला आमिसलोला भविस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.323; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, अलङ्कारों के प्रति लालच या लोभ – **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चहि लोलताहि लोलो होति – आहारलोलताय अलङ्कारलोलताय, परपुरिसलोलताय, धनलोलताय पादलोलताय,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.30; – **विभूसित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अलङ्कारविभूषित], गहनों से सजा हुआ/सजी हुई – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा दिब्बवत्थनिवत्था दिब्बालङ्कारविभूसिता सब्बकामसमिद्धा देवच्छरापटिभागा अहोसि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 39; – **रानुप्पदान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अलङ्कारानुप्रदान], गहनों या सजावट-सामग्रियों का दान – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्माननाय अनवमाननाय अनतिचरियाय इस्सरियवोस्सग्गेन, अलङ्कारानुप्पदानेन,* दी॰ नि॰ 3.144; – **रूपविचार** त्रि॰, ब॰ स॰, केवल अलङ्कारों या प्रसाधनसामग्रियों के बारे में सोचते रहने वाला/वाली – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थी खो, ब्राह्मण, पुरिसाधिप्पाया अलङ्कारूपविचारा पुत्ताधिट्ठाना असपतीभिनिवेसा इस्सरियपरियोसाना'ति,* अ॰ नि॰ 2(2).76; *अलङ्कारत्थाय मनो उपविचरति एतिस्साति अलङ्कारूपविचारा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.122.

अलङ्घनीय त्रि॰, √लङ्घ के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अलङ्घनीय], वह, जिसका उल्लंघन न किया जा सके, उल्लंघन न करने योग्य – **यं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो आचरेय्य परदारमलङ्घनीयं,* तेल॰ 80.

अळजनपद पु॰, ब्य॰ सं॰, श्रीलङ्का के एक प्राचीन क्षेत्र का नाम, जहां महाविहार की तीर्थयात्रा से वापस लौटते समय इसिदत्त तथा महासोण नामक भिक्षु रुके थे – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसिदत्तत्थेरोपि अनुपुब्बेन चारिकं चरन्तो अळजनपदं सम्पापुणि,* विभ॰ अट्ठ॰ 421.

अलज्जी त्रि॰, लज्जी का निषे॰ [अलज्जिन्], लज्जा से रहित, बेशर्म – *यदि तेन सद्धिं परिभोगं करोति, सोपि अलज्जीयेव होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.248; *अदूसकानं पुत्तानं, अलज्जी वत ब्राह्मणो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.323; – **ज्जिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन असज्जिपुनब्बसुका नाम कीटागिरिस्मिं आवासिका होन्ति अलज्जिनो पापभिक्खू,* पारा॰ 281; – **ज्जिपग्गह** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अलज्जीप्रग्रह], निर्लज्ज

लोगों को जमकर पकड़ लेना, निर्लज्जियों को समर्थन या संरक्षण – **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरे द्वे पग्गहा, द्वे च परिभोगा – लज्जिपग्गहो, अलज्जिपग्गहो ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.248; – **परिभोग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अलज्जीपरिभोग], निर्लज्जों के साथ मौज-मस्ती, निर्लज्जों के साथ सांसारिक सुखों का उपभोग – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरेपि चत्तारो परिभोगा लज्जिपरिभोगो, अलज्जिपरिभोगो, धम्मियपरिभोगो, अधम्मियपरिभोगोति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.248; – **पुग्गल** पु॰, कर्म॰ स॰ [अलज्जीपुद्गल], निर्लज्ज व्यक्ति – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ *अलज्जिपुग्गले निस्साय वसन्तीति अत्थो,* महाव॰ अट्ठ॰ 296-97; **भाव** पु॰, [अलज्जीभाव], लज्जाहीनता, बेशर्मी – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा यदास्स अलज्जीभावं जानाति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.248; – **वाद** पु॰, [अलज्जीवाद], लज्जाहीन या निर्लज्ज कह कर पुकारना, निर्लज्ज की संज्ञा या उपाधि **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छब्बग्गिया भिक्खू एवं वदन्ति – किस्स तुम्हे, आवुसो अम्हे अलज्जिवादेन पापेथा'ति?,* पाचि॰ 200.

अलज्जिताय त्रि॰, √लज्ज के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अलज्जितव्य], लज्जा न करने योग्य विषय – **ये** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलज्जिताये लज्जन्ति, लज्जिताये न लज्जरे,* ध॰ प॰ 316; *तत्थ अलज्जितायेति अलज्जितब्बेन, भिक्खाभाजनस्मिं अलज्जितब्बं नाम, ... तेन तेसं अलज्जितब्बेन लज्जितं लज्जितब्बेन अलज्जितं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.280.

अलज्जुस्सद त्रि॰, ब॰ स॰ [अलज्योत्सेध], अत्यधिक निर्लज्ज, बढ़ी-चढ़ी बेशर्मी से युक्त – **दे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलज्जुस्सदे गूळ्हेन, विवटेनेव लज्जिसु,* विन॰ वि॰ 2771.

अलज्जुस्सन्ना त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अलज्ज्युत्सन्न], निर्लज्जों से खचाखच भरा हुआ/हुई – **न्ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे अलज्जुस्सना होति, परिसा उब्बाहिकाय वूपसमेतब्बं,* परि॰ 414.

अलञ्जल/अरञ्जर पु॰, [अरञ्जर], बहुत बड़ा पानी का मटका – **रो/लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्जरो उदकचाटि, अलञ्जलो, बहुउदकगण्हनकोति अत्थो,* वजिर॰ टी॰ 481.

अळति[1] √अळ से व्यु॰ वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अडति], प्रयास करता है – *अळ उग्गमे अळति, वाळो,* सद्द॰ 2.460.

अळति[2] √अल से व्यु॰ वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अलति, अलते], सजाता है, सक्षम होता है, रोकता है – *अलति, अलङ्कारो अलङ्कतो अलङ्कतं,* सद्द॰ 2.434; *केचि पन एत्थ अलभूसन परियापन वारणेसू'ति धातुं पठन्ति,* तदे॰.

अलत्तक/अलन्तक पु॰, [अलक्त, अलक्तक], वृक्षों से निकलने वाली राल, लाल रंग की लाख, आलता, महावर – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अलत्तको यावको च लाखा जतु नपुंसके,* अभि॰ प॰ 305; – **कत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अलक्तककृत], महावर या आलता से रंगा हुआ – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अलत्तककता पादा, पादुकारुय्ह वेसिका,* थेरगा॰ 459; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.397; *अलत्तककता पादा, मुखं चुण्णकमक्खितं,* थेरगा॰ 771; – **पटल/पाटल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, महावर या आलता जैसा श्वेतरक्त वर्ण, लाख जैसा रंग – *तेन पच्चूससमये अलत्तकपटलबन्धुजीवकपुप्फसदिसं मंसपेसिं विजायि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).332; खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 128; *अलत्तकपाटलवण्णं उत्तरासङ्गचीवरं एकंसं कत्मेव,* जा॰ अट्ठ॰ 4.103; – **रसरञ्जित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अलक्तकरसरञ्जित], लाख के द्रव द्वारा रंगा हुआ – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *सक्को चीवरकरणट्ठाने भूमिपरिभण्डमकासि, भूमि अलत्तकरसरञ्जिता विय अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.345; – **वण्ण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अलक्तकवर्ण], लाख या महावर जैसे रङ्ग वाला – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तावदेव अलत्तकवण्णं रत्तचन्दनं पज्झायि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.115; – **ण्णानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *थेरस्स हत्थतो मुच्चित्वा अलत्तकवण्णानि भगवतो पादतलानि चन्दनदारुआदीसु ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.175.

अळत्तुरुनाडाल्वार पु॰, व्य॰ सं॰, दो तमिल शासकों की उपाधि या नाम – *अळत्तुरुनाडाल्वारो तयो मण्णयरायरा, कळवण्डियनाडाल्वारो, केरळसीहमुत्तरो,* चू॰ वं॰ 76.141; *अळत्तुरुनाडाल्वरा दुवे पन्दियरायरो,* चू॰ वं॰ 76.184.

अलत्थ √लभ का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, उसने पाया, लाभ प्राप्त किया – *सब्बाव इत्थी कयिरुं नु पापं, अञ्ञं अलत्थ पीठसप्पिनापि सद्धिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.432; *अलत्थाति अलद्धा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.435.

अलद्ध त्रि॰, √लभ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अलब्ध], वह, जिसने कुछ भी प्राप्त नहीं किया है – **द्धस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलद्धस्स च यो लाभो, लद्धस्स चानुरक्खणा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.111; *अलद्धस्साति यो च पुब्बे अलद्धस्स लाभस्स लाभो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.112; – **द्धन्नलवोदक** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसे अन्न एवं जल की एक बूंद तक प्राप्त नहीं हुई है –

दका पु., प्र. वि., ब. व. - *अनच्छादितकोपीना अलद्धन्नलवोदका,* सद्धम्मो. 106.

अलद्धब्ब त्रि., √लभ के सं. कृ. का निषे., नहीं प्राप्त होने योग्य, नहीं मिलने योग्य - **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *पिण्डम्पि अलद्धब्बं अहोसि,* म. नि. 2.198; *एत्थ पूरेतुं अयुत्तट्ठेन कायदुच्चरितादि अविन्दियं नाम अलद्धब्बं ति अत्थो,* सद्द. 2.577.

अलद्धमोक्ख त्रि., ब. स. [अलब्धाधिमोक्ष], सुदृढ़-संकल्प को प्राप्त न करने वाला - **क्खा** पु., प्र. वि., ब. व. - *ये पुब्बबुद्धेसु कताधिकारा, अलद्धमोक्खा जिनसासनेसु,* अप. 1.1.

अलद्धविपाकवार त्रि., ब. स. [अलब्धविपाकवार], परिपाक होने के अवसर को न प्राप्त करने वाला, वह, जिसके परिपाक का अवसर ही नहीं आया है - **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अपरिपक्कवेदनीयन्ति अलद्धविपाकवारं,* अ. नि. अट्ठ. 3.263.

अलद्धा √लभ के पू. का. कृ. लद्धा का निषे. [अलभ्य], नहीं प्राप्त कर - *कथं झायिं बहुलं कामसञ्ञा, परिबाहिरा होन्ति अलद्ध यो त'न्ति,* स. नि. 1(1).148; 149; *अलद्धाति अलभित्वा,* स. नि. अट्ठ. 1.165.

अलद्धाधिमोक्ख त्रि., ब. स. [अलब्धाधिमोक्ष], सुदृढ़-संकल्प को प्राप्त न किया हुआ, संशयालु - **क्खे** पु., सप्त. वि., ए. व. - *विचिकिच्छासहगते अलद्धाधिमोक्खे दुब्बलेपि पटिसन्धिं आकङ्खमाने उद्धच्चसहगतं लद्धाधिमोक्खं बलवं कस्मा नाकङ्खतीति?* ध. स. अट्ठ. 300.

अलद्धूपचार त्रि., ब. स. [अलब्धोपचार], पूर्णरूप से प्रयास न किया गया, आधे-अधूरे रूप में किया गया - **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अलद्धूपचारं सिप्पं फलं न देति ताताति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.235.

अळनागराजमहेसी स्त्री., व्य. सं., नागों की एक रानी - *चित्तलपब्बते भिक्खुना नीहटउदकवाहकं अळनागराजमहेसी विय, एवम्पि वट्टति,* पारा. अट्ठ. 2.234; पाठा. अळन्दनागराजमहेसी.

अलपित त्रि., √लप के भू. क. कृ., लपित का निषे. [अलपित], नहीं कहा गया, नहीं स्थापित या नहीं प्रतिपादित - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. *अभासितं अलपितं तथागतेन भासितं लपितं तथागतेनाति दीपेति,* महाव. 476.

अलब्भ त्रि., √लभ से सं. कृ., लब्भ का निषे. [अलभ्य], नहीं प्राप्त करने योग्य, नहीं मिल सकने योग्य - **ब्भं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यमिदं कम्मं दिट्ठधम्मवेदनीयं तं उपक्कमेन वा पधानेन वा सम्परायवेदनीयं होतूति अलब्भमेतं,* म. नि. 3.7.

अलब्भनीय त्रि., √लभ के सं. कृ., लब्भनीय का निषे. [अलभनीय], उपरिवत् - **यानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *अलब्भनीयानि ठानानि समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं,* अ. नि. 2(1).50; - **यट्ठान** नपुं., कर्म. स. [अलभनीयस्थान], प्राप्त न हो सकने योग्य चीज या वस्तु - **नं** प्र. वि., ए. व. - *पण्डितानं कथं सुत्वा अलब्भनीयट्ठान'न्ति तथतो ञत्वा अप्पमत्तकम्पि सोकं न करिंसू'ति,* जा. अट्ठ. 4.53.

अलब्भनेय्य त्रि., √लभ के सं. कृ., लब्भनेय्य का निषे. [अलभनीय], उपरिवत् - **य्यो** पु., प्र. वि., ए. व. *सचे पजानेय्य अलब्भनेय्यो, मयाव अञ्ञेन वा एस अत्थो,* अ. नि. 2(1).53; जा. अट्ठ. 3.177; - **खेमता** स्त्री., भाव., कुशल-मङ्गल या कल्याण का अप्राप्य होना - **य** प्र. वि., ए. व. - *अतायनताय चेव अलब्भनेय्यखेमताय च अताणतो,* महानि. अट्ठ. 132; - **ट्ठान** नपुं., कर्म. स. [अलभनीयस्थान], नहीं प्राप्त हो सकने योग्य अवस्था या स्थिति - **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यस्मा अलब्भियं, अलब्भनेय्यट्ठानञ्हि नामेतन्ति अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.77; - **पतिट्ठ** त्रि., ब. स. [अलभनीयप्रतिष्ठ], किसी अवस्था पर दृढ़-स्थिति प्राप्त न करने वाला - **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *दुक्खोगाहं अलब्भनेय्यपतिट्ठञ्च, तस्मा गम्भीरं,* ध. स. अट्ठ. 24; *सकलसुत्तन्तं भगवा परेसं पञ्ञाय अलब्भनेय्यपतिट्ठं परमगम्भीरं सब्बञ्ञुतञाणं दस्सेन्तो ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).60; - **वत्थु** नपुं., कर्म. स. [अलभनीयवस्तु], प्राप्त न हो सकने योग्य वस्तु - **स्मिं** सप्त. वि., ए. व. - *आकासेन गच्छन्तस्स चन्दस्स गहेतुकामतासदिसं अलब्भनेय्यवत्थुस्मिं इच्छाभावतोति अधिप्पायो,* पे. व. अट्ठ. 55.

अलब्भिय त्रि., √लभ के सं. कृ., लब्भिय का निषे. [अलभ्य], नहीं पाए जाने योग्य, अप्राप्य - **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *जातो मे मा मरी पुत्तो, कुतो लब्भा अलब्भियं,* जा. अट्ठ. 4.77; *यस्मा अलब्भियं, अलब्भनेय्यट्ठानञ्हि नामेतन्ति अत्थो,* तदे..

अलमत्थ / अलमत्त त्रि., ब. स. [अलमर्थ], सक्षम, समर्थ, योग्य, निपुण - **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. - *एवं भोगे समाहत्वा, अलमत्तो कुले गिही,* दी. नि. 3.143; *अलमत्थोति युत्तसभावो समत्थो वा परियत्तरूपो घरावासं सण्ठापेतुं,* दी.

नि॰ अट्ठ॰ 3.121; – **तर** त्रि॰, तुल॰ विशे॰, अधिक योग्य, अधिक सामर्थ, अधिक निपुण – **तरा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तुम्हे तेन पण्डिततरा च ब्यत्ततरा च बहुस्सुततरा च अलमत्थतरा च,* चूळव॰ 2; *अलमत्थतराति समत्थतरा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 1.

अलमत्थदस त्रि॰, [अलमर्थदृक्], हितकारी या उपयोगी बातों को देखने में समर्थ (ऋषि) – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अलमत्थदसतरेहीति एत्थ अत्थे पस्सितुं समत्था अलमत्थदसा, ते अतिसित्वा ठिता अलमत्थदसतरा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.359; – **दसतर** त्रि॰, तुल॰ विशे॰, हितकारक बातों को देखने में अधिक समक्ष या समर्थ – **तरो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलमत्थदसतरो चेव पितरा; येपिस्स पिता अत्थे अनुसासि, तेपि जोतिपालस्सेव माणवस्स अनुसासनिया'ति,* दी॰ नि॰ 2.170; *अलमत्थदसतरोति समत्थो पटिबलो अत्थदसो अलमत्थदसो, तं अलमत्थदसं तिरेतीति अलमत्थदसतरो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.227.

अलमत्थविचिन्तक त्रि॰, [अलमर्थविचिन्तक], हितकारक एवं उपयोगी बातों का निश्चय करने में सक्षम – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पण्डितं वत मं सन्तं, अलमत्थविचिन्तकं,* थेरगा॰ 252; *अलमत्थविचिन्तकन्ति अत्तनो च परेसञ्च अत्थं हितं विचिन्तेतुं समत्थं, अलं वा परियत्तं अत्थस्स विचिन्तकं, किलेसविद्धंसनसमत्थं अत्थदस्सिनं वा, सब्बमेतं अत्तनो अन्तिमभविकताय थेरो वदति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.405.

अलमरिय त्रि॰, कर्म॰ स॰, आर्य होने में सक्षम, आर्य की पहचान करने में सक्षम, आर्य बनाने वाली बातों को जानने में समर्थ – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ अलमरियं ञातुन्ति अलमरियो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).334; – **या** ब॰ व॰ – *ये इमेसं भवतं धम्मा अकुसला अकुसलसङ्खाता, सावज्जा सावज्जसङ्खाता, असेवितब्बा असेवितब्बसङ्खाता, न अलमरिया न अलमरियसङ्खाता, कण्हा कण्हसङ्खाता ...,* दी॰ नि॰ 1.148.

अलमरियञाणदस्सन त्रि॰, उत्तम ज्ञान एवं दर्शन को प्राप्त करने में सक्षम – **नं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो पन भिक्खु अनभिजानं उत्तरिमनुस्सधम्मं अत्तुपनायिकं अलमरियञाणदस्सनं समुदाचरेय्य,* पारा॰ 110; 111; *अलमरियञाणदस्सनन्ति एत्थ लोकियलोकुत्तरा पञ्ञा जाननट्ठेन ञाणं, चक्खुना दिट्ठमिव धम्मं पच्चक्खकरणतो दस्सनट्ठेन दस्सनन्ति ञाणदस्सनं, ... तत्थ येन ञाणदस्सनेन सो अलमरियञाणदस्सनोति वुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.73; – **विसेस** पु॰, तत्पु॰ स॰, उत्तम ज्ञान एवं दर्शन की क्षमता की सबसे उत्कृष्ट अवस्था – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नत्थि समणस्स गोतमस्स उत्तरिमनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसो,* म॰ नि॰ 1.99; *अलमरियो च सो ञाणदस्सनविसेसो चाति अलमरियञाणदस्सनविसेसो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).334; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इरियाय ताय पटिपदाय ताय दुक्करकारिकाय नाज्झगमं उत्तरिं मनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसं,* म॰ नि॰ 1.115.

अलंपञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [अलंप्रज्ञ], समझदार, परिपक्व बुद्धि वाला – **ञ्ञो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यतो च खो, भिक्खवे, सो कुमारो बुद्धो होति अलंपञ्ञो,* अ॰ नि॰ 2(1).6; *अलंपञ्ञोति युत्तपञ्ञो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.3.

अलंपतेय्य स्त्री॰, पति प्राप्त करने हेतु उपयुक्त आयु वाली, विवाह करने योग्य आयु को प्राप्त नारी – **य्या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मनुस्सेसु पञ्चवस्सिका कुमारिका अलंपतेय्या भविस्सन्ति,* दी॰ नि॰ 3.52; *अलंपतेय्याति पतिनो दातुं युत्ता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.33.

अलम्बत्थना / अलम्बत्थनी स्त्री॰, ब॰ व॰ [अलम्बसस्तनो], वह नारी, जिसके स्तन नीचे की ओर लटके हुए न हो, कठोर स्तनों वाली युवती – **नियो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *महासत्तस्स पन अतिदीघादिदोसवज्जिता अलम्बत्थनियो मधुरथञ्ञायो चतुसट्ठि धातियो अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.3; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अलम्बस्तनता], स्तनों के लटकते न रहने की स्थिति में होना, स्तनों का कठोर होना – *अनुन्नतकुच्छिता छट्ठो अलम्बत्थनता सत्तमो, अपलितभावो अट्ठमो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.232.

अलम्बित त्रि॰, √लम्ब के भू॰ क॰ कृ॰ लम्बित का निषे॰, वह, जिसकी प्रगति में कोई बाधा नहीं डाली गई है, बिना हिचकिचाहट वाला – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहापेत्वा अलम्बित्वाति अपरिहीनं अलम्बितं कत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.311.

अलम्बित्वा √लम्ब के पू॰ का॰ कृ॰, प्रेर॰ लम्बित्वा का निषे॰, बिना देरी के, बिना बाधा या हिचकिचाहट के – *अहापेत्वा अलम्बित्वा परिपूरं वित्थारेन परस्स अवण्णं भासिता होति,* अ॰ नि॰ 1(2).89; *अहापेत्वा अलम्बित्वाति अपरिहीनं अलम्बितं कत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.311.

अलम्बुसा स्त्री॰, एक अप्सरा का नाम – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'देवकञ्ञं पराभेत्वा, सुधम्मायं अलम्बुस'न्ति ... पण्डुकम्बलसिलासने निसिन्नो तं अलम्बुसं पक्कोसापेत्वा*

इदमाह, जा॰ अट्ठ॰ 5.146; *सक्कट्ठानं नु खो तापसो पत्थेती'ति अलम्बुसं नाम देवकञ्ञं तापसस्स तपं भिन्दित्वा एही'ति पेसेसि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.274; – **जातक** नपुं॰, जा॰ अट्ठ॰ के 523वें जातक का शीर्षक, जिसमें अलम्बुसा नामक एक अप्सरा के द्वारा इसिसिङ्ग नामक ऋषि को तपोभ्रष्ट करने के असफल प्रयास का कथानक दिया गया है, जा॰ अट्ठ॰ 5.145-156.

अलवणभोजी त्रि॰, [अलवणभोजी], बिना नमक का भोजन खाने वाला, नमकीन या नमकयुक्त भोजन न खाने वाला – *असुरियंपस्सानि मुखानि, अचन्दमुल्लोकिकानि मुखानि, असद्धभोजी, अलवणभोजी, अपुनगेय्या गाथा,* सद्द॰ 3.744.

अलस¹ त्रि॰, [अलस], आलसी, सुस्त, अकर्मण्य – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निक्कोसज्जो अकिलासु, मन्दो तु अलसो'प्यथ,* अभि॰ प॰ 516; ... *यथा-मनुस्सो, ... इल्लिसो, अलसो, महिसो सीसं कीसं,* क॰ व्या॰ 675; *अलसो कोधपञ्ञाणो, तं पराभवतो मुखं,* सु॰ नि॰ 96; *अलसोति जातिअलसो अच्चन्ताभिभूतो थिनेन ठितट्ठाने ठितो एव होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.134; – **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकम्मकाया अलसा महग्घसा,* अ॰ नि॰ 2(2).230; *अलसाति निसिन्नट्ठाने निसिन्नाव ठितट्ठाने ठिताव होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.178; – **जातिक** त्रि॰, [अलसजातिक], आलसी स्वभाव वाला, स्वभाव से ही सुस्त या निष्क्रिय रहने वाला – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलसजातिका अम्हाकं धीता, एतिस्सा सामिको कञ्चिकमत्तम्पि न लभिस्सति मञ्ञे'ति* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.218; – **कस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतरस्स सत्तस्स अलसजातिकस्स एतदहोसि,* दी॰ नि॰ 3.66; – **ता** स्त्री॰, अलस का भाव॰ [अलसता], आलस्य, निष्क्रियता, निकम्मापन, सुस्ती – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेवं अलसताय कम्मन्ते अप्पयोजेत्वा वप्पमङ्गलादीसु पिण्डाय चरित्वा* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.112; *अलसो अलसताय मन्तितं अत्थं ब्यापादेति,* मि॰ प॰ 103; – **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अलसभाव], आलस्य, सुस्ती, निष्क्रियता – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *युवा बलीति पठमयोब्बने ठितो बलसम्पन्नोपि हुत्वा अलसभावेन उपेतो होति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.236.

अलसक पु॰, [अलसक], पेट का एक रोग, अपच या अजीर्णता का रोग, अतिभोजन – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अचेलो कोरक्खत्तियो सत्तमं दिवसं अलसकेन कालङ्करिस्सति,* दी॰ नि॰ 3.5; *अलसकेनाति अलसकब्याधिना,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.5; *अलसकेनाति अजीरणेन आमरोगेन,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 3.5.

अलसताळम्बर नपुं॰, समा॰ द्व॰ स॰, दो प्रकार के वाद्य – *अलसो च ताळम्बरञ्च अलसताळम्बरं,* मो॰ व्या॰ 3.19.

अलसन्द¹ पु॰, व्य॰ सं॰, यूनानियों के अधीनस्थ एक द्वीप का नाम, जहां यूनानी शासक मिलिन्द का जन्म हुआ – *अत्थि, भन्ते, अलसन्दो नाम दीपो, तत्थाहं जातो'ति,* मि॰ प॰ 91; – **न्दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महासमुद्दं पविसित्वा वङ्गं तक्कोलं चीनं सोवीरं सुरट्ठं अलसन्दं कोलपट्टनं सुवण्णभूमिं गच्छति,* मि॰ प॰ 324.

अलसन्द² पु॰, सिंहली सूचियों में उल्लिखित यूनानियों का एक सुदूरवर्ती बन्दरगाह – *योननगरालसन्दा योनमहाधम्मरक्खितो,* म॰ वं॰ 29.39; *योननगरालसन्दा ति योनविसयम्हि अलसन्दा नाम नगरपरिवत्ततो ति वुत्तं होति,* म॰ वं॰ टी॰ 481.

अलसन्दक पु॰, अलसन्दा नामक यूनानी नगर या द्वीप का निवासी – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अलसन्दका पल्लवका, धम्मरा निग्गमानुसा,* अप॰ 1.394.

अलसुण नपुं॰, लसुण का निषे॰ [अलशुन], लहसुन से भिन्न कुछ और – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लसुणे अलसुणसञ्ञा खादति, आपत्ति पाचित्तियस्स ... अलसुणे लसुणसञ्ञा खादति, आपत्ति दुक्कटस्स, अलसुणे वेमतिका खादति, आपत्ति दुक्कटस्स, अलसुणे अलसुणसञ्ञा खादति, अनापत्ति,* पाचि॰ 353-54.

अलात¹ / आलात नपुं॰, [अलात], आग का अंगार, अलाव, अधजली लकड़ी – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुक्कुळो तुण्हभस्मस्मिं, अङ्गारो'लातमुम्मुकं,* अभि॰ प॰ 36; *जवतो पनस्स सरीरं अन्धकारे परिब्भमन्तं अलातं विय खायति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.284; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा अलातं गहेत्वा निद्दायमाना विय निसीदित्वा वीहिखादनत्थाय एळके सम्पत्ते उट्ठाय अलातेन एळकं पहरि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.462; – **तानि** ब॰ व॰ – *सक्को अलातानि समानेन्तो अग्गिं जालेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.78; – **खण्ड** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अलातखण्ड], आग के अंगारो का एक हिस्सा, अलाव का एक भाग – **ण्डं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलातखण्डं वा अङ्गारपिण्डो वा छारिका वा धूमो वा उपट्ठाति,* विसुद्धि॰ 1.164; – **तग्गिसिखा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अलाताग्निशिखा], आग के अङ्गारों की लौ या लपट, अलाव से बाहर निकल रही लौ – *बलवता पुरिसेन आविञ्छनअलातग्गिसिखा विय उय्यानपाकारमत्थके*

पञ्ञायित्थ, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.116; - **चक्क** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अलातचक्र], मण्डलाकार आग का अलाव, गोल आकार वाला आग का अंगारा - **क्कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मायामरीचिसुपिनन्तअलातचक्कगन्धब्बनगरफेणकदलिआदयो विय अस्सारा निस्साराति चापि उपट्ठहन्ति,* विसुद्धि॰ 2.267; *मण्डलाकारेन अविज्झियमानं अलातमेव अलातचक्कं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.400.

अलात² / अलातक पु॰, व्य॰ सं॰, राजा अंगति के सेनापति का नाम - *विजयो च सुनामो च अलातो चाति तयो अमच्चा अहेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.102; *ततो सेनापति रञ्ञो, अलातो एतदब्रवि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.103; *अलातो देवदत्तोसि, सुनामो आसि भद्दजि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.145; *विजयो च सुनामो च सेनापति अलातको,* जा॰ अट्ठ॰ 7.115.

अलाबु नपुं॰, [अलाबु / आलबू, स्त्री॰], लम्बी लौकी, तुमड़ी से बना पान-पात्र, पानी में तैरने वाला तुमड़ी का हलका फल - *कारवेल्लो तु सुसवि, तुम्ब्य लाबु च लाबु सा,* अभि॰ प॰ 596; *सो कुद्दालकेन भूमिपक्कम्मं कत्वा डाकञ्चेव अलाबुकुम्भण्डएळालुकादीनि च वपित्वा तानि विक्किणन्तो कपणजीविकं कप्पेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.299; *यथा पन अलाबुलाबुसद्देसु विसुं विसुं विज्जमानेसु ...,* सद्द॰ 1.218; *यानिमानि अपत्थानि अलाबूनेव सारदे,* ध॰ प॰ 149; - **क** नपुं॰, उपरिवत् - **कं¹** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मत्थलुङ्गस्स पूरितन्ति दधिभरितअलाबुकं विय मत्थलुङ्गभरितं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.210; - **कं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बुद्धस्स पादे धोवित्वा अलाबुकमदासहं,* अप॰ 2.14; - **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेलभाजनेसु विसाणे वा नळियं वा अलाबुके वा ठपेत्वा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.234; - **कटाह** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अलाबुकटाह], तुमड़ी से बना हुआ पात्र या कड़ाही - **हं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उदके अलाबुकटाहं विय आरम्मणे पिलवतीति पिलापनता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 425; - **कटाहसण्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰ [अलाबुककटाहसंस्थान], तुमड़ी के पात्र जैसे आकार वाला - *सीसट्ठीनि सिब्बेत्वा ठपितजज्जरालाबुकटाहसण्ठानानीति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 38; - **पत्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अलाबुपात्र], तुमड़ी से बना हुआ पात्र - **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *निगण्ठसमणा विय अलाबुपत्तं भिक्खू पत्तं अग्गबाहाय पक्खिपित्वा आदाय विचरन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.73; - **लोमस** त्रि॰, कर्म॰ स॰, तुमड़ी के सूक्ष्म-रेशों के समान सूक्ष्म-धागों वाला - **सानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अहं खो पनुदायि, अप्पेकदा गहपतिचीवरानि धारेमि दळ्हानि सत्थलूखानि अलाबुलोमसानि,* म॰ नि॰ 2.209; *अलाबुलोमसानीति अलाबुलोमसदिससुत्तानि सुखुमानीति दीपेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.170.

अलाभ पु॰, लाभ का निषे॰ [अलाभ], लाभ का अभाव, हानि, न्यूनता, कमी - **भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *धम्मेन च अलाभो यो, यो च लाभो अधम्मिको, अलाभो धम्मिको सेय्यो, यं चे लाभो अधम्मिको,* थेरगा॰ 666; *लाभो अलाभो यसो अयसो च, निन्दा पसंसा च सुखञ्च दुक्खं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.84; - **भेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पञ्ञाय च अलाभेन, धम्मस्स च अदस्सना,* जा॰ अट्ठ॰ 6.20; *पञ्ञायाति विपस्सनापञ्ञाय अलाभेन,* जा॰ अट्ठ॰ 6.21; - **क** नपुं॰, अलाभ से व्यु॰, किसी वस्तु के लाभ न होने से उत्पन्न निराशाभाव - **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इमं पस्सित्वा अलाभकेन सुस्सित्वा मरिस्सती'ति, आपत्ति दुक्कटस्स,* पारा॰ 91; *इतरो अलाभकेन सुस्सित्वा मरति, पाराजिकं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.53.

अलाभी त्रि॰, लाभी का निषे॰ [अलाभिन्], लाभ प्राप्त न करने वाला / वाली - *तत्थ द्वे जना उच्छेददिट्ठिं गण्हन्ति, लाभी च अलाभी च, ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.102; - **भिभाव** पु॰, लाभ प्राप्त न होने की अवस्था - **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भिक्खवे, एसो भिक्खु अत्तनो अलाभिभावञ्च अरियधम्मलाभिभावञ्च अत्तनाव अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.232.

अलामक त्रि॰, लामक का निषे॰, अलम्पट, नीचपन से मुक्त - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपापकन्ति अलामकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.277; - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ अनोमदस्सिस्सूति अनोमस्स अलामकस्स पच्चेकबोधिञाणस्स दिट्ठत्ता पच्चेकबुद्धा अनोमदस्सिनो नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 3.361; - **केहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तत्थ अपापकेहीति अलामकेहि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.213; - **दस्सना** स्त्री॰, ब॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, वह, जो असुन्दर अथवा कुरूप न हो, दिखने में सुन्दरी - *सामिकस्स अलामकदस्सना सातिसयं दस्सनीया पासादिका,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 83.

अलायित त्रि॰, √लू के भू॰ क॰ कृ॰ लायित का निषे॰, नहीं काटा गया - *अलायितन्ति लायितट्ठानम्पि तेसं कम्मप्पच्चया अलायितमेव हुत्वा अनूनं परिपुण्णमेव पञ्ञायति,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 3.42.

अळार¹ त्रि॰, [अराल], मुड़ा हुआ, टेढ़ा, वक्र - *अळार वेल्लित वङ्कं कुटिल जिम्ह कुञ्चितं,* अभि॰ प॰ 709.

अळार² / आळार पु॰, व्य॰ सं॰, मिथिला के एक कुटुम्बी या गृहस्थ का नाम - *करोम ते तं वचनं अळार, मित्तञ्च नो होहि विदेहपुत्त,* जा॰ अट्ठ॰ 5.160; *आळारो, सारिपुत्तो,*

सङ्खपालनागराजा पन अहमेव अहोसि'न्ति, जा॰ अट्ठ॰ 5.170.

अळारक्खी त्रि॰, ब॰ स॰ [अरालाक्ष], विशाल नेत्रों वाला – **क्खी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यतो पन मे अयं अळारक्खी विसालनेत्ता सोभनलोचना लद्धा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.293.

अळारपम्ह / अळारपखुम / आळारपम्ह त्रि॰, ब॰ स॰ [अरालपक्ष्मन्], वक्र या तिरछी बरौनियों वाला/वाली, विशाल नयनों वाला/वाली, सुन्दर एवं तिरछी पलकों वाला/वाली – **म्हा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळारपम्हा हसुला, सुसञ्ञा तनुमज्झिमा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.258; *अळारपम्हाति विसालक्खिगण्डा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.260; *आळारपम्हा हसिता पियंवदा,* वि॰ व॰ 1025; *आळारपम्हाति बहलसङ्गतपखुमा, गोपखुमाति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 234; – **म्हेहि** नपुं॰, तृ॰ वि॰ ब॰ व॰ – *अळारपम्हेहि सुभेहि वग्गुभि, पलोभयन्ती मं यदा उदिक्खति, ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.203; *अळारपम्हेहीति विसालपखुमेहि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.204; – **म्हे** संबो॰, ए॰ व॰ – *आळारपम्हे हसिते पियंवदे,* पे॰ व॰ 443; *आळारपम्हेति वेल्लितदीघनीलपमुखे,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 164.

अलालामुख त्रि॰, ब॰ स॰ [अलालामुख], **शा॰ अ॰** वह, जिसके मुख से लार न निकलती हो, **ला॰ अ॰** बचपन की चञ्चलता से रहित, प्रौढ़ बुद्धि वाला – **खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनेळमूगोति अलालामुखो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98.

अलि / अळि पु॰, [अलि], काला भौंरा – *मधुलीहो मधुकरो मधुपो भमरो अली,* अभि॰ प॰ 636; *सरे सरोजे रुदिताळिपाळि समन्तो पस्सति पञ्जरञ्जसा,* जिना॰ 70; *तत्थ कमोळिअलिसेवितन्ति वन्दन्तानं अनेकसतानं ब्रह्मानं मोलिभमरसेवितन्तिसेवितन्ति कवयो इच्छन्ति,* सद्द॰ 1.239.

अलिक क. त्रि॰, [अलीक], असत्य, झूठा, अधम, निन्दनीय, अप्रिय – *अधमो कुच्छिते ऊने, अप्पिये'यलिको भवे,* अभि॰ प॰ 1070; तुल॰, *पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्यात्, अलीकं त्वप्रियेऽनृते,* अमर॰ 3.3.12; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं तेसं तित्थियानं वचनं मिच्छा अभूतं वितथं अलिकं विरुद्धं विपरीतं दुक्खदायकं दुक्खविपाकं अपायगमनीयन्ति,* मि॰ प॰ 110; **ख.** नपुं॰, [अलीक], झूठी या असत्य बात, असत्य कथन या वचन – *लीकं त्वसच्चं मिच्छा मुसाव्ययं,* अभि॰ प॰ 127; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मेन लद्धं सतमस्नमाना, न कामकामा अलिकं भणन्ति,* सु॰ नि॰ 242; *सच्चंयेव भासति नो अलिकं,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 148; *सच्चं भणे नालिकं तं चतुत्थ'न्ति,* सु॰ नि॰ 452; खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 108; *न मुण्डकेन समणो, अब्बतो अलिकं भणं,* ध॰ प॰ 264; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भक्खाति अभूतेन, अलिकेनाभिसारये,* जा॰ अट्ठ॰ 6.207; – **वादी** त्रि॰, [अलीकवादिन्], असत्यवादी, झूठ बोलने वाला – **दी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ अभूतवादीति अरियूपवादवसेन अलिकवादी,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.179; – **दिनं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जिने कदरियं दानेन, सच्चेनालिकवादिनं,* ध॰ प॰ 223; – **ने** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलिकवादिनेति मुसावादिम्हिपि न विस्ससे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.51; – **दिता** स्त्री॰, भाव॰ [अलीकवादिता], असत्य बोलना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मुसावादिनोति दुस्सीला समाना सीलवन्तो मय'न्ति अलिकवादिताय मुसावादिनो,* उदा॰ अट्ठ॰ 210.

अलिखितपोत्थक पु॰, कर्म॰ स॰ [अलिखितपुस्तक, नपुं॰], रिक्त पुस्तक या कोरा कागज, जिस पर कुछ भी नहीं लिखा गया हो – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रित्तपोत्थकोपीति अलिखितपोत्थको,* वि॰ वि॰ टी॰ 2.233.

अलिङ्ग त्रि॰, ब॰ स॰, निषे॰ [अलिङ्ग], तीन लिङ्गों में से किसी भी एक सुनिश्चित लिङ्ग से रहित शब्द – **ङ्गेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुलिङ्गेन वा सलिङ्गेन वा अलिङ्गेन वा सद्धिं समानाधिकरणानि हुत्वा ...,* सद्द॰ 1.226; – **भेद** त्रि॰, ब॰ स॰, निषे॰, लिङ्गों के भेदों से रहित, (क्रियापद) **दं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किरियालक्खणं आख्यातिकं अलिङ्गभेद'न्ति इति,* सद्द॰ 1.27; – **भेदत्त** नपुं॰, भाव॰ [अलिङ्गभेदत्व], लिङ्गों के भेद का न रहना, लिङ्ग-भेद का अभाव होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आख्यातिकस्स किरियालक्खणत्ता अलिङ्गभेदत्ता च तिण्णं लिङ्गानं ...,* सद्द॰ 1.27.

अलित्त त्रि॰, √लिप के भू॰ क॰ कृ॰ लित्त का निषे॰ [अलिप्त], **शा॰ अ॰** नहीं लीपा हुआ, **ला॰ अ॰** अप्रभावित, अप्रदूषित – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनूपलित्तोति तण्हादिट्ठिलेपेहि अलित्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.122; *अनूपलित्तोति तण्हादीहि लेपेहि अलित्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.182; – **त्तं** पु॰ द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलित्तन्ति तं अन्तेवासिकं पापधम्मेन अलित्तं सो आचरियो विसदिद्धो सरो सेसं सरकलापं विय लिम्पति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.394.

अलिनी स्त्री॰, [अलिनी], काले रङ्ग की भ्रमरी या भौंरा – *अत्थं वदता मा वुच्चति लक्खी अलिनी ति भमरी'ति वुत्तं,* सद्द॰ 1.244.

अलिप्पमान त्रि॰, √लिप के कर्म॰ वा॰, वर्त॰ कृ॰, लिप्पमान का निषे॰ [अलिप्पमान], लिप्त न होने वाला, प्रभावित या प्रदूषित न होने वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पदुमंव*

तोयेन अलिप्पमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो, सु. नि. 71; *अकुसलमूलानं पहानवसेन असन्तसन्तो असज्जमानो अलिप्पमानो च वेदितब्बो,* सु. नि. अट्ठ. 1.100; – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *तेसं लेपानं पहीनत्ता लोकेन अलिप्पमानं,* सु. नि. अट्ठ. 1.220; *इमं पदुमं उदके सञ्जातमेव उदकेन अलिप्पमानं ठित'न्ति,* जा. अट्ठ. 3.281.

अलीन त्रि., लीन का निषे. [अलीन], **शा. अ.** नहीं लेटा हुआ, नहीं छिपा हुआ, **ला. अ.** अशिथिल, जागरुक, चौकन्ना – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. *योगिना योगावचरेन कुसलेसु धम्मेसु अलीनमतन्दितं सन्तं मानसं पग्गहेतब्बं,* मि. प. 359; *सम्पहट्ठं यदा चित्तं, अलीनं भवतिनुद्धतं,* महानि. 385; – **चित्त** त्रि., ब. स. [अलीनचित्त], अशिथिल चित्त वाला, आसक्तिरहित या हर तरह के लगावों से मुक्त चित्त वाला – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अलीनचित्तो अकुसीतवुत्ति,* सु. नि. 68; – **त्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *उदग्गचित्तन्ति थिनमिद्धविगमेन सम्पग्गहवसेन अलीनचित्तं,* उदा. अट्ठ. 231; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. *अलीनचित्तस्स तुवं, विक्कन्तमनुजीवसि,* जा. अट्ठ. 4.242; *दुक्खूपनीतं मच्चुमुखा पमोचयि, अलीनचित्तं तं मिगं वदेसी'ति,* तदे.; – **चित्तसन्थार** त्रि., ब. स. [अलीनचित्तसंस्तार], आसक्ति-रहित अथवा सङ्कीर्णतारहित चित्त के फैलाव या विस्तार वाला (शरीर रूपी रथ) – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अलीनचित्तसन्थारो, वुद्धिसेवी रजोहतो,* जा. अट्ठ. 7.142; *अलीनचित्तसन्थारो यथा रथो नाम दन्तमयेन उळारेन सन्थारेन सोभति, एवं तव कायरथोपि दानादिना अलीनअसङ्कुटितचित्तसन्थारो होतु,* जा. अट्ठ. 7.144; – **नज्झासय** त्रि., ब. स. [अलीनाध्याशय], जागरुक चित्तवृत्ति वाला, अतन्द्रित मन वाला – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यो पुरिसो अलीनेन असंकुटितेन चित्तेन पकतियापि अलीनमनो अलीनज्झासयोव हुत्वा अनवज्जट्ठेन कुसलं ...,* जा. अट्ठ. 1.265; – **ता** स्त्री., अलीन का भाव. [अलीनता], अशिथिलता, जागरुकता, चित्त की उदारता अथवा असङ्कीर्णता – *धम्मानुवत्ती च अलीनता च, अत्थस्स द्वारा पमुखा छळेते'ति,* जा. अट्ठ. 1.350; *अलीनता चाति चित्तस्स अलीनता अनीचता, इमिना चित्तस्स असङ्कोचतं पणीतभावं उत्तमभावं दस्सेति,* जा. अट्ठ. 1.351; – **तं** द्वि वि., ए. व. – *अलीनचित्तोति एतेन बलविरियूपत्थम्भानं चित्तचेतसिकानं अलीनतं दस्सेति,* सु. नि. अट्ठ. 1.97; – **मन** त्रि., ब. स. [अलीनमनस्], उदार या असंकीर्ण मन वाला – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अलीनमनो अलीनज्झासयोव हुत्वा अनवज्जट्ठेन कुसलं सन्ततिं सबोधिपक्खियभेदं धम्मं भावेति वड्ढेति,* जा. अट्ठ. 1.265; – **मनस** त्रि., ब. स., उपरिवत् – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यो अलीनेन चित्तेन अलीनमनसो नरो,* जा. अट्ठ. 1.265; **मन-सङ्कप्प** त्रि., ब. स. [अलीनमनसंकल्प], सुदृढ़ या उदार संकल्प करने वाला, उदार मन वाला – **प्पो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अलीनमनसङ्कप्पो, विधुरो एतदब्रवि,* जा. अट्ठ. 7.186; – **विरिय** त्रि., ब. स. [अलीनवीर्य], सुदृढ़ वीर्य से संपन्न – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अलीनवीरियो होति, पग्गहितमनो सदा,* बु. वं. 2.138; जा. अट्ठ. 1.30; – **वुत्ति** त्रि., ब. स. [अलीनवृत्ति], उत्साही मनोवृत्ति वाला, उत्साह भरे मन वाला – **त्तिं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *उड्डाहकं चेपि अलीनवुत्तिं कोमारभत्तारं पियं मनापं,* जा. अट्ठ. 5.445.

अलीनचित्त पु., व्य. सं., एक राजकुमार का नाम, जो बाद में वाराणसी का राजा बना *तस्स नामग्गहणदिवसे पन महाजनस्स अलीनचित्तं पग्गण्हन्तो जातोति अलीनचित्तकुमारो त्वेवस्स नामं अकंसु,* जा. अट्ठ. 2.17; – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *अलीनचित्तं निस्साय, पहट्ठा महती चमू,* जा. अट्ठ. 2.18; ध. प. अट्ठ. 1.309; – **जातक** नपुं., जातक सं. 156 का शीर्षक, जा. अट्ठ. 2.15-19; *इमं दुकनिपाते अलीनचित्तजातकं वित्थारेत्वा कथेसि,* ध. प. अट्ठ. 1.309.

अलीनसत्तु / अलीनसत्त पु., व्य. सं., उत्तरपञ्चाल नगर के राजा जयद्दिस के पुत्र के रूप में उत्पन्न एक बोधिसत्व का नाम – *सामि अलीनसत्तु यस्मा त्वं अनधिमनोसि,* जा. अट्ठ. 5.27; – **कुमार** पु., उपरिवत् – **रो** प्र. वि., ए. व. – *... अग्गमहेसी राहुलमाता, अलीनसत्तुकुमारो पन अहमेव अहोसिन्ति,* जा. अट्ठ. 5.31; 32; *तदा बोधिसत्तो तस्स अग्गमहेसिया कुच्छिम्हि निब्बत्ति, अलीनसत्तुकुमारोतिस्स नामं करिंसु,* जा. अट्ठ. 5.21; – **त्तुं** द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ अलीनसत्तुन्ति एवंनामकं कुमारं ...,* जा. अट्ठ. 5.24; – **त्ते** सप्त. वि., ए. व. – *आवी रहो वापि मनोपदोसं, नाहं सरे जातुमलीनसत्ते,* जा. अट्ठ. 5.26; ... *जातु एकंसेन अलीनसत्ते मम भातिके अहं सम्मुखा वा परम्मुखा वा मनोपदोसं न सरामि,* तदे.

अलुत्त-विभत्तिक त्रि., ब. स. [अलुप्तविभक्तिक], वह पद, जिसकी विभक्तियों का लोप नहीं हुआ है, विभक्तिप्रत्ययसहित पद – **केन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *अलुत्तविभत्तिकेन पदेन सह पदानं समासो होति,* सद्द. 3.743.

अलुत्त-समास पु., कर्म. स. [अलुप्तसमास], ऐसा समासपद, जिसके पूर्वपद की विभक्तियों का लोप न हुआ हो - **सो** प्र. वि., ए. व. - *तस्सपापियसिकाकम्मन्ति च अलुत्तसमासोयेव, तेनाह इदं ही'ति आदि,* वि. वि. टी. 2.210; *सो च समासो किच्चवसेन लुत्तसमासो अलुत्तसमासो ति दुविधो,* सद्द. 3.745; - **से** सप्त. वि., ए. व. - *ब्राह्मणा'ति आदिसु अत्थसमसनं अलुत्तसमासे,* सद्द. 3.741.

अलुद्ध त्रि., √लुभ के भू. क. कृ. लुद्ध का निषे. [अलुब्ध], लोभ से रहित, निर्लोभी, लगाव या लालच से मुक्त - **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अलुद्धो पनायं, भद्दिय, पुरिसपुग्गलो लोभेन अनभिभूतो अपरियादिन्नचित्तो नेव पाणं हनति,* अ. नि. 1(2).222; *तत्थ अलोलोति अलुद्धो,* जा. अट्ठ. 7.193; - **द्धा** ब. व. - *न हि अलुद्धा एवरूपानि कम्मानि करोन्ति,* जा. अट्ठ. 4.12; - **चित्त** त्रि., ब. स. [अलुब्धचित्त], लोभमुक्त चित्त वाला, लगाव या लालच से रहित चित्त वाला - **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *इध पन, भिक्खवे, भिक्खू अलुद्धचित्ता विवदन्ति,* चूळव. 197.

अलुब्भन नपुं., √लुभ से व्यु. क्रि. ना., लुब्भन का निषे., लोभ या लालच न करना, आसक्ति न रखना - *सयं वा न लुब्भति, अलुब्भनमत्तमेव वा तन्ति अलोभो,* ध. स. अट्ठ. 172; अभि. अव. (पृ.) 21; - **क** त्रि., 1. लोभ न करने वाला, 2. नपुं., अलोभ, लालच का अभाव - *अलोभनिद्देसे अलुब्भनकवसेन अलोभो,* ध. स. अट्ठ. 193; - **ना** स्त्री., अलुब्भन से व्यु., लोभ या लालच का न होना - *यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना,* ध. स. 32; *अलुब्भनाति अलुब्भनाकारो,* ध. स. अट्ठ. 193; - **नाकार** पु., निर्लोभता का आचरण - **रो** प्र. वि., ए. व. - *अलुब्भनाति अलुब्भनाकारो,* ध. स. अट्ठ. 193.

अलुब्भित त्रि., √लुभ के भू. क. कृ., लुब्भित का निषे. [अलुब्ध], लोभ या लालसा से मुक्त, निर्लोभी - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *अलुब्भितस्स भावो अलुब्भितत्तं,* ध. स. अट्ठ. 194; - **त्तं** नपुं., भाव., प्र. वि., ए. व. [अलुब्धत्व], लोभ से मुक्त होना, निर्लोलुपता, निराकांक्षता - *यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा,* ध. स. 32; 312.

अलुळित त्रि., √लुळ के भू. क. कृ., लुळित का निषे. [अलुलित], नहीं हिलाया हुआ, परिशुद्ध, साफ सुथरा - *अलुळितोति न कललीभूतो,* महानि. अट्ठ. 304; *आपो सुसण्ठितमकम्पितमलुळितसभावपरिसुद्धो ... अपनेत्वा सुसण्ठितमकम्पितमलुळितसभावपरिसुद्धाचारेन भवितब्बं,* मि. प. 351.

अलूख त्रि., लूख का निषे. [अरुक्ष], नहीं रूखा, रूखेपन से रहित, चिकना, साफ-सुथरा - **खं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *मज्झे कण्हं होति सुकण्हं अलूखं सिनिद्धं पासादिकं दस्सनेय्यं अद्दारिट्ठकसमानं,* महानि. 261; *अलूखन्ति पासादिकं,* महानि. अट्ठ. 305.

अलेण 1. नपुं., लेण का निषे., तत्पु. स. [अलयन], शरण या आश्रय का अभाव, विश्राम या विश्राम-स्थल का अभाव, अशरण स्थल, अनाश्रय - **तो** प. वि., ए. व. - *पभङ्गुतो अधुवतो अताणतो अलेणतो असरणतो ... आदीनवतो निस्सरणतो तीरेति - अयं तीरणपरिञ्ञा,* महानि. 38; *अल्लीयितुं अनरहताय, अल्लीनानम्पि च लेणकिच्चाकारिताय अलेणतो ...,* महानि. अट्ठ. 132; मि. प. 392; **2**. त्रि., **क**. आश्रय-रहित, शरण न देने वाला, टिकने की जगह से रहित - **णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अलेणो लोकसन्निवासोति,* पटि. म. 116; *अतायनो लोकसन्निवासो, अलेणो, असरणो, असरणीभूतो,* उदा. अट्ठ. 113; **ख**. वह, जिसे कहीं आश्रय या शरण नहीं मिली है, बेसहारा - **णा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अलेणा अनगारा च, नीलमञ्चपरायणा,* पे. व. 120; *अब्भाहता दुक्खे पतिट्ठिता अताणा अलेणा असरणा असरणीभूता,* महानि. 304; - **दस्सी** त्रि., [अलयनदर्शिन्], आश्रय या निवास स्थान को नहीं देख रहा/देख रही - **स्सिनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *परियेसति लेणमलेणदस्सिनी, तदा नदी अजकरणी रमेति मं,* थेरगा. 308; *अलेणदस्सिनीति वसनट्ठानं अपस्सन्ती,* थेरगा. अट्ठ. 2.27.

अलेप पु., लेप का निषे., तत्पु. स. [अलेप], लेप का अभाव - **पो** प्र. वि., ए. व. - *तत्थ लेपो च अलेपो च लेपोकासो च अलेपोकासो च वेदितब्बो, सेय्यथिदं - लेपोति द्वे लेपा - मत्तिकालेपो च सुधालेपो च, ठपेत्वा पन इमे द्वे लेपे अवसेसो भस्मगोमयादिभेदो लेपो अलेपो,* पारा. अट्ठ. 2.140; - **पारहो** पु., प्र. वि., ए. व. [अलेपार्ह], लेप न करने योग्य - *थम्भतुलापिट्ठसङ्घाटवातपानधूमच्छिद्दादि अलेपारहो ओकासो सब्बोपि अलेपोकासोति वेदितब्बो,* पारा. अट्ठ. 2.140; - **पोकासो** पु., तत्पु. स., प्र. वि., ए. व. [अलेपावकाश], लेप करने के लिए अनुपयुक्त स्थल - *तत्थ लेपो च अलेपो च लेपोकासो च अलेपोकासो च वेदितब्बो, ... सब्बोपि अलेपोकासोति वेदितब्बो,* पारा. अट्ठ. 2.140.

अलोण त्रि., ब. स. [अलवण], नमक की अपेक्षित मात्रा से रहित, बिना पर्याप्त नमक वाला - **णं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *परिभिन्नवण्णं अलोणं सुक्खकुम्मासं उपनेसि, भगवा पटिग्गहेसि,* वि. व. अट्ठ. 153; *ततो अलोणं यागुं लभित्वा एकिस्साय सालाय निसीदित्वा पिवन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).277; – **णिका** स्त्री., अलोण से व्यु., उपरिवत् – **य** तृ. वि., ए. व. - *अलोणिकायाति फाणितविरहिताय, निप्फाणितत्ता हि सा अलोणिका'ति वुत्ता,* जा. अट्ठ. 3.362; *सुक्खाय अलोणिकाय च, पस्स फलं कुम्मासपिण्डिया,* जा. अट्ठ. 3.361; जा. अट्ठ. 1.224; – **कदिवस** पु., कर्म. स. [अलोणकदिवस], नमक का प्रयोग नहीं किया जाने वाला दिन - **से** सप्त. वि., ए. व. - *पुरिमदिवसे मनुस्सा बहुं लोणमदंसु, अथाहं अलोणकदिवसे भविस्सती'ति अतिरेकं लोणं ठपेसिन्ति,* जा. अट्ठ. 3.324; - **काहार** पु., कर्म. स. [अलोणकाहार], बिना नमक वाला भोजन - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *एकदा अलोणकाहारमेव देन्ति,* जा. अट्ठ. 3.324.

अलोण-पण्ण-भक्ख त्रि., [अलवणपर्णभक्षिन्], बिना नमक के साग-सब्जियों के पत्तों को खाने वाला - **क्खो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अलोणपण्णभक्खोम्हि, नियमेसु च संवुतो,* अप. 1.242.

अलोणिक त्रि., अलोण से व्यु. [अलवणक], बिना नमक वाला - **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *पवना आभतं पण्णं, अतेलञ्च अलोणिकं,* चरिया. (पृ.) 372; *इदं लोणिकं, इदं अलोणिकं, इदं तित्तकं इदं खारिकं इदं कटुकं ... इदं कसावं'ति सूपरसं न जानाति,* ध. प. अट्ठ. 1.268.

अलोपनीय त्रि., √लुप के सं. कृ., लोपनीय का निषे. [अलोपनीय], लोप न करने योग्य, लोप का अविषयीभूत - **या** पु., प्र. वि., ब. व. - *अत्थविसेसस्स जोतका वा अजोतका वा लोपनीया वा अलोपनीया वा, ते सब्बा पच्चया,* सद्द. 1.3.

अलोम पु., लोभ का निषे., तत्पु. स. [अलोभ], लोभ नामक अकुशल हेतु का चित्त में अभाव, तीन कुशलमूलों में से प्रथम - **भो** प्र. वि., ए. व. - *तीणि कुसलमूलानि - अलोभो कुसलमूलं, अदोसो कुसलमूलं, अमोहो कुसलमूलं,* दी. नि. 3.171; *अलोभो खो, महालि, हेतु, अलोभो पच्चयो कल्याणस्स कम्मस्स किरियाय,* अ. नि. 3(2).72; - **ज** त्रि., [अलोभज], अलोभ के कारण उत्पन्न - **जं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अलोभपकतं कम्मं अलोभजं अलोभनिदानं अलोभसमुदयं,* अ. नि. 1(1).160; - **ज्झासय** त्रि., ब. स. [अलोभाध्याशय], लोभ से मुक्त चित्तवृत्ति वाला - **सया** पु., प्र. वि., ए. व. *अलोभज्झासयाति अलुब्भनाकारेन पवत्तअज्झासया,* विसुद्धि. महाटी. 1.128; - **मय** त्रि., अलोभ से युक्त - **येन** पु., तृ. वि., ए. व. - *कम्मफलसद्दहनसद्धामयेन च अलोभमयेन च सुन्दरेन अलङ्कारेन समन्नागतो,* जा. अट्ठ. 7.143; - **निदान** त्रि., ब. स. [अलोभनिदान], अलोभ के कारण उत्पन्न - **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अलोभकतं कम्मं अलोभजं अलोभनिदानं अलोभसमुदयं,* अ. नि. 1(1).160; - **निस्सन्दता** स्त्री., भाव., अलोभ का फल या परिणाम होना - **य** तृ. वि., ए. व. - *अथ वा तं विमानं यस्स पुञ्ञकम्मस्स निस्सन्दफलं, तस्स अलोभनिस्सन्दताय सोवण्णमयं, अदोसनिस्सन्दताय उळारं,* वि. व. अट्ठ. 11; - **निद्देस** पु., तत्पु. स. [अलोभनिर्देश], अलोभविषयक कथन या व्याख्यान - **से** सप्त. वि., ए. व. - *अलोभनिद्देसे अलुब्भनकवसेन अलोभो,* ध. स. अट्ठ. 193; - **पकत** त्रि., ब. स. [अलोभप्रकृत], अलोभ के प्रभाव में किया गया, अलोभ द्वारा निर्धारित - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यं, भिक्खवे, अलोभपकतं कम्मं अलोभजं अलोभनिदानं अलोभसमुदयं,* अ. नि. 1(1).160; 297; - **पच्चय** त्रि., ब. स. [अलोभप्रत्यय], अलोभ को प्रत्यय के रूप में रखकर उत्पन्न - **या** पु., प्र. वि., ब. व. - *इतिस्स मे अलोभजा अलोभनिदाना अलोभसमुदया अलोभपच्चया अनेके कुसला धम्मा सम्भवन्ति,* अ. नि. 1(1).233; - **सङ्खात** त्रि., कर्म. स. [अलोभसंख्यात], अलोभ नाम से प्रसिद्ध, अलोभ नाम वाला - *अलोभो कुसलमूलन्ति अलोभसङ्खातं कुसलमूलं,* ध. स. अट्ठ. 194; - **समुदय** त्रि., ब. स. [अलोभसमुदय], अलोभ से उत्पन्न होने वाला - **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यं, भिक्खवे, अलोभपकतं कम्मं अलोभजं अलोभनिदानं अलोभसमुदयं,* अ. नि. 1(1).160; 297; - **या** पु., प्र. वि., ए. व. - *इतिस्स मे अलोभजा अलोभनिदाना अलोभसमुदया अलोभपच्चया अनेके कुसला धम्मा सम्भवन्ति,* अ. नि. 1(1).233; - **मुस्सदा** तत्पु. स., पु., प्र. वि., ब. व., अलोभ से परिपूर्ण - *इमे सत्ता पुब्बहेतुनियामेन ... अलोभुस्सदा अदोसुस्सदा अमोहुस्सदा च होन्ति,* विसुद्धि. 1.101.

अलोम त्रि., निषे., ब. स. [अलोमन्], रोएं-रहित, बिना रोमों वाला - **मो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सिङ्गी मिगो आयतचक्खुनेत्तो अट्ठित्तचो वारिसयो अलोमो,* जा. अट्ठ. 2.283; - **मा** स्त्री.,

प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *नातिदीघा नातिरस्सा, नालोमा नातिलोमसा'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 6.287.

अलोमविमान नपुं॰, वि॰ व॰ के एक अध्याय का शीर्षक - *अलोमविमानं चतुत्थं*, वि॰ व॰ 711-717; *अभिक्कन्तेन वण्णेनाति अलोमविमानं*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 152.

अलोमहट्ठ त्रि॰, लोमहट्ठ का निषे॰ [अलोमहृष्ट], **शा॰ अ॰** लोमहर्ष या रोमाञ्च से रहित, वह, जिसके रोंगटे खड़े न हों, **ला॰ अ॰** भयरहित, निर्भीक - **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अलोमहट्ठो मनुजिन्द, पुच्छ पञ्हं यमिच्छसि*, जा॰ अट्ठ॰ 6.119; *अलोमहट्ठोति निब्भयो अहट्ठलोमो हुत्वा पुच्छ, महाराजाति*, तदे॰; *अछम्भी अभीतो अलोमहट्ठो, इच्चब्रवि वरुणं नागराजानं*, जा॰ अट्ठ॰ 7.220; *अलोमहट्ठोति भयेन अहट्ठलोमो*, तदे॰.

अलोमा स्त्री॰, व्य॰ सं॰, एक नारी का नाम - *तत्थेका अलोमा नाम दुग्गतित्थी भगवन्तं दिस्वा पसन्नचित्ता अञ्ञं दातब्बं अपस्सन्ती ...*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 153.

अलोल त्रि॰, लोल का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अलोल], लालच-रहित, निर्लोभ, सुदृढ़, स्थिर, अचञ्चल - **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रसेसु गेधं अकरं अलोलो, अनञ्ञपोसी सपदानचारी*, सु॰ नि॰ 65; *अलोलोति इदं सायिस्सामि, इदं सायिस्सामी'ति एवं रसविसेसेसु अनाकुलो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.93; *सद्धो होति हिरिमा धितिमा अकुहो अत्थवसी अलोलो सिक्खाकामो दळहसमादानो अनुज्झानबहुलो मेत्ताविहारी*, मि॰ प॰ 319; - **लक्खि** त्रि॰, ब॰ स॰ [अलोलाक्ष], अचञ्चल दृष्टि वाला, चञ्चलता के साथ इधर-उधर न ताकने वाला - **क्खिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अलोलक्खिं मितभाणिं, युगमत्तं निदक्खितं*, अप॰ 2.148; - **जातिक** त्रि॰, लोलजातिक का निषे॰ [अलोलजातिक], चञ्चलता से रहित स्वभाव वाला, स्थिर प्रकृति वाला - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तत्र, भिक्खवे, ये ते मक्कटा अबालजातिका अलोलजातिका, ते तं लेपं दिस्वा आरका परिवज्जन्ति*, स॰ नि॰ 3(1).226.

अलोलुप त्रि॰, लोलुप का निषे॰ [अलोलुप], लालच से रहित, लोभरहित - **पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ऊनूदरो मिताहारो, अप्पिच्छस्स अलोलुपो*, सु॰ नि॰ 712; *वीतसोको निरारम्भो, अप्पाहारो अलोलुपो*, अप॰ 1.386; - **पा** ब॰ व॰ - *अप्पिच्छा निपका एते, अप्पाहारा अलोलुपा*, अप॰ 1.14; *अप्पिच्छा निपका धीरा, अप्पाहारा, अलोलुपा*, मि॰ प॰ 310; - **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एणिजङ्घं किसं वीरं, अप्पाहारं अलोलुपं*, स॰ नि॰ 1(1).19; *अलोलुपन्ति चतूसु पच्चयेसु लोलुप्पविरहितं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.50.

अलोलुप्प त्रि॰, लोलुप्प का निषे॰ [अलौलुप्य], लालचीपन से मुक्त - **प्पा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *अप्पकिच्चा अलोलुप्पा, निपका सन्तवुत्तिनो*, अप॰ 2.56; - **चारता** स्त्री॰, भोजन ग्रहण करने में लालचीपन का अभाव - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुवराजापि सुवगणपरिवुतो आगन्त्वा अलोलुप्पचारताय हिय्यो खादितट्ठाने ओड्डितपासे पादं पवेसन्तोव ओतरि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.248.

अलोहित त्रि॰, लोहित का निषे॰, ब॰ स॰ [अलोहित], **क.** वह, जो लाल रङ्ग का न हो, **ख.** रक्त-रहित, बिना खून वाला / वाली - **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अक्कोसति नाम अनिमित्तासि, निमित्तमत्तासि अलोहितासि, धुवलोहितासि*, पारा॰ 190; *अलोहितातिं सुक्खसोता*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.122; - **क** त्रि॰, ब॰ स॰, उपरिवत् - **कानि** नपुं॰ प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अलोहितकानि द्वेपि वट्टन्तियेव*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.79.

अल्ल त्रि॰, [आर्द्र], गीला, नम, सूखेपन से रहित, ताजा - *तिन्तो'ल्ला'द किलिन्नोन्ना, मग्गितं परियेसितं*, अभि॰ प॰ 753; - **ल्लं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अल्लं सुक्खं वा भुञ्जन्तो, न बाळहं सुहितो सिया*, मि॰ प॰ 378; *यथालद्धेन ब्यञ्जनेन सद्धिं अल्लमेव भत्तं पच्छियं ओपीळेत्वा आदाय योजनिकं मग्गं पक्खन्दो*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.252; - **ल्लेन / ल्लाय** पु॰ / स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मुखं पिदहित्वा अल्लेन चम्मेन ओनन्धित्वा अल्लाय मत्तिकाय बहलावलेपनं करित्वा ...*, दी॰ नि॰ 2.247; - **ल्लेहि** पु॰ / नपुं॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तेन खो पन समयेन भिक्खू अल्लेहि पादेहि सेनासनं अक्कमन्ति*, चूळव॰ 307.

अल्लकप्प पु॰ / नपुं॰, स्था॰ सं॰, मगध के पड़ोस में स्थित बुली नामक जाति के लोगों का क्षेत्र या नगर - **प्पे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अल्लकप्पकापि बुलयो अल्लकप्पे भगवतो सरीरानं थूपञ्च महञ्च अकंसु*, दी॰ नि॰ 2.125; - **क** त्रि॰, अल्लकप्प क्षेत्र के निवासी बुल्ली लोग - **प्पका** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अस्सोसुं खो अल्लकप्पका बुलयो ... अथ खो अल्लकप्पका बुलयो कोसिनारकानं मल्लानं दूतं पाहेसुं*, दी॰ नि॰ 2.124; - **तापस** पु॰, व्य॰ सं॰, अल्लकप्प जनपद का राजा जो बाद में तपस्वी बन गया - **सस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अल्लकप्पतापसस्सपि खो ततो अविदूरे वसनट्ठानं होति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.96; - **रट्ठ** नपुं॰, अल्लकप्प नामक राष्ट्र - **ट्ठे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अतीते अल्लकप्परट्ठे अल्लकप्पराजा नाम*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.94; *अल्लकप्परट्ठे पन दुब्भिक्खे जीवितुं असक्कोन्तो*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.98; - **राज** पु॰, व्य॰ सं॰,

अल्लकप्प नामक क्षेत्र का उसी नाम वाला राजा – **जा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अतीते अल्लकप्परट्ठे अल्लकप्पराजा नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.94.

अल्लकेस त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्द्रकेश], गीले या भींगे हुए बालों वाला/वाली – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो वड्ढो लिच्छवी ... अल्लवत्थो अल्लकेसो येन भगवा तेनुपसङ्कमि,* चूळव॰ 245; – **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओदातवत्था सुचि अल्लकेसा, कच्चानि किं कुम्भिमधिस्सयित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.376.

अल्लगूथ नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आर्द्रगूथ], ताजा पाखाना, गीला मल – **थं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गूथपुञ्जं अभिरुहि, अल्लगूथं तस्मिं आरुळ्हे थोकं ओनमि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.177.

अल्लगोमय नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आर्द्रगोमय], ताजा गोबर, गीला गोबर – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हरितसस्सं वा अल्लगोमयं वा कच्छपं वा तिलं वा पुप्फं वा फलं वा आमसति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 95; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हट्ठतुट्ठा अल्लगोमयेन गेहं उपलिम्पेत्वा पायासं पचित्वा आगमनमग्गं ओलोकेन्ती ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.43; *सुधापरिकम्मकतम्पि भूमिं अल्लगोमयेन ओपुञ्जापेत्वा परिसुक्खभावं ञत्वा ... न पञ्ञायति,* उदा॰ अट्ठ॰ 331.

अल्लचम्म नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आर्द्रचर्मन्], गीला चमड़ा – **म्मेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नवहि मंसपेसिसतेहि अनुलित्तो, अल्लचम्मेन परियोनद्धो, छविरागेन पटिच्छन्नो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).402; – **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ यथा अल्लचम्मपरियोनद्धाय पेळाय न अल्लचम्मं जानाति ... अहं अल्लचम्मेन परियोनद्धा'ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 34; *तावदेव बलवता पुरिसेन अक्कन्तअल्लचम्मं विय,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.358; – **पटिच्छन्न** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्द्रचर्मप्रतिच्छन्न], गीले चमड़े से ढका हुआ – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अल्लचम्मपटिच्छन्नो, नवद्वारो महावणो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 35; मि॰ प॰ 80; – **परियोनद्ध** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आर्द्रचर्मपर्यवनद्ध], ताजे या जीवित चमड़े से ढका हुआ – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं सरीरं नाम ... नवमंसपेसिसतानुलित्तं अल्लचम्मपरियोनद्धं छविया पटिच्छन्नं,* विसुद्धि॰ 1.186.

अल्लचीवर त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्द्रचीवरक], गीले चीवर धारण करने वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कदाहं सत्ताहसम्मेघे, ओवट्ठो अल्लचीवरो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.63.

अल्लतिण नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आर्द्रतृण], ताजी घास, गीला तृण – *अल्लतिणादिं आगम्म निब्बायतीति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).127.

अल्लत्त नपुं॰, भाव॰ [आर्द्रत्व], गीलापन, ताजापन, हरापन – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपो धातु सिनेहेति च अल्लत्तञ्च अनुपालेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).278; *उदके आकिरन्ते अल्लत्तं वा पल्लवितहरितभावो वा न भवेय्य,* मि॰ प॰ 151.

अल्लदारु नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आर्द्रदारु], हरी-भरी लकड़ी, नहीं सूखी हुई ताजी लकड़ी – **रूनि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकेन हत्थेन अल्लदारूनि भञ्जित्वा रुक्खतो ओरुय्ह ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.305; – **रासि** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्द्रदारुराशि], हरी भरी या ताजी लकड़ी का ढेर – **सिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सामणेरे समादपेत्वा पासाणपिट्ठे अल्लदारुरासिं कारेहीति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.29.

अल्लपाणि त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्द्रपाणि], गीले या भींगे हुए करतल (गदेली) वाला/वाली – **णिना** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अल्लपाणिना उपकारकिरियाय अल्लपाणिना धोतहत्थेन पुब्बकारिना हेट्ठा ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 102; – **हत** त्रि॰, हाथ धोकर किए हुए उपकार को भूल जाने वाला, अकृतज्ञ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अल्लपाणिहतो पोसो, न सो भद्रानि पस्सती'ति,* पे॰ व॰ 265; *अल्लपाणिहतो पोसोति अल्लपाणिना धोतहत्थेन पुब्बकारिना ... हतो बाधितो ... अकतञ्ञु पुग्गलो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 102.

अल्लपिण्डमंस नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आर्द्रमांसपिण्ड], ताजे मांस का पिण्ड – **ण्डेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्तस्स मधुरसद्दं सुत्वा अल्लमंसपिण्डेन हदये पहटा विय ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.248.

अल्लमंसपेसिवण्ण त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्द्रमांसपेशीवर्ण], ताजी मांसपेशी के समान रङ्ग-रूप वाला/वाली – **ण्णं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सा पस्सन्तियाव तं अल्लमंसपेसिवण्णं कुमारकं गहेत्वा मुरुमुरायन्ती खादित्वा पक्कामि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.20.

अल्लमंससरीर त्रि॰, ब॰ स॰ [आर्द्रमांसशरीर], ताजे मांस से भरे शरीर वाला/वाली – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *न हि एते कोळापरुक्खा, न च वम्मिका अल्लमंससरीराव,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.278; 2.379.

अल्लमत्तिकापिण्ड पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्द्रमृत्तिकापिण्ड], गीली मिट्टी का पिण्ड या गोला – **ण्डम्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्था घणपिट्ठिपासाणे अल्लमत्तिकपिण्डम्हि लञ्छनं विय पदचेतियं दस्सेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.250; – **पुञ्ज** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आर्द्रमृत्तिकापुञ्ज], गीली मिट्टी का ढेर – **ञ्जे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, भिक्खवे, पुरिसो गरुकं सिलागुळं अल्लमत्तिकापुञ्जे पक्खिपेय्य,* म॰ नि॰ 3.138.

अल्लमधु नपुं., कर्म. स. [आर्द्रमधु], ताजा शहद - **धुं** द्वि. वि., ए. व. - *किं नु खो एत्थ नत्थी'ति ओलोकेन्ता अल्लमधुमेव न अद्दसंसु,* ध. प. अट्ठ. 1.357; - **धुस्स** ष. वि., ए. व. - *ते अल्लमधुस्सत्थाय चतूसु नगरद्वारेसु चत्तारि कहापणसहस्सानि गाहापेत्वा पहिणिंसु,* ध. प. अट्ठ. 1.357.

अल्लमीरचवट्टिका स्त्री., तत्पु. स. [आर्द्रमरिचवर्तिका], हरी मिर्च की फल्ली - **कं** द्वि. वि., ए. व. - *मरिचवट्टिकं ति अल्लमरिचवट्टिकं,* म. वं. टी. 453.

अल्लयूस पु./नपुं., कर्म. स. [आर्द्रयूष, नपुं.], ताजा झोल या शोरबा, ताजा रसा - *आपोधातुनिद्देसे आपोगतन्ति सब्बआपेसु गतं अल्लयूसभावलक्खणं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).126; *सब्बआपेसु गतं अल्लयूसभावलक्खण'न्ति द्रवभावलक्खणन्ति अत्थो,* म. नि. टी. (मू.प.) 1(2).161.

अल्लरस त्रि., ब. स. [आर्द्ररस], ताजे या नए स्वाद वाला - **सं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *सिन्धवा किलन्ता अल्लरसमेव नेसं मुद्दिकपानं देथा'ति आणापेसि,* जा. अट्ठ. 2.79; *पञ्चसतानं आजानीयसिन्धवानं अल्लरसमुद्दिकपानकपीतावसेसं उच्छिट्ठकसटं ...,* ध. प. अट्ठ. 1.334.

अल्लरुक्ख पु., कर्म. स. [आर्द्रवृक्ष], हरा-भरा पेड़ - **क्खे** द्वि. वि., ब. व. - *सो साधु, भन्ते, ति वत्वा उदुम्बरादयो अल्लरुक्खे छिन्दित्वा महन्तं रासिं कत्वा ...,* स. नि. अट्ठ. 2.242-43.

अल्लरोहितमच्छ पु., कर्म. स. [आर्द्ररोहितमत्स्य], ताजी रेहू मछली - **च्छं** द्वि. वि., ए. व. - *दोहळो मे सामि, उप्पन्नो, अल्लरोहितमच्छं खादितुं इच्छामी'ति,* जा. अट्ठ. 3.293.

अल्लवण त्रि., ब. स. [आर्द्रव्रण], ताजे या खून बह रहे घाव वाला - **णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अद्धदण्डकादीनं वा अञ्ञतरेन, याव अल्लवणो होति, ताव न पब्बाजेतब्बो, ... सो सचे भुजिस्सो याव अल्लवणो होति, ताव न पब्बाजेतब्बो,* महाव. अट्ठ. 266.

अल्लवत्थ त्रि., ब. स. [आर्द्रवस्त्र], गीले कपड़े धारण करने वाला/वाली - **त्थो/त्था** पु./स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अल्लकोसो अल्लवत्थो इस्सरपुरिसो विय ... अल्लकेसा अल्लवत्था उप्पलकुमुदमाला पिळन्धित्वा पदुमपुण्डरीककलापे ...,* जा. अट्ठ. 1.108; *अल्लवत्थो अल्लकेसो येन भगवा तेनुपसङ्कमि,* चूळव. 245.

अल्लसरीर नपुं., कर्म. स. [आर्द्रशरीर], सद्यः-निष्प्राण हुआ शरीर - **रे** सप्त. वि., ए. व. - *अभिन्ने सरीरेति अब्भुण्हे अल्लसरीरे पंसुकूलं न गहेतब्बं,* पारा. अट्ठ. 1.302; - **रेसु** सप्त. वि., ब. व. - *तं खणं पतितेसु अल्लसरीरेसु रागं उप्पादयिंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.62.

अल्लससमंस पु., कर्म. स. [आर्द्रशशमांस], खरगोश का ताजा मांस - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *वेज्जेन च अल्लससमंसं लद्धुं वट्टती'ति वुत्तं,* ध. स. अट्ठ. 149; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).211;.

अल्लसाटक नपुं., कर्म. स. [आर्द्रशाटक], गीले कपड़े का एक टुकड़ा - **कं** द्वि. वि., ए. व. - *अल्लसाटकं हदये कत्वा सीताय छायाय निपन्नो होति,* विसुद्धि. 1.263.

अल्लसिङ्ग नपुं., कर्म. स. [आर्द्रशृङ्ग], पौधे के ऊपर निकली नई कोपल या किसलय - *अयं वा सो मतो सेति, अल्लसिङ्गंव वच्छितो,* जा. अट्ठ. 3.344; *अल्लसिङ्गन्ति मालुवलताय अग्गपवालं,* तदे..

अल्लसिंगीवेर पु., कर्म. स. [आर्द्रशृङ्गवेर], हरा या ताजा अदरख - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *सब्बपत्तानि लुञ्जित्वा अल्लसिङ्गीवेरञ्च सिद्धत्थके ...,* जा. अट्ठ. 3.197.

अल्लसिनेह पु., कर्म. स. [आर्द्रस्नेह], अण्डे का भीतरी उजला तरल पदार्थ - **हो** प्र. वि., ए. व. - *योपि नेसं अल्लसिनेहो सो परियादानं गच्छति,* पारा. अट्ठ. 1.101; *यो नेसं अल्लसिनेहो, सोपि परियादानं गच्छति,* स. नि. अट्ठ. 2.289.

अल्लसिर त्रि., ब. स. [आर्द्रशिरस्], गीले या भीगे हुए शिर वाला - **रा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अल्लवत्था अल्लसिरा, सब्बेव पञ्जलीकता,* अप. 1.43; थेरगा. अट्ठ. 1.401.

अल्लसुक्खतिण नपुं., कर्म. स. [आर्द्रशुष्कतृण], हरी एवं सूखी घास - **णानि** द्वि. वि., ब. व. - *ते अल्लसुक्खतिणानि खादन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).216; ध. स. अट्ठ. 362.

अल्लहत्थ पु., कर्म. स. [आर्द्रहस्त], गीला या भीगा हुआ हाथ - **त्थं** द्वि. वि., ए. व. - *अल्लहत्थं ठपेत्वान, रजग्गाहो च भूमिया,* खु. सि. 257; *अघंसन्तेन पन अल्लहत्थं पथवियं ठपेत्वा रजं गहेतुं वट्टति,* पाचि. अट्ठ. 21.

अल्लापसल्लाप पु., द्व. स. [आलापसंलाप], आलाप और संलाप, बातचीत - **पं** द्वि. वि., ए. व. - *बालेनल्लापसल्लापं न करे न च रोचये,* जा. अट्ठ. 4.215.

अल्लायते अल्ल के ना. धा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आर्द्रायते], गीला सा हो रहा है - *अल्लायते अयं रुक्खो, अपि वारीव सन्दति,* जा. अट्ठ. 4.313; *अल्लायतेति उदकभरितो विय अल्लो हुत्वा पञ्ञायति,* जा. अट्ठ. 4.314.

अल्लावलेपन / अद्दावलेपन त्रि., ब. स. [आर्द्रावलेपन], गीली लिपाई-पुताई से युक्त - **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सेय्यथापि, आवुसो, कूटागारं वा साला वा बहलमत्तिका अद्दावलेपना,* स. नि. 2(2).187.

अल्लि स्त्री., **क.** एक वृक्ष का नाम - **या** ष. वि., ए. व. - *पत्तेसु अल्लिया पत्तं, तथा पत्तञ्च नीलिया,* विन. वि. 2744; *अल्लिया पन पत्तेन, धोवितुं पन वट्टति,* विन. वि. 2746; **ख.** अल्लि-वृक्ष की पत्तियों से तैयार किया गया रंग - **ल्लिं** द्वि. वि., ए. व. - *अल्लिं नीलञ्च पत्तेसु, तचे लोद्दञ्च कण्डुलं,* खु. सि. 59; *अल्लिपत्तं नीलिपत्तञ्च ठपेत्वा सब्बं पत्तरजनं वट्टति, गिहिपरिभुत्तं पन अल्लिपत्तेन एकवारं रजितुं वट्टति,* महाव. अट्ठ. 383.

अल्लिक नपुं./स्त्री., उपरिवत् - *यो च पक्खिपति भिक्खु चीवरं कञ्जिपिट्ठखलिअल्लिकादिसु,* विन. वि. 3040.

अल्लिपत्त नपुं., तत्पु. स., अल्लि-नामक वृक्ष की पत्ती - **त्तेन** तृ. वि., ए. व. *गिहिपरिभुत्तं पन अल्लिपत्तेन एकवारं रजितुं वट्टति,* महाव. अट्ठ. 383.

अल्लीन त्रि., आ + √ली का भू. क. कृ. [आलीन], पूरी तरह से चिपका हुआ या सटा हुआ, आसक्त, जुड़ा हुआ - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो नु खो दुक्खं अल्लीनो दुक्खं उपगतो दुक्खं अज्झोसितो,* म. नि. 1.298-99; *दुक्खं अल्लीनोति इमं पञ्चक्खन्धदुक्खं तण्हादिट्ठीहि अल्लीनो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).176; - **नानं** ष. वि., ब. व. - *अल्लीनानम्पि च लेणकिच्चाकारिताय अलेणतो,* महानि. अट्ठ. 132; *अत्तपरितापने च अल्लीनेहि किलेसदुक्खातुरानं अनुसिक्खन्तेहि ...,* उदा. अट्ठ. 287; - **त्त** नपुं., भाव. [आलीनत्व], पूरी तरह से जुड़ा हुआ होना या लगावयुक्त होना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *सो चित्तेन अल्लीनत्ता पारं समुद्दस्स अन्तो वसन्तोपि अन्तोयेव होति,* जा. अट्ठ. 4.194.

अल्लीयति आ + √ली का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलीयते], किसी के साथ पूरी तरह से जुड़ जाता है या सट जाता है, किसी पर आश्रित हो जाता है, किसी के प्रति आसक्त हो जाता है - *उत्तरसेट्ठिपुत्तस्स पन दीघरत्तं ब्रह्मलोके वसितत्ता किलेसेसु चित्तं न अल्लीयति,* जा. अट्ठ. 1.415; *अनुपलित्तोति उपगन्त्वापि न अल्लीयति पोक्खरपत्ते उदकबिन्दु विय,* महानि. अट्ठ. 1.134; - **न्ति** ब. व. - *आपेन्तीति अल्लीयन्ति ओसरन्ति,* उदा. अट्ठ. 246; - **येथ** विधि., प्र. पु., ए. व. - *इमं चे तुम्हे, भिक्खवे, दिट्ठिं एवं परिसुद्धं एवं परियोदातं न अल्लीयेथ ...,* म. नि. 1.331; - **यिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. - *तस्सा पच्छितो एकं पूवं गण्हन्तिया सब्बे एकाबद्धा अल्लीयिंसु,* जा. अट्ठ. 1.332; - **यितुं** निमि. कृ. - *आसीविसपटिभागो असनिअग्गिसदिसो अल्लीयितुं न युत्तो आसङ्कितब्बो,* जा. अट्ठ. 1.478; - **यित्वा** पू. का. कृ. - *अन्तरद्वारे दिट्ठमङ्गलिकं दिस्वा एकमन्तं अपगन्त्वा अल्लीयित्वा अट्ठासि,* जा. अट्ठ. 4.338.

अल्लीयन नपुं., आ + √ली से व्यु., क्रि. ना. [आलीयन], घनिष्ट सम्बन्ध, दृढ़ लगाव या प्रबल आसक्ति - **नं** प्र. वि., ए. व. - *सच्चिकिरियावसेन अल्लीयनं अरहतीति अत्थो,* विसुद्धि. 1.208; *गूथधारी विय गूथपिण्डे कामेसुयेव अल्लीयनं इच्छन्ति,* उदा. अट्ठ. 57.

अल्लीयापन त्रि., मजबूती से जोड़ देने वाला, दृढ़ता से गूंथ देने वाला या सिल देने वाला - *अग्गळं तुन्नन्ति एत्थ उद्धरित्वा अल्लीयापनखण्डं अग्गळं,* महाव. अट्ठ. 385; *अल्लीयापनखण्डन्ति दुब्बलट्ठानं अपनेत्वा अल्लीयापनवत्थखण्डं,* सारत्थ. टी. 3.307.

अल्लीयापेत्वा आ + √ली के प्रेर. का पू. का. कृ., मजबूती से जोड़ दे कर, दृढ़ता से गूंथ कर या सिल कर - *सन्थरस्स अन्ते अनुवातं विय दस्सेत्वा ओदातं अल्लियापेत्वा ...,* पारा. अट्ठ. 2.239.

अल्लोकास पु., कर्म. स. [आर्द्रावकाश], भीगा हुआ या गीला स्थल - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *तत्थ वातेन असम्फुट्ठं अल्लोकासं तिलफलमत्तम्पि पवेसेन्तस्स पाराजिकमेव,* पारा. अट्ठ. 1.223; - **से** सप्त. वि., ए. व. - *अल्लोकासे निमित्तं सं, तिलमत्तम्पि सन्थतं,* खु. सि. 1.2.

√अव रक्षा अर्थ वाली एक धातु - *अव रक्खणे जीव पाणधारणे तु प्लवो गते,* धा. मं. (पृ.) 377; *अव पालने, अवति, बुद्धो मम अवतं,* सद्द. 2.440.

अव अ., उप. [अव / अप], **क.** अनेक अर्थों का सङ्केतक - *वियोगे जानने चाधोभावानिच्छयसुद्धिसु, वचोकियाय थेय्ये च ञाणप्पत्तादिके अव,* अभि. प. 1173; *अधोभावे वियोगे च देसे निच्छयसुद्धिसु, परिभावे जानने च थेय्यादिसु च दिस्सति, अव इच्चुपसग्गोति विञ्ञातब्बं विभाविना,* सद्द. 3.882; **1. अधोभाव या नीचे की ओर** - *ओक्खित्तचक्खू न च पादलोलो,* सु. नि. 63; *तत्थ ओक्खित्तचक्खू ति हेट्ठाखित्तचक्खु,* सु. नि. अट्ठ. 1.92; **2. वियोग या बिलगाव** - *अनुजानामि, भिक्खवे, ओमुक्कं गुणङ्गुणूपाहनं,* महाव. 260; *ओमुक्कन्ति पटिमुञ्चित्वा अपनीतं,* महाव. अट्ठ. 346; **3. देश या स्थान** - *तेन खो पन समयेन भगवा ...*

अज्झोकासे चङ्कमति, महाव॰ 20; 4. **निश्चय या पुष्टि** - *हत्थदाठ्ठनरिन्देन तस्मिं अत्थे वधारिते*, चू॰ वं॰ 47.4; 5. **शुद्धि की प्रकृष्टता या अधिकता** - *वोदानन्ति विसुद्धता*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.84; 6. **तिरस्कार या अपमान** - *यो चत्तानं समुक्कंसे, परे च मवजानाति*, सु॰ नि॰ 132; *परे च मवजानातीति तेहियेव परे अवजानाति, नीचं करोति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.144; 7. **जानना** - *एत्थ च यथा लोके अवगन्ता अवगतोति वुच्चति*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 7; 8. **छीनना, चुराना** - *संविदावहारो नाम सम्बहुला संविदहित्वा एको भण्डं अवहरति* ..., पारा॰ 60; **ख. व्यञ्जनादि पदों से पूर्व प्रायः 'ओ' के रूप में परिवर्तित**, अप के स्थान पर भी प्रयुक्त - *ओलोकेथ, भिक्खवे, लिच्छविपरिसं अपलोकेथ, भिक्खवे, लिच्छविपरिसं*, दी॰ नि॰ 2.76; *सो नेव सक्कुण्णेय्य उग्गिलितुं न सक्कुण्णेय्य ओगिलितुं*, म॰ नि॰ 2.62.

अवहरि/अवाहरी अव + √हर का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवाहरत्], नीचे की ओर ले गया - *पातालरजो हि दुत्तरो, मा तं कामरजो अवाहरि*, स॰ नि॰ 1(1).228; *अयं कामरजो तं मा अवहरि, अपायमेव मा नेतूति अत्थो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.253.

अवं अ॰, उप॰, क्रि॰ वि॰, प्रायः स॰ प॰ में ही प्रयुक्त [वै॰ अवाक्/अवान्], नीचे, नीचे की ओर - *तं सद्दं सुत्वा तुरितमवसरी सो*, सु॰ नि॰ 690; पाठा॰ अवसरी; *अवसरीति ओतरि*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.187; *पतन्ति सत्ता निरयं अवंसिरा*, सु॰ नि॰ 251; ... *अवंसिरा अधोगतसीसा*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.266.

अवंसिर त्रि॰, ब॰ स॰ [अवाक्शिरस], नीचे की ओर अपना सिर किया हुआ - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवनतं सिरो यस्स, सो यं अवंसिरो*, सद्द॰ 1.102; *अवंसिरोति आदिसु निच्चं ववत्थितविभासत्ता वाधिकारस्स*, मो॰ व्या॰ 1.38; - **रा** ब॰ व॰ - *एवं निसिन्नकाले एवं अवंसिरा पतिस्सन्ती'ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.245; *निगण्ठा अवंसिरा आवाटे पतिंसु*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.246.

अवकंस पु॰, अव + √कंस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवकर्ष], पतन, नीचे की ओर घसीटा या खींच कर ले जाया जाना - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पच्चयो सत्तधा छठा, होति तं अवकंसतो*, ..., विभ॰ अट्ठ॰ 165; *वत्थुनो कायजिव्हानं, वसा तिंसावकंसतो, उक्कंसस्सावकंसस्स, अन्तरे अनुरूपतो*, अभि॰ अव॰ 100.

अवकङ्खति अव + √कंख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, इच्छा करता है, कामना करता है - *एवञ्हि धीरा कुब्बन्ति, नावकङ्खन्ति जीवितं*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.243; - **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एको अरञ्ञे विहरसि, नावकङ्खसि जीवितं*, जा॰ अट्ठ॰ 4.334; *नावकङ्खसीति सयं दुल्लभभोजनो हुत्वा एवरूपं भोजनं अञ्ञस्स देसि, किं अत्तनो जीवितं न कङ्खसि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.335; - **ङ्खामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *भत्तिञ्च तयि सम्पस्सं, नावकङ्खामि जीवितं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.334.

अवकड्ढयित्वा अव + √कड्ढ का पू॰ का॰ कृ॰, **शा॰ अ॰** नीचे की ओर खींच कर, **ला॰ अ॰** कहीं अन्यत्र से लेकर या उद्धृत कर - *हेतुमवकड्ढयित्वा, एसो हारो परिक्खारो*, नेत्ति॰ 5; *हेतुमवकड्ढयित्वाति तं यथावुत्तपच्चयसङ्खातं जनकादिभेदभिन्नं हेतुं आकड्ढित्वा सुत्ततो निद्धारेत्वा यो संवण्णनासङ्खातो* ..., नेत्ति॰ अट्ठ॰ 160.

अवकण्णक त्रि॰, [अवकर्णक], कनकटा, कटे हुए कान वाला (दास के लिये प्रयुक्त नाम) - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *हीनं नाम नामं - अवकण्णकं, जवकण्णकं, धनिट्ठकं सविट्ठकं, कुलवड्ढकं*, पाचि॰ 8; *अवकण्णकादि दासानं नाम होति, तस्मा हीनं*, पाचि॰ अट्ठ॰ 5; *अवकण्णकन्ति छिन्नकण्णकनामं*, वजिर॰ टी॰ 257.

अवकन्त त्रि॰, अव + √कत का भू॰ क॰ कृ॰ [अवकृत्त], काटा हुआ - *तेनेव तस्सा गलकावकन्तं, अयम्पि अत्थो बहुतादिसोवा'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.225.

अवकन्तति अव + √कत का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवकृन्तति], टुकड़ों में करके काट देता है, खण्ड-खण्ड कर देता है, - **न्ति** प्र॰ पु॰ ब॰ व॰ - *ओक्कन्तति पुनप्पुनन्ति अवकन्तितट्ठाने खारोदकेन आसिञ्चित्वा पुनप्पुनम्पि अवकन्तन्ति*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 186; - **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ *पुथुसो मं विकन्तित्वा, खण्डसो अवकन्तथ*, जा॰ अट्ठ॰ 4.140; **न्ता** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अग्गे चाति अवकन्तन्ता पन पठमं अग्गे, ततो मज्झे छेत्वा सब्बपच्छा मूले छिन्दथ*, जा॰ अट्ठ॰ 4.141; - **न्तित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ - *ओक्कन्तति पुनप्पुनन्ति अवकन्तितट्ठाने* ..., पे॰ व॰ अट्ठ॰ 186.

अवकप्पन नपुं॰, अव + √कप से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, √कप के अर्थ के रूप में प्रयुक्त, सक्षम होना, समर्थ होना - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कप अवकम्पने, कपेति कप्पति, कपणो, कपणो ति करुणायितब्बो*, सद्द॰ 2.553; *भू अवकप्पने*, सद्द॰ 2.555.

अवकप्पना स्त्री॰, उपरिवत् [अवकल्पना], **शा॰ अ॰** घोड़े का लगाम द्वारा नियन्त्रण, **ला॰ अ॰** नियन्त्रण - *अवकप्पनाय कप्पितअस्सो आकड्ढियमानोपि राजानं गहेत्वा पलायि*, जा॰ अट्ठ॰ 6.236; *एवं अवकप्पनाय कप्पेत्वा मज्झिमयामसमनन्तरे* ..., तदे॰.

अवकस्सित्वा अव + √कस का पू. का. कृ., नीचे की ओर घसीट कर, खींच कर - *तत्थ ओक्कस्साति अवकस्सित्वा आकड्ढित्वा,* दी. नि. अट्ठ. 2.98; *ओकस्साति वा पसय्हाति वा पसय्हाकारस्सेवेतं नामं, ओकासातिपि पठन्ति, तत्थ ओकस्साति अवकसित्वा आकड्ढित्वा,* अ. नि. अट्ठ. 3.155.

अवकिरण नपुं., अव + √किर से व्यु., क्रि. ना. [अवकिरण], दूर फेंक देना, छितरा देना, परित्याग, विनाश, नानाकरण - **णे** सप्त. वि., ए. व. - *चसद्दग्गहणमवधारणत्थं - अवसाने, अवकिरणे, अवकिरति,* क. व्या. 79.

अवकिरति/ओकिरति अव + √किर का वर्त., प्र. पु., ए. व., **शा. अ.** इधर-उधर बिखरा देता है या छितरा देता है, दूर फेंक देता है, **ला. अ.** उपेक्षा करता है - *चसद्दग्गहणमवधारणत्थं - अवसाने, अवकिरणे, अवकिरति,* क. व्या. 79; - **वाकिरि** अद्य., प्र. पु., ए. व., दूर फेंक दिया - *सस्सु च पच्छा अनुयुञ्जते ममं, कहं नु उच्छुं वधुके अवाकिरि,* वि. व. 300; *अवाकिरीति अपनेसि छड्डेसि, विनासेसि वा,* वि. व. अट्ठ. 104; - **किरिय** पू. का. कृ., इधर उधर बिखेर कर - *किसञ्हि वच्छं अवकिरिय दण्डकी, उच्छिन्नमूलो सजनो सरट्ठो, ... अवकिरियाति अवकिरित्वानिट्ठुभनदन्तकट्ठपातनेन तस्स सरीरे कलिं पवाहेत्वा,* जा. अट्ठ. 5.137; 138; - **किरित्वा** पू. का. कृ., बिखरा कर - *सित्थावकारकन्ति सित्थानि अवकिरित्वा अवकिरित्वा,* पाचि. अट्ठ. 155; - **किरीयति** कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व., छोड़ दिया जाता है, त्याग दिया जाता है - *पहूतं अन्नपानम्पि, अपिस्सु अवकिरीयति,* पे. व. 396; *अपिस्सु अवकिरीयतीति सूति निपातमत्तं, अपि अवकिरीयति छड्डीयति,* पे. व. अट्ठ. 152.

अवकुज्ज त्रि., [बौ. सं. अवकुब्जक], अधोमुख होकर पड़ा हुआ, नीचे की ओर मुख करके लेटा हुआ, नीचे की ओर झुका हुआ (कुबड़ा) - **ज्जो** पु., प्र. वि., ए. व. - *कुज्जति निकुज्जति उक्कुज्जति पटिकुज्जति, निकुज्जितं वा उक्कुज्जेय्य, अञ्जिस्सा पातिया पटिकुज्जति, अवकुज्जेति अवकुज्जो निपज्ज अहं,* सद्द. 2.349; *सो खो अहं, सारिपुत्त, वच्चं वा मुत्तं वा करिस्सामी'ति तत्थेव अवकुज्जो पपतामि तायेवप्पाहारताय,* म. नि. 1.114; *अवकुज्जो पपतामी'ति तस्स हि उच्चारपस्सावत्थाय निसिन्नस्स पस्सावो नेव निक्खमति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).363; - **ज्जा**[1] स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *घरतो निक्खमित्वान, अवकुज्जा निपज्जहं,* थेरीगा. अट्ठ. 9; - **ज्जा**[2] पु., प्र. वि., ब. व. - *उत्ताना पटिकिराम, अवकुज्जा पतामसे,* पे. व. 789; *अवकुज्जा पतामसेति कदाचि अवकुज्जा हुत्वा पताम,* पे. व. अट्ठ. 236; - **कं** अ., द्वि. वि., प्रतिरू. निपा., अस्त, व्यय या तिरोधान के रूप में - *तेन विचिनि सङ्खारे अक्कुज्जमवकुज्जकं,* बु. वं. 11.4; *उक्कुज्जमवकुज्जकन्ति सङ्खारानं उदयञ्च वयञ्च विचिनीति अत्थो,* बु. वं. अट्ठ. 211; - **निपन्न** त्रि., कर्म. स., नीचे को मुख करके लेटा हुआ या पड़ा हुआ - **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो उत्तानं निपन्नो ... यो अवकुज्ज निपन्नो ... यो चन्दं पस्सति,* महानि. 280; *अवकुज्ज निपन्नोति अधोमुखो हुत्वा निपन्नो पस्सति,* महानि. अट्ठ. 335; - **पञ्ञ** त्रि., ब. स., मन्द प्रज्ञा वाला, लड़खड़ाती हुई बुद्धि वाला - **ञ्ञो** पु., प्र. वि., ए. व. - *कतमो च पुग्गलो अवकुज्जपञ्ञो?,* पु. प. 138; *दसमे अवकुज्जपञ्ञोति अधोमुखपञ्ञो,* अ. नि. अट्ठ. 2.98.

अवकुज्जेति अवकुज्ज का ना. धा., वर्त., प्र. पु., ए. व., पलट देता है, उलट पुलट कर देता है, गड़बड़ कर देता है - *अञ्जिस्सा पातिया पटिकुज्जति अवकुज्जेति, अवकुज्जो निपज्ज अहं,* सद्द. 2.349; - **ज्जन्तो** त्रि., वर्त. कृ., उलटता हुआ - *भत्तभरितं पातिं अवकुज्जन्तो विय थेरस्स पसादभङ्गं करोन्तो एवमाह,* अ. नि. अट्ठ. 2.205.

अवकुट्ठ त्रि., अव + √कुस का भू. क. कृ. [अवक्रुष्ट], कल कल से गूंज रहा, आवाजों से भरा हुआ, कूजित, निनादित - **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अवादयो कुट्ठाद्यत्थे ततिताय; अवकुट्ठं कोकिलाय वनमवकोकिलं, अवमयूरं,* मो. व्या. 3.13.

अवकूल त्रि., निचली या गहरी खाइयों वाले तट वाला/वाली - **ला** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अनावकुलाति न अवकुला अखानुमा उपरि उक्कुलविकुलभावरहिता वा समसण्ठिता,* जा. अट्ठ. 5.162.

अवकोकिल त्रि., [अवकोलिल], **1.** अत्यधिक कोयलों वाला, **2.** कोयलों की कूक से गूंजता हुआ - **लं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अवकुट्ठं कोकिलाय वनमवकोकिलं,* मो. व्या. 3.13; *वियोगे ओमुक्कौपाहनो, अवकोकिलं वनं,* सद्द. 3.882.

अवक्कन्त त्रि., अव + √कमु का भू. क. कृ. [अवक्रान्त], भीतर तक भरा हुआ, पूरी तरह से डूबा हुआ, अत्यधिक पीड़ित - **न्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *भिक्खवे, एकन्तदुक्खा अभविस्स दुक्खानुपतिता दुक्खावक्कन्ता अनवक्कन्ता सुखेन, नयिदं सत्ता पथवीधातुया सारज्जेय्युं,* स. नि. 1(2).157; *दुक्खावक्कन्ताति दुक्खेन ओक्कन्ता ओतिण्णा,* स. नि. अट्ठ. 2.138.

अवक्कन्ति स्त्री., [अवक्रान्ति], **क.** मार्ग या नियाम में प्रवेश, **ख.** गर्भ में प्रवेश या अवतरण, **ग.** पुनर्जन्म का ग्रहण, **घ.** अनुभूति, साक्षात्कार, प्रादुर्भाव – *येसं धम्मानं समनन्तरा अरियधम्मस्स अवक्कन्ति होति,* पु. प. 119; *अवक्कन्ति होतीति ओक्कन्ति निब्बत्ति पातुभावो होति,* पु. प. अट्ठ. 35; *तस्मिं पतिट्ठिते विञ्ञाणे विरुळ्हे नामरूपस्स अवक्कन्ति होति,* स. नि. 1(2).58.

अवक्कम / वोक्कम पु., [अवक्रम], गर्भ में प्रवेश, गर्भ-धारण – तस्सा उतुम्हि न्हाताय, होति गब्भस्स वोक्कमो, जा. अट्ठ. 5.323.

अवक्कमति अव + √कम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अवक्राम्यति], **शा. अ.** अन्दर जाता है, पास पहुंचता है, **ला. अ.** प्रवेश करता है, गर्भ में प्रवेश करता है – **क्कमिं** अद्य., उ. पु., ए. व. – *पच्छतो तुय्हं नट्ठुट्ठं, कथं ख्वाहं अवक्कमिं'न्ति,* जा. अट्ठ. 3.423; *तव पच्छतो ठितं अहं कथं अवक्कमिन्ति अत्थो,* जा. अट्ठ. 3.424.

अवक्कमन नपुं., अव + √कम से व्यु., क्रि. ना. [अवक्रमण], अवतरण, अन्दर प्रवेश, नीचे उतरकर आना – *थेरस्स कुमारकस्सपस्स गब्भावक्कमन'न्ति? ... तासं त्वं सद्दहसि गब्भस्सावक्कमनन्ति?,* मि. प. 130.

अवक्कारपाती स्त्री., तत्पु. स. [अवकारपात्र / अवस्करपात्र, नपुं.], भिक्षा में प्राप्त भोजन के अतिरिक्त भाग को रखने वाला पात्र, कूड़ा रखने का पात्र, उच्छिष्ट भोजनादि को रखने की टोकरी – **तिं** द्वि. वि., ए. व. – *पानीयं परिभोजनीयं पटिसामेति, अवक्कारपातिं पटिसामेति, भत्तग्गं सम्मज्जति,* म. नि. 1.271; *अवक्कारपातिन्ति अतिरेकपिण्डपातं अपनेत्वा ठपनत्थाय एकं समुग्गपातिं धोवित्वा ठपेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).140; – **यं** सप्त. वि., ए. व. – *तस्मिं खो पन समये भिक्खूनं अवक्कारपातियं भुत्तावसेसकं भत्तं होति,* ध. प. अट्ठ. 1.174.

अवक्खलित नपुं., [अवस्खलित, त्रि.], अपराध, त्रुटि, सन्मार्ग से फिसलन, भूल, कमी, गलती – **तं** प्र. वि., ए. व. – *तस्स तं अनिस्सितस्स यथावुत्तं चलितं अवक्खलितं, विप्फन्दितं वा नत्थि कारणस्स सुविक्खम्भितत्ता,* उदा. अट्ठ. 323; *अलभमानोति रथरेणुमत्तम्पि अवक्खलितं अपस्सन्तो ...,* स. नि. अट्ठ. 1.163.

अवक्खित्त त्रि., अव + √खिप का भू. क. कृ. [अवक्षिप्त], **शा. अ.** नीचे की ओर फेंका हुआ, **ला. अ.** उपेक्षित, नकारा गया, अस्वीकृत, अग्राह्य – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अथायं कायो उज्झितो अवक्खित्तो सेति, यथा कट्ठं अचेतन'न्ति,* म. नि. 1.376; स. प. में पू. प. के रूप में – **मत्तिकापिण्ड** पु., कर्म. स. [अवक्षिप्तमृत्तिकापिण्ड], नीचे फेंका हुआ मिट्टी का ढेला – *ताय एव मुच्छाय उप्पत्तिया ठत्वा अवक्खित्तमत्तिकापिण्डा विय विस्सुस्सित्वा पथवियं पतिता,* पे. व. अट्ठ. 151; – **चक्खु** त्रि., ब. स. [अवक्षिप्तचक्षु], नीचे की ओर आंख की नजर रखने वाला, अपनी दृष्टि नीचे की ओर किया हुआ – *तत्थ अधोभावे अवकुज्जो, अवक्खित्तचक्खु,* सद्द. 3.882; तुल. ओक्खित्तचक्खु; – **सेद** त्रि., ब. स. [अवक्षिप्तस्वेद], पसीना बहाकर कठोर परिश्रम करने वाला – **देहि** तृ. वि., ब. व. – *सेदावक्खित्तेहीति अवक्खित्तसेदेहि, सेदं मुञ्चित्वा वायामेन पयोगेन समधिगतेहीति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 2.305.

अवक्खिपति अव + √खिप का वर्त., प्र. पु., ए. व., उतार फेंकता है, दूर हटा देता है – **न्ती** स्त्री., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व., पीछे की ओर फेंक रही – *अजा यथा वेळुगुम्बस्मिं बद्धा, अवक्खिपन्ती असिमज्झगच्छि, ... तत्थ अवक्खिपन्तीति कीळमाना पच्छिमपादे खिपन्ती,* जा. अट्ठ. 4.225; – **पि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *ततो नो समणो गोतमो महावाते थुसं धुनन्तो विय दूरमेव अवक्खिपि,* दी. नि. अट्ठ. 1.216.

अवक्खिपन नपुं., अव + √खिप से व्यु., क्रि. ना., उतार फेंकना, दूर हटा देना – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *अधो अवक्खिपनेनाति इमाहि छहि कलाहि यथा अतिभोति,* जा. अट्ठ. 1.166.

अवक्खेप पु., उपरिवत् – **पो** प्र. वि., ए. व. – *अवक्खेपो अधो खिपनं,* सद्द. 2.530.

अवखण्डन नपुं., अव + √खण्ड से व्यु., क्रि. ना. [अवखण्डन], विभाजन, वितरण, दान, टुकड़े-टुकड़े कर देना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *दानं वुच्चति अवखण्डनं, अपेतं दानतोति अपदानं अनवखण्डनन्ति अत्थो,* विसुद्धि. 1.58; *अवखण्डनं विच्छिन्दनं निरन्तरमप्पवत्ति,* विसुद्धि. महाटी. 1.83; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *दा अवखण्डने ... एत्थ च परित्तन्ति समन्ततो खण्डितत्ता परित्तं अप्पमत्तकं हि गोमयपिण्डं परित्तन्ति वुच्चति,* सद्द. 2.480; – **रहित** त्रि., तत्पु. स. [अवखण्डनरहित], बाधा से रहित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सह अपदानेन सपदानं, अवखण्डनरहितं अनुघरन्ति वुत्तं होति,* विसुद्धि. 1.58.

अवगच्छति अव + √गम का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अवगच्छति], जानता है – *पटिगच्छतीति पुन गच्छति, अवगच्छतीति*

जानाति अधिगच्छती'ति लभति जानाति वा, सद्द॰ 2.462.

अवगण्डकारकं अ., क्रि॰ वि॰, गालों के भीतर भोजन को ठूंसते हुए (खाते समय), गालों को फुलाते हुए – *न अवगण्डकारकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया'ति,* पाचि॰ 265; *अवगण्डकारकन्ति मक्कटो विय गण्डे कत्वा कत्वा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 154; *कदाचि अवगण्डकारकं भुञ्जन्तो विय कपोलन्तरे ठपेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98.

अवगत त्रि॰, अव + √गम का भू॰ क॰ कृ॰ [अवगत], **क.** वह, जिसने जान लिया है, समझा हुआ, सुपरिचित, ठीक से जाना हुआ – *बुद्धं ञातं पटिपन्नं विदितावगतं मतं,* अभि॰ प॰ 757; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ अञ्ञातोति अवगतो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 193; **ख.** क॰ वा॰ में, जानने वाला, समझने वाला – *एत्थ च यथा लोके अवगन्ता अवगतोति वुच्चति, एवं बुज्झिता सच्चानीति बुद्धो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 7; *तत्थ सकललोकं तीरणपरिञ्ञाय तथाय गतो अवगतोति तथागतो,* उदा॰ अट्ठ॰ 104.

अवगन्तु त्रि॰, अव + √गम से व्यु॰, क॰ ना॰ [अवगन्तृ], ज्ञाता, समझने वाला, जानने वाला – **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ च यथा लोके अवगन्ता अवगतोति वुच्चति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 7.

अवगम पु॰, [अवगम], ज्ञान, समझ, जानना – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगमो अवगमो गन्तब्बं गमनीयं गम्मं गम्ममानं गमीयमानं गो मातुगामो,* सद्द॰ 2.464–65.

अवगमन नपुं॰, [अवगमन], उपरिवत् – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुध अवगमने, अवगमनं जाननं,* सद्द॰ 2.481; *एत्थ ओक्कमनं वुच्चन्ति अवगमनट्ठेन पञ्च नीवरणानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).108.

अवगम्यते अव + √गम के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवगम्यते], जाना जाता है, समझा जाता है – *पयोगसामत्थिया सम्बन्धिविसेसानवगमोवगम्यते,* मो॰ व्या॰ 4.40.

अवगाहति / ओगाहति अव + √गाह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवगाहते], **शा॰ अ॰** अन्दर तक जाकर डुबकी लगाता है, पानी में भीतर तक डूबकर नहाता है, **ला॰ अ॰** गहराई तक जाकर ज्ञान पाता है, निष्णात बनता है, पूरी तरह से डूब जाता है – *विसुद्धं सो हि सङ्गिगिं कथं नामावगाहति,* सद्धम्मो॰ 383; – **न्ति** ब॰ व॰ – *नावगाहन्ति चित्तग्गिं नरकग्गिं व नीरजा,* सद्धम्मो॰ 370; – **हितुं** निमि॰ कृ॰ – *केवलं परसत्तत्थं को समत्थोवगाहितुं,* सद्धम्मो॰ 37; *परलोक फलन्तस्स को समत्थो, व गाहितुं,* सद्धम्मो॰ 327.

अवगाहन / ओगहण नपुं॰, अव + √गाह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवगाहन], **शा॰ अ॰** स्नान, जल में पूर्णरूप से डूब जाना, **ला॰ अ॰** नहाने के लिए प्रयुक्त स्थान या घाट – **हणे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा नाम ओगहणे मनुस्सानं न्हानतित्थे ... अङ्गं घंसन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221; *पीळ अवगाहने,* सद्द॰ 2.569.

अवगुण्ठन नपुं॰, अव + √गुण्ठ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवगुण्ठन], घूंघट, पर्दा, आच्छादन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हितावगुण्ठनं थूलं मोहजालं विघाटितं,* सद्धम्मो॰ 314.

अवग्गाह पु॰, [अवग्रह], **शा॰ अ॰** विघ्न, बाधा, बिलगाव, **ला॰ अ॰** सूखा, अनावृष्टि – **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुब्बुट्ठिकाति अवग्गाहो, वस्सविबन्धोति वुत्तं होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.84.

अवङ्क त्रि॰, वङ्क (वक्र) का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अवक्र], **शा॰ अ॰** शरीर की वक्रता से रहित, **ला॰ अ॰** सरल-स्वभाव वाला, निष्कपट, निष्ठावान्, कुटिलता से रहित **ङ्को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्तो विधूमो अनीघो निरासो, मुत्तो विसल्लो अममो अवङ्को,* पे॰ व॰ 550; *अवङ्कोति कायवङ्कादिवङ्कविरहितो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 200; *उजू अवङ्को असठो अमायो, न लेसकप्पेन च वोहरेय्य,* वि॰ व॰ 1270; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपि नु खो, महाराज, नाराचस्स ... अजिम्हस्स अवङ्कस्स अकुटिलस्स ...,* मि॰ प॰ 115; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अवक्रता], सीधापन, अकुटिलता, सरलता – *उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता – अयं तस्मिं समये कायुजुकता होति,* ध॰ स॰ 50; *अवङ्कताति चन्दलेखावङ्कभावपटिक्खेपो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 195; – **त्त** नपुं॰ भाव॰ [अवक्रत्व], उपरिवत् – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं नेमियापि अवङ्कत्ता अदोसत्ता अकसावत्ता, अरानम्पि अवङ्कत्ता ... नाभियापि अवङ्कत्ता अदोसत्ता अकसावत्ता पवत्तितं समानं,* अ॰ नि॰ 1(1).135.

अवच त्रि॰, उच्च के मि॰ सा॰ पर अव + च के योग से व्यु॰, प्रायः उच्च के साथ स॰ प॰ में प्रयुक्त [अवाक् अ॰], नीचे की ओर स्थित, निचला, नीचे वाला, तुच्छ, हीन, निकृष्ट – **चा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उच्चावचा चेतनका भवन्तीति खणे खणे उप्पज्जमाना चेतना उच्चापि अवचापि उप्पज्जन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.202; – **चं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उच्चावचाति अञ्ञेसु ठानेसु पणीतं उच्चं वुच्चति, हीनं अवचं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.111; – **य** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ताय चेताय*

उच्चाय अवचाय वा पटिपदाय न पारं दिगुणं यन्ति, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.195; – **कम्म** नपुं॰, कर्म॰ स॰, छोटा मोटा कर्म, घटिया या तुच्छ काम, हलका साधारण या गौण कार्य – **म्मं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवचकम्मं नाम पादधोवनमक्खनादिखुद्दककम्मं, अथ वा चेतिये सुधाकम्मादि उच्चकम्मं नाम, तत्थेव कसावपचनउदकानयनकुच्छकरण निय्यासबन्धनादि अवचकम्मं नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).295.

अवचन[1] नपुं॰, वचन का निषे॰, अनुपयुक्त कथन या वचन, कुछ भी नहीं कहना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तादिसं रूपं न वुत्तं, अवचनं येव युत्ततरं,* सद्द॰ 1.161; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सच्चं, अवचने कारणं अत्थि, तं सुणाथ मूलाय पटिकस्सेय्य,* सद्द॰ 1.135; – **कारण** नपुं॰, नहीं बोलने या कुछ भी न कहने का कारण – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स अवचनकारणं आचिक्खन्ती देवता चतुत्थपञ्चमगाथा अभासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.270.

अवचन[2] त्रि॰, ब॰ स॰, वचनकर का निषे॰ [अवचनकर], बात को न मानने वाला, आज्ञा का पालन न करने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *न अञ्ञा चित्तं उपट्ठपेन्ति, अनस्सवा अवचनकरा पटिलोमवुत्तिनो, अञ्ञेनेव मुखं करोन्ति,* महानि॰ 27; *अवचनकराति सुणमानापि वचनं न करोन्तीति अवचनकरा,* महानि॰ अट्ठ॰ 89.

अवचनीय त्रि॰, √वच के सं॰ कृ॰, वचनीय का निषे॰ [अवचनीय], **शा॰ अ॰** कुछ भी नहीं कहे जाने योग्य, वर्णन न किए जाने योग्य, **ला॰ अ॰** नहीं डाटने फटकारने योग्य, अनिन्दनीय, आज्ञा नहीं दिए जाने योग्य – **यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथञ्हि नाम आयस्मा छन्नो भिक्खूहि सहधम्मिकं वुच्चमानो अत्तानं अवचनीयं करिस्सती'ति* ..., पारा॰ 278; *अहमेव अत्तनो अत्थं वा अनत्थं वा जानिस्सामी'ति अत्तानं अवचनीयं अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.426; – **त्ता** नपुं॰, भाव॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ [अवचनीयत्व], नहीं कहने योग्य होना, अकथनीयता – *उदपादीति आख्यातेन अवचनीयत्तचक्खुं उदपादी'ति,* सद्द॰ 1.126.

अवचरक त्रि॰, ओचरक के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अवचरण नपुं॰, अव + √चर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवचारण], **शा॰ अ॰** किसी क्षेत्र-विशेष में द्रष्ट क्रियाशीलता, किसी काम पर लगा होना, **ला॰ अ॰** किसी काम से सुपरिचय – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ *त्वं पवत्तसम्पहारं सङ्गामं मद्दित्वा अवचरणतो सङ्गामावचरो* ..., जा॰ अट्ठ॰ 2.78; *यथा पन सङ्गामे अवचरणतो सङ्गामावचरोति लद्धनामको नागो नगरे चरन्तोपि सङ्गामावचरो त्वेव वुच्चति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 108.

अवचरति / ओचरति अव + √चर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवचरति], **क.** एक सुनिश्चित क्षेत्र में क्रियाशील होता है, आलम्बन-विशेष से सुपरिचित होता है – *कामोवचरतीत्येत्थ, कामेवचरतीति वा ठानूपचारतो वापि, तं कामावचरं भवे'ति,* अभि॰ ध॰ वि॰ 78; *एवञ्हि नो सुत्ते ओचरतीति,* म॰ नि॰ 2.180; – **रन्तं** वर्त॰ कृ॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमिदं अञ्ञत्थ अवचरन्तम्पि कामावचरमेवाति वेदितब्बं,* ..., ध॰ स॰ अट्ठ॰ 108; **ख.** घटिया या हीन आचरण करता है – **वाचरी** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अवाचरी पट्ठवसानुगस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 5.441; *अवाचरीति अनाचारं चरि,* तदे॰; **ग.** विचार-विमर्श करता है – **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, छानबीन करके – ... *ओचरका जनपदं ओचरित्वा आगच्छन्ति,* स॰ नि॰ 1(1).96; *ओचरित्वाति अवचरित्वा वीमंसित्वा, तं तं पवत्तिं ञत्वाति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.132.

अवचारयति / अवचारयेति अव + √चर के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, किसी को सुनिश्चित क्षेत्र के अन्दर कार्य करने अथवा विचरण करने हेतु प्रेरित करता है – अपिच कामभवसङ्खाते कामे पटिसन्धिं अवचारेतीतिपि कामावचरं, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 108.

अवछादन नपुं॰, [अवछादन], ढक देने वाला ढक्कन, अदृश्य बना देने वाला आवरण या पर्दा, छत, चादर – **पच्चुपट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰, आवरण को खड़ा कर देने वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परगुणमक्खनलक्खणो मक्खो, तेसं विनासनरसो, तदवच्छादनपच्चुपट्ठानो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).113.

अवच्छिद्द (छिद्दावच्छिद्द) त्रि॰, *केवल द्व॰ स॰ में छिद्द के उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त* [छिद्रावछिद्र], केवल छेदों ही छेदों से भरा हुआ, बुरी तरह से कटा या फटा हुआ, पूर्ण रूप से विदीर्ण – **द्दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रुक्खो ओभग्गो खाणुमत्तो छिद्दावच्छिद्दोव हुत्वा वाते पहरन्ते आकोटितो विय सद्दं निच्छारेन्तो अट्ठासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.161; जा॰ अट्ठ॰ 3.434; – **द्दं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा छिद्दावछिद्दं घरावासं तत्थ सन्थरन्तीतिपि, सन्थागारो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.85; *दुच्छन्नन्ति विरळच्छन्नं छिद्दावछिद्दं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.71; *बेळुवमत्ता हुत्वा पमिज्जिंसु, सकलसरीरं छिद्दावछिद्दं अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.181.

अवच्छिन्दति / ओच्छिन्दति अव + √छिद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवछिनत्ति], काट फेंकता है, छोटे छोटे टुकड़ों में कर देता है, विनष्ट कर देता है, काट देता है – *अयं काळकण्णी सिङ्गाली मय्हं मग्गं ओच्छिन्दती'ति, लेड्डुदण्डं गहेत्वा मातरं पलापेत्वा अटविं पटिपज्जि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.319; – **न्दित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *कालं कत्वा पुत्तसिनेहेन सिङ्गाली हुत्वा तव मरणभयभीता मग्गं ते ओच्छिन्दित्वा तं वारेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.320; *यस्स पन किस्मिञ्चिदेव ठाने अवच्छिन्दित्वा खन्धगतं पातेतुकामस्स सतो यं ठानं मनुस्सानं सप्पटिभयं, ... तत्थेव अविच्छिन्दित्वा पातेति, अयं कूटो नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.5.

अवच्छेदकं अ॰, क्रि॰ वि॰, *कवलावच्छेदकं जैसे मुहावरों में ही प्राप्त* (छोटे छोटे भागों या निबालों में) विभाजित करके – *न कबळावच्छेदकं भुञ्जिस्सामीति सिक्खा करणीया'ति ...,* पाचि॰ 264; *कबळावच्छेदकन्ति कबळं अवच्छिन्दित्वा अवच्छिन्दित्वा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 154.

अवजात त्रि॰, अव + √जन का भू॰ क॰ कृ॰ [अवजात], **शा॰ अ॰** अधम या नीच वंश में जन्म लेने वाला, **ला॰ अ॰** नीच स्वभाव या आचरण वाला – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमे तयो? – अतिजातो, अनुजातो, अवजातोति,* इतिवु॰ 47; *अवजातोति गुणेहि मातापितूनं अधमो हुत्वा जातो, तेहि हीनगुणोति अत्थो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 195; *अनुजातोति तयो पुत्ता अतिजातो च अनुजातो च अवजातो चाति, अनुप्पन्नं यसं उप्पादेन्तो अतिजातो कुलभारो अवजातो कुलपवेणिरक्खको पन अनुजातो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.210; – **त** संबो॰, ए॰ व॰ – *पुरिसन्त कली अवजात, मा बहुभाणिध नेरयिकोसि,* सु॰ नि॰ 669; *अवजात बुद्धस्स अवजातपुत्त,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.180; – **दारक** पु॰, कर्म॰ स॰, नीच कुल में उत्पन्न बालक, बुरी प्रकृति वाला बालक – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्भो मय्हं गेहे एवरूपो एको अवजातदारको अत्थि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.314; – **पुत्त** पु॰, कर्म॰ स॰, उपरिवत् – *एको मे अवजातपुत्तो अत्थि, तं तव सन्तिकं पेसेस्सामि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.103; *अयं मे अवजातपुत्तो, इमं मारेत्वा वच्चकूपे खिपतु* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.104.

अवजानन नपुं॰, अव + √ञा से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवजानन], अपमान, तिरस्कार, नीची निगाह से देखना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परिभवे अवजाननं, अवमञ्ञति दहरो ति न उञ्ञातब्बो,* सद्द॰ 3.882; *तत्रायं अधिप्पायो – यं तं पटिजाननञ्च अवजाननञ्च, तस्स पटिच्छादनत्थं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 2.

अवजानना स्त्री॰, उपरिवत् **क.** अपमान, तिरस्कार – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तावञ्ञाति अत्तानं अवजानना,* विभ॰ अट्ठ॰ 458; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सरियथिकेन पन वुत्तप्पकारं अवजाननञ्च परिभवनञ्च अकत्वा पुब्बुट्ठायिपच्छानिपातितादीहि, उपायेहि खत्तियकुमारो तोसेतब्बो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.119; **ख.** अस्वीकृति, खण्डन, निषेध – *... वत्तब्बेति अवजानना परवादिस्स,* कथा॰ अट्ठ॰ 109; *अवजाननञ्च तस्स युत्तन्ति निग्गहो च न कातब्बो, ... अवजाननेनेव निग्गहं दस्सेति,* कथा॰ मू॰ टी॰ 50.

अवजानाति अव + √ञा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवजानाति], तिरस्कार करता है, उपेक्षा करता है, हीन या तुच्छ समझता है, अस्वीकृत करता है – *दत्वा अवजानाति, संवासेन अवजानाति,* अ॰ नि॰ 2(1).155; *तमेनं दत्वा अवजानातीति अयं दिन्नं पटिग्गहेतुमेव जानातीति एवं अवमञ्ञति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.51; *तं नित्तण्हं मुनिं चरन्तं, नावजानाति सदेवकोपि लोको'ति,* उदा॰ 160; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अत्तानञ्च नावजानामी'ति,* स॰ नि॰ 1(2).47; *अतानञ्च नावजानामीति अत्तानञ्च न अवजानामि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.57; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अप्पञ्ञातोति नं बाला, अवजानन्ति अजानता,* थेरगा॰ 129; – **नमाना** स्त्री॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवजानमाना भणति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.156; – **नेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *परं वा अवजानेय्य, किमञ्ञत्र अदस्सनाति,* सु॰ नि॰ 208; – **नित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *अम्हेहि सद्धिं सल्लपन्तो अवजानित्वा पटिजानिस्सति,* पाचि॰ 2;

अवञेय्या स्त्री॰, सं॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवञ्ञाति अवञ्ञेय्या अवजानितब्बाति वुत्तं होति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 153; द्रष्ट॰ अवञ्ञत्ति, अवञ्ञात, अवञ्ञित तथा अवञ्ञा.

अवजानापेति अव + √ञा के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, तिरस्कार या उपेक्षा कराता है, अननुमोदित या प्रतिषिद्ध कराता है – *अथ वा परिभावापेतीति हीळापेति अवजानापेति,* सद्द॰ 1.5; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *उज्झापेसीति अवजानापेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).5.

अवजानीयते अव + √ञा के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवज्ञायते], तिरस्कृत या अपमानित किया जाता है, अभिभूत किया जाता है – *अथ वा परिभवीयतेति हीळीयते अवजानीयते,* सद्द॰ 1.6.

अवजीयति अव + √जि के कर्म॰ वा॰ का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, (युद्ध अथवा क्रीड़ा आदि में) जीत लिया जाता है, खो दिया जाता है, समाप्त कर दिया जाता है – *यस्स जितं नावजीयति,*

जितं यस्स नो याति कोचि लोके, ध॰ प॰ 179; *यस्स सम्मासम्बुद्धस्स तेन तेन मग्गेन जितं रागादिकिलेसजातं पुन असमुदाचरणतो नावजीयति, दुज्जितं नाम न होति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.113; *न तं जितं साधु जितं, यं जितं अवजीयति, तं खो जितं साधु जितं, यं जितं नावजीयति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.300.

अवजीयन नपुं॰, अव + √जि के कर्म॰ वा॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, जीत लिया जाना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं जितं साधु जितं नाम न होति, कस्मा? पुन अवजीयनतो, ... कस्मा? पुन नावजीयनतो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.300.

अवज्ज 1. त्रि॰, √वद के सं॰ कृ॰, वज्ज का निषे॰ [अवद्य], **शा॰ अ॰** वह, जिसके बारे में कुछ अच्छा न कहा जा सके, **ला॰ अ॰** निन्दनीय, तुच्छ, अधम – *पतिकिट्ठं निकिट्ठं च इत्तरावज्जकुच्छिता,* अभि॰ प॰ 699; – **ज्जानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *न अवज्जानि अनवज्जानि अनिन्दितानि अगरहितानीति, वुत्तं होति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 112; 2. त्रि॰, √वज्ज के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अवर्ज्य], **शा॰ अ॰** नहीं वर्जित किए जाने योग्य, **ला॰ अ॰** वर्जनीय पापकर्मों आदि से इतर (पुण्य-कर्म) – **ज्जं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वज्जञ्च वज्जतो ञत्वा, अवज्जञ्च अवज्जतो,* ध॰ प॰ 319; – **ज्जे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवज्जे वज्जमतिनो,* ध॰ प॰ 318; *अवज्जे वज्जमतिनी, वज्जे चावज्जदस्सिनी,* थेरीगा॰ 107; *अवज्जे वज्जमतिनीति न्हानुच्छादनदन्तकट्ठखादनादिके अनवज्जे सावज्जसञ्ञी,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 119; *तत्थ अवज्जेति दसवत्थुकाय सम्मादिट्ठिया, तस्सा उपनिस्सयभूते धम्मे च,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.281; – **दस्सी** त्रि॰, [अवर्ज्यदर्शिन्/अवद्यदर्शिन्], कोई भी दोष न देखने वाला/वाली – **स्सिनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वज्जे चावज्जदस्सिनी,* थेरीगा॰ 107; *वज्जे चावज्जदस्सिनीति मानमक्खपलासविपल्लासादिके सावज्जे अनवज्जदिट्ठी,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 119; **सञ्ञिता** स्त्री॰, भाव॰ [अवद्यसंज्ञात्व], दोषरहित होने की संज्ञा या समझ का होना – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वज्जे वज्जसञ्ञिता वज्जे अवज्जसञ्ञिता,* महानि॰ 158; *अवज्जे वज्जसञ्ञिताति निद्दोसे दोससञ्ञिता, वज्जे अवज्जसञ्ञिताति सदोसे निद्दोससञ्ञिता,* महानि॰ अट्ठ॰ 259.

अवज्जिकसाव त्रि॰, ब॰ स॰ [अवर्जितकषाय], वह, जिसका चित्त काषायों (कलुषित विचारों) से मुक्त नहीं है – **वं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिद्धन्तकसावन्ति अनीहतदोसं अनपनीतकसावं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.218; *तं होति जातरूपं धन्तं सधन्तं निद्धन्तं अविद्धन्तकसावं, न चेव मुदु होति न च कम्मनियं,* अ॰ नि॰ 1(1).286.

अवज्झ त्रि॰, **क**. √वध के सं॰ कृ॰ वज्झ (वध्य) का निषे॰ [अवध्य], वध नहीं करने योग्य, नहीं मार डालने योग्य – **ज्झो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवज्झो ब्राह्मणो दूतो, चेतपुत्त सुणोहि मे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.291; *एतेहि तीहि ठानेहि, अवज्झो होति ब्राह्मणो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.45; – **ज्झा** ब॰ व॰ – *अवज्झा ब्राह्मणा आसुं, अजेय्या धम्मरक्खिता,* सु॰ नि॰ 290; *ते एवं नमस्सियमाना लोकेन अवज्झा ब्राह्मणा आसुं, न केवलञ्च अवज्झा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.46; **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवध्यरूप], अवध्य स्वरूप वाला, (कवच धारण करने के कारण) वध न करने योग्य शरीर वाला – **पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुक्खेन फुट्ठस्सुदपादिसञ्ञा, अरहद्धजो सब्भि अवज्झरूपो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.43; मि॰ प॰ 209; *अरहद्धजो नाम सब्भि पण्डितेहि अवज्झरूपो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.44; **ख**. त्रि॰ (अवन्ध्य) वह, जो बांझ न हो, उत्पादक, फलप्रद, सफल – **ज्झा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवज्झा मय्हंपब्बज्जा,* थेरगा॰ 789.

अवज्झायति/अवझायति अव + √झा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अत्यधिक चिन्ता करता है, शोक करता है – *अक्खच्छिन्नोव झायति,* स॰ नि॰ 1(1).70; *अक्खछिन्नो'वझायतीति अक्खच्छिन्नो अवझायति बलवचिन्तनं चिन्तेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.102; *विसमं मग्गमारुय्ह, अक्खछिन्नोव झायति,* मि॰ प॰ 70; – **न्ति** ब॰ व॰ – *तस्मा ते खीणपत्ता कोञ्चा विय एत्थेव बज्झित्वा अवझायन्तीति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.73.

अवञ्चन त्रि॰, √वञ्च से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ वञ्चन का निषे॰ [अवञ्चन], चलने फिरने में असमर्थ, गमन करने में अक्षम – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सन्ति पादा अवञ्चनाति पादापि मे अत्थि, तेहि पन वञ्चितुं पदवारगमनेन गन्तुं न सक्काति अवञ्चना,* जा॰ अट्ठ॰ 1.211; चरिया॰ 401.

अवञ्झ त्रि॰, वञ्झ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अवन्ध्य], वह जो, बांझ न हो, उत्पादक, उत्पन्न करने में सक्षम, फलप्रद, सफल – **ञ्झो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथागतस्स परिनिब्बुतस्स असादियन्तस्सेव कतो अधिकारो अवञ्झो भवति सफलो,* मि॰ प॰ 108; 112; – **वादी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अवन्ध्यवादिन्], वह, जिसके वचन निष्फल या अलाभप्रद न हो, सफल एवं लाभप्रद बात बोलने वाला – *अवञ्झवादी अतुलो अब्भुतोरुगुणाकरो,* सद्धम्मो॰ 345.

अवञ्ञत्ति स्त्री., [अवज्ञप्ति], असम्मान, द्रष्ट. अनवञ्ञत्ति के अन्त.

अवञ्ञा स्त्री., [अवज्ञा], अपमान, तिरस्कार - **ञ्ञं** द्वि. वि., ए. व. - *उभयेहिपि दुन्निक्खित्तानं दारुभण्डादीनं तेसु अवमञ्ञं अकत्वा अत्तना ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2)289.

अवञ्ञात / ओञ्ञात त्रि., अव + √ञा का भू. क. कृ. [अवज्ञात], तिरस्कृत, अपमानित, पराभूत - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तेसु तेसु वा पन जनपदेसु ओञ्ञातं अवञ्ञातं हीळितं परिभूतं अचित्तीकतं, एतं हीनं नाम नामं,* पाचि. 8; - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अवञ्ञातो च होतीध मज्जपायी पुरा नरो,* सद्धम्मो. 88; - **कुलज** त्रि., तत्पु. स., तिरस्कृत अथवा असम्मानित कुल में जन्म लेने वाला - **जो** पु., प्र. वि., ए. व. - *थद्धो, वञ्ञातकुलजो जळो अपरिपुच्छको,* सद्धम्मो. 90.

अवञ्जित त्रि., अव + √ञा के नियमित भू. क. कृ. अवञ्ञात के स्थान पर अप. [अवज्ञात], असम्मानित, अपमानित, पराभूत *अवञ्जितावगणिता परिभूतावमानिता,* अभि. प. 756.

अवट्टुम त्रि., ब. स. [अवर्त्मन्], बिना मार्ग वाला, मार्ग-रहित - **मे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. *नो अनन्तके, सकोटिये, नो अकोटिये, सवट्टुमे, नो अवट्टुमे, सपरियन्ते, नो अपरियन्ते, सुप्पमत्ते वा सरावमत्ते वा,* विसुद्धि. 1.120.

अवट्ठान / अवत्थान नपुं., अव + √ठा से व्यु., क्रि. ना. [अवस्थान], स्थिरता, अचल स्थिति - **नं** प्र. वि., ए. व. - *तेनस्स पहटकुकुटस्सेव मुहुत्तम्पि कम्पमानस्स अवत्थानं नाम नाहोसि,* जा. अट्ठ. 1.484; *अवत्थानं अधिट्ठानं, हितचरिया मेत्ताभावना'ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.42; - **याचना** स्त्री., तत्पु. स. [अवस्थानयाचना], अचल स्थिति या स्थिरता के लिए याचना - **य** च. वि., ए. व. - *तिट्ठतु भगवा कप्प'न्ति सकलकप्पं अवट्ठानयाचनाय यदिदं ...,* उदा. अट्ठ. 264.

अवत्थापनवचन नपुं., तत्पु. स. [अवस्थापनवचन], स्थिरता अथवा निर्धारण को प्रकाशित करने वाला वचन - **नं** प्र. वि., ए. व. - *अद्धाति एकंसवचनं निस्संसयवचनं निक्कङ्खावचनं ... अवत्थापनवचनमेतं अद्धाति,* महानि. 2; *अवत्थापनवचनमेतन्ति एतं वचनं ओतरित्वा पतिट्ठितं सन्तिट्ठापनं ठपनं,* महानि. अट्ठ. 15.

अवट्ठित / अवत्थित त्रि., अव + √ठा का भू. क. कृ. [अवस्थित], दृढ़ता के साथ स्थित, सुप्रतिष्ठित, स्थिर, दृढ़ - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *एवं सुपरिसुद्धसीलो चतुपच्चयसन्तोसे अवट्ठितो सप्पच्चयं नामरूपं परिगहेत्वा ...,* उदा. अट्ठ. 166; - **ता** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *समवट्ठिताति सम्मा अवट्ठिता आभोगं कत्वा ठिता,* सु. नि. अट्ठ. 2.73; - **वाद** त्रि., ब. स. [अवस्थितवाद], दृढ़ वाद का प्रतिपादक या अनुयायी, स्थिर या लचीलेपन से रहित मत का प्रतिपादक - **दा** पु., प्र. वि., ब. व. - *सकायने दळ्हवादा थिरवादा बलिकवादा अवट्ठितवादाति सकायने तत्थ दळ्हं वदाना, ...,* महानि. 221; - **सभाव** त्रि., ब. स. [अवस्थितस्वभाव], स्थिर प्रकृति वाला, अचञ्चल स्वभाव वाला - **वो** पु., प्र. वि., ए. व. - *ठितधम्मोति ठितसभावो अवट्ठितसभावो,* उदा. अट्ठ. 244; **समादान** त्रि., ब. स., दृढ़ता के साथ किसी काम को ग्रहण करने वाला या हाथ में लेने वाला - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अवत्थितसमादानो कायसुचरिते वचीसुचरिते मनोसुचरिते दानसंविभागे सीलसमादाने उपोसथुपवासे मत्तेय्यताय ...* दी. नि. 3.108; *दळ्हसमादानो अस्स अवत्थितसमादानोति वीरियपक्कमं दळ्हं करेय्य,* महानि. 368.

अवट्ठिति स्त्री., [अवस्थिति], सुदृढ़ स्थिति, स्थिरता, दृढ़ता, अचपलता - *अरियसावकस्स अरियञाणं उप्पन्नं होति, अथ चतुन्नं इन्द्रियानं ... पे. ... अवट्ठिति होति,* स. नि. 3(2).303; *या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं ...,* ध. स. 570; महानि. 269; *विचिकिच्छासहगतन्ति इमेसु सत्तरससु चित्तेसु दुब्बलत्ता सण्ठिति अवट्ठितिआदीनि न लब्भन्ति,* ध. स. अट्ठ. 328. *निद्देसवारे चित्तस्सेकग्गतानिद्देसे ताव सण्ठिति अवट्ठितीति,* ध. स. अट्ठ. 292.

अवड्ढन नपुं., √वड्ढ से व्यु., क्रि. ना., वड्ढन का निषे. [अवर्धन], वृद्धि का न होना, वृद्धि का अभाव, नहीं बढ़ना - **वस** नपुं., नहीं बढ़ने का कारण - **सेन** तृ. वि., ए. व. - *अट्ठिकसञ्ञा अवड्ढनवसेन अविभूताति वुत्ता,* विसुद्धि. 1.109.

अवड्ढि / अवद्धि / अवुड्ढि स्त्री., वड्ढि का निषे., तत्पु. स. [अवृद्धि], वृद्धि या विकास का अभाव, हानि, कमी, सङ्कट, विपत्ति - *अयं सकलस्स यूथस्स अनयो अवुड्ढि महाविनासो करोति,* जा. अट्ठ. 3.315; *अभुम्मेति भू'ति वड्ढि, अभू'ति अवड्ढि, विनासो मय्हन्ति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.118; **या** तृ. वि., ए. व. - *तस्स अभवेन अवुड्ढिया पुत्तदारस्स वा परिजनस्स वा तथारूपं पारिजुञ्ञं दिस्वा वा सुत्वा वा न*

नन्दति, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.121; – **मुख** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, हानि का कारण – **खे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उय्योगमुखेति परिहानिमुखे, अवुड्ढिमुखे च वितोसीति अत्थो*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.195; – **कर** त्रि॰, [अवृद्धिकर], हानिकारक, अहितकारक – **रानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असप्पायानीति अवड्ढिकरानि आरम्मणानि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.36; – **काम** त्रि॰, [अवृद्धिकाम], वृद्धि, प्रगति या हित की कामना न करने वाला, भला होने की चाह न रखने वाला – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनत्थकामस्साति अवड्ढिकामस्स*, जा॰ अट्ठ॰ 3.93.

अवड्ढित त्रि॰, √वड्ढ के प्रेर॰, भू॰ क॰ कृ॰ वड्ढित का निषे॰ [अवर्धित], नहीं बढ़ाया हुआ, विकसित न किया हुआ – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो पन अवड्ढिते आरम्मणे पवत्तो, अयं परित्तारम्मणो*, विसुद्धि॰ 1.87; – **कसिण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवर्धितकृत्स्न], कसिण का विकास न करने वाला **णस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवड्ढितकसिणस्स तं कसिणं अत्ताति च लोकोति च गहेत्वा एवं होति, ...*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.14; *चक्कवाळपरियन्तं कत्वा वड्ढितकसिणो पन अनन्तसञ्ञी होति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98.

अवड्ढिनिस्सित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अवृद्धिनिःश्रित], दुर्भाग्य से पीड़ित, अभागा – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपानुभाति अवड्ढिनिस्सिता मानथद्धा*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.29.

अवड्ढिभूत त्रि॰, [अवृद्धिभूत], अवृद्धि या अमङ्गल बना हुआ, अहितकर – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवभूतावाति अवड्ढिभूता अवमङ्गलभूतायेव*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.318.

अवड्ढेत्वा √वड्ढ के पू॰ का॰ कृ॰ वड्ढेत्वा का निषे॰ [अवर्धयित्वा], नहीं बढ़ाकर, विकास नहीं कराकर – *पटिभागनिमित्तं चक्कवाळपरियन्तं अवड्ढेत्वा तं ... उद्धमधो अवड्ढेत्वा पन तिरियं वड्ढेत्वा उद्धमधो अन्तसञ्ञी*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98; *तं निमित्तं पत्तवड्ढनपूववड्ढनभत्तवड्ढनलतावड्ढनदुस्सवड्ढनयोगेन अवड्ढेत्वा*, विसुद्धि॰ 1.147.

अवण त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्रण], 1. बिना घाव वाला, व्रण से रहित, व्रण या घाव उत्पन्न न करने वाला – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *को मे असत्थो अवणो, सल्लमब्भन्तरपस्सयं*, थेरगा॰ 757; 2. बेदाग, दागों से रहित – **णे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पथविं खणित्वा पक्खलन्ता विय अवणे वेळुरियमणिम्हि वणं उप्पादेन्ता विय*, उदा॰ अट्ठ॰ 89.

अवण्ट / अवट त्रि॰, ब॰ स॰ [अवृन्त], **क**. पत्ते के डण्ठल या डण्डी से रहित, बिना डण्ठल वाला (ताड़ वृक्ष या फल), **ख**. बोंड़ी या अग्रभाग रहित (स्तन) – **ण्टा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दुविधा ... ते हि द्वे हुत्वा उरे जाता वण्टस्स अभावा अवण्टा*, जा॰ अट्ठ॰ 5.151; – **वटं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पसन्नचित्तो सुमनो, अवटं अददिं फलं*, अप॰ 1.323; अप॰ 2.41;

अवण्टक त्रि॰, उपरिवत् – **कानि**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अखीलकानि च अवण्टकानि, हेट्ठा नभ्या कटिसमोहितानि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.193; – **कानि**[2] नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वाकं वा रज्जुं वा दिगुणं कत्वा नत्थ अवण्टकानि नीपपुप्फादीनि पवेसेत्वा पटिपाटिया बन्धन्ति*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.183–84.

अवण्टफलदायक पु॰, एक स्थविर का नाम – *इत्थं सुदं आयस्मा अवण्टफलदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति*, अप॰ 1.323.

अवण्टफलवग्ग पु॰, अपदान के 39वें वग्ग का शीर्षक, अप॰ 1.323–331.

अवण्टफलिय पु॰, एक स्थविर का नाम – *इत्थं सुदं आयस्मा अवण्टफलियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति*, अप॰ 2.41–42; 87–88.

अवण्ण[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अवर्ण्य], अप्रशंसनीय, प्रशंसा न करने योग्य – **ण्णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰/द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चोरा गोघातका लुद्धा, अवण्णे वण्णकारका*, जा॰ अट्ठ॰ 5.262; *तत्थ अवण्णे वण्णकारकाति पेसुञ्ञकारका*, जा॰ अट्ठ॰ 5.269.

अवण्ण[2] पु॰, वण्ण का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अवर्ण], अपयश, अकीर्ति, अयश, अप्रशंसा, निन्दापरक वचन – **ण्णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सक्कियो होति पापस्मिं, अवण्णो चस्स रूहति*, इतिवु॰ 50; *अस्स वा पुग्गलस्स अवण्णो अभूतोपि पापजनसेविताय रुहति विरुळ्हिं वेपुल्लं आपज्जति पत्थरति*, इतिवु॰ अट्ठ॰ 212; – **ण्णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समणस्स गोतमस्स अवण्णं उप्पादेत्वा लाभसक्कारं नासेस्सामा'ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.102; – **ण्णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स सत्थुनो तस्स दिट्ठिया ... तस्स आदायस्स अवण्णे भञ्ञमाने अत्तमनो होति ... सङ्घस्स वा अवण्णे भञ्ञमाने कुपितो होति*, महाव॰ 90; – **काम** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवर्णकाम], निन्दा करने की इच्छा रखने वाला – **मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आयस्मन्तो अवण्णकामा बुद्धस्स अवण्णकामा धम्मस्स अवण्णकामा सङ्घस्स*, अ॰ नि॰ 3(1).32; – **भय** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अवर्णभय], निन्दा का डर, अपयश के फैलने का डर – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवण्णहारिकाति एवं मे अवण्णभयापि दस्सती'ति गेहतो गेहं*, विभ॰ अट्ठ॰ 457; विसुद्धि॰ 1.28; – **भासक** त्रि॰, [अवर्णभाषक], निन्दा की बातें बोलने वाला, अपयश के

वचन कहने वाला - **केसु** पु., सप्त. वि., ब. व. - *तेसु अवण्णभासकेसु, तस्मिं वा अवण्णे तुम्हे भवेय्याथ चे, यदि भवेय्याथाति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.49; - **वादी** त्रि., [अवर्णवादिन्], दूसरों के बारे में बुरा बोलने वाला, निन्दा करने वाला - **दिं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *तत्रापि अवण्णवादिं अपस्सन्तो अत्तनो गुणकथमेव सुत्वा हिमवन्तपदेसे नु खो कथ'न्ति ...,* जा. अट्ठ. 3.94; - **विरहित** त्रि., तत्पु. स. [अवर्णविरहित], निन्दारहित, अनिन्दित, अपयश का अपात्र - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *बुद्धस्स अवण्णं भासतीति अवण्णविरहितस्स अपरिमाणवण्णसमन्नागतस्सापि बुद्धस्स भगवतो,* दी. नि. अट्ठ. 1.36; - **संयुत्त** त्रि., तत्पु. स. [अवर्णसंयुक्त], अपयश या निन्दा का पात्र, निन्दित - **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अवण्णसंयुता जहन्ति जीवितं, इतो विमुत्तापि च यन्ति दुग्गतिं,* जा. अट्ठ. 3.390; *अवण्णसंयुता जहन्तीति अधम्मिका लोलराजानो अवण्णेन युत्ता हुत्वा जीवितं जहन्ति,* जा. अट्ठ. 3.391; - **संसग्गभय** नपुं., तत्पु. स. [अवर्णसंसर्गभय], निन्दनीय हो जाने का डर - **या** प. वि., ब. व. - *सुखीपि हेके न करोन्ति पापं, अवण्णसंसग्गभया पुनेके, ... यसदायकस्स सामिकस्स अपरज्झन्तानं अवण्णो भविस्सती'ति अवण्णसंसग्गभया न करोन्ति,* जा. अट्ठ. 6.203; 204; - **हरण** नपुं., तत्पु. स. [अवर्णहरण], अपयश का प्रसार, बदनामी का फैलाव - *गेहतो गेहं, गामतो गामं, जनपदतो जनपदं अवण्णहरणं,* विभ. अट्ठ. 457; विसुद्धि. 1.28; - **हारिका** स्त्री., तत्पु. स. [अवर्णहारिका], अपयश का प्रसार एवं प्रचार करने वाली - *सङ्घिपना पापना सम्पापना अवण्णहारिका परपिट्ठिमंसिकता,* विभ. 405; *अवण्णहारिकाति एवं मे अवण्णभयापि दस्सती'ति गेहतो गेहं ... अवण्णहरणं,* विभ. अट्ठ. 457; विसुद्धि. 1.28; - **ण्णारह** त्रि., [अवर्णार्ह], निन्दनीय, निन्दा किए जाने योग्य - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *अननुविच्च अपरियोगाहेत्वा अवण्णारहस्स वण्णं भासति,* अ. नि. 1(1).107; अ. नि. 1(2).3; *इध, पोतलिय, एकच्चो पुग्गलो, अवण्णारहस्स अवण्णं भासिता होति,* अ. नि. 1(2).115.

अवण्णनीयसोभ त्रि., ब. स. [अवर्णनीयशोभा], वर्णन न करने योग्य शोभा वाला, अत्यन्त श्रेष्ठ शोभा से युक्त - **भं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तं सुवण्णरूपकं जिव्हाय अवण्णनीयसोभं अहोसि,* जा. अट्ठ. 5.274.

अवतंस / अवटंसक / वटंस / वटंसक पु./नपुं., [अवतंस/अवतंसक], फलों से बना कान का आभूषण, कर्णाभूषण - **को** प्र. वि., ए. व. - *उत्तंसो सेखरा'वेळा मुद्धमाल्ये'वटंसको,* अभि. प. 308; *उत्तंसो त्ववतंसो च कण्णपूरे च सेखरे,* अभि. प. 870; - **टंसा** प्र. वि., ब. व. - *विरोचन्ति परिक्खित्ता, अवटंसा सुनिम्मिता,* अप. 2.249; थेरीगा. अट्ठ. 76; - **टंसं / टंसकं** द्वि. वि., ए. व. - *मोलिं वटंसं पामङ्गभिङ्गारं हरिचन्दनं,* म. वं. 11.28; *वटंसं ति कण्णपिलन्धनं वटंसकं ति वुत्तं होति,* म. वं. टी. 11.28; - **सको** पु., प्र. वि., ए. व. - *वटंसकोति कण्णस्स उपरि पिळन्धनत्थं कतपुप्फविकति, सो च वटंसो'ति वुच्चति,* वि. वि. टी. 263; - **सका** ब. व. - *वटंसका वातधुता, वातेन सम्पकम्पिता,* वि. व. 684.

अवतत / ओतत / ओत्थत त्रि., अव + √तन का भू. क. कृ. [अवतत/अवस्तीर्ण], ऊपर की ओर फैलाया हुआ, आच्छादित, ढका हुआ - **त्थतं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यस्स अच्चन्तदुस्सील्यं, मालुवा सालमिवोत्थतं,* ध. प. 162; पाठा. ओत्थत; *खेत्ते सुविरूळ्हं धञ्ञबीजं सम्मा पवत्तमानेन वस्सेन ओततविततआकिण्णबहुफलं हुत्वा सस्सुद्धानसमयं पापुणाति,* मि. प. 282.

अवतरण नपुं., अव + √तर से व्यु., क्रि. ना. [अवतरण], नीचे उतरना, नीचे की ओर जा रहा उतार - **णे** सप्त. वि., ए. व. - *अवतारो'वतरणे तित्थस्मिं विवरे'प्यथ,* अभि. प. 981.

अवतरति अव + √तर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अवतरति], नीचे उतर कर आता है, डुबकी लगाता है, प्रवेश करता है - *यदि चतूसु अरियसच्चेसु अवतरति, किलेसविनये सन्दिस्सति,* नेत्ति. 20-21.

अवतार पु., अव + √तर से व्यु. [अवतार], **1.** उतार, वह स्थान, जहां, नीचे उतर कर आ सके, नहाने का घाट, विवर - **रो** प्र. वि., ए. व. - *अवतारो'वतरणे तित्थस्मिं विवरे'प्यथ,* अभि. प. 981; **2.** प्रारम्भिक प्रवेशद्वार, भूमिका, स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त - **रं** द्वि. वि., ए. व. - *अभिधम्मावतारन्तु मधुरं मतिवड्ढनं,* अभि. अव. 2; *अभिधम्मं ओतरन्ति अनेनाति अभिधम्मावतारं नाम पकरणं,* अभि. अव., अभि. टी. 1.130; *बालावतारं भासिस्सं,* बाला. 65.

अवति[1] √अव (रक्षा करना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. - *अवति "बुद्धो मम अवतं",* सद्द. 2.440.

अवति[2] √उ (शब्द करना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अवते], शब्द करता है - *उ सद्दे, अवति अवन्ति अवसि,* सद्द. 2.322.

अवतिट्ठति अव + √ठा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अवतिष्ठति], ठहरता है, टिक जाता है, लम्बे समय तक बना रहता है - *सद्धा दुतिया पुरिसस्स होति, नो चे अस्सद्धियं अवतिट्ठति,* स. नि. 1(1).29; *यत्थ भयं नावतिट्ठति, तेन मग्गेन वजन्ति भिक्खवो'ति,* थेरगा. 21; - **त्थासि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *दण्डको पतित्वा खन्धे अवत्थासि,* जा. अट्ठ. 4.185.

अवतिण्ण त्रि., अव + √तर का भू. क. कृ. [अवतीर्ण], उतरा हुआ, अन्दर तक प्रविष्ट, प्रभावित, डूबा हुआ - **ण्णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *उप्पथं अवतिण्णो भवं, न हि भवं अम्हाकं वचनत्थं जानाति,* सद्द. 1.136.

अवत्तब्बता स्त्री., √वद के सं. कृ., वत्तब्ब के भाव. का निषे. [अवक्तव्यता], वचनों द्वारा कहने योग्य न होना, वचनों का अविषय होना - **य** तृ. वि., ए. व. - *तम्हि ... अवत्तब्बताय अनक्खातं नाम,* ध. प. अट्ठ. 2.169.

अवत्थ[1] त्रि., ब. स. [अवस्त्र], वस्त्ररहित, नग्न - **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. - *नग्गो दिगम्बरो'वत्थो, घस्मरो तु च भक्खको,* अभि. प. 734.

अवत्थ[2] त्रि., √अ'स के भू. क. कृ. से व्यु. [अपास्त], दूर फेंक दिया गया, छोड़ा हुआ - **त्थं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *छिन्नं वने खत्तियेहि अवत्थं, सिङ्गालसङ्घा परिकड्ढिस्सन्ति,* जा. अट्ठ. 5.292; *अवत्थन्ति छड्डितं,* जा. अट्ठ. 5.293.

अवत्थत / ओत्थत / अवत्थट त्रि., अव + √थर का भू. क. कृ. [अवस्तृत], आच्छादित, खचित, अत्यधिक भरा हुआ - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सुखुमालताय भत्तकाजेन अवत्थतो पतति,* जा. अट्ठ. 5.284; *वलिग्गाही देवपुत्तो रञ्ञो तेजेन ओत्थतो,* म. वं. 21.30; *सो असनिया मत्थके अवत्थटो विय मा मं, आवुसो, नासेहि, नत्थि मय्हं एवरूपन्ति,* ध. प. अट्ठ. 2.31; - **तं** द्वि. वि., ए. व. - *तं भत्तकाजेन ओत्थतं दिस्वा चिन्तेसि,* जा. अट्ठ. 5.284.

अवत्थद्ध त्रि., अव + √थम्भ का भू. क. कृ. [अवस्तब्ध], निर्भर, आश्रय लेने वाला - **त्थद्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सके सिप्पे अवत्थद्धो, अगमं काननं अहं,* अप. 1.232; पाठा. अपत्थद्धो.

अवत्थन्तरभेद पु., तत्पु. स. [अवस्थान्तरभेद], विभिन्न मनोदशाओं का विभाजन - **तो** प्र. वि., ए. व. - *समथोति च निद्दिट्ठा अवत्थन्तरभेदतो,* सद्धम्मो. 457.

अवत्थरण / ओत्थरण नपुं., अव + √थर से व्यु., क्रि. ना. [अवस्तरण], **क.** आच्छादन, ढक लेना, **ख.** अचानक हमला कर अभिभूत कर लेना - *सम्म, तथादारुणानं चोरानं आवुधानि गहेत्वा अवत्थरणकाले केन नु खो ते कारणेन चित्तुत्रासभतम्पि न उप्पन्न'न्ति पुच्छन्तो पठमं गाथमाह,* जा. अट्ठ. 2.278; *रञ्ञो अवत्थरणभावं ञत्वा दधिघटं विस्सज्जेसि,* जा. अट्ठ. 2.85; *अत्तनो अवत्थरणभावं ञत्वा पटिवचनं न दस्सती'ति जानाति,* दी. नि. अट्ठ. 1.221.

अवत्थरति / ओत्थरति अव + √थर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अवस्तृणाति], ढक देता है, ऊपर ढेर लगा देता है, अत्यधिक भर देता है, ऊपर फैला देता है - *अप्पहरिते कतो हरितं ओत्थरति, आपदासु, उम्मत्तकस्स आदिकम्मिकस्साति,* पाचि. 281; *तेसम्हि सरीरतो तेजो मम सरीरं ओत्थरति, मम सरीरतो तेजो तेसं सरीरं न ओत्थरति,* ध. प. अट्ठ. 1.239; - **न्ति** ब. व. - *तस्स हदये अपस्मारवाता अवत्थरन्तीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.75; - **न्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - *सामणेरम्हि तस्मिं काले सिनेरुना अवत्थरन्तोपि मारेतुं समत्थो नाम अत्थि,* ध. प. अट्ठ. 1.384; - **न्ता** ब. व. - *ते नगरं अवत्थरन्ता विय तस्स गेहं गन्त्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.169; - **मानो** उपरिवत् ए. व. - *सोपि खो अग्गि एकधूमो हुत्वा एकजालो अवत्थरमानो आगच्छतेव,* जा. अट्ठ. 1.209; - **मानं** उपरिवत्, द्वि. वि., ए. व. - *तयोपि जने अवत्थरमानं गेहं पति,* ध. प. अट्ठ. 1.392; - **रित्वा** पू. का. कृ. - *ता इत्थियो तूरियभण्डानि अवत्थरित्वा निद्दायन्तियो ...,* जा. अट्ठ. 1.71; *बोधिसत्तो कुलावके निपन्नकोव गीवं उक्खिपित्वा अवत्थरित्वा आगच्छन्तं अग्गिं दिस्वा चिन्तेसि,* जा. अट्ठ. 1.210.

अवत्था स्त्री., [अवस्था], दशा, स्थिति, स्थायीपन, जीवन की अवधि - **तो** प्र. वि., ए. व. - *तासं येव च नामानि अवत्थातो इमानि पि,* सद्द. 2.363; **सु** सप्त. वि., ब. व. - *अथ वा सम्मा गतत्ताति तीसुपि अवत्थासु सम्मापटिपत्तिया गतत्ता, सुप्पटिपन्नत्ताति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 70; *तस्मा तीसुपि अवत्थासु सब्बसत्तेसु समानरसाय तथाय महाकरुणाय सकललोकहिताय गतो पटिपन्नोति तथागतो,* उदा. अट्ठ. 106; - **त्थादिविभाग** पु., तत्पु. स. [अवस्थादिविभाग], अवस्था या स्थिति आदि की दृष्टि से प्रभेद या विभाजन - **गेन** तृ. वि., ए. व. - *कामतण्हादिवसेन अट्ठसतभेदा अवत्थादिविभागेन अनन्तभेदा च,* उदा. अट्ठ. 174.

अवत्थापित त्रि., अव + √ठा के प्रेर. का भू. क. कृ. [अवस्थापित], व्यवस्थित या सुनिश्चित किया हुआ, सुनिर्धारित - **ताय** स्त्री., तृ. वि., ए. व. - *देसनाति तस्सा मनसाववत्थापिताय पाळिया देसना,* पारा. अट्ठ. 1.18.

अवत्थापीयति अव + √ठा के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., कर्म. वा. [अवस्थाप्यते], स्थापित कराया जाता है, बैठाया जाता है, निर्धारित कराया जाता है - *तेन सोतेन हेतुभूतेन, करणभूतेन वा अवधीयति अवत्थापीयति अप्पीयतीति सोतावधानं,* पटि. म. अट्ठ. 1.11.

अवत्थारक पु., केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त [अवस्तारक], आच्छादन, चादर - **को** प्र. वि., ए. व. - *पटिञ्ञाय कारेतब्बं, येभुय्यसिका, तस्सपापियसिका, तिणवत्थारकोति,* पाचि. 283; *इदं कम्मं तिणवत्थारकसदिसत्ता तिणवत्थारको ति वुत्तं,* चूळव. अट्ठ. 39; **केन** तृ. वि., ए. व. - *एवरूपं अधिकरणं तिणवत्थारकेन वूपसमेतुं,* चूळव. 192.

अवत्थु नपुं., वत्थु का निषे., तत्पु. स. [अवस्तु], आधार का अभाव, उपयुक्त कारण का अभाव, अयथार्थता - **स्मिं** सप्त. वि., ए. व. - *अनापत्तिकानं अवत्थुस्मिं अकारणे पातिमोक्खं ठपेतब्बं,* चूळव. 398; *येन कारणेन हेतुसमुग्घाते अहेतुस्मिं अवत्थुस्मिं दिब्बचक्खु उप्पज्जति,* मि. प. 126; - **क** त्रि., [अवस्तुक], निर्मूल, कारण-रहित, आधार-रहित वास्तविक आधार से रहित - **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *कायवत्थुकम्पि इतरवत्थुकम्पि अवत्थुकम्पीति कायिकचेतसिकं विपाकसुखं अनुगच्छति,* ध. प. अट्ठ. 1.25; *उद्दिस्सकं अवत्थुकं ममायनमत्तमेव होति,* जा. अट्ठ. 4.204; - **पक्क** त्रि., कर्म. स. [अवस्तुकपक्व], उचित रूप में नहीं पकाया हुआ - **क्का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *उच्छुरसं उपादाय अपक्का वा अवत्थुकपक्का वा सब्बापि अवत्थुका उच्छुविकति फाणितन्ति वेदितब्बा,* पारा. अट्ठ. 1.267.

अवदञ्ञू त्रि., वदञ्ञू का निषे. [अवदान्य], अशिष्ट, विनम्रता से रहित, घमण्डी, कृपण, कञ्जूस - *असद्धो कदरियो अवदञ्ञू, मच्छरि पेसुणियं अनुयुत्तो,* सु. नि. 668; - **ञ्ञुता** स्त्री., भाव. [अवदान्यता], **शा. अ.** दान जैसे कुशल कर्मों से सम्बद्ध वचनों से अनजान होना, **ला. अ.** कृपणता, अहंभाव, अशिष्टता - *पञ्च मच्छरियानि - आवासमच्छरियं ... कदरियं कटुकञ्चुकता अग्गहितत्तं चित्तस्स - अयं वुच्चति अवदञ्ञुता,* विभ. 432; *अवदञ्ञुताति थद्धमच्छरियवसेन देहि, करोही'ति वचनस्स अजानता,* विभ. अट्ठ. 471; - **य** तृ. वि., ए. व. - *मच्छरियेन अवदञ्ञुताय समन्नागता जना पमत्ता,* महानि. 26; *अवदञ्ञुतायाति सब्बञ्ञुबुद्धानम्पि कथितं अजाननभावेन,* महानि. अट्ठ. 88.

अवदन्त त्रि., √वद के वर्त. कृ., वदन्त का निषे. [अवदत्], नहीं बोल रहा, नहीं कह रहा - **न्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. *एवं मं अवदन्तं यो एवं पुच्छेय्य - किस्स नु खो, भन्ते, विञ्ञाणहारो'ति, एस कल्लो पञ्हो,* स. नि. 1(2).14.

अवदमान त्रि., √वद के वर्त. कृ., वदमान का निषे. [अवदमान], उपरिवत् - **मानो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तेसु एकं लेड्डुं अभिरुहित्वा अट्ठासि अवदमानो,* स. नि. अट्ठ. 3.231.

अवदातक / ओदातक त्रि., [अवदातक], उजला, सफेद, धवल - **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *तित्थियानं धजं केचि, धारिस्सन्त्यवदातकं,* थेरगा. 965; - **तनुत्तच** त्रि., ब. स., उज्ज्वल, धवल एवं कोमल त्वचा वाला - **चं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *हेमयञ्ञोपचितङ्गं, अवदाततनुत्तचं,* अप. 2.125.

अवदानिय त्रि., [अवदान्य], अनुदार, कञ्जूस, कृपण, उदारतापूर्वक दान न देने वाला - **या** पु., प्र. वि., ब. व. - *कामेसु गिद्धा पसुता पमूळ्हा, अवदानिया ते विसमे निविट्ठा,* सु. नि. 780; महानि. 25; *अवदानियाति अवगच्छन्तीतिपि अवदानिया, मच्छरिनोपि वुच्चन्ति अवदानिया,* महानि. 26.

अवदारण नपुं., **1**. अव + √दर के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [अवदारण], नीचे तक खोदना, विदारण या तोड़फोड़ - **णे** सप्त. वि., ए. व. - *खणु अवदारणे,* सद्द. 2.397; **2**. क. ना., खोदने वाला यन्त्र, खन्ती, फावड़ा, कुदाल - **णं** प्र. वि., ए. व. - *लेड्डुत्तो मत्तिकाखण्डो, खणित्तीत्थ्यवदारणं,* अभि. प. 447.

अवदिसितब्ब / अपदिसितब्ब त्रि., अव / अप + √दिस का सं. कृ., सङ्केतित या व्यवस्थापित किए जाने योग्य, ठीक से विनिश्चित कराया जाना चाहिए - **ब्बा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अपदिसितब्बा विसुं कातब्बा ववत्थपेतब्बा, विञ्ञूहि गारय्हा भवेय्याथाति वुत्तं होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).99; पाठा. अवदिसितब्बा.

अवदिहति अव + √दिह का वर्त., प्र. पु., ए. व., परिपूर्ण करता है, भर देता है - *उदरं अवदिहति उपचिनोति परिपूरेतीति उदरावदेहकं,* लीन. (दी. नि. टी.) 3.222.

अवदेहकं अ., क्रि. वि., *केवल 'उदरावदेहकं' के रूप में प्राप्त,* केवल उदर को अत्यधिक भर देने हेतु - *उदरावदेहकं भुत्वा, सयन्तुत्तानसेय्यका,* थेरगा. 935; *उदरं अवदिहति उपचिनोति परिपूरेतीति उदरावदेहकं,* लीन. (दी.नि.टी.) 3.222; *ब्राह्मणा यावदत्थं उदरावदेहकं भुञ्जित्वा अवसेसं ...,* अ. नि. 2(1).208.

अवदेहन नपुं., अव + √दिह से व्यु., क्रि. ना., अत्यधिक भरपूर कर देना, परिपूर्ण कर देना - **तो** प. वि., ए. व. - *तञ्हि उदरं अवदेहनतो उदरावदेहकन्ति वुच्चति,* दी. नि. अट्ठ. 3.195.

अवधारण नपुं., अव + √धर के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [अवधारण], निश्चय, निर्धारण, संपुष्टि, समर्थन, परिसीमित कर देना - **णे** सप्त. वि., ए. व. - *स्वप्पे'वधारणे मत्तं, अपचितियच्चने खये,* अभि. प. 1117; *हा खेदे सच्छि पच्चक्खे, धुवं थिरावधारणे,* अभि. प. 1159; *अवधारणे निच्छयो,* सद्द. 3.885; याव, इति, एवं, खो, नो, एव जैसे निपा. के अर्थों की सीमा को निश्चित करने के अर्थ में अत्यधिक प्रयुक्त, **याव** - *याव सद्दोवधारणे ... अवधारणमेत्तकता परिच्छेदो ... अवधारणे ति किं, याव दिन्नं ताव भुत्तं नावधारयामि कित्तकं मया भुत्तं,* मो. व्या. 3.4; **अथो** - *अथोति निपातमत्तं, अवधारणत्थे वा, महाराज, ते आगतं दुरागतं न होति,* पे. व. अट्ठ. 218; **इति** - *इच्चस्स वचनीयन्ति आदिसु अवधारणे,* सद्द. 2.317; **एव** - *एवावधारणे ञेय्यं, यथत्तं तु यथातथं,* अभि. प. 1152; **एवं** - *एवं नो एत्थ होती'ति आदीसु अवधारणे, स्वायमिध आकारानिदस्सनावधारणेसु दट्ठब्बो,* दी. नि. अट्ठ. 1.28; **च** - *चकारो अवधारणत्थो, एवकारो वा अयं सन्धिवसेनेत्थ एकारो नट्ठो,* सु. नि. अट्ठ. 1.61; - **णत्थ** त्रि., ब. स. [अवधारणार्थ], विनियमन या परिसीमन के प्रयोजन वाला - **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. - *चकारो अवधारणत्थो,* सु. नि. अट्ठ. 1.61; - **त्थं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *चसद्दग्गहणमवधारणत्थं ...,* क. व्या. 79; - **फलत्त** नपुं., भाव., निश्चायन अथवा परिसीमन का सङ्केतक होना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *सब्बानिपि वाक्यानि एवकारत्थसहितानियेव अवधारणफलत्ता,* इतिवु. अट्ठ. 20; *सब्बानि हि वाक्यानि एवकारत्थसहितानियेव अवधारणफलत्ता तेसं ...,* उदा. अट्ठ. 11.

अवधारित त्रि., अव + √धर के प्रेर. का भू. क. कृ. [अवधारित], निश्चित किया गया, निर्धारित किया गया - *गमने विस्सुते चावधारितोपचितेसु च,* अभि. प. 797; - **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. - *हत्थदाठ्ठनरिन्देन तस्मिं अत्थे'वधारिते,* चू. वं. 47.4.

अवधारेत्वा अव + √धर के प्रेर. का पू. का. कृ. [अवधार्य्य], सुनिश्चित करके - *अयं सम्पत्ति पापुणितु'न्ति च अवधारेत्वा वेदे भिन्दित्वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.50.

अवधि पु., [अवधि], किसी भी क्रिया के किए जाने का प्रारम्भिक बिन्दु, बिलगाव का बिन्दु या स्थल - **स्मा** प. वि., ए. व. - *पञ्चम्यवधिस्मा, पदत्थावधिस्मा पञ्चमी विभत्ति होति,* मो. व्या. 2.28.

अवधीयति अव + √धा के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अवधीयते], व्यवस्थापित या निर्धारित किया जाता है, प्रयोग में उतारा जाता है - *करणभूतेन वा अवधीयति अवत्थापीयति अप्पीयतीति सोतावधानं,* पटि. म. अट्ठ. 1.11.

अवनत / ओणत अव + √नम का भू. क. कृ. [अवनत], नीचे की ओर सिर को झुकाया हुआ, विनम्र - *अवनतं सिरो यस्स, सो यं अवंसिरो,* सद्द. 1.102.

अवनति स्त्री., स. प. में प्रयुक्त [अवनति], नीचे की ओर झुकना, पतन, ह्रास, निराशा - *पब्बतो अनुन्नतो अनोनतो, एवमेव खो, महाराज, योगिना योगावचरेन उन्नतावनति न करणीया,* मि. प. 356.

अवनथ त्रि., ब. स., तृष्णा से मुक्त, तृष्णारहित - **थो** पु., प्र. वि., ए. व. - *वनथं न करेय्य कुहिञ्चि, निब्बनथो अवनथो स भिक्खु,* थेरगा. 1223; *यो हि सब्बेन सब्बं नित्तण्हो, ततो एव कत्थचिपि नन्दिया अभावतो अवनथो,* थेरगा. अट्ठ. 2.439.

अवनी स्त्री., [अवनी], पृथ्वी, धरती - *पुथवी जगती भूरी भू भूतधरा'वनी,* अभि. प. 182; *छमा वसुमती उब्बी अवनी कु वसुन्धरा,* सद्द. 1.81; - **निं** द्वि. वि. ए. व. - *कुड्डी एको पकुपित्वा हत्थेन आहनियावनिं,* चू. वं. 37.153; - **निपाल** पु., तत्पु. स. [अवनिपाल], राजा, शासक - **लो** प्र. वि., ए. व. - *सुचिरं अवनिपालो सञ्ञमं अज्झुपेतो,* दा. वं. 4.5; - **पति / पती** पु., उपरिवत् - *विसालतेजो विजयस्सिरिं तदा लभी परक्कन्तिभुजो'वनीपति,* चू. वं. 83.52; *अथावनिपती गन्त्वा अनुराधपुरं तहिं,* चू. वं. 88.80; - **निस्सर** पु., तत्पु. स. [अवनीश्वर], पृथ्वी का स्वामी, राजा - *अथोपकारं संबुद्धसासनस्सावनिस्सरो,* चू. वं. 81.40.

अवन्ततण्ह त्रि., वन्ततण्ह का निषे. [अवान्ततृष्ण], वह, जिसकी तृष्णा शान्त नहीं हुई है, अशान्त तृष्णा वाला - **ण्हा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अवीततण्हा अविगततण्हा अचत्ततण्हा अवन्ततण्हा,* महानि. 34-35; - **ण्हासे** उपरिवत् - *हीना नरा मच्चुमुखे लपन्ति, अवीततण्हासे भवाभवेसु,* सु. नि. 782; *अवीततण्हासेति अविगततण्हा,* महानि. अट्ठ. 123.

अवन्ती 1. स्त्री., एक जनपद या नगर - *कालिङ्गा'वन्तिपञ्चाला वज्जी गन्धार-चेतयो,* अभि. प. 184; *एवं अवन्ती अवन्तियो ति आदिना पि नामिकपदमाला योजेतब्बा,* सद्द. 1.205; - **सु** सप्त. वि., ए. व. - *आयस्मा*

महाकच्चानो अवन्तीसु विहरति, स॰ नि॰ 2(1).9; *ततिये अवन्तीसूति अवन्तिदक्खिणापथसङ्खाते अवन्तिरट्ठे,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.228; 2. पु॰, ब॰ व॰, अवन्ती नामक जनपद के निवासी - *महेसयं अवन्तीनं, सोवीरानञ्च रोरुकं,* दी॰ नि॰ 2.172; - **जनपद** पु॰, तत्पु॰ स॰, अवन्ती नामक क्षेत्र - **दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *महाकच्चाने अवन्तिजनपदे कुररघरं निस्साय पवत्तपब्बते विहरन्ते,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.340; - **दक्खिणापथ** पु॰, कर्म॰ स॰ [अवन्तिदक्षिणापथ], दक्षिणापथ का अवन्ती क्षेत्र - **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेन खो पन समयेन अवन्तिदक्खिणापथो अप्पभिक्खुको होति,* महा॰ 269; - **थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *काळदेविलो नाम इसि अवन्तिदक्खिणापथे एकग्घनसेलं निस्साय अनेकसहस्सइसिपरिवारो वसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.408; *अप्पेव नाम भगवा अवन्तिदक्खिणापथे गुणङ्गुणूपाहनं अनुजानेय्य,* महाव॰ 269; - **दक्खिणापथक** त्रि॰, दक्षिणापथ में स्थित अवन्ती नामक स्थान में रहने वाला - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अट्ठासीतिमत्ता अवन्तिदक्खिणापथका भिक्खू ...,* चूळव॰ 468; - **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *काकण्डपुत्तो पावेय्यकानञ्च अवन्तिदक्खिणापथकानञ्च भिक्खूनं सन्तिके दूतं पाहेसि,* तदे॰; - **पुत्त** पु॰, [अवन्तिपुत्र], अवन्ती का राजकुमार - **त्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अथ खो राजा माधुरो अवन्तिपुत्तो भद्रानि भद्रानि यानानि योजापेत्वा ...,* म॰ नि॰ 2.280; *अवन्तिपुत्तोति अवन्तिरट्ठे रञ्ञो धीताय पुत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.227; - **महाराज** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अवन्तिमहाराज], अवन्ती का राजा - **जा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अतीते अवन्तिरट्ठे उज्जेनियं अवन्तिमहाराजा नाम रज्जं कारेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.350; - **रट्ठ** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अवन्तिराष्ट्र], अवन्ती नामक राष्ट्र - **ट्ठ**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सकावन्ती अस्सकरट्ठं वा अवन्तिरट्ठं वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.309; - **ट्ठं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवन्तिरट्ठं भुञ्जन्तो पितरा दिन्नमत्तनो,* म॰ वं॰ 13.8; *असोककुमारस्स उपराजट्ठानं च अवन्तिरट्ठं च,* म॰ वं॰ टी॰ 283.

अवन्दि √वन्द का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, वन्दना की - *अवन्दि चोरो सुगतस्स पादे,* थेरगा॰ 869.

अवन्दिय[1] त्रि॰, √वन्द के सं॰ कृ॰, वन्दिय का निषे॰ [अवन्द्य], वन्दना नहीं करने योग्य, प्रणाम या अभिवादन न करने योग्य - **न्दिया** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इमे खो, भिक्खवे, दस अवन्दिया,* चूळव॰ 291; *कथं अवन्दिया बुद्धा,* अप॰ 2.204.

अवन्दिय[2] पु॰, व्य॰ सं॰, एक तमिल शासक का नाम - *मनाभरणमहाराजव्हो अवन्दियरायरो,* चू॰ वं॰ 76.146.

अवपतित त्रि॰, अव + √पत का भू॰ क॰ कृ॰ [अवपतित], नीचे गिरा हुआ, नीचे की ओर मुख करके गिरा हुआ - **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *हत्थिक्खन्धावपतितं, कुञ्जरो चे अनुक्कमे,* थेरगा॰ 194; *तत्थ अवपतितन्ति अवमुखं पतितं उद्धंपादं अधोमुखं पतितं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.345.

अवपत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [अवपत्र], पत्तों से रहित, बिना पत्तों वाला - **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ओपत्तन्ति अवपत्तं निप्पत्तं पतितपत्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.438.

अवबुज्झति अव + √बुध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवबुध्यते], समझता है, जानता है, किसी के विषय में सचेत होता है, चित्त का आलम्बन बनाता है - *खुरंव मधुना लित्तं, उल्लिहं नावबुज्झति,* थेरगा॰ 737; *भयमन्तरतो जातं, तं जनो नावबुज्झति,* इतिवु॰ 61; - **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एतं मे याचमानानं, अञ्जलिं नावबुज्झसि,* - **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *करोन्ता नावबुज्झन्ति,* अ॰ नि॰ 2(2).235; - **थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अजा सो नावबुज्झथ,* जा॰ अट्ठ॰ 3.355; - **ज्झितुं** निमि॰ कृ॰ - *न सक्का सुखेन अवबुज्झितुं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).77.

अवबोध पु॰, [अवबोध], पूर्णज्ञान, साक्षात् ज्ञान, गम्भीर ज्ञान, *प्रायः स॰ प॰ में प्राप्त* - **धानुभावदीपक** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, पूर्णज्ञान के प्रभाव को प्रकट करने वाला - **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *... अवबोधानुभावदीपकं उदानं उदानेसीति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 39.

अवबोधति अव + √बुध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवबोधति], अनुभव करता है, प्रत्यक्ष अनुभूति करता है, ध्यान देता है, विश्वास करता है - **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *ये वाचं सन्धिभेदस्स, नावबोधन्ति सारथी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.129; *नावबोधन्तीति न सारतो पच्चेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.130; - **धामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *ततो सकस्स चित्तस्स नावबोधामि कञ्चिनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.204; - **धेतुं** अव + √बुध का निमि॰ कृ॰, प्रेर॰ [अवबोधयितुं], सम्यक ज्ञान कराने के लिए, अवबोध या यथार्थज्ञान कराने हेतु - *परं अवबोधेतुं सुखावबोधनत्थं इदमारद्धन्ति वेदितब्बं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.281(रो॰); पाठा॰ अवबोधे उतुम्पीति 2.158 (वि॰वि॰वि॰).

अवबोधन नपुं॰, अव + √बुध से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवबोधन], अनुभूति, प्रत्यक्ष ज्ञान, विश्वास - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *... ञावबोधने,* धा॰ मं॰ 118; सद्द॰ 2.350.

अवभास पु॰, *ओभास का उत्तरकालीन रूप, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त* [अवभास], प्रकाश, चमक, कान्ति;

गम्भीर॰ आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰ - **क** त्रि॰, [अवभासक], प्रकाश बिखेरने वाला, चमकाने वाला, प्रकाशित कर देने वाला, सिद्धिमग्गावभासक के अन्त॰ द्रष्ट॰.

अवभासति / ओभासति अव + √भास का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, ओभासति रूप में ही प्राप्त [अवभासति], प्रकाशित होता है, चमकता है - *ओभासति ताव सो किमि,* उदा॰ 156; - **भासित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [अवभासित], किसी के द्वारा प्रकाशित किया हुआ या प्रदीप्त किया हुआ - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सब्बञ्ञुञाणसतरंसिपज्जोतेनावभासिता,* सद्धम्मो॰ 590.

अवभुञ्जति अव + √भुज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवभुङ्क्ते], अपङ्ग के समान अनुचित रूप में या घटिया रूप में खाता है, हीन रूप में उपभोग करता है - **मोत्तुं** निमि॰ कृ॰ - .. *स्वाहं एवं अवभोत्तुं न उस्सहामीति वदति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.239; **भुत्त** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [अवभुक्त], अनुचित रूप में भोग किया गया **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रञ्ञो हि किञ्चं अनिप्फादेन्तो तं अवभुत्तं भुञ्जति,* तदे॰.

अवभूत त्रि॰, अव + √भू, भू॰ क॰ कृ॰ [अवभूत], घटिया, हीन, तुच्छ, निकृष्ट - **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवभूताव अयं धनञ्जानी ब्राह्मणी ...,* म॰ नि॰ 2.433; *अवभूतावाति अवड्ढिभूता अवमङ्गलभूतायेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.318; *अवभूताति अधोभूता अधोभावो सत्तानं अवड्ढि अवमङ्गलन्ति आह - 'अवड्ढिभूता अवमङ्गलभूतायेवा'ति,* लीन॰ (म॰नि॰टी॰) 2.209.

अवमङ्गल त्रि॰, [अपमङ्गल], बुरे लक्षणों वाला, अपशकुनो से भरा, दुर्भाग्य का सूचक, अमङ्गलजनक - **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इदञ्हि अवमङ्गलं काळकण्णिसदिसं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.355; *सब्बकल्याणधम्मानं, अवमङ्गलमुट्ठितं,* ना॰ रू॰ प॰ 1304; - **वत्थ** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अवमङ्गलवस्त्र], अमङ्गलसूचक वस्त्र, कफन, मृतशरीर को आच्छादित करने वाला वस्त्र - **त्थं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सिवेय्यकं नाम उत्तरकुरुसु सिवथिकं अवमङ्गलवत्थं,* महाव॰ अट्ठ॰ 376.

अवमञ्ञति अव + √मन का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवमन्यते], अपमान भरी दृष्टि से देखता है, तुच्छ समझता है, तिरस्कार करता है, बुरा व्यवहार करता है - *परिभवे अवजाननं, अवमञ्ञति,* सद्द॰ 3.882; - **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *ओचिनायतूति 'नीहरथेतं काळकण्णि'न्ति अवमञ्ञतु, अवजानातूति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.4; - **थ / ञ्ञि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *पतिं भरियावमञ्ञथाति भरिया च ... पतिं अवमञ्ञथ, परिभवि अवमञ्ञि न सक्कच्चं उपट्ठासि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.53; - **ञ्ञिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एस दासो, तस्मा तं पगब्भताय एवं वदेती'ति अवमञ्ञिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.164.

अवमञ्ञन नपुं॰, अव + √मन से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवमानन], अपमान, तुच्छ समझना, हीन मानना - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *मक्खं असहमानो'ति एत्थ पन अत्तनि परेहि कतं अवमञ्ञनं मक्खोति वुच्चति,* सद्द॰ 2.523.

अवमद्दन नपुं॰, अव + √मद्द से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवमर्दन], कुचल देना, प्रहार करना, तोड़ देना, मर्दन कर देना - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्चपूजागते वञ्च गमने किञ्चावमद्दने,* धा॰ मं॰ 9.

अवमयूर त्रि॰, मयूरों से भरा हुआ, अत्यधिक मयूरों वाला - **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवकुट्ठं कोकिलाय वनमवकोकिलं,* अवमयूरं, मो॰ व्या॰ 3.13.

अवमान पु॰, [अवमान], असम्मान, अपमान *अवमानं तिरोक्कारो परिभवोप्यनादरो,* अभि॰ प॰ 172; - **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अदु पुत्तेहि अवमानो कतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.381; - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *कस्मा इमस्स दुट्ठमक्कटस्स अवमानं सहसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.317; - **प्पत्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवमानप्राप्त], असम्मान का विषय, वह, जिसे असम्मान मिला है **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सा अवमानप्पत्ता हुत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.398.

अवमानित त्रि॰, [अवमानित], अपमानित, तिरस्कृत - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवञ्ञितावगणिता परिभूतावमानिता,* अभि॰ प॰ 756; - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सो भरियाय अवमानितो निब्बिन्नमानसो अञ्ञं कञ्ञं आनेसि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 31.

अवमानेत्वा अव + √मन के प्रेर॰ का पू॰ का॰ कृ॰, अपमानित करके - ... *अवमानेत्वा रट्ठा पब्बाजेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.235.

अवमुख त्रि॰, ब॰ स॰ [अवमुख], अधोमुख, नीचे की ओर मुख को किया हुआ - **खं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ अवपतितन्ति अवमुखं पतितं उद्धंपादं अधोमुखं पतितं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.345.

अवमोचन नपुं॰, [अवमोचन], ढीला करना, मुक्त करना, स्वतन्त्र करना - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुत्त अवमोचने,* सद्द॰ 2.540.

अवय त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्यय], किसी भी प्रकार की अल्पता या न्यूनता से रहित, व्यय या क्षति से रहित - **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *समवयसट्ठेसनोति एत्थ अवयाति अनूना,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.215; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.292.

अवयव पु॰, व्यु॰ अनिश्चित [अवयव, अव + √यु + अच्], 1. शरीर का अङ्ग या भाग - **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अङ्गं त्ववयवो वुत्तो,* अभि॰ प॰ 278; - **वेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सब्बगत्तेहीति सब्बेहि सरीरावयवेहि सकलेहि अङ्गपच्चङ्गेहि ...,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 41; - **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *गत्तानि सरीरावयवा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 183; 2. शरीर, - **वे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सरीरन्ति सरीरभूतं धातुं अवयवे चायं समुदायवोहारो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 169; 3. कारण, किसी भी बात का हिस्सा - **वेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *चतूहि अङ्गेहीति चतूहि कारणेहि अवयवेहि वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.112; 4. किसी भी अनुमान वाक्य का घटक या अङ्ग जो, प्रतिज्ञा, हेतु, दृष्टान्त, उपनय और निगमन नामक पांच अङ्गों या घटकों के रूप में रहता है - *यदञ्ञे पटिञ्ञादीहि अवयवेहि नामादीहि पदेहि ... समन्नागतं वाचं "सुभासित"न्ति मञ्ञन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 113; - **विनिमुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अवयवविनिर्मुक्त], अङ्गों के अतिरिक्त कुछ और - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *समूहोतिपि अवयवविनिमुत्तो परमत्थतो अविज्जमानोपि ... अवयवानं आधारभावेन पञ्ञापीयति,* उदा॰ अट्ठ॰ 19; - **विसेसवन्तु** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवयवविशेषवत्], विशेष प्रकार के अवयवों या भागों वाला - **वन्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ये हि वेदिकाय निरन्तरं ठिता सुसण्ठितघटकादिअवयवविसेसवन्तो थम्भकसमुदाया, ...,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 231-232; - **सहावट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अवयवों या विभिन्न भागों की एक साथ स्थिति - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवयवसहावट्ठानमेव हि समूहो,* उदा॰ अट्ठ॰ 17; - **सम्बन्ध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अवयवसम्बन्ध], विभिन्न भागों का आपसी सम्बन्ध - **न्धे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रत्तियाति अवयवसम्बन्धे सामिवचनं,* उदा॰ अट्ठ॰ 30; - **वादिसम्पन्न** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, विभिन्न तार्किक अङ्गों से युक्त - **न्ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवयवादिसम्पन्नापि हि ... वाचा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.113.

अवर/अपर त्रि॰, [अवर, अपर], क. आयु में छोटा, ख. बाद का, पश्चवर्ती, समय या स्थान की दृष्टि से पिछला, ग. अनुवर्ती, उत्तरवर्ती, घ. कम, घटिया, ङ. अन्तिम, पास वाला, च. पश्चिम की ओर वाला - **रे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपरपुरेति पुरस्स अपरे, पच्छिमदिसायन्ति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).334; - **रं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *परोवरं अरियधम्मं विदित्वा,* सु॰ नि॰ 355; *तत्थ परोवरन्ति ... सुन्दरासुन्दरं दूरे सन्तिकं वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.75; - **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *परोपरानि वरावरा सुन्दरासुन्दरा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 123; - **ज** त्रि॰, [अवरज], बाद में जन्म लेने वाला छोटा भाई - **जे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उभो प्यवरजे निजे,* चू॰ वं॰ 88.19; - **मत्तक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवरमातृक], बहुत कम मात्रा वाला - **केन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ओरमत्तकेनाति अवरमत्तकेन अप्पमत्तकेन,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.163.

अवरज्झति/अपरज्झति अव + √राध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अपराध्यते], क. उपेक्षा करता है, असफल होता है, छोड़ देता है - **ज्झिस्सं** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *करिस्सं नावरज्झिस्सं,* थेरगा॰ 167; *नावरज्झिस्सन्ति तमहं दानि करिस्सं न विराधेस्सं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.317; ख. अपराध करता है - **ज्झाम** वर्त॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ - *तत्थ नापरज्झामाति मारेन्तो अपरज्झति नाम, मयं न मारेम,* जा॰ अट्ठ॰ 5.371.

अवरपुर/अपरपुर त्रि॰, नगर से पश्चिम दिशा की ओर स्थित - **रे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकं समयं भगवा वेसालियं विहरति बहिनगरे अपरपुरे वनसण्डे,* म॰ नि॰ 1.99.

अवरुज्झन्ति अव + √रुध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, विरोध करते हैं, अवरोध खड़ा करते हैं - *नावरुज्झन्ति ते वचो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.386.

अवरुद्ध/ओरुद्ध त्रि॰, अव + √रुध का भू॰ क॰ कृ॰ [अवरुद्ध], नियन्त्रित अथवा संयत कर दिया गया, नियन्त्रित करा दिया गया - **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवरुद्धेत्थाति रट्ठतो पब्बाजिता हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.351; - **द्धानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवरुद्धानं, महाराज, अरञ्ञे जीवसोकिनन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.368; ख. किसी के द्वारा खड़े किए गए अवरोध या रुकावट से युक्त, बाधायुक्त, बन्द कर दिया गया - **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *गोणो किट्ठादो दामेन वा बद्धो वजे वा ओरुद्धो,* अ॰ नि॰ 2(2).101; - **द्धा** ब॰ व॰ - *बुद्धधम्मोरुसेलेहि अवरुद्धा समन्ततो,* सद्धम्मो॰ 592; - **द्धे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ओरुद्धे भिक्खवो दिस्वा, सेतुं गङ्गाय कारयि,* अप॰ 2.269; ग. विद्रोही, वैरी, शत्रु - **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ते खो ते, मारिस, अमनुस्सा महाराजानं अवरुद्धा नाम वुच्चन्ति,* दी॰ नि॰ 3.154; *अवरुद्धा नामाति पच्चामित्ता वेरिनो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.136; *अवरुद्धा होन्तीति पटिविरुद्धा होन्ति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 147; - **क**[1] त्रि॰, अवरुद्ध से व्यु॰, क. बाहर निकाल दिया गया, निष्कासित - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवरुद्धकोति रट्ठा पब्बाजितो अरञ्ञे वसन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.355; ख. शत्रु, वैरी, विरोधी - **द्धे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰

व॰ – *नीहरित्वा यक्खगणे पिसाचे अवरुद्धके,* दी॰ वं॰ 21; – **क²** पु॰, व्य॰ सं॰, एक यक्ष का नाम – **द्धको** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको पन अवरुद्धको नाम यक्खो ... आगन्त्वा अट्ठासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.378.

अवरुन्धति/ओरुन्धति अव + √रुध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवरुणद्धि], **क.** बन्द कर देता है, घेरे के अन्दर कर देता है, नियन्त्रित कर देता है – *गावमवरुन्धति वजं,* मो॰ व्या॰ 2.2; **ख.** बाहर कर देता है, निष्कासित कर देता है – **द्धसि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अवरुद्धसीति रट्ठा नीहरसि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.261.

अवरोज पु॰, व्य॰ सं॰, विपस्सी बुद्ध के समकालीन एक गृहस्थ तथा उसके भाञ्जे का नाम – *विपस्सीबुद्धकाले किर एस अवरोजस्स नाम कुटुम्बिकस्स भागिनेय्यो ... अवरोजो नाम अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.211.

अवरोध/ओरोध पु॰, अव + √रुध से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवरोध], अन्दर बन्द कर देना, घेरा-बन्दी करना, – **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *तेपि सङ्खारखन्धपरियापन्नत्ता एत्थेव अवरोधं गच्छन्ति,* विभ॰ अट्ठ॰ 29; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा अञ्ञेसं तदवरोधतोपि पञ्चेव वुत्ताति,* तदे॰; – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सब्बपञ्ञत्तीनञ्च विज्जमानादीसु छसु पञ्ञत्तीसु अवरोधो,* उदा॰ अट्ठ॰ 13.

अवलक्खण त्रि॰, अमङ्गलसूचक, अपशकुन का सङ्केतक – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *येसं हत्थतो लाभं न लभति, तेसं असिं अवलक्खणोति गरहति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.435; तुल॰ अवमङ्गल.

अवलञ्ज त्रि॰, √वळजि से व्यु॰, सं॰ कृ॰ का निषे॰, परिभोग नहीं करने योग्य, व्यावहारिक प्रयोग में न लाए जाने योग्य, लुञ्ज-पुञ्ज, नहीं चलने-फिरने योग्य – **ञ्जो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवुसो नङ्गलत्थेर, तव विचरणमग्गो अवळञ्जो विय जातो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.349; – **ञ्जं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आहारं थम्भेत्वा मग्गं अवलञ्जं करोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).271; – **ञ्जे** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सेतुसङ्कमनानि च अवलञ्जे अकंसु,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 35.

अवलञ्जन नपुं॰/त्रि॰, वलञ्जन का निषे॰, अप्रयोग – **नट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰, अप्रयोग का अर्थ – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमस्मिं सुत्ते अवळञ्जनट्ठेन 'पुराणमग्गो'"ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.104.

अवलञ्जियमान त्रि॰, √वलजि के कर्म॰ वा॰ के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, किसी के द्वारा अप्रयुक्त, व्यावहारिक उपयोग में नहीं लाया जा रहा – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गेहे पन ... सुवण्णपाति भाजनन्तरे निक्खित्ता दीघरत्तं अवलञ्जियमाना मलग्गहिता अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.118.

अवलम्ब अव + √लम्ब का पू॰ का॰ कृ॰ [अवलम्ब्य], सहारा लेकर, किसी पर टिक कर या आश्रित होकर – *नावाय च त्वं अवलम्ब तिट्ठसि,* पे॰ व॰ 443; *अवलम्बाति अवलम्बित्वा अपस्सेनं अपस्साय,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 164.

अवलम्बक/ओलम्बक त्रि॰, किसी के सहारे लटका हुआ (सीका आदि) – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुवपोतको तं सुत्वा ... साखायं ओलम्बकं ओतारेन्तो विय ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.222.

अवलम्बन नपुं॰, अव + √लम्ब से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवलम्बन], **क.** आधार, सहारा, आश्रय, **ख.** नीचे की ओर लटक रहा – *अवसंसनं अवलम्बनं,* सद्द॰ 2.406.

अवलित्त त्रि॰, अव + √लिप का भू॰ क॰ कृ॰ [अवलिप्त], **शा॰ अ॰** लीपा हुआ, पोता हुआ, अन्दर और बाहर में की गई लिपाई-पोताई से युक्त, **ला॰ अ॰** आसक्त – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुटि नाम उल्लित्ता वा होति अवलित्ता वा ...,* पारा॰ 229.

अवलेखति/ओलेखति अव + √लिख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवलिखति], **शा॰ अ॰** रगड़ कर या खरोंचकर मिटा देता है, **ला॰ अ॰ क.** स्नानगृह में अपने मैल को रगड़ कर साफ कर देता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *फरुसेनपि कट्ठेन अवलेखन्ति,* चूळव॰ 366; – **खेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *नावलेखेय्य फरुसेनुहतञ्चापि धोवये,* खु॰ सि॰ 22; – **खितब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ – *न फरुसेन कट्ठेन अवलेखितब्बं,* चूळव॰ 366; **ख.** पेड़ की छाल को छीलकर उतार देता है – **खेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अवलेखनमत्तकेन अवलिखेय्य,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.368; **ग.** केशों को काट देना या मूड़ देता है – **खिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *केसे मे ओलिखिस्सन्ति,* थेरगा॰ 169; ... *'मम केसे ओलिखिस्सं कप्पेमी'ति केसादीनं छेदनादिवसेन कप्पनतो कप्पको ... मं उपगच्छि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.322.

अवलेखन/अपलेखन नपुं॰, अव + √लिख से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, छीलना, खरोंचना, रगड़कर साफ कर देना, रगड़ कर मिटा देना – **कट्ठ** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अवलेखनकाष्ठ], खरोंचने या रगड़ने के लिए प्रयुक्त काष्ठ का उपकरण – **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न अवलेखनकट्ठं वच्चकूपम्हि पातेतब्बं,* चूळव॰ 366; *अनुजानामि, भिक्खवे, अवलेखनकट्ठं,*

चूळव॰ 263; - **पीठर** पु॰, तत्पु॰ स॰, खरोंचने के लिए प्रयुक्त काष्ठखण्डों को रखने वाला पात्र - **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनुजानामि, भिक्खवे, अवलेखनपिठरन्ति,* चूळव॰ 263; - **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवलेखनपीठरोति अवलेखनकट्ठानं ठपनभाजनविसेसो,* वि॰ वि॰ टी॰ 2.223; - **सत्थक** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अवलेखनशस्त्रक], काटने, छीलने या खरोंचने का औजार या उपकरण - **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवलेखनसत्थकेन तेलसिङ्गं लिखन्तो विय सरीरमंसं ओतारेत्वा दस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.360.

अवलेप पु॰, अव + √लिप से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवलेप], **शा॰ अ॰** लीपना, पोतना, अलङ्करण - **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *लेपगब्भेस्ववलेपो,* अभि॰ प॰ 1079; **ला॰ अ॰** गर्व, अहङ्कार, अभिमान - **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *धम्मे ठितो विगतकोधमदावलेपो,* तेल॰ 1; *अवलेपोति अहङ्कारो,* सद्द॰ 2.473.

अवलोकन नपुं॰, अव + √लोक से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवलोकन], अवलोकन करना, करुणापूर्वक देखना या दृष्टि डालना, दृष्टि में रखना, पर्यवेक्षण करना - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवलोकनन्ति नागावलोकितं,* सद्द॰ 2.520.

अवलोकित त्रि॰, अव + √लोक का भू॰ क॰ कृ॰ [अवलोकित], देखा हुआ, दृष्टि, नजर - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवलोकनन्ति नागावलोकितं,* सद्द॰ 2.520.

अवलोकेति / ओलोकेति / अपलोकेति अव + √लोक का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवलोकयति], करुणा भरी दृष्टि से दृष्टिपात करता है, नीचे की ओर देखता है, पर्यवेक्षण करता है - *सो न उद्धं उल्लोकेति न अधो ओलोकेति,* म॰ नि॰ 2.346; *नट्ठं काकणिकं वा मासकं वा परियेसन्तो विय न अधो ओलोकेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.275; - **केय्याथ** विधि॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ - *विजानेय्य सकं अत्थं, अवलोकेय्याथ पावचनं,* थेरगा॰ 587; ... *तस्मा तस्स वादो निय्यानिको'ति सत्थु सासनमहन्ततं ओलोकेय्याति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.178.

अववत्थान नपुं॰, वि + अव + √ठा के क्रि॰ ना॰, ववत्थान का निषे॰ [अव्यवस्थान], अनिर्धारण, अनिश्चय, काल आदि का सुनिश्चित न रहना - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनिमित्ततोति अववत्थानतो, परिच्छेदाभावतोति अत्थो,* विसुद्धि॰ 1.227, *अववत्थानतोति कालादिवसेन ववत्थानाभावतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.276.

अववत्थितचारिका स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अव्यवस्थितचारिका], अनिश्चित प्रकृति की चारिका (जीवनवृत्ति) - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनवत्थितचारिकन्ति अववत्थितचारिकं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.83.

अवस त्रि॰, ब॰ स॰ [अवश], **क.** पराधीन, बेवश, अस्वतन्त्र, परतन्त्र - **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विवसो त्ववसो भवे,* अभि॰ प॰ 743; *अवसो'नुभविस्सामि निरये पापजं फलं,* सद्धम्मो॰ 290; **ख.** स्वतन्त्र, दूसरे के वश में न रहने वाला, स्वाधीन - *अनिच्चतावसमवसो उपागतो,* म॰ वं॰ 2.33; *सब्बस्स समारकस्स सब्रह्मकस्स लोकस्स इस्सरियवसमनुपगमनेन अवसोति वुच्चति,* म॰ वं॰ टी॰ 107(ना॰).

अवसक्कति अव + √सक का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पीछे की ओर जाता है, काम से उपरत होता है - *दळ्हपहारं अभिकङ्खमानो, अवसक्कती दस्सति सुप्पहारन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.71.

अवसट / ओसट / अवस्सट त्रि॰, अव + √सर का भू॰ क॰ कृ॰ [अवसृत], **शा॰ अ॰** प्रवेश कर चुका, आ पहुंचा हुआ, **ला॰ अ॰** किसी एक धार्मिक संप्रदाय को छोड़ दूसरे सम्प्रदाय में पहुंचा हुआ - **टं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तमेनं मनसाकटतो तावदेव अवसटं मनसाकटस्स मग्गं पुच्छेय्युं,* दी॰ नि॰ 1.224; *तस्मा 'तावदेव अवसट'न्ति आह, तङ्खणमेव निक्खन्तन्ति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.305; - **टा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यदा च सा तिता वा अस्स ... अवस्सटा वा,* पाचि॰ 291; *अवस्सटा नाम तित्थायतनं सङ्कन्ता वुच्चति,* पाचि॰ 292.

अवसनाकार पु॰, तत्पु॰ स॰, नहीं बसने देने की योजना - **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *'इमस्मिं विहारे एतस्स अवसनाकारो मया कातुं वट्टती'ति तेन उपट्ठानवेलाय आगतेन सद्धिं किञ्चि न कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.233.

अवसन्नसम्मासङ्कप्पचित त्रि॰, ब॰ स॰ [अवसन्नसम्यक्संकल्पचित्त], वह, जिसके चित्त के सम्यक् संकल्प निराशा से भरे हैं - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *संसन्नसंकप्पमनोति तीहि मिच्छावितक्केहि सुट्ठु अवसन्नसम्मासङ्कप्पचित्तो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.236.

अवसमान त्रि॰, √वस के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, नहीं बसने वाला, नहीं निवास कर रहा - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनाचेरकुलं वसन्ति आचरियकुलेपि अवसमानो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.418.

अवसर पु॰, [अवसर], समय प्रसङ्ग, सुविधा का समय, मौका, प्रस्ताव - **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पत्थावो'वसरो समा,* अभि॰

प. 770; – रं द्वि. वि., ए. व. – *सीहलानं महाखग्गप्पहारावसरं ततो,* चू. वं. 76.165; तुल., *प्रस्तावः स्यादवसरः,* अमर. 535.

अवसरि / ओसरि अव + √सर का अद्य., प्र. पु., ए. व., अन्दर प्रवेश किया, समीप जा पहुंचा – *अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन वेसाली तदवसरि,* पारा. 11; *तत्थ गङ्गं नदिं उत्तरित्वा येन बाराणसी तदवसरि, तेन अवसरि तदवसरि,* पारा. अट्ठ. 1.154; – **वासरिं** उ. पु., ए. व. – *सो मासखेत्तं तुरितो अवासरिं,* वि. व. 1166; *अवासरिन्ति उपगच्छिं, पाविसिं वा,* वि. व. अट्ठ. 264; *एत्थ च सो मासखेत्तं तरितो अवासरिन्ति उपगच्छिं उपविसिं वा,* सद्द. 2.426.

अवसल त्रि., वसल का निषे., तत्पु. स. [अवृषल], वह, जो अधम या हीन जाति में उत्पन्न नहीं हुआ है, उत्तम या उच्च जाति में उत्पन्न – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अब्राह्मणो अवसलो असक्यधीतरा अमातापितरसंवड्ढो,* सद्द. 3.759; *न ब्राह्मणो अब्राह्मणो, न वसलो अवसलो,* क. व्या. 328; *अब्राह्मणो, अवसलो, अभिक्खु, अपञ्चवस्सो, अपञ्चगवं,* क. व्या. 335.

अवसवत्तक त्रि., वसवत्तक का निषे. [अवशवर्तिन्], अपने वश में न रहने वाला, अपने नियन्त्रण से बाहर **त्तिके** पु., सप्त. वि., ए. व. – *तत्थ का परिदेवनाति एवं अवसवत्तिके संसारपवत्ते मरणं पटिच्च का नाम परिदेवना,* पे. व. अट्ठ. 54.

अवसवत्तन नपुं., वसवत्तन का निषे. [अवशवर्तन], अपने वश या नियन्त्रण में न रहना, अपने अधीन न होना – **तो** प. वि., ए. व. – *अवसवत्तनतो, अवसवत्तनाकारो अनत्तलक्खणं,* विसुद्धि. 2.275; *अनत्तसञ्ञा सण्ठातीति असारकतो अवसवत्तनतो परतो रित्ततो तुच्छतो सुञ्ञतो च,* उदा. अट्ठ. 191; – **नट्ठ** पु., तत्पु. स., वश में नहीं रहने का अर्थ – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *अस्सामिकट्ठेन सुञ्ञतो अवसवत्तनट्ठेन अनत्ततो, ...,* अ. नि. अट्ठ. 3.276; *न सक्काति अवसवत्तनट्ठेन अनत्ता अत्तसुञ्ञा अस्सामिका अनिस्सराति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 2.234; – **नाकार** पु., तत्पु. स. [अवशवर्तनाकार], अपने वश में नहीं रहने वाला आकार या स्वरूप – **रो** प्र. वि., ए. व. – *अवसवत्तनतो अवसवत्तनाकारो अनत्तलक्खणं,* विसुद्धि. 2.275; – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *अनत्ताकारन्ति अवसवत्तनाकारं,* महानि. अट्ठ. 312; – **नाकारसङ्खात** त्रि., तत्पु. स. [अवशवर्तनाकारसंख्यात], अस्वाधीन रूप में ज्ञात – **तो** पु., प. वि., ए. व. – ... *अवसवत्तनाकारसङ्खातो अनत्ताकारो अनत्तलक्खणन्ति दट्ठब्बं,* विसुद्धि. महाटी. 2.412.

अवसवत्ती त्रि., वसवत्ती का निषे. [अवशवर्तिन्], **क.** अपने वश में न रहने वाला, आत्म-नियन्त्रण की क्षमता से रहित, **ख.** चित्त के वश में न रहने वाला, स्वच्छन्द अनियन्त्रित – **त्तिता** स्त्री., भाव., स्वाधीनता – *दुक्खा अवसवत्तिता, अनत्ताति तिलक्खणं,* खु. सि. 67; – **त्तिनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अलद्धा चेतसो सन्तिं चित्ते अवसवत्तिनी,* थेरीगा. 37; *चित्ते अवसवत्तिनीति वीरियसमताय अभावेन मम भावनाचित्ते न वसवत्तिनी,* थेरीगा. अट्ठ. 48; – **त्ती** पु., प्र. वि., ब. व. – *अवसवत्ती तेविज्जा ब्राह्मणा कायस्स भेदा परं मरणा वसवत्तिस्स ब्रह्मुनो सहब्यूपगा भविस्सन्ती'ति,* दी. नि. 1.224; *तत्थ अरहा अनिस्सरो अस्सामी अवसवत्ती'ति,* मि. प. 237.

अवसान[1] **/ ओसान** नपुं., [अवसान], उपसंहार, समाप्ति, अन्त को प्राप्त होना, अन्त, विराम – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *अन्तो निथि समीपं चावसाने पदपूरणे,* अभि. प. 791; *अवसाने उपेक्खासहगतो,* विसुद्धि. 1.85.

अवसान[2] त्रि., अन्तिम, चरम – नो पु., प्र. वि., ए. व. – *तस्सायं पच्छिमकोति तस्स खीणासवस्स अयं समुस्सयो अत्तभावो अवसानो,* महानि. अट्ठ. 71; – **ने** पु., सप्त. वि., ए. व. – *अन्तिमे भवेति अवसाने उपपत्तिभवे, तदे; अवसाने उपेक्खासहगतो,* विसुद्धि. 1.85; *अवसानेति द्वीसुपि नयेसु परियोसानज्झाने,* विसुद्धि. महाटी. 1.104; – **गाथा** स्त्री., तत्पु. स. [अवसानगाथा], अन्तिम गाथा – *अवसानगाथा पन सङ्गीतिकारेहि ठपिता,* स. नि. अट्ठ. 1.183; – **पिण्डपात** पु., कर्म. स., भिक्षा में प्राप्त अन्तिम भोजन – *चुन्दस्सपि अपरभागे अवसानपिण्डपातो किर मया दिन्नो, धम्मसीसं किर मया गहितं,* उदा. अट्ठ. 329.

अवसाय पु., [अवसाय, अव + √सो + घञ], उपसंहार, अन्त, समाप्ति – **यो** प्र. वि., ए. व. – *अवसायीति अवसायो वुच्चति अवसानं निट्ठानं ... अनुत्तरं योगक्खेमं पत्थयमानाति,* थेरीगा. अट्ठ. 21.

अवसायी त्रि., अवसाय से व्यु. [अवसायिन्], सुदृढ़-संकल्प वाला, अडिग-निश्चय वाला / वाली – **यी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *छन्दजाता अवसायी, मनसा च फुटा सिया ... तत्थ छन्दजाताति अग्गफलत्थं जातच्छन्दा, अवसायीति अवसायो वुच्चति अवसानं निट्ठानं, ...,* थेरीगा. अट्ठ. 20–21.

अवसिट्ठ त्रि., अव + √सास का भू. क. कृ. [अवशिष्ट], शेष बचा हुआ, छोड़ा हुआ, बाकी बचा हुआ – **ट्ठानं** पु., ष. वि.,

ब॰ व॰ - *ञातीनं वावसिट्ठानं, उभिन्नं जीवितक्खये,* जा॰ अट्ठ॰ 5.333; - **ट्ठा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न चस्स काचि ओदनमिञ्जा मुखे अवसिट्ठा होति,* म॰ नि॰ 2.347; - **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं ते, चुन्द, सूकरमद्दवं अवसिट्ठं, तं सोब्भे निखणाहि,* दी॰ नि॰ 2.97; - **ट्ठानि** ब॰ व॰ - *अवसिस्सन्तीति अवसिट्ठानि भविस्सन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.71; - **क** त्रि॰, उपरिवत्, उच्छिष्ट भोजन, जूठा भोजन - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तुम्हे सीहानं ब्यग्घानं, वाळानञ्चावसिट्ठकं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.273; *तत्थ वाळानञ्चावसिट्ठकन्ति सेसवाळमिगानञ्च अवसिट्ठकं उच्छिट्ठभोजनं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.273; - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *मग्गो फलं पहीना च, किलेसा अवसिट्ठका,* अभि॰ अव॰ 166.

अवसित / ओसित त्रि॰, अव + √सि का भू॰ क॰ कृ॰ [अवश्रित], समाप्त, पूरा किया हुआ, निश्चित किया हुआ, अच्छी तरह से निर्धारित, ज्ञात - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तीसु त्ववसितं ञाते अवसानगते मतं,* अभि॰ प॰ 963; - **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नदि अन्वावसिता बाराणसी सारिपुत्तं पञ्ञवा,* सद्द॰ 3.715.

अवसित्तवण्ण / ओसित्तवण्ण त्रि॰, ब॰ स॰, अप + √सिच का भू॰ क॰ कृ॰ [अवसिक्तवर्ण], उड़ेला या ढाला हुआ, पानी की धार जैसा तर किया हुआ या भिगोया हुआ, नीचे तक उड़ेला हुआ या टपकाया हुआ - **ण्णं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ओसित्तवण्णं परिदय्ह सोभसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.396; *ओसित्तवण्णन्ति अवसित्तउदकधारवण्णं दिब्बदुकूलं,* तदे॰.

अवसिर त्रि॰, ब॰ स॰, नीचे की ओर सिर को झुकाया हुआ - **सा** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सब्बाभिभुं'वसिरसा सिरसा नमामि,* सद्द॰ 1.39.

अवसिस्सति अव + √सास का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवशिष्यते], बचा हुआ रह जाता है, शेष बचता है - *नामंयेवावसिस्सति, अक्खेय्यं पेतस्स जन्तुनो,* सु॰ नि॰ 814; *अथापरं विञ्ञाणंयेव अवसिस्सति परिसुद्धं परियोदातं,* म॰ नि॰ 3.291; *अवसिस्सतीति अयम्पेत्थ पाटियेक्को अनुसन्धि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.219; - **स्सन्ति** ब॰ व॰ - *सरीरानि अवसिस्सन्तीति पजानाति,* स॰ नि॰ 1(2).74; *अवसिस्सन्तीति अवसिट्ठानि भविस्सन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.71; - **स्सेय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *तत्त यायं उस्मा सा तत्थेव वूपसमेय्य, कपल्लानि अवसिस्सेय्युं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.71; - **स्सतु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *कामं तचो च न्हारु च, अट्ठि च अवसिस्सतु,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.108.

अवसिस्सन नपुं॰, अव + √सास से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, शेष बचा रह जाना, बचा हुआ होना - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवसिस्सनमट्ठिस्स मंसलोहितसुस्सनं,* अभि॰ प॰ 157.

अवसीकत त्रि॰, वसीकत का निषे॰ [अवशीकृत], अपने वश में नहीं किया हुआ - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पगुणन्ति पञ्चहि वसिताहि अवसीकतं,* ध॰ स॰ मू॰ टी॰ 100.

अवसीदति / ओसीदति अव + √सद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवसीदति], **शा॰ अ॰** नीचे की ओर डूब जाता है, **ला॰ अ॰** कष्ट में फंस जाता है, विषाद से ग्रस्त हो जाता है - *अतिभारं समादाय, अण्णवे अवसीदति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.120; - **दित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *निसीदित्वा निसीदित्वान निसीदितूनं निसीदिय निसीदियान संसीदित्वा अवसीदित्वा ओसीदित्वा,* सद्द॰ 2.384.

अवसीन त्रि॰, अव + √सा का भू॰ क॰ कृ॰, सुनिर्धारित, अच्छी तरह से स्थापित - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तिण्णं तेसं आवसिनेत्थ एको गन्धब्बकायूपगतो वसीनो,* दी॰ नि॰ 2.202; *(आवसिनेत्थ एकोति तत्थ हीने काये एकोयेव आवासिको जातो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.271); - **ने** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अथद्दसं भिक्खवो दिट्ठपुब्बे, गन्धब्बकायूपगते, वसीने,* दी॰ नि॰ 2.200; *गन्धब्बकायूपगते वसीनेति गन्धब्बकायं आवासिको हुत्वा उपगते,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.269.

अवसुस्सति / अवसुच्छति अव + √सुस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवशुष्यति], नीचे तक सूख जाता है - *अङ्गरत्ते व रत्ते वा, नदीव अवसुच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.321; *अवसुच्छतीति अप्पोदका कुन्नदी अवसुस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.322.

अवसूर त्रि॰, ब॰ स॰, सूर्य के अस्त हो जाने के समय वाला, सूर्य के नीचे की ओर रहने के समय वाला - **रं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनावसूरं चिररत्तसंसितं उच्चावचं चरितमिदं पुराणं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.49; *अनावसूरन्ति न अवसूरं, अनत्थङ्गतसूरियन्ति अत्थो,* तदे॰.

अवसेक पु॰, [अवसेक], भरपूर छिड़काव, ऊपर तक छलकते रहना, अत्यधिक परिपूर्ण होना - **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं अवसेकोति वुच्चति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).100; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.71; *यथा हि यं तेलादिमिनितब्बवत्थु मानं गहेतुं न सक्कोति, विस्सिन्दित्वा गच्छति, तं 'अवसेको'ति वुच्चति,* सारत्थ॰ टी॰ 1.87.

अवसेस[1] पु॰, [अवशेष], बचा हुआ हिस्सा, छोड़ा हुआ भाग, बाकी, असमाप्त - **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवसेसेन वच्छको यापेति,* अ॰ नि॰ 1(2).237; - **दोही** त्रि॰, [अवशेषदोहिन्],

(बछड़े के पीने के बाद) शेष बचे हुए को ही दुह लेने वाला - *गोचरकुसलो होति, सावसेसदोही च होति,* म॰ नि॰ 1.287; - **मंसलोहितयुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, बचे हुए मांस एवं रक्त से युक्त - **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *समंसलोहितन्ति सावसेसमंसलोहितयुत्तं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.325.

अवसेस[2] त्रि॰, [अवशेष], शेष बचा हुआ, अवशिष्ट, अन्य, दूसरा - **से** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *मेथुनधम्मतो अवसेसेपि सुन्दरे च असुन्दरे च पञ्च कामगुणे हित्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.192; - **सा**[1] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इतो मुत्ता पन अवसेसा चतूहि सतिपट्ठानेहि उपसन्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.3; - **सा**[2] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्स ओनमनेन अवसेसा जनता ओनमति अपचितिं करोति,* मि॰ प॰ 220; - **सानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवसेसानि यानि कानिचि विविधानि पुप्फजातानि,* मि॰ प॰ 177; - **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवसेसेहि समुट्ठानेहि भगवतो वेदना उप्पज्जति,* मि॰ प॰ 139; - **सानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवसेसानं देवमनुस्सानं पूजा करणीया,* मि॰ प॰ 173; - **सेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवसेसेसु पन अप्पमञ्ञा सत्तपञ्ञत्तियं पवत्तन्ति,* अभि॰ ध॰ स॰ 65.

अवस्सं अ॰, क्रि॰ वि॰ [अवश्यं], आवश्यक रूप से, अनिवार्य रूप से, निश्चय ही, सर्वथा, बिना किसी सन्देह के - *अन्तरेनन्तरा अन्तोवस्सं नूनं च निच्छये,* अभि॰ प॰ 1150.

अवस्सक त्रि॰, अवस्स से व्यु॰ [आवश्यक], जरूरी, अनिवार्य, अपरिहार्य - *अवस्सक-अधमिण इच्चेतेस्वत्थेसु णीप्पच्चयो होति किच्चा च,* क॰ व्या॰ 638; *अवस्सक अधमिण इच्चेतेस्वत्थेसु णीप्पच्चयो होति,* सद्द॰ 3.862; - **त्त** नपुं॰, भाव॰, आवश्यकता, जरूरत, अनिवार्यता - **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं सन्ते पि अवस्सकत्तं आविकातुं अवस्सन्ति वुत्तं,* सद्द॰ 3.862.

अवस्सकारी त्रि॰, [अवश्यकारिन्], निश्चित रूप से काम को करने वाला - *क्रियत्था णी होति सीलादिसु पतीयमानेसु, उण्हभोजी, खीरपायी अवस्सकारी सतन्दायी,* मो॰ व्या॰ 5.53.

अवस्सजति अव + √सज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवसृजति], ढीला कर देता है, मुक्त कर देता है, स्वेच्छानुसार काम कर देता है, छोड़ देता है, शिथिल कर देता है - **न्ति** ब॰ व॰ - *पप्पोन्ति पदमजरामरं चिराय, संक्लेसं सकलमवस्सजन्ति धीरा,* ना॰ रू॰ प॰ 1791; - **स्सजी** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *सुदुक्करं पोरिसादो अकासि, जीवं गहेत्वान अवस्सजी मं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.481; - **स्सट्ठ** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰, मुक्त कर दिया गया, शिथिल कर दिया गया - **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किलेसाभावेनेव कम्मं अप्पटिसन्धिकत्ता अवस्सट्ठं नाम होतीति एवं किलेसप्पहानेन कम्मं पजहि,* उदा॰ अट्ठ॰ 269; - **स्सट्ठभवसङ्खार** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवसृष्टभवसंस्कार], वह, जिसका भवसंस्कार शिथिल हो चुका है - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इति बोधिमूलेयेव अवस्सट्ठभवसङ्खारो भगवा वेखमिस्सकेन विय,* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 269.

अवस्सन नपुं॰, √वस्स से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, वस्सन का निषे॰, बोलने का अभाव, नहीं मिमियाना - **नत्थाय** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰, तत्पु॰ स॰, नहीं मिमियाने देने के लिए - *दिवा अरञ्ञे खादिस्सामा'ति तस्सा अवस्सनत्थाय मुखं बन्धित्वा वेलुगुम्बे ठपेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.224.

अवस्संभावी त्रि॰, [अवश्यंभाविन्], अवश्य ही घटित हो जाने वाला, निश्चित रूप से हो जाने वाला - *सावकभावं उपगन्तुकामो, अरियसावको वा अवस्संभावी,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 222; - **विनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *निरयादिका दुग्गति इच्छितब्बा, सा अस्स अवस्सभाविनी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.186.

अवस्सय पु॰, [अपश्रय], सहारा, शरण, आश्रय, आधार **क.** आश्रय-भूत वस्तु, स्थल, क्षेत्र या कर्म - **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चत्तारो महापदेसा यावज्जदिवसा भिक्खूनं पतिट्ठा च अवस्सयो च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.22; *इधलोकपरलोकेसु दानसदिसो अवस्सयो पतिट्ठा आलम्बनं ताणं लेणं गति परायणं नत्थि,* उदा॰ अट्ठ॰ 229; *इदञ्हि अवस्सयट्ठेन रतनमयसीहासनसदिसं,* तदे॰; **ख.** आश्रय या शरणस्थल के रूप में मनुष्य - *अहमस्स अवस्सयो भविस्सामी'ति केवट्टानं सन्तिकं गन्त्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.208; *इमिस्सा ठपेत्वा मं अञ्ञो अवस्सयो भवितुं समत्थो नाम नत्थी'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.393; - **कम्म** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अपश्रयकर्मन्], आश्रय या सहारा के रूप में कर्म - **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यावाहं बुद्धपूजादिं अत्तनो अवस्सयकम्मं करोमी'ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.177.

अवस्सयिं अव / अप + √सि का अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, आ गिरा, आ पड़ा, बस गया, सहारा लिया - *इति पङ्के अवस्सयिन्ति इमिना कारणेनाहं इमस्मिं कद्दमे अवस्सयिं निपज्जिं, वासं कप्पेसिन्ति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.66; *इति पङ्के अवस्सयिन्ति इदं एतस्स अत्थस्स साधकं वचनं,* सद्द॰ 1.85.

अवस्सिक त्रि॰, वस्सिक का निषे॰ [अवर्षिक], **क.** वर्षा-ऋतु के साथ नहीं जुड़ा हुआ, वर्षाकाल से भिन्न काल वाला -

सङ्केत त्रि॰, वर्षा-ऋतु के चार मासों के अतिरिक्त अन्य आठ मासों का सङ्केत देने वाला – **ते** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अनुजानामि, भिक्खवे, अट्ठ मासे अवस्सिकसङ्केते मण्डपे वा रुक्खमूले ... सेनासनं निक्खिपितु'न्ति,* पाचि॰ 59; *अवस्सिकसङ्केतेति वस्सिकवस्सानमासाति एवं अपञ्ञत्ते ... अट्ठ मासेति अत्थो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 33; **ख.** उपसम्पदा-ग्रहण करने के समय के बाद एक वर्ष पूरा न करने वाला, वह, जिसने उपसम्पदा लिए हुए एक वर्ष भी पूरा नहीं किया है – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपसम्पन्नकाले पन अवस्सिकोव समानो तिपिटकधरो अहोसि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.31; *अवस्सिकोव समानोति उपसम्पदतो पट्ठाय अपरिपुण्णएकवस्सोति अधिप्पायो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.110; – **दहर** पु॰, कर्म॰ स॰, एक वर्ष पूरा न किया हुआ श्रामणेर, वह श्रामणेर, जिसने एक वर्षावास भी पूर्ण नहीं किया है – **रानं** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवस्सिकदहरानं सन्तिकं गन्त्वा ....* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.98.

अवस्सित त्रि॰, अव + √सि का भू॰ क॰ कृ॰ [अवश्रित / अधिश्रित], सहारा, आश्रय या अवलम्बन लिया हुआ, किसी के सहारे टिका हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनरियधम्ममवस्सितो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.371; **ता** ब॰ व॰ – *सब्बे व किब्बिसा चण्डा मदमाना अवस्सिता,* दी॰ वं॰ 2.5.

अवस्सुत त्रि॰, अव + √सु का भू॰ क॰ कृ॰ [अवस्रुत], **शा॰ अ॰ क.** बाहर निकल कर बह रहा, रिसाव से युक्त, टपक रहा – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धिरत्थु पूरे दुग्गन्धे, मारपक्खे अवस्सुते,* थेरगा॰ 279; *अवस्सुतेति सब्बकालं ... तहिं तहिं असुचिनिस्सन्दनेन च अवस्सुते,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.10; **ख.** भीगा हुआ, गीला, आर्द्र – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कूटागारे दुच्छन्ने कूटम्पि अरक्खितं होति ... कूटम्पि अवस्सुतं होति,* अ॰ नि॰ 1(1).295; **ला॰ अ॰ क.** दूषित, वासनाओं से ग्रस्त, राग से रञ्जित, इच्छाओं में डूबा हुआ – ... *अरक्खितकायकम्मन्तस्स ... कायकम्मम्पि अवस्सुतं होति ...,* अ॰ नि॰ 1(1).295; *यो सो पुग्गलो दुस्सीलो पापधम्मो ... अन्तोपूति अवस्सुतो ... न तेन सद्धिं संवसति,* अ॰ नि॰ 3(1).41-42; ... *कसम्बुजातो अवस्सुतो पापो,* विसुद्धि॰ 1.54; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छहि द्वारेहि रागादिकिलेसानुवस्सेन तिन्तता अवस्सुतस्स,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.80; – **तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अवस्सुतानन्ति किलेसेन तिन्तानं,* महानि॰ अट्ठ॰ 208; **ख.** अन्य पुरुष या नारी के प्रति कामवासना से ग्रस्त चित्त वाला / वाली – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवस्सुतो नाम सारत्तो अपेक्खवा पटिबद्धचित्तो,* पाचि॰ 287; – **कायकम्मन्त** त्रि॰, ब॰ स॰, प्रदूषित अथवा कलुषित शारीरिक, वाचिक एवं मानसिक कर्मों वाला – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स अवस्सुतकायकम्मन्तस्स ... कायकम्मम्पि पूतिकं होति,* अ॰ नि॰ 1(1).295; – **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰, रागयुक्त अथवा कलुषित चित्त वाला – **त्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कस्मा पन भगवा अवस्सुतचित्तं आयस्मन्तं नन्दं अच्छरायो ओलोकापेसि,* उदा॰ अट्ठ॰ 139; – **परियाय** पु॰, व्य॰ सं॰, स॰ नि॰ के षळायतन-संयुत्त के एक सुत्त का शीर्षक, जिसमें भिक्खु महामोग्गल्लान ने चित्त के अवस्सुत या रागरञ्जित तथा प्रदूषित होने के कारणों पर उपदेश दिया है, स॰ नि॰ 2(2).184-188; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयस्मा महामोग्गल्लानो एतदवोच अवस्सुतपरियायञ्च वो, आवुसो, देसेस्सामि, अनवस्सुतपरियायञ्च,* स॰ नि॰ 2(2).185; **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰, राग का भाव, कामवासना का भाव – **वे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुनिया चेव पुरिसस्स च कायसंसग्गरागेन अवस्सुतभावे सतीति अत्थो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 163.

अवस्सुति स्त्री॰, मैथुन-क्रिया, शारीरिक सम्बन्ध – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पितुनो च सा सुत्वान वाक्यं, रत्तिं निक्खम्म अवस्सुतिं चरी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.155; *तत्थ अवस्सुतिन्ति, भिक्खवे, सा नागमाणविका पितु वचनं सुत्वा पितरं अस्सासेत्वा, ... अञ्जनगिरिं गन्त्वा अवस्सुतिं चरि किलेसअवस्सुतिं भत्तुपरियेसनं चरीति अत्थो,* तदे॰.

अवहत / ओहट त्रि॰, अव + √हर का भू॰ क॰ कृ॰ [अवहृत], **1. शा॰ अ॰** दूर ले जाया गया, हटा दिया गया, **ला॰ अ॰** चुरा लिया गया – **टा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमिना देव पुरिसेन मय्हं अम्बा अवहटा'ति,* मि॰ प॰ 45; – **टेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वस्सोघेन सब्बकुणपेसु अवहटेसु सुद्धवालुकवस्सं वस्सि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.129; – **टं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवहारकेन हि मया इदं नाम अवहट'न्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.244; **2.** कर्तृ॰ वा॰ में – **टो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो अवहटो सो पाराजिको'ति,* पारा॰ 76.

अवहनन नपुं॰, अव + √हन से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवहनन], अधोगमन, नीचे की ओर जाना – **ट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अवहननार्थ], अधोगमन का अर्थ, नीचे की ओर बहने का आशय या तात्पर्य – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बोपि चेस अवहननट्ठेन रासट्ठेन च ओघोति वेदितब्बो, अवहननट्ठेनाति अधोगमनट्ठेन,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.17; *किञ्च भिय्यो* –

अवहननट्ठेन ओघोति च आजवनट्ठेन आजव'न्ति च, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.259.

अवहरण नपुं॰, अव + √हर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अवहरण], **शा॰ अ॰** दूर ले जाना, **ला॰ अ॰** चोरी करके या छीन कर ले जाना - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवहरणं चोरिकाय गहणं वासेति वासयति वसा,* सद्द॰ 2.567; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰, मन में चोरी करने की भावना रखने वाला, चोरी की भावना से भरे चित्त वाला - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *थेय्यसङ्खातन्ति थेय्यचित्तो अवहरणचित्तो,* पारा॰ 52; - **णाधिप्पाय** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवहरणाभिप्राय], उपरिवत् - **प्पायो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न अवहरणाधिप्पायो नापि विनासाधिप्पायोति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 196.

अवहरति अव + √हर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवहरति], **शा॰ अ॰** दूर ले जाता है, **ला॰ अ॰** चुरा कर ले जाता है, चोरी छिपे ले जाता है, बिना अनुमति के ले जाता है - *सो तं भण्डं अवहरति, आपत्ति उभिन्नं पाराजिकस्स,* पारा॰ 60; *सो आणत्तो अहं तया'ति, तं भण्डं अवहरति, मूलट्ठस्स अनापत्ति,* पारा॰ 62; - **रामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *इमस्स अम्बे अवहरामि,* मि॰ प॰ 45; - **रन्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आदियन्तो हरन्तोवहरन्तो इरियापथं,* विन॰ वि॰ 39; - **हर** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *इत्थन्नामं भण्डं अवहरा'ति,* पारा॰ 60; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 136; - **हरे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *कायेन यो नावहरे, वाचाय न मुसा भणे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.75; - **रिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *एवं महासारं नाम पिळन्धनं अवहरिस्सती'ति परिभासिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.367; - **स्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - *भूमट्ठं भण्डं अवहरिस्सामीति थेय्यचित्तो दुतियं वा परियेसति,* पारा॰ 54; - **स्सथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ - *कथञ्हि नाम तुम्हे, आवुसो, रजकभण्डिकं अवहरिस्सथ,* पारा॰ 51; - **रिस्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ - *संविधावहारो नाम 'असुकं नाम भण्डं अवहरिस्सामा'ति संविदहित्वा संमन्तयित्वा अवहरणं,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 121; - **वाहरि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *तस्स सा वसमन्वेतु, या ते अम्बे अवाहरी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.118; *तथारूपं पतिलभतु, ये ते अम्बे अवाहरीति,* तदे॰; - **वहरि** उपरिवत् - *न खो सो, महाराज, तानि अम्बानि अवहरि, यानि तेन रोपितानि,* मि॰ प॰ 77; - **वाहरुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *चतुरो जना संविधाय, गरुभण्डं अवाहरुं,* परि॰ 400; - **रित्थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ - *किस्स तुम्हे, आवुसो, रजकभण्डिकं अवहरित्था'ति?,* पारा॰ 51; - **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ - *भिक्खू रजकत्थरणं गन्त्वा रजकभण्डिकं अवहरित्वा आरामं हरित्वा भाजेसुं,* पारा॰ 51.

अवहवन नपुं॰, अव + √हु से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, आवाहन, पुकारना - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवहुति अवहवनं, तेन निब्बत्तं ओहाविमं,* क॰ व्या॰ 646; सद्द॰ 3.866.

अवहसन्ति/ओहसन्ति अव + √हस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [उपहसन्ति], उपहास करते हैं, खिल्ली उड़ाते हैं - *अथस्स अमच्चा अञ्ञमञ्ञं अवहसन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.105; - **सन्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वत्वा अवहसन्तो पक्कामि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 155; *अवहसन्तमिवाति अवहासं कुरुमानं विय,* सारत्थ॰ टी॰ 1.51; - **हसमाना** स्त्री॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सा बालसूरियरस्मिकलापसिरिं अवहसमाना विय सुरत्तसुद्धसिनिद्धपवाळमया होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.188; - **सिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *मिगो उट्ठाय वातवेगेन पलायि, अमच्चादयो राजानं अवहसिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.286; - **सीयति** कर्म॰ स॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, दूसरों द्वारा उपहास किया जाता है या खिल्ली उड़ाई जा रही है - **सियमानो** पु॰, कर्म॰ स॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ततो अमच्चेहि अवहसियमानो मारेत्वा नं आहरिस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.241; *तत्थ ऊहसतीति अवहसति, ऊहसीयमानोति अवहसीयमानो,* सद्द॰ 2.443.

अवहाय अव + √हा का पू॰ का॰ कृ॰ [अवहाय], छोड़कर, उपेक्षा कर, अवज्ञा कर, परवाह न करके - *मंसकाजं अवहाय, गोधं अनुपतामहं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.54; *उजुमग्गं अवहाय, कुम्मग्गमनुधावति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.121.

अवहार पु॰, अव + √हर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अपहार], ग्रहण, प्राप्ति, उपलब्धि - **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यत्थहि एकेकेन पदेन अवहारो सिज्झति, ... पदेहि एकोयेव अवहारो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.243; *वातेनेव सा हटा होति, पुग्गलस्स नत्थि अवहारो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.266; - **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *पञ्च अवहारा - थेय्यावहारो, पसय्हावहारो, परिकप्पावहारो पटिच्छन्नावहारो, कुसावहारो,* परि॰ 253; - **क** त्रि॰, [अपहारक], अपहरण करने वाला, दूर ले जाने वाला, चुरा लेने वाला - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवहारकस्स आपत्ति पाराजिकस्स,* पारा॰ 61; - **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ वत्थुन्ति भण्डं, अवहारकेन हि मया इदं नाम अवहट'न्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.244; - **रङ्ग** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अपहाराङ्ग], अपहरण कर्म का अङ्ग, चोरी का अङ्ग - **ङ्गानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *परपरिग्गहितञ्च होती'ति आदिना नयेन अवहारङ्गानि वुत्तानि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.242.

अवहास पु., अव + √हस से व्यु., क्रि. ना. [उपहास], मजाक, खिल्ली, मखौल – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *अवहसन्तमिवाति अवहासं कुरुमानं विय,* सारत्थ. टी. 1.51.

अवहितसोत/ओहितसोत त्रि., ब. स. [अवहितस्रोतस्], ध्यान के साथ सुनने वाला, चैतन्य श्रवणशक्ति वाला – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *ओहितसोताति अवहितसोता, सुट्ठ ठपितसोता,* उदा. अट्ठ. 316.

अवहीयसि/ओहीयसि अव + √हा के कर्म. वा. का वर्त., म. पु., ए. व., पीछे छोड़ दिए जाते हो, पीछे रह जाते हो – *किं एको अवहीयसि,* जा. अट्ठ. 5.335; *अवहीयसी'ति ओहीयसि,* जा. अट्ठ. 5.337.

अवहूति स्त्री., अव + √हु से व्यु., आवाहन, पुकार – *अवहूति अवहननं,* क. व्या. 646; सद्द. 3.866.

अवाकयिरा अव + आ + √कर का विधि., प्र. पु., ए. व., छिन्न-भिन्न कर दे, नष्ट कर दे, काट दे – *यो च दत्वा अवाकयिरा,* जा. अट्ठ. 3.299; *अवाकयिराति तं पटिञ्ञातमत्थं ददन्तो तस्मिं लोभं अवाकरेय्य छिन्देय्य,* जा. अट्ठ. 299-300.

अवाचयिं √वच के प्रेर. का अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने बचवाया, मैंने किसी दूसरे से कुछ कहलवाया – *निरयनरदेवेसु, उपपन्ने अवाचयिं,* अप. 2.149.

अवातपानक त्रि., ब. स. [अवातायनक], बिना खिड़कियों वाला, झरोखों से रहित – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *तेन खो पन समयेन विहारा अवातपानका होन्ति ...,* चूळव. 274.

अवातातपहत त्रि., तत्पु. स. [अवातातपहत], हवा एवं गर्मी द्वारा अप्रभावित – **तानि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *सो तत्थ सुखेत्ते सुभूमे ... बीजानि पतिट्ठपेय्य अखण्डानि अपूतीनि अवातातपहतानि ...,* दी. नि. 2.260; *अवातातपहतानीति वातेन च आतपेन च न हतानि, निरोजतं न पापितानि,* स. नि. अट्ठ. 2.241.

अवादित त्रि., √वद के प्रेर. के भू. क. कृ. का निषे. [अवादित], नहीं बजाया गया (सङ्गीतवाद्य) – **ता** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *तन्तिबद्धा वीणा ... केनचि अवादिता सयमेव वज्जिंसु,* दी. नि. अट्ठ. 2.28.

अवापुरेत्वा अव + आ + √पुर का पू. का. कृ., खोलकर, उद्घाटित कर के – *अथस्स अमच्चा ... नगरद्वारं अवापुरित्वा तं परिवारेत्वा निक्खमिंसु,* जा. अट्ठ. 2.18.

अवायमन्तु त्रि., वि + आ + √यम के वर्त. कृ., वायमन्तु का निषे., प्रयास नहीं कर रहा, दृढ़-प्रयत्न न करने वाला – **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अवायमन्तोति वायामं चेतसिकं वीरियं अकरोन्तो,* स. नि. टी. 1.290; *अवायामन्ति अवायमन्तो,* स. नि. अट्ठ. 1.297; – **तो/न्तस्स** पु., च./ष. वि., ए. व. – *तस्स अनुट्ठहतो अघटतो अवायमतो लाभाय लाभो उप्पज्जति,* अ. नि. 3(1).121; *घरा नानीहमानस्साति ... अवायमन्तस्स घरा नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 2.195.

अवायाम त्रि., ब. स. [अव्यायाम], दृढ़-पराक्रम या प्रबल-वीर्य से रहित, प्रयास न करने वाला – **मं** नपुं., द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. – *अनुट्ठहं अवायामं, सुखं यत्राधिगच्छति,* स. नि. 1(1).250.

अवायिम त्रि., नहीं बुना हुआ – **मं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सन्थतं नाम सन्थरित्वा कतं होति अवायिमं,* पारा. 340.

अवारित त्रि., [अवारित], अप्रतिविद्ध, अवर्जित, नहीं ढका हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अनोवटोति अपिहितो अवारितो अप्पटिक्खित्तो,* पाचि. अट्ठ. 58.

अवारियजातक नपुं., जातक संख्या 376 का शीर्षक, जा. अट्ठ. 3.200-204.

अवारियपिता पु., तत्पु. स., अवारिया नामक युवती का पिता, जो गङ्गा नदी में नाविक था – *अवारियपिता नाम, अहु गङ्गाय नाविको,* जा. अट्ठ. 3.201.

अवारियवग्ग पु., जा. अट्ठ. के छठे निपात का एक वग्ग जिसके अन्तर्गत दस जातक-कथानक रखे गए हैं, जा. अट्ठ. 3.200-241.

अवारिया स्त्री., व्य. सं., गङ्गा के एक नाविक की पुत्री – *अवारिया नाम तस्स धीता, तस्सा वसेन अवारियपिता नाम जातो,* जा. अट्ठ. 3.202.

अवावट त्रि., [अपावृत], **शा. अ.** उन्मुक्त, आवरण से रहित, अबाधित, **ला. अ.** विवाह के बन्धन से मुक्त अथवा अविवाहित नारी – **टा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अवावटा यदि वा अत्थि भत्ता,* जा. अट्ठ. 5.202; *अवावटाति अपेतावरणा अपरिग्गहा,* तदे.

अवास पु., वास का निषे., [बौ. सं. अवास], निवास-रहित कर देना, वास या बसने के स्थान का अभाव, उजाड़ – **साय** च. वि., ए. व.- *भिक्खूनं अवासाय परिसक्कति,* महाव. 106; *अवासायाति 'किन्ति इमस्मिं आवासे न वसेय्यु'न्ति परक्कमति,* महाव. अट्ठ. 279.

अवाहन त्रि., ब. स. [अवाहन], **शा. अ.** बिना वाहन वाला, **ला. अ.** किसी हाथी पर आरूढ न रहने वाला – **नानं** पु.,

ष॰ वि॰, ब॰ व॰ *महासत्तो अवाहनानं राजूनं वाहनानि दत्वा उय्योजेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.502.

अवाहयि √वह के प्रेर॰ का अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, **शा॰ अ॰** बहाया, **ला॰ अ॰ क.** अन्दर लाकर बहाया या गिराया, **ख.** दूषित कर दिया – *किच्छाकतं उदपानं, कथं सम्म अवाहयी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.294; ... *त्वं अवाहयि मुत्तकरीसेन अज्झोत्थरि दूसेसि, तं वा मुत्तकरीसं एत्थ अवाहयि पातेसीति,* तदे॰.

अवि पु॰, [अवि], मेष, भेड़ – *अब्भो मेण्डमेसा च उरणो अवि एळको,* अभि॰ प॰ 501; *एत्थ अजो ति एळको, इमानि पनस्स परियायवचनानि, अजो एळको उरब्भो अवि मेण्डको ति,* सद्द॰ 2.345; – स्त्री॰, [अवी, भिन्नार्थक], मादा भेड़ – *अवीति रत्ता एळका,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 543.

अविकत्थी त्रि॰, विकत्थी का निषे॰, बढ़-चढ़कर डींग न हांकने वाला, धोखा-धड़ी वाली बातें न करने वाला, यथार्थपरक वचन बोलने वाला – *अक्कोधनो असन्तासी अविकत्थी अकुक्कुचो,* सु॰ नि॰ 856; *अविकत्थीति सीलादीहि अविकत्थनसीलो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.241; ... *कत्थना विकत्थना आरतो विरतो पटिविरतो ... चेतसा विहरतीति अविकत्थी,* महानि॰ 158.

अविकप्पना स्त्री॰, विकप्पना का निषे॰, सही अथवा ठीक नहीं होना, विनय-नियमों के अनुरूप नहीं रहना, अप्रतिरूपता, अतिरिक्त चीवर, भिक्षापात्र तथा परम्पर भोजन आदि का नियम-संगत न होना – *पञ्च पिण्डपातिकस्स भिक्खुनो कप्पन्ति – अनामन्तचारो, गणभोजनं, परम्परभोजनं, अनधिट्ठानं, अविकप्पना,* परि॰ 253; *अविकप्पना नाम या परम्परभोजने विकप्पना वुत्ता, तस्सा अकरणं,* परि॰ अट्ठ॰ 173.

अविकप्पित त्रि॰, विकप्पित का निषे॰, अन्य भिक्षु द्वारा अननुमोदित (चीवर या पात्र) – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अतिरेकचीवरं नाम अनधिट्ठितं अविकप्पितं,* पारा॰ 303.

अविकम्पन नपुं॰, वि + √कम्प से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, विकम्पन का निषे॰ [अविकम्पन], नहीं कांपना, स्थिरता, दृढ़ता – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *केन पनेतं अविकम्पनन्ति आह 'मूलजाताय सद्धाया'ति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 182; – **पच्चुपट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰ *[अविकम्पनप्रत्युपस्थान],* दृढ़ता या स्थिरता के रूप में व्यक्त होने वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ पन अविक्खेपलक्खणो समाधि ... अविकम्पनपच्चुपट्ठानो,* विसुद्धि॰ 1.83; *उद्धच्चे अविकम्पनवसेन पच्चुपतिट्ठति, सम्पयुत्तानं वा तं पच्चुपट्ठपेतीति अविकम्पनपच्चुपट्ठानो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.101.

अविकम्पमान त्रि॰, वि + √कम्प के वर्त॰ कृ॰, विकम्पमान का निषे॰ [अविकम्पमान], सुदृढ़, आत्मविश्वास से भरपूर – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तीसु विधासु अविकम्पमानो,* सु॰ नि॰ 848; *वरस्सु सम्म अविकम्पमानो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.489; *तत्थ अविकम्पमानोति अनोलीयमानो,* तदे॰.

अविकम्पयन्तु त्रि॰, वि + √कम्प के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अविकम्पयत्], कम्पन-रहित, स्थिर, दृढ़ – **पयं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविकम्पयं धम्मसभाय मज्झे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.222.

अविकम्पित त्रि॰, वि + √कम्प के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविकम्पित], नहीं हिलने-डुलने वाला, निर्भीक, बेखौफ, विश्वस्त – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *योपि याचेय्य मं चक्खुं, ददेय्यं अविकम्पितो,* चरिया॰ 376; *एतेहि यदि ते अत्थो, दस्सामि अविकम्पितो,* अप॰ 1.334.

अविकम्पी त्रि॰, [अविकम्पिन्], उपरिवत् – **पिनं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमानिसंसं पब्रूमि, पुच्छितो अविकम्पिनं,* सु॰ नि॰ 958.

अविकलचक्खु त्रि॰, ब॰ स॰ [अविकलचक्षु], सही सलामत दृष्टि वाला, दोषरहित आंखों वाला – **क्खुं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं देहीति यथा तं अविकलचक्खुं सिवयो परिवारेय्युं एवं बाहिरधनमेवस्स देहि, मा अक्खीनि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.363.

अविकलता स्त्री॰, अविकल का भाव॰ [अविकलता], सम्पूर्णता, अन्यूनता, कमी या गड़बड़ी का न होना – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनूनतन्ति इत्थादीहि अविकलतं,* चरिया॰ अट्ठ॰ 201.

अविकलिन्द्रिय त्रि॰, ब॰ स॰ [अविकलेन्द्रिय], सक्षम एवं दोषरहित इन्द्रियों वाला – **यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहीनिन्द्रियन्ति सण्ठानवसेन अविकलिन्द्रियं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.179.

अविकार त्रि॰, ब॰ स॰ [अविकार], विकारों से रहित, शुद्ध, स्वच्छ – **रं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्चत्थिकास्स दुखिता भवन्ति, दिस्वा मुखं अविकारं पुराणं,* अ॰ नि॰ 2(1).52; जा॰ अट्ठ॰ 3.177.

अविकिण्ण त्रि॰, वि + √किर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविकीर्ण], **शा॰ अ॰** नहीं बिखरा हुआ, नहीं छितराया हुआ, **ला॰ अ॰** स्वभाव की शिथिलता से रहित, नियन्त्रित, संयमित – **ण्णं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविकिण्णं मितं वाचं, पत्ते काले उदीरये,* जा॰ अट्ठ॰ 7.190; – **वचनब्यप्पथ** त्रि॰, ब॰ स॰, नियन्त्रित अथवा संयमित वाणी बोलने वाला – **थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न सम्फप्पलापं न मुद्धतं,*

अविकिण्णवचनब्यप्पथो अहोसि, दी॰ नि॰ 3.132; *अविकिण्णवचनानं विय पुरिमबोधिसत्तानं वचनपथो अस्साति अविकिण्णवचनब्यप्पथो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.110; – **वाच** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविकीर्णवाक्], उपरिवत् – **चो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो अकुतूहलो अविकिण्णवाचो मन्तं न भिन्दति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.370; *अचपलो अमुखरो अविकिण्णवाचो उपट्ठिस्सति,* पु॰ प॰ 142; – **चा** ब॰ व॰ – *ये गुय्हमन्ता अविकिण्णवाचा, दळ्हा सदत्थेसु नरा दुजिव्ह,* जा॰ अट्ठ॰ 5.77; – **सुख** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अविकीर्णसुख], स्थिर या अचल सुख – **खं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किलेसेहि अनवसित्तसुखं अविकिण्णसुखन्तिपि वुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).114.

अविकोपन नपुं॰, विकोपन का निषे॰, नाश या हानि का न होना, अक्षति, अविनाश, अविखण्डन – **नत्थ** पु॰, तत्पु॰ स॰, क्षति अथवा हानि नहीं होने का प्रयोजन – **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भूतगामसिक्खापदस्स हि अविकोपनत्थमेतं वुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 1(1).101.

अविकोपिय त्रि॰, वि + √कुप के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अविकोप्य], विनाश न किए जाने योग्य, बाधित या रूपान्तरित न होने योग्य – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मेत्ताविहारी हि पुग्गलो सब्बेसं पियो होति परूपक्कमेन अविकोपियो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.68.

अविकोपी त्रि॰, विकोपी का निषे॰ [अविकोपिन्], नहीं हिल-डुल रहा, अबाधित, बाधित या रूपान्तरित नहीं किए जाने योग्य – **पिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्तिमे सस्सता काया, अच्छेज्जा अविकोपिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.109; *अविकोपिनोति विकोपेतुं न सक्का,* जा॰ अट्ठ॰ 7.110.

अविक्खम्भित त्रि॰, वि + √खम्भ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, प्रतिबन्ध, रुकावट या नियंत्रण से रहित, नहीं निरुद्ध, निष्क्रिय या निष्प्रभावी नहीं बनाया हुआ – *समथविपस्सनानं अञ्ञतरवसेन अविक्खम्भितकिलेसजातं चित्तसन्ततिमनारूळ्हं उप्पत्तिनिवारकस्स हेतुनो, अभावा अविक्खम्भितुप्पन्नं नाम,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.7; – **तुप्पन्न** त्रि॰, कर्म॰ स॰, अबाधित अथवा अनिरुद्ध होने के कारण उत्पन्न – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हेतुनो अभावा अविक्खम्भितुप्पन्नं नाम,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.7.

अविक्खम्भिय त्रि॰, वि + √खम्भ के सं॰ कृ॰ का निषे॰, बाधित न किए जाने योग्य, अभिभूत नहीं किए जाने योग्य – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अक्खम्भियो होति केनचि मनुस्सभूतेन पच्चत्थिकेन पच्चामित्तेन,* दी॰ नि॰ 3.108; *अक्खम्भियोति अविक्खम्भनीयो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.94.

अविक्खित्त त्रि॰, वि + √खिप के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविक्षिप्त], **शा॰ अ॰** नहीं बिखराया हुआ, इधर उधर नहीं छितराया हुआ, **ला॰ अ॰** नहीं बिखरे हुए चित्त वाला, चित्त के बिखराव से रहित – **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समाहितं मे चित्तं अविक्खित्तं,* नेत्ति॰ 73; – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुसण्ठितेन इरियापथेन अविक्खित्तेन चित्तेन हट्ठेन उदग्गेन विप्पसन्नेन थेरं नागसेनं उपसङ्कमित्वा ...,* मि॰ प॰ 102; – **त्तेहि** ब॰ व॰ – *बहि अविक्खित्तेहि अन्तो अनुपविट्ठेहेव पञ्चहि इन्द्रियेहि ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.175; – **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविक्षिप्तचित्त], स्थिर चित्त वाला, चञ्चलता से रहित चित्त वाला, चित्त के बिखराव से मुक्त – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो अविक्खित्तचित्तो समानो भब्बो अयोनिसोमनसिकारं पहातुं,* अ॰ नि॰ 3(2).123; *सुपरिसुद्धकायवचीपयोगो हि विप्पटिसाराभावतो अविक्खित्तचित्तो परियत्तियं विसारदो होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 14; – **ता** स्त्री॰, अविक्खित्त का भाव॰ [अविक्षिप्तता], **शा॰ अ॰** बिखराव का अभाव, **ला॰ अ॰** चित्त में बिखराव या चञ्चलता का न होना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपमुस्सताय उजुं, अविक्खित्तताय अनुद्धटं, पतिट्ठितताय अचपलं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.196; – **भोजित्ता** स्त्री॰, भाव॰, बिखराए या इधर उधर फैलाए बिना भोजन करना – *विसुं विसुं भाजनेसु ठितानि ब्यञ्जनानि गण्हतो तत्थ तत्थ साभोगताय सिया विक्खित्तभोजिता, ... वुत्तं अविक्खित्तभोजिता'ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.90; **मन** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविक्षिप्तमनस्], बिखराव या चञ्चलता से रहित मन वाला – **मनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविक्खित्तमनो होमि, सब्बारक्खेहि रक्खितो,* अप॰ 1.341; – **सोत** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविक्षिप्तस्रोतस्], केन्द्रित ध्यान से युक्त श्रवणशक्ति वाला, ध्यान लगाकर सुनने वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ओहितसोताति वा अविक्खित्तसोता,* उदा॰ अट्ठ॰ 316.

अविक्खिपमान त्रि॰, वि + √खिप के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, बाधित नहीं होने वाला, चञ्चल न होता हुआ, अस्थिर या अशान्त नहीं हो रहा – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकारम्मणे चित्तचेतसिका समं सम्मा च अविक्खिपमाना अविप्पकिण्णा च हुत्वा तिट्ठन्ति,* विसुद्धि॰ 1.83; *अविक्खिपमानाति न विक्खिपमाना वूपसममाना,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.101.

अविक्खेप पु., विक्खेप का निषे., तत्पु. स. [अविक्षेप], चित्त में अशान्ति या बेचैनी का न होना, चित्त में चञ्चलता का अभाव, चित्त की शान्त अवस्था, एकाग्रता – **पो** पु., प्र. वि., ए. व. *एकग्गता तु समथो अविक्खेपो समाधि च*, अभि. प. 155; *नेक्खम्मवसेन चित्तस्स एकग्गता अविक्खेपो समाधि*, पटि. म. 87; *चित्तस्स एकग्गता अविक्खेपोति एकग्गस्स भावो एकग्गता, नानारम्मणे न विक्खिपति तेन चित्तन्ति अविक्खेपो, चित्तस्स एकग्गतासङ्खातो अविक्खेपोति अत्थो*, पटि. म. अट्ठ. 1.253; – **पं** द्वि. वि., ए. व. – *चित्तस्स एकग्गतं अविक्खेपं पजानतो उप्पज्जति पीति पामोज्जं*, पटि. म. 178; - **पेन** तृ. वि., ए. व. – *अविक्खेपेन उद्धच्चं हिरीयतीति – हिरिबलं*, पटि. म. 344; – **खन्ति** स्त्री., तत्पु. स. [अविक्षेपक्षान्ति], चित्त की एकाग्रता से प्राप्त क्षान्ति या शान्त अवस्था -- *अविक्खेपखन्ति उद्धच्चेन सुञ्ञा*, पटि. म. 358; – **पट्ठ** पु., तत्पु. स. [अविक्षेपार्थ], अविक्षिप्तता का अर्थ, एकाग्रता का आशय – **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. – *समाधिन्द्रियस्स अविक्खेपट्ठो अभिञ्ञेय्यो*, पटि. म. 15; – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *अविक्खेपट्ठेन सम्मासमाधि रूपरागा अरूपरागा*, पटि. म. 64; *तेनायं विहारो समाधीति वुत्तो, न अविक्खेपट्ठेन*, उदा. अट्ठ. 158; **पटिलाभ** पु., तत्पु. स. [अविक्षेपप्रतिलाभ], चित्त की एकाग्रता का लाभ – **भो** प्र. वि., ए. व. – *अविक्खेपपटिलाभो उद्धच्चेन सुञ्ञो*, पटि. म. 357; – **पटिवेध** पु., तत्पु. स. [अविक्षेपप्रतिवेध], चित्त की एकाग्रता का ध्यान-भावना द्वारा व्यावहारिक अनुभव – **धो** प्र. वि., ए. व. – *अविक्खेपप्पटिवेधो उद्धच्चेन सुञ्ञो*, पटि. म. 357; – **परिग्गह** पु., तत्पु. स. [अविक्षेपपरिग्रह], चित्त की स्थिरता या एकाग्रता की प्राप्ति – **हो** प्र. वि., ए. व. *अविक्खेपपरिग्गहो उद्धच्चेन सुञ्ञो*, पटि. म. 357; – **परियोगाहन** नपुं., तत्पु. स. [अविक्षेपपर्यवगाहन], एकाग्रता में पूरी तरह डूब जाना, एकाग्रता की आन्तरिक एवं प्रत्यक्ष अनुभूति – **णं** प्र. वि., ए. व. – *अविक्खेपपरियोगाहणं उद्धच्चेन सुञ्ञं*, पटि. म. 358; **परिसुद्धत्त** नपुं., भाव., एकाग्रता से सम्बद्ध पूर्ण शुद्धि, एकाग्रता द्वारा पूर्ण रूप से विशुद्ध हो जाना – **त्ता** प. वि., ए. व. *अविक्खेपपरिसुद्धत्ता आसवसमुच्छेदे पञ्ञा आनन्तरिकसमाधिम्हि ञाणं*, पटि. म. 87; – **मण्ड** पु., तत्पु. स. [अविक्षेपमण्ड], चित्त की शान्ति या एकाग्रतारूपी मांड़ **ण्डं** द्वि. वि., ए. व. – *उद्धच्चं कसटं छड्डेत्वा समाधिन्द्रियस्स अविक्खेपमण्डं पिवतीति – मण्डपेय्यं*, पटि. म. 268–69; – **लक्खण** 1. नपुं., तत्पु. स., एकाग्रता या चित्त की शान्ति वाला लक्षण – **णं** प्र. वि., ए. व. – *चित्तेकग्गताय अविक्खेपलक्खणं*, दी. नि. अट्ठ. 1.60; – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *कतिविधो समाधीति अविक्खेपलक्खणेन ताव एकविधो*, विसुद्धि. 1.84; 2. अविक्षेप या चित्त-उपशम के लक्षण वाला – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अविक्खेपलक्खणो समाधि*, विसुद्धि. 1.83; – **णा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. ... *अविक्खेपलक्खणा चित्तेकग्गताति इमे पञ्च धम्मा वत्तन्ति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).243; – **विमुत्ति** स्त्री., ब. स., चित्त के उपशम या एकाग्रता द्वारा प्राप्त विमुक्ति, एकाग्रता या समाधि के द्वारा प्राप्त विमुक्ति – *अविक्खेपविमुत्ति सम्मासमाधि*, पटि. म. 319; – **विराग** त्रि., ब. स., समाधि या चित्त की एकाग्रता को रागमुक्ति के उपाय के रूप में ग्रहण करने वाला – **गो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अविक्खेपविरागो समाधिसम्बोज्झङ्गो*, पटि. म. 317; – **सीस** त्रि., अविक्षेप या चित्त की एकाग्रता की मुख्यता या प्रधानता वाला – **सं** पु., प्र. वि., ए. व. – *अविक्खेपसीसञ्च समाधि*, पटि. म. 94; – **पाधिट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [अविक्षेपाधिष्ठान], चित्त की एकाग्रता या समाधि के लिए दृढ़-संकल्प – **नं** प्र. वि., ए. व. – *अविक्खेपाधिट्ठानं उद्धच्चेन सुञ्ञं*, पटि. म. 358; – **कामिसमय** पु., तत्पु. स. [अविक्षेपाभिसमय], चित्त की एकाग्रता एवं उपशम की प्राप्ति -- **यो** प्र. वि., ए. व. - *अविक्खेपाभिसमयो सम्मासमाधि*, पटि. म. 385; -- **पेसना** स्त्री., तत्पु. स., चित्त की एकाग्रता के लिए प्रयास – **ना** प्र. वि., ए. व. – *अविक्खेपेसना उद्धच्चेन सुञ्ञा*, पटि. म. 357.

अविगत त्रि., वि + √गम के भू. क. कृ. का निषे. [अविगत], **शा. अ.** दूर नहीं गया हुआ, नष्ट नहीं हो चुका, **ला. अ.** आवश्यक अङ्ग से युक्त – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अनञ्ञो अविगतो सन्धावतीति*, कथा. 36; *अविगतो एकेनापि आकारेन अविगतोति अत्थो*, कथा. अट्ठ. 123; – **तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *अविगतेनाति वा पाठो, तस्सत्थो कदाचि अविच्छन्नेनाति*, अ. नि. टी. 1.195; – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. *चक्खुपथे अन्धकारे अविगतेयेव हेट्ठामञ्चकतो निक्खमित्वा* ..., ध. प. अट्ठ. 1.277; – **छन्द** त्रि., ब. स. [अविगतछन्द], तृष्णा से मुक्ति नहीं पाया हुआ, इच्छाओं या आसक्तियों से मुक्त न होने वाला – **न्दो** पु., प्र. वि., ए. व. – *भिक्खु कामेसु अवीतरागो होति अविगतच्छन्दो अविगतपेमो*, दी. नि. 3. 190; म. नि. 1.146; **तण्ह** त्रि., ब. स. [अविगततृष्णा],

वह, जिसके चित्त से तृष्णा नष्ट नहीं हुई है – **हा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अवीततण्हा अविगततण्हा अवन्ततण्हा अवन्ततण्हा,* महानि. 34–35; – **पच्चय** पु., कर्म. स. [अविगतप्रत्यय], नष्ट नहीं हुआ कारण या प्रत्यय – **यो** प्र. वि., ए. व. – *पञ्चविधो होति अत्थिपच्चयो अविगतपच्चयो च,* अभि. ध. स. 59; – **यता** स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व. [अविगतप्रत्ययता], प्रत्यय या कारण का समाप्त न होना, प्रत्यय का विद्यमान रहना – *अत्थिपच्चयभावोति नत्थि निब्बानस्स सब्बदा भाविनो अत्थिपच्चयता,* अभि. ध. वि. 219; – **पेम** त्रि., ब. स. [अविगतप्रेमन्], वह, जिसका प्रेम मिटा नहीं है, प्रेम को जारी रखने वाला – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *आयतिञ्च सिक्खासमादाने अविगतपेमो,* अ. नि. 2(2).166; दी. नि. 3.199; – **विमति** त्रि., ब. स. [अविगतविमति], सन्देह या शङ्का को नहीं नष्ट किया हुआ, संशयालु, शङ्कालु – **ती** पु., प्र. वि., ब. व. – *ते पत्वाख्यातसद्दे अविगतविमती होन्ति ञाणी पि,* सद्द. 1.13 – **सोक** त्रि., ब. स. [अविगतशोक], वह, जिसके चित्त का शोक अभी तक नहीं मिटा है, शोक से पीड़ित मन वाला – **कानं** पु., ष. वि., ब. व. – *जीवसोकिनन्ति अविगतसोकानं अरञ्ञे वसन्तानं ...,* जा. अट्ठ. 7.368.

अविग्गह 1. पु., विग्गह (कलह) का निषे., तत्पु. स. [अविग्रह], अकलह, झगड़ा-झंझट का अभाव – **हो** प्र. वि., ए. व. – *इति अभण्डनं इति अविग्गहो इति अकलहो,* स. नि. 1(1).259; **2.** त्रि., विग्गह (शरीर) का निषे., ब. स. [अविग्रह], **शा. अ.** अशरीरधारी, अनङ्ग, **ला. अ.** कामदेव – **हो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अविग्गहो तु कामो च मनोभू मदनो भवे,* अभि. प. 42; – **क** त्रि., ब. स., द्वेषभाव से रहित, कलह से मुक्त, शरीररहित, अशरीरी, अभौतिक – **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *उपेति चाविग्गहकम्पदं पदं,* अभि. अव. 174; *अविग्गहकम्पदं पदं अविग्गहकं सरीररहितं पदं पटिपज्जितब्बं ञातब्बं पदं निब्बानं उपेति पापुणाति च,* अभि. अव. पु. टी. 114; *अविग्गहकम्पदन्ति विग्गहञ्च कम्पञ्च न देतीति अविग्गहकम्पदन्ति अत्थो,* अभि. अव. अभि. टी. 2.270.

अविग्गहीत त्रि., विग्गहीत का निषे. [अविगृहीत], अलग-अलग करके उदित न होने वाला, अविभिन्न, एक पिण्ड के रूप में एकीकृत – **तट्ठ** पु., अलग-अलग न होने का अर्थ – **तट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *चित्तं पन नो हितट्ठेन निरन्तरट्ठेन अविग्गहट्ठेन समग्गट्ठेन एकमेवाति दस्सेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).139.

अविघात पु., विघात का निषे. [अविघात], हानिरहितता, दुःख का अभाव, स्वस्थता, कुशलता – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यस्मा च खो, आवुसो, कुसले धम्मे उपसम्पज्ज विहरतो, दिट्ठे चेव धम्मे सुखो विहारो अविघातो ...,* स. नि. 2(1).8; *तत्र अविघातोति निद्दुक्खो,* स. नि. अट्ठ. 2.228; – **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. – *दिट्ठेव धम्मे सुखं विहरति अविघातं अनुपायासं अपरिळाहं,* अ. नि. 1(1).234; – **पक्खिक / पक्खिय** त्रि., [अविघातपक्षीय], सुख या कल्याण के पक्ष के साथ जुड़ा हुआ – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *पञ्ञावुद्धिको अविघातपक्खिको निब्बानसंवत्तनिको,* म. नि. 1.164; *न दुक्खकोट्ठासाय संवत्ततीति अविघातपक्खिको,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).396; – **क्खिका** ब. व. – ... *सत्त बोज्झङ्गा चक्खुकरणा ञाणकरणा पञ्ञावुद्धिया अविघातपक्खिया निब्बानसंवत्तनिका'ति,* स. नि. 3(1).119.

अविघातव त्रि., वि + √हन के प्रेर. का निषे., हानि से रहित, बाधाओं से मुक्त, विक्षेप-रहित, एकाग्रचित्त, सुखमय, समाहित – *सतो च होति अप्पिच्छो, सन्तुट्ठो अविघातवा,* थेरगा. 899; *चित्तस्स विघातकरं विक्खेपं पहाय अविघातवा अविक्खित्तो समाहितो,* थेरगा. अट्ठ. 2.291.

अविघाती त्रि., विघाती का निषे. [अविघातिन्], विक्षेप न करने वाला, चित्त की व्याकुलता न लाने वाला, बाधाओं से रहित, प्रतिघात न करने वाला – *अविघाती दिसा सब्बा, सीलगन्धो पवायति,* विसुद्धि. 1.55; *अविघातीति अप्पटिघाती,* विसुद्धि. महाटी. 1.80.

अविचक्खण त्रि., विचक्खण का निषे. [अविचक्षण], अचतुर, मन्द-बुद्धि, मूर्ख – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अवकुज्जपञ्ञो पुरिसो दुम्मेधो अविचक्खणो,* अ. नि. 1(1).154; *अविचक्खणोति संविदहनपञ्ञाय रहितो,* अ. नि. अट्ठ. 2.99.

अविचल त्रि., [अविचल], **शा. अ.** नहीं हिलने डुलने वाला, अचल, **ला. अ.** स्थिर चित्त, चित्त की चञ्चलता से रहित – **लाय** स्त्री., तृ. वि., ए. व. – *तेसु अविचलाय मेत्ताय पुब्बकारिनो होन्ति,* विसुद्धि. 1.315; *अविचलायाति पटिपक्खेन अकम्पनीयाय,* विसुद्धि. महाटी. 1.368; – **लाधिट्ठान** त्रि., ब. स. [अविचलाधिष्ठान], सुदृढ़ या अडिग संकल्प वाला – **ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *तेसं हितसुखाय अविचलाधिट्ठानाति होन्ति,* विसुद्धि. 1.315; *अविचलाधिट्ठानाति यथासमादिन्नेसु दानादिधम्मेसु निच्चलाधिट्ठायिनो अचलसमादानाधिट्ठाना,* विसुद्धि. महाटी. 1.368.

अविचार त्रि., ब. स. [अविचार], विचार से रहित, विचार नामक चेतसिक से मुक्त - **रा** पु., प्र. वि., ब. व. - *कतमे धम्मा अविचारा,* ध. स. 1278; - **भूमि** स्त्री., तत्पु. स. [अविचारभूमि], विचार नामक चेतसिक से रहित चित्त की भूमि - **यं** सप्त. वि., ए. व. - *अविचारभूमियं कामावचरे रूपावचरे ... इमे धम्मा अविचारा,* ध. स. 1278.

अविचारेत्वा वि + √चर के प्रेर. के पू. का. कृ., विचारेत्वा का निषे. [अविचार्य], विचार न करके, बिना सोचे-विचारे - *सहसा समेच्चाति सहसा आदीनवानिसंसे अविचारेत्वा* ..., वि. व. अट्ठ. 285.

अविचालिय त्रि., वि + √चल के प्रेर. के सं. कृ. का निषे. [अविचाल्य], ऐसी दृढ़-आधारभूमि, जहां से कुछ भी हिलाया-डुलाया न जा सके - **या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सुगतीनम्महामग्गा पतिट्ठा अविचालिया,* सद्धम्मो. 444.

अविचिकिच्छ त्रि., ब. स. [अविचिकित्स्य], विचिकित्सा से मुक्त, सन्देह से भरी मनोवृत्ति से रहित - **च्छो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सो अविचिकिच्छो समानो भब्बो रागं पहातुं,* अ. नि. 3(2).123.

अविचिन्तिय त्रि., वि + √चिन्त के सं. कृ. का निषे. [अविचिन्त्य], चिन्तन का अविषय, चिन्तन या विचार करने के क्षेत्र से बाहर वाला - **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *पारत्थिकं फलं यन्तं फलं व अविचिन्तियं,* सद्धम्मो. 273.

अविच्चं अ., क्रि. वि., व्यु. संदिग्ध, खुले रूप में, नहीं छिपा कर, खुल कर, किसी भी रहस्य या गोपनीयता के बिना - *नीचं भासति, अविच्चं भासति, विविच्चं भासति,* जा. अट्ठ. 5.431; ध. प. अट्ठ. 2.396; *अविच्चान्ति बहुजनमज्झे अप्पटिच्छन्नं,* जा. अट्ठ. 5.434.

अविच्छिज्ज वि + √छिद के पू. का. कृ. विच्छिज्ज का निषे., [अविच्छिद्य], बिना किसी रुकावट के, लगातार, बीच में व्यवधान न करके - *एकेनेव पयोगेन, अविच्छिज्ज सचे पन,* विन. वि. 1659.

अविच्छिन्न त्रि., वि + √छिद के भू. क. कृ. विच्छिन्न का निषे. [अविच्छिन्न], बिना रुकावट वाला, बीच में किसी भी रुकावट या बाधा से रहित - **न्ने** पु., सप्त. वि., ए. व. - *तेन अविच्छिन्नेयेव तत्थ भगवतो विहारे इदमधिकारन्तरं उदपादीति दस्सेति,* खु. पा. अट्ठ. 91-92; - **त्थ** पु., तत्पु. स. [अविच्छिन्नार्थ], निरन्तरता या लगातारपन का अर्थ - **त्थे** सप्त. वि., ए. व. - *अथ इति कत्थचि पञ्हानन्तरियाविच्छिन्नाधिकारन्तरेसु पि, ... अथ नं आह; अविच्छिन्नत्थे,* सद्द. 3.891; - **धार** त्रि., ब. स. [अविच्छिन्नधार], अखण्ड धारा वाला, लगातार बह रहे प्रवाह वाला - **रं** नपुं., द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. - *भगवा हि यथानिक्खित्ताय मातिकाय अच्छिन्नधारं कत्वा आकासगङ्गं ओतोरन्तो विय देसनं देसेसियेव,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.222; - **पवत्ति** स्त्री., कर्म. स. [अविच्छिन्नप्रवृत्ति], लगातार चल रही क्रिया - *याव तस्मिं भवे सन्तानस्स अनुप्पबन्धो अविच्छिन्नप्पवत्ति होति,* सारत्थ. टी. 2.241.

अविच्छेद पु., विच्छेद का निषे. [अविच्छेद], अखण्डता, लगातारपन, निरन्तरता, सातत्य - **देन** तृ. वि., ए. व. - *धम्मस्स अविच्छेदेन पवत्तीति अत्थो,* सारत्थ. टी. 1.75; - **दाय** च. वि., ए. व.- *तस्स तस्स सतस्स उप्पन्नधम्मानं अनुप्पबन्धवसेन अविच्छेदाय* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).215; - **करणं** नपुं., तत्पु. स., प्र. वि., ए. व. [अविच्छेदकरणं], निरन्तरता या लगातारपन को उत्पन्न करना - *सन्तानकिरिया नाम पबन्धकिरिया अविच्छेदकरणं,* सद्द. 2.540; **त्थे** पु., तत्पु. स., सप्त. वि., ए. व. [अविच्छेदार्थ], निरन्तरता या लगातारपन के अर्थ में - *अथाति अविच्छेदत्थे, खोति अधिकारन्तरनिदस्सनत्थे निपातो,* खु. पा. अट्ठ. 91.

अविजहन्तु त्रि., वि + √हा के वर्त. कृ. का निषे. [अविजहत], नहीं त्यागता हुआ, रिक्त नहीं होता हुआ - **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अप्पमत्तोति कम्मट्ठाने सतिं अविजहन्तो,* उदा. अट्ठ. 140; - **न्ता** ब. व. - *चित्तीकारं अविजहन्ता अविक्खित्तचित्ता हुत्वा,* पे. व. अट्ठ. 23.

अविजहित त्रि., वि + √हा के भू. क. कृ. का निषे., नहीं छोड़ा हुआ, अनुपालन किया गया, कभी भी नहीं त्यागा गया, सभी अवसरों के लिए अनिवार्य - **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *सब्बबुद्धानं अविजहितं उदानं उदानेसि,* जा. अट्ठ. 1.85; - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अविजहितोति बुद्धानं तथानिसज्जाय अनञ्ञत्थभावीभावतो अपरिच्चत्तो,* लीन. (दी.नि.टी.) 2.14; - **ट्ठान** नपुं., कर्म. स., अचल स्थान - *इदं किर ठानं सब्बबुद्धानं अविजहितट्ठानमेव,* जा. अट्ठ. 1.103; - **गन्ध-तेलप्पदीप** त्रि., ब. स., सुगन्धित तेल से भरे दीपक से कभी भी रहित न होने वाला, सदा सुगन्धित तेल से भरे दीपक वाला - *समोसरितगन्धदाममालादामं अविजहितगन्धतेलपदीपं होति,* जा. अट्ठ. 1.179.

अविजात त्रि., वि + √जन के भू. क. कृ. विजात का निषे. [अविजात], नहीं उत्पन्न, जन्म को ग्रहण नहीं किया हुआ

– **ता** स्त्री., प्र. वि., ब. व. *अत्तभावे अभिनिम्मिनित्वा कुमारियो, अविजाता, सकिंविजाता, दुविजाता मज्झिमित्थियो,* जा. अट्ठ. 1.88; **पुत्त** त्रि., ब. स. [अविजातपुत्र], पुत्र को जन्म न देने वाला – **त्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अपगतगब्भाति अविजातपुत्ता,* वि. वि. टी. 2.221; – **वण्ण** नपुं., तत्पु. स., सन्तान को जन्म न देने वाली तरुण नारी का स्वरूप – **ण्णं** द्वि. वि., ए. व. – *ततो भगवा अविजातवण्णं, सकिंविजातवण्णं ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.205; – **ण्णसत** नपुं., कर्म. स., सन्तान उत्पन्न न करने वाली नारी के एक सौ स्वरूप – *एकसतं एकसतं अविजातवण्णसतं अभिनिम्मिनित्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु,* स. नि. 1(1).147.

अविजानन्त त्रि., वि + √ञा के वर्त कृ. विजानन्तु का निषे. [अविजानत्], नहीं जान रहा, नहीं समझने वाला, अज्ञानी – **नता** पु., तृ. वि., ए. व. – *न त्वेविदं कुसीतेन, बालेनमविजानता,* इतिवु. 75; *चत्तारि सच्चानि यथाभूतं अविजानता,* इतिवु. अट्ठ. 286; – **नतो** ष. वि., ए. व. – *अनवट्ठितचित्तस्स, सद्धम्मं अविजानतो,* ध. प. 38; – **नन्ता** प्र. वि., ब. व. – *यदा च अविजानन्ता इरियन्त्यमरा विय,* थेरगा. 276; **नतं** पु., ष. वि., ब. व. *दीघो बालानं संसारो, सद्धम्मं अविजानतं,* ध. प. 60.

अविजित त्रि., वि + √जि के भू. क. कृ. विजित का निषे. [अविजित], **शा. अ.** नहीं जीता हुआ, **ला. अ.** किसी अन्य राजा के अधीन न आने वाला क्षेत्र – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स अविजितं ...,* म. नि. 2.338.

अविज्जक्खण नपुं., तत्पु. स. [अविद्याक्षण], अविद्या से भरे हुए चित्त की विद्यमानता का क्षण – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *अविज्जाक्खणे मग्गपञ्ञा नत्थि, मग्गपञ्ञाक्खणे अविज्जा नत्थि,* अ. नि. अट्ठ. 2.27.

अविज्जण्डकोस पु., तत्पु. स. [अविद्याण्डकोश], अविद्या का अण्डकोश, अविद्या रूपी अण्डे का खोल – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *अविज्जागताय पजाय अण्डभूताय परियोनद्धाय अविज्जण्डकोसं पदालेत्वा,* पारा. 4; *अविज्जण्डकोसं पदालेत्वाति तं अविज्जामयं अण्डकोसं भिन्दित्वा,* पारा. अट्ठ. 1.102; – **सानं** ष. वि., ब. व. *उपादानपञ्ञत्ति सब्बञ्ञुताय, पदालनापञ्ञत्ति अविज्जण्डकोसानं, ...,* नेत्ति. 51.

अविज्जन्धकार पु., तत्पु. स. [अविद्यान्धकार], अज्ञान का अंधेरा, अविद्या का अंधकार – **रं** द्वि. वि., ए. व. *पञ्ञा, महाराज, उप्पज्जमाना अविज्जन्धकारं विधमेति,* मि. प. 37; – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *महता च अविज्जन्धकारेन पिहितं,* मि. प. 286; – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *अन्धकारेति अविज्जन्धकारेन सकलेन किलेसन्धकारेन च अन्धकारे लोके,* वि. व. अट्ठ. 85; – **रस्स** ष. वि., ए. व. – *देसनापञ्ञत्ति अविज्जन्धकारस्स वेवचनपञ्ञत्ति च, ...,* नेत्ति. 52; – **परियोनद्ध** त्रि., तत्पु. स. [अविद्यान्धकारपर्यवनद्ध], अज्ञान के अधेरे में फंसा हुआ – **द्धा** पु., प्र. वि., ब. व. – *तं तं एवं पटिक्कूलम्पि समानं अविज्जन्धकारपरियोनद्धा अत्तसिनेहरागरत्ता,* विसुद्धि. 1.186; – **रावरण** त्रि., ब. स. [अविद्यान्धकारावरण], अविद्या के अन्धकार की चादर या आच्छादन – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. *अविज्जन्धकारावरणो लोकसन्निवासो अण्डभूतो किलेसपञ्जरपक्खित्तो,* पटि. म. 116; उदा. अट्ठ. 113.

अविज्जमान त्रि., √विद के वर्त. कृ., विज्जमान का निषे. [अविद्यमान], **शा. अ.** नहीं विद्यमान, अस्तित्व में नहीं आया हुआ, **ला. अ.** मिथ्या, अवास्तविक, असत् – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *धातुयो विज्जमाना, पुरिसो अविज्जमानो ...,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.217; – **नेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *तस्मिं पुग्गले अविज्जमानेन अन्तिमवत्थुना अनुवदति चोदेति,* पारा. अट्ठ. 2.69; – **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *एवमादिप्पभेदा पन परमत्थतो अविज्जमानापि ...,* अभि. ध. स. 60; – **नज्जतन** त्रि., ब. स. [अविद्यमानाद्यतन], आज के बीते हुए समय से असम्बद्ध – **ने** पु., सप्त. वि., ए. व. – *अविज्जमानज्जतने भूतेत्थे वत्तमानतो क्रियत्था आ आदयो होन्ति,* मो. व्या. 6.5; – **ता** स्त्री., भाव. [अविद्यमानता], विद्यमान न रहना, अस्तित्व में न आना – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *अतीते अत्तनो विज्जमानतं अविज्जमानतञ्च कङ्खति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).74; – **त्त** नपुं., भाव. [अविद्यमानत्व], उपरिवत् – **त्ता** प. वि., ए. व. – *अत्तनि अविज्जमानत्ता ति गोत्तभू ति वुच्चति,* सद्द. 1.78; – **पञ्ञत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [अविद्यमानप्रज्ञप्ति], जो वास्तव में सत्ता वाली वस्तु नहीं है, उसके बारे में कुछ कहना या बतलाना, असत् का प्रज्ञापन – *तथा अविज्जमानस्स लोकनिरुत्तिमत्तसिद्धस्स इत्थिपुरिसादिकस्स पञ्ञापना अविज्जमानपञ्ञत्ति नाम,* पु. प. अट्ठ. 26; *अविज्जमानेन अविज्जमानपञ्ञत्ति चेति छब्बिधा होति,* अभि. ध. स. 61.

अविज्जा स्त्री., [अविद्या], **शा. अ.** विद्या या ज्ञान का अभाव, **ला. अ.** चार आर्यसत्यों, प्रतीत्य समुत्पाद तथा

तिलक्खण के विषय में ज्ञान एवं दर्शन का अभाव, मिथ्यारूप में संसार को देखना, संसार का मूल कारण, भवचक्र या संसारचक्र का मूल कारण – *मोहो'विज्जा तथा'ञ्ञाणं,* अभि॰ प॰ 168; *तं अविन्दियं विन्दतीति अविज्जा ... तं विन्दियं न विन्दतीति अविज्जा ... सच्चानं तथट्ठं अविदितं करोतीतिपि अविज्जा ... चतुब्बिधं अत्थं अविदितं करोतीतिपि अविज्जा ... न जवतीति अविज्जा, अपिच चक्खुविञ्ञाणादीनं ... धम्मानं छादनतोपि अविज्जा,* विसुद्धि 2.155–56; *न विजानातीति अविज्जा ... विज्जमाने वा न जवापेतीति अविज्जा,* अभि॰ ध॰ वि॰ 207; *विज्जाय पटिक्खभावतो न विज्जाति अविज्जा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 294; *अविज्जाति दुक्खादीसु अञ्ञाणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.145; *अविज्जा हायं महामोहो, येनिदं संसितं चिरं,* सु॰ नि॰ 735; *तत्थ यस्मा चतूसु सच्चेसु अञ्ञाणभूता अविज्जा संसारस्स सीसं, तस्मा अविज्जा मुद्धाति आह,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.275; – **ज्जं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जं दालयिस्सामि, निसिन्नो नगमुद्धनि,* थेरगा॰ 544; *अविज्जं तेन पजहति, न तत्थ अविज्जानुसयो अनुसेती'ति,* म॰ नि॰ 1.385; – **ज्जाय¹** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाय निवुतो कायो, चतुगन्थेन गन्थितो,* थेरगा॰ 572; – **ज्जाय²** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाय मानानुसया अविज्जानुसया ... चित्तं विचित्तं होति,* महानि॰ 20; – **ज्जाय³** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जायत्वेव असेसविरागनिरोधा सङ्खारनिरोधो,* महाव॰ 2; – **कोट्ठास** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याकोष्ठांश], अविद्या नामक शीर्षक – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाभागे अविज्जाकोट्ठासे वत्तन्तीतिपि अविज्जाभागिनो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 97; – **खन्ध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यास्कन्ध], सञ्चित राशि के रूप में अविद्या, अविद्या की सञ्चित राशि – **न्धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु महन्तं अविज्जाक्खन्धं पदालेति,* अ॰ नि॰ 1(1).321; – **न्धेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाखन्धेन जयसेनो राजकुमारो आवुतो निवुतो ओफुटो परियोनद्धो,* म॰ नि॰ 3.172; – **गत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यागत], अज्ञान से ग्रस्त, वह, जिसकी अविद्या नष्ट नहीं हुई है, अविद्या में फंसा हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बकं ब्रह्मानं एतदवोचं – अविज्जागतो वत, भो, बको ब्रह्मा,* म॰ नि॰ 1.409; *अविज्जागतोति अविज्जाय समन्नागतो अप्पहीनाविज्जोति अधिप्पायो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.250; *अविज्जागतोति अविज्जाय गतो समन्नागतो अञ्ञाणी अन्धीभूतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).298; – **तस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जागतस्स, भिक्खवे, अविद्दसुनो मिच्छादिट्ठि पहोति,* स॰ नि॰ 3(1).2; – **ग्गहण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याग्रहण], अज्ञान की पकड़, अविद्या की उत्पत्ति – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाग्गहणेन हि अवसेसकिलेसवट्टञ्च कम्मादीनि च बालं पलिबोधेन्ति,* विसुद्धि॰ 2.210; *तत्थ अविज्जाग्गहणेनाति अविज्जाय उप्पादनेन, अप्पहानेन वा, अत्तनो सन्ताने सन्निहितभावकरणेनाति अत्थो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.315; **जातिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविद्याजातिक], अज्ञान से उत्पन्न होने वाला, अविद्या से उदित होने वाला – **तिका** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सङ्खारा अविज्जानिदाना अविज्जासमुदया अविज्जाजातिका अविज्जापभवा,* म॰ नि॰ 1.98; स॰ नि॰ 1(2).13; – **तम** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यातमस्], अविद्या का अन्धकार, अज्ञान का अंधेरा – **मसा** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं अन्धबाललोको अविज्जातमसा परिवारितो,* उदा॰ अट्ठ॰ 314; – **धातु** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याधातु], अविद्या का मूलभूत तत्त्व, जवन-नामक चित्त क्षण में उदित अविद्या – *अत्थि, भिक्खवे, मनो, अत्थि धम्मा, अत्थि अविज्जाधातु,* स॰ नि॰ 2(1).43; *अविज्जाधातूति जवनक्खणे अविज्जा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.239; – **निदान** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविद्यानिदान], अविद्या के कारण उत्पन्न होने वाला – **दाना** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *सङ्खारा अविज्जानिदाना अविज्जासमुदया अविज्जाजातिका अविज्जापभवा,* म॰ नि॰ 1.98; पटि॰ म॰ 290; – **निरोध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यानिरोध], अविद्या का निरोध, अज्ञान की समाप्ति – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जानिरोधो, भिक्खवे, आसवनिरोधो,* अ॰ नि॰ 2(2).118; *यदिदं – अविज्जानिरोधा सङ्खारनिरोधो ... विञ्ञाणनिरोधो,* उदा॰ 70; **धा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जानिरोधाति अरियमग्गेन अविज्जाय अनवसेसनिरोधा ... अच्चन्तसमुग्घाटतीति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 38 39; **निवुत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अविद्या से अभिभूत, अविद्या द्वारा प्रवञ्चित – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जानिवुते लोके, अन्धकारेन ओत्थटे,* अप॰ 1.85; – **नीवरण** 1. त्रि॰, ब॰ स॰, अविद्या के नीवरण या आच्छादन से युक्त, अज्ञान से अभिभूत – **णस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जानीवरणस्स, भिक्खवे, बालस्स तण्हाय सम्पयुत्तस्स एवमयं कायो समुदागतो,* स॰ नि॰ 1(2).22; – **णानं** ब॰ स॰ – *अविज्जानीवरणानं खो, आवुसो, सत्तानं तण्हा संयोजनानं तत्रतत्राभिनन्दना ...,* म॰ नि॰ 1.374; 2. नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यानीवरण], अविद्या या अज्ञान की चादर या आच्छादन – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुक्खे अञ्ञाणं ... मोहो अकुसलमूलं*

- *इदं वुच्चति अविज्जानीवरणं,* ध॰ स॰ 1168; *छ नीवरणा – कामच्छन्दनीवरणं ... अविज्जानीवरणं,* ध॰ स॰ 1158; अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जासंयोजनं अविज्जानीवरणं, कथा॰ 148; – **ज्जानुसय** पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अविद्यानुशय], अचेतन चित्त में विद्यमान अनुशय के रूप में अविद्या, सात अनुशयों में से एक – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो ... अकुसलमूलं,* ध॰ स॰ 390; द्रष्ट॰ अनुसय; – **पच्चय** पु॰, कर्म॰ स॰ [अविद्याप्रत्यय], अविद्या-रूपी कारण – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जा च सा पच्चयो चाति अविज्जापच्चयो,* विसुद्धि॰ 2.156; – **या** ब॰ व॰ *अविज्जापच्चया, भिक्खवे, सङ्खारा, सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं,* स॰ नि॰ 1(2).2; – **पटलुद्धार** त्रि॰, स॰ प॰ के अन्त॰ प्राप्त, अज्ञान-रूपी मोतियाबिन्द या दृष्टिबाधा को हटाने वाला – *अविज्जापटलुद्धारविज्जानेत्तोसधं वरं,* ना॰ रू॰ प॰ 1126; – **पटिच्छन्न** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याप्रतिच्छन्न], अज्ञान के द्वारा ढका हुआ या आच्छादित, अज्ञानग्रस्त – **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अविज्जानिवुटाति अविज्जापटिच्छन्ना,* चूळव॰ अट्ठ॰ 134; – **पद** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यापद], अविद्याशब्द – **दं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *जरामरणा पट्ठाय याव मूलभूतं अविज्जापदं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.10; – **पभेद** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याप्रभेद], अज्ञान का विघटन, अविद्या का उच्छेद – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो अविज्जाप्पभेदं मनसि करोति,* अ॰ नि॰ 1(2).192; *अविज्जाप्पभेदं मनसि करोतीति अट्ठसु ठानेसु अञ्ञाणभूताय गणबहलमहाअविज्जाय पभेदसङ्खातं अरहत्तं मनसि करोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.351; – **परियुट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यापर्यवस्थान], अविद्या द्वारा अभिभूत हो जाना, अविद्या से पीड़ित होना या ग्रस्त होना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं,* ध॰ स॰ 390; *विज्जाय पटिपक्खभावतो न विज्जाति अविज्जा ... चित्तं परियुट्ठाति, अभिभवतीति परियुट्ठानं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 294; – **पळिघ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यापरिघ], अविद्या-रूपी अर्गला, अविद्या की बाधा, विघ्न या रुकावट – **घस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं सब्बम्पि छिन्दित्वा ठितं अविज्जापलिघस्स अक्खित्तत्ता उक्खित्तपलिघं ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.170; – **पहान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याप्रहाण], अविद्या से छुटकारा, अविद्या का उच्छेद – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जापहानं भावितं बहुलीकतं पञ्ञाधिट्ठानं परिपूरेति,* नेत्ति॰ 99; – **बन्धन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याबन्धन], अविद्या का बन्धन – **ना** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं किर सम्मा बन्धना विप्पमोक्खो होति, यदिदं अविज्जाबन्धना,* म॰ नि॰ 2.245; – **भवतण्हामयनाभि** त्रि॰, ब॰ स॰, अविद्या एवं भवतृष्णा-रूपी नाभि वाला (संसारचक्र) – *यञ्चेतं अविज्जाभवतण्हामयनाभि पुञ्ञादिअभिसङ्खारारं ...,* विसुद्धि॰ 1.190; – **भाग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याभाग], अविद्या का भाग या हिस्सा – **गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाभागे अविज्जाकोट्ठासे वत्तन्तीतिपि अविज्जाभागिनो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 97; – **भागी** त्रि॰, अविद्या के साथ जुड़ा हुआ – **गिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सम्पयोगवसेनेव अविज्जं भजन्तीति अविज्जाभागिनो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 97; – **भाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याभाव], अविद्या का अभाव, अज्ञान का अन्त – **वे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाभावे भावतो,* विसुद्धि॰ 2.160; – **भिभूत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याभिभूत], अविद्या द्वारा ग्रस्त, अज्ञान के वश में आया हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्मा अविज्जाभिभूतो पुथुज्जनो,* विसुद्धि॰ 2.155; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाभिभूतस्स च दन्धा अभिञ्ञा होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 228; – **मूलक** त्रि॰, [अविद्यामूलक], ऐसा धर्म, जिसका मूल या जिसकी जड़ अविद्या में हो – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये केचि अकुसला धम्मा सब्बे ते अविज्जामूलका अविज्जासमोसरणा अविज्जासमुग्घाता,* स॰ नि॰ 1(2).240; – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ यदेतं सब्बपठमे अविज्जामूलके नये पच्चयचतुक्कं,* विभ॰ अट्ठ॰ 191; – **योग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यायोग], अविद्या का (संसार के साथ) जोड़ने वाला बन्धन, भवबन्धन के रूप में अविद्या – *अविज्जा अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो, ... अकुसलमूलं,* ध॰ स॰ 390; – **योगविसंयोग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यायोगविसंयोग], अविद्या द्वारा बनाए गए बन्धन का खुल जाना या छूट जाना – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तारो मे, भिक्खवे, विसंयोगा, ... कामयोगविसंयोगो ... अविज्जायोगविसंयोगो,* अ॰ नि॰ 1(2).12; – **विनय** त्रि॰, ब॰ स॰, अविद्या पर नियन्त्रण हो जाने वाली स्थिति से सम्बद्ध, अविद्या को हटा देने वाली अर्हत्व की अवस्था से सम्बन्धित – **ये** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा तथागतेन अविज्जाविनये धम्मे देसियमाने ... चित्तं उपट्ठपेति,* अ॰ नि॰ 1(2).150; *अविज्जाविनयेति अविज्जाविनयो वुच्चति अरहत्तं, तंनिस्सिते धम्मे देसियमानेति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.330; – **विराग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्याविराग], अविद्या से छुटकारा, अविद्या का बिलगाव – **गा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... सो अविज्जाविरागा विज्जुप्पादा नेव कामुपदानं उपादियति,* म॰ नि॰ 1.98; –

विसदोस पु., कर्म. स. [अविद्याविषदोष], अविद्या-रूपी विष का दोष, विष की गड़बड़ी के रूप में अविद्या – **सो** प्र. वि., ए. व. – *तण्हा खो सल्लं समणेन वुत्तं अविज्जाविसदोसो, छन्दरागब्यापादेन रुप्पति,* म. नि. 3.41; *... एत्थ सउपादानसल्लुद्धारो विय अप्पहीनो अविज्जाविसदोसो दट्ठब्बो,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.36; – **विसदोसलित्त / दोससंलित्त / दोससल्लित** त्रि., तत्पु. स., अविद्या-रूपी विष के दोषों से युक्त, अज्ञान के विष की हानियों से भरपूर – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अविज्जाविसदोससंलित्तो, किलेसकललीभूतो रागदोसमोहजटाजटितो,* ..., उदा. अट्ठ. 113; – **संयोजन** नपुं., तत्पु. स. [अविद्यासंयोजन], सात प्रकार के मानसिक बन्धनों में से एक, अविद्या का बन्धन – **नं** प्र. वि., ए. व. *अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जासंयोजनं अविज्जानीवरणं,* कथा. 148; *सत्तिमानि, भिक्खवे, संयोजनानि ... अनुनयसंयोजनं ... भवरागसंयोजनं, अविज्जासंयोजनं,* अ. नि. 2(2).158; **समतिक्कम** पु., तत्पु. स. [अविद्यासमतिक्रमण], अविद्या को लांघ जाना या पार कर जाना, अविद्या को जीत लेना, अविद्या का पराभव – **क्कमा** प. वि., ए. व. – *ये रागदोसविनया अविज्जासमतिक्कमा,* स. नि. 1(1).272; *अविज्जासमतिक्कमाति चतुसच्चपटिच्छादिकाय वट्टमूलकअविज्जाय समतिक्कमेन,* ..., स. नि. अट्ठ. 1.307; – **समुग्घात** त्रि., तत्पु. स. [अविद्यासमुद्घात], अर्हत्वमार्ग से अविद्या का नाश होने पर नष्ट होने वाला, अविद्या को पूर्ण रूप से ध्वस्त कर देने से नष्ट हो जाने वाला – **ग्घाता** प्र. वि., ए. व. *... सब्बे ते अविज्जामूलका अविज्जासमोसरणा अविज्जासमुग्घाता, सब्बे ते समुग्घातं गच्छन्ति,* स. नि. 1(2).240; *अविज्जासमुग्घाताति अरहत्तमग्गेन अविज्जाय समुग्घातेन* ..., स. नि. अट्ठ. 2.198; – **समुदय** पु., तत्पु. स. [अविद्यासमुदय], अविद्या का उदय, अविद्या की उत्पत्ति – **या**[1] प्र. वि., ब. व. – *सङ्खारा अविज्जानिदाना अविज्जासमुदया अविज्जाजातिका अविज्जापभवा,* म. नि. 1.98; – **या**[2] प. वि. ए. व. – *अविज्जासमुदया रूपसमुदयोति – पच्चयसमुदयट्ठेन रूपक्खन्धस्स उदयं पस्सति,* पटि. म. 49; *अविज्जासमुदया सङ्खारसमुदयो, अविज्जानिरोधा सङ्खारनिरोधो,* म. नि. 1.69; – **समोसरण** त्रि., तत्पु. स. [अविद्यासमवसरण], अविद्या से ग्रस्त चित्त में जमावड़ा करने वाला या एक साथ आ जुटने वाला (अकुशल-धर्म) – **णा** पु., प्र. वि., ब. व. – *ये केचि अकुसलाधम्मा सब्बे ते अविज्जामूलका अविज्जासमोसरणा अविज्जासमुग्घाता, सब्बे ते समुग्घातं गच्छन्ति,* स. नि. 1(2).240; – **सम्पयुत्त** त्रि., तत्पु. स. [अविद्यासम्प्रयुक्त], अज्ञान के साथ जुड़ा हुआ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अविज्जापच्चया सङ्खारो अविज्जासम्पयुत्तो, सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं सङ्खारसम्पयुत्तं,* विभ. 159; – **सम्फस्सज** त्रि., तत्पु. स. [अविद्यासंस्पर्शज], अविद्या से जुड़े हुए स्पर्श नामक चेतसिक से उत्पन्न – **जेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. *अविज्जासम्फस्सजेन, भिक्खवे, वेदयितेन फुट्ठस्स अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स अस्मीतिपिस्स होति,* स. नि. 2(1).43; *अविज्जासम्फस्सजेनाति अविज्जासम्पयुत्तफस्सतो जातेन,* स. नि. अट्ठ. 2.239; – **सम्भूत** त्रि., तत्पु. स. [अविद्यासम्भूत], अविद्या के कारण उत्पन्न – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *चक्खु अविज्जासम्भूतन्ति ववत्थेति,* पटि. म. 69; – **सम्मूळ्हत्त** नपुं., सम्मूळ्ह का भाव. [अविद्यासम्मूढत्व], अविद्या के कारण उत्पन्न मूढ़ता या मोहग्रस्तता – **त्ता** प. वि., ए. व. – *अविज्जासम्मूळ्हत्ताति भवादीनवप्पटिच्छादिकाय अविज्जाय सम्मूळ्हत्ता,* विसुद्धि. महाटी. 2.270; – **ज्जासव** पु., तत्पु. स. [अविद्यास्रव], चार प्रकार के आस्रवों में से एक, अविद्या का आस्रव, जिसके कारण चार आर्य सत्यों का ज्ञान-दर्शन नहीं हो पाता – **वो** प्र. वि., ए. व. – *अनुप्पन्नो वा अविज्जासवो न उप्पज्जति, उप्पन्नो वा अविज्जासवो पहीयति,* म. नि. 1.11; *अविज्जासवोति चतूसु सच्चेसु अञ्ञाणं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).73; विशेष द्रष्ट. आसव के अन्त.; – **सहगतकिलेस** पु., कर्म. स. [अविद्यासहगतक्लेश], अविद्या के साथ जुड़ा हुआ क्लेश, अविद्या के साथ रहने वाला क्लेश – **से** सप्त. वि., ए. व. *अविज्जाय च अविज्जासहगतकिलेसे च खन्धे च न कम्पति न चलति न वेधतीति,* पटि. म. 91; *अविज्जा सहगतकिलेसे चाति यथायोगं अविज्जाय सम्पयुत्तलोभदोसमानदिट्ठि-विचिकिच्छाथिनउद्धच्चअहिरि-कअनोत्तप्पकिलेसे च,* ..., पटि. म. अट्ठ. 1.257; – **सीस** नपुं., तत्पु. स. [अविद्याशीर्ष], सिर के रूप में अविद्या, शीर्षक के तौर पर अविद्या – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *अथ च पन पञ्ञायति इदप्पच्चया अविज्जा'ति एवं अविज्जासीसेन कथिता,* दी. नि. अट्ठ. 2.87; *अविज्जासीसेनाति अविज्जं उत्तमङ्गं कत्वा, अविज्जामुखेनाति अत्थो,* लीन. (दी.नि.टी.) 2.99; – **सोत** पु. / नपुं., तत्पु. स. [अविद्यास्रोतस्], अविद्या का झरना या प्रपात – *तण्हासोतो दिट्ठिसोतो ... अविज्जासोतो'ति आदीसु*

तण्हादीसु पञ्चसु धम्मेसु ..., पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.11; *सेय्यथीदं तण्हासोतो दिट्ठिसोतो किलेससोतो दुच्चरितसोतो अविज्जासोतो'ति आदीसु तण्हादीसु पञ्चसु धम्मेसु,* सद्द॰ 2.492; **हेतुक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविद्याहेतुक], अविद्या के कारण से उत्पन्न **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जापच्चया सङ्खारो अविज्जाहेतुको सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं सङ्खारहेतुकं,* विभ॰ 158; – **ज्जुपक्किलिट्ठ** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्योपक्लिष्ट], अविद्या द्वारा कलुषित कर दिया गया, अज्ञान के कारण अविशुद्ध कर दिया गया – **लिट्ठा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रागुपक्किलिट्ठं वा, ... अविज्जुपक्किलिट्ठा वा पञ्ञा न भावीयति,* अ॰ नि॰ 1(1).77; *अविज्जुपक्किलिट्ठा वा पञ्ञा न भावीयतीति अविज्जाय उपक्किलिट्ठत्ता मग्गपञ्ञा न भावीयतीति दस्सेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.27; – **ज्जुपनिस** त्रि॰, ब॰ स॰, अविद्या को सर्वप्रमुख बनाकर उत्पन्न, अविद्या के कारण से उत्पन्न – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इति खो, भिक्खवे, अविज्जुपनिसा सङ्खारा, सङ्खारूपनिसं विञ्ञाणं, विञ्ञाणूपनिसं नामरूपं,* स॰ नि॰ 1(2).29; – **ज्जूपसम** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्योपशम], अज्ञान का उपशमन, अविद्या की समाप्ति **मा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदा अविज्जूपसमा, उपसन्तो चरिस्सतीति,* विभ॰ अट्ठ॰ 142; – **ज्जोघ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविद्यौघ], चार प्रकार के ओघों में से एक, बाढ़ के रूप में पुञ्जीभूत अविद्या, चित्त में अविद्या का समुच्चय – **घो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कामोघो, भवोघो दिट्ठोघो, अविज्जोघो – इमे खो, आवुसो, चत्तारो ओघा'ति,* स॰ नि॰ 2(2).251; *ओघमतरीति एत्थ चत्तारो ओघा, कामोघो भवोघो दिट्ठोघो अविज्जोघोति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.17.

अविञ्ञत्त त्रि॰, विञ्ञत्त का निषे॰ [अविज्ञप्त], कायविज्ञप्ति एवं वचीविज्ञप्ति द्वारा अप्रकाशित, अनुमोदन न किया हुआ – **त्तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविञ्ञत्तं निवारेमिचीवरं पच्चयञ्चहं,* अप॰ 1.296.

अविञ्ञत्ति स्त्री॰, विञ्ञत्ति का निषे॰ [अविज्ञप्ति], विज्ञप्ति (कायविज्ञप्ति या वचीविज्ञप्ति) का अभाव – *अविञ्ञत्ति दुस्सिल्यन्ति? अविञ्ञत्ति दुस्सिल्यन्ति, कथा,* कथा॰ 358–359; *इदानि अविञ्ञत्ति दुस्सील्यन्तिकथा नाम होति ...,* कथा॰ अट्ठ॰ 221; – **जनत्त** नपुं॰, भाव॰ [अविज्ञप्तिजन्यत्व], काय अथवा वाणी के द्वारों से प्रकाशित विज्ञप्ति द्वारा उत्पन्न नहीं होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविञ्ञत्तिजनत्ता हि, अविपाकसभावतो,* अभि॰ अव॰ 9; ... *ता जनेन्तीति विञ्ञत्तिजना, न विञ्ञत्तिजना अविञ्ञत्तिजना, तेसं भावो अविञ्ञत्तिजनत्तं, तस्मा अविञ्ञत्तिजनत्ता कायविञ्ञत्तिवचीविञ्ञत्तिसङ्खातानं कम्मद्वारानं अजनकत्ता* ..., अभि॰ अव॰ पु॰ टी॰ 10.

अविञ्ञाण त्रि॰, ब॰ स॰ [अविज्ञान], चेतनारहित, बिना विज्ञान वाला – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं सो अरूपी अवेदनो असञ्ञी असङ्खारो अविञ्ञाणो तथागतोति समनुपस्ससी'ति,* स॰ नि॰ 2(1).102; – **क** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविज्ञानक], निर्जीव, निष्प्राण, निश्चेतन – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्ताति वा सविञ्ञाणको खन्धसन्तानो, अविञ्ञाणको लोको,* उदा॰ अट्ठ॰ 281; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बं अत्तनो सन्तकं सविञ्ञाणकं अविञ्ञाणकं मज्झे भिन्दित्वा उपड्ढमेव अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.445; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अविज्ञानकत्व], निश्चेतनता, निर्जीवता – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथापि तानि अविञ्ञाणकत्ता तदत्थानं इत्थिदब्बेसु वत्ततीति वत्तुं न युज्जति,* सद्द॰ 1.212; – **कासुभ** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अविज्ञानकाशुभ], ध्यान का निर्जीव अशुभ आलम्बन – **भेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उद्धुमातकं विनीलकं विपुब्बकं ... अट्ठिकन्ति दससु अविञ्ञाणकासुभेसु भस्ता विय,* ..., विसुद्धि॰ 1.171; *अविञ्ञाणकासुभेसू'ति इदं उद्धुमातकादीनं सभावदस्सनवसेन वुत्तं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.189.

अविञ्ञात त्रि॰, वि + √ञा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविज्ञात], नहीं जाना हुआ, ठीक से नहीं समझा हुआ – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न तुय्हं अदिट्ठं असुतं अमुतं, अथो अविञ्ञातं किञ्चनमत्थि लोके,* सु॰ नि॰ 1128; *न तस्स अदिट्ठमिधत्थि किञ्चि, अथो अविञ्ञातमजानितब्बं,* महानि॰ 265; *अविञ्ञातन्ति अतीतकालिकं अविञ्ञातं नाम किञ्चि धम्मजातं नाहोसीति पाठसेसो,* महानि॰ अट्ठ॰ 314; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविञ्ञाते अविञ्ञातवादी होति,* अ॰ नि॰ 1(2).259.

अविञ्ञातु पु॰, वि + √ञा के क॰ ना॰ विञ्ञातु का निषे॰ [अविज्ञातृ], ठीक से नहीं जानने वाला, अज्ञानी – **तारेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *जनपदेसु पच्चाजातो होति मिलक्खेसु अविञ्ञातारेसु,* दी॰ नि॰ 3.210; *अथ खो एतेव सत्ता बहुतरा ये पच्चन्तिमेसु जनपदेसु पच्चाजायन्ति अविञ्ञातारेसु मिलक्खेसु,* अ॰ नि॰ 1(1).48.

अविञ्ञातवादी त्रि॰, [अविज्ञातवादिन्], नहीं जानने की बात बोलने वाला – **दी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविञ्ञाते अविञ्ञातवादी होति,* अ॰ नि॰ 1(2).259; **दिता** स्त्री॰,

भाव॰ [अविज्ञातवादिता], नहीं जानने की बात बोलना - *मुते अमुतवादिता, विञ्ञाते अविञ्ञातवादिता,* अ॰ नि॰ 3(1).131.

अविञ्ञापितत्थ त्रि॰, ब॰ स॰ [अविज्ञापितार्थ], वह, जिसे धर्म के तात्पर्य की शिक्षा नहीं दी गई है, धर्म के सही अर्थ की शिक्षा को प्राप्त न किया हुआ - **त्था** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अविञ्ञापितत्था चम्ह सद्धम्मे, न च नो केवलं परिपूरं ब्रह्मचरियं आविकतं होति,* दी॰ नि॰ 3.90; *अविञ्ञापितत्थाति अबोधितत्था,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.84.

अविञ्ञू त्रि॰, विञ्ञू का निषे॰ [अविज्ञ], बुद्धिहीन, परिपक्व बुद्धि से रहित - *अविद्दसूति अविञ्ञू,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.227; महानि॰ अट्ठ॰ 147; - **ञ्ञुता** स्त्री॰, भाव॰ [अविज्ञता], बुद्धिहीनता, अज्ञानता - **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *गामदारकानं वा अविञ्ञुतं पत्तानं सावेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.204 - **ञ्ञुस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अविञ्ञुस्स सावेति, अपच्चक्खाता होति सिक्खा,* पारा॰ 30; *अविञ्ञुस्स सावेतीति महल्लकस्स वा पोत्थकरूपसदिसस्स, गरुमेधस्स वा समये अकोविदस्स ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.204.

अवित त्रि॰, √अव का भू॰ क॰ कृ॰, रक्षित, रक्षा किया हुआ - *रक्खितं गोपितं गुत्तं तातं गोपायिताविता,* अभि॰ प॰ 754; तुल॰, *त्राणं त्रातं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च,* अमर॰ 3.1.105.

अवितक्क 1. पु॰, वितक्क का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अवितर्क], वितर्क का अभाव - **क्कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवितक्कं समापन्नो, सम्मासम्बुद्धसावको,* थेरगा॰ 650; *तत्थ अवितक्कं समापन्नोति, वितक्कविरहितं दुतियादिझानं समापन्नो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.204; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *निसिन्ना रुक्खमूलम्हि, अवितक्कस्स लाभिनी,* थेरीगा॰ 75; *अवितक्कस्स लाभिनीति सा अहं एवं पमादविहारिनी समाना अज्ज इदानि अय्यस्स, ... अग्गफलस्स अधिगमेन अवितक्कस्स लाभिनी अम्हीति योजना,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 87; **2.** त्रि॰, ब॰ स॰, वितर्क से रहित (चित्त या द्वितीय तथा अनेक आगे वाले ध्यानों की अवस्था) - **क्को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवितक्कोम्हि अविचारो, अज्झत्तं सतिमा सुखमस्मी'ति पजानाति,* स॰ नि॰ 3(1).233; *यदपि अवितक्क अविचारो समाधि तदपि समाधिसम्बोज्झङ्गो,* स॰ नि॰ 3(1).131; - **क्कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहासिं,* पारा॰ 4; *अवितक्कं अविचारन्ति भावनाय पहीनत्ता एतस्मिं एतस्स वा वितक्को नत्थीति अवितक्कं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.109; - **क्का** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *यं चे अवितक्कं अविचारं, ये अवितक्के अविचारे ते पणीततरे,* दी॰ नि॰ 2.205; - **सुत्त** नपुं॰, व्य॰ सं॰, स॰ नि॰ के खन्धवग्ग के सारिपुत्तसंयुत्त का दूसरा सुत्त, जिसमें वितर्क एवं विचार से रहित द्वितीय ध्यान का उल्लेख है, स॰ नि॰ 2(1).233; - **अविचार** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवितर्काविचार], वितर्क एवं विचार से रहित - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अवितक्कविचारमत्तो समाधि, अवितक्कअविचारो समाधि,* मि॰ प॰ 306; *रूपक्खन्धो अवितक्कअविचारो ... सिया अवितक्कअविचारा,* विभ॰ 510; - **झायी** त्रि॰, अवितक्क + √झा से व्यु॰, क्रि॰ वि॰ [अवितर्कध्यायिन्], वितर्क से रहित ध्यान की भावना करने वाला - *अज्झाय धम्मं अवितक्कझायी, न कुप्पति न सरति न थिनो,* स॰ नि॰ 1(1).149; *अवितक्कझायीति अवितक्केन चतुत्थज्झानेन झायन्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.165; - **विचारमत्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवितर्कविचारमात्र], पांच रूपध्यानों की पद्धति में दूसरा ध्यान, जिसमें वितर्क का अभाव रहता है तथा विचारमात्र रहता है - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तयो समाधी ... अवितक्कविचारमत्तो समाधि,* दी॰ नि॰ 3.175; *पञ्चकनयेन दुतियज्झानसमाधि अवितक्कविचारमत्तो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.168; - **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सो अवितक्कविचारमत्तं समाधिं पटिलभति,* विसुद्धि॰ 1.85; - **सहगत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अवितर्कसहगत], वितर्क से रहित, वितर्क के साथ न रहने वाला (द्वितीय ध्यान) - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अवितक्कसहगता सञ्ञामनसिकारा समुदाचरन्ति,* पटि॰ म॰ 31; विसुद्धि॰ 1.87; *अवितक्कसहगताति दुतियज्झानारम्मणा,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.119; - **क्काविचार** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवितर्काविचार], वितर्क एवं विचार से मुक्त (तृतीय ध्यान) - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किलेसवितक्कविचारेहि अवितक्काविचारो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.236.

अवितक्कित त्रि॰, वि + √तक्क के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अवितर्कित], **1. कर्म॰ वा॰ में,** अचिन्तित, वह, जिसके विषय में सोचा न गया हो - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेसं अवितक्कितो अचिन्तितोपि मरणफस्सो आगच्छतीति दस्सेति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.241; **2. कर्तृ॰ वा॰ में,** चिन्तन न करने वाला, सोच विचार न करने वाला - **क्किता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *बहू हि फस्सा अहिता हिता च, अवितक्किता मच्चुमुपब्बजन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.241; जा॰ अट्ठ॰ 6.50; *अवितक्कितातिअवितक्कितारो अचिन्तितारो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.51.

अवितथ त्रि., वितथ का निषे. [अवितथ], सही, सत्य, यथार्थ, पूर्ण, वह, जो झूठा न हो, सच्चा – **थं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सम्मा'व्ययं चा'वितथं सच्चं तच्छं यथातथं,* अभि. प. 127; *भूतं तथं अवितथं, तिपुक्खलं तं नयं आहु,* नेत्ति. 5; *सभावस्स अमोघताय अवितथं,* स. नि. अट्ठ. 3.328; **थानि** ब. व. – *तथानि अवितथानि अनञ्ञथानि, ... तथमेतं अवितथमेतं अनञ्ञथमेतं इमानि खो, भिक्खवे, चत्तारि तथानि अवितथानि अनञ्ञथानि,* स. नि. 3(2).493; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).54; **था** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *भगवता अभिसम्बुद्धोति एवम्पि अभिसम्बोधि तथा अवितथा अनञ्ञथा,* उदा. अट्ठ. 120; – **ग्गाहक** त्रि., [अवितथग्राहक], यथार्थ या सत्य का ग्रहण करने वाला, सच्चाई को पकड़ लेने वाला – **कस्स** नपुं., ष. वि., ए. व. – *अरियञाणस्साति अरियस्स अवितथगाहकस्स ञाणस्स तेन पटिवेधञाणं विय पच्चपेक्खणञाणम्पि गहितं होति,* विसुद्धि. महाटी. 2.181; – **ता** स्त्री., भाव. [अवितथता], यथार्थता, सच्चाई, झूठा या मिथ्या न रहना, अविसंवादिता - *या तत्र तथता अवितथता अनञ्ञथता इदप्पच्चयता,* स. नि. 1(2).24; *सामग्गिं उपगतेसु पच्चयेसु मुहुत्तम्पि ततो निब्बत्तानं धम्मानं असम्भवाभावतो अवितथाताति,* स. नि. अट्ठ. 2.37; विसुद्धि. 2.147; – **नाम** त्रि., ब. स. [अवितथनामन्], यथार्थ नाम वाला, गुणों या लक्षणों के अनुरूप नाम वाला – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सच्चनामोति तच्छनामो भूतनामो आगुं अकरणेनेव नागोति एवं अवितथनामो,* अ. नि. अट्ठ. 3.114; – **भाव** पु., [अवितथभाव], झूठे या दूसरे रूप का न होना, यथार्थता, सत्यता – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *अवितथभावेन सच्चानि चाति अरियसच्चानि,* इतिवु. अट्ठ. 75; – **वचन** त्रि., ब. स. [अवितथवचन], यथार्थ या सत्य वचन बोलने वाला, अपनी कही बात को न काटने वाला, सत्यवादी – **तो** प. वि., ए. व. – *अवितथवचनतो सच्चवादीति एवमत्थो दट्ठब्बो,* सु. नि. अट्ठ. 1.89; **वादी** त्रि., [अवितथवादिन्], सत्यवादी, सच बोलने वाला - *ननु भगवा सच्चवादी कालवादी भूतवादी तथवादी अवितथवादी अनञ्ञथवादीति?,* कथा. 64; ... *अवितथवादीति सङ्ख्यं गच्छेय्य,* पारा. अट्ठ. 1.97.

अवितिण्णकंख त्रि., ब. स. [अवितीर्णकांक्ष], सन्देह या शङ्का के ऊपर नहीं उठा हुआ, संशयालु, शङ्का भरी मनोवृत्ति वाला – **ङ्खो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इधेव धम्मं अविभावयित्वा, अवितिण्णकङ्खो मरणं उपेति,* सु. नि. 320; *सयं अजानं अवितिण्णकङ्खो, किं सो परे सक्खति निज्झपेतुं,* स. नि. 322; – **ङ्खं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *मन्ताहुती यञ्ञमुतूपसेवना, सोधेन्ति मच्चं अवितिण्णकङ्खं,* सु. नि. 252; *अवितिण्णकङ्खन्ति किलेससुद्धिया वा भवसुद्धिया वा अवितिण्णविचिकिच्छं ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.266.

अवित्थनता स्त्री., अवित्थन का भाव., कठोरता या भारीपन का अभाव, हलकापन, भारीपन का न होना – **ता** प्र. वि., ए. व. – *सङ्खारक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता,* ध. स. 42, 43; *अवित्थनताति मानादिकिलेसभारस्स अभावेन अथद्धता,* ध. स. अट्ठ. 194.

अवित्थायन्तु त्रि., वर्त. कृ. [अविस्त्यायत्], नहीं घबड़ा रहा, मोहग्रस्त या संशयग्रस्त नहीं हो रहा – **यन्तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *न हि सक्का अखीणासवेन असम्बद्धेन अवित्थायन्तेन पदीपसहस्सं जालेन्तेन विय,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).255; *तेसु कत्थचिपि असम्मुय्हन्तो अवित्थायन्तेन ...,* म. नि. टी. (म.प.) 2.258.

अवित्थार पु., वित्थार का निषे. [अविस्तार], विस्तार का अभाव, संक्षेप - **रेन** तृ. वि., ए. व. – *पुट्ठो खो पन पञ्हाभिनीतो हापेत्वा लम्बित्वा अपरिपूरं अवित्थारेन परस्स वण्णं भासिता होति,* अ. नि. 1(2).90.

अविदित त्रि., √विद के भू. क. कृ. का निषे. [अविदित], नहीं जाना हुआ, अज्ञात, अनुभव में न आया हुआ – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *नत्थि किञ्चि ब्रह्मुनो अविदितं, नत्थि किञ्चि ब्रह्मुनो असच्छिकत'न्ति,* दी. नि. 1.202; *अय्यो देवदत्तो महानुभावो, एतस्स अविदितं नाम नत्थी'ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.115; **तो** पु., प्र. वि., ए. व. *यमहं सत्थु अनारोचेत्वा सब्रह्मचारीहि च अविदितो इध यथानिसिन्नोव परिनिब्बायिस्सामि,* उदा. अट्ठ. 348; – **ता** ब. व. – *न आगता वा गता वा अस्सासपस्सासा अविदिता होन्ति,* पटि. म. 165; – **कम्मापदान** त्रि., ब. स. [अविदितकर्मापदान], वह, जिसके गुण या उत्कृष्ट कर्म विदित न हों, अप्रकट गुणों एवं कर्मों वाला – *तत्थ अञ्ञातोति अपाकटगुणो अविदितकम्मावदानो,* जा. अट्ठ. 7.186; – **तग्ग** त्रि., ब. स. [अविदिताग्र], अज्ञात आदि एवं अन्त वाला, वह, जिसके प्रारम्भ एवं अन्त का ज्ञान न हो - *अनमतग्गोयन्ति अयं संसारो अविदितग्गो,* चूळनि. अट्ठ. 31; *वस्ससतं वस्ससहस्सं ञाणेन अनुगन्त्वापि अनमतग्गो अविदितग्गो,* स. नि. अट्ठ. 2.139; – **त्त** नपुं., भाव. [अविदिताग्रत्व], आदि या प्रारम्भ का अज्ञात होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *ञाणेन अनुगन्त्वापि अमतग्गत्ता अविदितग्गत्ता इमिना दीघेन अद्धुना सत्तानं*

संसरतं, ..., थेरीगा॰ अट्ठ॰ 312; – **तादि** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविदितादि], अज्ञात प्रारम्भ वाला, वह, जिसके प्रारम्भ का ज्ञान नहीं है – **दि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोकादीहि अविज्जा, सिद्धा भवचक्कमविदितादिमिदं ... कथमिदं भवचक्कं अविदितादि, कथं कारकवेदकरहितं,* विसुद्धि॰ 2.209; *अविदितादि मिदन्ति म-कारो पदसन्धिकरो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.314.

अविदू त्रि॰, विदू का निषे॰ [अविद्वत्], अविद्वान्, अपण्डित, अज्ञानी, मूर्ख – *यं सो अविदू अन्धबालो लोभजञ्च दोसजञ्च मोहजञ्चाति कम्मं करोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.115; – **दुनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा तं अविद्दसुनोति यथा अविदुनो बालस्स अन्धपुथुज्जनस्स,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).269.

अविदूर त्रि॰, विदूर का निषे॰ [अविदूर], वह, जो बहुत दूर में स्थित नहीं है, समीपवर्ती, पास में मौजूद – *अविदूरं च सामन्तं सन्निकट्ठमुपन्तिकं,* अभि॰ प॰ 706; – **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिं कुलावकस्स अविदूरं अभिरुळ्हे सरे निमुज्जित्वा,* ..., जा॰ अट्ठ॰ 4.260; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्चुग्गता मं तिट्ठन्ति, अस्समस्साविदूरतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.331; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं, भन्ते, रम्मकस्स ब्राह्मणस्स अस्समो अविदूरे,* म॰ नि॰ 1.219; *कस्सपस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स अविदूरे आरामो,* म॰ नि॰ 2.249; – **रम्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इङ्घ आगच्छतोरेन, अविदूरम्हि गायतु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.426; – **गत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अविदूरगत], बहुत दूर नहीं पहुंचा हुआ, समीप में ही स्थित – **तं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दसालगुहा, पियङ्गुगुहा सेरीसकन्तिआदिका अविदूरगतं उपनिधाय ...,* पु॰ प॰ अट्ठ॰ 28; – **गतूपनिधा** स्त्री॰, समीप वाली वस्तु के आधार पर दिया गया नाम, आठ प्रकार की उपनिध ाप्रज्ञप्तियों में से एक – *अविदूरगतं उपनिधाय वुत्तताय अविदूरगतूपनिधा नाम,* पु॰ प॰ अट्ठ॰ 28; – **गमन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अविदूरगमन], बहुत दूर नहीं जाना, पास में ही जाना – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पिच्छा अप्पचिन्ताय, अदूरगमनेन च,* जा॰ अट्ठ॰ 3.275; *अदूरगमनेन चाति असुकस्मिं नाम ठाने मधुरं लभिस्सामी'ति चिन्तेत्वा अविदूरगमनेन च,* तदे॰; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अविदूरत्त्व], दूर में स्थित नहीं होना, समीपवर्ती रहना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तासं अविदूरत्ता 'उत्तरापो'तिपि वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.145; सद्द॰ 1.109; *तासं अविदूरत्ता सो जनपदो उत्तरापो ति वुत्तं,* सद्द॰ 1.107; – **मग्ग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अविदूरमार्ग], पास वाला रास्ता, निकट में स्थित मार्ग – **ग्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰ – *अविदूरे अतिक्कमन्तीति अविदूरमग्गेन नगरं पविसन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.131.

अविदूरेनिदान नपुं॰, जा॰ अट्ठ॰ का वह भाग, जिसमें तुसितभवन में बोधिसत्त्व के निवास से लेकर बोधिमण्डप में बोधिज्ञान की प्राप्ति का विवरण है, जा॰ अट्ठ॰ 1.58–85; *इति तुसितपुरतो पट्ठाय याव अयं बोधिमण्डे सब्बञ्ञुतप्पत्ति, एत्तकं ठानं अविदूरेनिदानं नामाति वेदितब्बं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.85; ... *ताव पवत्तो कथामग्गो अविदूरेनिदानं नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.3.

अविद्दसू त्रि॰, [अविद्वत्], अविद्वान, अज्ञानी, मूर्ख – **सु** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न मोनेन मुनी होति, मूळ्हरूपो अविद्दसु,* ध॰ प॰ 268; *अविद्दसूति अविञ्ञू,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.227; – **सुनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा पनावुसो, निद्दा विद्दसुनो उदाहु अविद्दसुनो'ति? ... सा निद्दा अविद्दसुनो'ति,* म॰ नि॰ 1.95; *तथापि एवं तिट्ठन्ति ञातयो अविद्दसुनोति अधिप्पायो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 16.

अविद्धकण्ण त्रि॰, ब॰ स॰ [अविद्धकर्ण], वह, जिसका कर्णवेध या कान छेदने का संस्कार नहीं किया गया है, नहीं छिदे हुए कानों वाला – **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविद्धकण्णो वा योनकजातिको पन परिसदूसको न होति,* महाव॰ अट्ठ॰ 294; *सचे अविद्धकण्णो, तम्पि अविद्धकण्णन्ति एवं सब्बाकारेहि तेन सदिसमेव होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 2.184.

अविदवन्तु त्रि॰, *केवल प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ में ही प्राप्त* [अविद्वत्], अविद्या या अज्ञान से ग्रस्त, अज्ञानी, मूर्ख – *तत्थ अविद्वाति अविद्दसु,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.250.

अविधेय्यता स्त्री॰, अविधेय्य का भाव॰ [अविधेयता], किसी भी विधान, आज्ञा या नियम का विषय न होना – **य** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवसताय, अविधेय्यताय च परतो,* विसुद्धि॰ 2.246; *अविधेय्यतायाति मा जीरथ, मा मीयथा'ति आदिना विधातुं असक्कुणेय्यतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 371.

अविनट्ठ त्रि॰, वि + √नस के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविनष्ट], वह, जो नष्ट या समाप्त नहीं हुआ है, विद्यमान, जीवित – **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चिरकालसगङ्गितो तया, अविनट्ठो पुनरन्तरं चिरं,* अप॰ 2.69; – **ट्ठम्हि / ट्ठे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विनये अविनट्ठम्हि, पुन तिट्ठति सासनं,* महाव॰ 125; *गतमग्गे पदवलञ्जे अविनट्ठेयेव मच्चुं नलाटेनादाय आगता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.294.

अविनय पु., [अविनय], दुराचार, विनय का अभाव, असंयत आचरण - **यो** प्र. वि., ए. व. - *पुरे अविनयो दिप्पति विनयो पटिबाहिय्यति*, चूळव. 453; पारा. अट्ठ. 1.6; **यं** द्वि. वि., ए. व. *ये ते, भिक्खवे, भिक्खू अविनयं विनयोति दीपेन्ति*, अ. नि. 1(1).25; *धम्मं धम्मोति वदामि, अविनयं अविनयतोति वदामि*, चूळव. 464; - **ये** सप्त. वि., ए. व. - *यो च अविनये विनयसञ्ञी, यो च विनये अविनयसञ्ञी*, अ. नि. 1(1).103; - **कम्म** नपुं., तत्पु. स. [अविनयकर्मन्], विनय-नियमों से विपरीत आचरण, विनय-विरुद्ध कार्य - **म्मं** प्र. वि., ए. व. - *अधम्मकम्मं तं, उपालि, अविनयकम्मन्ति*, महाव. 424; - **म्मानि** ब. व. - *अविनयकम्मानि पवत्तन्ति विनयकम्मानि नप्पवत्तन्ति, ... अविनयकम्मानि दिप्पन्ति*, अ. नि. 1(1).90; - **धारिता** स्त्री., भाव. [अविनयधारित्व], विनय-नियमों में अशिक्षित होना, विनय को धारण न करना - **य** तृ. वि., ए. व. - *अविनयधारिताय मञ्ञे त्वं अजानन्तो एवं वदेसी'ति*, ध. स. अट्ठ. 30; **वादी** त्रि., [अविनयवादिन्], विनय के विपरीत बातें बोलने वाला - *भिक्खू एवमाहंसु - अधम्मवादी देवदत्तो, अविनयवादी देवदत्तो*, पारा. 274; *अकालवादी अभूतवादी अनत्थवादी अधम्मवादी अविनयवादी*, म. नि. 1.360; - **दिनो** ब. व. - *पुरे अविनयवादिनो बलवन्तो होन्ति, विनयवादिनो दुब्बला होन्ती'ति*, चूळव. 453; **सञ्ञी** त्रि., [अविनयसंज्ञी], (किसी काम को) विनय के विपरीत समझने वाला - **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो च अविनये अविनयसञ्ञी, यो च विनये विनयसञ्ञी*, अ. नि. 1(1).103.

अविनास पु., विनास का निषे., तत्पु. स. [अविनाश], विनाश का अभाव, नित्यता - **क** त्रि., विनासक का निषे., ब. स. [अविनाशक], विनाश न करने वाला, धन का अपव्यय न करने वाला/वाली - **के** पु., द्वि. वि., ब. व. *अनक्खाकितवे तात, असोण्डे अविनासके*, जा. अट्ठ. 5.111; *अविनासकेति तव सन्तकानं धनधञ्ञादीनं अविनासके*, जा. अट्ठ. 5.113; - **सिका** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *तत्थ च होति अधुत्ती अथेनी असोण्डी अविनासिका*, अ. नि. 3(1).94; - **कायो** ब. व. - *तत्थ च भविस्साम अधुत्ती अथेनी असोण्डी अविनासिकायो'ति*, अ. नि. 2(1).33; - **धम्म** त्रि., विनासधम्म का निषे. [अविनाशधर्मन्], अविनाशी, कभी विनष्ट न होने वाला (निर्वाण), अविनश्वर स्वभाव वाला **म्मं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अच्चन्तसङ्खातं अविनासधम्मं निब्बानं निट्ठा अस्साति अच्चन्तनिट्ठो*, अ. नि. अट्ठ. 3.342; - **न** त्रि., ब. स., कभी विनष्ट न होने वाला, अविनाशी स्वभाव वाला - **नं** पु., द्वि. वि., ए. व. *पविभत्तं इमं थेरं सद्धम्मं अविनासनं*, दी. वं. 4.21.

अविनासितज्झान त्रि., ब. स. [अविनाशितध्यान], वह, जिसने ध्यान को भग्न या विनष्ट नहीं किया है, ध्यान को न त्यागने वाला - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *बहि अनीहटज्झानो, अविनासितज्झानो वा, नीहरणविनासत्थञ्हि इदं निराकरणं नाम*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).166; - **ना** ब. व. - *अनिराकतज्झानाति बहि अनीहतज्झाना अविनासितज्झाना वा*, इतिवु. अट्ठ. 147.

अविनिच्छयञ्ञु त्रि., विनिच्छयञ्ञू का निषे. [अविनिश्चयज्ञ], निश्चय करने में असमर्थ, निर्णय में अक्षम - *अविनिच्छयञ्ञु अत्थेसु, मन्दोव पटिभासि मं*, जा. अट्ठ. 5.361.

अविनिच्छित त्रि., वि + नि + √चि के भू. क. कृ. का निषे. [अविनिश्चित], निश्चय नहीं किया हुआ, अनिर्णीत, समाधान नहीं किया गया, उलझन भरा - *सकलजम्बुदीपे किर अविनिच्छितो पञ्हो मम सन्तिकं आगतो*, जा. अट्ठ. 5.59.

अविनिपातधम्म त्रि., विनिपातधम्म का निषे. [अविनिपातधर्मन्], नरक जैसी दुखदायक अधोगतियों में जन्म न लेने वाला - **म्मो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सो सोतापन्नो अविनिपातधम्मो नियतो सम्बोधिपरायणो'ति*, पारा. 10; *अविनिपातधम्मोति विनिपातेतीति विनिपातो, नास्स विनिपातो धम्मोति अविनिपातधम्मो*, पारा. अट्ठ. 1.149; - **म्मा** ब. व. - *अतिरच्छानगामिनोति देसनामत्तमेतं, अविनिपातधम्माति अत्थो*, स. नि. अट्ठ. 1.194.

अविनिपातसभाव त्रि., ब. स. [अविनिपातस्वभाव], नरक जैसी अपायभूमियों में न उत्पन्न होने वाले स्वभाव से युक्त - *चतूसु अपायेसु अविनिपातनसभावोति अत्थो*, स. नि. अट्ठ. 3.311.

अविनिब्भुजन्त त्रि., वि + नि + √भुज के वर्त. कृ. का निषे. [अविनिर्भुञ्जत्], अवगाहन या गहन अनुचिन्तन न करने वाला, स्पष्ट प्रभेद या विभाजन नहीं कर रहा, अलग अलग करके नहीं दिखा रहा - **ब्भुजं** पु., प्र. वि., ए. व. - *बहुस्सुतं अनागम्म, धम्मट्ठं अविनिब्भुजं*, जा. अट्ठ. 5.117; *अविनिब्भुजन्ति अत्थानत्थं कारणाकारणं अनोगाहन्तो अतीरेन्तो न कोचि पञ्ञं अधिगच्छति, ताताति*, जा. अट्ठ. 5.118.

अविनिब्भुत्त त्रि., वि + नि + √भुज के भू. क. कृ. का निषे. [अविनिर्भुक्त, बौ. सं. अविनिर्भूत], अन्य से पृथक् न किया हुआ, अन्य से अलग न करने योग्य, अवियुक्त, अविभाजित

– **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदा अविनिब्भुत्ता तेहि धम्मेहि अयं सञ्ञा, इदं विञ्ञाणं ...,* विसुद्धि॰ 2.64; *अविनिब्भुत्ताति अवियुत्ता,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.72; – **त्तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *लक्खणादीहि पन अत्तना अविनिभुत्तानं धम्मानं अनुपालनलक्खणं जीवितिन्द्रियं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 168.

अविनिब्भोग 1. पु॰, वि + नि + √भुज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [अविनिर्भोग], अपृथक्करण, एक से दूसरे को अलग नहीं करना, अविभाजन – **गो** प्र॰ वि॰ ए॰ व॰ – *विसुं अभावो अविनिब्भोगो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.238; *अविनिब्भोगवसेन रूपं एतेसं अत्थीति रूपिनो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 94; **2**. त्रि॰, विभाजन या बिलगाव से रहित, दूसरे से अलग न किया हुआ, अविभाजित – **गं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रूपवेदनादीसु कञ्चि एकधम्मम्पि अविनिब्भोगं कत्वा ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 487; – **गानि** ब॰ व॰ – *एक घटे अविनिब्भोगानि कत्वा निक्खिपति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.267–68; – **पच्चुपट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविनिर्भोगप्रत्युपस्थान], विभाजन के अभाव को प्रकट करने वाला, अविभाजन का प्रकाशक – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नमनलक्खणं नामं, सम्पयोगरसं, अविनिब्भोगपच्चुपट्ठानं विञ्ञाणपदट्ठानं,* विसुद्धि॰ 2.157; – **रूप** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अविनिर्भोगरूप], ऐसे रूपधर्म, जो एक दूसरे से अलग-अलग होकर क्रियाशील नहीं होते, समूह में रहकर क्रियाशील रूपधर्म – **पं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वण्णो गन्धो रसो ओजा भूतचतुक्कञ्चेति अट्ठविधम्पि अविनिब्भोगरूपं* अभि॰ ध॰ स॰ 44; *अविनिब्भोगरूपमेव जीवितेन सह जीवितनवकन्ति पवुच्चति,* अभि॰ ध॰ स॰ 46; *अविनिब्भोगरूपं कत्थचिपि अञ्ञमञ्ञं विनिभुञ्जनस्स विसुं विसुं पवत्तिया अभावतो,* अभि॰ ध॰ वि॰ 183; – **सद्द** पु॰, कर्म॰ स॰ [अविनिर्भोगशब्द], रहस्यमय शब्द या आवाज, सुस्पष्ट रूप से न पहचानने योग्य शब्द, ऊँचा शब्द – **द्दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *पत्थटत्ता महन्तं अविनिब्भोगसद्दं करोन्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.123; *अङ्कुरत्तसमये सुतं भिंसनकं अविनिब्भोगसद्दं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.379.

अविनीत त्रि॰, वि + √नी के भू॰ क॰ कृ॰ विनीत का निषे॰ [अविनीत], अनियन्त्रित, नियन्त्रण के बाहर, वश में न रहने वाला, दमन न किये जाने योग्य अप्रशिक्षित – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्वे हत्थिदम्मा वा अस्सदम्मा वा गोदम्मा वा अदन्ता अविनीता,* म॰ नि॰ 3.171; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यानं अदन्तं अकारितं अविनीतं उप्पथं गण्हाति,* महानि॰ 106; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तना अदन्तो अविनीतो अपरिनिब्बुतो परं दमेस्सति विनेस्सति परिनिब्बापेस्सती'ति,* म॰ नि॰ 1.56; *असिक्खितविनयताय अविनीतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).202.

अविन्दन्त त्रि॰, √विद के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अविन्दत्], प्राप्त न करता हुआ, नहीं पाता हुआ, अनुभव न करता हुआ – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिब्बिसं तं ञाणं अविन्दन्तो अलभन्तोयेव सन्धाविस्सं संसरिं* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.71; – **न्तियो** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ता तस्स सरीरसम्फस्सं अविन्दन्तियो हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.10.

अविन्दित्वा √विद के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, नहीं प्राप्त कर के – *अलद्धा अलभित्वा अनधिगन्त्वा अविन्दित्वा अप्पटिलभित्वाति, ...,* चूळनि॰ 235.

अविन्दिय त्रि॰, √विद के सं॰ कृ॰ का निषे॰, नहीं प्राप्त करने योग्य – **यं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं अविन्दियं विन्दतीति अविज्जा,* विसुद्धि॰ 2.155; *धम्मे धरमानकंयेव खीणासवं विञ्ञाणवसेन इन्दादीहि अविन्दियं वदामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).22.

अविन्देय्य त्रि॰, उपरिवत् – **य्यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अननुविज्जोति असंविज्जमानो वा अविन्देय्यो वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).22.

अविपक्क त्रि॰, वि + √पच के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविपक्व], नहीं पका हुआ – *अकुसलकम्मसमादानं उपचितं अविपक्कं विपाकाय पच्चुपट्ठितं,* नेत्ति॰ 81; *अविपक्कन्ति न विपक्कविपाकं,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 288; – **विपाक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविपक्वविपाक], परिपक्व होने की अवस्था को अप्राप्त, विपाक को अप्राप्त – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुब्बे पापकम्मं कतं अविपक्कविपाकं,* अ॰ नि॰ 1(2).226; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अतीता अविपक्कविपाका धम्मा एकच्चे अत्थि,* कथा॰ 131; *अविपक्कविपाकधम्मा एकच्चेति इदं यस्मा येसं सो अविपक्कविपाकानं अत्थितं इच्छति ... एकदेसं अविपक्कविपाकाति विप्पकतविपाका वुच्चन्ति ... ताव तं विप्पकतविपाकं नाम होति,* कथा॰ अट्ठ॰ 152–53.

अविपक्कन्त त्रि॰, वि + प + √कम के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविप्रक्रान्त], कहीं दूसरी ओर नहीं गया हुआ, अचल, स्थिर – **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सकेसु सकेसु आसनेसु ठिता अविपक्कन्ता,* दी॰ नि॰ 2.154; *अविपक्कन्ताति अगता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.208.

अविपच्चनीकसातता स्त्री., भाव., विपरीत या विरुद्ध धर्म के प्रति आस्वाद या रुचि का अभाव *सोवचस्सता अप्पटिकूलग्गाहिता अविपच्चनीकसातता सगारवता सादरियं सादरता सप्पस्सिवता,* ध. स. 1334; पु. प. 130.

अविपत्ति स्त्री., [अविपत्ति], विपत्ति या संकट का अभाव - **या** तृ. वि., ए. व. - *दुतिये अजरसाति अजीरणेन, अविपत्तियाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 1.83.

अविपरिणामधम्म त्रि., ब. स. [अविपरिणामधर्मन्], अपरिवर्तनीय, परिवर्तन न करने योग्य, संसारचक्र में संसरण से मुक्त, नित्य - **म्मो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सो निच्चो धुवो सस्सतो अविपरिणामधम्मो सस्सतिसमं तथेव ठस्सति,* दी. नि. 1.16; *जरावसेनापि विपरिणामस्स अभावतो अविपरिणामधम्मोति,* दी. नि. अट्ठ. 1.96; - **म्मं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अच्चुतन्ति निच्चं धुवं सस्सतं अविपरिणामधम्मन्ति निब्बानपदमच्चुतं,* चूळनि. 115; *निब्बानं निच्चं धुवं सस्सतं अविपरिणामधम्मन्ति असंहीरं असंकुप्पकं,* चूळनि. 207; *इदं निच्चं, इदं धुवं, इदं सस्सतं, इदं अविपरिणामधम्म'न्ति,* नेत्ति. अट्ठ. 363.

अविपरीत त्रि., विपरीत का निषे., तत्पु. स. [अविपरीत], यथार्थ, वास्तविक, पूर्ण, सत्य, अप्रतिकूल - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *इति सब्बलोकाभिभवने तथो अविपरीतो देसनाविलासमयो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).56; - **तं** द्वि. वि., ए. व. - *विचक्खणताय अनूनाधिकं अविरीतञ्च गहेत्वा वित्थारिकं करोति,* सु. नि. अट्ठ. 1.199; - **दस्सन** त्रि., ब. स. [अविपरीतदर्शन], विपरीत रूप में न देखने वाला, धर्मों के यथार्थ-स्वरूप को देखने वाला, सम्यक्-दृष्टि वाला - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सम्मादिट्ठिको खो पन होति अविपरीतदस्सनो,* म. नि. 1.362; - **मन** त्रि., [अविपरीतमनस्], अविपरीत या सत्य मानने वाला - **ना** पु., प्र. वि., ब. व. - *सच्चसञ्ञिनो भूतमना ... याथावसञ्ञिनो अविपरीतमना अविपरीतसञ्ञिनो वदन्ति,* महानि. 44; - **वचन** नपुं., कर्म. स. [अविपरीतवचन], सत्य कथन, यथार्थ वचन, अनुकूल वचन - **नं** प्र. वि., ए. व. - *तं सभाववचनं असेसवचनं ... याथावचनं, अविपरीतवचनं इसिवचनं ... सम्मासम्बुद्धवचनं,* मि. प. 203; - **सञ्ञा** स्त्री., तत्पु. स. [अविपरीतसंज्ञा], यथार्थता या वास्तविकता का ज्ञान, अनित्य, दुःख एवं अनात्म, इन तीन लक्षणों का ज्ञान - **ञ्ञा** प्र. वि., ब. व. - *तिस्सो अविपरीतसञ्ञा - अनिच्चसञ्ञा दुक्खसञ्ञा अनत्तञ्ञा,* नेत्ति. 104; - **सञ्ञी** त्रि., [अविपरीतसंज्ञिन्], धर्मों के यथार्थ-स्वरूप का ज्ञान रखने वाला, धर्मों के अनित्य, दुःख और अनात्मक लक्षणों का ज्ञान रखने वाला - **ञ्ञिनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *सच्चसञ्ञिनो ... याथावसञ्ञिनो अविपरीतमना अविपरीतसञ्ञिनो वदन्ति,* महानि. 44; - **सभाव** पु., [अविपरीतस्वभाव], धर्मों का वास्तविक स्वभाव - **वो** प्र. वि., ए. व. - *अभिमुखं ञाणेन सम्मा एतब्बो अभिसमेतब्बोति अभिसमयो, धम्मानं अविपरीतसभावो,* उदा. अट्ठ. 17; - **ताभिलाप** पु., तत्पु. स. [अविपरीताभिलाप], यथार्थ कथन, सत्य का कथन - **पो** प्र. वि., ए. व. - *धम्माभिलापोति अत्थब्यञ्जनको अविपरीताभिलापो,* सारत्थ. टी. 1.69; - **तावबोध** पु., कर्म. स. [अविपरीतावबोध], यथार्थ ज्ञान, सही समझ, सम्यक्-ज्ञान, भ्रम से मुक्त ज्ञान - **धं** द्वि. वि., ए. व. - *सच्चादिके च सुद्धिमग्गे अत्तनो अविपरीतावबोधं सब्बाकारतो विदित्वा ...,* उदा. अट्ठ. 61.

अविपल्लत्थ त्रि., विपल्लत्थ का निषे. [अविपर्यस्त], भीतर में उलट-पुलट से रहित, अपरिवर्तित, विपरीत अथवा अवास्तविक रूप में न समझा हुआ - **त्था** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *एवम्पिस्स एसा, आनन्द, यथाभुच्चा अविपल्लत्था परिसुद्धा सुञ्ञतावक्कन्ति भवति,* म. नि. 3.149, 152; **चित्त** ब. स. [अविपर्यस्तचित्त], विपरीत रूप में धर्मों का ग्रहण न करने वाले चित्त से युक्त, यथार्थग्राही चित्त वाला **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *कस्स हि नाम, भन्ते, अबालस्स अदुट्ठस्स अमूळहस्स अविपल्लत्थचित्तस्स आयस्मा सारिपुत्तो न रुच्चेय्या'ति,* स. नि. 1(1).78.

अविपल्लासवचनलेस पु., विपल्लास का निषे. [अविपर्यासवचनलेश], अविपर्यस्त वचन का छोटा सा खण्ड - **सेन** तृ. वि., ए. व. - *वत्तमानस्स पदावयवभूतस्स मज्झसद्दस्स अविपल्लासवचनलेसेन तुम्हं त्वममसद्देसु पि विभत्तिविपल्लासो,* सद्द. 1.294.

अविपस्सन्त त्रि., वि + √दिस के वर्त. कृ. का निषे. [अविपश्यत्], यथार्थ रूप में नहीं देख रहा, समभाव से भरे चित्त से सूक्ष्म रूप में न देखने वाला, धर्मों की विपश्यना में अक्षम **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *कुसले धम्मे अविपस्सन्तस्स, अनेसन्तस्स अगवेसन्तस्साति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 3.28.

अविपस्सक त्रि., [अविपश्यक], उपरिवत् - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *अविपस्सकस्स कुसलानं धम्मानं ... अननुयुत्तस्स विहरतो,* अ. नि. 2(1).65; *अविपस्सकस्स कुसलानं धम्मानन्ति*

कुसलधम्मे अविपस्सन्तस्स, अनेसन्तस्स अगवेसन्तस्साति अत्थो, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.28.

अविपस्सनापादकत्त नपुं॰, भाव॰ [अविपश्यनापादकत्व], विपश्यना-भावना का व्यावहारिक अभ्यास न करना – **त्ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न हि अधिमानिकस्स भिक्खुनो झानं सल्लेखो वा सल्लेखपटिपदा वा होति, कस्मा? अविपस्सनापादकत्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).194.

अविपाक 1. पु॰, विपाक का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अविपाक], विपाक का अभाव, नहीं पका हुआ होना, पकने की अवस्था का न होना, ठीक से हज़म न होना, अजीर्णता – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विसमकोट्ठस्स मन्ददुब्बलगहणिकस्स अविपाकेन जीवितं हरति,* मि॰ प॰ 247; 2. त्रि॰, ब॰ स॰ [अविपाक], विपाक को प्राप्त न होने वाला, फल या परिणाम नहीं देने वाला, अव्याकृत – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविपाकं अव्याकतं,* अभि॰ अव॰ 2; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ *अतीता अविपक्कविपाका धम्मा – ते अत्थिति,* कथा॰ 132; *अविपाकाति इदं अब्याकतानं वसेन चोदेतुं वुत्तं,* कथा॰ अट्ठ॰ 152; – **जिन** पु॰, विपाकजिन का निषे॰ [बौ॰ सं॰ अविपाकजित्], अज्ञानी-जन, पृथग्जन, कर्मों के विपाक को नहीं जीता हुआ, कामनाओं के साथ कर्म करने वाला – **नस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुथुज्जनस्स अनोधिजिनस्स अविपाकजिनस्स अनादीनवदस्साविनो अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स ...,* म॰ नि॰ 3.266; *अविपाकजिनस्साति एत्थपि आयतिं विपाकं जिनित्वा ठितत्ता खीणासवाव विपाकजिनो नाम तस्मा अखीणासवस्सेवाति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प.) 3.196; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अविपाकता], परिपक्व नहीं होना, विपाक से रहित अवस्था – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं पन न अत्तनो पतिमाननस्स अविपाकताय न अदक्खिणेय्यताय,* मि॰ प॰ 226; – **सभाव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविपाकस्वभाव], स्वभाव से ही विपाक नहीं देने वाला – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविञ्ञत्तिजनत्ता हि; अविपाकसभावतो,* अभि॰ अव॰ 9; ... *मनोद्वारसङ्खातस्स कम्मद्वारस्स वसेन च अप्पवत्तनतो अविपाकसभावतो च अकम्मभावतो,* अभि॰ अव॰ पु॰ टी॰ 10; **कारह** त्रि॰, विपाकारह का निषे॰ [अविपाकार्ह], किसी भी प्रकार का विपाक उत्पन्न करने में अक्षम – **हं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदुभयविपरीतलक्खणमब्याकतं अविपाकारहं वा,* अभि॰ अव॰ 3; *अविपाकारहं विपाकस्स अननुच्छविकं,* अभि॰ अव॰ पु॰ टी॰ 3.

अविप्पकत त्रि॰, वि + प + √कर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविप्रकृत], समाप्ति तक न पहुंचा हुआ, अपरिसमाप्त, अपरिनिष्ठित – **वच** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अप्रकृतवचस्], प्रकृत या वर्तमान समय से भिन्न काल का सूचक वचन – *अविप्पकतवचो च सियुं अत्थानुरूपतो,* सद्द॰ 1.183.

अविप्पकिण्ण त्रि॰, वि + प + √किर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविप्रकीर्ण], नहीं छितराया हुआ, नहीं बिखरा हुआ, स्थिर, एकाग्र – **ण्णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मा यस्स धम्मस्सानुभावेन एकारम्मणे चित्तचेतसिका समं सम्मा च अविक्खिपमाना अविप्पकिण्णा च हुत्वा तिट्ठन्ति ...,* विसुद्धि॰ 1.83; *अविप्पकण्णाति अविसटा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.101; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अविप्रकीर्णता], स्थिरता, बिखरा हुआ न होना – *समाधानं समाधि, कायकम्मादीनं सम्मा पयोगवसेन अविप्पकण्णता ति अत्थो,* सद्द॰ 2.479.

अविप्पटिसार पु॰, विप्पटिसार का निषे॰ [अविप्रतिसार], शोक या पश्चात्ताप का अभाव – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *लोकुत्तरो सीलवतो अविप्पटिसारो जायति,* नेत्ति॰ 56; *अधम्मचुदितस्स, आवुसो, भिक्खुनो पञ्चहाकारेहि अविप्पटिसारो उपदहातब्बो,* अ॰ नि॰ 2(1).182; *अविप्पटिसारो उपदहातब्बोति अमङ्कुभावो उपनेतब्बो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.61; – **राय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलं ते अविप्पटिसाराय,* अ॰ नि॰ 2(1).182; – **कर** त्रि॰, [अविप्रतिसारकर], शोक या दुःख को उत्पन्न न करने वाला, पश्चात्ताप के भाव को उत्पन्न न करने वाला – **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्छापि अविप्पटिसारकरं भविस्सतीति,* चूळव॰ 409; **त्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविप्रतिसारार्थ], पश्चात्ताप या मानसिक अनुताप के अभाव को लाने वाला, मानसिक-प्रमोद को प्रयोजन बनाने वाला **त्थानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविप्पटिसारत्थानि ... अविप्पटिसारानिसंसानी'ति,* अ॰ नि॰ 3(2).2; *अमङ्कुभावस्स अविप्पटिसारस्स अत्थाय संवत्तन्तीति, अविप्पटिसारत्थानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.285. – **विपन्न** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अविप्रतिसारविपन्न], मानसिक उल्लास को खो चुका, मानसिक-प्रमोद से वञ्चित, मानसिक शीतलता से रहित – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविप्पटिसारे असति अविप्पटिसारविपन्नस्स हतूपनिसं होति पामोज्जं,* अ॰ नि॰ 3(2).4; – **रानिसंस** त्रि॰, ब॰ स॰, मानसिक-प्रमोद के लाभ वाला **सानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अविप्पटिसारत्थानि ... अविप्पटिसारानिसंसानीति,* अ॰ नि॰ 3(2).2.

अविप्पटिसारी त्रि., विप्पटिसारी का निषे. [अविप्रतिसारिन्], मानसिक अनुताप न करने वाला, पश्चात्ताप के भाव से मुक्त - **रिस्स** पु., ष. वि., ए. व. - *धम्मता एसा, ..., यं अविप्पटिसारिस्स पामोज्जं जायति,* अ. नि. 3(2).3.

अविप्पमुत्त त्रि., वि + प + √मुच के भू. क. कृ. का निषे. [अविप्रमुक्त], पूरी तरह से मुक्त न होने वाला, वह, जो पूर्णरूप से मुक्त नहीं हो पाया है - **त्ता** पु., प. वि., ब. व. - *सब्बे ते अविप्पमुत्ता भवस्मा'ति वदामि,* उदा. 105-06; - **त्त** नपुं., भाव. [अविप्रमुक्तत्व], पूरी तरह से मुक्त न होना, छुटकारा न पाना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *निरयम्पि गच्छतीति आदि निरयादीहि अविप्पमुत्तत्ता अपरपरियायवसेन तत्थ गमनं सन्धाय वुत्तं,* अ. नि. अट्ठ. 2.225.

अविप्पयोग पु., विप्पयोग का निषे. [अविप्रयोग], वियोग या बिछोह का न होना, अपार्थक्य, संयोग - *मोदन्ति वत ... हितसुखाविप्पयोगकामता मुदिता,* सु. नि. अट्ठ. 1.102; - **ता** स्त्री., भाव. [अविप्रयोगता], बिछोह या बिलगाव का न होना, अपार्थक्य - ... *पियेहि मनापेहि सद्धिं अविप्पयोगता दीघायुकताति एवमादीनि फलानि, ...,* खु. पा. अट्ठ. 23.

अविप्पवसन्त त्रि., वि + प + √वस के वर्त. कृ., विप्पवसन्त का निषे. [अविप्रवसत्], घर से दूर या बाहर निवास नहीं कर रहा, परदेश में नहीं रह रहा - **तो / न्तस्स** पु., ष. वि., ए. व. - *तस्सेव सतो अविप्पवसतो, अञ्ञस्सेव सरामि अत्तान'न्ति,* थेरगा. 118; *अविप्पवसतोति न विप्पवसन्तस्स, चिरविप्पवासेन ... अधिप्पायो,* थेरगा. अट्ठ. 1.256.

अविप्पवास पु., विप्पवास (विप्रवास) का निषे. [अविप्रवास], **शा. अ.** दूर या अन्यत्र निवास का न होना, पास में या साथ में विद्यमान होना, **ला. अ.** बिलगाव का न होना, संयोग, अपार्थक्य, सहभाव - **सो** प्र. वि., ए. व. - *सो पनेस अत्थतो सतिया अविप्पवासो नाम,* ध. प. अट्ठ. 1.130; **सेन** तृ. वि., ए. व. - *तेसं सतिया अविप्पवासेन सतानं ...,* ध. प. अट्ठ. 2.258; *अविप्पवासेन अनापत्ति,* परि. 398; *अविप्पवासेन अनापत्तीति सहगारसेय्याय अनापत्ति,* परि. अट्ठ. 240; - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *नमस्समानो विवसेमि रत्तिं, तेनेव मञ्ञामि अविप्पवासं,* सु. नि. 1148; *या सा, भिक्खवे, सङ्घेन सीमा सम्मता समानसंवासा एकूपोसथा, सङ्घो तं सीमं तिचीवरेन अविप्पवासं सम्मन्नतु,* महाव. 137; - **सा** प. वि., ए. व. - *सम्मता ... तिचीवरेन अविप्पवासा ठपेत्वा गामञ्च गामूपचारञ्चाति इमिस्सा कम्मवाचाय उप्पन्नकालतो पट्ठाय भिक्खूनं पुरिमकम्मवाचा न वट्टति,* महाव. अट्ठ. 313; - **सीमा** स्त्री., तत्पु. स. [अविप्रवाससीमा], भिक्षुओं के लिए सङ्घ द्वारा अनुमोदित आवासों की वह सीमा, जिसके भीतर पड़ने वाले विहारों में भिक्षु तीन चीवरों में से किसी एक को छोड़ने हेतु सङ्घ द्वारा अनुमोदित थे, इसी का दूसरा नाम समानसंवाससीमा भी है, पन्द्रह प्रकार की सीमाओं में से एक - *यावतिका भिक्खू अन्तोसीमगता तेहि भाजेतब्बन्ति आदिम्हि पन मातिकानिद्देसे सीमाय देतीति ... खण्डसीमा, ..., अविप्पवाससीमा, ... चक्कवाळसीमाति पन्नरस सीमा वेदितब्बा,* महाव. अट्ठ. 392; *अविप्पवाससीमा पन यत्थ समानसंवासकसीमा, तत्थेव गच्छति,* महाव. अट्ठ. 314; **मं** द्वि. वि., ए. व. - *तत्थ सचे खण्डसीमञ्च अविप्पवाससीमञ्च जानन्ति,* तदे..

अविप्पवुट्ठ त्रि., वि + प + √वस के भू. क. कृ. का निषे. [अविप्रोषित], परदेश में नहीं बसा हुआ, दूर न गया हुआ, समीप में ही विद्यमान, जुड़ा हुआ - **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तेनेव मञ्ञामि अविप्पवासन्ति ... अविप्पवासोति तं मञ्ञामि, अविप्पवुट्ठोति तं मञ्ञामि जानामि,* चूळनि. 199; - **सति** त्रि., ब. स. [अविप्रोषितस्मृति], जागरुक स्मृति वाला, अविनष्ट स्मृति वाला, अप्रमादी - **नो** पु., ष. वि., ए. व. - *अप्पमत्तस्साति अविप्पवुत्थसतिनो,* ध. प. अट्ठ. 1.136.

अविप्पसन्न त्रि., विप्पसन्न का निषे. [अविप्रसन्न], मलिन, अशुद्ध, अस्वच्छ - **न्ने** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *अप्पसन्नेति तायेव आविलताय अविप्पसन्ने,* जा. अट्ठ. 2.83; **चित्त** त्रि., ब. स. [अविप्रसन्नचित्त], मलिन या दूषित चित्त वाला - **त्तानं** पु., ष. वि., ब. व. - *अविप्पसन्नचित्तानञ्हि इन्द्रियप्पसादो नाम नत्थि,* अ. नि. अट्ठ. 2.166.

अविप्फारिकता स्त्री., अविप्फारिक का भाव. [अविस्फारितता], विस्तृत किया हुआ न होना, फैलाया हुआ न रहना, सङ्कुचित अथवा मन्द रहना, शिथिलता - **य** तृ. वि., ए. व. - *लीनन्ति अविप्फारिकताय पटिकुटितं,* ध. स. अट्ठ. 402; *तत्थ पीळनं दुक्खसच्चस्स तंसमङ्गिनो हिंसनं अविप्फारिकताकरणं,* उदा. अट्ठ. 17; - **कभाव** पु., उपरिवत् - **वो** प्र. वि., ए. व. - *अनसनन्ति न असनं अविप्फारिकभावो कायालसियं,* दी. नि. अट्ठ. 3.35.

अविब्भन्त त्रि., वि + √भम के वर्त. कृ. का निषे. [अविभ्रान्त], विभ्रम या भौचक्केपन से रहित, घबराहट से रहित, असंयम से रहित - **न्तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अथरस ... निच्चलं अविब्भन्तं ... दिस्वा एतं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.216;

अविब्भन्तन्ति विब्भमरहितं निल्लोलुप्पं, म॰ नि॰ टी॰ (उप.प॰) 3.178.

अविब्भज्जसेवी त्रि॰, [अविभज्यसेविन्], बिना किसी भेदभाव के ही सेवा करने वाला/वाली, विवेक रहित होकर किसी के सङ्ग रहने वाला/वाली - **विनिं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं तं असच्चं अविभज्जसेविनिं, जानामि, मूळ्हं विदुरानुपातिनिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.395; *अविभज्जसेविनिन्ति अविभजित्वा युत्तायुत्तं अजानित्वा सिप्पादिसम्पन्नेपि इतरेपि सेवमानं,* तदे॰.

अविभत्त त्रि॰, वि + √भज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविभक्त], विभाजित नहीं किया हुआ, सूक्ष्म रूप से अपरीक्षित - **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अविभत्तो लोकक्खायिकेहि महासमुद्दो,* मि॰ प॰ 289; - **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं पनेत्थ अत्थतो अविभत्तं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 66; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वित्थारेन अत्थं अविभत्तस्स,* म॰ नि॰ 3.94; **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ये च मे ... पुग्गला संखित्तेन वुत्ता वित्थारेन अविभत्ता,* म॰ नि॰ 2.375; - **लोमभमुक** त्रि॰, ब॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अविभक्तरोमाभ्रमुख], ललाट के रोमों से सटी हुई अथवा जुड़ी हुई भौंहों वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मक्कटभमुकोति नळाटलोमेहि अविभत्तलोमभमुको,* वि॰ वि॰ टी॰ 2.121.

अविभत्तिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अविभक्तिक], विभक्ति-चिह्नों से रहित, विभक्ति के अर्थविशेष के साथ नहीं जुड़ा हुआ - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अविभत्तिको निद्देसो कात्तब्बो,* सद्द॰ 1.300; *पुप्फरुक्खा'ति अविभत्तिकनिद्देसो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 135; - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस इति अविभत्तिकं नामिकपदं, एत्थ च अस समी ति होति ति पाळी निदस्सनं,* सद्द॰ 2.450.

अविभत्तियुत्त त्रि॰, विभत्तियुत्त का निषे॰ [अविभक्तियुक्त], विभक्ति-विधान के साथ नहीं जुड़ा हुआ, विभक्ति-विधान के अननुरूप - **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - ..., *एकच्च अविभत्तियुत्ता, तत्थ, ये यदग्गेन विभत्तियुत्ता,* सद्द॰ 1.299.

अविभाग पु॰, विभाग का निषे॰ [अविभाग], अविभाजन, अपार्थक्य - **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एकपदत्थगहणं अविभागो ति अधिप्पेतो,* सद्द॰ 1.38.

अविभाजित त्रि॰, विभाजित का निषे॰ [अविभाजित], खण्डों में विभाजित नहीं किया हुआ - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विस्सज्जितमविस्सट्ठं, विभत्तमविभाजितं,* विन॰ वि॰ 2856.

अविभाजिय त्रि॰, विभाजिय का निषे॰ [अविभाज्य], विभाजित नहीं करने योग्य - **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *पञ्चेते अविभाजिया,* खु॰ सि॰ 324; *अविभाजियाति भाजेत्वा न गहेतब्बा* .... खु॰ सि॰ टी॰ 164.

अविभावयित्वा वि + √भू के प्रेर॰ के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अविभाव्य], स्पष्ट रूप से नहीं समझ कर, साफ तौर पर नहीं जानकर - *इधेव धम्मं अविभावयित्वा, अवितिण्णकङ्खो मरणं उपेति,* सु॰ नि॰ 320; 322.

अविभावित त्रि॰, वि + √भू के प्रेर॰ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰, [अविभावित], पूर्ण रूप से नहीं जाना हुआ, स्पष्ट रूप से नहीं ज्ञात - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ ... *लक्खणं अञ्ञातं ... अविभूतं अविभावितं,* महानि॰ 250; - **तत्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविभावितार्थक], अस्पष्ट अर्थ वाला - **त्थेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अप्पनिग्घोसानीति अविभावितत्थेन निग्घोसेन रहितानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.250; - **तत्थसद्द** पु॰, कर्म॰ स॰ [अविभावितार्थशब्द], अस्पष्ट अर्थ वाला शब्द, निरर्थक शब्द - **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अब्यत्तसद्दो अविभावितत्थसद्दो निरत्थकसद्दो च,* सद्द॰ 2.326.

अविभावी त्रि॰, विभावी का निषे॰ [अविभाविन्], स्पष्ट रूप से नहीं जानने वाला, अज्ञानी, साफ तौर पर नहीं समझा हुआ - **वी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अविद्वाति अविज्जागतो अञ्ञाणी अविभावी दुप्पञ्ञो,* चूळनि॰ 63; *मोमुहोति मोहमुहो अविज्जागतो अञ्ञाणी अविभावी दुप्पञ्ञो,* चूळनि॰ 172.

अविभूत त्रि॰, विभूत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अविभूत], अस्पष्ट, अविकसित, पूर्ण रूप से अप्रकाशित, धुंधला, कमजोर - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अतिवाते सद्दो अविभूतो होति,* मि॰ प॰ 102; ... *अयं कालो मय्हं पटिच्छन्नो अविभूतो न पञ्ञायति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.38; **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इमे सङ्खारा अञ्ञमञ्ञमिस्सा आलुळिता अविभूता दुद्दीपना,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).259 - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *लक्खणं अञ्ञातं ... अतीरितं अविभूतं अविभावितं,* महानि॰ 250; *अविभूतन्ति न पाकटं,* महानि॰ अट्ठ॰ 301.

अविभूसना स्त्री॰, साज-सजावट या समलङ्करण का अभाव, अनलङ्कृति - **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमण्डना अविभूसना वण्णस्स परिपन्थो,* अ॰ नि॰ 3(2).112.

अविभेदिय त्रि॰, वि + √भिद के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अविभेद्य], विभेद न करने योग्य, टुकड़े-टुकड़े न करने योग्य, फूट न डालने योग्य, नहीं भेद डालने योग्य - **दिया** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अविभेदियास्स परिसा भवति,* दी॰ नि॰ 3.130.

अविमन त्रि., ब. स. [अविमनस्], अव्यग्र या शान्त मन वाला, मन की बेचैनी से मुक्त - **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *त्वं ... इमस्मिं गेहे अविमना अभिरमस्सू'ति,* पे. व. अट्ठ. 239.

अविमुख त्रि., विमुख का निषे., तत्पु. स. [अविमुख], अप्रतिकूल, अनुकूल, अविपरीत, काम से मुंह न मोड़ने वाला - **खा** पु., प्र. वि., ब. व. - *दासकम्मकरपोरिसा अविमुखा कम्मं करोन्ति,* अ. नि. 2(1).240.

अविमुत्त त्रि., विमुत्त का निषे. [अविमुक्त], विमुक्ति नहीं पाया हुआ, छुटकारा नहीं पाया हुआ - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *उपयो, भिक्खवे, अविमुत्तो, अनुपयो, विमुत्तो,* स. नि. 2(1).49; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *पुब्बे अविमुत्तस्स विमुत्तासा सा पटिप्पस्सद्धा,* अ. नि. 1(1).132; - **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - ... *अविमुत्तञ्चेव चित्तं विमुच्चति,* म. नि. 2.12.

अविम्हापक त्रि., विम्हापक का निषे. [अविस्मापक], विस्मय में न डाल देने वाला, भौचक्का न कर देने वाला, धोखा-धड़ी न करने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अकुहकोति अविम्हापको तीहि कुहनवत्थूहि,* सु. नि. अट्ठ. 2.241.

अवियग्गता स्त्री., वियग्ग के भाव. का निषे. [अव्यग्रता], समरसता, समरूप में क्रियाशीलता, सन्तुलन, सङ्गति - *कच्चि यापनियं, भन्ते, वातानमवियग्गता,* जा. अट्ठ. 7.106; *वातानमवियग्गताति कच्चि ते सरीरे धातुयो समप्पवत्ता, वातानं ब्यग्गता नत्थि, तत्थ तत्थ ... अत्थो,* जा. अट्ठ. 7.107.

अवियत्त त्रि., वियत्त का निषे. [अव्यक्त], अस्पष्ट, स्पष्ट रूप से प्रकाशित न किया गया/की गई - **त्तायं** स्त्री., सप्त. वि., ए. व. - *मिलेछ अवियत्तायं वाचायं,* सद्द. 2.342.

अवियोग पु., [अवियोग], संयोग, पार्थक्य का अभाव, किसी के साथ जुड़ा रहना या किसी के साथ विद्यमान रहना - **गे** सप्त. वि., ए. व. - *सन्तेपि च नेसं कत्थचि अवियोगे ओळारिकट्ठेन पुब्बङ्गमट्ठेन च ... चेतसो ... वितक्को,* ध. स. अट्ठ. 160.

अवियोजित त्रि., वि + √युज के प्रेर. के भू. क. कृ. का निषे. [अवियोजित], (किसी से) अलग न किया हुआ, (किसी के साथ) जुड़ा या उसमें मौजूद - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *रुक्खतो पन अवियोजितं असुक्खं भूतगामो'ति वुच्चति,* दी. नि. अट्ठ. 1.75.

अविरज्झनवेधिता स्त्री., भाव. [अविराध्यनवेधित्व], बिना किसी चूक के लक्ष्य को बेध देना, अचूक निशानेबाजी - **ताय** तृ. वि., ए. व. - *कतहत्थेति अविरज्झनवेधिताय सम्पन्नहत्थे,* जा. अट्ठ. 6.277.

अविरज्झित्वा वि + √राध के पू. का. कृ. का निषे. [अविराध्य], कोई चूक किए बिना, बिना त्रुटि के - *यथा हि मग्गानन्तरं अविरज्झित्वाव फलं निब्बत्तति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).345.

अविरत त्रि., वि + √रम के भू. क. कृ. विरत का निषे. [अविरत], (से) बिलग न होने वाला, नहीं त्यागने वाला, निरन्तर जारी रखने वाला - **तं** अ., क्रि. वि., निरन्तर रूप में, लगातार - *सततं निच्चमविरतानारतसन्ततमनवरतं च धुवं,* अभि. प. 41; *कायो रतो अविरतं ब्यसनं परेति,* तेल. 53; - **त्त** नपुं., भाव. [अविरतत्व], लगातारपन, किसी से बिलग न होना या उसे छोड़ न देना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *हत्थगते दण्डे ... पहारदानतो अविरतत्ता अत्तदण्डेसु जनेसु निब्बुतं निक्खित्तदण्डं,* सु. नि. अट्ठ. 2.171.

अविरति स्त्री., विरति का निषे. [अविरति], बिलगाव का अभाव, लगाव - *विरतिअविरतिवसेन,* विसुद्धि. 1.11; *विरमणं वा विरति, न विरतीति अविरति,* विसुद्धि. टी. 1.30.

अविरद्ध त्रि., वि + √राध के भू. क. कृ. का निषे. [अविराद्ध], नहीं चूक रहा, नहीं छोड़ रहा, नहीं त्यागा हुआ - **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *मं विरज्झन्तोपि ... सोळस च उस्सदनिरये अविरद्धोयेवा'ति वत्वा पक्कामि,* जा. अट्ठ. 1.468; - **द्धं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तत्थ अपण्णकन्ति एकंसिकं अविरद्धं निय्यानिकं,* जा. अट्ठ. 1.111; - **कारण** नपुं., कर्म. स. [अविराद्धकारण], सही कारण, दोषरहित तर्क - **णं** प्र. वि., ए. व. - ... *पण्डितेहि पटिपन्नं एकंसिककारणं अविरद्धकारणं निय्यानिककारणं,* जा. अट्ठ. 1.111; - **गाह** पु., कर्म. स. [अविराद्धग्राह], अनुकूल रूप में ग्रहण, पूर्ण रूप में ग्रहण - **हं** द्वि. वि., ए. व. - *अपण्णकग्गाहं पन एकंसिकग्गाहं अविरद्धग्गाहं गहितमनुस्सा ...,* जा. अट्ठ. 1.107; - **वेधी** त्रि., [अविराद्धवेधिन्], बिना चूके लक्ष्य का वेध करने वाला, अचूक निशानेबाज - **नो** पु., प्र. वि., ब. व. - *अक्खणवेधिनोति अविरद्धवेधिनो,* जा. अट्ठ. 4.450.

अविरलित त्रि., अविरल से व्यु. [अविरल], एक दूसरे से सटा हुआ, व्यवधान-रहित, सघन - **तं** नपुं., क्रि. वि., द्वि. वि., ए. व. - *अविरलितं उदेनतं धातुया ताय दिस्वा,* दा. वं. 4.24.

अविरागी त्रि., विरागी का निषे. [अविरागिन्], **शा. अ.** रंगों से नहीं रंगा हुआ, रंग न बदलने वाला, **ला. अ.** राग या

लगाव से मुक्त, स्थिर, दृढ़ - **गिनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यस्स चित्तं अहालिद्दं, सद्धा च अविरागिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 3.76; *सद्धा च अविरागिनीति कम्मं वा विपाकं वा ओकप्पनीयस्स वा पुग्गलस्स वचनं ... भिज्जति,* तदे॰.

अविराजयन्त त्रि॰, वि + √रज के प्रेर॰, वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, आसक्ति या लगाव से स्वयं को मुक्त न करने वाला, विराग से रहित - **यं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनभिजानं ... अविराजयं अप्पजहं अभब्बो दुक्खक्खयाय,* स॰ नि॰ 2(2).16; *चतुत्थे ... अविराजयं अप्पजहन्ति अनभिजानन्तो ... अप्पजहन्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.6.

अविराधित त्रि॰, वि + √राध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविराद्ध], **शा॰ अ॰** वह, जो कभी असफल नहीं रहा है, कभी भी नहीं चूकने वाला, अचूक, पूर्णतः सफल - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पोङ्खानुपोङ्खं अविराधितं,* स॰ नि॰ 3(2).513; **ला॰ अ॰** सन्देहरहित, सुस्पष्ट - *अपण्णकन्ति अविराधितं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.147; - **वेधी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अचूक निशानेबाज, बिना चूक के लक्ष्य का वेध करने वाला - *अक्खणवेधीति अविराधितवेधी,* जा॰ अट्ठ॰ 2.75; - **हत्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविराद्धवेधीहस्त], बिना चूक के लक्ष्य-वेध करने वाले हाथ से युक्त, कुशल धनुर्धर - **त्थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *परिचिताति सातच्चकिरियाय सुपरिचिता कता इस्सासस्स अविराधितवेधिहत्थो विय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.160.

अविराधेत्वा वि + √राध के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अविराध्य], असफल न होकर, लक्ष्य के बेधने में चूक न करके - *तेन आचरियसन्तिके उग्गहितकम्मट्ठानविधानं अविराधेत्वा ... कसिणं कातब्बं,* विसुद्धि॰ 1.120; *अविराधेत्वाति अविरज्झित्वा ...,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.134.

अविरिय / अवीरिय त्रि॰, ब॰ स॰ [अवीर्य], वीर्य या पराक्रम से रहित, शक्तिरहित, बलहीन - **रिया** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सब्बे सत्ता ... अवसा अबला अवीरिया नियतिसङ्गतिभावपरिणता ... पटिसंवेदेन्ति,* दी॰ नि॰ 1.47.

अविरिळा स्त्री॰, विरीळा का निषे॰ [अव्रीडा], अलज्जा, बेशर्मी, लज्जा का अभाव - **ळा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अलज्जा अविरिळा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.139.

अविरुज्झमान 1. त्रि॰, वि + √रुध के कर्म॰ वा॰, वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अविरुध्यमान], अबाधित, अपीड़ित, अप्रतिहत, बाधा या रुकावट से मुक्त - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सब्बेन लोकेन अविरुज्झमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो,* सु॰ नि॰ 73; ... *अविरुज्झमानोति दससु दिसासु सब्बेन सत्तलोकेन अविरुज्झमानो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.102; **2**. क॰ वा॰, आत्मने॰, वर्त॰ कृ॰, विरोध नहीं कर रहा, प्रतिकूल नहीं हो रहा - **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *विसेनिकत्वा पन ये चरन्ति, दिट्ठीहि दिट्ठिं अविरुज्झमाना,* सु॰ नि॰ 839.

अविरुद्ध त्रि॰, विरुद्ध का निषे॰ [अविरुद्ध], **1**. विरोध में नहीं जा रहा, प्रतिकूल नहीं रहने वाला, सच्चरित्र अहानिकर, मुक्तिदायक - **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वचसा मनसा च कम्मुना च, अविरुद्धो सम्मा विदित्वा धम्मं,* सु॰ नि॰ 367; 709; ... *अविरुद्धोति एतेसं तिण्णं दुच्चरितानं पहीनत्ता सुचरितेहि सद्धिं अविरुद्धो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.87; *अनानुरुद्धो अविरुद्ध केनचि,* स॰ नि॰ 2(2).77; *अनानुरुद्धो अविरुद्धो केनचीति केनचि सद्धिं नेव अनुरुद्धो न विरुद्धो भवेय्य,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.27; - **द्धं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अविरुद्धं विरुद्धेसु, अत्तदण्डेसु निब्बुतं,* सु॰ नि॰ 635; *अविरुद्धन्ति आघातवसेन विरुद्धेसुपि लोकियमहाजनेसु आघाताभावेन अविरुद्धं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.171; **2**. तार्किक एवं व्याकरण के विधानों के अनुरूप रहने वाला - **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अविरुद्धो अपण्णको,* अभि॰ प॰ 698; - **पटिपदा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अविरुद्धप्रतिपत्], अनुकूल मार्ग, सही रास्ता - **दाय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनुलोमपटिपदायाति अविरुद्धपटिपदाय, ...,* महानि॰ अट्ठ॰ 50.

अविरुळ्ह त्रि॰, वि + √रुह के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविरुढ़], वृद्धि को अप्राप्त, अविकसित - **हे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तदप्पतिट्ठिते विञ्ञाणे अविरुळ्हे आयतिं पुनब्भवाभिनिब्बत्ति न होति,* स॰ नि॰ 1(2).58; *अविरुळ्हेति कम्मं जवापेत्वा पटिसन्धिआकड्ढनसमत्थताय अनिब्बत्तमूले,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.63; - **पक्ख** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविरूढपक्ष], पूर्ण रूप से विकास को अप्राप्त पंखों वाला - **क्खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कोकिलपोतको काकिया पुट्ठो अविरुळ्हपक्खो अकालेयेव कोकिलरवं रवि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.88.

अविरुळ्हि स्त्री॰, विरुळ्हि का निषे॰, [अविरूढि], विकास या वृद्धि का अभाव - **छन्द** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविरूढिछन्दस्], विकास या वृद्धि की इच्छा न रखने वाला - **न्दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ते खीणबीजा अविरुळ्हिछन्दा, निब्बन्ति धीरा यथायं पदीपो,* सु॰ नि॰ 238; *अविरुळ्हिछन्दाति विरुळ्हिछन्दविरहिता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.253; - **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविरूढिधर्मन्], असुदृढ़ धर्म वाला - **म्मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चूळपन्थको नाम भिक्खु दन्धो अविरुळ्हिधम्मो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.123; - **म्मा** ब॰ व॰ - *तुम्हे खोत्थ नागा*

अविरुळ्हिधम्मा इमस्मिं धम्मविनये, महाव॰ 110; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अविरूढ़धर्मत्व], धर्म का सुदृढ़ न रहना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविरुळ्हिधम्मत्ता वा मत्थकच्छिन्नतालो विय कताति तालावत्थुकता,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.97; – **भाव** पु॰, उपरिवत् – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स... पण्डुपलासस्स विय अविरुळ्हिभावं दस्सेन्तो ... आरभि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).10.

अविरुहन त्रि॰, ब॰ स॰ [अविरोह, पु॰], किसी प्रकार के अंकुरण अथवा उदय की प्रक्रिया से रहित, ऐसा स्थान, जहां कुछ भी न उग सके या न बढ़ सके – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निब्बानं सब्बकिलेसानं अविरुहनं,* मि॰ प॰ 294.

अविरोध पु॰, विरोध का निषे॰ [अविरोध], **शा॰ अ॰** विरोध या प्रतिकूलता का अभाव, अनुकूलता, सुसङ्गति, **ला॰ अ॰** मैत्री भावना, अद्वेष – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अविरोधो वुच्चति मेत्ता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.243; – **कर** त्रि॰, विरोध न करने वाला – **रेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अविरोधकरेसु पाणिसु, पुथुसत्तेसु पदुट्ठमानसो,* पे॰ व॰ 480; *अविरोधकरेसूति केनचि विरोधं अकरोन्तेसु मिगसकुणादीसु,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 179; – **प्पसंसी** त्रि॰, [अविरोधप्रशंसिन्], शान्तिभावना की प्रशंसा करने वाला, मैत्रीभाव का प्रशंसक – **सिनं** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिसा हि मे खन्तिवादानं, अविरोधप्पसंसिनं,* थेरगा॰ 875; ... *अविरोधप्पसंसिनन्ति केनचि अविरोधभूताय मेत्ताय एव पसंसनसीलानं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.282; – **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविरोधलक्षण], अविरोध या मैत्री-भावना के लक्षणों से युक्त – **क्खणो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविरोधलक्खणो वा अनुकूलमित्तो विय,* अभि॰ अव॰ 21; *अदोसो अचण्डिक्कलक्खणो, अविरोधलक्खणो वा अनुकूलमित्तो विय,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 172.

अविरोधन नपुं॰, उपरिवत् – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अक्कोधं अविहिंसञ्च, खन्तिञ्च अविरोधनं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.240.

अविरोधितापच्चुपट्ठान त्रि॰, ब॰ स॰ [अविरोधित्वप्रत्युपस्थान], विरोध के अभाव या मैत्रीभावना के रूप में प्रकाशित होने वाला/वाली – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बकिरियासु अविरोधितापच्चुपट्ठाना, मुदुरूपपदट्ठाना,* अभि॰ अव॰ 90.

अविलङ्घनिय त्रि॰, वि + √लङ्घ के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अविलङ्घनीय], अतिक्रमण नहीं करने योग्य, वह, जिसे अभिभूत न किया जा सके या जिसका उल्लंघन न किया जा सके – **या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वोहारविसयस्मिं हि लोकसम्मुति एव पधाना अविलङ्घनिया,* सद्द॰ 1.72.

अविलम्बित त्रि॰, वि + √लम्ब के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविलम्बित], विलम्ब न करने वाला, शीघ्रता से काम करने वाला – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसु तुण्णमरं चाविलम्बितं तुवटं पि च,* अभि॰ प॰ 40.

अविलुत्त त्रि॰, वि + √लुप के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविलुप्त], नहीं लूटा हुआ, नहीं विलुप्त – **त्ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविलुत्ते विलुत्तसञ्ञी,* पारा॰ 305; *अविलुत्तेति एत्थ पन गब्भं भिन्दित्वा पसय्हावहारवसेन अविलुत्तेति वेदितब्बं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.203.

अविलोपिय त्रि॰, वि + √लुप के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अविलोप्य], विलोपित या विनष्ट नहीं किए जाने योग्य, नहीं लूटने योग्य – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविलोपियमञ्ञेहि अनन्तसुखदायकं,* सद्धम्मो॰ 311.

अविलोम नपुं॰, [अविलोमन्], भेड़ का बाल – *गोलोमाविलोम विसाण-दधितिलपिट्ठादीनि च दुब्बा-सरभूतिणकादीनं,* विसुद्धि॰ 2.172.

अविलोमेन्त त्रि॰, विलोम के ना॰ धा॰ के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अविलोमयत्], नहीं पलटता हुआ, विपरीत रूप में परिवर्तित नहीं कर रहा – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा ... भगवतो देसनं अविलोमेन्तो लोकसम्मुतियं ठत्वाव चत्तारोमे, ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).149.

अविवट त्रि॰, विवट का निषे॰ [अविवृत], ढका हुआ, नहीं खुला हुआ, अनुद्‌घाटित – **टं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स ते आयस्मन्तो अविवटञ्चेव न विवरन्ति,* म॰ नि॰ 1.285.

अविवदमान त्रि॰, वि + √वद के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अविवदमान], विवाद या कलह न करता हुआ, झगड़ा न करता हुआ – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समग्गो हि सङ्घो सम्मोदमानो अविवदमानो एकुद्देसो फासु विहरती'ति,* पारा॰ 271; *अविवदमानोति अयं धम्मो, नायं धम्मो'ति एवं न विवदमानो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.175.

अविवाद पु॰, [अविवाद], विवाद या कलह का अभाव, सामञ्जस्य, सहमति – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विवादं भयतो दिस्वा, अविवादञ्च खेमतो,* अप॰ 1.7; – **दाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयम्पि ... सङ्गहाय अविवादाय सामग्गिया एकीभावाय संवत्तति,* दी॰ नि॰ 3.194; – **भूमि** स्त्री॰, निषे॰ स॰ [अविवादभूमि], विवादों या कलहों से रहित चित्त की अवस्था, निर्वाण की अवस्था – **मिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतम्पि*

दिस्वा न विवादयेथ, खेमाभिपस्सं अविवादभूमिं, सु॰ नि॰ 902; *खेमाभिपस्सं अविवादभूमिन्ति, अविवादभूमिं वुच्चति अमतं निब्बानं,* महानि॰ 226; – **वड्ढनकरी** स्त्री॰, अविवाद या विवाद के उपशमन को बढ़ाने वाली – **रिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविवादवड्ढनकरिं सुगिरं, भिन्नानुसन्धिजननिं अभणि,* दी॰ नि॰ 3.130.

अविवित्त त्रि॰, वि + √विच के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविविक्त], **क.** भरा हुआ, परिपूर्ण, अविरहित, युक्त – **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दसहि सद्देहि अविवित्तं, अन्नपानसमायुतं,* बु॰ वं॰ 2.2; खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 89; – **त्ता** स्त्री॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुसावती, ... दसहि सद्देहि अविवित्ता अहोसि ... रत्तिञ्च,* दी॰ नि॰ 2.111; **ख.** अलग या बिलग न किया हुआ, अभिन्न – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुथुज्जनो तेधातुकेहि धम्मेहि अविवित्तोति?,* कथा॰ 487; **कथा** स्त्री॰, कथा॰ के एक खण्ड का शीर्षक, कथा॰ 487; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अविविक्तता], रहित न होना, विद्यमानता, अस्तित्व – *अत्थिभावो ति अत्थिता विज्जमानता अविवित्तता,* सद्द॰ 1.71.

अविस त्रि॰, ब॰ स॰ [अविष], विष-रहित, बिना विष वाला, विष के प्रभाव से मुक्त – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *यो त्वं एवं गतं नागं, अविसो अतिमञ्ञति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.39; *अविसो अतिमञ्ञसीति निब्बिसोति अवजानासि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.40; – **सा** ब॰ व॰ – *सप्पा अजगरा नाम, अविसा ते महब्बला,* जा॰ अट्ठ॰ 7.263; *अविसाति निब्बिसा,* तदे॰; *मण्डूकभक्खा उदकन्तसेवी, आसीविसं मं अविसा सपन्ती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.13; – **सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *बलवता ... अगदं दत्वा अविसं करेय्य,* मि॰ प॰ 281.

अविसंवादक त्रि॰, वि + सं + √वद के क॰ ना॰ का निषे॰ [अविसंवादक], अपने वचन पर दृढ़ रहने वाला, अप्रवञ्चक, सत्यवादी, अपनी कही बात के विपरीत आचरण न करने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... सच्चवादी सच्चसन्धो थेतो पच्चयिको अविसंवादको लोकस्सा'ति,* दी॰ नि॰ 1.4; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मित्तानी वे यस्स भवन्ति सन्तो, संविस्सत्था अविसंवादकस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 4.68; – **दिकं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सच्चन्ति अविसंवादिकं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.308; – **दिकानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *... सच्चानि, अवितथानि अविसंवादकानीति अत्थो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 64; – **ट्ठायी** त्रि॰, [अविसंवादस्थायिन्], विश्वसनीयता या सत्यवादिता में स्थिर रखने वाला – **यिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सङ्घेन अनुमता पुग्गला पच्चेकट्ठायिनो अविसंवादकट्ठायिनो,* परि॰ 312; ... *अविसंवादकट्ठायिनोति इस्सरियाधिपच्चजेट्ठकट्ठाने च अविसंवादकट्ठाने च ठिता,* परि॰ अट्ठ॰ 210.

अविसंवादन नपुं॰, वि + सं + √वद के प्रेर॰, क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [अविसंवादन], अनुरूपता, वचनपरायणता, कर्तव्यनिष्ठता – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सच्चं ... द्वीहि द्वारेहि अविसंवादनं सच्चं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.117; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेतानि ... यथासकविसयस्स अविसंवादनतो तथानि अवितथानि अनञ्ञथानि,* उदा॰ अट्ठ॰ 115; 120; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अविसंवादनता], वचन पर अडिग रहना, कर्तव्यपरायण होना, वचनपरायणता – **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दानेन पेय्यवज्जेन अत्थचरियाय समानत्तताय अविसंवादनताय,* दी॰ नि॰ 3.144; *चतुत्थदिसावारे अविसंवादनतायाति यस्स यस्स नामं गण्हाति, तं तं अविसंवादेत्वा ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.125; – **दना** स्त्री॰, उपरिवत् – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविसंवादना मित्तानं आहारो,* अ॰ नि॰ 3(2).113.

अविसंवादसील त्रि॰, [अविसंवादशील], स्वभाव से ही अपने कहे वचन पर दृढ़ रहने वाला, विश्वसनीय प्रकृति वाला, सत्यपरायण, अप्रवञ्चक – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविसंवादकस्साति अविसंवादनसीलस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 4.69.

अविसंवादेन्त त्रि॰, वि + सं + √वद के प्रेर॰ के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अविसंवादयत्], अपने वचनों के विरुद्ध आचरण न करने वाला, भरोसेमन्द, सच्चा – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... अविसंवादेन्तो एतेसु धम्मं चरति नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 5.120.

अविसंवादेत्वा पू॰ का॰ कृ॰, अपनी बात के विपरीत न जाकर, नहीं खण्डन कर – *तं पनेतं ... पच्चवेक्खण समादानानं कारणभूतं अविसंवादेत्वा लोकनायको यस्मा ... पूरेत्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 106; *तं तं अविसंवादेत्वा ... इदम्पि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.125.

अविसङ्क त्रि॰, ब॰ स॰ [अविशङ्क], शङ्का या सन्देह से मुक्त, हिचकिचाहट से रहित, बेखौफ – **ङ्का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अधिमत्तानि पापानि अविसङ्का चरन्ति ये,* सद्धम्मो॰ 176.

अविसङ्केत त्रि॰, ब॰ स॰, विशिष्ट रूप वाले सङ्केत से रहित, सुनिश्चित सङ्केत से अविपरीत – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति यथापरिच्छेदे वा परिच्छेदब्भन्तरे वा अविसङ्केतं, ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.65.

अविसट त्रि॰, वि + √सर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविसृत], नहीं बिखरा हुआ, नहीं फैला हुआ, नहीं छितराया हुआ –

टं नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अविसारीति अविसटो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.278.

अविसद त्रि., [अविशद], **क.** अस्पष्ट, अप्रकट, अविशुद्ध, असुन्दर, अभव्य - **दो** पु., प्र. वि., ए. व. - *इत्थीनञ्हि ..., उपरिमकायो अविसदो,* ध. स. अट्ठ. 353; - **दा** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *इत्थियो हि गच्छमाना अविसदा गच्छन्ति,* ध. स. अट्ठ. 353; - **दं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *पुरिसम्पि हि अविसदं दिस्वा मातुगामो विय गच्छति तिट्ठति ... वदन्ति,* ध. स. अट्ठ. 354; - **दानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *सुखुमम्पि ... इन्द्रियानि जरं पत्तस्स परिपक्कानि आलुळितानि अविसदानि,* ध. स. अट्ठ. 360; **ख.** अचतुर, मूर्ख, कुशलता या प्रवीणता से रहित - **दो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अब्यत्तोति अविसदो अछेको,* दी. नि. अट्ठ. 2.361; - **ता** स्त्री., भाव. [अविशदता], विशेषज्ञता का अभाव, निपुणता का अभाव - **य** तृ. वि., ए. व. - *... अञ्जाणभावेन मन्दो अविसदताय मोमूहो,* पु. प. अट्ठ. 94; - **त्त** नपुं., भाव. [अविशदत्व], उपरिवत् - **त्तं** द्वि. वि., ए. व. - *अविसदत्तं अक्खातुं नयो दिन्नो ति नो रुचि,* सद्द. 1.210; - **दाकार** त्रि., ब. स. [अविशदाकार], अभव्य आकार वाला / वाली - **रा** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *इति यथा इत्थियो येभुय्येन अविसदाकारा, ...,* सद्द. 1.224; **दाकारवोहार** पु., कर्म. स. [अविशदाकारव्यवहार], अभव्य स्वरूप की व्यवहार में अभिव्यक्ति - **रो** प्र. वि., ए. व. - *अविसदाकारवोहारो इत्थिलिङ्गं,* सद्द. 1.216; - **ता** स्त्री., भाव., असुस्पष्ट स्वरूप का व्यवहार में प्रकाशन - **तं** द्वि. वि., ए. व. - *यथा वा गोसद्दस्स अविसदाकारवोहारतं पटिच्च इत्थिलिङ्गभावो उप्पज्जति,* सद्द. 1.112.

अविसम त्रि., विसम का निषे. [अविषम], अकठिन, बराबर, समान, सम - **मेन** पु., तृ. वि., ए. व. - *समेन वत्तेय्याति अविसमेन ... ञायेन पवत्तेय्य,* पे. व. अट्ठ. 114-15.

अविसय पु., [अविषय], अपने विशेष क्षेत्र से बाहर वाला, अनुपयुक्त, पहुंच या पकड़ से बाहर का, अगोचर, अदृश्य - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अविसयो एस मय्हं,* पे. व. अट्ठ. 107; *अञ्जेसं अविसयो, बुद्धानमेव विसयोति,* ध. स. अट्ठ. 13; - **स्मिं / ये** पु., सप्त. वि., ए. व. - *यथा तं, भिक्खवे, अविसयस्मिं'न्ति,* स. नि. 2(2).14; *अविसयस्मिन्ति एत्थ तन्ति निपातमत्तं,* स. नि. अट्ठ. 3.5; *अञ्जत्र पन धातूनं अविसये तद्धितवसेन,* सद्द. 2.506; - **भूत** त्रि., [अविषयभूत], अपनी शक्ति, पकड़ या पहुंच से बाहर का हो चुका, अगोचर या अग्राह्य हो चुका - **तं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *... अञ्जेसं अविसयभूतं कथं ... ब्याकासी'ति,* पे. व. अट्ठ. 171; *... तित्थियानं अविसयभूतं बुद्धगोचरं ... दस्सेन्तो,* उदा. अट्ठ. 173.

अविसय्ह त्रि., वि + √सह के सं. कृ. का निषे. [अविसह्य], असहनीय, असाध्य, अत्यधिक भारी, न उठाने योग्य - **य्हं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *सचस्स होति अविसय्हं,* म. नि. 1.271; *अविसय्हन्ति उक्खिपितुं असक्कुणेय्यं, अतिभारियं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).141; *सचे च जञ्जा अविसय्हमत्तनो, न ते हि मय्हं सुखागमाय,* जा. अट्ठ. 4.202; *सचेति यदि अत्तनो दुक्खं अविसय्हं अत्तनो वा ... जानेय्य,* जा. अट्ठ. 4.203; - **साही** त्रि., असहनीय को सहन करने वाला - **हि** पु., संबो., प्र. वि., ए. व. - *अञ्जातमेतं अविसय्हसाहि, अत्तानमम्बञ्च ददामि ते तं,* जा. अट्ठ. 5.8; *अविसय्हसाहीति राजानो नाम दुस्सहं सहन्ति, तेन नं आलपन्ती एवमाह,* जा. अट्ठ. 5.9.

अविसहन्त त्रि., वि + √सह के वर्त. कृ. का निषे. [अविसहत्], सक्षम नहीं हो रहा, सहन करने में अक्षम - **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *... ब्रह्मचरियं चरितुं सो अविसहन्तो सिक्खं ... हीनायावत्तो'ति,* दी. नि. 3.4; *... अद्धा अविसहन्तो असक्कोन्तो ब्रह्मचरियं चरितुं,* दी. नि. अट्ठ. 3.3; - **न्ती** स्त्री. प्र. वि., ए. व. - *... भिक्खुसङ्घस्स पत्ते पतिट्ठापेतुं अविसहन्ती अट्ठासि,* वि. व. अट्ठ. 54.

अविसहन नपुं., वि + √सह से व्यु., क्रि. ना., सक्षम या समर्थ न होना, सहन न कर पाना - *तस्मिं दुक्खसासनारोचने वत्तुं अविसहनवसेन किलमन्तं मं ... अस्सासेन्तु,* सद्द. 1.21.

अविसहमान त्रि., वि + √सह के वर्त. कृ. का निषे. [असहमान], सहन नहीं कर पा रहा, सक्षम या समर्थ नहीं हो रहा - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सोपि ... पत्तं गण्हथा'ति वत्तुं अविसहमानो विहारंयेव अगमासि,* जा. अट्ठ. 1.100.

अविसार पु., विसार का निषे. [अविसार], फैलाव का अभाव, बिखराव का न रहना, अप्रसार अविक्षेप - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अविसारो अत्तनो एव अविसरणसभावो,* विसुद्धि. महाटी. 2.132; - **ट्ठ** पु., तत्पु. स., अप्रसार या अविक्षेप का अर्थ - **ट्ठो** प्र. वि., ए. व. - *अविसारट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि. म. 15; - **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. - *अविसारट्ठेन समाधि,* पटि. म. 43; - **लक्खण** त्रि., ब. स. [अविसारलक्षण], बिखराव या विक्षेप के अभाव वाले लक्षण से युक्त (समाधि) - **णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सो*

अविसारलक्खणो, अविक्खेपलक्खणो वा, अभि॰ अव॰ 20; विसुद्धि॰ 2.91.

अविसारद त्रि॰, विसारद का निषे॰ [अविशारद], सुदृढ़ विश्वास से रहित, शङ्कालु, संशयालु – *अविसारदो उपसङ्कमति मङ्कुभूतो,* दी॰ नि॰ 2.67; *अविसारदोति गहट्ठो ताव ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.115; – **दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *युद्धेसु अविसारदा भविस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.327; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अविशारदता], शङ्कालु या संशय भरा होना, आत्मविश्वास से भरपूर न रहना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकच्चे अविसारदताय ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.227; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अविशारदत्व], उपरिवत् – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरिसावचरोति अविसारदत्ता परिसं ओतरितुं न सक्कोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.17.

अविसारी त्रि॰, [अविसारिन्], नहीं बिखरा हुआ, इधर-उधर नहीं छितराया हुआ, अविक्षिप्त – **री** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ब्रह्मुनो सनङ्कुमारस्स ... बिन्दु च अविसारी च गम्भीरो च निन्नादी च,* दी॰ नि॰ 2.156; *अविसारीति सुविसदो अविप्पकिण्णो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.209.

अविसाहट त्रि॰, वि + सं + √हर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविसंहृत], नहीं बिखरा हुआ, अचञ्चल, अव्यग्र, शान्त **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अविसंहृतचित्त], अचञ्चल या अविक्षिप्त चित्त वाला – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मनसि करोमाति एकग्गचित्ता अविक्खित्तचित्ता अविसाहटचित्ता निसामेम,* महाव॰ 131; – **मानसता** स्त्री॰, भाव॰, शान्त चित्तवाला रहना, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या तस्मिं ... अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि,* ध॰ स॰ 11; ... *अविसाहटस्स मानसस्स भावोति अविसाहटमानसता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 189.

अविसाहार पु॰, अविसंहार के स्थान पर अप॰ [अविसंहार], अविक्षेप, अचञ्चलता, बिखराव का अभाव, स्थिरता, एकाग्रता, शङ्का का अभाव – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता ... होति,* ध॰ स॰ 11; *उद्धच्चविचिकिच्छावसेन पवत्तस्स विसाहारस्स पटिपक्खतो अविसाहारो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 189.

अविसुद्ध त्रि॰, वि + √सुध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अविशुद्ध], शुद्ध नहीं किया हुआ, मलिन, मलों से दूषित – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *भिक्खु अविसुद्धो ताहि आपत्तीहि,* चूळव॰ 163; – **द्धा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *साललट्ठि बहिद्धा सुपरिकम्मकता अन्तो अविसुद्धा,* अ॰ नि॰ 1(2).230; – **स्स** नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयमस्स ... अविसुद्धस्स चित्तस्स विसुद्धिया ... परियोदपनाय,* अ॰ नि॰ 2(1).197; – **द्धानं** ब॰ व॰ – *सब्बेसञ्च ... अविसुद्धानं सद्धादीनं विसुद्धिकरणवसेन ... संवत्तति,* उदा॰ अट्ठ॰ 179-180.

अविसुद्धिधम्म त्रि॰, ब॰ स॰ [अविशुद्धिधर्मन्], विशुद्धि अथवा निर्वाण को प्राप्त न करने वाला – **म्मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *परो बालो ... परित्तो असुद्धिधम्मो अविसुद्धिधम्मो अपरिसुद्धिधम्मो अवोदातधम्मोति,* महानि॰ 222.

अविसेस पु॰, विसेस का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अविशेष], सामान्यता, अप्रभेद, एकरूपता – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, सामान्यरूप से, किसी विशेष सङ्केत के बिना – *तत्थ ... अविसेसेन सब्बम्पि चतुभूमिकचित्तं वुच्चति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.24; *अविसेसेन पन सरीरट्ठकस्सेतं गहणं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 368; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, उपरिवत् – *अविसेसतो पन अञ्ञाणन्ति एतेन सभावतो निद्दिट्ठाति ञातब्बा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).233; – **कर** त्रि॰, [अविशेषकर], विशेष प्रभेद को सूचित न करने वाला, प्रभेद न करने वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविसेसकरो नेरु, हन्द नेरुं जहामसेति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.217; – **रे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न तत्थ सन्तो वसन्ति, अविसेसकरे नरे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.217; – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सिखीरिव ... येनकामंचरा नेरु विय अविसेसकरा विसरुक्खो विय निच्चफलितायोति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.421; – **कारी** त्रि॰, [अविशेषकारिन्], प्रभेद न करने वाला, विशेष का सङ्केत न देने वाला – **रितो** पु॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ *अविसेसतो ... दुरासदतो अकतञ्ञुततो अविसेसकारितो अनन्तदोसूपद्दवतोति ... वेदितब्बा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.58; – **ञ्ञू** त्रि॰, [अविशेषज्ञ], विशिष्टता या प्रभेदक लक्षण को न जानने वाला – **ञ्ञुनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अविसेसञ्ञुनो हि एवमादिविभागं अजानन्ता ... विराधेन्ति,* सद्द॰ 1.104; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अविशेषता], विशिष्टता का अभाव, दूसरों से अलग करने वाले विशिष्ट प्रभेदक धर्मों का अभाव – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निग्गुणो अविसेसताय,* मि॰ प॰ 175; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अविशेषत्व], उपरिवत् – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविसेसत्ते सति कथं तेसं पुमित्थिलिङ्गववत्थानं सिया,* सद्द॰ 1.208.

अविस्सजन्त त्रि॰, वि + √सज के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अविसृजत्], व्यय नहीं करता हुआ, त्याग नहीं कर रहा,

हाथ से न छोड़ता हुआ - **जं** पु., प्र. वि., ए. व. - *अददं अविस्सजं भोगं, सन्धि तेनस्स जीरति,* जा. अट्ठ. 3.221.

अविस्सज्जनिय त्रि., वि + √सज के सं. कृ. का निषे. [अविसर्जनीय], नहीं त्यागने योग्य, समाधान न करने योग्य, अचिन्तनीय - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *बुद्धविसयो अविसज्जनीयो,* नेत्ति. 150; - **या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *पुग्गलपरोपरञ्ञुता अविसज्जनीया,* नेत्ति. 150.

अविस्सज्जित त्रि., वि + √सज के भू. क. कृ. का निषे. [अविसृष्ट], नहीं छोड़ा हुआ, नहीं त्यागा हुआ, नहीं दान दिया किया हुआ, समाधान न किया हुआ, अचिन्तित - **तानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *विस्सज्जितानिपि अविस्सज्जितानि होन्ति,* चूळव. 301.

अविस्सज्जित्वा वि + √सज के पू. का. कृ. का निषे. [अविसृज्य], नहीं छोड़कर, अन्तर्भूत कर - *नामरूपं अविस्सज्जित्वाव नेसं धम्मं देसेतुं वट्टती'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.339;

अविस्सट्ठ त्रि., वि + सज के भू. क. कृ. का निषे. [अविसृष्ट], **क.** नहीं छोड़ दिया गया, तिलाञ्जलि नहीं दिया गया, नहीं भेज दिया गया, जाने हेतु अनुमति नहीं दिया गया - **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. - *परलोक'न्ति एवं अम्हेहि अविस्सट्ठो,* पे. व. अट्ठ. 54; **ख.** अस्पष्ट, अव्यक्त - **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. *अविसट्ठम्पि होति अविञ्ञेय्यं तस्मानस्स भासितं,* म. नि. 3.283; - **कम्मट्ठान** त्रि., ब. स. [अविसृष्टकर्मस्थान], ध्यान के कर्मस्थान को नहीं छोड़ने वाला, कर्मस्थान को नहीं त्यागने वाला - **ट्ठानो** पु., प्र. वि., ए. व. - *एको किर ... पटिपन्नको योगावचरो अविस्सट्ठकम्मट्ठानो हुत्वा ... चरन्तो ... चलि,* जा. अट्ठ. 1.290.

अविस्सत्थ / अविस्सट्ठ त्रि., विस्सत्थ (विश्वास) का निषे. [अविश्वस्त], विश्वास न करने योग्य, संदिग्ध आचरण वाला **त्थे** पु., सप्त. वि., ए. व. - *न विस्ससे अविस्सत्थे, विस्सत्थेपि न विस्ससे,* जा. अट्ठ. 1.371; - **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो पुब्बे सभयो अत्तनि अविस्सत्थो अहोसि, तस्मिं अविस्सत्थे,* जा. अट्ठ. 1.371; - **स्सट्ठा** ब. व. - *भिक्खू अविस्सट्ठा परिभुञ्जन्ति,* महाव. 288.

अविस्सासनीय त्रि., वि + √सस के सं. कृ. का निषे. [अविश्वसनीय], विश्वास न करने योग्य - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - ... *अकतञ्ञू मित्तदुब्भी अविस्सासनीयो,* जा. अट्ठ. 3.418; *चारो मे पुराणसहायोति अविस्सासनीयो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.236.

अविस्सासिक त्रि., विस्सासिक का निषे., आत्मविश्वास से रहित, दूसरों पर विश्वास न करने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *यो कोचि अविस्सासिको अत्तनो पटिविरुद्धो पि च मित्तो नाम भवेय्य,* सद्द. 2.494; - **केन** पु., तृ. वि., ए. व. - ... *अविस्सासिकेन दिन्नकम्पि मारेतियेव,* जा. अट्ठ. 1.370.

अविस्सासिय त्रि., [अविश्वास्य], विश्वास न करने योग्य - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *एवं ... अविस्सासियो परित्तो जीवितस्स अद्धाति ... अनुस्सरितब्बं,* विसुद्धि. 1.229; *अविस्सासियो अविस्सासनीयो,* विसुद्धि. महाटी. 1.278.

अविह पु., [बौ. सं. अवृह], **क.** देवताओं का एक विशेष वर्ग - **हा** प्र. वि., ब. व. - *अविहा, अतप्पा, सुदस्सा, सुदस्सी, अकनिट्ठा,* दी. नि. 3.189; *अविहा देवा ...,* म. नि. 3.145; - **हेहि** तृ. वि. ब. व. - *अविहेहि देवेहि सद्धिं येन अतप्पा देवा तेनुपसङ्कमि,* दी. नि. 2.40; - **हानं** ष. वि., ब. व. - *अविहानं देवानं ...,* कथा. 176; - **हेसु** सप्त. वि., ब. व. - *अयं वुच्चतीति अयं एवरूपो पुग्गलो अविहेसु ताव कप्पसहस्सप्पमाणस्स आयुनो ...,* पु. प. अट्ठ. 48; **ख.** नपुं. / पु., अवृह नामक देववर्ग का लोक **हं** द्वि. वि., ए. व. *तिण्णं धम्मानं अतित्तो, हत्थको अविहं गतो'ति,* अ. नि. 1(1).314; *अविहं उपपन्नासे, विमुत्ता सत्त भिक्खवो,* स. नि. 1(1).40; - **तो** प. वि., ए. व. - *तत्थ यो अविहतो पट्ठाय चत्तारो देवलोके सोधेत्वा ... अकनिट्ठगामी नाम,* पु. प. अट्ठ. 49; - **हा** प्र. वि., ए. व. - *अविहा चुतो अतप्पं गच्छतीतिआदीसु अविहे कप्पसहस्सं वसन्तो ... गच्छति,* पु. प. अट्ठ. 48; - **हाब्रह्मलोक** पु., [अवृहब्रह्मलोक], अवृह देववर्ग का लोक - **के** सप्त. वि., ए. व. *कालङ्कतो च पन अविहाब्रह्मलोके निब्बत्ति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.226.

अविहञ्ञमान त्रि., वि + √हन, कर्म. वा., वर्त. कृ. का निषे. [अविहन्यमान], मानसिक बेचैनी से पीड़ित न रहने वाला, मानसिक पीड़ा से मुक्त - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. *ता सुद ... सम्पजानो अधिवासेसि अविहञ्ञमानो,* दी. नि. 2.77; *अविहञ्ञमानोहि वेदनानुवत्तनवसेन अपरापरं परिवत्तनं अकरोन्तो अपीळियमानो अदुक्खियमानोव अधिवासेसि,* दी. नि. अट्ठ. 2.122.

अविहत त्रि., वि + √हन या √हर के भू. क. कृ. का निषे. [अविहत, अविहृत], **क.** वह, जिस पर प्रहार नहीं किया गया है या जिसे मारा नहीं गया है, **ख.** वह, जिसे दूर नहीं ले जाया गया है या जिसे हटाया नहीं गया है - **खाणुकण्टक**

त्रि., ब. स. [अविहतस्थाणुकण्टक], ऐसी जगह, जिसमें से ठूंठ और झाड़ियां निकाली या नष्ट नहीं की गई हैं, बिना साफ किए हुए ठूंठों और कांटो से भरा - **के** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *सो तत्थ दुक्खेत्ते दुब्भूमे अविहतखाणुकण्टके बीजानि पतिट्ठापेय्य ... असुखसयितानि,* दी. नि. 2.260; - **योब्बन** त्रि., ब. स. [अविहतयौवन], वह, जिसकी युवावस्था अभी तक समाप्त या नष्ट नहीं हुई है, युवावस्था में विद्यमान - **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *दसक्खत्तुं विजातापि खो पन साकिं विजाता विय अविगतयोब्बनायेव होति,* ध. प. अट्ठ. 1.217; - **सक्कायदिट्ठिक** त्रि., ब. स. [अविहतसत्कायदृष्टिक], वह, जिसके चित्त में सत्कायदृष्टि अथवा आत्मा की नित्यता की मिथ्या धारणा नष्ट नहीं हुई है - *पुथु अविहतसक्कायदिट्ठिकाति पुथुज्जना,* ध. स. अट्ठ. 378.

अविहिंसक त्रि., विहिंसक का निषे. [अविहिंसक], हिंसा से परिपूर्ण मनोवृत्ति न रखने वाला, मैत्रीभावना से युक्त चित्तवाला - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *मयमेत्थ अविहिंसका भविस्सामा'ति सल्लेखो करणीयो,* म. नि. 1.53.

अविहिंसना स्त्री., विहिंसना का निषे., हिंसामयी मनोभावना का अभाव, दयालुता, मैत्रीभाव, करुणा का भाव - *अविहेसाति अविहिंसना,* पारा. अट्ठ. 1.230.

अविहिंसन्त त्रि., वि + √हिंस के वर्त. कृ. का निषे. [अविहिंसत्], किसी की हिंसा न करने वाला, किसी को पीड़ा या कष्ट न देने वाला - **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अहेठयं चरन्ति अविहिंसन्तो चरमानो,* स. नि. अट्ठ. 1.57.

अविहिंसा स्त्री., विहिंसा का निषे. [अविहिंसा], हिंसामयी मनोभावना का अभाव, दयालुता, मैत्रीभाव, करुणा का भाव - *साधु धम्मचरिया ... पुञ्ञकिरिया साधु अविहिंसा साधु भूतानुकम्पा'ति,* दी. नि. 2.22; *अविहिंसाति करुणाय पुब्बभागो,* दी. नि. अट्ठ. 2.42; - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *सोरच्चं अविहिंसञ्च, खन्तिञ्चापि अवण्णयुं* सु. नि. 294; *अविहिंसाति पाणिआदीहि अविहेसिकजातिकता सकरुणभावो,* सु. नि. अट्ठ. 2.48; - **य** तृ. वि., ए. व. - *खन्तिया, अविहिंसाय, मेत्तचित्तताय, अनुदयताय ... परं रक्खतो,* स. नि. 3(1).244; *अविहिंसायाति सपुब्बभागाय करुणाय,* स. नि. अट्ठ. 3.254; - **यं** सप्त. वि., ए. व. - ... *अक्कोधे अविहिंसायं सच्चे सोचेय्य,* मि. प. 123; - **छन्द** पु., तत्पु. स., करुणा या मैत्रीभाव से सम्बन्धित इच्छा - **न्दं** द्वि. वि., ए. व. - *अविहिंसाछन्दं पटिच्च उप्पज्जति अविहिंसापरिळाहो,* स. नि. 1(2).135; - **धातु** स्त्री., तत्पु. स. [अविहिंसाधातु], प्राणियों के प्रति अहिंसा या करुणा का चेतसिक तत्त्व - **तु** प्र. वि., ए. व. - *तिस्सो कुसलधातुयो नेक्खम्मधातु, अब्यापादधातु, अविहिंसाधातु,* दी. नि. 3.172; *या सत्तेसु करुणा ... करुणाचेतोविमुत्ती'ति अयं अविहिंसाधातु,* दी. नि. अट्ठ. 3.154; - **तुं** द्वि. वि., ए. व. - *अविहिंसाधातुं ..., पटिच्च उप्पज्जति अविहिंसासञ्ञा,* स. नि. 1(2).135; - **पच्चुपट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [अविहिंसाप्रत्युपस्थान], अहिंसा के रूप में प्रकाशित होने वाली / वाला प्रकट होने वाला / वाली - ... *करुणा, ..., अविहिंसापच्चुपट्ठाना, ...,* अभि. अव. 23; - **पटिसंयुत्त** त्रि., तत्पु. स. [अविहिंसाप्रतिसंयुक्त], अहिंसा के साथ जुड़ा हुआ, अहिंसा में अन्तर्भूत - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अविहिंसापटिसंयुत्तो तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना ... सम्मासङ्कप्पो,* विभ. 97; - **त्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *अविहिंसापटिसञ्ञुत्ता सञ्ञा अविहिंसासञ्ञा,* महानि. अट्ठ. 135; - **परिळाह** पु., तत्पु. स. [अविहिंसापरिडाह], अहिंसा के लिए उत्कण्ठा, अभिलाषा या ललक - **हो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अविहिंसाछन्दं पटिच्च उप्पज्जति अविहिंसापरिळाहो,* स. नि. 1(2).135; - **परियेसना** स्त्री., तत्पु. स. [अविहिंसापर्येषण], अहिंसा-भावना की खोज या उसे पाने की उत्कण्ठा - *अविहिंसापरिळाहं पटिच्च उप्पज्जति अविहिंसापरियेसना,* स. नि. 1(2).135; - **वितक्क** पु., तत्पु. स. [अविहिंसावितर्क], चित्त में अहिंसा की भावना का अभिनिरोपण - **क्कं** द्वि. वि., ए. व. - *अविहिंसावितक्कं बहुलमकासि,* म. नि. 1.165; - **संकप्प** पु., तत्पु. स. [अविहिंसासंकल्प], तीन संकल्पों में से एक, अहिंसा-विषयक संकल्प - **प्पा** प्र. वि., ब. व. - *तयो कुसलसङ्कप्पा - नेक्खम्मसङ्कप्पो, अब्यापादसङ्कप्पो, अविहिंसासङ्कप्पो,* दी. नि. 3.172; - **सञ्ञा** स्त्री., तत्पु. स. [अविहिंसासंज्ञा], अहिंसा-विषयक संज्ञास्तरीय ज्ञान, तीन कुशलसंज्ञाओं में एक - *तिस्सो कुसलसञ्ञा - नेक्खम्मसञ्ञा, अब्यापादसञ्ञा, अविहिंसासञ्ञा,* दी. नि. 3.172; - **सारितक्ख** त्रि., ब. स. [अविहिंसासारिताक्ष], अहिंसा द्वारा घुमाई जा रही धुरी से युक्त - **क्खो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अविहिंसासारितक्खो, संविभागपटिच्छदो,* जा. अट्ठ. 7.142; *अविहिंसासारितक्खोति अविहिंसामयेन सारितेन सुट्ठु परिनिट्ठितेन अक्खेन समन्नागतो,* जा. अट्ठ. 7.143.

अविहेठकजातिक त्रि., विहेठकजातिक का निषे. [अविहेठकजातिक], स्वभाव से ही किसी को पीड़ा न देने

वाला, अहिंसक या अनुत्पीड़क प्रकृति वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *तथागतो पुरिमं जातिं ... सत्तानं अविहेठकजातिको अहोसि पाणिना वा ... सत्थेन वा,* दी. नि. 3.124.

अविहेठन / अविहेठना पु./स्त्री., [अविहेठना], अहिंसा, अनुत्पीड़न, पीड़ा न देना, कष्ट न पहुंचाना, अविहिंसन, अहानि – **नत्थ** पु., तत्पु. स., हानि नहीं होने का प्रयोजन – **त्थाय** च. वि., ए. व. – *एवमस्सा सीहादीनम्पि अविहेठनत्थाय आरक्खं ... आणापेसुं,* जा. अट्ठ. 7.329; – **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अहिंसाति परेसं अविहेसा अविहेठना,* जा. अट्ठ. 2.45.

अविहेठयन्त त्रि., वि + √हेठ का वर्त. कृ. का निषे. [अविहेठयत्], पीड़ित न करता हुआ, चोट न पहुंचा रहा, हानि नहीं कर रहा – **यं** पु., प्र. वि., ए. व. – *सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं, अविहेठयं अञ्ञतरम्पि तेसं,* सु. नि. 35; *अविहेठयन्ति अविहेठयन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 1.52.

अविहेसिकजातिकता स्त्री., भाव., अहिंसक प्रकृति का होना, कष्ट या पीड़ा न देने वाले स्वभाव का होना – **ता** प्र. वि., ए. व. *अविहिंसाति पाणिआदीहि अविहेसिकजातिकता सकरुणभावो,* सु. नि. अट्ठ. 2.48.

अविहेसा स्त्री., विहेसा का निषे. [अविहिंसा], प्राणियों के प्रति हिंसक मनोवृत्ति का अभाव, प्राणियों के प्रति अनुकम्पा या उनका कल्याण करने का भाव – *तस्स मोघपुरिसस्स पाणेसु अनुदया अनुकम्पा अविहेसा भविस्सति,* पारा. 48; *अविहेसा ति अविहिंसना, एतेहि करुणापुब्बभागं दस्सेति,* पारा. अट्ठ. 1.230; *अहिंसाति परेसं अविहेसा अविहेठना,* जा. अट्ठ. 2.45; – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *अविहेसं खो पनस्स मनसिकरोतो ... विमुच्चति,* अ. नि. 2(1).225; – **य** च. वि., ए. व.– ... *अविहेसाय चित्तं पक्खन्दति पसीदति सन्तिट्ठति विमुच्चति,* अ. नि. 2(1).225; – **धातु** स्त्री., तत्पु. स. [अविहिंसाधातु], धातु या मूल-तत्त्व के रूप में अहिंसा की भावना – *छयिमा, ..., धातुयो – कामधातु, ..., अविहिंसाधातु,* म. नि. 3.109; – **वन्तु** त्रि., [अविहिंसावत्], अहिंसा की भावना से युक्त, अनुकम्पा से भरा हुआ – **वा** पु., प्र. वि., ए. व. – *अविहेसवा होति, अविहेसासहगतेन चेतसा विहरति,* म. नि. 3.98.

अवीचि[1] त्रि., वीचि का निषे., ब. स. [अवीचि, पु./स्त्री.], बिना अन्तराल वाला, लगातार चल रहा, सतत् रूप में प्रवर्तित, व्यवधानरहित, **चि** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अवीचीति अविरळं,* महानि. अट्ठ. 62; *पुन अवीचि सवीचीति एवम्पि दुविधा होति,* ध. स. अट्ठ. 360; – **क** त्रि., ब. स. [अवीचिक], लगातार चल रहा / रही – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *विसदिसचित्तपवत्तिसङ्खाताय वीचिया अभावेन अवीचिका, चित्तसन्तति,* विसुद्धि. महाटी. 2.450; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – ... *अवीचिकं चित्तसन्ततिं अनुप्पबन्धमानं तथेव सङ्खारे आरम्मणं कत्वा उप्पज्जति पठमं जवनचित्तं,* विसुद्धि. 2.306; – **जरा** स्त्री., कर्म. स., लगातार रूप से चल रही जीर्णता, निरन्तर विद्यमान जरा, लगातार हो रहा रूपान्तरण – *अन्तरन्तरा वण्णविसेसादीनं दुविञ्ञेय्यत्ता जरा अवीचिजरा नाम,* ध. स. अट्ठ. 360; – **मनुसम्बन्ध** त्रि., अवीचि + अनुसम्बन्ध, व्यवधान से रहित क्रम, लगातार चल रहा सिलसिला – *अवीचिमनुसम्बन्धो, नदीसोतोव वत्ततीति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).271.

अवीचि[2] पु., (निरय के तात्पर्य में) स्त्री. [अवीचि त्रि.], आठ प्रकार के महानरकों में से एक *पतापनो अवीचि त्थी संघातो तपनो इति,* अभि. प. 657; – **चि** प्र. वि., ए. व. – ... *अयं लोको अवीचि मज्झे ...,* अ. नि. 1(1).186; *अवीचीव निरस्सादं लोकं ञत्वा दुखद्दितं,* सद्धम्मो. 37; – **चिं** द्वि. वि., ए. व. – ... *बहिजेतवने पथविया विवरे दिन्ने अवीचिं पाविसि,* जा. अट्ठ. 4.179; – **ना** तृ. वि., ए. व. *हेट्ठा च अवीचिना परिच्छिन्ने लोकसन्निवासे एतं ... नत्थी ति,* जा. अट्ठ. 1.350; – **तो** प. वि., ए. व. – *अयं पन अवीचितो याव भवग्गा पत्थटं किलेसोघं ... आह,* स. नि. अट्ठ. 1.17–18; – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *अथ रुक्खं ... एकप्पहारेनेव कालं कत्वा अवीचिम्हि निब्बत्ता महादुक्खं अनुभवन्ति,* स. नि. अट्ठ. 1.100; – **चग्गि** पु., तत्पु. स., अवीचि-नरक की जलाने वाली आग – *यस्मिञ्च जायमानस्मिं अवीचग्गि न पज्जलि,* अप. 1.159; – **निरय** पु., तत्पु. स. [बौ. सं. अवीचिनिरय], अवीचि नाम वाला एक नरक – **यो** प्र. वि., ए. व. – *एवं अवीचिनिरयो, हेट्ठा उपरि पस्सतो,* महानि. 300; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *अवीचिनिरयं पत्तो, चतुद्वारं भयानकं,* चूळव. 343; – **ये** सप्त. वि., ए. व. – ... *न जच्चबधिरो, ..., न अवीचिनिरये, ..., न अञ्ञं चक्कवाळं सङ्कमति,* सु. नि. अट्ठ. 1.41–42; – **परायण** त्रि., तत्पु. स., अवीचि-नामक नरक में जाने वाला – *तस्माति यस्मा चेतियराजा छन्दागमनेन अवीचिपरायणो जातो,* जा. अट्ठ. 3.406; – **परियन्त** त्रि., ब. स. [बौ. सं. अवीचिपर्यन्त], अवीचि-नामक नरक की सीमा वाला, अवीचि नरक तक

जाने वाला - **न्तं** नपुं., क्रि. वि., द्वि. वि., ए. व. - *तत्थ इदं रूपं नाम हेट्ठा अवीचिपरियन्तं कत्वा उपरि अकनिट्ठब्रह्मलोकं ... वत्तति,* स. नि. अट्ठ. 3.106; - **महानिरय** पु., कर्म. स. [बौ. सं. अवीचिमहानिरय], अवीचि-नामक महान नरक - *तथा असुरभवनं अवीचिमहानिरयो जम्बुदीपो च,* सु. नि. अट्ठ. 2.150; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *जालरोरुवोति पन अवीचिमहानिरयस्सेपेतं नामं,* स. नि. अट्ठ. 1.73; - **तो** प. वि., ए. व. - *तावदेव अवीचिमहानिरयतो अग्गिजाला निक्खमित्वा तं ... गण्हि,* जा. अट्ठ. 1.308; - **ये** सप्त. वि., ए. व. - *उण्हेन रुप्पनं अवीचिमहानिरये पाकटं होति,* स. नि. अट्ठ. 2.258; - **युप्पत्तिसंवत्तनिक** त्रि., [बौ. सं. अवीचिनिरयुत्पत्तिसंवर्तनिक], अवीचि-नामक नरक में उत्पत्ति दिलाने वाला, अवीचि-नरक की ओर ले जाने वाला - *एतमत्थं विदित्वाति एतं अवीचिमहानिरयुप्पत्तिसंवत्तनियं कप्पट्ठियं अतेकिच्छं ... विदित्वा ...,* उदा. अट्ठ. 259; - **सन्ताप** पु., तत्पु. स. [अवीचिमहानिरयसन्ताप], अवीचि-नामक महानरक की गर्मी या तपिश - **पो** प्र. वि., ए. व. - *जीवन्तस्सेव अवीचिमहानिरयसन्तापो उपट्ठहि,* ध. प. अट्ठ. 1.74; - **संपत्त** त्रि., तत्पु. स. [अवीचिसंप्राप्त], अवीचि-नामक महानरक में पहुंचा हुआ - *तस्मिं खणे दक्खिणचक्कवाळं ओसीदित्वा हेट्ठा अवीचिसम्पत्तं विय अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.80.

अवीत त्रि., वि + √इ के भू. का. कृ. का निषे., केवल स. पू. प. के रूप में ही प्राप्त [अवीत], दूर नहीं गया हुआ, तिरोहित नहीं हो चुका - **गन्ध** त्रि., ब. स. [अवीतगन्ध], वह, जिसकी सुगन्ध नष्ट नहीं हुई है, सुगन्ध से युक्त **धं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *पदुमं यथा कोकनदं सुगन्धं, पातो सिया फुल्लमवीतगन्धं,* स. नि. 1(1).99; *यथा कोकनदसङ्खातं पदुमं पातोव फुल्लं, अवीतगन्धं सिया,* स. नि. अट्ठ. 1.134; - **च्छन्द** त्रि., ब. स. [अवीतछन्दस्], वह, जिसकी इच्छा या तृष्णा समाप्त नहीं हुई है - **न्दो** पु., प्र. वि., ए. व. - *... अवीतरागो होति अविगतच्छन्दो ...,* अ. नि. 3(1).265; - **तण्ह** त्रि., ब. स. [अवीततृष्ण], वह, जिसके मन की तृष्णा का निरोध या क्षय नहीं हुआ है - **ण्हो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अवीततण्हो हि पापिच्छो ...,* उदा. अट्ठ. 51; - **ण्हा** ब. व. - *राजा च अञ्ञे च बहू मनुस्सा, अवीततण्हा मरणं उपेन्ति,* थेरगा. 778; - **ण्हासे** ब. व. - *हीना नरा मच्चुमुखे लपन्ति, अवीततण्हासे भवाभवेसु,* सु. नि. 782; - **दोस** त्रि., ब. स. [अवीतद्वेष], द्वेष से अमुक्त, द्वेषयुक्त - **सो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अज्जापि नून समणो गोतमो अवीतरागो अवीतदोसो अवीतमोहो,* म. नि. 1.29; - **सा** ब. व. - *मयम्पि हि चक्खुविञ्ञेय्येसु रूपेसु अवीतरागा अवीतदोसा अवीतमोहा,* म. नि. 3.353-54; - **परिळाह** त्रि., ब. स. [अवीतपरिदाह], चित्त में जल रही अग्नि से अमुक्त, चित्त की व्याकुलता से युक्त - **हो** पु., प्र. वि., ए. व. - *... अवीतरागो होति ... अविगत परिळाहो अविगततण्हो,* अ. नि. 3(1).265; - **मोह** त्रि., ब. स., मोह से ग्रस्त चित्त वाला - *मयम्पि हि चक्खुविञ्ञेय्येसु रूपेसु अवीतरागा अवीतदोसा अवीतमोहा,* म. नि. 3.353-54; - **राग** त्रि., ब. स. [अवीतराग], राग से अविनिर्मुक्त, राग से ग्रस्त चित्त वाला - **गो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अवीतरागो कामेसु, यस्स पञ्चिन्द्रिया मुदू,* अ. नि. 2(2).84; **गं** द्वि. वि., ए. व. - *यञ्हि ... अवीतरागं इमिना उपक्कमेन उपक्कमेय्याम हदयं वास्स फलेय्य,* स. नि. 1(1).147; - **गा** पु., प्र. वि., ब. व. - *परिनिब्बुते ... अवीतरागा अप्पेकच्चे बाहा पग्गय्ह कन्दन्ति,* दी. नि. 2.118; *अवीतरागाति पुथुज्जना चेव सोतापन्नसकदागामिनो च,* दी. नि. अट्ठ. 2.168; - **गे** द्वि. वि., ब. व. - *सो अञ्ञे सत्ते पस्सामि कामेसु अवीतरागे कामतण्हाहि खज्जमाने ... पटिसेवन्ते,* म. नि. 2.184.

अवीतिक्कन्तपुब्ब त्रि., ब. स., वीतिक्कन्तपुब्ब का निषे. [अव्यतिक्रान्तपूर्व], वह, जिसने पहले या पूर्वकाल में पार नहीं किया है, अब से पहले पार न किया हुआ, उल्लंघन न किया हुआ - **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अतिण्णपुब्बन्ति इमिना दीघेन अद्धुना सुपिनन्तेनपि अवीतिक्कन्तपुब्बं,* सु. नि. अट्ठ. 2.37.

अवीतिक्कमन्त त्रि., वि + अति + √कम के वर्त. कृ. का निषे. [अव्यतिक्रान्त], उल्लघंन नहीं करता हुआ, अतिक्रमण नहीं करता हुआ - **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तस्मिञ्च सिक्खापदे अवीतिक्कमन्तो सिक्खतीति,* पारा. अट्ठ. 1.193.

अवीतिक्कम पु., [अव्यतिक्रम], अनुल्लंघन, अतिक्रमण या अनाचार का अभाव, सदाचार - *सोरच्चनिद्देसे कायिको अवीतिक्कमोति तिविधं कायसुचरितं,* ध. स. अट्ठ. 1.417; *... कायिको अवीतिक्कमो वाचसिको अवीतिक्कमो'ति सीलमेव सोरच्च'न्ति वुत्तं,* स. नि. अट्ठ. 1.224.

अवीतिक्कमन नपुं., [अव्यतिक्रमण], अनुल्लंघन, अनाचार का व्यवहार में अप्रयोग - **नं** प्र. वि., ए. व. - *पाणातिपातस्स अवीतिक्कमनं अवीतिक्कमो सीलं,* विसुद्धि. महाटी. 1.72.

अवीतिवत्त त्रि., वि + अति + √वत के भू. क. कृ. का निषे. [अव्यतिवृत्त], **शा. अ.** पार नहीं किया हुआ, **ला. अ.** वश में न किया हुआ, नहीं जीता हुआ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *हीनाति अञ्ञे ततो सब्बमाह, तस्मा विवादानि अवीतिवत्तो,* सु. नि. 802; *तस्मा विवादानि अवीतिवत्तोति तेन कारणेन सो दिट्ठकलहे अवीतिवत्तोव होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.222; – **त्ता** ब. व. – *अवीतिवत्ता सक्कायं, जातिमरणसारिनो,* थेरीगा. 199; *ततो एव अवीतिवत्ता सक्कायं निस्सरणाभिमुखा अहुत्वा सक्कायतीरमेव अनुपरिधावन्ता ... अनुस्सरन्ति,* थेरीगा. अट्ठ. 191.

अवीमंसित त्रि., वीमंसित का निषे. [अविमृष्ट], अपरीक्षित, अचिन्तित, ठीक से नहीं परखा गया – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *एवमेव अञ्ञेसम्पि येसञ्चेतं असङ्खातं अवीमंसितं,* जा. अट्ठ. 4.5.

अवीरपुरिस पु., वीरपुरिस का निषे. [अवीरपुरुष], कायर, बलहीन पुरुष – **सो** प्र. वि., ए. व. – *न अवीरपुरिसो विय अप्पमत्तकेनपि सीतेन चलति कम्पति कम्मट्ठानं विजहति,* अ. नि. अट्ठ. 3.130.

अवीवदात त्रि., वीवदात का निषे., तत्पु. स. [अव्यवदात], अस्वच्छ, अपवित्र, मलों से भरा हुआ – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *पकप्पिता सङ्खता यस्स धम्मा, पुरक्खता सन्ति अवीवदाता,* सु. नि. 790; *अवीवदाताति अवोदाता,* सु. नि. अट्ठ. 2.216.

अवुट्ठापनीय त्रि., वि + उ + √ठा के प्रेर. के सं. कृ. का निषे. [अव्युत्थापनीय], नहीं हटाए जाने योग्य, नहीं निकाल बाहर कराने योग्य – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *न भिक्खवे भण्डागारिको वुट्ठापेतब्बोति एत्थ अञ्ञेपि अवुट्ठापनीया जानितब्बा,* महाव. अट्ठ. 381.

अवुट्ठि स्त्री., वुट्ठि का निषे., [अवृष्टि], वर्षा का अभाव, सूखा – **अतिवुट्ठिआदि** पु., सूखा या अतिवृष्टि इत्यादि – **दीहि** पु., तृ. वि., ब. व. – *विपज्जमानन्ति अवुट्ठिअतिवुट्ठिआदीहि कसिकम्मं, ...,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.312.

अवुट्ठिक त्रि., [अवृष्टिक], बिना वर्षा वाला/वाली – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अवुट्ठिका दिसा नत्थि, सन्तत्ता कुथितापि च,* अप. 2.190; – **मेघसम** त्रि., ब. स. [अवृष्टिकमेघसम], वर्षा रहित मेघ जैसा, बरसात न करने वाले बादल के समान – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *छट्ठे अवुट्ठिकसमोति अवुट्ठिकमेघसमो,* इतिवु. अट्ठ. 209; – **समो** पु., ब. स., प्र. वि., ए. व. [अवृष्टिकसम], उपरिवत् – *पुग्गलो अवुट्ठिकसमो होति,* इतिवु. 48.

अवुट्ठिका स्त्री., अवुट्ठिक से व्यु., बिना वर्षा वाली, वर्षा से रहित – **य** तृ. वि., ए. व. – *ईतीनिपातेन अवुट्ठिताय वा, न किञ्चि विन्दन्ति,* जा. अट्ठ. 5.396.

अवुट्ठित त्रि., वि + उ + √ठा के भू. क. कृ. का निषे. [अव्युत्थित], अभी तक नहीं उठा हुआ – **तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *भुत्ताविना पवारितेन आसना अवुट्ठितेन कतं होति,* पाचि. 114; *आसना अवुट्ठितेनाति एत्थ पन असम्मोहत्थं अयं विनिच्छयो,* पाचि. अट्ठ. 85-86; – **ताय** स्त्री., सप्त. वि., ए. व. – *अवुट्ठिताय परिसाय,* महाव. 162.

अवुत्त त्रि., √वद के भू. क. कृ. का निषे. [अनुक्त], **क.** नहीं कहा गया, नाम लेकर नहीं पुकारा गया, अनिर्दिष्ट, असङ्केतित – **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अलमेतं सब्बन्ति अवुत्तं होति,* पाचि. 114; *अत्तनो ... तेन वुत्तञ्च अवुत्तञ्च ... उप्पादयिंसु,* जा. अट्ठ. 7.8; **ख.** अनामन्त्रित, स्वतःस्फूर्त, दूसरों द्वारा नहीं कहा गया – **त्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – ..., *अवुत्ता धोवतीति, उद्देसाय वा ओवादाय वा आगता किलिन्नं चीवरं दिस्वा ... देथ,* पारा. अट्ठ. 2.219; – **काल** पु., कर्म. स. [अनुक्तकाल], समीप में विद्यमान काल, वर्तमान काल, अनिर्धारित काल – **लो** प्र. वि., ए. व. – *अनुं समीपे वुत्तोकालो अनुत्तकालो, पच्चुप्पन्नकालो ति अत्थो, न उत्तकालो ति वा अनुत्तकालो,* क. व्या. 417 पर क. व.; – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *अत्थो अवुत्तकाले ति तस्स जायति मे मति,* सद्द. 1.51; – **नय** त्रि., ब. स. [अनुक्तनय], पूर्व में प्रकाशित न किए गए स्पष्टीकरण वाला, वह, जिसका स्पष्टीकरण पहले नहीं किया गया है – **यं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *यतो तानि अञ्ञानि च तथाविधानि छड्डेत्वा अवुत्तनयमेव वण्णयिस्साम,* सु. नि. अट्ठ. 2.71; – **पुब्ब** त्रि., ब. स. [अनुक्तपूर्व], पूर्व में नहीं कहा गया, पूर्व में अकथित – **ब्बं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – ... *अग्गिकभारद्वाजस्साति यं यं अवुत्तपुब्बं, तं तदेव वण्णयिस्साम,* सु. नि. अट्ठ. 1.139; – **विकप्पनत्थ** पु., कर्म. स. [अनुक्तविकल्पार्थ], नहीं कहे गये विकल्प के अर्थ का प्रकाशक – *वा-सद्दो अवुत्तविकप्पनत्थो* ..., वि. वि. अट्ठ. 2.202; – **सिद्ध** त्रि., स्वतः प्रकाशित, बिना कहे हुए ही स्पष्ट – **द्धं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तत्थ परिचारककारकानं ब्याकरणं अवुत्तसिद्धं,* लीन. (दी.नि.टी.) 2.187.

अवुत्थ त्रि., √वस के भू. क. कृ. का निषे. [अनुषित], वर्षावास पूरा नहीं किया हुआ – **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. – *वुत्तञ्हि खुद्दसिक्खावण्णनाय "अवुत्थोति पच्छिमिकाय*

उपगतो अपरिनिट्ठितत्ता 'अवुत्थो'ति वुच्चती'ति, विन॰ वि॰ टी॰ 2.168; – **पुब्ब** त्रि॰, ब॰ स॰ [अनुषितपूर्व], पूर्वकाल में एक साथ निवास नहीं किया हुआ – **ब्बं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ असन्थुतन्ति एकाहद्वीहम्पि एकतो अवुत्थपुब्बं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.208.

अवुड्ढि स्त्री॰, वुड्ढि का निषे॰ [अवृद्धि], पतन, पराभव – **ड्ढि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभवो ति अवुड्ढि,* सद्द॰ 1.248; – **ड्ढिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पराभवतीति पराभवो होति व्यसनं आपज्जति अवुड्ढिं पापुणाति,* सद्द॰ 1.4; – **क** त्रि॰, अवुड्ढि से व्यु॰ [अवृद्धिक], बिना वृद्धि वाला, विश्वास या वृद्धि से रहित – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तनोति तनुते ति अवुड्ढिका,* सद्द॰ 2.550.

अवुसित त्रि॰, √वस के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अनुषित], ठीक से पालन न किया गया, उचित रूप में आचरण नहीं किया गया – **तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवुसितेन मे एत्थ वुसितं,* म॰ नि॰ 2.193; *अवुसितेनेव ब्रह्मचरियेन वुसितं नाम होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.163; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अवुषितत्त्व], उचित रूप में आचरण या पालन नहीं किया जाना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्बट्ठो माणवो ... अवुसितत्ता'ति,* दी॰ नि॰ 1.79; – **वन्तु** त्रि॰, [अनुषितवत्], पालन या आचरण नहीं करने वाला – **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *आचरियकुले अवुसितवा ... असिक्खितो ... समानो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.206; – **वाद** पु॰, तत्पु॰ स॰, अप्रतिपालक या आचरण न करने वाले के रूप में कथन – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवुसितवादेन वुच्चमानो कुपितो,* दी॰ नि॰ 1.79.

अवुपच्छेद / अवूपच्छेद पु॰, [अव्युच्छेद], व्यवधान का अभाव, निरन्तरता – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यत्थ अवुपच्छेदो तत्थ सन्तति,* नेत्ति॰ 66.

अवूपसन्त त्रि॰, वि + उप + √सम के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अव्युपशान्त], अशान्त, सङ्कटों या विपदाओं से भरपूर **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उद्धतो लोको अवूपसन्तोति,* पटि॰ म॰ 116; – **न्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *घट्टितं चलितं भन्तं अवूपसन्तं,* महानि॰ 369; *अवूपसन्तन्ति अनिब्बुतं,* महानि॰ अट्ठ॰ 374; – **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अवूपसन्ता अज्झत्तं ... अच्छति,* थेरगा॰ 936; – **चित्त** ब॰ स॰ [अव्युपशान्तचित्त], अशान्त चित्त वाला, उद्विग्न चित्त वाला, राग द्वेष आदि से दूषित मन वाला – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अज्झत्तं अवूपसन्तचित्ता,* म॰ नि॰ 3.353; **न्ताकार** पु॰, कर्म॰ स॰, अशान्त अवस्था, अशान्ति, व्याकुलाहट – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवूपसमो नाम अवूपसन्ताकारो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).295.

अवूपसम पु॰, [अव्युपशम], चित्त में शान्ति का अभाव, चित्त में राग एवं द्वेष आदि के कारण उत्पन्न व्याकुलता या व्यग्रता – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतसो अवूपसमो,* स॰ नि॰ 3(1).82; – **मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतसो अवूपसमे अयोनिसोमनसिकारेन ... उप्पादो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).295; – **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्युपशम लक्षण], अशान्ति या चञ्चलता के लक्षणों से युक्त – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं अवूपसमलक्खणं वाताभिघातचलजलं विय,* अभि॰ अव॰ 25.

अवेकल्ल त्रि॰, ब॰ स॰ [अवैकल्य], विकलता से रहित, अविचल, दृढ़ता से परिपूर्ण – **ल्लं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जण्णु अवेकल्लं करोति,* मि॰ प॰ 391; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अविकलता], पूरी तरह से सही-सलामत होना या सक्षम होना, परिपूर्णता – *इन्द्रियानं अवेकल्लता दुल्लभा लोकस्मिं,* अ॰ नि॰ 2(2).141; – **नाम** त्रि॰, ब॰ स॰ [अवैकल्यनाम], अविकलता या परिपूर्णता के अनुरूप नाम पाने वाला – **मं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनोमनामन्ति सब्बगुणसमन्नागतत्ता अवेकल्लनामं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.76; – **बुद्धि** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अविकलबुद्धि], परिपूर्ण बुद्धि – *बुद्धिसम्पन्नोति अवेकल्लबुद्धिसम्पन्नो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.192.

अवेक्खति अव + √इक्ख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [बौ॰ सं॰ अवीक्षते], करुणा के साथ अवलोकन करता है, बिना विशेष प्रयास के ही दिव्यचक्षु द्वारा देखता है, – *अवेक्खति जातिजराभिभूत'न्ति,* इतिवु॰ 25; ... *पब्बतमुद्धनि ठितो भूमियं ठिते ... अकिच्छेन अवेक्खति, तथा सोपि धीरो ... बाले चवन्ते च उपपज्जन्ते च अकिच्छेन अवेक्खतीति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.147.

अविचिकिच्छ त्रि॰, ब॰ स॰ [अविचिकित्स], सन्देह या विचिकित्सा से मुक्त – **च्छो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविचिकिच्छो समानो भब्बो रागं पहातुं,* अ॰ नि॰ 3(2).123; – **च्छी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकङ्खी होति अविचिकिच्छी निट्ठङ्गतो सद्धम्मे,* अ॰ नि॰ 1(2).203.

अवेच्च अ॰, अव + √इ का पू॰ का॰ कृ॰ [बौ॰ सं॰ अवेत्य], अच्छी तरह से जान कर, गम्भीर रूप में प्रवेश करके, ठीक से जान कर – *यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सति,* सु॰ नि॰ 231; *यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सतीति यो चत्तारि अरियसच्चानि पञ्ञाय अज्झोगाहेत्वा पस्सति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰

1.247; *सब्बं तुवं ञाणमवेच्च धम्मं,* सु॰ नि॰ 380; *अनवसेसं अवेच्च पटिविज्झित्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.90; – **प्पसन्न** त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अवेत्यप्रसन्न], गम्भीर ज्ञान पर आधारित प्रसन्नता या श्रद्धा से युक्त – **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये केचि, भिक्खवे, मयि अवेच्चप्पसन्ना,* अ॰ नि॰ 3(2).99; *अवेच्चप्पसन्नाति अचलप्पसादेन सम्पन्ना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.315; – **प्पसाद** पु॰, अचल श्रद्धा या ज्ञान पर आधारित श्रद्धा – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुद्धे अवेच्चप्पसादेन समन्नागता,* दी॰ नि॰ 2.160; *अवेच्चप्पसादेनाति अचलप्पसादेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.214; *धम्मे, अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो,* म॰ नि॰ 1.59; – **प्पसादे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सङ्घे अवेच्चप्पसादे समादपेतब्बा निवेसेतब्बा,* अ॰ नि॰ 1(1).253.

अवेति अव + √इ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवेति], **शा॰ अ॰** नीचे तक उतर कर जाता है, **ला॰ अ॰** जानता है, ठीक से समझ लेता है – *यो,वेतीति यो अवेति अवगच्छति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.146; *यो अवेति जानातीति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.229.

अवेदन त्रि॰, ब॰ स॰ [अवेदन], किसी भी प्रकार की वेदना या अनुभव से रहित, दुःख की वेदना का अनुभव न करने वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं किं मञ्ञसि, ... अयं सो अरूपी अवेदनो असञ्ञी ... तथागतोति समनुपस्ससी'ति,* स॰ नि॰ 2(1).102; – **क / निक** ब॰ स॰ – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असञ्ञसत्ता देवा अहेतुका ... अफस्सका अवेदनका'ति वचनतो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 60.

अवेदनीय त्रि॰, √विद के प्रेर॰ के सं॰ कृ॰ का **निषे॰** [अवेदनीय], अनुभव नहीं किए जाने योग्य, अनुभव में नहीं आने योग्य, विपाक के रूप में वेदना को उत्पन्न न करने वाला – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं कम्मं अवेदनीयं,* अ॰ नि॰ 3(1).197; *अवेदनीयन्ति विपाकवेदनाय अदायकं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.263.

अवेदयित त्रि॰, √विद के प्रेर॰ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अवेदित], वेदना से मुक्त, दुखात्मक अनुभव से मुक्त – **सुख** नपुं॰, कर्म॰ स॰, वेदना या अनुभव का अविषयीभूत सुख – **खं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निरोधो अवेदयितसुखं नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.82; *इति वेदयितसुखं वा होतु अवेदयितसुखं वा,* तदे॰; *सुखं उपलब्भतीति वेदयितसुखं वा अवेदयितसुखं वा उपलब्भति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.83.

अवेदि √विद का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अवेदीत्], जाना, समझा – *यतो खयं पच्चयानं अवेदी'ति,* उदा॰ 70; *इममतिमधुरं अवेदि यो यो ... सकलं अवेदि सो सो,* अभि॰ अव॰ 74; – **देसि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तथेव त्वं अवेदेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.372; *तथेव त्वं अवेदेसीति तथेव त्वं अञ्ञासि,* तदे॰; – **वेदुं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न चापि मे अप्पियतं अवेदुं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.29; – **वेदयुं** प्रेर॰, अद्य॰ का प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *पङ्कोति हि नं अवेदयुं,* थेरगा॰ 495.

अवेधधम्म त्रि॰, ब॰ स॰ [अवेध्यधर्मन्], अचल या दृढ़-स्वभाव वाला, दूसरों से प्रभावित न होने वाला, अकम्पनीय – **म्मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहुस्सुतो होति अवेधधम्मो,* सु॰ नि॰ 324; *अवेधधम्मोति अट्ठहि लोकधम्मेहि अकम्पनियसभावो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.58.

अवेधमान त्रि॰, √विध का वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, **शा॰ अ॰** अकम्पमान, **ला॰ अ॰** अविचलित, अप्रभावित – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निन्दापसंसासु अवेधमानं,* सु॰ नि॰ 215; *निन्दापसंसासु पटिघानुनयवसेन अवेधमानं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.220.

अवेभङ्गिय / अवेभङ्गिक त्रि॰, वि + √भज के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अविभाज्य], अविभाज्य, विभाजित करके नहीं रखने योग्य, अविभाजित – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चातुद्दिसस्स सङ्घस्स अविस्सज्जिकं अवेभङ्गिकन्ति,* महाव॰ 397; – **ङ्गियानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चिमानि ... अवेभङ्गियानि न विभजितब्बानि,* चूळव॰ 302.

अवेर[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अवैर], वैरभाव से मुक्त, द्वेष-भाव न रखने वाला – **रं[1]** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथाहं दिट्ठेव धम्मे अवेरं अब्यापज्झं अनीघं सुखिं अत्तानं परिहरामीति,* अ॰ नि॰ 1(1).222; – **रं[2]** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवेरं अब्यापज्जं मेत्तचित्तं भावेति,* दी॰ नि॰ 1.151; *अवेरन्ति दोसवेरविरहितं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.266; – **रेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महग्गतेन अप्पमाणेन अवेरेन अब्यापज्जेन फरित्वा विहरति,* दी॰ नि॰ 3.36; – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अवेरा अदण्डा असपत्ता ... विहरेमु,* दी॰ नि॰ 2.203; *अवेराति अप्पटिघा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.278.

अवेर[2] नपुं॰, निषे॰ तत्पु॰ स॰ [अवैर], वैर का अभाव, द्वेष का अभाव, मैत्रीभाव – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तानं अभयं देति अवेरं देति,* अ॰ नि॰ 3(1).77; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवेरेन च सम्मन्ति ... सनन्तनो,* ध॰ प॰ 5; *अवेरेन च सम्मन्तीति ... अवेरेन खन्तिमेत्तोदकेन ... अभावं गच्छन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.32; – **चित्त** ब॰ स॰ [अवैरचित्त], वैरभाव या द्वेष-भाव से मुक्त चित्त वाला, मैत्रीभाव से परिपूर्ण चित्त वाला – **त्तो** पु॰,

प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सवेरचित्तो वा अवेरचित्तो वा'ति अवेरचित्तो,* दी॰ नि॰ 1.223; *अरियसावको एवं अवेरचित्तो एवं ... विसुद्धचित्तो,* अ॰ नि॰ 1(1).221; *अवेरचित्तोति एवं अकुसलवेरस्स च ... नत्थिताय अवेरचित्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177.

अवेरी त्रि॰, वेरी का निषे॰ [अवैरिन्], वैरभाव या द्वेषभाव न रखने वाला – **रिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वेरिनेसु अवेरिनो ... विहराम अवेरिनो,* ध॰ प॰ 197; *अब्यापज्जा विहरेमु अवेरिनो'ति इति,* दी॰ नि॰ 2.203; *केनचि सद्धिं अवेरिनो विहरेय्याम,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.278.

अवेला स्त्री॰, वेला का निषे॰ [अवेला], अनुपयुक्त समय, अनिर्धारित समय, असमय – *अज्ज ताव अवेला,* जा॰ अट्ठ॰ 6.179; – **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चिन्तेत्वा अवेलाय अन्तमसो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.213; *वेलाय वा अवेलाय वा ... आगमिस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.93; – **यं** उपरिवत् – *यस्स हि अवेलायं उद्धुमातकनिमित्तट्ठानं गन्त्वा ... ओलोकन्तस्सेव तं मतसरीरं ... उपट्ठाति,* विसुद्धि॰ 1.179; *अवेलायन्ति सज्झावेलादि अयुत्तवेलायं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.196.

अवेहासकुटी स्त्री॰, कर्म॰ स॰, भूमि पर (आकाश के नीचे) निर्मित कुटी या पर्णशाला – **टिया** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवेहासकुटिया सीसघट्टाय हेट्ठा अपरिभोगं होति,* पाचि॰ 68; *अवेहासकुटियाति भूमियं कतपण्णसालादिसु अनापत्ति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 43.

अवेहासविहार पु॰, कर्म॰ स॰, भूमि पर निर्मित विहार – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवेहासविहारे वा,* विन॰ वि॰ 1103.

अवोक्कमन्त त्रि॰, वि + अव + √कम के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अव्यपक्राम्यत्], विशेष रूप से (सही मार्ग का) अपक्रमण या उल्लंघन नहीं कर रहा, सन्मार्ग या उत्तम आचरण की उपेक्षा नहीं कर रहा – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सच्चवाचाय अवोक्कमन्तो, सम्मादिट्ठिया अवोक्कमन्तो, अरिया अट्ठङ्गिका मग्गा अवोक्कमन्तो,* महानि॰ 320; *अवोक्कमन्तो समया सका च,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.2; – **न्तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सकसमयं अवोक्कमन्तेन,* विसुद्धि॰ 2.151; ... *कथावत्थुम्हि पटिक्खित्ते पुग्गलवादादिके च वदन्तो सकसमयं वोक्कमति नाम, तथा अवोक्कमन्तेन,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.226.

अवोक्कम्म अ॰, वि + अव + √कम के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [अव्यपक्रम्य], अपक्रमण नहीं करके, अपने सिद्धान्त, मार्ग या उत्तम आचरण से नहीं हटकर – *सच्चा अवोक्कम्म मुनि,* सु॰ नि॰ 952; *पुब्बे वुत्ता तिविधापि सच्चा अवोक्कम्म मोनेय्यप्पत्तिया मुनीति सङ्ख्यं गतो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.260; *उच्चनीचकुलं अवोक्कम्म पिण्डाय चरति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.139; – **चारी** त्रि॰, घरों को चुने बिना एक-एक घर में क्रमशः भिक्षाटन करने वाला – **री** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सपदानचारीति अवोक्कम्मचारी अनुपुब्बचारी,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.94.

अब्बोच्छिन्न त्रि॰, वि + अव + √छि के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अव्यवच्छिन्न], व्यवधान-रहित, निरन्तर रूप में विद्यमान – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्जापि तु अब्बोच्छिन्नो पुब्बाचरियनिच्छयो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 2.

अवोदात त्रि॰, वोदात का निषे॰ [अव्यवदात], अस्वच्छ, उज्वलता से रहित, मलिन, धूमिल – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अवीवदाताति अवोदाता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.216; *अवीवदाताति ... अवोदाता अपरिसुद्धा संकिलिट्ठा,* महानि॰ 52; तुल॰ अवीवदात (ऊपर); – **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्यवदातधर्मन्], अपवित्र या मलिन प्रकृति वाला – *असुद्धिधम्मो ... अवोदातधम्मोति,* महानि॰ 222.

अवोसितत्त / अब्योसितत्त नपुं॰, वि + अव + √सो के भू॰ क॰ कृ॰ के भाव॰ का निषे॰ [अव्यवसितत्व], पूर्णता (पूर्ण विमुक्ति) की अवस्था को प्राप्त न करना, अर्हत्त्व फल की अप्राप्ति की अवस्था – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्योसितत्ता हि भवाभवेसु,* थेरगा॰ 784; *अब्योसितत्ता हीति अनधिगतनिट्ठत्ता,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.253.

अवोहारकुसल त्रि॰, वोहारकुसल का निषे॰ [अव्यहारकुशल], व्यापार आदि व्यावहारिक कार्यों में अकुशल – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अवोहारकुसला इमे गामिका,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 248.

अव्यग्ग स्त्री॰, व्यग्ग का निषे॰ [अव्यग्र], व्यग्रता या घबराहट से रहित – **ग्गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्यग्गो मनो यस्स,* सद्द॰ 1.122; – **ता** स्त्री॰, अव्यग्ग का भाव॰ [अव्यग्रता], बेचैनी या व्याकुलाहट का अभाव – *अब्यग्गता निक्कमनञ्च काले,* जा॰ अट्ठ॰ 3.6; – **निमित्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अव्यग्रनिमित्त], मानसिक बेचैनी के उपशमन हेतु समाधि में चित्त की एकाग्रता हेतु गृहीत आलम्बन – **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समथनिमित्तं अब्यग्गनिमित्तं,* स॰ नि॰ 3(1).125; – **मनस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्यग्रमनस], स्थिर या एकाग्र चित्त वाला, चञ्चलता से मुक्त चित्त वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्यग्गमनसो नरो,* स॰ नि॰ 1(1).115;

अब्यग्गमनसोति एकग्गचित्तो, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.144; – **मानस** त्रि॰, ब॰ स॰, उपरिवत् – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्यग्गमानसो नरो,* अ॰ नि॰ 1(1).155.

अव्यञ्जन / अब्यञ्जन त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्यञ्जन], ध्वनियों के कारण अस्पष्ट, असुस्पष्ट – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभावतो अब्यञ्जना नाम देसना,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).104.

अव्यत्त / अब्यत्त त्रि॰, वि + √अञ्ज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अव्यक्त], **क.** मूर्ख, अकुशल, अज्ञानी, अविवेकी – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बालो होति अब्यत्तो ... अनपदानो,* महाव॰ 419; **त्तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्यत्तेन च सामञ्ञं,* स॰ नि॰ 1(1).9; *अब्यत्तेनाति बालेन,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.33; – **त्तस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बालस्स अब्यत्तस्स भणितेन,* पु॰ प॰ 141; – **त्ता**[1] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपासिका बाला अब्यत्ता ... अम्मकरञ्ञा,* अ॰ नि॰ 2(2).63; – **त्ता**[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बाला अब्यत्ता ... परेसं वण्णं वा,* म॰ नि॰ 2.323; – **त्ता** स्त्री॰, भाव॰ [अव्यक्तता], मूर्खता, अकुशलता – **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *त्वं अत्तनो अब्यत्तताय बालभावेन,* जा॰ अट्ठ॰ 1.473; **ख.** अस्पष्ट, धूमिल – **सद्द** पु॰, कर्म॰ स॰ [अव्यक्तशब्द], अस्पष्ट अर्थ वाला शब्द, निरर्थक शब्द – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हिक्क अव्यत्तसद्दे अव्यत्तसद्दो अविभावितत्थसद्दो निरत्थकसद्दो च,* सद्द॰ 2.326; – **द्दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सळ अव्यत्तसद्दे सळति साळिको साळिका,* सद्द॰ 2.461; – **त्तक्खर** त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्यक्ताक्षरक], असुस्पष्ट अक्षरों या ध्वनियों वाला – **क्खरं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अव्यत्तक्खरं तिक्खत्तुं ... गज्जि,* उदा॰ अट्ठ॰ 54; – **राग** त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्यक्तराग], रक्तिम, रक्ताभ, ललछौंहा – **गे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरुणो रंसिभेदे चाव्यत्तरागे च लोहिते,* अभि॰ प॰ 980; – **विलाप** पु॰, कर्म॰ स॰ [अव्यक्तविलाप], अस्पष्ट स्वर में विलाप या रोना-धोना – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्ययतं विलपसीति त्वं अब्यत्तविलापं विलपसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.473.

अव्यथ / अब्यथ पु॰, [अव्यथ, त्रि॰], पीड़ा, विपत्ति या थकावट का अभाव, अनुत्पीड़न – **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थब्यापत्ति अब्यथो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.411; ... *तदा अब्यथो अकिलमनं चतुत्थं साधु,* तदे॰.

अव्यभिचारवोहार / अब्यभिचारवोहार[1] पु॰, कर्म॰ स॰ [अव्यभिचारव्यवहार], सर्वथा युक्तिसङ्गत व्यावहारिक वचन-प्रयोग या अभिव्यक्ति **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मे च सभावनिरुत्ति अब्यभिचारवोहारो अभिलापो,* उदा॰ अट्ठ॰ 109.

अव्यभिचारिवोहार / अब्यभिचारिवोहार[2] पु॰, कर्म॰ स॰ [अव्यभिचारिव्यवहार], निर्दुष्ट या युक्तियुक्त तार्किक स्थापना, दोषरहित लक्षण – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मे च या सभावनिरुत्ति अब्यभिचारिवोहारो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.4.

अव्यय[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्यय], **शा॰ अ॰** अपरिवर्तनशील, अविनाशी, अखण्डित, **ला॰ अ॰** (व्याकरण में), ऐसा शब्द, जिसके मूल स्वरूप में लिंग, विभक्ति या वचन के कारण कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सदिसं तीसु लिङ्गेसु सब्बासु च विभत्तिसु, वचनेसु च सब्बेसु यन्न ब्येति तदव्ययं,* सद्द॰ 1.299 में उदधृत; – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तानि वुच्चन्ति अव्यया,* सद्द॰ 3.746; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [अव्ययत्व], अव्यय अथवा विकार-रहित होना – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अव्ययत्ते पन, ...,* सद्द॰ 2.451.

अव्यय[2] **/ अब्यय** पु॰, व्यय का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अव्यय], व्यय या हानि का अभाव, अविकार, अविनाश – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ विशे॰ – *मुधाति अब्ययेन काकणिकमत्तम्पि ब्ययं अकत्वा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 146; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.247; – **पद** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अव्ययपद], अव्यय के रूप में प्रयुक्त पद, ऐसा पद, (शब्द) जिसका प्रयोग यदा-कदा 'अव्यय' के रूप में किया जाता हो – **दं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एत्थ अत्थी ति अव्ययपदमिव,* सद्द॰ 2.451; – **दानि** ब॰ व॰ – *एवं अव्ययपदानि,* सद्द॰ 3.321; – **पदसदिस** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अव्ययपदसदृक्], उपरिवत् – **सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको एकाया ति इदं अव्ययपदसदिसं,* सद्द॰ 1.264; – **पुब्बक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्ययपूर्वक], ऐसा समास, जिसके पूर्वपद में कोई अव्ययपद रहे – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अव्ययपुब्बको अव्ययीभावो अव्ययपुरेचरो अव्ययप्पधानो ... होति,* सद्द॰ 3.746.

अव्ययत नपुं॰, भाव॰ [अव्यक्तत्व], अस्पष्ट, अविशद – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, असुस्पष्ट रूप से – *अब्ययतं विलपसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.473; *अब्ययतं विलपसीति त्वं अब्यत्तविलापं विलपसि,* तदे॰; पाठा॰ अब्ययतं.

अव्ययीभाव / अब्ययीभाव पु॰, [अव्ययीभाव], वह समास, जिसका समास से पूर्व का अव्ययभिन्न पद भी समास होने पर अव्यय बना दिया जाए, चार प्रमुख समास भेदों में से एक समास – **सञ्ञो** पु॰, ब॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰

[अव्ययीभावसंज्ञको], अव्ययीभाव नाम वाला - *उपसग्गनिपातपुब्बको समासो अब्ययीभावसञ्ञो होति,* क॰ व्या॰ 321; - **समासो** पु॰, कर्म॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अव्ययीभावसमास], अव्ययीभाव नाम वाला समास - *सो अब्ययीभावसमासो नपुंसकलिङ्गो व दट्ठब्बो,* क॰ व्या॰ 322.

अब्यसनीयता स्त्री॰, व्यसनीय के भाव॰ का निषे॰, लम्पटता या कामुकता का न होना, दुराचारमयी प्रवृत्ति का अभाव - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनाकुला कम्मन्ता नाम कालञ्ञुताय ... अब्यसनीयताय च ... आकुलभावविरहिता ... कम्मन्ता,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 111.

अव्याकत / अब्याकत त्रि॰, वि + आ + √कर के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अव्याकृत], **क**. अनिर्णीत, अव्याख्यात, निश्चित उत्तर दिए बिना ही छोड़ दिया गया, अनुत्तरित - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मया अब्याकतं-असस्सतो लोको,* दी॰ नि॰ 1.167; - **तानि** ब॰ व॰ - *यानिमानि दिट्ठिगतानि भगवता अब्याकतानि ... पटिक्खित्तानि,* म॰ नि॰ 2.97; **ख**. अनिश्चित प्रकृति वाला (धर्म), जिसे कुशल या अकुशल के सुनिश्चित वर्गों के अन्दर न रखा जा सके, अनियत, अनेकांशिक - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दिट्ठिगतं अब्याकतं'न्ति,* कथा॰ 407; *अविपाकं अब्याकतं,* अभि॰ अव॰ 2; - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कुसलो फस्सो अकुसलो फस्सो अब्याकतो फस्सो,* महानि॰ 37; - **तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अब्याकतेन मग्गेन भवितब्बं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 272; - **ता**[1] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अब्याकता वेदना सुखुमा,* विभ॰ 4; - **ता**[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *कतमे धम्मा अब्याकता,* ध॰ स॰ 431; *न ब्याकताति अब्याकता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 87; *अविपाकलक्खणा अब्याकता,* तदे॰; - **ते** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *यावता अब्याकते धम्मे* ..., पटि॰ म॰ 120; - **तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अब्याकतानं पर अनुप्पत्तिट्ठानस्स अभावा,* पट्ठा॰ अट्ठ॰ 335; - **कथा** स्त्री॰, कथा॰ के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, कथा॰ 407-408; - **पदनिद्देसो** पु॰, तत्पु॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अव्याकृतपदनिर्देश], 'अव्याकत' शब्द का प्रयोग या उल्लेख - *अब्याकतपदनिद्देसो उत्तानत्थोयेवाति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 376; - **पुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अव्याकृतपृच्छा], अव्याकृत धर्मों के विषय में प्रश्न - *तिस्सो पुच्छा-कुसलपुच्छा, अकुसलपुच्छा, अब्याकतपुच्छा,* महानि॰ 251; *अब्याकतपुच्छाति तदुभयविपरीतधम्मपुच्छा,* महानि॰ अट्ठ॰ 302; - **मूल क**. नपुं॰, तत्पु॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अव्याकृतमूल], अव्याकृत धर्मों का मूल आधार - *अलोभो अब्याकतमूलं ... पे॰ ... अदोसो अब्याकतमूलं ... इमे धम्मा अब्याकता,* ध॰ स॰ 576; **ख**. त्रि॰, ब॰ स॰, अनिश्चित मूल वाला, ऐसा धर्म, जिसका मूल आधार कुशल या अकुशल के रूप में नियत न रहे - **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ये केचि अब्याकता धम्मा, सब्बे ते अब्याकतमूला,* यम॰ 1.5; - **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(2).211-235; - **वत्थु** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अव्याकृतवस्तु], ऐसा धर्म, जिसे बुद्ध ने 'कुशल' या 'अकुशल' जैसे नियत वर्गों में नहीं रखा है - **त्थूसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सुतवतो अरियसावकस्स ... अब्याकतवत्थूसु* ..., अ॰ नि॰ 2(2).211; *अब्याकतवत्थूसूति एकंसादिवसेन अकथितवत्थूसु,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.173; - **विपाक** त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्याकृतविपाक], ऐसा धर्म, जिसका विपाक 'कुशल' या 'अकुशल' वर्गों में सुनिश्चित न रहे - *अब्याकतं विपाकं किरियं रूपं निब्बानन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 300; पाठा॰ अव्याकतविपाकं; - **संयुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ का एक संयुक्त, स॰ नि॰ 2(2).344; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.150-152; - **हेतु** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अव्याकृतहेतु], अव्याकृत धर्मों का कारण - *तयो अब्याकतहेतू* ..., ध॰ स॰ 1059.

अव्याकरणधम्म / अब्याकरणधम्म त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्याकरण-धर्मन्], नियत रूप में धर्मों की व्याख्या न करने की प्रकृति वाला - **म्मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं पस्सं एवं अब्याकरणधम्मो होति,* अ॰ नि॰ 2(2).211.

अव्याकुल त्रि॰, व्याकुल का निषे॰ [अव्याकुल], व्याकुलता से रहित, अविस्खलित, स्थिर, शान्त - **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *पदनिक्खेपो च अब्याकुला होन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235.

अव्यादिण्ण / अब्यादिण्ण त्रि॰, वि + आ + √दा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अव्यादत्त], नहीं छितराया या बिखरा हुआ, अविक्षिप्त, नहीं फैला हुआ - **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अविसटो अब्यादिण्णो दूरङ्गमो ... हारहारी च,* ..., अ॰ नि॰ 2(1).60.

अव्याधि / अब्याधि क. त्रि॰, निषे॰ ब॰ स॰ [अव्याधि], रोग से मुक्त व्याधिरहित, स्वस्थ, नीरोग, कुशल-क्षेम से परिपूर्ण - **धि** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अब्याधि विसदो होमि,* अप॰ 1.347; - **धिं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अब्याधिं अनुत्तरं योगक्खेमं निब्बानं,* अ॰ नि॰ 1(2).284; **ख**. स्त्री॰, निषे॰ तत्पु॰ स॰, रोग का अभाव, स्वस्थता - **धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अब्याधि अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 11; - **क** त्रि॰, ब॰ स॰ [अव्याधिक], बीमारी से रहित, स्वस्थ - **का** पु॰, प्र॰

वि., ब. व. - *अब्याधिका अरोगा मम सन्तिके,* मि. प. 233.

अब्यापज्ज / अव्यापज्झ / अव्याबज्झ 1.क. त्रि., वि + आ + √पद या √बाध के सं. कृ. का निषे. [अव्याबाध्य / अव्यापद्य], हानि न पहुंचाने योग्य, क्षति नहीं करने योग्य, दुखरहित, बाधारहित - **ज्जो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अयं सत्तो अरोगो होतु अब्यापज्जो'ति एवं तस्मिं मेत्ताभावना कातब्बा,* जा. अट्ठ. 3.82; - **ज्जं** उपरिवत् - *अब्यापज्जं सुखं लोकन्ति ... अब्यापज्जं निद्दुक्खं,* इतिवु. अट्ठ. 69; - **ज्झं** द्वि. वि., ए. व. - *अब्यापज्झं सुखं लोकं,* इतिवु. 13; 1. **ख**. हानि न पहुंचाने वाला, क्षति नहीं करने वाला, हिंसक मनोभाव से रहित - **ज्जो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सब्यापज्जाय पजाय अब्यापज्जो विहरति,* अ. नि. 2(2).7; - **ज्झं**[1] द्वि. वि., ए. व., क्रि. विशे. - *अब्याबज्झं सिया एवं,* जा. अट्ठ. 7.180; - **ज्झं**[2] स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *अब्याबज्झंयेव तस्मिं समये वेदनं वेदेति,* म. नि. 1.124; - **ज्झा** पु., प्र. वि., ब. व. - *द्वे धम्मा अब्याबज्झा'ति,* अ. नि. 1(1).118; - **ज्झेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. - *अवेरेन अब्याबज्झेन फरित्वा विहासि,* म. नि. 2.273; 2.**क**. नपुं., भाव., दुख से मुक्ति की अवस्था, दुखविमुक्ति (निर्वाण), क्षेम की अवस्था - *दुक्खक्खयोव्यापज्झं च विवट्टं खेम-केवलं,* अभि. प. 8; - **ज्जं** प्र. वि., ए. व. - *अव्यापज्जं सुखं लोके,* उदा. 79; *अब्यापज्जन्ति अकुप्पनभावो ...,* उदा. अट्ठ. 80; - **ज्झं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अवेरं दत्वा अव्याबज्झं दत्वा,* अ. नि. 3(1).77; 2.**ख**. पु., उपरिवत् - **ज्जो** प्र. वि., ए. व. - *अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो,* ध. स. 33; *कोधदुक्खपटिपक्खतो न ब्यापज्जोति अब्यापज्जो,* ध. स. अट्ठ. 194; - **गामी** त्रि., [अव्याबाध्यगामिन्], दुख से विमुक्ति की अवस्था (निर्वाण) की ओर ले जाने वाला - **मिं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *देसेस्सामि अब्यापज्झगामिञ्च मग्गं,* स. नि. 2(2).342; - **चित्त** त्रि., ब. स. [अव्याबाध्यचित्त], हिंसक मनोवृत्ति से मुक्त चित्त वाला, द्वेषमुक्त चित्तवृत्ति वाला - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अरियसावको एवं ... अब्यापज्झचितो ... विसुद्धचित्तो,* अ. नि. 1(1).221; *अब्याबज्झचित्तोति ... निद्दुक्खचित्तो,* अ. नि. अट्ठ. 2.177.

अव्यापज्जमान / अब्यापज्जमान त्रि., वि + आ + √बाध के वर्त. कृ. का निषे. [अव्यापद्यमान / अव्याबाधमान], व्यावाधित या रूपान्तरित नहीं होता हुआ, अपरिवर्तनीय, अनेक स्वरूपों को ग्रहण नहीं करने वाला - **नो** पु., प्र. वि., ए. व. - *यथाहं आकासोव अब्यापज्जमानो,* सु. नि. 1071; *अब्यापज्जमानोति नानप्पकारतं अनापज्जमानो,* सु. नि. अट्ठ. 2.283.

अव्यापज्झत्थिक त्रि., ब. स. [अव्यावाधार्थिक], स्वास्थ्य या नैरोग्य को लाने वाला - **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *अव्यापज्झत्थिकं सेवे भेसज्जं स्नेहवज्जितो,* सद्धम्मो. 397.

अव्यापज्झन / अब्यापज्झन नपुं., व्यापज्झन का निषे. [अव्यावाध], पीड़ा या दुख का अभाव, हानि का अभाव, किसी तरह की बाधा-विपत्ति का न होना - **ज्झनं** प्र. वि., ए. व. - *अब्यापज्झनं कस्सचि अदुक्खनं अब्यापज्झो,* इतिवु. अट्ठ. 130.

अव्यापज्झपरम / अब्यापज्झपरम त्रि., ब. स. [अव्यावाधापरम], बाधामुक्त या दुखरहित अवस्था में परिणत होने वाला / वाली - **मं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अब्याबज्झपरमाहं ... वेदनानं अस्सादं वदामि,* म. नि. 1.124; - **ता** स्त्री., भाव., दुख से विमुक्ति में परिणत होने की अवस्था - **य** च. वि., ए. व. - *यावदेव उप्पन्नानं वेय्याबाधिकानं वेदनानं पटिघाताय, अब्याबज्झपरमताय,* म. नि. 1.14.

अव्यापज्झरत / अब्यापज्झरत त्रि., तत्पु. स. [अव्यापादरत], अव्यापाद या अद्वेष की भावना को पाने हेतु लगा हुआ, अद्वेष-भाव के सेवन में रत - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तथागतो अब्यापज्झरतो,* इतिवु. 24; *अब्यापज्झे रतो सेवनवसेन निरतोति अब्यापज्झरतो,* इतिवु. अट्ठ. 130.

अव्यापज्झलक्खण / अब्यापज्झलक्खण त्रि., ब. स. [अव्यापादलक्षण], अहिंसा, अद्वेष या मैत्री-भावना के लक्षण से युक्त - *अव्यापज्झलक्खणो अदोसो,* नेत्ति. 25.

अव्यापज्झसुख नपुं., तत्पु. स. [अव्यापादसुख], अविहिंसा-भाव या अद्वेष की मनोवृत्ति से उत्पन्न सुख - **खं** द्वि. वि., ए. व. - *अवेरं अभयञ्चापि अव्यापज्झसुखम्पि च,* सद्धम्मो. 338; *अव्यापज्झसुखञ्चापि ... ब्रवि,* सद्धम्मो. 339.

अव्यापज्झाधिमुत्त / अब्यापज्झाधिमुत्त त्रि., ब. स. [अव्यापादाधिमुक्त], अद्वेष या अविहिंसा के मनोभाव को प्रत्यक्ष रूप से देख रहा अर्हत्, राग, द्वेष एवं मोह के क्षय को स्वयं अनुभव कर रहा (अर्हत्) - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अब्यापज्झाधिमुत्तो होति,* महाव. 255; ... *खीणासवो, भन्ते, ... खया रागस्स ... खया दोसस्स ... खया मोहस्स वीतमोहत्ता अब्यापज्झाधिमुत्तो होति,* महाव. 255-56; *अब्यापज्झाधिमुत्तोति अब्यापज्जं अरहत्तं व्याकरोतीति अत्थो,* महाव. अट्ठ. 345; - **त्तस्स** पु., ष. वि., ए. व. -

अब्यापज्जाधिमुत्तस्स उपादानक्खयस्स च, महाव. 257.

अव्यापज्झाराम / अब्यापज्झाराम त्रि., [अव्यापादाराम], अव्यापाद या अद्वेष में आनन्द अनुभव करने वाला, दुःख से पूर्ण विमुक्ति की अवस्था में रमने वाला – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अब्यापज्झारामो होति,* अ. नि. 2(2).132; *अब्यापज्झो निद्दुक्खभावे रमतीति अब्यापज्झारामो,* अ. नि. अट्ठ. 3.141; *अब्यापज्झारामो ... तथागतो अब्यापज्झरतो,* इतिवु. 24.

अव्यापन्न / अब्यापन्न त्रि., वि + आ + √पद के भू. क. कृ. का निषे. [अव्यापन्न], **क.** वह, जो दुर्भाग्य, विपत्ति या दुख से पीड़ित नहीं है, वह, जो विक्षिप्त या अस्त-व्यस्त नहीं है, **ख.** द्वेष या हिंसा के भाव से मुक्त – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अब्यापन्नो सदा सतो,* अ. नि. 1(2).37; – **न्नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *चित्ते गहपति, अब्यापन्ने कायकम्मम्पि अब्यापन्नं होति,* अ. नि. 1(1).297; – **चित्त** त्रि., ब. स. [अव्यापन्नचित्त], व्यापाद या हिंसामयी वृत्ति से मुक्त शुद्ध चित्त वाला – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *ब्यापादपदोसं पहाय अब्यापन्नचित्तो विहरति,* दी. नि. 1.63; – **चेतस** त्रि., ब. स. [अव्यापन्नचेतस्], उपरिवत् – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अप्पतिट्ठितचित्तो अदीनमानसो अब्यापन्नचेतसो, ...,* स. नि. 3(1).90; *अब्यापन्नचेतसोति दोसवसेन अपूतिचित्तो,* स. नि. अट्ठ. 3.182.

अव्यापाद / अब्यापाद पु., वि + आ + √पद के क्रि. ना. का निषे. [अव्यापाद], अद्वेष, अहिंसक मनोभाव, द्वेष या हिंसा के अकुशल मनोभावों का अभाव, मैत्री-भावना – **दो** प्र. वि., ए. व. – *अदुस्सितत्तं अब्यापादो ...,* ध. स. 33; *अब्यापादो अविहिंसा, विवेको यस्स आवुधं,* स. नि. 3.16; *अब्यापादोति मेत्ता च मेत्तापुब्बभागो च,* स. नि. अट्ठ. 3.158; – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *अब्यापादं ... मनसिकरोतो अब्यापादे चित्तं ... विमुच्चति,* दी. नि. 3.191; – **देन** तृ. वि., ए. व. – *अब्यापादेन मेत्तापि ...,* अभि. अव. 18; – **खन्ति** स्त्री., तत्पु. स. [अव्यापादक्षान्ति], द्वेषभाव से मुक्त क्षान्ति या सहनशीलता का भाव – *अब्यापादखन्ति ब्यापादेन सुञ्ञा,* पटि. म. 358; – **धातु** स्त्री., तत्पु. स., अद्वेष या मैत्रीभावना से प्रतिसंयुक्त तर्क, वितर्क, संकल्प आदि – *अब्यापादपटिसंयुत्तो तक्को वितक्को ... सम्मासङ्कप्पो – अयं वुच्चति"अब्यापादधातु",* विभ. 97; – **पच्चय** पु., तत्पु. स. [अव्यापादप्रत्यय], अद्वेष का कारण – **या** प. वि., ए. व. – *अब्यापादपच्चया च दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति,* म. नि. 1.396; – **पटिलाभ** पु., तत्पु. स. [अव्यापादप्रतिलाभ], अद्वेषभाव की प्राप्ति या लाभ – **भो** प्र. वि., ए. व. – *अब्यापादपटिलाभो ब्यापादेन सुञ्ञो,* पटि. म. 357; – **पटिवेध** पु., तत्पु. स. [अव्यापादप्रतिवेध], अद्वेष के विषय में अन्तर्दृष्टि – **धो** प्र. वि., ए. व. – *अब्यापादप्पटिवेधो ब्यापादेन सुञ्ञो,* पटि. म. 357; – **परिग्गहो** पु., तत्पु. स., प्र. वि., ए. व. [अव्यापादपरिग्रह], अद्वेष-भाव का पूर्ण रूप से ग्रहण – *अब्यापादपरिग्गहो ब्यापादेन सुञ्ञो,* पटि. म. 357; – **परियोगाहण** नपुं., तत्पु. स. [अव्यापादपर्यवगाहन], अद्वेषभाव में पूर्ण रूप से निमग्न होना या उसमें डूब जाना – **णं** प्र. वि., ए. व. – *अब्यापादपरियोगाहणं ब्यापादेन सुञ्ञं,* पटि. म. 358; – **वितक्क** पु., तत्पु. स. [अव्यापादवितर्क], अद्वेष के विषय में मानसिक चिन्तन – **क्को** प्र. वि., ए. व. – *अब्यापादवितक्को ... निब्बानसंवत्तनिको,* इतिवु. 60; – **संकप्प** पु., तत्पु. स. [अव्यापादसङ्कल्प], अद्वेष या मैत्रीभाव के लिए लिया गया दृढ़-संकल्प – **प्पो** प्र. वि., ए. व. – *ब्यापादतो निस्सटोति अब्यापादसङ्कप्पो,* विभ. अट्ठ. 110; – **सञ्ञा** स्त्री., तत्पु. स. [अव्यापादसंज्ञा], अद्वेष के विषय में संज्ञास्तरीय ज्ञान – *अब्यापादधातुं भिक्खवे, पटिच्च उप्पज्जति अब्यापादसञ्ञा,* स. नि. 1(2).134; – **सहगत** त्रि., तत्पु. स., अद्वेष के साथ जुड़ा हुआ – **तेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *अब्यापादसहगतेन चेतसा विहरति,* म. नि. 3.98; – **दाधिट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [अव्यापादाधिष्ठान], अद्वेष के विषय में चेतना, अद्वेष या मैत्री-भावना के विषय में दृढ़-संकल्प – **नं** प्र. वि., ए. व. – *अब्यापादाधिट्ठानं ब्यापादेन सुञ्ञं,* पटि. म. 358; – **दाधिपतत्त** नपुं., भाव. [अव्यापादाधिपतित्व], अद्वेष-भाव द्वारा सुनिर्धारित या नियन्त्रित होना, अद्वेष-भाव की प्रधानता – **तत्ता** प. वि., ए. व. – *अब्यापादाधिपतत्ता पञ्ञा ब्यापादतो सञ्ञाय विवट्टतीति ...,* पटि. म. 99; – **देसना** स्त्री., तत्पु. स. [अव्यापादेषणा], अद्वेष-भाव की तलाश – *अब्यापादेसना ब्यापादेन सुञ्ञा,* पटि. म. 357.

अव्यापार / अब्यापार त्रि., ब. स. [अव्यापार], बिना काम काज वाला, बेकार, निरर्थक, काम में न आने योग्य – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कायदण्डो निरीहो अब्यापारो, तथा वची दण्डो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.41; – **नय** पु., तत्पु. स., चार प्रकार के अर्थनयों (अर्थ-निश्चायक पद्धतियों) में से तृतीय नय – **यो** प्र. वि., ए. व. – *यस्मा पनेत्थ एकत्तनयो नानत्तनयो अब्यापारनयो,* विभ. अट्ठ. 188; –

पच्चुपट्ठान त्रि., ब. स. [अव्यापारप्रत्युपस्थान], क्रिया के अभाव में भी उदित होने वाला / वाली – ना स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अनाभोगरसा अब्यापारपच्चुपट्ठाना पीतिविरागपदट्ठानाति,* ध. स. अट्ठ. 218.

अव्याबाधन / अब्याबाधन नपुं., [अव्यावाधन], बाधा का अभाव, हिंसक मनोवृत्ति या द्वेषभाव का अभाव – **नत्थ** पु., तत्पु. स. [अव्यावाधनार्थ], अद्वेषभाव या बाधा नहीं पहुंचाने का प्रयोजन – *अञ्ञमञ्ञं अब्याबाधनत्थं ... विहरितब्ब'न्ति,* उदा. अट्ठ. 84.

अव्यामिस्स / अब्यामिस्स त्रि., व्यामिस्स का निषे. [अव्यामिश्र], मिलावट से रहित, अपने आप में परिपूर्ण या अखण्ड – **स्सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *केवलो अब्यामिस्सो सकलो ... भिक्खुधम्मो कथितो,* सु. नि. अट्ठ. 2.96; – **ता** स्त्री., भाव. [अव्यामिश्रत्व, नपुं.], व्यामिश्रित नहीं रहना, अपने आप में परिपूर्ण या अखण्ड होना – **ता** प्र. वि., ए. व. – *एवमादीसु अब्यामिस्सता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).30.

अव्यायिक / अब्यायिक त्रि., [अव्ययिक], व्यय नहीं होने वाला, विनष्ट न होने वाला, परिवर्तित न होने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अब्यायिको होति सतं समागमो,* अ. नि. 1(2).58; *अब्यायिको होतीति अविगच्छनसभावो,* अ. नि. अट्ठ. 2.298.

अव्यावट / अवावट / अब्यावट त्रि., वि + आ + √वर अथवा √पुर के भू. क. कृ. का निषे. [अव्यापृत], **क.** व्यापार अथवा क्रिया-कलाप से मुक्त, पापमय काम-काज में नहीं उलझा रहने वाला, बुरे कामों को करने में उत्सुकता न रखने वाला – **टेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *समणेन भवितब्बं अब्यावटेन,* पारा. 202; *समणेन नाम ईदिसेसु कम्मेसु अब्यावटेन अब्यापारेन भवितब्बं,* पारा. अट्ठ. 2.127; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *अब्यावटस्स भद्दस्स, न पापमुपलिम्पती'ति,* जा. अट्ठ. 3.55; *अब्यावटस्साति एवं सन्ते पापकम्मकरणत्थाय अब्यावटस्स उस्सुक्कं अनापन्नस्स,* ..., तदे.; **ख.** उदासीन, तटस्थ, निरपेक्ष – **टो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अनुस्सुक्को अवावटो हुत्वाति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.152; – **टा**[1] पु., प्र. वि., ब. व. – *अब्यावटा तुम्हे होथ तथागतस्स सरीरपूजाय,* दी. नि. 2.107; *तेसं गहणे अब्यावटा भवेय्यामाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).66; – **टा**[2] स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *मातु निवेसने वसिस्सती'ति अब्यावटा अहेसुं,* जा. अट्ठ. 7.33.

अव्यासेक / अब्यासेक त्रि., ब. स., निषे. [बौ. सं. अव्यासेक], **शा. अ.** असेचन, अत्यधिक आसिञ्चन से रहित, दृढ़ प्रभाव से मुक्त, **ला. अ.** अकुशल धर्मों से अलिप्त या पूर्णतया मुक्त, क्लेश-धर्मों की मलिनता से रहित, वेदाग, विशुद्ध – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *चित्तक्खिपीतिजननमब्यासेकमसेचनं,* अभि. प. 697; – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *अब्यासेका अमुखरा,* थेरगा. 926; *अब्यासेकाति सतिविप्पवासाभावतो किलेसब्यासेकरहिता,* थेरगा. अट्ठ. 2.298; – **सुख** नपुं., कर्म. स. [अव्यासेकसुख], विशुद्ध सुख, काम भोगों से प्राप्त सांसारिक सुख से अमिश्रित आध्यात्मिक सुख – **खं** द्वि. वि., ए. व. – *अज्झत्तं अब्यासेकसुखं पटिसंवेदेति,* दी. नि. 1.62; *अब्यासेकसुखन्ति ... अब्यासेकं असम्मिस्सं परिसुद्धं ... पटिसंवेदेतीति,* दी. नि. अट्ठ. 1.150.

अव्हयति / अव्हायति / अव्हेति आ + √हु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आह्वयति], **क.** आह्वान करता है, बुलाता है, निमन्त्रित करता है, उत्तेजित करता है, चुनौती देता है, पुकार कर बुलाता है – *नामसंकित्तनं कत्वा परिदेवनवसेन अव्हायति,* पे. व. अट्ठ. 142; – **न्ति** प्र. पु., ए. व. – *तत्थ अव्हयन्ति वरावरन्ति वरतो वरं नच्चञ्च गीतञ्च करोन्तियो पक्कोसन्ति,* जा. अट्ठ. 7.183; – **न्ता** पु., वर्त. कृ., प्र. पु., ब. व. – *अव्हयन्तेव गच्छन्तं,* जा. अट्ठ. 7.292; – **यस्सु** अनु., म. पु., ए. व. – *अव्हायस्सु मं भद्दन्ते,* जा. अट्ठ. 6.21; *अव्हायस्सूति'एहि पब्बजाही'ति पक्कोसस्सु,* तदे.; – **व्हेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *ओरिमे तीरे ठितो तीरं अव्हेय्य,* दी. नि. 1.221; *अव्हेय्याति पक्कोसेय्य,* दी. नि. अट्ठ. 1.303; – **व्हयेसि** अद्य., म. पु., ए. व. – *ते त्वं दलिद्दो कथमव्हयेसीति,* जा. अट्ठ. 7.165; – **व्हेत्थ** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *अव्हेत्थ यक्खो अविकम्पमानो,* जा. अट्ठ. 7.164; **ख.** देवता का आवाह्न करता है, भूत-प्रेतों को बुलाता है (मन्त्रों द्वारा) – **व्हायन्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. – *अकुसलं भयभेरवं अव्हायन्ति,* म. नि. 1.22; *भयभेरवं अत्तनि ... अव्हायन्ति पक्कोसन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).121; – **व्हयन्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. – *कालेनाति अव्हयन्तो च कालो,* स. नि. अट्ठ. 1.207; **ग.** नामकरण करता है, नाम दे देता है, नाम लेकर पुकारता है – **यन्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. – *अनूननामो इति मव्हयन्ति,* जा. अट्ठ. 7.165; – **यमानो** पु., वर्त. कृ., प्र. पु., ए. व. – *कण्हसिरिव्हयोति ... च अव्हयमानो,* सु. नि. अट्ठ. 2.187;

घ. उत्तेजित करता है, उकसाता है, चुनौती देता है, अवज्ञा करता है - *सो मं रङ्गम्हि अव्हेति,* जा. अट्ठ. 2.211; - **यन्तु** अनु., प्र. पु., ब. व. - *अव्हायन्तु सुयुद्धेन,* जा. अट्ठ. 7.37; *अव्हायन्तूति अव्हायन्तो,* तदे.; - **मानो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. - *भेकोवरञ्ञे अहिमव्हायमानो,* जा. अट्ठ. 4.222; - **व्हयेसि** विधि., म. पु., ए. व. - *ते त्वं दलिद्दो कथमव्हयेसी'ति,* जा. अट्ठ. 7.165; **ङ. विनय के विशेष सन्दर्भ में,** भिक्षुसङ्घ में पुनर्वास प्रदान करता है, वापस बुलाता है - **ब्भेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. - *एकेनपि चे ऊनो वीसतिगणो भिक्खुसङ्घो तं भिक्खुं अब्भेय्य,* पारा. 290; - **ब्भेतब्बो** पु., सं. कृ., प्र. वि., ए. व. - *तत्थ सो भिक्खु अब्भेतब्बो,* पारा. 290; *अब्भेतब्बोति ... अब्भानकम्मवसेन ओसारेतब्बोति वुत्तं होति,* पारा. अट्ठ. 2.193.

अव्हयन नपुं., [आह्वयन], नाम, अभिधान - **नं** प्र. वि., ए. व. - *जिघञ्ञनामव्हयनं दिसं पति,* जा. अट्ठ. 5.397.

अव्हा स्त्री., [आह्वा], नाम, संज्ञा - *सञ्ञा'ख्या'व्हा समञ्ञा चा'भिधानं नाममव्हयो,* अभि. प. 114.

अव्हात / अव्हित / अब्भित त्रि., आ + √व्हे का भू. क. कृ., *केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त* [आहूत], (नाम से) पुकारा गया, बुलाया गया, आमन्त्रित, आहूत - **अन.** पु., निषे., प्र. पु., ए. व. - *अनव्हितो ततो आगा,* जा. अट्ठ. 3.142.

अव्हान नपुं., आ + √व्हे से व्यु., क्रि. ना. [आह्वान], **क.** बुलावा, आमन्त्रण, पुकार, **ख.** नाम, अभिधान - *निवासा'व्हानगहणकिच्छे'सत्थनिवत्तिसु,* अभि. प. 1181; - **नं¹** प्र. पु., ए. व. - *एहीति च अव्हानम्पि लद्धन्ति,* ध. प. अट्ठ. 2.351; *अव्हानं निरत्थकं,* स. नि. अट्ठ. 1.207; - **नं²** द्वि. वि., ए. व. - *अव्हानं नाभिनन्देय्य,* सु. नि. 715; - **नेन** तृ. वि., ए. व. - *सच्चेनेव अव्हानेन नामेन युत्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.297.

अव्हायन नपुं., उपरिवत् [आव्हान], पुकार, बुलावा, आमन्त्रण, नाम, अभिधान - **नं** प्र. वि., ए. व. - *अव्हायनं पक्कोसनं,* सद्द. 2.456; *आमन्तणं अव्हायनं पक्कोसनं,* सद्द. 2.558; - **तो** प. वि., ए. व. - *उपरूपरि अव्हायनतो ये .. धम्मिकसमणब्राह्मणा ...,* जा. अट्ठ. 3.205; - **हेतु** च. वि. के अर्थ में प्रयुक्त अ. [आव्हानहेतु], पुकारने के लिए - *अपि नु तस्स पुरिसस्स अव्हायनहेतु वा ...,* दी. नि. 1.221.

अव्हायिक त्रि., [आह्वायक], पुकारने वाला, निमन्त्रण देने वाला, दूत, सन्देशवाहक, प्रेरणा देने वाला - **यिका** पु., प्र. वि., ब. व. - *अव्हायिका ... ... तम्पि दिसं वदन्ति,* जा. अट्ठ. 3.205; *अव्हायिकाति ... पक्कोसनका,* तदे..

अव्हित त्रि., आ + √व्हे का भू. क. कृ. [आहूत], पुकारा गया, बुलाया गया - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अव्हितो अनव्हितो ततो आगा,* सद्द. 2.456.

√अस¹ / √असु एक धातु, अनेक धातुओं के अन्तर्गत, विविध अर्थों की प्रकाशक [√अस् / √अश], **क.** खाना, भोजन करना - *अस भोजने वुत्तानं फलमस्नाति,* सद्द. 2.501; क्रि. रू. के लिए द्रष्ट.; अस्नाति के अन्त.; **ख.** व्याप्त होना - *असु व्यापने, असुणाति, अस्सु,* सद्द. 2.494; क्रि. रू. के लिए द्रष्ट.; असुणाति के अन्त.; **ग.** होना, अस्तित्व में रहना - *अस भुवि अत्थि, अस,* सद्द. 2.450; क्रि. रू. के लिए द्रष्ट.; अत्थि के अन्त. (ऊपर); घ. फेकना - *असु खेपे,* सद्द. 2.490.

अस² त्रि., निषे. तत्पु. [अस्व / असत्], **क.** स्वामी-रहित, पति-रहित, वह, जिसे कोई भी अपना न कहे - **सा** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *असा लोकित्थियो नाम,* जा. अट्ठ. 5.446; *असाति असतियो लामका,* जा. अट्ठ. 5.447; **ख.** त्रि., **ब. स.** [अस्व], अकिंचन, निर्धन, अपनी निजी संपत्ति से रहित, हीन, तुच्छ - *कामेसु हि असकामा,* थेरीगा. 508; *असकामाति कामा नामेते असन्तो हीना लामकाति अत्थो,* थेरीगा. अट्ठ. 315.

असन्त त्रि., √अस³ के वर्त. कृ. का निषे. [असत्], **शा. अ.** अविद्यमान, वह, जिसका अस्तित्व न हो, **ला. अ. क.** सत्ताहीन, अवास्तविक, मिथ्या, असत्य, **ख.** बुरा, दुष्ट, पापी, असज्जन - **न्तो / न्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *असन्तो निरयं यन्ति,* स. नि. 1(1).22; *असन्तस्स पिया होन्ति,* सु. नि. 94; - **न्ते** पु., द्वि. वि., ब. व. - *हित्वा असन्ते न जहाम सन्ते,* जा. अट्ठ. 4.47; - **न्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *असन्तं वा अज्झत्तं कामच्छन्दं 'नत्थि मे अज्झत्तं कामच्छन्दो'ति पजानाति,* म. नि. 1.78; *असन्तन्ति असमुदाचारवसेन वा पहीनत्ता वा अविज्जमानं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).291; - **सतं** पु., ष. वि., ब. व. - *असतं धम्मं रोचेति,* सु. नि. 94; - **सता / सन्तेन** पु. / नपुं., तृ. वि., ए. व. - *असता च न सोचति,* सु. नि. 956; ध. प. 367; *असता च न सोचतीति अविज्जमानकारणा असन्तकारणा न सोचति,* सु. नि. अट्ठ. 2.260; *असताति असन्तेन,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).22; - **सति / सन्ते** पु. / नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *'सिया नु खो, भन्ते, बहिद्धा असति परितस्सना'ति,* म. नि.

1.189; *बहिद्धा असतीति बहिद्धा परिक्खारविनासे ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).17; – **सब्भि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मानातिमानो च असब्भि सन्थवो,* सु॰ नि॰ 248; *असब्भि सन्थवोति असप्पुरिसेहि सन्थवो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.264; – **सन्तानं / सतं** पु॰/नपुं॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असतं धम्मं रोचेति,* सु॰ नि॰ 94; *असतं धम्मो नाम द्वासट्ठि दिट्ठिगतानि दसाकुसलकम्मपथा वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.134; *ये तुम्हे असन्तानं अनागतानं दुक्खानं पहानाय वायमथा'ति,* मि॰ प॰ 89; – **सा / सती** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असती किरायं, भो, वीणा नाम,* स॰ नि॰ 2(2).195; – **सतिं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मय्हं अयन्ति असतिं असञ्जतं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.467; *असतिं असञ्जतन्ति इमं असतिं असप्पुरिसधम्मसमन्नागतं* ..., जा॰ अट्ठ॰ 468; – **न्तिया / तिया** स्त्री॰, ष॰/सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किं ते सच्चबलं अत्थि चोरिया धुत्तिया असतिया ...,* मि॰ प॰ 128; *असन्तिया आपत्तिया तुण्ही भवितब्बं,* महाव॰ 130; – **सतियो** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विनस्सथ तुम्हे वसिलियो चोरियो धुत्तियो असतियो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.413; – **सतीनं** स्त्री॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मा च वसं असतीनं निगच्छे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.207.

असंयम पु॰, संयम का निषे॰ [असंयम], संयम का अभाव, नियन्त्रण का अभाव, करुणा या दया-जैसे सद्गुणों का अभाव, दुःशील, दुराचार – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुद्दानं असंयमो,* स॰ नि॰ 1(1).50; – **मा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विरम पाणवधा असंयमा,* पे॰ व॰ 482; *असंयमाति असंवरा दुस्सील्या,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 179.

असंयुत्त त्रि॰, सं + √युज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असंयुक्त], नहीं जुड़ा हुआ, असम्बद्ध, अतुलनीय, अनुपयुक्त – **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मिगी पक्खी असञ्ञुत्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 3.233; *असञ्ञुत्ताति जयम्पतिका भवितुं अयुत्ता असम्बन्धा,* तदे॰; – **त्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं विवाहं असंयुत्तं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.6; *असंयुत्तन्ति अयुत्तं ... अननुच्छविकं,* तदे॰.

असंयोग पु॰, संयोग का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असंयोग], बिलगाव, किसी भी तरह के सम्बन्ध का अभाव – **गाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असंयोगाय सन्तिके ... अनुपादानाय सन्तिके ति,* म॰ नि॰ 2.81.

असंयोगन्त त्रि॰, ब॰ स॰ [असंयोगान्त], ऐसा स्वर, जिसके बाद में संयुक्त व्यञ्जन न हो – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुद्धादिसरस्स वासंयोगन्तस्स सणे च,* क॰ व्या॰ 402.

असंयोजनिय त्रि॰, सं + √युज के प्रेर॰ के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [असंयोजनीय], संयोजनों (बन्धनों) में नहीं बांधे जाने योग्य (धर्म) – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असंयोजनिया धम्मा,* ध॰ स॰ 21; *न संयोजनिया असंयोजनिया,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 95.

असंवट्टन नपुं॰, संवट्टन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असंवर्त्त], (पृथ्वी आदि महाभूतों के) विनाश या प्रलय का अभाव – *पथविया ... असंवट्टनभावं वा तथतो जानित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.65.

असंवत्तनिक त्रि॰, [असंवर्तनिक], विनाश या प्रलय की ओर नहीं ले जाने वाला, समाप्त न कराने वाला, अनुच्छेद-कारक – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असमाधिसंवत्तनिकाति अप्पनासमाधिस्स वा उपचारसमाधिस्स वा असंवत्तनिका,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 417; *अनिब्बानसंवत्तनिकाति निब्बानत्थाय असंवत्तनिका,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.188.

असंवर पु॰, संवर का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असंवर], **शा॰ अ॰** पूरी तरह से बन्द न कर देना, **ला॰ अ॰** (इन्द्रियों पर) नियन्त्रण का अभाव, असंयम, असहिष्णुता – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दसमे असंवरोति अनधिवासकभावो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.145; *एवं खो भिक्खवे असंवरो होति,* स॰ नि॰ 2(2).189; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उद्धच्चं पहातुं असंवरं ... दुस्सील्यं पहातुं ...,* अ॰ नि॰ 3(2).120; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वाचसिकेन असंवरेन समन्नागतो अहोसिं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 10; – **रस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुब्भरतादीनं वत्थुभूतस्स असंवरस्स अवण्णं निन्दं गरहं भासित्वाति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.171; – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असंयमाति असंवरा दुस्सील्या,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 179; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असंवरे सति द्वारम्पि अगुत्तं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 421; – **द्वार** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [असंवरद्वार], असंयमित या अनियन्त्रित इन्द्रियद्वार – **रानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अट्ठ च असंवरद्वारानि कथितानि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.330-331; – **राभिरत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [असंवराभिरत], असंयम की प्रवृत्ति से युक्त, असंयमी, संयम या आत्मनियन्त्रण में नहीं लगा हुआ – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पटिक्खिपनाधिप्पाया असंवराभिरता ते सम्परायिकेन वट्टभयेन तज्जेन्तो ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.172.

असंवास 1. पु॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असंवास], **शा॰ अ॰** एक साथ नहीं रहना, सहवास का अभाव, आपसी सङ्गति का अभाव, समागम का अभाव – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असंवासेन जीरति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.197; *असंगन्तु ... असमागमसङ्खातेन असंवासेन जीरति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.198; **ला॰**

अ॰ भिक्षुसंघ से निष्कासन (पाराजिक नामक अपराध होने पर) - **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *पाराजिको होति असंवासो,* पारा॰ 24, 25; *असंवासो भिक्खूहि च भिक्खुनीहि च,* परि॰ 398; *असंवासोति उपोसथपवारणादिना संवासेन असंवासो,* परि॰ अट्ठ॰ 240; **2.** त्रि॰, ब॰ स॰ [असंवास्य], **शा॰ अ॰** साथ में निवास न करने योग्य (व्यक्ति), सहवास के लिए अनुपयुक्त, **ला॰ अ॰** भिक्षुसंघ से निष्कासन-योग्य (भिक्षु) - **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *असंवासा इमे सियुं,* विन॰ वि॰ 3111; - **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंवासाति संवासो नाम एककम्मं एकुद्देसो समसिक्खता एसो संवासो नाम। सो ताय सद्धिं नत्थि, तेन वुच्चति असंवासाति,* पाचि॰ 288; *असंवासा यथा पुरे,* खु॰ सि॰ 3; - **पुग्गल** पु॰, कर्म॰ स॰, साथ में न रखने योग्य अथवा संघ-कर्म में सम्मिलित न होने योग्य भिक्षु - **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कत्वासंवासपुग्गलं,* विन॰ वि॰ 2606; - **सारह** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [असंवासार्ह], साथ में निवास नहीं करने योग्य, संघ में पुनः प्रवेश नहीं देने योग्य - *असंवासारहसंवासारहविभागकारणपरिदीपनं उदानं उदानेसि,* उदा॰ अट्ठ॰ 249.

असंवासिक त्रि॰, भिक्षुसंघ में संवास नहीं देने योग्य - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंवासिको चाति ...,* खु॰ सि॰ 28;- **का** ब॰ व॰ - ... *इमेपि असंवासिका'ति वुत्ता,* खु॰ सि॰ पु॰ टी॰ 142; - **निद्देस** पु॰, तत्पु॰ स॰, खु॰ सि॰ के उस खण्ड-विशेष का शीर्षक, जिसमें संघ में पुनः प्रवेश न देने योग्य व्यक्तियों की सूची दी गई है, खु॰ सि॰ 28.

असंवासियत्त नपुं॰, असंवासिय का भाव॰ [असंवास्यत्व], साथ में निवास करने योग्य नहीं होना, किसी (अनुशासन या मार्ग) में साथ साथ रहने की इच्छा वाला न होना - **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पापेहि असंवासियत्ता जिनसासनस्स, ...,* मि॰ प॰ 234; - **भाव** पु॰, उपरिवत् - **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पापेहि असंवासियभावं दस्सेन्ति,* मि॰ प॰ 234.

असंविदित त्रि॰, सं + √विद के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असंविदित], अनुभूत नहीं किया हुआ, ठीक से नहीं जाना हुआ - **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं असंविदितं कत्वा, आभतं पन तं बहि,* विन॰ वि॰ 1864.

असंविन्दन्त त्रि॰, सं + √विद के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [असंविन्दत्], प्राप्त न करता हुआ, लाभ न पाता हुआ, अनुभव न करता हुआ - **न्दं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ममत्तं सो असंविन्दं,* थेरगा॰ 717; *असंविन्दं असंविन्दन्तो अलभन्तो अकरोन्तो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.229.

असंविभागरत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [असंविभागरत], अनुदार, दान देने से विरत, कृपण, कञ्जूस - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अदानाधिमुत्ता असंविभागरताति अत्थो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.264.

असंविभागी त्रि॰, सं + वि + √भज से व्यु॰, क्रियार्थक विशे॰ का निषे॰ [असंविभागी], उदारतापूर्वक दान न देने वाला, कृपण, अनुदार - *असंविभागी च सुखं न विन्दती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.393.

असंविहित त्रि॰, सं॰ + वि + √धा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असंविहित], **क.** *कर्म॰ वा॰, स॰ प॰ में ही,* तैयार नहीं किया हुआ, ठीक से नहीं किया हुआ, **ख.** *कर्तृ॰ वा॰ में,* उचित पद्धति नहीं अपनाने वाला, भिक्षुसंघ के समक्ष अपनी बात को उपयुक्त रूप से प्रस्तुत न करने वाला - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अधिकरणकारका असंविहिता तं आवासं आगच्छन्ति,* महाव॰ 247; *असंविहिताति संविदहनरहिता ... अकतसंविदहिता,* महाव॰ अट्ठ॰ 341; - **कम्मन्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [असंविहितकर्मान्तक], पापपूर्ण या अनुचित कायकर्म, वाक्कर्म एवं मानसिक कर्म करने वाला, कायद्वार आदि से पापकर्म करने वाला - **न्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंविहितकम्मन्तं बालं दुम्मन्तिमन्तिनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.95; - **साखापरिवार** त्रि॰, ब॰ स॰, ठीक से तैयार किए गए बाड़ा या घेराबन्दी से रहित, बाड़ा-रहित - **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंविहितसाखापरिवारमिव सस्सं,* विसुद्धि॰ 1.34.

असंवुत त्रि॰, सं + √वु के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असंवृत], **शा॰ अ॰** नहीं ढका हुआ, खुला हुआ, नीचे या ऊपर कहीं से भी अनाच्छादित, सर्वथा उन्मुक्त - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अघा असंवुता अन्धकारा अन्धकारतिमिसा,* दी॰ नि॰ 2.9; *असंवुताति हेट्ठा उपरि च केनचि न पिहिता,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 2.23; **ला॰ अ॰** नियन्त्रण में नहीं लाया हुआ, सुरक्षित करके नहीं रखा गया, बन्द करके नहीं रखा गया - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *पापका असंवुता अहिरिका ... पब्बजन्ति,* मि॰ प॰ 235; - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *यं एवं असंवुतं महतो अनत्थाय संवत्तति ...,* अ॰ नि॰ 1(1).10; *चक्खुन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं ... पापका अकुसला, धम्मा अन्वास्सवेय्युं,* ध॰ स॰ 1352; *चक्खुन्द्रियं असंवुतं अपिहितचक्खुद्वारं हुत्वा ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 420.

असंसग्ग पु॰, संसग्ग का विलो॰, निषे॰ तत्पु॰ स॰ [असंसर्ग], लगाव या आसक्ति का अभाव, अपरिग्रह, विराग, अनासक्ति-भाव - **ग्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंसग्गेन छिज्जति,* स॰ नि॰

1(2).139; *असंसग्गेन छिज्जतीति एकतो ठाननिसज्जनादीनि अकरोन्तस्स असंसग्गेन अदस्सनेन छिज्जति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.126; - **ग्गस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंसग्गस्स च वण्णवादी,* म॰ नि॰ 1.278; - **ग्गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अलोभो अनभिसङ्गो अपरिग्गहलक्खणो मुत्तप्पवत्तनरसो असंसग्गोति गय्हति,* ना॰ रू॰ प॰ 91; - **कथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [असंसर्गकथा], अनासक्ति-भाव या विराग के विषय में कथन, विराग-विषयक संलाप - *अप्पिच्छकथा ... असंसग्गकथा ... सीलकथा,* अ॰ नि॰ 3(1).172; - **ग्गरामता** स्त्री॰, भाव॰, अनासक्तिभाव के प्रति अभिरुचि होना - *कतमे अट्ठ ... इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता ... असंसग्गारामता निप्पपञ्चारामता,* अ॰ नि॰ 3(1).152.

असंसट्ठ त्रि॰, सं + √सज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असंसृष्ट], नहीं घुला-मिला हुआ, अलिप्त, संसर्ग-रहित, अलग-थलग, अमिश्रित - **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंसट्ठं गहट्ठेहि,* सु॰ नि॰ 633; *असंसट्ठन्ति ... अभावेन असंसट्ठं उभयन्ति गिहीहि च अनगारेहि ... असंसट्ठं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.171; - **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंसट्ठो कुले गणे,* अप॰ 2.16; *असंसट्ठो गहट्ठेहि,* थेरगा॰ 581; *असंसट्ठोति दस्सनसवनसमुल्लपनसम्भोगकायसंसग्गानं अभावेन असंसट्ठो यथावुत्तसंसग्गरहितो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.175.

असंसप्प पु॰, [असंसर्पण, नपुं॰], **शा॰ अ॰** फिसलन या स्खलन का अभाव, **ला॰ अ॰** हिचकिचाहट का अभाव, दृढ़-संकल्प - **प्पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अधिमोक्खो असंसप्पो* ..., ना॰ रू॰ प॰ 83.

असंसप्पनरस त्रि॰, ब॰ स॰, अविचलित बनाने का कृत्य करने वाला, हिचकिचाहट से रहित कर देने वाला (अधिमोक्ष) - **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सन्निट्ठानलक्खणो असंसप्पनरसो ... सन्निट्ठातब्बधम्मपदट्ठानो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 178.

असंसय क. त्रि॰, ब॰ स॰ [असंशय], सन्देह से मुक्त, संशय से रहित - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंसयस्स कुसलस्स* ..., म॰ नि॰ 2.54; - **या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंसया बहुजनपूजिता अहं,* वि॰ व॰ 146; *असंसयाति ... विचिकिच्छाय पहीनत्ता अपगतसंसया ... असंसिया'ति केचि पठन्ति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 67; **ख.** नपुं॰, संशय का अभाव, निश्चय - **ये** पु॰, - *चर असंसये चरेति चरयति,* सद्द॰ 2.559; - **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, निश्चित रूप से - *असंसयं जातिखयन्तदस्सी,* जा॰ अट्ठ॰ 3.384; *असंसयं सो निरयं उपेति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.43.

असंहारिम त्रि॰, संहारिम का निषे॰, नहीं हिलाने-डुलाने योग्य, स्थिर, अचल, दृढ़ - **मे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं खाणुके बन्धित्वा ठपितमञ्चादिम्हि असंहारिमे फलके वा पासाणे वा न रूहतियेव,* पाचि॰ अट्ठ॰ 100; *अनापत्ति आपुच्छा गच्छति असंहारिमे गिलानाय ... आदिकम्मिकायाति,* पाचि॰ 373; *असंहारिमेति थाममज्झिमेन पुरिसेन असंहारिये,* सारत्थ॰ टी॰ 3.63.

असंहारिय त्रि॰, सं + √हर, प्रेर॰ के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [असंहार्य], किसी के भी द्वारा नहीं हिलाने-डुलाने योग्य, अचल, अत्यन्त दृढ़ - **या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *तथागते सद्धा निविट्ठा मूलजाता पतिट्ठिता दळ्हा असंहारिया समणेन वा ब्राह्मणेन वा ... केनचि वा लोकस्मिं,* दी॰ नि॰ 3.62; *असंहारियाति सुनिखातइन्दखीलो विय केनचि चालेतुं असक्कुणेय्या,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.44; - **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंहारियो नाम च होति पण्डितो,* थेरगा॰ 372; ... *सो तादिसो पुग्गलो किलेसेहि देवपुत्तमारादिसु वा केनचि असंहारियताय असंहारियो नाम होति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.66; - **ये** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंहारिमेति थाममज्झिमेन पुरिसेन असंहारिये,* सारत्थ॰ टी॰ 3.63.

असंहीर त्रि॰, सं + √हर, कर्म॰ वा॰ के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [असंह्रिय], नहीं हिला-डुला सकने योग्य, अकम्प्य, दृढ़, स्थिर - **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यावजीवं असंहीरा,* इतिवु॰ 56; - **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विनये ... ठितो होति असंहीरो,* अ॰ नि॰ 2(2).269; *विनये ... विनयलक्खणे पतिट्ठितो होति, असंहीरोति न सक्का होति गहितग्गहणं विस्सज्जापेतुं* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.190; - **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *धम्मदसा ठिता असंहीरा,* थेरगा॰ 1252; *असंहीराति केनचि असंहारिया हुत्वा पतिट्ठिता,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.445; - **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असंहीरं असंकुप्पं,* थेरगा॰ 649; *असंहीरन्ति न संहीरं ... रागेन अनाकड्ढनियं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.204; - **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [असंह्रियचित्त], अविकम्प्य चित्त वाला, दृढ़ चित्त वाला - **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अत्तभावे मयि ससिनेहा असंहीरचित्ता ... भवेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 4.252.

असक त्रि॰, ब॰ स॰ [अस्वक], वह, जो अपना नहीं है, पराया - **कट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰, अपने से भिन्न का अर्थ - **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असकट्ठेन परतो* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.105.

असकिं अ॰, निपा॰ [असकृत्], अनेक बार, बार-बार - *सरूपानं पदब्यञ्जनानं एकसेसो होति असकिं,* क॰ व्या॰ 390.

असक्कच्चं अ., सत + √कर के पू. का. कृ. का निषे. [असत्कृत्य], ठीक से न करके, असावधानी, उपेक्षा या अवज्ञा के साथ, बिना सोचे विचारे, तिरस्कारभाव के साथ, अनुचित रूप में – *सक्कच्चञ्ञेव पहारं देति नो असक्कच्चं,* अ. नि. 2(1).114; *सक्कच्चञ्ञेव देति नो असक्कच्चन्ति अनवञ्ञाय अविरज्झित्वाव देति, नो अवञ्ञाय विरज्झित्वा,* अ. नि. अट्ठ. 3.42; *असक्कच्चं देति ... अनागमनदिट्ठिको देति,* अ. नि. 2(1).161; *असक्कच्चं देतीति न सक्करित्वा सुचिं कत्वा देति,* अ. नि. अट्ठ. 3.54; *असक्कच्चन्ति अनादरं कत्वा देय्यधम्मस्स असक्कच्चकरणं ... न सक्करित्वा सुचिं कत्वा देती,* अ. नि. टी. 3.47.

असक्कच्चकारी त्रि., बिना सोचे-विचारे ही काम करने वाला, अविवेक के साथ काम करने वाला – *न समाधिस्स वुट्ठानकुसलो होति असक्कच्चकारी च होति ... असप्पायकारी च,* अ. नि. 2(2).129.

असक्कच्चकिरियता स्त्री., भाव., विवेकसङ्गत व्यवहार या आचरण का अभाव, सोचे-विचारे बिना ही कार्य करने की प्रवृत्ति – *कुसलानं वा धम्मानं भावनाय असक्कच्चकिरियता ... अनासेवना अभावना अबहुलीकम्मं अनधिट्ठानं अननुयोगो पमादो,* विभ. 401; *असक्कच्चकिरियताति एतेसं दानादीनं कुसलधम्मानं भावनाय पुग्गलस्स वा देय्यधम्मस्स वा असक्कच्चकरणवसेन असक्कच्चकिरिया,* विभ. अट्ठ. 443.

असक्कच्चदान नपुं., अविवेक या असावधानी के साथ दिया गया दान – *असक्कच्चदानपच्चवेक्खणधम्मसवनादीसु ... पवत्तिकाले परित्तारम्मणा,* ध. स. अट्ठ. 430.

असक्कत त्रि., सक्कत का निषे., तत्पु. स. [असत्कृत], अपूजित, असम्मानित, उचित रूप में अविचारित – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *असक्कता चस्म धनञ्जयाया'ति,* जा. अट्ठ. 3.84; *असक्कता चस्माति अन्नपानं न लभाम,* तदे.; *परिब्बाजका असक्कता होन्ति अगरुकता ... अनपचिता,* उदा. 81.

असक्करियमान त्रि., सत + √कर, कर्म. वा. के वर्त. कृ. का निषे. [असत्क्रियमाण], असम्मानित, अपूजित – **ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *अम्हेहि असक्करियमाना ... अपूजियमाना असक्कारपकता पक्कमिस्सन्ति वा ... भगवन्तं वा पसादेस्सन्ती'ति,* महाव. 475.

असक्कार पु., सक्कार का निषे., तत्पु. स. [असत्कार], असम्मान, सत्कार का अभाव – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *यस्स सक्करियमानस्स असक्कारेन चूभयं ...,* इतिवु. 54; – **पकत** त्रि., ब. स. [असत्कारप्रकृत], असम्मान के प्रभाव से प्रभावित – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *एवं इमे अम्हेहि असक्करियमाना ... असक्कारपकता पक्कमिस्सन्ति वा ... पसादेस्सन्ती'ति,* महाव. 475.

असक्कुणेय्य त्रि., √सक से व्यु., सं. कृ. का निषे. [अशक्य], नहीं किये जाने योग्य, असंभव – **य्यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *हितपटिपत्तिया वा दुन्नयो होति नेतुं असक्कुणेय्यो,* जा. अट्ठ. 4.217; – **य्ये** पु., सप्त. वि., ए. व. – *बोधेतुं असक्कुणेय्ये अरूपभवे निब्बत्तिस्सामी'ति दिस्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.65; *असक्कुणेय्ये हदयब्भन्तरे मम खन्ति पतिट्ठिता,* जा. अट्ठ. 3.35; – **त्त** नपुं., भाव. [अशक्यत्व], असंभव होना, कर सकने योग्य न रहना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *मतस्स पुन जीवापेतुं असक्कुणेय्यत्ता इद्धिमतो,* जा. अट्ठ. 3.144; – **ता** स्त्री., भाव., उपरिवत् – **य** तृ./प्र. वि., ए. व. – *वसे वत्तेतुं असक्कुणेय्यताय ... निप्फादेतीति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 169; *भोजनेन ओनमितुं असक्कुणेय्यताय अनोनमनदण्डो,* अ. नि. टी. 1.203; – **भाव** पु., उपरिवत् – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *पूजनीयट्ठानस्स सक्कुणेय्यभावं जानाथा'ति,* जा. अट्ठ. 4.204.

असक्कोन्त त्रि., √सक के वर्त. कृ. का निषे. [असक्नुवत्], सक्षम न होता हुआ, अक्षम, कर सकने में असमर्थ – **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असम्भुणन्तोति असक्कोन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.97.

असक्खर त्रि., ब. स. [अशर्कर], कंकड़ों-पत्थरों से रहित, मृदु – **रा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *असक्खरा चेव मुदू सुभा च,* जा. अट्ठ. 5.162; *असक्खराति ... पासाणसक्खररहिता मुदु सुभा,* तदे.; – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असक्खरो ति आदिना नयेन ... मग्गकथं कथेसुं,* ध. प. अट्ठ. 2.231.

असक्खिक त्रि., ब. स. [असाक्षिक], बिना साक्षी वाला, बिन गवाह का – **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *असक्खिकं अड्डं करोन्तो विय च,* ध. स. अट्ठ. 32.

असक्य त्रि., √सक के सं. कृ. का निषे. [अशक्य], नहीं किए जा सकने योग्य, असंभव – **क्यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अफलो च असक्यो च वायामो,* सु. नि. अट्ठ. 1.7.

असक्यधीतु स्त्री., कर्म. स. [अशाक्यदुहितृ], अननुरूप बौद्ध-भिक्षुणी, ऐसी भिक्षुणी, जो बुद्धधर्म के अनुरूप आचरण न करती हो – **ता** प्र. वि., ए. व. – *अस्समणी होति असक्यधीता,* पाचि. 288.

असक्यपुत्तिय त्रि., [अशाक्यपुत्रीय], बुद्धधर्म के अनुरूप आचरण न करने वाला भिक्षु/भिक्षुणी - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - ... *पटिसेवित्वा अस्समणो होति असक्यपुत्तियो,* महाव. 123; *यंनूनाहं अस्समणो ... असक्यपुत्तियो अस्सन्ति वदति विञ्ञापेति,* पारा. 26; - **धम्म** पु., निषे., तत्पु. स. [अशाक्यपुत्रीयधर्म], शाक्यपुत्र बुद्ध के धर्म से इतर दूसरा धर्म - **म्मो** पु., प्र. वि., ए. व. - *धारेय्यासि अस्समणधम्मो असक्यपुत्तियधम्मोति,* स. नि. 2(2).311; - **भाव** पु., निषे., तत्पु. स. [अशाक्यपुत्रीयभाव], बुद्ध के मार्ग का अनुगमन न करने की अवस्था, बौद्ध-भिक्षु से भिन्न होने की स्थिति - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *पत्थयमानो ... पे. ... असक्यपुत्तियभावं पत्थयमानो,* पारा. 27; - **वेवचन** नपुं., तत्पु. स., शाक्यपुत्र (बुद्ध) के प्रति श्रद्धावान न रहने की बात को प्रकाशित करने वाले वचन का एक प्रकार - **नानि** प्र. वि., ब. व. - *अस्समणवेवचनानि वा असक्यपुत्तियवेवचनानि वा,* पारा. 30; - **नेन** पु./नपुं., तृ. वि., ए. व. - *एवमादि असक्यपुत्तियवेवचनेन सिक्खापच्चक्खानं होति,* पारा. अट्ठ. 1.202.

असग्गुणविभावी त्रि., [असद्गुणविभाविन्], दुर्गुणों को प्रकाशित या प्रकट करने वाला - **विनो** पु., ष. वि., ए. व. - *तस्स निल्लज्जराजस्स असग्गुणविभाविनो,* सद्धम्मो. 382.

असंकच्चिक/असंकच्चिका त्रि., संकच्चिक का निषे., तत्पु. स. [बौ. सं. असङ्कच्छिका], कटिपरिधान या कमर पर लपेटी हुई पट्टी से रहित - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *असङ्कच्चिका गामं पिण्डाय पाविसि,* पाचि. 478.

असङ्कमनिय/असंकमनीय त्रि., सं + √कम के प्रेर. के सं. कृ. का निषे. [असंक्रामणीय], एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं हटाए जाने योग्य, अविचाल्य - **यायो** स्त्री., द्वि. वि., ब. व. - *पादुका धुवट्ठानिया असङ्कमनियायो,* महाव. 264; *असङ्कमनीयायोति भूमियं ... असंहारिया,* महाव. अट्ठ. 347.

असंकमान त्रि., √संक के वर्त. कृ. का निषे. [अशङ्कमान], शङ्का नहीं करने वाला, भय-रहित, - **ना** पु., प्र. वि., ब. व. - *असङ्कमाना अभिनिब्बुत्तत्ता,* जा. अट्ठ. 2.315.

असंकर त्रि., ब. स., **शा. अ.** अमिश्रित, **ला. अ.** संभ्रम से रहित, सन्देहमुक्त - **तो** प. वि., ए. व. - *असङ्करतो वा ठपेति,* नेत्ति. अट्ठ. 247.

असंकिण्ण त्रि., सं + √किर के भू. क. कृ. का निषे. [असंकीर्ण], **शा. अ.** आपस में मिलावट से रहित, **ला. अ.** विशुद्ध, भ्रमरहित, अभ्रान्त - **ण्णा** पु., प्र. वि., ब. व. - *पोराणा असंकिण्णा असंकिण्णपुब्बा,* अ. नि. 1(2).33; *असंकिण्णा अविकिण्णा अनपनीता,* अ. नि. अट्ठ. 2.269.

असंकित त्रि., [अशङ्कित], शङ्का से मुक्त, घबराहट या भय से रहित - *असंकितो अजयूथं उपेति,* जा. अट्ठ. 5.230; *कादम्बनदिया तीरे ठपेत्वान असङ्कितो,* म. वं. 22.53.

असंकिय त्रि., √सङ्क के सं. कृ. का निषे. [अशंक्य], शङ्का नहीं करने योग्य, निर्भय, आशङ्काभाव से मुक्त - *असङ्कियोम्हि गामम्हि,* जा. अट्ठ. 1.319; ... *अहं गामे वसन्तोपि ... असङ्कियो निब्भयो निरासङ्कोति दीपेति,* तदे..

असंकिलिट्ठ त्रि., सं. + √किलिस के भू. क. कृ. का निषे. [असंक्लिष्ट], मलिन या अविशुद्ध नहीं किया गया, विशुद्ध, मलों से रहित (निर्वाण) - **ट्ठं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *असंकिलिट्ठं अनुत्तरं योगक्खेमं निब्बानं परियेसति,* अ. नि. 1(2).284; - **ट्ठा** पु., प्र. वि., ब. व. - *असंकिलिट्ठा धम्मा न वत्तब्बा किलेसा चेव संकिलिट्ठा चातिपि,* ध. स. 1576; - **चित्त** त्रि., ब. स. [असंक्लिष्टचित्त], मलिनता से मुक्त विशुद्ध चित्त वाला - *असंकिलिट्ठचित्तो ब्रह्मा ...,* दी. नि. 1.224; ... *संकिलेसेहि असंकिलिट्ठचित्तो सुपरिसुद्धमानसो,* दी. नि. अट्ठ. 1.304.

असंकिलेसक त्रि., संकिलेसिक का निषे. [असंक्लेशिक], मलिनता से मुक्त, विशुद्ध - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *असंकिलेसिका धम्मा न वत्तब्बा,* ध. स. 1574.

असंकुचितचित्त त्रि., ब. स. [असंकुचितचित्त], वह, जिसका चित्त सङ्कुचित या अनुदार न हो, उदार चित्त वाला - *अनोलीनोति ... दाने असङ्कुचितचित्तोति अत्थो,* चरिया. अट्ठ. 23.

असंकुप्प त्रि., सं. + √कुप के सं. कृ. का निषे. [असंकम्प्य], इधर से उधर नहीं ले जाए जाने योग्य, अविचाल्य, स्थिर, दृढ़ - **प्पं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *असंहीरं असंकुप्पं, ...,* थेरगा. 649.

असंकुसकवुत्ति त्रि., ब. स. [असंकुसकवृत्ति], वह, जिसका स्वभाव हठी या जिद्दी नहीं हो, अप्रतिकूल जीवन-वृत्ति वाला, अनुकूल प्रकृति वाला - *असङ्कुसकवुत्तिस्स स राजवसतिं वसे,* जा. अट्ठ. 7.193; *असङ्कुसकवुत्तिस्साति अप्पटिलोमवुत्ति अस्स,* तदे..

असंकेत पु., संकेत का निषे. [असङ्केत], अनिर्धारण, इशारा या सुझाव का अभाव - **तेन** तृ. वि., ए. व., क्रि. विशे., निर्धारण किए बिना - *अनुपरिवेणियं पातिमोक्खं उद्दिसन्ति असङ्केतेन,* महाव. 134; *असङ्केतेनाति सङ्केतं अकत्वा,* महाव. अट्ठ. 312.

असंखत त्रि., सं. + √कर के भू. क. कृ. का निषे. [असंस्कृत], **शा. अ.** हेतु एवं प्रत्ययों से उत्पन्न नहीं किया हुआ, **ला. अ.** हेतु-प्रत्ययों से अनुत्पन्न तथा स्वयं भी विपाक को उत्पन्न न करने वाला लोकोत्तर धर्म निर्वाण (मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद एवं आकाश) – **तं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *असङ्खतं सिवममतं सुदुद्दसं,* अभि. प. 7; *असङ्खतं अमतं अनासवञ्च,* नेत्ति. 46; – **तं**[2] पु./नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *असङ्खतञ्च ... देसेस्सामि असङ्खतगामिञ्च मग्गं,* स. नि. 2(2).334; – **तस्स** पु., ष. वि., ए. व. – *तीणिमानि, भिक्खवे, असङ्खतस्स असङ्खतलक्खणानि ... न उप्पादो पञ्ञायति, न वयो पञ्ञायति, न ठितस्स अञ्ञथत्तं पञ्ञायति ...,* अ. नि. 1(1).177; *अट्ठमे असङ्खतस्साति पच्चयेहि समागन्त्वा अकतस्स,* अ. नि. अट्ठ. 2.135; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *निरोधो असङ्खतो,* नेत्ति. 15; – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *विमुत्त्यसङ्खता धातु सुद्धि-निब्बुतियो सियुं,* अभि. प. 9; – **गामी** त्रि., [असंस्कृतगामिन्], असंस्कृत-धर्म निर्वाण की ओर ले जाने वाला – **मिं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *असङ्खतञ्च, वो, भिक्खवे देसेस्सामि असङ्खतगामिञ्च मग्गं,* स. नि. 2(2).334; – **त्त** नपुं., भाव. [असंस्कृतत्व], हेतु-प्रत्ययों द्वारा उत्पादित न होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *असङ्खतत्ता धम्मस्साति,* मि. प. 251; – **धातु** स्त्री., कर्म. स. [असंस्कृतधातु], हेतु-प्रत्ययो द्वारा अनुत्पादित – *द्वे इमा ... धातुयो सङ्खताधातु असङ्खताधातु,* म. नि. 3.110; – **पञ्ञत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [असंस्कृतप्रज्ञप्ति], असंस्कृत धर्मों का प्रकाशन या अभिव्यक्ति – *असङ्खतधम्मस्स पञ्ञापना असङ्खतपञ्ञत्ति नाम,* पु. प. अट्ठ. 29; *भूमिपञ्ञति असङ्खतपञ्ञत्ति च विज्जमानपञ्ञत्तियेव,* पु. प. अट्ठ. 29; – **संयुत्त** नपुं., स. नि. के उस संयुत्त का शीर्षक, जिसमें असंस्कृत धर्म निर्वाण तथा उसका साक्षात्कार कराने वाले मार्ग का उपदेश दिया गया है, लोकोत्तर धर्म तथा उसकी ओर ले जाने वाले मार्ग का प्रकाशक स. नि. का एक खण्ड, स. नि. 2(2).334-344; *लोकुत्तराति लोकुत्तरत्थदीपका असङ्खतसंयुत्तादयो,* स. नि. अट्ठ. 3.320; – **तारम्मण** त्रि., ब. व. [असंस्कृतालम्बन], असंस्कृत धर्म निर्वाण को अपना आलम्बन बनाने वाला – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *विमोक्खो असङ्खतारम्मणो च ... निब्बानधातूति,* नेत्ति. 104.

असंखरान त्रि., सं + √कर के वर्त. कृ. का निषे. [असंस्कुर्वाण], तीन प्रकार के कर्म-अभिसङ्खारों में से किसी एक से भी अभिसंस्कृत न करने वाला – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असङ्खरानो सतिमा अनोको,* स. नि. 1(1).148; *असङ्खरानोति तयो कम्माभिसङ्खारे अनभिसङ्खरोन्तो,* स. नि. अट्ठ. 1.165.

असंखात त्रि., सं. + √ख्या के भू. क. कृ. का निषे. [असंख्यात], सम्यक् रूप में अविचारित, उचित रूप में अचिन्तित – *येसञ्चेतं असङ्खातं,* जा. अट्ठ. 4.4; *अञ्ञेसम्पि येसञ्चेव असङ्खातं अवीमंसितं,* जा. अट्ठ. 4.5.

असंखार त्रि., संखार का निषे., ब. स. [असंस्कार], **शा. अ.** संस्कार-स्कन्ध से रहित – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अयं सो अरूपी अवेदनो असञ्ञी असङ्खारो ... समनुपस्ससी'ति,* स. नि. 2(1).102; **ला. अ.** स्वतःस्फूर्त चित्त, स्वतःप्रवृत्त – **रं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *असङ्खारं ससङ्खार-विपाकानि न पच्चति,* अभि. ध. स. 38; – **रेन** तृ. वि., ए. व. – . .. *इध असङ्खारेना'ति अवुत्तेपि असङ्खारिकभावो वेदितब्बो,* ध. स. अट्ठ. 116; – **परिनिब्बायी** त्रि., [बौ. सं. अनभिसंस्कारपरिनिर्वायिन्], अनागामी नामक आर्यश्रावक का तृतीय प्रभेद, ऊपर के पांच संयोजनों के प्रहाण के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता न रखने वाला अनागामी आर्यपुद्गल – **यी** पु., प्र. वि., ए. व. – *सो असङ्खारेन अरियमग्गं सञ्जनेति उपरिट्ठिमानं संयोजनानं पहानाय अयं वुच्चति पुग्गलो असङ्खारपरिनिब्बायी,* पु. प. 123; *असङ्खारेन अप्पदुक्खेन अधिमत्तपयोगं अकत्वाव किलेसपरिनिब्बानेन परिनिब्बानधम्मोति असङ्खारपरिनिब्बायी,* पु. प. अट्ठ. 48.

असंखारिक/असंखारिय त्रि., असङ्खार से व्यु. [असांस्कारिक], अपनी चित्त-सन्तति के पूर्वक्षणों की प्रवृत्ति द्वारा स्वतः-प्रवृत्त (चित्त) – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – ... *चित्तस्स तिक्खभावसङ्खातो विसेसोविध सङ्खारो, सो यस्स नत्थि तं असङ्खारं, तदेव असङ्खारिकं,* अभि. ध. स. 79; – **केन** तृ. वि., ए. व. – *असङ्खारिकेन पणीतानीति ... हीनादितापि चाति,* खु. पा. अट्ठ. 26.

असंखिय त्रि., [असंख्य], गणना न करने योग्य, माप-जोख न करने योग्य – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *गणनातो असङ्खियं,* अप. 1.73; – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *गणनातो असङ्खियो,* बु. वं. 27.8; – **या** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *परिच्चत्ता असङ्खिया,* अप. 2.256; – **ये** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *चतुरो च असङ्खिये,* बु. वं. 2.1.

असंखुब्भ त्रि., सं + √खुभ के सं. कृ. का निषे. [असंक्षोभ्य], संक्षुब्ध न करने योग्य, शान्त, निर्विकार, अविचलित - *अनिलज्जसासङ्खुब्भो ... असङ्खियो,* अप. 1.113.

असङ्खेय्य / असङ्ख्येय्य त्रि., सं + √ख्या के सं. कृ. का निषे. [असंखेय], असंख्य, गणना न करने योग्य, अप्रमेय, अगण्य - **य्यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असङ्ख्येय्यो अप्पमेय्यो महापुञ्ञक्खन्धो,* स. नि. 3(2).462; - **य्या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *असङ्खेय्या अप्पमेय्या दक्खिणा पाटिकङ्खितब्बा,* म. नि. 3.305; - **य्येन** पु., तृ. वि., ए. व. - *असङ्ख्येय्येन गुणेन परिसुद्धञ्च लहुकञ्च,* मि. प. 115; - **य्ये** पु., द्वि. वि., ब. व. - *संवच्छरे असङ्खेय्ये,* जा. अट्ठ. 5.258; - **य्यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अपरिमितअसङ्ख्येय्य अप्पमेय्यगुणं वरं,* मि. प. 321; - **य्यानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *चत्तारिमानि भिक्खवे कप्पस्स असङ्खेय्यानी ति,* अ. नि. 1(2). 164; - **य्येहि** नपुं., तृ. वि., ब. व. - *चतूहि च असङ्ख्येय्येहि कप्पानं ... च एत्थन्तरे,* मि. प. 218; - **य्यानं** पु./नपुं., ष. वि., ब. व. - *चतुन्नं असङ्ख्येय्यानं मत्थके ... ... अमरवती नाम नगरं अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.3.

असंख्य पु., अव्यय, वह, जिसमें संख्या आदि के प्रभाववश कोई रूप-परिवर्तन नहीं होता है - **या** प्र. वि., ब. व. - ... *तथा हि असंख्या ति च अव्यया ति च,* सद्द. 1.299; - **सद्द** पु., कर्म. स., अव्यय के रूप में प्रयुक्त शब्द - **द्दं** द्वि. वि., ए. व. - ... *उपसग्गनिपातसङ्खाते असंख्यसद्दे सन्धाय वुत्तं न एकेकं असंख्यासद्दं सन्धाय ...,* सद्द. 1.299.

असङ्ग त्रि., ब. स. [असङ्ग], **शा. अ.** सङ्गरहित, लिपटा कर या सटा कर न रखने वाला, **ला. अ.** विषयभोगों के प्रति मानसिक लगाव या आसक्ति से मुक्त - **ङ्गो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असङ्गो अनिलो यथा,* अप. 2.107; - **ङ्गा** ब. व. - *असङ्गा अतुलगुणा अतुलयसा,* मि. प. 311; - **चारी** त्रि., [असङ्गचारिन्], आसक्ति से मुक्त या लोभरहित मन के साथ विचरण करने वाला - **रिनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *मगा विय असङ्गचारिनो,* स. नि. 1(1).231; - **चित्त** त्रि., ब. स. [असङ्गचित्त], आसक्ति-रहित चित्त वाला, लगावमुक्त मन वाला - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असङ्गचित्तो निक्लेसो,* अप. 2.16.

असंगन्तु त्रि., सं + √गम के कर्तृ. ना. का निषे. [असंगन्तृ], संगमन न करने वाला, (प्रियजनों या परिचितों के पास) बहुत कम आने-जाने वाला, साथ न रहने वाला, संवास न करने वाला - **न्तु** पु., ष. वि., ए. व. - *स्वेव मित्तो असंगन्तु,* जा. अट्ठ. 5.197; *असंगन्तु असमागच्छन्तस्स ... असंवासेन जीरति विनस्सति,* जा. अट्ठ. 5.198.

असंगमानस त्रि., ब. स., आसक्ति या लगाव से विमुक्त मन वाला - **सा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *न च पज्जित्थ असङ्गमानसा,* थेरीगा. 398; - **सो** पु., प्र. वि., ए. व. - *कुलेसु कामेसु असङ्गमानसो,* थेरगा. 1122.

असङ्गह पु., सङ्गह का निषे. [असङ्ग्रह], अनन्तर्भाव, अन्तर्भूत न होना - **हो** प्र. वि., ए. व. - *तेकालिकाख्यातपदे कालातिपत्तिया पन असङ्गहो वा होती ति,* सद्द. 1.55; - **क** त्रि., [असंग्राहक], **क.** संग्रह न करने वाला, सङ्कलन न करने वाला, **ख.** अकृपालु, सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण से रहित - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *असङ्गाहको आजीविकभयस्स भायेय्य,* अ. नि. 3(1).183.

असङ्गहित त्रि., सं + √गह के भू. क. कृ. का निषे. [असंगृहीत], **क.** अन्तर्भूत नहीं किया हुआ - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *सङ्गहितेन असङ्गहितं,* धातु. 1; **ख.** अनुकम्पापूर्वक ग्रहण नहीं किया हुआ, अनुग्रह का पात्र नहीं बनाया गया - *तेसं असङ्गहितमनुस्सानं वसेन नस्सन्ति,* जा. अट्ठ. 5.113.

असंगाहना स्त्री., सं + √गाह से व्यु., क्रि. ना. [असंगाहन, नपुं.], **शा. अ.** अन्दर तक जाकर प्रवेश न करना, **ला. अ.** पूरी तरह से नहीं समझना - *असम्बोधो अप्पटिवेधो असंगाहना अपरियोगाहना,* ध. स. 390.

असङ्गी त्रि., [असङ्गिन्], **शा. अ.** साथ सङ्ग न करने वाला, **ला. अ.** आसक्ति या लगावरहित, निर्बाध, बाधा या रुकावट से रहित - **ङ्गिने** पु., द्वि. वि., ब. व. - *आवेळिने सद्दगमे असङ्गिने,* जा. अट्ठ. 5.404; पाठा. असङ्गिते.

असङ्घट्ट त्रि., [असंघृष्ट], पीड़ा या व्यथा न देने वाला, अकष्टदायक, संत्रास उत्पन्न न करने वाला - **ट्टो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अक्कोधनो असङ्घट्टो,* जा. अट्ठ. 7.190; *असङ्घट्टोति परं असङ्घट्टेन्तो,* तदे..

असच्च त्रि., ब. स. [असत्य], झूठा, सत्य नहीं बोलने वाला, धोखेबाज - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *किञ्च तुय्हं असच्चस्स,* जा. अट्ठ. 5.369; *असच्चस्साति वचीसच्चरहितस्स ...,* जा. अट्ठ. 5.370; - **च्चं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *तं तं असच्चं अविभज्जसेविनिं,* जा. अट्ठ. 5.395; *असच्चन्ति ... सच्चे ... असच्चं उत्तमभावरहितं,* तदे..

असच्छिकत त्रि., सच्छिकत का निषे. [असाक्षात्कृत], स्वयं सीधे अनुभव नहीं किया हुआ, स्वयं आन्तरिक रूप में नहीं

देखा गया – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *नत्थि किञ्चि ब्रह्मुनो असच्छिकतन्ति,* दी. नि. 1.202; *अञ्ञातं ... असच्छिकतं अनभिसमेतं,* अ. नि. 3(1).199; – **ते** सप्त. वि., ए. व. – *असच्छिकते सच्छिकतसञ्ञिनो,* पारा. 111; – **कत्वा** पू. का. कृ., साक्षात् न देखकर, प्रज्ञा की आंख से न देखकर – *पञ्ञाय असच्छिकत्वा सुद्धेन सद्धामत्तकेनेव ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).74.

असज्जन्त त्रि., √सज के वर्त कृ. का निषे. [असज्यत्], आसक्त या लगाव से भरपूर न रहने वाला, अनासक्त, निर्लिप्त, लगाव-रहित मन वाला – **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरज्जन्तो असज्जन्तो असोचन्तो भिक्खु नाम होती'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.339.

असज्जमानो त्रि., **क.** उपरिवत् – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तिरोभावं तिरोकुट्टं ... असज्जमानो गच्छति,* दी. नि. 1.69; *वातोव जालम्हि असज्जमानो,* सु. नि. 71; – **ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *असज्जमाना विचरन्ति लोके,* सु. नि. 470; – **नं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तं नामरूपस्मिमसज्जमानं,* ध. प. 221; *असज्जमानन्ति अलग्गमानं,* ध. प. अट्ठ. 2.174; **ख.** हिचकिचाहट से रहित, हकलाहट से मुक्त रहता हुआ – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *थेरो पुच्छितपुच्छितं पञ्हं असज्जमानोव कथेसि,* विभ. अट्ठ. 462.

असज्झायकत त्रि., [अस्वाध्यायकृत], आवृत्ति नहीं किया हुआ, नहीं दुहराया गया, पूर्व में अभ्यास नहीं किया हुआ – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *सज्झायकतापि मन्ता ... पगेव असज्झायकता,* स. नि. 3(1).142.

असज्झायमल त्रि., ब. स., (स्वाध्याय या पुनःपुनः) आवृत्ति न किए जाने के कारण अपवित्र या मलिन बन जाने वाला – **ला** पु., प्र. वि., ब. व. – *असज्झायमला मन्ता,* ध. प. 241; *याकाचि परियत्ति वा सिप्पं वा यस्मा असज्झायन्तस्स ... विनस्सति ... तस्मा असज्झायमला मन्ता'ति वुत्तं,* ध. प. अट्ठ. 2.201.

असञ्चरण त्रि., नहीं चलने-फिरने योग्य, व्यवहार में न लाए जाने योग्य – **णं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तथागतो सन्तं येव मग्गं लुग्गं ... असञ्चरणं सम्पस्समानो उप्पादेसि,* मि. प. 207.

असञ्चरणकारण नपुं., तत्पु. स., नहीं जा पहुंचने का कारण, सञ्चरण न करने का कारण – *किं नु खो इमस्स मोरराजस्स पादे पासस्स असञ्चरणकारण'न्ति,* जा. अट्ठ. 4.298.

असञ्चरणकपास पु., कर्म. स., सञ्चरण न करने वाला पाश या बन्धन, पास न जाने वाला बन्धन – *सत्त वस्ससतानि असञ्चरणकपासो ...,* जा. अट्ठ. 4.299.

असञ्चरणभाव पु., कर्म. स., पास नहीं पहुंच पाना, सञ्चरण न कर सकना – *सो गन्त्वा बोधिसत्तेन अक्कन्तट्ठानेपि पासस्स असञ्चरणभावं ...,* जा. अट्ठ. 2.29.

असञ्चलित त्रि., सं. + √चल के भू. क. कृ. का निषे. [असञ्चलित], नहीं हिल-डुल रहा, नहीं कांप रहा, दृढ़ – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अकम्पितं असञ्चलितं सुसण्ठितं,* मि. प. 211.

असञ्चारिम त्रि., सञ्चारिम का निषे., नहीं हिलाए-डुलाए जाने योग्य, अविचाल्य, दृढ़, दूर तक फेंक कर नहीं चलाए जाने योग्य – **मेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *असञ्चारिमेन उपकरणेन मारेतुकामस्स,* पारा. अट्ठ. 2.37.

असञ्चारिमुपाय पु., कर्म. स., असञ्चरणशील (जाल या गड्ढा जैसे) उपाय – **येन** तृ. वि., ए. व. – *असञ्चारिमुपायेन मारणत्थं परस्स च,* विन. वि. 247.

असञ्चिच्च 1. अ., सं. + √चिन्त के पू. का. कृ. का निषे. [असंचिन्त्य], सोच-विचार न करके, किसी निश्चित अभिप्राय के बिना, चेतना के बिना – *अनापत्ति असञ्चिच्च ...,* पाचि. 168; पारा. 125; **2.** त्रि., पू. *का. कृ. का ही अनियमित रूपान्तरण,* चेतना से असम्प्रयुक्त, विशेष अभिप्राय न रखने वाला – **च्चो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असञ्चिच्च अहं,* पारा. 95; *असञ्चिच्चोति अवधकचेतनो विरद्धपयोगो हि सो,* पारा. अट्ठ. 2.56; – **कथा** स्त्री., कथा. के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, कथा. 477–79.

असञ्चेतनिक त्रि., [असञ्चेतनिक], **क.** चेतना के बिना या मन में सोचे-विचारे बिना ही हो जाने वाला कर्म, एक प्रकार का कर्मविपाक – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *असञ्चेतनिकं, भन्ते, निगण्ठो नाटपुत्तो नो महासावज्जं पञ्ञपेती'ति,* म. नि. 2.45; **ख.** चेतना के द्वारा सोच कर कर्म न करने वाला/वाली, बिना चेतना के ही कर्म करने वाला/वाली – **का** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *ता पठमं असञ्चेतनिका हुत्वा कम्मुना न बज्झिंसु,* ध. प. अट्ठ. 1.128.

असञ्जात त्रि., सं + √जन के भू. क. कृ. का निषे. [असंजात], वह, जिसे अभी तक उत्पन्न नहीं किया गया है, अनुत्पन्न, अप्रकटीकृत, अप्रादुर्भूत – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *असञ्जातस्स मग्गस्स सञ्जनेता,* स. नि. 1(1).221;

असञ्जातस्साति इदं अनुप्पन्नवेवचनमेव, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.244; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असञ्जातञ्च सञ्जनी,* अप॰ 2.240; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ · *ये धम्मा ... असञ्जाता अनिब्बत्ता,* ध॰ स॰ 1042; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं रूपं अजातं अभूतं असञ्जातं अनिब्बत्तं,* विभ॰ 2.

असञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [असंज्ञ], **क.** संज्ञाहीन, होश-हवाश से रहित, मूर्च्छित, बेहोश – **ञ्ञं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ असञ्ञा असञ्ञं करोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.143; **ख.** पु॰/नपुं॰, अस्तित्व की वह कोटि जिसमें अन्तर्भूत प्राणी संज्ञाहीन रहते हैं, असंज्ञी-भव – **ञ्ञं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतं सन्तं एतं पणीतं यदिदं असञ्ञ'न्ति,* म॰ नि॰ 3.18; – **ञ्ञे** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असञ्ञे च अरूपिब्रह्मानो च उपेत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.358; – **क** त्रि॰, ब॰ स॰ [असंज्ञक], संज्ञाहीन चित्त वाला, असंज्ञीभाव में विद्यमान प्राणी – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असञ्ञका ... अचित्तका पातुभवन्ति,* विभ॰ 491; – **कथा** स्त्री॰, कथा॰ के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, जिसमें असंज्ञी भव से सम्बन्धित मत का परीक्षण किया गया है, कथा॰ 218-220; – **काय** पु॰, कर्म॰ स॰ [असंज्ञकाय], संज्ञाहीन या चित्तहीन शरीर – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिन्द्रियबद्धमसञ्ञकायं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.53; *असञ्ञकायन्ति अनिन्द्रियबद्धं अचित्तकायञ्च समानं एतं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.55; – **भव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असंज्ञीभव], असंज्ञी (संज्ञाहीन, चित्तरहित) प्राणियों का क्षेत्र **वे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असञ्ञिनोति असञ्ञभवे निब्बत्ते अचित्तकसत्ते दस्सेति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.452; – **सत्त** पु॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ असंज्ञिसत्त्व], संज्ञा से रहित प्राणी, पञ्चम सत्त्वावास वाले अरूपी ब्रह्मा-देवों का एक वर्ग – **त्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असञ्ञिनो वुच्चन्ति ... असञ्ञसत्ता नपि सो निरोधसमापन्नो, नपि असञ्ञसत्तो,* महानि॰ 204; *सेय्यथापि देवा असञ्ञसत्ता,* अ॰ नि॰ 3(1).211; – **त्तेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असञ्ञसत्तेसु सञ्ञा अत्थीति? आमन्ता,* कथा॰ 219.

असञ्ञत त्रि॰, सं॰ + √यम के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असंयत], नियन्त्रणरहित, नियन्त्रण के अधीन न रहने वाला, असंयमी – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ · *परपाणरोधाय गिही असञ्ञतो,* सु॰ नि॰ 222; *सो लुद्दको गिही परपाणरोधाय ... असंयतो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.228-229; – **ता** ब॰ व॰ – *ये इध कामेसु असञ्ञता जना,* सु॰ नि॰ 246; – **तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सहसा करोन्तानमसञ्ञतानं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.101; *सहसा करोन्तानमसञ्ञतानन्ति सहसा ... कम्मं करोन्तानं दुस्सीलानं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.102; – **तं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मय्हं अयन्ति असतिं असञ्ञतं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.467; – **तासु** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अच्चन्तसीलासु असञ्ञतासु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.445; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मज्जमंसनिरता असञ्ञता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.450; – **परिक्खार** त्रि॰, ब॰ स॰, जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं (चीवर, पिण्डपात, निवास एवं औषधि) के विषय में ध्यान न देने वाला अथवा इनकें प्रयोग में संयम न बरतने वाला, चीवर आदि के विषय में असंयत – **रं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ · *असञ्ञतपरिक्खारं भिक्खुं आरब्भ कथेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.9; – **परिक्खारभिक्खुवत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ का एक कथानक, जिसमें चीवर आदि आवश्यक वस्तुओं के प्रयोग में असंयत एक भिक्षु की कहानी है, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.9-10; – **वचन** त्रि॰, ब॰ स॰ [असंयतवचन], बोलने में असंयत, बेलगाम बातचीत करने वाला – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विकिण्णवाचाति असंयतवचना,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).161.

असञ्ञत्ति स्त्री॰, सञ्ञत्ति का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असंज्ञप्ति], ठीक से जानकारी न देना, असंज्ञापन, सही-सही रूप में नहीं बतलाना – *असञ्ञत्तिबलाति असञ्ञत्तियेव बलं एतेसन्ति असञ्ञत्तिबला,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.47-48; – **बल** त्रि॰, ब॰ स॰ [असंज्ञप्ति], असंज्ञापनरूपी बल से युक्त, वह, जो बातों को ठीक तरह से नहीं बतला सके – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असञ्ञत्तिबला अनिज्झत्तिबला अप्पटिनिस्सग्गमन्तिनो,* अ॰ नि॰ 1(1).90.

असञ्ञा स्त्री॰, सञ्ञा का निषे, तत्पु॰ स॰ [असंज्ञा], **1. शा॰ अ॰** संज्ञाहीनता, मूर्च्छा, बेहोशी, संज्ञा से शून्य होना, अज्ञान, मोह – **ञ्ञा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असञ्ञा सम्मोहो,* म॰ नि॰ 19; *असञ्ञा सम्मोहोति निस्सञ्ञभावो नामेस सम्मोहट्ठानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.12; **2. ला॰ अ॰** स्त्री॰, नौ प्रकार की आकाशीय विद्युतों में से वह बिजली, जो अपनी गर्जना और तीव्र जगमगाहट से प्राणियों को संज्ञाहीन बना देती है – **ञ्ञा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नवविधा हि असनियो असञ्ञा, विचक्का, ... असञ्ञा असञ्ञं करोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.143; – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असञ्ञं करोति, यो तस्सा सद्देन, तेजसा च अज्झोत्थटो,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 2.152.

असञ्ञी त्रि॰, सञ्ञी का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असंज्ञिन्], **क.** संज्ञा से रहित, चेतना से रहित, बिना संज्ञा वाला, **ख.** असंज्ञी-भव में उत्पन्न प्राणी, **ग.** संज्ञावेदयित्-निरोध की

समापत्ति को प्राप्त व्यक्ति - **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. - *नोपि असञ्ञी न विभूतसञ्ञी,* सु. नि. 880; *नोपि असञ्ञीति सञ्ञाविरहितोपि न होति निरोधसमापन्नो वा असञ्ञसत्तो वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.245; महानि. अट्ठ. 287; - **ञ्ञिनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *ये केचि पाण भूतत्थि सञ्ञिनो वा असञ्ञिनो,* अप. 1.90; तुल., असञ्ञ² (ऊपर); - **गब्भ** त्रि., ब. स., गर्भ में संज्ञा से रहित रहने वाले, पशु एवं वनस्पति जैसे प्राणी जो निश्चेतन होते हुए भी उत्पादक होते हैं - **ब्भा** पु., प्र. वि., ब. व. - *सत्त असञ्ञीगब्भा,* दी. नि. 1. 48; *सत्त असञ्ञीगब्भाति सालिवीहियवगोधूमकङ्गुवरककुद्रूसके सन्धाय वदति,* दी. नि. अट्ठ. 1.135; विलो. सञ्ञीगब्भा; द्रष्ट. आगे; - **भव** पु., तत्पु. स. [असंज्ञीभाव], संज्ञा से शून्य ब्रह्मा जैसे प्राणियों का लोक या संज्ञाशून्य सत्त्वों का लोक - **वो** प्र. वि., ए. व. - *आजीवकानं अनन्तमानसो ति एवं परिकप्पितो असञ्ञीभवो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).322; - **वाद** पु., तत्पु. स. [असंज्ञीवाद], मृत्यु के उपरान्त संज्ञाहीन आत्मा के अस्तित्व को प्रतिपादित करने वाला (आजीवकों का) सिद्धान्त - **दो** प्र. वि., ए. व. - *असञ्ञीवादो सञ्ञीवादे आदिम्हि वुत्तानं द्विन्नं चतुक्कानं वसेन वेदितब्बो,* दी. नि. अट्ठ. 1.102.

असञ्ञसत्तुपिक त्रि., [असंज्ञीसत्त्वोपग], संज्ञाहीन प्राणियों के भव की अवस्था की ओर ले जाने वाला - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सञ्ञावेदयितनिरोधसमापत्ति असञ्ञसत्तुपिकाति,* कथा. 419; - **काकथा** स्त्री., कथा. के एक खण्ड का शीर्षक, कथा. 419-420.

असठ त्रि., सठ का निषे., तत्पु. स. [अशठ], निष्ठावान्, सज्जन, ईमानदार, धोखाधड़ी न करने वाला - **ठो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असठो अमायो,* मि. प. 323; *असठो होति अमायावी,* अ. नि. 2(1).61; - **ठेन** नपुं., तृ. वि., ए. व., क्रि. विशे., बिना छल के, धोखाधड़ी के बिना - *पस्सन्तु नोते असठेन युद्धं,* जा. अट्ठ. 7.173.

असण्ठित त्रि., सं + √ठा के भू. क. कृ. का निषे. [असंस्थित], अप्रतिष्ठित, दृढ़तापूर्वक नहीं स्थित - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *अरूपेसु असण्ठिता,* इतिवु. 46; *अरूपेसु असण्ठिताति अरुपरागेन अरूपभवेसु अप्पतिट्ठहन्ता,* इतिवु. अट्ठ. 195; **2.** √संद के भू. क. कृ. का निषे. [अश्रन्थित], वह, जो ढीला या शिथिल न हो, सुदृढ़, अशिथिल, - **तं¹** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अज्झत्तं असण्ठितं ... न परितस्सेय्य,* म. नि. 3.271; *अज्झत्तं असण्ठितन्ति गोचरज्झत्ते निकन्तिवसेन असण्ठितं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.200; - **तं²** पु., द्वि. वि., ए. व. - *सभावं चिन्तयन्तस्स, अकम्पितमसण्ठितं,* चरिया. 379; *असण्ठितन्ति सङ्कोचरहितं,* चरिया. अट्ठ. 77.

असतासम्पजञ्ञ नपुं., असति + असम्पजञ्ञ का समा. द्व. स. [अस्मृत्यसम्प्रजन्य], स्मृति एवं सम्प्रजन्य का अभाव, चित्त की जागरुकता का अभाव - **ञ्ञं** द्वि. वि., ए. व. - *अयोनिसोमनसिकारो परिपूरो असतासम्पजञ्ञं परिपूरेति,* अ. नि. 3(2).94.

असति¹ √अस (खाना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अश्नाति], **1.** खाता है - *असती ति असको,* क. व्या. 643; *असतीति आसको,* सद्द. 3.865; - **न्ति** ब. व. - *रसन्ता तं असन्ति भक्खन्तीति पि रसो,* सद्द. 2.585; **2.** त्रि., ब. स. [अस्मृतिक], स्मृति या चित्त की जागरुकता से रहित, भुलक्कड़, अज्ञानी - **तियो** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *विनस्सथ तुम्हे वसिलियो चोरियो धुत्तियो असतियो ...,* जा. अट्ठ. 5.413; **3.** स्त्री., सति का निषे., तत्पु. स. [अस्मृति], स्मृति का अभाव, चित्त की जागरुकता का अभाव, स्मृति विप्रमोष, प्रत्युत्पन्नमति न रहना - **ति** प्र. वि., ए. व. - *अननुस्सति अप्पटिस्सति असति ... सम्मुसनता,* ध. स. 1356; *असतीयेव पापियाति ... लोकस्मिं पन असतियेव पापिया, असतिकरणंयेव हीनं ...* जा. अट्ठ. 2.146; - **तिया** तृ./प्र. वि., ए. व., क्रि. वि., बिना सोचे-विचारे - *अपि चाहं अस्सतिया पविट्ठो ति,* महाव. 390; *अस्सतिया भगवन्तं न पुच्छिं,* चूळव. 457; पाठा. अस्सतिया.

असति² √अस के वर्त. कृ., सन्त के निषे., असन्त का सप्त. वि., ए. व. विद्यमान न रहने पर, अभाव में, न होने की हालत में - ... *असति पुरतो निक्खमनमुखे केन निक्खमेय्या ति,* मि. प. 272; *पुब्बन्तानुदिट्ठीनं असति, ... अपरन्तानुदिट्ठीनं असति,* स. नि. 2(1).42.

असत्त त्रि., √सज के भू. क. कृ. का निषे. [असक्त], **शा. अ.** नहीं लिपटा हुआ, नहीं जुड़ा हुआ, **ला. अ.** कामभोगों में मन का लगाव न रखने वाला, सभी तरह की आसक्तियों से मुक्त - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *आकासो अलग्गो असत्तो अप्पातिट्ठितो अपलिबुद्धो,* मि. प. 356; - **त्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. - ... *अकिञ्चनं कामभवे असत्तं,* सु. नि. 178; 1065; *दुविधे कामे तिविधे च भवे अलग्गनेन कामभवे असत्तं,* सु. नि. अट्ठ. 1.184; - **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *असत्ता विचरन्ति लोके,* सु. नि. 494; *तत्थ असत्ताति रागादिसङ्गवसेन अलग्गा,* सु. नि. अट्ठ. 2.128.

असत्तगोदावरं अ., अव्ययी. स. [असप्तगोदावर], वह क्षेत्र, जहां गोदावरी, सात शाखाओं में विभक्त नहीं हुई है – *न सत्तगोदावरं असत्तगोदावरं, ...*, क. व्या. 328; सद्द. 3.759.

असत्थ नपुं., सत्थ का निषे., तत्पु. स. [अशस्त्र], शस्त्र का अभाव, बिना शस्त्र के – **त्थेन** तृ. वि., ए. व. – *अदण्डेन असत्थेन, दमेसि उत्तमे दमे*, अप. 1.355.

असत्थाराम / अस्सत्थाराम पु., एक आराम का नाम – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *पियदस्सी मुनिवरो, अस्सत्थारामम्हि निब्बुतो*, बु. वं. 15.27.

असत्थावचर त्रि., [अशस्त्रावचर], शस्त्रों का प्रयोग न करने वाला, शस्त्रों के प्रति अभिरुचि न रखने वाला – **रा** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *ता च खो अदण्डावचरा असत्थावचरा, इति ... अकलहो*, स. नि. 1(1).259.

असदिस त्रि., ब. स. [असदृश], **क.1.** भिन्न, असमान, दूसरी तरह का, दूसरे से नहीं मिलता-जुलता – **सं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *एवं अञ्ञमञ्ञअसदिसं भिक्खुसहस्सं मापेसि*, ध. प. अट्ठ. 1.141; – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सब्बो हि सदिसो होति, नत्थि कामे असादिसो*, जा. अट्ठ. 6.248; **क.2.** अद्वितीय, बेजोड़, अनुपम – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *अनुत्तरो असदिसो अपटिभागोति*, ध. प. अट्ठ. 1.237; *असमो ... असदिसो अतुलो ...*, मि. प. 302; – **तेज** त्रि., ब. स. [असदृशतेजस्], अतुलनीय तेज से युक्त – **जो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *असमत्थतेजो असदिसतेजो तव अग्गि न तप्पेय्य*, जा. अट्ठ. 7.54; – **ता** स्त्री., भाव. [असादृश्य, नपुं.], अतुलनीयता, अनुपम या बेजोड़ होना – *अगेधता ... दुरनुबोधता दुल्लभता असदिसता बुद्धधम्मस्स*, मि. प. 257; – **दान** नपुं., कर्म. स., अतुलनीय दान, अनुपम दान – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *असदिसदाने पनेस लाभो मत्थकं पत्तो*, दी. नि. अट्ठ. 2.221; – **दानवत्थु** नपुं., ध. प. अट्ठ. की एक कथा, ध. प. अट्ठ. 2.105-108; – **रूप** त्रि., ब. स. [असदृशरूप], अनुपम स्वरूप वाला, दूसरों से भिन्न विशिष्ट स्वरूप वाला – **पं** पु., द्वि. वि., ए. व. – ... *अञ्ञेहि पासादेहि असदिसरूपं ... पासादं ...*, ध. प. अट्ठ. 2.74; – **पो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असदिसरूपो नाथो, आरुप्पं यं चतुब्बिधं आह*, ध. स. अट्ठ. 253; – **वग्ग** पु., जा. अट्ठ. का एक वर्ग, जा. अट्ठ. 2.72 93; – **वचन** त्रि., ब. स., अतुलनीय अर्थ का सूचक, अद्वितीय (अकेला) अर्थ का प्रकाशक – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एकसद्दोहि सङ्खावचनो च होति असदिसवचनो च*, सद्द. 1.283; – **संयोग** पु., तत्पु. स. [असदृशसंयोग], दो असमानों के बीच संयोग या मेल – **गे** सप्त. वि., ए. व. – *असदिससंयोगे च नो उप्पन्ना पुत्ता ... पापुणिस्सन्ति*, दी. नि. अट्ठ. 1.210; **ख.** पु., व्य. सं., एक राजकुमार का नाम – *तस्स ... नामग्गहणदिवसे असदिसकुमारो ति नामं अकंसु*, जा. अट्ठ. 2.72; – **कुमार** पु., एक राजकुमार, उपरिवत्; – **जातक** नपुं., एक जातक-कथा का शीर्षक; जा. अट्ठ. 2.72-75.

असद्द त्रि., ब. स. [अशब्द], शब्दरहित, कोलाहलरहित, शान्त, नीरव – *कल्लअसद्दे, असद्दो निस्सद्दो ...*, सद्द. 2.437.

असद्दहन नपुं., श्रद्धा का अभाव, अश्रद्धा, अविश्वास – **नं** द्वि. वि., ए. व. – ... *रञ्ञो असद्दहनं आरब्भ कथेसि*, जा. अट्ठ. 4.45.

असद्धम्म पु., सद्धम्म का निषे., तत्पु. स. [असद्धर्म], **क.** मिथ्या-सिद्धान्त, भ्रान्त-धारणा, **ख.** लोभ, द्वेष एवं मोह आदि अकुशल धर्म, पापमयी मनोवृत्तियां – **म्मेहि** तृ. वि. ब. व. – *तत्थ असद्धम्मेहीति असतं धम्मेहि, असन्तेहि वा धम्मेहि*, इतिवु. अट्ठ. 244; *असद्धम्मेहि अभिभूतो परियादिन्नचित्तो ... अतेकिच्छो*, इतिवु. 62; – **म्मा** प्र. वि., ब. व. – *इमे खो, भिक्खवे, चत्तारो असद्धम्मा*, अ. नि. 1(2).54; *सत्तविधेन पापं सत्त असद्धम्मा*, जा. अट्ठ. 3.254; **ग.** मैथुन-धर्म – *असद्धम्मो च वसलधम्मो मीळ्हसुखं पि च ...*, सद्द. 2.408; *गामधम्मो असद्धम्मो व्यवायो मेथुनं रति*, अभि. प. 317; – **म्मं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ नाम त्वं, मोघपुरिस, यं त्वं असद्धम्मं गामधम्मं ... समापज्जिस्ससि*, पारा. 22; *असद्धम्मन्ति असतं नीचजनानं धम्मं*, पारा. अट्ठ. 1.170; – **म्मेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *मातुगामोपि ते असद्धम्मेन निमन्तेन्ति*, म. नि. 2.121; *असद्धम्मेन निमन्तेन्तीति ... मेथुनधम्मेन निमन्तेन्ति*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.117; – **पटिसेवन** नपुं., [असद्धर्मप्रतिसेवन], मैथुन का सेवन, मैथुनक्रिया में आनन्द – **नाय** च. वि., ए. व. – *सायन्हे पनस्सा असद्धम्मपटिसेवनाय चित्तं नमति*, स. नि. अट्ठ. 3.124; – **पूरण** त्रि., तत्पु. स., भ्रान्त-धारणाओं या मिथ्या-सिद्धान्तों का प्रचारक – **णा** पु., प्र. वि., ब. व. – *यथा यथा असद्धम्मपूरणा पूरणादयो*, सद्द. 1.58; – **रत** त्रि., तत्पु. स. [असद्धर्मरत], दुराचार या अकुशल कर्मों के करने में लगा हुआ – *असमाहितसङ्कप्पो, असद्धम्मरतो मगो*, अ. नि. 1(2).27; – **युत** त्रि., दुराचार के साथ जुड़ा हुआ, बुरे आचार-विचार से जुड़ा हुआ – *अत्थि सद्धम्मसंयुत्ता, असद्धम्मयुतापि च*, उत्त. वि. 438; – **सञ्ञत्ति** स्त्री., तत्पु. स., मिथ्या या भ्रान्त-धर्म की शिक्षा – *अयञ्च*

... *पच्चनीकता असद्धम्मसञ्ञत्ति अत्तुक्कंसना परवम्भना,* म॰ नि॰ 2.72; – **समन्नागत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, पापमय आचरण से परिपूर्ण – *अस्सद्धम्मसमन्नागतो होति,* म॰ नि॰ 3.69; *अस्सद्धसमन्नागतोति पापधम्मसमन्नागतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.55.

असद्धिय / अस्सद्धिय त्रि॰, सद्धिय का निषे॰ [अश्रद्धेय], अविश्वसनीय, अविश्वासजनक – **ये** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुतिये अस्सद्धिये अकम्पनट्ठेन सद्धाबलं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.337.

असद्धेय्य त्रि॰, [अश्रद्धेय], अविश्वसनीय – *समुद्दो नाम असद्धेय्यो अनेकन्तरायो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.23.

असन 1. पु॰, [असन], पीतसाल नाम का वृक्ष – *असनो पियके कण्डे मक्खने खिपने'सनं,* अभि॰ प॰ 1004; – **ना** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उद्दालका सोमरुक्खा, अगरुफल्लिया बहू पुत्तजीवा च ककुधा, असना चेत्थ पुप्फिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.294; – **रुक्ख** पु॰, तिस्सबुद्ध के लिए परिकल्पित बोधिवृक्ष – *तस्स भगवतो खेमं नाम नगरं अहोसि ... असनरुक्खो बोधि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.50; **2.** नपुं॰, √अस (खाना) से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [अशन], आहार, भोजन, स्वाद लेना, रस चखना – *अथासनं, आहारो भोजनं घासो,* अभि॰ प॰ 465; *असनं भत्तपरिभोगो, खादनं पूवादिभक्खणं,* सद्द॰ 2.440; *एत्थ असनन्ति आहारो, सो हि असीयति भुञ्जीयतीति असनन्ति वुच्चति,* सद्द॰ 2.501; *पवारितो नाम असनं पञ्ञायति,* पाचि॰ 113; **3. क.** नपुं॰, √अस (फेंकना) से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, अस्त्र, ऐसा हथियार, जिसका प्रयोग फेंक कर किया जाए, बाण, भाला, बर्छा – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बाणो कण्डमुसु द्वीसु खुरप्पो तेजना'सनं,* अभि॰ प॰ 388; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *लहुकेन असनेन अप्पकसिरेनेव ...,* म॰ नि॰ 1.116; *असनेनाति अन्तो सुसिरं कत्वा ... सल्लहुककण्डेन,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).364; **ख.** नपुं॰, वह, जिसके द्वारा (कुछ) फेंका जाए या चलाया जाए – *करणे च-नुदति अनेना ति नूदनं ... असनं,* क॰ व्या॰ 643; **4.** नपुं॰, √अस (व्याप्त होना) से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, व्याप्ति, फैलाव, प्रसारण, अनालस्य – *अनसनन्ति न असनं अविप्फारिकभावो कायालसियं,* लीन॰ (दी॰ नि॰ अट्ठ॰) 3.35; – **पदर** पु॰, तत्पु॰ स॰, पीतसाल पेड़ की लकड़ी से बनी हुई पट्टी – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चतुरङ्गुलबहलं असनपदरं विनिविज्झति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.75; – **फलक** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, उपरिवत् – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चतुरङ्गुलबहलं असनफलकं विनिविज्झितुं वट्टतीति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.126; – **बोधिय** पु॰, एक स्थविर का नाम – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा असनबोधियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.110; – **रुक्ख** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असनवृक्ष], पीतसाल नामक वृक्ष – *असनरुक्खो बोधि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.50.

असनि स्त्री॰, [अशनि], बिजली का ठनका, इन्द्र का वज्र, चमक और आवाज के साथ आकाश से भूमि पर गिरने वाली आकाशीय विद्युत् – *तङ्खणञ्ञेव तस्मिं पासाणपिट्ठे असनि पति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.169; – **निं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *असनिं पातेन्तो विय खन्धे पहरित्वा रथं आदाय अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.336; – **यो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नवविधा हि असनियो ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.143; – **या** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विज्जुल्लतासु निच्छरन्तीसु असनिया फलन्तिया नेव पस्सेय्य,* दी॰ नि॰ 2.99; *असनिया फलन्तियाति नवविधाय असनिया भिज्जमानाय विय महारवं रवन्तिया, ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.143; – **अग्गि** पु॰, आकाश से गिर रही बिजली की आग – ... *असनिअग्गि वा पतित्वा डहति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.40; – **घोस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अशनिघोष], बिजली गिरने की आवाज, ठनका, वज्रपात की आवाज – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *असनिघोसेन घोसिता विय धम्मं कथेन्तापि ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.308; – **पात** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अशनिपात], वज्रपात, आकाश से बिजली का गिरना – *ततो अञ्ञत्थ पथवियं ... मत्थके असनिपातो विय अत्तनो उपरि पतति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 39; – **पातट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अशतिपातस्थान], बिजली के गिरने वाला स्थान, वह स्थान, जहां वज्रपात हुआ है – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असनिपातट्ठानं विय महानिखादनेन खतसन्धिमुखं विय च होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.53; – **विचक्क** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अशनिविचक्र], आकाशीय बिजली का झुण्ड या तांता, बिजली का मण्डल या घेरा – **क्कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असनिविचक्कं आगच्छतु ..., असनिविचक्कन्ति खो, ..., लाभसक्कारसिलोकस्सेतं अधिवचनं,* स॰ नि॰ 1(2).208; *तं असनिविचक्कं विय आकासे भेरवसद्दं करोन्तं धूमायन्तं पज्जलन्तं ... निपति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.284; – **वेग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अशनिवेग], बिजली का वेग या बिजली जैसी तेजी – **गेन तृ॰** वि॰, ए॰ व॰ – *तेनेवासनिवेगेन तत्थ कालङ्कतो अहं,* अप॰ 1.104; – **सद्द** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अशनिशब्द], बिजली की कड़क, बिजली गिरने की आवाज, ठनका – **द्दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो अनिवत्तन्ता पुरतो असनिसद्दं विय सुणिस्सथ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.135.

असन्त त्रि., [अशान्त], शान्ति-रहित, अनुपशान्त, व्याकुल चित्त वाला - **न्तेसु** पु., सप्त. वि., ब. व. - *सन्तो असन्तेसु उपेक्खको सो, अनुग्गहो उग्गहणन्ति मञ्ञे,* सु. नि. 918.

असन्तक त्रि., सन्तक का निषे., तत्पु. स. [अनन्तक], अनन्त, वह जिसका कोई अन्त न हो - **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *सन्तकं वा होति नो असन्तकं,* स. नि. 3(2).344.

असन्तजातिक त्रि., ब. स., अविद्यमान प्रकृति वाला/वाली - *असन्तजातिका ति हि तेसं अत्थो,* सद्द. 1.177.

असन्तत्त त्रि., सन्तत्त का निषे. [असंतप्त], अनुष्णीकृत, गर्म नहीं किया हुआ - *उदपत्तो अग्गिना असन्तत्तो अनुक्कुथितो अनुस्सदकजातो,* अ. नि. 2(1).216.

असन्तदीपन नपुं., तत्पु. स. [असद्दीपन], जो कुछ विद्यमान नहीं है, उसका कथन या उससे युक्त रहने का दावा - **ने** सप्त. वि., ए. व. - *पञ्चेत्थ अङ्गानि असन्तदीपने,* खु. सि. 4(1.15); *असन्तदीपनेति उत्तरिमनुस्सधम्मारोचनपाराजिकेति अत्थो,* खु. सि., पु. टी. 78.

असन्तपग्गह पु., तत्पु. स. [असन्तप्रगृह], असज्जन या अयोग्य व्यक्ति पर अनुग्रह, अपात्र पर अनुकम्पा, बुरे लोगों का समर्थन - **ग्गहं** द्वि. वि., ए. व. - ... *अजातसत्तुस्स रञ्ञो असन्तपग्गहं आरब्भ कथेसि,* जा. अट्ठ. 1.484.

असन्तभाव पु., तत्पु. स. [अशान्तभाव], शान्ति-रहित अवस्था, चित्त की अशान्त-अवस्था - *पापिच्छता तस्स असन्तभावो,* विन. वि. 311; तुल. असन्तता (ऊपर).

असन्तसन्त त्रि., सं + √तस के वर्त. कृ. का निषे. [असंत्रस्यत्], संत्रास या भय से मुक्त, भयरहित रहने वाला, नहीं डर रहा - *असन्तसं जीवितसङ्कयम्हि, एको चरे खग्गविसाणकप्पो,* सु. नि. 74; *असन्तसं जीवितसङ्कयम्हीति सो पच्चेकसम्बुद्धो जीवितपरियोसाने असन्तासी अनुत्रासी ... अभीरु ... विहरतीति,* चूळनि. 274; - **न्तो** उपरिवत् - *सीहोव सद्देसु असन्तसन्तो, वातोव जालम्हि असज्जमानो,* सु. नि. 71; *असन्तासीति तेन तेन अलाभकेन असन्तसन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.240.

असन्तसनक त्रि., भयमुक्त, संत्रासरहित - *असन्तासीति अब्भन्तरे रागसन्तासादीनं अभावेन असन्तसनको,* ध. प. अट्ठ. 2.321.

असन्तसन्तगाथा स्त्री., सु. नि. की 71वीं गाथा, सु. नि. अट्ठ. 1.100.

असन्तसन्निवास पु., तत्पु. स. [असत्सन्निवास], असज्जन लोगों का साथ-सङ्ग, दुष्ट लोगों का साथ - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *असन्तसन्निवासञ्च वो, भिक्खवे, देसेस्सामि सन्तसन्निवासञ्च,* अ. नि. 1(1).93; *एकादसमे असन्तसन्निवासन्ति असप्पुरिसानं सन्निवासं,* अ. नि. अट्ठ. 2.50.

असन्तसम्पग्गाहक त्रि., तत्पु. स. [असन्तसंप्रग्राहक], दुष्ट-जनों को प्रोत्साहित करने वाला, असज्जन लोगों को समर्थन करने वाला - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *असन्तसम्पग्गाहका विनासं पापुणन्तीति,* जा. अट्ठ. 1.486.

असन्तसम्भावना स्त्री., तत्पु. स., अप्राप्त लोकोत्तर धर्मों के अपने पास होने का कथन या दावा - **य** तृ. वि., ए. व. - *यस्मा तं उल्लपित्वा असन्तसम्भावनाय उप्पन्ने पच्चये गण्हाति,* पारा. अट्ठ. 2.70; *एवं असन्तसम्भावनाय वा कुलदूसककम्मेन वा ... न अञ्ञस्स वट्टन्ति,* पारा. अट्ठ. 2. 246-47; *असन्तसम्भावनायाति अत्तनि अविज्जमानउत्तरिमनुस्सधम्मारोचनं सन्धाय वुत्तं,* सारत्थ. टी. 2.370.

असन्तासी त्रि., सन्तासी का निषे. [असंत्रासिन्], नहीं डरने वाला, राग एवं भय से मुक्त - **सी** पु., प्र. वि., ए. व. - *अक्कोधनो असन्तासी, अविकत्थी अकुक्कुचो,* सु. नि. 856; *असन्तासीति तेन तेन अलाभकेन असन्तसन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.240; *निट्ठङ्गतो असन्तासी ...,* ध. प. 351; *असन्तासीति अब्भन्तरे रागसंतासादीनं अभावेन असन्तसनको,* ध. प. अट्ठ. 2.321.

असन्तुट्ठ त्रि., [असन्तुष्ट], सन्तोषभाव से रहित, सन्तोष न करने वाला, आनन्द अनुभव न करने वाला - **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सेहि दारेहि असन्तुट्ठो,* सु. नि. 108; - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *असन्तुट्ठस्स, भिक्खवे, अनुप्पन्ना चेव अकुसला धम्मा उप्पज्जन्ति,* अ. नि. 1(1).15.

असन्तुट्ठिता स्त्री., असन्तुट्ठि का भाव., असंतोष या लोभ - *असन्तुट्ठिता च कुसलेसु धम्मेसु अप्पटिवानिता च पधानस्मिं,* दी. नि. 3.171; *चतुत्थे असन्तुट्ठितति असन्तुट्ठे पुग्गले ... उप्पन्नो असन्तोससङ्खातो लोभो,* अ. नि. अट्ठ. 1.61.

असन्तुट्ठिबहुल त्रि., ब. स. [असन्तुष्टिबहुल], अत्यधिक असन्तोष या लोभ से पूर्ण - **लो** पु., प्र. वि., ए. व. - ... *वेदबहुलो च असन्तुट्ठिबहुलो च अनिक्खित्तधुरो च ... पतारेति,* अ. नि. 2(2).133; *असन्तुट्ठिबहुलोति कुसलधम्मेसु असन्तुट्ठो,* अ. नि. अट्ठ. 3.141.

असन्तुलेय्य त्रि., सं + √तुल के सं. कृ. का निषे., नहीं तौले जा सकने योग्य, नहीं खरीदे जाने योग्य - **य्यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असन्तुलेय्यो मम सो धनेन,* जा. अट्ठ.

7.176; *असन्तुलेय्यो ... सत्तविधेन रतनेन सद्धिं न तुलेतब्बोति,* तदे॰.

असन्थत त्रि॰, सन्थत का निषे॰ [असंस्तृत], **शा॰ अ॰** नहीं ढका हुआ, नहीं बिछाया या फैलाया हुआ, नहीं लपेटा हुआ – **ताय** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मुखं अभिनिसीदेन्ति सन्थतस्स असन्थताय, ...,* पारा॰ 37; **ला॰ अ॰** वस्त्र या गलीचे द्वारा नहीं ढका हुआ, खुला हुआ – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अतीता नवुति कप्पा, ... नाभिजानामि निक्खित्ते, पादे भूम्या असन्थते,* अप॰ 1.327.

असन्थम्भनभाव पु॰, [असंस्तम्भभाव], शरीर को सख्त या कड़ा नहीं बनाना, शरीर में ऐंठन या जड़ता उत्पन्न न करना, अनम्यता, कड़ापन का अभाव – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भोकासवासो विय कायं न सन्थम्भेतीति कायस्स असन्थम्भनभावो पञ्चमो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.13.

असन्थव पु॰, सन्थव का निषे॰ [असंस्तव], जान-पहचान या घनिष्टता का अभाव, अपरिचय, घनिष्टता या मेल-जोल का न होना – **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपिहा नून मयिपि तव पुत्तकेपि अपिहा असन्थवा मञ्ञे,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.45; – **वं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिकेतमसन्थवं, एतं वे मुनिदस्सनं,* सु॰ नि॰ 209; *सन्थवपटिक्खेपेन च असन्थवं वेदितब्बं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.215; *सत्तसङ्खारवत्थुकस्स तण्हासन्थवस्स अभावा असन्थवो नाम, तं अनिकेतं असन्थवं को हनिस्सतीति अधिप्पायो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.74.

असन्थुत त्रि॰, सं + √थु के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰ [असंस्तुत], अपरिचित, अनजान, संसर्ग में नहीं आया हुआ – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असन्थुतं मं चिरसन्थुतेन, निमीनि सामा अधुवं धुवेन,* जा॰ अट्ठ॰ 3.53; *तत्थ असन्थुतन्ति अकतसंसग्गं,* तदे॰; – **विस्सासी** त्रि॰, [असंस्तुतविश्वासिन्], अपरिचित जनों पर विश्वास करने वाला, अनजान लोगों पर भरोसा रखने वाला – *असन्थवविस्सासीति अत्तना सद्धिं सन्थवं अकरोन्तेसु विस्सासं अनापज्जन्तेसुयेव विस्सासं करोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.45.

असन्दिट्ठिपरामासी त्रि॰, सन्दिट्ठिपरामासी का निषे॰ [अस्वदृष्टिपरामर्शिन्], केवल अपने ही मत को पकड़कर न रहने वाला, मिथ्या-दृष्टि से रहित – *मयमेत्थ असन्दिट्ठिपरामासी अनाधानग्गाही सुप्पटिनिस्सग्गी भविस्सामा'ति सल्लेखो करणीयो,* म॰ नि॰ 1.54.

असन्दिद्ध त्रि॰, [असंदिग्ध], सन्देहरहित, सुस्पष्ट – **द्धं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, सुस्पष्ट रूप से, बिना किसी संदेह के – *असंदिद्धञ्च भणति,* अ॰ नि॰ 3(1).38; *असन्दिद्धन्ति निस्सन्देहं विगतसंसयं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.216; *असन्दिट्ठं वियाकासिं, उपतिस्सेन पुच्छितो,* अप॰ 2.129.

असन्देह पु॰, सन्देह का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असन्देह], निश्चय, सन्देह का अभाव – **हेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, बिना सन्देह के – *तत्थ निस्संसयन्ति असन्देहेन एकन्तेनाति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 129.

असन्दोसधम्म त्रि॰, ब॰ स॰ [अद्वेषधर्मन्], द्वेष से रहित चित्तवृत्ति से युक्त, द्वेषमुक्त जीवनवृत्ति वाला – **म्मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असन्दोसधम्मं मे चित्त'न्ति पञ्ञाय चित्तं सुपरिचितं होति,* अ॰ नि॰ 3(1).212.

असन्धिता स्त्री॰, असन्धि का भाव॰ [असन्धित्व], सन्धि, जोड़ या मेल-जोल का अभाव – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाहं असन्धिता पक्खो, न बधिरो असोतता,* जा॰ अट्ठ॰ 6.19; *तत्थ असन्धितादि सन्धीनं अभावेन,* जा॰ अट्ठ॰ 6.20.

असन्धिमित्ता स्त्री॰, व्य॰ सं॰, सम्राट अशोक की पटरानी – **य** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वे घटे अग्गमहेसिया असन्धिमित्ताय,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.31.

असन्धेय्य त्रि॰ सं + √धा के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [असन्धेय], पुनः एक साथ न जोड़ने योग्य, पुनः न जोड़ सकने योग्य – **य्यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असन्धेय्योव सो जेय्यो, द्वेधा भिन्नसिला विय,* विन॰ वि॰ 242.

असन्नत त्रि॰, **सं॰** + √नम के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असन्नत], **शा॰ अ॰** नहीं झुका हुआ, **ला॰ अ॰** सम्मान व्यक्त न करने वाला, उद्दण्ड – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मानिनो ब्राह्मणा वापि गुरूसूपि असन्नता,* सद्धम्मो॰ 417.

असन्निट्ठानचरण नपुं॰, कर्म॰ स॰, अनियमित भिक्षाटन – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनवट्ठितचारिकन्ति असन्निट्ठानचरणं,* महानि॰ अट्ठ॰ 316.

असन्निधिकत त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असन्निधिकृत], सञ्चय न किया हुआ, जुटाकर या बटोर कर न रखा गया – **तेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, सञ्चित न किए जाने से – *असन्निधिकतेन अत्थतं होति कथिनं,* महाव॰ 332.

असन्निधिकारक त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असन्निधिकारक], जोड़-बटोर कर या संग्रह करके न रखने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते हि निक्खित्तजातरूपरजता असन्निधिकारकाव हुत्वा केवलं ... अहेसुं* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.45.

असन्निधिकारपरिभोगी त्रि॰, चीजों का संग्रह करके भोग न करने वाला, सञ्चित भोगसाधनों का उपभोग न करने

वाला – **गिना** पु., तृ. वि., ए. व. – *योगिना योगावचरेन असन्निधिकारपरिभोगिना भवितब्बं,* मि. प. 372.

असन्निधिभक्ख त्रि., संग्रह न करके भोग करने वाला – **क्खो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सीहो असन्निधिभक्खो,* मि. प. 372.

असन्निपात पु., सन्निपात का निषे., तत्पु. स. [असन्निपात], एक साथ इकट्ठा न होना, संपर्क, संगम या मेल-जोल का न होना – **तो** प्र. वि., ए. व. – *ततो एतस्सापि गेहद्वारा ब्राह्मणानं असन्निपातो भविस्सति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.293.

असपत्त पु./नपुं., ब. स. [असपत्न], वैरी-रहित, शत्रु-रहित, बाधा या विरोध रहित – **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *अवेरा अदण्डा असपत्ता अब्यापज्जा विहरेमु अवेरिनो'ति* ..., दी. नि. 2.203; *असपत्ताति अपच्चत्थिका,* दी. नि. अट्ठ. 2.278; – **त्तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *असपत्तन्ति विगतपच्चत्थिकं,* सु. नि. अट्ठ. 1.166.

असपत्ति/असपत्ती स्त्री., विशे. [असपत्नीका], सौत-रहित, बिना-सौतों वाली – **त्ति/त्ती** प्र. वि., ए. व. – *असपत्ति अगारं अज्झावसन्ती पुत्तवती अस्सन्ति,* स. नि. 2(2).243; *असपत्ती हुत्वा एकिकाव घरे वसेय्यन्ति एवमस्सा चित्तं अभिनिविसतीति असपत्तीभिनिवेसा,* अ. नि. अट्ठ. 3.122.

असपत्तीभिनिवेसा स्त्री., ब. स., सौत-रहित होने की प्रबल इच्छा से जुड़ी हुई नारी – **सा** प्र. वि., ए. व. – *इत्थी ..., पुरिसाधिप्पाया ... असपत्तीभिनिवेसा इस्सरियपरियोसाना'ति,* अ. नि. 2(2).76; *असपत्ती हुत्वा एकिकाव घरे वसेय्यन्ति एवमस्सा चित्तं अभिनिविसतीति असपत्तीभिनिवेसा,* अ. नि. अट्ठ. 3.122.

असप्पथ पु., कर्म. स. [असत्पथ], अनुचित मार्ग, गलत रास्ता – **थं** द्वि. वि., ए. व. – *तस्मा असप्पथं अनोतरित्वा भो पुरिसा इति वचनेन दूरट्ठस्स च अदूरट्ठस्स च पुरिसस्सालपनं भवति,* सद्द. 1.91.

असप्पाय त्रि., सप्पाय का निषे., व्यु. संदिग्ध [बौ. सं. असाम्प्रेय], विषम, अकुशल, अनुपयुक्त, अपथ्यकर (भोजन आदि के रूप में) अहितकर, अवृद्धिकर, अस्वस्थता लाने वाला – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अयं असप्पायो,* विसुद्धि. 1.124; – **यानि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *मा ते असप्पायानि भोजनानि भुञ्जतो वणो अस्सावी अस्स,* म. नि. 3.42; *असप्पायानीति अवड्ढिकरानि आरम्मणानि,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.36; – **यं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *अलुद्धो हि लोभनीयम्पि असप्पायं न सेवति, तेन खो अरोगो होति,* ध. स. अट्ठ. 173; *अहितन्ति यं एतं तव कटुकभण्डसङ्खातं पिप्फलि, एतं मय्हं अहितं असप्पायन्ति,* जा. अट्ठ. 3.74; *गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिं असप्पायं पाटिदेसनीयं,* पाचि. 232; – **कारी** त्रि., [बौ. सं. असाम्प्रेयकारिन्], अपथ्यकारी या हानिकारक भोजन लेने वाला – **री** पु., प्र. वि., ए. व. – *असप्पायकारी होति,* महाव. 394; – **किरिया** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. असाम्प्रेयक्रिया], स्वास्थ्यलाभ के लिए अहितकर उपचार, अस्वास्थ्यकर जीवनवृत्ति – **या** प्र. वि., ए. व. – *असप्पायकिरिया आरोग्यस्स परिपन्थो,* अ. नि. 3(2).112.

असप्पुरिस त्रि., कर्म. स. [असत्पुरुष], असज्जन पुरुष, निम्न श्रेणी का पुरुष, दुर्जन, अनार्य – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *जानेय्य ..., असप्पुरिसो असप्पुरिसं – असप्पुरिसो अयं भव'न्ति,* म. नि. 3.69; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *खम देव असप्पुरिसस्स,* ..., जा. अट्ठ. 4.38; *एतस्स असप्पुरिसस्स खमथाति अत्थो,* तदे.; – **सा** पु., प्र. वि., ब. व. – *एते असप्पुरिसा लोके,* ..., जा. अट्ठ. 5.229; – **कम्मन्त** त्रि., ब. स., असज्जन जैसा काम करने वाला, दुष्टजनों द्वारा किए जाने वाले अनुचित कर्मों को करने वाला – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असप्पुरिसभत्ति होति ... असप्पुरिसकम्मन्तो होति असप्पुरिसदिट्ठि होति, असप्पुरिसदानं देति,* म. नि. 3.69; – **चिन्ती** त्रि., असज्जनों जैसा विचार रखने वाला – **न्ती** पु., प्र. वि., ए. व. – *असप्पुरिसो ... असप्पुरिसचिन्ती होति* ..., म. नि. 3.69; – **तर** त्रि., तुल. विशे. [असत्पुरुषतर], दूसरे दुर्जनों से बढ़-चढ़ कर दुष्ट – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अयं वुच्चति, भिक्खवे, असप्पुरिसेन असप्पुरिसतरो,* अ. नि. 1(2).247; – **दान** नपुं., तत्पु. स. [असत्पुरुषदान], असज्जन की तरह दान, असज्जन द्वारा किया गया दान – *असप्पुरिसो, ... असप्पुरिसदिट्ठि होति, असप्पुरिसदानं देति,* म. नि. 3.69; – **दिट्ठि** त्रि., ब. स. [असत्पुरुषदृष्टि], दुष्ट या अनार्य पुरुष द्वारा गृहीत मिथ्या-दृष्टि से युक्त – **ट्ठि** पु., प्र. वि., ए. व. – *असप्पुरिसो ... असप्पुरिसदिट्ठि होति* ..., म. नि. 3.69; – **धम्म क.** पु., तत्पु. स. [असत्पुरुषधर्म], असज्जन का धर्म या अनैतिक व्यवहार – **म्मो** प्र. वि., ए. व. – *कतमो च, भिक्खवे, असप्पुरिसधम्मो,* म. नि. 3.85; **ख.** त्रि., ब. स., अनार्यजनों के स्वभाव वाला – **म्मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असप्पुरिसधम्मो सो,* ..., जा. अट्ठ. 5.221; – **भत्ति** त्रि., ब. स. [असत्पुरुषभक्तिक],

दुष्ट लोगों के प्रति भक्तिभाव रखने वाला - **त्ति** पु., प्र. वि., ए. व. - *असप्पुरिसो असप्पुरिसभत्ति होति,* म. नि. 3.69; - **मन्ती** त्रि., [असत्पुरुषमन्त्रिन्], असज्जन की तरह मन्त्रणा या परामर्श देने वाला - **न्ती** पु., प्र. वि., ए. व. - *असप्पुरिसो ... असप्पुरिसमन्ती होति,* म. नि. 3.69; - **वाच** त्रि., ब. स. [असत्पुरुषवाक्], असज्जन के समान वाणी बोलने वाला - **चो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असप्पुरिसो ... असप्पुरिसवाचो होति,* म. नि. 3.69; - **संसग्ग** पु., तत्पु. स. [असत्पुरुषसंसर्ग], असज्जन लोगों का साथ या संगति, दुष्ट लोगों से मेल-जोल - **ग्गो** प्र. वि., ए. व. - *असप्पुरिससंसग्गो, दुक्खन्तो कटुकुद्रयो'ति,* जा. अट्ठ. 5.229; - **संसेव** पु., तत्पु. स. [असत्पुरुषसंसेवन, नपुं.], असज्जनों के साथ मेल-जोल - **वो** प्र. वि., ए. व. - *असप्पुरिससंसेवो परिपूरो असद्धम्मस्सवनं परिपूरेति,* अ. नि. 3(2).94; - **सम्भत्ति** त्रि., ब. स. [असत्पुरुषसंभक्तिक], असज्जनों का साथ करने वाला - **नो** पु., प्र. वि., ब. व. - ..., *असप्पुरिससम्भत्तिनो, ..., भिक्खवे, निगण्ठा,* अ. नि. 3(2).124.

असबल त्रि., सबल का निषे., तत्पु. स. [अशबल], धब्बों से रहित, अमिश्रित, विशुद्ध, खण्डों या भागों में अविभक्त, अखण्ड - **लेहि** नपुं., तृ. वि., ब. व. - *अरियकन्तेहि सीलेहि समन्नागतो होति अखण्डेहि अच्छिद्देहि असबलेहि अकम्मासेहि ... समाधिसंवत्तनिकेहि,* दी. नि. 2.74; स. नि. 2(2).265.

असब्बकालिकत्त नपुं., भाव. [असार्वकालिकत्व], सभी कालों से सम्बद्ध न रहना, सदा विद्यमान न रहना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *असब्बकालिकत्ता पन न गहिता,* अ. नि. अट्ठ. 3.272.

असब्बञ्ञू त्रि., सब्बञ्ञू का निषे., तत्पु. स. [असर्वज्ञ], सर्वज्ञ न होना, सभी कुछ के ज्ञान की शक्ति से रहित होना - **ञ्ञू** पु., प्र. वि., ए. व. - *तेन हि, भन्ते नागसेन, बुद्धो असब्बञ्ञूति,* मि. प. 112; - **ञ्ञुता** स्त्री., भाव. [असर्वज्ञता], सर्वज्ञ न होना, सर्वज्ञता का अभाव - **य** तृ. वि., ए. व. - *उदाहु असब्बञ्ञुताय ओसक्कितं,* मि. प. 218.

असब्बत्थगामी त्रि., सब्बत्थगामी का निषे., तत्पु. स. [असर्वत्रगामिन्], सदा एवं सर्वत्र लागू न होने वाला, एक से अधिक सन्दर्भों में लागू न होने वाला/वाली - **मिं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *असब्बत्थगामिं वाचं, बालो सब्बत्थ भासति,* जा. अट्ठ. 1.429; *या वाचा ओपम्मवसेन सब्बत्थ न गच्छति तं असब्बत्थगामिं वाचं बालो दन्धपुग्गलो सब्बत्थ भासति,* जा. अट्ठ. 1.430.

असब्बधातुक त्रि., सब्बधातुक का निषे., *व्याकरण में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द* [असार्वधातुक], आख्यात विभक्तियों में वर्तमान, अनुज्ञा, विधि एवं अनद्यतन भूत की चार विभक्तियां 'सब्बधातुक' कहलाती हैं, इनके अतिरिक्त शेष विभक्त्यिां असब्बधातुक कही गई हैं, सार्वधातुक से भिन्न (आख्यातविभक्तियां) - **के** पु., सप्त. वि., ए. व. - *असस्सेव धातुस्स भू होति वा असब्बधातुके परे,* क. व्या. 509; सद्द. 3.834.

असब्बनाम नपुं., सब्बनाम का निषे., तत्पु. स., *व्याकरण में ही प्रयुक्त* [असर्वनाम], सब्ब जैसे सर्वनामों से भिन्न (शब्द) - **मेसु** सप्त. वि., ब. व. - *इदानि असब्बनामेसु सङ्गहो वुच्चते,* सद्द. 1.271; - **त्त** नपुं., भाव. [असर्वनाममत्त्व], सर्वनाम न होना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *असब्बनामत्ता च सब्बथा पि पुरिसकञ्ञाचित्तनयेन एव योजेतब्बो,* सद्द. 1.271.

असब्बनामिक त्रि., [असार्वनामिक], सर्वनाम शब्दों के अन्तर्गत न आने वाला (शब्द) - **केसु** पु., सप्त. वि., ब. व. - *सब्बनामेसु गय्हन्ति असब्बनामिकेसु पि,* सद्द. 1.271.

असब्बप्पयोग पु., सब्बप्पयोग का निषे. [असर्वप्रयोग], सर्वत्र न होने वाला प्रयोग, आंशिक प्रयोग, बचा हुआ या अवशिष्ट विषयों पर प्रयोग - **गे** सप्त. वि., ए. व. - *सिस असब्बप्पयोगे,* सद्द. 2.567.

असब्बसङ्गाहकवचन नपुं., सब्बसङ्गाहकवचन का निषे., तत्पु. स. [असर्वसंग्राहकवचन], सभी का संग्रह न करने वाला वचन, सीमित आशय वाला वचन - **नं** प्र. वि., ए. व. - *असब्बसङ्गाहकवचनं इदं गावीसद्देन इत्थिया येव गहेतब्बत्ता ति चे ...,* सद्द. 1.211.

असब्बसाधारण त्रि., सब्बसाधारण का निषे. [असर्वसाधारण], असामान्य, विशिष्ट - **णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - ... *छन्नवुतिया वचनेहि सब्बसाधारणं असब्बसाधारणञ्च पदमालानयं ब्रूम,* सद्द. 2.318.

असब्भ त्रि., सब्भ का निषे., तत्पु. स. [असभ्य], सभा के बीच नहीं करने या नहीं बोलने योग्य, शिष्ट या भद्रजनों के लिए अनुपयुक्त, अभव्य, अकुशल - **ब्भो** पु., प्र. वि., ए. व. - *मातुगामो नामेस असब्भो अकतञ्ञू,* जा. अट्ठ. 3.465; - **ब्भा** प. वि., ए. व. - *ओवदेय्यानुसासेय्य, असब्भा च निवारये,* ध. प. 77; *असब्भा चाति अकुसलधम्मा च निवारेय्य,*

ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.311; - **ब्भाहि** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *असब्भाहि फरुसाहि वाचाहि अक्कोसन्ति परिभासन्ति, ...,* उदा॰ 82; *तत्थ असब्भाहीति असभायोग्गाहि सभायं साधुजनसमूहे वत्तुं अयुत्ताहि, दुट्ठुल्लाहीति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 89.

असब्भि व्यु॰ संदिग्ध **क**. असन्त का पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ [असद्भिः], असज्जनों द्वारा - *नासब्भि बहु सङ्गमो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.478; *नासब्भीति असप्पुरिसेहि पन ...,* तदे॰; *असब्भि हेतं, ..., उपञ्ञातं यदिदं अकतञ्ञुता अकतवेदिता,* अ॰ नि॰ 1(1).78; *यो पन अम्हेहि पदमालाय सब्भीति अयं सद्दो ततिया-पञ्चमीबहुवचनवसेन योजितो, सो च खो सन्त इति अकारन्तपकतिवसेन,•* सद्द॰ 1.174-75; **ख**. त्रि॰, संभवतः असब्भ/असभिय का परिवर्तित रूप [असभ्य], अशिष्ट, अनुत्तम, असत्पुरुष - *अञ्ञत्थ पन सब्भी ति इकारन्तपकतिवसेन योजेतब्बो, तत्थ हि सब्भी ति सप्पुरिसो निब्बानञ्च सुन्दराधिवचनं वा, ...,* सद्द॰ 1.175 - **ब्भि** पु॰, संबो॰ ए॰ व॰ - *बहुम्पेतं असब्भि जातवेद,* जा॰ अट्ठ॰ 1.471; *असब्भीति असप्पुरिस, असाधुजातिक,* जा॰ अट्ठ॰ 1.472; - **ब्भं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ..., *वाचं अभासि फरुसं असब्भं,* पे॰ व॰ 460; - **कारण** नपुं॰, कर्म॰ स॰, अनुपयुक्त कारण - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असब्भिकारणं, यं पुत्तदारं याचन्ते अत्तानं ददेय्य,* मि॰ प॰ 260; - **जातिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [असभ्यजातिक], अशिष्ट स्वभाव वाला - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सो नरदेवयक्खाबाधो असब्भिजातिको लामको,* जा॰ अट्ठ॰ 6.217; - **रूप** त्रि॰, ब॰ स॰ [असभ्यरूप], अशिष्ट या अज्ञानी प्रकृति वाला - **पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनरियरूपो पुरिसो जनिन्द, असम्मोदको थद्धो असब्भिरूपो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.241; 217; *तत्थ असब्भिरूपोति अपण्डितजातिको,* तदे॰; - **वाद** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असभ्यवाद], अशिष्ट जनों या अज्ञानी लोगों का सिद्धान्त, अनुपयुक्त सिद्धान्त - **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कितवोपमं आहरित्वा नानप्पकारकं असब्भिवादं वदमाना वाचाय घट्टयिंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.60.

असभाग त्रि॰, ब॰ स॰ [असभाग], असमान, असदृश, भिन्न प्रकृति का, एक ही श्रेणी के अन्दर न आने वाला - **गाय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ततियस्स पठमे असभागवुत्तिकोति असभागाय विसदिसाय जीवितवुत्तिया समन्नागतो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.6-7; - **वुत्तिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [असभागवृत्तिक], आपस में प्रेमभाव या शिष्टाचार-परायणता न रखने वाला - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अगारवा अप्पतिस्सा असभागवुत्तिका विहरन्ति,* चूळव॰ 290.

असभायोग्ग त्रि॰, सभायोग्ग का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असभायोग्य], सभा में न कहे जाने योग्य, सभा में सम्मिलित न होने योग्य, असभ्य - **ग्गाहि** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तत्थ असब्भाहीति असभायोग्गाहि सभायं साधुजनसमूहे वत्तुं अयुत्ताहि,* उदा॰ अट्ठ॰ 89.

असम[1] त्रि॰, [असम], **क**. ऊबड़-खाबड़, असमतल, कहीं ऊंचा तो कहीं निचला - **मं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अन्धोव विसमं मग्गं, न जानाति समासमं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.170; **ख**. अनूठा, बेजोड़, अनुपम, अतुलनीय, भिन्न - **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं तथागतो बोधिसत्तो समानो असमो लोकेन ...,* मि॰ प॰ 125; *मेत्ताय असमो होहि,* बु॰ वं॰ 2.157; - **मा** ब॰ व॰ - *असमा उभोदूरविहारवुत्तिनो ...,* सु॰ नि॰ 222; - **मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तस्सापि असमं सीलं,* बु॰ वं॰ 10.2; *तत्थ असमं सीलन्ति अञ्ञेसं सीलेन असदिसं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 204; - **ता** स्त्री॰, भाव॰ [असमता], विषमता, अन्तर, प्रभेद - **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञेहि धम्मेहि असमतं वत्वा इदानि तेसं सत्तानं ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 1.143.

असम[2] पु॰, ब॰ व॰ में प्रयुक्त होने पर, **क**. देवताओं का विशेष वर्ग - **मा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *वेण्डुदेवा सहलि च, असमा च दुवे यमा,* दी॰ नि॰ 2.191; *असमा च दुवे यमाति असमदेवता च द्वे च यमका देवा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.254; **ख**. पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ में प्रयुक्त होने पर, असम देव-वर्ग का एक देव - , .. *असमो च सहलि च नीको च अकोटको वेगब्भरि च* ..., स॰ नि॰ 1(1).80.

असम[3] पु॰, एक चक्रवर्ती राजा - **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इतो तेसट्ठिमे कप्पे, असमो नाम खत्तियो, सत्तरतनसम्पन्नो, चक्कवत्ती महब्बलो,* अप॰ 1.249.

असम[4] पु॰, सोभित बुद्ध का अग्रश्रावक या अग्रसेवक - **मो** उपरिवत् - *भिय्यो चेव असमो च, अहेसुं अग्गुपट्ठका,* बु॰ वं॰ 10.23.

असमत्त त्रि॰, सं॰ + √आप के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असमाप्त], समाप्त नहीं किया गया, पूरा न किया गया, आधा अधूरा, अपूर्ण - **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *अकेवली ते, असमत्ता ते,* महानि॰ 220; - **त्ते** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *ते, भगवा असमत्ते ओवदति, यथा पुण्णञ्च गोवतिकं अचेलञ्च कुक्कुरवतिकं,* नेत्ति॰ 81; *असमत्तेति कम्मे असम्पुण्णे, ते असम्पुण्णे वा,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 289.

असमत्थ त्रि., समत्थ का निषे., तत्पु. स. [असमर्थ], अक्षम, सामर्थ्य से रहित - **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. - *मुञ्चस्सति उपायापरिच्चागे अनुपायापरिग्गहे च असमत्थो होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).254; *यथा बलिबद्दस्स युगनङ्गलादीनि वहितुं असमत्थो एसो'ति ...,* ध. प. अट्ठ. 2.70; - **ता** स्त्री., भाव. [असमर्थता], अक्षमता, सामर्थ्य का अभाव - **तं** द्वि. वि., ए. व. - *एतमत्थं विदित्वाति एतं ... केवलं तरितुं असमत्थतं ...,* उदा. अट्ठ. 343; - **पञ्ञ** त्रि., ब. स. [असमर्थप्रज्ञ], क्षमता से रहित प्रज्ञा वाला, अविकसित बुद्धि वाला - **ञ्ञं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *दहरिं कुमारिं असमत्थपञ्ञं, यं तानयिं ञातिकुला सुगत्ते,* जा. अट्ठ. 4.32; *तत्थ असमत्थपञ्ञन्ति कुटुम्बं विचारेतुं अप्पटिबलपञ्ञं अतितरुणिञ्ञेव समानं,* तदे.

असमधुर त्रि., निषे., ब. स. [असमधुर], अनुपम भार को ढोने वाला, दूसरों द्वारा नहीं ढोए जा सकने योग्य भार को ढोने वाला - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तथागतो नाम असमधुरो, तथागतेन वुळ्हधुरं अञ्ञो वहितुं समत्थो नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 1.192; - **रं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *एवं असमधुरं पण्डितं नाहं दकरक्खस्स दस्सामीति,* जा. अट्ठ. 6.309; - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *सोहं न सोस्सं असमधुरस्स धम्मं,* सु. नि. 699.

असमनुपस्सनलक्खण त्रि., ब. व. [असमानुपश्यनलक्षण], गहराई या सूक्ष्मता के साथ अनुपश्यना न किए जाने के स्वभाव वाला, वह, जिसने सूक्ष्मता के साथ अनुपश्यना नहीं की है - **क्खणा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सङ्खतलक्खणानं धम्मानं असमनुपस्सनलक्खणा निच्चसञ्ञा,* नेत्ति. 25.

असमन्नागत त्रि., समन्नागत का निषे. [असमन्वागत], पूरी तरह से अपने पास न रखने वाला, (से) रहित - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अनुलोमिकाय खन्तिया असमन्नागतो सम्मत्तनियामं ओक्कमिस्सती'ति नेतं ठानं विज्जति,* अ. नि. 2(2).142.

असमन्नाहार त्रि., ब. स. [असमन्वाहार], **शा. अ.** एक साथ नहीं लाना, **ला. अ.** चित्त की एकाग्रता का अभाव, एकाग्रता के साथ अनुचिन्तन का अभाव - **तो** प. वि., ए. व. - *असमन्नाहारतोति पठवीधातु चेत्थ'अहं पठवीधातू'ति वा ... न जानाति,* विसुद्धि. 1.360; - **ता** स्त्री., भाव., सूक्ष्म अनुचिन्तन के अभाव की दशा - ... *एते धम्माति हेट्ठा धातूनं असमन्नाहारता दस्सिता एव ...,* विसुद्धि. महाटी. 1.425.

असमपेक्खण नपुं., निषे., तत्पु. स. [असम्प्रेक्षण], संप्रेक्षण का अभाव, सूक्ष्मता के साथ या समभाव के साथ धर्मों को चित्त द्वारा ग्रहण न करना - **णा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *रूपे खो, ... असमपेक्खणा, वेदनासमुदये, ...,* स. नि. 2(1).260; *न समं पेक्खतीति असमपेक्खणा,* ध. स. अट्ठ. 294; - **ने** सप्त. वि., ए. व. - *असमपेक्खने मोहो उप्पज्जति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).265; पाठा. असमपेक्खन.

असमय पु., समय का निषे., तत्पु. स. [असमय], अनुपयुक्त समय, अनुपयुक्त काल - **यो** प्र. वि., ए. व. - *अकालो ... भगवन्तं दस्सनाय, ... मनोभावनियानम्पि भिक्खूनं असमयो दस्सनाय,* म. नि. 2.224; - **या** ब. व. - *पञ्चिमे भिक्खवे असमया पधानाय,* अ. नि. 2(1).61; - **येन** तृ. वि., ए. व. - ... *असमयेन भुत्तं अनोजवन्तं होति,* अ. नि. 2(1).240; - **प्पत्त** त्रि., समयप्पत्त का निषे., तत्पु. स. [असमयप्राप्त], अपने निर्धारित समय को न पा सकने वाला, निर्धारित जीवनावधि तक न पहुंचने वाला - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *वातेन पटिपीळितो सो वलाहको असमयप्पत्तो येव विगतो'ति,* मि. प. 280.

असमयविमुत्त त्रि., तत्पु. स., हेतु-प्रत्ययों के बिना ही विमुक्ति को पाने वाला अर्हत्, सुनिश्चित विमुक्ति से विमुक्त, पूर्णरूप से निर्वाण को प्राप्त अर्हत् - **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *भिक्खु असमयविमुत्तो करणीयं अत्तनो न समनुपस्सन्ति कतस्स वा पतिचयं,* अ. नि. 3(2).303; *असमयविमुत्तो ति असमयविमुत्तिया विमुत्तो खीणासवो,* अ. नि. अट्ठ. 3.343.

असमयविमुत्ति स्त्री., कर्म. स., सुनिश्चित विमुक्ति, अर्हत् द्वारा प्राप्त विमुक्ति - **या** प्र. वि., ए. व. - *असमयविमोक्खं आराधेति, अट्ठानमेतं, ... यं सो भिक्खु ताय असमयविमुत्तिया परिहायेथ,* म. नि. 1.260.

असमयविमोक्ख पु., कर्म. स., चार आर्य-मार्ग, श्रमण-जीवन के चार फल एवं निर्वाण - **क्खं** द्वि. वि., ए. व. - *असमयविमोक्खं आराधेतीति, कतमो असमयविमोक्खो? चत्तारो च अरियमग्गा, ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).130. - **क्खो** प्र. वि., ए. व. - *चत्तारि च सामञ्ञफलानि, निब्बानञ्च, अयं असमयविमोक्खो'ति,* पटि. म. 226;

असमवेक्खित्वा सं. + अव + √इक्ख के भू. क. कृ. का निषे. [असमवेक्ष्य], अच्छी तरह से अचिन्तित या अविचारित, ठीक से सोच-विचार न कर - *असमवेक्खित्वा पारिमं तीरं,* म. नि. 1.290.

असमसम त्रि., ब. स., अनुपम, बेजोड़, अतुलनीय, अनुपमेय बुद्धों जैसा, वह, जिसके जैसा कोई और न हो - **मो** पु., प्र. वि., ए. व. - ... *अप्पटिपुग्गलो असमो असमसमो द्विपदानं अग्गो'ति,* अ. नि. 1(1).29; *असमसमोति असमा वुच्चन्ति अतीतानागता सब्बञ्ञुबुद्धा, तेहि असमेहि समोति असमसमो,* अ. नि. अट्ठ. 1.94; - **मं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *तदापाहं असमसमं, ससङ्घं, सपरिज्जनं,* बु. वं. 11.14.

असमा स्त्री., 1. पदुम बुद्ध की माता - **मा** प्र. वि., ए. व. - *चम्पकं नाम नगरं, असमो नाम खत्तियो, असमा नाम जनिका, पदुमस्स महेसिनो,* बु. वं. 10.16; 2. पदुमुत्तर बुद्ध की दो अग्रशिष्याओं में से एक - **मा** प्र. वि., ए. व. - *अमिता च असमा च, अहेसुं अग्गसाविका,* बु. वं. 12.25.

असमादानचार पु., भिक्षु के लिए निर्धारित तीन चीवरों को बिना लिए ही भिक्षाटन के लिए विचरना - **रो** प्र. वि., ए. व. - ... *अनामन्तचारो, असमादानचारो, गणभोजनं,* ..., महाव. 331; *असमादानचारोति तिचीवरं असमादाय चरणं, चीवरविप्पवासो कप्पिस्सतीति अत्थो,* महाव. अट्ठ. 366.

असमाधि स्त्री., समाधि का निषे., तत्पु. स. [असमाधि], चित्त में समभाव एवं एकाग्रता का अभाव - **धि** प्र. वि., ए. व. - *इति खो, भिक्खवे, समाधि मग्गो, असमाधि कुम्मग्गो'ति,* अ. नि. 2(2).123; - **संवत्तनिक** त्रि., समाधि या चित्तसमता एवं चित्त की एकाग्रता की ओर न ले जाने वाला/वाली - **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *या सा वाचा अण्डका ... असमाधिसंवत्तनिका,* म. नि. 1.360; *असमाधिसंवत्तनिकाति अप्पनासमाधिस्स वा उपचारसमाधिस्स वा असंवत्तनिका,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).227; - **सुख** नपुं., निषे., तत्पु. स., समाधि में अनुभूत सुख से भिन्न दूसरा सुख - **खं** प्र. वि., ए. व. - *द्वेमानि, भिक्खवे, सुखानि, कतमानि द्वे? समाधिसुखञ्च असमाधिसुखञ्च,* अ. नि. 1(1).97.

असमान त्रि., ब. स. [असमान], भिन्न, दूसरा, अन्य, असदृश - **ने** पु., सप्त. वि., ए. व. - *असमाने कत्तरि पयोगो,* सद्द. 1.312; - **कत्तुक** त्रि., ब. स. [असमानकर्तृक], भिन्न कर्ता वाला - **कानं** पु., ष. वि., ब. व. - *असमानकत्तुकानं त्वादिसद्दप्पयोगो,* सद्द. 1.313; - **कालिक** त्रि., समानकालिक का निषे. [असमानकालिक], भिन्न-भिन्न कालों से जुड़ा हुआ - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - *सासनस्मिं हि केचि सद्दा ... असमानकालिका असमानपदजातिका च भवन्ति,* सद्द. 1.31; - **गतिकत्त** नपुं., भाव. [असमानगतिकत्व], एक समान स्थिति का न रहना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *तेहि असमानगतिकत्ताति कारणं दस्सितं होति,* सद्द. 1.182; - **जातिक** त्रि., ब. स. [असमानजातिक], भिन्न वर्ग या समूह वाला, भिन्न प्रकृति वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *इत्तरजच्चोति अञ्ञजातिको, मया सद्धिं असमानजातिको लामकजातिकोति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.200; - **त्तता** स्त्री., भाव. [असमानात्मता], पक्षपात से रहित न होना - **य** तृ. वि., ए. व. - *कतेन अदानेन वा अप्पियवचनेन वा अनत्थचरियाय वा असमानत्तताय वा यतो कुतोचि चरियं ... न सुतपुब्बं,* मि. प. 159; - **नत्थ** त्रि., ब. स. [असमानार्थ], भिन्न अर्थ वाला - **त्था** पु., प्र. वि., ब. व. - *समानसुतिका पि असमानत्था चेव होन्ति असमानविभत्तिका च,* सद्द. 1.31; - **न्त** त्रि., ब. स. [असमानान्त], भिन्न-भिन्न प्रत्ययों में अन्त होने वाला, अलग अलग विभक्तिचिह्नों वाला - **न्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *केचि सद्दा ... असमानन्ता ... भवन्ति,* सद्द. 1.31; - **न्तिक** त्रि., ब. स., उपरिवत् - **न्तिका** पु., प्र. वि., ब. व. - *काचि असमानसुतिका काचि असमानन्तिका,* सद्द. 2.461; - **पदजातिक** त्रि., ब. स. [असमानपदजातिक], भिन्न भिन्न पद-प्रभेद वाला - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *केचि सद्दा ... असमानपदजातिका ... भवन्ति,* सद्द. 1.31; - **प्पवत्तिनिमित्त** त्रि., ब. स., भिन्न भिन्न रूप से व्युत्पन्न श्रुतिसम या समध्वनिक पद - **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *केचि सद्दा ... असमानप्पवत्तिनिमित्ता ... भवन्ति,* सद्द. 1.31; - **लिङ्ग** त्रि., ब. स. [असमानलिङ्गिन्], भिन्न भिन्न लिङ्गों के साथ सम्बद्ध - **ङ्गा** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *केचि सद्दा ... असमानलिङ्गा ... भवन्ति,* सद्द. 1.31; - **वचनक** त्रि., ब. स. [असमानवचनक], भिन्न भिन्न वचनों का सूचक - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *केचि सद्दा ... असमानवचनका ... भवन्ति,* सद्द. 1.31; - **विभत्तिक** त्रि., ब. स. [असमानविभक्तिक], भिन्न भिन्न विभक्तियों में प्रयुक्त - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *केचि सद्दा ... असमानविभत्तिका ... भवन्ति,* सद्द. 1.31; - **सुतिक** त्रि., ब. स. [असमानश्रुतिक], असमान या भिन्न भिन्न ध्वनियों से युक्त, असमश्रुति - **का** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - ... *काचि असमानसुतिका काचि असमानन्तिका,* सद्द. 2.461; - **नासनिक** त्रि., ब. स. [असमानासनिक], भिन्न प्रकार के आसन (मञ्च या पीठ) रखने वाला - **केहि** पु., तृ. वि., ब. व. - *तेन खो पन समयेन भिक्खू असमानासनिकेहि सह दीघासने निसीदितुं कुक्कुच्चायन्ति,* चूळव. 299.

असमापत्ति स्त्री॰, समापत्ति का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असमापत्ति], अप्राप्ति, अलाभ, आध्यात्मिक प्रगति का अलाभ - **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एत्थ दानि आयस्मन्तो इदञ्च वेय्याकरणं इमेसञ्च धम्मानं असमापत्ति,* स॰ नि॰ 1(2).108.

असमापन्नपुब्ब त्रि॰, ब॰ स॰, पूर्वकाल में अप्राप्त, पहले नहीं पाया हुआ - **ब्बा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न च सा समापत्ति सुलभरूपा या तेन भिक्खुना असमापन्नपुब्बा,* स॰ नि॰ 1(2).253.

असमास पु॰, [असमास], समास या संक्षेपण का अभाव, व्यास, विस्तार, असंक्षेपण - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भवन्तो भवमिच्चत्थं असमासस्स भासये,* सद्द॰ 1.249; - **क** त्रि॰, ब॰ स॰ [असमासक], समासरहित, असमस्त - **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *समासकपदञ्चेव असमासकमेव च,* सद्द॰ 1.249; - **विसय** त्रि॰, निषे॰, ब॰ स॰ [असमासविषय], समासों के क्षेत्र से बाहर वाला - **ये** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असमासविसये तोपच्चयो च ...,* सद्द॰ 1.141.

असमाहित त्रि॰, सं + आ + √धा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असमाहित], **शा॰ अ॰** ठीक से एकजुट बनाकर नहीं रखा गया, असंगृहीत, **ला॰ अ॰** आत्मनियन्त्रण से रहित, अशान्त, अस्थिर, एकाग्रता या समाधि करने में अक्षम - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *समाहितो आराधको होति नो असमाहितो,* अ॰ नि॰ 3(2).296; *न खो पनाहं असमाहितो विब्भन्तचित्तो ...,* म॰ नि॰ 1.26; - **ता** ब॰ व॰ - *ये खो केचि समणा वा ब्राह्मणा वा असमाहिता विब्भन्तचित्ता ...,* म॰ नि॰ 1.26; - **सङ्कप्प** त्रि॰, ब॰ स॰ [असमाहितसङ्कल्प], असुदृढ़ संकल्प वाला, शिथिल सङ्कल्प से युक्त - **प्पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असमाहितसङ्कप्पो, असद्धम्मरतो मगो,* अ॰ नि॰ 1(2).27; *असमाहितसङ्कप्पोति अट्ठपितसङ्कप्पो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.260.

असमिज्झनक त्रि॰, पूरा न होने वाला / वाली, सफल न होने वाला / वाली - **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आसा नाम असमिज्झनका नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.220.

असमिद्ध त्रि॰, समिद्ध का निषे॰ [असमृद्ध], धन एवं समृद्धि से रहित, निर्धन, अकिञ्चन - **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तथा समिद्धो नाथोति वुच्चति असमिद्धो अनाथोति,* सद्द॰ 2.366.

असमिद्धि क. स्त्री॰, समिद्धि का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असमृद्धि], अभाव, असफलता, दरिद्रता, अभव्यता - *सियाभावासमिद्धीसु किच्छे चानन्दनादिके,* अभि॰ प॰ 1169; *त्यम्हा अनिद्धिका दन्ता, असमिद्धि दमेति नो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.368; *असमिद्धियेव नो दमेतीति,* तदे॰; **ख**. त्रि॰, ब॰ स॰ [असमृद्धिक], दरिद्र, धन एवं समृद्धि से रहित - **द्धिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनिद्धिनन्ति, महाराज, अनिद्धिं असमिद्धिं दलिद्दपुरिसं नाम साव ... दमेति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.368.

असमुग्घात पु॰, समुग्घात का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असमुद्घात], जड़ से उखाड़ फेंकने का अभाव, समूल उन्मूलन का अभाव, नहीं उखाड़ फेंकना - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यत्थ असमुग्घातो तत्थ अनुसयो,* नेत्ति॰ 66; - **गत** त्रि॰, [असमुद्घातगत], जड़ के साथ नहीं उखाड़ फेंका हुआ, सम्पूर्णरूप से अभी तक नष्ट न किया गया - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तासु तासु भूमिसु असमुग्घातगता किलेसा भूमिलद्धुप्पन्नाति संङ्ख गच्छन्तीति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.372.

असमुग्घातित त्रि॰, [असमुद्घातित], अनुत्पातित, जड़ से नहीं उखाड़ा गया, पूर्णरूप से विनष्ट न किया गया - **किलेस** पु॰, कर्म॰ स॰, नष्ट नहीं किया गया क्लेश - **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *मग्गेन असमुग्घातितकिलेसा पन भवग्गे निब्बत्तस्सापि उप्पज्जन्तीति पुरिमनयेनेव वित्थारेतब्बं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.372; - **तुप्पन्न** त्रि॰, कर्म॰ स॰ [असमुद्घातितुत्पन्न], पूरी तरह से नष्ट न किए जाने के कारण उत्पन्न - **न्नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ..., *अविक्खम्भितुप्पन्नं असमुग्घातितुप्पन्नन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.372.

असमुच्छिन्दन नपुं॰, समुच्छिन्दन का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असमुच्छेदन], पूर्णरूप से नहीं काट दिया जाना, सम्पूर्ण रूप से विनष्ट न किया जाना - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न पन ... किलेसानं असमुच्छिन्दनतो अनिय्यानिकत्ता ... अतुल्याकारतो,* उदा॰ अट्ठ॰ 29.

असमुच्छिन्न त्रि॰, सं + उ + √छिद के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असमुच्छिन्न], पूर्ण रूप से विनष्ट न किया हुआ - **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *भिक्खुस्स वा भिक्खुनिया वा ... चेतसोविनिबन्धा असमुच्छिन्ना,* अ॰ नि॰ 3(2).15.

असमुट्ठित त्रि॰, सं + उ + √ठा के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असमुत्थित], ऊपर उठकर नहीं आया हुआ, अनुत्पन्न, अस्तित्व में नहीं आया हुआ - **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *अनुट्ठिता असमुट्ठिता अनुप्पन्ना अनुप्पन्नंसेन सङ्गहिता,* ध॰ स॰ 1042.

असमुदाचार पु॰, सं + उ + आ + √चर के क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [असमुदाचार], **क**. उचित व्यावहारिक प्रयोग में या प्रचलन में नहीं आना, व्यावहारिक प्रयोग का अभाव, **ख**.

शिष्टाचार की उचित क्रिया का अभाव, सक्रियता का अभाव, संबोधित करने की उचित रीति का अभाव – **रेन** तृ. वि., ए. व. – ... *किलेसानं असमुदाचारेन पब्बजितकिच्चं नो निप्फन्नं*, ध. प. अट्ठ. 2.62.

असमुदानित त्रि., सं + उ + आ + √नी के भू. क. कृ. का निषे. [असमुदानीत], उचित रूप में नहीं लाया गया, धर्मपूर्वक अर्जित न किया गया – **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *अलद्धा वित्तं तप्पति, पुब्बे असमुदानितं*, जा. अट्ठ. 4.158; *असमुदानितं असम्भतं धनं ... सोचति*, जा. अट्ठ. 4.159.

असमुप्पन्न त्रि., सं + उ + √पद के भू. क. कृ. का निषे. [असमुत्पन्न], नहीं उत्पन्न, अस्तित्व को अप्राप्त, जन्मग्रहण न किया हुआ – **न्ना** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *अनुप्पन्ना असमुप्पन्ना अनुट्ठिता असमुट्ठिता अनुप्पन्ना अनुप्पन्नंसेन सङ्गहिता*, ध. स. 1042.

असमूहत त्रि., सं + उ + √हन के भू. क. कृ. का निषे. [असमुद्धत], पूर्ण रूप से नष्ट न किया हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *अस्मी'ति अनुसयो असमूहतो*, स. नि. 2(1).119; – **तुप्पन्न** त्रि., कर्म. स. [असमुद्धतोत्पन्न], अविनाशित होने के कारण उत्पन्न, पूरी तरह निरुद्ध नहीं रहने के कारण उत्पत्ति को प्राप्त – **नं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *धम्मतं अनतीतन्ति कत्वा असमूहतुप्पन्नन्ति वुच्चति*, सु. नि. अट्ठ. 1.7.

असमेक्खितत्त नपुं., सं + आ + √इक्ख के भू. क. कृ. का निषे. का भाव. [असमीक्षितत्व], ठीक से समीक्षण नहीं किया जाना, उचित सोच-विचार का न होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *मरीचिधम्मं असमेक्खितत्ता, मायागुणा नातिवदन्ति पञ्ञं*, जा. अट्ठ. 7.52; *तयिदं असमेक्खितत्ता युत्तायुत्तं अजानन्ता बाला ... उपगच्छन्ति*, जा. अट्ठ. 7.54.

असमेन्त त्रि., सं + आ + √इ के वर्त. कृ. का निषे., ठीक से नहीं आना, समग्र रूप में नहीं रहना – **न्ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *एकस्मिं फले असमेन्ते ... नत्थि*, जा. अट्ठ. 2.328.

असमोसरण नपुं., सं + ओ + √सर से व्यु., क्रि. ना. का निषे. [असमवसरण], आपस में मेल-जोल का अभाव, पारस्परिक संपर्क का अभाव – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *अच्चाभिक्खणसंसग्गा, असमोसरणेन च, एतेन मित्ता जीरन्ति*, जा. अट्ठ. 5.221; ... *असमोसरणेन च मित्ता जीरन्ति*, जा. अट्ठ. 5.222.

असम्पकम्पी त्रि., सम्पकम्पी का निषे. [असम्प्रकम्पिन्], प्रकम्पित न होने वाला, नहीं हिलने-डुलने वाला, सुदृढ़, स्थिर – **म्पी** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *गम्भीरनेमो सुनिखातो अचलो असम्पकम्पी*, स. नि. 3(2).342.

असम्पकम्पिय त्रि., सं + प + √कम्प के सं. कृ. का निषे., नहीं हिलाए-डुलाए जाने योग्य, सुदृढ़, स्थिर, विचलित या बेचैन न किए जाने योग्य – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यथिन्दखीलो ..., चतुब्भि वातेहि असम्पकम्पियो*, सु. नि. 231; *असम्पकम्पियोति कम्पेतुं वा चालेतुं वा असक्कुणेय्यो*, सु. नि. अट्ठ. 1.247.

असम्पजञ्ञ नपुं., सम्पजञ्ञ का निषे. [बौ. सं. असम्प्रजन्य], समभाव से धर्मों के प्रजानन का अभाव, अज्ञान-भाव, चित्त की जागरुकता का अभाव – **ञ्ञं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *मुट्ठस्सच्चञ्च असम्पजञ्ञञ्च*, अ. नि. 1(1).115; *असम्पजञ्ञन्ति अञ्ञाणभावो*, अ. नि. अट्ठ. 2.65; – **किरिया** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. असम्प्रजन्यक्रिया], आत्मसंयमरहित क्रिया, समभाव एवं शान्ति से रहित चित्त के द्वारा की गई क्रिया – **या** प्र. वि., ए. व. – *हत्थस्स कुकतत्ता असंयमो असम्पजञ्ञकिरिया हत्थकुक्कुच्चन्ति वेदितब्बो*, लीन. (दी.नि.टी.) 1.193; विशेष तात्पर्य जानने के लिए देखें 'सम्पजञ्ञ' (आगे).

असम्पजान त्रि., सम्पजान का निषे., ब. स. [असंप्रज्ञान], समभावयुक्त चित्त द्वारा धर्मों का यथार्थ ज्ञान न करने वाला, स्मृति अथवा चित्त की जागरुकता से रहित, चेतना से रहित – **ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *मुट्ठस्सती असम्पजाना*, म. नि. 1.39; – **नो** ए. व. – *असम्पजानो उपायपरिग्गहे अनुपायपरिवज्जने च सम्मुय्हति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).254; *अयं असम्पजानो अभिसङ्खरोति नाम*, अ. नि. अट्ठ. 2.345; – **कम्म** त्रि., ब. स., संप्रज्ञान के बिना कर्मों को करने वाला, अपनी चेतना के सम्प्रयोग के बिना ही कर्म करने वाला – **म्मं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तत्थ असम्पजानकम्मं एवं वेदितब्बं – दहरदारका मातापितूहि कतं करोमाति चेतियं वन्दन्ति*, अ. नि. अट्ठ. 2.345; **मूलिका** स्त्री., अज्ञान या असंप्रज्ञान से उत्पन्न – **का** प्र. वि., ब. व. *असम्पजानमूलिका वीसतीति असीति चेतना होन्ति*, अ. नि. अट्ठ. 2.346.

असम्पटिवेध पु., सम्पटिवेध का निषे., तत्पु. स. [असम्प्रतिवेध], प्रतिवेध-ज्ञान का अभाव, गम्भीर आध्यात्मिक ज्ञानदर्शन का अभाव – **धो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यत्थ असम्पटिवेधो तत्थ अविज्जा*, नेत्ति. 66; द्रष्ट. सम्पटिवेध एवं पटिवेध (आगे); – **रस** त्रि., ब. स., पूर्ण प्रतिवेधज्ञान न

होने देने का काम करने वाला - **सो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असम्पटिवेधरसो आरम्मणसभावच्छादनरसो वा,* ध. स. अट्ठ. 289; - **लक्खण** त्रि., ब. स. [असम्प्रतिवेधलक्षण], प्रतिवेधज्ञान न कराने के लक्षण से युक्त - **णा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सब्बधम्मयाथावअसम्पटिवेधलक्खणा अविज्जा,* नेत्ति. 25.

असम्पत्त त्रि., सं + √प + √आप के भू. क. कृ. का निषे. [असंप्राप्त], **क.** अप्राप्त (समय), अभी तक नहीं आया हुआ (समय या बारी) - **त्ते** पु., सप्त. वि., ए. व. - *यो वे काले असम्पत्ते, अतिवेलं पभासति,* जा. अट्ठ. 3.88; *तत्थ काले असम्पत्तेति अत्तनो वचनकाले असम्पत्ते,* जा. अट्ठ. 3.89; **ख.** वह, जो अभी तक पहुंच नहीं सका है या जिसे अभी तक कुछ मिल नहीं सका है - *असम्पत्तोम्हि राजानं, अद्दसं सिखिनायकं,* अप. 1.227; - **वय** त्रि., ब. स. [असम्प्राप्तवयस्], परिपक्व आयु को अप्राप्त, नाबालिग, अवयस्क - **या** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *असम्पत्तवयाव कुमारियो पुरिसन्तरं गन्त्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.322.

असम्पदान नपुं., सम्पदान का निषे., तत्पु. स. [असम्प्रदान], दान न करना, आपस में न बांटना - **नेन** तृ. वि., ए. व. - *असम्पदानेनितरीतरस्स,* जा. अट्ठ. 1.446; *तत्थ असम्पदानेनाति असम्पादानेन,* जा. अट्ठ. 1.447; - **जातक** नपुं., जा. अट्ठ. की एक कथा, जा. अट्ठ. 1.445-448.

असम्पदुट्ठ त्रि., सं + प + √दुस के भू. क. कृ. का निषे. [असंप्रदुष्ट], नहीं प्रदूषित, अमिश्रित, अप्रभावित, मैत्री भावना से विशुद्ध - **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तेसु तुवं वचसा कम्मुना च, असम्पदुट्ठो च भवाहि निच्चं,* जा. अट्ठ. 7.215; ... *च निच्चं असम्पदुट्ठो भव, ... मेत्तचित्तसङ्घातं असम्पदोसं अनुरक्ख,* तदे.; - **ट्ठं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *कथं हि दुट्ठेन असम्पदुट्ठं, सुद्धं ... करेय्या'ति,* सु. नि. 90.

असम्पदोस पु., सम्पदोस का निषे. [असम्प्रदोष], द्वेषभाव का अभाव, अद्वेष, मैत्री-भावना - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *एवं तुवं नाग असम्पदोसं, अनुपालय वचसा कम्मुना च,* जा. अट्ठ. 7.215; *अनुपालयाति ... मेत्तचित्तसङ्घातं असम्पदोसं अनुरक्ख,* तदे..

असम्पवेधी त्रि., सं. + प + √विध से व्यु. क्रि. विशे. का निषे. [असम्प्रवेधिन्], कम्पनरहित, नहीं हिलने-डुलने वाला, अविचलित, स्थिर, दृढ़ - **धी**[1] पु., प्र. वि., ए. व. - *इन्दखीलो ... गम्भीरनेमो सुनिखातो अचलो असम्पवेधी,* दी. नि. 3.99; - **धी**[2] स्त्री., प्र. वि., ए. व. - ... *नगरे एसिका होति गम्भीरनेमा ... असम्पवेधी,* अ. नि. 2(2).241; - **धी**[3] पु., प्र. वि., ब. व. - *खिला निखाता असम्पवेधी (इति धनियो गोपो),* सु. नि. 28.

असम्पादित त्रि., [असम्पादित], पूर्णता की स्थिति तक प्राप्त न कराया गया, शुद्ध रूप में अप्राप्त अनुपार्जित - **अत्तभावस्स** पु., कर्म. स., ष. वि., ए. व., पूर्णतया विशुद्ध रूप में अप्राप्त अस्तित्व - *अकतत्तस्साति असम्पादितअत्तभावस्स मित्तदुब्भिस्स,* जा. अट्ठ. 5.347.

असम्पायन्त त्रि., वर्त. कृ. [असम्पादयत्], उपयुक्त उत्तर नहीं देने वाला, प्रश्न का उचित रूप में विसर्जन नहीं कर रहा - **न्ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *असम्पायन्ता कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोन्ति,* सु. नि. (पृ.) 157.

असम्पायन नपुं., [असम्पादन], उपयुक्त उत्तर न देना, अनिष्पादन - **नं** प्र. वि., ए. व. - *सो ममस्स विघातोति यं यं पुनप्पुनं वत्वापि असम्पायनं नाम,* दी. नि. अट्ठ. 1.100.

असम्फप्पलापवादिता स्त्री., भाव. [असंप्रलापवादिता], निरर्थक बातें न बोलना, बकवास न करना - *अपिसुणाफरुसासम्फप्पलापवादिता ...,* खु. पा. अट्ठ. 24.

असम्फुट्ठ / असम्फुट त्रि., सम्फुट का निषे. [असंस्पृष्ट], **1.** स्पर्श न किया हुआ, अछूता, **2.** नहीं भरा हुआ, अपरिपूर्ण, अपरिव्याप्त - **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यो आकासो आकासगतं ... असम्फुट्ठं चतूहि महाभूतेहि - इदं तं रूपं आकासधातु,* ध. स. 724; ... *महाभूतेहीति एतेहि असम्फुट्ठं निज्जटाकासंव कथितं,* ध. स. अट्ठ. 352.

असम्बन्ध त्रि., ब. स. [असम्बद्ध], आपस में नहीं जुड़ा हुआ, एक दूसरे के साथ सम्बन्ध न रखने वाला - **न्धा** पु., प्र. वि., ब. व. - *असञ्ञुत्ताति जयम्पतिका भवितुं अयुत्ता असम्बन्धा,* जा. अट्ठ. 3.233; - **त्त** नपुं., भाव. [असम्बद्धत्व], सम्बन्ध का न रहना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *एकं पन ... अञ्ञेहि रुक्खेहि असम्बन्धत्ता उम्मूलेत्वा भूमियं पातेसि,* जा. अट्ठ. 1.313.

असम्बाध त्रि., ब. स. [असम्बाध], बाधारहित, रुकावट-रहित, रोकटोक-रहित - **धं**[1] स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *मेत्तञ्च ..., मानसं ..., उद्धं ..., असम्बाधं अवेरमसपत्तं,* सु. नि. 150; *असम्बाधन्ति सम्बाधविरहितं,* सु. नि. अट्ठ. 1.166; - **धं**[2] नपुं., प्र. वि., ए. व. - *असपत्तमसम्बाधं ...,* थेरीगा. 514; *किलेससम्बाधाभावतो असम्बाधं,* थेरीगा. अट्ठ. 316; - **धाय** पु., प्र. वि., ए. व. - ... *असम्बाधाय गन्धकुटियं विहरन्तो विय ...,* जा. अट्ठ. 1.88.

असम्बुद्ध / असम्बुद्धन्त त्रि., **क.** सं. + √बुध के वर्त. कृ. का निषे. [असम्बुध्यत्], नहीं जानने वाला, नहीं ग्रहण करने वाला, अज्ञानी – **द्धं** पु., प्र./द्वि. वि., ए. व. – *पुमित्तो च असम्बुद्धं,* जा. अट्ठ. 5.73; *असम्बुद्धन्ति असम्बुद्धन्तो अजानन्तो, अप्पज्ञोति अत्थो,* जा. अट्ठ. 5.73; *असम्बुधं बुद्धनिसेवितं यं ...,* पारा. अट्ठ. 1.1; **ख.** सं. + √बुध के सं. कृ. का निषे. [असंबुध्य], नहीं जानने योग्य, अग्राह्य, समझ के बाहर का – *गुय्हमत्थं असम्बुद्धं, सम्बोधयति यो नरो,* जा. अट्ठ. 5.76; *तत्र असम्बुद्धन्ति परेहि अञ्ञातं ... परेसं बोधेतुं अयुत्तन्ति अत्थो,* सद्द. 2.482.

असम्बोध पु., सम्बोध का निषे., तत्पु. स. [असम्बोध], अज्ञान – **धो** प्र. वि., ए. व. – ... *अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो ...,* ध. स. 390; 1067; 1168.

असम्भजन्त त्रि., सं. + √भज के वर्त. कृ. का निषे. [असंभजत्], सेवन नहीं कर रहा, साथ सङ्ग न करने वाला – **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – ..., *असम्भजन्तम्पि न सम्भजेय्य,* जा. अट्ठ. 2.172.

असम्भव पु., सम्भव का निषे., तत्पु. स. [असंभव], वह, जो सम्भव न हो, असम्भावना, असंभाव्यता – **तो** प. वि., ए. व. – *तस्सीलस्सत्थस्स असंभवतो,* सद्द. 195; – **वा** उपरिवत् – ... *तं भुम्मत्थासम्भवा न युज्जति,* खु. पा. अट्ठ. 134.

असम्भावनेय्य त्रि., सं + √भू(प्रेर.) के सं. कृ. का निषे. [असंभावनीय], 'संभव है' इस रूप में अचिन्तनीय, असंभाव्य रूप में चिन्तित – **य्या** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *अरूपावचरा पन भुञ्जेय्युन्ति असम्भावनेय्या,* सु. नि. अट्ठ. 1.121.

असम्भिन्न त्रि., सं. + √भिद का भू. क. कृ. का निषे. [असंभिन्न], **क.** नहीं मिटाया हुआ, नहीं हटाया गया, नष्ट नहीं किया हुआ – **न्नेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *कालस्सेव असम्भिन्नेन विलेपनेन येन भगवा तेनुपसङ्कमि,* पाचि. 158; *असम्भिन्नेनाति अमक्खितेन, अनट्ठेनाति अत्थो,* सारत्थ. टी. 3.73; **ख.1.** अमिश्रित, आपसी मिलावट से रहित, विशुद्ध – **न्नं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. ... *आमिसेन असम्भिन्नं सन्धाय वुत्तं,* पाचि. अट्ठ. 145; ... *असम्भिन्नपायासं पचेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.66; **ख.2.** अमिश्रित रक्त वाला, वर्णसाङ्कर्य्य से रहित, शुद्ध नस्ल वाला, शुद्ध (वंश) – **न्ने** पु., सप्त. वि., ए. व. – *महासम्मतवंसम्हि, असम्भिन्ने महामुनि,* म. वं. 2.23; – **न्नाय** स्त्री., सप्त. वि., ए. व. – *सो हि असम्भिन्नाय महासम्मतपवेणिया ओक्काकवंसे जातत्ता जातिकुलपुत्तो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).130; – **न्नङ्ग** नपुं., कर्म. स., पांच प्रकार के धुतङ्ग, भेद-प्रभेद-रहित धुतङ्ग – **ङ्गानि** प्र. वि., ब. व. – *समासतो तीणि सीसङ्गानि पञ्च असम्भिन्नङ्गानीति अट्ठेव होन्ति,* विसुद्धि. 1.81; *असम्भिन्नङ्गानीति केहिचि सम्भेदरहितानि, विसुंयेव अङ्गानीति,* विसुद्धि. महाटी. 1.98; – **रस** त्रि., ब. स., अमिश्रित स्वभाव वाला, मिलावट से रहित – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *आमिसेन असम्भिन्न-रसं सन्धाय भासितं,* विन. वि. 1837; – **वत्थुक** त्रि., ब. स. [असम्भिन्नवस्तुक], अविनष्ट या निरोध को अप्राप्त वस्तु (आधार) वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *असम्भिन्नवत्थुका, असम्भिनारम्मणाति असम्भिन्नम्हिं वत्थुस्मिं असम्भिन्ने आरम्मणे उप्पज्जन्ति,* विभ. 362; *असम्भिन्नवत्थुकाति अनिरुद्धवत्थुका,* विभ. अट्ठ. 381; – **न्नारम्मण** त्रि., ब. स. [असम्भिन्नालम्बन], निरोध को अप्राप्त आलम्बन वाला – **णा** पु., प्र. वि., ब. व. – *असम्भिन्नारम्मणाति असम्भिन्नस्मिं वत्थुस्मिं असम्भिन्ने आरम्मणे उप्पज्जन्ति,* विभ. 362; – **णताय** स्त्री., भाव., तृ. वि., ए. व., आलम्बनों के निरुद्ध न होने से – *असम्भिन्नारम्मणतायपि एसेव नयो,* विभ. अट्ठ. 381.

असम्भीत त्रि., सं. + √भी के भू. क. कृ. का निषे. [असम्भीत], भय से मुक्त, नहीं डरा हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असम्भीतो भयातीतो,* अप. 1.351; – **ता** ब. व. – *सीहराजावसम्भीता, गजराजाव थामवा,* अप. 1.16; – **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *असम्भीतं अनुत्तासिं, मिगराजंव केसरिं,* अप. 1.356.

असम्भुणन्तो त्रि., सं. + √भू के वर्त. कृ. का निषे. [असम्भवत्], सक्षम या समर्थ न होने वाला, अक्षम, असमर्थ – **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असम्भुणन्तो पन ब्रह्मचरियं,* सु. नि. 398; *तत्थ असम्भुणन्तोति असक्कोन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 2.97.

असम्भूत त्रि., सं. + √भू के भू. क. कृ. का निषे. [असम्भूत], अस्तित्व में नहीं आया हुआ, नहीं उत्पन्न, अजात – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अन्तवन्तानि भूतानि, असम्भूतं अनन्तकं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).306.

असम्भोग[1] पु., सम्भोग का निषे., तत्पु. स. [असम्भोग], **शा. अ.** समूह में भोग का अभाव, **ला. अ.** सामाजिक जीवन से निष्कासन, सामाजिक बहिष्कार – **गं** द्वि. वि., ए. व. – *सङ्घो छन्नस्स भिक्खुनो, ... उक्खेपनीय कम्मं करोतु – असम्भोगं सङ्घेन,* चूळव. 45.

असम्भोग[2] त्रि., ब. स., सामाजिक जीवन से बहिष्कृत, सहवास से वञ्चित - **गो** पु., प्र. वि., ए. व. - ..., *असम्भोगो सङ्घेन,* चूळव. 245.

असम्मग्गत त्रि., सम्मग्गत का निषे. [असम्यग्गत], समुचित रूप से गमन न करने वाला, अपूर्ण, अर्हत् अवस्था तक न गया हुआ, ठीक से नहीं समझने वाला - **ग्गतो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सो पुनप्पुनं ... सासनस्मिं असम्मग्गतो असम्भावतो अक्खायति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).326.

असम्मट्ठ त्रि., सं + √मज के भू. क. कृ. का निषे. [असंमृष्ट], **शा. अ.** ठीक से स्वच्छ न किया गया, सम्मार्जन-रहित, **ला. अ.** गम्भीररूप से अपरीक्षित, सूक्ष्मरूप से अविचारित - **ट्ठट्ठान** नपुं., कर्म. स., अचिन्तित स्थल, अविचारित विषय - **नं** द्वि. वि., ए. व. - *अथायस्मा सारिपुत्तो असम्मट्ठट्ठानं सम्मज्जित्वा,* ..., जा. अट्ठ. 3.2.

असम्मत त्रि., सं + √मन के भू. क. कृ. का निषे. [असम्मत], सहमति या अनुमोदन न पाया हुआ, अननुमोदित, बिना अनुमति का - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *असम्मता अनुसासन्ति,* महाव. 119; - **तो** ए. व. - *उपसम्पन्नं ... असम्मतो नाम सम्मतेन वा सङ्घेन वा भारं कत्वा ठपितो वेदितब्बो,* पाचि. अट्ठ. 62.

असम्मत्तकारी त्रि., अक्षम, असमर्थ, उचित विचार या चिन्तन न करने वाला - **रीनं** पु., ष. वि., ब. व. - *मा चायं सारधम्मो वरधम्मो असम्मत्तकारीनं हत्थगतो ओञ्ञातो अवञ्ञातो ... भवतु,* मि. प. 184.

असम्मा अ., निपा. सम्मा का निषे., क्रि. वि. [असम्यक्], अनुपयुक्त रूप से, नहीं ठीक से - *अनुजानामि, ... असम्मावत्तन्तं पणामेतुं,* महाव. 60.

असम्मान पु., सम्मान का निषे., तत्पु. स. [असम्मान], सम्मान का अभाव, अपमान, तिरस्कार, अवहेलना **ने** सप्त. वि., ए. व. - *अभिरूपक अभिरूपका ति आदीसु असम्माने, ... आमेडितं दट्ठब्बं,* सद्द. 1.40.

असम्मानित त्रि., सम्मानित का निषे., तत्पु. स. [असम्मानित], सम्मान को अप्राप्त, अपमानित, तिरष्कृत - *माता पिता समणब्राह्मणा च असम्मानिता यस्स सके अगारे,* जा. अट्ठ. 4.92; *असम्मानिताति असक्कता,* जा. अट्ठ. 4.93.

असम्माभासन नपुं., [असम्यक्भाषण], अनुचित रूप से बोलना, अनुपयुक्त भाषण - **ने** सप्त. वि., ए. व. - *सठ असम्माभासने, ... न सम्मा भासती ति अत्थो,* सद्द. 2.533.

असम्मासम्बुद्ध पु., सम्मासम्बुद्ध का निषे., तत्पु. स. [असम्यक्सम्बुद्ध], सम्यक् रूप से स्वयं सम्बोधि ज्ञान न पाया हुआ व्यक्ति, पूर्णबुद्धत्व को अप्राप्त व्यक्ति - **द्धेसु** सप्त. वि., ब. व. - *असम्मासम्बुद्धेसु सम्मासम्बुद्धा'ति,* स. नि. 1(2).135; - **प्पवेदित** त्रि., तत्पु. स. [असम्यक्सम्बुद्धप्रवेदित], पूर्ण बुद्धों द्वारा अनुपदिष्ट, सम्यक्-संबुद्ध द्वारा उपदेश न दिया गया - **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. - *यथा तं ... अनुपसमसवंत्तनिके असम्मासम्बुद्धप्पवेदिते भिन्नथूपे अप्पटिसरणो,* दी. नि. 3.87.

असम्मिस्स त्रि., [असम्मिश्र], मिलावट-रहित, अमिश्रित, विशुद्ध - **स्सं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *तं सब्बं असातं अमधुरं केवलं असम्मिस्सं दुक्खमेव फुसन्ति,* जा. अट्ठ. 3.214; - **तो** प. वि., ए. व. - ... *दस्सनेन असम्मिस्सतो ववत्थानं दस्सितं होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).252.

असम्मुखा अ., निपा., सम्मुखा का निषे. [असम्मुखं], सामने नहीं, साक्षात् रूप से नहीं - *यो ... कम्मं असम्मुखा करोति,* महाव. 424; *तस्स असम्मुखा अनापुच्छायेवस्स, ...,* मि. प. 211.

असम्मुखीभूत त्रि., निषे., तत्पु. स. [असन्मुखीभूत], सामने नहीं आया हुआ, अविद्यमान, गैरहाज़िर, अनुपस्थित **तानं** पु., ष. वि., ब. व. - *कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू असम्मुखीभूतानं भिक्खूनं कम्मानि करिस्सन्ति,* चूळव. 173.

असम्मुट्ठ त्रि., सं + √मुस के भू. क. कृ. का निषे. [असम्मुषित], चुराकर दूर नहीं ले जाया गया, दृष्टिपथ से ओझल नहीं किया हुआ, सामने उपस्थित, अविनाशित **ट्ठा**[1] स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *उपट्ठिता सति असम्मुट्ठा,* पारा. 4; - **ट्ठा**[2] पु., प्र. वि., ब. व. - *येसं धम्मा असम्मुट्ठा,* स. नि. 1(1).5; *असम्मुट्ठाति पञ्ञाय पटिविद्धभावेनेव अनट्ठा,* स. नि. अट्ठ. 1.24.

असम्मुय्हन नपुं., सं + √मुह से व्यु., क्रि. ना. का निषे., मोह से ग्रस्त न होना, सम्यक्-प्रजानन - **नं** प्र. वि., ए. व. - *अभिक्कमादीसु पन असम्मुय्हनं असम्मोहसम्पजञ्ञं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).270.

असम्मुस्सनता स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व., अविक्षिप्तता, स्मृति के विप्रलोप का अभाव, स्मृति की जागरूकता - ... *सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति,* ध. स. 52; *चिरकतचिरभासितानं असम्मुस्सनभावतो असम्मुस्सनता,* ध. स. अट्ठ. 191.

असम्मूळ्ह त्रि., सं. + √मुह के भू. क. कृ. का निषे. [असंमूढ़], मोह से मुक्त, मोह-रहित, मन की स्वच्छता एवं उज्ज्वलता से युक्त – **ळ्हो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सीलवा सीलसम्पन्नो असम्मूळ्हो कालङ्करोति,* दी. नि. 2.68; अ. नि. 1(1).74; – **भाव** पु., [असंमूढभाव], मोहयुक्त अवस्था – **वाय** च. वि., ए. व. – ... *सोतूनं असम्मूळ्हभावाय,* सद्द. 1.179; – **विहारी** त्रि., [असंमूढविहारिन्], मोह-रहित होकर, जीने वाला – **रिनं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तीहि विज्जाहि सम्पन्नं, असम्मूळ्हविहारिनं,* अ. नि. 1(1).192.

असम्मोदक त्रि., सम्मोदक का निषे. [असम्मोदक], प्रसन्नता या मानसिक आनन्द न देने वाला, अमैत्रीपूर्ण व्यवहार करने वाला, अविनम्र, – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *असम्मोदको थद्धो असब्भिरूपो,* जा. अट्ठ. 6.241; – **दिका** स्त्री., असम्मोदक से व्यु. [असम्मोदिका], अमैत्रीपूर्ण मनोवृत्ति, आनन्द उत्पन्न न करने वाली बातचीत, सम्मोद न उत्पन्न करने वाली – **य** तृ./च. वि., ए. व. – *भिन्ने, भिक्खवे, सङ्घे अधम्मियायमाने असम्मोदिकाय वत्तमानाय ...,* महाव. 462; *असम्मोदिकाय वत्तमानाय, ... सम्मोदनकथाय अवत्तमानायाति अत्थो,* महाव. अट्ठ. 407.

असम्मोदिय नपुं., अप्रिय भाव, सम्मोद या प्रसन्नता को न लाने वाला – **यं** प्र. वि., ए. व. – *असम्मोदियम्पि वो अस्स, अच्चन्तं मम कारणा,* जा. अट्ठ. 7.277; *असम्मोदियन्ति असामग्गियं,* तदे..

असम्मोस पु., सम्मोस का निषे., तत्पु. स. [अविप्रमोष], (स्मृति का) अनाश, अतिरोभाव या अलोप, विलुप्त नहीं हो जाना, अदृश्य नहीं होना – **सा** प. वि., ए. व. – *सतिया असम्मोसा ते देवा तम्हा काया न चवन्ति,* दी. नि. 1.17; ... *सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तति यथयिदं,* अ. नि. 1(1).23; *असम्मोसाय अनन्तरधानायाति, वुत्तपटिपक्खनयेनेव वेदितब्बं,* अ. नि. अट्ठ. 1.69; – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *सुत'न्ति वचनेन सुतस्स असम्मोसं दीपेति,* दी. नि. अट्ठ. 1.30; – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *असम्मोसेन पन सतिसिद्धि,* दी. नि. अट्ठ. 1.30.

असम्मोसनरस त्रि., लोप या विनाश न होने देने के कार्यों को करने वाला/वाली – **सा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अपिलापनलक्खणा सति, असम्मोसनरसा,* ... ध. स. अट्ठ. 167.

असम्मोह पु., सम्मोह का निषे., तत्पु. स. [असम्मोह], मोह या संभ्रम का अभाव, अज्ञान का अभाव, अमूढ़भाव – **हं** द्वि. वि., ए. व. – *तण्हाक्खयाधिमुत्तस्स, असम्मोहञ्च चेतसो,* अ. नि. 2(2).89; *एत्थ च एवन्ति वचनेन असम्मोहं दीपेति,* दी. नि. अट्ठ. 1.30; – **तो** प. वि., ए. व. – *तञ्च पन असम्मोहतो, न विसयतो,* सु. नि. अट्ठ. 1.19; – **करण** त्रि., ब. स., अमोह को या मोह के निरोध को लाने वाला, मोहनाशक – **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *असम्मोहकरं ठानं, नेतिधम्मानुलोमिकं,* परि. 187; – **ता** स्त्री., भाव. [असंमोहत्व, नपुं.], मोह के अभाव की दशा, मूढ़ता का न रह जाना – **ता** प्र. वि., ए. व. – ... *अमत्तता अप्पमत्तता असम्मोहता अच्छम्भिता असारम्भिता ...,* खु. पा. अट्ठ. 24; – **धम्म** त्रि., ब. स. [असम्मोहधर्मन्], मोह का अविषयीभूत, स्वभाव से ही मोह का शिकार न बनने वाला – **म्मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असम्मोहधम्मो सत्तो लोके उप्पन्नो बहुजनहिताय ... देवमनुस्सान'न्ति,* म. नि. 1.27; – **धुर** नपुं., कर्म. स., उत्तम या विशिष्ट भाव के रूप में अमोह, कुशल धर्मों में अग्रगण्य धर्म के रूप में अमोह – **रं** प्र. वि., ए. व. – *तयिदं महासीवत्थेरेन वुत्तं असम्मोहधुरं इमस्मिं सतिपट्ठानसुत्ते अधिप्पेतं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).280; – **सम्पजञ्ञ** नपुं., कर्म. स., सम्प्रजन्य के चार प्रभेदों में चौथा, जिसमें साधक खड़े रहते, घूमते-फिरते आदि में मोह से रहित रहता है या सम्प्रजाननयुक्त रहता है – **ञ्ञं** प्र. वि., ए. व. – *तत्थ सात्थकसम्पजञ्ञं सप्पायसम्पजञ्ञं गोचरसम्पजञ्ञं असम्मोहसम्पजञ्ञन्ति चतुब्बिधं सम्पजञ्ञं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).264; *अभिक्कमादीसु असमुय्हनमेव सम्पजञ्ञं असम्मोहसम्पजञ्ञं,* म. नि. टी. (मू.प.) 1(1).316; – **हाधिमुत्त** त्रि., ब. स. [असम्मोहाधिमुक्त], सम्मोह नष्ट हो जाने के कारण अर्हत् अवस्था को प्राप्त, अधिमुक्ति के छः स्थानों में एक – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *नेक्खम्माधिमुत्तो होति, ..., असम्मोहाधिमुत्तो होति,* महाव. 255; *सम्मोहाभावतो असम्मोहोति च वुच्चति,* महाव. अट्ठ. 344.

असयंवसी त्रि., सयंवसी का निषे. [अस्वयंवशी], स्वयं अपने वश में न रहने वाला, अपने सहारे न जीने वाला, पराधीन, परनिर्भर, अनाथ – **सी**[1] पु., प्र. वि., ए. व. – *तदा सो पच्चुदावत्ति, सङ्कुद्धो असयंवसे,* दी. नि. 2.193; *सङ्कुद्धो असयं वसेति ... असक्कोन्तो असयंवसे असयंवसी अत्तनो वसेन अकामको हुत्वा निवत्तो,* दी. नि. अट्ठ. 2.257; – **सी**[2] पु., प्र. वि., ब. व. – *महल्लका अनाथा असयंवसी ...,* जा. अट्ठ. 1.322.

असयंकार त्रि., सयंकार का निषे. [अस्वयंकार], स्वयं अपने द्वारा नहीं निर्मित, स्वयं अपने द्वारा अनुत्पादित,

अस्वयंकृत – **रो पु.**, प्र. वि., ए. व. – *असयंकारो अपरंकारो अधिच्चसमुप्पन्नो अत्ता च लोको च,* दी. नि. 3.103; *असयंकारोति आह असयंकतो'ति यादिच्छिकत्ताति अधिप्पायो,* लीन. (दी.नि.टी.) 3.87.

असयंपाचक त्रि., सयंपाचक का निषे., तत्पु. स. [अस्वयंपाचक], अपने लिए स्वयं न पकाने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *असामपाकाति असयंपाचका,* लीन. (दी.नि.टी.) 1.271.

असय्ह¹ त्रि. [असह्य], नहीं सहे जाने योग्य एवं तीव्र दुःख से पीड़ित **तिब्बदुक्खाभिभूता** पु., प्र. वि., ब. व., उपरिवत् – *असय्हतिब्बदुक्खाभिभूता अताणा असरणा ...,* मि. प. 149.

असय्ह² पु., व्य. सं. (क) एक प्रत्येकबुद्ध – *असय्हो खेमाभिरतो च सोरतो,* म. नि. 3.116; – **महासेट्ठी** पु., एक श्रेष्ठी या व्यापारी **ट्ठि** प्र. वि., ए. व. – *तेन समयेन रोरुवनगरे असय्हमहासेट्ठि नाम अहोसि,* पे. व. अट्ठ. 98.

असय्हसाही त्रि., नहीं सहने योग्य को सह लेने वाला, दूसरों द्वारा अपराजेय को पराजित कर देने वाला – **हिनं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तथागतं बुद्धमसय्हसाहिनं, दुवे वितक्का समुदाचरन्ति नं,* इतिवु. 24; ... *अञ्ञेहि सहितुं वहितुं असक्कुणेय्यत्ता, असय्हस्स सकलस्स बोधिसम्भारस्स च सहनतो वहनतो, तथा अञ्ञेहि सहितुं अभिभवितुं दुक्करत्ता ... असय्हसाहिनं,* इतिवु. अट्ठ. 132; – **हिनो** पु., ष. वि., ए. व. *बुद्धस्स पुत्तोम्हि असय्हसाहिनो,* थेरगा. 536; – **हिनं** ब. व. – *जयो कलिङ्गानमसय्हसाहिनं,* जा. अट्ठ. 3.5; *तत्थ असय्हसाहिनन्ति असय्हं दुस्सहं सहितुं समत्थानं,* तदे.; – **हिता** स्त्री., भाव., नहीं सहे जाने योग्य को सहन करने की क्षमता – **य** तृ. वि., ए. व. – ..., *असय्हसाहिताय विसय्ह,* जा. अट्ठ. 3.12.

असय्हसीत त्रि., ब. स. [असह्यशीतक], न सहने योग्य ठण्डक वाला (क्षेत्र, लोक), अत्यधिक शीतलता से युक्त (स्थान) – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *तिब्बन्धकारे च असय्हसीते, लोकन्तरे यं असुरेसु दुक्खं,* विसुद्धि. 2.129; विभ. अट्ठ. 91.

असरण त्रि., ब. स. [अशरण], बिना शरण वाला, आश्रय या सहारा न देने वाला – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असरणो लोकसन्निवासोति* –, पटि. म. 116; *असरणोति निस्सितानं न भयसारको न भयविनासको,* पटि. म. अट्ठ. 2.14; – **णा** ब. व. – ... *अताणा अलेणा असरणा असरणीभूता,* महानि. 304; – **तो** प. वि., ए. व. – *अताणतो अलेणतो असरणतो रित्ततो तुच्छतो सुञ्ञतो ...,* महानि. 38; *निस्सितानं भयसारकत्ताभावेन असरणतो,* महानि. अट्ठ. 132.

असरणभाव पु., [अस्मरणभाव], विस्मरण की स्थिति, भुलक्कड़पन – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *कस्मा पनस्स सत्था असरणभावं अकासीति?,* ध. प. अट्ठ. 2.67.

असरणीभूत त्रि., [अशरणीभूत], उपरिवत् – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *अताणा अलेणा असरणा असरणीभूता,* महानि. 304.

असरूप त्रि., ब. स. [असरूप], **शा. अ.** भिन्न स्वरूप वाला, **ला. अ.** उच्चारण-स्थान या मात्रा आदि की भिन्नता वाला (स्वर) – **पा** पु., प्र. वि., ए. व. – *वा परो असरूपा, सरम्हा असरूपा परो सरो लोपं पप्पोति वा,* क. व्या. 13; सद्द. 2.613.

असल्लक्खण नपुं., सल्लक्खण का निषे., तत्पु. स. [असंलक्षण], संलक्षण या सूक्ष्म निरीक्षण का अभाव, गहरे दृष्टिपात का अभाव, ठीक से नहीं देखा जाना – **क्खणा** प. वि., ए. व. – *रूपे खो, वच्छ, असल्लक्खणा ... वेदनाय खो, ...,* स. नि. 2(1).259.

असल्लक्खेत्वा अ., सल्लखेति के पू. का. कृ. का निषे. [असंलक्ष्य], ठीक से सोचे-विचारे बिना, जल्दबाजी में, हड़बड़ाहट में – *असल्लक्खेत्वापि निवेसनं पविसन्ति,* चूळव. 358; *अहं असल्लक्खेत्वा अक्कमिं, मा कुज्झी'ति वुत्तेपि कुज्झियेव,* जा. अट्ठ. 1.207.

असल्लीन त्रि., सं + √ली के भू. क. कृ. का निषे. [असंलीन], उत्साह भरे चित्त वाला, अशिथिल, पूर्ण रूप से विकसित, असङ्कीर्ण – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आरद्धं ..., वीरियं अहोसि असल्लीनं,* पारा. 4; *आरद्धत्तायेव च मे तं असल्लीनं अहोसि,* पारा. अट्ठ. 1.103; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *असल्लीनेन चित्तेन, वदेन अज्झवासयि,* स. नि. 1(1).186; *असल्लीनेनाति अनल्लीनेन असङ्कुचितेन सुविकसितेनेव चित्तेन,* स. नि. अट्ठ. 1.197; – **त्त 1.** नपुं., असंलीन का भाव. [असंलीनत्व], निरुत्साह या शिथिलता से रहित होना – **त्ता प.** वि., ए. व. – *असल्लीनत्ता पहितत्तातिपि पठन्ति,* पटि. म. अट्ठ. 1.38; **2.** त्रि., ब. स. [असंलीनात्मन्], निरुत्साह से रहित आत्मा वाला, असङ्कुचित या उदार आत्मा वाला – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असल्लीनत्तपहितत्तपग्गहट्ठे पञ्ञा वीरियारम्भे ञाणं,* पटि. म. 3; *तत्थ असल्लीनत्तपहितत्तपग्गहट्ठेति कोसज्जवसेन*

असल्लीनो असङ्कुचितो अत्ता अस्साति असल्लीनत्तो, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.37.

असल्लेख पु॰, सल्लेख का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ असंलेख], अनियन्त्रण, अनियमपरायणता - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *असन्तुट्ठिया असंलेखस्स वुप्पन्नस्स निवारणे,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).103.

असवण्ण त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असवर्ण], असमान रूप वाला, भिन्न उच्चारण-स्थान एवं प्रयत्न वाला (स्वर) - **ण्णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *क्वचासवण्णं लुत्ते, सरो खो परो पुब्बसरे लुत्ते क्वचि असवण्णं पप्पोति,* क॰ व्या॰ 14.

असस्सत त्रि॰, सस्सत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अशाश्वत], बराबर विद्यमान न रहने वाला, अनित्य, परिवर्तनशील, अध्रुव - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ..., *अहो रूपमसस्सतं,* अप॰ 2.245; - **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असस्सतोति तमेव लोकं उच्छिज्जति विनस्सतीति गण्हन्तस्स उच्छेदगहणाकारप्पवत्ता दिट्ठि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 396; - **भाव** पु॰, कर्म॰ स॰ [अशाश्वतभाव], अनित्यता, परिवर्तनशीलता - **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनस्सासिकाति असस्सतभावेन अस्सासरहिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.180.

असस्सती / असस्सति त्रि॰, सस्सती का निषे॰ [अशाश्वतिक], सदा विद्यमान न रहने वाला, अनित्य प्रकृति वाला - *असस्सातिरिव खायती'तिपि पाठो,* उदा॰ अट्ठ॰ 314.

असस्सतिक त्रि॰, *केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त,* एकच्चअसस्सतिक के अन्त॰ द्रष्ट॰ [अशाश्वतिक], अनित्य या अध्रुव बतलाने वाला, **एकच्च॰** कुछ मामलों में अनित्य बतलाने वाला - **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *एके समणब्राह्मणा एकच्चसस्सतिका एकच्चअसस्सतिका एकच्चं ... सस्सतं ... असस्सतं अत्तानञ्च ... वत्थूहि,* दी॰ नि॰ 1.15.

असह त्रि॰, [असह], नहीं सहने वाला, क्षान्ति-रहित, धैर्यरहित, घबड़ाहट भरे स्वभाव वाला - **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सहति सहो असहो असय्हो,* सद्द॰ 2.458.

असहन्त त्रि॰, √सह के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [असहत्], नहीं सहने वाला, सहनशीलता न रखने वाला, क्षान्ति-रहित - **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विदेहो ... गरहं असहन्तो पटिपक्खो हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.324.

असहत्था सहत्थ के निषे॰ का प॰ वि॰, ए॰ व॰, प्रायः अ॰, क्रि॰ विशे॰ के रूप में प्रयुक्त, **शा॰ अ॰** अपने हाथ से नहीं, **ला॰ अ॰** उचित सम्मानभाव के बिना ही - *असहत्था दानं देति,* म॰ नि॰ 3.70; *असहत्थाति अत्तनो हत्थेन न देति, दासकम्मकारादीहि दापेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.56.

असहन नपुं॰, √सह के क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [असहन], क्षान्ति या सहनशीलता का अभाव, डाह, मात्सर्य, नहीं सह पाना, ठीक न लगना - **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *कतस्स अपराधस्स असहनं नाम न युत्त'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.17; ... *परेहि साधारणभावासहनलक्खणस्स मच्छेरस्स ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 15; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, असहनशीलता, अप्रिय या प्रतिकूल मानसिक संवेदन होना - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *परेहि साधारणभावस्स असहनता,* विभ॰ अट्ठ॰ 485.

असहमान त्रि॰, √सह के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [असहमान], सहन न करता हुआ - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अथ खो सो नागो मक्खं असहमानो पज्जलि,* महाव॰ 29.

असहानधम्मता स्त्री॰, भाव॰ [अपरिहानिधर्मता], हानिरहित स्वभाव वाला - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सह हानधम्मेनाति सहानधम्मो न सहानधम्मोति असहानधम्मो, तस्स भावो, असहानधम्मता, तं असहानधम्मतं,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 3.108 - **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पप्पोति बोधिं असहानधम्मतन्ति,* दी॰ नि॰ 3.124; *असहानधम्मतन्ति अपरिहीनधम्मं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.107.

असहाय त्रि॰, ब॰ स॰ [असहाय], **क.** अद्वितीय, अनुपम - **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अदुतियो असहायो अप्पटिमो,* अ॰ नि॰ 1(1).29; **ख.** मित्रहीन, अकेला, बिना साथी का - **ये** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *'एको वूपकट्ठो'ति आदिसु असहाये,* सद्द॰ 1.267; - **किच्च** त्रि॰, ब॰ स॰, साथी की कोई आवश्यकता न रखने वाला - **च्चो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असहायकिच्चो सीहो विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).56.

असहित त्रि॰, [असहित], साथ में न रहने वाला, रहित, अर्थ से नहीं सम्बद्ध, अर्थ-रहित - **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अप्पञ्च भासति असहितञ्च,* अ॰ नि॰ 1(2).158; *नवमे असहितन्ति अत्थेन असंयुत्तं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.334; *सहितं मे असहितं ते,* दी॰ नि॰ 1.7; *असहितं तेति तुम्हं वचनं असहितं असिलिट्ठं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.81; - **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *परिसा चस्स कुसला होति सहितासहितस्स,* अ॰ नि॰ 1(2).158; *सहितासहितस्साति अत्थनिस्सितस्स वा अनिस्सितस्स वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.334.

असा स्त्री., द्रष्ट. अस एवं अहा के अन्त. - *इत्थिलिङ्गे वत्तब्बे असति असा ति रूपानि भवन्ति,* सद्द. 1.176.

असात त्रि., सात का निषे. [अशात], दुख देने वाला, कड़वा, अमधुर, तीता, मन में प्रतिकूल संवेदना उदित कराने वाला, दुखभरा (अनुभव) - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यं खो, आवुसो, कायिकं दुक्खं कायिकं असातं ..., इदं वुच्चतावुसो दुक्खं,* म. नि. 3.299; - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *... सारीरिका वेदना दुक्खा ... कटुका असाता ...,* स. नि. 1(1).32; *असाताति अमधुरा,* स. नि. अट्ठ. 1.71; - **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *असातं अमधुरमेव निब्बत्तेन्ति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.88; - **ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *तत्थ असातरागोति असाते दुक्खवेदयिते अहो वत मे एतदेव भवेय्या'ति रज्जना,* कथा. अट्ठ. 236; - **तं** नपुं., भाव. [अशातत्व], कड़वापन, अमधुरत्व, मन के लिए अननुकूल संवेदन - **त्ताय** च. वि., ए. व. - *तं तित्तकत्ताय कटुकत्ताय असातत्ताय संवत्तति,* अ. नि. 1(1).45; - **सन्निवास** पु., तत्पु. स., अमधुर या स्वादहीन चीजों का साथ - **सेन** तृ. वि., ए. व. - *असातसन्निवासेन, तेनम्बो कटुकप्फलो'ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.357; *असातसन्निवासेनाति अमधुरनिम्बमूलसंसग्गेन,* अ. नि. टी. 1.213.

असातच्चकारी त्रि., [असातत्यकारिन्], रुककर काम करने वाला, लगातार काम न करने वाला - **री** पु., प्र. वि., ए. व. - *असक्कच्चकारी च होति, असातच्चकारी च, असप्पायकारी च,* अ. नि. 2(2).129; *असातच्चकारीति न सततकारी,* अ. नि. अट्ठ. 3.140.

असातच्चकिरियता स्त्री., भाव. [असातत्यक्रियता], निरन्तर क्रियाशील नहीं रहना, बीच बीच में रुककर सक्रिय होना - **ता** प्र. वि., ए. व. - *असक्कच्चकिरियता, असातच्चकिरियता, अनट्ठितकिरियता,* खु. पा. अट्ठ. 115.

असातमन्त पु./नपुं., कर्म. स. [अशातमन्त्र], दुख उत्पन्न कराने वाला मन्त्र - **न्तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *तात, उग्गहितो ते असातमन्तो'ति,* जा. अट्ठ. 1.277; - **जातक** नपुं., जा. अट्ठ. के इत्थिवग्ग का प्रथम जातक, जा. अट्ठ. 1.275-279.

असातराग पु., तत्पु. स. [अशातराग], दुख या अननुकूल के प्रति मन का लगाव - **गो** प्र. वि., ए. व. - *अत्थि असातरागोति? आमन्ता, दुक्खाभिनन्दनो सत्ता,* कथा. 391; *तत्थ असातरागोति असाते दुक्खवेदयिते ... रज्जना,* कथा. अट्ठ. 236.

असातरूपजातक नपुं., जा. अट्ठ. की एक कथा का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.389-392.

असादियन्त त्रि., [अनास्वादयत्], स्वाद न लेता हुआ, उपभोग का आनन्द नहीं पा रहा, अनुभव नहीं कर रहा - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *परिनिब्बुतस्स तथागतस्स असादियन्तस्स कुतो अधिकारो वज्झो भवति ...,* मि. प. 110; *अनापत्ति अजानन्तस्स, असादियन्तस्स ...,* पारा. 38.

असादिस त्रि., [असदृश], असमान, भिन्न - **सो** पु., प्र. वि., ए. व. - *सब्बो हि सदिसो होति, नत्थि कामे असादिसो'ति,* जा. अट्ठ. 6.248.

असादु त्रि., सादु का निषे., तत्पु. स. [अस्वादु], स्वादरहित, बेस्वाद - **दुं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *सादुं वा यदि वासादुं, ...,* जा. अट्ठ. 3.124; *तत्थ यदि वासादुन्ति यदि वा असादुं,* तदे.; - **दु** पु., प्र. वि., ए. व. - *... सादु व असादु, यो वा पनञ्ञोपि अत्थि रसो ...,* ध. स. 629; *असादुति अनिट्ठरसो,* ध. स. अट्ठ. 353.

असाधक त्रि., साधक का निषे., तत्पु. स. [असाधक], सिद्धि में अनुपयोगी, सिद्ध न करने वाला, अप्रभावशाली - **धिका** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *तासु कण्हपक्खउपमा अत्थस्स असाधिका,* स. नि. अट्ठ. 2.288.

असाधारण त्रि., [असाधारण], असामान्य, दूसरों से अलग, विशिष्ट - **णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *असाधारणमञ्ञेसं, अचोराहरणो निधि,* खु. पा. 10; *तत्थ असाधारणमञ्ञेसन्ति असाधारणो अञ्ञेसं, मकारो पदसन्धिकरो ...,* खु. पा. अट्ठ. 180; - **णा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *सामुक्कंसिकाति सामं उक्कंसिका ... असाधारणा अञ्ञेसन्ति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.224; - **णेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. - *असाधारणेन ञाणेन समन्नागतो होति,* अ. नि. 2(2).141; **णे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. - *अग्गिआदीहि असाधारणे बुद्धस्स सासने धनं निदहितुं लद्धं,* ध. प. अट्ठ. 2.36; - **ञाण** नपुं., कर्म. स. [असाधारणज्ञान], दूसरों में प्राप्त न होने वाला विशेष प्रकार का ज्ञान, बुद्ध का विशिष्ट ज्ञान - **णेन** तृ. वि., ए. व. - *यथाद्दक्खी यथा सामं सच्चाभिसम्बोधेन असाधारणञाणेन च अद्दक्खि,* सु. नि. अट्ठ 2.297; - **तं** स्त्री., भाव., द्वि. वि., ए. व. - *भिक्खुनीहि तु भिक्खूनं, असाधारणतं गता,* विन. वि. 822; - **पञ्ञत्त** त्रि., [असाधारणप्रज्ञप्त], विशिष्ट नियम के रूप में बतलाया हुआ - **त्ता** पु., प. वि., ए. व. - *असाधारणपञ्ञत्ता, खुद्दका नवुतिच्छ च,* उत्त. वि. 829; - **पञ्ञत्ति** स्त्री., कर्म. स. [असाधारणप्रज्ञप्ति], विशिष्ट

प्रकार का विनय-नियम, सभी भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के लिए सामान्य-रूप में लागू न होने वाला नियम – *सब्बत्थपञ्ञत्ति, ... असाधारणपञ्ञत्तीति? ..., उभतोपञ्ञत्ति,* परि॰ 2; – **भाव** पु॰, कर्म॰ स॰ [असाधारणभाव], विशिष्टता, असामान्यता – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असाधारणभावं तु, गमितानि महेसिना,* उत्त॰ वि॰ 811; 823.

असाधिय त्रि॰, √साध के सं॰ कृ॰ का निषे॰ [असाध्य], उपचार द्वारा ठीक न होने योग्य, लाइलाज़ – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सप्पिकुम्भसतेनापि ब्याधिजातो असाधियो,* म॰ वं॰ 5.218.

असाधु त्रि॰, साधु का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असाधु], असज्जन, दुष्ट, दुर्जन, बुरा, गलत – **धु** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *साधूपि हुत्वा न असाधु होन्ति,* ..., थेरगा॰ 1008; – **धूनि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सुकरानि असाधूनि, अत्तनो अहितानि च,* ध॰ प॰ 163; *यानि कम्मानि असाधूनि सावज्जानि अपायसंवत्तनिकत्तायेव ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.86; – **धुं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असाधुं साधुना जिने,* ध॰ प॰ 223; – **कम्मी** त्रि॰, [असाधुकर्मिन्], बुरे काम करने वाला – **म्मिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये जीवलोकस्मिं असाधुकम्मिनो,* ..., जा॰ अट्ठ॰ 6.133; – **जातिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [असाधुजातिक], असज्जन स्वभाव वाला, दुष्ट प्रकृति वाला – **क** संबो॰, ए॰ व॰ – *असब्भीति असप्पुरिस असाधुजातिक,* जा॰ अट्ठ॰ 1.472; – **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ असब्भिरूपन्ति असाधुजातिकं लामकं अकुसलकम्मं अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.216; – **सन्निवास** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असाधुसन्निवास], दुष्ट लोगों का साथ-सङ्ग – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असाधुसन्निवासो नाम पापो अनत्थकरो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.83.

असामग्गिय नपुं॰, समग्ग के भाव॰ का निषे॰ [असामग्र्य], सहमति का अभाव, असहमति, असामञ्जस्य – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असम्मोदियन्ति असामग्गियं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.277.

असामञ्ञ त्रि॰, समण के भाव॰ का निषे॰ [अश्रामण्य], श्रमणों के प्रति अवज्ञापूर्ण या अपमानपूर्ण, श्रमणों के लिए अनुपयुक्त – **ञ्ञो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसो अमत्तेय्यो अपेत्तेय्यो असामञ्ञो अब्रह्मञ्ञो,* अ॰ नि॰ 1(1).163; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [अश्राम्यत्व, नपुं॰], श्रमणों के प्रति तिरस्कारपूर्ण होना, श्रमणों के लिए अनुपयुक्त होना – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमत्तेय्यता अपेत्तेय्यता असामञ्ञता अब्रह्मञ्ञता न कुले जेट्ठापचायिता,* दी॰ नि॰ 3.51.

असामन्तपञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [सं॰], अनुपम या बेजोड़ प्रज्ञा वाला – **ञ्ञो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनभिसम्भवनीयो च सो अञ्ञेहीति – असामन्तपञ्ञो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.400; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, बेजोड़ प्रज्ञा से युक्त रहना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गम्भीरपञ्ञताय ... असामन्तपञ्ञताय संवत्तति,* अ॰ नि॰ 1(1).60.

असामन्तपञ्ञा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [सं॰], अनुपम प्रज्ञा, बेजोड़ प्रज्ञा, दूसरों में अविद्यमान प्रज्ञा – **ञ्ञा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असामन्तपञ्ञताय संवत्तन्तीति कतमा असामन्तपञ्ञा?,* पटि॰ म॰ 367; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.400.

असामपाक त्रि॰, [अस्वयंपाक], स्वयं नहीं पकाने वाला (तापसों का एक वर्ग) – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये पन किं पब्बजितस्स ... पविसित्वा पक्कभिक्खमेव गण्हन्ति, ते असामपाका नाम,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.218; *असामपाकाति असयंपाचका,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 1.271.

असामयिक / असामायिक त्रि॰, सामयिक का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ असामयिक], वह, जो अस्थायी न हो, स्थायी, निर्धारित समय की सीमा में नहीं बंधा हुआ, लोकोत्तर – **कं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपसम्पज्ज विहरिस्सति असामायिकं वा अकुप्पन्ति* –, म॰ नि॰ 3.154; *असामायिकन्ति न समयवसेन किलेसेहि विमुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.116.

असामी पु॰, अस्सामिक के अन्त॰ द्रष्ट॰.

असार त्रि॰, ब॰ स॰ [असार], सारहीन, मूल्यहीन, बेकार, तुच्छ, खोखला – **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथा'सारं च फेग्गु च,* अभि॰ प॰ 698; **क.** खोखला या सारहीन (वृक्ष, पौधा आदि) – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा नळो असारो निस्सारो सारापगतो,* विसुद्धि॰ 2.291; – **रेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायकलिना असारेन,* थेरीगा॰ 72; **ख.** सारहीन (लोक), सारहीन पांच स्कन्ध, सारहीन धन, सारहीन धारणा, आत्मा एवं आत्मीय जैसे परिकल्पित सारतत्त्व से रहित – **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रूपं असारं निस्सारं सरापगतं ... वेदना ... विञ्ञाणं ... जरामरणं असारं निस्सारं,* विसुद्धि॰ 2.290–91; – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निरयलोको असारो निसारो ...,* महानि॰ 303; *पच्चया दसवत्थुका मिच्छादिट्ठि, तस्सा उपनिस्सयभूता धम्मदेसनाति अयं असारो नाम,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.66; – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा माया असारा निस्सारा सारापगता,* विसुद्धि॰ 2.291; – **क** त्रि॰, ब॰ स॰ [असारक], उपरिवत्; **1.** खोखला, सारहीन (वृक्ष आदि) – **केसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कट्ठङ्गरुक्खेसु*

असारकेसु, जा॰ अट्ठ॰ 2.135; *असारकेसूति निस्सारेसु पालिभद्दकसिम्बलि आदीसु ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.135; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *बन्धनेन ... अबलं बन्धनं, दुब्बलं बन्धनं, पूतिकं बन्धनं, असारकं बन्धनं'न्ति,* म॰ नि॰ 2.121–122; **2.** आत्म एवं आत्मीय-भाव के रूप में परिकल्पित सारतत्त्व से रहित (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान नामक स्कन्ध, लोक एवं धनसम्पदा आदि) – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असारकञ्ञेव खायति,* स॰ नि॰ 2(1).127; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असारकतो अवसवत्तनतो परतो रित्ततो तुच्छतो सुञ्ञतो च सब्बे धम्मा अनत्ता'ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 191.

असारज्जना स्त्री॰, सं॰ + √रञ्ज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ का निषे॰ [असंरञ्जन, नपुं॰], अनासक्ति, राग से विनिर्मुक्त होना – **ज्जना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं ...,* ध॰ स॰ 32; 312; 315.

असारज्जितत्त नपुं॰, भाव॰ [असंरञ्जनत्व], अनासक्तिभाव, राग से मुक्त रहने की अवस्था – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *असारागो असारज्जना असारज्जि तत्तं* ध॰ स॰ 32, 312, 315.

असारत्त त्रि॰, सं॰ + रञ्ज के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असंरक्त], लगावों से मुक्त, राग या आसक्ति से रहित – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविरुद्धो असारत्तो, पाणेसु तसथावरे,* सु॰ नि॰ 709; *अत्तपक्खियेसु असारत्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.192.

असारद त्रि॰, सारद का निषे॰ [अशारद], **शा॰ अ॰** शरद ऋतु में तैयार न होने वाला, शरद् ऋतु में न उगने वाला, **ला॰ अ॰** निरर्थक या सूखे हुए अनाजों का बीज, पुआल – **दानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बीजानि ... खण्डानि पूतीनि वातातपहतानि असारदानि असुखसयितानि,* दी॰ नि॰ 2.260; *असारादानीति तण्डुलसारादानरहितानि पलालानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.362.

असारदस्सी त्रि॰, [असारदर्शिन्], (किन्हीं धर्मों में) सार न देखने वाला, असार समझने वाला – **स्सिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असारे सारमतिनो, सारे चासारदस्सिनो,* ध॰ प॰ 11; *चासारदस्सिनोति दसवत्थुका सम्मादिट्ठी, तस्सा उपनिस्सयभूता धम्मदेसनाति ... तस्मिं 'नायं सारो'ति असारदस्सिनो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.66.

असारद्ध त्रि॰, सं॰ + √रभ के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असंरब्ध], उद्वेग से रहित, उत्तेजना-रहित, तृष्णा एवं द्वेष से रहित – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पस्सद्धो कायो असारद्धो,* पारा॰ 4; *असारद्धोति सो च खो पस्सद्धत्तायेव असारद्धो, विगतदरथोति वुत्तं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.103; *यस्मा असारद्धो कायो लहुको होति,* विसुद्धि॰ 1.271; – **काय** त्रि॰, ब॰ स॰ [असंरब्धकाय], उद्वेग या उत्तेजना से मुक्त शान्त शरीर वाला – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असारद्धकायो नु खो बहुलं विहरामि,* अ॰ नि॰ 3(2).78.

असारम्भिता स्त्री॰, भाव॰, उत्तेजित या उद्वेग से युक्त नहीं होना, उद्विग्नता का अभाव, अव्याकुलता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अच्छम्भिता असारम्भिता अनुस्सङ्कित्ता ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 24.

असाराग पु॰, साराग का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असंरञ्जन, नपुं॰], राग का अभाव, विराग, अनासक्ति – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *असारागो असारज्जना ...,* ध॰ स॰ 32; 312; 315; – **धम्म** त्रि॰, ब॰ स॰ [असंरञ्जनधर्मन्], स्वभाव से ही राग में ग्रसित न होने वाला, रागमुक्त प्रकृति वाला – **म्मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असारागधम्मं मे चित्त'न्ति पज्जाय चित्तं सुपरिचितं होति,* अ॰ नि॰ 3(1).212; *असारागधम्मन्ति न सरज्जनसभावं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.273.

असारुप्प क. त्रि॰, [असारूप्य], असमान या भिन्न स्वरूप वाला, अननुरूप, अलग तरह का, अनुपयुक्त, अनुचित – **प्पं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधेव मया अक्खीनि उप्पाटेत्वा दातुं असारुप्प'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.362; **ख.** नपुं॰, अनुचित कार्य – **प्पेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना नं असारुप्पेन वा खलितेन वा सङ्गमज्झे निग्गण्हिस्सामीति ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.309.

असाहस[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [असाहस], दुस्साहस भरे काम न करने वाला, बिना सोचे-विचारे काम न करने वाला, राग, द्वेष एवं मोह के दुष्प्रभाव के वश में होकर काम न करने वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुन्नतेन मनसा, अपळासो असाहसो,* अ॰ नि॰ 1(1).229; *असाहसोति रागदोसमोहसाहसानं वसेन असाहसो हुत्वा, ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182; – **सं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असाहसन्ति धम्मिकविनिच्छये ठितत्तायेव साहसिककिरियाय विरहितं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.282.

असाहस[2] नपुं॰, साहस का निषे॰, तत्पु॰ स॰, प्रायः तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ में क्रि॰ वि॰ के रूप में प्रयुक्त [असाहसेन], दुस्साहस भरी मनोवृत्ति से बिलग होकर, शील के आचरण से युक्त होकर, धर्म के अनुसार, शान्तभाव के साथ, अहिंसक-भाव के साथ – *धम्मेन जिस्साम असाहसेन,* जा॰ अट्ठ॰ 7.173; *धम्मेनेव नो असाहसेन जयो होतु,* तदे॰; *असाहसेन धम्मेन,*

समेन नयती परे, ध. प. 257; *असाहसेनाति अमुसावादेन,* ध. प. अट्ठ. 2.220; **- से** सप्त. वि., ए. व. - *दाने अहिंसाय असाहसे रतो,* दी. नि. 3.109.

असाहसिकट्ठ पु., तत्पु. स. [असाहसिकार्थ], असाहसिक का तात्पर्य या अर्थ - **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. - *विसुद्धकम्मन्तन्ति तेनेव असाहसिकट्ठेन विसुद्धकम्मन्तं ...,* जा. अट्ठ. 3.282.

असाहसिककम्म नपुं., कर्म. स. [असाहसिककर्म], दुस्साहस भरी मनोवृत्ति के साथ न किए गए कुशल कर्म, राग, द्वेष एवं मोह से मुक्त चित्त द्वारा अभिसंस्कृत अच्छे कर्म - **म्मेन** तृ. वि., ए. व. - *अहं धम्मेन समेन असाहसिककम्मेन आहटं,* जा. अट्ठ. 7.154.

असाहिय त्रि., असय्ह का अप. [असह्य], नहीं सहे जाने योग्य - **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तस्स तस्सानुरूपं व फलं होति असाहियं,* सद्धम्मो. 94.

असि[1] √अस (होना) के वर्त., म. पु., ए. व. [असि], 'अत्थि' के अन्त. द्रष्ट..

असि[2] पु., तलवार, खड्ग, कृपाण - *ससति, सत्थं, सत्थं वुच्चति असि,* सद्द. 2.443; *मण्डलग्गो तु नेत्तिंसो असि खग्गो च सायको,* अभि. प. 391; **- सि** प्र. वि., ए. व. - *असि तिक्खोव मंसम्हि, पेसुञ्ञं परिवत्तति,* जा. अट्ठ. 3.129; **- सिं** द्वि. वि., ए. व. - *पण्णकं तिखिणधारं, असिं सम्पन्नपायिनं,* जा. अट्ठ. 3.298; **- ना** तृ. वि., ए. व. - ... *असिनापि सीसं छिन्दति,* म. नि. 1.121; **- क** त्रि., ब. स., स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, तलवार ग्रहण किया हुआ, खड्गधारी **उक्खित्ता**- पु., प्र. वि., ए. व., खड्ग को उठाकर फेंकने वाला - *इध पुरिसो आगच्छेय्य उक्खित्तासिको,* म. नि. 2.46; **- कलह** पु., तत्पु. स. [असिकलह], तलवार से युद्ध, असियुद्ध - **हो** प्र. वि., ए. व. - *असिना कलहो असिकलहो,* रूप. 336; **- कोट्ट** पु., तलवार द्वारा (चमड़े) को काटने वाला चमार, चर्मकार - **ट्टो** प्र. वि., ए. व. - *किस्स त्वं, उदायि, निसीदनं समन्ततो समञ्छसि; सेय्यथापि पुराणासिकोट्टो'ति,* पाचि. 225; *सेय्यथापि पुराणासिकोट्टोति यथा नाम पुराणचम्मकारोति अत्थो,* पाचि. अट्ठ. 143; **- कोस** पु., तत्पु. स. [असिकोश], तलवार की म्यान - **सो** प्र. वि., ए. व. - ... *गहित असिकोसो विय च सिरीसरुक्खो विय च ...,* स. नि. अट्ठ. 3.98; **- गाह / ग्गाह** पु., [असिग्राहिन्], **क.** तलवार को धारण करने वाला सिपाही, खड्गधारी रक्षक - **हो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असिगाहो असिं अब्बाहेसि,* जा. अट्ठ. 2.264; **- हा** ब. व. - *तं दिस्वा असिग्गाहा कोसतो असिं अब्बाहिंसु,* पारा. अट्ठ. 1.41; *राजानं विय एकरथे ठिता असिग्गाहछत्तग्गाहा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.95; **ख.** सेनापति एवं भण्डागारिक के नीचे के पद वाला तथा राजा की तलवार लेकर चलने वाला राज्याधिकारी - **हं** द्वि. वि., ए. व. - *तथा सेट्ठिं, छत्तग्गाहं, असिग्गाहन्ति सब्बेपि ते लज्जापेसि येव,* जा. अट्ठ. 6.46; *सिलाकालं असिग्गाहं कत्वा रक्खाय योजयि,* चू. वं. 39.54; **- गाहकठान** नपुं., खड्गधारी सुरक्षाधिकारी का पद - **म्हि** सप्त. वि., ए. व. - *असिग्गाहकठानम्हि तस्स पुत्तं ठपेसि च,* चू. वं. 44.43; **- गिलन** नपुं., तत्पु. स., तलवार को मुंह के भीतर निगल जाना - **तो** प. वि., ए. व. - *यदञ्जन्ति इतो असिगिलनतो यं अञ्ञं दुक्करतरं कारणं, ...,* जा. अट्ठ. 3.298; **- चम्म** नपुं., समा. द्व. स. [असिचर्मन्], ढाल और तलवार - *असि च चम्मञ्च असिचम्मं,* क. व्या. 324; **- म्मं** द्वि. वि., ए. व. - *असिचम्मं गहेत्वा धनुकलापं सन्नय्हित्वा ...,* म. नि. 1.121; *असिचम्मन्ति असिञ्चेव खेटकफलकादीनि च,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).370.

असि[3] पु., [असि], निचले स्थानों पर उगने वाला एक वृक्ष - **सी** प्र. वि., ब. व. - *असी तालाव तिट्ठन्ति,* जा. अट्ठ. 7.304; *असीति एवंनामका रुक्खा सिनिद्धाय भूमिया ठिता ताला विय तिट्ठन्ति,* जा. अट्ठ. 7.305.

असिक्खित त्रि., सिक्खित का निषे., तत्पु. स. [अशिक्षित], शिक्षा न पाया हुआ, शिल्पों को न सीखा हुआ - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - ... *असिक्खितो अकतहत्थो अकतयोग्गो अकतूपासनो ...,* स. नि. 1(1).117; *असिक्खितोति धनुसिप्पे असिक्खितो,* स. नि. अट्ठ. 1.145; **- क** त्रि., [अशिक्षितक], उपरिवत् - **का** पु., प्र. वि., ब. व. - ... *अकतबुद्धिनो असिक्खितका च,* जा. अट्ठ. 3.49; **- त्त** नपुं., भाव. [अशिक्षितत्व], अशिक्षित होना, शिक्षा प्राप्त किया हुआ न होना - **त्ता** प. वि., ए. व. - *सहीरपञ्जरस्साति तस्स असिक्खितत्ता ततो ततो हरितब्बपञ्जरस्स निच्चं चलबुद्धिनो,* जा. अट्ठ. 4.387; **- विनयता** स्त्री., भाव., विनय का अभ्यास नहीं किया जाना, विनय में अप्रशिक्षित रहना - **य** तृ. वि., ए. व. - *असिक्खितविनयताय अविनीतो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).202; **- सिक्ख** त्रि., ब. स., पूरी तरह से शिक्षा न पाया हुआ - **क्खं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *छसु धम्मेसु असिक्खितसिक्खं सिक्खमानं वुट्ठापेन्तीति,* पाचि. 435.

असिञ्चति √सिच का वर्त., प्र. पु., ए. व., *'अ' का प्रयोग अनियमित* [सिञ्चति], सींचता है, पानी देता है – *परेसं भतको पोसो, अम्बाराममसिञ्चति,* वि. व. 1151; *असिञ्चतीति सिञ्चति, अ-कारो निपातमत्तं, सिञ्चति अम्बरुक्खमूलेसु धुवं जलसेकं करोतीति अत्थो, असिञ्चथा'ति च पाठो सिञ्चित्थाति अत्थो, असिञ्चह'न्ति च पठन्ति,* वि. व. अट्ठ. 261.

असित[1] नपुं./पु., [वै. असिद, पु., अ. मा., असिय], हंसिया – **तं** प्र. वि., ए. व. – *एको हि पुरिसो असितं गहेत्वा ... सालियो लायति,* अ. नि. अट्ठ. 3.256; – **तेन** तृ. वि., ए. व. – *... दब्बगहनादीनि असितेन लायित्वा ...,* जा. अट्ठ. 5.41; – **ता** प्र. वि., ब. व. – असितासु मया *नङ्गलासु मया खुद्दकद्दालासु मया असिता सुमया, नङ्गला सु मया ...,* थेरगा. 43.

असित[2] त्रि., √अस का भू. क. कृ. [अशित], **1.क. कर्म. वा. में,** किसी के द्वारा खाया हुआ, उपभोग किया हुआ – *गिलितो खादितो भुत्तो भक्खितागझोहटासिता,* अभि. प. 757; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *असितं भोजनं भवता,* क. व्या. 627; ... *असितं होति परिभुत्तं,* स. नि. अट्ठ. 3.54; **1.ख. क्रि. ना. के रूप में प्रयुक्त होने पर,** भोजन – *अञ्ञत्र असितपीतखायितसायिता ...,* म. नि. 1.117; – **ते** सप्त. वि., ए. व. – *असिते पीते ... सम्पजानकारी होति,* दी. नि. 1.62; ... *असितेति पिण्डपातभोजने,* दी. नि. अट्ठ. 1.162; **2. कर्तृ. वा. में,** वह, जो भोजन कर चुका है, वह, जो संतुष्ट हो चुका है, तृप्त, भोग कर चुका, विपाक का फल अनुभव कर चुका – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *गरुमुपासितो देवदत्तो,* क. व्या. 628; ..., *असितो च घरं वजे'ति,* जा. अट्ठ. 2.207; *असितो च घरं वजेति असितो सुहितो हुत्वा अत्तनो वसनट्ठानं गच्छेय्य,* तदे.; *असितोति असितासनो परिभुत्तफलो,* जा. अट्ठ. 7.328.

असित[3] त्रि., √सि के भू. क. कृ. का निषे. [अश्रित], तृष्णा एवं दृष्टि का आश्रय न लेने वाला या उनसे असम्बद्ध, आश्रय नहीं लिया हुआ, बन्धनों में नहीं जकड़ा हुआ, बन्धनमुक्त (बुद्ध एवं अर्हत्) – **तो** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तं बुद्धं असितं तादिं, ...,* सु. नि. 963; *सो तण्हादिट्ठीहि अनिस्सितत्ता असितो,* सु. नि. अट्ठ. 2.137; *तं छिन्नगन्थं असितं अनासवं, ...,* सु. नि. 221; *दिट्ठिया तण्हाय वा कत्थचि अनिस्सितत्ता असितं,* सु. नि. अट्ठ. 1.228.

असित[4] त्रि., सित का निषे. [असित], जो सफेद न हो, काला, नीला, गहरे रङ्ग का – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *नीलो कण्हो'सितो काळो मेचको सामसामला,* अभि. प. 96; – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *दीघस्स केसा असिता,* जा. अट्ठ. 6.103; – **ते** पु., द्वि. वि., ब. व. – *ते नूनं मे असिते वेल्लितग्गे, ...,* जा. अट्ठ. 5.292; *असितेति काळके,* जा. अट्ठ. 5.293; – **निचितमुदुक** त्रि., द्व. स. [असितनिचितमृदुक], काला घना एवं कोमल – **के** पु., द्वि. वि., ब. व. – *अथ असितनिचितमुदुके, केसे ...,* थेरीगा. 482.

असित[5] पु., **1.** अनेक ऋषियों का नाम, असित देवल या काळ-देवल या कण्हसिरि, जिसने नवजात शिशु सिद्धार्थ की पूजा की थी तथा जो महामाया देवी के शिक्षक तथा शुद्धोदन के पुरोहित थे – **तो** प्र. वि., ए. व. – *असितो इसि अद्दस दिवाविहारे,* सु. नि. 684; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *... असितस्स इसिनो भागिनेय्यो नालको नाम तापसो ...,* सु. नि. अट्ठ. 2.184; *अञ्ञातमेतं वचनं, असितस्स यथातथं,* सु. नि. 704; – **व्हय** त्रि., ब. स. [असिताह्वय], असित नाम वाला – **स्स** ष. वि., ए. व. – *दस्सेसु पुत्तं असितव्हयस्स सक्या,* सु. नि. 691; **2.** असित-देवल-नामक एक दूसरा ऋषि, जिसने सात ब्राह्मण-ऋषियों के जाति-दर्प का दमन किया था – *असितो देवलो इसि,* म. नि. 2.369.

असित[6] पु., एक माली का नाम – **तो** प्र. वि., ए. व. – *असितो नाम नामेन, मालाकारो अहं तदा,* अप. 1.227.

असितञ्जननगर नपुं., महाकंस नामक राजा की राजधानी – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *... असितञ्जननगरे महाकंसो नाम राजा रज्जं कारेसि,* जा. अट्ठ. 4.71; 73; पे. व. अट्ठ. 98.

असितब्ब त्रि., √अस का सं. कृ. [अशितव्य], खाए जाने योग्य, खाया जाना चाहिए – *असितब्बं भोजनं भवता,* क. व्या. 627; *मुखेन असितब्बं भुञ्जितब्बन्ति मुखासियं,* ध. स. अट्ठ. 361.

असितविस त्रि., ब. स., वह, जिसका खाया हुआ सभी कुछ विष बन जाता है, अत्यधिक जहरीला – **सा** पु., प्र. वि., ब. व. – *असितविसाति यं यं एतेहि असितं होति परिभुत्तं, तं तं विसमेव सम्पज्जति, तस्मा असितं विसं होति एतेसन्ति आसीविसा,* स. नि. 3.54.

असितव्याभङ्गी व्यु. संदिग्ध, संभवतः स्त्री., द्व. स., **शा. अ.** हंसिया एवं बंहगी, **ला. अ.** बंहगी लेकर पालकी को ढोने वाला कहार, घास काटने वाला हंसिया एवं घास भरने वाली बोरी को धारण करने वाला मजदूर (शूद्र) – **ङ्गिं** द्वि. वि.,

ए॰ व॰ - *असितब्याभङ्गिञ्च पन सुद्दो सन्धनं अतिमञ्ञमानो अकिच्चकारी होति,* म॰ नि॰ 2.397; *असितव्याभङ्गिन्ति तिणलायनअसितञ्चेव काजञ्च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.300; *असितव्याभङ्गिं, भिक्खवे, कुलपुत्तो ओहाय अगारस्मा अनगारियं पब्बजितो होति,* अ॰ नि॰ 2(1).5; *असितव्याभङ्गिन्ति तिणलायनअसितञ्चेव तिणवहनकाजञ्च,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.3; ... *असन्ति लूनन्ति तेनाति असितं दात्तं, विविधा आभञ्जन्ति भारं ओलम्बेन्ति तेनाति व्याभङ्गी,* अ॰ नि॰ टी॰ 3.2; - **ता** स्त्री॰, भाव॰, हंसिया एवं घास ढोने वाली बंहगी या बोरी को धारण कर चलने वाले शूद्र की स्थिति, घास काटने एवं घास ढोने की क्रिया करने वाले दास की अवस्था - **य तृ॰** वि॰, ए॰ व॰ - *कसिगोरक्खादिना वेस्सो अहं, असितव्याभङ्गिताय सुद्दो अहं,* विभ॰ अट्ठ॰ 484; *असितव्याभङ्गितायाति दात्तेन काजेन चाति एतेन परिक्खारेन ... ..., लवनवहनकिरिया वा "असितव्याभङ्गी"ति वुत्ता,* विभ॰ मू॰ टी॰ 233.

असितव्हय त्रि॰, ब॰ स॰ [असिताह्वय], असित नाम वाला - **स्स ष॰** वि॰, ए॰ व॰ - ..., *समागते असिताव्हयस्स सासनेति,* सु॰ नि॰ 703.

असितातिग त्रि॰, [असितातिग], कृष्णपक्ष को पार कर चुका शुक्लपक्ष का चन्द्रमा, कालिमा से मुक्त चन्द्रमा, स्वच्छ एवं धवल चन्द्र - **गं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दक्खेमोघतरं नागं, चन्दंव असितातिगं,* दी॰ नि॰ 2.192; *असितातिगन्ति काळकभावातीतं चन्दंव सिरिया विरोचमानं ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.255; - **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *असितातिगो काळकभावातीताय सिरिया चन्दो,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 2.225.

असितापङ्ग त्रि॰, ब॰ स॰ [असितापाङ्ग], वह, जिसकी आंखों के किनारे कृष्ण-वर्ण के हों, काजल से कजरारे नेत्रों वाला, काले कजरारे नेत्र-कोर वाला - **ङ्गि** स्त्री॰, संबो॰ ए॰ व॰ - *तया मं असितापङ्गि, सितानि भणितानि च,* जा॰ अट्ठ॰ 3.371; *असितापङ्गीति तया मं असिता अपङ्गि, ..., अक्खिकोटितो अञ्जनसलाकाय नीहरित्वा अभिसङ्खतअसितापङ्गि, ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.371.

असिताभू स्त्री॰, व्य॰ सं॰ [असितभ्रू], वाराणसी की राजवधू का नाम, जिसकी कहानी 234वीं जातक-कथा में वर्णित है - **भुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सो असिताभुं नाम अत्तनो देविं आदाय हिमवन्तं पविसित्वा ... निवासं कप्पेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.192; - **भुया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवं हायति अत्थम्हा, अहंव असिताभुया'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.193; - **जातक** नपुं॰, 234वें जातक का शीर्षक, जिसमें वाराणसी की राजपुत्री असिताभू का कथानक दिया गया है, जा॰ अट्ठ॰ 2.192-193.

असितासन त्रि॰, ब॰ स॰ [अशिताशन], भोजन खा चुका, भोजन समाप्त कर चुका व्यक्ति - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असितोति असितासनो परिभुत्तफलो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.328.

असितुण्ड नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [असितुण्ड], तलवार की नोक, तलवार का अग्रभाग - **ण्डेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *आकासे खिपित्वा असितुण्डेन सम्पटिच्छित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.155.

असित्वा √अस (खाना) का पू॰ का॰ कृ॰ (अशित्वा), भोजन या पान ग्रहणकर, खाकर, पीकर - *ते तं अमतं असित्वा अरोगा दीघायुका सब्बीतितो परिमुच्चेय्युं,* मि॰ प॰ 164.

असिथरु पु॰, तत्पु॰ स॰ [असित्सरु], तलवार की मूठ - **रुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *चोरस्स हत्थे असिथरुं ठपेत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.318.

असिथिल त्रि॰, निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अशिथिल], शिथिलता से रहित, दृढ़, स्थिर प्रकृति वाला - **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यथा च ईसापटिबद्धं युगनद्धं किच्चकरं होति अचलं असिथिलं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.116; - **परक्कमता** स्त्री॰, भाव॰ [अशिथिलपराक्रमत्व], सुदृढ़ पराक्रम से परिपूर्ण रहना, वीरता - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं विरियबलं सम्मावायामो,* ध॰ स॰ 13; 22; 289; 571; - **पूरको** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अपने कर्तव्य को दृढ़ता के साथ निभाने वाला - *असिथिलपूरको तिब्बच्छन्दो बहलपत्थनो हुत्वाव करोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).295.

असिद्ध त्रि॰, √साध के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [असिद्ध], 1. कच्चा, नहीं पका हुआ - *असिद्धदुसिद्धानं डाकादीनं गन्धो आमकगन्धो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 352; 2. तर्क द्वारा प्रमाणित न किया हुआ - **त्त** नपुं॰, भाव॰ [असिद्धत्व], तर्क द्वारा ठीक से स्थापित न हो पाना, अस्तित्व की असिद्धि - **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *न, अणुआदीनं असिद्धत्ता,* विसुद्धि॰ 2.138; - **भोजन** त्रि॰, ब॰ स॰ [असिद्धभोजन], वह, जिसके लिए भोजन तैयार नहीं किया गया है - **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अभिन्नकट्ठोसि अनाभतोदको, अहापितग्गीसि असिद्धभोजनो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.192; *असिद्धभोजनोति न ते किञ्चि अम्हाकं कन्दमूलं वा पण्णं वा सेदितं,* तदे॰.

असिधारा स्त्री., तत्पु. स. [असिधारा], तलवार की धार - **रा** प्र. वि., ए. व. - *असङ्गारेन ... विय तिखिणा असिधारा,* स. नि. अट्ठ. 3.263; - **रूपम** त्रि., ब. स. [असिधारोपम], तलवार की धार जैसा काट डालने वाला या तेज धार वाला - **मेहि** पु./नपुं., तृ. वि., ब. व. - *वितुदेन्तीति असिधारुपमेहि तिखिणेहि लोहतुण्डकेहि विज्झित्वा ... गच्छन्ति,* स. नि. अट्ठ. 2.192; *तस्स कुसकण्टकेहि विद्धस्स सरपत्तेहि च असिधारूपमेहि ...,* स. नि. अट्ठ. 3.107.

असिनिद्ध त्रि., सिनिद्ध का निषे. [अस्निग्ध], चिकनाईरहित, स्निग्धतारहित, बिना तरलता वाला - **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अकटयुसन्ति असिनिद्धो मुग्गपचितपानीयो,* महाव. अट्ठ. 353; - **द्धेसु** पु., सप्त. वि., ए. व. - *रुक्खो दुमम्हि फरुसासिनिद्धेसु च सो तिसु,* अभि. प. 977.

असिपत्तपादप पु., कर्म. स. [असिपत्रपादप], तलवार की धार जैसे तीक्ष्ण एवं नुकीले पत्तों वाला पेड़ - **पं** द्वि. वि., ए. व. - *तमारुहन्तं असिपत्तपादपं,* जा. अट्ठ. 7.139.

असिपत्तवन नपुं., तत्पु. स. [असिपत्रवन], नरकलोक का वह वन, जिसमें तलवार की धार वाले पेड़ रहते हैं - **स्स** ष. वि., ए. व. - *असिपत्तवनस्स समनन्तरा सहितमेव महती खारोदका नदी,* म. नि. 3.224.

असिपत्ताचित त्रि., तत्पु. स. [असिपत्राचित], तलवार की धार जैसे पत्तों से भरपूर - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *ततो निक्खन्तमत्तं तं, असिपत्ताचिता दुमा,* जा. अट्ठ. 7.139.

असिपासा पु., प्र. वि., ब. व. में ही प्राप्त, मनुष्यों की एक प्रजाति - *सिवा वसुदेवा घनिका असिपासा भद्दिपुत्ताति,* मि. प. 184.

असिपुत्ती स्त्री., तत्पु. स. [असिपुत्री], चाकू, छुरी - *छुरिका सत्यसिपुत्ति,* अभि. प. 392.

असिप्प त्रि., ब. स. [अशिल्प], शिल्पों का ज्ञान न रखने वाला, किसी प्रकार की कला या दस्तकारी के ज्ञान से रहित - **स्स** पु., ष. वि., ए. व. - *किच्छा वुत्ति असिप्पस्स,* ..., जा. अट्ठ. 4.158; - **प्पो** पु., प्र. वि., ए. व. - *कलिमेव नूनं गण्हामि, असिप्पो धुत्तको यथा,* जा. अट्ठ. 7.112; - **जीवी** त्रि., सिप्पजीवी का निषे. [अशिल्पजीविन्], दस्तकारी या शिल्पों के ज्ञान के सहारे जीविकोपार्जन न करने वाला - **वी** पु., प्र. वि., ए. व. - *असिप्पजीवी लहु अत्थकामो,* उदा. 105; *सिप्पं उपनिस्साय जीविकं न कप्पेतीति असिप्पजीवी,* उदा. अट्ठ. 166.

असिप्पहार पु., तत्पु. स. [असिप्रहार], तलवार का प्रहार, तलवार द्वारा किया गया घाव - **रानं** ष. वि., ब. व. - *खमो सत्तिप्पहारानं असिप्पहारानं उसुप्पहारानं ...,* म. नि. 3.174.

असिप्पी त्रि., सिप्पी का निषे., तत्पु. स. [अशिल्पिन्], दस्तकारी या शिल्प को न जानने वाला, शिल्पों में अकुशल - **प्पिनो** पु., प्र. वि., ब. व. - *धीरा च बाला च हवे जनिन्द, सिप्पूपपन्ना च असिप्पिनो च,* जा. अट्ठ. 6.184.

असिबन्धकपुत्त पु., व्य. सं., गांव के एक मुखिया का नाम - **त्तो** प्र. वि., ए. व. - *अथ खो असिबन्धकपुत्तो गामणि येन भगवा तेनुपसङ्कमि,* स. नि. 2(2).299.

असिमालक पु., *केवल असिमालकं करोति/कत्वा/कारेसि जैसे मुहावरों में ही प्रयुक्त,* शरीर को तलवार की नोक से टुकड़े-टुकड़े कर देता है, असितुण्ड द्वारा शरीर का खण्डों में विच्छेदन करता है, तलवार द्वारा शरीर के टुकड़ों को माला जैसा पिरो देता है - **कं** द्वि. वि., ए. व. - *सो तस्स कळेवरं आकासे खिपित्वा असितुण्डेन सम्पटिच्छित्वा असिमालकं नाम कत्वा महातले विप्पकिरि,* जा. अट्ठ. 3.154-155; ... *असिमालकं नाम कारेसि,* जा. अट्ठ. 3.152; - **को** प्र. वि., ए. व. - *असिमालकोपि कतो,* जा. अट्ठ. 3.155.

असिमालकम्म नपुं., तत्पु. स., उपरिवत् - **म्मं** द्वि. वि., ए. व. - *कारापयन्ते असिमालकम्मं,* दा. वं. 3.35(रो.).

असिलक्खण नपुं., तलवारों के लक्षणों पर प्रकाश डालने वाला शास्त्र - **णं** प्र. वि., ए. व. - *मणिलक्खणं ... असिलक्खणं ... कच्छपलक्खणं मिगलक्खणं इति वा इति,* दी. नि. 1.8-9; - **णं** द्वि. वि., ए. व. - *सो किर ... असिं उपसिङ्घित्वा असिलक्खणं उदाहरति,* जा. अट्ठ. 1.435; - **जातक** नपुं., 126वें जातक का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.435-437; - **पाठक** पु., असिलक्षणशास्त्र को पढ़ने वाला - **कं** द्वि. वि., ए. व. - *तथेवेकस्स कल्याणन्ति इदं सत्था जेतवने विहरन्तो कोसलरञ्ञो असिलक्खणपाठकं ब्राह्मणं आरब्भ कथेसि,* जा. अट्ठ. 1.435.

असिलट्ठि स्त्री., [असियष्टि], लम्बी एवं पतली तलवार की धार - **ट्ठिं** द्वि. वि., ए. व. - *असिचम्मन्ति असिलट्ठिञ्चेव कण्डवारणञ्च,* जा. अट्ठ. 4.329; - **या** तृ. वि., ए. व. - *नड्डेन कम्मं नाम नड्डे बन्धाय दीघासिलट्ठिया वा अयमुसलेन वा छेदनभेदनं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.92.

असिलाघा स्त्री., सिलाघा का निषे., तत्पु. स. [अश्लाघा], अपयश, अकीर्ति, निन्दा - **घा** प्र. वि., ए. व. - *असिलोको अकित्ती च असिलाघा च अत्थुति,* सद्द. 2.380.

असिलिट्ठ त्रि., सिलिट्ठ का निषे. [अश्लिष्ट], **शा. अ.** (किसी में) लगाव या चिपकाव न रखने वाला, **ला. अ.** दो अर्थों के परस्पर-मिश्रण के संभ्रम से रहित, सुस्पष्ट - **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *असहितं तेति तुय्हं वचनं असहितं असिलिट्ठं,* स. नि. अट्ठ. 2.230; - **ट्ठं** द्वि. वि., ए. व. - *... युत्तायुत्तं कारणाकारणं सिलिट्ठासिलिट्ठं न जानातीति अत्थो,* पु. प. अट्ठ. 72. **असिलेसा** द्रष्ट. अस्सिलिस (आगे).

असिलोक पु., सिलोक का निषे. [अश्लोक], अप्रशंसा, अपयश, निन्दा - **को** प्र. वि., ए. व. - *असिलोकोपि मे अस्स, पापञ्च पसवे बहुं,* जा. अट्ठ. 7.240; - **भय** नपुं., तत्पु. स. [अश्लोकभय], निन्दा का भय, बदनामी का डर - **यं** प्र. वि., ए. व. - *आजीविकभयं, असिलोकभयं, ... दुग्गतिभयं,* अ. नि. 3(1).182; *असिलोकभयन्ति गरहाभयं,* अ. नि. अट्ठ. 3.259.

असिलोम त्रि., ब. स. [असिलोम], तलवार की तरह नुकीले रोमों वाला - **मं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *गिज्झकूटा ... अद्दसं असिलोमं पुरिसं वेहासं गच्छन्तं,* स. नि. 1(2). 233; - **पेत** पु., कर्म. स. [असिलोमप्रेत], तलवार के समान नुकीले रोमों वाला प्रेत - *तस्मा असिलोमपेतो जातो,* स. नि. अट्ठ. 2.194; - **वत्थु** नपुं., स. नि. के एक खण्ड का शीर्षक, स. नि. 1(2).233; स. नि. अट्ठ. 2. 194.

असिसदिसविस त्रि., ब. स. [असिसदृशविष], तलवार के समान तीक्ष्ण एवं काट देने वाले विष से भरा - **सा** पु., प्र. वि., ब. व. - *असिसदिसविसाति असिविय तिखिणं ... आसीविसाति एवमेत्थ वचनत्थो वेदितब्बो,* स. नि. अट्ठ. 3.54.

असिसूना स्त्री., असि एवं सूना का इतरीतर द्व. स., पशु को काटने वाली वधिक की छुरी तथा काटे जा रहे पशु को रखने के लिए प्रयुक्त काठ का पीढ़ा - ... *अद्दस असिसूनं, असिसूना, भदन्ते'ति,* ..., म. नि. 1.197; *असिसूनाति एत्थ, यथा सूनाय उपरि मंसं उपेत्वा असिना कोट्टेन्ति, एवमिमे सत्ता ... किलेसकामेहि घातयमाना ... किलेसकामेहि कन्तिता कोट्टिता च होन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).38; - **नूपम** त्रि., ब. स., वधिक की छुरी एवं वध में प्रयुक्त काष्ठपीठिका के समान, दुख से परिपूर्ण - **मा** पु., प्र. वि., ब. व. - *असिसूनूपमा कामा वुत्ता भगवता,* म. नि. 1.183;

असीघचार पु., कर्म. स. [अशीघ्रचार], मन्द-गमन, धीमी चाल - **रो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असीघचारो असीघप्पवत्ति,* सद्द. 2.394.

असीति स्त्री., केवल ए. व. में ही प्रयुक्त [अशीति], अस्सी (80) की संख्या - *सत्तरिञ्चादि पि, असीति, असीति, असीतिया, असीतियं,* सद्द. 1.297; *असीति मे, ... वस्सानि पब्बजितस्साति,* म. नि. 3.167; - **असीतिं / असीति** द्वि. वि., ए. व. - *एकपुप्फं चजित्वान, असीतिं वस्सकोटियो,* थेरगा. 96; - **तिया**[1] तृ. वि., ए. व. - *असीतिया वस्सेहि ...,* म. नि. 3.167; - **तिया**[2] ष. वि., ए. व. - *असीतिया गामिकसहस्सानं ...,* महाव. 252; - **तिया**[3] सप्त. वि., ए. व. - *असीतिया महासावकेसु,* विसुद्धि. 1.96.

असीतिक / आसीतिक / असीतिय त्रि., असीति से व्यु. [आसीतिक], **क.** अस्सी वर्ष की आयु वाला, अस्सी वर्षों का - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *आसीतिको मे वयो वत्तति,* दी. नि. 2.78; *आसीतिकोति असीतिसंवच्छरिको,* दी. नि. अट्ठ. 2.124; - **कं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - *आसीतिकं नावुतिकंव जच्चा,* जा. अट्ठ. 3.349; *आसीतिकं ... जच्चाति असीतिसंवच्छरं वा नवुतिसंवच्छरं वा जातिया,* तदे. 3.349; *अम्भो पुरिस, न त्वं अद्दस मनुस्सेसु इत्थिं वा पुरिसं वा आसीतिकं वा नावुतिकं वा ...,* अ. नि. 1(1).163; **2.** अस्सी स्वर्णमुद्राओं के मूल्य वाला - *आसीतिया नावुतिया च गाथा,* जा. अट्ठ. 5.479; *आसीतिया च नावुतिया च सतारहा चापि भवेय्य,* जा. अट्ठ. 5.480; **3.** स्त्री., एक लता, *केवल स. पू. प. के रूप में प्रयुक्त* - **पब्ब** नपुं., तत्पु. स. [अशीतिकपर्वन्], अशीति लता के पोर - **ब्बानि** प्र. वि., ब. व. - ... *आसीतिकपब्बानि वा काळपब्बानि वा,* म. नि. 1.114; *आसीतिकपब्बानि ... वाति यथा आसीतिकवल्लिया वा काळवल्लिया वा, सन्धिट्ठानेसु मिलायित्वा मज्झे उन्नतुन्नतानि होन्ति, एवं मय्हं अङ्गपच्चङ्गानि ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).362.

असीतिकवल्ली / आसीतिकवल्ली स्त्री., तत्पु. स. [अशीतिकवल्ली], उपरिवत् - **ल्लिया** ष. वि., ए. व. - *आसीतिकपब्बानि वा ... यथा आसीतिकवल्लिया वा काळवल्लिया वा ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).362.

असीतितम त्रि., [अशीतितम], अस्सीवां - **मो** पु., प्र. वि., ए. व. - *इति ... कते ... सोळसराजको नाम असीतितमो परिच्छेदो,* चू. वं. 80.80.

असीतिनिपात पु., जा. अट्ठ. के एक समुच्चय का शीर्षक, जा. अट्ठ. 5.328-503.

असीतिप्पभा स्त्री., कर्म. स. [अशीतिप्रभा], बुद्ध के प्रभामण्डल के तीन प्रकारों में से एक – **मा** प्र. वि., ए. व. – *तत्थ ब्यामप्पभा वा असीतिप्पभा वा सब्बेसं समाना,* सु. नि. अट्ठ. 2.122.

असीतिमहासावकवण्णनागाथा स्त्री., ग. वं. की एक गाथा, ग. वं. 66(रो.).

असीतिवस्सवय त्रि., ब. स. [अशीतिवर्षवय], अस्सी वर्षों की आयु वाला – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसीतिकोति असीतिवस्सवयो,* अ. नि. अट्ठ. 2.42.

असीतिवस्ससहस्सायुक त्रि., ब. स. [अशीतिवर्षसहस्रायुक], अस्सी हजार वर्षों की आयु तक जीने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *चत्तारीसवस्ससहस्सायुकानं मनुस्सानं असीतिवस्ससहस्सायुका पुत्ता भविस्सन्ति,* दी. नि. 3.55; – **केसु** पु., सप्त. वि., ब. व. – *असीतिवस्ससहस्सायुकेसु, भिक्खवे मनुस्सेसु ...,* दी. नि. अट्ठ. 3.35.

असीतिसंवच्छर त्रि., ब. स. [अशीतिसंवत्सरिक], अस्सी संवत्सरों या वर्षों की आयु वाला – **रं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *आसीतिकं नावुतिकंव जच्चाति असीतिसंवच्छरं वा नवुतिसंवच्छरं वा जातिया,* जा. अट्ठ. 3.349; – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसीतिकोति असीतिसंवच्छरिको,* दी. नि. अट्ठ. 2.124.

असीतिहत्थगम्भीर त्रि., तत्पु. स. [अशीतिहस्तगम्भीर], अस्सी हाथों की गहराई वाला – **राय** स्त्री., सप्त. वि., ए. व. – *तावदेव असीतिहत्थगम्भीराय अङ्गारकासुया ...,* जा. अट्ठ. 1.229.

असीतिहत्थमुग्गत त्रि., [असीतिहत्थोद्गत], अस्सी हाथों की ऊंचाई वाला – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *उच्चत्तनेन सो बुद्धो, असीतिहत्थमुग्गतो,* बु. वं. 7.24.

असीतिहत्थमुब्बेध / असीतिहत्थुब्बेध त्रि., उपरिवत् – **धो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असीतिहत्थमुब्बेधो, दीपङ्करो महामुनी,* जा. अट्ठ. 1.39; *असीतिहत्थुब्बेधो रासि अहोसि,* वि. व. अट्ठ. 52.

असीमा स्त्री., सीमा का निषे., तत्पु. स. [असीमा], **शा. अ.** सीमा का अभाव, **ला. अ.** उपोसथ-नामक सङ्घकर्म के अनुष्ठान के लिए अनुमोदित सीमा का न होना – **मा** प्र. वि., ए. व. – *सब्बा, ... नदी असीमा, सब्बो समुद्दो असीमो, सब्बो जातस्सरो असीमो,* महाव. 139; *सब्बा, भिक्खवे, नदी असीमाति या काचि नदीलक्खणप्पत्ता नदी निमित्तानि कित्तेत्वा एतं बद्धसीमं करोमा'ति कतापि असीमाव होति,* महाव. अट्ठ. 315.

असीयति √अस (भोजन करना) के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [अश्यते], खाया जाता है – *सो हि असीयति भुञ्जीयती ति असनन्ति वुच्चति,* सद्द. 2.501; 583.

असील त्रि., ब. स. [अशील], शीलों का पालन न करने वाला, नैतिक आचरण न करने वाला, दुराचारी – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *को दुतियं असीलिस्स, बन्धरस्सक्खि भेच्छति,* जा. अट्ठ. 3.381; पाठा. असीलिस्स; – **लट्ठ** त्रि., [अशीलस्थ], शीलों में अच्छी तरह पैरों को नहीं जमाया हुआ, शीलों में अप्रतिष्ठित, शील-विपरीत, शीलों पर नहीं आधारित – **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदं ते असारुप्पं, इद ते असीलट्ठ'न्ति,* महानि. 381; *असीलट्ठन्ति तव पयोगं न सीले पतिट्ठन्ति असीलट्ठं, सीले ठितस्स पयोगं न होतीति वुत्तं होति,* महानि. अट्ठ. 382; – **ता** स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व. [अशीलता], शीलों से रहित होना, शीलों का पालन न करना, प्रातिमोक्ष के संरक्षण से रक्षित न होना – *असीलता ति पातिमोक्खसंवरं विना अब्बता नोपि तेन,* सु. नि. अट्ठ. 2.237.

असीसक त्रि., ब. स. [अशीर्षक], बिना शिर वाला, शिर से रहित – **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. – ... *असीसकं कबन्धं वेहासं गच्छन्तं ...,* स. नि. 1(2).236; *असीसकं अनङ्गुट्ठं, सिङ्गालो हरति रोहित'न्ति,* जा. अट्ठ. 3.295.

असीसघट्ट त्रि., [अशीर्षघर्ष], शिर से न टकराने वाला / वाली – **ट्टा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *वेहासकुटि नाम मज्झिमस्स पुरिसस्स असीसघट्टा,* पाचि. 68; ... *असीसघट्टाति या पमाणमज्झिमस्स पुरिसस्स सब्बहेट्ठिमाहि तुलाहि सीसं न घट्टेति,* पाचि. अट्ठ. 42.

असीह पु., सीह का निषे., तत्पु. स. [असिंह], सिंह से इतर (प्राणी), सिंह से भिन्न (प्राणी) – **हो** प्र. वि., ए. व. – *असीहो सीहमानेन, यो अत्तानं विकुब्बति,* जा. अट्ठ. 3.97.

असु[1] पु. / स्त्री., सर्व. असु का प्र. वि., ए. व. [असौ], यह (पुरुष या नारी) – *असु हि, भो गोतम, अग्गि दुक्खसम्फस्सो चेव महाभितापो च महापरिळाहो चा'ति,* म. नि. 2.185; – **अदुं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अदुञ्हि, भन्ते अट्ठिकङ्कलं ... निम्मंसं लोहितमक्खिकं,* अ. नि. 2.29; – **मुं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *अपि नु खो सो कुक्कुरो अमुं अट्ठिकङ्कलं ... पटिविनेय्यति,* म. नि. 2.29; – **क / अमुक** त्रि., असु[1] से

व्यु॰ [असुक/अमुक], यह नाम वाला/वाली, फलाना - *असुको असुका, असुकं असुके ति आदिना अमुको अमुका,* सद्द॰ 1.278; - **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुको नाम तुम्हाकं एवञ्च एवञ्च अगुणं कथेती'ति ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.225; - **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ननु त्वं पदुमकुमारस्स भरिया असुकरञ्ञो धीता, असुका नाम ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.99; - **कं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुकं नामा ति वुत्ते ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.220; - **कं**[2] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुकञ्च असुकञ्चा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.109; - **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुकेन मे तेलं पक्कन्ति मा वदित्थ,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.8; - **कस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आणत्तिको नाम असुकस्स भण्डं अवहरा'ति अञ्ञं आणापेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.243; - **कस्मिं** पु॰/नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अमुकस्मिं गामे वा निगमे वा नगरे वा'ति,* म॰ नि॰ 2.100.

असु[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [असु], प्राण - *पाणो त्वसु पकासितो,* अभि॰ प॰ 407; - **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुम्हि च बले पाणो सत्ते हदयगानिले,* अभि॰ प॰ 945.

असुक्क त्रि॰, सुक्क का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अशुक्ल], अनुज्ज्वल, गन्दा, मलिन, काला (कर्म) - **क्कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कम्मं अकण्हं असुक्कं अकण्हअसुक्कविपाकं,* म॰ नि॰ 2.59.

असुक्ख त्रि॰, √सुस के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अशुष्क], नहीं सूखा हुआ, हरा भरा या ताजा - **क्खं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रुक्खतो पन अवियोजितं असुक्खं भूतगामो'ति वुच्चति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.75.

असुख क. त्रि॰, ब॰ स॰ [असुख], सुख का अनुभव न कराने वाला, दुख से भरा, **ख.** नपुं॰, निषे॰ तत्पु॰ स॰ [असुख], सुख का अभाव, दुख, मन के लिए प्रतिकूल अनुभव - **खाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *बहुजनअहिताय बहुजनअसुखाय अनत्थाय अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं,* दी॰ नि॰ 3.195.

असुखसयित त्रि॰, तत्पु॰ स॰, ठीक से सुखाकर भण्डारण नहीं किया हुआ, अन्नभण्डार में ठीक से नहीं रखा गया - **तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *बीजानि पतिट्ठापेय्य खण्डानि ... असुखसयितानि,* दी॰ नि॰ 2.260; *असुखसयितानीति यानि सुक्खापेत्वा कोट्ठे आकिरित्वा ठपितानि, तानि सुखसयितानि नाम एतानि पन न तादिसानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.362.

असुखुम त्रि॰, सुखुम का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असूक्ष्म], स्थूल, मोटा-झोंटा, सुव्यक्त - **मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दुट्ठुल्लन्ति दुट्ठं च किलेसदूसितं थूलञ्च असुखुमं, अनिपुणन्ति वुत्तं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.170.

असुङ्कारह त्रि॰, [अशुल्कार्ह], शुल्क न लगाए जाने योग्य, टैक्स न भरने योग्य - **हं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चोरानं अनुपकारं सुङ्किकानं असुङ्कारहं मातिकापत्तञ्चेव ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.243.

असुचि त्रि॰, सुचि को निषे॰ [अशुचि], **शा॰ अ॰** अपवित्र, गन्दा, मलिन - *सम्भवे चासुचि पुमे अमेज्झे तीसु दिस्सति,* अभि॰ प॰ 1024; - **चि** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुचि पूतिलोमोसि, दुग्गन्धो वासि सूकर,* जा॰ अट्ठ॰ 2.10; *असुचि दुग्गन्धो सभीरु सप्पटिभयो मित्तदुब्भी,* अ॰ नि॰ 2(1).240; - **ची** ब॰ व॰ - *इमे चुन्द दस अकुसलकम्मपथा असुचीयेव होन्ति असुचिकरणा,* अ॰ नि॰ 3(2).234; *अतद्दुपञ्ञा असुची मनुस्सा,* सु॰ नि॰ 75; - **चिना/चिया** पु॰/स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुचिना कायकम्मेन ... असुचिया चेतनाय ... असुचिना पणिधिना समन्नागता,* चूळनि॰ 275; **ला॰ अ॰ 1.** नपुं॰, शरीर के विविध द्वारों से बाहर होकर बहने वाला मल या गन्दगी - *अथस्स नवहि सोतेहि, असुची सवति सब्बदा,* सु॰ नि॰ 199; *असुचि सवतीति सब्बलोकपाकटनानप्पकारपरमदुग्गन्धजेगुच्छ असुचियेव सवति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.209; **ला॰ अ॰ 2.** वीर्य, शुक्र - *असुचि सम्भवो सुक्कं,* अभि॰ प॰ 274; - **चि** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेसं ... ओक्कमन्तानं सुपिनन्तेन असुचि मुच्चति, सेनासनं असुचिना मक्खियति,* महाव॰ 385; - **कपल्लक** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अशुचिकपालक], गन्दे मल या विष्टा से भरी गगरी - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पथविस्सरस्स असुचिकपल्लकं सीसेन उक्खिपित्वा विचरणं नाम ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 426; - **करण** त्रि॰, [अशुचिकरण], अपवित्र कर देने वाला, गन्दा बनाने वाला - **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *दस अकुसलकम्मपथा असुचीयेव होन्ति असुचिकरणा च,* अ॰ नि॰ 3(2).234; - **कललकूप** पु॰, कर्म॰ स॰ [अशुचिकललकूप], अपवित्र वस्तुओं या मलों से भरा हुआ तालाब, अत्यन्त गन्दा जलाशय - **पे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चन्दनिकायाति असुचिकललकूपे,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.141; - **कलिमल** नपुं॰, कर्म॰ स॰, अपवित्र एवं काले रंग का मल, आंख का कीचड़ एवं नाक के अन्दर से बह रहा नेटा - **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *नयेन नानप्पकारकं असुचिकलिमलं वमतीति वम्मिको,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).33; - **किलिट्ठ** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अपवित्र वस्तु द्वारा गीला किया हुआ, मूत्र आदि अपवित्र द्रवों द्वारा भिगोया हुआ - **ट्ठं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *किलिन्नं पस्सित्वाति असुचिकिलिट्ठं पस्सित्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.224; -

जेगुच्छपटिक्कूल त्रि., द्व. स., अपवित्र, घृणित एवं प्रतिकूल - **ले** पु., सप्त. वि., ए. व. - *यथा नाम ... सङ्कारासिम्हि असुचिजेगुच्छियपटिकूलेपि सुचिगन्धं पदुमं जायेथ,* ध. प. अट्ठ. 1.250; - **ट्ठान** नपुं., कर्म. स. [अशुचिस्थान], अपवित्र स्थान, गन्दी जगह - **ने** सप्त. वि., ए. व. - *वराहो वासुचिट्ठाने छड्डेत्वा सुद्धभोजनं,* सद्धम्मो. 378; - **तर** त्रि., तुल. विशे. [अशुचितर], और भी अधिक अपवित्र, अपेक्षाकृत अधिक अपवित्र - **रानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. - *असुचितरानि ... दुग्गन्धतरानि च पूतिकतरानि च,* म. नि. 2.185; *असुचितरानि ... दुग्गन्धानि च पूतीनि च, इदानि पन असुचितरानि चेव दुग्गन्धतरानि ...,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.156; - **निस्सवण** त्रि., ब. स. [अशुचिनिस्रवण], मल को या अपवित्र तरल को बहाता रहने वाला, गन्दगी को टपकाने वाला - **णं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *दुक्खोदयं असुचिनिस्सवणं अनत्तं,* तेल. 45; - **पटिपीळित** त्रि., तत्पु. स. [अशुचिप्रतिपीड़ित], अपवित्रता से पीड़ित, गन्दगी से परेशान - **तो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असुचिपटिपीळितो नाम सो होति माणवको वा माणविका वा,* अ. नि. 2(1).210; - **पिण्ड** पु., तत्पु. स. [अशुचिपिण्ड], मल का पिण्ड, अपवित्रता से भरा पिण्ड - **ण्डं** द्वि. वि., ए. व. - ... *ते चक्खुसञ्जितं असुचिपिण्डं गण्ह,* थेरीगा. अट्ठ. 282; - **पुण्ण** त्रि., तत्पु. स. [अशुचिपूर्ण], मलों से भरपूर, गन्दगी से भरा हुआ - ..., *असकिं पग्घरितं असुचिपुण्णं,* थेरीगा. 300; - **बीभच्छ** त्रि., द्व. स. [अशुचिवीभत्स], अपवित्र एवं घृणास्पद, गन्दा एवं घिनौना - **च्छं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. *ततो असुचि बीभच्छं दुग्गन्धं किमिसङ्कुलं,* सद्धम्मो. 603; - **भरित** त्रि., तत्पु. स., अपवित्रता से भरपूर, मलों से भरा हुआ - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *तं जण्णुमत्तम्पि असुचिभरितं होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).87; - **भावमिस्सित** त्रि., तत्पु. स. [अशुचिभावमिश्रित], अपवित्रता-भाव से युक्त - **ता** पु., प्र. वि., ब. व. - *असुचिभावमिस्सिताति ताय रसगिद्धिया रसपटिलाभत्थाय नानप्पकारमिच्छाजीवसङ्खातअसुचिभावमिस्सिता,* सु. नि. अट्ठ. 1.263; - **सम्मत** त्रि., अपवित्र माना गया - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *जरावसानं योब्बञ्ञं, रूपं असुचिसम्मतं,* अप. 2.244; - **सुख** नपुं., कर्म. स. [अशुचिसुख], अशुद्धि या अपवित्रता में प्राप्त किया गया सुख, मलिन काम-भोगों में प्राप्त सुख, क्लेशों आदि की मलिनता से भरा हुआ सांसारिक सुख - **खं** प्र. वि., ए. व. - *मीळ्हसुखन्ति असुचिसुखं,* अ. नि. अट्ठ. 3.12; *असुचिसुखन्ति कायासुचिसन्निस्सितत्ता किलेसासुचिसन्निस्सितत्ता च असुचिसन्निस्सितसुखं,* अ. नि. टी. 3.13-14; - **सेदयूस** पु., कर्म. स. [अशुचिस्वेदयूष], पसीने का अपवित्र बहाव, पसीने का गन्दा पानी - **सो** प्र. वि., ए. व. - *नवनवुतिया लोमकूपसहस्सेहि असुचिसेदयूसो पग्घरति,* विसुद्धि. 1.186.

असुञ्ञ त्रि., निषे. तत्पु. स. [अशून्य], नहीं खाली, नहीं रिक्त, नहीं रहित, अवियुक्त, जुड़ा हुआ, लगातार रूप में भरा हुआ - **ञ्ञो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असुञ्ञो लोको अरहन्तेहि अस्सा'ति,* दी. नि. 2.114; *असुञ्ञो ... नळवनं सरवनं विय निरन्तरो अस्स,* दी. नि. अट्ठ. 2.162; - **ञ्ञा** ब. व. - *अविवित्ताति असुञ्ञा,* उदा. अट्ठ. 346; - **गन्ध** त्रि., ब. स. [अशून्यगन्ध], किसी विशेष प्रकार की गन्ध से युक्त, गन्ध से अविरहित - **न्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *मनुञ्ञगन्धेन असुञ्ञगन्धो,* जिना. 83; - **त्त** नपुं., भाव. [अशून्यत्व], अशून्यता, अशून्य-भाव, अभावरहित होने की दशा - **त्तं** प्र. वि., ए. व. - *सुञ्ञो ... अत्थि चेविदं असुञ्ञतं यदिदं -,* म. नि. 3.148; *एकत्तन्ति एकभावं, एकं असुञ्ञतं अत्थीति अत्थो, एको असुञ्ञभावो अत्थीति वुत्तं होति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.111.

असुणन्तो / अस्सुणन्तो √सु के वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. का निषे. [अश्रृण्वत्], नहीं सुनता हुआ - *पुच्छञ्हि किञ्चि असुणन्तो, सुत्वा पञ्हे वियाकते,* सु. नि. 1029; - **न्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अचेतनं ब्राह्मण अस्सुणन्तं,* जा. अट्ठ. 3.20; *तत्थ अस्सुणन्तन्ति अचेतनत्ताव असुणन्तं,* तदे..

असुणिं √सु का अद्य., उ. पु., ए. व., मैंने सुना - *एकनवुतितो कप्पे, यं धम्ममसुणिं तदा,* अप. 1.267.

असुत्तन्तविनिबद्ध त्रि., तत्पु. स., सुत्तों के अन्दर नहीं रखा गया, बुद्ध-वचनों के अन्तर्गत न आने वाला - **द्धं** पु./नपुं., द्वि. वि., ए. व. - ... *असुत्तन्तविनिबद्धं पाळिविनिमुत्तं ... अत्थो,* पारा. अट्ठ. 1.172; *असुत्तन्तविनिबद्धन्ति सुत्तन्तेसु अनिबद्धं, पाळिअनारुळ्हन्ति अत्थो,* सारत्थ. टी. 2.27.

असुत्तमय त्रि., [असूत्रमय], सूतों या धागों से नहीं बना हुआ - **यं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *असुत्तमयं पसाधनं रजतेन सुत्तकिच्चं करिंसु,* ध. प. अट्ठ. 1.221.

असुत्तमयिक त्रि., उपरिवत् - **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. - ... *असुत्तमयिकं सुमनपुप्फपटं महारहञ्च ... आहरन्ति,* पारा. अट्ठ. 1.32; *असुत्तमयिकन्ति कप्परुक्खतो निब्बत्तदिब्बदुस्सत्ता सुत्तेहि न कतन्ति असुत्तमयिकं,* सारत्थ. टी. 1.111.

असुद्ध त्रि., सुद्ध का निषे., तत्पु. स. [अशुद्ध], अस्वच्छ, मलिन, गन्दा, नैतिक-दृष्टि से अकुशल, आचारहीन – **द्धेन** पु./नपुं., तृ. वि., ए. व. – *कथं ..., सुद्धं असुद्धेन समं करेय्या'ति,* सु. नि. 90; *कथञ्हि सुतवा ... सुद्धं समणत्तयमेवं अपरिसुद्धकायसमाचारतादीहि असुद्धेन ... समं करेय्य ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.131; – **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असुद्धो होति पुग्गलो अञ्ञतरं पाराजिकं धम्मं अज्झापन्नो,* पारा. 259; – **द्धा** ब. व. – *अन्तो असुद्धा बहि सोभमाना'ति,* स. नि. 1(1).96; *अन्तो असुद्धाति अब्भन्तरतो रागादीहि अपरिसुद्धा,* महानि. अट्ठ. 358; – **कम्म** त्रि., ब. स. [अशुद्धकर्मन्], मलिन कर्मों को करने वाला, अकुशल कर्मों को करने वाला – **म्मा** पु., प्र. वि., ब. व. – *ये सुद्धधञ्ञं ..., असुद्धकम्मा कथिनो ददन्ति,* जा. अट्ठ. 6.132; *असुद्धकम्माति किलिट्ठकायवचीमनोकम्मा,* जा. अट्ठ. 6.133; – **धम्मत्त** नपुं., भाव. [अकुशलधर्मत्व], पापमय या अकुशल धर्मों से युक्त होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – ... *असुद्धधम्मत्ता अनरियधम्मेसु केराटिकत्ता सठेसु नस्सति,* जा. अट्ठ. 3.9; – **भक्ख** त्रि., [अशुद्धभक्षिन्], अशुद्ध पदार्थों को खाने वाला, गन्दी चीजों को खा लेने वाला – **क्खो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असुद्धभक्खोसि खणानुपाती, किच्छेन ते लब्भति अन्नपानं,* जा. अट्ठ. 3.461.

असुद्धि स्त्री., सुद्धि का निषे., तत्पु. स., प्र. वि., ए. व. [अशुद्धि], शुद्धि का अभाव, आचरण में पवित्रता का अभाव, अकुशलता – *सुद्धी असुद्धि पच्चत्तं,* ध. प. 165; *अकुसलकम्मसङ्खाता च असुद्धि ...,* ध. प. अट्ठ. 2.89; – **द्धिं** द्वि. वि., ए. व. – *सुद्धिं असुद्धिन्ति अपत्थयानो,* सु. नि. 906; *असुद्धिन्ति असुद्धिं पत्थेन्ति, अकुसले धम्मे पत्थेन्ति,* महानि. 230; – **धम्म** त्रि., ब. स. [अशुद्धिधर्मन्], विशुद्धि या निर्वाण को प्राप्त न करने योग्य, स्वभाव से ही विशुद्धि रहित चित्त वाला – **म्मं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *सयमेव ..., परं वदं बालमसुद्धिधम्मं,* सु. नि. 899; – **म्मो** प्र. वि., ए. व. – *बालमसुद्धिधम्मन्ति परो बालो हीनो निहीनो ओमको लामको ... असुद्धिधम्मो अविसुद्धिधम्मो ...,* महानि. 222.

असुन्दर त्रि., सुन्दर का निषे., तत्पु. स. [असुन्दर], बुरा, प्रतिकूल, मन द्वारा प्रतिकूल रूप में संवेदनीय – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *असुन्दरो गन्धो यस्स सो दुग्गन्धि,* क. व्या. 339; – **रं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *इध भिक्खु चीवरं लभति, सुन्दरं वा असुन्दरं वा,* दी. नि. अट्ठ. 1.166.

असुभ त्रि., सुभ का निषे., तत्पु. स. [अशुभ], **शा. अ.** अमङ्गलों को लाने वाला, अमङ्गलकारी, अपवित्र, **ला. अ. क.** क्लेशों के मलों से परिपूर्ण, घिनौना (शरीर एवं सांसारिक सुख आदि) – **भं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सङ्खतमसुभन्ति ... किलेसासुचिपग्घरणेन असुभन्ति ञत्वा ...,* थेरीगा. अट्ठ. 280; – **भं**[2] नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *असुभं असुभतद्दसुं,* अ. नि. 1(2).60; – **तो** प. वि., ए. व. – *असुभतद्दसुन्ति असुभं असुभतोयेव अद्दसंसु,* अ. नि. अट्ठ. 2.299; – **भे** पु./नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *असुभे असुभसञ्ञिनो,* अ. नि. 1(2).60; **ला. अ. ख.** त्रि., अशुभ या अपवित्र माने गए दस प्रकार के आलम्बनों पर उपचार-ध्यान अथवा उनकी स्मृति या अनुपश्यना – **भं** द्वि. वि., ए. व. – *असुभं, राहुल, भावनं भावेहि,* म. नि. 2.95; *असुभन्ति उद्धुमातकादिसु उपचारप्पनं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.101; – **भा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *रागस्स पहानाय असुभा भावेतब्बा,* अ. नि. 2(2).145; – **य** च. वि., ए. व. – *असुभाय चित्तं भावेहि,* सु. नि. 343; *असुभाय चित्तं भावेहीति यथा सविञ्ञाणके अविञ्ञाणके वा काये असुभभावना सम्पज्जति, एवं चित्तं भावेहि,* सु. नि. अट्ठ. 2.69; **ला. अ. ग.** पु., अशुभ भावना के दस प्रकार अथवा चित्त की एकाग्रता के दस अशुभ आलम्बन – **भा** प्र. वि., ब. व. – *उद्धुमातकं, विनीलकं, विपुब्बकं, विच्छिद्दकं, विक्खायितकं, विक्खित्तकं, हतविक्खित्तकं, लोहितकं, पुळुवकं, अट्ठिकन्ति इमे दस असुभा,* विसुद्धि. 1.108; अभि. ध. स. 62; – **भे** द्वि. वि., ब. व. – *उग्गण्हेय्यासुभे कथं,* ना. रू. परि. 1069; – **कथा** स्त्री., तत्पु. स. [अशुभकथा], **शा. अ.** अमङ्गल भरी चीजों के बारे में कथन या उपदेश, शरीर एवं विषय-भोगों आदि के अशुभ होने के विषय में उपदेश – **थं** द्वि. वि., ए. व. – *भगवा भिक्खूनं अनेकपरियायेन असुभकथं कथेति,* पारा. 81; स. नि. 3.390; **ला. अ.** बुद्धवचन से बाहर की पांच प्रकार की कथावस्तुओं में से एक – *तिस्सो पन सङ्गीतियो अनारुळ्हं धातुकथा आरम्मणकथा असुभकथा ञाणवत्थुकथा विज्जाकरण्डकोति ...,* स. नि. अट्ठ. 2.177; – **कम्मट्ठान** नपुं., कर्म. स. [बौ. सं. अशुभकर्मस्थान], ध्यान के चालीस कर्मस्थानों (आलम्बनों) में से एक के रूप में अशुभ – **नं** द्वि. वि., ए. व. – ... *रागपटिपक्खं असुभकम्मट्ठानं गहेत्वा ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).72; ... *तस्स रागपटिघाताय असुभकम्मट्ठानं अदासि,* ध. प. अट्ठ. 2.243; – **कम्मट्ठाननिद्देस** पु., विसुद्धि. के उस खण्ड का शीर्षक, जिसमें फूले हुए मृत शरीर जैसे

अशुभ-कर्मस्थानों के ग्रहण करने की विधि का विवेचन है, विसुद्धि॰ 1.171-188; - **कम्मिकतिस्सत्थेर** पु॰, चेतियपर्वत के महातिस्सथेर का ही दूसरा नाम - *असुभकम्मिकतिस्सत्थेरसदिसे असुभभावनारते कल्याणमित्ते सेवन्तस्सापि कामच्छन्दो पहीयति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).292; - **ज्झान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अशुभध्यान], अशुभ माने जाने वाले कर्मस्थानों पर चित्त की एकाग्रता - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं असुभज्झानं भावेति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.320; - **नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *यदि एवं या असुभज्झानानं अप्पमाणारम्मणता वुत्ता ...,* विसुद्धि॰ 1.109; - **दस्सन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अशुभदर्शन], अशुभ या अमङ्गलदायक का दर्शन - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुभदस्सनम्पि सात्थं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).265; - **निमित्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰, चित्त की एकाग्रता लाने में कारण बनने वाला अशुभ आलम्बन - **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुभनिमित्तं नाम असुभम्पि असुभारम्मणम्पि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).292; - **भावना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, दस प्रकार के अशुभ कर्मस्थानों में किसी एक का ग्रहण कर की जा रही ध्यानभावना - **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ब्रह्मविहारभावना असुभभावना आनापानस्सतिभावना च ...,* म॰ नि॰ टी॰ (म॰प॰) 2.62; - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुभभावनाय वण्णं भासति,* स॰ नि॰ 3(2).390; - **भावनानुयोग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अशुभभावनानुयोग], दस अशुभों की आलम्बन को रूप में ग्रहण कर ध्यान-भावना का अभ्यास - **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपिच छ धम्मा ... असुभभावनानुयोगो इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता भोजने मत्तञ्ञुता कल्याणमित्तता सप्पायकथाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).292; - **भावनारत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अशुभों को कर्मस्थान बनाकर ध्यानभावना में लगा हुआ - **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुभकम्मिकतिस्सत्थेरसदिसे असुभभावनारते कल्याणमित्ते सेवन्तस्सपि कामच्छन्दो पहीयति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.331; - **लक्खण** नपुं॰, तेल॰ की उन चौदह गाथाओं के समुच्चय का शीर्षक, जिनमें शरीर के अशुभलक्षणों पर प्रकाश डाला गया है, तेल॰ 64-77; - **सञ्ञा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अशुभसंज्ञा], "यह शरीर अशुभ है" इस प्रकार का संज्ञा-ज्ञान, शरीर की अशुभ-अनुपश्यना से उत्पन्न ज्ञान, सात संज्ञाओं में से एक - *सत्त सञ्ञा - अनिच्चसञ्ञा, अनत्तसञ्ञा, असुभसञ्ञा ... निरोधसञ्ञा,* दी॰ नि॰ 3.199; ... *असुभानुपस्सनाञाणे सञ्ञा असुभसञ्ञा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.203; - **सञ्ञी** त्रि॰, अशुभ की अनुपश्यना कर 'शरीर अशुभ है, तुच्छ है', इस प्रकार का ज्ञान पाने वाला - **ञ्ञिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ते निब्बापेन्ति रागग्गिं, निच्चं असुभसञ्ञिनो,* इतिवु॰ 66; *तत्थ असुभसञ्ञिनोति द्वत्तिंसाकारवसेन चेव उद्धुमातकादिवसेन च असुभभावनानुयोगेन असुभसञ्ञिनो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 261; - **समापत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अशुभसमापत्ति], अशुभ कर्मस्थानों को ग्रहण कर ध्यान की प्राप्ति - **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आदिस्स आदिस्स असुभसमापत्तिया वण्णं भासति,* पारा॰ 81; - **भाकार** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अशुभाकार], अशुभ या अमङ्गलमय स्वरूप - **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *असुभं असुभाकारं अनुपस्सका हुत्वा विहरथ,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 233; - **भानुपस्सी / भानुपस्सिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, शरीर आदि में अशुभ की अनुपश्यना करने वाले - *असुभानुपस्सी, ... कायस्मिं विहरथ,* इतिवु॰ 58; *असुभानुपस्सीति असुभं अनुपस्सन्ता ... कायस्मिं असुभं असुभाकारं अनुपस्सका हुत्वा विहरथ,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 233; *असुभानुपस्सी कायस्मिं, ...,* इतिवु॰ 59; *एथ तुम्हे ... असुभानुपस्सिनो काये विहरथ,* म॰ नि॰ 1.420; - **पस्सिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुभानुपस्सिं विहरन्तं, ...,* ध॰ प॰ 8; *असुभानुपस्सिन्ति दससु असुभेसु अञ्ञतरं असुभं पस्सन्तं ... केसे असुभतो पस्सन्तं ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.45; - **भारम्मण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अशुभालम्बन], ध्यान की भावना के क्रम में आलम्बन के रूप में गृहीत अशुभ - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *असुभनिमित्तं नाम असुभम्पि असुभारम्मणम्पि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).292; - **भावज्जना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अशुभ आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता - **नादीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *असुभावज्जनादीहि उपायेहि निवारये,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.103; - **भासुखभावादि** पु॰, अशुभ एवं असुख आदि से रहित अवस्थाएं या स्थितियां - **दीनं** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुभसुखभावादीनं पक्खेपस्स ... असुभासुखभावादीनं अपनयनस्स च पहानं वुत्तं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.313-14; *असुभासुखभावादीनन्ति एत्थ पन आदि-सद्देन अमनुञ्ञअनिच्चतादीनं,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.274.

असुर पु॰, [असुर], **क.** (केवल ब॰ व॰ में ही प्रयुक्त होने पर) सुरों या देवों के प्रतिपक्षी या शत्रु, दानव, पूर्वकाल में देवता के रूप में रह चुके दैत्य - *पुब्बदेवा सुररिपू असुरा दानवा पुमे,* अभि॰ प॰ 14; **ख.1.** व्यु॰, 'हमने सुरा नहीं पी' ऐसा कहने के कारण असुर नाम पाने वाले देवता - ... *ताता न सुरं पिविम्ह, न सुरं पिविम्हा ति आहंसु, ततो पट्ठाय असुरा नाम जाता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.295; **ख.2.** सुरों अर्थात् देवताओं के शत्रु असुर - *सुरा नाम देवा, तेसं पटिपक्खाति*

वा असुरा, उदा॰ अट्ठ॰ 243; **ख.3**. वास्तविक देवों के समान प्रभासित नहीं होने के कारण असुर – *पकतिदेवा विय न सुरन्ति, न इसन्ति न विरोचन्तीति असुरा,* उदा॰ अट्ठ॰ 243; **ख.4**. प्राणियों के अनेक वर्गों में से एक, अन्य प्राणियों से भिन्न प्राणियों का एक वर्ग – *सुखकामा हि देवा मनुस्सा असुरा नागा गन्धब्बा ये चञ्ञे सन्ति पुथुकाया'ति,* दी॰ नि॰ 2.198; **ग.1**. असुरों के दो सुस्पष्ट वर्ग **क**. कालकञ्चिका, ये प्रेतों जैसे स्वरूप वाले तथा प्रेतों के साथ आवाह-विवाह करते हैं – *ननु कालकञ्चिका असुरा पेतानं समानवण्णा ... पेतेहि सह आवाहविवाहं गच्छन्ति,* कथा॰ 299; **ख**. वेपचित्तिपरिसा, इस वर्ग वाले असुर देवताओं जैसे रूप वाले होते हैं तथा उन्हीं के साथ वैवाहिक-सम्बन्ध भी स्थापित करते है – *ननु वेपचित्तिपरिसा देवानं समानवण्णा ... ..देवेहि सह आवाहविवाहं गच्छन्तीति,* कथा॰ 299; **ग.2**. पु॰, ए॰ व॰ में प्रयुक्त, **शा॰ अ॰** एक असुर, देवताओं से शत्रुता रखने वाली प्रजाति का एक प्राणी, **ला॰ अ॰** दुष्ट प्रकृति वाला असज्जन व्यक्ति, वीभत्स – *एवं खो, भिक्खवे, पुग्गलो असुरो होति असुरपरिवारो,* अ॰ नि॰ 1(2).106; *असुरोति असुरसदिसोविभच्छो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.319; *नेसो मिगो महाराज, असुरेसो दिसम्पति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.244; *तत्थ असुरेसोति असुरो एसो, असुरजेट्ठको सक्को एसोति अधिप्पायेन वदति,* तदे॰; – **कञ्ञा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [असुरकन्या], असुरों की पुत्री सुजा, जो देवराज इन्द्र की भार्या थी – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो सुजं असुरकञ्ञं पुरतो कत्वा अपेथ,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.289; – **काय** पु॰, असुरों का लोक, चार प्रकार की अपाय-भूमियों या दुखभरी गतियों में एक, अकुशल कर्मों के विपाक के कारण प्राप्त होने वाले दुखद लोक में जन्म – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कालङ्कतो च कालकञ्चिका नाम असुरा सब्बनिहीनो असुरकायो, तत्र उपपज्जिस्सति,* दी॰ नि॰ 3.5; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवेसु मनुस्सेसु च, तिरच्छानयोनिया असुरकाये,* थेरीगा॰ 477; *असुरकायेति कालकञ्चिकादिपेतासुरनिकाये,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 309; – **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दिब्बा वत, भो, काया परिपूरिस्सन्ति, परिहायिस्सन्ति असुरकाया'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).168; *असुरकायाति चत्तारो अपाया परिपूरिस्सन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.122; – **गण** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असुरगण], असुरों का समूह, बहुत सारे असुर – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मिं काले असुरगणा तावतिंसदेवलोके पटिवसन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).198; – **गणप्पमद्दन** पु॰, [असुरगणप्रमर्दन], असुरों के समूहों को परास्त करने वाला देवराज शक्र (इन्द्र) – **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *स देवराजा असुरगणप्पमद्दनो, ओकासमाकङ्खति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.133; – **जेट्ठक** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असुरज्येष्ठक], असुरों का मुखिया, असुरों में प्रमुख, असुरों का स्वामी – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ असुरेसोति असुरो एसो, असुरजेट्ठको सक्को एसोति अधिप्पायेन वदति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.244; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [असुरत्व], असुरभाव, असुर होने की अवस्था – **त्ताय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं दिट्ठि ... यक्खत्ताय वा असुरत्ताय वा ... देवताय वा,* महानि॰ 52; – **दन्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [असुरदन्त], असुरों के दांतों जैसे विकराल दांतों वाला, मुख से बाहर की ओर निकले हुए दांतों वाला – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *असुरदन्तो वा हेट्ठा वा उपरि वा बहिनिक्खन्तदन्तो,* महाव॰ अट्ठ॰ 295; – **नगर** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [असुरनगर], असुरों का नगर, असुरों की राजधानी – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वे नगरानि ... अयुज्झपुरानि नाम जातानि देवनगरञ्च असुरनगरञ्च,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.296; – **परिवार** त्रि॰, ब॰ स॰ [असुरपरिवार], असुरों के समूह के साथ रहने वाला, असुरों से चारों ओर से घिरा हुआ – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुग्गलो असुरो होति असुरपरिवारो,* अ॰ नि॰ 1(2).106; – **पुर** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [असुरपुर], असुरों का नगर, असुरों की राजधानी – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कोटिसतापि कोटिसहस्सापि नागा तेहि सद्धिं युज्झित्वा ते असुरपुरंयेव पवेसेत्वा निवत्तन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.296; – **भवन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [असुरभवन], सुमेरु पर्वत के नीचे पाताल में स्थित असुरों का निवासस्थान – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिनेरुस्स हेट्ठिमतले असुरभवनं नाम अत्थि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).198; – **भेरी** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [असुरभेरी], असुरों का ताशा या बड़ा ढोल, असुरों का नगाड़ा – **रियो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ..., *युद्धसज्जा हुत्वा, असुरभेरियो वादेन्ता महासमुद्दे उदकं द्विधा भेत्वा उट्ठहन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.296; – **माया** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [असुरमाया], असुरों की माया, असुरों की जादुई चाल – **याहि** तृ॰ वि॰ ब॰ व॰ – *समायाति सद्धिं असुरमायाहि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.18; – **योनि** स्त्री॰, [असुरयोनि], असुर नामक प्रजाति, असुरों का लोक – **निं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असुरकायन्ति काळकञ्जिकअसुरयोनिञ्च वड्ढेन्तीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.179; – **योनिय** त्रि॰, असुरयोनि में पुनर्जन्म दिलाने वाला – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असुरयोनियोति असुरयोनिया हितो, असुरजातिनिब्बत्तनकोति अत्थो,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 254; –

राज पु॰, तत्पु॰ स॰ [असुरराज], असुरों का राजा, असुरों का अधिपति – **जो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असुराधिपोति यथा तावतिंसेहि परिवारितं इन्दं असुरराजा नप्पसहति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.124; – **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(2).106-116; – **वत** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [असुरव्रत], असुरों का व्रत, असुरों द्वारा ग्रहण किया गया व्यवहार – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वतानीति हत्थिवतं वा ... यक्खवतं वा असुरवतं वा ...,* महानि॰ 66; – **वतिक** त्रि॰, [असुरव्रतिक], असुरों के व्रतों या विधि विधानों का अनुसरण करने वाला, असुरों के कार्यकलापों को ग्रहण करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्तेके समणब्राह्मणा वतसुद्धिका, ... यक्खवतिका वा होन्ति, असुरवतिका वा होन्ति, ...,* महानि॰ 63-64; – **विमान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [असुरविमान], असुरों का लोक, असुरों का निवासस्थान – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ नेसं पुञ्ञानुभावेन सिनेरुनो हेट्ठिमतले असुरविमानं नाम निब्बत्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.154; – **सासन** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असुरशासन], शक्र (इन्द्र) की एक उपाधि – **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जम्बारिचेव वजिरहत्थो असुरसासनो,* सद्द॰ 2.378; – **राधिप** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असुराधिप], असुरों का स्वामी – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, *अमित्ता नप्पसहन्ति, इन्दंव असुराधिपो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.123; *असुराधिपोति यथा तावतिंसेहि परिवारितं इन्दं असुरराजा नप्पसहति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.124; – **राधिपति** पु॰, उपरिवत् – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ये मादिसं असुराधिपतिं नवगूथसूकरं विय कण्ठपञ्चमेहि बन्धनेहि बन्धित्वा निसीदापेन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.110; – **राभिभू** पु॰, शक्र (इन्द्र) की एक उपाधि – *गन्धब्बराजा देविन्दो सुरिन्दो असुराभिभूति,* सद्द॰ 2.378; – **रिन्द** पु॰, तत्पु॰ स॰ [असुरेन्द्र], असुरों का राजा या स्वामी – **न्देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकलनगरं बोधिसत्तस्स रूपदस्सनेन धनपालकेन पविट्ठराजगहं विय असुरिन्देन पविट्ठदेवनगरं विय च सङ्खोभं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.75.

असुरिन्दकभारद्वाज पु॰, अक्कोसकभारद्वाज का अनुज – **जो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असुरिन्दकभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं एतदवोच –,* स॰ नि॰ 1(1).191; *ततिये असुरिन्दकभारद्वाजोति अक्कोसकभारद्वाजस्स कनिट्ठो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.202.

असुरियंपस्स त्रि॰, [असूर्यम्पश्य], सूर्य को न देखने वाला/वाली – **स्सानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असुरियंपस्सानि मुखानि,* सद्द॰ 3.744.

असुरोप/अस्सुरोप पु॰, 1. द्वेष या क्रोध से भरा चित्त, जिसमें बोले गए वचन आधे-अधूरे ही रह जाते हैं, परिपूर्ण नहीं हो पाते, चित्त में उत्तेजना या क्रोध का भाव – ... *दोसो दुस्सना ... चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स,* ध॰ स॰ 418; *न एतेन सुरोपितं वचनं होति, दुरुत्तं अपरिपुण्णमेव होतीति असुरोपो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 297; 2. आंसुओं से भरपूर क्रोध या उत्तेजना की अवस्था – *अपरे पन अस्सुजननट्ठेन अस्सुरोपनतो अस्सुरोपोति वदन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 297.

असुलभ त्रि॰, सुलभ का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [असुलभ], सरलता से प्राप्त न होने वाला – **भं** पु॰/नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असुलभमब्भुतमतुलं निच्चं नीरुजं असोकमतिसन्तं,* सद्धम्मो॰ 496.

असुवण्ण 1. त्रि॰, सुवण्ण का निषे॰ [असुवर्ण], सोना से भिन्न वह वस्तु, जो सोना से भिन्न हो, रहित हो – **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमस्मिं करीसमत्ते पदेसे आमलकमत्तोपि पंसुपिण्डो असुवण्णो नाम नत्थी'ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.330; 2. नपुं॰, सुवण्ण का निषे॰, तत्पु॰ स॰, सोना के अतिरिक्त कुछ अन्य – **ण्णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा असुवण्णमेव सुवण्ण'न्ति ... दत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.12.

असुसानट्ठान नपुं॰, सुसानट्ठान का निषे॰ [अश्मशानस्थान], ऐसा स्थान, जहां श्मशान न हो या जहां कोई मृत व्यक्ति की दाहक्रिया न की गयी हो – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पथवियञ्हि अझापितट्ठानं वा असुसानट्ठानं वा ... लद्धुं न सक्का ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.45.

असुसिर त्रि॰, [असुषिर], नहीं खोखला, ठोस – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा हि एकघनो असुसिरो ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.330.

असुस्सूसन्त त्रि॰, √सु (सुनना) के इच्छा॰ के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अशुश्रूषत्], सुनने की इच्छा न रखने वाला – **स्सं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चञ्च खो असुस्सूसं, न कोचि अधिगच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.117; *असुस्सूसन्ति पण्डितपुग्गले अपयिरुपासन्तो अस्सुणन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.118.

असुस्सूसा स्त्री॰, सुस्सूसा का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अशुश्रूषा], सुनने की इच्छा का अभाव – **सा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असुस्सूसा अपरिपुच्छा पञ्ञाय पटिपन्थो,* अ॰ नि॰ 3(2).113.

असूयित्थ √सु (सुनना) के कर्म॰ वा॰ का अद्य॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰, सुना गया था – *असूयित्था ति वा सुतं,* सद्द॰ 2.491.

असूर पु॰, निषे॰ तत्पु॰ स॰ [अशूर], शूरता एवं वीरता से रहित, साहसहीन, कायर, डरपोक – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ –

नासूरोति न असूरो भीरुकजातिको, जा॰ अट्ठ॰ 7.186; *न नं असूरो जिनाति,* सु॰ नि॰ 441; ... *एवं तव सेनं असूरो काये च जीविते च सापेक्खो पुरिसो न जिनाति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.107; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं युद्धत्थो भरे राजा, नासूरं जातिपच्चया,* स॰ नि॰ 1(1).118; *नासूरं जातिपच्चयाति, अयं जातिसम्पन्नो'ति एवं जातिकारणा असूरं न भरेय्य,* स॰ नि॰ 1(1).146.

असेख / असेक्ख त्रि॰, सेक्ख का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्य], **शा॰ अ॰** शिक्षा द्वारा प्रशिक्षित नहीं किया जाने योग्य, **ला॰ अ॰ 1**. अर्हत्, जिसे अब आगे किसी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता नहीं रह जाती है, **2**. अर्हत् द्वारा प्राप्त किये जा रहे शील, समाधि एवं प्रज्ञा जैसे सम्प्रयुक्त धर्म – **क्खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असेक्खेन सीलक्खन्धेनाति असेक्खस्स सीलक्खन्धो असेक्खो सीलक्खन्धो नाम,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.146; *खीणासवो त्वसेक्खो च वीतरागो तथा'रहा,* अभि॰ प॰ 10; *तयो पुग्गला-सेक्खो पुग्गलो, असेक्खो पुग्गलो, नेवसेक्खोनासेक्खो पुग्गलो,* दी॰ नि॰ 3.174; *खीणासवो सिक्खितसिक्खत्ता पुन न सिक्खिस्सतीति असेक्खो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.164; – **क्खा**[1] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहतो पञ्ञा असेक्खा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.166; – **क्खा**[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दस असेक्खा धम्मा,* दी॰ नि॰ 3.216; *असेक्खा सम्मादिट्ठीतिआदयो सब्बेपि फलसम्पयुत्तधम्मा एव,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.215; – **खं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेखस्स असेखं ञाणं अत्थीति,* कथा॰ 254; – **खेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असेखेनावुसो, सारिपुत्त, भिक्खुना चत्तारो सतिपट्ठाना उपसम्पज्ज विहातब्बा,* स॰ नि॰ 3.370; – **ञाण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यज्ञान], अर्हत् का आज्ञा-ज्ञान, "मैंने अर्हत् अवस्था को प्राप्त कर लिया", इस प्रकार का प्रतिवेधज्ञान, आस्रवों के क्षय का ज्ञान – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असेखञाणमुप्पन्नं, अन्तिमोयं समुस्सयो,* स॰ नि॰ 2(1).78; *असेखञाणन्ति अरहत्तफलञाणं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.251; – **ञाणकथा** स्त्री॰, कथा॰ के एक स्थलविशेष का शीर्षक, कथा॰ 254 255; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यत्व], अशैक्ष्य या अर्हत्व के फल के प्राप्ति की अवस्था – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा हि सयं असेक्खत्ता असेक्खविसयं अब्भञ्ञासि,* उदा॰ अट्ठ॰ 141; – **धम्मक्खन्ध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यधर्मस्कन्ध], अर्हत् द्वारा प्राप्त पांच प्रकार के धर्म – **न्धस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चअसेक्खधम्मक्खन्धस्स च भागवा होतीति ... अरहत्तेन देसनाय कूटं गण्हीति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.92; – **बल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यबल], अर्हत् के बल – **लानि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दस असेखबलानि? सम्मादिट्ठिं सिक्खतीति सेखबलं, तत्थ सिक्खितत्ता असेखबलं,* पटि॰ म॰ 347; – **भागिय** त्रि॰, [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यभागीय], अर्हत्वफल की लोकोत्तर अवस्था से सम्बन्धित – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किं इदं सुत्तं आहच्च वचनं ... संकिलेसभागियं ... असेक्खभागियं,* नेत्ति॰ 20; 105; *परिनिट्ठितसिक्खाधम्मा असेक्खा, असेक्खभावे पवत्तं, असेक्खे भजापेतीति वा असेक्खभागियं,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 338; – **भूमि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यभूमि], अर्हत्तव-फल की अवस्था – **मिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा उत्तरि असेक्खभूमिं पुच्छन्तो दुतियं पञ्हं पुच्छि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).178; – **मुनि** पु॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यमुनि], अर्हत्, वह आर्यपुद्गल, जिसके चित्त के सभी आस्रव क्षीण हो चुके है – **नीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवरूपानं असेखमुनीनं अभिसम्परायो नाम नत्थि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.186; – **रतन** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यरत्न], रत्नों की भांति अनुत्तर मूल्यों वाला अर्हत् – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असेखरतनम्पि दुविधं सुखविपस्सकसमथयानिकवसेन,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 141; – **विसय** पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ अशैक्ष्यविषय], अर्हतों के ज्ञान का क्षेत्र – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा हि सयं असेक्खत्ता असेक्खविसयं अब्भञ्ञासि,* उदा॰ अट्ठ॰ 141; – **सीलक्खन्धमहन्तता** स्त्री॰, भाव॰, अर्हतों की शीलराशि की उत्कृष्टता या ऊंचाई – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुदास्सु नामाहम्पि एवं असेखसीलक्खन्धमहन्तताय सञ्जातक्खन्धो भवेय्यं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.82.

असेख / असेखिय त्रि॰, [अशैक्ष्य], अर्हत् से सम्बद्ध सम्यक्-दृष्टि आदि कुशल धर्म, शिक्षा प्राप्ति के मार्ग से आगे पहुंच चुके आर्यपुद्गल से सम्बन्धित कुशल धर्म – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असेखिया धम्मा, ..., असेखा सम्मादिट्ठि, ... असेखा सम्माविमुत्ति –,* अ॰ नि॰ 3(2).189; *द्वादसमे असेखियाति असेखायेव, असेखसन्तका वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.333.

असेचन त्रि॰, अ + √सिच (सींचना) का क्रि॰ ना॰ अथवा सेचनक का निषे॰ [बौ॰ सं॰ आसेचन], **शा॰ अ॰** चित्त, आंखों, कानों, जिह्वा तथा काय आदि में प्रीति उत्पन्न कर देने वाला, आनन्द से पूरी तरह सिक्त या भिगोया हुआ, वह, जिसे देखते-देखते जी न भरे, मनोहर, सुन्दर, अपने आप में आनन्दमय, अन्य की अपेक्षा से आनन्दमय बनने

वाला - **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *चित्तक्खिपीतिजननमब्यासेकमसेचनं,* अभि. प. 697; *तेन चित्तेन पातब्बं, विमुत्तिरसमसेचनं'न्ति,* मि. प. 377; **ला. अ. क.** स्वाद में आनन्ददायक - **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. - *लभेथेव सादुरसं असेचनकं,* म. नि. 1.162; *तञ्च पन अप्पटिवानीयं, असेचनकमोजवं,* स. नि. 1(1).246; *असेचकनमोजवन्ति अनासित्तकं ओजवन्तं यथा हि बाहिरानि असम्भिन्नपायासादीनिपि सप्पिमधुसक्खराहि आसित्तानि योजितानेव मधुरानि ... न एवमयं धम्मो अयं हि ... न अञ्ञेन उपसित्तो,* स. नि. अट्ठ. 1.277; **ला. अ. ख.** उत्तम एवं सुखद सुगन्ध से भरपूर - *सो यतो यतो घायेथ ... अधिगच्छतेव सुरभिगन्धं असेचनकं,* अ. नि. 2(1).218; **ला. अ. ग.** अपने आप में परिपूर्ण एवं उत्तम अनुभव, (आनापानसति का अभ्यास) - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अयम्पि खो, भिक्खवे, आनापानस्सतिसमाधि भावितो ... असेचनको च सुखो च ...,* पारा. 83; *एत्थ पन नास्स सेचनन्ति असेचनको अनासित्तको अब्बोकिण्णो ...,* पारा. अट्ठ. 2.9; *नास्स सन्तपणीतभावावहं किञ्चि सेचनन्ति असेचनको,* सारत्थ. टी. 2.163; **ला. अ. घ.** शील आदि में अपने आप में परिपूर्ण (साधक) - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अजेगुच्छोति सम्पन्नसीलादिताय अजेगुच्छनीयो असेचनको मनापो,* सु. नि. अट्ठ. 2.241; - **त्त** नपुं., भाव. [असेचनकत्व], मन को आनन्दित कर देना, अपने आप में मनोहारी या सुन्दर रहना - **त्ताय** च. वि., ए. व. - ... *मधुरत्ताय सातत्ताय असेचनकत्ताय संवत्तति,* अ. नि. 1(1).45; - **फल** त्रि., ब. स. [असेचनकफल], अनुकूल फल देने वाला, मन को आनन्दित करने वाले फल को देने वाला - **लं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *ननु दानं इट्ठफलं ... असेचनकफलं ...,* कथा. 179.

असेचितब्बक त्रि., √सिच (सींचना, भिगोना) के प्रेर. के सं. कृ. का निषे., अतिरिक्त रस या मशाले नहीं डालने योग्य, उचित अनुपात में डाले गए सभी रसों एवं मशालों से युक्त - **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *असेचनकन्ति असेचितब्बकं, सप्पिफाणितमधुसक्करादीसु इदं नामेत्थ मन्दं इदं बहुकन्ति न वत्तब्बं समयोजितरसं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).392.

असेट्ठचरिया स्त्री., कर्म. स. [अश्रेष्ठचर्या], उत्तम आचरण का अभाव, दुराचार, अब्रह्मचर्य - **यं** द्वि. वि., ए. व. - *अब्रह्मचरियन्ति असेट्ठचरियं,* दी. नि. अट्ठ. 1.67.

असेट्ठचारी त्रि., [अश्रेष्ठचारिन्], उत्तम आचरण से विहीन, अब्रह्मचारी - **नो** पु., प्र. वि., ब. व. - *अब्रह्मचारिनोति मेथुनप्पटिसेविताय असेट्ठचारिनो इमे हि नामा'ति हीळेन्ता वदन्ति,* उदा. अट्ठ. 210.

असेनासनक / असेनासनिक त्रि., [अशयनासनिक], आवश्यक आवासों की सुविधा से रहित, निवासस्थान को न पाया हुआ - **केन** पु., तृ. वि., ए. व. - *असेनासनिकेन वस्सं उपगन्तब्बं,* महाव. 201; *असेनासनिकेनाति यस्स पञ्चन्नं छदनानं अञ्ञतरेन छन्नं योजितद्वारबन्धनं सेनासनं नत्थि, तेन न उपगन्तब्बं,* महाव. अट्ठ. 335.

असेल पु., व्य. सं., **1.** पाण्डु वासुदेव का पुत्र, **2.** मुटसिव का पुत्र - **लो** प्र. वि., ए. व. - *ते गहेत्वा असेलो तु मुटसिवस्स अत्रजो,* म. वं. 21.11-13.

असेवना स्त्री., सेवना का निषे., तत्पु. स. [असेवन, नपुं.], सेवासुश्रूषा न करना, उपेक्षा, उचित देखभाल न करना, साथ-सङ्ग न करना - **ना** प्र. वि., ए. व. - *असेवना च बालानं, पण्डितानञ्च सेवना,* खु. पा. 5.3; *तत्थ असेवनाति अभजना अपयिरुपासना,* खु. पा. अट्ठ. 99.

असेवितब्ब त्रि., √सेव (सेवा करना, साथ करना) के सं. कृ. का निषे. [असेवितव्य], साथ संग न करने योग्य, आचरण न करने योग्य, - **तब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - ... *कायसमाचारपाहं ... दुविधेन वदामि - सेवितब्बम्पि, असेवितब्बम्पि,* म. नि. 3.94.

असेस त्रि., ब. स. [अशेष], समग्र, समूचा, सारा, कुछ भी नहीं छोड़ा हुआ - **सं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. - *निस्सेसं कसिणासेसं समग्गं च अनूनकं,* अभि. प. 702; - **सं**[2] द्वि. वि., ए. व., क्रि. विशे., समूचे तौर पर, पूरी तरह से - *यो रागमुदच्छिदा असेसं, भिसपुप्फंव सरोरुहं विगय्ह,* सु. नि. 2-4; *असेसन्ति सानुसयं,* सु. नि. अट्ठ. 1.15; *असेसमेते पजहासि बुद्धो'ति,* उदा. 111; ... *असेसं, अनवसेसं ...,* उदा. अट्ठ. 192-93; - **सा** पु., प्र. वि., ब. व. - *अरी असेसा दमथं उपेन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 2.191; - **निरोध** पु., कर्म. स. [अशेषनिरोध], पूरी तरह से समाप्ति या रुकावट, पूर्णरूप से विनाश - **धा** प. वि., ए. व. - *केचि न निरुज्झन्ति अविज्जाय सावसेसनिरोधा,* उदा. अट्ठ. 40; - **निस्सेस** त्रि., द्व. स. [अशेषनिःशेष], सभी को अपने अन्दर समेटा हुआ, समग्र, समूचा - **सा** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *यस्मा एवं दुक्खा पमुच्चति असेसनिस्सेसाति अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठापेसि,* सु. नि. अट्ठ. 1.183; -

वचन नपुं., कर्म. स. [अशेषवचन], सभी को अपने में अन्तर्गत करने वाला वचन, यथार्थ-वचन – **नं** प्र. वि., ए. व. – *असेसवचनं इदं, निस्सेसवचनं इदं, निप्परियायवचनं इदं* ..., मि. प. 121; – **विरागनिरोध** पु., कर्म. स. [अशेषविरागनिरोध], पूरी तरह से बिलगाव और विनाश, विराग के मार्ग द्वारा पूर्ण निरोध – **धा** प. वि., ए. व. – *अविज्जायत्वेव असेसविरागनिरोधा सङ्खारनिरोधो,* म. नि. 1.334; *असेसविरागनिरोधाति विरागसङ्खातेन मग्गेन असेसनिरोधा अनुप्पादनिरोधा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).204; *असेसविरागनिरोधाति असेसं विरागेन निरोधा, असेसविरागसङ्खाता वा निरोधा,* सु. नि. अट्ठ. 2.201.

असेत्वा √सिस (बाकी बचा रहना) के पू. का. कृ. का निषे., बाकी कुछ भी बचा हुआ न छोड़कर, अपने पीछे कुछ भी बचा हुआ न छोड़कर – *एकं सामणेरम्पि विहारे असेसेत्वा भिक्खं अधिवासेथाति,* स. नि. अट्ठ. 2.160.

असोक 1. त्रि., ब. स. [अशोक], शोक-रहित, शोक-मुक्त (व्यक्ति अथवा चित्त) – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *असोको होति निब्बुतोति,* सु. नि. 598; – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *असोकं विरजं सुद्धं,* सु. नि. 641; ध. प. 412; *तमहं वट्टमूलसोकेन असोकं* ..., सु. नि. अट्ठ. 2.172; – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *असोका ते विरजा अनुपायासाति वदामी'ति,* उदा. 177; **2.** पु., शोक का निषे., तत्पु. स. [अशोक], शोक का अभाव, शोक से मुक्त अवस्था, अशोकभाव, निर्वाण की अवस्था – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *तस्मा असोकं विरजं पत्थयानो,* उदा. 177; ... *असोकभावं ... असोकं विरजं'न्ति लद्धनामं निब्बानं,* ..., उदा. अट्ठ. 347; **3**. पु., [अशोक], एक वृक्ष, लाल फूलों वाला एक प्रसिद्ध वृक्ष – *असोको वञ्जुलो चाथ,* अभि. प. 573; – **का** प्र. वि., ब. व. – *असोका मुदयन्ती च, वल्लिभो खुद्दपुप्फियो,* जा. अट्ठ. 7.304; *अतिमुत्ता असोका च, पुप्फिता मम अस्समे,* अप. 1.12; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *असोकं पुप्फितं दिस्वा,* अप. 1.206; **4**. पु., एक पर्वत का नाम – **को** प्र. वि., ए. व. – *हिमवन्तस्साविदूरे, असोको नाम पब्बतो,* अप. 1.376; **5.** पु., अनेक व्यक्तियों का नाम, **क.** अनोमदस्सी बुद्ध का अग्रश्रावक – **को** प्र. वि., ए. व. – *निसभो च अनोमो च अहेसुं अग्गसावका,* बु. वं. 323; पाठा. अनोमो; **ख**. विपस्सी बुद्ध का उपट्ठाक (परिचारक) – *विपस्सिस्स, भिक्खवे, भगवतो ... असोको नाम भिक्खु उपट्ठाको अहोसि,* दी. नि. 2.5; **ग.** कस्सपबुद्ध के समय का एक ब्राह्मण – *कस्सपमुनिनो काले असोको नाम ब्राह्मणो,* म. वं. 27.11; **घ.** एक भिक्षु – *असोको नाम, भन्ते, भिक्खु कालङ्कतो,* स. नि. 3.424; **ङ.** मौर्यवंश का एक प्रसिद्ध राजा, जो पहले चण्डाशोक तथा बाद में धर्माशोक कहलाया – *चण्डासोको'ति ञायित्थ पुरे पापेन कम्मुना, धम्मासोको'ति ञायित्थ पच्छा पुञ्ञेन कम्मुना,* म. वं. 5.189; *अनागते पियदासो नाम कुमारो ... असोको धम्मराजा भविस्सति,* दी. नि. अट्ठ. 2.182; – **कत्रज** पु., तत्पु. स. [अशोकात्मज], सम्राट अशोक का पुत्र (महेन्द्र) – **जं** द्वि. वि., ए. व. – *परिपुण्णवीसति वस्सो महिन्दो अशोकत्रजो,* दी. वं. 7.21; – **कण्णिका** स्त्री., तत्पु. स. [अशोककर्णिका], कानों के आभूषण के रूप में प्रयुक्त अशोक वृक्ष के फूलों का गुच्छा – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *अपिळन्ह मञ्जरिन्ति सपल्लवं असोककण्णिकं कण्णे पिळन्धित्वाति वुत्तं होति,* जा. अट्ठ. 5.396; – **कङ्कुर** नपुं., तत्पु. स. [अशोकाङ्कुर], अशोक के वृक्ष का अङ्कुर – **रं** प्र. वि., ए. व. – *असोकङ्कुरं हि आदितोव तनुरत्तं होति,* विसुद्धि. 2.259; – **चित्त** नपुं., ब. स. [अशोकचित्त], शोक से रहित चित्त – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *एवं इमिस्सा गाथाय अट्ठलोकधम्मेहि अकम्पितचित्तं, असोकचित्तं, निरजचित्तं, खेमचित्तन्ति चत्तारि मङ्गलानि वुत्तानि,* खु. पा. अट्ठ. 124; – **धम्मराज** पु., कर्म. स. [अशोकधर्मराजन्], मौर्य सम्राट धर्माशोक, धर्मराजा अशोक – **रञ्ञो** ष. वि., ए. व. – *अनच्छरियञ्चेतं थेरस्स ... सतसहस्सकप्पे पूरितपारमिस्स, असोकधम्मरञ्ञो कुलूपको निग्रोधत्थेरो दिवसस्स निक्खत्तुं चीवरं परिवत्तेसि,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.141; – **पिण्डी** स्त्री., तत्पु. स., अशोक वृक्ष के फूलों की कलियों का गुच्छा – **ण्डिया** तृ. वि., ए. व. – *पुप्फपच्छिकतालपण्णगुळकादीनं पन छिद्देसु असोकपिण्डिया वा अन्तरेसु पुप्फानि पवेसेतुं न दोसो,* पारा. अट्ठ. 2.184; – **पुप्फ** नपुं., तत्पु. स. [अशोकपुष्प], अशोक वृक्ष का पुष्प – **प्फानि** द्वि. वि., ए. व. – ... *पिण्डीकतानि बहूनि असोकपुप्फानि गहेत्वा आगच्छन्ती* ..., वि. व. अट्ठ. 143; – **पूजक** पु., एक स्थविर, एक भिक्खु – **को** प्र. वि., ए. व. – *इत्थं सुदं आयस्मा असोकपूजको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.206; – **भाव** पु., [अशोकभाव], शोक का अभाव – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *तस्मा अत्तनो यथावुत्तसोकाभावेन च असोकं असोकभावं रागरजादिविगमनेन विरजं विरजभावं अरहत्तं* ..., उदा. अट्ठ. 347; – **मालक / माळक** पु., अनुराधपुर महाविहार के बत्तीस क्षेत्रों में से एक क्षेत्र – **के** सप्त. वि., ए. व. – *असोकमाळकेति*

असोकनामके माळके, म॰ वं॰ टी॰ 318 (ना॰); – **मालादेवी** स्त्री॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का के राजा वट्टगामणी के राजकुमार सालि की रानी – **विं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असोकमालादेविं तं सम्बद्धं पुब्बजातिया,* म॰ वं॰ 33.3; – **रुक्ख** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अशोकवृक्ष], अशोक का पेड़ – **क्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अन्धवने सुपुप्फितं असोकरुक्खं दिस्वा ... असोकपुप्फानि गहेत्वा आगच्छन्ती,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 143; – **वनिका** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अशोक वृक्षों की वाटिका – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयमस्स असोकवनिका, सुपुप्फिता सब्बकालिका रम्मा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.180; *अशोकवनिकाति असोकवनभूमि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.181; – **सव्हय** त्रि॰, [अशोकसाह्वय], अशोक के नाम से पुकारा जाने वाला – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुञ्ञकम्माभिनिब्बतं, पाहेसि सोकसव्हयो,* दी॰ वं॰ 12.4.

असोका स्त्री॰, व्य॰ सं॰, अनेक नारियों के लिए प्रयुक्त नाम **क.** मङ्गलबुद्ध की अग्रश्राविका – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीवला च असोका च, अहेसुं अग्गसाविका,* बु॰ वं॰ 314; **ख.** गौतम बुद्ध के समय की एक भिक्षुणी तथा एक उपासिका – *असोका नाम, भन्ते, उपासिका कालङ्कता,* स॰ नि॰ 3(2).424; **ग.** एक चाण्डाल की पुत्री – *असोकानामिकाय चण्डालधीतुया सन्थववसेन लग्गो पटिबद्धचित्तो अहोसी ति अत्थो,* म॰ वं॰ टी॰ 559(ना॰).

असोकाराम पु॰, मौर्य सम्राट अशोक द्वारा पाटलिपुत्र (पटना) में बनवाया गया एक विहार – **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुन राजा असोकारामं नाम महाविहारं कारेत्वा सट्ठिसहस्सानं भिक्खूनं निच्चभत्तं पट्ठपेसि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.35; – **मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असोकारामे सत्तवस्सानि उपोसथो उपच्छिज्जि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.38.

असोकिता स्त्री॰, भाव॰, शोक से रहित होना, शोक-मुक्त अवस्था – *पाणातिपाता वेरमणिया चेत्थ अङ्गपच्चङ्गसम्पन्नता ... असोकिता पियेहि मनापेहि सद्धिं अविप्पयोगिता दीघायुकताति एवमादीनि फलानि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 23.

असोचन्त / असोच्यन्त त्रि॰, √सुच के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अशोचत्], शोक न करता हुआ – **चं** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सक्का नु खो रज्जं कारेतुं अहनं ... असोचं असोचापयं धम्मेना'ति?,* स॰ नि॰ 1(1).137.

असोचनकारण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अशोचनकारण], शोक न करने का कारण, शोकाभाव का कारण – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स बोधिसत्तो असोचनकारणं कथेन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.145.

असोचितुं √सुच (शोक न करना) के निमि॰ कृ॰ का निषे॰, शोक न करना – ... *न सक्का असोचितुं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.187.

असोण्ड त्रि॰, सोण्ड का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [अशौण्ड], नशे में चूर न रहने वाला, मद्यपान में रत न रहने वाला, शराब पीने की लत से मुक्त – **ण्डो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुक्खस्सुदानि पञ्ञकरो, असोण्डो अविनासको,* जा॰ अट्ठ॰ 5.112; – **ण्डी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ च भविस्साम अधुत्ती अथेनी असोण्डी अविनासिकायो'ति,* अ॰ नि॰ 2(1).33; *असोण्डीति सुरासोण्डतादिवसेन असोण्डियो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.19.

असोतता स्त्री॰, असोत का भाव॰ [अश्रोतष्कता], कानों या सुनने की शक्ति का अभाव रहना – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ..., *न बधिरो असोतता,* जा॰ अट्ठ॰ 6.19; *असोततानि सोतानं अभावेन,* जा॰ अट्ठ॰ 6.20.

असोतुकम्यता स्त्री॰, भाव॰ [अश्रोतुकाम्यता], सुनने की इच्छा का अभाव – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियधम्मस्स असोतुकम्यतं अप्पहाय ...,* अ॰ नि॰ 3(2).120.

असोधितभाव पु॰, कर्म॰ स॰ [अशोधितभाव], विशोधन का अभाव, सुस्पष्ट नहीं किया जाना, अपरीक्षण – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो कम्मस्स असोधितभावं आचिक्खि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.27.

असोभन त्रि॰, सोभन का निषे॰ [अशोभन], असुन्दर, अमङ्गलकारी, अशुभ, बुरा – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अज्ज असोभनं नक्खत्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.249.

असोमनस्सित त्रि॰, मन में प्रसन्नता या आह्लाद को न पाने वाला / वाली – **स्सिका** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अप्पतीता होन्ति तेन अतुट्ठा असोमनस्सिकाति अप्पच्चयो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.49.

असोरत त्रि॰, सोरत का निषे॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ असूरत], उद्धत, दुर्दमनीय, प्रचण्ड, असाध्य – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चण्डीति असोरता किब्बिसा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).5.

अस्नाति / असनाति √अस (खाना) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अश्नाति], खाता है, निगलता है, आनन्द लेता है, उपभोग करता है – *वुत्तानं फलमस्नाति, यो मित्तानं न दुब्भति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.16; *अस्नातीति परिभुञ्जति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.17; *सो हि घतं अस्नाति, तस्मा घतासनो'ति वुच्चति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.451; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ..., *पिण्डमस्नातु भत्तुनो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.373; – **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *अस्नाथ पिवथ*

खादथा'ति दसमेन सद्देन, दी॰ नि॰ 2.128; – **अस्निये** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – ..., *तस्मा अदत्वा उदकम्पि नास्निये,* जा॰ अट्ठ॰ 5.393; ... *नास्निये न परि भुञ्जिस्सामीति इमं वतं समादियिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.394; – **असिस्सामि/असिस्सं** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *नासिस्सं न पिविस्सामि,* थेरगा॰ 223; *किंसू असिस्सामि कुवं वा असिस्सं,* सु॰ नि॰ 976.

अस्म/अम्ह पु॰, [अश्मन्], पत्थर, चकमक पत्थर – *थम्भ पासाण'स्मोपलो सिला,* अभि॰ प॰ 605; – **स्मा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्मा नून ते हदयं, आयसं दळ्हबन्धनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.319; *अस्मा नून ते हदयन्ति तात, मातापितूनं हदयं नाम पुत्तेसु मुदुकं होति ..., तव पन हदयं पासाणो विय मञ्ञे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.320; *अस्मा कुम्भमिवाभिदाति पासाणो घटं विय,* जा॰ अट्ठ॰ 3.25; – **अस्मनि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'मा पादं खलि यस्मनी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.383.

अस्मपुप्फ नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अश्मपुष्प], शिलाजीत का पुष्प – *सेलेय्य मरमपुप्फं च,* अभि॰ प॰ 591.

अस्मिमान पु॰, "मैं कुछ हूं", "मैं महत्वपूर्ण हूं" इस रूप से चित्त में "मैं" के सम्बन्ध में मनन या चिन्तन, आत्मदृष्टि – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्मिमानस्स यो विनयो,* उदा॰ 80; *अस्मिमानस्स यो विनयोति इमिना पन अरहत्तं कथितं,* उदा॰ अट्ठ॰ 80; महाव॰ अट्ठ॰ 231; – **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्मिमानो समुच्छिन्नो, ...,* स॰ नि॰ 2(1).77; *अस्मिमानो समुच्छिन्नोति नवविधो अस्मिमानो अरहत्तमग्गेन समुच्छिन्नो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.250; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिच्चसञ्ञा, ... भाविता ... सब्बं अस्मिमानं समूहनति,* स॰ नि॰ 2(1).139; – **समुग्घात** पु॰, [अस्मिमानसमुद्घात], 'मैं सम्बन्धी मान्यता का नाश – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनत्तसञ्ञी अस्मिमानसमुग्घातं पापुणाति दिट्ठेव धम्मे निब्बान'न्ति,* उदा॰ 110.

अस्स/स्स 1. इम (यह) सर्व॰, का पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ [अस्स], इसका – *नास्स कोसा धनं गण्हे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.188; *यञ्हिस्स, भिक्खवे, संवरं असंवुतस्स विहरतो ...,* म॰ नि॰ 1.13; 2. √अस (होना) का विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [स्यात्], हो, द्रष्ट॰, अत्थि के अन्त॰ (ऊपर); 3. नपुं॰, [आस्य], मुख – **स्सं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *मुखं अस्सञ्च आननं,* सद्द॰ 2.386; 4. पु॰, स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त [अस्र/अश्र], कोना, किनारा, प्रान्तभाग – **स्सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ कोणो'स्सो कोटि नारियं,* अभि॰ प॰ 394; 1102; ... *चतुरस्ससमुग्गरेन पोथेत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.73; 5. पु॰, [अश्व], घोड़ा – *हयो तुरङ्गो तुरगो वाहो अस्सो च सिन्धवो,* अभि॰ प॰ 368; 1102; ... *अस्सो भद्रो कसामिवा'ति,* स॰ नि॰ 1(1).9; *अस्सोव जिण्णो निब्भोगो,* स॰ नि॰ 1(1).205; – **स्सा**[1] प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता,* ध॰ प॰ 94; *सेता सुदं अस्सा युत्ता होन्ति ...,* स॰ नि॰ 3(1).4; *मधुरेनाकारेन अस्सा हसिंसु,* उदा॰ अट्ठ॰ 119; – **स्सा**[2] स्त्री॰, घोड़ी – *वळवा'स्सा,* अभि॰ प॰ 371; – **स्सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आजञ्ञन्ति इमं आजानीयस्सञ्च मणिञ्चाति ... अक्खधुत्तोति अस्सं दस्सेत्वा एवमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 7.165.

अस्सक[1] पु॰, [अश्मक], क. ब॰ व॰ में आन्ध्र-प्रदेश की एक जनजाति अथवा इस जनजाति का क्षेत्र, दक्षिण में एक देश या उस देश के निवासी – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अङ्गानं, मगधानं, ... अस्सकानं, अवन्तीनं,* अ॰ नि॰ 1(1).242; ख. ए॰ व॰ में, अश्मक प्रजाति का राजा, अश्मक क्षेत्र का शासक – **कस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो अस्सकस्स विसये, अळकस्स समासने,* सु॰ नि॰ 983; *अस्सकस्स च अळकस्स चाति द्विन्नम्पि राजूनं समासन्ने विसये आसन्ने रट्ठे द्विन्नम्पि रट्ठानं मज्झेति अधिप्पायो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.271.

अस्सक[2] पु॰, [अश्वक], छोटा घोड़ा, भाड़े का टट्टू, मामूली घोड़ा – ... *अस्सकरथकादीहि बालकीळनकेहि कीळयमानो ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.207.

अस्सक[3] त्रि॰, *केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त* [अस्रक/अश्रक], कोना, किनारा, – **चतुर॰** चार किनारों वाला, चौकोर – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰ – ... *न चतुरस्सकं कारापेतब्बं ...,* चूळव॰ 255.

अस्सक[4] त्रि॰, [अस्वक], 1. दरिद्र, वह, जिसके पास अपनी कोई धन-दौलत न हो – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसो दलिद्दो अस्सको अनाळ्हियो,* म॰ नि॰ 2.123; *अस्सकोति निस्सको,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.119; 2. नहीं अपना, बेगाना, सदा अपने साथ न रहने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्सको लोको, सब्बं पहाय गमनीयन्ति,* म॰ नि॰ 2.265; *अस्सकोति निस्सको सकभण्डविरहितो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.216.

अस्सकजातक नपुं॰, जा॰ अट्ठ॰ की एक कथा, जा॰ अट्ठ॰ 2.128–131.

अस्सकण्ण पु॰, [अश्वकर्ण], 1. एक वृक्ष – **ण्णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नेव सालो न खदिरो, नास्सकण्णो कुतो धवो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.186; *साळो'स्सकण्णो सज्जो'थ,* अभि॰ प॰ 4.562; –

ण्णा ब॰ व॰ - ..., *अस्सकण्णा विभीटका*, जा॰ अट्ठ॰ 2.133; ... *अस्सकण्णा च विभीटका च रुक्खा दिट्ठपुब्बा*, तदे॰; 2. सिनेरु (सुमेर) पर्वत के अगल-बगल स्थित सात पर्वतों में से एक - *नेमिन्धरो विनतको अस्सकण्णो कुलाचला*, अभि॰ प॰ 27; *युगन्धरो ईसधरो, करवीको सुदस्सनो नेमिन्धरो विनतको, अस्सकण्णो गिरि ब्रह्म*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.149.

अस्सकरट्ठ नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अश्मकराष्ट्र], दक्षिण में स्थित एक प्रदेश - **ट्ठे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेन समयेन अस्सकरट्ठे पोतलिनगरे अस्सकराजा रज्जं करोति*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 218; *एवं सकलजम्बुदीपं विचरित्वा अस्सकरट्ठे पाटलिनगरं पापुणिंसु* जा॰ अट्ठ॰ 3.3.

अस्सकराज पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्मकराजन्], अश्मक देश का राजा - **जा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अस्सकरट्ठे पोतलिनगरे अस्सकराजा रज्जं करोति*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 218; - **जेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अयमस्सकराजेन, देसो विचरितो मया*, जा॰ अट्ठ॰ 2.130; ... *पुब्बे मया अस्सकराजेन सद्धिं विचरितो*, तदे॰; - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ अस्सकाधिपतिस्साति अस्सकरट्ठाधिपतिनो अस्सकराजस्स*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 219.

अस्सकाधिपति पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्मकाधिपति], अश्मक देश का राजा - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ अस्सकाधिपतिस्साति अस्सकरट्ठाधिपतिनो अस्सकराजस्स* ..., वि॰ व॰ अट्ठ॰ 219.

अस्सकाय पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वकाय], घुड़सवार टुकड़ी - **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इमस्मिं राजकुले हत्थिकायापि अस्सकायापि रथकायापि पत्तिकायापि*, ..., म॰ नि॰ 2.266.

अस्सकावन्ती पु॰, द्व॰ स॰ [अश्मकावन्ति], अश्मक एवं अवन्ति-नामक राष्ट्र या जनपद - **न्ती** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अथ वा अस्सकावन्ती, सुमना दम्म ते मयं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.308; *अस्सकावन्ती अस्सकरट्ठं वा अवन्तिरट्ठं वा*, जा॰ अट्ठ॰ 5.309.

अस्सकुणप नपुं॰, तत्पु॰ स॰, घोड़े की लाश - *हत्थिकुणपअस्सकुणपगोकुणपमहिंसकुणप ... कुक्कुरकुणपानिपि दट्ठब्बानि भवन्ति*, विसुद्धि॰ 1.333.

अस्सखळुङ्क पु॰, कर्म॰ स॰ [अश्वकलङ्क], घोड़े की गड़बड़ी, घटिया नस्ल का घोड़ा, काबू में न रखे जाने योग्य घोड़ा, घोड़े का बच्चा - **ङ्को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सखळुङ्कोति अस्सपोतो*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235; - **ङ्के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अट्ठ च, भिक्खवे, अस्सखळुङ्के देसेस्सामि अट्ठ च अस्सदोसे*, अ॰ नि॰ 3(1).33; - **सुत्त** पु॰, अ॰ नि॰ के अट्ठकवग्ग का चौथा सुत्त, जिसमें घोड़ों की आठ कमियों या गड़बड़ियों की समानता पर मनुष्य के आठ दोषों का उपदेश है, अ॰ नि॰ 1(1).323-325.

अस्सगोणादिक नपुं॰, [अश्वगोणादिक], घोड़ा एवं बैल आदि - **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *योग्गन्ति युगे युञ्जितब्बं ते तव अस्सगोणादिकं*, जा॰ अट्ठ॰ 6.29.

अस्सगन्धा स्त्री॰, [अश्वगन्धा], एक औषधीय पौधा - *अधोतकं ... अस्सगन्धादिपिट्ठानि च यावजीविकानि*, पाचि॰ अट्ठ॰ 92.

अस्सगुत्त पु॰, [अश्वगुप्त], व्यक्तियों के नाम, भदन्त नागसेन के एक शिक्षक का नाम - *अथ खो आयस्मा अस्सगुत्तो दिब्बाय सोतधातुया मिलिन्दस्स रञ्ञो वचनं सुत्वा युगन्धरमत्थके भिक्खुसङ्घं सन्निपातेत्वा भिक्खू पुच्छि ... पटिबलो ... पटिविनेतुन्ति*, मि॰ प॰ 6; - **थेर** पु॰, कर्म॰ स॰, महाकाश्यप की परम्परा का एक स्थविर - **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *महाकस्सपत्थेरस्स ... चन्दगुत्तत्थेरस्स, ... सूरियगुत्तत्थेरस्स, ... अस्सगुत्तथेरस्स, .. योनकधम्मरक्खितत्थेरस्स* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.179-80.

अस्सगुम्ब पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वगुल्म], घुड़सवार सेना की टुकड़ी - **म्बे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *कदाहं अस्सगुम्बे च, सब्बालङ्कारभूसिते*, जा॰ अट्ठ॰ 6.56.

अस्सगोचर त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्वगोचर], घोड़े को अपना शिकार बनाने वाला - **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यथेव हि सोणो अस्सगोचरो अस्से डंसेन्तोव चरति, तथा सुहनुपि*, जा॰ अट्ठ॰ 2.25.

अस्सगोपक पु॰, [अश्वगोपक], साईस, घोड़े की देखभाल करने वाला - **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *खिप्पमेवेस ... अयं सिङ्गारो आचारसम्पन्नो अस्सगोपको मं सिक्खापेतीति ... अनुसिक्खिस्सति*, जा॰ अट्ठ॰ 2.81; - **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *सो अस्सगोपकानं सन्तिके वड्ढति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.432.

अस्सछकणपिण्ड नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वशकृत्पिण्ड], घोड़े की लीद का गोला - **ण्डेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पुन पि ... अस्सगोपकवेसेन तं दिस्वा तथेव अस्सछकणपिण्डेन पहरि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.277.

अस्सजाति त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्वजातिक], घोड़े की प्रजाति वाला - **तिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सिमितिन्ति ... दन्तमेव गोणजातिं वा अस्सजातिं वा याने योजेत्वा नयन्ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.284.

अस्सजातिय त्रि., ब. स. [अश्वजातीय], घोड़े की नस्ल में उत्पन्न - **यो** पु., प्र. वि., ए. व. - *बोधिसत्तस्स जातिया जातो बोधिसत्तजातियो, एवं अस्सजातियो हत्थिजातियो, मनुस्सजातियो,* क. व्या. 355.

अस्सजि पु., [अश्वजित्], 1. पञ्चवर्गीय भिक्षुओं के बीच पांचवां, जिसने इसिपत्तन में अर्हत्व प्राप्त किया - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अथ खो आयस्मतो च महानामस्स आयस्मतो च अस्सजिस्स भगवता धम्मिया ... धम्मचक्खुं उदपादि,* महाव. 16; 2. छब्बग्गीय भिक्षुओं के दो गणाचार्य स्थविरों में से एक - **जि** प्र. वि., ए. व. - *अस्सजिपुनब्बसुकाति अस्सजि च पुनब्बसुको च छसु छब्बग्गियेसु द्वे गणाचरिया,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.133; - **पुनब्बसुक** पु., द्व. स., अश्वजित् एवं पुनर्वसु नामक दो गणाचार्य स्थविर - **का** प्र. वि., ब. व. - ... *अस्सजिपुनब्बसुका नाम भिक्खू कीटागिरिस्मिं आवासिका होन्ति,* म. नि. 2.148; - **अस्सजिपुनब्बसुकवत्थु** नपुं., ध. प. अट्ठ. का एक कथानक, ध. प. अट्ठ. 1.310-311.

अस्सतर पु., [अश्वतर], खच्चर - **रो** प्र. वि., ए. व. - *भेदो अस्सतरो तस्सा'जानीयो तु कुलीनको,* अभि. प. 369; *तब्भेदा सिन्धवो चेव गोजो अस्सतरोपि च,* सद्द. 2.417; *इध वळवं गद्रभेन सम्पयोजेय्युं ... सो ... अस्सतरो होति,* म. नि. 2.368; - **तरा** प्र. वि., ब. व. - *वरमस्सतरा दन्ता, आजानीया च सिन्धवा,* ध. प. 322; *अस्सतराति वळवाय गद्रभेन जाता,* ध. प. अट्ठ. 2.284; - **रे** द्वि. वि., ब. व. - *योजेन्तु वे राजरथे सुचित्ते, कम्बोजके अस्सतरे सुदन्ते,* जा. अट्ठ. 4.419.

अस्सतरी स्त्री., [अश्वतरी], मादा खच्चड़, खच्चड़ी - **री** प्र. वि., ए. व. - *सेय्यथापि, भिक्खवे, अस्सतरी अत्तवधाय गब्भं गण्हाति ...,* स. नि. 1(2).218; - **रिं** द्वि. वि., ए. व. - *सक्कारो कापुरिसं हन्ति, गब्भो अस्सतरिं यथा'ति,* स. नि. 1(1).180; *अस्सतरिन्ति गद्रभस्स वळवाय जातं,* स. नि. अट्ठ. 1.193; - **रथ** पु., तत्पु. स. [अश्वतरीरथ], मादा खच्चरों द्वारा खींचा जा रहा रथ - **थेन** तृ. वि., ए. व. - *पुरतोव सेतेन पलेति हत्थिना, मज्झे पन अस्सतरीरथेन,* पे. व. 73; *अस्सतरीरथेनाति अस्सतरीयुत्तेन रथेन पलेतीति योजना,* पे. व. अट्ठ. 48; - **था** प्र. वि., ब. व. - *सतं हत्थी सतं अस्सा, सतं अस्सतरीरथा,* स. नि. 1(1).244; - **थं** द्वि. वि., ए. व. - *दासिं दासञ्च सो दज्जा, अस्सं चस्सतरीरथं,* जा. अट्ठ. 7.355.

अस्सति √अस (फेंकना) का वर्त., प्र. वि., ए. व., फेंक देता है, त्याग देता है - *अस्सति, निरस्सति आदियति च धम्मं,* सद्द. 2.490; - **अस्सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. - *तथा ते तपे अस्सि निरस्सि पहासि विद्धंसेसीति तपस्सी,* पारा. अट्ठ. 1.99.

अस्सते √अस (खाना) के कर्म. वा. का वर्त., प्र. वि., ए. व. [अश्यते], खाया जाता है - *अस्सते असनं,* क. व्या. 643.

अस्सत्थ[1] 1. पु., [अश्वत्थ], पीपल का पेड़, बोधिवृक्ष - **त्थो** प्र. वि., ए. व. - *अस्सत्थो बोधि च द्वीसु,* अभि. प. 551; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अस्सत्थस्सेव तरुणं, पवाळं मालुतेरितं ..., हदयं मे पवेधति,* जा. अट्ठ. 5.322; - **त्थे** सप्त. वि., ए. व. - *अस्सत्थे हरितोभासे ...,* थेरगा. 217; - **त्था** प्र. वि., ब. व. - *हरीतकी आमलका, अस्सत्था बदरानि च,* जा. अट्ठ. 7.293; - **त्थं** द्वि. वि., ए. व. - *अस्सत्थं व पथे जातं,* जा. अट्ठ. 7.288; 2. नपुं., पीपल के बीज - **त्थानि** द्वि. वि., ब. व. - *अस्सत्थानि च भक्खित्वा, ...,* जा. अट्ठ. 3.352.

अस्सत्थ[2] त्रि., अस्ससति का भू. क. कृ. का निषे. [आश्वस्त], निश्चिन्त, आश्वासन-प्राप्त - **त्थं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अस्सत्थमासीनं समेक्खियान, ...,* जा. अट्ठ. 7.206; *तत्थ अस्सत्थमासीनन्ति लद्धस्सासं हुत्वा निसिन्नं, तदे.; अस्सत्थं न विदित्वान, ...,* जा. अट्ठ. 7.343.

अस्सत्थक त्रि., [अश्वत्थक], पीपल की लकड़ी से बना हुआ - **के** सप्त. वि., ए. व. - *असत्थके फलमये, ..., मधुपानकसङ्खे च, लभामि थालके अहं,* अप. 1.342; पाठा. अस्सत्थे.

अस्सत्थकपित्थ नपुं., ए. व./पु., ब. व., द्व. स. [अश्वत्थकपित्थं/अश्वत्थकपित्था], पीपल और कैंथे के पेड़ - *अस्सत्थो च कपित्थो च अस्सत्थकपित्थं,* क. व्या. 325.

अस्सत्थपत्त नपुं., [अश्वत्थपत्र], पीपल का पत्ता - **त्तं** प्र. वि., ए. व. - *वेधमस्सत्थपत्तंव, पितु पादानि वन्दति,* जा. अट्ठ. 7.318.

अस्सत्थर नपुं., [अश्वास्तरण], घोड़े की पीठ पर बिछाया जाने वाला चादर या बिछावन - **रं** प्र. वि., ए. व. - *आसन्दिं पल्लङ्कं गोनकं ... कुत्तकं हत्थत्थरं अस्सत्थरं रथत्थरं ... वा इति,* दी. नि. 1.7; *अस्सत्थरन्ति हत्थिअस्सपिट्ठीसु अत्थरणअत्थरकायेव,* दी. नि. अट्ठ. 1.79.

अस्सत्थरक पु., [अश्वास्तरक], घोड़े के चित्र की कशीदाकारी से युक्त चादर या गलीचा - ... *हत्थत्थरक - अस्सत्थरक-सीहत्थरक-ब्यग्घत्थरक-चन्दत्थरक-सूरियत्थरक-चित्तत्थरकादीहि* ..., म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.13.

अस्सदमक पु., [अश्वदमक], घोड़ों को सधाने में चतुर - **को** प्र. वि., ए. व. - *दक्खो अस्सदमको भद्रं अस्साजानीयं लभित्वा पठमेनेव मुखाधाने कारणं कारेति,* म. नि. 2.118; - **केन** तृ. वि., ए. व. - *अस्सदमकेन, भिक्खवे, अस्सदम्मो सारितो एकञ्ञेव दिसं धावति* ..., म. नि. 3.270.

अस्सदम्म पु., कर्म. स. [अश्वदम्य], नया अप्रशिक्षित घोड़ा, नहीं सधा हुआ बछेड़ा - **म्मो** प्र. वि., ए. व. - *अस्सदम्मो सारितो एकञ्ञेव दिसं धावति* ..., म. नि. 3.270; - **म्मा** ब. व. - *द्वे हत्थिदम्मा वा अस्सदम्मा वा गोदम्मा वा अदन्ता अविनीता,* म. नि. 2.337; 3.171; *हत्थिदम्मा वा अस्सदम्मा वा गोदम्मा वाति एत्थ अदन्तहत्थिदम्मादयो विय चित्तेकग्गरहिता पुग्गला दट्ठब्बा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.144; - **सारथि** पु., कर्म. स. [अश्वदम्यसारथि], घोड़ों को सधाने में कुशल साईस - **थि** प्र. वि., ए. व. - *किं नु खो मं अज्ज अस्सदम्मसारथि कारणं कारेस्सति, किमस्साहं पटिकरोमी'ति,* अ. नि. 1(2).131; *तमेनं दक्खो योग्गाचरियो अस्सदम्मसारथि अभिरुहित्वा* ..., म. नि. 1.176.

अस्सदूत पु., [अश्वदूत], घुड़सवार सन्देशवाहक - **ते** द्वि. वि., ब. व. - ... *चतुद्दिसा अस्सदूते उय्योजेत्वा* ..., महाव. 20; *अस्सदूतेति आरुळ्हअस्से दूते,* सारत्थ. टी. 3.177.

अस्सदोस पु., तत्पु. स. [अश्वदोष], घोड़े का दोष, घोड़े की गड़बड़ी - **सो** प्र. वि., ए. व. - ... *अट्ठमो अस्सदोसो,* अ. नि. 3(1).35.

अस्सद्ध / असद्ध त्रि., ब. स. [अश्रद्ध], श्रद्धाहीन, श्रद्धाभाव न रखने वाला - **द्धा** पु., प्र. वि., ब. व. - *राजानो अस्सद्धा अप्पसन्ना,* महाव. 93; *असद्धाति बुद्धादीसु सद्धाविरहिता,* विसुद्धि. 1.169; - **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. - *असद्धो अकतञ्ञू च,* ध. प. 97; *अत्तनो पटिविद्धगुणं परेसं कथाय न सद्दहतीति अस्सद्धो,* ध. प. अट्ठ. 1.352; - **भाव** पु., तत्पु. स. [अश्रद्धादिभाव], श्रद्धा से रहित होने आदि की अवस्था - **वं** द्वि. वि., ए. व. - ... *मनुस्सानं अस्सद्धादिभावं वा आगम्म* ..., उदा. अट्ठ. 148; - **भोजी** त्रि., सद्धभोजी का निषे. [अश्राद्धभोजिन्], श्राद्ध का भोजन न खाने वाला - **जी** पु., प्र. वि., ए. व. - *अचन्दमुल्लोकिकानि मुखानि, असद्धभोजी, अलवणभोजी अपुनगेय्या गाथा,* सद्द. 3.744.

अस्सद्धा स्त्री., सद्धा का निषे., तत्पु. स. [अश्रद्धा], श्रद्धा का अभाव, अविश्वास - **द्धं** द्वि. वि., ए. व. - *विनासयति अस्सद्धं, सद्धं वड्ढेति सासने,* उदा. अट्ठ. 15.

अस्सद्धिय क. नपुं., [अश्रद्धय], श्रद्धा का अभाव, श्रद्धा-सम्पदा का अभाव, ख. त्रि., श्रद्धा न करने योग्य, विश्वास न करने योग्य - **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *अस्सद्धियन्तिस्स वचनीयं,* अ. नि. 3(2).94; *अस्सद्धियं खो पन तथागतप्पवेदिते धम्मविनये परिहानमेतं,* अ. नि. 3(2).133; *अस्सद्धियं कसटो,* पटि. म. 268; *यतो ..., सद्धा अन्तरहिता होति, असद्धियं परियुट्ठाय तिट्ठति,* अ. नि. 2(1).5; - **ये** सप्त. वि., ए. व. - *असद्धिये न कम्पतीति सद्धाबलं,* ध. स. अट्ठ. 189.

अस्सधेनु स्त्री., कर्म. स. [अश्वधेनु], घोड़ी, बछेड़े को दूध पिलाने वाली घोड़ी या कोई भी मादा पशु - *गोधेनु अस्सधेनु मिगधेनु ति धेनुसद्दो सामञ्ञवसेन सपोतिकासु तिरच्छानगतित्थीसु वत्तति,* सद्द. 2.393.

अस्सनाविकपुत्त पु., दो तमिल अधिपतियों या प्रमुखों का नाम - **त्ता** प्र. वि., ब. व. - *अस्सनाविकपुत्ता द्वे दामिका सेनगुत्तका,* म. वं. 21.10.

अस्सन्दमान त्रि., √सन्द के वर्त. कृ. का निषे. [अस्यन्दमान], नहीं बहता हुआ / हुई - **ना** स्त्री., प्र. वि., ब. व. - *नदियो असन्दमाना अट्ठंसु,* जा. अट्ठ. 1.62.

अस्सपणीय नपुं., कर्म. स. [अश्वपण्य], बेचने के लिए रखा गया घोड़ा, विक्रयार्थ पोसा जा रहा घोड़ा - **यं** द्वि. वि., ए. व. - *पुरिसो उदयत्थिको अस्सपणियं पोसेय्य,* अ. नि. 1(2).229; *अस्सपणियं पोसेय्याति पञ्च अस्सपोतसतानि किणित्वा पच्छा विक्किणिस्सामीति पोसेय्य,* अ. नि. अट्ठ. 2.367.

अस्सपन्ति स्त्री., तत्पु. स. [अश्वपंक्ति], घोड़ों की लम्बी कतार - **न्तीहि** तृ. वि., ब. व. - *सब्बं राजङ्गणं निरन्तरं अस्सपन्तीहि परिक्खित्तमिवाहोसि,* जा. अट्ठ. 2.242.

अस्सपाल पु., व्य. सं. [अश्वपाल], राजा एसुकारी के पुरोहित का पुत्र, हत्थिपाल, गोपाल एवं अजपाल का भाई - **लो** प्र. वि., ए. व. - *तस्सपि जातकाले अस्सपालो'ति नामं करिंसु,* जा. अट्ठ. 4.432; *अस्सपालो सारिपुत्तो,* जा. अट्ठ. 4.444.

अस्सपिट्ठ नपुं., तत्पु. स. [अश्वपृष्ठ / अश्वपृष्ठि], घोड़े की पीठ - **ट्ठे** सप्त. वि., ए. व. - ... *हत्थिगीवाय वा निसिन्नो अस्सपिट्ठे वा निसिन्नो रथूपत्थरे वा ठितो* ..., दी. नि. 1.90; *अस्सपिट्ठे निसिन्नोव ... अदासि,* ध. प. अट्ठ. 2.46;

त्थरण नपुं., तत्पु. स. [अश्वपृष्ठास्तरण], घोड़े की पीठ पर बिछाया गया बिछावन या गलीचा - *चम्मं विहनन्ति एळकस्स, अस्सपिट्ठत्थरस्सुखस्स हेतु,* जा. अट्ठ. 6.181.

अस्सपिट्ठि स्त्री., तत्पु. स. [अश्वपृष्ठ/अश्वपृष्ठि], घोड़े की पीठ - **तो** प. वि., ए. व. - *सो पुण्णको अस्सपिट्ठितो ओरुय्ह ...,* जा. अट्ठ. 7.164; *सो तावदेव अस्सपिट्ठितो ओतरित्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.317.

अस्सपुर नपुं., व्य. सं., अङ्ग जनपद का एक नगर - **रं** प्र. वि., ए. व. - *अस्सपुरं नाम अङ्गानं निगमो,* म. नि. 1.342; *अस्सपुरं नाम अङ्गानं निगमोति अस्सपुरन्ति नगरनामेन लद्धवोहारो अङ्गानं जनपदस्स एको निगमो, तं गोचरगामं कत्वा विहरतीति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).208.

अस्सपोत पु., तत्पु. स. [अश्वपोत], बछेड़ा, घोड़े का अनाड़ी बच्चा - **तो** प्र. वि., ए. व. - *अस्सखळुङ्कोति अस्सपोतो,* अ. नि. अट्ठ. 2.235; - **क** पु., [अश्वपोतक], उपरिवत् - ... *अस्सपोतकप्पमाणो यमसम्पन्नो ...,* जा. अट्ठ. 1.268; - **कं** द्वि. वि., ए. व. - *वेतनं मे ददमानो इममि्प अस्सपोतकं वेतनतो खण्डेत्वा देही'ति आह,* जा. अट्ठ. 2.239; - **प्पमाण** त्रि., ब. स. [अश्वपोतकप्रमाण], बछेड़े जैसा - **णो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अस्सपोतकप्पमाणो थामसम्पन्नो ...,* जा. अट्ठ. 1.268; - **णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *सरीरं पनस्स महन्तं अस्सपोतकप्पमाणं अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.153.

अस्सबन्ध पु., [अश्वबन्ध], घोड़े को सधाने में कुशल साईस - **न्धं** द्वि. वि., ए. व. - *हत्थिबन्धं अस्सबन्धं गोपुरिसञ्च ... सधनमनुपतन्ति नारियो,* जा. अट्ठ. 5.446; - **न्धो** प्र. वि., ए. व. - *तस्स गिरिदत्तो नाम अस्सबन्धो ...,* जा. अट्ठ. 2.81.

अस्सभण्डक नपुं., तत्पु. स. [अश्वभाण्डक], घोड़े को सजाने वाला साजो-समान - **केन** तृ. वि., ए. व. - ... *अस्सभण्डकेन अलङ्करित्वा अस्सं अदासि,* जा. अट्ठ. 2.94.

अस्सम पु., [आश्रम], 1. तपस्वी या ऋषि-मुनि का वन में बनाया हुआ ऐसा वासस्थान, जिसमें पर्णशाला एवं चंक्रमणपथ रहे तथा जो गोचरग्राम से बहुत दूरी पर स्थित न हो; 2. आश्रम में रहने वाले का जीवन - **मो** प्र. वि., ए. व. - *ब्रह्मचारिगहट्ठादो अस्समो च तपोवने,* अभि. प. 928; 409; *पदुमकिञ्जक्खरेणूहि, ओकिण्णो होति अस्समो,* जा. अट्ठ. 7.294; *अथ खो भगवा येन उरुवेलकस्सपस्स जटिलस्स अस्समो तेनुपसङ्कमि,* महाव. 78; *अस्समो सुकतो मय्हं,* बु. वं. 2.28; - **मं** द्वि. वि., ए. व. - *अयं एकपदी एति, उजुं गच्छति अस्समं,* जा. अट्ठ. 7.297; 2. गृहस्थ, वानप्रस्थ, आदि चार-आश्रम, घर-बार छोड़ वन में रहकर बिताया जा रहा वानप्रस्थ-नामक आश्रम - **मं** द्वि. वि., ए. व. - *महायञ्ञं यजित्वान, पुन पाविसि अस्समं,* सु. नि. 985.

अस्समंस नपुं., तत्पु. स. [अश्वमांस], घोड़े का मांस - **सं** द्वि. वि., ए. व. - *न, भिक्खवे, अस्समंसं परिभुञ्जितब्बं,* महाव. 295.

अस्समण पु., समण का निषे., तत्पु. स. [अश्रमण], श्रमण या भिक्षुभाव के लिए आवश्यक संयमों से रहित, अयोग्य या अनाचारी भिक्षु, भिक्षुभाव से पतित या भ्रष्ट - **णो** प्र. वि., ए. व. - *यंनूनाहं अस्समणो अस्स'न्ति,* पारा. 26; *अस्समणोति मं धारेहीति न वेवचनेन पच्चक्खानं,* पारा. अट्ठ. 1.202; *यो भिक्खु मेथुनं धम्मं पटिसेवति, अस्समणो होति असक्यपुत्तियो,* महाव. 123; - **णे** द्वि. वि., ब. व. - *ततो पलापे वाहेथ, अस्समणे समणमानिने,* सु. नि. 284; - **धम्म** त्रि., ब. स. [अश्रमणधर्मन्], श्रमण-धर्म का पालन न करने वाला, भिक्षु के लिए निर्धारित संयम से रहित, दुराचारी भिक्षु - **म्मो** पु., प्र. वि., ए. व. - ... *धारेय्यासि अस्समणधम्मो असक्यपुत्तियधम्मोति,* स. नि. 2(2).311.

अस्समणी स्त्री., अस्समण से व्यु. [अश्रमणी], अच्छे आचरणों से विहीन भिक्षुणी, असंयत भिक्षुणी - **णी** प्र. वि., ए. व. - ... *अस्समणी होती असक्यधीता,* पाचि. 288.

अस्समण्डल नपुं., [अश्वमण्डल], घोड़ों को दौड़ाने का मैदान, घोड़े को घुमाने-फिराने का मैदान, घुड़सवारी के अभ्यास करने का मैदान - **ले** सप्त. वि., ए. व. - ... *अस्सं आनने गहेत्वा अस्समण्डले परिवत्तेय्य,* जा. अट्ठ. 2.81; *एवं सब्बदिसासु अस्समण्डले अस्समिव मेत्तासहगतं चित्तं सारेतिपि पच्चासारेतिपीति,* विसुद्धि. 1.298; - **तो** प. वि., ए. व. - ... *अस्समण्डलतो याव चम्पानगरद्वारा ...,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.5.

अस्समण्डलतित्थट्ठ त्रि., अनुराधपुर महाविहार के अस्समण्डलतीर्थ नामक एक स्थान पर स्थित - **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अस्समण्डलतित्थट्ठो कित्तिनामादिपोत्थकी,* चू. वं. 72.27.

अस्समण्डलिका स्त्री., [अश्वमण्डलिका], घोड़ा को बन्द करने का गोलाकार बाड़ा, उत्तरापथ के घोड़ों के व्यापारियों की सराय - **सु** सप्त. वि., ब. व. - ... *उत्तरापथका अस्सवाणिजा ... अस्समण्डलिकासु भिक्खूनं पत्थपत्थपुलकं पञ्ञत्तं होति,* पारा. 7; - **यो** द्वि. वि., ब. व. -

अस्समण्डलिकायोति पञ्ञायिंसूति परिमण्डलाकारेन कतत्ता अस्समण्डलिकायोति पाकटा अहेसुं, सारत्थ॰ टी॰ 1.373.

अस्समपद नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आश्रमपद], आश्रम का स्थल, आश्रम की भूमि, आश्रम – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ नं अस्समपदं नेत्वा ... पटिजग्गि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.96; .. *पन्नरसयोजनं अस्समपदं मापेही'ति आह*, जा॰ अट्ठ॰ 1.301; – **सम्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आश्रमपदसंपत्ति], आश्रम के स्थल की समृद्धि या सम्पदा – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ गन्त्वा इमं अस्समपदसम्पत्तिं पस्सिस्सतीति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.293.

अस्सममग्गपस्स पु॰/नपुं॰, आश्रम की ओर जाने वाले मार्ग के आस-पास का क्षेत्र – **स्से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञे पन ... च अनुमग्गे मम अस्सममग्गपस्से वसन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.191.

अस्समारक पु॰, [अश्वमारक], एक औषधीय पादप, कनैर या कनैल – *करवीरो'स्समारको*, अभि॰ प॰ 577.

अस्समुख[1] त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्वमुख], घुड़मुंहा, घोड़े की तरह मुख वाला – **खी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एकस्मिं पब्बतपादे अस्समुखी यक्खिनी हुत्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 3.444.

अस्समुख[2] नपुं॰, अनवतप्त जलाशय में पानी आने के चार मुहानों में से एक – **खं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ चतूसु पस्सेसु सीहमुखं हत्थिमुखं अस्समुखं उसभमुखन्ति चत्तारि मुखानि होन्ति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.27.

अस्समुट्ठिक/अस्ममुट्ठिक त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्ममुष्टिक], पत्थर जैसी कठोर मुट्ठी वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये दिवसे दिवसे भिक्खापरियेट्ठि नाम दुक्खा पब्बजितस्सा'ति मुट्ठिपासाणेन अम्बाटकादीनं रुक्खानं तचं कोट्टेत्वा खादन्ति, ते अस्ममुट्ठिका नाम*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.219; *अस्ममुट्ठिना मुट्ठिपासाणेन वत्तन्तीति अस्ममुट्ठिका*, लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 1.272.

अस्समेण्ड पु॰, अस्समण्ड का अप॰, साईस – *अस्सारोहाति सब्बेपि अस्साचरियअस्सवेज्जअस्समेण्डादयो*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.131.

अस्समेध पु॰, [अश्वमेघ], एक वैदिक यज्ञ, जिसमें घोड़े की बलि दी जाती थी – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्समेधो च पुरिसमेधो चेव निरग्गळो*, अभि॰ प॰ 413; – **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्समेधं पुरिसमेधं, सम्मापासं वाजपेय्यं निरग्गळं*, सु॰ नि॰ 305; *अस्समेध'न्ति आदीसु अस्समेत्थमेधन्तीति अस्समेधो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.51; – **विकप्प** पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वमेधविकल्प], अश्वमेध यज्ञ का विकल्प या प्रभेद – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नवहि ... अस्समेधो ... वुत्तविभवदक्खिणस्स सब्बमेध परियायनामस्स अस्समेधविकप्पस्सेवेतं अधिवचनं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.129; इतिवु॰ अट्ठ॰ 82.

अस्सय/आसय पु॰, [आश्रय], सहारा, अवलम्बन, शरणस्थल, निवासस्थान – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसयोति वसनट्ठानं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.91; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चित्तसालसमीपम्हि महाबोधिपदस्सये*, म॰ वं॰ 20.52.

अस्सयान नपुं॰, [अश्वयान], सवारी के रूप में प्रयुक्त घोड़ा, घोड़ा की सवारी – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भद्दकं वत भो अस्सयानं सचे दमथं उपेय्या'ति*, दी॰ नि॰ 2.130; *न अस्सयानं, न रथेन यातुं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.74.

अस्सयी त्रि॰, [आश्रयिन्], आश्रय या सहारा लेने वाला, अवलम्बन लेने वाला – **यिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मानस्सिनोति मानस्सयिनो, माननिस्सिताति वुत्तं होति*, चूळव॰ अट्ठ॰ 108.

अस्सयुज[1] पु॰, [अश्वयुज], अश्विनी-नामक प्रथम नक्षत्र – *अस्सयुजो भरणित्थी कत्तिका रोहिणी येव*, अभि॰ प॰ 58; – **नक्खत्त** नपुं॰, अश्विनी नक्षत्र – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्सयुजनक्खत्तेन देवोरोहनन्ति* ..., दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.16.

अस्सयुज[2] पु॰, [अश्वयुज], अश्विनी नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा वाला आश्विनमास – **जा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पोट्ठपादास्सयुजा च मासा द्वादस कत्तिको*, अभि॰ प॰ 75; *अस्सयुजकत्तिकमासा हि लोके सरदउतूति वुच्चन्ति*, इतिवु॰ अट्ठ॰ 79.

अस्सयुद्ध नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वयुद्ध], मनोरञ्जन के साधन के रूप में घोड़ों का युद्ध – **द्धं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – . .. *हत्थियुद्धं अस्सयुद्धं ... वट्टकयुद्धं ... सेनाब्यूहं ... इति*, दी॰ नि॰ 1.6.

अस्सर त्रि॰, निषे॰ ब॰ स॰ [अस्वर], स्वरों से रहित (व्यञ्जन) – **रं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ सन्धिं ... अधो ठितं अस्सरं कत्वा ... वियोजये*, क॰ व्या॰ 10.

अस्सरणता स्त्री॰, अस्सरण का भाव॰ [अस्मरणत्व, नपुं॰], स्मरण न रखना, भूल जाना, स्मृति का अभाव – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या अस्सति ... अस्सति अस्सरणता अधारणता पिलापनता सम्मुसनता*, पु॰ प॰ 127.

अस्सरतन नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अश्वरत्न], उत्तम गुणों वाला घोड़ा, बहुमूल्य घोड़ा, चक्रवर्ती राजा – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *रञ्ञो महासुदस्सनस्स अस्सरतनं पातुरहोसि* ..., दी॰ नि॰ 2.130; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्सरतनेन चेवाहं*,

भन्ते, लभेय्यं ..., स॰ नि॰ 1(1).116; - **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सरतनेपि एसेव नयो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.144; - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सेय्यथिदं - चक्करतनं ... अस्सरतनं ..., परिणायकरतनमेव सत्तमं*, दी॰ नि॰ 1.77.

अस्सरति आ + √सर (रेंगना, चलना) के वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ का अप॰ [आसरति], अतिक्रमण करता है - ... *कत्वा ... अतिच्च अस्सरति एताय सत्तोति अच्चसरा*, महानि॰ अट्ठ॰ 161; 332.

अस्सरथ पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वरथ], घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा रथ - **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सेन युत्तो रथो अस्सरथो*, सद्द॰ 3.755; - **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *भरिया मे अरोगा वितानि चत्तारि सहस्सानि पादासि दासञ्च दासिञ्च अस्सरथञ्च*, महाव॰ 360; *अस्सासयि अस्सरथं, ब्राह्मणस्स धनेसिनो'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.271.

अस्सरन्त त्रि॰, √सर (स्मरण करना) के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अस्मरत्], स्मरण न करता हुआ, नहीं जानता हुआ - **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *ब्राह्मणा पोराणं अस्सरन्ता एवमाहंसु*, दी॰ नि॰ 3.60; *अस्सरन्ताति अस्सरमाना, ... अननुस्सरन्ता अजानन्ता एवं वदन्तीति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.41.

अस्सराज पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वराजन्], उत्तम घोड़ा, शाही घोड़ा - **जा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *वलाहको नाम अस्सराजा*, दी॰ नि॰ 2.130; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.56; - **जानं** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - ... *रमणीये भूमिभागे वितं कण्डकं अस्सराजानं दिस्वा ...*, जा॰ अट्ठ॰ 1.72.

अस्सरूपक नपुं॰, [अश्वसदृश], घोड़े से समानता - **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सरूपकं नो दस्सेही'ति गामदारकेहि वुच्चमानो ... लभति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.289.

अस्सलक्खण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वलक्षण], घोड़ों के शुभ लक्षण (को बतलाने वाली विद्या), अट्ठारह महाशिल्पों में से एक - **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सेय्यथिदं - मणिलक्खणं, ... अस्सलक्खणं ... मिगलक्खणं इति वा इति*, दी॰ नि॰ 1.8-9.

अस्सलण्ड नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वलण्ड], घोड़े की लीद - **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तं अन्तोफरुसताय बहिमट्ठताय हत्थिलण्डं विय अस्सलण्डं विय च होतीति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.73.

अस्सलायन पु॰, व्यक्तियों का नाम, **1**. श्रावस्ती का एक विद्वान युवा ब्राह्मण - *तेन खो पन समयेन अस्सलायनो नाम माणवो सावत्थियं पटिवसति दहरो*, म॰ नि॰ 2.362; *अपि ब्राह्मणा सन्ति केचीति इमिना ... अस्सलायनवासेट्ठअम्बट्ठउत्तरमाणवकादयो दस्सेति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.93; **2**. स्थविर महाकोट्ठित का पिता - **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *माता चन्दवती नाम, पिता मे अस्सलायनो*, अप॰ 2.129; - **सुत्त** नपुं॰, म॰ नि॰ का एक सुत्त, जिसमें श्रावस्ती के युवा ब्राह्मण अस्सलायन का भगवान बुद्ध के साथ संवाद वर्णित है, म॰ नि॰ 2.362-371; *वित्थारो पन अस्सलायनसुत्तानुसारेन वेदितब्बो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.121.

अस्सव[1] त्रि॰, [आश्रव], आज्ञाकारी, आज्ञापालक, बात को सुनने वाला, विनीत - **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *विधेय्यो तु अस्सवो सुब्बचो समा*, अभि॰ प॰ 730; *सुस्सूसा सेट्ठा भरियानं, यो च पुत्तानमस्सवो'ति*, स॰ नि॰ 1(1).8; *अस्सवोति आसुणमानो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.32; *भवति परिजनस्सवो विधेय्यो*, दी॰ नि॰ 3.114; *परिजनस्सवोति परिजनो अस्सवो वचनकरो*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.100; - **वा**[1] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *यक्खापि मे अस्सवा नत्थि केचि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.88; *अस्सवाति वचनकारका इच्छितिच्छितदायका ...*, जा॰ अट्ठ॰ 4.89; - **वा**[2] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *गोपी मम अस्सवा अलोला*, सु॰ नि॰ 22; - **वं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *चित्तं मम अस्सवं विमुत्तं*, सु॰ नि॰ 23.

अस्सव[2] / **अस्साव** पु॰, [आस्रव], बहाव, स्रवण, पीब से भरा बहाव, घाव से पीब का रिसाव - *विधेय्ये अस्सवो तीसु पुब्बम्हि पुरिसे सिया*, अभि॰ प॰ 1036; *यस्स कण्डु वा पिळका वा अस्सावो वा थुल्लकच्छु वा वा आबाधो*, महाव॰ 277.

अस्सवत नपुं॰, [अश्वव्रत], (कुछ तपस्वियों द्वारा धार्मिक-चर्या के रूप में अपनाया गया) घोड़े की क्रियाओं का आचरण - **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वतानीति हत्थिवतं वा अस्सवतं वा ...*, महानि॰ 66; - **तिक** त्रि॰, अस्सवत से व्यु॰ [अश्ववतिक], घोड़े की क्रियाओं के आचरण का व्रत लेने वाला - **तिका** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ते हत्थिवतिका वा होन्ति, अस्सवतिका वा होन्ति, ...*, महानि॰ 63; *अस्सवतिकादीसुपि लब्भमानवसेन यथायोगं योजेतब्बं*, महानि॰ अट्ठ॰ 171.

अस्सवति आ + √सु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आस्रवति], बहता है, प्रवाहित होता है - **वे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *आवेधञ्च न पस्सामि, यतो रुहिरमस्सवे*, जा॰ अट्ठ॰ 2.230; *यतो रुहिरमस्सवेति यतो मे आवेधतो लोहितं पग्घरेय्य, तं न पस्सामीति अत्थो*, तदे॰.

अस्सवन नपुं॰, सवन का निषे॰ [अश्रवण], नहीं सुनना, ध्यान न देना, उपेक्षा, अवज्ञा-भाव - *पच्छा आगतपरिसं*

अस्सवनसुस्सवन आधारणदळ्हीकरणादीनि वा सन्धाय तदत्थदीपकमेव च, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.114; - **भावपटिक्खेप** पु॰, [अश्रवणभावप्रतिक्षेप], नहीं सुनने की स्थिति का निराकरण - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुतन्ति अस्सवनभावपटिक्खेपतो अनूनाधिकाविपरीतग्गहणनिदस्सनं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.29; - **ता** स्त्री॰, अस्सवन का भाव॰, नहीं सुनने की अवस्था, उपेक्षा भाव, आज्ञापरायणता का अभाव - *अस्सवनता धम्मस्स परिहायन्ति,* महाव॰ 6.

अस्सवनीय त्रि॰, √सु (सुनना) का सं॰ कृ॰ का निषे॰ [अश्रवणीय], नहीं सुने जाने योग्य, कठोर या बहुत ऊंची आवाज वाला - **खरस्सर** त्रि॰, सुनाई देने में कठिन तथा तीक्ष्ण स्वर वाला - *दिट्ठविद्देसनीयो चास्सवनीयखरस्सरो,* सद्धम्मो॰ 82.

अस्सवस त्रि॰, सवस का निषे॰ [अस्ववश], अपनी स्वयं की मदद करने में भी अक्षम, पूरी तरह परावलम्बी - **सं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जरातुरन्ति जराय किलन्तं अस्सवसं,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.40.

अस्सवाणिज पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्ववाणिज], घोड़ों का सौदागर, घोड़ों के क्रय-विक्रय का व्यापार करने वाला - **जा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *उत्तरापथका अस्सवाणिजा पञ्चमत्तेहि अस्ससतेहि वेरञ्जं वस्सावासं उपगता होन्ति,* पारा॰ 7; *तेन खो पन समयेन उत्तरापथका अस्सवाणिजा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.133; - **क** पु॰, उपरिवत् - **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तेसं अस्सवाणिजका पत्थपत्थपुलकं भिक्खं पञ्ञापेसुं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.333.

अस्सवाल पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वबाल], घोड़े का बाल - **लेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *वाळकम्बलन्ति अस्सवालेहि कतकम्बलं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.265; *चामरीवालअस्सवालादीहि कतं वालकम्बलं,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 3.200.

अस्सवेज्ज पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्ववैद्य], घोड़े का चिकित्सक - *अस्सारोहाति सब्बेपि अस्साचरियअस्सवेज्जअस्समेण्डादयो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.130-31.

अस्ससति आ + √ससु (श्वांस लेना) वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, 1.क. अन्दर की ओर श्वांस को खींचता है - *सो सतोव अस्ससति, सतोव पस्ससति, दीघं वा अस्ससन्तो दीघं अस्ससामी'ति पजानाति,* दी॰ नि॰ 2.215; - **सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ - ... *दीघं अस्ससामीति पजानाति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.318; - **सन्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰ का प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मुखं विवरित्वा निपन्नो अस्ससन्तो पस्ससन्तो निद्दं उपगच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.42; 1.ख. दूसरे को अभिभूत करने, पीड़ित करने या उस पर आविष्ट करने हेतु लम्बी सांस खींचता है, आविष्ट कर लेता है - **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ - *यक्खा पिसाचा अथवापि पेता, कुपिता ते अस्ससन्ति मनुस्से, न मच्चुनो अस्ससितुस्सहन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.448; *अस्ससन्तीति अस्सासवातेन उपहनन्ति, आविसन्तीति वा अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.451; 2.क. फिर से ऊर्जा पाने हेतु दम भर लेता है, थोड़ी सी राहत की सांस ले लेता है - **स्सासयित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, प्रेर॰, विश्राम करके - *मुहुत्तं अस्सासयित्वा, अगमा येन पब्बतो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.84; 2.ख. धीरज रखता है - **स्सास** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अम्म अस्सास मा सोचि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.35; *अस्सास हेस्सामि ते पति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.156; - **स्सासत** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *अस्सासतायस्मा,* स॰ नि॰ 3(2).472; *अस्सासतायस्माति, अस्सासतु आयस्मा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.321; 3. विश्वास करता है, भरोसा करता है - **अस्मसे / अस्ससे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ - *नास्मसे कतपापम्हि, नास्मसे अलिकवादिने नास्मसे अत्तत्थपञ्ञम्हि, अतिसन्तेपि नास्मसे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.50; *तत्थ नास्मसेति नास्ससे ... न विस्ससेति वुत्तं होति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.51.

अस्सपरस्स पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वापरश्व], घोड़ों के बीच अच्छा घोड़ा, घोड़ों के बीच ऊँची नस्ल वाला या प्रशिक्षित घोड़ा - **स्सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *इमे खो, भिक्खवे, तयो अस्सपरस्सा,* अ॰ नि॰ 1(1).325; *नवमे अस्सपरस्सेति अस्सेसु परस्से,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235.

अस्ससम्मद्द त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्वसम्मर्द], बहुत सारे घोड़ों से भरा हुआ - **द्दं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *रञ्ञो राजन्तेपुरं हत्थिसम्मद्दं अस्ससम्मद्दं रथसम्मद्दं ...,* पाचि॰ 212.

अस्ससाला स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वशाला], घुड़साल, घोड़ों के रखने का स्थान, अस्तबल - **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अस्से अस्ससालायं सण्ठापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.130; - **निस्सित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वशालानिश्रित], घुडसाल के पास में स्थित - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्ससालानिस्सितं वा होति,* पारा॰ 231.

अस्ससित नपुं॰, आ + √ससु का भू॰ क॰ कृ॰ [आश्वसित], आश्वास, सांस लेना - *अस्ससितपस्ससितमत्तेन जीवन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 99.

अस्ससिप्प नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वशिल्प], घोड़ों को सधाने अथवा नियन्त्रित करने की विद्या - **प्पं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्ससिप्पं सिप्पानं अग्ग'न्ति,* उदा॰ 103; ... *अस्ससिप्पन्ति एत्थापि एसेव नयो,* उदा॰ अट्ठ॰ 165.

अस्सा स्त्री॰, [अश्वा], घोड़ी - *वळवा'स्सा,* अभि॰ प॰ 371.

अस्साचरिय पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्वाचार्य], **क.** राजा के समीप रहने वाला घोड़ों का विशेषज्ञ, घुड़सवारी शिक्षक - **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *राजा अस्साचरियं आमन्तेत्वा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.32; **ख.** घुड़सवार सेना का अधिकारी - **येहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *गामणीयेहीति अस्साचरियेहि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.260.

अस्साजानीय पु॰, कर्म॰ स॰ [अश्वाजानेय], उत्तम नस्ल का घोड़ा - **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *दक्खो अस्सदमको भद्रं अस्साजानीयं लभित्वा पठमेनेव मुखाधाने कारणं कारेति,* म॰ नि॰ 2.118; *तीहि भिक्खवे अङ्गेहि समन्नागतो रञ्ञो भद्रो अस्साजानीयो राजारहो होति,* अ॰ नि॰ 1(1).277; - **ये** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *तयो च, भिक्खवे, भद्रे अस्साजानीये देसेस्सामि,* अ॰ नि॰ 1(1).326; *अस्साजानीयेति कारणाकारणं जाननके अस्से,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.236.

अस्साद पु॰, [आस्वाद], 1. *√चक्ख (चखना), √रस (स्वाद लेना) तथा √लिह (चाटना) आदि धातुओं के अर्थों का सूचक,* खाद्य एवं पेय आदि का रसास्वादन - *अस्सादत्थो पि चक्खुसद्दो भवति,* सद्द॰ 2.332; *रस अस्सादसिनेहेसु,* सद्द॰ 2.443; **2.** अनुकूल रूप में संवेदनीय रूप, शब्द, गन्ध, रस एवं स्पृष्टव्य जैसे इन्द्रिय-विषयों में आनन्द का अनुभव या उसका उपभोग - **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *एवमेव खो, महाराज, योगिना ... सब्बभवपटिसन्धीसु मानसं उब्बेजयितब्बं, अस्सादो न कातब्बो,* मि॰ प॰ 356; - **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पियरूपेसु अस्सादेन गिद्धा ... अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 95; - **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अलद्धा तत्थ अस्सादं वायसेत्तो अपक्कमे,* स॰ नि॰ 1(1).145; **3.** सुख या मौजमस्ती भरी अवस्था, रसपरिपूर्णता - **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सङ्गो एसो परित्तमेत्थ सोख्यं, अप्पस्सादो दुक्खमेत्थ भिय्यो,* सु॰ नि॰ 61; *अप्पस्सादो दुक्खमेत्थ भिय्योति एत्थ च य्वायं यं खो, भिक्खवे, इमे पञ्च कामगुणे पटिच्च उप्पज्जति सुखं सोमनस्सं, अयं कामानं अस्सादो ति वुत्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; *यं खो लोकं पटिच्च उप्पज्जति सुखं सोमनस्सं, अयं लोके अस्सादो,* अ॰ नि॰ 1(1).292; - **चेतना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आस्वादचेतना], विषयभोगों में आनन्दानुभूति की चेतना, सोलह प्रकार की दृष्टियों में से एक - **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सुपिनन्ते अस्सादचेतना अत्थि उपलब्भति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.96; - **दिट्ठि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आस्वाददृष्टि], विषयभोगों में सुख एवं सौमनस्य समझने वाली मिथ्याधारणा - **ट्ठि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अस्साददिट्ठि, अत्तानुदिट्ठि, मिच्छादिट्ठि,* अ॰ नि॰ 2(2).146; *अस्साददिट्ठीति सस्सतदिट्ठि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.145; - **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्साददिट्ठिया पञ्चतिंसाय आकारेहि अभिनिवेसो होति,* पटि॰ म॰ 127.

अस्सादन नपुं॰, [अस्सादन], खाने, पीने, चखने या चाटने में आनन्द या सुख का अनुभव, स्वाद लेना - *लिह अस्सादने,* सद्द॰ 2.459; *रस अस्सादने,* सद्द॰ 2.443; *सा अस्सादने,* सद्द॰ 2.482; *मोक्खासने अस्सादने,* सद्द॰ 2.522.

अस्सादना स्त्री॰, स्वाद लेने की क्रिया, स्वाद का अनुभव - **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ..., *अपि अस्सादना सिया,* स॰ नि॰ 1(1).145; स॰ नि॰ 1(1).449; *अस्सादनाति सादुभावो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.109.

अस्सादनीय त्रि॰, आ + √स्वद का सं॰ कृ॰ [आस्वादनीय], स्वाद प्राप्त करने योग्य, अच्छे स्वाद के पाने योग्य, स्वादिष्ट, खाने-पीने में अच्छा लगने योग्य - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सा कथं छसु द्वारेसु तण्हाय पच्चयो होतीति चे? अस्सादनीयतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).229.

अस्सादपरियेसना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आस्वादपर्येषण], स्वाद की तलाश, विषयभोगों में आनन्दमयी अनुभूति का अन्वेषण - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सादपरियेसनं अचरिं,* स॰ नि॰ 1(2).155.

अस्सादबद्धचित्तता स्त्री॰, भाव॰ [आस्वादबद्धचित्तता], भोगों में स्वाद पाने के लिए चित्त का बंधा हुआ रहना - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *ओवदितोपि अस्सादबद्धचित्तताय सचे वुत्तप्पकारो आदीनवो भविस्सति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.106.

अस्सादमत्ता स्त्री॰, [आस्वादमात्रा], बहुत थोड़ा सा स्वाद, स्वल्प-स्वाद, बहुत हल्का मजा - **त्ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *होति चेव काचि सातमत्ता अस्सादमत्ता - यदिदं वणमुखानं कण्डूवनहेतु,* म॰ नि॰ 2.185; *एवमस्स काचि अस्सादमत्ता होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.156.

अस्सादरहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आस्वादरहित], बेस्वाद, बिना स्वाद का - **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *इदञ्हि कसिरञ्च दुक्खं अस्सादरहितं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.101.

अस्सादसञ्ञा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आस्वादसंज्ञा], संसार के विषय-भोगों के आनन्दमय होने का विचार - **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *आदीनवदस्सनेन अस्सादसञ्ञाय पहाणं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).26.

अस्सादानुपस्सी त्रि॰, [आस्वादानुपश्यिन], भोग आनन्द से परिपूर्ण या स्वाद से भरे हैं, इस प्रकार की अनुपश्यना या अनुचिन्तन करने वाला, विषयभोगों को आनन्दमय रूप में

देखने वाला – **स्सी** पु., प्र. वि., ए. व. – *संयोजनियेसु भिक्खवे धम्मेसु अस्सादानुपस्सी विहरन्तो रागं न पजहति,* अ. नि. 1(1).67; – **स्सिनो** पु., ष. वि., ए. व. – *एवमेव खो, भिक्खवे, उपादानियेसु धम्मेसु अस्सादानुपस्सिनो विहरतो तण्हा पवड्ढति,* स. नि. 1(2).76; *अस्सादानुपस्सिनोति अस्सादं अनुपस्सन्तस्स,* स. नि. अट्ठ. 2.72; – **स्सिता** स्त्री., भाव., प्र. वि., ए. व. [आस्वादानुपश्यित्व, नपुं.], स्वाद या सुख से परिपूर्ण रूप में देखना – *या च संयोजनियेसु धम्मेसु अस्सादानुपस्सिता,* अ. नि. 1(1).67.

अस्सादियत्त नपुं., भाव. [आस्वाद्यत्व], आनन्द भरे रूप में अनुभव करने योग्य होना, स्वाद लेने योग्य रहना, सुबोधा. 352.

अस्सादेति आ + √सद (स्वाद लेना) वर्त., प्र. पु., ए. व. [आस्वादयति], स्वाद लेता है, आनन्द लेता है, अनुकूल रूप में संवेदन करता है, चखता है, उपभोग करता है – *यो हि कोचि ... उप्पन्नं लाभसक्कारसिलोकं अस्सादेति निकामेति* ..., स. नि. 1(2).206; *सो तदस्सादेति, तं निकामेति, तेन च वित्तिं आपज्जति,* अ. नि. 1(2).143; – **न्ति** ब. व. – *रसन्ति तं सत्ताति रसो, अस्सादेन्ती ति अत्थो,* विभ. अट्ठ. 42; – **दयतो** वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व. – *अथस्स तं सम्पत्तिं अस्सादयतो कामवितक्को उदपादि,* उदा. अट्ठ. 176.

अस्सानीक नपुं., तत्पु. स. [अश्वानीक], घुड़सवार सेना की टुकड़ी – **कं** प्र. वि., ए. व. – *अनीकं नाम हत्थानीकं, अस्सानीकं,* ..., पाचि. 146; – **का** प्र. वि., ब. व. – *चुद्दस अस्सानीका,* स. नि. अट्ठ. 2.170.

अस्सामणक त्रि., [अश्रामणक], किसी भी श्रमण या भिक्षु के लिए अनुचित, भिक्षु के लिए अनुपयुक्त – **कं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अननुच्छविकं ... अप्पतिरूपं अस्सामणकं अकप्पियं अकरणीयं,* महाव. 50; – **कं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *समणा एवरूपं अस्समणकं अननुच्छविकं करोन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).311.

अस्सामी पु., सामी का निषे., तत्पु. स., प्र. वि., ए. व. [अस्वामिन्], स्वामी या अधिपति न होना, अशक्तता, अक्षमता – *तत्थ अरहा अनिस्सरो अस्सामी अवसवत्ती'ति,* मि. प. 236; *अत्तनो सन्तकस्स अस्सामिनो हुत्वा* ..., जा. अट्ठ. 3.169.

असामिक / अस्सामिक[1] पु., उपरिवत् – **के** द्वि. वि., ब. व. – *सामिके अस्सामिके कातुं* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).111; *असामिके सामिके करोन्तो* ..., जा. अट्ठ. 4.159.

असामिक / अस्सामिक[2] त्रि., ब. स. [अस्वामिक], बिना स्वामी का, बिना दावेदार का, बेनामी – **कं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *यं वा पनञ्ञम्पि पथविमहासमुद्दहिमवन्तादिनिस्सितमसामिकं रतनं,* खु. पा. अट्ठ. 136; – **कं**[2] द्वि. वि., ए. व. – ... *कुटिं कारयमानेन अस्सामिकं अत्तुद्देसं पमाणिका कारेतब्बा,* पारा. 229; – **कायो** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *कुटियो कारापेन्ति अस्सामिकायो* ..., पारा. 224; – **भण्ड** नपुं., कर्म. स. [अस्वामिकभाण्ड], ऐसी संपत्ति, जिसका कोई दावेदार न हो, बेनामी संपत्ति – *असामिकभण्डं नाम रञ्ञो पापुणाती'ति,* जा. अट्ठ. 6.176.

अस्सारुह / अस्सारोह पु., [अश्वारोह], घोड़े पर सवार होने वाला, घुड़सवार, साईस, घोड़े का चिकित्सक, अश्वशिक्षक – **हो** प्र. वि., ए. व. – *अस्सारोहो गामणी,* स. नि. 2(2).298; – **हा** प्र. वि., ब. व. – *हत्थारोहा अस्सारोहा रथिका* ..., दी. नि. 1.45; *अस्सारोहाति सब्बेपि अस्साचरियअस्सवेज्जअस्समेण्डादयो,* दी. नि. अट्ठ. 1.130-31; – **हं** द्वि. वि., ए. व. – *नागो ... हत्थारुहम्पि हनति ... अस्सारुहम्पि हनति,* अ. नि. 1(2).133-134; – **हे** द्वि. वि., ब. व. – *कदाहं अस्सारोहे च, सब्बालङ्कारभूसिते,* जा. अट्ठ. 6.58.

अस्सालङ्कार पु., तत्पु. स. [अश्वालङ्कार], घोड़े को सजाने वाले अलङ्कार या सजावट के सामान – **रेहि** तृ. वि. ब. व. – *परमेहि वा उत्तमेहि दिब्बेहि अस्सालङ्कारेहि अलङ्कता,* वि. व. अट्ठ. 62.

अस्साव पु., [आस्रव], बाहर निकल कर बह रही पीब या फोड़े की गन्दगी का रिसाव या बहाव – **वो** प्र. वि., ए. व. – *पिळका वा, अस्सावो वा, थुल्लकच्छु वा आबाधो, कायो वा दुग्गन्धो, चुण्णानि भेसज्जानि,* महाव. 277; 387; *अस्सावोति अरिसभगन्दरमधुमेहादीनं वसेन असुचिपग्घरणकं,* महाव. अट्ठ. 143.

अस्सावी त्रि., [आस्राविन्], पीब को बहा रहा या रिसा रहा घाव – **वी** पु., प्र. वि., ए. व. – *भोजनानि भुञ्जतो वणो अस्सावी अस्स,* म. नि. 3.42; 43.

अस्सास पु., [आश्वास], अनेक प्रकार की प्राण-वायुओं में से एक, **1.क.** बाहर से भीतर की ओर खींच कर ले जाई गई वायु – **सो** प्र. वि., ए. व. – *अथो अपानं पस्सासो, अस्सासो आनमुच्चते,* अभि. प. 39; *अङ्गमङ्गानुसारिनो वाता, अस्सासो पस्सासो इति, यं वा पनञ्ञम्पि किञ्चि अज्झत्तं पच्चत्तं वायो*

वायोगतं उपादिन्नं ..., म॰ नि॰ 1.249; *अस्सासोति अन्तोपविसननासिकावतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(2).127; विभ॰ अट्ठ॰ 66; **1.ख.** मुख से बाहर निकलने वाली वायु – *अस्सासोति बहि निक्खमनवातो,* विसुद्धि॰ 1.260; **1.ग.** कष्ट या पीड़ा देने वाली वायु, अस्सासवायु के अन्त॰, द्रष्ट॰ (आगे); **2.क.** खुलकर सांस लेना, चेतना-लाभ – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ तत्थेव सो अस्सासं अलभमानो मरेय्य,* मि॰ प॰ 163; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मा महन्तेहि अस्सासेहि अस्ससति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.134; **2.ख.** सुख, राहत, तसल्ली, सन्तुष्टि, प्रोत्साहन, सुरक्षा का भरोसा – *सो तस्सा वचनेन अस्सासं पटिलभित्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 6.4; *छ खत्तिया अस्सासं पटिलभिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 7.371; – **साय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अस्सासाय धम्मं देसेति,* अ॰ नि॰ 3(1).28; **2.ग.** आत्मविश्वास, अपने ऊपर पक्का भरोसा – **सो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *को पनायस्मन्तानं अस्सासो, किं बलं, येन तुम्हे आयस्मन्तो एवं वदेथ,* म॰ नि॰ 1.93; *अस्सासो परमो कतो,* सद्धम्मो॰ 313; ... *अस्सासोति अवस्सयो पतिट्ठा उपत्थम्भो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).320; – **सा प्र॰** वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारो अस्सासा अधिगता होन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).221; *अस्सासाति अवस्सया पतिट्ठा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177.

अस्सासक[1] पु॰, [आश्वासक], ढाढ़स बंधाने वाला, धीरज बंधाने वाला – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पतिट्ठा भयभीतानं, ताणो सरणगामिनं, अस्सासको महावीरो, सो मे बुद्धो निमन्तितो,* अप॰ 1.352; *अस्सासको विय बुद्धो, अस्सासो विय धम्मो* ..., खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 12.

अस्सासक[2] पु॰/नपुं॰, [आशास्य], आकांक्षा, महत्त्वाकांक्षा, हार्दिक लालसा, चाह, इच्छा, वाञ्छनीय पदार्थ – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कुमारस्स सतो इमे पञ्च अस्सासका अहेसुं,* महाव॰ 42; *अस्सासकाति आसीसना, पत्थनाति अत्थो,* महाव॰ अट्ठ॰ 244; – **के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *राजा सत्थु सन्तिके निसिन्नोयेव पञ्च अस्सासके पवेदेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.92.

अस्सासकर त्रि॰, [आश्वासकर], आश्वासन देने वाला, ढाढ़स बंधाने वाला – **रेहि** पु॰/नपुं॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अस्सासनीयेहि धम्मेहीति अस्सासकरेहि धम्मेहि,* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.321.

अस्सासकरण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आश्वासकरण], आश्वासन या तसल्ली देना, तसल्ली देने के काम का साधन – **ट्ठ** पु॰, आश्वस्त कर देने का अर्थ या तात्पर्य – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महाराज, धुतगुणं विसुद्धिकामानं जरामरणभीतानं अस्सासकरणट्ठेन* ..., मि॰ प॰ 320; – **रस** त्रि॰, ब॰ स॰, तसल्ली देने का काम करने वाला, निश्चिन्तता भर देने का कृत्य करने वाला – **सं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चुतिरसं, अस्सासकरणरसं वा, अनिमित्तपच्चुपट्ठानं, निस्सरणपच्चुपट्ठानं वाति वेदितब्बं,* अभि॰ अव॰ 101.

अस्सासकारक त्रि॰, [आश्वासकारक], ढाढ़स बंधाने वाला, तसल्ली या भरोसा भर देने वाला, मन में सुख लाने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तारको त्वं यथा नावा, निधीवस्सासकारको,* अप॰ 1.357.

अस्सासनीय त्रि॰, [आश्वासनीय], आश्वासन देने वाला, ढाढ़स बंधाने वाला, तसल्ली देने वाला – **येहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतूहि अस्सासनीयेहि धम्मेहि अस्सासेतब्बो,* स॰ नि॰ 3(2).471; 472.

अस्सासपस्सास पु॰, द्व॰ स॰, ए॰ व॰ एवं ब॰ व॰ में प्रयुक्त [आश्वासप्रश्वास], वायु को शरीर के अन्दर खींचना एवं बाहर निकालना – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाहु अस्सासपस्सासो, ठितचित्तस्स तादिनो,* दी॰ नि॰ 2.118; – **सानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवमस्स अस्सासपस्सासानं सद्दो होति,* स॰ नि॰ 1(1).126; – **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतुत्थं झानं समापन्नस्स अस्सासपस्सासा निरुद्धा होन्ति,* दी॰ नि॰ 3.211; – **से**[1] द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आम, महाराज, सक्का अस्सासपस्सासे निरोधेतुं न्ति,* मि॰ प॰ 95; – **से**[2] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निरुद्धेपि ओळारिके अस्सासपस्सासे* ... *पवत्तन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.18; – **सेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मुखतो च नासतो च अस्सासपस्सासेसु उपरुद्धेसु सद्दो होति,* म॰ नि॰ 1.311; – **सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायञ्ञतराहं, आनन्द, एतं वदामि, यदिदं - अस्सासपस्सासं,* स॰ नि॰ 3(2).399; – **कम्मिक** त्रि॰, [आश्वासप्रश्वासकर्मिक], श्वास-प्रक्रिया के नियन्त्रण का अभ्यास करने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ अस्सासपस्सासकम्मिको इमे अस्सासपस्सासा किं निस्सिता,* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).260; – **काय** पु॰, [आश्वासप्रश्वासकाय], भीतर खींची जा रही तथा बाहर निकाली जा रही वायु की राशि या समुच्चय – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेव काये* ... *अस्सासपस्सासकायो नाम नप्पवत्ततीति कायादिनिरोधा अस्सासपस्सासनिरोधोति एवं पस्सन्तो* ... *वुच्चति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).261; – **निरोधपञ्ह** पु॰, मि॰ प॰ के एक प्रश्न का शीर्षक, जिसमें आश्वास (सांस अन्दर खींचने) और प्रश्वास (श्वास बाहर

फेकने) की क्रियाओं के निरोध के विषय में राजा मिलिन्द का प्रश्न है – **ञ्हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्सासपस्सासनिरोधपञ्हो एकादसमो,* मि॰ प॰ 95; – **परिग्गाहक** त्रि॰, [आश्वासप्रश्वासपरिग्राहक], श्वासप्रक्रिया पर नियन्त्रण रखने वाला/वाली – **हिका** स्त्री॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ अस्सासपस्सासपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).261; – **सायत्तवुत्तिता** स्त्री॰, भाव॰ [आश्वासप्रश्वासायत्तवृत्तित्व], श्वास-प्रक्रिया के अधीन रहने के स्वभाव वाला, श्वसन-प्रक्रिया पर आश्रित या टिका हुआ होना, सांस के सहारे टिका होना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पाणनताय पाणा, अस्सासपस्सासायत्तवुत्तितायाति अत्थो,* विसुद्धि॰ 1.300.

अस्सासप्पत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आश्वासप्राप्त], आश्वासन पाया हुआ, आत्मविश्वास से भरा हुआ, सन्तुष्ट – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कित्तावता नु खो, आवुसो, अस्सासप्पत्तो होती'ति,* स॰ नि॰ 2(2).248; – **त्ता**[1] प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सावका विनीता अस्सासप्पत्ता पटिजानन्ति अज्झासयं आदिब्रह्मचरियं,* दी॰ नि॰ 3.28; *अस्सासपत्ताति तुट्ठिपत्ता सोमनस्सपत्ता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.17; – **त्ता**[2] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न नकुलमाता गहपतानी इमस्मिं धम्मविनये ओगाधप्पत्ता पतिगाधप्पत्ता अस्सासप्पत्ता तिण्णविचिकिच्छा* ..., अ॰ नि॰ 2(2).18.

अस्सासमत्ता स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आश्वासमात्रा], राहत या सुख की थोड़ी सी मात्रा, राहत की थोड़ी सी बात, थोड़ी सी राहत – **त्ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहोसि काचिदेव अस्सासमत्ता न ताव भगवा परिनिब्बायिस्सति,* दी॰ नि॰ 2.78; – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परिस्समं विनोदेत्वा, अस्सासमत्तं लभित्वा* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 62.

अस्सासरत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आश्वासरत], **शा॰ अ॰** आश्वास एवं प्रश्वास में आनन्द लेने वाला, **ला॰ अ॰** अपने बुद्धत्व के फल की प्राप्ति में आनन्द ले रहा – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो झायी अस्सासरतो, अज्झत्तं सुसमाहितो,* अ॰ नि॰ 2(2).61; *अस्सासरतोति नागस्स हि अस्सासपस्सासा विय बुद्धनागस्स फलसमापत्ति, तत्थ रतो,* ..., अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.115.

अस्सासवात पु॰, [आश्वासवात], दूसरों को आविष्ट कर लेने वाली प्रेत की श्वास या वायु – **तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्ससन्तीति अस्सासवातेन उपहनन्ति, आविसन्तीति वा अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.451.

अस्सासवार पु॰, तत्पु॰ स॰ [आश्वासवार], श्वास को भीतर की ओर ले जाने का क्षण या बारी, श्वास भीतर ले जाने का अवसर – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अस्सासवारे पस्सासवारे समापत्तिं समापज्जन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).189; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *कथेन्तो च जनं निरस्सासं अकत्वा तस्स अस्सासवारं देति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.123.

अस्सासविरहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आश्वासविरहित], आश्वासन से रहित, सुख या तसल्ली से रहित, सन्तुष्टि या आनन्द न देने वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनस्सासिकानीति अस्सासविरहितानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.162.

अस्सासेतु त्रि॰, [आश्वासयितृ], आश्वासन देने वाला, तसल्ली देने वाला, राहत देने वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्सासेता यथा चन्दो, सूरियोव पभङ्करो,* अप॰ 2.107; 108.

अस्सासेति आ + √सस के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आश्वासयति], तसल्ली देता है, भरोसा दिलाता है, फिर से प्राणवान् बना देता है – **सि/सयि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अत्तानं मोचेत्वा खिप्पं आगमिस्सतीति अस्सासेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.202; *अस्सासयीति परितोसेन्तो निय्यादेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.271; – **सेसुं** ब॰ व॰ *मयं तयोपि जना ... दिसोदिसं गमिस्सामाति नं अस्सासेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.35; – **सेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *गिलाने अस्सासेत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.226; – **सेतब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *उपासकेन ... उपासको आबाधिको ... चतूहि अस्सासनीयेहि धम्मेहि अस्सासेतब्बो,* स॰ नि॰ 3(2).471.

अस्सित त्रि॰, आ + √सि का भू॰ क॰ कृ॰ [आश्रित], सहारा लिया हुआ, किसी का आश्रय लिया हुआ, किसी पर अवलम्बित रहने वाला, अनुसरण करने वाला, पराधीन, अनुचर – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको अरञ्ञे वनवस्सितो मुनि ... कस्मा भवं विजनमरञ्ञमस्सितो,* स॰ नि॰ 1(1).210–11; *वनवस्सितो मुनीति वनं अवस्सितो बुद्धमुनि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.233; *जनमेवस्सितो ... अस्सितो तण्हाय अल्लीनो परिग्गय्हठितो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.292.

अस्सिरी त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्रीक], शोभा-रहित, अपनी प्रभा या चमक-दमक को खो चुका (व्यक्ति) **री** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्सिरी विय खायति,* नेत्ति॰ 52; *अस्सिरी ... अलक्खिको एव हुत्वा उपट्ठाति,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 250.

अस्सिरीकदस्सन त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्रीकदर्शन], तेजहीन स्वरूप वाला, शोभाहीन, दिखने में शोभा-रहित – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परमदुग्गन्धजेगुच्छं अस्सिरिकदस्सनं नानप्पकारं ... पस्सतीति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 29.

अस्सिलिस पु., [अश्लेषा], 27 नक्षत्रों के बीच नवां नक्षत्र जिसमें पांच तारे होते हैं - *मिगसिरमद्दा च पुनब्बसु फुस्सो चासिलेसा'पि,* अभि. प. 58; सद्द. 2.359; पाठा. अस्सिलिस.

अस्सु[1] √अस (होना) के विधि., प्र. पु., ए. व./प्र. पु., ब. व. में वैकल्पिक रूप, अत्थि के अन्त., द्रष्ट..

अस्सु[2] √सु (सुनना) के अद्य., म. पु., ए. व. का वैकल्पिक रूप, तूने सुनाया - *तानिस्स कम्मायतनानि अस्सु, पुरिसस्स वुत्तिसमोधानताय,* जा. अट्ठ. 3.477; *तत्थ अस्सुति अस्सोसि,* जा. अट्ठ. 3.476.

अस्सु[3] अ., पदपूरणार्थक एवं अवधारणार्थक निपा. [स्म, स्विद्], निश्चित रूप से, वास्तव में - *विसिट्ठकल्याणितरस्सु रूपतो,* वि. व. 319; *अस्सूति निपातमत्तं,* वि. व. अट्ठ. 111; *सहावस्स दस्सनसम्पदाय, तयस्सु धम्मा जहिता भवन्ति,* सु. नि. 233; *आदित्तस्सु नामज्ज वेदियको पब्बतो झायतिसु नामज्ज ... वेदियको ... अहेसुं,* दी. नि. 2.195.

अस्सु[4] नपुं., [अश्रु], आंसू - **स्सूनि** प्र. वि., ब. व. - *वप्पो नेत्तजलास्सूनि,* अभि. प. 260; - **स्सु** प्र. वि., ए. व. - *अस्सु सोमनस्सदोमनस्सविसभागाहारउतूहि समुट्ठहित्वा अक्खिकूपके पूरेत्वा तिट्ठन्ती वा पग्घरन्ती वा आपोधातु,* पटि. म. अट्ठ. 1.72; *पित्तं सेम्हं पुब्बो लोहितं सेदो मेदो अस्सु वसा खेळो सिङ्घाणिका लसिका मुत्तं,* म. नि. 1.247; - **ना** तृ. वि., ए. व. - ..., *अस्सुना पण्णलोचनो,* अप. 2.210; - **म्हि** सप्त. वि., ए. व. - ... *एकेकस्सपि अस्सुम्हि थञ्ञे रुधिरम्हि च पमाणतो ...,* थेरीगा. अट्ठ. 313; - **स्सूनि**[1] प्र. वि., ब. व. - *तस्स अस्सूनि तेसं ... पतन्ति,* जा. अट्ठ. 7.316; - **स्सूनि**[2] द्वि. वि., ब. व. - *अस्सूनि पवत्तयमानो ... पक्कामि,* महाव. 110; - **क** नपुं., अस्सु[4] से व्यु. [अश्रुक], आंसू - **केन** तृ. वि., ए. व. - *तासं रोदन्तीनं भगवतो सरीरं अस्सुकेन मक्खितं,* चूळव. 458; - **किलिन्नमुख** नपुं., तत्पु. स. [अश्रुक्लिन्नमुख], आंसुओं से भींगा हुआ मुख - **खं** द्वि. वि., ए. व. - *अज्जेव तव अस्सुकिलिन्नमुखं हासापेन्तोव आगच्छिस्सामीति ...,* जा. अट्ठ. 3.287; - **जनन** नपुं., तत्पु. स. [अश्रुजनन], आंसुओं को उत्पन्न कर देना - **तो** नपुं., प. वि., ए. व. - *तं अकारणं, सोमनस्सस्सापि अस्सुजननतो,* ध. स. अट्ठ. 297; - **जल** नपुं., तत्पु. स. [अश्रुजल], आंसुओं का पानी - **लं** प्र. वि., ए. व. - *ततो बहुं अस्सुजलं अनप्पकं,* ध. प. अट्ठ. 1.304.

अस्सुणन्त त्रि., √सु (सुनना) के वर्त. कृ. का निषे. [अश्रृण्वत्], नहीं सुन रहा, सुनने में अक्षम - **न्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अचेतनं ब्राह्मण अस्सुणन्तं, ...,* जा. अट्ठ. 3.20; *तत्थ अस्सुणन्तन्ति अचेतनत्ताव असुणन्तं,* तदे..

अस्सुत / असुत त्रि., √सु (सुनना) के भू. क. कृ. का निषे. [अश्रुत], **1.शा. अ.** नहीं सुना गया, न सुना हुआ, वह, जो सुनाई नहीं दिया है, **2.ला. अ.** मूर्ख या अज्ञानी, अप्रशिक्षित, वह, जिसने शास्त्र को या धर्म को नहीं सुना है, **3.** वह, जिसे सुना नहीं गया है, अज्ञात - **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. - *अस्सुतं सावेन्ति, सुतं परियोदापेन्ति,* दी. नि. 3.145; - **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. - *न तुय्हं अदिट्ठं असुतं अमुतं, ... लोके,* सु. नि. 1128; *बहुम्पि ते अदिट्ठन्ति तया चक्खुना अदिट्ठं सोतेन च अस्सुतमेव बहुतरं,* जा. अट्ठ. 3.205; - **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. - *यदा ते चिरवासिमाता अदिट्ठा अहोसि, अस्सुता अहोसि,* स. नि. 2(2).313; - **ते** सप्त. वि., ए. व. - *असुते सुतवादिता,* अ. नि. 3(1).131; - **पुब्ब** त्रि., ब. स. [अश्रुतपूर्व], पहले नहीं सुना गया/सुनी गई, पूर्वकाल में नहीं सुना हुआ - **ब्बा** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. - ... *गाथायो पटिभंसु पुब्बे अस्सुतपुब्बा,* महाव. 5; - **य** तृ. वि., ए. व. - ... *अगतपुब्बाय वा दिसाय अस्सुतपुब्बाय वा नामपञ्ञत्तिया सम्मुय्हेय्याति,* मि. प. 41; - **पुब्बता** स्त्री., भाव., पूर्वकाल में सुना हुआ न रहना - **य** तृ. वि., ए. व. - *तस्सा वचनं सुत्वा नत्थी'ति पदस्स असुतपुब्बताय नत्थिपूवा नाम इदानि भविस्सन्ती'ति, ...,* ध. प. अट्ठ. 2.354; - **भाव** पु., सुना हुआ न रहना - **वं** द्वि. वि., ए. व. - *पुण्णको अत्तनो वचनस्स अस्सुतभावं ञत्वा जिनकदेवपुत्तस्स सन्तिके अट्ठासि,* जा. अट्ठ. 7.162.

अस्सुतवन्तु त्रि., √सु (सुनना) के भू. क. कृ. का निषे. [अश्रुतवत्], **शा. अ.** वह, जिसने सुना नहीं है, **ला. अ.** स्कन्धों, धातुओं, आयतनों तथा स्मृति-प्रस्थानों में पूर्ण ज्ञान को अप्राप्त, अज्ञानी, पृथग्जन - **तवा** पु., प्र. वि., ए. व. - *अस्सुतवाति खन्धधातु आयतनपच्चयाकार-सतिपट्ठानादीसु उग्गहपरिपुच्छाविनिच्छयरहितो,* स. नि. अट्ठ. 2.85; *सो आगमाधिगमाभावा ञेय्यो अस्सुतवा इति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).23; *अस्सुतवा पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावी अरियधम्मस्स अकोविदो ... अविनीतो,* म. नि. 1(1).1-2; - **वतो** पु., ष. वि., ए. व. - *तस्मा अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स चित्तभावना नत्थी'ति वदामी'ति,* अ. नि. 1(1).13.

असुतवादिता स्त्री., अस्सुतवादी का भाव. [अश्रुतवादित्व, नपुं.], किसी सुनी बात को भी न सुनी हुई मानना, ज्ञात

को अज्ञात मानना, आठ प्रकार के अनार्य-व्यवहारों में से एक - **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *दिट्ठे अदिट्ठवादिता, सुते असुतवादिता ... इमे खो, भिक्खवे, अट्ठ अनरियवोहारा'ति,* अ॰ नि॰ 3(1).131.

अस्सुतालाप त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्रुतालाप], वह, जिस ने मनुष्यों के आलाप को पहले कभी नहीं सुना है - **पा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ब्रह्माणो चस्सुतालापा सम्बुद्धा चापि भासरे,* मो॰ प॰ प॰, भूमिका, पृ॰ 2.

अस्सुतावी त्रि॰, वह, जिसने पहले शास्त्रों को या धर्म के उपदेशों को सुना ही नहीं है, पृथग्जन, अज्ञानी - **विनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *बाला ..., दुम्मेधा अस्सुताविनो,* अ॰ नि॰ 1(1).190; *अस्सुताविनोति खेत्तविनिच्छयसवनेन रहिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.141.

अस्सुति स्त्री॰, [अश्रुति], श्रवण-परम्परा का अभाव, अश्रवण, नहीं सुनना - **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अदिट्ठिया अस्सुतिया अञाणा,* सु॰ नि॰ 845; 846.

अस्सुत्थ √सु (सुनना) का अद्य॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰, तुम लोगों ने सुना था - *अस्सुत्थ नो, तुम्हे, भिक्खवे, अभिभुस्स भिक्खुनो ब्रह्मलोके ठितस्स गाथायो भासमानस्सा'ति,* स॰ नि॰ 1(1).184.

अस्सुदं अ॰, *सुदं अथवा अस्सु निपा॰ का परिवर्तित रूप, पदपूरणार्थक अथवा निर्धारणार्थक निपा॰ के रूप में प्रयुक्त,* व्यु॰ संदिग्ध; वास्तव में, निश्चित रूप से - *इमस्सुदं यन्ति दिसोदिसं पुरे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.308; *इमस्सुदन्ति इमे सुदं मया अक्खीनि उम्मीलेत्वा ओलोकितमत्ताव पुब्बे दिसोदिसं,* तदे॰; द्रष्ट॰ सुदं के अन्त॰ (आगे).

अस्सुध अ॰, निपा॰, उपरिवत् - ... *नास्सुध कोचि भगवन्तं उपसङ्कमति,* स॰ नि॰ 3(2).390; *नास्सुधाति एत्थ अस्सुधाति पदपूरणमत्ते अवधारणत्थे वा निपातो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.299; *एवं, भन्ते ति खो ते भिक्खू भगवतो पटिस्सुणित्वा नास्सुध कोचि भगवन्तं उपसङ्कमति,* पारा॰ 347.

अस्सुधारा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अश्रुधारा], आंसुओं की धारा, आंसुओं का लगातार बहाव - **रा**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सुधारा पवत्तयमाना ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.100; - **रा**[2] प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अस्सुधारा पवत्तन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).263; - **रा**[3] द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अस्सुधारा पवत्तेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.289.

अस्सुनेत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्रुनेत्र], आंसुओं से भरपूर नेत्रों वाला / वाली - **त्ता**[1] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ..., *अस्सुनेत्ता रुदंमुखा,* अप॰ 2.235; - **त्ता**[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - ..., *अस्सुनेत्ता रुदंमुखा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.278.

अस्सुपग्घरणक्खि त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्रुप्रघरणाक्ष], लगातार बह रहे आंसुओं से भरी हुई आंखों वाला - **क्खि** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *निप्पखुमक्खि वा अस्सुपग्घरणक्खि वा ... समन्नागतक्खि वा,* महाव॰ अट्ठ॰ 294.

अस्सुमेसज्जामेसज्जपञ्ह पु॰, मि॰ प॰ में मिलिन्द द्वारा आंसू के निर्मल या समल होने के विषय में पूछा गया एक प्रश्न - **ञ्हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सुभेसज्जाभेसज्जपञ्हो छट्ठो,* मि॰ प॰ 83.

अस्सुपात पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्रुपात], आंसुओं का टपकना या गिरना - **तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *थेरस्स अस्सुपातेन मुत्तदिवसो नाम अहोसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).263.

अस्सुपुण्ण त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अश्रुपूर्ण], आंसुओं से भरा हुआ - **ण्णेहि** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अस्सुपुण्णेहि नेत्तेहि रोदित्वा पक्कामि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.286; - **नेत्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्रुपूर्णनेत्र], आंसुओं से भरे हुए नेत्रों वाला - **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *ते तस्स ... अस्सुपुण्णनेत्ता हुत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.8.

अस्सुबिन्दुघटा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अश्रुविन्दुघटा], आंसुओं की बूंदों की बहुलता या अधिकता - **टा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *वारिगणाति अस्सुबिन्दुघटा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.415.

अस्सुमुख त्रि॰, ब॰ स॰ [अश्रुमुख], आंसुओं से भरपूर मुख वाला / वाली - **खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *पितु मरणेन सोकपरिदेवसमापन्नो अस्सुमुखो ... चितकं पदक्खिणं करोति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 34; - **खा** ब॰ व॰ - *अञ्ञे सोचन्ति रोदन्ति, अञ्ञे अस्सुमुखा जना,* जा॰ अट्ठ॰ 3.145; *अस्सुमुखा रुदमाना,* म॰ नि॰ 2.6; - **खं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अस्सुमुखं रोदमानं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.397; - **खानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अस्सुमुखानं रुदन्तानं,* दी॰ नि॰ 1.116; *अस्सूनि मुखे एतेसन्ति अस्सुमुखा, तेसं अस्सुमुखानं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.229; - **खा / खी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *सा दक्खिणा अस्सुमुखा सदण्डा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.60; *तस्स सन्तिकं गन्त्वा अस्सुमुखी रोदमाना ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.157.

अस्सुमेघ पु॰, एक प्रत्येकबुद्ध का नाम - *अथस्सुमेघो अनीघो सुदाठो,* म॰ नि॰ 3.116.

अस्सुमोचन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अश्रुमोचन], आंसुओं को गिराना, रोना, रुदन - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तत्थ रुण्णन्ति*

रुदितं अस्सुमोचनं नहि कातब्बन्ति वचनसेसो, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 15.

अस्सुम्ह √सु (सुनना) का अद्य॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰, हमने सुना था – *अस्सुम्ह अभिभुस्स भिक्खुनो ब्रह्मलोके ठितस्स गाथायो भासमानस्स,* स॰ नि॰ 1(1).184.

अस्सुरोप/असुरोप पु॰, सुरोप का निषे॰, द्वेषभाव, दौर्मनष्य, मन में विद्यमान रोष, मन की अप्रसन्नता, वचन की अपरिपूर्णता – **पो** – *असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स,* ध॰ स॰ 418; *दुरुत्तं अपरिपुण्णमेव होतीति असुरोपो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 297; द्रष्ट॰ असुरोप के अन्त॰ (पीछे).

अस्सुविमोचनमत्त नपुं॰, [अश्रुविमोचनमात्र], केवल आंसुओं को गिराना, रोना, कलपना, रुदन – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न अस्सुविमोचनमत्तेन ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.141.

अस्सुसमुद्द पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्रुसमुद्र], आंसुओं का समुद्र, बहुत सारे आंसू – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोसितो मया अस्सुसमुद्दो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.333.

अस्सुसुक्खनकाल पु॰, तत्पु॰ स॰ [अश्रुशोषणकाल], आसुओं को सूख जाने का समय – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसंयेव एवं रोदन्तानं अस्सुसुक्खनकालो नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.345.

अस्सोसि √सु (सुनना) के अद्य॰ का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, सुना *अस्सोसि खो वेरञ्जो ब्राह्मणो,* पारा॰ 1.

अह[1] **क.** अट्ठ॰ के अनुसार त्रि॰, तुच्छ, घटिया, हीन, निकृष्ट – *अहाति हि लामकपरियायो अहलोकित्थियो नामा'तिआदीसु विय,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 315; **ख.** पा॰ टे॰ सो॰ के शब्दकोश के अनुसार अ॰, निपा॰ [अहो, अहह], आश्चर्य, पीड़ा, अवहेलना, वियोगजनित दुख (का सूचक) शोक, खेद, का सूचक, पा॰ इ॰ डि॰ 91.

अह[2] पु॰/नपुं॰, [अहन्/अहर], दिन – **हं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिवसो तु अहं दिनं,* अभि॰ प॰ 67; – **हो** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निकीळितं निच्चमहो च रत्तिं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.210; – **हस्स/हु** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुब्बापरज्ज सायमज्झेहि अहस्स अन्तो,* मो॰ व्या॰ 3.110; *द्वे पुण्णमायो तदहु अमञ्जहं, दिस्वान ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.203; *अहं तदहू तस्मिं छणदिवसे ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.204; – **हे/हनि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चमे तदहूति तस्मिं अहनि तस्मिं दिवसे ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 241; *तस्मिं अहनि गोपाला लद्धा एकं चतुप्पदं,* म॰ वं॰ 10.14; ... *देवपुत्तस्स इद्धिया तदहेव सावत्थिं पत्वा जेतवनं ... आरोचेसि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 39; – **हानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्च अहानि पञ्चाहं,* क॰ व्या॰ 339.

अहं उ॰ पु॰ सूचक सर्व॰, अम्ह का प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अहं], **1.** मैं – *स्मिही ति किमत्थं? त्वं भवसि, अहं भवामि,* क॰ व्या॰ 139; *अहं पठमं झानं समापज्जामीति वा ...,* स॰ नि॰ 2(1).232; *एतं वो अहमक्खामि,* सु॰ नि॰ 174; *तमहं सारथिं ब्रूमि,* ध॰ प॰ 222; **2.** अधिक सूक्ष्म अर्थ मैं, मेरी आत्मा, मेरा महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, लोक में एकमात्र महत्व वाला मैं – *ये वदन्ति न ते अहं,* स॰ नि॰ 1(1).137; *इमिनाहं सीलेन देवो वा भविस्सामि देवञ्ञतरो वा,* विसुद्धि॰ 1.12; – **मं/ममं/मे** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, मुझ को, मुझे – **मं** – *न मं मिगा उत्तसन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.93; *न मं वञ्चेसि ब्राह्मणो,* सु॰ नि॰ 358; – **ममं** – *ममं भुत्वा वने वसाति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.47; *अलञ्हि ते जग्घिताये, ममं दिस्वान एदिसं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.197; – **मे** – *तत्थ सो मं डहतीति सो मे डहति, अयमेव वा पाठो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.449; *तं मे तपति नो इदं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.367; – **मया/मे** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, मेरे द्वारा, मेरे साथ – *सो मया ... पुट्ठो ... पटिचरि,* म॰ नि॰ 2.232; *यं मया पकतं कम्मं,* थेरगा॰ 80; – **मया/ममतो/मम/मे** प॰ वि॰, ए॰ व॰, मुझ से, **क.** तुल॰ विशे॰ के साथ संबद्ध, **ख.** ममतो – *ममतोपि सुरूपिनिं,* अप॰ 2.244; **ग.** मम – *भिन्नं वतिदं कुलं ममा'ति चिन्तयतो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.279; *ममाति मया, अयमेव वा पाठो,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 2.238; **घ.** मे *न मे समण मोक्खसी'ति,* महाव॰ 27; – **मय्हं/ममं/मे/मम क.** च॰ वि॰, ए॰ व॰, मेरे लिए, मुझ को – *सब्बञ्ञुतं पियं मय्हं,* चरिया॰ 1, 3, 8; *अद्धा हि सो भक्खो मम मनापो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.495; *न सा ममं अप्पिया भूमिपाल,* जा॰ अट्ठ॰ 207; *तेन मे समणा पिया,* थेरीगा॰ 278; **ख.** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – मेरा/मेरी – *पुत्तो ममं ओरसको समानो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.42; *तं तत्थ अवधी सेनो, पेक्खतो सुधरे ममा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.247; *अरोगा मय्ह मातरो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.27; *पुब्बेव मे, भिक्खवे, सम्बोधा ... एतदहोसि,* अ॰ नि॰ 1(1).292; – **मयि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰, मुझ में, मेरे विषय में – *किन्ति वो, भिक्खवे, मयि होति,* म॰ नि॰ 3.25; *सादियतु नु खो, महाराज, अथ महापथवी सब्बबीजानि मयि संविरूहन्तूति,* मि॰ प॰ 110; – **मयं/अम्हे/अस्मा/नो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, हम – *तेविज्जा मयमस्मुभो,* सु॰ नि॰ 599; *उपसङ्कमित्वा अम्हे एतदवोच,* स॰ नि॰ 1(1).139; *मयमस्माम्हस्स,* मो॰ व्या॰ 2.211; *अङ्गमासे असम्पत्ते, चतुसच्चं फुसिम्ह नो,* अप॰ 2.265; – **अम्हे/अस्मे/अम्हं/अम्हाकं/अम्हानं/नो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰, हमको, हमें, हम लोगों को – *अम्हे च भरिया*

नातिक्कमन्ति, जा॰ अट्ठ॰ 4.47; *अस्माभिजप्पन्ति जना अनेका'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.317; *तत्थ त्यम्हन्ति ते दारका अम्हाकं तत्थ अरञ्ञे ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.267; *अम्हाकं पस्सासि, अम्हे पस्ससि वा,* क॰ व्या॰ 162; *मा नो अज्ज विकन्तिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.363; *त्यम्हं तत्थ रमेस्सन्ति, अरञ्ञे जीवसोकिनन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.267; *कच्चायने तुम्हानं अम्हानन्ति च पठमा-दुतिया बहुवचनं,* सद्द॰ 1.289;– **अम्हेहि / अस्माहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰, हमारे द्वारा – *अतिथी खो पनम्हेहि सक्कातब्बा ...,* दी॰ नि॰ 1.103; *अस्माभि परिचिण्णोसि,* अप॰ 2.208; *न नो विवाहो नागेहि, कतपुब्बो कुदाचनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.6; – **अम्हेहि** प॰ वि॰, ब॰ व॰, हम से, हम लोगों से, हम लोगों की अपेक्षा से – *चत्तारो महाराजानो अम्हेहि अभिक्कन्ततरा च पणीततरा च,* दी॰ नि॰ 1.199; – **अम्हाकं / अस्माकं / अम्हं / नो** च॰ वि॰, ब॰ व॰, हमारे लिए, हम लोगों के लिए – *अम्हाकञ्च कता पूजा, दायका च अनिप्फला,* खु॰ पा॰ 7.5; *दुल्लभो अङ्गसम्पन्नो, खन्तिरस्माक रुच्चती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.174; *वने वाळमिगाकिण्णे, हिंसा अम्हं न विज्जति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.311; *तं नो वद पुच्छितो बुद्धसेट्ठ,* सु॰ नि॰ 385; – **अम्हाकं / अस्माकं / अम्हं / अम्हानं / नो** ष॰ वि॰, ब॰ व॰, हमारा, हमारी, हमारे – *ये खो पन, भो, केचि ... अम्हाकं गामखेत्तं आगच्छन्ति अतिथी नो ते होन्ति ... अतिथि खो पनम्हेहि सक्कातब्बो ... इमिनापङ्गेन न अरहति सो भवं गोतमो अम्हाकं दस्सनाय उपसङ्कमितुं,* दी॰ नि॰ 1.103; *तस्मा हि अम्हं दहरा न मीयरे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.47; *न नो समं अत्थि तथागतेन,* खु॰ पा॰ 6.3; – **अम्हेसु / अस्मेसु / अस्मासु / अस्मसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰, हम लोगों में, हमारे बीच मे – *इतिपेतं भूतं, इतिपेतं तच्छं, अत्थि चेतं अम्हेसु, संविज्जति च पनेतं अम्हेसू'ति,* दी॰ नि॰ 1.3; *त्वं अम्हेसु एकेकं खादितुकामोसी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.218; *न चायं किञ्चि रस्मासु, सत्तूव समपज्जथ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.344; *यं किच्चं परमे मित्ते, कतमस्मासु तं तया, पत्ता निस्संसयं त्याम्हा, भत्तिरस्मासु या तव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.348.

अहकं सर्व॰, अम्ह का प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अहं का स्थानापन्न रूप, मैं – *सब्बस्स अम्हसद्दस्स सविभत्तिकस्स अहं अहकं इच्चादेसा होन्ति सिम्हि विभत्तियं,* सद्द॰ 3.656; *अहकन्ति रूपन्तरम्पि इच्छितब्बं,* सद्द॰ 1.289.

अहंकार पु॰, अहं + √कर से व्यु॰, *क्रि॰ ना॰, प्रायः 'ममकार' के साथ प्रयुक्त* [अहङ्कार], 1. 'मैं एक नित्य, आनन्दमय एवं चित्स्वरूप आत्मा हूं' इस प्रकार की मिथ्या-धारणा – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मानो अहङ्कारो,* सद्द॰ 554; *गब्बो'भिमानो'हङ्कारो,* अभि॰ प॰ 171; *अहस्मीति मञ्ञमानो सो समुन्नतिलक्खणो, केतुसम्पग्गहरसो, अहंकारो'ति गय्हति,* ना॰ रू॰ प॰ 2.112; – **रा** ब॰ व॰ – *अहङ्कारा च मे उपरुज्झिस्सन्ति, ममङ्कारा ...,* अ॰ नि॰ 2(2).143; *अहंकाराति अहंकारदिट्ठि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.144; 2. "यह आत्मा और संसार स्वयंकृत है", इस प्रकार की मिथ्या-मान्यता, कर्ता के रूप में, 'मैं' को मानने की भ्रान्त-धारणा, अपने कारकभाव का भ्रम – *अहंकारपसुतायं पजा, परंकारूपसंहिता,* उदा॰ 152; ... *सयंकतो अत्ता च लोको चाति एवं वुत्तसयंकारसङ्खातं अहङ्कारं ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 282; – **दिट्ठि** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अहङ्कारदृष्टि], मैं आत्मा हूं, नित्य व्यक्तित्व हूं, आदि रूप की मिथ्या-धारणा, मैं और मेरेपन का भ्रम – **ट्ठि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहङ्कारममङ्कारमानानुसयाति अहङ्कारदिट्ठि च ममङ्कारतण्हा च मानानुसयो चाति अत्तनो च परस्स च किलेसा, ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.101–102; – **पसूत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [अहङ्कारप्रसूत], 'आत्मा या लोक स्वयं अपने द्वारा कृत है', इस मिथ्या-धारणा से ग्रस्त, अहंकार की मिथ्यादृष्टि में फंसा हुआ – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहंकारपसुतायं पजा,* उदा॰ 152; *तत्थ 'अहङ्कारपसुतायं पजा'ति सयंकतो अत्ता च लोको चाति एवं वुत्तसयंकारसङ्खातं अहङ्कारं तथापवत्तं दिट्ठिं पसुता अनुयुत्ता अयं पजा मिच्छाभिनिविट्ठो सत्तकायो,* उदा॰ अट्ठ॰ 282; – **मल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अहङ्कारमल], नित्य एवं आनन्दमय आत्मा की भ्रान्त-धारणा के कारण उत्पन्न चित्त का मल या अशुद्धि – ... *इस्सामच्छरियाहङ्कारादिमलानं सुप्पहीनत्तं दीपेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 200; – **रस** त्रि॰, ब॰ स॰ [अहङ्काररस], अहंकार के विशिष्ट लक्षण से युक्त – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उण्णतिलक्खणो मानो, अहंकाररसो, उद्धुमातभावपच्चुपट्ठानो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).114; – **वत्थु** नपुं॰, अहङ्कार का भावात्मक अस्तित्व, भाव या वस्तुसत् रूप में अहङ्कार, वस्तुरूप में "मैं" की धारणा – **त्थु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ वा अत्ताति अहङ्कारवत्थु, लोकोति ममङ्कारवत्थु,* उदा॰ अट्ठ॰ 280.

अहंपुब्बिका स्त्री॰, [अहम्पूर्विका], स्वयं को होड़ में सबसे पूर्व या प्रथम रखने की मनोवृत्ति, होड़ लगाकर सैनिकों की दौड़, होड़, प्रतियोगिता, डींग, आत्मश्लाघा – **का** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरतो पुरतो चाहंपुब्बिकाय निरग्गलं,* चू॰ वं॰ 89.29.

अहट्ठ त्रि॰, √हस (हंसना, प्रसन्न होना) के भू॰ क॰ कृ॰ का निषे॰ [अहृष्ट], अप्रसन्न, नहीं खिला हुआ, प्रसन्नता से

रहित – **ट्ठानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. *इन्द्रियानि अहट्ठानि, सावं जातं मुखं तव,* जा. अट्ठ. 7.31; *तत्थ अहट्ठानीति न विप्पसन्नानि,* तदे.; **लोम** त्रि., ब. स. [अहृष्टलोम], **शा. अ.** वह, जिसके रोंगटे या रोएं खड़े न हो गए हैं, **ला. अ.** निर्भय, निडर, आश्वस्त **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अलोमहट्ठोति निब्भयो अहट्ठलोमो हुत्वा पुच्छ, महाराजाति,* जा. अट्ठ. 6.119.

अहत त्रि., √हन (मारना, पीटना) के भू. क. कृ. का निषे. [अहत्], **शा. अ.** नहीं मारा गया, नहीं पीटा गया, **ला. अ.** (केवल वस्त्र के ही सन्दर्भ में), अभी तक नहीं धोया गया (वस्त्र, कठिनचीवर), कोरा, नया, अपरिभुक्त, प्रयोग में न आया हुआ - **तं** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *अथो वत्थं अहतं ति मतं नवं,* अभि. प. 293; – **तानं** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *अनुजानामि, भिक्खवे, अहतानं दुस्सानं अहतकप्पानं दिगुणं सङ्घाटिं,* महाव. 381; – **तेन** तृ. वि., ए. व. – *अहतेन अत्थतं होति कथिनं,* महाव. 332; *अहतेनाति अपरिभुत्तेन,* महाव. अट्ठ. 370; ... *रञ्ञो चक्कवत्तिस्स सरीरं अहतेन वत्थेन वेठेन्ति,* दी. नि. 2.107; *अहतेन वत्थेनाति नवेन कासिकवत्थेन,* दी. नि. अट्ठ. 2.157; – **तेहि** तृ. वि., ब. व. - ... *नेमित्ते ब्राह्मणे अहतेहि वत्थेहि अच्छादापेत्वा* ..., दी. नि. 2.15; – **कप्प** त्रि., [अहतकल्प], लगभग नया जैसा (वस्त्र), एक या दो बार धोया हुआ (वस्त्र, चीवर) – **प्पेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *अहतकप्पेन अत्थतं होति कथिनं,* महाव. 332; *अहतकप्पेनाति अहतसदिसेन एकवारं वा द्विक्खत्तुं वा धोतेन,* महाव. अट्ठ. 370; – **वत्थ** नपुं., कर्म. स. [अहतवस्त्र], नया वस्त्र, कोरा वस्त्र, नहीं धोया गया नया कपड़ा – **त्थानि** द्वि. वि., ब. व. – ... *ताता, खिप्पं मं गन्धोदकेन न्हापेत्वा अहतवत्थानि निवासापेत्वा ... नावाय धुरे ठपेथा'ति,* जा. अट्ठ. 4.129; *सो ... अहतवत्थानि निवासेत्वा ... गेहं आगन्त्वा निसीदि,* ध. प. अट्ठ. 1.362; – **वत्थनिवत्थ** त्रि., नए वस्त्र को धारण किया हुआ – **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. *सब्बेसं पच्छतो सयं महासेट्ठि अहतवत्थनिवत्थो अहतवत्थनिवत्थेहेव पञ्चहि ... अब्भुग्गच्छि,* जा. अट्ठ. 1.102; – **साटक** पु., कर्म. स. [अहतशाटक], नया या नहीं धोया हुआ कोरा वस्त्र – **के** द्वि. वि., ब. व. – *सो पुब्बे ... अहतसाटके निवासेतुं ... न लभि,* ध. प. अट्ठ. 1.362; *ते तस्स ... सज्झाय अहतसाटके चीवरङ्ककरस्स दत्वा तं गण्हित्वा गच्छन्ति,* जा. अट्ठ. 1.217.

अहत्थ त्रि., ब. स. [अहस्त], बिना हाथ वाला, लूला, बेहाथ - **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. – *भिन्नगलो वा ... अहत्थो वा एकहत्थो वा ... गोधागत्तो वा ...,* महाव. अट्ठ. 295; – **पास** पु., हत्थपास का निषे. [अहस्तपार्श्व], **शा. अ.** एक हाथ की दूरी, बहुत अधिक समीपता **से** सप्त. वि., ए. व. – *अहत्थपासे कतं होति,* पाचि. 114; *कतं अहत्थपासेपि, न च भुत्ताविना कतं,* उत्त. वि. 643; **ला. अ.** त्रि., अनिकटवर्ती, पकड़ से बाहर स्थित, अगोचर, अविषय – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अहत्थपासो मारस्स,* ..., थेरगा. 888; *अहत्थपासो मारस्साति किलेसमारादीनं अगोचरो,* थेरगा. अट्ठ. 2.284.

अहनन्त त्रि., √हन (हत्या करना, मार डालना) के वर्त. कृ. का निषे., प्राणघात नहीं कर रहा, प्राण नहीं ले रहा, हत्या नहीं कर रहा – **न्तं** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *अहनं अघातयं ... असोचापयं धम्मेना'ति,* स. नि. 1(1).137.

अहन्तु पु., √हन (हत्या करना) के क. ना. का निषे. [अहन्तृ], प्राणि-हत्या न करने वाला, प्राणातिपात से विरत – **न्तारं** द्वि. वि., ए. व. – *अहन्तारमहन्तारं, यो नरो हन्तुमिच्छति,* जा. अट्ठ. 3.175.

अहमहंकर त्रि., [अहमहङ्कर], होड़ या प्रतियोगिता में 'पहले में', 'पहले मैं' की इच्छा रखने वाला, होड़ में प्रथम रहने को आतुर – **रा** पु., प्र. वि., ब. व. – *तत्थ अहं पुरेति अहं पुरिमं अहं पुरिमन्ति अहमहंकराति अत्थो,* वि. व. अट्ठ. 297.

अहमहमिका स्त्री., [अहमहमिका], प्रतिस्पर्धा या होड़ में स्वयं को आगे रखने की ललक, प्रतिस्पर्धा, होड़, ईर्ष्या – *यो'हङ्कारो'ञ्ञमञ्ञस्स सा'हमहमिका भवे,* अभि. प. 397.

अहंमान पु., [अहंमान], "मैं नित्य एवं आनन्दरूप आत्मा हूं" इस प्रकार की भ्रान्त-धारणा, 'मैं' के विषय में मिथ्याधारणा, अहङ्कार – *अत्थन्तरवसेन पन आहितो अहंमानो एत्थाति अत्ता अत्तभावो'ति च,* सद्द. 2.360.

अहह 1. नपुं., बहुत बड़ी संख्या की एक इकाई, एक पर 70 शून्य वाली ऊंची संख्या - **हं** प्र. वि., ए. व. *निन्नहुतसतसहस्सानं सतं अक्खोहिणी, तथा विन्दु, ..., अहहं, ... कथानं महाकथानं असङ्खेय्यं,* क. व्या. 397; *अहहं अबबं चेवाटटं सोगन्धिकुप्पलं,* अभि. प. 475; *वीसति अटटानि एकं अहहं,* सद्द. 3.802; **2.** पु., एक नरक, जिसमें पापी व्यक्ति को एक अहह वर्षों तक रहना होता है – **हो** प्र. वि., ए. व. – *सेय्यथापि भिक्खु, वीसति अबबा निरया, एवमेको अहहो निरयो,* अ. नि. 3(2).147.

अहहा निपा., अ. [अहहा], शोक, खेद, आश्चर्य, दया एवं तरस आदि का सूचक, अरे, हाय-हाय, ओहो हो, उफ - *अहहा बाललपना, परिवज्जेथ जग्गतो'ति*, जा. अट्ठ. 3.397; *तत्थ अहहाति संवेगदीपनं*, तदे..

अहापयन्त त्रि., √हा (त्यागदेना) के प्रेर. के वर्त. कृ. का निषे. [अहापयत्], बरबाद न करता हुआ, नहीं छोड़ता हुआ, उपेक्षा या तिरस्कार न करता हुआ - **यं** पु., प्र. वि., ए. व. - *ओवादकारी भतपोसी, कुलवंसं अहापयं*, अ. नि. 2(1).39.

अहापितग्गि त्रि., ब. स. [अहावितागिन], अग्नि में आहुतियां न डालने वाला, अग्नि को प्रज्वलित न करने वाला - *अभिन्नकट्ठोसि अनाभतोदको, अहापितग्गीसि असिद्धभोजनो*, जा. अट्ठ. 5.192.

अहापेत्वा √हा (त्याग देना) के प्रेर. के पू. का. कृ. का निषे., किसी भी चीज को नहीं छोड़कर - *पुट्ठो खो पन पञ्हाभिनीतो अहापेत्वा अलम्बित्वा परिपूरं वित्थारेन ... होति*, अ. नि. 1(2).89; *अहापेत्वा ... अपरिहीनं ... कत्वा*, अ. नि. अट्ठ. 2.311

अहारिय त्रि., √हर (ले जाना) के सं. कृ. का निषे. [अहार्य], दूर न ले जाए जाने योग्य, हरण नहीं किए जाने योग्य, नहीं चुराने या लूटने योग्य - *किंसु नरानं रतनं, किंसु चोरेह्यहारिय'न्ति*, स. नि. 1(1).42.

अहारियरजमत्तिक त्रि., ब. स. [अहार्यरजमृत्तिक], वह, जिसके द्वारा राग की धूल और मिट्टी न हटाई जा सके - **के** पु., सप्त. वि., ए. व. - *रहदेहमस्मि ओगाळ्हो, अहारियरजमत्तिके*, थेरगा. 759; - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *अहारियरजमत्तिकेति अपनेतुं असक्कुणेय्यो रागादिरजो मत्तिका कद्दमो एतस्साति अहारियरजमत्तिको, रहदो ...*, थेरगा. अट्ठ. 243.

अहारी त्रि., हारी का निषे. [अहारिन्], बाहर की ओर न ले जाने वाला, बाहर की ओर न निकालने वाला - *एको उदकमणिको अच्छिद्दो अहारी अपरिहारी*, स. नि. 2(2).302; *अहारी अपरिहारीति उदकं न हरति न परिहरति, न परियादियतीति अत्थो*, स. नि. अट्ठ. 3.142.

अहालिद्द त्रि., हालिद्द का निषे. [अहारिद्र], **शा. अ.** हल्दी की तरह हल्के रंग से नहीं रंगा हुआ, **ला. अ.** स्थिर, क्षण-क्षण में रंग न बदलने वाला - *यस्स चित्तं अहालिद्दं*, जा. अट्ठ. 3.76; *यस्स पुग्गलस्स चित्तं अहालिद्दं हलिद्दिरागो विय खिप्पं न विरज्जति, थिरमेव होति*, तदे..

अहास पु., हास का निषे., तत्पु. स. [अहास], अत्यधिक खुशी में न फूल जाना, नहीं इठलाना - **सो** प्र. वि., ए. व. - *अहासो अत्थलाभेसु*, जा. अट्ठ. 3.411; *अहासो अत्थलाभेसूति महन्ते इस्सरिये उप्पन्ने अप्पमादवसेन अहासो अनुप्पिलावितत्तं ततियं साधु*, तदे..

अहासधम्म पु., हासधम्म का निषे., तत्पु. स. [अहासधर्म], मौजमस्ती या आनन्द का अभाव - *उदके अहसधम्मे अहसधम्मसञ्ञी, अनापत्ति*, पाचि. 152.

अहासि √हर (ले जाना, छीन लेना) के अद्य. का प्र. पु., ए. व., उसने छीन लिया, चुरा लिया, लूट लिया - *अक्कोच्छि मं अवधि मं, अजिनि मं अहासि मे*, ध. प. 4; *अहासि मेति मम सन्तकं पत्तादीसु किञ्चिदेव अवहरि*, ध. प. अट्ठ. 1.29; *पनुण्णकोधो ..., यो ब्राह्मणो सोकमलं अहासि*, सु. नि. 473-74.

अहि[1] √अस (होना) के अनु. का म. पु., ए. व., तुम हो, अत्थि के अन्त. द्रष्ट. (ऊपर).

अहि[2] पु., [अहि], सांप, सर्प-प्रजाति के अन्तर्गत आने वाला अजगर, नाग आदि - **हि** प्र. वि., ए. व. - *आसीविसो भुजङ्गो'हि भुजगो च भुजङ्गमो*, अभि. प. 653; *अपदानं अहि मच्छा ... तत्थ अहिग्गहणेन सब्बापि अजगरगोनसादिभेदा दीघजाति सङ्गहिता*, पारा. अट्ठ. 1.206; - **हिं** द्वि. वि., ए. व. - *अहिं कीळापेन्तो बाराणसियं ... विचरि*, जा. अट्ठ. 3.171; - **ना** तृ. वि., ए. व. - *तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु अहिना दट्ठो होति*, महाव. 282; - **स्स** ष. वि., ए. व. - *अहिस्स कुणपं अहिकुणपं*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).159.

अहिंसक[1] त्रि., [अहिंसक], हिंसा न करने वाला, दूसरे प्राणियों को उत्पीड़ित न करने वाला - **को** पु., प्र. वि., ए. व. - *स वे अहिंसको होति, यो परं न विहिंसती'ति*, स. नि. 1(1).192; *तत्थ अहिंसकोति अहं कस्सचि अहिंसको सीलाचारसम्पन्नो*, जा. अट्ठ. 4.405; - **का** ब. व. - *अहिंसका अतीतंसे, छ सत्थारो यसस्सिनो*, अ. नि. 2(2).83; *अहिंसका अतीतंसेति एते छ सत्थारो अतीतंसे अहिंसका अहेसुं*, अ. नि. अट्ठ. 3.124.

अहिंसक[2] पु., **1**. अंगुलिमाल का मूल नाम, श्रावस्ती के राजपुरोहित भार्गव का पुत्र, जन्म होते ही राजा का चित्त बेचैन हो गया, अतः इसका नाम हिंसक हुआ, पीछे यही नाम अहिंसक में बदल गया - *तस्स नामं करोन्ता यस्मा जायमानो रञ्ञो चित्तं विहेसेन्तो जातो, तस्मा हिंसकोति*

कत्वा पच्छा दिट्ठं अदिट्ठन्ति विय अहिंसकोति वोहरिंसु, थेरगा. अट्ठ. 2.275; *अहिंसको ति मे नामं हिंसकस्स पुरे सतो,* म. नि. 2.315; 2. भारद्वाज का दूसरा नाम, क्योंकि उन्होंने भगवान बुद्ध से अहिंसक के विषय में प्रश्न पूछा था - *नामेन वा एस अहिंसको, गोत्तेन भारद्वाजो,* स. नि. अट्ठ. 1.203.

अहिंसन्त त्रि., √हिंस (हिंसा करना) के वर्त. कृ. का निषे. [अहिंसत्], हिंसा नहीं कर रहा, हिंसक मनोवृत्ति से मुक्त रहने वाला, पीड़ा न पहुंचाने वाला, हानि न पहुंचाता हुआ - **सं** पु., प्र. वि., ए. व. - *अहिंसं सब्बगत्तानि, सल्लं मे उद्धरिस्सति,* थेरगा. 757.

अहिंसककुल नपुं., तत्पु. स. [अहिंसककुल], हिंसा से बिलग रहने वाला कुल या वंश - **ले** सप्त. वि., ए. व. - *मयं अहिंसककुले जाता, न सक्का आचरियाति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.235.

अहिंसकपञ्ह नपुं., भारद्वाजगोत्रीय ब्राह्मण द्वारा बुद्ध से पूछा गया अहिंसक-विषयक प्रश्न - **ञ्हं** द्वि. वि., ए. व. - *पञ्चमे अहिंसकभारद्वाजोति भारद्वाजोवेस, अहिंसकपञ्हं पन पुच्छि, तेनस्सेतं सङ्गीतिकारेहि नाम गहितं,* स. नि. अट्ठ. 1.203; - **सुत्त** नपुं., स. नि. का एक सुत्त, स. नि. 1(1).191-92; स. नि. अट्ठ. 1.203.

अहिंसकहत्थ त्रि., ब. स. [अहिंसकहस्त], हिंसा न करने वाले हाथों से युक्त, हिंसाविरत हाथों वाला - **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. - *अदुब्भपाणीति अहिंसकहत्थो हत्थसंयतो,* पे. व. अट्ठ. 102.

अहिंसन नपुं., [अहिंसन], हिंसा न करना - **नेन** तृ. वि., ए. व. - *तत्थ अहिंसाति अहिंसनेन,* ध. प. अट्ठ. 2.229.

अहिंसयन्त त्रि., √हिंस के ना. धा. के वर्त. कृ. का निषे., हिंसा नहीं कर रहा - **यं** पु., प्र. वि., ए. व. - *अहिंसयं परं लोके, पियो होहिसि मामकोति,* मि. प. 179.

अहिंसा स्त्री., हिंसा का निषे., तत्पु. स. [अहिंसा], प्राणियों की हत्या या उन्हें किसी प्रकार की पीड़ा या हानि पहुंचाने से चित्त की विरति, करुणा-भावना, करुणा उत्पन्न होने से पूर्व करुणा की आधारभूत चित्तवृत्ति - **सा** प्र. वि., ए. व. - *सब्भि दानं उपञ्ञत्तं, अहिंसा संयमो दमो,* स. नि. 1(1).176; *अहिंसाति करुणा चेव करुणापुब्बभागो च,* अ. नि. अट्ठ. 2.134; *अहिंसा सब्बपाणानं, अरियोति पवुच्चति,* ध. प. 270; *तत्थ अहिंसाति अहिंसनेन,* ध. प. अट्ठ. 2.229 - **य**[1] सप्त. वि., ए. व. - *यस्स सब्बमहोरत्तं अहिंसाय रतो मनो,* स. नि. 1(1).241; *अहिंसायाति करुणाय चेव करुणापुब्बभागे च,* स. नि. अट्ठ. 1.268; - **य**[2] तृ. वि., ए. व. - *अहिंसाय चर लोके, पियो होहिसि मंमिव,* जा. अट्ठ. 4.64; *अहिंसायाति अहिंसाय समन्नागतो हुत्वा लोके चर,* जा. अट्ठ. 4.65.

अहिंसानिग्गहपञ्ह पु., मि. प. में राजा मिलिन्द द्वारा अहिंसा एवं निग्गह-विषयक बुद्धवचनों की असङ्गति के विषय में पूछा गया प्रश्न - **ञ्हो** प्र. वि., ए. व. - *अहिंसानिग्गहपञ्हो एकादसमो,* मि. प. 179-180.

अहिंसारतिनी स्त्री., ब. स. [अहिंसारतिका], अहिंसा में रमण करने वाली, अहिंसक चित्तवृत्ति के विकास में लगी हुई - *साहं अहिंसारतिनी, कामसा धम्मचारिनी,* जा. अट्ठ. 4.285; *अहिंसारतिनीति अहिंसासङ्खाताय रतिया समन्नागता,* जा. अट्ठ. 4.286.

अहिक त्रि., अह से व्यु., *केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त* [आहिक], दिनों वाला, एकाहिक, द्वीहिक, पञ्चाहिक, सत्ताहिक आदि के अन्त. द्रष्ट..

अहिकञ्चुक पु., तत्पु. स. [अहिकञ्चुक], सांप की केंचुली या त्वचा - **स्स** ष. वि., ए. व. - *करण्डाति इदम्पि अहिकञ्चुकस्स नामं, न विलीवकरण्डकस्स, अहिकञ्चुको हि अहिना सदिसोव होति,* दी. नि. अट्ठ. 1.180; तुल. करण्ड.

अहिकुणप नपुं., कर्म. स. [अहिकुणप, त्रि., पु., नपुं.], सड़ा-गला सांप, मुर्दे जैसी दुर्गन्ध देने वाला सांप, बदबूदार सांप का मृत शरीर - **पं** प्र. वि., ए. व. - *तमेनं सामिका अहिकुणपं वा कुक्कुरकुणपं वा मनुस्सकुणपं वा, ...,* म. नि. 1.38; *तत्थ कुणपन्ति मतकलेवरं, अहिस्स कुणपं अहिकुणपं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).159; - **पेन** तृ. वि., ए. व. - *इत्थी वा पुरिसो वा ... अहिकुणपेन वा कुक्कुरकुणपेन वा मनुस्सकुणपेन वा कण्ठे आसत्तेन अट्टियेय्य ...,* म. नि. 1.170; *अहिकुणपेनातिआदि अतिजेगुच्छपटिकूलकुणपदस्सनत्थं वुत्तं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).404.

अहिकुण्ठिक / अहिकुण्डिक / अहिगुण्टिक द्रष्ट. अहिगुण्ठिक के अन्त. (आगे).

अहिगुण्ठिक पु., अहितुण्डिक का अप., अहितुण्डिक के अन्त., द्रष्ट. (आगे).

अहिगुण्ठिकजातक नपुं., अहितुण्डिकजातक के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

अहिग्गाह पु., [अहिग्राह], सांप को पकड़ने वाला, संपेरा, नट – *यावतत्थि अहिग्गाहो, मया भिय्यो न विज्जती'ति,* जा. अट्ठ. 7.36.

अहिच्छत्त पु., नागों का एक राजा – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *तं अहिच्छत्तो नाम नागराजा पटिग्गहेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.139.

अहिच्छत्तक पु./नपुं., [अहिच्छत्रक], कुकुरमुत्ता – **को** प्र. वि., ए. व. – *सेय्यथापि नाम अहिच्छत्तको, एवमेव पातुरहोसि,* दी. नि. 3.64; – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सूकरेहि महितप्पदेसे जातं अहिच्छत्तकन्ति,* उदा. अट्ठ. 324; – **कानि** ब. व. – *तं सुत्वा नागो ... एसिकत्थम्भे सोण्डाय पलिवेठेत्वा अहिच्छत्तकानि विय लुञ्चित्वा ...,* जा. अट्ठ. 2.78; – **पिण्डिकवण्ण** त्रि., ब. स. [अहिच्छत्रपिण्डिकावर्ण], कुकुरमुत्तों के पिण्ड या गोले के स्वरूप वाला – **ण्णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तं वण्णतो सेतं अहिच्छत्तकपिण्डिकवण्णं, दधिभावं असम्पत्तदुद्दखीरवण्णन्तिपि वत्तुं वट्टति,* विभ. अट्ठ. 231; – **मकुल** पु., तत्पु. स. [अहिच्छत्रमुकुल], अधखिला कुकुरमुत्ता, पूरी तरह से तैयार न होने वाला कुकुरमुत्ता, कुकुरमुत्ता की कली – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *यथा पन अहिच्छत्तकमकुलं पथवितो उट्ठहन्तं पंसुचुण्णं गहेत्वाव उट्ठहति,* विभ. अट्ठ. 22; – **लानि** ब. व. – *कुद्दालेन आहताहतट्ठाने अहिच्छत्तकमकुळानि विय कुम्भियो उट्ठहिंसु,* अ. नि. अट्ठ. 1.148.

अहित 1. त्रि., हित का निषे., तत्पु. स. [अहित], अकल्याणकारक, हित या भलाई न करने वाला, अपथ्यकर, हानिकारक – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – ..., *अहितं मय्ह पिप्फली'ति,* जा. अट्ठ. 3.73; *अहितन्ति यं एतं तव कटुकभण्डसङ्खातं पिप्फलि, एतं मय्हं अहितं असप्पायन्ति,* जा. अट्ठ. 3.74; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अहितो भवति ञातीनं, सकुणानंव चेतको,* जा. अट्ठ. 3.314; *सो हि अहितो भवति ञातीनं, विनासमेव वहति,* जा. अट्ठ. 3.315; – **ता** ब. व. – *इमे धम्मा हिता, इमे धम्मा अहिता,* मि. प. 35; **2.** पु., शत्रु, प्रतिद्वन्दी – *पच्चत्थिको परिपन्थी पटिपक्खा'हितापरो,* अभि. प. 344; – **तो** प्र. वि., ए. व. – *महाहितं वरददं, अहितोति विसङ्कितो,* अप. 2.218; – **ते** द्वि. वि., ब. व. – *तथेव त्वम्पि अहितहिते, समं मेत्ताय भावय,* जा. अट्ठ. 1.33; – **तेसु** सप्त. वि., ब. व. – *अहितेसुपि हितेसुपि एकचित्तो भवेय्यासि,* जा. अट्ठ. 1.32; **3.** नपुं., हानि, कष्ट, पीड़ा, त्रास – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *अहितं वत ते ञाति, मन्तयिंसु रहोगता,* जा. अट्ठ. 7.282; – **ताय** च. वि., ए. व. – *मा ते अहोसि दीघरत्तं अहिताय दुक्खाया'ति,* म. नि. 1.416; – **काम** त्रि., [अहितकाम], किसी का अहित करने की इच्छा रखने वाला, हानि पहुंचाने की कामना करने वाला – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *पुरिसो अनत्थकामो अहितकामो ... मारस्सेतं पापिमतो अधिवचनं,* म. नि. 1.167; – **मा** ब. व. – *तस्स ये केचि अहितकामा उपगन्त्वा तं न पस्सन्ति,* मि. प. 190; – **चित्त** त्रि., ब. स. [अहितचित्त], दूसरों का अहित करने की बात सोचने वाले चित्त से युक्त – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *भिसक्को सल्लकत्तो अहितचित्तो भेसज्जेन अनुलिम्पति,* मि. प. 120; – **तज्झासय** त्रि., ब. स. [अहिताध्याशय], उपरिवत् – **या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *पादपरिचारिका नाम सामिकानं हितज्झासया अप्पका, अहितज्झासयाव बहुतरा, हितज्झासया ... अहितज्झासया'ति,* जा. अट्ठ. 5.33; – **फस्स** पु., [अहितस्पर्श], हित न करने वाला संपर्क, हानिप्रद स्पर्श – **स्सेन** तृ. वि., ए. व. – *तेसु फस्सेसु अहितफस्सेन फुट्ठा सत्ता हितफस्सोपि ... करोन्ता ...,* जा. अट्ठ. 6.51; – **विञ्ञाण** नपुं., कर्म. स., प्रतिकूल रूप में संवेदनीय धर्म के विषय में चेतना – **तो** प. वि., ए. व. – *कथं अहितविञ्ञाणतो ... ? यम्हि दुक्खापितो, अमुकस्मिं एवं दुक्खापितो'ति सरति, एवं अहितविञ्ञाणतो सति उप्पज्जति,* मि. प. 87; – **तानुकम्पी** त्रि., [अहितानुकम्पिन्], हित एवं अनुकम्पा न करने वाला – **म्पिनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *पदुट्ठचित्ता अहितानुकम्पिनी, अञ्ञेसु रत्ता अतिमञ्ञते पतिं,* अ. नि. 2(2).230; – **तापनयन** नपुं., तत्पु. स. [अहितापनयन], अहित या अमङ्गल का निवारण, जो कुछ हानिकारक हो उसे हटा देना – *यस्मा च हितूपसंहारअहितापनयन-सम्पत्तिमोदनअनाभोगवसेन चतुब्बिधोयेव सत्तेसु मनसिकारो ...,* ध. स. अट्ठ. 240; – **तावहत्त** नपुं., भाव. [अहितावहत्व], अहितकारक होना, हानिकारक होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *कामा हि अहितावहत्ता मेत्तिया अभावेन अमित्ता,* थेरी. अट्ठ. 267.

अहितुण्डिक / आहितुण्डिक पु., [आहितुण्डिक], बाजीगर, संपेरा, ऐन्द्रजालिक जादूगर, सर्प के काटे हुए का चिकित्सक – **को** प्र. वि., ए. व. – *बाळगाय्हहितुण्डिको,* अभि. प. 656; *अहितुण्डिको ब्राह्मणो ओसधं, खादित्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.413; *यथा वा पन, महाराज बलवता आसीविसेन दट्ठस्स अन्तरायेव आहितुण्डिको अगदं दत्वा अविसं करेय्य,* मि. प. 281; ...

यथा नाम छेको अहितुण्डिको सप्पदट्ठविसं तेनेव सप्पेन पुन डंसापेत्वा उब्बाहेय्य, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).176; *सचे अहितुण्डिको गण्हिस्सति, उदकं लोहितवण्णं भविस्सती ति आह,* जा॰ अट्ठ॰ 4.412; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अलक्कमालीति अहितुण्डिकेन कण्ठे परिक्खिपित्वा ठपिताय अलक्कमालाय समन्नागतो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.277; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एसोपि अहितुण्डिकस्स हत्थे अत्तनो अनुभूतदुक्खमेव सन्धाय एवमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 4.277.

अहिदीप पु॰, एक द्वीप, जिसका प्राचीन नाम कारद्वीप था – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदा कारदीपो अहिदीपो नाम अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.213.

अहिनकुल नपुं॰, समा॰ द्व॰ स॰ [अहिनकुलं], **शा॰ अ॰** सांप और नेवला, **ला॰ अ॰** स्वाभाविक बैर – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहि च नकुलो च अहिनकुलं,* क॰ व्या॰ 324; सद्द॰ 3.750.

अहिनङ्गुट्ठ नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अहिलाङ्गूल], सांप की पूंछ – **ट्ठे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अहिनङ्गुट्ठे गण्हितुं वायमसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).334.

अहिनाग पु॰, कर्म॰ स॰ [अहिनाग], सर्प का स्वरूप धारण किया हुआ नाग-प्रजाति का प्राणी – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिस्वा इसिं पविट्ठं, अहिनागो दुम्मनो पधूपायि,* महाव॰ 30; – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नागन्ति सुमनपुप्फकलापसदिसं महाफणं तिविधसोवत्थिकपरिक्खित्तं अहिनागं अद्दस,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).33.

अहिपेत पु॰, कर्म॰ स॰ [अहिप्रेत], सर्प के स्वरूप में एक प्रेत – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न हि पापं कतं कम्मन्ति इमं धम्मदेसनं सत्था वेळुवने विहरन्तो अञ्ञतरं अहिपेतं आरब्भ कथेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.285; – **वत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ की एक कथा, जिसमें मनुष्य का शिर तथा सर्प का शरीर धारण किए हुए एक प्रेत का कथानक दिया गया है, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.285-288.

अहिभीरुक त्रि॰, [अहिभीरुक], सांपों से डरने वाला – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा अहिभीरुको पुरिसो अरञ्ञे सप्पेन अनुबद्धो ... भायतेव ...,* विसुद्धि॰ 1.316.

अहिमंस नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अहिमांस], सांप का मांस, रेंगने वाले किसी भी बड़े प्राणी का मांस – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *मनुस्सा दुब्भिक्खे अहिमंसं परिभुञ्जन्ति,* महाव॰ 295; *अहिमंसन्ति कस्सचि अपादकस्स दीघजातिकस्स मंसं न वट्टति,* महाव॰ अट्ठ॰ 355.

अहिमेखला स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [अहिमेखला], सांप की करधनी, सांप की कमर-पट्टी – **य** तृ॰ / प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो ... इमाय अहिमेखलाय आकासतो ओरुय्ह ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.81.

अहिमेखलिका स्त्री॰, उपरिवत् – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *देवदत्तो ... कुमारकवण्णं अभिनिम्मिनित्वा अहिमेखलिकाय अजातसत्तुस्स कुमारस्स उच्छङ्गे पातुरहोसि,* चूळव॰ 320; *अहिमेखलिकाति अहिं कटियं बन्धित्वा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 109.

अहिरञ्ञ त्रि॰, ब॰ स॰ [अहिरण्य], सोने से रहित, अपने पास सोना न रखने वाला – **ञ्ञो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *जनपदो अहिरञ्ञो अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.201.

अहिराजकुल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अहिराजकुल], नागों के राजाओं का राजकुल – **लानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारि अहिराजकुलानि, विरूपक्खं अहिराजकुलं, एरापथं ..., छब्यापुत्तं.., कण्हागोतमं अहिराजकुलं,* चूळव॰ 227; – **लानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये हि केचि दट्ठविसा, सब्बेते इमेसं चतुन्नं अहिराजकुलानं अब्भन्तरगताव होन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.308.

अहिराजसुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ के चतुक्कनिपात का एक सुत्त, जिसमें नागराजाओं के चार कुलों का वर्णन है, अ॰ नि॰ 1(2).83-85.

अहिरीक / अहिरिक 1. त्रि॰, [अह्रीक], निर्लज्ज, लज्जाभाव से रहित, बेशर्म, बेहया – **रिको** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमो च पुग्गलो अहिरिको? ...,* पु॰ प॰ 126; *अनातापी अनोत्तापी, कुसीतो हीनवीरियो, यो थीनमिद्धबहुलो, अहिरीको अनादरो,* इतिवु॰ 22; *अहिरिको अनोत्तप्पी,* सु॰ नि॰ 133; *नास्स पापजिगुच्छनलक्खणा हिरी, नास्स उत्तासनतो उब्बेगलक्खणं ओतप्पन्ति अहिरिको अनोतप्पी,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.145; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुजीवं अहिरिकेन,* ध॰ प॰ 244; *तत्थ अहिरिकेनाति छिन्नहिरोत्तप्पकेन,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.204; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अहिरिका अहिरिकेहि सद्धिं संसन्दिंसु समिंसु,* स॰ नि॰ 1(2).140; *तथा अहिरिका भिन्नमरियादा अलज्जिपुग्गला अहिरिकेहि ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.126; *परे अहिरिका भविस्सन्ति, मयमेत्थ हिरिमना भविस्सामा ति सल्लेखो करणीयो,* म॰ नि॰ 1.54; – **कायो** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *छिन्निका धुत्तिका अहिरिकायो,* पारा॰ 188; *अहिरिकायोति निल्लज्जा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.120; **2.** नपुं॰, [आह्रीक्य], निर्लज्जता, बेशर्मी – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ कतमं अहिरिकं,* पु॰ प॰ 126; *अहिरिकञ्च अनोत्तप्पञ्च,* अ॰ नि॰ 1(1).67; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *असिथिला अब्बोकिण्णा अहिरिकेन,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.116; – **ता** स्त्री॰,

भाव॰ [अह्रीकता], लज्जाहीनता, बेशर्मी - **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *नाहं अलक्ख्या अहिरिक्कताय वा, ...,* थेरगा॰ 1126; *अहिरिक्कतायाति यथावज्जं केळिं करोन्तो विय निल्लज्जताय,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.399; - **बल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अह्रीकबल], निर्लज्जता का बल, शक्ति के रूप में निर्लज्जता - *अहिरिकमेव बलं अहिरिकबलं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 289; - **भाव** पु॰, भाव॰, निर्लज्जता का भाव - **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *हिरीमनापि अहिरीकभावं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.17; - **मूलकसुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ का एक सुत्त, जिसमें अह्रीक आदि के कारण प्राणियों के दुखग्रस्त होने का उपदेश संगृहीत है, स॰ नि॰ 1(2).144-146; - **समाव** त्रि॰, ब॰ स॰ [अह्रीकस्वभाव], स्वभाव से ही निर्लज्ज, लज्जाहीन प्रकृति वाला - **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनरियरूपोति अहिरिकसभावो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.82; - **कानोत्तप्पवमन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अह्रीकानवत्राप्यवमन], निर्लज्जता एवं दुस्साहस का प्रकाशन - **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अहिरिकानोत्तप्पवमनं कारेति,* मि॰ प॰ 304.

अहिवण्ण पु॰, तत्पु॰ स॰ [अहिवर्ण], सांप का स्वरूप, सर्प के समान रूप - **ण्णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - *मातानं, महाराज, यक्खानं सरीरं कीटवण्णेन वा दिस्सति, ..., अहिवण्णेन वा दिस्सति, ..., मिगवण्णेन वा दिस्सती'ति,* मि॰ प॰ 253.

अहिवातकरोग पु॰, एक संक्रामक रोग, संभवतः प्लेग या ऐसी महामारी, जिसमें पहले मक्खियां, कीड़े, चूहे आदि मरते हैं तथा सबसे पीछे घर में रहने वाले मनुष्य - **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अपरभागे भद्दवतियसेट्ठिनो गेहे अहिवातरोगो पतितो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.109; - **गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अञ्ञतरं कुलं अहिवातकरोगेन कालङ्कतं होति, तस्स पितापुत्तका सेसा होन्ति,* महाव॰ 98; *अहिवातकरोगेनाति मारिब्याधिना, यत्र हि सो रोगो उप्पज्जति, तं कुलं द्विपदचतुप्पदं सब्बं नस्सति, यो भित्तिं वा छदनं वा भिन्दित्वा पलायति, तिरोगामादिगतो वा होति, सो मुच्चति,* महाव॰ अट्ठ॰ 270-71.

अहिविज्जा स्त्री॰, [अहिविद्या], सर्प के विष को मिटाने वाली चिकित्सा अथवा मन्त्र द्वारा सर्प के आवाहन की विद्या - **ज्जा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अङ्गं ... अङ्गविज्जा, ... अहिविज्जा, विसविज्जा, विच्छिकविज्जा मूसिकविज्जा, ... इति वा इति,* दी॰ नि॰ 1.8; *अहिविज्जाति सप्पदट्ठतिकिच्छनविज्जा चेव सप्पाव्हायनविज्जा च,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.83.

अहिसरीर नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अहिशरीर], सांप की कुण्डली, सांप का शरीर - *एत्थ च भोगो ति भुजीयति कुटिलं कारीयतीति भोगो अहिसरीरं, भोगी ति सप्पो,* सद्द॰ 2.349.

अहीनगामी त्रि॰, हीन या दीनताभरी मनोवृत्ति से मुक्त - **सु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ - *दीघायुकेसु अममेसु पाणिसु, विसेसगामीसु अहीनगामीसु,* नेत्ति॰ 119; *अहीनगामीसूति यथालद्धसम्पत्तीहि यावतायुकं अपरिहीनसभावेसु,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 349-350.

अहीनिन्द्रिय त्रि॰, ब॰ स॰ [अहीनेन्द्रिय], अविकल इन्द्रियों वाला, सक्षम इन्द्रियों वाला - **यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *बोधिसत्तञ्च ... तिरोकुच्छिगतं पस्सति सब्बङ्गपच्चङ्गिं अहीनिन्द्रियं,* दी॰ नि॰ 2.10; *पस्सतीति कललादिकालं अतिक्कमित्वा सञ्जातअङ्गपच्चङ्गअहीनिन्द्रियभावं उपगतंयेव पस्सति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.25; - **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अञ्ञो अत्ता दिब्बो रूपी मनोमयो सब्बङ्गपच्चङ्गी अहीनिन्द्रियो,* दी॰ नि॰ 1.29; *अहीनिन्द्रियोति परिपुण्णिन्द्रियो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.103.

अहीरथ √हर (हरण करना) के अद्य॰ कर्म॰ वा॰ का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, हरवाया गया, ले जाया गया - *रट्ठे विलुम्पमानम्हि, नास्स किञ्चि अहीरथ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.241; *अहीरथाति यथा पब्बतगहनादीहि निक्खमित्वा रट्ठं विलुम्पमानेसु चोरेसु बहुपरिक्खारस्स अन्तोगामे ठपितं विलुम्पति हरति, तथा यस्स अधनस्स कायपटिबद्धपटिक्खारस्स न किञ्चि अहीरथ तस्स छट्ठम्पि भद्दमेव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.243.

अहीळितत्त नपुं॰, अहीळित का भाव॰, अतिरष्कृत होना, अपमानित न होना - **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अनवञ्ञत्तीति अनवञ्ञा परेहि अत्तनो अहीळितता अपरिभूतता, ...,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 219.

अहु[1] अह का स॰ प॰ में परिवर्तित रूप, दिन, दिन में - *अजातसत्तु विदेहिपुत्तो तदहुपोसथे पन्नरसे कोमुदिया चातुमासिनिया ... रत्तिया ... निसिन्नो होति,* दी॰ नि॰ 1.42; *तदहूति तस्मिं अहु, तस्मिं दिवसेति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.117.

अहु[2] / **अहू** √हु (होना) अद्य॰ का प्र॰ / म॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभूत् / अभूः], वह हुआ था, तू हुआ था - *अहु राजा विदेहानं,* सद्द॰ 2.461; - **हुं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰, मैं था - *अहं केवट्टगामस्मिं, अहुं केवट्टदारको,* अप॰ 1.330; *मा मे माता तरन्तस्स, अन्तरायकरा अहू'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.111.

अहुत्वा √हु (होना) के पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, पूर्वकाल में अस्तित्व में न रहकर, अभाव में रहकर - *एवं किरिमे धम्मा*

अहुत्वा सम्भोन्ति, हुत्वा पटिवेन्ती'ति, म॰ नि॰ 3.75; *अहुत्वा सम्भोन्तीति इमिना उदयं पस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.61; *अहुत्वायेवुप्पज्जन्ति, न कुतोचिपि आगता,* ना॰ रू॰ प॰ 1543.

अहुवासिं √हु (होना) का अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰, हुआ, था – *अहुवासिन्ति अहोसिन्ति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 274; सद्द॰ 2.455.

अहुहासिय नपुं॰, [अट्टहास], दांत निकाल कर किया गया अट्टहास, महाहसित, ऊंची आवाज में हंसी – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायं एळगळागुम्बे, करोति अहुहासियं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.194; *अहुहासियन्ति दन्तविदंसकं महाहसितं वुच्चति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.195.

अहेठयन्त त्रि॰, √हेठ (पीड़ा देना, अपमान करना) के वर्त॰ कृ॰ का निषे॰ [अहेठयत्], पीड़ा न पहुंचाने वाला, कष्ट न देने वाला – **यं / न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथापि भमरो पुप्फं वण्णगन्धमहेठयं,* ध॰ प॰ 49; ... *अहेठयन्तो अविनासेन्तो विचरतीति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.210; – **यानो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ उपरिवत् – *अनिस्सितो अञ्ञमहेठयानो,* स॰ नि॰ 1(1).9; *अहेठयानोति अविहिंसमानो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.34.

अहेतु 1. पु॰, तत्पु॰ स॰ [अहेतु], हेतु या कारण की अविद्यमानता, हेतु का न होना – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, अहेतु द्वारा – *अधिच्च लद्धन्ति अहेतुना लद्धं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.164; – **तूहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰, बिना कारणों से – *न हि बुद्धा अहेतूहि, सितं पातुकरोन्ति ते,* अप॰ 1.19; – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ ... *हेतुसमुग्घाते अहेतुस्मिं अवत्थुस्मिं नत्थि दिब्बचक्खुस्स उप्पादोति सुत्ते वुत्तं,* मि॰ प॰ 125; 2. त्रि॰, ब॰ स॰, बिना हेतु वाला, बिना कारण वाला – **तु** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बं तं अहेतु अप्पच्चया'ति,* विभ॰ 426; – **क** त्रि॰, [अहेतुक], क. बिना हेतु वाला, कारणों से रहित, अकारण, कार्य-कारण-नियम से सर्वथा मुक्त, (धर्म, रूप, चित्त, प्राणी, योनि आदि) – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सहेतुका, भिक्खवे, उप्पज्जन्ति पापका अकुसला धम्मा, नो अहेतुका,* अ॰ नि॰ 1(1).98; *सहेतुका धम्मा, अहेतुका धम्मा,* ध॰ स॰ 2; *सम्पयोगतो पवत्तेन सह हेतुनाति सहेतुका, तथेव पवत्तो नत्थि एतेसं हेतूति अहेतुका,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 94; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बं रूपं न हेतु, अहेतुकं ...,* ध॰ स॰ 584; – **के** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *कामावचरस्स विपाकतो अहेतुके चित्तुप्पादे ठपेत्वा ...,* ध॰ स॰ 1441; – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पटिसन्धिसञ्ञा पन नेसं तिहेतुकापि द्विहेतुकापि अहेतुकापि होन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.89; – **कानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गब्भसेय्यकानं सत्तानं अहेतुकानं नपुंसकानं उपपत्तिक्खणे चत्तारिन्द्रियानि पातुभवन्ति,* विभ॰ 488; **ख**. अहेतुवादी, धर्मों को अहेतुक प्रतिपादित करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अहेतुका ये न वदन्ति कम्मं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.301; *अहेतुका "विसुद्धिया वा संकिलेसस्स वा हेतुभूतं कम्मं नत्थी"ति एववादा,* तदे॰; – **अपच्चयवादी** त्रि॰, [अहेत्वप्रत्ययवादिन्], धर्म हेतु एवं प्रत्ययों के बिना ही उत्पन्न हुए हैं, इस मत को प्रतिपादित करने वाला (आचार्य) – **दी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्हाकं पाचरियो अहेतुअपच्चयवादी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.153; – **किरियाचित्त** नपुं॰, [अहेतुकक्रियाचित्त], विपाक उत्पन्न न करने वाले तथा (लोभ, द्वेष, मोह, अलोभ, अद्वेष, अमोह नामक) हेतुओं से असम्प्रयुक्त कामावचर भूमि के 3 प्रकार के चित्त – **त्तानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उपेक्खासहगतं पञ्चद्वारावज्जनचित्तं, तथा मनोद्वारावज्जनचित्तं, सोमनस्ससहगतं हसितुप्पादचित्तञ्चेति इमानि तीणिपि अहेतुककिरियचित्तानि नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ 3; – **कुसलविपाकचित्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अहेतुककुशलविपाकचित्त], कामावचरभूमि के हेतुओं से असम्प्रयुक्त तथा कुशल विपाक देने वाले आठ प्रकार के चित्त – ... *इमानि अट्ठपि कुसलविपाकाहेतुकाचित्तानि नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ 3; – **चित्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [अहेतुकचित्त], छ प्रकार के हेतुओं में से किसी एक से भी असंप्रयुक्त कामावचरभूमि के अट्ठारह प्रकार के चित्त, 7 अकुशल-विपाक, 8 कुशल-विपाक तथा 3 अहेतुकक्रियाचित्त – **त्तानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इच्चेवं सब्बथापि अट्ठारसाहेतुकचित्तानि समत्तानि,* अभि॰ ध॰ स॰ 3; – **कट्ठक** नपुं॰, [अहेतुकाष्टक], आठ अहेतुक चित्तों का समुच्चय – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्खुद्वारे तु चत्तारि, गहितागहणेनिध, सोतधानादिना सद्धिं, होतेवाहेतुकट्ठकं,* अभि॰ अव॰ 442; – **दिट्ठि** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [अहेतुकदृष्टि], धर्मों के अहेतुक होने की मिथ्या धारणा – *अहेतुकदिट्ठि उभयम्पि पटिबाहति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.87; – **पटिसन्धि** 1. स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अहेतुकप्रतिसन्धि], बिना हेतु के पुनर्जन्म – **न्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अहेतुकपटिसन्धिं गहेत्वा उरेन परिसक्कनट्ठाने निब्बत्तोस्मि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.134; 2. त्रि॰, ब॰ स॰, अहेतुक-श्रेणी की प्रजाति में जन्म लेने वाला, अपायगति में उत्पत्ति प्राप्त करने वाला – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहेतुपटिसन्धिस्स, न तदारम्मणं भवे,* अभि॰ अव॰ 444; – **योनि** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [अहेतुकयोनि], निकृष्ट श्रेणी की

प्रजाति में पुनर्जन्म - **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *एत्तकं नाम कालं समणधम्मं कत्वा अहेतुकयोनियं मण्डूकभक्खट्ठाने निब्बत्तोम्ही'ति ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.132; - **वाद** 1. पु॰, तत्पु॰ स॰ [अहेतुकवाद], धर्मों का बिना हेतुओं के ही उत्पन्न बतलाने वाले सिद्धान्त - **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेन च अहेतुकवादोपि सङ्गहितो होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 281; **2.** त्रि॰, धर्मों की अहेतुक उत्पत्ति प्रतिपादित करने वाला - **दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अहेसुं उक्कला वस्सभञ्जा अहेतुकवादा ... नत्थिकवादा,* स॰ नि॰ 2(1).68; - **वादी** त्रि॰, [अहेतुकवादी], धर्म बिना हेतुओं के ही उत्पन्न है, इस प्रकार के सिद्धान्त का प्रतिपादक - **दी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *तेसु एको अहेतुकवादी, ..., तेसु अहेतुकवादी इमे सत्ता संसारसुद्धिका'ति महाजनं उग्गण्हापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.217; - **दिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *जानापेस्सामि ने'ति अहेतुकवादिं ताव आमन्तेत्वा पुच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.224; - **ज** त्रि॰, [अहेतुज], बिना हेतु के उत्पन्न - **जं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *यं लोके अकम्मजं अहेतुजं अनुतुजं, ते मे कथेही'ति,* मि॰ प॰ 250; - **दिट्ठि** स्त्री॰, स॰ प॰ के रूपों में प्राप्त [अहेतुदृष्टि], 'धर्म हेतुओं के बिना उत्पन्न है', इस प्रकार की मिथ्या-धारणा - *पच्चयपरिग्गहेन अहेतुविसमहेतुदिट्ठीनं, ... पहानं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.8.

अहेवन नपुं॰, उत्तम वन-प्रदेश - **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उत्तमाहेवनन्दहोति अहेवनं वुच्चति वनसण्डो, उत्तमं वनसण्डं दहतीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.58.

अहो अ॰, निपा॰ [अहो], निम्नलिखित अर्थों का सूचक, 1. **इच्छा, कामना, प्रार्थना** (विधि॰ क्रि॰रू॰ के साथ) - *अहो इति पत्थनत्थे,* सद्द॰ 3.898; *अहो भवं अस्सम मय्हं पस्से,* जा॰ अट्ठ॰ 5.190; 2. **आश्चर्य, हर्ष, प्रशंसा** - *अहो, नाम, साधु इच्चेते पसंसनत्थे,* सद्द॰ 3.897; ... *अहो अच्छरियं, अहो अब्भुत'न्ति कथं समुट्ठापेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.97; ... *अभिक्खणं उदानं उदानेसि – "अहो सुखं, अहो सुखं"न्ति,* चूळव॰ 319; *सा "अहो इमिस्सा केसा सोभना, अहो नलाटं सोभनं"न्ति ... बलवसिनेहा अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.64; **3. निन्दा या गर्हा** - *अहो नाम इच्चेते गरहत्थे,* सद्द॰ 3.897; *अहो वत रे अम्हाकं पण्डितक, अहो वत रे अम्हाकं बहुस्सुतक, ...,* दी॰ नि॰ 1.93; **4.** निम्नलिखित निपा॰ के साथ प्रयुक्त– **क. नून,** आश्चर्य भरी प्रीति एवं अनुस्मरण का सूचक - *अहो नून भगवा, अहो नून सुगतो, यो इमेसं धम्मानं सुकुसलो'ति,* म॰ नि॰ 2.232; *तत्थ अहो नूनाति अनुस्सरणत्थे निपातद्वयं तेन तस्स भगवन्तं अनुस्सरन्तस्स एतदहोसि अहो नून भगवा, अहो नून सुगतो'ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.191; **ख. वत** (अहो वत) विधि॰ क्रि॰ प॰ के साथ, इच्छा के अर्थ का सूचक - ... *अहो इति पत्थनत्थे,* सद्द॰ 3.898; *अहो वत मं अरञ्ञे वसमानं रज्जे अभिसिञ्चेय्यु'न्ति,* तदे॰; में उद्धृत, *अहो वत अञ्ञेपि सत्ता इत्थत्तं आगच्छेय्यु'न्ति,* दी॰ नि॰ 1.15; **ग.** अहो वत रे, **(1)** निन्दा या डांट-फटकार, भर्त्सना - *अहो वत रे अम्हाकं पण्डितक, अहो वत रे अम्हाकं बहुस्सुतक,* दी॰ नि॰ 1.93; *अहो वताति गरहवचनमेतं रेति इदं हीळनवसेन आमन्तनं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.223; **(2)** प्रशंसा का सूचक - *अहो वत रे छेका आचरिया, ईदिसानिपि नाम सिप्पानि करिस्सन्ती'ति एवं तेसं छेकताय तुस्सति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 251.

अहोगङ्ग पु॰, उत्तर-भारत में गङ्गा-तट पर स्थित एक पर्वत, जो कुछ समय तक सम्भूत साणवासी का निवास-स्थान था तथा बाद में मोग्गलिपुत्त तिस्सथेर का भी सात वर्षों तक आश्रयस्थल बना, यहीं पर काकण्डक-पुत्र यश साणवासी थेर से मिलने आए तथा वैशाली के भिक्षुओं के विनयविपरीत दस आचरणों पर विचार करने हेतु इस पर्वत पर अर्हतों की एक सभा आयोजित हुई - **ङ्गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *येन अहोगङ्गो पब्बतो, येनायस्मा सम्भूतो साणवासी तेनुपसङ्कमि,* चूळव॰ 468; - **ङ्गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अहोगङ्गे पब्बते सन्निपतिंसु,* चूळव॰ 468; - **ङ्गम्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ - *उद्धं गङ्गाय एको व अहोगङ्गम्हि पब्बते,* म॰ वं॰ 5.233; - **पब्बत** पु॰, उपरिवत् - **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *फासुविहारेन विहरितुकामो अहोगङ्गपब्बतं अगमासि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.38.

अहोपुरिस पु॰, [अहोपुरुष], **शा॰ अ॰** अत्यधिक घमण्ड या अहंमन्यता से भरा पुरुष, शेखी बघारने वाला, **ला॰ अ॰** अपने धन, बल आदि की डींग हांकने वाला पुरुष - **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अहोपुरिसतो दप्पने णिको,* सद्द॰ 3.867; - **सिका** स्त्री॰, [अहोपुरुषिका], अत्यधिक घमण्ड या अहंमन्यता, डींग हांकना या शेखी बघारना - *अहङ्कारदप्पने अहोसद्दपुब्बस्मा पुरिससद्दतो णिकपच्चयो होति, अहोपुरिसिका,* सद्द॰ 3.867.

अहोरत्त पु॰, [अहोरात्र], रात-दिन - **त्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ - घटिका सट्ठयहोरत्तो, अभि॰ प॰ 74; - **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ - *अहोरत्तं अनुयुञ्जं, जीवितं अनिकामयं,* स॰ नि॰ 1(1).143; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.243 में उद्धृत; **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ - ... *अहोरत्तेन अट्ठचत्तालीसंयोजनसहस्सानि भस्समाना ...,* मि॰ प॰ 90; - **त्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ - *अच्चयन्ति अहोरत्ता,*

स॰ नि॰ 1(1).129; – **त्तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अहोरत्तानमच्चये,* स॰ नि॰ 1(1).85; – **त्तानुसिक्खी** त्रि॰, [अहोरात्रानुशिक्षिन्], स्वयं को रात-दिन प्रशिक्षित करने में लगा हुआ – **क्खिना** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनावुसो, भिक्खुना तेनेव पीतिपामोज्जेन विहातब्बं अहोरत्तानुसिक्खिना कुसलेसु धम्मेसु,* म॰ नि॰ 1.140; *अहोरत्तानुसिक्खिनाति दिवापि रत्तिम्पि सिक्खन्तेन* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).379; – **नुक्खिनं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सदा जागरमानानं, अहोरत्तानुसिक्खिनं,* ध॰ प॰ 226.

अहोरत्ति स्त्री॰, द्व॰ स॰ [अहोरात्र], रात और दिन – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ विशे॰ – *अथ सब्बमहोरत्तिं, बुद्धो तपति तेजसा,* ध॰ प॰ 387.

अहोसि √हु (होना) का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, हुआ – *अथ खो मिलिन्दस्स रञ्ञो एतदहोसि,* मि॰ प॰ 26; विशेष प्रयोगों हेतु होति के अन्त॰, द्रष्ट॰ (आगे); – **कम्म** नपुं॰, अहोसि + कम्म के योग से व्यु॰ – *अहोसिकम्मं, अहोसि कम्मविपाको,* पटि॰ म॰ 259; के कथन से बना हुआ शब्द, पूर्वकाल में चेतना द्वारा अभिसंस्कृत परन्तु कुशल एवं अकुशल विपाक उत्पन्न न करने वाला कर्म, केवल अभिसंस्कृत हो चुका परन्तु विपाक को अप्राप्त कर्म – *तत्थ यं कम्मं अतीते ... आयूहितं अतीतेयेव विपाकवारं लभि ..., तं अहोसिकम्मं ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.113; *अहोसिकम्मन्ति अहोसि एव कम्मं, न तस्स विपाको अहोसि अत्थि भविस्सति चाति एवं वेदितब्बं कम्मं,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.94.



ISBN :81-88242-14-4
978-81-88242-14-6